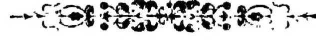


मथुराम-जीवनदास-

वेदधर्मसभाना अध्यक्ष.

श्री.

सुश्रुत आयुर्वेद.



गुजराती भाषान्तर

वैद्यराज प्रभुराम जीवनराम तथा डा. पोपट प्रभुरामनी

देखरेखनीचे तयार करनार

जामनगरवासी

शास्त्री कालिदास गोविंदजी.

अनुक्रमणिका करनार

रा. रा. विश्वनाथ प्रभुराम वैद्य बी. ए. तथा रा. रा. त्रंबकलाल पोपट भट्ट.

छपावी प्रगट करनार

वेदधर्मसभानी कार्यभारमंडली तरफथी

तेना मंत्रीओ

शेठ द्वारकादास धरमशी, रा. रा. विश्वनाथ प्रभुराम वैद्य.

मुंबई–"निर्णयसागर" छापखानामां छाप्यो.

संवत् १९५७ सने १९०१ इ.

मूल्य १० रुपीआ.

व्यासावटंकधरजीवनराम पुत्रो ।
मुद्रापयत्प्रणयतः प्रभुराम नामा ॥
श्रीवेदधर्मपरिषत्परमानुमत्या ।
सत्पुस्तकं यदिदमस्तु मुदे विदां तत् ॥

भाषांतरकर्त्ता तरफथी

उपोद्घात.



आयुर्वेदना अति प्राचीन ग्रंथो जेवा के ब्रह्मसंहिता, दक्षसंहिता आदि ग्रंथो हमणां उपलब्ध नथी; ते ग्रंथो प्राचीन समयमां हता ए चरक सुश्रुत विगेरे ग्रंथोथी सिद्ध थायछे. उपर प्रमाणे वस्तुस्थिति होवाथी, सघळा विद्वज्जनोना जाणवामां छे के अधुना चरक अने सुश्रुत नामना आयुर्वेदना बे मुख्य प्राचीन संस्कृत ग्रंथो सर्व आर्य वैद्यकना मूलभूत छे, पोतामां जणावेलां चिकित्सादिकनां तत्वोथी यूरोप आदि देशोमां पण संपूर्ण प्रख्याति तथा प्रशंसा पामेला छे, सदाचरणनी पद्धतिना तथा निदानोना उपदेशथी शरीरनी स्वस्थता जाळववाना परमसाधनभूत छे, रोगोथी शरीरनी स्वस्थता बगडी होय तो ते सुधारवानी अनेक युक्तिओ बतावनारा छे, प्राचीन छतां पण जेओना करतां आज दिवस सूधीना अर्वाचीन कोई आर्य के अनार्य वैद्यक ग्रंथो तत्वविचारमां वधी शक्या नथी एवा छे, बाललग्न आदि दुराचारो के जेओ पाछळथी आर्यलोकोमां पेसी प्रबल हानि करनारा थई पड्या छे. तेओने पेहेलांथीज दुष्ट जणावी चूक्या छे, मनु तथा याज्ञवल्क्य आदि धर्मशास्त्रकारोए पण जेओनां असगोत्रविवाह तथा रजस्वलास्पर्श–निषेध आदि आरोग्यरक्षक तत्वोने धर्मना स्वरूपमां गोठवी दई लोकोना उपकारने माटे सुदृढता आपी छे एवा छे, जेओमां करेलुं धणखरुं द्रव्यादिकना गुणदोषोनुं तथा रसवीर्यविपाकआदिनुं उपपत्तिपूर्वक विवेचन प्राचीन आर्योनी अपूर्व शोधकतानें बतावी मानंद आश्चर्य आपे छे एवा छे, मनुष्यशरीर जीवतुं होय त्यां सूधी तेमां अंदर थती होवाने लीधे कदी प्रत्यक्ष थाय नही एवी अने ए शरीर मरी जाय त्यारे तेमां तमाम बंधज पडीजाय एवी रस–रक्त–संचरण आदि स्वाभाविक क्रियाओनुं यथास्थित निरूपण करवाथी पोताना दिव्य ज्ञानमयपणानो निश्चय करावेछे, मरकी आदि देशोपद्रवोना तथा गर्भसंभवआदिना विषयोमां चलावेलां सूक्ष्मतत्वज्ञानोथी (फीलॉसॉफीओथी) विद्वानोने सविस्मय करी नाखे छे, केटलाएक शांतिमय सदुपदेशोरूप औषधोथी मानसिक रोगोने टाळवामां तो पोतेज वैद्यरूप थाय छे, मरवापडेलाओने अमुक अमुक अवधिमां मरण थवानी अगमचेती आपनारां निमित्तो जणाववाथी मिलकतनी व्यवस्था आदि करवामां प्रमत्त न थवा आपे एवा छे, शरीर के जे सर्व पुरुषार्थोना साधनरूप छे तेने चिरंजीवी तथा सबल बनावनारा रसायन आदि प्रयोगोनां निरूपण करवाथी सर्व लोकोना परममित्ररूप छे, आयुष्यनी परीक्षानो तथा रोगोना साध्यासाध्यपणाआदिनो पूर्ण उपदेश करवाथी वैद्यजनोना परम गुरुरूप छे, नगरादिकमां तथा सेनाओमां मारी गोठवणथी डाक्टरो वगेरे राखवानी यूरोपीयनोनी चातुरी के जे आपणने विस्मयकारक लागे छे तेवी चातुरी प्राचीन कालना आर्यलोकोमां हतीज एवो निश्चय करावीने आपणनी वचला समयमां थयेली भूलनेज विस्मयना कारणरूप जणावे छे, नपुंसकोना सोपपत्तिक भेदो आपीने आपणने अमुक विकर्मोथी निवृत्त रेहेवानुं पाकुं शिक्षण आपे छे, गर्भ रह्या पहेलां तथा गर्भ रह्या पछी अने जन्म्या पछी ते छेक मरणपर्यंत करवाना सदुपचारो बतावीने मनुष्योनो मातापिता करतां पण विशेष उपकार करेछे अने विषोनी जातो तथा विषना संसर्गोनी चिकित्सा आदि बतावीने आपणने स्थावरविषोथी तेमज सर्पादिकना तथा हडकीया वगेरेना दंशादिक जंगमविषोथी पण बचाववानो अनुग्रह करे छे.

आ चरकनो अने सुश्रुतनो प्रथम अध्याय जोतां जणाय छे के देवलोकमां ब्रह्मा, प्रजापति, अश्विनीकुमार अने इंद्र ए रीते आयुर्वेदनो विद्यावंश एकज चालेलो छे पण इंद्रनी पासेथी ते वेद शीखेला ब्रह्मर्षि भरद्वाजथी अने राजर्षि धन्वंतरिथी भूलोकमां चरक अने सुश्रुत नामनी मुख्य बे शाखाओ थएली छे. ब्रह्मर्षि भरद्वाजनी पासेथी शिखेला आत्रेय (पुनर्वसु) मुनिये जे मूल संहिता करी, ते उपर अग्निवेश मुनिये जे वृत्ति करी अने ते उपर चरक मुनिये जे सविस्तर प्रतिसंस्कार कर्यो ए त्रणेना समुदायरूप चरकग्रंथ छे. तेमज राजर्षि धन्वंतरीनी

१ कल्पस्थानना ६ ठा अध्यायना २२ मा विषयथी ३० मा विषयसुधी वांचो. २६ मो तथा २७ मो विषय वांचवाथी जणाशे के जेम हाल यूरोपीयन वैद्योए शीतळानी तथा मरकीनी रसी शोधी काहाडी छे तेम प्राचीन आचार्योए हडकवाना विषमां गोठवण शोधी काहाडी छे.

पासेथी शीखेला सुश्रुतमुनिए धन्वंतरिनी जे मूलसंहिता उपर जे वृत्ति करी अने ते वृत्ति उपर नागार्जुने जे सविस्तर प्रतिसंस्कार कर्यो ए त्रणेना समुदायरूप सुश्रुतग्रंथ छे. पण जेम व्याकरणशास्त्रमां सूत्रनो भाग, वार्तिकनो भाग अने भाष्यनो भाग जूदा जूदा करी बतावी शकाय छे तेम आ ग्रंथोनां संहिताभाग, वृत्तिभाग अने प्रतिसंस्कारभाग जूदा जूदा करी बतावी शकाय एम नथी. कारण के वृत्तिकारोए संहिताभागमां अने प्रतिसंस्कारकारोए वृत्तिभागमां तथा संहिताभागमां सुधारावधारा करीने भारे मिश्रण करी नाख्युं छे. आम थया छतां पण **भवतिचात्र, भवतश्चात्र** अने **भवंतिचात्र** एवां मथाळांओनी नीचे जे श्लोको आपवामां आव्या छे तेओ प्रायशः मूलसंहिताकारोनाज होय अने रामकृष्ण आदि अर्वाचीन देवादिकना नामोवाळा मंत्रादिक भागो प्रतिसंस्कारकारोनाज होय एम धारीशकाय छे.

सुश्रुतमां शल्यतंत्र, शालाक्यतंत्र, कायचिकित्सातंत्र, भूतविद्यातंत्र, कौमारभृत्यतंत्र, अगदतंत्र, रसायनतंत्र तथा वाजीकरणतंत्रे ए आयुर्वेदनां आठे अंगोनो संग्रह करेलो छे अने चरकमां शल्यतंत्र विना शालाक्यतंत्र आदि सात अंगोनो संग्रह करेलो छे. मूढगर्भ आदि विषयोमां ज्यां ज्यां वाहाडकाप आदि शल्यतंत्रनी क्रियाओनी अपेक्षा जणाई छे त्यां त्यां चरके स्पष्ट अक्षरथी कह्युं छे के ए क्रियाओ शल्यतंत्र जाणनारा वैद्यना हाथथी करावी लेवी.[३] चिकित्सा आदि अनेक विषयो उपर चरकमां जे तत्वज्ञानात्मक सूक्ष्म विचारो जोवामां आवे छे तेओ खरेखर अप्रतिम छे एम कह्यावगर चालतुं नथी पण ते साथे एटलुं जणाववानी जरूर छे के सुश्रुतमां कांईक अल्प अक्षरोथी करेला पण जे तत्वज्ञानात्मक सूक्ष्म विचारो जोवामां आवेछे तेओ चरकना तेवा विचारोथी बहु ओछा उतरे एवा तो नथीजे. चरकमां थोडा रोगोनां नाम, निदान, लक्षणादिक तथा चिकित्साओ आपेलां छे अने सुश्रुतमां घणा रोगोनां नाम, निदान, लक्षणादिक तथा चिकित्साओ आपेलांछे सुश्रुतनी शारीरविद्या चरकथी घणी चडीयाती छे अने शल्यतंत्ररूप वाहाडकाप आदि करवानी विद्या तो पोतानी आवगीज छे. चरकमां चिकित्सितस्थानना छेल्ला सत्तर अध्यायो, कल्पस्थान सघळुं अने सिद्धिस्थान सघळुं एटला असल भागो प्रथमथीज कोईने हाथ लागेला नथी तेथी ए ग्रंथने पूर्ण करवा माटे एटला भागो **दृष्टबलकापिलबलि** नामना कोई आचार्ये नवा करीने ते ग्रंथमां दाखल करेला छे एम ते ग्रंथना चिकित्सितस्थानना छेल्ला अध्यायमां स्पष्ट लख्युं छे. सुश्रुतमां एवुं कशुं थयेलुं जोवामां आवतुं नथी.

आपणा आर्यलोकोना जूना ग्रंथोमां शकसंवत् आपवानी चालज नथी ते प्रमाणे आ बे जूना ग्रंथोमां पण शकसंवत् आपेला नथी तेथी आ ग्रंथोना काळनो निर्णय करवामां घणी भांजगड पडे छे तोपण आसपासनां प्रमाणो उपरथी आत्रेयमुनि, भगवान् धन्वंतरी, अग्निवेश अने सुश्रुत एओ तो बहुज प्राचीन कालमां हता एम कहीशकाय

---

२ चिकित्सास्थानना ३० मा अध्यायनो ८ मो विषय वांचो.

३ आ आठे तंत्रोना अर्थो आ ग्रंथना पेहेला अध्यायना ४ थाथी ११ मा सूधीना विषयो वांचवाथी जाणवामां आवशे.

४ **परिदृष्टकर्मणा शल्यहर्त्रा हरणमित्येके.** चरक शारीरस्थान अध्याय ८ मो. **अश्मरी तु शाम्येन्नचेच्छल्यविदुद्धरेत्ताम्.** चरक चिकित्सास्थान अध्याय २६ मो.

१ **अस्मिन् सप्तदशाध्यायाः कल्पाः सिद्धय एवच । नासाद्यंतेग्निवेशस्य तंत्रे चरकसंस्कृते ॥ तानेतान् कापिलबलिः शेषान् दृष्टबलोऽकरोत् । तंत्रस्यास्य महार्थस्य पूरणार्थं यथायथम् ॥**

२ महाभारतना शांतिपर्वना २१० मा अध्यायमां कह्युं छे के "**युगांतेंतर्हितान् वेदान् सेतिहासान् महर्षयः । लेभिरे तपसा पूर्वमनुज्ञाताः स्वयंभुवा ॥ वेदविद्वेद भगवान् वेदांगानि बृहस्पतिः । भार्गवो नीतिशास्त्रं तु जगाद जगतोहितम् ॥ गांधर्वं नारदो वेदं भरद्वाजो धनुर्ग्रहम् । देवर्षिचरितं गार्ग्यः कृष्णात्रेयश्चिकित्सितम् ॥**" पूर्वकल्पना अंतमां प्रलय थतां तिरोहित थई गयेला इतिहासो सहित वेदो पाछी सृष्टिना आरंभ कालमां ब्रह्मानी अनुज्ञाथी मोटा मोटा ऋषिओए तपश्चर्यारूप साधनवते मेळव्या हता. ए प्रमाणे सघळा वेदोने जाणनारा ऋषिओमां लोकोना हितने माटे बृहस्पतिए वेदोनां अंगोनो, शुक्रे नीतिशास्त्रनो, नारदे गांधर्ववेद(गायनशास्त्र)नो, भरद्वाजे धनुर्वेदनो, गार्ग्ये देवताओनां तथा ऋषिओना चरित्रनो अने कृष्णात्रेये (आत्रेये) आयुर्वेदनो प्रकाश कर्यो छे." धन्वंतरी ए वैवस्वतमनुना दौहित्र पुरूरवाथी नवमी पेहेडीए हता एम श्रीभागवतना नवमस्कंधना १७ मा अध्यायमां कह्युं छे. अग्निवेश द्रोणाचार्यना गुरू हता एम महाभारतना आदिपर्वमां कह्युं छे. सुश्रुत विश्वामित्रना पुत्र हता एम सुश्रुतग्रंथमां कह्युं छे अने ते विश्वामित्र वाल्मीकिरामायण आदि ग्रंथोमां अति प्रसिद्ध छे.

छे. चरकमुनि ए जो मनाया प्रमाणे पतंजलिज होय तो ते मगधदेशना प्रख्यात अशोक राजाना पितामह चंद्रगुप्तना राज्यसमय पछी दश पेहेडीए थएला पुष्पमित्र राजाना राज्यसमयमां अथवा ते पछीना तुरतना समयमां एटले आशरे इस्वीसनथी त्रणसो चारसो वर्ष पेहेलां हता एम व्याकरण महाभाष्यमां स्वंरूपंशब्दस्याशब्दसंज्ञा । १-१-६८ ए सूत्रना व्याख्यानमां आपेला चंद्रगुप्तसभा तथा पुष्पमित्रसभा ए प्रत्युदाहरणथी जणाय छे. नागार्जुन के जेने सुश्रुतनो प्रतिसंस्कारकार केहेवामां आव्यो छे तेनुं तो जन्मकालादिक कांई पण जाणवामां नहि आवतां प्रतिसंस्कर्त्तातरीके नाम पण सुश्रुतना टीकाकार डल्हनना लखवा उपरथी जणायुं छे,[1] तोपण एटलुं तो कहीशकाय छे के ते वाग्भटथी पेहेलांनो छे केमके वाग्भटे प्रतिसंस्कृत थयेला चरक सुश्रुत ग्रंथो उपरथी सरल क्रमांतर करीने वाग्भट नामना ग्रंथमां विषयो आप्या छे. वाग्भट इस्वीसनथी पेहेलां आशरे बसो वर्ष उपर थयेल छे एम वाग्भटना अंग्रेजी तथा मराठी उपोद्घात उपरथी जणाय छे.

हालमां चरक, सुश्रुत अने वाग्भट ए आयुर्वेदनी वृद्धत्रयी अथवा आयुर्वेदना जूना प्रतिष्ठित शास्त्रग्रंथो गणाय छे, पण ते विषयमां एटलुं केहेवुं पडे छे के चरक तथा सुश्रुत ए बे ग्रंथो तमाम स्वतंत्र छे अने वाग्भट घणुं करीने ए बे ग्रंथोना एक जातना क्रमांतरात्मक तथा शब्दांतरात्मक उताराहूप छे. तोपण सुश्रुतना शल्यतंत्र उपरथी वाग्भटे पोताना ग्रंथमां जे लख्युं छे ते सुश्रुतना लेखथी जरा वधारे छे कारण के वाग्भट्टे शस्त्रो तथा शल्यो आदिमां कैंक वधारे लख्युं छे. अने वाग्भटना ग्रंथ पछी आज दिवस सूधीमां जे शार्ङ्गधर तथा भावप्रकाश आदि आयुर्वेद विषयना प्रकरण ग्रंथो थया छे तेओमां तो चरकादिकना मात्र फलितार्थोज लीधा छे तथा शल्यतंत्रने छोडीज देवामां आव्युं छे; ते उपरथी कहीशकाय छे के आपणा आर्यवैद्यकमां सुश्रुतना समय पछी वाग्भटना समय सूधीमां शल्यतंत्रविद्या तथा शारीरविद्या कशी वृद्धि पामी न हती अने वाग्भटना समय पछी तो शल्यतंत्रविद्या अस्त पामेली छे, तथा शारीरविद्या लोकोमां अर्वाचीन धर्मसंप्रदायोना प्रचारथी स्पर्शास्पर्शनी छींट पेसवाने लीधे अनुभवाया वगरनी मात्र उताराहूपेज लखाती आवी छे. सुश्रुते तो स्पष्ट आज्ञा करी छे के वैद्योए अवश्य मुडदां फाडीचीरीने तेओना अंदरना भागोनुं प्रत्यक्ष अवलोकन करवुं.[2] प्रकरणग्रंथोनो प्रचार थतां आपणा आर्यग्रंथोमां आलस्यादिकने लीधे शास्त्रग्रंथोनुं परिशीलन बंध पड्युं अने हालतो केटलोक समय थया दुर्दैवने लीधे प्रायशः प्रकरणग्रंथोनुं परिशीलन पण बंध पड्युं छे.

कपायेलां कानना‌क पाछां सांधवानी क्रिया सुश्रुतमां[3] सरस रीते बतावेल छे, ते उपरथी ते बाबत अंग्रजी वैदकमां लीधेल छे अने तेथीज ते क्रिया इन्डीयन ऑपरेशन (Indian operation) ए नामथी इंग्रेजी वैदकमां हजी सुधी ओळखाय छे, ते छतां पण आज काल "शारीरविद्या, यंत्रविद्या तथा चीरवुं फाडवुं इत्यादितो अंग्रजी वैद्यकमांज छे अने बीजा विषयोमां पण देशीवैद्यक अंग्रेजी वैद्यकथी घणुं उतरतुं छे" एम केटलाएकनुं केहेवुं आपणने सांभळवुं पडे छे ए केवळ उपर कहेली स्थितिनोज परिणाम छे. संस्कृतभाषानो परिचय घणे भागे बंध पडीजाय, जेणे आयुर्वेदनो संपूर्ण अभ्यास करी अनुज्ञापत्र (सनंद) मेळव्युं होय तेज चिकित्सा करी शके एवो प्राचीन संप्रदाय त्रूटी जाय, घणे भागे आर्यराजाओ पोताना प्रजाप्रत्येना धर्मनी अपेक्षा नहि राखतां मोजशोख कर्या करे अने वोरा, हजाम तथा मोची वगेरे पण पांच सात साचां खोटां औषधो लई वैद्य बनी बेसे त्यारे जे दशा आववी जोईए तेज आवी छे.

आ समयमां चरकसुश्रुतनो अने तेमां पण विशेषे करी प्रथम सुश्रुतनो लोकोमां प्रचार थाय तो केटलाएक लोकोने आर्यवैद्यक उपर जे अनास्था बेसी गई छे ते दूर थईजाय, अंग्रेजी शल्यविद्या तथा शारीरविद्या के जे बहुज सुधारावधाराने प्राप्त थई छे तथा प्राप्त थती जाय छे तेमां पण सुश्रुतनां मूलतत्वो उपरेज अनुगम थयेल छे एम निश्चय थाय, प्राचीन आर्य वैद्यकमां रोगोनां मूलकारणादिक विषे जे सूक्ष्म विचारो गोठवेला छे तेवा विचारो अनार्यवैद्यकमां थोडाज छे एम ध्यानमां आवे, कालक्रमने लीधे नवळी स्थितिमां आवी पडेलुं आर्यवैद्यक

१ आ ग्रंथना पेहेलाज सूत्रनी टीकामां डल्हने लख्युं छे के **प्रतिसंस्कर्त्तापीह नागार्जुन एव.**

२ आ ग्रंथना शारीरस्थानना ५ मा अध्यायनो ५० मो विषय वांचो.

३ आ ग्रंथना सूत्रस्थाननो १० मा अध्यायनो २ जो विषय वांचो.

उत्कृष्टस्थितिनुं अवलंबन करवा लागे, आपणा देशनी औषधीओ के जेओ हाल पण आयुर्वेदनी भांगी तूटी पद्धतिने श्रद्धाथी वळगी रहेली केटलाएक सुज्ञ आर्यवैद्योना हाथथी वपराएली होय तो आपणां शरीरोनां बंधारण आदिने तथा आपणा देशनां पवन जळ आदिने अनुसरती होवाथी, यूरोप आदिदेशोनी औषधीओ करतां उत्तम लाभो आपती जोवामां आवे छे तेओनी विज्ञानपूर्वक वधारे योजना थाय, प्रत्येक वैद्यने सघळा रोगोनी चिकित्सा करवानो अभिनिवेश के जे घणुं करीने सघळा रोगोना विषयमां पूर्णज्ञान मेळववा न आपे एवो छे तेने छोडी दईने हालना आर्यवैद्यो प्राचीनकाळनी सामान्य पद्धतिप्रमाणे रोगोना विभागो करीने तेओनी चिकित्सामां जूदा जूदा प्रवर्त्ते तो वधारे सगवड थाय अने बीजा पण घणा घणा लाभो के जेओ आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका वांचवाथी पण कांई कांई ध्यानमां आवशे तेओने यथाशक्ति पोहोंचवानी लोकोने उत्कंठा थाय.

आवा लोकहितार्थ विचारो हृदयमां आववाथी मुंबइनी **वेदधर्मसभा** के जेना प्रमुख वैद्यराज प्रभुराम जीवनराम छे, अने जेना मंत्रीनी पदवी उपर शेठ द्वारकादास धरमशी तथा रा० विश्वनाथ प्रभुराम छे तेणे संस्कृत जाणनारा तथा नहीं जाणनारा सर्व लोकोनी सगवडने माटे भाषांतरसहित सुश्रुतग्रंथ प्रसिद्ध करवानुं धारी गूजराती भाषांतर करवानी मने आज्ञा करतां में ते आज्ञाने स्वीकारी लीधी. भाषांतरनो आरंभ करतां जोके **काहं मंदमतिः क्केदं मथनं क्षीरवारिधेः। कस्तत्र परमाणुर्वै यत्र मज्जति मंदरः॥** तथा **तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्** । ए श्रीधरस्वामीना तथा महाकवि कालिदासना वचन प्रमाणे मारी आ प्रवृत्ति छे एम मारा मनमां आव्युं तो पण 'बेचार वैद्यकग्रंथोनां भाषांतरो मारा हाथथी थइगयेल छे तेथी जे कांई ज्ञानमळ्युं छे ते आ विषयमां पण उपयोगी थई पडशे, नवो मळेलो कोशसंग्रह पण साहाय्य आपशे, डल्हने अनेक टीकाओ उपरथी करेली सुश्रुतनी संस्कृत टीका लेखकोना तथा छापनाराओना प्रमादथी अति अशुद्ध थइ गयेली छतां पण आ विषयमां केटलेक अंशे उपकारी थया वगर रेहेशे नही, वैद्यराज प्रभुराम जीवनराम अने डा० पोपट प्रभुरामनी देखरेख अने साहाय होवाथी, अने वळी जगत पराया दोषोने सुधारी लेनारा तथा पराया अल्प गुणोथी पण राजी थनारा सज्जनोथी रहित थइ गयुं नथी तेथी परिश्रम सफळ थया विना रेहेशे नही' एम धारीने में आ भाषांतर तैयार करी आप्युं. आमां अमुक अमुक स्थले ज्यां विशेष जणाववानुं योग्य जणायुं त्यां चरक, वाग्भट तथा भावप्रकाश आदिना आशयो पण आप्या छे.

आ भाषांतरमां औषधियोनां जे गुजराती नामो आप्यां छे (जेओना पर्यायो मळ्या नथी तेओनां तो संस्कृत नामोज राखेलां छे.) तेओ घणुं करी ते औषधीओना गुणदोषादिक जोया विना आप्यां नथी तो पण कोइ स्थले उपेक्षादिक थवाथी औषधीओना पर्यायोमां असह्य भूल थयेली जणाय तो अथवा कोइ स्थलमां देखत भूलो थयेली जणाय तो अथवा पूर्वापरविरोध आदि बीजी पण कोइ भूल थयेली जणाय तो सज्जनो **प्रमादो मानुषो भावः** ए नियमने ध्यानमां लइ तथा आवा मोटा काममां तेवा बनाववुं साधारण जाणी क्षमा करशे एवी आशा राखवामां आवे छे.

स्थले स्थले पूर्वापर अध्यायोना तथा विषयोना जे नंबरो आपवामां आव्या छे तेमां जूज स्थले एकाद न्यूनाधिक नंबर छपाइ गयो छे ते वांचनाराओए संबंध जोईने सुधारी लेवो.

१ सुश्रुतनुं अवलोकन करतां जणाय छे के पंचस्थानात्मक संहितामां जेटलां रोगो तथा चिकित्सादि आपेलां छे तेओ भगवान् धन्वंतरिना खास विषयोरूप छे अने उत्तरतंत्रमां जे आपेलां तेओ विदेहराजाना तथा अन्यमुनिओना खास विषयोरूप छे. ए नेत्ररोगादिक रोगो तथा तेओना चिकित्सादिक अन्य वैद्योना खास विषयो छतां तेओने सर्वज्ञ भगवान् धन्वंतरिए तीव्रबुद्धिवाळा शिष्योना अभ्यासने माटे परिशिष्टमां (उत्तरतंत्रमां) दाखल कर्यां छे पण तेम छतां तेओमां जे शल्यतंत्रसंबंधी भाग छे ते तो भगवान् धन्वंतरिनोज छे एम धारवुं असंबद्ध नथी.

२ 'मंदबुद्धिवाळो हुं क्यां अने आ क्षीरसमुद्रनुं मंथन क्यां? जेमां मंदराचल पण डूबी जाय तेमां परमाणु शा हिसाबमां छे.—' श्रीधरस्वामी. हुं मोहने लीधे दुस्तर समुद्रने नाहना मछवाथी तरवा इच्छुंछुं. महाकवि कालिदास.

३ जेम के सूत्रस्थानना ६ ठा अध्यायना ७ मा विषयनी ५ मी लीटीमां तथा १६ मा विषयनी त्रीजी लीटीमां प्रावृष् शब्दने बदले वर्षाशब्द लखाइ गयो छे.

४ जेम के शारीरस्थानना पेहेला अध्यायना ११ मा विषयनी नोटमां शा. अ ४ वि २१ एम छे त्यां शा. अ. ३ वि. २१ एम वांची लेवुं.

सुश्रुत-सूत्रस्थान.

अनुक्रमणिका.

छ.

ज.

फ.

ब.

सुश्रुत–निदानस्थान.

अनुक्रमणिका.

सुश्रुत–शारीरस्थान.

अनुक्रमणिका.

सुश्रुत—चिकित्सितस्थान.

अनुक्रमणिका.

सुश्रुत-कल्पस्थान.

अनुक्रमणिका.

सुश्रुत—उत्तरतंत्र.

अनुक्रमणिका.

आ.

ब.

स.

ह.

सुश्रुत-आयुर्वेद.

मूळ तथा गुजराती भाषांतर.

अध्याय १ लो.

नमो ब्रह्मप्रजापत्यश्विबलभिद्धन्वन्तरिसुश्रुतप्रभृतिभ्यः ।

ब्रह्मा, प्रजापति, अश्विनीकुमार, इंद्र, धन्वंतरि अने सुश्रुत आदि प्राचीन आचार्योने प्रणाम करीए छीए.

१ अथातो वेदोत्पत्तिं नामाध्यायं व्याख्यास्यामः । यथोवाच भगवान् धन्वन्तरिः सुश्रुताय

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वेदोत्पत्ति' ए नामना अध्यायनुं व्याख्यान ते प्रमाणे करीशुं के जे प्रमाणे भगवान्[3] धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे[4].

२ अथ खलु भगवन्तममरवरमृषिगणपरिवृतमाश्रमस्थं काशिराजं दिवोदासं धन्वन्तरिमौपधेनववैतरणौरभ्रपौष्कलावतकरवीर्यगोपुररक्षितसुश्रुतप्रभृतय ऊचुः । भगवन् शारीरमानसागन्तुभिर्व्याधिभिर्विविधवेदनाभिघातोपद्रुतान्सनाथानप्यनाथवद्विचेष्टमानान् विक्रोशतश्च मानवानभिसमीक्ष्य मनसि नः पीडा भवति तेषां सुखैषिणां रोगोपशमार्थमात्मनः प्राणयात्रार्थं च प्रजाहितहेतोरायुर्वेदं श्रोतुमिच्छाम इहोपदिश्यमानं । अत्रायत्तमैहिकमामुष्मिकं च श्रेयः । तद्भगवन्तमुपपन्नाः स्मः शिष्यत्वेनेति । तानुवाच भगवान् स्वागतं वः । सर्व एवामीमांस्या अध्याप्याश्च भवन्तो वत्साः ।

शिष्योनी प्रार्थना तथा गुरुतरफथी अंगीकार.

२ देवताओमां उत्तम ऋषिओना समूहथी वीटाएला अने वानप्रस्थ आश्रममां रहेला काशिराजे दिवोदास के जे 'धन्वंतरि' ए नामथी पण

---

१ मूळमां **अथ** शब्द छे तेनो 'हवे' एवो अर्थ लेवाथी जणाय छे के आथी पेहेलां पण अमुक विषयनुं व्याख्यान आपेलुं छे. टीकाकार डल्हन तो कहे छे के **अथ** ए शब्द केवळ ग्रंथारंभना मंगलाचरणनेमाटेज छे.

२ आयुर्वेदना प्राकट्य विषेनो.

३ जे पुरुष ज्ञानना भंडाररूप होय तेने 'भगवान्' ए विशेषण लागु पाडवामां आवेछे.

४ आ पेहेलुं सूत्र, असल ग्रंथने प्रतिसंस्कार आपनारा नागार्जुने करेलुं छे. कोइ ग्रंथना अर्थनी शब्दांतरोमां विस्तारथी जे गोठवण करवी ते प्रतिसंस्कार कहेवायछे.

५ दिवोदास पूर्वजन्ममां अमृत लाव्या हता तथा ब्रह्माना अवताररूप हता तेथी तेमने 'देवताओमां उत्तम' ए विशेषण आप्युं छे. (डल्हन) ? श्रीभागवतमां तो धन्वंतरिने विष्णुना अवताररूप मानेला छे.

६ टीकाकार डल्हन कहेछे के "काशिराज एटले वाराणसी देशना राजा." पण श्रीभागवतनो नवमस्कंध जोतां तो एम जणायछे के दिवोदास 'काशि'ए नामथी ओळखाता एक चंद्रवंशी क्षत्रियकुलमां जन्म्या हता तेथी काशिराज कहेवाता हता.

काश्यस्य काशिस्तत्पुत्रो राष्ट्रो दीर्घतमः पिता ।
धन्वंतरिर्दीर्घतम आयुर्वेदप्रवर्त्तकः ॥
तत्पुत्रः केतुमानस्य जज्ञे भीमरथस्ततः ।
दिवोदासोद्युमांस्तस्मात् प्रतर्दन इति स्मृतः ॥
इतीमे काशयो भूपाः क्षत्रवृद्धान्वयायिनः ।
(नवमस्कंध, अध्याय १७ मो).

आ उपरथी एम पण जणायछे के दिवोदास आयुर्वेदनी प्रवृत्ति करनारा धन्वंतरिराजाना प्रपौत्र हता. दिवोदासे पोताना परदादाने मार्गे चालीने आयुर्वेदनी

ओळखाता हता तेमनी पासे जईने औपधेनव वैतरण, औरभ्र, पौष्कलावत, करवीर्य, गोपुररक्षित अने सुश्रुत आदि ऋषिओए विज्ञप्ति करी के "महाराज! शारीर, मानस अने आगंतुक व्याधिओने[1] लीधे अनेक प्रकारनी वेदनाओथी तथा धक्काओथी कष्ट पामता अने तेथी मातापिता आदि अनेक रक्षकोवाळा छतां पण अनाथोनी पेठे तरफड्या आदि चेष्टाओ करता तथा बूमो पाडता माणसोने जोईने अमारा मनमां पीडा थाय छे. माटे ए सुखाभिलाषीओना रोगोनी शांतिने माटे, अमारी पण स्वस्थता चालु राखवाने माटे[2] अने भविष्यनी प्रजाओना पण हितनेमाटे अहीं आपना मुखथी आयुर्वेदना उपदेशनुं श्रवण करवा इच्छीए छीए. केमके आ लोकसंबंधी धनलाभादिक तथा सुखलाभादिक कल्याण अने परलोकसंबंधी स्वर्गप्राप्ति तथा जन्मांतरज्ञानादिक कल्याण आयुर्वेदना ज्ञानने आधीन छे. आ कारणथी अमो शिष्यो बनीने आपनी पासे आव्या छीए." भगवान् धन्वंतरि बोल्या के "तमो भले आव्या. पुत्रो! तमारी जाति वगेरेनी योग्यता सुप्रसिद्ध होवाने लीधे ते विषयमां कशो विचार करवो पडे एम नथी तेथी तमो अध्ययन करावावाना पात्र छो."

३ इह खल्वायुर्वेदो नाम यदुपाङ्गमथर्ववेदस्यानुत्पाद्यैव प्रजाः श्लोकशतसहस्रमध्यायसहस्रंच कृतवान् स्वयम्भूः। ततोऽल्पायुष्ट्वमल्पमेधस्त्वंचावलोक्य नराणां भूयोऽष्टधा प्रणीतवान्॥

तद्यथा॥ शल्यं शालाक्यं कायचिकित्सा भूतविद्या कौमारभृत्यमगदतन्त्रं रसायनतन्त्रं वाजीकरणतन्त्रमिति॥

आयुर्वेदनो प्रथम मोटो विस्तार अने पछी आठ अंगोमां संक्षेप.

३ आ जगत्मां आयुर्वेद के जे अथर्ववेदनुं उपांग[3] छे तेने ब्रह्माए लोकसृष्टिथी पेहेलांज एक लाख श्लोकोना एक हजार अध्यायोमां गोठवीने प्रकट कर्यो हतो पण पाछळथी तेमणेज माणसोने अल्प आयुष्यवाळां तथा अल्प बुद्धिवाळां जोईने छेवट ते आयुर्वेदने नोखनोखा आठ विभागोमां गोठवी नाख्यो. ए आठ विभागोनां अनुक्रमथी **शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र** अने **वाजीकरणतंत्र** ए आठ नामो छे.

अथास्य प्रत्यङ्गलक्षणसमासः।

४ तत्र शल्यं नाम विविधतृणकाष्ठपाषाणपांशुलोहलोष्ठास्थिवालनखपूयास्रावान्तर्गर्भशल्योद्धरणार्थं यन्त्रशस्त्रक्षाराग्निप्रणिधानव्रणविनिश्चयार्थं च॥

आयुर्वेदना एक एक अंगनुं संक्षिप्त लक्षण.

४ व्रण वगेरेनी अंदर रहेलां अनेक जातनां खड, काष्ठ, पथरा, रज, लोढां, ढेफां, हाडकां, वाळ, नख अने परूनो स्राव एओने काहाडवाना, धुंचवाएला गर्भरूप शल्यने काहाडवाना, यंत्रो

प्रवृत्ति करी होय अने तेथी तेमने परदादानुं नाम आपवामां आव्युं होय ए संभवित छे.

१ शारीर, मानस अने आगंतुक ए त्रण प्रकारना रोगोनुं व्याख्यान आ अध्यायना १७ मा विषयमां आपवामां आवशे ते जोवुं. जोके ए सूत्रमां क्षुधा, तृषा वगेरे चोथा प्रकारना स्वाभाविक रोगो पण कह्या छे तोपण ए रोगोनी चिकित्सानुं आ शास्त्रमां प्राधान्य नथी तेथी अहीं त्रण प्रकारना रोगोनां नाम आप्यां छे. केटलीएक प्रतोमां **'शारीर-मानसागंतु-स्वाभाविकैः'** एवो पण पाठ छे पण ते पाठ टीकाकारने सम्मत नथी.

२ **'आत्मनः प्राणयात्रार्थं।'** एनो आ अर्थ टीकाकारना लखवाप्रमाणे लख्यो छे. 'अमारी आजीविका चालवानेमाटे' एवो अर्थ पण करी शकायछे.

३ जेम देहनां हाथ पग वगेरे उपांगो कहेवायछे अने माथां वगेरे अंगो कहेवायछे तेम अथर्ववेदनुं वैद्यकशास्त्र उपांग कहेवायछे अने शिक्षा, कल्प तथा व्याकरण वगेरे अंगो कहेवायछे.

दाखल करवाना, शस्त्रो दाखल करवाना, क्षार मूकवाना, डाम देवाना अने व्रणोना निश्चयो करवाना प्रकारो जणाववाने माटे जे विभाग छे ते शल्य[1] कहेवायछे."

५ शालाक्यं नाम ऊर्द्ध्वजत्रुगतानां रोगाणां श्रवणनयनवदनघ्राणादिसंश्रितानां व्याधीनामुपशमनार्थं ॥

५ कंठना मूळथी अथवा हांसडीथी ऊपर थएला एटले कान, नेत्र, मुख अने नासिका इत्यादिमां थएला व्याधिओने शांत करवानेमाटे जे विभाग छे ते शालाक्य[2] कहेवाय छे.

६ कायचिकित्सा नाम सर्वाङ्गसंसृतानां व्याधीनां ज्वरातीसाररक्तपित्तशोषोन्मादापस्मारकुष्ठमेहादीनामुपशमनार्थं ॥

६ सर्व अंगमां गति करनारा ज्वर, अतीसार[3], रक्तपित्त, शोष, उन्माद, अपस्मार, कोढ तथा प्रमेह वगेरे रोगोने शांत करवानेमाटे जे विभाग छे ते कायचिकित्सा[4] कहेवाय छे.

७ भूतविद्या नाम देवासुरगन्धर्वयक्षरक्षःपितृपिशाचनागग्रहोपसृष्टचेतसां शान्तिकर्मबलिहरणादिग्रहोपशमनार्थं ॥

७ देव, असुर, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, पितृ, पिशाच अने नाग एओना वळगाडथी जेओनुं चित्त दूषित थई गयुं होय तेओना उपर कहेला वळगाडने शांतिकर्मथी तथा बलिदान वगेरेथी शांत करवानेमाटे जे विभाग छे ते भूतविद्या[5] कहेवाय छे.

८ कौमारभृत्यं नाम कुमारभरणधात्रीक्षीरदोषसंशोधनार्थं दुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानांच व्याधीनामुपशमनार्थं ॥

८ "बालकोना भरण–पोषणनेमाटे, धवरावनारी दाईओनां दूधने सारूं करवा माटे अने खराब धावणथी उत्पन्न थएला अथवा बालग्रहोना वळगाडथी उत्पन्न थएला रोगोने शांत करवानेमाटे जे विभाग छे ते **कौमारभृत्य** कहेवाय छे."

९ अगदतन्त्रं नाम सर्पकीटलूतावृश्चिकमूषिकादिदुष्टविषव्यञ्जनार्थं विविधविषसंयोगविषोपहतोपशमनार्थं ॥

९ "सर्प, एळ वगेरे कीडा, झेरी करोळीआ, वीछी के उंदर वगेरे कोई प्राणी करडी गएल होय पण तेओमांथी 'कोण करडी गएल छे' एवी खबर न पडी होय त्यारे तेओना झेरनी परीक्षा करवाने माटे अने अनेक प्रकारनां विषोथी अथवा संयोगीविषोथी[6] दुःखी थएलाओनी पीडाने शांत करवानेमाटे जे विभाग छे ते **अगदतंत्र**[7] कहेवाय छे."

१ कांटा वगेरे पदार्थ अथवा बीजो पण जे कोइ पदार्थ शरीरनी अंदर सालतो होय ते पण शल्य कहेवायछे. ए शल्यने टाळवाना प्रकारो जणाववानेमाटे जे शास्त्र ते पण शल्य कहेवायछे.

२ आमां शलाकायंत्रोनुं काम मुख्य छे तेथी 'शालाक्य' नाम आप्युं छे.

३ अहीं अतीसार शब्द असल पाठमां नथी एम डल्लन कहेछे.

४ काय एटले दोषो, धातुओ तथा मळो एओना संघातमां रेहेनारा रोगोनी अथवा काय एटले जठराग्निने पामीने रेहेनारा रोगोनी जे चिकित्सा ते कायचिकित्सा. (डल्लन.)

५ भूतना आवेशने दूर करवानेमाटे जे विद्या ते भूतविद्या. उत्तरतंत्रमां अपस्मारने तथा उन्मादने भूतविद्यामां दाखल कर्या छे तेनुं कारण ए छे के एओनी स्थिति भूतावेशनी स्थिति जेवी छे तथा चिकित्सा पण भूतावेशनी चिकित्साने मळती छे.

६ मध तथा घी एओनुं समभागे मिश्रण थयुं होय तो संयोगीविष थाय. आप्रमाणे बीजां पण संयोगीविषो आ स्थानना २० मा अध्यायमां कहेवामां आवशे. कल्पस्थानना ८ मा अध्यायनो ७ मो तथा ८ मो विषय पण वांचो.

७ अगद एटले विष टाळवानो उपाय तेनुं तंत्र ते अगदतंत्र.

१० रसायनतन्त्रं नाम वयःस्थापनमायुर्मेधाबलकरं रोगापहरणसमर्थंच ॥

१० "लांबा वखत सुधी यौवनने तथा तेनी शक्तिने टकावी राखवाना, आयुष्यने वधारवाना, बुद्धिने वधारवाना, बळने वधारवाना अने रोगोने अत्यंत दूर करवाना दृढ प्रकारो जणाववाने माटे जे विभाग छे ते **रसायनतंत्र**[१] कहेवाय छे."

११ वाजीकरणतन्त्रं नाम अल्पदुष्टविशुष्कक्षीणरेतसामाप्यायनप्रसादोपचयजनननिमित्तं प्रहर्षजननार्थंच ।

एवमयमायुर्वेदोऽष्टाङ्ग उपदिश्यते ॥

११ जेओनुं वीर्य प्रकृतिथीज अल्प होय तेओना वीर्यने वधारवाना, बगडेला वीर्यवाळाओना वीर्यने शुद्ध करवाना, मादकादिक पदार्थोना सेवनथी के अतिस्त्रीसंगादिकथी सुकाई गएला वीर्यवाळाओना वीर्यने सारूं करवाना, रोगादिकथी क्षीण थएला वीर्यवाळाओना वीर्यने प्रथमना जेवी स्थिति आपवाना, अथवा पचीश वर्षथी ओछी उंमर होवाने लीधे अल्प वीर्यवाळाओना वीर्यने वधारवाना, आधेड अवस्था होवाने लीधे क्षीण थएला वीर्यवाळाओना वीर्यने प्रथमना जेवी स्थिति आपवाना, वृद्ध अवस्था होवाथी सुकाएलावीर्यवाळाओना वीर्यने वधारवाना अने स्वस्थ पुरुषोने स्त्रीसंगमां प्रहर्ष उत्पन्न करी देवाना प्रकारो जणाववाने माटे जे विभाग छे ते **वाजीकरणतंत्र**[२] कहेवाय छे.

आयुर्वेद आ आठ अंगोवाळो होवाथी **अष्टांग** कहेवाय छे.

१२ अत्र कस्मै किमुच्यतामिति । त ऊचुः । अस्माकं सर्वेषामेव शल्यज्ञानमूलं कृत्वोपदिशतु भगवानिति । स उवाचैवमस्त्विति । त ऊचुर्भूयोऽपि भगवन्तं । अस्माकमेकमतीनां मतमभिसमीक्ष्य सुश्रुतो भगवन्तं प्रक्ष्यति । अस्मै चोपदिश्यमानं वयमप्युपधारयिष्यामः । स होवाचैवमस्त्विति ॥

१२ आ आठ अंगोमांथी कया अंगनो तमारामांथी कोने उपदेश करवो ते कहो. ऋषिओ बोल्या के "आप शल्यज्ञानने मूलरूप करीने अमोने सर्वने सर्व अंगनो उपदेश करो." धन्वंतरि बोल्या के—"बहु सारूं." फरी पण ते शिष्य थई आवेला ऋषिओए धन्वंतरिने कह्युं के—"अमो सर्वे एकमत थईने अमारो अभिप्राय सुश्रुतने जणावीशुं एटले सुश्रुत अमारा अभिप्राय उपर ध्यान राखीने आपने पूछशे. आप सुश्रुतने जे जे उपदेश करशो ते ते उपदेशने अमो पण हृदयमां धारी लेइशुं." धन्वंतरि बोल्या "त्यारे एम थवा दियो" एम कहीने भाषण करवा लाग्या.

१३ वत्स सुश्रुत! इह खल्वायुर्वेदप्रयोजनं व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थस्य रक्षणंच । आयुरस्मिन्विद्यतेऽनेन वा आयुर्विन्दतीत्यायुर्वेदः ॥

आयुर्वेदनुं प्रयोजन तथा आयुर्वेद शब्दनो अर्थ.

१३ वत्स सुश्रुत! जेओ व्याधिथी[३] दुःखी थता होय तेओनो व्याधिथी छुटकारो थाय अने स्वस्थनुं रक्षण थाय ए आयुर्वेदनुं प्रयोजन[४] छे. जेमां आयुष्यनो विचार करवामां आव्योछे अथवा

---

१ रस रक्तादिकने वृद्धि आपवानुं अथवा रस, वीर्य तथा विपाक आदिने विशेष मेळववानुं साधन.

२ पुरुष जेथी स्त्रीसंगमां वाजी एटले घोडाना जेवा सामर्थ्यवाळो तथा वीर्यवाळो बने ते वाजीकरण.

३ दुष्ट थएला वातादिक दोषोने, तेओनां कार्योरूप ज्वरादिक क्लेशोने अने संसार आपनारा रागद्वेषादिकने पण आ व्याधिशब्द लागु पडेछे.

४ याप्यव्याधिथी रक्षणरूप अने रसायनथी आयुष्यनो वधारो करवारूप जे बीजां प्रयोजनो छे तेओनो पण आ प्रयोजनमां समावेश थई जायछे. कारणके साध्यव्याधिनी अने याप्यव्याधिनी चिकित्सा एकज छे अने रसायनथी आयुष्यनो वधारो स्वस्थना रक्षणमां आवी जायछे. अथवा मूळमां जे 'च' शब्द छे तेथी आ प्रयोजनोनुं पण ग्रहण करी लेवुं. (डल्लन.)

जेथी माणस आयुष्यने प्राप्त थाय छे ते आयुर्वेद. ए आयुर्वेद[1] शब्दनो अर्थ छे."

१४ तस्याङ्गवरमाद्यमागमप्रत्यक्षानुमानोपमानैरविरुद्धमुच्यमानमुपधारय । एतद्ध्यङ्गं प्रथमं प्रागभिघातव्रणसंरोहाद्यज्ञशिरःसन्धानाच्च । श्रूयते हि यथा रुद्रेण यज्ञस्य शिरश्छिन्नमिति ततो देवा अश्विनावभिगम्योचुः । भगवन्तौ नः श्रेष्ठतमौ युवां भविष्यथः । भवद्भ्यां यज्ञस्य शिरःसन्धातव्यं । तावूचतुरेवमस्त्विति । अथ तयोरर्थे देवा इन्द्रं यज्ञभागेन प्रासादयन् । ताभ्यां यज्ञस्य शिरः संहितमिति । अष्टास्वपि चायुर्वेदतन्त्रेष्वेतदेवाधिकमभिमतमाशुक्रियाकरणाद्यन्त्रशस्त्रक्षाराग्निप्रणिधानात्सर्वतन्त्रसामान्याच्च । तदिदं शाश्वतं पुण्यं स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यं वृत्तिकरंचेति ॥

आठ अंगोमां शल्य प्रथम अंग होवानुं कारण.

१४ शल्य के जे आयुर्वेदनां आठे अंगोमां श्रेष्ठ होवाने लीधे प्रथम छे तेनुं आगम[2], प्रत्यक्ष, अनुमान अने उपमान ए चारे प्रमाणोथी अविरुद्ध एटले ए चारे प्रमाणोथी ते सिद्ध थाय[3] एवुं व्याख्यान आपुंछुं ते सांभळो. सृष्टिमां शारीरव्याधिओनी उत्पत्तिथी पेहेलां देवताओना अने दैत्योना संग्राममां शस्त्रादिकना अभिघातोथी जे व्रणो उत्पन्न थया हता तेओ शल्यतंत्रमां कह्याप्रमाणे उपचारो करवाथी रुझाया हता तेथी अने यज्ञनुं कपाई गएलुं माथुं पण शल्यतंत्रमां कह्याप्रमाणे करवाथी संधायुं हतुं तेथी आ शल्यतंत्र आयुर्वेदनां आठे अंगोमां श्रेष्ठ छे अने श्रेष्ठ होवाने लीधे आठे अंगोमां पेहेलुं गणायछे. वृद्ध लोकोनी परंपराथी सांभळता आव्या छीए के "ज्यारे रुद्रे यज्ञनुं माथुं कापी नाख्युं त्यारे देवताओए अश्विनीकुमारोनी पासे जईने कह्युं के 'तमो यज्ञनुं माथुं सांधी आपो तो अमो तमोने आपणमां (देवताओमां) अतिउत्तम गणीए' अश्विनीकुमारोए माथुं सांधी आपवानो स्वीकार करतां देवताओए इंद्रने प्रसन्न करी अश्विनीकुमारोने यज्ञमां भाग मळवानी इंद्रनी मंजुरी मेळवी आपी, अने अश्विनीकुमारोए यज्ञनुं माथुं सांधी दीधुं. आयुर्वेदनां आठे तंत्रोमां आ शल्यतंत्रज श्रेष्ठ मानवामां आवेलुं छे; कारण के आ तंत्र बीजां सात तंत्रोनी पंक्तिमां होवा उपरांत यंत्र, शस्त्र, क्षार अने अग्नि एओना उपयोगथी बीजां तंत्रोना करतां भारे झडपथी कार्य सिद्ध करी आपेछे तथा सर्वतंत्रोमां अनुस्यूत छे. आथी आ तंत्र बहु प्राचीन छे, पवित्र छे, स्वर्ग आपनार छे, कीर्ति आपनार छे, आयुष्यनुं हित करनार छे अने जीविका आपनार छे.

---

१ 'वेद' ए शब्दमां विद् विचारणे, अने विद्लृ लाभे ए बे धातुओना अर्थोनो उपयोग कर्यो छे. (उत्तरतंत्रना ६५ मा अध्यायनो छठो विषय जुवो.)

२ आगम एटले वेद तथा आप्तलोकोनुं शास्त्र. आ प्रमाणने सर्व प्रमाणोथी उत्कृष्ट गणीने पेहेलुं लख्युं छे.

३ रुद्रे कापी नाखेलुं यज्ञनुं माथुं अश्विनीकुमारोए सांध्युं हतुं इत्यादिक कथाओ पुराणादिकमां आवेछे तेथी आ तंत्र आगमथी सिद्ध छे. सूर्यनी सामे जोवाथी तथा नाकनी अंदर सुतरनी वाट घालवाथी छींक आवे इत्यादिक आ तंत्रनी वातो प्रत्यक्षथी सिद्ध थायछे. (उत्तरतंत्रना ५९ मा अध्यायनो २४ मो विषय जुवो.) शल्यना खरा ठेकाणानो पत्तो न मळतो होय त्यारे चामडीने माटी वगेरेथी चोळी जोतां ज्यां रताश जोवामां आवे त्यां अथवा घीर्थी खरडी जोतां ज्यां घी पीगळी जाय त्यां शल्य छे एम समजवुं इत्यादिक अनुमानो पण आ तंत्रनी सिद्धि करे छे. (आ स्थानना २६ मा अध्यायनो ५ मो विषय जुवो.) 'मस अडद जेवो थाय' इत्यादिमां उपमानोथी पण सिद्धि थायछे. (निदानस्थानना १३ मा अध्यायनो ३३ मो विषय जुवो.)

४ वैद्यना सर्वोत्तम धंधाने अविचारथी 'अधम छे' एम समजीने देवताओए प्रथम अश्विनीकुमारोने यज्ञना भागथी बहिष्कृत कर्या हता पण पाछळथी यज्ञनुं माथुं साधवानी गरज पडवाथी भाग आपवानो ठराव कर्यो अने वैद्यना धंधाने सर्वोत्तम मान्यो.

१५ ब्रह्मा प्रोवाच ततः प्रजापतिरधिजगे तस्मादश्विनावश्विभ्यामिन्द्र इन्द्रादहं मया त्विह प्रदेयमर्थिभ्यः प्रजाहितहेतोः ॥

भवति चात्र ॥

अहं हि धन्वन्तरिरादिदेवो
जरारुजामृत्यु-हरोऽमराणां ।
शल्याङ्गमङ्गैरपरैरुपेतं
प्राप्तोऽस्मि गां भूय इहोपदेष्टुं ॥

आयुर्वेद पृथ्वीउपर आववानी गुरुपरंपरा.

[१]१५ आ आयुर्वेदने प्रथम ब्रह्माए प्रकाशित कर्यो हतो, ब्रह्मानी पासेथी प्रजापति भण्या हता, प्रजापतिनी पासेथी अश्विनीकुमारो भण्या हता, अश्विनीकुमारोनी पासेथी इंद्र भण्या हता, इंद्रनी पासेथी हुं भण्यो छुं अने हुं तमो के जेओ अर्थी थईने आव्या छो तेओने प्रजाओना हितनेमाटे भणाववानुं योग्य धारूं छुं.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "हुं विष्णुना अवताररूप धन्वंतरि के जेणे देवताओनां जरा, रोगो अने मरणो एओने टाळ्यां हतां तेज, बीजां सघळां अंगोथी संयुक्त शल्यरूप अंगनो उपदेश करवा माटे अहीं फरीवार अवतार धरी पृथ्वीमां आवेलो छुं."

१६ अस्मिन् शास्त्रे पञ्चमहाभूतशरीरिसमवायः पुरुष इत्युच्यते । तस्मिन् क्रिया सोऽधिष्ठानं कस्माल्लोकस्य द्वैविध्यात् । लोको हि द्विविधः स्थावरो जङ्गमश्च । द्विविधात्मक एवाग्नेयः सौम्यश्च तद्भूयस्त्वात् । पञ्चात्मको वा । तत्र चतुर्विधो भूतग्रामः स्वेदजाण्डजोद्भिज्जजरायुजसंज्ञः । तत्र पुरुषः प्रधानं तस्योपकरणमन्यत् । तस्मात्पुरुषोऽधिष्ठानं ॥

पुरुष.

आयुर्वेदमां कहेली क्रियाओनो आश्रय.

(आयुर्वेदनी क्रियाओ कोने लागु पडे छे)

१६ आ शास्त्रमां पृथ्वीआदि पंचमहाभूतो अने जीव एओ मळीने जे मनुष्यशरीर थएलुं छे ते पुरुष कहेवाय छे अने ते पुरुषमां सघळी क्रियाओ लागु पाडवामां आवेछे माटे ते पुरुष आश्रय (अधिष्ठान) छे. (आ सघळो आयुर्वेद जीवता मनुष्य शरीरने माटेज छे.) कारणके स्थावर अने जंगम ए रीते लोक बे प्रकारनो छे, अने ते बन्ने प्रकारनो लोक आग्नेय अने सौम्य[२] (अग्निमय अने चंद्रमय) छे. लोकमां उष्ण अने शीत ए बे गुणोज घणा जोवामां आवेछे तेथी लोकने अग्निचंद्रात्मक कहेवो योग्य छे. अथवा सर्व लोक पृथ्वीआदि पंचभूतमय छे तेथी तेने पंचात्मक कहीए तो पण खोटुं नथी. ए लोकमां प्राणीओ स्वेदज[३], अंडज, उद्भिज अने जरायुज ए रीते चार प्रकारनां[४] छे. आ स्थावर–जंगमात्मक लोकमां जीवतुं मनुष्यशरीर के जे पुरुष कहेवाय छे ते मुख्य छे अने बाकीनुं जे कांई छे ते सघळुं मनुष्यशरीरना सुखना साधनरूप छे. आम छे एटलामाटे मनुष्यशरीर आयुर्वेदमां कहेली सघळी क्रियाओना आश्रयरूप[५] छे.

१७ तद्दुःखसंयोगा व्याधय इत्युच्यन्ते ।

१ प्रतिसंस्कार करनार नागार्जुन धन्वंतरिना असल श्लोकने अहीं दाखल करेछे.

२ घणुं करीने जगत्मां शीत अने उष्ण ए बे राशिओ शिवाय त्रीजो कोइपण द्रव्योनो राशि नथी.

३ चारे प्रकारना प्राणीओमां स्वेद (बाफ–गरमी) विना कोइनी पण सिद्धि थती नथी तेथी स्वेदजने प्रथम गण्या छे.

४ पृथ्वीनी अथवा शरीरनी बाफथी जे प्राणिओ उत्पन्न थायछे तेओ स्वेदज, जे प्राणिओ इंडामांथी थायछे तेओ अंडज, जेओ गर्भाशयथी–ओरथी थायछे तेओ जरायुज अने जेओ धरतीने फोडीने उत्पन्न थायछे तेओ उद्भिज कहेवायछे.

५ आथी सूचव्युं छे के मनुष्यशरीरनेमाटेज बीजा सघळा पदार्थो छे माटे मनुष्यना सुखनेमाटे आयुर्वेदमां कह्याप्रमाणे गमे ते पदार्थनो उपयोग कराववामां कशो बाध नथी.

ते चतुर्विधा आगन्तवः शारीरा मानसाः स्वाभाविकाश्चेति । तेषामागन्तवोऽभिघातनिमित्ताः । शारीरास्त्वन्नपानमूला वातपित्तकफशोणितसन्निपातवैषम्यनिमित्ताः । मानसास्तु क्रोधशोकभयहर्षविषादेर्ष्याभ्यसूयादैन्यमात्सर्यलोभकामप्रभृतय इच्छाद्वेषभेदैर्भवन्ति । स्वाभाविकाः क्षुत्पिपासाजरामृत्युनिद्राप्रभृतयः ॥ त एते मनःशरीराधिष्ठानाः ॥

व्याधिओनुं सामान्य निरूपण.

१७ जेओनी प्राप्तिथी अथवा जेओना होवाथी उपर कहेला पुरुषने दुःख थाय छे तेओ व्याधिओ कहेवायछे. ए व्याधिओ आगंतु, शारीर, मानस अने स्वाभाविक ए रीते चार प्रकारना छे. जेओ अभिघातरूप एटलें शस्त्रादिकना प्रहाररूप काराणेथी थायछे ते आगंतु व्याधिओ कहेवायछे. जे व्याधिओ अन्नपाननी विषमतारूप मूळने लीधे वात, पित्त, कफ, रुधिर अने सन्निपात एओनी विषमताथी थायछे तेओ शारीर व्याधिओ कहेवाय छे. क्रोध, शोक, भय, हर्ष, ग्लानि, ईर्ष्या, अभ्यसूया-दीनता, मत्सर, लोभ, अने काम इत्यादिक विकारो के जेओ इच्छाना भेदोथी अने द्वेषना भेदोथी थायछे तेओ मानस व्याधिओ कहेवायछे. भूख, तरश, जरा, मृत्यु अने निद्रा वगेरे भावो स्वाभाविक व्याधिओ कहेवायछे. आ व्याधिओ मनमां तथा शरीरमां थायछे.

१८ तेषां संशोधनसंशमनाहाराचाराः सम्यक्प्रयुक्तानि ग्रहहेतवः ॥

व्याधिओने टाळवानी क्रियाओनुं सामान्य निरूपण.

१८ संशोधन, संशमन, आहार अने आचार

१ आगंतुव्याधिओ शारीरव्याधिओथी पेहेलां उत्पन्न थयाछे माटे तेओनुं प्रथम ग्रहण कर्युं छे.

२ वाघ आदिना प्रहार वगेरेथी थतां दुःखो पण आगंतुओमांज गणायछे.

३ काळनी, काया वगेरेनी अने विषयोनी विषमतानो पण आमां समावेश समजी लेवो.

४ जोके रुधिर दोष नथी पण दूष्य छे तो पण तेने दोषोनी पंक्तिमां गण्युं छे तेनुं कारण ए छे के आ शल्यतंत्रमां व्रण प्रधान छे अने व्रणमां दूष्योनी अंदर रुधिर प्रधान छे.

५ वातपूर्णकोष्ठता आदि व्याधिओ उपरथी वातादिकनी विषमता जणायछे.

६ पराइ संपत्ति जोवाथी असहनता.

७ पराया गुणोमां दोषोनुं आरोपण.

८ हर्ष, शोक, दीनता, काम तथा लोभ वगेरे विकारो इच्छाना भेदोथी थायछे अने क्रोध, भय, ग्लानि, ईर्ष्या, अभ्यसूया तथा मत्सर आदि विकारो द्वेषना भेदोथी थायछे.

९ भूख तथा तरश वगेरे, व्याधिओ सर्वदा शरीरना स्वभावथी थायछे पण कोइ वखते दोषोथी पण थायछे. जेम के पित्तनी वृद्धि थतां अने कफनी क्षीणता थतां भस्मक अग्निथी जे भूख लागेछे ते दोषजन्य छे माटे तेनो प्रतीकार करवो जोइये. तरश के निद्रा पण ज्यारे दोषोथी थाय त्यारे तेओनो प्रतीकार करवो जोइए. जरा पण ज्यारे अकालमां थाय त्यारे दोषजन्य समजीने तेनो प्रतीकार करवो जोइए. जो के भूख, तरश अने जरा स्वाभाविक होय तो पण पित्तजन्य छे अने स्वाभाविक निद्रा पण कफजन्य छे तो पण ते अल्पदोषथी थएली होवाने लीधे दोषजन्य गणाती नथी.

१० क्रोध वगेरे व्याधिओ मनमां, जरा वगेरे व्याधिओ शरीरमां अने अपस्मार वगेरे व्याधिओ मनमां तथा शरीरमां बन्नेमां थायछे. मानसव्याधिओ प्रथम मनने अने पछी शरीरने पीडेछे अने शारीरव्याधिओ प्रथम शरीरने अने पछी मनने पीडेछे.

११ एक बहिराश्रय अने बीजुं अभ्यंतराश्रय एम संशोधन बे प्रकारनुं छे. शस्त्र, क्षार तथा लेप वगेरे बहिराश्रय अने वमन तथा विरेचन वगेरे अभ्यंतराश्रय कहेवायछे.

१२ दोषोने बहार काहाडे नहि तथा वधारे पण नहि परंतु समस्थितिवाळा करे ते संशमन कहेवायछे. लेप तथा सेचन वगेरे बहिराश्रय अने पाचन तथा रसायन वगेरे अभ्यंतराश्रय संशमन छे.

१३ भक्ष्य वगेरे चार प्रकारना आहारना दोषप्रशमन, व्याधिप्रशमन अने स्वास्थ्यवृत्तिकर एवा त्रण भेद छे.

१४ कायानी, वाणीनी तथा मननी क्रियाओ.

ए क्रियाओ कहेवायछे. आ क्रियाओनो सारी रीते विचार करीने विधिपूर्वक प्रयोग करवामां आवे तो ते क्रियाओ व्याधिओनो निग्रह करे छे.

१९ प्राणिनां पुनर्मूलमाहारो बलवर्णौजसांच स षट्सु रसेष्वायत्तो रसाः पुनर्द्रव्याश्रयाः । द्रव्याणि पुनरोपधयस्ता द्विविधाः स्थावरा जङ्गमाश्च । तासां स्थावराश्चतुर्विधाः। वनस्पतयो वृक्षा वीरुध ओषधय इति । तास्वपुष्पाः फलवन्तोवनस्पतयः । पुष्पफलवन्तो वृक्षाः । प्रतानवत्यः स्तम्बिन्यश्च वीरुधः । फलपाकनिष्ठा ओषधय इति । जङ्गमाः खल्वपि चतुर्विधा जरायुजाण्डजस्वेदजोद्भिज्जाः । तत्र पशुमनुष्यव्यालादयो जरायुजाः । खगसर्पसरीसृपप्रभृतयोऽण्डजाः । कृमिकीटपिपीलिकाप्रभृतयः स्वेदजाः । इन्द्रगोपमण्डूकप्रभृतय उद्भिज्जाः ॥ तत्र स्थावरेभ्यस्त्वक्पत्रपुष्पफलमूलकन्दनिर्यासस्वरसादयः प्रयोजनवन्तो जङ्गमेभ्यश्चर्मनखरोमरुधिरादयः ॥ पार्थिवाः सुवर्णरजतमणिमुक्तामनःशिलामृत्कपालादयः ॥

औषधिओनुं सामान्य निरूपण.

१९ जे आहार छे ते प्राणिओना मूळसमान छे अने प्राणिओना बळना, वर्णना तथा ओजना[1] पण मूळरूप छे. ए आहार छ रसोने[2] आधीन छे अने ए रसो द्रव्योमां रहेला छे. जे द्रव्यो छे तेज औषधिओ छे. ए औषधिओ स्थावर अने जंगम एमं बे प्रकारनी छे. तेओमां स्थावर औषधिओना वनस्पति, वृक्ष, वीरुध् अने औषधि ए चार भेद छे. जेओमां पुष्पो नहि थतां फळो लागे छे तेओ (वड तथा पीपळा वगेरे) वनस्पति कहेवायछे. जेओमां पुष्पो तथा फळो बन्ने थायछे तेओ (आंबा तथा आंबली वगेरे) वृक्ष कहेवायछे. जेओ लांबी चाले छे तथा गुच्छोवाळी होय छे तेओ (लताओ) वीरुध् कहेवाय छे अने जेओ फळो पाकी रहेवाना समयमां नष्ट थई जायछे तेओ (घऊं, बाजरी वगेरे) औषधिओ कहेवायछे. जंगम औषधिओना जरायुज, अंडज, स्वेदज अने उद्भिज ए चार भेद छे.[3] अहिंसक पशुओ, मनुष्यो अने हिंसक पशुओ वगेरे[4] प्राणिओ जरायुज कहेवायछे.[5] पक्षीओ, सर्पो अने पेट घसडीने चालनारां एळ वगेरे प्राणिओ अंडज कहेवायछे. विष्टा वगेरेना कृमिओ, वींछी वगेरे कीडाओ अने कीडीओ वगेरे प्राणीओ स्वेदज कहेवायछे. इंद्रगोप (वरसादमां थता राता कीडाओ, भगवान्नी भेंशो) अने देडकां वगेरे प्राणिओ उद्भिज्ज कहेवाय छे. तेओमां स्थावर औषधिओना छाल, पानडां, फूल, फळ, मूळ, कंद, गुंदर तथा स्वरस वगेरे पदार्थो उपयोगी छे अने जंगम औषधिओना चामडां, नख, रूवाडां तथा लोही वगेरे पदार्थो उपयोगी छे. सोनुं, रुपुं, मणि, मोती, मणशील, माटी अने ठीकरां आदि जे पृथिवीना विकाररूप पदार्थो छे तेओ[6] पण औषधिओज छे[7]."

१ हृदयमां रहेलो, सर्वधातुओना धामरूप जे सोमात्मक पदार्थ छे ते.

२ मधुर, खारो, तीखो, कडवो, खाटो अने तूरो.

३ प्रथम कहेलर स्वेदज वगेरे क्रमने अहीं छोडी दीधो छे ते प्राणिओनी उत्पत्तिमां जोवामां आवती गडबड जणाववानेमाटे छे. जेम के कीडीओ अंडज पण छे अने उद्भिज्ज पण छे.

४ अहीं उपकरणोना प्रस्तावमां पशुओ मुख्य छे माटे माणसोथी पेहेलां तेओनुं ग्रहण कर्युं छे.

५ मूळमां जे पशुशब्द छे तेथी हिंसक पशुओनुं पण ग्रहण थायछे माटे 'व्याल' शब्दथी सर्पोनी जे जाति अंडज नथी तेनुं ग्रहण करवुं एम केटलाएक कहेछे.

६ जो के तर्कशास्त्रीओए सोनाने तैजस (तेजना विकाररूप) गणेलुं छे तो पण आयुर्वेदवाळाओए गुरुत्व, कठिनत्व तथा स्थिरत्व आदि कारणोथी पार्थिव (पृथ्वीना विकाररूप) ज स्वीकारेलुं छे.

७ जो के आ पार्थिव औषधिओने पण स्थावर औषधिओमांज गणवी योग्य छे तो पण अहीं जुदी पाडीने कहेली छे तेनुं कारण ए छे के वनस्पति आदि स्थावर औषधिओ रसनी प्रधानताने लीधे आहारमां उपयोगी छे अने पार्थिव स्थावर औषधिओ आहारमां उपयोगी नथी.

२० कालकृतास्तु प्रवातनिवातातपच्छाया-ज्योत्स्नातमःशीतोष्णवर्षाहोरात्रपक्षमासर्त्वय-नादयः संवत्सरविशेषाः । त एते स्वभावत एव दोषाणां संचयप्रकोपप्रशमप्रतीकारहेतवः प्रयोजनवन्तश्च ॥

काळनुं सामान्य निरूपण.

२० प्रत्येक वर्षमां घणा पवनवाळो समय, पवनवगरनो समय, तडकानो समय, छायानो समय, चांदनीनो समय, अंधकारनो समय, शीतकाळ, उष्णकाळ, वर्षाकाळ, रात, दिवस, पखवाडीआं, महिना, ऋतुओ अने अयनो. इत्यादिक जे जे विशेषो (भेदो) जोवामां आवेछे तेओ काळें करेळा अर्थात् कालनाज भेदो छे. काळना आ भेदो स्वभावथीज वातादिकदोषोना संचयना[1], प्रकोपना[2], प्रशमना[3] अने प्रतीकारना (टाळवाना) करनारा थायछे अने चिकित्सामां उपयोगी[4] होवानेलीधे प्रयोजनवाळा होवाथी औषधिओरूप गणीशकाय एम पण छे.

२१ भवन्ति चात्र ॥

शारीराणां विकाराणामेष वर्गश्चतुर्विधः ।
चये कोपे शमे चैव हेतुरुक्तश्चिकित्सकैः ॥
आगन्तवश्च ये रोगास्ते द्विधा निपतन्ति हि ।
मनस्यन्ये शरीरेऽन्ये तेषां तु द्विविधा क्रिया ॥
शरीरपतितानांतु शारीरवदुपक्रमः ।
मानसानांतु शब्दादिरिष्टो वर्गः सुखावहः ॥

औषधिओनो सामान्य उपयोग.

सामान्य चिकित्सा.

२१ आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "स्थावर, जंगम, पृथ्वीना विकारो अने काळना विशेषो एओ शारीर दोषोना तथा व्याधिओना संचयमां, प्रकोपमां, प्रशममां अने टाळवामां कारणोरूप तथा साधनोरूप थायछे एम वैद्योए कह्युं छे. जे आगंतुरोगो छे तेओ बे प्रकारथी आवीपडेछे. केटलाएक आगंतुरोगो शरीरमां आवीपडेछे अने केटलाएक आगंतुरोगो मनमां आवीपडेछे.[5] एओनी चिकित्सा बे प्रकारथी थायछे. जे आगंतुरोगो शरीरमां आवीपड्या होय तेओनी चिकित्सा शारीररोगोनी चिकित्सानी पेठेज करवी अने जे आगंतुरोगो मनमां आवीपड्या होय तेओनी चिकित्सा शब्दस्पर्शादिक प्रिय विषयो आपवाथी तथा धीरज आपवा वगेरेथी करवी. आ प्रमाणे चिकित्सा करवाथी रोगीओने सुख थायछे.

२२ एवमेतत्पुरुषो व्याधिरौषधं क्रियाकाल इति च चतुष्टयं समासेन व्याख्यातम् ॥ तत्र पुरुषग्रहणात्तत्सम्भवद्रव्यसमूहो भूतादिरुक्तस्तदङ्गप्रत्यङ्गविकल्पाश्च त्वङ्मांसशिरास्नायुप्रभृतयः । व्याधिग्रहणाद्वातपित्तकफशोणितसन्निपातवैषम्यनिमित्ताः सर्व एव व्याधयो व्याख्याताः । ओषधिग्रहणाद्द्रव्यगुणरसवीर्य-

१ पोतपोताना स्थानोमांज दोषोनी जे वृद्धि थाय ते संचय कहेवायछे.

२ दोषोनी स्थानमांथी जे अयोग्य मार्गे गति थाय ते प्रकोप कहेवायछे. प्रकोप शब्दथी प्रकोप, प्रसर, स्थानसंश्रय, व्यक्ति अने भेद ए सर्वनुं ग्रहण करवुं. प्रसर आदिनां लक्षणो आ स्थानना २१ मा अध्यायमां कहेवामां आवशे.

३ शांत थवुं. जेम के ग्रीष्मऋतुमां तथा मध्याह्नकाळमां कफज्वर स्वाभाविक रीतेज शांत थइ जायछे.

४ अमुक औषधने तडकामां सुकाववुं तथा अमुक औषधने राते अगाशीमां मूकी राखवुं एम कहेवामां आवशे ते उपरथी कालना भेदो पण चिकित्सामां उपयोगी छे एम जणाशे.

५ अभिघातथी थता व्रणादिक आगंतु रोगो शरीरमां आवीपडेछे अने अप्रियश्रवणादिकथी थता शोकादिक आगंतु रोगो मनमां आवीपडेछे.

६ जो के आ अध्यायना १७ मा विषयमां अभिघातजन्य रोगोने आगंतु कहेला छे अने शोकादिक रोगोने मानस कहेला छे तो पण व्रणादिक रोगोनी पेठे शोकादिक रोगोनो पण बाहारनां निमित्तोथी आववानो स्वभाव छे तेथी तेओने धन्वंतरिए अहीं आगंतु पण कहेला छे.

विपाकप्रभावाणामादेशः । क्रियाग्रहणाच्छेद्यादीनि स्नेहादीनि च कर्माणि व्याख्यातानि। कालग्रहणात्सर्वक्रियाकालानामादेशः ॥

भवति चात्र ।

बीजं चिकित्सितस्यैतत्समासेन प्रकीर्तितं ।
सविंशमध्यायशतमस्य व्याख्या भविष्यति ॥

कहेवाएला विषयोनो उपसंहार.

(ए विषयो आयुर्वेदना बीजरूप छे)

२२ आ रीते क्रियाओना आश्रयरूप पुरुषनुं निरूपण कर्युं अने ते पछी व्याधि, क्रिया, औषध अने काळ ए चार विषयनुं संक्षेपथी निरूपण कर्युं. हवे पछी कहेवानो सघळो ग्रंथ आ अध्यायमां कहेला पुरुष, व्याधि, क्रिया, औषध अने काळ ए पांच पदार्थोना व्याख्यानरूप छे एम समजवुं. जेथी पुरुषनी (मनुष्यशरीरनी) उत्पत्ति थायछे एवा शुक्रशोणितादिकरूप पांचभौतिक पदार्थोना समूहनुं, पुरुषना अंग उपांगादिकनुं अने त्वचा, मांस, शिरा तथा स्नायु वगेरेनुं जे सविस्तर वर्णन आपवामां आवशे ते सघळुं पुरुषनुं व्याख्यान छे एम समजवुं. वात, पित्त, कफ, रुधिर अने सन्निपात एओनी विषमताथी थनारा तथा आगंतुकादिक सर्वे रोगोनुं जे सविस्तर वर्णन आपवामां आवशे ते सघळुं व्याधिनुं व्याख्यान छे एम समजवुं. छेदन भेदनादिक तथा स्नेहनादिक कर्मोनुं जे सविस्तर वर्णन करवामां आवशे ते सघळुं क्रियानुं व्याख्यान छे एम समजवुं. नोखनोखी औषधिओनुं अने तेओना नोखनोखा गुण, रस, वीर्य, विपाक तथा प्रभाव एओनुं जे सविस्तर वर्णन आपवामां आवशे ते सघळुं औषधनुं व्याख्यान छे एम समजवुं. ते ते क्रियाओ करवाना ते ते समयोनुं जे सविस्तर वर्णन करवामां आवशे ते सघळु काळनुं व्याख्यान छे एम समजवुं.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के आ सघळा चिकित्सितनुं बीज संक्षेपथी केहेवायां आव्युं. (आ पेहेला अध्यायमां पुरुष, व्याधि, क्रिया, औषध अने काळ एओविषे जे कांई कह्युं ते सघळा आयुर्वेदना बीजरूप छे.) हवे पछी जे एकसो ओगणीश अध्यायो[1] कहेवामां आवशे तेओ उपर कहेला संक्षिप्त बीजना व्याख्यानरूप थशे.

२३ तच्च सविंशमध्यायशतं पंचसु स्थानेषु । तत्र सूत्रस्थाननिदानशारीरचिकित्सितकल्पेष्वर्थवशात्संविभज्योत्तरे तन्त्रे शेषानर्थान् व्याख्यास्यामः ॥

भवति चात्र ॥

स्वयम्भुवा प्रोक्तमिदं सनातनं
पठेद्धि यः काशिपतिप्रकाशितम् ।
स पुण्यकर्मा भुवि पूजितो नृपै-
रसुक्षये शक्रसलोकतां व्रजेत्

एकसो वीश अध्यायोनी पांच विभागोमां वेहेचण, उत्तरतंत्रनी प्राप्ति अने फलस्तुति.

२३ ए एकसो वीश अध्यायोने सूत्रस्थान, निदानस्थान, शारीरस्थान, चिकित्सितस्थान अने कल्पस्थान ए नामना पांच विभागोमां अर्थनी संगति प्रमाणे वेहेंचीने पछी उत्तरतंत्रमां परिशिष्ट विषयोनुं व्याख्यान आपीशुं.

आ आयुर्वेदनो अभ्यास करवाना फळविषे भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखना श्लोकथी कह्युं छे के " ब्रह्माए कहेलुं आ प्राचीन आयुर्वेद नामनुं शास्त्र के जे काशिपतिए (में) प्रसिद्ध करेलुं छे तेनो जे पुरुष अभ्यास करशे ते पुरुष पृथ्वीमां चिकित्सासंबंधी उत्तम कर्मो करवाथी पुण्यवान् थशे, राजाओ तरफथी सन्मान पामशे अने मरण पाम्या पछी इंद्रना लोकने प्राप्त थशे."

[1] मूळमां एकसो वीश अध्याय व्याख्यानरूप कह्या छे ते आ पेहेला अध्यायने साथे गणीने कह्या छे.

अध्याय २ जो.

१ अथातः शिष्योपनयनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शिष्योपनयनीय' नामना अध्यायनुं व्याख्यान ते प्रमाणे करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानामन्यतममन्वयवयःशीलशौर्यशौचाचारविनयशक्तिबलमेधाधृतिस्मृतिमतिप्रतिपत्तियुक्तं तनुजिह्वौष्ठदन्ताग्रमृजुवक्त्राक्षिनासं प्रसन्नचित्तवाक्चेष्टं क्लेशसहं च भिषक् शिष्यमुपनयेत्। अतो विपरीतगुणं नोपनयेत् ॥

केवा शिष्यने आयुर्वेदनी दीक्षा देवी अने केवाने न देवी.

२ शिष्य थवा आवेलो जे पुरुष ब्राह्मण क्षत्रिय के वैश्य जातिनो होय, कुलीन होय, योग्य अवस्थावाळो होय, सुशील होय, दरेक कार्यमां गभराय नहि एवो होय, पवित्र होय, सारी पद्धतिवाळो होय, जितेंद्रिय होय, उत्साहवाळो होय, क्रियाओ करवानी शारीरशक्तिवाळो होय, ग्रंथनुं धारणकरवाना सामर्थ्यवाळो होय, धीरजवाळो होय, अनुभवेली बाबतने भूली न जाय एवो होय, न आवेली बाबतने पण कल्पी शके एवो होय, अर्थनो निश्चय करी लेवानी चातुरीवाळो होय, पातळी जीभवाळो होय, पातळा होठवाळो होय, दांतनी झीणी अणीओवाळो होय, सरल मुखवाळो होय, सरल नेत्रोवाळो होय; सरल नासिकावाळो होय, प्रसन्न चित्तवाळो होय, प्रसन्न वाणीवाळो होय, प्रसन्न चेष्टाओवाळो होय अने दुःखोनुं सहन करी शके एवो होय तेने वैद्ये आयुर्वेदनी दीक्षा आपवी. जे पुरुष उपर कहेला गुणोथी विपरीत गुणोवाळो होय तेने दीक्षा नहि देवी.

३ उपनयनीयस्तु ब्राह्मणः प्रशस्तेषु तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रेषु प्रशस्तायां दिशि शुचौ समे देशे चतुर्हस्तं चतुरस्रं स्थण्डिलमुपलिप्य गोमयेन दर्भैः संस्तीर्य पुष्पैर्लाजभक्तैरत्नैश्च देवताः पूजयित्वा विप्रान् भिषजश्च तत्रोल्लिख्याभ्युक्ष्य च दक्षिणतो ब्रह्माणं स्थापयित्वाग्निमुपसमाधाय खदिरपलाशदेवदारुबिल्वानां समिद्भिश्चतुर्णां वा क्षीरवृक्षाणां न्यग्रोधोडुम्बराश्वत्थमधूकानां दधिमधुघृताक्ताभिर्दार्वीहोमिकेन विधिना स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात्। सप्रणवाभिर्महाव्याहृतिभिस्ततः प्रतिदैवतमृषींश्च स्वाहाकारं च कुर्यात् शिष्यमपि कारयेत् ॥

दीक्षा आपवानो विधि.

३ दीक्षा आपनारा ब्राह्मणे ज्योतिश्शास्त्रमां कह्याप्रमाणे तिथि, करण तथा नक्षत्र एओनी शुभता जोई ते दिवसे शुभ मुहूर्त्तमां, पूर्व अथवा उत्तर दिशामां पवित्र तथा सपाट प्रदेशमां चार हाथनुं चोरस स्थंडिल बनावी, तेने गायना छाणथी लीपी आसपास दर्भो बीछावी, पुष्पोथी शाळनी धाणीओथी तथा रत्नोथी देवताओनुं, ब्राह्मणोनुं तथा वैद्योनुं पूजन करी, स्थंडिल उपर दर्भवते लींटी करवाथी जरा माटी उखेडी, दर्भथी स्थंडिल उपर जरा पाणी छांटी, दक्षिणमां ब्रह्मानुं स्थापन करी, स्थंडिलमां अग्नि पधरावी, दार्वीहोममां कहेला विधिप्रमाणे दहीं, मध तथा घी एओथी खरडेली खेर, खाखरो, देवदार तथा बीली ए चार वृक्षोनी अथवा वड, उंबरो, पीपळो अने महुडो ए चार छीरवाळां वृक्षोनी समिधोनो

१ शिष्यने आयुर्वेदनी दीक्षा आपवाना विधिविषयनो.

२ 'जेना कुलमां आयुर्वेद भणवानी परंपरा चाली आवती होय, एवो' ए अर्थ पण लई शकाय छे.

३ शिष्यने दीक्षा आपवानो मुख्य अधिकार ब्राह्मणनेज छे तेथी अहीं ब्राह्मणशब्द आप्यो छे.

४ दार्वीहोमनी पद्धति सामवेदी अग्निहोत्री ब्राह्मणोमां प्रसिद्ध छे. (डल्हन.)

होम करी **ओंभूःस्वाहा ओंभुवःस्वाहा ओंस्वःस्वाहा ओंभूर्भुवःस्वःस्वाहा** ए रीते महाव्याहृतिओ बोली सरवावते घीनी आहुतिओ होमवी. ब्रह्मा, प्रजापति, अश्विनीकुमार तथा इंद्र ए प्रत्येक देवताओनेमाटे अने धन्वंतरि, भरद्वाज तथा आत्रेय इत्यादि ऋषिओनेमाटे **ब्रह्मणेस्वाहा** इत्यादि मंत्रोनुं उच्चारण करीने घीनी आहुतिओ होमवी तथा शिष्यनी पासे पण मंत्रोनुं उच्चारण करावीने घीनी आहुतिओ होमाववी.

४ ब्राह्मणस्त्रयाणां वर्णानामुपनयनं कर्तुमर्हति राजन्यो द्वयस्य वैश्यो वैश्यस्यैवेति ॥

दीक्षा आपवानो कोने अधिकार छे.

४ ब्राह्मण ब्राह्मणने, क्षत्रियने अने वैश्यने दीक्षा आपी शके छे. क्षत्रिय क्षत्रियने अने वैश्यने दीक्षा आपी शके छे अने वैश्य वैश्यनेज दीक्षा आपी शके [1]छे.

५ शूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्जमुपनीतमध्यापयेदित्येके ॥

शूद्रथी पण दीक्षा लई शकाय.

५ शूद्र पण जो कुलीन होय अने सद्गुणोथी संपन्न होय तो वेदमंत्रोना उच्चारणवगरनी दीक्षा आपीने आयुर्वेद भणाववो एम केटलाएक आचार्यो कहेछे.

६ ततोऽग्निं त्रिः परिणीयाग्निसाक्षिकं शिष्यं ब्रूयात् । कामक्रोधलोभमोहमानाहङ्कारेर्ष्यापारुष्यपैशुन्यानृतालस्यायशस्यानि हित्वा नीचनखरोम्णा शुचिना काषायवाससा सत्यव्रतब्रह्मचर्याभिवादनतत्परेणाऽवश्यं भवितव्यं मदनुमतस्थानगमनशयनासनभोजनाध्ययनपरेण भूत्वा मत्प्रियहितेषु वर्तितव्यमतोऽन्यथा ते वर्तमानस्याधर्मो भवत्यफला च विद्या न च प्राकाश्यं प्राप्नोति । अहं वा त्वयि सम्यग्वर्तमाने यद्यन्यथादर्शी स्यामेनोभाग् भवेयमफलविद्यश्च । द्विजगुरुदरिद्रमित्रप्रव्रजितोपनतसाध्वनाथाभ्युपगतानां चात्मबान्धवानामिव स्वभेषजैः प्रतिकर्तव्यमेवं साधु भवति ॥ व्याधशाकुनिकपतितपापकारिणां न च प्रतिकर्तव्यमेवं विद्या प्रकाशते मित्रयशोधर्मार्थकामांश्च प्राप्नोति ॥

शिष्यने करवानी भलामण तथा शिष्यनी

६ पछी अग्निने त्रण वार प्रदक्षिणा फरी अग्निने साक्षी राखीने शिष्यने कहेवुं के "तारे अभ्यास पूरो थतां सुधी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान, अहंकार, ईर्ष्या, कठोरवचन, चाडी, मिथ्याभाषण, आलस्य अने जेओथी अपकीर्ति थाय एवां कार्योमां प्रवृत्ति, एओने छोडी देवां. नख तथा वाळो नीचां राखवां. पवित्र रहेवुं. काषाय वस्त्रो पहेरवां. अवश्य करी सत्य व्रतमां, ब्रह्मचर्यमां तथा मान्य जनोने अभिवादन (प्रणाम) करवामां तत्पर रहेवुं. मारी आज्ञाप्रमाणेज स्थिति, गमन, शयन, आसन, भोजन तथा अध्ययन ए क्रियाओमां सावधान रहेवुं अने मने प्रसन्न करनारां तथा जेओथी मारूं हित थाय एवां कृत्योमां तत्पर रहेवुं. जो तुं आ नियमोथी उलटी रीते वर्त्तशे तो तने अधर्म थशे अने तारी विद्या अफल थशे तथा तेम थवाथी क्यांय पण प्रकाश नहीं पामे. तेमज हुं पण, तुं सारी रीते चालतां छतां तारा उपरना मारा धर्मथी उलटी रीते वर्त्तुं तो मने पण पाप लागे तथा मारी विद्या पण अफल थाय. आयुर्वेदनो अभ्यास पूर्ण थई रह्या पछी तारे ब्राह्मण, गुरु, दरिद्र, मित्र, तपस्वी, पासे रेहेनारा स्नेहीजन, सत्पुरुष, अनाथ अने दूरथी आवेला एओने पोताना बांधवो जेवा समजीने तेओना रोगोनी चिकित्सा ताराज धनथी तैयार करेलां औषधोथी करवी. आम करवाथी कल्याण थाय छे. पशु-

[1] धर्मशास्त्रप्रमाणे क्षत्रियथी अने वैश्यथी कोइने दीक्षा आपी शकाय नहि माटे मूळमां **राजन्यो द्वयस्य, वैश्यो वैश्यस्यैवेति** एटलो पाठ प्राचीन नथी अने तेथी त्याज्य छे एम निबंधकारोनो सिद्धांत छे. (डल्हन.)

ओनी हिंसा करनारा, पक्षीओनी हिंसा करनारा, पतित अने चोरी तथा व्यभिचार वगेरे पापकर्म करनारा एओना रोगोनी चिकित्सा करवीज नहीं. आम करवाथी विद्या प्रकाशे छे अने मित्र, यश, धर्म, धन तथा कामसुख एओनी प्राप्ति थाय छे."

७ भवतश्चात्र ॥
कृष्णेऽष्टमी तन्निधनेऽहनी द्वे
कृष्णेतरेऽप्येव महर्द्विसन्ध्यम् ।
अकालविद्युत्स्तनयित्नुघोषे
स्वतन्त्रराष्ट्रक्षितिपव्यथासु ॥
श्मशानयानायतनाहवेषु
महोत्सवौत्पातिकदर्शनेषु ।
नाध्येयमन्येषु च येषु विप्रा
नाधीयते नाशुचिना च नित्यम् ।

आयुर्वेदना अनध्यायो.

७ आविषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "कृष्णपक्ष नी अष्टमी चतुर्दशी तथा अमावास्या अने शुक्लपक्षनी पण अष्टमी चतुर्दशी तथा पुनेम एओमां अध्ययन करवुं नहीं. दिवसमां सायंसंध्याना के प्रातःसंध्याना समयमां अध्ययन करवुं नहीं, ऋतुवगरनी वीजळी के ऋतुवगरनी गर्जना थाय त्यारे पण अध्ययन नहीं करवुं. पोतानां माणसोने, पोताना देशने के पोताना राजाने पीडा होय त्यारे पण अध्ययन नहीं करवुं. स्मशानमां, वाहन उपर बेठा होइये त्यारे, वधस्थानमां, संग्राममां, महोत्सवमां अने ज्यारे उत्पात जोवामां आवे त्यारे पण अध्ययन करवुं नहीं. जे प्रतिपदा आदि तिथिओमां के समयोमां ब्राह्मणो वेदादिकनुं अध्ययन करता नथी ते तिथिओमां तथा ते समयोमां पण आयुर्वेदनुं अध्ययन करवुं नहीं तथा अपवित्र स्थितिमां पण कदी अध्ययन करवुं नहीं."

अध्याय ३ जो.

१ अथातोऽध्ययनसंप्रदानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

१ अध्यायोना (पाठोना) विभाग पाड्याविना शिष्योने अध्ययन आपी शकातुं नथी माटे पाठोना विभागो विषेनो अध्याय.

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अध्ययनसंप्रदानीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतकहेलुं छे.

२ प्रागभिहितं सविंशमध्यायशतं पंचसु स्थानेषु । तत्र सूत्रस्थानमध्यायाः षट्चत्वारिंशत् । षोडश निदानानि । दश शारीराणि । चत्वारिंशच्चिकित्सितानि । अष्टौ कल्पाः । तदुत्तरं षट्षष्टिः ॥

पांच स्थानोना तथा उत्तरतंत्रना अध्यायोनी संख्या.

२ पेहेला अध्यायमां कही आव्या छीए के एकसो वीश अध्यायोनी पांच स्थानोमां वेहेचण करी छे. ए वेहेचण आप्रमाणे छे. सूत्रस्थान छेतालीस अध्यायनुं छे, निदानस्थान सोळ अध्यायनुं छे, शारीरस्थान दश अध्यायनुं छे, चिकित्सितस्थान चाळीश अध्यायनुं छे अने कल्पस्थान आठ अध्यायनुं छे. (१२०) पछी उत्तरतंत्र छासठ अध्यायनुं छे.

३ वेदोत्पत्तिः शिष्यनयस्तथाध्ययनदानिकः ।
प्रभाषणाग्रहरणावृतुचर्याथ यान्त्रिकः
शस्त्रावचारणं योग्या विशिखा क्षारकल्पनम्
अग्निकर्मजलौकाख्यावध्यायौ रक्तवर्णनम् ॥
दोषधातुमलाद्यानां विज्ञानाध्याय एव च ।
कर्णव्यधामपक्वैषावालेपो व्रणुपासनम् ॥
हिताहितो व्रणप्रश्नो व्रणास्रावश्च यः पृथक् ।
कृत्याकृत्यविधिर्व्याधिसमुद्देशीय एव च ॥
विनिश्चयः शस्त्रविधौ प्रणष्टशाल्यिकस्तथा ।
शल्योद्धृतिर्व्रणज्ञानं दूतस्वप्ननिदर्शनम् ॥
पंचेन्द्रियं तथा छाया स्वभावाद्वैकृतं तथा ।
वारणो युक्तसेनीय आतुरक्रमिश्रकौ ॥
भूमिभागो द्रव्यगणः संशुद्धौ शमने च यः ।

द्रव्यादीनां च विज्ञानं विशेषो द्रव्यगोऽपरः
रसज्ञानं वमनार्थमध्यायो रेचनाय च ।
द्रवद्रव्यविधिस्तद्वदन्नपानविधिस्तथा ॥
सूचनात्सूत्रणाच्चैव सन्धानाच्चार्थसन्ततेः ।
षट्चत्वारिंशदध्यायं सूत्रस्थानं प्रचक्षते ॥

सूत्रस्थानना छेंतालीस अध्यायोनां नामो तथा 'सूत्रस्थान' ए शब्दनो अर्थ.

३ वेदोत्पत्ति, शिष्योपनयनीय, अध्ययनसंप्रदानीय, प्रभाषणीय, अग्रोपहरणीय, ऋतुचर्या, यंत्रविधि, शस्त्रावचारणीय, योग्यासूत्रीय, विशिखानुप्रवेशनीय, क्षारपाकविधि, अग्निकर्मविधि, जलौकावचारणीय, शोणितवर्णनीय, दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय, कर्णव्यधबंधविधि, आमपक्वैषणीय, व्रणालेपनबंधविधि, व्रणितोपासनीय, हिताहितीय, व्रणप्रश्न, व्रणास्रावविज्ञानीय, कृत्याकृत्यविधि, व्याधिसमुद्देशीय, अष्टविधशस्त्रकर्मण्य, प्रणष्टशल्यविज्ञानीय, शल्यापनयनीय, विपरीताविपरीतव्रणविज्ञानीय, विपरीताविपरीतदूतशकुनस्वप्ननिदर्शनीय, पंचेंद्रियार्थविप्रतिपत्ति, छायाविप्रतिपत्ति, स्वभावविप्रतिपत्ति, अवारणीय, युक्तसेनीय, आतुरोपक्रमणीय, मिश्रक, भूमिप्रविभागविज्ञानीय, द्रव्यसंग्रहणीय, संशोधनसंशमनीय, द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकविज्ञानीय, द्रव्यविशेषविज्ञानीय, रसविशेषविज्ञानीय, वमनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय, विरेचनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय, द्रवद्रव्यविज्ञानीय अने अन्नपानविधि ए नामना छेंतालीस अध्यायोथी सूत्रस्थान गोठवेलुं छे.

आ स्थानमां आयुर्वेदसंबंधी सघळी बाबतोनो संक्षेपथी प्रकाश कर्यो छे, ते ते बाबतोने सहुसहुनां योग्य स्थलोमां निवेशित करी छे, अने छुटा छुटा विषयोने सांधी दीधा छे तेथी आ स्थान सूत्रस्थान कहेवाय छे.

४ वातव्याधिकमर्शांसि साश्मरिश्च भगन्दरः ।
कुष्ठमेहोदरा मूढविद्रध्यः परिसर्पणम् ॥
ग्रन्थिवृद्धी भग्नशूकक्षुद्राश्च मुखरोगिकम् ।
हेतुलक्षणनिर्देशान्निदानानीति षोडश ॥

निदानस्थानना सोळ अध्यायोनां नामो तथा 'निदानस्थान' ए शब्दनो अर्थ.

'४ वातव्याधिनिदान, अर्शोनिदान, अश्मरीनिदान, भगंदरनिदान, कुष्ठनिदान, प्रमेहनिदान, उदरव्याधिनिदान, मूढगर्भनिदान, विद्रधिनिदान, विसर्पनाडीस्तनरोगनिदान, ग्रंथ्यपच्यर्बुदगलगंडनिदान, वृद्ध्युपदंशश्लीपदनिदान, क्षुद्ररोगनिदान, शूकदोषनिदान, भग्ननिदान अने मुखरोगनिदान ए नामना सोळ अध्यायोथी निदानस्थान गोठवेलुं छे.

आ स्थानमां ते ते रोगोनी उत्पत्तिनां कारणो अने ते ते रोगोनां लक्षणो बतावेलां छे तेथी आ निदानस्थान केहेवाय छे.

५ भूतचिन्ता रजःशुद्धिर्गर्भावक्रान्तिरेव च ।
व्याकरणं च गर्भस्य शरीरस्य च यत् स्मृतम् ॥
प्रत्येकं मर्मनिर्देशः शिरावर्णनमेव च ।
शिराव्यधो धमनीनां गर्भिण्याव्याकृतिस्तथा ॥
निर्दिष्टानि दशैतानि शारीराणि महर्षिणा ।
विज्ञानार्थं शरीरस्य भिषजां योगिनामपि ॥

शारीरस्थानना दश अध्यायोनां नामो तथा 'शारीरस्थान' ए शब्दनो अर्थ.

५ सर्वभूतचिंताशारीर, शुक्रशोणितशुद्धिशारीर, गर्भावक्रांतिशारीर, गर्भव्याकरणशारीर, शरीरसंख्याव्याकरणशारीर, प्रत्येकमर्मनिर्देशशारीर, शिरावर्णनशारीर, शिराव्यधविधिशारीर, धमनीव्याकरणशारीर अने गर्भिणीव्याकरणशारीर ए नामना दश अध्यायोथी भगवान् धन्वंतरिए शारीरस्थान गोठवेलुं छे.'

आ स्थानथी वैद्योने अने योगियोने शरीरनी अंदरनी रचनाओनुं ज्ञान थाय छे माटे आ स्थान शारीरस्थान केहेवाय छे.

**६ द्विव्रणीयो व्रणः सद्यो भग्नानां वातरोगिकम् ।
महावातिकमर्शांसि साश्मरिश्च भगन्दरः ॥
कुष्ठानां महतां चापि मैहिकं पैडिकं तथा ।
मधुमेहचिकित्सा च तथा चोदरिणामपि ॥
मूढगर्भचिकित्सा च विद्रधीनां विसर्पिणाम् ।
ग्रन्थिवृद्ध्युपदंशानां तथा च क्षुद्ररोगिकम् ॥
शूकदोषचिकित्सा च तथा च मुखरोगिणाम् ।
शोफस्यानागतानां च निषेधो मिश्रकं तथा ॥
वाजीकरं च यत्क्षीणे सर्वाबाधशमोपि च ।
मेधायुष्करणं चापि स्वभावव्याधिवारणम् ॥
निवृत्तसन्तापकरं कीर्तितं च रसायनम् ।
स्नेहोपयौगिकः स्वेदो वमने सविरेचने ॥
तयोर्व्यापच्चिकित्सा च नेत्रबस्तिविभागिकः ।
नेत्रबस्तिविपत्सिद्धिस्तथाचोत्तरबस्तिकः ॥
निरूहक्रमसंज्ञश्च तथैवातुरसंज्ञकः ।
धूमनस्यविधिश्चाद्याश्चत्वारिंशदिति स्मृताः ॥
प्रायश्चित्तं प्रशमनं चिकित्सा शान्तिकर्म च ।
पर्यायास्तस्य निर्दिष्टाश्चिकित्सास्थानमुच्यते ॥**

चिकित्सास्थानना चालीस अध्यायोनां नामो तथा 'चिकित्सास्थान' ए शब्दनो अर्थ.

६ द्विव्रणीयचिकित्सित, सद्योव्रणचिकित्सित, भग्नचिकित्सित, वातव्याधिचिकित्सित, महावातव्याधिचिकित्सित, अर्शश्चिकित्सित, अश्मरीचिकित्सित, भगंदरचिकित्सित, कुष्ठचिकित्सित, महाकुष्ठचिकित्सित, प्रमेहचिकित्सित, प्रमेहपिडिकाचिकित्सित, मधुमेहचिकित्सित, उदरचिकित्सित, मूढगर्भचिकित्सित, विद्रधिचिकित्सित, विसर्पनाडीस्तनरोगचिकित्सित, ग्रंथ्यपच्यर्बुदगलगंडचिकित्सित, वृध्युपदंशश्लीपदचिकित्सित, क्षुद्ररोगचिकित्सित, शूकरोगचिकित्सित, मुखरोगचिकित्सित, शोफचिकित्सित, अनागताबाधप्रतिषेधनीय, मिश्रकचिकित्सित, क्षीणबलीयवाजीकरणचिकित्सित, सर्वोपघातशमनीयरसायन, मेधायुष्कामीयरसायन, स्वभावव्याधिप्रतिषेधनीयरसायन, निवृत्तसंतापीयरसायन, स्नेहोपयौगिकचिकित्सित, स्वेदावचारणीयचिकित्सित, वमनविरेचनसाध्योपद्रवचिकित्सित, वमनविरेचनव्यापच्चिकित्सित, नेत्रबस्तिप्रमाणप्रविभागचिकित्सित, नेत्रबस्तिव्यापच्चिकित्सित, अनुवासनोत्तरबस्तिचिकित्सित, निरूहक्रमचिकित्सित, आतुरोपद्रवचिकित्सित अने धूमनस्यकवलग्रहचिकित्सित ए नामना उत्तम चाळीस अध्यायोथी चिकित्सास्थान गोठवेलुं छे.

प्रायश्चित्त, प्रशमन अने शांतिकर्म एओ चिकित्साना पर्याय शब्दो छे. अर्थात् रोगोना निवारणनो विधि अथवा रोगोने शांत करनारा उपायो अथवा रोगोने शांत करवानां कर्मो आ स्थानमां कहेल छे तेथी आ स्थान चिकित्सास्थान केहेवाय छे.

**७ अन्नस्य रक्षा विज्ञानं स्थावरस्येतरस्य च ।
सर्पदष्टविषज्ञानं तस्यैव च चिकित्सितम् ।
दुंदुभेर्मूषिकाणां च कीटानां कल्प एव च ।
अष्टौ कल्पाः समाख्याता विषभेषजकल्पनात् ॥
अध्यायानां शतं विंशमेवमेतदुदीरितम् ।**

कल्पस्थानना आठ अध्यायोनां नामो तथा 'कल्पस्थान' ए शब्दनो अर्थ.

७ अन्नपानरक्षाकल्प, स्थावरविषविज्ञानीय, जंगमविषविज्ञानीय, सर्पदष्टविषविज्ञानीय, सर्पदष्टकल्पचिकित्सित, मूषिककल्प, दुंदुभिस्वनीय अने कीटकल्प ए नामना आठ अध्यायो कल्पस्थानमां गोठवेला छे.

आ स्थानमां विषनां औषधोनी कल्पना आपी छे तेथी आ स्थान कल्पस्थान केहेवाय छे.

आ पांचे स्थानोना अध्यायोनो सरवाळो करतां १२० नी संख्या थाय छे.

**८ अतःपरं स्वनाम्नैव तन्त्रमुत्तरमुच्यते ॥
अधिकृत्य कृतं यस्मात्तन्त्रमेतदुपद्रवान् ।**

१ कायचिकित्सातंत्रनो मोटो भाग, रसायनतंत्र अने वाजीकरणतंत्र एओ आमां आवीजाय छे.

२ अगदतंत्र कल्पस्थानमां आवीजाय छे.

औपद्रविक इत्येष तस्याध्यत्वान्निरुच्यते ॥
सन्धौ वर्त्मनि शुक्ले च कृष्णे सर्वत्र दृष्टिषु ।
संविज्ञानार्थमध्याया गदानां तु प्रति प्रति ॥
चिकित्साप्रविभागीयो वाताभिष्यन्दवारणः ।
पैत्तस्य श्लैष्मिकस्यापि रौधिरस्य तथैव च ॥
लेख्यभेद्यनिषेधौ च छेद्यानां वर्त्मदृष्टिषु ।
क्रियाकल्पोऽभिघातश्च कर्णोत्थास्तच्चिकित्सितं
घ्राणोत्थानां च विज्ञानं तद्वद्प्रतिषेधनम् ।
प्रतिश्यायनिषेधश्च शिरोगदविवेचनम् ।
चिकित्सा तद्गदानां च शालाक्यं तन्त्रमुच्यते ॥
नवग्रहाकृतिज्ञानं स्कन्दस्य च निषेधनम् ।
अपस्मारशकुन्योश्च रेवत्याश्च पुनः पृथक् ॥
पूतनायास्तथान्धाया मण्डिका शीतपूतना ।
नैगमेषचिकित्सा च ग्रहोत्पत्तिः सयोनिजा ।
कौमारतन्त्रमित्येतच्छारीरेषु च कीर्तितम् ॥
ज्वरातिसारशोषाणां गुल्महृद्रोगिणामपि ।
पाण्डूनां रक्तपित्तस्य मूर्छायाः पानजाश्च ये ॥
तृष्णायाश्छर्दिहिक्कानां निषेधः श्वासकासयोः ।
स्वरभेदचिकित्सा च कृम्युदावर्तिनोः पृथक् ॥
विसूचिकारोचकयोर्मूत्राघातविकृच्छ्रयोः ।
इति कायचिकित्सायाः शेषमत्र प्रकीर्तितम् ॥
अमानुषनिषेधश्च तथापस्मारिकोऽपरः ।
उन्मादप्रतिषेधश्च भूतविद्या निरुच्यते ॥
रसभेदाः स्वस्थवृत्तिर्युक्तयस्तान्त्रिकाश्च याः ।
दोषभेदा इति ज्ञेया अध्यायास्तन्त्रभूषणाः ॥
श्रेष्ठत्वादुत्तरं ह्येतत्तन्त्रमाहुर्महर्षयः ।
बह्वर्थसंग्रहाच्छ्रेष्ठमुत्तरं चापि पश्चिमम् ॥

उत्तरतंत्रना छासठ अध्यायोनां नामो, पेटाना विभागो तथा 'उत्तरतंत्र' ए शब्दनो अर्थ.

८ उपर कहेलां पांचे स्थानोरूप पूर्वतंत्र पछीनुं तंत्र उत्तरतंत्र केहेवाय छे. आ तंत्र के जे अवशिष्ट उपद्रवो(रोगो)रूप विषयने लइने करेलुं छे तेना आरंभरूप होवाथी तेना पेहेला अध्यायनुं नाम औपद्रविक छे. (तेपछी तो जे जे अध्यायमां जे जे रोगनुं के विषयनुं सारी रीते विज्ञान आपेलुं छे ते ते रोग के विषय उपरथी ते ते अध्यायनुं नाम राखेलुं छे.)

औपद्रविक, संधिगतरोगविज्ञानीय, वर्त्मगतरोगविज्ञानीय, शुक्लगतरोगविज्ञानीय, कृष्णगतरोगविज्ञानीय, सर्वगतरोगविज्ञानीय, दृष्टिगतरोगविज्ञानीय, चिकित्सितप्रविभागविज्ञानीय, वाताभिष्यंदप्रतिषेध, पित्ताभिष्यंदप्रतिषेध, श्लेष्माभिष्यंदप्रतिषेध, रक्ताभिष्यंदप्रतिषेध, लेख्यरोगप्रतिषेध, भेद्यरोगप्रतिषेध, छेद्यरोगप्रतिषेध, पक्ष्मकोपप्रतिषेध, दृष्टिगतरोगप्रतिषेध, क्रियाकल्प-नयनाभिघातप्रतिषेध, कर्णगतरोगविज्ञानीय, कर्णगतरोगप्रतिषेध, नासागतरोगविज्ञानीय, नासागतरोगप्रतिषेध, प्रतिश्यायप्रतिषेध, शिरोरोगविज्ञानीय अने शिरोरोगप्रतिषेध ए छवीश अध्यायो शालाक्यतंत्ररूप छे. (आ तंत्रने लगता मुखरोगनिदान तथा मुखरोगचिकित्सित आदि केटलाएक विषयो पूर्वतंत्रमां पण कह्या छे.)

नवग्रहाकृतिविज्ञानीय, स्कंदग्रहप्रतिषेध, स्कंदापस्मारप्रतिषेध, शकुनीप्रतिषेध, रेवतीप्रतिषेध, पूतनाप्रतिषेध, अंधपूतनाप्रतिषेध, शीतपूतनाप्रतिषेध, मुखमंडिकाप्रतिषेध, नैगमेषप्रतिषेध, ग्रहोत्पत्ति अने योनिव्यापत्प्रतिषेध आ बार अध्यायो कौमारभृत्यतंत्ररूप छे, शारीरस्थानमां कौमारभृत्यतंत्रना केटलाएक विषयो कह्या[1] छे.

ज्वरप्रतिषेध, अतीसारप्रतिषेध, शोषप्रतिषेध, गुल्मप्रतिषेध, हृद्रोगप्रतिषेध, पांडुरोगप्रतिषेध, रक्तपित्तप्रतिषेध, मूर्छाप्रतिषेध, पानात्ययप्रतिषेध, तृष्णाप्रतिषेध, छर्दिप्रतिषेध, हिक्काप्रतिषेध, श्वासप्रतिषेध, कासप्रतिषेध, स्वरभेदप्रतिषेध, कृमिरोगप्रतिषेध, उदावर्त्तप्रतिषेध, विसूचिकाप्रतिषेध, अरोचकप्रतिषेध, मूत्राघातप्रतिषेध

१ शुक्रशोणित शुद्धि अने गर्भावक्रांति इत्यादि.

अने मूत्रदोषप्रतिषेध आ एकवीश अध्यायो कायचिकित्सातंत्रना शेषभागरूप [2] छे.

अमानुषप्रतिषेध, अपस्मारप्रतिषेध अने उन्मादप्रतिषेध ए त्रण अध्यायो भूतविद्यातंत्ररूप छे.

रसभेदविकल्प, स्वस्थवृत्त, तंत्रयुक्ति अने दोषभेदविकल्प आ चार अध्यायो सबळा आयुर्वेदना शणगाररूप छे. कुल अध्याय ६६.

आ तंत्र घणा विषयोना संग्रहवाळुं होवाने लीधे श्रेष्ठ छे अथवा पांचे स्थानोथी पाछळ छे तेथी मोटा ऋषिओ आ तंत्रने उत्तरतंत्र केहे छे.

९ शालाक्यतंत्रं कौमारं चिकित्साकायिकी च या।
भूतविद्येति चत्वारि तन्त्रे तूत्तरसंज्ञिते ॥
वाजीकरं चिकित्सासु रसायनविधिस्तथा।
विषतन्त्रं पुनः कल्पाः शल्यज्ञानं समन्ततः ॥

आयुर्वेदना आठ अंगोना आ ग्रंथमां समावेश.

९ शालाक्यतंत्र, कौमारभृत्यतंत्र, कायचिकित्सातंत्र, तथा भूतविद्यातंत्र ए चार अंगो उत्तरतंत्रमां छे, वाजीकरणतंत्र तथा रसायनतंत्र नामनां अंगो चिकित्सा स्थानमां छे, अगदतंत्र नामनु अंग कल्पस्थानमां छे अने शल्यतंत्र नामनुं अंग तो सर्वत्र व्याप्त छे.

१० इत्यष्टाङ्गमिदं तन्त्रमादिदेवप्रकाशितम्।
विधिनाधीत्य युञ्जाना भवन्ति प्राणदा भुवि ॥
एतदवश्यमध्येयमधीत्य च कर्माप्यवश्यमुपासितव्यमुभयज्ञो हि भिषग्राजार्हो भवति ॥
भवन्ति चात्र ॥
यस्तु केवलशास्त्रज्ञः कर्मस्वपरिनिष्ठितः।
स मुह्यत्यातुरम्प्राप्य प्राप्य भीरुरिवाहवम् ॥
यस्तु कर्मसु निष्णातो धार्ष्ट्याच्छास्त्रबहिष्कृतः।
स सत्सु पूजां नाप्नोति वधं चार्हति राजतः ॥
उभावेतावनिपुणावसमर्थौ स्वकर्मणि।
अर्द्धवेदधरावेतावेकपक्षाविव द्विजौ ॥
ओषध्योऽमृतकल्पास्तु शस्त्राशनिविषोपमाः।
भवन्त्यज्ञैरुपहृतास्तस्मादेतौ विवर्जयेत् ॥
स्नेहादिष्वनभिज्ञो यश्छेदादिषु च कर्मसु।
स निहन्ति जनं लोभात् कुवैद्यो नृपदोषतः ॥
यस्तूभयज्ञो मतिमान् स समर्थोऽर्थसाधने।
आहवे कर्म निर्वोढुं द्विचक्रः स्यन्दनो यथा ॥

आ ग्रंथना तथा तेमां कहेली क्रियाओना अभ्यासथी लाभ अने बन्नेना अभ्यासनी जरूर.

१० आ प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए प्रकाशित करेला आ शास्त्रने विधिपूर्वक जाणीने जेओ तेमां करेला प्रयोगो करे तेओ पृथ्वीमां लोकोने जीवनदान देनारा थाय छे.

आ ग्रंथ अवश्य जाणवो जोइए अने जाणीने तेमां कहेली क्रियाओनो पण अवश्य अभ्यास करवो जोइए. शास्त्र अने क्रिया ए बन्नेने जाणनारो वैद्य राजपूज्य थाय छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे पुरुष केवळ शास्त्रने जाणतो होय पण क्रियाओमां निपुण न होय (क्रियाओमां केळवाएलो न होय) ते पुरुष, जेम बीकण पुरुष संग्रामने प्राप्त थईने गभराई जाय छे तेम रोगीने प्राप्त थईने गभराई जाय छे. जे पुरुष केवळ क्रियाओमांज केळवाएलो होय पण तेटलाथीज पोताने कृतार्थ मानीलेवारूप धृष्टताने लीधे शास्त्रथी बहिर्मुख होय ते पुरुष (शास्त्रनुं ज्ञान नहीं छतां केवळ क्रियाओना अभ्यासने लीधे क्रियाओ करनारो पुरुष) विद्वानोमां प्रशंसापात्र थतो नथी. एवा पुरुषनो राजाए वधज करवो जोइए. क्रियाओनो अभ्यासी नहीं छतां केवळ शास्त्रना अभ्यासवाळो अने शास्त्रनो अभ्यासी नहीं छतां केवळ क्रियाओना अभ्यासवाळो ए बन्ने पुरुषो अशिक्षित अने अर्द्धज्ञानवाळा होवा-

१ केम के कायचिकित्सानो केटलोक भाग पूर्वतंत्रमां कह्यो छे.

२ कायचिकित्सातंत्रनो अवशिष्ट भाग.

थी एक एक पांखवाळा बे पक्षीओनी पेठे पोताना काममां अशक्त छे. औषधिओ जाते अमृत जेवी होय तो पण शास्त्रज्ञान वगरना तथा क्रियाभ्यास वगरना माणसोना हाथथी देवामां आवे तो तेओ शस्त्रो जेवी, वज्रपात जेवी अने विष जेवी थई पडे[1] छे माटे शास्त्रज्ञान वगरना वैद्यनो पण त्याग करवो अने क्रियाज्ञान वगरना वैद्यनो पण त्याग करवो. जे वैद्य शास्त्रनो अभ्यासी छतां पण स्नेहनादिक तथा छेदादिक क्रियाओमां अजाण्यो होय ते कुवैद्यज छे अने ते कुवैद्य राजाना दोषने लीधे (अटकायत नहीं करवारूप राजाना अपराधने लीधे) लोभथी माणसने मारी नाखे छे. जेम बन्ने पइडांवाळो रथ संग्राममां पोतानुं काम पार पाडवाने समर्थ थाय छे तेम शास्त्राभ्यास अने क्रियाभ्यास ए बन्ने अभ्यासोवाळो विद्वान् सांकडना समयमां पण पोतानुं काम पार पाडवाने समर्थ थाय छे.

११ अथ वत्स तदेतदध्येयं यथा तथोपरय मया प्रोच्यमानम् । अथ शुचये कृतोत्तरासङ्गायाव्याकुलायोपस्थितायाध्ययनकाले शिष्याय यथाशक्ति गुरुरुपदिशेत् पदं पादं श्लोकं वा ते च पदपादश्लोका भूयः क्रमेणानुसन्धेया एवमेकैकशो घटयेदात्मना चानुपठेत्। अद्रुतमविलम्बितमविशङ्कितमननुनासिकं व्यक्ताक्षरमपीडितवर्णमक्षिभ्रुवौष्ठहस्तैरनभिनीतं सुसंस्कृतं नात्युच्चैर्नातिनीचैश्च स्वरैःपठेन्नचान्तरेण कश्चिद्व्रजेत्तयोरधीयानयोः ॥

भवतश्चात्र ॥

शुचिर्गुरुपरो दक्षस्तन्द्रानिद्राविवर्जितः ।
पठेदेतेन विधिना शिष्यः शास्त्रान्तमाप्नुयात् ॥
वाक्सौष्ठवेऽर्थविज्ञाने प्रागल्भ्ये कर्मनैपुणे ।
तदभ्यासे च सिद्धौ च यतेताध्ययनान्तगः ॥

आ शास्त्र भणाववानो तथा भणवानो प्रकार.

११ पुत्र सुश्रुत! हवे आ शास्त्र जे प्रकारथी भणाववुं तथा भणवुं जोइए ते प्रकार कहुंछुं ते सांभळो. आवश्यक नित्यकर्मो करवाथी पवित्र थएला, जेणे उत्तरीय वस्त्रनुं धारण कर्युं होय एवा अने एकाग्रचित्तवाळा शिष्यने समीपमां बेसाडी गुरुए तेनी शक्तिप्रमाणे पदनो, पादनो अथवा आखा श्लोकनो उपदेश करवो अने पाछां ते पदो, पादो अथवा श्लोको क्रमथी याद रखाववां. आ प्रमाणेज एक एकनी अन्वययोजना कराववी अने पाछळथी गुरुए पोते पण सघळुं बोली संभळाववुं. शिष्ये पद वगेरेना उच्चारणमां बहु उतावळ नहीं करवी, बहु धीरज नहीं करवी, त्रास नहीं राखवो, ञमङणन ए अनुनासिक अक्षरो शिवाय बीजा अक्षरो अनुनासिक (गुंगणा) बोलवा नहीं, अक्षरो स्पष्ट संभळाय तेम करवुं, अक्षरोपर दबाण करवुं नहीं, आंखोथी भ्रकुटिओथी होठोथी के हाथोथी बतावा करवा नहीं, सारी रीते शुद्ध बोलवुं अने बहु उंचो स्वर के बहु नीचो स्वर नहीं राखवो पण मध्यम स्वर राखवो. ज्यारे अध्ययन चालतुं होय त्यारे गुरु अने शिष्य एओनी वचमां थईने कोई पण नीकळे नहीं एवी गोठवण होवी जोइए.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे शिष्य पवित्र रही, गुरुभक्त रही, उद्योगी रही अने आलस्यथी तथा असमयनी निद्राथी रहित रही उपर कहेला प्रकारथी अध्ययन करे ते शिष्य शास्त्रना पारने प्राप्त थाय छे, अध्ययन पूरूं थई गया पछी वाणीनी स्पष्टतामां, अर्थना विज्ञानमां, दृढ उत्साहीपणामां, क्रियाओनी पूरी

१ ऊर्ध्वभागनी, अधोभागनी अने बन्ने भागनी अथवा संशोधनौषधनी, पाचनौषधनी अने संशमनौषधनी व्यापत्तिओ देखाडवानेसारू शस्त्रनी, वज्रपातनी अने विषनी उपमाओ आपी छे एम केवलाएक केहे छे. (डल्हन.)

कसरतमां, क्रियाओनी चातुरीमां, क्रियाओ नजरे जोवामां अने धारेली बाबतो पार पाडवांमां यत्न करवो."

अध्याय ४ थो.

१ अथातः प्रभापणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'प्रभापणीय' नामना अध्यायनुं तेप्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जेप्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनीपासे कहेलुं छे.

२ अधिगतमप्यध्ययनमप्रभावितमर्थतः खरस्य चन्दनभार इव केवलं परिश्रमकरं भवति ॥

भवति चात्र ॥

यथा खरश्चन्दनभारवाही
भारस्य वेत्ता नतु चन्दनस्य ।
एवं हि शास्त्राणि बहून्यधीत्य
चार्थेषु मूढाः खरवद्वहन्ति ॥

तस्मात्सविंशमध्यायशतमनुपदंपादश्लोकार्द्धश्लोकमनुवर्णयितव्यमनुश्रोतव्यं च ॥ कस्मात्सूक्ष्मा हि द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकदोषधातुमलाशयमर्मशिरास्नायुसन्ध्यस्थिगर्भसम्भवद्रव्यसमूहविभागास्तथा प्रणष्टशल्योद्धरणव्रणविनिश्चयभग्नविकल्पाः साध्ययाप्यप्रत्याख्येयता च विकाराणामेवमादयश्चान्ये विशेषाः सहस्रशो ये विचिन्त्यमाना विमलविपुलबुद्धेरपि बुद्धिमाकुलीकुर्युः किं पुनरल्पबुद्धेः ॥ तस्मादवश्यमनुपदपादश्लोकार्द्धश्लोकमनुवर्णयितव्यमनुश्रोतव्यं च ॥

शास्त्र भण्या पछी जाते अर्थनुं व्याख्यान करवाविषे तथा तेवां व्याख्यानो सांभळवाविषे.

२ शास्त्रने गुरुना मुखथी अर्थसहित शीखी लीधा पछी पोतानी मेळे पण ते शास्त्रना अर्थनुं व्याख्यान करवुं. जे शास्त्र भणाया छतां पण उपरप्रमाणे अर्थथी प्रभापित न थयुं होय ते शास्त्र जेम गधेडाने चंदननां काष्ठोनो बोजो केवळ परिश्रम आपनारज थाय छे तेम भणनारने परिश्रम आपनारज थाय छे.

कह्युं छे के "जेम चंदनना काष्ठोना बोजाओने उपाडनारा गधेडांओ केवळ भारनेज जाणे छे पण चंदनोना चमत्कारने जाणता नथी तेम घणां शास्त्रोनुं अध्ययन कर्या छतां पण ते शास्त्रोनुं अर्थथी प्रभापण नहीं करेलुं होवाथी अर्थोमां मूढ रहेला लोको शास्त्रोना बोजानेज उपाडे छे पण शास्त्रोना चमत्कारने जाणता नथी."

आ कारणथी पांचे तंत्रोना अने उत्तरतंत्रना दरएक पदनुं, दरएक पादनुं, दरएक श्लोकार्द्धनुं अने दरएक श्लोकनुं उपर कह्या प्रमाणे जाते व्याख्यान करवुं अने गुरुना तथा बीजाओना मोहोडाथी पण सांभळवुं. केम के द्रव्यो, रसो, गुणो, वीर्यो, विपाको, दोषो, धातुओ, उपधातुओ, मळो, आशयो, मर्मो, शिराओ, स्नायुओ, संधिओ, अस्थिओ अने गर्भने उत्पन्न करनारा पदार्थो एओना समुदायना विभागो, तेमज चामडी वगेरेमां गुम थई गएलां शल्योने काहाडवाना भेदो, व्रणोना निश्चयो करवाना भेदो, भांगेलांना भेदो अने

१ शास्त्रनुं अर्थसहित अध्ययन करी लीधा पछी ते शास्त्रनुं पाछुं अर्थथी व्याख्यान करवुं ए प्रभापण केहेवाय छे. प्रभापणने उद्देशीने करेलो अध्याय ते प्रभापणीय.

२ स्थावरादिक औषधिओ द्रव्यो केहेवाय छे. मधुरआदि छ रसो केहेवाय छे. गुरुआदि गुणो केहेवाय छे. शीत तथा ऊष्ण एम बे प्रकारनुं वीर्य छे. आठ प्रकारनुं पण केहेवामां आवशे. मधुर तथा कटु एम बे प्रकारना विपाक छे. वात, पित्त तथा कफ ए दोषो केहेवाय छे. रस तथा रक्त आदि धातुओ केहेवाय छे. विष्टा, मूत्र तथा चीपडा आदि मळो केहेवाय छे. आशयो ७ छे अने स्त्रीओनां शरीरोमां गर्भाशय नामनो आठमो पण आशय छे. मर्मो १०७ छे, शिराओ ७०० छे, स्नायुओ ९०० छे, संधिओ २१० छे, अस्थिओ ३०० छे.

रोगोनां साध्यपणां, याप्यपणां तथा असाध्यपणां वगेरे बीजा पण केटलाएक प्रकारो एवा सूक्ष्म छे, के जेओ हजार हजारवार विचारातां छतां पण अने विचारनारो निर्मल तथा मोटी बुद्धिवाळो छतां पण तेनी बुद्धिने व्याकुल करी नाखे त्यारे अल्पबुद्धिवाळानी बुद्धिने व्याकुल करी नाखे तेमां तो केहेवुंज शुं? आम छे एटला माटे दरएक पदोनुं, दरएक पादोनुं, दरएक श्लोकार्द्धोनुं तथा दरएक श्लोकोनुं अर्थथी जाते व्याख्यान करवुं अने गुरुना तथा बीजाओना मोहोडाथी पण तेवुं व्याख्यान सांभळवुं.

३ अन्यशास्त्रविषयोपपन्नानां चार्थानामिहोपनिपतितानामर्थवशात्तेषां तद्विद्येभ्य एव व्याख्यानमनुश्रोतव्यं कस्मान्नह्येकस्मिञ्छास्त्रे शक्यः सर्वशास्त्राणामवरोधः कर्तुम् ॥

भवन्ति चात्र ।

एकं शास्त्रमधीयानो न विद्याच्छास्त्रनिश्चयम् ।
तस्माद्बहुश्रुतः शास्त्रं विजानीयाच्चिकित्सकः ॥
शास्त्रं गुरुमुखोद्गीर्णमादायोपास्य चासकृत् ।
यः कर्म कुरुते वैद्यः स वैद्योऽन्ये तु तस्कराः ॥
औपधेनवमौरभ्रं सौश्रुतं पौष्कलावतम् ।
शेषाणां शल्यतन्त्राणां मूलान्येतानि निर्दिशेत् ॥

बीजां शास्त्रोना जे विषयो आ शास्त्रमां आवे छे तेओनुं संपूर्ण ज्ञान शी रीते मेळववुं.

३ व्याकरण, सांख्य, तर्क तथा ज्योतिष इत्यादि बीजां शास्त्रोना अमुक विषयो के जेओ प्रयोजनने लीधे आ शास्त्रमां दाखल करवा पडेला छे तेओनुं व्याख्यान ते ते शास्त्रोना पंडितोनी पासेथीज सांभळवुं के जेथी ते विषयोनुं संपूर्ण ज्ञान मळे. केवळ आ शास्त्र भणवाथी ते विषयोनुं संपूर्ण ज्ञान मळी शके एम नथी. केम के एक शास्त्रमां सर्व शास्त्रोनुं पूरूं संकलन करी शकातुं नथी.

आ विषयना श्लोकोमां विद्वानोए कह्युं छे के "जे पुरुष एकज शास्त्र भणे तेने ते शास्त्रनो पण पूरो निश्चय थाय नहीं. माटे वैद्ये आ शास्त्र भण्या पछी बीजां पण घणां शास्त्रो सांभळीने आ शास्त्रनो पाको निश्चय करवो. जे वैद्य गुरुना मुखथी शास्त्रनुं ग्रहण करी अने पछी वारंवार तेनो अर्थथी अभ्यास करीने चिकित्सा करे तेज खरो वैद्य केहेवाय. बीजा वैद्यो तो वैद्यना बाहानाथी रोगीओनी पासेथी धन हरनारा तथा रोगीओनां प्राणोनो विनाश करनारा होवाथी एक जातना चोरज छे. औपधेनव, औरभ्र अने पौष्कलावत ए त्रण तंत्रो आ सुश्रुततंत्रना जेवांज छे अने सघळां शल्यतंत्रोनां मूलरूप छे माटे आ तंत्रना विषयोनी ए त्रण तंत्रोना विषयोनीसाथे मेळवणी करीने, जे जे कांई मिथ्याज्ञानो तथा संशयज्ञानो रही जतां होय अथवा रही गयां होय तेओनुं निवारण करवुं."

अध्याय ५ मो.

१ अथातोऽग्रोपहरणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अग्रोपहरणीय' नामना अध्यायनुं व्याख्यान तेप्रमाणे करीशुं के जेप्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ त्रिविधं कर्म । पूर्वकर्म प्रधानकर्म पश्चात्कर्मेति । तद्व्याधिं प्रति प्रत्युपदेक्ष्यामः ॥ अस्मिञ्छास्त्रे शस्त्रकर्मप्राधान्याच्छस्त्रकर्मैव तावत्पूर्वमुपदेक्ष्यामस्तत्सम्भारांश्च ॥

कर्मोना त्रण प्रकार तथा शस्त्रक्रियाना उपदेशनो प्रारंभ.

२ पूर्वकर्म, (मुख्यकर्म कर्याथी पेहेलां तेना साधनरूपे करवानुं कर्म) प्रधानकर्म, (मुख्यकर्म)

१ कर्म करवाथी पेहेलां तैयार राखवानी यंत्रआदि सामग्रीओ विषेनो.

अने पश्चात्कर्म (मुख्यकर्म कऱ्या पछी करवानुं कर्म) ए रीते त्रण प्रकारनुं कर्म [1]छे. तेनो उपदेश अहीं पण करवामां आवे तो ग्रंथनो विस्तार थई जाय माटे ते ते व्याधिओना प्रकरणमां करवामां आवशे. हाल प्रथम तो आ शास्त्रमां शस्त्रकर्मज मुख्य छे माटे ते कर्मने अने ते कर्मनी सामग्रीओनो उपदेश करीए छीये.

३ तच्च शस्त्रकर्माऽष्टविधम् । तद्यथा । छेद्यं भेद्यं लेख्यं वेध्यमेष्यमाहार्यं विस्राव्यं सीव्यमिति ॥

अतोऽन्यतमं कर्मचिकीर्षता वैद्येन पूर्वमेवोपकल्पयितव्यानि । तद्यथा । यन्त्रशस्त्रक्षाराग्निशलाकाशृङ्गजलौकालाबूजाम्बवोष्ठपिचुप्रोतसूत्रपत्रपट्टमधुघृतवसापयस्तैलतर्पणकषायालेपनकल्कव्यजनशीतोष्णोदककटाहादीनि परिकर्मिणश्च स्निग्धाः स्थिरा बलवन्तः ॥

शस्त्रकर्मना आठ प्रकार अने ते कर्मना आरंभमां तैयार राखवानी सामग्रीओ.

३ छेद्य, भेद्य, लेख्य, वेध्य, एष्य, आहार्य, विस्राव्य अने सीव्य ए रीते शस्त्रकर्मना आठ प्रकार [2]छे. एओमानुं कोई कर्म करवुं होय त्यारे वैद्ये प्रथमथीज यंत्रो, शस्त्रो, क्षारो, अग्नि, शलाकाओ, (सळीओ) शींगडां, जळो नामना जीव, तुंबडां, जांबवोष्ठ, रू, वस्त्र वगेरेनां पोतां, सुतर, पानडां, पट्टीओ, मध, घी, चरबी, दूध, तेल, तर्पण, क्काथो, लेपो, कल्को, पंखाओ, थंडुं जळ, उनुं जळ तथा लोढोडां वगेरेनां कडायां इत्यादिक सामग्रीओ तैयार राखवी.[6] तेमज प्रीतिवाळा, दृढ मनवाळा तथा शारीरबळवाळा (सर्व कार्यो करी शके एवा) परिचारको (सेवको–सारवार करनाराओ) पण तैयार राखवा.

४ ततः प्रशस्तेषु तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रेषु दध्यक्षतान्नपानरत्नैरग्निं विप्रान् भिषजश्चार्चयित्वा कृतबलिमङ्गलस्वस्तिवाचनं लघु भुक्तवन्तं प्राङ्मुखमातुरमुपवेश्य यन्त्रयित्वा प्रत्यङ्मुखो वैद्यो मर्मशिरास्नायुसन्ध्यस्थिधमनीः परिहरन्ननुलोमं शस्त्रं निदध्यादापूयदर्शना-

---

१ केटलाएक केहे छे के "लंघनथी मांडीने विरेचन पर्यंत जे कर्म छे ते व्रणनुं पूर्वकर्म छे, पाचन तथा रोपण ए प्रधानकर्म छे अने बळने वर्णने तथा अग्निने ठीक करवां ए पश्चात्कर्म छे." केटलाएक केहेछे के "शोधन करवानुं होय तो तेमां पाचन स्नेहन तथा स्वेदन ए पूर्वकर्म छे. वमन, विरेचन, पीचकारी, नस्य तथा फस खोलवी ए प्रधानकर्म छे अने राब वगेरे अन्न देवुं ए पश्चात्कर्म छे." केटलाएक केहेछे के "व्याधिनी उत्पत्तिथी पेहेलां चयथी ते पूर्वरूप सुधीमां करवानी जे क्रिया छे ते पूर्वकर्म छे. व्याधिनी उत्पत्ति पछी करवानी जे क्रिया छे ते प्रधानकर्म छे अने व्याधि मटीगया पछी जे उपचारो करवाना छे ते पश्चात्कर्म छे."

२ अरश वगेरे निरशेष कापी नाखवा योग्य रोगो छेद्य केहेवायछे. भेदवायोग्य विद्रधि वगेरे रोगो भेद्य केहेवायछे. खोतरवायोग्य अथवा उखेडवायोग्य रोहिणी वगेरे रोगो लेख्य केहेवायछे. नाहानां मुखोवाळां शस्त्रोथी वींधवायोग्य नसो वगेरे वेध्य केहेवायछे. शोधवायोग्य नाडीव्रण वगेरे एष्य केहेवायछे. खेंचीकाढवायोग्य पथरी वगेरे आहार्य केहेवायछे. स्राव कराववायोग्य विद्रधि तथा कुष्ठ वगेरे विस्राव्य केहेवायछे अने भेदी नाखीने पछी सीवी लेवायोग्य दरदो सीव्य केहेवायछे. आप्रमाणे जो के छेद्य आदि शब्दो रोगोने लागु पडे छे तोपण अहीं अभेदोपचारथी ते ते रोगोमां लागु करवानां शस्त्रोने लागु पाड्या छे. शोधवुं तथा खेंची काहाडवुं ए बे क्रियाओ वखतपर छेदीभेदीने पण करवी पडेछे माटे तेओने शस्त्रकर्मोमां गणी छे.

३ जांबू जेवा मुखवाळो काळो तथा लांबो पथरो. आ पथरो डाम देवामां काम आवेछे. आ स्थानना बारमा अध्यायनो त्रीजो विषय जुवो.

४ पाणीथी भीजावेला सातु वगेरे तथा दूध वगेरे पदार्थो के जेओ व्रणने तृप्त करवामां उपयोगी थाय छे.

५ बारीक वाटेली औषधोनी चटणी जेवी लुगदीओ.

६ आ यंत्रादिक सामग्रीओनी अंदर केटलीक सामग्रीओ कर्मनां अंगोरूप छे अने केटलीएक सामग्रीओ जो कांई खराबी थाय तो तेने शांत करवा माटे छे.

त्सकृदेवापहरेच्छस्त्रमाशु च । महत्स्वपि च पाकेषु द्व्यङ्गुलं त्र्यङ्गुलं वा शस्त्रपदमुक्तम् ॥

जेना शरीरमां शस्त्रकर्म करवानुं होय तेने कराववानो विधि अने वैद्ये शस्त्र नाखवा तथा काहाडवानो प्रकार.

४ पछी जोशीलोकोने पूछी जे दिवसे तिथि करण तथा नक्षत्र एओनो सारो योग होय ते दिवसे शुभ मुहूर्तमां रोगीना हाथथी दहीं, अक्षत, अन्नपान तथा रत्नोवते अग्निनी, ब्राह्मणोनी तथा वैद्योनी पूजा करावी, ते रोगीनुं स्वस्तिवाचन करावी, गायनआदि मंगळकृत्य तथा बलिदान करावीने ते रोगीने हलकुं जमाडवुं. पछी रोगीने उगमणे मोहोडे बेसाडी, अंगोने चलायमान न करे एवी रीते नियमित करी (बांधी) वैद्ये पोतानुं मोहोडुं पश्चिममां राखी मर्म, रग, नस, सांधा, अस्थि तथा नाडीओ एओने बचावी (एओमां जखम नहीं थवा देतां) रोगीना शरीरनां रूवाडांओनी वळणने अनुसरी[१] परू देखाय त्यांसुधी उंडुं एकीवखतेज झडपथी नस्तर घोंची देवुं अने झडपथी पाछुं कहाडी लेवुं. वारंवार घोंचाघोंच न थाय तेम करवुं. मोटा पाकोमां पण शस्त्रवते बे आंगळनी अथवा वधारेमां वधारे त्रण आंगळनी उंडी जग्या करवी. एथी वधारे करवी नहीं.

५ तत्रायतो विशालः समः सुविभक्त इति व्रणगुणाः ॥

भवतश्चात्र ॥

आयतश्च विशालश्च सुविभक्तो निराश्रयः ।
प्राप्तकालकृतश्चापि व्रणः कर्मणि शस्यते ॥
शौर्यमाशुक्रिया शस्त्रतैक्ष्ण्यमस्वेदवेपथू ।
असंमोहश्च वैद्यस्य शस्त्रकर्मणि शस्यते ॥

केवो व्रण शस्त्रक्रियामां अनुकूल पडे तथा वैद्ये व्रणमां केवो छेद करवो, शस्त्रक्रिया करनार वैद्यमां केवा गुणो जोइए.

५ जे व्रण लांबो, विस्तीर्ण, सर्व भागोमां समपाकवाळो[२] जुदा जुदा देखाता सघळा भागोवाळो अने जीभना के दांतना संधि वगेरे अप्राप्य स्थलमां नहीं रहेलो होय ते व्रण शस्त्रक्रिया करवामां सगवड पडतो गणायछे. अथवा वैद्ये शस्त्रवते जे छेद करवो ते लांबो, पोहोळो, सरखो, नीचापणा के उंचापणा वगरनो अने जेना भागो स्पष्ट देखाय एवो करवो. आ व्रणना अथवा छेदना गुणो छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "शस्त्रक्रियामां लांबो, पोहोळो, जेना भागो स्पष्ट देखाय एवो, मर्म आदि स्थलोने नहीं पोहोंचेलो अने योग्य समये करवामां आवेलो[४] छेद वखणाय छे. वैद्ये शस्त्रक्रिया करवामां निर्भय रेहेवुं.[५] झडप राखवी, शस्त्रो तीक्ष्ण राखवां, पोताना शरीरमां पसीनो न आवे एम करवुं, ध्रुजवुं नहीं, काचा तथा पाका व्रणने समजवामां तथा समयसर प्राप्त थएली क्रि-

---

१ शस्त्र जो रूवाडांओनी वलणथी उलटुं नाखवामां आवे तो तेनी धारा रूवाडांओथी कुंठित थइ जाय छे अने तेवां शस्त्रथी व्यथा पण बहु थाय छे.

२ जो कांइक पाकेलो अने कांइक न पाकेलो होय तो शस्त्रक्रियामां अनुकूल पडतो थतो नथी.

३ जो वैद्ये करेलो व्रण आवो होय तो तेमां कल्कने के क्वाथ वगेरेने दाखल करवानुं सगवड भरेलुं थाय छे. टुंको, सांकडो, अस्पष्ट भागोवाळो, वांकोचुंको अने उंचा के नीचापणावाळो छेद अयोग्य गणायछे.

४ जे व्रण शीतकाळमां अग्निसाध्य होय ते व्रण ग्रीष्मकालमां शस्त्रसाध्य थायछे इत्यादि रीते समयनी-योग्यता समजी लेवी. अथवा व्रणनुं पाकेलापणुं ए समयनी योग्यता समजवी. काचा व्रणमां नस्तर मारवामां आवे तो परू नहीं नीकळतां रूधिर नीकळे छे अने तेथी ते व्रण कष्टसाध्य थई पडे छे.

५ वैद्य जो भयभीत होय तो साध्यव्रणमां पण छेकसुधी शस्त्रने पोहोचाडे नहीं अने केटलाक भागने अवशेषज राखी दिये.

६ झडप राखवाथी तथा हाथनी हलकाईथी रोगीने घणीवारसुधी दुःख वेठवुं पडतुं नथी.

७ शस्त्र जेम जेम वधारे तीक्ष्ण होय तेम तेम रोगीने पीडा ओछी थायछे.

यामां भूल करवी नहीं अने लोही वगेरे देखवाथी गभराई जवुं नहीं. जे वैद्यमां आवा गुणो होय ते वैद्य प्रशंसापात्र थाय छे."

६ एकेन वा व्रणेनाशुध्यमानेनान्तरा बुद्ध्याऽवेक्ष्यापरान्व्रणान्कुर्यात् ।

भवति चात्र ॥

यतो यतो गतिं विद्यादुत्सङ्गो यत्र यत्र च
तत्र तत्र व्रणं कुर्याद्यथा दोषो न तिष्ठति ॥

एकथी वधारे व्रणो (छेदो) क्यारे करवा.

६ एक व्रण करवाथी सारूं न थाय तो वैद्ये बुद्धिथी विचार करीने मध्यमां बीजा व्रणो पण करवा.

आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "आसपास पण ज्यां ज्यां परूनी गति जोवामां आवे अने ज्यां ज्यां परूए अंदरना बीजा काचा भागने फाड्यो होय त्यां त्यां पण व्रण करवो के जेथी परू रहे नहीं."

७ तत्र भ्रूगण्डशङ्खललाटाक्षिपुटौष्ठदन्तवेष्टकक्षाकुक्षिवंक्षणेषु तिर्यक्छेद उक्तः ।
चन्द्रमण्डलवच्छेदान्पाणिपादेपु कारयेत् ।
अर्द्धचन्द्राकृतींश्चापि गुदे मेढ्रे च बुद्धिमान् ॥

सरखो व्रण करवानो अपवाद.

७ भ्रकुटी, गाल, लमणा, ललाट, आंखनी पांपण, होठ, दांतनां पेढां, काख, पेट के साथळोना सांधा एओमां छेद करवानी जरूर पडे त्यारे आडो छेद करवो. हाथमां के पगमां छेद करवा होय त्यारे बुद्धिमान् वैद्ये चंद्रमंडल जेवा गोळ छेद करवा अने गुदामां के लिंगमां छेद करवा होय त्यारे अरधा चंद्र जेवा करवा.

८ अन्यथा तु शिरास्नायुच्छेदनादतिमात्रं वेदना चिराद्व्रणसंरोहो मांसकन्दीप्रादुर्भावश्चेति ॥

उपर कह्याथी उलटी रीते छेद करवामां आवे तो तेथी नुकसान.

८ उपर व्रणो (छेदो) करवानो जे प्रकार कह्यो तेथी उलटी रीते छेद करवामां आवे तो तेथी शिरा के स्नायु कपाई जवाने लीधे रोगीने अत्यंत वेदना थाय छे, व्रण लांबे काळे रूझाय छे अने अंदर मांसना कंद जेवा अंकुरो उत्पन्न थाय छ.

९ मूढगर्भोदरार्शोऽश्मरीभगन्दरमुखरोगेष्वभुक्तवतः कर्म कुर्वीत ॥

रोगीने जमाड्या पछी तेना शरीरमां शस्त्रक्रिया करवानुं कह्युं तेनो अपवाद.

९ प्रसवमां गर्भनी अटकायत, जलोदर आदि उदरना रोगो, अरश, पथरी, भगंदर अने मोहोडाना रोगो एओमां रोगीने जमाड्यावगरज शस्त्रक्रिया करवी[१]

१० ततः शस्त्रमवचार्य शीताभिरद्भिरातुरमाश्वास्य समन्तात्परिपीड्याङ्गुल्या व्रणमभिमृद्य प्रक्षाल्य कषायेण प्लोतेनोदकमादाय तिलकल्कमधुसर्पिःप्रगाढामौषधयुक्तां वर्तिं प्रणिदध्यात् । ततः कल्केनाच्छाद्य नातिस्निग्धां नातिरूक्षां घनां कवलिकां दत्वा वस्त्रपट्टेन बध्नीयाद्वेदैनारक्षोघ्नैर्धूपैर्धूपयेद्रक्षोघ्नैश्च मन्त्रै रक्षां कुर्वीत ।

शस्त्रक्रिया कर्या पछी करवाना उपचारो.

१० शस्त्रक्रिया करी लीधा पछी रोगीने शीतल जळथी आश्वासित[२] करी व्रणने चोतरफ आंगळीथी दबावी स्राव काहाडी. नाखी, शस्त्रथी करेली जग्याना समीकरणने माटे व्रणनुं अभिमर्दन करी, (आंगळीओ वते चोळी) क्वाथथी धोई

१ गर्भनी अटकायत वगेरे पांच व्याधिओमां जो कोठो अन्नथी पूर्ण होय तो यंत्रप्रयोग वगेरेथी आतुर कष्ट पामे छे अथवा मरी जाय छे अने मोहोडाना रोगोमां आहार आंगळी वगेरेना दबाणथी अथवा सूगथी बाहार नीकळे तो क्रियामां मोटी अडचण आवे छे.

२ मूर्छादिकना प्रतिबंधने माटे शीतळ जळथी आश्वासन करवुं.

नाखी, व्रणनी अंदर रहेलां जळने पोतांथी खेंची लईने ते पछी तलनो कल्क, मध तथा घी एओथी सारी पेठे खरडेली अने आ स्थानना ३६ मा अध्यायना ६ ठा विषयमां कहेलां संशोधनीय औषधोवाळी वाट व्रणनी अंदर खोसवी. पछी चिकित्सित स्थानना पेहेला तथा बीजा अध्यायमां कहेलां सद्योव्रणनां औषधोना कल्कथी (चटणीथी) ढांकी दई तेनी उपर, घणा घीवाळी नहीं तेम अत्यंत लुखी पण नहीं एवी घाटी कवलिका मूकी लुगडानो पाटो बांधी देवो. पछी वेदनाने तथा राक्षसोने टाळनारा धूपोनी धुमाडी देवी अने राक्षसोने हणनारा मंत्रोथी रक्षा करवी.

११ ततो गुग्गुल्वगुरुसर्जरसवचागौरसर्षपचूर्णैर्लवणनिम्बपत्रव्यामिश्रैराज्ययुक्तैर्धूपैर्धूपयेत् । आज्यशेषेण चास्य प्राणान् समालभेत् । उदकुम्भाच्चापो गृहीत्वा प्रोक्षयन्रक्षाकर्म कुर्यात्तद्वक्ष्यामः ॥

वेदनाने तथा राक्षसोने टाळनारा धूपो अने धूपो कर्या पछी करवानो विधि.

११ गुगळ, अगरू, राळ, वज अने धोळा सर्षप एओनां चूर्णोने लूणथी तथा लींबडानां पानडांओथी मिश्रित करी ते सर्वने घीमां कालवीने तेनी धुमाडी देवी अने पछी ते धूपोने कालववाना वासणमां जे घी खरडाई रह्युं होय ते घीथी दरदीनां हृदय आदि अंगो के जेओ प्राणने रेहेवानां स्थानको छे तेओपर अभ्यंग करवो. पछी व्रणवाळा दरदीने लोही तथा परू वगेरेनो पात्र होवाने लीधे राक्षसोना भयनो संभव छे एटला माटे जळना कुंभमांथी जळ लई प्रोक्षण करतां करतां (छाटतां छाटतां) नीचे प्रमाणे मंत्रो बोली रक्षानी क्रिया करवी.

१२ कृत्यानां प्रतिघातार्थं तथा रक्षोभयस्य च ।
रक्षाकर्म करिष्यामि ब्रह्मा तदनुमन्यताम् ॥
नागाः पिशाचा गन्धर्वाः पितरो यक्षराक्षसाः ।
अभिद्रवन्ति ये ये त्वां ब्रह्माद्या घ्नन्तु तान्सदा॥
पृथिव्यामन्तरीक्षे च ये चरन्ति निशाचराः ।
दिक्षु वास्तुनिवासाश्च पान्तु त्वां ते नमस्कृताः ॥
पान्तु त्वां मुनयो ब्राह्मा दिव्या राजर्षयस्तथा ।
पर्वताश्चैव नद्यश्च सर्वाः सर्वेऽपि सागराः ॥
अग्नी रक्षतु ते जिह्वां प्राणान्वायुस्तथैवच ।
सोमो व्यानमपानं ते पर्जन्यः परिरक्षतु ॥
उदानं विद्युतः पान्तु समानं स्तनयित्नवः ।
बलमिन्द्रो बलपतिर्मनुर्मन्ये मतिं तथा ॥
कामांस्ते पान्तु गन्धर्वाः सत्वमिन्द्रोऽभिरक्षतु।
प्रज्ञां ते वरुणो राजा समुद्रो नाभिमण्डलम् ॥
चक्षुः सूर्यो दिशः श्रोत्रे चन्द्रमाः पातु ते मनः।
नक्षत्राणि सदा रूपं छायां पान्तु निशास्तव ।
रेतस्त्वाप्याययन्त्वापो रोमाण्योषधयस्तथा ।
आकाशं खानि ते पातु देहं तव वसुंधरा ॥
वैश्वानरः शिरः पातु विष्णुस्तवपराक्रमं ।
पौरुषं पुरुषश्रेष्ठो ब्रह्मात्मानं ध्रुवो भ्रुवौ ।
एता देहे विशेषेण तव नित्या हि देवताः ।
एतास्त्वां सततं पान्तु दीर्घमायुरवाप्नुहि ॥

---

१ कपडां अथवा रूनां पोतांथी. हाल तेने बदले वादळीनो पण उपयोग थायछे.

२ केटलाएक केहे छे के औषधोना स्वरसने नीकळी जतो अटकाववा सारू चिकित्सित स्थानना त्रीजा अध्यायमां कह्या प्रमाणे खाखरा तथा उंबरा वगेरेनां छाल तथा पानडां वगेरेथी करेली पट्टी कवलिका केहेवाय छे. केटलाएक केहे छे के बेवडा के चोवडा कोमळ कपडानी पट्टी कवलिका केहेवाय छे अने केटलाएक केहे छे के शेकेला जव अने साथुनी घी नाखीने बनावेली लोपरी कवलिका केहेवाय छे.

३ राल तथा लूण वगेरे पदार्थो वेदना मटाडे छे अने वज वगेरे पदार्थो राक्षसोने हणे छे. आ धुमाडीनो मुख्य हेतु हवा शुद्ध करवानो छे जेथी हवामां उडता झीणा जंतुओ व्रणमां पेसवा पामे नहीं.

४ फक्त व्रणनेज धुमाडी देवी एम समजवुं नहीं पण दुर्गंध टाळवाने माटे अने मक्षिकादिकना परिहार माटे आतुरनां शयनादिकने पण धुमाडी देवी. गाम

स्वस्ति ते भगवान् ब्रह्मा स्वस्ति देवाश्च कुर्वताम्।
स्वस्ति ते चन्द्रसूर्यौ च स्वस्ति नारदपर्वतौ ॥
स्वस्त्यग्निश्चैव वायुश्च स्वस्ति देवाः सहेन्द्रगाः।
पितामहकृता रक्षा स्वस्त्यायुर्वर्द्धतां तव ॥
ईतयस्ते प्रशाम्यन्तु सदा भव गतव्यथः।
इति स्वाहा ॥
एतैर्वेदात्मकैर्मन्त्रैः कृत्याव्याधिविनाशनैः।
मयैवं कृतरक्षस्त्वं दीर्घमायुरवाप्नुहि ॥

रक्षानी क्रियानो विधि.

१२ राक्षसोना भयना प्रतिघातने माटे.अने कोप पामेला मंत्रशास्त्री पुरुषे करेला अभिचार प्रयोगथी उत्पन्न थएली कृत्या नामनी राक्षसीओनो प्रतिघात करवाने माटे हुं रक्षानी क्रिया करीश. आ क्रियानो ब्रह्मा स्वीकार करजो. नागो, पिशाचो, गंधर्वो, पितृओ तथा ब्रह्मराक्षसो एओमांना जे जे कोई तने पीडता होय तेओने ब्रह्मा सर्वदा नष्ट करी नाखजो. जे राक्षसो पृथ्वीमां, अंतरिक्षमां तथा दिशाओमां फरे छे तेओ अने जे राक्षसो आ घरनी अंदर रेहेता होय तेओने नमस्कार करीए छीए माटे तेओ तारूं रक्षण करजो. मुनिओ पोताना ब्रह्मतेजथी तारूं रक्षण करजो. सघळा दिव्य राजर्षिओ पण तारूं रक्षण करजो. सर्वे पर्वतो, नदीओ अने समुद्रो पण तारूं रक्षण करजो. अग्नि तारी जीभनी, वायु तारा प्राणवायुनी, चंद्र व्यानवायुनी, इंद्र अथवा वृष्टिवाळो मेघ अपानवायुनी, वीजळीओ उदानवायुनी, गाजता मेघो समानवायुनी, बळनो पति इंद्र बळनी, प्रजापति डोकना पाछला भागमां रहेली बे शिराओनी तथा बुद्धिनी, गंधर्वो इच्छेला विषयोनी, इंद्र सत्वगुणनी, वरुण राजा ज्ञानशक्तिनी, समुद्र नाभिमंडळनी, सूर्य चक्षुइंद्रियनी, दिशाओ श्रोत्रइंद्रियनी, चंद्र चित्तनी, नक्षत्रो सौंदर्यनी अने रात्रिओ छाया नामनी प्रभा के जे समीपमां जोवामां आवे छे तेनी रक्षा करजो. जळ तारा वीर्यने वृद्धि आपजो. ओषधिओ तारां रूवाडांओनी, आकाश स्रोतोनी, पृथ्वी देहनी, वैश्वानर मस्तकनी, विष्णु सामर्थ्यनी, नारायण मेढ्रनी, ब्रह्मा जीवनी, अने ध्रुव भ्रकुटिओनी रक्षा करजो. उपर कहेला देवताओ के जेओ तारा शरीरमां सर्वदा रहे छे तेओ तारूं निरंतर रक्षण करजो अने तेथी तुं लांबा आयुष्यने पामजे. ऐश्वर्यवाळा ब्रह्मा तारूं कल्याण करजो. देवताओ तारूं मंगळ करो. चंद्र तथा सूर्य अने नारदमुनि तथा पर्वतमुनि तारूं कल्याण करो. अग्नि, वायु अने इंद्रनी साथे चालनारा देवताओ तारूं मंगळ करो. तारी आ रक्षा ब्रह्माए करेली छे. तारूं मंगळ अने आयुष्य वृद्धि पामजो. तने ईतिओ[1] शांत थई जजो. तुं सर्वदा व्यथाथी रहित रेहेजे. स्वाहा. अभिचारथी उत्पन्न थएली राक्षसीओने तथा रोगोने नष्ट करनारा आ वेदमय मंत्रोथी मे जेनो रक्षणविधि करेलो छे एवो तुं लांबा आयुष्यने प्राप्त थजे.

१३ ततः कृतरक्षमातुरमागारं प्रवेश्याचारिकमादिशेत्। ततस्तृतीयेऽहनि विमुच्यैवं बध्नीयाद्वस्त्रपट्टेन न चैनं त्वरमाणोऽपरेद्युर्मोक्षयेत्। द्वितीयदिवसे परिमोक्षणाद्विग्रथितो व्रणश्चिरादुपसंरोहति तीव्ररुजश्च भवति। अत ऊर्ध्वं दोषकालबलादीनवेक्ष्य कषायालेपनबन्धाहाराचारान्विदध्यात्। न चैनं त्वरमाणः सान्तर्दोषं रोपयेत् स ह्यल्पेनाप्यपचारेणाभ्यन्तरमुत्सङ्गं कृत्वा भूयोऽपि विकरोति

भवन्ति चात्र ॥
तस्मादन्तर्बहिश्चैव सुशुद्धं रोपयेद्व्रणम्।
रूढेऽप्यजीर्णव्यायामव्यवायादीन्विवर्जयेत्।
हर्षं क्रोधं भयं चापि यावदास्थैर्यसम्भवात् ॥
हेमन्ते शिशिरे चैव वसंते चापि मोक्षयेत्।
त्र्यहाद्द्व्यहाच्छरद्ग्रीष्मवर्षास्वपि च बुद्धिमान् ॥

[1] अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः।
प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः ॥

अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टीडो, उंदरो, पोपटो अने देशमां आवेली दुश्मनोनी फोज ए छ ईतिओ केहेवाय छे.

रक्षा कर्या पछीनी इतिकर्त्तव्यता.

१३ उपर प्रमाणे रक्षा कर्या पछी रोगीने घरमां प्रवेश करावी आ स्थानना 'व्रणितोपासनीय' नामना १९ मा अध्यायमां कह्या प्रमाणे आहार विहार करवानी आज्ञा करवी. पछी त्रीजे दिवसे पाटो छोडी, एवीज रीते (प्रथम कह्याप्रमाणेज) क्वाथथी व्रणने धोई साफ करी, वाट मुकी कल्कथी ढांकी, उपर लोपरी मुकी, पाटो बांधवो. कदी पण उतावळ करीने बीजे दिवसे पाटो छोडवो नहीं. बीजे दिवसे पाटो छोडवाथी व्रण कचथाईने अंकुरित नहीं थतां ग्रंथि जेवो थई जाय छे अने तेथी घणे काळे भींय आववाथी रूझाय छे तथा तीव्र पीडा करेछे. त्रीजा दिवस पछी वात आदि दोषो, हेमंतादि काळ, हीन मध्यम तथा उत्तम बळ अने अवस्था इत्यादिकनी परीक्षा करीने क्वाथ, आलेपन, पाटा, आहार तथा आचरण इत्यादिकनी गोठवण करवी. ज्यांसुधी व्रणनी अंदर जरा पण परूनो संबंध रेहेतो होय त्यांसुधी तेने उतावळ करी मांस आदिनी भरती लावीने रुझाववो नहीं. कारण के एवी रीतनी जरा पण विरुद्ध क्रिया थई जाय तो ते व्रण अंदरना भागमां कोतर पाडीने पाछो पण वकरे छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के "क्रियामां जरा पण भूल थई जाय तो व्रण वकरे छे एटला माटे अंदर तथा बाहार पण व्रणनां वर्ण, रस, स्थान अने गंध अत्यंत शुद्ध थई जाय त्यारे ते व्रणने भरवानो उपाय करवो. व्रण भराया पछी पण अजीर्ण, कसरत तथा मैथुन इत्यादिकनो त्याग करवो. ज्यांसुधी तमाम रुझाईने स्थिरता न थई होय त्यांसुधी हर्ष, क्रोध अने भय एओनो पण त्याग करवो. बुद्धिवान् वैद्ये हेमंत, शिशिर अने वसंत ए त्रण ऋतुओमां त्रण दिवस पछी पाटो छोडवो अने शरद्, ग्रीष्म तथा वर्षा ए त्रण ऋतुओमां बे दिवसे पण पाटो छोडवो." (हेमंत. शिशिर अने वसंत ए त्रण ऋतुओ शीतकालरूप होवाथी तेओमां व्रणना तुरत पाकी जवानी धास्ती नथी तेथी त्रण दिवस पछी पाटो छोडवानुं कह्युं छे. शरद्, ग्रीष्म तथा वर्षा ए त्रण ऋतुओ उष्णकालरूप होवाथी तेओमां व्रणना तुरत पाकी जवानी धास्ती छे तेथी बे दिवस पछी पाटो छोडवानुं कह्युं छे, पण ध्यानमां राखवुं के "पैत्तिक व्रण होय तो हेमंतमां तथा शिशिरमां पण योग्य विचार करीने मोडो के वेहेलो पाटो छोडवो अने वसंतमां वैशाख उष्ण छे तेथी कोई वखते बे दिवसे पण छोडवो. पैत्तिक व्रणमां एक दिवसमां बे वार पण पाटो बंधाय छे. शरद्, ग्रीष्म तथा वर्षा एओमां बे दिवसे पाटो छोडवानो विधि छे ते छतां पण योग्य जणाय तो एक दिवसमां पण बे वार पाटो बांधवो." मूळमां बे अपि शब्दो छे अने त्रण च शब्दो छे तेथी आ सघळा अर्थो निकळे छे.)

१४ अतिपातिषु रोगेषु नेच्छेद्विधिमिमं भिषक्
प्रदीप्तागारवच्छीघ्रं तत्र कुर्यात् प्रतिक्रियाम् ॥

सघळी सामग्रीओ तैयार कर्या पछी शस्त्रकर्म करवानुं कह्युं छे तेनो तथा पाटा बांधवाना समयो वगेरे नियमोनो अपवाद.

१४ जे रोगो झडपदार होय तेओमां तो वैद्ये सघळी सामग्रीओ तैयार करवानो वखत नहीं काहाडतां अने पाटा बांधवाना समयो वगेरेना नियमो उपर पण ध्यान नहीं आपतां, जेम बळवा लागेला घरनी हरएक प्रकारोथी

१ आथी त्रण दिवसेज छोडवो अने बे दिवसेज छोडवो एवो नियम कर्यो छे एम समजवुं नहीं. वास्तविक अभिप्राय ए छे के हेमंत आदिना अने शरद् आदिना उत्कर्षोने तथा अपकर्षोने जोईने व्रणना पाटा छोडवा.

२ ज्यां शस्त्रक्रियाने विलंब थतां माठो परिणाम आववानो संभव होय.

शांति करवामां आवे छे तेम झडपथी वृद्धि पामनारा रोगोनी शांति करवाना उपायोज शीघ्रताथी करवा.

१५ या वेदनाशस्त्रनिपातजाता
तीव्रा शरीरं प्रदुनोति जन्तोः ।
घृतेन सा शान्तिमुपैति सिक्ता
कोष्णेन यष्टीमधुकान्वितेन

शस्त्र लगाव्याथी थती तीव्र वेदनाने शांत करवानो उपाय.

१९ शस्त्र लगाव्याथी जे तीव्र वेदना थाय छे ते वेदना माणसना शरीरने बहु परिताप आपे छे. ए वेदनाने शांत करवानो उपाय ए छे के घीमां जेठीमध नांखी ते घीने जरा गरम करीने तेनुं ते व्रणनी उपर सेचन करवुं.

छठा अध्याय.

१ अथात ऋतुचर्याध्यायं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'ऋतुचर्या' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जेप्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ कालो हि नाम भगवान् स्वयम्भूरनादिमध्यनिधनोऽत्र रसव्यापत्संपत्तीजीवितमरणे च मनुष्याणामायत्ते स सूक्ष्मामपि कलां न लीयत इति कालः संकलयति कालयति वा भूतानीति कालः । तस्य संवत्सरात्मनो भगवानादित्यो गतिविशेषेणाक्षिनिमेषकाष्ठाकलामुहूर्ताहोरात्रपक्षमासर्त्वयनसंवत्सरयुगप्रविभागं करोति ॥ तत्र लघ्वक्षरोच्चारणमात्रोऽक्षिनिमेषः । पंचदशाक्षिनिमेषाः काष्ठा । त्रिंशत्काष्ठाः कला । विंशतिकलो मुहूर्त्तः कलादशभागश्च । त्रिंशन्मुहूर्तमहोरात्रम् । पंचदशाहोरात्राणि पक्षः । स च द्विविधः शुक्लः कृष्णश्च तौ मासः॥

वर्षरूप काळनुं तथा तेना मासपर्यंत अवयवोनुं निरूपण.

२ काळ ए महासमर्थ पदार्थ छे, कोइए उत्पन्न करेलो नथी अने आदिथी मध्यथी तथा अंतथी रहित छे. रसोनुं (रसवाळा पदार्थोनुं) वधवुं तथा घटवुं अने माणसोनुं जीववुं तथा मरवुं काळने आधीन छे. ए पदार्थ जरावार पण खोभरतो नथी तेथी, अथवा संहारवाथी सर्वे प्राणिओने एकठां करी नाखेछे तेथी अथवा प्राणीओने सुख दुःखोथी जोडी देछे तेथी, अथवा सर्वनो संक्षेप करी नाखेछे तेथी अथवा सर्वने मरणना समीपमां लई जाय छे तेथी **काळ** केहेवाय छे. मोटी शक्तिवाळा सूर्यनारायण पोतानी गतिना विशेषथी (उदयास्तथी) ए वर्षरूप शरीरवाळा काळना अक्षिनिमेष, काष्ठा, कळा, मुहूर्त्त, अहोरात्र, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर अने युग ए नामना विभागो करे छे. ए विभागोमां एक लघु स्वरनुं उच्चारण करवामां जेटलो वखत लागे छे तेटलो वखत **अक्षिनिमेष** केहेवाय छे. पंदर अक्षिनिमेष थाय त्यारे **काष्ठा** केहेवाय छे. त्रीश काष्ठा थाय त्यारे कळा केहेवाय छे. वीश कळा थाय अथवा मतांतर त्रण काष्ठा थाय त्यारे **मुहूर्त्त** केहेवाय छे. त्रीश मुहूर्त्त थाय त्यारे **अहोरात्र** (दिवस तथा रात्रि मळीने एक अहोरात्र गणाय छे.). केहेवाय छे

१ आ पारिग्राफनो विषय धन्वंतरिए कहेला श्लोकोमांज छे तो पण जुदो पाडवो योग्य जणायाथी जुदो पाड्यो छे.

२ आ पारिग्राफनो विषय पण धन्वंतरिए कहेला श्लोकोमांज छे तो पण जुदो पाडवो योग्य जणायाथी जुदो पाड्यो छे.

३ ते ते ऋतुओमां वर्त्तवाना प्रकारो विषेनो.

४ काळनो धर्म बतावीने हवे कर्म बतावे छे के जेथी काळनुं चिकित्सामां उपयोगीपणुं जणाय.

५ भूत, भविष्य तथा वर्त्तमान दिवसोना, ऋतुओना तथा बीजा वर्षोना पण धर्मो एक वर्षमां आवी जाय छे माटे काळने वर्षरूप शरीरवाळो कह्यो छे.

अने पंदर अहोरात्र थाय त्यारे पक्ष केहेवाय छे. शुक्लपक्ष अने कृष्णपक्ष ए रीते बे प्रकारनो पक्ष छे. बे पक्ष थाय त्यारे एक मास केहेवाय छे.[1]

३ तत्र माघादयो द्वादश मासा द्विमासिकमृतुं कृत्वा षडृतवो भवन्ति । ते शिशिरवसन्तग्रीष्मवर्षाशरद्धेमन्ताः । तेषां तपस्तपस्यौ शिशिरः । मधुमाधवौ वसन्तः । शुचिशुक्रौ ग्रीष्मः । नभोनभस्यौ वर्षाः । इषोर्जौ शरत् । सहःसहस्यौ हेमन्त इति ॥ त एते शीतोष्णवर्षलक्षणाश्चन्द्रादित्ययोः कालविभागकरत्वादयने द्वे भवतो दक्षिणमुत्तरं च । तयोर्दक्षिणं वर्षाशरद्धेमन्तास्तेषु भगवानाप्यायते सोमोऽम्ललवणमधुराश्च रसा बलवन्तो भवन्त्युत्तरोत्तरं च सर्वप्राणिनां बलमभिवर्द्धते । उत्तरं च शिशिरवसन्तग्रीष्मास्तेषु भगवानाप्यायतेऽर्कस्तिक्तकषायकटुकाश्च रसा बलवन्तो भवन्त्युत्तरोत्तरं च सर्वप्राणिनां बलमपहीयते

भवति चात्र

शीतांशुः क्लेदयत्युर्वीं विवस्वाञ्छोषयत्यपि ।
तावुभावपि संश्रित्य वायुः पालयति प्रजाः ॥

ऋतुओनुं, अयनोनुं तथा तेओमां रसोना अने बळना वधवा घटवानुं निरूपण.

३ बार मासो बबे मासना समुदायरूप एक एक ऋतुने बनावीने छ ऋतुओरूप थाय छे. शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् अने हेमंत ए ऋतुओ छे. एओमां माघ अने फाल्गुन ए बे मासो शिशिरऋतु केहेवाय छे. चैत्र अने वैशाख ए बे मासो वसंतऋतु केहेवाय छे. ज्येष्ठ अने आषाढ ए बे मासो ग्रीष्मऋतु केहेवाय छे. श्रावण अने भाद्रपद ए बे मासो वर्षाऋतु केहेवाय छे. आश्विन अने कार्तिक ए बे मासो शरद्ऋतु केहेवाय छे अने मार्गशीर्ष तथा पौष ए बे मासो हेमंतऋतु केहेवाय छे.[2] शीत, उष्ण अने वरसादरूपी लक्षणोवाळी ए छ ऋतुओ चंद्रना अने सूर्यना काळोनो विभाग करनारी होवाथी दक्षिणायन अने उत्तरायण ए नामना बे अयनोरूप थाय छे.[3] ए अयनोमां वर्षा, शरद् अने हेमंत ए त्रण ऋतुओ दक्षिणायनरूप छे. ए त्रण ऋतुओमां उत्तरोत्तर चंद्रदेव अधिक बळ पामे छे. खाटो, खारो तथा मधुर ए त्रण रसो पण उत्तरोत्तर अधिक बळवाळा थाय छे[4] अने प्राणिओनुं बळ पण उत्तरोत्तर वृद्धि पामे छे. शिशिर, वसंत अने ग्रीष्म ए त्रण ऋतुओ उत्तरायणरूप छे. ए त्रण ऋतुओमां सूर्यनारायण अधिक बळ पामे छे. कडवो, तूरो अने तीखो ए त्रण रसो पण अधिक बळवाळा थाय छे[5] अने सर्व प्राणीओनुं बळ उत्तरोत्तर ओछुं थतुं जाय छे.

---

१ शंका—अहीं तो लघु स्वरना उच्चारणादिकथी निमेषादिक विभागो कह्या त्यारे 'सूर्यनारायण पोतानी गतिना विशेषथी निमेषादिक विभागो करे छे एम केहेवुं केम संभवे? समाधान—ज्योतिषी लोको सूर्यनी गति उपरथी पण शंकुनी छायाना आश्रयथी निमेषादिना माप करेछे माटे कशो दोष नथी. शंकुनी छायानो माप सर्वलोकप्रसिद्ध नथी तेथी अहिं तेने छोडी दइने लोकप्रसिद्ध हिसाबज लीधो छे. (डल्हन.)

२ शिशिरादिक विभाग रसोना तथा बळना न्यूनाधिकपणा उपरथी तथा तेओनी निष्पत्ति उपरथी चिकित्सामां उपयोगी छे माटे कह्यो छे. चरकमां पण सूत्रस्थानना तस्याशितीय नामना छट्ठा अध्यायमां रसनी तथा बळनी निष्पत्ति देखाडवाने माटेज शिशिरादिक ऋतुओ देखाडेली छे.

३ दक्षिणायन चंद्रना काळनो अने उत्तरायण सूर्यना काळनो विभाग करे छे. जोके ऋतुओनां नामोमां उत्तरायणनी ऋतुओ प्रथम गणावी छे तोपण अहीं दक्षिणायननुं प्रथम व्याख्यान् आप्युं छे तेनुं कारण ए छे के दक्षिणायन विसर्ग (स्नेहने तथा बळने देवानो काळ) छे अने बळने वधारनार छे.

४ वर्षाऋतुमां खाटा रसनुं, शरद्ऋतुमां खारा रसनुं अने हेमंत ऋतुमां मधुर रसनुं बळ उत्तरोत्तर वधे छे.

५ शिशिरमां कडवा रसनुं, वसंतमां तूरा रसनुं अने ग्रीष्ममां तीखा रसनुं बळ उत्तरोत्तर वधे छे.

आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "चंद्र पृथ्वीने आर्द्र करे छे, सूर्य पृथ्वीने सुकावे छे अने वायु ए बन्नेना आश्रयथी प्रजाओनुं पाळन करे[1] छे."

४ अथ खल्वयने द्वे युगपत्संवत्सरो भवति । ते तु पंच युगमिति संज्ञां लभन्ते । स एष निमेषादियुगपर्यन्तः कालश्चक्रवत्परिवर्तमानः कालचक्रमुच्यत इत्येके ॥

वर्षनुं, युगनुं तथा कालचक्रनुं निरूपण.

४ दक्षिणायन अने उत्तरायण ए बन्ने मळीने वर्ष थाय छे अने एवां पांच वर्षो थाय त्यारे ते सर्व वर्षो मळीने 'युग' एवा नामने प्राप्त थाय छे. चक्रनी पेठे फर्या करतो निमेषथी मांडीने युग-सुधीनो आ काळ 'कालचक्र' केहेवाय छे एम केटलाएक केहे छे.

५ इह[2] तु वर्षाशरद्धेमन्तवसन्तग्रीष्मप्रावृषः षडृतवो भवन्ति दोषोपचयप्रकोपोपशमनिमित्तम् । ते तु भाद्रपदाद्येन द्विमासिकेन व्याख्याताः । तद्यथा । भाद्रपदाश्वयुजौ वर्षाः । कार्तिकमार्गशीर्षौ शरत् । पौषमाघौ हेमन्तः । फाल्गुनचैत्रौ वसन्तः । वैशाखज्यैष्ठौ ग्रीष्मः । आषाढश्रावणौ प्रावृडिति ॥

आ अध्यायमां ऋतुओनो जुदो क्रम लेवो.

५ आ अध्यायमां तो वर्षा, शरद्, हेमंत, वसंत, ग्रीष्म अने प्रावृष् ए छ ऋतुओ समजवी के जेओना अनुसारथी वात आदि दोषोनां उपचय, (वृद्धि) प्रकोप अने उपशम समजाववामां आवशे. ए ऋतुओ भाद्रपद आदि बबे मासोथी थाय छे. जेम के भाद्रपद अने आश्विन ए बे मासो वर्षाऋतु[3] छे. कार्तिक अने मार्गशीर्ष ए बे मासो शरद्ऋतु छे. पौष अने माघ ए बे मासो हेमंतऋतु छे. फाल्गुन अने चैत्र ए बे मासो वसंतऋतु छे. वैशाख अने ज्येष्ठ ए बे मासो ग्रीष्मऋतु छे अने आषाढ तथा श्रावण ए बे मासो प्रावृट्[4]ऋतु छे.

६ तत्र वर्षास्वोषधयस्तरुण्योऽल्पवीर्या आपश्चाप्रसन्नाः क्षितिमलप्रायास्ता उपयुज्यमाना नभसि मेघावतते जलप्रक्लिन्नायां भूमौ क्लिन्नदेहानां प्राणिनां शीतवातविष्टब्धाग्नीनां विदह्यन्ते विदाहात् पित्तसंचयमापादयन्ति स संचयः शरदि प्रविरलमेघे वियत्युपशुष्यति पङ्केऽर्ककिरणप्रविलापितः पैत्तिकान् व्याधीञ्जनयति । ता एवौषधयः कालपरिणामात्परिणतवीर्या बलवत्यो हेमन्ते भवन्त्यापश्च प्रसन्नाः स्निग्धा अत्यर्थं गुर्व्यस्ता उपयुज्यमाना मन्दकिरणत्वाद्भानोः सतुषारपवनोपष्टम्भितदेहानां देहिनामविदग्धाः स्नेहाच्छैत्याद्गौरवादुपलेपाच्च श्लेष्मणः संचयमापादयन्ति स संचयो वसन्तेऽर्करश्मिप्रविलापित ईषत्स्तब्धदेहानां देहिनां श्लैष्मिकान् व्याधीञ्जनयति । ता एवौषधयो निदाघे निःसारा रूक्षा अतिमात्रं लघ्व्यो भवन्त्यापश्च ता उपयुज्यमानाः सूर्यप्रतापोपशोषितदेहानां देहिनां रौक्ष्याल्लघुत्वाद्वैशद्याच्च वायोः संचयमापादयन्ति स सं-

१ वायु चंद्रना आश्रयथी जगतनी वृद्धि करे छे अने सूर्यना आश्रयथी शोषण करे छे के जेथी ते ते काळ प्रमाणे रसोनी गोठवण बनीने प्रजानुं रक्षण थाय छे.

२ डल्हने 'इह' ए मूळनां पदनो आ 'अध्यायमां' एवो अर्थ लख्यो छे पण केटलाएक एम माने छे के सघळा आयुर्वेदमां ऋतुओनो आ क्रमज लेवो. वास्तविक ए छे के प्रथमनो क्रम रसनी तथा बळनी वृद्धि तथा हानि बताववाने माटे छे अने आ क्रम दोषोना संचय प्रकोप तथा उपशम बताववाने माटे छे.

३ संचयना वखतमां पण जो रोग झडपदार जणाय तो संशोधन करवुं एम जणाववाने माटे पित्तना संचयवाळी वर्षाऋतु प्रथम लीधी छे.

४ झाझा वरसादवाळी प्रावृष् अने ओछा वरसादवाळी पण झाझा वरसादना अनुबंधवाळी वर्षा गणी छे.

चयः प्रावृषि चात्यर्थं जलोपक्लिन्नायां भूमौ क्लिन्नदेहानां प्राणिनां शीतवातवर्षेरितो वातिकान् व्याधीञ्जनयति । एवमेष दोषाणां संचयप्रकोपहेतुरुक्तः ॥

ऋतुओमां दोषोना उपचय अने प्रकोप थवानां कारणो.

६ तेओमां वर्षाऋतुमां घउं चणा वगेरे ओषधिओ नवीन थाय छे तथा थोडी शक्तिवाळी होय छे अने जळ पण अस्वच्छ तथा जेओमां पृथ्वीनो मल झाझो होय एवां होय छे. आकाश वादळांओथी घेराएलुं तथा पृथ्वी जळथी कचकचती होवाने लीधे जेओनां शरीरो आर्द्र थएलां होय छे तथा जेओनो जठराग्नि शीतथी कोप पामेला अंदरना वायुए मंद करी नाखेलो होय छे एवां प्राणीओ ए नवी तथा ओछी शक्तिवाळी औषधिओनो अने मेलां जळनो उपयोग करे छे तेथी ते औषधिओ तथा जळ प्राणीओनां शरीरोमां खाटो पाक पामे छे अने तेवो पाक पामवाथी पित्तनो संचय करे छे. ए संचय ज्यारे शरदृऋतुमां आकाशनां वादळां पांखां पडी जाय छे अने पृथ्वीपरनो कादव सुकावा लागे छे त्यारे सूर्यनी किरणोथी पीगळीने पित्तसंबंधी रोगोने उत्पन्न करे छे. एज औषधिओ हेमंतमां काळना फेरफारने लीधे उत्पन्न थएली अधिक शक्तिवाळी तथा शरीरनी पुष्टि करे एवी थाय छे अने जळ पण स्वच्छ, स्निग्ध तथा अत्यंत भारे थाय छे. ए समयमां सूर्यनी किरणो मंद थई जवाने लीधे हिमथी आर्द्र थएला पवने जेओनां शरीरोने पुष्टि आपी होय छे एवां प्राणीओ ते औषधिओनो अने ते जलोनो उपयोग करे छे तेथी ते औषधिओ तथा जळ प्राणीओनां शरीरोमां पूर्ण परिपाक नहीं पामवाने लीधे स्निग्धपणाथी, शीतपणाथी, भारेपणाथी तथा चोपड़ाई रेहेवाथी कफनो संचय करे छे. पछी ए संचय वसंतऋतुमां जरा भारे पडेलां शरीरोवाळा प्राणीओनां शरीरोमां सूर्यनी किरणोथी पीगळीने कफसंबंधी व्याधिओने उत्पन्न करे छे. एज ओषधिओ तथा जळ ग्रीष्ममां निस्सार, रूक्ष अने अत्यंत हलकापणांवाळां थई जाय छे. ए समयमां सूर्यना तापे सुकावी नाखेलां शरीरोवाळां प्राणीओ ते औषधिओनो अने ते जळनो उपयोग करे छे तेथी ते औषधिओ अने जळ पोताना रूक्षपणाथी, हलकापणाथी तथा शुष्कपणाथी वायुनो संचय करे छे. पछी ए संचय प्रावृषृऋतुमां अत्यंत जळथी पलळेलां प्राणीओनां शरीरोमां शीत पवनथी अने वरसादथी प्रेराईने वायुसंबंधी व्याधिओने उत्पन्न करे छे. आ प्रमाणे दोषोना संचयनां अने प्रकोपनां कारणो कह्यां.

७ तत्र वर्षाहेमन्तग्रीष्मेषु संचितानां दोषाणां शरद्वसन्तप्रावृट्सु च प्रकुपितानां निर्हरणं कर्तव्यम्

प्रकोप पामेला दोषोनुं संशोधन करवानो सामान्य समय.

७ वर्षामां संचय पामी शरदमां प्रकोप पामेला पित्तनुं शरदृऋतुमां संशोधन करवुं. हेमंतमां

---

१ जो के वर्षाऋतुमां घउं आदि धान्यो जूनांज होय छे तोपण पोतामां सूक्ष्म जळ पेसी जवाने लीधे तेओ कुणां थइ जाय छे, कांईक शक्तिवगरनां थई जाय छे अने कोंटा फूटवा जेवां उपसेलां थई जाय छे तेथी तेओने नवीन तथा अल्पशक्तिवाळां कह्यां छे. शाक आदि औषधीओ तो नवीनज थाय छे.

२ संचय एटले संघातरूपवृद्धि. केटलाएक केहे छे के संचय एटले पोताना स्थानमां वृद्धि.

३ वसंतमां सूर्यनो ताप अति तीक्ष्ण होतो नथी तेथी कफनुं पीगळवुं थाय पण शोषण न थाय.

४ जो के वायु शीत होवाने लीधे उष्णतावाळी ग्रीष्मऋतुमां तेनो संचय थवो संभवतो नथी तोपण औषधीओना रूक्षपणाथी वायुनी रूक्षता वधे छे एज तेनो संचय समजवो.

५ 'प्र' शब्दथी सूचव्युं छे के जे माणसोने दोष बहुज होय तेओनेज संशोधन देवुं.

संचय पामी वसंतमां प्रकोप पामेला कफनुं वसंतमां संशोधन करवुं अने ग्रीष्ममां संचय पामी वर्षामां प्रकोप पामेला वायुनुं वर्षामां संशोधन करवुं.[1] (संशोधन एटले खेचीने शरीरमांथीं बाहार काहाडवुं.)

८ तत्र पैत्तिकानां व्याधीनामुपशमो हेमन्ते श्लैष्मिकाणां निदाघे वातिकानां घनात्यये स्वभावत एव । त एते संचयप्रकोपोपशमा व्याख्याताः ॥

व्याधिओनो स्वाभाविक उपशम थवानो काळ.

८ तेमां पित्तसंबंधी व्याधिओनो हेमंतमां[2] स्वाभाविक रीते उपशम थाय छे, कफसंबंधी व्याधिओनो ग्रीष्ममां स्वाभाविक[3] रीते उपशम थाय छे अने वायुसंबंधी व्याधिओनो शरद्मां स्वाभाविक[4] रीते उपशम[5] थाय छे. आ संचय, प्रकोप अने उपशम ए त्रणनुं व्याख्यान (पांचमाथी आठमा विषय सुधीमां) करवामां आव्युं.

९ तत्र पूर्वाह्णे वसन्तस्य लिङ्गं मध्याह्ने ग्रीष्मस्यापराह्णे प्रावृषः प्रदोषे वार्षिकं शारदमर्द्धरात्रे प्रत्युषसि हैमन्तमुपलक्षयेत् । एवमहोरात्रमपि वर्षमिव शीतोष्णवर्षलक्षणं दोषोपचयप्रकोपोपशमैर्जानीयात् ॥

आखा वर्षनी पेठे एक अहोरात्रमां पण सघळी ऋतुओनां चिन्हो एटले दोषोना संचय, प्रकोप अने उपशम.

९ एक अहोरात्रना पूर्वाह्णमां (मध्याह्नथी पेहेलाना भागमां) वसंतनुं चिन्ह थाय छे, मध्यान्हमां ग्रीष्मनुं चिन्ह थाय छे, अपराह्णमां (मध्यान्हपछीना भागमां) प्रावृष्नुं चिन्ह थाय छे, प्रदोषमां वर्षानुं चिन्ह थाय छे, अधराते शरद्नुं चिन्ह थाय छे अने परोढीए हेमंतनुं चिन्ह थाय छे ए जाणी लेवुं. आप्रमाणे अहोरात्रने पण दोषोना संचय, प्रकोप अने उपशम थवा उपरथी शीत, उष्ण अने वरसादरूपी लक्षणवाळां आखा वर्ष जेवुं समजवुं.

१० तत्राव्यापन्नेष्वृतुष्वव्यापन्ना ओषधयो

---

१ जे ऋतुओमां वमनादिक कराववां जोइए ते ऋतुओने छोडी दइने अन्य ऋतुओमां कराववामां आवे तो विपत्तिने अने मरणने उत्पन्न करे छे एवो सामान्य नियम छे. तोपण संशोधनथीज मटे एवा झडपदार रोगोमां अन्य ऋतुओमां पण संशोधन करवुं एम मूळमां 'च' शब्दथी सूचवी आप्युं छे. शरद् आदि ऋतुओना बीजा मासमां संशोधन करवुं एटले पित्तनुं संशोधन मार्गशीर्षमां, कफनुं संशोधन चैत्रमां अने वातनुं संशोधन श्रावणमां करवुं ए साधारण काळ छे के जेथी दोषोने त्रण महिनानुं अंतर मळवाथी 'ग्रीष्मादिसंचितान् दोषांस्त्रिमासांतरितान् हरेत्' ए वचन सार्थक थाय.

२ शीतादिकने लीधे.

३ उष्णतादिकने लीधे.

४ उष्णताआदिने लीधे.

५ आ स्वाभाविक उपशम काळना नियमप्रमाणे साधारण थाय छे माटे असाधारण उपशम करवाने माटे चिकित्साशास्त्रनी जरूर छे. जेम के घटादिक पदार्थोनो साधारण नाश काळना नियमप्रमाणे थयाज करेछे तोपण असाधारण नाश करवानेमाटे मुद्गरादिकनी जरूर छे.

६ एक अहोरात्रमां पण पूर्वाह्णमां कफनो प्रकोप थवारूप वसंतनुं चिन्ह अने मध्यान्हमां वायुनो संचय थवारूप ग्रीष्मनुं चिन्ह देखाय छे इत्यादि समजी लेवुं. अहोरात्रमां दोषोना जे अल्प संचय अने अल्प प्रकोप थाय छे तेओनुं संशोधन दांतण करवा आदिथी थाय छे पण ऋतुओमां जे संचय अने प्रकोप थाय छे तेओ बलवत्तर होवाथी तेओनुं संशोधन तो वमन आदि क्रियाओथीज थाय एम समजवुं. अहोरात्रमां थता संचय अने प्रकोप मात्र चंद्रना, सूर्यना अने वायुना उष्ण आदि गुणोरूप अल्प कारणथी थाय छे माटे अल्प होय छे पण ऋतुओमां थता संचय अने प्रकोप तो बीजा मार्गोमां गएला चंद्र, सूर्य अने वायु एओए करेला द्रव्यो वगेरेना फेरफाररूप मोटां कारणथी थाय छे माटे तेओ बलवत्तर होय छे.

भवन्त्यापश्च ता उपयुज्यमानाः प्राणायुर्बलवीर्यौजस्कर्यो भवंति । तेषां पुनर्व्यापदोऽदृष्टकारिताः । शीतोष्णवातवर्षाणि खलु विपरीतान्योषधीर्व्यापादयंत्यपश्च तासामुपयोगाद्विविधरोगप्रादुर्भावो मरको वा भवेदिति ॥

ऋतुओ बगडेली न होय तो सुखशांति अने बगडेली होय तो रोगोनी उत्पत्ति.

१० जो ऋतुओ बगडेली न होय तो औषधिओ अने जळ बगडतां नथी अने नहीं बगडेली औषधीओ तथा नहीं बगडेलां जळ उपयोगमां लेवायाथी ते औषधिओ तथा ते जळ माणसोने शारीरबळ, आयुष्य, उत्साहवृद्धि, शक्ति अने ओज एओनी संपत्ति करी आपे छे. ऋतुओना बगाडो सर्व जनोना अधर्मने लीधे शीत, उष्ण, वायु तथा वरसाद एओ विपरीत एटले हीनयोगवाळां, मिथ्यायोगवाळां, के अतियोगवाळां थई जवाथी थाय छे. विपरीत थएलां शीत, उष्ण, वायु अने वरसाद एओ औषधिओने तथा जळने खराब करी नाखेछे अने ते खराब थएल औषधिओनो तथा जळनो उपयोग थवाथी अनेक प्रकारना रोगो उत्पन्न थाय छे अथवा मरकी चाले छे.

११ तत्राव्यापन्नानामोषधीनामपां चोपयोगः ॥

ऋतुओना बगाडोनी चिकित्सा.

११ जो ऋतुओमां बगाड थयो होय तो नहीं बगडेली जुनी औषधिओनो तथा जुनां जळनो उपयोग करवो.

१२ कदाचिदव्यापन्नेष्वप्यृतुषु कृत्याभिशापरक्षःक्रोधाधर्मैरुपध्वस्यन्ते जनपदाः । विषौषधीपुष्पगन्धेन वायुनोपनीतेनाक्रम्यते यो देशस्तत्र दोषप्रकृत्यविशेषेण कासश्वासवमथुप्रतिश्यायशिरोरुग्ज्वरैरुपतप्यंते ग्रहनक्षत्रचरितैर्वा गृहदारशयनासनयानवाहनमणिरत्नोपकरणगर्हितलक्षणनिमित्तप्रादुर्भावैर्वा ॥

ऋतुओनो बगाड नहीं थया छतां पण कोई वखते देशोमां रोगादिक त्रास उत्पन्न थवानां कारणो.

१२ ऋतुओ नहीं बगडेली अर्थात् स्वच्छ रही होय तोपण कोई वखते कृत्याथी, गुरुओना के सिद्धो वगेरेना शापोथी, राक्षसोथी के अधर्मोथी देशो भारे विपत्तिमां पडेछे. वायुए आणेलां झेरी औषधिओनां पुष्पोना गंधथी जे देश व्याप्त थाय ते देशमां पण दोषोनो के प्रकृतिओनो कशो मेळ नहीं रेहेतां खांसी, श्वास, वमन, सळखम, माथांनां दरदो अने ज्वर एओथी लोको दुखी थाय छे. शनैश्चर आदि ग्रहोनी दुष्ट राशिमां स्थिति अथवा वक्रगति आदि कारणोथी, नक्षत्रोनां उल्कापात आदि कारणोथी, घरोमां गंदकी वधवाथी, योनिरोगादिक रोगोवाळी अथवा मलिन आचारवाळी स्त्रीओ होवाथी, मांकड वगेरेथी भरेली खराब शय्याओ तथा आसनो होवाथी, जेओपर बेसवाथी बहुज थडका लागवा तथा शरीर छोलाई जवा आदि दुःखो उत्पन्न थाय एवां गाडी वगेरे तथा उंट वगेरे वाहनोथी, संहिता ग्रंथोमां जेओने खराब गणेलां छे एवां मणि रत्नादिकनी वपराशथी अने अन्याय आदि कारणो उत्पन्न थयाथी पण लोकोमां विपत्तिओ आवे छे.

१३ तत्र स्थानपरित्यागशान्तिकर्मप्रायश्चित्तमङ्गलजपहोमोपहारेज्याञ्जलिनमस्कारतपोनियमदयादानदीक्षाभ्युपगमदेवताब्राह्मणगुरुपरैर्भवितव्यमेवं साधु भवति ॥

उपर कहेली विपत्तिओनी चिकित्सा.

१३ उपर कह्याप्रमाणे विपत्तिओ आवे त्यारे ते ते स्थानकोनो त्याग करवो, वेदमंत्रोथी यजन आदि शांतिकर्मो करवां, चांद्रायण आदि प्रायश्चित्तो करवां, उत्तम औषधिओनां धारणो वगेरे मंगळो करवां, जप करवा, होम करवा, देवताओने बलिदानो देवां, देवताओनां तथा

महात्माओनां पूजनो करवां, देवताओने तथा महात्माओने हाथ जोडवा तथा नमस्कार करवा, उपवासादिक तप करवां, नियमो पाळवा, दयामां तथा दानोमां तत्पर रेहेवुं, गुरुओनी पासेथी मंत्रोनी दीक्षाओ लेवी, गुरुओनी आज्ञा मानवी अने देवताओनी ब्राह्मणोनी तथा गुरुओनी सेवामां तत्पर रेहेवुं. आप्रमाणे करवाथी सारूं थाय छे.

१४ ऋतूनामत ऊर्ध्वमव्यापन्नानां लक्षणान्युपदेक्ष्यामः ॥

वायुर्वात्युत्तरः शीतो रजोधूमाकुला दिशः ।
छन्नस्तुषारैः सविता हिमानद्धा जलाशयाः ॥
दर्पिताध्वाङ्क्षखङ्गाह्वमहिषोरभ्रकुञ्जराः ।
रोध्रप्रियङ्गुपुन्नागाः पुष्पिता हिमसाह्वये ॥ १ ॥
शिशिरे शीतमधिकं वातवृष्ट्याकुला दिशः ।
शेषं हेमंतवत्सर्वं विज्ञेयं लक्षणं बुधैः ॥ २ ॥
दिशो वसंते विमलाः काननैरुपशोभिताः ।
किंशुकाम्भोजबकुलचूताशोकादिपुष्पितैः ॥
कोकिलाषट्पदगणैरुपगीता मनोहराः ।
दक्षिणानिलसंवीताः सुमुखाः पल्लवोज्ज्वलाः ३
ग्रीष्मे तीक्ष्णांशुरादित्यो मारुतो नैर्ऋतोऽसुखः ।
भूस्तप्ता सरितस्तन्व्यो दिशः प्रज्वलिता इव ॥
भ्रांतचक्राह्वयुगलाः पयःपानाकुला मृगाः ।
ध्वस्तवीरुत्तृणलता विपर्णाङ्कितपादपाः ॥ ४ ॥
प्रावृष्यम्बरमानद्धं पश्चिमानिलकर्षितैः ।
अम्बुदैर्विद्युदुद्द्योतप्रस्रुतैस्तुमुलस्वनैः ॥
कोमलश्यामशष्पाढ्या शक्रगोपोज्ज्वला मही ।
कदम्बनीपकुटजसर्जकेतकिभूषिता ॥ ५ ॥
तत्र वर्षासु नद्योम्भःपूरोद्भ्रन्नतटद्रुमाः ।
वाप्यः प्रोत्फुल्लकुमुदनीलोत्पलविराजिताः ॥
भूरव्यक्तस्थलश्वभ्रा बहुशस्योपशोभिता ।
नातिगर्जत्स्रवन्मेघनिरुद्धार्कग्रहं नभः ॥ ६ ॥
बभ्रुरुष्णः शरद्यर्कः श्वेताभ्रविमलं नभः ।
तथा सरांस्यम्बुरुहैर्भान्ति हंसांसघट्टितैः ॥
पङ्कशुष्कद्रुमाकीर्णा निम्नोन्नतसमेषु भूः ।
बाणसप्ताह्वबन्धूककाशासनविराजिता ॥ ७ ॥

नहीं बगडेली ऋतुओनां लक्षणो.

१४ हवे नहीं बगडेली ऋतुओनां लक्षणो कहीए छीए. जो हेमंतऋतुमां उत्तर तरफनो शीतल पवन वातो होय, दिशाओ रजथी तथा धूमसथी व्याप्त रहेती होय, सूर्य झाकळथी ढंकाएलो रेहेतो होय, जलाशयो थंडीथी व्याप्त रेहेता होय, कागडा गेंडा पाडा घेंटा तथा हाथीओ मस्त रेहेता होय अने लोदर, घउलांनां वृक्षो तथा पुन्नागो (नागकेसरनां वृक्षो) पुष्पयुक्त थई रह्यां होय तो ते हेमंतऋतुने नहीं बगडेली समजवी.

जो शिशिरऋतुमां थंडी अधिक होय, दिशाओ वायुसहित वृष्टिथी व्याकुळ थती होय अने बीजां सघळां लक्षणो हेमंतऋतुना जेवांज देखातां होय तो ते शिशिरऋतुने नहीं बगडेली समजवी.

जो वसंत ऋतुमां दिशाओ निर्मल रहेती होय, खाखरा कमळो बोलसरी आंबा तथा अशोक आदि वृक्षोथी भरपूर थएलां वनोथी शोभी रहेली होय, कोकिलाओना टौकाराओथी तथा भ्रमरोना गुंजारोथी मननुं आकर्षण करती होय, दक्षिणतरफना पवनथी घेराएली होय, सारा देखावोवाळी होय अने नवीन पल्लवोथी दीपी रहेली होय तो ते वसंत ऋतुने नहीं बगडेली समजवी.

१ आ अध्यायमां वर्षा, शरद्, हेमंत, वसंत, ग्रीष्म अने प्रावृष् ए छ ऋतुओ के जेओ भाद्रपद आदि बबे मासोथी थाय छे तेओनुंज ग्रहण करवानुं पांचमा विषयमां केहेवाई गयुं छे ते छतां अहीं शिशिरऋतुने गणवामां आवे तो प्रतिज्ञाभंग थाय छे अने, वळी सात ऋतुओ थई जाय छे माटे तेने जुदी ऋतु नहीं गणतां हेमंतना उत्तर भागमांज गणवानो ग्रंथकारनो अभिप्राय होय एम जणाय छे.

२ केटलाएक केहेछे के 'अशोक एटले आशोपालव' अने केटलाएक केहेछे के 'अशोक ए नामथीज प्रसिद्ध जुदूंज झाड छे.'

जो ग्रीष्मऋतुमां सूर्य तीक्ष्ण किरणोवाळो होय, गभरावनारो नैर्ऋत खुणानो पवन वातो होय, पृथ्वी धगेली रहेती होय, नदीओ पातळा प्रवाहोवाळी थई गई होय, दिशाओ सळगेली जेवी देखाती होय, चक्रवाकपक्षीओनां जोडांओ जलाशयोने माटे भटकतां होय, मृगो पाणी पीवाने माटे व्याकुल रेहेतां होय, दृढ लताओ, खडो तथा कोमळ लताओ अत्यंत सुकाई गयां होय अने वृक्षो पानडां वगरनां थई गयां होय तो ते ग्रीष्मऋतुने नहीं बगडेली समजवी.

जो प्रावृष् ऋतुमां पश्चिमदिशाना पवने खेंची आणेलां, वीजळीओना चमकाटवाळां, जळनी वृष्टि कर्या करतां तथा भारे गर्जनाओवाळां वादळांओथी आकाश ढंकाएलुं रेहेतुं होय, अने पृथ्वी कोमळ काळा रंगना खडोथी संपन्न, कसुंबा रंगना कीडाओथी (मेघना मामाओथी) दीपी रहेली, तथा कदंबोथी धूलीकदंबोथी अने केतकीओथी शणगार पामेली होय तो ते प्रावृष्ऋतुने नहीं बगडेली समजवी.

जो वर्षाऋतुमां नदीओनां कीनाराओनां वृक्षो जळनां पूरथी भांगी गयां होय, वाव्यो प्रफुल्लित कुमुदोथी (रात्रि विकासी कमळोथी) तथा नीळ कमळोथी शोभी रहेली होय, पृथ्वीना सपाट प्रदेशो के खाडाओ कादवने लीधे बराबर वरती शकाता न होय, खेतरोमां घणां घणां धान्योथी शोभा फेलाई रही होय अने आकाशमां प्रबल गर्जना वगरनां तथा जळनो स्राव कर्या करतां वादळांओथी सूर्य तथा बीजा ग्रहो ढंकाई गएला होय तो ते वर्षाऋतुने नहीं बगडेली समजवी.

जो शरद्ऋतुमां सूर्य पींगळा रंगनो देखातो होय, आकाश सफेद वादळांओवाळुं देखातुं होय तथा स्वच्छ पण देखातुं होय, सरोवरो हंसपक्षिओनी कांधोथी चलायमान थतां कमळोथी शोभी रह्यां होय अने पृथ्वी नीचा प्रदेशोमां कादववाळी, उंचा प्रदेशोमां सुकाएली, सपाट प्रदेशोमां वृक्षोवाळी, तथा कांटा अशेरीयाओथी, सप्तपर्ण नामना वृक्षोथी, (जेम बीलीमां त्रण त्रण पानडां साथे थाय छे तेम जेओमां सात सात पानडां साथे थाय छे ते वृक्षोथी) बपोरीआओथी अने बीबलाओथी शोभी रही होय तो ते शरद्ऋतुने नहीं बगडेली समजवी.

१५ स्वगुणैरतियुक्तेषु विपरीतेषु वा पुनः ।
विषमेष्वपि वा दोषाः कुप्यंत्यृतुषु देहिनाम् ॥

ऋतुओना बगडवानो संग्रह.

१५ जे ऋतुओ पोतपोताना गुणोनो अतियोग पामेली होय अथवा पोतपोताना गुणोथी मंद मंद योग पामेली होय अथवा शीतमां उष्ण, उष्णमां शीत अने वर्षामां अवृष्टि एवी रीतनी विपरीतता पामी होय अथवा अनुलोम विलोम चिह्नोवाळी थई होय ते ऋतुओमां माणसोना वात, पित्त अने कफ प्रकोप पामे छे[२].

१ जेम के वर्षानां चिन्हो शरद्मां अने शरद्नां चिन्हो हेमंतमां देखाय इत्यादि.

२ अहीं डल्हन श्लोकोथी लखेछे के पूर्व देशनां माणसो मांछलांओनुं तथा खाटा पदार्थोनुं भोजन करे छे अने जलप्राय देशोमां रेहेनाराओ पण तेमज करे छे माटे तेओने घणुं करीने श्लीपद तथा गलगंड आदि रोगो थाय छे. दक्षिण देशनां माणसो नीचा प्रदेशना जळनां तथा समुद्रनां माछलां खाय छे तेथी तेओने कोढ बहु थाय छे. मालवानां माणसो तेल, खटाई तथा घऊं खाय छे तेथी तेओ घणुं करीने लंगडा तथा अरशना दरदवाळां थाय छे. बाहार प्रांतना लोको मांस खाय छे, सुरापान करेछे अने स्त्रियोमां लंपट रेहेछे तेथी तेओ घणुं करी क्षयरोगी जोवामां आवे छे. बाल्हीक देशना लोको अभिष्यंदी (शरदी करनारां) मांसोनो तथा जळोनो उपयोग करेछे अने तीक्ष्ण अन्नो खाय छे तेथी तेओ घणुं करी सळखमना दरदवाळा थाय छे. वैद्ये एवा सर्व लोकोनुं सात्म्य (हमेश गोठी रहेलुं आहारादिक) अने सत्व जोई आहारनी साथे औषध देवुं. ऋतुओनां सात्म्योनो त्याग करवाथी माणस कृश, निर्बल अने रोगी थाय छे.

१६ हरेद्वसन्ते श्लेष्माणं पित्तं शरदि निर्हरेत् । वर्षासु शमयेद्वायुं प्राग्विकारसमुच्छ्रयात् ॥

दोषोनुं संशोधन करवानो संग्रह.

१६ विकारोनो अत्यंत प्रकोप न थयो होय ते पेहेलांज वसंतमां कफनुं, शरदमां पित्तनुं अने वर्षामां वायुनुं संशोधन करवुं.

अध्याय ७ मो.

१ अथातो यन्त्रविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'यंत्रविधि'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ यन्त्रशतमेकोत्तरमत्र हस्तमेव प्रधानतमं यंत्राणामवगच्छ । किं कारणम् । यस्माद्धस्तादृते यंत्राणामप्रवृत्तिरेव तदधीनत्वाद्यंत्रकर्मणाम् । तत्र मनःशरीराबाधकराणि शल्यानि तेषामाहरणोपायो यंत्राणि ॥ तानि षट्प्रकाराणि । तद्यथा । स्वस्तिकयंत्राणि । संदंशयंत्राणि । तालयंत्राणि । नाडीयंत्राणि । शलाकायंत्राणि । उपयन्त्राणि चेति ॥ तत्र चतुर्विंशतिः स्वस्तिकयंत्राणि । द्वे संदंशयंत्रे । द्वे एव तालयंत्रे । विंशतिर्नाड्यः । अष्टाविंशतिः शलाकाः । पंचविंशतिरुपयंत्राणि ॥ तानि प्रायशो लौहानि भवन्ति तत्प्रतिरूपकाणि वा तदलाभे । तत्र नानाप्रकाराणां व्यालानां मृगपक्षिणां मुखैर्मुखानि यंत्राणां प्रायशः सदृशानि तस्मात्तत्सारूप्यादागमादुपदेशादन्ययंत्रदर्शनाद्युक्तितश्च कारयेत् ॥

यंत्रोनी संख्या तथा यंत्रोना प्रकारो.

२ यंत्रो मुख्यत्वे करी एकसो अने एक (१०१)[2] छे. यंत्रोमां सर्वथी प्रधान यंत्र हाथज छे एम समजो. कारण के हाथ विना यंत्रोनी प्रवृत्तिज थती नथी. यंत्रोनां कर्मो हाथनेज आधीन छे. जेओ मनने तथा शरीरने पीडा आपे छे ते शल्यो केहेवाय छे अने ते शल्योने काहाडवानो उपाय यंत्रो छे. ए यंत्रो छ प्रकारनां छे. जेम के स्वस्तिकयंत्रो[3], संदंशयंत्रो[4], तालयंत्रो[5], नाडीयंत्रो[6] शलाकायंत्रो[7] अने उपयंत्रो[8].

एओमां चोवीश स्वस्तिकयंत्रो छे, बे संदंशयंत्रो छे, बेजे[9] तालयंत्रो छे, वीश नाडीयंत्रो छे, अठ्यावीश शलाका यंत्रो छे अने पचीस उपयंत्रो छे. ए यंत्रो घणुं करीने लोहोडांनां[10] जोइए अने

सात्म्यने सेवनारो, जितेंद्रिय रेहेनारो, खाधेलुं जीर्ण थया पछीज जमनारो अने परिमित निद्रावाळो माणस आनंदथी जीवे छे. जे ऋतुमां जे गर्भ रहे ते गर्भमां ते ऋतुप्रमाणे बल तथा वीर्य आदि प्राप्त थाय छे.

१ शल्योने काहाडवा वगेरेना ओजारोना भेद अथवा कल्पना.

२ यंत्रो असंख्यात छे एवो अर्थ पण थाय छे.

३ जेओने उघाडतां साथीया जेवो अर्थात् चोकडी जेवो आकार थई रहे ते स्वस्तिक यंत्रो केहेवाय छे.

४ साणशी अथवा चीपीया.

५ ताल एटले माछलांना गळाना शल्क जेवा आकारवाळां जे यंत्रो होय तेओ तालयंत्र केहेवाय छे.

६ जे यंत्रो नळी जेवां होय ते नाडीयंत्रो केहेवाय छे. आ यंत्रो घणुं करीने पोलां होय. केम के तेओथी दुष्ट रुधिर वगेरेने चूसवानुं तथा क्षार वगेरे मुकवानुं पण काम थाय छे.

७ शळीओ जेवा आकारवाळां यंत्रो.

८ पोते यंत्रो नहीं छतां यंत्रोनुं काम करनारां.

९ बीजां यंत्रोनी संख्या पछी निश्चयवाचक 'ज' मुक्यो नथी अने अहीं मुक्यो छे तेथी एम जणाव्युं छे के बीजां यंत्रोनी जे संख्या कही छे तेमां अधिकता पण थाय छे परंतु तालयंत्रो तो बेनी संख्याथी वधतांज नथी. (डल्लन) शल्योनां आकार वगेरे जोईने तथा प्रयोजनो जोईने अधिक संख्या पण बनाववी योग्य छे.

१० डल्लन केहे छे के मूळमां जे लोह शब्द छे ते सुवर्ण आदि पांचे धातुओनो वाचक छे माटे यंत्रो योग्यता प्रमाणे पांचे धातुओनां बनाववां. उपयोगने अनुसरीने गमे ते धातुनां करवां. स्वच्छताने माटे केटलांक यंत्रो उपर हाल रुपानो ढोळ चडाववामां आवे छे.

लोहोडुं न मळे तो॰ पछी तेना जेवा पदार्थोनां जोइए.

ए यंत्रोनां मोहोडां घणुं करीने अनेक प्रकारनां हिंसक पशुओना मोहोडांओ जेवां अने हिंसक पक्षिओना मोहोडांओ जेवां थाय छे. एटला माटे ते पशुपक्षीओनां मोहोडांओना आकारोथी मेळवीने शास्त्र तपासीने, वृद्ध वैद्योने पुछीने, बीजां यंत्रोने जोइने, अने केम करवामां आवे तो तेओ उपयोगी थाय ए विचारीने तेओनां मोहोडां कराववां.

३ समाहितानि यंत्राणि खरश्लक्ष्णमुखानि च। सुदृढानि सुरूपाणि सुग्रहाणि च कारयेत् ॥

यंत्रो केवां जोइए.

३ ए सघळां यंत्रो बराबर योग्य मापवाळां कराववां, सारा देखाववाळां तथा मजबूत कराववां, ठीक रीते पकडाय एवां पांखाओवाळां तथा जेओथी पकडेली वस्तु आम तेम हटी जाय नहीं एवां कराववां अने तेओमां अमुक यंत्रो करकरीयाळा मोहोडावांळां तथा अमुक यंत्रो लीसा मोहोडांवाळां कराववां.

४ तत्र स्वस्तिकयंत्राण्यष्टादशाङ्गुलप्रमाणानि सिंहव्याघ्रवृकतरक्ष्वृक्षद्वीपिमार्जारश्रृगालमृगैर्वारुककाककङ्ककुररचासभासशशघात्युलूकचिल्लिश्येनगृध्रक्रौंचभृङ्गराजाञ्जलिकर्णावभञ्जननन्दिमुखमुखानि मसूराकृतिभिः कीलैरवबद्धानि मूलेऽङ्कुशवदावृत्तवारंगाण्यस्थिविदष्टशल्योद्धरणार्थमुपदिश्यंते ॥

चोवीश स्वस्तिक यंत्रोनां नामो, नामो उपरथी आकृतिओ, प्रमाण, बनावट तथा उपयोग.

४ एओमां चोवीस स्वस्तिकयंत्रो सिंहमुखं, व्याघ्रमुखं, वृकमुखं, तरक्षुमुखं, ऋक्षमुखं, द्वीपिमुखं, मार्जारमुखं, शृगालमुखं, मृगैर्वारुकमुखं, काकमुखं, कंकमुखं, कुररमुखं, चासमुखं, भासमुखं, शशघातिमुखं, उलूकमुखं, चिल्लीमुखं, श्येनमुखं, गृध्रमुखं, क्रौंचमुखं, भृंगराजमुखं, अंजलि-

१ दांत, शींगडां, काष्ठो, वांस, सूतर, झाडनी छाल, खड, स्नायुओनां तंतुओ तथा पथरा इत्यादिक पदार्थोनां पण यंत्रो थाय.

२ जेम हिंसक (शीकारी) पशुपक्षीओ पोताना शीकारने पोतानां मोहोडांओथी पकडी ले छे अने पकड्या पछी खेच्या वगर रेहेतां नथी तेम यंत्रो पण शरीरमां रहेलां शल्योने पकडी लई खेंची काहाडे ए हेतुथी तथा शीकारी पशुपक्षीओनां मोहोडांओजेवां होय तोज काम करी शके छे तेथी हिंसक शब्द मुक्यो छे.

३ यंत्रोनां मोहोडां करावत्रामां माणसोनी अवस्थाओनो तथा अवयव आदिना विभागोनो पण विचार करवो. कोईपण युक्तिनी खामी राखवी नहीं.

४ सिंहना जेवा मोहोडावाळुं.

५ वाघ-दीपडाना जेवा मोहोडावाळुं.

६ वरुना जेवा मोहोडावाळुं.

७ झरखना जेवा मोहोडावाळुं.

८ रींछना जेवा मोहोडावाळुं.

९ चीतराना जेवा मोहोडावाळुं.

१० बिलाडाना जेवा मोहोडावाळुं.

११ शीयाळना जेवा मोहोडावाळुं.

१२ मृगैर्वारुक नामनो हिंसक पशु हरिणना जेवा आकारवाळो थाय छे तेना जेवा मोहोडावाळुं. मृगैर्वारुकनो पर्याय गुजरातीमां मळ्यो नथी.

१३ कागडाना जेवा मोहोडावाळुं.

१४ 'कंक' ए नामनी धोळी, लांबी चांचवाळी अने मोटा कदवाळी समळी थाय छे के जेना पीछडांओने भीललोको तीरनी पछवाडे बांधे छे तेना जेवा मोहोडावाळुं. नखप्रभाभूषितकंकपत्रे (रघुवंश.)

१५ टीटोडाना जेवा मोहोडावाळुं.

१६ नीलकंठ नामना पक्षीना जेवा मोहोडावाळुं.

१७ गरंज के जे मरेलां पशुओना मांसने ठोली ठोलीने खाय छे तेना जेवा मोहोडावाळुं.

१८ ससलांने फाडी खानारा बाजना जेवा मोहोडावाळुं.

१९ घुवडना जेवा मोहोडावाळुं.

२० समलीना जेवा मोहोडावाळुं.

२१ शकरा-सींचाणाना जेवा मोहोडावाळुं.

२२ गीधना जेवा मोहोडावाळुं.

२३ कुंझडीना जेवा मोहोडावाळुं.

२४ उपरना भागमां तेतरना जेवा रंगवाळी एक जातनी काळी चकली थाय छे, तेना जेवा मुखवाळुं.

कर्णमुख, अवभंजनमुख, अने नंदिमुखमुख[3] ए नामोथी केहेवामां आवे छे. आ यंत्रो अढार अढार आंगळनां जोईए. एओनी कांधमां मसूरना दाणा जेवी जड नाखवी अने एओनां पांखाओ तेओना पोताना छेडाओमां अंकुशनी पेठे वळेलां करवां. आ स्वस्तिकयंत्रो हाडकांओमां खूंचेलां, शल्योने काहाडवाने माटे उपयोगमां लेवाय छे.

५ सनिग्रहोऽनिग्रहश्च संदंशौ षोडशाङ्गुलौ भवतस्त्वङ्मांसशिरास्नायुगतशल्योद्धरणार्थमुपादिश्येते ॥

बे संदंश यंत्रोनां प्रमाण तथा उपयोग.

५ संदेश यंत्र बे प्रकारनां छे, एकनी[4] नीचे हथेळीमां पकडवानो भाग राखवामां आवे छे अने बीजानी नीचे तेवो भाग राखवामां आवतो नथी (जुवो सांणसी, चीपीओ अने समाणी) एओनुं प्रमाण सोळ सोळ आंगळनुं जोइए अने ए बे संदंशयंत्रो त्वचामां, मांसमां, झीणी नसोमां तथा मोटी रगोमां रहेलां शल्योने काहाडवाने माटे उपयोगमां लेवाय छे.

६ तालयंत्रे द्वादशांगुले मत्स्यतालुवदेकतालद्वितालके कर्णनासानाडीशल्यानामाहरणार्थम् ॥

बे तालयंत्रोनां प्रमाण, आकार तथा उपयोग.

६ तालयंत्रो बार बार आंगळनां थाय छे. तेओमां एक माछलांना गळाना शल्क (चुई) जेवा पातळा मोहोडावाळा एक प्रदेशवाळुं अने बीजुं माछलांना गळाना शल्क जेवा पातळा मोहोडावाळा बे प्रदेशवाळुं थाय छे. ए बे तालयंत्रो काननी के नाकनी नळीओमां रहेलां शल्योने (मेल तथा कांकरी के केश वगेरेने) काहाडवामां उपयोगी थाय छे. (आ तालयंत्रोनी जाडाई कान वगेरेना प्रदेशमां पेसवाने लायक करवी.)

७ नाडीयंत्राण्यनेकप्रकाराण्यनेकप्रयोजनान्येकतोमुखान्युभयतोमुखानि च तानि स्रोतोगतशल्योद्धरणार्थं रोगदर्शनार्थमाचूषणार्थं क्रियासौकर्यार्थं चेति तानि स्रोतोद्वारपरिणाहानि यथायोगपरिणाहदीर्घाणि च ॥ भगंदरार्शोव्रणबस्त्युत्तरबस्तिमूत्रवृद्धिदकोदरधूमनिरुद्धप्रकशसन्निरुद्धगुदयंत्राण्यलाबूशृंगयंत्राणि चोपरिष्टाद्वक्ष्यामः ॥

वीश नाडीयंत्रोनां प्रमाण, नाम तथा उपयोग.

७ नाडीयंत्रो अनेक प्रकारोवाळां अने अनेक प्रयोजनोवाळां थाय छे. (आ यंत्रो नाडीओनी पेठे एटले नळीओनी पेठे मध्यमां पोलां होवाथी नाडीयंत्रो केहेवाय छे.) एओमां अलाबूयंत्र आदि नाडीयंत्रो के जेओ लोहीनुं आकर्षण करवा वगेरेमां उपयोगी छे तेओ एक तरफ मोहोडांवाळां थाय छे अने बस्तियंत्र, उत्तरबस्तियंत्र तथा धूमयंत्र आदि नाडीयंत्रो बन्ने तरफ मोहोडावाळां थाय छे. नाडीयंत्रो स्रोतोमां[5] रहेलां शल्योने काहाडवामां, अंदर-

१ अंजलिकर्णपक्षी अप्रसिद्ध छे. कोई टीकाकारोए पण जाणेल नथी (वडवानरीना कानो अंजलि जेवा थाय छे माटे वडवानरी होय तो होय.)

२ अवभंजन पक्षी पण अप्रसिद्ध छे. देशांतरमां थतां हशे.

३ नंदिमुख नामना पक्षीना जेवा मोहोडावाळुं. आ पक्षीने हिंदुस्थानी लोको पत्राटी केहेछे. आ चकलीनी जात छे. तेनुं गळुं पातळुं तथा जरा लाल थाय छे अने रंग काळो तथा धोळो थाय छे.

४ केटलाएक एम मानेछे के जेमां कांध उपर जड आवे ते पेहेला प्रकारनो संदंश (साणशी) केहेवाय अने जेमां कांध उपर जड न आवे ते बीजा प्रकारनो संदंश (चीपिओ अथवा समाणी) केहेवाय.

५ मन, प्राण, अन्न, जळ, दोषो, धातुओ, उपधातुओ, धातुओना मळो, मूत्र अने विष्टा इत्यादि पदार्थो शरीरमां जे रस्ताओथी गति करेछे ते रस्ताओ स्रोत केहेवाय छे.

ना अरश वगेरे रोगोने जोवाना काममां, अस्थिओमां रहेला वायुने, दुष्ट रुधिरने तथा दुष्ट धावणने चूसवाना काममां अने अंदरना अरश वगेरे रोगोमां शस्त्रनी, क्षारनी तथा अग्निवगेरेनी क्रियानी सुगमता करवामां उपयोगी थाय छे. आ नाडीयंत्रो स्रोतोनां द्वारो जेवां गोळ अने योग्यताने अनुसरीने जाडां तथा लांबां थाय छे.

भगंदरयंत्र[1], अर्शोयंत्र[2], व्रणयंत्र[3], बस्तियंत्र[4], उत्तर बस्तियंत्र[5], मूत्रवृद्धियंत्र[6], दकोदरयंत्र[7], धूमयंत्र[8], निरुद्धप्रकशयंत्र[9], संनिरुद्धगुदयंत्र[10], अलाबूयंत्र[11], अने शृंगयंत्र[12] ए नाडीयंत्रोनां नामो छे. (आ नाडीयंत्रो भगंदर आदि दरदोमां उपयोगी थाय छे.) आ यंत्रो विषे विशेष व्याख्यान ते ते रोगोनी चिकित्साओमां आपवामां आवशे[13].

८ शलाकायंत्राण्यपि नानाप्रकाराणि नानाप्रयोजनानि यथायोगपरिणाहदीर्घाणि च तेषां गण्डूपदशरपुंखसर्पफणबडिशमुखे द्वे द्वे एषणव्यूहनचालनाहरणार्थमुपदिश्येते । मसूरदलमात्रमुखे द्वे किंचिदानताग्रे स्रोतोगतशल्योद्धरणार्थम् । षट्कार्पासकृतोष्णीषाणि प्रमार्जनक्रियासु । त्रीणि दर्व्याकृतीनि खल्लमुखानि क्षारौषधप्रणिधानार्थम् । त्रीण्यन्यानि जाम्बववदनानि त्रीण्यंकुशवदनानि षडेवाग्निकर्मस्वभिप्रेतानि । नासार्बुदहरणार्थमेकं कोलास्थिदलमात्रमुखं खल्लतीक्ष्णोष्ठम् । अंजनार्थमेकं कलायपरिमण्डलमुभयतो मुकुलाग्रम् । मूत्रमार्गविशोधनार्थमेकं मालतीपुष्पवृन्ताग्रप्रमाणपरिमण्डलमिति ॥

अठ्यावीश शलाकायंत्रोना आकार, प्रमाण तथा उपयोग.

८ शलाकायंत्रो पण (सळीरूप यंत्रो पण) अनेक प्रकारनां, अनेक प्रयोजनोवाळां अने योग्यता प्रमाणे जाडाई तथा लंबाईवाळां थाय छे. एओमां बे यंत्रो अणशीयाना जेवां मोहोडावाळां, बे यंत्रो बाणना पुंख जेवां मोहोडावाळां, बे यंत्रो सर्पनी फेण जेवां मोहोडावाळां अने बे यंत्रो मांछलां पकडवानी कुंढी–गिल जेवा मोहोडांवाळां थाय छे. अणशीया जेवां मोहोडावाळां बे यंत्रो उंडा पाक वगेरेमां परु वगेरेने शोधवाना काममां उपयोगी थाय छे. बाणना पुंख जेवां मोहोडांवाळां बे यंत्रो शल्योने उंचा करवाना काममां उपयोगी थाय छे. सर्पनी फेण जेवां मोहोडांवाळां बे यंत्रो शल्योने चलायमान करवाना काममां उपयोगी थाय छे अने माछलां पकडवानी जेवां मोहोडावाळां बे यंत्रो शल्योने बाहार काहाडी लेवाना काममां उपयोगी थाय छे. बे यंत्रो मसूरनी दाळ जेवां मोहोडावाळां तथा कांईक नमेली अणीओवाळां थाय छे अने ए यंत्रो स्रोतोमां रहेलां शल्योने काहाडवामां उपयोगी थाय छे. छ यंत्रो कपासनी टोपीओवाळां थाय छे अने तेओ लोही, परू तथा पाणी वगेरेने लुसी नाख-

१ भगंदरमां उपयोगी.

२ अरशमां उपयोगी.

३ व्रणमां उपयोगी.

४ पिचकारी मारवामां उपयोगी.

५ लिंगमां के योनिमां पिचकारी मारवामां उपयोगी.

६ मूत्रवृद्धिमां मूत्रनो स्राव कराववामां उपयोगी.

७ जलोदरना जळने स्रवाववामां उपयोगी.

८ धुमाडो पीवानी नळी.

९ निरुद्धप्रकश नामना दरदमां उपयोगी.

१० संनिरुद्धगुद नामना दरदमां उपयोगी.

११ तुंबडुं. १२ शीगडुं.

१३ शंका–नाडीयंत्रो वीश होय छे एम प्रथमज कह्युं छे ते छतां अहीं बारनी संख्या केम थाय छे. वीश केवी रीते पुरां करवां ? समाधान–भगंदर यंत्र बे थाय छे. एक एक छिद्रवाळुं अने बीजूं बे छिद्रवाळुं. अर्शोयंत्र पण बे थाय छे. एक एक छिद्रवाळुं अने बीजूं बे छिद्रवाळुं. बस्तियंत्र अवस्थाओना भेदथी चार थाय छे. उत्तरबस्तियंत्र एक स्त्रीयोने माटे अने बीजुं पुरुषोने माटे एम बे थाय छे अने वैरेचनिक, स्नैहिक, तथा प्रायोगिक ए रीते धूमयंत्र त्रण थाय छे. आ प्रमाणे आठनी संख्या वधवाथी वीश पूरां थाय छे.

वाना काममां उपयोगी थाय छे. त्रण यंत्रो कडछी जेवी आकृतिवाळां तथा कडछीनी पेठे पोहोळां तथा उंडां मोहोडांवाळां थाय छे अने तेओ शरीरना भागोमां क्षार के औषध दाखल करवामां उपयोगी थाय छे. बीजां त्रण यंत्रो जांबु जेवां मोहोडावाळां तथा त्रण यंत्रो हाथीना अंकुशना जेवां मोहोडावाळां थाय छे अने ते छ यंत्रो अग्निना कामोमां (डाम देवा आदि कामोमां) उपयोगी थाय छे. एक यंत्र बोरना ठळीआमांथी नीकळता बीजनी दाळ जेवडा मुखवाळुं, उंडा तथा पहोळा मोहोडा वाळुं अने तीक्ष्ण होठवाळुं थाय छे अने ते यंत्र नाकनी रसोळी काहाडवामां उपयोगी थाय छे. एक यंत्र लांबु छतां पण वटाणाना दाणा जेवुं फरतुं गोळ तथा बन्ने तरफ कळी जेवी अणीओवाळुं थाय छे अने ते यंत्र आंखमां अंजनो आंजवाना काममां उपयोगी थाय छे. एक यंत्र मालतीना पुष्पना दीटीयाना अग्र जेवुं लंबगोळ थाय छे अने ते यंत्र मूत्रना मार्गने शुद्ध करवाना काममां उपयोगी थाय छे. (कुल २८).

९ उपयन्त्राण्यपि रज्जुवेणिकापट्टचर्मांतवल्कललतावस्त्राष्ठीलाश्ममुद्गरपाणिपादतलाङ्गुलिजिह्वादन्तनखमुखवालाश्वकटकशाखाष्ठीवनप्रवाहणहर्षायस्कांतमयानि क्षाराग्निभेषजानि चेति ॥

एतानि देहे सर्वस्मिन् देहस्यावयवे तथा ।
संधौ कोष्ठे धमन्यां च यथायोगं प्रयोजयेत्

पचीश उपयंत्रोनां नाम तथा उपयोग.

९ दोरी, त्रेवडी भांगेली दोरी, पाटीयुं, चामडाना भागो, खाखरा तथा उंबरा वगेरे वृक्षोनी छाल, लांबा तंतुओवाळी लता, वस्त्र, लंबगोळ पथरो, मुद्गर, हाथनुं के पगनुं तळुं, आंगळी, जीभ, दांत, नख, मोहोडुं, वाळ, घोडाना चोकडानी कडी, झाडनी शाखा, थुंकाववुं, वमन विरेचन अश्रुपात तथा छीक वगेरे गति आपनार क्रियाओ, हर्ष, लोहोडाने गति आपनार पथरो, क्षार, अग्नि तथा औषधो ए पचीश उपयंत्रो छे. (यंत्रो नही छतां यंत्रोना जेवां काम करे ते उपयंत्रो केहेवाय.)

आ उपयंत्रोनो सघळा शरीरमां, शरीरना अवयवमां, सांधामां, कोठामां, तथा नाडीमां यथायोग्य उपयोग करवो.

१० यन्त्रकर्माणि तु निर्घातनपूरणबन्धनव्यूहनवर्तनचालनविवर्तनविवरणपीडनमार्गविशोधनविकर्षणाहरणाञ्छनोन्नमनविनमनभंजनोन्मथनाचूषणैषणदारणर्जूकरणप्रक्षालनप्रधमनप्रमार्जनानि चतुर्विंशतिः ॥

यंत्रोनां कामो.

१० आम तेम हलाववुं, तैल वगेरेथी पूरवुं, बांधवुं, उंचुं करवुं, गोळ करवुं, एक स्थानथी बीजा स्थानमां लेवुं, पाछुं फेरववुं, खुल्लुं करवुं, दबाववुं, रस्तो

---

१ वृक्षोनी छालो भांगेला वगेरेने बांधवामां काम आवे छे.

२ आ पथरो अष्ठीलाश्मा केहेवाय छे अने ते उत्तरापथमां प्रसिद्ध छे. (डल्लन.)

३ काष्ठादिकथी बनावेलो मुद्गर हाडकामां गुम थएला शल्यने चलायमान करवामां उपयोगी थाय छे.

४ घोडाना चोकडानी कडीनो उपयोग आ सूत्रस्थानना शल्यापनयनीय नामना २७ मा अध्यायना ८ मा विषयमां केहेवामां आवशे.

५ आनो उपयोग पण आ सूत्रस्थानना शल्यापनयनीय नामना २७ मा अध्यायना ७ मा विषयमां केहेवामां आवशे.

६ आ पथरो आकर्षक, चुंबक, द्रावक अने भ्रामक एम चार प्रकारनो थाय छे. (लोढाने आकर्षण करनार, लोढानुं चुंबन करनार, लोढाने द्रवीभाव आपनार अने लोढाने भ्रमण करावनार).

७ पीचकारी तथा नळी वगेरेथी तैल वगेरे पूराय छे.

८ परु वगेरे काहाडवाने माटे आंगळी वगेरेथी व्रणने दबावाय छे.

साफ करवो, खेंचवुं, काहाडी लेवुं, जरा अग्रमां लाववुं, उंचे उपाडवुं, नमाववुं, मर्दन करवुं, गुम थएला शल्यना मार्गमां कोई वस्तुनुं हलाववुं, लोही वगेरे चुसवुं, परूनी गतिनुं तथा पथरी वगेरेनुं शोधवुं, चीरवुं, वांकानुं सरखुं करवुं, धोई नाखवुं, नाकमां चूर्ण आदि नाखवुं अने वाळ तथा आंगळी वगेरेथी मार्जन करवुं ए चोवीश, यंत्रोनां कामो समजवां.

११ स्वबुद्ध्या चापि विभजे-
द्यन्त्रकर्माणि बुद्धिमान् ।
असंख्येयविकल्पत्वा-
च्छल्यानामिति निश्चयः ॥

यंत्रोनां कामोनी संख्यानो नियम नहीं होवा विषे.

११ शल्योना भेदो असंख्यात छे एटला माटे बुद्धिमान् वैद्ये पोतानी बुद्धिथी पण यंत्रोनां कामोना विभागो जाणी लेवा तथा कल्पी लेवा.

१२ तत्रातिस्थूलमसारमतिदीर्घमतिह्रस्वमग्राहिविषमग्राहि वक्रं शिथिलमत्युन्नतं मृदुकीलं मृदुमुखं मृदुपाशमिति द्वादश यंत्रदोषाः॥

यंत्रोना दोषो.

१२ अत्यंत जाडापणुं, अशुद्ध लोढा वगेरेथी बनावेलापणुं, अत्यंत लांबापणुं, अत्यंत टुंकापणुं, नहीं पकडनार पणुं, एक भागने पकडनार पणुं, वांकापणुं, पोचापणुं, अत्यंत उंचापणुं, ढीली जडवाळापणुं, लांपडा मुखवाळापणुं अने कोमळ पाशवाळापणुं ए बार यंत्रोना दोषो समजवाँ.

१३ एतैर्दोषैर्विनिर्मुक्तं यंत्रमष्टादशांगुलम् ।
प्रशस्तं भिषजा ज्ञेयं तद्धि कर्मसु योजयेत् ॥

यंत्रोना गुणो.

१३ जे अढार आंगळनुं यंत्र उपर कहेला दोषोथी रहित होय होय तेने वैद्ये उत्तम समजवुं अने तेवा यंत्रनो क्रियाओमां उपयोग करवो.

१४ दृश्यं सिंहमुखाद्यैस्तु गूढं कङ्कमुखादिभिः ।
निर्हरेत्तु शनैः शल्यं शास्त्रयुक्तिव्यपेक्षया

केवां केवां शल्योने कयां कयां यंत्रोथी काहाडवां.

१४ शास्त्रो उपर तथा युक्तिओ उपर ध्यान आपीने वैद्ये नजरे देखाता शल्यने सिंहमुखादिक यंत्रोवते अने गुप्त रहेला शल्यने कंकमुखादिक यंत्रोवते धीरे धीरे काहाडवुं.

१५ विवर्तते साध्ववगाहते च
शल्यं निगृह्योद्धरते च यस्मात् ।
यंत्रेष्वतः कङ्कमुखं प्रधानं
स्थानेषु सर्वेष्वविकारि चैव ॥

हाथ विना बीजां यंत्रोमां कंकमुखयंत्रनुं प्रधानपणुं अने सर्व स्थानोमां पेसवाने योग्यपणुं.

१५ कंकमुखयंत्र अंदर सारी रीते फरे छे, सारी रीते पेसे छे, शल्यने सारी रीते पकडीने खेंची काहाडे छे अने सर्व स्थानकोमां पेसवाना अधिकारवाळुं तथा योग्य सगवडवाळुं छे माटे ते यंत्र बीजां सघळां यंत्रोमां प्रधान छे.

अध्याय ८ मो.

१ अथातः शस्त्रावचारणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछ्या उपरथी 'शस्त्रावचार-

१ मूत्र के विष्टा अटकी पडेलां होय तो रस्तो साफ करवो पडे छे.

२ मांसादिकमां चोटी रहेला शल्यने खेंचवुं.

३ नमी गएला कान वगेरेनुं उंचुं उपाडवुं.

४ शल्यना मार्गमां सळी वगेरेनुं फेरववुं.

५ मुखथी, तुंबडाथी के शींगडां वगेरेथी लोही वगेरे चूसाय छे.

६ नेत्रमां रज पडेल होय तो वाळ, आंगळी तथा वस्त्रनी वाट वगेरेथी मार्जन करवामां आवे छे.

७ आ दोषो घणुं करीने स्वस्तिक यंत्रोमां समजवाना छे एम नीचेना विषय उपरथीज जणाय छे.

८ कयां कयां कर्मोमां कयां कयां शस्त्रोनो उपयोग करवो ते विषेनो.

णीय ' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए 'सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ विंशतिः शस्त्राणि । तद्यथा । मण्डलाग्रकरपत्रवृद्धिपत्रनखशस्त्रमुद्रिकोत्पलपत्रकार्धधारसूचीकुशपत्राटीमुखशरारीमुखांतर्मुखत्रिकूर्चककुठारिकाव्रीहिमुखारावेतसपत्रकबडिशदन्तशङ्क्वेषण्य इति । तत्र मण्डलाग्रकरपत्रे स्यातां छेदने लेखने च । वृद्धिपत्रनखशस्त्रमुद्रिकोत्पलपत्रकार्द्धधाराणि छेदने भेदने च । सूचीकुशपत्राटीमुखशरारीमुखांतर्मुखत्रिकूर्चकानि विस्रावणे । कुठारिकाव्रीहिमुखारावेतसपत्रकाणि व्यधने सूची च । बडिशो दंतशंकुश्चाहरणे । एषण्येषणे आनुलोम्ये च । सूच्यः सेवने । इत्यष्टविधे कर्मण्युपयोगः शस्त्राणां व्याख्यातः ॥

शस्त्रोनी संख्या, नामो तथा कामो.

२ मंडलाग्र[1], करपत्र[2], वृद्धिपत्र[3], नखशस्त्र[4], मुद्रिका[5], उत्पलपत्रक[6], अर्द्धधार[7], सूची[8], कुशपत्र[9], आटीमुख[10], शरारीमुख[11], अंतर्मुख[12], त्रिकूर्चक[13], कुठारिका[14], व्रीहिमुख[15], आरा[16], वेतसपत्र[17], बडिश[18], दंतशंकु[19] अने एषणी[20] ए नामनां वीश शस्त्रो थाय छे.

१ जेना फळाना प्रदेशमां तर्जनीना अंदरना नख जेवुं गोळ मंडल होय ते. आ छ आंगळनुं जोइए.

२ घणा दांताओवाळुं आ करवत दश आंगळ लांबुं अने बे आंगळ पोहोळुं जोइए.

३ आ शस्त्र अस्त्राना जेवा आकारवाळुं थाय छे. एक सीधी अणीवाळुं अने बीजुं पृष्ठ भागमां नमेली अणीवाळुं थाय छे. आ बन्ने सात आंगळनां जोइए.

४ नेरणी आठ आंगळ लांबी करवी. आनुं फळुं बे आंगळ लांबुं अने एक आंगळ पोहोळुं जोइए.

५ जो वाग्भटे कहेलुं अंगुलिशस्त्र आ होय तो ते शस्त्र करडामांथी बाहार नीकळेला मुखवाळुं अने अरध आंगळ लांबा फळावाळुं जोइए.

६ कमळपत्र जेवा आकारवाळुं आ शस्त्र लांबा मोहोडावाळुं थाय छे.

७ अर्द्धमां धारवाळुं अने टुंका मोहोडावाळुं आ आठ आंगळ लांबुं, एक आंगळ पोहोळुं अने बे आंगळना फळावाळुं जोइए.

८ सूचीओ विषे आ सूत्रस्थानना २५ मा अध्यायना ११ मा विषयमां केहेवामां आवशे.

९ आ शस्त्र दर्भना पींछाना जेवी आकृतिवाळुं, एक आंगळना फळावाळुं अने मध्यमां त्रण आंगळनुं करवुं. (तंत्रांतर उपरथी डल्हन .)

१० आ शस्त्र जळमां रेहेनार आड नामना पक्षीना जेवा मुखवाळुं अने बे आंगळना फळावाळुं करवुं. (वाग्भट.)

११ आ शस्त्र लांबी चांचवाळा अने सफेद कांधवाळा आड पक्षीना जेवा मुखवाळुं, बे आंगळना फळावाळुं, चपल पांखीयांओवाळुं अने बार आंगळ लांबुं करवुं. आ शस्त्र कातर केहेवाय छे. (डल्हन.)

१२ आ शस्त्र दोढ आंगळना फळावाळुं, आठ आंगळ लांबुं, वांकी धारावाळुं अने अर्द्धचंद्र जेवुं करवुं.

१३ आ शस्त्र आठ आंगळ लांबुं, त्रण फळांवाळुं अने एक एक फळा वच्चे चोखानी साळना जेटलां अंतरवाळुं करवुं.

१४ कुठारिका एटले कुहाडी. आ शस्त्र पोहोळुं, गायना दांत जेवा अरधा आंगळना मुखवाळुं अने दांडीवाळुं करवुं. (वाग्भट.)

१५ आ शस्त्र अरधा आंगळना फळावाळुं, चोखानी साळना जेवा मोहोडावाळुं, छ आंगळ लांबुं अने बे आंगळना हाथावाळुं करवुं.

१६ आ शस्त्र मोचीनी आर जेवुं, अरध आंगळना गोळ मोहोडावाळुं, अरध आंगळ सुधीज पेसनारूं अने उपरना भागमां तेटलाज चोरसपणावाळुं करवुं.(वाग्भट.)

१७ आ शस्त्र नेतरना पानडा जेवुं, एक आंगळ पोहोळुं, चार आंगळ लांबुं अने चार आंगळना हाथावाळुं करवुं. (भोजना ग्रंथ उपरथी डल्हन.)

१८ आ शस्त्र माछलां पकडवानी कुंढीनी पेठे नमेला मुखवाळुं करवुं. (वाग्भट.)

१९ आ शस्त्र एक प्रदेशमां एक धारावाळुं तथा चोरस करवुं अने बीजा प्रदेशमां गोळ आकारवाळुं करवुं. (वाग्भट.)

२० आ शस्त्र अणशीयाना जेवा मुखवाळुं, लांबुं अने व्रणने अनुसरती जाडाईवाळुं करवुं.

एओमां मंडलाग्र अने करपत्र ए बे शस्त्रो छेदनमां तथा लेखनमां (उखेडवा-खोतरवामां) काम आवे छे. वृद्धिपत्र, नखशस्त्र, मुद्रिका, उत्पलपत्रक, अने अर्धधार ए पांच शस्त्रो छेदनमां, भेदनमां तथा लेखनमां पण काम लागे छे. सूची, कुशपत्र, आटीमुख, शरारीमुख, अंतर्मुख, अने त्रिकूर्चक ए छ शस्त्रो परु तथा रुधिर वगेरेने स्रवाववामां काम लागे छे. कुठारिका, व्रीहिमुख, आरा तथा वेतसपत्रक ए चार शस्त्रो वींधवामां काम लागे छे. सूची पण वींधवामां काम लागे छे.[1] बडिश अने दंतशंकु ए बे शस्त्रो शल्योने बाहार खेंची लेवामां काम लागे छे. एषणी परु वगेरेने शोधवामां तथा स्रवाववामां काम लागे छे. सूचीओ सीववामा काम लागे छे. आ प्रमाणे आठ प्रकारनां कर्मोमां शस्त्रोनो उपयोग कह्यो.

३ तेषामथ यथायोगग्रहणसमासोपायः कर्मसु वक्ष्यते । तत्र वृद्धिपत्रं वृन्तफलसाधारणे भागे गृह्णीयाच्छेदनान्येवं सर्वाणि । वृद्धिपत्रं मण्डलाग्रं च किंचिदुत्तानपाणिना लेखने बहुशोऽवचार्यम् । वृन्ताग्रे विस्रावणानि । विशेषेण बालवृद्धसुकुमारभीरुनारीणां राज्ञां राजपुत्राणां च त्रिकूर्चकेन विस्रावयेत् । तलप्रच्छादितवृन्तमंगुष्ठप्रदेशिनीभ्यां व्रीहिमुखम् । कुठारिकां वामहस्तन्यस्तामितरहस्तमध्यमांगुल्यांगुष्ठविष्टब्धयाभिहन्यात् । आराकरपत्रैषण्यो मूले । शेषाणि तु यथायोगं गृह्णीयात् । तेषां नामभिरेवाकृतयः प्रायेण व्याख्याताः ॥

तत्र नखशस्त्रैषण्यावष्टांगुले । सूच्यो वक्ष्यन्ते । बडिशो दन्तशंकुश्चानताग्रे तीक्ष्णकण्टकप्रशमयवपत्रमुखे । एषणी गण्डूपदाकारमुखी । प्रदेशिन्यग्रपर्वप्रदेशप्रमाणा मुद्रिका । दशांगुला शरारीमुखी सा कर्तरीति कथ्यते । शेषाणि तु षडंगुलानि ॥

शस्त्रोने पकडवानी रीति, शस्त्रोना आकारोनी सूचना, शस्त्रोनां प्रमाणो तथा उपयोग करवानी रीति.

३ ए शस्त्रोने योग्य रीते पकडवानी तथा चोंचवानी रीति आगळ जतां शस्त्रोना उपयोगोना विषयोमां केहेवामां आवशे तोपण अहीं संक्षेपथी कहीए छीए. वृद्धिपत्र नामना शस्त्रने तेना हाथाना अने फळाना मध्यभागमां पकडवुं. जेओ भेदन करवानां शस्त्रो छे ते सर्वने एप्रमाणेज पकडवां. वृद्धिपत्रथी के मंडलाग्रथी लेखन करवुं होय त्यारे तेओने कांईक उंचा हाथथी पकडीने दरद उपर वारंवार तेओनी योजना करवी. बीजां शस्त्रोनी पेठे तेओनो एक वारज उपयोग करवो एम समजवुं नहीं. जे शस्त्रो परु वगेरेने स्रववावानां छे तेओने हाथाना अग्रमां पकडवां. विशेषे करी बाल, वृद्ध, सुकुमार, बीकण, जुवान स्त्रीओ, राजाओ के राजकुमारो एओनां परु वगेरेने स्रवाववां होय तो त्रिकूर्चक नामना शस्त्रथीज स्रवाववां. व्रीहिमुख नामना शस्त्रनो उपयोग करवो होय त्यारे तेना हाथाने हाथना तळांथी ढांकीने तेने अंगुठावते तथा अंगुठाना पडखानी आंगळीवते चलाववुं. कुठारिकाथी काम करवुं होय त्यारे तेने डाबा हाथमां राखी जमणा हाथनी वचली

---

१ कुशपत्र तथा उत्पलपत्रक वगेरेनो पण वींधवामां उपयोग थाय.

२ बडिश यंत्रोमां पण केहेवाई गयुं छे ते छतां शस्त्रोमां पण तेने लख्युं छे तेनुं कारण ए छे के यंत्ररूप बडिशनी जाडाई तथा लंबाई योग्यता प्रमाणे करवां. अने शस्त्ररूप बडिश तो छ आंगळनुं लांबुं तथा तीक्ष्ण कांटाना जेवा मुखवाळुंज करवुं.

३ एषणीने यंत्रोमां पण गणी छे अने शस्त्रोमां पण गणी छे. यंत्ररूप एषणीनुं यथायोग्य प्रमाण करवुं अने शस्त्ररूप एषणीनुं तो आठ आंगळनुंज करवुं. आनुं मुख तीक्ष्ण तथा झीणी अणीवाळुं करवुं.

४ सूचीओ (सोइयो) घणा प्रकारनी थायछे तेथी बहुवचन थाप्युं छे.

आंगळीने अंगुठानो टेको दई. ते आंगळीथी ठोकवी. आरा, करपत्र अने एषणी ए शस्त्रोने तेओना मूळमांज पकडवां अने बाकीनां शस्त्रोने जेम क्रिया करवामां अनुकूल आवे तेम पकडवां. आ शस्त्रोनी आकृतिओ तो घणुं करीने तेओनां नामो उपरथीज कही दीधी छे.

एओमां नखशस्त्र अने एषणी आठ आठ आंगळनां करवां. सूचीओनुं प्रमाण आ सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे. बडिश नमेली अणीवाळुं अने तीक्ष्ण कांटा जेवा मोहोडावाळुं करवुं. दंतशंकु नामनुं शस्त्र जवना पेहेला नीकळता पानडाना जेवा मुखवाळुं करवुं. एषणीनुं मोहोडुं अणशीयाना मोहोडा जेवुं करवुं. मुद्रिका नामनुं शस्त्र अंगुठाना पडखानी आंगळीना त्रण पर्वोमानुं उपलुं पर्व पेसी जाय तेवडुं करवुं. शरारीमुख अथवा शरारीमुखी नामनुं शस्त्र दश आंगळनुं करवुं. आ शस्त्र कातर केहेवाय छे. बाकीनां शस्त्रो छ छ आंगळनां करवां.[2]

४ तानि सुग्रहाणि सुलोहानि सुधाराणि सुरूपाणि सुसमाहितमुखाग्राण्यकरालानि चेति शस्त्रसम्पत् ॥

केवां शस्त्रो सारां गणाय.

४ शस्त्रो सारी रीते पकडीशकाय एवां, सारा लोढांवाळां, शोभती धारावाळां, सारा देखाववाळां, करकरी वगरनां अने जेओनां मोहोडाओनां अग्रो जेवां जोईए तेवां ठीक करी राखेलां होय एवां जोइए.

५ तत्र वक्रं कुण्ठं खण्डं खरधारमतिस्थूलमत्यल्पमतिदीर्घमतिह्रस्वमित्यष्टौ शस्त्रदोषाः। अतो विपरीतगुणमाददीतान्यत्रकरपत्रात्तद्धि खरधारमस्थिच्छेदनार्थम् ॥

केवां शस्त्रो खराब गणाय.

५ जे शस्त्र वांकुं, जाडी धारवाळुं होवाने लीधे रुवाणाने न उतारे एवुं, खंडित, खरसट धारवाळुं बहु जाडुं, बहु पातळुं, बहु लांबु के बहु टुंकुं होय ते खराब गणाय छे. वांकापणुं तथा जाडी धारवाळापणुं इत्यादि आठ दोषोमांथी जेमां कोई पण दोष न होय अर्थात् ए दोषोथी उलटा गुणोवाळुं एटले सरल, रुवाडांने उतारे एवी सूक्ष्मधारवाळुं, अखंडित, लासी धारवाळुं, बहु जाडुं न होय एवुं, बहु पातळुं न होय एवुं. बहु लांबुं न होय एवुं अने बहु टुंकुं पण न होय एवुं शस्त्र लेवुं. करवत तो लासी धारवाळुं नहीं पण खरसट धारवाळुंज जोईए. केम के तेनो उपयोग हाडकाना छेदनमां करवानो छे.

६ तत्र धारा भेदनानां मासूरी । लेखनानामर्द्धमासूरी । व्यधनानां विस्रावणानां च कैशिकी । छेदनानामर्द्धकैशिकीति

कयां शस्त्रोनी धारोनी केवी सूक्ष्मता करवी.

६ वृद्धिपत्र तथा नखशस्त्र आदि शस्त्रो के जेओ भेदन करवामां उपयोगी छे तेओनी धारा मसूरनी दाळ जेवी पातळी जोइए. मंडलाग्र आदि शस्त्रो के जेओ खोतरवामां—उखेडवामां उपयोगी छे तेओनी धारा मसूरनी अरधी दाळ जेवी पातळी जोइए. कुठारिका तथा व्रीहिमुख आदि शस्त्रो के जेओ वींधवामां उपयोगी छे अने सूची तथा कुशपत्र आदि शस्त्रो के जेओ परु वगेरेने स्रवाववामां उपयोगी छे तेओनी धारा वाळ जेवी पातळी जोइए. भेदनमां तथा उखेडवामां जे शस्त्रो उपयोगी छे तेओनोज ज्यारे छे-

१ तीक्ष्ण कांटाना जेवा मोहोडावाळी, जवना पेहेला नीकळता पानडाना जेवा मोहोडावाळी अने अणशीयाना जेवा मोहोडावाळी एम त्रण प्रकारनी एषणी थाय छे.

२ आ अध्यायना बीजा विषयनी नोटमां शस्त्रोनां प्रमाणोविषे आंगळनी जे संख्या आपेली छे ते ग्रंथांतरना मतप्रमाणे आपेली छे.

दनमां उपयोग करवो होय त्यारे तेओनी धारा वाळना अर्ध जेवी पातळी जोइए.

७ तेषां पायना त्रिविधा क्षारोदकतैलेषु । तत्र क्षारपायितं शरशल्यास्थिच्छेदनेषु । उदकपायितं मांसच्छेदनभेदनपाटनेषु । तैलपायितं शिराव्यधनस्नायुच्छेदनेषु । तेषां निशानार्थं श्लक्ष्णशिला माषवर्णा । धारासंस्थापनार्थं शाल्मलीफलकमिति ॥

शस्त्रोने पावानो अने चडाववानो प्रकार तथा तेओनी धार समी करवानुं पाटीयुं.

७ क्षारथी, पाणीथी अने तेलथी एम त्रण प्रकारें शस्त्रोने पावामां आवे छे[1]. तेमां बाणना शल्यना के हाडकाना छेदनमां जे शस्त्र वापरवानुं होय तेने क्षार पावो. मांसना कापवामां, भेदनमां के चीरवामां जे शस्त्रनो उपयोग करवो होय तेने पाणी पावुं अने शिराओने वींधवामां तथा स्नायुओने कापवामां जे शस्त्रनो उपयोग करवो होय तेने तेल पावुं. ए शस्त्रोनी धारने चडाववा माटे लासी अने अडद जेवी काळी शिला (पथरी) राखवी अने चडावेली धारने सर्वत्र सरखी करवा माटे शेमळा नामना झाडनुं पाटीयुं[2] राखवुं.

८ भवति चात्र ।
यदा सुनिशितं शस्त्रं रोमच्छेदि सुसंस्थितम् ।
सुगृहीतं प्रमाणेन तदा कर्मसु योजयेत् ॥

शस्त्र केवुं होय त्यारे काममां लेवुं.

८ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के " शस्त्र ज्यारे सारी पेठे सजेलुं, रुवाडांने लइ जाय एवुं, पाटीआपर चडाववाथी समी करेली धारावाळुं अने योग्य प्रमाणवाळुं होय त्यारे तेने आगळ कह्याप्रमाणे पकडीने तेनी क्रियामां उपयोग करवो. "

९ अनुशस्त्राणि तु त्वक्सारस्फटिककाचकुरुविन्दजलौकाग्निक्षारनखगोजीशेफालिकाशाकपत्रकरीरवालांगुलय इति ॥

अनुशस्त्रो (पोते शस्त्रो नहीं छतां शस्त्रोनुं काम करनारां.)

९ वांस, स्फटिक, काच, कुरुविंद, (एक जातनो रातो पथरो के जे उपर घसवाथी शस्त्रो तीक्ष्ण थाय छे ते अथवा रताशमां पीलाशवाळुं माणक) जळो, अग्नि, क्षार, नख, गळजीभीनां पानडां, धोळी नगोडनां पानडां, सागनां पानडां, केरडानी सळीओ, वाळ अने आंगळी एटलां अनुशस्त्रो[3] छे.

१० शिशूनां शस्त्रभीरूणां शस्त्राभावे च योजयेत् ।
त्वक्सारादिचतुर्वर्गं छेद्ये भेद्ये च बुद्धिमान् ॥
आहार्यच्छेद्यभेद्येषु नखं शक्येषु योजयेत् ।
विधिः प्रवक्ष्यते पश्चात्क्षारवह्निजलौकसाम् ॥
ये स्युर्मुखगता रोगा नेत्रवर्त्मगताश्च ये ।
गोजीशेफालिकाशाकपत्रैर्विस्रावयेत्तु तान् ॥
एष्येष्वेषण्यलाभे तु वालांगुल्यङ्कुरा हिताः ॥

शस्त्रोने-बदले अनुशस्त्रोनो उपयोग.

१० शस्त्रो मळे नहीं एवा समयमां अने बाळकोना अंगोमां के शस्त्रोथी भय पामनारा लोकोनां अंगोमां शस्त्रक्रिया करवी होय तो बुद्धिमान वैद्ये छेदवा योग्य अने भेदवा योग्य शल्योमां शस्त्रोने बदले वांस, स्फटिक, काच अने कुरुविंद एओनो उपयोग करवो. काहाडी लेवामां, छेदवामां अने भेदवामां जो बनी शके एम जणाय तो नखनो उपयोग करवो. क्षारनो, अग्निनो अने जळो मुकवानो प्रकार आगळ जतां केहेवामां आवशे. जे रोगो मुखमां के नेत्रोनी पांपणोमां होय तेओने स्रवाववा होय तो गळजीभीनां पानडां, धोळी नगोडनां पानडां अने सागनां पानडां एओथी स्रवाववा. जेओना छेडाने अथवा प्रदेश व-

[1] पावुं एटले शस्त्रोने गरम करी क्षारमां, पाणीमां अथवा तेलमां नाखीने बुझाववुं. [2] टपटपीयुं.

[3] जेओनां अंगो शस्त्रो घोंचवाने माटे लायक नथी एवां बालकोनां शरीरोमां तथा लायक छतां पण शस्त्रथी भयें पामनारा वगेरेनां अंगोमां शस्त्रोथी जे क्रिया करवानी होय ते क्रिया वांस वगेरेथी करवी.

गेरेने शोधवा जोइए एवा रोगोमां एषणी नामनुं शस्त्र न मळे तो वाळथी, आंगळीथी अने केरडानां अंकुरोथी काम चलाववुं ए हितकारी छे.

११ शस्त्राण्येतानि मतिमाञ्छुद्धशैक्यायसानि तु कारयेत्करणैः प्राप्तं कर्मारं कर्मकोविदम् ॥

शस्त्रो केवा लोढोडानां कराववां तथा केवा लुहारना हाथथी कराववां.

११ बुद्धिमान् वैद्ये ए शस्त्रो शुद्ध तीक्ष्ण लोहोडानां (गजवेलनां) कराववां अने जे लुहार शिल्पमां चतुर, पूरां साधनोवाळो अने अनुभवी होय तेना हाथथी कराववां.

१२ प्रयोगज्ञस्य वैद्यस्य सिद्धिर्भवति नित्यशः। तस्मात्परिचयः कार्यः शस्त्राणामादितः सदा ॥

वैद्ये अध्ययननी शरुआतथीज शस्त्रानो अभ्यास राखवो.

१२ शस्त्रोनी उत्तम योजना जाणनारा वैद्यने हमेश पोताना कामनां सिद्धि मळे छे एटला माटे तेणे अध्ययनना आरंभथीज नित्य शस्त्रोनो अभ्यास करवो.

अध्याय ९ मो.

१ अथातो योग्यासूत्रीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'योग्यासूत्रीय[१]' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अधिगतसर्वशास्त्रार्थमपि शिष्यं योग्यां कारयेत् । छेद्यादिषु स्नेहादिषु च कर्मपथमुपदिशेत् । सुबहुश्रुतोप्यकृतयोग्यः कर्मस्वयोग्यो भवति ॥

१ क्रियाओनो अभ्यास करवाविषेनो.

शिष्यने क्रियाओनो अभ्यास कराववाविषे.

२ शिष्य सघळा आयुर्वेदना अर्थने समजी चुक्यो होय तो पण तेने क्रियाओनो अभ्यास कराववो. छेदन वगेरेमां तथा स्नेहन वगेरेमां ते क्रियाओनी रीतिनो उपदेश करवो. (शिष्यना हाथथी ते क्रियाओ कराववी.) घणुंज अध्ययन करनारो तथा जेणे ते विषयमां बीजाओना मोढोडाथी पण घणुं सांभळ्युं होय एवो शिष्य पण जो क्रियाओनी कसरत करवा वगरनो रह्यो होय तो क्रियाओ करवामां नालायक रेहेछे.

३ तत्र पुष्पफलालाबूकालिन्दकत्रपुसैर्वारुककर्कारुकप्रभृतिषु छेद्यविशेषान् दर्शयेदुत्कर्तनपरिकर्तनानि चोपदिशेत् । दृतिबस्तिप्रसेवकप्रभृतिषूदकपंकपूर्णेषु भेद्ययोग्याम् । सरोम्णिचर्मण्याततं लेख्यस्य । मृतपशुशिरासूत्पलनालेषु च वेध्यस्य । घुणोपहतकाष्ठवेणुनलनालीशुष्कालाबुमुखेष्वेष्यस्य । पनसबिम्बीविल्वफलमज्जमृतपशुदन्तेष्वाहार्यस्य । मधूच्छिष्टोपलिप्ते शाल्मलीफलके विस्राव्यस्य । सूक्ष्मघनवस्त्रान्तयोर्मृदुचर्मान्तयोश्च सीव्यस्य । पुस्तमयपुरुषाङ्गप्रत्यङ्गविशेषेषु बंधयोग्याम् । मृदुमांसपेशीषूत्पलनालेषु च कर्णसन्धिबन्धयोग्याम् । मृदुषु मांसखण्डेष्वग्निक्षारयोग्याम् । उदकपूर्णघटपार्श्वस्रोतस्यलाबूमुखादिषु च नेत्रप्रणिधानबस्तिपीडनयोग्यामिति ॥

भवतश्चात्र ॥

एवमादिषु मेधावी योग्यार्हेषु यथाविधि ।
द्रव्येषु योग्यां कुर्वाणो न प्रमुह्यति कर्मसु ॥
तस्मात्कौशलमन्विच्छञ्छस्त्रक्षाराग्निकर्मसु ।
यस्य यत्रेह साधर्म्यं तत्र योग्यां समाचरेत् ॥

प्रथम कया कया पदार्थोमां क्रियाओनो अभ्यास कराववो.

३ पदकोळां, कडवी तुंबडीओ, कालिंगां, त्रूसडां, काकडी तथा कोळां ए वगेरेमां गोतीर्थ

तथा लांगलक आदि छेदनना प्रकारो देखाडवा अने उपरना भागोमां कापवानी तथा नीचेना भागोमां कापवानी रीतिओनो उपदेश करवो.

पखालो, मूत्राशयोनी कोथळीओ अने चामडाना कोस एओमां पाणी तथा कादव भरी ते पखालो वगेरेमां भेदन करवानो अभ्यास कराववो.

रुवाडांओवाळुं चामडुं पाथरीने तेमां लेखननो (उखेडवा तथा खोतरवानो) अभ्यास कराववो.

मरेला पशुओनी नसोमां अने कमळोनां नाळोमां वींधवानी क्रियानो अभ्यास कराववो.

घण नामना जीवडाओए फोलेलां काष्ठोमां, वांसोमां, बरुओमां, डांडलीओमां अने सुकाएली तुंबडीओ वगेरेमां शल्यादिक शोधी काहाडवानो अभ्यास कराववो.

फनस, घोलां तथा बीलां एओना गर्भोमां अने मरेलां पशुओना दांतोमां शल्यो काहाडी लेवानो अभ्यास कराववो.

जेना उपर मीण चोपडयुं होय एवा शेमळाना पाटीयामां स्रवाववानो अभ्यास कराववो.

झीणां तथा जाडां वस्त्रोना छेडाओमां तथा कोमळ चामडाना छेडाओमां सीववानो अभ्यास कराववो.

वस्त्र वगेरेथी बनावेलां माणसोनां पुतळाओनां ते ते अंगोमां तथा उपांगोमां पाटा बांधवा वगेरेनो अभ्यास कराववो.

कोमळ मांसोनी पेशीओमां तथा नील कमळोनां नाळोमां कानना सांधाओने बांधवानो अभ्यास कराववो.

कोमळ मांसना टुकडाओमां अग्निसंबंधी क्रियाओनो (डामवा वगेरेनो) अने क्षार मुकवानो अभ्यास कराववो.

जळथी भरेला घडाना पडखामां छिद्र करीने ते छिद्रमां तथा तुंबडानां मोहोडां वगेरेमां नळी नाखवानी तथा पिचकारी दबाववानी क्रियाओनो अभ्यास कराववो.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "बुद्धिमान् पुरुष जेओमां अभ्यासनी युक्ति फावे एवा उपर कहेला कोळां वगेरे पदार्थोमां शास्त्ररीतिने अनुसरीने छेदन-भेदनादिक क्रियाओनो अभ्यास करे तो पछी साचेसाची ते क्रियाओ करवामां मुंझातो नथी. आम छे एटलामाटे शस्त्रकर्म, क्षारकर्म, अने अग्निकर्म एओमां प्रवीणता मेळववानी इच्छा राखनारा पुरुषे जे जे पदार्थमां जे जे क्रिया करवा जेवी सरखाई जोवामां आवे ते ते पदार्थमां ते ते क्रिया करवानो अभ्यास करवो."

अध्याय १० मो.

१ अथातो विशिखानुप्रवेशनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विशिखानुप्रवेशनीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अधिगततन्त्रेणोपासिततन्त्रार्थेन दृष्टकर्मणा कृतयोग्येन शास्त्रार्थं निगदता राज्ञानुज्ञातेन नीचनखरोम्णा शुचिना शुक्लवस्त्रपरिहितेन छत्रवता दण्डहस्तेन सोपानत्केनानुद्धतवेषेण सुमनसा कल्याणाभिव्याहारेणाकुहकेन बंधुभूतेन भूतानां सुसहायवता वैद्येन विशिखानुप्रवेष्टव्या ॥

वैद्ये पोताना धंधानी शरुआत करवाविषे.

२ शास्त्रनो संपूर्ण अर्थ जाणी लई, शास्त्रना अर्थनुं संपूर्ण सेवन करी, बीजा वैद्योना हाथथी

१ वैद्ये पोतानो धंधो चलाववानी शरूआत करवा विषेनो.

थती छेदन तथा स्नेहन आदि क्रियाओनुं घणी घणीवार प्रत्यक्ष अवलोकन करी, पोतांना हाथथी पण ते ते क्रियाओ करवानो पूर्ण अभ्यास करी, शास्त्रनो अर्थ बीजा विद्वानोनी पासे केहेवो होय तो संपूर्ण तथा यथार्थ कही शकाय एवी शक्तिनुं संपादन करी, राजाने परीक्षा आपी तेनी पासेथी अनुज्ञापत्र मेळवीने वैद्ये पोताना धंधानी शरुआत करवी. वैद्ये पोताना नखो तथा डाहाडी मुछना वाळ सादा राखवा, पवित्र रेहेवुं, सफेद वस्त्रो पेहेरवां, हाथमां छत्र तथा लाकडी राखवां, पगरखां पेहेरी राखवां, वेष उद्धताई भरेलो नहीं पण सादो राखवो, मनमां प्रसन्न केहेवुं, मांगलिक बोलवानी टेव राखवी, कोई जातनुं कपट के ढोंग करवाथी दूर रेहेवुं, प्राणीओना बंधुरूप थईने वर्त्तवुं अने ज्यां जवुं होय त्यां पोतानी साथे कामकाज करवानेमाटे एक सारो सहाय राखवो.

३ ततो दूतनिमित्तशकुनमङ्गलानुलोम्येनातुरगृहमभिगम्योपविश्यातुरमभिपश्येत् स्पृशेत्पृच्छेच्च । त्रिभिरेतैर्विज्ञानोपायै रोगाः प्रायशो वेदितव्या इत्येके । तत्तु न सम्यक् । षड्विधो हि रोगाणां विज्ञानोपायः । तद्यथा पंचभिः श्रोत्रादिभिः प्रश्नेन चेति ॥

वैद्ये रोगीने घेर शी रीते जवुं अने त्यां जइने शुं करवुं.

३ पछी पोताने बोलाववा आवेला रोगीना दूतनी, सुगंधी वायु वगेरे निमित्तोनी, शुभपक्षीओनां बोलवां वगेरे शकुनोनी अने दर्पण आदि मांगलिक पदार्थोनी अनुकूलता लई, आतुरने घेर जई, त्यां बेसीने आतुरने जोवो, आतुरनो स्पर्श करवो तथा आतुरने तेनी स्थितिनी हकीकत पूछवी. केटलाएक केहेछे के "जोवाथी, स्पर्श करवाथी तथा पूछवाथी घणुं करीने रोगो जाणी लेवा" पण ते वात बराबर नथी. कारण के रोगोने जाणवाना ए त्रण उपाय नथी पण श्रोत्रइंद्रिय, त्वचाइंद्रिय, चक्षुइंद्रिय, रसनाइंद्रिय, घ्राणइंद्रिय अने प्रश्न ए छ उपायो छे.

४ तत्र श्रोत्रेन्द्रियविज्ञेया विशेषा रोगेषु व्रणास्रावविज्ञानीयादिषु वक्ष्यन्ते सफेनं रक्तमीरयन्ननिलः सशब्दो निर्गच्छतीत्येवमादयः । स्पर्शनेन्द्रियविज्ञेयाः शीतोष्णश्लक्ष्णकर्कशमृदुकठिनत्वादयो ज्वरशोफादिषु । चक्षुरिन्द्रियविज्ञेयाः शरीरोपचयापचयायुर्लक्षणबलवर्णविकारादयः । रसनेन्द्रियविज्ञेयाः प्रमेहादिषु रसविशेषाः । घ्राणेन्द्रियविज्ञेया अरिष्टलिङ्गादिषु व्रणानामव्रणानां च गन्धविशेषाः । प्रश्नेन च विजानीयाद्देशं कालं जातिं सात्म्यमातङ्कसमुत्पत्तिं वेदनासमुच्छ्रायं बलं दीप्ताग्नितां वातमूत्रपुरीषरजसां प्रवृत्त्यप्रवृत्ती कालप्रकर्षादींश्च विशेषान् । आत्मसदृशेषु विज्ञानाभ्युपायेषु तत्स्थानीयैर्जानीयात्

भवति चात्र

मिथ्यादृष्टा विकारा हि दुराख्यातास्तथैव च ।
तथा दुष्परिमृष्टाश्च मोहयेयुश्चिकित्सकम् ॥

रोगोने जाणवाना छ उपायोनुं विवेचन.

४ रोगोना विषयमां 'फीणवाळा रुधिरने प्रवर्त्तावतो पवन अवाज करतो नीकळे छे.' इत्यादिक विशेषो श्रोत्रइंद्रियथी जाणवामां आवे छे के जेओ व्रणास्रावविज्ञानीय आदि अध्यायोमां केहेवामां आवशे. (आ स्थाननो २२ मो अध्याय 'व्रणास्रावविज्ञानीय' ए नामथी केहेवाय छे.)

ज्वर तथा सोजा आदि रोगोमां थंडापणुं, गरमपणुं, लासापणुं, खरसटपणुं, कोमळपणुं, तथा कठणपणुं इत्यादिक विशेषो स्पर्शनेंद्रियथी (त्वचाचामडी इंद्रियथी) जाणवामां आवे छे.

शरीरनी स्थूलता, कृशता, आयुष्यनां लक्षणो, उत्साह अने वर्णना विचारो इत्यादिक विशेषो चक्षुइंद्रियथी जाणवामां आवे छे.

प्रमेह वगेरे रोगोमां जे मधुरपणा वगेरे रसोना विशेषो छे तेओ तेओना उपर मांखी तथा की-

डीओ वगेरेना जवा उपरथी जणाय छे माटे ते विशेषो रसनाइंद्रियथी जाणवामां आवे छे.

जे चिह्नो उपरथी 'रोगी मरी जशे' एवुं अनुमान थाय छे ते चिन्होमां व्रणोना तथा व्रणोथी जुदा रोगोना जे जे जुदा जुदा गंधोना विशेषो केहेवामां आवशे तेओ घ्राणइंद्रियथी जाणवामां आवे छे.

पूछवाथी जे देशमां रोग उत्पन्न थयो होय तेनी, रोगनी उत्पत्तिना समयनी, रोगीनी जातिनी, रोगीने अनुकूल पडता आहारविहारोनी, जेथी रोग थयो होय ते कारणनी, वेदनाना वधारानी, शरीरनी शक्तिनी, जठराग्निनी प्रदीप्तता वगेरे स्थितिनी, वायु मूत्र विष्टा तथा रज आदिनी प्रवृत्ति के अप्रवृत्ति थवानी, केटलो काल थया रोग थयो छे तेनी अने ए वगेरे बीजा विशेषोनी पण खबर पडे छे.

श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना, घ्राण अने प्रश्न ए छ परीक्षाना उपायो के जेओ सघळा दोषोनी परीक्षामां लागु पाडी शकाय एवा छे तेओथी प्राप्त थतां शब्दज्ञानथी, स्पर्शज्ञानथी, रूपज्ञानथी, रसज्ञानथी, गंधज्ञानथी अने वृत्तांत वगेरेना ज्ञानथी वैद्ये रोगोनी परीक्षा करी लेवी.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे विकारो खोटी रीते जोवामां आवे अथवा रोगीना मुखथी खोटी रीते जणाववामां आवे अथवा खोटा उपचारोथी योजवामां आवे ते विकारो वैद्यने मुंझावीदेछे."

५ एवमभिसमीक्ष्य साध्यान् साधयेद्याप्यान् यापयेदसाध्यान्नोपक्रमेत् परिसंवत्सरोत्थितांश्च विकारान् प्रायशो वर्जयेत् । तत्र साध्या अदि व्याधयः प्रायेणैषां दुश्चिकित्स्यतमा भवन्ति । तद्यथा श्रोत्रियनृपतिस्त्रीबालवृद्धभीरुराजसेवककितवदुर्बलवैद्यविदग्धव्याधिगोपकदरिद्रकृपणक्रोधवतामनात्मवतामनाथानां चैवं निरूप्य चिकित्सां कुर्वन् धर्मार्थकामयशांसि प्राप्नोति ॥

भवति चात्र ॥

स्त्रीभिः सहास्यां संवासं परिहासं च वर्जयेत्। दत्तं च ताभ्यो नादेयमन्नादन्यद्भिषग्वरैः ॥

---

१ जांगल, अनूप अने साधारण ए त्रण प्रकारना देशोमां जे देशमां व्याधि उत्पन्न थयो होय तेनी एटले कया देशमां आ दोषनो संचय थयो छे, कया देशमां प्रकोप थयो छे अने कया देशमां व्याधिनी उत्पत्ति थई छे अथवा आतुरना जे देशमां एटले अवयवमां व्याधि उत्पन्न थयो होय तेनी (कफस्थानमां उत्पन्न थयो छे के पित्तस्थानमां उत्पन्न थयो छे?) तेनी खबर पडेछे.

२ कई ऋतुमां तथा कई अवस्थामां उत्पन्न थयो छे तेनी तथा ज्वरादिक होय तो तेनो कया समयमां प्रादुर्भाव थाय छे तेनी.

३ ब्राह्मणादिक जातिनी.

४ जठराग्नि सम छे? विषम छे? के मंद छे? ए स्थितिनी.

५ वातव्रणमां अवाजवाळां तथा फीणवाळां रुधिरनुं तथा पवननुं नीकळवुं श्रोत्रथी जणाय छे. व्रणनुं कठोरपणुं के रुक्षपणुं इत्यादि त्वचाथी जणाय छे. व्रणनो भस्म जेवो, होला जेवो के अस्थि जेवो वर्ण चक्षुथी जणाय छे. तीखो तथा घाणी वगेरे जेवो गंध घ्राणथी जणाय छे, व्रणना कषाय वगेरे रसो रसनाथी जणाय छे अने तोदन तथा भेदन आदि विशेषो प्रश्नथी जणाय छे. पित्तव्रणमां उष्णता त्वचाथी जणाय छे. नीलो तथा पीळो वर्ण चक्षुथी जणाय छे, तीखो तथा खाटो रस रसनाथी जणाय छे, तीक्ष्णादिक गंध घ्राणथी जणाय छे अने दाह आदि वेदनाओ प्रश्नथी जणाय छे. तेमज कफव्रणमां स्निग्धपणुं वगेरे त्वचाथी जणाय छे, श्वेतपणुं चक्षुथी जणाय छे, मधुरत्वादिक रसनाथी जणायछे, दुर्गंधत्वादिक घ्राणथी जणाय छे अने खुजली तथा भारेपणा वगेरे विशेषो प्रश्नथी जणाय छे. आथी एम जणाव्युं के जे व्याधिओनां नामो आयुर्वेदना ग्रंथोमां कह्यां न होय ते व्याधिओने पण कुशाग्रबुद्धिवाळा वैद्ये वात आदि दोषोनां चिन्हो उपरथी जाणी लेवा.

केवा व्याधिओनी चिकित्सा करवी, केवा व्याधिओने छोडी देवा तथा केवा प्रकारथी वर्त्तवुं.

९ ए प्रमाणे पूर्ण विचार करीने वैद्ये साध्य व्याधिओने मटाडवानी चिकित्सा करवी, याप्य व्याधिओने थोभावी राखवानी तथा न वधवा देवानी चिकित्सा करवी अने असाध्य रोगोनी चिकित्सा करवीज नहीं. जे व्याधिओनी उत्पत्ति थयाने एक वर्ष नीकळी गयुं होय ते व्याधिओनी पण घणुं करी चिकित्सा करवी नहीं[1]. वेदीआ ब्राह्मणो, राजाओ, स्त्रीओ, बालको, वृद्धो, बीकण लोको, राजाना सेवको, जुगारीओ, नबळाओ, वैद्यकनुं थोडुंक ज्ञान मळवाथी पोताने वैद्य माननाराओ, व्याधिने गुप्त राखनाराओ, दरिद्र लोको, कंजुस लोको, क्रोधी लोको, अजितेंद्रिय लोको अने अनाथलोको एओना व्याधिओ साध्य छतां पण घणुं करीने चिकित्सा करवामां मुशकेली भरेला थई पडे छे[2]. आ प्रमाणे विचार करीने चिकित्सा करनारो वैद्य, धर्मने, धनने, सुखने अने यशने प्राप्त थाय छे.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "वैद्ये स्त्रीओनी साथे बेसवानी, स्त्रीओनी साथे रेहेवानी अने स्त्रीओनी साथे हांसी करवानी टेव राखवी नहीं. उत्तम वैद्योए स्त्रीओनी पासेथी अन्न शिवाय बीजुं कशुं तेओ आपे तोपण लेवुं नहीं. (राजानी के स्त्रीओना मालेकोनी अनुमति होय तो धनादिक पण लेवुं").

अध्याय ११ मो.

१ अथातः क्षारपाकविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'क्षारपाकविधि[3]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शस्त्रानुशस्त्रेभ्यः क्षारः प्रधानतमश्छेद्यभेद्यलेख्यकरणात्त्रिदोषघ्नत्वाद्विशेषक्रियावचारणाच्च। तत्र क्षरणात्क्षणनाद्वा क्षारः। नानौषधिसमवायात्त्रिदोषघ्नः शुक्लत्वात्सौम्यस्तस्य सौम्यस्यापि सतो दहनपचनदारणादिशक्तिरविरुद्धा स खल्वाग्नेयौषधिगणभूयिष्ठ-

---

१ व्याधिनी उत्पत्तिने एक वर्ष थई गयुं होय तो ते व्याधिनुं उत्तरोत्तर धातुओमां संक्रमण थवाने लीधे घणुं करीने असाध्यपणुं थई जाय छे. व्याधि जो एक के बे दोषथी थएल होय तो ते दोषोने शमावनारी ऋतुमां ते व्याधिनो प्रशम के अल्पता थाय पण एक वर्ष वीत्या छतां ते कशुं नहीं थवाथी त्रिदोषजन्यपणुं जणाय रेहेछे. 'घणुं करीने' एम कह्युं तेनुं कारण ए छे के केटलाक रक्तगुल्म वगेरे व्याधिओ एक वर्ष व्यतीत थई गया पछी पण चिकित्सा करवा योग्य छे अने आर्दित तो त्रण वर्ष वीती गयासुधी पण साध्य छे.

२ वेदीआ ब्राह्मणो नित्यस्नान वगेरेने छोडे नहीं तेथी, राजाओ स्वछंदचारी होय तेथी, स्त्रीओ लाजने लीधे वेगादिकने रोकी राखे तथा गुह्य व्याधिनो प्रकाश करे नहीं तेथी, बालको तथा वृद्धो विरेचन वगेरेने अयोग्य होय छे तेथी, बीकण लोको क्रियाथी बीये छे तेथी, राजाना नोकरो परतंत्र होय छे तेथी, जुगारीओ व्यसनी होय छे तेथी, नबळाओ वृद्ध समान होय छे तेथी, थोडुं समजवाथी पोताने वैद्य मानी लेनाराओ वैद्यना कह्याथी उलटुं करे तेथी, व्याधिओने गुप्त राखनाराओ व्याधिने कही देखाडे नहीं तेथी, दरिद्र लोको निर्धन होवाने लीधे औषध करी शके नहीं तेथी, कंजुसलोको लोभथी औषध करे नहीं तेथी, क्रोधीओना रोगो क्रोधथी वृद्धि पामे छे तेथी, अजितेंद्रिय लोको पथ्य पाळे नहीं तेथी अने अनाथ लोको परिचारक वगरना होय तेथी तेओना व्याधिओ साध्य छतां पण घणुं करीने चिकित्सा करवामां बहु मुशकेली भरेला थई पडे छे.

३ क्षार पकाववाना तथा क्षार मूकवाना प्रकारविषेनो.

त्वात् कटुक उष्णस्तीक्ष्णः पाचनो विलयनः शोधनो रोपणः शोषणः स्तम्भनो लेखनः कृम्यामकफकुष्ठविषमेदसामुपहन्ता पुंस्त्वस्य चातिसेवितः । स द्विविधः प्रतिसारणीयः पानीयश्च ।

क्षारनुं मुख्यपणुं, क्षार शब्दनी व्युत्पत्ति तथा क्षारनां कृत्यो.

२ मंडलाग्र वगेरे शस्त्रोथी अने जळो तथा अग्नि के जेओ अनुशस्त्रोमां प्रधान तथा प्रधानतर छे तेओथी पण क्षार अत्यंत मुख्य छे. कारण के छेदन, भेदन अने लेखन ए त्रण क्रियाओ के जेओ जळो मुकवाथी के अग्निथी थती नथी तेओ क्षारथी थाय छे अने वळी ते क्षार त्रणे दोषोने हरनार छे के जेथी पित्तसंबंधी अरशो वगेरेमां पण तेनो विशेष उपयोग छे. दुष्ट थएलां त्वचा तथा मांस वगेरेने चलायमान करेछे अथवा फाडी नाखेछे अथवा नष्ट करी नाखेछे तेथी क्षार केहेवायछे. क्षारमां अनेक औषधिओनो संयोग थायछे तेथी ते क्षार त्रणे दोषोने हणी नाखेछे अने जो के उष्ण छे तो पण सफेदपणाने लीधे सौम्य पण छे. क्षार सौम्य छतां पण तेमां बाळवानी, पकाववानी तथा फाडी नाखवा वगेरेनी शक्ति रहे छे. (जेम के हिम सौम्य छतां पण तेमां बाळवानी, पकाववानी तथा फाडी नाखवा वगेरेनी शक्ति छे.) क्षारमां अग्निसंबंधी (गरम) औषधिओनो जथो घणो छे तेथी ते क्षार तीखो छे, उष्ण छे, व्रणना सोजा तथा अन्नना अजीर्ण वगेरेने पकावनार छे[1], वात तथा कफवाळा सोजाने पीगळावी नाखनार छे, दुष्ट व्रणने शुद्ध करी नाखनार छे. शुद्ध व्रणमां भरती करनार छे,[2] कचकचता व्रणने सुकावनार छे, स्रवता लोहीने अटकावनार छे, त्वचा तथा मांस वगेरेने उखेडनार छे अने बाहारना तथा अंदरना कीडाओने[3], आमने, (अपक्व रसने) कफने, कोढने, झेरने अने मेदना रोगने हणनार छे. जो पीवाना क्षारनुं अत्यंत सेवन करवामां आवे तो तेथी वीर्यनो नाश पण थाय छे.

३ तत्र प्रतिसारणीयः कुष्ठकिटिभदद्रुकिलासभगन्दरार्बुददुष्टव्रणनाडीचर्मकीलतिलकालकन्यच्छव्यङ्गमशकबाह्यविद्रधिकृमिविषार्शस्सूपदिश्यते सप्तसु च मुखरोगेषूपजिह्वाधिजिह्वोपकुशदन्तवैदर्भेषु तिसृषु च रोहिणीष्वेतेषु चैवानुशस्त्रप्रणिधानमुक्तम् ॥ पानीयस्तु गरगुल्मोदराग्निसंगाजीर्णारोचकानाहशर्कराश्मर्याभ्यन्तरविद्रधिकृमिविषार्शस्सूपयुज्यते ॥

क्षारना बे प्रकार अने तेओनो नोखनोखा रोगोनी उपर उपयोग.

३ **प्रतिसारणीय** (बाहारना प्रदेशो पर मुकवानो) अने **पानीय** (पीवानो) एम क्षार बे प्रकारनो छे तेओमां **प्रतिसारणीय क्षार** कोढ, किटिभ, दादर, किलास, भगंदर, अर्बुद, दुष्ट व्रण,

१ प्रतिसारणीय क्षार व्रणना सोजाने पकावे छे अने पानीय क्षार अन्नना अजीर्णने पकावे छे.

२ क्षार औषधोना योगनी शक्तिने लीधे व्रणनी अंदर भरती पण लावे छे. केटलाएक केहेछे के 'शुद्ध व्रणमां शिरा वगेरेने कापी नाखवाना भयने लीधे क्षार मुकवो योग्यज नथी ते छतां अहीं तेने शुद्ध व्रणमां भरती लावनारो कह्यो तेनो अभिप्राय एवो समजवो के क्षार जाते भरती लावनारो नथी पण परंपराथी भरती लावनारो छे.' केटलाएक मूलपाठमांथी 'रोपण' ए शब्दने काहाडीज नाखे छे.

३ बाहारना कीडाओने प्रतिसारणीय अने अंदरना कीडाओने पानीय क्षार हणे छे.

४ किटिभ जोके एक जातनो कोढज छे तो पण कोढथी भिन्न लखवानुं कारण ए छे के किटिभ प्रतिसारणीयथी अवश्य मटे छे.

५ वृद्धि पामेला दोषो शरीरना कोई प्रदेशमां मांसने अने रुधिरने दूषित करी गोळ, स्थिर, मोटा, घणां मूळवाळा, उंडा पेठेला, लांबा काळसुधी वधे एवा अने गांठ करतां पण घणी जाडाईवाळा मांसना गोळाने उत्पन्न करे छे ते अर्बुद केहेवाय छे. (भा. प्र.)

नाडीव्रण चर्मकील, तिलकालक, न्यच्छ, व्यंग, मशक, (मस) बाहारना कृमि, बाहारनो विद्रधि, बाहारनुं झेर अने अरश इत्यादि रोगोउपर उपयोगी छे अने मोहडाना उपजिव्हे, अधिजिव्ह, उपकुश, दंतवैदर्भ, वातरोहिणी, पित्तरोहिणी, तथा कफरोहिणी ए सात रोगो उपरज उपयोगी छे. (मोहोडाना तो ए सात रोगो उपरज क्षार मुकवो. बीजा रोगो उपर नहीं मुकवो.) **पानीय** क्षार कृत्रिम झेर उपर, गुल्म उपर, उदरना रोगो उपर जठराग्निना विकारथी थता कालेराआदि रोगो उपर, अजीर्ण उपर, अरुचि उपर, आनाह उपर, वायुथी भेदाएली पथरीनी कांकरीओ उपर, पथरी उपर, अंदरना विद्रधि, उपर, अंदरना कृमिओनी उपर, अंदरना झेर उपर अने अरश उपर उपयोगी थाय छे.

४ अहितस्तु रक्तपित्तज्वरितपित्तप्रकृतिबालवृद्धदुर्बलभ्रममदमूर्छातिमिरपरीतेभ्योऽन्येभ्यश्चैवंविधेभ्यः

कया रोगीओने पानीय क्षार अहित छे.

४ रक्तपित्तवाळो, ज्वरवाळो, पित्तप्रकृतिवाळो, बालक, वृद्ध, दुर्बल, भ्रमथी घेराएलो, मदथी घेराएलो, मूर्छाथी घेराएलो, तिमिरथी घेराएलो अने एवाज प्रकारना बीजा रोगिओ एओने पानीय क्षार अहित छे.

१ उंडो पेठेलो अने नळीनी पेठे परूने वेहेनारो व्रण. (भा. प्र.)

२ कोप पामेलो व्यानवायु कफनो परिग्रह करी गुदाथी बाहार जे स्थिर अने चामडाना खीला जेवा अरश करे छे ते चर्मकील केहेवाय छे. (आ ग्रंथनुं निदानस्थान अध्याय २ जो.)

३ शरीर उपर पीडा वगरना काळा तल जेवां जे चिन्हो थाय छे ते तिलकालक केहेवाय छे. (भा. प्र.)

४ गात्रमां सहज, पीडारहित, नाहानुं अथवा मोटुं काळुं अथवा धोळुं जे चकरडुं थाय छे ते न्यच्छ केहेवाय छे. (भा. प्र.)

५ क्रोधथी तथा परिश्रमथी कोप पामेलो वायु पित्तथी संयुक्त थई मोहोडापर आवीने तुरत मोहोडा उपर पीडावगरनुं, नाहानुं अने काळुं मंडल करे छे ते मंडल व्यंग केहेवाय छे. (भा. प्र.)

६ त्वचा, रुधिर, मांस अने मेद एओने दूषित करी अस्थिपर्यंत पोहोचेला अत्यंत वृद्धि पामेला दोषोए करेलो उंडां मूळवाळो अने महा पीडाकारी भयंकर सोजो विद्रधि केहेवाय छे. (भा. प्र.)

७ जीभने उचकावीने थएलो जीभनी अणीजेवो अने चळ, लाळ तथा बळतरावाळो सोजो उपजिव्ह केहेवाय छे. (भा. प्र.)

८ रुधिरनी साथे मिश्रित थएला कफथी जीभनी उपर जीभनी अणीजेवो जे सोजो थाय छे ते. (भा.प्र.)

९ दांतोनां पेढांओमां दाह तथा पाक थाय, तेथी दांतो हलवा लागे, घसतां थोडी वेदनावाळो लोहीनो स्राव थाय, लोही स्रव्या पछी सोजो थाय तथा मुख दुर्गंधवाळुं थाय ते उपकुश केहेवाय छे अने ते पित्तथी तथा रक्तथी थायछे. (भा. प्र.)

१० दांतोनां मूळ घसतां मोटो सोजो थाय, दांतो हली जाय अने वेदना, दाह तथा पाक थाय ते दंतवैदर्भ. (भा. प्र.)

११ जीभने चोमेर अत्यंत वेदनावाळा अने कंठने रोकी दीए एवा मांसना कांटा थाय अने वायुथी थता उपद्रवो अत्यंत थाय ते वातरोहिणी केहेवाय. (भा. प्र.)

१२ गळामां मांसना जे कांटाओ तुरत थाय, तुरत बळतरा करे, तुरत पाकी जाय अने तीव्र ज्वर आवे ते पित्तरोहिणी केहेवाय. (भा. प्र.)

१३ कंठना स्रोतने रोकनारा, मंद पाकवाळा, भारे अने स्थिर जे मांसना कांटा उत्पन्न थाय ते कफरोहिणी केहेवाय. (भा. प्र.) सन्निपातज अने रक्तजरोहिणी तो असाध्यज छे तेथी तेओने अहीं लीधी नथी.

१४ आम अथवा विष्टा अनुक्रमथी जथाबंध थई दुष्ट पवनथी रोकाइने नीकळे नहीं ते रोग आनाह केहेवाय छे. (भा. प्र.)

१५ चक्र उपर चडेलानी पेठे जे रोगथी भ्रमण थाय छे ते भ्रम केहेवाय छे.

१६ विषथी, मद्यथी अथवा लोहिथी उत्पन्न थएलो विकार. जेवो के सोपारी खावाथी मीणो चडे छे.

५ तं चेतरक्षारवद्दग्ध्वा परिस्रावयेत्तस्य विस्तारोऽन्यत्र ॥

पानीय क्षार बनाववानो संक्षिप्त विधि.

५ नीचे जे प्रतिसारणीय क्षारनो विधि केहेवामां आवशे तेप्रमाणे काष्ठोने बाळी, ते भस्मने छ गणा पाणीमां पकावी, त्रीजा भाग जेटलुं पाणी अवशेष रहे त्यारे तेने मोटा वस्त्रथी स्रवावी लेवी पण प्रतिसारणीय क्षारनी पेठे बीजी वार पकाववी नहीं एटले ते पानीय क्षार केहेवाय छे. आ पानीय क्षारना संबंधमां जे कांई विस्तारथी केहेवानुं छे ते गुल्मादिना अध्यायोमां केहेवामां आवशे.

६ अथेतरस्त्रिविधो मृदुर्मध्यस्तीक्ष्णश्च । तं चिकीर्षुः शरदि गिरिसानुजं शुचिरुपोष्य प्रशस्तेऽहनि प्रशस्तदेशजातमनुपहतं मध्यमवयसं महान्तमसितमुष्ककमधिवास्यापरेद्युः पाटयित्वाऽभिमन्त्र्यानेन मन्त्रेण ।
अग्निवीर्य महावीर्य मा ते वीर्यं प्रणश्यतु ।
इहैव तिष्ठ कल्याण मम कार्यं करिष्यसि ।
मम कार्ये कृते पश्चात्स्वर्गलोकं गमिष्यसि ॥

श्वेतपुष्परक्तपुष्पसहस्रं जुहुयात् । खण्डशः प्रकल्प्यावपाट्य निर्वाते देशे निचितं कृत्वा सुधाशर्कराश्च प्रक्षिप्य तिलनालैरादीपयेदथोपशान्तेऽग्नौ तद्भस्म पृथग्गृह्णीयाद्भस्मशर्कराश्च ।

अथानेनैवविधानेन कुटजपलाशाश्वकर्णपारिभद्रकविभीतकारग्वधतिल्वकार्कस्नुह्यपामार्गपाटलानक्तमालवृषकदलीचित्रकपूतीकेन्द्रवृक्षास्फोताश्वमारकसप्तच्छदाग्निमन्थगुञ्जाश्चतस्रश्च कोशातकीः समूलफलपत्रशाखा दहेत् । ततः क्षारद्रोणमुदकद्रोणैः षड्भिरालोड्य मूत्रैर्वा यथोक्तैरेकविंशतिवारान् विस्राव्य महति कटाहे शनैर्दर्व्या विघट्टयन् विपचेत् ॥

स यदा भवत्यच्छो रक्तस्तीक्ष्णः पिच्छिलश्च तमादाय महति वस्त्रे परिस्राव्येतरद्विसृज्य च पुनरग्नावधिश्रयेत् । तत एव च क्षारोदकात्कुडवमध्यर्द्धं वापनयेत् ।

ततः कटशर्कराभस्मशर्कराक्षीरपाकशङ्खनाभीरग्निवर्णाः कृत्वाऽयसे पात्रे तस्मिन्नेव क्षारोदके निषिच्य पिष्ट्वा तेनैव द्विद्रोणेऽष्टपलसंमितं शंखनाभ्यादीनां प्रमाणं प्रतिवाप्य सततमप्रमत्तश्चैनमवघट्टयन् विपचेत् । स यथा नातिसान्द्रो नातिद्रवश्च भवति तथा प्रयतेत ।

अथैनमागतपाकमवतार्यानुगुप्तमायसे कुम्भे संवृतमुखे निदध्यादेष मध्यमः ।

एष एवाप्रतीवापः पक्वः संव्यूहिमो मृदुः ।

प्रतिवापे यथालाभं दन्तीद्रवन्तीचित्रकलांगलकीपूतिकप्रवालतालपत्रीबिडसुवर्चिकाकनकक्षीरीहिंगुवचाविषाः समाः श्लक्ष्णचूर्णाः शुक्तिप्रमाणाः प्रतिवापः । स एव सप्रतीवापः पक्वः पाक्यस्तीक्ष्णः ।

तेषां यथाव्याधिबलमुपयोगः । क्षीणबले तु क्षारोदकमावपेद्बलकरणार्थम् ॥

प्रतिसारणीय क्षार बनाववानो प्रकार.

६ प्रतिसारणीय क्षार मृदु, (कोमळ) मध्य अने तीक्ष्ण एम त्रण प्रकारनो थाय छे. ए क्षार बनाववानी इच्छा थाय त्यारे वैद्ये शरदृऋतुमां जोशीओने पूछवाथी सारो दिवस नक्की करीने ते दिवसे पवित्र थई, उपवास करी, पर्वतना शिखर उपर अथवा जांगल[1] देशमां सारा प्रदेशमां उगेला, दावाग्नि वगेरेथी नहीं उपघात पामेला, मध्यम अवस्थावाळा अने मोटा, काळा मरखानी पासे जई, अधिवासन करी आवी, बीजे दिवसे त्यां जई तेने फाडी नाखी "हे अग्निसरिखा जोरवाळा! हे मोटी शक्तिवाळा! तारी शक्तिनो नाश थजो मां. हे कल्याणरूप! तुं अहींज रेहेजे तथा मारूं काम करजे. मारूं काम कर्या पछी स्वर्गलोकमां जजे."

१ जे देश अल्प वृक्षोवाळो, अल्प जळवाळो, अने उष्णतावाळो होय ते देश जांगल केहेवाय छे.

ए अर्थवाळा मूलोक्त मंत्रथी अभिमंत्रण करी एक हजार धोळां फूल तथा रातां फूलनो होम करवो. पछी ते मरखानां काष्ठोना फाडा करी, फाडाओना पण टुकडेटुकडा करी नाखी, ते टुकडाओने पवन वगरना प्रदेशमां खडकी, ते ढगलामां जेओमांथी चूनो बने छे एवी कांकरीओ नाखी तेने तलसरांओथी सळगावी देवो. बळी जाय अने अग्नि शांत थई जाय त्यारे भस्मने लई लेवी अने चूनानी पाकी तथा काची कांकरीओने पण जुदी लई लेवी. पछी एज रीतिथी पर्वतना शिखर उपर के जांगल देशमां सारी जग्यापर उगेलां इंद्रजवनां बे[1] जातनां झाड, खाखरो, राळनुं झाड, देवदार, बेहेडानुं झाड, गरमाळानुं झाड, लोदरनुं[2] झाड, आकडो, थोर, अघेडो, काकच, करंज, अरडूसी, केळ, चित्रानुं झाड, गुच्छ-चरेल, करंज, उपलसरी, कणेर, सप्तपर्ण, अरणी, चणोठीनुं झाड अने चार प्रकारनी[3] कडवी घीसोडीओ एओने फळ, फूल, पानडां तथा शाखाओ सहित बाळी तेओनी भस्मने पण जुदी लई लेवी[4].

पछी मरखानी भस्मना बे भाग अने इंद्रजव आदिनी भस्मनो एक भाग लई, बन्नेने मिश्रित करी, तेनो एक हजार चोवीश तोलां भार तोल करी तेटली भस्मने तेथी छगणां पाणीमां अथवा छगणां गोमूत्रमां घोळी नाखी, तेने मोटा कडायामां वस्त्रथी एकवीश वार गाळी लई, ते सघळा पाणीने मोटा कडायानी नीचे आंच करी धीरे धीरे कडछाथी हलावतां हलावतां पकाववुं.

पछी ए क्वाथ ज्यारे आछो, रातो, तीक्ष्ण अने चीकणा तांतडावाळो थाय (ज्यारे त्रीजा भाग जेटलुं पाणी अवशेष रहे त्यारे आ सघळा गुणो थई जाय छे.) त्यारे तेने लई मोटा वस्त्रथी गाळी लई किटांने फेकी दई ते क्वाथने फरीवार अग्नि उपर कडायामां चडाववो अने तेमांथी एक कुडव (सोळ तोलां भारनुं एक कुडव थाय छे.) अथवा दोढ कुडवभार पाणी जुदुं काहाडी लेवुं.

पछी चुनानी काची कांकरीओ, पाकी कांकरीओ छीपो तथा शंखोना वळीओवाळा भाग एओने समभागे एटले प्रत्येकने आठ आठ पलभार (चार तोलां भारनुं एक पल थाय छे.) लई अग्निमां नाखी अग्निजेवां खूब लाल करी तेओने लोहोडानां पात्रमां भरेला पेला कुडवभार अथवा दोढ कुडव भार पाणीमां ठारी, तेज पाणीथी वाटी ते सर्वना लोंदाने पेला बे हजार अडतालीश तोलांभार पाणीवाळा क्वाथमां नाखी, अविच्छिन्न रीते कांई पण गफलत नहीं राखतां कडछाथी हलावी हलावीने पकाववो अने तेमां एवी तजवीज राखवी के ए क्वाथ अत्यंत घाटो न थई जाय तथा अत्यंत पातळो पण न रहे.

पछी ए क्वाथमां बराबर पाक आवी जाय त्यारे तेने उतारी लई योग्य रक्षणथी लोहोडाना घडामां नाखवो अने ते घडानुं मोहोडुं बंध करी

१ इंद्रजवनां झाड बे प्रकारनां थाय छे तेओमां मोटां फळोवाळुं, मोटां फुलोवाळुं तथा स्निग्ध पानडांवाळुं झाड नर केहेवाय छे अने नाहानां फळोवाळुं नाहानां दीटीयांवाळुं तथा काळां अने रातां फळोवाळुं झाड मादा केहेवाय छे. (डल्लन.)

२ जेम बीलीमां त्रण त्रण पानडां साथे थाय छे तेम आमां सात सात पानडां साथे थाय छे अने ते शेमळानां पानडां जेवां होय छे.

३ मोटां फळोवाळी, नाहानां फळोवाळी, सफेद पुष्पोवाळी अने पीळां पुष्पोवाळी.

४ जो के मरखानो अने इंद्रजवनां झाड वगेरेनो साथेज उपयोग करवानो छे तो पण तेओनी भस्मने जुदी जुदी करवानुं कह्युं तेनुं कारण ए छे के इंद्रजवनां झाड वगेरेनी भस्मना भाग करतां मरखानी भस्मना भाग अधिक दाखल करवाना छे. केटलाएक तो एम केहेछे के एकला मरखानी भस्मथी पण क्षार थाय एम जणाववाने माटे जुदुं जुदुं विधान कर्युं छे.

५ लोहोडाना घडामां नाखवा करतां हालना समयना काचना शीसामां नाखवो ए वधारे अनुकूल थशे.

देवुं. आ प्रमाणे तैयार करेलो प्रतिसारणीय क्षार मध्यम केहेवाय छे.

चूनानी काची तथा पाकी कांकरीओ वगेरेने नहीं नाखतां उपर प्रमाणे केवळ क्राथथीज तैयार करवामां आव्यो होय तो ते प्रतिसारणीय क्षार मृदु अथवा संव्यूहिम केहेवाय छे.

एने तैयार करवाना समयमां तेमां चूनानी काची तथा पाकी कांकरीओ वगेरेनो वाटेलो लोंदो नाखीने ते पछी नेपालो, द्रवंती, (बीजी ज़ातनो नेपाळो) चित्रो, दूधीओ, वछनाग, करंजनां पानडां, मुसली, बिडलूण, संचळ, दारुडी, हींग, वज अने अतवसनी कळी एओमांथी जेटलां मळी आवे तेटलांने समभागे लई एटले प्रत्येकने बबे तोलां भार लई, तेओनुं बारीक चूर्ण करी ते चूर्ण पण नाखी पाक करवो. आप्रमाणे करवामां आवे तो ते प्रतिसारणीय क्षार तीक्ष्ण अथवा पाक्य केहेवाय छे.

आ मृदु, मध्यम अने तीक्ष्ण ए त्रण प्रकारना क्षारोनो व्याधिना बळने अनुसरीने उपयोग करवो. तैयार कर्या पछी काळने लीधे अथवा औषधिओनी हीनतानेलीधे क्षार जो निर्बल थई जाय तो तेने बळ आपवा माटे तेमां उपर कहेलुं एकवीश वार गाळेलुं भस्मनुं जळ नाखीने तेने फरीवार पकाववो.

७ भवतश्चात्र ॥

नैवातितीक्ष्णो न मृदुःशुक्लःश्लक्ष्णोऽथ पिच्छिलः
अभिष्यन्दी शिवः शीघ्रः क्षारो ह्यष्टगुणः स्मृतः॥
अतिमार्दवशैत्यौष्ण्यतैक्ष्ण्यपैच्छिल्यसर्पिताः ।
सान्द्रताऽपक्वता हीनद्रव्यता दोष उच्यते ॥

क्षारना गुणो तथा दोषो.

७ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "क्षारमां आठ गुणो जोइए एटले अत्यंत तीक्ष्णपणुं पण नहीं जोइए. अत्यंत कोमळपणुं पण नहीं जोइए, अत्यंत सफेदपणुं पण नहीं जोईए. लस्सापणुं जोईए. चीकणा तांतडा होवा जोइए. मुक्या पछी रेलाई जाय एवी स्थिति होवी जोईए. सौम्यता होवी जोईए. अने तुरत काम करनारपणुं होवुं जोईए.

अत्यंत कोमळपणुं, अत्यंत सफेदपणुं, अत्यंत उष्णपणुं, अत्यंत तीक्ष्णपणुं, अत्यंत चीकणा तांतडावाळापणुं, अत्यंत रेलाइजनारपणुं, अत्यंत घाटापणुं, अपक्वपणुं अने हीनशक्तिवाळां औषधोथी युक्तपणुं ए नव दोषोमांथी कोइपण दोष क्षारमां नहीं जोइए."

८ तत्र क्षारसाध्यव्याधिव्याधितमुपवेश्य निर्वातातपे देशेऽसम्बाधेऽग्रोपहरणीयोक्तेन विधानेनोपसंभृतसंभारं ततोऽस्य तमवकाशं निरीक्ष्यावघृष्यावलिख्य प्रच्छयित्वा शलाकया क्षारं पातयित्वा वाक्छतमात्रमुपेक्षेत ॥

प्रतिसारणीय क्षार मुकवानो प्रकार.

८ जेने क्षारथी मटे एवो व्याधि थयो होय तेने जेमां वायु पण न होय, तडको पण न होय अने लोकोनी गरदी पण न होय एवा विशाल प्रदेशमां बेसाडी, सूत्रस्थानना 'अग्रोपहरणीय' नामना पांचमा अध्यायमां कह्याप्रमाणे योग्य मुहूर्तमां तेनी पासे यंत्र, शस्त्र, क्षार, अग्नि तथा सळी वगेरे सामग्रीओ मुकी, पछी शरीरना जे प्रदेशमां

---

१ जो चुनानी कांकरा वगेरे पदार्थो वधारे नाख्या होय तो अत्यंत सफेद थई जाय. केटलाएक तो मूळना अति शब्दने शुक्लनी साथे संबंध नहीं आपीने अर्थ करेछे के क्षार सफेदज़ जोइए.

२ मूळमां **श्लक्ष्ण** शब्दने बदले **मृत्स्नः** एवो पण पाठ छे तेनो अर्थ एवो थाय के त्वचाने गोठे एवो होवो जोइए.

३ मूळमां **शिव** शब्दने बदले **समः** एवो पाठ पण छे तेनो अर्थ एवो थाय के बहु घाटो के बहु पातळो न होवो जोईए.

४ जेनुं वारण करवुं होय तो सेहेज बनी शके एवो अने फक्त दोषनेज लागु पडे एवो होवो जोइये एम बे गुणो अधिक पण बोलवामां आवे छे. खरज लाववा वगेरे गुणो नहीं होवा जोइए.

व्याधि थएल होय ते प्रदेशने बराबर जोइ तपासी व्याधिनो आकार जाणी लई, ते व्याधि जो पित्तथी थएल होय तो ते प्रदेशने घसीने, वायुथी थएल होय तो ते प्रदेश बेहेरमारी गएली कठण चामडीवाळो होवाने लीधे तेने खणीने अने कफथी थएल होय तो ते प्रदेश खरज तथा सोजानी प्रबळतावाळो होवाने लीधे तेने टोचीने तेमां शलाकायंत्रवते क्षार मुकवो अने मुक्या पछी सो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थाय तेटला समयसुधी एम ने एम रेहेवा देवो. (आटला समयमां जे क्षार व्याधिने बाळी शके ते क्षारने संपूर्ण गुणवाळो समजवो.)

९ तस्मिन्निपतिते व्याधौ कृष्णता दग्धलक्षणम् ॥

व्याधि क्षारथी जेवो बळवो जोइए तेवो बळ्यो के नहीं ? तेनी परीक्षा.

९ क्षार पड्या पछी व्याधि काळा वर्णवाळो थई जाय तो तेने सम्यग्दग्ध (बराबर बळेलो) समजवो. (सम्यग्दग्धपणानुं आ सामान्य लक्षण छे.)

१० तत्राम्लवर्गः शमनः सर्पिर्मधुकसंयुतः॥

सम्यग्दग्ध थया पछी क्षारनुं शमन करवाना उपाय.

१० घी तथा जेठीमध सहित सौवीरक[1] तुषोदक[2] अने धान्याम्ल[3] आदि अम्लवर्ग (खाटा पदार्थोनो वर्ग) क्षारनुं शमन करनार छे.

११ अथ चेत्स्थिरमूलत्वात्क्षारदग्धं न शीर्यते
इदमालेपनं तत्र समग्रमवचारयेत् ॥
अम्लकांजिकबीजानि तिलान्मधुकमेव च ।
प्रपेष्य समभागानि तेनैवमनुलेपयेत् ॥

क्षारथी बळी गएलो व्याधि वींखाय नहीं तो शुं करवुं ?

११ जो व्याधि स्थिर मूळवाळो होवाने लीधे क्षारथी बळया छतां पण वींखाय नहीं तो खाटी कांजीनी[4] नीचेना कांजीना पदार्थोने, तिलोने अने जेठी मधने समभागे लई वाटीने तेनो क्षारथी बळेला भाग उपर संपूर्ण रीते लेप करवो.

१२ तिलकल्कः समधुको घृताक्तो व्रणरोपणः।

क्षारे करेला व्रणने भरती लावीने रुझाववानो उपाय.

१२ क्षारे करेला व्रण उपर जो जेठीमध सहित तिलोने वाटी तेनां लोंदामां घी नाखीने ते लोंदानो लेप करवामां आवे तो ते व्रण भोंय आवीने रुझाई जाय छे.

१३ रसेनाम्लेन तीक्ष्णेन वीर्योष्णेन च योजितः।
आग्नेयेनाग्निना तुल्यः कथं क्षारः प्रशाम्यति ॥

शंका.

१३ सौवीरक, तुषोदक अने धान्याम्ल आदि खाटो रस के जे तीक्ष्ण छे, उष्ण वीर्यवाळो छे अने अग्निसंबंधीज छे तेथी अग्नि जेवा क्षारनुं शमन केम थवुं जोईए ?

१४ एवं चेन्मन्यसे वत्स प्रोच्यमानं निबोध मे ।
अम्लवर्ज्यान्रसान्क्षारे सर्वानेव विभावयेत् ॥
कटुकस्तत्र भूयिष्ठो लवणानुरसस्तथा ।
अम्लेन सह संयुक्तः स तीक्ष्णलवणो रसः ॥
माधुर्यं भजतेऽत्यर्थं तीक्ष्णभावं विमुञ्चति ।
माधुर्याच्छममाप्नोति वह्निरद्भिरिवाप्लुतः ॥

समाधान.

१४ हे पुत्र ! तमने एम लागतुं होय तो हुं ए शंकानुं समाधान कहुं छुं ते सांभळो. क्षारमां

---

१ फोतरां काहाडी नाखी काचा अथवा पाका जवोना टुकडा करी जे पाणीमां आथ्या होय ते पाणी सौवीरक केहेवाय छे. केटलाएक केहेछे के एवी रीते घउंना टुकडा आथवाथी पण सौवीरक थाय छे.

२ फोतरांसहित काचा जवोना टुकडे टुकडा करीने पाणीमां आथ्या होय तो ते पाणी तुषोदक केहेवाय छे.

३ चोखानुं चूर्ण तथा कोदरा वगेरेनुं चूर्ण आथवाथी धान्याम्ल थाय छे.

४ धान्य अने वडां वगेरे जे आथेलां होय ते कांजी केहेवाय छे.

एक खाटा रस शिवाय बीजा पांचे रसो छे अने तेओमां खारो रस प्रधान छे अने तीखो रस खारा रसथी कांईक ओछो छे[1]. क्षारमां रहेलो ए तीक्ष्ण खारो रस सौवीरक आदि खाटा रसना संयोगथी अत्यंत मधुर थई जाय छे अने तीक्ष्णपणाने छोडी दे छे. जेम अग्नि पाणीथी भीजाईने शांत थई जाय छे तेम क्षार खारा रसना अने खाटा रसना समागमथी थएली मधुरताथी शांत थई जाय छे.

१५ तत्र सम्यग्दग्धे विकारोपशमो लाघवमनास्रावश्च । हीनदग्धे तोदकण्डूजाड्यानि व्याधिवृद्धिश्च । अतिदग्धे दाहपाकरागस्रावांगमर्दक्लमपिपासामूर्च्छाः स्युर्मरणं वा ॥

क्षारदग्धनी बीजी चिकित्साओ केहेवा माटे ठीक रीते बळ्यानां, ओछुं बळ्याना अने अत्यंत बळ्याना लक्षणा.

१५ व्याधिनुं स्थल क्षारथी ठीक बळेल होय तो विकारोनी शांति थाय छे, अंगोमां हलकापणुं थाय छे अने लोही तथा परु वगेरेनो स्राव बंध पडी जाय छे. (आ सम्यग्दग्ध वाय छे.)

व्याधिनुं स्थल क्षारथी ओछुं बळेल होय तो भोंकाया जेवी पीडा थाय छे, खरज आवे छे. जडपणुं थाय छे अने व्याधिनी वृद्धि थाय छे[3]. (आ हीनदग्ध केहेवाय छे.)

व्याधिनुं स्थल क्षारथी अत्यंत बळेल होय तो बळतरा थाय छे, पाकी जाय छे, रताश थाय छे, स्राव थाय छे, अंगो भांग्या करे छे, ग्लानि थाय छे, तरश लागे छे, मूर्छा आवे छे अने वखतपर मरण पण थई जाय छे[4]. (आ अतिदग्ध केहेवाय छे.)

१६ क्षारदग्धव्रणं तु यथादोषं यथाव्याधि चोपक्रमेत् ॥

क्षारथी बाळेला व्रणमां ओछा बळवाथी के अत्यंत बळवाथी बगाड थाय तो तेनी चिकित्सा.

१६ क्षारथी दग्ध थएला व्रणमां बगाड थाय तो दोषोनी उपर तथा व्याधि उपर लक्ष्य आपी ते दोषोना तथा व्याधिना प्रत्यनीक (सामावळीयापणुं धरावनारा) उपायथी तेनी चिकित्सा करवी.

१७ अथ नैते क्षारकृत्याः । तद्यथा दुर्बलबालस्थविरभीरुसर्वाङ्गशूनोदरिरक्तपित्तिगर्भिण्यृतुमतीप्रवृद्धज्वरिप्रमेहोरःक्षतक्षीणतृष्णामूर्च्छोपद्रुतक्लीबापवृत्तोद्वृत्तफलयोनयः ॥

केवां माणसो क्षारकर्मने अयोग्य छे.

१७ नीजे लखेलां माणसोनी उपर क्षारक्रिया करवी नहीं. दुर्बल, बालक, वृद्ध, बीकण, सर्व अंगोमां सूजी गएलो, उदररोगी, रक्तपित्तवाळो, गर्भवाळी स्त्री, रजस्वला स्त्री, अत्यंत वृद्धि पामेला ज्वरवाळो, प्रमेहवाळो, छातिना क्षतथी क्षीण थएलो, तरशथी उपद्रव पामेलो, मूर्छाथी उपद्रव

---

१ केटलाएक मानेछे के 'क्षारमां तीखो रसज अधिक छे' पण ते वात बराबर नथी. कारण के लोको खाटा पदार्थोना भक्षणमां मधुरताने माटे खारा पदार्थोनोज उपयोग करेछे अने ग्रंथकारे पण क्षारने लवणवर्गमांज दाखल करेलो छे. लवणवर्गमां पाठथीज क्षारनुं लवणपणुं सिद्ध थाय छे ते छतां आ अध्यायना बीजा विषयमां क्षारने तीखो कह्यो छे तेनुं कारण ए छे के क्षारमां तीखो रस खारा रसथी ओछो छे पण बीजा रसोथी अधिक छे एम जणाववानुं छे.

२ क्षार मुकाया पछी केटलीकवारे आ लक्षणो थाय छे. केटलाएक केहेछे के आ लक्षणोमानां केटलांएक तुरतज थायछे अने केटलांएक अमुक समयपछी थाय छे.

३ केटलाएक मूळनो **'तोददाहकंडूजाड्यानि'** एवो पाठ बोलीने केहेछे के भोंकावुं ए वायुना, दाह ए पित्तना, खरज ए कफना अने जडता ए रुधिरना प्रकोपनुं चिन्ह छे.

४ दाह तथा पाक इत्यादिक पित्तना प्रकोपनां चिन्हो छे.

पामेलो, क्षीण वीर्यवाळो, जेना वृषणो योग्य स्थलथी उंचे चडीगया होय ते, जेना वृषणो योग्य स्थलथी नीचे उतरीगया होय ते, जेनो गर्भाशय अथवा योनि योग्य स्थलथी ऊंचे चडी गएल होय ते[2] अने जेनो गर्भाशय अथवा योनि योग्य स्थलथी नीचे उतरी गयां होय ते, एटलां माणसोनां शरीरोमां क्षारक्रिया करवी नहीं.

१८ तथा मर्मशिरास्नायुधमनीसन्धितरुणास्थिसेवनीगलनाभीनखान्तरशेफस्रोतस्स्वल्पमांसेषु च प्रदेशेष्वक्ष्णोश्च न दद्यादन्यत्र वर्त्मरोगात् ॥

शरीरना कया कया प्रदेशोमां क्षार मुकवो नहीं.

१८ मर्मस्थलो, शिराओ, स्नायुओ, धमनीओ, सांधाओ, तरुण अस्थिओ[3], सीवणीओ[4], गळुं, नाभी[5], नखोनां मध्य, लिंग, स्रोतो, जेओमां मांस थोडुं छे एवा गोठण तथा ललाट वगेरे प्रदेशो अने नेत्रो एओमां क्षार मुकवो नहीं. नेत्रोनी पांपणोमां रोग थयो होय तो नेत्रोनो[6] संबंध छतां पण पापणोमां क्षार मुकवो.

१९ तत्र क्षारसाध्येष्वपि व्याधिषु शूनगात्रमस्थिशूलिनमन्नद्वेषिणं हृदयसन्धिपीडोपद्रुतं क्षारो न साधयति ॥

व्याधि क्षारथी साध्य होय तो पण केवां माणसोनो व्याधि क्षारथी मटतो नथी.

१९ सूजी गएलां गात्रोवाळो, जेने हाडकाओमां शूल होय ते, अन्न उपर अरुचिवाळो, हृदयनी पीडाथी उपद्रव पामेलो अने सांधानी पीडाथी उपद्रव पामेलो एओना, रोगो क्षारथी साध्य होय तो पण ते रोगोने क्षार मटाडतो नथी.

२० भवति चात्र ॥

विषाग्निशस्त्राशनिमृत्युकल्पः
क्षारो भवत्यल्पमतिप्रयुक्तः ।
स धीमता सम्यगनुप्रयुक्तो
रोगान्निहन्यादचिरेण घोरान् ॥

क्षारनी क्रियामां बुद्धिमान् वैद्यनी जरूर.

२० आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "अल्प बुद्धिवाळा वैद्ये मुकेलो अथवा पायेलो क्षार विषनी पेठे वेदनाओथी सर्व अंगोमां व्यापीने, अग्निनी पेठे फोल्ला वगेरे उत्पन्न करीने, शस्त्रनी पेठे अंगच्छेदन करीने अने वीजळीनी पेठे झडप करीने मारीनाखे छे पण ए क्षार जो बुद्धिमान् वैद्ये मुकेलो के पायेलो होय तो थोडा समयमांज भयंकर रोगोने पण नष्ट करी नाखे छे.

अध्याय १२ मो.

१ अथातोऽग्निकर्मविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अग्निकर्मविधि' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ क्षाराग्निर्गरीयान् क्रियासु व्याख्यातस्तद्दग्धानां रोगाणामपुनर्भावाद्भेषजशस्त्रक्षारैरसाध्यानां तत्साध्यत्वाच्च ॥

अग्निनुं सामर्थ्य.

२ अग्नि गुणोमां नहीं पण कामोमां क्षार क-

१ नपुंसकने तो क्षारनो अधिकारज नथी.

२ आमां केटलाएकने प्रतिसारणीय क्षारनो, केटलाएकने पानीय क्षारनो अने केटलाएकने बन्ने प्रकारना क्षारनो निषेध छे.

३ नासिका, कर्ण, कंठ अने नेत्रो एओनां अस्थिओ तरुण अस्थिओ कहेवाय छे.

४ माथामां पांच, जीभमां एक अने लिंगमां एक ए रीते सात सीवणीओ छे.

५ जो के नाभि मर्मोमांज आवी जाय छे तो पण नाभिनुं जुदुं ग्रहण कर्युं छे तेनुं कारण ए छे के नाभिमां क्षार मुकवाथी वधारे खराबी थाय छे ए जणाववानुं छे.

६ अग्निथी डांभवानी क्रियाविधिनो.

रतां पण बलवत्तर छे[1]. कारण के अग्निए बाळेला रोगो पाछा उत्पन्न थता नथी अने जेओ औषधोथी, शस्त्रोथी तथा क्षारोथी पण असाध्य होय ते रोगो अग्निथी टळी जाय छे[3].

३ अथेमानि दहनोपकरणानि । तद्यथा । पिप्पल्यजाशकृद्गोदन्तशरशलाका जांबवौष्ठेतरलौहाः क्षौद्रगुडस्नेहाश्च । तत्र पिप्पल्यजाशकृद्गोदन्तशरशलाकास्त्वग्गतानां जांबवौष्ठेतरलोहानि मांसगतानां क्षौद्रगुडस्नेहाः शिरास्नायुसन्ध्यस्थिगतानाम् ॥

अग्निथी दहन करवानां साधनो अने तेओमां कयां कयां साधनोनो कया कया स्थलना रोगोमां उपयोग करवो ते.

३ लींडीपीपळ, बकरीनी लींडी, गायनो दांत, कांसडानी सळी, जांबु जेवा मोहोडावाळी काळा पथरानी सळी, त्रांबा तथा रुपा वगेरे धातुओना पदार्थो, मध, गोळ अने तेल आदि स्नेह पदार्थो रोगोने अग्निथी बाळवानां साधनो छे.

एओमां लींडीपीपळ, बकरीनी लींडी, गायनो दांत अने कांसडानी सळी एओ वायुए तथा कफे करेला त्वचामां रहेला सुप्ति (चामडीनुं बेहेरमारी गएलापणुं) आदि रोगोने बाळवामां काम लागेछे.

जांबु जेवा गोळ मोहोडावाळी काळा पथरानी सळी अने त्रांबा तथा रुपा वगेरे धातुओना पदार्थो वायुए तथा कफे उत्पन्न करेला मांसमां रहेला रोगोने बाळवामां काम लागे छे अने मध, गोळ तथा तेल आदि पदार्थो वायुए तथा कफे उत्पन्न करेला शिराओमां, स्नायुओमां, सांधाओमां तथा अस्थिओमां रहेला रोगोने बाळवामां काम लागेछे[4].

४ तत्राग्निकर्म सर्वर्तुषु कुर्यादन्यत्र शरद्ग्रीष्माभ्यां तत्राप्यात्ययिकेऽग्निकर्मसाध्ये व्याधौ तत्प्रत्यनीकं विधिं कृत्वा ॥

अग्निथी दहन करवामां योग्य ऋतु.

४ शरद् अने ग्रीष्म ए बे ऋतुओ शिवाय सघळी ऋतुओमां अग्निनुं कर्म करवुं. परंतु जेथी

---

१ त्रणे दोषोने हणवामां अने छेदन, भेदन तथा लेखन आदि क्रियाओ करवामां तो क्षारनुंज मुख्यपणुं छे. जेम कर्ण दृढप्रहारीपणामां अर्जुनथी अधिक हतो अने अर्जुन बाणने अति दूर पोहोचाडवामां कर्णथी अधिक हतो तेम अग्नि अने क्षार एओ पोतापोतानां कृत्योमां परस्परथी बलवत्तर छे.

२ जो रोगो साध्य होय अने सम्यग्दग्ध थया होय तो पाछा उत्पन्न थता नथी पण तेम न होय तो बाळ्या पछी पण पाछा उत्पन्न थाय छे. केटलाएक केहेछे के "अग्निए मूळमांथी उखेडी नाखेला रोगो पाछा उत्पन्न थताज नथी. अर्बुद वगेरे रोगो दाह कर्या पछी पण पाछा उत्पन्न थएला जोवामां आवेछे तेओ मिथ्या आहार आदिथी पाछो दोषनो प्रकोप थवाने लीधे बीजा उत्पन्न थाय छे पण तेना ते तो उत्पन्न थताज नथी."

३ औषधना प्रयोगथी न मटे तो शस्त्रनो, शस्त्रना प्रयोगथी न मटाडी शकाय तो क्षारनो अने क्षारथी पण न मटे एवो दृढ मूळवाळो व्याधि होय तो अग्निनो प्रयोग करवो.

४ मध, गोळ तथा तेल वगेरेनी साथे राळ अने मीण वगेरे पदार्थोने पण गणवा.

५ काश्यपमुनिना आयुर्वेदमां शिरा वगेरेमां अग्निनी क्रिया करवानो निषेध कर्यो छे अने आ आयुर्वेदमां विधान कर्युं छे माटे शास्त्रांतरना विरोधना परिहारने माटे एम समजवुं के शिरा, स्नायु, अस्थि के संधि कपाई जवाथी रुधिर बहुज वेहेवा लाग्युं होय तो ते खराबी मटाडवाने माटे अग्निनी क्रिया करवानुं अहीं कह्युं छे पण शिरा वगेरेमां रहेला रोगनुं उच्छेदन करवाने माटे कह्युं नथी. केमके मांसनो दाह करवाथीज शिरा वगेरेमां रहेला रोगनुं उच्छेदन थई जाय छे. मदशौनक केहेछे के "त्वचामां अने मांसमां रहेलो वायु त्वचाना दाहथी शांत थाय छे अने शिरा, स्नायु, अस्थि तथा संधि एओमां रहेला रोगो मांसना दाहथी शांत थई जाय छे" (डल्हन) परंतु डल्हननो आ अभिप्राय आ अध्यायना छट्ठा विषयने अनुकूल छे के नही? ए विचारवा जेवुं छे.

तुरत प्राण जतां रहे एवो व्याधि थयो होय अने ते अग्निनीज क्रियाथी मटे एम होय तो शरद् ऋतुमां तथा ग्रीष्म ऋतुमां पण ते ऋतुओनी गरमीने शांत करे एवा शीतल वस्त्र, शीतल भोजन तथा शीतल लेपन आदि विधिओ करीने अग्निसंबंधी क्रिया करवी.

५ सर्वव्याधिष्वृतुषु च पिच्छिलमन्नं भुक्तवतः कर्म कुर्वीत मूढगर्भाश्मरीभगन्दरार्शोमुखरोगेष्वभुक्तवतः ॥

अग्निनी क्रियानो अंगभूत विधि.

५ सर्व व्याधिओमां तथा सर्व ऋतुओमां रोगीने जेओनां वीर्य चीकाशवाळां होय छे[१] एवां अन्नो जमाडीने पछी तेना अंगपर अग्निनी क्रिया करवी पण गर्भनी खराब स्थितिनी गुंचवण, पथरी, भगंदर, अरश अने मोहोडाना रोग एओमां तो रोगी जमेल न होय ते पेहेलां अग्निनी क्रिया करवी[२].

६ तत्र द्विविधमग्निकर्माहुरेके त्वग्दग्धं मांसदग्धं च । इह तु शिरास्नायुसन्ध्यस्थिष्वपि न प्रतिषिद्धोऽग्निः ॥

अग्निनी क्रियामां मतभेद.

६ केटलाएक आचार्यो केहे छे के "चामडीमां रहेला रोगने अने मांसमां रहेला रोगने बाळवासारु अग्निनी क्रिया करवी एटले अग्निकर्म 'त्वग्दग्ध' अने 'मांसदग्ध' एवा बे प्रकारनुंज छे" परंतु अमारा सिद्धांतमां तो शिराओ, स्नायुओ, सांधाओ अने अस्थिओ एओमां रहेला रोगोने बाळवासारु पण अग्निनी क्रिया करवानो निषेध नथी.

७ तत्र शब्दप्रादुर्भावो दुर्गन्धता त्वक्संकोचश्च त्वग्दग्धे । कपोतवर्णताऽल्पश्वयथुवेदना शुष्कसंकुचितव्रणता च मांसदग्धे । कृष्णोन्नतव्रणता स्रावसन्निरोधश्च शिरास्नायुदग्धे । रूक्षारुणता कर्कशस्थिरव्रणता च सन्ध्यस्थिदग्धे ॥

चामडी वगेरेमां अग्निक्रिया कर्‍या पछी देखावानां जुदां जुदां लक्षणो.

७ चामडीमां अग्निनी क्रिया करवामां आवे तो अवाज उत्पन्न थाय छे, दुर्गंध नीकळवा लागे छे अने चामडीनो संकोच थाय छे. मांसमां अग्निनी क्रिया करवामां आवे तो रोगवाळा प्रदेशनो होलाना जेवो वर्ण थई जाय छे, सोजो तथा पीडा अल्प थई जाय छे अने व्रण सुकाई जाय छे तथा संकोचाई जाय छे. शिरामां के स्नायुमां अग्निनी क्रिया करवामां आवे तो व्रण काळो तथा उंचो थई जाय छे अने स्राव रोकाई जाय छे. संधिमां के अस्थिमां अग्निनी क्रिया करवामां आवे तो व्याधिनो प्रदेश रुक्ष तथा लाल थई जाय छे अने व्रण कठोर तथा स्थिर थई जाय छे.

८ तत्र शिरोरोगाधिमन्थयोर्भ्रूललाटशङ्खप्रदेशेषु दहेत् । वर्त्मरोगेष्वार्द्रालक्तकप्रतिच्छन्नां दृष्टिं कृत्वा वर्त्मरोमकूपान् दहेत् ॥

कया रोगो होय तो कया प्रदेशोमां दहन करवुं.

८ माथानो रोग होय के अधिमंथ[४] रोग होय तो भमरमां, ललाटमां अने लमणामां दहन करवुं. पापणमां रोग होय तो चक्षुने भीनां कप-

१ शीत, मृदु तथा पिच्छिल (चीकणां) वीर्यो पित्तने हणनार छे.

२ भोजन कर्‍युं होय तो वमन थवाथी के दस्त आववाथी क्रियानो विघात थवानो संभव छे तेथी.

३ आ अध्यायना त्रीजा विषयनी नोटमां डल्हनने जे अभिप्राय लख्यो छे तेने वळगी रहीनेज डल्हने आ विषयनुं व्याख्यान आप्युं छे पण बीजा टीकाकारो एवुं व्याख्यान आपे छे के तुरतज प्राण जतां रहे एवो व्याधि होय तो शिराओ वगेरेनुं पण दहन करवुं.

४ आंखो दुखवा आवतां तेनी चिकित्सा न करवामां आवे तो अधिमंथ नामनो रोग थाय छे के जेथी आंखमां अत्यंत वेदना थाय छे अने अरधुं माथुं जाणे अत्यंत फाडी नाखवामां आवतुं होय के मथी नाखवामां आवतुं होय एवी पीडा थाय छे (भा० प्र०)

डांथी ढांकीने पांपणना रुवाडाना खाडाओमां दहन करवुं.

९ त्वङ्मांसशिरास्नायुसन्ध्यस्थिस्थितेऽत्युग्ररुजेवायावुच्छ्रितकठिनसुप्तमांसे व्रणे ग्रन्थ्यर्शोऽर्बुदभगन्दरापच्चीश्लीपदचर्मकीलतिलकालकांत्रवृद्धिसन्धिशिराच्छेदनादिषु नाडीशोणितातिप्रवृत्तिषु चाग्निकर्म कुर्यात् ॥

अग्निनी क्रिया करवाना विषयो.

९ चामडी. मांस. शिराओ. स्नायुओ. सांधाओ के अस्थिओ एओमां रहेलो वायु अत्यंत पीडा करतो होय तो, अथवा उंचा कठण अने जड मांसवाळो व्रण होय तो. अथवा गांठ, अरश, अर्बुद[1], भगंदर, अपची[2], श्लीपद[3], चर्मकील[4], तिलकालक[5] के अंत्रवृद्धि[6] थएल होय तो, अथवा सांधाओनुं के शिराओनुं छेदन आदि थयुं होय तो. अथवा नाडीव्रण[7] थयो होय तो, अथवा लोही अत्यंत वेहेवा लाग्युं होय तो अग्निनी क्रिया करवी.

१० तत्र रोगाधिष्ठानभेदादग्निकर्म चतुर्द्धा भिद्यते । तद्यथा । वलयविन्दुविलेखाप्रतिसारणानीति दहनविशेषाः ॥

डांभनी चार आकृतिओ.

१० रोगोना भेदथी अने रोगोनां स्थानकोना भेदथी डांभनी चार आकृतिओ थाय छे. तेओमां सळी वगेरेथी जे चकरडा जेवी गोळ आकृति करवामां आवे ते वलय (कंकणाकार) केहेवाय छे. चांल्लां जेवी जे आकृति करवामां आवे ते बिंदु केहेवाय छे. आडी, सीधी के वांकी जे लीटी करवामां आवे ते विलेखा केहेवाय छे अने तावेली सळी वगेरेथी आम तेम घसवावते जे आकृति थाय ते प्रतिसारण केहेवाय छे.

भवति चात्र ॥

११ रोगस्य संस्थानमतो विदित्वा
नरस्य मर्माणि बलाबलं च ।
व्याधिं तथर्तुं च समीक्ष्य सम्यक्
ततो व्यवस्येद्भिषगग्निकर्म ॥

अग्निनी क्रिया करवामां केटली बाबतोपर ध्यान आपवुं.

११ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वन्तरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "सारी पेठे गांठ आदि रोगोंना आकारनो विचार करीने[8], रोगीनां मर्मस्थलोनो विचार करीने[9], रोगी बळवान् छे के नहीं तेनो विचार करीने[10], रोग वायुनो छे कफनो छे के पित्तनो छे तेनो विचार करीने[11] अने

१ अर्बुदनुं लक्षण अगीयारमा अध्यायना त्रीजा विषयनी नोटमां जुवो.

२ गंडमाळना केटलाएक गांठाओ पाकीने स्रवे, केटलाएक गांठाओ मटी जाय, केटलाएक नवा थाय अने लांबा काळ सुधी ते दरद चाल्या करे ते अपची केहेवाय छे. (भा० प्र०)

३ ज्वरवाळो, साथळना संधिमां थएलो अने अत्यंत पीडावाळो जे सोजो अनुक्रमे पगमां उतरे ते श्लीपद केहेवाय छे. केटलाएक केहेछे के कान, नेत्र, लिंग, होट अने नाक एओमां पण आवो सोजो थाय ते श्लीपद केहेवाय छे. (भा० प्र०)

४ अगीयारमा अध्यायना त्रीजा विषयनी नोट जुवो.

५ आनुं लक्षण अगीयारमा अध्यायना त्रीजा विषयनी नोटमां जुवो.

६ दुष्ट थएलो पवन नाहाना आंतरडाना अवयवने बगाडी ठेकाणाथी नीचे लई जाय त्यारे ते साथळना मूळमां रही गांठ जेवो सोजो करे ते अंत्रवृद्धि केहेवाय छे. आ सोजो वृषणोमां आवेछे. (भा० प्र०)

७ ऊंडो पेठेलो अने नळीनीपेठे परुने वेहेनारो व्रण.

८ आथी वलयादिक आकारो करवानुं कारण सूचव्युं छे के रोगना आकार प्रमाणे डांभनी आकृति करवी.

९ आथी मर्मस्थलोनो बचाव करीने दाह करवानुं सूचव्युं छे.

१० आथी सूचव्युं छे के रोगी बळवान् होय तो अग्निक्रिया करवी पण निर्बळ होय तो नहीं करवी.

११ आथी सूचव्युं छे के व्याधि वायुनो के कफनो होय तो अग्निक्रिया करवी पण पित्तनो होय तो नहीं करवी.

ऋतुनो विचार करीने पछी वैद्ये अग्निसंबंधी क्रिया करवानो निश्चय करवो.

१२ तत्र सम्यग्दग्धे मधुसर्पिर्भ्यामभ्यङ्गः ॥

सम्यग्दाह (जेवो जोइए तेवो दाह) थयो होय तो ते उपर शमननो उपाय.

१२ सम्यग्दाह थयो होय तो मधथी तथा घीथी ते दाहना स्थानक उपर अभ्यंग करवो. (रक्त तथा पित्त के जेओ अग्निनी क्रियाना विषयरूप नथी तेओने स्वस्थ करवा माटे अने दाहथी थएली वेदनाने शांत करवा माटे आ उपाय छे.)

१३ अथेमानग्निना परिहरेत् पित्तप्रकृतिमन्तःशोणितं भिन्नकोष्ठमनुद्धृतशल्यं दुर्बलं बालं वृद्धं भीरुमनेकव्रणपीडितमस्वेद्यांश्चेति ॥

केवां माणसोनां अंगोपर अग्निनी क्रिया नहीं करवी.

१३ पित्त प्रकृतिवाळो, जेनो कोठो भेदाई गयो होय पण रुधिर अंदरज रही गयुं होय एवो, दुर्बल, बालक, वृद्ध, बीकण, अनेक व्रणोथी अथवा अनेक व्याधिओथी पीडाएलो अने शेक करवा वगेरे स्वेदनक्रियाओने अयोग्य रोगोवाळाओ. एओनां अंगोपर अग्निनी क्रिया करवी नहीं.

१४ अत ऊर्ध्वमितरथादग्धलक्षणं वक्ष्यामः । तत्र स्निग्धं रूक्षं वाश्रित्य द्रव्यमग्निर्दहति । अग्निसन्तप्तो हि स्नेहः सूक्ष्मशिरानुसारित्वात्त्वगादीननुप्रविश्याशु दहति । तस्मात्स्नेहदग्धेऽधिका रुजो भवन्ति । तत्र प्लुष्टं दुर्दग्धं सम्यग्दग्धमतिदग्धं चेति चतुर्विधमग्निदग्धम् । तत्र यद्विवर्णं प्लुष्यतेऽतिमात्रं तत्प्लुष्टम् । यत्रोत्तिष्ठन्ति स्फोटास्तीव्राश्चोषदाहरागपाकवेदनाश्चिराच्चोपशाम्यन्ति तद्दुर्दग्धम् । सम्यग्दग्धमनवगाढं तालफलवर्णं सुसंस्थितं पूर्वलक्षणयुक्तं च । अतिदग्धे मांसावलम्बनं गात्रविश्लेषः शिरास्नायुसन्ध्यस्थिव्यापादनमतिमात्रं ज्वरदाहपिपासामूर्च्छाश्चोपद्रवा भवन्ति व्रणश्चास्य चिरेण रोहति रूढश्च विवर्णो भवति ॥ तदेतच्चतुर्विधमग्निदग्धलक्षणमात्मकर्मप्रसाधकं भवति ॥

डांभनी कंकणाकार वगेरे चार आकृतिओथी जुदी रीतना दहनोविषे अने ते दहनोना चार प्रकारविषे.

१४ हवे वलय आदि चार आकारोथी जुदी रीतनां दहनो के जेओ वैद्यना हाथ विना प्रमादथी पण थाय छे अने एक सम्यग्दग्ध विना वैद्यना प्रमादथी पण थाय छे तेओनां लक्षणो कहीएछीए. अग्नि घी वगेरे स्निग्ध द्रव्यनो आश्रय करीने अथवा काष्ठ, पाषाण के इंट आदि रूक्ष द्रव्यनो आश्रय करीने बाळेछे. तेमां अग्निथी संतप्त थएलुं घी वगेरे स्नेहद्रव्य पोतानो झीणी शिराओमां पेसवानो स्वभाव होवाथी चामडी वगेरेमां घुसी जईने तुरत बाळे छे अने एम छे एटला माटे घी वगेरे स्निग्ध द्रव्योथी दाझेलाने वेदनाओ बहु थाय छे.

आ दहनोमां प्लुष्ट, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध अने अतिदग्ध एम चार प्रकारो थाय छे[३]. स्वाभाविक वर्ण बदली जईने अत्यंत बळतरा थाय अने फोल्ला न उठे तो **प्लुष्ट** थयुं समजवुं. फोल्ला उठे, जाणे

---

१ आवा माणसना शरीरपर अग्निक्रिया करवामां आवे तो लोहीना निरोधने लीधे दाह तथा पाक वगेरे थवानो संभव छे.

२ पांडुरोगी, प्रमेहवाळो, रक्तपित्तवाळो अने तृषाथी पीडित इत्यादिक आतुरो स्वेदन क्रियाने योग्य नथी.

३ प्लुष्ट अने दुर्दग्ध ए बन्ने हीन दग्ध छतां पण तेओने जुदां जुदां गण्यां छे तेनुं कारण ए छे के तेओनां लक्षणो अने चिकित्साओ भिन्न भिन्न छे. प्लुष्ट अने दुर्दग्ध एओथी हीनदग्ध जुदुं नथी.

४ केटलाएक **प्लुष्टमतिमात्रं विवर्णं यत्प्लुष्यते** ए पाठांतर बोलीने व्याख्यान आपे छे के "अग्निना तापथी उच्छिन्न जेवुं थई जाय अने पांडुवर्णवाळुं थई जाय ते प्लुष्ट केहेवाय छे."

आकर्षण थतुं होय. एवा प्रकारनी तीव्र वेदना थाय, रताश थई जाय, पाकी जाय तथा सबाका (लबकारा) नीकळवा वगेरे बीजी पण तीव्र वेदनाओ थाय अने ते वेदनाओ लांबे काळे मटे एवी थाय तो **दुर्दग्ध** थयुं समजवुं. जो दाहनुं मूळ उंडुं न गयुं होय एटले अतिदग्धनां लक्षणो न थयां होय, पाकेलां ताडना फळ जेवो रंग थई गयो होय, दाहमां अत्यंत उंचापणुं के अत्यंत नीचापणु वगेरे दोषो न थएल होय अने त्वचा वगेरेमां दहन थयानां जे लक्षणो प्रथम (आ अध्यायना ७ मा विषयमां) कह्यां छे ते लक्षणोथी युक्त होय तो **सम्यग्दग्ध** थयुं समजवुं. जो मांस लटकी रह्युं होय. गात्र वींखाई गयुं होय, शिराओमां स्नायुओमां सांधाओमां के अस्थिओमां त्रुटफाट थई गई होय अने ज्वर, दाह, तरश, तथा मूर्छा ए उपद्रवो अत्यंत थया होय तो **अतिदग्ध** थयुं समजवुं. अतिदग्ध थयुं होय तो तेनो व्रण घणे काळे भराय छे अने भराया पछी पण खराब रंगवाळो रेहे छे. वैद्ये रोगीना अंग उपर दाहक्रिया करवी होय तो जेथी सम्यग्दग्धनां लक्षणो थाय एवी करवी पण प्लुष्टनां, दुर्दग्धनां के अतिदग्धनां लक्षणो थाय एवी नहीं करवी.

१५ भवन्ति चात्र ॥

अग्निना कोपितं रक्तं भृशं जन्तोः प्रकुप्यति ।
ततस्तेनैव वेगेन पित्तमस्याभ्युदीर्यते ॥
तुल्यवीर्ये उभे ह्येते रसतो द्रव्यतस्तथा ।
तेनास्य वेदनास्तीव्राः प्रकृत्या च विदह्यते ॥
स्फोटाः शीघ्रं प्रजायन्ते ज्वरस्तृष्णा च वर्द्धते॥

दाझवाथी फोल्ला तथा ज्वर वगेरे थवानुं कारण.

१५ आ स्थलना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "प्राणीना शरीरमां अग्निए कोपित करेलुं रुधिर अत्यंत प्रकोप करे छे अने ते प्रकोप थतां अग्नि तथा रुधिर ए बन्ने मळी झडपथी पित्तने पण प्रकुपित करे छे. अग्नि अने पित्त ए बन्ने उष्ण वीर्यवाळां छे, तीखा रसवाळां छे अने तुल्य द्रव्योवाळां छे तेथी दाझेला माणसनुं पित्त प्रकुपित थाय छे. पित्त के जे स्वभावथीज दाहवाळुं छे तेनो प्रकोप थवाथी पित्तसंबंधी दाहादिक तीव्र वेदनाओ थाय छे अने रुधिरथी तथा पित्तथी फोल्ला थाय छे तथा ज्वर अने तरश वृद्धि पामे छे.

१६ दग्धस्योपशमार्थाय चिकित्सा संप्रवक्ष्यते ।
प्लुष्टस्याग्निप्रतपनं कार्यमुष्णं तथौषधम् ।
शरीरे स्विन्नभूयिष्ठे स्विन्नं भवति शोणितम् ॥
प्रकृत्या ह्युदकं शीतं स्कन्दयत्यतिशोणितम् ।
तस्मात्सुखयति ह्युष्णं न तु शीतं कथंचन ॥
शीतामुष्णां च दुर्दग्धे क्रियां कुर्याद्भिषक् पुनः ।
घृतालेपनसेकांस्तु शीतानेवास्य कारयेत् ॥
सम्यग्दग्धे तुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः ।
सामृतैः सर्पिषा स्निग्धैरालेपं कारयेद्भिषक् ॥
ग्राम्यानूपौदकैश्चैनं पिष्टैर्मांसैः प्रलेपयेत् ।
पित्तविद्रधिवच्चैनं संततोष्माणमाचरेत् ॥
अतिदग्धे विशीर्णानि मांसान्युद्धृत्य शीतलाम् ।
क्रियां कुर्याद्भिषक्पश्चाच्छालितण्डुलकण्डनैः ॥
तिन्दुकीत्वक्कषायैर्वा घृतमिश्रैः प्रलेपयेत् ।
व्रणं गुडूचीपत्रैर्वा छादयेदथवौदकैः ।
क्रियां च निखिलां कुर्याद्भिषक् पित्तविसर्पवत्॥

दाझेलानी शांतिने माटे चिकित्सा.

१६ दग्धनी शांतिने माटे चिकित्सा कहीए छीए. जो प्लुष्ट थयुं होय तो शरीरने अग्निथी तपाववुं अने लेपन तथा अन्नपानादिक औषधो पण उष्णज करवां. शरीरने बहुज शेकवाथी रुधिर पण शेकाइने पातळुं थाय छे एटले तेथी गरमी शरीरथी बाहार नीकळतां अने मार्ग खुलो थवाथी वायु पण अनुकूल गतिवाळो थतां सुख थाय छे. जो शीत उपचारो करवामां आवे तो दुःख थाय छे. केम के जळ स्वाभाविक रीते शीतल होवाथी रुधिरने अत्यंत जमावी दे छे तेथी गरमी बाहार नहीं नीकळतां अने वायुनुं गमन पण रोकाई जतां

भारे वेदना थाय. आम छे एटलामाटे जेने प्लुष्ट थयुं होय ते माणसने गरम उपचारज सुख आपे छे पण शीत उपचार कदी सुख आपतो नथी.

दुर्दग्ध थयुं होय तो वैद्ये ते आतुरना शरीर उपर शीतल क्रिया पण करवी अने उष्णक्रिया पण करवी. (दाह अत्यंत थतो होय तो शीतलक्रिया करवी अने दाह बहु न थतो होय तो उष्णक्रिया करवी.) घीनुं आलेपन तथा सेचन आदि उपचारो तो शीतज कराववा.

सम्यग्दग्ध थयुं होय तो वैद्ये वंशलोचन, पीपर (लींडीपीपळ नहीं पण टेटीओवाळुं पीपर ए नामनुं मोटुं झाड थाय छे तेनी छाल,) रतांजलि, सोनागेरु अने गळो एओने वाटी घीथी स्निग्ध करीने तेनो सुकाय नहीं एवो लेप कराववो. (आथी पित्त शांत थाय छे.) घोडा वगेरे ग्राम्य पशुओनां मांसो, सुवर आदि जलप्राय प्रदेशमां फरनारां पशुओनां मांसो अने काचबा आदि जलचर प्राणीओनां मांसो एओने वाटीने तेओनो पण लेप कराववो. (आथी वायु शांत थाय छे.) जो बहुज गरमी रेहेती होय तो तेनी पित्तविद्रधिनी पेठे पण चिकित्सा करवी. (अहीं आ अध्यायना १२ मा विषयमां कहेली चिकित्सा पण स्मरणमां राखवी.)

अतिदग्ध थयुं होय तो लटकी रहेलां मांसोने काहाडी नाखीने वैद्ये शीतल क्रिया करवी. पछी राता चोखानुं चूर्ण भभरावबुं अथवा टींबरुनी छालना चूर्णने घीथी मिश्रित करीने तेनो लेप करवो अथवा गळोनां पानडांओथी के कमळ आदि जळसंबंधी उद्भिज्जोनां पत्रोथी व्रणने ढांकवो तथा पित्तविसर्पनी जे चिकित्सा छे ते पण सघळी करवी. (पित्तथी अने रक्तथी उपद्रव पामेलो व्रण गळो वगेरेनां पानडांओथी ढांकवामां आवतां गरमीनो त्याग करीने सुखेथी रुझाय छे.)

१७ मधूच्छिष्टं समधुकं रोध्रं सर्जरसं तथा ।
मञ्जिष्ठां चन्दनं मूर्वां पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत् ।
सर्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमुत्तमम् ॥

सघळां अग्निदग्धोमां भरती लाववाने माटे चिकित्सा.

१७ मीण, जेठीमध, लोदर, राळ, मजीठ, रतांजलि अने मूर्वा नामनो वेलो एओने वाटी कल्क करी तेथी घी पकावीने ते घी चोपडवुं. आ घी सघळां अग्निदग्धोमां भरती (रुझ) लाववानेमाटे उत्तम उपाय छे.

१८ स्नेहदग्धे क्रियां रूक्षां विशेषेणावचारयेत् ।

स्नेहथी दग्ध थएलानी चिकित्सा.

१८ स्नेहथी दग्ध थएल होय तो विशेषे करी रुक्ष क्रियानी योजना करवी.

१९ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि धूमोपहतलक्षणम् ।
श्वसिति क्षौति चात्यर्थमत्याध्मति कासते ।
चक्षुषोः परिदाहश्च रागश्चैवोपजायते ॥
सधूमकं निःश्वसिति घ्रेयमन्यन्न वेत्ति च ।
तथैव च रसान्सर्वान् श्रुतिश्चास्योपहन्यते ॥
तृष्णादाहज्वरयुतः सीदत्यथ च मूर्छति ।
धूमोपहत इत्येवं शृणु तस्य चिकित्सितम् ॥

धुमाडावते जे उपघात थयो होय तेनां लक्षणो.

१९ हवे धुमाडाथी उपघात पामेलानुं लक्षण कहुं छुं. जे माणसने धुमाडाथी उपघात थयो

१ पित्तविद्रधि थएल होय तो वैद्ये आसोंद, वाळो, जेठीमध, अने रतांजलि एओने दुधमां वटावी ते कल्कमां घी मेळवीने तेनो लेप करावो. (भा० प्र०)

२ केटलाएक केहेछे के टींबरुनी छालना अने नळीयाना चूर्णने घीथी मिश्रित करीने तेनो लेप करावो. केटलाएक केहेछे के टींबरुनी तथा वड वगेरे कषायवृक्षोनी छालने घीथी मिश्रित करीने तेनो लेप करावो.

३ जो पित्तविसर्प थएल होय तो कसेलां, शींगोडां, कमळ, मोथ, शैवाळ, नील कमळ, अने कादव एओने वाटी तेमां घी मेळवी वचमां वस्त्र राखीने ते थंडो लेप करवो. (भा० प्र०)

होय ते माणस हांफे छे, बहु हेडकी खाय छे, बहु आफरी जाय छे तथा उधरस खाय छे, अने सघळा रसोने पण जाणी शकतो नथी. ए माणसने आंखोमां बळतरा तथा रताश थाय छे, निश्वासमां धुमाडो नीकळे छे, कोई गंधनी खबर पडती नथी, कान बेहेरा थई जाय छे, तरश दाह तथा ज्वर प्राप्त थाय छे, ग्लानि थाय छे अने मूर्छा आवे छे. हवे धुमाडाथी उपघात पामेलानी चिकित्सा सांभळो.

२० सर्पिरिक्षुरसं द्राक्षां पयो वा शर्कराम्बु वा।
मधुराम्लौ रसौ वापि वमनाय प्रदापयेत् ॥
वमतः कोष्ठशुद्धिः स्याद्धूमगन्धश्च नश्यति ।
विधिनानेन शाम्यन्ति सदनक्षवथुज्वराः ॥
दाहमूर्छातृडाध्मानश्वासकासाश्च दारुणाः ।
मधुरैर्लवणाम्लैश्च कटुकैः कवलग्रहैः ॥
सम्यग्गृह्णातीन्द्रियार्थान्मनश्चास्य प्रसीदति ।
शिरोविरेचनं तस्मै दद्याद्योगेन शास्त्रवित् ॥
दृष्टिर्विशुध्यते चास्य शिरोग्रीवं च देहिनः ।
अविदाहि लघु स्निग्धमाहारं चास्य कल्पयेत् ॥

धुमाडाथी उपघात पामेलानी चिकित्सा.

२० ए माणसने वमन कराववाने माटे घी तथा शेलडीनो रस देवो. अथवा द्राक्ष अने दूध देवां. अथवा साकरनुं पाणी देवुं. अथवा मधुर रस अने खारो रस देवा. वमन थवाथी कोठानी शुद्धि थाय छे. अने धुमाडानो गंध नष्ट थई जाय छे. आ चिकित्सा करवाथी ग्लानि, छींको, ज्वर, दाह, मूर्छा, तरश, आफरो. श्वास. अने उधरस एओ दारुण होय तो पण शांत थई जाय छे. ए माणसने मधुर, खारा, खाटा तथा तीखा कोळीआ[1] लेवरावવા. आथी ते माणस इंद्रियोना गंधादिक विषयोनुं सारी रीते ग्रहण करेछे अने एनुं मन पण प्रसन्न थाय छे. शास्त्र जाणनारा वैद्ये ए माणसने मात्राथी शिरो विरेचन (माथाने खाली करवानो उपाय) पण देवुं. आ उपायथी ते माणसनी दृष्टि शुद्ध थई जाय छे. अने माथुं तथा कंठ पण शुद्ध थई जाय छे. ए माणसने आहार एवो देवो के जे बळतराने नहीं करनारो, हलको अने स्निग्ध होय.

२१ उष्णवातातपैर्दग्धे शीतः कार्यो विधिः सदा
शीतवर्षानिलहत उष्णं स्निग्धं च शस्यते ।
तथाऽतितेजसा दग्धे सिद्धिर्नास्ति कथंचन ॥
इन्द्रवज्राग्निदग्धेऽपि जीवति प्रतिकारयेत् ।
स्नेहाभ्यङ्गपरीषेकैः प्रदेहैश्च तथा भिषक् ॥

दग्ध जेवानी चिकित्सा.

२१ गरम पवनथी के तडका वगेरेथी दग्ध थएल होय तो ते उपर सर्वदा शीत उपचारो करवा. हिम पडवाथीके वृष्टिवाळा पवन विगेरेथी उपघात थयो होय तो उष्ण अने स्निग्ध उपचारो करवा ए उत्तम छे. वीजळीथी बळी गएल होय तो कोई उपाय चालतो नथी परंतु तेथी बळ्या छतां पण जो जीवतो होय तो वैद्ये स्नेह पदार्थोना अभ्यंगोथी, परिषेकोथी[2] तथा जाडा लेपोथी चिकित्सा करवी.

अध्याय १३ मो.

१ अथातो जलौकावचारणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'जलौकावचारणीय[3]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

१ वायु पित्त तथा कफ एओने तोडनारा पदार्थोना कोळीओ करी तेने केवळ मोहोडामां नाखी अरधो चावीने थुंकी नाखवो ए कवलग्रह (कोळीओ लीधो) केहेवाय छे. (भा० प्र०) आ ग्रंथना चिकित्सास्थानना ४० मा अध्यायना ३८ मा विषयथी जुवो.

२ उपर धार करवी ए परिषेक केहेवाय छे.

३ जळो मुकवाना प्रकार विषेनो.

२ नृपाढ्यबालस्थविरभीरुदुर्बलनारीसुकुमाराणामनुग्रहार्थं परमसुकुमारोऽयं शोणितावसेचनोपायोऽभिहितो जलौकसः ॥

जळो मुकवारूप उपायनी प्रशंसा.

२ बिगडेलुं लोही काहाडवानो जळो मुकवारूप जे उपाय छे ते शीगडुं मुकवारूप तथा तुंबडी मुकवारूप सुकुमार उपायोथी पण वधारे सुकुमार छे अने ते राजाओने माटे, धनाढ्य लोकोने माटे, बालकोने माटे, वृद्धलोकोने माटे, बीकणलोकोने माटे, नबळाओने माटे, स्त्रीओनेमाटे अने सुकुमार प्रकृतिवाळां माणसोने..माटे दया लावीने विद्वानोए शोधी काहाडेलो छे.

३ तत्र वातपित्तकफदुष्टशोणितं यथासंख्यं शृङ्गजलौकालाबुभिरवसेचयेत् स्निग्धशीतरूक्षत्वात् सर्वाणि सर्वैर्वा ॥

भवन्ति चात्र ॥

उष्णं समधुरं श्लक्ष्णं गवां शृङ्गं प्रकीर्तितम् ।
तस्माद्वातोपसृष्टे तु हितं तदवसेचने ॥
शीताधिवासा मधुरा जलौका वारिसम्भवा ।
तस्मात्पित्तोपसृष्टे तु हिता सा ह्यवसेचने ॥
अलावु कटुकं रूक्षं तीक्ष्णं च परिकीर्तितम्
तस्माच्छ्लेष्मोपसृष्टे तु हितं तदवसेचने ॥

जळोना, शींगडाना तथा तुंबडीना विषयविभाग.

३ रुधिर जो वायुथी बगडेलुं होय तो शींगडुं मुकीने काहाडवुं, पित्तथी बगडेलुं होय तो जळो मुकीने काहाडवुं अने कफथी बगडेलुं होय तो तुंबडी मुकीने काहाडवुं. अथवा वायुथी बगडेला लोहीने माटे शींगडुं, पित्तथी बगडेला लोहीने माटे जळो अने कफथी बगडेला लोहीने माटे तुंबडी योग्य समये न मळी आवे तो वात, पित्त, अने कफ एओमाना गमे तेथी बगडेलुं लोही शींगडुं, जळो अने तुंबडी एओमाना गमे ते साधनथी काहाडवुं.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के “ गायनुं शींगडुं उष्ण छे, कांईक स्निग्ध छे अने लासुं छे तेथी वायुथी बगडेलुं लोही काहाडवामां ते वधारे हितकारी छे. जळो शीतस्थलमां रेहेनारी छे, मधुर छे अने जळमां उत्पन्न थएली होय छे तेथी पित्तथी बगडेलुं लोही काहाडवामां ते वधारे हितकारी छे. तुंबडी तीखी छे, रुक्ष छे अने तीक्ष्ण छे तेथी कफथी बगडेलुं लोही काहाडवामां ते वधारे हितकारी छे. ”

४ तत्र प्रच्छिते तनुवस्त्रपटलावबद्धेन शृङ्गेण शोणितमवसेचयेदाचूषणात् । सान्तर्दीपयाऽलाब्वा ॥

शींगडाथी तथा तुंबडीथी लोही काहाडवानो प्रकार.

४ शींगडाथी लोही काहाडवुं होय तो जे भागमां लोही बगडेलुं होय ते भागने प्रथम शस्त्रथी टोची. झीणा कपडाथी ढांकेलुं शींगडुं लगावी ते शींगडावते ज्यांसुधी लोही चूसाय त्यांसुधी काहाडवुं. तुंबडीवते लोही काहाडवुं होय तो जे भागमां लोही बगडेलुं होय ते भागने प्रथम शस्त्रथी टोची, काळी माटीथी चोपडेली तुंबडीनी अंदर दीवो मुकी ते तुंबडी पेला भाग उपर लगावीने ज्यांसुधी. लोही चूसाय त्यांसुधी काहाडवुं.

१ तुंबडीने धाटा सूतरथी, मूत्राशयनी कोथळीथी तथा करोळीयाना पड अने जाळा वगेरेथी ढांकवी एम पण केहेवामां आवेछे.

२ शींगडुं धोळी गायनुं, चंद्रजेवुं वांकुं, सात आंगल लांबुं अने जेनी अंदर रूनां पुंबडां नाख्यां होय एवुं जोइये. एना मूळमां अंगुठाना मूळ जेवडुं अने अग्रमां मग जेवडुं छिद्र जोईए.

३ तुंबडी आठ आंगळ परिणाहवाली, चार आंगळना नाळवाळी अने पातळी जोईए.

५ अथ जलायुका वक्ष्यन्ते । जलमासामायुरिति जलायुका जलमासामोक इति जलौकसः । ता द्वादश । तासां सविषाः षट् तावत्य एव निर्विषाः ॥

जळोनां संस्कृत नामोनी व्युत्पत्तिओ अने जळोनी जातोनी संख्या आदि.

५ संस्कृत भाषामां जळोनां जलायुका अने जलौकस् ए बे नाम छे. जळ (पाणी) एओनुं आयुष्य छे तेथी जलायुका केहेवाय छे अने जळ एओनुं स्थानक छे तेथी जलौकस् केहेवाय छे. जळो बार जातनी थाय छे तेओमां छ जात झेरवाळी छे अने छ जात झेरवगरनी छे.

६ तत्र सविषाः । कृष्णा कर्बुरा अलगर्दा इन्द्रायुधा सामुद्रिका गोचन्दना चेति । तास्वंजनचूर्णवर्णा पृथुशिराः कृष्णा । वर्मिमत्स्यवदायता छिन्नोन्नतकुक्षिः कर्बुरा । रोमशा महापार्श्वा कृष्णमुख्यलगर्दा । इन्द्रायुधवदूर्ध्वराजिभिश्चित्रिता इन्द्रायुधा । ईषदसितपीतिका विचित्रपुष्पाकृतिचित्रा सामुद्रिका । गोवृषणवदधोभागे द्विधाभूताकृतिरणुमुखी गोचन्दनेति । ताभिर्दष्टे पुरुषे दंशे श्वयथुरतिमात्रं कण्डूर्मूर्छा ज्वरो दाहश्छर्दिर्मदः सदनमिति लिङ्गानि भवन्ति । तत्र महागदः पानालेपननस्यकर्मादिषूपयोज्यः । इन्द्रायुधादष्टमसाध्यमित्येताः सविषाः सचिकित्सिता व्याख्याताः ॥

झेरी जळोनुं निरूपण तथा तेओना झेरनी चिकित्सा.

६ कृष्णा, कर्बुरा, अलगर्दा, इंद्रायुधा, सामुद्रिका अने गोचंदना ए छ जातनी जळो झेरी छे. एओमां जे जळो काजळना चूर्ण जेवी काळी अने मोटां माथांवाळी होय छे ते **कृष्णा** केहेवाय छे. जे जळो सर्प जेवी अथवा वर्मी नामनां मत्स्य जेवी लांबी अने कांईक चीराएला तथा कांईक उंचा पेटवाळी होय ते **कर्बुरा** केहेवाय छे. जे जळो वळीओने लीधे रुंछाडवाळी जेवी जणाती, मोटां पडखांवाळी अने काळां मोहोडांवाळी होय ते **अलगर्दा** केहेवाय छे. जे जळो चोमासामां देखाता इंद्रधनुषनी पेठे विचित्र रंगोवाळी उंची उंची लीटीओथी युक्त होय ते **इंद्रायुधा** केहेवाय छे. जे जळो कांईक काळी, कांईक पीळी अने विचित्र पुष्पनी पेठे जुदी जुदी स्थितिवाळां सफेद छाटणांओथी युक्त होय ते **सामुद्रिका** केहेवाय छे. जे जळो पोताना शरीरना नीचेना भागमां बळदना वृषणनी पेठे बे भागवाळी होय अने झीणां मोहोडांवाळी होय ते **गोचंदना** केहेवाय छे. आ जातोमांनी कोई पण जळो माणसने करडे तो सोजो, अत्यंत खरज, मूर्छा, ज्वर, बळतरा, वमन, सोपारी खावाथी चडता मीणा जेवो मीणो अने ग्लानि एटलां चिह्नो थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो पीवामां, लेपमां अने नस्यकर्म वगेरेमां महागदना[1] उपयोगरूप चिकित्सा करवी. आ जातोमां इंद्रायुधा नामनी चोथी जातनी जळो करडी होय तो तेनुं झेर तो असाध्य[2]ज छे. आ प्रमाणे छ जातनी झेरी जळोनुं अने तेओमां पांच जातनी जळोना झेरनी चिकित्सानुं निरूपण करयुं.

७ अथ निर्विषाः । कपिला पिङ्गला शङ्कुमुखी मूषिका पुण्डरीकमुखी सावरिका चेति । तत्र मनःशिलारञ्जिताभ्यामिव पार्श्वाभ्यां पृष्ठे स्निग्धमुद्गवर्णा कपिला । किंचिद्रक्ता वृत्तकाया पिंगाऽऽशुगा च पिंगला । यकृद्वर्णा शीघ्रपायिनी दीर्घतीक्ष्णमुखी शङ्कुमुखी । मूषिकाकृतिवर्णाऽनिष्टगन्धा च मूषिका । मुद्गवर्णा

१ कल्पस्थानना ५ मा अध्यायनो २६ मो विषय जुवो.

२ इंद्रायुधाना दंशनुं चिह्न असाध्य सर्पना जेवा विषना वेगथी जाणी लेवुं. सोजा वगेरे मृत्युकारक चिह्नो संपूर्ण जोवामां आववाथी अने महागदथी पण शांत नहीं थवाथी इंद्रायुधाना दंशनी खबर पडेछे एम केटलाएक केहेछे.

पुण्डरीकतुल्यवक्त्रा पुण्डरीकमुखी । स्निग्धा पद्मपत्रवर्णाऽष्टादशाङ्गुलप्रमाणा सावरिका सा च पश्वर्थे । इत्येता अविषा व्याख्याताः ॥

झेरवगरनी जळोनी जातो तथा स्वरूपोः

७ कपिला, पिंगला, शंकुमुखी, मूषिका, पुंडरीकमुखी अने सावरिका ए छ जातो झेरवगरनी छे. जे जळो मणशीलथी रंगेलां जेवां पडखांओवाळी अने पीठमां लीला मगना जेवा रंगवाळी होय ते **कपिला** केहेवाय छे. जे जळो कांइक राती, गोळ शरीरवाळी पिंगळी अने झडपथी चालनारी होय ते **पिंगला** केहेवाय छे. जे जळो जमणा पडखांनी गांठ जेवा वर्णवाळी, झडपथी लोही पीनारी अने लांबा तथा तीक्ष्ण मोहोडावाळी होय ते **शंकुमुखी** केहेवाय छे. जे जळो उंदरना जेवा आकारवाळी, उंदरना जेवा वर्णवाळी अने खराब गंधवाळी होय ते **मूषिका** केहेवाय छे. जे जळो मगना जेवा वर्णवाळी अने कमळनी पेठे विस्तीर्ण मोहोडावाळी होय ते **पुंडरीकमुखी** केहेवाय छे. जे जळो स्निग्ध, सफेद कमळना पत्र जेवा मुखवाळी अने अढार आंगळ लांबी होय ते **सावरिका** केहेवाय छे. आ सावरिका (भेंसाजळो) हाथी तथा घोडा वगेरे पशुओनुं लोही काहाडवामां काम आवे छे. आ झेरवगरनी जळोनी जातिओनुं निरुपण कर्युं.

८ तासां यवनपाण्ड्यसह्यपौतनादीनि क्षेत्राणि । तेषु महाशरीरा बलवत्यः शीघ्रपायिन्यो महाशना निर्विषाश्च विशेषेण भवन्ति ॥

झेरवगरनी जळोनी उत्पत्तिना मुख्य देशो.

८ तुरकी, हिंदुस्ताननना दक्षिण देशोमांनो पांड्य देश, सह्याद्रि अने मथुराप्रांत इत्यादि देशोमां झेरवगरनी जळोनी जातिओ विशेषे करी उत्पन्न थाय छे अने तेओ मोटां शरीरोवाळी, बळवाळी, झडपथी लोही पीनारी तथा घणुं खानारी होय छे.

९ तत्र सविषमत्स्यकीटदुर्दुरमूत्रपुरीषकोथजाताः कलुषेष्वम्भस्सु च सविषाः ॥ पद्मोत्पलनलिनकुमुदसौगन्धिककुवलयपुण्डरीकशैवालकोथजाता विमलेष्वम्भस्सु च निर्विषाः ॥

झेरी जळोनां क्षेत्रो अने झेरवगरनी जळोनां क्षेत्रो.

९ झेरी माछलां, कीडा अने देडकां एओना मूत्रना तथा विष्टाना सडामां उत्पन्न थएली अने मेलां पाणीमां रेहेनारी जळो झेरी होय छे. जरा धोळां कमळो, जरा नील कमळो, जरा रातां कमळो, पोयणां, सौगंधिक नामनां रात्रिविकासी कमळो, रक्त कमळो, अति सफेद कमळो तथा शेवाळ एओना सडामां उत्पन्न थएली अने निर्मळ पाणीमां रेहेनारी जळो झेरवगरनी होय छे.

१० भवति चात्र

क्षेत्रेषु विचरन्त्येताः सलिलेषु सुगन्धिषु ।
न च सङ्कीर्णचारिण्यो न च पङ्केशयाः सुखाः ॥

तासां ग्रहणमार्द्रचर्मणान्यैर्वा प्रयोगैर्गृह्णीयात् । अथैनां नवे महति घटे सरस्तडागोदकपंकमावाप्य निदध्यात् । भक्ष्यार्थे चासामुपहरेच्छैवलं वल्लूरमौदकांश्च कन्दांश्चूर्णीकृत्य शय्यार्थं तृणमौदकानि च पत्राणि । त्र्यहात्त्र्यहाच्चान्यज्जलं भक्ष्यं च दद्यात् सप्तरात्रात्सप्तरात्राच्च घटमन्यं संक्रामयेत् ॥

भवति चात्र ॥

स्थूलमध्याः परिक्लिष्टाः पृथ्व्यो मन्दविचेष्टिताः।
अग्राहिण्योऽल्पपायिन्यः सविषाश्च न पूजिताः॥

झेरवगरनी जळोनुं सामान्य लक्षण अने तेओने पकडवानी तथा राखवानी रीति.

१० आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "ए झेरवगरनी जळो सारां क्षेत्रोमां सुगंध पाणीमां विचरे छे, विष्टा आदि विरुद्ध आहार करती नथी, कादवमां रेहेती नथी अने सुखकारी होयछे."

जळोने आळां चामडांथी अथवा बीजा प्रयोगोथी पकडवी. पछी नवा तथा मोटा घडामां सरोवरना तथा तळावनां जळ अने कादव नाखी तेमां तेओने नाखवी. एओने आहारने माटे शैवाळ, सुकाएलुं मांस तथा जळमां उत्पन्न थएला कंदोनुं चूर्ण आपवुं अने सुवाने माटे खड तथा जळमां उत्पन्न थता रोपाओनां पानडां आपवां. बबे दिवसे अथवा त्रण त्रण दिवसे बीजुं पाणी तथा बीजुं भक्ष्य आपवुं अने सात सात रात वीत्या पछी तेओने बीजा घडामां नाखवी.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे जळो जाडां मध्योवाळी, क्लेश पामेली, पोहोळी, सुस्त चेष्टावाळी बराबर पकड नहीं करनारी, थोडुं लोही पीनारी के झेरी होय तेने वळगाडवाना काममां अयोग्य समजवी.

११ अथ जलौकोऽवसेकसाध्यव्याधितमुपवेश्य संवेश्य वा विरुक्षयेच्चास्य तमवकाशं मृद्गोमयचूर्णैर्यद्यरुजः स्यात् । गृहीताश्च ताः सर्षपरजनीकल्कोदकप्रदिग्धगात्रीः सलिलसरकमध्ये मुहूर्तस्थिता विगतक्लमा ज्ञात्वा ताभीरोगं ग्राहयेत् । सूक्ष्मशुक्लार्द्रपिचुप्लोतावच्छन्नां कृत्वा मुखमपावृणुयादगृह्णन्त्यै क्षीरबिन्दुं शोणितबिन्दुं वा दद्याच्छस्त्रपदानि वा कुर्वीत यद्येवमपि न गृह्णीयात्तदान्यां ग्राहयेत् । यदा च निविशतेऽश्वखुरवदाननं कृत्वोन्नम्य च स्कन्धं तदा जानीयाद्गृह्णातीति गृह्णन्तीं चार्द्रवस्त्रावच्छन्नां धारयेत्सेचयेच्च । दंशे तोदकण्डूप्रादुर्भावैर्जानीयाच्छुद्धमियमादत्त इति । शुद्धमाद्ददानामपनयेत् । अथ शोणितगन्धेन न मुञ्चेन्मुखमस्याः सैन्धवचूर्णेनावकिरेत् ॥

जळो वळगाडवानी पद्धति.

११ जेनो रोग जळो वळगाडवाथी मटे एवो होय ते रोगीने बेसाडी अथवा सुवाडी, जे जग्यामां रोग होय ते जग्या जो व्रण वगरनी होय तो ते उपर माटीनुं तथा छाणनुं चूर्ण लगावीने घसवुं के जेथी त्यां जळो वळगे (जो व्रण होय तो तेम करवानी जरुर नथी. केमके व्रणना गंधथी अने क्लेदथीज वळगी रेहेशे. व्रण उपर चूर्ण घसवाथी पीडा पण बहु थाय.) पछी घडामांथी जळोने पकडी बाहार काहाडी तेनां गात्रोने सर्षपना तथा हळदरना कल्कना पाणीथी खरडी, पाणीना कुंडां वगेरे बीजा पात्रमां थोडीवार राखी, ते शांत थएली जाणवामां आवे त्यारे तेनी पासे रोगनी जग्या पकडाववी. झीणुं तथा धोळुं रु तथा वस्त्र भीजवी तेथी जळोने ढांकी देवी[1] अने तेनुं मोहोडुं उघाडुं राखवुं. जळो जो रोगना स्थानकने पकडे नहीं तो रोगना स्थानकपर दुधनुं टीपुं अथवा लोहीनुं टीपुं नाखवुं अथवा शस्त्रथी टोचा करवा के जेथी जळो ते स्थानकने पकडे. आम कर्या छतां पण न पकडे तो ते जळोने छोडी दई बीजी जळोनी पासे पकडाववुं. ज्यारे जळो पोताना मोहोडाने घोडानी खरी जेवुं करी, कांध ऊंची करीने चोटे त्यारे जाणवुं के हवे लोही पीए छे. लोही पीवा लागेली जळोने भीना कपडाथी ढांकीराखवी अने तेनापर पाणी रेड्या करवुं. जळोना दंशमां ज्यारे व्यथा अने चळ थवा लागे[2] त्यारे तेने शुद्ध लोही पीती जाणीने

१ जळो मुख पामे तो तुरत लोही पीएछे माटे भीना वस्त्रथी तथा रुथी ढांकवानो उपचार करवो.

२ धातुना क्षयने लीधे उल्बण थयेला वायुथी व्यथा थाय छे. शुद्ध रुधिरनो क्षय थतां कफना कार्यरूप खरज न थवी जोइए एम धारीने केटलाएक तो मूळमां कंडू शब्दनुं उच्चारणज करता नथी. केटलाएक केहेछे के "रुधिरधातु के जे आग्नेय पदार्थ छे तेनो क्षय थतां सौम्य कफधातु जळोना मोहोडाना क्लेदथी वृद्धि पामेछे तेथी खरज थवानो संभव छे."

त्यांथी खसेडी लेवी[1] कदाच ते जळो लोहीनी अत्यंत लालचथी रोगना स्थानने न छोडे तो ते जळोना मोहोडा उपर सैंधवनुं चूर्ण भभराववुं के जेथी ते पोतानी मेळे छोडी दे.

१२ अथ पतितां तण्डुलकण्डनप्रदिग्धगात्रीं तैललवणाभ्यक्तमुखीं वामहस्ताङ्गुष्ठाङ्गुलीभ्यां गृहीतपुच्छां दक्षिणहस्तांगुष्ठांगुलीभ्यां शनैःशनैरनुलोममनुमार्जयेदामुखाद्वामयेत्तावद्यावत्सम्यग्वान्तलिङ्गानीति । सम्यग्वान्ता सलिलसरकन्यस्ता भोक्तुकामा सती चरेत् । या सीदति न चेष्टते सा दुर्वान्ता तां पुनः सम्यग्वामयेत् । दुर्वान्ताया व्याधिरसाध्य इन्द्रमदो नाम भवति । अथ सुवान्तां पूर्ववत्सन्निदध्यात् ॥

जळो लोही पीने पडी गया पछी तेने नीचोववानी रीति.

१२ जळो लोही पीने पडी जाय त्यारे तेनां गात्रोपर चोखाना चूर्णनो जाडो लेप करी अने मोहोडापर तेलमां वाटेलुं लूण खरडी, डाबा हाथना अंगुठाथी तथा आंगळीथी तेनुं पूंछडुं पकडी, जमणा हाथना अंगुठाथी तथा आंगळीथी धीरे धीरे अनुकूल रीते छेक तेना मोहोडामुधी दबाण करतुं जवुं अने दबावी दबावीने लोही ओकावी नाखवुं ते त्यांसुधी के ज्यांसुधी सारी पेठे ओकी नाख्यानां चिह्नो देखाय. ए जळो पाणीना वासणमां नाखवामां आवतां खावानी इच्छाथी फरवा लागे तो जाणवुं के तेणे संपूर्ण रीते लोही ओकी नाख्युं छे. जो जळो पाणीना वासणमां सुस्त थई रहे अने फरवा लागे नहीं तो तेने 'बराबर लोही ओकावायुं नथी' एम जाणीने फरीवार सारी पेठे ओकाववुं. जो जळोने सारी पेठे लोही ओकाववामां न आवे तो तेने इंद्रमद[2] नामनो रोग थाय छे. लोहीनुं सारी पेठे वमन करावीने पाछी तेने प्रथमनी पेठे घडामां नाखवी.

१३ शोणितस्य च योगायोगानवेक्ष्य जलौकोव्रणान्मधुनाऽवघट्टयेच्छीताभिरद्भिश्च परिषेचयेद्बध्नीत वा व्रणं कषायमधुरस्निग्धशीतैश्च प्रदेहैः प्रदिह्यादिति ॥

लोही काहाड्या पछी जळोना व्रणोपर करवानी क्रिया.

१३ लोही नीकळवाना हीनयोग, मिथ्यायोग तथा अतियोग जोई तपासी जो हीनयोग थयो जणाय तो व्रणोनी उपर मध चोळवो[3], अतियोग थयो होय तो व्रणोउपर थंडा जळनुं सेचन करवुं अथवा पाटो बांधवो[4] अने मिथ्यायोग थयो होय तो व्रणोउपर तूरा, मधुर, स्निग्ध तथा शीतल कल्कोना जाडा लेपो करवा[5].

१ जेम हंस दुधथी मिश्रित करेला पाणीमांथी दुधनेज पीएछे तेम जळो प्रथम मिश्रित रुधिरमांथी दुष्ट रुधिरनेज पीएछे. दुष्ट रुधिर समाप्त थई रहे त्यारे पछी शुद्ध रुधिर पीवा लागे छे.

२ केटलाएक केहेछे के आ रोगनुं लक्षण आ ग्रंथमां आप्युं नथी माटे आ पाठमां इंद्रमद शब्द बोलवोज नहीं.

३ अवशेष रहेला दुष्ट रुधिरनो स्राव कराववासारू चोळवानुं कह्युं छे.

४ स्रववा लागेला लोहीने अटकाववामाटे थंडा जळना सेचननुं अने पाटो बांधवानुं कह्युं छे.

५ कषायनो लेप दुष्ट रुधिरने स्वच्छ करवामाटे अने मधुरनो लेप स्रवी जता शुद्ध रुधिरने अटकाववा माटे कह्यो छे. केटलाएक तो एम केहेछे के "मूर्छादिक उपद्रवोने टाळवामाटे शीत जळनुं सेचन कह्युं छे अने व्रणने सांधवा माटे मधथी चोळवानुं तथा कषाय आदि लेप करवानुं कह्युं छे." लोही नीकळवानो सम्यग्योग थयो होय तो जळोए करेला व्रणोने सो वार धोएला घीनो अभ्यंग करवो अथवा तेवा घीथी भीजावेलुं रू तेओना उपर मुकवुं. जळो मुकवा वगेरे थी लोही स्रवाववुं ते पण माणसना, दोषना तथा व्याधिना बळना प्रमाणने जोईने स्रवाववुं. जेम के रोगनुं स्थानक अल्प होय तो अल्प स्रवाववुं अने मोटुं होय तो घणुं स्रवाववुं इत्यादि. लोही स्रवाववानी मात्रा नीचेप्रमाणे समजवी.

१४ भवति चात्र ॥
क्षेत्राणि ग्रहणं जातीः पोषणं सावचारणम् ।
जलौकसां च यो वेत्ति तत्साध्यान्स जयेद्गदान् ॥

वैद्ये जळोनां क्षेत्रो वगेरे जाणवानी जरूर.

१४ आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे वैद्य जळोना क्षेत्रोने, जातिओने, पोषणनी रीतिने, व्याधिउपर वळगाडवानी रीतिने अने ते पछी करवानां कर्मोनी पद्धतिने जाणतो होय ते वैद्य, जळो वळगाडवाथी मटे एवा रोगोने जीतेछे.

अध्याय १४ मो.

१ अथातः शोणितवर्णनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शोणितवर्णनीय[1]' नामना अध्यायनुं व्याख्यान ते प्रमाणे करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ तत्र पांचभौतिकस्य चतुर्विधस्य षड्रसस्य द्विविधवीर्यस्याष्टविधवीर्यस्य वाऽनेकगुणस्योपयुक्तस्याहारस्य सम्यक्परिणतस्य यस्तेजोभूतः सारः परमसूक्ष्मः स रस इत्युच्यते । तस्य च हृदयं स्थानं स हृदयाच्चतुर्विंशतिं धमनीरनुप्रविश्योर्ध्वगा दश दश चाधोगामिन्यश्चतस्रस्तिर्यग्गाः कृत्स्नं शरीरमहरहस्तर्पयति वर्द्धयति धारयति यापयति चादृष्टहेतुकेन कर्मणा

रसनुं स्वरूप, स्थान तथा कामो[2].

२ आहार के जे पृथ्वी वगेरे पांच महाभूतोना विकाररूप छे, पीवानो जमवानो चाटवानो अने खावानो. ए रीते चार प्रकारनो छे, मधुर वगेरे छ रसोवाळो छे, शीत तथा उष्ण एम बे प्रकारना वीर्यवाळो छे, अथवा शीत उष्ण स्निग्ध रुक्ष विशद पिच्छिल मृदु तथा तीक्ष्ण ए भेदोथी आठ प्रकारनां वीर्यवाळो छे अने अनेक गुणोवाळो छे (शीत आदि तथा द्रव आदि गुणोना भेदथी वीश गुणोवाळो छे) तेनो योग्य रीते उपयोग थया पछी ते सारी रीते पाकतां तेनो जे अग्निना संयोगथी उत्पन्न थएलो अथवा घीनी पेठे उत्पन्न थएलो अथवा घीना जेवा आकारवाळो, विष्टा आदि मळोथी रहित अने सूक्ष्म सूक्ष्म स्रोतोमां पण गति करी शके एवो परमसूक्ष्म सार थाय छे ते **रस** केहेवाय छे. हृदयनी आसपासनो जे प्रदेश छे ते रसनुं स्थानक छे[3]. ए रस हृदयमांथी धमनी नामनी चोवीश नाडीओ के जेओमांनी दश शरीरना उंचा भागमां गएली छे, दश नीचा भागमां गएली छे अने चार आडी गएली छे तेओमां प्रवेश करी दिवसे दिवसे जीवना अदृष्टथी थएली क्रियाने लीधे सघळां शरीरने तृप्त करेछे, बालकना शरीरने वधारे छे, मध्यम वयवाळाना शरीरने धरी राखे छे अने वृद्धना शरीरने चलाव्ये जाय छे.

३ तस्य शरीरमनुधावतोऽनुमानाद्गतिरुपलक्षयितव्या क्षयवृद्धिवैकृतैः ॥

रसनी विकृत तथा अविकृत गतिने अनुमानथी जाणवा विषे.

३ ए रस के जे शरीरमां गति कर्या करेछे तेनी विकृत गति, हृदयनी पीडा तथा कंप वगेरे क्षयनां चिह्नोथी अने हृदयमां बोजा वगेरे वृद्धिनां चिह्नोथी जाणी लेवी. (हृदयमां पीडा तथा कंप

चार तोला भारनुं एक पल थाय छे एवां साडातेर पल खवाववुं एटले चोपन तोलां भार खवाववुं ए उत्तम मात्रा छे. पचीश तोलां भार खवाववुं ए मध्यम मात्रा छे अने साडाबार तोलां भार खवाववुं ए अधम मात्रा छे. जे मात्रा खवाववी होय ते पण बे दिवसे खवाववी.

१ रुधिरना वर्णननो अधिकार लईने कहेलो.

२ रुधिरनी उत्पत्ति रसने आधीन छे माटे प्रथम रसविषे कहे छे.

३ हृदय पोते तो ओजनुं स्थानक छे तेथी रसनुं स्थानक होवुं संभवे नहीं.

वगेरे थतां होय तो जाणवुं के रसनी क्षयरूप विकृत गति थई छे अने हृदयमां बोजा वगेरे थतां होय तो जाणवुं के रसनी वृद्धिरूप विकृत गति थई छे.) रस सघळा शरीरने बराबर तृप्ति आपतो होय तो तेथी अने बीजां पण तेवा प्रकारनां चिह्नोथी रसनी अविकृत गति '(विकार वगरनी गति–सम्यग्गति–जेवी जोईए तेवी गति) जाणी लेवी.

४ तस्मिन् सर्वशरीरावयवदोषधातुमलाशयानुसारिणि रसे जिज्ञासा किमयं सौम्यस्तैजस इति। अत्रोच्यते स खलु द्रवानुसारी स्नेहनजीवनतर्पणधारणादिभिर्विशेषैः सौम्य इत्यवगम्यते ॥

रस सौम्य पदार्थ छे के तैजस पदार्थ छे? (चंद्रात्मक छे के अग्न्यात्मक छे?)

४ सघळा शरीरना अवयवोने, दोषोने, धातुओने, मळोने तथा आशयोने अनुसरनारा ए रस विषे एवी जिज्ञासा (जाणवानी इच्छा) थाय छे के ते रस नामनो पदार्थ कफनी पेठे सौम्य छे के पित्तनी पेठे तैजस छे? आवो संशय थतां एवा निश्चय उपर अवाय छे के "ते रस द्रवरूपे शरीरमां गति करनार छे, स्निग्ध करनार छे, जीवाडनार छे, तृप्त करनार छे, धरी राखनार छे अने तेवाज बीजा पण केटलाएक विशेषोवाळो छे तेथी सौम्यज छे." (चंद्रात्मक–जलात्मकज छे.)

५ स खल्वाप्यो रसो यकृत्प्लीहानौ प्राप्य रागमुपैति ॥

भवतश्चात्र ॥

रञ्जितास्तेजसा त्वापः शरीरस्थेन देहिनाम्।
अव्यापन्नाः प्रसन्नेन रक्तमित्यभिधीयते ॥
रसादेव स्त्रिया रक्तं रजःसंज्ञं प्रवर्तते।
तद्वर्षाद्द्वादशादूर्ध्वं याति पंचाशतः क्षयम् ॥

रसमांथी लोही बनवाविषे.

५ ए रीते रस जळमय पदार्थ छतां पण जमणा पडखानी यकृत् नामनी गांठने अने डाबा पडखानी प्लीह (बरल) नामनी गांठने प्राप्त थईने रातापणुं पामेछे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "रस जो कोई जातना बगाडने न पाम्यो होय तो प्राणीओना शरीरमां रहेला रंजक नामना स्वच्छ पित्तथी रंगाईजइने 'रुधिर' ए नामने प्राप्त थाय छे. स्त्रीनुं जे रज नामनुं रुधिर होय छे ते पण रसथीज बने छे अने ते रुधिर बारमा वर्ष पछी प्रवर्त्ते छे तथा पंचासमा वर्ष पछी क्षय पामे छे.

६ आर्तवं शोणितं त्वाग्नेयमग्नीषोमीयत्वाद्गर्भस्य ॥

स्त्रीनुं रज अग्न्यात्मक (तैजस) पदार्थ होवाविषे.

६ स्त्रीनुं ऋतुसंबंधी रुधिर (रज) जो के जलात्मक रसमांथी उत्पन्न थाय छे तो पण ते अग्निसंबंधी पदार्थज छे. कारण के गर्भ अग्नीषोमीय केहेवाय छे तो ए कथन जो रज अग्निसंबंधी पदार्थ होय तोज घटे छे. स्त्रीनुं रज अग्निसंबंधी छे अने पुरुषनुं वीर्य चंद्रसंबंधी अथवा जलात्मक छे तेओथी उत्पत्ति थवाने लीधे गर्भ अग्नीषोमीय गणाय छे[१].

७ पांचभौतिकं चापरे जीवरक्तमाहुराचार्याः ॥
विस्रता द्रवता रागः स्पन्दनं लघुता तथा।
भूम्यादीनां गुणा ह्येते दृश्यन्ते चात्र शोणिते॥

१ अहीं टीकाकार डल्लन एम जणावे छे के रज अने सामान्य रुधिर ए बन्ने आग्नेय पदार्थ छे पण बीजाओ एम माने छे के रजज आग्नेय छे अने सामान्य रुधिर तो अनुष्णाशीत छे. परंतु नीचे मतांतर लख्युं छे ते उपरथी जणाय छे के धन्वंतरि पण रज अने रुधिर ए बन्नेने आग्नेय पदार्थज माने छे माटे डल्लननुं केहेवुं बराबर छे.

सामान्य रुधिरना स्वभावमां मतांतर.

७ सामान्य रुधिर के जे प्राणीओना जीवनरूप छे ते विषे बीजा आचार्यो केहे छे के ए रुधिर केवळ आग्नेय नथी पण पृथ्वी आदि पांचे भूतोना विकाररूप छे.

रुधिरमां जे आमगंध (काचा मांसना जेवो गंध) छे ते पृथ्वीनो गुण छे, जे द्रवपणुं छे ते जळनो गुण छे, जे रातापणुं छे ते तेजनो गुण छे, जे चलन छे ते वायुनो गुण छे अने जे हलकापणुं छे ते आकाशनो गुण छे. आ प्रमाणे पृथ्वी वगेरे भूतोना गंध आदि गुणो रुधिरमां जोवामां आवे छे माटे रुधिर पांचभौतिक छे.

८ रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते ।
मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्ज्ञः शुक्रस्य सम्भवः॥
तत्रैषां धातूनामन्नपानरसः प्रीणयिता ।
रसजं पुरुषं विद्याद्रसं रक्षेत् प्रयत्नतः ।
अन्नात्पानाच्च मतिमानाचाराच्चाप्यतन्द्रितः ॥

रसमांथीज धातुओनी उत्पत्ति, रसथीज धातुओनुं पोषण अने रसनुं रक्षण करवानी भलामण.

८ जे रस छे तेज पोताना थोडाक भागथी रुधिररूपे गोठवाय छे, रुधिर पोताना थोडाक भागथी मांसरूपे गोठवाय छे, मांस पोतानां थोडाक भागथी मेदरूपे गोठवाय छे, मेद पोताना थोडाक भागथी अस्थिरूपे गोठवाय छे, अस्थि पोताना थोडाक भागथी मज्जारूपे गोठवाय छे अने मज्जा पोताना थोडाक भागथी वीर्यरूपे गोठवाय छे. अन्नपाननो रस जेम आ प्रमाणे धातुओने अनुक्रमे उत्पत्ति आपे छे तेमज धातुओने पोषण पण आपे छे. आम छे एटला माटे बुद्धिमान् पुरुषे मनुष्य शरीरनी उत्पत्ति रसथीज थाय छे एम जाणी आलस्य नहीं राखतां प्रयत्नपूर्वक योग्य अन्नपानोथी रसनुं रक्षण करवुं, अने आचरण पण एवुंज करवुं के जेथी रसनुं रक्षण थाय.

९ तत्र रस गतौ धातुरहरहर्गच्छतीत्यतो रसः । स खलु त्रीणि त्रीणि कलासहस्राणि पंचदश च कला एकैकस्मिन् धाताववतिष्ठत एवं मासेन रसः शुक्रीभवति स्त्रीणां चार्तवमिति ॥

भवति चात्र ॥

अष्टादश सहस्राणि संख्या ह्यस्मिन्समुच्चये ।
कलानां नवतिः प्रोक्ता स्वतन्त्रपरतन्त्रयोः ॥

स शब्दार्चिर्जलसन्तानवदणुना विशेषेणानुधावत्येव शरीरं केवलम् ।

वाजीकरण्यस्त्वोषधयः स्वबलगुणोत्कर्षाद्विरेचनवदुपयुक्ताः शुक्रं शीघ्रं विरेचयन्ति ॥

रस शब्दनो विग्रह, प्रत्येक धातुमां रसनी स्थितिनो काळ, एक महीने रसनुं वीर्यरूपे गोठवावुं अने वाजीकरण आदि औषधिओनो विशेष चमत्कार.

९ दिवसे दिवसे गति कर्या करे छे तेथी रस केहेवाय छे. कारण के 'रस' ए शब्द संस्कृत भाषाना गति अर्थवाळा धातुमांथी निष्पन्न थयो छे. ए रस शरीरमां एक दिवसेज उत्पन्न थईने पोता पछीना धातुओमां एक एक धातुनी अंदर त्रण त्रण हजार अने पंदर पंदर कळा एटले पांच पांच दिवसो सुधी रहे छे अने एम थतां एक म-

१ लोही जीवता शरीरमां जोवामां आवे छे पण रोगादिकथी मरण पामेला शरीरमां जोवामां आवतुं नथी माटे ते जीवनरूप एटले जीवनतुल्य गणाय छे.
जीवोवसति सर्व स्मिन् देहे तत्र विशेषतः ।
वीर्ये रक्ते मले यस्मिन् क्षीणे याति क्षयं क्षणात् ॥
(भा. प्र.)
आ उपरथी एम समजवुं के जीव शुद्ध रुधिरमां वसे छे पण दोषयुक्त रुधिरमां वसतो नथी. दोषयुक्त रुधिरमां पण जीव वसतो होय तो दोषयुक्त रुधिरने जळो तथा तुंबडी वगेरे द्वारा काहाडी नाखवानुं कह्युं छे ते अयुक्त गणाय.

हिने पुरुषोना वीर्यरूप थाय छे अने स्त्रीओना रज-रूप थाय छे[1]. (जो के स्त्रीओनुं रज पण रुधिरज छे तेथी ते सातमे दिवसेज निष्पन्न थाय छे तो पण अहीं महीने दिवसे उत्पन्न थवानुं कह्युं तेनुं कारण ए छे के ते रज वधीवधीने एक महीने प्रत्यक्ष देखाय छे.)

आ विषयना श्लोकमां कह्युं छे के रस वीर्य-रूप थतां सुधीमां कुल एकंदर कळाओ अढार हजार अने नेवुं एटले एक मास थाय छे ए वात आ शास्त्रमां तथा बीजां शास्त्रमां पण सर-खीज छे.

ए रस पोतानी सूक्ष्म झडपथी सघळा शरीरमां शब्दना प्रवाहनी पेठे आडो दोडे छे, ज्वाळाना प्रवाहनी पेठे ऊंचे दोडे छे, अने जळना प्रवाहनी पेठे नीचे पण दोडे छे[2].

जो के आ प्रमाणे रस एक महीने वीर्यरूप थाय छे तो पण ते उपरथी एम नहीं समजवुं के "वाजीकरण[3], अने जीवनीय वगेरे औषधि-ओना प्रयोगो के जेओ तुरत वीर्य उत्पन्न करनारा कहेला छे ते सघळा व्यर्थ जाय छे" कारण के जेम नेपाळा तथा नसोतर वगेरे विरेचन औषधो तुरतज रेच लगाडे छे तेम वाजीकरण वगेरे औष-धिओ पण उपयोगमां लेवामां आवे के तुरतज पोताना बळना अने गुणना उत्कर्षथी वीर्यने प्र-वर्तावे छे[4].

१० **तथाहि पुष्पमुकुलस्थो गन्धो न श-क्यमिहास्तीति वक्तुं नैव नास्तीत्यथवास्ति सतां भावानामभिव्यक्तिरिति कृत्वा केवलं सौ-क्ष्म्यान्नाभिव्यज्यते स एव गन्धो विवृतपत्र-केशरैः कालान्तरेणाभिव्यक्तिं गच्छत्येवं बाला-नामपि[5] वयःपरिणामाच्छुक्रप्रादुर्भावो भव-**

१ जे रज छे तेज स्त्रीओनुं वीर्य छे. केमके 'ज्यारे बे स्त्रीओज परस्पर कामना युक्त थईने परस्परनुं वीर्य मुके त्यारे अस्थिओ वगरनुं बाल शरीर पेदा थायछे' एम कह्युं छे.

२ केटलाएक तो एम व्याख्यान करे छे के "तीक्ष्ण अग्निवाळाओने शब्दना प्रवाहनी पेठे बहुज झडपथी रसनो संचार थाय छे, मध्य अग्निवाळाओने ज्वालाना प्रवाहनी पेठे साधारण झडपथी रसनो संचार थाय छे अने मंद अग्निवाळाओने जळना प्रवाहनी पेठे मंद वेगथी रसनो संचार थाय छे. आ कारणथी तीक्ष्ण अ-ग्निवाळाओने रस अढार दिवसेज वीर्यरूप थई जाय छे, मध्य अग्निवाळाओने कांइक अधिक दिवसे वीर्यरूप थई जाय छे अने मंद अग्निवाळाओने तो रस एक महीनेज वीर्यरूप थाय छे." आ व्याख्यानने गय-दास आचार्ये बहुज दूषित करेलुं छे अने एम सिद्ध कर्युं छे के "तीक्ष्ण अग्निवाळाओने महीनामां कांइक ओछुं होय त्यारे रस वीर्यरूप थाय छे, मंद अग्नि-वाळाओने महीना उपरांत थाय त्यारे रस वीर्यरूप थाय छे अने मध्य अग्निवाळाओने बराबर एक महिने रस वीर्यरूप थाय छे."

३ प्रिय विषयो, जुवान कामिनी, अजवाळी रात, मदिरा, पुष्पमाळाओ, बगीचा, मननो अप्रतिघात, दुध, घी, अडद, भीलामां तथा शिखंड इत्यादि जे औषधिओथी पुरुष रतिप्रसंगमां घोडा जेवो समर्थ थाय ते औषधिओ वाजीकरणी केहेवाय छे. चिकित्सा-स्थानना २६ मो अध्याय जुवो.

४ काकोल्यादिगण के जे आ स्थानना ३८ मा अध्यायना १८ मां विषयमां केहेवामां आवशे ते.

५. जुवान स्त्रीना स्पर्श आदि वाजीकरणो पोताना बळ-ना उत्कर्षथी, दूध तथा घी वगेरे वाजीकरणो पोताना स्नेह वगेरे गुणना उत्कर्षथी अने अडद आदि वाजीकरणो पोताना प्रभाव तथा गुण ए बन्नेना उत्कर्षथी तुरतज रसादिकना उत्पादन पूर्वक वीर्यने उत्पन्न करीने प्रव-र्त्तावे छे इत्यादि समजवुं. वाजीकरण वगेरे औषधो पर-भारांज वीर्यने प्रवर्त्तावे छे एम समजवुं नहीं पण एम सम-जवुं के एओ पोताना बळनी (प्रभावनी) अने गुणोनी अधिकताने लीधे तुरतज रसादिकने उत्पन्न करीने वीर्यने पेदा करीदेछे तथा प्रवर्त्तावेछे. कह्युं छे के "दूध, अडद, भीलामां, फळोनी मज्जाओ अने आमळां एओ तुरतज रसादिकनुं उत्पादन करी ते द्वारा वीर्यने उत्पन्न करीदेछे अने प्रवर्त्तावे छे."

ति रोमराज्यादयोऽथार्तवादयश्च विशेषा नारीणां रजसि चोपचीयमाने शनैः शनैः स्तनगर्भाशययोन्यभिवृद्धिर्भवति ॥

रस महीने महीने वीर्य तथा रजरूप थतां छतां पण बालकोने तथा कन्याओने वीर्य तथा रज न देखावानुं कारण.

१० जेम फुलनी काची कळीमां 'गंध छे' एम कही शकातुं नथी अने 'गंध नथी' एम पण कही शकातुं नथी परंतु जे पदार्थो प्रथम होय तेज पदार्थो कारण सामग्रीने प्राप्त थईने पाछळथी अभिव्यक्त थाय छे पण जेओनुं मुदल अस्तित्वज न होय ते पदार्थो कदी पण अभिव्यक्त थता नथी' ए सिद्धांतने अनुसरीने कही शकाय छे के 'फुलनी कळीमां गंध छे पण फक्त सूक्ष्म होवाने लीधे प्रत्यक्ष जणातो नथी.' तेम बाळकोमां वीर्य प्रथमथी मुदल नज होय तो पाछळथी अभिव्यक्त न थवुं जोइए माटे बाळकोमां पण वीर्य छे पण सूक्ष्म होवाने लीधे प्रत्यक्ष थतुं नथी. जेम कळीमां रहेलो गंध काळांतरे कळीनी पांखडीओ तथा केसरा ऊघडे त्यारे अभिव्यक्त थाय छे तेम बालकोमां रहेलुं वीर्य काळांतरे अवस्थानो परिणाम थाय त्यारे अभिव्यक्त थाय छे. कन्याओने रज आदि विशेषो देखाता नथी ते विषे तथा बालकोने अने कन्याओने रोमराजी वगेरे देखातां नथी ते विषे पण ए प्रमाणेज समजी लेवुं. स्त्री जातिने जेम जेम रज वधतुं जाय छे तेम तेम धीरे धीरे स्तनो, गर्भाशय अने योनि एओनी अभिवृद्धि थती जाय छे.

११ स एवान्नरसो वृद्धानां जरापरिपक्वशरीरत्वान्न प्रीणनो भवति ॥

अन्नपाननो रस शरीरनी वृद्धि करनारो छतां पण वृद्धाओना शरीरोनी वृद्धि करतो नथी तेनुं कारण.

११ जो के अन्नपाननो रस सर्व धातुओनो पोषक छे तो पण वृद्धलोकोनां शरीरो जरावस्थाथी पाकी गएलां होय छे तेथी तेओना धातुओने संपूर्ण पुष्टि नहि आपी शकतां जराक पुष्टि आपे छे के जेथी वृद्ध लोकोनुं जीवन चाल्या करे छे.

१२ त एते शरीरधारणाद्धातव इत्युच्यन्ते। तेषां क्षयवृद्धी शोणितनिमित्ते तस्मात्तदधिकृत्य वक्ष्यामः ॥

धातुशब्दनो अर्थ तथा रुधिर संबंधी विषयनो आरंभ.

१२ ए रस वगेरे पदार्थो शरीरनुं धारण करे छे तेथी 'धातुओ' केहेवाय छे. धातुओनो क्षय अने धातुओनी वृद्धि एओनो पायो लोही उपर छे माटे हवे लोही संबंधी विचारनो आरंभ करीए छीए.

१३ तत्र फेनिलमरुणं कृष्णं परुषं तनु शीघ्रगमस्कन्दि च वातेन दुष्टं । नीलं पीतं हरितश्यावं विस्रमनिष्टं पिपीलिकामक्षिकाणामस्कन्दि च पित्तदुष्टम्। गैरिकोदकप्रतीकाशं स्निग्धं शीतलं बहलं पिच्छिलं चिरस्रावि मांसपेशीप्रभं श्लेष्मदुष्टं च। सर्वलक्षणसंयुक्तम्। काञ्जिकाभं विशेषतो दुर्गन्धि च सन्निपातदुष्टम्। द्विदोषलिंगं संसृष्टम् । इन्द्रगोपप्रतीकाशमसंहतमविवर्णंच प्रकृतिस्थं जानीयात् ॥

बगडेला लोहीनां तथा शुद्ध लोहीनां लक्षणो.

१३ वायुथी बगडेलुं लोही फीणवाळुं, जराक रातुं, पाकवामां अभिमुख थाय त्यारे काळुं, चीकाश वगरनुं, आछुं, झडपथी चालनारुं अने घाटापणा वगरनुं थाय छे.

पित्तथी बगडेलुं लोही नीळरंगवाळुं, पीळा रंगवाळुं, हऱ्या तथा काळा रंगवाळुं, काचा मांसना जेवा गंधवाळुं, कीडीओने तथा मांखीओने गमे नहीं एवुं अने घाटापणावाळुं थाय छे. (आमवाळा पित्तथी बगडेलुं होय तो नीळ अथवा

हस्या तथा काळा रंगवाळुं अने आम वगरना पित्तथी बगडेलुं होय तो पीळा रंगवाळुं थाय छे.)

कफथी बगडेलुं लोही गेरुना पाणी जेवुं, स्निग्ध, थंडुं, झाडुं, चीकासवाळुं, घणीवारे स्रवे एवुं अने घाटीपणाथी मांसनी पेशी जेवुं थाय छे.

वात, पित्त अने कफ ए त्रणे दोषोथी बगडेलुं होय तो उपर कहेलां सघळां लक्षणोवाळुं, कांजी जेवुं अने विशेषे करी दुर्गंधवाळुं थाय छे.

बे दोषोथी बगडेलुं होय तो तेमां बे दोषोनां लक्षणो जोवामां आवे छे.

लोही शुद्ध होय तो इंद्रगोपक (वरसादथी थता राता कीडा-मेघना मामा) जेवुं रातुं होय छे, बहु पातळुं के बहु घाटुं होतुं नथी अने वस्त्र वगेरे उपर पडयुं होय तो धोवातां छतां पण पोताना रंगने बदलावतुं नथी.

(रुधिरनो 'जीवशोणित' नामनो एक जुदो प्रकार पण चिकित्सास्थानना ३४ मा अध्यायना १० विषयमां केहेवामां आवशे.)

१४ विस्राव्यान्यन्यत्र वक्ष्यामः१। अथाऽविस्राव्याः। सर्वाङ्गशोफः क्षीणस्य चाम्लभोजननिमित्तः पाण्डुरोग्यर्शसोदरिशोषिगर्भिणीनां च श्वयथवः ॥

केवां माणसोनां लोहीने स्रवाववुं नहीं.

१४ स्रवाववा योग्य रुधिरो विषे बीजा स्थलमां (आ स्थानना २९ मा अध्याय वगेरेमां) कहीशुं. अहीं तो जे माणसोनां लोही नहीं स्रवाववां जोइए तेओनी टिप्पण आपीएछीए. सघळां अंगोमां सोजावाळो, जेने खाटुं जमवाथी सोजो थयो होय एवो क्षीण माणस, पांडुरोगी, अरशवाळो, उदरना रोगवाळो, शोषवाळो अने गर्भिणी स्त्री एओना सोजाओमांथी लोही स्रवाववुं नहीं.

१५ तत्र शस्त्रविस्रावणं द्विविधं प्रच्छानं शिराव्यधनं च। तत्र ऋज्वसङ्कीर्णं सूक्ष्मं सममनवगाढमनुत्तानमाशु च शस्त्रं पातयेन्मर्मशिरास्नायुसन्धीनां चानुपघाति। तत्र दुर्दिने दुर्विद्धे शीतवातयोरस्विन्नेऽभुक्तवतः स्कन्नत्वाच्छोणितं न स्रवत्यल्पं वा स्रवति ॥

भवति चात्र ॥

मदमूर्छाश्रमार्तानां वातविण्मूत्रसङ्गिनाम्।
निद्राभिभूतभीतानां नृणां नासृक् प्रवर्तते ॥

शस्त्रथी लोही स्रवाववाना बे प्रकार, शस्त्र केवुं जोइए? फांचरूं केवुं मारवुं? लोही क्यारे स्रवे नहीं अथवा ओछुं स्रवे?

१९ फांचरूं (छेरो) मारीने स्रवाववुं अने फस खोलीने स्रवाववुं एम शस्त्रथी स्रवाववाना बे प्रकार छे. फांचरूं मारवुं होय तो जेनुं मोहोडुं अत्यंत मोटुं न होय एवा शस्त्रथी सरल, बीजा फांचराथी संकीर्ण न थाय एवुं, सरखी रेखावाळुं दूर नही उतरेलुं. अने कांइक मांसनो स्पर्श करे एवुं मारवुं. फांचरूं मारवानुं जे शस्त्र होय तेथी शिराओने, स्नायुओने के संधिओने हरकत न आवे एवी रीते झडपथी क्रिया करवी. दिवस वादळांओथी घेराएलो होय अथवा अयोग्य रीते फांचरूं मारवामां आवे अथवा टाढ के पवन प्रबल होय, अथवा रोगीने स्वेदन (शेक वगेरे क्रिया) न कर्युं होय अथवा रोगीने जमाड्यो न होय अथवा रोगी तुरतनो जमेलो होय तो लोही घाटुं होवाने लीधे स्रवतुं नथी अथवा ओछुं स्रवे छे.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के "जे माणसो मदथी (विषना के मद्यना विकारथी) मूर्छाथी के श्रमथी पीडाएल होय, वायुनी विष्टानी के मूत्रनी अटकायतवाळां होय, निद्राथी घेराएलां होय के भय पामेलां होय तेओनुं लोही स्रवतुं नथी."

१६ तद्दुष्टं शोणितमनिर्ह्रियमाणं कण्डूशोफरागदाहपाकवेदना जनयेत्।

१ आमां अयोग अने तेनां कारणो बतावावामां आवशे.

अत्युष्णातिस्विन्नातिविद्धेष्वज्ञैर्विस्रावितमतिप्रवर्तते ।

तदतिप्रवृत्तं शिरोभितापमान्ध्यमधिमन्थं तिमिरप्रादुर्भावं धातुक्षयमाक्षेपकं पक्षाघातमेकाङ्गविकारं तृष्णादाहौ हिक्कां कासं श्वासं पाण्डुरोगं मरणं चापादयति ॥

दुष्ट लोही स्रवाववामां न आवे तो शुं थाय ? लोहीनो अतिस्राव शाथी थाय अने ते थाय तो शी पीडाओ थाय ?

१६ दुष्ट थएलुं (बगडेलुं) लोही जो स्रवावीने काहाडी नाखवामां न आव्युं होय तो खरज, सोजा, अंगमां रताश, पाकवुं तथा वेदना एओने उत्पन्न करेछे.

अत्यंत उष्ण कालमां अथवा अत्यंत स्वेदन करीने अथवा अत्यंत वींधीने स्रवाववामां आवे अथवा जेओए जुना वैद्योना हाथथी थती क्रियाओ जोएली न होय एवा वैद्योना हाथथी स्रवाववामां आवे तो लोही बहुज स्रववा लागे छे.

लोहीनी जो अत्यंत प्रवृत्ति (बहुज स्राव) थाय तो तेथी माथानुं शूळ, आंधळापणुं, अधिमंथ नामनो चक्षुनो रोग, तिमिर, (लिंगनाश) धातुक्षय, आक्षेपक वायु, पक्षाघात, वायुथी थतो एक अंगमां विकार, तरश, बळतरा, हेडकी, खांसी, श्वास, तथा पांडुरोग थाय छे अने मरण पण थई जाय छे.

१७ भवन्ति चात्र ॥

तस्मान्न शीते नात्युष्णे नास्विन्ने नातितापिते।
यवागूं प्रतिपीतस्य शोणितं मोक्षयेद्भिषक् ॥
सम्यग्गत्वा यदा रक्तं स्वयमेवावतिष्ठते ।
शुद्धं तदा विजानीयात्सम्यग्विस्रावितं च तत्॥
लाघवं वेदनाशान्तिर्व्याधेर्वेगपरिक्षयः ।
सम्यग्विस्राविते लिङ्गं प्रसादो मनसस्तथा
त्वग्दोषा ग्रन्थयः शोफा रोगाः शोणितजाश्च ये ।
रक्तमोक्षणशीलानां न भवन्ति कदाचन

लोही स्रवाववानो सम्यग्योग, सम्यग्योगनां कारणो, सम्यग्योगनुं लक्षण तथा सम्यग्योगथी लाभो.

१७ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "पूर्वोक्त कारण माटे वैद्ये अत्यंत शीतकालमां के अत्यंत उष्णकालमां स्रवाववुं नहीं. रोगीना शरीरपर स्वेदन क्रिया कर्या वगर स्रवाववुं नहीं. स्वेदनक्रिया अत्यंत थई गई होय तो स्रवाववुं नहीं. सूर्यनी किरणो वगेरेथी अत्यंत ताप लाग्यो होय तो स्रवाववुं नहीं. यवागूनामनी राब बे वार के त्रण वार पाया पछी स्रवाववुं. लोही ज्यारे सारी रीते रातावर्णवाळुं थाय त्यारे तेने शुद्ध थएलुं समजवुं. तेमज ज्यारे सारी रीते स्रवीने रातुं थएलुं लोही पोतानी मेळेज स्रवतुं अटकी जाय त्यारे तेने सारी रीते स्रवावायुं समजवुं. हलकापणुं, वेदनानी शांति, व्याधिना वेगनो क्षय अने मननी प्रसन्नता एटलां आभ्यंतर चिह्नोथी पण लोहीनुं सारी रीते स्रावण थयुं समजवुं. जेओ लोहीनुं स्रावण करावावानो अभ्यास राखेछे तेओने कोढ, लाखुं तथा दाझ वगेरे चामडीना दोषो, ग्रंथिओ, सोजाओ अने

---

१ आमां अतियोग तथा तेनां कारणो बताववामां आवशे.

२ जो माथामांथी लोहीनी बहुज प्रवृत्ति थाय तो माथानां शूलथी लिंगनाश सुधीना रोगो थाय छे.

३ धातुक्षय तो लोहीनो अतिस्राव थवाथी सघळा शरीरमां थाय.

४ प्रकोप पामेलो वायु सघळी धमनीओमां आवी वारंवार चंचल थई हाथीना उपरनी बेठकनी पेठे माणसना शरीरने हलाव्या करे ते आक्षेपक वायु केहेवाय छे.

५ यवागू शब्दथी अहीं तिलनी राब समजवी. केमके ते राब तुरतज स्नेहन करे छे अने रुधिरनो उत्क्लेद करे छे." केटलाएक केहे छे के "मगनी कणीओनी जरा पातळी राब ए यवागू केहेवाय छे. यवागूमां घणुं करीने क्लेदन तथा स्वेदन करवानो स्वभाव छे अने वळी ते यवागू द्रव तथा उष्ण होय छे तेथी तुरतज लोहीने पीगळावेछे" आ यवागू मात्राथी पावी.

लोहीना बगाडथी थनारा रक्तगुल्म तथा विसर्प वगेरे रोगो कदी पण थता नथी.

१८ अथ खल्वप्रवर्तमाने रक्ते एलाशीतशिवकुष्ठतगरपाठाभद्रदारुविडङ्गचित्रकत्रिकटुकागारधूमहरिद्रार्काङ्कुरनक्तमालफलैर्यथालाभं त्रिभिश्चतुर्भिः समस्तैर्वा चूर्णीकृतैः सर्षपतैललवणप्रगाढैर्व्रणमुखमवघर्षयेदेवं सम्यक् प्रवर्तते ।

लोही काहाडवानो प्रयत्न कर्या छतां पण लोही न नीकळे तो तेने काहाडवानो उपाय.

१८ योग्य प्रयत्न कर्या छतां पण लोहीनी प्रवृत्ति न थाय तो एळची, कपूर, कठ, तगर, काळीपाड, तेलीयो देवदार, वावडींग, चित्रो, त्रिकटु, (सुंठ,–मरी–पीपळ) घरना धुमाडानी धूंस, हळदर, आकडाना अंकुर अने करंजनां फळ ए सघळांओनुं अथवा ए सघळां न मळे तो एओमांनां त्रण चारनुं चूर्ण करी ए चूर्णने लूणसहित सरसीआ तेलमां कालवीने तेथी व्रणना मोहोडाने घसवुं. आम करवाथी लोही सारी रीते वेहेवा लागेछे.

१९ अथातिप्रवृत्ते रोध्रमधुकप्रियङ्गुपतङ्गगैरिकसर्जरसरसाञ्जनशाल्मलीपुष्पशंखशुक्तिमाषयवगोधूमचूर्णैः शनैर्व्रणमुखमवचूर्ण्याङ्गुल्यग्रेणावपीडयेत् । सालसर्जार्जुनारिमेदमेषशृङ्गधवधन्वनत्वग्भिर्वा चूर्णिताभिः क्षौमेण वा ध्मापितेन समुद्रफेनलाक्षाचूर्णैर्वा यथोक्तैर्व्रणबन्धनद्रव्यैर्गाढं बध्नीयात् । शीताच्छादनभोजनागारैः शीतैः परिषेकप्रदेहैश्चोपाचरेत् क्षारेणाग्निना वा दहेद्यथोक्तव्यधनादनन्तरं वा तामेवातिप्रवृत्तां शिरां विध्येत् । काकोल्यादिक्काथं वा शर्करामधुमधुरं पाययेत् । एणहरिणोरभ्रशशमहिषवराहाणां वा रुधिरम् । क्षीरयूषरसैः सुस्निग्धैश्चाश्नीयादुपद्रवांश्च यथास्वमुपाचरेत् ।

भवन्ति चात्र ॥

धातुक्षयात्स्रुते रक्ते मन्दः संजायतेऽनलः ।
पवनश्च परं कोपं याति तस्मात्प्रयत्नतः ॥
तन्नातिशीतैर्लघुभिः स्निग्धैः शोणितवर्द्धनैः ।
ईषदम्लैरनम्लैर्वा भोजनैः समुपाचरेत् ॥
चतुर्विधं यदेतद्धि रुधिरस्य निवारणम् ।
संधानं स्कन्दनं चैव पाचनं दहनं तथा ।
व्रणं कषायः संधत्ते रक्तं स्कन्दयते हिमम् ।
तथा संपाचयेद्भस्म दाहः संकोचयेच्छिराः ॥
अस्कन्दमाने रुधिरे संधानानि प्रयोजयेत् ।
संधाने भ्रश्यमाने तु पाचनैः समुपाचरेत् ॥
कल्पैरेतैस्त्रिभिर्वैद्यः प्रयतेत यथाविधि ॥
असिद्धिमत्सु चैतेषु दाहः परम इष्यते ॥

लोही जो अत्यंत नीकळवा लागे तो तेने अटकाववाना उपायो तथा अतिस्रावना संबंधमां करवाना उपचारो.

१९ लोही जो अत्यंत नीकळया करे तो लोदर, जेठीमध, घउलां, पतंग, गेरु, राळ, रसवंती, शेमळानां फूल, शंख, छीप, अडद, जव अने घउं एओनुं चूर्ण करी ते चूर्ण धीरे धीरे व्रणना मोहोडा उपर भभरावी आंगळीना अग्रवते व्रणना मोहोडाने दबाववुं. अथवा सालवृक्ष, राळनुं झाड, कडायो, गंधीलो खेर, मेंढाशींगी, धावडो अने धामण एओनी छालनुं चूर्ण करी ते चूर्ण धीरे धीरे व्रणना मोहोडापर भभरावी आंगळीना अग्रथी व्रणना मोहोडाने दबाववुं अथवा अलसीनुं वस्त्र बाळी तेनी भस धीरे धीरे व्रणना मोहोडापर भभरावी आंगळीना अग्रथी व्रणना मोहोडाने दबाववुं अथवा समुद्रफीण अने लाख एओनुं चूर्ण करी धीरे धीरे व्रणना मोहोडापर भभरावी आंगळीना अग्रवते व्रणना मोहोडाने दबाववुं अथवा अलसीनां वस्त्र अने सुतरनां वस्त्र वगेरे पाटाओ के जेओ आ स्थानना १८ मा अध्यायना छठ्ठा विषयमां केहेवामां आवशे तेओथी व्रणना मोहोडाने मजबूत रीते बांधवुं. शीतवस्त्रथी आच्छादन, शीतल भोजन, शीतल घरमां निवास, शीतल सेचन अने शीतल शीतल जाडा लेपो ए-

ओथी पण उपचारो करवा. अथवा क्षारथी के अग्निथी दहन करवुं. नस शास्त्रोक्त रीते खोलाया पछी अत्यंत वेहेवा लागी होय तो लोहीनी गतिने अटकाववा माटे प्रथम जे छेद् कह्यो होय तेनी पासे बांधीने बीजो छेद करवो के जेथी लोहीनी गति त्रुटी जाय. अथवा काकोली आदि गणनो क्वाथ करी तेने साकरवते तथा मधवते मीठो करीने पावो. अथवा काळीआर मृग, साधारण मृग, घेंटो, ससलो, पाडो के सुवर एओनुं लोही पावुं. जेने लोहीनो बहु स्राव थयो होय ते माणस जो पित्तप्रकृतिवाळो होय अथवा तेने पित्तथी बगडेलुं लोही बहु नीकळ्युं होय तो दूधथी भीजावेलो भात घीथी सारी पेठे स्निग्ध करीने खवराववो. जो कफ प्रकृतिवाळो होय अथवा तेने कफथी बगडेलुं लोही बहु नीकळ्युं होय तो मगना यूषथी भीजावेलो घीथी स्निग्ध करेलो भात खवराववो. जो वातप्रकृतिवाळो होय अथवा तेने वायुथी बगडेलुं लोही बहु नीकळ्युं होय तोय तो मांसना रसाथी भींजावेलो घीथी स्निग्ध करेलो भात खवराववो. लोहीनो अतिस्राव थवाथी माथानां शूल आदि जे उपद्रवो थया होय तेओना उपर तेओने अनुसरता उपायो करवा.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "लोहीनो स्राव थया पछी धातुना क्षयने लीधे अग्नि मंद थई जाय छे अने पवन भारे प्रकोप पामेले एटला माटे अत्यंत शीतल न होय एवां, हलकां, स्निग्ध, लोहीने वधारनारां, कांईक खाटां (दाडिम तथा आमळावाळां) अथवा खटाश वगरनां भोजनोथी उपचार करवो. (आ उपचारथी अग्नि प्रदीप्त थाय छे, रुधिर तृप्त थाय छे अने उपद्रवोनो नाश थाय छे.) शस्त्रथी करेला जखमने सांधवो, लोहीने घाटुं करवुं, जखमने पकाववो अने जखमने डांभवो ए चार उपायो लोहीने अटकावनारा छे. लोदर वगेरे तूरी वस्तुओनुं चूर्ण भभराववाथी अथवा हरडे के पंचवल्कल आदि तूरी वस्तुओनुं चूर्ण भभराववाथी जखम संधाय छे, शीतल पदार्थोथी रुधिर घाटुं थई जाय छे, अलसी वगेरेनी भस्मथी जखम पाके छे अने डांभवाथी नसोनो संकोच थाय छे एटले तेथी लोही वेहेतुं अटकी जाय छे. लोही घाटुं न थतुं होय अर्थात् अटकतुं न होय तो प्रथम शीत उपचारो वगेरे करवुं. एथी पण न अटके तो लोदर तथा हरडे वगेरेनुं चूर्ण इत्यादि सांधनारा उपायोनो प्रयोग करवो अने एथी पण न अटके तो पछी भस्मादिक पकावनारा उपायोनो प्रयोग करवो. ए त्रण प्रकारोथी शास्त्ररीति प्रमाणे यत्न करतां छतां पण जो ए कोई पण प्रयोग लागु न पडे तो वैद्ये छेवट जखमने डांभवारूप प्रबल उपाय करवो."

२० सशेषदोषे रुधिरे न व्याधिरतिवर्तते ।
सावशेषे ततः स्थेयं न तु कुर्यादतिक्रमम् ॥
देहस्य रुधिरं मूलं रुधिरेणैव धार्यते ।
तस्माद्यत्नेन संरक्ष्यं रक्तं जीव इति स्थितिः ॥

१ "काकोली क्षीरकाकोली जीवकर्षभकौ तथा। ऋद्धिर्वृद्धिस्तथा मेदा महा मेदागडूचिका ॥ मुद्गपर्णी माषपर्णी पद्मकं वंशलोचना। शृंगी प्रपौंडरीकं च जीवंती मधुयष्टिका ॥ द्राक्षा चेति गणो नाम्ना काकोल्यादिरुदीरितः ॥" आ गण आ स्थानना ३८ मा अध्यायना ९८ मा विषयमां कह्यो छे.

२ आठ तोलांभार मगने एक सो अठ्यावीश तोलांभार पाणीमां पकावतां चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे चोळी गळी लई तेमां चार तोलांभार दाडिमनो रस नाखी सैंधव, सुंठ तथा धाणा नाखीने उपर पीपळनुं तथा जीरानुं चूर्ण भभराववुं एटले ते मगनो यूष केहेवाय छे.

३ केटलाएक केहे छे के प्रदीप्त अग्निवाळाओने दूधथी भीजावेलो, मध्य अग्निवाळाओने यूषथी भीजावेलो अने मंद अग्निवाळाओने मांसना रसाथी भीजावेलो भात खवराववो.

बगडेलां लोहीने तमाम स्रवावी नाखवानो आग्रह नहीं राखवाविषे.

२० दुष्ट थएलुं रुधिर नीकळी जतां कांईक अवशेष रही जाय तो पण व्याधिनो वधारो थतो नथी एटला माटे एवुं लोही कांईक अवशेष रही गयुं होय तेटलामांज तेने स्रवाववांथी अटकवुं पण लोहीनो अतिस्राव करवो नहीं. देहनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय एओमां लोहीज मूळ छे अने लोहीथीज देहनुं धारण थाय छे एटला माटे लोहीनुं यत्नथी संरक्षण करवुं. जे लोही छे ते जीवनरूप छे एवो निश्चय छे.

२१ स्रुतरक्तस्य सेकाद्यैः शीतैः प्रकुपितेऽनिले। शोफं सतोदं कोष्णेन सर्पिषा परिषेचयेत् ॥

लोहीनो स्राव कर्या पछी करवानुं पश्चात्कर्म.

२१ जेनुं लोही स्रवाववामां आव्युं होय तेने शीतल सेचन आदि करवाथी वायुनो प्रकोप थतां जो व्यथा सहित सोजो होय तो तेना उपर जरा जरा उनाशवाळा घीथी सेचन करवुं.

अध्याय १५ मो.

१ अथातो दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीयं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ दोषधातुमलमूलं हि शरीरं तस्मादेतेषां लक्षणमुच्यमानमुपधारय ॥

दोषादिकनां लक्षणो केहेवानुं कारण.

२ दोषो, धातुओ, उपधातुओ अने मळो एओ शरीरनां मूळरूप छे एटला माटे एओनां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो.

३ तत्र प्रस्पन्दनोद्वहनपूरणविवेकधारणलक्षणो वायुः पंचधा प्रविभक्तः शरीरं धारयति।

प्रकृतिस्थ (जेवी जोईए तेवी स्थितिमां रेहेला) वायुनुं कर्मरूप लक्षण.

३ व्यान, उदान, प्राण, समान अने अपान ए रीते पांच प्रकारोमां वेहेंचाएलो वायु शरीरनुं धारण करे छे. एओमां व्यानवायु शरीरनुं चालन करे छे. उदानवायु इंद्रियोना विषयोनुं धारण करेछे. प्राणवायु आहारथी पूरण करेछे. समान वायु रस, मूत्र तथा विष्टा वगेरेनुं पृथक्करण करे छे अने अपानवायु वेगना समयमां विष्टा तथा मूत्र वगेरेने प्रवर्त्तावे छे तथा अवेगना समयमां तेओने धरी राखे छे. (केटलाएक एवुं व्याख्यान करे छे के "प्रस्पंदन एटले श्वास तथा उच्छ्वास आदिरूपे शरीरनुं चालन, उद्वहन एटले दोष धातु तथा मळ एओनुं शरीरमां अहीं तहीं लई जवुं, पूरण एटले आहाररसादिकनुं पोतपोताना आशयोमां लई जवुं, विवेक एटले रस मूत्र तथा विष्टा वगेरेनुं पृथक्करण करवुं अने धारण एटले शरीरनुं धारण करवुं ए सघळा वायुओनुं सामान्यकर्म छे.)

४ रागपक्त्योजस्तेजोमेधोष्मकृत्पित्तं पंचधा प्रविभक्तमग्निकर्मणानुग्रहं करोति ॥

प्रकृतिस्थ पित्तनुं कर्मरूप लक्षण.

४ रंजकाग्नि, पाचकाग्नि, साधकाग्नि, आलोचकाग्नि, अने भ्राजकाग्नि ए रीते पांच प्रकारोमां

---

१ वात आदि दोषो, रस आदि धातुओ अने विष्टा आदि मळो एओनां क्षयनां तथा वृद्धिनां चिन्हो अने सामान्य चिकित्साओ जणाववा विषेनो.

२ जेम वृक्षादिकनां उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय एओमां मूल प्रधान छे तेम शरीरनां उत्पत्ति वगेरेमां दोषादिक प्रधान छे माटे तेओने मूळरूप केहेला छे.

३ दोष वगेरेनी समता क्षय अने वृद्धि एओ स्वभावरूप लक्षणथी अने कर्मरूप लक्षणथी जणाय छे तेओमां वायुनुं स्वभावरूप लक्षण निदानस्थानना पेहेला अध्यायमां, पित्तनुं तथा कफनुं आ स्थानना २१ मा अध्यायमां अने धातु वगेरेनुं पण जुदां जुदां स्थलोमां केहेवामां आवशे. अहीं तो कर्मरूप लक्षणोज केहेवामां आवशे.

वेहेंचाएलुं पित्त अग्निनुं काम करीने शरीरनो उपकार करेछे. एओमां रंजकाग्नि रसने रंगेछे. पाचकाग्नि आहारने पकावे छे. साधकाग्नि हृदयमां रेहेनारा चंद्रात्मक ओजने बनावे छे तथा ग्रंथादिकनुं धारण करवानी शक्तिवाळी बुद्धिनुं निष्पादन करेछे. आलोचकाग्नि दृष्टिनुं निष्पादन करेछे अने भ्राजकाग्नि शरीरमां गरमी आप्या करे छे. (केटलाएक एवुं व्याख्यान करे छे के पांचे प्रकारनां पित्तो ए सघळां कामो करेछे.)

५ **संधिसंश्लेषणस्नेहनरोपणपूरणबलस्थैर्यकृच्छ्लेष्मा पंचधा प्रविभक्त उदककर्मणाऽनुग्रहं करोति ॥**

प्रकृतिस्थ कफनुं कर्मरूप लक्षण.

५ आमाशय, उरःस्थल, मस्तक, कंठ अने संधिओ ए पांच स्थानकोमां वेहेचाएलो[1] कफ सांधाओनुं बंधन करेछे, स्निग्धपणाने लीधे शरीरनुं स्नेहन करेछे, सौम्यपणाने लीधे व्रणमां भरती आणेछे, अने घणो तथा कठण होवाथी शरीरनुं पूरण करेछे, पुष्टि आपेछे तथा दृढपणुं करेछे. आ रीते कफ जळनुं काम करीने शरीरनो उपकार करेछे. (केटलाएक केहेछे के शरीरने वृद्धि आपवी अने धातुओने तृप्त करवा ए पण कफनुंज काम छे.)

६ **रसः प्रीणयति रक्तपुष्टिं च करोति । रक्तं वर्णप्रसादं मांसपुष्टिं जीवयति च । मांसं शरीरपुष्टिं मेदसश्च । मेदः स्नेहस्वेदौ दृढत्वं पुष्टिमस्थ्नां च । अस्थि देहधारणं मज्ज्ञः पुष्टिं च । मज्जा प्रीतिं स्नेहं बलं शुक्रपुष्टिं पूरणमस्थ्नां च करोति । शुक्रं धैर्यं च्यवनं प्रीतिं देहबलं हर्षं बीजार्थं च ॥**

प्रकृतिस्थ धातुओनां कर्मरूप लक्षणो.

६ **रस** तृप्ति आपेछे अने रुधिरनुं पोषण करेछे. **रुधिर** शरीरना वर्णने स्वच्छ राखेछे, मांसनुं पोषण करेछे अने जीवाडेछे. **मांस** शरीरनी पुष्टि करेछे अने मेदनी पण पुष्टि करेछे. **मेद** शरीरमां स्निग्धता करेछे, पसीनो आपेछे, दृढपणुं करेछे अने अस्थिओने पुष्टि आपेछे, **अस्थि** देहनुं धारण करेछे अने मज्जाने पुष्टि आपेछे. **मज्जा** प्रीति आपेछे, स्नेह आपेछे, बळ आपेछे, वीर्यने पुष्टि आपेछे अने अस्थिओनी अंदर भरती राख्या करेछे. **वीर्य** धैर्य रखावे छे, (वीर्य नहीं होवाथीज नपुंसको अधीर होयछे) स्खलित थाय छे, स्त्रीओ उपर स्नेह करावेछे, देहमां बळ आपेछे, हर्ष आपेछे, अने गर्भनी उत्पत्ति करेछे[2].

७ **पुरीषमुपष्टम्भं वाय्वग्निधारणं च । बस्तिपूरणविक्लेदकृन्मूत्रम् । स्वेदः क्लेदत्वक्सौकुमार्यकृत्**

प्रकृतिस्थ मळोनां कर्मरूप लक्षणो.

७ **विष्टा** शरीरने टकावेछे, अने वायुनुं तथा अग्निनुं धारण करेछे. **मूत्र** मूत्राशयने पूर्या करेछे अने आर्द्र राख्या करेछे. **स्वेद** (पसीनो) शरीरमां क्लेदन करेछे अने चामडीने सुकुमार राखेछे.

८ **रक्तलक्षणमार्तवं गर्भकृच्च । गर्भो गर्भलक्षणम् । स्तन्यं स्तनयोरापीनत्वजननं जीवनं चेति**

प्रकृतिस्थ उपधातुओनां कर्मरूप लक्षणो.

८ **रज** रुधिरना जेवाज स्वभाववाळुं छे, गर्भने उत्पन्न करेछे अने रुधिरनी पेठेज जीवन आपेछे. **गर्भ** स्तनोनां मुखोने श्यामता आपवा वगेरे गर्भलक्षणोने उत्पन्न करेछे. **धावण** (दूध) स्तनोने पुष्ट करेछे अने बालकोने जीवन आपेछे.

---

१ केटलाएक तो आशयोना भेदथी पांच प्रकारोमां वेहेंचाएला कफनां अनुक्रमे श्लेष्मक, क्लेदक, बोधक, तर्पक अने अवलंबक एवां पांच नामो आपेछे.

२ अहीं 'रस तृप्ति आपेछे, रुधिर जीवाडेछे, मांस लेप करे छे, मेद स्निग्धता करे छे, अस्थि धारण करे छे, मज्जा अस्थिने पूरे छे अने वीर्य धैर्य आपे छे, स्खलित थाय छे, स्त्रीओ उपर प्रीति आपे छे, उत्साह आपे छे, हर्ष आपे छे, तथा गर्भने उत्पन्न करे छे, एटला अर्थवाळो पाठज निबंधकारोए आदरथी स्वीकारेलो छे.

९ तेषां विधिवत्परिरक्षणं कुर्वीत ॥

प्रकृतिस्थ दोषोनुं, धातुओनुं, मळोनुं तथा उपधातुओनुं रक्षण करवानी भलामण.

९ ए दोषो, धातुओ, मळो तथा उपधातुओ प्रकृतिस्थ होय तो शरीरना बहु उपकारक छे माटे तेओनुं शास्त्रोक्त प्रकार प्रमाणे रक्षण करवुं योग्य छे.

१० अत ऊर्ध्वमेषां क्षीणलक्षणं वक्ष्यामः । क्षयः पुनरेषामतिसंशोधनातिसंशमनवेगविधारणासात्म्यान्नमनस्तापव्यायामानशनातिमैथुनैर्भवति ॥

दोषो वगेरेनी क्षीणता थवानां कारणो.

१० हवे ए दोषो, धातुओ, मळो तथा उपधातुओ एओनी क्षीणतानां लक्षणो केहेवाना छीए तेथी, प्रथम ए क्षीणता थवानां कारणो बतावीए छीए. अत्यंत संशोधनथी, अत्यंत संशमनथी, मूत्र वगेरेना वेगोने अटकावी राखवाथी, प्रकृतिने अनुकूल न होय एवा पदार्थो खावाथी, मनना संतापथी, अत्यंत कसरत करवाथी, उपवासो करवाथी अने अतिमैथुन करवाथी ए दोषो वगेरे पदार्थोनी क्षीणता थाय छे[१].

११ तत्र वातक्षये मन्दचेष्टताल्पवाक्त्वमल्पहर्षो मूढसंज्ञता च ।

पित्तक्षये मन्दोष्माग्निता निष्प्रभत्वं च ।

श्लेष्मक्षये रूक्षतान्तर्दाह आमाशयेतराशयशिरसां शून्यता संधिशैथिल्यं तृष्णा दौर्बल्यं प्रजागरणं च ।

तत्र स्वयोनिवर्धनद्रव्याण्येव प्रतीकारः ॥

दोषोनी क्षीणतानां लक्षणो तथा चिकित्सा.

११ **वायुनो क्षय** थयो होय तो शरीरनो व्यापार मंद थई जायछे, भाषण अल्प थई जायछे, हर्ष अथवा संतोष अल्प थई जायछे पदार्थोनुं यथार्थ ज्ञान नष्ट थई जायछे अने आ अध्यायना त्रीजा विषयमां वायुनां जे कर्मरूप लक्षणो कह्यां तेओनी पण हानि थाय छे. (कफ के जे वायुनो विरोधी छे तेनां आ अध्यायना पांचमा विषयमां कहेलां कर्मलक्षणोनी वृद्धि थायछे.)

पित्तनो क्षय थयो होय तो गरमी तथा अग्नि मंद थई जायछे, कांतिनी हानि थायछे अने आ अध्यायना चोथा विषयमां पित्तनां जे कर्मलक्षणो कह्यां छे तेओनी पण हानि थायछे. (विरोधी लक्षणोनी वृद्धि थाय छे.)

कफनो क्षय थयो होय तो शरीरमां रुक्षपणुं थायछे, अंदर दाह थाय छे, आमाशय वगेरे कफना सघळा आशयोनी (स्थानोनी) अने माथानी शून्यता थाय छे, सांधाओनुं शिथिलपणुं थायछे, तरश लाग्या करेछे, दुर्बलपणुं थाय छे, निद्रा नहीं आववाथी उजागरो थायछे अने आ अध्यायना पांचमा विषयमां कफनां जे कर्मलक्षणो कह्यां छे तेओनी पण हानि थाय छे. (विरोधी लक्षणोनी वृद्धि थाय छे.)

आ प्रमाणे कोई दोषनो क्षय थयो होय तो जे दोषनो क्षय थयो होय ते दोषने तथा ते दोषना उत्पत्तिकारणने वृद्धि आपनारा पदार्थोनुं सेवन कराववुं एज ते दोषना क्षयनी चिकित्सा छे. (जेम के वायुनो क्षय थयो होय तो शीत तथा रुक्ष पदार्थोनुं सेवन कराववुं, पित्तनो क्षय थयो होय तो तीखा तथा उष्ण पदार्थोनुं सेवन कराववुं अने कफनो क्षय थयो होय तो दूध वगेरे स्निग्ध तथा शीत पदार्थोनुं सेवन कराववुं. कफनो क्षय थयो होय तो कफ रसथी उत्पन्न थायछे माटे रसनी वृद्धि करनारा पदार्थोनुं पण सेवन कराववुं अने पित्तनो क्षय थयो होय तो पित्त रुधिरथी उत्पन्न

[१] आ कारणोमां घणखरां कारणो वायुने वृद्धि आपनारां छे अने पित्तने तथा कफनेज क्षय आपनारां माटे आ कारणोना पाठनुं अहीं प्रयोजन नथी एम सांप्रदायिक आचार्यो माने छे.

थायछे माटे रुधिरनी वृद्धि करनारा पदार्थोनुं पण सेवन कराववुं इत्यादि समजी लेवुं पण तेमां एटलुं याद राखवुं के जेथी क्षीण दोषनी वृद्धि थाय पण बीजा दोषनो प्रकोप थाय एवा पदार्थोनुं सेवन नहीं कराववुं.)

१२ रसक्षये हृत्पीडा कम्पः शून्यता तृष्णा च ।

शोणितक्षये त्वक्पारुष्यमम्लशीतप्रार्थना शिराशैथिल्यं च ।

मांसक्षये स्फिग्गण्डौष्ठोपस्थोरुवक्षःकक्षापिण्डिकोदरग्रीवाशुष्कता रौक्ष्यतोदौ गात्राणां सदनं धमनीशैथिल्यं च ।

मेदःक्षये प्लीहाभिवृद्धिः सन्धिशून्यता रौक्ष्यं मेदुरमांसप्रार्थना च ।

अस्थिक्षयेऽस्थितोदो दन्तनखभङ्गो रौक्ष्यं च।

मज्जक्षयेऽल्पशुक्रता पर्वभेदोऽस्थिनिस्तोदोऽस्थिशून्यता च ।

शुक्रक्षये मेढ्रवृषणवेदनाऽशक्तिर्मैथुने चिराद्वा प्रसेकः प्रसेके चाल्परक्तशुक्रदर्शनं च ।

तत्रापि स्वयोनिवर्द्धनद्रव्योपयोगः प्रतीकारः ॥

धातुओनी क्षीणतानां लक्षणो तथा चिकित्सा.

१२ **रसनो क्षय** थयो होय तो हृदयमां पीडा थायछे, हृदयमां कंप थायछे, हृदयमां शून्यता थायछे अने तरश बहु लागे छे[१].

रुधिरनो क्षय थयो होय तो चामडीमां कठोरपणुं थायछे, शिराओमां शिथिलपणुं थायछे, वायुनी वृद्धि थवाने लीधे वायुथी विरुद्ध खाटा रसनी इच्छा थायछे अने द्रवरूप रुधिरनो नाश थतां तेजनी वृद्धि थवाथी शीतनी पण इच्छा थाय छे.

मांसनो क्षय थयो होय तो कूला, गाल, होठ, उपस्थ, साथळ, छाती, काख, पिंडीओ, उदर अने डोक एओ सुकाई जायछे, रुक्षपणुं थायछे, व्यथा थायछे, गात्रोमां ग्लानि थायछे अने धमनी नामनी नाडीओ शिथिल थई जायछे.

मेदनो क्षय थयो होय तो बरलनी वृद्धि थायछे, सांधाओमां शून्यता थायछे, चामडीमां रुक्षपणुं थाय छे अने स्निग्धमांस खावानी इच्छा थाय छे.

अस्थिनो क्षय थयो होय तो अस्थिओमां व्यथा थाय छे, दांतोनो तथा नखोनो भंग थाय छे अने देहमां अथवा दांतोमां तथा नखोमां रुक्षपणुं थाय छे.

मज्जानो क्षय थयो होय तो वीर्य अल्प थई जाय छे, आंगळी वगेरेनां पर्वोमां पीडा थाय छे, अस्थिओमां व्यथा थाय छे अने भरती नहीं मळवाने लीधे अस्थिओ शून्य थई जाय छे.

वीर्यनो क्षय थयो होय तो लिंगमां तथा वृषणोमां वेदना थाय छे, मैथुनमां अशक्ति थाय छे, मैथुन करवामां आवे तो पण घणीवारे वीर्य स्खलित थाय छे अने ते वीर्य थोडुं तथा रताशवाळुं जोवामां आवे छे.

आ प्रमाणे कोई धातुनो क्षय थयो होय तो जे धातुनो क्षय थयो होय ते धातुने तथा ते धातुना उत्पत्तिकारणने वृद्धि आपनारा पदार्थोनुं तथा तेवांज कर्मोनुं सेवन कराववुं एज ते धातुना क्षयनी चिकित्सा छे.

१३ पुरीषक्षये हृदयपार्श्वपीडा सशब्दस्य च वायोरूर्ध्वगमनं कुक्षौ संचरणं च ।

मूत्रक्षये बस्तितोदोऽल्पमूत्रता च ।

अत्रापि स्वयोनिवर्द्धनद्रव्याण्येव प्रतीकारः॥

स्वेदक्षये स्तब्धरोमकूपता त्वक्शोषः स्पर्शवैगुण्यं स्वेदनाशश्च ।

---

१ केटलाएक वैद्यो अहीं पाठांतर बोलीने एवो अर्थ करे छे के रसनो क्षय थयो होय तो हृदयमां पीडा थाय छे, कंप थाय छे, शरीरनो शोष थाय छे, आमाशयनी अथवा मननी शून्यता थाय छे अने तरश बहु लागे छे.

तत्राभ्यङ्गः स्वेदोपयोगश्च ॥

मळोनी क्षीणतानां लक्षणो तथा चिकित्सा.

१३ **विष्टानो क्षय** थयो होय तो हृदयमां तथा पडखांओमां पीडा थाय छे, पवन अवाज करतो करतो उंचो चडे छे, अने पेटमां तेवाज पवननो संचार थाय छे.

मूत्रनो क्षय थयो होय तो मूत्राशयमां व्यथा थाय छे अने मूत्र थोडुं थई जाय छे.

आ प्रमाणे विष्टानो क्षय थयो होय के मूत्रनो क्षय थयो होय तो ते मळने तथा ते मळनां उत्पत्ति कारणोने वृद्धि आपनारा पदार्थोनुं सेवन करावvुं. (जेम के विष्टानो क्षय थयो होय तो अडद वगेरेनुं अने मूत्रनो क्षय थयो होय तो शेलडी तथा काकडी वगेरेनुं सेवन करवुं.)

पसीनानो क्षय थयो होय तो रुवाडांनां छिद्रो अक्कड थई जाय छे, त्वचामां शोष थाय छे, स्पर्शनुं बराबर ज्ञान थतुं नथी अने पसीनो आवतो नथी.

आ प्रमाणे पसीनानो नाश थयो होय तो तैलादिकनो अभ्यंग करावvो, शेक लेवा वगेरे स्वेदनक्रिया कराववी अने कुकडां तथा सुवर वगेरेनां मांसोनो उपयोग करावvो.

१४ आर्तवक्षये यथोचितकालादर्शनमल्पता वा योनिवेदना च ।

तत्र संशोधनमाग्नेयानां च द्रव्याणां विधिवदुपयोगः ॥

स्तन्यक्षये स्तनयोर्म्लानता स्तन्यासम्भवोऽल्पता वा ।

तत्र श्लेष्मवर्द्धनद्रव्योपयोगः ॥

गर्भक्षये गर्भास्पन्दनमनुन्नतकुक्षिता च ।

तत्र प्राप्तबस्तिकालायाः क्षीरबस्तिप्रयोगो मेध्यान्नोपयोगश्चेति ॥

उपधातुओनी क्षीणतानां लक्षणो तथा चिकित्सा.

१४ **रजनो क्षय** थयो होय तो महीने महीने रज स्रववानो जे योग्य काळ छे तेमां रज जोवामां आवतुं नथी, जो स्राव थाय तो पण अल्प थाय छे अने योनिमां वेदना थाय छे.

आ प्रमाणे रजनो क्षय थयो होय तो सामान्य संशोधन करवुं अने तिल, अडद, सुरा तथा शुक्त[2] वगेरे आग्नेय पदार्थोनो उपयोग करावvो.

धावणनो क्षय थयो होय तो स्तनो करमाई जाय छे. धावण आवतुं नथी अने आवे तो अल्प आवे छे.

आ प्रमाणे धावणनो क्षय थयो होय तो जेओथी कफ वधे एवा पदार्थोनो उपयोग करावvो.

गर्भनो क्षय थयो होय तो गर्भनुं चलन थतुं नथी (गर्भ पेटमां फरकतो नथी) अने पेट उन्नत (ऊंचुं) रेहेतुं नथी.

आ प्रमाणे गर्भनो क्षय थयो होय तो स्निग्ध अन्नोनो उपयोग करावvो अने पीचकारी देवानो काळ (आठमो महीनो बेठो) होय तो दूधनी पीचकारी देवी.

१५ अत ऊर्ध्वमतिवृद्धानां दोषधातुमलानां लक्षणं[1] वक्ष्यामः ॥ वृद्धिः पुनरेषां स्वयोनिवर्द्धनाभ्युपसेवनाद्भवति ॥

दोषो वगेरेनी वृद्धिनां लक्षणो केहेवानो आरंभ अने वृद्धिनुं कारण.

१५ हवे अत्यंत वृद्धि पामेला दोषो, धातुओ तथा मळो एओनां लक्षणो कहीशुं. एओनी वृद्धि एओने वधारनारा तथा एओनां उत्पत्तिकार-

१ केटलाएक केहेछे के रजनी क्षीणता थई होय तो वमन देवुं पण विरेचन देवुं नहीं. केमके विरेचनथी पित्तनो क्षय थवाने लीधे उलटो रजनो क्षयज थई जाय. वमनथी तो सौम्य धातु हणाई जतां अने आग्नेय धातु वृद्धि पामतां रज वृद्धि पामे छे एटले अनुकूलता थाय छे.

२ कंदमूल फलादीनि सस्नेहलवणानि तु ।
यत्र द्रवेऽभिषूयंते तच्छुक्तमभिधीयते.

आथेलां अथाणां (संधाणा) नो रस शुक्त केहेवाय छे. (भा. प्र.) आ स्थानना ४५ मा अध्यायनो १८६ मो विषय जुवो.

णोने वधारनारा पदार्थोनुं अति सेवन कर्याथी थाय छे.

१६ तत्र वातवृद्धौ वाक्पारुष्यं कार्श्यं कार्ष्ण्यं गात्रस्फुरणमुष्णकामिता निद्रानाशोऽल्पबलत्वं गाढवर्चस्कत्वं च ।

पित्तवृद्धौ पीतावभासता सन्तापः शीतकामित्वमल्पनिद्रता मूर्छा बलहानिरिन्द्रियदौर्बल्यं पीतविण्मूत्रनेत्रत्वं च ।

श्लेष्मवृद्धौ शौक्ल्यं शैत्यं स्थैर्यं गौरवमवसादस्तन्द्रा निद्रा सन्ध्यस्थिविश्लेषश्च

दोषोनी अति वृद्धिनां लक्षणो.

१६ **वायुनी वृद्धि** थई होय तो वचनोनुं कठोरपणुं थाय छे, मांसनो क्षय थवाथी गात्रो कृश थई जाय छे, शरीर काळुं थई जाय छे, गात्रो फरक्या करे छे, उष्ण पदार्थोनी इच्छा थाय छे, निद्रानो नाश थाय छे, उत्साहनी हानि थाय छे अने विष्टा कठण थई जाय छे. (वायुनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

पित्तनी वृद्धि थई होय तो पदार्थो पीळा पीळा लागे छे, संताप थाय छे, शीत पदार्थोनी इच्छा थाय छे, निद्रा अल्प थई जाय छे,[1] थई जाय छे, संतापने लीधे ओजनो क्षय थाय छे, इंद्रियोमां नबळापणुं आवे छे अने विष्टा, मूत्र, तथा नेत्र एओ पीळां थई जाय छे. (पित्तनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

कफनी वृद्धि थई होय तो चामडी वगेरे सफेद तथा शीतल थई जाय छे, गात्रो झलाई जाय छे, भारेपणुं थाय छे, चित्तमां तथा देहमां ग्लानि थाय छे, तंद्रा प्राप्त थाय छे अने कफ वधीने भराई जवाने लीधे सांधाओ तथा सांधाओनां अस्थिओ जुदां पडी जाय छे. (परस्परने बराबर वळगी रेहेतां नथी.) (कफनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

१७ रसोऽतिवृद्धौ हृदयोत्क्लेदं प्रसेकं चापादयति ।

रक्तं रक्ताङ्गाक्षतां शिरापूर्णत्वं च ।

मांसं स्फिग्गण्डौष्ठोपस्थोरुबाहुजंघासु वृद्धिं गुरुगात्रतां च ।

मेदः स्निग्धाङ्गतामुदरपार्श्ववृद्धिं कासश्वासादीन् दौर्गन्ध्यं च ।

अस्थि अध्यस्थीन्यधिदन्तांश्च ।

मज्जा सर्वाङ्गनेत्रगौरवम् ।

शुक्रं शुक्राश्मरीमतिप्रादुर्भावं च ॥

धातुओनी वृद्धिनां लक्षणो.

१७ **रसनी अतिवृद्धि** थई होय तो हृदयमां मोळ आवे छे, वखतपर वमन थाय छे अने लाळ झर्या करे छे. (रसनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

रुधिरनी अतिवृद्धि थई होय तो अंगो तथा नेत्रो रातां थई जाय छे अने शिराओ पूर्ण (भराई गएली) थई जाय छे. (रुधिरनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

मांसनी अतिवृद्धि थई होय तो कूला, गाल, होठ, उपस्थ, साथळ, बाहु अने पींडीयो एओनी वृद्धि थाय छे अने गात्रोमां भारेपणुं थाय छे. (मांसनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

मेदनी अतिवृद्धि थई होय तो अंगो स्निग्ध थई जाय छे, पेट तथा पडखां वृद्धि पामे छे, खांसी तथा श्वास वगेरे दरदो थाय छे अने दुर्गंधपणुं थाय छे. (मेदनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

अस्थिनी अतिवृद्धि थई होय तो अस्थिओ तथा दांतो अधिक थाय छे अने केशोनी तथा नखोनी पण अतिवृद्धि थाय छे. (अस्थिनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

मज्जानी अतिवृद्धि थई होय तो स-

---

१ पित्त कांईक स्निग्ध छे तेथी निद्रानो नाश नहीं पण निद्रानी अल्पता थवी संभवित छे.

घळां अंगोमां तथा नेत्रोमां भारेपणुं थाय छे. (मज्जानां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

वीर्यनी अतिवृद्धि थई होय तो वीर्यनी पथरी थाय छे अने वीर्यनो अत्यंत स्राव थाय छे. (वीर्यनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

१८ पुरीषमाटोपं कुक्षौ शूलं च ।
मूत्रं मुहुर्मुहुः प्रवृत्तिं बस्तितोदमाध्मानं च ।
स्वेदस्त्वचो दौर्गन्ध्यं कण्डूं च ॥

मळोनी अतिवृद्धिनां लक्षणो.

१८ **विष्टानी अतिवृद्धि** थई होय तो पेटमां आफरो तथा क्षोभ थाय छे अने कूखमां शूळ पण नीकळे छे. (विष्टानां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

मूत्रनी अतिवृद्धि थई होय तो मूत्रनी प्रवृत्ति वारंवार थाय छे अने मूत्राशयमां व्यथा थाय छे तथा क्षोभ पण थाय छे. (मूत्रनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

पसीनानी अतिवृद्धि थई होय तो चामडीमां दुर्गंधपणुं थाय छे तथा खरज आवे छे. (पसीनानां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

१९ आर्तवमङ्गमर्दमतिप्रवृत्तिं दौर्बल्यं च ।
स्तन्यं स्तनयोरापीनत्वं मुहुर्मुहुः प्रवृत्तिं तोदं च ।
गर्भो जठराभिवृद्धिं शोथं च ॥

उपधातुओनी अतिवृद्धिनां लक्षणो.

१९ **रजनी अतिवृद्धि** थई होय तो अंगो भांग्या करे छे, रजनो बहु स्राव थाय छे अने शरीरमां दुर्बलपणुं थाय छे.[1] (रजनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

धावणनी अतिवृद्धि थई होय तो स्तनो अतिपुष्ट थाय छे, वारंवार धावण स्रव्या करे छे अने स्तनोमां व्यथा थाय छे. (धावणनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

गर्भनी अतिवृद्धि थई होय तो पेट वधी जाय छे अने सोजो पण थाय छे. (गर्भनां कर्मरूप लक्षणो पण वधे छे.)

२० तेषां यथास्वं संशोधनं क्षपणं च क्षयादविरुद्धैः क्रियाविशेषैः कुर्वीत ॥

दोषो, धातुओ, मळो तथा उपधातुओ एओनी अतिवृद्धिनी चिकित्सा.

२० ए अतिवृद्धि पामेला दोषो, धातुओ, मळो तथा उपधातुओ एओनुं ते ते प्रकारनी क्रियाओथी यथायोग्य संशोधन तथा संशमन करवुं पण ते क्रियाओ जेओथी दोषो वगेरेनो क्षय थई जाय एवी नहीं होवी जोईए.[2]

२१ पूर्वः पूर्वोऽतिवृद्धत्वाद्वर्द्धयेद्धि परंपरम् ।
तस्मादतिप्रवृद्धानां धातूनां ह्रासनं हितम् ॥

कोईपण धातुनी अतिवृद्धि के अति क्षीणता हितकारी नथी पण सर्व धातुओनुं प्रकृतिस्थपणुं हितकारी छे.

२१ कोई पण पेहेलो पेहेलो धातु अत्यंत वृद्धि पामे तो ते पोतपोताथी पछी पछीना धातुने वधारे छे अने कोई पछी पछीनो धातु अत्यंत वृद्धि पामे तो ते पोतपोताथी पेहेला पेहेलाना धातुने वधारे छे. एवीज रीते कोई पछी पछीनो धातु अति क्षीण थाय तो पोतपोताथी पेहेला पेहेला धातुने क्षीण करेछे अने पेहेलो पेहेलो धातु अतिक्षीण थाय

---

१ मूळमां '**दौर्बल्यं**' ने बदले **दौर्गंध्यं** एवो पण पाठ छे. तेनो अर्थ एवो थाय छे के अत्यंत वृद्धि पामेलुं रज शरीरमां दुर्गंधपणुं करे छे. रज पित्तनो धर्म छे एटलामाटे तेथी दुर्गंधता थवी पण संभवे छे. वृद्धि पामेला रजथी रक्तगुल्मादिक रोगो पण थाय छे.

२ केटला एक तो **तेषां क्षपणमविरुद्धैः क्रियाविशेषैः कुर्वीत** एवो पाठ बोले छे. ए पाठनो अर्थ ए छे के संशमन, संशोधन, आहार अने आचार ए नामनी क्रियाओथी दोषो वगेरेनी वृद्धिने टाळवी.

तो पोतपोताथी पछी पछीना धातुने क्षीण करे छे. आ प्रमाणे धातुओनो परस्पर संबंध छे माटे अत्यंत वधेला धातुओनी वृद्धिने ओछी करवी अने अत्यंत क्षीण थएला धातुओना क्षयने ओछो करवो अर्थात् जे रीते सघळा धातुओ प्रकृतिस्थ रहे तेम करवुं ए हितकारी छे[२].

२२ बललक्षणं बलक्षयलक्षणमत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ।

तत्र रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत्परं तेजस्तत्खल्वोजस्तदेव बलमित्युच्यते स्वशास्त्रसिद्धान्तात् । तत्र बलेन स्थिरोपचितमांसता सर्वचेष्टास्वप्रतिघातः स्वरवर्णप्रसादो बाह्यानामाभ्यन्तराणां च करणानामात्मकार्यप्रतिपत्तिर्भवति ॥

भवन्ति चात्र ॥

ओजः सोमात्मकं स्निग्धं शुक्लं शीतं स्थिरं सरम्।
विविक्तं मृदु मृत्स्नं च प्राणायतनमुत्तमम् ॥
देहः सावयवस्तेन व्याप्तो भवति देहिनाम् ।
तदभावाच्च शीर्यन्ते शरीराणि शरीरिणाम् ॥
अभिघातात्क्षयात्कोपाच्छोकाद्ध्यानाच्छ्रमात्क्षुधः
ओजः संक्षीयते ह्येभ्यो धातुग्रहणनिःसृतम् ।
तेजः समीरितं तस्माद्विभ्रंशयति देहिनः ॥

तस्य विस्रंसो व्यापत् क्षय इति लिङ्गानि व्यापन्नस्य भवन्ति ॥ संधिविश्लेषो गात्राणां सदनं दोषच्यवनं क्रियासन्निरोधश्च विस्रंसे । स्तब्धगुरुगात्रता वातशोफो वर्णभेदो ग्लानिस्तन्द्रा निद्रा च व्यापन्ने । मूर्छा मांसक्षयो मोहः प्रलापो मरणमिति क्षये ॥

भवन्ति चात्र ॥

त्रयो दोषा बलस्योक्ता व्यापद्विस्रंसनक्षयाः ।
विश्लेषसादौ गात्राणां दोषविस्रंसनं श्रमः ।
अप्राचुर्यं क्रियाणां च बलविस्रंसलक्षणम् ॥
गुरुत्वं स्तब्धताङ्गेषु ग्लानिर्वर्णस्य भेदनम् ।
तन्द्रा निद्रा वातशोफो बलव्यापदि लक्षणम् ॥
मूर्छा मांसक्षयो मोहः प्रलापोऽज्ञानमेव च ।
पूर्वोक्तानि च लिङ्गानि मरणं च बलक्षये ॥

बळनुं लक्षण तथा बळना क्षयनुं लक्षण.

२२ हवे बळनुं लक्षण तथा बळना क्षयनुं लक्षण कहीशुं.

रसथी मांडीने वीर्यपर्यंत सघळा धातुओनो जे उत्कृष्ट स्नेह छे एज ओज छे अने एज अमारा शास्त्रना सिद्धांतप्रमाणे बळ केहेवाय छे[२]. ए बळथी मांस स्थिर तथा संपत्तिवाळुं रेहे छे, शरीरना वाणीना तथा मनना व्यापारोमां अप्रतिहतपणुं (प्रतिघातथी रहितपणुं) रेहेछे[३], स्वरनी तथा वर्णनी निर्मळता रेहेछे[४] अने कर्मेंद्रियो तथा ज्ञानेंद्रियो पोतपोतानां कामोमां साहु-

१ आथी एम जणाव्युं के धातुओ पोतानी मळे वृद्धिके क्षय पाम्या होय तो अनर्थ करे छे अने बीजा धातुओए परंपराथी वधार्या के क्षीण कर्या होय त्यारे तो वळी मोटो अनर्थ करे छे.

२ जो के मूलग्रंथकर्त्ता आ ठेकाणे बळने अने ओजने चोखी रीते एकज केहे छे तो पण डल्लन केहे छे के "बल अने ओज ए बे जुदा पदार्थो छतां अहीं तेओने एक कह्या छे तेनुं कारण ए छे के बन्नेनी चिकित्सा एकज छे. ओज के जे सर्व धातुओना स्नेहभूत छे अने उपचयरूप छे तेमां रूप, रस, शौर्य तथा वीर्य इत्यादिक गुणो छे अने बळ के जे भार उपाडवा वगेरे शक्ति उपरथीज जणाय छे तेमां रूप आदि गुणो नथी ए मोटो भेद छे. आ ग्रंथमां पेहेला अध्यायना **'प्राणिनां पुनर्मूलमाहारो बलवर्णौजसां च'** ए वाक्यमां पण बळने अने ओजने जुदां गण्यां छे. चरकमां पण ओजने बळथी जुदुं जणावीने तेमां धोळो, रातो तथा पीळो ए त्रण वर्ण कह्या छे. ए ओज जुदो धातु नथी पण जेम दूधमां घी रेहेछे तेम वीर्यमां अभिन्नपणाथी रहेल छे. नहींतर आठ धातुओ थई जाय." 'मूळमां शुक्ल शब्दने बदले शुक्र शब्द छे.' एम कहीने मूळना शब्दथीज ओजमां त्रणे वर्ण ठराववानो डल्लने प्रयत्न कर्यो छे.

३ मांसनुं स्थिरत्वादिक अने क्रियाओनुं अप्रतिहतपणुं ए, शक्तिरूप बळथीज थाय छे. (डल्लन.)

४ आ, बळ अने ओज ए बन्नेथी थाय छे. (डल्लन.)

चेत रेहे छे तथा ते कामोने लांबा काळ सुधी करवाने शक्तिवाळां रेहेछे[1].

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "ओज सौम्य (चंद्रात्मक) छे, स्निग्ध छे, सफेद छे, शीतल छे, शरीरना अवयवोने स्थिरता आपनारूं छे, प्रसरवाना स्वभाववाळुं छे, श्रेष्ठ गुणोथी युक्त छे, अथवा नवीन छे[2], कोमळ छे, चीकणुं छे, (गुरु आदि गुणोवाळुं पण छे) अने अग्नीषोम आदि प्राणोना उत्तम स्थानकरूप छे. प्राणिओनो अवयवो सहित देह ए ओजनी व्याप्तिथी उत्पन्न थाय छे तथा टके छे. ओजनो अभाव थाय तो प्राणिओनां शरीर नष्ट थई जाय छे. ए ओज अभिघातथी, क्षयथी, कोपथी, शोकथी, ध्यानथी, श्रमथी अने क्षुधाथी क्षीण थायछे. ए अभिघात आदि हेतुओने लीधे हृदयमांथी नीकळेलुं अने अभिघात आदिथी उत्पन्न थएला वायुए ठेलेलुं ए क्षीण थएलुं ओज प्राणिओने स्वस्थताथी भ्रष्ट करी नाखेछे.

आवी रीते अभिघात वगेरेथी हरकत पामेला ओजनी विस्रंस, (स्थानमांथी भ्रष्टता[3]) व्यापत्, (अन्यथाभाव[4]) अने क्षय (पोताना प्रमाणथी ओछापणुं[5]) ए रीते त्रण जातनी क्षीणता थायछे. एओमां **विस्रंस** नामनी क्षीणता थई होय तो सांधाओनुं शिथिलपणुं, गात्रोनी ग्लानि, दोषोनी पोतपोतानां स्थानोथी च्युति अने शरीर वगेरेनी क्रियाओनो निरोध थाय छे. **व्यापत्** नामनी क्षीणता थई होय तो गात्रो अक्कड तथा भारे थई जाय छे, वायुसंबंधी सोजो थाय छे, शरीरनो वर्ण बदली जाय छे, ग्लानि थायछे अने तंद्रा तथा निद्रा रह्या करेछे. **क्षय** नामनी क्षीणता थई होय तो मूर्छा, (ज्ञानेंद्रियोनो निरोध) मोह, मांसनो क्षय, प्रलाप अने मरण थाय छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "वळना (ओजना) विस्रंस, व्यापत् अने क्षय ए नामना त्रण दोष (विकार) थायछे. गात्रोनुं असंघट्टितपणुं, गात्रोनी ग्लानि, दोषोनी स्थानच्युति, श्रम अने क्रियाओनुं अल्पपणुं एटलां चिह्नो उपरथी जाणवुं के ओजनो **विस्रंस** थयोछे. अंगोमां भारेपणुं, स्तब्धपणुं, ग्लानि, वर्णनुं बदलीजवुं, तंद्रा, निद्रा अने वायुसंबंधी सोजो एटलां चिह्नो उपरथी जाणवुं के ओजनी **व्यापत्** थई छे. मूर्छा, मांसनो क्षय, मोह, प्रलाप, अज्ञान, उपर कहेलां चिह्नो अने मरणनी तैयारी एओ उपरथी जाणवुं के ओजनो **क्षय** थयोछे.

२३ तत्र विस्रंसे व्यापन्ने च क्रियाविशेषैरविरुद्धैर्बलमास्थापयेत् । नष्टसंज्ञमितरं च वर्जयेत् ॥

बळना क्षयनी चिकित्सा.

२३ बळनां (ओजनां) विस्रंस के व्यापत् थएल होय तो अग्नि वगेरेने हरकत न पाडे एवी रसायन तथा वाजीकरण आदि क्रियाओथी बळनी वृद्धि करवी. बळनो क्षय थएल होय अने तेथी जो संज्ञाज जती रही होय तो तेनी चिकित्सा छोडीज देवी. (संज्ञा न जती रही होय तो रसायनादिकथी चिकित्सा करवी.)

२४ तेजोऽप्याग्नेयं क्रमशः पच्यमानानां धातूनामभिनिर्वृत्तमन्तरस्थं स्नेहजातं वसाख्यं स्त्रीणां विशेषतो भवति तेन मार्दवसौकुमार्यमृद्वल्परोमतोत्साहदृष्टिस्थितिपक्तिकान्तिदीप्तयो भवन्ति तत् कषायतिक्तशीतरूक्षविष्टम्भि-

१ ज्ञानेंद्रियोनी कार्यप्रवृत्ति तथा कर्मेंद्रियोनी कार्यप्रवृत्ति बन्नेथी थाय छे. जे ओज छे ते बळनुं कारण छे. (डल्लन)

२ नवीन छे माटे नवीन अन्नादिकथीज तेनी वृद्धि थाय छे.

३ स्थानभ्रष्टता अभिघात वगेरेथीज थाय छे.

४ अन्यथाभाव दुष्ट दोषोना अने दूष्योना संसर्गथी थाय छे.

५ ओछापणुं शोक ध्यान तथा क्षय वगेरेथी थाय छे.

वेगविघातव्यवायव्यायामव्याधिकर्षणैश्च विक्रियते । तस्यापि पारुष्यवर्णभेदतोदनिष्प्रभत्वानि विस्रंसने भवन्ति । कार्श्यं मन्दाग्निताधस्तिर्यक्च्युतिर्व्यापत्तौ । दृष्ट्यग्निबलहान्यनिलप्रकोपमरणानि क्षये ।

तत्रापि स्नेहपानाभ्यङ्गप्रदेहपरिषेकस्निग्धलघ्वन्नानि क्षये विदधीत ॥

तेजनुं लक्षण, तेजनी क्षीणतानुं लक्षण अने क्षीणतानी चिकित्सा.

२४ तेज पण आग्नेय पदार्थ छे. अनुक्रमथी पाकता धातुओमांथी बनतो 'वसा' ए नामनो स्नेह के जे शरीरनी अंदर रेहेछे ते तेज छे. आ तेज स्त्रीओमां अधिक होय छे तेथी स्त्रीओनां शरीरोमां कोमळता, सुकुमारपणुं, कोमळ तथा अल्प रुवाडावाळापणुं, उत्साह, दृष्टि, स्थिरता, अन्नादिकनुं पाकवुं, कांति अने दीप्ति अधिक थाय छे. तुरां, कडवां, टाढां, लुखां तथा दस्तनी अटकायत करनारां अन्नादिकथी, मूत्रादिकना वेगोनो विघात करवाथी, अतिमैथुनथी, अत्यंत कसरत करवाथी, व्याधिओथी अने उपवास वगेरेथी ए तेज क्षीणता पामेछे. तेजनी **विस्रंस** नामनी क्षीणता थई होय तो त्वचानुं कठोरपणुं, वर्णनुं बदलाईजवुं, व्यथा अने कांतिरहितपणुं एटलां चिन्हो थाय छे. तेजनी **व्यापत्** नामनी क्षीणता थई होय तो कृशपणुं, अग्निनी मंदता अने वसानुं विष्टाद्वारथी अथवा मूत्रद्वारथी नीकळी जवुं थाय छे. तेजनी **क्षय** नामनी क्षीणता थई होय तो दृष्टिना तथा अग्निना बळनी हानि थाय छे अने वायुनो प्रकोप थाय छे तथा मरण पण थई जाय छे.

आ प्रमाणे तेजनी क्षीणता थई होय तो स्नेहनां पान, अभ्यंग, प्रदेह (लेप) तथा परिषेक करवा अने स्निग्ध तथा हलकां अन्नो जमाडवां.[1]

२५ भवन्ति चात्र ॥

दोषधातुमलक्षीणो बलक्षीणोऽपि वा नरः ।
स्वयोनिवर्द्धनं यत्तदन्नपानं प्रकाङ्क्षति
यद्यदाहारजातं हि क्षीणः प्रार्थयते नरः ।
तस्य तस्य स लाभे तु तं तं क्षयमपोहति ॥
यस्य धातुक्षयाद्वायुः संज्ञां कर्म च नाशयेत् ।
प्रक्षीणं च बलं यस्य नासौ शक्यश्चिकित्सितुम् ॥

दोषोना, धातुओना, मळोना, उपधातुओना तथा बळना क्षय उपर आहारनां सामान्य प्रकार तथा केवा क्षयवाळाने असाध्य समजवो ते.

२५ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे माणसने दोषो, धातुओ, मळो, उपधातुओ तथा बळ एओमांथी कोइनो क्षय थयो होय ते माणस, जेनो क्षय थयो होय तेने तथा तेनी उत्पत्तिना कारणने वधारनारां अन्नपानोने इच्छे छे.[2] क्षीण थएला

१ आ चोवीशमो आखो विषय निबंधकारोए 'ऋषिप्रणीत नथी अर्थात् क्षेपक छे' एम कहीने अपठनीय ठराव्यो छे अने ते उपरथी डल्हने पण तेनुं व्याख्यान आप्युं नथी.

२ केटलाएक सुश्रुतपाठीओ अहीं आहारनी इच्छाना विषयमां श्लोकोनो अधिक पाठ बोले छे ते पाठनो अर्थ नीचेप्रमाणे छे. **वायुना** क्षयवाळा माणसने जव, मग, वटाणा, रुक्ष तथा हलकुं भोजन अने तूरा, तीखा तथा कडवा रसो एओनी इच्छा थाय छे. **पित्तना** क्षयवाळा माणसने तल, अडद तथा कळथी वगेरे, लोटना जथावाळा पदार्थो, दहीनी उपरनो चीकासवाळो घाटो भाग, अथाणानो रस, खाटा पदार्थो, दही तथा छास एओनी इच्छा थाय छे. **कफना** क्षयवाळा माणसने पाडानां सुवरनां तथा बकरानां मांसो, गोळ, भारे पदार्थो, दूध अने दही एओनी इच्छा थाय छे. **रसना** क्षयवाळा माणसने शेलडीनो रस, मांसनो रस, मंथ, मध, घी, गोळनुं पाणी, लोही, मांस तथा राब एओनी इच्छा थाय छे. **रुधिरना** क्षयवाळा माणसने धाख,

माणसने जे जे आहारनी इच्छा थाय ते ते आहार जो तेने मळे तो ते ते दोषो वगेरेनो क्षय मटी जाय छे.

धातुवगेरेना क्षयने लीधे वायुए जेनी संज्ञानो अने क्रियानो नाश कर्यो होय अने जेनुं शारीर बळ तमाम क्षीण थई गयुं होय ते माणसनी चिकित्सा करी शकाती नथी. (करवामां आवे तो पण विफळ थाय छे.)

२६ **रसनिमित्तमेव स्थौल्यं कार्श्यं च तत्र श्लेष्मलाहारसेविनोऽध्यशनशीलस्याव्यायामिनो दिवास्वप्नरतस्य चाम एवान्नरसो- मधुरतरश्च शरीरमनुक्रामन्नतिस्नेहान्मेदो जनयति तदतिस्थौल्यमापादयति । तमतिस्थूलं क्षुद्रश्वासपिपासाक्षुत्स्वप्नस्वेदगात्रदौर्गन्ध्यक्रथनगात्रसादगद्गदत्वानि क्षिप्रमेवाविशन्ति सौकुमार्यान्मेदसः सर्वक्रियास्वसमर्थः कफमेदोनिरुद्धमार्गत्वाच्चाल्पव्यवायो भवत्यावृतमार्गत्वादेवं शेषा धातवो नाप्यायन्तेऽत्यर्थमतोऽल्पप्राणो भवति प्रमेहपिडकाज्वरभगन्दरविद्रधिवातविकाराणामन्यतमं प्राप्य पंचत्वमुपयाति सर्व एव चास्य रोगा बलवन्तो भवन्त्यावृतमार्गत्वात् स्रोतसामतस्तस्योत्पत्तिहेतुं परिहरेत् । उत्पन्ने तु शिलाजतुगुग्गुलुगोमूत्रत्रिफलालोहरजोरसांजनमधुयवमुद्गकोरदूषकश्यामाकोद्दालकादीनां विरूक्षणच्छेदनीयानां च द्रव्याणां विधिवदुपयोगो व्यायामो लेखनबस्त्युपयोगश्चेति ॥**

तत्र पुनर्वातलाहारसेविनोऽतिव्यायामव्यवायाध्ययनभयशोकध्यानरात्रिजागरणपिपासाक्षुत्कषायाल्पाशनप्रभृतिभिरुपशोषितो रसधातुः शरीरमनुक्रामन्नल्पत्वान्न प्रीणयति तस्मादतिकार्श्यं च भवति । सोऽतिकृशः क्षुत्पिपासाशीतोष्णवातवर्षभारादानेष्वसहिष्णुर्वातरोगप्रायोऽल्पप्राणश्च क्रियासु भवति श्वासकासशोषप्लीहोदराग्निसादगुल्मरक्तपित्तानामन्यतमं प्राप्य मरणमुपयाति सर्व एव चास्य रोगा बलवन्तो भवन्त्यल्पप्राणत्वादतस्तस्योत्पत्तिहेतुं परिहरेत् । उत्पन्ने तु पयस्याश्वगन्धाविदारीविदारीगन्धाशतावरीबलातिबलानागबलानां मधुराणामन्यासां चौषधीनामुपयोगः क्षीरदधिघृतमांसशालिषष्टिकयवगोधूमानां च दिवास्वप्नब्रह्मचर्याव्यायामबृंहणबस्त्युपयोगश्चेति ॥

दाडिम, स्नेह तथा लूण एओवाळां अने रुधिरमां पकावेलां मांसोनी इछा थाय छे. **मांसना** क्षयवाळा माणसने खाटा पदार्थो, दहीमां पकावेलां वडां वगेरे, खाडवको अने मांसभक्षक स्थूल प्राणिओनां मांसो एओनी इच्छा थाय छे. **मेदना** क्षयवाळा माणसने मेदमां पकावेलां तथा क्षारवाळां ग्राम्य पशुओनां, सूवर वगेरेनां तथा जलजंतुओनां मांसोनी इच्छा थाय छे. **अस्थिना** क्षयवाळाने सारी रीते पकावेला रसोनी तथा अस्थिओवाळां मांसोनी इच्छा थाय छे. **मज्जाना** क्षयवाळाने शिथिल मांस, अस्थिओथी तथा स्नेहथी संयुक्त मज्जा अने मधुर तथा खाटा रसवाळा पदार्थो एओनी इच्छा थाय छे. **वीर्यना** क्षयवाला माणसने मोर, कुकडां, हंस तथा सारस एओनां इंडांओनी अने ग्राम्य पशुओ, सूवर वगेरे तथा जलचर प्राणीओ एओनां मांसोनी इच्छा थाय छे. **विष्टाना** क्षयवाळाने जवना खाटा पदार्थो, अनेक प्रकारनां शाको अने मोरनां मांसनो यूष एओनी इच्छा थाय छे. **मूत्रना** क्षयवाळाने राब, शेलडीनो रस, दुध, गोळवाळुं बोरनुं पाणी अने काकडीओ एओनी इच्छा थाय छे. **पसीनाना** क्षयवाळाने अभ्यंग, मर्दन, पवनवगरनी जग्यामां शयन तथा आसन अने जाडां वस्त्रो एओनी इच्छा थाय छे. **रजना** क्षयवाळी स्त्रीने तीखां, खारां, खाटां, विदाही अने भारेपणावाळां फळोनी, शाकोनी अने अनुपानोनी इच्छा थाय छे. **गर्भना** क्षयवाळीने हरिणी, बकरी, गाडर तथा सूवर एओना पकावेला गर्भोनी, चरबीनी अने कांटाथी पकावेलां मांसोनी इच्छा थाय छे. **धावणना** क्षयवाळीने यूष, भात, मांस, गायनुं दुध, साकर, आसव, दही अने बीजां पण प्रिय भक्ष्यो एओनी इच्छा थाय छे.

शरीरमां अत्यंत स्थूलता थवानां तथा अत्यंत कृशता थवानां कारणो अने स्थूलतानी तथा कृशतानी चिकित्सा.

२६ शरीरनी स्थूलतानुं अने कृशतानुं मुख्य कारण रसज छे. कफवर्धक आहारोनुं सेवन करनारा, झाझुं भोजन करवानी आदतवाळा,[1] कसरत के मेहेनत नहीं करनारा अने दिवसे सुवाना अभ्यासवाळा माणसना शरीरमां केवल जठराग्निए पकावेलो पण धातुओना अग्निओथी नहीं पाकवाने लीधे काचो रहेलो अने तेथी अत्यंत मधुरतावाळो अन्ननो रस शरीरमां गति करतो करतो मेदथी रस्ता रोकाई जवाने लीधे रुधिरने तथा मांसने छोडी दई पोताना अत्यंत स्निग्धपणाने लीधे परभारी मेदनीज वृद्धि करे छे अने ते वृद्धि पामेलुं मेद शरीरमां अत्यंत स्थूलपणुं करी नाखेछे. आवी रीते अत्यंत स्थूलपणुं पामेला माणसना शरीरमां क्षुद्रश्वास, तरश, क्षुधा, निद्रा, पसीनो, दुर्गंधपणुं, कंठमां घरघराट, गात्रोनी ग्लानि अने वाणीनुं गद्गदपणुं (अस्फुटपणुं) एओ तुरतज प्रवेश करे छे. मेदथी स्थूल थएलो माणस मेदना सुकुमारपणाने लीधे सघळी क्रियाओमां असमर्थ थाय छे अने कफथी तथा मेदथी रोकाएला मार्गोवाळो थई जवाने लीधे अल्प मैथुनवाळो थई जाय छे. ए प्रमाणे मेदथी मार्गो रोकाई जवाने लीधे अस्थिवगेरे बीजा धातुओ पण रसथी सारी पेठे तृप्ति पामता नथी तेथी ते माणस अल्प शक्तिवाळो थई जाय छे. ए माणस प्रमेहपिडका, ज्वर, भगंदर, विद्रधि के वायुसंबंधी विकारो एओमांना कोई रोगने प्राप्त थईने मरण पामे छे. ए माणसना शरीरमां स्रोतोना रस्ताओ मेदथी ढंकाएला होय छे तेथी तेने सर्वे रोगो बळवान् थई पडे छे. आम छे एटला माटे जेओथी स्थूलतानी उत्पत्ति थाय छे ते कारणोनो स्थूलतानी उत्पत्ति थयाथी पेहेलांज त्याग कराववो.[2] जो स्थूलता थई गई होय तो शिलाजीत, गुगळ, गोमूत्र, त्रिफला, लोहभस्म, रसवंती, मध, जव, मग, कोदरा, सामो अने जंगली कोदरा इत्यादिक पदार्थोनो अने बीजा पण मेदने तोडनारा तथा स्रोतोने शुद्ध करनारा पदार्थोनो अवस्थाना तथा जठराग्निना बळने अनुसरीने विधिप्रमाणे उपयोग कराववो, कसरत करावनी अने मेदने तथा कफने उखेडी नाखनारी लेखन बस्तिओनो[3] (पिचकारीओनो) पण उपयोग करावनो.

तेमज वातवर्द्धक (अतिरुक्ष) आहारोनुं सेवन करनारा, अति कसरत के अति मेहेनत करनारा, अति मैथुन करनारा, अत्यंत अध्ययन करनारा, अति भय धरावता, अति शोक करता, अत्यंत ध्यान करनारा, रात्रिओमां अति जागरण करनारा, अत्यंत तरस्या रेहेता, अत्यंत भूख्या रेहेनारा, अने तूरां तथा अल्प भोजनो करनारा माणसनो एज वातवर्द्धक आहारोना सेवन वगेरे कारणोए अत्यंत रुक्ष तथा अल्प करी नाखेलो रस शरीरमां फरतां छतां अल्पपणाने लीधे तथा रुक्षपणाने लीधे धातुओने पूरीरीते तृप्त करी शकतो नथी तेथी ते माणसना शरीरमां अत्यंत कृशपणुं थाय छे. आवी रीते अत्यंत कृश[4] थएलो माणस भूखने, तरशने, टाढने, गरमीने, वायुने, वरसादने तथा बोजाने सहन करी शकतो नथी,

१ अजीर्णमां भोजन करवाना अभ्यासवाळा.

२ आथी एम जणाव्युं के अनागत (नहीं आवेला) व्याधिनी प्रथमथीज ते व्याधिनां निदानोनो त्याग करावनारूप चिकित्सा करवी.

३ हरडां, बेहडां तथा आमळां एओनो क्वाथ, गोमूत्र, मध अने जवखार एओने संयुक्त करी ऊषकादि गणनां चूर्णो नाखीने जे पिचकारी देवामां आवे ते लेखन बस्तिओ केहेवाय छे.

४ आथी उपचयरूप बळनो (ओजनो) अभाव देखाड्यो.

घणा घणां वायुसंबंधी रोगोवाळो थाय छे अने कायानी, वाणीनी तथा मननी क्रियाओमां अल्प शक्तिवाळो थाय छे. ए माणस श्वास, खांसी, क्षय, बरल, उदररोग, अग्निनी मंदता, गुल्म तथा रक्तपित्त एओमांना कोई रोगने प्राप्त थईने मरण पामे छे. एना शरीरमां शक्ति अल्प होय छे तेथी तेने सर्वे रोगो बळवान् थई पडे छे. आम छे एटला माटे जेओथी कृशतानी उत्पत्ति थाय छे ते कारणोनो कृशतानी उत्पत्तिथी पेहेलांज त्याग करावयो. जो कृशता थई गई होय तो क्षीरकाकोली, आसोंद, विदारीकंद, (फगवेलानो कंद) शालिपर्णी, शतावरी, बळदाणा, खमाट, गंगेटी अने बीजी पण मधुर औषधिओनो उपयोग करावयो. दूध, दही, घी, मांस, चोखा, साठीचोखा, जव तथा घऊं ए धान्योनो उपयोग करावयो. दिवसे सुवुं, ब्रह्मचर्य पाळवुं, कसरतनो तथा मेहेनतनो त्याग अने बृंहणबस्ति एओनी योजना करवी.

२७ यः पुनरुभयसाधारणान्युपसेवेत तस्यान्नरसः शरीरमनुक्रामन्समान् धातूनुपचिनोति समधातुत्वान्मध्यशरीरो भवति सर्वक्रियासु समर्थः क्षुत्पिपासाशीतोष्णवर्षातपसहो बलवांश्च स सततमनुपालयितव्य इति "

भवन्ति चात्र ॥

अत्यन्तगर्हितावेतौ सदा स्थूलकृशौ नरौ ।
श्रेष्ठो मध्यशरीरस्तु कृशः स्थूलात्तु पूजितः ॥

मध्यशरीर थवानो उपाय अने मध्यशरीरवाळानी प्रशंसा.

२७ जे माणस अत्यंत स्निग्ध पण नहीं अने अत्यंत रुक्ष पण नहीं एवा पदार्थोनो उपयोग करे ते माणसनो अन्नरस शरीरमां फरतो फरतो धातुओने सम राखीने उपचय आप्या करे छे. ए माणस धातुओनी समताने लीधे मध्य शरीरवाळो थाय छे, सघळी क्रियाओ करवामां समर्थ थाय छे, भूख तरश थंडी गरमी वरसाद तथा तडको एओनुं सहनकरी शके छे अने बळवान् थाय छे. आवा मध्य शरीरवाळा माणसने वैद्ये सर्वदा स्वस्थ वृत्तनी पद्धतिमां चालतो राखीने पालन करवुं. (स्वस्थवृत्त चिकित्सितस्थानना २४ मा तथा उत्तरतंत्रना ६४ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे.)

आ स्थलना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "स्थूल शरीरवाळो अने कृश शरीरवाळो ए बे माणसो सर्वदा निंदित छे अने मध्य शरीरवाळो माणस श्रेष्ठ छे. जो के स्थूल शरीरवाळो अने कृश शरीरवाळो ए बन्ने निंदित छे तो पण तेओमां स्थूल शरीरवाळाथी कृश शरीरवाळो उत्तम छे." (कारण के स्थूलशरीरवाळो माणस क्रियाओमां असमर्थ रेहे छे अने सर्वदा व्याधिओथी पीडाया करे छे.)

२८ दोषः प्रकुपितो धातून्क्षपयत्यात्मतेजसा ।
इद्धः स्वतेजसा वह्निरुखागतमिवोदकम् ॥

दोषोज धातुओना, मळोना अने उपधातुओना क्षयमां कारणरूप छे.

२८ वात, पित्त अने कफ एओ प्रकुपित थाय तो पोतानी शक्तिथी, जेम प्रदीप्त थएलो अग्नि पोताना तेजथी तपेलीमां रहेला पाणीने

१ आथी शक्तिरूप बळनो अभाव देखाड्यो.

२ धातुओने वधारनारां द्रव्योना क्वाथो करी तेओमां मधुर द्रव्योना कल्क, घी अने मांसनो रस नाखी तेओनी पिचकारीओ मारवी ए बृंहणबस्तिओ केहेवाय छे.

३ साठी चोखा, राता चोखा, दाडिम अने तांदळजा वगेरे स्वस्थ वृत्तिसंबंधी पदार्थोनो.

४ 'सघळी क्रियाओमां समर्थ थाय छे' एटलुं केहेवाथीज 'बलवान् थाय छे' एम समजी लेवाय छे ते छतां मुखथी कह्युं ते एम जणाववा 'के' आवी रीतना आहार विहारोनुं सेवन करनारो माणस अवश्य बळवान् थाय छे.

५ पित्त पोतानी कटुकताथी तथा उष्णताथी, वायु पोतानी शोषण करवानी शक्तिथी अने कफ पोतानी मार्गोने रोकी राखवारूप शक्तिथी धातुओ वगेरेने क्षीण करे छे.

क्षीण करे छे. तेम धातुओने, मळोने तथा उपधातुओने क्षीण करे छे. (धातुओ वगेरेनी वृद्धिने पण ओछी करे छे अने समताने पण ओछी करे छे.)

२९ वैलक्षण्याच्छरीराणामस्थायित्वात्तथैव च।
दोषधातुमलानां तु परिमाणं न विद्यते ॥

पलवगेरे मापोथी दोषादिकनां प्रमाणो नहीं केहेवानुं कारण.

२९ शरीरो वात आदि प्रकृतिओना, रसरक्तादिकना अने लांबा टुंकापणा वगेरेना भेदने लीधे कोई कोईनी साथे मळतां आवतां नथी अने वळी धातुओ वगेरे पदार्थो बाल्यादिक अवस्थाओमां, हेमंत आदिऋतुओमां तथा प्रत्येक दिवसमां पण फेरफार पाम्या करे छे[1] तेथी दोषोनुं, धातुओनुं, मळोनुं के उपधातुओनुं कशुं मुकरर प्रमाण छे ज नहीं, (तेथी अमोए आ ग्रंथमां कह्युं नथी.)

३० एषां समत्वं यच्चापि भिषग्भिरवधार्यते ।
न तत्स्वास्थ्यादृते शक्यं वक्तुमन्येन हेतुना ॥

दोषादिकनां प्रमाणो मुकरर थया विना तेओनी समता शी रीते जाणी शकाय?

३० ए दोषो वगेरेनी समता के जेने वैद्यलोको कल्पी ले छे ते (समता) स्वस्थपणा शिवाय बीजा कोई पण कारणथी कही शकाय एम नथी, (स्वस्थता उपरथीज समतानुं अनुमान करी लेवुं.)

३१ दोषादीनांत्वसमतामनुमानेन लक्षयेत् ।
अप्रसन्नेन्द्रियं वीक्ष्य पुरुषं कुशलो भिषक् ॥

क्षय तथा वृद्धिरूप असमता पण अनुमानथीज जाणी लेवी.

३१ माणसने अप्रसन्न इंद्रियोवाळो तथा अप्रसन्न वर्णादिकवाळो जोइने प्रवीण वैद्ये दोषादिकनी क्षय तथा वृद्धिरूप असमता अनुमानथी धारी लेवी.

३२ क्षपयेद्बृंहयेच्चापि दोषधातुमलान् भिषक् ।
तावद्यावदरोगः स्यादेतत्साम्यस्य लक्षणम् ॥

असमताने अनुमानथी धारीलईने पछी केम करवुं?

३२ जो दोषो, धातुओ, मळो तथा उपधातुओ वृद्धि पामेला जणाय तो वैद्ये तेओने ओछा करवा अने क्षीण थएला जणाय तो तेओने वधारवा. आ कर्षण अने बृंहणरूप क्रियाओ त्यांसुधी करवी के ज्यांसुधी रोगीने आरोग्य प्राप्त थाय. जे आरोग्य छे तेज दोषोवगेरेनी समतानुं लक्षण छे.[2]

३३ समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥

दोषादिकनी जे समता तेज आरोग्य अथवा स्वस्थता छे.

३३ सम दोषोवाळो, सम अग्निवाळो,[3] सम

१ बाल्यावस्थामां वीर्यनी अल्पता होय छे अने कफनी वृद्धि होय छे. हेमंतमां कफ वधे छे अने ग्रीष्ममां वायु वधे छे. तेमज प्रभातमां कफ वधे छे अने मध्यान्हे पित्त वधे छे इत्यादि फेरफारो समजी लेवा.

२ जोके प्रत्येक अवस्थामां, प्रत्येक ऋतुमां अने प्रत्येक दिवसमां दोषोना फेरफार थया करे छे तेथी कोई समये पण दोषोनी समता थएली कही शकाय एम नथी तोपण आरोग्यदशामां दोषोना संचय तथा प्रकोप वगेरे अल्प होय छे तेथी दोषोनी समता गणवामां आवे छे. अथवा दोषोना ऋतुसंबंधी संचयादिकमां स्वस्थवृत्तमां कहेला विधिओथी अने प्रत्येक दिवससंबंधी संचयादिकमां दातण करवा वगेरे विधिओथी दोषोनी समता रेहेवी संभवे छे.

३ जो के दोषोनी समताथी अग्निनी समता मळी रहे छे तो पण 'सम अग्निवाळो' एम जे जुदुं रह्युं छे ते, दोषोनी अने अग्निनी चिकित्सा जुदी जुदी छे एम जणाववाने माटे कह्युं छे. जेम के घी अने बकरीनुं दूध पित्तने हरनार छतां पण अग्निने वधारे छे.

धातुओवाळो, सम मळोवाळो अने सम क्रिया-ओवाळो माणस के जे प्रसन्न देहवाळो, प्रसन्न इंद्रियोवाळो अने प्रसन्न मनवाळोज होय छे ते स्वस्थ केहेवाय छे."

अध्याय १६ मो.

१ अथातः कर्णव्यधबन्धविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कर्णव्यधबंधविधि[2]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासें कहेलुं छे.

२ रक्षाभूषणनिमित्तं बालस्य कर्णौ विध्येते षष्ठे मासि सप्तमे वा शुक्लपक्षे प्रशस्तेषु तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रेषु कृतमंगलस्वस्तिवाचनं ... भ्याऽभिसान्त्वयन् भिषग्वामहस्तेनाकृष्य कर्णे दैवकृते छिद्रे आदित्यकरावभासिते शनैः शनैर्दक्षिणहस्तेन ऋजु विध्येत् प्रतनुकं सूच्या बहलमारया पूर्वं दक्षिणं कुमारस्य वामं कन्यायास्ततः पिचुवर्तिं प्रवेश्य सम्यग्विद्धमामतैलेन परिषेचयेत् ॥

बालकना कान वींधवानुं प्रयोजन, समय, पद्धति अने वींध्या पछीनी क्रिया.

२ रक्षाने[3] माटे अने भूषणो पेहेरावाने माटे अथवा रक्षण करनारां भूषणो पेहेराववाने माटे बालकना कानो वींधवामां आवे छे. छठ्ठे महीने अथवा सातमे महीने[4] शुक्लपक्षमां ज्योतिश्शास्त्रनी रीति प्रमाणे शुभ तिथि, शुभकरण अने शुभ योग होय ते दिवसे मंगल तथा स्वस्ति वाचन कराव्या पछी शुभ मुहूर्तमां वैद्ये बाळकने उपमाताना (धाव्यना) अथवा बीजा कोई रक्षक पुरुषना खोळामां बेसाडी, कृत्रिम हाथी घोडा वगेरे रमकडांओथी तथा लाडु वगेरे भक्ष्योथी पण ललचावी, सांत्वना करतां करतां तेना कानने डाबा हाथथी खेंची, ते कानमां दैवेज करी राखेलुं छिद्र के जे सूर्यनी किरणोना प्रकाशथी देखाई रहे छे तेमां धीरे धीरे जमणा हाथथी सोय पकडीने तेथी सरल वींध करवो. कान जाडो के कठण होय तो आरथी वींध पाडवो. कुमारनो प्रथम जमणो कान वींधवो अने कन्यानो प्रथम डाबो कान वींधवो. वींध्या पछी जो 'बराबर प्रदेशमां वींधायो छे' एम जणाय तो ते वींधमां रूनी वाट नाखवी अने तेनी उपर काचा तैलथी सेचन करवुं.

३ शोणितबहुत्वेन वेदनया वाऽन्यदेशविद्धमिति जानीयान्निरुपद्रवतया तद्देशविद्धमिति ।

कान योग्य प्रदेशमां वींधायो छे के नहीं? तेनी परीक्षा.

३ जो लोही घणुं नीकळे अथवा वेदना थाय तो जाणवुं के बीजा प्रदेशमां वींधाईगयो छे अने कशो उपद्रव न थाय तो जाणवुं के बराबर दैवे करी राखेला छिद्रमांज वींधायो छे.

४ तत्राज्ञेन यदृच्छया विद्धासु शिरासु कालिकामर्मरिकालोहितिकासूपद्रवा भवन्ति ।

१ धातुओनी अने मळोनी सम क्रियाओवाळो अर्थात् सम निद्रा तथा सम जागरण वगेरेवाळो, एवो अर्थ पण करी शकाय छे.

२ कानने वींधवाना तथा बांधवाना प्रकारविषेनो.

३ जो के कान वींधायाथी रुधिरादिकनो संभव होवाने लीधे राक्षसोनो भय थवानो संभव छे तो पण ते काननो व्रण अल्प काल सुधी रेहेछे अने तेमां छिद्र तो दैवेज करी मुकेलुं होय छे तेथी कर्णवेध रक्षानेमाटे करवामां आवे छे एम कह्युं छे.

४ जन्मथी छठ्ठे के सातमे महीने नहीं पण वर्षना आरंभरूप भाद्रपद मासथी छठ्ठे के सातमे महीने अर्थात् माघमां के फाल्गुनमां. (डल्हन.) पण डल्हननुं आ केहेवुं ज्योतिःशास्त्रथी विरुद्ध थाय छे.

तत्र कालिकायां ज्वरो दाहः श्वयथुर्वेदना च भवति । मर्मरिकायां वेदना ज्वरो ग्रन्थयश्च । लोहितिकायां मन्यास्तम्भापतानकशिरोग्रहकर्णशूलानि भवन्ति । तेषु यथास्वं प्रतिकुर्वीत ।

दैवे करीराखेला छिद्र विना बीजा प्रदेशोमां वींधाई जाय तो तेथी थता उपद्रवो तथा तेओनी चिकित्सा.

४ जो यदृच्छाने लीधे मूर्खना हाथथी काननी कालिका, मर्मरिका के लोहितिका नामनी नस वींधाई जाय तो नीचे प्रमाणे जुदा जुदा प्रकारना उपद्रवो थाय छे. **कालिका** नामनी नस वींधाईगई होय तो ज्वर, दाह, सोजो अने वेदना थाय छे. **मर्मरिका** नामनी नस वींधाईगई होय तो वेदना, ज्वर अने ग्रंथिओ थाय छे. **लोहितिका** नामनी नस वींधाईगई होय तो मन्यास्तंभ[1], अपतानक[2], शिरोग्रह[3] अने कर्णशूल[4] नामना व्याधिओ थाय छे. आ प्रमाणे ज्वर वगेरे कोई व्याधि थाय तो जे व्याधिनुं जे औषधादिक छे ते औषधादिकथी ते व्याधिनी चिकित्सा करवी.

५ क्लिष्टजिह्माऽप्रशस्तसूचीव्यधाद्गाढतरवर्तित्वाद्दोषप्रकोपादप्रशस्तव्यधाद्वा यत्र संरम्भो वेदना वा भवति तत्र वर्तिमपहृत्याशु मधुकैरण्डमूलमञ्जिष्ठायवतिलकल्कैर्मधुघृतप्रगाढैरालेपयेत्तावद्यावत्सुरूढ इति सुरूढं चैनं पुनर्विध्येद्विधानं तु पूर्वोक्तमेव । त्र्यहात्र्यहाच्च वर्तिं स्थूलतरां दद्यात्परिषेकं च तमेव । अथ व्यपगतदोषोपद्रवे कर्णे वर्धनार्थं लघु वर्धनकं कुर्यात् ॥

कालिका वगेरे नसो नहीं वींधांया छतां पण व्यापत्ति अने ते व्यापत्तिनी चिकित्सा.

५ कटाएली, वांकी अणीवाळी के बीजी पण कोई अयोग्यतावाळी सोयवते वींधायाथी अथवा वाटना अत्यंत मजबूतपणाथी अथवा दैवकृत छिद्र शिवाय बीजा स्थलमां वींधायाथी के दोषना प्रकोपथी कानमां सोजो के वेदना थाय तो वाटने काहाडी लईने तुरत जेठीमध, एरडानां मूळ, मजीठ, जव अने तिल एओना कल्क करी, मध तथा घीमां सारी पेठे कालवीने तेओनो चोतरफ लेप कऱ्या करवो. ते त्यांसुधी के ज्यांसुधी पेह्लेलो व्रण सारी पेठे रुझाई जाय. सारी पेठे रुझाया पछी फरीवार ते कानने वींधवो. वींधवानो विधि तो प्रथम केहेवाई गयो छे. फरीवार वींधीने त्रण त्रण दिवसे कांईक विशेष विशेष जाडी वाट नाखवी अने तेना उपर काचा तैलनुंज सेचन करवुं. कानमांथी दोषो तथा उपद्रवो टळी जाय त्यारे ते कानने वधारवा माटे तेमां नाहानी अवेडा के लींबडा वगेरेनी सळी नाखवी अथवा सींसा वगेरे धातुनी हलकी भुंगळी नाखवी.

६ भवति चात्र ॥

एवं विवर्धितः कर्णश्छिद्यते तु द्विधा नृणाम् ।
दोषतो वाऽभिघाताद्वा संधानं तस्य मे शृणु ॥

तत्र समासेन पंचदश कर्णबन्धनाकृतयः ॥ तद्यथा नेमिसंधानक उत्पलभेद्यको वल्लूरक आसंगिमो गण्डकर्ण आहार्यो निर्वेधिमो व्यायोजिमः कपाटसंधिकोऽर्धकपाटसंधिकः

---

१ वायु कफथी वींटाईने डोकना पाछला भागमां रहेली चौद शिराओने स्तब्ध करी दे छे ते मन्यास्तंभ (भा. प्र.)

२ वायुना प्रकोपथी जोवानी शक्ति तथा संज्ञा नष्ट थई जाय, गळुं घुघव्यां करे अने मोहथी घेराएलुं हृदय मोहथी छुटुं थाय त्यारे वळी स्वस्थता मळे ते अपतानक केहेवाय छे. (भा. प्र.)

३ वायु रुधिरमां रही डोकनी शिराओने रूक्ष, वेदनावाळी तथा काळी करी नाखे छे ते शिरोग्रह. केहेवाय छे. (भा. प्र.)

४ कानमां चोमेर अवळीरीते फरतो अने प्रकोप पामेला दोषोथी वींटाएलो वायु कानमां ते ते दोषना संबंधवाळां शूलने अत्यंत उत्पन्न करे छे ते कर्णशूल केहेवाय छे. (भा. प्र.)

संक्षिप्तो हीनकर्णो वल्लीकर्णो यष्टिकर्णः काकोष्ठक इति ।

तेषु पृथुलायतसमोभयपालिर्नेमिसंधानकः । वृत्तायतसमोभयपालिरुत्पलभेद्यकः । ह्रस्ववृत्तसमोभयपालिर्वल्लूरकः । अभ्यन्तरदीर्घैकपालिरासंगिमः । बाह्यदीर्घैकपालिर्गण्डकर्णः । अपालिरुभयतोऽप्याहार्यः । पीठोपमपालिरुभयतः क्षीणपुत्रिकाश्रितो निर्वेधिमः । स्थूलाणुसमविषमपालिर्व्यायोजिमः । अभ्यन्तरदीर्घैकपालिरितराल्पपालिः कपाटसंधिकः । बाह्यदीर्घैकपालिरितराल्पपालिरर्धकपाटसंधिकः । तत्र दशैते कर्णबन्धविकल्पाः साध्यास्तेषां स्वनामभिरेवाकृतयः प्रायेण व्याख्याताः । संक्षिप्तादयः पंचाऽसाध्यास्तत्र शुष्कशष्कुलिरुत्सन्नपालिरितराल्पपालिः संक्षिप्तः । अनधिष्ठानपालिः पर्यन्तयोः क्षीणमांसो हीनकर्णः । तनुविषमाल्पपालिर्वल्लीकर्णः । ग्रथितमांसः स्तब्धशिराततः सूक्ष्मपालिर्यष्टिकर्णः । निर्मांससंक्षिप्ताग्राल्पशोणितपालिः काकोष्ठक इति । बन्धेष्वपि तु शोफदाहरागपाकपिडकास्रावयुक्ता न सिद्धिमुपयान्ति ॥

भवन्ति चात्र ॥

यस्य पालिद्वयमपि कर्णस्य न भवेदिह ।
कर्णपीठं समे मध्ये तस्य विद्ध्वा विवर्धयेत् ॥
बाह्यायामिह दीर्घायां संधिराभ्यन्तरो भवेत् ।
आभ्यन्तरायां दीर्घायां बाह्यसंधिरुदाहृतः ॥
एकैव तु भवेत्पालिः स्थूला पृथ्वी स्थिरा च या ।
तां द्विधा पाटयित्वा तु छित्त्वा चोपरि संधयेत्
गण्डादुत्पाट्य मांसेन सानुबन्धेन जीवता ।
कर्णपालिमपालेस्तु कुर्यान्निर्लिख्य शास्त्रवित् ॥

वधारेलो कान छेदाई जाय तो तेने सांधवाना प्रकारो.

६ अहीं भगवान् धन्वंतरिए कह्युं छे के "ए प्रमाणे वधारेलो माणसोनो कान घात आदि दोषोए करेला व्याधिथी अथवा अभिघातथी (चोट लागवाथी) एम बे प्रकारे छेदाई जाय छे. आ प्रमाणे छेदाई गयो होय तो तेने सांधवाना प्रकार कहुंछुं ते सांमळो."

तेमां संक्षेपथी[2] नेमिसंधानक, उत्पलभेद्यक, वल्लूरक, आसंगिम, गंडकर्ण, आहार्य, निर्वेधिम, व्यायोजिम, कपाटसंधिक, अर्धकपाटसंधिक, संक्षिप्त, हीनकर्ण, वल्लीकर्ण, यष्टिकर्ण अने काकोष्ठक ए रीते कर्णबंधनोनी पंदर आकृतिओ छे. (जो, के आ आकृतिओमां अर्धकपाटसंधिक सुधीनी दश आकृतिओज कर्णबंध छे तो पण सर्वेने कर्णबंध कही छे ते छत्रिन्यायथी कही छे एम समजवुं.)

कानना बूटना बन्ने भाग पोहोळा, लांबा तथा समान होय तो तेओ नेमि एटले पईडानी धारनी पेठे संधाय छे माटे ते कर्णबंध **नेमिसंधानक** केहेवाय छे. कानना बूटना बन्ने भाग गोळ लांबा तथा समान होय तो तेओ भेदाएला कमळपत्रनी पेठे संधाय छे माटे ते कर्णबंध **उत्पलभेद्यक** केहेवाय छे. कानना बूटना बन्ने भाग टुंका, गोळ तथा तुल्य होय तो तेओ सुका मांसनी फाडोनी पेठे संधाय छे तेथी **वल्लूरक** केहेवाय छे. कानना बूटना बे भागोमां गाल तरफनो एकज लांबो भाग बच्यो होय तो तेमांथी फाडी कापी, जता रहेला भागना मूळनी साथे लगावी देवाय छे माटे ते कर्णबंध **आसंगिम** केहेवाय छे. कानना बूटना बे भागोमां बाहारनो एटले गाल तरफना भागनी सामेनो एकज लांबो भाग बच्यो होय तो तेने गाल तरफना जता रहेला बीजा भागना मूळनी साथे जोडी देवाय छे तेथी ते कर्णबंध **गंडकर्ण** केहेवाय छे. कानना बूटना भागो बन्ने थोडा थोडा रह्या होय

---

१ विस्तारथी केहेवा मागीए तो कर्णबंधोना भेदो अपरिमित थाय एम छे.

२ माणसोना टोळामां घणां माणसो छत्रवाळां होय तो टोळानां सघळां माणसो छत्रवाळां गणाय छे ए छत्रिन्याय समजवो. आ पंदर प्रकारोमां दश कर्णबंध छे तेथी पंदरेने कर्णबंध कह्या छे.

तो गालना प्रदेशमांथी वळगेला छेडावाळुं जीवतुं मांस काहाडी बूटना जेवो आकार बनावीने सांधवामां आवे छे माटे ते कर्णबंध **आहार्य** केहेवाय छे. काननी बूटना बे भागो जरा पण नहीं रेहेतां छेदाई गएल होय तो क्षीण थएली काननी पुतळीउपर वेध करी बनाववामां आवे छे माटे ते कर्णवेध **निर्वेधिम** केहेवाय छे. काननी बूटना बे भागो (बे चीर) जाडी झीणी होवाथी समविषम होय तो शस्त्रथी बन्नेने कोतरी अनेक प्रकारनी योजनाथी सांधी देवाय छे माटे ते **कर्णबंध व्यायोजिम** केहेवाय छे. काननी बूटना बे भागोमांथी गाल तरफनो भाग लांबो होय अने सामेनो भाग टुंको होय तो लांबा भागने टुंका भागनी साथे बाहार कमाडनी पेठे सांधी देवामां आवे छे माटे ते कर्णबंध **कपाटसंधिक** केहेवाय छे. काननी बूटना बे भागोमांथी गाल तरफना भागनी सामेनो भाग लांबो होय अने गाल तरफनो भाग टुंको होय तो लांबा भागने अंदर अरधा कमाडनी पेठें सांधी देवामां आवेछे माटे ते कर्णबंध **अर्धकपाटसंधिक** केहेवायछे. कर्णबंधोना पंदर भेदोमां आ दश भेदो साध्य छे अने एओनी आकृतिओ घणुं करीने तेओनां नामो उपरथी जणावी दीधीछे. ए दश पछीना संक्षिप्त वगेरे पांच कर्णबंधो असाध्य छे. काननी बूटना बे भागोमां गाल तरफना भागनी सामेना जता रहेला भागनुं मूळपण सुकाई गयुं होय अने गाल तरफनो भाग अल्प होय तो ते कान **संक्षिप्त** केहेवायछे. काननी बूटना बन्ने भागोनां मूळो सुकाई गयां होय अने आसपास गालना भागोनां मांसो पण क्षीण थई गयां होय तो ते कान **हीनकर्ण** केहेवाय छे. काननी बूंटना बन्ने भागो पातळा विषम तथा अल्प होय तो ते कान वेलजेवो होवाथी **वल्लीकर्ण** केहेवाय छे. गुंथाएलां मांसवाळो, अक्कड शिराओथी व्याप्त अने झीणी झीणी बूटोनी चीरोवाळो कान लाकडी जेवो होवाथी **यष्टिकर्ण** केहेवाय छे. मांसवगरनी, संकोचाएलां अग्रोवाळी अने अल्प रुधिरवाळी बूटनी चीरोवाळो कान कागडानी चांच जेवो होवाथी **काकोष्ठक** केहेवाय छे. पेहेलाना दश बंधोमां पण जे कानो सोजा, दाह, रताश, पाक, फोल्लीओ अने स्राव एओथी युक्त होय तेओ सारा करी शकाता नथी.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं के "जे काननी बूटोनी बन्ने चीरो रही न होय ते काननी पुतळीनी उपरना समतावाळा मध्यभागमां वेध करीने वधारो करवो. (आ निर्वेधिमनुं संधानसूत्र छे.) गाल तरफनी फाडनी सामेनी फाड लांबी होय तो तेने गाल तरफना टुंका भागनी साथे अंदर सांधो आवे अने गाल तरफनी फाड लांबी होय तो तेने सामेना टुंका भागनी साथे बाहार सांधो आवे. (आ अर्धकपाटसंधिक अने कपाटसंधिक एओनुं संधानसूत्र छे[1].) जो जाडी पोहोळी तथा स्थिरतावाळी एकज फाड अवशेष रही होय तो तेने फाडी बे फाड करी एक फाडने कापीने उपरना भागमां सांधवी. (आ आसंगिमनुं संधान सूत्र छे.) बूटनी बन्ने फाडो थोडी थोडी रही होय तो शास्त्र जाणनारा वैद्ये ए फाडोमां टोचा दई गालमांथी वळगेला छेडावाळुं जीवतुं (लोहीवाळुं) मांस काहाडीने ते मांसथी बन्ने फाडोने पूरी करीने सांधी देवी[2]. (आ आहार्यनुं संधानसूत्र छे.)"

७ अतोन्यतमं बन्धं चिकीर्षुरग्रोपहरणीयोक्तोपसंभृतसम्भारं विशेषतश्चात्रोपहरेत् सु-

१ डल्हन तो माने छे के आ व्यायोजिमनुं पण संधानसूत्र छे.

२ लोहीवाळा मांसनो एक छेडो गालमां वळगेलो न राख्यो होय तो बूटपर नवुं चोडेलुं ते मांस उचडी जाय छे. आम छे एटला माटे सांधो बराबर रुझाइने मजबूत थया पछी, मांसनो गालनी साथे वळगेलो छेडो कापी नाखवो.

रामण्डं क्षीरमुदकं धान्याम्लं कपालचूर्णं चेति। ततोऽङ्गनां पुरुषं वा ग्रथितकेशान्तं लघु भुक्तवन्तमाप्तैः सुपरिगृहीतं च कृत्वा बन्धमुपधार्य छेद्यभेद्यलेख्यव्यधनैरुपपन्नैरुपपाद्य कर्णं शोणितमवेक्षेत तद्दुष्टमदुष्टं वेति । तत्र वातदुष्टे धान्याम्लोष्णोदकाभ्यां पित्तदुष्टे शीतोदकपयोभ्यां श्लेष्मदुष्टे सुरामण्डोष्णोदकाभ्यां प्रक्षाल्य कर्णौ पुनरवलिख्यानुन्नतमहीनमविषमं च कर्णसंधिं संनिवेश्य स्थितरक्तं संदध्यात् । ततो मधुघृतेनाभ्यज्य पिचुप्लोतयोरन्यतरेणावगुण्ठ्य सूत्रेणानवगाढमशिथिलं च बद्ध्वा कपालचूर्णेनावकीर्याऽऽचारिकमुपदिशेद्द्विव्रणीयोक्तेन च विधानेनोपचरेत् ॥

कान सांधवानी सामग्री, पद्धति तथा सांध्या पछीनी चिकित्सा.

७ ए दश बंधोमांनो कोई पण बंध करवो होय त्यारे वैद्ये आ ग्रंथना 'अग्रोपहरणीय' नामना अध्यायमां (आ स्थानना ५ मा अध्यायमां) कहेली सामग्रीओ हाजर राखवी अने विशेष करी सुदिरानी उपरनो आछो भाग, दूध, जळ, धान्याम्ल[1] अने ठीकरानुं चूर्ण एओने हाजर राखवां. पछी स्त्रीने[2] के पुरुषने तेना वाळ गुंथावी,[3] हलकूं जमाडी, तेनां सगां संबंधीओने हाजर राखी, ते द्वारा बराबर स्थिर करी, विश्वासपात्र लोकोनी साथे 'अहीं अमुक प्रकारनो बंध करवो छे' एम निश्चय करी लई, कान उपर छेदन, भेदन लेखन तथा वेधन ए क्रियाओमांथी योग्य जणाय ते क्रिया करीने लोहीनी तपास करवी के 'लोही दुष्ट छे के अदुष्ट छे?' रुधिर जो वायुथी दुष्ट थएलुं जणाय तो तेने धान्याम्ल तथा उनुं जळ एओथी, पित्तथी दुष्ट थएलुं जणाय तो तेने थंडा पाणीथी तथा दूधथी अने कफथी दुष्ट थएलुं जणाय तो तेने मदिरानी आछथी तथा उना पाणीथी धोई नाखी, कानमां फरीवार टोचा दई, उंचो पण नहीं, नीचो पण नहीं अने विषम पण नहीं, एवो बराबर सांधो मिलावी, लोही वेहेतुं बंध पडे त्यारे सांधवानी क्रिया करवी. पछी ते उपर मधनो तथा घीनो अभ्यंग करी तेना उपर रू अथवा कपडुं वींटी दोरावते बहु दृढ पण नहीं अने पोचुं पण नहीं एवी रीते बांधी लई तेनापर ठीकरानुं चूर्ण भभरावीने पछी आहार विहार करवानुं बतावबुं अने द्विव्रणीय नामना अध्यायमां (चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायमां) कहेली आलेपन आदि क्रियाओथी उपचार करवा.

८ भवतश्चात्र ।

विघट्टनं दिवास्वप्नं व्यायाममतिभोजनम् ।
व्यवायमग्निसंतापं वाक्छ्रमं च विवर्जयेत् ॥
आमतैलपरीषेकं त्रिरात्रमवचारयेत् ।
ततस्तैलेन संसृष्टं त्र्यहादपनयेत्पिचुम् ॥

कर्णसंधान करवामां आव्या पछी वर्जितकर्म तथा कर्त्तव्यकर्म.

८ कानने हलाववो के रगडवो नहीं. दिवसे सुवुं नहीं. कसरत के मेहेनत करवी नहीं. अति भोजन करवुं नहीं. मैथुन करवुं नहीं. अग्निनो ताप लेवो नहीं अने झाझुं बोलवुं पण नहीं.

कान उपर त्रण दिवस सुधी काचा तैलथी सेचन कर्या करवुं अने त्रण त्रण दिवस थया पछी तैलथी भीजाएलुं रूनुं पुमडुं अथवा कपडुं काहाडी नाखवुं.

९ **न चासंशुद्धरक्तमतिप्रवृत्तरक्तं क्षीणरक्तं वा संदध्यात् । स हि वातदुष्टे रक्ते रूढोऽपि**

१ चोखानुं चूर्ण तथा कोदरा वगेरेनुं चूर्ण आथवाथी धान्याम्ल थाय छे. (भा. प्र.)

२ स्त्रीओने भूषणोनुं प्रधानपणुं छे तेथी स्त्रीनुं नाम प्रथम आप्युं छे.

३ वाळ गुंथाव्या न होय तो ते वाळो आडा अवळा आवी पडवाथी क्रियामां हरकत आवे.

४ रोगी जम्यो होय तो क्रियानी पीडानुं सहन करीशके अने थोडुं तथा हलकुं जम्यो होय तेथी वेदनाने लीधे अथवा रातना उजागरा वगेरेने लीधे पण अजीर्णनी हरकत न आवे.

परिपुटनवान् । पित्तदुष्टे दाहपाकरागवेदनावान् । श्लेष्मदुष्टे स्तब्धः कण्डूमान् । अतिप्रवृत्तरक्ते श्यावशोफवान् क्षीणोऽल्पमांसो न वृद्धिमुपैति ।

केवा कानने सांधवो नहीं ?

९ अशुद्ध (दुष्ट) लोहीवाळा कानने सांधवो नहीं, लोही शुद्ध छतां पण बहु वेहेतुं होय त्यांसुधी सांधवो नहीं अने क्षीण रुधिरवाळा कानने पण सांधवो नहीं. रुधिर जो **वायुथी दुष्ट** होय तो सांधेलो कान रुझाई गया छतां पण पाछो फाटी जाय छे अथवा मिश्रकचिकित्सितमां (चिकित्सास्थानना २५ मा अध्यायमां) कह्या प्रमाणे सोजावाळा परिपोट नामना रोगवाळो थाय छे. रुधिर जो **पित्तथी दुष्ट** होय तो सांधेलो कान दाह, पाक, रताश तथा वेदना एओथी संयुक्त थाय छे. रुधिर जो **कफथी दुष्ट** होय तो सांधेलो कान स्तब्ध अने खरजवाळो थाय छे. रुधिर अत्यंत वेहेतुं होय ते छतां सांध्यो होय तो ते कान वायुए करेला काळा सोजावाळो थाय छे. जो क्षीण रुधिरवाळो कान सांधवामां आव्यो होय तो अल्प मांसवाळो रेहेवाने लीधे वधतो नथी.

१० स यदा सुरूढो निरुपद्रवः सवर्णो भवति तदैनं शनैः शनैरभिवर्धयेत् । अतोऽन्यथा संरम्भदाहपाकरागवेदनावान् पुनश्छिद्यते वा ॥

सांधेला कानने वधारवानी पद्धति.

१० ज्यारे कान सारी पेठे रुझाएलो, उपद्रवो वगरनो अने प्रथमना जेवा वर्णवाळो थाय त्यारे धीरे धीरे तेने वधारवो. जो बराबर रुझाया विना, उपद्रवो वगरनो थया विना अने प्रथमना जेवा वर्णवाळो थया विना अथवा उतावळें उतावळें वधारवामां आवे तो सोजो, दाह, पाक, रताश तथा वेदना एओथी युक्त थाय छे अथवा पाछो छेदाई जाय छे.

११ अथास्याप्रदुष्टस्याभिवर्द्धनार्थमभ्यंगः । तद्यथा । गोधाप्रतुदविष्किरानूपौदकवसामज्जानौ पयः सर्पिस्तैलं गौरसर्षपजं च यथालाभं सम्भृत्यार्कालर्कबलातिबलानन्तापामार्गाश्वगन्धाविदारिगन्धाक्षीरशुक्लाजलशूकमधुरवर्गप्रतिवापं तैलं वा पाचयित्वा स्वनुगुप्तं निदध्यात् । स्वेदितोन्मर्दितं कर्णं स्नेहेनानेन योजयेत् । अथानुपद्रवः सम्यग्बलवांश्च विवर्द्धते ॥ यवाश्वगन्धायष्ट्याह्वैस्तिलैश्चोद्वर्तनं हितम् । शतावर्यश्वगन्धाभ्यां पयस्यैरण्डजीवनैः ॥ तैलं विपक्कं सक्षीरमभ्यंगात्पालिवर्धनम् ।

दोषवगरना कानने वधारवा माटे अभ्यंग.

११ हवे जेमां कशो दोष न रह्यो होय एवा कानने वधारवा माटे अभ्यंग कहीए छीए. चंदनघो, तेतर तथा कुकडां वगेरे विष्किर पक्षीओ, काबर तथा कबूतर, वगेरे प्रतुद पक्षीओ, सूवर तथा पाडा वगेरे आनूप अने रोहित वगेरे जळजंतुओ एओनी चरबी तथा मज्जा अने घी तथा सफेद सर्षपनुं तेल ए चारे स्नेहोने यथालाभ (मळे तेटला)

---

१ अहीं शुद्ध रुधिरना अतिस्रावथीज क्षीण रुधिरवाळो समजवो पण दोषसंबंधी उपद्रवोथी क्षीण रुधिरवाळो समजवो नहीं. केमके दोषोसंबंधी उपद्रवोथी क्षीण थएलाने वधारवामां आवे तो ते छेदाईज जाय छे.

२ जे पक्षीओ पृथ्वीने खोतरी खोतरीने तेमांथी पोताना भक्ष्यने खाय छे तेओ विष्किर केहेवाय छे.

३ जे पक्षीओ पोताना भक्ष्यने चांचथी फोली फोलीने खाय छे तेओ प्रतुद केहेवाय छे.

४ पाडा, सूवर, गेंडा, चमरी तथा हाथी वगेरे पशुओ जळना कीनाराओ उपर फरे छे तथी आनूप केहेवाय छे.

५ जेनां पेट, मोहोडुं, आंख्यो तथा पांख्यो रातां होय अने पूंछडुं काळुं होय ते मत्स्य रोहित केहेवाय छे. आ मत्स्यने गुजरातीमां रोहीडो केहे छे.

एकठा करी चोगणा दूधमां पकावीने सारा बंदोबस्तथी राखी मुकवा अथवा एकला तेलनेज आकडो, धोळो आकडो, बळदाणा, खपाट, धोळी उपलसरी, अघेडो, आसोंद, शालिपर्णी, दूधवाळो, फगवेलानो कंद, जलशूक अने काकोली आदि, मधुर गण एओनो कल्क नाखी प्रकावीने. सारा बंदोबस्तथी राखी मुकवुं.

कानने शेकी तथा चोळीने तेउपर ए स्नेहनो अथवा तैलनो अभ्यंग करवो. आम करवाथी कान उपद्रव वगरनो तथा बळवान् थईने वृद्धि पामे छे. अभ्यंग कर्या पछी जव, आसोंद, जेठीमध अने तिल एओना कल्कथी कानने चोळीने साफ करवो ए हितकारी छे. शतावरी. आसोंद, खरणेर, एरंडो अने काकोली आदि जीवनीयगण एओनो कल्क नाखी चोगणा दूधमां पकावेला तैलनो अभ्यंग करवामां आवे तो तेथी पण कान वधे छे.

१२ ये तु कर्णा न वर्द्धन्ते विधिनानेन योजिताः।
तेषामपांगदेशेषु कुर्यात्प्रच्छानमेव तु ॥
बाह्यच्छेदं न कुर्वीत व्यापदस्तु ततो ध्रुवाः ॥

उपर प्रमाणे करतां छतां कान न वधे तो शुं करवुं?

१२ कानने वधारवाना जे उपायो कह्या ते उपायोनी योजना करतां कान न वधे तो योग्यता जोई ते काननी पुतळीना नीचा भागमां शस्त्रवते जराक छेदन करवुं. काननी पुतळीथी बाहारना भागमां कदी पण छेदन करवुं नहीं. बाहारना भागमां छेदन करवामां आवे तो तेथी अवश्य बगाडो थाय छे.

१३ बद्धमात्रं तु यः कर्णं सहसैवाभिवर्द्धयेत् ।
आमकोशी समाध्मातः क्षिप्रमेव विमुच्यते ॥

नहीं रुझाएला कानने वधारवामां हरकत.

१३ जो कर्णबंध करीने तुरतज कानने वधारवामां आवे तो ते बराबर नहीं रुझाएला मध्यवाळो कान सूजी जईने तुरतज त्रुटी जाय छे.

१४ जातरोमा सुवर्त्मा च श्लिष्टसंधिः समः स्थिरः
सुरूढोऽवेदनो यस्तु तं कर्णं वर्द्धयेच्छनैः ॥

कान केवो थया पछी तेने वधारवो?

१४ कान ज्यारे सारी पेठे रुझाएलो, वेदना वगरनो, जेना उपर रुवाडां उत्पन्न थयां होय एवो, सुंदर छिद्रवाळो, परस्परनी साथे संलग्न सांधाओवाळो, नीचापणाथी तथा उंचापणाथी रहित अने दृढ थाय त्यारे तेने धीरे धीरे वधारवो.

१५ अमिताः कर्णबन्धास्तु विज्ञेयाः कुशलैरिह ।
यो यथा सुनिविष्टः स्यात्तं तथा विनियोजयेत्॥

आ ग्रंथमां कहेला कर्णबंधना प्रकारोथी जुदो पण कोई प्रकार योग्य जणाय तो ते करवो.

१५ अहीं कुशल वैद्योए 'कर्णबंधोना प्रकारो अपरिमित छे' एम समजी लेवुं अने यथाशक्ति ते प्रकारो जाणी लेवा. ज्यां जे प्रकार बंध बेसतो जणाय त्यां ते प्रकारनी योजना करवी.

१६ कर्णपाल्यामयान्नृणां पुनर्वक्ष्यामि सुश्रुत ।
कर्णपाल्यां प्रकुपिता वातपित्तकफास्त्रयः ॥
द्विधा वाप्यथ संसृष्टाः कुर्वंति विविधा रुजः ।
विस्फोटः स्तब्धता शोफः पाल्यां दोषे तु वातिके

१ जो कोई स्नेह पकाववो होय तो तेने चोगणां दूधमां पकाववो एवी मर्यादा छे. पण ज्यां कोई द्रवनुं नाम न आप्युं होय त्यां चोगणां पाणीमां पकाववो. दुधनी साथे बीजो पण कोई द्रव नाखवानुं कह्युं होय तो दूध स्नेह बराबरज नाखवुं. 'यथालाभ एकठा करीने' एम कह्युं ते उपरथी जणाय छे के सघळा न मळे तो बे त्रणनुं पण ग्रहण करीने तेओने पकावी राखवा.

२ आनो पर्याय गुजरातीमां मळतो नथी.

३ जलशूक एटले जळनी शेवाळ अथवा जळनी अंदर रेहेनारो रुवाणांवाळो झेरी प्राणी समजवो. केटला एक केहेछे के जळमां फरनारो काळो कीडो समजवो.

दाहविस्फोटजननं शोफः पाकश्च पैत्तिके ।
कण्डूः सश्वयथुः स्तम्भो गुरुत्वं च कफात्मके ॥
यथादोषं च संशोध्य कुर्यात्तेषां चिकित्सितम् ।
स्वेदाभ्यंगपरीषेकैः प्रलेपासृग्विमोक्षणैः ॥
मूर्द्धी क्रियां बृंहणीयैर्यथास्वं भोजनैस्तथा ।
य एवं वेत्ति दोषाणां चिकित्सां कर्तुमर्हति ॥

काननी बूटमां ते ते दोषसंबंधी व्याधिओ अने तेओनी सामान्य चिकित्सा.

१६ हे सुश्रुत! हवे माणसोने काननी बूटमां जे रोगो थाय छे तेओ विषे कहुं छुं. काननी बूटमां प्रकोप पामेला वात, पित्त अने कफ ए त्रण दोषो जुदा जुदा अथवा बबे मळीने अथवा त्रणे मळीने अनेक प्रकारना रोगोने उत्पन्न करे छे. जो **वायुनो** प्रकोप थयो होय तो फोल्ला, स्तब्धपणुं तथा सोजो थाय छे. जो **पित्तनो** प्रकोप थयो होय तो दाह, फोल्ला, सोजो तथा पाक थाय छे. जो **कफनो** प्रकोप थयो होय तो खरज, सोजो, स्तब्धपणुं अने भारेपणुं थाय छे.

जे दोष होय तेने अनुसरतुं संशोधन करीने योग्यता प्रमाणे स्वेदनोथी, अभ्यंगोथी, स्नेहादिकनी धाराओ करवाथी, प्रलेपोथी अने लोही काढवाथी, ते ते व्याधिओनी चिकित्सा करवी. तेमज योग्यताने अनुसरीने बृंहणीय औषधोथी तथा तेवाज प्रकारनां भोजनोथी कोमळ चिकित्सा पण करवी. जे वैद्य आ प्रमाणे दोषोनी परीक्षा करी शके ते वैद्यज चिकित्सा करवामां योग्य छे[1].

१७अत ऊर्ध्वं नामलिंगैर्वक्ष्ये पाल्यामुपद्रवान् ।
उत्पाटकश्चोत्पुटकः श्यावः कण्डूयुतो भृशम् ॥
अवमन्थः सकण्डूको ग्रन्थिको जम्बुलस्तथा ।
स्रावी च दाहवांश्चैव शृण्वेषां क्रमशः क्रियाम् ॥
अपामार्गः सर्जरसः पाटलालकुचत्वचौ ।
उत्पाटके प्रलेपः स्यात्तैलमेभिश्च पाचयेत् ॥
शम्याकशिग्रुपूतीकगोधामेदोऽथ तद्वसा ।
वाराहं गव्यमैणेयं पित्तं सर्पिश्च संसृजेत् ॥
लेपमुत्पुटके दद्यात्तैलमेभिश्च साधितम् ।
गौरीं सुगन्धां सश्यामामनन्तां तण्डुलीयकम् ॥
श्यावे प्रलेपनं दद्यात्तैलमेभिश्च साधितम् ।
पाठां रसांजनं क्षौद्रं तथा स्यादुष्णकांजिकम् ॥
दद्याल्लेपं सकण्डूके तैलमेभिश्च साधितम् ।
व्रणीभूतस्य देयं स्यादिदं तैलं विजानता ॥
मधुकक्षीरकाकोलीजीवकाद्यैर्विपाचितम् ।
गोधावराहसर्पाणां वसाः स्युः कृतबृंहणे ॥
प्रलेपनमिदं दद्यादवसिच्यावमन्थके ।
प्रपौण्डरीकं मधुकं समंगां धवमेव च ॥
तैलमेभिश्च संपक्वं शृणु कण्डूमतः क्रियाम् ।
सहदेवा विश्वदेवा अजाक्षीरं ससैन्धवम् ॥
एतैरालेपनं दद्यात्तैलमेभिश्च साधितम् ॥
ग्रन्थिके गुटिकां पूर्वं स्रावयेदवपाट्य तु ।
ततः सैन्धवचूर्णं तु घृष्ट्वा लेपं प्रदापयेत् ॥
लिखित्वा तत्स्रुतं घृष्ट्वा चूर्णै रोध्रस्य जम्बुले ।
क्षीरेण प्रतिसार्यैनं शुद्धं संरोपयेत्ततः ॥
मधुपर्णी मधूकं च मधुकं मधुना सह ।
लेपः स्राविणि दातव्यस्तैलमेभिश्च साधितम् ॥
पंचवल्कैः समधुकैः पिष्टैस्तैश्च घृतान्वितैः ।
जीवकाद्यैः ससर्पिष्कैर्दह्यमानं प्रलेपयेत् ॥

काननी बूटना ते ते रोगोनां जुदां जुदां नामो, नामो उपरथीज लक्षणो अने ते रोगोनी चिकित्साओ.

१७ हवे काननी बूटमां जे रोगो थाय छे तेओने नामोथी तथा चिह्नोथी जणावुं छुं. उत्पाटक, उत्पुटक, श्याव, सकंडूक, अवमंथ, कंडूमान्, ग्रंथिक, जंबुल, स्रावी अने दाहवान् ए नामना दश रोग थाय छे.

(काननी बूटमां दाह, पाक तथा पीडा ए-

---

१ आ आखो सोळमो विषय ऋषिप्रणीत नथी अर्थात् क्षेपक छे एम सुश्रुतना संप्रदायी लोको माने छे अने ते उपरथी डल्लने पण तेमज मानीने आनी व्याख्या करी नथी.

ओवाळो जे सोजो थाय ते **उत्पाटक** केहेवाय छे. कानना बूटमां वेदनावाळो अने फाटी जनारो जे स्तब्ध सोजो थाय ते **उत्पुटक** केहेवाय छे. कानना बूटमां दाह, पाक तथा पीडावाळो जे काळो सोजो उत्पन्न थाय ते **श्याव** केहेवाय छे. कानना बूटमां जे अत्यंत खरजवाळो सोजो उत्पन्न थाय ते **सकंडूक** केहेवाय छे. कानना बूटमां कफना जेवा वर्णवाळो, कफसंबंधी वेदनावाळो तथा खरजवाळो जे सोजो उत्पन्न थाय ते **अवमंथक** केहेवाय छे. कानना बूटमां जे साधारण चळवाळो सोजो उत्पन्न थाय ते **कंडूमान्** केहेवाय छे. कानना बूटमां गांठरूप सोजो उत्पन्न थाय ते **ग्रंथिक** केहेवाय छे. कानना बूटमां जांबु जेवो जे काळो सोजो थाय ते **जंबुल** केहेवायछे. कानना बूटमां खरज, दाह अने वेदनावाळी तथा स्राववाळी सर्षपो जेवी फोल्लीओ थाय ते **स्रावी** केहेवायछे. कानना बूटमां फक्त भारे बळतरावाळो सोजो थाय ते **दाहवान्** केहेवाय छे.)

हवे ए दश रोगोनी अनुक्रमथी चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो.

उत्पाटक थयो होय तो अघेडो, राळ, पाडल अने क्षुद्र फनसनी छाल एओनो प्रलेप करवो अने एओनो कल्क नाखीने पकावेलुं तेल लगाववुं.

उत्पुटक थयो होय तो गरमाळो, सरगवो, करंज, चंदनघोनुं मेद, चंदनघोनी वसा, सुवरनुं पित्तुं, बळदनुं पित्तुं, काळीयार हरिणनुं पित्तुं अने घी एओने साथे वाटीने तेनो लेप करवो अने एओना कल्कथी पकावेलुं तैल लगाववुं.

श्याव थयो होय तो हळदर, नगड, धउलां, धोळी धोकड अने तांदळजो एओनो प्रलेप करवो अने एओनो कल्क नाखीने पकावेलुं तेल लगाववुं.

सकंडूक थयो होय तो काळीपाड, रसवंती, मध, अने गरम कांजी एओनो लेप करवो अने एओनो कल्क नाखी पकावेलुं तैल लगाववुं. जो सकंडूक व्रणरूप थई गयो होय तो समजु वैद्ये जेठीमध, क्षीरकाकोली अने जीवक इत्यादि ओषधोथी पकावेलुं तैल लगाववुं तथा बृंहणक्रिया करीने चंदनघो, सूवर अने सर्प एओनी चरबीनो लेप करवो.

अवमंथक थयो होय तो स्रावण कर्या पछी पांडरवो, जेठीमध, मजीठ, अने धावडो एओनो लेप करवो अने तेओनो कल्क नाखी पकावेलुं तैल लगाववुं.

कंडूमान् थयो होय तो सहदेवी अने गंगेटी एओने बकरीना दूधमां सैंधव सहित वाटी तेनो लेप करवो अने एओनो कल्क नाखी पकावेलुं तैल लगाववुं.

ग्रंथिक थयो होय तो प्रथम गांठने चीरीने तेमांथी स्राव कराववो अने पछी ते उपर सैंधवनुं चूर्ण घसीने तेनोज लेप करवो.

जंबुल थयो होय तो तेने शस्त्रवते खोतरी स्राव कर्या पछी लोदरना चूर्णथी घसी दूधथी धोई, शुद्ध थया पछी तेनी रोपणक्रिया (व्रणमां भरती लाववानी क्रिया) करवी.

स्रावी थयो होय तो सीवण, जेठीमध, महुडो अने मध एओनो लेप करवो अने एज द्रव्यो नाखीने पकावेलुं तैल लगाववुं.

दाहवान् थयो होय तो पंचवल्कल[1] अने जेठीमध एओने वाटी घीथी मिश्रित करीने तेनो लेप करवो. अथवा जीवकादिक द्रव्योने वाटी घीथी मिश्रित करने तेनो लेप करवो.[2]

---

१ वड, उंबरो, पीपळो, पारसपीपळो अने पीपर ए पांच छीरवाळां वृक्षोनी छाल पंच वल्कल केहेवाय छे.

२ आ सघळो सत्तरमो विषय पूर्वाचार्योए तथा डल्हने पण क्षेपक मानेलो छे. चिकित्सास्थानना २५ मा अध्यायमां कानना बूटना पांच रोगो चिकित्सासहित आपेला छे तेथी जणाय छे के आ अध्यायनो आ सत्तरमो विषय क्षेपकज होवो जोइए. एक ठेकाणाना रोगोनुं बे ठेकाणे निरूपण जोवामां आवे ए वांधा भरेलुंज गणाय.

१८ विश्लेषितायास्त्वथ नासिकाया
वक्ष्यामि संधानविधिं यथावत् ।
नासाप्रमाणं पृथिवीरुहाणां
पत्रं गृहीत्वा त्ववलम्बितस्य ॥
तेन प्रमाणेन हि गण्डपार्श्वा-
दुत्कृत्य वद्धं त्वथ नासिकाग्रम् ॥
विलिख्य चाशु प्रतिसंदधीत
तत्साधुबंधैर्भिषगप्रमत्तः ।
सुसंहितं सम्यगथो यथावत्
नाडीद्वयेनाभिसमीक्ष्य बद्ध्वा ॥
प्रोन्नम्य चैनामवचूर्णयेच्च
पत्तंगयष्टीमधुकांजनैश्च ।
संछाद्य सम्यक् पिचुना सितेन
तैलेन सिंचेदसकृत्तिलानाम् ॥
घृतं च पाय्यः स नरः सुजीर्णे
स्निग्धो विरेच्यः स यथोपदेशम् ।
रूढं च सन्धानमुपागतं स्यात्
तदर्धशेषं तु पुनर्निकृन्तेत् ॥
हीनां पुनर्वर्द्धयितुं यतेत
समां च कुर्यादतिवृद्धनासाम् ॥

कपाई गएला नाकने सांधवानो प्रकार.

१८ हवे नाक कपाई गयुं होय तो तेने सांधवानो प्रकार संपूर्ण रीते कहुं छुं. वैद्ये नाकनो जेटलो भाग कपाई गयो होय ते बरोबर कोई झाडनुं पानडुं लई, तेने गाल उपर मुकी, बरावर ते प्रमाणे भरी लई गालना पडखामांथी संलग्न रीते गालने वळगी रहेला छेडावाळुं मांस कापी लई, नाकना अग्रने टोचा दईने तुरतज सावधानी राखी ते अग्रनी साथे सारा बंधोथी ते मांसने सांधी देवुं. ते नाकना अग्रने सारी रीते संधाएलुं जोई वरूनी अथवा एरडानी डांडलीनी बे नळीओथी योग्य रीते बांधी लई सारी रीते उंचुं करीने तेना उपर रतांजलि, जेठीमध अने रसवंती एओनुं चूर्ण भभरावी, सफेद रुना पुंमडाथी संपूर्ण रीते ढांकी दई तेनी उपर वारंवार तिलना तैलथी सेचन करवुं. ए माणसने घी पावुं अने घी पावाथी स्निग्ध थएला ते माणसने भोजन सारी पेठे जीर्ण थया पछी शास्त्रोक्त रीतिप्रमाणे विरेचन देवुं. ज्यारे सांधेलो भाग संपूर्ण रीते रुझाईने ठीक जामी जाय, त्यारे गालनी साथे वळगी रहेलो ते मांसनो छेडो कापी नाखवो. आम कर्या छतां जो नाक टुंकुं रही गयुं होय तो तेने वधारवा माटे ते प्रमाणेज फरीवार यत्न करवो अने बहु वधी गयुं होय तो तेने सम करवुं.

१९ नाडीयोगं विनौष्ठस्य नासासंधानवद्विधिम् ।
य एवमेवं जानीयात्स राज्ञः कर्तुमर्हति ॥

कपाई गएला होठने सांधवानो प्रकार.

१९ कपाई गएला होठने सांधवानो प्रकार पण नळीओ लगाववा शिवाय बाकी नाकने सांधवाना प्रकारना पेठेज करवो. जे वैद्य आ प्रमाणे करी जाणे तेज वैद्य राजानी चिकित्सा करवाने लायक गणायछे.

अध्याय १७ मो.

१ अथात आमपक्वैषणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथीज 'आमपक्वैषणीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शोफसमुत्थाना ग्रन्थिविद्रध्यलजीप्रभृतयः प्रायेण व्याधयोऽभिधास्यन्तेऽनेकाकृतयस्तैर्विलक्षणः पृथुर्ग्रथितः समो विषमो वा त्वङ्मांसस्थायी दोषसंघातः शरीरैकदेशोत्थितः शोफ इत्युच्यते ॥

स षड्विधो वातपित्तकफशोणितसन्निपाताऽऽगन्तुनिमित्तः ।

---

१ काचा सोजानी, पाकवा लागेला सोजानी तथा पाकी गएला सोजानी परीक्षा विषेनो.

सोजानुं स्वरूप अने ते सोजाना छ प्रकार.

२ घणुं करीने सोजाना जेवा उदयवाळा अने अनेक आकारोवाळा ग्रंथि, विद्रधि अने अलजी इत्यादि व्याधिओ के जेओ केहेवामां आवशे ते-ओथी जुदाज प्रकारनो, विस्तीर्ण, गांठ जेवो उंचो, सम आकारवाळो अथवा विषम आकारवाळो अने घणुं करीने त्वचामां तथा मांसमां रेहेनारो दोषोनो जे उच्छ्राय शरीरना कोई एक प्रदेशमां उठे छे ते सोजो केहेवाय छे.

वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, संन्निपातजन्य, रुधिरजन्य अने आगंतुजन्य ए रीते ते सोजो छ प्रकारनो थाय छे.

३ तस्य दोषरूपव्यंजनैर्लक्षणानि व्याख्यास्यामः ।

तत्र वातशोफोऽरुणः कृष्णोवा परुषो मृदुरनवस्थितस्तोदादयश्चात्र वेदनाविशेषा भवंति।

पित्तशोफः पीतो मृदुः सरक्तो वा शीघ्रानुसारी चोषादयश्चात्र वेदनाविशेषा भवंति ।

श्लेष्मशोफः पाण्डुः शुक्लो वा कठिनः शीतः स्निग्धो मन्दानुसारी कण्ड्वादयश्चात्र वेदनाविशेषा भवंति ।

सर्ववर्णवेदनः सन्निपातजः ।

पित्तवच्छोणितजोऽतिकृष्णश्च ।

पित्तरक्तलक्षण आगन्तुर्लोहितावभासश्च ।

सोजाना छ प्रकारोनां जुदां जुदां लक्षणो.

३ ए सोजानां दोषोसंबंधी वर्णो उपरथी अने दोषोसंबंधी चिह्नो उपरथी लक्षणो कहीए छीए.

वातजन्य सोजो लाल अथवा काळो होय छे, रुक्ष होय छे, कोमळ होय छे, चंचल होय छे अने तेमां सोयथी भोकाया जेवी तथा शस्त्रथी कपाया जेवी वगेरे अनेक जातनी वेदनाओ थाय छे.

पित्तजन्य सोजो पीळो अथवा रताशवाळो होय छे, कोमळ होय छे, तुरत गति करनारो होय छे अने तेमां आकर्षण थवा जेवी तथा चोमेर बळया जेवी वगेरे अनेक जातनी वेदनाओ थाय छे.

कफजन्य सोजो पांडुवर्णवाळो अथवा सफेद वर्णवाळो होय छे, कठण होय छे, थंडो होय छे, स्निग्ध होय छे, मंद गतिवाळो होय छे अने तेमां खरज तथा भारेपणुं इत्यादि अनेक वेदनाओ थाय छे.

सन्निपातजन्य सोजो उपर कहेला सघळा वर्णोवाळो अने उपर कहेली सघळी वेदनाओ-वाळो थाय छे.

रुधिरजन्य सोजो पित्तजन्य सोजा जेवो होय छे अने अत्यंत काळो होय छे.

आगंतुजन्य (अभिघात आदिथी थएलो) सोजो पित्तजन्य सोजानां तथा रुधिरजन्य सोजानां लक्षणोवाळो होय छे अने लाल अवभासवाळो होय छे.

४ स यदा बाह्याभ्यन्तरैः क्रियाविशेषैर्न सम्भावितः प्रशमयितुं क्रियाविपर्ययाद्बहुत्वाद्वा दोषाणां तदा पाकाभिमुखो भवति ॥

सोजानुं पाकवामां अभिमुख थवानुं कारण.

४. ए सोजो ज्यारे आलेपन तथा शोधन वगेरे बाहारनी क्रियाओथी अने क्वाथपान, वमन तथा विरेचन वगेरे अंदरनी क्रियाओथी पण दोषोना बहुपणाने लीधे अथवा ते क्रियाओमां कोई प्रकारनी भूल थई जवाथी शमावी शकाय नहीं त्यारे पाकवामां अभिमुख थाय छे.

५ तस्याऽऽमस्य पच्यमानस्य पक्वस्य च लक्षणमुच्यमानमवधारय ।

तत्र मन्दोष्मता त्वक्सवर्णता शीतशोफता स्थैर्यं मन्दवेदनताल्पशोफता चामलक्षणमुद्दिष्टम् ।

सूचीभिरिव निस्तुद्यते दंश्यत इव पिपीलिकाभिस्ताभिश्च संसृप्यत इव छिद्यत इव शस्त्रेण भिद्यत इव शक्तिभिस्ताड्यत इव दण्डेन पीड्यत इव पाणिना घट्ट्यत इव चांगुल्या दह्यते पच्यत इव चाग्निक्षाराभ्यामोषचोषपरीदाहाश्च भवंति वृश्चिकविद्ध इव च स्थाना-

सनशयनेषु न शांतिमुपैति । आध्मातवस्तिरिवाततश्च शोफो भवति त्वग्वैवर्ण्यं शोफाभिवृद्धिर्ज्वरदाहपिपासा भक्तारुचिश्च पच्यमानलिंगम् ॥

वेदनोपशान्तिः पाण्डुतालपशोफता वलीप्रादुर्भावस्त्वक्परिपुटनं निम्नदर्शनमङ्गुल्याऽवपीडिते प्रत्युन्नमनं बस्ताविवोदकसंचरणं पूयस्य प्रपीडयत्येकमन्तमन्तेवावपीडिते मुहुर्मुहुस्तोदः कण्डूरनुन्नतता च व्याधेरुपद्रवशांतिर्भक्ताभिकाङ्क्षा च पक्वलिङ्गम् ॥

काचा, पाकवा लागेला तथा पाकी गएला सोजानां लक्षणो.

५ काचा सोजानां, पाकवा लागेला सोजानां अने पाकी गएला सोजानां जुदां जुदां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो.

जो सोजो **काचो** होय तो ते सोजामां उनापणुं मंद होय छे, रंग चामडीना जेवोज होय छे, थंडापणुं होय छे, कठणपणुं होय छे, वेदना अल्प होय छे अने ते सोजानुं कद पण नाहानुं होय छे.

जो सोजो **पाकवा लागेलो** होय तो तेमां जाणे सोईओ भोंकाती होय, कीडीओ चटका लेती होय, कीडीओ चडती होय, शस्त्रथी छेदन थतुं होय, भालाओथी भेदन थतुं होय, धोकाथी मार पडतो होय, हाथथी दबाण थतुं होय, आंगळीथी मर्दन थतुं होय, अग्निथी बाळी नखातुं होय तथा क्षारथी पकावातुं होय एवी वेदनाओ थाय छे, एक प्रदेशमां अथवा चोमेर बळतरा थाय छे, अने आकर्षण थतुं होय एवी पीडा थाय छे. जेने वीछी करड्यो होय एवा माणसनी पेठे पाकवा लागेला सोजावाळो माणस उभतां, बेसतां के सुतां क्यांय पण शांति पामतो नथी. सोजो फुंकथी फुलावेला मूत्राशयना दडानी पेठे चामडीना संकोचथी रहित थई जाय छे, चामडीनो रंग बदली जाय छे, सोजो वधी जाय छे, ज्वर आवे छे, बळतरा उठे छे, तरश लाग्या करे छे अने अन्न उपर अरुचि थाय छे.

जो सोजो **पाकी गयो** होय तो वेदना ओछी पडी जाय छे, सोजानो रंग फीकी सफेदाईवाळो थई जाय छे, सोजानुं कद कांईक नाहानुं थई जाय छे, सोजानी उपर करचलीओ वळे छे, चामडी उचडी जाय छे, नमेलापणुं जोवामां आवे छे, आंगळीथी दबाववामां आवतां बीजा प्रदेशमां उंचाण थतुं जोवामां आवे छे, सोजाना एक छेडाने दबाववामां आवे अथवा ते छेडो पोतानी मेळे दबाय तो, जेम मूत्राशयनी कोथळीमां जळनुं आम तेम संचरण थाय तेम सोजामां परूनुं आम तेम संचरण थाय छे, वारंवार भोंकाया जेवी वेदना थाय छे, खरज आवे छे. उंचाई ओछी थई जाय छे, बळतरा वगेरे उपद्रवोनी शांति थाय छे अने अन्न खावानी इच्छा थाय छे. (पाकी गएला सोजामां भोंकाया जेवी वेदना थाय ए वातनुं चिह्न छे अने खरज आवे ए कफनुं चिह्न छे. दाहादिक जतुं रहेवाथी पित्तनुं चिह्न मालुम पडतुं नथी.)

६ **कफजेषु तु रोगेषु गम्भीरगतित्वादभिघातजेषु वा केषुचिदसमस्तं पक्वलक्षणं दृष्ट्वा पक्वमपक्वमिति मन्यमानो भिषग्मोहमुपैति यत्र हि त्वक्सवर्णता शीतशोफता स्थौल्यमल्परुजताऽश्मवद्घनता न तत्र मोहमुपेयादिति**

कफजन्य तथा अभिघातजन्य सोजाना पाकवानी परीक्षा भूल खवरावी दिए एवी होवाथी तेमां वैद्यने विशेष चेतवणी.

६ कफजन्य सोजाओमां गंभीरगतिवाळापणुं होय छे अने अभिघातथी थएला केटलाएक सोजाओमां गुप्त प्रदेशनी अंदर पेसी गएलां शल्य वगेरे निमित्त होय तेथी, पक्वपणानां लक्षणो पूरे पूरां जो-

वामां आवतां नथी. आम थवाने लीधे वैद्य पाकेला सोजाने पण काचो मानी लेवाथी भूंल खाई जाय एम छे. कफजन्य तथा अभिघातजन्य ए बन्ने प्रकारना सोजाओ पाकी गया होय तो पण तेओनो उंडो पाक थवाने लीधे उपरनो रंग चामडीना जेवोज रहेछे, स्पर्श अंदरमां उनो छतां पण बाहारना भागमां थंडो रेहे छे[1], स्थूलता रेहे छे, पीडा थोडी होय छे[2] अने कठणपणुं पथराना जेवुं रेहे छे[3] तेथी तेओमां वैद्यने काचापणानी भ्रांति थवानो संभव छे तो पण उपर कह्या प्रमाणे (उपरना पांचमा विषयमां कह्याप्रमाणे) पाकी गयानां बीजां लक्षणो जोवामां आवे तो वैद्ये जरापण नहीं मुंझातां ते सोजाओने पाकी गएलाज समजवा.

७ भवंति चात्र ॥
आमं विपच्यमानं च सम्यक् पक्वं च यो भिषक् ।
जानीयात्स भवेद्वैद्यः शेषास्तस्करवृत्तयः ॥

काचा वगेरेनां लक्षणो जाणवाथी गुण अने नहीं जाणवाथी दोष.

७ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे वैद्य काचा सोजाने, पाकवा लागेला सोजाने अने पाकी गएला सोंजाने सारी पेठे ओळखी शके तेज खरो वैद्य केहेवाय. बाकीना वैद्योने तो एक जातना चोरना धंधावाळाज समजवा."

८ वाताद्दते नास्ति रुजा न पाकः
पित्ताद्दते नास्ति कफाच्च पूयः ।
तस्मात्समस्ताः परिपाककाले
पचंति शोफांस्त्रय एव दोषाः ॥

शरुआतमां एक दोषथी उत्पन्न थएला सोजाओ पण पाकवाना समयमां त्रणे दोषोना संबंधवाळा थईजाय छे.

८ वायु विना वेदना होती नथी, पित्त विना पाक होतो नथी अने कफ विना परू होतुं नथी तेथी सिद्ध थाय छे के पाकना समयमां त्रणे दोषो सोजाओने पकावे छे.

९ कालान्तरेणाऽभ्युदितं तु पित्तं
कृत्वा वशे वातकफौ प्रसह्य ।
पचत्यतः शोणितमेष पाको
मतोऽपरेषां विदुषां द्वितीयः ॥

पित्तना प्राधान्यथी पण सोजानो पाक थाय छे अने ते पाक, उपर कहेला पाकथी जुदो मानवामां आवेछे.

९ पोताना प्रकोपादिकनो समय प्राप्त थवाने लीधे चोमेर उदय' पामेलुं पित्त बलात्कारथी वायुने तथा कफने हीन करी पोताना पेटामां लई लेईने लोहीने पकावे छे. आ प्रमाणे लोही पाकवाथी सोजानो जे पाक थायछे तेने विद्वान लोको, उपर कहेला पाकथी जुदो मानेछे. (आथी एम पण सूचव्युं के वात, पित्त, कफ अने रुधिर ए चारे मळीने आ शरीरने धरी राखे छे.)

१० तत्रामच्छेदे मांससिरास्नाय्वस्थिसंधिव्यापादनमतिमात्रं शोणितातिप्रवृत्तिर्वेदनाप्रादुर्भावोऽवदरणमनेकोपद्रवदर्शनं क्षतविद्रधिर्वा भवति ।

स यदा भयमोहाभ्यां पक्वमप्यपक्वमिति मन्यमानश्चिरमुपेक्षते व्याधिं वैद्यस्तदा गम्भीरानुगतो द्वारमलभमानः पूयः स्वमाश्रयमवदीर्योत्संगं महांतमवकाशं कृत्वा नाडीं जनयित्वा कृच्छ्रसाध्यो भवत्यसाध्यो वेति ।

भवन्ति चात्र ।

यश्छिनत्त्याममज्ञानाद्यश्च पक्वमुपेक्षते ।
श्वपचाविव मन्तव्यौ तावनिश्चितकारिणौ ॥

१ गंभीर गतिवाळापणाने लीधे अने कफथी थएलापणाने लीधे पण बाहारना भागमां स्पर्श थंडो रेहे.

२ कफजन्य सोजामां कफना योगथी पीडा अल्प रेहे छे.

३ कठणपणुं गंभीर गतिथी पण थाय अने कफना संबंधथी पण थाय.

काचा सोजाने कापवो नहीं अने पाकेला सोजाने कापवानी उपेक्षा करवी नहीं.

१० काचा सोजाने कापवाथी मांस, शिराओ, स्नायुओ तथा संधिओ एओनुं अत्यंत हिंसन थई जाय छे, लोहीनो अत्यंत स्राव थाय छे, वेदनानो प्रादुर्भाव थाय छे, उंडो चीरो पडी जाय छे, अनेक उपद्रवो जोवामां आवे छे अने वखतपर क्षतविद्रधि[1] पण थाय छे.

जो वैद्य भयथी के मोहथी, पाकेला सोजाने पण काचो मानीने लांबा वखतसुधी उपेक्षा करे तो (कापे नहीं तो) परू उंडुं पेसी जई नीकळवानुं द्वार नहि मळवाने लीधे पोताना स्थानकने फाडीनाखी अंदर उंडाणवाळी मोटी कोतर बनावी लई नाडीव्रण (नसमां व्रण—भरनींगळ) करी नाखीने कष्टसाध्य थई पडेछे अने वखतपर असाध्यपण थई पडेछे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के जे "वैद्य अज्ञानने लीधे काचा सोजाने कापे अने जे वैद्य पाकेला सोजाने कापवामां उपेक्षा करे ते बन्ने अनिश्चित क्रियावाळा वैद्योने चांडालो जेवाज मानवा."

११ प्राक्छस्त्रकर्मणश्चेष्टं भोजयेदातुरं भिषक् ।
मद्यपं पाययेन्मद्यं तीक्ष्णं योऽवेदनासहः ॥
न मूर्च्छत्यन्नसंयोगान्मत्तः शस्त्रं न बुध्यते ।
तस्मादवश्यं भोक्तव्यं रोगेष्वेतेषु कर्मणि ॥

प्राणो ह्याभ्यन्तरो नृणां बाह्यप्राणगुणान्वितः ।
धारयत्यविरोधेन शरीरं पांचभौतिकम् ॥

सोजो शस्त्रक्रियाने लायक थाय त्यारे करवानुं पूर्वकर्म..

११ वैद्ये शस्त्रक्रिया कर्या पेहेलां रोगीने हितकारी अथवा प्रियलागे[2] एवुं अन्न जमाडवुं अने जे रोगी वेदनानुं सहन न करी शके एवो अने मद्य पीनार होय तेने तीक्ष्ण मद्य पण पावुं. रोगी अन्नना संयोगथी मूर्छित थतो नथी अने मद्य पीधुं होय तो शस्त्रनी वेदनाने पण जाणतो नथी. आम छे एटला माटे मूढगर्भ, उदररोग तथा पथरीआदि रोगो शिवाय बीजा रोगोमां शस्त्रकर्म करवानुं होय त्यारे रोगीने अवश्य जमाडवो अने मद्य पीवानी आदत होय तो तीक्ष्ण मद्य पण पावुं. हृदयमां रहेला ओजे उत्पन्न करेलुं ताकातरूप बळ, पांचभौतिक द्रव्योना आहारे उत्पन्न करेला उपचयथी अने शरीरनी दृढताआदि गुणोथी युक्त थईने अविरोधथी माणसोना पांचभौतिक शरीरनुं धारण करे छे[3] एटलामाटे शस्त्रकर्म प्राप्त थाय त्यारे मूढगर्भआदि रोगो शिवाय बीजा रोगोमां रोजीने अवश्य जमाडवो जोईए.

१२ अल्पोमहान्वा क्रियया विना यः
समुच्छ्रितः पाकमुपैति शोफः ।
विशालमूलो विषमो विदग्धः
स कृच्छ्रतां यात्यवगाढदोषः ॥

---

१ अभिघातथी के जखमने लीधे रुधिरनो क्षय थवाथी कोप पामेला वायुए फेलावेली अभिघातनी अथवा क्षतनी गरमी रुधिरने तथा पित्तने प्रकुपित करी काळा अथवा पाकेला उंबराना फळ जेवा, ज्वरवाळा, तृषावाळा, दाहवाळा अने जेनुं उठवुं तथा पाकवुं तुरत थाय छे एवा विद्रधिने (मोटा मूळवाला सोजाने) उत्पन्न करेछे ते सोजो क्षतविद्रधि केहेवाय छे.

२ जेना अंगमां शस्त्रक्रिया करवी होय तेने बळ आपवामाटे, जे प्रिय होय ते अन्न अपथ्य होय तो पण जमाडवुं एम केटलाएक केहे छे.

३ लक्षणटिप्पणीकार तो आनो एवो अर्थ आपे छे के जेथी प्राणी जीवेछे ते अग्नीषोमादिक आभ्यंतरप्राण बाह्यप्राणरूप अन्नमां रहेला तर्पणआदि गुणोथी युक्त थईने अविरोधथी माणसोना पांचभौतिक शरीरनुं धारण करे छे.

मोटा अथवा नाहाना सोजाने चिकित्सा-वगर राखवाथी मोटी हरकत.

१२ शरीरमां उंचो थएलो नाहानो अथवा मोटो जे सोजो चिकित्सावगरज पाकीजाय 'ते सोजो विशाल मूळवाळो, विषम पाकवाळो अने उंडा उतरेला परूवाळो थईने 'कष्टसाध्य थई पडे छे.

१३ आलेपविस्रावणशोधनैश्च
सम्यक्प्रयुक्तैर्यदि नोपशाम्येत् ।
पच्येत शीघ्रं सममल्पमूलः
संपिण्डितश्चोपरि चोन्नतः स्यात् ॥

सोजाउपर क्रियाओनी सफलता.

१३ आलेपन, लोहीनुं स्रवाववुं अने शोधन ए क्रियाओनो सारीरीते प्रयोग करवामां आवे तो सोजो शांत थई जाय छे. पण कदाच शांत न थाय तो पण तुरत पाके, समपाकवाळो थाय, अल्प मूळवाळो रहे अने गोळ थईने उपरज उंचो थाय.

१४ कक्षं समासाद्य यथैव वह्नि-
र्वाय्वीरितः सन्दहति प्रसह्य ।
तथैव पूयोऽप्यविनिःसृतो हि
मांसं शिरास्नायु च खादतीह ॥

पाकेला सोजाने नहीं कापवाथी नुकसान थवामां दृष्टांत.

१४ जेम अग्नि पवनथी प्रेराई सुका खडने प्राप्त थईने ते खडने बलात्कारथी बाळी नाखे छे तेम नही काहाडवामां आवेलुं परू दोषादिकथी प्रेराई मांसादिकमां पेसीने मांसने, शिराने अने स्नायुने बलात्कारथी खाई जाय छे.

१५ आदौ विम्लापनं कुर्याद्द्वितीयमवसेचनम् ।
तृतीयमुपनाहं च चतुर्थीं पाटनक्रियाम् ॥
पंचमं शोधनं कुर्यात्षष्ठं रोपणमिष्यते ।
एते क्रमा व्रणस्योक्ताः सप्तमं वैकृतापहम् ॥

सोजाउपर करवानी सात क्रियाओ.

१५ शोफने आंगळी वगेरेथी चोळीने नरम करवो ए विम्लापन नामनी पेहेली क्रिया केहेवाय छे. पछी जळो वगेरे लगावीने तेमांथी लोही स्रवाववुं ए अवसेचन नामनी बीजी क्रिया वाय छे, पछी तेना उपर औषधोवाळा पाटा बांधवा ए उपनाह नामनी त्रीजी क्रिया केहेवाय छे. पछी तेने शस्त्रवते चीरवो ए पाटननामनी चोथी क्रिया केहेवाय छे. पछी तेनुं शोधन करवुं ए शोधन नामनी पांचमी क्रिया केहेवाय छे. पछी ते व्रणमां भरती लाववी ए रोपण नामनी छठ्ठी क्रिया केहेवाय छे. ते पछी व्रणना स्थानमां असलना जेवो वर्ण बनाववो तथा रुवाडां उगाडवा वगेरे करवुं ए सातमी वैकृतापह नामनी क्रिया केहेवाय छे. शोफउपर आ सात क्रियाओ करवी.

अध्याय १८ मो.

१ अथातो व्रणालेपनबन्धविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः .

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'व्रणालेपन बंधविधि'' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करी शुं के जेप्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ आलेप आद्य उपक्रम एष सर्वशोफानां सामान्यः प्रधानतमश्च तं च प्रतिरोगं वक्ष्यामः। ततो बन्धः प्रधानं तेन शुद्धिर्व्रणरोपणमस्थि-संधिस्थैर्यं च ॥

१ केटलाएक केहेछे के विम्लापन शब्दथी सोजाने नरम पाडनारा लेप, परिषेक, अभ्यंग तथा स्वेदन वगेरेनुं पण ग्रहण करवुं. तेमज अवसेचन शब्दथी वमन, विरेचनआदि क्रियाओनुं पण ग्रहण करवुं. आवी रीते बाकीनी पांच क्रियाओमां पण तेने तेने लगती बीजी क्रियाओनुं ग्रहण करी लेवुं.

२ सोजा तथा व्रण उपर लेप करवाना तथा पाटा बांधवाना प्रकारो विषयनो.

शोफउपर लेपनी श्रेष्ठता अने तेथी पण बंधनी श्रेष्ठता.

२ लेप करवो ए श्रेष्ठ क्रिया छे अने ते सघळा प्रकारना सोजाओने माटे साधारण छे. लेप पीडाने तुरत मटाडे छे माटे सघळी क्रियाओ करतां वधारे प्रधान छे. आ सूत्रस्थानमां तथा चिकित्सास्थानमां प्रत्येक रोगना विषयमां ते लेपनुं निरूपण करीशुं. लेप करतां बंधनी प्रधानता छे. केम के बंधथी (औषधसंयुक्त पाटा बांधवाथी) व्रणनी शुद्धि थाय छे, व्रणमां भरती आवे छे अने अस्थिओना संधिओनी दृढता थाय छे.

३ तत्र प्रतिलोममालिम्पेन्नानुलोमं प्रतिलोमे हि सम्यगौषधमवतिष्ठतेऽनुप्रविशति रोमकूपान् स्वेदवाहिभिः शिरामुखैश्च वीर्यं प्राप्नोति । न च शुष्यमाणमुपेक्षेतान्यत्र पीडयितव्यात् । शुष्को ह्यपार्थकोऽरुष्करश्च ॥

लेप करवानी रीति.

३ लेप करवो ते रुवाडांओनी वलाणथी उलटो करवो पण रुवाडांओनी वलाणने अनुसरतो करवो नही. रुवाडांओनी वलाणथी उलटो लेप करवाथी औषध बराबर स्थिति करे छे, रुवाडांओनां छिद्रोमां पेसी जाय छे अने पसीनानुं वहन करनारां शिराओनां मुखोद्वारा गति करीने शक्ति पामे छे. लेपने लगाव्या पछी सुकावा देवो नहीं पण जे लेप व्रणने दबाववा तथा ताणवामाटे करवामां आवे ते लेपने तो सुकावा देवो. सुकाएलो लेप अंगउपर रह्यो होय तो पण निष्फल छे अने उलटी पीडा करे छे.

४ स त्रिविधः प्रलेपः प्रदेह आलेपश्च । तेषामन्तरं प्रलेपः शीतस्तनुरविशोषी विशोषी च । प्रदेहस्तूष्णः शीतो वा बहलो बहुरविशोषी च । मध्यमोऽत्रालेपः । तत्र रक्तपित्तप्रसादकृदालेपः। प्रदेहो वातश्लेष्मप्रशमनः सन्धानः शोधनो रोपणः शोफवेदनापहश्च । तस्योपयोगः क्षताक्षतेषु । यस्तु क्षतेषूपयुज्यते स भूयः कल्क इति संज्ञां लभते निरुद्धालेपसंज्ञस्तेनास्रावसंनिरोधो मृदुता पूतिमांसापकर्षणमन्तर्निर्दोषता व्रणशुद्धिश्च भवति ॥

अविदग्धेषु शोफेषु हितमालेपनं भवेत् ।
यथास्वं दोषशमनं दाहकण्डूरुजापहम् ॥
त्वक्प्रसादनमेवाग्र्यं मांसरक्तप्रसादनम् ।
दाहप्रशमनं श्रेष्ठं तोदकण्डूविनाशनम् ॥
मर्मदेशेषु ये रोगा गुह्येष्वपि तथा नृणाम् ।
संशोधनाय तेषां हि कुर्यादालेपनं भिषक् ॥
षड्भागं पैत्तिके स्नेहं चतुर्भागं तु वातिके ।
अष्टभागं तु कफजे स्नेहमात्रां प्रदापयेत् ॥

लेपना त्रण भेद अने तेओमां कयो लेप कया कार्यने माटे करवो ते.

४ लेपना प्रलेप, प्रदेह अने आलेप ए नामना त्रण भेद छे. तेओमां जे लेप पातळो, शीतल, सुकावा देवो नही जोईए एवो अने दबाववा योग्य व्रणउपर सुकावा देवो जोईए एवो करवामां आवे ते **प्रलेप** कहेवाय छे. जे लेप थंडो, जाडो, झाझो अने सुकाय नही एवो करवामां आवे ते **प्रदेह** केहेवाय छे. प्रलेपनां लक्षणवाळो पण नही अने प्रदेहनां लक्षणवाळो पण नही एवो जे मध्यमस्थितिनो लेप करवामां आवे ते **आलेप** केहेवाय छे. एओमां आलेप रुधिरने तथा पित्तने शुद्ध करे छे. प्रदेह वायुने तथा कफने शांत करे छे, भांगेलांने सांधी दे छे, शुद्ध करनार छे, व्रणमां भरती लावीने रुझावनार छे अने सोजानी वेदनाने टाळनार छे.[1] जखमथी थएला अने जखमवगर थएला शोफोमां लेपनो उपयोग छे. लेप ज्यारे जखमथी थएला सोजाउपर करवानो होय त्यारे तेने 'लेप' ए नाम नहीं आपतां 'कल्क' ए नाम आपवामां आवे

१ अहींथी प्रलेपनां कार्योनो पाठ जतो रह्यो जणाय छे.

छे. कल्कथी व्रणनो स्राव अटके छे, व्रणमां कोमळपणुं थाय छे, व्रणमांथी बगडेलुं मांस दूर थई जाय छे, अंदरनुं परू नष्ट थई जाय छे अने व्रणमां रहेला दोषोनी निवृत्ति तथा व्रणमां भरती थाय छे.

काचा सोजाओनी उपर आलेप हितकारी छे. (पाका सोजाओनी उपर तो प्रदेहज हितकारी छे के जे प्रदेहनुं बीजुं नाम उपनाह छे.) योग्य द्रव्योथी करवामां आवेलुं लेपन दोषोने शांत करे छे अने पित्तसंबंधी दाहने, कफसंबंधी खरजने तथा वातसंबंधी वेदनाने मटाडे छे. लेपन चामडीने शुद्ध करवामां मुख्य छे, मांसने तथा रुधिरने स्वच्छ करे छे अने रुधिरआदि दूष्योए करेला दाह, व्यथा तथा खरज एओने पण नष्ट करे छे. माणसोने मर्मस्थलोमां तथा गुह्यप्रदेशोमां पण जे रोगो थया होय तेओनुं संशोधन करवानेमाटे वैद्ये लेपन देवुं. पित्तसंबंधी व्रणउपर करवाना लेपनमां छट्ठा भाग जेटली, वातसंबंधी व्रणउपर करवाना लेपनमां चोथा भाग जेटली अने कफसंबंधी व्रणउपर करवाना लेपनमां आठमा भाग जेटली स्नेहनी मात्रा नाखवी.

५ तस्य प्रमाणमार्द्रमाहिषचर्मोत्सेधमुपदिशंति। न चालेपं रात्रौ प्रयुंजीत माभूच्छैत्यपिहितोष्मणस्तदनिर्गमाद्विकारप्रवृत्तिरिति ॥
प्रदेहसाध्ये व्याधौ तु हितमालेपनं दिवा।
पित्तरक्ताभिघातोत्थे सविषे च विशेषतः ॥
न च पर्युषितं लेपं कदाचिदवचारयेत्।
उष्माणं वेदनां दाहं घनत्वाज्जनयेत्स हि ॥
उपर्युपरि लेपं तु न कदाचित्प्रदापयेत् ॥
न च तेनैव लेपेन प्रदेहं दापयेत्पुनः।
शुष्कभावात्स निर्वीर्यो युक्तोऽपि स्यादपार्थकः।

लेपनां प्रमाण तथा समय अने लेपमां अमुक प्रकारनो निषेध.

५ आलेपनो थर पाडाना आळा चांमडा जेटलो उंचो करवो एम केहेवामां आवे छे. आलेप राते करवो नहीं. कारण के अंदरनी गरमी रातनी शीतलताथी दबाईने नीकळी जाय छे ते जो राते पण लेप कर्यो होय तो रुवाडाओनां छिद्रो रोकाई जवानेलीधे बाहार नीकळी शकती नथी तेथी विकारनी वृद्धि थाय छे. जे व्याधि प्रदेहथी मटे एवो होय तेमां पण दिवसे लेप करवो ए हितकारी छे. पित्तथी, रुधिरथी तथा अभिघातथी उत्पन्न थएला तथा झेरना संबंधवाळा व्याधिमां तो दिवसेज लेप करवो ए विशेष हितकारी छे. रातवाशी रहेलो लेप कदी पण लगाववो नहीं. केम के ते वाशी लेप घाटा पणाने लीधे गरमीने, वेदनाने तथा दाहने उत्पन्न करे छे. लेपनो थथेडो लेपनी उपर उपर कदी पण कराववो नहीं. अंगउपरथी काहाडी नाखेलो एनो ए लेप कदी पण फरीवार कराववो नहीं. केम के ते एकवार सुकाई गएलो होवाथी निर्वीर्य थई गएलो होय छे तेथी फरीवार लगाववामां आवे तो पण निष्फलज थाय छे.

६ अत ऊर्ध्वं व्रणबन्धनद्रव्याण्युपदेक्ष्यामः। तद्यथा। क्षौमकार्पासाविकदुकूलकौशेयपत्रोर्णचीनपट्टचर्मान्तर्वल्कलालाबूशकललताविदलरज्जुतूलफलसंतानिकालोहानीति तेषां व्याधिं कालं चावेक्ष्योपयोगः प्रकरणतश्चैषामादेशः ॥

व्रणउपर पाटा बांधवाना पदार्थो.

६ हवे व्रणउपर पाटा बांधवाना पदार्थो कहीएछीए. अलसीनां वस्त्र, कपासनां वस्त्र, उननां वस्त्र, शणनां वस्त्र, रेशमी वस्त्र, धोएलां रेशमी वस्त्र, चीनाई वस्त्र, चामडां, वृक्षोनी अंतरछाल, तुंब्रडांनी फाड, लता, वांस वगेरेनी फाडो, दोरी, रू, दूधनी तर अथवा सूतरनी आंटी, अने धातुओना पदार्थो एओ व्रणने बांधवानां साधनो छे. व्याधिने तथा समयने जोईने एओनो उपयोग करवो अने जेवुं प्रकरण होय तेप्रमाणे गोठवण करी लेवी (जेम के वात—कफ संबंधी व्याधि होय तो अने व्याधिनुं स्थान दृढ

होय तो एओमांथी घाटा पदार्थोनो उपयोग करवो. पित्तसंबंधी व्याधि होय, उष्णकाल होय के व्याधिनुं स्थान शिथिल होय तो एओमांथी पातळा पदार्थोनो उपयोग करवो. तेमां पण मस्तकनो व्रण होय तो तूंबडानी फाडथी बंधन कराववुं इत्यादि समजी लेवुं.)

७ तत्र कोशदामस्वस्तिकानुवेल्लितप्रतोलीमण्डलस्थगिकायमकखट्वाचीनविबन्धवितानगोफणाः पंचांगी चेति चतुर्दश बन्धविशेषाः। तेषां नामभिरेवाकृतयः प्रायेण व्याख्याताः॥

ते ते प्रदेशमां बांधवाना पाटाओनी आकृतिओ बतावबानेमाटे पाटाओनां नामो.

७ कोशबंध, दामबंध, स्वस्तिकबंध, अनुवेल्लितबंध, प्रतोलीबंध, मंडलबंध, स्थगिकाबंध, यमकबंध, खट्वाबंध, चीनबंध, विबंधबंध, वितानबंध गोफणाबंध अने पंचागीबंध ए रीते पाटा बांधवाना चौद भेद छे. ए बंधोनी आकृतिओ घणुं करीने तेओनां नामो उपरथीज समजावी दीधी छे. (कमलना पोटा जेवो जे पाटो बंधाय ते **कोशबंध** केहेवाय छे. दोरी जेवो अने चार छेडावाळो जे पाटो बंधाय ते **दामबंध** केहेवाय छे. चोकडी जेवो जे पाटो बंधाय ते **स्वस्तिकबंध** केहेवाय छे. पाछळना भागमां आंटा दईदईने जे पाटो बंधाय ते **अनुवेल्लितबंध** केहेवाय छे. सपाट रस्ता जेवो अने करोळीयाना जाळां जेवां छिद्रोवाळो जे पाटो बंधाय ते **प्रतोलीबंध** केहेवाय छे. जे पाटो टोपीनी पेठे गोळ आकृतिवाळो बांधवामां आवे ते **मंडलबंध** केहेवाय छे. जे पाटो दरजीनी झीणी अंगुठी जेवो बांधवामां आवे ते **स्थगिकाबंध** केहेवाय छे. जे पाटो जोटा रूपे बांधवामां आवे ते **यमकबंध** केहेवाय छे. जे पाटो खाटलाना आकारे बांधवामां आवे ते **खट्वाबंध** केहेवाय छे. जे पाटो घणा चीराओथी बांधवामां आवे ते **चीनबंध** केहेवाय छे. जे पाटो विविधबंधोथी बांधवामां आवे ते **विबंधबंध** केहेवाय छे. जे पाटो उलेच जेवो बांधवामां आवे ते **वितानबंध** केहेवाय छे. जे पाटो पथरा फेंकवानी गोफण जेवो बांधवामां आवे ते **गोफणाबंध** केहेवाय छे. जे पाटो पांच तरफथी बांधवामां आवे ते **पंचांगीबंध** केहेवाय छे.)

८ तत्र कोशमंगुष्ठांगुलिपर्वसु विदध्यात्। दाम सम्बाधेऽङ्गे। सन्धिकूर्चकभ्रूस्तनान्तरतलकर्णेषु स्वस्तिकम्। अनुवेल्लितं तु शाखासु। ग्रीवामेढ्रयोः प्रतोलीम्। वृत्तेऽङ्गे मण्डलम्। अंगुष्ठांगुलिमेढ्राग्रेषु स्थगिकाम्। यमलव्रणयोर्यमकम्। हनुशंखगण्डेषु खट्वाम्। अपांगयोश्चीनम्। पृष्ठोदरोरःसु विबन्धम्। मूर्द्धनि वितानम्। चिबुकनासौष्ठांसबस्तिषु गोफणाम्। जत्रुण ऊर्ध्वं पंचांगीमिति। यो वा यस्मिञ्छरीरप्रदेशे सुनिविष्टो भवति तं तस्मिन् विदध्यात्। यंत्रणमत ऊर्ध्वमधस्तिर्यक्च॥

कया स्थानमां कयो पाटो बांधवो?

८ अंगुठानां अने आंगळीओनां पर्वोमां कोशबंध बांधवो. सांकडवाळा अंगमां दामबंध बांधवो. सांधाओना मध्यमां, कूर्चकोना[1] मध्यमां, भ्रकुटीओना मध्यमां, स्तनोना मध्यमां, तळामां अने कानमां स्वस्तिकबंध बांधवो. पगमां तथा बाहुमां अनुवेल्लितबंध बांधवो. डोकमां तथा शिश्नमां प्रतोलीबंध बांधवो. गोळ अंगमां मंडलबंध बांधवो. अंगुठाना अग्रमां, आंगळीना अग्रमां

---

१ कूर्चाः स्युर्हस्तयोर्द्वौ तु तावंतौ पादयोरपि। ग्रीवायामेक एकस्तु मेढ्रे सर्वेऽपि षट् स्मृताः। कूर्चा अपि शिरास्नायुमांसास्थिप्रभवाः स्मृताः बे हाथमां बे, बे पगमां बे, शिश्नमां एक अने डोकमां एक एवी रीते सघळा मळीने छ कूर्चो छे. ए कूर्चो (गाभाओ) शिराओथी, स्नायुओथी, मांसथी अने अस्थिओथी बनेला छे.

तथा शिश्नना अग्रमां स्थगिकाबंध बांधवो. बे व्रण हारोहार होय त्यां यमकबंध बांधवो. हडपची, लमणा तथा गाल एओमां खट्वाबंध बांधवो. नेत्रोना छेडाओमां चीनबंध बांधवो. पीठ, पेट तथा छाती एओमां विबंधबंध बांधवो. मस्तकमां वितानबंध बांधवो. दाढी, नाक, होठ, खभा तथा मूत्राशय एओमां गोफणाबंध बांधवो. डोकनी हांसडीनी उपर पंचांगीबंध बांधवो. अथवा उपर कहेलो कशो नियम नहीं राखतां शरीरना जे प्रदेशमां जे प्रकारनो पाटो बंध बेसतो आवे ते प्रदेशमां ते प्रकारनो पाटो बांधवो. पाटाना छेडाओनी गांठ्यो उंची पण बंधाय, नीची पण बंधाय अने आडी पण बंधाय.

९ तत्र घनां कवलिकां दत्वा वामहस्तपरिक्षेपमृजुमनाविद्धमसंकुचितं मृदुपट्टं निवेश्य बध्नीयात् । न च व्रणस्योपरि कुर्याद्ग्रन्थिमाबाधकरं वा ॥

पाटो केवी रीते बांधवो ?

९ औषध उपर घाटी पोटीस अथवा छाल पानडां वगेरेनी घाटी थेपली मूकी डाबा हाथमां पाटो पकडी जमणा हाथवते ते पाटाने सीधो, संकीर्णपणावगरनो, करचलीओवगरनो अने कोमळतावाळो गोठवीने बांधी देवो. पाटानी गांठ व्रणनी उपर आवे तेम नहीं करवुं अने ए गांठ डाबा जमणां पडखांओमां के पीठमां आवे तेम नहीं करवुं. जे स्थलमां तथा जे रीते बांधवाथी रोगीने सुवा बेसवा वगेरेमां हरकत न आवे ते स्थलमां तथा तेवी रीते पाटानी गांठ बांधवी.

१० न च विकेशिकौषधे अतिस्निग्धे अतिरूक्षे विषमे वा कुर्वीत । यस्मादतिस्नेहात्क्लेदो रौक्ष्याच्छेदो दुर्न्यासाद्व्रणवर्त्मावघर्षणमिति ॥

व्रणमां नाखवानी वाट अने औषधनो कल्क केवां जोईए ?

१० व्रणमां नाखवानी वाट अने उपर लगाववानो औषधनो कल्क एओने अत्यंत स्निग्ध नहीं करवां, अत्यंत रूक्ष पण नहीं करवां अने विषम रीते पण दाखल नहीं करवां. केम के अत्यंत स्निग्ध करवाथी व्रणमां आर्द्रपणुं थई जाय छे, अत्यंत रूक्ष करवाथी व्रणना भेळा थता बे होठनो छेद थई जाय छे अने विषम रीते दाखल करवाथी व्रणनुं मोहोडुं घसाय छे.

११ तत्र व्रणायतनविशेषाद्बन्धविशेषस्त्रिविधो भवति गाढः समः शिथिल इति ।
पीडयन्नरुजो गाढः सोच्छ्वासः शिथिलः स्मृतः ।
नैव गाढो न शिथिलः समो बन्धः प्रकीर्तितः ॥

तत्र स्फिक्कुक्षिकक्षावङ्क्षणोरःशिरस्सु गाढः । शाखावदनकर्णकण्ठमेढ्रमुष्कपृष्ठपार्श्वोदरोरस्सु समः । अक्ष्णोः संधिषु च शिथिल इति ॥

व्रणनां स्थानको उपरथी पाटाना त्रण प्रकार अने कया प्रकारनो पाटो कया स्थानना व्रणउपर बांधवो ? ते.

११ व्रणनां स्थानकोना भेदने लीधे गाढ (दृढ) सम अने शिथिल (ढीलो) ए रीते बंधना त्रण प्रकार छे. दबावे एवो पण वेदना नहीं करे एवो जे बंध (पाटो) ते **गाढ** केहेवाय छे. श्वास खातो एटले पोचापणावाळो जे बंध ते **शिथिल** केहेवाय छे अने गाढ पण नहीं तथा शिथिल पण नहीं एवो जे बंध ते **सम** केहेवाय छे.

तेओमां कूला, कूख, काख, साथळनो संधि, हृदय अने माथुं एओमां **गाढबंध** बांधवो. बाहु, पग, मोहोडुं, कान, कंठ, शिश्न, वृषण, पीठ, पडखां, पेट अने वक्षःस्थल एओमां **समबंध** बांधवो. नेत्रोमां अने संधिओमां **शिथिलबंध** बांधवो.

१२ तत्र पैत्तिकं गाढस्थाने समं बध्नीयात् समस्थाने शिथिलं शिथिलस्थाने नैवं शोणितदुष्टं च ।

श्लैष्मिकं शिथिलस्थाने समं समस्थाने गाढं गाढस्थाने गाढतरमेवं वातदुष्टं च ॥

दोषोउपरथी पाटा बांधवानो भेद.

१२ जो व्रण पित्तसंबंधी होय तो गाढबंध बांधवाना ठेकाणामां समबंध बांधवो, समबंध बांधवाना ठेकाणामां शिथिलबंध बांधवो अने शिथिलबंध बांधवाना ठेकाणामां मुद्दल बांधवोज नहीं. व्रण जो रुधिरथी दुष्ट होय तो पण पित्तसंबंधी व्रण प्रमाणेज समजवुं.

जो व्रण कफसंबंधी होय तो शिथिलबंध बांधवाना ठेकाणामां समबंध बंध बांधवो, समबंध बांधवाना ठेकाणामां गाढबंध बांधवो अने गाढबंध बांधवाना ठेकाणामां अतिगाढबंध बांधवो. व्रण जो वायुसंबंधी होय तो पण कफसंबंधी व्रण प्रमाणेज समजवुं.

१३ तत्र पैत्तिकं शरदि ग्रीष्मे द्विरह्नो बध्नीयाद्रक्तोपद्रुतमप्येवम् ।

श्लैष्मिकं हेमन्तवसन्तयोस्त्र्यहाद्वातोपद्रुतमप्येवम् ॥

ऋतुओना भेदथी पाटा बांधवानो भेद.

१३ जो पित्तसंबंधी व्रण होय तो शरदृऋतुमां अने ग्रीष्मऋतुमां तेना उपर एक दिवसमां बे वार पाटो बांधवो. व्रण रुधिरथी दुष्ट होय तो पण ए प्रमाणेज करवुं.

जो कफसंबंधी व्रण होय तो हेमंतऋतुमां अने वसंतऋतुमां तेना उपर त्रण त्रण दिवसे पाटो बांधवो. व्रण वायुसंबंधी होय तो पण ए प्रमाणेज समजवुं.

१४ एवमभ्यूह्य बन्धविपर्ययं च कुर्वीत ॥

वैद्ये पोताना तर्कथी पण पाटानो फेरफार करवो.

१४ उपर पाटा बांधवाना फेरफारोनां कारणो जणाव्यां ते प्रमाणे वैद्ये बीजां पण केटलांएक कारणोनो पोताथी पण तर्क करीने पाटा बांधवाना फेरफारो करवा. (जेम के पित्त अने कफ ए बन्नेसंबंधी व्रण होय तो ग्रीष्मऋतुमां तथा शरदृऋतुमां नित्य प्रातःकाले पाटो बांधवो. हेमंतऋतुमां पित्तसंबंधी व्रणने नित्य पाटो बांधवो अने वर्षा वगेरे ऋतुओमां पण पित्त तथा कफ ए बन्नेसंबंधी व्रणने बे बे दिवसे सायंकाले पाटो बांधवो इत्यादि.)

१५ तत्र समशिथिलस्थानेषु गाढबद्धे विकेशिकौषधनैरर्थक्यं शोफवेदनाप्रादुर्भावश्च ।

गाढसमस्थानेषु शिथिलबद्धे विकेशिकौषधपतनं पट्टसंचाराद्व्रणवर्त्मावघर्षणमिति ।

गाढशिथिलस्थानेषु समं बद्धे च गुणाभाव इति ।

गाढ, सम अने शिथिल एओमांथी जे बंध जे ठेकाणे बांधवो जोईए ते ठेकाणे ते बंध नहीं बांधतां बीजो बंध बांधवाथी नुकसान.

१५ शरीरना जे प्रदेशोमां सम के शिथिलबंध बांधवो जोइए ते प्रदेशोमां गाढबंध बांधवामां आवे तो व्रणमां नाखेली वाट तथा उपर लगावेलो कल्क व्यर्थ जाय छे अने सोजामां वेदना प्रकट थाय छे.

शरीरना जे प्रदेशोमां गाढ के समबंध बांधवो जोईए ते प्रदेशोमां शिथिलबंध बांधवामां आवे तो व्रणमां नाखेली वाट तथा उपर लगावेलो कल्क पडी जाय छे अने बंधनो संचार थवाथी व्रणनुं मोहोडुं पण घसाय छे.

शरीरना जे प्रदेशोमां गाढ के शिथिलबंध बांधवो जोईए ते प्रदेशमां समबंध बांधवामां आवे तो योग्य गुण थतो नथी.

१६ अविपरीतबन्धे वेदनोपशान्तिरसृक्प्रसादो मार्दवं च ॥

योग्य बंध (पाटो) बांधवाथी लाभ.

१६ अविपरीत एटले जे स्थानपर जेवो बंध बांधवो जोईए तेवोज बंध बंधायाथी वेदनानी उपशांति थाय छे, लोहीनी स्वच्छता थाय छे अने कोमळपणुं थाय छे.

१७ अबध्यमानो दंशमशकतृणकाष्ठोपलपांशुशीतवातातपप्रभृतिभिर्विशेषैरभिहन्यते ।

व्रणो विविधवेदनोपद्रुतश्च दुष्टतामुपैत्यालेपनादीनि चास्य विशोषमुपयान्ति ॥

पाटो नहीं बांधवाथी नुकसान.

१७ पाटाथी नहीं बांधवामां आवतो व्रण डांस, मच्छर, खड, काष्ठ, पथरा, रज, थंडी, पवन तथा तडको इत्यादि विशेषोथी अभिघात पामे छे, विविध वेदनाओथी पीडाईने दुष्टता पामेछे अने ते व्रणनी उपर जे लेपादिक कर्यां होय ते पण सुकाई जाय छे.

१८ चूर्णितं मथितं भग्नं विश्लिष्टमतिपातितम् ।
अस्थिस्नायुशिरं छिन्नमाशु बन्धेन रोहति ॥
सुखमेवं व्रणी शेते सुखं गच्छति तिष्ठति ।
सुखं शय्यासनस्थस्य क्षिप्रं संरोहति व्रणः ॥

पाटो बांधवाथी असाधारण लाभ.

१८ चूर्णित थएलां, हलबली गएलां, भांगीगएलां, संधिथी भ्रष्ट थएलां, स्थानथी भ्रष्ट थईने लटकतां अने छेदाई गएलां अस्थिओ, स्नायुओ तथा शिराओ पाटो बंधायाथी तुरतज साजां थई जाय छे. व्रणवाळो माणस पण पाटो बंधायाथी सुखे सुई शके छे, सुखे चाली शके छे, सुखे उभी शके छे अने सुखथी सुई शकता तथा सुखथी बेसी शकता ते माणसनो व्रण पण सुखासनादिक स्थितिमांज तुरत रुझाई जाय छे.

१९ अवन्ध्याः पित्तरक्ताभिघातविषनिमित्ता यदा चोपदाहपाकरागवेदनाभिभूताः क्षाराग्निदग्धाः पाकात्प्रकुपिताः प्रविशीर्णमांसाश्च भवन्ति ।

कुष्ठिनामग्निदग्धानां पिडका मधुमेहिनाम् ।
कर्णिकाश्चोन्दुरुविषे विषजुष्टव्रणाश्च ये ॥
मांसपाके न बध्यन्ते गुदपाके च दारुणे ।

अमुक प्रकारना व्रणोनी उपर पाटो नहीं बांधवो जोईए.

१९ पित्त, रुधिर, अभिघात के विष एओथी उत्पन्न थएला व्रणो ज्यारे पोताना एक प्रदेशमां के सर्व प्रदेशमां चोसथी, बळतराथी, पाकवाथी, रताशथी के वेदनाथी व्याप्त थया होय त्यारे तेओने पाटाथी नहीं बांधवा जोईए. क्षारथी के अग्निथी बाळेला व्रणो पण ज्यारे पाकवाथी प्रकुपित थया होय के वींखाई गएलां मांसोवाळा थईगया होय त्यारे तेओने पाटाथी नहीं बांधवा जोईए.

कोढवाळा तथा अग्निथी दग्ध थएला माणसोनुं मांस पाक्युं होय त्यारे तेओना व्रणोने पाटाथी बांधवा नही. मधुप्रमेहवाळा माणसोनी पिडकाओने (एक जातनी फोल्लीओने) पाटाथी बांधवी नही. उंदरना झेरथी जे कर्णिकाओ (फळो रेहेवानां छिद्रोवाळी कमळोनी डोडीओ जेवी आकृतिओ) थएली होय तेओने तथा बीजा पण विषवाळा व्रणोने पाटाथी बांधवा नही. दारुण गुदपाक थयो होय तेने पण पाटो बांधवो नही. (उंदरना झेरथी कर्णिकाओ थवा विषे कल्पस्थानना छठ्ठा अध्यायनो चोथो, अढारमो तथा एकवीशमो विषय जुओ.)

२० स्वबुद्ध्या चापि विभजेत् कृत्याकृत्यांश्च बुद्धिमान् ॥
देशं दोषं च विज्ञाय व्रणं च व्रणकोविदः ।
ऋतूंश्च परिसंख्याय ततो बन्धान्निवेशयेत् ॥

वैद्ये पोतानी बुद्धिथी पण साध्योनुं तथा असाध्योनुं विवेचन करी लेवुं अने प्रदेशादिक जोईने पाटा बांधवा.

२० बुद्धिमान् वैद्ये पोतानी बुद्धिथी पण साध्य व्रणोनुं तथा असाध्य व्रणोनुं विवेचन करी लेवुं. व्रणोने जाणनारा वैद्ये प्रदेश, दोष, व्रण तथा ऋतु एओनी उपर बराबर ध्यान आपीने पछी पाटा बांधवा.

२१ ऊर्ध्वं तिर्यगधस्ताच्च यन्त्रणा त्रिविधा मता ।
यथा च बध्यते बन्धस्तथा वक्ष्याम्यशेषतः ॥
घनां कवलिकां दत्त्वा मृदु चैवापि पट्टकम् ।
विकेशिकामौषधं च नातिस्निग्धं समाचरेत् ॥

प्रक्लेदयत्यतिस्निग्धा तथा रूक्षा क्षिणोति च ।
युक्तस्नेहा रोपयति दुर्न्यस्ता वर्त्म घर्षति ॥
विषमं च व्रणं कुर्यात्स्तम्भयेत्स्रावयेत्तथा ।
यथाव्रणं विदित्वा तु योगं वैद्यः प्रयोजयेत् ॥
पित्तजे रक्तजे वापि सकृदेव परिक्षिपेत् ।
असकृत्कफजे वापि वातजे च विचक्षणः ॥
तलेन प्रतिपीड्याथ स्रावयेदनुलोमतः ।
सर्वांश्च बंधान्गूढान्तान् संधींश्च विनिवेशयेत् ॥
ओष्ठस्याप्येष संधाने यथोद्दिष्टो विधिः स्मृतः ।
बुद्ध्योत्प्रेक्ष्याभियुक्तेन तथा चास्थिषु जानता॥
उत्तिष्ठतो निषण्णस्य शयनं चापि गच्छतः ।
गच्छतो विविधैर्यानैर्नास्य दुष्यति स व्रणः ॥
ये च स्युर्मांससंस्था वै त्वग्गताश्च तथा व्रणाः।
संध्यस्थिकोष्ठप्राप्ताश्च शिरास्नायुगतास्तथा ॥
तथावगाढगम्भीराः सर्वतो विषमस्थिताः ।
नैते साधयितुं शक्या ऋते बन्धाद्भवन्ति हि ॥

उपर कहेला विषयोनो सामान्य संग्रह.

२१ पाटाना छेडाओनी गाठ्योनुं बांधवुं उंचे, आडुं तथा नीचे एम त्रण प्रकारनुं स्वीकारेलुं छे. जे रीते पाटो बंधाय ते रीति संपूर्ण रीते कहुं छुं. औषध उपर घाटी पोटीस अथवा छालपानडां वगेरेनी घाटी थेपली मुकीने ते उपर कोमळ पाटो बांधवो. व्रणमां खोसवानी वाट तथा उपर लगाववानो कल्क अतिस्निग्ध के अतिरुक्ष थाय एम नहीं करवुं. वाट अतिस्निग्ध होय तो व्रणने क्लेदवाळो करेछे, अतिरुक्ष होय तो व्रणना होठोने छेदी नाखे छे अने विषम रीते नखाएली होय तो व्रणना मोहोडाने घसे छे. वाट जो जेटलो जोईए तेटलाज स्नेहवाळी होय तो व्रणमां भरती लावीने रुझावे छे. वैद्ये व्रणनी परीक्षा करीने तेने उंचो नीचो करवानी, स्तब्ध करवानी तथा तेमांथी स्राव करवानी योजना करवी. व्रण जो पित्तजन्य के रुधिरजन्य होय तो विचक्षण वैद्ये एकवडो पाटो बांधवो. अने कफजन्य के वातजन्य होय तो बेवडो त्रेवडो बांधवो. वैद्ये पोताना हाथना तळांथी दबावीने अनुलोम रीते (सवळी रीते) व्रणमांथी पाचने स्रवाववो अने सघळा पाटाओने तथा सांधाओने तेओना छेडा गुप्त रहे एवी रीते गोठववा. त्रुटी गएला होठने सांधवामां पण पूर्वोक्त रीति प्रमाणे योग्य गोठवण करवी. शारीरने जाणनारा प्रामाणिक वैद्ये अस्थिओने सांधवामां पण बुद्धिथी तर्क करीने ते क्रिया करवी. जो योग्य गोठवण करवामां आवी होय तो उठतां, बेसतां, सुतां अने विविध वाहनोपर चडीने चालतां पण व्रणमां कशो बगाड थतो नथी. जो व्रणो मांसने, त्वचाने, संधिने, अस्थिने, कोठाने, शिराने के स्नायुने प्राप्त थया होय, उंडा पेसवाने लीधे गंभीर गतिवाळा होय अने सघळी तरफथी विषमस्थितिवाळा होय तो तेओ पाटा बांध्या विना वश्य करी शकाता नथी.

१ होठनो तथा अस्थिनो विषय प्रकृतथी असंबद्ध जेवो लागे छे.

अध्याय १९ मो.

१ **अथातो व्रणितोपासनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥**

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'व्रणितोपासनीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ **व्रणिनः प्रथममेवागारमन्विच्छेत्तच्चागारं प्रशस्तवास्त्वादिकं कार्यम् ।**
प्रशस्तवास्तुनि गृहे शुचावातपवर्जिते ।
निवाते न च रोगाः स्युः शारीरागन्तुमानसाः ॥
तस्मिञ्छयनमसम्बाधं स्वास्तीर्णं मनोज्ञं प्राक्छिरस्कं सशस्त्रं कुर्वीत ।
सुखचेष्टाप्रचारः स्यात्स्वास्तीर्णे शयने व्रणी ।
प्राच्यां दिशि स्थिता देवास्तत्पूजार्थं नतं शिरः॥
तस्मिन्सुहृद्भिरनुकूलैः प्रियंवदैरुपास्यमानो यथेष्टमासीत ।

२ व्रणवाळानी सेवा करवा तथा व्रणवाळाए वर्त्तवा विषयनो.

सुहृदो विक्षिपन्त्याशु कथाभिर्व्रणवेदनाः ।
आश्वासयन्तो बहुशस्त्वनुकूलाः प्रियंवदाः ॥

व्रणवाळाने माटे घर तथा तेमां तेणे शयन करवा वगेरेनो प्रकार.

२ व्रणवाळाने माटे प्रथमज घरनी सगवड करवी अने ते घर सारा प्रदेशमां करवामां आवेलुं तथा अंदर सुवा बेसवा वगेरेना उत्तम प्रदेशोवाळुं करवुं. जे घर सारा प्रदेशोवाळुं, स्वच्छ, तडका वगरनुं अने पवन वगरनुं होय तेमां शारीर, आगंतुक के मानसिक कोई पण रोगो थता नथी. ए घरमां सारी रीते बीछावेलुं, सांकड वगरनुं, मनने प्रिय लागे एवुं तथा उगमणी तरफ ओशीसावाळुं शयन करवुं अने ते शयननी पासे राक्षसादिकना निवारणने माटे शस्त्रो राखवां. शयन जो सारी रीते बीछावेलुं होय तो व्रणवाळो माणस तेमां सुखथी पडखां पालटवा वगेरे क्रियाओ करी शके छे. पूर्वदिशामां देवताओ रेहेछे एटला माटे तेओने मान आपवा सारू ते तरफ माथुं राखवानुं कह्युं छे. व्रणवाळाए ए शयनमां यथेष्ट रीते बेसवुं अने प्रिय बोलनारा तथा अनुकूल वर्त्तनारा मित्रलोकोए ते व्रणवाळानी सेवा करवी. घणी घणी रीते आश्वासना करता अने प्रिय लागे एवी इतिहासादिकनी वातो करता अनुकूल मित्रो पोतानी वातोथीज तुरत व्रणनी वेदनाओने शांत करीदेछे.

३ न च दिवा निद्रावशगः स्यात् ।
दिवास्वप्नाद्व्रणे कण्डूर्गात्राणां गौरवं तथा ।
श्वयथुर्वेदना रागः स्रावश्चैव भृशं भवेत् ॥
उत्थानसंवेशनपरिवर्तनचङ्क्रमणोच्चैर्भाषणादिषु चात्मचेष्टास्वप्रमत्तो व्रणं संरक्षेत् ।
स्थानासनं चङ्क्रमणं यानयानातिभाषणम् ।
व्रणवान्न निषेवेत शक्तिमानपि मानवः ॥
उत्थानाद्यासनं स्थानं शय्यां चातिनिषेविता ।
प्राप्नुयान्मारुतादंगे रुजस्तस्माद्विवर्जयेत् ॥
गम्यानां च स्त्रीणां संदर्शनसंभाषणसंस्पर्शनानि दूरतः परिहरेत् ।
स्त्रीदर्शनादिभिः शुक्रं कदाचिच्चलितं स्रवेत् ।
ग्राम्यधर्मकृतान्दोषान् सोऽसंसर्गेऽप्यवाप्नुयात् ॥

व्रणवाळाए दिवसनी निद्रा छोडी देवी, शारीर चेष्टाओ बहु करवी नहीं अने गम्य स्त्रीओनो पण समागम छोडी देवो.

३ व्रणवाळाए दिवसनी निद्रा करवी नहीं. कारण के दिवसे उंघवाथी व्रणमां खरज आवेछे, गात्रोमां भारेपणुं थाय छे, सोजो थाय छे, वेदना थायछे, रताश थाय छे अने अत्यंत स्रावपण थाय छे[1]. उठवुं, सुवुं, पडखां पालटवां, फरवुं तथा उंचा स्वरथी बोलवुं इत्यादिक शारीर चेष्टाओ करवाना समयमां व्रणवाळाए सावधानपणाथी व्रणनुं संरक्षण करवुं. व्रणवाळा माणसे पोतामां शक्ति छतां पण उभा रेहवानुं, बेसवानुं, आम तेम जवा आववानुं, वाहनपर बेसीने फरवानुं अने अतिभाषणनुं सेवन करवुं नहीं. व्रणवाळो माणस जो उठवा वगेरेनुं, बेसी रेहेवानुं, उभा रेहेवानुं अने शय्यानुं पण अत्यंत सेवन करे तो पवनने लीधे अंगमां वेदनाओने प्राप्त थाय छे एटला माटे तेवां अतिसेवनोने छोडी देवां. जे स्त्रीओ गम्य होय तेओनां पण दर्शन, संभाषण अने स्पर्शन एओने दूरथी छोडी देवां. कारण के स्त्रीओनां दर्शन वगेरे कारणथी चलित थएलुं वीर्य जो कदाच स्रवे तो स्त्रीओनो संग नहीं कर्या छतां पण मैथुनथी थती विपत्तिओ प्राप्त थाय छे.

४ नवधान्यमापतिलकलायकुलत्थनिष्पावहरितकशाकाम्ललवणकटुकगुडपिष्टविकृतिव-

१ खरज तथा भारेपणुं कफथी, सोजो तथा वेदना वायुथी, रताश पित्तथी अने स्राव रुधिरथी थाय छे माटे दिवसनी निद्रा सघळा दोषोने उत्पन्न करे छे एम समजवुं.

हरितशुष्कशाकाजाविकानूपौदकमांसवसाशीतो-
दककृशरापायसदधिदुग्धतक्रप्रभृतीन्परिहरेत् ।
तक्रान्तो नवधान्यादिर्योऽयं वर्गः प्रकीर्तितः ।
दोषसंजननो ह्येष विज्ञेयः पूयवर्धनः ॥

मद्यपश्च मैरेयाऽरिष्टासवसीधुसुराविकारान् परिहरेत् ।
मद्यमम्लं तथा रूक्षं तीक्ष्णमुष्णं च वीर्यतः ।
आशुकारि च तत्पीतं क्षिप्रं व्यापादयेद्व्रणम् ॥

व्रणवाळाए खावापीवामां छोडी देवाना पदार्थो.

४ नवां धान्यो, अडद, तल, वटाणा, कळथी, वाल, सरगवानुं चुकानुं तथा लुणी वगेरेनुं हरितशाक, खाटो रस, खारो रस, तीखो रस, गोळना विकारो, चोखाना लोटना विकारो, सूकेलुं मांस, सूकां शाक, बकरानुं मांस, गाडरनुं मांस, जलप्राय प्रदेशमां फरनारा सूवर वगेरे पशुओनुं तथा सारस वगेरे पक्षीओनुं मांस, जलचर जंतुओनुं मांस, चरबी, टाढुं जळ, तिल चोखा तथा अडदनी राब के खीचडी, दूधपाक, दहीं, दूध तथा छाश ए वगेरेनो त्याग करवो. आ नवां धान्यथी मांडीने छाश सुधीनो जे वर्ग कह्यो ते व्रणने दुष्ट करनार छे अने परुने वधारनार छे. मद्य पीवानो अभ्यास होय तो पण मैरेय (सुराने तथा आसवने मिश्रित करी मथनो योग आपीने करेलुं मद्य) अरिष्ट, आसव, सीधुं तथा सुरां एओना विकारोनो त्याग करवो. कारण के मद्य खाटुं छे, रुक्ष छे, तीक्ष्ण छे, उष्णवीर्यवाळुं छे अने झडपथी प्रवृत्ति करनारूं छे तेथी ते जो पीवामां आवे तो तुरतज व्रणनी खराबी करेछे.

५ वातातपरजोधूमावश्यायातिसेवनातिभोजनानिष्टश्रवणदर्शनेर्ष्यामर्षभयक्रोधशोकध्यानरात्रिजागरणविषमासनाशनशयनोपवासवाग्व्यायामस्थानचङ्क्रमणशीतवातविरुद्धाशनाजीर्णमक्षिकाद्याबाधाः परिहरेत् ॥
व्रणिनः संप्रतप्तस्य कारणैरेवमादिभिः ॥
क्षीणशोणितमांसस्य भुक्तं सम्यङ् जीर्यति ॥
अजीर्णात्पवनादीनां विभ्रमो बलवान्भवेत् ।
ततः शोफरुजास्रावदाहपाकानवाप्नुयात् ॥

व्रणवाळाए छोडी देवानी क्रियाओ तथा पीडाओ.

५ पवननुं अतिसेवन, तडकानुं अतिसेवन, रजनुं अतिसेवन, धुमाडानुं अतिसेवन, तुषारनुं अतिसेवन, अतिभोजन, अनिष्ट शब्दोनुं श्रवण, अनिष्ट पदार्थोनुं दर्शन, ईर्ष्या, असहनता, भय, क्रोध, शोक, चिंता, रातनुं जागरण, विषम बेठक, विषम भोजन, विषम शयन, उपवास, घणुं भाषण, उभुं रेहवुं, आडुं अवळुं फरवुं, थंडी, पवन, वि-

१ आ वर्गमां केटलाएक पदार्थो वातहर छे, केटलाएक पित्तहर छे अने केटलाएक कफहर पण छे तेथी अहीं दोषोनी वृद्धि कही नथी पण व्याधिबीज कही छे.

२ पकावेलां औषधोथी तथा जळथी जे मद्य करवामां आव्युं होय ते अरिष्ट केहेवाय छे. जेम के द्राक्षारिष्ट.

३ काचां औषधोथी तथा काचां पाणीथी जे मद्य करवामां आव्युं होय ते आसव केहेवाय छे. जेमके लोहासव.

४ शेलडीना पाका अथवा काचा रसथी करवामां आवेलुं मद्य.

५ चोखाना अथवा साठी चोखाना लोट वगेरेथी करवामां आवेलुं मद्य सुरा केहेवाय छे.

६ केटलाएक केहे छे के जे मद्यो खाटा वगेरे गुणोवाळां छे ते सघळांओनो व्रणवाळाए त्याग करवो पण जे मद्यो द्राक्षा वगेरेथी करवामां आवे छे तेओमां तेवा गुणो नथी अने तेओ रक्तपित्तादिकमां पण देवाय छे माटे वैद्ये व्रणवाळाने कोईक वखते एवां मद्यो देवामां हरकत गणवी नहीं एम ग्रंथकर्त्तानो आशय छे.

७ झाझु जमवुं, थोडुं जमवुं तथा समयवगर जमवुं ए विषम भोजन गणाय छे.

८ जो के राते जागवुं अने दिवसे सुवुं एज विषम शयन छे अने तेनो निषेध प्रथमज केहेलो छे तो पण अहीं फरीवार जे निषेध कर्यो छे ते विषम शयननुं अत्यंत खराबपणुं सूचववाने माटे कर्यो छे. (डल्लन.)

रुद्ध भोजन, अजीर्ण अने माखीओ तथा मच्छर वगेरेनी पीडा, एओनो त्याग करवो. कारण के जेनुं रुधिर तथा मांस क्षीण थएलुं होय छे एवा व्रणवाळाने उपर कहेलां पक्वनां अतिसेवन आदि कारणोथी संताप थाय तो खाधेलुं अन्नादिक सारी रीते पचतुं नथी, एवी रीते अजीर्ण थयाथी वात, पित्त, तथा कफ एओनी स्थानांतरमां जवा आदि बलवत्तर गडबड थाय छे अने ते गडबड थवाथी व्रणमां सोजो, वेदना, अतिस्राव, बळतरा तथा पाक थाय छे. (सोजो तथा वेदना वायुथी, अतिस्राव कफथी अने बलतरा तथा पाक पित्तथी थाय छे.)

६ सदा नीचनखरोम्णा शुचिना शुक्लवाससा शान्तिमंगलदेवताब्राह्मणगुरुपरेण भवितव्यमिति । तत्कस्य हेतोर्हिंसाविहाराणि हि महावीर्याणि रक्षांसि पशुपतिकुबेरकुमारानुचराणि मांसशोणितप्रियत्वात्क्षतजनिमित्तं व्रणिनमुपसर्पन्ति सत्कारार्थं जिघांसूनि वा कदाचित् ॥

भवति चात्र ॥

तेषां सत्कारकामानां प्रयतेनान्तरात्मना ।
धूपबल्युपहारांश्च भक्ष्यांश्चैवोपहारयेत् ॥

ते तु संतर्पिता आत्मवन्तं न हिंस्युः ।

तस्मात्सततमतन्द्रितो जनपरिवृतो नित्यदीपोदकशस्त्रस्रग्दामपुष्पलाजाद्यलंकृते वेश्मनि सम्पन्मङ्गलमनोनुकूलाः कथाः शृण्वन्नासीत ॥

सम्पदाद्यनुकूलाभिः कथाभिः प्रीतमानसः ।
आशावान् व्याधिमोक्षाय क्षिप्रं सुखमवाप्नुयात् ।

ऋग्यजुःसामाथर्ववेदाभिहितैरपरैश्चाशीर्विधानैरुपाध्याया भिषजश्च संध्ययो रक्षां कुर्युः॥

सर्षपारिष्टपत्राभ्यां सर्पिषा लवणेन च ।
द्विरह्नः कारयेद्धूपं दशरात्रमतन्द्रितः ॥

छत्रातिऽच्छत्रे लाङ्गूलीं जटिलां ब्रह्मचारिणीं लक्ष्मीं गुहामतिगुहां शतवीर्यां सहस्रवीर्यां सिद्धार्थांश्च शिरसा धारयेत् ॥

व्यज्येत वालव्यजनैर्व्रणं न च विघट्टयेत् ।
न तुदेन्न च कण्डूयेच्छयानः परिपालयेत् ।
अनेन विधिना युक्तमादावेव निशाचराः ।
वनं केसरिणाक्रान्तं वर्जयन्ति मृगा इव ॥

राक्षसो वगेरेनो उपद्रव न थवा देवानो विधि.

६ व्रणवाळाए सर्वदा पोताना नखो अने वाळो सादा राखवा, पवित्र रेहेवुं, धोळां वस्त्रो पेहेरवां अने शांतिमंगल, देवताओनां पूजन, ब्राह्मणोनां पूजन तथा गुरुओनां पूजन एओमां तत्पर रेहेवुं. कारण के महादेवनी, कुबेरनी तथा कार्तिकेयस्वामीनी सेवा करनारा केटलाएक राक्षसो (ग्रहो) के जेओ हिंसाने एकजातनी क्रीडारूप माननारा छे अने अत्यंत बलवान् छे तेओ पोताने मांस तथा रुधिर प्यारां होवाथी कोई वखते मारीनाखवानी इच्छाथी अने घणुं करीने पूजा लेवानी इच्छाथी व्रणवाळानी पासे आवे छे.

आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "पूजा लेवानी इच्छावाळा ए राक्षसोने माटे वैद्ये सावधान अंतःकरणथी धूपो करावा, पूजनो कराववां, पशुओनां बलिदान देवराववां अने भक्ष्यो पण अपाववां."

आ रीते तृप्त करेला ए राक्षसो जितेंद्रिय रेहेनारा ए व्रणवाळाने दुःख देता के मारता नथी. राक्षसोना हाथथी घात न थवामां सादाई, पवित्रता, देववगेरेनुं पूजन अने शुभ स्थानमां निवास इत्यादि बहु उपयोगी थाय छे एटला माटे व्रणवाळाए निरंतर आलस्यथी रहित रहीने सारा लोकोनो समागम राखवो अने अखंड दीवाथी, पुष्पोनी माळाओथी, जळथी, शस्त्रोथी, हार आदि आभरणोथी, पुष्पोथी तथा चोखानी धाणी आदिथी शणगारेला घरमां रेहेवुं. तेमज संपत्तिने, मंगळने तथा मनने

१ जेमां मद्य तथा घी समान भागे आव्यां होय इत्यादि भोजनो.

अनुकूलता आपनारी कथाओ सांभळतां रेहेवुं. संपत्तिवगेरेने अनुकूलता आपनारी कथाओथी प्रसन्न रेहेता मनवाळो माणस व्याधिथी छुटवानी दृढ आशावाळो थवाथी तुरत सुख पामे छे. उपाध्याय लोकोए अने वैद्योए ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद एओमां कहेलां तथा ते उपरांत बीजां पण आशीर्वादोनां विधानोथी प्रातःकाले तथा सायंकाले व्रणवाळानी रक्षा करवी. वैद्ये काळजी राखीने दश रात सुधी एक दिवसमां बेवार सर्षप, लींबडानां पानडां, घी तथा लूण एओनो धूप कराववो के जेथी राक्षसोनी पीडा, रुधिर आदिनी पीडा अने मांखीओ आदिनी पीडा पण टळी जाय छे.

व्रणवाळाए छत्रा, अतिच्छत्रा[1], कौवच, जटामांसी, ब्राह्मी, खीजडी, शालिपर्णी, पृष्टिपर्णी, शतावरी, सफेद धोकड, अने धोळा सर्षप ए औषधीओने पण माथापर धऱ्या करवी. पोताना शरीरने चामरोथी पवन नखाव्या करवो. व्रणने हलाववो नहीं, खोतरवो नहीं तथा खंजोरवो पण नहीं अने शयनना समयमां पण तेनुं परिपालन करवुं.

जेम केसरीसिंहे दबावेला वनने मृगो प्रथमथीज छोडी देछे तेम आ विधिथी संयुक्त रेहेगारा व्रणवाळा माणसने राक्षसो प्रथमथीज छोडी देछे.

७ जीर्णशाल्योदनं स्निग्धमल्पमुष्णं द्रवोत्तरम् ।
भुञ्जानो जाङ्गलैर्मांसैः शीघ्रं व्रणमपोहति ॥
तण्डुलीयकजीवन्तीसुनिषण्णकवास्तुकैः ।
वालमूलकवार्ताकपटोलैः कारवेल्लकैः ॥
सदाडिमैः सामलकैर्घृतभृष्टैः ससैन्धवैः ।
अन्यैरेवंगुणैर्वापि मुद्गादीनां रसेन वा ॥
सक्तून् विलेपीं कुल्माषं जलं चापि शृतं पिबेत् ।

व्रणवाळाए आहारमां उपयोग करवाना पदार्थो.

७ जुना[2] चोखानो द्रव वगरनो,[3] स्निग्ध, उनो अने थोडो भात हरिण आदि जांगल पशुओना मांसनी[4] साथे खावामां आवे तो ते भात तुरतज व्रणने मटाडे छे. तांदळजो, खरखोडी, सुनिषण्णक[5], टांको, कोमळ मूळा, रींगणां, पटोळ, तथा कारेलां एओने दाडिमनो अने आमळांनो योग आपी, घीमां शेकी, सैंधव नाखीने तेओनी साथे अथवा एओना जेवा गुणोवाळां बीजां कंटोलां वगेरे शाकोनी साथे अथवा मगवगेरेना रसनी साथे जवनो अथवा चोखानी धाणीनो साथवो, जवनी के चोखानी थोडा द्रववाळी राब अथवा जवनी घुघरी खावी अने उनुं करेलुं पाणी पीवुं.

८ व्रणे श्वयथुरायासात्स च रागश्च जागरात् ।
तौ च रुक्च दिवास्वापात्ताश्च मृत्युश्च मैथुनात् ॥

निषिद्ध आचरण करवाथी हानि.

८ परिश्रम करवाथी व्रणमां सोजो थाय छे. जागरण करवाथी सोजो तथा रताश थाय छे, दिवसे निद्रा करवाथी सोजो रताश तथा वेदना थाय छे अने मैथुन करवाथी सोजो, रताश, वेदना तथा मरण थाय छे.

९ दिवा न निद्रावशगो निवातगृहगोचरः ।
व्रणी वैद्यवशे तिष्ठञ्छीघ्रं व्रणमपोहति ॥
एवंवृत्तसमाचारो व्रणी सम्पद्यते सुखी ।
आयुश्च दीर्घमाप्नोति धन्वन्तरिवचो यथा ॥

---

१ छत्रा अने अतिछत्रा ए बे कुत्रानी जातो छे. कुत्रो भूतसंबंधी पीडाने हरनार छे.

२ नवां धान्यनो प्रथमज निषेध करेलो छतां अहीं चोखाने 'जुना' ए विशेषण आप्युं ते 'एक' वर्षना जुना चोखा 'लेवा' एम सूचववाने माटे छे. (डल्हन).

३ जो के मूळना 'द्रवोत्तर' ए शब्दथी 'अधिक द्रववाळो' एवो अर्थ पण थाय छे पण व्रणवाळाने द्रवनो निषेध छे तेथी आ बीजो अर्थ लीधो छे.

४ जांगल पशुओना मांसनो उपयोग व्रणमां भरती लाववाना समयमां कराववो. केमके मांस मांसथी वधे छे.

५ आ शाक चार चार पानडांवाळुं थाय छे, जळमां उगे छे अने गुजरातीमां ओटींगण केहेवाय छे.

व्रणवाळाए राखवानी वर्त्तणुकनो संग्रह.

९ व्रणवाळो माणस जो दिवसे निद्रा न करे, पवन वगरना घरमां रहे तथा वैद्यना कह्या प्रमाणेज वर्त्ते तो तेनो व्रण तुरत मटी जाय छे. व्रणवाळो माणस आ प्रमाणे वर्त्ते तो सुखी थाय छे अने लांबा आयुष्यने प्राप्त थाय छे एम भगवान् धन्वंतरिए कह्युं छे.

अध्याय २० मो.

१ अथातो हिताहितीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'हिताहितीय'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ यद्वायोः पथ्यं तत्पित्तस्यापथ्यमित्यनेन हेतुना न किंचिद्द्रव्यमेकान्तेन हितमहितं वास्तीति केचिदाचार्या ब्रुवते तत्तु न सम्यक् । इह खलु यस्माद्द्रव्याणि स्वभावतः संयोगतश्चैकान्तहितान्येकान्ताहितानि हिताहितानि च भवन्ति । तत्रैकान्तहितानि जातिसात्म्यात् सलिलघृतदुग्धौदनप्रभृतीनि। एकान्ताहितानि दहनपचनमारणादिषु प्रवृत्तान्यग्निक्षारविषादीनि । संयोगादपराणि विषतुल्यानि भवन्ति । हिताऽहितानि तु यद्वायोः पथ्यं तत्पित्तस्यापथ्यमिति ।

अतः सर्वप्राणिनामयमाहारार्थे वर्ग उपदिश्यते।

तद्यथा । रक्तशालिषष्टिकगंगुकमुकुन्दकपाण्डुकपीतकप्रमोदककालकाशनकपुष्पककर्दमकशकुनाहृतसुगन्धककलमनीवारकोद्रवोद्दालकश्यामाकगोधूमवेणुयवादयः । एणहरिणकुरङ्गमृगमातृकाश्वदंष्ट्राकरालक्रकरकपोतलावतित्तिरिकपिञ्जलवर्तीरवर्तिकादीनां मांसानि । मुद्गवनमुद्गमकुष्ठकलायमसूरमङ्गल्यचणकहरेण्वाढकीसतीनाः । चिल्लिवास्तुकसुनिषण्णकजीवन्तीतण्डुलीयकमण्डूकपर्ण्यः । गव्यं घृतं सैन्धवदाडिमामलकमित्येष वर्गः सर्वप्राणिनां सामान्यतः पथ्यतमः ।

तथा ब्रह्मचर्यनिवातशयनोष्णोदकनिशास्वप्नव्यायामाश्चैकान्ततः पथ्यतमाः ।

एकान्तहितान्येकान्ताहितानि च प्रागुपदिष्टानि हिताहितानि तु यद्वायोः पथ्यं तत्पित्तस्यापथ्यमिति ॥

हितनो, अहितनो तथा हिताहितनो सामान्य निर्णय.

२ 'वायुने जे पथ्य छे ते पित्तने अपथ्य छे'[2] इत्यादि कारणोने लीधे 'अमुक द्रव्य हितज छे अने अमुक द्रव्य अहितज छे' एवो निर्णय करी शकातो नथी एम केटलाएक आचार्यो केहेछे पण तेओनुं ए केहेवुं बराबर नथी. केम के आ जगतमां स्वभावथी[3] अने संयोगथी[4] केटलांएक द्रव्यो हितरूपज छे, केटलांएक द्रवो अहितरूपज छे अने केटलांएक द्रव्यो हिताहितरूप पण छे. जेम के जळ, घी, दूध तथा भात वगेरे द्रव्यो मनुष्यना देहनी साथे जन्मथीज सात्म्य होवाथी हितरूपज छे. अग्नि, क्षार तथा झेर वगेरे द्रव्यो बाळवामां, पकावी नाखवामां तथा मारी नाखवा वगेरेमां प्रवृत्तिवाळां होवाथी अहितरूपज[5] छे अने

१ हित, अहित तथा हिताहित पदार्थोना विवेचन विषेनो.

२ तैल तथा कांजी वगेरे पदार्थो वायुने हितरूप छे अने पित्तने अहितरूप छे इत्यादि समजी लेवुं.

३ पदार्थोनी कोईपण अवस्थामां न छूटे एवी जे प्रकृति होय छे ते स्वभाव केहेवाय छे. जेम के अग्निनुं उष्णपणुं अने जळनुं द्रवपणुं.

४ एकथी वधारे पदार्थोनुं जे मिश्रित थवुं ते संयोग केहेवाय छे. संयोगमां पण स्वभावनुं कारणपणुं तो छेज.

५ अग्नि वगेरे द्रव्यो स्वस्थने अहित छे पण रोगीने तो ते ते रोगना अनुसारथी हितरूप छे.

केटलांएक द्रव्यो हितरूप छतां पण संयोगथी झेर जेवां थवाने लीधे अहितरूपज छे. केटलांएक द्रव्यो 'जे वायुने पथ्य छे ते पित्तने अपथ्य छे' इत्यादि नियमने लीधे हिताहितरूप पण छे.

आम छे एटला माटे सामान्य रीते सर्व मनुष्योना आहारने माटे नीचे प्रमाणे उपयोगी द्रव्योनो वर्ग निश्चित करवामां आव्यो छे.

राता चोखा, साठी चोखा, पीळा चोखा, काळा साठी चोखा, पांडु वर्णनां फोतरांवाळा चोखा, पीतक नामना चोखा, प्रमोदक नामना चोखा, कालक नामना चोखा, अशनक नामना चोखा, पुष्पक नामना चोखा, कर्दमक नामना चोखा, शकुनाहृत नामना चोखा, सुगंधक नामना चोखा, कलम नामना चोखा[१], बंटी, कोदरा, जंगली कोदरा, सामो, घऊं तथा पोला वांसना (बांवुना) जव इत्यादिक धान्यो, काळीआर मृगनुं मांस, राता हरिणनुं मांस, कुरंग नामना हरिणनुं मांस, नाहाना कदनी मोटा पेटवाळी कुरंगीनुं मांस, श्वदंष्ट्रानुं मांस, कस्तूरीमृगनुं मांस, नीलकंठ पक्षीनुं मांस, होलानुं मांस, लावांपक्षीनुं मांस, तेतरनुं मांस, गोरां तेतरनुं मांस, बटावडां पक्षीनुं मांस अने वैयां पक्षीनुं मांस इत्यादिक मांसो, मग[२], जंगली मग, मठ, वटाणा, मसूर, सफेद रंगना मसूर, चणा, हरेणु नामना वटाणा, तुवर, मटर, चील नामना टांकानुं शाक, टांकानुं शाक, सुनिषण्णकनुं शाक, राहारोडीनुं अथवा खरखोडीनुं शाक, तांदळजानुं शाक, ब्राह्मीनुं शाक, गायनुं घी, सैंधव, दाडिम अने आमळां ए वर्ग सघळां मनुष्योने सामान्य रीते अतिपथ्य छे.

माणसोने जेम उपर कहेलो वर्ग आहारमां सामान्य रीते अत्यंत हितकारी छे तेमज मैथुननी निवृत्ति, बहु पवन वगरनी जग्यामां शयन, उनुं पाणी, रातनी निद्रा अने नियमित कसरत एओ विहारोमां सामान्य रीते अत्यंत हितकारी छे.

जे द्रव्यो हितरूपज छे अने जे द्रव्यो अहितरूपज छे तेओ प्रथम केहेवाई गयां छे. हिताहित द्रव्योनुं ज्ञान 'वायुने जे पथ्य छे ते पित्तने अपथ्य छे' ए पद्धतिने अनुसरीने मेळवी लेवुं.

३ संयोगतस्त्वपराणि विषतुल्यानि भवन्ति। तद्यथा । वल्लीफलकवककरीराम्लफललवणकुलत्थपिण्याकदधितैलविरोहिपिष्टशुष्कशाकाजाविकमांसमद्यजाम्बवचिलिचिममत्स्यगोधावराहांश्च नैकध्यमश्नीयात्पयसा ॥

संयोगथी अहितरूप थनारां द्रव्योविषे.

३ केटलांएक द्रव्यो बीजां द्रव्योना संयोगथी विषतुल्य थाय छे. जेम के वेलाओमांथी उत्पन्न थएलां कोळां वगेरे फळो, चोमासामां थता मींदडाना टोप, केरडां, अंबाडा वगेरे खाटां फळो, खारा पदार्थो, कळथी, खोळ, दहीं, तेल, कोंटा फुटेलां धान्यो, चोखाना लोटना पदार्थो, शाकोनी सुकवणीओ, बकरांनुं मांस, घेटानुं मांस, मद्य, जांबु, राती लीटीओवाळां तथा राती आंख्योवाळां माछलां, चंदनघोनुं मांस अने सूवरनुं मांस एओ दूधना संयोगथी विषतुल्य

१ अहींसुधी जात जातना चोखाओनां नामोज आपेलां छे. हाल देशोदेशनी जुदी भाषाओने लीधे संस्कृत भाषानां ए नामो चालतां नथी तेथी गुजरातीमां अमुक संस्कृत नामवाळा ते अमुकज चोखा एम बतावी शकातुं नथी. हाल गुजरातीमां तो जिरासाल, पटणी, आंबेमोहोर, बंगाली, चीनीसकर, उडा, सांठेसाली तथा बीरबटी इत्यादि नामो चालेछे तेओमां जेम योग्य जणाय तेम संस्कृत नामोनी कल्पना करी लेवी.

२ घणुं करीने चोमासामां बाजरा भेळा तथा जुदा पण ववायछे ते त्रपकीया मग केहेवाय छे अने उनाळामां जे ववायछे ते उनाळु मग केहेवाय छे. कच्छी मग तथा वागडीया मग इत्यादि देशो उपरथी मगनां नामो बोलवामां आवे छे. कच्छी मग काळा होय छे अने वागडीया मग लीला होय छे. आ ग्रंथमां लीला रंगवाळा मगने वखाण्या छे. आ स्थानना ४६ मा अध्यायनो ११ मो विषय जुवो.

थाय छे माटे एओने दूधनी साथे एकठां करी खावां नहीं.

४ रोगं सात्म्यं च देशं च कालं देहं च बुद्धिमान्।
अवेक्ष्याग्न्यादिकान्भावान्रोगवृत्तेः प्रयोजयेत् ॥
अवस्थान्तरबाहुल्याद्रोगादीनां व्यवस्थितम् ।
द्रव्यं नेच्छन्ति भिषज इच्छन्ति स्वस्थरक्षणे ॥
द्वयोरन्यतरादाने वदन्ति विषदुग्धयोः ।
दुग्धस्यैकान्तहिततां विषमेकान्ततोऽहितम् ॥
एवं युक्तरसाढ्येषु द्रव्येषु सलिलादिषु ।
एकांतहिततां विद्धि वत्स सुश्रुत नान्यथा ॥

उपर कहेली व्यवस्थानो रोगीना विषयमां अपवाद.

४ ऊहापोहवाळी तर्कशाळी बुद्धिवाळा वैद्ये उदरादिक रोगने, जाति आतुर औषध अन्न रस देश ऋतु तथा जळ ए भेदोथी आठ प्रकारना सात्म्यने, अनूप आदि देशने, शीत उष्ण तथा वर्षा ए रूप काळने अने स्थूल कृश तथा मध्य ए भेदोवाळा देहने जोई तेओ विषे संपूर्ण विचार करीने अग्नि तथा विष आदि अहित पदार्थोनी पण रोगोना विषयमां योजना करवी. (जेम के उदरना रोगवाळाने जराक विष पण देवामां आवे छे इत्यादि.) रोग वगेरेनी स्थितिओना फेरफारो घणा घणा होवाने लीधे वैद्यलोको रोगीना विषयमां 'अमुक द्रव्य हितज छे अने अमुक द्रव्य अहितज छे' ए नियमने स्वीकारता नथी पण स्वस्थना रक्षणमां ए नियमने स्वीकारे छे. उपर कहेला रोगादिकना विषयोनो विचार नहीं लेतां दूध अने झेर एओनो एक एकनोज विचार लईए तो दूध हितरूपज अने विष अहितरूज सिद्ध थाय छे. हे पुत्र सुश्रुत ! ए रीते योग्य रसोवाळां घी तथा भात आदि द्रव्योमां तथा जळ आदि द्रव्योमां जे हितरूपपणुंज मानवामां आव्युं छे तेने पण स्वस्थना विषयमांज नियमित समजवुं पण रोगीना विषयमां नियमित समजवुं नहीं.

५ अतोऽन्यान्यपि संयोगादहितानि वक्ष्यामः॥ न च विरूढधान्यैर्वसामधुपयोगुडमाषैर्वा ग्राम्यानूपौदकपिशितादीन्यभ्यवहरेत् । न पयोमधुभ्यां रोहिणीशाकं जातुशाकं वाश्नीयात् । बलाकां वारुणीकुल्माषाभ्याम् । काकमाचीं पिप्पलीमरिचाभ्यां । नाडीभङ्गशाककुक्कुटदधीनि च नैकध्यम् । मधु चोष्णोदकानुपानं पित्तेन वा मांसानि । सुराकृशरापायसांश्च नैकध्यम् । सौवीरकेण सह तिलशष्कुलीम् । मत्स्यैः सहेक्षुविकारान् । गुडेन काकमाचीं मधुना मूलकं गुडेन वाराहं मधुना च सह विरुद्धम् । क्षीरेण मूलकम् । आम्रजाम्बवश्वाविच्छूकरगोधाश्च सर्वांश्च मत्स्यान्विशेषेण चिलिचिमं पयसा । कदलीफलं तालफलेन पयसा दध्ना तक्रेण वा । लकुचफलं पयसा दध्ना माषसूपेन वा मधुना घृतेन च । प्राक्पयस पयसोऽन्ते वा

संयोगथी अहितरूप थनारा बीजा पण केटलाएक पदार्थो.

५ हवे संयोगथी अहितरूप थनारा बीजा पण केटलाएक पदार्थो कहीए छीए. ग्राम्य पशुओनां, जलप्राय प्रदेशमां फरनारां सुवर वगेरे पशुओनां तथा जलजंतुओनां मांसो वगेरेने कोंटा फुटेलां धान्योनी साथे, चरबीनी साथे, मधनी साथे, दूधनी साथे, गोळनी साथे, मधनी साथे के अडदनी साथे खावां नहीं. कडुना शाकने अथवा स्थळकमळना शाकने दूधनी के मद्यनी साथे खावुं नहीं. बलाका नामनी बगलानी जातना मांसने मद्यनी के घुघरीनी साथे खावुं नहीं. अघेडीना शाकने पीपळनी के मरीनी साथे खावुं नहीं. डांडली के पानडांरूप शाकने, कुकडाना मांसने अने दहीने एकठां खावां नहीं. उना पाणीना अनुपानथी मध खावुं नहीं. पित्तांनी साथे मांसो खावां नहीं. मदिरा, तल अडद तथा चोखानी खीचडी अने दूधपाक एओने साथे खावां नहीं. जवनी के घउनी कां-

जीनी साथे तिलनी पूरीओ खावी नहीं. मांछलांओनी साथे शेलडीना विकाररूप गोळ वगेरे पदार्थो खावा नहीं. अघेडी गोळनी साथे, मूळा मधनी साथे अने सुवरनुं मांस मधनी तथा गोळनी साथे विरुद्ध छे. मूळा दुधनी साथे विरुद्ध छे. आंबां, जांबु, शेढाईनुं मांस, सूवरनुं मांस, चंदनघोनुं मांस, सघळी जातनां माछलां अने तेओमां पण विशेषे करी राती लीटीओवाळुं तथा राती आंखोवाळुं माछलुं एओ दूधनी साथे विरुद्ध छे. केळां ताडना फळनी साथे, दूधनी साथे, दहीनी साथे अने छाशनी साथे विरुद्ध छे. जंगली फनस दूधनी साथे, दहीनी साथे, अडदनी दाळनी साथे, मधनी साथे अने घीनी साथे विरुद्ध छे. दूध खाधाथी पेहेलां अने पछी पण जंगली फनस विरुद्ध छे.

६ अतः कर्मविरुद्धान् वक्ष्यामः ॥ कपोतान्सर्षपतैलभृष्टान्नाद्यात् । कपिञ्जलमयूरलावतित्तिरिगोधाश्चैरण्डदार्वग्निसिद्धा एरण्डतैलसिद्धा वा नाद्यात् । कांस्यभाजने दशरात्रपर्युषितं सर्पिर्मधु चोष्णैरुष्णे वा । मत्स्यपरिपचने शृङ्गवेरपरिपचने वा सिद्धां काकमाचीम् । तिलकल्कसिद्धमुपोदिकाशाकम् । नारिकेलेन वराहवसापरिभृष्टां बलाकाम् । भासमङ्गारशूल्यं नाश्नीयादिति ॥

क्रियाथी अहित थता पदार्थो.

६ सरसीया तेलमां शेकेलुं होलानुं के कबुतरनुं मांस खावुं नहीं. धोळां तेतर, मोर, लांवां, सामान्य तेतर अने चंदनघो एओनां मांसोने एरडाना लाकडाना अग्निथी अथवा एरंडीया तेलथी पकावीने खावां नहीं. कांसाना वासणमां दशरात सुधी रहेलुं घी खावुं नहीं. उष्ण काळमां मध खावुं नहीं. अग्नि आदि उष्ण पदार्थोथी संबंध पामेलुं मध खावुं नहीं. माछलां पकाववाना अथवा आदु पकाववाना वासणमां पकावेलुं अघेडीनुं शाक खावुं नहीं. तिलना कल्कथी पकावेलुं पोथीनुं शाक खावुं नहीं. सुवरनी चरबीमां पकावेलुं बलाका (बगलानी एक जात)नुं मांस नाळीएरनी साथे खावुं नहीं. नाहानी चांचवाळा भुखरा रंगना गरंजना मांसने अंगारा उपर कांटाथी पकावीने खावुं नहीं.

७ अतो मानविरुद्धान् वक्ष्यामः ॥ मध्वम्बुनी मधुसर्पिषी मानतस्तुल्ये नाश्नीयात् । स्नेहौ मधुस्नेहौ जलस्नेहौ वा विशेषादान्तरीक्षोदकानुपानौ ॥

प्रमाणथी अहित थता पदार्थो.

७ परस्परथी समान वजनवाळां मध तथा पाणी के मध तथा घी खावां नहीं. मध तथा स्नेह, जळ तथा स्नेह, तेल तथा घी, तेल तथा चरबी, तेल तथा मज्जा, घी तथा चरबी, घी तथा मज्जा अने मज्जा तथा चरबी एओने समान वजनवाळां करी खावां नहीं. मध तथा स्नेह एओने विशेषे करी आकाशमांथी झीलेला जळना अनुपानथी खावां नहीं.

८ अत ऊर्ध्वं रसद्वन्द्वानि रसतो वीर्यतो विपाकतश्च विरुद्धानि वक्ष्यामः ॥ तत्र मधुराम्लौ रसवीर्यविरुद्धौ मधुरलवणौ च मधुरकटुकौ च सर्वतः । मधुरतिक्तौ रसविपाकाभ्यां मधुरकषायौ चाम्ललवणौ रसतः । अम्लकटुकौ रसविपाकाभ्यामम्लतिक्तावम्लकषायौ च सर्वतः । लवणकटुकौ रसविपाकाभ्यां लवणतिक्तौ लवणकषायौ च सर्वतः । कटुतिक्तौ रसवीर्याभ्यां कटुकषायौ तिक्तकषायौ च रसतः ॥

रसथी, वीर्यथी तथा विपाकथी परस्पर विरुद्ध बेबे पदार्थो.

८ हवे बेबे पदार्थो के जेओ परस्परनी साथे रसथी, वीर्यथी[1] तथा विपाकथी[2] विरुद्ध छे तेओनुं निरूपण करीए छीए.

१ उष्ण तथा शीत ए बे प्रकारनुं वीर्य छे.

२ जठराग्निथी संयोग थतां रसोनो परिणाम थया पछी जे बीजो रस उत्पन्न थाय छे ते विपाक केहेवाय छे.

मधुर पदार्थ अने खाटो पदार्थ एओ तथा मधुर पदार्थ अने खारो पदार्थ एओ रसथी तथा वीर्यथी विरुद्ध छे. मधुर पदार्थ अने तीखो पदार्थ एओ रसथी, वीर्यथी तथा विपाकथी पण विरुद्ध छे. मधुर पदार्थ अने कडवो पदार्थ एओ तथा मधुर पदार्थ अने तूरो पदार्थ एओ रसथी तथा विपाकथी विरुद्ध छे. खाटो पदार्थ तथा खारो पदार्थ एओ रसथी विरुद्ध छे. खाटो पदार्थ अने तीखो पदार्थ एओ रसथी तथा विपाकथी विरुद्ध छे. खाटो पदार्थ अने कडवो पदार्थ एओ तथा खाटो पदार्थ अने तूरो पदार्थ एओ रसथी, वीर्यथी तथा विपाकथी विरुद्ध छे. खारो पदार्थ अने तीखो पदार्थ एओ रसथी तथा विपाकथी विरुद्ध छे. खारो पदार्थ अने कडवो पदार्थ एओ तथा खारो पदार्थ अने तूरो पदार्थ एओ रसथी वीर्यथी तथा विपाकथी विरुद्ध छे. तीखो पदार्थ तथा कडवो पदार्थ एओ रसथी तथा वीर्यथी विरुद्ध छे. तीखो पदार्थ अने तूरो पदार्थ एओ तथा कडवो पदार्थ अने तूरो पदार्थ एओ रसथी विरुद्ध छे.

९ तरतमयोगयुक्तांश्च भावानतिरूक्षानतिस्निग्धानत्युष्णानतिशीतानित्येवमादीन् विवर्जयेत् ॥

अतिशयित गुणवाळा पदार्थो पण सामान्य रीते त्याज्य छे.

९ जे जे पदार्थो पोतानी जातना पदार्थो करतां अतिशयित गुणोवाळा होय अर्थात् अतिरूक्ष, अतिस्निग्ध, अतिउष्ण के अतिशीत होय तेओने तथा एवीज रीतनो अतिशय धरावनारा बीजा अतितीक्ष्णादिक पदार्थोने पण छोडी देवा. (भेंशनुं दूध के जे गायना दूध करतां अतिस्निग्ध छे तेने सम अग्निवाळा स्वच्छ माणसे छोडी देवुं अने तीक्ष्ण अग्निवाळा स्वस्थ माणसे सेववुं इत्यादिक ऊह आ उपरथी करी लेवो.)

१० भवन्ति चात्र ॥

विरुद्धान्येवमादीनि रसवीर्यविपाकतः ।
तान्येकान्ताहितान्येव शेषं विद्याद्धिताहितम् ॥

परस्परमां रसथी, वीर्यथी तथा विपाकथी विरुद्धता धरावनारा पदार्थोनुं आवश्यक अहितपणुं.

१० आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'जेओने परस्परमां रसथी, वीर्यथी, विपाकथी के एओमांना बेथी के त्रणेथी विरोध होय ते द्रव्यो तथा एवीज रीतनी बीजी जातनी विरुद्धता धरावनारां द्रव्यो पण अहितरूपज छे एम समजवुं. बाकीना पदार्थो तो कोईने माटे हित छे अने कोईने माटे अहित छे एम समजवुं. (अडद आदि पदार्थो जेना दोषने प्रकुपित करे तेने माटे अहित छे अने जेना दोषनुं हरण करे तेने माटे हित छे.)

११ व्याधिमिन्द्रियदौर्बल्यं मरणं चाधिगच्छति ।
विरुद्धरसवीर्यादीन्भुञ्जानोऽनात्मवान्नरः ॥
यत्किंचिद्दोषमुत्क्लेश्य भुक्तं कायान्न निर्हरेत् ।
रसादिष्वयथार्थं वा तद्विकाराय कल्पते ॥

विरुद्ध तथा अहित भोजन करवाथी हानि.

११ जेओनां रस तथा वीर्य वगेरे परस्परथी विरुद्ध छे एवा पदार्थोने अनुचित रीते खातो मूर्ख माणस विस्फोटक तथा भगंदर आदि रो-

---

१ आ सघळो ८ मो पाठ ऋषिप्रणीत नथी अर्थात् क्षेपक छे एम केटलाएक मानेछे. कारण के 'पेहेलां मधुर पदार्थ खावो' इत्यादि वाक्योथी सघळा रसो खावानी स्वस्थ माणसोने आज्ञा करेली छे अने 'एक रसनुंज सर्वदा सेवन करवुं नहीं' इत्यादि वाक्योथी एक रसना सेवननो निषेध करेलो छे. आ पाठने स्वीकारीए तो पण आ पाठ उपरथी करेलो निषेध उपयोग करवा योग्य दहीं साकर वगेरे पदार्थोने लागु पडतो नथी पण जे पदार्थो उपयोग करवामां अयोग्य छे तेओनेज लागु पडेछे एम समजवुं.

गोने, इंद्रियोना नबळापणाने अने मरणने पण प्राप्त थाय छे. मात्र परस्परथी विरुद्ध पदार्थज नहीं, परंतु जे कोई अहित पदार्थ पोते खावामां आव्या पछी दोषने प्रकुपित करे पण प्रकुपित करीनेपाळा तथा नसोतर वगेरेनी पेठे पाछो ते दोषने शरीरमांथी काहाडे नहीं अथवा दोषने प्रकुपित नहीं करतां रस आदि धातुओमां बगाड करे ते पदार्थ व्याधि उत्पन्न करवाने समर्थ थाय छे.

१२ विरुद्धाशनजान्रोगान्प्रतिहंति विरेचनम् ।
वमनं शमनं वापि पूर्वं वा हितसेवनम् ॥

विरुद्ध पदार्थ खावाथी उत्पन्न थता रोगोनी सामान्य चिकित्सा.

१२ विरुद्ध पदार्थोनुं भक्षण करवाथी उत्पन्न थएला रोगो तेओने टाळे एवां विरेचनथी, वमनथी अथवा संशमनथी मटे छे. (घणा दोषवाळाओने तथा बळवाळाओने वमन विरेचन देवां अने अल्प दोषवाळाओने तथा अल्प बळवाळाओने संशमन देवुं.) अथवा विरुद्ध पदार्थो खावामां आवी जाय तो पेहेलांथीज हित पदार्थोनुं सेवन करवामां लागवुं के जेथी, विरुद्ध पदार्थो व्याधिओने उत्पन्न करी शके नहीं.

१३ सात्म्यतोऽल्पतया वापि दीप्ताग्नेस्तरुणस्य च।
स्निग्धव्यायामबलिनां विरुद्धं वितथं भवेत् ॥

व्यायामशीलो बलवाञ्छिशुश्च
स्निग्धोऽग्निमांश्चापि महाशनश्च ।
आप्नोति रोगान्न विरुद्धजाता-
नभ्यासतो वाल्पतया च जन्तुः ॥

विरुद्ध पदार्थोनुं भक्षण पण वखतपर रोगोने उत्पन्न करतुं नथी तेनां कारणो.

१३ कोई माणसने विरुद्ध पदार्थो सात्म्यरूप होवाने लीधे, कोई माणसने विरुद्ध पदार्थोनी अल्पताने लीधे, कोई माणसने जठराग्निना प्रदीप्तपणाने लीधे, कोई माणसने जुवानीने लीधे, कोई माणसने स्निग्धपणाने लीधे, कोई माणसने कसरतने लीधे अने कोई माणसने बळने लीधे विरुद्ध पदार्थोनुं भक्षण अनर्थ उत्पन्न करी शकतुं नथी. कसरत करनारो माणस, बलवान् माणस, बालक, स्निग्ध, प्रबल जठराग्निवाळो माणस, अने जे कांई होय ते खाईजवानी आदतवाळो माणस विरुद्ध भक्षणथी थनारा रोगोने प्राप्त थतो नथी. विरुद्ध भक्षणना अभ्यासने लीधे अथवा विरुद्ध भक्षणनी अल्पताथी पण ते संबंधी रोगो उत्पन्न थता नथी."

१४ अथ वातगुणान्वक्ष्यामः ॥

पूर्वः समधुरः स्निग्धो लवणश्चैव मारुतः ।
गुरुर्विदाहजननो रक्तपित्ताभिवर्द्धनः ॥
क्षतानां विषजुष्टानां व्रणिनः श्लेष्मलाश्च ये ।
तेषामेव विशेषेण सदा रोगविवर्द्धनः ॥
वातलानां प्रशस्तश्च श्रान्तानां कफशोषिणाम् ।
तेषामेव विशेषेण व्रणक्लेदविवर्द्धनः ॥
मधुरश्चाविदाही च कषायानुरसो लघुः ।
दक्षिणो मारुतः श्रेष्ठश्चक्षुष्यो बलवर्द्धनः ।
रक्तपित्तप्रशमनो न च वातप्रकोपणः ॥
विशदो रूक्षपरुषः खरः स्नेहबलापहः ।
पश्चिमो मारुतस्तीक्ष्णः कफमेदोविशोषणः ।
सद्यः प्राणक्षयकरः शोषणस्तु शरीरिणाम् ॥
उत्तरो मारुतः स्निग्धो मृदुर्मधुर एव च ।
कषायानुरसः शीतो दोषाणामप्रकोपणः ॥
तस्माच्च प्रकृतिस्थानां क्लेदनो बलवर्द्धनः ।
क्षीणक्षतविषार्तानां विशेषेण तु पूजितः ॥

हितरूप पवननुं पण दिशाना संयोगने लीधे अहितपणुं जणाववाने माटे पवनना गुणो.

१४ पूर्व दिशानो पवन पेटामां मधुर रसवालो छे, स्निग्ध छे, खारो छे, भारे छे, अन्नने विदाह करनार छे, रुधिरने तथा पित्तने वधारनार छे, विशेषे करी क्षतवाळाओना, झेरथी संयुक्त थएलाओना, व्रणवाळाओना तथा कफप्रकृतिवाळाओना रोगोने वधारनार छे अने वातप्रकृतिवाळाओने माटे,

थाकेलाओने माटे अने कफना शोषवाळाओने माटे सारो छे पण जो तेओ व्रणवाळा होय तो तेओना व्रणमां क्लेद (कचकाण) करनार छे.

दक्षिण दिशानो पवन मधुर छे, अन्नादिकनो विदाह करनार नथी. मधुरना पेटामां तूरा रसवाळो छे, हलको छे, चक्षुने माटे सारो छे, बळने वधारनार छे, श्रेष्ठ छे, रुधिरनुं तथा पित्तनुं प्रशमन करनार छे अने शरीरना वायुने प्रकुपित करनार नथी.

पश्चिम दिशानो पवन आर्द्रताथी रहित छे, रुक्ष छे, कठोर छे, खरसट छे, स्नेहने नथा बळने हणनार छे, तीक्ष्ण छे, कफने तथा मेदने सुकावनार छे, बळनो तुरत क्षय करनार छे अने माणसोने सुकावनार छे.

उत्तर दिशानो पवन स्निग्ध छे, कोमळ छे, मधुर छे, मधुरना पेटामां तूरा रसवाळो छे, शीतल छे, दोषोने प्रकुपित करनार नथी, स्वस्थ माणसोने क्लेदयुक्त करनार छे, बळने वधारनार छे अने क्षीण थएलाओने माटे, क्षतवाळाओने माटे तथा झेरथी पीडाएलाओने माटे बहु सारो छे.

अध्याय २१ मो.

१ अथातो व्रणप्रश्नमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'व्रणप्रश्न' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलु छे.

२ वातपित्तश्लेष्माण एव देहसम्भवहेतवः । तैरेवाव्यापन्नैरधोमध्योर्द्ध्वसंनिविष्टैः शरीरमिदं धार्यतेऽगारमिव स्थूणाभिस्तिसृभिरतश्च त्रिस्थूणमाहुरेके । त एव च व्यापन्नाः प्रलयहेतवस्तदेभिरेव शोणितचतुर्थैः सम्भवस्थितिप्रलयेष्वप्यविरहितं शरीरं भवति ॥

भवति चात्र ॥

नर्ते देहः कफादस्ति न पित्तान्न च मारुतात् ।
शोणितादपि वा नित्यं देह एतैस्तु धार्यते ॥

शरीरनां उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय दोषोथी तथा रुधिरथीज थाय छे.

२ वात, पित्त अने कफ एओज शरीरनी उत्पत्तिनां कारणो छे. शरीरना नीचा, वचला, तथा उंचा भागमां रहेला ए वात आदि दोषो बगडेला न होय तो तेओथीज आ शरीरनुं धारण थायछे. जेम मोटा त्रण स्तंभोथी घरनुं धारण थायछे तेम वात आदि त्रण दोषोथी शरीरनुं धारण थाय छे तेथी केटलाएक विद्वानो शरीरने 'त्रिस्थूण' केहेछे. ए वात आदि दोषो जो बगड्या होय तो तेओथीज शरीरनो नाश थायछे. आ रीते शरीरनां उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय एओ, त्रणे दोषो वगर अने चोथा लोही वगर कदी पण थतां नथी.

आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्व-

१ केटलाएक केहे छे के आ अध्याय आहारोना निरूपणने माटेज होवाथी तेमां पवनना गुणदोषोनुं वर्णन असंगत छे माटे आ आखो चौदमो विषय क्षेपकज छे.

२ व्रणादिकने उत्पन्न करनारा दोषोना संबंधमां शिष्योना प्रश्नोना खुलासा विषेनो.

३ जो के शुक्र अने शोणित एओ देहनी उत्पत्तिनां कारणो छे तो पण वात वगेरे दोषोने उत्पत्तिना कारणरूप कह्या ते एटलामाटे के ए दोषो शुक्रनां तथा शोणितना मददगार छे.

४ व्रणना पाकवाना विषयमां मुख्य आचार्यो माने छे के दोषोथीज व्रण पाके छे अने केटलाएक माने छे के व्रणना पाकवामां लोही पण कारणरूप छे. (जुवो आ सूत्रस्थानना १७ मा अध्यायनो ८ मो तथा नवमो विषय.) आ प्रमाणे बे मत छे तेथी शरीरनी उत्पत्ति आदिना कारणरूपे प्रथम दोषोनेज गणीने पाछळथी लोहीने पण दाखल कर्युं छे.

मुखथी कह्युं छे के "कफ, पित्त, वात अने तेओनी साथे चोथुं लईए तो लोही, एओ विना देह होतोज नथी अने एओथीज सर्वदा देहनुं धारण थाय छे."

३ तत्र वा गतिगन्धनयोरिति धातुः । तप सन्तापे । श्लिष आलिङ्गने । एतेषां कृद्विहितैः प्रत्ययैर्वातः पित्तं श्लेष्मेति च रूपाणि भवन्ति।

वात आदि दोषो के जेओ चिकित्सामां उपयोगी छे तेओनां लक्षणो देखाडवा-माटे वात आदि शब्दोनी व्युत्पत्ति.

३ संस्कृत भाषाना व्याकरण प्रमाणे गति अने सूचन अर्थवाळा **वा** धातुथी पर कृत्संज्ञक **क्त**' प्रत्यय आववाथी **वात** शब्द थयो छे. संताप अर्थवाळा **तप** धातुथी पर कृत्संज्ञक '**क्त**' प्रत्यय आववाथी तथा **पृषोदरादि** गणनी रीतिथी वर्णनो विपर्यय थवाथी **पित्त** शब्द थयो छे अने आलिंगन अर्थवाळा '**श्लिष**' धातुथी पर कृत्संज्ञक '**मनि**' प्रत्यय आववाथी तथा उपधागुण थवाथी '**श्लेष्मन्**' शब्द थयो छे के जे कफनो पर्याय छे. ए धातुओना अर्थो उपरथीज सामान्य रीते वात, पित्त अने कफ एओनां रूपो तथा कामो ध्यानमां आवी जाय छे.

४ दोषस्थानान्यत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥ तत्र समासेन वातः श्रोणिगुदसंश्रयः । श्रोणिगुदयोरुपर्यधो नाभेः पक्काशयः पक्कामाशयमध्यं पित्तस्य । आमाशयः श्लेष्मणः ।

अतःपरं पंचधा विभज्यन्ते । तत्र वातस्य वातव्याधौ वक्ष्यामः । पित्तस्य यकृत्प्लीहानौ हृदयं दृष्टिस्त्वक् पूर्वोक्तं च । श्लेष्मणस्तूरःशिरःकण्ठसन्धय इति पूर्वोक्तं च । एतानि खलु दोषाणां स्थानान्यव्यापन्नानाम्

भवति चात्र ॥

विसर्गादानविक्षेपैः सोमसूर्यानिला यथा ।
धारयन्ति जगद्देहं कफपित्तानिलास्तथा ॥

१. दोषोनां स्थानको.

४ हवे दोषोनां स्थानको कहीए छीए. संक्षेपथी कहीए तो वात (वायु) कटी अने गुदा एओमां रहेलो छे, पित्त पक्काशयना तथा आमाशयना मध्यमां रहेलुं छे अने कफ आमाशयमां रहेलो छे. कटिनी तथा गुदानी उपर अने नाभिनी नीचे पक्काशय (पाकेला आहारने रेहेवानुं खानुं) छे अने नाभिना तथा स्तनना मध्यमां आमाशय (काचा आहारने रेहेवानुं खानुं) छे.

हवे ए दोषोनी पांच पांच प्रकारनी वेहेंचण थवानां जे पांच पांच स्थानको छे तेओनुं निरूपण करीएछीए. वातनां जे पांच स्थानको छे तेओ विषे तो निदानस्थानना वातव्याधि नामना पेहेला अध्यायमां केहेवामां आवशे तेथी अहीं केहेता नथी. जमणा पडखानी **यकृत्** अथवा **कालखंड** नामनी तथा डाबा पडखानी **प्लीहन्** (बरल) नामनी गांठ, हृदय, दृष्टि, त्वचा अने पक्काशयनुं तथा आमाशयनुं मध्य ए पांच पित्तनां स्थानको छे. स्तनोनुं मध्य, माथुं, कंठ, सांधाओ अने आमाशय ए पांच कफनां स्थानको छे. ज्यांसुधी दोषो बगडेला (प्रकोपादिक पामेला) न होय त्यांसुधी तेओनां एज मुख्य स्थानको छे.

आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के "जेम चंद्र रसना दानथी, (देवाथी) सूर्य रसना आदानथी (खेंचवाथी) अने वायु शीतादिकनी प्रेरणा करवाथी जगतने धरी रहेल छे तेम कफ बळना दानथी, पित्त बळने खेंचवाथी अने वात शीतादिकनुं प्रेरण करवाथी देहने धरी रहेल छे."

५ अत्र जिज्ञासा किं पित्तव्यतिरेकादन्योऽग्निराहोस्वित्पित्तमेवाग्निरिति । अत्रोच्यते । न खलु पित्तव्यतिरेकादन्योऽग्निरुपलभ्यते आग्नेयत्वात्पित्ते दहनपचनादिष्वभिवर्तमानेऽग्निवदुपचारः क्रियतेऽन्तरग्निरिति । क्षीणे ह्य-

ग्निगुणे तत्समानद्रव्योपयोगादतिवृद्धे 'शीतक्रियोपयोगादागमाच्च पश्यामो न खलु पित्तव्यतिरेकादन्योऽग्निरिति ॥

पित्त अने अग्नि एओ भिन्न भिन्न नथी पण एकज छे.

९ अहीं जाणवानी इच्छा (संशय) थाय छे के अग्नि ए पदार्थ पित्तथी न्यारो छे? अथवा जे पित्त छे तेज अग्नि छे?' आ विषयमां उत्तर आपीए छीए के 'अग्नि पित्तथी जुदो छे' एम कोई पण प्रमाणथी सिद्ध थतुं नथी. **प्रत्यक्ष** प्रमाणथी जोईए तो शरीरमां पित्तशिवाय बीजो अग्नि जोवामां आवतो नथी. अग्निना सघळा गुणो पित्तमां छे तेथी पित्तज आहारादिकने पकाववा तथा बाळवा वगेरे क्रियाओमां प्रवर्ततुं होवाने लीधे तेनेज अग्निनुं सादृश्य आपीने 'जठराग्नि' ए शब्दथी केहेवामां आवे छे. **अनुमान** प्रमाणथी जोईए तो तेथी पण सिद्ध थाय छे के शरीरमां पित्त शिवाय बीजो अग्नि नथी. केम के अग्निना जेवाज गुणोवाळुं पित्त ज्यारे क्षीण थाय छे त्यारे अग्नि जेवीज उष्णता तथा तीक्ष्णतावाळां औषधोनो उपयोग करवामां आवे छे अने अत्यंत वधे छे त्यारे शीतक्रियाओनो उपयोग करवामां आवे छे. **आगम (शाब्द)** प्रमाणथी जोईए तो पण 'शरीरमां पित्त शिवाय बीजो अग्नि नथी' एम सिद्ध थाय छे. केम के सघळा आयुर्वेदमां क्यांय पण 'अग्निने पित्तथी जुदो कह्यो होय एवुं वचन जोवामां आवतुं नथी.

६ तच्चादृष्टहेतुकेन विशेषेण पक्वामाशयमध्यस्थं पित्तं चतुर्विधमन्नपानं पचति विवेचयति च रसदोषमूत्रपुरीषाणि तत्रस्थमेव चात्मशक्त्याशेषाणां पित्तस्थानानां शरीरस्य चाग्निकर्मणानुग्रहं करोति तस्मिन् पित्ते पाचकोऽग्निरिति संज्ञा ॥

यत्तु यकृत्प्लीह्नोः पित्तं तस्मिन् रंजकोऽग्निरिति संज्ञा स रसस्य रागकृदुक्तः ।

यत् पित्तं हृदयसंस्थितं तस्मिन् साधकोऽग्निरिति संज्ञा सोऽभिप्रार्थितमनोरथसाधनकृदुक्तः ।

यद्दृष्ट्यां पित्तं तस्मिन्नालोचकोऽग्निरिति संज्ञा स रूपग्रहणेऽधिकृतः ।

यत्तु त्वचि पित्तं तस्मिन् भ्राजकोऽग्निरिति संज्ञा, सोऽभ्यङ्गपरिषेकावगाहावलेपनादीनां क्रियाद्रव्याणां पक्ता छायानां च प्रकाशकः ॥

पित्तनां स्थानपरत्वे जुदां जुदां कामो तथा कामो उपरथी जुदां जुदां नामो.

६ पक्वाशय अने आमाशय एओना मध्यमां रहेलुं पित्त अदृष्टे आपेली शक्तिथी चारे प्रकारना

१ पित्त अने अग्नि एकज होयतो 'घी पित्तने शांत करेछे अने अग्निने प्रदीप्त करेछे, दिवसनी निद्रा पित्तने प्रकुपित करेछे पण अग्निने शांत करेछे अने दूध तथा माछलां पित्तनी वृद्धि करेछे पण अग्निने प्रदीप्त करतां नथी' इत्यादि सिद्धांतो खोटा पडी जाय छे. तेमज पित्त द्रवरूप छे, स्निग्ध छे तथा नीचे गति करनारूं पण छे अने अग्नि द्रवरूप नथी, रूक्ष छे तथा ऊंचे गतिवाळो छे इत्यादि स्वभावोने पण विरोध आवे छे अने आ सूत्रस्थानना पंदरमा अध्यायना ३३ मा विषयना **समदोषः समाग्निश्च** ए श्लोकमां दोषोने तथा अग्निने भिन्न भिन्न गण्या छे ते वातने पण विरोध आवेछे माटे पित्तथी अग्निने जुदोज समजवो. आ विषयमां बन्नेनी जे एकता कही ते तो बन्नेनी चिकित्सानी एकता जणाववाने माटे छे. नहींतर अग्नि के जे रस तथा विपाकआदि गुणोथी रहित छे तेनी केमे करी चिकित्सा बनी शके नहीं. (डल्हन.) जेम फानसमां दीवो रहे छे तेम नाभिमां सोममंडलनी अंदरना सूर्यमंडलनी अंदर जरायुथी ढंकाएलो अग्नि छे. (तंत्रांतर.) जेम अत्यंत तपावेला लोहोडांना गोळाने अग्नि केहेवामां आवे छे तेम पित्तने जठराग्नि मानवामां आवेछे माटे वास्तविक रीते जठराग्नि पित्तथी जुदो छे. (मधुकोश.) जठराग्नि मोटा देहवाळां प्राणीओनां शरीरोमां जव जेटलो, नाहाना देहवाळां प्राणीओनां शरीरोमां तिळ जेवडो अने कीटपतंगोनां शरीरोमां वाळ जेटलो छे (रसप्रदीप.)

(भक्ष्य, भोज्य, लेह्य अने चोष्य) अन्नने पकावे छे, रस दोष मूत्र तथा विष्टा एओनुं पृथक्करण करे छे अने त्यांज रही पोतानी शक्तिथी अग्निनुं काम करी बाकीनां पित्तस्थानोनो तथा सघळा शरीरनो उपकार करे छे. आ पित्त 'पाचकाग्नि' ए नामथी ओळखाय छे.

यकृत् तथा प्लीह एओमां रहेलुं पित्त रसने रंग्या करे छे तेथी 'रंजकाग्नि' ए नामथी ओळखाय छे.

हृदयमां रहेलुं पित्त हृदयमां रहेला कफरूपी अंधकारने दूर करी मनने स्पष्ट तथा गुणवान् करी आपीने धारेला मनोरथोने (धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष एओने) सिद्ध करावेछे तेथी 'साधकाग्नि' ए नामथी ओळखाय छे.

दृष्टिमां रहेलुं पित्त रूपोनुं ग्रहण करावेछे तेथी 'आलोचकाग्नि' ए नामथी ओळखाय छ.

त्वचामां रहेलुं पित्त अभ्यंग[1], परिषेक[2], अवगाहन[3] तथा अवलेपन[4] आदि क्रियाओमां उपयोगमां लेवामां आवेलां द्रव्योने पकावेछे तथा कांतिओने उत्पन्न करेछे तेथी 'भ्राजकाग्नि' ए नामथी ओळखाय छे.

७ भवति चात्र ॥
पित्तं तीक्ष्णं द्रवं पूति नीलं पीतं तथैव च ।
उष्णं कटुरसं चैव विदग्धं चाम्लमेव च ॥

पित्तनुं चिकित्सामां उपयोगी स्वभावरूप लक्षण.

७ आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "पित्त राई तथा मरी वगेरेनी पेठे तीक्ष्ण छे; द्रवरूप छे, काचा मांसादिकना जेवा गंधवाळुं छे, आमवाळुं होय त्यारे नील रंगवाळुं होय छे, आम वगरनुं होय त्यारे पीळा रंगवाळुं होय छे, उष्ण छे, तीखा रसवाळुं छे अने विरुद्ध पाकावस्थामां खाटुं होय छे."

८ श्लेष्मस्थानान्यत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः । तत्रामाशयः पित्ताशयस्योपरिष्टात्तत्प्रत्यनीकत्वादूर्ध्वगतित्वात्तेजसश्चन्द्र इवादित्यस्य स चतुर्विधस्याहारस्याधारः । स च तत्रौदकैर्गुणैराहारः प्रक्लिन्नो भिन्नसंघातः सुखजरश्च भवति ।

माधुर्यात्पिच्छिलत्वाच्च प्रक्लेदित्वात्तथैव च।
आमाशये संभवति श्लेष्मा मधुरशीतलः ॥

स तत्रस्थ एव स्वशक्त्या शेषाणां श्लेष्मस्थानानां शरीरस्य चोदककर्मणानुग्रहं करोति ।

उरःस्थस्त्रिकसंधारणमात्मवीर्येणान्नरससहितेन हृदयावलम्बनं करोति ।

जिह्वामूलकण्ठस्थो जिह्वेन्द्रियस्य सौम्यत्वात् सम्यग्रसज्ञाने वर्तते ।

शिरस्थः स्नेहसंतर्पणाधिकृतत्वादिन्द्रियाणामात्मवीर्येणानुग्रहं करोति ।

संधिस्थस्तु श्लेष्मा सर्वसंधिसंश्लेषात्सर्वसंध्यनुग्रहं करोति ॥

कफनां स्थानो तथा कामो.

८ हवे कफनां स्थानको कहीए छीए. एओमां आमाशय के जे कफनुं पेहेलुं स्थान छे ते पित्ताशयनी उपर छे. कारण के तेजोमय पित्त के जे अग्निनी पेठे उंची गतिवाळुं छे ते जो पोतानी उपर पोताथी विरुद्ध गुणोवाळो आमाशय न होय तो स्वच्छंद गतिवाळुं थईने शरीरने बाळी नाखे. जगत्कर्त्ताए जेम सूर्यना तेजनी उर्ध्वगतिने अटकाववा माटे सूर्यनी उपर चंद्र गोठव्यो[5] छे तेम पित्तनी उर्ध्वगतिने अटकाववा माटे पित्ताशयनी उपर आमाशयने गोठव्यो छे. आ-

---

१ अंगपर तैलादिक चोळवुं.

२ उपरथी जळ वगेरेनी धारा करवी.

३ जळ वगेरेथी भरेली कोठी वगेरेमां बेसवुं.

४ अंग उपर चोपडवुं-लगाववुं.

५ ज्योतिःशास्त्रना सिद्धांतग्रंथोमां सूर्य ऊंचो छे अने चंद्र नीचो छे एम लख्युं छे पण पुराण ग्रंथोमां चंद्र सूर्यनी उपर छे एम लख्युं छे. आ ग्रंथकारे पुराणना मतने दृष्टांतने माटेज स्वीकारीने चंद्रने सूर्यथी ऊंचो स्वीकार्यो छे.

माशय चारे प्रकारना आहारनो आधार छे माटे तेनी नीचे जो पित्तरूप अग्नि न होय तो सघळो आहार काचोज रहे तेथी पण आमाशयनी स्थिति पित्ताशयथी उपरज संभवे छे. आमाशयमां आवेलो आहार आमाशयमां रहेला द्रव तथा स्नेह आदि जळसंबंधी गुणोने लीधे छुटा छुटा अवयवोवाळो थई जाय छे, तथा पळळी जाय छे अने तेथी सहेज पचे एवो बनी जाय छे.

आमाशयमां मधुरपणुं, चीकणापणुं तथा आर्द्रपणुं इत्यादि गुणो होवाने लीधे तेमां मधुरतावाळो तथा शीतळतावाळो कफ पूरी सगवड पामीने रेहे छे.

ए कफ आमाशयमां रह्यो रह्यो पोतानी शक्तिथी जळनां पूरण तथा क्लेदन आदि कृत्यो करीने बीजां कफस्थानोनो तथा शरीरनो उपकार करे छे.

स्तनोना मध्यमां रहेलो कफ अन्नोना रससहित पोतानी शक्तिथी कांधना तथा बे हाथना संधिस्थानने धरी राखे छे अने हृदयने कार्यमां समर्थ करे छे.

जीभना मूळने लगतो कंठमां रहेलो कफ सौम्यपणाथी जीभने सारी रीते रसनुं ज्ञान आपे छे.

माथामां रहेलो कफ स्नेहथी तृप्त करवाना काममां गोठवाएलो होवाने लीधे पोतानी शक्तिथी इंद्रियोनी उपर अनुग्रह करे छे.

सांधाओमां रहेलो कफ सघळा सांधाओने जोडी राखवाथी तेओना उपर अनुग्रह करे छे.

९ भवति चात्र ॥

श्लेष्मा श्वेतो गुरुः स्निग्धः पिच्छिलः शीत एव च मधुरस्त्वविदग्धः स्याद्विदग्धो लवणः स्मृतः॥

कफनुं चिकित्सामां उपयोगी स्वभावरूप लक्षण.

९ आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'कफ सफेद छे, भारे छे, स्निग्ध छे, चीकणो छे अने शीतलपणा वगेरे गुणोवाळो छे. ए कफ अपक्वस्थितिमां मधुर होय छे अने पाकावस्थामां खारो होय छे. अथवा प्रकृतिस्थ होय त्यारे मधुर होय छे अने दुष्ट थयो होय त्यारे खारो होय छे.'

१० शोणितस्य स्थानं यकृत्प्लीहानौ तच्च प्रागभिहितं तत्रस्थमेव शोणितस्थानानामनुग्रहं करोति ॥

लोहीनुं स्थान तथा काम.

१० यकृत् (जमणा पडखानी गांठ) तथा प्लीह (डाबा पडखानी गांठ–बरल) एओ लोहीनुं स्थानक छे के जे विषे आ सूत्रस्थानना 'शोणितवर्णनीय' नामना चौदमा अध्यायमां केहेवाई गयुं छे. ए लोही त्यां रह्युं रह्युं पोतानां बीजां स्थानकोपर अनुग्रह करे छे.

११ भवति चात्र ॥

अनुष्णशीतं मधुरं स्निग्धं रक्तं च वर्णतः । शोणितं गुरु विस्रं स्याद्विदाहश्चास्य पित्तवत्॥

लोहीनुं चिकित्सामां उपयोगी स्वभावरूप लक्षण.

११ आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'लोही अनुष्णाशीत छे, मधुर छे, स्निग्ध छे, राता वर्णवाळुं छे, भारे छे, काचा मांसादिकना जेवा गंधवाळुं छे अने जे पदार्थोथी पित्तनो विरुद्ध पाक थाय छे ते पदार्थोथीज लोहीनो विरुद्ध पाक थाय छे.

१२ एतानि खलु दोषस्थानान्येषु संचीयन्ते दोषाः । प्राक्संचयहेतुरुक्तः । तत्र संचितानां दोषाणां स्तब्धपूर्णकोष्ठता पीतावभासता मन्दोष्मता चाङ्गानां गौरवमालस्यं चयकारणविद्वेषश्चेति लिङ्गानि भवन्ति तत्र प्रथमः क्रियाकालः ॥

दोषोनो चिकित्साना पेहेला काळरूप चय अने चयनां लक्षणो.

१२ उपर दोषोनां जे स्थानको कह्यां तेओमां

१ वधवुं–जमाथवुं.

दोषोनो चय (संचय) थाय छे. दोषोना चय थवामां जे कारणो छे तेओ आ सूत्रस्थानना ऋतुचर्या नामना छठ्ठा अध्यायना छठ्ठा विषयमां केहेवाई गयां छे. वातनो चय थयो होय तो कोठो स्तब्ध अने पूर्ण थाय छे. पित्तनो चय थयो होय तो पीळो देखाव थाय छे अने मंदमंद गरमी देखाय छे. कफनो चय थयो होय तो अंगोमां भारेपणुं तथा आलस्य थाय छे. सर्वमां सामान्य चिह्न ए थाय छे के जे पदार्थोथी चय थयो होय ते पदार्थो उपर अरुचि थाय छे. आ रीते चय थाय त्यारे 'चिकित्सानो पेहेलो अवसर छे' एम समजवुं.

१३ अत ऊर्ध्वं प्रकोपणानि वक्ष्यामः। तत्र बलवद्विग्रहातिव्यायामव्यवायाध्ययनप्रपतनप्रधावनप्रपीडनाभिघातलंघनप्लवनतरणरात्रिजागरणभारहरणगजतुरङ्गरथपदातिचर्याकटुकषायतिक्तरूक्षलघुशीतवीर्यशुष्कशाकवल्लूरवरकोद्दालककोरदूषश्यामाकनीवारमुद्गमसूराढकीहरेणुकलायनिष्पावानशनविषमाशनाध्यशनवातमूत्रपुरीषशुक्रच्छर्दिक्षवथूद्गारबाष्पवेगविघातादिभिर्विशेषैर्वायुः प्रकोपमापद्यते ॥

स शीताभ्रप्रवातेषु घर्मान्ते च विशेषतः।
प्रत्यूषेष्वपराह्णे तु जीर्णेऽन्ने च प्रकुप्यति ॥

क्रोधशोकभयायासोपवासविदग्धमैथुनोपगमनकट्वम्ललवणतीक्ष्णोष्णलघुविदाहितिलतैलपिण्याककुलत्थसर्षपातसीहरितकशाकगोधामत्स्याजाविकमांसदधितक्रकूर्चिकामस्तुसौवीरकसुराविकाराम्लफलकट्वराकप्रभृतिभिः पित्तं प्रकोपमापद्यते।

तदुष्णैरुष्णकाले च मेघान्ते च विशेषतः।
मध्याह्ने चार्द्धरात्रे च जीर्यत्यन्ने च कुप्यति

दिवास्वप्नाव्यायामालस्यमधुराम्ललवणशीतस्निग्धगुरुपिच्छिलाभिष्यन्दिहायनकयवकनैषधेत्कटमाषमहामाषगोधूमतिलपिष्टविकृतिदधिदुग्धकृशरापायसेक्षुविकारानूपौदकमांसवसातिसमृणालकशेरुकशृङ्गाटकमधुरवल्लीफलासमाशनाध्यशनप्रभृतिभिः श्लेष्मा प्रकोपमापद्यते।

स शीतैः शीतकाले च वसन्ते च विशेषतः।
पूर्वाह्णे च प्रदोषे च भुक्तमात्रे प्रकुप्यति ॥

पित्तप्रकोपणैरेव चाभीक्ष्णं द्रवस्निग्धगुरुभिश्चाहारैर्दिवास्वप्नक्रोधानलातपश्रमाभिघाताजीर्णविरुद्धाध्यशनादिभिरसृक् प्रकोपमापद्यते। यस्माद्रक्तं विना दोषैर्न कदाचित् प्रकुप्यति। तस्मात्तस्य यथादोषं कालं विद्यात्प्रकोपणे ॥

तेषां प्रकोपात्कोष्ठतोदसंचरणाम्लिकापिपासापरिदाहान्नद्वेषहृदयोत्क्लेदाश्च जायन्ते। तत्र द्वितीयः क्रियाकालः ॥

दोषोनो तथा लोहीनो चिकित्साना बीजा कालरूप प्रकोप[1] अने तेना समया.

१३ हवे दोषोनो प्रकोप थवानां कारणो कहीए छीए. बळवाननी साथे लडाई, अत्यंत कसरत, अत्यंत मैथुन, अत्यंत अध्ययन, अत्यंत पडवुं, अत्यंत दोडवुं, अत्यंत दबावुं, अत्यंत अभिघात, वेगथी खाडा वगेरेनुं उल्लंघन करवुं, कुदीकुदीने चालवुं, पाणीमां अत्यंत तरवुं, रातना उजागरा, अत्यंत बोजो उठाववो, हाथीथी घोडाथी रथथी के पगथी अत्यंत फरवुं, तीखा तूरा कडवा रूक्ष हलका तथा शीतवीर्यवाळा पदार्थोनुं अतिसेवन, शाकोनी काचरीओ, सुकाएलां मांसो, नागली, जंगली कोदरा, कोदरा, सामो, बंटी, मग, मसूर, तुवर, वटाणा, कलाय नामनी वटाणानी बीजी जात, वाल, चोला, उपवास, अल्प भोजन, विषम भोजन, अजीर्णमां भोजन, अधोवायुना वेगनो रोध, मूत्रना वेगनो रोध, विष्टाना वेगनो रोध, वीर्यना वेगनो रोध, उळटीनो रोध, छींकनो रोध, ओडकारनो रोध अने आंसुना वेगनो रोध इत्यादि कारणोथी वायु प्रकुपित थाय छे. विशेषे करी शीतकाल,

१ उद्धत थवुं-मस्तीमां आवी जवुं-गुस्से थवुं.

वादळांनो समय, घणा पवनवाळो समय, वर्षाकाळ, परोढीयुं, रोंढो, अने जमेलुं अन्न जीर्ण थवानो समय एटला समयोमां **वायुनो** प्रकोप थाय छे.

क्रोध, शोक, भय, परिश्रम, उपवास, आहार आदिथी थती बळतरा, मैथुननुं अत्यंत सेवन, तीखा खाटा खारा तीक्ष्ण उष्ण तथा हलका पदार्थो, खाटा थई बळतरा वगेरेने उत्पन्न करीने मांड मांड पचे एवा आहारो, तिल, तैल, खोळ, कलथी, सर्षप, अलसी, सरगवा तथा चुका वगेरे लीलोतरी चंदनघोनुं मांस, माछलां, बकरानुं मांस, गाडरनुं मांस, दही, बगडीने फोदा फोदा थयेली छास, दहीनी नीचेनो भाग, कांजी, पैष्टी वगेरे तीक्ष्ण मदिराओ, खाटां फळो, स्नेहवाळुं दही अने आकडो इत्यादिकथी पित्तनो प्रकोप थाय छे. विशेषे करी उष्ण द्रव्योथी, उष्ण कालमां, शरद् ऋतुमां, मध्याह्न कालमां, अधराते अने अन्न पचतुं होय ते समयमां **पित्तनो** प्रकोप थाय छे.

दिवसनी निद्रा, कसरतनो अभाव, आलस्य, मधुर खाटा खारा शीत स्निग्ध भारे चीकणा तथा अभिष्यंदी (स्रोत वगेरेने अत्यंत क्लेदयुक्त करी भारेपणुं करनारा) आहारो, हायनक नामना चोखा, यवक नामनुं धान्य, नैषध नामनुं धान्य, इत्कट नामनुं धान्य, अडद, चोळा (घऊं, तिल, चोखाना लोटना विकारो, दही, दूध, तल चोखा तथा अडद एओनी खीचडी, दूधपाक, शेलडीना विकारो, जलप्राय प्रदेशमां फरनारां सूवर वगेरे पशुओनां मांसो, जलचर जंतुओनां मांसो, चरबी, कमळनां मूळ, कमळना नाळना तंतु, कसेलां, शींगोडां, नाळीएर वगेरे मधुर फळो, वेलामांथी थतां तुंबडां वगेरे फळो, विषम भोजन अने अजीर्णमां भोजन इत्यादिकथी **कफनो** प्रकोप थाय छे. विशेषे करी शीतद्रव्योथी, शीतकालमां, वसंतऋतुमां, पूर्वाह्न समयमां, प्रदोष समयमां अने जम्या पछी तुरतना समयमां कफनो प्रकोप थाय छे.

पित्तने प्रकुपित करनारा आहारोथी, द्रव स्निग्ध तथा भारे आहारोनुं वारंवार सेवन करवाथी, दिवसनी निद्राथी, क्रोधथी, अग्निथी, तडकाथी, श्रमथी, अभिघातथी, अजीर्णथी, विरुद्ध भोजनथी, अतिभोजनथी तथा तेवाज बीजा प्रकारोथी **लोहीनो** प्रकोप थाय छे. लोही दोषो विना कदी पण प्रकुपित थतुं नथी एटला माटे जे दोषनो प्रकोप थवाना जे काळो छे तेज काळो ते दोषथी दुष्ट थएला **लोहीनो** प्रकोप थवाना काळो समजवा. (वायुथी दुष्ट थएलुं लोही वायुनो प्रकोप थवाना समयमां, पित्तथी दुष्ट थएलुं लोही पित्तनो प्रकोप थवाना समयमां अने कफथी दुष्ट थएलुं लोही कफनो प्रकोप थवाना समयमां प्रकुपित थाय छे.)

वायुना प्रकोपथी कोठामां वेदना तथा कोठामां वायुनुं परिभ्रमण ए चिह्नो थाय छे. **पित्तना** प्रकोपथी खाटा ओडकार, तरश तथा सर्व अंगोमां दाह ए चिह्नो थाय छे अने **कफना** प्रकोपथी अन्न उपर अरुचि तथा मोळ आववी ए चिह्नो थाय छे. आ प्रमाणे प्रकोप थाय त्यारे चिकित्सानो बीजो अवसर छे.

१४ अत ऊर्ध्वं प्रसरं वक्ष्यामः । तेषामेभिरातङ्कविशेषैः प्रकुपितानां पर्युषितकिण्वोदकपिष्टसमवाय इवोद्रिक्तानां प्रसरो भवति । तेषां वायुर्गतिमत्त्वात्प्रसरणहेतुः सत्यप्यचैतन्ये स हि रजोभूयिष्ठो रजश्च प्रवर्तकं सर्वभावानाम्। यथा महानुदकसंचयोऽतिवृद्धः सेतुमवदार्यापरेणोदकेन व्यामिश्रः सर्वतः प्रधावत्येवं दोषाः कदाचिदेकशो द्विशः समस्ताः शोणितसहिता वाऽनेकधा प्रसरन्ति ।

तद्यथा । वातः पित्तं श्लेष्मा शोणितम् । वातपित्ते वातश्लेष्माणौ पित्तश्लेष्माणौ वातशोणिते पित्तशोणिते श्लेष्मशोणिते । वातपित्तशोणितानि वातश्लेष्मशोणितानि पित्तश्लेष्मशोणितानि । वातपित्तकफा वातपित्तकफशोणितानीत्येवं पंचदशधा प्रसरन्ति ॥

कृत्स्नेऽर्द्धेऽवयवे वापि यत्राङ्गे कुपितो भृशम् ।
दोषो विकारं नभसि मेघवत्तत्र वर्षति ॥
नात्यर्थं कुपितश्चापि लीनो मार्गेषु तिष्ठति ।
निष्प्रत्यनीकः कालेन हेतुमासाद्य कुप्यति ॥

तत्र वायोः पित्तस्थानगतस्य पित्तवत् प्रतीकारः। पित्तस्य कफस्थानगतस्य कफवत्। कफस्य च वातस्थानगतस्य वातवदेष क्रियाविभागः ॥

एवं प्रकुपितानां प्रसरतां च वायोर्विमार्गगमनाटोपौ । ओषचोषपरिदाहधूमायनानि पित्तस्य । अरोचकाविपाकाङ्गसादाश्छर्दिश्चेति श्लेष्मणो लिङ्गानि भवन्ति । तत्र तृतीयः क्रियाकालः ॥

दोषोनो चिकित्साना त्रीजा काळरूप प्रसर.

१४ हवे दोषोना प्रसर विषे कहीए छीए. जेम मदिरानुं बीज, (दारूनी नीचे रहेलो कदडो के जे बीजो दारू बनाववाना समयमां दारूना पदार्थोमां नाखवामां आवे छे ते.) जळ अने लोट एओना गुणो परस्परमां प्रवेश करवाथी ते पदार्थोनो गाळमां आथो (जोस–खमीर) आववारूप फेलाव थाय छे तेम उपर कहेलां प्रकोपनां कारणोथी प्रकोप पामेला दोषोनो जे भारे फेलाव थाय छे ते **प्रसर** केहेवाय छे. वायु जो के अचेतन छे तो पण ते घणा रजोगुणवाळो छे अने सर्व पदार्थोने प्रवृत्ति आपवी ए रजोगुणनो धर्म छे माटे रजोगुणने लीधे गतिवाळो होवाथी सर्वना प्रसरणमां कारणभूत थाय छे. जेम अत्यंत वृद्धि पामेलो मोटो पाणीनो जथ्थो पोतानी आडे बांधेली पाजने तोडी नाखी कोई समये एकलोज अने कोई समये बीजां पाणीथी मिश्रित थईने चारे कोर दोडे छे तेम दोषो पण कोई समये एकला कोई समये बे मळीने, कोई समये सघळा मळीने अने कोई समये रुधिरथी मळीने तथा कोई समये एकलुं रुधिर पण अनेक प्रकारे प्रसरे छे.

एकला वायुनो प्रसर, एकला पित्तनो प्रसर, एकला कफनो प्रसर, एकला रुधिरनो प्रसर, वायुनो तथा पित्तनो प्रसर, वायुनो तथा कफनो प्रसर, पित्तनो तथा कफनो प्रसर, वायुनो तथा रुधिरनो प्रसर, पित्तनो तथा रुधिरनो प्रसर, कफनो तथा रुधिरनो प्रसर, वायुनो पित्तनो तथा रुधिरनो प्रसर, वायुनो कफनो तथा रुधिरनो प्रसर, पित्तनो कफनो तथा रुधिरनो प्रसर, वायुनो पित्तनो तथा कफनो प्रसर अने वायु पित्त कफ तथा रुधिर ए चारेनो प्रसर ए रीते पंदर प्रकारना प्रसरो थाय छे.

दोष सघळा अंगमां, अरधा अंगमां के एक अवयवमां ज्यां प्रसर पाम्यो होय त्यां जेम मेघ आकाशमां जळने वरसावे छे तेम ते दोष विकारने वरसावे छे. दोष जो अत्यंत प्रकोप नहीं पामतां एटले प्रसर नहीं पामतां साधारण प्रकोप पाम्यो होय अने तेनी चिकित्सा करवामां न आवे तो संताईने शरीरना मार्गोमां रहे छे ते ज्यारे काळे करीने पोताने कारण मळे त्यारे प्रसर पामे छे.

प्रसर थतां जो वायु पित्तना स्थानमां आव्यो होय तो तेनी पित्तनी पेठे चिकित्सा करवी, पित्त कफना स्थानमां आव्युं होय तो तेनी कफनी पेठे चिकित्सा करवी अने कफ वायुना स्थानमां आव्यो होय तो तेनी वायुनी पेठे चिकित्सा करवी. ए चिकित्साना विभागो समजवा.

ए रीते दोषो प्रसरने अर्थात् अत्यंत प्रकोपने प्राप्त थाय छे. तेमां जो **वायु** प्रसर पाम्यो होय तो पोताना मार्गने मुकीने बीजे मार्गे चालवा लागे तथा पेटमां वेदनापूर्वक क्षोभ करे ए

१ जेम घीने उनुं करतां प्रथम तेनुं संचलन मात्र थाय तेम दोषोनुं जे संचलनमात्र थाय ते प्रकोप केहेवाय छे अने जेम ते घीने अत्यंत तपावतां फीणना समूहथी भरपूर थईने तेनी बीजा प्रदेशमां गति थाय छे तेम दोषोनी जे बीजा प्रदेशमां गति थाय ते **प्रसर** केहेवाय छे. (**डल्लन.**)

थाय छे. **पित्त** प्रसर पाम्युं होय तो एक अंगमां अथवा सर्व अंगमां बळतरा, चोस अने जाणे धुमाडा नीकळता होय एवी स्थिति ए चिह्नो थाय छे. कफ प्रसर पाम्यो होय तो अरुचि, अपाक, अंगोमां ग्लानि अने उलटी ए चिह्नो थाय छे. आ रीते प्रसर थाय त्यारे चिकित्सानो त्रीजो अवसर छे.[1]

१५ अत ऊर्ध्वं स्थानसंश्रयं वक्ष्यामः ॥ एवं कुपितास्तांस्ताञ्छरीरप्रदेशानागत्य तांस्तान् व्याधीञ्जनयन्ति । ते यदोदरसंनिवेशं कुर्वन्ति तदा गुल्मविद्रध्युदराग्निसङ्गानाहविसूचिकातिसारप्रभृतीञ्जनयन्ति । बस्तिगताः प्रमेहाश्मरीमूत्राघातमूत्रदोषप्रभृतीन् । मेढ्रगता निरुद्धप्रकशोपदंशशूकदोषप्रभृतीन् । गुदगता भगंदरार्शःप्रभृतीन् । वृषणगता वृद्धीः । ऊर्ध्वजत्रुगतास्तूर्ध्वजान् । त्वङ्मांसशोणितस्थाः क्षुद्ररोगान् कुष्ठानि विसर्पांश्च । मेदोगता ग्रन्थ्यपच्युर्बुदगलगण्डालजीप्रभृतीन् । अस्थिगता विद्रध्यनुशयीप्रभृतीन् । पादगताः श्लीपदवातशोणितवातकण्टकप्रभृतीन् । सर्वांगगता ज्वरसर्वांगरोगप्रभृतीन् ।

तेषामेवमभिनिविष्टानां पूर्वरूपप्रादुर्भावस्तत्प्रतिरोगं वक्ष्यामः । तत्र पूर्वरूपगतेषु चतुर्थः क्रियाकालः ॥

दोषोनो चिकित्साना चोथा कालरूप स्थानसंश्रय.

१६ हवे दोषोना स्थानसंश्रय विषे कहीए छीए. ए रीते प्रसर थतां दोषो शरीरना ते ते प्रदेशोमां आवीने ते ते व्याधिओनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे ते स्थानसंश्रय केहेवाय छे. ए दोषो ज्यारे **उदरमां** जमा थाय त्यारे गुल्म, विद्रधि, उदरना रोगो, अग्निनी मंदता, मलबंध, कालेरा अने अतीसार इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे **मूत्राशयमां** जमा थाय त्यारे प्रमेह, पथरी, मूत्राघात अने मूत्रदोष इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे **लिंगमां** जमा थाय त्यारे निरुद्धप्रकुश[2], चांदी अने शूकदोष[3] इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे **गुदामां** जमा थाय त्यारे भगंदर अने अरश इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे **वृषणमां** जमा थाय त्यारे वधराळनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. **गळाना कांठलाथी उपरना भागमां** जमा थाय त्यारे ते भागना रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे **त्वचामां**, (रसमां) **मांसमां** के **रुधिरमां** जमा थाय त्यारे क्षुद्ररोग, कोढ, तथा विसर्प एओनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे **मेदमां** जमा थाय त्यारे गांठ, अपची, अर्बुद, गलगंड तथा अलजी[4] इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे **अस्थिओमां** जमा थाय त्यारे विद्रधि अने अनुशयी[5] इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे.[8] ज्यारे **पगमां** जमा थाय त्यारे श्लीपद[7],

---

१ प्रसर थयो होय त्यांसुधी दोषनी तेनां कारणो उपरथी तथा चिन्हो उपरथी आनुमानिक चिकित्साओ थाय अने प्रसरथी पछीनी स्थितिओमां तो व्याधिओ जणाई रेहेवाथी प्रत्यक्ष चिकित्साओ थाय छे.

२ लिंगनो मणि चामडीथी रोकाइ जतां मूत्रनो मार्ग रोकाइने थोडुं थोडुं मूतराय छे तथा मणि खुल्लो थतो नथी ते रोग.

३ लिंगने औषधो लगावीने जाडुं करवा जतां थता रोगो.

४ गंडमालनी गांठ्यो पाकी फुटीने स्रवे तथा केटलीएक नष्ट थईने पाछी उत्पन्न थाय ते रोग.

५ घणे काळे वधे अने पाके एवी उंडां मूळवाळी मोटी गोळ रसोळी.

६ हडपचीनी, ओडनी अथवा गळानी उपर वृषणनी पेठे लटकतो नाहानो अथवा मोटो सोजो. (भा.प्र.)

७ पग उपर गंभीर अल्प सोजावाळी, पगना जेवा वर्णवाळी अने अंदर पाकवाळी फोडली थाय छे ते.(भा.प्र.)

८-मज्जामां तथा शुक्रमां दोषो जमा थतां जे रोगो थाय छे तेओ स्वल्प छे अने कोइ वखतेज थाय छे माटे तेओ विषे अहीं कशुं कह्युं नथी. (डल्लन.)

९ बहु पीडावाळो साथळना मूळमां थईने अनुक्रमे पगमां उतरेलो सोजो. आवो सोजो कान नेत्र लिंग होठ तथा नाक एओमां पण थाय छे.

वातरक्त तथा वातकंटक इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे. ज्यारे सघळा शरीरमां जमा थाय त्यारे ज्वर अने सर्वांगवात इत्यादि रोगोनां पूर्वरूपोने उत्पन्न करे छे.

ते ते स्थानकोमां जमा थएला दोषोथी जे जे रोगोनां जे जे पूर्वरूपो थाय छे ते ते पूर्वरूपो ते ते रोगना विषयमां कहीशुं. रोगो पूर्वरूपनी स्थितिमां होय त्यारे चिकित्सानो चोथो अवसर छे.[2]

१६ अत ऊर्ध्वं व्याधिदर्शनं वक्ष्यामः । शोफार्बुदग्रन्थिविद्रधिविसर्पप्रभृतीनां प्रव्यक्तलक्षणता ज्वरातिसारप्रभृतीनां च । तत्र पंचमः क्रियाकालः ॥

दोषोनी, चिकित्साना पांचमा कालरूप व्यक्ति.

१६ हवे व्यक्तिनुं निरूपण करीएछीए. सोजा, अर्बुद, ग्रंथि, विद्रधि अने विसर्प इत्यादि रोगोनां तथा ज्वर अने अतीसार इत्यादि रोगोनां रूपो स्पष्ट रीते देखवामां आवे ए दोषोनी व्यक्ति समजवी. आ रीतनी व्यक्ति थाय त्यारे चिकित्सानो पांचमो अवसर छे.

१७ अत ऊर्ध्वमेतेषामवदीर्णानां व्रणभावमापन्नानां षष्ठः क्रियाकालः । ज्वरातिसारप्रभृतीनां च दीर्घकालानुबन्धः । तत्राप्रतिक्रियमाणेऽसाध्यतामुपयान्ति ॥

दोषोनो चिकित्साना छठ्ठा कालरूप भेद.

१७ सोजा, अर्बुद, ग्रंथि, विद्रधि अने विसर्प वगेरे रोगो ज्यारे फाटीने व्रणरूप थाय त्यारे अने ज्वर तथा अतीसार वगेरे रोगो लांबा काळसूधी चाले त्यारे दोषोनो भेद थयो समजवो.[3] आ भेद चिकित्सानो छठ्ठो अवसर छे. आ अवसरमां पण जो चिकित्सा करवामां न आवे तो रोगो असाध्य थाय छे. (भेदथी पेहेलांनी पांच स्थितिओमां वखतपर चिकित्सा न थई होय तो पण चिकित्सानो अवसर रेहे छे पण भेद थया पछी जो चिकित्सा न करवामां आवे तो सातमी कोई पण स्थिति नहीं होवाथी रोगना नाशनी आशाज राखी शकाती नथी.)

१८ भवन्ति चात्र ॥

संचयं च प्रकोपं च प्रसरं स्थानसंश्रयम् ।
व्यक्तिं भेदं च यो वेत्ति दोषाणां स भवेद्भिषक्॥
संचयेऽपहृता दोषा लभन्ते नोत्तरा गतीः ।
ते तूत्तरासु गतिषु भवन्ति बलवत्तराः ॥

वैद्यनुं लक्षण तथा पेहेला अवसरमां करेली चिकित्साथी लाभ.

१८ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "दोषोनां संचय, प्रकोप, प्रसर, स्थानसंश्रय, व्यक्ति अने भेद एओने अने संचयादिकनां कारणो तथा स्थानो वगेरेने जे जाणतो होय तेज वैद्यपणाने लायक छे.

संचयना समयमांज जो चिकित्सा करवामां आवे तो दोषो प्रकोप आदि उत्तरोत्तर स्थितिओमां आवी शकता नथी अने चिकित्सा पण अल्प करवी पडे छे. ए दोषो जेम जेम उत्तरोत्तर स्थितिओमां आवता जाय तेम तेम बलवत्तर थता जाय छे. (जो दोषोनुं बहुपणुं होय तो संशोधनरूप, मध्यपणुं होय तो लंघन–पाचनरूप अने अल्पपणुं होय तो संशमनरूप चिकित्सा करवी.)

१९ सर्वैर्भावैस्त्रिभिर्वापि द्वाभ्यामेकेन वा पुनः। संसर्गे कुपितः क्रुद्धं दोषं दोषोऽनुधावति ॥

---

१ श्रमथी अथवा पग विषम रीते मुकायाथी वायुने लीधे घुंटीमां जे पीडा थाय ते.

२ सूक्ष्मपणाने लीधे स्थानमां जमा थवानुं लक्षण पण नहीं केहेतां अने तेने क्रियाकालपणुं पण नहीं आपतां परभारूं तेना कार्यरूप पूर्वरूपनेज क्रियाकालपणुं आप्युं छे.

३ केटलाएक केहे छे के दरएक व्याधिओनी जातोमां लांबा काळसूधी चालवुं संभवतुं नथी एटला माटे ज्वरादिक व्याधिओमां जे वात वगेरेनां लक्षणो उपरथी जुदाइ गणावी छे तेनेज भेदरूप समजवी. जेम के ज्वरना आठ भेद छे इत्यादि.

संसर्गे यो गरीयान् स्यादुपक्रम्यः स वै भवेत्। शेषदोषाविरोधेन सन्निपाते तथैवच ॥

रोगने उत्पन्न करनारा दोषोमां 'कयो मुख्य छे अने कयो गौण छे?' ते जाणवानी अने जाणीने चिकित्सा करवानी पद्धति.

१९ बे अथवा त्रण दोष भेळा थया होय तेओमां प्रकोप पामेलो जे दोष अंशोथी परिपूर्ण होय तेने मुख्य जाणवो अने प्रकोप पामेला जे एक के बे दोष पोताना एक बे के त्रण अंशोथी पेहेला मुख्य दोपने अनुसर्‍या होय तेओने गौण जाणवा. (जे मुख्य होय ते अनुबंध्य केहेवाय छे अने जे गौण होय ते अनुबंध केहेवाय छे. अनुबंध्यनी चिकित्सा करीने तेनो प्रशम करवाथी अनुबंधनो प्रशम थई जाय छे. जो बे के त्रण दोषो पोतपोताना सघळा अंशोथी परिपूर्ण होय तो सर्वने परस्परना अनुबंधरूप समजवा.) बे दोपना संसर्गमां अथवा त्रणे दोपना सन्निपातमां जे दोष बलवत्तर होय तेनी चिकित्सा करवी अने तेमां बाकीना दोपने अथवा दोपोने अयोग्य उपचार न थाय एवी संभाळ राखवी.

२० वृणोति यस्माद्रूढेऽपि व्रणवस्तु न नश्यति। आदेहधारणात्तस्माद्व्रण इत्युच्यते बुधैः ॥

व्रण शब्दनो अर्थ.

२० व्रण जे भागमां उत्पन्न थयो होय ते भागने ढांकी दे छे, अने धरती आवीने रुझाई गया पछी पण शरीर रहे त्यांसुधी तेनुं चिह्न मटतुं नथी एटला माटे विद्वान लोको तेने 'व्रण' केहे छे."

अध्याय २२ मो.

१ अथातो व्रणास्रावविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'व्रणास्रावविज्ञानीयं' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलु छ.

२ त्वङ्मांसशिरास्नाय्वस्थिसंधिकोष्ठमर्माणीत्यष्टौ व्रणवस्तूनि। अत्र सर्वव्रणसंनिवेशः। तत्राद्यैकवस्तुसंनिवेशी त्वग्भेदी व्रणः सूपचरः। शेषाः स्वयमवदीर्यमाणा दुरुपचाराः॥ तत्रायतश्चतुरस्रो वृत्तस्त्रिपुटक इति व्रणाकृतिसमासः। शेषास्तु विकृताकृतयो दुरुपक्रमा भवन्ति। सर्व एव व्रणाः क्षिप्रं संरोहन्त्यात्मवतां सुभिषग्भिश्चोपक्रान्ताः। अनात्मनामज्ञैश्चोपक्रान्ताः प्रदुष्यन्ति प्रवृद्धत्वाद्दोषाणाम् ॥

व्रणोनां स्थानको अने व्रणोनी चिकित्सामां सुगमता तथा मुशकेली.

२ त्वचा, मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, संधि, कोठो अने मर्म ए आठ, व्रणोनां स्थानको छे. जे व्रण थाय छे ते एओमानांज स्थानकोमां थाय छे. तेओमां जे व्रण पेहेलाज स्थानकवाळो एटले केवळ त्वचानेज भेदीने थयो होय तेनी चिकित्सा करवी सुगम छे. बाकीना मांस आदि स्थानकोवाळा व्रणो जो आलेपनआदि क्रिया विना पोतानी मेळेज पाकीने फाट्या होय तो तेओनी चिकित्सा कठण थई पडे छे. व्रण लांबी, चोरस, गोळ अने त्रिकोण एओमांनी कोई आकृतिवाळो होय तो चि-

१ 'सान्निपातिक ज्वरोमां प्रथम पित्तनुंज शमन करवुं. केमके ज्वरथी पीडाएलां शरीरोमां पित्त, निवारण करवाने अत्यंत अशक्य छे. सन्निपात ज्वरमां अने सन्निपातातिसारमां तो प्रथम पित्तनुंज निवारण करवाना उपचारो करवा' इत्यादि वचनो तो समसन्निपातने माटे छे. विषम सन्निपातमां तो जे दोष बलवत्तर जणाय तेनीज चिकित्सा करवी. (डल्हन.)

२ परू वगेरेना स्रावो उपरथी व्रणोना दोपो वगेरेनी परीक्षा विषेनो.

३ जेम स्रावनुं ज्ञान चिकित्सामां मदद करे छे तेम आकृतिनुं ज्ञान पण मदद करे छे.

कित्सा करवामां सुगम थाय छे अने बाकीना अर्द्धचंद्र तथा साथीआआदि विकृत आकृतिवाळा व्रणो चिकित्सा करवामां मुशकेली भरेला थई पडे छे. हित आहारनुं तथा हित विहारनुं सेवन करनारा माणसोने थएला अने जेओनी चिकित्सा सारा वैद्योना हाथथी थती होय एवा सघळा व्रणो तुरत धरती आववाथी रुझाई जाय छे[1] अने अहित आहारनुं तथा अहित विहारनुं सेवन करनारा माणसोने थएला तथा जेओनी चिकित्सा मूर्ख वैद्योना हाथथी थती होय एवा व्रणो दोषोनी वृद्धिथी कवथाई जाय छे.

३ तत्रातिसंवृतोऽतिविवृतोऽतिकठिनोऽतिमृदुरुत्सन्नोऽवसन्नोऽतिशीतोऽत्युष्णः कृष्णरक्तपीतशुक्लादीनां वर्णानामन्यतमवर्णो भैरवः पूतिपूयमांसशिरास्नायुप्रभृतिपूर्णः पूतिपूयास्राव्युन्मार्ग्युत्सङ्ग्यमनोज्ञदर्शनगन्धोऽत्यर्थं वेदनावान् दाहपाकरागकण्डूशोफपिडकोपद्रुतोऽत्यर्थं दुष्टशोणितास्रावी दीर्घकालानुबन्धी चेति दुष्टव्रणलिङ्गानि ॥

घणुं करीने दुष्ट व्रणोमांज स्राव थाय छे माटे दुष्ट व्रणोनां चिह्नो.

३ जे व्रण अत्यंत संकोचाएलो, अत्यंत उघाडा मुखवाळो, अत्यंत कठण, अत्यंत कोमळ, उंचां मांसवाळो, हीन मांसवाळो, (उंडा आकारवाळो) अत्यंत शीतल, अत्यंत उनो, काळा राता पीळा के धोळा वगेरे वर्णवाळो, जेनुं कारण जाणवामां न आवतुं होय एवो, दुर्गंधी परू दुर्गंधी मांस दुर्गंधी शिराओ तथा दुर्गंधी स्नायु वगेरेथी भरेलो, दुर्गंधी परूना स्राववाळो, आडी गतिवाळो, अंदर उंडी कोतरवाळो, खराब देखाववाळो, खराब गंधवाळो, अत्यंत वेदनावाळो, दाहथी पाकथी रताशथी खरजथी सोजाथी तथा फोडलीओथी उपद्रव पामेलो, दुष्ट रुधिरना अतिस्राववाळो के लांबा काळथी थएलो होय ते व्रणने दुष्ट जाणवो.

४ तस्य दोषोच्छ्रायेण षट्त्वं विभज्य यथास्वं प्रतीकारे प्रयतेत ॥

व्रणनी छ भेदमां वेहेंचण करी चिकित्सा करवानी पद्धति.

४ व्रणने दोषना उत्कटपणा ऊपरथी वात, पित्त, कफ, रुधिर, सन्निपात अने आगंतु ए छ भेदमां वेहेची सूक्ष्म दृष्टिथी अमुक भेदनो निश्चय करीने दोषना अनुसारथी तेनी चिकित्सा करवानो यत्न करवो.

५ अत ऊर्ध्वं सर्वस्रावान् वक्ष्यामः। तत्र घृष्टासु छिन्नासु वा त्वक्षु स्फोटेषु भिन्नेषु विदारितेषु वा सलिलप्रकाशो भवत्यास्रावः किंचिद्विस्रः पीतावभासश्च । मांसगतः सर्पिःप्रकाशः सान्द्रः श्वेतः पिच्छिलश्च । शिरागतः सद्यश्छिन्नासु शिरासु रक्तातिप्रवृत्तिः पक्वासु च तोयनाडीभिरिव तोयागमनं पूयस्यास्रावश्चात्र तनुर्विच्छिन्नः पिच्छिलोऽवलम्बीश्यावोऽवश्यायप्रतिमश्च । स्नायुगतः स्निग्धो घनः सिंघाणकप्रतिमः सरक्तश्च । अस्थिगतोऽस्थिन्यभिहते स्फुटिते भिन्ने दोषावदारिते वा दोषभक्षितत्वादस्थि निःसारं शुक्तिधौतमिवाभात्यास्रावश्चात्र मज्जामिश्रः सरुधिरः

---

१ कोढ तथा प्रमेहवाळा लोको योग्य आहारविहारवाळा होय अने योग्य वैद्यना हाथथी चिकित्सा पामता होय तो पण तेओना व्रणो कोई वखते वीर्यनी प्रवृत्तिमात्रथीज दुष्ट थई जाय छे.

२ अत्यंत संकोच, कठणपणुं ऊंचा मांसवाळापणुं, वेदना अने सोजो एओ वायुथी थाय छे. अत्यंत खुल्ला मोहोडावाळापणुं अत्यंत उनापणुं, खराब देखाववाळापणुं, खराब गंधवाळापणुं, दाह, पाक, रताश अने दुष्ट रुधिरनो स्राव एओ रुधिरथी तथा पित्तथी थाय छे. अत्यंत कोमळपणुं, कोतर अने खरज एओ कफथी थाय छे. अतिशीतपणुं कफसहित वायुथी थाय छे अने लांबा काळसुधी स्थिति त्रणे दोषोथी थाय छे इत्यादि यथायोग्य समजी लेवुं.

स्निग्धश्च ॥ संधिगतः पीड्यमानो न प्रवर्तेत आकुंचनप्रसारणोन्नमनविनमनप्रधावनोत्कासनप्रवाहणैश्च स्रवत्यास्रावश्चात्र पिच्छिलोऽवलम्बी सफेनपूयरुधिरोन्मथितश्च ॥ कोष्ठगतोऽसृङ्मूत्रपुरीषपूयोदकानि स्रवति ॥ मर्मगतस्त्वगादिष्ववरुद्धत्वान्नोच्यते ॥

व्रणमां थता स्रावो उपरथी तेनां स्थानकोनी परीक्षा.

५ हवे दोषसंबंधी व्रणना तथा आगंतु व्रणना स्रावो कहीएछीए. त्वचा घसावाथी के छेदावाथी अथवा फोल्ला भेदावाथी के कोईए भेदवाथी त्वचांमां[1] जे व्रण थाय छे तेमांथी पाणी जेवो, कांईक काचा[2] मांसादिकना जेवा गंधवाळो अने पीळा देखाववाळो स्राव थाय छे. **मांसमां** रहेला व्रणमांथी घी जेवो, घाटो, धोळो अने चीकणो स्राव थाय छे. शिराओनुं आघात आदिथी तुरत छेदन थई जतां जे व्रण थाय तेमांथी रुधिरनी अत्यंत प्रवृत्ति थाय छे अने शिराओ पाकी जतां **शिराओमां**[3] जे व्रण थाय छे तेमांथी जाणे नळीओथी पाणी आवतुं होय तेम स्राव आव्या करेछे अने परूनो स्राव पातळो, थोडो थोडो चीकणो, लटकतो, काळो तथा झाकळ जेवो थाय छे. **स्नायुमां**[4] रहेला व्रणमांथी स्निग्ध, घाटो, नाकना जाडा लींट जेवो अने रताशवाळो स्राव थाय छे. अस्थि अभिघात पामतां, फूटतां, भेदातां अथवा दोषथी चीरातां **अस्थिमां** व्रण थाय छे त्यारे अस्थि दोषथी खवाई जवाने लीधे हलकुं थई जाय छे, छीप जेवुं थई जाय छे तथा धोएला जेवुं लागे छे अने तेमांथी मज्जाथी मिश्रित तथा रुधिरवाळो स्निग्ध स्राव थाय छे. जो व्रण **संधिमां** थयो होय तो दबावतां छतां पण तेमांथी स्राव थतो नथी परंतु हाथ वगेरे गात्रोने संकोचवाथी, लांबां करवाथी, उंचां करवाथी, नीचां करवाथी, दोडवाथी, खांसी आववाथी तथा वेगसंबंधी जोर करवाथी स्राव थाय छे अने ते स्राव चीकणो, लटकतो अने परूथी तथा फीणथी मिश्रित लोहीवाळो थाय छे. **कोठामां** रहेला व्रणमांथी[5] लोही, मूत्र, विष्टा, परू तथा पित्त अथवा रसनो क्लेद एओनो स्राव थाय छे. **मर्ममां** रहेला व्रणनो त्वचा आदिमां रहेला व्रणोमां अंतर्भाव थई जाय छे तेथी तेना स्राव विषे अहीं जुदुं केहेवामां आवतुं नथी.

६ तत्र त्वगादिगतानामास्रावाणां यथाक्रमं पारुष्यश्यावावश्यायदधिमस्तुक्षारोदकमांसधावनपुलाकोदकसंनिभत्वानि मारुताद्भवन्ति । पित्ताद्गोमेदगोमूत्रभस्मशङ्खकषायोदकमाध्वीकतैलसंनिभत्वानि । पित्तवद्रक्तादतिविस्रत्वं च । कफान्नवनीतकासीसमज्जपिष्टतिलनारिकेलोदकवराहवसासंनिभत्वानि । सन्निपातात्तिलनारिकेलोदकैर्वारुकरसकाञ्जिकप्रसादारुकोदकप्रियङ्गुफलयकृन्मुद्गयूषसवर्णत्वानीति ॥

व्रणमांथी थता स्रावो उपरथी तेना दोषोनी परीक्षा.

६[6] त्वचा वगेरेमां रहेला व्रणोमांथी जो अनु-

१ त्वचामां थाय छे एटले रसमां थाय छे एम समजवुं. (डल्हन.)

२ काचा मांसादिकना जेवो गंध तथा पीळो देखाव ए पित्तथी थता स्रावनुं लक्षण छे.

३ शिरा कपायाथी जे व्रण थाय तेनुं अधिष्ठान रुधिर छे एम समजवुं.

४ स्नायुना व्रणनुं अधिष्ठान मेद छे एम समजवुं. केटलाएक केहे छे के मेद अने मज्जा एओ बीनी पेठे पीगळी जवाना स्वभाववाळा छे माटे तेओमां व्रणनी स्थिति संभवती नथी.

५ 'कोठामां रहेलो व्रण' ए शब्दथी मळोना तथा धातुओना समुदायमां रहेलो व्रण कह्यो एम समजवुं. (डल्हन.)

६ आ विषयमां कहेला व्रणोमां जे व्रणो घसावा तथा छेदावा वगेरे बाहारनां कारणोथी थया होय तेओने आगंतु व्रणो समजवा.

क्रमे कठण, काळो, झाकळ जेवो, दही जेवो, दहीना पाणी जेवो, खाराना पाणी जेवो, मांसनां धोण जेवो अने काचा धान्यना धोण जेवो स्राव थतो होय तो जाणवुं के ते व्रण **वायुथी** दुष्ट छे. गोमेद नामना मणि जेवो, गोमूत्र जेवो, भस्म जेवो, शंख जेवो, काथना पाणी जेवो, मद्य जेवो अने तेल जेवो स्राव थतो होय तो जाणवुं के ते व्रण **पित्तथी** दुष्ट छे. पित्तथी थता स्राव जेवो अने अत्यंत काचा मांसना जेवा गंधवाळो स्राव थतो होय तो जाणवुं के ते व्रण **रुधिरथी** दुष्ट छे. मांखण जेवो, हीराकसी जेवो, मज्जा जेवो, लोटना पाणी जेवो, तिलना पाणी जेवो, नाळीएरना पाणी जेवो अने सूवरनी चरबी जेवो स्राव थतो होय तो जाणवुं के ते व्रण **कफथी** दुष्ट छे. तलना तथा नाळीएरना पाणी जेवो, काकडीना रस जेवो, कांजीनी आछ जेवो, अरुक(ना पाणी जेवो, घउंला जेवा वर्णवाळो, यकृत्‌ना जेवा वर्णवाळो अने मगना यूषना जेवा वर्णवाळो स्राव थतो होय तो जाणवुं के ते व्रण **त्रणे दोषोथी** दुष्ट छे.

७ श्लोकौ चात्र भवतः ॥

पक्काशयादसाध्यस्तु पुलाकोदकसंनिभः ।
क्षारोदकनिभः स्रावो वर्ज्यो रक्ताशयात्स्रवन् ॥
आमाशयात्कलायाम्भोनिभश्च त्रिकसंधिजः ।
स्रावानेतान्परीक्ष्यादौ ततः कर्माचरेद्भिषक् ॥

स्राव उपरथी व्रणना असाध्यपणानी परीक्षा.

७ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के “ जो पक्काशयमांथी काचा धान्यना धोण जेवो स्राव थतो होय तो ते व्रणने असाध्य जाणीने छोडी देवो. तेमज रक्ताशयमांथी खाराना पाणी जेवो, आमाशयमांथी मटरना धोण जेवो, तेमज कांधना तथा हाथना संधिस्थानमांथी पण मटरना धोण जेवो स्राव थतो होय तो ते व्रणोने पण असाध्य जाणी छोडी देवा. वैद्ये प्रथम आ प्रमाणे स्रावोनी परीक्षा करीने पछी चिकित्सा करवी.

८ अत ऊर्ध्वं सर्वव्रणवेदना वक्ष्यामः ॥

तोदनभेदनताडनच्छेदनायमनमन्थनविक्षेपणचुमचुमायननिर्दहनावभञ्जनस्फोटनविदारणोत्पाटनकम्पनविविधशूलविश्लेषणविकिरणपूरणस्तम्भनस्वपनावकुञ्चनाङ्कुशिकाः संभवन्त्यनिमित्तविविधवेदनाप्रादुर्भावो वा मुहुर्मुहुर्यत्रागच्छन्ति वेदनाविशेषास्तं वातिकमिति विद्यात् ॥

उपाचोपपरिदाहधूमायनानि यत्र गात्रमङ्गारावकीर्णमिव पच्यते यत्र चोष्माभिवृद्धिः क्षते क्षारावसिक्तवच्च वेदनाविशेषास्तं पैत्तिकमिति विद्यात् ॥

पित्तवद्रक्तसमुत्थं जानीयात् ॥

कण्डूर्गुरुत्वं सुप्तत्वमुपदेहोऽल्पवेदनत्वं स्तम्भः शैत्यं च यत्र तं श्लैष्मिकमिति विद्यात् ॥

यत्र सर्वासां वेदनानां समुत्पत्तिस्तं सांनिपातिकमिति विद्यात् ॥

जुदा जुदा प्रकारोनी वेदनाओ उपरथी व्रणोनी परीक्षा.

८ हवे कया दोषवाळा व्रणमां कया प्रकारनी वेदना थाय ते विषे कहीएछीए. जे व्रणमां सोईओथी भोकाया जेवी, चामडी चीराया जेवी, धोकाथी वागता मार जेवी, शस्त्रादिकथी थता छेदन जेवी, संकोचाएला अंगने लांबुं करवामां आवतुं होय तेना जेवी, रवाईथी वलोवाया जेवी, उचकावीने फेंकी नखाता जेवी, राई वगेरेनो लेप करवाथी थता चमचमाट जेवी, अग्निथी बाळी

१ मर्मने छोडी दईने त्वचा वगेरे सात स्थानोमां अनुक्रम लेवो एटले त्वचामां रहेला व्रणमांथी कठण, मांसमां रहेला व्रणमांथी काळो, शिरामां रहेला व्रणमांथा झाकळ जेवो इत्यादि समजी लेवुं. आवी रीते पित्तव्रण, रुधिरव्रण, कफव्रण तथा सन्निपातव्रण एओना स्रावोमां पण त्वचा वगेरे सात स्थानोनो अनुक्रम लेवो.

नखाता जेवी, मरडीने भांगी नखाता जेवी, पथरा वगेरेथी फाडी नखाता जेवी, नख वगेरेथी चीरी नखाता जेवी, उखेडी नखाता जेवी, हाथ वगेरेथी कंपावाता जेवी, अंगमां अनेक शूळ नीकळतां होय एवी, अवयवोने तोडीने जुदा जुदा मुकाता होय एवी, अंदरमां ठुंचा भराता होय एवी, दाबीने स्तब्ध करी नाखवामां आवतुं होय एवी, जडता थवा जेवी, संकुचित करातुं होय एवी अने खाली चड्या जेवी तथा अंकुशोथी आकर्षण थतुं होय एवी वेदनाओ थती होय अथवा अकस्मात् अकस्मात् अनेक वेदनाओ प्रकट थती होय अथवा वारंवार नवी नवी वेदनाओ आव्या करती होय ते व्रणने **वातजन्य** जाणवो.

जे व्रणमां एक ठेकाणे अथवा सर्व ठेकाणे दाह थतो होय, चोस थतो होय, धुमाडा नीकळवा जेवुं लागतुं होय, चोतरफ बळता टांडा मुकायानी पेठे गात्र रंधाई जतुं होय, गरमीनी अत्यंत वृद्धि थती होय अने जाणे जख्ममां क्षार मुकातो होय एवी अनेक जातनी वेदनाओ थती होय ते व्रणने **पित्तजन्य** जाणवो.

रुधिरजन्य व्रणने पण पित्तजन्य व्रणना जेवीज वेदनाओथी पारखी लेवो.

जे व्रणमां खरज, भारेपणुं, जडपणुं, (नख वाग्या वगेरेनी के मांखी-मच्छर वगेरेना दंशनी वेदना जाणवामां न आवे एवापणुं) थरनी वृद्धि, वेदनानुं अल्पपणुं, अक्कडपणुं अने शीतपणुं होय ते व्रणने **कफजन्य** जाणवो.

जे व्रणमां उपर कहेली त्रण दोषोनी वेदनाओ उत्पन्न थती होय ते व्रणने **सन्निपातजन्य** जाणवो.

९ अत ऊर्ध्वं व्रणवर्णान्वक्ष्यामः ॥ भस्मकपोतास्थिवर्णः परुषोऽरुणः कृष्ण इति मारुतजस्य ।

नीलः पीतो हरितः श्यावः कृष्णो रक्तः कपिलः पिंगल इति रक्तपित्तसमुत्थयोः ।

श्वेतः स्निग्धः पाण्डुरिति श्लेष्मजस्य । सर्ववर्णोपेतः सांनिपातिक इति ॥

वर्णो उपरथी व्रणोनी परीक्षा.

९ हवे कया दोषथी थएला व्रणनो केवो वर्ण थाय छे ते विषे कहीएछीए. जे व्रणनो वर्ण भस्मना जेवो, होलाना जेवो, हाडकाना जेवो, बरड, रातो के काळो होय ते व्रणने **वातजन्य** जाणवो.

जे व्रणनो वर्ण नील, पीळो, लीलो, जरा काळो, काळो, रातो, कपिल के पींगळो होय ते व्रणने **पित्तजन्य** जाणवो. **रुधिरजन्य** व्रण पण एवाज वर्णवाळो होय छे.

जे व्रणनो वर्ण सफेद, स्निग्ध के पांडु होय ते व्रणने **कफजन्य** जाणवो.

जे व्रणनो वर्ण उपर कहेला सघळा प्रकारोवाळो होय ते व्रणने **सन्निपातजन्य** जाणवो.

१० भवति चात्र ॥

न केवलं व्रणेपूक्तो वेदनावर्णसंग्रहः ।
सर्वशोफविकारेषु व्रणवल्लक्षयेद्भिषक् ॥

सोजासंबंधी विकारोमां पण व्रणनी पेठेज परीक्षा करवी.

१० आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के " उपर जे वेदनाओनुं, वर्णोनुं, स्रावोनुं तथा बीजा पण दोषजन्य प्रकारोनुं वर्णन कर्युं ते केवळ व्रणोनी परीक्षाने माटेज नथी माटे वैद्ये तेवा वर्णो वगेरे उपरथी विद्रधि, अळजी तथा ग्रंथि वगेरे सघळा सोजासंबंधी विकारोनी पण एप्रमाणेज परीक्षा करवी."

अध्याय २३ मो.

१ अथातः कृत्याकृत्यविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कृत्याकृ

विधि' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ तत्र वयस्थानां दृढानां प्राणवतां सत्ववतां च सुचिकित्स्या व्रणा एकस्मिन्वा पुरुषे यत्रैतद्गुणचतुष्टयं तस्य सुखसाधनीयतमाः । तत्र वयस्थानां प्रत्यग्रधातुत्वादाशु व्रणा रोहन्ति । दृढानां स्थिरबहुमांसत्वाच्छस्त्रमवचार्यमाणं शिरास्नाय्वादिविशेषान्न प्राप्नोति । प्राणवतां वेदनाभिघाताहारयंत्रणादिभिर्न ग्लानिरुत्पद्यते । सत्ववतां दारुणैरपि क्रियाविशेषैर्न व्यथा भवति । तस्माद्वेतेषां सुखसाधनीयाः ॥

केवा रोगीओना व्रणो सुखसाध्य छे?

२ जुवान माणसोना, दृढ माणसोना, शक्तिवाळां माणसोना अने कष्ट पडतां छतां पण व्याकुल नहीं थनारां माणसोना व्रणो सुखसाध्य छे. जे एकज माणसमां जुवानपणुं, दृढपणुं, शक्तिवाळापणुं अने कष्ट पडतां छतां पण नहीं व्याकुल थनारापणुं ए चारे गुणो होय तेना व्रणो तो अत्यंत सुखसाध्य छे. जुवान माणसोना सवळा धातुओ नवा होय छे तेथी तेओना व्रणो तुरत रुझाई जाय छे. दृढ माणसोनुं मांस स्थिर तथा घणुं होय छे तेथी तेओना व्रणोमां नाखवामां आवतुं शस्त्र तेओनी शिराने के स्नायु वगेरेने पोहोंची जतुं नथी. शक्तिवाळां माणसोने वेदना, अभिघात तथा आहारनी परेजी इत्यादिकथी शरीरनी शिथिलता थती नथी अने कष्ट पडतां छतां पण व्याकुल नहीं थनारां माणसोने अनेक प्रकारनी दारुण क्रियाओथी पण व्यथा थती नथी एटला माटे एओना व्रणो सुखसाध्य थाय छे. (एओमांथी एक गुण होय तो व्रण सुखसाध्य थाय छे, बे के त्रण गुणो होय तो व्रण वधारे सुखसाध्य थाय छे अने चारे गुणो होय तो व्रण अत्यंत सुखसाध्य थाय छे.)

३ त एव विपरीतगुणा वृद्धकृशाल्पप्राणभीरुषु द्रष्टव्याः ॥

केवा रोगीओना व्रणो कष्टसाध्य छे?

३ जेओ वृद्ध, कृश, (अदृढ) अल्प शक्तिवाळा के बीकण होय तेओना व्रणो कष्टसाध्य थाय छे. (वृद्धपणुं, अदृढपणुं, अल्प शक्ति अने बीकणपणुं एओमांथी एक होय तो व्रण कष्टसाध्य थाय छे, बे के त्रण होय तो वधारे कष्टसाध्य थाय छे अने ए चारे होय तो अतिकष्टसाध्य थाय छे.)

४ स्फिक्पायुप्रजननललाटगण्डौष्ठपृष्ठकर्णफलकोषजत्रुमुखाभ्यन्तरसंस्थाः सुखरोपणीया व्रणाः ॥

क्यां स्थानकोमां थएला व्रणो सुखसाध्य छे?

४ कूला, गुदा, लिंग, ललाट, गाल, होठ, पीठ, वृषण, गळानो कांठलो अने मोहोडानो अंदरनो भाग एओमां थएला व्रणो सेहेज रुझावी शकाय छे तेथी सुखसाध्य छे.

५ अक्षिदन्तनासापाङ्गश्रोत्रनाभिजठरसेवनीनितम्बपार्श्वकुक्षिवक्षःकक्षास्तनसंधिभागगताः ॥

क्यां स्थानकोमां थएला व्रणो कष्टसाध्य छे?

५ नेत्र, दांत, नाक, नेत्रोना प्रांत, कान, नाभि, पेट, सीवणी, नितंब, पडखां, कूख, छाती, काख अने स्तनोनो संधिभाग एओमां थएला व्रणो कष्टसाध्य छे.

६ सफेनपूयरक्तानिलवाहिनोऽन्तःशल्याश्च

१ व्रणोना साध्यपणाना, कष्टसाध्यपणाना, याप्यपणाना तथा असाध्यपणाना निर्णयविधिनो.

२ आ विषयमां नीचेना विषयमांथी 'दुश्चिकित्स्याः' ए पदनो अपकर्ष करी लेवो. केमके आनुकूल्यने माटे आ विषयने जुदो पाड्योछे.

दुश्चिकित्स्याः । अधोभागाश्चोर्ध्वभागामिर्वाहिणो रोमान्तोपनखमर्मजङ्घास्थिसंश्रिताश्च । भगंदरमपि चान्तर्मुखं सेवनीकुटकास्थिसंश्रितम् ॥

भवति चात्र ॥

कुष्ठिनां विषजुष्टानां शोषिणां मधुमेहिनाम् ।
व्रणाः कृच्छ्रेण सिध्यन्ति येषां चापि व्रणे व्रणाः ॥

वळीपण केवा तथा कया स्थलमां थयेला व्रणो कष्टसाध्य छे?

६ जेओमांथी फीण, परू तथा रुधिर एओथी संयुक्त पवन नीकळतो होय तथा जेओनी अंदर शल्य होय ते व्रणो कष्टसाध्य छे. नीचे रहेला जे व्रणोना उंचेना भागमांथी स्राव थतो होय ते व्रणो, केशोना अंतनी जग्यामां थएला व्रणो, नखोना समीपमां थएला व्रणो, मर्मोमां थएला व्रणो अने पींडीना अस्थिमां थएला व्रणो पण कष्टसाध्य छे. भगंदर पण जो अंदर मोहोडावाळुं होय अने सीवणीने, कटिकांडना अस्थिने के मूत्रमार्गना अस्थिने आश्रित होय तो कष्टसाध्य छे.

आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "कोढीआ, दूषीविषना संबंधवाळा, क्षयरोगवाळा, मधुप्रमेहवाळा, अने जेओने एक व्रणमां बीजा व्रणो थया होय तेओना व्रणो कष्टसाध्य छे."

७ अवपाटिकानिरुद्धप्रकशसंनिरुद्धगुदजठरग्रन्थिक्षतकृमयः प्रतिश्यायजाः कोष्ठजाश्च कृमयस्त्वग्दोषिणां प्रमेहिनां वा ये परिक्षतेषु दृश्यन्ते शर्करासिकतामेहवातकुण्डलिकाष्ठीलादन्तशर्करोपकुशकण्ठशालूका निष्कोषणदूषिताश्च दन्तवेष्टा विसर्पास्थिक्षतोरःक्षतव्रणग्रन्थिप्रभृतयश्च याप्याः ॥

साध्यायाप्यत्वमायान्ति याप्याश्चासाध्यतां तथा।
घ्नन्ति प्राणानसाध्यास्तु नराणामक्रियावताम् ॥
यापनीयं विजानीयात्क्रिया धारयते तु यम् ।
क्रियायां तु निवृत्तायां सद्य एव विनश्यति ॥
प्राप्ता क्रिया धारयति याप्यव्याधितमातुरम् ।
प्रपतिष्यद्दिवागारं विष्कम्भः साधुयोजितः ॥

याप्य व्रणोनो निर्देश अने 'याप्य' शब्दनो अर्थ.

७ जेओने अवपाटिका[२], निरुद्धप्रकश, सन्निरुद्धगुद[३], उदररोग, पथरीनी कांकरी, सिकतामेह[४], वातकुंडलिका[५], अष्ठीला[६], दंतशर्करा[७], उपकुश[८], कंठशालूक[९], विसर्प, अस्थिक्षत, उरःक्षत, के व्रणग्रंथि इत्यादि रोगो थएल होय, जेओने ग्रंथिना क्षतमां कीडा पड्या होय, जेओने प्रतिश्यायथी[१०] कीडा पड्या होय के कोठामां कीडा पड्या होय, जेओने त्वचाना दोषना के प्रमेहना क्षतोमां कीडा पड्या अने जेओना दांतोनां पेढांओ मसी देवा वगेरेना झेरी पदार्थथी दूषित गयां होय तेओना व्रणोने याप्य समजवा.

---

१ अति जुनुं, झेरने हणनारी औषधीओए निर्वीर्य करेलुं, वायु वगेरेए सुकावेलुं के स्वाभाविक रीते गुणहीनपणावाळुं झेर दूषीविष केहेवाय छे.

२ नाहानी उम्मरवाळी स्त्रीनो बालात्कारे संभोग करवाथी के हाथवते मैथुनक्रिया करवा वगेरेथी लिंगनी चामडी फाटी गई होय ते रोग.

३ गुदानुं द्वार सूक्ष्म थई गयुं होय ते रोग.

४ प्रमेहमां रेती जेवी कांकरीओ जती होय ते रोग.

५ मूत्राशयमां वायु कुंडलीरूप थईने फरतां वेदना सहित थोडुं थोडुं मुतराय छे ते रोग.

६ वायुथी मलमूत्र रोकाई, गुदा तथा मूत्राशय फूली जतां मलमूत्रनो मार्ग रोकनारी चंचल अने ऊंची जे लांबी गांठ थाय छे ते. (भा. प्र.)

७ दांतनो मेल अने कफ सुकाईने कांकरी जेवो खरसट स्पर्शवाळो थाय छे ते. (भा. प्र.)

८ दांतनां पेढांओमां दाह तथा पाक थाय, दांत हलबलाववाथी थोडी वेदना सहित लोही स्रवे अने मोहोडुं दुर्गंधी थाय ते रोग. (भा. प्र.)

९ गळामां कफथी कांटा जेवी, बोरना ठळीया जेवडी, खरसट तथा स्थिर गांठ थाय छे ते. (भा. प्र.)

१० प्रतिश्यायनुं लक्षण उत्तरतंत्रना २४ मा अध्यायमां जुवो.

जे रोगीमाणसो चिकित्साथी रहित रहे तेओना साध्य रोगो याप्य थई जाय छे, याप्यरोगो असाध्य थई जाय छे अने ते असाध्यरोगो तुरत प्राण लई जाय छे,

जे रोग चिकित्सा चालू रेहेवाथी प्राण लई शकतो न होय पण चिकित्सा बंध पाडवामां आवे तो तुरतज प्राण लई जाय एम होय ते रोग **याप्य** केहेवाय छे. जेम पडवाने तैयार थएला घरने सारी रीते लगावेलो थांभलो धरी राखे छे तेम याप्य व्याधिवाळा रोगीने सारी रीते करवामां आवती चिकित्सा जीवाड्या करे छे.

८ अत ऊर्ध्वमसाध्यान्वक्ष्यामः ॥ मांसपिण्डवदुद्गताः प्रसेकिनोऽन्तःपूयवेदनावन्तोऽश्वापानवदुद्वृत्तौष्ठाः । केचित्कठिना गोशृंगवदुन्नतमृदुमांसप्ररोहाः । अपरे दुष्टरुधिरास्राविणस्तनुपिच्छिलास्राविणो वा मध्योन्नताः। केचिदवसन्नसुषिरपर्यन्ताः । शणतूलवत्स्नायुजालवन्तो दुर्दर्शा वसामेदोमज्जमस्तुलुङ्गस्राविणश्च दोषसमुत्थाः । पीतासितमूत्रपुरीषवातवाहिनश्च कोष्ठस्थाः।क्षीणमांसानां च सर्वतोगतयश्चाणुमुखाः । मांसबुद्बुदवन्तः सशब्दवातवाहिनश्च शिरःकण्ठस्थाः।क्षीणमांसानां च पूयरक्तनिर्वाहिणोऽरोचकाविपाककासश्वासोपद्रवयुक्ताः । भिन्ने वा शिरःकपाले यत्र मस्तुलुङ्गदर्शनं त्रिदोषलिङ्गप्रादुर्भावः कासश्वासौ वा यस्येति ॥

भवन्ति चात्र ।

वसां मेदोऽथ मज्जानं मस्तुलुङ्गं च यः स्रवेत्।
आगन्तुस्तु व्रणः सिध्येन्न सिध्येद्दोषसम्भवः॥
अमर्मोपहिते देशे शिरासंध्यस्थिवर्जिते ।
विकारो योऽनुपर्येति तदसाध्यस्य लक्षणम् ॥
क्रमेणोपचयं प्राप्य धातूननुगतः शनैः ।
न शक्य उन्मूलयितुं वृद्धो वृक्ष इवामयः ॥
स स्थिरत्वान्महत्त्वाच्च धात्वनुक्रमणेन च ।
निहन्त्यौषधवीर्याणि मन्त्रान्दुष्टग्रहो यथा ॥
अतो यो विपरीतः स्यात्सुखसाध्यः स उच्यते।
अबद्धमूलः क्षुपको यद्वदुत्पाटने सुखः ॥

असाध्य व्रणो.

८ हवे असाध्य व्रणोनो निर्देश करीए छीए. जे व्रणो मांसना पिंडनी पेठे बाहार नीकळेला, बहु स्राववाळा, अंदर परूनी वेदनावाळा अने घोडीनी योनिनी पेठे उघडेला होठवाळा होय तेओ असाध्य छे. कठण अने जेओमां मांसना अंकुरो गायना शींगडांनी पेठे उंचा तथा कोमळ होय एवा केटलाएक व्रणो असाध्य छे. मध्यमां उंचा अने दुष्ट रुधिरना स्राववाळा अथवा पातळा अने चीकणा स्राववाळा केटलाएक व्रणो असाध्य छे. नीचा मांसवाळा अने छेडामां उंडां छिद्रवाळा केटलाएक व्रणो असाध्य छे. अभिघातथी नहीं पण दोषोथी उत्पन्न थएला केटलाएक व्रणो के जेओ शणना तांतणा जेवां स्नायुओनां जाळांओवाळा, जोई शकाय नहीं एवा भयंकर अने चरबी, मेद, मज्जा तथा मगजना स्राववाळा होय छे तेओ असाध्य छे. कोठामां रहेला जे व्रणोने लीधे गुदमांथी, मोहोडामांथी तथा व्रणना मुखमांथी काळां पीळां मूत्र विष्टा के पवन नीकळतां होय ते व्रणो असाध्य छे. जेओनां मांसो क्षीण थयां होय एवां माणसोना जे व्रणो रस वगेरे सर्व धातुओमां गतिवाळा अने झीणा मोहोडावाळा होय तेओ असाध्य छे. माथाना के कंठना जे व्रणोमांथी शब्दसहित पवन नीकळतो होय तथा मांसना परपोटां जेवां जोवामां आवता होय ते व्रणो असाध्य छे. जेओनां मांसो क्षीण थयां होय एवां माणसोना जे व्रणो परूना तथा रुधिरना वहनवाळा अने अरुचि, अपाक, खांसी तथा श्वास ए उपद्रवोथी युक्त होय तेओ असाध्य छे. माथानुं अस्थि भेदाई जतां थएला जे व्रणोमांथी मगज (जरा पीगळेला घी जेवी माथानी मज्जा) देखवामां आवतुं होय, त्रणे दोषोनां चिह्नो प्रकट थयां होय के खांसी तथा श्वास थएल होय तो ते व्रणो असाध्य छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे व्रण चरबीना, मेदना, मज्जाना तथा माथानुं मगज के जे अरधा पीगळेला घी जेवुं होय छे तेना स्रावबाळो होय ते व्रण जो आगंतु होय तो साध्य छे पण जो दोषोथी थएलो होय तो असाध्य छे. मर्मना समीपमां नहीं रहेला अने शिराओ संधिओ तथा अस्थिओ इत्यादि वगरना प्रदेशमां (त्वचामां) थया छतां पण तथा चिकित्सा कराता छतां पण जे व्रण सघळा धातुओमां फेलातो जतो होय ते व्रण असाध्य छे. क्रमथी वृद्धि पामीने धीरे धीरे धातुओमां पोहोचेलो रोग वृद्धि पामेला वृक्षनी पेठे उखेडी नाखवाने अशक्य थाय छे. स्थिरपणाथी, मोटापणाथी अने धातुओमां गति करवाथी प्रबल थएलो रोग, जेम दुष्ट ग्रह (स्कंदापस्मारादिक) मंत्रोनी शक्तिने हणी नाखे छे तेम औषधोनी शक्तिने हणी नाखे छे. जे व्रण ए असाध्यनां लक्षणोथी विपरीत लक्षणोवाळो होय ते सुखसाध्य केहेवाय छे अने ते सुखसाध्य व्रण, नहीं बंधाएला मूळवाळा तथा शाखाओ आदि वगरना नाहाना झाडनी पेठे उखेडी नाखवामां सुगम थाय छे.

९ त्रिभिर्दोषैरनाक्रान्तः श्यावौष्ठोऽपिडकी समः
अवेदनो निरास्रावो व्रणः शुद्ध इहोच्यते ॥

व्रण शुद्ध थयानुं लक्षण.

९ ज्यारे व्रण दोषोसंबंधी आकृति, गंध तथा वर्ण आदिथी रहित थाय, कांईक काळाश पकडता होठवाळो थाय, फोल्लीओ वगरनो थाय, जीभनां तळां जेवो सम थाय, दोषो संबंधी वेदनाओथी मुक्त थईने सामान्य वेदनावाळोज रहे अने स्राववगरनो थाय त्यारे तेने शुद्ध थएलो समजवो.

१० कपोतवर्णप्रतिमा यस्यान्ताः क्लेदवर्जिताः ।
स्थिराश्चिपिटिकावन्तो रोहतीति तमादिशेत्॥

व्रण रुझावा लागवानुं लक्षण.

१० ज्यारे व्रणना छेडाओ होलाना वर्ण जेवा धूसर थाय, कठण थाय, क्लेदवगरना थाय अने चामडीनी उचडती धोळी सूक्ष्म करचलीवाळा थाय त्यारे 'ते रुझावा लाग्यो छे' एम केहेवुं.

११ रूढवर्त्मानमग्रन्थिमशूनमरुजं व्रणम् ।
त्वक्सवर्णं समतलं सम्यग्रूढं विनिर्दिशेत् ॥

व्रण सारी पेठे रुझायानुं लक्षण.

११ ज्यारे व्रण जामी गएला मोहोडावाळो, ग्रंथिवगरनो, सोजावगरनो, वेदनावगरनो, चामडीना जेवा वर्णवाळो अने हाथनां तळां जेवो सपाट थई जाय त्यारे तेने बराबर रुझाएलो केहेवो.

१२ दोषप्रकोपाद्व्यायामादभिघातादजीर्णतः ।
हर्षात्क्रोधाद्भयाद्वापि व्रणो रूढोऽपि दीर्यते ॥

व्रण रुझाया पछी पण वखतपर फाटे छे तेनां कारणो.

१२ व्रण रुझाई गया छतां पण दोषोना प्रकोपथी, कसरत के मेहेनत करवाथी, अभिघात थयाथी अने अजीर्ण थवाथी पाछो फाटे छे अने हर्षथी, शोकथी के भयथी पण पाछो फाटे छे एटलामाटे केटलाक काळ सुधी ए कारणोथी दूर रेहेवुं.[1] "

अध्याय २४ मो.

१ अथातो व्याधिसमुद्देशीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'व्याधिसमुद्देशीय' [2] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्या-

---

१ आ बारमा विषयने सघळा निबंधकारोए अनार्ष (क्षेपक) गण्यो छे.

२ व्याधिओना संक्षिप्त उद्देशविषनो.

ख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ द्विविधा व्याधयः शस्त्रसाध्याः स्नेहादिक्रियासाध्याश्च । तत्र शस्त्रसाध्येषु स्नेहादिक्रिया न प्रतिषिध्यते । स्नेहादिक्रियासाध्येषु शस्त्रकर्म न क्रियते । अस्मिन्पुनः शास्त्रे सर्वतन्त्रसामान्यात्सर्वेषां व्याधीनां यथा स्थूलमवरोधः क्रियते । प्रागभिहितं तद्दुःखसंयोगो व्याधिरिति तच्च दुःखं त्रिविधमाध्यात्मिकमाधिभौतिकमाधिदैविकमिति तत्तु सप्तविधे व्याधावुपनिपतति ॥

सघळा व्याधिओनी क्रियानो संक्षेप अने स्थूल रीते व्याधिओनो संग्रह.

२ शस्त्रोथी साध्य अने स्नेहन स्वेदन आदि क्रियाओथी साध्य, एम व्याधिओ बे प्रकारना छे. तेओमां जे व्याधिओ शस्त्रोथी साध्य छे तेओमां स्नेहन आदि क्रियाओनो निषेध करवामां आवतो नथी पण जे व्याधिओ स्नेहन आदि क्रियाओथी साध्य छे तेओमां शस्त्रनी क्रियानो निषेध करवामां आवे छे. हवे आ सुश्रुततंत्र सघळां तंत्रोनी पंक्तिमां पण छे एटला माटे आ तंत्रमां स्थूल रीते सघळा व्याधिओनो संग्रह करीए छीए. आ स्थानना पेहेला अध्यायना १७ मा विषयमां केहेवाई गयुं छे के "पुरुषने जेथी दुःखनो संयोग थाय छे ते व्याधि केहेवाय छे." आध्यात्मिक, आधिभौतिक अने आधिदैविक ए रीते दुःखना त्रण प्रकार छे अने ते त्रण प्रकारनुं दुःख नीचेप्रमाणे सात प्रकारना रोगोमां प्राप्त थाय छे.

३ ते पुनः सप्तविधा व्याधयः। तद्यथा। आदिबलप्रवृत्ता जन्मबलप्रवृत्ता दोषबलप्रवृत्ताः संघातबलप्रवृत्ताः कालबलप्रवृत्ता दैवबलप्रवृत्ताः स्वभावबलप्रवृत्ता इति । तत्रादिबलप्रवृत्ता ये शुक्रशोणितदोषान्वयाः कुष्ठार्शःप्रभृतयः। तेऽपि द्विविधा मातृजाः पितृजाश्च। जन्मबलप्रवृत्ता ये मातुरपचारात्पङ्गुजात्यन्धबधिरमूकमिण्मिणवामनप्रभृतयो जायन्ते। तेऽपि द्विविधा रसकृता दौहृदापचारकृताश्च। दोषबलप्रवृत्ता य आतङ्कसमुत्पन्ना मिथ्याहाराचारभवाश्च। तेऽपि द्विविधा आमाशयसमुत्थाः पक्वाशयसमुत्थाश्च। पुनश्च द्विविधाः शारीरा मानसाश्च। त एत आध्यात्मिकाः ॥ संघातबलप्रवृत्ता य आगन्तवो दुर्बलस्य बलवद्विग्रहात्। तेऽपि द्विविधाः शस्त्रकृता व्यालादिकृताश्च। एत आधिभौतिकाः ॥ कालबलप्रवृत्ता ये शीतोष्णवातवर्षाप्रभृतिनिमित्ताः। तेऽपि द्विविधा व्यापन्नर्तुकृता अव्यापन्नर्तुकृताश्च । दैवबलप्रवृत्ता ये देवद्रोहादभिशस्तका अथर्वकृता उपसर्गकृताश्च। तेऽपि द्विविधा विद्युदशनिकृताः पिशाचादिकृताश्च। पुनश्च द्विविधाः संसर्गजा आकस्मिकाश्च ॥ स्वभावबलप्रवृत्ताः क्षुत्पिपासाजरामृत्युनिद्राप्रभृतयः । तेऽपि द्विविधाः कालकृता अकालकृताश्च। तत्र परिरक्षणकृताः कालकृता अपरिरक्षणकृता अकालकृताः। एत आधिदैविकाः। तत्र सर्वव्याध्यवरोधः ॥

रोगोना सात प्रकार.

३ आदिबलप्रवृत्त, जन्मबलप्रवृत्त, दोषबलप्रवृत्त, संघातबलप्रवृत्त, कालबलप्रवृत्त, दैवबलप्रवृत्त अने स्वभावबलप्रवृत्त ए रीते सात प्रकारना रोगो छे. वीर्यना तथा रजना दोषथी संताननां शरीरमां प्रवर्त्तनारा जे कोढ अने अरश आदि रोगो छे तेओ **आदिबलप्रवृत्त** केहेवाय छे. एओमां पण मातृज अने पितृज ए बे भेद छे. जे रोगो माताना रजना संबंधथी प्रवर्त्ते छे तेओ मातृज केहेवाय छे अने जे रोगो पिताना वीर्यना संबंधथी प्रवर्त्ते छे तेओ पितृज केहेवाय छे. लंगडापणुं, जन्मांधपणुं, बेहेरापणुं, मुंगापणुं, गुंगणुं बोलनारपणुं अने ठींगणापणुं इत्यादि रोगो के जेओ माताए करेली विरुद्ध क्रियाथी थाय छे तेओ **जन्मबलप्रवृत्त** केहेवाय छे. एओमां

पण रसज अने दौर्हृदापचारकृत ए बे भेद छे. जे रोगो माताए करेली आहारविहारनी भूलथी थाय छे तेओ रसज केहेवाय छे अने जे रोगो गर्भ रह्या पछी चोथा मासथी थता भावा अभावाने पूर्ण करवा वगेरेमां थएली मातानी भूलथी थाय छे तेओ दौर्हृदापचारकृत केहेवाय छे. जे रोगो सळीखम आदि रोगोथी उत्पन्न थाय छे तथा जे रोगो खोटा आहारथी तथा आचारथी थाय छे तेओ **दोषबलप्रवृत्त** केहेवाय छे. एओमां पण आमाशयमां उत्पन्न थएल अने पक्वाशयमां उत्पन्न थएल ए बे भेद छे अने तेओमां पण शारीर अने मानस ए बीजा बे भेद छे. आ आदिबलप्रवृत्त, जन्मबलप्रवृत्त अने दोषबलप्रवृत्त ए त्रणे प्रकारना व्याधिओ आध्यात्मिक दुःखवाळा एटले शरीरमां रहेला वात आदि दोषोथी अथवा शरीरमां रहेला रजोगुण आदि दोषोथी उत्पन्न थएला दुःखवाळा समजवा. जे रोगो नबळा माणसने बळवाननी सामे लडाई थवाथी नवा आवे छे तेओ **संघातबलप्रवृत्त** केहेवाय छे. एओमां पण शस्त्रकृत अने सिंहादिकृत ए बे भेद छे. आ संघातबलप्रवृत्त व्याधिओ आधिभौतिक दुःखवाळा एटले बीजा प्राणीओथी थएलां दुःखवाळा समजवा. जे जाड्य, दाह तथा कंप आदि रोगो टाढ, तडका, पवन के वरसाद आदि निमित्तोथी थाय छे तेओ **कालबलप्रवृत्त** केहेवाय छे. एओमां पण बगडेली ऋतुथी थएल अने नहीं बगडेली ऋतुथी थएल ए भेद छे. जे रोगो देव वगेरेनो द्रोह करवामां आवतां तेओना शाप आदि कारणथी अथवा शत्रुओए करेला अथर्ववेदोक्त आभिचारिक प्रयोगोथी अथवा पीडित लोकोना संसर्गथी थाय छे तेओ **दैवबलप्रवृत्त** केहेवाय छे. एओमां पण वीजळी तथा कडाका वगेरेए करेला अने पिशाच वगेरेए करेला ए बे भेद छे अने तेओमां पण वळी संसर्गजन्य अने आकस्मिक ए बे भेद छे. भूख, तरश, जरा, मृत्यु तथा निद्रा आदि जे रोगो स्वभावना बळथी थाय छे तेओ **स्वभावबलप्रवृत्त** केहेवाय छे. एओमां पण कालकृत अने अकालकृत ए बे भेद छे. योग्य रीते यत्न करतां छतां पण जेओ थाय छे तेओने कालकृत समजवा अने योग्य रीते यत्न नहीं करवाथी जेओ थाय छे तेओने अकालकृत समजवा. आ कालबळप्रवृत्त, दैवबळप्रवृत्त अने स्वभावबळप्रवृत्त ए त्रणे प्रकारना व्याधिओ आधिदैविक दुःखवाळा एटले ईश्वरशक्तिए करेलां दुःखोवाळा समजवा. आ रीते सात भेदोमां स्थूल रीते सघळा व्याधिओनो संग्रह थयो.

४ सर्वेषां च व्याधीनां वातपित्तश्लेष्माण एव मूलं तल्लिङ्गत्वाद्दृष्टफलत्वादागमाच्च । यथाहि कृत्स्नं विकारजातं विश्वरूपेणावस्थितं सत्वरजस्तमांसि न व्यतिरिच्यन्ते । एवमेव कृत्स्नं विकारजातं विश्वरूपेणावस्थितमव्यतिरिच्य वातपित्तश्लेष्माणो वर्तन्ते ॥ दोषधातुमलसंसर्गादायतनविशेषान्निमित्ततश्चैषां विकल्पा भवन्ति । दोषदूषितेष्वत्यर्थं धातुषु संज्ञा क्रियते रसजोऽयं शोणितजोऽयं मांसजोऽयं मेदोजोऽयमस्थिजोऽयं मज्जजोऽयं शुक्रजोऽयं व्याधिरिति ॥

तत्रान्नाश्रद्धारोचकाविपाकाङ्गमर्दज्वरहृल्लासतृप्तिगौरवहृत्पाण्डुरोगमार्गोपरोधकार्श्यवैरस्याङ्गसादाकालवलीपलितदर्शनप्रभृतयो रसदोषजा विकाराः ॥

कुष्ठविसर्पपिडकामशकनीलिकातिलकालकन्यच्छव्यङ्गेन्द्रलुप्तप्लीहविद्रधिगुल्मवातशोणितार्शोऽर्बुदाङ्गमर्दासृग्दररक्तपित्तप्रभृतयो रक्तदोषजा गुदमुखमेढ्रपाकाश्च ॥

अधिमांसार्बुदार्शोऽधिजिह्वोपजिह्वोपकुशगलशुण्डिकाऽलजीमांससंघातौष्ठप्रकोपगलगण्डगण्डमालाप्रभृतयो मांसदोषजाः ॥

ग्रन्थिवृद्धिगलगण्डार्बुदमेदोजौष्ठप्रकोपमधुमेहातिस्थौल्यातिस्वेदप्रभृतयो मेदोदोषजाः ॥

अध्यस्थ्यधिदन्तास्थितोदशूलकुनखप्रभृतयोऽस्थिदोषजाः ॥

तमोदर्शनमूर्छाभ्रमपर्वस्थूलमूलारुर्जन्मनेत्राभिष्यन्दप्रभृतयो मज्जदोषजाः ॥

क्लैब्याप्रहर्षशुक्राश्मरीशुक्रमेहशुक्रदोषादयश्च तद्दोषजाः ॥

त्वग्दोषाः सङ्गोऽतिप्रवृत्तिर्वा मलायतनदोषाः।

इन्द्रियाणामप्रवृत्तिरयथाप्रवृत्तिर्वेन्द्रियायतनदोषाः ॥

इत्येवं समास उक्तो विस्तरनिमित्तानि चैषां प्रतिरोगं वक्ष्यामः ॥

भवति चात्र ॥

कुपितानां हि दोषाणां शरीरे परिधावताम् ।
यत्र सङ्गः खवैगुण्याद्व्याधिस्तत्रोपजायते ॥

सघळा व्याधिओनो वात, पित्त अने कफ एओमां समावेश.

४ वात, पित्त अने कफ एओज सघळा व्याधिओनुं मूळ छे. कारण के सघळा व्याधिओमां एओनां चिह्नो जोवामां आवेछे. एओनो प्रतीकार करवाथी व्याधिओनो प्रतीकार थाय छे अने सघळो आयुर्वेद जोतां पण एओनुंज मूळपणुं सिद्ध थाय छे. जेम जगतरूपे रहेला सघळा जन्य पदार्थोनी स्थिति सत्वगुण, रजोगुण अने तमोगुण विना नथी तेम मोटा विस्तारथी रहेला सघळा व्याधिओनी स्थिति वात, पित्त अने कफ विना नथी. दोषोनी साथे धातुओना संसर्गोथी, दोषदूष्योनी साथे मळोना संसर्गोथी, दोषना बगाडवाळां इंद्रियोनां स्थानकोना भेदोथी अने निमित्तोना भेदोथी व्याधिओना भेदोनी कल्पनाओ करवामां आवी छे. जेम अग्निथी अत्यंत तपी गएलां घीथी अथवा तैलथी माणसनुं अंग बळतां अग्निनुं नाम नहीं लईने 'घीथी बळ्युं अने तैलथी बळ्युं' एम केहेवामां आवे छे पण वास्तविक रीते अग्निथीज बळेलुं होय छे तेम दोषोथी अत्यंत दूषित थएला रस आदि धातुओथी व्याधिओ थतां दोषोनां नाम नहीं लईने 'आ व्याधि रसथी थयो छे, आ व्याधि रुधिरथी थयो छे, आ व्याधि मांसथी थयो छे, आ व्याधि मेदथी थयो छे, आ व्याधि अस्थिथी थयो छे, आ व्याधि मज्जाथी थयो छे अने आ व्याधि वीर्यथी थयो छे' एम संज्ञाओ आपवामां आवेछे पण वास्तविक रीते सघळा व्याधिओ दोषोथीज थएला होयछे.

अन्न उपर द्वेष, अरोचक, अविपाक, अंगोनुं भांगवुं, ज्वर, मोळ, तृप्ति, भारेपणुं, हृदयना रोग, पांडुरोग, स्रोतोनो उपरोध, कृशपणुं, विरसपणुं, अंगोमां ग्लानि, समय वगर अंगोमां करचली पडवी अने समय वगर केशोनुं सफेद थई जवुं इत्यादि व्याधिओ दोषोथी दूषित थएला रसथी थाय छे.

कोढ, विसर्प, फोल्लीओ, मस, दाझ, तल, लाखां, खील, उंदरी, बरलनुं दरद, विद्रधि, गुल्म, वातरक्त, अरश, अर्बुद, अंगोनुं भांगवुं, प्रदर, गुदानुं पाकवुं, मुखनुं पाकवुं, लिंगनुं पाकवुं अने रक्तपित्त इत्यादि व्याधिओ दोषोथी दूषित थएला रुधिरथी थाय छे.

अधिमांस, अर्बुद, अरश, अधिजिह्व, उपजिह्व, उपकुश, गलशुंडिका, अलजी, मांससंघात नामनो मुखरोग, होठनो प्रकोप, गलगंड अने गंडमाला इत्यादि व्याधिओ दोषोथी दूषित थएला मांसथी थाय छे.

ग्रंथि, वधराळ, गलगंड, अर्बुद, मेदथी थतो होठनो प्रकोप, मधुप्रमेह, अत्यंत जाडापणुं अने अत्यंत पसीनो इत्यादि व्याधिओ दोषोथी दूषित थएला मेदथी थाय छे.

---

१ चिकित्साना प्रकारो जणाववाने माटे तथा सुखसाध्यत्व वगेरे जणाववा माटे प्रत्येक धातुओथी थता विकारो देखाडे छे.

२ ताळवाना मूळथी चालेलो चामडानी फूलेली नळी जेवो लांबो सोजो.

अस्थिनुं अधिकपणुं, दांतोनुं अधिकपणुं, अस्थिओमां व्यथा, अस्थिओमां शूळ अने कुनख इत्यादि व्याधिओ दोषोथी दूषित थएलां अस्थिओथी थाय छे.

अंधारूं देखावुं, मूर्छा, चक्रपर चडेलाना जेवुं भ्रमण, पर्वोमां जाडां मूळवाळा व्रणोनी उत्पत्ति अने नेत्राभिष्यंद (आंखो दुखवा उठवी) इत्यादि विकारो दोषोथी दूषित थएली मज्जाथी थाय छे.

नपुंसकपणुं, स्त्रीनी पासे जतां शक्ति नहीं आववी, वीर्यसंबंधी पथरी, शुक्रप्रमेह अने वीर्यसंबंधी दोषो इत्यादि व्याधिओ दोषोथी दूषित थएला वीर्यथी थाय छे.

त्वचाना रोग, मळोनी अटकायत अथवा मळोनी अतिप्रवृत्ति ए व्याधिओ दोषदूष्योथी संसर्ग पामेला मळोथी थाय छे.

इंद्रियोनी अप्रवृत्ति अथवा जेवी जोइए तेवी प्रवृत्तिनो अभाव ए व्याधिओ दोषोना बगाडवाळां इंद्रियोनां स्थानकोना भेदोथी थाय छे.

आ प्रमाणे संसर्गथी तथा दोषोना बगाडवाळां इंद्रियोनां स्थानकोना भेदथी नोखनोखा व्याधिओ उत्पन्न थवानो संक्षेप कह्यो. व्याधिओनो विस्तार तथा व्याधिओ उत्पन्न थवानां निमित्तो एओनुं निरूपण ते ते व्याधिओना प्रकरणोमां करीशुं.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "प्रकोप पामीने शरीरमां प्रसर पामवा लागेला दोषोनो स्रोतोना विगुणपणाने लीधे ज्यां ज्यां जमाव (स्थानसंश्रय) थाय छे त्यां त्यां व्याधि उत्पन्न थाय छे."

५ भूयोऽत्र जिज्ञास्यं किं वातादीनां ज्वरादीनां च नित्यः संश्लेषः परिच्छेदो वेति ॥

दोषोनो अने व्याधिओनो नित्यसंबंध छे के अनित्यसंबंध छे?

५ 'दोषो कारणोरूप छे अने व्याधिओ तेओनां कार्योरूप छे' एम कह्युं त्यारे फरी आ विषयमां जिज्ञासा थाय छे के "जेम अग्निने अने उष्णताने नित्य संबंध छे तेम दोषोने अने व्याधिओने नित्य संबंध छे? के जेम कुंभारने अने घडाने नोखनोखां स्थलमां रेहेवारूप अनित्य संबंध छे तेम दोषोने अने ज्वर आदि व्याधिओने नोखनोखां रेहेवारूप अनित्य संबंध छे?

६ यदि नित्यः संश्लेषः स्यात्तर्हि नित्यातुराः सर्व एव प्राणिनः स्युः । अथाप्यन्यथा वातादीनां ज्वरादीनां चान्यत्र वर्तमानानामन्यत्र लिङ्गं न भवतीति कृत्वा यदुच्यते वातादयो ज्वरादीनां मूलानीति तन्न ॥

नित्यसंबंध मानवामां पण दोष अने अनित्यसंबंध मानवामां पण दोष.

६ जो नित्यसंबंध होय तो सघळां प्राणिओ सर्वदा रोगीज रेहेवां जोइए अने अनित्यसंबंध होय तो वात आदि दोषो अने ज्वर आदि व्याधिओ भिन्नभिन्न प्रदेशमां रेहेनार ठरे छे तेथी तेओनुं एक प्रदेशमां चिह्न नहीं देखावुं जोइए. आम बन्ने पक्षमां दोष आवे छे तेथी 'वात आदि दोषो ज्वर वगेरे व्याधिओनां मूळ छे' एम बोलवुं बराबर जणातुं नथी.

७ अत्रोच्यते । दोषान्प्रत्याख्याय ज्वरादयो न भवन्ति । अथ च न नित्यः संबन्धो यथाहि विद्युद्वाताशनिवर्षाण्याकाशं प्रत्याख्याय न भवन्ति । सत्यप्याकाशे कदाचिन्न भवन्ति । अथ च निमित्ततस्तत एवोत्पत्तिरिति । तरङ्गबुद्बुदादयश्चोदकविशेषा एवम् । वातादीनां ज्वरादीनां च नाप्येवं संश्लेषो न परिच्छेदः शाश्वतिकः । अथ च निमित्तत एवोत्पत्तिरिति ॥

विकारपरिमाणं च संख्या चैषां पृथक् पृथक् ।
विस्तरेणोत्तरे तन्त्रे सर्वा बाधाश्च वक्ष्यते ॥

नित्यसंबंध के अनित्यसंबंध कशुं नथी पण जुदाज प्रकारनो संबंध छे.

७ आ विषयमां निर्णय आपीएछीए के दोषोने छोडीने ज्वर वगेरे व्याधिओनी स्थिति छेज नहीं, पण तेम छतां नित्यसंबंध पण नथी एटले के जेम वादळांने छोडीने वीजळी, पवन, कडाका तथा वरसाद एओनी स्थिति नथी पण तेम छतां तेओ वादळां विद्यमान छतां पण कोई समये होतां नथी परंतु निमित्त प्राप्त थयाथी तेओनी वादळांओमांथी उत्पत्ति थाय छे तेम दोषो विद्यमान छतां पण कोई समये व्याधिओ होता नथी परंतु निमित्त प्राप्त थयाथी तेओनी दोषोमांथी उत्पत्ति थाय छे. जेम जळने छोडीने जळना तरंग तथा परपोटा आदि प्रकारोनी स्थिति नथी पण तेम छतां तेओ जळ विद्यमान छतां पण कोई समये होतां नथी परंतु पवनरूप निमित्त प्राप्त थवाथी तेओनी जळमांथी उत्पत्ति थाय छे तेम दोषोने छोडीने व्याधिओनी स्थिति नथी पण तेम छतां तेओ दोषो विद्यमान छतां पण कोई समये होता नथी परंतु निमित्तो प्राप्त थयाथी तेओनी दोषोमांथी उत्पत्ति थाय छे. आ प्रमाणे छे तेथी वात आदि दोषोने अने ज्वर आदि व्याधिओने अग्निनी अने उष्णतानी पेठे नित्यसंबंध पण नथी तेम कुंभारनी अने घडानी पेठे नोखनोखा प्रदेशमां रहेवारूप अनित्यसंबंध पण नथी. परंतु जुदा प्रकारनोज कार्यकारणभावसंबंध छे के जेथी वीजळी वगेरेनी पेठे तथा तरंग आदिनी पेठे निमित्तो प्राप्त थयाथीज व्याधिओनी दोषोमांथी अने दोषोना स्थलमांज उत्पत्ति थाय छे. आ निमित्तो ते ते व्याधिओनां प्रकरणोमां केहेवामां आवशे.

व्याधिओनी कुल संख्या, प्रत्येक व्याधिओनी जुदी जुदी संख्या अने ज्वर, अतीसार तथा शोष वगेरे व्याधिओ हवे पछीना ग्रंथसंदर्भमां केहेवामां आवशे.

अध्याय २५ मो.

१ यथातोऽष्टविधशस्त्रकर्मण्यमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अष्टविधशस्त्रकर्मण्य' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ छेद्या भगन्दरा ग्रन्थिः श्लैष्मिकस्तिलकालकः।
व्रणवर्त्मार्बुदान्यर्शश्चर्मकीलोऽस्थिमांसगम् ॥
शल्यं जतुमणिर्मांससंघातो गलशुण्डिका ।
स्नायुमांसशिराकोथो वल्मीकं शतपोनकः ॥
अध्रुषश्चोपदंशाश्च मांसकन्द्यधिमांसकः ।

छेदन करवा योग्य व्याधिओ.

२ भगंदरो, कफसंबंधी काचो ग्रंथि, क्षुद्ररोगोमां गणेलो तिलकालक, व्रणनो मार्ग, अर्बुदो, अरश, चर्मकील, मांसमां के अस्थिमां रहेलुं शल्य, जतुमणि, मांससंघात, गलशुंडिका, स्नायुनो सडो, मांसनो सडो, शिरानो सडो, वल्मीक, शूकदोषोमां गणेलो शतपोनक, अध्रुष, उपदंशो, मांसनो अंकुर अने अधिमांसक एटला व्याधिओ छेदन करवाने योग्य छे. (आ परिगणन नथी पण उपलक्षणमात्र छे एम जणाय छे. केम के मस वगेरे जे बीजा पण व्याधिओने चिकित्सास्थानमां छेद्य कह्या छे तेओनां नामो अथवा कशुं सूचन आमां जोवामां आवतुं नथी. नीचे आपेला

---

१ कया कया व्याधिओ आठ प्रकारनी शस्त्रक्रियाओमां कई कई शस्त्रक्रियाने लायक छे ते विषेनो.

२ चिकित्सास्थानना २१ मा अध्यायना १३ मा विषयमां शतपोनकनी जे चिकित्सा कही छे तेमां तो लेखन करवानुं कह्युं छे.

भेद्य आदि व्याधिओना विषयोमां पण उपलक्षणपणुंज जणाय छे.)

३ भेद्या विद्रधयोऽन्यत्र सर्वजाद्ग्रन्थयस्त्रयः ॥
आदितो ये विसर्पाश्च वृद्धयः सविदारिकाः ।
प्रमेहपिडकाशोफस्तनरोगावमन्थकाः ।
कुम्भीकानुशयीनाड्यो वृन्दौ पुष्करिकालजी ।
प्रायशः क्षुद्ररोगाश्च पुप्पुटौ तालुदन्तजौ ॥
तुण्डिकेरी गिलायुश्च पूर्वं ये च प्रपाकिणः ।
बस्तिस्तथाश्मरीहेतोर्मेदोजा ये च केचन ॥

भेदन करवा योग्य व्याधिओ.

३ सर्व दोषोथी उत्पन्न थएला विद्रधि शिवाय बाकीना सघळा विद्रधिओ, वातिक पैत्तिक तथा श्लैष्मिक ए त्रणे ग्रंथियो, वातिक पैत्तिक तथा श्लैष्मिक विसर्पो, वृद्धिओ, विदारिका नामनो क्षुद्ररोग, प्रमेहपिडका, सोजो, स्तनरोगो, शूकदोषोमांनो अवमंथक, कुंभीका, अनुशयी, नाडीव्रणो, कंठरोगोमांना बे वृंदो, शूकदोषोमांनी पुष्करिका, अलजी, घणखरा क्षुद्ररोगो, तालुपुप्पुट, दंतपुप्पुट, तुंडिकेरी, गिलायु, भगंदरो अने जे कोई मेदथी थएला रोगो होय तेओ भेदन करवाने योग्य छे. मूत्राशयनुं भेदन करवुं होय तो पथरीने माटेज करवुं पण बीजा कोई कारणथी करवुं नहीं.

४ लेख्याश्चतस्रो रोहिण्यः किलासमुपजिह्विका ।
मेदोजो दन्तवैदर्भो ग्रन्थिर्वर्त्माधिजिह्विका ॥
अर्शांसि मण्डलं मांसकन्दी मांसोन्नतिस्तथा ।

लेखन करवा योग्य व्याधिओ.

४ वातिक पैत्तिक श्लैष्मिक अने सान्निपातिक ए चारे प्रकारनी रोहिणीओ, किलास, उपजिह्विका, मेदथी थएलो रोग, दंतवैदर्भ, ग्रंथि, व्रणनुं मोहोडुं, अधिजिह्विका, अरशो, कोढ वगेरेनां मंडलो, मांसकंदी (स्वल्पमांसनो अंकुर) अने मांसनी उंचाई एटला व्याधिओ लेखन करवाने योग्य छे.

५ वेध्याः शिरा बहुविधा मूत्रवृद्धिर्दकोदरम् ॥

वेधन करवा योग्य व्याधिओ.

५ घणा प्रकारनी शिराओ, मूत्रवृद्धि अने दकोदर ए व्याधिओ वेधन करवाने योग्य छे.

६ एष्या नाड्यः सशल्याश्च व्रणा उन्मार्गिणश्च ये ।

एषण करवा योग्य (अंदर शोधवा लायक) व्याधिओ.

६ नाडीव्रणो, शल्यवाळा व्रणो अने विपरीत मार्गमां गएला व्रणो एषण करवाने (लोहोडा वगेरेनी सळीथी अंदर तपासवाने) योग्य छे.

७ आहार्याः शर्करास्तिस्रो दन्तकर्णमलाश्मरी ॥
शल्यानि मूढगर्भाश्च वर्चश्च निचितं गुदे ।

आहार्य (खेंची काहाडवा योग्य) व्याधिओ.

७ दंतशर्करा आदि त्रण प्रकारनी शर्कराओ, अतिचलित दंत, कर्णमळ, पथरी, शल्यो, मूढगर्भो अने गुदामां जमा थएली विष्टा एओ आहार्य छे.

८ स्राव्या विद्रधयः पंच भवेयुः सर्वजादृते ॥
कुष्ठानि वायुः सरुजः शोफो यश्चैकदेशजः ।
पाल्यामयाः श्लीपदानि विषजुष्टं च शोणितम् ॥
अर्बुदानि विसर्पाश्च ग्रन्थयश्चादितस्तु ये ।
त्रयस्त्रयश्चोपदंशाः स्तनरोगा विदारिका ॥
शौषिरो गलशालूकं कण्टकाः कृमिदन्तकः ।
दन्तवेष्टः सोपकुशः शीतादो दन्तपुप्पुटः ॥
पित्तासृक्कफजाश्चोष्ठ्याः क्षुद्ररोगाश्च भूयशः ।

स्राव करावता योग्य व्याधिओ.

८ सर्व दोषोथी उत्पन्न थएला विद्रधि शिवाय बाकीना पांचे प्रकारना विद्रधिओ, कुष्ठो, वेदनावाळो वायु, एक प्रदेशमां उत्पन्न थएलो सोजो, काननी बूंटोनां दरदो, श्लीपदो, झेरना संयोगवाळुं रुधिर, अर्बुदो, विसर्पो, वातिक पैत्तिक तथा श्लैष्मिक ग्रंथिओ, त्रण जातना उपदंशो, स्तनरोगो, विदारिका, शौषिर, गलशालूक, कंटको, कृमिदंतक,

दंतवेष्ट, उपकुश, शीताद, दंतपुप्पुट, पित्त रुधिर तथा कफ एओथी उत्पन्न थएला होठ संबंधी रोगो अने घणखरा क्षुद्ररोगो एओ स्राव कराववा योग्य छे.

९ सीव्या मेदःसमुत्थाश्च भिन्नाः सुलिखिता गदाः ॥ सद्योव्रणाश्च ये चैव चलसंधिव्यपाश्रयाः ।

सीववा योग्य व्याधिओ.

९ केवळ मेदथी उत्पन्न थएला जे व्याधिओ भेदवामां आव्या होय अने सारी पेठे खोतराया तथा उखेडाया होय तेओ सीववा योग्य छे. तुरतना थएला व्रणो अने हाथ पग वगेरेना हालता सांधाओमां थएला व्रणो पण सीववा लायक छे.

१० न क्षाराग्निविषैर्जुष्टा नवा मारुतवाहिनः ॥ नान्तर्लोहितशल्याश्च तेषु सम्यग्विशोधनम् ॥ पांशुरोमनखादीनि चलमस्थि भवेच्च यत् । अहृतानि यतोऽमूनि पाचयेयुर्भृशं व्रणम् ॥ रुजश्च विविधाः कुर्युस्तस्मादेतान्विशोधयेत् ।

केवा व्रणोने सीववा नहीं तथा तेवा व्रणोमां केवी क्रिया करवी.

१० जे व्रणो क्षारथी अग्निथी के झेरथी संसर्ग पाम्या होय, जे व्रणोमांथी पवन नीकळतो होय अने जे व्रणोनी अंदर लोही के शल्य रहीं गएल होय ते व्रणोने सीववा नहीं. एवा व्रणोने सारी रीते शुद्ध करवा एज सारूं छे केम के रज, रुवाणां, नख वगेरे तथा चंचल अस्थि एओ काहाडवामां नहीं आवतां व्रणमां रही जाय तो व्रणने अत्यंत पकावे छे तथा अनेक प्रकारनी वेदनाओ करे छे. आम छे एटला माटे तेवा व्रणोनुं सारी पेठे शोधन करवुं जोइए.

११ ततो व्रणं समुन्नम्य स्थापयित्वा यथास्थितम् ॥ सीव्येत् सूक्ष्मेण सूत्रेण वल्केनाश्मन्तकस्य वा । शणजक्षौमसूत्राभ्यां स्नाय्वा वालेन वा पुनः । मूर्वागडूचीतानैर्वा सीव्येद्वेल्लितकं शनैः ॥ सीव्येद्गोफणिकां वापि सीव्येद्वा तुन्नसेवनीम् । ऋजुग्रन्थिमथो वापि यथायोगमथापि वा ॥ देशेऽल्पमांसे संधौ च सूची वृत्ताङ्गुलद्वयम् । आयता त्र्यङ्गुला त्र्यस्रा मांसले वापि पूजिता ॥ धनुर्वक्रा हिता मर्मफलकोशोदरोपरि । इत्येतास्त्रिविधाः सूचीस्तीक्ष्णाग्राः सुसमाहिताः । कारयेन्मालतीपुष्पवृन्ताग्रपरिमण्डलाः ॥ नातिदूरे निकृष्टे वा सूचीं कर्मणि पातयेत् । दूराद्रुजो व्रणौष्ठस्य संनिकृष्टेऽवलुञ्चनम्

व्रणने केम करी, शा पदार्थथी, केवी सोईथी तथा केवी रीते सीववो.

११ व्रणने उंचो करी, चामडी वगेरेने बराबर बेसतां करी, झीणा सुतरना दोराथी, अथवा आसोंदरानी छालथी अथवा शणथी अथवा रेसमना दोराथी अथवा शण जेवा स्नायु नामना उपधातुना वाळाथी अथवा वाळथी अथवा धनुपनी दोरी बनाववामां काम आवती मूर्वाथी अथवा गळोना तांतडाओथी धीरे धीरे वेलानी पेठे, गोफणनी पेठे अथवा दरजीलोकोनी पद्धतिप्राणे सरल गांठ्यो आपी तूनी लेवानी रीते अथवा जेम योग्य लागे तेवी रीते टांका भरीने सीवी लेवो. अल्पमांसवाळा प्रदेशमां अथवा संधिमां सीववुं होय तो गोळ अने बे आंगळ लांबी सोई जोइए. घणा मांसवाळा प्रदेशमां सीववुं होय तो त्रण आंगळ लांबी अने त्रण हांसोवाळी सोई अनुकूल थाय छे. मर्मोमां, वृषणोमां के पेट उपर सीववुं होय तो धनुष जेवी वांकी सोई अनुकूल थाय छे. आ त्रणे प्रकारनी सोईओ तीक्ष्ण, सारी गोठवणवाळी, स्वच्छ अने मालतीना पुष्पना डीटीआना अग्र जेवी गोळ कराववी. सीववाना समयमां सोईने व्रणनी अंदर अतिदूर पण नाखवी नहीं अने बहु नजदीक पण नाखवी नहीं. सोई जो बहु उंडी नाखवामां आवे तो वेदनाओ थाय छे अने बहुज नजदीकमां नाखवामां आवे तो चामडी उचडी जाय छे.

१२ अथ क्षौमपिचुच्छन्नं सुस्यूतं प्रतिसारयेत्
प्रियङ्ग्वञ्जनयष्ट्याह्वरोध्रचूर्णैः समन्ततः ॥
शल्लकीफलचूर्णैर्वा क्षौमध्यामेन वा पुनः ।
ततो व्रणं यथायोगं बद्ध्वाचारिकमादिशेत् ॥

व्रणने सीवी लीधा पछीनी क्रिया.

१२ सारी रीते सीवी लीधेला व्रणने रेशमी वस्त्रथी तथा रूना पुंबडाथी ढांकी चोतरफ घउलां, रसवंती, जेठीमध तथा लोदर एओनुं चूर्ण भभराववुं अथवा सालेडा नामना वृक्षना फळनुं चूर्ण भभरावबुं अथवा अलसीना वस्त्रनी भस्म भभरावत्री. वैद्ये आटलुं कर्या पछी व्रणवाळाने यथायोग्य रीते व्रणितोपासनीय नामना आ सूत्रस्थानना १९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे घणी घणी रीते आचारविधि बताववो.

१३ एतदष्टविधं कर्म समासेन प्रकीर्तितम् ।
चिकित्सितेषु कात्स्न्र्येन विस्तरस्तस्य वक्ष्यते ॥

शस्त्रक्रियाओनो अहीं संक्षेप अने चिकित्साप्रकरणमां विस्तार.

१३ आ आठ प्रकारनुं शस्त्रकर्म अहीं संक्षेपथी कह्युं. संपूर्ण विस्तारथी तो चिकित्सानां प्रकरणोमां केहेवामां आवशे.

१४ हीनातिरिक्तं तिर्यक्च गात्रच्छेदनमात्मनः ।
एताश्चतस्रोऽष्टविधे कर्मणि व्यापदः स्मृताः ॥

आठे प्रकारनां शस्त्रकर्मोमां व्यापत्तिओ. (बगाडो.)

१४ शस्त्र व्रणनी अंदर जेटलुं नाखवुं जोईए तेथी ओछुं नाखवामां आवे अथवा शस्त्रथी जेटलुं काम करवुं जोईए तेथी ओछुं करवामां आवे तो ते बगाड छे. शस्त्र व्रणनी अंदर जेटलुं नाखवुं जोईए तेथी अधिक नाखवामां आवे अथवा शस्त्रथी जेटलुं काम करवुं जोईए तेथी अधिक करवामां आवे तो ते पण बगाड छे. शस्त्र व्रणमां आडुं नाखवामां आवे तो ते पण बगाड छे अने शस्त्र नाखतां वैद्यनुंज अंग कपाई जाय तो ते पण बगाड छे. आठे प्रकारनी शस्त्रक्रियाओमां आ चार व्यापत्तिओ कहेली छे.

१५ अज्ञानलोभाहितवाक्ययोग-
भयप्रमोहैरपरैश्च भावैः ।
यदा प्रयुञ्जीत भिषक्कुशस्त्रं
तदास शेषान्कुरुते विकारान् ॥
तं क्षारशस्त्राग्निभिरौषधैश्च
भूयोऽभियुञ्जानमयुक्तियुक्तम् ।
जिजीविषुर्दूरत एव वैद्यं
विवर्जयेदुग्रविषाग्नितुल्यम् ॥
तदेव युक्तं त्वतिमर्मसंधीन्
हिंस्याच्छिरां स्नायुमथास्थि चैव ।
मूर्खप्रयुक्तं पुरुषं क्षणेन
प्राणैर्वियुञ्ज्यादथवा कथंचित् ॥

शस्त्रक्रिया करनारो वैद्य बहुज प्रवीण तथा प्रामाणिक जोईए.

१५ जो वैद्य अज्ञानथी, लोभथी, शत्रुओनी शीखवणीथी, भयथी, मोहथी के व्यग्रपणा वगेरेथी व्रणमां शस्त्रनो हीनयोग करे तो बीजा पण केटलाएक विकारोने उत्पन्न करी देछे. युक्तिओने नहीं जाणनारो ए मूर्ख वैद्य गेररीते फरीवार पण क्षार, शस्त्र, अग्नि के औषध एओनी क्रिया करवा तैयार थाय तो जीववाने इच्छनारा रोगीए तेने उग्र विष जेवो तथा उग्र अग्नि जेवो समजीने दूरथीज छोडी देवो.

मूर्ख वैद्यना हाथथी थएलो शस्त्रनो अतियोग पण मर्मने, संधिने, शिराने स्नायुने तथा अस्थिने कापी नाखे छे अने ते प्रमाणे थवाथी वखतपर एकज क्षणमां माणसने प्राणरहित पण करी नाखे छे.

१६ भ्रमः प्रलापः पतनं प्रमोहो
विचेष्टनं संस्त्रपनोष्णता च ।
स्रस्तांगता मूर्च्छनमूर्ध्ववात-
स्तीव्रा रुजो वातकृताश्च तास्ताः ॥

मांसोदकाभं रुधिरं च गच्छे-
त्सर्वेन्द्रियार्थोपरमस्तथैव ।
दशार्द्धसंख्येष्वपि हि क्षतेषु
सामान्यतो मर्मसु लिङ्गमुक्तम् ॥

शस्त्रक्रिया करतां शस्त्रवते मर्ममां जखम थाय तो तेनां सामान्य चिह्नो केवां होय?

१६ पांच प्रकारनां मर्मो के जेओ शारीरस्थानना छठ्ठा अध्यायना बीजा विषयमां केहेवामां आवशे तेओमां शस्त्रथी वेध थाय तो रोगीने भ्रम (चाकडापर चडेलाना जेवुं भ्रमण) असंबद्ध भाषण, पडीजवुं, मोह, शारीरचेष्टाओथी रहितपणुं, चित्तनी अशक्तता, शरीरमां परिताप, शरीरनुं शिथिलपणुं, मूर्छा, श्वास अने वायुए करेली ते ते वेदनाओ थाय छे. तेमज मांसना धोण जेवुं रुधिर चालवा लागे छे अने सघळा विषयोनुं ग्रहण बंध पडी जाय छे.

१७ सुरेन्द्रगोपप्रतिमं प्रभूतं
रक्तं स्रवेद्वै क्षततश्च वायुः ।
करोति रोगान् विविधान् यथोक्ता-
ञ्छिन्नासु भिन्नास्वथ वा शिरासु ॥

मर्मवगरनी एकली शिराज जखम पामे तो केवां चिह्नो थाय छे?

१७ व्रणादिकमां शस्त्र चलावतां तेथी मर्मवगरनी एकली शिराओज छेदाय के भेदाय तो वरसादमां पृथ्वी उपर थता इंद्रगोप नामना लाल कीडाओना जेवुं रातुं लोही ते जखममांथी अत्यंत स्रववा लागे छे अने वायु आ सूत्रस्थानना शोणितवर्णनीय नामना १४ मा अध्यायना १६ मा विषयमां कहेला माथानुं शूळ तथा अधिमंथ वगेरे अनेक प्रकारना रोगोने उत्पन्न करे छे.

१८ कौब्जं शरीरावयवाङ्गसादः
क्रियास्वशक्तिस्तुमुला रुजश्च ।
चिराद्व्रणो रोहति यस्य चापि
तं स्नायुविद्धं मनुजं व्यवस्येत् ॥

मर्मवगरनी एकली स्नायुज जखम पामे तो केवां चिह्नो थाय छे?

१८ जो शरीरनुं खुंधापणुं थई जाय, अवयव तथा सघळुं शरीर पण क्रियाओमां अशक्त थई जाय, तुमुल वेदनाओ थाय अने व्रण लांबे काळे रुझाय तो जाणवुं के स्नायुमां जखम थयो छे.

१९ शोफातिवृद्धिस्तुमुला रुजश्च
बलक्षयः पर्वसु भेदशोफौ ।
क्षतेषु संधिष्वचलाचलेषु
स्यात्संधिकर्मोपरतिश्च लिङ्गम् ॥

मर्मवगरनो एकलो संधिज जखम पामे तो केवां चिह्नो थाय छे?

१९ चल के अचल संधि, शस्त्रथी जखम पामे तो सोजानी अत्यंत वृद्धि थाय छे, तुमुल वेदनाओ थाय छे, बळनो क्षय थाय छे, संधिमां भेद तथा सोजा थाय छे अने संधिनी सघळी क्रियाओ बंध पडी जाय छे.

२० घोरा रुजो यस्य निशादिनेषु
सर्वास्ववस्थासु न शान्तिरस्ति ।
तृष्णाङ्गसादौ श्वयथुश्च रुक्च
तमस्थिविद्धं मनुजं व्यवस्येत् ॥

मर्मवगरनुं एकलुं अस्थिज जखम पामे तो केवां चिह्नो थाय छे?

२० जो घोर वेदनाओ थाय, राते के दिवसे कोई पण अवस्थामां शांति नज थाय, तरश लाग्या करे, अंगोमां ग्लानि थाय, सोजो थाय अने संताप थाय तो जाणवुं के अस्थिमां जखम थयो छे.

२१ यथास्वमेतानि विभावयेयु-
र्लिङ्गानि मर्मस्वभिताडितेषु ॥

संधि, शिरा, स्नायु के अस्थि पोतानां मर्मसहित जखमायां होय तो केवां चिह्नो थाय छे?

२१ संधि, शिरा, स्नायु के अस्थि पोतपोतानां

मर्मसहित जखम पाम्यां होय तो उपर प्रमाणे एक एकनां चिन्हो थवा उपरांत आ अध्यायना १६ मा विषयमां कह्याप्रमाणे भ्रम तथा असंबद्ध भाषण (प्रलाप) आदि चिन्हो पण थाय छे.

२२ स्पर्शन्न जानाति विपाण्डुवर्णो
यो मांसमर्मण्यभिताडितः स्यात् ॥

मास जो पोताना मर्ममा जखम पामे तो केवां चिह्नो थाय छे?

२२ मांसनुं मर्म शस्त्रक्रियाथी जखम पामे तो माणसने कोई प्रकारना स्पर्शनी खबर पडती नथी अने शरीरनो वर्ण अत्यंत पांडु (फीको सफेद) थइ जाय छे.

२३ आत्मानमेवाथ जघन्यकारी
शस्त्रेण यो हन्ति हि कर्म कुर्वन् ।
तमात्मवानात्महनं कुवैद्यं
विवर्जयेदायुरभीप्समानः ॥

शस्त्रक्रिया करतां पोतानाज अंगने कापी नाखनारा मूर्ख वैद्यविषे.

२३ जे मूर्ख वैद्य शस्त्रक्रिया करवा लागतां पोतानाज अंगने जखमी करी नाखे तेने आत्मघाती समजीने, जीववाने इच्छनारा विचक्षण रोगीए छोडीज देवो.

२४ तिर्यक्प्रणिहिते शस्त्रे दोषाः पूर्वमुदाहृताः।
तस्मात्परिहरन्दोषान्कुर्याच्छस्त्रनिपातनम् ॥

वैद्ये शस्त्रक्रियामां कोई पण भूल नहीं आववा देवी जोईए.

२४ जो शस्त्रने आडुं नाखवामां आवे तो आ सूत्रस्थानना अग्रोपहरणीय नामना ९ मा अध्यायना ८ मा विषयमां कहेला दोषो थाय छे. आम छे एटला माटे वैद्ये कोइ पण दोषने नहीं लागू पडवा देतां शस्त्रक्रिया करवी.

२५ मातरं पितरं पुत्रान्बान्धवानपि चातुरः ।
अथैतानभिशङ्केत वैद्ये विश्वासमेति च
विसृजत्यात्मनात्मानं न चैनं परिशङ्कते ।
तस्मात्पुत्रवदेवैनं पालयेदातुरं भिषक् ॥

वैद्ये रोगीनुं पुत्रनी पेठे पालन करवु जोईए.

२५ रोगी पोतानी मानो, बापनो, पुत्रोनो तथा बांधवोनो पण विश्वास करतो नथी एटलुंज नहीं पण तेओना उपर शंका राखे छे अने वैद्यनो परिपूर्ण विश्वास करे छे, पोताथीज पोताना शरीरने वैद्यना हाथमां सोंपी देछे अने वैद्यनी उपर कशो शक राखतो नथी एटला माटे वैद्ये तेने पुत्रनी पेठे पाळवो जोईए.

२६ कर्मणा कश्चिदेकेन द्वाभ्यां कश्चित्त्रिभिस्तथा।
विकारः साध्यते कश्चिच्चतुर्भिरपि कर्मभिः ॥

कोई वखते एक व्याधिने टाळवामां अनेक क्रियाओनी पण जरूर पडेछे.

२६ कोई व्याधि एक क्रियाथी, कोई व्याधि बे क्रियाओथी, कोई व्याधि त्रण क्रियाओथी अने कोई व्याधि चार क्रियाओथी पण टळे छे.

२७ धर्मार्थौ कीर्तिमत्यर्थं सतां ग्रहणमुत्तमम् ।
प्राप्नुयात्स्वर्गवासं च हितमारभ्य कर्मणा ॥

क्रियाथी व्याधिने टाळनारा वैद्यने मोटुं फळ थाय छे.

२७ वैद्य क्रियावते रोगीनुं हित करवाथी धर्मने, धनने, अनंत कीर्तिने, सत्पुरुषो तरफना उत्तम मानने अने अंते स्वर्गवासने पण पामे छे.

अध्याय २६ मो.

१ अथातः प्रणष्टशल्यविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'प्रणष्टशल्यविज्ञानीय'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीए छीए.

---

१ शरीरमां गुम थई गएला शल्यनी परीक्षा करवा विषेनो.

ख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शल श्वल आशुगमने धातुस्तस्य शल्यमिति रूपम् । तद्द्विविधं शारीरमागन्तुकं च । सर्वशरीराबाधकरं शल्यं तदिहोपदिश्यत इत्यतः शल्यशास्त्रम् । तत्र शारीरं रोमनखादि धातवोऽन्नमला दोषाश्च दुष्टाः । आगन्त्वपि शारीरशल्यव्यतिरेकेण यावन्तो भावा दुःखमुत्पादयन्ति । अधिकारो हि लोहवेणुवृक्षतृणशृङ्गास्थिमयेषु तत्रापि विशेषतो लोहमयेष्वेव विशसनार्थोपपन्नत्वाल्लोहस्य । लौहानामपि दुर्वारत्वादणुमुखत्वाद्दूरप्रयोजनकरत्वाच्च शर एवाधिकृतः । स द्विविधः कर्णी श्लक्ष्णश्च । प्रायेण विविधवृक्षपत्रपुष्पफलतुल्याकृतया व्याख्याता व्यालमृगपक्षिवक्त्रसदृशाश्च ॥

शल्यशब्दनी व्युत्पत्ति, शल्य ए शुं छे ? अने शी चीज मुख्य शल्यरूप थाय छे ?

२ संस्कृत व्याकरणनी रीतिप्रमाणे 'शल' अने 'श्वल' ए बे धातुओ शीघ्रगतिरूप अर्थवाळा छे तेओमां पेहेला धातुनी आगळ कृत्प्रत्यय लागवाथी 'शल्य' ए रूप थाय छे. एक शारीर अने बीजुं आगंतुक ए रीते ते शल्य बे प्रकारनुं होय छे. शल्य एटले सर्व शरीरमां गमे त्यां पीडा करनारी वस्तु. ए वस्तुनो आ शास्त्रमां उपदेश करवामां आवे छे तेथी आ शास्त्रनुं 'शल्यशास्त्र' ए नाम छे. रोम तथा नख वगेरे पदार्थो, दुष्ट थएला धातुओ, दुष्ट थएला उपधातुओ, दुष्ट थएला अन्नना मळो अने दुष्ट थएला दोषो एओ **शारीर** शल्यो केहेवाय छे. शारीर शल्य शिवाय बीजा जे कोई पदार्थो दुःखने उत्पन्न करे छे तेओ **आगंतु** शल्यो केहेवाय छे. लोहोडाना, वांसना, वृक्षना, खडना, शींगडाना अने अस्थिओना पदार्थोमां शल्यरूप थवानी योग्यता छे अने तेओमां पण विशेषे लोहोडाना पदार्थोमांज शल्यरूप थवानी योग्यता छे. कारण के लोहोडुं पीडवाना तथा मारवाना काममां वधारे उपयोगी थाय छे. लोहोडाना पदार्थोमां पण बाणज शल्यपणानी विशेष योग्यतावाळो छे. कारण के ते वारण करवाने अशक्य छे, झीणा मोहोडावाळो होय छे अने दूरथीज धारेला प्रयोजनने पार पाडी नाखे छे. ए बाण **कर्णी** (कानवाळो–आडा के वळेला एक भागवाळो) अने **श्लक्ष्ण** (कानवगरनो सीधो) एम बे प्रकारनो होय छे. बाणो घणुं करीने अनेक जातनां वृक्षोनां पानडांओ जेवी, पुष्पो जेवी तथा फळो जेवी आकृतिओवाळा होय छे अने हिंसक पशुओनां तथा पक्षिओनां मोहोडांओनां जेवी आकृतिओवाळा पण होय छे.

३ सर्वशल्यानां तु महतामणूनां वा पञ्चविधो गतिविशेष ऊर्ध्वमधोऽर्वाचीनस्तियङ्कृजुरिति । तानि यदा वेगक्षयात्प्रतिघाताद्वा त्वगादिषु व्रणवस्तुष्ववतिष्ठन्ते धमनीस्रोतोऽस्थितद्विवरपेशीप्रभृतिषु वा शरीरप्रदेशेषु

तत्र शल्यलक्षणमुच्यमानमुपधारय । तच्च द्विविधं सामान्यं वैशेषिकं च । श्यावं पिडकावन्तं शोफवेदनावन्तं मुहुर्मुहुः शोणितास्राविणं बुद्बुदवदुन्नतं मृदुमांसं च व्रणं जानीयात्सशल्योऽयमिति सामान्यलक्षणमेतदुक्तम् ॥

वैशेषिकं तु त्वग्गते विवर्णः शोफो भवत्यायतः कठिनश्च । मांसगते शोफाभिवृद्धिः शल्यमार्गानुपसंरोहः पीडनासहिष्णुता चोषपाकौ च । पेश्यन्तरस्थेप्येतदेव चोषशोफवर्जम् । शिरागते शिराध्मानं शिराशूलं शिराशोफश्च । स्नायुगते स्नायुजालोत्क्षेपणं संरम्भश्चोग्रा रुक्च । स्रोतोगते स्रोतसां स्वकर्मगुणहानिः । धमनीस्थे सफेनं रक्तमीरयन्ननिलः सशब्दो निर्गच्छत्यङ्गमर्दः पिपासा हृल्लासश्च । अस्थिगते विविधवेदनाप्रादुर्भावः शोफश्च । अस्थिविवरगतेऽस्थिपूर्णताऽस्थितोदः संहर्षो बलवांश्च ।

संधिगतेऽस्थिवच्चेष्टोपरमश्च । कोष्ठगत आटोपानाहौ मूत्रपुरीषाहारदर्शनं च व्रणमुखात् । मर्मगते मर्मविद्धवच्चेष्टते ।

सूक्ष्मगतिषु शल्येष्वेतान्येव लक्षणान्यस्पष्टानि भवन्ति ॥

शल्योनी पांच प्रकारनी गति अने शरीरमां पेठेलां शल्योनां सामान्य तथा विशेष लक्षणो.

३ नाहानां अथवा मोटां सर्व शल्योनी गति उंचे, नीचे, पाछळथी, आडी अने सीधी एम पांच प्रकारनी होय छे. (शल्य जो नीचेथी आवे तो शरीरमां उंचे जाय छे, उंचेथी आवे तो नीचे जाय छे, पाछळथी आवे तो आगळ जाय छे, पडखाथी आवे तो आडुं जाय छे अने सामेथी आवे तो सीधुं जाय छे.) ए शल्यो ज्यारे वेग बंध पडवाथी अथवा वेगनो प्रतिघात थवाथी व्रणनां त्वचा वगेरे (त्वचा, मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि, संधि, कोठो अने मर्म) आठ स्थानोमां अथवा धमनीओमां, स्रोतोमां के अस्थिओनां छिद्रोमां अथवा पेशीओ वगेरेमां (मांसखंडो वगेरेमां) रही जाय छे त्यारे तेओमां नीचेप्रमाणे लक्षणो थाय छे.

शल्यनां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो. सामान्य अने वैशेषिक एम लक्षणना बे प्रकार छे. व्रण काळी झांईवाळो, फोल्लीओवाळो, सोजानी वेदनावाळो, वारंवार लोहीनो स्राव करतो, परपोटानी पेठे उंचो अने कोमळ मांसवाळो जोवामां आवे त्यारे जाणवुं के 'आ व्रण शल्यवाळो छे' शल्यनुं आ **सामान्य** लक्षण कह्युं.

विशेष लक्षण तो आ छे के शल्य जो **त्वचामां** होय तो त्वचाना वर्णथी जुदा वर्णवाळो, लांबो अने कठण सोजो थाय छे. **मांसमां** होय तो सोजो वृद्धि पामेलो होय छे, शल्यनो मार्ग रूझातो नथी, दबाण खमी शकातुं नथी, चोस थाय छे अने पाक थई जाय छे. शल्य **पेशीनी** अंदर होय तो पण चोस तथा सोजा शिवाय बीजां सघळां एज (मांसमां रहेला शल्यनांज) लक्षणो थाय छे. शल्य जो **शिरामां** होय तो शिरा फूले छे, शिरामां शूल थाय छे अने शिरामां सोजो थाय छे. शल्य जो स्नायुमां होय तो स्नायुनुं जाळ उंचुं थई जाय छे, सोजो थाय छे अने उग्र वेदना थाय छे. शल्य जो **स्रोतमां** होय तो स्रोतो रसादिकनुं वहन करवानुं काम बराबर करी शकतां नथी अने तेओनो वर्ण पण बदलाई जाय छे. शल्य जो **धमनीमां** होय तो पवन फीणवाळा रुधिरने चलावतो तथा अवाज करतो नीकळे छे, गात्रो भांगे छे, तरश लाग्या करे छे अने वारंवार थूंकवुं पडे छे. शल्य जो **अस्थिमां** होय तो अनेक प्रकारनी वेदनाओ उत्पन्न थाय छे अने सोजो थाय छे. शल्य जो **अस्थिना छिद्रमां** होय तो अस्थि भरपूर थई जाय छे, अस्थिमां व्यथा थाय छे अने रुवाडां उभां करीनाखनारो पवननो प्रबल उपद्रव थाय छे. शल्य जो **संधिमां** होय तो अस्थिमां रहेलां शल्यना जेवोज प्रकार थाय छे अने अंगनी संकोचवा तथा लांबू करवा वगेरे क्रियानी हानि थाय छे. शल्य जो कोठामां होय तो सोयवते भोंकायाना जेवी व्यथावाळो वायुनो क्षोभ थाय छे, वायु मूत्र तथा विष्टा वगेरे रोकाई जाय छे अने व्रणना मोहोडामांथी मूत्र विष्टा तथा आहार नजरे पडे छे. शल्य जो **मर्ममां** होय तो शिरा वगेरेनां मर्मो वीधायानां जे चिह्नो (गया २५ मा अध्यायमां कहेलां छे) तेओ थाय छे.

शल्यो सूक्ष्मस्थितिवाळां होय तो पण ते ते स्थानकोमां उपर कह्याप्रमाणेज चिंह्नो थाय छे परंतु तेओ अस्पष्ट रेहे छे.

४ महान्ति स्वल्पानि वा शुद्धदेहानामनुलोमसंनिविष्टानि रोहन्ति विशेषतः कण्ठस्रो-

तःशिरात्वक्पेश्यस्थिविवरेषु दोषप्रकोपव्यायामाभिघातेभ्यः प्रचलितानि पुनर्बाधन्ते ॥

शल्योनुं शरीरनी अंदर गुम थई जवानुं कारण.

४ जेओनां शरीरो शुद्ध होय (वात आदि दोषोथी दूषित न होय) तेओनां शरीरोमां रुवाडांनी वलाण प्रमाणे अनुकूल रीते पेठेलां नाहानां अथवा मोटां शल्यो शरीरोमां पाकादिक नहीं थवाने लीधे अंदरना भागोमां मळी जवाथी गुम थई जाय छे. कंठ, स्रोत, शिरा, त्वचा, पेशी के अस्थिनां छिद्र एओमां पेठेलां शल्यो तो विशेषे करी ते ते भागोमां मळी जवाथी गुम थई जाय छे. परंतु तेओ ज्यारे कोई दोषना प्रकोपथी, कसरत वगेरे मेहेनत करवाथी के अभिघातथी चलायमान थाय छे त्यारे पाछां पीडा करे छे.

५ तत्र त्वक्प्रणष्टे स्निग्धस्विन्नायां मृन्माषयवगोधूमगोमयमृदितायां त्वचि यत्र संरम्भो वेदना वा भवति तत्र शल्यं जानीयात् ॥ स्त्यानघृतमृच्चन्दनकल्कैर्वा प्रदिग्धायां शल्योष्मणाशु विसरति घृतमुपशुष्यति वा लेपो यत्र तत्र शल्यं विजानीयात् ॥

मांसप्रणष्टे स्नेहस्वेदादिभिः क्रियाविशेषैरविरुद्धैरातुरमुपपादयेत् । कर्शितस्य तु शिथिलीभूतमनबद्धं क्षुभ्यमाणं यत्र संरम्भो वेदना वा भवति तत्र च शल्यं विजानीयात् ॥

कोष्ठास्थिसंधिपेशीविवरेष्ववस्थितमेवं परीक्षेत ॥

शिराधमनीस्रोतःस्नायुप्रणष्टे खण्डचक्रसंयुक्ते याने व्याधितमारोप्याशु विषमेऽध्वनि यायाद्यत्र संरम्भो वेदना वा भवति तत्र शल्यं जानीयात् ॥

अस्थिप्रणष्टे स्नेहस्वेदोपपन्नान्यस्थीनि बन्धनपीडनाभ्यां भृशमुपचरेद्यत्र संरम्भो वेदना वा भवति तत्र शल्यं जानीयात् ॥

संधिप्रणष्टे स्नेहस्वेदोपपन्नान् संधीन्प्रसारणाकुञ्चनबन्धनपीडनैर्भृशमुपचरेद्यत्र संरम्भो वेदना वा भवति तत्र शल्यमिति जानीयात् ॥

मर्मप्रणष्टे त्वनन्यभावान्मर्मणामुक्तं परीक्षणं भवति ॥

गुम थएलां शल्योने शोधी काहाडवाना उपायो.

९ शल्य जो त्वचामां गुम थयुं होय तो त्वचाने स्नेहननो तथा स्वेदननो संस्कार आपी माटीना, अडदना, जवना, घउंना तथा छाणना चूर्णथी चोळतां जे स्थलमां रताश, सोजो के वेदना थाय ते स्थलमां 'शल्य छे' एम जाणी लेवुं. अथवा त्वचाने थीणा घीनो, माटीनो के चंदनना कल्कनो लेप करतां जे स्थलमां शल्यनी गरमीथी तुरत घी पीगळवा लागे आथवा माटी वगेरेनो लेप सुकाई जवा लागे ते स्थलमां 'शल्य छे' एम जाणी लेवुं.

शल्य जो मांसमां गुम थयुं होय तो आतुरना अंगमां स्नेहन, स्वेदन तथा वमन विरेचन वगेरे अविरुद्ध उपचारो करवा. आवा उपचारो थवाने लीधे शरीरनी कृशता थतां शल्य ज्यां चोटी गयुं होय त्यांथी पोचुं पडी छुटुं थईने हालवा लागे छे. आम थवाथी जे प्रदेशमां रताश, सोजो के वेदना थाय ते प्रदेशमां 'शल्य छे' एम जाणवुं.

शल्य जो कोठामां, अस्थिना छिद्रमां, संधिना छिद्रमां के पेशीना छिद्रमां गुम थयुं होय तो पण तेनी एवीज रीते परीक्षा करवी.

शल्य जो शिरामां, धमनीमां, स्रोतमां के स्नायुमां गुम थयुं होय तो आतुरने भांगेलां पईडावाळी गाडीमां बेसाडीने वेगथी खाडा खडबावाळा नीचा उंचा मार्गमां फेरववो. गाडीनो थडको लागवाथी जे प्रदेशमां रताश, सोजो के वेदना थाय ते प्रदेशमां 'शल्य छे' एम जाणी लेवुं.

शल्य जो अस्थिमां गुप्त थयुं होय तो अस्थिओने स्नेहनथी तथा स्वेदनथी युक्त करी अत्यंत बांधवां तथा दबाववां. आम करवाथी ज्यां रताश, सोजो के वेदना थाय ते प्रदेशमां 'शल्य छे' एम जाणवुं.

शल्य जो संधिमां गुम थयुं होय तो संधिओने स्नेहन तथा स्वेदन आपी सारी पेठे लांबा कराववा, टुंका कराववा, बांधवा तथा दबाववा. आ प्रमाणे करतां जे स्थलमां रताश, सोजो के वेदना थाय ते स्थलमां 'शल्य छे' एम जाणी लेवुं.

शल्य जो मर्ममां गुम थयुं होय तो मर्मो, उपर कहेलां त्वचा आदि स्थानकोथी जुदा स्थानमां होतां नथी तेथी मर्मोमां रहेला शल्यनी परीक्षा त्वचा आदि स्थानकोमां गुम थएलां शल्योनी परीक्षा करवानी पद्धति प्रमाणेज करवी एम केहेवाई गयुं समजवुं.

६ सामान्यलक्षणमपि च हस्तिस्कन्धाश्वपृष्ठपर्वतद्रुमारोहणधनुर्व्यायामद्रुतयाननियुद्धाध्वगमनलङ्घनप्रतरणप्लवनव्यायामैर्जृम्भोद्गारकासक्षवथुष्ठीवनहसनप्राणायामैर्वातमूत्रपुरीषशुक्रोत्सर्गैर्वा यत्र संरम्भो वेदना वा भवति तत्र शल्यं जानीयात् ॥

शरीरमां गुम थएला शल्यनां दूरनां सामान्य लक्षणो.

६ शरीरमां रही गएला शल्यनुं नजदीकनुं सामान्य लक्षण आ अध्यायना त्रीजा विषयमां केहेवाई गयुं छे पण तेनुं दूरनुं सामान्य लक्षण आ छे के आतुरने हाथीनी कांधउपर चडवाथी, घोडानी पीठपर चडवाथी, पर्वतपर चडवाथी, झाडपर चडवाथी, धनुष खेंचवानी मेहेनत करवाथी, वेगवाळा वाहनपर चडवाथी, कुस्तीथी, मार्गमां चालवाथी, भीत वगेरेने ठेंकी जवाथी, जळमां तरवाथी, कूदवाथी, शरीरने श्रम पडे एवुं काम करवाथी, बगासुं खावाथी, ओडकार आववाथी, खांसी आववाथी, छींक आववाथी, थुंकवाथी, हसवाथी, प्राणायाम करवाथी अथवा अधोवायु मूत्र विष्टा के वीर्य एओनो उत्सर्ग करतां जे प्रदेशमां रताश, सोजो के वेदना थाय ते प्रदेशमां 'शल्य छे' एम वैद्ये जाणी लेवुं.

७ भवन्ति चात्र ॥

यस्मिंस्तोदादयो देशे सुप्तता गुरुतापि च ।
घट्टते बहुशो यत्र रुज्यते तुदतेऽपि च ॥
आतुरश्चापि यं देशमभीक्ष्णं परिरक्षति ।
संवाह्यमानो बहुशस्तत्र शल्यं विनिर्दिशेत् ॥

शल्य जाणवानां बीजां पण केटलांएक चिह्नो.

७ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे प्रदेशमां सोईवते भोकाया जेवी व्यथा, रताश, पाकवा वगेरे, स्पर्शनी खबर न पडे एवापणुं तथा भारेपणुं थाय अथवा रोगी जे प्रदेशने वारंवार चलायमान कर्या करे, चांपवा वगेरेनुं दबाण आवतां वारंवार जे प्रदेशने बचाव्या करे, जे प्रदेशमां वारंवार पीडाय अने जे प्रदेशपर पोताना हाथथी के नखथी दबाववानो चाळो कर्या करे ते प्रदेशमां 'शल्य छे' एम जाणी लेवुं.

८ अल्पबाधमशूनं च नीरुजं निरुपद्रवम् ।
प्रसन्नं मृदुपर्यन्तं निराघट्टमनुन्नतम् ॥
एषण्या सर्वतो दृष्ट्वा यथामार्गं चिकित्सकः ।
प्रसाराकुञ्चनाद्यूनं निःशल्यमिति निर्दिशेत् ॥

रोगीने शल्यरहित क्यारे केहेवो?

८ ज्यारे दुःख अल्प थई जाय, सोजो रहे नहीं, शूल आदि वेदनाओ टळी जाय, उपद्रवो जता रहे अने व्रण स्वच्छ, कोमळ छेडावाळो, जेना उपर आंगळीथी के नखथी दाब देवा वगेरेनो कशो पण चाळो न थतो होय एवो तथा उंचाण वगरनो थई जाय त्यारे वैद्ये जे मार्गेथी शल्य पेठुं होय ते मार्गमां एषणीथी (परू वगेरे शोध-

वानी सळी नाखवाथी) सघळी तरफ जोई तपासी तथा ते स्थलने लांबा करवाना समयमां के संकोचवाना समयमां तमाम अडचण वगरनुं थएलुं जोईने रोगीने शल्यरहित थएलो केहेवो.

९ अस्थ्यात्मकं भज्यते तु शल्यमन्तश्च शीर्यते।
प्रायो निर्भुज्यते शार्ङ्गमायसं चेति निश्चयः ॥
वार्क्षवैणवतार्णानि निर्ह्रियन्ते तु नो यदि ।
पचन्ति रक्तं मांसं च क्षिप्रमेतानि देहिनाम् ॥
कानकं राजतं ताम्रं रैतिकं त्रपु सीसकम् ।
चिरस्थानाद्विलीयन्ते पित्ततेजःप्रतापनात् ॥
स्वभावशीता मृदवो ये चान्येऽपीदृशा मताः।
द्रवीभूताः शरीरेऽस्मिन्नेकत्वं यान्ति धातुभिः॥
विषाणदन्तकेशास्थिवेणुदारूपलानि तु ।
शल्यानि न विशीर्यन्ते शरीरे मृण्मयानि च ॥

शल्योनी काहाडी नाखवामां जाणवा जेवी अंदरनी स्थितिओ.

९ अस्थिरूप शल्य अंदर भांगी जाय छे अने कोईक तो अंदरने अंदर वींखाई पण जाय छे माटे तेने काहाडवाना समयमां तेना कोई अवयवो अंदर न रही जाय एवी तजवीज राखवी. शींगडानुं तथा लोहोडानुं शल्य घणुं करीने अंदर वांकुं वळी जाय छे एवो निश्चय छे. झाडनां, वांसनां के खडनां शल्यो जो काहाडी नाखवामां न आवे तो तेओ तुरतज माणसोनां रुधिरने अने मांसने पकावी नाखे छे अने पकावीने पछी पोतानी मेळे नीकळी पडे छे माटे तेओ जो विशल्यघ्न (जेमांथी शल्य काहाडवामां आवे तो प्राण जतां रहे एवां) मर्मोमां[१] पड्यां होय तो तेओने काहाडवांज नहीं. सोनुं, रुपुं, त्रांबुं, पीतळ, कथील तथा सीसुं एओनां शल्यो लांबा काळसुधी शरीरमां रहे तो पित्तरूपी अग्निनो ताप लागवाथी पोतानी मेळेज पीगळीने शरीरना धातुओनी साथे एक थई जाय छे माटे जो तेओ विशल्यघ्न मर्मोमां पड्यां होय तो तेओने नहीं काहाडवाथी कशी हरकत नथी. कांसा वगेरे जे पदार्थो स्वभावथीज शीतल छे तथा कोमळ छे अने बीजा पण जे जे पदार्थो तेवाज प्रकारना छे तेओनां शल्यो आ शरीरमां पित्तरूपी अग्निना तापथी पीगळी जईने धातुओनी साथे एकत्व पामी जाय छे. शींगडां, दांत, केश, अस्थि, वांस, काष्ठ, पथ्थर अने माटी एओनां शल्यो तो कदी पण शरीरनी अंदर सडी जतां नथी के एकत्व पामतां नथी.

१० द्विविधं पञ्चगतिकं त्वगादिव्रणवस्तुषु ।
यो वेत्त्यधिष्ठितं शल्यं स राज्ञः कर्तुमर्हति ॥

आखा अध्यायनो पिंडार्थ.

१० शल्यना कर्णिपणाने तथा श्लक्ष्णपणाने, शल्यनी पांच प्रकारनी गतिओने अने त्वचा आदि व्रणवस्तुओमां जेनी अंदर शल्य होय तेने जे वैद्य बराबर जाणी शके ते वैद्यज राजवैद्य थवाने लायक छे.

अध्याय २७ मो.

१ अथातः शल्यापनयनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शल्यापनयनीय'[२] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शल्यं द्विविधमवबद्धमनवबद्धं च ॥

शल्यना बे भेद.

२ एक अवबद्ध (मजबुत चोटी बेठेलुं) अने बीजुं अनवबद्ध, (नहीं चोटी बेठेलुं) एम शल्य बे प्रकारनुं होय छे.

३ तत्र समासेनावबद्धशल्योद्धरणार्थं पञ्चदश हेतून्वक्ष्यामः ।

---

१ शारीरस्थानना छठ्ठा अध्यायनो १५ मो तथा १६ मो विषय जुवो.

२ शल्यने काहाडवाना प्रकारो विषेनो.

तद्यथा । स्वभावः पाचनं भेदनं दारणं पीडनं प्रमार्जनं निर्ध्मापनं वमनं विरेचनं प्रक्षालनं प्रतिमर्शः प्रवाहणमाचूषणमयस्कान्तो हर्षश्चेति ॥

अवबद्ध शल्यने काहाडवाना पंदर उपायो.

३ एओमां अवबद्ध शल्य काहाडवाना पंदर उपायो संक्षेपथी कहीएछीए (के जेओमांना अमुक उपायो अनवबद्ध शल्य काहाडवामां पण लागू पडे एम पोतानी मेळे समजी शकाशे.)

स्वभाव, (प्रकृति,) **पाचन,** (पाकतुं न होय तेने पाचनद्रव्योथी[1] पकाववुं) **भेदन,** (शस्त्रोथी भेदवुं) **दारण,** (फाडी नाखनारां द्रव्योथी[2] फाडी नाखवुं) **पीडन,** (दबावनारां द्रव्योथी[3] दाब देवो) **प्रमार्जन,** (वाळथी के वस्त्र वगेरेथी लूंछी दूर करी नाखवा वगेरे.) **निर्ध्मापन,** (नाकमां नळीवते पीपळ तथा कायफल वगेरेनुं चूर्ण नाखवा वगेरे.) **वमन, विरेचन, प्रक्षालन,** (धोवुं) **प्रतिमर्श,** (आंगळी वगेरेथी घसवुं) **प्रवाहण,** (विष्टा वगेरेने बलात्कारथी काहाडवाने माटे रोगीए जोर करवुं) **आचूषण,** (मोहोडा वगेरेथी चूसवुं) **अयस्कांत** (लोहोडाने खेचनारो चुंबक) अने **हर्ष** ए पंदर उपायोथी अवबद्ध-शल्य नीकळे छे.

४ तत्राश्रुक्षवथूद्गारकासमूत्रपुरीषानिलैः स्वभावबलप्रवृत्तैर्नयनादिभ्यः पतति ॥

सावगाढं शल्यमविदह्यमानं पाचयेत् प्रकोपात्तस्य पूयशोणितवेगाद्गौरवाद्वा पतति ॥

पक्कमभिद्यमानं भेदयेद्दारयेद्वा भिन्नमनिरस्यमानं पीडनीयैः पीडयेत्पाणिभिर्वा ॥

अणून्यक्षशल्यानि परिषेचनाध्मापनैर्वालवस्त्रपाणिभिः प्रमार्जयेत् ॥

आहारशेषश्लेष्महीनाणुशल्यानि श्वसनोत्कासनप्रधमनैर्निर्ह्रमेत्

अन्नशल्यानि वमनाङ्गुलिप्रतिमर्शप्रभृतिभिर्विरेचनैः पक्वाशयगतानि ॥

व्रणदोषाश्रयगतानि प्रक्षालनैः ॥

वातमूत्रपुरीषगर्भसङ्गेषु प्रवाहणमुक्तम् ॥

मारुतोदकसविषरुधिरदुष्टस्तन्येष्वाचूषणमास्येन विषाणैर्वा ॥

अनुलोममनवबद्धमकर्णमनल्पव्रणमुखमयस्कान्तेन ॥

हृद्यवस्थितमनेककारणोत्पन्नं शोकशल्यं हर्षेणेति

कयां शल्योमां कया उपायोनी योजना करवी.

४ आंसु, छींक, ओडकार, खांसी, मूत्र, विष्टा अने पवन के जेओ स्वभावशक्तिथीज प्रवर्त्ते छे तेओना बळथी नेत्रादिकमां रहेलुं शल्य पोतानी मेळे पडी जाय छे. (स्वभाव.)

अंदर गएलुं शल्य जो पाक्युं न होय तो पाचनद्रव्योथी पकाववुं एटले मांसनो सडो थतां परूना तथा रुधिरना वेगथी अथवा पोतानाज भारेपणाथी पडी जाय छे. (पाचन.)

शल्य पाकेलुं छतां भेदातुं न होय तो तेने वृद्धिपत्र आदि शस्त्रोथी भेदी नाखवुं अने तेम कर्या छतां पण न पडे तो फाडी नाखनारां द्रव्योथी फाडी नाखवुं अथवा दबावनारां द्रव्योथी के हाथथी दबाववुं. (आ भेदन, दारण अने पीडन.)

इंद्रियोमां रहेलां नाहानां शल्योने जळनी धा-

१ शणनां बीज, मूळानां बीज, सरगवानां बीज, तल, सर्षप, साथवो, मदिरानी नीचे रहेलो कदडो, अलसी अने बीजां पण उष्ण वीर्य द्रव्यो पाचन केहेवाय छे.

२ गुञ्छकरंज, दूधीयो वछनाग अथवा भीलामुं, नेपाळो, चीतरो, कणेर, कबुतरनी चरक, गरंजनी चरक, अने कंकपक्षीनी चरक, अथवा क्षार द्रव्यो के क्षार ए फाडी नाखनारां द्रव्यो केहेवाय छे.

३ चीकणी औषधोओनी छालो तथा मूळीयां ए दबावनारां द्रव्यो केहेवाय छे. जव, घउं तथा अडद एओना लोट पण दबावनार छे.

राथी, फूंक मारवाथी अने वाळ, वस्त्र के हाथ एओथी दूर करी नाखवां. (प्रमार्जन.)

भोजन करतां गळा वगेरेमां रही गएला आहारना अवयवने, कफने अने पडी गएलां शल्योना अवशेष रही गएला भागोने श्वासथी, खांसी आणवाथी अथवा नाकमां औषधोनां चूर्णो नाखी छींको आणवाथी काहाडी नाखवां. (निर्ध्मापन.)

अन्नरूप शल्योने वमनथी तथा अंदर आंगळी वगेरे घसवाथी काहाडी नाखवां अने पक्वाशयमां रहेलां अन्नरूप शल्योने विरेचनोथी काहाडी नाखवां. (वमन. प्रतिमर्श तथा विरेचन.)

परूना स्थानमां रहेलां शल्योने धोवाथी काहाडी नाखवां. (प्रक्षालन.)

पवन, मूत्र, विष्टा, के गर्भ अटकी रहेल होय तो ते शल्योने जोर कराववाथी काहाडी नखाववां (प्रवाहण.)

पवन, जळ, झेरवाळुं रुधिर अने दुष्ट धावण एओने मोहोडाथी अथवा शींगडाथी चूसीने काहाडी नाखवां. (आचूषण.)

जे शल्य अवबद्ध न होय, सरल होय, वांका भागवगरनुं होय के मोटा मोहोडावाळा व्रणमां रहेलुं होय तेने लोहोडाने खेंचनारा चुंबकथी काहाडी नाखवुं. (अयस्कांत.)

अनेक कारणोथी उत्पन्न थईने हृदयमां रहेला शोकरूपी शल्यने हर्षथी काहाडी नाखवुं. (हर्ष.)

५ सर्वशल्यानां तु महतामणूनां वा द्वावे वाहरणहेतू भवतः प्रतिलोमोऽनुलोमश्च तत्र प्रतिलोममवाचीनमानयेदनुलोमं पराचीनम् ।

उत्तुण्डितं छित्त्वा निर्घातयेच्छेदनीयमुखम् । छेदनीयमुखान्यपि कुक्षिवक्षःकक्षावङ्क्षणपर्शुकान्तरपतितानि च हस्तशक्यं यथामार्गं हस्तेनैवापहर्तुं प्रयतेत ।

अनुत्तुण्डितशल्यानि छेदनीयमुखानि च ।
अनिर्घात्यानि जानीयाद्भूयश्छेदानुबन्धतः ॥

हस्तेनापहर्तुमशक्यं विशस्य शस्त्रेण यन्त्रेण वापहरेत् ॥

शल्यने काहाडवाना बे मार्ग तथा काहाडवानी पद्धति.

९ नाहानां अथवा मोटां सघळां शल्योने काहाडवाना बेज मार्ग छे. एक अनुलोम अने बीजो प्रतिलोम. (जे रस्ताथी पेठुं होय ते रस्ताथीज काहाडवुं ए प्रतिलोम केहेवाय छे अने जे रस्ताथी पेठुं होय तेनी सामेना रस्ताथी काहाडवुं ए अनुलोम केहेवाय छे.) अत्यंत दूर नहीं पेसवाने लीधे अंगना पूर्वार्द्धमां रहेलुं होय तेने प्रतिलोम मार्गथी काहाडवुं अने अत्यंत दूर पेसवाने लीधे जेनुं मोहोडुं अंगना परार्द्धमां नीकळ्युं होय तेने अनुलोम रीते काहाडवुं.

शल्यनुं मोहोडुं परार्द्धमांथी बाहार नीकळ्युं न होय पण ते मोहोडाना गोदाथी ते अंगनो परार्द्धनो भाग उंचो थई रह्यो होय तो अने ते कापवा लायक मुखवाळो होय तो तेने कापीने शल्यने हाथवते के मुद्गर आदिवते हलबलाववुं. पेट, छाती, काख, साथळनुं मूल के पांसळां एओमां रहेलां शल्योए परार्द्धना भागने उंचो कर्यो होय अने ते भागनुं मोहोडुं कापवालायक जणाय तो पण तेम नहीं करतां हाथथी बनी शके एम होय तो हाथवतेज प्रतिलोम मार्गथी काहाडवानो यत्न करवो अने हाथ आदिथी शल्यने हलाववुं नहीं.

शल्य बहुज दूरसुधी पेठेलुं छतां पण ते शल्ये पोताना मोहोडाथी परार्द्धना भागने उंचो कर्यो न होय तो परार्द्धनो भाग छेदवालायक मुखवाळो जणातां छतां पण शल्यने हाथ वगेरेथी हलबलाववुं नहीं. कारण के हलबलाववाथी वधारे छेद थई जशे.

हाथवते काहाडी शकाय एम न होय तो योग्य यंत्रवते पकडीने काहाडी लेवुं. पण जो

यंत्रथी पण काहाडी शकाय नहीं एम होय तो शस्त्रथी कापी जोईतो रस्तो करीने काहाडी लेवुं.'

६ भवति चात्र ॥

शीतलेन जलेनैनं मूर्छन्तमवसेचयेत् ।
संरक्षेदस्य मर्माणि मुहुराश्वासयेच्च तम् ॥

शल्य काहाडती वखते रोगीने उपद्रव थाय तो तेनी चिकित्सा.

६ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "शल्य काहाडवाना समयमां आतुर मूर्छित थतो होय तो तेना उपर शीतलजळ छांटवुं, तेना मर्मोनुं रक्षण करवुं 'अने वारंवार दूधनुं तर्पण वगेरे आपवाथी तेनुं आश्वासन करवुं."

७ ततः शल्यमुद्धृत्य निर्लोहितं व्रणं कृत्वा स्वेदार्हमग्निघृतप्रभृतिभिः संस्वेद्य विदह्य प्रदिह्य सर्पिर्मधुभ्यां बद्ध्वाऽऽचारिकमुपदिशेत् ॥

शल्य काहाड्या पछी करवानी क्रिया (पश्चात्कर्म.)

७ शल्य काहाडी लीधा पछी व्रणने रुधिरवगरनो करी, स्वेदनक्रियाने लायक जणाय तो योग्यताप्रमाणे अग्निथी के उना घी वगेरेथी स्वेदनक्रिया करी अने जो डांभवा लायक जणाय तो डांभी तेना उपर मधनो तथा घीनो लेप करी पाटो बांधीने वैद्ये योग्य आहार विहारादिकनो उपदेश करवो.

८ शिरास्नायुविलग्नं शलाकादिभिर्विमोच्यापनयेत् ।

श्वयथुग्रस्तवारङ्गं समवपीड्य श्वयथुं दुर्बलवारङ्गं कुशादिभिर्बद्ध्वा ।

हृदयमभितो वर्तमानं शल्यं शीतजलादिभिरुद्वेजितस्यापहरेद्यथामार्गम् । दुरुपहरमन्यतोऽपबाधमानं पाटयित्वोद्धरेत् ॥

अस्थिविवरप्रविष्टमस्थिविदष्टं वाऽवगृह्य पादाभ्यां यन्त्रेणापहरेदशक्यमेवं वा बलवद्भिः सुपरिगृहीतस्य यन्त्रेण ग्राहयित्वा शल्यवारङ्गं प्रविभुज्य धनुर्गुणैर्बद्ध्वैकतश्चास्य पञ्चाङ्ग्यामुपसंयतस्याश्वस्य वक्त्रकटके वा बध्नीयादथैनं कशया ताडयेद्यथोन्नमयञ्छिरो वेगेन शल्यमुद्धरति । दृढां वा वृक्षशाखामवनम्य तस्यां पूर्ववद्बद्ध्वोद्धरेत् ॥

अस्थिदेशोत्तुण्डितमष्ठीलाश्ममुद्गराणामन्यतमस्य प्रहारेण विचाल्य यथामार्गमेव ।

यन्त्रेण विमृदितकर्णानि कर्णवन्त्यनाबाधकरदेशोत्तुण्डितानि पुरस्तादेव ॥

जातुषे कण्ठासक्ते कण्ठे नाडीं प्रवेश्याग्नितप्तां च शलाकां तयावगृह्य शीताभिरद्भिः परिषिच्य स्थिरीभूतमुद्धरेत् ।

अजातुषं जतुमधूच्छिष्टलिप्तया शलाकया पूर्वकल्पेनेत्येके ।

अस्थिशल्यमन्यद्वा तिर्यक्कण्ठासक्तमवेक्ष्य केशोण्डुकं दृढैकसूत्रबद्धं द्रवभक्तोपहितं पाययेदाकण्ठाच्च पूर्णकोष्ठं वामयेद्वमतश्च शल्यैकदेशसक्तं ज्ञात्वा सूत्रं सहसा त्वाक्षिपेत् । मृदुना वा दन्तधावनकूर्चकेनापहरेत् प्रणुदेद्वान्तः । क्षतकण्ठाय च मधुसर्पिषी लेढुं प्रयच्छेत्त्रिफलाचूर्णं वा मधुशर्करामिश्रम् ॥

उदकपूर्णमवाक्शिरसमवपीडयेद्धुनीयाद्वामयेद्वा भस्मराशौ वा निखनेदामुखात् ॥

ग्रासशल्ये तु कण्ठासक्ते निःशङ्कमनवबुद्धं स्कन्धे मुष्टिनाभिहन्यात् । स्नेहं मद्यं पानीयं वा पाययेत् ॥

बाहुरज्जुलतापाशशल्ये तु कण्ठपीडनाद्वायुः प्रकुपितः श्लेष्माणं कोपयित्वा स्रोतो निरुणद्धि लालास्रावं फेनागमनं संज्ञानाशं चापादयति । तमभ्यज्य संस्वेद्य शिरोविरेचनं तस्मै तीक्ष्णं दद्याद्रसं च वातघ्नं विदध्यादिति ।

जुदा जुदा भागोमांथी शल्य काहाडवाना जुदा जुदा प्रकारो.

८ शल्य शिरामां के स्नायुमां चोटी रह्युं होय

तो तेने शलाका आदिवते शिराथी तथा स्नायुथी छुटुं पाडीने पछी काहाडवुं.

शल्यनुं पांखुं सोजामां वेराई गयुं होय तो सोजाने दबावीने क्रिया करवी अने शल्यनुं पांखुं नबळुं होय तो तेने छाल वगेरेनी पट्टीआदि वते बांधीने क्रिया करवी.

हृदयना समीपना प्रदेशमां शल्य होय तो शीतल जळ वगेरेथी आतुरने जाग्रत करी करीने प्रतिलोम मार्गथी शल्य काहाडवुं. जो शल्य प्रतिलोम मार्गथी काहाडवुं मुशकेल जणाय अने ते शल्य मर्मने पीडा करनारूं होय तो बीजा प्रदेशमां शस्त्रथी चीरीने पण ते शल्यने काहाडी लेवुं.

जे शल्य अस्थिना छिद्रमां पेठेलुं होय अथवा जेने अस्थि बहुज वळगी रहेलुं होय ते शल्यने वैद्ये योग्य लागमां पोताना पग भरावीने यंत्रवते काहाडी लेवुं. आप्रमाणे करतां छतां पण न काहाडी शकाय एम होय तो आतुरने बलवान् पुरुषोना हाथोथी बराबर पकडावी, यंत्रवते शल्यना पांखाने वाकुं वाळी नाखी, ते पांखामां धनुषनी दोरीनो एक छेडो बांधी, एक घोडाने पंचांगी नामना बंधनमां (जे बंधनथी मोहोडुं अने चार पग आघां पाछां करी शकाय नहीं एवा दृढ बंधनमां) बांधी, धनुषनी दोरीना बीजा छेडाने उभा राखेला ए घोडाना चोकडानी कडीमां बांधवो अने पछी ते घोडाने चाबुख (कोरडो) एवी रीते मारवो के जे रीते घोडो पोताना माथाने उंचुं करतां झडपथी शल्यने काहाडी लिये अथवा कोइ झाडनी मजबूत शाखाने नमावी, ते शाखामां धनुषनी दोरीना बीजा छेडाने बांधीने शाखाने हाथमांथी छोडी देवी एटले उंची थती ते शाखाज शल्यने काहाडती जशे.

जो शल्य अस्थिना पाछलना भागमां मोहोडुं काहाडी रह्युं होय तो ते शल्यने लाठना, पथराना अथवा मुद्गरना प्रहारथी चलायमान करीने प्रतिलोम मार्गथीज काहाडी लेवुं.

कर्णवाळुं (आडी अथवा नमेली एक अणीवाळुं) शल्य जो मर्मादिकने पीडा न करे एवा प्रदेशमां मोहोडुं घालीने ते प्रदेशने उंचो करी रह्युं होय तो यंत्रथी शल्यना कर्णने (आडी अथवा नमेली अणीने) चगदी के मरडी नाखीने पछी ते शल्यने ते प्रदेशमांज खेंची लेवुं.

लाखनुं शल्य कंठमां अटकी रह्युं होय तो कंठमां नळी नाखी अने ते नळीनी अंदर अग्निथी तपावेली सळी नाखी ते सळीमां शल्यने चोटाडी लई, पछी सळी उपर थंडुं जळ नाखी, ज्यारे शल्य ते सळीमां स्थिर थई जाय त्यारे काहाडी लेवुं.

लाख शिवाय बीजा कोई पदार्थनुं शल्य कंठमां अटकी रह्युं होय तो कंठमां नळी नाखी अने ते नळीनी अंदर लाखथी अथवा मीणथी चोपडेली अग्निथी तपावेली सळी नाखी ते सळीमां शल्यने चोटाडी लई पछी सळी उपर थंडुं जळ नाखी, ज्यारे ते शल्य सळीमां स्थिर थई जाय त्यारे काहाडी लेवुं एम केटलाएक केहे छे.

अस्थिनुं अथवा बीजा कोई पदार्थनुं शल्य कंठमां आडुं लागी रह्युं छे एम जोवामां आवे तो वाळना जाळाने (गुंचराने) एक मजबूत दोराथी बांधी ते जाळुं आतुरने चोखानी पातळी राबनी साथे पाई देवुं. गळासुधी राब पावाथी आतुरनो कोठो पूर्ण थतां आतुरने वमन कराववुं अने वमन थतां ज्यारे ते जाळुं शल्यना एक भागमां वींटाई रहेलुं जाणवामां आवे त्यारे दोराना बाहारना छेडाने तुरत खेंची लेवो एटले ते शल्य पेला जाळानी साथे बाहार नीकळी आवशे अथवा कंठमां आडा आवेला शल्यने दांतणना कोमळ कुचाथी बाहार काहाडी लेवुं अने बाहार काहाडी लेवानुं न बनी शके तो ठेलीने अंदर पेसाडी देवुं. आम करवाथी जेनुं गळुं छोलाई

गयुं होय एवा आतुरने मध तथा घी चाटवा आपवां अथवा मधमां तथा साकरमां कालवेलुं त्रिफळानुं चूर्ण चाटवा देवुं.

जेना पेटमां नदी के कुवा वगेरेनुं पाणी बहुज भराई गयुं होय एवा माणसने उंधे माथे लटकावीने दबाववो अथवा कंपाववो. अथवा वमन कराववुं अथवा भस्मना समूहमां मोहोडासुधी दाटी देवो.

कोळीआनुं शल्य गळामां लागी रह्युं होय तो ते आतुरनी कांध उपर बेधडक अचानक मुठी मारवी अथवा स्नेह, मद्य के पाणी पावुं.

हाथथी, दोरींथी के लताथी गळाने फांसी आवी होय तो गळुं दबावाथी प्रकुपित थएलो वायु कफने प्रकुपित करीने स्रोतने रोकी दे छे अने तेम करीने लाळनो स्राव करावे छे, फीण लावी देछे अने संज्ञानो नाश पण करी दे छे. आवा आतुरने वैद्ये अभ्यंग करी तथा स्वेदन करीने तीक्ष्ण शिरोविरेचन (जेथी माथुं खाली थाय एवुं नस्य) देवुं अने वायुने हणनारो रस पण देवो.

९ भवन्ति चात्र ॥

शल्याकृतिविशेषांश्च स्थानान्यावेक्ष्य बुद्धिमान्।
तथा यन्त्रपृथक्त्वं च सम्यक्छल्यमथाहरेत् ॥
कर्णवन्ति तु शल्यानि दुःखाहार्याणि यानि च।
आददीत भिषक्तस्मात्तानि युक्त्या समाहितः ॥
एतैरुपायैः शल्यं तु नैव निर्घात्यते यदि ।
मत्या निपुणया वैद्यो यन्त्रयोगैश्च निर्हरेत् ॥
शोथपाकौ रुजश्चोग्राः कुर्याच्छल्यमनिर्हृतम् ।
वैकल्यं मरणं चापि तस्माद्यत्नाद्विनिर्हरेत् ॥

शल्य काहाडवाना काममां, आ ग्रंथमां नहीं कहेली पण केटलीक युक्ति करवी.

९ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के "बुद्धिमान् वैद्ये शल्यनां नेत्र तथा हृदय वगेरे स्थानकोने, शल्यनी जुदी जुदी आकृतिओने तथा यंत्रोना जुदा जुदापणाने जोईने योग्य युक्तिथी शल्य काहाडवुं. जे शल्यो कर्णवाळां होय छे तेओने तथा बीजां पण जे शल्यो काहाडवामां बहु मुशकेली भरेलां जणाय तेओने वैद्ये बहुज साहुचेती राखी बराबर युक्ति गोठवीने काहाडवां. जो उपर कहेला उपायोथी शल्य नहीं काहाडी शकाय एम जणाय तो वैद्ये निपुण बुद्धिथी बीजां यंत्रो तथा बीजा संयोगो गोठवीने पण शल्य काहाडवुं. जो शल्य काहाडवामां न आव्युं होय तो ते शल्य सोजाने, पाकने, उग्र वेदनाओने, खोडखापणने अने मरणने पण उत्पन्न करे छे एटला माटे गमे तेवो योग्य यत्न करीने शल्यने काहाडवुं जोइए.

अध्याय २८ मा.

१ अथातो विपरीताविपरीतव्रणविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विपरीताविपरीतव्रणविज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ फलाग्निजलवृष्टीनां पुष्पधूमाम्बुदा यथा ।
ख्यापयन्ति भविष्यत्त्वं तथाऽरिष्टानि पञ्चताम्॥
तानि सौक्ष्म्यात्प्रमादाद्वा तथैवाशु व्यतिक्रमात्।
गृह्यन्ते नोद्भतान्यज्ञैर्मुमूर्षोर्नत्वसम्भवात् ॥

अरिष्टो मरणनी भविष्यत्ता सूचवे छे.

२ जेम पुष्पो फळोनी भविष्यत्ताने, धुमाडो अग्निनी भविष्यत्ताने, अने वांदळांओ वृष्टिनी भविष्यत्ताने सूचवे छे तेम अरिष्टो रोगीना मरणनी भविष्यत्ताने सूचवे छे. (एओमां जेम धुमाडाए

१ व्रण आतुरने विपरीत छे के अविपरीत छे ते जाणवानां चिन्होविषेनो.

सूचवेली अग्निनी भविष्यत्ता खरीज नीवडे छे तेम दोषोए सूचवेली मरणनी भविष्यत्ता तो खरीज नीवडे छे. दोषोशिवाय बीजां चिह्नोए सूचवेली मरणनी भविष्यत्तामां वखतपर व्यभिचार पण थई जाय छे.) ए अरिष्टो प्रकट्या छतां पण सूक्ष्मताने लीधे, अथवा प्रमादने लीधे, अथवा झडपदार होवाने लीधे मूर्ख माणसोना धारवामां आवतां नथी. परंतु जो अरिष्टो थाय तो तेओथी मरणनो संभव नथी एम नथी.

३ ध्रुवं तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत्किलामलैः ।
रसायनतपोजप्यतत्परैर्वा निवार्यते ॥

दोषोए सूचवेलुं मरण पण प्रबळ उपायोथी टाळी शकाय छे.

३ दोषजन्य अरिष्टोए सूचवेलुं मरण जो के व्यभिचारवगरनुं छे अर्थात् अवश्य थाय छे एम केहेवामां आवेछे तोपण रागादिक दोषोथी रहित रेहेनारा महात्मा ब्राह्मण लोको तेनुं निवारण करी शके छे अने रसायनोना सेवनथी, तप करवामां तत्पर रेहेवाथी अने जप करवामां तत्पर रेहेवाथी पण तेनुं निवारण थतुं जेवामां आवे छे.

४ नक्षत्रपीडा बहुधा यथाकालाद्विपच्यते ।
तथैवारिष्टपाकं च ब्रुवते बहुधा जनाः ॥

अरिष्टनुं फळ लांबे दिवसे पण थाय छे.

४ जेम ज्योतिःशास्त्रनी रीतिप्रमाणे नक्षत्रे उत्पन्न करेली पीडा घणुं करीने लांबे दिवसे प्रकट थाय छे तेम अरिष्टोनुं फळ कोई समये लांबे दिवसे पण थाय छे एम विद्वान् लोको घणी घणी रीते बोले छे.

५ असिद्धिमाप्नुयाल्लोके प्रतिकुर्वन्गतायुषः ।
अतो रिष्टानि यत्नेन लक्षयेत्कुशलो भिषक् ॥

वैद्ये अरिष्टो जोवानी जरूर.

५ जेनुं आयुष्य क्षीण थयुं होय एवा रोगीनी चिकित्सा करवाथी वैद्यने धर्म, अर्थ तथा काम वगेरेनी हानि थाय छे एटला माटे प्रवीण वैद्ये अरिष्टो यत्नपूर्वक जोवां जोइए.

६ गन्धवर्णरसादीनां विशेषाणां समासतः ।
वैकृतं यत्तदाचष्टे व्रणिनः पक्वलक्षणम् ॥

व्रणवाळां माणसनां अरिष्टोनो सामान्य संग्रह.

६ व्रणना गंध, वर्ण, रस, शब्द, स्पर्श तथा आकार एओना जे स्वभावो छे तेओमां विकृतिवाळो फेरफार जोवामां आवे तो जाणवुं के ते फेरफार व्रणवाळाना मरणनी नीशानीरूप छे.

७ कटुस्तीक्ष्णश्च विस्रश्च गन्धस्तु पवनादिभिः॥
लोहगन्धिस्तु रक्तेन व्यामिश्रः सांनिपातिकः ॥
लाजातसीतैलसमाः किंचिद्विस्राश्च गन्धतः ।
ज्ञेयाः प्रकृतिगन्धाः स्युरतोन्यद्गन्धवैकृतम् ॥
मद्यागुर्वाज्यसुमनःपद्मचन्दनचम्पकैः ।
सगन्धा दिव्यगन्धाश्च मुमूर्षूणां व्रणाः स्मृताः॥
श्ववाजिमूषिकध्वाङ्क्षपूतिवल्लूरमत्कुणैः ।
सगन्धाः पङ्कगन्धाश्च भूमिगन्धाश्च गर्हिताः ॥

गंधोना स्वभावोना फेरफाररूप अरिष्ट.

७ वातसंबंधी व्रणमां तीखो, पित्तसंबंधी व्रणमां तीक्ष्ण, कफसंबंधी व्रणमां काचा मांसना जेवो, लोहीसंबंधी व्रणमां लोहोडांना जेवो, त्रणे दोषना सन्निपातथी थएला व्रणमां मिश्रित, वातपैत्तिक व्रणमां कांईक काचा मांसना जेवो तथा साळनी धाणी जेवो, वातश्लैष्मिक व्रणमां कांईक काचा मांसना जेवो तथा अळसीना तेल जेवो अने पित्तश्लैष्मिक व्रणमां कांईक काचा मांसना जेवो तथा तिलना तेलना जेवो गंध होय ए स्वाभाविक छे. ए शिवाय जुदी रीतनो गंध आवे तो विकृति थई छे (अरिष्ट थयुं छे) एम समजवुं, जो व्रणमांथी मद्यना जेवो, अगरूना जेवो, घीना जेवो, जाईनां फूलना जेवो,

१ आ शास्त्रमां व्रणनी बाबतज मुख्य छे माटे प्रथम व्रणवाळानांज अरिष्टो जणाव्यां छे.

कमळना जेवो, चंदनना जेवो के चंपकपुष्पना जेवो गंध नीकळतो होय अथवा दिव्य गंध नीकळतो होय तो तेने मृत्युना चिह्नरूप जाणवो. कुतरां, घोडा, उंदर, कागडा, सुकाएलुं दुर्गंधी मांस, कादव अने पृथ्वी एओना जेवा गंधो पण मृत्युना चिह्नरूप छे.

८ ध्यामकुङ्कुमकङ्कुष्ठसवर्णाः पित्तकोपतः ।
न दह्यन्ते न चूष्यन्ते भिषक्तान्परिवर्जयेत् ॥
कंडूमंतः स्थिराः श्वेताः स्निग्धाः कफनिमित्ततः ।
दूयंते च विदह्यन्ते भिषक्तान्परिवर्जयेत् ॥
कृष्णास्तु ये तनुस्रावा वातजा मर्मतापिनः ।
स्वल्पामपि न कुर्वन्ति रुजं तान्परिवर्जयेत् ॥

वर्णोना स्वभावोना फेरफाररूप अरिष्ट.

८ पित्तना कोपथी थएला व्रणो कांईक काळा, केसर जेवा के दारुडीना रसना जेवा होय छे पण ते व्रणो जो बलतरावगरना होय तथा चोसवगरना होय तो वैद्ये ते व्रणोनी चिकित्सा करवी नहीं. कफना कोपथी थएला व्रणो खरजवाळा, स्थिर, सफेद तथा स्निग्ध होय छे पण ते व्रणो जो अति पीडा करता होय अने बळतरा करता होय तो वैद्ये ते व्रणोनी चिकित्सा करवी नहीं. वातना कोपथी थएला व्रणो काळा, पातळा स्राववाळा अने मर्मोने ताप करनारा होय छे पण ते व्रणो जो जरा पण वेदना न करता होय तो वैद्ये ते व्रणोनी चिकित्सा करवी नहीं. (वेदनाओना फेरफारनेज वर्णोना फेरफाररूप समजवो.)

९ क्ष्वेडन्ते घुर्घुरायन्ते ज्वलन्तीव च ये व्रणाः ।
त्वग्मांसस्थाश्च पवनं सशब्दं विसृजन्ति ये ॥
ये च मर्मस्वसम्भूता भवन्त्यत्यर्थवेदनाः ।

शब्दोना स्वभावोना फेरफाररूप[1] अरिष्ट.

९ जे व्रणोमां खडखडाट के घरघराट थतो होय, जे व्रणो सळगता जेवा देखाता होय, जे व्रणो त्वचामां तथा मांसमां रह्या छतां पोतामांथी अवाजवाळा पवनने काहाडता होय अने जे व्रणो मर्मोमां नहीं थएला छतां अत्यंत वेदनावाळा होय ते व्रणोनी वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं.

१० दह्यन्ते चान्तरत्यर्थं बहिःशीताश्च ये व्रणाः ।
दह्यन्ते बहिरत्यर्थं भवन्त्यन्तश्च शीतलाः ।

स्पर्शोना स्वभावोना फेरफाररूप अरिष्ट.

१० जे व्रणो अंदर अत्यंत उष्णतावाळा छतां बाहारना भागमां शीतल जणाता होय अथवा अंदर शीतलतावाळा छतां बाहारना भागमां उष्णतावाळा जणाता होय तेओनी वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं.

११ शक्तिकुन्तध्वजरथा वाजिवारणगोवृषाः ॥
येषु चाप्यवभासेरन्प्रासादाकृतयस्तथा ।
चूर्णावकीर्णा इव ये भांति वा न च चूर्णिताः॥

आकारोना स्वभावोना फेरफाररूप अरिष्ट.

११ जे व्रणो सांग, भालां, ध्वज, रथ, घोडा, हाथी, बळद अने मेहेल एओना जेवी आकृतिओवाळां देखाय अथवा जेओ पोतानी उपर चूर्णो भभरावेलां नहीं छतां चूर्णोनो संयोग पामेला जेवा देखाय ते व्रणोनी वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं.

१२ प्राणमांसक्षयश्वासकासारोचकपीडिताः ।
प्रवृद्धपूयरुधिरा व्रणा येषां च मर्मसु ॥

उपद्रवोरूप अरिष्ट.

१२ जे व्रणोथी शक्तिनो तथा बळनो क्षय

[1] आ अध्यायना छठा विषयमां कह्याप्रमाणे शब्दोना स्वभावोना फेरफाररूप अरिष्ट केहेवाथी पेहेलां रसोना स्वभावोना फेरफाररूप अरिष्ट केहेवुं जोइए पण ते मुद्दल कह्युंज नथी माटे वैद्ये वातना कषायररसनो, पित्तना तीखारसनो अने कफना मधुररसनो फेरफार कीडी वगेरेना आववा न आववा वगेरे उपरथी पोतानी मेळेज जाणी लेवो. (जाते चाखीने पण निश्चय करवामां आवे छे.)

थयो होय, जे व्रणोथी श्वास खांसी तथा अरोचक थयां होय, जे व्रणोमां परू तथा रुधिर बहुज वधी पड्यां होय तथा जे व्रणो मर्मोमां थया होय ते व्रणोनी चिकित्सा करवी नहीं.

१३ क्रियाभिः सम्यगारब्धा
न सिद्ध्यन्ति च ये व्रणाः ।
वर्जयेत्तान्भिषक्प्राज्ञः
संरक्षन्नात्मनो यशः ॥

चिकित्सानी निष्फळतारूप अरिष्ट.

१३ जे व्रणो शास्त्रोक्त रीतिप्रमाणे बराबर चिकित्साओ करवामां आवतां छतां पण केमेकरी मटे नहीं तेओनी पोताना यशनो बचाव करवा इच्छनारा वैद्ये चिकित्सा छोडीज देवी.

अध्याय २९ मो.

१ अथातो विपरीताविपरीतदूतशकुनस्वप्ननिदर्शनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विपरीताविपरीतदूतशकुनस्वप्ननिदर्शनीय'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ दूतदर्शनसंभाषावेषाश्चेष्टितमेव च ।
ऋक्षं वेला तिथिश्चैव निमित्तं शकुनोऽनिलः ॥
देशो वैद्यस्य वाग्देहमनसां च विचेष्टितम् ।
कथयन्त्यातुरगतं शुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥

रोगीना शुभ अथवा अशुभ भविष्यनी परीक्षा कया कया पदार्थो उपरथी थाय छे.

२ दूतनुं[२] दर्शन, दूतनुं भाषण, दूतनो वेष, दूतनी चेष्टा, नक्षत्र, वेला, तिथि, निमित्त, शकुन, पवन, वैद्यनो प्रदेश अने वैद्यनी कायिक वाचिक तथा मानसिक चेष्टा एओ आतुरना शुभ के अशुभ भविष्यने सूचवी आपे छे.

३ पाषण्डाश्रमवर्णानां स्वपक्षाः कर्मसिद्धये ।
त एव विपरीताः स्युर्दूताः कर्मविपत्तये ॥
नपुंसकं स्त्री बहवो नैककार्या असूयकाः ।
गर्दभोष्ट्ररथप्राप्ताः प्राप्ता वा स्युः परम्पराः ॥
वैद्यं य उपसर्पन्ति दूतास्ते चापि गर्हिताः ।

दूतोनुं अशुभ दर्शन.

३ जैन आदि पाखंड धर्मवाळा रोगी तरफथी तेवाज पाखंड धर्मवाळो दूत आवे तो, रोगी जे ब्रह्मचर्य आदि आश्रमवाळो होय तेवाज आश्रमवाळो तेना तरफथी दूत आवे तो अने रोगी जे वर्णनो होय तेज वर्णवाळो तेना तरफथी दूत आवे तो रोगीनुं कार्य सिद्ध थशे एम समजवुं. पण रोगीथी विपरीत पाखंडवाळो, विपरीत आश्रमवाळो अने विपरीत वर्णवाळो दूत आवे तो रोगीनुं कार्य बगडशे एम समजवुं. (जैन तरफथी जैन, मार्गी तरफथी मार्गी, ब्रह्मचारी तरफथी ब्रह्मचारी अने गृहस्थ तरफथी गृहस्थ दूत आवे तो कार्यनी सिद्धि समजवी अने जैन तरफथी मार्गी, मार्गी तरफथी जैन, ब्रह्मचारी तरफथी गृहस्थ के गृहस्थ तरफथी ब्रह्मचारी दूत आवे तो कार्यनी असिद्धि समजवी.)

नपुंसक, स्त्री, घणा, अनेकने माटे आवनारा, परस्पर कजीया करता, गधेडानी के उंटनी गाडीमां बेठेला अथवा पोतानी पंक्ति बांधीने आवनारा, एवा एवा जे दूतो वैद्यनी पासे आवे तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा.

४ पाशदण्डायुधधराः पाण्डुरेतरवाससः ॥
आर्द्रजीर्णापसव्यैकमलिनध्वस्तवाससः ।
न्यूनाधिकाङ्गा उद्विग्ना विकृता रौद्ररूपिणः ॥

---

१ विपरीत के अविपरीत दूत, शकुन तथा स्वप्न इत्यादिक उपरथी रोगीना शुभ के अशुभ भविष्यनी कल्पनाविषेनो.

२ रोगीतरफथी वैद्यने बोलाववा माटे अथवा पूछवा माटे जे माणस आवे ते दूत केहेवाय छे.

दूतोनां अशुभ वेष (तथा अंग.)

४ दोरी वगेरेना पाश, कडीआळी लाकडी तथा खड्गादिक आयुधो एओने धरनारा, काळां पीळां के रातां वस्त्रोवाळा, भीनां जुनां जमणा खभापर रहेलां एकज मेलां के फाटेलां वस्त्रोवाळा, न्यून के अधिक अंगोवाळा, भय पामेला, कोढ आदि विकारोवाळा के भयंकर रूपोवाळा दूतो वैद्यनी पासे आवे तो तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा.

५ रूक्षनिष्ठुरवादाश्चाप्यमाङ्गल्याभिधायिनः ।

दूतोना अशुभ भाषण.

५ स्नेह वगरनां वचनो बोलता, कठोर वचनो बोलता अथवा 'मुवो गयो' इत्यादि अमंगल शब्दो बोलता दूतो वैद्यनी पासे आवे तो तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा.

६ छिन्दंतस्तृणकाष्ठानि स्पृशन्तो नासिकां स्तनम् ।
वस्त्रान्तानामिकाकेशनखरोमदशास्पृशः ॥
स्रोतोऽवरोधहृद्गण्डमूर्द्धोरःकुक्षिपाणयः ।
कपालोपलभस्मास्थितुषाङ्गारकराश्च ये ॥
विलिखन्तो महीं किंचिन्मुञ्चन्तो लोष्टभेदिनः ।
तैलकर्दमदिग्धाङ्गा रक्तस्रगनुलेपनाः ॥
फलं पक्वमसारं वा गृहीत्वान्यच्च तद्विधम् ।
नखैर्नखान्तरं वापि करेण चरणं तथा ॥
उपानच्चर्महस्ता वा विकृतव्याधिपीडिताः ।
वामाचारा रुदन्तश्च श्वासिनो विकृतेक्षणाः ॥
याम्यां दिशं प्राञ्जलयो विषमैकपदेस्थिताः ।
वैद्यं य उपसर्पन्ति दूतास्ते चापि गर्हिताः ॥

दूतोनी अशुभ चेष्टाओ.

६ तृण तथा काष्ठ वगेरेनुं छेदन करता करता अने नाक, स्तन, वस्त्रना अंत, अनामिका नामनी आंगळी, केश, नख, रुवाडां के छेडावाळा वस्त्रना छेडा एओनो स्पर्श करता करता जे दूतो आवे के बेठा होय तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा. कान वगेरेनां छिद्रो, कांध, गुह्य, हृदय, गाल, माथुं, छाती के कूख एओनी उपर हाथ राखीने जे दूतो आवे तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा. माथाना अस्थिनो खंड, पथरो, भस्म, अस्थि, फोतरां के कोलसा एओने हाथमां लईने जे दूतो आवे तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा. धरतीने खोतरता, कोई पकडेली वस्तुने मुकी देता, ठेफां भांगतां, तैलथी खरडाएला, कादवथी खरडाएला, रातां वस्त्रोवाळा, राती माळाओवाळा, जेमां अंदर कांई सार न होय एवा पाका फळने अथवा एवीज कोई बीजी वस्तुने हाथमां लई आवेला, नखथी नखने अथवा हाथथी पगने पकडता, हाथमां पगरखां के बीजां चामडांवाळा, गलत्कुष्ट आदि विकृत व्याधिओथी पीडाएला, विपरीत व्यवहारवाळा, रोता, हांफता, विकृत नेत्रोवाळा, दक्षिण दिशामां हाथ जोडता तथा विषम स्थितिथी के एक पगथी उभेला अथवा कोई एक विषम स्थानमां उभा रहेला दूतोने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा.

७ दक्षिणाभिमुखं देशे त्वशुचौ वा हुताशनम् ।
ज्वलयन्तं पचन्तं वा क्रूरकर्मणि चोद्यतम् ॥
नग्नं भूमौ शयानं वा वेगोत्सर्गेषु वाऽशुचिम् ।
प्रकीर्णकेशमभ्यक्तं स्विन्नं विक्लवमेव च ॥
वैद्यं य उपसर्पन्ति दूतास्ते चापि गर्हिताः ।

वैद्यनां अशुभ प्रदेश अने अशुभ कायिक वाचिक तथा मानसिक चेष्टाओ.

७ वैद्य पोते दक्षिण दिशा तरफ मुख राखी बेठो के उभो होय, अपवित्र प्रदेशमां होय, अग्निने सळगावतो होय, कोई वस्तुने पकावतो होय, पशुवधआदि क्रूर कर्म के मुंडनआदि कर्म करवा तैयार थयो होय, नागो होय, धरतीपर सूतो होय, मूत्र के विष्टा वगेरेनो उत्सर्ग करीने अपवित्र स्थितिमां होय, छूटा केशवाळो होय, तैलना अभ्यंगवाळो होय, पसीनावाळो होय के विह्वल

होय ते समये जे दूतो आवे तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा.

८ वैद्यस्य पित्र्ये दैवे वा कार्ये चोत्पातदर्शने॥ मध्याह्ने चार्धरात्रे वा संध्ययोः

दूतोनी अशुभ वेळा.

८ वैद्य श्राद्ध आदि पितृकार्यमां के होम आदि देवकार्यमां लाग्यो होय ते समये, उत्पात जोवामां आवतो होय ते समये, मध्याह्ने, अधराते, सूर्योदयना समयमां अथवा सूर्यास्तना समयमां जे दूतो आवे तेओने अशुभनां चिह्नोरूप समजवा.

९ कृत्तिकासु च। आर्द्राश्लेषामघामूलपूर्वासु भरणीषु च॥

दूतोना समागमना अशुभ नक्षत्रो.

९ कृत्तिका, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, मूळ, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, पूर्वाषाढा अने भरणी एओमांनां कोई नक्षत्रमां दूतो आवे तो तेओने अशुभनां चिन्होरूप समजवा.

१० चतुर्थ्यां वा नवम्यां वा षष्ठ्यां संधिदिनेषु च वैद्यं य उपसर्पन्ति दूतास्ते चापि गर्हिताः॥

दूतोना समागममां अशुभ तिथिओ.

१० चोथ, नोम, छठ, अमावास्या, पुनेम तथा प्रतिपदा ए तिथिओमां दूतो वैद्यनी पासे आवे तो तेओने अशुभनां चिन्होरूप समजवा.

**११ स्विन्नाभितप्ता मध्याह्ने ज्वलनस्य समीपतः। गर्हिताः पित्तरोगेषु दूता वैद्यमुपागताः॥
त एव कफरोगेषु कर्मसिद्धिकराः स्मृताः। एतेन शेषं व्याख्यातं बुद्ध्या संविभजेत्तु तत्॥
रक्तपित्तातिसारेषु प्रमेहेषु तथैव च। प्रशस्तो जलरोधेषु दूतवैद्यसमागमः॥
विज्ञायैवं विभागं तु शेषं बुध्येत पण्डितः।**

अमुक अमुक रोगोमां स्थानपरत्वे दूतोना समागमनुं शुभाशुभपणुं.

११ पसीनावाळा तथा परिताप पामेला दूतो अग्निना समीपमांथी मध्याह्नना समयमां वैद्यनी पासे आवे अने रोगीने पित्तसंबंधी रोग होय तो ते दूतोने अशुभनां चिन्होरूप समजवा. पण रोगीने कफसंबंधी रोग होय तो एज दूतोने कार्यनी सिद्धि करनारा समजवा. आ उपरथी बाकीनुं केहेवाइ गयुं माटे ए पद्धति उपर ध्यान आपीने आवा विषयमां बुद्धिथी शुभाशुभना विभागो करी लेवा. (रोगीने वायुसंबंधी रोग होय अने दूतो थंडा पवनना के बलवत्तर पवनना समयमां आवे तो तेओने अशुभ समजवा इत्यादि.)

रोगीओने रक्तपित्त, अतीसार के प्रमेह होय अने ते रोगीओना दूतो जे ठेकाणे जलनो निरोध थतो होय ते ठेकाणामां आवीने वैद्यने मळे तो ते समागमने शुभनां चिन्हरूप समजवो. पंडित वैद्ये आ उपरथी समजी लईने बीजा स्थलोमां थता समागमना शुभपणानो पण निर्णय करी लेवो. (रोगीओने उदावर्त्त अने मूत्रकृच्छ्र आदि रोगो होय अने ते रोगीओना दूतो ज्यां जळ वेहेतुं होय एवा स्थलमां आवीने वैद्यने मळे तो ते समागम शुभना चिन्हरूप छे इत्यादि.)

**१२ शुक्लवासाः शुचिर्गौरः श्यामो वा प्रियदर्शनः स्वस्यां जातौ सगोत्रो वा दूतः कार्यकरः स्मृतः।
गोयानेनागतस्तुष्टः पादाभ्यां शुभचेष्टितः॥
धृतिमान्विधिकालज्ञः स्वतन्त्रः प्रतिपत्तिमान्। अलंकृतो मङ्गलवान्दूतः कार्यकरः स्मृतः॥
स्वस्थं प्राङ्मुखमासीनं समे देशे शुचौ शुचिम्। उपसर्पति यो वैद्यं स च कार्यकरः स्मृतः॥**

केवी रीतनां दूतदर्शनादिकने शुभनां चिन्होरूप समजवां ?

१२ दूत जो सफेद वस्त्रोवाळो, स्वच्छ, गौर वर्णवाळो, श्याम वर्णवाळो छतां पण रूपाळो, रोगीनी जातनो के रोगीना गोत्रवाळो होय तो तेने कार्यनी सिद्धि करनार समजवो. जे दूत बळद के घोडा वगेरे सारां वाहनथी अथवा पगे

चालीने आव्यो होय, शुभ चेष्टावाळो होय, धीरजवाळो होय, पूर्वापर वगेरेना ज्ञानवाळो होय, स्वतंत्र होय, विधिने तथा समयने जाणनारो होय, शणगारेलो होय, स्निग्ध तथा कोमळ बोलनारो होय, मांगलिक पदार्थोवाळो होय अने अविपरीत तिथि नक्षत्रादिकमां आवेलो होय तेने कार्यनी सिद्धि करनार समजवो. जे दूत आधिव्याधि वगरना, पवित्र तथा सम प्रदेशमां उगमणे मोहोडे बेठेला अने पवित्र स्थितिवाळा वैद्यनी पासे आवे तेने कार्यनी सिद्धि करनार समजवो.

१३ मांसोदकुम्भातपत्रविप्रवारणगोवृषाः ।
शुक्लवर्णाश्च पूज्यन्ते प्रस्थाने दर्शनं गताः ॥
स्त्री पुत्रिणी सवत्सा गौर्वर्द्धमानमलंकृता ।
कन्या मत्स्याः फलं चामं स्वस्तिकं मोदका दधि।
हिरण्याक्षतपात्रं वा रत्नानि सुमनो नृपः ।
अप्रशान्तोऽनलो वाजी हंसश्चापः शिखी तथा॥
ब्रह्मदुन्दुभिजीमूतशङ्खवेणुरथस्वनाः ।
सिंहगोवृषनादाश्च ह्रेषितं गजबृंहितम् ॥
शस्तं हंसरुतं नृणां कौशिकं चैव वामतः ।
प्रस्थाने यायिनः श्रेष्ठा वाचश्च हृदयंगमाः ॥
पत्रपुष्पफलोपेतान्सक्षीरान्नीरुजो द्रुमान् ।
आश्रिता वा नभोवेश्मध्वजतोरणवेदिकाः ॥
दिक्षु शान्तासु वक्तारो मधुरं पृष्ठतोऽनुगाः ।
वामा वा दक्षिणा वापि शकुनाः कर्मसिद्धये ॥
शुष्केऽशनिहतेऽपत्रे वल्लीनद्धे सकण्टके ।
वृक्षेऽथवाश्मभस्मास्थिविट्तुषाङ्गारपांसुषु ॥
चैत्यवल्मीकविषमस्थिता दीप्तखरस्वराः ।
पुरतो दिक्षु दीप्तासु वक्तारो नार्थसाधकाः ॥
पुंनामानःखगा वामाः स्त्रीसंज्ञा दक्षिणाः शुभाः।
दक्षिणाद्वामगमनं प्रशस्तं श्वशृगालयोः ।
वामं नकुलचाषाणां नोभयं शशसर्पयोः ॥
भासकौशिकयोश्चैव न प्रशस्तं किलोभयम् ।
दर्शनं वा रुतं चापि न गोधाकृकलासयोः ॥

दूतैरनिष्टैस्तुल्यानामशस्तं दर्शनं नृणाम् ।
कुलत्थतिलकर्पासतुषपाषाणभस्मनाम् ॥
पात्रं नेष्टं तथाङ्गारतैलकर्दमपूरितम् ।
प्रसन्नेतरमद्यानां पूर्णं वा रक्तसर्षपैः ॥
शवकाष्ठपलाशानां शुष्काणां पथि संगमाः ।
नेष्यन्ते पतितान्तस्थदीनान्धरिपवस्तथा ॥
मृदुः शीतोऽनुकूलश्च सुगन्धिश्चानिलः शुभः।
खरोष्णोऽनिष्टगन्धश्च प्रतिलोमश्च गर्हितः ॥
ग्रंथ्यर्बुदादिषु सदा छेदशब्दश्च पूजितः ।
विद्रध्युदरगुल्मेषु भेदशब्दस्तथैव च ॥
रक्तपित्तातिसारेषु रुद्धशब्दः प्रशस्यते ।
एवं व्याधिविशेषेण निमित्तमुपधारयेत् ॥
तथैवाक्रुष्टहाकष्टमाक्रन्दरुदितस्वनाः ।
छर्दा वातपुरीषाणां शब्दो वै गर्दभोष्ट्रयोः ॥
प्रतिषिद्धं तथा भग्नं क्षुतं स्खलितमाहतम् ।
दौर्मनस्यं च वैद्यस्य यात्रायां न प्रशस्यते ॥
प्रवेशेप्येतदुद्देशादवेक्ष्यं च तथातुरे ।
प्रतिद्वारं गृहे वास्य पुनरेतच्च गण्यते ॥
केशभस्मास्थिकाष्ठाश्मतुषकर्पासकण्टकाः ।
खट्वोर्ध्वपादा मद्यापो वसा तैलं तिलास्तृणम्॥
नपुंसकव्यङ्गभग्ननग्नमुण्डासिताम्बराः ।
प्रस्थाने वा प्रवेशे वा नेष्यन्ते दर्शनं गताः ॥
भाण्डानां सङ्करस्थानां स्थानात्संचरणं तथा ।
निखातोत्पाटनं भङ्गः पतनं निर्गमस्तथा ॥
वैद्यासनावसादो वा रोगी वा स्यादधोमुखः ।
वैद्यं संभाषमाणोऽङ्गं कुड्यमास्तरणानि वा ॥
प्रमृज्याद्वा धुनीयाद्वा करौ पृष्ठं शिरस्तथा ।
हस्तं चाकृष्य वैद्यस्य न्यसेच्छिरसि चोरसि ॥
यो वैद्यमुन्मुखः पृच्छेदुन्मार्ष्टि स्वाङ्गमातुरः ।
न स सिद्ध्यति वैद्यो वा गृहे यस्य न पूज्यते ॥
भवने पूज्यते वापि यस्य वैद्यः स सिद्ध्यति ।
शुभं शुभेषु दूतादिष्वशुभं ह्यशुभेषु च ॥
आतुरस्य ध्रुवं तस्माद्दूतादील्लँक्षयेद्भिषक् ।

दूतने वैद्यने घेर जतां अने वैद्यने रोगीने घेर जतां केवां शकुनो तथा केवां निमित्तो थाय तो हितकारी गणवां अने केवां थाय तो अशुभ गणवां.

१३ जवाना समयमां मांस, जळनो घडो, छत्र, ब्राह्मणो, हाथी, बळद, फूल, दहीं तथा अविद्ध मोती वगेरे सफेद वर्णवाळा शुभ पदार्थो, पुत्रवाळी स्त्री, वाछडासहित गाय, आरती उतारवानी थाळी वगेरे, शणगारेली कन्या, माछलां, काचुं फळ, साथीआ, लाडुओ, सुवर्णनुं पात्र, अक्षतनुं पात्र, रत्नो, प्रसन्न चित्तवाळो राजा, प्रज्वलित अग्नि, घोडो, हंसपक्षी, चापपक्षी के मोरपक्षी जोवामां आवे तो शुभ थशे एम समजवुं. वेदघोष, नोबतनो अवाज, मेघनो नाद, शंखनो शब्द, वांसळीनो शब्द, रथनो शब्द, सिंहनाद, बळदनो नाद, घोडानी हणेणाटी, हाथीनी गर्जना के हंसनो शब्द सांभळवामां आवे तो शुभ थशे एम समजवुं. डाबी तरफ घुवडनो अवाज थाय तो तेने पण शुभकारी समजवो. जवाना समयमां राजद्वारी लोको जोवामां आवे तथा हृदयने प्रिय लागे एवी वाणी सांभळवामां आवे तो शुभ थशे एम समजवुं. पानडां फूल तथा फळ एओथी संपन्न तथा दरदवगरना छीरवाळा वृक्षोनी उपर बेठेला अथवा आकाशमां उडता अथवा घर ध्वज दरवाजो के वेदी एओनी उपर बेठेला पक्षीओ शांत दिशामां मधुर अवाज करे अथवा पाछळ आवे अथवा डाबा के जमणा उतरे तो तेओने कार्यनी सिद्धि करनारा समजवा.[1] सुकाएला, वीजळीथी उपहत थएला, पानडांवगरना, वेलाओथी घेराएला के कांटावाळा वृक्षनी उपर बेठेला अथवा पथरा, भस्म, अस्थि, विष्टा, फोतरां, कोलसा, रज, थाळां बांधेलां वृक्षो, राफडा के विषमस्थान एओनी उपर बेठेला दीप्त तथा कठोर शब्दवाळा पक्षीओ सामी दिशामां अथवा खराब दिशाओमां अवाज करे तो अशुभ थशे एम समजवुं. पुल्लिंग नामवाळा पक्षीओ डाबा उतरे अने स्त्रीलिंग नामवाळा पक्षीओ जमणा उतरे तो शुभ थशे एम समजवुं. कुतरो के शीयाळ जमणा भागमांथी डाबो उतरे तो शुभ छे अने नोळीओ के चापपक्षी डाबा भागमांथी जमणो उतरे तो शुभ छे. ससलो, सर्प, गरंज के घुवड एओ डाबा उतरे तो पण अशुभ छे अने जमणा उतरे तो पण अशुभ छे. चंदनघो के काचंडो एओनुं दर्शन तथा अवाज अशुभज छे. अशुभसूचक दूतो जेवांज वेषादिकवाळां बीजां पण कोई माणसो जोवामां आवे तो तेओ अशुभ छे. कळथी, तिल, कपास, फोतरां, पथरा तथा भस्म एओनुं दर्शन अशुभ छे. कोलसाथी, तेलथी के कादवथी भरेला पात्रनुं दर्शन अशुभ छे. नीरां मद्यथी भरेला पात्रनुं दर्शन अशुभ नथी पण ते वगरनां बीजां मद्योथी अथवा राता सर्षपोथी भरेला पात्रनुं दर्शन अशुभ छे. मार्गमां चालतां सुकाएलां शबो, काष्ठो तथा पानडां एओनो समागम अशुभ छे. पतित, मरवा तैयार थएल अथवा चंडाल, दीन, अंध तथा शत्रु एओनो समागम पण अशुभ छे. कोमळ, शीतल, अनुकूल तथा सुगंधवाळो पवन शुभकारी छे. कठोर, गरम, खराब गंधवाळो तथा सामेथी आवतो पवन अशुभ छे. ग्रंथि के अर्बुद वगेरे रोगवाळानी पासे जवुं होय त्यारे कापवाना अर्थवाळो शब्द सांभळवामां आवे तो शुभ छे. विद्रधि, उदररोग के गुल्म ए रोगवाळानी पासे जवुं होय त्यारे भेदनना अर्थवाळो शब्द काने पडे तो शुभ छे. रक्तपित्त के अतिसार ए रोगवाळानी पासे जवुं होय त्यारे रोकावाना अर्थवाळो शब्द काने शुभनुं चिन्ह छे.

१ रोगीना घरमां जतो पूर्ण घडो अने रोगीना घरमांथी नीकळतो खाली घडो जोवामां आवे तो ते

पडे तो शुभ छे. आ प्रमाणे व्याधिओना भेदो उपरथी शब्दोनुं शुभाशुभना निमित्तपणुं समजी लेवुं. तेमज गाळो भांडवानो शब्द, हाय भुंडुं थयुं एवो शब्द, बराडानो शब्द, रोवानो शब्द, वमननो अवाज, अधोवायुनो अवाज, विष्टाना उत्सर्गनो अवाज, गधेडानो अवाज अने उंटनो अवाज एओ पण अशुभ छे. वैद्य पोताना घरथी चाले ते समयमां मनाइ थाय, कांई भांगी जाय, छीक थाय, लथडी जवाय, आघात थाय के मनमां खेद थाय तो पण अशुभ थाय छे. रोगीना घरमां प्रवेश करती वखते पोतानी अने रोगीनी पण ए सघळी स्थितिओ वैद्ये जोवी. रोगीना घरमां गया पछी ते घरना द्वारनी आगळ के ते घरमां एवी कोई स्थितिओ थाय तो तेओने अशुभ करनारी गणवी नहीं. वैद्य पोताना घरथी चाले ते समयमां अने रोगीना घरमां पेसे ते समयमां केश, भस्म, अस्थि, काष्ठ, पथरा, फोतरां, कपास, कांटा, उंधो पडेलो खाटलो, मद्यनुं जळ, चरबी, तैल, खड, नपुंसक, खोडखापणवाळो माणस, भांगेलां अंगवाळो माणस, नम्न, मुंडो, के तमाम काळां वस्त्रोवाळो माणस जोवामां आवे तो ते अशुभनां चिह्नरूप छे एम समजवुं. वैद्य रोगीना घरमां जाय के बेसे ते समयमां, एकठां करी राखेलां वासणो स्थानमांथी खसी जाय, उंडी खोडेली वस्तु उखेडवामां आवती होय, कोई वस्तु भांगी नाखवामां आवती होय, कोई वस्तु पडती होय, कोई वस्तुने बाहार लई जवामां आवती होय, वैद्यनुं आसन गबडी जाय के रोगी नीचुं मोहोडुं करी बेठो होय तो ते अशुभनां चिह्नरूप छे. रोगी वैद्यनी सामे वात करतो करतो भीतने, बीछानाने, पोताना हाथने, पीठने के माथाने चोळया करे अथवा हलाव्या करे तो ते पण अशुभ छे. जो रोगी माणस वैद्यना हाथने खेंचीने पोताना माथा उपर के छाती उपर मुके अथवा उचुं मोहोडुं राखीने वैद्यने पूछे अथवा पूछतो पूछतो पोताना अंगने साफ कर्या करे तो ते रोगीने आराम थतो नथी. जेना घरमां वैद्यनो सत्कार न थाय ते रोगीने पण आराम थतो नथी. जेना घरमां वैद्य पूजाय ते रोगी रोगथी मुक्त थाय छे. दूतादिक शुभ होय तो रोगीनुं शुभ थाय छे अने अशुभ होय तो रोगीनुं अशुभ थाय छे एटलामाटे वैद्ये अवश्य दूतादिकनी परीक्षा कर्या करवी.

१४ स्वप्नानतः प्रवक्ष्यामि मरणाय शुभाय च ॥
सुहृदो यांश्च पश्यन्ति व्याधितो वा स्वयं तथा।
स्नेहाभ्यक्तशरीरस्तु करभव्यालगर्दभैः ॥
वराहैर्महिषैर्वापि यो यायाद्दक्षिणामुखः ।
रक्ताम्बरधरा कृष्णा हसन्ती मुक्तमूर्द्धजा ॥
यं वा कर्षति बद्ध्वा स्त्री नृत्यन्ती दक्षिणामुखम्।
अन्त्यावसायिभिर्यो वा कृष्यते दक्षिणामुखः ॥
परिष्वजेरंन्यं वापि प्रेताः प्रव्रजितास्तथा ।
मूर्द्धन्याघ्रायते यस्तु श्वापदैर्विकृताननैः ॥
पिबेन्मधु च तैलं च यो वा पङ्केऽवसीदति ।
पङ्कप्रदिग्धगात्रो वा प्रनृत्येत्प्रहसेत्तथा ॥
निरम्बरश्च यो रक्तां धारयेच्छिरसि स्रजम् ।
यस्य वंशो नलो वापि तालो वोरसि जायते ॥
यं वा मत्स्यो ग्रसेद्यो वा जननीं प्रविशेन्नरः ।
पर्वताग्रात्पतेद्यो वा श्वभ्रे वा तमसा वृते ॥
ह्रियते स्रोतसा यो वा यो वा मौण्ड्यमवाप्नुयात्।
पराजीयेत बध्येत काकाद्यैर्वाभिभूयते ॥
पतनं तारकादीनां प्रणाशं दीपचक्षुषोः ।
यः पश्येद्देवतानां वा प्रकम्पमवनेस्तथा ॥
यस्य छर्दिर्विरेको वा दशनाः प्रपतन्ति वा।
शाल्मलीं किंशुकं यूपं वल्मीकं पारिभद्रकम् ॥
पुष्पाढ्यं कोविदारं वा चितां वा योऽधिरोहति।
कर्पासतैलपिण्याकलोहानि लवणं तिलान् ॥
लभेताश्नीत वा पक्कमन्नं यश्च पिबेत्सुराम्।
स्वस्थः स लभते व्याधिं व्याधितो मृत्युमृच्छति।
यथास्वं प्रकृतिस्वप्नो विस्मृतो विहतश्च यः ।
चिन्ताकृतो दिवा दृष्टो भवन्त्यफलदास्तु ते ॥

ज्वरितानां शुना सख्यं कपिसख्यं तु शोषिणाम्।
उन्मादे राक्षसैः प्रेतैरपस्मारे प्रवर्तनम् ॥
मेहातिसारिणां तोयपानं स्नेहस्य कुष्ठिनाम् ।
गुल्मेषु स्थावरोत्पत्तिः कोष्ठे मूर्ध्नि शिरोरुजि ॥
शष्कुलीभक्षणं छर्द्यामध्वा श्वासपिपासयोः ।
हारिद्रं भोजनं वापि यस्य स्यात्पाण्डुरोगिणः॥
रक्तपित्ती पिबेद्यश्च शोणितं स विनश्यति ।
स्वप्नानेवंविधान्दृष्ट्वा प्रातरुत्थाय यत्नवान् ॥
दद्यान्माषांस्तिलाँल्लोहं विप्रेभ्यः काञ्चनं तथा ।
जपेच्चापि शुभान्मन्त्रान्गायत्रीं त्रिपदां तथा ॥
दृष्ट्वा च प्रथमे यामे सुप्याद्ध्यात्वा पुनः शुभम्।
जपेद्वान्यतमं देवं ब्रह्मचारी समाहितः ।
न चाचक्षीत कस्मैचिद्दृष्ट्वा स्वप्नमशोभनम् ॥
देवतायतने चैव वसेद्रात्रित्रयं तथा ।
विप्रांश्च पूजयेन्नित्यं दुःस्वप्नात्प्रविमुच्यते ॥
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि प्रशस्तं स्वप्नदर्शनम् ।
देवान्द्विजान्गोवृषभाञ्जीवतः सुहृदो नृपान् ॥
समिद्धमग्निं विप्रांश्च निर्मलानि जलानि च ।
पश्यत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥
मांसं मत्स्यान्स्रजः श्वेता वासांसि च फलानि च।
लभन्ते धनलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥
महाप्रासादसफलवृक्षवारणपर्वतान् ।
आरोहेद्द्रव्यलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥
नदीनदसमुद्रांश्च क्षुभितान्कलुषोदकान् ।
तरेत्कल्याणलाभाय व्याधेरपगमाय च ॥
उरगो वा जलौका वा भ्रमरो वापि यं दशेत् ।
आरोग्यं निर्दिशेत्तस्य धनलाभं च बुद्धिमान् ॥
एवंरूपाञ्छुभान्स्वप्नान्यः पश्येद्व्याधितो नरः ।
स दीर्घायुरिति ज्ञेयस्तस्मै कर्म समाचरेत् ॥

स्वप्नो उपरथी शुभाशुभनुं अवेक्षण.

१४ हवे रोगीना संबंधीओने अथवा रोगीने पोताने प्राप्त थएलां जे स्वप्नो मरणनी के शुभनी सूचना आपे छे, ते स्वप्नोविषे कहुं छुं.

जे माणस स्वप्नमां तेलथी खरडाएला शरीरवाळो थई उंट, हिंसक जानवर, गधेडो, सूवर के पाडो एओना उपर बेसी दक्षिण दिशा तरफ जाय ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे. जे माणसने स्वप्नमां रातां वस्त्रोने धरनारी, हसती, छुटा केशवाळी अने नाचती काळी स्त्री बांधीने दक्षिण दिशा तरफ खेंचे ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे. जे माणसने स्वप्नमां चांडाललोको दक्षिण दिशा तरफ खेंचे अथवा प्रेतो (मरण पामेलाओ) के संन्यासीओ आलिंगन करे ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे. जे माणसने स्वप्नमां विकृत मोहोडांवाळां फाडीखानारां जानवरो माथापर सुंघे अथवा जे माणस स्वप्नमां मद्यने के तेलने पीए अथवा कादवमां खुंचीने सीदाय ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे. जे माणस स्वप्नमां कादवथी खरडाएलां गात्रोवाळो थई नाचे तथा हसे अथवा नागो नागो माथापर राती माळानुं धारण करे ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे. जे माणसने स्वप्नमां छातीपर वांस, बरू के ताड उगे अथवा जेने स्वप्नमां मत्स्य गळी जाय अथवा जे माणस स्वप्नमां माताना उदरमां पेसी जाय ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे. जे माणस स्वप्नमां पर्वतनी टोच उपरथी पडे अथवा अंधकारथी घेराएला खाडामां पडे अथवा प्रवाहमां तणाई जाय अथवा माथामां मुंडाई जाय अथवा हारी जाय, बंधाय के कागडाओ वगेरेथी पराभव पामे ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे. जे माणस स्वप्नमां ताराओने पडता देखे अथवा दीवाने के चक्षुने नष्ट थई गएलां देखे अथवा देवमूर्त्तिओना के पृथ्वीना कंपने देखे ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामे छे.

जे माणसने स्वप्नमां वमन थाय के विरेचन थाय अथवा दांत पडी जाय अथवा जे माणस स्वप्नमां शेमळाना झाडपर, खाखरापर, यज्ञमां पशु बांधवाना खीलापर, राफडापर, लींबडापर, पुष्पोथी भरपूर कांचनार नामना वृक्ष उपर अथवा चिता उपर चडे ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामेछे. जे माणसने स्वप्नमां कपास, तेल, खोळ, लोहोडाना पदार्थ, लूण के तल एओमांनूं कांइ मळे अथवा जे माणस स्वप्नमां रांधेलु अन्न खाय अथवा लोटनी मदिरा पीए ते माणस स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे अने रोगी होय तो मरण पामेछे.

जे स्वप्न पोतानी वात आदि प्रकृतिप्रमाणे जोवामां आवे, जे स्वप्न अत्यंत भूलाइ जाय, जे स्वप्न तुरतज सारा स्वप्नथी हणाइ जाय, जे स्वप्न चिंताए करेलो होय अने जे स्वप्न दिवसे जोवामां आवे ते स्वप्नो कशुं फळ आपता नथी.

ज्वरवाळा माणसोने स्वप्नमां कुतराओ साथे मैत्री थाय, क्षयवाळाओने स्वप्नमां वानराओनीसाथे मैत्री थाय, उन्मादवाळाओने स्वप्नमां राक्षसोनो समागम थाय अने अपस्मारवाळाओने स्वप्नमां प्रेतोनो समागम थाय तो ते रोगीओ मरण पामेछे. जो प्रमेह के अतिसारवाळो रोगी स्वप्नमां पाणी पीए, कोढवाळो रोगी स्वप्नमां तेल आदि स्नेह पीए, गुल्मवाळो रोगी स्वप्नमां पोताना कोठापर वृक्षनी उत्पत्ति थएली देखे, माथानो दरदी स्वप्नमां माथापर वृक्षनी उत्पत्ति थएली देखे, वमननो दरदी स्वप्नमां चणा वगेरेनी तेलमां तळेली पूरी खाय, श्वासनो के तरशनो दरदी स्वप्नमां पंथ करे, पांडुरोगनो दरदी स्वप्नमां हळदरवाळुं भोजन जमे अने रक्तपित्तनो दरदी स्वप्नमां लोही पीए तो मरी जायछे.

आवां दुष्ट स्वप्नो जोवामां आव्यां होय तो प्रभातमां उठी यत्नपूर्वक ब्राह्मणोने अडद, तल, लोहोडुं तथा सोनुं एओनां दानो देवां अने शुभ मंत्रोनो तथा त्रिपदा गायत्रीनो जप करवो. रात्रिना पेहेला पोहोरमां दुष्ट स्वप्न जोवामां आवे तो शुभनुं ध्यान करीने पाछुं सुईजवुं अथवा ब्रह्मचर्य राखी एकाग्र चित्तथी कोई देवना मंत्रनो जप करवो. खराब स्वप्न जोवामां आवेल होय तो तेनी कोईनी पासे वात नहीं केहेतां देवमंदिरमां त्रण रात सुधी रेहेवुं अने नित्य ब्राह्मणोनुं पूजन करवुं. आम करवाथी दुःस्वप्ननुं फळ थतुं नथी.

हवे सारां स्वप्नो कहुंछुं. जो स्वप्नमां देव, शुभ पक्षीओ, बळदो, जीवता संबंधीओ, राजाओ, प्रदीप्त अग्नि, ब्राह्मणो के निर्मळ जळ जोवामां आवे तो कल्याणनी प्राप्ति थाय छे अने जे व्याधि होय ते टळी जाय छे. जो स्वप्नमां मांस, मत्स्य, सफेद माळाओ. सफेद वस्त्रो के उत्तम फळो एओनी प्राप्ति थाय तो धननो लाभ थाय छे अने जे व्याधि होय ते टळी जाय छे. स्वप्नमां मोटो प्रासाद, फळवाळां वृक्षो, हाथी के पाहाड एओनी उपर चडे तो द्रव्य मळे छे अने जे व्याधि होय ते टळी जाय छे. स्वप्नमां वृद्धि पामेलां अने मेलां जळवाळां नदीओ, नदो के समुद्रो एओने तरे तो कल्याणनी प्राप्ति थाय छे अने जे व्याधि होय ते टळी जाय छे. जे माणसने स्वप्नमां सर्प, जळो के भ्रमर करडे तेने आरोग्य थवानुं अने धननो लाभ थवानुं भविष्य बुद्धिमान् वैद्ये केहेवुं. जे रोगी माणस आवी रीतनां शुभ स्वप्नोने देखे तेने लांबा आयुष्यवाळो जाणवो अने तेवो जाणीने चिकित्सा करवी.

१ वातप्रकृतिवाळो माणस स्वप्नमां आकाशमां जाय छे. पित्तप्रकृतिवाळो माणस स्वप्नमां अग्निने, वीजळीने तथा उल्काओने देखे छे. कफप्रकृतिवाळो माणस स्वप्नमां कमळोने, हंसोने तथा सुंदर जलाशयोने देखे छे. (भावप्रकाश.) शारीरस्थानना चोथा अध्यायनो ३३ मो ३४ मो तथा ३५ मो विषय जुवो.

अध्याय ३० मो.

उपक्रम.

१ अथातः पञ्चेन्द्रियार्थविप्रतिपत्तिमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'पंचेंद्रियार्थ-विप्रतिपत्ति'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शरीरशीलयोर्यातु प्रकृतेर्विकृतिर्भवेत् ।
तत्त्वरिष्टं समासेन व्यासतस्तु निबोध मे ॥

अरिष्टनुं संक्षिप्त लक्षण.

२ शरीरनी प्रकृतिनुं अने स्वभावनी प्रकृतिनुं विपरीतपणुं थई जाय ए अरिष्ट (मरणनुं लक्षण) समजवुं. अरिष्टनुं आ संक्षिप्त लक्षण कह्युं. हवे अरिष्ट विषे विस्ताथी कहुंछुं ते सांभळो.

३ शृणोति विविधाञ्छब्दान्यो दिव्यानामभावतः।
समुद्रपुरमेघानामसंपत्तौ च निःस्वनान् ॥
तान्स्वनान्नावगृह्णाति मन्यते चान्यशब्दवत् ।
ग्राम्यारण्यस्वनांश्चापि विपरीताञ्छृणोत्यपि ॥
द्विषच्छब्देषु रमते सुहृच्छब्देषु कुप्यति ।
न शृणोति च योऽकस्मात्तं ब्रुवन्ति गतायुषम् ॥

शब्दोनुं विपरीतपणुं ए माणसना मरणनुं चिह्न छे.

३ जे माणस आसपासमां कोई पण सिद्ध, गंधर्व के किन्नर आदि दिव्य प्राणीओ नहीं छतां पण तेओना विविध शब्दोने सांभळे अथवा समुद्र, पुरवासी लोको के मेघ एओना शब्दोनो अभाव छतां पण तेओना शब्दोने सांभळे अथवा ए समुद्रादिकना शब्दो थतां छतां पण तेओने न सांभळे अथवा ए समुद्रादिकना शब्दोने अन्य पदार्थोना शब्दो माने अथवा ग्राम्य प्राणीओना शब्दोने जंगली प्राणीओना शब्दो माने अने जंगली प्राणिओना शब्दोने ग्राम्य प्राणिओना शब्दो माने अथवा शत्रुओनी वातो सांभळीने राजी थाय अने स्नेहीओनी वातो सांभळीने कोप करे अथवा अकस्मात् कशुं सांभळेज नहीं ते माणसनुं आयुष्य क्षीण थयुं छे एम समजवुं.

४ यस्तूष्णमिव गृह्णाति शीतमुष्णं च शीतवत् ।
संजातशीतपिडको यश्च दाहेन पीड्यते ॥
उष्णगात्रोऽतिमात्रं च यः शीतेन प्रवेपते ।
प्रहारान्नाभिजानाति योऽङ्गच्छेदमथापि वा ॥

स्पर्शोनुं विपरीतपणुं पण माणसना मरणनुं चिह्न छे.

४ जे माणस उष्णस्पर्शने शीतस्पर्श जेवो तथा शीतस्पर्शने उष्णस्पर्श जेवो गणे, अथवा कफसंबंधी फोल्लीओ थया छतां पण बळतराथी पीडाय अथवा अत्यंत गरम गात्रोवाळो छतां पण शीतथी ध्रुजे अथवा लाकडी वगेरेना प्रहारोने के अंगना छेदनने पण न जाणे ते माणसनुं आयुष्य क्षीण थयुं छे एम समजवुं.

५ पांसुनेवावकीर्णानि यश्च गात्राणि मन्यते ।
वर्णान्यभावौ राज्यो वा यस्य गात्रे भवन्ति हि ॥

रूपोनुं विपरीतपणुं पण माणसना मरणनुं चिह्न छे.

५ जे माणस पोतानां गात्रोने रजथी खरडाएला जेवां माने अथवा जे माणसना शरीरमां वर्णनो मोटो फेरफार थई जाय अथवा जे माणसना शरीरमां काळी तथा राती वगेरे लीटीओ थाय ते माणसनुं आयुष्य क्षीण थयुं छे एम समजवुं.

६ स्नातानुलिप्तं यं चापि भजन्ते नीलमक्षिकाः।

रसनुं विपरीतपणुं पण माणसना मरणनुं चिह्न छे.

६ नाहीने शरीरपर चंदननुं लेपन करेलुं छतां पण जेना शरीरपर नील मांखीओ बेसे अर्थात् जेनुं शरीर अत्यंत मधुररसमय थई गयुं होय ते

[1] पांचे इंद्रियोना विषयोना विपरीतपणारूप अरिष्ट जणाववाविषेनो.

माणसनुं आयुष्य क्षीण थयुं छे एम समजवुं. (आवा माणसनुं मरण एक वर्षनी अंदर थाय छे.)

७ सुगन्धिर्वाति योऽकस्मात्तं ब्रुवंति गतायुषम् ॥

गंधनुं विपरीतपणुं पण माणसना मरणनुं चिह्न छे.

७ जे माणसना शरीरमां सुगंध पदार्थोनो प्रयोग नहीं कर्या छतां पण अकस्मात् सुगंध नीकळवा लागे ते माणसनुं आयुष्य क्षीण थयुं छे एम समजवुं. (आवा माणसनुं मरण एक वर्षनी अंदर थाय छे.)

८ विपरीतेन गृह्णाति रसान्यश्चोपयोजितान् ।
उपयुक्ताः क्रमाद्यस्य रसा दोषाभिवृद्धये ॥
यस्य दोषाग्निसाम्यं च कुर्युर्मिथ्योपयोजिताः ।
यो वा रसान्न संवेत्ति गतासुं तं प्रचक्षते ॥

रसोना विपरीतपणारूप अरिष्टनुं विशेष व्याख्यान.

८ जे माणस उपयोगमां लीधेला रसोने विपरीत समजे अर्थात् मधुरने खाटो अने खाटाने मधुर इत्यादि विपरीत माने अथवा रसो भोजन विधिमां कहेला क्रम प्रमाणे उपयोगमां लीधेला छतां पण जेना दोषोनेज वधारे अथवा अयोग्य रीते उपयोगमां लेवामां आवता रसो पण जेना शरीरमां दोषोनी अने अग्निनी समतारूप स्वस्थता आपे अथवा जे माणसने रसोनुं मुद्दल ज्ञानज रहे नहीं ते माणसनुं आयुष्य क्षीण थयुं छे एम समजवुं. (आवा माणसनुं मरण एक महीनानी अंदर थाय छे.)

९ सुगन्धं वेत्ति दुर्गन्धं दुर्गन्धस्य सुगन्धताम् ।
यो वा गन्धान्न जानाति गतासुं तं विनिर्दिशेत् ।

गंधोना विपरीतपणारूप अरिष्टनुं विशेष व्याख्यान.

९ जे माणस सुगंधने दुर्गंध जाणे तथा दुर्गंधने सुगंध जाणे अथवा जे माणसने गंधोनुं मुद्दल ज्ञानज न रहे ते माणसनुं आयुष्य क्षीण थयुं छे एम समजवुं.

१० द्वन्द्वान्युष्णहिमादीनि कालावस्था दिशस्तथा ।
विपरीतेन गृह्णाति भावानन्यांश्च यो नरः ॥

स्पर्शोना विपरीतपणारूप अरिष्टनुं विशेष व्याख्यान.

१० जे माणस गरम तथा थंडां अने उष्णवीर्य तथा शीतवीर्य इत्यादि द्वंद्वो (जोटाना पदार्थो)ने तेओनी स्थितिथी उलटां समजे अथवा जे माणस वायुनो अभाव, वायुनुं प्रबलपणुं तथा जळनो वरसाद इत्यादि काळनी अवस्थाओने तेओनी स्थितिथी विपरीत समजे तथा मनना स्पर्शथी दिशाओने पण उलटी समजे अर्थात् पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व इत्यादि उलटी रीते समजे अने बीजा पदार्थोने पण तेओ जे स्थितिना होय ते स्थितिथी उलटा समजे ते माणसना आयुष्यने समाप्त थई रेहेवा आवेलुं समजवुं. (आवा माणसनुं मरण एक महीनानी अंदर थाय छे.)

११ दिवा ज्योतींषि यश्चापि ज्वलितानीव पश्यति ।
रात्रौ सूर्यं ज्वलन्तं वा दिवा वा चन्द्रवर्चसम् ॥
अमेघोपप्लवे यश्च शक्रचापतडिद्गुणान् ।
तडित्वतोऽसिताञ्यो वा निर्मले गगने घनान् ।
विमानयानप्रासादैर्यश्च संकुलमम्बरम् ।
यश्चानिलं मूर्तिमन्तमन्तरीक्षं च पश्यति ॥
धूमनीहारवासोभिरावृतामिव मेदिनीम् ।
प्रदीप्तमिव लोकं च यो वाऽऽप्लुतमिवाम्भसा
भूमिमष्टापदाकारां लेखाभिर्यश्च पश्यति ।
न पश्यति सनक्षत्रां यश्च देवीमरुन्धतीम् ॥
ध्रुवमाकाशगङ्गां वा तं वदन्ति गतायुषम् ।
ज्योत्स्नादर्शोष्णतोयेषु छायां यश्च न पश्यति ॥
पश्यत्येकाङ्गहीनां वा विकृतां वाऽन्यसत्वजाम् ।
श्वकाककङ्कगृध्राणां प्रेतानां यक्षरक्षसाम् ॥

पिशाचोरगनागानां भूतानां विकृतामपि ।
यो वा मयूरकण्ठाभं विधूमं वह्निमीक्षते ॥
आतुरस्य भवेन्मृत्युः स्वस्थो व्याधिमवाप्नुयात्॥

रूपोना विपरीतपणारूप अरिष्टनुं विशेष व्याख्यान.

११ जे माणस दिवसे ताराओने प्रज्वलित जेवा देखे, राते सूर्यने प्रकाश पामेलो देखे, दिवसे सूर्यने चंद्र जेवा तेजवाळो देखे, आकाश वादळांओथी ढंकाएलुं नहीं छतां पण तेमां इंद्रधनुषने तथा वीजळीना चमकाराओने देखे, निर्मल आकाशमां पण वीजळीवाळां काळां वादळांओने देखे, आकाशने विमानोथी वाहनोथी तथा महेलोथी भरपूर देखे, वायुने तथा अंतरिक्षने देवता जेवा आकारवाळां देखे, पृथ्वीने धुमाडाथी झाकळथी तथा वस्त्रोथी ढंकाएली जेवी देखे, जगतने ग्रीष्मकालविना पण सळगेला जेवुं तथा वर्षाकालविना पण जळथी व्याप्त जेवुं देखे, पृथ्वीने लीटीओथी चोपड रमवाना कपडा जेवी देखे, राते नक्षत्रोनी साथे अरुंधतीदेवीने देखे नहीं, ध्रुवने तथा घाटा ताराओनी सडक जेवी आकाश गंगाने देखे नहीं, चंद्रना प्रकाशमां के सूर्यना तडकामां पोताना परछायाने देखे नहीं, जळमां के अरीसामां पोताना प्रतिबिंबने देखे नहीं, जो देखे तो एकाद अंगवगरनी, विकारवाळी अथवा कोई बीजा प्राणीना जेवी छाया देखे, कुतरां कागडा कंक गरंज प्रेत यक्ष राक्षस पिशाच सर्प तथा भूत आदि प्राणीओनी विकृत छायाओने देख्या करे अथवा निर्धूम अग्निने मोरना कंठ जेवो आशमानी देखे ते माणस रोगी होय तो मरी जाय छे अने स्वस्थ होय तो रोगी थाय छे. (वादळांनो आडंबर नहीं छतां इंद्रधनुष के वीजळी जोवामां आवे तो बे त्रण महीनामां मरण थाय छे.)

अध्याय ३१ मो.

१ अथातश्छायाविप्रतिपत्तिमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'छायाविप्रतिपत्ति'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ श्यावा लोहितिका नीला पीतिका वापि मानवं
अभिद्रवन्ति यं छायाः स परासुरसंशयम् ॥

छायाओना (कांतिओना) विपरीतपणारूप अरिष्ट.

२ जे माणसनी असलनी कांति टळी जइने काळी, राती, आशमानी अथवा पीळी कांति थइ जाय ते माणसने निस्संशय रीते क्षीण थएला आयुष्यवाळो जाणवो.

३ ह्रीश्रियौ नश्यतो यस्य तेज ओजः स्मृतिः प्रभा।
अकस्माद्य भजन्त वा स परासुरसंशयम् ॥

लाज वगेरेना विपरीतपणारूप अरिष्ट.

३ जे माणसनां लाज, शोभा, तेज, बळ, स्मरण अने प्रभा अकस्मात् नष्ट थइ जाय अथवा जे माणसने ए लाज, शोभा, तेज, बळ, स्मरण अने प्रभा अकस्मात् प्राप्त थाय ते माणसने निस्संशय रीते क्षीण थएला आयुष्यवाळो समजवो.

४ यस्याधरोष्ठः पतितः क्षिप्तश्चोर्ध्वं तथोत्तरः ।
उभौ वा जाम्बवाभासौ दुर्लभं तस्य जीवितम्॥
आरक्ता दशना यस्य श्यावा वा स्युः पतन्ति च ।
खञ्जनप्रतिमा वापि तं गतायुषमादिशेत् ॥
कृष्णा स्तब्धावलिप्ता वा जिह्वा शूना च यस्य वै।
कर्कशा वा भवेद्यस्य सोऽचिराद्धिजहात्यसून् ॥
कुटिला स्फुटिता वापि शुष्का वा यस्य नासिका।
अवस्फूर्जति भग्ना वा न स जीवति मानवः ॥

[1] कांति वगेरेना विपरीतपणारूप अरिष्टो जणावाविषेनो.

संक्षिप्ते विषमे स्तब्धे रक्ते स्त्रस्ते च लोचने ।
स्यातां वा प्रस्तुते यस्य स गतायुर्नरो ध्रुवम् ॥
केशाः सीमन्तिनो यस्य संक्षिप्ते विनते भ्रुवौ ।
लुनन्ति चाक्षिपक्ष्माणि सोऽचिराद्याति मृत्यवे॥

अवयवोनी विपरीतता(विकृति)रूप अरिष्ट.

४ जेनो हेठलो होठ लांबो थाय तथा उपलो होठ उंचो चडी जाय अथवा बन्ने होठ जांबुना फळो जेवा श्याम थइ जाय ते माणसने जीववुं दुर्लभ थाय छे. जेना दांतो रताशवाळा थइ जाय, कालाशवाळा थइ जाय, पडी जाय अथवा खंजन पक्षीना रंग जेवा काळा धोळा थइ जाय अथवा मृदंगना मोहोडा उपरना काळा भाग जेवा थइ जाय तेने क्षीण आयुष्यवाळो जाणवो. जेनी जीभ काळी, अक्कड, प्रमेहादिक विना पण लेपवाळी, सूजेली अथवा खरसट थइ जाय ते माणस थोडा समयमां प्राण छोडी दियेछे. (आ थयाथी एक पखवाडीयानी अंदर मरण थाय छे.) जेनी नासिका वांकी, खुली गएली, मुकाएली. घणा अवाजवाळी के त्रुटेली थइ जाय ते माणस जीवतो नथी. (आ अरिष्ट थयाथी सात रातनी अंदर मरण थाय छे.) जेनां नेत्रो संकोचाएलां, उंचां नीचां, अक्कड, रातां, नीचे पडेलां जेवां अथवा आसुना प्रवाहवाळां थइ जाय ते माणसने अवश्य क्षीण आयुष्यवाळो जाणवो. जेना केशो वचमां अनेक सेंथाओवाळा थइ जाय, भ्रकुटिओ टुंकी तथा नमेली थइ जाय के आंखोनी पांपणोना वाळो कंप्या करता होय अथवा खरी पडता होय ते माणस तुरतज मृत्युनी पासे जाय छे.

५ नाहरत्यन्नमास्यस्थं न धारयति यः शिरः ।
एकाग्रदृष्टिर्मूढात्मा सद्यः प्राणाञ्जहाति सः ॥
बलवान्दुर्बलो वापि संमोहं योऽधिगच्छति ।
उत्थाप्यमानो बहुशस्तं धीरः परिवर्जयेत् ॥
उत्तानः सर्वदा शेते पादौ विकुरुते च यः ।
विप्रसारणशीलो वा न स जीवति मानवः ॥
शीतपादकरोच्छ्वासश्छिन्नश्वासश्च यो भवेत् ।
काकोच्छ्वासश्च यो मर्त्यस्तं धीरः परिवर्जयेत् ॥
निद्रा न च्छिद्यते यस्य यो वै जागर्ति सर्वदा ।
मुह्येद्वा वक्तुकामस्तु प्रत्याख्येयः स जानता ॥
उत्तरोष्ठं च यो लिह्यादुत्करांश्च करोति यः ।
प्रेतैर्वा भाषते सार्धं प्रेतरूपं तमादिशेत् ॥

अवयवोनी क्रियाना विपरीतपणारूप अरिष्ट.

५ जे माणस मोहोडामां नाखेला अन्नने गळी शकतो न होय, माथुं स्थिर राखी शकतो न होय, दृष्टिने एकाग्र राख्या करतो होय के मूढ चित्तवाळो बनी गयो होय ते माणस तुरत मरी जाय छे. जे बळवान् अथवा दुर्बल रोगी उठाडवाना समयमां वारंवार मूर्छित थइ जतो होय तेनी धीर वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं. (वारंवार मूर्छित थवाथी उठीज शके नहीं ते माणस सात रातनी अंदर मरी जाय छे.) जे रोगी सर्वदा चत्तोज सुवे, पगने लांबा टुंका कर्‍या करे अथवा संकोचीज राखे ते रोगी तुरत मरी जाय छे. जे रोगीना हाथ पग तथा श्वास थंडा थई गया होय, श्वास त्रुटी त्रुटीने उंचोज रेहेतो होय अथवा जे रोगी कागडानी पेठे मोहोडुं फाडीने श्वास लीधा करतो होय तेनी वैद्ये चिकित्सा छोडी देवी. कारण के ते तुरत मरी जाय छे. जे रोगी उंघ्याज करतो होय अथवा जाग्याज करतो होय अने बोलवानी मरजी करे त्यारे गभराई जतो होय के मुंझाई जतो होय तेनी चिकित्सा करवानी समजु वैद्य ना पाडवी. जे रोगी उपला होठने चाट्या करतो होय, हाथ पग पछाड्या करतो होय के प्रेतोनी सामे वातों करतो होय तेने प्रेतरूपज समजवो.

६ खेभ्यः सरोमकूपेभ्यो यस्य रक्तं प्रवर्तते ।
पुरुषस्याविषार्तस्य सद्यो जह्यात्स जीवितम् ॥
वाताष्ठीला तु हृदये यस्योर्ध्वमनुयायिनी ।
रुजान्नविद्वेषकरी स परासुरसंशयम् ॥

अनन्योपद्रवकृतः शोफः पादसमुत्थितः ।
पुरुषं हन्ति नारीं तु मुखजो गुह्यजो द्वयम् ॥
अतिसारो ज्वरो हिक्का छर्दिः शूनाण्डमेढ्रता ।
श्वासिनः कासिनो वापि यस्य तं परिवर्जयेत् ॥
स्वेदो दाहश्च बलवान्हिक्का श्वासश्च मानवम् ।
बलवन्तमपि प्राणैर्वियुञ्जन्ति न संशयः ॥
श्यावा जिह्वा भवेद्यस्य सव्यं चाक्षि निमज्जति ।
मुखं च जायते पूति यस्य तं परिवर्जयेत् ॥
वक्त्रमापूर्यतेऽश्रूणां स्विद्यतश्चरणावुभौ ।
चक्षुश्चाकुलतां याति यमराष्ट्रं गमिष्यतः ॥
अतिमात्रं लघूनि स्युर्गात्राणि गुरुकाणि च ।
यस्याकस्मात्स विज्ञेयो गन्ता वैवस्वतालयम् ॥
पङ्कमत्स्यवसातैलघृतगन्धांश्च ये नराः ।
मृष्टगन्धांश्च ये वान्ति गन्तारस्ते यमालयम् ॥
यूका ललाटमायान्ति बलिं नाश्नन्ति वायसाः ।
येषां वापि रतिर्नास्ति यातारस्ते यमालयम् ॥
ज्वरातिसारशोफाः स्युर्यस्यान्योन्यावसादिनः ।
प्रक्षीणबलमांसस्य नासौ शक्यश्चिकित्सितुम् ॥
क्षीणस्य यस्य क्षुत्तृष्णे हृद्यैर्मिष्टैर्हितैस्तथा ।
न शाम्यतोऽन्नपानैश्च तस्य मृत्युरुपस्थितः ॥
प्रवाहिका शिरःशूलं कोष्ठशूलं च दारुणम् ।
पिपासा बलहानिश्च तस्य मृत्युरुपस्थितः ॥

शरीरना ते ते प्रदेशोमां ते ते व्याधिओरूप अरिष्ट.

६ झेरथी नहीं पीडाया छतां जे रोगीनी इंद्रियोनां छिद्रोमांथी तथा रुवाडांनां छिद्रोमांथी लोही चाल्या करतुं होय ते रोगी तुरत मरी जाय छे. जेना हृदयमां वाताष्ठीला नामनी गांठ उंचे चड्या करती होय अने तेथी अन्न उपर अरुचि तथा अति पीडा थतां होय तो ते रोगी अवश्य मरी जाय छे. श्वास, तरश तथा दुर्बलता वगेरेथी पगमां उत्पन्न थएलो अथवा पांडुरोगादिक कारणो शिवाय बीजा कारणोथी थएलो पगनो सोजो, अथवा श्वास तरश तथा दुर्बलता आदि उपद्रवोवाळो पगनो सोजो अथवा पगना तळाथी मोहोडाने प्राप्त थएलो सोजो पुरुषने मारी नाखे छे. एवी रीतनो सोजो मोहाडापर थयो होय तो स्त्रीने मारी नाखे छे. एवो सोजो जो गुह्यस्थलमां थयो होय तो पुरुषने पण मारी नाखे छे अने स्त्रीने पण मारी नाखे छे. जे श्वासना के खांसीना दरदीने अतीसार, ज्वर, हेडकी, उलटी के वृषणमां तथा लिंगमां सोजो थाय ते दरदीने वैद्ये छोडी देवो. (आवा दरदीनुं मरण सात रातनी अंदर थाय छे.) बहु पसीनो, बहु बळतरा, बहु हेडकी अने बहु श्वास एओ बळवान् माणसने प्राणमुक्त करी नाखे छे एमां कशो संशय नथी. जेनी जीभ काळी पडी गई होय, डाबी आंख उंडी उतरी गई होय अने मोहोडुं दुर्गंधी थई गयुं होय ते रोगीने वैद्ये छोडी देवो. (आवो रोगी त्रण रातनी अंदर मरी जाय छे.) जेनुं मोहोडुं आंसुओथी व्याप्त थई जतुं होय, बन्ने पग पसीनाथी भींजाई जता होय अने नेत्र व्याकुल थई जतां होय ते रोगीने यमपुरीमां जवाने तैयार थएलो समजवो. (आवो रोगी बे घडीनी अंदर के एक पोहोरनी अंदर मरी जाय छे.) परिचारको उठाडता होय ते समयमां जेनां गात्रो अकस्मात् भारे थई जाय अथवा अकस्मात् हलका थई जाय ते रोगी यमने घेर जाय छे. जे रोगीओनां शरीरोमांथी कादवना जेवो, माछलांना जेवो, चरबीना जेवो, घीना जेवो के अत्यंत प्रिय लागे एवो गंध नीकळे ते रोगीओने यमना द्वारमां जनारा समजवा. जेओना ललाटपर जू नामना जीवडा आवे, जेओना हाथथी नखाएला काकबलिने कागडाओ खाय नहीं अने जेओने कोई प्रकारे सुखज प्राप्त न थतुं होय तेओ यमपुरीमां जाय छे. (आवा दरदी एक वर्षनी अंदर मरे छे.) जेनां मांस तथा बळ क्षीण थई गयां होय एवा जे रोगीने ज्वर, अतीसार तथा सोजा परस्परना उपद्रवरूप थया होय ते रोगीनी वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं. क्षीण थएला जे रोगीनी भूख अने तरश प्रिय, मीठां तथा हितकारी अन्नपानोथी पण

शांति न पामे तेने मृत्यु आवी पोहोचेलो समजवो. जेने प्रवाहिका रोग, माथानुं शूल, कोठामां दारुण शूळ, तरश अने बळनाश थएलां होय ते रोगीने मरण पासे आवी चुकेलुं समजवुं.

७ विषमेणोपचारेण कर्मभिश्च पुराकृतैः ।
अनित्यत्वाच्च जन्तूनां जीवितं निधनं व्रजेत् ॥

प्राणीओनुं मरण त्रणमांना एक कारणथी थाय छे.

७ विषम चिकित्सा थवाथी अथवा प्राचीन कर्मोथी अथवा शरीरोनो अनित्य होवानोज स्वभाव छे तेथी प्राणीओनुं जीवित नष्ट थाय छे.

८ प्रेतभूतपिशाचाश्च रक्षांसि विविधानि च ।
मरणाभिमुखं नित्यमुपसर्पन्ति मानवम् ॥
तानि भेषजवीर्याणि प्रतिघ्नन्ति जिघांसया ।
तस्मान्मोघाः क्रियाः सर्वा भवन्त्येव गतायुषः ॥

जेनुं मोत आव्युं होय तेना उपर चिकित्सा शा माटे लागू पडती नथी.

८ जेनुं मोत आव्युं होय ते माणसनी पासे प्रेतो, भूतो, पिशाचो अने अनेक जातना राक्षसो सर्वदा आव्या करे छे अने तेओ ते माणसने मारी नाखवानी इच्छाथी औषधोनां वीर्योने हणी नाखे छे माटे जेनुं आयुष्य क्षीण थयुं होय तेना उपर सघळी चिकित्साओ निष्फळ थाय छे. (केटलाएक केहे छे के शरीर व्याधिओमां चिकित्सा निष्फळ थवानां कारणो आ सूत्रस्थानना २३ मा अध्यायना आठमा विषयमां **सस्थिरत्वान्महत्त्वाच्च धात्वनुक्रमणेन च निहन्त्यौषधवीर्याणि मंत्रान्दुष्टग्रहो यथा** ए श्लोकथी केहेवाई गयां छे माटे अहीं एम समजवुं के आगंतु रोगोमांज भूतप्रेतादिक लोको चिकित्सानुं निष्फळपणुं करे छे.)

अध्याय ३२ मो.

१ अथातः स्वभावविप्रतिपत्तिमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्वभावविप्रतिपत्ति'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्वभावप्रसिद्धानां शरीरैकदेशानामन्यभावित्वं मरणाय । तद्यथा । शुक्लानां कृष्णता कृष्णानां शुक्लता रक्तानामन्यवर्णत्वं स्थिराणामस्थिरत्वं मृदूनां स्थिरता चलानामचलत्वमचलानां चलता पृथूनां संक्षिप्तत्वं संक्षिप्तानां पृथुता दीर्घाणां ह्रस्वत्वं ह्रस्वानां दीर्घताऽपतनधर्मिणां पतनधर्मित्वं पतनधर्मिणामपतनधर्मित्वमकस्माच्च शैत्यौष्ण्यस्नैग्ध्यरौक्ष्यप्रस्तम्भवैवर्ण्यावसदनं चाङ्गानाम् ॥

अवयवोना स्वभावोनुं बदली जवुं मरणना चिह्नरूप छे.

२ माणसना शरीरना अवयवो के जेओ प्रसिद्ध स्वभाववाळा छे तेओना स्वभावोनो फेरफार अरिष्टरूप थाय छे. जेम के आंखोना आसपासना खुणा के जेओ सफेद छे तेओ अकस्मात् काळा थई जाय, आंखोना वचला डोळा के जेओ काळा छे तेओ अकस्मात् सफेद थई जाय, होठ ताळवुं तथा जीभ वगेरे के जेओ रातां होय छे तेओ अकस्मात् धोळां काळां के पीळां थई जाय, दांतो शिराओ तथा स्नायुओ वगेरे के जेओ कठण छे तेओ अकस्मात् कोमळ थई जाय, मांस लोही मेद तथा मज्जा वगेरे के जेओ कोमळ छे तेओ अकस्मात् कठण थई जाय, संधि तथा जीभ वगेरे के जेओ चल छे तेओ अकस्मात् अचल थई जाय, मांस मेद तथा

[1] स्वभावादिकनी विपरीततारूप अरिष्टो जणावावाविषेनो.

अस्थि वगेरे पदार्थो के जेओ अचल छे तेओ अकस्मात् चळ थई जाय, माथुं ललाट छाती तथा पीठ वगेरे के जेओ मोटां (पोहोळां) छे तेओ अकस्मात् नाहानां (संकुचित) थई जाय, कीकी नख रुवाडां तथा घुंटी वगेरे के जेओ नाहानां छे तेओ अकस्मात् मोटां थई जाय, नेत्रो नासिका तथा भुजाओ वगेरे के जेओ लांबां छे तेओ अकस्मात् टुंकां थई जाय. पींडी तथा कंठ वगेरे के जेओ टुंकां छे तेओ अकस्मात् लांबां थई जाय, आंगळीओ वगेरे के जेओ नहीं पडवाना स्वभाववाळां छे तेओ अकस्मात् पडवा लागे, रुवाडीं वगेरे के जेओ पडवाना स्वभाववाळां छे तेओ अकस्मात् न पडे एवां थई जाय, हाथ तथा पग वगेरे के जेओ उष्ण स्वभाववाळां छे तेओ अकस्मात् शीतल थई जाय, जीभ वगेरे के जेओ शीतल स्वभाववाळां छे तेओ अकस्मात् उष्ण थई जाय, नेत्रोनी कीकीओ वगेरे के जेओ स्निग्ध स्वभाववाळां छे तेओ अकस्मात् रुक्ष थाय, केश तथा रुवाडां वगेरे के जेओ रुक्ष स्वभाववाळां छे तेओ अकस्मात् स्निग्ध थई जाय, पगना फणा तथा कांडां उपरना भागो वगेरे के जेओ अक्कड रहेवाना स्वभाववाळा छे तेओ अकस्मात् शिथिल थई जाय, वस्त्रादिकथी ढंकाएला रहेता जे अवयवो सारा वर्णवाळा रहेवाना स्वभाववाळा छे तेओ अकस्मात् खराब वर्णवाळा थई जाय अने हाथ वगेरे अवयवो के जेओ प्रवृत्तिस्वभाववाळा छे तेओ अकस्मात् प्रवृत्ति वगरना थई जाय तो ते स्वभावोनो फेरफार थयो गणाय.

३ स्वेभ्यः स्थानेभ्यः शरीरैकदेशानामवस्रस्तोत्क्षिप्तभ्रान्तावक्षिप्तपतितविमुक्तनिर्गतान्तर्गतगुरुलघुत्वानि ॥

अवयवोनुं स्थानोथी जराक खसेलपणुं तथा तेओना वजननो फेरफार पण मरणना चिन्हरूप छे.

३ अवयवोनुं पोतपोतानां स्थानकोथी जरा पण खसेलपणुं तथा अवयवोना वजननो फेरफार पण मरणना चिह्नरूप छे. जेम के भमरो तथा पांपणो वगेरेनुं स्थानकोथी लटकी जवुं, तेओनुंज स्थानकोथी उंचे चडी जवुं, चक्षु वगेरेनुं परिभ्रमण थवुं, चक्षु वगेरेनुं आडुं थई जवुं, मस्तक तथा कंठ वगेरेनुं नमी जवुं, सांधाओनुं परस्परथी छुटा पडी जवुं, जीभ तथा नेत्र वगेरेनुं बाहार नीकळी जवुं, जीभ नेत्र तथा नाक वगेरेनुं अंदर पेसी जवुं, हाथ तथा साथळ वगेरेनुं हलकुं वजन थई जवुं अने आंखनी पांपणो वगेरेनुं भारे थई जवुं ए सघळां चिह्नो मरणनी सूचना आपे छे.

४ प्रवालवर्णव्यङ्गप्रादुर्भावोऽप्यकस्मात् । शिराणां च दर्शनं ललाटे नासावंशे वा पिडकोत्पत्तिः । ललाटे प्रभातकाले वा स्वेदः । नेत्ररोगाद्विना वाऽश्रुप्रवृत्तिः । गोमयचूर्णप्रकाशस्य वा रजसो दर्शनमुत्तमाङ्गे निलयनं वा कपोतकङ्कप्रभृतीनाम् । मूत्रपुरीषवृद्धिरभुञ्जानानां तत्प्रणाशो भुञ्जानानाम् । स्तनमूलहृदयोरःसु च शूलोत्पत्तयः । मध्ये शूनत्वमन्तेषु परिम्लायित्वं विपर्ययो वा तथार्द्धाङ्गे श्वयथुः । शोषोऽङ्गपक्षयोर्वा नष्टहीनविकलविकृतस्वरता विवर्णपुष्पप्रादुर्भावो वा दन्तमुखनखशरीरेषु । यस्य वाप्सु कफपुरीषरेतांसि निमज्जन्ति । यस्य वा दृष्टिमण्डले भिन्नविकृतानि रूपाण्यालोक्यन्ते । स्नेहाभ्यक्तकेशाङ्ग इव यो भाति ॥

बीजां पण अमुक विपरीत चिन्हो मरणनी सूचना आपे छे.

४ शरीरमां थएला व्यंग नामना काळी झांईवाळा क्षुद्ररोगनो वर्ण अकस्मात् परवाळाना वेलाना जेवो अत्यंत लाल थई जाय, ललाटमां लाल रंगनी शिराओ जोवामां आवे, नाकनी डांडीमां अत्यंत लाल रंगनी फोल्लीओ उत्पन्न थाय, प्रभातकाळे ललाटपर पसीनो आवे, नेत्ररोग आदि कारण विना नेत्रोमांथी आंसु चालवा लागे,

माथापर छाणना चूर्ण जेवी रज पडेली जोवामां आवे, माथापर होला के कंक वगेरे अशुभ पक्षीओ बेसी जाय, अतिभोजन नहीं करतां छतां मूत्रनी तथा विष्टानी वृद्धि थाय, भोजन करतां छतां मूत्रनो तथा विष्टानो नाश थाय, स्तननां मूळ हृदय तथा छाती एओमां शूळनी उत्पत्ति थाय, अंगोनुं मध्यमां सूजेलापणुं तथा अंतमां ग्लानियुक्तपणुं अथवा अंतमां सूजेलापणुं तथा मध्यमां ग्लानियुक्तपणुं थाय, अरधा अंगमां सोजो अने अर्धा अंगनुं ग्लानियुक्तपणुं थाय, अंगो अथवा अरधुं शरीर सुकाई जाय, स्वर नष्ट थई जाय, स्वर हीन थई जाय, स्वर गद्गदत्वादिकवाळो थई जाय, स्वर विकृत थई जाय, दांत मुख नख तथा शरीर एओमां फीका सफेद रंगवाळां पुष्पो जेवा बिंदुओ उत्पन्न थाय, कफ विष्टा तथा वीर्य एओ जळमां डूबी जाय, नेत्रोनी कीकीओमां प्रतिबिंबरूपे देखाता पदार्थो छिन्न भिन्न तथा विकृतरूपे देखाय अने केशोमां के अंगोमां तैलादिकनो अभ्यंग नहीं कर्या छतां तेओ अभ्यंगवाळा जेवां देखाय, ए चिह्नो मरणनी सूचना आपेछे.

५ यश्च दुर्बलो भक्तद्वेषातिसाराभ्यां पीड्यते । कासमानश्च तृष्णाभिभूतः । क्षीणश्छर्दिभक्तद्वेषयुक्तः । सफेनपूयरुधिरोद्वामी हतस्वरः शूलाभिपन्नश्च मनुष्यः । शूनकरचरणवदनः क्षीणोऽन्नद्वेषी स्रस्तपिण्डिकांसपाणिपादो ज्वरकासाभिभूतः । यस्तु पूर्वाह्णे भुक्तमपराह्णे छर्दयत्यविदग्धमतिसार्यते वा ज्वरकासाभिभूतः सश्वासो म्रियते । वस्तवद्विलपन्यश्च भूमौ पतति स्रस्तमुष्कः स्तब्धमेढ्रो भग्नग्रीवः प्रनष्टमेहनश्च मनुष्यः ॥

अमुक व्याधिओमां अमुक उपद्रवो थाय ए पण मरणना चिन्हरूप छे.

५ दुर्बलपणामां अन्नउपर अरुचि तथा अतीसार ए उपद्रवो मरणना चिह्नरूप छे. खांसीना दरदमां तरशथी दुःखितपणुं ए उपद्रव मरणना चिह्नरूप छे. क्षीणतामां उलटी, अन्नउपर द्वेष, फीण तथा परु सहित लोहीनुं वमन, स्वरभंग तथा शूल ए उपद्रवो मरणना चिह्नरूप छे. ज्वर तथा खांसी एओना संयोगमां हाथ पग तथा मोढोतुं एओना सोजा, क्षीणता, अन्नउपर द्वेष अने स्तन पींडीओ खभा तथा हाथ पग एओनुं शिथिलपणुं ए उपद्रवो मरणना चिह्नरूप छे. ज्वर खांसी तथा श्वास ए व्याधिओना संयोगमां पूर्वाह्णमां जमेला अन्ननी अपराह्णमां उलटी थवी अथवा जेमां काचुं अन्न नीकळे एवा अतिसारनुं थवुं ए उपद्रवो मरणना चिह्नरूप छे. वृषणोनी स्थानथी भ्रष्टता, लिंगनुं स्तब्धपणुं के अंदर पेसी गएलापणुं, गळानुं भांगी गएलापणुं तथा खाटकीना हाथथी कपाता बकरानी पेठे बराडा पाडतां पाडतां नीचे पडी जवुं ए उपद्रवो पण मरणना चिह्नरूप छे.

६ प्राग्विशुष्यमाणहृदय आर्द्रशरीरो यश्च लोष्टं लोष्ठेनाभिहन्ति काष्ठं काष्ठेन तृणानि वा छिनत्त्यधरोष्ठं दशत्युत्तरोष्ठं वा लेढ्युल्लुञ्चति वा कर्णौ केशांश्च देवद्विजगुरुसुहृद्वैद्यांश्च द्वेष्टि ॥

अमुक स्थिति तथा अमुक चेष्टाओ पण मरणना चिह्नरूप छे.

६ जेनुं सवळुं शरीर जळथी आर्द्र होवा छतां हृदय प्रथमथी सुकावा लागे ते माणस (पंदर दिवसनी अंदर) मरी जाय छे. जे माणस ढेफांथी ढेफांने भांग्या करतो होय, काष्ठथी काष्ठने भांग्या करतो होय, नख वगेरेथी तृणनुं छेदन कर्या करतो होय, हेठला होठने दांतोथी डस्या करतो होय, उपला होठने चाट्या करतो होय, कानने अथवा केशोने हाथथी तोड्या करतो होय के देवताओनी, ब्राह्मणोनी, गुरुओनी, स्नेहीओनी, अथवा वैद्यनी निंदा कर्या

करतो होय ते माणस (एक वर्षनी अंदर) मरी जाय छे.

७ यस्य वक्रानुवक्रगा ग्रहा गर्हितस्थानगताः पीडयन्ति जन्मक्षं वा यस्योल्काशनिभ्यामभिहन्यते होरा वा ॥

जन्मनक्षत्र अने जन्मलग्न एओनुं पीडावुं पण मरणना चिह्नरूप छे.

७ जेना जन्मनक्षत्रने वक्र थएला अथवा वक्र थईने तुरत सीधा चालेला ग्रहो ज्योतिःशास्त्रमां बतावेलां दुष्ट स्थानोमां रहीने पीडता होय अथवा जेनुं जन्मलग्न उल्कापातथी के वीजळीना कडाकाना अग्निथी पीडाय ते माणस मरी जाय छे.

८ गृहदारशयनासनयानवाहनमणिरत्नोपकरणगर्हितलक्षणनिमित्तप्रादुर्भावो वेति ॥

संहिता ग्रंथो प्रमाणे घर वगेरेमां खराब निमित्तनो प्रादुर्भाव पण मरणना चिह्नरूप छे.

८ (वाराहीसंहिता) वगेरे संहिताग्रंथोमां कह्याप्रमाणे जेना घरमां, स्त्रीमां, शयनमां, आसनमां, गाडी तथा घोडा वगेरे वाहनोमां, मणिरत्नोमां के घरनां राचरचीलांओमां खराब निमित्तोनो प्रादुर्भाव थाय ते माणस मरी जाय छे.

९ भवन्ति चात्र ।
चिकित्स्यमानः सम्यक्च विकारो योऽभिवर्द्धते।
प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्गतायुषः ॥
निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः ।
न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति ॥

चिकित्सा करातां छतां विकारनी वृद्धि, मोटा व्याधिनुं अकस्मात् बंध पडी जवुं अने आहारना फळनो अभाव एओ पण मरणनां चिह्नरूप छे.

९ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेनां बळ तथा मांस क्षीण थयां होय एवा माणसने कोई विकार सारी रीते चिकित्सा करवामां आवतां छतां पण वृद्धि पामे तो ते विकारने आयुष्यना क्षीणपणाना चिह्नरूप समजवो. जे माणसनो व्यातव्याधि वगेरे कोई मोटो व्याधि धीरे धीरे नहीं पण अकस्मात् बंध पडी जाय अने जे माणसने आहारादिकथी कशुं फळ न थतुं होय ते माणस मरी जाय छ.

१० एतान्यरिष्टरूपाणि
सम्यग्बुध्येत यो भिषक् ।
साध्यासाध्यपरीक्षायां
स राज्ञः संमतो भवेत् ॥

अरिष्टो जाणवाथी फळ.

१० जे वैद्य उपर कह्याप्रमाणे अरिष्टोनां रूपोने सारी रीते समजतो होय ते वैद्य साध्य तथा असाध्य रोगोनी परीक्षामां राजातरफथी मान पामे छे."

अध्याय ३३ मो.

१ अथातोऽवारणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अवारणीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ उपद्रवैस्तु ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम् ।
रसायनाद्विना वत्स ताञ्छृण्वेकमना मम ॥

आ अध्यायना विषयनुं व्यवस्थापन.

२ हे पुत्र सुश्रुत! उपद्रवोथी संयुक्त थएला

१ असाध्यरोगोना निरूपण विषेनो.

२ प्रथम उत्पन्न थएला व्याधिने तेमां पाछळथी उत्पन्न थएलो जे व्याधि बलवत्तर करी नाखे छे ते उपद्रव केहेवाय छे.

जे व्याधिओ रसायन प्रयोगो विना असाध्य[1] थई पडे छे ते व्याधिओ विषे कहुं छुं ते एकाग्रचित्त थईने मारी पासेथी सांभळो.

३ वातव्याधिः प्रमेहश्च कुष्ठमर्शो भगंदरः ।
अश्मरी मूढगर्भश्च तथैवोदरमष्टमम् ॥
अष्टावेते प्रकृत्यैव दुश्चिकित्स्या महागदाः ।
प्राणमांसक्षयश्वासतृष्णाशोषवमीज्वरैः ॥
मूर्च्छातिसारहिक्काभिः पुनश्चैतैरुपद्रुताः ।
वर्जनीया विशेषेण भिषजा सिद्धिमिच्छता ॥

वातव्याधि वगेरे आठ महारोगोने असाध्यपणुं आपनारा सामान्य उपद्रवो.

३ वातव्याधि, प्रमेह, कोढ, अरश, भगंदर, पथरी, मूढगर्भ अने उदररोग ए आठ महारोगो के जेओ स्वभावथीज चिकित्सा करवामां मुशकेली भरेला छे तेओ वळी जो उत्साहक्षय, बलक्षय, श्वास, तरश, शोष, वमन, ज्वर, मूर्छा, अतीसार के हेडकी ए उपद्रवोथी संयुक्त थएला जोवामां आवे तो कीर्तिने इच्छनारा वैद्ये तेओनी चिकित्सा करवीज नहीं.

४ शून सुप्तत्वच भग्न कम्पाध्मानानिपीडितम्॥
नरं रुजार्तमन्तश्च वातव्याधिर्विनाशयेत् ॥

वातव्याधिने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

४ वातव्याधि जो सोजाथी, त्वचाना बेहेर मारी गएलापणाथी, त्रुटवाथी, कंपथी, पेटना आफराथी अने अंदरनी गंभीर वेदनाथी संयुक्त थयो होय तो माणसने मारी नाखे छे. (आ उपद्रवोमांना त्रण उपद्रवोथी संयुक्त थाय तो पण मारी नाखे छे.)

५ यथोक्तोपद्रवाविष्टमतिप्रस्रुतमेव वा ।
पिडकापीडितं गाढं प्रमेहो हन्ति मानवम् ॥

प्रमेहने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

५ प्रमेह जो मूत्रना अत्यंत स्रावथी, शराविका वगेरे फोल्लीओनी पीडाथी, श्लैष्मिक स्थितिमां मांखीओना आववा वगेरेथी, पैत्तिक स्थितिमां वृषणोना फाटी जवा वगेरेथी अने वातिक स्थितिमां हृदयग्रह वगेरेथी संयुक्त होय तो माणसने मारी नाखे छे.

६ प्रभिन्नं प्रस्रुताङ्गं च रक्तनेत्रं हतस्वरम् ।
पञ्चकर्मगुणातीतं कुष्ठं हन्तीह कुष्ठिनम् ॥

कोढने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

६ कोढ जो अंगना भेदावाथी, अतिस्रावथी, नेत्रोनी रक्तताथी अने स्वरनाशथी संयुक्त थयो होय अने ते वळी अस्थिमां रहीने संशोधनादिक क्रियाओने पण न मानतो होय तो माणसने मारी नाखे छे.

७ तृष्णारोचकशूलार्तमतिप्रस्रुतशोणितम् ।
शोफातीसारसंयुक्तमर्शोव्याधिर्विनाशयेत् ॥

अरशने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

७ अरश जो तरशथी, अरोचकथी, शूलथी, सोजाथी अने अतिसारथी संयुक्त थयो होय अने रुधिरना अत्यंत स्राववाळो थयो होय तो माणसने मारी नाखे छे.

८ वातमूत्रपुरीषाणि क्रिमयः शुक्रमेव च ।
भगंदरात्प्रस्रवन्ति यस्य तं परिवर्जयेत् ॥

भगंदरने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

८ जे भगंदरमांथी वायु नीकळतो होय, मूत्रनो तथा विष्टानो स्राव थतो होय, कीडाओ नी-

१ रसायनप्रयोगो असाध्य व्याधिने पण घणुं करीने साध्य करी नाखे छे एटला माटे 'रसायन प्रयोगो विना' एम कह्युं छे.

कळता होय अने वीर्यनो स्राव थतो होय ते भगंदरनी वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं.

९ प्रशूननाभिवृषणं रुद्धमूत्रं रुगन्वितम् ।
अश्मरी क्षपयत्याशु सिकता शर्करान्विता ॥

पथरीने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

९ पथरी रेती के कांकरी जो नाभिना तथा वृषणना सोजाथी, मूत्रना रोधथी अने अति वेदनाथी संयुक्त थई होय तो माणसने तुरत मारी नाखे छे.

१० गर्भकोपपरासङ्गो मक्कल्लो योनिसंवृतिः ।
हन्यात्स्त्रियं मूढगर्भे यथोक्ताश्चाप्युपद्रवाः ॥

मूढगर्भने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

१० मूढगर्भ जो गर्भना अत्यंत निरोधथी मक्कल्ल नामना व्याधिथी, योनिना संकोचथी अने मूढगर्भना निदानमां (निदानस्थानना ८ मा अध्यायना ९ मा विषयमां) कहेला आक्षेपक खांसी श्वास तथा भ्रम वगेरे उपद्रवोथी संयुक्त थयो होय तो स्त्रीने मारी नाखे छे.

११ पार्श्वभङ्गान्नविद्वेषशोफातीसारपीडितम् ।
विरिक्तं पूर्यमाणं च वर्जयेदुदरार्दितम् ॥

उदररोगने असाध्य करी देनारा विशिष्ट उपद्रवो.

११ उदररोग जो पडखांओने भांगी नाखनारी वेदनाथी, अन्नना द्वेषथी, सोजाथी तथा अतिसारथी संयुक्त थयो होय अने विरेचनथी खाली करतां छतां पण पाछो भराई जतो होय तो वैद्ये तेनी चिकित्सा करवी नहीं.

१२ यस्ताम्यति विसंज्ञश्च शेते निपतितोऽपि वा ।
शीतार्दितोन्तरुष्णश्च ज्वरेण म्रियते नरः ॥
यो हृष्टरोमा रक्ताक्षो हृदि संघातशूलवान् ।
नित्यं वक्त्रेण चोच्छ्वस्यात्तं ज्वरो हन्ति मानवम् ॥
हिक्काश्वासपिपासार्तं मूढं विभ्रान्तलोचनम् ।
संततोच्छ्वासिनं क्षीणं नरं क्षपयति ज्वरः ॥
आविलाक्षं प्रताम्यन्तं निद्रायुक्तमतीव च ।
क्षीणशोणितमांसं च नरं क्षपयति ज्वरः ॥

ज्वरने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१२ ज्वरवाळो जे माणस अत्यंत गभराया करतो होय, बेभान थईने सुतो रेहेतो होय, पड्योज रेहेतो होय अने अंदर दाह पामतां छतां बाहार शीतथी पीडातो होय ते माणस ज्वरथी मरी जाय छे. जे ज्वरवाळा माणसनां रुवाडां उभां थई जतां होय, आंखो लाल थई गई होय, हृदयमां प्रबल शूल नीकळतुं होय अने निरंतर मोहोडाथी उंचो श्वासज चालतो होय ते माणसने ज्वर मारी नाखे छे. हेडकी, श्वास तथा तरश एओथी पीडाता, भानरहित थई जता, भ्रमण करती आंखोवाळा, क्षीण थएला अने निरंतर उंचो श्वास लीधा करता माणसने ज्वर तुरतज मारी नाखे छे. आंसुओथी भरपूर रेहेती आंखोवाळा, अत्यंत बेभान थई जता, रातदिवस उंघ्या करता अने जेनां रुधिर तथा मांस क्षीण थई गयां होय एवा माणसने ज्वर मारी नाखे छे.

१३ श्वासशूलपिपासार्तं क्षीणं ज्वरनिपीडितम् ।
विशेषेण नरं वृद्धमतीसारो विनाशयेत् ॥

अतीसारने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१३ श्वास, शूळ तथा तरश एओथी पीडाता, क्षीण थएला, ज्वरथी दुखी थता अने विशेषे

---

१ मुवावडी स्त्रीनो रूक्ष वधारेलो वायु तीक्ष्ण तथा उष्ण सुकावेला रुधिरने रोकीने नाभिनी नीचे, पडखांओमां, मूत्राशयमां अथवा मूत्राशयनी उपरना भागमां गांठने उत्पन्न करे छे. ए गांठ थवाथी नाभिमां, मूत्राशयमां तथा पेटमां शूळ नीकळे छे, पक्वाशय फूली जाय छे अने मूत्रनी अटकायत थाय छे ए मक्कल्ल रोग केहेवाय छे. (भा. प्र.)

करी वृद्ध अवस्थावाळा माणसने अतीसार मारी नाखे छे.

१४ शुक्लाक्षमन्नद्वेष्टारमूर्ध्वश्वासनिपीडितम् ।
कृच्छ्रेण बहु मेहन्तं यक्ष्मा हन्तीह मानवम् ॥

क्षयरोगने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१४ सफेद थईगएलां नेत्रोवाळा, अन्ननो द्वेष करनारा, उंचा श्वासे अत्यंत पीडेला अने अतिकष्टथी घणा मळनो उत्सर्ग करता माणसने यक्ष्मा (क्षयरोग) मारी नाखे छे.

१५ श्वासशूलपिपासान्नविद्वेषग्रन्थिमूढताः ।
भवन्ति दुर्बलत्वं च गुल्मिनो मृत्युमेष्यतः ॥

गुल्मने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१५ गुल्मवाळो जे माणस मरी जवानो होय तेने श्वास, शूळ, तरश, अन्न उपर द्वेष, गुल्मनुं अदृश्यपणुं अने दुर्बलपणुं प्राप्त थाय छे.

१६ आध्मातं बद्धनिष्यन्दं छर्दिहिक्कातृडन्वितम् ।
रुजाश्वाससमाविष्टं विद्रधिर्नाशयेन्नरम् ॥

विद्रधिने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१६ जो विद्रधिवाळो माणस आफरी गयो होय, उलटी हेडकी तृषा वेदना तथा श्वास एओथी घेराएलो होय अने वळी तेने मूत्रनी अटकायत थई होय के परूनी गति रोकाई गई होय तो ते माणसने विद्रधि मारी नाखे छे.

१७ पाण्डुदन्तनखो यश्च पाण्डुनेत्रश्च मानवः।
पाण्डुसङ्घातदर्शी च पाण्डुरोगी विनश्यति ॥

पांडुरोगने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१७ पांडुरोगवाळा जे माणसने नेत्रो, नखो तथा दांतो पांडु थई जाय अने सघळी दिशाओमां पांडु पदार्थोनो समूहज जोवामां आवे ते माणस मरी जाय छे.

१८ लोहितं छर्दयेद्यश्च बहुशो लोहितेक्षणः ।
रक्तानां च दिशां द्रष्टा रक्तपित्ती विनश्यति ॥

रक्तपित्तने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१८ जे रक्तपित्तवाळो माणस लोहीनुं वमन करे, वारंवार रातां नेत्रोवाळो थई जाय अने सघळी दिशाओने राती देखे ते माणस मरी जाय छे.

१९ अवाङ्मुखस्तून्मुखो वा क्षीणमांसबलो नरः ।
जागरिष्णुरसंदेहमुन्मादेन विनश्यति ॥

उन्मादने असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

१९ उन्मादवाळो जे माणस मोहोडाने नीचुं अथवा उंचुंज राखतो होय, जाग्याज करतो होय अने मांसनी तथा उत्साहनी क्षीणता पाम्यो होय ते माणस अवश्य मरी जाय छे.

२० बहुशोऽपस्मरन्तं तु प्रक्षीणं चलितभ्रुवम् ।
नेत्राभ्यां च विकुर्वाणमपस्मारो विनाशयेत् ॥

अपस्मारने (वाइने) असाध्य करी देनारा उपद्रवो.

२० जे अपस्मारवाळो माणस वारंवार अपस्मारना वेगोथी घेरातो होय, क्षीण थई गयो होय, बन्ने नेत्रोने विकारवाळां करी नाखतो होय अने चलित थएली भमरोवाळो होय ते माणस मरी जाय छे.

अध्याय ३४ मो.

१ अथातो युक्तसेनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'युक्तसेनीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं

---

१ आ माणसनो आहार अत्यंत मळरूप थई जाय छे अने तेथी मांसनो तथा रुधिरनो क्षय थाय छे. आवो क्षय थतां नेत्रोमां श्वेतता तथा अन्नउपर द्वेष आदि उपद्रवो थाय छे.

२ शत्रुओनी उपर चडाई लई जता राजानुं तथा तेनी सेनानुं शत्रुओए करेला विषप्रयोगोथी रक्षण करवाविषेनो तथा चिकित्साना चार पायाओविषेनो.

के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ युक्तसेनस्य नृपतेः परानभिजिगीषतः ।
भिषजा रक्षणं कार्यं यथा तदुपदेक्ष्यते ॥

आ अध्यायना विषयनुं व्यवस्थापन.

२ सेनाने तैयार करी, शत्रुओने जीतवानी इच्छाथी जेणे प्रयाण कर्युं एवा राजानुं वैद्ये जे प्रकारथी रक्षण करवुं जोईए ते प्रकारनो उपदेश करीएछीए.

३ विजिगीषुः सहामात्यैर्यात्रायुक्तः प्रयत्नतः ।
रक्षितव्यो विशेषेण विषादेव नराधिपः ॥
पन्थानमुदकं छायां भक्तं यवसमिन्धनम् ।
दूषयन्त्यरयो यस्माज्जानीयाच्छोधयेत्तथा ।
तस्य लिङ्गं चिकित्सा च कल्पस्थाने प्रवक्ष्यते ॥

विशेषे करी शत्रुओए करेला झेरना प्रयोगोथीज राजानो बचाव करवो जोइए.

३ शत्रुओने जीती लेवानी इच्छाथी पोताना मंत्रीओनी साथे जेणे फोजसहित प्रयाण कर्युं होय एवा राजानी उपर के तेनी सेनानी उपर शत्रुओनी तरफना झेरना प्रयोगोनीज बहु धास्ती रेहे छे माटे वैद्ये मुख्यत्वे करी प्रयत्नपूर्वक, तेवा प्रयोगोथी राजाने कशी हानि न थाय एवी रीतनो बचाव करवो जोईए. शत्रुओ विषप्रयोगोथी रस्तानी रजने, रस्ताना जळने, रस्ताना अन्नने, रस्तानां खडने, रस्तानां काष्ठोने अने रस्तानां वृक्षोनी छायाने[१] पण विषथी दूषित करी नाखे छे माटे वैद्ये चिह्नोउपरथी ते ते स्थलोमां विषनी परीक्षा करवी अने विषप्रयोग थयो जाणवामां आवे तो चिकित्सा करवी. विषनां चिह्नो अने चिकित्सा कल्पस्थानमां केहेवामां आवशे.

४ एकोत्तरं मृत्युशतमथर्वाणः प्रचक्षते ।
तत्रैकः कालसंज्ञस्तु शेषास्त्वागन्तवः स्मृताः ॥
दोषागन्तुजमृत्युभ्यो रसमन्त्रविशारदौ ।
रक्षतां नृपतिं नित्यं यत्नाद्वैद्यपुरोहितौ ॥

कालमृत्युथीज मरण थाय छे एम नथी पण अकालमृत्युओथी पण मरण थाय छे माटे अकालमृत्युओथी बचाव करवाने माटे वैद्यनी अने पुरोहितनी जरूर छे.

४ मृत्यु एक नथी पण एक सो अने एक छे एम अथर्ववेदना आचार्यो केहे छे. ए मृत्युओमां कालमृत्यु तो एकज छे अने बाकीना सघळा तो अकालमृत्युओज छे (आम छे एटला माटे प्राणिओनुं मरण काळ विना थतुंज नथी एवी अनाडी पकड राखवी नहीं.) औषधोमां प्रवीणता धरावनारा वैद्ये अने मंत्रोमां प्रवीणता धरावनारा पुरोहिते वात आदि दोषोथी थता मृत्युओथी अने विषप्रयोगादिकथी थता मृत्युओथी सर्वदा प्रयत्नपूर्वक राजानुं रक्षण करवुं.

५ ब्रह्मा वेदाङ्गमष्टाङ्गमायुर्वेदमभाषत ।
पुरोहितमते तस्माद्वर्तेत भिषगात्मवान् ॥

राजवैद्ये पुरोहितना मतमां वर्त्तवुं.

५ ब्रह्माए आठे अंगोवाळा आयुर्वेदने अथर्ववेदना अंगरूप कहेल छे अने अथर्ववेदनुं संपूर्ण ज्ञान पुरोहितने होय छे (वैद्यने तो अथर्ववेदना अंगरूप आयुर्वेदनुंज ज्ञान होय छे.) माटे बुद्धिमान् वैद्ये पुरोहितनो मत लईने सर्व कार्यो करवां.

६ संकरः सर्ववर्णानां प्रणाशो धर्मकर्मणाम् ॥
प्रजानामपि चोच्छित्तिर्नृपव्यसनहेतुतः ॥
पुरुषाणां नृपाणां च केवलं तुल्यमूर्तिता ।
आज्ञा त्यागः क्षमा धैर्यं विक्रमश्चाप्यमानुषः ॥

---

१ केटलांएक विषो एवा प्रभाववाळां होय छे के जेओ वृक्षोने लगाव्यां होय तो ते वृक्षोनी छायाओ पण विषमय थई जाय छे.

तस्माद्देवमिवाभीक्ष्णं वाङ्मनःकर्मभिः शुभैः।
चिन्तयेन्नृपतिं नित्यं श्रेयांसीच्छन्विचक्षणः ॥

वैद्ये राजानुं रक्षण करवामां पूरी काळजी राखवानां कारणो.

६ जो राजा विपत्ति पामे अथवा मरण पामे तो दंड नहीं रेहेवाथी सर्व वर्णोमां वर्णसंकर थई जाय, धर्मोनो तथा धंधारोजगारोनो विनाश थई जाय अने प्रजाओनुं पण उच्छेदन थई जाय. राजाओनां शरीरो तो बीजां माणसोना जेवांज होय छे पण राजाओमां जे आज्ञाशक्ति, दानशक्ति, क्षमाशक्ति, धैर्यशक्ति अने पराक्रमशक्ति होय छे ते, सघळां माणसोथीं विलक्षण होय छे एटला माटे अखंड कल्याणोने इच्छता विचक्षण वैद्ये सर्वदा शुभ मनथी अने शुभ कर्मोथी देवनी पेठेज राजानुं सेवन करवानी काळजी राखवी.

७ स्कन्धावारे च महति राजगेहादनन्तरम् ।
भवेत्संनिहितो वैद्यः सर्वोपकरणान्वितः ॥
तत्रस्थमेनं ध्वजवद्यशःख्यातिसमुच्छ्रितम् ।
उपसर्पन्त्यमोहेन विषशल्यामयार्दिताः ॥
स्वतन्त्रकुशलोऽन्येषु शास्त्रार्थेष्वबहिष्कृतः ।
वैद्यो ध्वज इवाभाति नृपतद्विधपूजितः ॥

सेनाना पडावमां वैद्यनुं रेहेठाण क्यां जोइए अने वैद्यनी स्थिति केवी जोइए ?

७ सेनाना मोटा पडावमां राजाने रेहेवानुं जे ठेकाणुं होय तेनी पासेज वैद्यनुं रेहेठाण जोइए. वैद्ये पोताना रेहेठाणमां (उतारामां) यंत्रो, शस्त्रो, क्षारो तथा औषधो वगेरे सघळां उपकरणो तैयार राखवां. यशना प्रख्यातपणाथी उन्नति पामेला वैद्ये ध्वजनी पेठे उंचा रेहेठाणमां रेहेवुं के जेथी ते ठेकाणानी पुछपाछ वगेरे शोध करवानी पंचायत नहीं रेहेवाने लीधे, जे जे लोको विषथी, बाणादिकनां शल्योथी के रोगोथी पीडाय ते सघळाओ कशी अगवड वगर त्यां आवी शके. पोताना शास्त्रमां पूरी प्रवीणतावाळो, बीजां शास्त्रोना विषयोमां पण प्रवेश कर्यावगर नहीं रहेलो अने राजाए तथा राजा जेवा सरदार लोकोए पूजेलो वैद्य जेम देवमंदिरमां ध्वज शोभे तेम सेनाना पडावमां शोभे छे.

८ वैद्यो व्याध्युपसृष्टश्च भेषजं परिचारकः ।
एते पादाश्चिकित्सायाः कर्मसाधनहेतवः ॥
गुणवद्भिस्त्रिभिः पादैश्चतुर्थो गुणवान्भिषक् ।
व्याधिमल्पेन कालेन महान्तमपि साधयेत् ॥
वैद्यहीनास्त्रयः पादा गुणवन्तोऽप्यपार्थकाः ।
उद्गातृहोतृब्रह्माणो यथाध्वर्युं विनाध्वरे ॥
वैद्यस्तु गुणवानेकस्तारयेदातुरान्सदा ।
प्लवं प्रतितरैर्हीनं कर्णधार इवाम्भसि ॥

चिकित्साना चार पादो अने तेओमां वैद्यनी श्रेष्ठता.

८ वैद्य, रोगी, औषध अने परिचारक ए चार, चिकित्साना पादो (पायाओ) गणाय छे. कारण के ए पायाओ ठीक होय तो चिकित्साना फळनी (आरोग्यनी) सिद्धि थाय छे. गुणवान् वैद्यरूपी चोथो पायो जो बीजा त्रण पाया सारा होय तो मोटा व्याधिने पण अल्प कालमां वश्य करी शके छे (टाळी शके छे.) जो वैद्य न होय तो उपर कहेला बीजा त्रणे पायाओ सारा छतां पण नकामाज थई पडे छे. जेम यज्ञमां अध्वर्यु न होय तो उद्गाता, होता अने ब्रह्मा ए त्रणे ऋत्विजो सारा होय तो पण व्यर्थ छे तेम वैद्य न होय तो रोगी वगेरे त्रण पायाओ सारा होय तो पण व्यर्थ छे. जेम खलासीओ सारा न होय पण सुकाणी सारो होय तो वाहाणने जळमांथी तारी शके छे तेम बीजा पाया गुणवान् न होय पण वैद्यरूपी एक चोथो पायो गुणवान् होय तो रोगीओने रोगोमांथी सर्वदा तारी शके छे.

९ तत्त्वाधिगतशास्त्रार्थो दृष्टकर्मा स्वयं कृती ।
लघुहस्तः शुचिः शूरः सज्जोपस्करभेषजः ॥

प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायी विशारदः ।
सत्यधर्मपरो यश्च स भिषक्पाद उच्यते ॥

वैद्यरूपी पायो केवो जोइए ?

९ जेणे आयुर्वेदनो तथा आयुर्वेदना अर्थनो संपूर्ण अभ्यास कर्यो होय, बीजा उत्तम वैद्योना हाथथी थती छेदादिक तथा स्नेहनादिक क्रियाओने नजरे जोएली होय. पोताना हाथथी पण ते क्रियाओ करेली होय अने यंत्रादिक उपस्करोने तथा औषधोने सज्ज राख्यां होय एवो, छेद आदि क्रियाओ करवामां ध्रुजे नहीं तथा रोगीने वधारे वेदना पण करे नहीं एवा हलका हाथवाळो, बाहारनी तथा अंदरनी पवित्रतावाळो, क्रियाओ करवामां उत्साहवाळो, हाजर रेहेता विचारोवाळो, ऊहापोह करवामां कुशल बुद्धिवाळो, विषम स्थितिओमां पण चिकित्सा करवामां नहीं मुंझाय एवो, पांडित्यवाळो अने सत्यमां तथा धर्ममां तत्पर रेहेनारो वैद्य चिकित्साना पेहेला पादरूप केहेवाय छे.

१० आयुष्मान्सत्त्ववान्साध्यो द्रव्यवानात्मवानपि ।
आस्तिको वैद्यवाक्यस्थो व्याधितः पाद उच्यते ॥

रोगीरूपी पायो केवो जोइए ?

१० लांबा आयुष्यनां चिह्नोवाळो, दुःखोनुं सहन करी शके एवो, साध्य व्याधिवाळो, धनवाळो, इंद्रियोनी लोलुपता वगरनो, स्वधर्म उपर आस्थावाळो अने वैद्यना केहेवा प्रमाणे वर्त्तनारो रोगी चिकित्साना बीजा पादरूप केहेवाय छे.

११ प्रशस्तदेशसंभूतं प्रशस्तेऽहनि चोद्धृतम् ।
युक्तमात्रं मनःकान्तं गन्धवर्णरसान्वितम् ॥
दोषघ्नमग्लानिकरमविकारि विपर्यये ।
समीक्ष्य दत्तं काले च भेषजं पाद उच्यते ॥

औषधरूपी पायो केवो जोइए ?

११ सारा प्रदेशमां उत्पन्न थएलुं, ज्योतिःशास्त्रादिकनी रीतिप्रमाणे सारा दिवसमां लेवामां आवेलुं; योग्य मात्रावाळुं, मनने प्रिय लागे एवुं, योग्य गंधवाळुं, योग्य वर्णवाळुं, योग्य रसवाळुं, वात आदि दोषोने हरनारूं, ग्लानि नहीं आपनारूं, क्रियामां बगाड थतां पण कशी विकृति नहीं करनारूं अने आयुष्य वगेरेनी परीक्षा करीने तथा समय जोईने आपवामां आवेलुं औषध चिकित्साना त्रीजा पादरूप केहेवाय छे.

१२ स्निग्धोऽजुगुप्सुर्बलवान्युक्तो व्याधितरक्षणे ।
वैद्यवाक्यकृदश्रान्तः पादः परिचरः स्मृतः ॥

परिचारकरूपी पायो केवो जोइए ?

१२ प्रीतिवाळो, आतुरनी गमे तेवी स्थिति होय तो पण तेनी सूग के निंदा नहीं करनारो, जेथी सघळा क्लेशोनुं सहन करी शकाय एवा बळवाळो, आतुरनुं रक्षण करवामां निपुण तथा तत्पर रेहेनारो, वैद्यना वचनने संपूर्ण रीते पाळनारो अने काम करवामां थाके नहीं एवो परिचारक चिकित्साना चोथा पादरूप केहेवाय छे.

अध्याय ३५ मो.

१ अथात आतुरोपक्रमणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'आतुरोपक्रमणीय'[१] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ आतुरमुपक्रममाणेन भिषजायुरेवादौ परीक्ष्येत । सत्यप्यायुषि व्याध्यृत्वग्निवयोदेहबलसत्वसात्म्यप्रकृतिभेषजदेशान्परीक्षेत ॥

वैद्ये प्रथम आतुरना आयुष्यनी अने ते पछी व्याधि वगेरेनी परीक्षा करवानी जरूर.

२ आतुरनी चिकित्सा करवा धारता वैद्ये प्रथम

१ केटलुं जोई तपासीने आतुरनी चिकित्सा करवी ते विषयनो.

तो ए आतुरना आयुष्यनीज परीक्षा करवी जोईए. आयुष्य लांबुं छे एम सिद्ध थया पछी पण व्याधि, ऋतु, अग्नि, अवस्था, देह, बळ, सत्व, सात्म्य, (जे कांई आहार विहारादिक हमेशना सेवनने लीधे शरीरने गोठी रहेल होय ते) प्रकृति, औषध अने देश इत्यादिकनी परीक्षा करवी जोईए.

३ तत्र महापाणिपादपार्श्वपृष्ठस्तनाग्रदशनवदनस्कन्धललाटं दीर्घाङ्गुलिपर्वोच्छ्वासप्रेक्षणबाहुं विस्तीर्णभ्रूस्तनान्तरोरस्कं ह्रस्वजङ्घामेढ्ग्रीवं गम्भीरसत्वस्वरनाभिमनुच्चैर्बद्धस्तनमुपचितमहारोमशकर्णं पश्चान्मस्तिष्कं स्नातानुलिप्तं मूर्द्धानुपूर्व्या विशुष्यमाणशरीरं पश्चाच्च विशुष्यमाणहृदयं पुरुषं जानीयाद्दीर्घायुः खल्वयमिति । तमेकान्तेनोपक्रमेत् ।

एभिर्लक्षणैर्विपरीतैरल्पायुः ।
मिश्रैर्मध्यमायुरिति ॥

भवन्ति चात्र ॥

गूढसंधिशिरास्नायुः संहताङ्गः स्थिरेन्द्रियः ।
उत्तरोत्तरसुक्षेत्रो यः स दीर्घायुरुच्यते ॥
गर्भात्प्रभृत्यरोगो यः शनैः समुपचीयते ।
शरीरज्ञानविज्ञानैः स दीर्घायुः समासतः ॥
मध्यमस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निबोध मे ।
अधस्तादक्षयोर्यस्य लेखाः स्युर्व्यक्तमायताः ॥
द्वे वा तिस्रोऽधिका वापि पादौ कर्णौ च मांसलौ ।
नासाग्रमूर्ध्वंच भवेदूर्ध्वलेखाश्च पृष्ठतः ॥
यस्य स्युस्तस्य परममायुर्भवति सप्ततिः ।
जघन्यस्यायुषो ज्ञानमत ऊर्ध्वं निबोध मे ॥
ह्रस्वानि यस्य पर्वाणि सुमहच्चापि मेहनम् ।
तथोरस्यवलीढानि न च स्यात्पृष्ठमायतम् ॥
ऊर्ध्वं च श्रवणौ स्थानान्नासा चोच्चा शरीरिणः ।
हसतो जल्पतो वापि दन्तमांसं प्रदृश्यते ।
प्रेक्षते यश्च विभ्रान्तं स जीवेत्पञ्चविंशतिम् ॥

१ चोथा विषयमां हाथ वगेरेनां जे प्रमाणो कह्यां छे तेओथी कांइक अधिक. (डल्हन.)

आयुष्यनी परीक्षा.

३ जेनां हाथ, पग, पडखां, पीठ, स्तननां अग्रो, दांतो, मुख, कांध अने ललाट एओ मोटां होय; आंगळीओनां पर्वो, श्वास, नेत्रो तथा बाहुओ लांबा होय; भ्रकुटीओ, स्तनोनुं मध्य तथा छाती विस्तीर्ण होय; पींडीओ, शिश्न तथा कंठ टुंकां होय; सत्व गंभीर (घणुं) होय; स्वर उद्धतपणा वगरनो तथा स्निग्ध होय; नाभि उंडी होय; स्तन घाटां बंधाएलां तथा कांईक उंचा होय; कान मांसनी भरतीवाळा मोटा तथा रूवांडांवाळा होय, माथाना पाछला भागमां मस्तिष्क(मगज) अधिक होय; नाह्या पछी अथवा चंदन वगेरेनुं लेपन कर्या पछी प्रथम माथाथी मांडीने शरीर सुकातुं होय अने छेवट छाती सुकाती होय ते पुरुषने **लांबा आयुष्यवाळो** जाणवो. वैद्ये आवा माणसनी चिकित्सा मनमां बेधडक रहीने करवी.

जे पुरुषमां उपर कहेलां लक्षणोथी उलटांज लक्षणो होय तेने **अल्प आयुष्यवाळो** जाणवो.

जे पुरुषमां लांबा आयुष्यवाळानां तथा अल्प आयुष्यवाळांनां लक्षणो मिश्रित देखातां होय तेने **मध्यम आयुष्यवाळो** जाणवो.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे पुरुष मांसादिकथी गूढ सांधाओवाळो, गूढ शिराओवाळो, गूढ स्नायुओवाळो, दृढ अंगोवाळो, स्थिर इंद्रियोवाळो अने पगनी आंगळीओथी मांडीने उत्तरोत्तर सुंदर अवयवोवाळो होय ते पुरुष **लांबा आयुष्यवाळो** केहेवाय छे. टुंकामां एटलुं समजवुं के जे पुरुष गर्भस्थितिथी मांडीने रोग वगरनो होय अने जेनां शरीर, तत्वबोध तथा शिल्प वगेरेनां ज्ञानो धीरे धीरे वधतां होय ते पुरुष **लांबा**

२ व्यंजनादि शुभा विद्या मेदो मेधादयो यशः ।
अल्पे वयसि यस्यैतन्नसजीवेत् कदाचन ॥
(तंत्रांतर)

आयुष्यवाळो होय छे. हवे **मध्यम आयुष्यवाळानी** परीक्षा कहुं छुं ते सांभळो. जेनां **अक्षक नामना बे** अस्थिओनी नीचे बे, त्रण अथवा तेथी वधारे लांबी अने स्पष्ट लीटीओ होय, पग तथा कान मांसथी भरपूर होय, नाकनी अणी उंची होय अने पीठमां उंची लीटीओ होय तेनुं परम आयुष्य सीत्तेर वर्षनुं थाय छे. हवे **अल्प आयुष्यवाळानी** परीक्षा कहुं छुं ते सांभळो. जेनी आंगळीओनां पर्वो (वेढाओ) टुंकां होय, शिश्न बहु मोटुं होय, छातीमां अवळी सवळी रुवाणांनी चकरीओ होय, पीठ पोहोळी न होय, कान तथा नाक पोताना स्थानथी उंचां होय, हसतां तथा बोलतां दांतनां पेढांओ देखाई रहेतां होय अने नेत्रोथी जोवुं भ्रमणवाळुं होय ते पुरुषनुं परम आयुष्य पचीश वर्षनुं थाय छे.

४ **अथ पुनरायुषो विज्ञानार्थमङ्गप्रत्यङ्गप्रप्रमाणसारानुपदेक्ष्यामः । तत्राङ्गान्यन्तराधिसक्थिबाहुशिरांसि तदवयवाः प्रत्यङ्गानीति । तत्र स्वैरङ्गुलैः पादाङ्गुष्ठप्रदेशिन्यौ द्व्यङ्गुलायते । प्रदेशिन्यास्तु मध्यमाऽनामिकाकनिष्ठिका यथोत्तरं पञ्चमभागहीनाः । चतुरङ्गुलायते पञ्चाङ्गुलविस्तृते प्रपदपादतले । पञ्चचतुरङ्गुलायतविस्तृता पार्ष्णिः । चतुर्दशाङ्गुलायतः पादः । चतुर्दशाङ्गुलपरिणाहानि पादगुल्फजङ्घाजानुमध्यानि । अष्टादशाङ्गुला जङ्घा । जानूपरिष्टाद्द्वात्रिंशदङ्गुलम् । एवं पञ्चाशत् । जङ्घायामसमावूरू । द्व्यङ्गुलानि वृषणचिबुकदशननासापुटभागकर्णमूलनयनान्तराणि । चतुरङ्गुलानि मेहनवदनांतरनासाकर्णललाटग्रीवोच्छ्रायदृष्ट्यन्तराणि । द्वादशाङ्गुलानि भगविस्तारमेहननाभिहृदयग्रीवास्तनान्तरमुखायाममणिबन्धप्रकोष्ठस्थौल्यानि । इन्द्रबस्तिपरिणाहांसपीठकूर्परान्तरायामः षोडशाङ्गुलः । चतुर्विंशत्यङ्गुलो हस्तः । द्वात्रिंशदङ्गुलपरिमाणौ भुजौ । द्वात्रिंशत्परिणाहावूरू ।**[1] **मणिबन्धकूर्परान्तरं षोडशाङ्गुलम् । तलं षट्चतुरङ्गुलायामविस्तारम् । अङ्गुष्ठमूलप्रदेशिनीश्रवणापाङ्गान्तरमध्यमाङ्गुल्यौ पञ्चाङ्गुले । अर्द्धपञ्चाङ्गुले प्रदेशिन्यनामिके । सार्द्धत्र्यङ्गुलौ कनिष्ठाङ्गुष्ठौ । चतुर्विंशतिविस्तारपरिणाहं मुखग्रीवम् । त्रिभागाङ्गुलिविस्तारा नासापुटमर्यादा । नयनत्रिभागपरिणाहा तारका । नवमस्तारकांशो दृष्टिः । केशान्तमस्तकान्तरमेकादशाङ्गुलम् । मस्तकादवटुकेशान्तो दशाङ्गुलः । कर्णावट्वन्तरं चतुर्दशाङ्गुलम् । पुरुषोरःप्रमाणविस्तीर्णा स्त्रीश्रोणिः । अष्टादशाङ्गुलविस्तीर्णमुरः । तत्प्रमाणा पुरुषस्य कटी । सविंशमङ्गुलशतं पुरुषायाम इति ॥**

भवन्ति चात्र ॥

पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान्नारी तु षोडशे ।
समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात्कुशलो भिषक् ॥
देहः स्वैरङ्गुलैरेष यथावदनुकीर्तितः ।
युक्तः प्रमाणेनानेन पुमान्वा यदि वाऽङ्गना ॥
दीर्घमायुरवाप्नोति वित्तं च महदृच्छति ।
मध्यमं मध्यमैरायुर्वित्तं हीनैस्तथाऽवरम् ॥

अथ सारान्वक्ष्यामः ॥

स्मृतिभक्तिप्रज्ञाशौर्यशौचोपेतं कल्याणाभिनिवेशं सत्त्वसारं विद्यात् ।

स्निग्धसंहतश्वेतास्थिदन्तनखं बहुलकाममप्रजं शुक्रेण ।

अकृशमुत्तमबलं स्निग्धगम्भीरस्वरं सौभाग्योपपन्नं महानेत्रं च मज्ज्ञा ।

महाशिरःस्कन्धं दृढदन्तहन्वस्थिनखमस्थिभिः ।

स्निग्धमूत्रस्वेदस्वरं बृहच्छरीरमायाससहिष्णुं मेदसा ।

अच्छिद्रगात्रं गूढास्थिसंधिं मांसोपचितं च मांसेन ।

स्निग्धताम्रनखनयनतालुजिह्वौष्ठपाणिपादतलं रक्तेन ।

१ शारीरस्थानना ५ मा अध्यायनो २० मा विषय जुवो.

सुप्रसन्नमृदुत्वग्रोमाणं त्वक्सारं विद्यात् ।
इत्येषां पूर्वं पूर्वं प्रधानमायुःसौभाग्ययोरपि ।
भवति चात्र ॥
सामान्यतोऽङ्गप्रत्यङ्गप्रमाणादथ सारतः ।
परीक्ष्यायुः सुनिपुणो भिषक्सिध्यति कर्मसु ॥

लांबा, मध्यम तथा अल्प आयुष्यना ज्ञानने माटे अंग-प्रत्यंगोनां प्रमाणो अने सत्व आदि सारो.

४ हवे माणसना आयुष्यना ज्ञानने माटे अंगोनां तथा प्रत्यंगोनां प्रमाणो कहीएछीए अने सारो पण कहीएछीए. शरीरनो मध्यभाग, कमरना संधिथी मांडीने पगनी अंगुली सुधीनो भाग, बाहु अने मस्तक एओ अंगो केहेवाय छे. ए अंगोना जे अवयवो छे ते प्रत्यंगो केहेवाय छे. एओमां पगनो अंगुठो अने प्रदेशिनी (पगना अंगुठानी पासेनी आंगळी) एओ नखना भागो शिवाय पोतानां (जेनां होय ते माणसनां) अंगुळोनी भरपथी बबे आंगळ लांबां होय छे. पगनी प्रदेशिनी पछीनी वचली आंगळी, ते पछीनी अनामिका आंगळी अने ते पछीनी कनिष्ठिका आंगळी एओ उत्तरोत्तर पांचमा पांचमा भागे टुंकी होय छे. पगनां फणा अने तळां चार आंगळ पोहोळां अने पांच आंगळ लांबां होय छे. पगनी पेनी पांच आंगळ पोहोळी अने चार आंगळ लांबी होय छे. पग चौद आंगळ लांबो होय छे. पगनुं मध्य, घुंटीओनुं मध्य, पीडीनुं घुंटीने लगतुं मध्य अने गोठणनुं मध्य एओ चौद आंगळना परिणाह (जाडाई) वाळां होय छे[२]. (चौद आंगळना दोराथी वीटाई रहे छे.) घुंटी अने गोठण एओनुं मध्य अढार आंगळ लांबुं होय छे[३]. गोठणना संधिथी उपर कमरना संधि सुधीनो भाग बत्रीश आंगळ लांबो होय छे. आ प्रमाणे घुंटीथी कमरना संधि सुधीनो भाग कुल पंचाश आंगळ लांबो होय छे. साथळो अढार आंगळ लांबा होय छे. वृषण, हडपची, दांत, नाकनां फोणवां, काननां मूळ अने नेत्रोनुं मध्य एओ बबे आंगळ लांबां होय छे. शिश्न, फाडेला मोहोडानुं मध्य, नाकनी डांडी, कान, ललाट, कंठ अने कीकीओनुं मध्य एओ चार चार आंगळ लांबां होय छे. स्त्रीनी योनिनो परिणाह[५], शिश्ननुं तथा नाभिनुं अंतर, नाभिनुं तथा हृदयनुं अंतर, हृदयनुं तथा डोकनुं अंतर, स्तनोनुं अंतर, हडपचीथी मांडीने ललाट सुधीनी मुखनी लंबाई, मणिबंधनो परिणाह अने तेथी उपरनो कांडानो परिणाह[६] एओ बार बार आंगळनां होय छे. पींडीना गोठणने लगता मध्यनो परिणाह, बे खभानी टोंचो वच्चेनी लंबाई अने बे भुजाओ वच्चेनी लंबाई एओ सोळ आंगळनां होय छे[७]. हाथ के जे कोणीथी मांडीने मध्यमा (वचली) आंगळीना अग्र सुधी गणाय छे ते चोवीश आंगळनो होय छे. बन्ने भुजाओनी लंबाई मळीने बत्रीश आंगळनी थाय छे. माथळोनो परिणाह (गोळ जाडाई) बत्रीश आंगळनी होय छे. मणिबंध अने कोणी एओ वच्चेनुं अंतर सोळ आंगळनुं होय छे. हाथनुं तळुं चार आंगळ पोहोळुं अने छ आंगळ लांबुं होय छे. अंगुठानुं मूळ अने प्रदेशिनी एओ वच्चेनुं अंतर,

१ पाठांतरमां एम छे के छ आंगळ लांबां होय छे.

२ पाठांतरमां, 'तेर आंगळना परिणाहवाळां होय छे' एवो अर्थ छे.

३ पाठांतरमां एवो अर्थ छे के पींडी चोवीश आंगळ लांबी होय छे.

४ जे शश जातिनो पुरुष होय तेनुं शिश्नज नम्र अवस्थामां चार आंगळनुं होय एम कामशास्त्रमां कह्युं छे.

५ आवो भारे परिणाह हस्तिनी जातिनी स्त्रीना भगनो होय एम कामशास्त्रमां कह्युं छे.

६ जे स्थलमां पोहोचीओ पेहेराय छे ते स्थलथी उपर चार आंगळनो भाग प्रकोष्ठ केहेवाय छे.

७ पाठांतरमां एम छे के ए लंबाई अढार आंगळनी होय छे.

कान अने नेत्रनो छेडो एओ वच्चेनुं अंतर अने वचळी आंगळी एओ पांच पांच आंगळनां लांबां होय छे. प्रदेशिनी अने अनामिका एओ साडाचार साडाचार अंगुळनी लांबी होय छे. कनिष्ठिका अने अंगुठो एओ साडा त्रण साडात्रण आंगळ लांबां होय छे. मोहोडुं चार आंगळ लांबुं होय छे. कंठ वीश आंगळना परिणाहवाळो होय छे. नाकनां फोणवानी मर्यादा पोणा बे आंगळनी होय छे. काळा डोळानी गोळाई आंखोना त्रीजा भाग जेटली होय छे. कीकीनुं प्रमाण काळा डोळाना नवमा भाग जेटलुं होय छे. केशोना अंतनी जग्या अने माथानुं मध्य एओ वच्चेनुं अंतर अगीआर आंगळनुं होय छे. माथाथी दाढी उपरना केशनो अंत दश आंगळ दूर होय छे. बे काननी टोचो अने दाढी एओनुं अंतर चौद आंगळनुं होय छे. पुरुषनो हृदयथी उपरनो अने कंठथी नीचेनो उरस्थल भाग के जे बार आंगळनो छे तेवडोज स्त्रीनो श्रोणिभाग (साथळना संधिथी नीचेनो अने भगथी उपरनो भाग) होय छे. स्त्रीनुं उरःस्थल अढार आंगळ लांबुं होय छे. पुरुषनी कमर पण अढार आंगळ लांबी होय छे. पगनी पेनीओने अने बाहुओने उंचां करी उभेला पुरुषनुं प्रमाण एकसो वीश १२० आंगळनुं थाय छे.

आ स्थलना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के " पुरुष पचीशमे वर्षे परिपूर्ण सर्व धातुओवाळो थाय छे अने स्त्री सोळमे वर्षे परिपूर्ण सर्व धातुओवाळी थाय छे माटे ते समये तेओनां अंगप्रत्यंगोनुं प्रमाण उपर कह्याप्रमाणे थाय छे एम प्रवीण वैद्ये जाणी लेवुं. उपर कह्याप्रमाणे अंगुलोथी देहनी जे भरप थाय छे ते पोतपोतानां अंगुलोथी थाय छे. देहनुं आ संपूर्ण प्रमाण केहेवामां आव्युं. जे पुरुष अथवा जे स्त्री आ प्रमाणथी युक्त होय ते अधिक आयुष्यने पामे छे अने घणा धनने मेळवे छे. जो मध्यम प्रमाण होय तो मध्यम आयुष्यनी तथा मध्यम धननी प्राप्ति थाय छे अने अल्प प्रमाण होय तो अल्प आयुष्यनी तथा अल्प धननी प्राप्ति थाय छे."

लांबा, मध्यम तथा अल्प आयुष्यनी परीक्षामां शरीरना सारोनुं ज्ञान पण उपयोगी छे माटे हवे सारो विषे कहीएछीए.

जे पुरुष स्मरणशक्तिथी, देव तथा गुरुजन आदिनी उपर भक्तिथी, कोई समयमां पण बाधित न थाय एवी बुद्धिथी, शूरपणाथी (कोई पण काममां नहीं गभरावारूप धैर्यथी) तथा पवित्रताथी युक्त होय अने कल्याणकारी बाबतोमांज यत्न धरावनारो होय तेने सत्वगुण संबंधी सारवाळो जाणवो.

जेनां अस्थिओ, दंतो तथा नखो स्निग्ध घाटां अने श्वेत होय तथा जेने रतिनी इच्छा घणी होय तथा प्रजापण घणी होय ते पुरुषने शुक्र (वीर्य) संबंधी सारवाळो जाणवो.

जे पुरुष कृश न होय, उत्तम बळवाळो होय, स्निग्ध तथा गंभीर स्वरवाळो होय, सौभाग्यवाळो होय अने मोटां नेत्रोवाळो होय तेने मज्जासंबंधी सारवाळो जाणवो.

जे पुरुषनां मस्तक तथा कांध मोटां होय अने दांतो, हडपची, अस्थिओ तथा नखो दृढ होय तेने अस्थिसंबंधी सारवाळो समजवो.

जे पुरुष मोटा शरीरवाळो तथा परिश्रमोनुं सहन करी शके एवो होय तथा जेनां मूत्र, स्वेद अने स्वर स्निग्ध होय तेने मेदसंबंधी सारवाळो जाणवो.

जे पुरुष उन्नत गात्रोवाळो तथा मांसनी भरतीवाळां शरीरवाळो होय अने जेनां अस्थिओना सांधाओ गूढ होय तेने मांससंबंधी सारवाळो जाणवो.

जे पुरुषनां नखो, नेत्रो, ताळवुं, जीभ, होठ, हाथनां तळां अने पगनां तळां स्निग्ध तथा रातां होय तेने रुधिरसंबंधी सारवाळो जाणवो.

जे पुरुषनी त्वचा अतिप्रसन्न तथा कोमळ होय अने रुवाणां पण तेवांज होय ते पुरुषने रससंबंधी सारवाळो जाणवो.

उपर कहेला आठ सारोमां पेहेलो सार पोता पछीना सात सारो करतां, बीजो सार पोता पछीना छ सारो करतां, त्रीजो सार पोता पछीना पांच सारो करतां, चोथो सार पोता पछीना चार सारो करतां, पांचमो सार पोताना पछीना त्रण सारो करतां, छठ्ठो सार पोता पछीना बे सारो करतां अने सातमो सार पोता पछीना एक सार करतां अधिक आयुष्यने तथा अधिक सौभाग्यने आपनार छे एटले उत्तरोत्तर करतां पूर्वपूर्व श्रेष्ठ छे एम समजवुं.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "गया ओगणत्रीशमा अध्यायथी ते तेत्रीशमा अध्याय सुधीमां व्रणादिकनी परीक्षाओनां जे चिह्नो कह्यां छे तेओ उपरथी, अंगोनां तथा प्रत्यंगोनां प्रमाणो उपरथी अने सारो उपरथी आयुष्यनी परीक्षा करीने चिकित्सा करनारो निपुण वैद्य चिकित्सासंबंधी सघळी क्रियाओमां सिद्धि पामे छे. (फतेहमंद नीवडे छे.)"

५ व्याधिविशेषास्तु प्रागभिहिताः। सर्व एवैते त्रिविधाः साध्या याप्याः प्रत्याख्येयाश्च। तत्रैतान् भूयस्त्रिधा परीक्षेत किमसावौपसर्गिकः प्राक्केवलोऽन्यलक्षण इति।

तत्रौपसर्गिको यः पूर्वोत्पन्नं व्याधिं जघन्यकालजातो व्याधिरुपसृजति स तन्मूल एवोपद्रवसंज्ञः।

प्राक्केवलो यः प्रागेवोत्पन्नो व्याधिरपूर्वरूपोऽनुपद्रवश्च।

अन्यलक्षणो यो भविष्यद्व्याधिख्यापकः स पूर्वरूपसंज्ञः॥

व्याधिओनी परीक्षा.

५ व्याधिओना भेदो तो आ सूत्रस्थानना वेदोत्पत्ति नामना पेहेला अध्यायमां अने व्याधिसमुद्देशीय नामना चोवीसमा अध्यायमां केहेवाई गया छे. ए सघळा व्याधिओना साध्य, याप्य अने प्रत्याख्येय (असाध्य) ए त्रण भेदो छे. वळी पण दरएक व्याधिनी त्रण प्रकारनी परीक्षा करवी के "आ व्याधि औपसर्गिक छे? प्राक्केवल छे? के अन्यलक्षण छे?"

पाछळथी उत्पन्न थएलो जे व्याधि प्रथमथी उत्पन्न थएला व्याधिने तेनी साथे मळी जईने जोर आपे ते व्याधि **औपसर्गिक** केहेवाय छे. औपसर्गिक व्याधिनुं मूळ पेहेलो व्याधि होय छे तेथी औपसर्गिक व्याधिने 'उपद्रव' ए नाम पण आपवामां आवे छे[2].

जे व्याधि कशा पण पूर्वरूप विना प्रथमथी पोताना रूपेज उत्पन्न थयो होय अने उपद्रवो वगरनो होय ते **प्राक्केवल** केहेवाय छे. (मश, तल तथा लाखां वगेरे व्याधिओ पूर्वरूपो विनाज उत्पन्न थाय छे अने उपद्रवो वगरनाज होय छे माटे तेओ प्राक्केवल गणाय.)

जे व्याधि भविष्यव्याधिनी सूचना आपनारो थाय ते **अन्यलक्षण** केहेवाय छे. अन्यलक्षणनेज पूर्वरूप केहेवामां आवे छे.

६ तत्र सोपद्रवमन्योन्याविरोधेनोपक्रमेत बलवन्तमुपद्रवं वा।

प्राक्केवलं यथास्वं प्रतिकुर्वीत।
अन्यलक्षणे त्वादिव्याधौ प्रयतेत॥

१ चिकित्सा करवानी ना पाडवा योग्य केटलाएक व्याधिओना विषयमां एम पण केहेवामां आवशे के वैद्ये आ व्याधिनी चिकित्सा करवानी प्रथम ना पाडीने पछी ते रोगी वगेरेनो आग्रह जणाय तो करवी के जेथी वैद्यने अपयश आवे नहीं

२ मूळव्याधिनी साथे थएलां चिन्हो उपद्रव न गणाय पण पाछळथी जे नवीन व्याधिओ थाय छे तेओ उपद्रवो केहेवाय. मूळव्याधिनां चिन्हो पण जो लांबा काळसुधी रह्यां आवे तो तेओने पण उपद्रवो कही शकाय छे. (डल्हन.)

भवति चात्र ॥

नास्ति रोगो विना दोषैर्यस्मात्तस्माद्विचक्षणः ।
अनुक्तमपि दोषाणां लिङ्गैर्व्याधिमुपाचरेत् ।

औपसर्गिक आदि त्रणे व्याधिओनी चिकित्सा करवानी पद्धति.

६ जे व्याधि उपद्रवोवाळो होय तेनी चिकित्सा करवी होय त्यारे मूलव्याधिनी चिकित्सा उपद्रवोनी चिकित्साथी विरुद्ध न थाय अने उपद्रवोनी चिकित्सा मूलव्याधिनी चिकित्साथी विरुद्ध न थाय एवी पद्धति पकडवी अथवा उपद्रवोमां जे कोई बलवान् उपद्रव होय तेनी प्रथम चिकित्सा करवी पण ते चिकित्सा बीजा उपद्रवोनी चिकित्साथी विरुद्ध थाय एम नहीं करवुं.

प्राक्केवल व्याधिनी चिकित्सा तो तेने पोताने माटे जे कही होय तेज करवी.

अन्यलक्षण (पूर्वरूपात्मक) व्याधिनी चिकित्सा करवी होय त्यारे जे व्याधि शरुआतमां जोवामां आवतो होय तेनीज तेने पोताने माटे कहेली खास चिकित्सा करवी.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "कोई पण रोग दोषो विना होतो नथी एटला माटे, जेनुं लक्षणादिक आ ग्रंथमां न केहेवामां आव्युं होय तेवा व्याधिनी चिकित्सा पण विचक्षण वैद्ये दोषोनां चिह्नो उपरथी कल्पना करी लईने करवी."

७ प्रागभिहिता ऋतवः ॥

ऋतुओनी परीक्षा.

७ ऋतुओनुं निरूपण आ सूत्रस्थानना ऋतुचर्याध्याय नामना ६ ठ्ठा अध्यायमां करवामां आवी गयुं छे ते उपरथी ऋतुओनी परीक्षा करी लेवी.

८ शीते शीतप्रतीकार उष्णे चोष्मनिवारणम् ।
कृत्वा कुर्यात्क्रियां प्राप्तां क्रियाकालं न हापयेत् ॥
अप्राप्ते वा क्रियाकाले प्राप्ते वा न कृता क्रिया ।
क्रिया हीनाऽतिरिक्ता वा साध्येष्वपि न सिध्यति
या ह्युदीर्णं शमयति नान्यं व्याधिं करोति च ।
सा क्रिया न तु या व्याधिं हरत्यन्यमुदीरयेत् ॥

जे ऋतुमां जे क्रिया विरुद्ध होय ते ऋतुमां ते क्रियाथीज मटे एवो कोई आत्ययिक (जेनो तुरत उपाय कर्याविना चालेज नहीं एवो) रोग उत्पन्न थाय तो तेनी चिकित्सा करवानी पद्धति.

८ शीत काळमां (शीयाळामां तथा चोमासामां) प्रथम शीतनो प्रतीकार एटले उष्णता करीने अने उष्ण काळमां प्रथम उष्णनुं निवारण एटले शीतता करीने ते पछी ते ते आत्ययिक रोगने माटे जे क्रिया शास्त्रनी आज्ञाथी प्राप्त होय ते करवी पण ऋतुना स्वभावने वळगी रहीने ते क्रिया करवानो वखत गुमाववो नहीं. (आ सूत्रस्थानना अग्निकर्मविधि नामना बारमा अध्यायनो चोथो विषय जुवो.) केम के समय प्राप्त थया छतां नहीं करवामां आवेली क्रिया समय वीत्या पछी करवामां आवे तो साध्यरोगोमां पण सिद्ध थती नथी. (जेम के ज्वरमां प्रथम नहीं करवामां आवेलुं लंघन ज्वर जीर्ण थया पछी करवामां आवे तो पण सिद्ध थतुं नथी. अर्थात् विफलज जाय छे[1]) जेम समय वीती गया पछी करवामां आवेली क्रिया साध्यरोगोमां पण निष्फल थाय छे तेम समय प्राप्त थया विना करवामां आवेली क्रिया पण निष्फल थाय छे. (जेम के आमज्वरमां आपवामां आवतुं औषध उलटुं ते ज्वरने वधारवाने लीधे निष्फलज थाय छे.) क्रिया जेटली करवी जोइए तेथी ओछी करवामां आवे तो पण व्यर्थ थाय छे. (जेम के दोष बहु छतां न्यून

१ जीर्णज्वर लंघनादिकथी मटतो नथी पण दूधथी तथा मांसरस आदि स्नेहोथी मटे छे.

क्रिया करवामां आवे तो रोगनो संपूर्ण नाश करती नथी.) जेटली करवी जोइए तेथी अधिक करवामां आवे तो पण सिद्ध नहीं थतां उलटी खराबीज करे छे. (जेम के दोष अल्प होय ते उपर मोटी क्रिया करवामां आवे तो बीजा रोगने उत्पन्न करी देछे अथवा रोगीनां प्राण लिये छे.) मिथ्या क्रिया करवामां आवे तो तेनुं पण एप्रमाणेज समजवुं. (जेम के शीतल क्रियाथी मटे एवा रोगमां उष्ण क्रिया अने उष्ण क्रियाथी मटे एवा रोगमां शीतल क्रिया रोगनी हानि करवाने बदले वृद्धिज करे छे.) जे क्रिया वृद्धि पामेला व्याधिने शमावे अने बीजा व्याधिने उत्पन्न न करे तेज क्रिया केहेवाय छे परंतु जे क्रिया एक व्याधिने हरे पण बीजा व्याधिने उत्पन्न करे ते क्रियाज केहेवाती नथी.

९ प्रागभिहितोऽग्निरन्नस्य पाचकः । स चतुर्विधो भवति दोषानभिपन्न एको विक्रियामापन्नस्त्रिविधो भवति विषमो वातेन तीक्ष्णः पित्तेन मन्दः श्लेष्मणा चतुर्थः समः सर्वसाम्यादिति ।

तत्र यो यथाकालमन्नमुपयुक्तं सम्यक्पचति स समः समैर्दोषैः ।

यः कदाचित्सम्यक्पचति कदाचिदाध्मानशूलोदावर्तातिसारजठरगौरवान्त्रकूजनप्रवाहणानि कृत्वा स विषमः ।

यः प्रभूतमप्युपयुक्तमन्नमाशु पचति स तीक्ष्णः स एवाभिवर्द्धमानोऽत्यग्निरित्याभाष्यते स मुहुर्मुहुः प्रभूतमप्युपयुक्तमाशुतरं पचति पाकान्ते च गलताल्वोष्ठशोषदाहसन्तापाञ्जनयति ।

यः स्वल्पमप्युपयुक्तमुदरशिरोगौरवकासश्वासप्रसेकच्छर्दिगात्रसदनानि कृत्वा महता कालेन पचति स मन्दः ॥

विषमो वातजान्रोगांस्तीक्ष्णः पित्तनिमित्तजान् । करोत्यग्निस्तथा मन्दो विकारान्कफसंभवान् ॥

अग्निनी परीक्षा.

९ जे अग्नि अन्नने पकावे छे तेनुं आ सूत्रस्थानना व्रणप्रश्न नामना २१ मा अध्यायना ९ मा तथा ६ ट्ठा विषयमां निरूपण करी आव्या छीए. ए अग्नि सम, विषम, तीक्ष्ण अने मंद ए रीते चार प्रकारनो थाय छे. जे अग्नि दोषोनी समताने लीधे खराबी नहीं पामेलो होय ते पेहेला प्रकारमां आवे छे अने दोषोथी खराब थईने विक्रिया पामेला अग्निओ विषम आदि त्रण प्रकारोमां आवे छे. अग्निनी विषमता वायुथी थाय छे, तीक्ष्णता पित्तथी थाय छे, मंदता कफथी थाय छे अने समता सर्व दोषोनी समताथी रहे छे.

जे अग्नि काळनुं उल्लंघन नहीं करतां जमवामां आवेला अन्नने सारी रीते पकावे ते सम केहेवाय छे. अग्निनी समता सर्व दोषोनी समताथीज रहे छे.

जे अग्नि कोई समये सारी रीते पकावे अने कोई समये आफराने, शूळने, उदावर्तने, अतिसारने, पेटना भारेपणाने, गडगडाटने के वेगना प्रेरणने उत्पन्न करीने पछी अन्नने पकावे ते **विषम** केहेवाय छे.

जे अग्नि खावामां आवेला घणा अन्नने पण तुरत पकावी नाखे ते **तीक्ष्ण** केहेवाय छे. एतीक्ष्ण अग्निज जो वधतो जतो होय तो अत्यग्नि (भस्मक) केहेवाय छे अने बहुज वधी जाय

१ कृश माणसनी बृंहणक्रिया अविवेकथी करवामां आवे तो अग्निमंदता, प्रमेह तथा अतीसार आदि रोगो उत्पन्न थाय छे अने स्थूल माणसनी कर्षणक्रिया अविवेकथी करवामां आवे तो क्षयरोग तथा वातरोग आदि रोगो उत्पन्न थाय छे ए वात प्रसिद्धज छे.

२ विषम अग्निवाळा माणसना अग्निने वायु ज्यारे विखेरी नाखतो नथी त्यारे ते अग्नि सारी रीते पकावे छे अने ज्यारे वायु अग्निने आम तेम विखेरी नाखे छे त्यारे ते अग्नि बराबर पकावी शकतो नथी.

तो तीक्ष्णतम केहेवाय छे. अत्यंत तीक्ष्ण थएलो अग्नि वारंवार अने घणा घणा खाधेला अन्नने पण तुरत पकावी नाखे छे अने पकावी नाख्या पछी गळामां, ताळवामां तथा होठमां शोषने दाहने तथा संतापने उत्पन्न करे छे.

जे अग्नि स्वल्प खाधेला अन्नने पण, पेटनुं तथा माथानुं भारेपणुं करीने अने खांसी, श्वास, लाळनो स्राव, उलटी तथा अंगग्लानि एओने पण उत्पन्न करीने घणे काळे पकावे छे ते **मंद** केहेवाय छे.

विषम अग्नि वायुसंबंधी रोगोने, तीक्ष्ण अग्नि पित्तसंबंधी रोगोने अने मंद अग्नि कफसंबंधी रोगोने उत्पन्न करे छे.

१० तत्र समे परिरक्षणं कुर्वीत। विषमे स्निग्धाम्ललवणैः क्रियाविशेषैः प्रतिकुर्वीत। तीक्ष्णे मधुरस्निग्धशीतैर्विरेकैश्च। एवमेवात्यग्नौ विशेषेण माहिषैश्च क्षीरदधिसर्पिर्भिः। मन्दे कटुतिक्तकषायैर्वमनैश्च ॥

जाठरो भगवानग्निरीश्वरोऽन्नस्य पाचकः।
सौक्ष्म्याद्रसानाददानो विवेक्तुं नैव शक्यते ॥
प्राणापानसमानैस्तु सर्वतः पवनैस्त्रिभिः।
ध्मायते पाल्यते चापि स्वे स्वे स्थाने व्यवस्थितैः ॥

समवगेरे अग्निओनी चिकित्सा करवानी पद्धति.

१० अग्नि **सम** होय तो एवीज चिकित्सा करवी के जेथी ते समज रह्या करे. **विषम** होय तो स्निग्ध, खाटा तथा खारा पदार्थोथी अनेक प्रकारनी क्रियाओ करवारूप चिकित्सा करवी. **तीक्ष्ण** होय तो मधुर, स्निग्ध तथा शीत पदार्थोथी अने विरेचनोथी चिकित्सा करवी. **अत्यग्नि** के **तीक्ष्णतम** होय तो एज रीते अने विशेषेकरी भेंशनां दही, दूध अने घी एओथी चिकित्सा करवी. **मंद** होय तो तीखा, कडवा तथा तूरा पदार्थोथी अने वमनोथी चिकित्सा करवी.

अन्नने पकावनारो जठराग्नि मोटा महिमावाळो छे अने अपार शक्तिवाळो छे. ए जठराग्नि सघळा रसोने पकाववाने माटे पोताना तंत्रमां लीधा करे छे पण पोते अतिसूक्ष्म होवाने लीधे प्रत्यक्ष नहीं देखातां अन्नने पकाववारूप कार्यथीज जाणवामां आवे छे. वायु जेम बाहारना अग्निनो सहाय थाय छे तेम अंदरना अग्निनो पण सहाय थाय छे. अंदरना सघळा वायुओमांथी प्राण, अपान अने समान ए त्रण वायुओज जठराग्निने साहाय्य आपे छे. पोतपोताना मार्गमां रही क्रिया कर्या करता ए त्रण वायुओमांथी प्राण तथा अपान ए अग्निने धम्या करे छे अने समानवायु पाळ्या करे छे.

११ वयस्तु त्रिविधं बालं मध्यं वृद्धमिति। तत्रोनषोडशवर्षा बालाः। तेऽपि त्रिविधाः क्षीरपाः क्षीरान्नादा अन्नादा इति। तेषु संवत्सरपराः क्षीरपा द्विसंवत्सरपराः क्षीरान्नादाः परतोऽन्नादा इति। षोडशसप्तत्योरन्तरे मध्यं वयस्तस्य विकल्पो वृद्धिर्यौवनं संपूर्णता हानिरिति। तत्राविंशतेर्वृद्धिरात्रिंशतो यौवनमाचत्वारिंशतः सर्वधात्विन्द्रियबलवीर्यसंपूर्णता। अत ऊर्ध्वमीषत्परिहाणिर्यावत्सप्ततिरिति ॥ सप्ततेरूर्ध्वं क्षीयमाणधात्विन्द्रियबलवीर्योत्साहमहन्यहनि वलीपलितखालित्यजुष्टं कासश्वासप्रभृतिभिरुपद्रवैरभिभूयमानं सर्वक्रियास्वसमर्थं जीर्णागारमिवाभिवृष्टमवसीदन्तं वृद्धमाचक्षते ॥

अवस्थाओनी परीक्षा.

११ बाल, मध्य अने वृद्ध ए रीते अवस्थाना त्रण भेद छे. ज्यांसुधी सोळ वर्ष पूरां न थयां होय त्यांसुधी **बाल** गणाय छे. बाळना पण क्षीरप, क्षीरान्नाद अने अन्नाद ए रीते त्रण भेद छे. पेहेलुं वर्ष पुरूं थतां सुधी धावण उपर मुख्य आधार रेहे छे तेथी क्षीरप केहेवाय छे. बीजुं वर्ष पुरूं थतां सुधी दूध अने अन्न ए बन्नेनी उपर

मुख्य आधार रेहे छे तेथी क्षीरान्नाद केहेवाय छे अने ते पछी अन्न उपरज मुख्य आधार रेहे छे तेथी अन्नाद केहेवाय छे. सोळ वर्ष अने सीत्तेर वर्ष एओना वचमां जे अवस्था होय छे ते मध्य गणाय छे. मध्यना पण वृद्धि, यौवन, संपूर्णता अने हानि ए रीते चार भेद छे. वीशमा वर्ष सुधी धातुओ वगेरे वधे छे तेथी वीश वर्ष सुधी वृद्धि केहेवाय छे. त्रीशमा वर्ष सुधी धातुओ वगेरेनी वृद्धिनो अने संपूर्णतानो मिश्रीभाव रेहे छे तेथी त्रीश वर्ष सुधीनी उमर यौवन केहेवाय छे. चाळीशमा वर्षसुधी सर्व धातुओ, इंद्रियो, बळ तथा वीर्य एओनुं पूर्णपणुं रेहे छे तेथी संपूर्णता केहेवाय छे. चाळीमा वर्ष पछी सीत्तेरमा वर्षसुधीमां ए धातुओ वगेरे सर्व पदार्थोनी उत्तरोत्तर कांइक कांइक हानि थया करे छे तेथी ते मध्य उमरनो भाग हानि केहेवाय छे. सीत्तेरमा वर्ष पछी धातुओ, इंद्रियो, बळ, वीर्य तथा उत्साह एओ दिवसे दिवसे क्षीण थतां जाय छे; वळी, (चामडीनी करचळी) वाळोनी सफेदाई तथा टाल एओ वधारे वधारे प्राप्त थया करे छे, खांसी तथा श्वास वगेरे उपद्रवो पराभव करता रेहे छे, सघळी क्रियाओमां अशक्तता थई जाय छे अने शरीर वरसादथी भीजाएला जुना घरनी पेठे पडवानी हालतमां आवी जाय छे माटे सीत्तेरमा वर्ष पछीनी अवस्था वृद्ध केहेवाय छे.

१२ तत्रोत्तरोत्तरासु वयोऽवस्थासूत्तरोत्तरा भेषजमात्राविशेषा भवन्त्यृते च परिहाणेस्तत्राद्यापेक्षया प्रतिकुर्वीत ।

भवन्ति चात्र ॥

बाले विवर्द्धते श्लेष्मा मध्यमे पित्तमेव तु ।
भूयिष्ठं वर्द्धते वायुर्वृद्धे तद्वीक्ष्य योजयेत् ॥
अग्निक्षारविरेकैस्तु बालवृद्धौ विवर्जयेत् ।
तत्साध्येषु विकारेषु मृद्वीं कुर्यात्क्रियां शनैः ॥

अवस्थाओना संबंधमां चिकित्सा करवानी पद्धति.

१२ एओमां उत्तरोत्तर अवस्थाओमां औषधोनी मात्राओ अधिक अधिक देवी. परंतु सीत्तेरमा वर्ष पछी ते प्रमाणे करवुं नहीं. सीत्तेरमा वर्ष पछी तो बाल अवस्थानी पद्धतिप्रमाणेज चिकित्सा करवी. (सोळ वर्षना माणसने जेटली मात्रा अपाय तेटलीज वृद्धने मात्रा देवी.)

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "घणुं करीने बाल अवस्थामां कफ वधे छे, मध्य अवस्थामां पित्त वधे छे अने वृद्ध अवस्थामां वायु वधे छे माटे ते उपर ध्यान आपीने वैद्ये चिकित्सानी योजना करवी. बालक अने वृद्ध एओनी अग्निथी, क्षारथी के विरेचनथी चिकित्सा करवी नहीं. बालकने के वृद्धने अग्निथी, क्षारथी के विरेचनथीज मटे एवा रोगो थया होय तो वैद्ये धीरे धीरे अग्निवगेरेनी कोमळ क्रियाओ करवी" (जेम के अग्निक्रिया करवी होय तो बकरीनी लीडीना अग्निथी करवी, छेदनभेदनादिक करवुं होय तो कबुतरनी के गरंजनी चरकथी करवुं, क्षारथीज क्रिया करवी तो मृदु क्षारथी करवी अने विरेचन करवुं होय तो गरमाळा वगेरेथी करवुं इत्यादि.)

१३ देहः स्थूलः कृशो मध्य इति प्रागुपदिष्टः ।

देहनी परीक्षा.

१३ देह स्थूल, मध्य अने कृश एम त्रण प्रकारनो होय छे. आ विषे आ सूत्रस्थानना 'दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय' नामना १५ मा अध्यायमां केहेवाइ गयुं छे.

१४ कर्षयेद्बृंहयेच्चापि सदा स्थूलकृशौ नरौ ।
रक्षणं चैव मध्यस्य कुर्वीत सततं भिषक् ॥

देहना संबंधमां चिकित्सानी पद्धति.

१४ वैद्ये सर्वदा स्थूलदेहवाळां माणसोनुं क-

१ 'यु' मिश्रणामिश्रणयोः (पाणिनीय धातुपाठ आदादिकगण.)

पण करवुं, कृश देहवाळां माणसोनुं बृंहण करवुं अने मध्यदेहवाळां माणसनुं हमेश तेवी ने तेवी स्थितिमां रहे एवी रीते रक्षण करवुं.

१५ बलमभिहितगुणम् । दौर्बल्यं च स्वभावदोषजरादिभिरवेक्षितव्यम् । यस्माद्बलवतः सर्वक्रियाप्रवृत्तिस्तस्माद्बलमेव प्रधानमधिकरणानाम् ॥

केचित्कृशाः प्राणवन्तः स्थूलाश्चाल्पबला नराः ।
तस्मात्स्थिरत्वं व्यायामैर्बलं वैद्यः प्रतर्कयेत् ॥

बळनी परीक्षा.

१५ बळनुं निरूपण आ सूत्रस्थानना 'दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय' नामना पंदरमा अध्यायना २२ मा विषयमां केहेवाई गयुं छे. बळनी परीक्षामां माणसनी दुर्बळता तपासवानी जरूर छे. दुर्बळता मातापितानां शुक्रशोणित संबंधी स्वभावथी थाय छे, वात आदि दोषोथी थाय छे अने जराअवस्था वगेरेथी पण थाय छे माटे वैद्ये अवेक्षण करवुं के 'दुर्बळता शा कारणथी थई छे?' जे माणस बळवान् होय ते सघळी क्रियाओमां प्रवर्त्तीशके छे माटे क्रियाओना जे जे आधारो छे ते सघळाओमां बळज प्रधान छे.

केटलाएक माणसो कृश छतां पण सारा बळवाळा होय छे अने केटलाएक माणसो स्थूल छतां पण अल्प बळवाळा होय छे माटे कसरत तथा मेहेनत वगेरे व्यायामो उपरथीज स्थिरतारूपी लक्षणवाळा बळनी परीक्षा करवी.

१६ सत्त्वं तु व्यसनाभ्युदयक्रियास्थानेष्ववैकल्यकरम् ।

सत्त्ववान्सहते सर्वं संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
राजसः स्तभ्यमानोऽन्यैः सहते नैव तामसः ॥

सत्वनी परीक्षा.

१६ गमे तेवां दुःखनां कारणो के दुःखो आवी पड्या छतां पण जेने लीधे मनमां ग्लानि के विह्वलता न थाय अने गमे तेवां सुखनां कारणो के सुखो आवी पड्या छतां पण जेने लीधे मनमां हर्षनो प्रबळ वेग उत्पन्न न थाय एवुं मननुं एक जातनुं जे सत्वगुणात्मक बळ होय छे ते सत्व केहेवाय छे.

सत्ववाळो माणस पोतानी बुद्धिथी पोताना मनने दृढ राखीने सघळुं सहन करे छे. रजोगुणवाळो माणस बीजा लोकोए कराता आश्वासनादिकथी मनने दृढ राखीने सघळुं सहन करे छे अने तमोगुणवाळो माणस बीजा लोकोए आश्वासनादिक करातां छतां पण मनने दृढ नहीं राखी शकतां दुःखनुं सहन करतो नथी.

१७ प्रकृतिं भेषजं चोपरिष्टाद्वक्ष्यामः ॥

प्रकृतिनी तथा औषधनी परीक्षा.

१७ प्रकृतिनी परीक्षानो प्रकार शारीरस्थानना 'गर्भव्याकरण' नामना चोथा अध्यायमां केहेवामां आवशे अने औषधनी परीक्षा आ सूत्रस्थानना 'भूमिप्रविभागीय' नामना ३७ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे. (आ चालता अध्याय पछी सूत्रस्थाननी समाप्तिसुधीना सघळा अध्यायोमां औषधनी परीक्षा छे एम केहेवामां पण कांई खोटुं नथी.)

१८ सात्म्यानि तु देशकालजात्यृतुरोगव्यायामदिवास्वप्नरसप्रभृतीनि प्रकृतिविरुद्धान्यपि यान्यबाधकराणि भवन्ति ।

यो रसः कल्पते यस्य सुखायैव निषेवितः ।
व्यायामजातमन्यद्वा तत्सात्म्यमिति निर्दिशेत् ॥

सात्म्यनी परीक्षा.

१८ जेओ प्रकृतिथी (स्वभावथी) कदाच विरुद्ध होय तो पण निरंतर सेवन आदि कारणने लीधे कशी हरकत करनारां होतां नथी परंतु सुखदायीज होय छे तेओ सात्म्य केहेवाय छे. ए सात्म्यो देशसात्म्य, कालसात्म्य, जातिसात्म्य, ऋतुसात्म्य, रोगसात्म्य, व्यायामसात्म्य, दिवास्व-

प्नसात्म्य, अने रससात्म्य इत्यादि अनेक प्रकारनां होय छे.

अत्यंत सेववामां आवतो जे रस अथवा व्यायामादिक पण, जे माणसने सुखदायीज थतो होय ते रस अथवा ते व्यायामादिक ते माणसने सात्म्य छे एम समजवुं.

१९ देशस्त्वानूपो जाङ्गलः साधारण इति॥ तत्र बहूदकनिम्नोन्नतनदीवर्षगहनो मृदुशीतानिलो बहुमहापर्वतवृक्षो मृदुसुकुमारोपचितशरीरमनुष्यप्रायः कफवातरोगभूयिष्ठश्चानूपः। आकाशसमः प्रविरलाल्पकण्टकिवृक्षप्रायोऽल्पवर्षप्रस्रवणोदपानोदकप्राय उष्णदारुणवातः प्रविरलाल्पशैलः स्थिरकृशशरीरमनुष्यप्रायो वातपित्तरोगभूयिष्ठश्च जाङ्गलः॥ उभयदेशलक्षणः साधारण इति॥

भवन्ति चात्र॥

समाः साधारणे यस्माच्छीतवर्षोष्ममारुताः।
दोषाणां समता जन्तोस्तस्मात्साधारणो मतः॥

देशनी परीक्षा.

१९ आनूप, जांगल अने साधारण ए रीते देशना त्रण भेद छे. जे देशमां घणां जळथी, घणा नीचा उंचा प्रदेशोथी, घणी नदीओथी तथा घणा वरसादथी गहनता होय, कोमळ तथा थंडो पवन वातो होय, पर्वतो तथा वृक्षो घणां तथा मोटां होय, माणसो घणुं करीने कोमळ, सुकुमार तथा पुष्ट शरीरोवाळांज थतां होय, अने कफ तथा वातसंबंधी रोगो घणा थता होय ते देशने **आनूप** समजवो. जे देशमां बहु नीचाण उंचाण के पाहाड आदि नहीं होवाने लीधे आकाश जेवी सपाटी होय, घणुं करीने वृक्षो पाखां थोडां तथा कांटावाळांज थतां होय, पर्वतो पण गहनपणा वगरना तथा थोडाज होय, घणुं करीने वरसाद थोडो थतो होय, झरणां जलाशयो अने जळ पण अल्प होय, पवन उष्ण तथा दारुण वातो होय, माणसो घणुं करीने स्थिर तथा कृश शरीरवाळांज थतां होय अने वात तथा पित्तसंबंधी रोगो घणा थता होय ते देशने **जांगल** समजवो. जे देशमां आनूप देशनां पण लक्षणो होय अने जांगल देशनां पण लक्षणो होय ते देशने **साधारण** समजवो.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "साधारण देशमां थंडी, वरसाद, गरमी अने पवन एओ समतावाळां होय छे अने माणसोनां शरीरोमां दोषोनी पण समता होय छे माटे साधारण देश उत्तम छे."

२० न तथा बलवन्तः स्युर्जलजा वा स्थलाहृताः।
स्वदेशे निचिता दोषा अन्यस्मिन्कोपमागताः॥
उचिते वर्तमानस्य नास्ति देशकृतं भयम्।
आहारस्वप्नचेष्टादौ तद्देशस्य गुणे सति॥

जे रोग पोताना जेवाज गुणोवाळा देशमां थयो होय ते रोगनी तेथी विपरीत गुणोवाळा देशमां चिकित्सा करवी बहु सुगम पडे छे.

२० आनूप देशमां उत्पन्न थएला श्लीपद आदि रोगोने (रोगीओने) जांगल देशमां लई जवामां आव्या होय तो ते रोगो, जेवा आनूप देशमां बळवान् होय तेवा जांगल देशमां बळवान् रेहेता नथी. पोताना जेवा गुणोवाळा देशमां उपचय पामेला दोषो पोताथी विरुद्ध गुणोवाळा देशमां प्रकोप पामे तो पण प्रथमना जेवा बळवान् रेहेता नथी. एक देशमांथी तेथी विरुद्ध गुणोवाळा बीजा देशमां आवेलो रोगी जो योग्य आहार, योग्य निद्रा तथा योग्य चेष्टा वगेरे करे तो रोगने ते देशनी असर थवाथी रोगीने प्रथमना देशे उत्पन्न करेली धास्ती रेहेती नथी. (जेम के आनूप देशमां उत्पन्न थएला कफसंबंधी रोगवाळो माणस जांगल देशमां आवे अने त्यां दिवसे सुई

रेहेवा आदि कफवर्धक क्रियाओ न करे पण कफविरुद्ध क्रियाओ करे तो आनूप देशमां उत्पन्न थएलो रोग देशना महिमाने लीधे वधारे निर्बल थईने टळी जाय छे.)

२१ देशप्रकृतिसात्म्यर्तुविपरीतोऽचिरोत्थितः। संपत्तौ भिषगादीनां बलसत्वायुषां तथा ॥
केवलः समदेहाग्नेः सुखसाध्यो मतो गदः।
अतोन्यथात्वसाध्यः स्यात्कृच्छ्रो व्यामिश्रलक्षणः

रोगोनी सुखसाध्यता, असाध्यता तथा कष्टसाध्यता.

२१ जे रोग देशथी, प्रकृतिथी, सात्म्यथी तथा ऋतुथी विपरीत होय[१], थोडा समयथी उत्पन्न थयो होय, एकज दोषवाळो होय अने सम देहवाळा तथा सम अग्निवाळा माणसने थयो होय ते रोगने **सुखसाध्य** समजवो. पण तेमां वैद्य वगेरेनी, बळनी, सत्वनी तथा आयुष्यनी संपत्ति जोइए.

जे रोगमां उपर कहेलां लक्षणोथी उलटांज लक्षणो होय ते रोगने **असाध्य** समजवो.

जे रोगमां सुखसाध्यनां अने असाध्यनां लक्षणो मिश्रित थयां होय ते रोगने **कष्टसाध्य** समजवो.

२२ क्रियायास्तु गुणालाभे क्रियामन्यां प्रयोजयेत् पूर्वस्यां शान्तवेगायां न क्रियासंकरो हितः ॥
गुणालाभेऽपि सपदि यदि सैव क्रिया हिता।
कर्तव्यैव तदा व्याधिः कृच्छ्रसाध्यो भवेद्यदि

एक क्रियाथी गुण न थाय तो बीजी क्रिया क्यारे करवी?

२२ एक क्रियाथी गुण थयो न जोवामां आवे तो ते क्रियानो वेग शांत थया पछी बीजी क्रिया करवी[२]. केम के क्रियाओनी भेळसेळ थाय ए हितकारी नथी. परंतु कष्टसाध्य व्याधिमां एक क्रियाथी गुण थयो न जोवामां आवे तो जे बीजी क्रिया हितकारीज जणाय ते जलदीज करवी.

२३ य एवमेनं विधिमेकरूपं
बिभर्ति कालादिवशेन धीमान्।
स मृत्युपाशाञ्जगतो गदौघा-
न्छिनत्ति भैषज्यपरश्वधेन ॥

आ अध्यायमां कह्याप्रमाणे करवाथी रोगोनो नाश थाय छे.

२३ जे बुद्धिमान् वैद्य आ अध्यायमां कह्याप्रमाणे काळ वगेरेना सामर्थ्य उपर पूरूं ध्यान आपीने एकमार्गीपणाथी चिकित्सा करे ते वैद्य जगतना मृत्युपाशो जेवा रोगोना समूहोने औषधरूपी कुहाडाथी कापी नाखे छे."

अध्याय ३६ मो.

१ अथातो मिश्रकमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मिश्रकं[३]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मातुलुङ्गाग्निमन्थौ च देवदारु महौषधम्। अहिंस्रा चैव रास्ना च प्रलेपो वातशोफहृत् ॥
दूर्वा च नलमूलं च मधुकं चन्दनं तथा।
शीतलाश्च गणाः सर्वे प्रलेपः पित्तशोफहृत् ॥

---

१ जेम के जांगल देशमां कफसंबंधी रोग थयो होय तो ते देशथी विपरीत छे. पित्तप्रकृतिवाळाने कफसंबंधी रोग थयो होय तो ते प्रकृतिथी विपरीत छे. जेने तीखा पदार्थो सात्म्य होय तेने कफसंबंधी रोग थयो होय तो ते सात्म्यथी विपरीत छे. शरद्मां वातिक, हेमंतमां पैत्तिक अने ग्रीष्ममां श्लैष्मिक रोग थयो होय तो ते ऋतुथी विपरीत छे.

२ पेहेली क्रियाने पांच के छ रात व्यतीत थई जाय ते पछी बीजी क्रिया करवी. (डल्हन.)

३ सोजानी तथा व्रणोनी चिकित्साओमां विम्लापन, पाचन, दारण, प्रपीडन, शोधन, रोपण, उत्सादन तथा अवसादन ए आठ प्रधान क्रियाओना एकंदर कथनवाळो अथवा सोजो अने व्रण एओना मिश्रयोगोना कथनवाळो.

आगन्तुजे रक्तजे च एष एव विधिः स्मृतः ।
विधिर्विषघ्नो विषजे पित्तघ्नोऽपि हितस्तथा ॥[1]
अजगन्धाऽश्वगन्धा च काला सरलया सह ।
एकैषिकाऽजशृङ्गी च प्रलेपः श्लेष्मशोफहृत् ॥
एते वर्गास्त्रयो लोध्रं पथ्या पिण्डीतकानि च ।
अनन्ता चेति लेपोऽयं सांनिपातिकशोफहृत् ॥
स्निग्धाम्ललवणो वाते कोष्णः शीतः पयोयुतः।
पित्ते चोष्णः कफे क्षारमूत्राढ्यस्तत्प्रशान्तये ॥

विम्लापनो (सोजाओने म्लानि आपनारा) लेपो.

२ बीजोरूं, अरणी, देवदार, सुंठ, कंथारी अने रास्ना एओनो लेप **वायुथी** थएला सोजाने हरे छे.

धोकड, वरूनुं मूळ, जेठीमध, रतांजलि अने काकोल्यादि, उत्पलादि तथा न्यग्रोधादि ए त्रण शीतलगणो एओनो लेप **पित्तथी** थएला सोजाने हरे छे.

आगंतुकथी थएला तथा **रूधिरथी** थएला सोजानी उपर पण एज (पित्तथी थएला सोजा उपर जे कह्यो तेज) लेप करवो. **विषथी थएला** सोजानी उपर विषने हणनारो विधि के जे कल्पस्थानमां केहेवामां आवशे ते पण हितकारी छे अने आ उपर कहेलो पित्तने शांत करनारो लेप पण हितकारी छे.

तलवणी, आसोंद, कंथारी अथवा काळीजीरी, रातां मूळवाळी नसोतर, धोळां मूळवाळी नसोतर, अने काकडाशींगी एओनो लेप **कफथी** थएला सोजाने हरे छे.

उपर कहेला बीजोरा आदि, धोकड आदि तथा तलवणी आदि त्रण वर्गो, लोदर, मीडोळ, हरडे अने धमासो एओनो लेप **सान्निपातिक** (त्रणे दोषोथी थएला) सोजाने हरे छे.

वायुथी थएला सोजानी उपर जे लेप कह्यो ते लेप स्निग्ध, खाटा तथा खारा पदार्थोथी मिश्रित करीने जरा उनो उनो करवो. पित्तथी थएला सोजानी उपर जे लेप कह्यो ते लेप दूधथी मिश्रित करीने थंडोज करवो. कफथी थएला सोजानी उपर जे लेप कह्यो ते लेप क्षारोथी तथा मूत्रोथी संयुक्त करी गरम करीने करवो. आ प्रमाणे करवाथी सोजाओनी शांति थाय छे.

३ शणमूलकशिग्रूणां फलानि तिलसर्षपाः ।
सक्तवः किण्वमतसी द्रव्याण्युष्णानि पाचनम्॥

सोजाओनुं पाचन. (पकावी नाखनार.)

३ शणनां बीज, मूळानां बीज, सरगवानां बीज, तल, सर्षप, साथवो,[2] मदिरानी नीचे रहेलो कदडो, अलसी अने बीजा पण कठ तथा अगरू वगेरे उष्ण वीर्यवाळा पदार्थो पाचन छे. (सोजाने पकावी नाखे छे.) एओमांनुं एक एक द्रव्य पण पाचन छे.

४ चिरविल्वोऽग्निको दन्ती चित्रको हयमारकः।
कपोतगृध्रकङ्कानां पुरीषाणि च दारणम् ।
क्षारद्रव्याणि वा यानि क्षारो वा दारणं परम् ॥

सोजाओनुं दारण (पाकेला सोजाने फाडी नाखनार.)

४ चिरविल्व नामनी करंज, (गुच्छकरंज) दूधीयो वछनाग अथवा भीलामुं, नेपाळो, चित्रो, कणेर, कबुतरनी चरक, गरंजनी चरक, अने कंकपक्षीनी चरक एओ दारण छे. (चरकरूप दारण सुकुमार छे माटे बालकना के वृद्धना सोजा उपर तेनो उपयोग करवो.) मखरो, खाखरो, इंद्रजवनुं झाड तथा राळनुं झाड इत्यादि क्षारनां द्रव्यो पण दारण छे. एओथी बनावेलो प्रतिसारणीय क्षार ए प्रबल दारण छे.

१ आ त्रणे गणो आ सूत्रस्थानना 'द्रव्यसंग्रहणीय' नामना ३८ मा अध्यायमां जोवा.

२ साथवो जोके शीतवीर्य छे तो पण प्रभावविशेषथी अथवा संयोगविशेषथी तेमां पाचनपणुं छे.

५द्रव्याणां पिच्छिलानां तु त्वङ्मूलानि प्रपीडनम्।
यवगोधूममाषाणां चूर्णानि च समासतः ॥

व्रणोनुं प्रपीडन (व्रणने दबावीने तेमांथी रसी काहाडनार.)

५ शेमळा तथा वड वगेरे चीकणी औषधीओनां छाल तथा मूळीआं एओ प्रपीडन छे. जव, घउं तथा अडद एओना लोट पण प्रपीडन छे. आ प्रपीडननो संक्षेप कह्यो. (प्रपीडननी रीति एम छे के व्रणना मोहोडाने खुल्लूं राखी व्रणनी उपर प्रपीडननो लेप करीने ते लेपने सुकावा देवो. सुकाई गएलो आ लेप व्रणने दबावे छे.)

६ शङ्खिन्यङ्कोटसुमनःकरवीरसुवर्चलाः ।
शोधनानि कषायाणि वर्गश्चारग्वधादिकः ॥
अजगन्धाऽजशृङ्गी च गवाक्षी लाङ्गलाह्वया ।
पूतीकश्चित्रकः पाठा विडङ्गैलाहरेणवः ॥
कटुत्रिकं यवक्षारो लवणानि मनःशिला ।
कासीसं त्रिवृता दन्ती हरितालं सुराष्ट्रजा ॥
संशोधनीनां वर्तीनां द्रव्याण्येतानि निर्दिशेत् ।
एतैरेवौषधैः कुर्यात्कल्कानपि च शोधनान् ॥
कासीसकटुरोहिण्योर्जातीकन्दहरिद्रयोः ।
पूर्वोद्दिष्टेषु चाङ्गेषु कुर्यात्तैलघृतानि वै ॥
अर्कोत्तमां स्नुहीक्षीरं पिष्ट्वा क्षारोत्तमानपि ।
जातीमूलं हरिद्रे द्वे कासीसं कटुरोहिणीम् ॥
पूर्वोद्दिष्टानि चान्यानि कुर्यात्संशोधनं घृतम् ।
मयूरको राजवृक्षो निम्बः कोपातकी तिलाः ।
बृहती कण्टकारी च हरितालं मनःशिला ।
शोधनानि च योज्यानि तैले द्रव्याणि शोधने ॥
कासीसे सैन्धवे किण्वे वचायां रजनीद्वये ।
शोधनाङ्गेषु चान्येषु चूर्णं कुर्वीत शोधनम् ॥
सालसारादिसारेषु पटोलत्रिफलासु च ।
रसक्रिया विधातव्या शोधनी शोधनेषु च ॥
श्रीवेष्टके सर्जरसे सरले देवदारुणि ।
सारेष्वपि च कुर्वीत मतिमान्व्रणधूपनम् ॥

व्रणोनुं शोधन (धोवा वगेरेथी व्रणने शुद्ध करनार.)

६ शंखवेल–(आंखफूटामणां) अंकोल, चमेली, कणेर अने सुरजमुखी एओना कषायो अने आरग्वधादि गण, एओ शोधन छे.

तलवणी, काकडाशींगी, इंद्रवारणां, दूधीयो वछनाग, गुच्छकरंज, चित्रो, काळीपाड, वावडींग, एळची, हरेणु, सुंठ, मरी, पीपळ, जवखार, पंचलवर्णो, मणशील, हीराकसी, नसोतर, नेपाळो, हरताल अने फटकडी एओनी वाट पण व्रणने शुद्ध करनार छे. (वाट उपर ए पदार्थोनो कल्क लगावीने ते वाट व्रणमां नाखवी.)

व्रणने शुद्ध करवाना कल्को पण एज पदार्थोना बनाववा.

हीराकसी अने कडु, चमेली अने हळदर अने उपर कहेलां शंखवेल (आंखफुटामणां) आदि तथा तलवणी आदि द्रव्यो एओनां तेल तथा घी पण शोधनने माटे करवां.

आकडानां मूळ, हरडां, बेहेडां, आमळां, थोरनुं छीर, मखरा तथा खाखरा वगेरे क्षारना पदार्थो, जाइनां मूळ, हळदर, दारुहळदर, कांईक पीळी हीराकसी, कडु अने उपर कहेली शोधननी वाटना पण सघळा पदार्थो एओने वाटीने तेओनुं घी बनाववुं. आ घी पण व्रणने शुद्ध करनार छे.

अघेडो, गरमाळो, लींबडो, कडवी घीसोडी, तिल, उभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, हरताल,

१ स्वरस, क्काथ, हिम अथवा फांट. लीली औषधिओ लावी तेओने ते वखतेज खांडी अथवा वाटीने तेओनो रस कपडांथी गाळी लेवामां आवे ते स्वरस केहेवाय छे. औषधने खांडी अथवा वाटी पाणीमां पळाळी राखी आखी रात एमनेएम रेहेवा दईने सवारे गाळी लेवुं ते हिम केहेवाय छे. औषधना बारीक चूर्णने माटीना वासणमां नाखी तेमां उनुं पाणी नाखीने पछी कपडाथी गाळी लेवुं ए फांट केहेवाय छे.

२ आ गण आ सूत्रस्थानना ३८ मा अध्यायमां जुवो.

३ आनो गुजरातीमां खरो पर्याय मळतो नथी.

४ सींधालूण, साभरलूण, दरीयाईलूण, बीडलूण अने संचळ.

मणशील अने शोधन करनारी वाटनां उपर कहेलां द्रव्यो अथवा विरेचन द्रव्यो ए पदार्थोनुं तेल बनाववुं. आ तेल पण व्रणने शुद्ध करनार छे.

हीराकसी, सैंधव, मदिरानी नीचेनो कदडो, वज, हळदर, दारुहळदर अने शोधननी, वाटने माटे कहेलां नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्यो एओनुं चूर्ण बनाववुं. आ चूर्ण पण व्रणने शुद्ध करनार छे.

शालसारादि[1] गणना सार, पटोल अने त्रिफळा (हरडां बेहेडां आमळां) एओनी तथा वमन विरेचननां द्रव्योनी रसक्रिया करवी. आ रसक्रिया पण व्रणने शुद्ध करनार छे. (रसक्रिया करवानी रीति एम छे के द्रव्योमां तेओथी आठगणुं अथवा सोळगणुं पाणी नाखी आठमो भाग अथवा सोळमो भाग अवशेष रहे एवो क्काथ करवो. पछी ते क्काथने गाळी लई पाछो अग्निपर चडावी तेनो मलम जेवो रगडो बनावीने चोपडवो.)

चंद्रस, राळ, सरल नामनो देवदार, देवदार अने शालसारादिक गणना पदार्थो एओनी धुमाडी देवाथी पण व्रण शुद्ध थाय छे माटे बुद्धिमान् वैद्ये ते धुमाडी पण देवी.

७ कषायाणामनुष्णानां वृक्षाणां त्वक्षु साधितम्।
शृतं शीतं कषायं वा रोपणार्थेषु शस्यते ॥
सोमामृताश्वगन्धासु काकोल्यादौ गणे तथा।
क्षीरिप्ररोहेष्वपि च वर्तयो रोपणाः स्मृताः ॥
समङ्गा सोमसरला सोमवल्का सचन्दना।
काकोल्यादिश्च कल्कः स्यात्प्रशस्तो व्रणरोपणे ॥
पृथक्पर्ण्यात्मगुप्ता च हरिद्रे मालती सिता।
काकोल्यादिश्च योज्यः स्यात्प्रशस्तो रोपणे घृते ॥
कालानुसार्याऽगुरुणी हरिद्रे देवदारु च।
प्रियङ्गवश्च रोध्रं च तैले योज्यानि रोपणे ॥
कङ्गुका त्रिफला रोध्रं कासीसं श्रवणाह्वया।
धवाश्वकर्णयोस्त्वक्च रोपणं चूर्णमिष्यते ॥
प्रियङ्गुका सर्जरसः पुष्पकासीसमेव च।
त्वक्चूर्णं धवजं चैव रोपणार्थं प्रशस्यते ॥
त्वक्षु न्यग्रोधवर्गस्य त्रिफलायां तथैव च।
रसक्रियां रोपणार्थे विदधीत यथाक्रमम् ॥

व्रणोनुं रोपण (व्रणमां भरती लावनार.)

७ वड, उंबरो, पीपळो तथा मोटी पीपर इत्यादि अनुष्ण कषाय वृक्षोनी छालनो क्काथ अथवा हिम करवो अथवा ए छालोनो फांट के स्वरसज करवो. आ क्काथ, हिम, फांट अथवा स्वरस व्रणमां धरती लाववाना काममां उत्तम छे.

सोमवल्ली अथवा ब्राह्मी, गळो, आसोंद, काकोल्यादि गण अने क्षीरिवृक्षोना[2] अंकुरो एओनो कल्क चोपडीने करेली वाटो पण व्रणनुं रोपण करवामां उत्तम छे.

रीसामणी, सोमवल्ली, सरल नामनो देवदार, कायफळ, रतांजलि अने काकोल्यादि गण एओनो कल्क पण व्रणनुं रोपण करवामां उत्तम छे.

पृश्निपर्णी[3], कौचां, हळदर, दारूहळदर, मालती, साकर अथवा सफेद धोकड अने काकोल्यादि गण एओनुं घी पण व्रणनुं रोपण करवामां उत्तम छे.

तगर, अगरू, हळदर, दारूहळदर, देवदार, घउलां अने लोदर एओनुं तैल पण व्रणनुं रोपण करवामां उत्तम छे.

कांग, त्रिफळा (हरडे बेहेडां आमळां) लोदर, हीराकशी, गोरखमुंडी, धावडानी छाल अने राळना झाडनी छाल एओना चूर्णथी पण व्रणनुं रोपण थाय छे.

कांग अथवा घउलां, राळ, सफेद रंगनी हीराकसी अने धावडानी छाल एओनुं चूर्ण पण व्रणनुं रोपण करवामां स्वीकारेलुं छे.

न्यग्रोधादि[4] वर्गनी छालनो अने त्रिफळानो

१ आ गण आ सूत्रस्थानना ३८ मा अध्यायमां जुवो.

२ वड, उंबरो, पीपळो, पारसपीपळो अने पीपर ए पांच क्षीरिवृक्षो केहेवाय छे.

३ आनो पर्याय गुजरातीमां यथार्थ मळतो नथी.

४ आ वर्ग आ सूत्रस्थानना ३८ मा अध्यायमां जोवो.

क्वाथ करी ते क्वाथने गाळी लई पाछो अग्निपर चडावी जाडो रगडो बनावीने चोपडवो. ए रसक्रिया व्रणनुं रोपण करवानेमाटे योग्य समये करवी.

८ अपामार्गोऽश्वगन्धा च तालपत्री सुवर्चला । उत्सादने प्रशस्यन्ते काकोल्यादिश्च यो गणः ॥

व्रणनुं उत्सादन (व्रणमां मांसनी वृद्धि करनार.)

८ अघेडानां मूळ, आसोंद, मुसली, सुरजमुखीनुं मूळ, अने काकोल्यादि गण एओनो लेप व्रणनी अंदर मांस वधारवाना काममां उत्तम छे.

९ कासीसं सैन्धवं किण्वं कुरुविन्दो मनःशिला। कुक्कुटाण्डकपालानि सुमनोमुकुलानि च ॥ फले शैरीषकारञ्जे धातुचूर्णानि यानि च । व्रणेषूत्सन्नमांसेषु प्रशस्तान्यवसादने ॥

व्रणनुं अवसादन (व्रणना अधिक मांसने तोडी नाखनार.)

९ हीराकसी, सैंधव, मदिरानुं बीज, (नीचेनो रगडो) जरा पीळाशवाळुं माणक, मणशील, कुकडाना ईंडानां खोपरां, जाईनी कळीओ, सरसडीआनुं फळ, करंजनुं फळ अने हरताल तथा हीराकसी वगेरे धातुओनां चूर्णो एओनो लेप व्रणोमां अधिक थएला मांसने तोडी नाखवामां उत्तम छे.

१० समस्तं वर्गमर्द्धं वा यथालाभमथापि वा । प्रयुञ्जीत भिषक्प्राज्ञो यथोद्दिष्टेषु कर्मसु ॥

शोधन तथा रोपण वगेरेना औषधोना वर्गो सघळा न मळे तो केम करवुं?

१० विद्वान् वैद्ये आ मिश्रकाध्यायमां, 'द्रव्यसंग्रहणीय' नामना ३८ मा अध्यायमां अने 'संशोधनसंशमनीय' नामना ३९ मा अध्यायमां औषधोना जे जे वर्गो केहेवामां आव्या छे तेओमांथी जे जे वर्ग संपूर्ण मळे तेनो संपूर्णनो, अरधो मळे तेनो अर्द्धनो अने अर्द्ध पण न मळे तो जेटलो मळे तेटलानो यथोक्त कर्मोमां उपयोग करवो.

अध्याय ३७ मो.

१ अथातो भूमिप्रविभागविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'भूमिप्रविभागविज्ञानीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनां पास कहेलु छे.

२ श्वभ्रशर्कराश्मविषमवल्मीकश्मशानाऽऽयतनदेवतायतनसिकताभिरनुपहतामनूषरामभङ्गुरामदूरोदकां स्निग्धां प्ररोहवतीं मृद्वीं स्थिरां समां कृष्णां गौरीं लोहितां वा भूमिमौषधार्थं परीक्षेत ।

तस्यां जातमपि कृमिविषशस्त्रातपपवनदहनतोयसंबाधमार्गैरनुपहतमेकरसं पुष्टं पृथ्ववगाढमूलमुदीच्यां चौषधमाददीत । इत्यौषधभूमिपरीक्षाविशेषः सामान्यः ॥

औषधो लेवानेमाटे पृथ्वीनी सामान्य परीक्षा अने ते पृथ्वीमांथी लेवानां औषधोनी सामान्य परीक्षा.

२ जेमांथी औषधिओ लेवी होय ते पृथ्वी एवी जोइए के जे खाडाओथी, कांकरीओथी तथा पथराओथी विषमता पामेली न होय, राफड[1]ओथी, श्मशानथी, प्राणिओना वधस्थानथी, देवस्थानथी, के रेतीथी उपहत थएली न होय, खारी न होय, जेमां रेखाओ पडी गई होय एवी न होय, जेमां जळ दूर होय एवी न होय, चीकणी होय, बीजां-

१ पृथ्वीना औषधिओ लवा लायक सारा भागोनी परीक्षा वगेरे विषयोवाळो.

कुरोनी सारी उत्पत्तिवाळी होय, कोमळ होय, जेनी माटी वायुथी के वरसाद वगेरेथी जती रही न होय, एवी होय, सपाट होय, अने काळा रंगवाळी, सोनेरी रंगवाळी के राता रंगवाळी होय. वैद्ये औषधिओ लेवानेमाटे आवी पृथ्वीनी परीक्षा करवी.

एवी पृथ्वीमां उत्पन्न थएली औषधिओ पण एवी लेवी के जेओ कीडाओथी, विषथी, शस्त्रोथी, तडकाथी, पवनथी, अग्निथी, जळथी के सांकडा रस्ताओथी उपहत थएली न होय, उत्कृष्ट रसवाळी होय, पुष्ट होय, जाडी छालवाळी होय अने उंडां मूळोवाळी होय. वैद्ये उत्तराभिमुख रहीने औषधिओनुं ग्रहण करवुं.

औषधिओनी अने पृथ्वीनी आ सामान्य परीक्षा कही.

३ विशेषतस्तु । तत्राश्मवती स्थिरा गुर्वी श्यावा कृष्णा वा स्थूलवृक्षशस्यप्राया स्वगुणभूयिष्ठा ॥

स्निग्धा शीतलाऽऽसन्नोदका स्निग्धशस्यतृणा कोमलवृक्षप्राया शुक्लाऽम्बुगुणभूयिष्ठा ॥

नानावर्णा लघ्वश्मवती प्रविरलाल्पपाण्डुवृक्षप्ररोहाऽग्निगुणभूयिष्ठा ॥

रूक्षा भस्मरासभवर्णा तनुरूक्षकोटराल्परसवृक्षप्रायाऽनिलगुणभूयिष्ठा ॥

मृद्वी समा श्वभ्रवत्यव्यक्तरसजला सर्वतोऽसारवृक्षा महापर्वतवृक्षप्राया श्यामा चाकाशगुणभूयिष्ठा ॥

पृथ्वीनी विशेष परीक्षा.

३ पृथ्वीनी विषेष परीक्षा नीचे प्रमाणे करवी. जे पृथ्वी पथराओवाळी, पवनथी के वरसादथी नहीं गएली माटीवाळी, भारे, झाझी अथवा थोडी काळाशवाळी अने घणखरां स्थूल वृक्षोवाळी तथा स्थूल तृणोवाळी होय तेने पोताना गुणना (पार्थिव गुणना) आधिक्यवाळी समजवी.

जे पृथ्वी स्निग्ध, शीतल, नजदीक जळवाळी, सफेद, घणखरां कोमळ वृक्षोवाळी अने घणखरां स्निग्ध धान्योवाळी तथा स्निग्ध तृणोवाळी होय तेने जळना गुणना आधिक्यवाळी समजवी.

जे पृथ्वी अनेक वर्णोवाळी, नाहाना तथा हलका पथराओवाळी अने जेमां वृक्षो पांखां, अल्प तथा पांडु वर्णवाळां थतां होय एवी होय तेने अग्निना गुणना आधिक्यवाळी समजवी.

जे पृथ्वी रूक्ष, भस्मना जेवा के गधेडाना जेवा वर्णवाळी, अने जेमां घणखरां वृक्षो नाहानां, रूक्ष, कोतरोवाळां तथा अल्परसवाळां थतां होय एवी होय तेने वायुना गुणना आधिक्यवाळी समजवी.

जे पृथ्वी कोमळ, सपाट, कोतरोवाळी, अस्फुट रसवाळी, अस्फुट जळवाळी, चोमेर निस्सार वृक्षोवाळी, घणखरा प्रदेशोमां मोटा पर्वतो तथा मोटा वृक्षोवाळी अने श्याम वर्णवाळी होय तेने आकाशना गुणना आधिक्यवाळी समजवी.

४ तत्र केचिदाहुराचार्याः । प्रावृड्वर्षाशरद्धेमन्तवसन्तग्रीष्मेषु यथासंख्यं मूलपत्रत्वक्क्षीरसारफलान्याददीतेति । तत्तु न सम्यक् । कस्मात्सौम्याग्नेयत्वाज्जगतः । सौम्यान्यौषधानि सौम्येष्वृतुष्वाददीताग्नेयान्याग्नेयेष्वेवमव्यापन्नगुणानि भवन्ति ॥ सौम्यान्यौषधानि सौम्येष्वृतुषु गृहीतानि सोमगुणभूयिष्ठायां भूमौ जातान्यतिमधुरस्निग्धशीतानि जायन्ते । एतेन शेषं व्याख्यातम् ॥

कई ऋतुओमां कयां औषधो लेवां?

४ आ विषयमां केटलाएक आचार्यो केहे छे के " प्रावृष् ऋतुमां मूळरूप, वर्षाऋतुमां पानडांरूप, शरदृऋतुमां छालरूप, हेमंतऋतुमां छीररूप, वसंतऋतुमां साररूप अने ग्रीष्मऋतुमां फळरूप औषधो लेवां. " पण ए आचार्योनुं ए केहवुं बराबर नथी. कारण के सघळुं जगत सौम्य (चंद्रमय) अने आग्नेय(अग्निमय)ज छे माटे ऋतुओनी शीतलता अने उष्णता उपरथीज औ-

षधो लेवानी कल्पना करवी योग्य छे. जेटलां औषधो सौम्य (शीतलतावाळां) छे तेओने सौम्य ऋतुओमां लेवां अने जेटलां औषधो आग्नेय (उष्णतावाळां) छे तेओने आग्नेय ऋतुओमां लेवां. केम के दरएक औषधो पोतपोताना स्वभावने लगती ऋतुओमां अव्यापन्न (नहीं बगडेला) गुणोवाळां होय. सौम्य औषधो जळना गुणोना आधिक्यवाळी पृथ्वीमां उत्पन्न थयां होय अने वळी तेओ सौम्य ऋतुओमां लेवामां आवे तो अत्यंत मधुर, अत्यंत स्निग्ध अने अत्यंत शीतलज रहे. बाकीनुं जे केहेवानुं रह्युं ते आ उपरथी केहेवाई गयुं समजवुं. (आग्नेय औषधो अग्निना गुणोना आधिक्यवाळी पृथ्वीमां उत्पन्न थयां होय अने वळी तेओ आग्नेय ऋतुओमांज लेवामां आवे तो पोताना गुणोथी भरपूरज रहे.)

५ तत्र पृथिव्यम्बुगुणभूयिष्ठायां भूमौ जातानि विरेचनद्रव्याण्याददीत । अग्न्याकाशमारुतगुणभूयिष्ठायां वमनद्रव्याणि । उभयगुणभूयिष्ठायामुभयतोभागानि । आकाशगुणभूयिष्ठायां संशमनानि । एवं बलवत्तराणि भवन्ति ।

कया कया कामनां औषधो कयां कयां तत्वोना गुणोना आधिक्यवाळी पृथ्वीमां उत्पन्न थयां होय तो बलवत्तर थाय छे ?

५ विरेचननां औषधो पृथ्वीना तथा जळना गुणोना आधिक्यवाळी पृथ्वीमां उत्पन्न थएलां होय ते लेवां. वमननां औषधो अग्निना, आकाशना तथा वायुना गुणोना आधिक्यवाळी पृथ्वीमां उत्पन्न थएलां होय ते लेवां. जेओथी विरेचन अने वमन बन्ने थाय एवां औषधो पृथ्वी वगेरे पांचे भूतोना गुणोना आधिक्यवाळी पृथ्वीमां उत्पन्न थएलां होय ते लेवां. संशमन औषधो एटले विरेचन के वमन कशुं नहीं करावतां व्याधिनी साथे एक थई जईने पोतेज व्याधिने शमावे छे तेओ आकाशना गुणोना आधिक्यवाळी पृथ्वीमां उत्पन्न थएलां होय ते लेवां. आ प्रमाणे लेवाएलां औषधो बलवत्तर थाय छे.

६ सर्वाण्येव चाभिनवान्यन्यत्र मधुघृतगुडपिप्पलीविडङ्गेभ्यः । सर्वाण्येव सक्षीराणि वीर्यवन्ति । तेषामसंपत्तावनतिक्रान्तसंवत्सराण्याददीतेति ॥

कयां औषधो नवां लेवां, कयां औषधो जुनां लेवां अने जे नवां लेवानां होय ते नवां न मळे तो केटला वखतना जूनां चाली शके?

६ मध. घी, गोळ, पीपळ अने वावडींग एओ शिवाय सघळां औषधो नवांज लेवां. केम के रस भरेलां औषधोज सामर्थ्यवाळां होय ए स्वाभाविक छे. परंतु नवां न मळे तो जेओने एक वर्ष वीती गयुं न होय एवां लेवां. (नवां लेवां एटले पाक्या पछीना तुरतना काळमांज लेवां एम समजवुं पण उत्पन्न थया पछी तुरतज लेवां एम समजवुं नहीं.)

७ भवन्ति चात्र ।
गोपालास्तापसा व्याधा ये चान्ये वनचारिणः।
मूलाहाराश्च ये तेभ्यो भेषजव्यक्तिरिष्यते ॥

औषधिओनी ओळखाण शीरीते मेळववी?

७ आ स्थलना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "गाय वगेरे पशुओने चारनारा लोको, तपस्वी लोको, पाराधी लोको, जंगलोमांज फरनारा म्लेच्छादिक लोको अने कंदमूळादिकनो आहार करीने जीवनारा लोको एओने पूछीपूछीने औषधिओनी ओळखाण मेळववी.

८ सर्वावयवसाध्येषु पलाशलवणादिषु ।
व्यवस्थितो न कालोऽस्ति तत्र सर्वो विधीयते॥

अमुक योगोमां 'नवां औषधोज लेवां' ए नियम नथी.

८ पत्रलवण वगेरे योगो के जेओमां औष-

धोना मूळ आदि सघळा अवयवो लेवाय छे तेओमां 'अमुक ऋतुमांज लेवां' ए कशो नियम नथी. एओमां प्रावृष्आदि सर्व समयनां औषधो लेवानी छुट छे. (पत्रलवणयोग चिकित्सास्थानना वातव्याधि नामना चोथा अध्यायना २४ मा विषयमां केहेवामां आवशे.)

९ गन्धवर्णरसोपेता षड्विधा भूमिरिष्यते ।
तस्माद्भूमिस्वभावेन बीजिनः षड्रसायुताः ॥
अव्यक्तः किल तोयस्य रसो निश्चयनिश्चितः
रस एव स चाव्यक्तो व्यक्तो भूमिरसाद्भवेत् ॥
सर्वलक्षणसंपन्ना भूमिः साधारणी स्मृता ।
द्रव्याणि यत्र तत्रैव तद्गुणानि विशेषतः ॥

औषधोनी उत्पत्तिभूमिनी परीक्षा करवानो मूळ हेतु.

९ पृथ्वी शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पांचे गुणोथी युक्त छे अने ते पोताना गुणना आधिक्यवाळी, जळना गुणना आधिक्यवाळी, अग्निना गुणना आधिक्यवाळी, वायुना गुणना आधिक्यवाळी, आकाशना गुणना आधिक्यवाळी अने सर्व गुणोना आधिक्यवाळी ए रीते छ प्रकारनी छे. आम छे एटला माटे वृक्षो पृथ्वीना स्वभाव प्रमाणेज छ रसोथी युक्त थाय छे अथवा छए रसो पृथ्वीना स्वभावनी साथे मळीनेज वृक्षोरूप थाय छे. जो के रस जळनोज गुण छे ए वात प्रमाणसिद्ध छे तो पण जळमां रहेलो रस अव्यक्त छे अने ते अव्यक्त रसज पृथ्वीना संबंधथी मधुर आदिपणाने प्राप्त थाय छे. पृथ्वी पांचे भूतोनां लक्षणोथी संपन्न छे तेथी तेने सर्व गुणोना साधारण आश्रयरूप मानवामां आवी छे. ए पृथ्वीमांज ते ते स्थलोमां सर्व औषधो उत्पन्न थाय छे माटे विशेषे करी सर्व औषधो पृथ्वीना गुणोवाळांज थाय छे.

१० विगन्धेनापरामृष्टमविपन्नं रसादिभिः ।
नवं द्रव्यं पुराणं वा ग्राह्यमेवं विनिर्दिशेत् ॥
विडङ्गं पिप्पली क्षौद्रं सर्पिश्चाप्यनवं हितम् ।
शेषमन्यत्त्वभिनवं गृह्णीयाद्दोषवर्जितम् ॥

नवुं अथवा जूनुं औषध केवी स्थितिनुं लेवुं?

१० नवुं लेवानुं के जूनुं लेवानुं जे कोई औषध विरुद्धगंधना संबंधवाळुं न थयुं होय अने रसादिकना बगडेलापणाथी रहित होय ते लेवुं. वावडींग, पीपळ, मध, घी अने गोळ एटलां औषधो जुनां होय तो हितकारी छे पण तेओ जो विरुद्धगंधथी के रसादिकना बगाडथी युक्त थयां होय तो त्याज्य छे. बाकीनां सघळां औषधो नवां होय तो हितकारी छे पण तेओ जो विरुद्धगंधथी के रसादिकना बगाडथी युक्त थयां होय तो त्याज्य छे.

११ जङ्गमानां वयःस्थानां रक्तरोमनखादिकम् ।
क्षीरमूत्रपुरीषाणि जीर्णाहारेषु संहरेत् ॥

जंगम औषधोना पदार्थो लेवानो नियम.

११ रुधिर, वाळ तथा नख वगेरे जे पदार्थो पशु वगेरे जंगमोना लेवाय छे ते पदार्थो जुवान जंगमोनाज लेवा पण बालक के वृद्ध जंगमोना लेवा नहीं. जंगमोनां दूध, मूत्र के छाण लेवानां होय तेओ, जंगमोए करेलो आहार जीर्ण थया पछीनांज लेवां.

१२ प्लोतमृद्भाण्डफलकशङ्कुविन्यस्तभेषजम् ।
प्रशस्तायां दिशि शुचौ भेषजागारमिष्यते ॥

औषधो राखवानी शाळा केवी जोइए?

१२ औषधोनी शाळा उत्तर अथवा पूर्व दिशामां जोईए अने पवित्र तथा स्वच्छ प्रदेशमां जोईए. ए शाळानी अंदर औषधो योग्यता प्रमाणे वस्त्रोमां, माटीनां वासणोमां, पाटीयांओ उपर अने खीलाओ उपर तैयार राखेलां होवां जोईए.

अध्याय ३८ मो.

१ अथातो द्रव्यसंग्रहणीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'द्रव्यसंग्रहणीयं' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ समासेन सप्तत्रिंशद्द्रव्यगणा भवन्ति ॥

द्रव्योना गणोनी संक्षिप्त संख्या.

२ संक्षेपथी गणतां द्रव्योना गणो साडत्रीश ३७ छे.

३ तद्यथा । विदारिगन्धा विदारी सहदेवा विश्वदेवा श्वदंष्ट्रा पृथक्पर्णी शतावरी सारिवा कृष्णसारिवा जीवकर्षभकौ महासहा क्षुद्रसहा बृहत्यौ पुनर्नवैरण्डो हंसपादी वृश्चिकाल्यृषभी चेति ॥

विदारिगन्धादिरयं गणः पित्तानिलापहः ।
शोषगुल्माङ्गमर्दोर्ध्वश्वासकासविनाशनः ॥

विदारिगंधादि गण अने तेना गुणो.

३ शालिपर्णी, विदारीकंद, (फगवेलानो कंद) सहदेवा, (पीळां फूलवाळी खपाट–कांकसी अथवा पीळां फूलवाळी महाबला के जे बलदाणानी जात छे ते.) विश्वदेवा, (गंगेटी) गोखरू, पृथक्पर्णी, शतावरी, सारिवा, (कपूरी) काळी कपूरी, जीवक, ऋषभक, जंगली अडद (अडबाउ अडद) जंगली मग (अडबाउ मग) उभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, साटोडी, एरडो, हंसराज, वृश्चिकाली, (जरा रुंछाडवाळी अने जमणी तरफ आवर्त्तवाळी तथा सफेद फूलवाळी मेंढाशींगी) अने कौवच ए वीश द्रव्यो मळीने **विदारिगंधादि** गण केहेवाय छे.

आ विदारिगंधादि गण पित्तने तथा वातने मटाडनार छे अने शोष, गुल्म, अंगमर्द, उर्ध्वश्वास तथा खांसी एओने नष्ट करनार छे.

४ आरग्वधमदनगोपघोण्टाकुटजपाठाकण्टकिपाटलामूर्वेन्द्रयवसप्तपर्णनिम्बकुरुण्टकदासीकुरुण्टकगुडूचीचित्रकशार्ङ्गेष्टाकरञ्जद्वयपटोलकिराततिक्तकानि सुषवी चेति ॥

आरग्वधादिरित्येष गणः श्लेष्मविषापहः ।
मेहकुष्ठज्वरवमीकण्डूघ्नो व्रणशोधनः ॥

आरग्वधादि गण अने तेना गुणो.

४ गरमाळो, मींढोळ, कंटोली अथवा एक जातनुं सोपारी, इंद्रजवनुं झाड, काळीपाड, वीकळो, पाडल, मूर्वा, इंद्रजव, सप्तपर्ण, लींबडो, पीळां फूलवाळो कांटाअशेरीयो, आशमानी फूलवाळो कांटाअशेरीयो, गळो, चित्रो, पीलूडी अथवा

---

१ द्रव्योना गणपाठविषेनो.

२ विदारिगंधादि गणमां शालिपर्णी, पृथक्पर्णी, जीवक अने ऋषभक ए चार द्रव्योना गुजराती पर्यायो मळताज नथी. जीवक अने ऋषभक तो कोईनी पण ओळखाणमां नथी. भावप्रकाश केहे छे के 'जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि अने वृद्धि ए आठ कंदो राजाओने पण अति दुर्लभ छे.' आ आठनां नामो संस्कृत भाषा शिवाय बीजी कोई पण भाषामां मळतां नथी तेथी कोई रीते एओनो शोध करी शकातो नथी. सालम वगेरे पौष्टिक कंदो हाल मळे छे पण तेओनां नामो संस्कृत वैद्यकना कोई पण प्राचीन ग्रंथमां मळतां नथी तेथी शंका थाय छे के रखेने ए कंदो जीवक आदि आठमांना होय? आ गणपाठोमां लखेलां जे द्रव्योना विशिष्ट गुणो अन्नपान विधि नामना आ सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायमां जोवामां न आवे तेओना गुणोनो सामान्य निर्णय आ गणपाठो उपरथीज करी लेवो. 'वृश्चिकाली' ए नाम चमारदुधेलीनुं पण छे अने तेना गुणो पण आ गणना गुणोथी मळता आवे छे.

३ जेमांथी धनुषनी दोरी बनावाय छे ते मूर्वा एम केहेवाय छे पण हजीसुधी गुजरातीमां तेनो पर्याय मळ्यो नथी.

४ आ झाडनी एक डांखलीमां सात सात पानडां थाय छे अने ते झाड गोवा तरफ थाय छे.

अधेडी, करंज, गुच्छकरंज पटोळ, करीयातुं अने कारेली ए एकवीश द्रव्यो मळीने **आरग्वधादि** गण केहेवाय छे.

आ आरग्वधादि गण कफने, प्रमेहने, कोढने, ज्वरने, वमनने, तथा खरजने मटाडनार छे अने व्रणने शुद्ध करनार छे.

५ वरुणार्तगलशिग्रुमधुशिग्रुतर्कारीमेषशृङ्गीपूतीकनक्तमालमोरटाग्निमन्थसैरीयकद्वयबिम्बीवसुकवसिरचित्रकशतावरीबिल्वाजशृङ्गीदर्भा बृहतीद्वयं चेति ॥

वरुणादिर्गणोह्येष कफमेदोनिवारणः ।
विनिहन्ति शिरःशूलं गुल्माभ्यन्तरविद्रधीन् ॥

वरुणादि गण अने तेना गुणो.

५ वायवरणां, काळां फूलवाळो कांटाअशेरीओ, सरगवो, रातो सरगवो, अरणी, चमारदुधेली, गुच्छकरंज, करंज, मोरट, मोटी अरणी, रातां फूलवाळो कांटाअशेरीयो. आशमानी फूलवाळो कांटाअशेरीओ, कडवी टींडोरी, आकडो, गजपीपळ, चित्रो, शतावरी, बीली, मेंढाशींगी, दर्भ, उभी भोरींगणी अने बेठी भोरींगणी ए बावीश द्रव्यो मळीने **वरुणादि** गण केहेवाय छे[१].

आ वरुणादि गण कफने, मेदने, माथाना शूलने, गुल्मने अने अंदरना विद्रधिने मटाडनार छे.

६ वीरतरुसहचरद्वयदर्भवृक्षादनीगुन्द्रानलकुशकाशाश्मभेदकाग्निमन्थमोरटावसुकवसिरभल्लूककुरुण्टकेन्दीवराकपोतवङ्काः श्वदंष्ट्रा चेति ॥

वीरतर्वादिरित्येष गणो वातविकारनुत् ।
अश्मरीशर्करामूत्रकृच्छ्राघातरुजापहः ॥

वीरतर्वादि गण अने तेना गुणो.

६ वेलतरु के जे सफेद तथा लाल फूलवाळो मारवाड तरफ थाय छे ते, रातां फूलवाळो कांटाअशेरीयो, आशमानी फूलवाळो कांटाअशेरीयो, दर्भ, बांदो, (एक वृक्ष उपर बीजुं वृक्ष थाय छे ते) पान्य, बरु, नाहानो दर्भ, कांसडो, पाषाणभेद, अरणी, मोरटा, सफेद फूलनो आकडो, अघेडो, अरडूसो, आगियो, चमारदुधेली, सूरजमुखी अने गोखरू ए ओगणीश द्रव्यो मळीने **वीरतर्वादि** गण केहेवाय छे[२].

आ वीरतर्वादि गण वायुना विकारोने, पथरीने, कांकरीने, मूत्रकृच्छ्रने अने मूत्राघातने मटाडनार छे.

७ सालसाराजकर्णखदिरकदरकालस्कन्धक्रमुकभूर्जमेषशृङ्गीतिनिशचन्दनकुचन्दनशिंशपाशिरीषासनधवार्जुनतालशाकनक्तमालपूतीकाश्वकर्णाऽगुरूणि कालीयकं चेति ॥

सालसारादिरित्येष गणः कुष्ठविनाशनः ।
मेहपाण्ड्वामयहरः कफमेदोविशोषणः ॥

सालसारादि गण अने तेना गुणो.

७ सागनो सार, नाहानुं राळनुं झाड, खेर, सफेद खेर, उंबरो, सोपारी, भोजपत्रनुं झाड, काकडाशिंगी, मींणोहरमो, सुखड, रतांजलि, शीशम, सरसडीयो, बीबलो, धावडो, कडायो, ताड, शाक, (सागनीज एक जात) करंज, गुच्छकरंज, राळनुं झाड, अगरू अने पीळी सुखड ए त्रेवीश द्रव्यो मळीने **सालसारादि** गण केहेवाय छे.

आ सालसारादि गण कोढ, प्रमेह, तथा पांडुरोग, एओने मटाडनार छे अने कफने तथा मेदने सुकावनार छे.

८ रोध्रसावररोध्रपलाशकुटन्नटाशोकफञ्जीकट्फलैलवालुकसल्लकीजिङ्गिनीकदम्बसालाः कदली चेति ॥

एष रोध्रादिरित्युक्तो मेदःकफहरो गणः ।
योनिदोषहरः स्तम्भी व्रण्यो विषविनाशनः ॥

रोध्रादि गण अने तेना गुणो.

८ लोदर, पठाणी लोदर, खाखरो, अरडूसो,

१ आ गणमां मोरट शब्दनो गुजराती पर्याय मळ्यो नथी.

२ आ गणमां मोरटानो गुजराती पर्याय मळ्यो नथी. संस्कृतमां तो मूर्वा पर्याय शब्द छे.

आसोपालव, भारंगी, कायफळ, एलवालुक, सालेडो, (किंदरूनुं झाड) मवेडी, कदंब, साग अने केळ ए तेर द्रव्यो मळीने **रोध्रादि** गण केहेवाय छे[1].

आ रोध्रादि गण मेदने, कफने तथा योनिना दोषने हरनार छे, अतिसारादिकने रोकनार छे, व्रणने माटे सारो छे अने विषनो नाश करनार छे.

९. अर्कालर्ककरञ्जद्वयनागदन्तीमयूरकभार्गीरास्नेन्द्रपुष्पीक्षुद्रश्वेतामहाश्वेतावृश्चिकाल्यलवणास्तापसवृक्षश्चेति ।
अर्कादिको गणो ह्येष कफमेदोविषापहः ।
कृमिकुष्ठप्रशमनो विशेषाद्व्रणशोधनः ॥

अर्कादि गण अने तेना गुणो.

९ आकडो, सफेद आकडो, करंज, गुच्छकरंज, नेपाळो, अघेडो, भारंगी, रास्ना, दुधीयो वछनाग, काळी गरणी, सफेद गरणी, चमारदुधेली, मालकांकणी अने इंगोळीओ ए चौद द्रव्यो मळीने **अर्कादि** गण केहेवाय छे.

आ **अर्कादि** गण कफने, मेदने तथा विषने मटाडनार छे, कृमिओने तथा कोढने शांत करनार छे अने विशेषे करी व्रणने शुद्ध करनार छे.

१० सुरसाश्वेतसुरसाफणिज्झकार्जकभूस्तृणसुगन्धकसुमुखकालमालकासमर्दक्षवकखरपुष्पाविडङ्गकट्फलसुरसीनिर्गुण्डीकुलहलोन्दुरुकर्णिकाफञ्जीप्राचीवलकाकमाच्यो विषमुष्टिकश्चेति ।
सुरसादिर्गणो ह्येष कफहृत्कृमिसूदनः ।
प्रतिश्यायारुचिश्वासकासघ्नो व्रणशोधनः ॥

सुरसादि गण अने तेना गुणो.

१० काळी तुलसी, धोळी तुलसी, मरवो, रामतुलसी, रोहिसखड, मोटुं सुगंधी खड, राई, बीजी जातनी काळी तुलसी, कासोंदरो, नाकछीकणी; जंगली तुलसी, वावडींग, कायफळ, धोळी नगड, काळी नगड, गोरखमुंडी, उंदरकन्नी, भारंगी, अघेडी, पीलुडी, अने बकान ए एकवीश द्रव्यो मळीने **सुरसादि** गण केहेवाय छे.

आ सुरसादि गण कफने, कृमिओने, प्रतिश्यायने, अरुचिने, श्वासने तथा खांसीने टाळनार छे अने व्रणने शुद्ध करनार छे.

११ मुष्ककपलाशधवचित्रकमदनवृक्षशिंशपावज्रवृक्षास्त्रिफला चेति ॥
मुष्ककादिर्गणो ह्येष मेदोघ्नः शुक्रदोषहृत् ।
मेहार्शःपाण्डुरोगघ्नः शर्कराश्मरिनाशनः ॥

मुष्ककादि गण अने तेना गुणो.

११ मखरो, खाखरो, धावडो, चित्रो, मींढोळनुं झाड, शीशम, थोर अने हरडे, बेहेडां तथा आमळां ए दश द्रव्यो मळीने **मुष्ककादि** गण केहेवाय छे.

आ मुष्ककादि गण मेदने, प्रमेहने, अरशने, पांडुरोगने, पथ्थरीने तथा कांकरीने नष्ट करनार छे अने वीर्यना दोषने हरनार छे.

१२ पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृङ्गवेरमरिचहस्तिपिप्पलीहरेणुकैलाजमोदेन्द्रयवपाठाजीरकसर्षपमहानिम्बफलहिङ्गुभार्गीमधुरसातिविषावचाविडङ्गानि कटुरोहिणी चेति ॥
पिप्पल्यादिः कफहरः प्रतिश्यायानिलारुचीः ।
निहन्याद्दीपनो गुल्मशूलघ्नश्चामपाचनः ॥

पिप्पल्यादि गण अने तेना गुणो.

१२ पीपळ, पीपळीमूळ, चवक, चित्रो, सुंठ, मरी, गजपीपळ, हरेणुका, एळची, बोडीअजमोद, इंद्रजव, काळीपाड, जीरूं, सर्षप, बकाननां फळ, हींग, भारंगी, मूर्वा, अतवस, वज, वावडींग अने कडु ए बावीश द्रव्यो मळीने **पिप्पल्यादि** गण केहेवाय छे[2].

---

१ आ गणमां एलवालुकनो गुजराती पर्याय मळ्यो नथी.

२ आ गणमां हरेणुकानो तथा मूर्वानो पर्याय शब्द गुजरातीमां मळ्यो नथी.

. आ पिप्पल्यादि गण कफने, प्रतिश्यायने, वायुने, अरुचिने, गुल्मने तथा शूलने मटाडनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने आमने पकावनार छे.

१३ एलातगरकुष्ठमांसीध्यामकत्वकपत्रनागपुष्पप्रियङ्गुहरेणुकाव्याघ्रनखशुक्तिचण्डास्थौणेयकश्रीवेष्टकचोचचोरकवालकगुग्गुलुसर्जरसतुरुष्ककुन्दरुकाऽगुरुस्पृक्कोशीरभद्रदारुकुङ्कुमानि पुंनागः केसरं चेति ।

एलादिको वातकफौ निहन्याद्विषमेव च ।
वर्णप्रसादनः कण्डूपिडकाकोठनाशनः ॥

एलादि गण अने तेना गुणो.

१३ एळची, तगर, कठ, जटामांसी, रोहिस खड, तज, तमालपत्र, नागकेसर, घउलां, हरेणुका, मोटा नखला, नाहाना नखला, करमाणी, स्थौणेयक, चंद्रस, झीणी तज, चोरक, (तगरनी गांठनो एक भेद) वाळो, गुगळ, राळ, शेलारस, किंदरू, अगरू, सुगंधी पानडी, काळो वाळो, देवदार, केसर, नागकेसरनुं झाड अने बोलसरी ए ओगणत्रीश द्रव्यो मळीने **एलादि** गण केहेवाय छे[1].

आ एलादि गण वातने, कफने, विषने, खरजने, फोल्लीओने तथा धामठांओने नष्ट करनार छे अने वर्णने स्वच्छ करनार छे.

१४ वचामुस्तातिविषाभयाभद्रदारूणि नागकेशरं चेति ॥

हरिद्रादारुहरिद्राकलशीकुटजबीजानि मधुकं चेति ॥

एतौ वचाहरिद्रादी गणौ स्तन्यविशोधनौ ।
आमातीसारशमनौ विशेषाद्दोषपाचनौ ॥

वचादि गण तथा हरिद्रादि गण अने ए बन्नेना गुणो.

१४ वज, मोथ, अतवस, हरडे, देवदार अने नागकेसर ए छ द्रव्यो मळीने **वचादि** गण केहेवाय छे.

हळदर, दारूहळदर, पृश्निपर्णी[2], इंद्रजव अने जेठीमध ए पांच द्रव्यो मळीने **हरिद्रादि** गण केहेवाय छे.

आ वचादि अने हरिद्रादि ए बन्ने गणो धावणने शुद्ध करनारा छे, आमने तथा अतीसारने शांत करनारा छे अने विशेष करी आमथी संसृष्ट थएला दोषोने पकावनारा छे.

१५ श्यामामहाश्यामात्रिवृद्दन्तीशङ्खिनीतिल्वककम्पिल्लकरम्यकक्रमुकपुत्रश्रेणीगवाक्षीराजवृक्षकरञ्जद्वयगुडूचीसप्तलाच्छगलान्त्रीसुधाः सुवर्णक्षीरी चेति ॥

उक्तः श्यामादिरित्येष गणो गुल्मविषापहः ।
आनाहोदरविड्भेदी तथोदावर्तनाशनः ॥

श्यामादि गण अने तेना गुणो.

१५ धोळी नसोतर, वरधारो, रातां मूळनी नसोतर, नेपाळो, आंखफुटामणां, लोदर, कपीलो, बकान, सोपारी, उंदरकन्नी, इंद्रवारणी, गरमाळो, करंज, गुच्छकरंज, गळो, हाथला, बीजी जातनो वरधारो[3], थोर अने दारूडी ए ओगणीश द्रव्यो मळीने **श्यामादि** गण केहेवाय छे.

आ श्यामादि गण गुल्मने, विषने, मळबंधने, उदररोगने तथा उदावर्तने नष्ट करनार छे अने दस्त लगाडनार छे.

१६ बृहतीकण्टकारिकाकुटजफलपाठा मधुकं चेति ॥

---

[1] आ गणमां हरेणुका अने स्थौणेयक ए बेना पर्याय शब्दो गुजरातीमां मळ्या नथी.

[2] आ गणमां पृश्निपर्णीनो पर्याय शब्द गुजरातीमां मळ्यो नथी.

[3] वरधारो ए समुद्रशोष होय एम लागे छे. समुद्रशोषनुं नाम कोई पण प्राचीन ग्रंथमां नथी. वरधाराना सर्वे गुणो तथा रूप समुद्रशोषमां बराबर मळे छे ?

पाचनीयो बृहत्यादिर्गणः पित्तानिलापहः ।
कफारोचकहृल्लासमूत्रकृच्छ्ररुजापहः ॥

बृहत्यादि गण अने तेना गुणो.

१६ उभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, इंद्रजव, काळीपाड अने जेठीमध ए पांच द्रव्यो मळीने **बृहत्यादि** गण केहेवाय छे.

आ बृहत्यादि गण पाचन करनार छे अने पित्तने, वातने, कफने, अरोचकने, मोळने तथा मूत्रकृच्छ्रने मटाडनार छे.

१७ पटोलचन्दनकुचन्दनमूर्वागुडूचीपाठाः कटुरोहिणी चेति ।
पटोलादिर्गणः पित्तकफारोचकनाशनः ।
ज्वरोपशमनो व्रण्यश्छर्दिकण्डूविषापहः ॥

पटोलादि गण अने तेना गुणो.

१७ पटोल, सुखड, रतांजलि, मूर्वा, गळो, काळीपाड अने कडु ए सात द्रव्यो मळीने **पटोलादि** गण केहेवाय छे[१].

आ पटोलादि गण पित्तने, कफने, अरोचकने, उलटीने, खरजने तथा झेरने टाळनार छे, ज्वरने शांत करनार छे अने व्रणने माटे पण सारो छे.

१८ काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकमुद्गपर्णीमाषपर्णीमेदामहामेदाछिन्नरुहाकर्कटश्रृङ्गीतुगाक्षीरीपद्मकप्रपौण्डरीकर्द्धिवृद्धिमृद्वीकाजीवन्त्यो मधुकं चेति ।
काकोल्यादिरयं पित्तशोणितानिलनाशनः ।
जीवनो बृंहणो वृष्यः स्तन्यश्लेष्मकरस्तथा ॥

काकोल्यादि गण अने तेना गुणो.

१८ काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, अडबाउ मग, अडबाउ अडद, मेदा, महामेदा, गळो, काकडाशींगी, वंशलोचन, पद्मकाष्ठ, पांडेरवो, ऋद्धि, वृद्धि, द्राक्ष, जीवंती[२] अने जेठीमध ए अढार द्रव्यो मळीने **काकोल्यादि** गण केहेवाय छे[३].

आ काकोल्यादि गण पित्तने, रुधिरसंबंधी रोगने तथा वातसंबंधी रोगने नष्ट करनार छे, प्राणनुं धारण करनार छे, पुष्टि आपनार छे, वीर्यने वधारनार छे, धावणने हितकारी छे अने कफ करनार छे.

१९ ऊषकसैन्धवशिलाजतुकासीसद्वयहिङ्गूनि तुत्थं चेति ।
ऊषकादिः कफं हन्ति गणो मेदोविशोषणः ।
अश्मरीशर्करामूत्रकृच्छ्रगुल्मप्रणाशनः ॥

ऊषकादि गण अने तेना गुणो.

१९ खारी माटी, सैंधव, शिलाजीत, भस्म जेवा रंगवाळी कांईक खाटी अने खारा रसवाळी हीराकसी, कांईक पीळी तथा तूरी बीजी जातनी हीराकसी, हींग अने मोरथुथु अथवा खापरीयो ए सात द्रव्यो मळीने **ऊषकादि** गण केहेवाय छे.

आ ऊषकादि गण कफने, पथरीने, कांकरीने, मूत्रकृच्छ्रने तथा गुल्मने नष्ट करनार छे अने मेदनुं शोषण करनार छे.

२० सारिवामधुकचन्दनकुचन्दनपद्मककाश्मरीफलमधूकपुष्पाण्युशीरं चेति ॥
सारिवादिः पिपासाघ्नो रक्तपित्तहरो गणः ।
पित्तज्वरप्रशमनो विशेषाद्दाहनाशनः ॥

सारिवादि गण अने तेना गुणो.

२० कपूरी, जेठीमध, सुखड, रतांजलि अथवा पतंग, पद्मक, सीवणनां फळ, महुडानां फूल

१ आ गणमां मूर्वानो पर्याय गुजरातीमां मळ्यो नथी.

२ कडवो खरखोडो, खरणेर, राडारूडी, डींगरोटी (सुईयाना वेला) अने व्रणधारनी मोटी खरखोडी ए सघळा जीवंतीओ केहेवाय छे तेओमांथी आ गणमां व्रण धारनी मोटी खरखोडी लेवी योग्य छे.

३ आ गणमां काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि अने वृद्धि ए आठ अलभ्यज छे.

अने वाळो ए आठ द्रव्यो मळीने **सारिवादि गण** केहेवाय छे.

आ सारिवादि गण तरशने तथा रक्तपित्तने हणनार छे, पित्तज्वरने शांत करनार छे अने विशेषे करी दाहने नष्ट करनार छे.

२१ अञ्जनरसाञ्जननागपुष्पप्रियङ्गुनीलोत्पलनलदनलिनकेशराणि मधुकं चेति ॥
अञ्जनादिर्गणो ह्येष रक्तपित्तनिबर्हणः ।
विषोपशमनो दाहं निहन्त्याभ्यन्तरं तथा ॥

अंजनादि गण अने तेना गुणो.

२१ सुरमो, रसवंती, नागकेशर, घउलां, नीलकमळ, जटामांसी, कमळना केसरा अने जेठीमध ए आठ द्रव्यो मळीने **अंजनादि गण** केहेवाय छे.

आ अंजनादि गण रक्तपित्तने नष्ट करनार छे, विषने शांत करनार छे अने अंदरना दाहने टाळी नाखे छे.

२२ परूपकद्राक्षाकट्फलदाडिमराजादनकतकफलशाकफलानि त्रिफला चेति ।
परूपकादिरित्येष गणोऽनिलविनाशनः ।
मूत्रदोषहरो हृद्यः पिपासाघ्नो रुचिप्रदः ॥

परूषकादि गण अने तेना गुणो.

२२ धामणां, द्राक्ष, कायफळ, दाडिम, राण, निर्मळी, सागनां फळ, हरडे, बेहेडां अने आमळां ए दश द्रव्यो मळीने **परूषकादि गण** केहेवाय छे.

आ परूपकादि गण वातना कोपने तथा तरशने मटाडनार छे, मूत्रना दोषने हरनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवो छे अने रुचि आपनार छे.

२३ प्रियङ्गुसमङ्गाधातकीपुंनागरक्तचन्दनकुचन्दनमोचरसाञ्जनकुम्भीकस्रोतोऽञ्जनपद्मकेसरयोजनवल्ल्यो दीर्घमूला चेति ॥

अम्बष्ठाधातकीकुसुमसमङ्गाकट्वङ्गमधुकबिल्वपेशिकारोध्रसावररोध्रपलाशनन्दीवृक्षपद्मकेसराणि चेति ॥

गणौ प्रियङ्ग्वम्बष्ठादी पक्वातीसारनाशनौ ।
संधानीयौ हितौ पित्ते व्रणानां चापि रोपणौ ॥

प्रियंग्वादि गण तथा अंबष्ठादि गण अने ते बन्नेना गुणो.

२३ घउलां, रीसामणी, धावणी, नागकेसरनुं झाड, रतांजलि, पतंग, मोचरस, रसवंती, पाडल, सुरमो, कमळना केसरा, मजीठ अने जवासो ए तेर द्रव्यो मळीने **प्रियंग्वादि गण** केहेवाय छे.

काळीपाड अथवा मोरशिखा, धावणीनां फूलें, रीसामणी, अरडूसो, जेठीमध, बीलांनी पेशी, लोदर, पठाणी लोदर, खाखरो, पिंडीतगर अने कमळना केसरा ए अगीयार द्रव्यो मळीने **अंबष्ठादि गण** केहेवाय छे.

आ प्रियंग्वादि गण अने अंबष्ठादि गण ए बन्ने गणो पक्व अतिसारने नष्ट करनारा छे, भांग्याने सांधनारा छे. पित्तमां पण हितकारी छे अने व्रणोमां पण भरती लावनारा छे.

२४ न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षमधूककपीतनककुभाम्रकोशाम्रसोमवल्कजम्बूद्वयप्रियालमधूकरोहिणीवञ्जुलकदम्बबदरीतिन्दुकीसल्लकीरोध्रसावररोध्रभल्लातकपलाशा नन्दीवृक्षश्चेति ।
न्यग्रोधादिर्गणो व्रण्यः संग्राही भग्नसाधकः ।
रक्तपित्तहरो दाहमेदोघ्नो योनिदोषहृत् ॥

न्यग्रोधादि गण अने तेना गुणो.

२४ वड, उंबरो, पीपळो, पीपर, जेठीमध, अंबाडो, कडायो, आंबो, पाहाडी आंबो, सफेद सारवाळो खेर, मोटां फळोवाळुं जांबूनुं झाड, झीणां फळोवाळुं जंगली जांबूनुं झाड, चारोळी, महुडो, कायफळ, नेतर, कदंब, बोरडी, टींबरू, सालेडो, लोदर, पठाणी लोदर, भीलामुं, खाखरो अने पारशपीपळो ए पचीश द्रव्यो मळीने **न्यग्रोधादि गण** केहेवाय छे.

आ न्यग्रोधादि गण व्रणने माटे सारो छे, द-

स्तने रोकनार छे, भांगेलाने सांधनार छे अने रक्तपित्तने, दाहने, मेदने तथा योनिना दोषोने मटाडनार छे.

२५ गुडूचीनिम्बकुस्तुम्बुरुचन्दनानि पद्मकं चेति ॥

एष सर्वज्वरान्हन्ति गुडूच्यादिस्तु दीपनः ।
हृल्लासारोचकवमीपिपासादाहनाशनः ॥

गडूच्यादि गण अने तेना गुणो.

२५ गळो, लींबडो, धाणा, रतांजलि अने पद्मक (पद्मकाष्ठ) ए पांच द्रव्यो मळीने **गडूच्यादि** गण केहेवाय छे.

आ गण सर्व प्रकारना ज्वरोने, मोळने, अरोचकने, उलटीने, तरशने तथा दाहने नष्ट करे छे अने अग्निने प्रदीप्त करे छे.

२६ उत्पलरक्तोत्पलकुमुदसौगन्धिककुवलयपुण्डरीकाणि मधुकं चेति ॥

उत्पलादिरयं दाहपित्तरक्तविनाशनः ।
पिपासाविषहृद्रोगच्छर्दिमूर्छाहरो गणः ॥

उत्पलादि गण अने तेना गुणो.

२६ नीलकमळ, रक्तकमळ, कुमुद (पोयणुं) सुगंधि नील कमळ, जरा श्याम तथा जरा सफेद रात्रिविकासीकमळ, श्वेतकमळ अने जेठीमध ए सात द्रव्यो मळीने **उत्पलादि** गण केहेवाय छे.

आ उत्पलादि गण दाहने, पित्तने, लोहीना बगाडने, तरशने, विषने, हृदयना रोगोने, उलटीने अने मूर्छाने मटाडनार छे.

२७ मुस्ताहरिद्रादारुहरिद्राहरीतक्यामलकबिभीतककुष्ठहैमवतीवचापाठाकटुरोहिणीशार्ङ्गष्टातिविषाद्राविडीभल्लातकानि चित्रकश्चेति ॥

एष मुस्तादिको नाम्ना गणः श्लेष्मनिषूदनः ।
योनिदोषहरः स्तन्यशोधनः पाचनस्तथा ॥

मुस्तादि गण अने तेना गुणो.

२७ मोथ, हळदर, दारूहळदर, हरडे, आमळां, बेहेडां, कठ, धोळीवज, रातीवज, काळीपाड, कडु, पीलुडी, अतवस, एळची, भीलामुं अने चित्रो ए सोळ द्रव्यो मळीने **मुस्तादि** गण केहेवाय छे.

आ मुस्तादि गण कफने तथा योनिना दोषोने मटाडनार छे, धावणने शुद्ध करनार छे अने पाचन छे.

२८ हरीतक्यामलकबिभीतकानि त्रिफला ॥

त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठविनाशनी ।
चक्षुष्या दीपनी चैव विषमज्वरनाशनी ॥

त्रिफळा गण अने तेना गुणो.

२८ हरडे, आमळां अने बेहेडां ए त्रण द्रव्यो मळीने **त्रिफळा** गण केहेवाय छे.

आ त्रिफळा गण कफने, पित्तने, प्रमेहने, कोढने तथा विषमज्वरने नष्ट करनार छे अने अग्निने दीप्त करनार छे तथा नेत्रोने हितकारी छे.

२९ पिप्पलीमरिचशृङ्गवेराणि त्रिकटुकम् ।

त्र्यूषणं कफमेदोघ्नं मेहकुष्ठत्वगामयान् ।
निहन्याद्दीपनं गुल्मपीनसाग्न्यल्पतामपि ॥

त्रिकटुक गण अने तेना गुणो.

२९ पीपळ, मरी अने सुंठ ए त्रण द्रव्यो मळीने **त्रिकटुक** अथवा त्र्यूषण गण केहेवाय छे.

आ त्रिकटुक गण अग्निने प्रदीप्त करनार छे अने कफने मेदने, प्रमेहने, कोढने, त्वचाना रोगोने, गुल्मने, पीनसने अने अग्निनी मंदताने मटाडनार छे.

३० आमलकीहरीतकीपिप्पल्यश्चित्रकश्चेति ॥

आमलक्यादिरित्येष गणः सर्वज्वरापहः ।
चक्षुष्यो दीपनो वृष्यः कफारोचकनाशनः ॥

आमलक्यादि गण अने तेना गुणो.

३० आमळी, हरडे, पीपळ अने चित्रो ए चार द्रव्यो मळीने **आमलक्यादि** गण केहेवाय छे.

आ आमलक्यादि गण सर्व प्रकारना ज्वरोने कफने तथा अरोचकने नष्ट करनार छे, नेत्रोने हितकारी छे, अग्निने प्रदीप्त करनार छे अने वीर्यनी वृद्धि करनार छे.

३१ त्रपुसीसताम्ररजतकृष्णलोहसुवर्णानि लोहमलं चेति ॥
गणस्त्रप्वादिरित्येष गरक्रिमिहरः परः ।
पिपासाविषहृद्रोगपाण्डुमेहहरस्तथा ॥

त्रप्वादि गण अने तेना गुणो.

३१ कथीळ, सीसुं, त्रांबुं, रूपुं, गजवेल, सोनुं अने लोहोडानो काटोडो ए सात द्रव्यो मळीने **त्रप्वादि** गण केहेवाय छे.

आ त्रप्वादि गण झेरने तथा कीडाओने मटाडवामां बहु उत्तम छे अने तरशने, विषसंबंधी रोगोने, हृदयना रोगोने, पांडुरोगने तथा प्रमेहने मटाडनार छे.

३२लाक्षाऽऽरेवतकुटजाऽश्वमारकट्फलहरिद्राद्वयनिम्बसप्तच्छदमालत्यस्त्रायमाणा चेति।
कषायस्तिक्तमधुरः कफपित्तार्तिनाशनः ।
कुष्ठक्रिमिहरश्चैव दुष्टव्रणविशोधनः ॥

लाक्षादि गण अने तेना गुणो.

३२ लाख, गरमाळो, इंद्रजव, कणेर, कायफळ, हळदर, दारूहळदर, लींबडो, सप्तपर्ण, मालती अने त्रायमाण ए अगीयार द्रव्यो मळीने **लाक्षादि** गण केहेवाय छे.

आ लाक्षादि गण तूरो छे, कडवो छे, मधुर छे, दुष्ट व्रणोने शुद्ध करनार छे अने कफना रोगोने, पित्तना रोगोने, कोढोने, तथा कृमिओने नष्ट करनार छे.

३३ पञ्च पञ्च मूलान्यत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥
तत्र त्रिकण्टकबृहतीद्वयपृथक्पर्ण्यो विदारिगन्धा चेति कनीयः ॥
कषायतिक्तमधुरं कनीयः पञ्चमूलकम् ।
वातघ्नं पित्तशमनं बृंहणं बलवर्द्धनम् ॥
बिल्वाग्निमन्थटुण्टुकपाटलाकाश्मर्यश्चेति महत् ।
सतिक्तं कफवातघ्नं पाके लघ्वग्निदीपनम् ।
मधुरानुरसं चैव पञ्चमूलं महत्स्मृतम् ॥

लघुपंचमूल गण तथा बृहत्पंचमूल गण अने तेओना गुणो.

३३ गोखरू, उभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, पृश्निपर्णी अने शालिपर्णी[१] ए पांच द्रव्यो मळीने **लघुपंचमूल** गण केहेवाय छे.

आ लघुपंचमूल गण तूरो छे, कडवो छे, मधुर छे, पुष्टि आपनार छे, बळने वधारनार छे अने वायुना रोगोने तथा पित्तना रोगोने शांत करनार छे.

बीली, अरणी, अरडूसो, काकच अने सीवण ए पांच द्रव्यो मळीने **बृहत्पंचमूल** गण केहेवाय छे.

आ बृहत्पंचमूल गण कडवा रसवाळो छे, कडवाने अनुसरता मधुर रसवाळो छे, पाकमां हलको छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने कफना तथा वायुना रोगोने नष्ट करनार छे.

३४ अनयोर्दशमूलमुच्यते ॥
गणः श्वासहरो ह्येष कफपित्तानिलापहः ।
आमस्य पाचनश्चैव सर्वज्वरविनाशनः ॥

दशमूल गण अने तेना गुणो.

३४ उपर कहेलां लघुपंचमूल अने बृहत्पंचमूल ए दश द्रव्यो मळीने **दशमूल** गण केहेवाय छे.

आ दशमूल गण श्वासने, कफने, पित्तने, वायुने तथा सर्व प्रकारना ज्वरोने हरनार छे अने आमने पकावनार छे.

---

१ आ गणमां पृश्निपर्णी अने शालिपर्णी एओना पर्याय शब्दो गुजरातीमां मळता नथी. केटलाएक वैद्यो आ गणमां गोखरूने बदले एरडो दाखल करे छे.

३५ विदारीसारिवारजनीगुडूच्योऽजश्टङ्गी चेति वल्लीसंज्ञः ॥

करमर्दत्रिकण्टकसैरीयकशतावरीगृध्रनख्य इति कण्टकसंज्ञः ॥

रक्तपित्तहरौ ह्येतौ शोफत्रयविनाशनौ ।
सर्वमेहहरौ चैव शुक्रदोषविनाशनौ "

वल्लीपंचमूल गण तथा कंटकपंचमूल गण अने तेना गुणो.

३५ फगवेलो, कपूरी, हळदर, गळो अने चमारदुधेली[१] ए पांच वेलारूप द्रव्यो मळीने **वल्लीपंचमूल** गण केहेवाय छे.

करमदां, गोखरू. कांटाअशेरीयो, शतावरी अने बोरडी ए पांच कांटावाळां द्रव्यो मळीने **कंटकपंचमूल** गण केहेवाय छे.

आ वल्लीपंचमूल गण अने कंटकपंचमूल गण त्रणे दोषोना सोजाओने, सर्व प्रकारना प्रमेहोने, वीर्यना दोषोने अने रक्तपित्तने नष्ट करनारा छे.

३६ कुशकाशनलदर्भकाण्डेक्षुका इति तृणसंज्ञकः ।
मूत्रदोषविकारं च रक्तपित्तं तथैव च ।
अन्त्यः प्रयुक्तः क्षीरेण शीघ्रमेव विनाशयेत् ॥

तृणपंचमूल गण अने तेना गुणो.

३६ टुंको कोमळ तथा सोई जेवां पत्रवाळो दर्भ, कांसडो, बरू, पोहोळो खरसट पत्रवाळो तथा लांबो दर्भ, अने धोळी शेलडी ए पांच द्रव्यो मळीने **तृणपंचमूल** गण केहेवाय छे.

आ तृणपंचमूल गणनो दूधनी साथे उपयोग करवामां आवे तो तेथी मूत्रदोषना विकारो तथा रक्तपित्त तुरतज नष्ट थाय छे.

३७ एषां वातहरावाद्यावन्त्यः पित्तविनाशनः ।
पञ्चकौ श्लेष्मशमनावितरौ परिकीर्तितौ ॥

लघुपंचमूल, बृहत्पंचमूल, वल्लीपंचमूल, कंटकपंचमूल, अने तृणपंचमूल एओना जूदा जूदा सामान्य गुणो.

३७ लघुपंचमूल अने बृहत्पंचमूल ए बे गणो वायुने हरनारा छे. वल्लीपंचमूल अने कंटकपंचमूल ए बे गणो कफने हरनारा छे अने तृणपंचमूल गण पित्तने हरनारो छे.

३८ त्रिवृदादिकमन्यत्रोपदेक्ष्यामः ॥

आडत्रीशमो गण बीजा स्थलमां केहेवामां आवशे.

३८ त्रिवृदादिक नामनो आडत्रीशमो गण उपर लखेला साडत्रीश गणोथी जुदो छे ते अन्य स्थलमां केहेवामां आवशे. (आ पछीना अध्यायनो चोथो विषय जुवो.)

३९ समासेन गणा ह्येते प्रोक्तास्तेषां तु विस्तरम् ।
चिकित्सितेषु वक्ष्यामि ज्ञात्वा दोषबलाबलम् ॥
एभिर्लेपान्कषायांश्च तैलं सर्पींषि पानकान् ।
प्रविभज्य यथान्यायं कुर्वीत मतिमान्भिषक् ॥

गणोनो यथायोग्य उपयोग करवाविषे.

३९ आ साडत्रीश गणो संक्षेपथी केहेवामां आव्या छे. एओनो उपयोग चिकित्सानां प्रकरणोमां केहेवामां आवशे. बुद्धिमान् वैद्य दोषोना बलाबलनी परीक्षा कर्या पछी आ गणोनी वेहेंचण करीने तेओथी लेपो, क्वाथो, हिमो, फांटो, स्वरसो, तैलो, घी, तथा पीवाना द्रवो वगेरे औषधो करवां.

४० धूमवर्षानिलक्लेदैः सर्वर्तुष्वनभिद्रुते ।
ग्राहयित्वा गृहे न्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

---

[१] चमारदुधेली वेलारूप छे अने आ गणने छाजता गुणोवाळी छे. मेंढाशींगी के जे मरडाशींगी पण केहेवाय छे ते तो मोटा वृक्षरूप छे. चमारदुधेलीनां मेंढा, विषाणिका तथा शृंगी ए त्रण नामो जोतां 'अजशृंगी' ए नाम पण बंध बेसतुं जणाय छे.

वैद्ये योग्य घरमां औषधोनो संग्रह करी राखवो.

४० वैद्ये औषधो मगावी, सघळी ऋतुओमां जेने धुमाडाथी, वरसादथी, पवनथी के क्लेदथी (भीनाशथी) कशी हरकत न थती होय एवा घरमां ते औषधोनो संग्रह राखवो.

४१ समीक्ष्य दोषभेदांश्च गणान्भिन्नान्प्रयोजयेत्। पृथङ्मिश्रान्समस्तान्वा गणं वा व्यस्तसंहतम्॥

गणोना उपयोगो करवानी पद्धति.

४१ दोषोना भेदो के जेओ उत्तरतंत्रना ६६ मा अध्यायमां केहेवाशे तेओनुं अवेक्षण करी रोगीना शरीरमां एक दोष जो बीजा दोषोना मिश्रणवगरनो जोवामां आवे तो एक गणनो प्रयोग करवो, जो बे दोषो मिश्रित थएला जोवामां आवे तो बे गणोनो प्रयोग करवो अने जो त्रणे दोषो मिश्रित थएला जोवामां आवे तो त्रण गणोनो प्रयोग करवो. (केटलाएक गणो बबे दोषोने टाळनारा पण छे.) गणनां द्रव्योमां जो बे, त्रण के चार वगेरे द्रव्योनो प्रयोग करवो योग्य जणाय तो तेम करवुं अने सघळां द्रव्योनो प्रयोग करवो योग्य जणाय तो तेम करवुं.

अध्याय ३९ मा.

१ अथातः संशोधनसंशमनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'संशोधनसंशमनीय'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मदनकुटजजीमूतकेक्ष्वाकुधामार्गवकृतवेधनसर्षपविडङ्गपिप्पलीकरञ्जप्रपुन्नाडकोविदारकर्बुदारारिष्टाश्वगन्धाविदुलबन्धुजीवकश्वेताशणपुष्पीबिम्बीवचामृगेर्वारुवश्चित्राचेत्यूर्ध्वभागहराणि ॥

वमन द्रव्यो.

२ मींढोळ, इंद्रजव, कुकडवेल, कडवी तुंबडी, कडवां तुरीयां, कडवी घीसोडी, सफेद सर्षप, वावडींग, पीपळ, करंज, कुवाडीओ, कंचनार, गुंदो, लींबडो, आसोंद, नेतर, बपोरीयो, धोळी वज, शण, कडवी घोली, राती वज, इंद्रवारणी अने उंदरकन्नी एटलां द्रव्यो वमन करावनारां छे[2].

३ तत्र कोविदारपूर्वेषां फलानि कोविदारादीनां मूलानि ॥

वमनमां ए द्रव्योना कया कया भागो लेवा?

३ मींढोळथी कुवाडीया सुधीनां द्रव्योनां फळो लेवां अने कंचनारथी उंदरकन्नी सुधीनां द्रव्योनां मूळो लेवां.

४ त्रिवृच्छ्यामादन्तीद्रवन्तीसप्तलाशङ्खिनीविषाणिकागवाक्षीछगलान्त्रीस्नुक्सुवर्णक्षीरीचित्रककिणिहीकुशकाशतिल्वककम्पिल्लकरम्यकपाटलापूगहरीतक्यामलकविभीतकनीलिनीचतुरङ्गुलैरण्डपूतीकमहावृक्षसप्तच्छदार्का ज्योतिष्मती चेत्यधोभागहराणि ॥

विरेचन द्रव्यो.

४ रातां मूळवाळी नसोतर, धोळी नसोतर, नेपाळो, नाहानो नेपाळो, हाथला, आंखफूटामणी, मेंढाशींगी, धोळां फूलवाळी इंद्रवारणी, वरधारो, थोर, दारूडी अथवा पीळीयो, चित्रो, नाहानी मालकांकणी, दर्भ, कांसडो, तिल्वक, (मोटो लोदर) कपीलो, बकान, पाडल, सोपारी, हरडे, आमळां, बेहेडां, गळी, गरमाळो, एरंडो,

[1] संशोधन तथा संशमन द्रव्योना निरूपणविषेनो. ३८ मा अध्यायमां रोगोनी सामे थनारां द्रव्यो कह्यां छे अने आ अध्यायमां तो दोषोनी सामे थनारा तथा पंचकर्मोमां उपयोगी संशोधन संशमन द्रव्योना जथाओ केहेवाय छे ए भेद छे. (डल्हन.)

[2] आ द्रव्योमां केटलांएक द्रव्यो साक्षात् वमन करावनारां छे अने केटलांएक द्रव्यो वमनद्रव्योमां मळ्या पछी वमन करावनारां छे. (डल्हन.)

गुच्छकरंज, कंटाला नामनो थोर, सप्तपर्ण, आकडो अने मालकांकणी एटलां द्रव्यो विरेचन करावनारां छे. (लोदरना गुणोनुं निरूपण जोतां तेमां ग्राहीपणुं जोवामां आवे छे. मोटा लोदरनां नामोमां 'विरेकी' शब्द छे तेथी तेमां विरेचनपणुं हशे ? कोशमां जोतां 'तिल्वक' ए नाम इंगोळीयानुं पण नीकळे छे.)

५ तत्र तिल्वकपूर्वेषां मूलानि । तिल्वकादीनां पाटलान्तानां त्वचः । कम्पिल्लकफलरजः । पूगादीनामेरण्डान्तानां फलानि । पूतीकारग्वधयोः पत्राणि । शेषाणां क्षीराणीति॥

विरेचनमां ए द्रव्योना कया कया भागो लेवा ?

५ रातां मूलवाळी नसोतरथी लोदर सुधीनां द्रव्योनां मूळो लेवां. लोदर, बकान अने पाडल एओनी छालो लेवी. कपीलाना फलनुं चूर्ण लेवुं. सोपारीथी एरडा सुधीनां द्रव्योनां फळो लेवां. गुच्छकरंज अने गरमाळो एओनां पानडां लेवां अने बाकीनां द्रव्योनां छीरो लेवां.

६ कोशातकी सप्तला शङ्खिनी देवदाली कारवेल्लिका चेत्युभयतोभागहराणि ॥

वमन तथा विरेचन ए बन्ने काम करनारां द्रव्यो.

६ कडवी घीसोडी, हाथला, आंखफूटामणी, कुकडवेल अने कारेली एटलां द्रव्यो वमन पण करावे छे अने विरेचन पण करावे छे.

७ एषां स्वरसा इति ॥

बन्ने कामकरनारा द्रव्योनो कयो भाग लेवो ?

७ ए द्रव्योनां स्वरसो लेवा.

८ पिप्पलीविडङ्गापामार्गशिग्रुसिद्धार्थकशिरीषमरिचकरवीरबिम्बीगिरिकर्णिकाकिणिहीवचाज्योतिष्मतीकरञ्जार्कालर्कलशुनातिविषाशृङ्गवेरतालीशतमालसुरसार्जकेङ्गुदीमेषशृङ्गीमातुलुङ्गीसुरुङ्गीपीलुजातीशालतालमधूकलाक्षाहिङ्गुलवणमद्यगोशकृद्रसमूत्राणीति शिरोविरेचनानि ॥

शिरोविरेचन एटले माथामांथी दोषने पाडनारां द्रव्यो.

८ पीपळ, वावडींग, अघेडो, सरगवो, सफेद सर्षप, सरसडीयो, मरी, कणेर, कडवी घोली, गरणी, नाहानी मालकांकणी, वज, मोटी मालकांकणी, करंज, आकडो, सफेद आकडो, लसण, अतवस, सुंठ, तालीस, तमाल, तुलसी, जंगली तुलसी, इंगोळीयो, मेंढाशींगी, जंगली बीजोरूं, रातां फूलोवाळो सरगवो, पीलुडी, मालती, साग, ताड, महुडो, लाख, हींग, लवणो, मद्यो, गायना छाणनो रस अने गायनुं मूत्र एटला पदार्थो शिरोविरेचन छे.

९ तत्र करवीरपूर्वेषां फलानि । करवीरादीनामलर्कान्तानां मूलानि । तालीशपूर्वेषां कन्दाः । तालीशादीनामर्जकान्तानां पत्राणि । इङ्गुदीमेषशृङ्ग्योस्त्वचौ । मातुलुङ्गीसुरुङ्गीपीलुजातीनां पुष्पाणि । शालतालमधूकानां साराः । हिङ्गुलाक्षे निर्यासौ । लवणानि पार्थिवविशेषाः । मद्यान्यासवसंयोगाः । गोमूत्रशकृद्रसौ मलाविति ॥

शिरोविरेचनमां ए द्रव्योना कया कया भागो लेवा ?

९ पीपळथी मरी सुधीनां द्रव्योनां फळो लेवां. कणेरथी सफेद आकडा सुधीनां द्रव्योनां मूळो लेवां. लसणथी सुंठ सुधीनां द्रव्योना कंदो लेवा. ताली-

---

१ कडवा घीसोडी वगेरे द्रव्यो नियमथी बन्ने काम करनारां छे अने इंद्रवारणी वगेरे द्रव्यो तो पत्र पुष्प तथा मूल वगेरेना भेदथी कोई वखते वमन करावे छे अने कोई वखते विरेचन करावे छे. (डल्हन.)

सथी जंगली तुलसी सुधीनां द्रव्योनां पानडां लेवां. इंगोळीयो अने मेंढाशींगी एओनी छालो लेवी. जंगली बीजोरूं, रातां पूलवाळो सरगवो, पीलुडी अने मालती एओनां पुष्पो लेवां. साग, ताड अने महुडो एओना सार लेवा. हींग अने लाख एओ गुंदररूप छे माटे ते पोतेज लेवी. लवणो (लूणो) पृथ्वीना अवयवोज छे माटे तेओ पोतेज लेवां. मद्यो आसवोना संयोगोरूप छे माटे तेओ पण पोतेज लेवां. गायनुं मूत्र अने गायना छाणनो रस एओ रसरूप छे माटे तेओ पण पोतेज लेवां.

१० संशमनान्यत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥ तत्र भद्रदारुकुष्ठहरिद्रावरुणमेषशृङ्गीबलातिबलार्तगलकच्छुरासल्लकीकुबेराक्षीवीरतरुसहचराग्निमन्थवत्सादन्येरण्डाश्मभेदकालर्काकेशतावरीपुनर्नवावसुकवसिरकाञ्चनकभार्गीकार्पासीवृश्चिकालीपत्तूरबदरयवकोलकुलत्थप्रभृतीनि विदारिगन्धाद्यः द्वे चाद्ये पञ्चमूल्यौ समासेन वातसंशमनो वर्गः ॥

वायुनां संशमन द्रव्यो. (संशमन द्रव्यो एटले वमन के विरेचन नहीं करावतां दोषोनुं शमन करनारां द्रव्यो.)

१० देवदार, कठ, हळदर, वायवरणां, मेंढाशींगी, बलदाणा, पीळां फूलवाळी खपाट, काळां पुष्पोवाळो कांटाअशेरीयो, कौवच, सालेडो, काकच, वेलतरू, पीळां फूलवाळो कांटाअशेरीयो, अरणी, गळो, एरडो, पाषाणभेद, सफेद फूलनो आकडो, रातां फूलनो आकडो, शतावरी, साटोडी, शिवलिंगी, अघेडो, धंतूरो, भारंगी, हीरवणी, चमारदूधेली, पतंग, बोर, जव, मोटां बोर तथा कळथी इत्यादि पदार्थो, विदारिगंधादि गण, लघुपंचमूल गण अने बृहत्पंचमूल गण एओ वायुनुं संशमन करनारां छे. आ वायुनुं संशमन करनारो वर्ग संक्षेपथी कह्यो.

११ चन्दनकुचन्दनह्रीबेरोशीरमञ्जिष्ठापयस्याविदारीशतावरीगुन्द्राशैवालकह्लारकुमुदोत्पलकदलीकन्दलीदूर्वामूर्वाप्रभृतीनि काकोल्यादिर्न्यग्रोधादिस्तृणपञ्चमूलमिति समासेन पित्तसंशमनो वर्गः ॥

पित्तनां संशमन द्रव्यो.

११ सुखड, रतांजलि अथवा पतंग, वाळो, काळा वाळानुं मूळ, मजीठ, खरणेर, विदारीकंद, शतावरी, मोथ, शेवाळ, कल्हार नामनुं कमळ, कुमुद नामनुं रात्रिविकासी कमळ, उत्पल नामनुं कमळ, केळना अंकुर, धोकड तथा मूर्वा आदि द्रव्यो, काकोल्यादि गण, न्यग्रोधादि गण अने तृणपंचमूल गण एओ पित्तनुं संशमन करनारां छे. आ पित्तनुं संशमन करनारो वर्ग संक्षेपथी कह्यो.

१२ कालेयकागुरुतिलपर्णीकुष्ठहरिद्राशीतशिवशतपुष्पासरलारास्नाप्रकीर्योदकीर्येङ्गुदीसुमनःकाकादनीलाङ्गलकीहस्तिकर्णमुञ्जातकलामज्जकप्रभृतीनि वल्लीकण्टकपञ्चमूल्यौ पिप्पल्यादिर्बृहत्यादिर्मुष्ककादिर्वचादिः सुरसादिरारग्वधादिरिति समासेन श्लेष्मसंशमनो वर्गः ॥

कफनां संशमन द्रव्यो.

१२ पीळी सुखड, अगरू, तलवणी, कठ, हळदर, कपूर अथवा पत्थरफूल, सुवा, नसोतर, रास्ना, करंज, गुच्छकरंज, इंगोळीयो, जाई, दूधीयो वछनाग, रातो एरडो, नाहानुं मुंझ नामनुं खड, तथा वाळो इत्यादि द्रव्यो, वल्लीपंचमूल गण, कंटकपंचमूल गण, पिप्पल्यादि गण, बृहत्यादि गण, मुष्ककादि गण, वचादि गण, सुरसादि गण अने आरग्वधादि गण

१ आथी एम जणाव्युं के आटलांज द्रव्यो वायुनां संशमन छे एम समजी बेसवुं नहीं.

२ चंदन आदि द्रव्यो गणोमां आवी गयां छतां पण नोखां लख्यां छे तेथी एम जणाव्युं छे के एओमांनां बे चार पण पोतानुं कार्य सारी रीते करी शके छे.

एओ कफनुं संशमन करनारां छे. आ कफनुं संशमन करनारो वर्ग संक्षेपथी कह्यो.[1]

१३ तत्र सर्वाण्येवौषधानि व्याध्यग्निपुरुषबलान्यभिसमीक्ष्य विदध्यात् । तत्र व्याधिबलादधिकमौषधमुपयुक्तं तमुपशमय्य व्याधिं व्याधिमन्यमावहति । अग्निबलादधिकमजीर्णं विष्टभ्य वा पच्यते । पुरुषबलादधिकं ग्लानिमूर्छामदानावहति संशमनम् । एवं संशोधनमतिपातयति । हीनमेभ्यो दत्तमकिंचित्करं भवति । तस्मात्सममेव विदध्यात् ॥

संशोधन तथा संशमन द्रव्यानां मात्रा अधिक के न्यून नहीं देवी जोइए पण समज देवी जोइए.

१३ वैद्ये व्याधिना, अग्निना अने पुरुषना बळने सारी पेठे जोई विचारीने सघळां औषधोनी योजना करवी. जो संशमन औषध व्याधिना बळ प्रमाणे नहीं पण तेथी अधिक आपवामां आवे तो ते ए व्याधिने शांत करीने बीजा व्याधिने उत्पन्न करे छे, जो अग्निना बळ प्रमाणे नहीं पण तेथी अधिक आपवामां आवे तो अजीर्णने उत्पन्न करे छे अथवा लांबा काळ सुधी स्थिर रहीने पाके छे अने पुरुषना बळ प्रमाणे नहीं पण तेथी अधिक आपवामां आवे तो ग्लानिने, मूर्छाने तथा मदने उत्पन्न करे छे. ए प्रमाणेज संशोधन औषध पण जो अधिक आपवामां आवे तो उपर प्रमाणे करे छे अने ते उपरांत रोगीना बळने बहुज हानि पोहोचाडी देछे. ए औषधो व्याधिना, अग्निना तथा पुरुषना बळथी न्यून आपवामां आवे तो अल्प गुण करनारां अथवा नकामांज थई पडे छे माटे जे औषध देवुं ते समज (रोगथी विषमज) देवुं.

१४ भवन्ति चात्र ॥
रोगे शोधनसाध्ये तु यो भवेद्दोषदुर्बलः ।
तस्मै दद्याद्भिषक्प्राज्ञो दोषप्रच्यावनं मृदु ॥

नबळा रोगीने बळवान् संशोधन नहीं देवुं.

१४ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं के "रोग संशोधनथी मटे एवो होय अने रोगी उपवासादिकथी नहीं पण दोषोथी नबळो थएलो होय तो तेने विद्वान् वैद्ये कोमळ वीर्यवाळुं गरमाळा वगेरे संशोधन देवुं.

१५ चले दोषे मृदौ कोष्ठे नेक्षेतात्र बलं नृणाम् ।
अव्याधिदुर्बलस्यापि शोधनं हि तदा भवेत् ॥
स्वयं प्रवृत्तदोषस्य मृदुकोष्ठस्य शोधनम् ।
भवेदल्पबलस्यापि प्रयुक्तं व्याधिनाशनम् ॥

उपवासादिकथी नबळा थएला रोगीने केम होय तो संशोधन देवुं?

१५ रोगी व्याधिथी नहीं पण उपवासादिकथी नबळो थएलो होय परंतु जो तेनो दोष स्थानथी चलित थयो होय अने कोठो कोमळ होय तो तेने संशोधन देवामां बळ उपर लक्ष्य नहीं आपवुं. केम के ए स्थितिमां संशोधन हितकारी छे. रोगी अल्प बळवाळो होय परंतु तेनो दोष पोतानी मेळेज स्थानथी चलित थयो होय अने कोठो कोमळ होय तो देवामां आवेलुं संशोधन व्याधिने नष्ट करनारूं थाय छे.

१६ व्याध्यादिषु तु मध्येषु क्वाथस्याञ्जलिरिष्यते ।
बिडालपदकं चूर्णं देयः कल्कोऽक्षसंमितः ॥

व्याधि, अग्नि तथा रोगी मध्यम बळवाळां होय तो औषधोनी मात्रा.

१६ व्याधि, अग्नि तथा रोगी मध्यम बळवाळां होय तो क्वाथनी मात्रा सोळ तोलां भार देवी, चूर्णनी मात्रा एक तोलां भार देवी अने कल्कनी मात्रा पण एक तोलां भारज देवी. (जो व्याधि, अग्नि तथा रोगी हीन बळवाळां होय तो ए मात्राओ ओछी करवी अने अधिक बळवाळां होय तो ए मात्राओ वधारवी.)"

---

१ आथी एम जणाव्युं के आटलांज द्रव्यो कफनुं संशमन करनारां छे एम समजी बेसवुं नहीं.

अध्याय ४० मो.

१ अथातो द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकविज्ञानीय'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ केचिदाचार्या ब्रुवते द्रव्यं प्रधानम्। कस्माद्व्यवस्थितत्वादिह खलु द्रव्यं व्यवस्थितं न रसादयो यथाऽऽमे फले ये रसादयस्ते पक्के न सन्ति । नित्यत्वाच्च नित्यं हि द्रव्यमनित्या गुणा यथा कल्कादिप्रविभागः स एव सम्पन्नरसगन्धो व्यापन्नरसगन्धो वा भवति । स्वजात्यवस्थानाच्च यथा हि पार्थिवं द्रव्यमन्यभावं न गच्छत्येवं शेषाणि । पञ्चेन्द्रियग्रहणाच्च पञ्चभिरिन्द्रियैर्गृह्यते द्रव्यं न रसादयः । आश्रयत्वाच्च द्रव्यमाश्रिता रसादयो भवन्ति । आरम्भसामर्थ्याच्च द्रव्याश्रित आरम्भो यथा विदारिगन्धादिमाहृत्य संक्षुद्य विपचेदित्येवमादिषु न रसादिष्वारम्भः । शास्त्रप्रामाण्याच्च शास्त्रे हि द्रव्यं प्रधानमुपदेशे हि योगानां यथा मातुलुङ्गाग्निमन्थौ चेति न रसादय उपदिश्यन्ते । क्रमापेक्षितत्वाच्च रसादीनां रसादयो हि द्रव्यक्रममपेक्षन्ते यथा तरुणे तरुणाः संपूर्णे संपूर्णा इति । एकदेशसाध्यत्वाच्च द्रव्याणामेकदेशेनापि व्याधयः साध्यन्ते यथा महावृक्षक्षीरेणेति । तस्माद्द्रव्यं प्रधानम् । द्रव्यलक्षणं तु क्रियागुणवत्समवायिकारणमिति ॥

केटलाएक आचार्योना मत प्रमाणे द्रव्यनीज प्रधानता.

२ केटलाएक आचार्यो केहे छे के "द्रव्य, रस[2], गुण[3], वीर्य[4] अने विपाक एओमां द्रव्यज प्रधान छे. आ विषयमां **पेहेलुं कारण** ए छे के द्रव्य एनुं एज रेहे छे अने रसादिक तो एना एज नहीं रेहेतां बदलाई जाय छे. जेम के आंबा वगेरेनुं फळ एनुं एज रेहे छे अने रसादिक तो जेओ काचा फळमां होय छे तेओ पाका फळमां होता नथी. **बीजुं कारण** ए छे के द्रव्य नित्य छे अने गुणो अनित्य छे. जेम के कल्क, स्वरस तथा क्वाथ वगेरे पदार्थ एनो ए रहे छे पण ते पदार्थमां रस तथा गंध अमुक काळमां जेवा जोईए तेवा रहे छे अने अमुक काळमां बगडी जाय छे. **त्रीजुं कारण** ए छे के द्रव्य पोतानी जे पार्थिव आदि जातिमां होय ते जातिमांज रेहे छे पण बीजी जातिने प्राप्त थतुं नथी. जेम के जे द्रव्य पृथ्वीसंबंधी होय ते पृथ्वीसंबंधीज रेहे छे पण जलसंबंधी, अग्निसंबंधी, वायुसंबंधी के आकाश-

---

१ द्रव्योना, मधुर आदि रसोना, शीतोष्णादिक गुणोना, ते ते द्रव्योना प्रभावोना अने परिपाक समयमां जे रसांतरो थाय छे तेओना विशेष ज्ञानविषेनो.

२ मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, लवण अने कषाय ए छ रसो केहेवाय छे.

३ शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, मंद, तीक्ष्ण, गुरु, लघु, पिच्छिल, विशद, श्लक्ष्ण, परुष, कठिन, मृदु, द्रव, सांद्र, स्थिर, सर, स्थूल अने सूक्ष्म ए वीश गुणो केहेवाय छे. (आ स्थानना ४६ मा अध्यायना २४१ मा विषयमां आज गुणो थोडा फेरफारथी निरूपित करेला छे.) (डल्लन.)

४ एओमांना शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष, विशद, पिच्छिल, मृदु अने तीक्ष्ण ए आठ गुणो वीर्य केहेवाय छे. गुणोथी वीर्योमां जुदाई छे. जुवो के जे गुणो आमळीमां छे तेज गुणो हरडेमां छे परंतु आमळी शीतवीर्य छे अने हरडे उष्णवीर्य छे. द्रव्य, रस, गुण अने विपाक एओ जे काम करी शकतां नथी ते कामने करनारो जे प्रभाव होय छे ते वीर्य छे. (डल्लन.)

५ द्रव्य परिपाकना समयमां पोताना स्वाभाविक रसने छोडी दईने जे रसांतरने प्राप्त थाय छे ते रसांतर विपाक केहेवाय छे. (डल्लन.)

संबंधी थई जतुं नथी तेमज जे द्रव्य जलसंबंधी होय ते जलसंबंधीज रेहे छे पण पृथ्वीसंबंधी, अग्निसंबंधी, वायुसंबंधी के आकाशसंबंधी थई जतुं नथी. आ प्रमाणेज अग्निसंबंधी, वायुसंबंधी तथा आकाशसंबंधी द्रव्योविषे समजी लेवुं. **चोथुं कारण** ए छे के द्रव्यनुं पांचे इंद्रियोथी ग्रहण थाय छे अने रस, गुण, वीर्य तथा विपाक एओनुं पांचे इंद्रियोथी ग्रहण थतुं नथी पण अमुक अमुक इंद्रियोथीज थाय छे. **पांचमुं कारण** ए छे के द्रव्यज रसना, गुणना, वीर्यना तथा विपाकना आश्रयरूप छे पण रस, गुण, वीर्य के विपाक एओ द्रव्यना आश्रयरूप नथी. **छट्ठुं कारण** ए छे के जे कल्क तथा क्काथ वगेरेनी बनावट थाय छे ते द्रव्यना आश्रयथीज थाय छे पण रसादिकना आश्रयथी थती नथी. जेम के 'शालिपर्णी आदि औषधने लावी कूटीने पकाववुं' इत्यादिक वाक्यो प्रमाणे द्रव्यनेज लावी कूटीने तेनी पाक आदि बनावट करी शकाशे पण रसादिकने लावी कूटीने तेनी पाक आदि बनावट करी शकाशे नहीं. **सातमुं कारण** ए छे के शास्त्रमां पण ते ते योगोना उपदेशमां द्रव्योनांज नामो आपेलां छे पण रसादिकनां नामो आपेलां नथी. जेम के अमुक योगमां बीजोरूं अने अरणी एओने मिश्रित करवां अने अमुक योगमां अमुक द्रव्योने मिश्रित करवां इत्यादि लख्युं छे पण अमुक योगमां अमुक रसोने, अमुक गुणोने, अमुक वीर्योने के अमुक विपाकोने मिश्रित करवां एम लख्युं नथी. **आठमुं कारण** ए छे के रस, गुण, वीर्य अने विपाक एओने द्रव्यना क्रमनी अपेक्षा छे पण द्रव्यने एओना क्रमनी अपेक्षा नथी. जेम के द्रव्य नवुं होय त्यारे एओ सघळा नवा होय छे अने द्रव्य संपूर्ण होय त्यारे एओ सघळा संपूर्ण होय छे. **नवमुं कारण** ए छे के अमुक व्याधिओने द्रव्यनो एक भाग पण टाळे छे परंतु रसनो, गुणनो, वीर्यनो के विपाकनो एक भाग कोइ व्याधिने टाळे छे एम नथी. जेम के थोरना एकला छीरनोज उपयोग करवाथी कोई व्याधि मटे छे तेम रसादिकना एकला अमुक भागनोज उपयोग करवाथी कोई व्याधि मटे ए संभवित नथी. रसादिक पदार्थो भागवगरनाज छे. आ नव कारणोथी सिद्ध थयुं के द्रव्यज प्रधान छे." क्रियाओवाळुं. गुणोवाळुं अने घटपटादिक पदार्थोमां समवायी (उपादान) कारणरूपे रेहेनारूं जे होय छे ते द्रव्य केहेवाय छ ए द्रव्यनु लक्षण छ.

३ नेत्याहुरन्ये। **रसास्तु प्रधानम्। कस्मादागमात्। आगमो हि शास्त्रमुच्यते शास्त्रे हि रसा अधिकृता यथा रसायत्त आहार इति तस्मिंश्च प्राणाः। उपदेशाच्चोपदिश्यन्ते हि रसा यथा मधुराम्ललवणा वातं शमयन्ति। अनुमानाच्च रसेन ह्यनुमीयते द्रव्यं यथा मधुरमिति। ऋषिवचनाच्च ऋषिवचनं वेदो यथा किंचिदिज्यार्थं मधुरमाहरेदिति। तस्माद्रसाः प्रधानम्॥**

केटलाएक आचार्योना मतप्रमाणे रसोनीज प्रधानता.

३ केटलाएक आचार्यो द्रव्योनी प्रधानता मानता नथी पण रसोनीज प्रधानता माने छे. एओ केहे छे के "रसोज प्रधान छे. आ विषयमां **पेहेलुं कारण** ए छे के आगममां रसोनी प्रधानता मानेली छे. आगम अने शास्त्र ए बे पर्याय शब्दो छे. 'आहार रसोने आधीन छे अने प्राणो आहारने आधीन छे' इत्यादि शास्त्रवचनोथी सिद्ध थाय छे के शास्त्रोए रसोनीज प्रधानता स्वीकारेली छे. **बीजुं कारण** ए छे के चिकित्साशास्त्रमां पण 'मधुर, अम्ल अने लवण ए रसो वायुने शांत करे छे' इत्यादि वाक्योथी रसोनो उपदेश मुख्य करेलो छे. **त्रीजुं कारण** ए छे के रसो उपरथीज द्रव्योनी मधुरता वगेरेनुं अनुमान थाय छे. जेम के मधुर रस अनुभवमां आववाथी अनु-

मान करवामां आवे छे के 'आ द्रव्य मधुर छे.' **चोथुं कारण** ए छे के 'यजन करवाने माटे थोडोक मधुर रस लाववो' एवां वेदवचनथी पण रसनुं प्राधान्य सिद्ध थाय छे. आ कारणोथी सिद्ध थयुं के रसोज प्रधान छे."

४ रसेषु गुणसंज्ञा । रसलक्षणमन्यत्रोपदेक्ष्यामः ॥

गुणोनी प्रधानतानो वाद जूदो लखवानी जरूर नथी.

४ जेम द्रव्यनी अने रसोनी प्रधानता विषेना वादो जूदा जूदा लख्या अने वीर्यनी तथा विपाकनी प्रधानताना वादो हवे पछी जूदा जूदा लखवामां आवशे तेम गुणोनी प्रधानतानो वाद जूदो लखवानी जरूर नथी. कारण के रस, वीर्य अने विपाक एओ एक जातना गुणोज छे माटे तेओनी प्रधानतानो वादज गुणोनी प्रधानतानो वाद छे. रसोनां लक्षणो आ सूत्रस्थानना 'रसविशेषविज्ञानीय' नामना ४२ मा अध्यायमां आपवामां आवशे.

५ नेत्याहुरन्ये । वीर्यं प्रधानमिति । कस्मात्तद्वशेनौषधकर्मनिष्पत्तेः । इहौषधकर्माण्यूर्ध्वाधोभागोभयभागसंशोधनसंशमनसंग्राहकाग्निदीपनप्रपीडनलेखनबृंहणरसायनवाजीकरणश्वयथुकरविलयनदहनदारणमादनप्राणघ्नविषप्रशमनानि वीर्यप्राधान्याद्भवन्ति । तच्च वीर्यं द्विविधमुष्णं शीतं चाग्नीषोमीयत्वाज्जगतः । केचिदष्टविधमाहुरुष्णं शीतं स्निग्धं रूक्षं विशदं पिच्छिलं मृदु तीक्ष्णं चेत्येतानि वीर्याणि स्वबलगुणोत्कर्षाद्रसमभिभूयात्मकर्म कुर्वन्ति । यथा तावन्महत्पञ्चमूलं कषायं तिक्तानुरसं वातं शमयेदुष्णवीर्यत्वात्तथा कुलत्थः कषायः कटुकः पलाण्डुः स्नेहभावाच्च । मधुरश्चेक्षुरसो वातं वर्द्धयति शीतवीर्यत्वात् ॥ कटुका पिप्पली पित्तं शमयति मृदुशीतवीर्यत्वादम्लमामलकं लवणं सैन्धवं च । तिक्ता काकमाची पित्तं वर्द्धयत्युष्णवीर्यत्वान्मधुरा मत्स्याश्च । कटुकं मूलकं श्लेष्माणं वर्द्धयति स्निग्धवीर्यत्वात् । अम्लं कपित्थं श्लेष्माणं शमयति रूक्षवीर्यत्वान्मधुरं क्षौद्रं च । तदेतन्निदर्शनमात्रमुक्तम् ॥

भवन्ति चात्र ॥

ये रसा वातशमना भवन्ति यदि तेषु वै ।
रौक्ष्यलाघवशैत्यानि न ते हन्युः समीरणम्
ये रसाः पित्तशमना भवन्ति यदि तेषु वै ।
तैक्ष्ण्यौष्ण्यलघुताश्चैव न ते तत्कर्मकारिणः ।
ये रसाः श्लेष्मशमना भवन्ति यदि तेषु वै ।
स्नेहगौरवशैत्यानि बलासं वर्द्धयन्ति ते ॥

तस्माद्वीर्यं प्रधानमिति ॥

केटलाएक आचार्योना मतप्रमाणे वीर्यनीज प्रधानता.

५ केटलाएक आचार्यो द्रव्योनी के रसोनी प्रधानता मानता नथी पण वीर्यनीज प्रधानता माने छे. कारण के औषधोनां कर्मोनी सिद्धि वीर्यने लीधेज थाय छे. आ चिकित्साशास्त्रमां औषधोनां वमन, विरेचन, उभयभाग संशोधन, (वमन तथा विरेचन ए बन्ने) संशमन, संग्रहण, अग्निदीपन, प्रपीडन, (दबाववुं) लेखन, (दोषोनुं उखेडी तथा खोतरीने पातळापणुं करवुं) बृंहण (शरीरनी पुष्टि करवी) रसायन, (यौवननुं स्थापन वगेरे) वाजीकरण, श्वयथुकरण, (सोजो करवो) विलयन, (सोजाने नरम पाडवो), दहन, दारण (चीरवुं) मद करवो, प्राण हरवां अने विषनुं शमन करवुं इत्यादि कामो वीर्यना प्राधान्यथीज थाय छे. ए वीर्य उष्ण अने शीत एम बे प्रकारनुं छे. कारण के सघळुं जगत अग्न्यात्मक अने सोमात्मकज छे. केटलाएक आचार्यो उष्ण. शीत, स्निग्ध. रूक्ष, विशद, पिच्छिल, मृदु अने तीक्ष्ण ए रीते वीर्यने आठ प्रकारनुं माने छे. आ वीर्यो पोताना बळोना अने पोताना गुणोना उत्कर्षथी रसनो पराभव करीने पोतानुं काम करे

छे. जेम के बृहत्पंचमूल गण तूरा रसवाळो अने कडवा अनुरसवाळो होवाथी वायुने वधारनारो संभवतां छतां पण उष्ण वीर्यपणाने लीधे वायुने शांत करे छे. तेमज कळथी तूरा रसवाळी अने डुंगळी (कांदा) तीखा रसवाळी होवाने लीधे वायुने वधारनारी संभवतां छतां पण उष्ण तथा स्निग्ध वीर्यवाळी होवाने लीधे वायुने शांत करे छे. शेलडीनो रस मधुर होवाथी वायुनो प्रतिपक्ष होवो संभवतां छतां पण शीत वीर्य होवाने लीधे वायुने वधारे छे. पीपळ तीखी, आमळुं खाटुं अने सेंधव खारूं होवाने लीधे पित्तने वधारनारां संभवतां छतां पण मृदु तथा शीत वीर्यवाळां होवाने लीधे पित्तने शांत करे छे. पीलुडी कडवी होवाथी[1] अने माछलां मधुर होवाथी पित्तनां प्रतिपक्ष होवां संभवतां छतां पण उष्ण वीर्यपणाने लीधे पित्तने वधारे छे. मोटा मूळो[2] तीखा होवाथी कफना प्रतिपक्ष होवा संभवतां छतां पण स्निग्ध वीर्यवाळा होवाने लीधे कफने वधारे छे. कोठ खाटुं अने मध मधुर होवाथी कफने वधारनार संभवतां छतां पण रूक्ष वीर्यवाळां होवाने लीधे कफने शांत करे छे. आ जे कह्युं ते केवळ दिक्प्रदर्शन मात्र छे.

आ स्थलना श्लोकोमां केटलाएक वैद्यो कहे छे के 'जेम उपर प्रमाणे अमुक वीर्यो अमुक द्रव्योमां पोताना होवाथी एटले अन्वयथी उपकार करे छे तेम अमुक वीर्यो अमुक रसोमां पोताना नहीं होवाथी एटले व्यतिरेकथी पण उपकार करे छे. जेम के मधुर, अम्ल अने लवण ए त्रण रसो के जेओ वायुने शांत करनारा छे तेओमां जो रूक्षपणुं, लघुपणुं के शीतपणुं होय तो ते रसो वायुने हणीशकेज नहीं. मधुर, तिक्त (कडवो) तथा कषाय ए त्रण रसो के जेओ पित्तने शांत करनारा छे तेओमां तीक्ष्णपणुं, उष्णपणुं के लघुपणुं होय तो ते रसो पित्तने हणीशकेज नहीं. तेमज कटु (तीखो) तिक्त, (कडवो) अने कषाय ए त्रण रसो के जेओ कफने हणनारा छे तेओमां स्निग्धपणुं, गुरुपणुं के शीतपणुं होय तो तेओ कफने वधारीज दिये. (आज विषयमां उपर लघु तथा गुरु एओने वीर्योमां गणेलां नथी ते छतां अहीं गण्यां छे ते मतांतरथी गण्यां हशे एम जणाय छे.)'

आ कारणोथी सिद्ध थयुं के वीर्यज प्रधान छे.

६ नेत्याहुरन्ये । विपाकः प्रधानमिति कस्मात्सम्यङ्मिथ्याविपाकत्वादिह सर्वद्रव्याण्यभ्यवहृतानि सम्यङ्मिथ्या विपकानि गुणं दोषं वा जनयन्ति । तत्राहुरन्ये प्रतिरसं पाक इति । केचित्त्रिविधमिच्छन्ति मधुरमम्लं कटुकं चेति । तत्तु न सम्यग्भूतगुणादागमाच्चाम्लो विपाको नास्ति पित्तं हि विदग्धमम्लतामुपैत्यग्नेर्मन्दत्वात् । यद्येवं लवणोऽप्यन्यः पाको भविष्यति श्लेष्मा हि विदग्धो लवणतामुपैति । मधुरो मधुरस्याम्लोऽम्लस्यैवं सर्वेषामिति केचिदाहुर्दृष्टान्तं चोपदिशन्ति यथा तावत्क्षीरं स्थालीगतमभिपच्यमानं मधुरमेव स्याद्यथा वा शालियवमुद्गादयः प्रकीर्णाः स्वभावमुत्तरकालेऽपि न परित्यजन्ति तद्वदिति । केचिद्वदन्त्यबलवन्तो बलवतां वशमायान्तीत्येवमनवस्थितिस्तस्मादसिद्धान्त एषः । आगमे हि द्विविध एव पाको मधुरः कटुकश्च । तयोर्मधुराख्यो गुरुः कटुकाख्यो लघुरिति । तत्र पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानां द्वैविध्यं भवति गुणसाधर्म्याद्गुरुता लघुता च । पृथिव्यापश्च गुर्व्यः शेषाणि लघूनि तस्माद्द्विविध एव पाक इति ॥

भवन्ति चात्र ॥

द्रव्येषु पच्यमानेषु येष्वम्बुपृथिवीगुणाः ।
निर्वर्तन्तेऽधिकास्तत्र पाको मधुर उच्यते ॥

१ बीजा आचार्योए पीलुडीने उष्ण वीर्य मानीने पित्तने वधारनारी गणी छे पण आ ग्रंथना आचार्ये तो समशीतोष्ण गणीने त्रणे दोषोने हणनारीज मानी छे.

२ नाहाना मूळा तो त्रणे दोषोने हणनारा छे.

तेजोऽनिलाकाशगुणाः पच्यमानेषु येषु तु ।
निर्वर्तन्तेऽधिकास्तत्र पाकः कटुक उच्यते ॥

केटलाएक आचार्योना मत प्रमाणे विपाकनीज प्रधानता.

६ केटलाएक आचार्यो द्रव्योनी, रसोनी के वीर्योनी प्रधानता मानता नथी पण विपाकनीज प्रधानता माने छे. कारण के खावामां आवतां सर्व द्रव्यो सम्यग्विपाक पामे तो गुणने उत्पन्न करे छे अने मिथ्याविपाक पामे तो दोषने उत्पन्न करे छे. आ विषयमां केटलाएक केहे छे के दरएक रसनो जुदो जुदो विपाक थाय छे. केटलाएक केहे छे के मधुर, अम्ल (खाटो) अने कटुक (तीखो) एम त्रणज विपाको थाय छे पण ए त्रण विपाको मानवा योग्य नथी. कारण के महाभूतोना गुणोनो तथा शास्त्रनो विचार करतां 'अम्लविपाक थतोज नथी' एम जणाय छे. जो अग्निना मंदपणाने लीधे विदाह पामेला पित्तनो जे अम्ल पाक थाय छे तेने विपाकरूप मानीये तो चोथो एक लवण विपाक पण मानवो जोईए. केम के विदाह पामेलो कफ लवणपणाने (खारापणाने) प्राप्त थाय छे. मधुरनो मधुर अने अम्लनो अम्ल ए रीते सर्व रसोना पोताना जेवाज विपाको थाय छे एम केहेनारा केटलाएक पूर्वोक्त आचार्यो ए विषयमां दृष्टांत पण आपे छे के जेम दूध कडाईमां नाखीने पकावातां छतां पण छेवट सुधी मधुरने मधुरज रेहे छे अने चोखा, जव तथा मग इत्यादि धान्यो धरतीमां ववाया छतां उत्तरकाळमां पण पोताना स्वभावने छोडतां नथी तेम रसो जठराग्निथी थती परिपाक अवस्थामां पण पोताना मधुरादिक स्वभावने न छोडे ए संभवितज छे. केटलाएक आचार्यो वळी एम बोले छे के निर्बळ रसो बळवान् रसोने वश्य थई जाय छे. आ प्रमाणे अनेक मतो पडवाथी विपाको विषे कशुं मुकरर थतुं नथी अने मुकरर थतुं नथी तेथीज जाणवुं जोईए के ए कोइ पण मतो सिद्धांतरूप नथी. शास्त्र जोतां तो 'मधुर अने कटुक' एम बे जातनोज विपाक सिद्ध थाय छे. एओमां मधुर विपाक भारे छे अने कटुक विपाक हलको छे. पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश एओना गुणोने अनुसरीने विपाकमां गुरुता अने लघुता थाय छे. पृथ्वी तथा जळ ए बे भूतो गुरु (भारे) छे अने बाकीनां त्रण भूतो लघु (हलकां) छे तेथी विपाकोमां गुरुता अने लघुता थाय छे. आथी सिद्ध थयुं के विपाक बे प्रकारनोज छे अने एज प्रधान छे.

आ विषयना श्लोकोमां कह्युं छे के "पाकवा लागेला पदार्थोमां जे पदार्थोनी अंदर पृथ्वीना अने जळना गुणो अधिक थाय छे ते पदार्थोनो विपाक मधुर थाय छे अने जे पदार्थोनी अंदर तेज, वायु अने आकाश एओना गुणो अधिक थाय छे ते पदार्थोनो विपाक कटुक थाय छे."

७ पृथक्त्वदर्शिनामेष वादिनां वादसंग्रहः ।
चतुर्णामपि सामर्थ्यमिच्छन्त्यत्र विपश्चितः ॥
तद्द्रव्यमात्मना किंचित्किंचिद्वीर्येण सेवितम् ।
किंचिद्रसविपाकाभ्यां दोषं हन्ति करोति वा ॥
पाको नास्ति विना वीर्याद्वीर्यं नास्ति विना रसात्
रसो नास्ति विना द्रव्याद्द्रव्यं श्रेष्ठमतः स्मृतम् ।
जन्म तु द्रव्यरसयोरन्योऽन्यापेक्षकं स्मृतम् ।
अन्योऽन्यापेक्षकं जन्म यथा स्याद्देहदेहिनोः ॥
वीर्यसंज्ञा गुणा येऽष्टौ तेऽपि द्रव्याश्रयाः स्मृताः।
रसेषु न वसन्त्येते निर्गुणास्तु गुणाः स्मृताः ॥
द्रव्ये द्रव्याणि यस्माद्धि विपच्यन्ते न षड्रसाः ।
श्रेष्ठं द्रव्यमतो ज्ञेयं शेषा भावास्तदाश्रयाः ॥

धन्वंतरिना सिद्धांतमां द्रव्य, रस, वीर्य अने विपाक ए चारेनी प्रधानता छे अने चारमां पण द्रव्यनी विशेष प्रधानता छे.

७ अमोए उपरना सघळा संदर्भथी, भेददर्शीओना वादोनो संग्रह देखाड्यो छे. धन्वंत-

रिना सिद्धांत प्रमाणे तो विद्वान लोको द्रव्य, रस, वीर्य अने विपाक ए चारेनुं प्रधानपणुं स्वीकारे छे अने चारमां पण द्रव्यनुं विशेष प्रधानपणुं स्वीकारे छे. कारण के सेववामां आवेलुं कोई द्रव्य पोताना पार्थिव आदि स्वरूपथी दोषोने तथा व्याधिने हणे छे अथवा करे छे, कोई द्रव्य वीर्यथी दोषने तथा व्याधिने हणे छे अथवा करे छे, कोई द्रव्य रसथी दोषने तथा व्याधिने हणे छे अथवा करे छे अने कोई द्रव्य विपाकथी दोषने तथा व्याधिने हणे छे अथवा करे छे. (जेम के खेर कोढने हणे छे ते केवळ पोताना स्वरूपथीज हणे छे, बृहत्पंचमूल गण पोताना वीर्यथीज वायुने हणे छे, गळो पोताना रसथीज पित्तने हणे छे अने सुंठ पोताना विपाकथीज वायुने हणे छे इत्यादि.) विपाक वीर्य विना थतो नथी, वीर्य रस विना थतुं नथी अने रस द्रव्य विना थतो नथी एटला माटे चारेमां द्रव्यनी विशेष प्रधानता मानवामां आवे छे. जेम जीव अने शरीर एओनुं जन्म, परस्परनी अपेक्षाथी छे तेम द्रव्य अने रस एओनुं जन्म पण परस्परनी अपेक्षाथी छे. (आ अध्यायना ९ मा विषयमां कह्या प्रमाणे) केटलाएक वैद्योए 'वीर्य' ए नामथी मानेला उष्ण आदि आठ गुणोने रसोमां रेहेनारा पण मान्या छे परंतु ए लोकोनुं ए मानवुं भूलभरेलुं छे. कारण के ते गुणो द्रव्योमां रहे छे पण रसोमां रेहेता नथी. गुणोमां गुणोनी स्थिति प्रमाणविरुद्धज छे. रसो पण गुण छे अने उष्णतादि आठ पण गुण छे. (गुणोमां गुणोनी स्थिति तर्कशास्त्रीओए पण स्वीकारी नथी.) (आ अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां कह्या प्रमाणे) केटलाएक आचार्योए विपाकोने रसोमां रेहेनारा स्वीकार्या छे तो ए स्वीकार पण भूलभरेलो छे. केम के रसो तथा विपाको ए बन्ने गुणो छे अने गुणोनी गुणोमां स्थिति प्रमाणविरुद्ध छे. आ पांचभौतिक शरीरमां द्रव्यो पाके छे पण छ रसो पाकता नथी. केम के रसो निरवयव छे अने निरवयव पदार्थोने पाकवुं संभवतुंज नथी. आ कारणोथी विपाको पण द्रव्योमां रेहेनाराज ठरे छे माटे द्रव्य, रस, वीर्य अने विपाक ए चारमां द्रव्यनी विशेष प्रधानता छे. द्रव्योना आश्रयथीज रस, वीर्य अने विपाक एओनी स्थिति छे.

८ अमीमांस्यान्यचिन्त्यानि प्रसिद्धानि स्वभावतः
आगमेनोपयोज्यानि भेषजानि विचक्षणैः ॥
प्रत्यक्षलक्षणफलाः प्रसिद्धाश्च स्वभावतः ।
नौषधीर्हेतुभिर्विद्वान्परीक्षेत कथंचन ॥
सहस्रेणापि हेतूनां नाम्बष्ठादिर्विरेचयेत् ।
तस्मात्तिष्ठेत्तु मतिमानागमे न तु हेतुषु ॥

केटलांएक औषधोनी उंडो विचार के तर्क नहीं करता केवळ शास्त्राधारथीज वापरवानी योग्यता.

८ जे औषधो प्रसिद्ध स्वभाववाळां छे तेओमां रस, वीर्य तथा विपाक वगेरेनो उंडो विचार के तर्क नहीं करतां विचक्षण वैद्योए केवळ शास्त्र उपरज आधार राखीने तेओने कामे लगाडवां. जे औषधिओनुं फळ प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे अने स्वभाव प्रसिद्धज छे ते औषधिओनी विद्वाने तेओना रस वगेरे हेतुओथी कोई रीते पण परीक्षा करवी नहीं. (एवी औषधिओना रस, वीर्य तथा विपाकादिक अनुमानथी विरुद्ध जतां होय तो पण ते वातनी कशी दरकार नहीं राखतां शास्त्रवचन उपर आधार राखीने तेओनो प्रयोग करी देवो[१].) जुवो के अंबष्ठादि गणमां विरेचनशक्ति

१ खेर, रसवंती तथा हळदर वगेरे द्रव्यो के जेओ कोढ वगेरेने हरनारां छे तेओना विषयमांज तर्क नहीं चलावतां शास्त्रवचन उपर आधार राखवो एम समजवुं. जो सर्व औषधोना विषयमां एम समजवामां आवे तो 'एक वर्गने बीजा वर्गनी साथ मिश्रित करवो' अने 'ए युक्तिथी वैद्ये सैकडो औषधो बनावी लेवां' इत्यादिक वचनोने विरोध आवे. (डल्लन.)

होवाना हजार हेतुओ जोवामां आवे छे तो पण ते गणथी कदी पण विरेचन थतुं नथी. आम छे एटला माटे विद्वान वैद्ये एवा केटलाएक विषयोमां शास्त्र उपरज आधार राखवो पण हेतुओ उपर आधार राखवो नहीं.

अध्याय ४१ मो.

१ अथातो द्रव्यविशेषविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'द्रव्यविशेपविज्ञानीय[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानां समुदायाद्द्रव्याभिनिर्वृत्तिरुत्कर्षस्त्वभिव्यञ्जको भवतीदं पार्थिवमिदमाप्यमिदं तैजसमिदं वायवीयमिदमाकाशीयमिति ॥

सघळां द्रव्यो पांचभौतिक छतां पण तेओमां 'अमुक द्रव्य अमुक भूतना विकाररूप छे अने अमुक द्रव्य अमुक भूतना विकाररूप छे' एम केहेवानुं कारण.

२ जो के पृथ्वी, जळ, तेज वायु अने आकाश ए पांचे भूतोना समवायथी सर्व द्रव्योनी उत्पत्ति छे तो पण जे द्रव्यमां जे भूतना गुणोनुं आधिक्य होय छे ते द्रव्यने ते भूतना विकाररूप अथवा ते भूतसंबंधी केहेवामां आवे छे. जेम के अमुक द्रव्य पार्थिव (पृथ्वीना विकाररूप अथवा पृथ्वीसंबंधी) छे, अमुक द्रव्य आप्य (जळना विकाररूप अथवा जलसंबंधी) छे, अमुक द्रव्य तैजस (तेजना विकाररूप अथवा तेजसंबंधी) छे, अमुक द्रव्य वायवीय (वायुना विकाररूप अथवा वायुसंबंधी) छे अने अमुक द्रव्य आकाशीय (आकाशना विकाररूप अथवा आकाशसंबंधी) छे.

१ द्रव्योना पार्थिव आदि भेदो जणाववा विषेनो.

३ तत्र स्थूलसारसान्द्रमन्दस्थिरखरगुरुकठिनगन्धबहुलमीषत्कषायं प्रायशो मधुरमिति पार्थिवम् ॥

तत्स्थैर्यबलसङ्घातोपचयकरं विशेषतश्चाधोगतिस्वभावमिति ॥

केवा गुणोवाळुं द्रव्य पार्थिव केहेवाय? अने ते पार्थिव द्रव्य शीशी क्रिया करे छे?

३ जे द्रव्य जाडुं, दृढ, घाटुं, मंद, स्थिर, खरसट, भारे, (घणे समये पाके एवुं) कठण, घणा गंधवाळुं, जरा तूरुं अने घणे अंशे मधुर होय ते पार्थिव केहेवाय छे.

पार्थिव द्रव्य स्थिरता आपे छे, बळ आपे छे, कठणपणुं आपे छे, पुष्टि आपे छे अने विशेषे करी नीचे जवाना स्वभाववाळुं होय छे.

४ शीतस्तिमितस्निग्धमन्दगुरुसरसान्द्रमृदुपिच्छिलरसबहुलमीषत्कषायाम्ललवणं मधुररसप्रायमाप्यम् ।

तत्स्नेहनप्रह्लादनक्लेदनबन्धनविष्यन्दनकरमिति ॥

केवा गुणोवाळुं द्रव्य आप्य केहेवाय अने ते आप्य द्रव्य शीशी क्रिया करे छे?

४ जे द्रव्य शीतल, आर्द्र, स्निग्ध, मंद, भारे, रसना आधिक्यवाळुं, सर (मळनी प्रवृत्ति करावनार) घाटुं, कोमळ, चीकासवाळुं, जरा तूरुं खाटुं तथा खारुं अने घणा माधुर्यवाळुं होय ते आप्य केहेवाय छे.

आप्य द्रव्य स्निग्धता आपे छे, सुख आपे छे, आर्द्रपणुं करे छे, चूर्ण वगेरे छूटा पदार्थने बांधी आपे छे अने स्राव करे छे.

५ उष्णतीक्ष्णसूक्ष्मरूक्षखरलघुविशदं रूपगुणबहुलमीषदम्ललवणं कटुकरसप्रायं विशेषतश्चोर्ध्वगतिस्वभावमिति तैजसम् ॥

तद्दहनपचनदारणतापनप्रकाशनप्रभावणंकरमिति ॥

केवा गुणोवाळुं द्रव्य तैजस केहेवाय? अने ते तैजस द्रव्य शी शी क्रिया करे छे?

५ जे द्रव्य उष्ण, तीक्ष्ण, स्रोतोने अनुसरवाना स्वभाववाळुं, रूक्ष, खरसट, हलकुं, चीकास वगरनुं, रूपगुणना आधिक्यवाळुं, जरा खाटुं तथा खारूं, घणा तीखा रसवाळुं अने विशेषे करी उंचे गति करवाना स्वभाववाळुं होय ते तैजस केहेवाय छे.

तैजस द्रव्य बाळे छे, पकावे छे, फाडी नाखे छे, तपावे छे, प्रकाश करे छे अने प्रभाने तथा गौरादिक वर्णने आपे छे.

६ सूक्ष्मरूक्षखरशिशिरलघुविशदं स्पर्शबहुलमीषत्तिक्तं विशेषतः कषायमिति वायवीयम्।

तद्वैशद्यलाघवग्लपनविरूक्षणविचारणकरमिति ॥

केवा गुणोवाळुं द्रव्य वायवीय केहेवाय छे अने ते वायवीय द्रव्य शी शी क्रिया करे छे?

६ जे द्रव्य सूक्ष्म, रूक्ष, खरसट, शीतल, हलकुं, नोखनोखा अवयवोवाळुं, घणा स्पर्शवाळुं, जरा कडवुं अने विशेषे करी तूरा रसवाळुं होय ते वायवीय केहेवाय छे.

वायवीय द्रव्य अवयवोने नोखनोखा करे छे, हलकाई आपे छे, स्त्रीना विषयमां प्रहर्ष रेहेवा देतुं नथी, रूक्षता करे छे अने मनमां अनेक विकल्पो करावे छे.

७ श्लक्ष्णसूक्ष्ममृदुव्यवायिविविक्तमव्यक्तरसं शब्दबहुलमाकाशीयम् ॥

तन्मार्दवसौषिर्यलाघवकरमिति ॥

केवा गुणोवाळुं द्रव्य आकाशीय केहेवाय छे अने ते आकाशीय द्रव्य शी शी क्रिया करे छे?

७ जे द्रव्य लासुं, सूक्ष्म, कोमळ, विषनी पेठे तथा मद्यनी पेठे सघळा शरीरमां व्याप्त थया पछी पाकनारूं, नोखनोखा अवयवोवाळुं, जेमां कोई पण रस स्पष्ट न होय एवुं अने घणा शब्दवाळुं होय ते आकाशीय केहेवाय छे.

आकाशीय द्रव्य कोमळता आपे छे, छिद्रयुक्तपणुं करे छे अने हलकाई करे छे.

८ अनेन निदर्शनेन नानौषधीभूतं जगति किंचिद्द्रव्यमस्तीति कृत्वा तं तं युक्तिविशेषमर्थं चाभिसमीक्ष्य स्ववीर्यगुणयुक्तानि द्रव्याणि कर्मकराणि भवन्ति ॥

सघळा पदार्थो औषधिरूप छे अने तेओ प्रयोजनने लगती योजनाने अनुसरीने काम करे छे.

८ आ दिक्प्रदर्शन उपरथी जाणी लेवुं के जगतमां एवुं कोई पण द्रव्य नथी के जे औषधिरूप न होय. आम छे एटलामाटे व्याधिना नाशरूप प्रयोजनने जोई नोखनोखी पाकादिक संस्कार तथा भावनावगेरे योजनाओ आपवाथी पोतपोतानां वीर्योवाळां तथा पोतपोतानां गुणोवाळां द्रव्यो काम करनारां थाय छे.

९ तानि यदा कुर्वन्ति स कालः। यत्कुर्वन्ति तत्कर्म। येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम्। यत्र कुर्वन्ति तदधिकरणम्। यथा कुर्वन्ति स उपायः। यन्निष्पादयति तत्फलमिति ॥

द्रव्योनां काळ, कर्म वीर्य, अधिकरण, उपाय अने फळ.

९ ए द्रव्यो जे समयमां कर्म करे छे ते तेओनो काळ केहेवाय छे, जे कांई काम करे छे

ते **कर्म** केहेवाय छे, जेथी काम करे छे ते **वीर्य** केहेवाय छे. जेमां काम करे छे ते (माणस) **अधिकरण** केहेवाय छे, जे स्वरस के कल्क आदि प्रकारथी काम करे छे ते प्रकार **उपाय** केहेवाय छे अने जेने (स्वस्थताने अथवा अस्वस्थताने) उत्पन्न करे छे ते फळ केहेवाय छे.

१० तत्र विरेचनद्रव्याणि पृथिव्यम्बुगुणभूयिष्ठानि पृथिव्यापो गुर्व्यौ गुरुत्वादधोगच्छन्ति तस्माद्विरेचनमधोगुणभूयिष्ठमनुमानात् ।

वमनद्रव्याण्यग्निवायुगुणभूयिष्ठान्यग्निवायू हि लघू लघुत्वाच्च तावूर्ध्वमुत्तिष्ठतस्तस्माद्वमनमप्यूर्ध्वगुणभूयिष्ठमुक्तम् ।

उभयगुणभूयिष्ठमुभयतोभागम् । आकाशगुणभूयिष्ठं संशमनम् । संग्राहकमनिलगुणभूयिष्ठमनिलस्य शोषणात्मकत्वात् । दीपनमग्निगुणभूयिष्ठम् । लेखनमनिलानलगुणभूयिष्ठम् । बृंहणं पृथिव्यम्बुगुणभूयिष्ठम् ॥

अनुमानोथी द्रव्योना पार्थिवत्व आदि स्वभावोनी परीक्षानी पद्धति.

१० जे कोई विरेचन द्रव्यो छे तेओ सघळां पृथ्वीना अने जळना गुणोना आधिक्यवाळां छे. केम के पृथ्वी अने जळ एओ भारे छे अने भारेपणाने लीधे नीचे गति करवाना स्वभाववाळां छे. विरेचन द्रव्यो पण नीचे गति करवारूप गुणथी अत्यंत युक्त होय छे माटे तेओ पृथ्वीना अने जळना गुणोना आधिक्यवाळां होवांज जोईए.

जे कोई वमन द्रव्यो छे तेओ अग्निना अने वायुना गुणोना आधिक्यवाळां छे केम के अग्नि तथा वायु हलका छे अने हलकापणाने लीधे उंचे गति करवाना स्वभाववाळा छे[१]. वमन द्रव्यो पण उंचे गति करवाना स्वभावथी अत्यंत युक्त छे माटे तेओ अग्निना अने वायुना गुणोना आधिक्यवाळां होवांज जोइए.

आ प्रमाणे जे कोई द्रव्योथी वमन तथा विरेचन ए बन्ने थाय छे ते द्रव्यो पृथ्वी, जळ, अग्नि अने वायु ए चारेना गुणोना आधिक्यवाळां होवांज जोइए. संशमन द्रव्यो आकाशना गुणोना आधिक्यवाळां होवां जोइए. संग्राहक द्रव्यो (मळने रोकनारां द्रव्यो) वायुना गुणोना आधिक्यवाळां होवां जोइए. केम के वायु शोषणात्मक छे. दीपन द्रव्यो अग्निना गुणोना आधिक्यवाळां होवां जोइए. लेखन द्रव्यो (कफने तथा मेदने उखेडी तथा खोतरीने पातळा करनारां द्रव्यो.) वायुना तथा अग्निना गुणोना आधिक्यवाळां होवांज जोइए. बृंहण द्रव्यो (पुष्टि आपनारां द्रव्यो) पृथ्वीना तथा जळना गुणोना आधिक्यवाळां होवांज जोइए.

११ एवमौषधकर्माण्यनुमानात्साधयेत् ॥

भवन्तिं चात्र ।

भूतेजोवारिजैर्द्रव्यैः शमं याति समीरणः ।
भूम्यम्बुवायुजैः पित्तं क्षिप्रमाप्नोति निर्वृतिम् ॥
खतेजोऽनिलजैः श्लेष्मा शममेति शरीरिणाम् ।
वियत्पवनजाताभ्यां वृद्धिमाप्नोति मारुतः ॥
आग्नेयमेव यद्द्रव्यं तेन पित्तमुदीर्यते ।
वसुधाजलजाताभ्यां बलासः परिवर्द्धते ।

द्रव्योनां कामोने पण अनुमानथी जाणी लेवां.

११ वैद्ये औषधोनां कामोने पण आवी रीतनां अनुमानोथी साधी लेवां.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वन्तरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "पार्थिव, तैजस (आग्नेय) तथा आप्य द्रव्योथी वायु तुरत शांति पामे छे. पार्थिव, आप्य अने वायवीय द्रव्योथी पित्त तुरत शांति पामे छे अने आकाशीय, तैजस तथा वायवीय द्रव्योथी कफ तुरत शांति पामे छे.

आकाशीय अने वायवीय द्रव्योथी, वायु वृद्धि

१ वायु आडी गतिवाळो छे एम निदानस्थानना पेहेला अध्यायना त्रीजा विषयमां कह्युं छे माटे अहीं उपपत्ति विचारवा जेवी छे.

पामे छे, तैजस द्रव्योथी पित्त वृद्धि पामे छे अने पार्थिव तथा आप्य द्रव्योथी कफ वृद्धि पामे छे.

१२ एवमेतद्गुणाधिक्यं द्रव्ये द्रव्ये विनिश्चितम् । द्विशो वा बहुशो वापि ज्ञात्वा दोषेऽवचारयेत् ॥

अनुमानोथी दरएक द्रव्योना गुणाधिक्यनो निश्चय करीने ते द्रव्योनो दोषोनी उपर प्रयोग करवो.

१२ आ प्रमाणे अनुमानोथी दरएक द्रव्योमां जे जे गुणोनुं आधिक्य होय तेनो निश्चय थाय छे. वैद्ये बुद्धिथी अवलोकन करीने एक, बे अथवा घणां द्रव्योनो व्याधिउपर प्रयोग करवो."

१३ तत्र य इमे गुणा वीर्यसंज्ञकाः शीतोष्णस्निग्धरूक्षमृदुतीक्ष्णपिच्छिलविशदास्तेषां तीक्ष्णोष्णावाग्नेयौ । शीतपिच्छिलावम्बुगुणभूयिष्ठौ । पृथिव्यम्बुगुणभूयिष्ठः स्नेहः । तोयाकाशगुणभूयिष्ठं मृदुत्वम् । वायुगुणभूयिष्ठं रौक्ष्यम् । क्षितिसमीरणगुणभूयिष्ठं वैशद्यम् ॥

वीर्योमां पण भूतोसंबंधी गुणोना आधिक्यनो निर्णय.

१३ शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष, मृदु, तीक्ष्ण, पिच्छिल अने विशद ए आठ गुणो के जेओ वीर्य केहेवाय छे तेओमां तीक्ष्ण तथा उष्ण ए गुणो अग्निना गुणोना आधिक्यवाळा छे, शीत तथा पिच्छिल ए बे गुणो जळना गुणोना आधिक्यवाळा छे, स्निग्ध गुण पृथ्वीना तथा जळना गुणोना आधिक्यवाळो छे, मृदु गुण जळना तथा आकाशना गुणोना आधिक्यवाळो छे, रूक्ष गुण वायुना गुणोना आधिक्यवाळो छे अने विशद गुण पृथ्वीना तथा वायुना गुणोना आधिक्यवाळो छे.

१४ गुरुलघुविपाकावुक्तगुणौ ॥

विपाकोमां पण भूतोसंबंधी गुणोना आधिक्यनो निर्णय.

१४ मधुर विपाक के जे गुरुता धरावनारो छे तेमां पृथ्वीना तथा जळना गुणोनुं आधिक्य छे अने कटुक विपाक के जे लघुता धरावनारो छे तेमां तेजना, वायुना तथा आकाशना गुणोनुं आधिक्य छे ए निर्णय (४० मा अध्यायना ६ ठ्ठा विषयमां) केहेवाई गयो छे.

१५ तत्रोष्णस्निग्धौ वातघ्नौ । शीतमृदुपिच्छिलाः पित्तघ्नाः । तीक्ष्णरूक्षविशदाः श्लेष्मघ्नाः ॥

कयुं वीर्य कया दोषने हणे छे ?

१५ उष्ण अने स्निग्ध ए वीर्यो वायुने हणे छे. शीत, मृदु तथा पिच्छिल ए वीर्यो पित्तने हणे छे अने तीक्ष्ण, रुक्ष, तथा विशद ए वीर्यो कफने हणे छे.

१६ गुरुपाको वातपित्तघ्नः । लघुपाकः श्लेष्मघ्नः ॥

कयो विपाक कया दोषने हणे छे ?

१६ गुरु विपाक (मधुर विपाक) वायुने तथा पित्तने हणे छे अने लघु विपाक (कटु विपाक) कफने हणे छे.

१७ तेषां मृदुशीतोष्णाः स्पर्शग्राह्याः । पिच्छिलविशदौ चक्षुःस्पर्शाभ्याम् । स्निग्धरूक्षौ चाक्षुषौ । तीक्ष्णो घ्राणदुःखोत्पादनेन ॥

वीर्यो शी शी रीते जाणी शकाय ?

१७ मृदु, शीत अने उष्ण ए त्रण वीर्यो स्पर्श करवाथी जाणवामां आवे छे. पिच्छिल अने विशद ए बे वीर्यो चक्षुथी तथा स्पर्शथी जाणवामां आवे छे. स्निग्ध अने रूक्ष ए बे वीर्यो चक्षुथी जाणवामां आवे छे. तीक्ष्ण वीर्य नाकमां दुःख उत्पन्न करवाथी जाणवामां आवे छे.

१८ गुरुपाकः सृष्टविण्मूत्रतया कफोत्क्लेशेन च । लघुर्बद्धविण्मूत्रतया मारुतकोपेन च ॥

विपाको शी रीते जाणी शकाय ?

१८ मधुरतावाळो गुरु विपाक विष्टानी तथा मूत्रनी वधारे प्रवृत्तिथी अने कफनुं उत्क्लेशन

(स्थानच्युतपणुं) थवाथी जाणवामां आवे छे. कटुकतावाळो लघु विपाक विष्टानी तथा मूत्रनी कबजीयतथी अने वायुना प्रकोपथी जाणवामां आवे छे.

१९ तत्र तुल्यरसेषु भूतेषु . गुणविशेषमुपलक्षयेत् । तद्यथा । मधुरो गुरुश्च पार्थिवः । मधुरः स्निग्धश्चाप्य इति ॥

तुल्य रसोवाळां द्रव्योमां पार्थिवत्व वगेरेनी परीक्षा केम करवी.

१९ जे द्रव्यो रसोथी तुल्य जोवामां आवतां होय तेओना पार्थिवत्व आदिनी परीक्षा गुणोना विशेष उपरथी करी लेवी. जेम के मधुरता धरावनारा बे पदार्थोमां जे पदार्थ मधुरतानी साथे गुरुताथी संयुक्त होय तेने पार्थिव समजवो अने जे पदार्थ मधुरतानी अने गुरुतानी साथे विशेष स्निग्धताथी संयुक्त होय तेने आप्य समजवो.

२० भवति चात्र

गुणा य उक्ता द्रव्येषु शरीरेष्वपि ते तथा ।
स्थानवृद्धिक्षयास्तस्माद्देहिनां द्रव्यहेतुकाः ॥

द्रव्योने लीधे शरीरोमां दोषोनी समता, वृद्धि तथा क्षीणता.

२० आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "द्रव्योमां जे गुणो केहेवामां आव्या ते गुणो प्राणीओनां शरीरोमां पण तेवीज रीते जोवामां आवे छे तेथी निश्चय करी शकाय छे के दोषोनी समता, वृद्धि अने क्षीणता एओ द्रव्योना उपयोगथीज थाय छे."

अध्याय ४२ मो.

१ अथातो रसविशेषविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'रसविशेषविज्ञानीय'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ आकाशपवनदहनतोयभूमिषु यथासंख्यमेकोत्तरपरिवृद्धाः शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः । तस्मादाप्यो रसः । परस्परसंसर्गात्परस्परानुग्रहात्परस्परानुप्रवेशाच्च सर्वेषु सर्वेषां सांनिध्यमस्त्युत्कर्षापकर्षात्तु ग्रहणम् ॥

रस जळनोज छे.

२ शब्द, स्पर्श, रूप. रस अने गंध एओ आकाश, वायु, अग्नि, जळ अने पृथ्वी ए पांच भूतोमां अनुक्रमथी वधेला जोवामां आवे छे. जेम के आकाश केवळ शब्दगुणवाळुंज छे. वायु शब्द तथा स्पर्श ए बे गुणोवाळो छे. अग्नि शब्द, स्पर्श तथा रूप ए त्रण गुणोवाळो छे. जळ शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस ए चार गुणोवाळुं छे अने पृथ्वी शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध ए पांच गुणोवाळी छे. आ उपरथी निश्चय करी शकाय छे के रस जळनोज छे पण बीजा कोई भूतनो नथी. जो के सर्व द्रव्योमां सर्व भूतोना परस्परना संयोगथी, परस्परना उपकारथी अने परस्परना अनुप्रवेशथी सर्व भूतोनुं सान्निध्य छे तो पण भूतोनी अधिकता अने न्यूनता उपरथी शब्दादिकनी अधिकतानुं अने न्यूनतानुं ग्रहण थाय छे. (जेम के जे द्रव्यमां आकाश अधिक होय छे ते द्रव्यमां शब्द अधिक होय छे अने जे द्रव्यमां वायु अधिक होय छे ते द्रव्यमां स्पर्श अधिक होय छे. इत्यादि.)

३ स खल्वाप्यो रसः शेषभूतसंसर्गाद्विदग्धः षोढा विभज्यते । तद्यथा । मधुरोऽम्लो लवणः कटुकस्तिक्तः कषाय इति । ते च भूयः परस्परसंसर्गात्त्रिषष्टिधा भिद्यन्ते ॥

रसना छ प्रकार अने छ प्रकारमांथी त्रेसठ प्रकार थवाविषे.

३ जळनाज गुणरूप ए रस काळनां साहा-

---
१ रसना भेदोना विशेष ज्ञानविषेनो.

य्यवाळां पृथ्वी, अग्नि, वायु अने आकाश एओना संसर्गथी परिपाकांतर पामीने मधुर, अम्ल, लवण, कटुक, तिक्त अने कषाय ए रीते छ प्रकारनो थाय छे अने ते छ प्रकारोमांथी वळी पण परस्परना संसर्गथी त्रेसठ प्रकारो बने छे. (रसोना त्रेसठ भेदोनुं निरूपण उत्तरतंत्रना ६३ मा अध्यायमां स्पष्टताथी आपवामां आवशे.)

४ तत्र भूम्यम्बुगुणबाहुल्यान्मधुरः । भूम्यग्निगुणबाहुल्यादम्लः । तोयाग्निगुणबाहुल्याल्लवणः । वाय्वग्निगुणबाहुल्यात्कटुकः । वाय्वाकाशगुणबाहुल्यात्तिक्तः । पृथिव्यनिलगुणबाहुल्यात्कषाय इति ॥

कयां कयां भूतोना गुणोना आधिक्यथी कयो कयो रस बने छे?

४ पृथ्वी अने जळ एओना गुणोना आधिक्यथी मधुर रस बने छे. पृथ्वी अने अग्नि एओना गुणोना आधिक्यथी अम्ल रस बने छे. जळ अने अग्नि एओना गुणोना आधिक्यथी लवण रस बने छे. वायु अने अग्नि एओना गुणोना आधिक्यथी कटुक रस बने छे. वायु अने आकाश एओना गुणोना आधिक्यथी तिक्त रस बने छे अने पृथ्वी तथा वायु एओना गुणोना आधिक्यथी कषाय रस बने छे.

५ तत्र मधुराम्ललवणा वातघ्नाः । मधुरतिक्तकषायाः पित्तघ्नाः । कटुतिक्तकषायाः श्लेष्मघ्नाः ॥

कया कया रसो कया दोषने हणे छे?

५ मधुर, अम्ल अने लवण ए त्रण रसो वायुने हणे छे. मधुर, तिक्त अने कषाय ए त्रण रसो पित्तने हणे छे अने कटुक, तिक्त तथा कषाय ए त्रण रसो कफने हणे छे.

६ तत्र वायुरात्मनैवात्मा पित्तमाग्नेयं श्लेष्मा सौम्य इति ॥

दोषोनी उत्पत्ति अमुक भूतोथी थई छे.

६ वायु पोतेज स्वतंत्र महाभूतरूप छे. पित्त अग्निमांथी उत्पन्न थयुं छे अने कफ जळमांथी उत्पन्न थयो छे.

७ त एव रसाः स्वयोनिवर्द्धना अन्ययोनिप्रशमनाश्च ॥

रसोनो सामान्य स्वभाव.

७ प्रत्येक रस जेओथी पोते उत्पन्न थया होय छे ते कारणोने वधारे छे अने जेओथी अन्य रसो उत्पन्न थया होय छे तेओनो ह्रास करे छे.

८ केचिदाहुरग्नीषोमीयत्वाज्जगतो रसा द्विविधाः सौम्या आग्नेयाश्च । तत्र मधुरतिक्तकषायाः सौम्याः कट्वम्ललवणा आग्नेयाः ॥ मधुराम्ललवणाः स्निग्धा गुरवश्च । कटुतिक्तकषाया रूक्षा लघवश्च । सौम्याः शीता आग्नेयाश्चोष्णाः ॥

रसोना मुख्य बेज भेदो होवाविषे केटलाएकनो मत.

८ केटलाएक आचार्यो केहे छे के सौम्य अने आग्नेय ए भेदोमांज रसो वेहेंचाई जाय छे. सघळुं जगत अग्न्यात्मक अने जळात्मकज छे तेथी रसोने ए बे भेदोमांज वेहेंचवा योग्य छे. मधुर, तिक्त अने कषाय ए त्रण रसो सौम्य (जलात्मक) छे अने कटु, अम्ल तथा लवण ए त्रण रसो अग्न्यात्मक छे. मधुर, अम्ल अने लवण ए त्रण रसो स्निग्ध छे अने गुरु छे. कटु, तिक्त अने कषाय ए त्रण रसो रुक्ष छे अने लघु छे. सौम्य रसो शीत छे अने आग्नेय रसो उष्ण छे.

९ तत्र शैत्यरौक्ष्यलाघववैशद्यवैष्टम्भ्यगुणलक्षणो वायुस्तस्य समानयोनिः कषायो रसः सोऽस्य शैत्याच्छैत्यं वर्द्धयति रौक्ष्याद्रौक्ष्यं लाघवाल्लाघवं वैशद्याद्वैशद्यं वैष्टम्भ्याद्वैष्टम्भ्यमिति ।

औष्ण्यतैक्ष्ण्यरौक्ष्यलाघववैशद्यगुणलक्षणं पित्तं तस्य समानयोनिः कटुको रसः सोऽ-

स्यौष्ण्यादौष्ण्यं वर्द्धयति तैक्ष्ण्यात्तैक्ष्ण्यं रौक्ष्याद्रौक्ष्यं लाघवाल्लाघवं वैशद्याद्वैशद्यमिति ॥

माधुर्यस्नेहगौरवशैत्यपैच्छिल्यगुणलक्षणः श्लेष्मा तस्य समानयोनिर्मधुरो रसः सोऽस्य माधुर्यान्माधुर्यं वर्द्धयति स्नेहात्स्नेहं गौरवाद्गौरवं शैत्याच्छैत्यं पैच्छिल्यात्पैच्छिल्यमिति ॥

कया कया रसो कया कया दोषोने वधारे छे? अने ते वधारवामां कयां कयां कारणो छे?

९ वायुमां शीतता, रूक्षता, लघुता, विशदता अने विष्टंभकता (मलादिकने अटकावनारपणुं) ए गुणो छे अने कषायरस पण एज स्वभावोवाळो छे माटे कषाय रस पोतानी शीतताथी वायुनी शीतताने, पोतानी रूक्षताथी वायुनी रूक्षताने, पोतानी लघुताथी वायुनी लघुताने, पोतानी विशदताथी वायुनी विशदताने अने पोतानी विष्टंभकताथी वायुनी विष्टंभकताने वधारे छे के जेथी वायु वृद्धि पामे छे.

पित्तमां उष्णता, तीक्ष्णता, रूक्षता, लघुता अने विशदता ए गुणो छे अने कटुक रस पण एज स्वभावोवाळो छे माटे कटुक रस पोतानी उष्णताथी पित्तनी उष्णताने, पोतानी तीक्ष्णताथी पित्तनी तीक्ष्णताने, पोतानी रूक्षताथी पित्तनी रूक्षताने, पोतानी लघुताथी पित्तनी लघुताने अने पोतानी विशदताथी पित्तनी विशदताने वधारे छे के जेथी पित्तनी वृद्धि थाय छे.

कफमां मधुरता, स्निग्धता, गुरुता, शीतता अने पिच्छिलता ए गुणो छे अने मधुर रस पण एज स्वभावोवाळो छे माटे मधुर रस पोतानी मधुरताथी कफनी मधुरताने, पोतानी स्निग्धताथी कफनी स्निग्धताने, पोतानी गुरुताथी कफनी गुरुताने, पोतानी शीतताथी कफनी शीतताने अने पोतानी पिच्छिलताथी कफनी पिच्छिलताने वधारे छे के जेथी कफनी वृद्धि थाय छे.

१० तस्य पुनरन्ययोनिः कटुको रसः स श्लेष्मणः प्रत्यनीकत्वात् कटुकत्वान्माधुर्यमभिभवति रौक्ष्यात्स्नेहं लाघवाद्गौरवमौष्ण्याच्छैत्यं वैशद्यात्पैच्छिल्यमिति ।

तदेतन्निदर्शनमात्रमुक्तम् ॥

पांचमा विषयमां कह्या प्रमाणे अमुक रसोथी अमुक दोषो हणाय छे तेमां शां शां कारणो छे?

१० कटुक रस कफथी विपरीत स्वभावोवाळो छे माटे ते रस कफनो शत्रु (कफथी विरुद्ध) होवाने लीधे पोताना तीखापणाथी कफनी मधुरतानो, पोताना रूक्षपणाथी कफना स्निग्धपणानो, पोतानी लघुताथी कफनी गुरुतानो, पोताना उष्णपणाथी कफनी शीततानो अने पोताना विशदपणाथी कफना पिच्छिलपणानो (तांतडावाळी चीकाशनो) पराभव करी नाखे छे के जेथी कफ हणाई जाय छे.

आ एक दृष्टांतमात्र कह्युं ते उपरथी बीजा अमुक रसोवते बीजा अमुक दोषोना नाश थवानां कारणो समजी लेवां.

११ रसलक्षणमत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥

तत्र यः परितोषमुत्पादयति प्रह्लादयति तर्पयति जीवयति मुखावलेपं जनयति श्लेष्माणं चाभिवर्द्धयति स मधुरः ॥

यो दन्तहर्षमुत्पादयति मुखास्रावं जनयति श्रद्धाश्चोत्पादयति सोऽम्लः ॥

यो भक्तरुचिमुत्पादयति कफप्रसेकं जनयति मार्दवं चापादयति स लवणः ॥

यो जिह्वाग्रं बाधते उद्वेगं जनयति शिरो गृह्णीते नासिकां च स्रावयति स कटुकः ॥

यो गले चोषमुत्पादयति मुखवैशद्यं जनयति भक्तरुचिं चापादयति हर्षं च स तिक्तः ॥

यो वक्त्रं परिशोषयति जिह्वां स्तम्भयति कण्ठं बध्नाति हृदयं कर्षति पीडयति च स कषायः ॥

प्रत्येक रसनां जूदां जूदां लक्षणो.

११ हवे रसोनां लक्षणो कहीए छीए.

जे रस परितोषने उत्पन्न करे छे, सुख आपेछे, तृप्ति आपेछे, प्राणोनुं धारण करे छे, मुखमां मळोनी वृद्धि करे छे अने कफने वधारे छे ते रस **मधुर** केहेवाय छे.

जे रस दांतोने अंबावी नाखे छे, मोहोडामांथी लाळनो स्राव करावे छे अने रुचिओने उत्पन्न करे छे ते रस **अम्ल** (खाटो) केहेवाय छे.

जे रस अन्नोमां रुचि उत्पन्न करे छे, कफनो स्राव करावे छे अने अंगोमां कोमळता करी देछे ते रस **लवण** (खारो) केहेवाय छे.

जे रस जीभनी अणीने पीडा करे छे, उद्वेगने (चमकी जवाने) उत्पन्न करे छे, उद्वेग करवाथी माथाने पकडी लेछे अने नाकमांथी स्राव करावे छे ते रस कटुक (तीखो) केहेवाय छे.

जे रस गळामां आकर्षण करे छे, मोहोडाने स्वच्छ करे छे, अन्नोमां रुचि उत्पन्न करे छे अने रुवाणांओने उभां करी नाखे छे ते रस तिक्त (कडवो) केहेवाय छे.

जे रस मोहोडाने सुकावी नाखे छे, जीभने स्तब्ध करी दे छ, कंठने बांधी लेछे अने हृदयने खेचे छे तथा पीडे छे ते रस कषाय (तूरो) केहेवाय छे.

१२ रसगुणानत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥

तत्र मधुरो रसो रसरक्तमांसमेदोऽस्थिमज्जौजःशुक्रस्तन्यवर्द्धनश्चक्षुष्यः केश्यो वर्ण्यो बलकृत्संधानः शोणितरसप्रसादनो बालवृद्धक्षतक्षीणहितः षट्पदपिपीलिकानामिष्टतमस्तृष्णामूर्छादाहप्रशमनः षडिन्द्रियप्रसादनः कृमिकफकरश्चेति। स एवंगुणोऽप्येक एवात्यर्थमासेव्यमानः कासश्वासालसकवमथुवदनमाधुर्यस्वरोपघातकृमिगलगण्डानापादयति तथार्बुदश्लीपदबस्तिगुदोपलेपाभिष्यन्दप्रभृतीञ्जनयति ॥

अम्लो जरणः पाचनः पवननिग्रहणोऽनुलोमनः कोष्ठविदाही बहिःशीतः क्लेदनः प्रायशो हृद्यश्चेति । स एवंगुणोऽप्येक एवात्यर्थमुपसेव्यमानो दन्तहर्षनयनसंमीलनरोमसंवेजनकफविलयनशरीरशैथिल्यान्यापादयति तथा क्षताभिहतदग्धदष्टभग्नशूनरुग्णप्रच्युतावमूत्रितविसर्पितच्छिन्नभिन्नविद्धोत्पिष्टादीनि पाचयत्याग्नेयस्वभावात्परिदहति कण्ठमुरो हृदयं चेति

लवणः संशोधनः पाचनो विश्लेषणः क्लेदनः शैथिल्यकृदुष्णः सर्वरसप्रत्यनीको मार्गविशोधनः सर्वशरीरावयवमार्दवकरश्चेति । स एवंगुणोऽप्येक एवात्यर्थमासेव्यमानो गात्रकण्डूकोठशोफवैवर्ण्यपुंस्त्वोपघातेन्द्रियोपतापांस्तथा मुखाक्षिपाकं रक्तपित्तवातशोणिताम्लिकाप्रभृतीनापादयति ॥

कटुको दीपनः पाचनो रोचनः शोधनः स्थौल्यालस्यकफकृमिविषकुष्ठकण्डूपशमनः संधिबन्धविच्छेदनोऽवसादनः स्तन्यशुक्रमेदसामुपहन्ता चेति । स एवंगुणोऽप्येक एवात्यर्थमुपसेव्यमानो भ्रममदगलताल्वोष्ठशोषगात्रसंतापबलविघातकम्पतोदभेदकृत्करचरणपार्श्वपृष्ठप्रभृतिषु च वातशूलानापादयति ॥

तिक्तश्छेदनो रोचनो दीपनः शोधनः कण्डूकोठतृष्णामूर्छाज्वरप्रशमनः स्तन्यशोधनो विण्मूत्रक्लेदमेदोवसापूयोपशोषणश्चेति। स एवंगुणोऽप्येक एवात्यर्थमुपसेव्यमानो गात्रमन्यास्तम्भाक्षेपकार्दितशिरःशूलभ्रमतोदभेदच्छेदास्यवैरस्यान्यापादयति ॥

कषायः संग्राहको रोपणः स्तम्भनः शोधनो लेखनः शोषणः पीडनः क्लेदोपशोषणश्चेति । स एवंगुणोऽप्येक एवात्यर्थमुपसेव्यमानो हृत्पीडास्यशोषोदराध्मानवाक्यग्रहमन्यास्तम्भगात्रस्फुरणचुमचुमायनाकुञ्चनाक्षेपणप्रभृतीञ्जनयति ॥

प्रत्येक रसना जूदा जूदा गुणो तथा दोषो.

१२ हवे रसोना गुणो कहीएछीए. (दोषो पण कहीएछीए.)

मधुर रस रसने, रुधिरने, मांसने, मेदने, अस्थिओने, मज्जाने, ओजने, वीर्यने तथा धावणने वधारे छे, चक्षुओनुं हित करे छे, केशोने सारा राखे छे, वर्णने सारो करे छे, बळ आपे छे, भांगेलांने सांधी दे छे. रुधिरने तथा रसने स्वच्छ करे छे, बालक वृद्ध तथा क्षतथी क्षीण थएल एओनुं हित करे छे, भ्रमरोने तथा कीडीओने बहुज प्यारो छे, तरश मूर्छा तथा दाह एओने शांत करे छे, पांचे इंद्रियोने तथा मनने प्रसन्न करे छे अने कृमिओने तथा कफने उत्पन्न करे छे. ए मधुर रस एवा गुणोवाळो छतां पण जो ते एकज अत्यंत सेवाय तो तेथी खांसी, श्वास, आलसक, उलटी, मोहोडानी मधुरता, स्वरनो उपघात, कृमि, गलगंड, अर्बुद, श्लीपद, मूत्राशयमां उपलेप, गुदामां उपलेप अने अभिष्यद (एक जातनो नेत्ररोग) इत्यादि व्याधिओने उत्पन्न करे छे.

अम्ल रस आहारने पचावे छे, दोपने तथा रोगने पकावे छे, पवनने पकडी ले छे, वायु मूत्र तथा विष्टा एओनुं अनुलोमन करे छ, (सीधे रस्ते लावे छे) कोठामां बळतरा करे छे, बाहारथी शीतता देखाडे छे, आर्द्रता करे छे अने घणुं करीने हृदयने प्रिय लागे एवो छे. ए अम्ल रस एवा गुणोवाळो छतां पण जो ते एकज अत्यंत सेवाय तो दांतोने अंबावी दे छे, नेत्रोने वीचावी नाखे छे, रुवाणांओने उभां करी दे छे, कफने पीगळावी नाखे छे, शरीरने शिथिल करी नाखे छे अने जखमी थएला, अभिघात पामेला, बळेला, करडाएला, भांगेला, सूजीगएला, वांका थइ गएला, स्थानथी खसी गएला, झेरी मूत्रवाळां प्राणीओनां मूत्रथी स्पर्श पामेला, झेरी स्पर्शवाळां प्राणीओथी स्पर्श पामेला, छेदाएला, भेदाएला, वींधाएला के मर्द्दन पामेला अवयवने पकावी दे छे तथा अग्न्यात्मक होवाने लीधे कंठनो, उरःस्थलनो अने हृदयनो दाह करे छे.

लवण रस वमन तथा विरेचन करी देवाथी संशोधन करे छे, दुष्ट व्रणने पकावी दे छे, अवयवोने जूदा पाडी दे छे, व्रणने आर्द्र करे छे, शरीरमां शिथिलता करी दे छे, उष्ण छे, सघळा रसोनो शत्रु छे, मूत्रादिकना मार्गोने साफ करनार छे अने सघळा शरीरना अवयवोने कोमळ करी देनार छे. ए लवणरस एवा गुणोवाळो छतां पण जो ते एकज अत्यंत सेवाय तो गात्रमां खरज, धामठां, सोजा, वर्णनी खराबी, पुरुषपणानो उपघात, (वीर्यनो क्षय) इंद्रियोनो उपताप, मोहोडानुं पाकवुं, आंखोनुं पाकवुं, रक्तपित्त, वातरक्त तथा खाटा ओडकार इत्यादि व्याधिओने उत्पन्न करे छे.

कटुक रस अग्निने दीप्त करे छे, पाचन छे, रुचि उपजांवे छे, मार्गोने स्वच्छ करे छे, स्थूलताने मटाडे छे, आलस्य कफ कृमि विष कोढ तथा खरज एओने शांत करे छे, सांधाओनां बंधनोने विच्छिन्न करी नाखे छे, उत्साहने टाळे छे अने धावण, वीर्य तथा मेद एओनो उपघात करे छे. ए कटुक रस एवा गुणोवाळो छतां पण जो ते एकज अत्यंत सेवाय तो भ्रमण, हर्षनो क्षय, गळानो शोष, ताळवांनो शोष, होठनो शोष, गात्रोमां संताप, बळनो उपघात, कंप, भोंकाया जेवी व्यथा तथा भेदन एओने करे छे अने हाथ पग, पडखां तथा पीठ वगेरेमां वातशूळोने उत्पन्न करे छे.

तिक्त रस कफने छेदी नाखे छे, बीजी भक्ष्य वस्तुओ उपर रुचि करावे छे, अग्निने दीप्त करे छे, शोधन करे छे, खरज धामठां तरश मूर्छा तथा ज्वर एओने शांत करे छे, धावणने साफ करे छे

अने विष्टा, मूत्र, क्लेद, मेद, चरबी तथा परू एओने सुकावे छे. ए तिक्त रस एवा गुणोवाळो छतां पण जो ते एकज अत्यंत सेवाय तो गात्रोने तथा डोकनी पाछली शिराओने झाली ले छे अने आक्षेपक, अर्दित, शिरःशूल, भ्रम, भोकाया जेवी पीडा, भेदन, छेदन तथा मुखनी विरसता ए व्याधिओने उत्पन्न करे छे.

कषाय रस मळोनी प्रवृत्तिने अटकावे छे, व्रणमां धरती लावे छे, गात्रोने दृढ करे छे, व्रणनुं शोधन करे छे, व्रणना मांसने उखेडी नाखे छे, द्रवनुं शोषण करे छे, व्रणने तथा हृदयने दबावे छे अने क्लेदने सुकावी नाखे छे. ए कषाय रस एवा गुणोवाळो छतां पण जो ते एकज अत्यंत सेवाय तो हृदयमां पीडा, मोहोडानो शोष, पेटनो आफरो, बोलवामां अटकायत, डोकनी पाछली शिराओनुं झलाई जवुं, गात्रोनुं फरकवुं, चमचमाटी, गात्रोनुं संकोचावुं अने अत्यंत कंपवुं इत्यादिक व्याधिओने उत्पन्न करे छे.

१३ अतः सर्वेषामेव द्रव्याण्युपदेक्ष्यामः ॥ तद्यथा ॥ काकोल्यादिः क्षीरघृतवसामज्जशालिषष्टिकयवगोधूममाषशृङ्गाटककसेरुकत्रपुसैर्वारुककर्कारुकालाबुकालिन्दकतकगिलोड्यप्रियालपुष्करबीजकाश्मर्यमधूकद्राक्षाखर्जूरराजादनतालनालिकेरेक्षुविकारबलातिबलात्मगुप्ताविदारीपयस्यागोक्षुरकक्षीरमोरटमधूलिकाकूष्माण्डप्रभृतीनि समासेन मधुरो वर्गः ॥

दाडिमामलकमातुलुङ्गाम्रातककपित्थकरमर्दबदरकोलप्राचीनामलकतिन्तिडीककोशाम्रभव्यपारावतवेत्रफललकुचाम्लवेतसदन्तशठदधितक्रसुराशुक्तसौवीरकतुषोदकधान्याम्लप्रभृतीनि समासेनाम्लो वर्गः ॥

सैन्धवसौवर्चलविडपाक्यरोमकसामुद्रकपक्त्रिमयवक्षारोषप्रसूतसुवर्चिकाप्रभृतीनि समासेन लवणो वर्गः ॥

१ गिलोड्यनो पर्याय गुजरातीमां मळ्यो नथी.

पिप्पल्यादिः सुरसादिः शिग्रुमधुशिग्रुमूलकलशुनसुमुखशीतशिवकुष्ठदेवदारुहरेणुकावल्गुजफलचण्डागुग्गुलुमुस्तालाङ्गलकीशुकनासापीलुप्रभृतीनि सालसारादिश्च प्रायशः कटुको वर्गः ॥

आरग्वधादिर्गुडूच्यादिर्मण्डूकपर्णीवेत्रकरीरहरिद्राद्वयेन्द्रयववरुणस्वादुकण्टकसप्तपर्णबृहतीद्वयशङ्खिनीद्रवन्तीत्रिवृत्कृतवेधनकर्कोटककारवेल्लकवार्ताककरीरकरवीरसुमनःशङ्खपुष्प्यपामार्गत्रायमाणाऽशोकरोहिणीवैजयन्तीसुवर्चलापुनर्नवावृश्चिकालीज्योतिष्मतीप्रभृतीनि समासेन तिक्तो वर्गः ॥

न्यग्रोधादिरम्बष्ठादिः प्रियङ्ग्वादी रोध्रादिस्त्रिफलाशल्लकीजम्ब्वाम्रबकुलतिन्दुकफलानि कतकशाकपाषाणभेदकवनस्पतिफलानि सालसारादिश्च प्रायशः कुरबककोविदारकजीवन्तीचिल्लीपालङ्क्यासुनिषण्णकप्रभृतीनि नीवारकादयो मुद्गादयश्च समासेन कषायो वर्गः ॥

प्रत्येक रसनां द्रव्यो.

१३ हवे सघळा रसोनां द्रव्यो बतावीए छीए.

काकोल्यादि गण, दूध, घी, चरबी, मज्जा, चोखा, साठीचोखा, जव, घउं, अडद, शींगोडां, कसेरुकंद, त्रपुस, (काकडीनी जात छे) एर्वारुक, (मोटी काकडी) कर्कारुक, (पदकोळां) मीठां तुंबडां, तडबूच, निर्मळी, गिलोड्य[1], चारोळी, कमळकाकडी, सीवणनां फळ, महुडां, द्राक्ष, खजूर, राण, ताडनां फळ, नाळीएर, शेलडीमांथी थता गोळ वगेरे सघळा पदार्थो, बलदाणा, खपाट, कौंचां, फगवेलानो कंद, खरणेर, गोखरू, फाटेला दूधनुं पाणी, जेठीमध अने ठुं इत्यादि पदार्थो **मधुरवर्ग** छे. आ मधुरवर्ग संक्षेपथी कह्यो छे.

दाडिम, आमळां, बीजोरां, अंबाडां, कोठ, कर-

मदां, नाहानां बोर, मोटां बोर, पान आंमळां, कोकम, पाहाडी आंबानां फळ, ओटनां फळ, अनन्नास, नेतरनां फळ, लकुच (नाहानां फनस) अमलवेत, लींबुं, दहीं, छाश, मदिरा, शुक्तं[1], सौवीरक[2], तुषोदकं[3], अने धान्याम्लं[4], इत्यादि पदार्थो **अम्लवर्ग** छे. आ अम्लवर्ग संक्षेपथी कह्यो छे.

सैंधव, संचळ, बिडलूण, वडागरूं लूण. सांभरलूण, दरीयाईलूण, पकावीने बनावेलुं लूण, जवखार, खारो अने साजीखार इत्यादि पदार्थो **लवणवर्ग** छे. आ लवणवर्ग संक्षेपथी कह्यो छे.

पिप्पल्यादि गण, सुरसादि गण, सरगवो, रातो सरगवो, मूळा, लसण, सुमुख नामनी जंगली तुलसी, कपूर अथवा पत्थरफूल, कठ, देवदार, हरेणुका, वापची, करमाणी, गुगळ, मोथ, दूधीयो वछनाग, अरडूसो, पीलु अने प्रायशः सालसारादि गण ए **कटुकवर्ग** छे. आ कटुकवर्ग संक्षेपथी कह्यो छे.

आरग्वधादि गण, गडूच्यादि गण, ब्राह्मी, नेतरना अंकुरो, हळदर, दारूहळदर, इंद्रजव, वायवरणां, गोखरू, सप्तपर्ण, उभी भोरींगणी, बेठी भोंरींगणी, आंखफूटामणी, उंदरकन्नी, नसोतर, कडवी घीसोडी, कडवी कंटोली, कारेली, रींगणी, केर, कणेर, मालती, मोटी सफेद जुई, अघेडो, त्रायमाण, कडु, मोटी अरणी, सुरजमुखी, साटोडी, मेंढाशिंगी अने मोटी मालकांकणी इत्यादि पदार्थो **तिक्तवर्ग** छे. आ तिक्तवर्ग संक्षेपथी कह्यो छे.

न्यग्रोधादि गण, अंबष्ठादि गण, प्रियंग्वादि गण, रोध्रादि गण, त्रिफळा गण, सालेडो, जांबु, आंबो, बोलसरी, टींबरुनां कांचां फळो, निर्मली, साग, पाषाणभेद, वड वगेरे वनस्पतिओनां फळो, घणखरो सालसारादि गण, कांटाअशेरीयो, कंचनार, कडवी खरखोडी, टांकानी भाजी, पालखनी भाजी, ओटींगण वगेरे, बंटीआदि तृणधान्यो अने मगआदि धान्यो ए पदार्थो **कषायवर्ग** छे. आ कषायवर्ग संक्षेपथी कह्यो छे.

१४ तत्रैषां रसानां संयोगास्त्रिषष्टिर्भवन्ति। तद्यथा। पञ्चदश द्विका विंशतिस्त्रिकाः पञ्चदश चतुष्काः षट् पञ्चका एकशः षड्रसा एकः षट्क इति। तेषामन्यत्र प्रयोजनानि वक्ष्यामः॥

रसोना त्रेसठ संयोगो.

१४ ए रसोना संयोगो त्रेसठ थाय छे. जेम के बबे रसोना संयोगो पंदर थाय छे. त्रण त्रण रसोना संयोगो वीश थाय छे. चार चार रसोना संयोगो पंदर थाय छे, पांच पांच रसोना संयोगो छ थाय छे. जुदा जुदा रसो छ थाय छे अने छनो संयोग एक थाय छे. एओनां प्रयोजनो उत्तरतंत्रना ६३ मा अध्यायमां कहीशुं.

१५ भवति चात्र ॥

जग्धाः षडधिगच्छन्ति बलिनो वशतां रसाः।
यथा प्रकुपिता दोषा वशं यान्ति बलीयसः ॥

छए रसो एक एक करीने वारंवार खाधा होय तो पण तेओ बलवान माणसने कशी हानि करी शकता नथी.

१५ आ रसोना विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेम दोषो प्रकोप पामेला छतां पण अति बळवान् माणसने

१ तेल, गोळ, कांजी अने लूण वगेरेवाळो आथो.

२ फोतरां काहाडी नाखी काचा अथवा पाका जवना टुकडा टुकडा करी पाणीमां आथ्या होय ते पाणी सौवीरक केहेवाय छे.

३ फोतरां सहित काचा जवोने टुकडा टुकडा करीने पाणीमां आथ्या होय ते पाणी तुषोदक केहेवाय छे.

४ चोखानुं तथा कोदरा वगेरेनुं चूर्ण आथवाथी धान्याम्ल थाय छे.

वश्य थई जाय छे तेम वारंवार एक एक करीने खाधेला छए रसो पण अति बळवान् माणसने वश्य थई जाय छे. (कशो व्याधि उत्पन्न करी शकता नथी.)

अध्याय ४३ मो.

१ अथातो वमनद्रव्यविकल्पविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वमनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय'नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वमनद्रव्याणां फलाद्यानां मदनफलानि श्रेष्ठतमानि भवन्ति ।

अथ मदनपुष्पाणामातपपरिशुष्काणां चूर्णप्रकुञ्चं प्रत्यक्पुष्पीसदापुष्पीनिम्बकषायाणामन्यतमेनालोड्य मधुसैन्धवयुक्तां मात्रां पाययित्वा वामयेत् ।

मदनशलाटुचूर्णान्येवं वा बकुलरम्यकोपयुक्तानि मधुलवणयुक्तान्यभिप्रतप्तानि मदनशलाटुचूर्णसिद्धां वा तिलतण्डुलयवागूम् ।

निर्वृत्तानां वा नातिहरितपाण्डूनां कुशमूढावबद्धमृद्गोमयप्रलिप्तानां यवतुषमुद्गमाषशाल्यादिधान्यराशावष्टरात्रोषिताक्लिन्नभिन्नानां फलानां फलपिप्पलीरुद्धृत्यातपे शोषयेत्तासां दधिमधुपललविमृदितपरिशुष्काणां सुभाजनस्थानामन्तर्नखमुष्टिमुष्णे यष्टीमधुककषाये कोविदारादीनामन्यतमे वा कषाये विमृद्य रात्रिपर्युषितं मधुसैन्धवयुक्तमाशीर्भिरभिमन्त्रितमुदङ्मुखः प्राङ्मुखमातुरं पाययेतानेन मन्त्रेणाभिमन्त्र्य ।

ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्कानलानिलाः ।
ऋषयः सौषधीग्रामा भूतसङ्घास्तु पान्तु ते ॥

१ वमनद्रव्यना प्रयोगो जणाववा विषेनो.

रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा ।
सुधेवोत्तमनागानां भैषज्यमिदमस्तु ते ॥

विशेषेण श्लेष्मज्वरप्रतिश्यायान्तर्विद्रधिष्वप्रवर्तमाने वा दोषे पिप्पलीवचागौरसर्षपकल्कोन्मिश्रैः सलवणैरुष्णाम्बुभिः पुनः पुनः प्रवर्तयेदासम्यग्वान्तलक्षणादिति ॥

मदनफलमज्जचूर्णं वा तत्क्वाथपरिभावितं मदनफलकषायेण । मदनफलमज्जासिद्धस्य वा पयसः संतानिकां क्षौद्रयुक्ताम् । मदनफलमज्जसिद्धं वा पयः । मदनफलमज्जासिद्धेन वा पयसा यवागूमधोभागासृक्पित्तहृद्दाहयोः ॥

मदनफलमज्जासिद्धस्य वा पयसो दधिभावमुपगतस्य दध्युत्तरं दधि वा कफप्रसेकच्छर्दिमूर्च्छातमकेषु ॥

मदनफलमज्जस्नेहं वा भल्लातकस्नेहवदादाय फाणितीभूतं लेहयेदातपपरिशुष्कं वा मदनफलमज्जचूर्णं जीवन्तीकषायेण पित्ते कफस्थानगते ॥

मदनफलमज्जक्वाथं वा पिप्पल्यादिप्रतीवापं तच्चूर्णं वा निम्बरूपिकाकषाययोरन्यतरेण कफव्याधिहरं मदनफलमज्जचूर्णं वा मधूककाश्मर्यद्राक्षाकषायेण संतर्पणं च ॥ मदनफलविधानमुक्तम् ॥

मींढोळथी वमन कराववाना एकत्रीश योगो.

पहेलो योग.

२ मींढोळ, कुकडवेल तथा कडवां तूरीयां वगेरे जे जे वमनद्रव्यो कहेलां छे तेओमां मींढोळ अत्यंत श्रेष्ठ छे.

मीढोळने तडकामां सुकावी, तेओनुं चूर्ण करी, ते चूर्णमांथी चार तोलां भार चूर्ण लई, ते चूर्णने अघेडाना क्वाथमां घोळी, तेमां मध तथा सैंधव नाखी, ते क्वाथ पाईने वमन करावबुं.

बीजो योग.

मीढोळने तडकामां सुकावी, तेओनुं चूर्ण करी, ते चूर्णमांथी चार तोलां भार चूर्ण लई, ते चूर्णने आकडाना क्वाथमां घोळी, तेमां मध तथा सैंधव नाखी, ते क्वाथ पाईने वमन करावबुं.

त्रीजो योग.

मीढोळने तडकामां सुकावी, तेओनुं चूर्ण करी, ते चूर्णमांथी चार तोलां भार चूर्ण लई, ते चूर्णने लींबडाना क्वाथमां घोळी तेमां मध तथा सैंधव नाखी, ते क्वाथ पाईने वमन करावबुं.

चोथो योग.

काचां मीढोळना चार तोलां भार चूर्णमां बोलसरी तथा बकान नाखी, अघेडाना रसमां घोळी, गरम करी, तेमां मध तथा सैंधव नाखी, ते रस पाईने वमन करावबुं.

पांचमो योग.

काचां मीढोळना चार तोलां भार चूर्णमां बोलसरी तथा बकान नाखी, आकडाना रसमां घोळी, गरम करी, तेमां मध तथा सैंधव नाखी ते रस पाईने वमन करावबुं.

छठ्ठा योग.

काचां मीढोळना चार तोलां भार चूर्णमां बोलसरी तथा बकान नाखी, लींबडाना रसमां घोळी, गरम करी, तेमां मध तथा सैंधव नाखी, ते रस पाईने वमन करावबुं.

सातमो योग.

काचां मीढोळनुं चार तोलां भार चूर्ण नाखीने पकावेली तिलनी तथा चोखानी राब चटाडीने वमन करावबुं.

आठमो योग.

पाकेलां पण अत्यंत हरित के पांडु न थई गयां होय एवां[1] मीढोळोने चोतरफ दर्भना पाटाथी बांधी, ते पाटा उपर छाण माटीनो लेप करी, जवनां फोतरांना ढगलामां, अथवा मग, अडद के चोखा वगेरे धान्यना ढगलामां आठ रात सुधी राखवां. आम करवाथी ए मीढोळो आर्द्र थई पोतानी मेळे फाटी जाय एटले तेओनां बीज काहाडी लईने तडकामां सुकाववां. पछी ए बीजोने दहीं, मध तथा मांस एओमां खूब वाटी फरीवार सुकावीने सारा वासणमां भरी राखवां. ए चूर्णमांथी जेमां नखो अंदर रहे एवी अर्थात् नाहानी मुठी भरी ते मुष्टिपरिमित चूर्णने जेठीमधना गरम काढामां चोळी नाखी रातवाशी रहेवा दई तेमां मध तथा सैंधव नाखवां. पछी वैद्ये ते काढाने वेदोक्त आशिर्वादना मंत्रोथी मंत्री, पोतानुं मुख उत्तर तरफ राखी, आतुरने उगमणे मोहोडे बेसाडी तथा नीचेप्रमाणे अर्थवाळा मूलोक्त मंत्रोथी अभिमंत्रित करीने ते काढो पावो.

" ब्रह्मा, दक्ष, अश्विनीकुमार, रुद्र, इंद्र, पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, अग्नि, पवन, ऋषिओ, औषधीओना समूहो अने सर्व भूतोना समूहो तारूं रक्षण करजो. जेम रसायन ऋषिओने आरोग्य आपे छे, अमृत देवताओने आरोग्य आपेछे अने सुधा उत्तम नागोने आरोग्य आपेछे तेम आ औषध तने आरोग्य आपजो. "

नवमाथी ओगणीशमा सुधीना अगीयार योगो.

उपर प्रमाणेज मीढोळनां बीजोनां चूर्णने तैयार करी, तेमांथी मुष्टिपरिमित चूर्ण लई, ते चूर्णने आ स्थानना संशोधनसंशमनीय नामना ओगणचाळीशमा अध्यायना बीजा विषयमां कहेलां कांचनार वगेरे अगीयार औषधोमांथी कोई औषधना काढामां चोळी नाखी, रातवाशी रेहेवा दई, तेमां मध तथा सैंधव नाखवां अने पछी वैद्ये उपर प्रमाणेज

[1] पाकीने अत्यंत हरित वर्णवाळां के पांडु वर्णवाळां थई गयां होय तो तेओना वीर्यनो अतिक्रम थई जाय छे.

मंत्रोच्चारण वगेरेनी गोठवण करीने ते काढो आतुरने पावो.

आठमाथी ओगणीशमा सुधीना योगोनो विषय.

विशेषे करी कफज्वर, प्रतिश्याय अने अंदरनो विद्रधि एओमां उपर कहेला योगोनो उपयोग करवो.

योग आप्या पछी बराबर वमन न थाय तो केम करवुं.

योग आप्या पछी दोषनी प्रवृत्ति न थाय तो पीपळ, वज तथा धोळा सर्षप एओना कल्कथी तथा सैंधवथी उना जळने मिश्रित करी ते पाईने वारंवार वमन करावबुं ते त्यांसुधी के ज्यांसुधी वमननो सम्यग्योग थयानां चिह्नो जोवामां आवे.

वीशमो योग.

मीढोळनी मज्जानुं (मीढोळनी अंदरना स्निग्ध भागनुं) चूर्ण करी, तेमांथी चार तोलां भार चूर्ण लई, मीढोळना काथनी भावना आपी, मीढोळना काथनी साथेज पाईने वमन करावबुं.

एकवीशमो योग.

मीढोळनी मज्जानुं चार तोलां भार चूर्ण अंदर नाखीने पकावेला दूधनी तर मधनी साथे चटाडीने वमन करावबुं.

बावीशमो योग.

मीढोळनी मज्जानुं चार तोलां भार चूर्ण नाखी पकावेलुं दूध पाईने वमन करावबुं.

त्रेवीशमो योग.

मीढोळनी मज्जानुं चूर्ण अंदर नाखी पकावेला दूधनी साथे राब पाईने वमन करावबुं.

वीशमाथी त्रेवीशमा सुधीना योगोनो विषय.

अधोभागना रक्तपित्तमां अने पित्ते करेला हृदयना दाहमां उपर कहेला योगोनो उपयोग करवो.[1]

चोवीशमो योग अने तेनो विषय.

मीढोळनी मज्जाना चार तोलां भार चूर्णनी साथे पकावेला दूधनुं दहीं करीने ते दहींनी उपरनो जाडो भाग चटाडी वमन करावबुं. कफसंबंधी लाळनो स्राव, उलटी, मूर्छा अने तमकश्वास एओमां आ योगनो उपयोग करवो.

पचीशमो योग अने तेनो विषय.

मीढोळनी मज्जाना चार तोलां भार चूर्णनी साथे पकावेला दूधनुं दहीं करी ते दहीं पाईने वमन करावबुं. आ योगनो उपयोग पण कफसंबंधी लाळनो स्राव, उलटी, मूर्छा अने तमकश्वास एओमां करवो.

छवीशमो योग अने तेनो विषय.

चिकित्सितस्थानना द्विव्रणीयचिकित्सित नामना पेहेला अध्यायना ६७ मा विषयमां कह्या प्रमाणे भीलामाना स्नेहनी पेठे मीढोळनी मज्जानो स्नेह लई ते राब जेवो स्नेह चटाडीने वमन करावबुं. पित्त कफना स्थानमां आव्युं होय त्यारे आ योगनो उपयोग करवो.

सत्यावीशमो योग अने तेनो विषय.

मीढोळनी मज्जाना चार तोलां भार चूर्णने तडकामां सुकावी जीवंतीना[2] काथनी साथे पाईने वमन करावबुं. पित्त कफना स्थानमां आव्युं होय त्यारे आ योगनो उपयोग करवो.

अठ्यावीशमो योग अने तेनो विषय.

मीढोळनी चार तोलां भार मज्जाना काथमां (ते काथ पाकवा आवे ते समयमां) पिप्पल्यादि

---

१ अधोभागना रक्तपित्तमां अने पित्ते करेला दाहमां केवळ एकवीशमा योगनोज उपयोग करवो एम डल्हन केहे छे पण मूलग्रंथनो अन्वय जोतां एओमां वीशमाथी त्रेवीशमा सुधीना चारे योगोनो उपयोग करवो एम जणाय छे.

२ जीवंती ए एक सूका अजमानी जात छे अने खारा रसवाळी छे तथा पाहाडोमां लतारूपे थाय छे. (डल्हन.)

गणनो कल्क नाखी ते क्वाथ सिद्ध थाय त्यारे पावो. कफसंबंधी व्याधिमां आ योगनो उपयोग करवो.

ओगणत्रीशमो योग अने तेनो विषय.

मीढोळनी चार तोला भार मज्जानुं चूर्ण लींबडाना क्वाथनी साथे पाईने वमन कराववुं. कफसंबंधी व्याधिमां आ योगनो उपयोग करवो.

त्रीशमो योग अने तेनो विषय.

मीढोळनी चार तोलां भार मज्जानुं चूर्ण आकडाना क्वाथनी साथे पाईने वमन कराववुं. कफसंबंधी व्याधिमां आ योगनो उपयोग करवो.

एकत्रीशमो योग अने तेनो विषय.

मीढोळनी चार तोलां भार मज्जानुं चूर्ण महुडां, सीवणनां फळ अने द्राक्ष एओना क्वाथनी साथे पाईने वमन कराववुं. आ योग कफसंबंधी रोगोने हरे छे तथा पीवामां पण रुचि आपे छे. आप्रमाणे मीढोळना एकत्रीश योगो कह्या.

३ जीमूतककुसुमचूर्णं वा पूर्ववदेवं क्षीरेण। निर्वृत्तेषु क्षीरयवागूं रोमशेषु सन्तानिकामरोमशेषु च दध्युत्तरं हरितपाण्डुषु दधि तत्कषायसंसृष्टां वा सुरां कफारोचककासश्वासपाण्डुरोगयक्ष्मसु पर्यागतेषु मदनफलमज्जवदुपयोगः॥

कुकडवेलनां पुष्पोथी वमन कराववाना योगो अने तेओनो विषय.

३ कुकडवेलनां पुष्पोनुं चार तोलां भार चूर्ण लई ते चूर्णने अघेडाना, आकडाना अथवा लींबडाना क्वाथमां घोळी तेमां मध तथा सैंधव नाखीने ते क्वाथ पावो. अथवा तेना एक नाहानी मुष्टिथी भरेला चूर्णने जेठीमधना के कांचनार आदि अगीयार औषधोमांना कोई औषधना क्वाथमां घोळी नाखी रातवाशी रहेवा दई तेमां मध तथा सैंधव नाखीने ते क्वाथ पावो. अथवा कुकडवेलनां पुष्पोनुं चूर्ण दूधमां घोळीने ते दूध पाई देवुं. कुकडवेलनां पुष्पो पाकी गयां होय तो तेओनुं चार तोलां भार चूर्ण नाखी दूध पकावीने ते दूधनी साथे राब पावी. कुकडवेलनां पुष्पो रुछाडवाळां थई गयां होय अर्थात् कठण थई गयां होय तो तेओना चार तोलां भार चूर्णनी साथे पकावेला दूधनी तर मधनी साथे चटाडीने वमन कराववुं. जो रूंछाड वगरनां होय अर्थात् वधारे पाकी गयां होय तो तेओना चार तोलां भार चूर्णनी साथे पकावेला दूधनुं दहीं करीने ते दहीनो उपरनो जाडो भाग चटाडवो. जो ए पुष्पो अत्यंत पाकीने हरित वर्णवाळां के पांडु वर्णवाळां थई गयां होय तो तेओना चार तोलां भार चूर्णनी साथे पकावेला दूधनुं दहीं करीने ते दहीं पावुं अथवा ए पुष्पोना क्वाथना संसर्गथी पेदा मदिरा बनावीने ते मदिरा पावी.

कफ, अरोचक, खांसी, श्वास, पांडुरोग अने यक्ष्मरोग एओमां उपर कहेला योगोनो उपयोग करवो.

कुकडवेलनां पुष्पो बहु पाकेलां न थई गयां होय पण हरित वर्णवाळां के पांडु वर्णवाळां थई गयां होय तो बीजा पण मींढोळनी मज्जानी पेठेज योगो करीने तेओनो उपयोग कराववो.

४ तद्वदेव कुटजफलविधानम्॥ कृतवेधनानामप्येष एव कल्पः॥

इंद्रजवथी वमन कराववाना तथा कडवी घीसोडीथी वमन कराववाना योगो.

४ इंद्रजवनां फळोथी वमन कराववाना योगो पण उपर प्रमाणेज करवा अने कडवी घीसोडीथी वमन कराववानी गोठवण पण ए प्रमाणेज करवी.

५ इक्ष्वाकुकुसुमचूर्णं वा पूर्ववदेवं क्षीरेण। कासश्वासच्छर्दिकफरोगेषूपयोगः॥

कडवी तूंबडीथी वमन करावावाना योगो अने तेओनो विषय.

९ कडवी तूंबडीनां फूलोथी वमन करावावाना योगो पण मीढोळथी वमन करावावाना योगोनी पेठे गोठवी लेवा. अथवा ते फूलोनुं चूर्ण दूधमां घोळीने ते दूध पाई देवुं.

कडवी तूंबडीथी वमन करावावाना योगोनो उपयोग खांसी, श्वास, उलटी अने कफसंबंधी रोगो एओमां करवो.

६ धामार्गवस्यापि मदनफलमज्जवदुपयोगो विशेषतस्तु गरगुल्मोदरकासश्वासश्लेष्मामयेषु वायौ वा कफस्थानगते ॥

कडवां तूरीयांथी वमन करावावाना योगो अने तेओनो विषय.

६ कडवां तूरीयांथी वमन करावावाना योगो पण मीढोळनी मज्जाथी वमन करावावाना योगोनी पेठेज करवा.

आ योगोनो विशेष उपयोग झेर, गुल्म, उदर-रोग, खांसी, श्वास तथा कफसंबंधी रोगो एओमां करवो अने वायु कफना स्थानमां गयो होय तो ते संबंधी व्याधिमां पण करवो.

७ कृतवेधनफलपिप्पलीनां वमनद्रव्यकषायपरिपीतानां बहुशश्चूर्णमुत्पलादिषु दत्तमाघ्रातं वामयति तत्त्वनवबद्धदोषेषु यवागूमाकण्ठात्पीतवत्सु च विदध्यात् ॥

सूंघाडवाथी वमन करावावानो योग अने ते योगनो विषय.

७ कडवी घीसोडीनां फळोमांथी बीजो काढाडी लई ते बीजोने वमनद्रव्योना क्वाथोनी तथा स्वरस वगेरेनी घणी घणी भावनाओ आपी, पछी तेओना चूर्णने उत्पलादि गणनी साथे मिश्रित करीने सुंघाडवामां आवे तो ते चूर्ण वमन करावे छे.

जेओना दोषो अत्यंत वृद्धि पाम्या होय एवा आतुरोने गळासुधी राब पाईने पछी उपर कहेलुं चूर्ण सुंघाडवुं.

८ वमनविरेचनशिरोविरेचनद्रव्याण्येवं वा प्रधानतमानि भवन्ति ॥

भावनाओ देवाथी वधारे फळ.

८ वमन, विरेचन अने शिरोविरेचन एओनां द्रव्योने पण जेम जेम तेवाज प्रकारनां द्रव्योनी घणी घणी भावनाओ देवामां आवे तेम तेम ते द्रव्यो अतिशयित शक्तिवाळां थाय छे.

९ भवतश्चात्र ॥

वमनद्रव्ययोगानां दिगियं सम्प्रकीर्तिता ।
तां विभज्य यथाव्याधि कालशक्तिविनिश्चयात् ॥
कषायैः स्वरसैः कल्कैश्चूर्णैरपि च बुद्धिमान् ।
पेयलेह्याद्यभोज्येषु वमनान्युपकल्पयेत् ॥

आ पद्धति प्रमाणे बीजा पण वमन-संबंधी योगोनी कल्पना करी लेवाविषे.

९ आ स्थलना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "आ वमनद्रव्योना योगोनो मार्ग अमोए कह्यो छे. बुद्धिमान् वैद्ये कालनो तथा वीर्य वगेरेनो निश्चय करी, जेवो रोग होय ते प्रमाणे आ मार्गना विभागो करी नाखीने भक्ष्य, भोज्य, लेह्य (चाटवा योग्य) तथा पेय (पीवा योग्य) पदार्थोमां क्वाथोथी, स्वरसोथी कल्कोथी तथा चूर्णोथी पण वमन द्रव्योना प्रयोगो गोठवी लेवा."

अध्याय ४४ मो.

१ अथातो विरेचनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय-मध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विरेचन-द्रव्यविज्ञानीय' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे

१ विरेचन द्रव्योना भेदनुं ज्ञान आपवा विषेनो.

व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अरुणाभं त्रिवृन्मूलं श्रेष्ठं मूलविरेचने ।
प्रधानं तिल्वकस्त्वक्षु फलेष्वपि हरीतकी ॥
तैलेष्वेरण्डजं तैलं स्वरसे कारवेल्लिका ।
सुधापयः पयस्सूक्तमिति प्राधान्यसंग्रहः ॥
तेषां विधानं वक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ।

विरेचनमां प्रधानद्रव्यो.

२ मूलरूप विरेचनोमां कांईक रताशवाळुं नसोतरनुं मूळ उत्तम छे, छालरूप विरेचनोमां मोटो लोदर[1] उत्तम छे, फळरूप विरेचनोमां हरडे उत्तम छे, तैलरूप विरेंचनोमां एरडीयुं तैल उत्तम छे, स्वरसरूप विरेचनोमां कारेलीनो स्वरस उत्तम छे अने छीररूप विरेचनोमां थोरनुं छीर उत्तम छे. आ प्रमाणे विरेचन द्रव्योमां जेओ मुख्य छे तेओनो संग्रह कह्यो. हवे योग्यताने अनुसरीने एओना प्रयोगनी रीति अनुक्रमथी कहुं छुं.

३ वैरेचनद्रव्यरसानुपीतं
मूलं महत्त्रैवृतमस्तदोषम् ।
चूर्णीकृतं सैन्धवनागराढ्य-
मम्लैः पिबेन्मारुतरोगजुष्टः ॥

वातरोगीने माटे विरेचन.

३ जेमां कीडा पडवा वगेरे कशी खराबी न थई होय एवुं नसोतरनुं मोटुं मूळ लई, तेनुं चूर्ण करी, तेने नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्योना रसोनी भावना आपी, सैंधवथी तथा सुंठथी मिश्रित करीने सौवीरक तथा दहीं वगेरे खाटा पदार्थोनी साथे पावुं. आ प्रयोग वायुना रोगवाळाने माटे छे.

४ इक्षोर्विकारैर्मधुरै रसैस्त-
त्पैत्ते गदे क्षीरयुतं पिबेद्वा ॥

पित्तरोगीने माटे विरेचन.

४ जेमां कीडा पडवा वगेरे कशी खराबी न थई होय एवुं नसोतरनुं मोटुं मूळ लई, तेनुं चूर्ण करी, तेने नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्योना रसोनी भावना आपी, सैंधवथी तथा सुंठथी मिश्रित करीने तेने खांडना के साकरना पाणीनी साथे अथवा काकोली आदि मधुर गणना क्वाथनी साथे अथवा दूधनी साथे पावुं. आ योग पित्तना रोगवाळाने माटे छे.

५ गुडूच्यरिष्टत्रिफलारसेन
सव्योषमूत्रं कफजे पिबेद्वा ॥

कफरोगीने माटे विरेचन.

५ जेमां कीडा पडवा वगेरे कशी खराबी न थई होय एवुं नसोतरनुं मोटुं मूळ लई, तेनुं चूर्ण करी, तेने नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्योना रसोनी भावना आपी, सैंधवथी तथा सुंठथी मिश्रित करीने गळोना, लींबडाना तथा त्रिफळाना क्वाथनी साथे अथवा जेमां सुंठ, मरी तथा पीपळनुं चूर्ण नाख्युं होय एवा गोमूत्रनी साथे पावुं. आ योग कफना रोगवाळाने माटे छे.

६ त्रिवर्णकत्र्यूषणयुक्तमेतद्-
गुडेन लिह्यादनवेन चूर्णम् ।
प्रस्थे च तन्मूलरसस्य दत्त्वा
तन्मूलकल्कं कुडवप्रमाणम् ।
कर्षोन्मिते सैन्धवनागरे च
विपाच्य कल्कीकृतमेतदद्यात् ॥

वातश्लैष्मिक रोगीने माटे विरेचनना बे योग.

६ जेमां कीडा पडवा वगेरे कशी खराबी न थई होय एवुं नसोतरनुं मोटुं मूळ लई, तेनुं चूर्ण करी, तेने नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्योना रसोनी भावना आपी, तेमां तेमां जेटलुंज तज, तमालपत्र, एळची, सुंठ, मरी तथा पीपळ एओनुं चूर्ण मिश्रित करी, ते चूर्ण जूना गोळनी साथे खवरावुं. अथवा जेमां कीडा पडवा वगेरे कशी खराबी

---

१ लोदरना गुणोनुं निरूपण जोतां तो तेमां ग्राहीपणुं जोवामां आवे छे ! ! मोटा लोदरनां नामोमां 'विरेकी' ए नाम पण छे के जेथी तेमां विरेचन शक्ति होवानुं मालुम पडे छे.

न थई होय एवां नसोतरनां मोटां मूळ लई, तेना चोसठ तोलां भारना क्काथमां तेज मूळनो सोळ-तोलां भार कल्क नाखी अने तेमां एक एक तोलां भार सैंधव तथा सुंठ पण नाखी, ते क्काथने पकावी, लुगदी जेवो थई जाय त्यारे तेमांथी यो-ग्यमात्रा खवराववी. आ बे योगो वातश्लैष्मिक रोगवाळाने माटे छे.

७ तत्कल्कभागः समहौषधार्द्धः
ससैन्धवो मूत्रयुतश्च पेयः ॥

विरेचननो छठो योग.

७ नसोतरना कल्कनो एक भाग लई तेमां अर्द्ध भाग जेटली सुंठ तथा अर्द्ध भाग जेटलुं सैंधव नाखीने गोमूत्रनी साथे पावुं.

८ समास्त्रिवृन्नागरकाऽभयाः स्यु-
र्भागार्द्धकं पूगफलं सुपक्कम् ।
विडङ्गसारो मरिचं सदारु
योगः ससिन्धूद्भवमूत्रयुक्तः ॥

विरेचननो सातमो योग.

८ नसोतर, सुंठ तथा हरडे एओनां चूर्णोने समभागे लई, मिश्रित करी, तेमां नसोतरना अ-रधा अरधा भाग जेटलां जुनां पाकेलां सोपारी, वावडींगनां बीज, मरी, देवदार तथा सैंधव ए-ओनां चूर्णो नाखी ते एकठा चूर्णने गोमूत्रनी साथे पावुं.

विरेचनद्रव्यभवं तु चूर्णं
रसेन तेषां मतिमान्विमृद्य ।
तन्मूलसिद्धेन च सर्पिषाक्तं
सेव्यं तदाज्ये गुटिकीकृतं च ॥

विरेचननो आठमो योग.

९ विरेचनुनां द्रव्योनुं चूर्ण करी, ते चूर्णने ते द्रव्योनाज रसनी भावना आपी अने पछी ते द्र-व्योनां मूळोना कल्कथी पकावेला घीनी भावना[1] आपी तेनी एज घीमां गोळीओ वाळीने ते गोळी-ओनुं सेवन कराववुं.

१० गुडे च पाकाभिमुखे निधाय
चूर्णीकृतं सम्यगिदं विपाच्य ।
शीतं त्रिजातात्कमथो विमृद्य
योगानुरूपा गुटिकाः प्रयोज्याः ॥

विरेचननो नवमो योग.

१० चूर्णथी बमणा गोळने एक पात्रमां नाखी, अग्निपर मूकी, ते गोळ पाकवा आवे त्यारे तेमां ते विरेचन द्रव्योनुं चूर्ण नाखी, सारी रीते पकावी, नीचे उतारी लई, गोळ थंडो पडे त्यारे तेमां सुगंधने माटे तज, तमालपत्र तथा एळची नाखी, बराबर चोळीने ते गोळनी योगने अनुस-रती गोळीओ वाळीने तेओनो प्रयोग करवो.

११ वैरेकीयद्रव्यचूर्णस्य भागं
सिद्धं सार्द्धं क्काथभागैश्चतुर्भिः ।
आमृद्नीयात्सर्पिषा तच्छृतेन ॥
तत्काथोष्मस्वेदितं सामितं च ॥
पाकप्राप्ते फाणिते चूर्णितं त-
त्क्षिप्तं पक्कं चावतार्यं प्रयत्नात् ।
शीतीभूता मोदका हृद्यगन्धाः
कार्यास्त्वेते भक्ष्यकल्पाः समासात् ॥

विरेचननो दशमो योग.

११ नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्योनां चूर्णनो एक भाग लई, तेने तेज द्रव्योना चोगणा क्काथमां पकाववो. पछी तेज द्रव्योना कल्कथी पकावेला घीमां ते चूर्ण जेटलीज घउनी परसूदी नाखी खूब शेकीने तेने तेज द्रव्योना जूदा क्काथमां पकाववी. पछी ए शीरो पाकवा आवे त्यारे तेमां पेलुं चूर्ण नाखी देवुं अने पाकी रहे त्यारे प्रयत्नपूर्वक ते शीराने नीचे उतारी लेवो. शीरो थंडो पडीने लाडु वाळवा जेवो थाय त्यारे तेमां तज वगेरे

[1] जेटला रसथी चूर्ण आर्द्र थाय तेटला रसनीज भावना देवी अने जेटला घीथी चूर्ण स्निग्ध थाय तेटला घीनीज भावना देवी.

सुगंधी पदार्थो नाखीने तेना, खावाना लाडुओ जेवा नाहाना नाहाना लाडु वाळवा अने ते लाडुओनो प्रयोग करवो.

१२ रसेन तेषां परिभाव्य मुद्गा-
न्यूषः ससिन्धूद्भवसर्पिरिष्टः ।
वैरेचनेऽन्यैरपि वैदलैः स्या-
देवं विदध्याद्वमनौषधैश्च ॥

विरेचननो अगीयारमो योग.

१२ नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्योना रसथी मगने भावना आपी ते मगनो यूष बनावी तेमां सैंधव तथा घी नाखीने ते यूपनो उपयोग कराववो.

आ मगना यूषनी पेठेज मसूर आदि बीजां पण शिंबी धान्योना यूषो बनावीने तेओनो पण उपयोग करावाय. वमन करववुं होय त्यारे मग वगेरे शिंबी धान्योने वमन द्रव्योना रसथी भावना आपी ते धान्योना यूषो बनावीने तेओनो उपयोग पण करावाय.

१३ भित्त्वा द्विधेक्षुं परिलिप्य कल्कै-
स्त्रिभण्डिजातैः प्रतिबध्य रज्ज्वा ।
पक्कं च सम्यक् पुटपाकयुक्त्या
खादेत्तु तं पित्तगदी सुशीतम् ॥

विरेचननो बारमो योग.

१३ शेलडीने चीरी तेमां धोळी नसोतरनो कल्क भरी ते शेलडीने दोराओथी बांधी, शीवण वगेरेनां पानडांओथी ढांकी दई, उपर माटी लगावी, निर्धूम अंगारानी अंदर बाफवा आदि पुटपाकनी रीतिप्रमाणे पकावीने ते शेलडी थंडी पडी जाय त्यारे खवरावबी. आ योग पित्तसंबंधी रोगवाळाने माटेछे.

१४सिताजगन्धात्वक्क्षीरीविदारीत्रिवृतः समाः
लिह्यान्मधुघृताभ्यां तु तृड्दाहज्वरशान्तये ॥

विरेचननो तेरमो योग.

१४ साकर, करमाणी, वंशलोचन, फगवेलानो कंद अने नसोतर एओने समभागे लई मधनी तथा घीनी साथे मिश्रित करीने चटाडवां. आ विरेचनथी तृषानी, दाहनी अने ज्वरनी शांति थाय छे.

१५ शर्कराक्षौद्रसंयुक्तं त्रिवृच्चूर्णावचूर्णितम् ।
रेचनं सुकुमाराणां त्वक्पत्रमरिचांशकम् ॥

विरेचननो चौदमो योग.

१५ साकर अने मध एओमां नसोतरनुं चूर्ण मिश्रित करी तेमां नसोतरथी चोथा भागनां तज, तमालपत्र तथा मरी नाखीने ते अवलेह चटाडवो. आ अवलेह सुकुमार मनुष्योने माटे उत्तम छे.

१६ पचेल्लेहं सिताक्षौद्रपलार्द्धकुडवान्वितम् ।
त्रिवृच्चूर्णयुतं शीतं पित्तघ्नं तद्विरेचनम् ॥

विरेचननो पंदरमो योग.

१६ चार तोलां भार साकर अने आठ तोलां भार मध एओमां चतुर्थांश भार नसोतरनुं चूर्ण मिलावीने तेने पकाववुं अने पाक्या पछी थंडुं थाय त्यारे चटाडवुं. आ विरेचन पित्तने टाळनार छे. (आ योगमां मधने अग्निथी गरम करवानी कशी हरकत समजवी नहीं.)

१७त्रिवृच्छ्यामाक्षारशुण्ठीपिप्पलीर्मधुनाग्नुयात् । सर्वश्लेष्मविकाराणां श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥

विरेचननो सोळमो योग.

१७ नसोतर, वरधारो, जवखार, सुंठ अने पीपळ एओने समभागे लई चूर्ण करी मधमां कालवीने चटाडवां. आ विरेचन कफसंबंधी सघळा विकारोने माटे उत्तम छे.

१८ बीजाढ्यपथ्याकाश्मर्यधात्रीदाडिमकोलजान् ।
तैलभृष्टान्रसानम्लफलैरावाप्य साधयेत् ॥

---

१ आठ तोलां भार मग एकसो अठ्यावीश तोलां भार पाणीमां पकाववा. चोथा भागनुं पाणी रहे त्यारे तेने लुगडामां चोळीने गळी लेवुं अने पछी ते पाणीने धाणा जीरा वगेरेथी वघारवुं एटले ते यूप केहेवाय छे.

घनीभूतं त्रिसौगन्ध्यत्रिवृत्क्षौद्रसमन्वितम् ।
लेह्यमेतत्कफप्रायैः सुकुमारैर्विरेचनम् ॥

विरेचननो सत्तरमो योग.

१८ सारी पेठे पाकेलां हरडे, शीवणनां फळ, आमळां, दाडिम अने बोर एटलां फळोने तेओनां बीजोसहित मोळगणा पाणीमां पकावीने तेओनो क्काथ करवो. ए क्काथने एरंडीया तेलमां पकावी लई, तेमां तेथी चोथा भागनां बीजोरां वगेरे खाटां फळो नाखीने तेनो फरीवार पाक करवो. ए पाक घाटो थई जाय त्यारे तेमां तज, तमालपत्र तथा एळची एओनुं चूर्ण नाखी तथा ते पाकना चतुर्थांश जेटलुं नसोतरनुं चूर्ण नाखी अने नसोतरना चूर्ण जेटलोज मध नाखीने ते पाक चटाडवो. आ अवलेह घणा कफवाळा सुकुमार माणसोने माटे उत्तम छे.

१९ नीलीतुल्यं त्वगेलं च तैस्त्रिवृत्ससितोपला ।
चूर्णं संतर्पणं क्षौद्रफलाम्लं संनिपातनुत् ॥

विरेचननो अढारमो योग.

१९ एक भाग गळीनी शींग, एक भाग तज तथा एळची अने बे भाग नसोतर एओना चूर्णने साकरथी, मधथी तथा बीजोरां वगेरे खाटां फळोथी मिश्रित करीने खवराववुं. आ विरेचन खावामां पण रुचि आपनार छे अने सन्निपातने मटाडनार छे.

२० त्रिवृच्छ्यामासिताकृष्णात्रिफलामाक्षिकैः समः ।
मोदकाः संनिपातोर्ध्वरक्तपित्तज्वरापहाः

विरेचननो ओगणीशमो योग.

२० नसोतर, वरधारो, पीपळ अने त्रिफळा एओने समभागे लई, चूर्ण करी, ते चूर्णने बमणी साकर तथा बमणो मध एओमां पकावीने तेना लाडु वाळवा. आ लाडुओ सन्निपातने, उपरना भागना रक्तपित्तने अने ज्वरने मटाडे छे.

२१ त्रिवृद्भागास्त्रयः प्रोक्तास्त्रिफला तत्समा तथा
क्षारकृष्णाविडङ्गानि संचूर्ण्य मधुसर्पिषा ॥
लिह्याद्गुडेन गुटिकां कृत्वा वाप्यथ भक्षयेत् ।
कफवातकृतान्गुल्मान्प्लीहोदरहलीमकान् ॥
हन्त्यन्यानपि चाप्येतन्निरपायं विरेचनम् ।

विरेचननो वीशमो योग.

२१ त्रण भाग नसोतर, त्रण भाग त्रिफळा अने एक एक भाग जवखार, पीपळ तथा वावडींग एओनुं चूर्ण करी तेने मधमां तथा घीमां कालवीने चटाडवुं अथवा गोळमां नाखी गोळी बनावीने खवराववुं. आ विरेचन कफथी तथा वायुथी थएला गुल्मोने, बरलना दरदने, उदररोगोने, हलीमकने तथा बीजा पण केटलाएक रोगोने मटाडे छे अने जेथी कोई जातनो पण बगाड न थाय एवुं छे.

२२ चूर्णं श्यामा त्रिवृन्नीली कट्वी मुस्ता दुरालभा ।
चव्येन्द्रबीजं त्रिफला सर्पिर्मांसरसाम्बुभिः ।
पीतं विरेचनं तद्धि रूक्षाणामपि शस्यते ॥

विरेचननो एकवीशमो योग.

२२ वरधारो, नसोतर, गळीनी शींग, कडु, मोथ, रातो धमासो, चवक, इंद्रजव अने त्रिफळा एओनुं चूर्ण करी घीनी तथा मांसना रसानी साथे पावामां आवे तो ते विरेचन रूक्ष शरीरवाळाओने माटे उत्तम छे. ए चूर्ण जळनी साथे पावामां आवे तो ते स्निग्ध शरीरवाळाओने माटे उत्तम छे.

२३ वैरेचनिकनिःक्काथभागाः शीतास्त्रयो मताः ।
द्वौ फाणितस्य तच्चापि पुनरग्नावधिश्रयेत् ॥
तत्साधु सिद्धं विज्ञाय शीतं कृत्वा निधापयेत् ।
कलशे कृतसंस्कारे विभज्यर्तू हिमाहिमौ ॥
मासादूर्ध्वं जातरसमासवं मधुगन्धिकम् ।
पिबेदसावेव विधिः क्षारमूत्रासवेष्वपि ॥

विरेचननो बावीशमो योग. (आसव.)

२३ थोर शिवाय बीजां विरेचन द्रव्योनो क्काथ करवो. पछी ते क्काथने थंडो करी ए क्काथना त्रण भाग अने साथवानी राबना बे भाग

एम पांच भागोने मिश्रित करीने पाछा अग्निपर चडाववा. सारी रीते पाकी अरधो द्रव रहे त्यारे उतारी लई ते पाकने थंडो पाडवो. पछी एक घडो लई, तेने सारी पेठे अंदर धोई, लूंछी, सुकावा दई, अंदर मध तथा पीपळ एओनो लेप करी, अगरूनी धुमाडी दई, तेमां पेला पाकने भरी ते घडाने शीतकालमां एक महीनासुधी अने उष्णकालमां पंदर दिवस सुधी धान्यना गंजमां दाटी मुकवो. मुदत पूरी थतां तेमां खमीर आवीने रस उत्पन्न थाय छे अने मधना जेवो गंध नीकळवा लागे छे एटले **आसव** सिद्ध थयो गणाय छे. आ आसवने पावाथी विरेचन थाय छे. चिकित्सानां प्रकरणोमां जे क्षारासवो अने मूत्रासवो केहेवामां आवशे तेओने बनाववानी रीत पण आप्रमाणेज समजी लेवी.

२४ वैरेचनिकमूलानां क्वाथे मापान्सुभावितान्।
सुधौतांस्तत्कषायेण शालीनां चापि तण्डुलान्॥
अवक्षुद्यैकतः पिण्डान्कृत्वा शुष्कान्सुचूर्णितान्।
शालितण्डुलचूर्णं च तत्कषायोष्मसाधितम्॥
तस्य पिष्टस्य भागांस्त्रीन्किण्वभागविमिश्रितान्।
मण्डोदकार्थे क्वाथं च दद्यात्तत्सर्वमेकतः॥
निदध्यात्कलशे तां तु सुरां जातरसां पिबेत्।
एष एव सुराकल्पो वमनेष्वपि कीर्तितः॥

विरेचननो त्रेवीशमो योग. (पैष्टी सुरा.)

२४ अडदनी दाळने नसोतर वगेरे विरेचन द्रव्योनां मूळोना क्वाथनी खूब भावना आपवी अने चोखाने पण ते क्वाथ वते सारी पेठे धोवा. पछी ते अडदनी दाळने तथा चोखाने सारी पेठे वाटी एकठां करीने तेना पिंडा बनावी सुकावी मुकवा. पछी चोखाना लोटने विरेचन द्रव्योना क्वाथमां पकावी, ते लोटना त्रण भाग अने पेला पिंडानो एक भाग एम चार भागने मिश्रित करी, तेमां विरेचन द्रव्योनोज क्वाथ रेडी ते सर्वने, उपरप्रमाणे संस्कार आपेला एटले जेने धोई, लूंछी, सुकावी, अंदर मध तथा पीपळनो लेप दीधो होय तथा अगरूनी धुमाडी दीधी होय एवा घडामां नाखी ते घडाने धान्यना गंजमां दाटी मुकवो. एमां ज्यारे खमीर आवीने रस उत्पन्न थाय अने गंध नीकळवा लागे त्यारे पैष्टी सुरा सिद्ध थई समजवी. आ सुरा पावाथी विरेचन थाय छे. मींढोळ वगेरे वमन द्रव्योनी सुरा बनाववी होय तो पण आप्रमाणेज बनावी लेवी.

२५ मूलानि त्रिवृदादीनां प्रथमस्य गणस्य च।
महतः पञ्चमूलस्य मूर्वाशार्ङ्गेष्टयोरपि
सुधां हैमवतीं चैव त्रिफलातिविषे वचाम्।
संहृत्यैतानि भागौ द्वौ कारयेदेकमेतयोः॥
कुर्यान्निःक्वाथमेकस्मिन्नेकस्मिंश्चूर्णमेव तु।
क्षुण्णांस्तस्मिंस्तु निःक्वाथे भावयेद्बहुशो यवान्॥
शुष्काणां मृदुभृष्टानां तेषां भागास्त्रयो मताः।
चतुर्थं भागमावाप्य चूर्णानामनुकीर्तितम्॥
प्रक्षिप्य कलशे सम्यक्समस्तं तदनन्तरम्।
तेषामेव कषायेण शीतलेन सुयोजितम्॥
पूर्ववत्संनिदध्यात्तु ज्ञेयं सौवीरकं हि तत्॥

विरेचननो चोवीशमो योग. (सौवीरक.)

२५ आ स्थानना ३९ मा अध्यायना चोथा विषयमां कहेलां नसोतर वगेरे द्रव्योनां मूळो, ३८ मा अध्यायमां कहेला विदारीगंधादिगणनां मूळो, बृहत्पंचमूळनां मूळो, मूर्वानुं मूळ, पीलुडीनुं मूळ, थोर, सफेद वज, त्रिफळा, अतवस अने वज एओने एकठां करीने तेना बे भाग करवा. एक भागनो क्वाथ करवो अने बीजा भागनुं चूर्ण करवुं. पछी जवोने कूटी तेओने सात दिवस सुधी ते क्वाथनी भावना देवी. पछी ते जवोने सुकावी थोडा थोडा शेकीने तेओना त्रण भाग अने चोथो चूर्णनो भाग ए रीते चार भागने एकठा करी, घडामां नाखी, ते चार भागोनी साथे पेहेलो थंडो क्वाथ पण ते घडामां भरी दईने ए घडाने धान्यना गंजमां दाटी देवो. ज्यारे आथो आवीने

सारा गंधवाळो रस थई जाय त्यारे सौवीरक थयुं समजवुं. आ सौवीरकथी विरेचन थाय छे.

२६ पूर्वोक्तं वर्गमाहृत्य द्विधा कृत्वैकमेतयोः ।
भागं संक्षुद्य संसृज्य यवान् स्थाल्यामधिश्रयेत् ॥
अजशृङ्ग्याः कषायेण तानभ्यासिच्य साधयेत् ।
सुसिद्धांश्चावतार्यैतानोषधिभ्यो विवेचयेत् ॥
विमृद्य सतुषान्सम्यक्ततस्तान्पूर्ववन्मितान् ।
पूर्वोक्तौषधभागस्य चूर्णं दत्त्वा तु पूर्ववत् ॥
तेनैव सह यूषेण कलशे पूर्ववन्न्यसेत् ।
ज्ञात्वा जातरसं चापि तत्तुषोदकमादिशेत् ॥
तुषाम्बुसौवीरकयोर्विधिरेष प्रकीर्तितः ।
षड्रात्रात्सप्तरात्राद्वा ते च पेये प्रकीर्तिते ॥

विरेचननो पचीशमो योग. (तुषोदक.)

२६ नसोतर वगेरेनां मूळो, विदारिगंधादि गणनां मूळो, बृहत्पंचमूळनां मूळो, मूर्वानुं मूळ, पीलुडीनुं मूळ, थोर, सफेद वज, त्रिफला, अतवस अने वज एओने एकठां करी तेना बे भाग करवा. एक भागने कूटी फोतरांवाळा जवोनी साथे मिश्रित करी ते जवोने हांडलीमां नाखी तेमां चमारदुदूलीनो अथवा मेंढाशींगीनो क्वाथ रेडीने ते क्वाथमां ते जवोने पकाववा. पाकी रहे त्यारे चूलापरथी उतारी लई, औषधीओथी जवोने जुदा वीणी लई, तेओने फोतरांसहितज मारी पेठे कूटी, ते जवना त्रण भाग अने चोथो बाकी बचावेलां औषधोनां चूर्णनो भाग ए रीते चार भागने एकठा करी, तेमां पहेलांनो (जेमांथी जवने काहाडी लीधा हता ते) क्वाथ नाखी, एक घडामां भरीने उपर कह्याप्रमाणेज ते घडाने धान्यना गंजमां दाटी देवो. ए घडामां ज्यारे आथो आवीने खाटो रस उत्पन्न थाय त्यारे तुषोदक थयुं जाणवुं. आ तुषोदकथी पण विरेचन थाय छे. आ तुषोदक बनाववानो प्रकार कह्यो अने उपरना विषयमां सौवीरक बनाववानो पण प्रकार कह्यो. सौवीरक अने तुषोदक एओमां खटाई बराबर न आवे तो पण उष्णकाळमां छ रात व्यतीत थया पछी अने शीतकालमां सात रात व्यतीत थया पछी तेओ पावा लायक थाय छे.

२७ वैरेचनेषु द्रव्येषु त्रिवृन्मूलविधिः स्मृतः ।

अतिदेश.

२७ आ अध्यायमां नसोतरनां मूळोना जे जे विधिओ कह्या ते ते विधिओज बीजां विरोचन द्रव्योना पण करवा.

२८ दन्तीद्रवन्त्योर्मूलानि विशेषान्मृत्कुशांतरे॥
पिप्पलीक्षौद्रयुक्तानि स्विन्नान्युद्धृत्य शोषयेत् ।
ततस्त्रिवृद्विधानेन योजयेच्छ्लेष्मपित्तयोः

विरेचननो छवीशमो योग. (मोटा तथा नाहाना नेपाळानां मूळोनी विशिष्ट कल्पना.)

२८ मोटा तथा नाहाना नेपाळानां मूळोने पीपळथी तथा मधथी संयुक्त करी गोळो बनावी, दर्भथी वीटीं, कपडमट्टी करीने अग्निमां सारीपेठे बाफवां. बफाई रहे त्यारे काहाडी लईने सुकाववां. पछी नसोतरनी रीतिप्रमाणेज तेओना कफउपर तथा पित्तउपर प्रयोगो करवा.

२९.तयोः कल्ककषायाभ्यां चक्रतैलं विपाचयेत्।
सर्पिश्च पक्वं वीसर्पकक्षादाहालजीर्जयेत् ॥
मेहगुल्मानिलश्लेष्मविबन्धांस्तैलमेव च ।

विरेचनना सत्यावीशमो तथा अठ्यावीशमो योग.

२९ मोटा तथा नाहाना नेपाळाना कल्कथी तथा क्वाथ[1]थी चक्रतैल (चक्रमां पीलाएलुं तैल)

१ बत्रीश पल (चार तोळां भारनुं एक पल थाय छे.) भार तैलमां आठ पल भार मोटा नेपाळानो कल्क अने एकसो अठ्यावीश पल भार बन्ने नेपाळानो क्वाथ नाखीने तैल पकाववुं. पांचसो पल भार पाणीमां सो पल भार नाहानो तथा मोहो नेपाळो नाखी ऊकाळतां एकसो अठ्यावीश पल भार पाणी अवशेष रहे त्यारे क्वाथ थयो गणाय. (डल्हन.)

पकाववुं अने एज कल्कथी तथा क्राथथी घी पण पकाववुं. आ घी विसर्पने, कखने, दाहने तथा अळजीने मटाडे छे अने तैल प्रमेहने, गुल्मने, वायुने, कफने तथा मलबंधने मटाडे छे.

३० चतुःस्नेहं शकृच्छुक्रवातसंरोधजा रुजः

विरेचननो ओगणत्रीशमो योग.

३० मोटा तथा नाहाना नेपाळाना कल्कथी तथा क्राथथी पकावेला घी, तैल, चरबी अने मज्जा ए चार स्नेहो विष्टाना, वीर्यना तथा वायुना रोधथी उत्पन्न थएला रोगोने मटाडे छे.

३१ दन्तीद्रवन्तीमरिचकनकाह्वयवासकैः ।
विश्वभेषजमृद्वीकाचित्रकैर्मूत्रभावितैः ॥
सप्ताहं सर्पिषा चूर्णं योज्यमेतद्विरेचनम् ।
जीर्णे संतर्पणं क्षौद्रं पित्तश्लेष्मरुजापहम् ।
अजीर्णपार्श्वरुक्पाण्डुप्लीहोदरनिबर्हणम् ॥

विरेचननो त्रीशमो योग.

३१ नाहानो नेपाळो, मोटो नेपाळो, मरी, पीळीओ, जवासो, सुंठ, द्राक्ष अने चित्रक एओने सात दिवससुधी गोमूत्रनी भावना आपी तेओनुं चूर्ण करी ते चूर्णने घीथी मिश्रित करीने चटाडवुं एटले तेथी विरेचन थाय छे. आ चूर्ण पची जाय त्यारे ते उपर मधसहित साथवो खवराववो. आ चूर्णथी पित्तना रोगो, कफना रोगो, अजीर्ण, पडखांनी पीडा, पांडुरोग, बरलनुं दरद अने उदररोगो मटी जाय छे.

३२ गुडस्याष्टपले पथ्या विंशतिः स्युः पलं पलम् ।
दन्तीचित्रकयोः कर्षौ पिप्पलीत्रिवृतोर्दश ॥
कृत्वैतान्मोदकानेकं दशमे दशमेऽहनि ।
ततः खादेदुष्णतोयसेवी निर्यन्त्रणास्त्विमे ॥
दोषघ्ना ग्रहणीपाण्डुरोगार्शःकुष्ठनाशनाः ।

विरेचननो एकत्रीशमो योग.

३२ बत्रीश तोलां भार गोळमां वीश हरडेनुं चूर्ण, चार तोलां भार नाहाना नेपाळानुं चूर्ण, चार तोलां भार चित्रकनुं चूर्ण, एक तोलां भार

पीपळनुं चूर्ण अने एक तोलां भार नसोतरनुं चूर्ण मिश्रित करी तेना दश लाडु करी मेलवा. एओमांथी दशमे दिशमे दिवसे एक लाडु खवराववो अने ते उपर उना पाणीनुं सेवन कराववुं. आ लाडुओ दोषोने हणनारा छे अने ग्रहणी, पांडुरोग, अरश तथा कुष्ट एओनो नाश करनारा छे. आमां कोई प्रकारनी परेज राखवानी कशी जरूर नथी.

३३ व्योषं त्रिजातकं मुस्ता विडङ्गामलके तथा ।
नवैतानि समांशानि त्रिवृदष्टगुणानि वै ।
श्लक्ष्णचूर्णीकृतानीह दन्तीभागद्वयं तथा ॥
सर्वाणि चूर्णितानीह गालितानि विमिश्रयेत् ।
षड्भिश्च शर्कराभागैरीषत्सैन्धवमाक्षिकैः ॥
पिण्डितं भक्षयित्वा तु ततः शीताम्बु पाययेत् ।
बस्तिरुक्तृड्ज्वरच्छर्दिशोषपाण्डुभ्रमापहम् ॥
निर्यन्त्रणमिदं सर्वं विषघ्नं तु विरेचनम् ।
त्रिवृदष्टकसंज्ञोऽयं प्रशस्तः पित्तरोगिणाम् ॥
भक्ष्यः क्षीरानुपानो वा पित्तश्लेष्मातुरैर्नरैः ।
भक्ष्यरूपसधर्मत्वादाढ्येष्वेव विधीयते ॥

विरेचननो बत्रीशमो योग. (त्रिवृदष्टक.)

३३ सुंठ, मरी, पीपळ, तज, तमालपत्र, एळची, मोथ, वावडींग तथा आमळां ए नव द्रव्योनो एक एक भाग अने नसोतरना आठ भाग लई तेओनुं चूर्ण करी कपडाथी चाळी लईने तेने छ भाग साकर अने चतुर्थांश जेटलां सैंधव तथा मध, एओथी मिश्रित करीने तेना गोळा करवा. आ गोळाओनो योग्य मात्राथी उपयोग कराववो अने तेना उपर टाढुं पाणी पावुं. आ विरेचन मूत्राशयना रोगने, तृषाने, ज्वरने, उलटीने, शोषने, पांडुरोगने तथा भ्रमने मटाडे छे अने झेरने पण नष्ट करे छे. आ विरेचनमां कशी परेज पाळवानी जरूर नथी. आ **त्रिवृदष्टक** नामनो योग पित्तजन्य रोगवाळाओने माटे बहु उत्तम छे. पित्त तथा कफ एओथी आतुर थएला लोको आ भक्ष्यनुं दूधरूप अनुपानथी सेवन करे तो पण

ते योग्य छे. आ गोळाओनुं रूप खावाना लाडुओ जेवुंज थाय छे अने ते गोळाओ धनवान् लोकोने माटेज छे.

३४ तिल्वकस्य त्वचं बाह्यामन्तर्वल्कविवर्जिताम्।
चूर्णयित्वा तु तौ भागौ तत्कषायेण गालयेत् ॥
तृतीयं भावितं तेन भागं शुष्कं तु भावितम् ।
दशमूलकषायेण त्रिवृद्वत्संप्रयोजयेत् ॥
विधानं त्वक्षु निर्दिष्टं फलानामथ वक्ष्यते ।

विरेचननो तेत्रीशमो योग.

३४ लोदरनी अंतर छालवगरनी उपरनीज छाल लई चूर्ण करीने तेना त्रण भाग करवा. एओमांथी बे भागने लोदरनी छालनाज क्वाथथी एकवीश वार गाळी लेवा. पछी अवशेष राखेला त्रीजा भागना चूर्णने ए गाळेला क्वाथनी भावना देवी अने ते भावना सुकाई गया पछी दशमूळना क्वाथनी भावना देवी. पछी ते चूर्णनो नसोतरना चूर्णनी पेठे ते ते प्रकारोथी उपयोग कराववो. जे जे द्रव्योनी छालो विरेचनमां उपयोगी थाय छे ते सघळां द्रव्योनी छालोनो विधि आ लोदरनी छालना विधिप्रमाणेज करवो. हवे फळोनो विधि केहेवामां आवशे.

३५ हरीतक्याः फलं त्वस्थिवियुक्तं दोषवर्जितम्
योज्यं त्रिवृद्विधानेन सर्वव्याधिनिबर्हणम् ।
रसायनं परं मेध्यं दुष्टान्तर्व्रणशोधनम् ॥

विरेचननो चोत्रीशमो योग.

३५ जेमां सडा वगेरे कशो दोष न होय एवुं हरडेनुं फळ लई ठळीओ काहाडी नाखीने ते फळनो नसोतरना प्रकारोप्रमाणेज उपयोग करावामां आवे तो तेथी सर्व व्याधिओनो नाश थाय छे. आ योग रसायन छे, परम पवित्र छे, बुद्धिने वधारनार छे अने अंदर दुष्ट थयेला व्रणने शुद्ध करनार छे.

३६ हरीतकी विडङ्गानि सैन्धवं नागरं त्रिवृत्।
मरिचानि च तत्सर्वं गोमूत्रेण विरेचनम् ॥

विरेचननो पांत्रीशमो योग.

३६ हरडे, वावडींग, सैंधव, सुंठ, नसोतर अने मरी एओनुं चूर्ण गोमूत्रनी साथे देवामां आवे तो तेथी योग्य विरेचन थाय छे.

३७ हरीतकी भद्रदारु कुष्ठं पूगफलं तथा ।
सैन्धवं शृङ्गवेरं च गोमूत्रेण विरेचनम् ॥

विरेचननो छत्रीशमो योग.

३७ हरडे, देवदार, कठ, सोपारी, सैंधव अने सुंठ एओनुं चूर्ण गोमूत्रनी साथे देवामां आवे तो तेथी योग्य विरेचन थाय छे.

३८ नीलिनीफलचूर्णं च नागराभययोस्तथा ।
लिह्याद्गुडेन सलिलं पश्चादुष्णं पिबेन्नरः ॥

विरेचननो साडत्रीशमो योग.

३८ गळीनी शींगो, सुंठ अने हरडे एओनुं चूर्ण गोळथी मिश्रित करी चटाडवुं अने ते उपर उनुं पाणी पावुं.

३९ पिप्पल्यादिकषायेण पिबेत्पिष्टां हरीतकीम्।
सैन्धवोपहितः सद्य एष योगो विरेचयेत् ॥

विरेचननो आडत्रीशमो योग.

३९ पिप्पल्यादि गणना क्वाथमां सैंधव सहित हरडेनुं चूर्ण नाखीने पावामां आवे तो ते योगथी तुरतज विरेचन थाय छे.

४० हरीतकी भक्ष्यमाणा नागरेण गुडेन वा ।
सैन्धवोपहिता वापि सातत्येनाग्निदीपनी ॥
वातानुलोमनी वृष्या चेन्द्रियाणां प्रसादनी ।

हरडेना योगोनां सामान्य फळो.

४० गोळनी साथे, सुंठनी साथे अथवा सैंधवनी साथे नित्य हरडेनुं सेवन कराववामां आवे तो ते हरडे अग्निने प्रदीप्त करे छे, पवननुं अनुलोमन करे छे, वीर्यने वधारे छे अने इंद्रियोने प्रसन्न राखे छे.

४१ संतर्पणकृतान्रोगान्प्रायो हन्ति हरीतकी ॥
शीतमामलकं रूक्षं पित्तमेदःकफापहम् ।

विभीतकमनुष्णं तु कफपित्तनिबर्हणम् ॥
त्रीण्यप्यम्लकषायाणि सतिक्तमधुराणि च ।
त्रिफला सर्वरोगघ्नी त्रिभागघृतमूर्छिता ॥
वयसः स्थापनं चापि कुर्यात्सततसेविता ।

त्रिफळाना गुणो तथा प्रयोग.

४१ हरडे घणुं करीने संतर्पणथी (अत्यंत तृप्त थवाथी) थता तरश आदि रोगोने हणे छे. आमळुं शीत छे, रूक्ष छे अने पित्तने, मेदने तथा कफने मटाडनारूं छे. बेहेडुं उष्ण नथी अने कफने तथा पित्तने मटाडनारूं छे. आ त्रणे फळो अम्ल, कषाय, तिक्त तथा मधुर ए चारे रसोथी युक्त छे अने त्रणे मळीने त्रिफळा केहेवाय छे. त्रिफळानुं चूर्ण त्रीजा भाग जेटला घीथी संयुक्त करीने नित्य खवरावमां आवे तो ते सर्व रोगोनो विनाश करे छे अने यौवननुं स्थापन करे छे.

४२ हरीतकीविधानेन फलान्येवं प्रयोजयेत् ॥
विरेचनानि सर्वाणि विशेषाच्चतुरङ्गुलात् ।
फलं काले समुद्धृत्य सिकतायां निधापयेत् ॥
सप्ताहमातपे शुष्कं ततो मज्जानमुद्धरेत् ।
तैलं ग्राह्यं जले पक्त्वा तिलवद्वा प्रपीड्य च॥
तस्योपयोगो बालानां यावद्वर्षाणि द्वादश ।

विरेचननो ओगणचाळीशमो योग. (हरडेना विधिनो विरेचन करनारां बीजां फळोमां अतिदेश अने तेमां गरमाळामां विशेष.)

४२ हरडेनो जे विधि कह्यो तेज विधि विरेचन करनारां बीजां फळोनो करवो. पण गरमाळाना फळथी (शींगथी) विरेचन कराववुं होय तो योग्य समयमां ते फळने लई, सात दिवस सुधी रेतीमां दाटी राखी, पछी तडकामां सुकावी, तेमांथी मज्जा काहाडी, ते मज्जाने जळमां पकावीने तेनुं तैल लई लेवुं अथवा तलनी पेठे दबावीने तेनुं तैल लई लेवुं. बालक बार वर्षनुं थाय त्यां सुधी तेने विरेचन देवामां आ तैलनो उपयोग करवो ए उत्तम छे.

४३ लिह्यादेरण्डतैलेन कुष्ठं त्रिकटुकान्वितम्।
सुखोदकं चानुपिबेदेष योगो विरेचयेत् ॥

विरेचननो चाळीशमो योग.

४३ कठ, सुंठ मरी तथा पीपळ एओना चूर्णने एरडीया तेलमां कालवीने खवरावमां आवे अने ते उपर जरा उनाशवाळुं पाणी पावामां आवे तो तेथी योग्य विरेचन थाय छे.

४४ एरण्डतैलं त्रिफलाक्काथेन द्विगुणेन तु ।
युक्तं पीतं तथा क्षीररसाभ्यां तु विरेचयेत् ॥
बालवृद्धक्षतक्षीणसुकुमारेषु योजितम् ॥
फलानां विधिरुद्दिष्टः क्षीराणां शृणु सुश्रुत ।

विरेचननो एकतालीशमो योग.

४४ एरंडीयुं तैल बमणा त्रिफळाना क्काथनी साथे, दूधनी साथे के मांसना रसानी साथे पावामां आवे तो तेथी बालकोने, वृद्धोने, क्षतथी क्षीण थएलाओने तथा सुकुमार शरीरवाळाओने सेहेज विरेचन थाय छे. हे सुश्रुत! आ फलरूप विरेचनोनो विधि कह्यो. हवे क्षीररूप विरेचनोनो विधि कहुंछुं ते सांभळो.

४५ विरेचनानां तीक्ष्णानां पयः सौधं परं मतम्।
अज्ञप्रयुक्तं तद्धन्ति विषवत्कर्मविभ्रमात् ।
विजानता प्रयुक्तं तु महान्तमपि संचयम् ॥
भिनत्त्याश्वेव दोषाणां रोगान्हन्ति च दुस्तरान्।
महत्याः पंचमूल्यास्तु बृहत्योश्चैकशः पृथक् ॥
कषायैः समभागं तु तदङ्गारैर्विशोषितम् ।
अम्लादिभिः पूर्ववत्तु प्रयोज्यं कोलसंमितम् ॥

विरेचननो बेतालीशमो योग.

४५ जेटलां तीक्ष्ण विरेचनो छे तेओमां सर्वथी थोरनुं छीर अति उत्तम छे. क्रियाओना विधिने नहीं जाणनारा मूर्ख वैद्यना हाथथी अपाएलुं ए छीर विषनी पेठे मारी नाखे छे. क्रियाओना विधिने जाणनारा विद्वान् वैद्यना हाथथी

आपवामां आवेलुं ए थोरनुं छीर दोषोना मोटा संचयने पण तुरतज भेदी नाखे छे अने दुस्तर रोगोने पण नष्ट करे छे. ए छीरने बृहत्पंचमूल, उभी भोरींगणी अने बेठी भोरींगणी एओना क्काथनी साथे मिश्रित करी अंगाराओनी उपर चडावीने सुकाववुं अने पछी ए क्काथना सात भाग अने छीरनो एक भाग ए रीते आठ भागोने मिश्रित करी ते एक तोलां भार योग नसोतरनी पेठे खाटी कांजी तथा मदिरा वगेरे पदार्थोनी साथे देवो.

४६ महावृक्षपयःपीतैर्यवागूस्तण्डुलैः कृता ।
पीता विरेचयत्याशु

विरेचननो त्रेंतालीशमो योग.

४६ तंडुलोने (चोखाने) थोरना छीरनी भावना आपी ते तंडुलोनी यवागू[1] बनावीने पावामां आवे तो ते यवागू तुरत विरेचन करावे छे.

४७ गुडेनोत्कारिका कृता ॥

विरेचननो चुमालीशमो योग.

४७ घउंने थोरना छीरनी भावना आपी ते घउंने दळावी तेनी घी, दूध तथा गोळ नाखीने लाफसी बनाववी. आ लाफसी तुरत विरेचन करावे छे.

४८ लेहो वा साधितः सम्यक्स्नुहीक्षीरसिताघृतैः ।

विरेचननो पिसतालीशमो योग.

४८ घउंना लोटने थोरना छीरनी भावना आपी तेनो साकर, घी तथा दूध एओथी सारी रीते बनावेलो शीरो तुरत विरेचन करावे छे.

४९ भावितास्तु स्नुहीक्षीरे पिप्पल्यो लवणान्विताः ॥

विरेचननो छेंतालीशमो योग.

४९ पीपळने थोरना छीरनी भावना आपी सैंधवनी साथे खवराववामां आवे तो तेथी पण उत्तम विरेचन थाय छे.

५० चूर्णं काम्पिल्लकं वापि तत्पीतं गुटिकाकृतम् ।

विरेचननो सडतालीशमो योग.

५० कपील्लाना चूर्णने थोरना छीरनी भावना आपी गोळी वाळीने ते खवराववामां आवे तो तेथी उत्तम विरेचन थाय छे.

५१ सप्तलाशङ्खिनीदन्तीत्रिवृदारग्वधं गवाम् ।
मूत्रेणाप्लाव्य सप्ताहं स्नुहीक्षीरे ततः परम् ।
कीर्णं तेनैव चूर्णेन माल्यं वसनमेव च ॥
आघ्रायाऽऽवृत्य वा सम्यङ् मृदुकोष्ठो विरिच्यते ।

विरेचननो अडतालीशमो योग.

५१ हाथला, आंखफूटामणी, नाहानो नेपाळो, नसोतर अने गरमाळो एओना चूर्णने सात दिवस सुधी गोमूत्रनी भावना आपीने अने ते पछी सात दिवस सुधी थोरना छीरनी भावना आपीने ते चूर्ण पुष्प उपर अथवा वस्त्र उपर छांटवुं. कोमळ कोठावाळो माणस सारी पेठे ए पुष्पने सुंघे अथवा ए वस्त्रने शरीरपर वींटी राखे तो तेथी तेने विरेचन थाय छे.

५२ क्षीरत्वक्फलमूलानां विधानैः परिकीर्तितैः ।
अवेक्ष्य सम्यग्रोगादीन्यथावदुपयोजयेत् ॥

वैद्ये रोगादिकने जोईने विरेचनोनो उपयोग कराववो.

५२ छीर, छाल, फळ तथा मूळ एओना जे जे विधिओ केहेवामां आव्या ते प्रमाणे तैयार करेलां विरेचनोनो वैद्ये रोगादिकनुं सारी पेठे अवलोकन करीने पछी योग्यता प्रमाणे उपयोग कराववो.

५३ त्रिवृच्छाणा भितास्तिस्रास्तिस्रश्च त्रिफलात्वचः ।
विडङ्गपिप्पलीक्षारशाणास्तिस्रश्च चूर्णिताः ॥

---

[1] धान्यने छगणा पाणीमां पकावतां धाटी कणीओ रहे अने पाणी थोडुं पचपच्या करतुं देखातुं होय त्यारे ते यवागू केहेवाय छे.

लिह्यात्सर्पिर्मधुभ्यां च मोदकं वा गुडेन वा ।
भक्षयेन्निष्परीहारमेतच्छ्रेष्ठं विरेचनम् ॥
गुल्मान्प्लीहोदरं कासं हलीमकमरोचकम् ।
कफवातकृतांश्चान्यान्व्याधीनेतद्व्यपोहति ॥

विरेचननो ओगणपंचाशमो योग.

९३ पोणा तोला भार नसोतर, पोणा तोला भार त्रिफळानी छाल अने पोणा तोळा भार वावडींग, पीपळ तथा जवखार एओने चूर्णित करी घीनी तथा मधनी साथे चटाडवां अथवा गोळमां मिश्रित करी लाडु बनावीने ते लाडुनुं भक्षण कराववुं. आ विरेचन श्रेष्ठ छे अने तेमां कोई जातनी परेज पाळवानी जरूर नथी. आ विरेचन गुल्मोने, बरलना रोगने, उदररोगने, खांसीने, हलीमकने, अरोचकने अने कफथी तथा वायुथी थएला बीजा रोगोने पण मटाडे छे.

९४ घृतेषु तैलेषु पयःसु चापि
मद्येषु मूत्रेषु तथा रसेषु ।
भक्ष्यान्नलेह्येषु च तेषु तेषु.
विरेचनान्यग्र्यमतिर्विदध्यात् ॥

'विरेचननो अमुक पदार्थोमां संयुक्त करीने देवां' एम जणाव्युं न होय त्यां ते पदार्थो कल्पी लेवाविषे.

९४ सूक्ष्म बुद्धिवाळा वैद्ये घी, तेलो, दूधो, मद्यो, मूत्रो, रसो तथा ते ते प्रकारनां भक्ष्यो, भोज्यो अने लेह्यो एओमां विरेचनोना प्रयोगो संयुक्त करी देवा.

९५ क्षीरं रसः कल्कमथो कषायः
शृतश्च शीतश्च तथैव चूर्णम् ।
कल्पाः षडेते खलु भेषजानां
यथोत्तरं ते लघवः प्रदिष्टाः ॥

औषधोना उत्तरोत्तर लघुतावाळा छ कल्पो.

९५ छीर, स्वरस, कल्क क्राथ, हिम अने चूर्ण ए रीते औषधोना छ कल्पो छे अने तेओमां पेहेलाथी बीजो, बीजाथी त्रीजो, त्रीजाथी चोथो, चोथाथी पांचमो अने पांचमाथी छट्ठो कल्प लघु छे.

१ लीली औषधीओने लावी ते वखतेज खांडी अथवा वाटीने तेओनो रस कपडाथी गाळी लेवामां आवे ते स्वरस केहेवाय छे. औषधनी चटणी जेवी लुगदी करवामां आवे ते कल्क केहेवाय छे. औषधने खांडी अथवा वाटी चोवीश तोलां भार पाणीमां पलाळी आखी रात एमने एम रेहेवा दई सवारे लेवुं ए हिम केहेवाय छे.

अध्याय ४९ मो.

१ अथातो द्रवद्रव्यविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'द्रवद्रव्यविज्ञानीय'[२] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पानीयमान्तरीक्षमनिर्देश्यरसममृतं जीवनं तर्पणं धारणमाश्वासजननं श्रमघ्नं क्लमपिपासामदमूर्छातन्द्रानिद्रादाहप्रशमनमेकान्ततः पथ्यतमं च ॥

अंतरिक्षमांथी झीलेला वरसादना जळना गुणो.

२ अंतरिक्षमांथी झीली लीधेलुं वरसादनुं जळ अप्रकट रसवाळुं छे. अमृत समान छे. प्राणनुं धारण करनार छे. तृप्ति आपनार छे, ओज देनार छे, आश्वासना आपनार छे, श्रमने हणनार छे अने क्लम, तरश, मद्य वगेरेथी थएलो मद, मूर्छा, तंद्रा, स्वाभाविक निद्राथी जुदी निद्रा तथा दाह एओने शांत करनार छे अने एकांते पथ्य छे.

२ पाणी तथा दूध वगेरे द्रव पदार्थोना भेदोना गुणोनुं ज्ञान आपवाविषेनो.

करनार छे अने सर्व काळोमां, सर्व देशोमां, सर्व पुरुषोमां तथा सर्व व्याधिओमां पथ्यरूप छे. स्वस्थ माणसने तो अत्यंत पथ्यरूप छे.

३ तदेवावनीपतितमन्यतमं रसमुपलभते स्थानविशेषान्नदीनदसरस्तडागवापीकूपचुण्टीप्रस्रवणोद्भिद्विकिरकेदारपल्वलादिषु स्थानेष्ववस्थितमिति ॥

ए जळ पृथ्वीपर पडे त्यारे तेमां रसो प्रकट थाय छे.

३ ए वरसादनुं जळ पृथ्वी उपर पडे त्यारे नदी, नद, सरोवर, खोदेलां तलाव, वाव, कुवा, बांध्या वगरना कुवा, पर्वत आदि उंचा प्रदेशमांथी पडतां झरणांओनां स्थानो, धरतीमांथी उंचे भपकतां जळनां स्थानो, वीरडा, क्यारा (खेतर) अने जळथी भराई रेहेती मोटी खाडो[1] इत्यादि स्थानकोना महिमाने लीधे मधुर आदि छ रसोमांथी कोई रसने प्राप्त थाय छे.

४ तत्र लोहितकपिलपाण्डुपीतनीलशुक्लेष्ववनिप्रदेशेषु मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायाणि यथासंख्यमुदकानि सम्भवन्तीत्येके भाषन्ते।

वरसादना जळमां रसनी प्रकटता थवाना कारण विषे परमत.

४ केटलाएक आचार्यो केहे छे के "वरसादनुं जळ राती पृथ्वीना प्रदेशोमां पडवाथी मधुर थाय छे, कपिल वर्णनी पृथ्वीना प्रदेशोमां पडवाथी खाटुं थाय छे, पांडु वर्णनी पृथ्वीना प्रदेशोमां पडवाथी खारूं थाय छे, पीळा वर्णनी पृथ्वीना प्रदेशोमां पडवाथी तीखुं थाय छे, श्यामवर्णनी पृथ्वीना प्रदेशोमां पडवाथी कडवुं थाय छे अने सफेद वर्णनी पृथ्वीना प्रदेशोमां पडवाथी तूरूं थाय छे."

५ तत्तु न सम्यक्। तत्र पृथिव्यादीनामन्योन्यानुप्रवेशकृतः सलिलरसो भवत्युत्कर्षापकर्षेण। तत्र स्वगुणभूयिष्ठायां भूमावम्लं लवणं च। अम्बुगुणभूयिष्ठायां मधुरम् । तेजोगुणभूयिष्ठायां कटुकं तिक्तं च । वायुगुणभूयिष्ठायां कषायं च। आकाशगुणभूयिष्ठायामव्यक्तरसमव्यक्तं ह्याकाशमित्यतस्तत्प्रधानमव्यक्तरसत्वात् तत्पयमान्तराक्षालाभे ॥

वरसादना जळमां रसनी प्रकटता थवाना कारण विषे स्वमत.

५ ए केटलाएक आचार्योनुं बोलवुं बराबर नथी. वास्तविक एम छे के पृथ्वी आदि भूतोनां परस्परमां अनुप्रवेशने लईने ते अनुप्रवेशनी वधघट प्रमाणे जळमां मधुर आदि रसो थाय छे. जे पृथ्वीमां पार्थिव गुणो अधिक होय ते पृथ्वीमां पडेलुं जळ खाटुं अने खारूं थाय छे[2]. जेमां जळना गुणो अधिक होय ते पृथ्वीमां पडेलुं जळ मधुर थाय छे. जेमां अग्निना गुणो अधिक होय ते पृथ्वीमां पडेलुं जळ तीखुं तथा कडवुं थाय छे. जेमां वायुना गुणो अधिक होय ते पृथ्वीमां पडेलुं जळ तूरूं थाय छे. जेमां आकाशना गुणो अधिक होय ते पृथ्वीमां पडेलुं जळ अस्फुट रसवाळुं थाय छे. केम के आकाश जाते अव्यक्त छे. जो आंतरिक्ष जळ न मळे तो जेमां आकाशना गुणो अधिक होय एवी पृथ्वीनुं जळ पीवुं. कारण के ते जळ अव्यक्त रसवाळुं होवाने लीधे प्रधान छे.

६ तत्रान्तरीक्षं चतुर्विधम् । तद्यथा ॥ धारं कारं तौषारं हैममिति । तेषां धारं प्रधानं लघुत्वात्तत्पुनर्द्विविधं गाङ्गं सामुद्रं चेति । तत्र गाङ्गमाश्वयुजे मासि प्रायशो वर्षति। तयोर्द्वयोरपि परीक्षणं कुर्वीत । शाल्योदनपिण्डम-

१ सूर्य मृगशिर नक्षत्रमां आवे त्यारे जेओमां पाणी न रहे एवी खाडो.

२ रसविशेषविज्ञानीयनामना ४२ मा अध्यायना चोथा विषयमां "पृथ्वीना गुणोनी अने जळना गुणोनी अधिकताथी मधुररस थाय छे" एम जे कह्युं छे तेनो आ अपवाद छे एम समजवुं.

कुथितमविदग्धं रजतभाजनोपहितं वर्षति देवे बहिष्कुर्वीत स यदि मुहूर्तं स्थितस्तादृश एव भवति तदा गाङ्गं पततीत्यवगन्तव्यं वर्णान्यत्वे सिक्थक्लेदे च सामुद्रमिति विद्यात्तन्नोपादेयम्। सामुद्रमप्याश्वयुजे मासि गृहीतं गाङ्गवद्भवति। गाङ्गं पुनः प्रधानं तदुपाददीताश्वयुजे मासि शुचिशुक्लविततपटैकदेशच्युतमथ वा हर्म्यतलपरिभ्रष्टमन्यैर्वा शुचिभिर्भाजनैर्गृहीतं सौवर्णे राजते मृण्मये वा पात्रे निदध्यात्तत्सर्वकालमुपयुञ्जीत। तस्यालाभे भौमम्। तच्चाकाशगुणबहुलम् ॥

आंतरिक्ष जळना भेद, गांगजळनी परीक्षा, गांगजळ लेवानो समय, ते जळ लेवानो तथा राखवानो प्रकार अने आंतरिक्षनुं प्रतिनिधि.

६ धार, कार, तौपार अने हैम ए रीते आंतरिक्ष जळ चार प्रकारनुं छे. वरसादनी नीचे पडती धाराओनुं झीली लीधेलुं जळ **धार** केहेवाय छे. आकाशमांथी जळना पथरा जेवा जे करा पडे छे तेओनुं जळ **कार** केहेवाय छे. तुपारनां जळो (नदीथी समुद्रपर्यंत जे अग्नि रहेल छे ते अग्निमांथी उत्पन्न थएलां अने जेओमां धुमाडानो लेश पण होतो नथी एवां जळो—राते पडतां तुपारनां जळो) तौषार केहेवाय छे. हिमालय वगेरेनां शिखरोमांथी हिम पीगळीने जे जळरूपे वरसे छे ते जळ **हैम** केहेवाय छे. ए चार प्रकारनां आंतरिक्ष जळोमां धारजळ हलकुं होवाने लीधे मुख्य छे. ए धारजळ, गांग अने सामुद्र ए रीते बे प्रकारनुं होय छे. जे जळ आसो महिनामां वरसे छे ते घणुं करीने **गांग** होय छे अने ते शिवायनुं धारजळ **सामुद्र** होय छे. आसो महिनामां पण गांगजळनी अने सामुद्रजळनी परीक्षा करी गांगजळज लेवुं. जेमां जरापण सडो के विवर्णपणुं न होय एवो भातनो पींडो रुपाना वासणमां राखीने ते वासण वरसादमां बाहार मूकवुं. जरावार वरसादमां राखतां ए पींडो जो एवो ने एवो रहे तो जाणवुं के गांगजळ पडे छे अने जो ते पींडानो वर्ण बदली जाय अथवा भातना दाणामां पचपचाट थई जाय तो जाणवुं के सामुद्रजळ पडे छे[१]. सामुद्रजळ पडतुं होय तो लेवुं नहीं. गांगजळ न मळे एम होय तो सामुद्रजल पण लेवुं. केम के आसो महिनामां लीधेलुं सामुद्र जळ पण गांगजळना जेवुंज काम करे छे. गांगजळ प्रधान छे अने ते आसो महिनामां लेवुं ते एवी रीते के वरसादमां अद्धर स्वच्छ वस्त्रने पोहोळुं करी तेना एक भागमांथी पडतुं जळ लेवुं अथवा स्वच्छ मेहेलना उपरना भागपरथी पडतुं होय ते लेवुं अथवा रुपानां के सुवर्ण वगेरेनां स्वच्छ पात्रोमां झीलीने लेवुं. ए जळने सुवर्णना, रुपाना के माटीना वासणमां राखी मुकवुं अने तेनो सर्व काळमां उपयोग करवो. ए गांगजल अथवा सामुद्रजळ न मळे तो पछी पृथ्वीपर पडेलुं जळ लेवुं पण ते एवुं लेवुं के जे आकाशना गुणोना आधिक्यवाळुं होय.

७ तत्पुनः सप्तविधम्। तद्यथा। कौपं नादेयं सारसं ताडागं प्रास्रवणमौद्भिदं चौण्ड्यमिति। तत्र वर्षास्वान्तरिक्षमौद्भिदं वा सेवेत महागुणत्वात्। शरदि सर्वं प्रसन्नत्वात्। हेमन्ते सारसं ताडागं वा। वसन्ते कौपं प्रास्रवणं वा। ग्रीष्मेष्वेवम्। प्रावृषि चौण्ड्यमनवमनभिवृष्टं सर्वं चेति ॥

पृथ्वीपर पडेला वरसादना जळना सात प्रकार अने तेओमां कया प्रकारनुं जळ कई ऋतुमा सेववु.

७ पृथ्वीपर पडेलुं जळ कुवानुं, नदीनुं, सरोवरनुं, माणसोए खोदीने करेला तळावनुं, झ-

१ रूपानुं वासण खाटा रसवाळुं होय छे तेमां सामुद्रजळ पड्याविना भातमां बगाड थाय नहीं.

रणानुं, पृथ्वीमांथी नीकळता भपकानुं अने बांध्या वगरना कुवानुं ए रीते सात प्रकारनुं होय छे. वर्षा ऋतुमां आंतरिक्षजळ अथवा पृथ्वीमांथी नीकळता भपकानुं जळ सेववुं. केम के ते उत्तम गुणोवाळुं छे. शरद्‌ऋतुमां अगस्त्यना उदयने लीधे सघळां जळो स्वच्छज होय छे माटे उपर कहेलां सघळां जळो सेववां. हेमंत ऋतुमां सरोवरनुं अथवा खोदीने करेला तळावनुं जळ सेववुं. वसंतऋतुमां कुवानुं अथवा झरणांनुं जळ सेववुं. ग्रीष्मऋतुमां पण कुवानुं अथवा झरणानुं जळ सेववुं. प्रावृष् ऋतुमां बांध्या वगरना कुवानुं जळ तथा जूनुं जळ सेववुं अने वरसाद न थयो होय त्यांसुधी सरोवर तथा तळाव वगेरेना जळनुं सेवन करवामां पण कशी हरकत नथी.

८ कीटमूत्रपुरीषाण्डशवकोथप्रदूषितम् ।
तृणपर्णोत्करयुतं कलुषं विषसंयुतम् ॥
योऽवगाहेत वर्षासु पिबेद्वापि नवं जलम् ।
सबाह्याभ्यन्तरान्रोगान्प्राप्नुयात्क्षिप्रमेव तु ॥

पृथ्वीपर पडेलुं वरसादनुं नवुं जळ पीवाथी अने तेवा जळमां नाहावाथी रोगो थाय छे.

८ आषाढ, श्रावण अने भाद्रपद एओमां नवुं जळ कीडाओना, मूत्रोना, विष्टाना, इंडाओना तथा शबोना सडाथी दूषित होय छे, खडना तथा पानडांओना कचराथी संयुक्त होय छे, मलिन होय छे अने स्थावर तथा जंगम विषोवाळुं पण होय छे माटे ते जळने जे माणस पीए तेने उदर रोगो वगेरे अंदरना रोगो तुरतज थाय छे अने ते जळमां जे माणस नाहाय तेने कुष्ट वगेरे बाहारना रोगो तुरतज थाय छे.

९ तत्र यच्छैवालपङ्कहटतृणपद्मपत्रप्रभृतिभिरवच्छन्नं शशिसूर्यकिरणानिलैर्नाभिजुष्टं गन्धवर्णरसोपसृष्टं च तद्व्यापन्नमिति विद्यात् ॥ तस्य स्पर्शरूपरसगन्धवीर्यविपाकदोषाः षट्सम्भवन्ति । तत्र खरता पैच्छिल्यमौष्ण्यं दन्तग्राहिता च स्पर्शदोषाः । पङ्कसिकताशैवालबहुवर्णता रूपदोषाः । व्यक्तरसता रसदोषः । अनिष्टगन्धता गन्धदोषः । यदुपयुक्तं तृष्णागौरवशूलकफप्रसेकानापादयति स वीर्यदोषः । यदुपयुक्तं चिराद्विपच्यते विष्टभ्नाति वा स विपाकदोष इति । त एत आन्तरिक्षे न सन्ति ॥

बगडेला जळनां लक्षणो.

९ शैवाळ, कादव, रातां पोडां, खड तथा कमळपत्र इत्यादिथी ढंकाएलुं, जेने सूर्यनी तथा चंद्रनी किरणोनो अने पवननो स्पर्श न थतो होय एवुं अथवा गंधथी, वर्णथी के रसथी संयुक्त थएलुं जे जळ होय तेने बगडेलुं समजवुं. जळमां स्पर्शदोष, रूपदोष, रसदोष, गंधदोष, वीर्यदोष अने विपाकदोष ए रीते छ प्रकारना दोषो थाय छे. खरसटपणुं, चीकाश, पृथ्वीनी बाफथी गरमपणुं अने जेथी दांतो खडखडवा लागे अथवा कळे एवुं थंडापणुं ए स्पर्शदोषो गणाय छे. कादव, रेती, शैवाळ अने अनेक वर्णोवाळापणुं ए रूपदोषो गणाय छे. रसनुं स्पष्टपणुं ए रसदोष गणाय छे. गंध खराब होय ते गंधदोष गणाय छे. पीवाथी तरश, भारेपणुं, शूळ तथा कफनुं झरवुं थाय ते वीर्यदोष गणाय छे. पीधा पछी घणी वारे पचे अथवा गडगडाड करे ते विपाकदोष गणाय छे. आ दोषो आंतरीक्ष जळमां होता नथी अने जेमां आकाशना गुणो घणा होय ते जळमां पण होता नथी.

१० व्यापन्नानामग्निक्वथनं सूर्यातपप्रतापनं तप्तायःपिण्डसिकतालोष्ट्राणां वा निर्वापणं प्रसादनं कर्तव्यं नागचम्पकोत्पलपाटलापुष्पप्रभृतिभिश्चाधिवासनमिति ॥

बगडेला जळने स्वच्छ करवाना उपायो.

१० अग्निथी उकाळवुं, सूर्यना तडकाथी तपाववुं, तपावेला लोढाना गोळाथी रेतीथी के

इंट वगेरेथी झामवुं अने नागकेसर, राजचंपक, सौगंधिक कमळ के पाडलनां पुष्प एओ वगेरेथी वासवुं ए बगडेला जळने स्वच्छ तथा सारूं करवाना उपायो छे.

११ सौवर्णे राजते ताम्रे कांस्ये मणिमये तथा । पुष्पावतंसं भौमे वा सुगन्धि सलिलं पिबेत् ॥

जळ केवुं अने केवा पात्रमां राखेलुं पीवुं?

११ सोनाना, रूपाना, त्रांबाना, कांसाना, मणिना के माटीना वासणमां राखेलुं अने पुष्पोथी वासेलुं सुगंधि जळ पीवुं.

१२ व्यापन्नं वर्जयेन्नित्यं तोयं यच्चाप्यनार्तवम् । दोषसंजननं ह्येतन्नाददीताहितं तु तत् ॥ व्यापन्नं सलिलं यस्तु पिबतीहाप्रसादितम् । श्वयथुं पाण्डुरोगं च त्वग्दोषमविपाकताम् ॥ श्वासकासप्रतिश्यायशूलगुल्मोदराणि च । अन्यान्वा विषमान्रोगान्प्राप्नुयात्क्षिप्रमेव च ॥

बगडेलुं तथा ऋतुवगर पडेलुं जळ छोडी देवुं.

१२ बगडेलुं तथा ऋतुवगर पडेलुं जळ सर्वदा छोडीज देवुं. ए जळ दोषोने उत्पन्न करनारूं अने अहितज छे माटे तेने लेवुंज नहीं. जे माणस बगडेला जळने अग्निनो ताप आपवा वगेरेथी सुधार्‍या वगरज पीए छे तेने सोजो, पांडुरोग, त्वचाना दोष, मंदाग्निपणुं, श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, शूळ, गुल्म, उदररोगो तथा बीजा पण केटलाएक विषम रोगो तुरतज थाय छे.

१३ तत्र सप्त कलुषस्य प्रसादनानि भवन्ति । तद्यथा । कतकगोमेदकबिसग्रन्थिशैवालमूलवस्त्राणि मुक्ता मणिश्चेति ॥

मेला जळने निर्मल करवाना उपायो.

१३ निर्मळीनुं चूर्ण, गोमेद नामनो मणि, कमळनुं मूळ, शैवाळनुं मूळ, वस्त्र, मोती अने स्फटिक वगेरे मणि ए सात, मेलां जळने निर्मळ करवाना उपायो छे. (आ रूपदोषने टाळवाना उपायो देखाड्या छे.)

१४ पंच निक्षेपणानि भवन्ति । तद्यथा । फलकं त्र्यष्टकं मुञ्जवलय उदकमञ्चिका शिक्यं चेति ॥

जळथी भरेलां वासणो राखवाना आधारो.

१४ पाटीआं, आठ हांसवाळी त्रिपदीओ, मुंझ नामना खडनी हींढोणीओ, मांचीओ अने शींकाओ ए पांच, जळने राखवाना आधारो समजवा. एओमांथी कोईना उपर जळथी भरेलां वासणो राखवां.

१५ सप्त शीतीकरणानि भवन्ति प्रवातस्थापनमुदकप्रक्षेपणं यष्टिकाभ्रामणं व्यजन वस्त्रोद्धरणं वालुकाप्रक्षेपणं शिक्यावलम्बनं चेति ॥

जळने थंडुं करवाना उपायो.

१५ पवनवाळी खुली जगामां राखवुं, जळथी भरेला पात्रनुं वस्त्रवते मोहोडुं बांधीने चोतरफ बीजुं जळ सींचवुं, लाकडी वगेरेथी बनावेला यंत्रमां जळना पात्रने लईने फेरववुं, पंखा नाखवा, वस्त्रथी गाळवुं, जळना पात्रने रेतीमां नाखवुं अने जळना पात्रने शींकामां लटकाववुं ए सात, जळने थंडुं करवाना उपायो छे.

१६ निर्गन्धमव्यक्तरसं तृष्णाघ्नं शुचि शीतलम् । अच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥

पृथ्वीनुं जळ केवुं होय ते लेवुं.

१६ जे जळ गंध वगरनुं, अस्फुट रसवाळुं, तरशने मटाडनारूं, पवित्र, थंडुं, स्वच्छ, हलकुं अने मनने प्रिय लागे एवुं होय ते जळ गुणवाळुं केहेवाय छे.

१७तत्र नद्यः पश्चिमाभिमुखाः पथ्या लघूदकत्वात् । पूर्वाभिमुखास्तु न प्रशस्यन्ते गुरूदकत्वात् । दक्षिणाभिमुखा नाऽतिदोषलाः साधारणत्वात् । तत्र सह्यप्रभवाः कुष्ठं ज-

नयन्ति विन्ध्यप्रभवाः कुष्ठं पाण्डुरोगं च मलयप्रभवाः कृमीन्महेन्द्रप्रभवाः श्लीपदोदराणि हिमवत्प्रभवा हृद्रोगश्वयथुशिरोरोगश्लीपदगलगण्डान्। प्राच्यावन्त्या अपरावन्त्याश्चार्शांस्युपजनयन्ति। पारिपात्रप्रभवाः पथ्या बलारोग्यकर्यं इति।

नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः प्रोक्ता याश्चामलोदकाः।
गुर्व्यः शैवालसंछन्नाः कलुषा मन्दगाश्च याः
प्रायेण नद्यो मरुषु सतिक्ता लवणान्विताः।
ईषत्कषाया मधुरा लघुपाका बले हिताः।

नदीओना गुणो.

१७ पश्चिम तरफ जनारी नदीओ हलका जळवाळी छे माटे पथ्य छे. पूर्व तरफ जनारी नदीओ भारे जल वाली छे तेथी सारी गणाती नथी. दक्षिण तरफ जनारी नदीओ साधारण छे माटे बहु दोषवाळी नथी. सह्याद्रिमांथी थएली नदीओ कोढने उत्पन्न करे छे, विंध्याचळमांथी थएली नदीओ कोढने तथा पांडुरोगने उत्पन्न करे छे, मलयाचलमांथी थएली नदीओ कृमिओने उत्पन्न करे छे[1], महेंद्राचलमांथी थएली नदीओ श्लीपदने तथा उदररोगोने उत्पन्न करे छे अने हिमालयमांथी थएली नदीओ छातीनां दरदोने, सोजाओने, माथाना रोगोने, श्लीपदने अने गळगंडने उत्पन्न करे छे. मालवामां पूर्वदिशाना पर्वतोमांथी थएली नदीओ तथा पश्चिमदिशाना पर्वतोमांथी थएली नदीओ अरशोने करे छे. पारिपात्र नामना पर्वतमांथी थएली नदीओ पथ्य छे अने बळने तथा आरोग्यने आपनारी छे.

जे नदीओ उतावळा वेगवाळी तथा निर्मळ जळवाळी होय तेओ हलका जळवाळी होय छे अने जे नदीओ शेवाळथी ढंकाएली, मेली तथा मंद वेगवाळी होय तेओ भारे जळवाळी होय छे. घणुं करीने मरुदेशनी नदीओ तिक्त तथा लवण रसोवाळी अने कांईक तूरी तथा मधुर होय छे तेथी तेओनुं जळ पाकमां हलकुं छे अने बळने माटे पण सारूं छे.

१८ तत्र सर्वेषां भौमानां ग्रहणं प्रत्युषसि तत्र ह्यमलत्वं शैत्यं चाधिकं भवति स एव चापां परो गुण इति ॥

पृथ्वीनुं जळ कया समयमां भरी लेवुं?

१८ सर्व प्रकारनां पृथ्वीनां जळो परोढीआना समयमां भरी लेवां. कारण के ए समये ते जळोमां निर्मळपणुं तथा शीतपणुं अधिक होय छे. निर्मळपणुं अने शीतलपणुं ए जळमां मुख्य गुणो छे.

१९ दिवार्ककिरणैर्जुष्टं निशायामिन्दुरश्मिभिः।
अरूक्षमनभिष्यन्दि तत्तुल्यं गगनाम्बुना ॥

सामान्य रीते पृथ्वीनुं केवुं जळ उत्तम छे?

१९ जे जळनी उपर दिवसे सूर्यनी किरणो पडती होय अने राते चंद्रनी किरणो पडती होय ते जलने रूक्ष के अभिष्यंदि (शरदी करनार) न होवाने लीधे आंतरीक्ष जळ जेवुं समजवुं, (अर्थात् आंतरीक्ष जळ न मळे तो ते जळ लेवुं.)

२० गगनाम्बु त्रिदोषघ्नं गृहीतं यत्सुभाजने।
बल्यं रसायनं मेध्यं पात्रापेक्षि ततः परम् ॥

आंतरीक्ष जळना विशेष गुणो.

२० सारा वासणमां लई राखेलुं आकाशनुं जळ त्रणे दोषोने हणनार छे, बळने वधारनार छे, रसायन होवाथी सर्वने उपयोगी छे अने प-

---

१ मलयाचळनी नदीओ बे जातनी छे. केटलीएक पथराओवाळी तथा रेतीवाळी छे अने केटलीएक केवल रेतीवाळीज छे. एओमां पेहेली जातनी नदीओ पथ्य छे. (डल्हन.)

२ हिमालयना उपरना भागमांथी प्रकट थएली नदीओ पथ्य छे अने नीचेना भागमांथी प्रकट थएली नदीओ दरदोने उत्पन्न करे छे. (डल्हन.) **हिमवत्प्रभवा यास्तु नद्योऽश्माहतपाथसः। गंगाशतद्रूसरयूयमुनाद्या गुणोत्तमाः** (भावप्रकाश.)

वित्र छे. जो ए जळ अतिश्रेष्ठ वासणमां राखवामां आव्युं होय तो अधिक गुण करे छे.

**२१ रक्षोघ्नं शीतलं ह्लादि ज्वरदाहविषापहम् ।
चन्द्रकान्तोद्भवं वारि पित्तघ्नं विमलं स्मृतम् ॥**

चंद्रकांत मणिमांथी झरेला जळना गुणो.

२१ चंद्रकांत मणिनुं जळ राक्षसोना भयने टाळनार छे, शीतल छे, सुखदायी छे, निर्मळ छे अने ज्वरने, दाहने, विषने तथा पित्तने मटाडनार छे.

**२२ मूर्छापित्तोष्णदाहेषु विषे रक्ते मदात्यये ।
भ्रमक्लमपरीतेषु तमके वमथौ तथा ॥
ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतमम्भः प्रशस्यते ।**

शीतजळ कया कया रोगोमां देवुं ?

२२ मूर्छा, पित्त, दाह, विष, रुधिरसंबंधी रोग, मदात्यय, भ्रमण, क्लम, तमकश्वास, मोह, उलटी अने उपरना भागनुं रक्तपित्त एओमां शीतल जळ देवुं ए उत्तम छे. सामान्य रीते शरद्ऋतु अने ग्रीष्मऋतु एओमां पण शीतल जळ देवुं ए उत्तम छे.

**२३ पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ॥
आध्माने स्तिमिते कोष्ठे सद्यः शुद्धौ नवज्वरे ।
हिक्कायां स्नेहपीते च शीताम्बु परिवर्जयेत् ॥**

कया कया रोगोमां शीतल जळनो उपयोग न करवो ?

२३ पडखांनुं शूळ, प्रतिश्याय, वायुसंबंधी रोग, गलग्रह, आफरो, कोठानुं स्तब्धपणुं, (आमकोष्ठ) नवीनज्वर अने हेडकी एओमां शीतल जळनो त्याग करवो. जे दिवसे शोधन कर्युं होय ते दिवसे अथवा ते दिवस पछी सात दिवस सुधी शीतल जळनो त्याग करवो. स्नेहपान कर्या पछी पण शीतळ जळ पीवुं नहीं.

**२४ नादेयं वातलं रूक्षं दीपनं लघु लेखनम् ।
तदभिष्यन्दि मधुरं सान्द्रं गुरु कफावहम् ॥**

नदीना जळना सामान्य गुणो.

२४ नदीनुं जळ वायुने उत्पन्न करनारूं छे, रूक्ष छे, अग्निने दीप्त करनार छे, हलकुं छे अने कफने तथा मेदने उखेडनारूं छे. पण जो नदीनुं जळ मधुर तथा घाटुं होय तो शरदी करनारूं छे, भारे छे अने कफ करनारूं छे.

२५ तृष्णाघ्नं सारसं बल्यं कषायं मधुरं लघु ।

सरोवरना (स्वतःसिद्ध तळावना) जळना गुणो.

२५ सरोवरनुं जळ तरशने मटाडनार छे, बळ आपनार छे, तूरूं छे, मधुर छे अने हलकुं छे.

२६ ताडागं वातलं स्वादु कषायं कटुपाकि च ।

माणसोए खोदीने करेला तळावना जळना गुणो.

२६ तळावनुं जळ वायुने उत्पन्न करनार छे, मधुर छे, तूरूं छे अने कटु पाकवाळुं छे.

२७ वातश्लेष्महरं वाप्यं सक्षारं कटु पित्तलम् ॥

वावना जळना गुणो.

२७ वावनुं जळ क्षारतावाळुं होय तो वायुने तथा कफने हणनार छे, तीखुं छे, अने पित्तने वधारनार छे. (मीठुं होय तो कफ करनार छे अने वायुने तथा पित्तने हणनार छे.)

२८ सक्षारं पित्तलं कौपं श्लेष्मघ्नं दीपनं लघु ॥

कूवाना जळना गुणो.

२८ कूवानुं जळ क्षारतावाळुं होय तो पित्त करनार छे, कफने हणनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने हलकुं छे. (मीठुं होय तो त्रणे दोषने हरनार छे, हितकारी छे अने हलकुं छे.)

२९ चौण्ड्यमग्निकरं रूक्षं मधुरं कफकृन्न च ।

नहीं बांधेला कुवाना जळना गुणो.

२९ नहीं बांधेला कुवानुं जळ अग्निने प्रदीप्त करनार छे, रूक्ष छे अने मधुर छतां कफ करनारूं नथी.

३० कफघ्नं दीपनं हृद्यं लघु प्रस्रवणोद्भवम् ॥

झरणांना जळना गुणो.

३० झरणांनुं जळ कफने हणनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे अने हलकुं छे.

३१ मधुरं पित्तशमनमविदाह्यौद्भिदं स्मृतम् ।

पृथ्वीमांथी भपकीने नीकळता जळना गुणो.

३१ पृथ्वीमांथी भपकीने नीकळतुं जळ मधुर छे, पित्तने शांत करनार छे अने सारी रीते पचे एवुं छे.

३२ वैकिरं कटु सक्षारं श्लेष्मघ्नं लघु दीपनम्॥

वीरडाना जळना गुणो.

३२ वीरडानुं जळ क्षारतावाळुं होय तो तीखुं छे, कफने हणनार छे, हलकुं छे अने अग्निने दीप्त करनार छे. (मीठुं होय तो निर्दोष छे, शीतल छे, स्वच्छ छे, हलकुं छे अने पित्तने हरनार छे.)

३३ कैदारं मधुरं प्रोक्तं विपाके गुरु दोषलम्

क्याराना (खेतरना) जळना गुणो.

३३ क्यारानुं जळ मधुर छे, विपाकमां भारे छे अने दोषोने उत्पन्न करनार छे.

३४ तद्वत्पाल्वलमुद्दिष्टं विशेषाद्दोषलं तु तत्॥

पल्वलना (सूर्य मृगशिर नक्षत्रमां आवे त्यारे सुकाई जनारा खाडाना) जळना गुणो.

३४ पल्वलनुं जळ खेतरना जळ जेवुंज छे अने विशेषे करी दोषोने उत्पन्न करनार छे.

३५ सामुद्रमुदकं विस्रं लवणं सर्वदोषकृत् ।

समुद्रना जळना गुणो.

३५ समुद्रनुं जळ खराब गंधवाळुं छे, खारूं छे अने सघळा दोषोने करनारूं छे.

३६ अनेकदोषमानूपं वार्यभिष्यन्दि गर्हितम् ॥

अनूपदेशना जळना गुणो.

३६ अनूपदेशनुं जळ अनेक दोषवाळुं छे, शरदी करनार छे अने खराब छे.

३७ एभिर्दोषैरसंयुक्तं निरवद्यं तु जाङ्गलम् ।

जांगलदेशना जळना गुणो.

३७ जांगलदेशनुं जळ (घणुं करीने) आ अध्यायना नवमा विषयमां कहेला स्पर्शादिक छ दोषोथी रहित होय छे अने उत्तम होय छे.

३८ पाके विदाहि तृष्णाघ्नं प्रशस्तं प्रीतिवर्द्धनम्
दीपनं स्वादु शीतं च तोयं साधारणं लघु ।

साधारण देशना जळना गुणो.

३८ साधारण देशनुं जळ पाकमां दाह करनार छे, तरशने हणनार छे, उत्तम छे, प्रीतिने वधारनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, मधुर छे, शीतल छे अने हलकुं छे.

३९ कफमेदोऽनिलामघ्नं दीपनं वस्तिशोधनम्॥
श्वासकासज्वरहरं पथ्यमुष्णोदकं सदा ।
यत्क्वाथ्यमानं निर्वेगं निःफेनं निर्मलं लघु ॥
चतुर्भागावशेषं तु तत्तोयं गुणवत्स्मृतम् ।

उना पाणीना गुणो.

३९ उकाळीने अरधुं अवशेष राखेलुं उनुं पाणी अग्निने दीप्त करनार छे, मूत्राशयने साफ करनार छे, सर्वदा पथ्य छे अने कफ, मेद, वायु, आम, श्वास, खांसी तथा ज्वर एओने हरनार छे.

उकाळवाना समयमां वेगथी तथा फीणथी रहित रहेलुं, निर्मळ, हलकुं अने उकाळीने चोथा भागनुं अवशेष राखेलुं उनुं जळ उत्तम गुणवाळुं छे.

४० न च पर्युषितं देयं कदाचिद्वारि जानता ॥
अम्लीभूतं कफोत्क्लेशि न हितं तत् पिपासवे ।

वैद्ये रातवाशी रहेलुं उनुं जळ आतुरने देवुं नहीं.

४० समजु वैद्ये कदी पण रातवाशी रहेलुं उनुं पाणी रोगीने देवुं नहीं. केम के ते खाटुं थई गएलुं होय छे अने कफने स्थानच्युत करनारूं छे माटे तरश्या थएलाने हितकारी नथी.

४१ मद्यपानात्समुद्भूते रोगे पित्तोत्थिते तथा॥
संनिपातसमुत्थे च शृतशीतं प्रशस्यते ।

उनुं करीने थंडुं पाडेलुं जळ देवाना विषयो.

४१ मदात्ययथी उत्पन्न थएला रोगमां, पित्तथी उत्पन्न थएला रोगमां अने सन्निपातथी उत्पन्न थएला रोगमां उनुं कर्या पछी थंडुं पाडेलुं जळ देवुं ए उत्तम छे. (मदात्ययमां पोतामां तो शीतल जळ पण उत्तम छे अने उनुं कर्या पछी थंडुं करेलुं जळ पण उत्तम छे.)

४२ स्निग्धं स्वादु हिमं हृद्यं दीपनं वस्तिशोधनम्
वृष्यं पित्तपिपासाघ्नं नारिकेलोदकं गुरु ।

नाळीएरना जळना गुणो.

४२ नाळीएरनुं जळ स्निग्ध छे, मधुर छे, थंडुं छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, मूत्राशयने साफ करनार छे, वीर्यने वधारनार छे, पित्तने तथा तरशने मटाडनार छे अने भारे छे.

४३ दाहातीसारपित्तासृङ्मूर्छामद्यविषार्तिषु ॥
शृतशीतं जलं शस्तं तृष्णाच्छर्दिभ्रमेषु च ।

उनुं करीने थंडुं पाडेलुं जळ देवाना बीजा पण विषयो.

४३ दाह, अतीसार, पित्तजन्यरोग, रुधिरजन्य रोग, मूर्छा, मद्यसंबंधी पीडा, विषसंबंधी पीडा, तरश, उलटी अने भ्रम एओमां उनुं करीने थंडुं पाडेलुं जळ देवुं ए उत्तम छे.

४४ अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये ॥
मन्दाग्नावुदरे कुष्ठे ज्वरे नेत्रामये तथा ।
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ॥

कया कया रोगमां थोडुं जळ पीवुं?

४४ अरोचक, प्रतिश्याय, लालनो स्राव, सोजो, क्षय, अग्निनुं मंदपणुं, उदररोग, कुष्ठ, ज्वर, नेत्रना रोग, व्रण अने मधुप्रमेह एओमां थोडुं थोडुं पाणी पीवुं.

इति जलवर्गः

४५ गव्यमाजं तथा चौष्ट्रमाविकं माहिषं च यत्।
अश्वायाश्चैव नार्याश्च करेणूनां च यत्पयः ॥

दूधना आठ भेद.

४५ गायनुं, बकरीनुं, उंटडीनुं, गाडरनुं, भेंशनुं, घोडीनुं, स्त्रीनुं अने हाथणीनुं ए रीते दूधना आठ भेद[१] छे.

४६ तत्त्वनेकौषधिरसप्रसादं प्राणदं गुरु ।
मधुरं पिच्छिलं शीतं स्निग्धं श्लक्ष्णं सरं मृदु ॥
सर्वप्राणभृतां तस्मात्सात्म्यं क्षीरमिहोच्यते ॥

तत्र सर्वमेव क्षीरं प्राणिनामप्रतिषिद्धं जातिसात्म्यात् । वातपित्तशोणितमानसविकारेष्वविरुद्धम् । जीर्णज्वरकासश्वासशोषक्षयगुल्मोन्मादोदरमूर्छाभ्रममदाहपिपासाहृद्बस्तिपाण्डुरोगग्रहणीदोषार्शःशूलोदावर्तातिसारप्रवाहिकायोनिरोगगर्भास्रावरक्तपित्तश्रमक्लमहरं पाप्मापहं बल्यं वृष्यं वाजीकरणं रसायनं मेध्यं संधानमास्थापनं वयःस्थापनमायुष्यं जीवनं बृंहणं वमनं विरेचनं च तुल्यगुणत्वाच्चौजसो वर्द्धनमिति बालवृद्धक्षतक्षीणानां क्षुद्व्यवायव्यायामकर्शितानां च पथ्यतमम् ।

दूधना सामान्य गुणो.

४६ दूध अनेक द्रव्योना रसना प्रसादरूप छे, प्राण आपनार छे, भारे छे, मधुर छे, चीकणुं छे, टाढुं छे, स्निग्ध छे, लासुं छे, मळनी प्रवृत्ति करावनार छे अने कोमळ छे. आप्रमाणे होवाने लीधे दूध सर्व प्राणिओने सात्म्य छे (प्रकृतिथीज हितकारी छे) एमं केहेवाय छे.

दूध सर्व प्राणिओने जन्मथीज सात्म्य छे ए-

१ खचरी, गधेडी, हरिणी अने गेंडी वगेरेनां दूधो घणुं करीने लेपादिकमां उपयोगी छे पण पीवामां उपयोगी नथी तेथी तेओने आ प्रकरणमां दाखल कर्यां नथी.

टला माटे कोई पण प्राणीने ए आठ प्रकारना दूधनो निषेध नथी. वातविकार, पित्तविकार, रुधिरविकार अने रजोगुण वगेरेथी थता मानसिक विकारोमां पण दूध अविरुद्ध छे. दूध जीर्णज्वर, कफजन्य वगरनी बीजी खांसीओ, श्वास मुख तथा कंठ वगेरेनो शोष, क्षयरोग, वातिक तथा पैत्तिक गुल्मो, उन्मादो, वातिक तथा पैत्तिक उदर रोगो, कफ वगरनी मूर्छा, कफ वगरनो भ्रम, कफ वगरनो मद, दाह, कफ वगरनी तरश, वातिक तथा पैत्तिक हृदयरोगो, मूत्राशयना रोगो, वातिक तथा पैत्तिक पांडुरोग, ग्रहणीरोग, अरश, शूळ, उदावर्त्त, अतीसार, प्रवाहिका, योनिरोगो, आमना संबंध वगरनो गर्भस्राव, कफनी प्रधानता वगरनुं तथा अग्निनी मंदता वगरनुं रक्तपित्त, श्रम तथा ग्लानि एओने हरनार छे, पापोने टाळनार छे, बळने वधारनार छे, वीर्यने वधारनार छे, स्त्रीसंगमां प्रहर्ष आपनार छे, सर्वदा उपयोग करवाथी रसायन छे, पवित्र छे, बुद्धिने वधारनार छे, भांगेलाने सांधनार छे, निरूहबस्तिमां उपयोगी छे, यौवनने स्थिर राखनार छे, आयुष्यने वधारनार छे, जीवाडनार छे, पुष्टि आपनार छे, वमन द्रव्योनी साथे मळीने वमन करावनार छे, जाते तथा विरेचन द्रव्योनी साथे मळीने पण विरेचन करावनार छे, ओजना जेवाज गुणोवाळुं होवाने लीधे ओजने वधारनार छे अने बालक, वृद्ध, क्षतथी क्षीण थएला, क्षुधाथी दुर्बल थएला, मैथुनथी दुर्बल थएला तथा कसरतथी दुर्बल थएला एओने अत्यंत पथ्यरूप छे. (घणुं करीने कफजन्य रोगोउपर सारूं नथी.)

४७ गोक्षीरमनभिष्यन्दि स्निग्धं गुरु रसायनम्।
रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥
जीवनीयं तथा वातपित्तघ्नं परमं स्मृतम् ।

गायना दूधना गुणो.

४७ गायनुं दूध स्रोतो वगेरेने क्लेद तथा मंदता आपनार नथी, स्निग्ध छे, भारे छे, रसायन छे, रक्तपित्तने हरनार छे, शीतल छे, रसमां तथा पाकमां मधुर छे, जीवनरूप छे अने वायुने तथा पित्तने तमाम टाळी नाखनार छे.

४८गव्यतुल्यगुणं त्वाजं विशेषाच्छोषिणां हितम्
दीपनं लघु संग्राहि श्वासकासास्रपित्तनुत् ।
अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ॥
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वव्याधिहरं पयः

बकरीना दूधना गुणो.

४८ बकरीनुं दूध गायना दूधना जेवाज गुणोवाळुं छे, विशेषे करी क्षयरोगवाळाओने हितकारी छे, अग्निने प्रदीप्त करनार छे, हलकुं छे, दस्तने रोकनार छे अने श्वास खांसी तथा रक्तपित्त एओने मटाडनार छे. बकरीओ नाहाना कदवाळी होय छे, तीखा तथा कडवा पदार्थोनुं सेवन करे छे, घणुं पाणी पीती नथी अने मेहेनत करनारी छे माटे तेओनुं दूध सर्व व्याधिओने टाळे छे.

४९ रूक्षोष्णं लवणं किंचिदौष्ट्रं स्वादुरसं लघु॥
शोफगुल्मोदरार्शोघ्नं क्रमिकुष्ठविषापहम् ।

उंटडीना दूधना गुणो.

४९ उंटडीनुं दूध रूक्ष छे, गरम छे, कांइक खारूं छे, मधुर रसवाळुं छे, हलकुं छे अने सोजा, गुल्म, उदररोग, अरश, क्रमि, कोढ तथा विष एओने हरनार छे.

५० आविकं मधुरं स्निग्धं गुरु पित्तकफावहम् ॥
पथ्यं केवलवातेषु कासे चानिलसम्भवे ।

गाडरना दूधना गुणो,

५० गाडरनुं दूध मधुर छे, स्निग्ध छे, भारे छे, पित्तने तथा कफने करनार छे, अन्य दोषोना संसर्गवगरना वातरोगोमां हितकारी छे अने वायुथी थएली खांसीमां पण हितकारी छे.

५१ महाभिष्यन्दि मधुरं माहिषं वह्निनाशनम् ॥
निद्राकरं शीतकरं गव्यात्स्निग्धतरं गुरु ।

भेंशना दूधना गुणो.

५१ भेंशनुं दूध स्रोतो वगेरेमां अतिमंदता तथा अतिक्लेद करनार छे, मधुर छे, जठराग्निने नष्ट करनार छे, निद्रा आपनार छे, शीत करनार छे अने गायना दूध करतां वधारे स्निग्ध छे तथा भारे छे.

५२ उष्णं चैकशफं बल्यं शाखावातहरं पयः ॥
मधुराम्लरसं रूक्षं लवणानुरसं लघु ।

घोडीना दूधना गुणो.

५२ घोडीनुं तथा एक खरीवाळी बीजी पशुजातिनुं दूध पण बळने वधारनार छे, हाथ पगना वायुरोगोने हरनार छे, गरम छे, मधुर छे, खाटा रसवाळुं छे रूक्ष छे, पेटामां लवण रसवाळुं छे अने हलकुं छे.

५३ नार्यास्तु मधुरं स्तन्यं कषायानुरसं हिमम्॥
नस्याश्चोतनयोः पथ्यं जीवनं लघु दीपनम् ।

स्त्रीना दूधना गुणो.

५३ स्त्रीनुं दूध मधुर छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे, टाढुं छे, नस्य देवामां तथा आंखोनी अंदर टीपां पाडवामां पथ्य छे, जीवन देनार छे, हलकुं छे अने अग्निने दीप्त करनार छे.

५४ हस्तिन्या मधुरं वृष्यं कषायानुरसं गुरु ॥
स्निग्धं स्थैर्यकरं शीतं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ।

हाथणीना दूधना गुणो.

५४ हाथणीनुं दूध मधुर छे, वीर्यने वधारनार छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे, भारे छे, स्निग्ध छे, शरीरने दृढ करनार छे, टाढुं छे, नेत्रोने हितकारी छे अने बळने वधारनार छे.

५५प्रायः प्राभातिकं क्षीरं गुरु विष्टम्भि शीतलम्
रात्रौ सोमगुणत्वाच्च व्यायामाभावतस्तथा ।

प्रभातमां दोहेला दूधना गुणो.

५५ रात्रि चंद्रना गुणोवाळी छे अने पशुओ राते व्यायाम करता नथी तेथी प्रभातनुं दूध घणुं करीने भारे होय छे, पेटमां गडगडाट करे छे अने शीतल होय छे.

५६ दिवाकराभितप्तानां व्यायामानिलसेवनात् ।
वातानुलोमि श्रान्तिघ्नं चक्षुष्यं चापराह्णिकम् ।

दिवसना पाछला पोहोरमां दोहेला दूधना गुणो.

५६ पशुओ दिवसे सूर्यनी किरणोथी तपे छे, व्यायाम करे छे अने पवननुं सेवन करे छे तेथी दिवसना पाछला पोहोरमां दोहेलुं दूध वायुनुं अनुलोमन करे छे, परिश्रमने मटाडे छे अने नेत्रोनुं हित करे छे.

५७पयोऽभिष्यन्दि गुर्वामं प्रायशः परिकीर्तितम्
तदेवोक्तं लघुतरमनभिष्यन्दि वै शृतम् ।
वर्जयित्वा स्त्रियाः स्तन्यमाममेव हि तद्धितम्
धारोष्णं गुणवत्क्षीरं विपरीतमतोऽन्यथा ।
तदेवातिशृतं सर्वं गुरु बृंहणमुच्यते ॥

टाढा, गरम करेला, शेडकढ्या, तथा बहुज गरम करेला दूधना गुणो.

५७ टाढुं दूध घणुं करीने स्रोतो वगेरेने मंदताथी तथा क्लेदथी युक्त करनार छे अने भारे छे. गरम करेलुं दूध अत्यंत हलकुं छे अने स्रोतो वगेरेने मंदताथी तथा क्लेदथी युक्त करनार नथी. स्त्रीनुं दूध तो गरम करेलुं हितकारी नथी पण टाढुंज हितकारी छे. शेडकढ्युं दूध उत्तम गुणकारी छे अने जे दूध शेडकढ्युं न होय ते तेवुं गुणकारी नथी. बहुज पकावेलुं (कढेलुं) सर्व प्रकारनुं दूध भारे छे, अने शरीरने पुष्टि आपनार छे.

५८ अनिष्टगन्धमम्लं च विवर्णं विरसं च यत् ।
वर्ज्यं सलवणं क्षीरं यच्च विग्रथितं भवेत् ।

केवा दूधनो त्याग करवो ?

५८ जे दूध खराब गंधवाळुं, खाटुं, बदली गये-

ला वर्णवाळुं, रसवगरनुं, खाराशवाळुं के फोदा फोदा थई बगडी गएलुं होय तेनो त्याग करवो.

इति क्षीरवर्गः

५९ दधि तु मधुरमम्लमत्यम्लं चेति तत्कषायानुरसं स्निग्धमुष्णं पीनसविषमज्वरातिसारारोचकमूत्रकृच्छ्रकार्श्यापहं वृष्यं प्राणकरं मङ्गल्यं च ॥

महाभिष्यन्दि मधुरं कफमेदोविवर्द्धनम ।
कफपित्तकृदम्लं स्यादत्यम्लं रक्तदूषणम् ॥
विदाहि सृष्टविण्मूत्रं मन्दजातं त्रिदोषकृत् ।

दहींना सामान्य गुणो.

५९ दहीं मधुर, खाटुं अने अने अत्यंत खाटुं एम त्रण प्रकारनुं होय छे. दहीं पेटामां तूरा रसवाळुं छे, स्निग्ध छे, उष्ण वीर्यवाळुं छे, वीर्यने वधारनार छे, बळ आपनार छे, मांगलिक छे अने पीनस, विषमज्वर, अतीसार, अरोचक, मूत्रकृच्छ्र तथा कृशता एओने मटाडनार छे. **मधुर** दहीं स्रोतो वगेरेने अत्यंत मंदता तथा अत्यंत क्लेद आपनारूं छे, अने कफने तथा मेदने वधारनार छे. **खाटुं** दहीं कफने तथा पित्तने करनार छे अने **अत्यंत खाटुं** दहीं रुधिरने खराब करनार छे. **जामवा लागेलुं** दहीं बळतरा करनार छे, विष्टानी तथा मूत्रनी वधारे प्रवृत्ति करनार छे अने एकी वखते त्रणे दोषोने करनार छे.

६० स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं बलवर्द्धनम्
वातापहं पवित्रं च दधि गव्यं रुचिप्रदम् ।

गायना दहींना गुणो.

६० गायनुं दहीं स्निग्ध छे, विपाकमां मधुर छे, अग्निने दीप्त करनार छे, बळने वधारनार छे, वायुने हणनार छे, पवित्र छे अने रुचि आपनार छे.

६१ दध्याजं कफपित्तघ्नं लघु वातक्षयापहम् ॥
दुर्नामश्वासकासेषु हितमग्नेः प्रदीपनम् ।

बकरीना दहींना गुणो.

६१ बकरीनुं दहीं कफने तथा पित्तने हणनार छे, हलकुं छे, वायुनो तथा क्षयनो नाश करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने अरश, श्वास तथा खांसी एओउपर हितकारी छे.

६२ विपाके मधुरं वृष्यं वातपित्तप्रसादनम् ॥
बलासवर्द्धनं स्निग्धं विशेषाद्दधि माहिषम् ।

भेंशना दहींना गुणो.

६२ भेंशनुं दहीं विपाकमां मधुर छे, वीर्यने वधारनार छे, वायुने तथा पित्तने शांत करनार छे, कफने अत्यंत वधारनार छे अने अत्यंत स्निग्ध छे.

६३ विपाके कटु सक्षारं गुरु भेद्यौष्ट्रिकं दधि॥
वातमर्शांसि कुष्ठानि क्रमीन्हन्त्युदराणि च ।

उंटडीना दहींना गुणो.

६३ उंटडीनुं दहीं विपाकमां तीखुं छे, क्षारवाळुं छे, भारे छे, दस्त लगाडनार छे अने वायु, अरश, कोढ, कृमिओ तथा उदररोगो एओने नष्ट करनार छे.

६४ कोपनं कफवातानां दुर्नाम्नां चाविकं दधि ॥
रसे पाके च मधुरमत्यभिष्यन्दि दोषलम् ।

गाडरना दहींना गुणो.

६४ गाडरनुं दहीं रसमां तथा पाकमां मधुर छे, स्रोतो वगेरेने अतिमंदता तथा अतिक्लेद आपनारूं छे, विकारो करनारूं छे, अने अरश, कफ तथा वायु एओने प्रकुपित करनारूं

६५ दीपनीयमचक्षुष्यं वाडवं दधि वातलम् ॥
रूक्षमुष्णं कषायं च कफमूत्रापहं च तत् ।

घोडीना दहींना गुणो.

६५ घोडीनुं दहीं अग्निने दीप्त करनार छे, वायुने उत्पन्न करनार छे, रुक्ष छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, तूरूं छे, कफने तथा मूत्रने हणनारूं छे अने नेत्रने माटे सारूं नथी.

६६ स्निग्धं विपाके मधुरं बल्यं संतर्पणं गुरु ॥
चक्षुष्यमग्र्यं दोषघ्नं दधि नार्या गुणोत्तरम् ।

स्त्रीना दहींना गुणो.

६६ स्त्रीनुं दहीं विपाकमां मधुर छे, बळ आ-

पनार छे, तृप्ति आपनार छे, भारे छे, मेत्रोने अत्यंत हितकारी छे, दोषोने हणनारूं छे अने सघळी रीते उत्कृष्ट गुणोवाळुं छे,

६७लघु पाके बलासघ्नं वीर्योष्णं शक्तिनाशनम्॥
कषायानुरसं नाग्या दधि वर्चोविवर्द्धनम् ।

हाथणीना दहींना गुणो.

६७ हाथणीनुं दहीं पाकमां हलकुं छे, कफने तोडनार छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, शक्तिने नष्ट करनार छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे अने विष्टाने वधारनार छे.

६८ दधीन्युक्तानि यानीह गव्यादीनि पृथक् पृथक्
विज्ञेयमेषु सर्वेषु गव्यमेव गुणोत्तरम् ।

सर्व दहींओमां गायना दहींनी उत्तमता.

६८ उपर जे गाय, बकरी, भेंश, उंटडी, गाडर, घोडी, स्त्री तथा हाथणी एओनां दहींओ जूदां जूदां कह्यां ते सघळांओमां गायना दूधनेज उत्कृष्ट गुणोवाळुं समजवुं.

६९ वातघ्नं कफकृत्स्निग्धं बृंहणं न च पित्तकृत्॥
कुर्याद्भक्ताभिलाषं च दधि यत्सुपरिस्रुतम् ।

वस्त्रथी गाळेला दहींना गुणो.

६९ वस्त्रथी सारी रीते गाळी लीधेलुं दहीं वायुने हणे छे, कफने उत्पन्न करे छे, स्निग्ध छे, पुष्टि आपनार छे, पित्त करनार नथी अने अन्न खावामां रुचि उपजावनार छे.

७० शृतात्क्षीरात्तु यज्जातं गुणवद्दधि तत्स्मृतम्॥
वातपित्तहरं रुच्यं धात्वग्निबलवर्द्धनम् ।

कढेला दूधमांथी करेला दहींना गुणो.

७० कढेला दूधमांथी करेलुं दहीं गुणवाळुं छे, वायुने तथा पित्तने हणनार छे, रुचि उपजावनार छे, अने धातुओने, अग्निने तथा बळने वधारनार छे.

७१ दध्नः सरो गुरुर्वृष्यो विज्ञेयोऽनिलनाशनः॥
वह्नेर्विधमनश्चापि कफशुक्रविवर्द्धनः ।

दहींनी तरना गुणो.

७१ दहींनी तर भारे छे, स्त्रीसंगमां प्रहर्ष आपनार छे, वायुने नष्ट करनार छे, अग्निने मंद करनार छे अने कफने तथा वीर्यने वधारनार छे.

७२ दधि त्वसारं रूक्षंच ग्राहि विष्टम्भि वातलम्
दीपनीयं लघुतरं सकषायं रुचिप्रदम् ।

तरवगरना दहींना गुणो.

७२ तरवगरनुं दहीं रूक्ष छे, दस्तने रोकनार छे, पेटमां गडगडाट करनार छे, वायुने उत्पन्न करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, अत्यंत हलकुं छे, कांइक तूरा रसवाळुं छे अने रुचि आपनार छे.

७३ शरद्ग्रीष्मवसंतेषु प्रायशो दधि गर्हितम् ॥
हेमंते शिशिरे चैव वर्षासु दधि शस्यते ।

ऋतुपरत्वे दहींना गुणदोषो.

७३ घणुं करीने शरद्, ग्रीष्म तथा वसंत ए त्रण ऋतुओमां दहीं खावुं ए खराब छे अने हेमंत, शिशिर तथा वर्षा ए त्रण ऋतुओमां दहीं खावुं ए सारूं छे.

७४ तृष्णाक्लमहरं मस्तु लघु स्रोतोविशोधनम्॥
अम्लं कषायं मधुरमवृष्यं कफवातनुत् ।
प्रह्लादनं प्रीणनं च भिनत्त्याशु मलं च तत्॥
बलमावहते चापि भक्तच्छन्दं करोति च ॥

दहींना नीचे रहेला जळमिश्रित भागना गुणो.

७४ दहींनो नीचे रहेलो जळमिश्रित भाग तरशने तथा क्लमने मटाडनार छे, स्रोतोने साफ करनार छे, खाटो छे, तूरो छे, मधुर छे, स्त्री संगमां हर्ष आपनार नथी, कफने तथा वायुने तोडनार छे, सुख आपनार छे, तृप्ति आपनार छे, मळने जलदी तोडी नाखनार छे, बळ आपनार छे अने अन्न खावामां रुचि उपजावनार छे.

७५ स्वाद्वम्लमत्यम्लकमन्दजातं
तथा शृतक्षीरभवं सरश्च ।

असारमेवं दधि सप्तधाऽस्मिन्
वर्गे स्मृता मस्तुगुणास्तथैव ॥

आ वर्गमां कहेली बाबतोनी अनुक्रमणिका.

७५ मधुर दहीं, खाटुं दहीं, अत्यंत खाटुं दहीं, जामवा लागेलुं दहीं, कढेला दूधनुं दहीं, दहींनी तर तथा तरवगरनुं दहीं ए सातना गुणो आ वर्गमां कह्या छे अने ते पछी दहींना नीचे रहेला जलमिश्रित भागना गुणो कह्या छे.

इति दधिवर्गः

७६ तक्रं मधुरमम्लं कषायानुरसमुष्णवीर्यं लघु रूक्षमग्निदीपनं गरशोफातीसारग्रहणीपाण्डुरोगार्शःप्लीहगुल्मारोचकविषमज्वरतृष्णाच्छर्दिप्रसेकशूलमेदःश्लेष्मानिलहरं मधुरविपाकं हृद्यं मूत्रकृच्छ्रस्नेहव्यापत्प्रशमनमवृष्यं च ॥

छाशना सामान्य गुणो.

७६ छाश मधुर छे, खाटी छे, पेटामां तूरा रसवाळी छे, उष्ण वीर्यवाळी छे, हलकी छे, रूक्ष छे, अग्निने दीप्त करनार छे, मधुर विपाकवाळी छे, हृदयने प्रिय लागे एवी छे, मूत्रकृच्छ्रने तथा स्नेहना अतियोगथी के मिथ्यायोगथी थएला बगाडने शांत करनार छे, स्त्रीसंगमां प्रहर्ष आपनार नथी अने झेर, सोजा, अतीसार, ग्रहणी, पांडुरोग, अरश, बरलनुं दरद, गुल्म, अरोचक, विषमज्वर, तरश, उलटी, लाळनो स्राव, शूळ, मेद, कफ तथा वायु एओने मटाडनार छे.

७७ मन्थनादिपृथग्भूतस्नेहमर्द्धोदकं तु यत् ।
नातिसांद्रद्रवं तक्रं स्वाद्वम्लं तुवरं रसे ॥
यत्तु सस्नेहमजलं मथितं घोलमुच्यते ॥

उपर कहेला गुणो केवी छाशना समजवा.

७७ जेमांथी वलोववा वगेरे उपायोवते माखण काहाडी लेवामां आव्युं होय, जेमां दहींथी अरधुं पाणी नाखवामां आव्युं होय, जेनो द्रव बहु घाटो न होय तथा जेनो रस मधुर खाटो अने तूरो होय ते छाशमां उपर कहेला गुणो समजवा. जेमांथी स्नेह काहाडी लेवामां न आव्यो होय तथा जेने जळ नाख्यावगरज वलोवी होय ते छाश घोल केहेवाय छे. घोलमां बीजा गुणो छे पण उपर कहेला गुणो नथी.

७८ तक्रं नैव क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले ।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपैत्तिके ॥

छाश नहीं देवाना विषयो.

७८ क्षतमां, शरदृऋतुमां, ग्रीष्मऋतुमां, दुर्बल माणसने, मूर्छामां, भ्रममां, दाहमां अने रक्तपित्तसंबंधी रोगमां छाश देवी नहीं.

७९शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च।
मार्गावरोधे दुष्टे च वायौ तक्रं प्रशस्यते ॥

कया विषयोमां छाश देवी सारी छे?

७९ शीतकालमां, अग्निनी मंदतामां, कफथी थएला रोगोमां, स्रोतो रोकाई गयां होय त्यारे अने वायु दुष्ट थयो होय त्यारे छाश देवी ए उत्तम छे.

८० तत्पुनर्मधुरं श्लेष्मप्रकोपणं पित्तप्रशमनं च । अम्लं वातघ्नं पित्तकरं च ॥

मीठी छाशना तथा खाटी छाशना गुणो.

८० मीठी छाश कफने प्रकुपित करनार छे अने पित्तने शांत करनार छे. खाटी छाश वायुने हणनार छे अने पित्तने उत्पन्न करनार छे.

८१ वातेऽम्लं सैन्धवोपेतं स्वादु पित्ते सशर्करम्।
पिबेत्तक्रं कफे चापि व्योषक्षारसमायुतम् ॥

कया दोषमां कया संयोगवाळी छाशनो उपयोग करवो?

८१ वातदोष होय तो सैंधवना योगवाळी खाटी छाशनो उपयोग करवो, पित्तदोष होय तो

साकरना योगवाळी मीठी छाशनो उपयोग करवो अने कफदोष होय तो सुंठ, मरी, पीपळ तथा जवखार एओना योगवाळी छाशनो उपयोग करवो.

८२ ग्राहिणी वातला रूक्षा दुर्जरा तक्रकूर्चिका।
तक्राल्लघुतरो मण्डः कूर्चिकादधितक्रजः ॥

बगडवाथी जेमां नाहानी नाहानी गांठ्यो पडी गई एवी छाशना उपरना भागना तथा बगडेला दहींना उपरना भागना गुणो.

८२ बगडवाथी जेमां नाहानी नाहानी गांठ्यो पडी गई होय ते छाश तक्रकूर्चिका केहेवाय छे. तक्रकूर्चिका दस्तने रोकनार छे, रुक्ष छे अने मांड पचे एवी छे.

बगडेली छाशनो तथा बगडेला दहींनो उपरनो भाग छाशथी अत्यंत हलको छे.

इति तक्रवर्गः

८३ गुरुः किलाटोऽनिलहा पुंस्त्वनिद्राप्रदः स्मृतः ।
मधुरौ बृंहणौ वृष्यौ तद्वत्पीयूषमोरटौ ॥

बगडेला दूधना मावाना, सात दिवसनी अंदरना खीराना अने फाटी गएला दूधना पाणीना गुणो.

८३ बगडेला दूधनो मावो भारे छे, वायुने हणनार छे, वीर्यने वधारे छे अने निद्रा आपे छे.

वीयाया पछी सात दिवसनी अंदरनुं खीरूं मधुर छे, वीर्यने वधारनार छे अने पुष्टिकारक छे.

फाटी गएला दूधनुं पाणी पण एवाज गुणोवाळुं छे.

८४ नवनीतं पुनः सद्यस्कं लघु सुकुमारं मधुरं कषायमीषदम्लं शीतलं मेध्यं दीपनं हृद्यं संग्राहि पित्तानिलहरं वृष्यमविदाहि क्षयकासश्वासव्रणार्शोऽर्दितापहम् ॥

माखणना सामान्य गुणो.

८४ ताजुं मांखण हलकुं छे, देहने सुकुमार करनारूं छे, मधुर छे, तूरुं छे, कांईक खाटुं छे, टाढुं छे, बुद्धिने वधारनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, दस्तने रोकनार छे, पित्तने तथा वायुने हरनार छे, वीर्यने वधारनार छे, पाकमां बळतरा करनारूं नथी अने क्षयने, खांसीने, श्वासने, व्रणने, अरशने तथा अर्दितने मटाडनार छे.

८५ गुरु कफमेदोविवर्द्धनं बलकरं बृंहणं शोषघ्नं विशेषतो बालानां प्रशस्यते ॥

वाशी मांखणना गुणो.

८५ वाशी मांखण भारे छे, कफने तथा मेदने वधारनार छे, बळ आपनार छे, पुष्टि आपनार छे, शोषने हणनार छे अने विशेषे करी बालकोने माटे उत्तम छे.

८६ क्षीरोत्थं पुनर्नवनीतमुत्कृष्टस्नेहं माधुर्ययुक्तमतिशीतं सौकुमार्यकरं चक्षुष्यं संग्राहि रक्तपित्तनेत्ररोगहरं प्रसादनं च

दूधमांथी काहाडी लीधेला मांखणना गुणो.

८६ दहीं कर्या पछी नहीं पण दूधमांथीज परभारूं काहाडी लीधेलुं मांखण उत्कृष्ट स्नेहवाळुं छे, मधुरताथी युक्त छे, अत्यंत शीत छे, सुकुमारता आपनारूं छे, नेत्रोने माटे सारूं छे, दस्तने रोकनार छे अने रक्तपित्तने तथा नेत्ररोगोने साफ करीने टाळी नाखे एवुं छे.

८७ संतानिका पुनर्वातघ्नी तर्पणी बल्या वृष्या स्निग्धा रुच्या मधुरा मधुरविपाका रक्तपित्तप्रसादनी गुर्वी च ।

दूधनी तरना गुणो.

८७ दूधनी तर वायुने हणनारी छे, तृप्ति आपनारी छे, बळने तथा वीर्यने वधारनारी छे, स्निग्ध छे, रुचि उपजावनारी छे, मधुर छे, मधुर विपाकवाळी छे, रक्तपित्तने साफ करी नाखनारी छे अने भारे छे.

८८ विकल्प एष दध्यादिः श्रेष्ठो गव्योऽभिवर्णितः।
विकल्पानवशिष्टांस्तु क्षीरवीर्यात्समादिशेत् ॥

गायनाज छाश वगेरे पदार्थो उत्तम होवाथी तेओनाज गुणो कह्या छे.

८८ आ जे छाश वगेरे जूदा जूदा पदार्थो केहेवामां आव्या तेओ गायना दूधनाज उत्तम छे अने गुणो पण तेओनाज कह्या छे एम समजवुं. बीजा दूधना छाश वगेरे पदार्थोना गुणो ते ते दूधोना गुणोप्रमाणे समजी लेवा.

इति प्रकीर्णवर्गः ।

८९ घृतं तु सौम्यं शीतवीर्यं मृदु मधुरमल्पाभिष्यन्दि स्नेहनमुदावर्तोन्मादापस्मारशूलज्वरानाहवातपित्तप्रशमनमग्निदीपनं स्मृतिमतिमेधाकान्तिस्वरलावण्यसौकुमार्यौजस्तेजोबलकरमायुष्यं वृष्यं मेध्यं वयःस्थापनं गुरु चक्षुष्यं श्लेष्माभिवर्द्धनं पाप्माऽलक्ष्मीप्रशमनं विषहरं रक्षोघ्नं च ॥

घीना सामान्य गुणो

८९ घी चंद्रात्मक पदार्थ छे, शीतवीर्यवाळुं छे, कोमळ छे, मधुर छे, स्रोतो वगेरेने थोडीक मंदता तथा थोडोक क्लेद आपनारूं छे, स्निग्ध करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, आयुष्यने तथा वीर्यने वधारनार छे, बुद्धि आपनार छे, यौवनने स्थिर राखनार छे, भारे छे, नेत्रोनुं हित करनार छे, कफने वधारनार छे, पापने तथा अलक्ष्मीने शांत करनार छे, विषने हरनार छे, राक्षसोने हणनार छे अने उदावर्त्त, उन्माद, अपस्मार, शूळ, ज्वर, मलबंध, वायु तथा पित्त एओने शमावनार छे. घीथी स्मरणशक्ति, भविष्यना ज्ञाननी शक्ति, ग्रंथादिकनुं धारण करवानी शक्ति, कांति, स्वरनुं सारापणुं, रूपनो अतिशय, अंगोनी सुकुमारता, ओज, तेज अने बळ एओनी प्राप्ति थाय छे.

९० विपाके मधुरं शीतं वातपित्तविषापहम् । चक्षुष्यमग्र्यं बल्यं च गव्यं सर्पिर्गुणोत्तरम् ॥

गायना घीना गुणो.

९० गायनुं घी विपाकमां मधुर छे, टाढुं छे, वात पित्त तथा विष एओने तोडनार छे, नेत्रोनुं अत्यंत हित करनार छे, बळ आपनार छे अने संघळा उत्कृष्ट गुणोवाळुं छे.

९१ आजं घृतं दीपनीयं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् । कासे श्वासे क्षये चापि पथ्यं पाके च तल्लघु ॥

बकरीना घीना गुणो.

९१ बकरीनुं घी अग्निने दीप्त करनार छे, नेत्रोनुं हित करनार छे, बळने वधारनार छे, पाकमां हलकुं छे अने खांसी उपर, श्वास उपर तथा क्षय उपर पथ्य छे.

९२ मधुरं रक्तपित्तघ्नं गुरु पाके कफावहम् । वातपित्तप्रशमनं सुशीतं माहिषं घृतम् ॥

भेंशना घीना गुणो.

९२ भेंशनुं घी मधुर छे, रक्तपित्तने हणनार छे, पाकमां भारे छे, कफ करनार छे, वायुने तथा पित्तने शांत करनार छे अने बहु टाढुं छे.

९३ औष्ट्रं कटुरसं पाके शोफक्रिमिविषापहम् । दीपनं कफवातघ्नं कुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥

उंटडीना घीना गुणो.

९३ उंटडीनुं घी पाकमां तीखा रसवाळुं छे, अग्निने प्रदीप्त करनार छे अने सोजा, कृमिओ, झेर, कफ, वायु, कोढ, गुल्म तथा उदररोग एओने मटाडनार छे.

९४ पाके लघ्वाविकं सर्पिर्न च पित्तप्रकोपणम् । कफेऽनिले योनिदोषे शोषे कम्पे च तद्धितम् ॥

गाडरना घीना गुणो.

९४ गाडरनुं घी पाकमां हलकुं छे, पित्तने प्रकुपित करनार नथी अने कफ, वायु, योनिदोष, शोष तथा कंप एओ उपर हितकारी छे.

९५ पाके लघूष्णवीर्यं च कषायं कफनाशनम् । दीपनं बद्धमूत्रं च विद्यादैकशफं घृतम् ॥

घोडीना घीना गुणो.

९५ घोडीनुं घी पाकमां हलकुं छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, तूरुं छे, कफने नष्ट करनार छे,

अग्निने दीप्त करनार छे अने मूत्रनी अटकायत करनार छे.

९६ चक्षुष्यमग्र्यं स्त्रीणां तु सर्पिः स्यादमृतोपमम् वृद्धिं करोति देहाग्न्योर्लघुपाकं विषापहम् ॥

स्त्रीना घीना गुणो.

९६ स्त्रीओनुं घी नेत्रोनुं अत्यंत हित करनार छे, अमृत जेवुं छे, देहने तथा अग्निने वृद्धि आपनार छे, पाकमां हलकुं छे अने विषने टाळनारूं छे.

९७ कषायं बद्धविण्मूत्रं तिक्तमग्निकरं लघु । हन्ति कारेणवं सर्पिः कफकुष्ठविषक्रिमीन् ॥

हाथणीना घीना गुणो.

९७ हाथणीनुं घी तूरुं छे, विष्टाने तथा मूत्रने रोकनार छे, कडवुं छे, अग्निने प्रदीप्त करनार छे, हलकुं छे अने कफ, कोढ, विष तथा कृमिओ एओने हणनार छे.

९८ क्षीरघृतं पुनः संग्राहि रक्तपित्तभ्रममूर्च्छाप्रशमनं नेत्ररोगहितं च ॥

दूधने वलोवीने काहाडेला मांखणना घीना गुणो.

९८ दूधने वलोवीने काहाडेला मांखणमांथी करेलुं घी दस्तने रोकनार छे, नेत्रना रोगोनी उपर सारूं छे अने रक्तपित्त, भ्रम तथा मूर्छा एओने शांत करनार छे.

९९ सर्पिर्मण्डस्तु मधुरः सरो योनिश्रोत्राक्षिशिरसां शूलघ्नो बस्तिनस्याक्षिप्रपूरणेषूपदिश्यते ॥

पीगळेला घीनी उपर जामेला घाटा भागना गुणो.

९९ पीगळेला घीनी उपर जामेलो घाटो भाग मधुर छे, मळने प्रवृत्ति आपनार छे अने योनि, कान, नेत्रो तथा माथुं एओना शूळने हणनार छे. पीचकारी देवामां, नस्य देवामां अने नेत्रोनी अंदर नाखवाना काममां ए भाग उपयोगी छे.

१०० सर्पिः पुराणं सरं कटुविपाकं त्रिदोषापहं मूर्छामेदउन्मादोदरज्वरगरशोफापस्मारयोनिश्रोत्राक्षिशिरःशूलघ्नं दीपनं बस्तिनस्याक्षिपूरणेषूपदिश्यते ॥

भवन्ति चात्र ॥

पुराणं तिमिरश्वासपीनसज्वरकासनुत् ।
मूर्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥
एकादश शतं चैव वत्सरानुषितं घृतम् ।
रक्षोघ्नं कुम्भसर्पिः स्यात्परतस्तु महाघृतम् ॥
पेयं महाघृतं भूतैः कफघ्नं पवनाधिकैः ।
बल्यं पवित्रं मेध्यं च विशेषात्तिमिरापहम् ॥
सर्वभूतहरं चैव घृतमेतत्प्रशस्यते ॥

जूना घीना गुणो.

१०० जूनुं घी मळनी प्रवृत्ति करनार छे, विपाकमां तीखुं छे, त्रणे दोषोने हणनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने मूर्छा, मेद, उन्माद, उदररोग, ज्वर, झेर, सोजो, अपस्मार, योनिशूल, कर्णशूल, नेत्रशूल, तथा मस्तकशूळ एओने मटाडनार छे. पीचकारी देवामां, नस्य देवामां तथा नेत्रोनी अंदर नाखवाना काममां ए घी उपयोगी छ.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "दश वर्षनुं जूनुं घी तिमिरने, श्वासने, सळीखमने, ज्वरने, खांसीने, मूर्छाने, कोढने, विषने, उन्मादने, ग्रहोने तथा अपस्मारने नष्ट करे छे. एकसो अगीयार वर्षनुं जूनुं घी **कुंभसर्पि** केहेवाय छे अने ते राक्षसोने हणे छे. एथी वधारे जूनुं घी **महाघृत** केहेवाय छे. वायुनी अधिकतावाळां मनुष्योए महाघृत पीवुं. ए महाघृत कफने हणनार छे, बळने वधारनार छे, पवित्र छे, बुद्धिनी वृद्धि करनार छे, विशेषे करी

तिमिरने हणनार छे, अने सघळा भूतोसंबंधी उपद्रवोनुं हरण करनार छे.

इति घृतवर्गः

१०१ तैलं त्वाग्नेयमुष्णं तीक्ष्णं मधुरं मधुरविपाकं बृंहणं प्रीणनं व्यवायि सूक्ष्मं विशदं गुरु सरं विकासि वृष्यं त्वक्प्रसादनं मेधामार्दवमांसस्थैर्यवर्णबलकरं चक्षुष्यं बद्धमूत्रं लेखनं तिक्तकषायानुरसं पाचनमनिलबलासक्षयकरं क्रिमिघ्नमशीतपित्तजननं योनिशिरःकर्णशूलप्रशमनं गर्भाशयशोधनं च तथा छिन्नभिन्नविद्धोत्पिष्टच्युतमथितक्षतपिच्चितभग्नस्फुटितक्षाराग्निदग्धविश्लिष्टदारिताभिहतदुर्भग्नमृगव्यालविदष्टप्रभृतिषु च परिषेकाभ्यङ्गावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते ॥

तद्बस्तिषु च पाने च नस्ये कर्णाक्षिपूरणे ।
अन्नपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशान्तये ॥

तिलना तैलना गुणो तथा कामो.

१०१ तिलनुं तैल अग्न्यात्मक छे उष्ण [1]छे, तीक्ष्ण छे, मधुर छे, विपाकमां पण मधुर छे, शरीरने दृढ करनार छे, तृप्ति आपनार छे, पच्या विना पण सघळा देहमां व्याप्त थनार छे, सूक्ष्म स्रोतोमां पण पेसे एवुं छे, निर्मळ छे, भारे छे, मळनी प्रवृत्ति करनार छे, सांधाओना बंधोने मोकळा करनार छे, वीर्यने वधारनार छे, त्वचाने स्वच्छ करनार छे, नेत्रोनुं हित करनार छे, मूत्रने रोकनार छे, मेदने उखेडनार छे, पेटामां कडवा तथा तूरा रसवाळुं छे, पाचन छे, वायुनो तथा कफनो क्षय करनार छे, वायुनां तथा कफनां स्रोतोने शुद्ध करनार छे, कीडाओने हणनार छे, शरीरने कांईक पातळुं करनार छे, पित्तने उत्पन्न करनार छे, गर्भाशयने शुद्ध करनार छे, धारणाशक्ति आपनार छे, कोमलता करनार छे, मांसनी स्थिरता करनार छे, वर्णने सारो करनार छे, बळ आपनार छे अने योनिशूल, मस्तकशूल तथा कर्णशूल एओने शांत करनार छे. छेदाएल, भेदाएल, वींधाएल, चूर्णित थएल, स्थानथी खसी गएल, हलबली गएल, जखमी थएल, चगदाई गएल, भांगी गएल, फूटी गएल, क्षारथी के अग्निथी बळेल, संधिथी छूटुं पडेल, चीराई गएल, अभिघात पामेल, बहुज खराब रीते भांगी गएल, दुष्ट पशुओए करडेल अने सर्पादिके डसेल इत्यादिक उपर परिषेकमां, अभ्यंग करवामां अने अवगाहन करावबामां तिलनुं तैल उत्तम छे.

वायुनी शांतिने माटे पीचकारीओमां, पीवामां, नस्यमां, कानमां नाखवामां, नेत्रोनी अंदर नाखवामां अने अन्नपानविधिमां पण तिलना तैलनो प्रयोग करवो.

१०२ एरण्डतैलं मधुरमुष्णं तीक्ष्णं दीपनं कटुकषायानुरसं सूक्ष्मं स्रोतोविशोधनं त्वच्यं वृष्यं मधुरविपाकं वयःस्थापनं योनिशुक्रविशोधनमारोग्यमेधाकान्तिस्मृतिबलकरं वातकफहरमधोभागदोषहरं च ॥

एरंडीआ तैलना गुणो तथा कामो.

१०२ एरंडीयुं तैल मधुर छे, उष्ण छे, तीक्ष्ण छे, अग्निने दीप्त करनार छे, पेटामां तीखा तथा तूरा रसवाळुं छे, सूक्ष्म स्रोतोमां पेसी जाय एवुं छे, स्रोतोने शुद्ध करनार छे, चामडीने सारी करे छे, वीर्यने वधारे छे, विपाकमां मधुर छे, जुवानीने स्थिर राखनार छे, योनिने तथा वीर्यने शुद्ध करनार छे, आरोग्य आपनार छे, धारणाशक्ति देनार छे, कांति आपनार छे, स्मरणशक्ति देनार छे, बळ आपनार छे, वायुने तथा कफने हरनार छे अने विरेचनद्वारा दोषोने हरनार छे.

---

[1] केटलाएक पदार्थो अग्न्यात्मक छतां पण उष्ण होता नथी अने केटलाएक पदार्थो उष्ण छतां पण आग्नेय होता नथी. तेथी अहीं तिलना तैलने आग्नेय अने उष्ण ए बन्ने विशेषण आप्यां छे. जुवो के प्रभा आग्नेय छतां पण उष्ण नथी अने माछलां उष्ण छतां पण आग्नेय नथी.

१०३ निम्बातसीकुसुम्भमूलकजीमूतकवृक्षककृतवेधनार्ककम्पिल्लकहस्तिकर्णपृथ्वीकापीलुकरञ्जेङ्गुदीशिग्रुसर्षपसुवर्चलाविडङ्गज्योतिष्मतीफलतैलानि तीक्ष्णानि लघून्युष्णवीर्याणि कटूनि कटुविपाकानि सराण्यनिलकफक्रिमिकुष्ठप्रमेहशिरोरोगहराणि चेति ॥

लींबडा वगेरेना फळोना तैलोना गुणो तथा कामो.

१०३ लींबडो, अलसी, कसुंबो, मूळा, कुकडवेल, इंद्रजव, कडवी घीसोडी, आकडो, कपीलो, रातो एरंडो, काळीजीरी, पीलु, करंज, इंगोळीओ, सरगवो, सर्षप, सूरजमुखी, वावडींग अने मालकांकणी एओनां फळोनां तैलो तीक्ष्ण छे, हलकां छे, उष्ण वीर्यवाळां छे, तीखां छे, विपाकमां पण तीखां छे, मळनी प्रवृत्ति करावनारां छे अने वायु, कफ, कृमि, कोढ, प्रमेह तथा माथाना रोगो एओने हरनारां छे.

१०४ वातघ्नं मधुरं तेषु क्षौमं तैलं बलावहम् । कटुपाकमचक्षुष्यं स्निग्धोष्णं गुरु पित्तलम् ॥

अलसीना तैलना विशेष गुणो तथा कामो.

१०४ अलसीनुं तैल वायुने हणनार छे, मधुर छे, बळ आपनार छे, पाकमां तीखुं छे, नेत्रोने माटे सारूं नथी, स्निग्ध छे, उष्ण छे भारे छे, अने पित्त करनार छे.

१०५ क्रिमिघ्नं सार्षपं तैलं कण्डूकुष्ठापहं लघु । कफमेदोऽनिलहरं लेखनं कटु दीपनम् ॥

सरसीया तैलना विशेष गुणो तथा कामो.

१०५ सरसीयुं तैल कृमिओने, खरजने, कोढने, कफने, मेदने तथा वायुने हरनार छे हलकुं छे, लेखन छे, तीखुं छे अने अग्निने दीप्त करनार छे.

१०६ क्रिमिघ्नमिङ्गुदीतैलमीषत्तिक्तं तथा लघु । कुष्ठामयक्रिमिहरं दृष्टिशुक्रबलापहम् ॥

इंगोळीयाना तैलना विशेष गुणो तथा कामो.

१०६ इंगोळीयानुं तैल कृमिओने, कोढने, कृमिजन्य विकारोने, दृष्टिने, वीर्यने तथा बळने हणनार छे, कांइक कडवुं छे अने हलकुं छे.

१०७ विपाके कटुकं तैलं कौसुम्भं सर्वदोषकृत् । रक्तपित्तकरं तीक्ष्णमचक्षुष्यं विदाहि च ॥

कसुंबाना तैलना विशेष गुणो तथा कामो.

१०७ कसुंबानुं तैल विपाकमां तीखुं छे, सर्व दोषोने करनार छे, रक्तपित्तने करनार छे, तीक्ष्ण छे, नेत्रोने माटे हित नथी अने बळतरा करनार छे.

१०८ किराततिक्तकाऽतिमुक्तकबिभीतकनालिकेरकोलाक्षोडजीवन्तीप्रियालकर्बुदारसूर्यवल्लीत्रपुसैर्वारुककर्कारुकूष्माण्डप्रभृतीनां तैलानि मधुराणि मधुरवीर्यविपाकानि वातपित्तप्रशमनानि शीतवीर्याण्यभिष्यन्दीनि सृष्टविण्मूत्राण्यग्निसादनानि चेति ॥

करीआता वगेरेना तैलना गुणो तथा कामो.

१०८ करीयातुं[१], टींबरू, बेहेडां, नाळीएर, बोरनी मज्जा, अखोड, मीठी खरखोडी, चारोळी, कांचनार, खरणेर, पतकाळुं, त्रपुस, (त्रुसडुं केहे, वाय छे ते ?) काकडी, पदकोळुं, कोळुं इत्यादिकनां तैलो मधुर छे, मधुर वीर्यवाळां छे, विपाकमां पण मधुर छे, वायुने तथा पित्तने शमावनारां छे, शीत वीर्यवाळां छे, स्रोतो वगेरेने मंदता तथा क्लेद आपनारां छे, विष्टानी तथा मूत्रनी वधारे प्रवृत्ति करनारां छे अने अग्निने मंद करनारां छे.

---

१ करीयाता वगेरे कडवा पदार्थोनुं तैल मधुर थाय छे ए प्रत्यक्ष जोएलुं छे. (डल्हन.)

१०९ मधूककाश्मर्यपलाशतैलानि मधुर-कषायाणि कफपित्तप्रशमनानि ॥

महुडानां, सीवणनां तथा खाखरानां फळाना तैलोना गुणो तथा कामो.

१०९ महुडानां फळो, सीवणनां फळो तथा खाखरानां फळो एओनां तैलो मधुर छे, तूरां छे तथा कफने अने पित्तने शांत करनारां छे.

११० तुवरकभल्लातकतैले उष्णे मधुरकषाये तिक्तानुरसे वातकफकुष्ठमेदोमेहक्रिमिहरे उभयतोभागदोषहरे च ॥

चेर[१] अने भीलामुं एओना फळोना तैलोना गुणो तथा कामो.

११० चेर अने भीलामुं एओनां तैलो उष्ण छे, मधुर छे, तूरां छे, पेटामां कडवा रसवाळां छे, वमनथी तथा विरेचनथी पण दोषोने हरनारां छे, अने वात, कफ, कोढ, मेद, प्रमेह तथा कृमि एओने हरनारां छे.

१११ सरलदेवदारुगण्डीरशिंशपागुरुसारस्नेहास्तिक्तकटुकषाया दुष्टव्रणशोधनाः कृमिकफकुष्ठानिलहराश्च ॥

सारोना स्नेहोना गुणो तथा कामो.

१११ सरल नामनो देवदार, देवदार, गंडीर[२], शीशम अने अगरू एओना सारोना स्नेहो कडवा छे, तीखा छे, तूरा छे, दुष्ट व्रणोने शुद्ध करनारा छे अने कृमि, कफ, कोढ तथा वायु एओने हरनारा छे.

११२ तुम्बीकोशाम्रदन्तीश्यामासप्तलानीलिकाकम्पिल्लकशङ्खिनीस्नेहास्तिक्तकटुकषाया अधोभागदोषहराः कृमिकफकुष्ठानिलहरा दुष्टव्रणविशोधनाश्च ॥

कडवी तुंबडी वगेरेना स्नेहोना गुणो तथा कामो.

११२ कडवी तुंबडी, जगंली आंबो, नेपाळो, वरधारो, हाथला, गळी, कपीलो अने शंखावळी एओना स्नेहो कडवा छे, तीखा छे, विरेचनथी दोषोने हरनारा छे अने कृमि, कफ, कोढ तथा वायु एओने हरनारा छे तथा दुष्ट व्रणोने शुद्ध करनारा छे.

११३ यवतिक्तातैलं सर्वदोषप्रशमनमीषत्तिक्तमग्निदीपनं लेखनं मेध्यं पथ्यं रसायनं च ॥

आंखफूटामणीना तैलना गुणो तथा कामो.

११३ आंखफुटामणीनुं तैल सर्व दोषोने शांत करणार छे, जराक कडकवुं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, कफने उखेडनार छे, पवित्र छे, पथ्य छे अने रसायन छे.

११४ एकैषिकातैलं मधुरमतिशीतं पित्तहरमनिलप्रकोपणं श्लेष्माभिवर्द्धनम् ॥

नसोतरना बीजना तैलना गुणो.

११४ नसोतरनुं तैल मधुर छे, अत्यंत टाढुं छे, पित्तने हरनार छे, वायुने प्रकुपित करनार छे अने कफने वधारनार छे.

११५ सहकारतैलमीषत्तिक्तमतिसुगन्धि वातकफहरं रूक्षं कषायं मधुररसवन्नातिपित्तकरं च ॥

अति सुगंधी आंबानी गोठलीना तैलना गुणो तथा कामो.

११५ कलमी आंबानुं तैल कांइक कडवुं छे, अतिसुगंधी छे, वायुने तथा कफने हरनार छे, रूक्ष छे, तूरूं छे, पेटमां मधुर रसवाळुं छे अने अतिपित्त करनार नथी.

११६ फलोद्भवानि तैलानि यान्यनुक्तानि कानिचित्
गुणान्कर्म च विज्ञाय फलवत्तानि निर्दिशेत् ॥

आ वर्गमां नही कहेलां फळोनां तैलोना गुणोनी तथा कामोनी समजण.

११६ आ वर्गमां जे जे फळोनां तैलो कह्यां

१ चेरनां वृक्षो समुद्रना कीनारापर कादवमां मोटां मोटां जथाबंध थाय छे.

२ गंडीरनो गुजराती पर्याय मळ्यो नथी.

ते तेलोना गुणो तथा कामो कह्या प्रमाणेज समजवा पण जे फळोनां तैलो कह्यां नथी ते तैलोनां गुणो तथा कामो ते ते फळोनां गुणोने तथा कामोने जाणी लईने ते प्रमाणेज समजवां.

११७ यावन्तः स्थावराः स्नेहाः समासात्परिकीर्तिताः।
सर्वे तैलगुणा ज्ञेयाः सर्वे चानिलनाशनाः ॥

स्थावर स्नेहोमां तिलना तेलना जेवाज अमुक गुणो तथा अमुक कामो छे.

११७ आ वर्गमां जेटला स्थावर स्नेहो संक्षेपथी कह्या छे तेओमां केटलाएकमां तिलना तैल जेवाज अमुक गुणो छे तथा केटलाएकमां तिलना तैलना जेवांज अमुक कामो छे. सर्वे स्नेहो वायुनो नाश करनारा छे.

११८ सर्वेभ्यस्त्विह तैलेभ्यस्तिलतैलं प्रशस्यते।
निष्पत्तेस्तद्गुणत्वाच्च तैलत्वमितरेष्वपि ॥

सघळां तैलोमां तिलनुं तैल उत्तम छे.

११८ सघळां तैलो तिलना तेलनी पेठे थाय छे अने तिलना तैलना जेवाज अमुक गुणोवाळां छे तेथी तैल केहेवाय छे. परंतु सघळां तैलोथी तिलनुं तैल उत्तम छे.

११९ ग्राम्यानूपौदकानां च वसामेदोमज्जानो गुरूष्णमधुरा वातघ्ना जाङ्गलैकशफक्रव्यादानां लघुशीतकषाया रक्तपित्तघ्नाः प्रतुदविष्किराणां श्लेष्मघ्नाः ॥

तत्र घृततैलवसामेदोमज्जानो यथोत्तरं गुरुविपाका वातहराश्च ॥

चरबी मेद तथा मज्जा एओना गुणो.

११९ उंट तथा बकरां वगेरे ग्राम्य प्राणीओ, पाडा वगेरे आनूप (जलप्राय प्रदेशमां फरनारां) प्राणीओ अने माछलां वगेरे जलचर प्राणीओ एओनां चरबी, मेद अने मज्जा एओ भारे छे, उष्ण छे, मधुर छे अने वायुने हणनारां छे. हरिण वगेरे जांगल प्राणीओ, एक डाबावाळां घोडा तथा गधेडा वगेरे प्राणीओ अने सिंह वगेरे मांसभक्षक प्राणीओ एओनां चरबी, मेद अने मज्जा एओ हलकां छे, टाढां छे, तूरां छे अने रुधिरना तथा पित्तना दोषोने हणनारां छे. होला तथा कबुतर वगेरे प्रतुद (चांचवते फोली फोलीने खानारां) पक्षीओ अने लावां वगेरे विष्किर (धरतीने खोतरी खोतरीने खानारां) पक्षीओ एओनां चरबी, मेद तथा मज्जा एओ कफने हणनारां छे. घी, तैल, चरबी, मेद अने मज्जा एओ उत्तरोत्तर अधिक अधिक भारे विपाकवाळां छे अने उत्तरोत्तर अधिक अधिक वायुने हरनारां छे.

इति तैलवर्गः

१२० मधु तु मधुरं कषायानुरसं रूक्षं शीतमग्निदीपनं वर्ण्यं वल्यं लघु सुकुमारं लेखनं हृद्यं संधानं शोधनं रोपणं वाजीकरणं संग्राहि चक्षुःप्रसादनं सूक्ष्ममार्गानुसारि पित्तश्लेष्ममेदोमेहहिक्काश्वासकासातिसारच्छर्दितृष्णाक्रिमिविषप्रशमनं ह्लादि त्रिदोषप्रशमनं च। तत्तु लघुत्वात्कफघ्नं पैच्छिल्यान्माधुर्यात्कषायभावाच्च वातपित्तघ्नम् ॥

मधना सामान्य गुणो.

१२० मध मधुर छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे, रुक्ष छे, टाढुं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, वर्णने सारो करनार छे, बळने वधारनार छे, हलकुं छे, सुकुमारपणुं आपनार छे, कफने उखेडनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, भांगाने सांधनार छे, व्रणादिकने शुद्ध करनार छे, व्रणने भरती लावीने रुझावनार छे, स्त्रीसंगमां जलदी उत्सुकता आपनार छे, मळनुं शोषण करनार छे, नेत्रोने स्वच्छ करनार छे; सूक्ष्म मार्गोमां गति करनार छे, सुख करनार छे अने पित्त, कफ, मेद, प्रमेह, हेडकी, श्वास, खांसी, अतीसार, उलटी, तरश, कृमिओ तथा विष एओने शांत करनार छे. मध त्रणे दोषोने हणनार छे. केम के हलकुं होवाथी कफने हणे छे अने चीकणुं, मधुर तथा तूरूं होवाथी वायुने

तथा पित्तने हणे छे. (जो के शीतपणुं, रुक्षपणुं अने हलकापणुं ए गुणो वायुने करनारा छे अने मधुरपणा वगेरे गुणो कफने करनारा छे तो पण द्रव्य अने गुणो ए बन्नेना प्रभावने लीधे मध त्रणे दोषोने हणनार छे.)

१२१ पौत्तिकं भ्रामरं क्षौद्रं माक्षिकं छात्रमेव च।
आर्घ्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः॥

मधनी आठ जातिओ.

१२१ पौत्तिक, भ्रामर, क्षौद्र, माक्षिक, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक अने दाल ए रीते आठ जातनुं मध थाय छे. (मच्छर जेवी अत्यंत झीणी, काळी, लोकोने बहु पीडा करनारी अने वृक्षोनी कोतरोमां रेहेनारी पुत्तिका नामनी मांखीओए बनावेलुं मध **पौत्तिक** केहेवाय छे. प्रसिद्ध भ्रमरो करतां कांईक नाहाना भ्रमरोए बनावेलुं स्फाटिकमणि सरखुं मध भ्रामर केहेवाय छे. पींगळा वर्णवाळी झीणी मांखीओए बनावेलुं मध **क्षौद्र** केहेवाय छे. पीळा वर्णवाळी मोटी मांखीओए बनावेलुं मध **माक्षिक** केहेवाय छे. पींगळी अने पीळी मांखीओ घणुं करीने हिमालयना वनमां छत्र जेवा आकारवाळा मधपोडाने बनावे छे ते मधपोडानुं मध **छात्र** केहेवाय छे. भ्रमरो जेवी तीक्ष्ण मुखोवाळी मांखीओए बनावेलुं मध **आर्घ्य** केहेवाय छे. घणुं करीने राफडाओमां रेहेनारा पींगळा वर्णवाळा झीणा झीणा कीडाओ जे पींगळा वर्णवाळुं थोडुंक मध बनावे छे ते **औद्दालक** केहेवाय छे. पुष्पोमांथी झरीने पानडांओनी उपर पडेलो जे मधुर, खाटो अने तूरो मकरंद होय छे ते **दाल** केहेवाय छे.)

१२२ विशेषात्पौत्तिकं लघु रूक्षोष्णं सविषान्वयात्
वातासृक्पित्तकृच्छेदि विदाहि मदकृन्मधु

पौत्तिक मधना गुणो.

१२२ ए आठ जातनां मधोमां पौत्तिक मध झेरवाळा रसोने खानारी माखीओना संबंधने लीधे विशेषे करी रूक्ष तथा उष्ण छे, मेद तथा ग्रंथि वगेरेने कापनार छे, पाकमां दाह करनारूं छे, झेरसंबंधी मदने उत्पन्न करनारूं छे अने वायुने, रुधिरने तथा पित्तने उत्पन्न करनारूं छे. (आ मध घीना जेवा वर्णवाळुं होय छे.)

१२३ पैच्छिल्यात्स्वादुभूयस्त्वाद्भ्रामरं गुरु संज्ञितम्

भ्रामर मधना गुणो.

१२३ भ्रामर मध चीकणुं तथा वधारे मधुरतावाळुं होवाने लीधे भारे छे.

१२४ क्षौद्रं विशेषतो ज्ञेयं शीतलं लघु लेखनम्॥

क्षौद्र मधना गुणो.

१२४ क्षौद्र मध विशेषे करी शीतल छे, हलकुं छे अने कफने उखेडनार छे. (आ मध कपिल वर्णवाळुं होय छे.)

१२५ तस्माल्लघुतरं रूक्षं माक्षिकं प्रवरं स्मृतम् ।
श्वासादिषु च रोगेषु प्रशस्तं तद्विशेषतः ॥

माक्षिक मधना गुणो.

१२५ माक्षिक मध क्षौद्र करतां पण वधारे हलकुं छे, रूक्ष छे अने उत्तम गणवामां आवे छे. ए मध श्वास आदि रोगोमां उपयोग करवा माटे बहु वखणाएलुं छे. (आ मध तैलना जेवा वर्णवाळुं होय छे.)

१२६ स्वादुपाकं गुरु हिमं पिच्छिलं रक्तपित्तजित् ।
श्वित्रमेहक्रिमिहरं विद्याच्छात्रं गुणोत्तरम् ॥

छात्र मधना गुणो.

१२६ छात्र मध पाकमां मधुर छे, भारे छे, टाढुं छे, चीकणुं छे अने रक्तपित्त, श्वित्र नामनो कोढ, प्रमेह तथा कृमि एओने हरनार छे अने उत्कृष्ट गुणोवाळुं छे.

१२७ आर्घ्यं मध्वतिचक्षुष्यं कफपित्तहरं परम्।
कषायं कटु पाके च बल्यं तिक्तमवातकृत् ॥

आर्घ्य मधना गुणो.

१२७ आर्घ्य मध नेत्रोनुं अत्यंत हित कर-

नार छे, कफने तथा पित्तने सारीपेठे मटाडनार छे, तूरूं छे, पाकमां तीखुं छे, बळ आपनार छे, कडवुं छे अने वायुने करनार नथी.

१२८ औद्दालकं रुचिकरं स्वर्यं कुष्ठविषापहम् । कषायमुष्णमम्लं च पित्तकृत्कटुपाकि च ॥

औद्दालक मधना गुणो.

१२८ औद्दालक मध रुचि करनार छे, स्वरने सारो करनार छे, कोढने तथा विषने हणनार छे, तूरूं छे, उष्ण छे, खाटुं छे, पित्त करनार छे अने पाकमां तीखुं छे.

१२९ छर्दिमेहप्रशमनं मधु रूक्षं दलोद्भवम् ।

दाल मधना गुणो.

१२९ दाल मध उलटीने तथा प्रमेहने शांत करनार छे अने रूक्ष छे.

१३० बृंहणीयं मधु नवं नातिश्लेष्महरं सरम् ॥

नवा मधना गुणो.

१३० नवुं एटले जेने मधपोडामांथी लीधा पछी घणो काळ न थयो होय एवुं मध शरीरने पुष्टि आपनारूं छे, कफने अत्यंत तोडनार नथी अने मळनी प्रवृत्ति करनार छे.

१३१ मेदःस्थौल्यापहं ग्राहि पुराणमतिलेखनम् ।

जूना मधना गुणो.

१३१ जूनुं मध मेदथी थएली स्थूलताने मटाडनार छे, मळादिकने शोषण आपनार छे अने कफने अत्यंत उखेडनार छे.

१३२ दोषत्रयहरं पक्वमाममम्लं त्रिदोषकृत् ॥

पाका तथा काचा मधना गुणो.

१३२ अग्निथी नहीं पण योग्य समयथी पाकीने घाटुं थएलुं मध त्रणे दोषोने हरनार छे अने काचुं मध त्रणे दोषोने करनार छे.

१३३ तद्युक्तं विविधैर्योगैर्निहन्यादामयान्बहून् । नानाद्रव्यात्मकत्वाच्च योगवाहि परं मधु ॥

मध योगवाही होवाने लीधे घणां कामो करनार छे.

१३३ मध विविध औषधोथी संयुक्त थईने घणा रोगोने मटाडे छे अने जाते पण अनेक द्रव्योथी गोठवाएलुं छे माटे सघळा योगवाही पदार्थोमां श्रेष्ठ छे, (संस्कारविशेषने लीधे जे जे द्रव्यनी साथे गोठवाय ते ते द्रव्यना गुणोने वधारीने जे द्रव्य अमृत समान थाय ते द्रव्य योगवाही केहेवाय छे.)

१३४ तत्तु नानाद्रव्यरसगुणवीर्यविपाकविरुद्धत्वात्पुष्परसविषमक्षिकासम्भवत्वाच्चानुष्णोपचारम् ।
उष्णैर्विरुध्यते सर्वं विषान्वयतया मधु ।
उष्णार्तमुष्णैरुष्णे वा तन्निहन्ति यथा विषम् ॥
तत्सौकुमार्याच्च तथैव शैत्यान्नानौषधीनां रससम्भवाच्च । उष्णैर्विरुध्येत विशेषतश्च तथान्तरीक्षेण जलेन चापि ॥

मधने उष्ण उपचारोथी तथा आंतरीक्ष जळथी विरोध छे.

१३४ मध अनेक द्रव्योना परस्पर विरुद्ध रसोथी, गुणोथी, वीर्योथी तथा विपाकोथी युक्त छे अने पुष्परसोमां फरनारी झेरी मांखीओए उत्पन्न करेलुं होय छे माटे तेने उष्ण उपचारोथी विरोध छे. सघळी जातनुं मध झेरी मांखीओए उत्पन्न करेलुं होवाने लीधे झेरना संबंधवाळुं छे माटे तेने उष्ण पदार्थोनी साथे विरोधज छे. उष्णथी (तापथी) पीडाएला माणसने आपवामां आवेलुं अथवा उष्ण वीर्यवाळां नहीं पण उष्ण स्पर्शवाळां द्रव्योनी साथे आपवामां आवेलुं अथवा उष्ण काळमां आपवामां आवेलुं मध झेरनी पेठे मारी नाखे छे. मध सुकुमार होवाथी, शीतल होवाथी अने अनेक औषधीओना रसोथी उत्पन्न थएलुं होवाथी तेने उष्ण स्पर्शवाळा पदार्थोनी साथे विशेष विरोध छे. मधने जेम उष्ण स्पर्शवाळा

पदार्थोनी साथे सकारण विरोध छे तेम आंतरीक्ष जळनी साथे स्वाभाविक विरोध छे. (आर्ष्य मधने उष्ण पदार्थोनी साथे विरोध नथी.)

१३५ उष्णेन मधु संयुक्तं वमनेष्ववचारितम्। अपाकादनवस्थानान्न विरुध्येत पूर्ववत् ॥

वमनमां मधने उष्ण पदार्थोनो संयोग आपवाथी पण कशी हरकत नथी.

१३५ वमन कर्मोमां मधने उष्ण पदार्थोनी साथे संयुक्त करीने आपवामां पण कशी उपर कहेली हरकत समजवी नहीं. केम के वमनमां आपेलुं मध अंदर पाकतु नथी अने अंदर रेहेतुं पण नथी माटे वमनमां तेने उष्ण पदार्थोना योगनो निषेध नथी. (आ प्रमाणे छे तो पण वृद्ध वैद्यो वमननी अधोद्वारमां जवानी धास्तीने लीधे वमनमां मधनो प्रयोग करता नथी.)

१३६ मध्वामात्परतस्त्वन्यदामं कष्टं न विद्यते। विरुद्धोपक्रमत्वात्तत्सर्वं हन्ति यथा विषम् ॥

मधनुं अजीर्ण महाकष्टदायी छे.

१३६ मधना अजीर्ण करतां बीजुं कोई पण अजीर्ण वधारे कष्टदायी नथी. केम के अजीर्णनी स्वेदन तथा उष्ण जलपान आदि सघळी चिकित्साओ मधथी विरुद्ध छे माटे मधनुं अजीर्ण झेरनी पेठेज माणसने मारी नाखे छे.

इति मधुवर्गः

१३७ इक्षवो मधुरा मधुरविपाका गुरवः शीताः स्निग्धा बल्या वृष्या मूत्रला रक्तपित्तप्रशमनाः कृमिकफकराश्चेति। ते चानेकविधाः। तद्यथा।

पौण्ड्रको भीरुकश्चैव वंशकः शतपोरकः। कान्तारस्तापसेक्षुश्च काष्ठेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत्। इत्येता जातयः स्थौल्याद्गुणान्वक्ष्याम्यतः परम् ॥

शेलडीना सामान्य गुणो तथा शेलडीनी बार जातो.

१३७ शेलडीओ मधुर छे, विपाकमां पण मधुर छे, भारे छे, टाढी छे, स्निग्ध छे, बळ आपनारी छे, वीर्यने वधारनारी छे, मूत्रने वधारनारी छे, रक्तपित्तने शांत करनारी छे अने कृमिओने तथा कफने करनारी छे. शेलडीओ पौंड्रक, भीरुक[1], वंशक[2], शतपोरक[3], कांतार[4], तापसेक्षु[5], काष्ठेक्षु[6], सूचिपत्रक[7], नेपाल[8], दीर्घपत्र[9], नीलपोर[10] अने कोशकार[11] इत्यादि अनेक जातनी थाय छे. आ तेनी बार जातो स्थूल मार्गथी मानवामां आवेली छे. हवे ए बार जातिओना गुणो कहुं छुं.

१३८ सुशीतो मधुरः स्निग्धो बृंहणः श्लेष्मलः सरः। अविदाही गुरुर्वृष्यः पौण्ड्रको भीरुकस्तथा ॥ आभ्यां तुल्यगुणः किंचित्सक्षारो वंशको मतः। वंशवच्छतपोरस्तु किंचिदुष्णः स वातहा कान्तारतापसाविक्षू वंशकानुगुणौ मतौ। एवंगुणस्तु काष्ठेक्षुः स तु वातप्रकोपणः ॥ सूचीपत्रो नीलपोरो नैपालो दीर्घपत्रकः। वातलाः कफपित्तघ्नाः सकषाया विदाहिनः ॥ कोशकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः।

बार जातनी शेलडीओना गुणो.

१३८ **पौंड्रक** अने **भीरुक** ए बे अत्यंत शीत छे, मधुर छे, स्निग्ध छे, पुष्टि आपनार

१ मिश्रवर्णोवाळी शेलडी.
२ काळी शेलडी.
३ वांस जेवा आकारवाळी शेलडी.
४ घणी कातरीओवाळी शेलडी.
५ काळी जंगली शेलडी.
६ पातळी शेलडी.
७ धोळी शेलडी. बीजा ग्रंथोमां आनुं नाम कांडेक्षु छे.
८ सोई जेवां पानडांवाळी शेलडी.
९ नेपाळ देशनी शेलडी.
१० लांबां पानडांवाळी शेलडी.
११ नीलवर्णनी कातरीओवाळी शेलडी.
१२ पोटा जेवी कातरीओवाळी शेलडी.

छे, कफ करनार छे मळनी प्रवृत्ति करावनार छे, विदाही नथी, भारे छे अने वीर्य वधारनार छे. **वंशक** उपर कहेला गुणोवाळी छे अने कांईक क्षार छे. **शतपोरक** वंशकना जेवाज गुणोवाळी छे, कांईक उष्ण छे अने वायुने हणनारी छे. **कांतार** अने **तापसेक्षु** ए बे वंशकने मळता गुणोवाळी मानवामां आवे छे. **काष्ठेक्षु** पण वंशकने मळता गुणोवाळी छे पण वायुने प्रकुपित करनारी छे. **सूचीपत्र, नीलपोर, नैपाल** अने **दीर्घपत्र** ए चार वायु करनारी छे, कफने तथा पित्तने हणनारी छे, तूरा रसवाळी छे अने विदाह करनारी छे. **कोशकार** भारे छे, टाढी छे अने रक्तपित्तने तथा क्षयने हणनारी छे.

१३९ अतीव मधुरो मूले मध्ये मधुर एव तु॥
अग्रेष्वक्षिषु विज्ञेय इक्षूणां लवणो रसः।

शेलडीना अवयवोमां जूदा जूदा रसो.

१३९ शेलडीना मूळमां अत्यंत मधुर रस छे, मध्यमां मधुर रस छे अने अग्र भागोमां तथा आंखोवाळी गांठ्योमां खारो रस छे.

१४० अविदाही कफकरो वातपित्तनिवारणः॥
वक्त्रप्रह्लादनो वृष्यो दन्तनिष्पीडितो रसः।

चूसेला शेलडीना रसना गुणो.

१४० शेलडीने दांतोथी दाबीने चूसेलो रस पाकमां बलतरा करनारो थतो नथी, कफ करनार छे, वायुनुं तथा पित्तनुं निवारण करनार छे, मोहोडांने सुख आपनार छे अने वीर्यने वधारनार छे.

१४१ गुरुर्विदाही विष्टम्भी यान्त्रिकस्तु प्रकीर्तितः॥

यंत्रथी पीलेली शेलडीना रसना गुणो.

१४१ यंत्रथी पीलीने काहाडेलो शेलडीनो रस पवनथी तथा तडका वगेरेथी संयोग पामवाने लीधे अने छालसहित पीलावाने लीधे भारे छे, पाकमां बळतरा करनार छे, पेटमां गडगडाट करनार छे अने मळने रोकनार छे.

१४२ पक्वो गुरुः सरः स्निग्धः सतीक्ष्णः कफवातनुत्॥

अग्निथी पकावेला शेलडीना रसना गुणो.

१४२ अग्निथी पकावेलो शेलडीनो रस भारे छे, मळनी प्रवृत्ति करनार छे, स्निग्ध छे, तीक्ष्णतावाळो छे अने कफने तथा वायुने मटाडनार छे.

१४३ फाणितं गुरु मधुरमभिष्यन्दि बृंहणमवृष्यं त्रिदोषकृच्च।

शेलडीना रसनी गोळ थया पेहेलांनी राबना गुणो.

१४३ गोळ बनाववा माटे करवामां आवती शेलडीना रसनी राब भारे छे, मधुर छे, स्रोतो वगेरेने क्लेदयुक्त करनारी छे, पुष्टि आपनारी छे, वीर्यवर्धक नथी अने त्रणे दोषोने करनारी छे.

१४४ गुडः सक्षारमधुरो नातिशीतः स्निग्धो मूत्ररक्तशोधनो नातिपित्तजिद्वातघ्नो मेदःकफकरो बल्यो वृष्यश्च॥

गोळना सामान्य गुणो.

१४४ गोळ क्षारसहित मधुर रसवाळो छे, बहु टाढो नथी, स्निग्ध छे, मूत्रने तथा रुधिरने शुद्ध करनार छे, पित्तने अत्यंत मटाडनार नथी, वायुने हणनार छे, मेदने तथा कफने करनार छे, बळ वधारनार छे अने स्त्रीसंगमां प्रहर्ष आपनार छे.

१४५ पित्तघ्नो मधुरः शुद्धो वातघ्नोऽसृक्प्रसादनः।
स पुराणोऽधिकगुणो गुडः पथ्यतमः स्मृतः॥

शुद्ध गोळना तथा जूना शुद्ध गोळना गुणो.

१४५ शुद्ध गोळ पित्तने हणनार छे, मधुर छे, वायुने हणनार छे अने लोहीने शुद्ध करनार छे. जूनो थएलो शुद्ध गोळ अधिक गुणोवाळो छे अने अत्यंत पथ्य छे.

१४६ मत्स्यण्डिकाखण्डशर्कराविमलजाता

उत्तरोत्तरं शीताः स्निग्धा गुरुतरा मधुरतरा वृष्या रक्तपित्तप्रसादनास्तृष्णाप्रशमनाश्च ॥

काची खांड, पाकी सफेद खांड, साकर अने खडीसाकर एओना गुणो.

१४६ काची खांड, पाकी सफेद खांड, साकर अने खडीसाकर एओ उत्तरोत्तर वधारे वधारे टाढी छे, वधारे वधारे मधुर छे, वधारे वधारे वीर्यवर्द्धक छे, वधारे वधारे रक्तपित्तने शांत करनारी छे अने वधारे वधारे तरशने शांत करनारी छे.

१४७ यथा यथैषां वैमल्यं मधुरत्वं तथा तथा। स्नेहलाघवशैत्यानि सरत्वं च तथा तथा ॥

गोळ वगेरे शेलडीना विकारोमां जेम जेम वधारे निर्मळता तेम तेम वधारे गुणो.

१४७ गोळ वगेरे शेलडीना विकारोमां जेम जेम वधारे निर्मळता (मेलथी रहितपणुं) होय तेम तेम तेओमां मधुरपणुं, स्निग्धपणुं, हलकापणुं, थंडापणुं अने दस्तनी प्रवृत्ति करनारपणुं वधारे वधारे होय छे.

**१४८ यो यो मत्स्यण्डिकाखण्डशर्कराणां स्वको गुणः ।
तेन तेनैव निर्देश्यस्तेषां विस्रावणो गुणः ॥**

खांड वगेरेना मेलोमां खांड वगेरेना जेवाज गुणो होय छे.

१४८ काची खांड, पाकी सफेद खांड तथा साकर एओने बनावतां जे तेओनो क्षारसहित मेल काढवामां आवे छे ते मेलमां (केटलेक अंशे)एओना जेवाज गुणो छे. (खांडना मेलमां खांडना जेवा अने साकरना मेलमां साकरना जेवा गुणो होय छे.)

**१४९ सारस्थिता सुविमला निःक्षारा च यथा यथा ।
तथा तथा गुणवती विज्ञेया शर्करा बुधैः ॥**

साकरनी श्रेष्ठतानी परीक्षा.

१४९ साकर जेम जेम साररूपे रहेली, निर्मळ अने क्षारवगरनी होय तेम तेम समजु वैद्योए तेने अधिक अधिक गुणोवाळी समजवी.

१५० मधुशर्करा पुनश्छर्द्यतीसारहरी रूक्षा छेदनी प्रह्लादनी कषायमधुरा मधुरविपाका च॥

मधनी साकरना गुणो.

१५० मधनी साकर उलटीने तथा अतीसारने हरनारी छे, रुक्ष छे, कफ वगेरेने कापनारी छे, सुख आपनारी छे, तूरी तथा मधुर छे अने विपाकमां पण मधुर छे. (मध कालान्तरे सुकाई घाटुं थईने साकर जेवुं बनी जाय छे एज मधनी साकर समजवी एम डल्हन केहे छे.)

१५१ यवासशर्करा मधुरकषाया तिक्तानुरसा श्लेष्महरी सरा चेति ॥

जवासानी साकरना गुणो.

१५१ जवासानी साकर मधुर छे, तूरी छे, पेटामां कडवा रसवाळी छे, कफने हरनारी छे अने दस्त लावनारी छे.

**१५२ यावत्यः शर्कराः प्रोक्ताः सर्वा दाहप्रणाशनाः ।
रक्तपित्तप्रशमनाश्छर्दिमूर्छातृषापहाः ॥**

सघळी साकरोना सामान्य गुणो.

१५२ जेटली साकरो केहेवामां आवी ते सघळी साकरो दाहने नष्ट करनारी छे, रक्तपित्तने शांत करनारी छे अने उलटीने, मूर्च्छाने तथा तरशने हणनारी छे,

**१५३ रूक्षं मधूकपुष्पोत्थं फाणितं वातपित्तकृत्।
कफघ्नं मधुरं पाके कषायं बस्तिदूषणम् ॥**

महुडानां फूलोनी साकर बनाववानी रावना गुणो.

१५३ महुडानां फूलोनी साकर बनाववानी राव रूक्ष छे, वायुने तथा पित्तने वधारनारी छे, कफने हणनारी छे, पाकमां मधुर छे, तूरी छे, अने मूत्राशयमां वातादिकनो प्रकोप करनारी छे.

इति इक्षुवर्गः

१५४ सर्वं पित्तकरं मद्यमम्लं दीपनरोचनम् ।
भेदनं कफवातघ्नं हृद्यं वस्तिविशोधनम् ॥
पाके लघु विदाह्युष्णं तीक्ष्णमिन्द्रियबोधनम् ।
विकासि सृष्टविण्मूत्रं शृणु तस्य विशेषणम् ।

मद्यना सामान्य गुणो.

१५४ सर्व प्रकारनां मद्यो पित्त करनारां छे, खाटा रसना अधिकपणावाळां छे, अग्निने दीप्त करनारां छे, रुचि उपजावनारां छे, दस्त लावनारां छे, कफने तथा वायुने हणनारां छे, हृदयने प्रिय लागे एवां छे, मूत्राशयने शुद्ध करनारां छे, पाकमां हलकां छे, पाकमां बलतरा करनारां छे, उष्ण छे, तीक्ष्ण छे, इंद्रियोने जाग्रत करनारां छे, सांधाओना बंधोने मोकळा करनारां छे अने विष्टानी तथा मूत्रनी वधारे प्रवृत्ति करावनारां छे. हवे मद्योना विशेषो कहुं छुं ते सांभळो.

१५५ मार्द्वीकमविदाहित्वान्मधुरान्वयतस्तथा ।
रक्तपित्तेऽपि सततं बुधैर्न प्रतिषिध्यते ॥
मधुरं तद्धि रूक्षं च कषायानुरसं लघु ।
लघुपाकि सरं शोषविषमज्वरनाशनम् ॥

द्राक्षना मद्यना गुणो.

१५५ द्राक्षनुं मद्य संताप करनार नथी अने मधुर द्रव्यना संबंधवाळुं छे तेथी विद्वान् वैद्यो रक्तपित्तमां पण कदी तेनी अटकायत करता नथी. द्राक्षनुं मद्य मधुर छे, रूक्ष छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे, हलकुं छे, तुरत पाकी जनार छे, दस्त उतारनार छे अने शोषने तथा विषमज्वरने नष्ट करनार छे.

१५६ मार्द्वीकाल्पान्तरं किंचित्खार्जूरं वातकोपनम्
तदेव विशदं रुच्यं कफघ्नं कर्शनं लघु ॥
कषायमधुरं हृद्यं सुगन्धीन्द्रियबोधनम् ।

खजूरना मद्यना गुणो.

१५६ खजूरनुं मद्य द्राक्षना मद्यथी थोडाज अंतरवाळुं छे अने कांईक वायुने प्रकुपित करनार छे. ए खजूरनुं मद्य निर्मळ होय तो रुचि उपजावनार छे, कफने हणनार छे, कृशता आपनार छे, हलकुं छे, तूरूं तथा मधुर छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, सुगंधी छे अने इंद्रियोने जाग्रत करनारूं छे.

१५७ कासार्शोग्रहणीदोषमूत्राघातानिलापहा ॥
स्तन्यरक्तक्षयाहिता सुरा बृंहणदीपनी ।

चोखा वगेरेना लोटनी राती मदिराना गुणो.

१५७ लोटनी राती मदिरा धावणने माटे सारी छे, रुधिरना क्षय उपर पण सारी छे, शरीरने पुष्टि आपनारी छे, अग्निने दीप्त करनारी छे अने खांसी, अरश, ग्रहणीदोष तथा मूत्राघात एओने मटाडनारी छे.

१५८ कासार्शोग्रहणीश्वासप्रतिश्यायविनाशनी ।
श्वेता मूत्रकफस्तन्यरक्तमांसकरी सुरा ।

चोखा वगेरेना लोटनी सफेद मदिराना गुणो.

१५८ लोटनी सफेद मदिरा खांसीने, अरशने, ग्रहणीने, श्वासने तथा प्रतिश्यायने नष्ट करनारी छे अने मूत्रने, कफने, धावणने, रुधिरने तथा मांसने वधारनारी छे.

१५९ छर्द्यरोचकहृत्कुक्षितोदशूलप्रमर्दनी ॥
प्रसन्ना कफवातार्शोविबन्धानाहनाशनी ।

मदिरा उपरनी आछना गुणो.

१५९ मदिरा उपरनी आछ उलटीने, अरोचकने, हृदयनी व्यथाने, कुक्षिनी व्यथाने, शूलने, कफने, वायुने, अरशने, दस्त वगेरेनी अटकायतने अने पेटना आफराने नष्ट करनारी छे.

१६० पित्तलाल्पकफा रूक्षा यवैर्वातप्रकोपणी ॥

जवनी मदिराना गुणो.

१६० जवनी मदिरा पित्त करनारी छे, कांईक कफ करनारी छे, रूक्ष छे, अने वायुने प्रकुपित करनारी छे.

१६१ विष्टम्भिनी सुरा गुर्वी श्लेष्मला तु मधूलिका ।

झीणा घउंनी मदिराना गुणो.

१६१ झीणा घउंनी मदिरा पेटमां गडगडाट करनारी छे, मळने नहीं प्रवर्तवा दईने पेटमां शूल वगेरेनी व्यथा करनारी छे, भारे छे अने कफने वधारनारी छे.

१६२ रूक्षा नातिकफा वृष्या पाचनी चाक्षिकी स्मृता ॥

बेहेडानी छाल नाखीने बनावेली मदिराना गुणो.

१६२ बेहेडानी छाल नाखीने करेली मदिरा रूक्ष छे, कफने अत्यंत वधारनारी नथी, स्त्रीसंगमां प्रहर्ष आपनारी छे अने पाचन करनारी छे.

१६३ त्रिदोषो भेद्यवृष्यश्च कोहलो वदनप्रियः।

जवना साथवाथी बनावेली मदिराना गुणो.

१६३ जवना साथवाथी बनावेली मदिरा त्रणे दोषोने उत्पन्न करनारी छे, दस्तनी प्रवृत्ति करावनारी छे, स्त्रीसंगमां प्रहर्ष आपनारी छे अने जीभने प्रिय लागे एवी छे.

१६४ ग्राह्युष्णो जगलः पक्ता रूक्षस्तृट्कफशोफहृत् ॥
हृद्यः प्रवाहिकाटोपदुर्नामानिलशोषहृत् ।

मदिरानी नीचे रहेला भागना गुणो.

१६४ मदिरानी नीचे रहेलो भाग दस्त वगेरेनुं शोषण करनार छे, उष्ण छे, पाचन छे, रूक्ष छे, हृदयने प्रिय लागे एवो छे अने तरश, कफ, सोजो, प्रवाहिका, पेटनी अंदरनो गडगडाट, अरश, वायु अने क्षय एओने मटाडनार छे. (लेप करवाथी सोजाने मटाडे छे.)

१६५ बक्कसो हृतसारत्वाद्विष्टम्भी वातकोपनः।
दीपनः सृष्टविण्मूत्रो विशदोऽल्पमदो गुरुः ।

सार काहाडी लइने बाकी राखेला मदिरानी नीचेना कूचाना गुणो.

१६५ सार काहाडी लइने बाकी राखेलो मद्यनी नीचेनो जूदा जूदा अवयवोवाळो कूचो निस्सार होवाने लीधे गडगडाट करनार छे, वायुने प्रकुपित करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, विष्टानी तथा मूत्रनी प्रवृत्ति करनार छे, थोडो मद आपनार छे अने भारे छे.

१६६ कषायो मधुरः सीधुर्गौडः पाचनदीपनः ॥

गोळना मद्यना गुणो.

१६६ गोळनुं मद्य तूरूं छे, मधुर छे, पाचन छे अने अग्निने दीप्त करनार छे.

१६७ शार्करो मधुरो रुच्यो दीपनो बस्तिशोधनः।
वातघ्नो मधुरः पाके हृद्य इन्द्रियबोधनः ॥

साकरना मद्यना गुणो.

१६७ साकरनुं मद्य मधुर छे, रुचि उपजावनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, मूत्राशयने शुद्ध करनार छे, वायुने हणनार छे, पाकमां मधुर छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे अने इंद्रियोने जाग्रत् करनार छे.

१६८ तद्वत्पक्वरसः सीधुर्बलवर्णकरः सरः ।
शोफघ्नो दीपनो हृद्यो रुच्यः श्लेष्मार्शसां हितः॥

शेलडीना पकावेला रसथी बनावेला मद्यना गुणो.

१६८ शेलडीना पाका रसथी बनावेलुं मद्य साकरना मद्यना जेवाज गुणोवाळुं छे, बळ आपनार छे, वर्णने सारो करनार छे, दस्त उतारनार छे, सोजाने हणनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, रुचि उपजावनार छे अने कफ उपर तथा अरश उपर सारूं छे.

१६९ कर्षणः शीतरसिकः श्वयथूदरनाशनः ।
वर्णकृज्जरणः स्वर्यो विबन्धघ्नोऽर्शसां हितः ॥

शेलडीना काचा रसथी बनावेला मद्यना गुणो.

१६९ शेलडीना रसनुं अग्निथी क्काथ कर्या वगर बनावेलुं मद्य धातुओनुं कर्षण करनार छे, सोजाने तथा उदररोगने नष्ट करनार छे, वर्णने सारो करनार छे, पाचक छे, स्वरने सारो करनार छे, मलबंधने तोडनार छे अने अरश उपर सारूं छे.

१७० आक्षिकः पाण्डुरोगघ्नो व्रण्यः संग्राहको लघुः ।
कषायमधुरः सीधुः पित्तघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥

बेहेडाना क्काथथी तथा गोळथी बनावेला अने जेने पुष्पो वगेरेनो संस्कार आप्यो होय एवा मद्यना गुणो.

१७० बेहेडाना क्काथथी तथा गोळथी बनावेलुं अने जेने धावणीनां पुष्पो वगेरेनो संस्कार आप्यो होय एवुं मद्य पांडुरोगने हणनार छे, व्रणने माटे सारूं छे, मळनुं शोषण करनार छे, हलकुं छे, तूरूं तथा मधुर छे, पित्तने हणनार छे अने रुधिरने स्वच्छ करनार छे.

१७१ जाम्बवो बद्धनिष्यन्दस्तुवरो वातकोपनः।

जांबूना मद्यना गुणो.

१७१ जांबूनुं मद्य मूत्रने रोकनार छे, तूरूं छे अने वायुने प्रकुपित करनार छे.

१७२ तीक्ष्णः सुरासवो हृद्यो मूत्रलः कफवातनुत् ।
मुखप्रियः स्थिरमदो विज्ञेयोऽनिलनाशनः ।

जळने बदले सुरा नाखीने बनावेला आसवना गुणो.

१७२ जळने बदले मदिरा नाखीने बनावेलो आसव तीक्ष्ण छे, हृदयने प्रिय लागे एवो छे, मूत्रने वधारनार छे, कफने तथा वायुने टाळनार छे, मुखने प्रिय लागे एवो छे, घणीवार सुधी मत्तपणुं राखे एवो छे अने पवनसंबंधी रोगोने नष्ट करनार छे.

१७३ लघुर्मध्वासवश्छेदी मेहकुष्ठविषापहः ॥
तिक्तः कषायः शोफघ्नस्तीक्ष्णः स्वादुरवातकृत् ।

मध तथा गोळ एओने मिश्रित करीने बनावेला आसवना गुणो.

१७३ मध तथा गोळ एओने मिश्रित करीने बनावेलो आसव हलको छे, कडवो तथा तूरो छे, मधुर छे, तीक्ष्ण छे, वायु करनार नथी, कफने कापनार छे अने प्रमेह, कोढ, झेर तथा सोजा एओने हणनार छे.

१७४ तीक्ष्णः कषायो मदकृद्दुर्नामकफगुल्महृत्॥
कृमिमेदोऽनिलहरो मैरेयो मधुरो गुरुः ।

सुरा अने आसव एओने मिश्रित करी बनावेला अने मधथी युक्त करेला मद्यना गुणो.

१७४ लोटनी सुराने अने गोळना आसवने जूदां जूदां बनावी पाछां तेओने मिश्रित करी मधनो योग आपीने बनावेलुं मद्य के जे मैरेय केहेवाय छे ते तीक्ष्ण छे, तूरूं छे, मद करनार छे, मधुर छे, भारे छे अने अरश, कफ, गुल्म, कृमिओ, मेद तथा वायु एओने टाळनार छे. (लोटनी सुराने अने मधना आसवने मिश्रित करी गोळनो योग आपीने बनावेला मद्यना पण एज गुणो छे.)

१७५ बल्यः पित्तहरो वर्ण्यो मृद्वीकेक्षुरसासवः॥

द्राक्ष तथा शेलडीनो रस एओना आसवना गुणो.

१७५ द्राक्ष तथा शेलडीनो रस एओनो बनावेलो आसव बळ आपनार छे, पित्तने हरनार छे अने वर्णने सारो करनार छे.

१७६ सीधुर्मधूकपुष्पोत्थो विदाह्यग्निबलप्रदः ।
रूक्षः कषायः कफहृद्वातपित्तप्रकोपणः ॥

महुडानां फूलना मद्यना गुणो.

१७६ महुडानां फूलोनुं मद्य पाकमां बलतरा

करनार छे, अग्निने बळ आपनार छे, रूक्ष छे, तूरूं छे, कफने हरनार छे अने वायुने तथा पित्तने प्रकुपित करनार छे.

१७७ निर्दिशेद्रसतश्चान्यान्कन्दमूलफलासवान् ।

आ प्रकरणमां नहीं कहेला अन्य आसओना गुणो जाणवानी पद्धति.

१७७ जे कंद, मूळ, फळ तथा छाल वगेरेना बीजा आसवो आ प्रकरणमां कह्या नथी तेआना गुणो ते ते कंद-मूळ वगेरेना रसोना अनुसारथी जाणी लेवा.

१७८ नवं मद्यमभिष्यन्दि गुरु वातादिकोपनम्॥
अनिष्टगन्धं विरसमहृद्यं च विदाहि च ।

नवा मद्यना गुणो.

१७८ नवुं मद्य स्रोतो वगेरेने क्लेद आपनारूं छे, भारे छे, वायु वगेरेने प्रकुपित करनारूं छे, अप्रिय गंधवाळुं छे, सारा रसवगरनुं छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं नथी अने खाटा पाकवाळुं होवाथी विदाह करनारूं छे.

१७९ सुगन्धि दीपनं हृद्यं रोचिष्णु कृमिनाशनम्
स्फुटस्रोतस्करं जीर्णं लघु वातकफापहम् ।

जूना मद्यना गुणो.

१७९ जूनुं मद्य सुगंधी छे, अग्निने दीप्त करनार छे, तृप्तने पण रुचि आपनारूं छे, कृमिओने नष्ट करनारूं छे, स्रोतोने चोखां करनारूं छे, हलकुं छे अने वायुने तथा कफने टाळनारूं छे.

१८० अरिष्टो द्रव्यसंयोगसंस्काराद्धिको गुणैः॥
बहुदोषहरश्चैव दोषाणां शमनश्च सः ।
दीपनः कफवातघ्नः सरः पित्ताविरोधनः ॥
शूलाध्मानोदरप्लीहज्वराजीर्णार्शसां हितः ।
पिप्पल्यादिकृतो गुल्मकफरोगहरः स्मृतः ॥
चिकित्सितेषु वक्ष्यन्तेऽरिष्टा रोगहराः पृथक्

अरिष्टना गुणो.

१८० अरिष्ट हरडे वगेरे द्रव्योना संयोगने लीधे अने संस्कारने लीधे मद्य करतां अधिक गुणोवाळो छे, घणा दोषोने हरनारो छे, घणा व्याधिओने शांत करनारो छे, अग्निने दीप्त करनारो छे, विशेषे करी कफने तथा वायुने हणनारो छे, दस्तनी प्रवृत्ति करनारो छे पित्तने जराक हणनारो छे अने शूळ, पेटनो आफरो, उदररोग, बरलनुं दरद, ज्वर, अजीर्ण तथा अरश एओनी उपर हितकारी छे. पीपळ वगेरेथी करेलो अरिष्ट गुल्मने अने कफसंबंधी रोगोने हरनारो छे. जूदा जूदा रोगोने हरनारा जूदा जूदा अरिष्टो चिकित्सानां प्रकरणोमां केहेवामां आवशे. (चिकित्सास्थानना १० मा अध्यायनो ९ मो विषय जुवो. एवी रीते बीजां स्थलोमां पण केहेवामां आवशे.)

१८१ अरिष्टासवसीधूनां गुणान्कर्माणि चादिशेत् ॥
बुद्ध्या यथास्वं संस्कारमवेक्ष्य कुशलो भिषक् ।

आ प्रकरणमां नहीं केहेवामां आवेला अरिष्ट, आसव अने सीधु एओना गुणो तथा कर्मो जाणवानी पद्धति.

१८१ आ वर्गमां जे अरिष्टो. जे आसवो तथा जे मद्यो केहेवामां आव्यां नथी तेओनां गुणो अने कर्मो, तेओना पदार्थो प्रमाणे तथा तेओना संस्कारो प्रमाणे विचक्षण वैद्ये पोतानी बुद्धिथी जाणी लेवां.

१८२ सान्द्रं विदाहि दुर्गन्धं विरसं कृमिलं गुरु॥
अहृद्यं तरुणं तीक्ष्णमुष्णं दुर्भाजनस्थितम् ।
अल्पौषधं पर्युषितमत्यच्छं पिच्छिलं च यत् ॥
तद्वर्ज्यं सर्वदा मद्यं किंचिच्छेषं तु यद्भवेत् ।
तत्र यत्स्तोकसम्भारं तरुणं पिच्छिलं गुरु ॥
कफप्रकोपि तन्मद्यं दुर्जरं च विशेषतः ।
पित्तप्रकोपि बहुलं तीक्ष्णमुष्णं विदाहि च
अहृद्यं दुष्टगं पूति कृमिलं विरसं तनु ।
तथा पर्युषितं चापि विद्यादनिलकोपनम् ॥
सर्वदोषैरुपेतं तु सर्वदोषप्रकोपणम् ।

केवुं मद्य खराब समजवुं अने खराब मद्यथी शी शी खराबी थाय छे?

१८२ जे मद्य घाटुं होय, पाकमां खाटुं थई जईने बळतरा करनार होय, दुर्गंधवाळुं होय, विरुद्ध रसवाळुं होय, कीडाओवाळुं होय, भारे होय, प्रिय न लागे एवुं होय, नवुं होय, तीक्ष्ण होय, उना स्पर्शवाळुं होय, खराब वासणमां रहेलुं होय, अल्प औषधोवाळुं होय, प्याला वगेरेमां रातवाशी रहेलुं होय, अत्यंत आछुं होय, चीकणुं होय के वासणमां नीचे कडदानी साथे अल्प अवशेष रहेलुं होय ते मद्यनो सर्वदा त्याग करवो.

जे मद्य अल्प औषधोवाळुं, नवुं, चीकणुं के भारे होय ते मद्य कफने प्रकुपित करे छे अने विशेषे करी दुर्जर (मांड पचे एवुं) होय छे.

जे मद्य घाटुं, तीक्ष्ण, उना स्पर्शवाळुं के पाकमां खाटुं थईने बळतरा करनारूं होय ते मद्य पित्तने प्रकुपित करे छे.

जे मद्य प्रिय न लागे एवुं, खराब वासणमां रहेलुं, अत्यंत आछुं, दुर्गंधवाळुं, कीडाओवाळुं, विरुद्ध रसवाळुं, वासणमां कडदानी साथे जराक अवशेष रहेलुं के प्याला वगेरेमां रातवाशी रहेलुं होय ते मद्य वायुने प्रकुपित करे छे.

जे मद्य घाटापणाथी मांडीने वासणमां कडदानी साथे अवशेष रेहेवा सुधीना सघळा दोषोथी युक्त होय ते मद्य वात, पित्त अने कफ ए त्रणे दोषोने प्रकुपित करे छे.

१८३ चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित्॥
रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मद्यं सेव्यं मदावहम् ।

केवा मद्यनुं सेवन करवुं?

१८३ जे मद्य जूनुं, उत्पन्न थयेला रसवाळुं, अग्निने दीप्त करनारूं, कफने तथा वायुने जीतनारूं, रुचिकारक, निर्मळ, सुगंधी तथा हर्ष आपनारूं होय ते मद्यनुं सेवन करवुं.

१८४ तस्यानेकप्रकारस्य मद्यस्य रसवीर्यतः ॥
सौक्ष्म्यादौष्ण्याच्च तैक्ष्ण्याच्च विकासित्वाच्च वह्निना ॥
समेत्य हृदयं प्राप्य धमनीरूर्ध्वमागतम्
विक्षोभ्येन्द्रियचेतांसि वीर्यं मदयतेऽचिरात् ।

मद्य शरीरमां केवी रीते मदने उत्पन्न करे छे?

१८४ मद्य के जे द्राक्ष आदि अनेक द्रव्योना भेदने लीधे, लवणवर्जित बीजा पांच रसोना भेदने लीधे अने उष्ण तथा रूक्ष आदि वीर्योना भेदने लीधे अनेक प्रकारनुं छे तेनी शक्ति जठराग्निनी साथे मळी अग्निना उर्ध्वगामीपणाने लीधे, मद्यना आग्नेयद्रव्यपणाथी तेना पण उर्ध्वगामीपणारूप स्वभावने लीधे तथा हलकापणाने लीधे धमनीओ द्वारा उंचे चडी, हृदयने प्राप्त थई, तीक्ष्णपणारूप तथा सांधाओना बंधोने मोकळा करी देनारपणारूप स्वभावने लीधे झडपदार होवाथी अने सूक्ष्म होवाथी तुरतज इंद्रियोने तथा चित्तने चलायमान करी नाखीने मदयुक्त करी दे छे.

१८५ चिरेण श्लैष्मिके पुंसि पानतो जायते मदः।
अचिराद्वातिके दृष्टः पैत्तिके शीघ्रमेव तु ॥

शरीरसंबंधी दोषो उपरथी मद प्राप्त थवाना समयना भेदो.

१८५ कफ प्रकृतिवाळा माणसने मद्य पीधा पछी घणी वारे मद उत्पन्न थाय छे, वायु प्रकृतिवाळा माणसने मद्य पीधा पछी थोडी वारे मद उत्पन्न थाय छे अने पित्त प्रकृतिवाळा माणसने मद्य पीधा पछी तुरतज मद उत्पन्न थाय छे.

१८६ सात्विके शौचदाक्षिण्यहर्षमण्डनलालसः।
गीताध्ययनसौभाग्यसुरतोत्साहकृन्मदः ॥
राजसे दुःखशीलत्वमात्मत्यागं ससाहसम् ।
कलहं सानुबंधं तु करोति पुरुषे मदः ॥
अशौचनिद्रामात्सर्यागम्यागमनलोलताः ।
असत्यभाषणं चापि कुर्याद्धि तामसे मदः ॥

मद्य पीनारनी सत्व आदि गुणो उपरथी जूदी जूदी चेष्टाओ.

१८६ मद्य सात्विक माणसमां पवित्रतानी, पराया मनने अनुसरीने वर्त्तवानी, हर्षनी अने शणगारनी लालसाओ उत्पन्न करे छे तथा गायन, अध्ययन, सौभाग्य अने मैथुनोत्साह एओने उत्पन्न करे छे.

एज मद्य रजोगुणी माणसमां दुःखना सेवनने, देहनो विनाश करी नाखे एवा साहसने अनें निरंतर चाल्या करे एवा कलहने (कजीयाने) उत्पन्न करे छे.

एज मद्य तमोगुणी माणसमां अपवित्रता, निद्रा, मत्सर, अगम्यागमननी लालसा अने असत्य भाषण एओने उत्पन्न करे छे.

१८७ रक्तपित्तकरं शुक्तं छेदि भुक्तविपाचनम्।
वैस्वर्यं जरणं श्लेष्मपाण्डुक्रिमिहरं लघु ॥
तीक्ष्णोष्णं मूत्रलं हृद्यं कफघ्नं कटुपाकि च ।

शुक्तना गुणो.

१८७ (दहीं, मध, गोळ, लूण तथा कांजी वगेरे पदार्थोने स्वच्छ वासणमां भरी धान्यना गंजमां त्रण रातसुधी राखी मेलतां तेमां जे आथो आवे छे ते शुक्त केहेवाय छे.) ए शुक्त रक्तपित्तने करनार छे, कफ वगेरेनुं छेदन करनार छे, खाधेलाने पचावनार छे, स्वरने बगाडनार छे, आमने जीर्ण करनार छे, हलकुं छे, कफना वधारावाळा पांडुरोगने तथा कृमिओने हरनार छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण छे, मूत्रजनक छे, प्रिय लागे एवुं छे, कफने हणनार छे, अने पाकमां तीखुं छे.

१८८ तद्वत्तदासुतं सर्वं रोचनं च विशेषतः ॥

आसुतना गुणो.

१८८ उपर कहेला शुक्तमां आथेलां कंदमूळ वगेरे के जेओ आसुत केहेवाय छे तेओ पण शुक्तना जेवाज गुणोवाळां छे अने विशेषे करी रुचि उपजावनारां छे.

१८९गौडानि रसशुक्तानि मधुशुक्तानि यानि च
यथापूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च ॥

द्रव्योना भेदथी शुक्तोना गुणोना भेद.

१८९ गोळना संबंधवाळा आथाओ, शेलडी वगेरेना रसना संबंधवाळा आथाओ अने मधना संबंधवाळा आथाओ एओमां मधना संबंधवाळा आथाओ करतां शेलडी वगेरेना रसना संबंधवाळा आथाओ अने ते आथाओ करतां गोळनासंबंधवाळा आथाओ वधारे भारे छे अने वधारे अभिप्यंदी (स्रोतोने क्लेदयुक्त करी देनारा) छे. (लींबुनो रस, पीपळीमूळ अने मध एओने स्वच्छ वासणमां भरी ते वासणने धान्यना गंजमां त्रण रातसुधी दाटी मुकवाथी जे आथो थाय ते मधुशुक्त केहेवाय छे.)

१९० तुषाम्बु दीपनं हृद्यं हृत्पाण्डुक्रिमिरोगनुत्।
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नं भेदि सौवीरकं तथा ॥

तुषोदकना तथा सौवीरकना गुणो.

१९० फोतरांसहित काचा जवोने टुकडा टुकडा करीने (भरडीने) पाणीमां आथवाथी थएलुं तुषोदक अग्निने दीप्त करनार छे, प्रिय लागे एवुं छे अने हृदयरोग, पांडुरोग तथा कृमिरोग एओने हरनार छे. फोतरां काहाडी नाखी पकावेला जवोना टुकडा टुकडा करी आथवाथी जे सौवीरक थाय छे ते ग्रहणीना तथा अरशना विकारने हणनार छे अने दस्त लगाडनार छे.

१९१ धान्याम्लं धान्ययोनित्वाद्दीपनं दाहनाशनम् ।
स्पर्शात्पानात्तु पवनकफतृष्णाहरं लघु ॥
तैक्ष्ण्याच्च निर्हरेदाशु कफं गण्डूषधारणात् ।
मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यमलशोषक्लमापहम् ॥
दीपनं जरणं भेदि हितमास्थापनेषु च ।
समुद्रमाश्रितानां च जनानां सात्म्यमुच्यते ॥

धान्याम्लना गुणो.

१९१ चोखानुं तथा कोदरा वगेरेनुं चूर्ण

आथवाथी जे धान्याम्ल थाय छे ते धान्यथी उत्पन्न थएवुं होवाने लीधे अग्निने दीप्त करनार छे,' स्पर्शथी दाहनो नाश करनार छे, पीवाथी वायु तथा कफसंबंधी तरशने हरनार छे अने हलकुं छे. ए धान्याम्ल तीक्ष्ण होवाने लीधे तुरत कफने बाहार काहाडी नाखे छे. धान्याम्लना कोगळानुं धारण करवाथी मोहोडानां विरसता, दुर्गंधपणुं, मळ, शोप तथा म्लानि एओ नष्ट थाय छे. धान्याम्ल जेम अग्निने दीप्त करनार छे तेम पाचन छे, दस्त पाडनार छे अने निरुहबस्तिमां (क्राथ, दूध तथा तेल एओने मिश्रित करी देवामां आवती पीचकारीमां) पण हितकारी छे तथा समुद्रना किनारापर रेहेनारा लोकोने तो सात्म्यज (स्वाभाविक अनुकूलज) छे.

इति मद्यवर्गः

१९२ गोमहिष्यजाविगजहयखरोष्ट्राणां मूत्राणि तीक्ष्णानि कट्वन्युष्णानि तिक्तानि लवणानुरसानि लघूनि शोधनानि कफवातक्रिमिमेदोविषगुल्मार्शउदरकुष्ठशोफारोचकपाण्डुरोगहराणि हृद्यानि दीपनानि च सामान्यतः ॥

भवन्ति चात्र ॥

तत्सर्वं कटुतीक्ष्णोष्णं लवणानुरसं लघु ।
शोधनं कफवातघ्नं क्रिमिमेदोविषापहम् ॥
अर्शोजठरगुल्मघ्नं शोफारोचकनाशनम् ।
पाण्डुरोगहरं भेदि हृद्यं दीपनपाचनम् ॥

अमुक मूत्रोना सामान्य गुणो.

१९२ गाय, भेंश, बकरी, गाडरी, हाथी, घोडो, गधेडो अने उंट एओनां मूत्रो तीक्ष्ण छे, तीखां छे, उष्ण छे, कडवां छे. पेठामां खारा रसवाळां छे, हलकां छे, मळोनी शुद्धि करनारां छे, प्रिय लागे एवां छे, अग्निने दीप्त करनारां छे अने कफ, वायु, क्रिमि, मेद, विष, गुल्म, अरश, उदररोग, कोढ, सोजो, अरोचक तथा पांडुरोग एओने हरनारां छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "सर्व जातनां मूत्रो तीखां छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण छे, पेटामां खारा रसवाळां छे, हलकां छे, मळोनी शुद्धि करनारां छे, दस्त लगाडनारां छे, प्रिय लागे एवां छे, अग्निने दीप्त करनारां छे, पाचन छे अने कफ, वायु, क्रिमि, मेदोरोग, विष, अरश, उदररोग, गुल्म, सोजो, अरोचक तथा पांडुरोग एओने नष्ट करनारां छे.

१९३ गोमूत्रं कटु तीक्ष्णोष्णं सक्षारत्वान्न वातलम् ।
लघ्वग्निदीपनं मेध्यं पित्तलं कफवातजित् ॥
शूलगुल्मोदरानाहविरेकास्थापनादिषु ।
मूत्रप्रयोगसाध्येषु गव्यं मूत्रं प्रयोजयेत् ॥

गोमूत्रना गुणो.

१९३ गायनुं मूत्र तीखुं छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण छे, क्षारवाळुं होवाने लीधे वायुने उत्पन्न करनार नथी, हलकुं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, पवित्र छे, पित्तने वधारनार छे अने कफने तथा वायुने मटाडनार छे. शूळ, गुल्म, उदररोग, मलबंध, विरेचन तथा निरूहबस्ति वगेरे जे विषयो मूत्रना प्रयोगने लायक जणाय तेओमां गायना मूत्रनो प्रयोग करवो.

१९४ दुर्नामोदरशूलेषु कुष्ठमेहाविशुद्धिषु ।
आनाहशोफगुल्मेषु पाण्डुरोगे च माहिषम् ॥

भेंशना मूत्रना गुणो.

१९४ भेंशनुं मूत्र अरश, उदररोग, शूळ, कोढ, प्रमेह, वमनादिकनी बराबर नहीं थएली शुद्धि, मलबंध, सोजा, गुल्म अने पांडुरोग एओनी उपर हितकारी छे.

१९५ कासश्वासापहं शोषकामलापाण्डुरोगनुत् ।
कटुतिक्तान्वितं छागमीषन्मारुतकोपनम् ॥

बकरीना मूत्रना गुणो.

१९५ बकरीनुं मूत्र तीखा तथा कडवा रस-

वाळुं छे, कांईक वायुने प्रकुपित करनार छे अने खांसी, श्वास, शोष, कमळो, तथा पांडुरोग एओने मटाडनार छे.

१९६ कासप्लीहोदरश्वासशोषवर्चोग्रहे हितम्।
सक्षारं तिक्तकटुकमुष्णं वातघ्नमाविकम् ॥

गाडरीना मूत्रना गुणो.

१९६ गाडरीनुं मूत्र क्षारवाळुं छे, कडवुं छे, तीखुं छे, उष्ण छे, वायुने हणनार छे अने खांसी, बरलनुं दरद, उदररोग, श्वास तथा मलबंध एओ उपर हितकारी छे.

१९७ दीपनं कटुतीक्ष्णोष्णं वातचेतोविकारनुत्।
आश्वं कफहरं मूत्रं क्रमिदद्रुषु शस्यते ॥

घोडाना मूत्रना गुणो.

१९७ घोडानुं मूत्र अग्निने दीप्त करनार छे, तीखुं छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण छे, क्रमि तथा दादर एओ उपर हितकारी छे अने वायु, चित्तना विकारो तथा कफ एओने टाळनार छे.

१९८ सतिक्तं लवणं भेदि वातघ्नं पित्तकोपनम्।
तीक्ष्णं क्षारे किलासे च नागं मूत्रं प्रयोजयेत्॥

हाथीना मूत्रना गुणो.

१९८ हाथीनुं मूत्र कडवुं छे, खारूं छे, दस्त पाडनार छे, वायुने हणनार छे, पित्तने प्रकुपित करनार छे अने तीक्ष्ण छे. क्षार करवामां अने किलास नामना कोढउपर हाथीना मूत्रनो प्रयोग करवो.

१९९ गरचेतोविकारघ्नं तीक्ष्णं ग्रहणिरोगनुत्।
दीपनं गार्दभं मूत्रं क्रमिवातकफापहम् ॥

गधेडाना मूत्रना गुणो.

१९९ गधेडानुं मूत्र तीक्ष्ण छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने विष, चित्तना विकारो, ग्रहणीरोग, क्रमिओ, वायु तथा कफ एओने टाळनार छे.

२०० शोफकुष्ठोदरोन्मादमारुतक्रिमिनाशनम्।
अर्शोघ्नं कारभं मूत्रं

उंटना मूत्रना गुणो.

२०० उंटनुं मूत्र सोजा, कोढ, उदररोग, उन्माद, वायु, क्रमिओ तथा अरश एओने हणनार छे अने झेरने पण टाळनार छे.

२०१ मानुषं च विषापहम् ॥

माणसना मूत्रना गुणो.

२०१ माणसनुं मूत्र झेरने टाळनार छे. (जो के माणसनुं मूत्र गोमूत्र वगेरे आठ मूत्रोमां गण्युं नथी तोपण धन्वंतरिना श्लोकोमां 'सर्व जातनां मूत्रो' ए वाक्यमां सूचवाई गएल छे माटे ए मूत्रने अहीं दाखल कर्युं छे.)

२०२ द्रवद्रव्याणि सर्वाणि समासात्कीर्तितानि तु।
कालदेशविभागज्ञो नृपतेर्दातुमर्हति ॥

उक्त तथा अनुक्त द्रवोना गुणोनो ऊह करी लेवा विषे.

२०२ आ अध्यायमां सघळां द्रवरूप द्रव्यो गुणोनी साथे संक्षेपथी कह्यां छे पण विस्तारथी कह्यां नथी. आम छे एटला माटे देशकाळना विभागोने जाणनारा राजवैद्य आ दिग्दर्शन प्रमाणे पोतानी बुद्धिथी द्रवद्रव्योना गुणोनो संपूर्ण ऊह करी लईने तेओनो प्रयोग करवो.

अध्याय ४६ मो.

१ अथातोऽन्नपानविधिमध्यायं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अन्नपानविधि'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे

२ धन्वन्तरिमभिवाद्य सुश्रुत उवाच । प्रागभिहितं प्राणिनां पुनर्मूलमाहारो बलवर्णौजसां च स षट्सु रसेष्वायत्तो रसाः पुनर्द्र-

१ अन्नोना तथा अनुपानादिकना विधिविषेनो.

व्याश्रयिणो द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकनिमित्ते च क्षयवृद्धी दोषधातूनां साम्यं च । ब्रह्मादेरपि च लोकस्याहारः स्थित्युत्पत्तिविनाशहेतुराहारादेवाभिवृद्धिर्बलमारोग्यं वर्णेन्द्रियप्रसादश्च तथाहारवैषम्यादस्वास्थ्यम् । तस्याशितपीतलीढखादितस्य नानाद्रव्यात्मकस्यानेकविधविकल्पस्यानेकविधप्रभावस्य पृथक्पृथग्द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकप्रभावकर्माणीच्छामि ज्ञातुम् । नह्यनवबुद्धस्वभावा भिषजः स्वस्थानुवृत्तिं रोगनिग्रहणं च कर्तुं समर्थाः । आहारमूलाश्च सर्वप्राणिनो यस्मात्तस्मादन्नपानविधिमुपदिशतु मे भगवान् ॥

अन्नपानना विधिविषे सुश्रुतनो प्रश्न.

२ सुश्रुते प्रणाम करीने भगवान् धन्वंतरिने पूछ्युं के "महाराज! प्राणिओनुं तथा प्राणिओना बळनुं, वर्णनुं अने ओजनुं मूळ कारण आहार छे, ए आहार छ रसोने आधीन छे, छ रसो द्रव्योने आधीन छे अने दोषोनां तथा धातुओनां क्षय वृद्धि तथा साम्य एओ द्रव्योना रसोथी, गुणोथी, वीर्योथी तथा विपाकोथी थाय छे एम आप प्रथम कही गया छो. ब्रह्माथी मांडीने जे जे कोई प्राणिओ छे तेओनी उत्पत्तिनो, स्थितिनो अने प्रलयनो हेतु आहारज छे, आहारथीज शरीरनां अभिवृद्धि, बळ तथा आरोग्य थाय छे, आहारथीज वर्णोनुं सारापणुं तथा इंद्रियोनुं सामर्थ्य थाय छे अने आहारनाज अन्यथा उपयोगथी अस्वस्थपणुं थाय छे. भक्ष्य, भोज्य, पेय अने लेह्य ए रीते चार प्रकारोवाळा, पृथ्वी आदि अनेक द्रव्योथी उत्पन्न थता, अनेक गोठवणोवाळा तथा अनेक प्रभावोवाळा ते आहारनां जे जे जूदां जूदां द्रव्यो छे तेओनां रसोने, गुणोने, वीर्योने, विपाकोने, प्रभावोने तथा कर्मोने जूदां जूदां जाणवा इच्छुंछुं, केम के जेओए आहारना स्वभावो जाण्या न होय ते वैद्यो स्वस्थ माणसोनी स्वस्थताने चालू राखी शकता नथी अने रोगी माणसोना रोगोनो निग्रह करी शकता नथी. आहारज सर्व प्राणिओनुं मूळ छे एटला माटे आप अन्नोना तथा अनुपानादिकना प्रकारोनो उपदेश करो."

३ इत्युक्तः प्रोवाच भगवान्धन्वन्तरिरथ खलु वत्स सुश्रुत यथाप्रश्नमुच्यमानमुपधारयस्व ।

धन्वंतरिए करेलो उत्तरनो आरंभ.

३ आ प्रमाणे सुश्रुतना प्रश्नने सांभळी भगवान् धन्वंतरि बोल्या के पुत्र सुश्रुत! हुं तमारा पूछवाप्रमाणे उत्तर आपुं छुं ते श्रवण करो.

४ तत्र लोहितकशालिकलमकर्दमकपाण्डुकसुगन्धकशकुनाहृतपुष्पाण्डकपुण्डरीकमहाशालिशीतभीरुकरोध्रपुष्पकदीर्घशूककाञ्चनकमहिषमस्तकहायनकदूषकमहादूषकप्रभृतयः शालयः ।

मधुरा वीर्यतः शीता लघुपाका बलावहाः ।
पित्तघ्नाल्पानिलकफाः स्निग्धा बद्धाल्पवर्चसः॥
तेषां लोहितकः श्रेष्ठो दोषघ्नः शुक्रमूत्रलः ।
चक्षुष्यो वर्णबलकृत्स्वर्यो हृद्यः श्रमापहः ॥
व्रण्यो ज्वरहरश्चैव सर्वदोषविषापहः ।
तस्मादल्पान्तरगुणाः क्रमशः शालयोऽवराः ॥

शालि (हेमंत ऋतुमां पाकनारा चोखा) नी जातो अने तेओना गुणो.

४ लोहितक, (राता संधीचोखा) कलमक, कर्दमक, (घणा कादवमां उत्पन्न थनारा) पांडुक, (सफेद फोतरावाळा तथा सफेद अणीवाळा) सुगंधक, (रंधाय त्यारे जेमांथी सुगंध आवे छे ते) शकुनाहृत, (उत्तरकुरु खंडमांथी हंसोए अथवा गरुडे आणेला) पुष्पांडक, (फूल जेवा) पुंडरीक, (सफेद कमळ जेवा सफेद, सुकुमार तथा सुगंधी) महाशालि, (जाडा) शीतभीरुक, (थंडीथी बगडी जनारा) रोध्रपुष्पक, (लोदरना फूल जेवी अणीवाळा) दीर्घशूक, (लांबी अणीवाळा) कांचनक, (पीळा वर्णवाळा) महिष-

मस्तक, हायनक, (वधारेमां वधारे एक वर्ष सुधी सारा रेहेनारा) दूपक अने महादूषक इत्यादि शालिनी जातिओ छे.

सघळा शालिओ मधुर छे, शीत वीर्यवाळा छे, पाकमां हलका छे, बळ आपनारा छे, पित्तने हणनारा छे, कांईक वायुने तथा कफने उत्पन्न करनारा छे, स्निग्ध छे अने विष्टाने बांधनारा तथा अल्प करनारा छे. ए सघळा शालिओमां लोहितक (राता संधीचोखा) श्रेष्ठ छे, दोषोने हणनारा छे, वीर्यने तथा मूत्रने वधारनारा छे, नेत्रोनुं हित करनारा छे, वर्णने सारो करनारा छे, बळ आपनारा छे, स्वरने सारो करनारा छे, हृदयने प्रिय लागे एवा छे, श्रमने टाळी नाखनारा छे, व्रणने शुद्ध करनारा छे अने सर्व दोषोने तथा सर्व विषोने हणनारा छे. लोहितक पछीना उपर केहेला बीजा शालिओ एथी उत्तरोत्तर अनुक्रमे ओछा ओछा गुणोवाळा छे.

५ षष्टिककाङ्गुकमुकुन्दकपीतकप्रमोदककाकलकासनपुष्पकमहाषष्टिकचूर्णककुरवककेदारकप्रभृतयः षष्टिकाः ।
रसे पाके च मधुराः शमना वातपित्तयोः ।
शालीनां च गुणैस्तुल्या बृंहणाः कफशुक्रलाः ॥
षष्टिकः प्रवरस्तेषां कषायानुरसो लघुः ।
मुदुः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नः स्थैर्यकृद्बलवर्द्धनः ॥
विपाके मधुरो ग्राही तुल्यो लोहितशालिभिः।
शेषास्त्वल्पान्तरगुणाः षष्टिकाः क्रमशो गुणैः ॥

वाव्या पछी साठ दिवसे पाकनारा चोखाओनी जातो तथा तेओना गुणो.

५ षष्टिक, (अधिक गौरतावाळा साठी चोखा) कांगुक, मुकुंदक, पीतक, प्रमोदक, काकलक, असनपुष्पक, महाषष्टिक, चूर्णक, कुरवक अने केदार इत्यादि जातना चोखा षष्टिक केहेवाय छे. (एओमां मुकुंदक, काकलक, असनपुष्पक, कुरवक अने केदार एओ श्याम वर्णवाळा थाय छे अने बीजा गौर तथा श्याम वर्णवाळा थाय छे.)

सघळा षष्टिको रसमां तथा पाकमां मधुर छे, वायुने तथा पित्तने शमावनारा छे, शालिओना गुणोथी पण युक्त छे, पुष्टि आपनारा छे अने कफने तथा वीर्यने वधारनारा छे. ए सघळा षष्टिकोमां षष्टिक (अधिक गौरतावाळा साठीचोखा) उत्तम छे, पेटामां कषाय रसवाळा छे, हलका छे, कोमळ छे, स्निग्ध छे, त्रणे दोषोने हणनारा छे, शरीरने दृढ करनारा छे, बळने वधारनारा छे, विपाकमां मधुर छे, दस्तने रोकनारा छे अने राता संधीचोखाओना जेवा गुणोवाळा छे. बाकीना षष्टिको उत्तरोत्तर अनुक्रमे कांईक कांईक ओछा गुणोवाळा छे.

६ कृष्णव्रीहिशालामुखजतुमुखनन्दीमुखलावाक्षकत्वरितककुक्कुटाण्डकपारावतकपाटलप्रभृतयो व्रीहयः ॥
कषायमधुराः पाके मधुरा वीर्यतोऽहिमाः ।
अल्पाभिष्यन्दिनस्तुल्याः षष्टिकैर्बद्धवर्चसः ॥
कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां कषायानुरसो लघुः ।
तस्मादल्पान्तरगुणाः क्रमशो व्रीहयोऽपरे ॥

व्रीहि (चोमासामां पाकनारा चोखा) नी जातो अने तेओना गुणो.

६ कृष्णव्रीहि, (काळी अणीवाळा) शालामुख, (श्वेत तथा श्यामवर्णवाळा) जतुमुख, (लाख जेवी अणीवाळा) नंदीमुख, (आडनी

१ चोखा अनेक जातना थाय छे. एओमांथी केटलीएक जातोना अर्थो बतावीने डल्हन लखे छे के 'चोखानी जातो ते ते देशोमां जूदां जूदां नामोथी बोलवामां आवे छे माटे ते ते देशना लोकोने पूछीने जाणी लेवी'. गुजरातीमां पण जीराशाल, पटणी, आंबेमोहोर, बंगाळी, चीनीसकर, उडा तथा वीरबटी इत्यादि अनेक जातो बोलवामां आवे छे पण तेओमां अमुक जात संस्कृतमां अमुक नामथी केहेवाय छे ए ओळखावबुं बनी शकतुं नथी.

चांच जेवी अणीवाळा) लावाक्षक, (लावां पक्षीनी आंख जेवा वर्णवाळा) त्वरितक, (साठीचोखाओनी पेठेज तुरत पाकनारा) कुक्कुटांडक, (कुकडाना इंडा जेवा गोळ तथा सफेद) पारावतक, (कबुतर जेवा वर्णवाळा) अने पाटलक, (पाडळना फूल जेवा वर्णवाळा) इत्यादि व्रीहिनी जातिओ छे.

सघळा व्रीहिओ पाकमां मधुर छे, उष्ण वीर्यवाळा छे, जराक अभिष्यंदी (स्रोतो वगेरेने क्लेदयुक्त करनारा) छे, विष्टाने बांधनारा छे अने षष्टिकोना जेवा गुणोवाळा छे. व्रीहिओमां कृष्णव्रीहिओ सर्वथी उत्तम छे, पेटामां कषाय रसवाळा छे अने हलका छे. ए पछीना बाकीना व्रीहिओ उत्तरोत्तर अनुक्रमे थोडा थोडा ओछा गुणोवाळा छे.

७ दग्धायामवनौ जाताः शालयो लघुपाकिनः।
कषाया बद्धविण्मूत्रा रूक्षाः श्लेष्मापकर्षणाः॥
स्थलजाः कफपित्तघ्नाः कषायाः कटुकान्वयाः।
किंचित्सतिक्तमधुराः पवनानलवर्द्धनाः॥
कैदारा मधुरा वृष्या बल्याः पित्तनिबर्हणाः।
ईषत्कषायाल्पमला गुरवः कफशुक्रलाः॥

भूमिपरत्व चोखाओना गुणो.

७ खडवगेरे पाथरीने बाळेली पृथ्वीमां उत्पन्न थएला शालिओ पेटमां जलदी पाकी जनारा छे, तूरा छे, विष्टाने तथा मूत्रने बांधनारा छे, रूक्ष छे अने कफने कमती करनारा छे.

जांगल प्रदेशमां उत्पन्न थएला शालिओ कफने तथा पित्तने हणनारा छे, तूरा छे, पेटामां तीखा रसवाळा छे, कांईक कडवाशवाळी मीठाशवाळा छे अने वायुने तथा जठराग्निने वधारनारा छे.

अनूप प्रदेशमां उत्पन्न थएला शालिओ मधुर छे, वीर्यनी प्रवृत्ति करावनारा छे, बळ आपनारा छे, पित्तने टाळनारा छे, कांईक तूरा छे, विष्टाने अल्प करनारा छे, भारे छे अने कफने तथा वीर्यने वधारनारा छे.

८ रोप्यातिरोप्या लघवः शीघ्रपाका गुणोत्तराः।
अदाहिनो दोषहरा बल्या मूत्रविवर्द्धनाः॥

एकवार के वधारेवार उखेडी उखेडीने बीजा स्थलमां वावेला चोखाओना गुणो.

८ एकवार के बे त्रणवार उखेडी उखेडीने बीजा स्थलमां वावेला चोखाओ हलका छे, तुरत पाकी जनारा छे, अधिक गुणोवाळा छे, दाह करनारा नथी, दोषोने हरनारा छे, बळ आपनारा छे अने मूत्रने वधारनारा छे.

९ शालयश्छिन्नरूढा ये रूक्षास्ते बद्धवर्चसः।
तिक्ताः कषायाः पित्तघ्नाः लघुपाकाः कफावहाः॥
विस्तरेणायमुद्दिष्टः शालिवर्गो हिताहितः।
तद्वत्कुधान्यमुद्गादिमाषादीनां च वक्ष्यते॥

छोडवाओने कापीने उगाडेला चोखाओना गुणो तथा शालिवर्गनो उपसंहार.

९ छोडवाओने कापीने उगाडेला चोखाओ रूक्ष छे, विष्टाने बांधनारा छे, कडवा छे, तूरा छे, पित्तने हणनारा छे, पेटमां जलदी पाकी जनारा छे अने कफ करनारा छे.

शालिवर्गनुं आ हिताहितपणुं विस्तारथी कह्युं. हवे एवी रीतेज खडधान्य, मग वगेरे तथा अडद वगेरे एओनुं पण हिताहितपणुं केहेवामां आवशे.

१० कोरदूषकश्यामाकनीवारशान्तनुवरकोद्दालप्रियङ्गुमधूलिकानान्दीमुखीकुरुविन्दगवेधुकवरुकतोदपर्णीमुकुन्दकवेणुयवप्रभृतयः कुधान्यविशेषाः॥
उष्णाः कषायमधुरा रूक्षाः कटुविपाकिनः।
श्लेष्मघ्ना बद्धनिष्यन्दा वातपित्तप्रकोपणाः॥
कषायमधुरास्तेषां शीतपित्तापहाः स्मृताः।
कोद्रवश्च सनीवारः श्यामाकश्च सशान्तनुः॥

कृष्णा रक्ताश्च पीताश्च श्वेताश्चैव प्रियङ्गवः ।
यथोत्तरं प्रधानाः स्यू रूक्षाः कफहराः स्मृताः॥
मधूली मधुरा शीता स्निग्धा नान्दीमुखी तथा।
विशोषी तत्र भूयिष्ठं वरुकः समुकन्दकः ॥
रूक्षा वेणुयवा ज्ञेया वीर्योष्णाः कटुपाकिनः ।
बद्धमूत्राः कफहराः कषाया वातकोपनाः ॥

खडधान्योनी जातो तथा तेओना गुणो.

१० कोदरा, सामो, बंटी, शांतनु, नागली, जंगली कोदरा, कांग, झीणा घउं, नांदीमुखी, (अणीवगरना झीणा तथा लांबा घऊं) कुरुविंदक, गवेधुक, (पर्वतोमां थता वरू सरखा कांसडांओनां बीजो के जेओ कसया दाणा केहेवाय छे ते) वन्यो, (कांगनी जात छे.) तोदपर्णी, मुकुंदक अने वांशीया घउं इत्यादिक खडधान्योनी जातिओ छे. (शांतनु, कुरुविंदक, तोदपर्णी अने मुकुंदक ए चारना गुजराती पर्यायो मळया नथी.)

खडधान्यो उष्ण छे, तूरां तथा मधुर छे, रूक्ष छे, विपाकमां तीखां छे, कफने टाळनारां छे, मूत्रने रोकनारां छे अने वातने तथा पित्तने प्रकुपित करनारां छे.

एओमां कोदरो, बंटी, सामो अने शांतनु एओ तूरां छे, मधुर छे अने शीतपित्तने टाळनारां छे.

कांग काळी, राती, पीळी अने सफेद एम चार प्रकारनी थाय छे तेओमां उत्तरोत्तर प्रधान छे, रूक्ष छे अने कफने हरनारी छे. झीणा घउं तथा अणी वगरना झीणा लांबा घउं एओ मधुर छे, टाढा छे तथा स्निग्ध छे. वन्यो अने मुकुंदक एओ द्रवधातुओने बहुज शोषण आपनारा छे. वांशीया घउं रूक्ष छे, उष्ण वीर्यवाळा छे, पाकमां तीखा छे, मूत्रने रोकनारा छे, कफने हरनारा छे, तूरा छे अने वायुने प्रकुपित करनारा छे.

११ मुद्गवनमुद्गकलायमकुष्ठमसूरमङ्गल्यचणकसतीनत्रिपुटकहरेण्वाढकीप्रभृतयो वैदलाः।
कषायमधुराः शीताः कटुपाका मरुत्कराः।
बद्धमूत्रपुरीषाश्च पित्तश्लेष्महरास्तथा ॥
नात्यर्थं वातलास्तेषु मुद्गा दृष्टिप्रसादनाः ।
प्रधाना हरितास्तत्र वन्या मुद्गसमाः स्मृताः ॥
विपाके मधुराः प्रोक्ता मसूरा बद्धवर्चसः।
मकुष्ठकाः कृमिकराः कलायाः प्रचुरानिलाः ॥
आढकी कफपित्तघ्नी नातिवातप्रकोपणी ।
वातलाः शीतमधुराः सकषाया विरूक्षणाः ॥
कफशोणितपित्तघ्नाश्चणकाः पुंस्त्वनाशनाः ।
हरेणवः सतीनाश्च विज्ञेया बद्धवर्चसः ॥
ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारकाः ॥

मग वगेरे वैदल धान्योनी जातो अने तेओना गुणो.

११ मग, वनमुद्ग, (जंगली मग) मटाणा, मठ, मसूर, सफेद वर्णवाळी मसूर, चणा, मटर, बीजी जातना मटर, नाहाना मटाणा अने तूवर इत्यादि धान्योनी जातिओ वैदल केहेवाय छे.

ए जातिओ तूरी तथा मधुर छे, टाढी छे, विपाकमां तीखी छे, वायु करनारी छे, विष्टाने तथा मूत्रने रोकनारी छे अने पित्तने तथा कफने हरनारी छे.

एओमां **मग** अत्यंत वायु करनारा नथी अने नेत्रोने स्वच्छ करनारा छे. मगमां पण **लीला वर्णवाळा मग** श्रेष्ठ छे. **वनमुद्गो** मगना जेवाज गुणोवाळा छे. मसूर विपाकमां मधुर छे अने विष्टाने रोकनार छे. **मठ** कृमि उपजाव-

१ आ अध्यायमां जे जे धान्य, तृणधान्य, शाक, कंदमूळ तथा पशुपक्षीओ वगेरेनां नामो आपवामां आव्यां छे तेओमांथी केटलांएकनी ओळखाण आपवामां अतिक्लेश होवाथी गभराईने डल्हन केहे छे के "धान्यो विषे देशोदेशना खेडुतोने पूछीने, मृगोविषे तथा पक्षिओ विषे देशोदेशना पाराधीओने पूछीने, कंदमूलादिक विषे वनचर तथा तपस्वी लोकोने पूछीने, शाको विषे गामना तथा जंगलना लोकोने पूछीने, रांधेलां अन्नोविषे रसोयाओने पूछीने अने केटलांएक द्रव्यो विषे गांधीओने पूछीने ओळखाण मेळवी लेवी.

नारा छे. **वटाणा** बहु वायु करनारा छे. **तूवर** कफने तथा पित्तने हणनारी छे अने वायुने जराक प्रकुपित करनारी छे. **चणा** वायु करनारा छे, टाढा छे, मधुर छे, तूराशवाळा छे, रूक्षता करनारा छे, कफ रुधिर तथा पित्त एओने हणनारा छे अने पुरुषपणाने कमती करनारा छे. **नाहाना मटाणा** अने **मटर** एओ विष्टाने बांधनारा (रोकनारा) छे. आ वैदल जातिओमां मग अने मसूर ए शिवाय सघळी जातिओ पेटमां आफरो करनारी छे.

१२ माषो गुरुर्भिन्नपुरीषमूत्रः
स्निग्धोष्णवृष्यो मधुरोऽनिलघ्नः ।
संतर्पणः स्तन्यकरो विशेषाद्
बलप्रदः शुक्रकफावहश्च ॥

अडदना गुणो.

१२ अडद भारे छे, विष्टाने तथा मूत्रने विशेष गति आपनारा छे, स्निग्ध छे, उष्ण छे, वीर्यनी प्रवृत्ति करनारा छे, मधुर छे, वायुने हणनारा छे, तृप्ति आपनारा छे, विशेषे करी धावण करनारा छे, बळ आपनारा छे अने वीर्यने तथा कफने वधारनारा छे.

१३ कषायभावान्न पुरीषभेदी
न मूत्रलो नैव कफस्य कर्ता ।
स्वादुर्विपाके मधुरोऽलसान्द्रः
संतर्पणः स्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

चोळाना गुणो.

१३ चोळा तूरा होवाने लीधे दस्त लगाडनारा नथी, मूत्रने वधारनारा नथी, कफ करनारा पण नथी, मधुर छे, विपाकमां पण मधुर छे, तृप्ति आपनारा छे, धावणने वधारनारा छे, अने रुचि उपजावनारा छे.

१४ माषैः समानं फलमात्मगुप्त-
मुक्तं च काकाण्डफलं तथैव ॥

कौचां तथा काकडोळीयांनां फळोना गुणो.

१४ कौचांनां फळो अने काकडोळीयां के जे अडदवेल पण केहेवाय छे तेनां फलो अडदना जेवाज गुणोवाळां छे.

१५ आरण्यमाषा गुणतः प्रदिष्टा
रूक्षाः कषाया अविदाहिनश्च ॥

जंगली अडदना गुणो.

१५ जंगली अडद (अडबाउ अडद) सारा अडदो करतां रूक्ष छे, तूरा छे अने घणीवारे पचीने बलतरा करनारा नथी.

१६ उष्णः कुलत्थो रसतः कषायः
कटुर्विपाके कफमारुतघ्नः ।
शुक्राश्मरीगुल्मनिषूदनश्च
संग्राहकः पीनसकासहारी ॥

कळथीना गुणो.

१६ कळथी उष्ण वीर्यवाळी छे, तूरा रसवाळी छे, विपाकमां तीखी छे, मिश्रित थएला कफ अने वायु एओने तोडनारी छे, दस्तने रोकनारी छे अने वीर्यनी पथरी, गुल्म, पीनस तथा खांसी एओने हरनारी छे.

१७ आनाहमेदोगुदकीलहिक्का-
श्वासापहः शोणितपित्तकृच्च ।
कफस्य हन्ता नयनामयघ्नो
विशेषतो वन्यकुलत्थ उक्तः ॥

चमेडना गुणो.

१७ चमेड विशेषे करी नेत्रोना रोगोने हणनारी छे, रुधिरने तथा पित्तने वधारनारी छे अने मलबंध, मेद, गुदकील नामनो अरश, हेडकी, श्वास तथा कफ एओने हणनारी छे.

१८ ईषत्कषायो मधुरः सतिक्तः
संग्राहकः पित्तकरस्तथोष्णः ।
तिलो विपाके मधुरो बलिष्ठः
स्निग्धो व्रणालेपन एव पथ्यः ॥
दन्त्योऽग्निमेधाजननोऽल्पमूत्र-
स्त्वच्योऽथ केश्योऽनिलहा गुरुश्च ।
तिलेषु सर्वेष्वसितः प्रधानो
मध्यः सितो हीनतरास्तथान्ये ॥

तिलना गुणो.

१८ तिल जराक तूरा छे, मधुर छे, कडवाशवाळा छे, मळोने रोकनारा छे, पित्त करनारा छे, उष्ण वीर्यवाळा छे, विपाकमां मधुर छे, बळ आपनारा छे, स्निग्ध छे, दुष्ट व्रणो उपर लेप करवामां उत्तम छे पण खावामां अपथ्य छे, दांतोने माटे सारा छे, जठराग्निने तथा बुद्धिने वधारनारा छे, मूत्रने अल्प करनारा छे, धावणने वधारनारा छे, त्वचाने सारी करनारा छे, केशने पण सारा करनारा छे, वायुने हणनारा छे अने भारे छे. तिलोमां काळा तल सर्वेथी मुख्य छे, धोळा तल मध्यम छे अने पीळा तथा राता वगेरे बीजा तिलो निकृष्ट छे.

१९ यवः कपायो मधुरो हिमश्च
कटुर्विपाके कफपित्तहारी ।
व्रणेषु पथ्यस्तिलवच्च नित्यं
प्रबद्धमूत्रो बहुवातवर्चाः ॥
स्थैर्याग्निमेधास्वरवर्णकृच्च
सपिच्छिलः स्थूलविलेखनश्च ।
मेदोमरुत्तृड्ढरणोऽतिरूक्षः
प्रसादनः शोणितपित्तयोश्च ॥

जवना गुणो.

१९ जव तूरा छे, मधुर छे, टाढा छे, विपाकमां तीखा छे, कफने तथा पित्तने हरनारा छे, व्रण उपर सर्वदा तिलो जेवाज पथ्य छे, मूत्रने अल्प करनारा छे, कोठाना वायुने तथा विष्टाने वधारनारा छे, चीकाशवाळा छे, जाडा माणसना मेदने ओछुं करनारा छे, मेदथी आवरण पामेला वायुने तथा तृषाने हरनारा छे, अतिरूक्ष छे, रुधिरने तथा पित्तने स्वच्छ करनारा छे, दृढता करनारा छे, जठराग्निने वधारनारा छे, बुद्धि आपनारा छे, स्वरने सारो करनारा छे अने वर्णने पण सारो करनारा छे.

२० एभिर्गुणैर्हीनतरांस्तु किंचि-
द्विद्याद्यवेभ्योऽतियवानशेषैः ।

अतियव (अणी वगरना नाहाना जव) ना गुणो.

२० अणी वगरना काळा तथा राता नाहाना जवोमां, उपर कहेला जवोना सघळा गुणो अत्यंत ओछा छे.

२१ गोधूम उक्तो मधुरो गुरुश्च
बल्यः स्थिरः शुक्ररुचिप्रदश्च ॥
स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तहन्ता
संधानकृच्छ्लेष्मकरः सरश्च ।

घउंना गुणो.

२१ घउं मधुर छे, भारे छे, बळ आपनारा छे, शरीरने दृढ करनारा छे, वीर्यने वधारनारा छे, रुचि आपनारा छे, अत्यंत स्निग्ध छे, अत्यंत टाढा छे, वायुने तथा पित्तने हणनारा छे, भांगेलाने सांधनारा छे, दस्त उतारनारा छे अने नवा होय तो कफ करनारा छे.

२२ रूक्षः कपायो विषशोफशुक्र-
बलासदृष्टिक्षयकृद्विदाही ॥
कटुर्विपाके मधुरस्तु शिम्बः
प्रभिन्नविण्मारुतपित्तलश्च ।

शींगोना सामान्य गुणो.

२२ शींगो रूक्ष छे, तूरी छे, बलतरा करनारी छे, विपाकमां तीखी छे, मधुर छे, विष्टानुं भेदन करनारी छे, वायुने तथा पित्तने वधारनारी छे, अने विषनो, सोजानो, कफनो तथा दृष्टिनो क्षय करनारी छे.

२३ सितासिताः पीतकरक्तवर्णा
भवन्ति येऽनेकविधास्तु शिम्बाः ॥
यथोदितास्ते गुणतः प्रधाना
ज्ञेयाः कटूष्णा रसपाकयोश्च ।

नोखनोखा वर्णो उपरथी शींगोना गुणो.

२३ धोळी, काळी, पीळी तथा राती जे अनेक प्रकारनी शींगो थाय छे तेओमां राती करतां पीळी, पीळी करतां काळी अने काळी क-

रतां धोळी शींगो उत्तम गुणोवाळी छे अने रसमां तथा पाकमां तीखी तथा उष्ण वीर्यवाळी छे.

२४ सहाह्वयं मूलकजाश्च शिम्बाः
कुशिम्बिवल्लीप्रभवास्तु शिम्बाः ॥
ज्ञेया विपाके मधुरा रसे च
बलप्रदाः पित्तनिबर्हणाश्च ।

परचुरण शींगोना गुणो.

२४ अडबाउ मगनी शींगो, अडबाउ अडदनी शींगो, मोघरा तथा परवोलीयां वेलानी शींगो विपाकमां मधुर छे, रसमां पण मधुर छे, बळ देनारी छे अने पित्तने शांत करनारी छे.

२५ विदाहवन्तश्च भृशं च रूक्षा
विष्टभ्य जीर्यन्त्यनिलप्रदाश्च ॥
रुचिप्रदाश्चैव सुदुर्जराश्च
सर्वे स्मृता वैदलिकास्तु शिम्बाः ।

मग वगेरे वैदल धान्योनी शींगोना गुणो.

२५ मग वगेरे वैदल धान्योनी आर्द्र शींगो बळतरा करनारी छे, अत्यंत रूक्ष छे, पेटमां गडगडाट करीने पछी पचे छे, वायुने वधारनारी छे, रुचिकारक छे अने मांडमांड पचे एवी होय छे.

२६ कटुर्विपाके कटुकः कफघ्नो
विदाहिभावादहितः कुसुम्भः ॥
उष्णातसीस्वादुरसाऽनिलघ्नी
पित्तोल्बणा स्यात्कटुका विपाके ।

कसुंबाना तथा अळसीना गुणो.

२६ कसुंबो तीखो छे, विपाकमां पण तीखो छे, कफने हणनार छे अने घणीवारे पचवाने लीधे बळतरा करनार होवाथी अहितरूप छे.

अळसी उष्ण वीर्यवाळी छे, मधुर छे, वायुने हणनारी छे, पित्तने बहुज प्रकुपित करनारी छे अने विपाकमां तीखी छे.

२७ पाके रसे चापि कटुः प्रदिष्टः
सिद्धार्थकः शोणितपित्तकोपी ॥
तीक्ष्णोष्णरूक्षः कफमारुतघ्नः

धोळा सर्षपना गुणो.

२७ धोळा सर्षप पाकमां तथा रसमां तीखा छे, रुधिरने तथा पित्तने प्रकुपित करनारा छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण वीर्यवाळा छे, रुक्ष छे अने कफने तथा वायुने हणनारा छे.

२८ तथा गुणश्चासितसर्षपोऽपि ॥

राता सर्षपना गुणो.

२८ राता सर्षपो पण तीक्ष्ण छे, उष्ण वीर्यवाळा छे, रूक्ष छे, कफने तथा वायुने हणनारा छे, रुधिरने तथा पित्तने प्रकुपित करनारा छे अने पाकमां तथा रसमां तीखा छे.

२९ अनार्तवं व्याधिहतमपर्यागतमेव च ।
अभूमिजं नवं चापि न धान्यं गुणवत्स्मृतम् ॥
नवं धान्यमभिष्यन्दि लघु संवत्सरोषितम् ।
विदाहि गुरु विष्टम्भि विरूढं दृष्टिदूषणम्

कयु धान्य सारू नथी ?

२९ पोतानी ऋतुवगर अन्य ऋतुमां उत्पन्न थएलुं, गेरु वगेरे दरदथी खराब थएलुं, नहीं पाकेलुं, खराब प्रदेशमां उगेलुं, नवुं अने जेनी अंकुरो उत्पन्न करवानी शक्ति जती रही होय एवुं धान्य गुणकारी नथी. नवुं धान्य कफनो उत्क्लेश करनार छे. जे धान्य एक वर्षनुं जूनुं होय ते हलकुं छे. जेनी अंकुरो उत्पन्न करवानी शक्ति जती रही होय एवुं धान्य बळतरा करनार छे, भारे छे, गडगडाट करनार छे अने नेत्रोने खराब करनार छे. (जेना कोंटा फुटेला होय अथवा जे जराक शेकेलुं धान्य होय ते पण खराब छे. केटलाएक केहे छे के अडद तथा चणा वगेरे धान्यो तो नवांज श्रेष्ठ छे.)

३० इयाल्यादेः सर्षपान्तस्य विविधस्यास्य भागशः ।
कालप्रमाणसंस्कारमात्राः संपरिकीर्तिताः ॥

धान्योनो उपयोग करवामां साधारण समजण अने उपसंहार.

३० चोखाथी मांडीने सर्षपपर्यंत जे आ जूदां

जूदां धान्यो केहेवामां आव्यां तेओनो तेओनी उत्पत्तिना समय उपर, तेओने आपवामां आवेला रांधवा तथा भुंजवा वगेरे संस्कार उपर तथा तेओनी मात्राओ उपर ध्यान राखीने उपयोग करवो.

३१ अत ऊर्ध्वं मांसवर्गानुपदेक्ष्यामः । तद्यथा । जलेशया आनूपा ग्राम्याः क्रव्यभुज एकशफा जाङ्गलाश्चेति षण्मांसवर्गास्तेषां वर्गाणामुत्तरोत्तरं प्रधानतमाः । ते पुनर्द्विविधा जाङ्गला आनूपाश्चेति ।

मांसोनी बे मुख्य वर्गोमां वेहेंचण.

३१ हवे मांसोना वर्गोनो उपदेश करीए छीए. जलेशय, (जलमां रेहेनारां प्राणीओनुं मांस) आनूप, (जलाशयोना कीनारा वगेरे जलप्राय प्रदेशोमां रेहेनारां प्राणिओनुं मांस) ग्राम्य, (गाममां रेहेनारां प्राणीओनुं मांस) क्रव्यभुज् (मांसभक्षक प्राणिओनुं मांस) एकशफ, (एक खरीवाळां प्राणीओनुं मांस) अने जांगल (जंगलमां रेहेनारां पशुओनुं मांस) ए रीते मांसोना छ वर्ग छे अने तेओ उत्तरोत्तर श्रेष्ठ छे. ए छ वर्गोनो जांगलवर्ग अने आनूपवर्ग ए बे वर्गोमां समावेश करवामां आवे छे.

३२ तत्र जाङ्गलवर्गोऽष्टविधः । तद्यथा । जङ्घाला विष्किराः प्रतुदा गुहाशयाः प्रसहाः पर्णमृगा बिलेशया ग्राम्याश्चेति । तेषां जङ्घालविष्किरौ प्रधानतमौ ।

जांगलवर्गना आठ प्रकार अने ते आठ प्रकारोनां नामो.

३२ जांगलवर्ग आठ प्रकारनो छे. जंघाल, विष्किर, प्रतुद, गुहाशय, प्रसह, पर्णमृग, बिलेशय अने ग्राम्य ए रीते आठ प्रकारनां प्राणिओनां मांसोनो जांगलवर्गमां समावेश थाय छे.

३३ एणहरिणर्क्षकुरङ्गकरालकृतमालशरभश्वदंष्ट्रापृषतचारुष्कमृगमातृकाप्रभृतयो जङ्घाला मृगाः कषाया मधुरा लघवो वातपित्तहरास्तीक्ष्णा हृद्या बस्तिशोधनाश्च ॥

कषायो मधुरो हृद्यः पित्तासृक्कफरोगहा ।
संग्राही रोचको बल्यस्तेषामेणो ज्वरापहः ॥
मधुरो मधुरः पाके दोषघ्नोऽनलदीपनः ।
शीतलो बद्धविण्मूत्रः सुगन्धिर्हरिणो लघुः ॥
एणः कृष्णस्तयोर्ज्ञेयो हरिणस्ताम्र उच्यते ।
न कृष्णो न च ताम्रश्च कुरङ्गः सोऽभिधीयते
शीतासृक्पित्तशमनी विज्ञेया मृगमातृका ।
संनिपातक्षयश्वासकासहिक्काऽरुचिप्रणुत् ॥

जंघाल प्राणिओ अने तेओना गुणो.

३३ काळीयार, रातो मृग, रोझ, काळो पण नहीं तथा रातो पण नहीं एवो मध्यवर्णवाळो मृग, कस्तूरीमृग, जथ्थामांज फरनारा मृगो, शरभ, (आठ पगवाळो एटले बीजा चार पग जेनी पीठमां होय छे एवो मृग) श्वदंष्ट्रा, (चार दाढोवाळो अतिक्रूर मृग) पृषत, (छांटणवाळो नाहाना कदनो मृग के जे पसुडो केहेवाय छे ते) चारुष्क, (रूपाळो नाहाना कदनो मृग) अने मृगमातृका (गुजरातीमां पर्याय मळयो नथी) एटला मृगो साथळना जोरवाळा होवाथी जंघाल केहेवाय छे.

जंघालमृगोनुं मांस तूरूं छे, मधुर छे, हलकुं छे, वायुने तथा पित्तने हरनार छे, तीक्ष्ण छे, प्रिय लागे एवुं छे अने मूत्राशयने स्वच्छ करनार छे एटले मूत्रकृच्छ्र, पथरी तथा मूत्राघात इत्यादि रोगोमां पथ्य छे.

एओमां काळीयारनुं मांस तूरूं छे, मधुर छे, प्रिय लागे एवुं छे, द्रवनुं शोषण करनार छे, रुचि उपजावनार छे, बळ आपनार छे अने पित्तसंबंधी रोग, रुधिरसंबंधी रोग, कफसंबंधी रोग अने ज्वर एओने मटाडनार छे.

राता हरिणनुं मांस शीतल छे, विष्टाने तथा मूत्रने रोकनार छे, सुगंधि छे अने हलकुं छे.

काळीआर एण केहेवाय छे, रातो मृग हरिण केहेवाय छे अने काळो पण नहीं तथा रातो पण नहीं एवो मृग कुरंग केहेवाय छे.

मृगमातृकानुं मांस शीत छे, रक्तपित्तने शांत करनार छे अने सन्निपात, क्षय, श्वास, खांसी, हेडकी तथा अरुचि एओने मटाडनार छे.

३४ लावतित्तिरिकपिञ्जलवर्तीरवर्तिकवर्तकानप्तृकावार्तीकचकोरकलविङ्कमयूरक्रकरोपचक्रकुक्कुटसारङ्गशतपत्रककुतित्तिरिकुरबाहुकयवलकप्रभृतयस्त्वाहला विष्किरा लघवः शीतमधुराः कषाया दोषशमनाश्च ॥
संग्राही दीपनश्चैव कषायमधुरो लघुः।
लावः कटुविपाकश्च संनिपाते च पूजितः ॥
ईषद्गुरूष्णमधुरो वृष्यो मेधाग्निवर्द्धनः ।
तित्तिरिः सर्वदोषघ्नो ग्राही वर्णप्रसादनः ॥
हिक्काश्वासानिलहरो विशेषाद्गौरतित्तिरिः ।
रक्तपित्तहरः शीतो लघुश्चापि कपिञ्जलः ॥
कफोत्थेषु च रोगेषु मन्दवाते च शस्यते ।
वातपित्तहरा वृष्या मेधाग्निबलवर्द्धनाः ॥
लघवः क्रकरा हृद्यास्तथा चैवोपचक्रकाः ।
कषायः स्वादुलवणस्त्वच्यः केश्यो रुचिप्रदः॥
मयूरः स्वरमेधाग्निदृक्छ्रोत्रेन्द्रियदार्ढ्यकृत् ।
स्निग्धोष्णोऽनिलहा वृष्यः स्वेदस्वरबलावहः॥
बृंहणः कुक्कुटो वन्यस्तद्वद्ग्राम्यो गुरुस्तु सः ।
वातरोगक्षयवमीविषमज्वरनाशनः ॥

विष्किर पक्षीओ अने तेओना मांसना गुणो.

३४ लावां, काळां तेतर, गोरां तेतर, लवाईडां, बटाउडां, वेयां, नप्तृका, वार्तीक, चकोर, गतां माथांवाळां तथा काळी डोकवाळां चकलां, मोर, कलकलीओ, उपचक्रक, (कलकलीयानी एक जात) कुकडां, बपैया, सुतार-टंकारा, भूरा वर्णनां तेतर, कुरबाहुक अने यवलक इत्यादिक व्याहल (बे पगथी अने चांचथी प्रहार करनारां) पक्षीओ धरतीने खोतरी खोतरीने तेमांथी कीडा वगेरेने खाय छे माटे विष्किर केहेवाय छे. (जेओना पर्यायो गुजरातीमां मळया नथी तेओनां संस्कृत नामोज राख्यां छे.)

विष्किरोनुं मांस हलकुं छे, टाढुं छे, मधुर छे, तूरूं छे अने दोषोने शमावनार छे.

एओमां लावांनुं मांस द्रवनुं शोषण करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, तूरूं तथा मधुर छे, हलकुं छे, विपाकमां तीखुं छे अने सन्निपात उपर अतिपथ्य छे.

काळां तेतरनुं मांस जराक भारे छे, कांईक उष्णवीर्य छे, कांईक मधुर छे, वीर्यने जठराग्निने तथा बुद्धिने वधारनार छे, सर्व दोषोने हणनार छे, द्रवनुं शोषण करनार छे अने वर्णने सारो करनार छे.

गोरा तेतरनुं मांस उपर कहेला गुणोवाळुं छे अने विशेष करी हेडकीने, श्वासने, तथा वायुने हरनार छे.

गतां माथांवाळां तथा काळी डोकवाळां चकलांनुं मांस रक्तपित्तने हरनार छे, टाढुं छे, हलकुं छे अने कफथी थएला रोगो उपर तथा मंद थएला वायु उपर बहु सारूं छे.

कळकलीआ तथा उपचक्रक एओनुं मांस वायुने तथा पित्तने हरनार छे, वीर्यने बुद्धिने तथा जठराग्निने वधारनार छे, हलकुं छे अने प्रिय लागे एवुं छे.

मोरनुं मांस तूरूं छे, मधुर छे, खारूं छे, चामडीने सारी करनार छे, केशने माटे सारूं छे, रुचि आपनार छे अने स्वर, बुद्धि, जठराग्नि, दृष्टि तथा श्रोत्रेंद्रिय एओने दृढ करनार छे.

जंगली कुकडानुं मांस स्निग्ध छे, गरम छे, वायुने शांत करनार छे, वीर्यने वधारनार छे, पसीनो आपनार छे, स्वरने सारो करनार छे, बळ आपनार छे अने पुष्टि आपनार छे. गामठी कुकडानुं मांस पण एवुंज छे पण ते वधारे भारे छे अने वायुसंबंधी रोग, क्षय, उलटी तथा विषमज्वर एओने नष्ट करनार छे.

३५ कपोतपारावतभृङ्गराजपरभृतकोयष्टिककुलिङ्गगृहकुलिङ्गगोक्षोडकडिंडिमाणकशत-

पत्रकमातृनिन्दकभेदाशिशुकसारिकावल्गुली-गिरिशालद्दालदूपकसुगृहीखञ्जरीटकहारीतदात्यूहप्रभृतयः प्रतुदाः ॥
कषायमधुरा रूक्षाः फलाहारा मरुत्कराः ।
पित्तश्लेष्महराः शीता बद्धमूत्राल्पवर्चसः ॥
सर्वदोषकरस्तेषां भेदाशी मलदूषकः ।
कषायस्वादुलवणो गुरुः काणकपोतकः ॥
रक्तपित्तप्रशमनः कषायविशदोऽपि च ।
विपाके मधुरश्चापि गुरुः पारावतः स्मृतः ॥
कुलिङ्गो मधुरः स्निग्धः कफशुक्रविवर्द्धनः ।
रक्तपित्तहरो वेश्मकुलिङ्गस्त्वतिशुक्रलः ॥

प्रतुद पक्षीओ अने तेओना मांसना गुणो.

३५ होला, कबुतर, भृंगराज, कोयल, कोयष्टिक, जंगली चकली, गामठी चकली, गोक्षोडक, माणक, काकाकवा, मातृनिंदक, भेदाशी, पोपट, मेना, वडवानरी, भेरव, आलद्दाल, दूपक, सुघरी, खंजन, हारीत अने दात्यूह इत्यादि पक्षीओ चांचवते फलादिक पदार्थोने फोली फोलीने खाय छे माटे प्रतुद केहेवाय छे. (जेओना पर्यायो गुजरातीमां मळ्या नथी तेओनां संस्कृत नामोज राखेलां छे.)

प्रतुदोनुं मांस तूरूं छे, मधुर छे, रूक्ष छे, वायुने करनार छे, पित्तने तथा कफने हरनार छे, टाढुं छे, मूत्रने रोकनार छे अने विष्टानुं अल्पपणुं करनार छे.

एओमां भेदाशीनुं मांस सर्व दोषोने करनारूं छे अने मळोने बगाडनारूं छे.

होलानुं तूरूं छे, मधुर छे खारूं छे अने भारे मांस छे.

कबुतरनुं मांस रक्तपित्तने शांत करनारूं छे, तूरूं छे, चीकणुं नथी, विपाकमां मधुर छे अने भारे छे.

जंगली चकलांनुं मांस मधुर छे, स्निग्ध छे अने कफने तथा वीर्यने वधारनार छे.

गामठी चकलांनुं एटले जे चकलां घरमां माळा करे छे तेओनुं मांस रक्तपित्तने हरनार छे तथा वीर्यने अत्यंत वधारनारूं छे.

३६ सिंहव्याघ्रवृकतरक्षृक्षद्वीपिमार्जारशृगालमृगेर्वारुकप्रभृतयो गुहाशयाः ॥
मधुरा गुरवः स्निग्धा बल्या मारुतनाशनाः ।
उष्णवीर्या हिता नित्यं नेत्रगुह्यविकारिणाम् ॥

गुहाशय पशुओ अने तेओना मांसना गुणो.

३६ सिंह, चीतरा, वरू, झरख, रींछ, दीपडा जंगली बीलाडा, शीयाळ तथा मृगेर्वारुक (अप्रसिद्ध छे.) इत्यादि पशुओ गुफाओमां रहे छे तेथी गुहाशय केहेवाय छे.

गुहाशयोनुं मांस मधुर छे, भारे छे, स्निग्ध छे, बळ आपनार छे, वायुने नष्ट करनार छे, उष्णवीर्य छे अने नेत्रोना विकारोवाळाओने तथा गुह्यना विकारवाळाओने सर्वदा पथ्य छे.

३७ काककङ्ककुररचापभासशशघात्युलूकचिल्लिश्येनगृध्रप्रभृतयः प्रसहाः ॥
एते सिंहादिभिः सर्वे समाना वायसादयः ।
रसवीर्यविपाकेषु विशेषाच्छोषिणे हिताः ॥

प्रसह पक्षीओ अने तेओना मांसना गुणो.

३७ कागडा, कंक, (जेओनां पीछां बाणनां पुंखोमां वापरवामां आवे छे ते.) टीटोडा, गरंज, भास, (गरंजनी एक जात) बाझ, घुवड, समळा, शकरा अने गीध इत्यादि पक्षिओ बलात्कारथी झोंटीने खाय छे माटे प्रसह केहेवाय छे.

ए कागडा वगेरे प्रसहोनुं मांस रसमां, वीर्यमां तथा विपाकमां उपर कहेला सिंहादिकना मांसना जेवाज गुणोवाळुं छे अने विशेषे करी क्षयरोगवाळाओने हितकारी छे.

३८ मद्गुमूंषिकवृक्षशायिकावकुशपूतिघासवानरप्रभृतयः पर्णमृगाः

मधुरा गुरवो वृष्याश्चक्षुष्याः शोषिणे हिताः ।
सृष्टमूत्रपुरीषाश्च कासार्शःश्वासनाशनाः ॥

पर्णमृगो तथा तेओना मांसना गुणो.

३८ मद्गु, झाडना उंदर, खीसकोली, गोलांगूल जातना वानर, पूतिघास (जेओना वृषणोमांथी जबादियां कस्तूरी थाय छे ते बीलाडा) अने वानर इत्यादि प्राणीओ पानडांओमां मृगोनी पेठे ठेकनारा छे तेथी पर्णमृगो केहेवाय छे.

पर्णमृगोनुं मांस मधुर छे, भारे छे, वीर्यने वधारनार छे, नेत्रोने हितकारी छे, क्षयरोगवाळाने माटे हितकारी छे, विष्टानी तथा मूत्रनी प्रवृत्ति करावनार छे अने खांसी, अरश तथा श्वास एओने नष्ट करनार छे.

३९ श्वाविच्छल्यकगोधाशशवृषदंशलोपाकलोमशकर्णकदलीमृगप्रियकाऽजगरसर्पमूषिकनकुलमहाबभ्रुप्रभृतयो बिलेशयाः ॥

वर्चोमूत्रं संहतं कुर्युरेते
वीर्ये चोष्णाः पूर्ववत्स्वादुपाकाः ।
वातं हन्युः श्लेष्मपित्ते च कुर्युः
स्निग्धाः कासश्वासकार्श्यापहाश्च ॥

कषायमधुरस्तेषां शशः पित्तकफापहः ।
नातिशीतलवीर्यत्वाद्वातसाधारणो मतः ॥
गोधा विपाके मधुरा कषायकटुका स्मृता ।
वातपित्तप्रशमनी बृंहणी बलवर्द्धनी ॥
शल्यकः स्वादुपित्तघ्नो लघुः शीतो विषापहः।
प्रियको मारुते पथ्योऽजगरस्त्वर्शसां हितः ॥
दुर्नामानिलदोषघ्नाः कृमिदूषीविषापहाः ।
चक्षुष्या मधुराः पाके सर्पा मेधाग्निवर्द्धनाः ॥
दर्वीकरा दीपकाश्च तेषूक्ताः कटुपाकिनः ।
मधुराश्चातिचक्षुष्याः सृष्टविण्मूत्रमारुताः ॥

बिलेशय प्राणीओ तथा तेओना मांसना गुणो.

३९ शेढाई, शेळा, घो, ससलां, गामठी बीलाडा, लोंकडी, लोमशकर्ण, कदलीमृग, प्रियकमृग, अजगर, सर्प, उंदर, नोळीयां तथा मोटां नोळीयां इत्यादि प्राणिओ दबमां रेहे छे तेथी बिलेशय केहेवाय छे. (जेओना गुजराती पर्यायो मळ्या नथी तेओनां संस्कृत नामोज राखेलां छे.)

बिलेशयोनुं मांस विष्टाने तथा मूत्रने घाटां करनार छे, सिंहादिकना मांसनी पेठेज उष्णवीर्यवाळुं छे, विपाकमां मधुर छे, वायुने हणनार छे, कफने तथा पित्तने वधारनार छे, स्निग्ध छे अने खांसी, श्वास तथा कृशता एओने मटाडनार छे.

एओमां ससलानुं मांस तूरूं तथा मधुर छे, पित्तने तथा कफने टाळनार छे अने अत्यंत शीतवीर्यवाळुं नथी तेथी वायुने कुपित पण करतुं नथी अने शांत पण करतुं नथी.

घोनुं मांस विपाकमां मधुर छे, तूरूं तथा तीखुं छे, वातने तथा पित्तने शांत करनार छे, पुष्टि आपनार छे अने बळने वधारनार छे.

शेळानुं मांस मधुर छे, पित्तने हणनार छे, हलकुं छे, टाढुं छे अने झेरने टाळनार छे.

प्रियकमृगनुं मांस वायुना रोग उपर पथ्य छे.

अजगरनुं मांस अरशना दरद उपर हितकारी छे.

सर्पोनुं मांस अरशने, वायुसंबंधी रोगने, कृमिओने तथा वायु के तडका वगेरेथी मंद थएला झेरने हणनार छे, नेत्रोने हितकारी छे, पाकमां मधुर छे अने बुद्धिने तथा अग्निने वधारनार छे.

सर्पोमां दर्वीकर[1] सर्पोनुं मांस अने रेखाओवाळा सर्पोनुं मांस पाकमां तीखुं छे, मधुर छे, नेत्रोनुं अत्यंत हितकरनार छे अने विष्टानी, मूत्रनी तथा पवननी प्रवृत्ति करनार छे.

४० अश्वाश्वतरखरोष्ट्रबस्तोरभ्रमेदःपुच्छकप्रभृतयो ग्राम्याः ॥

[1] दर्वीकर सर्पोनुं लक्षण कल्पस्थानना चोथा अध्यायना ९ मा विषयमां जोवुं.

ग्राम्या वातहराः सर्वे बृंहणाः कफपित्तलाः ।
मधुरा रसपाकाभ्यां दीपना बलवर्द्धनाः ॥
नातिशीतो गुरुः स्निग्धो मन्दपित्तकफः स्मृतः।
छगलस्त्वनभिष्यन्दी तेषां पीनसनाशनः ॥
बृंहणं मांसमौरभ्रं पित्तश्लेष्मावहं गुरु ।
मेदःपुच्छोद्भवं वृष्यमौरभ्रसदृशं गुणैः ॥
श्वासकासप्रतिश्यायविषमज्वरनाशनम् ।
औरभ्रवत्सलवणं मांसमेकशफोद्भवम् ।

ग्राम्य पशुओ तथा तेओना मांसना गुणो.

४० घोडा, खच्चर, गधेडा, उंट, बकरा, घेंटा अने दुंबावाळा घेंटा इत्यादिक ग्राम्य (गाममां रेहेनारां) पशुओ केहेवाय छे.

ग्राम्य पशुओनुं मांस वायुने हरनार छे, पुष्टि आपनार छे, कफने तथा पित्तने करनार छे, रसमां तथा पाकमां मधुर छे अग्निने दीप्त करनार छे अने बळने वधारनार छे.

बकरानुं मांस बहु टाढुं नथी, भारे छे, स्निग्ध छे, जराक कफने तथा पित्तने करनार छे, स्रोतो वगेरेने क्लेदयुक्त करनार नथी अने पीनसने हणनारूं छे.

घेंटानुं मांस पुष्टि आपनार छे, पित्तने तथा कफने वधारनार छे अने भारे छे.

दुंबावाळा घेंटानुं मांस वीर्यने वधारनार छे अने बीजा सघळा गुणोथी उपर कहेला घेंटाना मांस जेवुंज छे.

एक खरीवाळां घोडा वगेरे पशुओनुं मांस घेंटाना मांसना जेवाज गुणोवाळुं छे, खाराशवाळुं छे. अने श्वास, खांसी, प्रतिश्याय तथा विषमज्वर एओने हणनार छे.

४१ अल्पाभिष्यन्द्ययं वर्गो जाङ्गलः समुदाहृतः।
दूरे जनान्तनिलया दूरे पानीयगोचराः ।
ये मृगाश्च विहङ्गाश्च तेऽल्पाभिष्यन्दिनो मताः॥
अतीवासन्ननिलयाः समीपोदकगोचराः ।
ये मृगाश्च विहङ्गाश्च महाभिष्यन्दिनस्तु ते ॥

जांगल वर्गना मांसमां अमुक विशेष.

४१ आ जे जांगल प्राणीओनो मांसवर्ग कह्यो ते जराक अभिष्यंदी (शरदी करनार) छे. तेमां एम समजवानुं छे के जे जांगल पशुओ तथा पक्षीओ गामोथी दूर रेहेनारा तथा जलाशयोथी दूरना प्रदेशोमां रेहेनारा होय तेओनुं मांस थोडीक शरदी करनारूं छे अने जे जांगल पशुओ तथा पक्षीओ गामोना अत्यंत समीपमां रेहेनारा तथा जलाशयोना समीपमां रेहेनारा होय तेओनुं मांस बहु शरदी करनारूं छे.

४२ आनूपवर्गस्तु पंचविधः । तद्यथा । कूलचराः प्लवाः कोशस्थाः पादिनो मत्स्याश्चेति।

आनूप वर्गना पांच प्रकार अने तेओनां नामो.

४२ कूलचर, प्लव, कोशस्थ, पादी अने मत्स्य ए रीते आनूप वर्ग पांच प्रकारनो छे.

४३ तत्र गजगवयमहिषरुरुचमरसृमररोहितवराहखड्गिगोकर्णकालपुच्छकौन्द्रन्यङ्कुरण्यगवयप्रभृतयः कूलचराः पशवः ॥
वातपित्तहरा वृष्या मधुरा रसपाकयोः ।
शीतला बलिनः स्निग्धा मूत्रलाः कफवर्द्धनाः॥
विरूक्षणो लेखनश्च वीर्योष्णः पित्तदूषणः ।
स्वाद्वम्ललवणस्तेषां गजः श्लेष्मानिलापहः ॥
गवयस्य तु मांसं हि स्निग्धं मधुरकासजित् ।
विपाके मधुरं चापि व्यवायस्य तु वर्द्धनम् ॥
स्निग्धोष्णमधुरो वृष्यो महिषस्तर्पणो गुरुः ।
निद्रापुंस्त्वबलस्तन्यवर्द्धनो मांसदार्ढ्यकृत् ॥
रुरुमांसं समधुरं कषायानुरसं स्मृतम् ।
वातपित्तोपशमनं गुरु शुक्रप्रवर्द्धनम् ॥
तथा चमरमांसं तु स्निग्धं मधुरकासजित् ।
विपाके मधुरं चापि वातपित्तप्रणाशनम् ॥
सृमरस्य तु मांसं च कषायानुरसं स्मृतम् ।
वातपित्तोपशमनं गुरु शुक्रविवर्द्धनम् ॥
स्वेदनं बृंहणं वृष्यं शीतलं तर्पणं गुरु ।
स्निग्धं श्रमानिलहरं वाराहं बलवर्द्धनम् ॥

कफघ्नं खङ्गिपिशितं कषायमनिलापहम् ॥
पित्र्यं पवित्रमायुष्यं बद्धमूत्रं विरूक्षणम् ।
गोकर्णमांसं मधुरं स्निग्धं मृदु कफावहम् ॥
विपाके मधुरं चापि रक्तपित्तविनाशनम् ॥

कूलचरो तथा तेओना मांसना गुणो.

४३ हाथी, गवय, पाडा, रुरु, चमर (जेनां पूछडांनां चामर थाय छे ते) सृमर, (प्रबल गतिवाळो मोटो सूवर) रोहित, (राता वर्णवाळो मृगविशेष) सूवर, गेंडा, गोकर्ण, (गायना जेवा कानवाळो मृगविशेष) कालपुच्छक, (चंचल थता श्याम पूछडांवाळो मृगविशेष) ओन्द्र, (पाणीनो बीलाडो) न्यंकु, (सावरनी जात छे) अने जंगली गवय इत्यादि पशुओ जलाशयोना कीनाराओमां फरे छे तथा चरे छे तेथी कूलचरो केहेवाय छे.

कूलचरोनुं मांस वायुने तथा पित्तने हरनार छे, वीर्यने वधारनार छे, रसमां तथा पाकमां मधुर छे, टाढुं छे, बळ आपनार छे, स्निग्ध छे, अने मूत्रने तथा कफने वधारनार छे. (कूलचरोमां केटलाएकनां मांसो उष्ण पण छे.)

एओमां हाथीनुं मांस रूक्षता करनार छे, कफ वगेरेने उखेडनार छे, उष्ण वीर्यवाळुं छे, पित्तने प्रकुपित करनार छे, मधुर खाटो तथा खारो ए त्रण रसोथी युक्त छे अने कफने तथा पवनने टाळनार छे.

गवयनुं मांस स्निग्ध छे, मधुर छे, खांसीने टाळनार छे, विपाकमां पण मधुर छे अने मैथुन शक्तिने वधारनार छे.

पाडानुं मांस स्निग्ध छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, मधुर छे, वीर्यने वधारनार छे, तृप्ति आपनार छे, भारे छे, निद्राने, पुरुषपणाने, बळने तथा धावणने वधारनार छे अने मांसनी मजबूती करनार छे.

रुरुनुं मांस मधुर छे, पेटामां तूरूं छे, वायुने तथा पित्तने शमावनार छे, भारे छे अने वीर्यने वधारनार छे.

चमरनुं मांस स्निग्ध छे, मधुर छे, खांसीने टाळनार छे, विपाकमां पण मधुर छे अने वायुने तथा पित्तने नष्ट करनार छे.

सृमरनुं मांस पेटामां तूरा रसवाळुं छे, वायुने तथा पित्तने शमावनार छे, भारे छे अने वीर्यने वधारनार छे.

सूवरनुं मांस पसीनो आपनार छे, पुष्टि आपनार छे, वीर्यने वधारनार छे, टाढुं छे, तृप्ति आपनार छे, भारे छे, स्निग्ध छे, श्रमने तथा वायुने हरनार छे अने बळने वधारनार छे.

गेंडानुं मांस कफने हणनार छे, तूरूं छे, वायुने हणनार छे, श्राद्धमां वापरवाथी पितृओने प्रसन्न करे एवु छे, पवित्र छे, आयुष्यने वधारनार छे, मूत्रने रोकनार छे अने कांइक रूक्ष छे.

गोकर्णनुं मांस मधुर छे, स्निग्ध छे, कोमळ छे, कफने वधारनार छे, विपाकमां पण मधुर छे अने रक्तपित्तनो विनाश करनार छे.

४४ हंससारसक्रौञ्चचक्रवाककुररकादम्ब-
कारीमुखनन्दिमुखमद्गुत्कोशकाचाक्षमल्लिकाक्ष-
शुक्लाक्षपुष्करशायिकाकोनालकाम्बुकुक्कुटिका-
मेघरावश्वेतचरणप्रभृतयः प्लवाः संघातचारिणः।
रक्तपित्तहराः शीताः स्निग्धा वृष्या मरुज्जितः।
सृष्टमूत्रपुरीषाश्च मधुरा रसपाकयोः ॥
गुरूष्णमधुरः स्निग्धः स्वरवर्णबलप्रदः ।
बृंहणः शुक्रलस्तेषां हंसो मारुतनाशनः

प्लव पक्षीओ तथा तेओना मांसना गुणो.

४४ हंस, सारस, कुंझ, चक्रवाक, टीटोडो,

१ सावर जेवांज घणां विकट शींगडांवाळो, सावरना जेवा आकारवाळो, भारे अवाज करनारो अने शरद् ऋतुमां शींगडांनो त्याग करनारो मृग रुरु केहेवाय छे.

(प्रसहोमां पण टीटोडानो पाठ छे तेथी तेमां बन्ने जातना गुणो छे एम समजवुं.) बतक, कारंडव, (लांबा पगवाळो काळो जलचर पक्षी) जीवंजीव, (मोर जेवां पीछांवाळो अने जेना दर्शनथी विषनो नाश थाय छे ते) बलाका, (बगलानी एक जात) पुंडरीक, प्लव, शरारीमुख, नंदिमुख, जळनो कागडो, उत्क्रोश, (टीटोडानी एक जात) काचाक्ष, मल्लिकाक्ष, (जेनां चांच तथा पग कांइक धूम्रवर्णवाळां होय एवो सफेद हंस,) शुक्राक्ष, पुष्करशायिका, कोनालक, जलकुकडी, बपैयो (आनो विष्किरोमां पण पाठ छे तेथी तेमां बन्ने जातना गुणो समजवा.) अने श्वेतचरण, (मोटा कदवाळी बगलानी जात) इत्यादि पक्षीओ पाणीमां तरे छे तेथी प्लव केहेवाय छे अने तेओ पोताना जथामां फरनारां छे.

प्लवोनुं मांस रक्तपित्तने तथा वायुने हरनार छे, स्निग्ध छे, टाढुं छे, वीर्यवर्द्धक छे, विष्टानी तथा मूत्रनी प्रवृत्ति करनार छे अने रसमां तथा विपाकमां मधुर छे.

एओमां हंसनुं मांस भारे छे, उष्ण छे, मधुर छे, स्निग्ध छे, स्वरने, वर्णने तथा बलने देनार छे, वीर्यने वधारनार छे अने वायुने नष्ट करनार छे.

४५ शङ्खशङ्खनखशुक्तिशम्बूकभल्लूकप्रभृतयः कोशस्थाः ।
कूर्मकुम्भीरकर्कटककृष्णकर्कटकशिशुमारप्रभृतयः पादिनः ॥
शङ्खकूर्मादयः स्वादुरसपाका मरुन्नुदः ।
शीताः स्निग्धा हिताः पित्ते वर्चस्याः श्लेष्मवर्द्धनाः
कृष्णकर्कटकस्तेषां बल्यः कोष्णोऽनिलापहः
शुक्लः संधानकृत्सृष्टविण्मूत्रोऽनिलपित्तहा ॥

कोशस्थो तथा पादिओ अने तेओना मांसना गुणो.

४५ शंखना जीवडा, शंखलांनां जीवडा, छीपना जीवडा, कडाना जीवडा, अने भल्लूक (मोटा कडाना जीवडा) इत्यादि प्राणीओ संपुटोमां रेहेनारा छे तेथी कोशस्थ केहेवाय छे.

काचबा, कुंभीर, सफेद कुडचल, काळो कुडचळ अने शिशुमारक (दरीयाई कूतरो) इत्यादि जळजंतुओ पगवाळां छे तेथी पादी केहेवाय छे.

कोशस्थ अने पादी ए बन्ने जातना जलजंतुओनां मांसो रसमां तथा विपाकमां मधुर छे, वायुने तोडनारां छे, टाढां छे, स्निग्ध छे, पित्त उपर हितकारी छे, विष्टाने ठीक करनारां छे अने कफने वधारनारां छे.

एओमां काळा कुडचलनुं मांस बळ आपनार छे, जराक उष्णवीर्यवाळुं छे अने वायुने नष्ट करनार छे.

सफेद कुडचलनुं मांस भांगाने सांधनार छे, विष्टानी तथा मूत्रनी प्रवृत्ति करनार छे अने वायुने तथा पित्तने हणनार छे.

४६ मत्स्यास्तु द्विविधा नादेयाः सामुद्राश्च ।

मत्स्योना बे भेद.

४६ नादेय अने सामुद्र ए रीते मत्स्यो बे प्रकारना छे.

४७ रोहितपाठीनपाटलाराजीववर्मिगोमत्स्यकृष्णमत्स्यवागुञ्जारमुरलसहस्रदंष्ट्रप्रभृतयो नादेयाः ॥
नादेया मधुरा मत्स्या गुरवो मारुतापहाः ।
रक्तपित्तकराश्चोष्णा वृष्याः स्निग्धाल्पवर्चसः ॥
कषायानुरसास्तेषां शष्पशैवालभोजिनः ।
रोहितो मारुतहरो नात्यर्थं पित्तकोपनः ॥
पाठीनः श्लेष्मलो वृष्यो निद्रालुः पिशिताशनः ।
दूषयेद्रक्तपित्तं तु कुष्ठरोगं करोत्यसौ ॥
मुरलो बृंहणो वृष्यः स्तन्यश्लेष्मकरस्तथा ।
सरस्तडागसम्भूताः स्निग्धाः स्वादुरसाः स्मृताः
महाह्रदेषु बलिनः स्वल्पेऽम्भस्यबलाः स्मृताः ॥

नादेय मत्स्यो अने तेओना गुणो.

४७ रोहित, (रोहीडो) पाठीन, (लांबो नि-

मेळ तथा पांखो वगरनो) पाटला, राजीव, वर्मी, (सर्प जेवा आकारवाळो) गोमत्स्य, कृष्णमत्स्य, (घणा कांटावाळो तथा राती आंख्योवाळो) वागुंजार, मुरल अने सहस्रदंष्ट्र (घणी दाढोवाळो) इत्यादि जातना मत्स्यो नादेय केहेवाय छे. (मछीमारलोकोने पूछी पूछीने मत्स्योने ओळखी लेवा.)

नादेय मत्स्यो मधुर छे, भारे छे, वायुने तोडनारा छे, रक्तपित्तने करनारा छे, उष्णवीर्यवाळा छे, वीर्यने वधारनारा छे अने जेओथी विष्टा थोडी तथा स्निग्ध थाय एवा छे.

एओमां जे मत्स्यो लीलां खडने तथा शैवाळने खाय छे तेओ कांईक तूरा रसवाळा छे.

इत वायुने हरनार छे अने पित्तने अत्यंत प्रकुपित करनार नथी.

मांसनुं भक्षण करनारो पाठीन कफ करनार छे, वीर्यने वधारनार छे, निद्रा आपनार छे, अम्लपित्तने दूषित करनार छे अने कोढने उत्पन्न करनार छे.

मुरल पुष्टि आपनार छे, वीर्यने वधारनार छे अने धावणने तथा कफने उत्पन्न करनार छे.

स्वाभाविक तळावोना तथा माणसोए खोदीने करेलां तळावोना मत्स्यो स्निग्ध छे अने मधुर रसवाळा छे.

मोटा जलाशयोना मत्स्यो बळ आपनारा छे अने नाहाना जलाशयोना मत्स्यो बळ आपनारा नथी.

४८ तिमितिमिङ्गिलकुलिशपाकमत्स्यनिरालकनन्दिवारलकमकरगर्गरकचन्द्रकमहामीनराजीवप्रभृतयः सामुद्राः ॥
सामुद्रा गुरवः स्निग्धा मधुरा नातिपित्तलाः ।
उष्णा वातहरा वृष्या वर्चस्याः श्लेष्मवर्द्धनाः॥
बलावहा विशेषेण मांसाशित्वात्समुद्रजाः ।

सामुद्रमत्स्यो अने तेओना गुणदोषो.

४८ तिमि, (अतिमोटो मत्स्य) तिमिंगिल, (तेथी पण अत्यंत मोटो मत्स्य) कुलिश, पाकमत्स्य, निरालक, नंदिवारलक, मघर, गर्गरक, चंद्रक (पडखामां कांटावाळो गोळ मत्स्य) महामीन अने राजीव इत्यादि जातना मत्स्यो सामुद्र केहेवाय छे.

सामुद्रमत्स्यो भारे छे, स्निग्ध, छे, मधुर छे, जराक पित्त करनारा छे, उष्णवीर्यवाळा छे, वायुने हरनारा छे, वीर्यने वधारनारा छे, विष्टाने ठीक करनारा छे अने कफने वधारनारा छे. सामुद्रमत्स्यो मांसभक्षक होवाने लीधे विशेषे करी बळ आपनारा छे.

४९तेषामप्यनिलघ्नत्वाचौण्ट्यकौप्यौ गुणोत्तरौ स्निग्धत्वात्स्वादुपाकत्वात्तयोर्वाप्या गुणोत्तराः ।

बांध्या वगरना कुवाना, बांधेला कुवाना अने वावना मत्स्योना गुणो.

४९ नादेय मत्स्योमां बांध्या वगरना कुवाना मत्स्यो अने बांधेला कुवाना मत्स्यो उत्तम गुणोवाळा छे. एओथी पण वावना मत्स्यो स्निग्ध होवाने लीधे तथा मधुर पाकवाळा होवाने लीधे विशेष गुणोवाळा छे.

५० नादेया गुरवो मध्ये यस्मात्पुच्छास्यचारिणः।
सरस्तडागजानां तु विशेषेण शिरो लघु ॥
अदूरगोचरा यस्मात्तस्मादुत्सोदपानजाः ।
किंचिन्मुक्त्वा शिरोदेशमत्यर्थं गुरवस्तु ते ।
अधस्ताद्गुरवो ज्ञेया मत्स्याः सरसिजाः स्मृताः ॥
उरोविचरणात्तेषां पूर्वमङ्गं लघु स्मृतम् ॥
इत्यानूपो महाभिष्यन्दिमांसवर्गो व्याख्यातः

नदी वगेरेना मत्स्योना कया अवयवो हलका होय छे अने कया अवयवो भारे होय छे ?

५० नदीना मत्स्यो पूछडाथी तथा मोहोडाथी गति करनारा छे माटे तेओ मध्यभागमां भारे होय छे. स्वाभाविक तळावोना तथा खोदीने करेलां तळावोना मत्स्योनां माथां विशेषेकरी हलकां होय

छे. पर्वतोना झरणांओना मत्स्यो बहुज थोडो व्यायाम करनारा होय छे तेथी कांईक माथाना भाग विना तेओना बाकीना सघळा अवयवो अत्यंत भारे होय छे. मोटा तळावोना मत्स्योना नीचेना अवयवो भारे होय छे. ए मत्स्यो छातीथी गति करी छे माटे तेओना छातीथी उपरना अवयवो हलका गणवामां आवे छे.

आ प्रमाणे आनूप मांसवर्ग के जे भारे अभिष्यंदी (स्रोतो वगेरेने क्लेदयुक्त करनार–शरदी करनार) छे तेओनुं व्याख्यान कह्युं.

५१ तत्र शुष्कपूतिव्याधितविषसर्पहतदिग्धविद्धजीर्णकृशबालानामसात्म्यचारिणां मांसान्यभक्ष्याणि यस्माद्विगतव्यापन्नापहतपरिणताल्पासंपूर्णवीर्यत्वाद्दोषकराणि भवन्ति ॥
अरोचकं प्रतिश्यायं गुरु शुष्कं प्रकीर्त्तितम् ।
विषव्याधिहतं मृत्युं बालं छर्दिं च कोपयेत् ॥
कासश्वासकरं वृद्धं त्रिदोषं व्याधिदूषितम् ।
क्लिन्नमुत्क्लेशजननं कृशं वातप्रकोपणम् ।
एभ्योऽन्येषामुपादेयं मांसमिति ॥

केवां मांसोने छोडी देवां ?

५१ सुकाएलुं मांस, दुर्गंधवाळुं (सडेलुं) मांस, रोगवाळा प्राणिनुं मांस, झेरथी मरेला प्राणिनुं मांस, सर्पथी मरेलानुं मांस, झेरथी खरडेला शस्त्रादिकथी वींधाएला प्राणीनुं मांस, वृद्ध प्राणीनुं मांस, दुर्बल प्राणीनुं मांस, बालक प्राणीनुं मांस अने असात्म्य आहार करनारा प्राणीनुं मांस एओनुं भक्षण करवुं नहीं. कारण के ए मांसो निर्वीर्य, बगडेला वीर्यवाळां, हणाएलां वीर्यवाळां, जूना थएला वीर्यवाळां, अल्पवीर्यवाळां अने असंपूर्ण वीर्यवाळां होवाने लीधे दोषोने करनारां छे.

सूकाएलुं मांस अरुचि करनार छे, प्रतिश्याय नामना रोगने उत्पन्न करे छे अने भारे छे. रोगी प्राणीनुं मांस तथा विषथी मरेला प्राणीनुं मांस मरण आपे छे. बालक प्राणीनुं मांस उलटी करावे छे. वृद्ध प्राणीनुं मांस खांसीने तथा श्वासने उत्पन्न करे छे. व्याधिथी मरण पामेला प्राणीनुं मांस त्रणे दोषोने उत्पन्न करे छे. सडेलुं मांस उत्क्लेश करे छे (उछाळा आणे छे) अने दुबळा प्राणीनुं मांस वायुने प्रकुपित करे छे. जे मांस उपर कहेला दोषोथी रहित होय तेनुं ग्रहण करवुं.

५२ स्त्रियश्चतुष्पादेषु पुमांसो विहङ्गेषु महाशरीरेष्वल्पशरीरा अल्पशरीरेषु महाशरीराः प्रधानतमा एवमेकजातीयानां महाशरीरेभ्यः कृशशरीराः प्रधानतमाः ॥

जातिउपरथी तथा शरीरना नाहाना मोटा कदउपरथी मांसनी उत्तमता.

५२ पशुओमां स्त्रीजातिनुं मांस श्रेष्ठ छे, पक्षीओमां पुरुषजातिनुं मांस श्रेष्ठ छे, मोटा शरीरवाळां प्राणीओमां नाहानां शरीरवाळां प्राणीओनुं मांस श्रेष्ठ छे, नाहानां शरीरवाळां प्राणीओमां मोटा शरीरवाळां प्राणीनुं मांस श्रेष्ठ छे अने एक जातनां प्राणिओमां मोटां शरीरवाळां करतां कृश शरीरवाळानुं मांस श्रेष्ठ छे.

५३ स्थानादिकृतं मांसस्य गुरुलाघवमुपदेक्ष्यामः । तद्यथा रक्तादिषु शुक्रान्तेषु धातुषूत्तरोत्तरास्तु गुरुतरास्तथा सक्थिस्कन्धक्रोडशिरःपादकरकटीपृष्ठचर्मकालेयकयकृदन्त्राणि ॥
शिरःस्कन्धं कटीपृष्ठं सक्थिनी चात्मपक्षयोः ।
गुरुपूर्वं विजानीयाद्धातवस्तु यथोत्तरम् ॥
सर्वस्य प्राणिनो देहे मध्यो गुरुरुदाहृतः ॥
पूर्वभागो गुरुः पुंसामधोभागस्तु योषिताम् ॥
उरोग्रीवं विहङ्गानां विशेषेण गुरु स्मृतम् ।
पक्षोत्क्षेपात्समो दिष्टो मध्यभागस्तु पक्षिणाम् ॥

शरीरोना प्रदेशोने लीधे मांसनुं भारेपणुं तथा हलकापणुं.

५३ हवे स्थान वगेरेने लीधे मांसनां भारेपणानो तथा हलकापणानो उपदेश करीएछीए.

जेम रुधिरथी मांडीने वीर्य सुधीना धातुओमां उत्तरोत्तर धातुओ वधारे भारे छे तेम साथळ, खभा, हृदय, माथुं, पग, हाथ, कमर, पीठ, चामडी, कालेयक, (बुक्का-काळजुं) जमणा पडखानी गांठ अने आंतरडां उत्तरोत्तर भारे छे.

खभा करतां माथुं भारे छे, पीठ करतां कमर भारे छे अने साथळोमां उत्तर भाग करतां पूर्वभाग भारे छे. रुधिरथी मांडीने वीर्यपर्यंत धातुओ शरीरना उत्तरोत्तर भागोमां उत्तरोत्तर भारे छे. सर्व प्राणीओनां शरीरोमां मध्य भाग भारे छे. पुरुषोनां शरीरोनो उपरनो भाग भारे होय छे अने स्त्रीओनां शरीरोनो नीचेनो भाग भारे होय छे. पक्षीओनां छाती तथा कंठ वधारे भारे होय छे अने पांखो फफडाववाने लीधे मध्य भाग सम होय छे.

५४ अतीव रूक्षं मांसं तु विहङ्गानां फलाशिनाम्
बृंहणं मांसमत्यर्थं खगानां पिशिताशिनाम् ॥
मत्स्याशिनां पित्तकरं वातघ्नं धान्यचारिणाम् ।

आहारना विशेष उपरथी मांसमां विशेष.

५४ फळ खानारां पक्षीओनुं मांस अत्यंत रूक्ष होय छे, मांस खानारां पक्षीओनुं मांस अत्यंत पुष्टिकारक होय छे, मत्स्य खानारां पक्षीओनुं मांस पित्त करनार होय छे अने धान्य खानारां पक्षीओनुं मांस वायुने हणनार होय छे.

५५ जलजानूपजा ग्राम्या क्रव्यादेकशफास्तथा॥
प्रसहा बिलवासाश्च ये च जङ्घालसंज्ञिताः ।
प्रतुदा विष्किराश्चैव लघवः स्युर्यथोत्तरम् ॥
अल्पाभिष्यन्दिनश्चैव यथापूर्वमतोऽन्यथा ॥

उपर कहेला सघळा वर्गोनां मांसोमां उत्तरोत्तर वर्गना मांसनुं हलकापणुं.

५५ जलचर, आनूप, ग्राम्य, मांसभक्षक, एक खरीवाळां, प्रसह, बिलेशय, जंघाल, प्रतुद अने विष्किर एओमां उत्तरोत्तरनां मांसो पूर्व पूर्वनां मांसो करतां हलकां छे अने थोडां अभिष्यंदी (शरदी करनारां) छे. उत्तरोत्तरवर्गनां मांसो करतां पूर्वपूर्व वर्गनां मांसो भारे छे तथा वधारे अभिष्यंदी छे.

५६ प्रमाणाधिकास्तु स्वजातौ चाल्पसारा गुरवश्च ।

एक जातिनां पशु पक्षीओ वगेरेमां कदावरनुं मांस सारूं नथी.

५६ एक जातिनां पशु पक्षीओ वगेरेमां जेओ मोटां कदवाळां होय तेओनुं मांस अल्पसारवाळुं छे अने भारे छे.

५७ सर्वप्राणिनां सर्वशरीरेभ्यो ये प्रधानतमा भवन्ति यकृत्प्रदेशवर्तिनस्तानाददीत प्रधानलाभाभावे मध्यमवयस्कं सद्यस्कमक्लिष्टमुपादेयं मांसमिति ॥

शरीरना कया प्रदेशनुं मांस अति उत्तम छे.

५७ सर्व प्राणीओनां सर्व शरीरोमां जमणा पडखानी गांठना प्रदेशमां रेहेनारी जे लांबी लांबी मांसनी वाटो होय छे तेओ अति श्रेष्ठ छे माटे तेओनुं ग्रहण करवुं. आ जे मुख्य स्थाननुं मांस कह्युं छे ते जो न मळे तो पछी मध्यम वयवाळा प्राणीनुं जे ताजुं अने अनुकूल तथा निर्दोष मांस होय ते लेवुं.

५८ भवति चात्र ॥
वयःशरीरावयवाः स्वभावो धातवः क्रियाः ।
लिङ्गं प्रमाणं संस्कारो मात्रा चास्मिन्परीक्षिता ॥

मांसवर्गनो संक्षिप्त सार.

५८ आ स्थलना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "प्राणीओनी अवस्था, शरीरना अवयवो, आहार विहार आदि स्वभाव, एक अवयवना पण पूर्वोत्तर भागो, चलन आदि क्रियाओ, स्त्री पुरुषरूप जाति, शरीरनां कद, रांधवा वगेरेनो संस्कार अने मात्रा

एटला विषयोनुं अवेक्षण करीने मांसनुं हलकापणुं, भारेपणुं तथा स्निग्ध रूक्षादिकपणुं—इत्यादिकनो निर्णय करवो.

इति मांसवर्गः

५९ अत ऊर्ध्वं फलवर्गानुपदेक्ष्यामः । तद्यथा । दाडिमामलकबदरकोलकर्कन्धुसौवीरसिम्बितिकाफलकपित्थमातुलुङ्गाम्राम्रातककरमर्दप्रियाललकुचभव्यपारावतवेत्रफलप्राचीनामलकतिन्तिडीकनीपकोशाम्राम्लिकानारङ्गजम्बीरप्रभृतीनि ॥

अम्लानि रसतः पाके गुरूण्युष्णानि वीर्यतः ।
पित्तलान्यनिलघ्नानि कफोत्क्लेशकराणि च ॥

दाडिम वगेरे फळो तथा तेओना सामान्य गुणो.

५९ हवे फळोना वर्गो कहीएछीए. दाडिम, आमळां, बोर, नाहानां बोर, चणीयां बोर, खारेक जेवां लांबां बोर, मुठी जेवां मोटां मीठां बोर, कोठ, बीजोरां, आंबां, अंबाडां, करमदां, चारोली, लकुच, (नाहानां फनस) ओटनां फळ, अनन्नास, नेतरनां फळ, पाणीआमळां, कोकम, कदंबनां फळ, पाहाडी आंबानां फळ, आंबलीनां फळ, नारंगी अने खाटां लींबू एओ वगेरेना सामान्य गुणो नीचेप्रमाणे छे.

उपर कहेलां फळो खाटा रसवाळां छे, पाकमां भारे छे, उष्णवीर्यवाळां छे, पित्तने उत्पन्न करनारां छे, वायुने हणनारां छे अने कफनो उत्क्लेश (खबखबाट) करनारां छे.

६० कषायानुरसं तेषां दाडिमं नातिपित्तलम् ।
दीपनीयं रुचिकरं हृद्यं वर्चोविबन्धनम् ॥
द्विविधं तत्तु विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च ।
त्रिदोषघ्नं च मधुरमम्लं वातकफापहम् ॥

दाडिमना विशेष गुणदोष.

६० एओमां दाडिम पेटामां तूरा रसवाळुं छे, जराक पित्त करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, रुचि उपजावनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे अने विष्टाने रोकनार छे. दाडिम मीठुं अने खाटुं एम बे प्रकारनुं थाय छे तेओमां मीठुं दाडिम त्रणे दोषोने हणनार छे अने खाटुं दाडिम वायुने तथा कफने हणनार छे.

६१ अम्लं समधुरं तिक्तं कषायं कटुकं सरम् ।
चक्षुष्यं सर्वदोषघ्नं वृष्यमामलकीफलम्
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः ।
कफं रूक्षकषायत्वात्फलेभ्योऽभ्यधिकं च तत्

आमळाना विशेष गुणो.

६१ आमळां खाटां छे, मधुर रसवाळां छे, कडवां छे, तूरां छे, तीखां छे, दस्त लगाडनारां छे, नेत्रोने हितकारी छे, सर्व दोषोने हणनारां छे अने वीर्यने वधारनारां छे. आमळां खाटापणाने लीधे वायुने हणे छे, मधुरपणाने लीधे तथा शीतपणाने लीधे पित्तने हणे छे अने रूक्षपणाने लीधे तथा तूरापणाने लीधे वायुने पण हणे छे माटे सघळां फळोमां आमळां श्रेष्ठ छे.

६२ कर्कन्धुकोलबदरमामं पित्तकफावहम् ।
पक्वं पित्तानिलहरं स्निग्धं समधुरं सरम् ॥
पुरातनं तृट्छमनं श्रमघ्नं दीपनं लघु ।
सौवीरं बदरं स्निग्धं मधुरं वातपित्तजित् ॥

बोरना विशेष गुणो.

६२ चणीयां बोर, नाहानां बोर अने सामान्य बोर एओ काचां होय तो पित्तने तथा कफने उत्पन्न करे छे, पाकां होय तो पित्तने तथा वायुने हरे छे, स्निग्ध छे, मधुर रसवाळां छे अने दस्त लगाडनार छे. सुकाएलां जूनां बोर तृषाने शांत करनारां छे, श्रमने हणनारां छे, अग्निने दीप्त करनारां छे अने हलकां छे.

खारेक जेवां लांबा मीठां बोर स्निग्ध छे, मधुर छे अने वायुने तथा पित्तने जीतनारां छे.

६३ कषायं स्वादु संग्राहि शीतं सिम्बितिकाफलम् ।

सेवफळ (मुठी जेवां मोटां मीठां बोर) ना विशेष गुणो.

६३ सेवफळ तूरूं छे, मधुर छे, द्रवने सूकावनार छे अने शीत वीर्यवाळुं छे.

६४ आमं कपित्थमस्वर्यं कफघ्नं ग्राहि वातलम्।
कफानिलहरं पक्वं मधुराम्लरसं गुरु ।

कोठना विशेष गुणो.

६४ काचुं कोठ स्वरने बगाडनार छे, कफने हणनार छे, द्रवने सूकावनार छे तथा वायुने उत्पन्न करनार छे अने पाकुं कोठ कफने तथा वायुने हरनार छे, मधुर तथा खाटा रसवाळुं छे तथा भारे छे.

६५ श्वासकासारुचिहरं तृष्णाघ्नं कण्ठशोधनम्॥
लघ्वम्लं दीपनं हृद्यं मातुलुङ्गमुदाहृतम् ।
त्वक्तिक्ता दुर्जरा तस्य वातक्रिमिकफापहा ॥
स्वादु शीतं गुरु स्निग्धं मांसं मारुतपित्तजित्।
मेध्यं शूलानिलच्छर्दिकफारोचकनाशनम् ॥
दीपनं लघु संग्राहि गुल्मार्शोघ्नं तु केसरम् ।
शूलाजीर्णविबन्धेषु मन्दाग्नौ कफमारुते ॥
अरुचौ च विशेषेण रसस्तस्योपदिश्यते ।
पित्तानिलकरं बालं पित्तलं बद्धकेसरम् ॥
हृद्यं वर्णकरं रुच्यं रक्तमांसबलप्रदम् ।

बीजोरांना विशेष गुणो.

६५ बीजोरूं कंठने स्वच्छ करनार छे, हलकुं छे, खाटुं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, प्रिय लागे एवुं छे अने श्वास, खांसी, अरुचि तथा तरश एओने हरनार छे. बीजोरांनी छाल कडवी छे, मांड पचे एवी छे अने वायु, कृमिओ तथा कफ एओने हणनारी छे. बीजोरांनो गर्भ मधुर छे, टाढो छे, भारे छे, स्निग्ध छे अने वायुने तथा पित्तने टाळनार छे. बीजोरांना तंतुओ बुद्धिने वधारनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, हलका छे, द्रवनुं शोषण करनार छे अने शूळ, वायु, उलटी, कफ, गुल्म, अरश तथा अरोचक एओने नष्ट करनार छे. शूळ, अजीर्ण, मलबंध, अग्निनुं मंदपणुं, कफसहित वायु अने अरुचि एटलां दरदोमां बीजोरांनो रस विशेष उपयोगी छे. नाहानुं बीजोरूं पित्तने तथा वायुने करनारूं छे. जेमां तंतुओ बंधाई गया होय एवुं बीजोरूं पित्तने उत्पन्न करनार छे, प्रिय लागे एवुं छे, वर्णने सारो करनार छे, रुचि उपजावनार छे अने रुधिरने, मांसने तथा बळने आपनार छे.

६६ कषायानुरसं स्वादु वातघ्नं बृंहणं गुरु ॥
पित्ताविरोधि संपक्वमाम्रं शुक्रविवर्द्धनम् ।

आंबाना फळना विशेष गुणो.

६६ पाकेलुं आंबानुं फळ मधुर छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे, वायुने हणनार छे, पुष्टि आपनार छे, भारे छे, पित्तने जराक शांत करनार छे अने वीर्यने वधारनार छे.

६७ बृंहणं मधुरं बल्यं गुरु विष्टभ्य जीर्यति
आम्रातकफलं वृष्यं सस्नेहं श्लेष्मवर्द्धनम् ।

अंबाडाना विशेष गुणो.

६७ अंबाडानुं फळ पुष्टि आपनार छे, मधुर रसवाळुं पण छे, बळने वधारनार छे, भारे छे, घणी वारसुधी पेटमां पीडा करीने पछी पचे छे, वीर्यने तथा कफने वधारनार छे अने स्निग्ध छे.

६८ त्रिदोषविष्टम्भकरं लकुचं शुक्रनाशनम् ॥

नाहाना फनसना विशेष गुणो.

६८ नाहानुं (जंगली) फनस त्रणे दोषोने करनार छे, मळनी कबजीयत करनार छे, अने वीर्यनो नाश करनार छे.

६९ अम्लं तृष्णापहं रुच्यं पित्तकृत्करमर्दकम्।

करमदांना विशेष गुणो.

६९ करमदां खाटां छे, तरशने मटाडनार छे, रुचि उपजावनार छे अने पित्त करनार छे.

७० वातपित्तहरं वृष्यं प्रियालं गुरु शीतलम्॥

चारोलीना विशेष गुणो.

७० चारोली वायुने तथा पित्तने हरनार छे, वीर्यने वधारनार छे, भारे छे अने थंडी छे.

७१ हृद्यं स्वादु कषायाम्लं भव्यमास्यविशोधनम्
पित्तश्लेष्महरं ग्राहि गुरु विष्टम्भि शीतलम् ॥

ओटना फलना विशेष गुणो.

७१ ओटनुं फल प्रिय लागे एवुं छे, मधुर छे, तूरूं तथा खाटुं छे, मुखने स्वच्छ करनार छे, पित्तने तथा कफने हरनार छे, द्रवने सूकावनार छे, भारे छे, पेटमां गडगडाट करनारूं छे अने टाढुं छे.

७२ पारावतं समधुरं रुच्यमत्यग्निवातनुत् ।

अनन्नासना विशेष गुणो.

७२ अनन्नास मधुरतावाळुं छे, रुचि करनार छे अने अग्निने तथा वायुने अत्यंत टाळनार छे.

७३ गरदोषहरं नीपं प्राचीनामलकं तथा ॥

कदंबनां फळ तथा पाणीआमळां एओना विशेष गुणो.

७३ कदंबनां फळ झेरना दोषने हरे छे अने पाणीआमळां पण तेवाज गुणोवाळां छे.

७४ वातापहं तिन्तिडीकमामं पित्तबलासकृत् ।
ग्राह्युष्णं दीपनं रुच्यं संपक्कं कफवातनुत् ॥
तस्मादल्पान्तरगुणं कोशाम्रफलमुच्यते ।
अम्लिकायाः फलं पक्कं तद्वद्भेदि तु केवलम् ॥

कोकम, पाहाडी आंबानां फळ तथा आबलीनां फळ एओना विशेष गुणो.

७४ काचुं कोकम वायुने हणनार छे अने पित्तने तथा कफने करनार छे. पाकुं कोकम द्रवने सूकावनार छे, उष्ण छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने कफने तथा वायुने टाळनार छे. पाहाडी आंबानां फळ कोकम करतां थोडाज न्यून गुणोवाळां छे. आंबलीनुं पाकुं फळ पण एवुंज छे परंतु मलने पाडनार छे.

७५ अम्लं समधुरं हृद्यं विशदं भक्तरोचनम् ।
वातघ्नं दुर्जरं प्रोक्तं नारङ्गस्य फलं गुरु ॥

नारंगीना विशेष गुणो.

७५ नारंगीनुं फळ खाटुं छे, मधुरता वाळुं छे, प्रिय लागे एवुं छे, चीकाशवाळुं नथी, अन्न उपर रुचि करावनार छे, वायुने हणनार छे, मांड पचे एवुं छे अने भारे छे.

७६ तृष्णाशूलकफोत्क्लेशच्छर्दिश्वासनिवारणम्
वातश्लेष्मविबन्धघ्नं जम्बीरं गुरु पित्तकृत्

खाटा लींबूना विशेष गुणो.

७६ खाटुं लींबू वायुने, कफने तथा मळबंधने तोडनार छे, भारे छे, पित्त करनार छे अने तरश, शूळ, कफनो उत्क्लेश, उलटी तथा श्वास एओनुं निवारण करनार छे.

७७ ऐरावतं दन्तशठमम्लं शोणितपित्तकृत् ।

दोडींगा लींबूना गुणो.

७७ दोडींगुं लींबू खाटुं छे अने रुधिरने तथा पित्तने वधानार छे.

७८ क्षीरवृक्षफलजाम्बवराजादनतोदनतिन्दुकबकुलधन्वनाश्मन्तकाश्वकर्णफल्गुपरूपकगाङ्गेरुकीपुष्करवर्तिबिल्वबिम्बीप्रभृतीनि ॥
फलान्येतानि शीतानि कफपित्तहराणि च ।
संग्राहकाणि रूक्षाणि कषायमधुराणि च ॥

क्षीरवृक्षादिकनां फळो अने तेओना सामान्य गुणो.

७८ वड, उंबरो, पीपळो तथा पीपर इत्यादि क्षीरवृक्षोनां फळो, जांबू, राण, बखाई आंबलीनां फळ, टींबरू, बोलसरीनां फळ, धावडानां फळ, आसोंदरानां फळ, अश्वकर्ण, (राळना झाडनां फळ) अंजीर, धामणां, गंगेटीनां फळ, पुष्करवर्त्ति, (अप्रसिद्ध) बीलां अने घोलां इत्यादि फळोना सामान्य गुणो नीचे प्रमाणे छे.

ए सघळां फळो टाढां छे, कफने तथा पित्तने हरनारां छे, द्रवने सूकावनारां छे, रूक्ष छे अने तूरां तथा मधुर छे.

७९ क्षीरवृक्षफलं तेषां गुरु विष्टम्भि शीतलम् ।
कषायं मधुरं साम्लं नातिमारुतकोपनम् ॥

क्षीरवृक्षोनां फळोना विशेष गुणो.

७९ क्षीरवृक्षोनां फळो भारे छे, पेटमां गडगडाट करनारां छे, टाढां छे, तूरां छे, मधुर छे, खटाशवाळां छे अने वायुने जराक प्रकुपित करनारां छे.

८० अत्यर्थं वातलं ग्राहि जाम्बवं कफपित्तजित्

जांबूना फळना विशेष गुणो.

८० जांबूनुं फळ अत्यंत वायु करनार छे, द्रवने सूकावनार छे अने कफने तथा पित्तने जीतनार छे.

८१ स्निग्धं स्वादु कषायं च राजादनफलं गुरु॥

राणना फळना विशेष गुणो.

८१ राणनुं फळ स्निग्ध छे, मधुर छे, तूरूं छे, अने भारे छे.

८२ कषायं मधुरं रूक्षं तोदनं कफवातजित् ।
अम्लोष्णं लघु संग्राहि स्निग्धं पित्ताग्निवर्द्धनम्॥

बखाइ आंबलीना फळना गुणो.

८२ बखाई आंबलीनुं फळ तूरूं छे, मधुर छे, रूक्ष छे, कफने तथा वायुने जीतनार छे, खाटुं छे, उष्ण छे, हलकुं छे, द्रवने सूकावनार छे, स्निग्ध छे अने पित्तने तथा आग्निने वधारनार छे.

८३ आमं कषायं संग्राहि तिन्दुकं वातकोपनम्
विपाके गुरु संपक्कं मधुरं कफपित्तजित् ॥

टींबरूना फळना विशेष गुणो.

८३ काचुं टींबरूनुं फल तूरूं छे, द्रवने सूकावनार छे अने वायुने प्रकुपित करनार छे. पाकुं टींबरूनुं फळ विपाकमां भारे छे, मधुर छे अने कफने तथा पित्तने जीतनार छे.

८४ मधुरं च कषायं च स्निग्धं संग्राहि बाकुलम्
स्थिरीकरं च दन्तानां विशदं फलमुच्यते ॥

बोलसरीना फळना विशेष गुणो.

८४ बोलसरीनुं फळ मधुर छे, तूरूं छे, स्निग्ध छे, दांतोने मजबूत करनार छे, द्रवने सूकावनार छे अने चीकणुं नथी.

८५ कषायं च हिमं स्वादु धान्वनं कफवातजित्
तद्वद्राङ्गेरुकं विद्यादश्मन्तकफलानि च ॥

धावडानां फळ, गंगेटीनां फळ अने आसोंदरानां फळ एओना विशेष गुणो.

८५ धावडानां फळ, गंगेटीनां फळ अने आसोंदरानां फळ एओ तूरां छे, टाढां छे अने कफने तथा वायुने टाळनारां छे.

८६ विष्टम्भि मधुरं स्निग्धं फल्गुजं तर्पणं गुरु ।

अंजीरना विशेष गुणो.

८६ अंजीर पेटमां गडगडाट करनारूं छे, मधुर छे, स्निग्ध छे, तृप्ति आपनार छे अने भारे छे.

८७ अत्यम्लमीषन्मधुरं कषायानुरसं लघु
वातघ्नं पित्तजननमामं विद्यात्परूषकम् ।
तदेव पक्कं मधुरं वातपित्तनिबर्हणम् ॥
विपाके मधुरं शीतं रक्तपित्तप्रसादनम् ।

ध्रामणाना विशेष गुणो.

८७ काचुं ध्रामणुं अत्यंत खाटुं छे, जराक मधुर छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे, हलकुं छे, वायुने हणनार छे अने पित्तने उत्पन्न करनार छे. पाकुं ध्रामणुं मधुर छे, वायुने तथा पित्तने टाळनार छे, विपाकमां मधुर छे, टाढुं छे अने रुधिरने तथा पित्तने स्वच्छ करनार छे.

८८ पौष्करं स्वादु विष्टम्भि बल्यं कफकरं गुरु ॥

पुष्करवर्त्तिना विशेष गुणो.

८८ पुष्करवर्त्ति मधुर छे, घणीवारे पचनारी होवाथी गडगडाट करे छे, बळ आपनार छे, कफ करनार छे अने भारे छे.

८९ कफानिलहरं तीक्ष्णं स्निग्धं संग्राहि दीपनम्
कटुतिक्तकषायोष्णं बालं बिल्वमुदाहृतम् ॥
तदेव विद्यात्सम्पक्कं मधुरानुरसं गुरु ।
विदाहि विष्टम्भकरं दोषकृत्पूतिमारुतम् ॥

बीलांना विशेष गुणो.

८९ काचुं बीलूं कफने तथा वायुने हरनार छे, तीक्ष्ण छे, स्निग्ध छे, द्रवने सूकावनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, तीखूं कडवूं तथा तूरूं छे अने उष्णवीर्यवाळुं छे. पाकुं बीलुं पेटामां मधुर रसवाळुं छे, भारे छे, घणी वारे पचनारूं होवाथी बळतरा करनार छे, दस्तने स्तब्ध करनार छे, सुगंधी पवन वाळुं छे अने दोषोने उत्पन्न करनार छे.

९० बिम्बीफलं साश्वकर्णं स्तन्यकृत्कफपित्तजित्।
तृड्दाहज्वरपित्तासृक्कासश्वासक्षयापहम् ॥

घोलीना तथा सागना फळना विशेष गुणो.

९० घोलीनुं फळ तथा सागनुं फळ धावणने वधारनार छे, कफने तथा पित्तने जीतनार छे अने तृषा, दाह, ज्वर, पित्त, रुधिर, खांसी, श्वास तथा क्षय एओने मटाडनार छे.

९१ तालनारिकेलपनसमौचप्रभृतीनि ॥
स्वादुपाकरसान्याहुर्वातपित्तहराणि च ॥
बलप्रदानि स्निग्धानि बृंहणानि हिमानि च ॥

ताडी वगेरेनां फळो अने तेओना सामान्य गुणो.

९१ ताडीनुं फळ, नाळीएर, फनस तथा केळां इत्यादि फळोना सामान्य गुणो नीचे प्रमाणे छे.

ए फळो रसमां तथा पाकमां मधुर छे, वायुने तथा पित्तने हरनारां छे, बळ आपनारां छे, स्निग्ध छे, पुष्टि आपनारां छे अने टाढां छे.

९२ फलं स्वादुरसं तेषां तालजं गुरु पित्तजित्।
तद्बीजं स्वादुपाकं च मूत्रलं वातपित्तजित् ॥

ताडीना फळना तथा बीजना विशेष गुणो.

९२ एओमां ताडीनुं फळ मधुर रसवाळुं छे, भारे छे अने पित्तने जीतनार छे. ताडीना फळनुं बीज पाकमां मधुर छे, मूत्रने वधारनार छे अने वायुने तथा पित्तने जीतनार छे.

९३ नारिकेलं गुरु स्निग्धं पित्तघ्नं स्वादु शीतलम्
बलमांसप्रदं हृद्यं बृंहणं बस्तिशोधनम् ॥

नाळीएरना विशेष गुणो.

९३ नाळीएरीनुं फळ भारे छे, स्निग्ध छे, पित्तने हणनार छे, मधुर छे, टाढुं छे, बळने तथा मांसने वधारनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, पुष्टि आपनार छे, अने मूत्राशयने स्वच्छ करनार छे.

९४ पनसं सकषायं तु स्निग्धं स्वादुरसं गुरु।

फनसना विशेष गुणो.

९४ फनस पेटामां तूरा रसवाळुं छे, स्निग्ध छे, मधुर छे अने भारे छे.

९५ मौचं स्वादुरसं प्रोक्तं कषायं नातिशीतलम्
रक्तपित्तहरं वृष्यं रुच्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥

केळांना विशेष गुणो.

९५ केळुं मधुर रसवाळुं छे, तूरूं छे, बहु टाढुं नथी, रक्तपित्तने हरनार छे, वीर्यने वधारनार छे, रुचिकारक छे, कफ करनार छे अने भारे छे.

९६ द्राक्षाकाश्मर्यमधूकपुष्पखर्जूरप्रभृतीनि ॥
रक्तपित्तहराण्याहुर्गुरूणि मधुराणि च ।

द्राक्ष वगेरे फळो अने तेओना सामान्य गुणो.

९६ द्राक्ष, सीवणनुं फळ, महुडानुं फूल, महुडानुं फळ अने खजूर इत्यादिना सामान्य गुणो नीचे प्रमाणे छे.

एओ रक्तपित्तने हरनारां छे, भारे छे अने मधुर छे.

९७ तेषां द्राक्षा सरा स्वर्या मधुरा स्निग्धशीतला
रक्तपित्तज्वरश्वासतृष्णादाहक्षयापहा ।

द्राक्षना विशेष गुणो.

९७ एओमां द्राक्ष दस्त लगाडनार छे, स्वरने सारो करनारी छे, मधुर छे, स्निग्ध छे, शीतल

छे अने रक्तपित्त, ज्वर, श्वास, तरश, दाह तथा क्षय एओने टाळनारी छे.

९८ हृद्यं मूत्रविबन्धघ्नं पित्तासृग्वातनाशनम्॥
केश्यं रसायनं मेध्यं काश्मर्यं फलमुच्यते।

सीवणना फळना विशेष गुणो.

९८ सीवणनुं फळ हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, मूत्रनी अटकायतने टाळनार छे, केशोने माटे सारूं छे, रसायन छे, बुद्धिने वधारनार छे अने पित्त, रुधिरना रोग तथा वायु एओने नष्ट करनार छे.

९९ क्षतक्षयापहं हृद्यं शीतलं तर्पणं गुरु ॥
रसे पाके च मधुरं खार्जूरं रक्तपित्तजित्।

खजूरना विशेष गुणो.

९९ खजूर हृदयने प्रिय लागे एवो छे, शीतळ छे, तृप्ति आपनार छे, भारे छे, रसमां तथा पाकमां मधुर छे अने क्षत, क्षय तथा रक्तपित्त एओने टाळनार छे.

१०० बृंहणीयमहृद्यं च मधूककुसुमं गुरु ॥
वातपित्तोपशमनं फलं तस्योपदिश्यते ॥

महुडाना फूलना तथा फळना विशेष गुणो.

१०० महुडानुं फूल पुष्टि आपनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं नथी अने भारे छे. महुडानुं फल वायुने अने पित्तने शांत करनार छे.

१०१ वातामाक्षोडाभिषुकनिचुलपिचुनिकोचकोरुमाणप्रभृतीनि ॥
पित्तश्लेष्महराण्याहुः स्निग्धोष्णानि गुरूणि च।
बृंहणान्यनिलघ्नानि बल्यानि मधुराणि च ॥

बदाम वगेरे फळो अने तेओना सामान्य गुणो.

१०१ बदाम, अखोड, अभिषुक, निचुल[1], कपासना डोडवा, पस्तां तथा वायवरणां इत्यादि फळोना सामान्य गुणो नीचे प्रमाणे छे.

ए फळो पित्तने तथा कफने हणनारां छे, स्निग्ध छे, उष्ण वीर्यवाळां छे, भारे छे, पुष्टि आपनारां छे, वायुने हणनारां छे, बळ आपनारां छे अने मधुर छे.

१०२ कषायं कफपित्तघ्नं किंचित्तिक्तं रुचिप्रदम्।
हृद्यं सुगन्धि विशदं लवलीफलमुच्यते ॥

हरफारेवडी (खाटी आमली)ना विशेष गुणो.

१०२ हरफारेवडीनुं फळ तूरूं छे, कफने तथा पित्तने हणनार छे, कांईक कडवुं छे, रुचि आपनार छे, प्रिय लागे एवुं छे, सुगंधी छे अने चीकणुं नथी.

१०३ वस्तिरं शीतपाक्यं च सारुष्करनिबन्धनम्
विष्टम्भि दुर्जरं रूक्षं शीतलं वातकोपनम् ॥
विपाके मधुरं चापि रक्तपित्तप्रणाशनम्।

अघेडानां फळ, बळदाणानां फळ अने भीलामानुं दीटीयुं एओना गुणो.

१०३ अघेडानां फल, बळदाणा अने भीलामानुं दीटीयुं एओ कबजीयत करनारां छे, मांड पचे एवां छे, रूक्ष छे, शीतल छे, वायुने प्रकुपित करनारां छे अने रक्तपित्तनो नाश करनारां छे.

१०४ शीतं कषायं मधुरं टङ्कं मारुतकृद्गुरु।

टंकनामनुं फळ काश्मीर देशमां थाय छे तेना गुणो.

१०४ टंकफळ टाढुं छे, तूरूं छे, मधुर छे, वायुने करनार छे अने भारे छे.

१०५ स्निग्धोष्णं तिक्तमधुरं वातश्लैष्मिकमर्दनम् ॥

इंगोळीआना फळना विशेष गुणो.

१०५ इंगोळीयानुं फळ स्निग्ध छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, कडवुं तथा मधुर छे अने वायुने तथा कफने करनारूं छे.

१ अभिषुक तथा निचुल एओना गुजराती पर्यायो मळ्या नथी.

१०६ शमीफलं गुरु स्वादु रूक्षोष्णं केशनाशनम् ।

खीजडाना फळना विशेष गुणो.

१०६ खीजडानुं फळ भारे छे, मधुर छे, रूक्ष छे, उष्ण छे अने केशोनो नाश करनार छे.

१०७ गुरु श्लेष्मातकफलं कफकृन्मधुरं हिमम्।

गुंदाना फळना विशेष गुणो.

१०७ गुंदानुं फळ भारे छे, कफ करनार छे, मधुर छे अने टाढुं छे.

१०८ करीराक्षिकपीलूनि तृणशून्यफलानि च।
स्वादुतिक्तकटूष्णानि कफवातहराणि च॥

केरडां, भीलामानां फळ, पीलु अने केवडानां फळ एओना सामान्य गुणो.

१०८ केरडां, भीलामानां फळ, पीलुनां फळ अने केवडानां फळ एओ मधुर छे, कडवां छे, तीखां छे, उष्णवीर्यवाळां छे अने कफने तथा वायुने हरनारां छे.

१०९ तिक्तं पित्तकरं तेषां सरं कटुविपाकि च ।
तीक्ष्णोष्णं कटुकं पीलु सस्नेहं कफवातजित् ॥

पीलुना फळना विशेष गुणो.

१०९ एओमां पीलुनुं फळ कडवुं छे, पित्त करनार छे, दस्तने प्रवृत्ति आपनार छे, पाकमां तीखुं छे, तीक्ष्ण छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, स्निग्ध छे अने कफने तथा वायुने जीतनार छे.

११० आरुष्करं तौवरकं कषायं मधुरं लघु ।
उष्णं कृमिज्वरानाहमेहोदावर्तनाशनम् ॥
कुष्ठगुल्मोदरार्शोघ्नं कटुपाकि तथैव च ।

काजुकळीआ अने चेरनां फळ एओना गुणो.

११० काजुकळीआ तथा चेरीयां एओ तूरां छे, मधुर छे, हलकां छे, उष्ण छे, तीखा पाकवाळां छे अने कृमि, ज्वर, मलबंध, प्रमेह, उदावर्त्त, कोढ, गुल्म, उदररोग तथा अरश एओने हणनार छे.

१११ करञ्जकिंशुकारिष्टफलं जन्तुप्रमेहनुत् ॥
रूक्षोष्णं कटुकं पाके लघु वातकफापहम् ।

करंज, खाखरो तथा लींबडो एओनां फळोना गुणो.

१११ करंज, खाखरो तथा लींबडो एओनां फळो कृमिओने तथा प्रमेहने टाळनार छे, रूक्ष छे, उष्णवीर्यवाळां छे, पाकमां तीखां छे, हलकां छे अने वायुने तथा कफने मटाडनारां छे.

११२ तिक्तमीषद्विषहितं विडङ्गं कृमिनाशनम्।

वावडींगना गुणो.

११२ वावडींग कांइक कडवां छे, कृमिओनो नाश करनारां छे अने झेरने पण हणनारां छे.

११३ व्रण्यमुष्णं सरं मेध्यं दोषघ्नं शोफकुष्ठनुत्।
कषायं दीपनं चाम्लं चक्षुष्यं चाभयाफलम् ॥

हरडेना गुणो.

११३ हरडेनुं फळ व्रण उपर हितकारी छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, दस्तनी प्रवृत्ति करनार छे, बुद्धिने वधारनार छे, दोषोने हणनार छे, सोजाने तथा कोढने टाळनार छे, तूरूं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, खाटुं छे अने नेत्रोने माटे सारूं छे.

११४ भेदनं लघु रूक्षोष्णं वैस्वर्यक्रिमिनाशनम्।
चक्षुष्यं स्वादुपाक्यक्षं कषायं कफपित्तजित् ॥

बेहेडाना गुणो.

११४ बेहेडानुं फळ दस्तनी प्रवृत्ति करनार छे, हलकुं छे, रूक्ष छे, उष्ण छे, स्वरना भंगने तथा कृमिओने नष्ट करनार छे, नेत्रोने माटे सारू छे, मधुर पाकवाळुं छे अने कफने तथा पित्तने जीतनार छे.

११५ कफपित्तहरं रूक्षं वक्त्रक्लेदमलापहम् ।
कषायमीषन्मधुरं किंचित्पूगफलं सरम् ॥

सोपारीना गुणो.

११५ सोपारीनुं फळ कफने तथा पित्तने ह-

रनार छे, रूक्ष छे, मुखना क्लेदने तथा मेलने टाळनार छे, तूरूं छे, जराक मधुर छे अने कांइक दस्त लगाडनार छे.

११६ जातीकोशोऽथ कर्पूरं जातीकटुकयोः फलम् ।
कक्कोलकं लवङ्गं च तिक्तं कटु कफापहम् ॥
लघु तृष्णापहं वक्त्रक्लेददौर्गन्ध्यनाशनम् ।

जावंत्री, कपूर, जायफळ, नाहानो चणकबाब अथवा लताकस्तूरी, मोटो चणकबाब अने लवींग एओना सामान्य गुणो.

११६ जावंत्री, कपूर, जायफळ, नाहानो चणकबाब अथवा लताकस्तूरीनुं फळ, मोटो चणकबाब अने लवींग एओ कडवां छे, तीखां छे, कफने तथा तरशने टाळनारां छे, हलकां छे अने मुखना क्लेदने तथा दुर्गंधपणाने नष्ट करनारां छे.

११७ सतिक्तः सुरभिः शीतः कर्पूरो लघुलेखनः ।
तृष्णायां मुखशोषे च वैरस्ये चापि पूजितः ।

कपूरना विशेष गुणो.

११७ कपूर कडवाशवाळो छे, सुगंधी छे, शीतल छे, हलको छे, कफनुं लेखन करनार छे, अने तरश, मुखनो शोष अने मुखनुं विरसपणुं एओनी उपर बहु सारो छे.

११८ लताकस्तूरिका तद्वच्छीता बस्तिविशोधनी ॥

लताकस्तूरीना विशेष गुणो.

११८ लताकस्तूरी पण कपूर जेवीज छे, शीतल छे अने मूत्राशयने शुद्ध करनारी छे. (आ लताकस्तूरी दक्षिण देशमां थाय छे एम ग्रंथकारो लखे छे पण ते कोइ जगोए वापरवामां के देखवामां आवी नथी.)

११९ प्रियालमज्जा मधुरो वृष्यः पित्तानिलापहः ।
बैभीतको मदकरः कफमारुतनाशनः ।
कषायो मधुरो मज्जा कोलानां पित्तनाशनः ।
तृष्णाच्छर्द्यनिलघ्नश्च तद्वच्चामलकस्य च ॥
बीजपूरकशम्याकमज्जा कोशाम्रसम्भवः ।
स्वादुपाकोऽग्निबलकृत्स्निग्धः पित्तानिलापहः ॥
यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥

फळोनी मज्जाओना गुणो.

११९ चारोलीनी मज्जा मधुर छे, वीर्यने वधारनार छे अने पित्तने तथा वायुने नष्ट करनार छे. बेहेडांनी मज्जा मद करनार छे अने कफने तथा वायुने नष्ट करनार छे. बोरनी मज्जा तूरी छे, मधुर छे, पित्तने नष्ट करनार छे तथा तरशने उलटीने अने वायुने पण टाळनार छे. आमळांनी मज्जामां पण बोरनी मज्जाना जेवाज गुणो छे. बीजोरूं, गेरमाळानी शींग अने पाहाडी आंबानां फळो एओनी मज्जा मधुर पाकवाळी छे, अग्निने तथा बळने वधारनारी छे, स्निग्ध छे अने पित्तने तथा वायुने नष्ट करनार छे.

जे जे फळनुं जेवुं जेवुं वीर्य होय ते ते वीर्य प्रमाणे ते ते फळनी मज्जाना गुणो पण केहेवा.

१२० फलेषु परिपक्वं यद्गुणवत्तदुदाहृतम् ।
बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्धि गुणोत्तरम् ॥
ग्राह्युष्णं दीपनं तद्धि कषायं कटु तिक्तकम् ।

बीलां शिवाय बीजां फळो पाकेलां होय ते गुणकारी छे.

१२० फळोमां जे परिपक्व फळ होय तेने गुणकारी समजवुं पण बीलांने तो काचाने गुणकारी समजवुं. काचुं बीलुं द्रवने सुकावनार, अग्निने दीप्त करनार, तूरूं तथा तीखुं अने कडवुं होवाथी विशेष गुणकारी छे.

१२१ व्याधितं कृमिजुष्टं च पाकातीतमकालजम् ।
वर्जनीयं फलं सर्वमपर्यागतमेवच ॥

केवा फळनो त्याग करवो?

१२१ जे फळ व्याधिवाळुं, कीडावाळुं, जेनो

पाककाल जतो रह्यो होय एवुं, अयोग्य समयमां उत्पन्न थएलुं के अपरिपक्व होय तेनो त्याग करवो.

इति फलवर्गः

१२२ शाकान्यत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥ तत्र पुष्पफलाऽलाबुकालिन्दकप्रभृतीनि ॥
पित्तघ्नान्यनिलं कुर्युस्तथा मन्दकफानि च ।
सृष्टमूत्रपुरीषाणि स्वादुपाकरसानि च ॥

शाको तथा तेओना सामान्य गुणो.

१२२ हवे शाकवर्ग कहीएछीए. कोळुं, दूधेलुं तथा तडबूच इत्यादि शाको केहेवाय छे.

सघळां शाको पित्तने हणनारां छे, जराक कफ करनारां छे, विष्टाने तथा मूत्रने विशेष उत्पन्न करनारां छे अने विपाकमां तथा रसमां मधुर छे.

१२३ पित्तघ्नं तेषु कूष्माण्डं बालं मध्यं कफावहम् ।
पक्कं लघूष्णं सक्षारं दीपनं बस्तिशोधनम् ।
सर्वदोषहरं हृद्यं पथ्यं चेतोविकारिणाम् ।

कोळाना विशेष गुणो..

१२३ शाकोमां काचुं कोळुं पित्तने हणनार छे, मध्यम कोळुं कफने करनार छे अने पाकेलुं कोळुं हळकुं छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, कांइक क्षारतावाळुं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, मूत्राशयने शुद्ध करनार छे, सर्व दोषोने हरनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे तथा उन्माद वगेरे चित्तविकारो उपर पथ्य छे.

१२४ दृष्टिशुक्रक्षयकरं कालिन्दं कफवातकृत् ॥

तडबूचना विशेष गुणो.

१२४ तडबूच दृष्टिनो तथा वीर्यनो क्षय करनारूं छे अने कफने तथा वायुने वधारनार छे.

१२५ अलाबूर्भिन्नविट्का तु रूक्षा गुर्व्यतिशीतला ।

दूधेलाना विशेष गुणो.

१२५ दूधेलुं विष्टानुं भेदन करनार छे, रूक्ष छे, भारे छे अने अत्यंत शीतल छे.

१२६ तिक्तालाबूरहृद्या तु वामनी वातपित्तजित् ॥

कडवी तुंबडीना विशेष गुणो.

१२६ कडवी तुंबडी हृदयने अप्रिय लागे एवी छे, वमन करावनारी छे अने वायुने तथा पित्तने जीतनारी छे.

१२७ त्रपुसैर्वारुककर्कारुकशीर्णवृन्तप्रभृतीनि ॥
गुरुविष्टम्भिशीतानि स्वादूनि कफकृन्ति च ॥
सृष्टमूत्रपुरीषाणि सक्षारमधुराणि च ।

त्रपुस, एर्वारुक, कर्कारुक तथा शीर्णवृंत वगेरे काकडीओना[1] सामान्य गुणो.

१२७ त्रपुस, एर्वारुक, कर्कारुक तथा शीर्णवृंत इत्यादि काकडीओनी जातो भारेछे, कबजीयत करनार छे, शीतल छे, मधुर छे, कफ करनार छे, विष्टाने तथा मूत्रने प्रवृत्ति आपनारी छे, खाराशवाली छे अने मधुर छे.

१२८ बालं सुनीलं त्रपुसं तेषां पित्तहरं स्मृतम् ।
तत्पाण्डु कफकृज्जीर्णमम्लं वातकफापहम् ।
एर्वारुकं सकर्कारु सम्पक्कं कफवातकृत् ॥
सक्षारं मधुरं रुच्यं दीपनं नातिपित्तलम् ।
सक्षारं मधुरं चैव शीर्णवृन्तं कफापहम् ॥
भेदनं दीपनं हृद्यमानाहाष्ठीलनुल्लघु ।

काकडीओना विशेष गुणो.

१२८ त्रपुस नामनी काकडी काची तथा अत्यंत नील वर्णवाळी होय तो पित्तने हरे छे, पांडु वर्णवाळी होय तो कफ करे छे अने जूनी होय तो खाटी छे तथा वायुने अने कफने उत्पन्न करे छे.

एर्वारुक अने कर्कारुक ए जातनी काकडीओ

---

१ काकडीओ घणी जातनी थाय छे पण तेमां त्रपुस केई, कर्कारुक केई अने शीर्णवृंत केई ए बतावी शकातुं नथी. जेनुं दीडीयुं खरी पडतुं होय ते शीर्णवृंत केहेवाय. उनालु काकडीनें एर्वारुक कहे छे.

पाकी होय तो कफने तथा वायुने करनार छे, कांइक क्षारतावाळी छे, मधुर छे, रुचिकारक छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने जराक पित्त करनार छे.

शीर्णवृंत जातनी काकडी कांईक क्षारपणावाळी छे, मधुर छे, कफने तोडनार छे, दस्तने पाडनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, प्रिय लागे एवी छे, हलकी छे अने आनाह तथा अष्ठीला ए रोगोने नष्ट करे छे.

१२९ पिप्पलीमरिचशृङ्गवेरार्द्रकहिङ्गुजीरककुस्तुंबरुजम्बीरकसुमुखसुरसार्जकभूस्तृणसुगन्धककासमर्दककालमालकुठेरकक्षवककखरपुष्पशिग्रुमधुशिग्रुफणिज्जकसर्षपराजिकाकुलाहलवेणुगण्डीरतिलपर्णिकावर्षाभूचित्रकमूलकपोतिकालशुनपलाण्डुकलायप्रभृतीनि ॥
कटून्युष्णानि रुच्यानि वातश्लेष्महराणि च ।
कृतान्नेषूपयुज्यन्ते संस्कारार्थमनेकधा ॥

पीपळ तथा मरी वगेरे पदार्थो अने तेओना सामान्य गुणो.

१२९ पीपळ, मरी, सुंठ, आदु, हींग, जीरूं, धाणा, बखाई सूकां लींबू, तीखां पानडांवाळी तुलसी, जंगली तुलसी, क्षुद्र तुलसी, भूस्तृण, सुगंधक, (एक जातनुं नाहानुं सुगंधी खड) कासुंदरो, काळी तुलसी, कुठेरक (बीजी जातनी काळी तुलसी) क्षवक (काळा सर्षप) खरपुष्प, सरगवो, रातो सरगवो, मरवो, सर्षप, राई, कुलाहल, (गोरखमुंडी) वेणु, (वांस) गंडीर (कडवुं सूरण) तिलपर्णिका (तलवणी) साटोडी, चित्रक, कोमळ मूळा, लसण, डुंगळी–कांदा अने मटाणा इत्यादि पदार्थो तीखा छे, उष्ण छे, रुचिकारक छे, वायुने तथा कफने हरनारा छे अने एओमां केटलाएक रांधेलां अन्नोने ववार वगेरे संस्कारो आपवाना काममां अनेक प्रकारोथी उपयुक्त थाय छे (आ पदार्थोमां जेओना गुजराती पर्यायो मळया नथी तेओनां संस्कृत नामोज राखी दीधां छे.)

१३० तेषां गुर्वी स्वादुशीता पिप्पल्यार्द्रा कफावहा ।
शुष्का कफानिलघ्नी सा वृष्या पित्ताविरोधिनी ।

पीपळना विशेष गुणो.

१३० तेओमां लीली (आर्द्र) पीपळ भारे छे, मधुर छे, शीत छे अने कफ करनारी छे. सूकी पीपळ कफने तथा वायुने हणनारी छे वीर्यने वधारनारी छे अने पित्तथी विरुद्ध नथी.

१३१ स्वादुपाक्यार्द्रमरिचं गुरु श्लेष्मप्रसेकि च।
कटूष्णं लघु तच्छुष्कमवृष्यं कफवातजित् ॥
नात्युष्णं नातिशीतं च वीर्यतो मरिचं सितम् ।
गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यं च विशेषतः ॥

मरीना विशेष गुणो.

१३१ लीलुं (आर्द्र) मरी पाकमां मधुर छे, भारे छे अने मुखथी कफनो स्राव करावनार छे. सूकुं मरी तीखुं छे, उष्ण छे, हलकुं छे, वीर्यने माटे सारूं नथी अने कफने तथा वायुने जीतनार छे. सफेद मरी अत्यंत उष्णवीर्य नथी, अत्यंत शीतवीर्य पण नथी, सघळां मरीओ करतां उत्तम गुणोवाळुं छे अने विशेषे करी नेत्रोनुं हित करनार छे. (केटलाएक केहे छे के सरगवानां बीज एज धोळां मरी छे.)

१३२ नागरं कफवातघ्नं विपाके मधुरं कटु ।
वृष्योष्णं रोचनं हृद्यं सस्नेहं लघु दीपनम् ॥

सुंठना विशेष गुणो.

१३२ सुंठ कफने तथा वायुने हणनार छे, पाकमां मधुर छे, तीखी छे, वीर्यने वधारनार छे, उष्णवीर्यवाळी छे, रुचि उपजावनार छे, प्रिय

---

१ आ पदार्थोमां केटलाएक पदार्थो वघार वगेरेमां काम आवे छे, केटलाएक शाकरूप छे, केटलाएक औषधोरूप छे अने केटलाएक आहाररूप छे. (डल्हन)

लागे एवी छे, कांइक स्निग्ध छे, आर्द्रकथी हलकी छे अने अग्निने दीप्त करनारी छे.

१३३ कफानिलहरं स्वर्यं विबन्धानाहशूलनुत्
कटूष्णं रोचनं हृद्यं वृष्यं चैवार्द्रकं स्मृतम् ॥

आर्द्रक(आदु)ना विशेष गुणो.

१३३ आर्द्रक कफने तथा वायुने हरनार छे, स्वरने सारो करनार छे, तीखुं छे, उष्णवीर्य छे, रुचि उपजवानार छे, प्रिय लागे एवुं छे, वीर्यने वधारनार छे अने कबजीयतने, आफराने तथा शूळने मटाडनार छे.

१३४लघूष्णं पाचनं हिङ्गु दीपनं कफवातजित् ।
कटु स्निग्धं सरं तीक्ष्णं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ॥

हींगना विशेष गुणो.

१३४ हींग हलकी छे, उष्णवीर्य छे, पाचन छे, अग्निने दीप्त करनारी छे, कफने तथा वायुने जीतनारी छे, तीखी छे, स्निग्ध छे, दस्त लगाडनार छे, तीक्ष्ण छे अने शूल, अजीर्ण तथा अधोवायु वगेरेनी कबजीयत एओने टाळनार छे.

१३५ तीक्ष्णोष्णं कटुकं पाके रुच्यं पित्ताग्निवर्द्धनम् ।
कटु श्लेष्मानिलहरं गन्धाढ्यं जीरकद्वयम् ॥
कारवी करवी तद्वद्विज्ञेया सोपकुञ्चिका ।

सफेद जीरूं, शाहाजीरूं, काळीजीरी, कलौंजी जीरूं तथा अजमा एओना विशेष गुणो.

१३५ सफेद जीरूं तथा शाहाजीरूं तीक्ष्ण छे, उष्णवीर्य छे, पाकमां तीखुं छे, रुचिकारक छे, पित्तने तथा अग्निने वधारनार छे, तीखुं छे, कफने तथा वायुने हरनार छे अने सुगंधवाळुं छे. काळीजीरी, कलौंजी जीरूं तथा अजमा एओ पण एवाज गुणोवाळां छे.

१३६ भक्ष्यव्यञ्जनभोज्येषु विविधेष्ववचारिता॥
आर्द्रा कुस्तुम्बरी कुर्यात्स्वादुसौगन्ध्यहृद्यताम्
सा शुष्का मधुरा पाके स्निग्धा तृड्दाहनाशनी ।
दोषघ्नी कटुका किंचित्तिक्ता स्रोतोविशोधनी

लीला तथा सूका धाणाना गुणो.

१३६ कोथमरी (लीला धाणा) अनेक प्रकारनां भक्ष्योमां, भोज्योमां, तथा कढी वगेरेमां नाखवाथी ते पदार्थोने स्वादिष्ट, सुगंधी तथा प्रिय लागे एवा बनावी दे छे. सूका धाणा पाकमां मधुर छे, स्निग्ध छे. तृषाने तथा दाहने नष्ट करनार छे, दोषोने हणनार छे, कांईक तीखा छे, कांईक कडवा छे अने स्रोतोने शुद्ध करनारा छे.

१३७जम्बीरः पाचनस्तीक्ष्णः कृमिवातकफापहः
सुरभिर्दीपनो रुच्यो मुखवैशद्यकारकः ॥

सूका बखाइ लींबूना विशेष गुणो.

१३७ सूकुं बखाइ लींबुं पाचन छे, तीक्ष्ण छे, कृमि वायु तथा कफ एओने नष्ट करनार छे, सुगंधी छे, अग्निने दीप्त करनार छे, रुचिकारक छे अने मुखने स्वच्छ करनार छे.

१३८कफानिलविषश्वासकासदौर्गन्ध्यनाशनः।
पित्तकृत्पार्श्वशूलघ्नः सुमुखः समुदाहृतः ॥
तद्वत्तु सुरसो ज्ञेयो विशेषाद्गरनाशनः ।

सफेद मांजरवाळी तथा तीखां पानडांवाळी तुलसी अने जंगली तुलसी एओना विशेष गुणो.

१३८ सफेद मांजरवाळी तथा तीखां पानडांवाळी तुलसी कफने, वायुने, विषने, श्वासने, खांसीने तथा दुर्गंधपणांने नष्ट करनार छे, पित्त करनार छे अने पडखांना शूळने हणनार छे. जंगली तुलसी पण एवाज गुणोवाळी छे अने विशेषे करी झेरने नष्ट करनार छे.

१३९ कफघ्ना लघवो रूक्षाः स्निग्धोष्णाः पित्तवर्द्धनाः ॥
कटुपाकरसाश्चैव सुरसार्जकभूस्तृणाः ।

काळां मांजरवाळी तुलसी, क्षुद्र तुलसी अने भूस्तृण एओना विशेष गुणो.

१३९ काळां मांजरवाळी तुलसी, क्षुद्र तुलसी अने भूस्तृण एओ कफने हर्णनार छे, हलकां छे, रूक्ष छे, कांइक स्निग्ध छे, उष्णवीर्य छे, पित्तने वधारनारां छे अने पाकमां तथा रसमां तीखां छे.

१४० मधुरः कफवातघ्नः पाचनः कण्ठशोधनः। विशेपतः पित्तहरः सतिक्तः कासमर्दकः ।

कासुंदराना विशेष गुणो.

१४० कासुंदरो मधुर छे, कफने तथा वायुने हणनार छे, पाचन छे, कंठने शुद्ध करनार छे, कडवाशवाळो छे अने विशेषे करी पित्तने हणनार छे.

१४१ कटुःसक्षारमधुरः शिग्रुस्तिक्तोऽथ पित्तलः मधुशिग्रुः सरस्तिक्तः शोफघ्नो दीपनः कटुः ।

सरगवाना तथा राता सरगवाना विशेष गुणो.

१४१ सरगवो तीखो छे, क्षारसहित मधुर रसवाळो छे अने कडवो छे. रातो सरगवो पित्त करनार छे, दस्त लावनार छे, कडवो छे, सोजाने टाळनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने तीखो छे.

१४२ विदाहि बद्धविण्मूत्रं रूक्षं तीक्ष्णोष्णमेव च ॥ त्रिदोषं सार्षपं शाकं गाण्डीरं वेगनाम च ।

सर्षपना, कडवा सूरणना तथा वेगना विशेष गुणो.

१४२ सर्षपनुं शाक, कडवा सूरणनुं शाक तथा वेग(अप्रसिद्ध छे)नुं शाक एओ बळतरा करनारां छे, विष्टाने तथा मूत्रने रोकनारां छे, रूक्ष छे, तीक्ष्ण छे, उष्णवीर्य छे अने त्रणे दोषोने उत्पन्न करनारां छे.

१४३ चित्रकस्तिलपर्णी च कफशोफहरे लघू ॥

चित्रक अने तलवणी एओना विशेष गुणो.

१४३ चित्रक अने तलवणी एओ कफने तथा सोजाने हरनारां छे अने हलकां छे.

१४४ वर्षाभूः कफवातघ्नी हिता शोफोदरार्शसाम् ।

साटोडीना विशेष गुणो.

१४४ साटोडी कफने तथा वायुने हणनारी छे अने सोजा, उदररोग तथा अरश एओनी उपर पथ्य छे.

१४५ कटुतिक्तरसा हृद्या रोचनी वह्निदीपनी॥
सर्वदोषहरा लघ्वी कण्ठ्या मूलकपोतिका ।
महत्तद्गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णमामं त्रिदोषकृत् ॥
तदेव स्निग्धसिद्धं तु पित्तनुत्कफवातजित् ।
त्रिदोषशमनं शुष्कं विषदोषहरं लघु ॥
विष्टम्भि वातलं शाकं शुष्कमन्यत्र मूलकात् ॥
पुष्पं च पत्रं च फलं तथैव
यथोत्तरं ते लघवः प्रदिष्टाः ।
तेषां तु पुष्पं कफपित्तहन्तृ
फलं निहन्यात्कफमारुतौ च

मूळाना विशेष गुणो.

१४५ नाहाना कोमळ मूळा तीखा तथा कडवा रसवाळा छे, प्रिय लागे एवा छे, रुचिकारक छे, अग्निने दीप्त करनार छे, सर्व दोषोने हरनारा छे, हलका छे अने कंठने माटे उत्तम छे. मोटा मूळा भारे छे अने मळ वगेरेनी कबजीयत करनारा छे. अग्निथी नहीं पकावेला मोटा मूळा तीक्ष्ण छे अने त्रणे दोषोने करनारा छे. घी तथा तेल वगेरे स्नेहोमां पकावेला एज मूळा पित्तने टाळनार छे.अने कफने तथा वायुने जीतनार छे. सूकाएला मूळा त्रणे दोषोने शांत करनारा छे, विषना दोषने हरनारा छे अने हलका छे. मूळा शिवाय बीजुं सूकवणीरूप शाक कबजीयत करनार छे अने वायुने उत्पन्न करनार छे. मूळानां पुष्पोथी पांनडां अने पांनडांओथी फळो वधारे

वधारे हलकां छे. मूळानां पुष्पो कफने तथा पित्तने हणनार छे अने मूळानां फळो कफने तथा वायुने हणनार छे.

१४६ स्निग्धोष्णतीक्ष्णः कटुपिच्छिलश्च
गुरुः सरः स्वादुरसश्च बल्यः ॥
वृष्यश्च मेधास्वरवर्णचक्षु-
र्भग्नास्थिसंधानकरो रसोनः ।
हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-
विबन्धगुल्मारुचिकासशोफान्
दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तु-
समीरणश्वासकफांश्च हन्ति ।

लसणना विशेष गुणो.

१४६ लसण स्निग्ध छे, उष्णवीर्य छे, तीक्ष्ण छे, तीखुं छे, चीकाशवाळुं छे, भारे छे, दस्त लावनार छे, मधुर रसवाळुं छे, बळ आपनार छे, वीर्यने वधारनार छे, बुद्धिने सारी करनार छे, स्वरने हितकारी छे, वर्णने माटे तथा नेत्रोने माटे सारूं छे, भांगेलां अस्थिओने सांधनार छे अने हृदयना रोग, जीर्णज्वर, कुक्षिशूळ, कबजीयत, गुल्म, अरुचि, खांसी, सोजा, अरश, कोढ, अग्निनी मंदता, कृमि, वायु, श्वास तथा कफ एओने हणनार छे.

१४७ नात्युष्णवीर्योऽनिलहा कटुश्च
तीक्ष्णो गुरुर्नातिकफावहश्च ॥
बलावहः पित्तकरोऽथ किंचि-
त्पलाण्डुरग्निं च विवर्द्धयेच्च ॥
स्निग्धो रुचिष्यः स्थिरधातुकर्ता
बल्योऽथ मेधाकफपुष्टिदश्च ।
स्वादुर्गुरुः शोणितपित्तशस्तः
सपिच्छिलः क्षीरपलाण्डुरुक्तः ॥

डुंगळी(कांदा)ना विशेष गुणो.

१४७ डुंगळी अत्यंत उष्णवीर्यवाळी नथी, वायुने हणनारी छे, तीखी छे, तीक्ष्ण छे, भारे छे, अत्यंत कफ करनारी नथी, बळ आपनारी छे, कांईक पित्त करनारी छे अने अग्निने वधारनारी छे. आर्द्र (लीली) डुंगळी स्निग्ध छे, रुचि आपनारी छे, धातुने स्थिर करनारी छे, बळ आपनारी छे, बुद्धिने वधारनारी छे, कफ करनारी छे, पुष्टि आपनारी छे, स्वादिष्ट छे, भारे छे, रक्तपित्त उपर सारी छे अने चीकणी छे.

१४८ कलायशाकं पित्तघ्नं कफघ्नं वातलं गुरु ।
कषायानुरसं चैव विपाके मधुरं च तत् ॥

मटाणाना शाकना विशेष गुणो.

१४८ मटाणानुं शाक पित्तने हणनार छे, कफने हणनार छे, वायुने करनार छे, भारे छे, पेटामां तूरा रसवाळुं छे अने विपाकमां मधुर छे.

१४९ चुञ्चूयूथिकातरुणीजीवन्तीबिम्बीतिकानंताभल्लातकच्छगलान्त्रीवृक्षादनीफञ्जीशाल्मलीशेलुवनस्पतिप्रसवशणकर्बुदारकोविदारप्रभृतीनि ॥
कषायस्वादुतिक्तानि रक्तपित्तहराणि च ।
कफघ्नान्यनिलं कुर्युः संग्राहीणि लघूनि च ॥

छुंछ वगेरेनी भाजीओ अने तेओना सामान्य गुणो.

१४९ छुंछनी, यूथिकानी, (अप्रसिद्ध छे) कुंवारनी, राहारूडीनी, टींडोरीनी, दूधीया वछनागनी, भीलामानी, वरधारानी, बांदा (अपरवृक्ष)नी, फांग्यनी, शेमलानी, गुंदीनी, उंबरा वगेरे वनस्पतिओनां पल्लवोनी, शणनी, गुंदानी अने कंचनारनी इत्यादि भाजीओ तूरी छे, मधुर छे, कडवी छे, रक्तपित्तने हरनारी छे, कफने हणनारी छे, वायुने करनारी छे, दस्तने रोकनारी छे अने हलकी छे.

१५० लघुः पाके च जन्तुघ्नः पिच्छिलो व्रणिनां हितः ।
कषायमधुरो ग्राही चुञ्चूस्तेषां त्रिदोषहा ॥

छुंछना विशेष गुणो.

१५० एओमां छुंछनी भाजी पाकमां हलकी

छे, कृमिओने हणनारी छे, चीकणी छे, व्रणवाळाओने हितकारी छे, तूरी छे, मधुर छे, द्रवने सूकावनारी छे अने त्रणे दोषोने हणनारी छे.

१५१ चक्षुष्या सर्वदोषघ्नी जीवन्ती समुदाहृता।
वृक्षादनी वातहरा फञ्जी त्वल्पबला मता ॥

राहारूडीनी, बांदानी तथा फांग्यनी भाजीओना विशेष गुणो.

१५१ राहारूडीनी भाजी नेत्रोने हितकारी छे अने सर्व दोषोने हरनारी छे. बांदानी भाजी वायुने हरनारी छे. फांग्यनी भाजी अल्प बळ देनारी छे.

१५२ क्षीरवृक्षोत्पलादीनां कषायाः पल्लवाः स्मृताः ।
शीताः संग्राहिणः शस्ता रक्तपित्तातिसारिणाम्॥

उंबरा वगेरे वनस्पतिओनां तथा कमळ वगेरेनां पल्लवोनी भाजीओना विशेष गुणो.

१५२ छीरवाळां उंबरा वगेरे वृक्षोनां पल्लवो अने उत्पल वगेरे कमळ जातिओनां पत्रो एओनी भाजीओ तूरी छे, टाढी छे, द्रवने सूकावनारी छे अने रक्तपित्त तथा अतिसार एओनी उपर पथ्य छे.

१५३ पुनर्नवावरुणतर्कार्युरुबूकवत्सादनीबिल्वशाकप्रभृतीनि ।
उष्णानि स्वादुतिक्तानि वातप्रशमनानि च ।

धोळी साटोडी वगेरेनी भाजीओ अने तेओना सामान्य गुणो.

१५३ धोळी साटोडीनी भाजी, वायवरणांनी भाजी, अरणीनी भाजी, धोळा एरडानी भाजी, जंगली कपासनी भाजी अने बीलीनी भाजी इत्यादि भाजीओ उष्णवीर्यवाळी छे, मधुर छे, कडवी छे अने वायुने शांत करनारी छे.

१५४ तेषु पौनर्नवं शाकं विशेषाच्छोफनाशनम्।

धोळी साटोडानी भाजीना विशेष गुणो.

१५४ एओमां धोळी साटोडीनुं शाक विशेषे करी सोजाने नष्ट करनारूं छे.

१५५ तण्डुलीयकोपोदिकाऽश्वबलाचिल्लीपालङ्क्यावास्तुकप्रभृतीनि ॥
सृष्टमूत्रपुरीषाणि सक्षारमधुराणि च ।
मन्दवातकफान्याहू रक्तपित्तहराणि च ॥

तांदळजा वगेरेनी भाजीओ अने तेओना सामान्य गुणो.

१५५ तांदळजानी भाजी, पोथीनी भाजी, अश्वबला नामनी मोटा पानडांवाळी मेथीनी भाजी, (गदभनी भाजी होवी जोइए) चीलनी भाजी, पालखनी भाजी अने टांकानी भाजी इत्यादि भाजीओ विष्टाने तथा मूत्रने वृद्धि आपनारी तथा प्रवर्त्तावनारी छे, कांईक क्षारतावाळी छे, मधुर छे, कांईक वायुने तथा कफने करनारी छे अने रक्तपित्तने हरनारी छे.

१५६ मधुरो रसपाकाभ्यां रक्तपित्तमदापहः ।
तेषां शीततमो रूक्षस्तण्डुलीयो विषापहः ॥

तांदळजानी भाजीना विशेष गुणो.

१५६ एओमां तांदळजानी भाजी रसमां तथा पाकमां मधुर छे, रक्तपित्तने मदने तथा विषने मटाडनारी छे, अत्यंत टाढी छे अने रूक्ष छे.

१५७ स्वादुपाकरसा वृष्या वातपित्तमदापहा ।
उपोदिका सरा स्निग्धा बल्या श्लेष्मकरी हिमा॥

पोथीनी भाजीना विशेष गुणो.

१५७ पोथीनी भाजी रसमां तथा पाकमां मधुर छे, वीर्यने वधारनारी छे, वातपित्तने तथा मदने टाळनारी छे, दस्तनी प्रवृत्ति करनारी छे, स्निग्ध छे, बळ आपनारी छे, कफने करनारी छे अने टाढी छे.

१५८ कटुर्विपाके कृमिहा मेधाग्निबलवर्द्धनः॥
सक्षारः सर्वदोषघ्नो वास्तुको रोचकः सरः ।

चिल्ली वास्तुकवज्ज्ञेया पालङ्क्या तण्डुलीयवत् ॥
वातकृद्बद्धविण्मूत्रा रूक्षा पित्तकफे हिता ।

टांकानी, चीलनी तथा पालखनी भाजीना विशेष गुणो.

१५८ टांकानी भाजी क्षारवाळी छे, पाकमां तीखी छे, कृमिओने हणनारी छे, बुद्धिने अग्निने तथा बळने वधारनारी छे, सर्व दोषोने हणनारी छे, रुचिकारक छे अने दस्तनी प्रवृत्ति करनार छे. चीलनी भाजीना गुणो टांकानी भाजीना जेवाज छे. पालखनी भाजी तांदळजानी भाजीना जेवा गुणोवाळी छे, वायुने करनारी छे, विष्टाने तथा मूत्रने रोकनारी छे, रूक्ष छे अने पित्त उपर तथा कफ उपर सारी छे.

१५९ शाकमाश्वबलं रूक्षं बद्धविण्मूत्रमारुतम् ।

अश्वबला नामनी मोटां पानडांवाळी मेथीना विशेष गुणो.

१५९ अश्वबला नामनी मोटां पानडांवाळी मेथीनी भाजी रूक्ष छे अने विष्टाने, मूत्रने तथा वायुने अटकावनारी छे.

१६० मण्डूकपर्णीसप्तलासुनिषण्णकसुवर्चलाब्रह्मसुवर्चलापिप्पलीगुडूचीगोजिह्वाकाकमाचीप्रपुन्नाडावल्गुजसतीनबृहतीकण्टकारिकाफलपटोलवार्ताकुकारवेल्लककटुकिकाकेबुकोरुबूकपर्पटककिराततिक्तकर्कोटकारिष्टकोशातकीवेत्रकरीराटरूषकार्कपुष्पीप्रभृतीनि ।

रक्तपित्तहराण्याहुर्हृद्यानि सुलघूनि च ।
कुष्ठमेहज्वरश्वासकासारुचिहराणि च ॥

ब्राह्मी वगेरेनी भाजीओ तथा तेओना सामान्य गुणो.

१६० ब्राह्मी, हाथला अथवा कंटाळा, ओटीगण—अडदीआनी भाजी, सुवर्चला, (सूरजमुखीनी भाजी) ब्रह्मसुवर्चला (ब्राह्मीनी जात)नी भाजी, पीपळनी भाजी, गळोनी भाजी, गळजीभी (भोंपाथरी)नी भाजी, अघेडीनी भाजी, कुवाडीयानी भाजी, बावचीनी अथवा गुवारनी भाजी, मटरनां पांनडांनी भाजी, उभीभोरींगणीना डोडवानुं शाक, बेठी भोरींगणीना डोडवानुं शाक, मीठां पटोल, रींगणां, कारेलां, जंगली कासुंदरानी भाजी, कोबी, राता एरडानी भाजी, खडसलीयानी भाजी, करीयातानी भाजी, कंटोलां, लींबडानी भाजी, तूरीयां, नेतरनां अग्र, अरडुसानी भाजी, अने खरणेरनी भाजी इत्यादि भाजीओ रक्तपित्तने हरनारी छे, हृदयने प्रिय लागे एवी छे, अत्यंत हलकी छे अने कोढ, प्रमेह, ज्वर, श्वास, खांसी तथा अरुचि ए रोगोने हरनारी छे.

१६१ कषाया तु हिता पित्ते स्वादुपाकरसा हिमा ।
लघ्वी मण्डूकपर्णी तु तद्वद्गोजिह्विका मता ॥

ब्राह्मी अने गळजीभी एओना विशेष गुणो.

१६१ ब्राह्मी तूरी छे, पित्त उपर सारी छे, स्वादमां तथा पाकमां मधुर छे, टाढी छे अने हलकी छे. गळजीभी (भोंपाथरी) पण एवाज गुणोवाळी छे.

१६२ अविदाही त्रिदोषघ्नः संग्राही सुनिषण्णकः
अवल्गुजः कटुः पाके तिक्तः पित्तकफापहः ॥
ईषत्तिक्तं त्रिदोषघ्नं शाकं कटु सतीनजम् ।
नात्युष्णशीतं कुष्ठघ्नं काकमाच्यास्तु तद्विधम् ॥

ओटीगण, बावचीनी भाजी अथवा गुवारनी भाजी, मटरनी भाजी तथा अघेडीनी भाजी एओना विशेष गुणो.

१६२ ओटीगण (सुनिषण्णक) त्रणे दोषोने हणनार छे अने द्रवने सूकावनार छे. बावचीनी अथवा गुवारनी भाजी पाकमां कडवी छे, तीखी छे अने पित्त तथा कफ एओने हणनारी छे. मटरनी

भाजी जरा कडवी छे, त्रणे दोषोने हणनारी छे अने तीखी छे. अघेडीनी भाजी बहु उष्ण पण नथी तथा बहु शीत पण नथी, कोढने हणनारी छे, तीखी छे, जरा कडवी छे अने त्रणे दोषोने पण हणनारी छे.

१६३ कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानि कफवातहराणि च॥
फलानि बृहतीनां तु कटुतिक्तलघूनि च ।

भोरींगणीना डोडवाना विशेष गुणो.

१६३ भोरींगणी(बन्नेजातनी)ना डोडवा तीखा छे, कडवा छे, हलका छे अने खरज, कोढ, कृमिओ, कफ तथा वायु एओने हरनारा छे.

१६४ कफपित्तहरं व्रण्यमुष्णं तिक्तमवातलम्।
पटोलं कटुकं पाके वृष्यं रोचनदीपनम् ।

मीठा पटोळना विशेष गुणो.

१६४ मीठुं पटोळ कफने तथा पित्तने हरनार छे, व्रण उपर हितकारी छे, उष्णवीर्य छे, कडवुं छे, वायुने उत्पन्न करनार नथी, पाकमां तीखुं छे, वीर्यने वधारनार छे, रुचि उपजावनार छे अने अग्निने दीप्त करनार छे.

१६५ कफवातहरं तिक्तं रोचनं कटुकं लघु ॥
वार्ताकं दीपनं प्रोक्तं जीर्णं सक्षारपित्तलम् ।
तद्वत्कर्कोटकं प्रोक्तं कारवेल्लकमेव च ।

रींगणां, कंटोलां तथा कारेलां एओना विशेष गुणो.

१६५ रींगणुं कफने तथा वायुने हरनार छे, कडवुं छे, रुचिकारक छे, तीखुं छे, हलकुं छे अने अग्निने दीप्त करनार छे. पाकी गएलुं रींगणुं क्षारतावाळुं छे अने पित्तने उत्पन्न करनार छे. कंटोलामां अने कारेलामां पण एवाज गुणो छे.

१६६ अटरूषकवेत्राग्रगुडूचीनिम्बपर्पटाः ॥
किराततिक्तसहितास्तिक्ताः पित्तकफापहाः ।

अरडूसीनी, नेतरनां अग्रोनी, गलोनी, लींबडानी, खडसलीआनी अने करीयातानी भाजीना विशेष गुणो.

१६६ अरडूसीनी, नेतरनां अग्रोनी, गळोनी, लींबडानी, खडसलीयानी अने करीयातानी भाजी कडवी छे तथा पित्तने अने कफने मटाडनारी छे.

१६७ कफापहं शाकमुक्तं वरुणप्रपुनाडयोः ॥
रूक्षं लघु च शीतं च वातपित्तप्रकोपणम् ।

वायवरणानी तथा कुवाडीयानी भाजीना विशेष गुणो.

१६७ वायवरणानी भाजी तथा कुवाडीयानी भाजी कफने हणनारी छे, रूक्ष छे, हलकी छे, टाढी छे अने वायुने तथा पित्तने प्रकुपित करनारी छे.

१६८ दीपनं कालशाकं तु गरदोषहरं कटु ॥
कौसुम्भं मधुरं रूक्षमुष्णं श्लेष्महरं लघु ।

शरपंखानी तथा कसुंबानी भाजीना विशेष गुणो.

१६८ शेरपंखानी भाजी अग्निने दीप्त करनार छे, झेरना दोषने हरनार छे अने तीखी छे. (भावप्रकाशमां शरपंखाने कडवो कह्यो छे. डल्हन तो कालशाक एटले श्राद्धने लायक शाक एटलोज अर्थ आपे छे.) कसुंबानी भाजी मधुर छे, रूक्ष छे, उष्ण छे, कफने हरनार छे अने हलकी छे.

१६९वातलं नालिकाशाकं पित्तघ्नं मधुरं च तत्।
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नी साम्ला वातकफेऽहिता ॥

नाळा नामनो पाणीमां वेलो थाय छे तेनी भाजीना गुणो.

१६९ नाळानी भाजी वायुने करनार छे, पित्तने हणनार छे, मधुर छे, ग्रहणीने तथा अरशने मटाडनारी छे, खटाइवाळी छे अने वायु तथा कफ एओ उपर अहित छे.

१७० उष्णा कषायमधुरा चाङ्गेरी चाग्निदीपनी ॥

खाटी लूणीके जे चुको केहेवाय छे तेनी भाजीना विशेष गुणो.

१७० खाटी लूणी उष्णवीर्यवाळी छे, पेटामां तूरी तथा मधुर छे अने अग्निने दीप्त करनारी छे.

१७१ लोणिकाजातुकपर्णिकापत्तूरजीवकसुवर्चलाकुरबककठिञ्जरकुन्तलिकाकुरण्टिकाप्रभृतीनि ॥

स्वादुपाकरसाः शीताः कफघ्ना नातिपित्तलाः।
लवणानुरसा रूक्षाः सक्षारा वातलाः सराः ॥

लूणी वगेरे भाजीओ अने तेओना सामान्य गुणो.

१७१ लूणी, जातुक, पर्णिका, (वालोळ पानडी) पत्तूर, जीवक, सुवर्चला, कुरबक, कठिंजर (तुलसीनी जात छे) परपोटी अने आगीयो इत्यादि भाजीओ पाकमां तथा रसमां मधुर छे, टाढी छे, कफने हणनारी छे, बहु पित्त करनारी नथी, रूक्ष छे, क्षारवाळी छे, वायुने उत्पन्न करनार छे अने दस्त लगाडनार छे. (आमां जातुक, पत्तूर, जीवक, सुवर्चला अने कुरबक एओना गुजराती पर्यायो मळ्या नथी. डल्हने आ स्थानना २० मा अध्यायना ९ मा विषयमां जातुशाकनो अर्थ 'पौष्करशाक' आपेलो छे.)

१७२ स्वादुतिक्ता कुन्तलिका सकषाया कुरण्टिका ।

परपोटी तथा आगीयानी भाजीना विशेष गुणो.

१७२ परपोटी मधुर छे तथा कडवी छे अने आगीयो तूराशवालो छे.

१७३ संग्राहि शीतलं चापि लघु दोषाविरोधि च
राजक्षवकशाकं तु सटीशाकं तु तद्विधम् ।

काळी राइनी भाजीना तथा कपूरकाचरीनी भाजीना गुणो.

१७३ काळी राईनी भाजी द्रवने सुकावनार छे, शीतळ छे, हलकी छे अने दोषोथी विरुद्ध नथी. कपूरकाचरीनी भाजी पण एवाज गुणोवाळी छे.

१७४ स्वादुपाकरसं शाकं दुर्जरं हरिमन्थजम् ।
भेदनं मधुरं रूक्षं कलायमतिवातलम् ।

चणेचीना तथा मटाणाना शाकना विशेष गुणो.

१७४ चणेचीनुं शाक, रसमां तथा पाकमां मधुर छे अने मांड पचे एवुं छे. मटाणानुं शाक दस्तनी प्रवृत्ति करनार छे, मधुर छे, रूक्ष छे अने अत्यंत वायु करनार छे. (१४८ मा विषयमां पण मटाणाना शाकना गुणो कह्या छे अने अहीं पण कह्या छे तेथी अहीं बीजी कोइ जातना मटाणा समजवा.)

१७५ स्रंसनं कटुकं पाके लघु वातकफापहम्॥
शोफघ्नमुष्णवीर्यं तु पत्रं पूतिकरञ्जजम् ।

गुच्छकरंजनां पानडांना गुणो.

१७५ गुच्छकरंजनां पानडां मळने पाडनार छे, पाकमां तीखां छे, हलकां छे, वायुने तथा कफने हरनारां छे, सोजाने मटाडनारां छे अने उष्णवीर्यवाळां छे.

१७६ ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटु पित्तप्रकोपणम् ॥
सुगन्धि विशदं तिक्तं स्वर्यं वातकफापहम् ।
स्रंसनं कटुकं पाके कषायं वह्निदीपनम् ।
वक्त्रकण्डूमलक्लेददौर्गन्ध्यादिविशोधनम् ॥

नागरवेलना पानना गुणो.

१७६ नागरवेलनुं पान तीक्ष्ण छे, उष्णवीर्यवाळुं छे, तीखुं छे, पित्तने प्रकुपित करनार छे, सुगंधी छे, चीकाशवगरनुं छे, कडवुं छे, स्वरने सारो करनार छे, वायुने तथा कफने टाळनार छे, मळने स्थानथी पाडनार छे, पाकमां तीखुं छे, तूरूं छे, अग्निने दीप्त करनार छे अने मोहोडानां खरज, मळ, क्लेद, तथा दुर्गंधपणुं इत्यादिकने साफ करी नाखनार छे.

१७७ कोविदारशणशाल्मलीपुष्पाणि मधुराणि मधुरविपाकानि रक्तपित्तहराणि च ॥ वृषागस्त्ययोः पुष्पाणि तिक्तानि कटुविपाकानि क्षयकासापहानि ॥ मधुशिग्रुकरीरकुसुमानि

कटुविपाकानि वातहराणि सृष्टमूत्रपुरीषाणि च
आगस्त्यं नातिशीतोष्णं नक्तान्धानां प्रशस्यते ।
रक्तवृक्षस्य निम्बस्य मुष्ककार्कासनस्य च ॥
कफपित्तहरं पुष्पं कुष्टघ्नं कुटजस्य च ।
सतिक्तं मधुरं शीतं पद्मं पित्तकफापहम् ॥
मधुरं पिच्छिलं स्निग्धं कुमुदं ह्लादि शीतलम् ।
तस्मादल्पान्तरगुणे विद्यात्कुवलयोत्पले ॥
सिन्दुवारं विजानीयाद्धितं पित्तविनाशनम् ।
मालतीमल्लिके तिक्ते सौरभ्यात्पित्तनाशने ॥
सुगन्धि विशदं हृद्यं बाकुलं पाटलानि च ।
श्लेष्मपित्तविषघ्नं तु नागं तद्वच्च कुङ्कुमम् ।
चम्पकं रक्तपित्तघ्नं शीतोष्णं कफनाशनम् ।
किंशुकं कफपित्तघ्नं तद्वदेव कुरण्टकम् ।
यथावृक्षं विजानीयात्पुष्पं वृक्षोचितं तथा ॥
मधुशिग्रुकरीराणि कटुश्लेष्महराणि च ॥

कंचनार वगेरेनां पुष्पोनी भाजीओना गुणो.

१७७ कंचनारनां पुष्पो, शणनां पुष्पो अने शेमळानां पुष्पो मधुर छे, विपाकमां पण मधुर छे अने रक्तपित्तने हरनारां छे. अरडूसीनां तथा अगथीआनां पुष्पो कडवां छे, विपाकमां तीखां छे अने क्षयने तथा खांसीने टाळनारां छे. राता सरगवानां अने केरडानां पुष्पो विपाकमां तीखां छे, वायुने हरनारां छे अने विष्टानी तथा मूत्रनी विशेष प्रवृत्ति करावनारां छे. अगथीयानुं पुष्प अत्यंत शीतल पण नथी तथा अत्यंत उष्ण पण नथी अने रात्र्यंध लोकोने माटे हितकारी छे. रक्त वृक्ष(पर्याय मळ्यो नथी)नुं, लींबडानुं, मरखानुं, आकडानुं, बीबलानुं अने इंद्रजवनुं फूल कफने तथा पित्तने हरनार छे अने कोढने टाळनार छे. कमळनुं पुष्प कडवाशवाळुं छे, मधुर छे, शीत छे अने पित्तने तथा कफने टाळनार छे. कुमुद नामना रात्रिविकासी कमळनुं फूल मधुर छे, चीकाशवाळुं छे, स्निग्ध छे, सुखदायी छे अने शीतळ छे. कुवलय अने उत्पल ए नामनां कमळोनां पुष्पो लगभग कुमुदना पुष्प जेवाज गुणोवाळां छे. (कुवलय पण रात्रिविकासीज छे.) नगडनुं पुष्प हितकारी छे अने पित्तने टाळनार छे. मालतीनुं फूल अने मोगरानुं फूल कडवां छे अने सुगंधथी पित्तनो नाश करनारां छे. बोलसरीनां तथा पाडलनां पुष्पो सुगंधी छे, चीकाशवगरनां छे अने प्रिय लागे एवां छे. नागकेसरनां तथा केसरनां पुष्पो कफने, पित्तने तथा विषने हणनारां छे. चंपकनुं पुष्प रक्तपित्तने हणनार छे, शीत छे, उष्ण पण छे अने कफने नष्ट करनार छे. खाखरानुं फूल अने कांटाअशेरीयानुं फूल कफने तथा पित्तने हणनार छे. आ प्रकरणमां जे पुष्पोना गुणो नथी कह्या ते पुष्पोना गुणो तेओना वृक्षोना गुणोप्रमाणे जाणी लेवा. राता सरगवानी अने केरडानी डांडलीओ तीखी छे अने कफने हणनारी छे.

१७८ क्षवककुलेचरवंशकरीरप्रभृतीनि कफहराणि सृष्टमूत्रपुरीषाणि ॥
क्षवकं कृमिलं तेषु स्वादुपाकं सपिच्छिलम् ।
विष्यन्दि वातलं नातिपित्तश्लेष्मकरं च तत् ॥
वेणोः करीराः कफला मधुरा रसपाकतः ।
विदाहिनो वातकराः सकषाया विरूक्षणाः ॥

उद्भिदानि पलालेक्षुकरीषवेणुक्षितिजानि ॥ तत्र पलालजातं मधुरं मधुरविपाकं रूक्षं दोषप्रशमनं च । इक्षुजं मधुरं कषायानुरसं कटुकं शीतलं च ॥ उष्णं कारीषं कषायं वातकोपनं च ॥ वेणुजातं कषायं वातकोपनं च ॥ भूमिजं गुरु नातिवातलं भूमितश्चास्यानुरसः ॥

उद्भिद (धरतीने फोडीने नीकळनारां) शाकोना गुणो.

१७८ क्षवक, (अप्रसिद्ध छे) चोमासामां उगता मींदडीना टोप अने वांसना अंकुर इत्यादि शाको कफने हरनारां छे अने विष्टानी तथा मू-

त्रनी विशेष प्रवृत्ति करनारां छे. एओमां क्षवक कृमिओने उत्पन्न करनार छे, पाकमां मधुर छे, चीकाशवाळुं छे, कफनो स्राव करनार छे, वायुने वधारनार छे अने कफने तथा पित्तने कांईक उत्पन्न करनार छे. वांसना अंकुरो कफने उत्पन्न करनारा छे, रसमां तथा पाकमां मधुर छे, पाक्या पेहेलां बळतरा उत्पन्न करनारा छे, वायुने करनारा छे, तूराशवाळा छे अने रूक्षता करनारा छे. मीदडीना टोपो धान्यनां फोतरांओ वगेरेमां, शेलडीओमां, छाणमां, वांसमां अने पृथ्वीमां थाय छे तेओमां फोतरांओ वगेरेमां उत्पन्न थएला टोपो मधुर छे, विपाकमां पण मधुर छे, रूक्ष छे अने दोषोने शांत करनारा छे. शेलडीमां उत्पन्न थएला टोपो मधुर छे, पेटामां तूराशवाळा छे, तीखा छे अने शीतल छे. छाणमां उत्पन्न थएला टोपो उष्णवीर्यवाळा छे, तूरा छे अने वायुने प्रकुपित करनारा छे. वांसमां उत्पन्न थएला टोपो तूरा छे अने वायुने प्रकुपित करनारा छे. पृथ्वीमां उत्पन्न थएला टोपो भारे छे, वायुने अत्यंत उत्पन्न करनारा नथी अने जे पृथ्वीमां उत्पन्न थया होय ते पृथ्वीने अनुसरता गुणोवाळा होय छे.

१७९ पिण्याकतिलकल्कस्थूणिकाशुष्कशाकानि सर्वदोषप्रकोपणानि ॥
विष्टम्भिनः स्मृताः सर्वे वटका वातकोपनाः ।
सिण्डाकी वातला सान्द्रा रुचिप्यानलदीपनी॥

खोळ वगेरेनां शाकोना तथा वडीयो अने खेरा वगेरे शुष्क शाकोना गुणो.

१७९ सर्षप तथा अलसी वगेरेना खोळ, तलना खोळ अने वडीयो तथा खेरा वगेरे शुष्क शाको एओ सर्व दोषोने प्रकुपित करनारां छे. सर्व प्रकारनां खेरा तथा वडीओ दस्तने अटकावनार छे अने वायुने प्रकुपित करनारां छे. मूळा वगेरेने कांईक बाफी कचरी सुगंधी पदार्थोथी तथा राई वगेरे तीखा पदार्थोथी युक्त करीने आथ्यां होय ते शिंडाकी केहेवाय छे. ए शिंडाकी वायुने उत्पन्न करनारी छे, पुष्टि आपनारी छे, रुचिकारक छे अने अग्निने दीप्त करनारी छे.

१८० विड्भेदि गुरु रूक्षं च प्रायो विष्टम्भि-दुर्जरम् ।
सकषायं च सर्वं हि स्वादु शाकमुदाहृतम् ॥
पुष्पं पत्रं फलं नालं कन्दाश्च गुरवः क्रमात् ।

मधुर शाकोना सामान्य गुणो.

१८० सघळां मधुर शाको विष्टानुं भेदन करनारां छे, (दस्त उत्पन्न करनारां छे,) भारे छे, रूक्ष छे, घणुं करी दस्तने अटकावीने तेनी व्यथा तथा शूल सहित प्रवृत्ति करनारां छे, मांड पचे एवां छे अने तूराशवाळां छे. पुष्पशाक करतां पत्रशाक भारे छे, पत्रशाक करतां फळशाक भारे छे, फळशाक करतां नाळशाक (डांडलीओरूप शाक) भारे छे अने नाळशाक करतां कंदशाक भारे छे.

१८१ कर्कशं परिजीर्णं च कृमिजुष्टमदेशजम् ॥
वर्जयेत्पत्रशाकं तद्यदकालविरोहि च ।

केवा पत्रशाकनो (पानडांरूप शाकनो) त्याग करवो ?

१८१ जे पत्रशाक कठोर स्पर्शवाळुं, जूनुं, कीडाओए खाधेलुं, अयोग्य प्रदेशमां उत्पन्न थएलुं के अयोग्य काळमां उगेलुं होय तेनो त्याग करवो.

१८२ कन्दानत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥ विदारीकन्दशतावरीबिसमृणालशृङ्गाटककशेरुकपिण्डालुकमध्वालुकहस्त्यालुककाष्ठालुकशङ्खालुकरक्तालुकेन्दीवरोत्पलकन्दप्रभृतीनि ॥
रक्तपित्तहराण्याहुः शीतानि मधुराणि च ।
गुरूणि बहुशुक्राणि स्तन्यवृद्धिकराणि च ॥

कंदो अने तेओना सामान्य गुणो.

१८२ हवे कंदोविषे कहीये छीए. फगवेलानो कंद, शतावरी, कमळना मूळमांथी उत्पन्न थएला जाडा अंकुरो, कमळनाळो, शींगोडां, कसेरुकंद, पिंडालुक, मध्वालुक, हस्त्यालुक, काष्ठालुक, शंखालुक, रक्तालुक, (रतालु) इंदीवर नामना कमळनो कंद अने उत्पल नामना कमळनो कंद इत्यादि कंदो केहेवाय छे. (आमां जे केटलांएक अकंद छे तेओने पण गुणसाम्यने लीधे साथे गणी दीधां होय एम जणाय छे.)

कंदो रक्तपित्तने हरनारा, टाढा, मधुर, भारे, वीर्यने घणुं करनारा अने धावणनी वृद्धि करनारा केहेवाय छे.

१८३ मधुरो बृंहणो वृष्यः शीतः स्वर्योऽतिमूत्रलः।
विदारीकन्दो बल्यस्तु पित्तवातहरस्तु सः ॥

विदारीकंदना विशेष गुणो.

१८३ विदारीकंद एटले फगवेलानो कंद मधुर छे, पुष्टि करनार छे, वीर्यने वधारनार छे, टाढो छे, स्वरने सारो करनार छे, मूत्रने अत्यंत वधारनार छे, बळ आपनार छे अने पित्तने तथा वायुने हरनार छे.

१८४ वातपित्तहरी वृष्या स्वादुतिक्ता शतावरी।
महती चैव हृद्या च मेधाग्निबलवर्द्धिनी ॥
ग्रहण्यर्शोविकारघ्नी वृष्या शीता रसायनी।
कफपित्तहरास्तिक्तास्तस्या एवाङ्कुराः स्मृताः ॥

शतावरीना विशेष गुणो.

१८४ शतावरी वायुने तथा पित्तने हरनारी छे, वीर्यने वधारनारी छे अने मधुर तथा कडवी छे. मोटी शतावरी हृदयने सारूं करनारी छे, बुद्धिने अग्निने तथा बळने वधारनारी छे, ग्रहणीने तथा अरशना रोगने हणनारी छे, वीर्यने वधारनारी छे, टाढी छे अने रसायन छे. शतावरीना अंकुरो कफने तथा पित्तने हरनारा छे अने कडवा छे.

१८५ अविदाहि बिसं प्रोक्तं रक्तपित्तप्रसादनम्।
विष्टम्भि दुर्जरं रूक्षं विरसं मारुतावहम् ॥

कमळना मूळमां उत्पन्न थएला जाडा अंकुरोना विशेष गुणो.

१८५ कमळना अंकुरो बळतराने उत्पन्न करनार नथी, रक्तपित्तने स्वच्छ करनार छे, दस्तने अटकावनार छे, मांड पचे एवा छे, रूक्ष छे, रस रहित छे अने वायुने उत्पन्न करनार छे.

१८६ गुरू विष्टम्भिशीतौ च शृङ्गाटककशेरुकौ।

शींगोडाना तथा कसेरूकंदना विशेष गुणो.

१८६ शींगोडुं तथा कसेरुकंद भारे छे, दस्तने अटकावनार छे अने शीतल छे.

१८७ पिण्डालुकं कफकरं गुरु वातप्रकोपणम्॥

पिंडालुकना विशेष गुणो.

१८७ पिंडालुक कफने करनार छे, भारे छे अने वायुने प्रकुपित करनार छे.

१८८ सुरेन्द्रकन्दः श्लेष्मघ्नो विपाके कटुपित्तकृत् ॥

सुरेंद्रकंदना (शकरकंदना) विशेष गुणो.

१८८ शकरकंद कफने हणनार छे, विपाकमां तीखो छे अने पित्त करनार छे.

१८९ वेणोः करीरा गुरवः कफमारुतकोपनाः॥

१ हाल जे अनेक जातना कंदो थाय छे तेओमां केटलाएक पिंडालुक तथा मध्वालुक वगेरे अहीं लखेला कंदोज हशे पण नामोना फेरफार थई जवाथी लख्या प्रमाणे ओळखी शकाता नथी. जंगलमां पण अनेक कंदो थाय छे के जओमां केटलाएक खावा योग्य होय छे अने केटलाएक झेरी होय छे. साधुलोको झेरी कंदोने पण खटाईमां बाफवाथी झेरवगरना करीने खाय छे.

वांसना अंकुरोना विशेष गुणो.

१८९ वांसना अंकुरो भारे छे अने कफने तथा वायुने प्रकुपित करनारा छे.

१९० स्थूलसूरणमाणकप्रभृतयः कन्दा ईषत्कषायाः कटुका रूक्षा विष्टम्भिनो गुरवः कफवातलाः पित्तहराश्च ॥

सूरण आदि कंदो अने तेओना सामान्य गुणो.

१९० स्थूल, सूरण अने माणक (मानकंद) इत्यादिक पण कंदोज छे अने तेओ जराक तूरा छे, तीखा छे, रूक्ष छे, दस्तनी अटकायत करनारा छे, भारे छे, कफने तथा वायुने वधारनारा छे अने पित्तने हरनारा छे.

१९१ माणकं स्वादु शीतं च गुरु चापि प्रकीर्तितम्
स्थूलकन्दस्तु नात्युष्णः सूरणो गुदकीलहा ॥
कुमदोत्पलपद्मानां कन्दा मारुतकोपनाः ।
कषायाः पित्तशमना विपाके मधुरा हिमाः ॥
वाराहकन्दः श्लेष्मघ्नः कटुको रसपाकतः ।
मेहकुष्ठक्रिमिहरो बल्यो वृष्यो रसायनः ॥

एओमांना केटलाएक कंदोना विशेष गुणो.

१९१ मानकंद मधुर छे, शीतळ छे अने भारे छे. स्थूलकंद अत्यंत उष्ण नथी. सूरण अरशने मटाडनार छे. कुमुद, उत्पल अने पद्म (श्वेतकमळ) इत्यादि जातनां कमळोना कंदो वायुने प्रकुपित करनारा छे, तूरा छे, पित्तने शांत करनारा छे, पाकमां मधुर छे अने टाढा छे. वाराहीकंद कफने हणनार छे. रसमां तथा पाकमां तीखो छे, बळ आपनार छे, वीर्यने वधारनार छे, रसायन छे अने प्रमेहने, कोढने तथा कृमिओने हरनार छे.

१९२ तालनालिकेरखर्जूरप्रभृतीनां मस्तकमज्जानः ।
स्वादुपाकरसानाहू रक्तपित्तहरांस्तथा ॥
शुक्रलाननिलघ्नांश्च कफवृद्धिकरानपि ।

ताडी वगेरेनां अग्रोनी मज्जाना गुणो.

१९२ ताडी, नाळीएरी अने खजुरी एओनां अग्रोनी मज्जाओ रसमां तथा पाकमां मधुर छे, रक्तपित्तने तथा वायुने हरनारी छे अने कफने तथा वीर्यने वधारनारी छे.

१९३ बालं ह्यनार्तवं जीर्णं व्याधितं क्रिमिभक्षितम् ।
कन्दं विवर्जयेत्सर्वं यो वा सम्यङ् न रोहति ॥

केवा कंदनो त्याग करवो.

१९३ जे कंद काचो, ऋतुवगर उत्पन्न थओलो, जूनो, दरदवाळो, कीडाओए खाधेलो के वावतां बराबर न उगे एवो होय ते सर्व कंदनो त्याग करवो.

१९४ सैन्धवसामुद्रबिडसौवर्चलरोमकौद्भिदप्रभृतीनि लवणानि यथोत्तरमुष्णानि वातहराणि कफपित्तकराणि यथापूर्वं स्निग्धानि स्वादूनि सृष्टमूत्रपुरीषाणि चेति ॥

लवणो अने तेओना सामान्य गुणो.

१९४ सैंधव, दरीयाइलूण, बिडलूण, संचळ, वडागरूं अने औद्भिद (पृथ्वीने फोडीने नीकळता क्षारजळने सूर्यनी किरणोथी अथवा अग्निथी तपावीने जे लूण बनाववामां आवे छे ते) इत्यादि लवणो केहेवाय छे. एओ उत्तरोत्तर एटले सैंधव करतां दरीयाइलूण, दरीयाइलूण करतां बिडलूण, बिडलूण करतां संचळ, संचळ करतां वडागरूं अने वडागरा करतां औद्भिद वधारे उष्ण छे, वधारे वायुने हरनार छे अने वधारे कफने तथा पित्तने करनार छे. औद्भिद करतां वडागरूं, वडागरा करतां संचळ, संचळ करतां बिडलूण, बिललूण करतां दरीयाइलूण अने दरीयाइलूण करतां सैंधव वधारे स्निग्ध छे, वधारे

स्वादयुक्त छे अने वधारे मूत्रनी तथा विष्टानी प्रवृत्ति करावनार छे.

१९५ चक्षुष्यं सैन्धवं हृद्यं रुच्यं लघ्वग्निदीपनम् ।
स्निग्धं समधुरं वृष्यं शीतं दोषघ्नमुत्तमम् ॥

सैंधवना विशेष गुणो.

१९५ सैंधव चक्षुनुं हित करनार छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, रुचिकारक छे, हलकुं छे, अग्निने दीप्त करनार छे, स्निग्ध छे, मधुरतावाळुं पण छे, वीर्यने वधारनार छे, टाढुं छे, दोषोने हणनार छे अने सघळां लूणोथी उत्तम छे. (आ लूण सिंधदेशनी अमुक खाणमां उत्पन्न थाय छे तेथी सैंधव केहेवाय छे.)

१९६ सामुद्रं मधुरं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥

सामुद्र (दरीयाइलूण) ना विशेष गुणो.

१९६ दरीयाइलूण पाकमां मधुर छे, अत्यंत उष्ण नथी, बळतरा करनारूं नथी, दस्त पाडनार छे, कांइक स्निग्ध छे, शूळने टाळनार छे अने कांइक पित्त करनार छे. (आ लूण दरीयाना पाणीने जमावीने बनाववामां आवे छे तेथी सामुद्र केहेवाय छे.)

१९७ सक्षारं दीपनं सूक्ष्मं शूलहृद्रोगनाशनम् ।
रोचनं तीक्ष्णमुष्णं च बिडं वातानुलोमनम् ॥

बिडलूणना विशेष गुणो.

१९७ बिडलूण क्षारवाळुं छे. अग्निने दीप्त करनार छे, सूक्ष्म स्रोतोमां पेसी जाय एवुं छे, शूळने तथा हृदयना रोगने नष्ट करनार छे, रुचि उपजावनार छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण छे अने स्रोतोनी शुद्धि करनारूं होवाथी वायुने गति आपनार छे. (आ लूण प्रसारणीना पुट दइने जे क्षार बनाववामां आवे छे ते छे.)

१९८ लघु सौवर्चलं पाके वीर्योष्णं विशदं कटु ।
गुल्मशूलविबन्धघ्नं हृद्यं सुरभि रोचनम् ॥

संचळना विशेष गुणो.

१९८ संचळ पाकमां हलकुं छे, उष्ण वीर्यवाळुं छे, चीकाश वगरनुं छे, तीखुं छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे, सुगंधी छे, रुचिकारक छे अने गुल्मने, शूळने तथा मळबंधने टाळनार छे, (साजीखार अने दरीयाइलूण एओमांथी संचळ बनाववामां आवे छे.)

१९९ रोमकं तीक्ष्णमत्युष्णं व्यवायि कटुपाकि च ।
वातघ्नं लघु विष्यन्दि सूक्ष्मं विड्भेदि मूत्रलम् ॥

वडागराना विशेष गुणो.

१९९ वडागरूं तीक्ष्ण छे, अत्यंत उष्ण छे, जठराग्निथी पाक्याविनाज सघळा देहमां व्याप्त थईने पछी पाके एवुं छे, पाकमां तीखुं छे, वायुने हणनार छे, हलकुं छे, कफ करनार छे, स्रोतोमां पेसी जाय एवुं छे, दस्त पाडनार छे अने मूत्रने वधारनार छे. (आ लूण खारी जमीनमां क्यारा बांधी पाणी पाई जमाववामां आवे छे.)

२०० लघु तीक्ष्णोष्णमुत्क्लेदि सूक्ष्मं वातानुलोमनम् ।
सतिक्तं कटु सक्षारं विद्याल्लवणमौद्भिदम्

औद्भिद लवणना विशेष गुणो.

२०० औद्भिद लवण हलकुं छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण छे, आर्द्रपणुं करनार छे, स्रोतोमां पेसी जाय एवुं छे, वायुने अनुकूल करनार छे, कडवा शवाळुं छे, तीखुं छे अने क्षारवाळुं छे.

२०१ कफवातक्रिमिहरं लेखनं पित्तकोपनम् ।
दीपनं पाचनं भेदि लवणं गुटिकाह्वयम् ॥

गडलवण के जे वडागरानीज जात छे तेना विशेष गुणो.

२०१ गडलवण मलादिकने उखेडनार छे, पित्तने प्रकुपित करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे,

दस्त पाडनार छे अने कफने, वायुने तथा कृमिओने टाळनार छे.

२०२ ऊषसूतं वालुकेलं शैलमूलाकरोद्भवम् ।
लवणं कटुकं छेदि विहितं कटु चोच्यते ॥

धरतीना खारा वगेरे लवणोना गुणो.

२०२ खारी जमीनमां थतो खागे, रेताळ जमीननो खारो, पाहाडी खारो अने खाणमां थएलो खारो इत्यादि लवणो तीखां छे अने कफने कापनारां छे. आ शिवाय बनावटथी करेलां बीजां पण लवणो तीखांज केहेवामां आवे छे.

२०३ यवक्षारस्वर्जिकाक्षारपाकिमटङ्कणक्षाराः ।
गुल्मार्शोग्रहणीदोषशर्कराश्मरिनाशनाः ॥
क्षारास्तु पाचनाः सर्वे रक्तपित्तकराः स्मृताः ॥

क्षारो अने तेओना सामान्य गुणो.

२०३ जवखार, साजीखार, पाकिम (पकावीने करेलो प्रतिसारणीय तथा पानीय क्षार) अने टंकणखार ए क्षारो केहेवाय छे. सघळा क्षारो व्रणादिकनुं पाचन करनारा छे, रक्तपित्तने करनारा छे अने गुल्म, अरश, ग्रहणीदोष, कांकरी तथा पथरी एओने नष्ट करनारा छे.

२०४ज्ञेयौ वह्निसमौ क्षारौ स्वर्जिकायावशूकजौ।
शुक्रश्लेष्मविबन्धार्शोगुल्मप्लीहविनाशनौ ॥

साजीखार अने जवखार एओना विशेष गुणो.

२०४ साजीखार अने जवखार ए बन्ने क्षारो अग्नि जेवा गुणोवाळा छे अने वीर्य, कफ, मलबंध, अरश, गुल्म तथा बरलनुं दरद एओने नष्ट करनारा छे.

२०५उष्णोऽनिलघ्नः प्रक्लेदी ऊषक्षारो बलापहः।

खारी जमीनना खाराना विशेष गुणो.

२०५ खारी जमीननो खारो वायुने हणनार छे, आर्द्रपणुं करनार छे अने बळने नष्ट करनार छे.

२०६ मेदोघ्नः पाकिमः क्षारो मूत्रबस्तिविशोधनः ॥

पाकिमक्षारना विशेष गुणो.

२०६ पाकिमक्षार मेदने तोडनार छे अने मूत्रने तथा मूत्राशयने शुद्ध करनार छे.

२०७ विरूक्षणोऽनिलकरः श्लेष्मघ्नः पित्तदूषणः।
अग्निदीप्तिकरस्तीक्ष्णष्टङ्कणः क्षार उच्यते ॥

टंकणखारना विशेष गुणो.

२०७ टंकणखार रूक्षपणुं करनार छे, वायु करनार छे, कफने तोडनार छे, पित्तने दूषित करनार छे, अग्निने प्रदीप्त करनार छे अने तीक्ष्ण छे.

२०८ सुवर्णं स्वादु हृद्यं च बृंहणीयं रसायनम् ।
दोषत्रयघ्नं शीतं च चक्षुष्यं विषसूदनम् ॥

सुवर्णना गुणो.

२०८ सुवर्ण मधुर छे, हृदयने माटे सारूं छे, पुष्टि आपनार छे, रसायन छे, त्रणे दोषोने हणनार छे, टाढुं छे, नेत्रोनुं हित करनार छे अने झेरने नष्ट करनार छे.

२०९ रूप्यमम्लं सरं शीतं सस्नेहं पित्तवातनुत् ।

रूपाना गुणो.

२०९ रूपूं खाटुं छे, दस्तनी प्रवृत्ति करनार छे, टाढुं छे, स्निग्ध छे अने पित्तने तथा वायुने टाळनार छे.

२१० ताम्रं कषायं मधुरं लेखनं शीतलं सरम् ॥

त्रांबाना गुणो.

२१० त्रांबूं तूरूं छे, मधुर छे, कफादिकने उखेडनार छे, टाढुं छे अने दस्तनी प्रवृत्ति करनार छे.

२११ तिक्तं कांस्यं लेखनं च चक्षुष्यं कफवातजित् ।

कांसाना गुणो.

२११ कांसूं कडवुं छे, कफादिकने उखेडनार छे, नेत्रोने माटे सारूं छे अने कफने तथा वायुने टाळनार छे.

२१२ वातकृच्छीतलं लोहं तृष्णापित्तकफप्रणुत्

लोढाना गुणो.

२१२ लोढुं वायु करनार छे, टाढुं छे अने तरश, पित्त तथा कफ एओने टाळनार छे.

२१३ कटुक्रिमिघ्ने लवणे त्रपुसीसे विलेखने ।

कथीळना तथा सीसाना गुणो.

२१३ कथीळ तथा सीसुं कडवां छे, कृमिओने हणनारां छे, खारां छे अने कफादिकने उखेडनारां छे.

२१४ मुक्ताविद्रुमवज्रेन्द्रवैदूर्यस्फटिकादयः ॥
चक्षुष्या मणयः शीता लेखना विषसूदनाः ।
पवित्रा धारणीयाश्च पाप्मालक्ष्मीमलापहाः ॥

मणिओ तथा तेओना गुणो.

२१४ मोती, परवाळां, हीरा, नीलवी, लसणीया तथा स्फाटिक इत्यादि मणिओ केहेवाय छे. मणिओ नेत्रोनुं हित करनारा छे, टाढा छे, कफने उखेडनारा छे, झेरने टाळनारा छे, पवित्र छे, धारण करवा योग्य छे अने पापोने, अलक्ष्मीने तथा मळोने टाळनारा छे.

२१५ धान्येषु मांसेषु फलेषु चैव
शाकेषु चानुक्तमिहाप्रमेयात् ।
आस्वादतो भूतगुणैश्च मत्वा
तदादिशेद्द्रव्यमनल्पबुद्धिः ॥

जेओना गुणदोषो आ ग्रंथमां कह्या नथी एवां धान्यो, मांसो, फळो तथा शाको वगेरेना गुणोनी कल्पना करवानी पद्धति.

२१५ धान्यो, मांसो, फळो, शाको तथा कंदमूळो इत्यादि पदार्थो अपरिमित होवाथी सर्वना गुणो केहेवानुं बनी शके एम नथी एटला माटे जे पदार्थोना गुणो आ ग्रंथमां केहेवामां आव्या नथी तेओना गुणो उत्तम बुद्धिवाळा वैद्ये रसो उपरथी तथा ते ते पदार्थोने उत्पन्न करनारां पृथ्वी आदि भूतोना गुणो उपरथी कल्पी लईने केहेवा.

२१६ षष्टिका यवगोधूमा लोहिता ये च ।
शालयः
मुद्गाढकीमसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ॥

धान्यवर्गमां उत्तम धान्यो.

२१६ धान्यवर्गमां साठीचोखा, जव, घऊं, राता चोखा, मग, तूवर अने मसूर एओ उत्तम गणाय छे.

२१७ लावतित्तिरिसारङ्गकुरङ्गैणकपिञ्जलाः ।
मयूरवर्मिकूर्माश्च श्रेष्ठा मांसगणेष्विह ॥

मांसवर्गमां उत्तम मांसो.

२१७ लावां, तेतर, गौर हरिण, कुरंग, काळीयार मृग, गौर तेतर, मयूर, वर्मी नामनो मत्स्य, रोहित नामनो (रोहिडो) मत्स्य अने काचबो एओनां मांसो सघळा मांसवर्गमां उत्तम छे.

२१८ दाडिमामलकं द्राक्षा खर्जूरं सपरूषकम् ।
राजादनं मातुलुङ्गं फलवर्गे प्रशस्यते ॥

फळवर्गमां उत्तम फळो.

२१८ फळवर्गमां दाडिम, आमळां, द्राक्ष, खजूर, ध्रामणां, राण, अने बीजोरां एओ उत्तम गणाय छे.

२१९ सतीनो वास्तुकश्चुञ्चूचिल्लीमूलकपोतिकाः
मण्डूकपर्णी जीवन्ती शाकवर्गे प्रशस्यते ॥

शाकवर्गमां उत्तम शाको.

२१९ शाकवर्गमां मटाणानी भाजी, टांकानी भाजी, छूंछनी भाजी, चीलनी भाजी, नाहाना तथा कुमळा मूळानी भाजी, ब्राह्मीनी भाजी अने राहारूडी तथा मीठी खरखोडी एओ उत्तम गणाय छे.

२२० गव्यं क्षीरं घृतं श्रेष्ठम् ।

दूध तथा घी एओमां उत्तम.

२२० सघळां दूधोमां गायनुं दूध उत्तम छे अने सघळां घीमां गायनुं घी उत्तम छे.

२२१ सैन्धवं लवणेषु च ।
धात्री दाडिममम्लेषु पिप्पली नागरं कटौ ॥
तिक्ते पटोलवार्ताके मधुरे घृतमुच्यते ।
क्षौद्रं पूगफलं श्रेष्ठं कषाये सपरूषकम् ॥

ते ते रसोमां उत्तम रसवाळा पदार्थो.

२२१ लवणोमां सैंधव उत्तम छे. अम्ल (खाटा) पदार्थोमां आमळां तथा दाडिम उत्तम छे. तीखा पदार्थोमां पीपळ तथा सुंठ उत्तम छे. कडवा पदार्थोमां पटोल तथा रींगणां उत्तम छे. मधुर पदार्थोमां घी तथा मध उत्तम छे अने तूरा पदार्थोमां सोपारी तथा ध्रामणां उत्तम छे. (खाटा करवाना प्रयोगोमां ज्यां अमुक पदार्थोनां नाम न आप्यां होय त्यां आमळानो तथा दाडिमनोज प्रयोग करवो इत्यादि आ उपरथी समजी लेवुं.)

२२२ शर्करेक्षुविकारेषु पाने मध्वासवौ तथा॥

शेलडीना विकारोमां तथा पीवाना पदार्थोमां उत्तम.

२२२ शेलडीना विकारोमां साकर सर्वथी उत्तम छे अने पीवाना पदार्थोमां द्राक्षनुं मद्य तथा द्राक्षनो आसव उत्तम छे.

२२३ परिसंवत्सरं धान्यं मांसं वयसि मध्यमे।

धान्योमां तथा मांसोमां प्रधान.

२२३ धान्योमां जे धान्यने उत्पन्न थयाने एक वर्ष वीती गयुं होय अर्थात् जे धान्य एक वर्षनुं जूनुं होय तेनुं ग्रहण करवुं अने मांसोमां जे मांस मध्यम वयवाळा प्राणीनुं होय तेनुं ग्रहण करवु.

२२४ अपर्युषितमन्नं तु संस्कृतं मात्रया शुभम्।
फलं पर्यागतं शाकमशुष्कं तरुणं नवम् ।

अन्नोमां, फळोमां तथा शाकोमां प्रधान.

२२४ जे राधेलुं अन्न रातवाशी न रह्युं होय अने योग्य मात्राथी देवामां आव्युं होय तेने उत्तम समजवुं, फळोमां पाकेला फळने उत्तम समजवुं अने शाकोमां जे शाक सुकाएलुं न होय, ताजुं होय तथा करमाएलुं न होय तेने उत्तम समजवुं.

२२५ अतःपरं प्रवक्ष्यामि कृतान्नगुणविस्तरम् ।
लाजमण्डो विशुद्धानां पथ्यः पाचनदीपनः ।
वातानुलोमनो हृद्यः पिप्पलीनागरायुतः ॥
स्वेदाग्निजननी लघ्वी दीपनी बस्तिशोधनी ।
क्षुत्तृट्छ्रमग्लानिहरी पेया वातानुलोमनी ॥
विलेपी तर्पणी हृद्या ग्राहिणी बलवर्द्धनी ।
पथ्या स्वादुरसा लघ्वी दीपनी क्षुत्तृषापहा ॥
हृद्या सन्तर्पणी वृष्या बृंहणी बलवर्द्धनी ।
सिक्थैर्विरहितो मण्डः पेया सिक्थसमन्विता॥
विलेपी बहुसिक्था स्याद्यवागूर्विरलद्रवा ।
विष्टम्भी पायसो बल्यो मेदःकफकरो गुरुः ॥
कफपित्तकरी बल्या कृशराऽनिलनाशनी ।
धौतस्तु विमलः शुद्धो मनोज्ञः सुरभिः समः ॥
स्विन्नः सुप्रस्रुतस्तूष्णो विशदस्त्वोदनो लघुः।
अधौतोऽप्रस्रुतोऽस्विन्नः शीतश्चाप्योदनो गुरुः।
लघुः सुगन्धिः कफहा विज्ञेयो भृष्टतण्डुलः ।
स्नेहैर्मांसैः फलैः कन्दैर्वैदलाम्लैश्च संयुताः ॥
गुरवो बृंहणा बल्या ये च क्षीरोपसाधिताः ।
सुस्विन्नो निस्तुषो भृष्ट ईषत्सूपो लघुर्हितः ॥
स्विन्नं निष्पीडितं शाकं हितं स्यात्स्नेहसंस्कृतम्।
अस्विन्नं स्नेहरहितमपीडितमतोऽन्यथा ॥

नोखनोखा प्रकारनां रांधेलां अन्नोना गुणो.

२२५ हवे रांधेलां अन्नोना गुणो विषे विस्तारथी कहुं छुं. जेमां कणीओ न होय एवो राबनो जे उपरनो भाग ते मंड केहेवाय छे. विरेचन वगेरे कर्मोथी शुद्ध थएला रोगीओने शाळनी धाणीनो मंड पथ्य छे, पाचन करनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, वायुने अनुकूल गति आपनार छे अने प्रिय लागे एवो छे. ए मंडमां जराक पीपळनो अने सुंठनो योग देवो जोईए. जेमां कणीओ थोडी

होय अने द्रव पातळो होय अर्थात् जे राब-पीवा जेवी होय ते पेया केहेवाय छे. पेया उष्ण होवाथी पसीनाने उत्पन्न करे छे, अग्निने उत्पन्न करनारी छे, हलकी छे, अग्निने दीप्त करनारी छे, मूत्राशयने शुद्ध करनारी छे, वायुने अनुकूळ करनारी छे अने क्षुधा, तृषा, श्रम तथा ग्लानि एओने हरनारी छे. घणी कणीओवाळी चाटवा जेवी राब विलेपी केहेवाय छे. विलेपी तृप्ति आपनारी छे, हृदयने प्रिय लागे एवी छे, द्रवने सूकावनारी छे, बळने वधारनारी छे, पथ्य छे, स्वादिष्ट रसवाळी छे, हलकी छे, अग्निने दीप्त करनारी छे अने क्षुधाने तथा तृषाने टाळनारी छे. जेने अम्ल वगेरेथी संस्कार आप्यो होय एवी विलेपी हृदयनुं हित करनारी छे, तृप्ति आपनारी छे, वीर्यने वधारनारी छे, पुष्टि आपनारी छे अने बळने वधारनारी छे. (केटलाएक केहे छे के पांचगणा पाणीमां पकावेलो मंड केहेवाय, छगणा पाणीमां पकावेल होय ते यवागू केहेवाय, चौदगणा पाणीमां पकावेल होय ते पेया केहेवाय अने चोगणा पाणीमां पकावेल होय ते विलेपी केहेवाय.)

चोखाने दूधमां रांधीने करेलो दूधपाक गडगडाट तथा व्यथा करीने मळने प्रवर्त्तावनार छे, बळ आपनार छे, मेदने तथा कफने करनार छे अने भारे छे.

तिल, चोखा अने अडद एओनी खीचडी कफने तथा पित्तने करनारी छे, बळ आपनारी छे अने वायुने नष्ट करनारी छे.

सफेद, खांडीने निर्मल करेलो, जळथी धोईने साफ करेलो, मनने प्यारो लागे एवो, सुगंधवाळो, सघळा भागोमां बफाएलो, बाफीने छाबडा वगेरेथी गाळेलो, (ओसावेलो,) उनो अने नोखनोखा रहेला दाणाओवाळो भात हलको छे.

जळथी नहीं धोएलो, नहीं ओसावेलो, बराबर नहीं बफाएलो अने टाढो भात भारे छे.

चोखाने शेकीने पछी करवामां आवेलो तेओनो भात हलको छे, सुगंधवाळो होय छे अने कफने हणनारो छे.

घी वगेरे स्नेहोनी साथे, मांसोनी साथे, फळोनी साथे, कंदोनी साथे, मग वगेरे शिंबीधान्योनी साथे के दाडिम वगेरे अम्ल पदार्थोनी साथे पकावेलो भात भारे छे, पुष्टि आपे छे अने बळ आपे छे. प्रथम पाणीथी पकावी पाछळथी दूध नाखीने पकावेलो भात पण एवाज गुणोवाळो छे.

प्रथम फोतरां वगरनी करी जराक शेकीने पछी सारी पेठे जळमां पकावेली दाळ हलकी छे अने हित करनारी छे.

प्रथम बाफीने नीचोवेलुं अने पछी घीमां के तेलमां जेने संस्कार आप्यो होय एवुं शाक हितकारी छे. बाफ्या वगरनुं, नीचोव्या वगरनुं अने घी तथा तेल वगरनुं शाक हितकारी नथी.

२२६ मांसं स्वभावतो वृष्यं स्नेहनं बलवर्द्धनम् ।
स्नेहगोरसधान्याम्लफलाम्लकटुकैः सह ॥
सिद्धं मांसं हितं बल्यं रोचनं बृंहणं गुरु ।
तदेव गोरसादानं सुरभिद्रव्यसंस्कृतम्
विद्यात्पित्तकफोद्रेकि बलमांसाग्निवर्द्धनम् ।
परिशुष्कं स्थिरं स्निग्धं हर्षणं प्रीणनं गुरु ॥
रोचनं बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवर्द्धनम् ।
तदेवोल्लुप्तपिष्टत्वादुल्लुप्तमिति पाचकाः ॥
परिशुष्कगुणैर्युक्तं वह्नौ पक्वमतो लघु ।
तदेव शूलिकाप्रोतमङ्गारे परिपाचितम् ॥
ज्ञेयं गुरुतरं किंचित्प्रदिग्धं गुरुपाकतः ।
उल्लुप्तं भर्जितं पिष्टं प्रतप्तं कन्दुपाचितम् ॥
परिशुष्कं प्रदिग्धं च शूल्यं यच्चान्यदीदृशम् ।
मांसं यत्तैलसिद्धं तु वीर्योष्णं पित्तकृद्गुरु ॥
लघ्वग्निदीपनं हृद्यं रुच्यं दृष्टिप्रसादनम् ।
अनुष्णवीर्यं पित्तघ्नं मनोज्ञं घृतसाधितम् ॥
प्रीणनः प्राणजननः श्वासकासक्षयापहः ।
वातपित्तश्रमहरो हृद्यो मांसरसः स्मृतः ॥

करेल होय ते अकृत केहेवाय छे अने स्नेह, लूण तथा सुंठ वगेरे तीखा पदार्थो नाखीने जे यूषादिक करेल होय ते कृत केहेवाय छे. मगनो कृत अथवा अकृत यूष कफने हणनार छे, अग्निने प्रदीप्त करनार छे, प्रिय लागे छे अने विरेचन वगेरेथी शुद्ध थएला प्राणिओने पण अत्यंत पथ्यरूप छे. यूष जो दाडिम अने द्राक्ष एओथी युक्त करेलो होय तो रागखाडव केहेवाय छे. ए रागखाडव रुचिकारक छे, पाकमां हलको छे अने वायु वगेरे दोषोने कांईक शमावनार छे. मसूर, मग, घउं, कळथी अने लूण एओथी करेलो यूष कफना तथा पित्तना रोग उपर अविरुद्ध छे अने वायुसंबंधी रोग उपर बहु सारो छे. ए यूष द्राक्षथी तथा दाडिमथी युक्त करवामां आव्यो होय तो वायुसंबंधी रोगने अत्यंत टाळे छे, रुचिकारक थाय छे, अग्निने दीप्त करे छे, हृदयने प्रिय लागे छे अने तुरतज पची जाय छे. पटोलना पानडां नाखीने करेलो मग वगेरेनो यूष अने लींबडानां पानडां नाखीने करेलो मग वगेरेनो यूष एओ कफनुं तथा मेदनुं शोषण करे छे, पित्तने हणे छे, अग्निने प्रदीप्त करे छे, हृदयनुं हित करे छे अने कृमि, कोढ तथा ज्वर एओने नष्ट करे छे. नाहाना कुमळा मूळा नाखीने करेलो मग वगेरेनो यूष कफने, मेदने तथा गळाना रोगोने टाळे छे अने श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, लाळनो स्राव, अरोचक तथा ज्वर एओने पण हणे छे.

एकली कळथीनो अथवा कळथीनो अने मगनो यूष वायुने टाळे छे अने श्वास, पीनस, तूणी, प्रतूणी, खांसी, अरश, गुल्म तथा उदावर्त्त एओने पण नष्ट करे छे. दाडिम तथा आमळां नाखीने करेलो एकली कळथीनो अथवा कळथीनो अने मगनो यूष हृदयने प्रिय लागे छे, विरेचन के वमन नहीं करावतां दोषने शांत करे छे, हलको छे, बळने तथा अग्निने उत्पन्न करे छे, मूर्छाने तथा मेदने हणे छे अने पित्तने तथा वायुने पण जीते छे. मगनो तथा आमळांनो यूष द्रवनुं शोषण करे छे अने पित्त उपर तथा कफ उपर हितकारी थाय छे. जव, मध्यम प्रमाणनां बोर अने कळथी एओनो यूष कंठने सारो करे छे अने वायुने मटाडे छे. मग वगेरे बीजां पण पथ्य धान्योथी बनावेलो यूष पुष्टि आपे छे अने बळनी वृद्धि करे छे. (छाश नाखीने करेलो मग वगेरे धान्योनो यूष अने छाश, मरी, जीरूं तथा चित्रक नाखीने करेलो कोठनो तथा चुक्रानो यूष खडयूष केहेवाय छे. दहींनी तर, दाडिम, लूण तथा स्नेह नाखीने करेलो तलनो तथा अडदनो यूष कांबलिकयूष केहेवाय छे. तलनां फोतरां काहाडी नाखी ते तलने वाटी त्रण दिवस सुधी दूधमां राखी वस्त्रथी गाळी लई आर्द्रक नाखी पकावीने तेमां मरी, जीरूं तथा लूण नाख्यां होय ए यूष पण खडयूष केहेवाय छे.) खडयूष तथा कांबलिक यूष हृदयने गमे एवा छे अने वायु उपर तथा कफ उपर हितकारी छे.

दाडिम नाखीने खाटो करेलो यूष बळ आपे छे, कफने तथा वायुने हणे छे अने अग्निने दीप्त करे छे. दहीं नाखीने खाटो करेलो यूष कफने उत्पन्न करे छे, बळ आपे छे, स्निग्ध छे, वायुने हरे छे अने भारे छे. छाश नाखीने खाटो करेलो यूष पित्त करे छे अने विषने तथा रुधिरने प्रकुपित करे छे.

खडयूषो, खडयूषोथी पकावेली राबो, जातजा-

१ मसूर, मग तथा घऊं ए त्रण पदार्थो शीतल छे तेथी कळथी अने लूण पण पित्तनी वृद्धिने के प्रकोपने करी शकतां नथी अने कळथीना तथा लूणना योगने लीधे मग तथा मसूर पण वायुना रोग उपर हितकारी बनी जाय छे.

२ आवा यूषोमां मग वगेरे धान्यो त्रणगणां नाखवानो संप्रदाय छे.

तना खाडवो, आंबली तथा द्राक्ष वगेरेनां शरबतो अने एवाज बीजा पण केटलाएक पदार्थो वैद्यना केहेवा प्रमाणे करवामां आवे छे. गोरस (दहीं वगेरे) नाखीने बनावेला यूषादिक करतां धान्याम्ल[2] नाखीने बनावेलां यूषादिक हलकां छे अने ते करतां पण दाडिम तथा बीजोरां वगेरे फळोनी खटाईथी युक्त करेलां यूषादिक हलकां छे. अम्ल पदार्थोना संयोगथी संस्कार आपेला यूषो तथा मांसना रसो करतां संस्कार आप्या वगरना यूषो तथा मांसना रसो हलका छे.

२२८ तिलपिण्याकविकृतिः शुष्कशाकं विरूढकम् ।
सिण्डाकी च गुरूणि स्युः कफपित्तकराणि च ।
तद्वच्च वटकान्याहुर्विदाहीनि गुरूणि च ।

तलना लाडुओ वगेरे, खोळ, सूका शाको, कोंटा फुटाडेलां धान्यो, सिंडाकी अने सिंडाकीनी वडी एओना सामान्य गुणो.

२२८ तलनी लाडुओ वगेरे विकृतिओ, खोळ, सूकां शाको, कोंटा फुटाडेलां धान्यो अने सिंडाकी एओ भारे छे अने कफने तथा पित्तने करनारां छे. सिंडाकीनी वडीओ पण बळतरा करनारी अने भारे केहेवामां आवे छे. (मूळा वगेरे शाकने कांईक बाफी कचरी तेमां सुगंधी तथा तीखां वगेरे द्रव्यो नाखीने स्नेहमां तळी लेवामां आवे ते पण एक जातनी सिंडाकी केहेवाय छे.)

२२९ लघवो बृंहणा वृष्या हृद्या रोचनदीपनाः ।
तृष्णामूर्छाभ्रमच्छर्दिश्रमघ्ना रागखाडवाः ।

रागोना अने खाडवोना विशेष गुणो.

२२९ (साकर, संचळ, सैंधव, अम्लवेतस अथवा कोकम, आमणां, जांबू अने राई एओथी बनावेला पदार्थो राग केहेवाय छे.) राग अने खाडवो हलका छे, पुष्टि आपनारा छे, वीर्यने वधारनारा छे, हृदयने प्रिय लागे एवा छे, रुचिकारक छे, अग्निने दीप्त करनारा छे अने तरश, मूर्छा, भ्रम, उलटी तथा श्रम एओने मटाडनारा छे. (दाडिमथी तथा द्राक्षथी युक्त करेला यूषो राग—खाडव केहेवाय छे.)

२३० रसाला बृंहणी बल्या स्निग्धा वृष्या च रोचनी ॥

शिखंडना गुणो.

२३० शिखंड पुष्टि आपनार छे, बळ आपनार छे, स्निग्ध छे, वीर्यने वधारनार छे अने रुचिकारक छे.

२३१ स्नेहनं गुडसंयुक्तं हृद्यं दध्यनिलापहम् ।

गोळथी संयुक्त करेला दहींना गुणो.

२३१ गोळथी संयुक्त करेलुं दहीं स्निग्ध करनारूं छे, हृदयने प्रिय लागे एवुं छे अने वायुने हणनारूं छे.

२३२ सक्तवः सर्पिषाभ्यक्ताः शीतवारिपरिप्लुताः
नातिद्रवा नातिसान्द्रा मन्थ इत्युपदिश्यते ।
मन्थः सद्योबलकरः पिपासाश्रमनाशनः ॥
साम्लस्नेहगुडो मूत्रकृच्छ्रोदावर्तनाशनः ।
शर्करेक्षुरसद्राक्षायुक्तः पित्तविकारनुत् ॥
द्राक्षामधूकसंयुक्तः कफरोगनिबर्हणः ।
वर्गत्रयेणोपहितो मलदोषानुलोमनः ॥

साथवाना मंथोना गुणो.

२३२ जव वगेरेना साथवाने घी लगावी थंडा पाणीमां नाखी तेनो बहु द्रवरूप नहीं अने बहु घाटो पण नहीं एवो जे रस बनाववामां आवे ते

१ अम्ल, मधुर, कषाय तथा लवण पदार्थोना संयोगोथी अनेक जातना खाडवो बनाववामां आवे छे. दहीं, साकर, मध तथा केसर एओने एकत्र करी गाळीने करवामां आवेलुं शिखंड पण खाडव केहेवाय छे.

२ चोखानुं चूर्ण तथा कोदरा वगेरेनुं चूर्ण आथवाथी जे खाटो रस थाय छे ते धान्याम्ल केहेवाय छे. गया ४५ मा अध्यायनो १९१ मो विषय जुवो.

मंथ केहेवाय छे. मंथ तुरत बळ आपे छे पण रूक्ष होवाने लीधे उत्तरकाळमां बळ आपतो नथी अने तरशनो तथा श्रमनो नाश करे छे. खाटा पदार्थोथी, घीथी तथा गोळथी युक्त करेलो मंथ मूत्रकृच्छ्रने तथा उदावर्त्तने नष्ट करे छे. साकर, शेलडीनो रस अने द्राक्ष एओथी युक्त करेलो मंथ पित्तना विकारोने नष्ट करे छे. द्राक्षथी तथा महुडांथी युक्त करेलो मंथ कफसंबंधी रोगोने नष्ट करे छे. खाटा पदार्थो, घी, गोळ, साकर, शेलडीनो रस, द्राक्ष तथा महुडां ए सर्वथी युक्त करेलो मंथ मळोने तथा दोषोने अनुकूल करनार छे.

२३३ गौडमम्लमनम्लं वा पानकं गुरु मूत्रलम्
तदेव खण्डमृद्वीकाशर्करासहितं पुनः ॥
साम्लं सतीक्ष्णं सहिमं पानकं स्यान्निरत्ययम् ।
मार्द्वीकं तु श्रमहरं मूर्छादाहतृपापहम् ॥
परूषकाणां कोलानां हृद्यं विष्टम्भि पानकम् ।
द्रव्यसंयोगसंस्कारं ज्ञात्वा मात्राश्च सर्वतः ॥
पानकानां यथायोगं गुरुलाघवमादिशेत् ।

जूदा जूदा प्रकारना शरबतोना गुणो.

२३३ जेमां खटाश नाखी होय एवुं अथवा खटाश वगरनुं गोळनुं शरबत भारे छे अने मूत्रने वधारनार छे. खांड, द्राक्ष तथा साकर एओथी युक्त करेलुं, आंबली वगेरेनी खटाईवाळुं अने मरी वगेरे तीक्ष्ण पदार्थोथी तथा भीमसेनी बरासथी युक्त करेलुं ते शरबत अति उत्तम छे. द्राक्षनुं शरबत श्रमने मटाडे छे अने मूर्छा, दाह तथा तरश एओने पण नष्ट करे छे. फ्रामणानुं शरबत अने बोरनुं शरबत हृदयने प्रिय लागे छे अने दस्तनी अटकायत करे छे. पानको अनेक प्रकारनां थाय छे माटे वैद्ये ते ते पानकोमां (शरबतोमां) द्रव्योना संयोगने, द्रव्योथी आपवामां आवेला संस्कारने तथा द्रव्योनी मात्राओने जाणीने यथायोग्य रीते ते ते शरबतोनुं हलकापणु तथा भारेपणुं केहेवुं.

२३४ वक्ष्याम्यतः परं भक्ष्यान्रसवीर्यविपाकतः
भक्ष्याः क्षीरकृता बल्या वृष्या हृद्याः सुगन्धिनः
अदाहिनः पुष्टिकरा दीपनाः पित्तनाशनाः ॥
तेषां प्राणकरा हृद्या घृतपूराः कफावहाः ।
वातपित्तहरा वृष्या गुरवो रक्तमांसलाः ॥
बृंहणा गौडिका भक्ष्या गुरवोऽनिलनाशनाः ।
अदाहिनः पित्तहराः शुक्रलाः कफवर्द्धनाः ॥
मधुमस्तकसंपावाः पूपा ह्येते विशेषतः ।
गुरवो बृंहणाश्चैव मोदकास्तु सुदुर्जराः ॥
रोचनो दीपनः स्वर्यः पित्तघ्नः पवनापहः ।
गुरुर्मिष्टतमश्चैव सट्टकः प्राणवर्द्धनः ॥
हृद्यः सुगन्धिर्मधुरः स्निग्धः कफकरो गुरुः ।
वातापहस्तृप्तिकरो बल्यो विष्यन्दनः स्मृतः ॥
बृंहणा वातपित्तघ्ना भक्ष्या बल्यास्तु सामिताः।
हृद्याः पथ्यतमास्तेषां लघवः फेनकादयः ॥
मुद्गादिवेसवाराणां पूर्णा विष्टम्भिनो मताः ।
वेसवारैः सपिशितैः सम्पूर्णा गुरुबृंहणाः ॥
पाललाः श्लेष्मजननाः शष्कुल्यः कफपित्तलाः ।
वीर्योष्णाः पैष्टिका भक्ष्याः कफपित्तप्रकोपणाः ॥
विदाहिनो नातिबला गुरवश्च विशेषतः ।
वैदला लघवो भक्ष्याः कषायाः सृष्टमारुताः ॥
विष्टम्भिनः पित्तसमाः श्लेष्मघ्ना भिन्नवर्चसः ।
बल्या वृष्यास्तु गुरवो विज्ञेया मापसाधिताः ॥
कूर्चिकाविकृता भक्ष्या गुरवो नातिपित्तलाः ।
विरूढककृता भक्ष्या गुरवोऽनिलपित्तलाः ॥
विदाहोत्क्लेशजनना रूक्षा दृष्टिप्रदूषणाः ।
हृद्याः सुगन्धिनो वृष्या लघवो घृतपाचिताः ॥
वातपित्तहरा बल्या वर्णदृष्टिप्रसादनाः ।
विदाहिनस्तैलकृता गुरवः कटुपाकिनः ॥
उष्णा मारुतदृष्टिघ्नाः पित्तलास्त्वक्प्रदूषणाः ।
फलमांसेक्षुविकृतितिलमाषोपसंस्कृताः ॥
भक्ष्या बल्यास्तु गुरवो बृंहणा हृदयप्रियाः ।
कपालाङ्गारपक्कास्तु लघवो वातकोपनाः ॥
सुपक्कास्तनवश्चापि भूयिष्ठं लघवो मताः ।
सकिलाटादयो भक्ष्या गुरवः कफवर्द्धनाः ॥

कुल्माषा वातला रूक्षा गुरवो भिन्नवर्चसः ।
उदावर्तहरो वाट्यः कासपीनसमेहनुत् ।
धानोलुम्बास्तु लघवः कफमेदोविशोषणाः ॥
सक्तवो बृंहणा वृष्यास्तृष्णापित्तकफापहाः ।
पीताः सद्यो बलकरा भेदिनः पवनापहाः ॥
गुर्वी पिण्डी खरात्यर्थं लघ्वी सैव विपर्ययात् ॥
सक्तूनामाशु जीर्येत मृदुत्वादवलेहिका ।
लाजाश्छर्द्यतिसारघ्ना दीपनाः कफनाशनाः ॥
बल्याः कषायमधुरा लघवस्तृणमलापहाः ।
तृट्छर्दिदाहघर्मार्तिनुदस्तत्सक्तवो मताः ॥
रक्तपित्तहराश्चैव दाहज्वरविनाशनाः ॥
पृथुका गुरवः स्निग्धा बृंहणाः कफवर्द्धनाः ।
बल्याः सक्षीरभावात्तु वातघ्ना भिन्नवर्चसः ॥
सुदुर्जरः स्वादुरसो बृंहणस्तण्डुलो नवः ॥
सन्धानकृन्मेहहरः पुराणस्तण्डुलः स्मृतः ॥
द्रव्यसंयोगसंस्कारविकारान्समवेक्ष्य तु ।
यदा कारणमासाद्य भोक्तॄणां छन्दतोऽपि वा ॥
अनेकद्रव्ययोनित्वाच्छास्त्रतस्तान्विनिर्दिशेत् ॥

नोखनोखा प्रकारना भक्ष्य पदार्थोना गुणो.

२३४ हवे रसोनो, वीर्योनो तथा विपाकोनो विचार करीने लाडु वगेरे भक्ष्य पदार्थोना गुणो कहुं छुं. घउंना लोटने दूधनो योग आपीने बनावेला भक्ष्य पदार्थो बळ आपनारा छे, वीर्यने वधारनारा छे, प्रिय लागे एवा होय छे, सुगंधी होय छे, दाह करनारा होता नथी, पुष्टि करे छे, अग्निने दीप्त करे छे अने पित्तनो नाश करे छे.

घेवर घणुं बळ आपनार छे, हृदयने प्रिय लागे छे, कफ करनार छे, वायुने तथा पित्तने हरनार छे, वीर्यने वधारनार छे, भारे छे अने रुधिरने तथा मांसने वधारे छे.

गोळना भक्ष्यो पुष्टि आपे छे, भारे होय छे, वायुने नष्ट करे छे, दाह करता नथी, पित्तने हरे छे अने वीर्यने तथा कफने वधारे छे.

खाजां, संपावो, अने मालपुवा एओ विशेषे करी भारे छे अने पुष्टि आपनार छे.

लाडुओ तो अत्यंत दुर्जर (मांड मांड पचे एवा) होय छे.

सट्टक रुचि उपजावनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, स्वरने सारो करनार छे, पित्तने तथा वायुने हणनार छे, भारे छे, अत्यंत स्वादिष्ट छे अने बळने वधारनार छे.

घउंना लोटने घीथी, दूधथी तथा गोळथी युक्त करीने जे पकाववामां आवे छे ते विष्यंदन केहेवाय छे. विष्यंदन प्रिय लागे छे, सुगंधी होय छे, मधुर छे, स्निग्ध छे, कफ करनार छे, भारे छे, वायुने हणनार छे, तृप्ति आपनार छे अने बळ आपनार छे.

परसुदीमांथी बनता पदार्थो पुष्टि आपे छे, वायुने तथा पित्तने हणे छे अने बळ आपे छे. एओमां सुतरफेणी वगेरे पदार्थो हृदयने प्रिय लागनारा छे, अत्यंत पथ्य छे अने हलका छे.

बाफीने वाटेला तथा जेओने हींग वगेरेना संस्कारो आप्या होय एवा मग वगेरेना कल्को (वेसण-मसाला) वेसवार केहेवाय छे. ए मसालाओनुं पूरण भरीने करेला परसुदीना भक्ष्य पवी एटले ते संपाव केहेवाय छे.

१ परसुदीने घीनुं मोण दई पापडी बनावी घीमां तळीने कूटवी, चाळी नाखवी अने पछी शुद्ध साकरनुं बूरूं तेमां चोळी चोळीने मेळववुं. एमां घणां घणां एलची, लवींग, मरी, टोपरूं, भीमसेनी बरास अने चारोळीनां बीज नाखवां. पछी घीना मोणवाळी परसुदीनी रोटली करी तेनी अंदर पेलां चूर्णनुं पूरण भरी ढढरीते मोढोडुं बंध करी देवुं. ए रोटलीने झाझा घीमां पकावी एटले ते संपाव केहेवाय छे.

२ सट्टक घणी जातना थाय छे तेओमांनो एक प्रकार नीचे प्रमाणे छे. लवींग, सुंठ, मरी, पीपळ अने खांड एओनी साथे दहींने मथी गाळी तेने दाडिमोना रसनो तथा भीमसेनी बरासनो योग आपी ते दहीं नाखीने बनावेलुं भक्ष्य सट्टक केहेवाय छे.

दार्थो दस्तनी कबजीयत करनारा छे. मांससहित मग वगेरेना मसालाओनुं पूरण भरीने बनावेला परसुदीना भक्ष्य पदार्थो भारे छे अने पुष्टि आपनारा छे.

गोळ वगेरेथी संयुक्त करेला तिलना पिष्टथी बनावेला भक्ष्य पदार्थो कफने उत्पन्न करनार छे.

परसुदीनी सुंवाळीओ कफने तथा पित्तने वधारनारी छे.

चोखाना लोटथी बनावेला भक्ष्य पदार्थो उष्णवीर्यवाळा छे, कफने तथा पित्तने प्रकुपित करनारा छे, बळतरा करनारा छे, बळने अत्यंत वधारनारा नथी अने वधारे भारे छे.

मग वगेरे शींगनां धान्योथी बनावेला भक्ष्यो हलका छे, तूरा छे अने वायुनुं विसर्जन करावनारा छे परंतु अडदना भक्ष्यो दस्तनी अटकायत करीने पछी दस्तनुं भेदन करनारा छे, पित्तने साधारण रीते उत्पन्न करनारा छे, कफने हणनारा छे, बल देनारा छे, वीर्यने वधारनारा छे अने भारे छे.

उतरी जईने घाटुं थएलुं (बगडेलुं) दूध नाखीने बनावेला भक्ष्यो भारे छे अने पित्तने जराक उत्पन्न करनारा छे.

कोंटा फुटाडेलां मग वगेरे धान्योथी बनावेला भक्ष्य पदार्थो भारे छे, वायुने तथा पित्तने वधारनारा छे, बलतराने तथा दोषोना उत्क्लेशने करनारा छे, रुक्ष छे अने नेत्रोनुं अहित करनारा छे.

घीमां पकावेला भक्ष्य पदार्थो हृदयने प्रिय लागे छे, सुगंधवाळा होय छे, वीर्यने वधारे छे, हलका छे, वायुने तथा पित्तने हरे छे, बल आपे छे अने वर्णने तथा दृष्टिने स्वच्छ करनारा छे.

तेलमां पकावेला भक्ष्य पदार्थो विदाह करे छे, भारे छे, विपाकमां कडवा थाय छे, उष्ण छे, वायुने तथा दृष्टिने हणे छे, पित्तने उत्पन्न करे छे अने चामडीने खराब करे छे.

फल, मांस, गोळ वगेरे शेलडीना विकारो, तिल अने अडद एओथी बनावेला भक्ष्य पदार्थो बळ आपे छे, भारे छे, पुष्टि करे छे अने हृदयने प्रिय लागे छे.

तावडी उपर के अंगारा उपर पकावेला भक्ष्य पदार्थो हलका छे अने वायुने प्रकुपित करनारा छे. ए पदार्थो अत्यंत पकावेला तथा पातळा होय तो बहुज हलका छे.

बगडेला दूधनो मावो तथा तक्रपिंड (घाटी छाशने वस्त्रथी गाळी नाखतां तेनो छेवट रहेलो लोंदो) इत्यादि नाखीने बनावेला भक्ष्य पदार्थो भारे छे, तथा कफने वधारे छे.

घऊं वगेरे धान्योने बाफीने करेली घुघरीओ वायु करनारी छे, रूक्ष छे, भारे छे अने विष्टानुं भेदन करनारी छे.

ढोकळां उदावर्त्तने हरनारां छे अने खांसी, पीनस तथा प्रमेह एओने टाळनारां छे.

धाणी अने ओळा हलका छे अने कफनुं तथा मेदनुं शोषण करनारा छे.

साथवो पुष्टि आपनार छे, वीर्यने वधारनार छे, तरशने पित्तने तथा कफने हणनार छे, पीवामां आवे तो तुरत बळ आपे छे पण पाछळथी बळ आपनार नथी, विष्टानुं भेदन करनार छे अने वायुने तोडनार छे. साथवानी लाडुडी अत्यंत कठण छे (भारे छे) अने प्रवाहीरूपे राखेलो साथवो हलको छे. साथवानो अवलेह कोमळ होवाथी तुरत पची जाय छे.

चोखानी साळनी धाणी उलटीने तथा अतीसारने हणे छे, अग्निने दीप्त करे छे, बळ आपे छे, कफनो नाश करे छे, तूरी छे, मधुर छे, हलकी छे अने तरशने तथा मळने मटाडे छे. ए धाणीनो साथवो तृषा, उलटी, दाह, घामनी पीडा, रक्तपित्त, दाह तथा ज्वर एओने मटाडे छे.

पवा भारे छे, स्निग्ध छे, पुष्टि आपनारा छे, कफने वधारनारा छे अने बळ आपनारा छे. एओ दूधना संयोगथी वायुने हणनारा छे अने विष्टानुं भेदन करनारा छे.

नवा चोखा मांड पथ्ये छे, मधुर रसवाळा छे अने पुष्टि आपनारा छे. जुना चोखा भांगेलाने सांधनार छे अने बहुमूत्रताने हरनारा छे.

ज्यारे रोगीने ते ते भक्ष्यो खवराववानुं कारण प्राप्त थाय अथवा ते ते भक्ष्य खावानी रोगीने इच्छा थाय त्यारे द्रव्योना संयोगोनो, संस्कारोनो तथा विकारोनो विचार करीने वैद्ये शास्त्रानुसारथी ते ते भक्ष्योना गुरुत्वलघुत्वादिकनो निर्देश करवो. केम के भक्ष्य पदार्थो अनेक द्रव्योमांथी बने छे माटे ते सर्वना गुणदोषो केहेवानुं आ संक्षिप्त ग्रंथमां बनी शके एम नथी.

२३५ अतः सर्वाण्यनुपानान्युपदेक्ष्यामः ॥

अम्लेन केचिद्विहता मनुष्या
माधुर्ययोगे प्रणयीभवन्ति ।
तथाम्लयोगे मधुरेण तृप्ता-
स्तेषां यथेष्टं प्रवदन्ति पथ्यम् ॥
शीतोष्णतोयासवमद्ययूष-
फलाम्लधान्याम्लपयोरसानाम् ।
यस्यानुपानं तु हितं भवेद्य-
त्तस्मै प्रदेयं त्विह मात्रया तत् ॥
व्याधिं च कालं च विभाव्य धीरै-
र्द्रव्याणि भोज्यानि च तानि तानि ।
सर्वानुपानेषु वरं वदन्ति
मेध्यं यदम्भः शुचिभाजनस्थम् ॥
लोकस्य जन्मप्रभृति प्रशस्तं
तोयात्मकाः सर्वरसाश्च दृष्टाः ।
सङ्क्षेप एषोऽभिहितोऽनुपाने-
ष्वतःपरं विस्तरतोऽभिधास्ये ॥

उष्णोदकानुपानं तु स्नेहानामथ शस्यते ।
ऋते भल्लातकस्नेहात्स्नेहात्तौवरकात्तथा ॥
अनुपानं वदन्त्येके तैले यूषाम्लकाञ्जिके ।
शीतोदकं माक्षिकस्य पिष्टान्नस्य च सर्वशः ॥
दधिपायसमद्यार्तिविषजुष्टे तथैव च ।
केचित्पिष्टमयस्याहुरनुपानं सुखोदकम् ॥
पयो मांसरसो वापि शालिमुद्गादिभोजिनाम् ॥
युद्धाध्वातपसन्तापविषमद्यरुजासु च ।
माषादेरनुपानं तु धान्याम्लं दधिमस्तु वा ।
मद्यं मद्योचितानां तु सर्वमांसेषु पूजितम् ॥
अमद्यपानामुदकं फलाम्लं वा प्रशस्यते ।
क्षीरं घर्माध्वभाष्यस्त्रीक्लान्तानाममृतोपमम् ॥
सुराकृशानां स्थूलानामनुपानं मधूदकम् ।
निरामयानां चित्रं तु भक्तमध्ये प्रकीर्तितम् ॥
स्निग्धोष्णं मारुते पथ्यं कफे रूक्षोष्णमिष्यते ।
अनुपानं हितं चापि पित्ते मधुरशीतलम् ॥
हितं शोणितपित्तिभ्यः क्षीरमिक्षुरसस्तथा ।
अर्कश्लेलुशिरीषाणामासवास्तु विषार्तिषु ॥
अतः परं तु वर्गाणामनुपानं पृथक्पृथक् ।
प्रवक्ष्याम्यानुपूर्व्येण सर्वेषामेव मे शृणु ॥

तत्र पूर्वेशस्यजातीनां बदराम्लं वैदलानां धान्याम्लम् ॥

जङ्गालानां वर्तकादीनां च पिप्पल्यासवः । विष्किराणां कोलबदरासवः । प्रतुदानां तु क्षीरवृक्षासवः । गुहाशयानां तु खर्जूरनारिकेलासवः । प्रसहानामश्वगन्धासवः ॥ पर्णमृगाणां कृष्णगन्धासवः । बिलेशयानां फलसारासवः । एकशफानां त्रिफलासवः । अनेकशफानां खदिरासवः । कूलचराणां तु शृङ्गाटककशेरुकासवः । कोशवासिनां पादिनां च तदेव । प्लवानामिक्षुरसासवः । नादेयानां मृणालासवः । सामुद्राणां मातुलुङ्गासवः ।

अम्लानां फलानां पद्मोत्पलकन्दासवः । कषायाणां दाडिमवेत्रासवः । मधुराणां त्रिकटुकयुक्तः कन्दासवः । तालफलादीनां धान्याम्लम् कटुकानां दूर्वानलवेत्रासवः । पिप्पल्यादीनां श्वदंष्ट्रावसुकासवः ।

कूष्माण्डादीनां दार्वीकरीरासवः । चुञ्चुप्रभृतीनां लोध्रासवः । जीवन्त्यादीनां त्रिफलासवः । कुसुम्भशाकस्य स एव । मण्डूकपर्ण्यादीनां महापंचमूलासवः ।

तालमस्तकादीनामम्लफलासवः ।

सैन्धवादीनां सुरासव आरनालं च ।
तोयं वा सर्वत्रेति ॥

सघळां अनुपानोना (खाधा पीधा पछी पीवाना पदार्थोना) गुणो.

२३९ हवे सघळां अनुपानोनो उपदेश करीए छीए. खाटा पदार्थो खावा पीवाथी उद्वेग पामेलां केटलांएक माणसो मधुर पदार्थोना उपयोगथी सुखी थाय छे अने मधुर पदार्थो खावा-पीवाथी उद्वेग पामेलां केटलांएक माणसो खाटा पदार्थोना उपयोगथी सुखी थाय छे. आम छे एटला माटे खाटा पदार्थोथी तृप्त थएलाओने मधुर पथ्य छे अने मधुर पदार्थोथी तृप्त थएलाओने खाटुं पथ्य छे, (खाटा रस तथा मधुर रस शिवाय बीजा रसो तृप्तिपर्यंत खाई शकाय एवा नथी माटे अहीं बे रसविषेज कह्युं छे एम समजवुं अथवा जे रसथी तृप्ति थईने उद्वेग थयो होय ते रसथी विरुद्ध रसवाळा पदार्थनुं अनुपान देवुं एम आ उपरथी समजी लेवुं.)

टाढुं जळ, उनुं जळ, आसव, मद्य, यूष, दाडिम वगेरे फळोनो अम्ल रस, धान्याम्ल, दूध अने मांसनो रसो एओमांथी जे अनुपान जे माणसने हित होय ते माणसने ते अनुपान योग्य मात्राथी देवुं.

धीर वैद्योए व्याधिओनो, ऋतुओनो अने अवस्थाना समयोनो विचार करीने ते ते द्रवोनी तथा भोज्य पदार्थोनी योजना करवी.

पवित्र अने स्वच्छ वासणमां राखेलुं आंतरीक्ष (वरसादनुं झीली राखेलुं) जळ सघळां अनुपानोमां उत्तम छे. केम के सर्व लोकोने जन्मभर सुधी ए जळ पथ्य छे अने सघळा रसो पण जलात्मकज जोवामां आवे छे. में आ अनुपानविषे संक्षेप कह्यो. हवे विस्तारथी कहुं छुं.

भीलामाना स्नेह शिवाय तथा चेरीयांना स्नेह शिवाय बाकीना सघळा स्नेहोनी उपर उना जळनुं अनुपान देवुं ए उत्तम छे. (भीलामानो तथा चेरीयांनो स्नेह अत्यंत उष्ण छे माटे तेनी उपर तो टाढा जळनुंज अनुपान देवुं.) केटलाएक केहे छे के तैल[१] उपर उष्णकालमां यूषनुं अनुपान देवुं अने शीतकालमां खाटी कांजीनुं अनुपान।

सर्व प्रकारनुं मध, चोखाना लोटनुं अन्न, दहीं, दूधपाक, मद्य पीवाथी थतो दाह अने झेर चडवाथी थतो व्यामोह एओनी उपर टाढा पाणीनुं अनुपान देवुं. केटलाएक केहे छे के चोखाना लोटना अन्ननी उपर जराक उना करेला पाणीनुं अनुपान देवुं.

भात तथा मग वगेरेना भोजन उपर, युद्धथी थएली पीडा उपर, तडकाथी के पंथथी थएली पीडा उपर, अग्निना तापथी थएली पीडा उपर अने झेरथी के मद्यथी थएली पीडा उपर दूधनुं अथवा मांसना रसानुं अनुपान देवुं ए उत्तम छे.

अडद वगेरेना भोजन उपर धान्याम्लनुं अथवा दहींनी तरनुं के दहींनी नीचे रहेला पाणीनुं अनुपान देवुं.

जेओने मद्य पीवानो अभ्यास होय तेओने तो सघळा प्रकारनां मांसोनी उपर मद्यनुं अनुपान देवुं ए उत्तम छे. जेओने मद्य पीवानो अभ्यास न होय तेओने सघळा प्रकारनां मांसोनी उपर जळनुं अथवा दाडिम वगेरे फळोनी खटाईनुं अनुपान देवुं.

वामथी, पंथ करवाथी, उंचे स्वरे भाषण वगेरे करवाथी अने स्त्रीसंग करवाथी परिश्रम पामेलाओने दूधनुं अनुपान अमृत जेवुं गुणकारी थाय छे.

मद्य पीवाथी निर्बल थएलां स्थूल माणसोने मधथी मिश्रित करेला जळनुं अनुपान देवुं ए उत्तम छे.

१ गया ४५ मा अध्यायनो १९१ मो विषय जुवो.

स्वस्थ माणसोने भोजनना मध्यमां विचित्र प्रकारनुं अनुपान देवुं.

वायु उपर स्निग्ध तथा उष्ण अनुपान देवुं, पित्त उपर मधुर तथा शीतल अनुपान देवुं, कफ उपर रूक्ष तथा उष्ण अनुपान देवुं, रक्तपित्त उपर दूधनुं तथा शेलडीना रसनुं अनुपान देवुं अने झेरनी पीडाओ उपर आकडो, गुंदो तथा सरसडीयो एओना आसवोनुं अनुपान देवुं ए हितकारी छे.

हवे धान्य वगेरे सघळा वर्गोनी उपर अनुक्रमथी जूदां जूदां अनुपानो कहुं छुं ते सांभळो.

एओमां प्रथम केहेवामां आवेलां शूकधान्य, (अणीवाळां जव वगेरे धान्य) कुधान्य (सामा तथा बंटी वगेरे धान्य) अने शमीधान्य (अडद वगेरे धान्य) एओनी उपर बोरनी खटाईवाळुं अनुपान देवुं. मग तथा तुवर वगेरे वैदल धान्योनी उपर धान्याम्लनुं अनुपान देवुं.

जंघाल प्राणिओ तथा बटाउडां वगेरे विष्किर पक्षीओ एओना मांसनी उपर पीपळना* आसवनुं अनुपान देवुं. विष्किर पक्षीओना मांसनी उपर नाहानां तथा मोटां बोरना आसवनुं अनुपान पण उत्तम छे. प्रतुद पक्षीओनां मांसनी उपर उंबरा वगेरे छीरवाळां वृक्षोना आसवनुं अनुपान देवुं. गुहाशय प्राणीओनां मांसनी उपर खजूरना तथा नाळीएरना आसवनुं अनुपान देवुं. प्रसह पक्षीओनां मांसनी उपर आसोंदना आसवनुं अनुपान देवुं. पर्णमृगोना मांसोनी उपर सरगवाना आसवनुं अनुपान देवुं. बिलेशयोना मांसनी उपर उत्तम फळोना आसवनुं अनुपान देवुं. एक खरीवाळां घोडा वगेरे प्राणीओना मांसनी उपर त्रिफलाना आसवनुं अनुपान देवुं. बे खरीओवाळां प्राणीओनां मांसनी उपर खेरना आसवनुं अनुपान देवुं. पाडा वगेरे कूलचरोनां मांसनी उपर शींगोडाना अने कसेरुकंदना आसवनुं अनुपान देवुं. कोशवासीओनां तथा काचबा वगेरे पादीओनां मांसनी उपर पण शींगोडाना अने 'कसेरुकंदना आसवनुं अनुपान देवुं. बतक वगेरे प्लवोनां मांसनी उपर शेलडीना रसना आसवनुं अनुपान देवुं. नादेय मत्स्योनी उपर कमळना नाळना आसवनुं अनुपान देवुं अने सामुद्र मत्स्योनी उपर बीजोराना आसवनुं अनुपान देवुं.

दाडिम वगेरे खाटां फळोनी उपर श्वेत कमळोना तथा उत्पलोना कंदोना आसवनुं अनुपान देवुं. उंबरानां तथा वडनां फळ वगेरे तूरां फळोनी उपर दाडिमना तथा नेतरना आसवनुं अनुपान देवुं. द्राक्ष वगेरे मधुर फळोनी उपर सुंठ, मरी तथा पीपळ एओथी संयुक्त करेला कंदोना आसवनुं अनुपान देवुं. ताडी वगेरेनां फळोनी उपर धान्याम्लनुं अनुपान देवुं. तीखां फळोनी उपर धोकड, बरू तथा नेतर एओना आसवनुं अनुपान देवुं. पीपळ वगेरेनी उपर गोखरूना तथा बोलसरीना आसवनुं अनुपान देवुं.

कोळां वगेरे शाकोनी उपर दारूहळदर तथा केरडां एओना आसवनुं अनुपान देवुं. छुंछ वगेरे शाकोनी उपर लोदरना आसवनुं अनुपान देवुं. राहारूडी तथा खरखोडी वगेरेना शाकोनी उपर हरडे, बेहेडां तथा आमळां एओना आसवनुं अनुपान देवुं. कसुंबानी भाजी उपर पण एज अनुपान देवुं. ब्राह्मी वगेरेनी भाजी उपर बृहत्पंचमूलना आसवनुं अनुपान देवुं.

ताडीना अग्रनी मज्जा वगेरेनी उपर खाटां (दाडिम वगेरे) फळोना आसवनुं अनुपान देवुं.

सैंधव आदि लूणोनी उपर मदिरानुं, आसवनुं अने आरनाळनुं (फोतरां वगरना काचा अथवा पकावेला घउंना आथानुं) अनुपान देवुं.

अथवा सर्व पदार्थोनी उपर जळनुं अनुपान देवुं.

२३६ भवन्ति चात्र ।

सर्वेषामनुपानानां माहेन्द्रं तोयमुत्तमम् ।
सात्म्यं यस्य तु यत्तोयं तत्तस्मै हितमुच्यते ॥

उष्णं वाते कफे तोयं पित्ते रक्ते च शीतलम् ।
दोषवद्गुरु वा भुक्तमतिमात्रमथापि वा ॥
यथोक्तेनानुपानेन सुखमन्नं प्रजीर्यति ।
रोचनं बृंहणं वृष्यं दोषसङ्घातभेदनम् ॥
तर्पणं मार्दवकरं श्रमक्लमहरं सुखम् ।
दीपनं दोषशमनं पिपासाच्छेदनं परम् ॥
बल्यं वर्णकरं सम्यगनुपानं सदोच्यते ।
तदादौ कर्शयेत्पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम् ॥
पश्चात्पीतं बृंहयति तस्माद्वीक्ष्य प्रयोजयेत् ।
स्थिरतां गतमक्लिन्नमन्नमद्रवपायिनाम् ॥
भवत्याबाधजननमनुपानमतः पिबेत् ।
न पिबेच्छ्वासकासार्तो रोगे चाप्यूर्ध्वजत्रुगे ।
क्षतोरस्कः प्रसेकी च यस्य चोपहतः स्वरः ।
पीत्वाऽध्वभाष्याध्ययनगेयस्वप्नान्न शीलयेत् ॥
प्रदूष्यामाशयं तद्धि तस्य कण्ठोरसि स्थितम् ।
स्यन्दाग्निसादच्छर्दादीनामयाञ्जनयेद्बहून् ॥

अनुपानना गुणो, अनुपानना समयो अने अमुक विषयोमां अनुपानोनो निषेध वगेरे.

२३६ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "सघळा अनुपानोमां आंतरीक्ष जळनुं अनुपान श्रेष्ठ छे. आंतरीक्ष जळ न मळे तो पछी जे माणसने जे जळ सात्म्य होय ते माणसने ते जळनुं अनुपान देवुं. वायु तथा कफ एओनी उपर उना जळनुं अनुपान देवुं अने पित्त उपर तथा रुधिर उपर शीतल जळनुं अनुपान देवुं. दोषवाळुं, भारे के मात्रा करतां अधिक जमवामां आवेलुं अन्न, उपर कहेलां अनुपानोथी सुखकारी रीते पची जाय छे. अनुपान रुचि उपजावनार छे, पुष्टिकारक छे, वीर्यने वधारनार छे, दोषोना समूहनुं पृथक्करण करनार छे, तृप्ति आपनार छे, शरीरने कोमल करनार छे, श्रमने तथा ग्लानिने हरनार छे, स्वस्थता आपनार छे, अग्निने दीप्त करनार छे, वायु वगेरे दोषोनुं शमन करनार छे, तृषाने टाळनार छे, बळ आपनार छे अने वर्णने सारो करनार छे माटे सर्वदा अतिउत्तम गणवामां आवे छे. भोजनना आदिमां अनुपान पीवामां आवे तो ते अनुपान शरीरने कृश करी नाखे छे, भोजनना मध्यमां पीवामां आवे तो शरीरने मध्यमस्थितिमां राखे छे अने भोजनना अंतमां पीवामां आवे तो शरीरने पुष्ट करे छे माटे कृशताने इच्छनाराए भोजनना आदिमां, मध्यताने इच्छनाराए भोजनना मध्यमां अने पुष्टताने इच्छनाराए भोजनना अंतमां पीवुं अने वैद्ये ते प्रमाणे विचारीनेज देवुं. जेओ अनुपानरूप द्रवने पीए नहीं तेओए खाधेलुं अन्न पेटमां आर्द्र थया वगर अचळ थईने रेहेवाथी तेओने पीडाकारी थई पडे छे एटला माटे अनुपान पीवुं योग्य छे. श्वासना दरदीए, खांसीना दरदीए, गळानी हांसडीथी उपरना भागना दरदवाळाए, उरःक्षतवाळाए, जेने लाळनो स्राव थया करतो होय तेणे अने जेनो स्वर उपघात पाम्यो होय तेणे अनुपान पीवुं नहीं. अनुपान पीधा पछी पथ करवो नहीं, उंचा स्वरथी भाषण करवुं नहीं, भणवुं नहीं, गावुं नहीं अने निद्रा पण करवी नहीं. केम के कंठमां तथा छातीमां रहेलुं अनुपान ते माणसना आमाशयने दूषित करी अर्थात् वायु आदि दोषोने प्रकुपित करीने कफनो स्राव, अग्निनी मंदता तथा वमन आदि घणा रोगोने उत्पन्न करे छे."

२३७ गुरुलाघवचिन्तेयं स्वभावं नातिवर्तते ।
तथा संस्कारमात्रान्नं कालांश्चाप्युत्तरोत्तरम् ॥
मन्दकर्मानलारोग्याः सुकुमाराः सुखोचिताः ।
जन्तवो ये तु तेषां हि चिन्तेयं परिकीर्तिता ॥
बलिनः खरभक्ष्या ये ये च दीप्ताग्नयो नराः ।
कर्मनित्याश्च ये तेषां नावश्यं परिकीर्त्यते ॥

पदार्थोना हलकापणानो तथा भारेपणानो विचार अने ते केवां माणसोने भारे छे तथा केवां माणसोने भारे नथी.

२३७ खावापीवाना पदार्थोना हलकापणानो तथा भारेपणानो जे विचार केहेवामां आव्यो ते विचार ते ते पदार्थोना स्वभावनुं उल्लंघन करतो नथी. (जेम के जंगलनां जानवरो स्वभावथीज हलकां होवाथी तेओनुं मांस पण स्वभावथीज हलकुं छे इत्यादि.) स्वभाव पछी संस्कारनुं उल्लंघन करतो नथी. (जेम के चोखा हलका छतां पण चोखानो लोट भारे छे इत्यादि.) संस्कार पछी मात्रानुं उल्लंघन करतो नथी. (जेम के हलकां अन्नोथी तृप्ति करवी अने भारे अन्नोथी अरधी तृप्ति करवी इत्यादि.) मात्रा पछी अन्ननुं उल्लंघन करतो नथी. (जेम के मंड, पेया, विलेपी, भात तथा पूडा एओमां उत्तरोत्तर भारे छे अने पूर्व पूर्व हलकां छे इत्यादि.) अन्न पछी काळनुं उल्लंघन करतो नथी. (जेम के नवुं धान्य कफ करनार छे अने एक वर्ष सुधी रहेलुं जूनुं धान्य हलकुं छे इत्यादि.)

जे माणसो थोडुं काम करनारा, मंद अग्निवाळा, मंद आरोग्यवाळा, कोमळ शरीरवाळा अने सुख भोगववाना अभ्यासी होय ते माणसोने माटे पदार्थोना हलकापणानो तथा भारेपणानो आ विचार कह्यो छे. परंतु जे माणसो बळवाळा, कठोर पदार्थो खानारा, प्रदीप्त जठराग्निवाळा अने हमेश कामो करवानाज अभ्यासवाळा होय तेओने माटे पदार्थोना हलकापणानो तथा भारेपणानो विचार करवो आवश्यक नथी.

२३८ अथाहारविधिं वत्स विस्तरेणाखिलं शृणु।
आप्तान्वितमसंकीर्णं शुचि कार्यं महानसम् ॥
तत्राप्तैर्गुणसम्पन्नमन्नं भक्ष्यं सुसंस्कृतम् ।
शुचौ देशे सुसंगुप्तं समुपस्थापयेद्भिषक् ॥
विषघ्नैरगदैः स्पृष्टं प्रोक्षितं व्यजनोदकैः ।
सिद्धैर्मन्त्रैर्हतविषं सिद्धमन्नं निवेदयेत् ॥
वक्ष्याम्यतः परं कृत्स्नामाहारस्योपकल्पनाम् ।
घृतं कार्ष्णायसे देयं पेया देया तु राजते
फलानि सर्वभक्ष्यांश्च प्रदद्याद्वैदलेषु च ।
परिशुष्कप्रदिग्धानि सौवर्णेषु प्रकल्पयेत्
प्रद्रवाणि रसांश्चैव राजतेषूपहारयेत् ।
कट्टराणि खडांश्चैव सर्वाञ्छैलेषु दापयेत् ॥
दद्यात्ताम्रमये पात्रे सुशीतं सुशृतं पयः ।
पानीयं पानकं मद्यं मृण्मयेषु प्रदापयेत् ॥
काचस्फटिकपात्रेषु शीतलेषु शुभेषु च ।
दद्याद्वैदूर्यपात्रेषु रागखाडवसट्टकान् ॥
पुरस्ताद्विमले पात्रे सुविस्तीर्णे मनोरमे ।
सूदः सूपौदनं दद्यात्प्रदेहांश्च सुसंस्कृतान् ॥
फलानि सर्वभक्ष्यांश्च परिशुष्काणि यानि च ।
तानि दक्षिणपार्श्वे तु भुञ्जानस्योपकल्पयेत् ॥
प्रद्रवाणि रसांश्चैव पानीयं पानकं पयः ।
खडान्यूषांश्च पेयांश्च सव्यपार्श्वे प्रदापयेत् ॥
सर्वान्गुडविकारांश्च रागखाडवसट्टकान् ।
पुरस्तात्स्थापयेत्प्राज्ञो द्वयोरपि च मध्यतः ॥
एवं विज्ञाय मतिमान्भोजनस्योपकल्पनाम् ।
भोक्तारं विजने रम्ये निःसंपाते शुभे शुचौ ॥
सुगन्धिपुष्परचिते समे देशेऽथ भोजयेत् ।
विशिष्टमिष्टसंस्कारैः पथ्यैरिष्टैरसादिभिः ॥
मनोज्ञं शुचि नात्युष्णं प्रत्यग्रमशनं हितम् ।
पूर्वं मधुरमश्नीयान्मध्येऽम्ललवणौ रसौ ॥
पश्चाच्छेषान्रसान्वैद्यो भोजनेष्ववचारयेत् ।
आदौ फलानि भुञ्जीत दाडिमादीनि बुद्धिमान्
ततः पेयांस्ततो भोज्यान्भक्ष्यांश्चित्रांस्ततः परम् ।
घनं पूर्वं समश्नीयात्केचिदाहुर्विपर्ययम् ॥
आदावन्ते च मध्ये च भोजनस्य तु शस्यते
निरत्ययं दोषहरं फलं ह्यामलकं नृणाम् ॥
मृणालबिसशालूककन्देक्षुप्रभृतीनि च ।
पूर्वं योज्यानि भिषजा न तु भुक्ते कथंचन ॥
सुखमुच्चैः समासीनः समदेहोऽन्नतत्परः ।
काले सात्म्यं लघु स्निग्धं क्षिप्रमुष्णं द्रवोत्तरम् ।
बुभुक्षितोऽन्नमश्नीयान्मात्रावद्विदितागमः ।
काले भुक्तं प्रीणयति सात्म्यमन्नं न बाधते ॥

लघु शीघ्रं व्रजेत्पाकं स्निग्धोष्णं बलवह्निदम् ।
क्षिप्रं भुक्तं समं पाकं यात्यदोषं द्रवोत्तरम् ॥
सुखं जीर्यति मात्रावद्धातुसाम्यं करोति च ।
अतीवायतयामास्तु क्षपा येष्वृतुषु स्मृताः ॥
तेषु तत्प्रत्यनीकाढ्यं भुञ्जीत प्रातरेव तु ।
येषु चापि भवेयुश्च दिवसा भृशमायताः ॥
तेषु तत्कालविहितमपराह्णे प्रशस्यते ।
रजन्यो दिवसाश्चैव येषु चापि समाः स्मृताः॥
कृत्वा सममहोरात्रं तेषु भुञ्जीत भोजनम् ।
नाप्राप्तातीतकालं वा हीनाधिकमथापि वा ॥
अप्राप्तकाले भुञ्जानः शरीरे ह्यलघौ नरः ।
तांस्तान्व्याधीनवाप्नोति मरणं वा नियच्छति ॥
अतीतकाले भुञ्जानो वायुनोपहतेऽनले ।
कृच्छ्राद्विपच्यते भुक्तं द्वितीयं च न काङ्क्षति ॥
हीनमात्रमसन्तोषं करोति च बलक्षयम् ॥
आलस्यगौरवाटोपसादांश्च कुरुतेऽधिकम् ।
तस्मात्सुसंस्कृतं युक्त्या दोषैरेतैर्विवर्जितम् ।
यथोक्तगुणसम्पन्नमुपसेवेत भोजनम् ॥
विभज्य कालदोषादीन्कालयोरुभयोरपि ।
अचोक्षं दुष्टमुच्छिष्टं पाषाणतृणलोष्ठवत् ॥
द्विष्टं व्युषितमस्वादु पूति चान्नं विवर्जयेत् ।
चिरसिद्धं स्थिरं शीतमन्नमुष्णीकृतं पुनः ॥
अशान्तमुपदग्धं च तथा स्वादु न लक्ष्यते ।
यद्यत्स्वादुतरं तत्तद्विदध्यादुत्तरोत्तरम् ॥
प्रक्षालयेदद्भिरास्यं भुञ्जानस्य मुहुर्मुहुः ।
विशुद्धरसने तस्मै रोचतेऽन्नमपूर्ववत् ॥
स्वादुना तस्य रसनं प्रथमेनापि तर्पितम् ।
न तथा स्वादयेदन्यत्तस्मात्प्रक्षाल्यमन्तरा ॥
सौमनस्यं बलं पुष्टिमुत्साहं हर्षणं सुखम् ।
स्वादु संजनयत्यन्नमस्वादु च विपर्ययम् ॥
भुक्त्वा च यत्प्रार्थयते भूयस्तत्स्वादु भोजनम्।
अशितश्चोदकं युक्त्या भुञ्जानश्चान्तरा पिबेत् ॥
दन्तान्तरगतं चान्नं शोधनेनाहरेच्छनैः ।
कुर्यादनाहृतं तद्धि मुखस्यानिष्टगन्धताम् ॥
जीर्णेऽन्ने वर्द्धते वायुर्विदग्धे पित्तमेव तु ।
भुक्तमात्रे कफश्चापि तस्माद्भुक्ते हरेत्कफम् ॥
धूमेनापोह्य हृद्यैर्वा कषायकटुतिक्तकैः ।
पूगकक्कोलकर्पूरलवङ्गसुमनःफलैः ॥
कटुतिक्तकषायैर्वा मुखवैशद्यकारकैः ।
ताम्बूलपत्रसहितैः सुगन्धैर्वा विचक्षणः ॥
भुक्त्वा राजवदासीत यावदन्नक्लमो गतः ।
ततः पदशतं गत्वा वामपार्श्वे तु संविशेत् ॥
शब्दरूपरसान्गन्धान्स्पर्शांश्च मनसः प्रियान् ।
भुक्तवानुपसेवेत तेनान्नं साधु तिष्ठति ॥
शब्दरूपरसस्पर्शगन्धाश्चापि जुगुप्सिताः ।
अशुच्यन्नं तथाभुक्तमतिहास्यं च वामयेत् ॥
शयनं चासनं वापि नेच्छेद्वापि द्रवोत्तरम् ।
नाग्न्यातपौ न प्लवनं न यानं नापि वाहनम् ॥
नचैकरससेवायां प्रसज्येत कदाचन ।
शाकावरान्नभूयिष्ठमम्लं च न समाचरेत् ॥
एकैकशः समस्तान् वा नाप्यश्नीयाद्रसान्सदा ।
प्राग्भुक्ते त्वविविक्तेऽग्नौ द्विरन्नं न समाचरेत् ॥
पूर्वभुक्ते विदग्धेऽन्ने भुञ्जानो हन्ति पावकम् ।
मात्रा गुरुं परिहरेदाहारं द्रव्यतश्च यः ॥
पिष्टान्नं नैव भुञ्जीत मात्रया वा बुभुक्षितः ।
द्विगुणं च पिबेत्तोयं सुखं सम्यक्प्रजीर्यति ।
पेयलेह्याद्यभक्ष्याणां गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥
गुरूणामर्द्धसौहित्यं लघूनां तृप्तिरिष्यते ।
द्रवोत्तरो द्रवश्चापि न मात्रागुरुरिष्यते ॥
द्रवाढ्यमपि शुष्कं तु सम्यगेवोपपद्यते ।
विशुष्कमन्नमभ्यस्तं न पाकं साधु गच्छति ॥
पिण्डीकृतमसंक्लिन्नं विदाहमुपगच्छति ।
स्रोतस्यन्नवहे पित्तं पक्तौ वा यस्य तिष्ठति ॥
विदाहि भुक्तमन्यद्वा तस्याप्यन्नं विदह्यते ।
शुष्कं विरुद्धं विष्टम्भि वह्निव्यापदमावहेत् ॥

आहारनो विधि.

२३८ हे पुत्र सुश्रुत! हवे आहारनो विधि संपूर्ण रीते कहुं छुं ते सांभळो. रसोई करवानुं स्थान स्वच्छ अने सांकड वगरनुं बनाववुं अने तेमां, जे माणसो विश्वासपात्र होय तेओनेज रांखवां. ए स्थानमां ते विश्वासपात्र माणसोए

सारी रीते पकावेलुं अने जेना गंध, रस, स्पर्श तथा वर्ण प्रिय लागे एवुं खावानुं अन्न वैद्ये कोईनी पण नजर न पडे एवी रीते स्वच्छ जग्यामां रखाववुं. वैद्ये ए अन्नने विषहर औषधोथी युक्त करी तथा विषहर औषधोना योगवाळां जळोवते भीजावेला पंखाओथी तेना उपर पवन नाखी अथर्ववेदना विषनाशक सिद्ध मंत्रोथी अभिमंत्रित करी राजानी पासे हाजर करीने पीरसवुं तथा रसोयाना हाथथी पीरसाववुं.

हवे कया पदार्थो केवा केवा पात्रोमां पीरसवा तथा कया कया प्रदेशमां मुकवा इत्यादि विषेनी सघळी योजना कहुं छुं. घी लोढाना पात्रमां देवुं, पेया रूपाना पात्रमां देवी, फळो तथा सर्व प्रकारनां भक्ष्यो पांनडांओमां अथवा पानडांओथी ढाकेलां वांस वगेरेनां पात्रोमां पीरसवां, परिशुष्क मांसो तथा प्रदिग्ध मांसो सुवर्णनां पात्रोमां पीरसवां, मंड वगेरे उत्तम द्रवो तथा मांसना रसो रूपानां पात्रोमां पीरसवा, छाश कांजी तथा सर्व प्रकारना खडयूषो पथरांनां पात्रोमां पीरसवा, सारी पेठे उकाळीने योग्य रीते थंडुं करेलुं दूध त्रांबाना पात्रमां पीरसवुं, जळ शरबत तथा मद्य माटीनां पात्रोमां पीरसवां, रागो शीतल तथा शुभ काचनां पात्रोमां पीरसवा, खाडवो शीतल तथा शुभ स्फाटिकनां पात्रोमां पीरसवा अने सट्टको शीतल तथा शुभ वैदूर्य (लसणीया मणिओ)नां पात्रोमां पीरसवा. रसोयाए सारी रीते संस्कार आपेलां दाळ, भात अने प्रदिग्ध मांसो सामा भागमां राखेला निर्मल, विस्तीर्ण अने मनोहर पात्रमां पीरसवां. फळो, सर्व प्रकारनां भक्ष्यो अने परिशुष्क मांसो भोजन करनाराना जमणा हाथनी तरफ राखवां. मंड आदि उत्तम द्रवो, मांसना रसो, जळ, शरबतो, दूध, खडयूषो, यूषो तथा पीवाना पदार्थो भोजन करनाराना डाबा हाथनी तरफ राखवां. गोळसंबंधी सघळा विकारो, रागो, खाडवो तथा सट्टको समजु रसोयाए भोजन करनारानी सामे मध्य भागमां अने जमणी तथा डाबी तरफमां पण स्थापवा. बुद्धिमान् वैद्ये आ प्रमाणे भोजननी गोठवण जाणीने, जमनारने एकांत, रमणीय, सुगंधी पुष्पोनी रचनावाळा, सपाट, रज वगेरे न पडे एवा, शुभ अने पवित्र प्रदेशमां जमाडवो. मनने प्रिय लागे एवा वघार वगेरे संस्कारोथी युक्त करेलुं. पथ्य तथा प्रिय रसोवाळुं, गंधथी वर्णथी तथा स्पर्शथी पण प्रिय लागे एवुं, पवित्र, ᳚नुं न होय एवुं अने तुरतनुं पकावेलुं भोजन हितकारी थाय छे. वैद्ये भोजनमां प्रथम मधुर रस जमाडवो, मध्यमां खाटो तथा खारो रस जमाडवो अने ते पछी बाकीना रसो जमाडवा. बुद्धिमान् वैद्ये प्रथम दाडिम वगेरे फळो जमाडवां, पछी पीवाना पदार्थोनो उपयोग कराववो, पछी भोज्य पदार्थोनो उपयोग कराववो अने ते पछी विचित्र लाडु वगेरे भक्ष्य पदार्थोनो उपयोग कराववो. केटलाएक केहे छे के प्रथम कठण पदार्थो जमाडवा अने केटलाएक केहे छे के प्रथम द्रव पदार्थो जमाडवा. भोजनना आदिमां, मध्यमां अने अंतमां माणसोने आमळांनो उपयोग कराववो ए बहु उत्तम छे. केम के आमळां कशी हरकत करे एवां नथी अने नेत्रोनुं हित करनारां छे तथा दोषोने हरनारां छे. वैद्ये कमळनां नाळ, कमळना कंद, कमळना कंदोमांथी फुटेला कोंटा, सूरण वगेरे कंदो अने शेलडी वगेरे पदार्थोनो उपयोग कराववो होय तो प्रथम कराववो पण भोजन कर्या पछी कोई रीते पण कराववो

१ भूख्या माणसने प्रथम मधुर रस देवो के जेथी पक्वाशयमां रहेलो वायु जीताय. मध्यमां खाटो तथा खारो रस देवो के जेथी पित्ताशयमां अग्नि दीप्त थाय. अंतमां तीखा वगेरे रसो देवा के जेथी कफ जीताय.

२ वायुने जीतवाने माटे प्रथम दाडिम आदि अम्ल पदार्थोनो उपयोग कराववो. पछी दाडिम आदि कठण पदार्थोने कोमळ करवाने माटे तथा वयःस्थापनने माटे पीवाना पदार्थोनो उपयोग कराववो.

नहीं. उंचा आसनपर सारी रीते बेसाडी, शरीरने वांकुं टेहेडुं नहीं पण समान रखावी, मनने कामादिक प्रवृत्तिओमां नही रेहेवा दई अन्नमांज तत्पर रखावीने योग्य समयमां सात्म्य, हलकुं, स्निग्ध तथा जेमां द्रव प्रधान होय एवुं उष्ण अन्न जमाडवुं. जमवामां अत्यंत शीघ्रता पण नहीं कराववी अने अत्यंत विलंब पण नहीं कराववो. शास्त्रोक्त मार्ग उपर ध्यान आपी, भूख लागे त्यारे योग्य समयमां योग्य मात्राथी अन्न जमाडवुं. योग्य समयमां जमवामां आवेलुं अन्न तृप्ति आपे छे, सात्म्य अन्न पीडाने उत्पन्न करतुं नथी, हलकुं अन्न तुरत पाक पामे छे, स्निग्ध तथा उष्ण अन्न बळनी तथा अग्निनी वृद्धि करे छे, उतावळथी पण नहीं अने विलंबथी पण नहीं परंतु सम रीते जमवामां आवेलुं अन्न समपाकने पामे छे, जेमां द्रव प्रधान होय एवुं अन्न निर्दोष रीते पाके छे अने मात्राथी जमवामां आवेलुं अन्न सुखेथी जीर्ण थाय छे तथा दोषो वगेरेनी समता करे छे. जे ऋतुओमां रात्रिओ अत्यंत लांबी थाय छे ते ऋतुओमां (हेमंतमां अने शिशिरमां) ते ऋतुओना गुणोथी विपरीत गुणोवाळुं अन्न जमाडवुं अने ते सवा पोहोर दिवस चडे त्यारे जमाडवुं. जे ऋतुओमां दिवसो अत्यंत लांबा थाय छे ते ऋतुओमां (ग्रीष्ममां तथा वर्षामां) ते ऋतुओना गुणोथी विपरीत गुणोवाळुं अन्न जमाडवुं अने ते अपराह्नमां जमाडवुं एटले दिवसना अढी पोहोर गया पछी जमाडवुं. जे ऋतुओमां दिवसो अने रात्रिओ समान थाय छे ते ऋतुओमां (शरदमां अने वसंतमां) ते ऋतुओना गुणोथी विपरीत गुणोवाळुं अन्न जमाडवुं अने ते मध्याह्न समयमां जमाडवुं. (आ जमाडवानो विधि एक टंकज जमवाना अभ्यासवाळा माणसने माटे छे. जेने बे टंक जमवानी टेव होय ते माणसने सवा पोहोर दिवस चडे त्यारे जमाडवुं अने ते भोजननी मात्राथी अरधुं अथवा त्रीजा भागनुं अन्न दिवसना साडात्रण पोहोर गया पछी के राते जमाडवुं.) भोजननो समय प्राप्त थया विना जमाडवुं नहीं, भोजननो समय व्यतीत करीने पण जमाडवुं नहीं, ओछी मात्राथी पण जमाडवुं नहीं अने अधिक मात्राथी पण जमाडवुं नहीं. भोजननो समय प्राप्त थयाविना भोजन करतो माणस शरीर भारे थई जवाथी ते ते व्याधिओने प्राप्त थाय छे अथवा मरण पामे छे. भोजननो समय व्यतीत थया पछी भोजन करनारा माणसनो जठराग्नि वायुथी उपघात पामे छे तेथी तेने खाधेलुं अन्न मांड मांड पचे छे अने बीजीवार जमवानी इच्छा थती नथी. ओछी मात्राथी खाधेलुं अन्न तृप्ति आपतुं नथी अने बळनो क्षय करे छे. अधिक मात्राथी खाधेलुं अन्न आलस्यने, भारेपणाने, पेटना फूलवाने अने अंगोनी ग्लानिने उत्पन्न करे छे. आप्रमाणे छे एटला माटे सारी रीते संस्कार आपेलुं, उपर कहेला दोषोवगरनुं अने उपर कहेला उत्तम गुणोवाळुं भोजन योग्य मात्राथी कराववानो अभ्यास राखववो. समयोनो तथा दोष वगेरेनो विभाग करी उपर कह्या प्रमाणे नित्य बे वखत भोजन कराववुं. जे अन्न चोखाइ वगरनुं, दुष्ट, उच्छिष्ट, कांकरीवाळुं, तणसलांवाळुं, ढफांवाळुं, जेना उपर अरुचि थती होय एवुं, वाशी रहेलुं, घणीवार सुधी पड्युं रहेलुं, स्वाद वगरनुं के सडेलुं होय तेने छोडी देवुं. जे अन्न रंधाया पछी घणीवार सुधी पड्युं रहेलुं, कठण, टाढुं थई गएलुं, फरीवार उनुं करेलुं, नहीं परसीजेलुं के बळी गएलुं होय ते अन्न तेवुं स्वादिष्ट लागतुं नथी. घणा प्रकारनां अन्नो स्वादिष्ट होय तो तेओमां जे जे अन्न वधारे वधारे

१ जेटलुं अन्न जमवाथी कूखमां दबाण न थाय, पडखां फाटे नहीं, हृदयमां पीडा न थाय, पेटनुं भारेपणुं न थाय, चक्षु वगेरे इंद्रियो प्रसन्न थाय क्षुधा तथा तृषा शांत थाय अने हसवामां श्वासोच्छ्वासमां तथा वातो करवामां सुख रहे तेटलुं जमाडवुं ए मात्रा केहेवाय छे.

स्वादिष्ट ते ते अन्नने पाछळ पाछळथी पीरसवुं एटले एक स्वादिष्ट जमाया पछी तेथी वधारे स्वादिष्ट अन्न पीरसवुं अने ते जमाया पछी जे तेथी पण वधारे स्वादिष्ट होय ते पीरसवुं. जमवा लागेला माणसना मुखने जळवते वारंवार धोवरावबुं एटले वारंवार जळथी कोगळा करावबा. केम के कोगळा करवाथी जीभ शुद्ध थतां बीजो स्वाद अपूर्वनी पेठे रुचे छे. पेहेला स्वादथी तृप्त थएली माणसनी जीभ बीजा स्वादने पेहेलानी पेठे ग्रहण करी शकती नथी एटला माटे वचमां वचमां जळथी कोगळा करावबा. स्वादवाळुं अन्न मनना स्वस्थपणाने, बळने, पुष्टिने, उत्साहने, हर्षने तथा सुखने उत्पन्न करे छे अने स्वादवगरनुं अन्न मनना अस्वस्थपणाने, बळनी हानिने, पुष्टिनी हानिने, उत्साहना अभावने, अहर्षने तथा असुखने उत्पन्न करे छे. जमनारो जे अन्नने जम्या पछी फरीवार मागे ते अन्नने स्वादिष्ट जाणवुं. जमी रह्या पछी अने जमतां जमतां वचमां पण मात्राथी पाणी पावुं.

दांतोना मध्यमां पेसी रहेला के चोटी रहेला अन्नने धीरे धीरे खडनी सळी वगेरे वते काहाडी नखाववुं. जो ए अन्नने दांतोना मध्यमांथी काहाडी नाखवामां न आवे तो ते अन्न मोंहोडाने खराब गंधवाळुं करी नाखे छे.

जमेलुं अन्न जीर्ण थया पछी वायु वधे छे अने जीर्ण थवा लागे त्यारे पित्त वधे छे. भोजन कर्या पछी तुरत कफनी वृद्धि थाय छे एटला माटे भोजन कर्या पछी तुरतज बीडी पावाथी अथवा हृदयने प्रिय लागनारां तूरां, तीखां तथा कडवां सोपारी, चणकबाब, भीमसेनी बरास, लवींग तथा जायफळ एओथी अथवा मुखने स्वच्छ करे एवा तूरा, तीखा तथा कडवा बीजा पदार्थोथी अथवा नागरवेलनां पानसहित सुगंध. पदार्थोथी कफने दूर करवो.

समजु माणसे भोजन कर्या पछी ज्यांसुधी अन्ननो क्रम मटे त्यांसुधी राजानी पेठे बेसवुं अने ते पछी सो पगलां चाली शय्यामां डाबुं पडखुं दबावीने सुवुं. जमेला माणसे मनने प्रिय लागे एवा शब्द, रूप रस, गंध अने स्पर्श एओनुं सेवन करवुं. एम करवाथी उदरमां अन्ननी सारी रीते स्थिति थाय छे. खराब शब्द, खराब रूप, खराब रस, खराब गंध अने खराब स्पर्श एओ वमन करावे छे, जमवामां आवेलु अशुचि अन्न पण वमन करावे छे अने अतिहास्य पण वमन करावे छे.

जम्या पछी लांबा समय सुधी शयननुं के आसननुं सेवन नहीं करवुं. जेमां द्रव प्रधान होय एवा पदार्थनो पण उपयोग करवो नहीं. अग्निना तापनो, सूर्यना तडकानो, नाहावानो, जळमां तरवानो, दूर प्रदेशमां जवानो अने वाहननो पण त्याग करवोः

कदी पण एकनाएक रसनुं वारंवार सेवन करवामां लागवुं नहीं. जेमां शाक के वैदलान्नो (तुवरनी दाळ वगेरे अन्नो) घणां आवतां होय एवा भोजननुं वारंवार सेवन करवुं नहीं. तेमज खाटा रसनुं अतिसेवन करवुं नहीं. एक एक रस पण झाझो जमवो नहीं. तेमज सघळा रसो पण झाझा जमवा नहीं. अथवा एक एक रसनुंज सेवन करवुं नहीं अने सघळा रसोने एकठा करीने पण जमवा नहीं.

एक वार जम्या पछी ज्यांसुधी जठराग्नि निर्मळ न थयो होय त्यांसुधी बीजी वार जमवुं नहीं. पेहेलां जमेलुं अन्न जठराग्निथी कांईक पाकुं होय अने कांईक काचुं होय तेटलामां जे माणस बीजी वार जमे ते पोताना जठराग्निनोज विनाश करे छे.

जे अन्न मात्राथी अथवा द्रव्यथी भारे होय तेनो आहार करवो नहीं. जेमां नकरो चोखानो लोटज आवतो होय एवुं अन्न जमवुं नहीं. बहुज भूख लागी होय तो पण एवुं अन्न मात्राथीज जमवुं. एवुं अन्न जमवामां आव्युं होय तो ते उपर ब-

मणुं पाणी पीवुं के जेथी ते अन्न कशुं कष्ट आप्या वगर पची जाय.

पीवा योग्य पदार्थो करतां चाटवा योग्य पदार्थो भारे छे, चाटवा योग्य पदार्थो करतां दाळ भात वगेरे भोज्य पदार्थो भारे छे अने भोज्य पदार्थो करतां लाडु वगेरे भक्ष्य पदार्थो भारे छे. लाडु तथा अडद वगेरे पदार्थो के जेओ भारे छे तेओथी अरधी तृप्ति करवी अने सुवर वगेरेनां मांसो वगेरे पदार्थो के जेओ अत्यंत भारे छे तेओथी त्रीजा भागनी तृप्ति करवी. हलका पदार्थोथी पण जराक ओछी तृप्ति करवी. जे अत्यंत हलका पदार्थो छे तेओथी तृप्ति करवी पण मात्राथी करवी. जेमां द्रव प्रधान होय एवो पदार्थ अथवा जाते द्रवरूप पदार्थ पण मात्राथी भारे पडतो थाय एम करवुं नहीं. शुष्क अन्न पण द्रवनी साथे संयुक्त करीने जमवामां आवे तो जठराग्निथी सारी रीते पाकी जाय छे. शुष्क अन्न वारंवार खावामां आवे तो ते सारी पेठे पाकतुं नथी पण ते अन्न पेटमां पिंडारूपे तथा आर्द्रता पाम्या वगरनुं रहीने खाटो पाक पामे छे.

जे माणसना आमाशयमां अथवा अग्निना स्थानकमां पित्त होय ते माणसने जमवामां आवेलुं विदाही (खाटो पाक पामे एवुं) अन्न अने बीजुं अन्न पण काचुं पाकुंज रेहे छे.

शुष्क अन्नो, दूध तथा मत्स्य आदि विरुद्ध पदार्थो अने चणा तथा मसूर वगेरे विष्टंभी (कबजीयत करनारा) पदार्थो जठराग्निने मंद करी नाखे छे.

२३९ आमं विदग्धं विष्टब्धं कफपित्तानिलै-
स्त्रिभिः ।
अजीर्णं केचिदिच्छन्ति चतुर्थं रसशेषतः ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाद्वा
संधारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च ।
कालेऽपि सात्म्यं लघु चापि भुक्त-
मन्नं न पाकं भजते नरस्य ॥
ईर्ष्याभयक्रोधपरिक्षतेन
लुब्धेन रुग्दैन्यनिपीडितेन ।
प्रद्वेषयुक्तेन च सेव्यमान-
मन्नं न सम्यक्परिणाममेति ॥
माधुर्यमन्नं गतमामसंज्ञं
विदग्धसंज्ञं गतमम्लभावम् ।
किंचिद्विपक्वं भृशतोदशूलं
विष्टब्धमाबद्धविरुद्धवातम् ॥
उद्गारशुद्धावपि भक्तकाङ्क्षा
न जायते हृद्गुरुता च यस्य ।
रसावशेषेण तु सप्रसेकं
चतुर्थमेतत्प्रवदन्त्यजीर्णम् ॥

मूर्छा प्रलापो वमथुः प्रसेकः सदनं भ्रमः ।
उपद्रवा भवन्त्येते मरणं चाप्यजीर्णतः ।
तत्रामे लंघनं कार्यं विदग्धे वमनं हितम् ।
विष्टब्धे स्वेदनं पथ्यं रसशेषे शयीत च ॥
वामयेदाशु तं तस्मादुष्णेन लवणाम्बुना ।
कार्यं चानशनं तावद्यावन्न प्रकृतिं भजेत् ।
लघुकायमतश्चैनं लंघनैः समुपाचरेत् ॥
यावन्न प्रकृतिस्थः स्याद्दोषतः प्राणतस्तथा ॥
हिताहितोपसंयुक्तमन्नं समशनं स्मृतम् ।
बहु स्तोकमकाले वा विज्ञेयं विषमाशनम् ॥
साजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते ।
त्रयमेतन्निहन्त्याशु बहून्व्याधीन्करोति वा

अन्नं विदग्धं हि नरस्य शीघ्रं
शीताम्बुना वै परिपाकमेति ।
तद्ध्यस्य शैत्येन निहन्ति पित्त-
माक्लेदिभावाच्च नयत्यधस्तात् ॥
विदह्यते यस्य तु भुक्तमात्रे
दह्येत हृत्कोष्ठगलं च यस्य ।
द्राक्षाऽभयां माक्षिकसम्प्रयुक्तां
लीढ्वाऽभयां वा स सुखं लभेत ॥
भवेदजीर्णं प्रति यस्य शङ्का
स्निग्धस्य जन्तोर्बलिनोऽन्नकाले ।
प्रातः सशुण्ठीमभयामशङ्को
भुञ्जीत सम्प्राश्य हितं हितार्थी ॥

स्वल्पं यदा दोषविबद्धमामं
लीनं न तेजःपथमावृणोति ।
भवत्यजीर्णेऽपि तदा बुभुक्षा
सा मन्दबुद्धिं विषवन्निहन्ति ॥

अजीर्णना भेद, अजीर्णनां कारणो, अजीर्णथी हानि अने अजीर्णनी सामान्य चिकित्सा.

२३९ आमाजीर्ण, विदग्धाजीर्ण अने विष्टब्धाजीर्ण एम त्रण प्रकारनां अजीर्ण छे. आमाजीर्ण कफथी थाय छे, विदग्धाजीर्ण पित्तथी थाय छे अने विष्टब्धाजीर्ण वायुथी थाय छे. केटलाएक आचार्यो माने छे के 'रसशेपाजीर्ण नामनुं चोथुं पण एक अजीर्ण छे अने ते, खाधा पछी पाकी गएला अन्ननो साररूप जे द्रव भाग अपक्व रही गयो होय छे तेथी थाय छे.'

घणुं पाणी पीवाथी, विषम भोजन करवाथी, क्षुधा मूत्र तथा विष्टा वगेरेने रोकी राखवाथी, दिवसे सूवाथी अने राते जागवाथी माणसने समयसर खाधेलुं, प्रकृतिथी हितावह, हलकुं अने स्निग्धपणा तथा उनापणा आदि गुणोवाळुं अन्न पण पचतुं नथी. ईर्ष्याथी, भयथी, क्रोधथी के लोभथी व्याप्त थएलो अथवा रोगथी के दीनताथी पीडाएलो अथवा मत्सरथी संयुक्त थएलो माणस जे अन्ननुं भोजन करे ते अन्न ते माणसने सारी रीते पचतुं नथी.

कफथी दूषित थवाना प्रभावथी जे अन्न मधुरपणाने पामेलुं होय तेथी थएलुं अजीर्ण आमाजीर्ण केहेवाय छे. खावामां आवेलुं अन्न पित्तथी दूषित थवाना प्रभावथी कांईक काचुं तथा कांईक पाकुं थईने खाटापणाने पाम्युं होय तेथी जे अजीर्ण थाय ते विदग्धाजीर्ण केहेवाय छे. प्रवृत्त नहीं थता तथा विशेषे करी रोकाई गएला वायुथी जे अजीर्ण थाय छे ते विष्टब्धाजीर्ण केहेवाय छे. केटलाएक केहे छे के अन्ननो साररूप जे द्रवभाग अपक्व रही गयो होय छे तेथी जे अजीर्ण थाय छे ते रसशेषाजीर्ण केहेवाय छे.

(जो आमाजीर्ण होय तो पेटमां तथा अंगोमां भारेपणुं थाय छे, वमननी तैयारी जेवुं थई रेहे छे, गाल उपर तथा आंखोना डोडला उपर थेथर (सोजो) थाय छे, जेवुं खाधुं होय तेवाज ओडकार आवे छे तथा शरीरमां चळ आवे छे.

जो विदग्धाजीर्ण होय तो भ्रम थाय छे, तरश लागे छे, मूर्छा आवे छे, पित्तने लीधे संताप तथा चोस वगेरे घणा प्रकारनी व्यथाओ थाय छे, धुमाडावाळा तथा खाटा ओडकार आवे छे, पसीनो वळया करे छे अने दाह थाय छे.

जो विष्टब्धाजीर्ण होय तो अत्यंत शूळ नीकळे छे, आफरो थाय छे चोबावा जेवी तथा भेदावा जेवी वगेरे अनेक प्रकारनी वायुसंबंधी वेदनाओ थाय छे, मळ तथा अधोवायु रोकाई जाय छे, अंगो झलाई गयां जेवां थई जाय छे, मूर्छा थाय छे अने अंगोमां पीडा थाय छे.)

जो रसशेपाजीर्ण होय तो ओडकारो साफ आवतां छतां पण जमवानी इच्छा थती नथी, लाल स्रव्या करे छे अने छातीमां भारेपणुं थाय छे.

अजीर्णथी मूर्छा, असंबद्ध भाषण, वमन, ळनो स्राव, अंगोनी ग्लानि अने भ्रमण ए उपद्रवो थाय छे अने वखतपर मरण पण थई जाय छ.

आमाजीर्ण थयुं होय तो लंघन कराववुं हितकारी छे, विदग्धाजीर्ण होय तो वमन कराववुं हितकारी छे, विष्टब्धाजीर्ण होय तो स्वेदन (बाफ देवी) हितकारी छे अने रसशेपाजीर्ण होय तो शयन कराववुं हितकारी छे. योग्य जणाय तो आमाजीर्णमां लंघननी साथे वमन पण कराववुं अने रसशेपाजीर्णमां शयननी साथे स्वेदन पण देवुं तथा भोजनना समयमां पाचन पण देवुं. विदग्धाजीर्णमां लूणथी संयुक्त करेला उना पाणीथी तुरतज वमन

कराववुं, आमाजीर्णमां ज्यांसुधी अजीर्णनी विकृति न मटे त्यासुधी लंघन कराववुं. उपर कहेलो विधि कर्या पछी अजीर्णनो दरदी हलका शरीर-वाळो थया छतां पण ज्यांसुधी समदोषवाळो अने स्वस्थ प्राणवाळो न थाय त्यांसुधी तेने माटे लंघन जेवाज उपचारो कर्या करवा.

घणुं, थोडुं अथवा समय प्राप्त थया वगर जे भोजन करवामां आवे ते विषमाशन केहेवाय छे. हित पदार्थोथी तथा अहित पदार्थोथी पण संयुक्त भोजन करवामां आवे ते समशन केहेवाय छे अने अजीर्ण छतां जे भोजन करवामां आवे ते अध्यशन केहेवाय छे. विषमाशन, समशन तथा अध्यशन ए त्रणे, तुरत मारी नाखे छे अथवा घणा व्याधिओने उत्पन्न करे छे.

विदग्ध थएलुं (कांईक काचुं अने कांईक पाकुं रहीने खाटुं थएलुं) अन्न शीतल जळथी तुरत पाकी जाय छे. केम के शीतल जळ क्लेद-वगरनुं होवाने लीधे पोतानी शीतलताथी पित्तने तोडीने नीचे लई जाय छे.

जे माणसने जमतांवेंतज आमाशयमां विदाह थाय, हृदयमां, कोठामां तथा गळामां दाह थाय ते माणस जो द्राक्षथी संयुक्त हरडेना चूर्णने चाटे अथवा मद्यथी संयुक्त हरडेना चूर्णने चाटे तो सुख पामे.

जे स्निग्ध तथा बळवान् माणसने प्रभातमां रसशेषाजीर्णनी शंका उत्पन्न थाय ते माणसे पोताना हितने माटे भोजनना समयमां सुंठथी संयुक्त हरडेनुं चूर्ण खाईने पछी निश्शंक रीते हितकारी भोजन करवुं.

ज्यारे थोडुंक आम दोषथी रोकाईने एक पडखामां छुपी रहेलुं होवाथी जठराग्निना मार्गने रोकतुं नथी त्यारे अजीर्ण छतां पण जमवानी इच्छा थाय छे परंतु ते इच्छा मंदबुद्धिवाळाने अन्न खवरावीने झेरनी पेठे मारी नाखे छे.

२४० अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि गुणानां कर्मविस्तरम् ।
कर्मभिस्त्वनुमीयन्ते नानाद्रव्याश्रया गुणाः ॥
ह्लादनः स्तम्भनः शीतो मूर्छातृट्स्वेददाहजित् ।
उष्णस्तद्विपरीतः स्यात्पाचनश्च विशेषतः ॥
स्नेहमार्दवकृत्स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा ।
रूक्षस्तद्विपरीतः स्याद्विशेषात्स्तम्भनः खरः ॥
पिच्छिलो जीवनो बल्यः संधानः श्लेष्मलो गुरुः ।
विशदो विपरीतोऽस्मात्क्लेदाचूषणरोपणः ॥
दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्रावणो मृदुरन्यथा ।
सादोपलेपबलकृद्गुरुस्तर्पणबृंहणः ॥
लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनो रोपणस्तथा ।
दशाद्याः कर्मतः प्रोक्तास्तेषां कर्मविशेषणैः ॥
दशैवान्यान्प्रवक्ष्यामि द्रवादींस्तान्निबोध मे ।
द्रवः प्रक्लेदनः सान्द्रः स्थूलः स्याद्बंधकारकः ।
श्लक्ष्णः पिच्छिलवज्ज्ञेयः कर्कशो विशदो यथा ॥
सुखानुबंधी सूक्ष्मश्च सुगन्धो रोचनो मृदुः ।
दुर्गन्धो विपरीतोऽस्माद्हृल्लासारुचिकारकः ॥
सरोऽनुलोमनः प्रोक्तो मदो यात्राकरः स्मृतः ।
व्यवायी चाखिलं देहं व्याप्य पाकाय कल्पते ॥
विकासी विकसन्नेवं धातुबंधान्विमोक्षयेत् ।
आशुकारी तथाशुत्वाद्धावत्यम्भसि तैलवत् ॥
सूक्ष्मस्तु सौक्ष्म्यात्सूक्ष्मेषु स्रोतस्स्वनुसरः स्मृतः ।
गुणा विंशतिरित्येवं यथावत्परिकीर्तिताः ।

शीत आदि गुणो तथा तेओनां कामो.

२४० हवे गुणोनां कामोनो विस्तार कहुं छुं. गुणो के जेओ अनेक द्रव्योमां रहेला छे तेओनुं अनुमान तेओनां कामो उपरथी थाय छे.

१ अर्वाचीन ग्रंथोमां स्वीकारेला शीत तथा उष्ण आदि वीश गुणो के जेओ आ स्थानना ४० मा अध्यायना बीजा विषयनी नोटमां आपेला छे तेज गुणो जूज फेरफारथी ग्रंथकारे अहीं आपेला छे अने बे गुणो अधिक दाखल कर्या छे. आ फेरफारनुं कारण सूक्ष्मबुद्धिथी विचारवा जेवुं छे.

जे गुण सुखने उत्पन्न करे छे, लोही वगेरेनुं स्तंभन करे छे अने मूर्छाने, तृषाने, स्वेदने तथा दाहने मटाडे छे ते गुण **शीत** केहेवाय छे अर्थात् एवा गुणोवाळुं जे द्रव्य होय ते शीतगुणवाळुं द्रव्य केहेवाय छे.

जे गुण सुख आपतो नथी, लोही वगेरेनी प्रवृत्ति करे छे, मूर्छाने तृषाने स्वेदने तथा दाहने उत्पन्न करे छे अने विशेषेकरी व्रणादिकने पकावनार छे ते गुण **उष्ण** केहेवाय छे.

जे गुण स्निग्धपणुं करे छे, कोमळपणुं करे छे, बळ आपे छे अने वर्णने सारो करे छे ते गुण **स्निग्ध** केहेवाय छे.

जे गुण रूक्षपणुं करे छे, कठणपणुं करे छे, बळने ओछुं करे छे, वर्णने खराब करे छे विशेषेकरी अतीसार वगेरेने अटकावे छे अने कर्कश छे ते गुण **रूक्ष** केहेवाय छे.

जे गुण (तांतडावाळो छे,) जीवन आपे छे, बळ आपे छे, भांगेलांने सांधे छे, कफ करनार छे अने गुरुत्ववाळो छे ते गुण **पिच्छिल** केहेवाय छे.

जे गुण जीवन आपनार नथी, बळने ओछुं करनार छे, भांगेलांने सांधतो नथी पण जूदुंने जूदुं राखे छे, आर्द्रपणाने चूसनार छे, हलकाईवाळो छे अने व्रणने रुझावनारो छे ते गुण **विशद** केहेवाय छे.

जे गुण दाह करनार छे, व्रणादिकने पकावनार छे अने स्राव करनार छे ते गुण **तीक्ष्ण** केहेवाय छे.

जे गुण दाह करतो नथी, व्रणादिकने पाकवा देतो नथी अने परू वगेरेनो स्राव थवा देतो नथी (तथा कोमळ छे) ते गुण **मृदु** वाय छे.

जे गुण अंगने ग्लानि आपे छे, मळोनी वृद्धि करे छे, कफ करे छे, तृप्ति आपे छे अने पुष्टि आपे छे ते गुण **गुरु** केहेवाय छे.

जे गुण अंगोने उत्साह आपे छे, मळोनी वृद्धि करतो नथी, कफने हरे छे, चोखाई आपे छे विशेष तृप्ति के पुष्टि करतो नथी अने व्रणने रुझावे छे ते गुण **लघु** केहेवाय छे.

आ प्रमाणे पेहेला शीत आदि दश गुणो तेओनां कर्मोरूप विशेषो उपरथी कर्मोसहित केहेवामां आव्या. हवे बीजा द्रव आदि दश गुणो कहुं छुं ते सांभळो.

जे गुण आर्द्रपणुं करनार छे ते गुण **द्रव** केहेवाय छे.

जे गुण मांसादिकनो उपचय (वधारो) करनार छे अने घाटापणुं करनार छे ते गुण **सांद्र** केहेवाय छे.

जे गुण (स्नेहवगरना पदार्थोमां पण होय छे, कठण छतां पण चीकणो छे) अने ते उपरांत कफ करनार छे, जीवन आपे छे, बळ आपे छे, गुरुत्ववाळो छे अने भांगेलाने सांधनार छे ते गुण **श्लक्ष्ण** केहेवाय छे.

जे गुण जीवन आपनार नथी, बल आपनार नथी, भांगेलाने सांधनार नथी, कृशता करनार छे, हलकाईवाळो छे अने खरसटपणावाळो छे ते गुण **कर्कश** केहेवाय छे.

जे गुण द्रव्यने शरीरमां झीणां छिद्रोमां प्रवेश करावे छे, सुखने उत्पन्न करनार छे, रुचिकारक छे अने कोमळ छे ते गुण **सुगंध** केहेवाय छे.

जे गुण सुगंधथी उलटो छे, आहारने स्वाद वगरनो करनार छे अने मोळने तथा उलटीने करनार छे ते गुण **दुर्गंध** केहेवाय छे.

जे गुण वायुने तथा मलने अनुलोम गति आपीने प्रवर्त्तावनार छे ते गुण **सर** केहेवाय छे.

जे गुण शरीरमां रहीने शरीरनी वृत्ति चलावे छे ते गुण **मद** केहेवाय छे.

जे गुण अपक्व छतांज सघळा शरीरमां व्यापीने पाछळथी पाके छे ते गुण **व्यवायी** केहेवाय छे.

जे गुण अपक्व छतांज सघळा शरीरमां फेलाय छे अने फेलातांज धातुओने तथा सांधाओने शिथिल करी नाखे छे ते गुण **विकासी** केहेवाय छे.

जे गुण जेम तैल जळमां झडपथी दोडे छे तेम शरीरमां झडपथी दोडनार छे ते गुण **आशुकारी** केहेवाय छे.

जे गुण पोते सूक्ष्म होवाने लीधे शरीरनां सूक्ष्म स्रोतोमां गति करनार छे ते गुण **सूक्ष्म** केहेवाय छे.

आ प्रमाणे वीश गुणोनुं संपूर्ण रीते व्याख्यान आप्युं. (प्रतिज्ञा प्रमाणे वीशज गुणो थवा जोइए तेने बदले बावीश गुणो थाय छे अने स्थूलनो पाठ उमेरीये तो त्रेवीश थाय छे. आ विरोधने टाळवा माटे केटलाएक केहे छे के व्यवायी, विकासी अने आशुकारी ए त्रणनो पाठ क्षेपकज छे. केटलाएक केहे छे के वीश केहेवा जोइए तेने बदले त्रेवीश केहेवाथी एम जणाव्युं छे के गुणोनी संख्यानो नियमज नथी. केटलाएक केहे छे के **दशचान्यान्प्रवक्ष्यामि** एवो मूलमां पाठ छे तेमां **च**कारना बळथी वधाराना त्रण गुणोनो संग्रह पण करी शकाय छे. व्यवायी, विकासी अने आशुकारी ए त्रण गुणोनो निर्देश आ ग्रंथमां घणीवार आवे छे तेथी ए त्रण गुणोना पाठने क्षेपक केहेवो ए तो देखीतुंज अयोग्य छे.)

२४१ संप्रवक्ष्याम्यतश्चोर्ध्वमाहारगतिनिश्चयम् ॥
पंचभूतात्मके देह आहारः पांचभौतिकः ।
विपक्वः पंचधा सम्यग्गुणान्स्वानभिवर्द्धयेत् ॥
अविदग्धः कफं पित्तं विदग्धः पवनं पुनः ।
सम्यग्विपक्वो निःसार आहारः परिबृंहयेत् ॥
विण्मूत्रमाहारमलः सारः प्रागीरितो रसः ।
स तु व्यानेन विक्षिप्तः सर्वान्धातून्प्रतर्पयेत् ॥
कफः पित्तं मलः खेषु स्वेदः स्यान्नखरोम च ।
नेत्रविट् त्वक्षु च स्नेहो धातूनां क्रमशो मलाः ॥

आहारथी शरीरमां कया कया पदार्थो पोषण पामे छे तथा निष्पन्न थाय छे.

२४१ हवे आहारनी गतिनो निश्चय कहुं छुं. आ पंचभूतात्मक देहमां पंचभूतात्मक आहार पंचभूतोना अग्निओथी सारी रीते पाकीने पोतपोताने लगतां पंचभूतोने तथा ते पृथ्वी आदि भूतोना गंध आदि पांच गुणोने वधारे छे. काचो रहीने मधुर थतो आहार कफने अत्यंत वधारे छे. कांईक काचो तथा कांईक पाको रहीने खाटो थतो आहार पित्तने अत्यंत वधारे छे (के जे विदाही केहेवाय छे) अने सारी पेठे पक्व थएलो निस्सार आहार पोताना रूक्षपणाने लीधे वायुने अत्यंत वधारे छे. आहारनो जे मळ बाकी रहे छे ते विष्टारूप अने मूत्ररूप थाय छे छे. रस के जे आहारना साररूप छे ते विषे तो आ सूत्रस्थानना शोणितवर्णनीय नामना १४ मा अध्यायमां व्याख्यान अपाई गयुं छे. व्यान नामनो वायु के जे सघळा देहमां व्याप्त रहे छे तेणे प्रेरेलो ए रस सघळा धातुओने पोषण रूप तृप्ति आपे छे. शरीरमां जे कफ छे ते रसनो मळ छे, जे पित्त छे ते रुधिरनो मळ छे, कान तथा मुख वगेरे स्रोतोमां जे मेल थाय छे ते मांसनो मळ छे, जे पसीनो थाय छे ते मेदनो मळ छे, जे नखो तथा रूवाणां छे ते अस्थिओनो मळ छे अने नेत्रोना चीपडाओ तथा त्वचामां जे स्नेह रहे छे ते मज्जानो मळ छे. (वीर्यतो हजार वार गाळेला सुवर्ण जेवुं निर्मलज छे तेथी तेनो कोई पण मळ नथी. केटलाएक केहे छे के 'जे पुरुषना वृषण खेंची काहाडवामां आवे तेना मूछ वगेरेना वाळ पडी जाय छे माटे मूछ वगेरेना वाळोने वीर्यना मळरूप गणवा' पण ए वातनुं टीकाकारोए खंडन करेलुं छे.)

२४२ दिवा विबुद्धे हृदये जाग्रतः पुण्डरीकवत् ।
अन्नमक्लिन्नधातुत्वादजीर्णेऽपि हितं निशि ॥

हृदि संमीलिते रात्रौ प्रसुप्तस्य विशेषतः ।
क्लिन्नविस्रस्तधातुत्वादजीर्णे न हितं दिवा ॥

दिवसे करेलो आहार अजीर्ण होय तो राते आहार करवानी हरकत नथी पण राते करेलो आहार अजीर्ण होय तो दिवसे आहार करवामां हरकत छे.

२४२ माणस दिवसे जागतो होय के सूतो होय तो पण तेनुं हृदय, स्वभावथीज कमळनी पेठे प्रफुल्लित रेहेवाथी धातुओमां क्लेद थतो नथी तेथी दिवसे करेलो आहार अजीर्ण होय तो पण राते आहार करवो ए अहितरूप थतो नथी परंतु राते हृदय, कमळनी पेठे संकोचाई जाय छे अने सूतेला माणसनुं तो विशेषे करी संकोचाई जाय छे तेथी धातुओ आर्द्र तथा शिथिल थई जाय छे माटे राते करेलो आहार अजीर्ण होय तो दिवसे आहार करवो ए हितकारी नथी.

२४३ इमं विधिं योऽनुमतं महामुने-
र्नृपर्षिमुख्यस्य पठेद्धि यत्नतः ।
स भूमिपालाय विधातुमौषधं
महात्मनां चार्हति सूरिसत्तमः ॥

आ अध्यायना अथवा सूत्रस्थानना अभ्यासनी प्रशंसा.

२४३ राजर्षिओमां मुख्य महामुनि धन्वंतरिना मत प्रमाणे कहेला आ अन्नपानविधि नामना अध्यायनो अथवा आखा सूत्रस्थाननो जे वैद्य यत्नपूर्वक अभ्यास करे ते वैद्य विद्वानोमां श्रेष्ठ थवाने लीधे राजाओनी अने राजा जेवाओनी चिकित्सा करवाने योग्य थाय छे.

इति श्रीसौश्रुत आयुर्वेदे सूत्रस्थानं समाप्तम् ॥

सुश्रुत-आयुर्वेद.

निदानस्थान.

मूळ तथा गुजराती भाषांतर.

अध्याय १ लो.

१ अथातो वातव्याधिनिदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी "वातव्याधिनिदान[१]" ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ धन्वन्तरिं धर्मभृतां वरिष्ठममृतोद्भवम् ।
चरणावुपसंगृह्य सुश्रुतः परिपृच्छति ॥
वायोः प्रकृतिभूतस्य व्यापन्नस्य च कोपनैः ।
स्थानं कर्म च रोगांश्च वद मे वदतां वर ॥

सुश्रुतनो प्रश्न.

२ धर्मात्माओमां उत्तम अने क्षीरसमुद्रमांथी अमृतनी साथे पूर्वजन्ममां उत्पन्न थएला भगवान् धन्वंतरिने, सुश्रुते तेमनां चरणोमां प्रणाम करीने पूछ्युं के "हे वक्ताओमां उत्तम! प्रकृतिस्थ एटले पोताना स्वभाव प्रमाणे रहेला अर्थात् नहीं बगडेला वायुनां स्थानो तथा कामो अने कुपित करनारां द्रव्यो वगेरेथी बगडेला वायुनां स्थानो कामो तथा रोगो पण मारी पासे कहो." (मने कही समजावो.)

३ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्राब्रवीद्भिषजां वरः ।
स्वयम्भूरेष भगवान्वायुरित्यभिशब्दितः ॥
स्वातन्त्र्यान्नित्यभावाच्च सर्वगत्वात्तथैव च ।
सर्वेषामेव सर्वात्मा सर्वलोकनमस्कृतः ॥
स्थित्युत्पत्तिविनाशेषु भूतानामेष कारणम् ।
अव्यक्तो व्यक्तकर्मा च रूक्षः शीतो लघुः खरः ॥
तिर्यग्गो द्विगुणश्चैव रजोबहुल एव च ।
अचिन्त्यवीर्यो दोषाणां नेता रोगसमूहराट् ॥
आशुकारी मुहुश्चारी पक्वाधानगुदालयः ।
देहे विचरतस्तस्य लक्षणानि निबोध मे ॥
दोषधात्वग्निसमतां संप्राप्तिं विषयेषु च ।
क्रियाणामानुलोम्यं च करोत्यकुपितोऽनिलः ॥

प्रकृतिस्थ वायुनां माहात्म्य, स्थानो अने कामो.

३ एप्रमाणे सुश्रुतनुं वचन सांभळीने वैद्योमां उत्पन्न धन्वंतरि भगवान् नीचे प्रमाणे बोल्या. आ सघळां ऐश्वर्योथी संपन्न वायुदेव सघळां कामोमां स्वतंत्र छे, अविनाशी छे अने सर्व जगतमां व्यापी रहेल छे तेथी स्वयंभू केहेवाय छे. ए वायु सर्व जगतनां सघळां प्रयोजनोमां कारणरूप छे तेथी सर्व लोको तेने प्रणाम करे छे. ए वायुदेव सर्व प्राणिओनी उत्पत्तिनुं, जीवननुं अने मरणनुं कारण छे, अदृश्य मूर्तिवाळो छतां पण प्रकट क्रियाओवाळो छे, रूक्ष छे, स्वाभाविक रीते शीत छे, बीजा पदार्थोना योगथी उष्ण पण थाय छे, हलको छे, खरसट स्पर्शवाळो छे, आडी गतिवाळो छे, शब्द तथा स्पर्श ए बे गुणोवाळो छे, सत्व आदि त्रणे गुणोवाळो छे, ए त्रण गुणोमां पण प्रवृत्तिस्वभाववाळो होवाने लीधे

---

१ वायुसंबंधी रोगोनां जे कारणो, नामो अने लक्षणो छे तेओना कथनविषेनो.

रजोगुणना आधिक्यवाळो गणवामां आवे छे, अचिंत्य शक्तिवाळो छे, दोषोनो धातुओनो तथा मळोनो प्रेरक छे, जो वगडे तो रोगोनां पित्त कफ तथा रुधिर आदि जे जे कारणो छे ते सघळां कारणोमां मुख्य छे, झडपथी क्रिया करनारो छे, प्रकृतिस्थ दशामां पण वारंवार गति करनारो छे अने मुख्यत्वे करी पक्वाशयमां तथा गुदमां रेहे छे. हवे हुं देहमां गति कर्‍या करता ए वायुदेवनां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो. देहमां रेहेनारो वायु अकुपित होय तो दोषोनी, धातुओनी, मळोनी, उपधातुओनी तथा अग्निनी समता करे छे, सघळी इंद्रियोने विषयोनी प्राप्ति आपे छे अने शरीर वाणी तथा मन एओनी क्रियाओने अनुकूल रीते प्रवर्त्तावे छे.

४ यथाग्निः पंचधा भिन्नो नामस्थानात्मकर्मभिः
भिन्नोऽनिलस्तथा ह्येको नामस्थानक्रियामयैः ॥
प्राणोदानौ समानश्च व्यानश्चापान एव च ।
स्थानस्था मारुताः पञ्च यापयन्ति शरीरिणम् ॥
वायुर्यो वक्त्रसंचारी स प्राणो नाम देहधृक् ।
सोऽन्नं प्रवेशयत्यन्तः प्राणांश्चाप्यवलम्बते ॥
प्रायशः कुरुते दुष्टो हिक्काश्वासादिकान्गदान् ।
उदानो नाम यस्तूर्ध्वमुपैति पवनोत्तमः ॥
तेनभाषितगीतादिविशेषोऽभिप्रवर्तते ।
ऊर्ध्वजत्रुगतान्रोगान्करोति च विशेषतः ॥
आमपक्वाशयचरः समानो वह्निसङ्गतः ।
सोऽन्नं पचति तज्जांश्च विशेषान्विविनक्ति हि॥
गुल्माग्निसंगातीसारप्रभृतीन्कुरुते गदान् ।
कृत्स्नदेहचरो व्यानो रससंवहनोद्यतः ॥
स्वेदासृक्स्रावणो वापि पञ्चधा चेष्टयत्यपि ।
क्रुद्धश्च कुरुते रोगान्प्रायशः सर्वदेहगान् ॥
पक्वाधानालयोऽपानः काले कर्षति चाप्ययम् ।
समीरणः शकृन्मूत्रशुक्रगर्भार्तवान्यधः ॥
क्रुद्धश्च कुरुते रोगान्घोरान्बस्तिगुदाश्रयान् ।
शुक्रदोषप्रमेहास्तु व्यानापानप्रकोपजाः ॥

युगपत्कुपिताश्चापि देहं भिन्द्युरसंशयम् ।

जूदां जूदां स्थानोरूप उपाधिओने लीधे भिन्न भिन्न गणाता ए वायुनां भिन्न भिन्न नामो, कामो अने कुपित थाय त्यारे तेथी थता रोगो.

४ जेम पित्त पोतानां नामोथी, स्थानोथी तथा कामोथी पांच प्रकारनुं गणवामां आवे छे तेम वायु पण पोतानां नामोथी, स्थानोथी, कामोथी तथा रोगोथी पांच प्रकारनो गणवामां आवे छे. स्थानोना भेदने लीधे प्राण, उदान, समान, व्यान तथा अपान ए पांच नामो पामेलो वायु एटले एवां नामोथी गणाता पांच वायुओ पोतपोतानां स्थानकोमां रहीने सर्व प्राणिओनो निर्वाह चलाव्या करे छे.

मुखमां, मस्तकमां, छातीमां, कंठमां तथा नासिकामां फरनारो अने शरीरने निभावनारो जे प्राण नामनो वायु छे ते वायु अन्नने अंदर पेसाडे छे अने जीववाना आधारभूत हृदयने धरी राखे छे. (जेम सिंधुदेशनो घोडो खीलो उपाडीने दोडी जाय तेम ए प्राणवायु शरीरना मरण समयमां सघळा वायुओने उपाडीने दोडी जाय छे.) ए प्राणवायु जो प्रकुपित थाय तो घणुं करीने हेडकी, श्वास, खांसी, स्वरभेद तथा प्रतिश्याय आदि रोगोने उत्पन्न करे छे.

उदान नामनो वायु के जे नाभि, छाती तथा कंठरूपी उंचां स्थानकोमां गति कर्‍या करे छे ते वायुथी भाषण, गायन तथा श्वास आदि क्रियाओ चाल्या करे छे. ए उदान वायु जो कुपित थाय तो विशेष करी गळानी हांसडीथी उपरना भागोना रोगोने एटले नेत्र, मुख, नासिका, कान तथा माथुं ए वगेरेना रोगोने उत्पन्न करे छे.

समान नामनो वायु के जे पाकवा लागेला

२ सूत्रस्थानना २१ मा अध्यायनो छठो विषय जुवो.

आहारना आशयमां (स्थानकमां) रेहेनारो छे ते वायु जठराग्निना साहाय्यथी अन्नने पकावे छे अने अन्नना पाकवाथी थता रस, दोषो, मूत्र तथा विष्टा एओने जुदां पाडे छे. ए उदान वायु जो कुपित थाय तो गुल्म, अग्निनी मंदता तथा अतिसार वगेरे रोगोने उत्पन्न करे छे.

व्यान नामनो वायु के जे सघळा शरीरमां फर्या करे छे ते वायु अन्नना सारभूत रसने शरीरना सर्व भागोमां गति आप्या करे छे, पसीनानो तथा रुधिरनो स्राव करे छे अने हाथ पग वगेरे अवयवोने प्रसारण, आकुंचन, नमन, उन्नमन तथा तिर्यग्गमन (आडीगति) ए पांच प्रकारनी चेष्टाओ आपे छे. ए व्यानवायु जो कुपित थाय तो घणुं करीने सघळा देहमां व्याप्त थनारा ज्वर, अतिसार तथा रक्तपित्त वगेरे रोगोने उत्पन्न करे छे.

अपान नामनो वायु के जे पक्वाशयमां रेहे छे ते वायु समय प्राप्त थाय त्यारे विष्टाने, मूत्रने वीर्यने, गर्भने तथा रजने नीचे खेंची जाय छे. ए अपानवायु जो कुपित थाय तो मूत्राशयमां रेहेनारा पथरी वगेरे रोगोने अने गुदमां रेहेनारा भगंदर वगेरे रोगोने उत्पन्न करे छे.

वीर्य सघळां अंगोमां रहेलुं छे तथा उपस्थद्वाररूपी आश्रयवाळुं छे तेथी वीर्यसंबंधी रोगोने व्यान तथा अपान ए बन्ने वायुओना प्रकोपथी थता गणवामां आवे छे. एवी रीते प्रमेहो पण सघळा देहमां रेहेनारा मेद आदि दूष्यो(वायु आदि दोषोथी जे पदार्थो दूषित थाय छे तेओ दूष्य केहेवाय छे.)थी थाय छे तथा उपस्थद्वाररूपी आश्रयवाळा छे तेथी तेओने पण व्यान तथा अपान ए बन्ने वायुओना प्रकोपथी थता गणवामां आवे छे.

ए पांचे वायुओ एकी वखते प्रकुपित थाय तो देहने नष्ट करी नाखे छे ए वात निस्संशय छे.

९ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि नानास्थानान्तराश्रितः।
बहुशः कुपितो वायुर्विकारान्कुरुते हि यान् ।
वायुरामाशये क्रुद्धश्छर्द्यादीन्कुरुते गदान् ॥
मोहं मूर्छां पिपासां च हृद्ग्रहं पार्श्ववेदनाम् ।
पक्वाशयस्थोऽन्त्रकूजं शूलं नाभौ करोति च ॥
कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमानाहं त्रिकवेदनाम् ।
श्रोत्रादिष्विन्द्रियवधं कुर्यात्क्रुद्धः समीरणः ॥
वैवर्ण्यं स्फुरणं रौक्ष्यं सुप्तिं चुमुचुमायनम् ।
त्वक्स्थो निस्तोदनं कुर्यात्त्वग्भेदं परिपोटनम् ॥
व्रणांश्च रक्तगो ग्रंथीन्सशूलान्मांससंश्रितः ।
तथा मेदःश्रितः कुर्याद्ग्रन्थीन्मन्दरुजोऽव्रणान् ।
कुर्याच्छिरागतः शूलं शिराकुंचनपूरणम् ।
स्नायुप्राप्तः स्तम्भकम्पौ शूलमाक्षेपणं तथा ॥
हंति संधिगतः संधीञ्छूलशोफौ करोति च ।
अस्थिशोषं च भेदं च कुर्याच्छूलं च तत्स्थितः ॥
तथा मज्जगते रुक्च न कदाचित्प्रशाम्यति ।
अप्रवृत्तिः प्रवृत्तिर्वा विकृताः शुक्रगेऽनिले ॥

बीजां अनेक स्थानकोमां रहेलो वायु प्रकुपित थईने कया कया रोगोने उत्पन्न करे छे ?

९ हवे बीजां पण अनेक स्थानकोमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे जे जे घणा घणा रोगोने उत्पन्न करे छे ते रोगो कहुं छुं.

आमाशयमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे उलटी, उदरस्तंभ तथा उंची गति करनारूं रक्तपित्त इत्यादि रोगोने अने मोह, मूर्छा, तरश, हृदयग्रह तथा पडखांनी वेदना ए रोगोने उत्पन्न करे छे.

पक्वाशयमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे आंतरडांओमां अवाज, नाभिमां शूळ, दस्तनुं मांड मांड उतरवुं, मूत्रनुं मांड मांड उतरवुं, पेडुनुं चडी आववुं अने कूलानां तथा वरडानां अस्थिओनी संधिमां (ढांढांमां) वेदना इत्यादि रोगोने उत्पन्न करे छे.

कान वगेरे इंद्रियोमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे

ते ते इंद्रियोने नष्ट करी नाखे छे एटले पोतपोताना दर्शन तथा स्पर्शन आदि विषयोनुं ग्रहण करवामां तमाम अशक्त करी नाखे छे.

त्वचामां अर्थात् रसमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे त्वचाना वर्णने खराब करी नाखे छे, स्फुरण (अंगोनुं फरकवुं) करे छे, रूक्षता करे छे, स्पर्शनी खबर पडवा देतो नथी, राई वगेरेना लेपना जेवो चमचमाट करे छे, त्वचामां भोकाया जेवी व्यथा करे छे, त्वचानुं भेदन थया जेवुं करे छे अने त्वचाने उफसेली तथा फाटेली करे छे.

रुधिरमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे व्रणोने उत्पन्न करे छे. (रुधिरमां रहेला वायुना प्रकोपथी तीव्र पीडाओ थाय छे, संताप थाय छे, विवर्णपणुं थाय छे, कृशता थाय छे, अरुचि थाय छे अने जम्या पछी तृप्तिने लीधे रुधिरनी वृद्धि थवाथी स्तब्धपणुं पण थाय छे.)

मांसमां वायु प्रकुपित थाय तो शूळसहित ग्रंथिओ उत्पन्न थाय छे. (अंग भारे थई जाय छे, लाकडीनो के मूठीनो प्रहार वाग्या जेवी पीडा थाय छे, स्तब्धता थाय छे अने व्यथा पण थाय छे.)

मेदमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे मंद पीडावाळा तथा व्रण वगरना ग्रंथिओ थाय छे.

शिराओमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे शूळ थाय छे, शिराओनो संकोच थाय छे अने शिराओ भारे थई जाय छे. (बाह्यायाम तथा अंतरायाम थाय छे.)

स्नायुओमां वायु प्रकुपित थाय तो स्तंभ, कंप, शूळ तथा चालन थाय छे.

संधिओमां वायु प्रकुपित थाय तो संधिओनां आकुंचन तथा प्रसारण बंध पडी जाय छे, शूळ नीकळे छे अने सोजो पण थाय छे.

अस्थिओमां वायु प्रकुपित थाय तो अस्थिओ सूकाई जाय छे, अस्थिओमां भेदन थया जेवी पीडा थाय छे, शूळ नीकळे छे, (मांसनो तथा बळनो क्षय थाय छे अने निद्रा आवती नथी.)

मज्जामां वायु प्रकुपित थाय तो पीडा एवी थाय छे के जे कदी पण शांत थती नथी. (जेम अस्थिओमां वायु प्रकुपित थईने अस्थिओनुं शोषण करे छे तेम मज्जामां वायु प्रकुपित थईने मज्जानुं शोषण करे छे.)

वीर्यमां वायु प्रकुपित थाय त्यारे वीर्यनुं स्खलन बंध पडी जाय छे अने जो स्खलन थाय तो वीर्य मंद, गांठाओवाळुं तथा विवर्ण स्खलित थाय छे. (ए वायु काचा गर्भने पाडी नाखे छे, गर्भने मूढ करी नाखे छे तथा गर्भनां अंगोने बगाडवा वगेरे विकृति करे छे. वायुथी दुष्ट थएला वीर्यथी उत्पन्न थएलो गर्भ काचोज पडी जाय अथवा मूढ के विकृत थई जाय ए संभवित छे.)

६ हस्तपादशिरोधातूंस्तथा संचरति क्रमात् ।
व्याप्नुयाद्वाखिलं देहं वायुः सर्वगतो नृणाम् ॥
स्तम्भनाक्षेपणस्वापशोफशूलानि सर्वगः ।
स्थानेषूक्तेषु मिश्रश्च संमिश्राः कुरुते रुजः ॥
कुर्यादवयवप्राप्तो मारुतस्त्वमितान्गदान् ।

सर्व अंगोमां अथवा सर्व धातुओमां वायु प्रकुपित थईने कया रोगोने उत्पन्न करे छे.

६ एक अंगमां अथवा एक धातुमां प्रकुपित थएला वायुनी जो चिकित्सा नहीं करवाथी उपेक्षा करवामां आवे तो ते वायु सर्व अंगोमां तथा सर्व धातुओमां प्राप्त थाय छे. ए वायु क्रमथी माणसोना हस्तोमां, पगोमां, मस्तकोमां तथा धातुओमां गति करवा लागे छे अथवा एकी वखते सघळा देहमां व्याप्त थई जाय छे. सघळा शरीरमां व्यापेलो प्रकुपित वायु शरीरमां स्तंभन, चालन, जडता, सोजा तथा शूळ एओने उत्पन्न करे छे. जो उपर कहेलां आमाशय वगेरे स्थानोमां प्राप्त थएलो प्रकुपित वायु पित्तथी, क-

फथी के रुधिरथी मिश्रित थयो होय तो 'पित्तनां कफनां के रुधिरनां चिह्नोसहित पीडाओने उत्पन्न करे छे. (केवळ वायु शीत स्वभाववाळो होवाथी दाहने उत्पन्न करे नहीं पण पित्तथी संयुक्त थयो होय तो दाहने पण उत्पन्न करे छे इत्यादि समजी लेवुं.) अवयवोमां प्राप्त थएलो प्रकुपित वायु अनेक रोगोने उत्पन्न करे छे.

७ दाहसन्तापमूर्छाः स्युर्वायौ पित्तसमन्विते ॥
शैत्यशोफगुरुत्वानि तस्मिन्नेव कफान्विते ।
सूचीभिरिव निस्तोदः स्पर्शद्वेषः प्रसुप्तता ॥
शेषाः पित्तविकाराः स्युर्मारुते शोणितान्विते ।

पित्त वगेरेथी मिश्रित थएला वायुनां सामान्य लक्षणो.

७ वायु पित्तथी संयुक्त थयो होय तो दाह थाय छे, संताप थाय छे तथा मूर्छा थाय छे. वायु कफथी संयुक्त थयो होय तो अतिशीतपणुं, सोजा तथा भारेपणुं थाय छे. वायु रुधिरथी संयुक्त थयो होय तो सोईओथी भोंकाया जेवी पीडा थाय छे, स्पर्श उपर द्वेष थाय छे, जडपणुं थाय छे अने बाकी सघळां पित्तसंबंधी चिह्नो थाय छे.

८ प्राणे पित्तावृते छर्दिर्दाहश्चैवोपजायते ॥
दौर्बल्यं सदनं तन्द्रा वैवर्ण्यं च कफावृते ।
उदाने पित्तसंयुक्ते मूर्छादाहभ्रमक्लमाः ॥
अस्वेदहर्षौ मंदोऽग्निः शीतस्तम्भौ कफावृते ।
समाने पित्तसंयुक्ते स्वेददाहौष्ण्यमूर्छनम् ॥
कफाधिकं च विण्मूत्रं रोमहर्षः कफावृते ।
अपाने पित्तसंयुक्ते दाहौष्ण्ये स्यादसृग्दरम् ॥
अधःकाये गुरुत्वं च तस्मिन्नेव कफावृते ।
व्याने पित्तावृते दाहो गात्रविक्षेपणं क्लमः ॥
गुरूणि सर्वगात्राणि स्तम्भनं चास्थिपर्वणाम् ।
लिङ्गं कफावृते व्याने चेष्टास्तम्भस्तथैव च ॥

वायुने थएलां आवरणो[१]ना भेदोथी वातव्याधिओना भेद.

८ प्राणवायु जो पित्तथी आवरण पाम्यो होय तो उलटी तथा दाह थाय छे अने कफथी आवरण पाम्यो होय तो दुर्बलपणुं, ग्लानि, तंद्रा तथा विवर्णपणुं थाय छे.

उदान वायु पित्तथी आवरण पाम्यो होय तो मूर्छा, दाह, भ्रम तथा ग्लानि थाय छे अने कफथी आवरण पाम्यो होय तो पसीनानो अभाव, रूवाडांओनुं उभुं थवुं, अग्निनुं मंदपणुं अने शरीरनुं शीतपणुं तथा स्तब्धपणुं थाय छे.

समान वायु पित्तथी आवरण पाम्यो होय तो पसीनो, दाह, उष्णता तथा मूर्छा थाय छे अने कफथी आवरण पाम्यो होय तो विष्टा तथा मूत्र कफनी अधिकतावाळां थाय छे अने रुवाडां उभां थाय छे.

अपानवायु पित्तथी आवरण पाम्यो होय तो दाह थाय छे, उष्णता थाय छे तथा स्त्रीओने प्रदर पण थाय छे अने कफथी आवरण पाम्यो होय तो कायाना नीचला भागमां भारेपणुं (तथा शीतपणुं) थाय छे.

व्यानवायु पित्तथी आवरण पाम्यो होय तो दाह, गात्रोनुं पछाडवुं तथा ग्लानि थाय छे अने कफथी आवरण पाम्यो होय तो सघळां गात्रो भारे थई जाय छे, अस्थिओनां सांधाओ स्तब्ध थई जाय छे तथा चेष्टा थती अटकी जाय छे. (शूळ तथा सोजा पण थाय छे.)

९ प्रायशः सुकुमाराणां मिथ्याहारविहारिणाम् ।
शोकाच्च प्रमदामद्यव्यायामैश्चातिपीडनात् ॥
ऋतुसात्म्यविपर्यासात्स्नेहादीनां च विभ्रमात् ।
अव्यवाये तथा स्थूले वातरक्तं प्रकुप्यति ॥

---

१ गतिनुं रोकावुं ए आवरण केहेवाय छे. जेम के पित्तथी प्राणवायुनी गति रोकाय अने तेम थवाथी प्राणवायु पाछो फरे ए प्राणवायुने पित्तथी आवरण थयुं गणाय.

हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतोऽन्यैश्च वायुः
कोपं यातः कारणैः सेवितैः स्वैः ।
तीक्ष्णोष्णाम्लक्षारशाकादिभोज्यैः
संतापाद्यैर्भूयसा सेवितैश्च ॥
क्षिप्रं रक्तं दुष्टिमायाति तच्च
वायोर्मार्गं संरुणद्ध्याशु यातः ।
क्रुद्धोऽत्यर्थं मार्गरोधात्स वायु-
रत्युद्रिक्तं दूषयेद्रक्तमाशु ॥
तत्सम्पृक्तं वायुना दूषितेन
तत्प्राबल्यादुच्यते वातरक्तम् ।
तद्वत्पित्तं दूषितेनासृजाक्तं
श्लेष्मा दुष्टो दूषितेनासृजाक्तः ॥
स्पर्शोद्विग्नौ तोदभेदप्रशोष-
स्वापोपेतौ वातरक्तेन पादौ ।
पित्तासृग्भ्यामुग्रदाहौ भवेता-
मत्यर्थोष्णौ रक्तशोफौ मृदू च ॥
कण्डूमन्तौ श्वेतशीतौ सशोफौ
पीनस्तब्धौ श्लेष्मदुष्टे तु रक्ते ।
सर्वैर्दुष्टे शोणिते चापि दोषाः
स्वं स्वं रूपं पादयोर्दर्शयंति ॥

वातरक्तनां दूरनां तथा पासेनां निदानो, संप्राप्ति, भेदो अने लक्षणो.

९ घणुं करीने अनुचित आहार तथा अनुचित विहार करनारा सुकुमार शरीरवाळा लोकोने अने मैथुनथी रहित रेहेनारा स्थूल शरीरवाळा लोकोने वातरक्तनो (वायुनो अने रुधिरनो) प्रकोप थाय छे. शोक करवाथी, अत्यंत स्त्रीसंगथी, मद्यपानथी के कसरतथी अत्यंत पीडावाथी, ऋतुओमां पाळवाना विधिओनुं विपरीतपणुं करवाथी, असात्म्य पदार्थोना भक्षणादिकथी अने स्नेहन विरेचन तथा वमन वगेरे क्रियाओमां बगाड थवाथी वातरक्तनो प्रकोप थाय छे.

हाथी, घोडा के उंट वगेरेनी उपर चडीने पंथ करवाथी अने एवीज रीतनां बीजां पण भार उपाडवा वगेरे तथा विदाही पदार्थोनां भक्षण वगेरे कारणोनुं सेवन थवाथी वायु प्रकोप पामे छे. तीक्ष्ण, उष्ण, खाटा तथा खारा शाक वगेरे पदार्थोना अतिभक्षणथी अने अग्निना तथा सूर्यना ताप वगेरेनुं अतिसेवन करवाथी रुधिर तुरतज दुष्ट थई जाय छे. दुष्ट थएलुं ए रुधिर झडपथी गति करवाना स्वभाववाळा वायुना मार्गने रोकी देछे. मार्ग रोकावाथी अत्यंत प्रकुपित थएलो वायु अत्यंत वृद्धि पामेला रुधिरने दूषित करी नाखे छे. ए दूषित थएलुं रुधिर कुपित थएला वायुथी संयुक्त थई जाय छे तेथी वातरक्त थाय छे. (लोको हाल आ रोगने रक्तपित्त कहे छे.)

जेम वायुथी दूषित थएलुं रुधिर वायुथी संयुक्त थतां वातरक्त थाय छे तेम वायुथी दूषित थएलुं रुधिर पित्तथी संयुक्त थतां पण वातरक्त थाय छे, वायुथी दूषित थएलुं रुधिर कफथी संयुक्त थतां पण वातरक्त थाय छे अने वायुथी दूषित थएलुं रुधिर त्रणे दोषोथी संयुक्त थतां पण वातरक्त थाय छे. आमां वायुनो अने रुधिरनो प्रथम संबंध होयज छे तेथी आ रोग वातरक्त केहेवाय छे.

जो वातरक्त वायुना प्राबल्यवाळुं होय तो पग स्पर्शथी उद्वेग पामे छे अने भोंकाया जेवी व्यथाथी, भेदाया जेवी व्यथाथी, शुष्कपणाथी तथा जडताथी युक्त थई जाय छे.

जो वातरक्त पित्तना के रुधिरना प्राबल्यवाळुं होय तो पग उग्र बळतरावाळा, अत्यंत उष्ण, राता सोजावाळा अने कोमळ थई जाय छे.

जो वातरक्त कफना प्राबल्यवाळुं होय तो पग खरजवाळा, सफेद, शीतल, सोजावाळा, पुष्ट अने स्तब्ध थई जाय छे.

१ जे पदार्थो खाधार्थी खाटा ओडकार आवे, तरश लागे अने हृदयनी अंदर दाह थाय ते पदार्थ विदाही केहेवाय छे.

जो वातरक्त त्रणे दोषोना प्राबल्यवाळुं होय तो पगमां उपर कहेलां त्रणे दोषोनां लक्षणो जोवामां आवे छे[1].

१० प्राग्रूपे शिथिलौ स्विन्नौ शीतलौ सविपर्ययौ ।
वैवर्ण्यतोदसुप्तत्वगुरुत्वौषसमन्वितौ ॥

वातरक्तनुं पूर्वरूप.

१० वातरक्त थवानुं होय त्यारे पग शिथिल थई जाय छे, पसीनावाळा थई जाय छे, शीतल थाय छे अथवा कठण, पसीना वगरना तथा उष्ण थई जाय छे. पगमां विवर्णपणुं, व्यथा, स्पर्शनुं अज्ञान, भारेपणुं तथा दाह थाय छे.

११ पादयोर्मूलमास्थाय कदाचिद्धस्तयोरपि ।
आखोर्विषमिव क्रुद्धं तद्देहमनुसर्पति

पगशिवाय बीजुं पण वातरक्तना आरंभनुं स्थान.

११ पगना मूळथी मांडीने अने कोई समये हाथना मूळथी मांडीने पण, जेम उंदरनुं कुपित थएलुं झेर धीरे धीरे देहमां फेलाय छे तेम कुपित थएलुं ते वातरक्त चिकित्साथी रहित रेहेनाराओना शरीरमां धीरे धीरे फेलाय छे.

१२ आजानु स्फुटितं यच्च प्रभिन्नं प्रस्रुतं च यत् ।
उपद्रवैश्च यज्जुष्टं प्राणमांसक्षयादिभिः ॥
शोणितं तदसाध्यं स्याद्याप्यं संवत्सरोत्थितम् ।

वातरक्तनुं असाध्यपणुं तथा याप्यपणुं.

१२ जे वातरक्त पगथी ते गोठण पर्यंत फेलायुं होय तेने असाध्य समजवुं. जे वातरक्तथी त्वचा जेम टाढथी फाटी जाय छे तेम फाटी गई होय ते वातरक्तने असाध्य समजवुं. जे वातरक्त अत्यंत भेदाई गयुं होय अथवा अत्यंत स्राववाळुं होय अथवा बळक्षय, मांसक्षय अने आंगळीओनी वक्रता वगेरे उपद्रवोथी संयुक्त होय तेने पण असाध्य समजवुं. (वातरक्तमां त्वचानुं फाटवुं वायुना प्राबल्यथी अने भेदावुं तथा स्राव पित्तना अने रुधिरना प्राबल्यथी थाय छे.) जे वातरक्तनी उत्पत्ति थयाने एक वर्ष वीती गयुं होय ते वातरक्तने याप्य समजवुं.

१३ यदा तु धमनीः सर्वाः कुपितोऽभ्येति मारुतः ॥
तदाक्षिपत्याशु मुहुर्मुहुर्देहं मुहुश्चरः ।
मुहुर्मुहुस्तदाक्षेपादाक्षेपक इति स्मृतः ॥

आक्षेपकनुं निदान, संप्राप्ति तथा सामान्य लक्षण.

१३ ज्यारे प्रकुपित थएलो वायु सघळी धमनीओमां आवे छे त्यारे वारंवार संचरण करनारा ए वायुथी, जेम हाथी उपर बेठेला माणसनुं शरीर वारंवार हले छे तेम रोगीनुं शरीर वारंवार हले छे. आ प्रमाणे शरीरने वारंवार अने तुरत तुरत हलाववाने लीधे ए रोग आक्षेपक कहेवाय छे.

१४ सोऽपतानकसंज्ञो यः पातयत्यन्तरान्तरा ।

आक्षेपकना विशेषरूप अपतानकनुं सामान्य लक्षण.

१४ जे आक्षेपक वचमां वचमां पाडी नाखे ते अपतानक केहेवाय छे.

१५ कफान्वितो भृशं वायुस्तास्वेव यदि तिष्ठति॥
स दण्डवत्स्तम्भयति कृच्छ्रो दण्डापतानकः ।
हनुग्रहस्तदात्यर्थं सोऽन्नं कृच्छ्रान्निषेवते ॥
धनुस्तुल्यं नमेद्यस्तु स धनुःस्तम्भसंज्ञकः ।
अङ्गुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः ॥
स्नायुप्रतानमनिलो यदा क्षिपति वेगवान् ।
विष्टब्धाक्षः स्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वः कफं वमन् ॥

---

[1] वातरक्त बे बे दोषोनी प्रबलतावाळुं पण थाय छे एम चिकित्सितस्थानना '५ मा अध्यायना १२ मा विषय उपरथी जणाय छे.

अभ्यन्तरं धनुरिव यदा नमति मानवः ।
तदा सोऽभ्यन्तरायामं कुरुते मारुतो बली ॥
बाह्यस्नायुप्रतानस्थो बाह्यायामं करोति च ।
तमसाध्यं बुधाः प्राहुर्वक्षःकट्यूरुभञ्जनम् ॥
कफपित्तान्वितो वायुर्वायुरेव च केवलः ।
कुर्यादाक्षेपकं त्वन्यं चतुर्थमभिघातजम् ॥

अपतानकना दंडापतानक, अंतरायाम धनुःस्तंभ, बहिरायाम धनुःस्तंभ अने अभिघातजाक्षेप ए चार भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

१५ वायु कफथी संयुक्त थई धमनीओमांज रहे अने शरीरने लाकडीनी पेठे स्तब्ध करी नाखे ए **दंडापतानक** केहेवाय छे. आ दंडापतानक कष्टसाध्य छे. दंडापतानकमां दाढी अत्यंत झलाई जाय छे अने तेथी अन्न मांड मांड जमी शकाय छे.

ज्यारे आंगळीओ, घुंटीओ, पेट, हृदय, वक्षःस्थल अने गळुं एओमां रहेलो बळवान् पवन वेगवाळो थईने स्नायुओना समूहने, शिराओने तथा कंठने पण कंपावे छे त्यारे रोगीनी आंखो तथा दाढी स्तब्ध थई जाय छे, पडखां भांगी गएलां जेवां थई जाय छे, कफनुं वमन थाय छे अने रोगी छातीथी कमाननी पेठे नमी जाय छे ए **अंतरायाम धनुःस्तंभ** केहेवाय छे.

निदानोथी प्रबल थएलो वायु पगनां मूळमां, पींडीओमां, कमरमां ओडमां तथा पीठमां रहेली पछवाडानी शिराओने, स्नायुओने तथा कंदराओने कंपावे छे अने तेथी रोगी वांसातरफ कमाननी पेठेनमी जाय छे ए **बहिरायाम धनुःस्तंभ** केहेवाय छे. बहिरायाममां छाती, साथल तथा केड एओनुं संमर्दन थई जतुं होय तो ते बहिरायामने विद्वान् वैद्यो असाध्य केहे छे.

दंडापतानक कफथी संयुक्त थएला वायुथी थाय छे, अंतरायाम पित्तथी संयुक्त थएला वायुथी थाय छे अने बहिरायाम केवळ वायुथी थाय छे.

अपतानकनो **अभिघातजाक्षेप** नामनो चोथो भेद अभिघातथी उत्पन्न थएला वायुथी थाय छे. (अभिघातजाक्षेपनुं लक्षण जुदुं लख्युं नथी माटे आक्षेपकनुं तथा अपतानकनुं जे सामान्य लक्षण कह्युं छे तेज एनुं लक्षण समजवुं एम कल्पी शकाय छे.)

१६ गर्भपातनिमित्तश्च शोणितातिस्रवाच्च यः ।
अभिघातनिमित्तश्च न सिध्यत्यपतानकः ॥

अपतानकना असाध्यपणा विषे.

१६ जो अपतानक गर्भपातथी, रुधिरना अत्यंत स्रावथी के अभिघातथी थएल होय तो तेने असाध्य समजवो.

१७ अधोगमाः सतिर्यग्गा धमनीरूर्ध्वदेहगाः ।
यदा प्रकुपितोऽत्यर्थं मातरिश्वा प्रपद्यते ॥
तदान्यतरपक्षस्य संधिबंधान्विमोक्षयन् ।
हंति पक्षं तमाहुर्हि पक्षाघातं भिषग्वराः ॥
यस्य कृत्स्नं शरीरार्द्धमकर्मण्यमचेतनम् ।
ततः पतत्यसून्वापि जहात्यनिलपीडितः ॥

पक्षाघातनुं निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

१७ अत्यंत कुपित थएलो वायु शरीरना एक अर्द्धने छोडी दई, बीजा अर्द्धमां रहेली नीचेनी, आडी तथा उंचेनी धमनीओमां आवे छे त्यारे ते बीजा अर्द्धना संधिबंधोने छूटा करीने अरधा शरीरने हणे छे (जमणा अथवा डाबा पडखाने ते तरफना हाथ वगेरे अवयवो सहित नकामा करी नाखे छे.) ते रोगने उत्तम वैद्यो **पक्षाघात** केहे छे. आ रोगथी शरीरनो सघळो अर्द्धभाग काम करवामां असमर्थ अने स्पर्श वगेरेना अल्पज्ञानवाळो थई जाय छे. आम थवाथी ए वायुए पीडेलो माणस पडे छे अथवा प्राणने छोडी दे छे.

१८ शुद्धवातहतं पक्षं कृच्छ्रसाध्यतमं विदुः ।
साध्यमन्येन संसृष्टमसाध्यं क्षयहेतुकम्

पक्षाघातनुं कष्टसाध्यपणुं, साध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

१८ केवळ एटले बीजा दोषथी मिश्रित नहीं

थएला वायुए करेलो पक्षाघात अति कष्टसाध्य छे, बीजा दोषथी मिश्रित थएला वायुए करेलो पक्षाघात साध्य छे अने धातुओना क्षयथी कुपित थएला वायुए करेलो पक्षाघात असाध्य छे.

१९ वायुरूर्ध्वं व्रजेत्स्थानात्कुपितो हृदयं शिरः।
शङ्खौ च पीडयत्यङ्गान्याक्षिपेन्नमयेच्च सः ॥
निमीलिताक्षो निश्चेष्टः स्तब्धाक्षो वापि कूजति।
निरुच्छ्वासोऽथ वा कृच्छ्रादुच्छ्वस्यान्नष्टचेतनः॥
स्वस्थः स्याद्धृदये मुक्त आवृते च प्रमुह्यति ।
कफान्वितेन वातेन ज्ञेय एषोऽपतंत्रकः ॥

अपतंत्रकनां निदान, संप्राप्ति अने लक्षण.

१९ पोताने कुपित करनारां निदानोथी प्रकोप पामेलो वायु पक्वाशयमांथी उंचे जई हृदयने माथांने तथा लमणाओने पीडे छे, हाथ पग वगेरे अंगोने प्रचलित करे छे तथा कमाननी पेठे नमावे छे अने चित्तने मोहयुक्त करी दे छे के जेथी माणस वींचाएली आंख्योवाळो अथवा स्तब्ध आंख्योवाळो थई जाय छे, चेष्टाओथी रहित थई जाय छे, होलानी पेठे घुघवे छे, उंचा श्वास लई शकतो नथी अथवा मांड मांड उंचा श्वास लई शके छे अने बेभान थई जाय छे. आ रोग **अपतंत्रक** केहेवाय छे. आ रोगमां कफथी संयुक्त थएलो वायु ज्यारे हृदयने छोडी दे छे त्यारे माणस स्वस्थ थाय छे अने हृदयने घेरी ले छे त्यारे माणस संज्ञावगरनो थई जाय छे.

२० दिवास्वप्नासमस्थानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः।
मन्यास्तम्भं प्रकुरुते स एव श्लेष्मणा वृतः॥

मन्यास्तंभनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२० दिवसे निद्रा करवाथी, विपरीत रीते बेसवाथी, विपरीत रीते उभवाथी अने डोक वगेरे अवयवो आडा अवळा रेहे एवी रीते उंचा भागमां जोवाथी कुपित थएलो तेज वायु कफथी वीटाईने डोकना पाछला भागमां रहेली मन्या नामनी शिराओने स्तब्ध करी दे छे ए रोग **मन्यास्तंभ** केहेवाय छे.

२१ गर्भिणीसूतिकाबालवृद्धक्षीणेष्वसृक्क्षये ।
उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थं खादतः कठिनानि च ॥
हसतो जृम्भतो भाराद्विषमाच्छयनादपि ।
शिरोनासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसंधिगः ॥
अर्दयित्वाऽनिलो वक्त्रमर्दितं जनयत्यतः ।
वक्रीभवति वक्त्रार्द्धं ग्रीवा चाप्यपवर्तते ॥
शिरश्चलति वाक्सङ्गो नेत्रादीनां च वैकृतम् ।
ग्रीवाचिबुकदंतानां तस्मिन्पार्श्वे तु वेदना ॥

अर्दितनां (अरदीयानां) निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२१ (घणुं करीने) गर्भिणी, सूतिका, बालक, वृद्ध अने क्षीण माणस एओने लोहीनो क्षय थवाथी अर्दित थाय छे. उंचे स्वरे बोलवाथी, सोपारी वगेरे अत्यंत कठण पदार्थो खावाथी, अत्यंत हसवाथी, अत्यंत बगासां खावाथी, अत्यंत भार उपाडवाथी, डोकने आडी अवळी करी विषम रीते सुवाथी अने विषम रीते बेसवाथी माथुं नाक, होठ, हडपची, ललाट तथा नेत्रोनी संधि एओमां गएलो वायु मोहोडाने पीडे छे तेथी **अर्दित** रोग थाय छे. आ रोगथी अरधुं मोहोडुं वांकुं थई जाय छे, डोक वांकी थई जाय छे, माथुं चलायमान थाय छे, बोलवामां अटकायत थाय छे, नेत्र भमर गाल तथा नाक एओमां स्फुरण तथा वांकापणुं वगेरे थाय छे अने जे तरफ अर्दित थएल होय ते पडखे डोक, हडपची तथा दांत एओमां वेदना थाय छे.

२२ यस्याग्रजो रोमहर्षो वेपथुर्नेत्रमाविलम् ॥
वायुरूर्ध्वं त्वचि स्वापस्तोदो मन्याहनुग्रहः ।
तमर्दितमिति प्राहुर्व्याधिं व्याधिविशारदाः ॥

१ केटलाएक वैद्यो अपतंत्रकने अने अपतानकने एकज गणीने आ पाठनुं अध्ययन छोडीज दे छे.

२ केटलाएक वैद्यो मन्यास्तंभने अपतानकनुं पूर्वरूपज माने छे.

अर्दितनुं पूर्वरूप.

२२ अर्दित रोग थवानो होय त्यारे प्रथम रुवाणां उभां थई जाय छे, कंप थाय छे, नेत्र चीपडावाळुं थाय छे, वायु उंचे चाले छे, चामडीमां जडता थाय छे, (स्पर्शनी खबर पडती नथी,) व्यथा थाय छे अने डोकना पाछला भागनी शिराओ तथा हडपची झलाई जाय छे एम विद्वान वैद्यो केहे छे.

२३ क्षीणस्यानिमिषाक्षस्य प्रसक्ताव्यक्तभाषिणः। न सिध्यत्यर्दितं गाढं त्रिवर्षं वेपनस्य च ॥

अर्दितनुं असाध्यपणुं

२३ जे माणस क्षीण होय, जेनी आंखो निमेषोथी रहित थई गई होय अने जेनुं भाषण परस्परनी साथे मळेला अक्षरोवाळुं तथा अस्फुट होय ते माणसना अर्दितरोगने असाध्य समजवो. जेना अर्दितरोगने त्रण वर्ष थई गयां होय अथवा जे माणस ध्रुजतो होय, अथवा जेनां नेत्र नाक तथा मोहोडुं स्रवतां होय ते माणसनो अर्दित तो मटतोज नथी.

२४ पार्ष्णिप्रत्यङ्गुलीनां तु कण्डरा याऽनिलार्दिता सक्थ्नोः क्षेपं निगृह्णीयाद्गृध्रसीति हि सा स्मृता॥

गृध्रसीनुं निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२४ पगनी पेनीओनी तथा आंगळीओनी वायुए पीडेली कंडरा (मोटी नस) साथळोना हालवा चालवाने रोकी दे छे ते रोग **गृध्रसी** केहेवाय छे. (वायुए करेली अने वायु तथा कफ ए बन्नेए करेली एम गृध्रसी बे प्रकारनी थाय छे.)

२५ तलप्रत्यङ्गुलीनां तु कण्डरा बाहुपृष्ठतः । बाह्वोः कर्मक्षयकरी विश्वाचीति हि सा स्मृता ॥

विश्वाचीनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२५ बाहुना अथवा बन्ने बाहुओना पृष्ठभागथी मांडीने हाथना तळाने लगती आंगळीओनी जाडी नस वायुथी पीडाई बाहुना अथवा बन्ने बाहुओना कामनो क्षय करी नाखे छे ए रोग **विश्वाची** केहेवाय छे.

२६ वातशोणितजः शोफो जानुमध्ये महारुजः ॥ शिरः क्रोष्टुकपूर्वं तु स्थूलं क्रोष्टुकमूर्द्धवत् ।

क्रोष्टुकशिरनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२६ वायुथी तथा रुधिरथी अथवा वातरक्त नामना रोगथी गोटणना मध्यमां शीयाळीआना माथा जेवो जाडो तथा उंचो अने मोटी पीडावाळो जे सोजो थाय छे ते **क्रोष्टुकशिर** केहेवाय छे.

२७ वायुः कट्यास्थितः सक्थ्नः कण्डरामाक्षिपेद्यदा ॥ खञ्जस्तदा भवेज्जन्तुः पङ्गुः सक्थ्नोर्द्वयोर्वधात् ।

खंजवातनां अने पंगुवातनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२७ कमरमां रहेलो वायु कमरथी ते घुंटी सुधीना भागनी कंडराने (मोटी नसने) ज्यारे खेंचे छे (चालवा वगेरेमां कंपावे छे) त्यारे माणस खंज (लूलो) थई जाय छे. आ रोग **खंजवात** केहेवाय छे. कमरमां रहेलो वायु बन्ने पगनी कमरथी ते घुंटी सुधीनी कंडराओने खेंची बन्ने साथळोनी क्रियाने अटकावी दे छे ए रोग **पंगुवात** केहेवाय छे.

२८ प्रक्रामन्वेपते यस्तु खञ्जन्निव च गच्छति॥ कलायखञ्जं तं विद्यान्मुक्तसंधिप्रबंधनम् ।

कलायखंजनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२८ माणस वायुथी पीडाईने, चालवानी शरुआत करतां कंपे तथा जाणे लुलकातो होय एवो देखाय अने सांधाओनां बंधनोना शिथिलपणावाळो थई जाय ते माणसने **कलायखंज** नामनो रोग प्राप्त थयो समजवो. (चालवा लागती वखते कंप थवो तथा लुलकाता जेवुं देखावुं एटली खंजवातथी कलायखंजतानी जुदाई छे.

'कलायखंज' ए नाम अर्थने अनुसरीने नहीं होवाथी यौगिक नथी पण रूढ छे एम समजवुं.)

२९ न्यस्ते तु विषमे पादे रुजः कुर्यात्समीरणः॥ वातकण्टक इत्येष विज्ञेयः खुडकाश्रितः।

वातकंटकनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२९ पग विषम रीते मुकाई जतां पगनी पींडीना संधिमां रहेलो वायु जे पीडाने उत्पन्न करे छे ते पीडा **वातकंटक** केहेवाय छे.

३० पादयोः कुरुते दाहं पित्तासृक्सहितोऽनिलः विशेषतश्चंक्रमतः पाददाहं तमादिशेत्।

पाददाहनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३० पित्तथी तथा रुधिरथी संयुक्त थएलो वायु बन्ने पगमां दाह करे छे अने पगथी चालवाना समयमां विशेष दाह करे छे ए रोग **पाददाह** केहेवाय छे.

३१ हृष्यतश्चरणौ यस्य भवतश्च प्रसुप्तवत्॥ पादहर्षः स विज्ञेयः कफवातप्रकोपजः।

पादहर्षनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३१ कफथी संयुक्त थएला वायुना प्रकोपने लीधे बन्ने पग रोमांचवाळा, अंदर थंडीवाळा अने जाणे स्पर्शना ज्ञानथी रहितज होय एवा थई जाय छे ए रोग **पादहर्ष** केहेवाय छे.

३२ अंसदेशस्थितो वायुः शोषयित्वांसबन्धनम् शिरास्वाकुञ्च्य तत्रस्थो जनयत्यपबाहुकम्।

अंसशोषनां तथा अपबाहुकनां निदान, संप्राप्ति अने लक्षण.

३२ बाहुनी टोचना समीपना प्रदेशमां रहेलो वायु त्यांना कफने सुकावी नाखे छे ए रोग **अंसशोष** केहेवाय छे. बाहुनी टोचना समीपना प्रदेशमां रहेलो वायु बाहुनी शिराओनो संकोच करी नाखे छे ते रोग **अपबाहुक** केहेवाय छे.

३३ यदा शब्दवहं स्रोतो वायुरावृत्य तिष्ठति॥ शुद्धः श्लेष्मान्वितो वापि बाधिर्यं तेन जायते।

बाधिर्यनां (बेहेरापणानां) निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३३ ज्यारे शुद्ध (केवळ) अथवा कफसंयुक्त वायु कानना शब्दवाहि स्रोतने रोकी दईने रेहे छे त्यारे बेहेरापणुं थाय छे ए **बाधिर्य** केहेवाय छे. (रुधिरथी के पित्तथी संयुक्त थएलो वायु कानना शब्दवाहि स्रोतने रोकी दईने रेहे तो तेथी पण बाधिर्य थाय छे. आ रोग उत्तरतंत्रना २० मा अध्यायना ९ मा विषयमां पण केहेवामां आवशे.)

३४ हनुशङ्खशिरोग्रीवं यस्य भिन्दन्निवानिलः॥ कर्णयोः कुरुते शूलं कर्णशूलं तदुच्यते।

कर्णशूलनुं निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३४ प्रतिलोम गति करतो वायु जाणे हडपचीने, लमणाओने, माथाने तथा डोकने भेदी नाखतो होय एवी रीते कानमां शूळने उत्पन्न करे छे ए रोग **कर्णशूळ** केहेवाय छे. (आ रोग उत्तरतंत्रना २० अध्यायना त्रीजा विषयमां पण केहेवामां आवशे.)

३५ आवृत्य वायुः सकफो धमनीः शब्दवाहिनीः नरान्करोत्यक्रियकान्मूकमिन्मिणगद्गदान्॥

मूक, मिन्मिण तथा गद्गद एओनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षणो

३५ कफथी संयुक्त थएलो वायु शब्दने चलावनारी धमनीओनुं आवरण करी नाखीने (धमनीओने रोकी दईने) बोलवानी क्रियामां अडचण करनारा **मूक, मिन्मिण** तथा **गद्गद** ए त्रण रोगोने उत्पन्न करे छे. (तमाम मुंगापणुं कालापणुं—ए मूक केहेवाय छे. गुंगणी रीते एटले जेमां अक्षरो नाकमांथी बोलवामां आवे एवुं बोलनारपणुं ए मिन्मिण केहेवाय छे अने पदोनो तथा व्यंजनोनो जेमां लोप थई जाय एवुं अस्फुट बोलनारपणुं ए गद्गद केहेवाय छे. जो के आ

त्रणे रोगोनुं स्थानक एकज छे तो पण दोषना वधारा घटारा उपरथी अथवा प्रारब्धना योग उपरथी ए रोगोनो भेद थाय छे एम समजवुं.)

३६ अधो या वेदना याति वर्चोमूत्राशयोत्थिता। भिन्दन्तीव गुदोपस्थं सा तूणीत्युपदिश्यते ॥

तूणीवातनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३६ वायुना प्रकोपने लीधे विष्टाना स्थानकथी तथा मूत्राशयथी उठेली अने जाणे गुदने तथा उपस्थने (लिंगने अथवा योनिने) भेदी नाखती होय एवी जे वेदना नीचे जती होय ते **तूणी** केहेवाय छे.

३७ गुदोपस्थोत्थिता सैव प्रतिलोमविसर्पिणी। वेगैः पक्वाशयं याति प्रतितूणी तु सा स्मृता ॥

प्रतितूणीनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३७ वायुना प्रकोपने लीधे जे वेदना गुदामांथी तथा उपस्थमांथी उठी उंचे दोडीने, उत्पन्न थता तथा उपशम पामता वेगोथी वारंवार पक्वाशयमां जाय ते वेदना **प्रतितूणी** केहेवाय छे.

३८ साटोपमत्युग्ररुजमाध्मातमुदरं भृशम्। आध्मानमिति जानीयाद्धोरं वातनिरोधजम् ॥

आध्माननां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३८ अधोवायुना निरोधने लीधे पेट गडगडाटवाळुं, अत्यंत उग्र पीडावाळुं, अने पवनथी भराएली धमणनी पेठे अत्यंत फुलेलुं थई जाय छे ए कष्टकारी रोग **आध्मान** केहेवाय छे.

३९ विमुक्तपार्श्वहृदयं तदेवामाशयोत्थितम्। प्रत्याध्मानं विजानीयात्कफव्याकुलितानिलम् ॥

प्रत्याध्माननां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३९ वायु कफथी व्याकुल थवाने लीधे (रोकाई जवाने लीधे) पडखांओने तथा हृदयने छोडीदईने थएलुं अने आमाशयमांथी उठेलुं (नाभिना तथा स्तनना मध्यमांथी उठेलुं) जे आध्मान थाय छे तेज **प्रत्याध्मान** केहेवाय छे.

४० अष्ठीलावद्घनं ग्रन्थिमूर्ध्वमायतमुन्नतम्। वाताष्ठीलां विजानीयाद्बहिर्मार्गावरोधिनीम् ॥

वाताष्ठीलानां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

४० नाभिनी नीचे लंबगोळ पथरा जेवी घाटी, उंची तथा उंचेना भागमां विस्तारवाळी जे स्थिर अथवा चंचल गांठ वायुना प्रकोपथी थाय छे ते **वाताष्ठीला** केहेवाय छे. आ गांठ लिंगने, योनिने, तथा गुदाने रोकी देछे के जेथी विष्टानो, मूत्रनो अने अधोवायुनो रोध थाय छे. (पित्ते करेली के कफे करेली अष्ठीला होती नथी एटला माटे आ स्थलमां 'वाताष्ठीला' ए नामज समजवुं पण तेमां वात शब्दने व्यावर्त्तक समजवो नहीं.)

४१ एतामेव रुजायुक्तां वातविण्मूत्ररोधिनीम्। प्रत्यष्ठीलामिति वदेज्जठरे तिर्यगुत्थिताम् ॥

प्रत्यष्ठीलानां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

४१ वायुना प्रकोपने लीधे अधोवायुने, विष्टाने तथा मूत्रने रोकनारी अने वेदना करनारी अष्ठीला जो पेटमां आडी उत्पन्न थई होय तो **प्रत्यष्ठीला** केहेवाय छे.

अध्याय २ जो.

१ अथातोऽर्शसां निदानं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अर्शोनिदान'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

१ अरशोनां कारणो तथा लक्षणो वगेरेना कथन विषेनो.

२ षडर्शांसि भवन्ति वातपित्तकफशोणितसंनिपातैः सहजानि चेति ॥

तत्रानात्मवतां यथोक्तैः प्रकोपणैर्विरुद्धाध्यशनस्त्रीप्रसङ्गोत्कटकासनपृष्ठयानवेगविधारणादिभिर्विशेषैः प्रकुपिता दोषा एकशो द्विशः समस्ताः शोणितसहिता वा यथोक्तं प्रसृताः प्रधानधमनीरनुप्रपद्याऽधो गत्वा गुदमागमय्य प्रदूष्य वलीर्मांसप्ररोहाञ्जनयन्ति विशेषतो मन्दाग्नेस्तथा तृणकाष्ठोपललोष्ठवस्त्रादिभिः शीतोदकसंस्पर्शनाद्वा कन्दाः परिवृद्धिमासादयन्ति तान्यर्शांसीत्याचक्षते ॥

अरशोना भेदो, दूरनां तथा पासेनां निदानो अने संप्राप्ति.

२ वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी, रुधिरथी अने स्वभावथी एम छ प्रकारना अरशो थाय छे.

अजितेंद्रिय लोकोने सूत्रस्थानना व्रणप्रश्न नामना २१ मा अध्यायना १२ मा विषयमां कहेलां क्रोध, शोक, बळवाननी साथे विरोध तथा दिवसनी निद्रा वगेरे प्रकोपणोथी अने विरुद्ध भोजन, अजीर्णमां भोजन, अत्यंत स्त्रीसंग, गुदाने पेनीथी दबावीने बेसवानी टेव अथवा उभडक बेसवानी टेव, घोडा तथा उंट वगेरेनी पीठ उपर बेसीने पंथ करवो, अने विष्टा तथा मूत्र वगेरेनी हाजतोने रोकवी इत्यादि विशेषोथी प्रकुपित थएला एक एक दोष अथवा बे बे अथवा त्रणे दोषो अथवा पित्त जेवाज प्रकारवाळुं दोषथी संयुक्त थएलुं रुधिर सूत्रस्थानना २१ मा अध्यायना १४ मा विषयमां कह्या प्रमाणे वधवापूर्वक प्रसार पामी, विष्टानुं वहन करनारी धमनीओमां प्राप्त थई, नीचे जई, गुदामां आवी, गुदानी वळीओने दूषित करी, मांसना अंकुरोने उत्पन्न करे छे. ए अंकुरो मंद अग्निवाळा पुरुषने अत्यंत थाय छे. ए मांसना कंद जेवा अंकुरो तृणनो, काष्ठनो, पथरानो, ढेफांनो के वस्त्र वगेरेनो संयोग थवाथी अथवा शीत जळनो स्पर्श थवाथी वृद्धि पामे छे. ए अंकुरोने वैद्यो अरश केहे छे. (बे बे दोषोना संसर्गवाळां अरशोविषे आ अध्यायना १८ मा विषयमां जुवो.)

३ तत्र स्थूलान्त्रप्रतिबद्धमर्द्धपञ्चाङ्गुलं गुदमाहुस्तस्मिन् वलयस्तिस्रोऽध्यर्द्धाङ्गुलान्तरभूताः प्रवाहणी विसर्जनी संवरणी चेति चतुरङ्गुलायताः सर्वास्तिर्यगेकाङ्गुलोच्छ्रिताः ॥

शङ्खावर्तनिभाश्चापि ह्युपर्युपरि संस्थिताः ।
गजतालुनिभाश्चापि वर्णतः संप्रकीर्तिताः ॥
रोमान्तेभ्यो यवाध्यर्द्धो गुदोष्ठः परिकीर्तितः ॥
प्रथमा तु गुदोष्ठादङ्गुलमात्रे ।

गुदानुं तथा गुदानी वळीओनुं व्याख्यान.

३ स्थूल आंतरडुं के जे गुदांत्र केहेवाय छे तेनी साथे गुदा जोडाएली छे अने ते साडाचार आंगळना प्रमाणवाळी केहेवाय छे. ए गुदामां प्रवाहणी[1], विसर्जनी[2] अने संवरणी[3] ए नामनी त्रण वळीओ छे अने तेओ एक एकनी उपर रहेली छे. गुदानो होठ के जे रोमावळीना अंतनी उपर अरधा अंगुळनो छे तेनी उपर एक आंगळने छेटे पेहेली वळी छे, ए वळीनी उपर दोढ आंगळने छेटे बीजी वळी छे अने ते बीजी वळीनी उपर दोढ आंगळने छेटे त्रीजी वळी छे. गुदाना होठनुं अने त्रण वळीओनुं एकंदर अंतर साडाचार आंगळनुं छे के जेथी गुदा साडाचार आंगळनी केहेवाय छे. सघळी वळीओ चार आंगळ लांबी छे, एक आंगळनी आडी उंचाईवाळी छे, शंखना आवर्तोना जेवा आकारवाळी छे अने हा-

१ विष्टाने बाहार काहाडवा माटे जोर करनारी जे वळी छे ते प्रवाहणी केहेवाय छे.

२ विष्टाने बाहार काहाडनारी जे वळी छे ते विसर्जनी केहेवाय छे.

३ विष्टा नीकळी गया पछी गुदाने बीडी देनारी जे वळी छे ते संवरणी केहेवाय छे.

थीना ताळवाना जेवा वर्णवाळी छे. पेहेली वळी गुदाना होठथी एक आंगळ दूर छे.

४ तेषां तु भविष्यतां पूर्वरूपाण्यन्ने न श्रद्धा कृच्छ्रात्पक्तिरम्लिका सक्थिसदनमाटोपः कार्श्यमुद्गारबाहुल्यमक्ष्णोश्च श्वयथुरन्त्रकूजनं गुदपरिकर्तनमाशङ्का पाण्डुरोगग्रहणीदोषशोषाणां कासश्वासौ भ्रमस्तन्द्रा निद्रेन्द्रियदौर्बल्यं च जातेष्वेतानि रूपाणि प्रव्यक्ततराणि भवन्ति ॥

अरशोनां पूर्वरूप तथा सामान्य लक्षण.

४ अरशो थवानां होय त्यारे अन्न उपर अरुचि थाय छे, खाधेलुं अन्न मांड मांड पचे छे, खाटा ओडकार आवे छे, साथळोमां ग्लानि थाय छे, पेटमां गडगडाट थाय छे, शरीर दूबळुं थई जाय छे, ओडकार घणा आवे छे, आंखोपर सोजो थाय छे, आंतरडांओमां अवाज थाय छे, गुदामां वाढकाप थया जेवी व्यथा थाय छे, खांसी आवे छे, श्वास थाय छे, भ्रम थाय छे, तंद्रा थाय छे, निद्रा वधे छे, इंद्रियोनुं नबळापणुं थाय छे अने पांडुरोग, ग्रहणीदोष तथा शोष एओ उत्पन्न थयानी शंका थाय छे. ज्यारे अरशो उत्पन्न थाय त्यारे ए सघळां लक्षणो अत्यंत स्पष्ट थाय छे.

५ तत्र मारुतात्परिशुष्कारुणवर्णानि विषममध्यानि कदम्बपुष्पतुण्डिकेरीनाडीमुखसूचीमुखाकृतीनि च भवन्ति । तैरुपद्रुतः सशूलं संहतमुपवेश्यते कटीपृष्ठपार्श्वमेढ्रगुदनाभिप्रदेशेषु चास्य वेदना गुल्माष्ठीलाप्लीहोदराणि चास्य तन्निमित्तान्येव भवन्ति कृष्णत्वङ्नखनयनदशनवदनमूत्रपुरीषश्च पुरुषो भवति ॥

वायुथी थएलां अरशोनां विशिष्ट लक्षणो.

५ वायुथी थएलां अरशो स्राववगरनां होय छे, कांईक राता वर्णवाळां होय छे, नीचां उंचां मध्योवाळां होय छे अने कदंबनां पुष्पो जेवी, जंगली कपासनी डांडलीना मुख जेवी के सोईना मुख जेवी आकृतिओवाळां होय छे. ए अरशोथी उपहत थएला माणसने शूळ नीकळी नीकळीने घाटो दस्त आवे छे, कमर पीठ पडखां लिंग गुदा तथा नाभि एओमां वेदना थाय छे, अरशोने लीधेज गुल्म अष्ठीला बरलनुं दरद तथा उदररोग ए उपद्रवो थाय छे अने ए माणसनां त्वचा, नखो, नेत्रो, दांतो, मोहोडुं, मूत्र अने विष्टा श्याम थई जाय छे.

६ पित्तान्नीलाग्राणि तनूनि विसर्पीणि पीतावभासानि यकृत्प्रकाशानि शुकजिह्वासंस्थानानि यवमध्यानि जलौकोवक्त्रसदृशानि प्रक्लिन्नानि च भवन्ति तैरुपद्रुतः सदाहं सरुधिरमतिसार्यते ज्वरदाहपिपासामूर्च्छाश्चोपद्रवा भवन्ति पीतत्वङ्नखनयनदशनवदनमूत्रपुरीषश्च पुरुषो भवति ।

पित्तथी थएलां अरशोनां विशिष्ट लक्षणो.

६ पित्तथी थएलां अरशो श्याम अग्रोवाळां, मूळमां तथा अग्रमां पातळां, प्रसार पामनारां, पीळां अवभासवाळां, जमणा पडखानी गांठ जेवा वर्णवाळां, पोपटनी जीभ जेवी आकृतिवाळां, जवनी पेठे जाडां मध्योवाळां, जळोना मोहोडां जेवां अने क्लेदना स्राववाळां होय छे. ए अरशोथी उपहत थएला माणसने बळतरा थई थईने लोहीवाळो पातळो झाडो आव्या करे छे, ज्वर, दाह, तरश तथा मूर्छा ए उपद्रवो थाय छे अने ए माणसनां त्वचा, नखो, नेत्रो, दांतो, मोहोडुं, मूत्र तथा विष्टा पीळां थई जाय छे.

७ श्लेष्मजानि श्वेतानि महामूलानि स्थिराणि वृत्तानि स्निग्धानि पाण्डूनि करीरपनसास्थिगोस्तनाकाराणि न भिद्यन्ते न स्रवन्ति कण्डूबहुलानि च भवन्ति तैरुपद्रुतः सश्लेष्माणमनल्पं मांसधावनप्रकाशमतिसार्यते शोफशीतज्वरारोचकाविपाकशिरोगौरवाणि चास्य

तन्निमित्तान्येव भवन्ति शुक्लत्वङ्नखनयनदशनवदनमूत्रपुरीषश्च पुरुषो भवति ॥

कफथी थएलां अरशोनां विशिष्ट लक्षणो.

७ कफथी थएलां अरशो श्वेत होय छे, मोटा मूळवाळां होय छे, कठण होय छे, गोळ होय छे, स्निग्ध होय छे, धूसर वर्णवाळां होय छे, केरडाना जेवा, फनसना ठळीया जेवा के गायना आंचळ जेवा आकारवाळां होय छे, भेदातां नथी, स्रवतां नथी अने घणी खरजवाळां होय छे. ए अरशोथी उपहत थएला माणसने कफवाळो, झाझो तथा मांसना धोण जेवो पातळो झाडो आव्या करे छे. ए अरशोने लीधेज सोजा, शीतज्वर, अरुचि, अन्ननुं नहीं पाकवुं अने माथानुं भारेपणुं ए उपद्रवो थाय छे. ए माणसनां त्वचा, नखो, नेत्रो, दांतो, मोहोडुं, मूत्र तथा विष्टा सफेद वर्णवाळां थई जाय छे.

८ रक्तजानि न्यग्रोधप्ररोहविद्रुमकाकणन्तिकाफलसदृशानि पित्तलक्षणानि च यदावगाढपुरीषप्रपीडितानि भवन्ति तदात्यर्थं दुष्टमनल्पमसृक्सहसा विसृजन्ति तस्यैवातिप्रवृत्तौ शोणितातियोगोपद्रवा भवन्ति ॥

रुधिरथी थएलां अरशोनां विशिष्ट लक्षणो.

८ रुधिरथी थएलां अरशो वडवाईओ जेवां, परवाळां जेवां के चणोठी जेवा वर्णवाळां होय छे अने उपर पित्तथी थएलां अरशोनां जे लक्षणो कह्या ते लक्षणोवाळां होय छे. ए अरशो ज्यारे दृढ विष्टाथी दबाय छे त्यारे जलदीज अत्यंत दुष्ट तथा झाझा रुधिरनो स्राव करे छे. ए रुधिरनी अत्यंत प्रवृत्ति थतां ते माणसने रुधिरना अति स्रावथी थनारा आक्षेपक वगेरे उपद्रवो थाय छे.

९ संनिपातजानि सर्वदोषलक्षणयुक्तानि ॥

त्रणे दोषथी थएलां अरशोनां विशिष्ट लक्षणो.

९ सन्निपातथी एटले त्रणे दोषोना संयोगथी थएलां अरशो उपर कहेलां त्रणे दोषोनां लक्षणोवाळां होय छे.

१० सहजानि दुष्टशोणितशुक्रनिमित्तानि तेषां दोषत एव प्रसाधनं कर्तव्यम् । विशेषतश्चात्र दुर्दर्शनानि परुषाणि पाण्डूनि दारुणान्यन्तर्मुखानि तैरुपद्रुतः कृशोऽल्पभुक्छिरासन्ततगात्रोऽल्पप्रजः क्षीणरेताः क्षामस्वरः क्रोधनोऽल्पाग्निर्घ्राणशिरोऽक्षिश्रवणरोगवान्सततमन्त्रकूजाटोपहृदयोपलेपारोचकप्रभृतिभिः पीड्यते ॥

स्वभावथी थएलां (शरीरना जन्मनी साथेज थएलां) अरशोनां विशिष्ट लक्षणो.

१० स्वाभाविक एटले शरीरना जन्मनी साथेज थएलां अरशो माताना रजना दोषथी अने पिताना वीर्यना दोषथी थएलां होय छे माटे तेओनी चिकित्सा रजना तथा वीर्यना दोष उपर अथवा तेओमां पोतामां जे दोष जोवामां आवतो होय ते दोष उपर ध्यान आपीने करवी. विशेषे करी आ स्वाभाविक अरशो अंदरना विद्रधिओनी पेठे जोवाने अशक्य, कठण, भूखरा वर्णवाळां, अत्यंत दुःख देनारां अने अंदर मोहोडावाळां होय छे. आ अरशोथी उपहत थएलो माणस कृश शरीरवाळो, अल्प जमनारो, नसोथी व्याप्त थएलां शरीरवाळो, अल्प प्रजावाळो, क्षीण वीर्यवाळो, क्षीण स्वरवाळो, क्रोधी, अल्प अग्निवाळो अने नाकना, माथाना, नेत्रोना तथा कानना रोगोवाळो होय छे. ए माणस आंतरडाओनो अवाज, पेटनो गडगडाट, छातीनुं कफथी लेपाई रेहेवुं अने अरोचक इत्यादि रोगोथी पण निरंतर पीडाय छे.

१ वायु के कफ अनुबंधरूप थया होय तो तेओनां लक्षणो पण जोवामां आवे छे.

११ भवति चात्र ॥

बाह्यमध्यवलिस्थानां प्रतिकुर्याद्भिषग्वरः ।
अन्तर्वलिसमुत्थानां प्रत्याख्यायाचरेत्क्रियाम् ॥

अरशोनुं सामान्य रीते साध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

११ आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "अरशो संवरणी के विसर्जनी नामनी वळीओमां रह्यां होय तो उत्तम वैद्ये तेओनी चिकित्सा करवी. पण जो प्रवाहणी नामनी वळीमां रह्यां होय तो तेओ घणुं करी असाध्य छे एटला माटे चिकित्सा करवानी ना पाडीने पछी रोगी वगेरेनो आग्रह जणाय तो करवी."

१२ प्रकुपितास्तु दोषा मेढ्रमभिप्रपन्ना मांसशोणिते प्रदूष्य कण्डूं जनयन्ति ततः कण्डूयनात्क्षतं समुपजायते तस्मिंश्च क्षते दुष्टमांसजाः प्ररोहाः पिच्छिलरुधिरस्राविणो जायन्ते कूर्चकिनोऽभ्यन्तरमुपरिष्टाद्वा ते तु शेफो विनाशयन्त्युपघ्नन्ति च पुंस्त्वम् ॥

लिंगमां थएला अरशोनां निदान संप्राप्ति तथा लक्षण.

१२ प्रकुपित थएला दोषो लिंगमां आवी, मांसने तथा रुधिरने दूषित करी खरजने उत्पन्न करे छे, खरजने लीधे खंजवाळवाथी लिंगमां क्षत थाय छे अने ते क्षतमां दुष्ट मांसना अंकुरो थाय छे. मणिनी अंदर के बाहारनी चामडीमां उत्पन्न थएला ए अंकुरो चीकणा लोहीनो स्राव करे छे अने झीणा तथा लांबा तंतुओवाळा होय छे. आ अंकुरो लिंगनो विनाश करी नाखे छे अने पुरुषपणानो पण उपघात करे छे.

१३ योनिमभिप्रपन्नाः सुकुमारान्दुर्गन्धान् पिच्छिलरुधिरस्राविणश्छत्राकारान्करीराञ्जनयन्ति ॥

योनिमां थएला अरशोनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

१३ प्रकुपित थएला दोषो योनिमां आवी कोमळ, दुर्गंधवाळा, चीकणा तंतुओवाळा रुधिरने स्रवनारा अने छत्र जेवा आकारवाळा दुष्ट मांसना अंकुरोने उत्पन्न करे छे.

१४ त एवोर्ध्वमागताः श्रोत्राक्षिघ्राणवदनेष्वर्शांस्युपनिर्वर्तयन्ति ।

तत्र कर्णजेषु बाधिर्यं शूलं पूतिकर्णता च ।

नेत्रजेषु वर्त्मावरोधो वेदना स्रावो दर्शननाशश्च ।

घ्राणजेषु प्रतिश्यायोऽतिमात्रं क्षवथुः कृच्छ्रोच्छ्वासता पूतिनस्यं सानुनासिकवाक्यत्वं शिरोदुःखं च ।

वक्त्रजेषु कण्ठौष्ठतालूनामन्यतमस्मिंस्तैर्गदगदवाक्यता रसाज्ञानं मुखरोगाश्च भवन्ति ।

कान, नेत्रो, नाक तथा मुख एओमां थएला अरशोनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षणो.

१४ प्रकुपित थएला दोषो उंचे आवी कानमां, नेत्रमां, नाकमां तथा मुखमां अरशोने उत्पन्न करे छे.

अरशो कानमां थया होय तो बेहेरापणुं थाय छे, कानमां शूळ नीकळे छे अने कान दुर्गंधयुक्त थई जाय छे.

अरशो नेत्रमां थया होय तो पापणो रोकाई जाय छे, नेत्रोमां वेदना थाय छे, स्राव थाय छे अने नेत्रोनी जोवानी शक्ति बंध पडी जाय छे.

अरशो नाकमां थया होय तो प्रतिश्याय, प्रबल क्षवथु रोग, उच्छ्वासनुं मांड मांड लेवावुं, पूतिनस्य रोग, गुंगणा अक्षरो बोलनारपणुं अने माथानुं दुःख उत्पन्न थाय छे. (प्रतिश्याय, क्षवथु अने पूतिनस्य एओनां लक्षणो उत्तर तंत्रना २३ मा तथा २२ मा अध्यायमां जुवो.)

अरशो मुखमां थया होय तो कंठ, होठ, के ताळवुं एओमांथी एक स्थानमां रहेला ते अर-

शोथी बोलवामां गद्गदपणुं थाय छे, रसनी खबर पडती नथी अने मुखना रोगो उत्पन्न थाय छे.

१५ व्यानस्तु प्रकुपितः श्लेष्माणं परिगृह्य बहिः स्थिराणि कीलवदर्शांसि निर्वर्तयति तानि चर्मकीलान्यर्शांसीत्याचक्षते ॥

चर्मकील नामना अरशनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

१५ प्रकुपित थएलो व्यानवायु कफने साथे लईने गुदाना होठथी बाहार अथवा बीजा प्रदेशोमां पण त्वचाथी बाहार कठण अने खीला जेवा आकारवाळा अरशोने उत्पन्न करे छे. ए अरशोने वैद्यो **चर्मकील** केहे छे. (चर्मकील पण मांसना अंकुर जेवोज थाय छे माटे तेने अरशोमां गण्यो छे.)

१६ भवन्ति चात्र ॥

तेषु कीलेषु निस्तोदो मारुतेनोपजायते ।
श्लेष्मणा तु सवर्णत्वं ग्रन्थित्वं च विनिर्दिशेत् ॥
पित्तशोणितजं रौक्ष्यं कृष्णत्वं शुक्लता तथा ।
समुदीर्णखरत्वं च चर्मकीलस्य लक्षणम् ॥

चर्मकीलमां वात आदि दोषोनी प्रबलतानां लक्षणो.

१६ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "चर्मकीलमां जो वायु प्रबल होय तो तेमां सोईथी भोंकाया जेवी वेदना थाय छे. जो कफ प्रबल होय तो चर्मकीलनो वर्ण शरीरना वर्ण जेवोज थाय छे अने ते चर्मकील ग्रंथि जेवो थाय छे. जो पित्त के रुधिर प्रबल होय तो चर्मकीलमां रूक्षपणुं, श्यामपणुं, श्वेतपणुं तथा अत्यंत कठणपणुं थाय छे."

१७अर्शसां लक्षणं व्यासादुक्तं सामान्यतस्तु यत्।
तत्सर्वं प्राग्विनिर्दिष्टात्साधयेद्भिषजां वरः ॥

लिंग वगेरे प्रदेशोमां थता अरशोमां वायु वगेरे दोषोनां विशिष्ट लक्षणो जाणी लेवाविषे.

१७ लिंग वगेरे प्रदेशोमां थता अरशोनां सामान्य लक्षणो विस्तारथी केहेवामां आव्यां छे पण वायु आदि दोषोनां विशिष्ट लक्षणो केहेवामां आव्यां नथी माटे उत्तम वैद्यने ते लक्षणो जाणवानी इच्छा थाय तो तेणे आ अध्यायना पांचमा, छठा, सातमा, आठमा तथा नवमा विषयमां जे जे लक्षणो केहेवामां आव्यां छे ते लक्षणो उपरथी आ अरशोमां पण वायु वगेरे दोषोनां लक्षणोनी परीक्षा करी लेवी.

१८ अर्शःसु दृश्यते रूपं यदा दोषद्वयस्य तु ।
संसर्गं तं विजानीयात्संसर्गः स च षड्विधः ॥

औषधोनी कल्पना माटे अरशोमां इतर दोषोना संसर्गनुं निरूपण.

१८ अरशोमां जो बे दोषनां लक्षणो जोवामां आवे तो बे दोषनो संसर्ग थएलो समजवो. ए संसर्ग वातपित्तसंसर्ग, वातकफसंसर्ग, पित्तकफसंसर्ग, वातरुधिरसंसर्ग, पित्तरुधिरसंसर्ग अने कफरुधिरसंसर्ग ए रीते छ प्रकारनो थाय छे.

१९ त्रिदोषाण्यल्पलिङ्गानि याप्यानि तु विनिर्दिशेत् ।
द्वन्द्वजानि द्वितीयायां वलौ यान्याश्रितानि च॥
कृच्छ्रसाध्यानि तान्याहुः परिसंवत्सराणि च ।
संनिपातसमुत्थानि सहजानि च वर्जयेत् ॥
सर्वाः स्युर्वलयो येषां दुर्नामभिरुपद्रुताः ।
तैस्तु प्रतिहतो वायुरपानः संनिवर्तते ॥
ततो व्यानेन संगम्य ज्योतिर्मृद्नाति देहिनाम् ॥

अरशोनुं याप्यपणुं, कष्टसाध्यपणुं अने असाध्यपणुं ए विषयमां विशेष व्याख्यान.

१९ अरशो त्रणे दोषोनां चिह्नोवाळां छतां पण जो तेओमां ए चिह्नो अल्प होय तो ते अरशोने याप्य केहेवां. बे दोषोना संसर्गथी थएलां जे अरशो, बीजी वळीमां रह्यां होय तेओने तथा जेओनी उत्पत्तिने एक वर्ष वीती गयुं होय ते अरशोने कष्टसाध्य केहेवां. जे अरशो त्रणे दोषोनां पूरेपूरां

चिह्नोवाळां होय अथवा स्वाभाविक होय तेओने तो (घणुं करी) असाध्य समजीने छोडीज देवां.

जे माणसोनी त्रणे वळीओ अरशोथी घेराएली होय ते माणसोनो अपानवायु अरशोथी प्रतिघात पामीने बाहार नीकळतो नथी अने पछी व्याननी साथे मळीने जठराग्निनुं मर्दन करी नाखे छे. (आम थवाथी अरशो असाध्य थई पडे छे अथवा आ प्रमाणे थती अग्निनी मंदता स्वाभाविक अरशोमां उपद्रवरूप होय छे.)

अध्याय ३ जो.

१ अथातोऽश्मरीणां निदानं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अश्मरीनिदानं'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ चतस्रोऽश्मर्यो भवन्ति श्लेष्माधिष्ठानास्तद्यथा श्लेष्मणा वातेन पित्तेन शुक्रेण चेति॥ तत्रासंशोधनशीलस्यापथ्यकारिणः प्रकुपितः श्लेष्मा मूत्रसंपृक्तोऽनुप्रविश्य बस्तिमश्मरीं जनयति ॥

पथरीना भेदो तथा निदानो.

२ कफथी, वायुथी, पित्तथी अने वीर्यथी एम चार प्रकारनी पथरीओ थाय छे. सघळी पथरीओमां कफ समवायीकारण होय छे पण वीर्यथी थएली पथरीमां वीर्य समवायीकारण होय छे. (केटलाएक वैद्यो तो वीर्यनी पथरीमां पण कफनुं समवायीकारणपणुं माने छे.)

वमनविरेचनादिकथी संशोधन करवानी आदत वगरना अने अपथ्य करनारा पुरुषनो प्रकुपित थएलो कफ मूत्रनो संयोग पामी मूत्राशयमां प्रवेश करीने पथरीने उत्पन्न करे छे.

३ तासां पूर्वरूपाणि बस्तिपीडाऽरोचकौ मूत्रकृच्छ्रं बस्तिशिरोमुष्कशेफसां वेदना कृच्छ्राज्ज्वरावसादौ बस्तगन्धित्वं मूत्रस्येति ॥ यथास्वं वेदनावर्णं दुष्टं सान्द्रमथाविलम् । पूर्वरूपेऽश्मनः कृच्छ्रान्मूत्रं सृजति मानवः ॥

पथरीनां पूर्वरूप.

३ पथरी थवानी होय त्यारे मूत्राशयमां पीडा थाय छे, अन्न वगेरेनी उपर अरुचि थाय छे, मूतरवामां कष्ट थाय छे, मूत्राशयनो उपरनो भाग वृषण तथा लिंग एओमां आकर्षण थईने वेदना थाय छे, ज्वर आवे छे, ग्लानि थाय छे अने मूत्र मोटा बकराना जेवा गंधवाळुं थाय छे. माणस पथरीनुं पूर्वरूप प्राप्त थाय त्यारे जे दोषथी पथरी थवानी होय ते दोषने अनुसरती वेदनावाळुं, ते दोषने अनुसरता वर्णवाळुं, घाटुं थता मेलुं मूतरे छे अने ते पण मांड मांड मूतरी शके छे.

४ अथ जातासु नाभिबस्तिसेवनीमेहनेष्वन्यतमस्मिन्मेहतो वेदना मूत्रधारासंगः सरुधिरमूत्रता मूत्रविकिरणं च गोमेदकप्रकाशमनाविलं ससिकतं विसृजति धावनलङ्घनप्लवनपृष्ठयानाध्वगमनैश्चास्य वेदना भवति ॥

सघळा प्रकारनी पथरीओनुं सामान्य लक्षण.

४ ज्यारे पथरी थाय त्यारे मूतरवाना समयमां नाभि, मूत्राशय, सीवणी अने लिंग एओमांथी एकमां वेदना थाय छे, मूत्रनी धारा अटकी जाय जाय छे, लोहीवाळुं मूत्र नीकळे छे, मूत्र वींखाई जईने आमतेम पडे छे अने कोई समये वायुने लीधे पथरी मूत्रना मार्गमांथी खसी जाय त्यारे गोमेद नामना पीळा मणि जेवा वर्णवाळुं तथा रेतीवाळुं स्वच्छ मूत्र नीकळे छे. आ माणसने दोडतां, ठेकतां, पाणीमां तरतां, वाहननी पीठ उपर बेसीने चालतां अने पंथ करतां वेदना थाय छे.

[1] पथरीनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षणोना कथनविषेनो.

५ तत्र श्लेष्मा श्लेष्मलमन्नमभ्यवहरतोऽत्यर्थमुपलिप्याधः परिवृद्धिं प्राप्य बस्तिमुखमधिष्ठाय स्रोतो निरुणद्धि तस्य मूत्रप्रतिघाताद्दाल्यते भिद्यते निस्तुद्यत इव च बस्तिर्गुरुः शीतश्च भवति । अश्मरी चात्र श्वेता स्निग्धा महती कुक्कुटाण्डप्रतीकाशा मधूकपुष्पवर्णा वा भवति तां श्लैष्मिकीति विद्यात् ॥

कफथी थएली पथरीनां विशिष्ट (खास) लक्षणो.

५ कफवर्द्धक अन्नने खानारा माणसनो कफ ते माणसना शरीरना अंदरना भागने अत्यंत खरडी नाखी, नीचेना भागमां अतिवृद्धि पामी, मूत्राशयना मोहोडामां रहीने स्रोतने रोकी दे छे. आ माणसनो मूत्राशय मूत्रना प्रतिघातने लीधे जाणे छेदी नखातो होय, भेदी नखातो होय तथा सोईओथी भोंकातो होय तेम व्यथा पामे छे, भारे थई जाय छे अने टाढो थई जाय छे. एमां पथरी सफेद, स्निग्ध, मोटी अने कुकडानां इंडा जेवी अथवा महुडाना फूल जेवा वर्णवाळी होय छे. आवी पथरीने कफनी उल्वणताथी थएली समजवी.

६ पित्तयुक्तस्तु श्लेष्मा सङ्घातमुपगम्य यथोक्तां परिवृद्धिं प्राप्य बस्तिमुखमधिष्ठाय स्रोतो निरुणद्धि तस्य मूत्रप्रतीघाताद्दुष्यते चूष्यते दह्यते पच्यत इव बस्तिरुष्णवातश्च भवति । अश्मरी चात्र सरक्ता पीतावभासा कृष्णा भल्लातकास्थिप्रतिमा मधुवर्णा वा भवति तां पैत्तिकीति विद्यात् ॥

पित्तथी थएली पथरीनां विशिष्ट लक्षणो.

६ पित्तथी संयुक्त थएलो कफ कठणपणाने पामी तथा उपर कह्याप्रमाणे अतिवृद्धि पामी, मूत्राशयना मोहोडामां रहीने स्रोतने रोकी दे छे. आ माणसनो मूत्राशय मूत्रना प्रतिघातथी तप्या करतो होय, खेंचातो होय, बाळी नखातो होय अने क्षारादिकथी पकावी नखातो होय तेम व्यथा पामे छे अने ए माणसने उत्तरतंत्रना ५८ मा अध्याय ना १२ मा विषयमां कहेलो उष्णवात नामनो रोग थाय छे. एमां पथरी कांइक राती, पीळा अवभासवाळी, काळी, भीलामाना ठळीआ जेवी अथवा मधना जेवा वर्णवाळी होय छे. आवी पथरीने पित्तनी उल्वणताथी थएली समजवी.

७ वातयुक्तस्तु श्लेष्मा सङ्घातमुपगम्य यथोक्तां परिवृद्धिं प्राप्य बस्तिमुखमधिष्ठाय स्रोतो निरुणद्धि तस्य मूत्रप्रतीघातात्तीव्रा वेदना भवति तथात्यर्थं पीड्यमानो दन्तान्खादति नाभिं पीडयति मेढ्रं मृद्नाति पायुं स्पृशति विशर्द्धते विदहति वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेण चास्य मेहतो निःसरन्ति । अश्मरी चात्र श्यामा परुषा विषमा खरा कदम्बपुष्पवत्कण्टकाचिता भवति तां वातिकीति विद्यात् ॥

वायुथी थएली पथरीनां विशिष्ट लक्षणो.

७ वायुथी संयुक्त थएलो कफ कठणपणाने पामी तथा उपर कह्याप्रमाणे अतिवृद्धि पामी, मूत्राशयना मोहोडामां रहीने स्रोतने रोकी दे छे. आ माणस मूत्रना प्रतिघातथी तीव्र वेदना पामे छे, अत्यंत पीडावाथी दांत करडे छे, नाभिने दबाव्या करे छे, लिंगने चोळी नाखे छे, गुदानो स्पर्श करे छे, अधोवायुनो उत्सर्ग करे छे अने लिंगमां बळतरावाळो थाय छे. ए माणस ज्यारे मूतरे त्यारे वायु, मूत्र तथा विष्टा अत्यंत कष्टथी नीकळे छे. आमां पथरी काळी, खरसट, नीची उंची, कठण तथा कदंबना फूलनी पेठे कंटकोथी व्याप्त होय छे. आवी पथरीने वायुनी उल्वणताथी थएली समजवी.

८ प्रायेणैतास्तिस्रोऽश्मर्यो दिवास्वप्नसमशनाध्यशनशीतस्निग्धगुरुमधुराहारप्रियत्वाद्विशेषेण बालानां भवन्ति तेषामेवाल्पबस्तिकायत्वादनुपचितमांसत्वाच्च बस्तेः सुखग्रहणाहरणा भवन्ति ॥

उपर कहेली त्रण पथरीओ घणुं करी बालकोनेज थाय छे अने ते पथरीओ सेहेज काहाडी शकाय छे.

८ बालको दिवसनी निद्रा करे छे, हिताहित पदार्थोनुं भक्षण करे छे, अजीर्णमां खाय छे अने टाढा स्निग्ध भारे तथा मधुर आहारोपर अतिप्रेम राखे छे तेथी घणुं करीने आ उपर कहेली त्रण पथरीओ (कफनी उल्बणतावाळी, पित्तनी उल्बणतावाळी अने वायुनी उल्बणतावाळी) बालकोनेज थाय छे. ए बालकोना मूत्राशयो नाहाना होय छे, शरीरो नाहानां होय छे अने मूत्राशयोनां मांसो वृद्धि पामेलां होतां नथी अर्थात् तेओना मूत्राशयोनी जाडाई पण थोडी होय छे तेथी बालकोनी पथरीओ सेहेज (घणा आयासवगर) पकडी शकाय छे तथा काहाडी शकाय छे.

९ महतां तु शुक्राश्मरी शुक्रनिमित्ता भवति । मैथुनाभिघातादतिमैथुनाद्वा शुक्रं चलितमनिर्गच्छद्विमार्गगमनादनिलोऽभितः संगृह्य मेढ्रवृषणयोरंतरे संहरति संहृत्य चोपशोषयति सा मूत्रमार्गमावृणोति मूत्रकृच्छ्रं बस्तिवेदनां वृषणयोश्च श्वयथुमापादयति पीडितमात्रे च तस्मिन्नेव प्रदेशे प्रविलयमापद्यते तां शुक्राश्मरीति विद्यात् ॥

मोटाओने वीर्यथी पथरी थवानां विशिष्ट निदानो, संप्राप्ति तथा ते पथरीनां लक्षणो.

९ मोटाओने वीर्यथी पथरी थाय छे अने ते पथरी शुक्राश्मरी केहेवाय छे. मैथुनना विघातथी अथवा अतिमैथुनथी चलित थएला अने अवळा मार्गमां जवाने लीधे बाहार नहीं नीकळता वीर्यने वायु नीचेथी तथा उंचेथी धरी लईने लिंगना अने वृषणोना मध्यमां (मूत्राशयना द्वारनी नीचे) वर्त्तुल (गोळ) करी नाखे छे अने वर्त्तुल करी नाखीने सुकावी नाखे छे के जेथी ते वीर्य पथरीरूप बनी जाय छे. आ पथरी मूत्रना मार्गने रोकी देछे तथा मूत्रकृच्छ्रने, मूत्राशयमां व्यथाने अने वृषणोमां सोजाने उत्पन्न करे छे. ए पथरीवाळो प्रदेश दबाववामां आवतां ते पथरी अल्प होवाने लीधे तुरत छुपी जाय छे अने दबाणं मटे एटले पाछी प्रकट थाय छे. आवी पथरीने शुक्राश्मरी एटले वीर्यथी थएली पथरी जाणवी.

१० भवति चात्र ॥

शर्करा सिकता मेहो भस्माख्योऽश्मरिवैकृतम् ।

पथरीना उपद्रवो.

१० आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के " कांकरी, रेती, प्रमेह अने मूत्रशुक्रनामनो उत्तरतंत्रना ५८ मा अध्यायना ११ मा विषयमां कहेलो रोग एओ पथरीमां उपद्रवरूप थाय छे."

११ अश्मर्याः शर्करा ज्ञेया तुल्यव्यञ्जनवेदना॥
पवनेऽनुगुणे सा तु निरेत्यल्पा विशेषतः ।
सा भिन्नमूर्तिर्वातेन शर्करेत्यभिधीयते ॥

कांकरीनुं लक्षण अने ते कांकरीना पडवानुं तथा अटकवानुं कारण.

११ कांकरी पथरीनां जेवांज लक्षणोवाळी तथा पथरीना जेवीज वेदनावाळी थाय छे. वीर्यनी पथरीज ज्यारे वायुथी भेदाई जाय छे त्यारे **कांकरी** केहेवाय छे. वायुथी वींखाईने टुकडा टुकडारूप थएली ए पथरी (कांकरी अथवा रेती) ज्यारे वायु सवळी रीते चाले त्यारे घणुं करीने थोडी थोडी नीकळे छे अने वायु उलटो चाले त्यारे अटकी जाय छे.

१२ हृत्पीडा सक्थिसदनं कुक्षिशूलः सवेपथुः ।
तृष्णोर्ध्वगोऽनिलः कार्ष्ण्यं दौर्बल्यं पाण्डुगात्रता ॥
अरोचकाविपाकौ तु शर्करार्ते भवन्ति च ।
मूत्रमार्गप्रवृत्ता सा सक्ता कुर्यादुपद्रवान् ॥

दौर्बल्यं सदनं कार्श्यं कुक्षिशूलमरोचकम् ।
पाण्डुत्वमुष्णवातं च तृष्णां हृत्पीडनं वमिम्॥

कांकरीना तथा रेतीना उपद्रवो.

१२ कांकरीथी अथवा रेतीथी पीडाएला माणसने हृदयमां पीडा थाय छे, साथळोमां ग्लानि थाय छे, कूखमां शूळ नीकळे छे, कंप थाय छे, तरश लागे छे, श्वास उंचो चाले छे, शरीरमां काळापणुं थाय छे, दुर्बलपणुं थाय छे, गात्रो पांडु थई जाय छे, अन्नादिक उपर अरुचि थाय छे अने खाधेलुं अन्नादिक पचतुं नथी. मूत्रना मार्गमां प्राप्त थईने तेमां अंदर चोटी रहेली ते कांकरीथी अथवा रेतीथी दुर्बलपणुं, ग्लानि, कृशपणुं कूखमां शूळ, अन्नादिक उपर अरुचि, पांडुपणुं, उष्णवात, तरश, हृदयमां पीडा अने उलटी ए उपद्रवो थाय छे.

१३ नाभिपृष्ठकटीमुष्कगुदवङ्क्षणशेफसाम् ।
एकद्वारस्तनुत्वक्को मध्ये बस्तिरधोमुखः ॥
अलाब्वा इव रूपेण शिरास्नायुपरिग्रहः ।
बस्तिर्बस्तिशिरश्चैव पौरुषं वृषणौ गुदम् ॥
एकसंबन्धिनो ह्येते गुदास्थिविवरस्थिताः ।
मूत्राशयो मलाधारः प्राणायतनमुत्तमम् ॥
पक्वाशयगतास्तत्र नाड्यो मूत्रवहास्तु याः।
तर्पयंति सदा मूत्रं सरितः सागरं यथा ॥
सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते मुखान्यासां सहस्रशः ।
नाडीभिरुपनीतस्य मूत्रस्यामाशयान्तरात् ॥
जाग्रतः स्वपतश्चैव स निःष्यन्देन पूर्यते ।
आ मुखात्सलिले न्यस्तः पार्श्वेभ्यः पूर्यते नवः॥
घटो यथा तथा विद्धि बस्तिर्मूत्रेण पूर्यते ।
एवमेव प्रवेशेन वातः पित्तं कफोऽपि वा ॥
मूत्रयुक्त उपस्नेहात्प्रविश्य कुरुतेऽश्मरीम् ।
अप्सु स्वच्छास्वपि यथा निषिक्तासु नवे घटे॥
कालांतरेण पङ्कः स्यादश्मरीसंभवस्तथा ।
संहन्त्यपो यथा दिव्या मारुतोऽग्निश्च वैद्युतः॥
तद्वद्बलासं बस्तिस्थमुष्मा संहन्ति सानिलः ।

पथरीना आधाररूप मूत्राशयनुं स्थान, मूत्राशयनो आकार, मूत्राशयमां मूत्र भरावानो प्रकार अने तेमां पथरी बनवानो प्रकार.

१३ नाभि, पीठ, कमर, वृषण, गुदा, साथळना संधि अने लिंग एओना मध्यमां एक द्वारवाळो, पातळी त्वचावाळो, नीचे रहेला मुखवाळो, तुंबडीना जेवा रूपवाळो अने शिराओना तथा स्नायुओना आश्रयवाळो मूत्राशय छे. मूत्राशय, मूत्राशयनो उपरनो भाग, लिंग, वृषणो अने गुदा एओ एक संबंधवाळां छे अने गुदाना अस्थिना छिद्रने लगती स्थितिवाळां छे. मूत्राशय के जे मलाधार पण केहेवाय छे ते प्राणोनुं उत्तम स्थानक छे. जेम नदीओ समुद्रने वधार्या करे छे तेम मूत्रनुं वहन करनारी पक्वाशयमां रहेली नाडीओ मूत्रने सर्वदा वधार्या करे छे. मूत्रनुं वहन करनारी बे धमनीओनी शाखारूप बीजी हजारो नाडीओ छे. एओनां हजारो मुखो सूक्ष्मपणाने लीधे जोवामां आवतां नथी. माणस जागतो होय अने सुतो होय त्यारे पण आमाशयना अंतरथी नाडीओए आणेला मूत्रना झरवाथी मूत्राशय पूराया करे छे. जेम मोहोडुं बाहार राखी पाणीमां डूबावेलो नवो घडो पोताना पडखाओमांथी पेसता जळवते भराई जाय छे तेम मूत्राशय नीचे रहेला मुखवाळो छतां पण उपरना भागोमांथी पेसता मूत्रवते भराई जाय छे. बगडेला वायु, पित्त तथा कफ ए दोषो पण मूत्रनी साथेज मूत्राशयमां प्रवेश करे छे अने प्रवेश करी समीपना भागोने क्लेदयुक्त करीने पथरीने बनावे छे. जेम नवा घडामां स्वच्छ पाणी भरवामां आव्युं होय तो पण अमुक समय जतां तेमां कीच बने छे तेम मूत्राशयमां पथरी गोठवाय छे. जेम आकाशमां रहेला मेघना जळने वायु तथा वीजळीरूप अग्नि कठण बनावी देछे (करारूप करे छे)

तेम वायु अने पित्त एओ मूत्राशयमां रहेला कफने घाटो बनावी दे छे.

१४ मारुते प्रगुणे बस्तौ मूत्रं सम्यक्प्रवर्तते ॥ विकारा विविधाश्चापि प्रतिलोमे भवन्ति हि ॥ मूत्राघाताः प्रमेहाश्च शुक्रदोषास्तथैव च । मूत्रदोषाश्च ये केचिद्बस्तावेव भवन्ति हि ॥

मूत्राशयमां थता बीजा विकारोनुं पण वायुज कारण छे.

१४ मूत्राशयमां वायु अनुकूल चालतो होय तो मूत्र सारी रीते प्रवर्त्ते छे अने जो उलटो चालतो होय तो अनेक विकारो उत्पन्न थाय छे. मूत्राघातो, प्रमेहो, वीर्यना दोषो तथा बीजा पण जे कोई मूत्रना दोषो छे तेओ मूत्राशयमांज थाय छे.

अध्याय ४ थो.

१ अथातो भगन्दराणां निदानं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'भगंदरनिदान' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वातपित्तश्लेष्मसंनिपातागन्तुनिमित्ताः शतपोनकोष्ट्रग्रीवपरिस्राविशंबूकावर्तान्मार्गिणो यथासंख्यं पञ्च भगंदरा भवन्ति ॥

भगंदरोनां निदानो तथा भेदो.

२ वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी अने आगंतुक कारणथी एम पांच कारणोथी पांच प्रकारना भगंदर थाय छे. वायुथी थएलो भगंदर **शतपोनक** केहेवाय छे, पित्तथी थएलो भगंदर **उष्ट्रग्रीव** केहेवाय छे, कफथी थएलो भगंदर **परिस्रावी** केहेवाय छे, त्रणे दोषोथी थएलो भगंदर **शंबूकावर्त्त** केहेवाय छे अने आगंतुक कारणथी थएलो भगंदर **उन्मार्गी** केहेवाय छे.

३ ते तु भगवद्गुदबस्तिप्रदेशदारणाच्च भगंदरा इत्युच्यन्ते ॥ अपक्काः पिडकाः पक्कास्तु भगंदराः ॥

भगंदर ए नामनो अर्थ अने ते रोग भगंदर क्यारे केहेवाय ते.

३ गुदाना अने मूत्राशयना प्रदेशने आ रोग भगनी (योनिनी) पेठे फाडी नाखे छे तेथी भगंदर केहेवाय छे. पाकेल न होय त्यांसुधी पिडका (फोडली) केहेवाय छे अने पाके त्यारे भगंदर केहेवाय छे.

४ तेषां तु पूर्वरूपाणि कटीकपालवेदना गुदकण्डूर्दाहः शोफश्च गुदस्य भवति ॥

भगंदरोनां पूर्वरूपो.

४ भगंदर थवानो होय त्यारे कमरमां भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे, गुदामां खरज आवे छे, गुदामां दाह थाय छे अने गुदामां सोजो थाय छे.

५ तत्रापथ्यसेविनां वायुः प्रकुपितः संनिवृत्तः स्थिरीभूतो गुदमभितोऽङ्गुले द्व्यङ्गुले वा मांसशोणिते प्रदूष्यारुणवर्णां पिडकां जनयति सास्य तोदादीन्वेदनाविशेषाञ्जनयत्यप्रतिक्रियमाणा च पाकमुपैति मूत्राशयाभ्यासगतत्वाच्च व्रणः प्रक्लिन्नः शतपोनकवदणुमुखैश्छिद्रैरापूर्यते तानि च छिद्राण्यजस्रं फेनानुविद्धमधिकमास्रावं स्रवन्ति व्रणश्च ताड्यते भिद्यते छिद्यते सूचीभिरिव निस्तुद्यते गुदं चावदीर्यते वातमूत्रपुरीषरेतसामप्यागमश्च तैरेव छिद्रैर्भवति तं भगंदरं शतपोनक इत्याचक्षते ॥

शतपोनक नामना भगंदरनुं संप्राप्तिपूर्वक लक्षण.

५ अपथ्य पदार्थोनुं सेवन करनारा माणसोनो प्रकुपित थएलो वायु पाछो फरी, स्थिर थईने गुदानी पासे एक आंगळ जेटला अथवा बे आंगळ

---

१ भगंदरोना कारणो तथा लक्षणो वगेरेना निरूपणविषेनो.

जेटला प्रदेशमां मांसने तथा रुधिरने दूषित करी राता वर्णवाळी फोडलीने उत्पन्न करे छे. ए फोडली भोकाया जेवी व्यथा वगेरे अनेक प्रकारनी व्यथाओने उत्पन्न करे छे अने जो चिकित्सा करवामां न आवे तो ए फोडली पाकी जाय छे. ए फोडली मूत्राशयना समीपमां होय छे तेथी तेनो व्रण क्लेद पामे छे अने चालणीना जेवां अथवा आ स्थानना १४ मा अध्यायना १४मा विषयमां कहेला शतपोनक नामना व्याधिना जेवां झीणां मोहोडांवाळां छिद्रोथी पूराय छे. ए छिद्रोमांथी निरंतर फीणवाळो अत्यंत स्राव थाय छे अने व्रण जाणे दंडादिकथी ठोकातो होय, शस्त्रोथी भेदातो तथा छेदातो होय अने सोईओथी भोंकातो होय एवी व्यथा पामे छे तथा गुदा चीराई जाय छे. ए माणसने वायु, मूत्र, विष्टा तथा वीर्य एओ पण ते व्रणनां छिद्रोमांथीज नीकळे छे. आ भगंदरने आचार्यो **शतपोनक** केहे छे.

६ पित्तं तु प्रकुपितमनिलेनाधःप्रेरितं पूर्ववदवस्थितं रक्तां तन्वीमुच्छ्रितामुष्ट्रग्रीवाकारां पिडकां जनयति। सास्य चोषादीन्वेदनाविशेषाञ्जनयत्यप्रतिक्रियमाणा च पाकमुपैति व्रणश्चाग्निक्षाराभ्यामिव दह्यते दुर्गन्धमुष्णमास्रावं स्रवत्युपेक्षितश्च वातमूत्रपुरीषरेतांसि विसृजति तं भगंदरमुष्ट्रग्रीव इत्याचक्षते ॥

उष्ट्रग्रीव नामना भगंदरनुं संप्राप्तिपूर्वक लक्षण.

६ प्रकुपित थएलुं अने वायुए नीचे प्रेरेलुं पित्त गुदानी पासे एक आंगळ जेटला अथवा बे आंगळ जेटला प्रदेशमां मांसने तथा रुधिरने दूषित करी राती, झीणी अने उंटनी डोक जेवा आकारवाळी उंची फोडलीने उत्पन्न करे छे. ए फोडली दाह वगेरे अनेक वेदनाओने उत्पन्न करे छे अने जो चिकित्सा करवामां न आवे तो पाकी जाय छे. ते फोडलीनो व्रण जाणे अग्निथी के क्षारथी बाळी नखातो होय एवी बळतराथीयुक्त थाय छे, दुर्गंधवाळा उना स्रावने स्रवे छे अने जो चिकित्सा वगरनो राखवामां आवे तो ते व्रणमांथीज वायु, मूत्र, विष्टा तथा वीर्य नीकळे छे. आ भगंदरने आचार्यो **उष्ट्रग्रीव** केहे छे.

७ श्लेष्मा तु प्रकुपितः समीरणेनाधःप्रेरितः पूर्ववदवस्थितः शुक्लावभासां स्थिरां कण्डूमतीं पिडकां जनयति सास्य कण्ड्वादीन्वेदनाविशेषाञ्जनयत्यप्रतिक्रियमाणा च पाकमुपैति व्रणश्च कठिनः संरम्भी कण्डूप्रायः पिच्छिलमजस्रमास्रावं स्रवत्युपेक्षितश्च वातमूत्रपुरीषरेतांसि विसृजति तं भगंदरं परिस्रावीत्याचक्षते ।

परिस्रावी नामना भगंदरनुं संप्राप्तिपूर्वक लक्षण.

७ प्रकुपित थएलो अने वायुए नीचे प्रेरेलो कफ गुदानी पासे एक आंगळ जेटला अथवा बे आंगळ जेटला प्रदेशमां मांसने तथा रुधिरने दूषित करी सफेद अवभासवाळी, स्थिर (कठण) अने खरजवाळी फोडलीने उत्पन्न करे छे. ए फोडली ते रोगीने खरज वगेरे अनेक प्रकारनी वेदनाओ करे छे अने जो चिकित्सा करवामां न आवे तो पाकी जाय छे. ए पाकेली फोडलीनो व्रण कांईक कठण होय छे, सोजावाळो थाय छे, घणी खरजवाळो थाय छे अने तेमांथी निरंतर चीकणो स्राव थाय छे. ए व्रणने जो चिकित्सा वगरनो राखवामां आवे तो तेमांथीज वायु, मूत्र, विष्टा तथा वीर्य नीकळे छे. आ भगंदरने आचार्यो **परिस्रावी** केहे छे.

८ वायुः प्रकुपितः प्रकुपितौ पित्तश्लेष्माणौ परिगृह्याऽधो गत्वा पूर्ववदवस्थितः पादाङ्गुष्ठप्रमाणां सर्वलिङ्गां पिडकां जनयति सास्य तोददाहकण्ड्वादीन्वेदनाविशेषाञ्जनयत्यप्रतिक्रियमाणा च पाकमुपैति व्रणश्च नानाविध-

वर्णमास्रावं स्रवति पूर्णनदीशम्बूकावर्तवच्चात्र समुत्तिष्ठन्ति वेदनाविशेषास्तं भगंदरं शम्बूकावर्तमित्याचक्षते ।

शंबूकावर्त्त नामना भगंदरनुं संप्राप्तिपूर्वक लक्षण.

८ प्रकुपित थएलो वायु प्रकुपित थएला पित्तने तथा प्रकुपित थएला कफने साथे लई, नीचे जई, गुदानी पासे एक आंगळ जेटला अथवा बे आंगळ जेटला प्रदेशमां मांसने तथा रुधिरने दूषित करी पगना अंगुठा जेवडी अने उपर कहेलां त्रणे दोषोनां चिह्नोवाळी फोडलीने उत्पन्न करे छे. ए फोडली ते रोगीने सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा, दाह तथा खरज वगेरे अनेक प्रकारनी वेदनाओ करे छे अने जो चिकित्साथी रहित राखवामां आवे तो पाकी जाय छे. ए पाकेली फोडलीना व्रणमांथी अनेक प्रकारना वर्णोवाळो स्राव थाय छे अने ते व्रणमां भरपूर नदीमां थती शंखलांओनी चकरीओनी पेठे अनेक प्रकारनी वेदनाओ उठे छे अने स्रावनो मार्ग पण शंखलांनी चकरी जेवो थाय छे. आ भगंदरने आचार्यो शंबूकावर्त्त केहे छे. (शंखलांओनुं नाम 'शंबूक' छे ते उपरथी आ भगंदर शंबूकावर्त्त केहेवाय छे.)

९ मूढेन मांसलुब्धेन यदस्थिशल्यमन्नेन सहाभ्यवहृतं यदावगाढपुरीषोन्मिश्रमपानेनाधः प्रेरितमसम्यगागतं गुदं क्षिणोति तत्र क्षतनिमित्तः कोथ उपजायते तस्मिंश्च क्षते पूयरुधिरावकीर्णमांसकोथे भूमाविव जलप्रक्लिन्नायां क्रिमयः संजायन्ते ते भक्षयन्तो गुदमनेकधा पार्श्वतो दारयन्ति तस्य तैर्मार्गैः कृमिकृतैर्वातमूत्रपुरीषरेतांस्यभिनिःसरन्ति तं भगंदरमुन्मार्गीत्याचक्षते ।

उन्मार्गी नामना भगंदरनुं संप्राप्तिपूर्वक लक्षण.

९ मांस खावामां अत्यंत आसक्तिवाळा मूढ माणसे अन्ननी साथे जे अस्थिरूप शल्य खाधेलुं होय ते शल्य घाटी विष्टाथी संयुक्त थई, अपानवायुनी गतिने लीधे नीचेना भागमां ठेलाई, आडुंतेडुं आवी जईने गुदाने जखमी करे छे के जे जखमने लीधे तेमां दुर्गंधवाळो सडो थाय छे. परूथी तथा रुधिरथी व्याप्त थएला मांसना सडावाळा ते जखममां जेम जळना क्लेदवाळी पृथ्वीमां कीडाओ उत्पन्न थाय छे तेम कीडाओ उत्पन्न थाय छे. ए कीडाओ भक्षण करता करता गुदाने पासेना प्रदेशोमां अनेक प्रकारे फाडी नाखे छे अने ते कीडाओए करेला मार्गोमांथी वायु, मूत्र, विष्टा तथा वीर्य नीकळे छे. आ भगंदरने आचार्यो **उन्मार्गी** केहे छे. (कांटा वगेरेथी, नखथी, के खंजवाळवा वगेरेथी पण जखम थतां गुदामां फोडली थईने कीडाओवाळो व्रण थाय छे ते पण उन्मार्गी भगंदर गणाय छे. कीडाओए करेला आडा मार्गोमांथी विष्टा वगेरे नीकळे छे तेथी आने 'उन्मार्गी' नाम आपेलुं छे.)

१० भवन्ति चात्र ॥

उत्पद्यतेऽल्परुक्छोफा क्षिप्रं चाप्युपशाम्यति ।
पाय्वन्तदेशे पिडका सा ज्ञेयाऽन्या भगंदरात् ॥
भागंदरी तु विज्ञेया पिडकाऽतो विपर्ययात् ।
पायोः स्याद्व्यङ्गुले देशे गूढमूला सरुग्ज्वरा ॥

बीजी फोडलीमां अने भगंदरनी फोडलीमां तफावत.

१० आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "गुदाना छेडाना प्रदेशमां अल्प पीडावाळी तथा अल्प सोजावाळी जे फोडली उत्पन्न थाय छे अने पाछी तुरत शांत थई जाय छे ते फोडलीने भगंदरनी फोडलीथी जुदी समजवी. भगंदरनी फोडली तो एथी उलटा प्रकारनीज थाय छे अने ते गुदानी पासे एक आंगळना अथवा बे आंगळना प्रदेशमां गूढ मूळवाळी थाय छे तथा मोटी पीडाथी अने ज्वरथी संयुक्त थाय छे."

११ यानयानान्मलोत्सर्गात्कण्डूरुग्दाहशोफवान्। पायुर्भवेद्रुजः कट्यां पूर्वरूपं भगंदरे ॥

भगंदरनां पूर्वरूप.

११ वाहनपर बेसीने पंथ करवाथी तथा विष्टाना उत्सर्गथी गुदा खरजवाळी, वेदनावाळी, दाहवाळी तथा सोजावाळी थई जाय अने कमरमां पीडाओ उठे ए भगंदरनुं पूर्वरूप समजवुं.

१२ घोराः साधयितुं दुःखाः सर्व एव भगंदराः। तेष्वसाध्यस्त्रिदोषोत्थः क्षतजश्च भगंदरः ॥

भगंदरोनुं कष्टसाध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

१२ सघळा प्रकारना भगंदरो अतिदुःखदायी छे अने कष्टसाध्य छे. एओमां त्रणे दोषथी उत्पन्न थतो शंबूकावर्त्त नामनो भगंदर अने क्षतथी थतो उन्मार्गी नामनो भगंदर एओ तो असाध्यज छे.

अध्याय ९ मो.

१ अथातः कुष्ठनिदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कुष्ठनिदान' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मिथ्याहाराचारस्य विशेषाद्गुरुविरुद्धासात्म्याजीर्णाहिताशिनः स्नेहपीतस्य वान्तस्य वा व्यायामग्राम्यधर्मसेविनो ग्राम्यानूपौदकमांसानि वा पयसाभीक्ष्णमश्नतो यो वा मज्जत्यप्सूष्माभितप्तः सहसा छर्दिं वा प्रतिहन्ति तस्य पित्तश्लेष्माणौ प्रकुपितौ परिगृह्यानिलः प्रवृद्धस्तिर्यग्गाः शिराः संप्रतिपद्य समुद्धूय बाह्यं मार्गं प्रति समन्ताद्विक्षिपति। यत्र यत्र च दोषो विक्षिप्तो निःसरति तत्र तत्र मण्डलानि प्रादुर्भवन्त्येवमुत्पन्नस्त्वचि दोषस्तत्र च परिवृद्धिं प्राप्याऽप्रतिक्रियमाणोऽभ्यन्तरं प्रतिपद्यते धातून्दूषयन् ।

कुष्ठनां (कोढनां) दूरनां तथा पासेनां निदानो अने संप्राप्ति.

२ अनुचित आहार तथा अनुचित विहार करवाथी, विशेषे करी भारे, विरुद्ध, असात्म्य के अहित भोजन करवाथी, अजीर्णमां भोजन करवाथी, स्नेहपान कर्या पछी के वमन कर्या पछी कसरतनुं के मैथुननुं सेवन करवाथी, ग्राम्य, आनूप के जलजंतुओनां मांसोनुं दूधनी साथे वारंवार भोजन करवाथी, उलटीनो प्रतिघात करवाथी अने गरमीथी तपी जइने जलदी जळमां डूबकी मारवाथी पित्त, कफ तथा वायु ए त्रणे दोषो प्रकुपित थाय छे. प्रकोप पामेलो वायु प्रकोप पामेला ए पित्तने तथा कफने साथे लई, आडी शिराओमां आवी, ते शिराओने चलायमान करीने पित्तने तथा कफने चोतरफ शरीरना बाहारना मार्गो तरफ फेंके छे. ए प्रमाणे वायुए फेकेला दोष जे जे प्रदेशमां नीकळे छे ते ते प्रदेशमां कोढरूप मंडलो (चकरडां) उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे चामडीमां उत्पन्न थएलो दोष चामडीमांज वृद्धि पामी, जो चिकित्साथी रहित राखवामां आवे तो धातुओने दूषित करतो करतो अंदर पेसे छे.

३ तस्य पूर्वरूपाणि त्वक्पारुष्यमकस्माद्रोमहर्षः कण्डूः स्वेदबाहुल्यमस्वेदनं वाङ्गप्रदेशानां स्वापः क्षतविसर्पणमसृजः कृष्णता चेति॥

कोढनां पूर्व रूपो.

३ कोढ थवानो होय त्यारे चामडी खरसट थई जाय छे, अकस्मात् रुवाडां उभां थई जाय छे, खरज आवे छे, पसीनो बहु थई पडे छे अथवा थतोज नथी, अंगोने स्पर्शनी खबर पडती नथी, व्रणो फेलाता जाय छे अने लोही काळुं थई जाय छे.

१ कोढनां कारणो तथा संप्राप्ति वगेरेनां निरूपणविषेनो.

४ तत्र सप्त महाकुष्ठान्येकादश क्षुद्रकुष्ठान्येवमष्टादश कुष्ठानि भवन्ति । तत्र महाकुष्ठान्यरुणौदुम्बरर्क्षजिह्वकपालकाकणकपुण्डरीकदद्रुकुष्ठानीति । क्षुद्रकुष्ठान्यपि स्थूलारुष्कं महाकुष्ठमेककुष्ठं चर्मदलं विसर्पः परिसर्पः सिध्मं विचर्चिका किटिभं पामा रकसा चेति ॥

कोढोनी संख्या.

४ सात महाकुष्ठ अने अगीयार क्षुद्र कुष्ठ ए रीते कुष्ठो अढार प्रकारना छे. एओमां अरुण, औदुंबर, ऋक्षजिह्व, कपाल, काकणक, पुंडरीक अने दद्रुकुष्ठ ए सात महाकुष्ठ केहेवाय छे. स्थूलारुष्क, महाकुष्ठ, एककुष्ठ, चर्मदल, विसर्प, परिसर्प, सिध्म, विचर्चिका, किटिभ, पामा अने रकसा ए अगीयार महाकुष्ठो केहेवाय छे. (आ जे संख्या बतावी छे ते केवळ दिक्प्रदर्शन मात्र छे एम समजवुं. केम के कोढोनी संख्या मुकरर करी शकातीज नथी.)

५ सर्वाणि कुष्ठानि सवातानि सपित्तानि सश्लेष्माणि सक्रिमीणि च भवन्त्युत्सन्नतस्तु दोषग्रहणमभिभवात् ॥

सघळा कोढोमां सघळा दोषोना तथा कृमिओना संभवविषे.

५ सघळा प्रकारना कुष्ठो वात, पित्त अने कफ ए त्रणे दोषोवाळा होय छे अने कृमिओ (कीडाओ)वाळा पण होय छे. जो के आ प्रमाणे कुष्ठ त्रिदोषजन्यज छे तो पण तेमां जे दोषनी उल्वणताथी बीजा बे दोष दबाई गया होय ते दोषने प्रधानपणुं आपीने अमुक कुष्ठो वायुथी, अमुक कुष्ठो पित्तथी अने अमुक कुष्ठो कफथी थाय छे एम केहेवामां आवे छे.

६ तत्र वातेनारुणं पित्तेनौदुम्बरर्क्षजिह्वकपालकाकणकानि श्लेष्मणा पुण्डरीकं दद्रूकुष्ठं चेति तेषां तु महत्त्वं क्रियागुरुत्वादुत्तरोत्तरं धात्वनुप्रवेशादसाध्यत्वाच्चेति ॥

कया मोटा कोढमां कया दोषनुं प्राधान्य छे ? तथा सात महाकुष्ठ शाथी केहेवाय छे ?

६ एओमां अरुण वायुथी थाय छे. औदुंबर, ऋक्षजिह्व, कपाल अने काकणक एओ पित्तथी थाय छे. पुंडरीक अने दद्रूकुष्ठ एओ कफथी थाय छे. आ सात महाकुष्ठो (मोटा कोढो) केहेवाय छे तेनुं कारण ए छे के तेओ धातुओमां उत्तरोत्तर प्रवेश करे छे त्यारे असाध्य थाय छे अने साध्य होय त्यारे पण तेओनी चिकित्सा मोटा प्रयासथी थाय छे.

७ तत्र वातेनारुणाभानि तनूनि विसर्पीणि तोदभेदस्वापयुक्तान्यरुणानि ॥

पित्तेन पक्वोदुम्बरफलाकृतिवर्णान्यौदुम्बराणि ॥

ऋक्षजिह्वाप्रकाशखरत्वानि ऋक्षजिह्वानि ॥

कृष्णकपालिकाप्रकाशानि कपालकुष्ठानि ।

काकणन्तिकाफलसदृशान्यतीव रक्तकृष्णानि काकणकानि ॥

तेषां चतुर्णामप्योषचोषपरिदाहधूमायनानि क्षिप्रोत्थानप्रपाकभेदित्वानि क्रिमिजन्म च सामान्यानि लिङ्गानि ॥

पुण्डरीकपत्रप्रकाशानि पुण्डरीकाणि ।

अतसीपुष्पवर्णानि ताम्राणि वा विसर्पीणि पिडकावन्ति च दद्रूकुष्ठानि ।

तयोर्द्वयोरप्युत्सन्नता परिमण्डलता कण्डूश्चिरोत्थानत्वं चेति सामान्यरूपाणि ॥

सात महाकुष्ठोनां जूदां जूदां लक्षणो.

७ एओमां वायुनी उल्वणताने लीधे राता वर्णवाळां, पातळां, प्रसार पामनारां, सोइथी भोंकायाना जेवी तथा शस्त्रादिकथी भेदायाना जेवी व्यथावाळां तथा जडतावाळां जे मंडळो थाय छे तेओ अरुण केहेवाय छे.

पित्तनी उल्वणताने लीधे पाकेलां उंबरानां फळोना जेवा आकारवाळां तथा तेओना जेवाज

वर्णवाळां जे मंडळो थाय छे तेओ औदुंबर केहेवाय छे.

पित्तनीज उल्वणताने लीधे रींछनी जीभ जेवा वर्णवाळां तथा रींछनी जीभना जेवाज खरसटपणावाळां जे मंडळो थाय छे तेओ **ऋक्षजिह्व** केहेवाय छे.

पित्तनीज उल्वणताने लीधे काळी ठीकरीओ जेवा वर्णवाळां जे मंडळो थाय छे तेओ **कपालकुष्ठ** केहेवाय छे.

पित्तनीज उल्वणताने लीधे अत्यंत चणोठीना फळ जेवा वर्णवाळां एटले मध्यमां काळां अने अंतमां रातां अथवा मध्यमां रातां अने अंतमां काळां जे मंडळो थाय छे तेओ **काकणक** केहेवाय छे.

औदुंबर, ऋक्षजिह्व, कपाल अने काकणक ए चारे महाकुष्ठोमां ताप, चोस, बळतरा, धुंधवतां होय एवापणुं, (चमचमाट,) तुरत उठवुं, तुरत पाकवुं, तुरत भेदावुं अने कीडाओनी उत्पत्ति एटलां सामान्य चिह्नो थाय छे.

कफनी उल्वणताने लीधे कमळपत्रोना जेवा आकार तथा वर्णवाळां जे मंडळो थाय छे तेओ **पुंडरीक** केहेवाय छे.

कफनीज उल्वणताने लीधे अलसीना फूलना जेवा वर्णवाळां अथवा राता वर्णवाळां, प्रसार पामनारां अने फोडलीओवाळां जे मंडलो थाय छे तेओ **दद्रूकुष्ठ** (दादर) केहेवाय छे.

दद्रूकुष्ठ अने पुंडरीक ए बन्ने महाकुष्ठोमां उंचा मंडलवाळापणुं, गोळपणुं, खरज अने लांबे समये उठनारपणुं एटलां सामान्य चिह्नो थाय छे. (काळी तथा उंडां मूळवाळी जे दादर थाय छे ते महाकुष्ठोमां गणाय छे अने ए शिवाय बीजा प्रकारनी तथा उंडां मूळवगरनी जे दादर थाय छे ते तो क्षुद्र कुष्ठोमांज गणवा योग्य छे. चरके पण एवी रीतनी दादरने क्षुद्र कुष्ठोमां गणी छे.)

८ क्षुद्रकुष्ठान्यत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥

स्थूलानि संधिष्वतिदारुणानि
स्थूलारुंषि स्युः कठिनान्यरूंषि ।
त्वक्कोचभेदस्वपनाङ्गसादाः
कुष्ठे महत्पूर्वयुते भवन्ति ॥
कृष्णारुणं येन भवेच्छरीरं
तदेककुष्ठं प्रवदन्त्यसाध्यम् ।
स्युर्येन कण्डूव्यथनौषचोषा-
स्तलेषु तच्चर्मदलं वदन्ति ॥
विसर्पवत्सर्पति सर्वतो य-
स्त्वग्रक्तमांसान्यभिभूय शीघ्रम् ।
मूर्छाविदाहारतितोदपाकान्
कृत्वा विसर्पः स भवेद्विकारः ॥
शनैः शरीरे पिडकाः स्रवन्त्यः
सर्पन्ति यास्तं परिसर्पमाहुः ।
कण्डून्वितं श्वेतमपायि सिध्मं
विद्यात्तनु प्रायश ऊर्ध्वकाये ॥
राज्योऽतिकण्डूर्तिरुजः सुरूक्षा
भवन्ति गात्रेषु विचर्चिकायाम् ।
कण्डूमती दाहरुजोपपन्ना
विपादिका पादगतेयमेव ॥
यत्स्रावि वृत्तं घनमुग्रकण्डू
तत्स्निग्धकृष्णं किटिभं वदन्ति ।
सास्रावकण्डूपरिदाहवद्भिः
पामाऽणुकाभिः पिडकाभिरूह्या ॥
स्फोटैः सदाहैरति सैव कच्छूः
स्फिक्पाणिपादप्रभवैर्निरूप्या ।
कण्डून्विता या पिडका शरीरे
संस्रावहीना रकसोच्यते सा ॥

अगीयार क्षुद्र कुष्ठोनां जूदां जूदां लक्षणो.

८ हवे क्षुद्र कुष्ठोनां लक्षणोनुं निरूपण करीए छीए.

संधिओमां जाडा, अतिदारुण, (कष्टसाध्य) अने कठणपणावाळा जे व्रणो थाय छे तेओ **स्थूलारुष्क** केहेवाय छे.

महाकुष्ठ थएल होय तो चामडीनो संकोच थाय छे, चामडी भेदाई जाय छे, चामडी अचे-

तन (स्पर्शना ज्ञानवगरनी) थई जाय छे अने अंगोमां ग्लानि थाय छे.

जे कोढथी शरीर काळुं तथा रातुं थई जाय छे ते कोढ **एककुष्ठ** केहेवाय छे. आ कोढ असाध्य छे एम केहेवामां आवे छे.

जे कोढथी हाथनां तथा पगनां तळांओमां खरज, व्यथा, दाह अने चोस थाय छे ते कोढने वैद्यो **चर्मदल** केहे छे.

जे कोढ मूर्छाने, दाहने, अरुचिने तथा भोंकाया जेवी व्यथाने उत्पन्न करीने, पाकीने अने त्वचानो, रुधिरनो तथा मांसनो पराभव करीने विसर्पनी पेठे शरीरमां तुरत चोतरफ फेलाय छे ते कोढ **किसर्प** केहेवाय छे.

जे फोडलीओ स्राव करती करती शरीरमां धीरे धीरे फेलाय छे ते फोडलीओने वैद्यो **परिसर्प** केहे छे.

जे कोढ खरजवाळो, सफेद, पातळो तथा वधारे कष्ट न आपे एवो थाय छे ते **सिध्म** केहेवाय छे. आ कोढ घणुं करीने शरीरना उपरना भागमां, विशेषे करी छातीमां अने कोई वखते नाभिथी नीचेना भागमां पण थाय छे. (जे सिध्म धातुओमां पेसी गयुं होय ते तो महाकुष्ठज गणाय छे. चरके पण धातुओमां पेसी गएला सिध्मने महाकुष्ठोमां गणेलुं छे.)

गात्रोमां (हस्तोमां) अत्यंत खरजनी पीडावाळी, अत्यंत वेदनावाळी अने अत्यंत रूक्षपणावाळी रेखाओ (फाटो) थई जाय छे ते कोढ **विचर्चिका** केहेवाय छे. खरजवाळी, दाहवाळी तथा वेदनावाळी आ विचर्चिका जो पगमां थई होय तो तेज विपादिका केहेवाय छे.

स्राववाळी, गोळ, घाटी, उग्र खरजवाळी, स्निग्ध अने काळी जे कीटी थाय छे ते कोढ **किटिभ** केहेवाय छे.

स्राववाळी, खरजवाळी तथा बळतरावाळी जे नाहानी नाहानी फोडलीओ थाय छे ते कोढ **पामा** (खस) केहेवाय छे. ए पामाज जो तीव्र वेदनावाळा फोडलाओथी युक्त होय अने हाथ पगमां तथा कूलाओमां थएल होय तो कच्छू केहेवाय छे.

शरीरमां खरजवाळी अने स्राववगरनी जे फोडलीओ थाय छे ते कोढ **रकसा** केहेवाय छे.

९ अरुः ससिध्मं रकसा महच्च
यच्चैककुष्ठं कफजान्यमूनि ।
वायोः प्रकोपात्परिसर्पमेकं
शेषाणि पित्तप्रभवाणि विद्यात् ॥

कया क्षुद्रकुष्ठमां कया दोषनुं प्राधान्य छे ?

९ उपर कहेला अगीयार क्षुद्रकुष्ठोमां स्थूलारुष्क, सिध्म, रकसा, महाकुष्ठ तथा एककुष्ठ एओ कफथी थाय छे. (एओमां कफनी प्रधानता छे.) एक परिसर्प वायुना प्रकोपथी थाय छे. (वायुनी प्रधानतावाळो छे) बाकीना क्षुद्रकुष्ठो पित्तना प्रकोपथी थाय छे. (पित्तनी प्रधानतावाळा छे.)

१० किलासमपि कुष्ठविकल्प एव । तत्त्रिविधं वातेन पित्तेन श्लेष्मणा चेति । कुष्ठकिलासयोरन्तरं त्वग्गतमेव किलासमपरिस्रावि च । तद्वातेन मण्डलमरुणं परुषं परिध्वंसि च । पित्तेन पद्मपत्रप्रतीकाशं सपरिदाहं च । श्लेष्मणा श्वेतं स्निग्धं बहलं कण्डूमच्च ॥

तेषु संभिन्नमण्डलमन्तर्जातरक्तरोम चासाध्यमग्निदग्धं च ।

किलास के जे कोढनीज एक जात अथवा विकृति छे तेनां निदानो, भेदो, लक्षणो तथा अमुक प्रकारना किलासनुं असाध्यपणुं.

१० किलास पण कोढनीज एक जात अथवा विकृति छे. वायुथी थएलुं, पित्तथी थएलुं अने कफथी थएलुं ए रीते किलास त्रण प्रकारनुं छे. कोढ अने किलास एओ वच्चे तफावत ए छे के

कोढ रसमां अने रुधिर वगेरेमां पण रहे छे तथा स्त्राववाळो पण होय छे अने किलास तो रसमां-ज रहे छे अने स्त्राववगरनुंज होय छे. (बीजा ग्रंथोमां तो किलासने श्वित्र तथा दारुण ए बीजां पण बे नामो आपीने कह्युं छे के श्वित्र त्रण दोषोथी थाय छे तथा रुधिर आदि त्रण धातुओमां रहे छे.) वायुथी थएलुं किलास गोळ, रातुं, खरसट तथा जेमांथी कणीओ खरे एवुं होय छे. पित्तथी थएलुं किलास कमळपत्रना जेवा वर्णवाळुं (मध्यमां श्वेत तथा अंतमां रातुं) तथा बळतरावाळुं होय छे. कफथी थएलुं किलास श्वेत वर्णवाळुं होय छे, जाडुं होय छे अने खरजवाळुं होय छे.

एओमां जे किलास परस्परथी मिश्रित मंडलोवाळुं अथवा जेना मध्यमां रातां रूवाडां उत्पन्न थयां होय एवुं होय ते असाध्य छे. अग्निथी दाझवाने लीधे जे किलास उत्पन्न थयुं होय ते पण असाध्य छे.

११ कुष्ठेषु रुक्त्वक्सङ्कोचस्वापस्वेदशोफभेदकौण्यस्वरोपघाता वातेन ।

पाकावदरणाङ्गुलिपतनकर्णनासाभङ्गाक्षिरागसत्वोत्पत्तयः पित्तेन ।

कण्डूवर्णभेदशोफास्त्रावगौरवाणि श्लेष्मणा॥

कोढोमां दोषोनी उल्वणतानी परीक्षा करावनारां बीजां पण लक्षणो.

११ कोढोमां वायुनी उल्वणता होय तो वेदना थाय छे, त्वचानो संकोच थाय छे, स्पर्शनी खबर पडती नथी, पसीनो आव्या करे छे, (पसीनानो अभाव पण थई जाय छे,) सोजो थाय छे, त्वचानुं भेदन थाय छे, हाथनुं टुंठापणुं थाय छे अने स्वरनो उपघात थाय छे.

कोढोमां पित्तनी उल्वणता होय तो पाक थाय छे, त्वचा वगेरे फाटी जाय छे, आंगळीओ पडी जाय छे, काननो तथा नाकनो भंग थाय छे, आंखोमां रताश थाय छे अने कीडाओनी उत्पत्ति थाय छे.

कोढोमां कफनी उल्वणता होय तो खरज आव्या करे छे, वर्ण बदली जाय छे, सोजो थाय छे, स्राव थाय छे अने अंगोमां भारेपणुं थाय छे.

१२ तत्रादिबलप्रवृत्तं पुण्डरीकं काकणकं चासाध्यम् ॥

अमुक कोढोनुं असाध्यपणुं.

१२ जे कोढ आदिबलप्रवृत्त होय ते असाध्य छे अने पुंडरीक तथा काकणक पण असाध्य छे. (आदिबलप्रवृत्तनुं लक्षण सूत्रस्थानना २४ मा अध्यायना त्रीजा विषयमां जुवो.)

१३ भवन्ति चात्र ॥

यथा वनस्पतिर्जातः प्राप्य कालप्रकर्षणम् ।
अन्तर्भूमिं विगाहेत मूलैर्वृष्टिविवर्द्धितैः ॥
एवं कुष्ठं समुत्पन्नं त्वचि कालप्रकर्षतः ।
क्रमेण धातून्व्याप्नोति नरस्याप्रतिकारिणः ॥
स्पर्शहानिः स्वेदनत्वमीषत्कण्डूश्च जायते ।
वैवर्ण्यं रूक्षभावश्च कुष्ठे त्वचि समाश्रिते ॥
त्वक्स्वापो रोमहर्षश्च स्वेदस्याभिप्रवर्तनम् ।
कण्डूर्विपूयकश्चैव कुष्ठे शोणितसंश्रिते ॥
बाहुल्यं वक्त्रशोषश्च कार्कश्यं पिडकोद्गमः ।
तोदः स्फोटः स्थिरत्वं च कुष्ठे मांससमाश्रिते॥
दौर्गन्ध्यमुपदेहश्च पूयोऽथ क्रिमयस्तथा ।
गात्राणां भेदनं चापि कुष्ठे मेदःसमाश्रिते ॥
नासाभङ्गोऽक्षिरागश्च क्षते च क्रिमिसम्भवः ।
भवेत्स्वरोपघातश्च अस्थिमज्जसमाश्रिते ॥
कौण्यं गतिक्षयोऽङ्गानां संभेदः क्षतसर्पणम्
शुक्रस्थानगते लिङ्गं प्रागुक्तानि तथैव च ॥

कोढो धातुओमां प्रवेश करे छे ते विषयमां दृष्टांत अने ते ते धातुओमां पेठेला कोढोनां जूदां जूदां लक्षणो.

१३ आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमु-

रथी कह्युं छे के जेम उत्पन्न थएलुं झाड जेम जेम वधारे वखत जतो जाय तेम तेम वृष्टिने लीधे वधतां जतां मूळोथी धरतीमां वधारे वधारे उंडुं पेसे छे तेम त्वचामां उत्पन्न थएलो कोढ जो चिकित्साथी रहित राखवामां आवे तो जेम जेम वखत जतो जाय तेम तेम अनुक्रमे धातुओमां व्याप्त थाय छे.

कोढ जो रसमां पेठो होय तो स्पर्शनी खबर पडती नथी, पसीनो बहु आव्या करे छे, थोडी थोडी खरज आवे छे अने त्वचानुं विवर्णपणुं तथा रूक्षपणुं थाय छे.

कोढ जो रुधिरमां पेठो होय तो त्वचा जड (स्पर्शना ज्ञानवगरनी) थाय छे, रूवाडां उभां थाय छे, पसीनो बहु आव्या करे छे, खरज आवे छे अने दुर्गंधपणुं थाय छे.

कोढ जो मांसमां पेठो होय तो मंडलो जाडां थाय छे, मोहोडामां शोष थाय छे, खरसटपणुं थाय छे, फोडलीओ उपडे छे, भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे, चामडी फाटी जाय छे अने कोढनुं कठणपणुं थाय छे.

कोढ जो मेदमां पेठो होय तो दुर्गंधपणुं थाय छे, शरीर खरडाएलुं थई जाय छे, परु उत्पन्न थाय छे, कीडा पडे छे अने गात्रोनुं भेदन थाय छे.

कोढ जो अस्थिमां के मज्जामां पेठो होय तो नाक भांगी जाय छे, आंखोमां रताश थाय छे, क्षतमां कीडा पडे छे अने स्वरनो उपघात थाय छे.

कोढ वीर्यना (रजना के रेतना) स्थानमां पेठो होय तो हाथ ठुंठा थई जाय छे, अंगोनां चलन वगेरेनो क्षय थाय छे, अंगोनुं भेदन थाय छे, व्रणो फेलाय छे अने उपर लखेलां चिह्नो पण थाय छे."

१४ स्त्रीपुंसयोः कुष्ठदोषाद्दुष्टशोणितशुक्रयोः ।
यदपत्यन्तयोर्जातं ज्ञेयं तदपि कुष्ठितम् ।

रजमां तथा वीर्यमां पेठेलो कोढ संतानोने पण लागू पडे छे.

१४ जे स्त्रीपुरुषोनां रज तथा वीर्य कोढना दोषथी दुष्ट थएलां होय तेओने जे संतानो थाय तेओ पण कोढीयांज थाय छे.

१५ कुष्ठमात्मवतः साध्यं त्वग्रक्तपिशिताश्रितम् ।
मेदोगतं भवेद्याप्यमसाध्यमत उत्तरम् ॥

धातुओमां पेठेला कोढनुं साध्यपणुं, याप्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

१५ कोढ रसमां, रुधिरमां के मांसमां पेठेलो छतां पण रोगी जो बराबर पथ्य पाळनार होय तो तेनो कोढ साध्य थाय छे. मेदमां पेठेलो कोढ याप्य छे अने मेद पछीना धातुओमां एटले अस्थिमां, मज्जामां के वीर्यना स्थानमां पेठो होय तो असाध्यज छे एम समजवुं.

१६ ब्रह्मस्त्रीसज्जनवधपरस्वहरणादिभिः ॥
कर्मभिः पापरोगस्य प्राहुः कुष्ठस्य संभवम् ।
म्रियते यदि कुष्ठेन पुनर्जातेऽपि गच्छति ॥
नातः कष्टतरो रोगो यथा कुष्ठं प्रकीर्तितम् ।
आहाराचारयोःप्रोक्तामास्थाय महतीं क्रियाम् ॥
औषधीनां विशिष्टानां तपसश्च निषेवणात् ।
यस्तेन मुच्यते जन्तुः स पुण्यां गतिमाप्नुयात् ॥

जेओथी कोढ थाय एवां पापो, मरण पामेला कोढीया माणसने पुनर्जन्ममां पण कोढनी प्राप्ति अने असाधारण प्रयत्न करीने पण कोढ टाळवानी जरूर.

१६ ब्रह्महत्या, स्त्रीवध, सज्जनवध अने परधनहरण इत्यादिक पापकर्मोना योगथीज कोढ नामनो दुष्ट रोग थाय छे. जो कोढीओ माणस कोढसहित मरी जाय तो पुनर्जन्ममां पण ते कोढीओज थाय छे. कोढ जेवो बीजो कोइ पण रोग अत्यंत खराब नथी. आम छे एटला माटे

आहारनी तथा विहारनी आ ग्रंथमां कह्या प्रमाणे सघळी उत्तमोत्तम युक्ति राखी, उत्तम औषधिओनुं मोटुं सेवन राखी अने तपश्चर्यानुं पण अतिसेवन राखीने जेम बने तेम कोढमांथी मुक्त थवुं जोइए. जे माणस एप्रमाणे करीने कोढमांथी मुक्त थाय तेने पवित्र गतिनी प्राप्ति थाय छे.

१७प्रसङ्गाद्गात्रसंस्पर्शान्निश्वासात्सहभोजनात्।
सहशय्यासनाच्चापि वस्त्रमाल्यानुलेपनात्॥
कुष्ठं ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभिष्यन्द एव च ।
औपसर्गिकरोगाश्च सङ्क्रामन्ति नरान्नरम् ॥

कोढ वगेरे केटलाएक रोगो संसर्गथी पण थाय छे.

१७ कोढ, ज्वर, शोष, नेत्राभिष्यंद अने शीतला वगेरे रोगो रोगीनी साथे मैथुनप्रसंगथी, रोगीना गात्रनो स्पर्श करवाथी, रोगीनो निश्वास लेवाथी, रोगीनी साथे भोजन करवाथी, रोगीनी साथे सूवाथी, रोगीनी साथे बेसवाथी, रोगीनुं वस्त्र धरवाथी, रोगीए पेहेरेलां पुष्पो धरवाथी अने रोगीए धरेला चंदन वगेरेनुं लेपन करवाथी रोगीना शरीरमांथी बीजा माणसना शरीरमां पण प्रवेश करे छे. आम छे एटला माटे कोढ वगेरेना दरदीनो संसर्ग करवो पण योग्य नथी.

अध्याय ६ ठ्ठो.

१ अथातः प्रमेहनिदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'प्रमेहनिदान' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ दिवास्वप्नाव्यायामालस्यप्रसक्तं शीतस्निग्धमधुरमेद्यद्रवान्नपानसेविनं पुरुषं जानीयात्प्रमेही भविष्यतीति ।

प्रमेहनां दूरनां निदानो.

२ जे माणस दिवसे सूइ रेहेवाना अभ्यासवाळो, कदी पण कसरत–मेहेनत नहीं करनारो, आलस्यमांज लागेलो अने शीत, स्निग्ध, मधुर, मेदने उत्पन्न करनारां के द्रवरूप अन्नपानोनुं सेवन करनारो होय ते माणसने प्रमेह थशे एम जाणवुं.[२]

३ तस्य चैवं प्रवृत्तस्यापरिपक्का एव वातपित्तश्लेष्माणो यदा मेदसा सहैकत्वमुपेत्य मूत्रवाहिस्रोतांस्यनुसृत्याधो गत्वा बस्तेर्मुखमाश्रित्य निर्भिद्यन्ते तदा प्रमेहाञ्जनयन्ति ।

प्रमेहोनी संप्राप्ति.

३ एवी पद्धतिवाळा माणसना वात, पित्त अने कफ ए दोषो पोतानी आमदशामांज मेद वगेरेनी साथे एकता पामी, मूत्रनुं वहन करनारां स्रोतोने अनुसरी, नीचे जई, मूत्राशयना मोहोडानो आश्रय करीने ज्यारे बाहार नीकळवा लागे छे त्यारे प्रमेहोने उत्पन्न करे छे.

४ तेषां तु पूर्वरूपाणि हस्तपादतलदाहः स्निग्धपिच्छिलगुरुता गात्राणां मधुरशुक्लमूत्रता तन्द्रा सादः पिपासा दुर्गन्धश्च श्वासस्तालुगलजिह्वादन्तेषु मलोत्पत्तिर्जटिलीभावः केशानां वृद्धिश्च नखानाम् ।

प्रमेहनां पूर्वरूपो.

४ ज्यारे कोइ पण प्रमेह थवानो होय त्यारे हाथनां तथा पगनां तळांओमां दाह थाय छे, गात्रो स्निग्ध, चीकासवाळां तथा भारे थइ जाय छे, मूत्र मधुर तथा सफेद थाय छे, तंद्रा तथा ग्लानि प्राप्त थाय छे, तरश लाग्या करे छे, श्वास दुर्गंधवाळो थाय छे, ताळवामां गळामां जीभमां तथा दांतोमां मेलनी उत्पत्ति थाय छे, केश जटानी पेठे बाझी जाय छे अने नखो अत्यंत वधे छे.

---

१ प्रमेहनां निदानो आदिना निरूपणविषनो.

२ केटलाएक कहेछे के 'स्त्रीओने प्रमेहो थता नथी' पण ए वातनुं डल्हने खंडन कर्युं छे. केमके स्त्रीओने पण प्रमेहो थता जोवामां आवे छे.

५ तत्राविलप्रभूतमूत्रलक्षणाः सर्व एव प्रमेहाः सर्व एव सर्वदोषसमुत्थाः सह पिडकाभिः ॥

सघळा प्रमेहोनुं सामान्य लक्षण अने प्रमेहोना तथा प्रमेहपिडकाओना (प्रमेहसंबंधी फोडलीओना) दोषो.

५ मूत्र मेलुं अने घणुं थाय ए सघळा प्रमेहोनुं सामान्य लक्षण छे. सघळा प्रकारना प्रमेहो अने प्रमेहपिडकाओ जो के सघळा दोषोथी थाय छे तो पण 'आ प्रमेह अने आ पिडका अमुक दोषथी थएल छे' एम जे केहेवामां आवे छे ते, उल्बण थएला दोष उपरथी केहेवामां आवे छे.

६ तत्र कफादुदकेक्षुसुरासिकताशनैर्लवणपिष्टसान्द्रशुक्रफेनमेहा दश साध्या दोषदूष्याणां समक्रियत्वात् ॥

पित्तान्नीलहरिद्राम्लक्षारमञ्जिष्ठाशोणितमेहाः षड् याप्या दोषदूष्याणां विषमक्रियत्वात् ॥

वातात्सर्पिर्वसाक्षौद्रहस्तिमेहाश्चत्वारोऽसाध्यतमा महात्ययिकत्वात् ॥

प्रमेहोमां जूदा जूदा दोषोनी उल्बणता, प्रमेहोनी संख्या अने प्रमेहोनुं साध्यपणुं, याप्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

६ उदकप्रमेह, इक्षुप्रमेह, सुराप्रमेह, सिकताप्रमेह, शनैःप्रमेह, लवणप्रमेह, पिष्टप्रमेह, सांद्रप्रमेह, शुक्रप्रमेह अने फेनप्रमेह ए दश प्रमेहोमां कफनी उल्बणता होय छे. आ दश प्रमेहो साध्य छे. केम के तेओमां कफरूप मुख्य दोष पण कर्षणरूप चिकित्सानुं पात्र छे अने मेदरूप दूष्य पण कर्षणरूप चिकित्सानुं पात्र छे एटले बन्नेनी क्रिया तुल्य छे.

नीलप्रमेह, हरिद्राप्रमेह, अम्लप्रमेह, क्षारप्रमेह, मंजिष्ठाप्रमेह अने शोणितप्रमेह ए छ प्रमेहोमां पित्तनी उल्बणता होय छे. आ छ प्रमेहो याप्य छे. केम के तेओमां पित्तरूप मुख्य दोष तथा रुधिररूप दूष्य एओ शीत तथा मधुर चिकित्सानां पात्र छे अने मेदरूप दूष्य रूक्ष तथा तीक्ष्ण चिकित्सानुं पात्र छे एटले दोषनी तथा दूष्यनी क्रिया विषम छे.

सर्पिःप्रमेह, वसाप्रमेह, क्षौद्रप्रमेह अने हस्तिप्रमेह ए चार प्रमेहोमां वायुनी उल्बणता होय छे. आ चार प्रमेहो अत्यंत असाध्य छे. केम के तुरत विनाश करनारा छे, उत्तरोत्तर धातुओनो स्राव करनारा छे अने विषम चिकित्सावाळा पण छे. (आ प्रमेहोमां वायुरूप मुख्य दोष स्निग्ध तथा मधुर आदि चिकित्सानुं पात्र छे अने मेद आदि दूष्यो रूक्ष तथा तीक्ष्ण चिकित्सानां पात्र छे एटले दोषनी तथा दूष्योनी चिकित्सा विषम छे.)

७ तत्र वातपित्तमेदोभिरन्वितः श्लेष्मा श्लेष्मप्रमेहाञ्जनयति वातकफशोणितमेदोभिरन्वितं पित्तं पित्तप्रमेहान् कफपित्तवसामज्जमेदोभिरन्वितो वायुर्वातप्रमेहान् ॥

त्रणे दोषो कयां कयां दूष्योथी संयुक्त थईने कया कया प्रमेहोने उत्पन्न करेछे.

७ वात, पित्त अने मेद एओथी संयुक्त थएलो अने उल्बणता पामेलो कफ उदकप्रमेह वगेरे कफजन्य केहेवाता दश प्रमेहोने उत्पन्न करे छे. वात, कफ, रुधिर अने मेद एओथी संयुक्त थएलुं अने उल्बणता पामेलुं पित्त नीलप्रमेह वगेरे पित्तजन्य केहेवाता छ प्रमेहोने उत्पन्न करे छे. कफ, पित्त, वसा, मज्जा अने मेद एओथी संयुक्त थएलो अने उल्बणता पामेलो वायु सर्पिःप्रमेह वगेरे वातजन्य केहेवाता चार प्रमेहोने उत्पन्न करे छे. (आमां मेद, रुधिर, वसा तथा मज्जा ए चारज दूष्योनुं ग्रहण कर्युं छे पण बीजा ग्रंथोमां रस, मांस, मेद, रुधिर, वसा, वीर्य, मज्जा, लसीका तथा ओज ए सर्वने दूष्य गणेलां छे.)

८ तत्र श्वेतमवेदनमुदकसदृशमुदकमेही मेहति इक्षुरसतुल्यमिक्षुमेही सुरामेही सुरातुल्यं सरुजं सिकतानुविद्धं सिकतामेही शनैः सकफं मूत्रं शनैर्मेही विशदं लवणतुल्यं लवणमेही हृष्टरोमा पिष्टरसतुल्यं पिष्टमेही आविलं सान्द्रं सान्द्रमेही शुक्रतुल्यं शुक्रमेही स्तोकं स्तोकं सफेनं फेनमेही मेहति ॥

कफनी उल्बणतावाळा दश प्रमेहोनां विशिष्ट लक्षणो.

८ **उदकप्रमेह**वाळो माणस सफेद, वेदनावगरनुं अने पाणी जेवुं मूतरे छे. **इक्षुप्रमेह**वाळो माणस शेलडीना रस जेवुं मूतरे छे. **सुराप्रमेह**वाळो माणस मदिराजेवुं तथा वेदनावाळुं मूतरे छे. **सिकताप्रमेह**वाळो माणस रेतीनी कणीओवाळुं मूतरे छे. **शनैःप्रमेह**वाळो माणस धीरे धीरे कफवाळुं तथा चीकणुं मूतरे छे. **लवणप्रमेह**वाळो माणस निर्मळ तथा खारा पाणी जेवुं मूतरे छे. **पिष्टप्रमेह**वाळो माणस लोटना पाणी जेवुं मूतरे छे अने मूतरती वखते तेनां रूवाडां उभां थई जाय छे. **सांद्रप्रमेह**वाळो माणस मेलुं तथा घाटुं मूतरे छे. **शुक्रप्रमेह**वाळो माणस वीर्य जेवुं मूतरे छे अने **फेनप्रमेह**वाळो माणस फीणवाळुं थोडुं थोडुं मूतरे छे.

९ अत ऊर्ध्वं पित्तनिमित्तान्वक्ष्यामः ॥ सफेनमच्छं नीलं नीलमेही मेहति सदाहं हरिद्राभं हरिद्रामेही अम्लरसगन्धमम्लमेही स्रुतक्षारप्रतिमं क्षारमेही मञ्जिष्ठोदकप्रकाशं मञ्जिष्ठामेही शोणितप्रकाशं शोणितमेही मेहति ॥

पित्तनी उल्बणतावाळा छ प्रमेहोनां विशिष्ट लक्षणो.

९ **नीलप्रमेह**वाळो माणस फीणवाळुं, आछुं तथा नीलवर्णवाळुं मूतरे छे. **हरिद्राप्रमेह**वाळो माणस बळतरावाळुं तथा हळदर जेवा वर्णवाळुं मूतरे छे. **अम्लप्रमेह**वाळो माणस खाटा रसवाळुं तथा खाटा गंधवाळुं मूतरे छे. **क्षारप्रमेह**वाळो माणस वस्त्रथी गाळी लीधेला क्षार जेवुं मूतरे छे. **मंजिष्ठाप्रमेह**वाळो माणस मजीठना पाणी जेवुं मूतरे छे अने **शोणितप्रमेह**वाळो माणस लोही जेवा वर्णवाळुं मूतरे छे. (जोके रक्तपित्तमां पण मजीठना पाणी जेवुं अने लोही जेवुं मूत्र थाय छे तोपण रक्तपित्तमां प्रमेहनां पूर्वरूपो थतां नथी अने मंजिष्ठाप्रमेहमां तथा शोणितप्रमेहमां प्रमेहनां पूर्वरूपो थाय छे ए तफावत छे. डल्हन.)

१० अत ऊर्ध्वं वातनिमित्तान्वक्ष्यामः ॥ सर्पिःप्रकाशं सर्पिर्मेही मेहति वसाप्रकाशं वसामेही क्षौद्ररसवर्णं क्षौद्रमेही मत्तमातङ्गवदनुप्रबद्धं हस्तिमेही मेहति ।

वायुनी उल्बणतावाळा चार प्रमेहोनां विशिष्ट लक्षणो.

१० **सर्पिःप्रमेह**वाळो माणस घी जेवुं मूतरे छे. **वसाप्रमेह**वाळो माणस चरबी जेवुं मूतरे छे. **क्षौद्रप्रमेह**वाळो माणस मधना जेवा रस तथा वर्णवाळुं मूतरे छे अने **हस्तिप्रमेह**वाळो माणस मदोन्मत्त हाथीनी पेठे वारंवार रसी जेवा पदार्थवाळुं मूतऱ्या करे छे.

११ मक्षिकोपसर्पणमालस्यं मांसोपचयः प्रतिश्यायः शैथिल्यारोचकाविपाकाः कफप्रसेकच्छर्दिनिद्राकासश्वासाश्चेति श्लेष्मजानामुपद्रवाः ॥

कफनी उल्बणतावाळा दश प्रमेहोना उपद्रवो.

११ कफनी उल्बणतावाळा प्रमेहोमां वारंवार मांखीओनुं आवी बेसवुं, आलस्य, मांसनो वधारो, प्रतिश्याय, शिथिलपणुं, अरुचि, खोराकनुं नहीं पचवुं, मोहोडामांथी कफनुं झरवुं, उलटी, निद्रा, खांसी अने श्वास ए उपद्रवो थाय छे.

१२ वृषणयोरवदरणं बस्तिभेदो मेढ्तोदो

हृदि शूलमम्लिकाज्वरातीसारारोचका वमथुः परिधूमायनं दाहो मूर्च्छा पिपासा निद्रानाशः पाण्डुरोगः पीतविण्मूत्रत्वं चेति पैत्तिकानाम् ॥

पित्तनी उल्बणतावाळा छ प्रमेहोना उपद्रवो.

१२ पित्तनी उल्बणतावाळा प्रमेहोमां वृषणोनुं फाटवुं, मूत्राशयमां भेदाया जेवी व्यथा, लिंगमां के योनिमां सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा, छातीमां शूल, खाटा ओडकार, ज्वर, अतीसार, अरुचि, उलटी, चोमेरथी धूमाडा नीकळता होय एवी स्थिति, दाह, मूर्छा, तरश, निद्रानो नाश, पांडुरोग अने विष्टानुं तथा मूत्रनुं पीळापणुं ए उपद्रवो थाय छे.

१३ हृद्ग्रहो लौल्यमनिद्रा स्तम्भः कम्पः शूलं बद्धपुरीषत्वं चेति वातजानाम् ॥ एवमेते विंशतिः प्रमेहाः सोपद्रवा व्याख्याताः ॥

वायुनी उल्बणतावाळा चार प्रमेहोना उपद्रवो.

१३ वायुनी उल्बणतावाळा प्रमेहोमां हृदयनुं झलाइ जवुं, सघळा रसो जमवानी लोलता, निद्रानो अभाव, स्तंभ, कंप, शूळ अने विष्टानुं गेकाएलपणुं ए उपद्रवो थाय छे. ए प्रमाणे वीश प्रमेहोनुं अने तेओना उपद्रवोनुं व्याख्यान आप्युं.

१४ तत्र वसामेदोभ्यामभिपन्नशरीरस्य त्रिभिर्दोषैश्चानुगतधातोः प्रमेहिणो दश पिडका जायन्ते । तद्यथा । शराविका सर्षपिका कच्छपिका जालिनी विनता पुत्रिणी मसूरिका अलजी विदारिका विद्रधिका चेति ॥

प्रमेहपिडका (प्रमेहसंबंधी फोडलीओ) के जेओ प्रमेहोना एक जातना उपद्रवोज छे तेओनी संप्राप्ति तथा नामो.

१४ चरबीथी तथा मेदथी बगडेला शरीरवाळा अने जेना धातुओ त्रणे दोषोथी व्याप्त थया होय एवा प्रमेही माणसने शराविका, सर्षपिका, कच्छपिका, जालिनी, विनता, पुत्रिणी, मसूरिका, अलजी, विदारिका अने विद्रधिका ए नामनी दश जातनी फोडलीओ थाय छे.

**१५ शरावमात्रा तद्रूपा निम्नमध्या शराविका ।
गौरसर्षपसंस्थाना तत्प्रमाणा च सर्षपी ॥
सदाहा कूर्मसंस्थाना ज्ञेया कच्छपिका बुधैः ।
जालिनी तीव्रदाहा तु मांसजालसमावृता ॥
महती पिडका नीला सा बुधैर्विनता स्मृता ।
महत्यल्पाचिता ज्ञेया पिडका सा तु पुत्रिणी ॥
मसूरसमसंस्थाना ज्ञेया सा तु मसूरिका ।
रक्तासिता स्फोटवती दारुणा त्वलजी भवेत् ॥
विदारीकन्दवद्वृत्ता कठिना च विदारिका ।
विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ता ज्ञेया विद्रधिका बुधैः ॥**

शराविका वगेरे फोडलीओनां लक्षणो.

१५ जे फोडली कोडीयां जेवडी, कोडीया जेवा आकारवाळी, काळी अने मध्य भागमां उंडी होय तेने **शराविका** जाणवी. जे फोडली धोळा सर्षपना जेवा आकारवाळी अने धोळा सर्षप जेवडी होय तेने **सर्षपिका** जाणवी. जे फोडली दाहवाळी अने काचबा जेवा आकारवाळी होय तेने **कच्छपिका** जाणवी. जे फोडली तीव्र दाहवाळी अने मांसनां (अथवा झीणी झीणी नसोनां) जाळोथी वींटाएली होय तेने **जालिनी** जाणवी. जे फोडली मोटी अने आकाशी रंगवाळी होय तेने **विनता** जाणवी. जे फोडली मोटी अने बीजी झीणी झीणी घणी फोडलीओथी व्याप्त होय तेने **पुत्रिणी** जाणवी. जे फोडली मसूरनी दाळना जेवा आकारवाळी होय तेने **मसूरिका** जाणवी. जे फोडली राती तथा काळी होय अने बीजा फोडकाओथी पण व्याप्त होय तथा दारुण होय तेने **अलजी** जाणवी. जे फोडली फगवेलाना कंद जेवी गोळ होय अने कठण होय तेने **विदारिका** जाणवी. जे फोडली विद्रधिनां लक्षणोथी युक्त होय तेने **विद्रधिका** जाणवी.

१६ ये यन्मयाः स्मृता मेहास्तेषामेतास्तु तत्कृताः ।

प्रमेहनी फोडलीओमां दोषोनो निर्णय.

१६ जे प्रमेह जे दोषनी उल्बणतावाळो होय ते प्रमेहनी फोडली पण ते दोषनीज[1] उल्बणतावाळी होय छे.

१७ गुदे हृदि शिरस्यंसे पृष्ठे मर्मणि चोत्थिताः॥
सोपद्रवा दुर्बलस्य पिडकाः परिवर्जयेत् ।
कृत्स्नं शरीरं निष्पीड्य मेदोमज्जवसायुतः ॥
अधः प्रक्रमते वायुस्तेनासाध्यास्तु वातजाः ।

अमुक प्रकारनी फोडलीओनुं असाध्यपणुं तथा वातजन्य प्रमेहोनां असाध्यपणामां कारण.

१७ गुदामां, छातीमां, माथामां, खभामां, पीठमां के मर्मस्थलोमां उत्पन्न थएली, उपद्रवोवाळी अने नबळा अथवा नबळा अग्निवाळा माणसने थएली प्रमेहपिडकाओनी चिकित्सा करवी नहीं. वायु सघळा शरीरने नीचोवी मेदथी, मज्जाथी तथा चरबीथी युक्त थइने नीचे गति करे छे ते कारणथी वायुनी उल्बणतावाळा सघळा प्रमेहो असाध्य छे.

१८ प्रमेहपूर्वरूपाणामाकृतिर्यत्र दृश्यते ॥
किंचिच्चाप्यधिकं मूत्रं तं प्रमेहिणमादिशेत् ।
कृत्स्नान्यर्द्धानि वा यस्मिन्पूर्वरूपाणि मानवे ॥
प्रवृत्तमूत्रमत्यर्थं तं प्रमेहिणमादिशेत् ।
पिडकापीडितं गाढमुपसृष्टमुपद्रवैः ॥
मधुमेहिनमाचष्टे स चासाध्यः प्रकीर्तितः ।

प्रमेही कोने केहेवो? अने मधुप्रमेही कोने केहेवो? ते तथा मधुप्रमेहनुं असाध्यपणुं.

१८ जेना शरीरमां प्रमेहनां पूर्वरूपोनी आकृति जोवामां आवती होय अने मूत्र कांईक अधिक थयुं होय तेने प्रमेही केहेवो. जेना शरीरमां सघळां अथवा अरधां प्रमेहनां पूर्वरूपो जोवामां आवतां होय अने मूत्र अत्यंत वध्युं होय तेने पण प्रमेही केहेवो.

जे माणस फोडलीओथी अत्यंत पीडातो होय अने प्रमेहोना बीजा उपद्रवोथी पण घेरायो होय तेने मधुप्रमेही केहेवो. आ मधुप्रमेह असाध्य छे.

१९ स चापि गमनात्स्थानं स्थानादासनमिच्छति ॥
आसनाद्वृणुते शय्यां शयनात्स्वप्नमिच्छति ॥

मधुप्रमेहनुं बीजुं पण सामान्य लक्षण.

१९ मधुप्रमेहवाळो माणस चालतो होय त्यां उभो रेहेवानी इच्छा करे छे, उभो रह्यो होय त्यां बेसी जवानी इच्छा करे छे, बेठो होय त्यां शय्यानी इच्छा करे छे अने शय्यामां पड्यो होय त्यां निद्रा लेवानी इच्छा करे छे.

२० यथाहि वर्णानां पञ्चानामुत्कर्षापकर्षकृतेन संयोगविशेषेण शवलबभ्रुकपिलकपोतमेचकादीनां वर्णानामनेकेषामुत्पत्तिर्भवत्येवमेव दोषधातुमलाहारविशेषेणोत्कर्षापकर्षकृतेन संयोगविशेषेण प्रमेहाणां नानाकरणं भवति ॥

त्रण दोषोथी वीश प्रमेहोनी उत्पत्ति थवामां उपपत्ति.

२० जेम धोळो, लीलो, काळो, पीळो अने रातो ए पांच रंगोना वधारावटाराथी करेला संयोग विशेषथी कावरचीतरा, भूरा, पींगळा, होलाना जेवा, तथा आशमानी वगेरे अनेक रंगोनी उत्पत्ति थाय छे तेम दोषो, धातुओ, मळो अने आहारो एओना वधाराघटारा उपरथी थएला संयोगविशेषथी वीश प्रमेहोनी उत्पत्ति थाय छे.

---

[1] तरश, श्वास, मांसनो सडो, बहुमूत्रता, हेडकी, मद, ज्वर, विसर्प अने मर्मस्थलोनुं रोधन एटला ए फोडलीओना उपद्रवो छे. (भावप्रकाश.)

२१ भवति चात्र ॥

सर्व एव प्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिणः ।
मधुमेहत्वमायान्ति तदाऽसाध्या भवन्ति हि ॥

प्रमेहोनुं मधुप्रमेहपणारूप स्थितिमां असाध्यपणुं.

२१ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "चिकित्साथी रहित रेहेनारा माणसना सघळा प्रमेहो काळे करी मधुप्रमेहपणाने प्राप्त थाय छे त्यारे असाध्य बनी जाय छे. आम छे एटला माटे पूर्वरूपो देखातांज प्रमेहोनी चिकित्सा करवी जोईए."

अध्याय ७ मो.

१ अथात उदराणां निदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'उदरव्याधि-निदान' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ **धन्वन्तरिर्धर्मभृतां वरिष्ठो**
राजर्षिरिन्द्रप्रतिमो बभूव ।
ब्रह्मर्षिपुत्रं विनयोपपन्नं
शिष्यं शुभं सुश्रुतमन्वशात्सः ॥

गुरुशिष्यना संवादनुं स्मरण.

२ धन्वंरि के जे धर्मात्माओमां सर्वोत्तम अने इंद्रना जेवा प्रभाववाळा राजर्षि हता तेमणे विश्वामित्रना पुत्र अने नम्रताथी आवीने शिष्य थएला शुभ आचारवाळा सुश्रुतने नीचे प्रमाणे उपदेश कर्यो.

३ **पृथक्समस्तैरपि चेह दोषैः**
प्लीहोदरं बद्धगुदं तथैव ।
आगन्तुकं सप्तममष्टमं च
दकोदरं चेति वदन्ति तानि ॥

उदररोगोनां निदानो उपरथी ते रोगोनी संख्या.[1]

३ वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी, बरल वधवाथी, गुदानो रोध थवाथी, आगंतु कारणथी (शल्यवते आंतरडुं घवायाथी) अने पेटमां पाणीनो जमाव थवाथी ए रीते आठ प्रकारना उदररोगो थाय छे. ए आठ प्रकारना उदररोगोनां अनुक्रमे वातोदर, पित्तोदर, कफोदर, सन्निपातोदर अथवा दूष्युदर, प्लीहोदर, बद्धगुदोदर, परिस्राव्युदर अने दकोदर (जलोदर) ए आठ नामो छे.

४ **सुदुर्बलाग्नेरहिताशनस्य**
संशुष्कपूत्यन्ननिषेवणाद्वा ।
स्नेहादिमिथ्याचरणाच्च जन्तो-
र्वृद्धिं गताः कोष्ठमभिप्रपन्नाः ॥
गुल्माकृतिव्यंजितलक्षणानि
कुर्वन्ति घोराण्युदराणि दोषाः ।

उदररोगोनां दूरनां तथा पासेनां निदानो.

४ जठराग्नि अत्यंत मंद थई जवाथी, अहित भोजन (विरुद्धाशन, समशन, अध्यशन के विषमाशन) करवाथी, सुकाएलां के दुर्गंधवाळां अन्नोनुं सेवन करवाथी अने स्नेहपान तथा वमन विरेचन वगेरे क्रियाओ अनुचित रीते थवाथी वृद्धि पामीने कोठाने प्राप्त थएला दोषो गुल्म जेवी आकृतिथी प्रकट थएलां लक्षणोवाळा भयंकर उदररोगोने उत्पन्न करे छे.

५ **कोष्ठादुपस्नेहवदन्नसारो**
निःसृत्य दुष्टोऽनिलवेगनुन्नः ॥
त्वचः समुन्नम्य शनैः समन्ता-
द्विवर्द्धमानो जठरं करोति ।

उदररोगोनी संप्राप्ति.

५ दुष्ट थएलो अने वायुना वेगथी प्रेराएलो अन्नानो सार जेम नवा घडामांथी पाणी स्रवे छे

---

[1] उदररोगोनां कारणो, भेदो, संप्राप्ति तथा लक्षणो एओना निरूपणविषेनो.

तेम कोठामांथी स्त्रवी, त्वचाओने उंची करी. धीरे धीरे चोतरफ वधतो वधतो उदररोगोने उत्पन्न करे छे.

६ तत्पूर्वरूपं बलवर्णकाङ्क्षा-
वलीविनाशो जठरे हि राज्यः ॥
जीर्णापरिज्ञानविदाहवत्यो
बस्तौ रुजः पादगतश्च शोफः ।

उदररोगोनां पूर्वरूपो.

६ ज्यारे आठमांनो कोइ पण उदररोग थवानो होय त्यारे बळनी हानि थाय छे, वर्ण बगडी जाय छे, पेट उपरनी वळीओ नष्ट थई जाय छे, पेट उपर रेखाओ थाय छे, अन्ननो पचाव थवानी खबर पडती नथी, हृदयमां बळतरा थाय छे, मूत्राशयमां पीडा थाय छे अने पगमां सोजो थाय छे.

७ संगृह्य पार्श्वोदरपृष्ठनाभी-
र्यद्वर्द्धते कृष्णशिरावनद्धम् ॥
सशूलमानाहवदुग्रशब्दं
सतोदभेदं पवनात्मकं तत् ।

वातोदरनुं लक्षण.

७ पेट, पडखांओने, पीठने तथा नाभिने साथे लई वृद्धि पामे, झीणी झीणी काळी नसोथी व्याप्त थई जाय, शूळथी युक्त थाय, हाथवते ठोकवाथी पवनथी भराएली धमण जेवा उग्र अवाज करे, मळोनी जमावटवाळुं थाय, अने भोंकाया जेवी तथा भेदाया जेवी व्यथा पामे तो **वातोदर** थएलुं समजवुं.

८ यश्चोषतृष्णाज्वरदाहयुक्तं
पीतं शिरा यत्र भवन्ति पीताः ॥
पीताक्षिविण्मूत्रनखाननस्य
पित्तोदरं तत्त्वचिराभिवृद्धि ।

पित्तोदरनुं लक्षण.

८ पेट पीळुं तथा पीळी नसोथी व्याप्त थई जाय अने जलदी वधी जाय तेमज नेत्रो, विष्टा, मूत्र, नखो तथा मोहोडुं पीळां थई जाय अने संताप, तरश, ज्वर तथा दाह एओ थया करे तो **पित्तोदर** थयुं समजवुं.

९ यच्छीतलं शुक्लशिरावनद्धं
गुरु स्थिरं शुक्लनखाननस्य ॥
स्निग्धं महच्छोफयुतं ससादं
कफोदरं तच्च चिराभिवृद्धि ॥

कफोदरनुं लक्षण.

९ पेट टाढुं, झीणी झीणी धोळी नसोथी व्याप्त, भारे, कठण, स्निग्ध अने मोटा सोजावाळुं थई जाय, नख सफेद थई जाय, मोहोंडु सफेद थई जाय अने अंगोमां ग्लानि थाय तो **कफोदर** थयुं केहेवाय छे. कफोदर लांबे काळे वृद्धि पामे छे.

१० स्त्रियोऽन्नपानं नखरोममूत्र-
विडार्तवैर्युक्तमसाधुवृत्ताः ।
यस्मै प्रयच्छन्त्यरयो गरांश्च
दुष्टाम्बुदूषीविषसेवनाद्वा ॥
तेनाशु रक्तं कुपिताश्च दोषाः
कुर्वन्ति घोरं जठरं त्रिलिङ्गम् ।
तच्छीतवाताभ्रसमुद्भवेषु
विशेषतः कुप्यति दह्यते च ॥
स चातुरो मूर्च्छति संप्रसक्तं
पाण्डुः कृशः शुष्यति तृष्णया च ।
प्रकीर्तितं दूष्युदरं तु घोरं
प्लीहोदरं कीर्तयतो निबोध ॥

सन्निपातोदर अथवा दूष्युदरनुं लक्षण.

१० खराब चालवाळी स्त्रीओ अथवा बीजा कोई नजदीक रेहेनारां दुष्ट माणसो वशीकरण वगेरेनी इच्छाथी जे पुरुषने नख, रूवाडां, मूत्र, बिलाडां वगेरेनी विष्टा के रजस्वलापणानुं रुधिर एओथी युक्त करेलुं अन्न खवरावे ते पुरुषने, शत्रुओ जेने संयोगथी थएलां झेर खवरावे तेने, झेरी माछलां झेरी खड के झेरी पानडां वगेरेवाळुं

पाणी जेना पीवामां आवे तेने अने दूषीविषै जेना सेववामां आवे तेने ए कारणोथी प्रकुपित थएलुं रुधिर अने प्रकुपित थएला दोषो तुरतज त्रणे दोषोनां चिह्नोवाळा अति भयंकर उदररोगने उत्पन्न करे छे. ए उदररोग थंडीना समयमां, प्रबल वायुना समयमां अने जे समये आकाशमां वादळांओनो घेराव थाय ते समयमां विशेषे करी प्रकुपित थाय छे तथा बळतरा करे छे, आथी रोगी मूर्छित पण थई जाय छे. (एवा समयोमां दूषीविषादिकनो प्रकोप थाय अने तेथी रोगीने मूर्छा थाय ए संभवे छे.) आ रोगवाळो माणस निरंतर पांडु रेहे छे, शरीरमां कृश रेहे छे अने तरशथी सूकाया करे छे. आवा प्रकारनो उदररोग **दूष्युदर** अथवा **सन्निपातोदर** केहेवाय छे. आ भयंकर दूष्युदर कह्युं. हवे प्लीहोदरनुं लक्षण कहुं छुं ते सांभळो.

११ विदाह्यभिष्यन्दिरतस्य जन्तोः
प्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ।
प्लीहाभिवृद्धिं सततं करोति
प्लीहोदरं तत्प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥
वामे च पार्श्वे परिवृद्धिमेति
विशेषतः सीदति चातुरोऽत्र ।
मन्दज्वराग्निः कफपित्तलिङ्गै-
रुपद्रुतः क्षीणबलोऽतिपाण्डुः ॥
सव्येतरस्मिन्यकृति प्रदुष्टे
ज्ञेयं यकृद्दाल्युदरं तदेव ।

प्लीहोदरनुं लक्षण.

११ विदाही अने अभिष्यंदी पदार्थोनुं सेवन करनारा माणसने अत्यंत दुष्ट थएलुं रुधिर अने अत्यंत प्रकुपित थएलो कफ एओ निरंतर बरलनी वृद्धि करी दे छे. आ रोगने आयुर्वेदना आचार्यो **प्लीहोदर** केहे छे. आ रोगथी पेट डाबा पडखामां अत्यंत वृद्धि पामे छे अने तेथी आतुर अत्यंत सीदाय छे, मंद मंद ज्वरवाळो रेहे छे, मंद अग्निवाळो थई जाय छे, कफनां तथा पित्तनां चिह्नोथी उपद्रव पामे छे, निर्बल थई जाय छे तथा अत्यंत पांडु थई जाय छे. **यकृद्दाल्युदर** नामनो जे रोग छे ते पण आ प्लीहोदरनीज जात छे तेने लीधे जूदो गणवामां आव्यो नथी. प्लीहोदरथी यकृद्दाल्युदरनी जुदाई मात्र एटलीज छे के यकृत्नामनी जमणा पडखानी गांठ वधवाथी जमणा पडखामां पेटनुं जे वधवुं थाय छे ते यकृद्दाल्युदर केहेवाय छे. ए रोगमां रुधिरना तथा कफना प्रकोपने लीधे यकृत् भेदाई जाय छे तेथी ए रोगनुं नाम 'यकृद्दाल्युदर' छे.

१२ यस्यान्त्रमन्नैरुपलेपिभिर्वा
वालाश्मभिर्वा पिहितं यथावत् ॥
संचीयते तत्र मलः सदोषः
क्रमेण नाड्यामिव संकरो हि ।
निरुध्यते चास्य गुदे पुरीषं
निरेति कृच्छ्रादपि चाल्पमल्पम्
हृन्नाभिमध्ये परिवृद्धिमेति
यच्चोदरं विट्समगन्धिकं च ।
प्रच्छर्दयन् बद्धगुदी विभाव्य-
स्ततः परिस्राव्युदरं निबोध ॥

बद्धगुदोदरनुं लक्षण.

१२ चीकणा पदार्थोना संयोगवाळां अन्नोथी, वाळोथी अथवा कांकरीओथी गुदानुं आंतरडुं ढंकाई जतां गुदाना द्वारमां जेम परनाळमां कचरो एकठो थई जाय छे तेम क्रमे करी दोषस-

---

१ विषने हणनारी औषधिओथी हणावाने लीधे, जीर्ण होवाने लीधे, दावानळथी वायुथी के तडकाथी सूकाइ जवाने लीधे अथवा स्वाभाविक रीते जे झेर पोताना गुणोथी रहित थयुं होय ते दूषीविष केहेवाय छे.

२ जे पदार्थ खाधाथी खाटा ओडकार आवे, तरश लागे अने हृदयमां बळतरा थाय ते विदाही केहेवाय छे.

३ जे पदार्थ रसनुं वहन करनारी शिराओने चीकाशथी तथा भारेपणाथी रोकी दइने शरीरमां भारेपणुं करे ते अभिष्यंदी केहेवाय छे.

हित मळ एकठो थाय छे. आम थवाथी गुदामां विष्टा रोकाई जाय छे तथा घणे दाखडे मांड मांड थोडी थोडी नीकळे छे अने हृदयना तथा नाभिना मध्यमां पेटनो वधारो थाय छे. ए पेट विष्टा जेवुं गंधाय छे अने रोगीने उलटीओ थया करे छे. आ रोग **बद्धगुदोदर** केहेवाय छे. हवे परिस्राव्युदरनुं लक्षण कहुं छुं ते सांभळो.

१३ शल्यं यदन्नोपहितं तदन्त्रं
भिनत्ति यस्यागतमन्यथा वा ।
तस्मात्स्रुतोऽन्त्रात्सलिलप्रकाशः
स्रावः स्रवेद्वै गुदतस्तु भूयः ॥
नाभेरधश्चोदरमेति वृद्धिं
निस्तुद्यतेऽतीव विदह्यते च ।
एतत्परिस्राव्युदरं प्रदिष्टं
दकोदरं कीर्तयतो निबोध ॥

परिस्राव्युदर के जेने बीजा ग्रंथोमां क्षतोदर कह्युं छे तेनुं लक्षण.

१३ अन्ननी साथे खावामां आवी गएला अथवा बीजी कोइ रीते पेटमां आवी गएला कांटा के कांकरा वगेरे शल्यथी आंतरडुं भेदाइ जतां ते आंतरडांमांथी पाणी जेवो स्राव नीकळे छे, ते स्राव पाछो गुदामांथी थोडो थोडो स्रवे छे अने नाभिथी नीचेना भागमां पेट वधे छे के जेथी माणस सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा पामे छे तथा बळतराथी युक्त थाय छे. आ रोग **परिस्राव्युदर** केहेवाय छे. हवे दकोदरनुं लक्षण कहुं छुं ते सांभळो.

१४ यः स्नेहपीतोऽप्यनुवासितो वा
वान्तो विरिक्तोऽप्यथ वा निरूढः ।
पिबेज्जलं शीतलमाशु तस्य
स्रोतांसि दुष्यन्ति हि तद्वहानि ॥
स्नेहोपलिप्तेष्वथ चापि तेषु
दकोदरं पूर्ववदभ्युपैति ।
स्निग्धं महत्सम्परिवृत्तनाभि
भृशोन्नतं पूर्णमिवाम्बुना च ॥
यथा दृतिः क्षुभ्यति कम्पते च
शब्दायते चापि दकोदरं तत् ।

दकोदर(जलोदर)नुं लक्षण.

१४ स्नेहपान करीने अथवा अनुवासन बस्ति लइने अथवा वमन करीने अथवा विरेचन लइने अथवा निरूह बस्ति लईने जे माणस तुरत टाढुं पाणी पीए ते माणसनां जळनुं वहन करनारां स्नेहादि लिप्त स्रोतो दूषित थाय छे अने ते स्रोतो दूषित थतां जळ, रांधेला अन्नमां नाखेला झाझा घीनी पेठे स्रोतोमांथी बाहार नीकळी आवे छे तथा आवीने गुदामांथी नीकळवा लागे छे ए रोग **दकोदर** केहेवाय छे के जेथी पेट स्निग्ध, मोटुं, उथली पडेली नाभिवाळुं तथा अत्यंत उंचुं थई जाय छे, जळथी भरपूर जेवुं बनी जाय छे, जळना आमतेम चलनने लीधे पाणीथी भरेली पखालनी पेठे क्षोभ पामे छे, बाहार हल्या करे छे अने हलतां हलतां अवाज करे छे.

१५ आध्मानं गमनेऽशक्तिर्दौर्बल्यं दुर्बलाग्निता॥
शोफः सदनमङ्गानां संगो वातपुरीषयोः ।
दाहस्तृष्णा च सर्वेषु जठरेषु भवन्ति हि ॥

उदररोगोनां सामान्य लक्षणो अथवा उपद्रवो.

१५ आफरो, चालवामां अशक्ति, दुर्बलपणुं, जठराग्निनुं नबळापणुं, सोजो, अंगोमां ग्लानि, वायुनी तथा विष्टानी अटकायत, बळतरा अने तरश एटलां सामान्य लक्षणो अथवा उपद्रवो सघळा प्रकारना उदररोगोमां थाय छे.

१६ अन्ते सलिलभावं तु भजन्ते जठराणि तु ।
सर्वाण्येव परीपाकात्तदा तानि विवर्जयेत्॥

उदररोगोनुं असाध्यपणुं.

१६ सघळा उदररोगो परिपाक पामीने अंते जळरूप थई जाय छे. आ प्रमाणे उदररोगो जळ-

रूप थई जाय त्यारे तेओनी चिकित्सा करवी नहीं.

अध्याय ८ मो.

१ अथातो मूढगर्भनिदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मूढगर्भनिदानं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ ग्राम्यधर्मयानवाहनाध्वगमनप्रस्खलनप्रपतनप्रपीडनधावनाभिघातविषमशयनासनोपवासवेगाभिघातातिरूक्षकटुतिक्तभोजनशाकातिक्षारसेवनातिसारवमनविरेचनप्रेङ्खोलनाजीर्णगर्भशातनप्रभृतिभिर्विशेषैर्बन्धनान्मुच्यते गर्भः फलमिव वृन्तबन्धनादभिघातविशेषैः ।

मूढगर्भनां दूरनां निदानो.

२ मैथुन कराववाथी, रथादिकमां बेसीने जवाथी, वाहननी पीठपर चडीने चालवाथी, पंथ करवाथी, ठेश वागवाथी, लथडी जवाथी, पडी जवाथी, अत्यंत दबाण आववाथी, दोडवाथी, लाकडी वगेरेनो प्रहार पडवाथी, विषम रीते सूवाथी, विषम रीते बेसवाथी, उपवासो करवाथी, मूत्र वगेरेनी हाजतोने रोकवाथी, अतिसारथी, वमनथी, विरेचनथी, अतिरूक्ष भोजनथी, अत्यंत तीखुं जमवाथी, अत्यंत कडवुं जमवाथी, शाकोना अतिसेवनथी, क्षारना अतिसेवनथी, हींचकवाथी, अजीर्णथी, गर्भने पाडी नाखवाना उपचारो करवाथी अने एवा प्रकारनां बीजां पण कारणोथी, जेम फळ पथराओना के लाकडी वगेरेना अभिघातोथी पोताना डीटीयाना बंधनमांथी छूटुं पडी जाय छे तेम गर्भ गर्भाशयना शिराओरूप तथा पेशीओरूप बंधनमांथी छूटो पडी जाय छे.

३ स विमुक्तबन्धनो गर्भाशयमतिक्रम्य यकृत्प्लीहान्त्रविवरैरवस्रंसमानः कोष्ठसंक्षोभमापादयति तस्या जठरसंक्षोभाद्वायुरपानो मूढः पार्श्वबस्तिशीर्षोदरयोनिशूलानाहमूत्रसङ्गानामन्यतममापाद्य गर्भं व्यापादयति तरुणं शोणितस्रावेण तमेव कदाचिद्विवृद्धमसम्यगागतमपत्यपथमनुप्राप्तमनिरस्यमानमपानवैगुण्यसंमोहितं गर्भं मूढगर्भं इत्याचक्षते ।

मूढगर्भनुं पासेनुं निदान तथा संप्राप्ति.

३ गर्भाशयना बंधनमांथी उपर प्रमाणे छूटो पडेलो गर्भ गर्भाशयनुं उल्लंघन करी जमणा पडखानी गांठना, डाबा पडखानी गांठना तथा आंतरडांओना अवकाशो द्वारा खसतो खसतो पेटमां क्षोभने उत्पन्न करे छे. पेटनो क्षोभ थवाथी मूढ थएलो (रुद्ध थएलो) स्त्रीनो अपानवायु पडखांना शूळने, मूत्राशयना शूळने, माथाना शूळने, पेटना शूळने, योनिना शूळने, मलनी अटकायतने के मूत्रनी अटकायतने उत्पन्न करी लोहीनो स्राव करीने ते द्वारा काचा गर्भने स्त्रवावी नाखे छे अथवा पाडी नाखे छे. कोइ समये वृद्धि पामीने सघळां अंगोथी पूर्ण थएलो गर्भ अपानवायुना दुष्टपणाने लीधे मूर्छित थई विलोमपणाथी आवी योनिमां प्राप्त थाय छे अने केमे करी बाहार नीकळतो नथी ते गर्भने आयुर्वेदना आचार्यो मूढगर्भ केहे छे.

४ ततः स कीलः प्रतिखुरो बीजकः परिघ इति । तत्र ऊर्ध्वबाहुशिरःपादो यो योनिमुखं निरुणद्धि कील इव स कीलः । निःसृतहस्तपादशिराः कायसंगी प्रतिखुरः । यस्तु

---

१ घणुं करीने सघळा उदररोगो कष्टसाध्यज छे. रोगी बळवान् होय, उदरमां पाणी उत्पन्न न थयुं होय अने ते रोग तुरतनो उत्पन्न थएलो होय तो यत्न करवाथी मटे छे. बद्धगुद नामनो उदररोग एक पखवाडीयाथी उपर चाले तो घणुं करीने मारी नाखे छे. खड वगेरेथी आंतरडांमां छिद्र थयुं होय तो ते उदररोग पण मारी नाखे छे. (भावप्रकाश.)

२ सघळा अवयवोथी पूर्ण थयलो अने मन वगेरेथी पण युक्त थयलो गर्भ दुष्ट थयला अपान वायुने लीधे रोकाइ गयो होय तेना निदान वगेरेना कथनविषेनो.

निर्गच्छत्येकशिरोभुजः स बीजकः परिघ इव योनिमुखमावृत्य तिष्ठेत् स परिघ इति चतुर्विधो भवतीत्येके भाषन्ते तत्तु न सम्यक्कस्मात् स यदा विगुणानिलप्रपीडितोऽपत्यपथमनेकधा प्रतिपद्यते तदा संख्या हीयते । तत्र कश्चिद्द्वाभ्यां सक्थिभ्यां योनिमुखं प्रतिपद्यते । कश्चिदाभुग्नैकसक्थिरेकेन । कश्चिदाभुग्नसक्थिशरीरः स्फिग्देशेन तिर्यगागतः । कश्चिदुरःपार्श्वपृष्ठानामन्यतमेन योनिद्वारं पिधायावतिष्ठते । अन्तःपार्श्वापवृत्तशिराः कश्चिदेकेन बाहुना । कश्चिदाभुग्नशिरा बाहुद्वयेन । कश्चिदाभुग्नमध्यो हस्तपादशिरोभिः । कश्चिदेकेन सक्थ्ना योनिमुखमभिप्रतिपद्यतेऽपरेण पायुमित्यष्टविधा मूढगर्भगतिरुद्दिष्टा समासेन॥

मूढगर्भना विलोमरीते योनिमां आववाना प्रकारो.

४ केटलाएक आचार्यो केहे छे के "मूढगर्भ कील, प्रतिखुर, बीजक अने परिघ ए रीते चार प्रकारनो थाय छे. जेनां हाथ, माथुं अने पग उंचां होय एवो जे गर्भ उभा खीलानी पेठे योनिना मुखने रोकी दे छे ते **कील** केहेवाय छे. जे गर्भनां हाथ, पग तथा माथुं योनिमांथी बाहार नीकळ्या छतां बाकीनो शरीरनो भाग योनिमां अटकी रह्यो होय ते गर्भ **प्रतिखुर** केहेवाय छे. जेनो एक हाथ माथांनी साथे योनिमांथी बाहार नीकळ्यो होय अने बाकीनो भाग अंदर अटकी रह्यो होय ते गर्भ **बीजक** केहेवाय छे अने जे गर्भ भोगळनी पेठे आडो आवी योनिना मुखने बंध करीने अंदर रह्यो होय ते **परिघ** केहेवाय छे" परंतु ए आचार्योनुं ते केहेवुं बराबर नथी. केम के दुष्ट थएला अपानवायुए अत्यंत पीडेलो गर्भ ए चार प्रकार उपरांत बीजा पण अनेक प्रकारोथी योनिमां प्राप्त थाय छे तेथी ए चारनी संख्या मुकरर रेहेती नथी. कोई गर्भ बन्ने साथळथी योनिना मुखने प्राप्त थाय छे. जेनो एक साथळ वांको वळी गयो होय एवो कोई गर्भ बीजा एक साथळथीज योनिना मुखने प्राप्त थाय छे. जेना बन्ने साथळ वांका वळी गया होय तथा शरीर पण वांकुं वळी गयुं होय एवो कोई गर्भ आडो आवी कूलाना प्रदेशथी योनिना मुखने प्राप्त थाय छे. कोई गर्भ छातीथी, पडखांथी के पीठथी योनिना द्वारने ढांकी दईने अटकी रहे छे. जेनुं माथुं योनिनी अंदर पडखामां आडुं वळी गयुं होय एवो कोई गर्भ एक हाथथी योनिना द्वारने ढांकी दईने अटकी रहे छे. जेनुं माथुं वांकुं वळी गयुं होय एवो कोई गर्भ बे हाथथी योनिना द्वारने ढांकी दईने अटकी रहे छे. जेनी कमर वांकी वळी गई होय एवो कोई गर्भ हाथथी, पगथी तथा माथाथी योनिना द्वारने ढांकी दईने अटकी रहे छे. कोई गर्भ एक साथळथी योनिना मुखने अने बीजा साथळथी गुदाने प्राप्त थईने अटकी रहे छे. आ प्रमाणे मूढगर्भनी गति संक्षेपथी आठ प्रकारनी केहेवामां आवी. (आ उपरांत बीजा पण अनेक प्रकारोथी मूढगर्भ योनिना मुखमां प्राप्त थाय छे.)

५ तत्र द्वावंत्यावसाध्यौ मूढगर्भौ शेषानपि विपरीतेन्द्रियार्थाक्षेपकयोनिभ्रंशसंवरणमक्कल्लश्वासकासभ्रमनिपीडितान्परिहरेत् ॥

मूढ गर्भोनुं असाध्यपणुं.

५ ए आठ प्रकारोमां सातमा प्रकारनो अने आठमा प्रकारनो ए बे मूढ गर्भ तो असाध्यज छे. बाकीना पांच प्रकारना मूढ गर्भोना विषयमां पण जो तेओनी माताओ शब्दस्पर्शादिक विषयोनां विपरीत ग्रहणो करवा लागी होय, आक्षेपक नामना रोगथी पीडाएली होय, योनिभ्रंशथी (योनिना खसी जवांथी) पीडाएली होय, योनिना संकोचथी पीडाएली होय अथवा मक्कल नामना रोगथी, श्वासथी, खांसीथी के चकरी

आववाथी पीडाएली होय तो ते गर्भोनी चिकित्सा करवी नहीं.

६ भवन्ति चात्र ॥

कालस्य परिणामेन मुक्तं वृन्ताद्यथा फलम् ।
प्रपद्यते स्वभावेन नान्यथा पतितुं फलम् ॥
एवं कालप्रकर्षेण मुक्तो नाडीविबन्धनात् ।
गर्भाशयस्थो यो गर्भो जननाय प्रपद्यते ॥
कृमिवाताभिघातैस्तु तदेवोपद्रुतं फलम् ।
पतत्यकालेऽपि यथा तथा स्याद्गर्भविच्युतिः ॥

स्वाभाविक प्रसवनां तथा गर्भनो स्राव के पात थवानां कारणो.

६ जेम काळे करेला योग्य परिपाकने लीधे डीटीआना बंधनथी मुक्त थएलुं फळ स्वाभाविक रीते पतन पामे छे तेमां कशी हरकत पडती नथी तेम काळनी योग्यताए करेला योग्य प्रसवने लीधे गर्भाशयनी नाडीना बंधनमांथी मुक्त थएलो गर्भ स्वाभाविक रीते जन्म पामे छे तेमां कशी हरकत पडती नथी.

जेम कीडाओथी, पवनथी के लाकडी वगेरेना अभिघातथी उपद्रव पामेलुं फळ समय प्राप्त थया विना पण पडी जाय छे तेम निदानोथी उपद्रव पामेलो गर्भ समय प्राप्त थया विना पण स्रवी जाय छे तथा पडी जाय छे.

७ आ चतुर्थात्ततो मासात्प्रस्रवेद्गर्भविद्रवः ।
ततः स्थिरशरीरस्य पातः पञ्चमषष्ठयोः ॥

गर्भनो स्राव क्यांसुधी गणाय अने पात क्यांसुधी गणाय.

७ चोथा महीना सुधी गर्भनो भ्रंश रुधिररूपे थाय ते स्राव थयो केहेवाय अने पांचमा के छठ्ठा महीनामां कठण थएला गर्भनो भ्रंश थाय ते पात थयो केहेवाय छे. (आथी जणाव्युं के चार महिनासुधी तो मूढगर्भ गणायज नहीं.)

८ प्रविध्यति शिरो या तु शीताङ्गी निरपत्रपा ।
नीलोद्धतशिरा हन्ति सा गर्भं सच तां तथा ॥

मूढ गर्भवाळी केवी स्त्रीने असाध्य समजवी.

८ जे स्त्री पोताना माथाने पण धरी राखवामां अशक्त होय, माथुं पछाडती होय, टाढां अंगोवाळी थइ गइ होय, लाज वगरनी थइ गइ होय के जेना पेट उपर आशमानी वर्णवाळी शिराओ उपडी रही होय ते स्त्री गर्भने हणी नाखे छे अने ते गर्भ ते स्त्रीने हणी नाखे छे.

९ गर्भास्पन्दनमावीनां प्रणाशः श्यावपाण्डुता ।
भवत्युच्छ्वासपूतित्वं शूलं चान्तर्मृते शिशौ ॥

गर्भिणीनुं रक्षण थवाने माटे अने गर्भने खेंची लेवाने माटे, अंदर मरण पामेला गर्भनुं लक्षण.

९ जो गर्भ अंदरज मरीगयो होय तो गर्भनुं चलन थतुं नथी, प्रसवनी वेदनाओ नष्ट थइ जाय छे. (वीणो आवती नथी अने मूत्रनुं आव्या करवुं वगेरे प्रसवनां चिह्नो नष्ट थाय छे.) शरीरनुं काळाशथी मिश्रित पांडुपणुं थइ जाय छे, श्वास दुर्गंधवाळो थइ जाय छे अने मरेलुं बालक सूणी जवाने लीधे शूळ नीकळे छे.

१० मानसागन्तुभिर्मातुरुपतापैः प्रपीडितः ।
गर्भो व्यापद्यते कुक्षौ व्याधिभिश्च प्रपीडितः ॥

अंदर गर्भना मरणनुं कारण.

१० माने प्रहार वगेरेथी थएला आगुंतुक उपतापोथी अथवा बंधुना के धनना क्षय वगेरेथी थएला मानसिक उपतापोथी अथवा रोगोनी पीडाथी गर्भ पेटमांज मरी जाय छे.

११ वस्तमारविपन्नायाः कुक्षिः प्रस्पन्दते यदि ।
तत्क्षणाज्जन्मकाले तं पाटयित्वोद्धरेद्भिषक् ॥

मा मरीगया छतां पण गर्भ जीवतो होय तो ते गर्भने काहाडी लेवाविषे.

११ प्रसवना समयमां मा बकराने मोते मरी गई होय अर्थात् अत्यंत दुःखथी डोक वगेरेने म-

रडी नाखीने मरी गई होय पण जो तेनुं पेट च-लायमान थतुं होय तो जलदीज (वधारेमां वधारे बे घडीनी अंदरमां) माना पेटने चीरी नाखीने वैद्ये गर्भने बाहार काहाडी लेवो. (जो नवमो मास बेसी गयो होय तो आ क्रिया करवानी छे अने ते पण मानुं मरण थया पछी बे घडीनी अंदरज करवानी छे. जो बे घडीथी वधारे काळ व्यतीत थाय तो पछी गर्भ पण मरी जाय छे.)

अध्याय ९ मो.

१ अथातो विद्रधीनां निदानं व्याख्यास्यामः ।
सर्वामरगुरुः श्रीमान्निमित्तान्तरभूमिपः ।
शिष्यायोवाच निखिलमिदं विद्रधिलक्षणम् ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विद्रधिनिदान' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे. सघळा देवताओने अमृत आपीने अमर बनावनार अने औषधादिकथी मनुष्योनो उपकार करवाने माटेज राजा थएला श्रीमान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे नीचे प्रमाणे विद्रधिनुं सघळुं लक्षण कह्युं. (आ धन्वंतरिना वर्णनथी जणाव्युं छे के विद्रधिरोग बहु भयंकर छे.)

२ त्वग्रक्तमांसमेदांसि प्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः ।
दोषाः शोफं शनैर्घोरं जनयन्त्युच्छ्रिता भृशम् ॥
महामूलं रुजावन्तं वृत्तं चाप्यथवायतम् ।
तमाहुर्विद्रधिं धीरा विज्ञेयः षड्विधः स च ॥

बाहारना विद्रधिओनां निदान, संप्राप्ति तथा सामान्य लक्षण.

२ अत्यंत प्रकुपित थएला अने रसने, रुधिरने, मांसने तथा मेदने दूषित करीने अस्थिओमां प्राप्त थएला दोषो धीरे धीरे गोळ अथवा लांबा, मोटा मूळवाळा अने वेदनावाळा भयंकर सोजाने उत्पन्न करे छे. ए सोजाने विद्वानो **विद्रधि** कहे छे. आ विद्रधि छ प्रकारनो होय छे.

३ पृथग्दोषैः समस्तैश्च क्षतेनाप्यसृजा तथा ।
षण्णामपि हि तेषां तु लक्षणं संप्रवक्ष्यते ॥

विद्रधिना छ प्रकार.

३ वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी, क्षतथी अने रुधिरथी ए रीते विद्रधि छ प्रकारनो थाय छे. हवे ए छ प्रकारोनां जूदां जूदां लक्षणो कहीए छीए.

४ कृष्णोऽरुणो वा विषमो भृशमत्यर्थवेदनः ।
चिरोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिर्वातसम्भवः ॥

वायुथी थएला विद्रधिनुं लक्षण.

४ जे विद्रधि काळा अथवा राता वर्णवाळो, अत्यंत विषम तथा अत्यंत वेदनावाळो होय अने जेनुं उठवुं तथा पाकवुं लांबे काळे थाय ते विद्रधिने वायुसंबंधी जाणवो. आ विद्रधिनो स्राव पातळो होय छे.

५ पक्वोदुम्बरसंकाशः श्यावो वा ज्वरदाहवान् ।
क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिः पित्तसम्भवः ॥

पित्तथी थएला विद्रधिनुं लक्षण.

५ जे विद्रधि पाकेलां उंबरानां फळ जेवो अथवा काळाशवाळो होय, ज्वरथी तथा बळतराथी युक्त होय अने जेनुं उठवुं तथा पाकवुं शीघ्र थाय ते विद्रधिने पित्तथी थएलो जाणवो. आ विद्रधिनो स्राव पीळो होय छे.

६ शरावसदृशः पाण्डुः शीतः स्तब्धोऽल्पवेदनः ।
चिरोत्थानप्रपाकश्च सकण्डूश्च कफोत्थितः ॥
तनुपीतसिताश्चैषामास्रावाः क्रमशः स्मृताः ।

कफथी थएला विद्रधिनुं लक्षण.

६ जे विद्रधि कोडीया जेवो, पांडुवर्णवाळो, शीतल, स्तब्ध, अल्प वेदनावाळो तथा खरजवाळो होय अने जेनुं उठवुं तथा पाकवुं विलंबथी थाय ते विद्रधिने कफथी थएलो जाणवो. आ विद्रधिनो स्राव धोळो होय छे.

७ नानारूपरुजास्रावो घाटालो विषमो महान्।
विषमं पच्यते वापि विद्रधिः सांनिपातिकः॥

त्रणे दोषोथी थएला विद्रधिनुं लक्षण.

७ जे विद्रधि काळा राता तथा पांडु वर्णवाळो होय, भोंकाया जेवी व्यथा बलतरा तथा खरज आदि अनेक प्रकारनी पीडावाळो होय, पातळा पीळा तथा धोळा स्राववाळो होय, उंची अणीवाळो होय, उंचो नीचो होय, मोटो होय अने जेनुं पाकवुं लांबे काळे, थोडे काळे, उंडुं, छीछरूं तथा उंचुं नीचुं ए रीते अनियमित होय ते विद्रधिने त्रणे दोषोथी थएलो जाणवो.

८ तैस्तैर्भावैरभिहते क्षते चापथ्यसेविनः।
क्षतोष्मा वायुविसृतः सरक्तं पित्तमीरयेत्॥
ज्वरस्तृष्णा च दाहश्च जायते तस्य देहिनः।
एष विद्रधिरागन्तुः पित्तविद्रधिलक्षणः॥

क्षतथी (अभिघातथी) थएला विद्रधिनुं संप्राप्तिपूर्वक लक्षण.

८ लांकडां के पथरा वगेरेथी अभिघात थया छतां अथवा जेथी रुधिरनो स्राव थाय एवो जखम थया छतां जे माणस अपथ्यनुं सेवन करे तेना अंगमां रुधिरना क्षयथी प्रकुपित थएला वायुए फेलावेली अभिघातनी अथवा जखमनी गरमी रुधिरने तथा पित्तने प्रकुपित करीने विद्रधिने उत्पन्न करे छे के जेथी ते माणसने ज्वर, तरश अने बळतरा थाय छे. आ आगंतु (अभिघातथी थएला) विद्रधिनां लक्षणो पित्तथी थएला विद्रधिनां लक्षणो जेवां होय छे.

९ कृष्णस्फोटावृतः श्यावस्तीव्रदाहरुजाज्वरः।
पित्तविद्रधिलिङ्गस्तु रक्तविद्रधिरुच्यते॥

रुधिरथी थएला विद्रधिनुं लक्षण.

९ जे विद्रधि काळा फोडलाओथी वींटाएलो, काळाशवाळो, तीव्र बळतरावाळो, तीव्रवेदनावाळो, तीव्र ज्वरवाळो अने बीजां पण पित्तसंबंधी विद्रधिना जेवां लक्षणोवाळो होय ते विद्रधिने रुधिरथी थएलो जाणवो.

१० उक्ता विद्रधयो ह्येते तेष्वसाध्यस्तु सर्वजः।

आ बाह्य (बाहारना) विद्रधिओमां असाध्य विद्रधि.

१० आ जे सघळा बाह्य विद्रधिओ कह्या तेओमां त्रणे दोषोथी थएलो विद्रधि असाध्य छे.

११ आभ्यन्तरानतस्तूर्ध्वं विद्रधीन्परिचक्षते॥
गुर्वसात्म्यविरुद्धान्नशुष्कसंक्लिन्नभोजनात्।
अतिव्यवायव्यायामवेगाघातविदाहिभिः॥
पृथक्सम्भूय वा दोषाः कुपिता गुल्मरूपिणम्।
वल्मीकवत्समुन्नद्धमन्तः कुर्वन्ति विद्रधिम्॥
गुदे बस्तिमुखे नाभ्यां कुक्षौ वङ्क्षणयोस्तथा।
वृक्कयोः प्लीह्नि यकृति हृदये क्लोम्नि वा तथा।
तेषां लिङ्गानि जानीयाद्बाह्यविद्रधिलक्षणैः।

अंदरना विद्रधिओनां निदानो, संप्राप्ति तथा लक्षणो.

११ हवे अंदरना विद्रधिओ विषे कहीए छीए. भारे अन्नोना भोजनथी, असात्म्य अन्नोना भोजनथी, परस्पर विरुद्धता धरावनारा पदार्थोना भोजनथी, सूकाएला तथा सडेला पदार्थो जमवाथी, अत्यंत मैथुन करवाथी, अत्यंत कसरत करवाथी, मूत्र तथा अधोवायु वगेरेनी हाजतोने अटकाववाथी अने विदाही पदार्थोना सेवनथी कोप पामेला दोषो जूदा जूदा अथवा सामटा मळीने गुदानी अंदर, मूत्राशयना मोहोडामां, नाभिनी अंदर, पेटनी अंदर, साथळना सांधाओनी अंदर, डाबा तथा जमणा पडखामां रहेला वृक्क (वुक्का) नामना मांसपिंडोमां, बरलमां, कालखंड नामनी जमणा पडखानी गांठमां, हृदयनी अंदर अथवा तरश लागवाना स्थाननी अंदर राफडा जेवा चोमेर उंचा अने गुल्म जेवा रूपवाळा विद्रधिओने उत्पन्न करे छे. ए विद्रधिओनां चिह्नो बाहारना विद्रधिओनां लक्षणो प्रमाणे जाणी लेवां.

१२ आमपक्वैषणीयेन पक्वापक्वं विनिर्दिशेत् ॥

अंदरना विद्रधिओना काचापणानी तथा पाकापणानी परीक्षाविषे.

१२ अंदरना विद्रधिओ 'काचा छे के पाका छे' ए परीक्षा सूत्रस्थानना आमपक्वैषणीय नामना सत्तरमा अध्यायना ९ मा विषयमां कहेली रीतिप्रमाणे करी लेवी.

१३ अधिष्ठानविशेषेण लिङ्गं शृणु विशेषतः ।
गुदे वातनिरोधस्तु बस्तौ कृच्छ्राल्पमूत्रता ॥
नाभ्यां हिक्का तथाटोपः कुक्षौ मारुतकोपनम् ।
कटीपृष्ठग्रहस्तीव्रो वङ्क्षणोत्थे तु विद्रधौ ॥
वृक्कयोः पार्श्वसंकोचः प्लीन्युच्छ्वासावरोधनम् ।
सर्वाङ्गप्रग्रहस्तीव्रो हृदि शूलश्च दारुणः ॥
श्वासो यकृति तृष्णा च पिपासा क्लोमजेऽधिका ।

स्थानकोना भेद उपरथी अंदरना विद्रधिओनां अमुक चिह्नोनो भेद.

१३ हवे स्थानकोना भेद उपरथी अंदरना विद्रधिओनां विशिष्ट चिह्नो कहुं छुं ते सांभळो. गुदानी अंदर विद्रधि थयो होय तो अधोवायु रोकाई जाय छे. मूत्राशयना मोहोडामां विद्रधि थयो होय तो मांड मांड थोडुं थोडुं मूत्र उतरे छे. नाभिनी अंदर विद्रधि थयो होय तो हेडकी आव्या करे छे तथा संक्षोभ थाय छे. पेटनी अंदर विद्रधि थयो होय तो वायुनो प्रकोप थाय छे. साथळना मूळनी अंदर विद्रधि थयो होय तो तीव्र रीते कमर तथा पीठ झलाई जाय छे. बुक्काओमां विद्रधि थयो होय तो जाणे पडखां उखेडी नाखवामां आवतां होय एवी व्यथा थाय छे. बरलनी अंदर विद्रधि थयो होय तो उंचो श्वास लई शकातो नथी. हृदयनी अंदर विद्रधि थयो होय तो तीव्र रीते सघळां अंगो झलाई जाय छे तथा दारूण शूळ नीकळे छे. कालखंड (जमणा पडखानी गांठ)नी अंदर विद्रधि थयो होय तो श्वास तथा तरश थाय छे अने तरश लागवाना स्थाननी अंदर थयो होय तो बहुज पाणी पीवाय छे.

१४ आमो वा यदि वा पक्वो महान्वा यदि वेतरः ॥
सर्वो मर्मोत्थितश्चापि विद्रधिः कष्ट उच्यते ।

मर्मस्थलमां उत्पन्न थएलो अंदरनो विद्रधि सघळी स्थितिओमां कष्टसाध्य छे.

१४ काचो अथवा पाको अने नाहानो अथवा मोटो मर्मस्थलमां उत्पन्न थएलो सर्व प्रकारनो विद्रधि कष्टसाध्य छे.

१५ नाभेरुपरिजाः पक्वा यान्त्यूर्ध्वमितरे त्वधः ॥

अंदरना विद्रधिओना स्रावना मार्गो.

१५ नाभिथी उपरना भागोमां थएला अंदरना विद्रधिओ पाके त्यारे तेओनो स्राव मोहोडामांथी नीकळे छे अने नाभिथी नीचेना भागोमां (मूत्राशय वगेरेमां) थएला अंदरना विद्रधिओ पाके त्यारे तेओनो स्राव गुदामांथी नीकळे छे. (नाभिमां थएलो अंदरनो विद्रधि पाके त्यारे तेनो स्राव तो नाभि तथा मोहोडुं ए बन्नेमांथी थाय छे.)

१६ जीवत्यधो निस्रुतेषु स्रुतेषूर्ध्वं न जीवति ।
हृन्नाभिबस्तिवर्ज्या ये तेषु भिन्नेषु बाह्यतः ॥
जीवेत्कदाचित्पुरुषो नेतरेषु कदाचन ।

अंदरना विद्रधिओनुं स्राव उपरथी साध्यासाध्यपणुं.

१६ विद्रधिओनो स्राव गुदामांथी थतो होय तो माणस जीवे छे पण मोहोडामांथी स्राव थतो होय तो माणस जीवतो नथी. हृदय, नाभि अने मूत्राशय ए स्थानको शिवाय बीजां स्थानकोमां थएला अंदरना विद्रधिओ जो बाहार फूट करे तो माणस कदाच जीवे छे परंतु हृदय, नाभि अने मूत्राशय एओमां थएला विद्रधिओ तो अंदर के बाहार गमे त्यां फूट करे तो पण माणस कदी जीवतो नथी. (हृदय, नाभि अने मूत्राशय एओमां थएला विद्रधिओ तो असाध्यज छे. आ अध्यायनो २० मो विषय जुवो.)

१७ स्त्रीणामपप्रजातानां प्रजातानां तथाऽहितैः॥
दाहज्वरकरो घोरो जायते रक्तविद्रधिः ।

स्त्रीओने गर्भसंबंधी रुधिरथी थएला विद्रधिविषे.

१७ जेओनो गर्भ पडी गयो होय अथवा जेओने योग्य रीते प्रसव थयो होय ते स्त्रीओने पण शीत, रूक्ष तथा विदाही वगेरे अहित पदार्थोना सेवनथी दाहने तथा ज्वरने उत्पन्न करनारो भयंकर रुधिरसंबंधी विद्रधि थाय छे.

१८ अपि सम्यक्प्रजातानामसृक्कायादनिःसृतम्।
रक्तजं विद्रधिं विद्यात्कुक्षौ मक्कलसंज्ञितम् ।
सप्ताहान्नोपशान्तश्चेत्ततोऽसौ संप्रपच्यते ॥

स्त्रीओने प्रसवनुं लोही बराबर न नीकळ्युं होय तो तेथी पण विद्रधि थवाविषे.

१८ जे स्त्रीओने सारी रीते प्रसव थयो होय ते स्त्रीओने पण प्रसवनुं लोही शरीरमांथी बराबर न नीकळ्युं होय तो ते लोही मक्कल नामना रोगने उत्पन्न करे छे अने ते रोगमांथी पेटमां रुधिरसंबंधी विद्रधि थाय छे. ए विद्रधि जो सात दिवसनी अंदर शांत न थाय तो पछी पाके छे.

१९ विशेषमथ वक्ष्यामि स्पष्टं विद्रधिगुल्मयोः।
तुल्यदोषसमुत्थानाद्विद्रधेर्गुल्मकस्य च ॥
कस्मान्न पच्यते गुल्मो विद्रधिः पाकमेति च ।
गुल्माकाराः स्वयं दोषा विद्रधिर्मांसशोणिते ॥
विवरानुचरो ग्रन्थिरप्सु बुद्बुदको यथा ।
एवंप्रकारो गुल्मस्तु तस्मात्पाकं न गच्छति ॥
मांसशोणितबाहुल्यात्पाकं गच्छति विद्रधिः ।
मांसशोणितहीनत्वाद्गुल्मः पाकं न गच्छति ।
गुल्मस्तिष्ठति दोषे स्वे विद्रधिर्मांसशोणिते ॥
विद्रधिः पच्यते तस्माद्गुल्मश्चापि न पच्यते ।

विद्रधि अने गुल्म एओ, दोषोथी तुल्य रीते उत्पन्न थनारा छतां पण विद्रधि पाके छे अने गुल्म पाकतो नथी तेनुं कारण.

१९ हवे विद्रधि अने गुल्म एओना विशेषने स्पष्ट रीते कहुं छुं. विद्रधि अने गुल्म एओ, दोषोथी तुल्य रीते उठनारा छतां पण तेओमां गुल्म शामाटे पाकतो नथी अने विद्रधि शामाटे पाके छे एवो जे संशय उत्पन्न थाय छे तेनुं निवारण आ प्रमाणे छे. जे दोषो छे तेओ रुधिर वगेरे कोई पण दूष्योनो आश्रय कर्या विना पोतेज गुल्मरूप थाय छे अने विद्रधि तो दोषोए दूषित करेला मांसथी तथा रुधिर वगेरेथी बने छे. जेम पाणीमां पाणीमयज परपोटो थाय छे तेम स्रोतोमां फरनारो गुल्म एक जातनो दूष्यमय नहीं पण दोषमय ग्रंथिज थाय छे ए कारणने लीधे गुल्म पाकतो नथी. विद्रधि मांसना अने रुधिरना जथावाळो होवाने लीधे पाके छे अने गुल्म मांसथी तथा रुधिरथी रहित होवाने लीधे पाकतो नथी. गुल्म पोताना दोषमां रहे छे अने विद्रधि मांसमां तथा रुधिरमां रहे छे तेथी गुल्म पाकतो नथी अने विद्रधि पाके छे. (गुल्म नथी पाकतो ए वातने नियमित समजवी नहीं. केम के उत्तरतंत्रना ४२ मा अध्यायना छट्ठा विषयना कौंसमां गुल्मनो पाक पण परमतथी केहेवामां आवशे. जो गुल्मनो पाक थतो होय तो विद्रधि तुरत पाके छे अने गुल्म लांबे काळे पाके छे एटलो विशेष समजवो.)

२० हृन्नाभिबस्तिजः पक्वो वर्ज्यो यश्च त्रिदोषजः।

---

१ सुवावडी स्त्रीनो रूक्षथी वधेलो वायु तीक्ष्ण तथा उष्णे सूकावेला रुधिरने रोकीने नाभिनी नीचे पडखांओमां, मूत्राशयमां अथवा मूत्राशयथी उपरना भागमां गांठने उत्पन्न करे छे. ए गांठ थवाथी नाभिमां, मूत्राशयमां तथा पेटमां शूळ नीकळे छे, पक्वाशय फूली जाय छे अने मूत्रनी अटकायत थाय छे ए मक्कल रोग केहेवाय छे.

२ आ अध्यायनो अगीयारमो विषय जुवो.

विद्रधिना असाध्यपणानुं विशेष विवेचन.

२० हृदयमां, नाभिमां के मूत्राशयमां थएला विद्रधिने असाध्य समजवो अने त्रणे दोषोथी थएलो विद्रधि जो पाक्यो होय तो तेने पण असाध्य समजवो.

२१ अथ मज्जापरीपाको घोरः समुपजायते ।
सोऽस्थिमांसनिरोधेन द्वारं न लभते यदा ॥
ततः स व्याधिना तेन ज्वलनेनेव दह्यते ।
अस्थि मज्जोष्मणा तेन शीर्यते दह्यमानवत् ॥
विकारः शल्यभूतोऽयं क्लेशयेदातुरं चिरम् ।
अथास्य कर्मणा व्याधिर्द्वारं तु लभते यदा ॥
ततो मेदःप्रभं स्निग्धं शुक्लं शीतमथो गुरु ।
भिन्नेऽस्थ्नि निस्रवेत्पूयमेतदस्थिगतं विदुः ॥
विद्रधिं शास्त्रकुशलाः सर्वदोषरुजावहम् ॥

अस्थिनी अंदर विद्रधिना पाकवानुं लक्षण.

२१ अस्थिमां रहेलो विद्रधि पाके छे त्यारे मज्जानो पण भयंकर पाक थाय छे. ए मज्जानो पाक ज्यारे अस्थिथी तथा मांसथी अटकी रहीने बाहार नीकळवाना द्वारने प्राप्त थतो नथी त्यारे माणस ते व्याधिथी जेम अग्निथी दाह पामवा लागे तेम दाह पामवा लागे छे. ए मज्जाना पाकनी गरमीथी अस्थि जाणे बळवा लागेलुं होय तेम शिथिल थई जाय छे. आ शल्य जेवो थएलो विकार रोगीने लांबा वखतगुधी दुःख दे छे. ज्यारे शस्त्रक्रियाथी अस्थिने भेदवामां आवे त्यारे रस्तो मळवाने लीधे तेमांथी मेद जेवुं, स्निग्ध, धोळुं, टाढुं तथा भारे परु स्रवे छे. आवा अस्थिमां रहेला विद्रधिने शास्त्रज्ञ वैद्यो सघळा दोषोसंबंधी वेदनाओ करनारो केहे छे.

अध्याय १० मो.

१ अथातो विसर्पनाडीस्तनरोगनिदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विसर्पनाडीस्तनरोगनिदानं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे,

२ त्वङ्मांसशोणितगताः कुपितास्तु दोषाः
सर्वाङ्गसारिणमिहास्थितमात्मलिङ्गम् ।
कुर्वन्ति यं विसृतमुन्नतमाशु शोफं
तं सर्वतो विसरणाच्च विसर्पमाहुः ॥

विसर्पनां संप्राप्ति तथा निदान, अने विसर्प शब्दनो अर्थ (निरुक्ति.)

२ प्रकुपित थएला दोषो त्वचामां (रसमां) मांसमां तथा रुधिरमां आवी सर्व अंगोमां प्रसार पामनारा, पोतपोतानां (ते ते दोषनां) चिह्नोवाळा, स्थिर न रहे एवा तथा उंचाइवाळा जे विस्तीर्ण सोजाने उत्पन्न करे छे ते सोजो चोमेर विसरण (प्रसार) करनारो होवाथी विसर्प केहेवाय छे.

३ वातात्मकोऽसितमृदुः परुषोऽङ्गमर्द-
सम्भेदतोदपवनज्वरलिङ्गयुक्तः ।
गण्डैर्यदा तु विषमैरतिदूषितत्वा-
द्युक्तः स एव कथितः खलु वर्जनीयः ॥

वायुथी थएला विसर्पनुं विशिष्ट लक्षण अने अमुक स्थितिमां असाध्यपणुं.

३ वायुथी थएलो विसर्प काळा तथा कोमळ वर्णवाळो होय छे, खरसट होय छे अने अंगोना मर्दनने, भेदाया जेवी व्यथाने, भोंकाया जेवी व्यथाने तथा वातज्वरना जेवां चिह्नोने उत्पन्न

---

१ विसर्प, नाडीव्रण अने स्तनसंबंधी रोग एओनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षणो वगेरेना निरूपण विषेनो.

करे छे. जो ए वायुथी थएलो विसर्प धातुओना अत्यंत दूषितपणाने लीधे अग्नि जेवा विषम फोडलाओथी युक्त होय तो असाध्य छे माटे तेनी चिकित्सा करवी नहीं. (वायुथी थएला विसर्पना असाध्यपणानां जे आ चिह्नो कह्यां ते चिह्नो तेना असाध्यपणानां नथी पण वायु अने पित्त ए बे दोषोथी थएलो विसर्प के जे असाध्य छे तेनां छे एम पण मानवामां आवे छे.)

४ पित्तात्मको द्रुतगतिर्ज्वरदाहपाक-
स्फोटप्रभेदबहुलः क्षतजप्रकाशः ।
दोषप्रवृद्धिहत-मांसशिरो यदा स्या-
त्स्रोतोजकर्दमनिभो न तदा स सिध्येत् ॥

पित्तथी थएला विसर्पनुं विशिष्ट लक्षण अने अमुक स्थितिमां असाध्यपणुं.

४ पित्तथी थएलो विसर्प झडपथी गति करे छे, लोही जेवो रातो होय छे अने तेमां ज्वर, दाह, पाकवुं, फोडला तथा भेदावुं एओ अत्यंत होय छे. ए पित्तथी थएलो विसर्प जळना प्रवाहथी उत्पन्न थएला कादवना द्रव जेवा वर्णवाळो अने दोषनी अतिवृद्धिथी जेमां मांसनो तथा शिराओनो उपघात थइ गयो होय एवो थई जाय त्यारे असाध्य छे. (पित्तथी थएला विसर्पना असाध्यपणानां जे आ लक्षणो कह्यां ते लक्षणो तेना असाध्यपणानां नथी पण पित्त अने कफ ए बे दोषोथी थएलो विसर्प के जे असाध्य छे तेनां छे एम पण मानवामां आवे छे.)

५ श्लेष्मात्मकः सरति मन्दमशीघ्रपाकः
स्निग्धः सितः श्वयथुरल्परुगुग्रकण्डूः ।

कफथी थएला विसर्पनुं विशिष्ट लक्षण.

५ कफथी थएलो विसर्प धीरे धीरे फेलाय छे, तुरत पाकतो नथी, स्निग्ध होय छे, सफेद वर्णवाळो होय छे, अल्प पीडावाळो होय छे अने उग्र खरजवाळो होय छे.

६ सर्वात्मकस्त्रिविधवर्णरुजोऽवगाढः
पक्को न सिध्यति च मांसशिराप्रणाशात् ॥

त्रणे दोषोथी थएला विसर्पनुं विशिष्ट लक्षण तथा असाध्यपणुं.

६ जे विसर्पमां उपर कहेला वायु वगेरे सर्व दोषोनां वर्णो तथा वेदनाओ जोवामां आवे तथा जेनुं मूळ अत्यंत उंडुं होय ते विसर्पने त्रणे दोषोथी थएलो जाणवो. आ त्रिदोषात्मक अथवा सान्निपातिक विसर्प पाकीज जाय छे अने ते पाकवाना सडाथी मांसनो तथा शिराओनो नाश थई जाय छे माटे असाध्य छे.[१]

७ सद्यः क्षतव्रणमुपेत्य नरस्य पित्तं
रक्तं च दोषबहुलस्य करोति शोफम् ।
श्यावं सलोहितमतिज्वरदाहपाकं
स्फोटैः कुलत्थसदृशैरसितैश्च कीर्णम् ॥

क्षतथी थएला विसर्पनुं विशिष्ट लक्षण.

७ जेना धातुओ दोषोथी दूषित थया होय ते माणसने शस्त्रप्रहार वगेरे आगंतुक कारणोथी जखम थतां ते ताजा जखममां पित्त अने रुधिर ए बे बन्ने प्राप्त थईने काळाशवाळा, रताशवाळा, अत्यंत बळतरावाळा, अत्यंत ज्वरवाळा, अत्यंत पाकवाळा अने कळथी जेवा काळा फोडलाओथी व्याप्त थएला सोजाने उत्पन्न करे छे. ए सोजाने क्षतथी थएलो विसर्प जाणवो.

८ सिध्यन्ति वातकफपित्तकृता विसर्पाः
सर्वात्मकः क्षतकृतश्च न सिद्धिमेति ।
पैत्तानिलावपि च दर्शितपूर्वलिङ्गौ
सर्वे च मर्मसु भवन्ति हि कृच्छ्रसाध्याः ॥

---

१ डल्हन तो एम व्याख्यान आपे छे के त्रिदोषात्मक विसर्प कष्टसाध्य छे पण ते जो पाके अने पाकवाना सडाथी मांसनो तथा शिराओनो नाश थाय तो असाध्य छे.

विसर्पोना साध्यपणानुं, असाध्यपणानुं तथा कष्टसाध्यपणानुं सामुदायिक विवेचन.

८ वायुए करेलो, पित्ते करेलो अने कफे करेलो ए त्रण विसर्पो साध्य छे. त्रणे दोषोए करेलो विसर्प अने क्षते करेलो विसर्प एओ असाध्य छे. पित्ते करेलो विसर्प पण जो आ अध्यायना चोथा विषयमां कह्या प्रमाणे कादवना द्रव जेवा वर्णवाळो अने जेथी मांसनो तथा शिराओनो उपघात थयो होय एवो होय तो असाध्य छे. वायुए करेलो विसर्प पण जो आ अध्यायना त्रीजा विषयमां कह्याप्रमाणे अग्नि जेवा विषम फोडलाओथी युक्त थयो होय तो असाध्य छे. मर्मोमां थएला सघळा प्रकारना विसर्पो कष्टसाध्य छे.

९ शोफं न पक्क इति पक्कमुपेक्षते यो
यो वा व्रणं प्रचुरपूयमसाधुवृत्तः ।
अभ्यन्तरं प्रविशति प्रविदार्य तस्य
स्थानानि पूर्वविहितानि ततः स पूयः ॥
तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरित्यतश्च
नाडीव यद्वहति तेन मता तु नाडी ।

नाडीव्रणनी संप्राप्तिपूर्वक निरुक्ति.

९ जे मूर्ख माणस घणा परुवाळा पाकी गएला सोजाने काचो जाणीने तेनुं मोहोडुं करावे नहीं अथवा घणा परुवाळा पाकी गएला व्रणने काचो जाणीने तेने शोधन पदार्थोथी साफ करावे नहीं अने अहित आहार तथा अहित विहार करे ते माणसनुं परु ते पछी त्वचाने, मांसने, शिराओने, स्नायुओने, सांधाओने, अस्थिओने, कोठाने तथा मर्मस्थलोने छिद्रवाळां करीने तेओनी अंदर पेसी जाय छे. अंदर घणा दूरसुधी प्रवेश थवाने लीधे ते परु सर्वदा स्रव्या करे छे. आथी ए व्रणगति केहेवाय छे तथा पोली नळीनी पेठे परुने वह्या करे छे तेथी नाडीव्रण पण केहेवाय छे.

१० दोषैस्त्रिभिर्भवति सा पृथगेकशश्च
संमूर्च्छितैरपि च शल्यनिमित्ततोऽन्या ॥

नाडीव्रणोनी संख्या.

१० वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी अने शल्यथी ए रीते नाडीव्रणो पांच प्रकारना थाय छे.

११ तत्रानिलात्परुषसूक्ष्ममुखी सशूला
फेनानुविद्धमधिकं स्रवति क्षपायाम् ।

वायुथी थएला नाडीव्रणनुं लक्षण.

११ जो नाडीव्रण झीणा तथा खरसट मोहोडावाळो होय, शूळवाळो होय अने तेमांथी राते फीणथी मिश्रित स्राव अधिक थतो होय तो ते नाडीव्रणने वायुथी थएलो जाणवो.

१२ तृट्तापतोदसदनज्वरभेदहेतुः
पीतं स्रवत्यधिकमुष्णमहःसु पित्तात् ॥

पित्तथी थएला नाडीव्रणनुं लक्षण.

११ जो नाडीव्रण तरशने, तापने, भोंकाया जेवी व्यथाने, अंगोनी ग्लानिने, ज्वरने तथा भेदाया जेवी व्यथाने करतो होय अने दिवसे तेमांथी पीळा वर्णवाळो उष्ण स्राव अधिक थतो होय तो ते नाडीव्रणने पित्तथी थएलो जाणवो.

१३ ज्ञेया कफाद्बहुघनार्जुनपिच्छिलास्रा
रात्रिस्रुतिः स्तिमितरुक्कठिना सकण्डूः ।

कफथी थएला नाडीव्रणनुं लक्षण.

१३ जो नाडीव्रण बहु घाटा, सफेद तथा चीकणा स्राववाळो होय, अल्प वेदनावाळो होय, राते अधिक स्रवतो होय, कठण होय अने खरजवाळो होय तो ते नाडीव्रणने कफथी थएलो जाणवो.

१४ दोषद्वयाभिहितलक्षणदर्शनेन
तिस्रो गतीर्व्यतिकरप्रभवास्तु विद्यात् ॥

बबे दोषोथी थएला नाडीव्रणोनां लक्षणो.

१४ त्रण दोषोनां जे जूदां जूदां लक्षणो के-

हेवामां आव्यां तेओमांथी जे नाडीव्रणमां वायु अने पित्त ए बन्नेनां मिश्रित लक्षणो जोवामां आवे ते नाडीव्रणने वायु तथा पित्त ए बन्नेथी थएलो जाणवो, जे नाडीव्रणमां वायु अने कफ ए बन्नेनां मिश्रित लक्षणो जोवामां आवे ते नाडीव्रणने वायु तथा कफ ए बन्नेथी थएलो जाणवो अने जे नाडीव्रणमां पित्त तथा कफ ए बन्नेनां मिश्रित लक्षणो जोवामां आवे ते नाडीव्रणने पित्त तथा कफ ए बन्नेथी थएलो जाणवो. (गयदासाचार्य आ पाठ छोडी दीधो छे तेथी पांचज नाडीव्रणो थाय छे अने चिकित्सास्थानना १७ मा अध्यायनो ७ मो विषय जोतां तथा ते पछी आपेली चिकित्साओ जोतां पण गयदासाचार्यनो मत वास्तविक छे एम जणाय छे.)

१५ दाहज्वरश्वसनमूर्च्छनवक्त्रशोषा
यस्यां भवन्त्यभिहितानि च लक्षणानि ।
तामादिशेत्पवनपित्तकफप्रकोपा-
द्धोरामसुक्षयकरीमिव कालरात्रिम् ॥

त्रणे दोषथी थएला नाडीव्रणनुं लक्षण.

१५ जे नाडीव्रण दाहथी, ज्वरथी, श्वासथी, मूर्छाथी तथा मुखना शोषथी युक्त होय अने जेमां उपर कहेलां बीजां पण त्रणे दोषोनां लक्षणो होय ते भयंकर नाडीव्रणने त्रणे दोषोना प्रकोपथी थएलो अने कालरात्रिनी पेठे प्राणनो नाश करनारो जाणवो.

१६ नष्टं कथंचिदणुमात्रमुदीरितेषु
स्थानेषु शल्यमचिरेण गतिं करोति ।
सा फेनिलं मथितमुष्णमसृग्विमिश्रं
स्रावं करोति सहसा सरुजा च नित्यम् ॥

शल्यथी थएला नाडीव्रणनुं लक्षण.

१६ त्वचा, मांस, शिराओ, स्नायुओ, सांधाओ, अस्थिओ, कोठो के मर्मस्थलो एओमां पेठेलुं अने कोई रीते गुम थई जवाने लीधे नहीं देखवामां आवतुं झीणुं शल्य थोडा काळमां उंडी गति करे छे अने ते गतिथी तुरत मथाएला जेवो, उनो तथा लोहीथी संयुक्त थएलो फीणवाळो स्राव थाय छे अने निरंतर पीडा थया करे छे ए शल्यथी थएलो नाडीव्रण केहेवाय छे. (अंगोने लांबां टूंकां करवा वगेरेना समयमां शल्यनुं संचलन थतां स्राव थाय छे.)

१७ यावत्यो गतयो यैश्च कारणैः सम्भवन्ति हि।
तावन्तः स्तनरोगाः स्युः स्त्रीणां तैरेव हेतुभिः॥

स्तनरोगोनां निदानो अने संख्या.

१७ जे कारणोथी नाडीव्रणो थाय छे तथा जेटली संख्यावाळा थाय छे तेज कारणोथी स्त्रीओने स्तनरोगो थाय छे तथा तेटलीज संख्यावाळा थाय छे अर्थात् वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी अने अभिघातथी ए रीते स्तनरोगो पांच प्रकारना थाय छे.

१८ धमन्यः संवृतद्वाराः कन्यानां स्तनसंश्रिताः।
दोषाविसरणात्तासां न भवन्ति स्तनामयाः ॥
तासामेव प्रजातानां गर्भिणीनां तु ताः पुनः ।
स्वभावादेव विवृता जायन्ते सम्भवन्त्यतः ॥

जेओने कदी गर्भ न रह्यो होय एवी स्त्रीओने स्तनरोगो न थवानुं अने जेओने गर्भ के प्रसव थयो होय ते स्त्रीओने स्तनरोगो थवानुं कारण.

१८ जेओने गर्भ कदी पण नज रह्यो होय एवी स्त्रीओनां स्तनोनी धमनीओ बीडाएलां द्वारोवाळी अने तेने लीधे दोषोना संचारवगरनी होय छे तेथी तेवी स्त्रीओने स्तनरोगो थता नथी. जे स्त्रीओने प्रसव थयो होय ते स्त्रीओनी अने गर्भवाळी स्त्रीओनी ते धमनीओ स्वाभाविक रीते खुलेलां द्वारोवाळी थई जाय छे एटला माटे ते स्त्रीओने स्तनरोगो थाय छे.

१९ रसप्रसादो मधुरः पक्वाहारनिमित्तजः ।
कृत्स्नदेहात्स्तनौ प्राप्तः स्तन्यमित्यभिधीयते ॥

विशस्तेष्वपि देहेषु यथा शुक्रं न दृश्यते ।
सर्वदेहाश्रितत्वाच्च शुक्रलक्षणमुच्यते ॥
तदेव चेष्टयुवतेर्दर्शनात्स्मरणादपि ।
शब्दसंश्रवणात्स्पर्शात्संहर्षाच्च प्रवर्तते ॥
सुप्रसन्नं मनस्तत्र हर्षणे हेतुरुच्यते ।
आहाररसयोगित्वादेवं स्तन्यमपि स्त्रियाः ॥
तदेवापत्यसंस्पर्शाद्दर्शनात्स्मरणादपि ।
ग्रहणादप्युरोजस्य शुक्रवत्संप्रवर्त्तते ॥
स्नेहो निरन्तरस्तत्र प्रस्रवे हेतुरुच्यते ।

धावणनुं स्वरूप, मरण पामेली स्त्रीओनां शरीरोमां धावण नहीं देखावामां दृष्टांत अने धावणनी प्रवृत्तिनां सदृष्टांत कारणो.

१९ पाकेला आहारथी उत्पन्न थएलो रसनो मधुर तथा उत्तम सार सघळा शरीरमांथी स्तनोमां आवे छे त्यारे स्तन्य (धावण-दूध) केहेवाय छे. जेम पुरुषोनां शरीरोने कापीने तेओमां अवलोकन करतां छतां पण वीर्य नजरे जोवामां आवतुं नथी तेम स्त्रीओनां शरीरोने कापीने अवलोकन करतां छतां पण तेओमां धावण जोवामां आवतुं नथी. आम छतां पण जेम वीर्य पुरुषोना सघळा शरीरमां रेहेनार छे तेम धावण स्त्रीओना सघळा शरीरमां रेहेनार छे तेथी जेवी वीर्यनी रीति छे तेवीज धावणनी रीति छे. जेम प्यारी युवतीना दर्शनथी, स्मरणथी, शब्दना श्रवणथी के स्पर्शथी हर्ष उत्पन्न थतां ते हर्षने लीधे पुरुषोना वीर्यनो स्राव थाय छे अने ते हर्षनुं कारण सुप्रसन्न थएलुं मन छे तेम संतानना स्पर्शथी, दर्शनथी, स्मरणथी अने संतानना हाथवते स्तन पकडायाथी हर्ष थतां ते हर्षने लीधे स्त्रीओना दूधनो स्राव थाय छे अने ते हर्षनुं कारण हमेशनो स्नेह छे. वीर्यनुं अने दूधनुं बन्नेनुं मूल उत्पत्तिकारण आहारनो रसज छे.

२० तत्कषायं भवेद्वातात्क्षिप्तं च प्लवतेऽम्भसि॥
पित्तादम्लं च कटुकं राज्योऽम्भसि च पीतिकाः
कफाद्घनं पिच्छिलं च जले चाप्यवसीदति ॥
सर्वैर्दुष्टैः सर्वलिङ्गमभिघाताच्च दुष्यति ।

ते ते दोषोने लीधे धावणनी जूदी जूदी दुष्टता.

२० जो धावण वायुथी बगडेलुं होय तो तूरा रसवाळुं थाय छे अने पाणीमां नाखवामां आवतां पाणीनी उपर तरे छे. जो धावण पित्तथी बगडेलुं होय तो खाटुं तथा तीखुं थाय छे अने पाणीमां नाखतां तेनी पीळी पीळी रेखाओ थाय छे. जो धावण कफथी बगडेलुं होय तो घाटुं तथा चीकणुं थाय छे अने पाणीमां नाखतां पाणीनी अंदर डूबी जाय छे. त्रणे दोषोथी बगडेलुं होय तो त्रणे दोषोनां चिह्नोवाळुं थाय छे. धावण अभिघातथी पण दूषित थई जाय छे.

२१ यत्क्षीरमुदके क्षिप्तमेकीभवति पाण्डुरम् ॥
मधुरं चाविवर्णं च प्रसन्नं तद्विनिर्दिशेत् ।

निर्दोष धावणनुं लक्षण.

२१ जे धावण पाणीमां नाखवामां आवतां पाणीनी साथे मळी जाय, (एक थई जाय) सफेद होय, मधुर होय अने विवर्णपणाथी रहित होय ते धावणने प्रसन्न (निर्दोष) केहेवुं.

२२ सक्षीरौ वाप्यदुग्धौ वा प्राप्य दोषः स्तनौ स्त्रियाः ॥
रक्तं मांसं च सन्दूष्य स्तनरोगाय कल्पते ।

स्तनरोगोनी संप्राप्ति.

२२ दोष स्त्रीओना, दूधवाळा अथवा दूध वगरना स्तनोने प्राप्त थई, रुधिरने तथा मांसने दूषित करीने स्तनरोगने उत्पन्न करे छे.

२३ पञ्चानामपि तेषां तु हित्वा शोणितविद्रधिम् ॥
लक्षणानि समानानि बाह्यविद्रधिलक्षणैः ।

अतिदेशथी स्तनना रोगोनां लक्षणो.

२३ पांचे प्रकारना स्तनरोगोनां लक्षणो रुधिरना प्रकोपथी थएला विद्रधि शिवाय बाकीना बाहारना विद्रधिओनां लक्षणो जेवांज होय छे. (रु-

धिरना प्रकोपथी स्तनरोग थतो नथी ए स्वभावज छे.)

अध्याय ११ मो.

१ अथातो ग्रन्थ्यपच्यर्बुदगलगण्डानां
निदानं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'ग्रंथ्यपच्यर्बुदगलगंडनिदान' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वातादयो मांसमसृक्प्रदुष्टाः
संदूष्य मेदश्च कफानुविद्धम् ।
वृत्तोन्नतं विग्रथितं तु शोफं
कुर्वन्त्यतो ग्रन्थिरिति प्रदिष्टः ॥

ग्रंथिनां निदानो, संप्राप्ति तथा सामान्य लक्षण.

२ प्रकुपित थएला वायु, पित्त तथा कफ ए त्रण दोषो मांसने तथा रुधिरने दूषित करीने जे उंचा, गोळाकार तथा अत्यंत कठण गांठरूप सोजाने उत्पन्न करे छे ते **ग्रंथि** केहेवाय छे. कफथी संयुक्त थएलुं मेद पण एवाज ग्रंथिने उत्पन्न करे छे अने वायुथी विकृति पामेली शिराओ पण एवाज ग्रंथिने उत्पन्न करे छे.

३ आयम्यते व्यध्यत एति तोदं
प्रत्यस्यते कृत्यत एति भेदम् ।
कृष्णोऽमृदुर्बस्तिरिवाततश्च
भिन्नः स्रवेच्चानिलजोऽस्रमच्छम् ॥

वायुथी थएला ग्रंथिनुं लक्षण.

३ जे ग्रंथि जाणे खेंचीने लांबो करवामां आवतो होय, जाणे वारंवार कंपावातो होय, जाणे वारंवार सोईओथी भोंकातो होय, जाणे उपाडी उपाडीने फेंकवामां आवतो होय, जाणे कापी नखातो होय अने जाणे फाडी नाखवामां आवतो होय एवी व्यथा करे, काळो होय, कठण होय, मूत्राशयनी कोथळीनी पेठे लांबो होय अने भेदाय त्यारे आछा रुधिरने स्रवे ते ग्रंथिने वायुए करेलो जाणवो.

४ दन्दह्यते धूप्यति चातिमात्रं
पापच्यते प्रज्वलतीव चापि ।
रक्तः सपीतोप्यथवापि पित्ता-
द्भिन्नः स्रवेदुष्णमतीव चास्रम् ॥

पित्तथी थएला ग्रंथिनुं लक्षण.

४ जे ग्रंथि आखा शरीरमां अत्यंत बळतरा करतो होय, अंदर अत्यंत संताप करतो होय, अत्यंत पाकतो होय, अत्यंत सळगता जेवो जणातो होय, रातो अथवा पीळाशवाळो होय अने भेदाय त्यारे अत्यंत उना रुधिरने स्रवे ते ग्रंथिने पित्तथी थएलो जाणवो.

५ शीतोऽविवर्णोऽल्परुजोऽतिकण्डूः
पाषाणवत्संहननोपपन्नः ।
चिराभिवृद्धिश्च कफप्रकोपा-
द्भिन्नः स्रवेच्छुक्लघनं च पूयम् ॥

कफथी थएला ग्रंथिनुं लक्षण.

५ जे ग्रंथि टाढो होय, शरीरना जेवाज वर्णवाळो होय, थोडी वेदनावाळो होय, घणी खरजवाळो होय, पथरानी पेठे घाटो तथा मोटो होय, लांबे काळे वधतो होय अने भेदाय त्यारे सफेद तथा घाटा परूने स्रवे ते ग्रंथिने कफना प्रकोपथी थएलो समजवो.

६ शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिः
स्निग्धो महानल्परुजोऽतिकण्डूः ।
मेदःकृतो गच्छति चातिभिन्ने
पिण्याकसर्पिःप्रतिमं तु मेदः ॥

---

१ ग्रंथि, अपची, अर्बुद (रसोळी) अने गलगंड एओनां निदानो, संप्राप्ति तथा लक्षणो एओना निरूपणविषेनो.

मेदथी थएला ग्रंथिनुं लक्षण.

६ जे ग्रंथि शरीरना वधाराथी वधतो होय, शरीरनी क्षीणताथी क्षीण थतो होय, स्निग्ध होय, मोटो होय, थोडी वेदनावाळो होय, अत्यंत खरजवाळो होय अने वधारे भेदाय त्यारे तलना कल्क जेवा के थीणा घी जेवा मेदने स्रवे ते ग्रंथिने मेदसंबंधी जाणवो.

७ व्यायामजातैरबलस्य तैस्तै-
राक्षिप्य वायुर्हि शिराप्रतानम् ।
संपीड्य संकोच्य विशोष्य चापि
ग्रन्थिं करोत्युन्नतमाशु वृत्तम् ॥
ग्रन्थिः शिराजः

शिराओथी थएला ग्रंथिनुं लक्षण.

७ निर्बल माणस भार उपाडवा के युद्ध करवा वगेरे परिश्रमो करे तो तेओथी कुपित थएलो वायु शिराओना समूहने चलित करी, दबावी, संकोची तथा सूकावीने तुरत उंचा तथा गोळ आकारवाळा ग्रंथिने उत्पन्न करे छे. ए ग्रंथिने शिराओथी थएलो जाणवो.

८ स तु कृच्छ्रसाध्यो
भवेद्यदि स्यात्सरुजश्चलश्च ।
अरुक्स एवाप्यचलो महांश्च
मर्मोत्थितश्चापि विवर्जनीयः ॥

ग्रंथिओनुं कष्टसाध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

८ जो शिराओथी थएलो ग्रंथि पीडावाळो तथा चल होय तो कष्टसाध्य[1] छे. जो शिराओथी थएलो ग्रंथि अथवा वायु वगेरेथी थएला बीजा ग्रंथिओ पण पीडावगरना, अचळ, मोटा के मर्मस्थलोमां उत्पन्न थएला होय तो तेओनी चिकित्सा करवी नहीं अर्थात् असाध्य छे.

९ हन्वस्थिकक्षाक्षकबाहुसन्धि-
मन्यागलेषूपचितं तु मेदः ।
ग्रन्थिं स्थिरं वृत्तमथायतं वा
स्निग्धं कफश्चाल्परुजं करोति ॥
तं ग्रन्थिभिश्चामलकास्थिमात्रै-
र्मत्स्याण्डजालप्रतिमैस्तथान्यैः ।
अनन्यवर्णैरुपचीयमानं
चयप्रकर्षादपचीं वदन्ति ॥
कण्डूयुतास्तेऽल्परुजः प्रभिन्नाः
स्रवन्ति नश्यन्ति भवन्ति चान्ये ।
मेदःकफाभ्यां खलु रोग एष
सुदुस्तरो वर्षगणानुबन्धी ॥

अपचीनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

९ हडपचीनां अस्थिओनी संधिमां, काखनी संधिमां, अक्षकास्थिओनी संधिमां, बाहुनी संधिमां, डोकना पाछला भागनी धमनीमां (ओडमां) के गळामां वृद्धि पामेलां मेद तथा कफ एओ स्निग्ध, थोडी वेदनावाळा अने गोळ आकारवाळा अथवा लांबा स्थिर ग्रंथिने उत्पन्न करे छे. ए ग्रंथि मेदना तथा कफना अत्यंत वधाराने लीधे आमळाना ठळीया जेवडा अथवा माछलांनां इंडांओना समूहो जेवा अने शरीरना जेवाज वर्णवाळा बीजा ग्रंथिओथी व्याप्त थइने वध्या करे छे. ए रोगने आयुर्वेदना आचार्यो **अपची** केहे छे. खरजवाळा तथा थोडी पीडावाळा ए ग्रंथिओमां केटलाएक ग्रंथिओ पाकी भेदाईने स्रवे छे, केटलाएक मटी जाय छे अने केटलाएक नवा थता आवे छे. वायु आदिथी संयुक्त थएला मेदथी तथा कफथी थएलो ए रोग अतिदुस्तर छे अने घणां वर्षोसुधी चाल्या करे छे. (जे अपची छे ते गंडमाळानीज एक अवस्था छे एम मानवामां आवे छे.)

१० गात्रप्रदेशे कचिदेव दोषाः
संमूर्छिता मांसमभिप्रदूष्य ।

---

[1] चिकित्सितस्थानना १८ मा अध्यायमां आनी चिकित्सा आपी नथी तेथी तो असाध्यपणुं सिद्ध थाय एम छे पण वाग्भटे चिकित्सा आपी छे तेथी कष्टसाध्यपणुं ज रेहे छे.

वृत्तं स्थिरं मन्दरुजं महान्त-
मनल्पमूलं चिरवृद्ध्यपाकम् ॥
कुर्वन्ति मांसोपचयं च शोफं
तमर्बुदं शास्त्रविदो वदन्ति ।

अर्बुदनां (रसोळीनां) निदान, संप्राप्ति तथा सामान्य लक्षण.

१० प्रकुपित थएला दोषो कोई गात्रना प्रदेशमां मांसने (तथा रुधिरने) दूषित करीने गोळाकारवाळा, थोडी पीडावाळा, मोटा, मोटा मूळवाळा, स्थिर, नहीं पाकनारा अने लांबे काळे वधनारा सोजाने उत्पन्न करे छे. ए मांसना जथारूप सोजाने आयुर्वेदना आचार्यो **अर्बुद** केहे छे.

११ वातेन पित्तेन कफेन चापि
रक्तेन मांसेन च मेदसा च ॥
तज्जायते तस्य च लक्षणानि
ग्रन्थेः समानानि सदा भवन्ति ।

अमुक अर्बुदोनां विशिष्ट लक्षणोनी ग्रंथिनां लक्षणो प्रमाणेज परीक्षा.

११ ए अर्बुद वायुथी, पित्तथी, कफथी, रुधिरथी, मांसथी अने मेदथी एम छ प्रकारनुं थाय छे अने ए छ प्रकारोमां वायुथी, पित्तथी, कफथी तथा मेदथी थएला अर्बुदोनां लक्षणो सर्वदा ग्रंथिओनां लक्षणो जेवांज होय छे.

१२ दोषः प्रदुष्टो रुधिरं शिरास्तु
संपीड्य संकोच्य ततस्त्वपाकम् ॥
सास्रावमुन्नह्यति मांसपिण्डं
मांसाङ्कुरैराचितमाशुवृद्धिम् ।
स्रवत्यजस्रं रुधिरं प्रदुष्ट-
मसाध्यमेतद्रुधिरात्मकं स्यात्
रक्तक्षयोपद्रवपीडितत्वा-
त्पाण्डुर्भवेदर्बुदपीडितस्तु ।

रुधिरथी थएला अर्बुदनुं निदान, संप्राप्ति तथा विशिष्ट लक्षण.

१२ दुष्ट थएलुं पित्त रुधिरने तथा शिराओने संकोच पमाडीने तथा एकठां थई जाय एवी रीते घाटां करीने स्राववाळा, मांसना अंकुरोथी वीटाएला अने तुरत वधनारा मांसना पिंडने जराक पाके एवी रीते उंचो करे छे अने तेमांथी दुष्ट रुधिर निरंतर स्रव्या करे छे ए रुधिरथी थएलुं अर्बुद केहेवाय छे. आ अर्बुद असाध्य छे. आ अर्बुदथी पीडाएलो माणस रुधिरना क्षयथी थता उपद्रवोथी पीडाइने पांडुवर्णवाळो थई जाय छे. (सघळा प्रकारना अर्बुदोमां मांस तथा रुधिर दूषित थाय छे पण रुधिरथी थएला अर्बुदमां रुधिर विशेषे करी दूषित थाय छे अने मांसथी थएला अर्बुदमां मांस विशेषे करी दूषित थाय छे एम समजवुं.)

१३ मुष्टिप्रहारादिभिरर्दितेऽङ्गे
मांसं प्रदुष्टं प्रकरोति शोफम् ॥
अवेदनं स्निग्धमनन्यवर्ण-
मपाकमश्मोपममप्रचाल्यम् ।

मांसथी थएला अर्बुदनी संप्राप्ति तथा विशिष्ट लक्षण.

१३ मूठीना प्रहार वगेरेथी अंग पीडित थतां वायुथी दुष्ट थएलुं मांस वेदनावगरना अथवा थोडी वेदनावाळा, शरीरना जेवाज वर्णवाळा, नहि पाकनारा अथवा जराक पाकनारा, पथरा जेवा अने चलायमान न करी शकाय एवा स्निग्ध सोजाने उत्पन्न करे छे ए **मांसार्बुद** केहेवाय छे.

१४ प्रदुष्टमांसस्य नरस्य गाढ-
मेतद्भवेन्मांसपरायणस्य ॥

मांसथी थएला अर्बुदनुं दूरनुं निदान.

१४ मांस खावाना अभ्यासथी जेनुं मांस अतिदुष्ट थएलुं होय ते माणसने उपर कहेलो मांसार्बुद नामनो रोग उत्पन्न थाय छे.

१५ मांसार्बुदं त्वेतदसाध्यमुक्तं
साध्येष्वपीमान्युपवर्जयेत्तु ।

संप्रस्रुतं मर्मणि यच्च जातं
स्रोतःसु वा यच्च भवेदचाल्यम् ॥
यज्जायतेऽन्यत्खलु पूर्वजाते
ज्ञेयं तदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः ।
यद्द्वन्द्वजातं युगपत्क्रमाद्वा
द्विरर्बुदं तच्च भवेदसाध्यम् ॥

अर्बुदानु असाध्यपणु.

१५ मांसथी थएलुं अर्बुद अने रुधिरथी थयेलुं अर्बुद असाध्य छे. वायुथी थएलां अर्बुद वगेरे जे साध्य अर्बुदो छे तेओमां पण जे अर्बुद स्राववाळुं, मर्मस्थलमां थएलुं, स्रोतमां थएलुं के चलायमान न करी शकाय एवुं होय तेनी चिकित्सा करवी नहीं. प्रथम थएला अर्बुदमां जे बीजुं अर्बुद उत्पन्न थाय छे ते 'अध्यर्बुद' केहेवाय छे. जो एकी वखते अथवा अनुक्रमे हारोहार बे अर्बुदो थएलां होय तो ते 'द्विरर्बुद' केहेवाय छे. अध्यर्बुद अने द्विरर्बुद ए बन्ने पण असाध्य छे.

१६ न पाकमायान्ति कफाधिकत्वा-
न्मेदोऽधिकत्वाच्च विशेषतस्तु ।
दोषस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्च तेषां
सर्वार्बुदान्येव निसर्गतस्तु ॥

अर्बुदोनो पाक नहीं थवानुं कारण.

१६ सघळा प्रकारनां अर्बुदो विशेषे करी कफनी तथा मेदनी अधिकतावाळां होय छे तेथी, दोषोना कार्यरूप मांसना जथ्थानी स्थिरता होय छे तेथी, ए मांसनो जथो गुंथाई जाय छे तेथी अने मेद वगेरेना स्वभावने लीधे पण पाकतां नथी. (अपचीमां कफ तथा मेद अधिक होय छे तो पण अपचीनो पाक थतो जोवामां आवे छे अने अर्बुदमां ते प्रमाणेज छतां पण मुदल पाक थतो नथी अने थाय छे तो थोडो थाय छे तेनुं मुख्य कारण स्वभावविना बीजुं कशुं नथी.)

१७ वातः कफश्चैव गले प्रवृद्धौ
मन्ये तु संसृत्य तथैव मेदः ।
कुर्वन्ति गण्डं क्रमशः स्वलिङ्गैः
समन्वितं तं गलगण्डमाहुः ॥

गलगंडनी संप्राप्ति तथा भेदो.

१७ गळामां वृद्धि पामेला वायु, कफ के तेओथी दूषित थएलुं मेद डोकना पाछला भागनी मन्या नामनी बे शिराओमां आवीने अनुक्रमे पोतपोतानां लक्षणोवाळा (वायुनां, कफनां तथा मेदनां लक्षणोवाळा) गंडने (गडने) उत्पन्न करे छे ते रोग **गलगंड** केहेवाय छे.

१८ तोदान्वितः कृष्णशिरावनद्धः
कृष्णोऽरुणो वा पवनात्मकस्तु ।
मेदोऽन्वितश्चोपचितश्च काला-
द्भवेत्प्रदिग्धे च गलेऽरुजश्च ॥
पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्ध्यपाको
यदृच्छया पाकमियात्कदाचित् ।
वैरस्यमास्यस्य च तस्य जन्तो-
र्भवेत्तथा तालुगलप्रशोषः ॥

वायुए करेला गलगंडनुं लक्षण.

१८ जो गलगंड सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथावाळो होय, काळी शिराओथी व्याप्त होय अने काळा अथवा राता वर्णवाळो होय तो तेने वायुए करेलो जाणवो. आ गलगंड काळे करीने ज्यारे मेदथी संयुक्त थाय छे तथा वधे छे त्यारे मेदथी गळुं खरडाइ जवाने लीधे अति पीडावगरनो थई जाय छे. वायुए करेलो आ गलगंड कठण होय छे, लांबे काळे वधे छे, पाकतो नथी अने कोई समये यदृच्छाथी पाकी पण जाय छे. जे माणसने आ वायुसंबंधी गलगंड थयो होय ते माणसनुं मोहोडुं विरस रेहे छे अने ताळवुं तथा गळुं सूकाया करे छे.

१९ स्थिरः सवर्णो गुरुरुग्रकण्डूः
शीतो महांश्चापि कफात्मकस्तु ।
चिराभिवृद्धिं कुरुते चिराद्वा
प्रपच्यते मन्दरुजः कदाचित् ॥
माधुर्यमास्यस्य च तस्य जन्तो-
र्भवेत्तथा तालुगलप्रलेपः

कफे करेला गलगंडनुं लक्षण.

१९ जो गलगंड स्थिर होय, जे ठेकाणे थयो होय ते ठेकाणाना जेवाज वर्णवाळो होय, भारे होय, उग्र खरजवाळो होय, टाढो होय अने मोटो पण होय तो तेने कफे करेलो जाणवो. आ गलगंड लांबे काळे वधे छे, वखतपर लांबे काळे पाके पण छे अने मंद वेदनावाळो होय छे. जे माणसने आ कफसंबंधी गलगंड थयो होय ते माणसनुं मोहोडुं स्निग्ध तथा मधुर रेहे छे अने ताळवुं तथा गळुं कफथी खरडाएलां रेहे छे.

२० स्निग्धो मृदुः पाण्डुरनिष्टगन्धो
मेदःकृतो नीरुगथातिकण्डूः ॥
प्रलम्बतेऽलावुवदल्पमूलो
देहानुरूपक्षयवृद्धियुक्तः ।
स्निग्धास्यता तस्य भवेच्च जन्तो-
र्गलेन शब्दं कुरुते च नित्यम् ॥

मेदे करेला गलगंडनुं लक्षण.

२० जे गलगंड स्निग्ध होय, कोमळ होय, पांडु वर्णवाळो होय, खराब गंधवाळो होय, अति पीडावगरनो होय. घणी खरजवाळो होय, तूंबडांनी पेठे लटकतो होय, अल्प मूलवाळो होय अने शरीरना वधवाथी वधतो होय तथा क्षीण थवाथी क्षीण थतो होय ते गलगंडने मेदे करेलो जाणवो. आ गलगंड जेने थयो होय ते माणसनुं मोहोडुं स्निग्ध रेहे छे अने सर्वदा गळामांथी अवाज थया करे छे.

२१ कृच्छ्राच्छ्वसन्तं मृदुसर्वगात्रं
संवत्सरातीतमरोचकार्तम् ।
क्षीणं तु वैद्यो गलगण्डिनं तं
भिन्नस्वरं चैव विवर्जयेत्तु ॥

केवो गलगंड असाध्य छे.

२१ जे गलगंडथी मांड मांड श्वास लई शकातो होय, सघळां गात्रो कोमळ थई गयां होय, अरुचि तथा क्षीणता थई होय, स्वर बेसीगयो होय तथा जेनी उत्पत्तिने एक वर्ष वीती गयुं होय ते गलगंडनी वैद्ये चिकित्सा नहीं करवी.

२२ निबद्धः श्वयथुर्यस्य मुष्कवल्लम्बते गले ।
महान्वा यदि वा ह्रस्वस्तं गण्डमिति निर्दिशेत् ॥

गलगंडना स्वरूपनो पाको निश्चय.

२२ जेनो बंधाएलो मोटो अथवा नाहानो सोजो गळामां वृषणनी पेठे लटक्या करतो होय ते रोगनेज गलगंड केहेवो.

अध्याय १२ मो.

१ अथातो वृद्ध्युपदंशश्लीपदानां निदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वृद्ध्युपदंश श्लीपदनिदान'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वातपित्तश्लेष्मशोणितमेदोमूत्रान्त्रनिमित्ताः सप्त वृद्धयः । तासां मूत्रान्त्रनिमित्ते वृद्धी वातसमुत्थे केवलमुत्पत्तिहेतुरन्यतरः ॥

वृद्धिनां (वधराळनां) निदानो तथा संख्या.

२ वायुथी, पित्तथी, कफथी, रुधिरथी, मेदथी, मूत्रथी अने आंतरडांथी एम सात प्रकारनी वृद्धिओ थाय छे. एओमां मूत्रथी थएली वृद्धि अने आंतरडांथी थएली वृद्धि एओ पण जो के वायुरूप निदानथीज थाय छे तोपण ते वायु मूत्रना तथा आंतरडना आश्रयथी ए वृद्धिओने उत्पन्न करे छे अर्थात् ते वृद्धिओनी उत्पत्तिमां मूत्रनुं तथा आंतरडानुं पण कारणपणुं छे एटली जुदाईने लीधे ए बे प्रकारने वायुथी थएली वृद्धिथी जुदा गणवामां आव्या छे.

३ अधः प्रकुपितोऽन्यतमो हि दोषः फलको-

१ वधराळ, चांदी अने श्लीपद एओनां निदानो, संप्राप्ति तथा लक्षणो वगेरेना निरूपणविषेनो.

शवाहिनीरभिप्रपद्य धमनीः फलकोशयोर्वृद्धिं जनयति तां वृद्धिमित्याचक्षते ॥

वृद्धिनी संप्राप्ति.

३ नीचेना भागमां प्रकुपित थएलो वायु, पित्त के कफ वृषणनी कोथळीमां गएली धमनीओमां आवी वृषणनी वृद्धि करे छे ए रोगने आचार्यो **वृद्धि** कहे छे.

४ तासां भविष्यतीनां पूर्वरूपाणि बस्तिकटीमुष्कमेढ्रेषु वेदना मारुतनिग्रहः फलकोशशोफश्चेति ।

वृद्धिओनां पूर्वरूप.

४ सातमांनी कोई पण वृद्धि ज्यारे थवानी होय त्यारे मूत्राशयमां, कमरमां, वृषणमां अने लिंगमां वेदना थाय छे, वायुनो निग्रह थई जाय छे अने वृषणमां सोजो थाय छे.

५ तत्रानिलपरिपूर्णां बस्तिमिवाततां परुषामनिमित्तानिलरुजं वातवृद्धिमाचक्षते ॥

वायुथी थएली वृद्धिनुं लक्षण.

५ जे वधराळ पवनथी भराएली मूत्राशयनी कोथळी जेवी विस्तीर्ण, कठोर अने अकस्मात् थती वायुसंबंधी वेदनाओवाळी होय ते वधराळने **वातवृद्धि** केहे छे.

६ पक्वोदुम्बरसंकाशां ज्वरदाहोष्मवतीं चाशुसमुत्थानपाकां पित्तवृद्धिम् ॥

पित्तथी थएली वृद्धिनुं लक्षण.

६ जे वधराळ पाकेलां उंबरानां फळ जेवी होय, ज्वरथी युक्त होय, दाहथी तथा गरमीथी युक्त होय (अंदर बळतरावाळी होय तथा बाहारना भागमां पण तपती होय) अने तुरत उठेली तथा तुरत पाकेली होय ते वधराळने **पित्तवृद्धि** केहे छे.

७ कठिनामल्पवेदनां शीतां कण्डूमतीं श्लेष्मवृद्धिम् ॥

कफथी थएली वृद्धिनुं लक्षण.

७ जे वधराळ कठण होय, अल्प वेदनावाळी होय, टाढी होय अने खरजवाळी होय ते वधराळने **श्लेष्मवृद्धि** केहे छे.

८ कृष्णस्फोटावृतां पित्तवृद्धिलिङ्गां रक्तवृद्धिम् ॥

रुधिरथी थएली वृद्धिनुं लक्षण.

८ जे वधराळ काळा फोडलाओथी व्याप्त होय अने उपर कहेलां पित्तवृद्धिनां लक्षणोथी युक्त होय ते वधराळने **रक्तवृद्धि** केहे छे.

९ मृदुस्निग्धां कण्डूमतीमल्पवेदनां तालफलप्रकाशां मेदोवृद्धिम् ॥

मेदथी थएली वृद्धिनुं लक्षण.

९ जे वधराळ कोमळ तथा स्निग्ध होय, खरजवाळी होय, अल्प वेदनावाळी होय अने ताडना फळनी पेठे श्याम तथा वर्तुल होय ते वधराळने **मेदोवृद्धि** केहे छे.

१० मूत्रसन्धारणशीलस्य मूत्रवृद्धिर्भवति सा गच्छतोऽम्बुपूर्णा दृतिरिव क्षुभ्यति मूत्रकृच्छ्रवेदनां श्वयथुं कोशयोश्चापादयति तां मूत्रवृद्धिं विद्यात् ॥

मूत्रथी थएली वृद्धिनुं लक्षण.

१० जेनो मूत्रनी हाजतने अटकावी राखवानो स्वभाव होय ते पुरुषने मूत्रवृद्धि थाय छे. जे वधराळ चालवाना समयमां जळथी भरेली पखालनी पेठे क्षोभ पामती होय, मूत्रकृच्छ्रनी वेदना करती होय अने जेथी वृषणोमां सोजो थयो होय ते वधराळने **मूत्रवृद्धि** जाणवी.

११ भारहरणबलवद्विग्रहवृक्षप्रपतनादिभिरायासविशेषैर्वायुरतिप्रवृद्धः प्रकुपितश्च स्थूलान्त्रस्येतरस्य चैकदेशं द्विगुणमादायाधो

गत्वा वङ्क्षणसंधिमुपेत्य ग्रन्थिरूपेण स्थित्वाऽप्रतिक्रियमाणे च कालान्तरेण फलकोशं प्रविश्य मुष्कशोफमापादयत्याध्मातो बस्तिरिवाततः प्रदीर्घः शोफो भवति सशब्दमवपीडितश्चोर्ध्वमुपैति विमुक्तश्च पुनराधमति तामन्त्रवृद्धिमसाध्यामाचक्षते ॥

आंतरडांथी थएली वृद्धिनुं लक्षण अने असाध्यपणुं.

११ भार उपाडी लई जवाथी, बळवाननी सामे युद्ध करवाथी, झाड उपरथी पडवाथी अने एवाज प्रकारना बीजा पण परिश्रमो करवाथी अत्यंत वृद्धि पामेलो अने प्रकुपित थएलो वायु जाडा आंतरडाना एक प्रदेशने अने झीणा आंतरडाना एक प्रदेशने जोडी देवाथी बेवडो करी, पोतानी साथे लई, नीचे जई, साथळनी संधिमां प्राप्त थई ग्रंथिरूपे रहे छे अने जो ते समयमांज योग्य चिकित्सा न करवामां आवे तो वृषणनी कोथळीमां प्रवेश करी वृषणोमां सोजाने उत्पन्न करे छे. आ सोजो पवनथी भराएली मूत्राशयनी कोथळी जेवो फूलेलो अने लांबो थायछे. आ सोजो जो दबाववामां आवे तो अवाज करीने उंचो चडी जाय छे अने दबाणथी छूटो करवामां आवतां पाछो नीचे उतरीने फूली जाय छे. आ वधराळ **अंत्रवृद्धि** केहेवाय छे अने असाध्य गणवामां आवे छे.

१२ तत्रातिमैथुनादतिब्रह्मचर्याद्वा तथा ब्रह्मचारिणीं चिरोत्सृष्टां रजस्वलां दीर्घरोमां कर्कशरोमां सङ्कीर्णरोमां निगूढरोमामल्पद्वारां महाद्वारामप्रियामकामामचौक्ष्यसलिलप्रक्षालितयोनिमक्षालितयोनिं योनिरोगोपसृष्टां स्वभावतो वा दुष्टयोनिं वियोनिं वा नारीमत्यर्थमुपसेवमानस्य तथा करजदशनविषशूकनिपातनादर्दनाद्धस्ताभिघाताच्चतुष्पदीगमनादचौक्ष्यसलिलप्रक्षालनादवपीडनाच्छुक्रमूत्रवेगविधारणान्मैथुनान्ते वाऽप्रक्षालनादिभिर्मेढ्रमागम्य प्रकुपिता दोषाः क्षतेऽक्षते वा श्वयथुमुपजनयन्ति तमुपदंश इत्याचक्षते ॥

उपदंशनां (चांदीनां) दूरनां तथा पासेनां निदानो, संप्राप्ति अने सामान्य लक्षण.

१२ अत्यंत मैथुन करवाथी, अत्यंत ब्रह्मचर्य पाळवाथी, शरूआतथीज ब्रह्मचर्य पाळनारी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, लांबो काळ थया छोडी दीधेली स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, लांबां रूवाडांवाळी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, रजस्वलानो अतिसंग करवाथी, कठोर रूवाडांवाळी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, घाटां रूवाडांवाळी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, योनिनी अंदर रूवाडांवाळी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, जेनी योनिनुं द्वार अल्प के मोटुं होय एवी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, अप्रिय स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, कामनावगरनी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, जेणे योनि मेलापाणीथी धोएली होय एवी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, जेणे योनि धोएली न होय एवी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, योनिना रोगवाळी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, जेनी योनि स्वाभाविक रीतेज वात आदि दोषोथी दुष्ट होय एवी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, टूंकी योनिवाळी स्त्रीनो अतिसंग करवाथी, लिंगनी उपर नखनो दांतनो के शूक नामना झेरी कीडानो निपात कर्याथी, लिंगनुं पीडन थवाथी, हाथवते लिंगनो अभिघात थवाथी, बकरी वगेरे पशुजातिनो संग करवाथी, मेला पाणीवते लिंगने धोवाथी, लिंगनुं मर्दन थवाथी, वीर्यना के मूत्रना वेगने अटकाववाथी अने मैथुन कर्या पछी लिंगने नहीं धोवा वगेरेथी प्रकुपित थएला दोषो जखमी थएला अथवा नहीं जखमी थएला लिंगमां आवीने सोजाने उत्पन्न

करे छे. ए सोजाने आचार्यो **उपदंश** केहे छे.

१३ स पञ्चविधस्त्रिभिर्दोषैः पृथक्समस्तैरसृजा चैकः ॥

उपदंशोनी संख्या.

१३ वायुथी थएलो, पित्तथी थएलो, कफथी थएलो, त्रणे दोषोथी थएलो अने लोहीथी थएलो ए रीते उपदंशना पांच भेद छे.

१४ तत्र वातिके पारुष्यं त्वक्परिपुटनं स्तब्धमेढ्रता परुषशोफता विविधाश्च वातवेदनाः

वायुथी थएला उपदंशनुं विशिष्ट लक्षण.

१४ जो उपदंश वायुथी थयो होय तो तेमां खरसटपणुं, त्वचानुं फाटवुं, लिंगनुं स्तब्धपणुं, सोजानुं कठणपणुं अने बीजी पण अनेक प्रकारनी वायुसंबंधी वेदनाओ थाय छे.

१५ पैत्तिके ज्वरः श्वयथुः पक्वोदुम्बरसङ्काशस्तीव्रदाहः क्षिप्रपाकः पित्तवेदनाश्च ॥

पित्तथी थएला उपदंशनुं विशिष्ट लक्षण.

१५ जो उपदंश पित्तथी थयो होय तो तेथी ज्वर उत्पन्न थाय छे, पित्तसंबंधी बीजी पण वेदनाओ थाय छे अने पाकेलां उंबरानां फल जेवो, तीव्र बळतरावाळो तथा तुरत पाकनारो सोजो थाय छे.

१६ श्लैष्मिके श्वयथुः कण्डूमान् कठिनः स्निग्धः श्लेष्मवेदनाश्च ।

कफथी थएला उपदंशनुं विशिष्ट लक्षण.

१६ जो उपदंश कफथी थयो होय तो खरजवाळो, कठण तथा स्निग्ध सोजो थाय छे अने बीजी पण कफसंबंधी वेदनाओ थाय छे.

१७ रक्तजे कृष्णस्फोटप्रादुर्भावोऽत्यर्थमसृक्प्रवृत्तिः पित्तलिङ्गान्यत्यर्थं ज्वरदाहौ शोषश्च याप्यश्चैव कदाचित् ॥

रुधिरथी थएला उपदंशनुं विशिष्ट लक्षण.

१७ जो उपदंश रुधिरथी थयो होय तो काळा फोडला उत्पन्न थाय छे, लोहीनी बहुज प्रवृत्ति थाय छे, पित्तसंबंधी वेदनाओ थाय छे, ज्वर तथा दाह अत्यंत थाय छे अने शोष थाय छे. आ उपदंश कोई वखते याप्य पण थई पडे छे.

१८ सर्वजे सर्वलिङ्गदर्शनमवदरणं शेफसः कृमिप्रादुर्भावो मरणं चेति ॥

त्रणे दोषोथी थएला उपदंशनुं विशिष्ट लक्षण.

१८ जो उपदंश त्रणे दोषोथी थयो होय तो त्रणे दोषोनां चिह्नो जोवामां आवे छे, लिंग फाटी जाय छे, कीडा पडे छे अने मरण पण थाय छे.

१९ कुपितास्तु दोषा वातपित्तश्लेष्माणोऽधःप्रपन्ना वङ्क्षणोरुजानुजङ्घास्ववतिष्ठमानाः कालान्तरेण पादमाश्रित्य शनैः शोफं जनयन्ति तच्छ्लीपदमित्याचक्षते ।

श्लीपदनां निदानो, संप्राप्ति अने सामान्य लक्षण.

१९ प्रकुपित थएला वायु, पित्त अने कफ ए दोषो शरीरना नीचा भागमां प्राप्त थई, साथळोमां, साथळोनी संधिओमां, गोठणोमां तथा पगनी पींडीओमां रही काळांतरे पगमां आवीने धीरे धीरे सोजाने उत्पन्न करे छे. ए सोजाने आचार्यो **श्लीपद** केहे छे.

२० तत्रिविधं वातपित्तकफनिमित्तमिति ॥

श्लीपदोना भेद.

२० वायुथी थएल, पित्तथी थएल अने कफथी थएल ए रीते श्लीपदो त्रण प्रकारनां थाय छे.

---

१ उपदंशो स्त्रीओने पण थाय छे अने पुरुषोने पण थाय छे. उपदंशना दारुण फोडलाओमां केटलाएक उपस्थनी संधिमां थाय छे, केटलाएक सर्व उपस्थमां थाय छे, केटलाएक फळथी जेवा थाय छे, केटलाएक मगनी दाळ जेवा थाय छे, केटलाएक तुरत प्रसरे छे अने केटलाएक धीरे धीरे प्रसरे छे. एओथी वेदना, दाह, तरश तथा मोह थाय छे. (डल्लन.)

२१ तत्र वातजं खरं कृष्णं परुषमनिमित्तानिलरुजं परिस्फुटति च बहुशः ॥

वायुथी थएला श्लीपदनुं विशिष्ट लक्षण.

२१ वायुथी थएलुं श्लीपद खरसट होय छे, काळुं होय छे, रूक्ष होय छे, घणा प्रदेशोमां फाटे छे अने ते श्लीपदमां अचानक अचानक वायुसंबंधी वेदनाओ थाय छे.

२२ पित्तजं तु पीतावभासमीषन्मृदु ज्वरदाहप्रायं च ॥

पित्तथी थएला श्लीपदनुं विशिष्ट लक्षण.

२२ पित्तथी थएलुं श्लीपद पीळा अवभासवाळुं होय छे, कांइक कोमळ होय छे अने ज्वरथी तथा बळतराथी अत्यंत युक्त होय छे.

२३ श्लेष्मजं तु श्वेतं स्निग्धावभासं मन्दवेदनं भारिकमतिमहाग्रन्थिकं कण्टकैरुपचितं च ।

कफथी थएला श्लीपदनुं विशिष्ट लक्षण.

२३ कफथी थएलुं श्लीपद धोळुं होय छे, स्निग्ध अवभासवाळुं होय छे, मंद वेदनावाळुं होय छे, भारे होय छे, अत्यंत मोटा ग्रंथिओवाळुं होय छे अने कांटा जेवां उंचाणोथी युक्त होय छे.

२४ तत्र संवत्सरातीतमतिमहद्वल्मीकजातं प्रस्रुतमिति वर्जनीयानि ॥

असाध्य श्लीपदो.

२४ श्लीपद जो राफडा जेवुं थयुं होय, अत्यंत मोटुं होय के स्रावबाळुं होय तो तेनी चिकित्सा करवी नहीं. जेनी उत्पत्ति थयाने एक वर्ष वीती गयुं होय ते श्लीपदनी पण चिकित्सा करवी नहीं.

२५ भवन्ति चात्र ॥

त्रीण्यप्येतानि जानीयाच्छ्लीपदानि कफोच्छ्रयात् ।
गुरुत्वं च महत्त्वं च यस्मान्नास्ति विना कफात् ॥

त्रणे श्लीपदोमां कफनो संबंध होवाविषे.

२५ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "आ त्रणे श्लीपदोमां कफनो प्रकोप तो होयज छे एम समजवुं. कारण के भारेपणुं अने मोटापणुं कफना प्रकोपविना होयज नहीं."

२६ पुराणोदकभूयिष्ठाः सर्वर्तुषु च शीतलाः ।
ये देशास्तेषु जायन्ते श्लीपदानि विशेषतः ।

विशेषे करी श्लीपदोनी उत्पत्ति कया देशोमां थाय छे?

२६ जे देशोमां जूनुं पाणी घणुं रेहेतुं होय अने सघळी ऋतुओमां शीतलता रेहेती होय ते देशोमां श्लीपदो विशेषे करी थाय छे. ('विशेषे करी' एम कह्युं ते उपरथी समजाय छे के बीजा देशोमां पण श्लीपदो थाय छे.)

२७ पादवद्धस्तयोश्चापि श्लीपदं जायते नृणाम् ।
कर्णाक्षिनासिकोष्ठेषु केचिदिच्छन्ति तद्विदः ॥

शरीरना पग शिवाय बीजा प्रदेशोमां पण श्लीपदो थाय छे.

२७ माणसोने जेम पगोमां श्लीपदो थाय छे तेम हस्तोमां पण थाय छे. आयुर्वेदना केटलाएक आचार्यो केहे छे के कान, नेत्रो, नाक अने होठ ए प्रदेशोमां पण श्लीपदो थाय छे.

अध्याय १३ मो.

१ अथातः क्षुद्ररोगाणां निदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'क्षुद्ररोगनिदानं'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ समासेन चतुश्चत्वारिंशत्क्षुद्ररोगा भ-

१ क्षुद्ररोगोनां निदानादिकविषेनो.

वन्ति ॥ तद्यथा ॥ अजगल्लिका यवप्रख्याऽन्धालजी विवृता कच्छपिका वल्मीकमिन्द्रवृद्धा पनसिका पाषाणगर्दभो जालगर्दभः कक्षा विस्फोटकोऽग्निरोहिणी चिप्प्यं कुनखोऽनुशयी विदारिका शर्कराऽर्बुदं पामा विचर्चिका रकसा पाददारिका कदरमलसेन्द्रलुप्तौ दारुणकोऽरूंषिका पलितं मसूरिका यौवनपिडका पद्मिनीकण्टको जतुमणिर्मशकश्चर्मकीलस्तिलकालको न्यच्छं व्यङ्गः परिवर्तिकाऽवपाटिका निरुद्धप्रकशो निरुद्धगुदोऽहिपूतनं वृषणकच्छूर्गुदभ्रंशश्चेति ॥

क्षुद्ररोगोनी संख्या अने नाम.

२ संक्षेपथी जोतां क्षुद्ररोगो चुमालीश थाय छे. अजगल्लिका, यवप्रख्या, अंधालजी, विवृता, कच्छपिका, वल्मीक, इंद्रवृद्धा, पनसिका, पाषाणगर्दभ, जालगर्दभ, कक्षा, विस्फोटक, अग्निरोहिणी, चिप्प्य, कुनख, अनुशयी, विदारिका, शर्करार्बुद, पामा, विचर्चिका, रकसा, पाददारिका, कदर, अलस, इंद्रलुप्त, दारुणक, अरूंषिका, पलित, मसूरिका, यौवनपिडका, पद्मिनीकंटक, जतुमणि, मशक, चर्मकील, तिलकालक, न्यच्छ, व्यंग, परिवर्त्तिका, अवपाटिका, निरुद्धप्रकश, निरुद्धगुद, अहिपूतन, वृषणकच्छू अने गुदभ्रंश ए नामना चुमालीश क्षुद्ररोगो छे[1].

**३ स्निग्धा सवर्णा ग्रथिता नीरुजा मुद्गसंनिभा ।
कफवातोत्थिता ज्ञेया बालानामजगल्लिका ॥**

अजगल्लिकानुं निदान तथा लक्षण.

३ कफना तथा वायुना प्रकोपथी बालकोने शरीरोमां स्निग्ध, शरीरना जेवा वर्णवाळी, जाणे गुंथाएली होय एवी, पीडावगरनी अने मग जेवा आकारवाळी जे फोडली थाय छे ते **अजगल्लिका** केहेवाय छे. (जेओ बालक न होय तेओने पण आ रोग थाय छे एम केटलाएक माने छे.)

**४ यवाकारा सुकठिना ग्रथिता मांससंश्रिता ।
पिडका श्लेष्मवाताभ्यां यवप्रख्येति सोच्यते ॥**

यवप्रख्यानुं निदान तथा लक्षण.

४ कफना अने वायुना प्रकोपने लीधे जाडा जवना जेवा आकारवाळी (वचमां जाडी तथा छेडाओमां पातळी) अत्यंत कठण, गुंथाएली जेवी अने मांसरूपी आश्रयवाळी जे फोडली थाय छे ते **यवप्रख्या** केहेवाय छे.

**५ घनामवक्त्रां पिडकामुन्नतां परिमण्डलाम् ।
अन्धालजीमल्पपूयां तां विद्यात्कफवातजाम् ॥**

अंधालजीनुं निदान तथा लक्षण.

५ कफना अने वायुना प्रकोपने लीधे घाटी, अल्प मोहोडावाळी, गोळ, उंची अने थोडा परूवाळी जे फोडली थाय छे ते **अंधालजी** केहेवाय छे. (आ फोडलीनुं मोहोडुं स्नायुनी अंदर पसरेलुं होय छे. डल्लन.)

**६ विवृतास्यां महादाहां पक्वोदुम्बरसंनिभाम् ।
विवृतामिति तां विद्यात्पित्तोत्थां परिमण्डलाम्॥**

विवृतानुं निदान तथा लक्षण.

६ पित्तना प्रकोपने लीधे फाटेला मोहोडावाळी, अत्यंत बळतरावाळी, पाकेला उंबराना फळ जेवी अने गोळ आकारवाळी जे फोडली थाय छे तेने **विवृता** जाणवी.

**७ ग्रन्थयः पंच वा षड्वा दारुणाः कच्छपोन्नताः ।
कफानिलाभ्यामुद्भूतां विद्यात्तां कच्छपीमिति ॥**

[1] आ संख्यामां जो के केटलाएक महाव्याधिओ पण छे तोपण क्षुद्ररोगो घणा छे तेथी सर्वने क्षुद्ररोग कह्या छे. जेम के छत्रोवाळां घणां माणसो जतां होय तेओमां केटलांएक माणसो छत्रवगरनां होय तो पण 'छत्रवाळां जाय छे.' एम केहेवामां आवे छे. अथवा पूर्वाचार्योए एटला रोगोनुं 'क्षुद्ररोग' ए नाम संज्ञानी रीति प्रमाणे रूढज राख्युं छे एम समजी क्षुद्र शब्दनो अर्थ लेवोज नहीं एटले कशो दोष आवतो नथी. (डल्लन.)

कच्छपीनुं निदान तथा लक्षण.

७ काचबानी पेठे मध्यमां उंची तथा छेडाओमां नमेली पांच अथवा छ दारुण (कठण) ग्रंथिओ थाय छे तेने **कच्छपी** जाणवी. आ रोग कफथी तथा वायुथी थाय छे.

८ पाणिपादतले सन्धौ ग्रीवायामूर्ध्वजत्रुणि ।
ग्रन्थिर्वल्मीकवद्यस्तु शनैः समुपचीयते ॥
तोदक्लेदपरीदाहकण्डूमद्भिर्व्रणैर्वृतः ।
व्याधिर्वल्मीक इत्येष कफपित्तानिलोद्भवः ॥

वल्मीकनुं निदान तथा लक्षण.

८ हाथ पगनां तळांओमां, सांधाओमां, डोकमां अथवा हांसडीथी उपरना भागमां राफडानी पेठे घणां शिखरोवाळो उंचो तथा उंडो अने भोंकाया जेवी व्यथा, क्लेद, अतिदाह तथा खरज एओवाळा व्रणोथी वीटाएलो जे ग्रंथि राफडानी पेठेज धीरे धीरे वधतो आवे छे ते ग्रंथि **वल्मीक** (राफो) केहेवाय छे. आ रोग वायु, पित्त अने कफ ए त्रणे दोषोना प्रकोपथी थाय छे.

९ पद्मपुष्करवन्मध्ये पिडकाभिः समाचिताम् ।
इन्द्रवृद्धां तु तां विद्याद्वातपित्तोत्थितां भिषक् ॥

इंद्रवृद्धानुं निदान तथा लक्षण.

९ मध्यमां कमळनी डोडी जेवी अने बीजी केसराओ जेवी नाहानी नाहानी फोडलीओथी घेराएली जे फोडली थाय छे तेने वैद्ये **इंद्रवृद्धा** जाणवी. आ फोडली वायुथी तथा पित्तथी थाय छे.

१० कर्णोपरि समन्ताद्वा पृष्ठे वा पिडकोग्ररुक् ।
शालूकवत्पनसिकां तां विद्याच्छ्लेष्मवातजाम् ।

पनसिकानुं निदान तथा लक्षण.

१० काननी उपर अथवा काननी चोमेर अथवा कानने पछवाडे उग्र वेदनावाळी अने कमळना कंद जेवी जे फोडली थाय छे तेने **पनसिका** जाणवी. आ फोडली कफना तथा वायुना प्रकोपथी थाय छे.

११ हनुसन्धौ समुद्भूतं शोफमल्परुजं स्थिरम् ।
पाषाणगर्दभं विद्याद्बलासपवनात्मकम् ॥

पाषाणगर्दभनुं निदान तथा लक्षण.

११ कफना तथा वायुना प्रकोपथी दाढीना सांधामां कठण अने मंद वेदनावाळो जे सोजो थाय छे तेने **पाषाणगर्दभ** जाणवो.

१२ विसर्पवत्सर्पति यो दाहज्वरकरस्तनुः ।
अपाकः श्वयथुः पित्तात्स ज्ञेयो जालगर्दभः ॥

जालगर्दभनुं निदान तथा लक्षण.

१२ पातळो, थोडा पाकवाळो अने दाहने तथा ज्वरने उत्पन्न करनारो जे सोजो विसर्पनी पेठे फेलाय छे तेने **जालगर्दभ** जाणवो. आ सोजो पित्तना प्रकोपथी थाय छे.

१३ बाहुपार्श्वांसकक्षासु कृष्णस्फोटां सवेदनाम् ।
पित्तप्रकोपात्सम्भूतां कक्षामिति विनिर्दिशेत् ॥

कक्षा (कख) नुं निदान तथा लक्षण.

१३ बाहुओमां, पडखांओमां, खभाओमां अने काखोमां पित्तना प्रकोपथी वेदनावाळा जे काळा फोडला थाय छे तेओने **कक्षा** केहेवा.

१४ अग्निदग्धनिभाः स्फोटाः सज्वरा रक्तपित्ततः ।
क्वचित्सर्वत्र वा देहे स्मृता विस्फोटका इति ॥

विस्फोटकनुं निदान तथा लक्षण.

१४ रुधिरना अने पित्तना प्रकोपथी शरीरना कोई प्रदेशमां अथवा आखा शरीरमां अग्निथी दाझ्याना जेवा अने ज्वरवाळा जे फोडला थाय छे तेओने **विस्फोटक** जाणवा.

१५ कक्षाभागेषु ये स्फोटा जायन्ते मांसदारणाः ।
अन्तर्दाहज्वरकरा दीप्तपावकसंनिभाः ॥
सप्ताहाद्वा दशाहाद्वा पक्षाद्वा घ्नन्ति मानवम् ।
तामग्निरोहिणीं विद्यादसाध्यां संनिपाततः ॥

अग्निरोहिणीनुं निदान, लक्षण तथा असाध्यपणुं

१५ काखना (बगलना) भागोमां मांसने

फाडी नाखनारा, अंदर दाहने तथा ज्वरने उत्पन्न करनारा अने प्रदीप्त अग्नि जेवा जे फोडलाओ थाय छे ते **अग्निरोहिणी** केहेवाय छे. आ अग्निरोहिणी संनिपातथी (त्रणे दोषोना प्रकोपथी) थाय छे माटे असाध्य छे. त्रण दोषोमां जो वायुनी उल्वणता होय तो आ रोग माणसने सात दिवसनी अंदर मारी नाखे छे, पित्तनी उल्वणता होय तो दश दिवसनी अंदर मारी नाखे छे अने कफनी उल्वणता होय तो पंदर दिवसनी अंदर मारी नाखे छे. (आमां एम समजवानुं छे के जो योग्य चिकित्सा करवामां न आवे तोज अग्निरोहिणी असाध्य थई पडे छे पण जो योग्य चिकित्सा करवामां आवे तो साध्य थाय छे. केमके चरके अग्निरोहिणीनी चिकित्सा कहेली छे. भा. प्र.)

१६ नखमांसमधिष्ठाय पित्तं वातश्च वेदनाम् ।
करोति दाहपाकौ च तं व्याधिं चिप्यमादिशेत्॥
तदेव क्षतरोगाख्यं तथोपनखमित्यपि ।

चिप्यनुं निदान तथा लक्षण.

१६ वायु अने पित्त एओ नखना मांसमां रहीने वेदनाने, दाहने, पाकने, (तथा नखना क्षयने) करे छे. आ रोगने **चिप्य** केहेवो. आ रोग क्षतरोग अने उपनख ए नामोथी पण ओळखाय छे.

१७अभिघातात्प्रदुष्टो यो नखो रूक्षोऽसितः खरः।
भवेत्तु कुनखं विद्यात्कुलीरमिति संज्ञितम् ।

कुनखनुं निदान तथा लक्षण.

१७ काष्ठ वगेरेनो अभिघात थवाथी दुष्ट थएलो नख रूक्ष, काळो तथा खरसट थई जाय छे ए रोग **कुनख** अथवा कुलीर केहेवाय छे.

१८ गम्भीरामल्पसंरम्भां सवर्णामुपरिस्थिताम्॥
कफादन्तःप्रपाकां तां विद्यादनुशयीं भिषक् ।

अनुशयीनुं निदान तथा लक्षण.

१८ अंदर पाकवाळी, तेवी होवाने लीधे गंभीर, थोडा सोजावाळी अने शरीरना जेवाज वर्णवाळी जे फोडली पग उपर थाय छे तेने वैद्ये **अनुशयी** जाणवी. आ फोडली कफना प्रकोपथी थाय छे.

१९ विदारीकन्दवद्वृत्तां कक्षावङ्क्षणसन्धिषु ॥
रक्तां विदारिकां विद्यात्सर्वजां सर्वलक्षणाम् ।

विदारिकानुं निदान तथा लक्षण.

१९काखमां, साथळोना सांधाओमां के अन्य सांधाओमां फगवेलाना कंदनी पेठे गोळ आकारवाळी, राती अने दोषोना समुदायनां लक्षणोवाळी जे फोडली थाय छे तेने **विदारिका** जाणवी. आ फोडली त्रणे दोषोथी थाय छे. (त्रणे दोषोथी थतां छतां पण साध्य छे.)

२०प्राप्य मांसशिरास्नायु मेदःश्लेष्मा तथाऽनिलः
ग्रन्थिं कुर्वन्ति भिन्नोऽसौ मधुसर्पिर्वसानिभम् ।
स्रवत्यास्रावमत्यर्थं तत्र वृद्धिं गतोऽनिलः ॥
मांसं विशोष्य ग्रथितां शर्करां जनयेत्पुनः ।
दुर्गन्धं क्लिन्नमत्यर्थं नानावर्णं ततः शिराः ॥
स्रवन्ति सहसा रक्तं तद्विद्याच्छर्करार्बुदम् ।

शर्करार्बुदनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

२० मेद, कफ तथा पवन एओ मांसने, शिराओने तथा स्नायुओने प्राप्त थई ग्रंथिने उत्पन्न करे छे. ए ग्रंथि फूटीने मधना जेवो, घी जेवो तथा चरबी जेवो अत्यंत स्राव करे छे. एमां वृद्धि पामेलो वायु मांसने सूकावीने गुंथाएली जेवी कांकरीने उत्पन्न करेछे. ए कांकरी उत्पन्न थतां शिराओ दुर्गंधी, अत्यंत क्लेदवाळा अने अनेक वर्णोवाळा रुधिरने सहसा स्रवे छे ए **शर्करार्बुद** केहेवाय छे. (आ कांकरी रेती जेवी होय छे.भा.प्र.)

२१पामाविचर्च्यौ कुष्ठेषु रकसा च प्रकीर्तिता ॥

पामा, विचर्चिका तथा रकसा.

२१ **पामा, विचर्चिका** तथा **रकसा** एओनां निदानो तथा लक्षणो वगेरे आ निदानस्थानना कुष्ठनिदान नामना पांचमा अध्यायमां केहेवाई गयां छे.

२२ परिक्रमणशीलस्य वायुरत्यर्थरूक्षयोः ।
पादयोः कुरुते दारीं सरुजां तलसंश्रिताम् ॥

पाददारिकानुं निदान तथा लक्षण.

२२ जेने बहुज फरवानो अभ्यास होय ते माणसना अत्यंत रूक्ष थई गएलां पगोनां तळांओमां वायु वेदनावाळी चीरने (फाटने) उत्पन्न करे छे ए रोग **पाददारिका** केहेवाय छे.

२३ शर्करोन्मथिते पादे क्षते वा कण्टकादिभिः ।
मेदोरक्तानुगैश्चैव दोषैर्वा जायते नृणाम् ॥
सकीलः कठिनो ग्रन्थिर्निम्नमध्योन्नतोऽपि वा ।
कोलमात्रः सरुक्स्रावी जायते कदरस्तु सः ॥

कदर(कपासी)नुं निदान तथा लक्षण.

२३ पग कांकरीओवते मथित थवाथी अथवा कांटा वगेरे वते घवायाथी अथवा मेदने तथा रुधिरने प्राप्त थएला दोषोथी पगमां (हाथमां पण) नाहाना बोर जेवडी, कठण, पीडावाळी, स्राववाळी, अंदर शल्यवाळी अने नीचां मध्यवाळी अथवा उंची जे ग्रंथि थाय छे ते **कदर** केहेवाय छे.

२४ क्लिन्नाङ्गुल्यन्तरौ पादौ कण्डूदाहरुगन्वितौ ।
दुष्टकर्दमसंस्पर्शादलसं तं विनिर्दिशेत् ॥

अलसनुं निदान तथा लक्षण.

२४ खराब कादवना स्पर्शथी पग आंगळीओना मध्यमां सडावाळा, खरजवाळा, पीडावाळा अने दाहवाळा थाय छे ए रोग **अलस** केहेवाय छे.

२५ रोमकूपानुगं पित्तं वातेन सह मूर्च्छितम् ।
प्रच्यावयति रोमाणि ततः श्लेष्मा सशोणितः ।
रुणद्धि रोमकूपांस्तु ततोऽन्येषामसम्भवः ।
तदिन्द्रलुप्तं खालित्यं रुज्येति च विभाव्यते ॥

इंद्रलुप्तनुं (उंदरीनुं) निदान तथा लक्षण.

२५ रूवाडांओना खाडाओमां रहेलुं पित्त वायुनी साथे प्रकुपित थईने रूवाडांओने पाडी नाखे छे अने ते पछी रुधिरसहित कफ रूवाडांओना खाडाओने रोकी दे छे के जेथी ते ठेकाणे बीजां रूवाडां उत्पन्न थतां नथी. आ रोग **इंद्रलुप्त**, खालित्य अने रुज्या ए नामोथी केहेवाय छे.

२६ दारुणा कण्डुरा रूक्षा केशभूमिः प्रजायते ।
कफवातप्रकोपेण विद्याद्दारुणकं तु तम् ॥

दारुणकनुं निदान तथा लक्षण.

२६ कफना अने वायुना प्रकोपथी केशोनी जग्या कठण, खरजवाळी तथा रूक्ष थई जाय छे ए रोग **दारुणक** केहेवाय छे. (कफना अने वायुना प्रकोपमां पित्तनो तथा रुधिरनो प्रकोप पण पेटामां होय छे.)

२७ अरूंषि बहुवक्त्राणि बहुक्लेदानि मूर्द्धनि ।
कफासृक्कृमिकोपेन नृणां विद्यादरूंषिकाम् ।

अरूंषिकानुं निदान तथा लक्षण.

२७ कफ, रुधिर अने कृमिओ एओना प्रकोपथी माणसना मस्तकमां घणां मोहोडांवाळा तथा घणा क्लेदवाळा व्रणो थाय छे ए रोग **अरूंषिका** केहेवाय छे.

२८ क्रोधशोकश्रमकृतः शरीरोष्मा शिरोगतः॥
पित्तं च केशान्पचति पलितं तेन जायते ।

पलित(वाळोनां सफेदपणां)नुं निदान तथा लक्षण.

२८ शोकथी, क्रोधथी तथा श्रमथी प्रकुपित थएलो वायु शरीरनी गरमीने (वैकृतपित्तने) माथामां लई जाय छे अने माथामां रहेलुं भ्राजक नामनुं पित्त क्रोधथी प्रकुपित थाय छे. 'प्रकुपित थएलो एक दोष बीजा दोषोने पण प्रकुपित करे छे' ए वचन प्रमाणे उपर कहेली रीते प्रकुपित थएलां वायु अने पित्त एओ कफने प्रकुपित करे छे अने प्रकोप पामेलो ए कफ केशोने सफेद करी नाखे छे. आ रीते त्रण दोषोए करेलुं केशोनुं सफेदपणुं **पलित** केहेवाय छे. (पंजिकामां तो एम व्याख्यान आपेलुं छे के क्रोध, शोक अने श्रम एओए प्रकुपित करेलो अने तेथी माथामां

गएलो शरीरनो अग्नि अने पित्त एओ एक थईने केशोने सफेद करी नाखे छे ए पलित केहेवाय छे.)

२९ दाहज्वररुजावन्तस्ताम्राः स्फोटाः सपीतकाः ॥
गात्रेषु वदने चान्तर्विज्ञेयास्ता मसूरिकाः ।

मसूरिकानुं निदान तथा लक्षण.

२९ गात्रोमां अने मोहोडामां पण दाहवाळा, ज्वरवाळा, पीडावाळा, राता अने पीळाशवाळा फोडलाओ थाय छे ते **मसूरिका** केहेवाय छे. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के 'लोहीनी साथे मळेलुं पित्त ज्यारे शरीरने दूषित करे छे त्यारे सर्व गात्रोमां मसूर जेवडी अथवा अडद जेवडी अथवा नाहाना बोर जेवडी फोडलीओ थाय छे ते मसूरिका केहेवाय छे.' डल्हन केहे छे के 'आ रोग जगतमां शीतला केहेवाय छे.' भावप्रकाशमां तो शीतलाने मसूरिकाना भेदरूप गणेल छे अने मसूरिकाने वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, त्रिदोषजन्य अने रुधिरजन्य एम चार प्रकारनी मानेली छे तथा ते चार प्रकारोनां जूदां जूदां लक्षणो आप्यां छे. भावप्रकाशमां मसूरिकानां जे पूर्वरूपो तथा लक्षणो आप्यां छे तेओ घणुं करीने हाल गुजरातमां जे **ओली** केहेवाय छे तेने मळतां आवे छे.)

३० शाल्मलीकण्टकप्रख्याः कफमारुतशोणितैः॥
जायन्ते पिडका यूनां वक्त्रे या मुखदूषिकाः ।

यौवनपिडका (जुवानीमां थता खीलो)नुं निदान तथा लक्षण.

३० जुवान माणसना मोहोडा उपर कफ, वायु तथा रुधिर एओथी उत्पन्न थएली शेमळाना कांटाओ जेवी जे फोडलीओ थाय छे तेओने **यौवनपिडका** अथवा **मूखदूषिका** जाणवी.

३१ कण्टकैराचितं वृत्तं कण्डूमत्पाण्डु मण्डलम्॥
पद्मिनीकण्टकप्रख्यैस्तदाख्यं कफवातजम् ।

पद्मिनीकंटकनुं निदान तथा लक्षण.

३१ कफथी तथा वायुथी कमळना नाळना कांटा जेवां उंचाणोथी व्याप्त, गोळ, खरजवाळुं तथा धोळुं जे मंडल (चकरडुं) उत्पन्न थाय छे ते **पद्मिनीकंटक** केहेवाय छे.

३२ नीरुजं सममुत्सन्नं मण्डलं कफरक्तजम् ॥
सहजं रक्तमीषच्च श्लक्ष्णं जतुमणिं विदुः ।

जतुमणिनुं (लाखानुं) निदान तथा लक्षण.

३२ वेदनावगरनुं, शरीरना जेवा वर्णवाळुं, कांईक उंचुं, शरीरनी साथेज थएलुं, लासुं अने कांईक रातुं जे चकरडुं थाय छे ते **जतुमणि** केहेवाय छे. (केटलाएकनो मत एवो पण छे के वायु, पित्त अने उल्वणतावाळो कफ एओथी काळुं अने स्निग्धपणावाळुं जे मंडल थाय छे ते जतुमणि केहेवाय छे अने एवुंज वेदनावगरनुं जे रातुं मंडल थाय छे ते लाखुं केहेवाय छे.)

३३ अवेदनं स्थिरं चैव यस्य गात्रेषु दृश्यते ॥
माषवत्कृष्णमुत्सन्नमनिलान्मशकं दिशेत् ।

मशक (मस)नुं निदान तथा लक्षण.

३३ गात्रमां अडद जेवुं काळुं तथा उंचुं, वेदनावगरनुं अने कठणपणावाळुं जे थाय छे ते **मशक** केहेवाय छे. मशक वायुना प्रकोपथी थाय छे.

३४ कृष्णानि तिलमात्राणि नीरुजानि समानि च ॥
वातपित्तकफोद्रेकात्तान्विद्यात्तिलकालकान् ।

तिलकालक (तिल)नुं लक्षण तथा निदान.

३४ काळां, तल जेवडां, पीडावगरनां अने उंचाईवगरनां जे चाठां थाय छे ए **तिलकालक** केहेवाय छे. आ तिलकालक वायुना, पित्तना तथा अत्यंत वधेला कफना प्रकोपथी थाय छे.

३५ मण्डलं महदल्पं वा श्यामं वा यदि वा सितम् ॥
सहजं नीरुजं गात्रे न्यच्छमित्यभिधीयते ।

न्यच्छनुं निदान तथा लक्षण.

३५ गात्रमां मोटुं अथवा नाहानुं, काळुं अथवा धोळुं, शरीरनी साथे थएलुं अने वेदनावगरनुं जे मंडल थाय छे ते **न्यच्छ** केहेवाय छे. (आ न्यच्छ पित्तथी तथा रुधिरथी संयुक्त थएला वायुना प्रकोपथी थाय छे. डल्हन आ न्यच्छने लाखुं केहे छे.)

३६ समुत्थाननिदानाभ्यां चर्मकीलं प्रकीर्तितम्

चर्मकील.

३६ चर्मकीलनां निदान, संप्राप्ति अने लक्षण आ निदानस्थानना बीजा अध्यायमां केहेवाई गएल छे.

३७ क्रोधायासप्रकुपितो वायुः पित्तेन संयुतः।
सहसा मुखमागम्य मण्डलं विसृजेत्ततः॥
नीरुजं तनुकं श्यावं मुखे व्यङ्गं तमादिशेत्।

व्यंगनुं (दाझनुं) निदान तथा लक्षण.

३७ क्रोधथी तथा परिश्रमथी प्रकुपित थएलो वायु पित्तनी साथे मळी तुरत मोहोडामां आवीने मोहोडा उपर वेदनावगरनुं, पातळुं अने काळी झांईवाळुं मंडल करे छे ते **व्यंग** केहेवाय छे. (मोहोडा उपर अथवा गात्र उपर ए प्रमाणेज पित्तनी साथे मळेला प्रकुपित थएला वायुथी वेदनावगरनुं, पातळुं तथा काळुं मंडल थाय छे ते **नीलिका** केहेवाय छे. व्यंग अने नीलिका एओ दाझनाज भेद छे.)

३८ मर्दनात्पीडनाच्चापि तथैवाप्यभिघाततः॥
मेढ्रचर्म यदा वायुर्भजते सर्वतश्चरः।
तदा वातोपसृष्टं तु चर्म प्रतिनिवर्तते॥
मणेरधस्तात्कोशश्च ग्रन्थिरूपेण लम्बते।
सवेदनः सदाहश्च पाकं च व्रजति क्वचित्॥
मारुतागन्तुसम्भूतां विद्यात्तां परिवर्तिकाम्।
सकण्डूः कठिना चैव सैव श्लेष्मसमुत्थिता॥

परिवर्तिकानुं निदान तथा लक्षण.

३८ सघळा शरीरमां फरवाना स्वभाववाळो वायु ज्यारे अत्यंत चोळावाथी, अत्यंत दबाणथी के अत्यंत अभिघात थयाथी लिंगनी चामडीमां आवे छे त्यारे वायुथी दूषित थएली ते चामडी परिवर्तन पामे छे. (अवळी थई जाय छे.) अने लिंगना टोचकांनी नीचे ते चामडी ग्रंथिना जेवा रूपथी लटकवा लागे छे. आ ग्रंथिमां वेदना थाय छे दाह थाय छे अने कोई वखते पाक पण थाय छे. वायुथी तथा अभिघात वगेरे आगंतु कारणोथी थतो आ रोग **परिवर्तिका** केहेवाय छे. आ रोग जो कफना प्रकोपथी थयो होय तो तेमां खरज आवे छे तथा कठणपणुं होय छे.

३९ अल्पीयसीं यदा हर्षाद्बलाद्गच्छेत्स्त्रियं नरः।
हस्ताभिघातादथ वा चर्मण्युद्वर्तिते बलात्॥
मर्दनात्पीडनाद्वापि शुक्रवेगविघाततः।
यत्रावपाट्यते चर्म तां विद्यादवपाटिकाम्॥

अवपाटिकानुं निदान तथा लक्षण.

३९ जेनी योनिनुं छिद्र बहुज सांकडुं होय एवी स्त्रीमां कामातुर थईने जोरथी गमन करवाथी अथवा हस्तमैथुन आदिने लीधे हाथनो अभिघात थतां बलात्कारथी चामडी अवळी थई जवाथी अथवा मर्दन थवाथी, दबाणथी के वीर्यना वेगनो विघात थवाथी लिंगनी चामडी फाटी जाय छे. आ रोग **अवपाटिका** केहेवाय छे. (आ अवपाटिका वायुना संबंधवाळी होय तो खरसट, रूक्ष, सूक्ष्म, काळी तथा वेदनावाळी थाय छे. पित्तना संबंधवाळी होय तो पीळी अथवा राती अने दाहथी तथा तरशथी युक्त थाय छे अने कफना संबंधवाळी होय तो कठण, स्निग्ध, खरजवाळी तथा अल्प वेदनावाळी थाय छे.)

४० वातोपसृष्टमेवं तु चर्म संश्रयते मणिम्।
मणिश्चर्मोपनद्धस्तु मूत्रस्रोतो रुणद्धि च॥
निरुद्धप्रकशे तस्मिन्मन्दधारमवेदनम्।
मूत्रं प्रवर्त्तते जन्तोर्मणिर्विव्रियते न च॥

निरुद्धप्रकशं विद्याद्रूढां चावपाटिकाम् ।

निरुद्धप्रकशनुं निदान तथा लक्षण.

४० जेमां उपर लखेलांज कारणोथी प्रकुपित थईने वायु आव्यो होय एवी लिंगनी चामडी टोचकानी आडे आवी जाय छे अने ए रीते चामडीथी मढाई गएलुं टोचकुं मूत्रना प्रवाहने रोकी दे छे ए **निरुद्धप्रकश** केहेवाय छे. आ रोगमां मूत्र मंद मंद धारावाळुं तथा अल्प वेदनावाळुं प्रवर्ते छे अने लिंगनुं टोचकुं खुल्लुं थतुं नथी. जो उपर कहेला अवपाटिका नामना रोगमां लिंगनी चामडी टोचकानी आडे आववाथी मूत्र मंद मंद प्रवर्ततुं होय तो ते अवपाटिका पण निरुद्धप्रकश केहेवाय छे.

४१ वेगसन्धारणाद्वायुर्विहतो गुदमाश्रितः ॥
निरुणद्धि महत्स्रोतः सूक्ष्मद्वारं करोति च ।
मार्गस्य सौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेण पुरीषं तस्य गच्छति
सन्निरुद्धगुदं व्याधिमेनं विद्यात्सुदुस्तरम् ।

सन्निरुद्धगुदनुं निदान तथा लक्षण.

४१ मूत्र वगेरेना वेगोनी अटकायतथी अभिघात पामेलो वायु गुदामां आवी गुदाना मोटा द्वारने रोकीने ते द्वारने सूक्ष्म करी नाखे छे के जेथी मार्ग सांकडो थतां विष्टा मांड मांड नीकळे छे. आ व्याधि **सन्निरुद्धगुद** केहेवाय छे अने अतिदुस्तर छे.

४२ शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेऽपाने शिशोर्भवेत्
स्विन्नस्यास्नाप्यमानस्य कण्डू रक्तकफोद्भवा ।
कण्डूयनात्ततः क्षिप्रं स्फोटाः स्रावश्च जायते ॥
एकीभूतं व्रणैर्घोरं तं विद्यादहिपूतनम् ।

अहिपूतननुं निदान तथा लक्षण.

४२ मूत्रथी तथा विष्टाथी खरडाएली बालकनी गुदा बराबर धोवामां न आवे अने पसीनो वळ्या छतां बालकने नवराववामां न आवे तो रुधिरना तथा कफना प्रकोपथी खरज थाय छे, खरज थतां खंजोरवाथी तुरत फोडलीओ तथा स्राव थाय छे अने तेमांथी थएला व्रणो एकठा थईने भयंकर थई पडे छे. आ रोग **अहिपूतन** केहेवाय छे.

४३ स्नानोत्सादनहीनस्य मलो वृषणसंश्रितः ॥
प्रक्लिद्यते यदा स्वेदात्स कण्डूं जनयेत्तदा ।
तत्र कण्डूयनात्क्षिप्रं स्फोटः स्रावश्च जायते॥
प्राहुर्वृषणकच्छूं तां श्लेष्मरक्तप्रकोपजाम् ।

वृषणकच्छूनुं निदान तथा लक्षण.

४३ जे पुरुष नाहाय नहीं अने नाहाय तो पण अंगोने साफ कर्याविगरनोज रेहे तेनो वृषणो उपरनो मेल ज्यारे पसीनाथी पलळीने क्लेदयुक्त थाय छे त्यारे खरजने उत्पन्न करे छे अने एमां खंजोरवाथी तुरत फोडला तथा स्राव थाय छे ए रोग **वृषणकच्छू** केहेवाय छे. आ रोग कफना अने रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

४४ प्रवाहणातिसाराभ्यां निर्गच्छति गुदं बहिः
रूक्षदुर्बलदेहस्य तं गुदभ्रंशमादिशेत् ।

गुदभ्रंश (आमण नीकळवा)नुं लक्षण तथा निदान.

४४ जेनुं शरीर रुक्ष तथा दुर्बल होय तेनी गुदा दस्तना समयमां जोर करवाथी के अतिसारथी बाहार नीकळे छे ए **गुदभ्रंश** केहेवाय छे. (आ रोग वायुना प्रकोपथी थाय छे.)

अध्याय १४ मो.

१ अथातः शूकदोषनिदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शूकदोषनिदान' ए नामना अध्यायनुं व्याख्यान ते प्रश्नो

---

१ जळना मेलथी उत्पन्न थएला शूक नामना एक जातना कीडानो लिंगवृद्धिने माटे उपयोग करवाथी जे रोगो थाय छे ते रोगोनां निदानो तथा लक्षणो वगेरेना निरूपणविषेनो.

माणे करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे केहेलुं छे.

२ लिङ्गवृद्धिमिच्छतामक्रमप्रवृत्तानां शूकदोषनिमित्ता दश चाष्टौ च व्याधयो जायन्ते । तद्यथा । सर्षपिका । अष्ठीलिका । ग्रथितं । कुम्भीका । अलजी । मृदितं । संमूढपिडका । अवमन्थः । पुष्करिका । स्पर्शहानिः । उत्तमा । शतपोनकः । त्वक्पाकः । शोणितार्बुदम् । मांसार्बुदम् । मांसपाकः । विद्रधिः । तिलकालकश्चेति ॥

शूकदोषथी उत्पन्न थता व्याधिओनी संप्राप्ति अने संख्या.

२ लिंगने जाडुं करवाने इच्छता अने तेम करवाने माटे अयोग्य पद्धतिथी प्रवर्त्तेला पुरुषोने शूकदोषथी (जलना मेलथी उत्पन्न थएला एक जातना झेरी कीडानी भस्मवगेरेवाळा उपायोरूप दोषथी) अढार प्रकारना व्याधिओ उत्पन्न थाय छे[1]. सर्षपिका, अष्ठीलिका, ग्रथित, कुंभीका, अलजी, मृदित, संमूढपिडका, अवमंथ, पुष्करिका, स्पर्शहानि, उत्तमा, शतपोनक, त्वक्पाक, शोणितार्बुद, मांसार्बुद, मांसपाक, विद्रधि अने तिलकालक ए शूकदोषथी थएला अढार व्याधिओनां नामो छे.

३ गौरसर्षपतुल्या तु शूकदुर्भग्नहेतुका ।
पिडका कफरक्ताभ्यां ज्ञेया सर्षपिका बुधैः॥

सर्षपिकानुं लक्षण तथा निदान.

३ शूक नामना कीडाने लिंग उपर खराब रीते भांगवाथी धोळा सर्षप जेवा आकारवाळी जे फोडली थाय छे ते **सर्षपिका** केहेवाय छे. आ फोडलीनुं निदान कफ अने रुधिर छे. (केटलाएक ग्रंथोमां **शूकदुर्भगहेतुका** एवो पाठ कल्पीने आ श्लोकनो एवो अर्थ कर्यो छे के ' शूकथी अथवा दुष्टयोनिमां मैथुन करवाथी धोळा सर्षपना जेवा आकारवाळी जे फोडली थाय छे ते सर्षपिका केहेवाय छे. ' पण ए अर्थनुं गयदासाचार्ये खंडन करेलुं छे. केम के दुष्ट योनिमां मैथुन करवाथी तो उपदंश थाय छे एम आ निदानस्थानना बारमा अध्यायना बारमा विषयमां केहेवाइ गयुं छे.)

४ कठिना विषमैरन्तैर्मारुतस्य प्रकोपतः ।
शूकैस्तु विषसंयुक्तैः पिडकाऽष्ठीलिका भवेत् ।

अष्ठीलिकानुं लक्षण तथा निदान.

४ झेरी शूकोनो उपयोग करवाने लीधे वायुना प्रकोपथी विषम छेडाओवाळी जे कठण फोडली थाय छे ते **अष्ठीलिका** केहेवाय छे.

५ शूकैर्यत्पूरितं शश्वद्ग्रथितं तत्कफोत्थितम् ।

ग्रथितनुं लक्षण तथा निदान.

५ लिंगने शूक नामना कीडाओना अवयवोथी पूरित राखवाने लीधे लिंग गुंथाएला जेवुं थई जाय छे ए **ग्रथित** केहेवाय छे. ग्रथितनुं निदान कफ छे.

६ कुम्भीका रक्तपित्तोत्था जाम्बवास्थिनिभाऽशुभा ॥

---

१ वात्स्यायन सूत्रमां (कामशास्त्रमां) कह्युं छे के 'भीलामाना ठळीआ, शूक नामनो पाणीनो कीडो अने कमळपत्र एओने वासणनी अंदर बाळी भस्म करी ते भस्मने सैंधवथी मिश्रित करीने मोटी भोरींगणीना डेडवाना रसमां वाटवी. पछी लिंगने पाडाना छाणथी सारी पेठे धोइने तेना उपर ए भस्मनो कल्क लगाववामां आवे तो लिंग घोडाना लिंग जेवुं मोटुं थाय छे.' कामशास्त्रमां आ प्रमाणे शूकोनो उपयोग करवाना बीजा पण अनेक प्रयोगो लख्या छे. जेओमां शूकनो उपयोग नथी एवा अश्वगंधादि तैल वगेरे बीजा उपायो करवामां कशो दोष नथी. आसोंद, शतावरी, कठ, जटामांसी अने भोरींगणीना डेडवा एओनो कल्क नाखी तेलथी चोगणा दूधमां पकाववामां आवेलुं तलनुं तेल अश्वगंधादितैल केहेवाय छे. आ तैल लिंगने, स्तनोने अने काननी बूटोने वधारे छे. (भा. प्र.)

कुंभीकानुं लक्षण तथा निदान

६ शूकदोषने लीधेज रुधिरनो तथा कफनो प्रकोप थवाथी जांबूना ठळीया जेवा आकारवाळी जे काळी फोडली थाय छे ते **कुंभीका** केहेवाय छे.

७ अलजीलक्षणैर्युक्तामलजीं च वितर्कयेत् ।

अलजीनुं लक्षण तथा निदान.

७ अलजी नामनी प्रमेहसंबंधी फोडली के जे रताश तथा काळाशवाळी थाय छे तथा बीजी फोडलीओथी पण व्याप्त थाय छे तेना जेवी जे फोडली शूकदोषने लीधे लिंग उपर थाय छे ते पण **अलजी** केहेवाय छे. आ फोडलीनुं निदान रुधिर तथा पित्त छे.

८ मृदितं पीडितं यत्तु संरब्धं वायुकोपतः ॥

मृदितनुं लक्षण तथा निदान.

८ शूकदोष प्राप्त थतां लिंगने दबाववाथी लिंग उपर जे सोजो चडे छे ते **मृदित** केहेवाय छे. मृदितनुं निदान वायुनो प्रकोप छे.

९ पाणिभ्यां भृशसंमूढे संमूढपिडका भवेत् ।

संमूढपिडकानुं लक्षण तथा निदान.

९ शूकदोष प्राप्त थतां बन्ने हाथवते लिंगने अत्यंत चोळवाथी जे फोडली उत्पन्न थाय छे ते **संमूढपिडका** केहेवाय छे. आनुं निदान पण वायुनोज प्रकोप छे.

१०दीर्घा बह्वयश्च पिडका दीर्यन्ते मध्यतस्तु याः॥
सोऽवमन्थः कफासृग्भ्यां वेदनारोमहर्षकृत् ।

अवमंथनुं लक्षण तथा निदान.

१० शूकनो उपयोग करवाथी थएली घणी अने लांबा अंकुरोवाळी जे फोडलीओ मध्यभागमां फाटे छे अने वेदनाने तथा रोमांचना उभा थवाने करे छे ते फोडलीओ **अवमंथ** केहेवाय छे. आ फोडलीओ कफना तथा रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

११पित्तशोणितसम्भूता पिडका पिडकाचिता॥
पद्मपुष्करसंस्थाना ज्ञेया पुष्करिकेति सा ।

पुष्करिकानुं लक्षण तथा निदान.

११ शूकनो उपयोग करवाथी आसपास नाहानी नाहानी फोडलीओथी व्याप्त अने कमळनी डोडी जेवा आकारवाळी जे फोडली थाय छे ते **पुष्करिका** केहेवाय छे. आ फोडली पित्तना तथा रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

१२ जनयेत्स्पर्शहानिं तु शोणितं शूकदूषितम् ॥

स्पर्शहानिनुं लक्षण तथा निदान.

१२ शूकनो उपयोग करवाथी थएली जे फोडली स्पर्शनुं सहन न करी शके एवी थाय छे ते **स्पर्शहानि** केहेवाय छे. आ फोडली रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

१३ मुद्गमाषोपमा रक्ता पिडका रक्तपित्तजा ।
उत्तमैषा तु विज्ञेया शूकाजीर्णनिमित्तजा ॥

उत्तमानुं लक्षण तथा निदान.

१३ शूकदोषना अजीर्णथी (वारंवार शूकसंबंधी क्रिया थवाथी) मगना तथा अडदना जेवा आकारवाळी जे राती फोडली थाय छे ते उत्तमा केहेवाय छे. आ फोडली रुधिरना तथा पित्तना प्रकोपथी थाय छे.

१४ छिद्रैरणुमुखैर्यत्तु चितं मेढ्रं समन्ततः ।
वातशोणितजो व्याधिर्विज्ञेयः शतपोनकः ॥

शतपोनकनुं लक्षण तथा निदान.

१४ शूकना उपयोगने लीधे दुष्ट थएला वायुथी अने रुधिरथी लिंग झीणां झीणां मोहोडांवाळां छिद्रोथी चारेकोर व्याप्त थईने शतपोनक (चाळणी) जेवुं थई जाय छे ए व्याधि **शतपोनक** केहेवाय छे.

१५ पित्तरक्तकृतो ज्ञेयस्त्वक्पाको ज्वरदाहवान्।

त्वक्पाकनुं निदान तथा लक्षण.

१५शूकना उपयोगनेलीधे दुष्ट थएला पित्तथी अने रुधिरथी लिंगनी चामडीनो ज्वरने तथा बळतराने

उत्पन्न करनारो जे पाक थाय छे ते **त्वक्पाक** केहेवाय छे. (गयदासाचार्य केहे छे के 'आ व्याधि शूकना उपयोगने लीधे दुष्ट थएला वायुथी अने पित्तथी थाय छे.')

१६ कृष्णस्फोटैः सरक्तैश्च पिडकाभिश्च पीडितम्
लिङ्गं वस्तिरुजश्चोग्रा ज्ञेयं तच्छोणितार्बुदम् ॥

शोणितार्बुदनुं निदान तथा लक्षण.

१६ कांईक रताशवाळा काळा फोडलाओथी अने फोडलीओथी लिंग पीडाय अने मूत्राशयमां उग्र व्यथाओ थाय ए **शोणितार्बुद** केहेवाय छे. आ रोग शूकना उपयोगथी दूषित थएला रुधिरथी थाय छे.

१७ मांसदोषेण जानीयादर्बुदं मांससम्भवम् ।

मांसार्बुदनुं लक्षण तथा निदान.

१७ शूकना उपयोगथी दुष्ट थएलुं मांस वृद्धि पामतां तेने लीधे लिंग उपर मांसनी रसोळी जेवुं जे थाय छे ते **मांसार्बुद** केहेवाय छे.

१८ शीर्यन्ते यस्य मांसानि यस्य सर्वाश्च वेदनाः॥
विद्यात्तं मांसपाकं तु सर्वदोषकृतं भिषक् ।

मांसपाकनुं निदान तथा लक्षण.

१८ शूकना उपयोगने लीधे थएला त्रणे दोषोना प्रकोपथी लिंगनां मांसो खरी पडे छे अने त्रणे दोषोसंबंधी वेदनाओ थाय छे ए रोगने वैद्ये **मांसपाक** जाणवो.

१९ विद्रधिं सन्निपातेन यथोक्तमभिनिर्दिशेत् ॥

विद्रधिनुं निदान तथा लक्षण.

१९ आ स्थानना ९ मा अध्यायना ७ मा विषयमां जे त्रणे दोषोसंबंधी विद्रधि केहेवामां आव्यो छे तेना जेवांज लक्षणोवाळो जे सोजो लिंगमां थाय छे तेने पण **विद्रधि** केहेवो. आ सोजो शूकना उपयोगने लीधे प्रकुपित थएला त्रणे दोषोथी थाय छे.

२० कृष्णानि चित्राण्यथवा शूकानि सविषाणि च ।
पातितानि पचन्त्याशु मेढ्रं निरवशेषतः ॥
कालानि भूत्वा मांसानि शीर्यन्ते यस्य देहिनः।
सन्निपातसमुत्थानं तं विद्यात्तिलकालकम् ॥

तिलकालकनुं लक्षण तथा निदान.

२० काळा अथवा विविध रंगोवाळा शूक नामना झेरी कीडाओ लिंग उपर नाखवामां आव्या होय तो तेओ तुरत आखा लिंगने पकावी नाखे छे अने तेथी लिंगनां मांसो काळां काळां थईने खरी पडवा लागे छे. आ रोग तिलकालक केहेवाय छे अने ते त्रणे दोषोना प्रकोपथी थाय छे.

२१ तत्र मांसार्बुदं यच्च मांसपाकश्च यः स्मृतः।
विद्रधिश्च न सिध्यन्ति ये च स्युस्तिलकालकाः ॥

शूकदोषथी उत्पन्न थएला अमुक व्याधिओनुं असाध्यपणुं

२१ शूकदोषथी थएला उपर कहेला अढार व्याधिओमां मांसार्बुद, मांसपाक, विद्रधि अने तिलकालक ए चार असाध्य छे.

अध्याय १५ मो.

१ अथातो भग्नानां निदानं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'भग्ननिदान'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पतनपीडनप्रहाराक्षेपणव्यालमृगदशनप्रभृतिभिरभिघातविशेषैरनेकविधमस्थ्नां भङ्गमुपदिशन्ति तत्तु भङ्गजातमनुसार्यमाणं द्विविधमेवोत्पद्यते सन्धिमुक्तं काण्डभग्नं च ॥

१ अस्थिओना भंगनां निदानादिकना निरूपण विषेनो.

भग्ननां निदानो अने मुख्य बे भेद.

२ पडवाथी, दबावाथी, प्रहार वागवाथी, फेंकावाथी, हिंसक जानवरो करडवाथी अने एवाज प्रकारना बीजा पण अभिघातोथी अस्थिओनो भंग (जूदां पडवुं वगेरे) अनेक प्रकारनो थाय छे एम आचार्योए कह्युं छे. भग्नना सघळा प्रकारोमां अनुस्यूत थाय एवा भेदोनो बारीकीथी विचार करतां ए सघळा प्रकारोनो **संधिमुक्त** अने **कांडभग्न** ए नामना बे भेदोमां समावेश थाय छे. (बे अस्थिओनी संधावानी जग्यामां जे भग्न थयुं होय ते संधिमुक्त केहेवाय छे अने अस्थिना एक भागमां जे भग्न थयुं होय ते कांडभग्न केहेवाय छे.)

३ तत्र सन्धिमुक्तमुत्पिष्टं विश्लिष्टं विवर्तितमवक्षिप्तमतिक्षिप्तं तिर्यक्क्षिप्तमिति षड्विधम् ॥

संधिमुक्तना छ भेद.

३ उत्पिष्ट, विश्लिष्ट, विवर्तित, अवक्षिप्त, अतिक्षिप्त अने तिर्यक्क्षिप्त ए रीते संधिमुक्तना छ भेद छे.

४ तत्र प्रसारणाकुंचनविवर्तनाक्षेपणाऽशक्तिरुग्ररुजत्वं स्पर्शासहत्वं चेति सामान्यं सन्धिमुक्तलक्षणमुक्तम् ॥

संधिमुक्तनुं सामान्य लक्षण.

४ पसारवामां, संकोचवामां, फेरववामां तथा फकवामा अशक्तपणुं थाय, उग्र वेदना थाय अने स्पर्श खमी शकाय नहीं ए संधिभग्ननुं सामान्य लक्षण समजवुं. (ए लक्षणो थतां होय तो संधिभग्न थयुं छे एम जाणवुं.)

५ विशेषेणोत्पिष्टे सन्धावुभयतः शोफो वेदनाप्रादुर्भावो विशेषतश्च नानाप्रकारा वेदना रात्रौ प्रादुर्भवन्ति ॥

विश्लिष्टेऽल्पशोफो वेदनासातत्यं सन्धिविक्रिया च ॥

विवर्तिते तु सन्धिपार्श्वापगमनाद्विषमाङ्गता वेदना च ॥

अवक्षिप्ते सन्धिविश्लेषस्तीव्ररुजत्वं च ॥

अतिक्षिप्ते द्वयोः सन्ध्यस्थ्नोरतिक्रान्तता वेदना च ॥

तिर्यक्क्षिप्ते त्वेकास्थिपार्श्वापगमनमत्यर्थं वेदना चेति ॥

संधिमुक्तना छ भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

५ बे अस्थिओ परस्परनी साथे घसावाथी सांधो दबाई जतां बन्ने भागमां सोजो उत्पन्न थाय, वेदनानी उत्पत्ति थाय अने विशेषे करी राते अनेक प्रकारनी वेदनाओ थाय ए **उत्पिष्टनुं** लक्षण छे. (संधिनां अस्थिओनुं भींसाई जवुं ए उत्पिष्ट शब्दनो अर्थ छे.)

सोजानुं अल्पपणुं होय, राते तथा दिवसे हमेश वेदनाओ रहे अने सांधाओमां विक्रिया थाय ए **विश्लिष्टनुं** लक्षण छे. (सांधानां अस्थिओनुं परस्परथी जूदुं पडवुं ए विश्लिष्ट शब्दनो अर्थ छे.)

संधिओनां अस्थिओ उथलीजतां पोताना स्थलने छोडी दईने संधिओना पडखामां खसी जाय तेथी अंगनुं विषमपणुं थाय अने वेदनानुं पण विषमपणुं थाय ए विवर्तितनुं लक्षण छे. (अस्थिनुं पडखामां फरीजवुं ए विवर्तित शब्दनो अर्थ छे.)

एक संधिनुं अस्थि पोताना स्थानने छोडीने जूदुं पडे अने वेदनाओ तीव्र थाय ए **अवक्षिप्तनुं** लक्षण छे. (संधिना एक अस्थिनुं दूर थई जवुं ए अवक्षिप्त शब्दनो अर्थ छे.)

संधिनां बन्ने अस्थिओ दूर जतां रहे अने अतिवेदना थाय ए **अतिक्षिप्तनुं** लक्षण छे.(बन्ने अस्थिओनुं दूर दूर जतुं रेहेवुं ए अतिक्षिप्त शब्दनो अर्थ छे.)

सांधानुं एक अस्थि पडखामां खसी जाय अने अत्यंत वेदना थाय ए **तिर्यक्क्षिप्तनुं** लक्षण छे. (आडुं फेकाईजवुं ए तिर्यक्क्षिप्त शब्दनो अर्थ छे.)

६ काण्डभग्नमत ऊर्ध्वं वक्ष्यामः ॥ कर्कटकमश्वकर्णकं चूर्णितं पिच्चितमस्थिच्छलितं का-

ण्डभग्नं मज्जानुगतमतिपातितं वक्रं छिन्नं पाटितं स्फुटितमिति द्वादशविधम् ॥

कांडभग्नना बार भेद.

६ हवे कांडभग्नना भेदो कहीए छीए. कर्कटक, अश्वकर्णक, चूर्णित, पिच्चित, अस्थिच्छलित, कांडभग्न, मज्जानुगत, अतिपातित, वक्र, छिन्न, पाटित अने स्फुटित ए रीते कांडभग्न बार प्रकारनुं थाय छे.

७ श्वयथुबाहुल्यं स्पन्दनविवर्तनस्पर्शासहिष्णुत्वमवपीड्यमाने शब्दः स्रस्ताङ्गता विविधवेदनाप्रादुर्भावः सर्वास्ववस्थासु न शर्मलाभ इति समासेन काण्डभग्नलक्षणमुक्तम् ॥

कांडभग्ननुं सामान्य लक्षण.

७ सोजानुं घणापणुं थाय, चलननुं सहन न थाय, फरवानुं सहन न थाय, स्पर्शनुं सहन न थाय, दबावतां अवाज थाय, अंगनुं शिथिलपणुं थाय, अनेक प्रकारनी वेदनाओ प्रकट थाय अने कोई स्थितिमां पण सुख न मळे ए कांडभग्ननुं संक्षिप्त सामान्य लक्षण छे. (ए लक्षणो थतां होय तो कांडभग्न थयुं छे एम समजवुं.)

८ विशेषतस्तु संमूढमुभयतोऽस्थि मध्यभग्नं ग्रन्थिरिवोन्नतं कर्कटकम् ॥

अश्वकर्णवदुद्गतमश्वकर्णकम् ॥

चूर्णितमस्थि तत्तु शब्दस्पर्शाभ्यां बोद्धव्यम् ॥

पिच्चितं पृथुतां गतमनल्पशोफम् ॥

पार्श्वयोरस्थि हीनोद्गतमस्थिच्छलितम् ॥

चलितं प्रकम्पमानं काण्डभग्नम् ॥

अस्थ्यवयवोऽस्थिमध्यमनुप्रविश्य मज्जानमुन्नह्यतीति मज्जानुगतम् ॥

अस्थि निःशेषतश्छिन्नमतिपातितम् ॥

आभुग्नमविमुक्तास्थि वक्रम् ॥

अन्यतरपार्श्वावशिष्टं छिन्नम् ॥

पाटितमणुबहुविदारितं वेदनावच्च ॥

शूकपूर्णमिवाध्मातं विपुलविस्फुटीकृतं स्फुटितमिति ॥

कांडभग्नना बार भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

८ मध्यमां भांगेलुं, बन्ने पडखांओमां नमेलुं अने वचमां ग्रंथिनी पेठे उंचुं थएलुं अस्थि **कर्कटक** केहेवाय छे.

घोडाना काननी पेठे बाहार नीकळेलुं अस्थि **अश्वकर्णक** केहेवाय छे.

चूर्ण (भूको) थई गएलुं अस्थि **चूर्णित** केहेवाय छे. शब्द उपरथी अने स्पर्श उपरथी चूर्णित जाणी शकाय छे.

पीचाईने (चगदाईने) पोहोळुं थई गएलुं अने घणा सोजावाळुं अस्थि **पिच्चित** केहेवाय छे.

पडखांओमां जराक उंचुं थएलुं अस्थि **अस्थिच्छलित** केहेवाय छे.

चलित थईने कंपायमान थया करतुं अस्थि **कांडभग्न** केहेवाय छे.

अस्थिनो अवयव अस्थिना मध्यमां पेसी जईने मज्जाने उंची करी नाखे छे ए **मज्जानुगत** केहेवाय छे.

तमाम छेदाई गएलुं अस्थि **अतिपातित** केहेवाय छे.

जराक वांकुं थएलुं अने छूटुं नहीं पडेलुं अस्थि **वक्र** केहेवाय छे.

पडखांओमांथी एक पडखामां अवशेष रहेलुं अस्थि **छिन्न** केहेवाय छे.

जेमां झीणी झीणी घणी फाटो पडी गई होय अने वेदना थती होय ते अस्थि **पाटित** वाय छे.

बहुज फाटी गएलुं अने जाणे जव वगेरेनी अणीओथी पूरवामां आवेलुं होय तेम फूलेलुं तथा वेदना करतुं अस्थि **स्फुटित** केहेवाय छे.

९ तेषु चूर्णितच्छिन्नातिपातितमज्जानुगतानि कृच्छ्रसाध्यानि कृशवृद्धबालानां क्षतक्षीणकुष्ठश्वासिनां सन्ध्युपगतं चेति ॥

अमुक भग्नोनुं कष्टसाध्यपणुं.

९ कांडभग्नोमां चूर्णित, छिन्न, अतिपातित अने मज्जानुगत ए चार (अने कांडभग्न पण) कष्टसाध्य छे. कृश, वृद्ध, मूर्खताथी अहित आहारादिक करनारा, क्षतथी क्षीण थएला, कोढवाळा अने श्वासना दरदवाळा एओनुं तो सघळा प्रकारनुं संधियुक्त अने सघळा प्रकारनुं कांडभग्न कष्टसाध्यज छे.

१० भवन्ति चात्र ॥

भिन्नं कपालं कट्यां तु सन्धिमुक्तं तथा च्युतम्
जघनं प्रतिपिष्टं च वर्जयेत्तच्चिकित्सकः ॥
असंश्लिष्टं कपालं तु ललाटे चूर्णितं च यत् ।
भग्नं स्तनान्तरं शङ्खे पृष्ठे मूर्ध्नि च वर्जयेत् ॥
आदितो यच्च दुर्जातमस्थि सन्धिरथापि वा ।
सम्यक्संहितमप्यस्थि दुर्न्यासाद्दुर्निबन्धनात्
संक्षोभाद्वापि यद्गच्छेद्विक्रियां तत्तु वर्जयेत् ।

भग्नोना असाध्यपणानुं विवेचन.

१० आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के " गोठण, नितंब, खभा, गाल, ताळवुं, लमणा के माथुं एओमां कांडभग्न थयुं होय तो वैद्ये तेनी चिकित्सा करवी नहीं. कमरमां संधिमुक्त के तिर्यक्क्षिप्त थएल होय तो तेनी चिकित्सा करवी नहीं अने पेडुमां उत्पिष्ट थएल होय तो तेनी चिकित्सा करवी नहीं. गोठण, नितंब, खभा, गाल, ताळवुं, लमणो तथा माथुं एओनां अस्थिओ जो बीजां अस्थिओथी छूटां पडी गयां होय तो तेओनी चिकित्सा करवी नहीं. ललाटमां चूर्णित नामनुं कांडभग्न थयुं होय तो तेनी चिकित्सानो त्याग करवो. स्तनोनुं मध्य, पीठ, लमणो अने माथुं एओमां गमे ते प्रकारनुं भग्न थयुं होय तो पण तेनी चिकित्सा छोडीज देवी. जे कांडभग्न के संधिमुक्त शरूआतथीज बगडेल होय तेनी पण चिकित्सा करवी नहीं. जे अस्थि सारी रीते सांधेलुं छतां पण अयोग्य रीते स्थपायाथी, खराब रीते बंधायाथी के अभिघातादिकने लीधे चलित थवाथी विक्रियाने प्राप्त थयुं होय तेनी चिकित्सा पण करवी नहीं.

११ मध्यस्य वयसोऽवस्थास्तिस्रो याः परिकीर्तिताः ॥
तत्र स्थिरो भवेज्जन्तुरुपक्रान्तो विजानता ।

अवस्थाना विशेषथी चिकित्सानुं सफलपणुं.

११ सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना ११ मा विषयमां सोळमाथी चाळीशमा वर्षसुधीमां जे वृद्धि, यौवन अने संपूर्णता नामनी त्रण अवस्थाओ कहेली छे तेओमां संधिमुक्तने के कांडभग्नने पामेला माणसनी जो विचक्षण वैद्य चिकित्सा करे तो ते माणस सारी रीते आरोग्य पामीने स्थिर थाय छे.

१२ तरुणास्थीनि नम्यन्ते भज्यन्ते नलकानि तु ॥
कपालानि विभिद्यन्ते स्फुटन्ति रुचकानि च ॥

अमुक अस्थिओमां अमुक प्रकारनुं भग्न थवाविषे.

१२ तरुणास्थिओ (नाक, कान, आंख अने डोक एओनां अस्थिओ) नमी जाय छे अर्थात् तेओमां वक्र नामनुं कांडभग्न थवानो संभव छे. हाथनी तथा पगनी आंगळीओ अने कांडां वगेरेनां अस्थिओ के जेओ नलक केहेवाय छे तेओ त्रुटी जाय छे अर्थात् तेओमां अन्य अस्थिओनो प्रवेश थवाथी मज्जानुगत नामनुं कांडभग्न थवानो संभव छे. गोठण, नितंब, खभा, गाल, ताळवुं, लमणा तथा मस्तक एओनां अस्थिओ के जेओ कपाल केहेवाय छे तेओ भेदाई जाय छे अर्थात् तेओमां पाटित नामनुं कांडभग्न थवानो संभव छे. दांतोनां अस्थिओ के जेओ रुचक केहेवाय छे अने हाथ, पग, पडखां, पीठ, पेट, तथा छाती एओनां अस्थिओ के जेओ वलय केहेवाय छे तेओ फाटी जाय छे अर्थात् तेओमां स्फुटित नामनुं कांडभग्न थवानो संभव छे.

अध्याय १६ मो.

१ अथातो मुखरोगाणां निदानं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मुखरोगनिदान' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मुखरोगाः पञ्चषष्टिः सप्तस्वायतनेषु। तत्रायतनान्योष्ठौ दन्तमूलानि दन्ता जिह्वा तालु कण्ठः सर्वाणि चेति । तत्राष्टावोष्ठयोः । पञ्चदश दन्तमूलेषु । अष्टौ दन्तेषु । पञ्च जिह्वायाम्। नव तालुनि । सप्तदश कण्ठे । त्रयः सर्वेष्वायतनेषु ॥

मुखरोगोनी संख्या अने ते रोगो कया कया स्थानोमां केटला केटला थाय छे ते.

२ मुखरोगो पांसठ छे अने तेओ मोहोडानां सात स्थानकोमां थाय छे. होट, दांतोनां मूळो, दांतो, जीभ, ताळवुं, कंठ अने ए सघळां ए रीते सात स्थानको छे. पांसट रोगोमां आठ रोग होटमां थाय छे, पंदर रोग दांतोनां मूळोमां थाय छे, आठ रोग दांतोमां थाय छे, पांच रोग जीभमां थाय छे, नव रोग ताळवामां थाय छे, सत्तर रोग कंठमां थाय छे अने त्रण रोग ए सघळां स्थानकोमां थाय छे.

३ तत्रौष्ठप्रकोपा वातपित्तश्लेष्मसन्निपातरक्तमांसमेदोऽभिघातनिमित्ताः ॥

होठना रोगोनां निदानो.

३ वायुथी थएलो, पित्तथी थएलो, कफथी थएलो, त्रणे दोषोथी थएलो, रुधिरथी थएलो, मांसथी थएलो, मेदथी थएलो अने अभिघातथी थएलो ए रीते होठना रोग आठ छे.

४ कर्कशौ परुषौ स्तब्धौ कृष्णौ तीव्ररुगन्वितौ।
दाल्येते परिपाट्येते ओष्ठौ मारुतकोपतः ॥

वायुथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

४ बन्ने होठ सागना पानडां जेवा खरसट, रूक्ष, निश्चल, काळा, तीव्र वेदनावाळा, भेदाता होय एवा अने कांईक फाटेली चामडीवाळा थई जाय छे ए वायुथी थएलो होठनो रोग समजवो.

५ आचितौ पिडकाभिस्तु सर्षपाकृतिभिर्भृशम्
सदाहपाकसंस्रावौ नीलौ पीतौ च पित्ततः॥

पित्तथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

५ बन्ने होठ सर्षप जेवी आकृतिओवाळी फोडलीओथी अत्यंत व्याप्त थई जाय, बळतरावाळा थाय, पाकी जाय, स्राववाळा थाय अने आशमानी तथा पीळा वर्णवाळा थई जाय ए पित्तथी थएलो होठनो रोग समजवो.

६ सवर्णाभिस्तु चीयेते पिडकाभिरवेदनौ ।
कण्डूमन्तौ कफाच्छूनौ पिच्छिलौ शीतलौ गुरू॥

कफथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

६ बन्ने होठ चामडीना जेवा वर्णवाळी फोडलीओथी व्याप्त, थोडी वेदनावाळा, खरजवाळा, सूणेला, चीकणा, शीतल तथा भारे थई जाय ए कफथी थएलो होठनो रोग जाणवो.

७ सकृत्कृष्णौ सकृत्पीतौ सकृच्छ्वेतौ तथैव च।
सन्निपातेन विज्ञेयावनेकपिडकाचितौ ॥

त्रणे दोषोथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

७ बन्ने होठ जराक काळा, जराक पीळा, जराक धोळा अने अनेक फोडलीओथी व्याप्त थई जाय ए त्रणे दोषोथी थएलो होठनो रोग जाणवो. (आ असाध्य छे.)

८ खर्जूरफलवर्णाभिः पिडकाभिः समाचितौ ।
रक्तोपसृष्टौ रुधिरं स्रवतः शोणितप्रभौ ॥

रुधिरथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

८ बन्ने होठ खजूरीना फळ जेवा वर्णवाळी

१ मोहोडाना ते ते प्रदेशोना रोगोनां निदानो तथा लक्षणो केहेवा विषेनो.

फोडलीओथी व्याप्त, रुधिरना स्राववाळा अने रुधिरना जेवी कांतिवाळा थई जाय ए रुधिरथी थएलो होठनो रोग जाणवो.

९ मांसदुष्टौ गुरू स्थूलौ मांसपिण्डवदुद्गतौ । जन्तवश्चात्र मूर्च्छन्ति सृक्कस्योभयतो मुखात् ॥

मांसथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

९ बन्ने होठ भारे, जाडा तथा मांसना पिंडोनी पेठे उंचा थई जाय अने मोहोडानां बन्ने गलोफांओमां कीडाओ पडे ए मांसथी थएलो होठनो रोग जाणवो. (आ असाध्य छे.)

१० मेदसा घृतमण्डाभौ कण्डूमन्तौ स्थिरौ मृदू। अच्छस्फटिकसङ्काशमास्रावं स्रवतो गुरू ॥

मेदथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

१० बन्ने होठ घीनी उपरना आछा भाग जेवा, खरजवाळा, निश्चल, कोमळ, भारे अने स्वच्छ स्फटिक जेवो स्राव करनारा थई जाय ए मेदथी थएलो होठनो रोग जाणवो.

११ क्षतजाभौ विदीर्येते पाट्येते चाभिघाततः। ग्रथितौ च समाख्यातावोष्ठौ कण्डूसमन्वितौ ॥

अभिघातथी थएला होठना रोगनुं लक्षण.

११ बन्ने होठ लोही जेवा वर्णवाळा, चीराओवाळा, जाणे भेदन पामता होय एवा, ग्रंथिवाळा अने खरजवाळा थई जाय ए अभिघातथी थएलो होठनो रोग जाणवो.

१२ दन्तमूलगतास्तु शीतादो दन्तपुप्पुटको दन्तवेष्टकः शौषिरो महाशौषिरः परिदर उपकुशो दन्तवैदर्भो वर्द्धनोऽधिमांसो नाड्यः पञ्चेति ॥

दांतोनां मूळोमां (पेढांओमां) जे रोगो थाय छे तेओनां नामो.

१२ शीताद, दंतपुप्पुटक, दंतवेष्टक, शौषिर, महाशौषिर, परिदर, उपकुश, दंतवैदर्भ, वर्द्धन, अधिमांस अने पांच प्रकारनी दंतनाडीओ ए रीते दांतोनां मूळोमां पंदर रोगो थाय छे.

१३ शोणितं दन्तवेष्टेभ्यो यत्राकस्मात्प्रवर्तते । दुर्गन्धीनि सकृष्णानि प्रक्लेदीनि मृदूनि च ॥ दन्तमांसानि शीर्यन्ते पचन्ति च परस्परम् । शीतादो नाम स व्याधिः कफशोणितसम्भवः॥

शीतादनुं लक्षण अने निदान.

१३ दांतोनां पेढांओमांथी अभिघातविना अकस्मात् लोही नीकळवा लागे तथा पेढांनां मांसो दुर्गंधवाळां थई जाय, काळां थई जाय, क्लेदवाळां थई जाय, कोमळ थई जाय, पडवा लागे अने परस्परने पकाववा लागे ए रोग **शीताद** केहेवाय छे. आ रोग कफना तथा रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

१४ दन्तयोस्त्रिषु वा यस्य श्वयथुः सरुजो महान् दन्तपुप्पुटको ज्ञेयः कफरक्तनिमित्तजः

दंतपुप्पुटकनुं लक्षण तथा निदान.

१४ बे दांतोनां पेढामां अथवा त्रण दांतोना पेढांमां मोटो तथा वेदनावाळो सोजो उत्पन्न थाय ए रोग **दंतपुप्पुटक** केहेवाय छे. आ रोग कफना अने रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

१५ स्रवन्ति पूयरुधिरं चला दन्ता भवन्ति च । दन्तवेष्टः स विज्ञेयो दुष्टशोणितसम्भवः ॥

---

१ वायुथी थता होठना रोगमां केवळ वायुज निदानरूप होय छे अने अभिघातथी थएला होठना रोगमां कफ अने रुधिर एओथी संयुक्त थएलो वायु निदानरूप होय छे ए परस्परनो भेद समजवो.

२ आ निदानस्थानना दशमा अध्यायनो दशमो विषय जुवो. वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, त्रिदोषजन्य, अने शल्यजन्य ए पांच भेदवाळा, दांतोनां पेढांओमां थएला नाडीव्रणो दंतनाडीओ केहेवाय छे.

३ अन्य ग्रंथोमां दंतविद्रधि नामनो एक सोळमो दंतमूलरोग पण लख्यो छे. पेढांओमां रहेलां वात, पित्त, कफ अने रुधिर एओथी, बाहार बळतरावाळो तथा वेदनावाळो मोटो सोजो थाय छे अने तेमांथी परू तथा लोही स्रवे छे ते दंतविद्रधि केहेवाय छे.

दंतवेष्टकनुं लक्षण तथा निदान.

१५ दांतोनां पेढांओमांथी परूनो तथा रुधिरनो स्राव थाय अने दांतो हली जाय ए रोग **दंतवेष्टक** केहेवाय छे. आ रोग दुष्ट थएला रुधिरथी थाय छे.

१६ श्वयथुर्दन्तमूलेषु रुजावान्कफरक्तजः ।
लालास्रावी स विज्ञेयः कण्डूमाञ्छौषिरो गदः॥

शौषिरनुं लक्षण तथा निदान.

१६ दांतोनां मूळोमां (पेढांओमां) पीडावाळो, लाळना स्राववाळो अने खरजवाळो सोजो उत्पन्न थाय छे ए रोग **शौषिर** केहेवाय छे. आ रोग कफना तथा रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

१७ दन्ताश्चलन्ति वेष्टेभ्यस्तालु चाप्यवदीर्यते।
दन्तमांसानि पच्यन्ते मुखं च परिपीड्यते ॥
यस्मिन् स सर्वजो व्याधिर्महाशौषिरसंज्ञकः ।

महाशौषिरनुं लक्षण तथा निदान.

१७ पेढांओमांथी दांतो चलित थई जाय, ताळवुं तथा पेढांओ फाटवा लागे, पेढांओ पाकी जाय अने मोहोडुं अत्यंत पीडाय ए रोग **महाशौषिर** केहेवाय छे. आ रोग त्रणे दोषोना प्रकोपथी थाय छे (अने ते सात रातनी अंदर मारी नाखे छे.)

१८ दन्तमांसानि शीर्यन्ते यस्मिन्ष्ठीवति चाप्यसृक् ॥
पित्तासृक्कफजो व्याधिर्ज्ञेयः परिदरो हि सः ।

परिदरनुं लक्षण तथा निदान.

१८ दांतोनां मांसो खरी पडवा लागे अने रोगी वारंवार लोहीने थुंक्या करे ए रोग **परिदर** केहेवाय छे. आ रोग पित्त, रुधिर अने कफ एओना प्रकोपथी थाय छे.

१९ वेष्टेषु दाहः पाकश्च तेभ्यो दन्ताश्चलन्ति च॥
आघट्टिताः प्रस्रवन्ति शोणितं मन्दवेदनम् ।
आध्मायन्ते स्रुते रक्ते मुखं पूति च जायते ॥
यस्मिन्नुपकुशः स स्यात्पित्तरक्तकृतो गदः ।

उपकुशनुं लक्षण तथा निदान.

१९ पेढांओमां दाह तथा पाक थाय, पेढांओमांथी दांतो चलित थई जाय, दांतोने हलाववामां आवे त्यारे मंद वेदनावाळो लोहीनो स्राव थाय अने लोहीनो स्राव थतां पेढां सूणी जाय तथा मोहोडुं दुर्गंधवाळुं थई जाय ए रोग **उपकुश** केहेवाय छे. आ रोग पित्तना तथा रुधिरना प्रकोपथी थाय छे.

२० घृष्टेषु दन्तमूलेषु संरम्भो जायते महान्॥
भवन्ति च चला दन्ताः स वैदर्भोऽभिघातजः।

दंतवैदर्भनुं लक्षण तथा निदान.

२० पेढांओ घसातां मोटो सोजो उत्पन्न थाय, दांतो चलित थई जाय, वेदना थाय, दाह थाय तथा पाकवुं पण थाय ए रोग **दंतवैदर्भ** केहेवाय छे. आ रोग अभिघातथी थाय छे.

२१ मारुतेनाधिको दन्तो जायते तीव्रवेदनः ॥
वर्द्धनः स मतो व्याधिर्जाते रुक्च प्रशाम्यति।

वर्द्धननुं निदान तथा लक्षण.

२१ वायुना प्रकोपने लीधे तीव्र वेदनावाळो एक दांत अधिक उत्पन्न थाय छे अने ते उत्पन्न थया पछी वेदना शांत थाय छे ए रोग **वर्द्धन** केहेवाय छे. (बीजा ग्रंथोमां आ रोगने 'खलिवर्द्धन' नाम आपेलुं छे.)

२२ हानव्ये पश्चिमे दन्ते महाञ्छोथो महारुजः॥
लालास्रावी कफकृतो विज्ञेयः सोऽधिमांसकः।

अधिमांसकनुं निदान तथा लक्षण.

२२ नीचली पंक्तिना छेला दांतमां (छेली दाढना पेढामां?) मोटी पीडावाळो तथा लाळना स्राववाळो भारे सोजो थाय छे ए रोग **अधिमांसक** केहेवाय छे. आ रोग कफना प्रकोपथी थाय छे.

२३ दन्तमूलगता नाड्यः पञ्च ज्ञेया यथेरिताः॥

पांच प्रकारनी दंतनाडीओनां लक्षणो तथा निदानो.

२३ आ निदानस्थानना दशमा अध्यायमां

नाडीव्रणना प्रकरणमां जेवी वायुथी थएली, पित्तथी थएली, कफथी थएली, त्रणे दोषोथी थएली अने शल्यथी थएली, एम पांच प्रकारनी नाडीओ कहेली छे तेवीज पांच प्रकारनी नाडीओ (नळीओ) दांतोनां पेढांओमां थाय छे माटे तेओनां लक्षणो नाडीव्रणना प्रकरणमां कह्याप्रमाणेज समजी लेवां. (आ नाडीओमां त्रणे दोषोथी थएली नाडी असाध्य छे.)

२४ दन्तगतास्तु दालनः क्रिमिदन्तको दन्तहर्षो भञ्जनकः शर्करा कपालिका श्यावदन्तको हनुमोक्षश्चेति ॥

दांतोना रोगोनां नामो.

२४ दालन, क्रिमिदंतक, दंतहर्ष, भंजनक, शर्करा, कपालिका, श्यावदंतक अने हनुमोक्ष ए रीते दांतोमां आठ रोग थाय छे. (बीजा ग्रंथोमां हनुमोक्षने बदले **कराल** नामनो आठमो दंतरोग लख्यो छे अने तेनुं जूदुंज लक्षण आप्युं छे के 'दांतोमां रहेलो वायु धीरे धीरे दांतोने भयानक अने विकट करी नाखे छे' ए रोग कराल केहेवाय छे अने असाध्य छे.)

२५ दाल्यन्ते बहुधा दन्ता यस्मिंस्तीव्ररुगन्विताः दालनः स इति ज्ञेयः सदागतिनिमित्तजः ॥

दालननुं लक्षण तथा निदान.

२५ दांतो जाणे चीरी नाखवामां आवता होय एवी दांतोमां तीव्र पीडा थाय ए रोग **दालन** केहेवाय छे. आ रोग वायुना प्रकोपथी थाय[1] छे. (आ अर्थ बीजा ग्रंथना अभिप्रायथी मेळवीने लख्यो छे. मूळना अक्षरोनुं स्वारस्य जोतां तो एवो अर्थ थाय छे के जे रोगथी तीव्र वेदनावाळा दांतो अनेक रीते चीराई जाय छे—फाटी जाय छे ते रोगने दालन जाणवो अने ते वायुना प्रकोपथी थाय छे.)

१ आ रोगने असाध्य गण्यो छे.

२६ कृष्णश्छिद्री चलः स्रावी ससंरम्भो महारुजः अनिमित्तरुजो वाताद्विज्ञेयः क्रिमिदन्तकः ॥

कृमिदंतकनुं निदान तथा लक्षण.

२६ दांतोमां छिद्रो करनारो, काळो, चल अथवा अचल, स्राववाळो, मोटी पीडावाळो, सोजावाळो अने जेमां हलाववा वगेरे कारणो विना वेदना थया करे छे एवो जे रोग थाय छे ते **कृमिदंतक** केहेवाय छे. आ रोग वायुना प्रकोपथी थाय छे.

२७ दशनाः शीतमुष्णं च सहन्ते स्पर्शनं न च। यस्य तं दन्तहर्षं तु व्याधिं विद्यात्समीरणात् ॥

दंतहर्षनुं लक्षण तथा निदान.

२७ दांतो शीत स्पर्शोनुं, रूक्ष स्पर्शोनुं, प्रबल पवनना स्पर्शनुं अने खाटा स्पर्शोनुं सहन न करी शके एवा थई जाय ए रोग **दंतहर्ष** केहेवाय छे. आ रोग वायुना प्रकोपथी थाय छे.

२८ वक्त्रं वक्रं भवेद्यस्मिन्दन्तभङ्गश्च तीव्ररुक् । कफवातकृतो व्याधिः स भञ्जनकसंज्ञितः ॥

भंजनकनुं लक्षण तथा निदान.

२८ जेथी मोहोडुं वांकुं थई जाय छे, दांतो भांगी पडे छे अने तीव्र वेदना थाय छे ते रोग **भंजनक** केहेवाय छे. आ रोग कफना तथा वायुना प्रकोपथी थाय छे. (आ असाध्य छे.)

२९ शर्करेव स्थिरीभूतो मलो दन्तेषु यस्य वै। सा दन्तानां गुणघ्नी तु विज्ञेया दन्तशर्करा ॥

दंतशर्करानुं लक्षण तथा निदान.

२९ दांतो उपर रहेलो मेल पथरानी कणीओ जेवो स्थिर थई जाय अने दांतोना सफेदपणा वगेरे गुणो नष्ट थई जाय ए रोग **दंतशर्करा** केहेवाय छे. (बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के दांतोमां रहेलो मेल अने कफ वायुए सूकाव्याथी रेती जेवा खरसट स्पर्शवाळा थई जाय ए रोग दंतशर्करा केहेवाय छे.)

३० दलन्ति दन्तवल्कानि यदा शर्करया सह।
ज्ञेया कपालिका सैव दशनानां विनाशिनी ॥

कपालिकानुं लक्षण तथा निदान.

३० मेलसहित दांतोना अवयवो माटीनां ठीकरांओनी पेठे चीरोवाळा थई जाय अने उपर कह्याप्रमाणे शर्करा पण होय तो ए रोग **कपालिका** केहेवाय छे. आ कपालिका दांतोनो विनाश करे छे अने वायुना प्रकोपथी थाय छे (तथा अतिकष्टसाध्य छे.)

३१ योऽसृङ्मिश्रेण पित्तेन दग्धो दन्तस्त्वशेषतः।
श्यावतां नीलतां वापि गतः स श्यावदन्तकः॥

श्यावदंतकनुं निदान तथा लक्षण.

३१ रुधिरसहित पित्तथी बळेला जेवो थई गएलो दांत संपूर्ण रीते काळापणाने अथवा आशमानीपणाने पामे छे ए रोग श्यावदंतक केहेवाय छे. (आ असाध्य छे.)

३२ वातेन तैस्तैर्भावैस्तु हनुसन्धिर्विसंहतः।
हनुमोक्ष इति ज्ञेयो व्याधिरर्दितलक्षणः ॥

हनुमोक्षनुं निदान तथा लक्षण.

३२ उंचा स्वरथी भाषण तथा कठण पदार्थोनुं भक्षण इत्यादि कारणोने लीधे प्रकुपित थएलो वायु हडपचीना संधिने विघट्टित करी नाखे छे अने तेथी आ निदानस्थानना पेहेला अध्यायना २१ मा विषयमां कहेला अर्दितना जेवांज लक्षणो जोवामां आवे छे ए रोग **हनुमोक्ष** केहेवाय छे. (जो के आ रोग वातव्याधिओमां गणवा योग्य छे तो पण दांतोनी पासे रेहेवाने लीधे अने दांतोने पीडा करनारो होवाने लीधे तेने दंतरोगोमां गण्यो छे. ग्रंथांतरोमां तो आ रोगने बदले कराल नामनो जूदांज लक्षणवाळो रोग लख्यो छे.)

३३ जिह्वागतास्तु कण्टकास्त्रिविधास्त्रिभिर्दोषैरलास उपजिह्विका चेति ।

जीभना रोगोनां नामो.

३३ वातकंटक, पित्तकंटक, कफकंटक, अलास अने उपजिह्विका ए पांच जीभना **रोगो** छे.

३४ जिह्वाऽनिलेन स्फुटिता प्रसुप्ता
भवेच्च शाकच्छदनप्रकाशा ॥

वातकंटकनुं निदान तथा लक्षण.

३४ वायुना प्रकोपथी जीभ जराक फाटी जाय छे, खारा मीठा वगेरे रसोने जाणी शकती नथी अने सागना पानडांनी पेठे कांटाओथी व्याप्त थई जाय छे ए रोग **वातकंटक** केहेवाय छे.

३५ पित्तेन पीता परिदह्यते च
चिता सरक्तैरपि कण्टकैश्च ।

पित्तकंटकनुं निदान तथा लक्षण.

३५ पित्तना प्रकोपथी जीभ पीळी थई जाय छे, बळतरावाळी थाय छे अने रताशवाळा कांटाओथी व्याप्त थई जाय छे ए रोग **पित्तकंटक** केहेवाय छे.

३६ कफेन गुर्वी बहुला चिता च
मांसोद्गमैः शाल्मलिकण्टकाभैः ॥

कफकंटकनुं निदान तथा लक्षण.

३६ कफना प्रकोपथी जीभ जाडी थई जाय छे, भारे थई जाय छे अने शेमळाना कांटा जेवा मांसना कांटाओथी व्याप्त थई जाय छे ए रोग **कफकंटक** केहेवाय छे.

३७ जिह्वातले यः श्वयथुः प्रगाढः
सोऽलाससंज्ञः कफरक्तमूर्तिः ।
जिह्वां स तु स्तम्भयति प्रवृद्धो
मूले तु जिह्वा भृशमेति पाकम् ॥

अलासनुं निदान तथा लक्षण.

३७ जीभना तळामां कफ तथा रुधिर एओना प्रकोपथी जे अत्यंत दारुण सोजो थाय छे ते **अलास** केहेवाय छे. वृद्धि पामेलो आ रोग जीभने स्तब्ध करी नाखे छे अने आ रोगथी जीभनुं मूळ पण अत्यंत पाकी जाय छे.

(जीभने स्तब्ध करी देवाने लीधे आ रोगमां वायुनो पण प्रकोप छे अने जीभनुं मूळ अत्यंत पाकवाने लीधे पित्तनो पण प्रकोप छे एम सिद्ध थाय छे. आ प्रमाणे आ रोग त्रणे दोषोना अने रुधिरना पण प्रकोपथी थएलो होवाने लीधे असाध्य छे.)

३८ जिह्वाग्ररूपः श्वयथुर्हि जिह्वा-
मुन्नम्य जातः कफरक्तयोनिः ।
प्रसेककण्डूपरिदाहयुक्ता
प्रकथ्यतेऽसावुपजिह्विकेति ॥

उपजिह्विकानुं निदान तथा लक्षण.

३८ कफना अने रुधिरना प्रकोपने लीधे जीभने उंची करीने अर्थात् जीभनी नीचे सोजो थाय छे. ए सोजो जीभनी अणीना जेवी आकृतिवाळो होय छे अने तेथी जीभ लाळना स्रावथी, खरजथी तथा बळतराथी युक्त थाय छे. आ रोग **उपजिह्विका** केहेवाय छे.

३९ तालुगतास्तु गलशुण्डिका तुण्डिकेर्यध्रुषो मांसकच्छपोऽर्बुदं मांससङ्घातस्तालुपुप्पुटस्तालुशोषस्तालुपाक इति ॥

ताळवाना रोगोनां नामो.

३९ गलशुंडिका, तुंडिकेरी, अध्रुप, मांसकच्छप, ताल्वर्बुद, मांससंघात, तालुपुप्पुट, तालुशोप अने तालुपाक ए रीते नव ताळवाना रोगो छे.

४० श्लेष्मासृग्भ्यां तालुमूलात्प्रवृद्धो
दीर्घः शोफो ध्मातबस्तिप्रकाशः ।
तृष्णाकासश्वासकृत्सम्प्रदिष्टो
व्याधिर्वैद्यैः कण्ठशुण्डीति नाम्ना ॥

गलशुंडिकानुं निदान तथा लक्षण.

४० कफना अने रुधिरना प्रकोपने लीधे ताळवाना मूळमांथी वधेलो, लांबो, वायुथी पूराएला बस्तिना (मूत्राशयनी कोथळीना) दडा जेवो अने तरशने, खांसीने तथा श्वासने उत्पन्न करनारो जे सोजो थाय छे तेने वैद्यो **गलशुंडिका** केहे छे.

४१ शोफः स्थूलस्तोददाहप्रपाकी
प्रागुक्ताभ्यां तुण्डिकेरी मता तु ।

तुंडकेरीनुं निदान तथा लक्षण.

४१ कफ अने रुधिर एओना प्रकोपने लीधे ताळवामां जाडो, भोंकाया जेवी व्यथावाळो, बळतरावाळो अने पाकवाळो जे हीरवणीना फल जेवो सोजो थाय छे ते **तुंडिकेरी** केहेवाय छे.

४२ शोफः स्तब्धो लोहितस्तालुदेशे-
रक्ताज्ज्ञेयः सोऽध्रुषो रुग्ज्वराढ्यः ॥

अध्रुपनुं निदान तथा लक्षण.

४२ रुधिरना प्रकोपने लीधे ताळवामां अक्कड, रातो, ज्वरवाळो अने वेदनावाळो जे सोजो थाय छे ते **अध्रुष** केहेवाय छे.

४३ कूर्मोत्सन्नोऽवेदनोऽशीघ्रजन्माऽ-
रक्तो ज्ञेयः कच्छपः श्लेष्मणा स्यात् ।

मांसकच्छपनुं निदान तथा लक्षण.

४३ कफना प्रकोपने लीधे ताळवामां काचबानी पेठे मध्यमां उंचो तथा छेडाओमां नीचो, थोडी वेदनावाळो, पांडुर वर्णवाळो अने मंद गतिवाळो जे सोजो थाय छे ते **मांसकच्छप** केहेवाय छे.

४४ पद्माकारं तालुमध्ये तु शोफं
विद्याद्रक्तादर्बुदं प्रोक्तलिङ्गम् ॥

ताल्वर्बुदनुं निदान तथा लक्षण.

४४ रुधिरना प्रकोपने लीधे ताळवाना मध्यमां कमळनी डोडीना जेवा आकारवाळो, (कमळना केसरा जेवा लांबा मांसना अंकुरोथी पडखांओमां वीटाएलो तथा गोळ) अने आ निदानस्थानना अगीयारमा अध्यायना १२ मा विपयमां कहेलां रुधिरसंबंधी अर्बुदनां चिह्नोवाळो जे सोजो थाय छे ते **ताल्वर्बुद** केहेवाय छे. (आ रोग असाध्य छे.)

४५ दुष्टं मांसं श्लेष्मणा नीरुजं च
तालवन्तःस्थं मांससङ्घातमाहुः ।

मांससंघातनुं निदान तथा लक्षण.

४५ कफना प्रकोपने लीधे ताळवानी अंदर पीडावगरनुं जे बगडेलुं मांस जमा थएलुं होय छे ते **मांससंघात** केहेवाय छे.

४६ नीरुक्स्थायी कोलमात्रः कफात्स्या-
न्मेदोयुक्तात्पुप्पुटस्तालुदेशे ॥

तालुपुप्पुटनुं निदान तथा लक्षण.

४६ मेदथी संयुक्त थएला कफना प्रकोपने लीधे ताळवामां पीडावगरनो, स्थिर अने नाहाना बोर जेवडो जे सोजो थाय छे ते **तालुपुप्पुट** केहेवाय छे.

४७ शोषोऽत्यर्थं दीर्यते चापि तालु-
श्वासो वातात्तालुशोषः सपित्तात् ।

तालुशोषनुं निदान तथा लक्षण.

४७ वायुना अने पित्तना प्रकोपने लीधे ताळवामां अत्यंत शोष थाय, ताळवुं फाट्या करे अने श्वास पण थाय ए रोग **तालुशोष** केहेवाय छे.

४८ पित्तं कुर्यात्पाकमत्यर्थघोरं
तालुन्येनं तालुपाकं वदन्ति ॥

तालुपाकनुं निदान तथा लक्षण.

४८ पित्तना प्रकोपने लीधे ताळवामां अत्यंत भयंकर पाक थाय छे ए रोग **तालुपाक** केहेवाय छे.

४९ कण्ठगतास्तु रोहिण्यः पञ्च कण्ठशालूकमधिजिह्वो बलयो बलास एकवृन्दो वृन्दः शतघ्नी गिलायुर्गलविद्रधिर्गलौघः स्वरघ्नो मांसतानो विदारी चेति ॥

कंठना रोगोनां नामो.

४९ पांच रोहिणीओ, कंठशालूक, अधिजिह्व, वलय, बलास, एकवृंद, वृंद, शतघ्नी, गिलायु, गलविद्रधि, गलौघ, स्वरघ्न, मांसतान अने विदारी एओ कंठना रोगो छे. (आ अध्यायना बीजा विषयमां आपेली संख्या प्रमाणे कंठना रोगो सत्तरज थवा जोईए अने अहीं गणतां अढार थाय छे तेथी जैज्जटाचार्य केहे छे के 'जे एकवृंद छे तेज विशेष स्थितिथी अवस्थांतर पामीने वृंद बनी जाय छे माटे एकवृंद अने वृंद ए बन्ने एकज होवाथी संख्यानो वधारो थतो नथी.' गयदासाचार्य तो केहे छे के 'वृंदनो जे पाठ जोवामां आवे छे ते अनार्षज छे.' भावप्रकाश वगेरे ग्रंथोमां एकवृंद तथा वृंद एओने स्पष्ट रीते जूदा गण्या छे अने सुश्रुतना अक्षरोनुं सारस्य जोतां पण एकवृंद अने वृंद एओ जूदा जूदाज जणाय छे माटे आ अध्यायना बीजा विषयमां रोगोनी जे संख्या आपेली छे तेमां परंपराथी एकनो फरक रही गयो होय एम पण मानी शकाय छे.)

५० गलेऽनिलः पित्तकफौ च मूर्च्छितौ
पृथक् समस्ताश्च तथैव शोणितम् ।
प्रदूष्य मांसं गलरोधिनोऽङ्कुरान्
सृजन्ति यान्साऽसुहरा तु रोहिणी ॥

पांचे रोहिणीओनां निदान सामान्य संप्राप्ति तथा सामान्य लक्षण.

५० गळामां वृद्धि पामेलो वायु, अथवा वृद्धि पामेलुं पित्त, अथवा वृद्धि पामेलो कफ, अथवा वृद्धि पामेला ए त्रणे दोषो, अथवा वृद्धि पामेलुं रुधिर मांसने दूषित करीने गळानो उपरोध करनारा अंकुरोने उत्पन्न करे छे ए **रोहिणी** केहेवाय छे अने ते, प्राणनो नाश करनारी छे एटले असाध्य छे. (केटलाएक आचार्यो छेली बेने असाध्य अने पेहेली त्रणने साध्य माने छे. वास्तविक जोतां तो त्रणे दोषोथी थएली रोहिणीज खरी असाध्य जणाय छे. केमके बाकीनी चार रोहिणीओनी चिकित्सास्थानना बावीशमा अध्यायमां चिकित्सा कहेली छे.)

५१ जिह्वां समन्ताद् भृशवेदना ये
मांसाङ्कुराः कण्ठनिरोधिनः स्युः ।
तां रोहिणीं वातकृतां वदन्ति
वातात्मकोपद्रवगाढयुक्ताम् ॥

वायुथी थएली रोहिणीनुं विशिष्ट लक्षण.

९१ जीभनी चारे कोर अत्यंत वेदना करनारा अने गळाने रोकी देनारा मांसना अंकुरो थाय छे अने तेओना योगथी वायुसंबंधी स्तब्धपणा वगेरे उपद्रवो पण अत्यंत थाय छे ए **वायुथी थएली रोहिणी** केहेवाय छे.

५२ क्षिप्रोद्गमा क्षिप्रविदाहपाका
तीव्रज्वरा पित्तनिमित्ततः स्यात् ।

पित्तथी थएली रोहिणीनुं विशिष्ट लक्षण.

९२ गळामां मांसना अंकुरो तुरत उत्पन्न थाय, तुरत बळतरा थाय, तुरत पाके अने ज्वर पण तीव्र आवे ए **पित्तथी थएली रोहिणी** केहेवाय छे.

५३ स्रोतोनिरोधिन्यपि मन्दपाका
गुर्वी स्थिरा सा कफसम्भवा वै ॥

कफथी थएली रोहिणीनुं विशिष्ट लक्षण.

९३ गळानी शिराओनो निरोध थई गळामां मांसना अंकुरो उत्पन्न थाय छे अने तेओ धीरे धीरे पाके छे, भारे होय छे अने स्थिर होय छे ए **कफथी थयेली रोहिणी** केहेवाय छे.

५४ गम्भीरपाकाऽप्रतिवारवीर्या
त्रिदोषलिङ्गा त्रयसम्भवा स्यात् ॥

त्रणे दोषोथी थएली रोहिणीनुं लक्षण.

९४ गळामां उपर कहेलां त्रणे दोषोनां चिह्नोवाळा, ऊंडा पाकवाळा अने जेओनुं जोर अटकावी शकातुं नथी एवा मांसना अंकुरो उत्पन्न थाय छे ए **त्रणे दोषोथी थएली रोहिणी** केहेवाय छे. (अत्यंत असाध्य छे.)

५५ स्फोटाऽऽचिता पित्तसमानलिङ्गा-
ऽसाध्या प्रदिष्टा रुधिरात्मिकेयम् ॥

५५

रुधिरथी थएली रोहिणीनुं लक्षण.

९५ फोडलाओथी व्याप्त अने पित्तरोहिणीनां जेवांज चिह्नोवाळा जे मांसना अंकुरो गळामां उत्पन्न थाय छे ते **रुधिरथी थएली रोहिणी** केहेवाय छे अने ते असाध्य छे.

५६ कोलास्थिमात्रः कफसम्भवो यो
ग्रन्थिर्गले कण्टकशूकभूतः ।
खरः स्थिरः शस्त्रनिपातसाध्य-
स्तं कण्ठशालूकमिति ब्रुवन्ति ॥

कंठशालूकनुं निदान तथा लक्षण.

९६ कफना प्रकोपने लीधे गळामां कांटानी पेठे तथा जव वगेरे धान्यनी अणीनी पेठे वेदना उत्पन्न करनारो, खरसट, स्थिर, बोरना ठलीया जेवडो अने शस्त्रक्रियाथीज मटाडी शकाय एवो जे ग्रंथि थाय छे ते **कंठशालूक** केहेवाय छे.

५७ जिह्वाग्ररूपः श्वयथुः कफात्तु
जिह्वाप्रबन्धोपरि रक्तमिश्रात् ।
ज्ञेयोऽधिजिह्वः खलु रोग एष
विवर्जयेदागतपाकमेनम् ॥

अधिजिह्वनुं निदान तथा लक्षण.

९७ रुधिरथी मिश्रित थएला कफना प्रकोपने लीधे जीभना मूळनी उपर जीभनी अणी जेवा आकारवाळो जे सोजो उत्पन्न थाय छे ते **अधिजिह्व** केहेवाय छे. आ सोजो जो पाके तो पछी असाध्य समजीने तेनी चिकित्सा करवी नहीं. (आमां पाक थाय छे तेथी पित्तनुं पण मिश्रण छे एम समजवुं.)

५८ बलास एवायतमुन्नतं च
शोफं करोत्यन्नगतिं निवार्य ।
तं सर्वथैवाप्रतिवारवीर्यं
विवर्जनीयं वलयं वदन्ति ॥

वलयनुं निदान तथा लक्षण.

९८ प्रकोप पामेलो कफ अन्ननी गतिने अटकावीने गळामां लांबा तथा ऊंचा सोजाने उत्पन्न

करे छे ए **वलय** केहेवाय छे. आ रोग कोइ रीते मटे एवो नथी माटे तेनी चिकित्साज करवी नहीं.

५९ गले च शोफं कुरुतः प्रवृद्धौ
श्लेष्मानिलौ श्वासरुजोपपन्नम् ।
मर्मच्छिदं दुस्तरमेतमाहु-
र्बलाससंज्ञं निपुणा विकारम् ॥

बलासनुं निदान तथा लक्षण.

५९ वृद्धि पामेला वायु तथा कफ एओ गळामां श्वासवाळा, पीडावाळा अने हृदयना मर्मस्थलमां छेदनना जेवी व्यथा करनारा सोजाने उत्पन्न करे छे ए रोगने निपुण वैद्यो **बलास** केहे छे अने ते कष्टसाध्य छे एम केहे छे.

६० वृत्तोन्नतो यः श्वयथुः सदाहः
कण्डून्वितोऽपाक्यमृदुर्गुरुश्च ।
नाम्नैकवृन्दः परिकल्पितोऽसौ
व्याधिर्बलासक्षतजप्रसूतः ॥

एकवृंदनुं निदान तथा लक्षण.

६० कफना अने रुधिरना प्रकोपने लीधे गळामां गोळ, ऊंचो, जरा बळतरावाळो, खरजवाळो, जरा पाकनारो, जराक कोमळ अने भारेपणावाळो जे सोजो उत्पन्न थाय छे ते **एकवृंद** केहेवाय छे.

६१ समुन्नतं वृत्तममन्ददाहं
तीव्रज्वरं वृन्दमुदाहरन्ति ।
तं चापि पित्तक्षतजप्रकोपा-
द्विद्यात्सतोदं पवनास्रजं तम् ॥

वृंदनुं निदान तथा लक्षण.

६१ पित्तना अने रुधिरना प्रकोपने लीधे गळामां ऊंचो, गोळ, अत्यंत दाहवाळो अने तीव्र ज्वरवाळो जे सोजो उत्पन्न थाय छे ते **वृंद** केहेवाय छे. आ रोग जो भोंकाया जेवी व्यथाथी युक्त होय तो तेने वायुना तथा रुधिरना प्रकोपथी थएलो जाणवो. (आ रोग असाध्य छे.)

६२ वर्तिर्घना कण्ठनिरोधिनी या
चिताऽतिमात्रं पिशितप्ररोहैः ।
नानारुजोच्छ्रायकरी त्रिदोषा-
ज्ज्ञेया शतघ्नीव शतघ्न्यसाध्या ॥

शतघ्नीनुं निदान तथा लक्षण.

६२ त्रणे दोषोना प्रकोपने लीधे गळामां भोंकावुं, दाह तथा खरज वगेरे अनेक प्रकारनी व्यथाओने वधारनारी, कठण, मांसना अंकुरोथी अत्यंत व्याप्त अने गळाने रोकी देनारी वाट उत्पन्न थाय छे ए **शतघ्नी** केहेवाय छे. आ वाट त्रणे दोषोना प्रकोपथी थएली होवाने लीधे तोपनी पेठे प्राण लेनारी छे तेथी असाध्य छे.

६३ ग्रन्थिर्गले त्वामलकास्थिमात्रः
स्थिरोऽल्परुक्स्यात्कफरक्तमूर्तिः ।
संलक्ष्यते सक्तमिवाशनं च
स शस्त्रसाध्यस्तु गिलायुसंज्ञः ॥

गिलायुनुं निदान तथा लक्षण.

६३ कफना अने रुधिरना प्रकोपने लीधे गळामां आमळांना ठळीआ जेवडो, स्थिर, थोडी वेदनावाळो अने जाणे खाधेलुं अन्नादिक गळामां अटकी रह्युं होय एवो जणातो ग्रंथि उत्पन्न थाय छे ए **गिलायु** केहेवाय छे. आ रोग शस्त्रक्रियाथी मटे छे.

६४ सर्वं गलं व्याप्य समुत्थितो यः
शोफो रुजो यत्र वसन्ति सर्वाः ।
स सर्वदोषो गलविद्रधिस्तु
तस्यैव तुल्यः खलु सर्वजस्य ॥

गलविद्रधिनुं निदान तथा लक्षण.

६४ सघळा दोषोना प्रकोपने लीधे सघळा प्रकारनी वेदनाओवाळो अने सघळा गळामां व्याप्त थईने ऊठेलो जे सोजो उत्पन्न थाय छे ते **गलविद्रधि** केहेवाय छे. आ गलविद्रधि आ निदानस्थानना नवमा अध्यायमां कहेला त्रिदोषजन्य विद्रधि जेवोज होय छे.

६५ शोफो महानन्नजलावरोधी
तीव्रज्वरो वातगतेर्निहन्ता ।
कफेन जातो रुधिरान्वितेन
गले गलौघः परिकीर्त्यतेऽसौ ॥

गलौघनुं निदान तथा लक्षण.

६५ रुधिरथी संयुक्त थएला कफना प्रकोपने लीधे गळामां अन्ननी तथा जळनी गतिने रोकनारो, तीव्र ज्वरवाळो अने उदानवायुनी गतिने पण रोकनारो जे मोटो सोजो उत्पन्न थाय छे ते **गलौघ** केहेवाय छे. (आ असाध्य छे.)

६६ योऽतिप्रताम्यञ्छ्वसिति प्रसक्तं
भिन्नस्वरः शुष्कविमुक्तकण्ठः ।
कफोपदिग्धेष्वनिलायनेषु
ज्ञेयः स रोगः श्वसनात्स्वरघ्नः ॥

स्वरघ्ननुं निदान तथा लक्षण.

६६ वायुना मार्गो कफथी अत्यंत खरडाई जतां वारंवार तथा निरंतर हांफ चाल्या करे, स्वर भेदाइ जाय, गळुं खाधेला पदार्थने गळवामां अशक्त तथा सूकाएलुं थइ जाय अने अत्यंत अंधारां देखाया करे ए रोग **स्वरघ्न** केहेवाय छे. आ रोग वायुना प्रकोपथी थाय छे (अने असाध्य छे.)

६७ प्रतानवान् यः श्वयथुः सुकष्टो
गलोपरोधं कुरुते क्रमेण ।
स मांसतानः कथितोऽवलम्बी
प्राणप्रणुत्सर्वकृतो विकारः ॥

मांसताननुं लक्षण तथा निदान.

६७ त्रणे दोषोना प्रकोपने लीधे गळामां विस्तारवाळो, लटकतो अने अतिकष्ट देनारो जे सोजो क्रमे करी गळानो उपरोध करेछे ते रोग **मांसतान** केहेवाय छे. आ रोग प्राण लेनारो छे.

६८ सदाहतोदं श्वयथुं सरक्त-
मन्तर्गले पूतिविशीर्णमांसम् ।
पित्तेन विद्याद्वदने विदारीं
पार्श्वे विशेषात्स तु येन शेते ॥

विदारीनुं निदान तथा लक्षण.

६८ पित्तना प्रकोपने लीधे गळामां दाहवाळो, तीव्र वेदनावाळो, रताशवाळो अने सडेला दुर्गंधी मांसवाळो जे सोजो उत्पन्न थाय छे ते **विदारी** केहेवाय छे. माणसने विशेषे करी जे पडखुं वाळीने सूवानी टेव होय ते पडखाना गळाना भागमां घणुं करीने आ रोग थाय छे. (कोई वखते बीजा पडखाना गळाना भागमां थाय छे. आ रोग असाध्य छे.)

६९ सर्वसरास्तु वातपित्तकफशोणितनिमित्ताः॥

मोहोडानां होठ वगेरे सघळां स्थानकोमां अर्थात् आखा मोहोडामां थनारा रोगोनां निदानो.

६९ सघळा मोहोडामां थनारा रोगो के जेओ सर्वसर केहेवाय छे तेओ वायुथी, पित्तथी, कफथी अने रुधिरथी थाय छे. (एओमां पित्तथी थएलानुं अने रुधिरथी थएलानुं लक्षण एकज छे माटे रुधिरथी थएलानुं जूदुं लक्षण आपवामां आवशे नहीं.)

७० स्फोटैः सतोदैर्वदनं समन्ता-
द्यत्राऽऽचितं सर्वसरः स वातात् ॥

वायुथी थएला सर्वसरनुं लक्षण.

७० सोईओवते भोंकाया जेवी व्यथावाळा फोडलाओथी सघळुं मोहोडुं व्याप्त थई जाय छे ए **वायुथी थएलो सर्वसर** केहेवाय छे.

७१ रक्तैः सदाहैस्तनुभिः सपीतै-
र्यत्राऽऽचितं चापि स पित्तकोपात् ।

पित्तथी थएला सर्वसरनुं लक्षण.

७१ बळतरावाळा, राता अने पीळाशवाळा झीणा झीणा फोडलाओथी सघळुं मोहोडुं व्याप्त

थई जाय छे ए **पित्तथी थएलो सर्वसर** केहेवाय छे.

७२ कण्डूयुतैरल्परुजैः सवर्णै-
र्यत्राऽऽचितं चापि स वै कफेन ॥

कफथी थएला सर्वसरनुं लक्षण.

७२ खरजवाळा, थोडी वेदनावाळा अने मोहोडानी चामडीना जेवाज वर्णवाळा फोडलाओथी सघळुं मोहोडुं व्याप्त थई जाय ए **कफथी थएलो सर्वसर** केहेवाय छे.

७३ रक्तेन पित्तोदित एक एव
कैश्चित्प्रदिष्टो मुखपाकसंज्ञः ॥

रुधिरथी थएला सर्वसरनुं केटलाएकना मत प्रमाणे नामांतर.

७३ जो के रुधिरथी थएलो सर्वसर अने पित्तथी थएलो सर्वसर एओ एक लक्षणवाळाज छे तो पण केटलाएक आचार्योए रुधिरथी थएला सर्वसरने 'मुखपाक' ए जूदुं नाम आपेलुं छे.

इति सौश्रुत आयुर्वेदे निदानस्थानं

समाप्तम् ॥

सुश्रुत–आयुर्वेद.

शारीर स्थान.

मूळ तथा गुजराती भाषांतर.

अध्याय १ लो.

१अथातः सर्वभूतचिन्ताशारीरं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'सर्वभूतचिंतोशारीर' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सर्वभूतानां कारणमकारणं सत्त्वरजस्तमोलक्षणमष्टरूपमखिलस्य जगतः संभवहेतुरव्यक्तं नाम। तदेकं बहूनां क्षेत्रज्ञानामधिष्ठानं समुद्र इवौदकानां भावानाम् ॥

सांख्यसिद्धांतप्रमाणे जगतना मूलकारणनी मीमांसा (विचार.)

२ 'मूलप्रकृति' ए बीजा नामथी पण वातुं **अव्यक्त** के जे पोते कारण वगरनुं छे अर्थात् कोईथी पण उत्पन्न थएलुं नहीं होवाने लीधे कोईना पण विकाररूप (कार्यरूप) नथी, सत्व, रज तथा तम ए त्रण गुणोनी साम्यावस्थारूप छे अने प्रकृतित्वरूप सामान्य धर्मथी अव्यक्त, महत्तत्व (बुद्धि अथवा चित्त,) अहंकार तथा शब्द आदि पांच तन्मात्र ए आठ रूपोवाळुं छे अने सर्व जगतनी अभिव्यक्तिना निदानरूप छे तेज सघळा स्थावर जंगम पदार्थोनुं मूलकारण (उपादानकारण[३]) छे. जेम एक समुद्रज सघळा जलजंतुओनुं अधिष्ठान (रेहेवानुं ठेकाणुं) छे तेम ए एक अव्यक्तज सघळा जीवात्माओनुं अधिष्ठान छे.

३ तस्मादव्यक्तान्महानुत्पद्यते तल्लिङ्ग एव। तल्लिङ्गाच्च महतस्तल्लिङ्ग एवाहङ्कार उत्पद्यते। स च त्रिविधो वैकारिकस्तैजसो भूतादिरिति। तत्र वैकारिकादहङ्कारात्तैजससहायात्तल्लक्षणान्येवैकादशेन्द्रियाण्युत्पद्यन्ते तद्यथा। श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाग्घस्तोपस्थपायुपादमनांसीति। तत्र पूर्वाणि पञ्च बुद्धीन्द्रियाणि। इतराणि पञ्च कर्मेन्द्रियाणि। उभयात्मकं मनः॥

---

१ रोगोनां कारणोनुं, भेदोनुं, संप्राप्तिओनुं, लक्षणोनुं तथा साध्यासाध्यपणानुं निरूपण करनारा निदानस्थानथी जेने रोगोनां ए कारणो वगेरेनुं संपूर्ण ज्ञान थयुं होय एवा वैद्यने चिकित्सा जाणवानो अधिकार प्राप्त थाय छे पण ते चिकित्सा ज्यांसुधी शारीरनुं संपूर्ण ज्ञान न होय त्यांसुधी घणुं करी कामे लागी शकती नथी माटे वैद्यने शारीरज्ञान आपवासारु वचमां आ शारीरस्थान दाखल करवामां आव्युं छे.

२ सघळा स्थावर जंगम पदार्थोनां कारणोरूप पृथिवी वगेरे पंचमहाभूतो कया कारणमांथी उत्पन्न थयांछे, ए पंचमहाभूतोनां कयां कयां लक्षणो छे तथा तेओनां कार्यो कयां कयां छे इत्यादि विषयोना विचार विषेनो.

३ यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायि कारणम्। यथा तन्तवः पटस्य,पटश्च स्वगतरूपादेः समवायि कारणम् (तर्क संग्रह) कार्य जेमां अभिन्नपणाथी रहीनेज उत्पन्न थाय छे ते पदार्थ कार्यनुं समवायि कारण (अथवा उपादानकारण) केहेवाय छे. जेमके तंतुओ वस्त्रनुं समवायि कारण छे अने वस्त्र पोतामां रहेला रूपादिकनुं समवायि कारण छे.

भूतादेरपि तैजससहायात्तल्लक्षणान्येव पञ्च तन्मात्राण्युत्पद्यन्ते तद्यथा। शब्दतन्मात्रं स्पर्शतन्मात्रं रूपतन्मात्रं रसतन्मात्रं गन्धतन्मात्रमिति । तेषां विशेषाः शब्दस्पर्शरूपरसगन्धास्तेभ्यो भूतानि व्योमानिलानलजलोर्व्यः । एवमेषा तत्त्वचतुर्विंशतिर्व्याख्याता ॥

सांख्यसिद्धांत प्रमाणे सृष्टिक्रम.

३ ए अव्यक्तमांथी (मूलप्रकृतिमांथी) तेवाज स्वभाववाळुं (सत्व, रज तथा तम ए त्रण गुणोमय स्वभाववाळुं) **महत्तत्व** उत्पन्न थाय छे सत्व, रज अने तम ए त्रण गुणोमय स्वभाववाळा ए महत्तत्वमांथी तेवाज स्वभाववाळो अहंकार उत्पन्न थाय छे. ए अहंकार वैकारिक (सत्वप्रधान,) तैजस (रजःप्रधान) अने भूतादि (तमःप्रधान) ए रीते त्रण प्रकारनो छे. तैजसना साहाय्यवाळा वैकारिक अहंकारमांथी तेवाज स्वभाववाळां एटले प्रकाश अथवा ज्ञानरूप सात्विक स्वभाववाळां श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिव्हा, घ्राण, वाणी, हाथ, उपस्थ, पायु (गुदा,) पग अने मन ए अगीयार इंद्रियो उत्पन्न थाय छे. ए अगीयारमां पेहेलां पांच ज्ञानेंद्रियो केहेवाय छे, ते पछीनां पांच कर्मेंद्रियो केहेवाय छे अने छेल्लुं एटले अगीयारमुं मन, ज्ञानकर्मात्मक बन्ने प्रकारना स्वभाववाळुं केहेवाय छे. तैजसना साहाय्यवाळा भूतादि अहंकारमांथी पण तेवाज स्वभाववाळां एटले मोहादिकरूप तामस स्वभाववाळां शब्दतन्मात्र, स्पर्शतन्मात्र, रूपतन्मात्र, रसतन्मात्र अने गंधतन्मात्र ए पांच तन्मात्रो (अनुद्भूत स्वरूपवाळा–जेओनां स्वरूपो योगिओ शिवाय बीजाओना अनुभवमां न आवे एवा सूक्ष्म विषयो) उत्पन्न थाय छे. आ शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध के जेओ आपणा सर्वना अनुभवमां आवे छे तेओ ए तन्मात्रोनां विशेषरूपो (स्थूलरूपो) छे. शब्दतन्मात्रमांथी शब्दगुणवाळुं **आकाश** उत्पन्न थाय छे. शब्दतन्मात्रथी युक्त थएला स्पर्शतन्मात्रमांथी शब्द तथा स्पर्श ए बे गुणोवाळो **वायु** उत्पन्न थाय छे. शब्द तथा स्पर्श ए बे तन्मात्रोथी युक्त थएला रूपतन्मात्रमांथी शब्द, स्पर्श तथा रूप ए त्रण गुणोवाळुं **तेज** उत्पन्न थाय छे. शब्द; स्पर्श तथा रूप ए त्रण तन्मात्रोथी युक्त थएला रसतन्मात्रमांथी शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस ए चार गुणोवाळुं **जळ** उत्पन्न थाय छे अने शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस ए चार तन्मात्रोथी युक्त थएला गंधतन्मात्रमांथी शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध ए पांचे गुणोवाळी **पृथ्वी** उत्पन्न थाय छे. आ रीते अव्यक्त, महत्तत्व, अहंकार, अगीयार इंद्रियो, पांच तन्मात्रो अने आकाश आदि पांच महाभूतो ए चोवीश तत्वोनुं व्याख्यान थयुं.

४ तत्र बुद्धीन्द्रियाणां शब्दादयो विषयाः। कर्मेन्द्रियाणां यथासङ्ख्यं वचनादानानन्दविसर्गविहरणानि ॥

सांख्यसिद्धांत प्रमाणे ज्ञानेंद्रियोना तथा कर्मेंद्रियोना विषयो.

४ शब्द श्रोत्रेंद्रियनो विषय छे, स्पर्श त्वचाइंद्रियनो विषय छे, रूप चक्षुइंद्रियनो विषय छे, रस जिव्हाइंद्रियनो विषय छे अने गंध घ्राणइंद्रियनो विषय छे. एवीज रीते वचन (बोलवुं) वाणीइंद्रियनो विषय छे, लेवुं–उपाडवुं हस्तइंद्रियनो विषय छे, रति उपस्थइंद्रियनो विषय छे, मलोत्सर्ग पायुइंद्रियनो विषय छे अने गति पाद (पग) इंद्रियनो विषय छे.

५ अव्यक्तं महानहंकारः पञ्च तन्मात्राणि चेत्यष्टौ प्रकृतयः शेषाः षोडश विकाराः ॥

सांख्यसिद्धांत प्रमाणे एक प्रकृति, सात प्रकृतिविकृतिओ अने सोळ विकारो.

६ ए चोवीश तत्वोमां जे अव्यक्त छे तेनुं कोई कारण नथी पण ते पोतेज सर्वनुं कारण छे

तेथी ते प्रकृतिज छे. महत्तत्व, अहंकार अने पांच तन्मात्रो एओ अनुक्रमे अहंकारनां, पांच तन्मात्रोनां तथा अगीयार इंद्रियोनां अने पांच भूतोनां कारणरूप छे अने अव्यक्तनां, महत्तत्वनां तथा अहंकारनां कार्यरूप छे तेथी प्रकृतिरूप पण छे अने विकृतिरूप पण छे. (महत्तत्व अव्यक्तनुं कार्य छे अने अहंकारनुं कारण छे. अहंकार महत्तत्वनुं कार्य छे अने पांच तन्मात्रोनुं तथा अगीयार इंद्रियोनुं कारण छे. पांच तन्मात्रो अहंकारनां कार्य छे अने पांच महाभूतोनां कारण छे तेथी ए सात तत्वो प्रकृतिविकृतिरूप गणाय छे.) बाकीनां सोळ (अगीयार इंद्रियो अने पांच महाभूतो) कोईनां कारणरूप नथी पण कार्यरूपज छे तेथी विकारोज गणाय छे.

६ स्वः स्वश्चैषां विषयोऽधिभूतम्। स्वयमध्यात्मम्। अधिदैवतं च बुद्धेर्ब्रह्मा। अहङ्कारस्येश्वरः। मनसश्चन्द्रमाः। दिशः श्रोत्रस्य। त्वचो वायुः। सूर्यश्चक्षुपोः। रसनस्यापः। पृथिवी घ्राणस्य। वचसोऽग्निः। हस्तयोरिन्द्रः। पादयोर्विष्णुः। पायोर्मित्रः। प्रजापतिरुपस्थस्येति॥

सांख्यसिद्धांत प्रमाणे अध्यात्म, अधिभूत अने अधिदैव एओनी व्यवस्था.

६ बुद्धि (महत्तत्त्व) अध्यात्म छे, बोद्धव्य अधिभूत छे अने ब्रह्मा अधिदैव छे. अहंकार अध्यात्म छे, अहंकर्त्तव्य अधिभूत छे अने रुद्र अधिदैव छे. मन अध्यात्म छे, मंतव्य अधिभूत छे अने चंद्र अधिदैव छे. श्रोत्र अध्यात्म छे, श्रोतव्य अधिभूत छे अने दिशाओ अधिदैव छे. त्वचा अध्यात्म छे, स्पर्शनीय अधिभूत छे अने वायु अधिदैव छे. चक्षु अध्यात्म छे, दृश्य अधिभूत छे अने सूर्य अधिदैव छे. जिह्वा अध्यात्म छे, रसनीय अधिभूत छे अने वरुण अधिदैव छे. घ्राण अध्यात्म छे घ्रातव्य अधिभूत छे अने पृथ्वी अधिदैव छे. तेमज वाणी अध्यात्म छे, वक्तव्य अधिभूत छे अने अग्नि अधिदैव छे. हस्त अध्यात्म छे, आदातव्य अधिभूत छे अने इंद्र अधिदैव छे. उपस्थ अध्यात्म छे, आनंदनीय अधिभूत छे अने प्रजापति अधिदैव छे. पायु अध्यात्म छे, विसर्जनीय अधिभूत छे अने मित्र अधिदैव छे. पाद अध्यात्म छे, गंतव्य अधिभूत छे अने विष्णु अधिदैव छे.

७ तत्र सर्व एवाचेतन एष वर्गः। पुरुषः पञ्चविंशतितमः। स च कार्यकारणसंयुक्तश्चेतयिता भवति॥

सांख्यसिद्धांत प्रमाणे चेतननो तथा अचेतननो विभाग.

७ उपर कहेलां चोवीशे तत्वोनो वर्ग अचेतन छे. जीवात्मा के जे पचीशमो छे अने महत्तत्व आदि कार्योना तथा अव्यक्तरूप कारणना आभिमानिक संयोगवालो छे ते चेतन छे.

८ सत्यप्यचैतन्ये प्रधानस्य पुरुषकैवल्यार्थं प्रवृत्तिमुपदिशन्ति क्षीरादींश्च हेतूनुदाहरन्ति॥

सांख्यसिद्धांत प्रमाणे अव्यक्तनां अचेतन छतां प्रवृत्ति अने तेमां दृष्टांत.

८ अव्यक्त (प्रकृति) पोते अचेतन छतां पण (जड छतां पण) जीवात्माने मोक्ष देवाने माटे प्रवर्त्ते छे. जेम दूध जड छतां पण वाछडाना पोषणने माटे प्रवर्त्ते छे अने रेत जड छतां पण पुरुषने आनंद देवा माटे प्रवर्त्ते छे तेम प्रकृति अचेतन छतां पण जीवात्माने मोक्ष देवाने माटे प्रवर्त्ते छे.

९ अत ऊर्ध्वं प्रकृतिपुरुषयोः साधर्म्यवैधर्म्यं व्याख्यास्यामः।

तद्यथा। उभावप्यनादी उभावप्यनन्तौ उभावप्यलिङ्गौ उभावपि नित्यौ उभावप्यपरौ उभौ च सर्वगताविति॥ एका तु प्रकृतिरचेतना त्रिगुणा बीजधर्मिणी प्रसवधर्मिण्यमध्यस्थधर्मिणी चेति॥ बहवस्तु पुरुषाश्चेत-

नावन्तोऽगुणा अबीजधर्मिणोऽप्रसवधर्मिणो मध्यस्थधर्मिणश्चेति ॥

प्रकृति अने जीवात्मा एओनी केटला अंशोमां तुल्यता छे अने केटला अंशोमां अतुल्यता छे तेनुं सांख्य-सिद्धांत प्रमाणे विवेचन.

९ प्रकृति अने जीवात्मा एओ बन्ने कोईमांथी पण उत्पन्न थएलां नथी, (स्वतःसिद्धज छे,) बन्ने अंतवगरनां छे, बन्ने अप्रत्यक्ष छे, बन्ने नित्य छे, बन्ने जेओथी पर कोई पण नथी एवां छे अने बन्ने सर्वव्यापक छे अर्थात् स्वतःसिद्धत्व, अनंतत्व, अप्रत्यक्षत्व, नित्यत्व, अपरत्व अने सर्वव्यापकत्व एटला अंशोमां प्रकृति तथा जीवात्मा ए बन्ने तुल्य छे.

प्रकृति एक छे अने जीवात्माओ अनेक छे. प्रकृति अचेतन छे अने जीवात्माओ चेतन छे. प्रकृति सत्वादिक त्रण गुणोवाळी छे अने जीवात्माओ निर्गुण छे. प्रलयना समयमां महत्तत्व आदि सघळां कार्यो प्रकृतिमां लय पामेछे अने जीवात्माओमां कोईनो पण लय थतो नथी. प्रकृति चराचर जगतने उत्पन्न करनारी छे अने जीवात्माओ कोईने पण उत्पन्न करता नथी. प्रकृति सत्व आदि गुणोना समूहरूपपणाने लीधे सुखदुःखादिकरूप छे अने जीवात्माओ सुख दुःखादिकथी रहित साक्षिओरूपज छे. आटला अंशोमां प्रकृति अने जीवात्माओ अतुल्य छे.

१० तत्र कारणानुरूपं कार्यमिति कृत्वा सर्व एवैते विशेषाः सत्त्वरजस्तमोमया भवन्ति तदञ्जनत्वात्तन्मयत्वाच्च तद्गुणा इव पुरुषा भवन्तीत्येके भाषन्ते ॥

जीवात्माओ सत्वआदि गुणोवाळा केहेवाय छे तेनुं सांख्यसिद्धांत प्रमाणे कारण.

१० 'जे कार्य होय ते पोतानां कारण जेवुंज होय' ए नियमप्रमाणे ए महत्तत्वादिक सघळा विकारो त्रिगुणात्मक छे. केमके सघळा विकारोना कारणरूप प्रकृति त्रिगुणात्मक (सत्वरजस्तमोमय) छे. जीवात्माओ तो पोते त्रिगुणात्मक नहीं' छतां पण देहादिक त्रिगुणात्मक पदार्थोना संबंधने लीधे अने तेओमां मिथ्या अभिमान धरवाने लीधे त्रिगुणात्मक होय एवा देखाय छे.

११ वैद्यके तु ॥

स्वभावमीश्वरं कालं यदृच्छां नियतिं तथा ।
परिणामं च मन्यन्ते प्रकृतिं पृथुदर्शिनः ॥
तन्मयान्येव भूतानि तद्गुणान्येव चादिशेत् ।
तैश्च तल्लक्षणः कृत्स्नो भूतग्रामो व्यजन्यत ॥
तस्योपयोगोऽभिहितश्चिकित्सां प्रति सर्वदा ।
भूतेभ्यो हि परं यस्मान्नास्ति चिन्ता चिकित्सिते॥

यतोऽभिहितं तत्संभवद्रव्यसमूहो भूतादिरुक्तः । भौतिकानि चेन्द्रियाण्यायुर्वेदे वर्ण्यन्ते तथेन्द्रियार्थाः ॥

भवति चात्र ॥

इन्द्रियेणेन्द्रियार्थं तु स्वं स्वं गृह्णाति मानवः ।
नियतं तुल्ययोनित्वान्नान्येनान्यमिति स्थितिः ॥

न चायुर्वेदशास्त्रेषूपदिश्यन्ते सर्वगताः क्षेत्रज्ञा नित्याश्च । असर्वगतेषु च क्षेत्रज्ञेषु नित्यपुरुषख्यापकान् हेतूनुदाहरन्ति ॥ आयुर्वेदशास्त्रेष्वसर्वगताः क्षेत्रज्ञा नित्याश्च तिर्यग्योनिमानुषदेवेषु संचरन्ति धर्माधर्मनिमित्तम् । त एतेऽनुमानग्राह्याः परमसूक्ष्माश्चेतनावन्तः शाश्वता लोहितरेतसोः सन्निपातेष्वभिव्यज्यन्ते यतोऽभिहितं पञ्चमहाभूतशरीरिसमवायः पुरुष इति । स एव कर्मपुरुषश्चिकित्साधिकृतः ॥

सांख्यसिद्धांतथी वैद्यकसिद्धांतमां अमुक बाबतोनी जूदाई.

११ सांख्यसिद्धांतिओ एक अव्यक्तनेज जगतना मूलकारणरूप माने छे पण विस्तीर्ण विचार-

वाळा आयुर्वेद सिद्धांतिओ तो स्वभाव, ईश्वर, काल, यदृच्छा, पापपुण्य अने अव्यक्तनो परिणाम ए छ पदार्थोने जगतना मूळकारणरूप माने छे. सांख्यसिद्धांतिओ आकाश आदि पांच महाभूतोने शब्दस्पर्शादिकना परिणामरूप माने छे पण आयुर्वेदना सिद्धांतवाळा वैद्ये तो उपर कहेला स्वभाव आदि छ पदार्थोमांथी परबारांज बनेलां मानवां अने तेओमां उत्तरोत्तर वधती शब्द-स्पर्शादिक गुणोनी संख्याने सांख्यसिद्धांतिओए मुकरर करेली व्यवस्था प्रमाणेज मानवी. ए पांच महाभूतोमांथी एओना जेवांज लक्षणोवाळो आ स्थावर जंगम पदार्थोनो सघळो समूह उत्पन्न थयो छे के जेनो सर्वदा चिकित्सामां उपयोग होवानुं आ ग्रंथना सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायना १६ मा विषयमांज सूचववामां आव्युं छे. चिकित्साशास्त्रमां (आयुर्वेदमां) पांच महाभूतोना गुणस्वभावादिक सुधीनो विचार करवानी जरूर छे पण तेथी उपर वधीने अव्यक्तादिकनो विचार करवानी जरूर पण नथी. केमके पांच महाभूतोज पुरुषनी उत्पत्तिनां कारणोरूप शुक्रशोणितादिक पदार्थोनुं मूळ कारण छे. सांख्यसिद्धांतिओ इंद्रियोने तथा शब्दस्पर्शादिकने अहंकारमांथी उत्पन्न थएलां माने छे पण आयुर्वेदमां तो इंद्रियोने तथा शब्दस्पर्शादिकने पांच महाभूतोमांथीज उत्पन्न थएलां मानवामां आवे छे. आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जो के इंद्रियो अने तेओना शब्दस्पर्शादिक विषयो पांचे महाभूतोमांथी उत्पन्न थएल छे तो पण माणस जे

१ स्वभाववादीओ केहे छे के 'कंटकोमां तीक्ष्णताने, मृगपक्षीओमां विचित्रताने, शेलडीमां मधुरताने अने मरीमां तीखापणांने कोण करे छे? स्वभावज करे छे माटे सर्व जगतनुं कारण स्वभावज छे.' ईश्वरवादीओ केहे छे के 'पृथ्वी, पर्वतो, वृक्षो, प्राणीओ तथा स्वर्गनरकादिक एओनी बनावट ईश्वर विना बीजा कोइथी थवी संभवतीज नथी माटे सर्व जगतनुं कारण ईश्वरज छे.' ज्योतिश्शास्त्री वगेरे कालवादीओ केहे छे के 'जगतनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय ए सघळुं काळथी थाय छे माटे सर्व जगतनुं कारण काळज छे.' यदृच्छावादिओ केहे छे के 'सर्व पदार्थोनी उत्पत्ति कोई अमुक कारणथीज थाय छे एम सिद्ध करी शकातुं नथी माटे यदृच्छा नामनी कोइ आकस्मिक शक्तिज सर्व जगतनुं कारण छे.' नियतिवादीओ केहे छे के 'पापो तथा पुण्यो के जेओ नियति केहेवाय छे तेओज सर्व जगतनुं कारण छे.' सांख्यसिद्धांतिओ केहे छे के 'अव्यक्त अथवा अव्यक्तनो परिणामज सर्व जगतनुं कारण छे.' वैद्यशास्त्रीओ तो ए सघळा वादोने युक्तिसिद्ध गणीने स्वभाव आदि छए पदार्थोने जगतना कारणरूप स्वीकारे छे. ए उपरथीज आ सुश्रुतग्रंथमां अंगप्रत्यंगो बनवा वगेरे अनेक विषयोमां **अंगप्रत्यंगनिर्वृत्तिः स्वभावादेव जायते** शा. अ. ४ वि. २१ इत्यादिक वाक्योथी स्वभावने पण कारणरूप मान्यो छे. अन्नपाचन वगेरे अनेक विषयोमां **जाठरो भगवान् वह्निरीश्वरोऽन्नस्य पाचकः** सू. अ. ३५ वि. १० इत्यादि अनेक वाक्योथी ईश्वररूप जठराग्नि वगेरेने पण कारणरूप मानेला छे. रसोनां ऱ्हास वृद्धि तथा माणसनां जीवन मरण आदि विषयोमां **कालो हि नाम भगवान् स्वयंभूरनादिमध्यनिधनोऽत्र रसव्यापत्संपत्ती जीवितमरणे च मनुष्याणामायत्ते** सू. अ. ६ वि. २ इत्यादि अनेक वाक्योथी काळने पण कारणरूप मान्यो छे. गलगंडना पाकवा वगेरे अनेक विषयोमां **पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्ध्यपाको यदृच्छया पाकमियात् कदाचित्** नि. अ. ११ वि. १८ इत्यादि वाक्योथी यदृच्छाने पण कारणरूप मानेली छे. कुष्ठ वगेरेना विषयोमां **ब्रह्मस्त्रीसज्जनवधपरस्वहरणादिभिः । कर्मभिः पापरोगस्य प्राहुः कुष्ठस्य संभवम्** नि. अ. ५ वि. १६ इत्यादि अनेक वाक्योथी पापपुण्योने पण कारणरूप मानेलां छे अने वीर्यनी अभिव्यक्ति वगेरे अनेक विषयोमां **बालानामपि वयःपरिणामाच्छुक्रप्रादुर्भावो भवति** सू. अ. १४ वि. १० इत्यादि अनेक वाक्योथी परिणामने पण कारणरूप स्वीकार्यो छे. दरएक पदार्थनी जे साम्यावस्था ते अव्यक्त गणाय छे अने ते पदार्थनुं साम्यावस्थाथी जे भ्रष्ट थवुं ते तेनो परिणाम गणाय छे.

इंद्रियमां जे भूतनुं आधिक्य छे ते इंद्रियथी ते भूतना गुणनुंज ग्रहण करे छे (जेम के चक्षुमां तेजनुं आधिक्य छे तो चक्षुथी तेजना गुणनुंज-रूपनुंज ग्रहण थाय छे अने घ्राणमां पृथ्वीनुं आधिक्य छे तो घ्राणथी पृथ्वीना गुणनुंज–गंधनुंज ग्रहण थाय छे इत्यादि.) पण जे इंद्रियमां जे भूतनुं आधिक्य न होय ते इंद्रियथी ते भूतना गुणनुं ग्रहण करतो नथी एवी स्थिति छे."

जेम सांख्यसिद्धांतमां जीवात्माओने सर्वव्यापक अने नित्य मानवामां आवे छे तेम आयुर्वेदशास्त्रोमां मानवामां आवता नथी पण असर्वव्यापक (प्रत्येक शरीरमां भिन्न भिन्न) अने नित्य मानवामां आवे छे तथा तेओमां असर्वव्यापकपणुं छतां पण नित्यपणुं छे एम सिद्ध करनारा हेतुओ पण आपवामां आवे छे. जीवात्माओ, पोते जे पापपुण्यो करेलां होय ते प्रमाणे पशुपक्षीवगेरे योनिओमां, मनुष्ययोनिओमां अने देवयोनिओमां जाय छे तेथी तेओने सर्वव्यापकपणुं संभवतुं नथी. जे सर्वव्यापक होय तेनी अन्यस्थलमां गति संभवेज नहीं. जो जीवात्माओ सर्वव्यापक होय तो एकना सुखथी सर्वने सुख थवुं जोइए अने एकना दुःखथी सर्वने दुःख थवुं जोइए तेथी सुखोनी तथा दुःखोनी व्यवस्था पण त्रुटी जाय तथा पापपुण्योनी व्यवस्था पण त्रुटी जाय. आप्रमाणे जीवात्माओमां सर्वव्यापकपणुं नथी पण नित्यपणुं तो छेज. केमके जो अनित्य एटले विनाशी होय तो तेओने पापपुण्योनां फळो भोगववाने माटे अन्य योनिओमां जवुं संभवे नहीं अने पुनर्जन्मनो स्वीकार करवामां न आवे तो कृतनाश (करेलां पापपुण्योनो फल आप्या विना विनाश) अने अकृताभ्यागम (नहीं करेलां पापपुण्योनां सुखदुःखरूप फलोनी प्राप्ति) ए नामना बे दोष प्राप्त थाय. आ कारणोथी आयुर्वेदशास्त्रोमां जीवात्माओने प्रतिशरीर भिन्न भिन्न अने तेम छतां पण नित्य (अविनाशी) मानवामां आवे छे.

ए जीवात्माओ के जेओ प्रत्यक्षप्रमाणथी नहीं पण अनुमानप्रमाणथी सिद्ध थाय छे, परम सूक्ष्म छे, चेतनावाळा छे अने नित्य छे तेओ कदी पण जन्मता नथी पण रजना अने वीर्यना संयोगोमां मात्र अभिव्यक्त थायछे के जेथी 'तेओ जन्मे छे' एम केहेवामां आवेछे. ए उपरथीज आ ग्रंथना सूत्रस्थानना पेहेलाज अध्यायना १६ मा विषयमां जणाव्युं छे के 'जीवात्मानो अने पंचमहाभूतात्मक शुक्रशोणितनो जे संयोग थाय छे तेज **पुरुष** छे अने ते पुरुषने माटेज चिकित्सा छे.' ए पुरुष जेम पापपुण्योनां फलोने भोगवे छे तेम चिकित्सानां फलोने पण (आरोग्यादिकने पण) भोगवे छे तेथी **कर्मपुरुष** केहेवाय छे. (सांख्यशास्त्रमां पुरुषनुं जे निरंजन स्वरूप मानेलुं छे तेने चिकित्सानी साथे कशो संबंध घटतो नथी अने जीवात्मा वगरना एकला शरीरने पण चिकित्सानी साथे कशो संबंध घटतो नथी माटे आ चिकित्साशास्त्रमां जीवात्माना अने शुक्रशोणितना संयोगने पुरुष मानीने चिकित्साना अधिष्ठानरूप गण्यो छे.)

१२ तस्य सुखदुःखे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नः प्राणापानावुन्मेषनिमेषौ बुद्धिर्मनःसंकल्पो विचारणा स्मृतिर्विज्ञानमध्यवसायो विषयोपलब्धिश्च गुणाः

मननी साथे संबंध प्राप्त थतां पुरुषना (जीवात्माना) गुणो.

१२ सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, प्राणक्रिया, अपानक्रिया, नेत्रोनुं उघाडवुं, नेत्रोनुं वींचवुं, बुद्धि, मनथी थतो संकल्प, विचार, स्मरण, शिल्पशास्त्रादिकनो बोध, निश्चय अने विषयोनुं ज्ञान एटला, पुरुषना गुणो छे.

१३ सात्त्विकास्तु आनृशंस्यं संविभागरुचिता तितिक्षा सत्यं धर्म आस्तिक्यं ज्ञानं बुद्धिर्मेधा स्मृतिर्धृतिरनभिषङ्गश्च ॥

सात्विक गुणो.

१३ क्रूरताथी रहितपणुं, बीजाओने विभागो आपीने अन्नादिक जमवामां रुचि, क्षमा, सत्य, धर्म, आस्तिकपणुं, आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान, बुद्धिनुं तत्काल स्फुरवुं, ग्रंथोनुं धारण करवानी शक्ति, शुभ प्रसंगनुं स्मरण, धीरज, अने फलोनी आंकाक्षा छोडी दइने सत्कर्म करवां एटला सात्विक गुणो छे.

१४ राजसास्तु दुःखबहुलताऽटनशीलताऽधृतिरहङ्कार आनृतिकत्वमकारुण्यं दम्भो मानो हर्षः कामः क्रोधश्च ॥

राजस गुणो.

१४ प्रयासनुं अधिकपणुं, फरवानो स्वभाव, अधैर्य, अहंकार, मिथ्या बोलवानी टेव, निर्दयपणुं, दंभ, पोताने उत्कृष्ट समजवानी टेव, हर्ष, काम अने क्रोध एटला राजस गुणो छे.

१५ तामसास्तु विषादित्वं नास्तिक्यमधर्मशीलता बुद्धेर्निरोधोऽज्ञानं दुर्मेधस्त्वमकर्मशीलता निद्रालुत्वं चेति ॥

तामस गुणो.

१५ खेदयुक्तपणुं, नास्तिकपणुं, अधर्म करवानी टेव, बुद्धिनो निरोध, अज्ञान, बुद्धिनुं दुष्टपणुं, आलस्य अने उंघवानी वधारे टेव एटला तामस गुणो छे.

१६ आन्तरीक्षास्तु शब्दः शब्देन्द्रियं सर्वच्छिद्रसमूहो विविक्तता च ॥

आकाशना गुणो.

१६ शब्द, श्रोत्रेंद्रिय, सघळां छिद्रोनो समूह अने निर्मळपणुं एटला आकाशना गुणो छे.

१७ वायव्यास्तु स्पर्शः स्पर्शेन्द्रियं सर्वचेष्टासमूहः सर्वशरीरस्पन्दनं लघुता च ॥

वायुना गुणो.

१७ स्पर्श, त्वचाइंद्रिय, सघळा प्रकारनी चेष्टाओ, सघळा शरीरनुं चलनवलन अने हलकापणुं एटला वायुना गुणो छे.

१८ तैजसास्तु रूपं रूपेन्द्रियं वर्णः संतापो भ्राजिष्णुता पक्तिरमर्षस्तैक्ष्ण्यं शौर्यं च ॥

तेजना गुणो.

१८ रूप, चक्षुइंद्रिय, वर्ण, संताप, दीप्तपणुं, आहारनुं पाकवुं, क्रोध, झडप अने शूरता एटला तेजना गुणो छे.

१९ आप्यास्तु रसो रसनेन्द्रियं सर्वद्रवसमूहो गुरुता शैत्यं स्नेहो रेतश्च ॥

जलना गुणो.

१९ रस, जिह्वाइंद्रिय, सघळा प्रकारना द्रवो, भारेपणुं, शीतलपणुं, स्निग्धपणुं अने रेत एटला जलना गुणो छे.

२० पार्थिवास्तु गन्धो गन्धेन्द्रियं सर्वमूर्तिसमूहो गुरुता चेति ॥

पृथ्वीना गुणो.

२० गंध, घ्राणेंद्रिय, सर्व प्रकारनां कठणपणां अने भारेपणुं एटला पृथ्वीना गुणो छे.

२१ तत्र सत्त्वबहुलमाकाशम् । रजोबहुलो वायुः । सत्त्वरजोबहुलोऽग्निः । सत्त्वतमोबहुला आपः । तमोबहुला पृथिवीति ॥

कया भूतमां कया गुणनुं आधिक्य छे ?

२१ आकाशमां सत्वगुण घणो छे. वायुमां रजोगुण घणो छे. अग्निमां (तेजमां) सत्व तथा रज ए बे गुणो घणा छे. जलमां सत्व तथा तम ए बे गुणो घणा छे अने पृथ्वीमां तमोगुण घणो छे.

२२ भवति चात्र ॥

अन्योन्यानुप्रविष्टानि सर्वाण्येतानि निर्दिशेत् ।
स्वे स्वे द्रव्ये तु सर्वेषां व्यक्तं लक्षणमिष्यते ॥

भूतांना परस्परमां अनुप्रवेश अने तेओनी पोतपोतानां द्रव्योमां स्पष्टता.

२२ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "ए सर्व भूतो परस्परमां पेठेलां छे एम समजवुं. (आकाश वायुमां पण पेठेलुं छे तेथी वायुमां शब्द तथा स्पर्श ए बे गुणो छे. आकाश तथा वायु तेजमां पण पेठेलां छे तेथी तेजमां शब्द, स्पर्श अने रूप ए त्रण गुणो छे. आकाश, वायु तथा तेज जलमां पण पेठेलां छे तेथी जळमां शब्द, स्पर्श, रूप अने रस ए चार गुणो छे. आकाश, वायु, तेज अने जल पृथ्वीमां पण पेठेलां छे तेथी पृथ्वीमां शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पांच गुणो छे इत्यादि.) जो के आ प्रमाणे सर्व भूतोने परस्परनो संबंध छे तो पण जे द्रव्य जे भूतनुं होय छे अर्थात् जे द्रव्यमां जे भूतनुं आधिक्य होय छे ते द्रव्यमां ते भूतनुं लक्षण स्पष्ट होय छे."

२३ अष्टौ प्रकृतयः प्रोक्ता विकाराः षोडशैव तु।
क्षेत्रज्ञश्च समासेन स्वतंत्रपरतंत्रयोः ॥

आ अध्यायमां कहेला मुख्य विषयोनो संग्रह.

२३ आयुर्वेदशास्त्रमां अने सांख्यशास्त्रमां आठ प्रकृतिओ, सोळ विकारो अने जीवात्मा एओविषे जे सिद्धांत छे ते आ अध्यायमां संक्षेपथी कह्यो छे.

अध्याय २ जो.

१ अथातः शुक्रशोणितशुद्धिं नाम शारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शुक्रशोणितशुद्धिशारीरं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वातपित्तश्लेष्मकुणपग्रन्थिपूतिपूयक्षीणमूत्रपुरीषरेतसः प्रजोत्पादने न समर्था भवन्ति ॥
तेषु वातवर्णवेदनं वातेन ।
पित्तवर्णवेदनं पित्तेन ।
श्लेष्मवर्णवेदनं श्लेष्मणा ।
शोणितवर्णवेदनं कुणपगंध्यनल्पं रक्तेन ।
ग्रंथिभूतं श्लेष्मवाताभ्याम् ।
पूतिपूयनिभं पित्तश्लेष्मभ्याम् ।
क्षीणं प्रागुक्तं पित्तमारुताभ्याम् ।
मूत्रपुरीषगन्धि सन्निपातेनेति ।
तेषु कुणपग्रंथिपूतिपूयक्षीणरेतसः कृच्छ्रसाध्या मूत्रपुरीषरेतसस्त्वसाध्याः साध्यमन्यच्चेति ॥

दुष्ट वीर्यवाळानुं शुद्ध प्रजाथी रहितपणुं, दुष्ट वीर्यनां निदानसहित लक्षणो अने दुष्ट वीर्यनुं साध्यासाध्यपणुं.

२ जेओनुं वीर्य वायुदूषित, पित्तदूषित, कफदूषित, वायु वगेरेथी दूषित थएला रुधिरथी दूषित, कफथी तथा वायुथी दूषित, पित्तथी तथा कफथी दूषित, पित्तथी तथा वायुथी दूषित के त्रणे दोषोथी दूषित होय ते पुरुषो शुद्ध प्रजाने उत्पन्न करवामां समर्थ थता नथी.

जो वीर्य वायुदूषित होय तो राता के काळा वर्णवाळुं होय छे अने तेमां तोदन (सोईओथी भोंकाया जेवी पीडा) तथा भेदन वगेरे व्यथाओ होय छे.

जो वीर्य पित्तदूषित होय तो पीळा तथा आशमानी वगेरे वर्णोवाळुं होय छे, शबना जेवा तथा परुना जेवा गंधवाळुं होय छे अने तेमां दाह तथा चोस वगेरे वेदनाओ होय छे.

---

१ वीर्यनी तथा रजनी शुद्धिविषेनो. जो वीर्य तथा रज शुद्ध होय तोज तेओना संयोगोमां शुद्ध प्रजानी अभिव्यक्ति थाय छे माटे वीर्यनी तथा रजनी शुद्धिविषेनो अध्याय आपवामां आवे छे.

जो वीर्य कफदूषित होय तो सफेद वर्णवाळुं होय छे, काचा मांसना जेवा गंधवाळुं होय छे अने तेमां खरज वगेरे व्यथाओ होय छे.

जो वीर्य वायु वगेरेथी दूषित थएला रुधिरथी दूषित होय तो रुधिरना जेवा वर्णवाळुं होय छे, शबना जेवा गंधवाळुं होय छे, दाह तथा चोस वगेरे वेदनाओवाळुं होय छे अने घणुं होय छे.

जो वीर्य कफथी तथा वायुथी दूषित होय तो गांठाओवाळुं होय छे.

जो वीर्य पित्तथी तथा कफथी दूषित होय तो दुर्गंधवाळा परु जेवुं होय छे.

जो वीर्य पित्तथी तथा वायुथी दूषित होय तो क्षीण होय छे. (क्षीण वीर्यनुं लक्षण आ ग्रंथना सूत्रस्थानना 'दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय' नामना १९ मा अध्यायना १२ मा विषयमां केहेवाइ गयुं छे ते जोइ लेवुं.)

जो वीर्य त्रणे दोषोथी दूषित होय तो मूत्रना जेवा तथा विष्टाना जेवा गंधवाळुं होय छे.

एओमां रुधिरथी दूषित थएलुं, कफथी तथा वायुथी दूषित थएलुं, पित्तथी तथा कफथी दूषित थएलुं अने पित्तथी तथा वायुथी दूषित थएलुं एटला प्रकारनां वीर्यो कष्टसाध्य छे. त्रणे दोषोथी दूषित थएलुं वीर्य असाध्य छे अने वायुदूषित, पित्तदूषित अने कफदूषित ए त्रण प्रकारनां वीर्यो साध्य छे.

३ आर्त्तवमपि त्रिभिर्दोषैः शोणितचतुर्थैः पृथग् द्वन्द्वैः समस्तैश्चोपसृष्टमबीजं भवति तदपि दोषवर्णवेदनादिभिर्विज्ञेयम्। तेषु कुणपग्रन्थिपूतिपूयक्षीणमूत्रपुरीषप्रकाशमसाध्यं साध्यमन्यद्भवति ॥

दुष्ट रजवाळी स्त्रीनुं शुद्धप्रजाथी रहितपणुं, दुष्ट रजनां निदानसहित लक्षणो अने दुष्ट रजनुं साध्यासाध्यपणुं.

३ जे स्त्रीओनुं रज वायुदूषित, पित्तदूषित, कफदूषित, वायु वगेरेथी दूषित थएला रुधिरथी दूषित, कफथी तथा वायुथी दूषित, पित्तथी तथा कफथी दूषित, पित्तथी तथा वायुथी दूषित के त्रणे दोषोथी दूषित होय ते स्त्रीओ शुद्धबीजरहित होय छे एटले शुद्धगर्भनुं धारण करवामां समर्थ नथी.

जो रज वायुदूषित होय तो राता के काळा वर्णवाळुं होय छे अने तेमां तोदन (सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा) तथा भेदन वगेरे व्यथाओ होय छे.

जो रज पित्तदूषित होय तो पीला तथा आशमानी वगेरे वर्णोवाळुं होय छे, शबना तथा परुना जेवा गंधवाळुं होय छे अने तेमां दाह तथा चोस वगेरे वेदनाओ होय छे.

जो रज कफदूषित होय तो सफेद वर्णवाळुं होय छे, काचा मांसना जेवा गंधवाळुं होय छे अने तेमां खरज वगेरे वेदनाओ होय छे.

जो रज वायु वगेरेथी दूषित थएला रुधिरथी दूषित होय तो लाल रंगवाळुं होय छे, शबना जेवा गंधवाळुं होय छे, दाह तथा चोस वगेरे वेदनाओवाळुं होय छे अने घणुं होय छे.

जो रज कफथी तथा वायुथी दूषित होय तो गांठाओवाळुं होय छे.

जो रज पित्तथी तथा कफथी दूषित होय तो दुर्गंधवाळा परुजेवुं होय छे.

जो रज पित्तथी तथा वायुथी दूषित होय तो क्षीण होय छे. (क्षीण रजनुं लक्षण आ ग्रंथना सूत्रस्थानना 'दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय' नामना १९ मा अध्यायना १४ मा विषयमां केहेवाइ गयुं छे ते जोइ लेवुं.)

जो रज त्रणे दोषोथी दूषित होय तो मूत्रना जेवा तथा विष्टाना जेवा गंधवाळुं होय छे.

एओमां रुधिरथी दूषित थएलुं, कफथी तथा वायुथी दूषित थएलुं, पित्तथी तथा कफथी दूषित थएलुं, पित्तथी तथा वायुथी दूषित थएलुं अने त्रणे दोषोथी दूषित थएलुं ए पांच प्रकारनां रजो

असाध्य छे अने वायुदूषित, पित्तदूषित तथा कफदूषित ए व्रण प्रकारनां रजो साध्य छे.

४ भवन्ति चात्र ॥

तेष्वाद्याञ्छुक्रदोषांस्त्रीन्स्नेहस्वेदादिभिर्जयेत् ।
क्रियाविशेषैर्मतिमांस्तथा चोत्तरबस्तिभिः ॥
पाययेत नरं सर्पिर्भिषक्कुणपरेतसि ।
धातकीपुष्पखदिरदाडिमार्जुनसाधितम् ॥
पाययेदथ वा सर्पिः शालसारादिसाधितम् ।
ग्रन्थिभूते शठीसिद्धं पालाशे वापि भस्मनि ॥
परूषकवटादिभ्यां पूयप्रख्ये च साधितम् ।
प्रागुक्तं वक्ष्यते यच्च तत्कार्यं क्षीणरेतसि ॥
विट्प्रभे पाययेत् सिद्धं चित्रकोशीरहिङ्गुभिः ।
स्निग्धं वान्तं विरिक्तं च निरूढमनुवासितम् ॥
योजयेच्छुक्रदोषार्तं सम्यगुत्तरबस्तिना ।

वीर्यना दोषोनी चिकित्सा.

४ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेओनुं वीर्य वायुदूषित, पित्तदूषित के कफदूषित होय ते पुरुषोनी बुद्धिमान् वैद्ये दोषोनी स्थितिप्रमाणे स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, निरूहबस्ति[1] तथा अनुवासनबस्ति[2] ए क्रियाओथी चिकित्सा करवी अने विशेषे करी उत्तरबस्तिओथी[3] चिकित्सा करवी." (शमन चिकित्सा पण करवी.)

जेनुं वीर्य वायु वगेरेथी दूषित थएला रुधिरथी दूषित थयुं होय ते पुरुषने वैद्ये धावणीनां फूल, खेर, दाडिम अने कडायो अथवा साजड एओना कल्कथी तथा क्वाथथी पकावेलुं अथवा शालसारादिगणना कल्कथी तथा क्वाथथी पकावेलुं घी पावुं.

जेनुं वीर्य कफथी तथा वायुथी दूषित थएलुं होय ते पुरुषने वैद्ये कचूराना अथवा कपूरकाचरीना कल्कथी तथा क्वाथथी पकावेलुं अथवा खाखरानी भस्मथी पकावेलुं घी पावुं.

जेनुं वीर्य पित्तथी तथा कफथी दूषित थएलुं होय ते पुरुषने परूपकादिगण तथा न्यग्रोधादिगण (सूत्रस्थानना ३८ मा अध्यायमां जुवो.) एओना कल्कथी तथा क्वाथथी पकावेलुं घी पावुं.

जेनुं वीर्य पित्तथी तथा वायुथी दूषित थयुं होय अर्थात् क्षीण थएलुं होय ते पुरुषने वीर्यवर्द्धक पदार्थोनो उपयोग कराववो अने चिकित्सितस्थानना 'क्षीणबलीयवाजीकरणचिकित्सित' नामना २६ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे वाजीकरणक्रिया पण करवी.

जेनुं वीर्य त्रणे दोषोथी दूषित थएलुं होय अर्थात् मूत्रना तथा विष्टाना जेवा गंधवाळुं थएलुं होय ते पुरुषने चित्रक, वाळो अने हींग एओना कल्कथी तथा क्वाथथी पकावेलुं घी पावुं. (जोके त्रणे दोषोथी दूषित थएलुं वीर्य असाध्य छे तो पण तेना दुर्गंधने दूर करवाने माटे आ चिकित्सा कही छे एम समजवुं.)

वीर्यना दोषथी पीडित थएला पुरुषने स्नेहन, वमन, विरेचन, निरूहबस्ति तथा अनुवासनबस्ति एओथी योजित करीने पछी उत्तरबस्तिनी सारी रीते योजना आपवी ए तेनी सामान्य चिकित्सा छे.

५ विधिमुत्तरबस्त्यन्तं कुर्यादार्तवशुद्धये ॥
स्त्रीणां स्नेहादियुक्तानां चतसृष्वार्तवार्तिषु ।
कुर्यात्कल्कान्पिचूंश्चापि पथ्यान्याचमनानि च ॥
ग्रन्थिभूते पिबेत्पाठां त्र्यूषणं वृक्षकाणि च ।
दुर्गन्धिपूयसङ्काशे मज्जतुल्ये तथार्तवे ॥
पिबेद्भद्रश्रियः क्वाथं चन्दनक्वाथमेव च ।
शुक्रदोषहराणां च यथास्वमवचारणम् ॥

---

१ काढाने, दूधने तथा तेलने भेळां करीने तेथी गुदामां पिचकारी मारवामां आवे ते निरूहबस्ति केहेवाय छे.

२ घी के तेल वगेरे स्नेहोथी गुदामां जे पिचकारी मारवामां आवे ते अनुवासनबस्ति केहेवाय छे.

३ लिंगमां के योनिमां पिचकारी मारवामां आवे ते उत्तरबस्ति केहेवाय छे.

४ सूत्रस्थानना ३८ मा अध्यायनो ७ मो विषय जुवो.

दोषाणां शुद्धिकरणं शेषास्वप्यार्तवार्त्तिषु ।
अन्नं शालियवं मद्यं हितं मांसं च पित्तलम् ॥

रजना दोषोनी चिकित्सा.

५ जेओनुं रज वायुदूषित, पित्तदूषित, कफदूषित के वायु वगेरेथी दूषित थएला रुधिरथी दूषित थएलुं होय ते स्त्रीओना रजने शुद्ध करवामाटे दोषोना अनुसारथी स्नेहन, वमन, विरेचन, निरूहबस्ति तथा अनुवासनबस्ति ए क्रियाओ करवी. उत्तरबस्तिरूप क्रिया तो वायुदूषित, पित्तदूषित, कफदूषित अने वायु वगेरेथी दूषित थएला रुधिरथी दूषित ए चारे प्रकारनां रजो उपर करवी. ए चारे प्रकारनी रजसंबंधी पीडाओमां स्त्रीओने स्नेहनादिक उचित क्रियाओथी युक्त करीने, उत्तरतंत्रना ३८ मा अध्यायमां कहेलां वायुआदि दोषोने हरनारां द्रव्योनो, पोतांओनो अने पथ्य आचमनो (योनिने धोवानां जळो)नो पण योग आपवो.

जेओनुं रज कफथी तथा वायुथी दूषित थएलुं होय अर्थात् गांठाओवाळुं थयुं होय ते स्त्रीओने काळीपाड, सुंठ मरी तथा पीपळ अने इंद्रजव एओनो क्वाथ पावो.

जेओनुं रज पित्तथी तथा कफथी दूषित थयुं होय अर्थात् दुर्गंधी परु जेवुं थई गयुं होय ते स्त्रीओने तथा जेओनुं रज त्रणे दोषोथी दूषित थवाने लीधे मज्जाजेवुं थई गयुं होय अर्थात् मूत्रना तथा विष्टाना जेवा गंधवाळुं थई गयुं होय ते स्त्रीओने सूखडनो तथा रतांजलिनो क्वाथ पावो.

जेओनुं रज पित्तथी तथा वायुथी दूषित थयुं होय अर्थात् क्षीण थएलुं होय ते स्त्रीओने वीर्यना दोषोनुं हरण करनारा रसायन तथा वाजीकरण इत्यादि उपायोनो योग्यताप्रमाणे योग आपवो.

उपर जणावेला आठ प्रकारोमांथी कोई प्रकारनी अथवा ते शिवाय बीजी पण कोई रजसंबंधी पीडा थई होय तो दोषोनी शुद्धि करवी, चोखा तथा जव खवरावva, मद्य पावुं अने पित्तने वधारनारूं मांस खवराववुं ए हित करनारी सामान्य चिकित्सा छे. (आ प्रकरणमां असाध्य रजोदोषोनी पण चिकित्सा कही छे ते केवळ तेओना दुर्गंधने टाळवामाटे कही छे.)

६ स्फटिकाभं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगन्धि च ।
शुक्रमिच्छन्ति केचित्तु तैलक्षौद्रनिभं तथा ॥

वीर्यना शुद्धपणानुं लक्षण.

६ जे वीर्य स्फटिक जेवुं, द्रवरूप, स्निग्ध, मधुर अने मधना जेवा गंधवाळुं होय तेने शुद्ध समजवुं. केटलाएक कहे छे के जे वीर्य तेलजेवुं तथा मधजेवुं होय तेने शुद्ध समजवुं.

७ शशासृक्प्रतिमं यत्तु यद्वा लाक्षारसोपमम् ।
तदार्तवं प्रशंसन्ति यद्वासो न विरञ्जयेत् ॥

रजना शुद्धपणानुं लक्षण.

७ जे रज ससलाना लोही जेवुं अथवा लाखना रस जेवुं होय तथा जेनी धोई नाख्या पछी पण वस्त्र उपर विवर्णता थाय नहीं ते रजने शुद्ध समजवुं.

८ तदेवातिप्रसङ्गेन प्रवृत्तमनृतावपि ।
असृग्दरं विजानीयादतोऽन्यद्रक्तलक्षणात् ॥
असृग्दरो भवेत्सर्वः साङ्गमर्दः सवेदनः ।
तस्यातिवृत्तौ दौर्बल्यं भ्रमो मूर्च्छा तमस्तृषा ॥
दाहः प्रलापः पाण्डुत्वं तन्द्रा रोगाश्च वातजाः ।

प्रदरनुं लक्षण तथा प्रदरमां लोहीनो अत्यंत स्राव थवाथी थता उपद्रवो.

८ ए रजज जो बहुज स्रवे अथवा लांबा वखत सुधी स्रवे अथवा ऋतु वगर पण स्रवे तो ते **प्रदर** केहेवाय छे. प्रदरनुं वर्णादिक उपर कहेला शुद्ध रजना वर्णादिक करतां जूदुंज होय छे. (सूत्रस्थानना शोणितवर्णनीय नामना चौदमा अध्यायना १३ मा विषयमां कह्याप्रमाणे प्रदरमां फीणथी संयुक्तपणा वगेरे लक्षणो पण होय छे.) सर्व प्रकारना प्रदरोमां अंगोनुं भांग्या करवुं

तथा शूळ नीकळ्यां करवां ए तो होयज छे. लोहीनो अतिस्राव थवाथी दुर्बलपणुं, भ्रम, मूर्छा, अंधकारदर्शन, तरश, बळतरा, प्रलाप, पांडुपणुं, तंद्रा अने वायुथी थता आक्षेपक वगेरे रोगो थाय छे.

९ तरुण्या हितसेविन्यास्तदल्पोपद्रवं भिषक्॥
रक्तपित्तविधानेन यथावत्समुपाचरेत् ।

प्रदरनी चिकित्सा.

९ स्त्री जुवान होय तथा हितपदार्थोनुं सेवन करनारी होय अने प्रदर थोडा उपद्रवोवाळो होय तो वैद्ये ते प्रदरनी रक्तपित्तना विधिप्रमाणे उचित चिकित्सा करवी. (उत्तरतंत्रना ४९ मा अध्यायनो ११ मो विषय जुवो.)

१० दोषैरावृतमार्गत्वादार्तवं नश्यति स्त्रियाः॥
तत्र मत्स्यकुलत्थाम्लतिलमाषसुरा हिताः।
पाने मूत्रमुदश्विच्च दधि शुक्तं च भोजने ॥

जुवान स्त्रीने रज न आवतुं होय तो तेनुं निदान तथा चिकित्सा.

१० रजनो मार्ग वायुथी, कफथी के ए बन्नेथी रोकाई गयो होय तो स्त्रीनुं रज नष्ट थई जाय छे. आ प्रमाणे रज नष्ट थई गयुं होय तो ते उपर माछलां, कळथी, गोमूत्र, अरधा पाणीवाळी छाश, खाटी कांजी, तिल, अडद, मदिरा, दही अने शुक्त (तेल अने लूण वगेरे नाखीने जे द्रवमां कंद मूळ अने फळ वगेरे आथवामां आवे छे ते द्रव अथवा सू. अ. ४६ वि. १८७ मां कहेलो आथो) एओनो खावापीवामां उपयोग करावको ए हितकारी थाय छे.

११ क्षीणं प्रागीरितं रक्तं सलक्षणचिकित्सितम्
तथाप्यत्र विधातव्यं विधानं नष्टरक्तवत् ॥

क्षीण थएला रजनी प्रकारांतरथी पण चिकित्सा.

११ क्षीण थएला रजनुं लक्षण अने चिकित्सा प्रथम आ अध्यायना ९ मा विषयमां तथा सूत्रस्थानना १९ मा अध्यायना १४ मा विषयमां केहेवाई गएल छे तो पण अहीं केहेवुं योग्य छे के क्षीण थएला रजनी नष्ट थएला रजनी पेठे पण चिकित्सा करवी.

१२ एवमदुष्टशुक्रः शुद्धार्तवा ॥ ऋतौ प्रथमदिवसात्प्रभृति ब्रह्मचारिणी दिवास्वप्नाञ्जनाश्रुपातस्नानानुलेपनाभ्यङ्गनखच्छेदनप्रधावनहसनकत्थनातिशब्दश्रवणावलेखनानिलायासान्परिहरेत् । किं कारणम् ।

दिवा स्वपन्त्याः स्वापशीलोऽञ्जनादन्धो रोदनाद्विकृतदृष्टिः स्नानानुलेपनाद्दुःखशीलस्तैलाभ्यङ्गात्कुष्ठी नखापकर्तनात्कुनखो प्रधावनाच्चञ्चलो हसनाच्छ्यावदन्तौष्ठतालुजिह्वः प्रलापी चातिकत्थनादतिशब्दश्रवणाद्बधिरोऽवलेखनात्खलतिर्मारुतायाससेवनान्मत्तो गर्भो भवतीत्येवमेतान्परिहरेत् ॥

दर्भसंस्तरशायिनीं करतलशरावपर्णान्यतमभोजिनीं हविष्यस्य त्र्यहं च भर्तुः संरक्षेत् ।

रजस्वलाए पाळवाना नियमो अने ते नियमो नहीं पाळवाथी प्रजाने नुकसान.

१२ उपरप्रमाणे करवाथी जो पुरुष अशुद्ध वीर्यवाळो होय तो शुद्ध वीर्यवाळो थाय छे अने स्त्री अशुद्ध रजवाळी होय तो शुद्ध रजवाळी थाय छे. स्त्रीए ऋतु आव्या पछी त्रण दिवस सुधी ब्रह्मचर्य पाळवुं, (मैथुननो त्याग करवो,) दिवसनी निद्रा करवी नहीं, आंजण आंजवुं नहीं, आंसु पाडवां नहीं, नाहावुं नहीं, चंदनादिकनुं लेपन करवुं नहीं, तैलनो अभ्यंग करवो नहीं, नखोनुं छेदन करवुं नहीं, दोडवुं नहीं, हसवुं नहीं, झाझुं बोलवुं नहीं, कोलाहलनुं श्रवण करवुं नहीं, कांकसी वगेरेथी माथुं ओळवुं नहीं, झाझा पवनवाळी जगामां बेसवुं नहीं अने कशो परिश्रम करवो नहीं.

रजस्वला स्त्री जो दिवसनी सुई रहे तो गर्भ

अत्यंत उंघनारो थाय छे, आंजण आंजे तो गर्भ आंधळो थाय छे, रोय तो गर्भ विकृत नेत्रोवाळो थाय छे, नाहाय के लेपन करे तो गर्भ दुखीओ थाय छे, तैलनो अभ्यंग करे तो गर्भ कोढीओ थाय छे, नखोनुं छेदन करे तो गर्भ खराब नखोवाळो थाय छे, दोडे तो गर्भ चंचल थाय छे, हसे तो गर्भनां दांत जीभ ताळवुं तथा होठ काळां थाय छे, झाझुं बोले तो गर्भ प्रलाप करनारो (अनर्थक वचन बोलनारो) थाय छे, कोलाहल सांभळे तो गर्भ बेहेरो थाय छे, माथुं ओळे तो गर्भ टालीओ थाय छे अने झाझा पवननुं के परिश्रमनुं सेवन करे तो गर्भ उन्मत्त थाय छे. आम छे एटला माटे दिवसनुं शयन तथा आंजण आंजवुं इत्यादिकनो रजस्वला स्त्रीए त्याग करवो.

वैद्ये रजस्वलाने त्रण दिवस सुधी दर्भना बीछानामां सूवडाववी, जे कांई जमवानुं होय ते हाथमांज राखीने अथवा माटीना वासणमां राखीने अथवा पानडापर राखीने जमे एम करवुं, चोखा वगेरे हविष्यान्नज जमवा देवुं अने त्रण दिवस सुधी पतिनी नजरे पण पडवा देवी नहीं.

१३ ततः शुद्धस्नातां चतुर्थेऽहन्यहतवाससमलङ्कृतां कृतमङ्गलस्वस्तिवाचनां भर्तारं दर्शयेत् । तत्कस्य हेतोः ।

पूर्वं पश्येदृतुस्नाता यादृशं नरमङ्गना ।
तादृशं जनयेत्पुत्रं भर्तारं दर्शयेदतः ॥

वैद्ये चोथे दिवसे करवानो विधि.

१३ रजस्वला चोथे दिवसे शुद्ध रीते नाही, नवीन वस्त्रो पेहेरी, शणगार धरी, मांगलिक विधि करी, स्वस्तिवाचन करावीने प्रथम पोताना पतिनुंज मुख जोय एम वैद्ये करवुं. कारण के ऋतुस्नात थएली स्त्री प्रथम, जेवा पुरुषने देखे तेवा पुत्रने जन्म आपेछे एटला माटे वैद्ये रजस्वलाने तेनो पतिज प्रथम देखाडवो.

१४ ततो विधानं पुत्रीयमुपाध्यायः समाचरेत् कर्मान्ते च क्रमं ह्येनमारभेत विचक्षणः ॥

ततोऽपराह्णे पुमान्मासं ब्रह्मचारी सर्पिःस्निग्धः सर्पिःक्षीराभ्यां शाल्योदनं भुक्त्वा मासं ब्रह्मचारिणीं तैलस्निग्धां तैलमाषोत्तराहारां नारीमुपेयाद्रात्रौ सामादिभिर्विश्वास्य विकल्प्यैवं चतुर्थ्यां षष्ठ्यामष्टम्यां दशम्यां द्वादश्यां वोपेयादिति पुत्रकामः ॥

एषूत्तरोत्तरं विद्यादायुरारोग्यमेव च ।
प्रजासौभाग्यमैश्वर्यं बलं च दिवसेषु वै ॥

रजस्वला पतिनुं अवलोकन करे ते पछीनो विधि.

१४ पछी उपाध्याये जेथी पुत्रनी उत्पत्ति थाय एवुं होमादिक विधान करवुं. ए विधान थई रह्या पछी पतिए विचक्षणता राखीने नीचेप्रमाणे करवुं.

पुत्रनी इच्छा होय तो पतिए स्त्रीना रजोदर्शनथी पेहेलां एक महिना सुधी बराबर ब्रह्मचर्य पाळी राखवुं जोईए अने स्त्रीए पण रजोदर्शनथी पेहेलां एक महिना सुधी बराबर ब्रह्मचर्य पाळी राखवुं जोईए एटले महिना सुधी मैथुननो संकल्प पण नहीं करवो जोईए. एवी रीते एक महीना सुधी ब्रह्मचारी रहेला अने घी जमवाथी स्निग्ध थएला पतिए रजोदर्शनथी चोथे दिवसे अपराह्ण समयमां दूधनी अने घीनी साथे राता चोखानो भात जमी, तैलना अभ्यंगथी स्निग्ध थएली अने जेणे तैलनी अने अडदनी अधिकतावाळो आहार कर्यो होय एवी ते स्त्रीनी पासे राते जवुं. त्यां साम आदि कोमळ उपायोथी ते स्त्रीने केटलीक धीरज आपी, विश्वास बेसाडीने तेनो संग करवो. अथवा एवाज प्रकारथी नीचे लखेली रात्रिओनां फळो उपर ध्यान आपीने छट्ठी राते अथवा आठमी राते अथवा दशमी राते अथवा बारमी राते तेनो संग करवो.

चोथी रात करतां छट्ठी राते, छट्ठी रात करतां आठमी राते, आठमी रात करतां दशमी राते अने दशमी रात करतां बारमी राते प्रथम संग करवाथी उत्तरोत्तर अधिक अधिक आयुष्यनी, अधिक अधिक आरोग्यनी, अधिक अधिक सुप्रजपणानी, अधिक अधिक ऐश्वर्यनी अने अधिक अधिक बळनी प्राप्ति थाय छे.

१५ अतः परं पञ्चम्यां सप्तम्यां नवम्यामेकादश्यां वा स्त्रीकामः ॥ त्रयोदशीप्रभृतयो निन्द्याः ॥

पुत्रीनी उत्पत्तिनी इच्छा होय तो स्त्रीसंग करवानी रात्रिओ.

१५ जो पुत्रीनी उत्पत्तिनी इच्छा होय तो रजोदर्शनथी पांचमी राते अथवा सातमी राते अथवा नवमी राते अथवा अगीयारमी राते स्त्रीनो प्रथम संग करवो. तेरमी वगेरे रात्रिओने तो निंदितज समजवी.

१६ तत्र प्रथमे दिवसे ऋतुमत्यां मैथुनगमनमनायुष्यं पुंसां भवति यश्च तत्राधीयते गर्भः स प्रसूयमानो विमुच्यते। द्वितीयेऽप्येवं सूतिकागृहे वा। तृतीयेऽप्येवमसम्पूर्णाङ्गोऽल्पायुर्वा भवति। चतुर्थे तु सम्पूर्णाङ्गो दीर्घायुश्च भवति।

रजस्वलापणानी पेहेली त्रण रात्रिओमां स्त्रीसंग करवाथी नुकसान.

१६ रजस्वला स्त्रीमां पेहेले दिवसे मैथुन करवामां आवे तो पुरुषना आयुष्यनी हानि थायछे अने जो तेमां गर्भ रहे तो ते पण जन्मतो जन्मतो मरीजाय छे. बीजे दिवसे मैथुन करवामां आवे तो पुरुषना आयुष्यनी हानि थायछे अने गर्भ रहे तो ते पण जन्मतो जन्मतो मरीजाय छे अथवा जन्म्या पछी दश दिवसनी अंदर मरीजाय छे. त्रीजे दिवसे मैथुन करवामां आवे तो पण एमज थायछे अने कदाच गर्भ जीवे तो पण ते अपूर्ण अंगोवाळो अथवा अल्प आयुष्यवाळो थाय छे. चोथे दिवसे मैथुन करवामां आवे तो गर्भ संपूर्ण अंगोवाळो तथा लांबा आयुष्यवाळो थाय छे.

१७ न च प्रवर्तमाने रक्ते बीजं प्रविष्टं गुणकरं भवति। यथा नद्यां प्रतिस्रोतः प्लावि द्रव्यं प्रक्षिप्तं प्रतिनिवर्तते नोर्ध्वं गच्छति तद्वदेव द्रष्टव्यम्। तस्मान्नियमवतीं त्रिरात्रं परिहरेत्।

रजस्वलापणानी पेहेली त्रण रात्रिओमां स्त्रीसंग नहीं करवानुं बीजुं पण कारण.

१७ पेहेली त्रण रात्रि सुधीमां लोही के जे प्रवर्त्याज करे छे तेमां जो वीर्य प्रवेश करे तो ते गुणकारक (प्रजोत्पादक) थाय एवो संभव नथी पण जेम वेहेती नदीमां प्रवाहनी सामे नाखवामां आवेलो तरनारो पदार्थ उपर नहीं जतां पाछोज वळे छे तेम वेहेता लोहीमां नाखेलुं वीर्य घणुं करीने गर्भाशयमां नहीं जतां पाछुंज वळे एवो संभव छे एटले वीर्यना व्यर्थ जवानी धास्तीने लीधे पण त्रण रात्रि सुधी रजस्वलाना संगनो त्याग करवो अने रजस्वलाए पण त्रण रात्रि सुधी पतिना मैथुनोत्साहनुं निवारण करे एवा उपर कहेला नियमो पाळवा योग्य छे.

१८ अतः परं मासादुपेयात्।

एक वार संग करीने पाछो एक महीना पछी संग करवा विषे.

१८ रजस्वला थएली स्त्रीनो उपर कह्या प्रमाणे चोथी रात्रिथी बारमी रात्रि सुधीमां एक वार संग करीने पाछो एक महिना पछी संग करवो. कारण के पाछुं रजोदर्शन थयाथी गर्भ नहीं रह्यानो निश्चय थाय छे एटले पछी गर्भना द्वारनुं विघट्टन थयाथी गर्भनो स्राव थई जवानी धास्ती रेहेती नथी.

१९ लब्धगर्भायाश्चैतेष्वहःसु लक्ष्मणावटशुङ्गासहदेवाविश्वदेवानामन्यतमां क्षीरेणाभि-

पुत्र्य स्त्रींश्चतुरो वा बिन्दून्दद्याद्दक्षिणे नासापुटे पुत्रकामायै न च तान्निष्ठीवेत् ॥

गर्भवतीने नस्य देवाविषे.

१९ जेने गर्भ रह्यो होय ते स्त्रीने एज दिवसोमां लक्ष्मणा, (नाहानां नाहानां रातां छांटणांवाळी, बकराना जेवा गंधवाळी अने बकराना जेवीज आकृतिवाळी औषधि थाय छे ते) वडवाइनुं अग्र, पीळां फूलवाळी महाबला के जे बळदाणानी जात छे ते अने गंगेटी ए चार औषधिओमांथी कोई पण औषधीने दूधमां वाटी तेनां त्रण के चार टीपां जमणा नाकमां नाखवां अने ते टीपां गळामां जतां पण गर्भवतीए तेओने थूंकी काहाडवां नहीं. जेने पुत्रनी इच्छा होय ते स्त्रीने माटे आ विधि छे. (आ नस्य रहेला गर्भनुं स्थापन करे छे अने पुत्रनी प्राप्ति करे छे तेथी त्रण त्रण महीनाने अंतरे आपवुं जोईए. गर्भ न रह्यो होय तो पण प्रथम आ चारे औषधिओनुं नस्य आपीने पछी संग करवामां आवे तो गर्भ रेहे छे अने पुत्रनी प्राप्ति थाय छे एम केटलाएक तंत्रोमां लख्युं छे.)

२० ध्रुवं चतुर्णां सान्निध्याद्गर्भः स्याद्विधिपूर्वकः ऋतुक्षेत्राम्बुबीजानां सामग्र्यादङ्कुरो यथा ॥
एवं जाता रूपवन्तो महासत्त्वाश्चिरायुषः ।
भवन्त्यृणस्य मोक्तारः सत्पुत्राः पुत्रिणे हिताः॥

चार पदार्थोना सान्निध्यथी अवश्य गर्भनुं रेहेवुं अने तेथी सारा पुत्रोनीज उत्पत्ति.

२० जेम योग्य ऋतु, योग्य क्षेत्र, योग्य वरसाद अने योग्य बीज ए चार पदार्थोना सान्निध्यथी अवश्य सारा अंकुरनी उत्पत्ति थाय छे तेम योग्य रज, योग्य गर्भाशय, योग्य रसधातु अने योग्य बीज ए चार पदार्थोना सान्निध्यथी अवश्य सारा गर्भनी स्थिति थाय छे. आवा गर्भोथी उत्पन्न थएला पुत्रो रूपाळा, घणा सत्वगुणवाळा, मातापिताने ऋणथी मुक्त करनारा, लांबा आयुष्यवाळा, सुपात्र अने पितानुं सघळी रीते हित करे एवा थाय छे.

२१ तत्र तेजोधातुः सर्ववर्णानां प्रभवः स यदा गर्भोत्पत्तावब्धातुप्रायो भवति तदा गर्भं गौरं करोति पृथिवीधातुप्रायः कृष्णं पृथिव्याकाशधातुप्रायः कृष्णश्यामं तोयाकाशधातुप्रायो गौरश्यामम् । यादृग्वर्णमाहारमुपसेवते गर्भिणी तादृग्वर्णप्रसवा भवतीत्येके भाषन्ते ॥

गर्भना गौर के श्याम वगेरे वर्णो शाथी थाय छे?

२१ सघळा वर्णोनुं मूलकारण तेज नामनुं त्रीजुं महाभूत छे. ए तेज जो गर्भाधानना समयमां पोतामां जळना अधिक मिश्रणवाळुं होय तो गर्भने गौर वर्णवाळो करे छे, पोतामां पृथ्वीना अधिक मिश्रणवाळुं होय तो गर्भने श्याम वर्णवाळो करे छे, पोतामां पृथ्वी तथा आकाश एओना अधिक मिश्रणवाळुं होय तो गर्भने कृष्णश्याम वर्णवाळो (अत्यंतश्याम रंगवाळो) करे छे अने पोतामां जळ तथा आकाश एओना अधिक मिश्रणवाळुं होय तो गर्भने गौरश्याम वर्णवाळो करे छे. आ विषयमां केटलाएक आचार्यो एम कहे छे के गर्भिणी, जेवा वर्णवाळा आहारनुं सेवन करे तेवो वर्ण तेना गर्भने प्राप्त थाय छे.

२२ तत्र दृष्टिभागमप्रतिपन्नं तेजो जात्यन्धं करोति । तदेव रक्तानुगतं रक्ताक्षं पित्तानुगतं पिङ्गाक्षं श्लेष्मानुगतं शुक्लाक्षं वातानुगतं विकृताक्षमिति ॥

गर्भनी आंख्योमां अमुक विकारो थवानुं कारण.

२२ जो ए तेज चोथे महिने गर्भनी दृष्टिना भागमां प्राप्त न थाय तो गर्भने जन्मांध करे छे, जो रुधिरनी साथे संबंध पामेलुं होय तो गर्भने राती आंख्योवाळो करे छे, जो पित्तनी साथे

संबंध पामेलुं होय तो गर्भने पींगळी आंख्योवाळो करे छे, जो कफनी साथे संबंध पाम्युं होय तो' गर्भने सफेद आंख्योवाळो करे छे अने जो वायुनी साथे संबंध पाम्युं होय तो गर्भने त्रांसापणा वगेरे विकृतियुक्त आंख्योवाळो करे छे.

२३ भवन्ति चात्र ॥

घृतपिण्डो यथैवाग्निमाश्रितः प्रविलीयते ।
विसर्पत्यार्तवं नार्यास्तथा पुंसां समागमे ॥

त्रण दिवससुधी स्त्रवीने थीजेला रजनो मैथुनना समयमां पाछो संचार थवानुं कारण.

२३ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेम घीनो पिंड अग्निना संबंधथी पीगळीने संचार करे छे तेम त्रण दिवस सुधी स्त्रवीने थीजेलुं स्त्रीनुं रजरूप रुधिर पुरुषनो समागम प्राप्त थतां बे इंद्रियोना घर्षणने लीधे उत्पन्न थएली गरमीथी पीगळीने संचार करे छे." (ए संचार पामेलुं रुधिर वीर्यनी साथे मळी गर्भाशयमां गर्भनी उत्पत्तिना कारणरूप थाय छे. पुरुषना समागमना समयमां स्त्रीनुं वीर्य पण स्त्रवे छे पण ते वीर्य सारा गर्भने कशुं उपयोगी थतुं नथी माटे तेनो कशो विचार करवामां आव्यो नथी. डल्हन.)

२४ बीजेऽन्तर्वायुना भिन्ने द्वौ जीवौ कुक्षिमागतौ ।
यमावित्यभिधीयेते धर्मेतरपुरःसरौ ॥

एकी वखते बे गर्भ रेहेवानुं कारण.

२४ शुक्रशोणितरूप बीज गर्भाशयनी अंदर वायुने लीधे बे भागमां वेहेचाई जाय तो उदरमां बे जीव आवे छे अने तेओ जोडलुं केहेवाय छे. जोडलांनी उत्पत्ति कोई पापकर्मना योगथीज थाय छे.

२५ पित्रोरत्यल्पबीजत्वादासेक्यः पुरुषो भवेत् ।
स शुक्रं प्राश्य लभते ध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ॥

आसेक्य नामना नपुंसकनी उत्पत्तिनुं विशिष्ट कारण अने तेवा नपुंसकनुं लक्षण.

२५ मातानुं रज अने पितानुं वीर्य अत्यंत अल्प होय तो तेओना योगथी **आसेक्य** नामनो नपुंसक उत्पन्न थाय छे. ज्यारे कोई अन्य पुरुषना वीर्यनुं मुखमैथुनद्वारा भक्षण करवामां आवे त्यारेज जेनुं लिंग उच्छ्रित थाय ते आसेक्य केहेवाय छे. (आ नपुंसक 'मुखयोनि' ए नामथी पण केहेवाय छे.)

२६ यः पूतियोनौ जायेत स सौगन्धिकसंज्ञितः ।
स योनिशेफसोर्गन्धमाघ्राय लभते बलम् ॥

सौगंधिक नामना नपुंसकनी उत्पत्तिनुं विशिष्ट कारण अने तेवा नपुंसकनुं लक्षण.

२६ दुर्गंधवाळी योनिमां गर्भनो प्रादुर्भाव थाय तो तेथी **सौगंधिक** नामनो नपुंसक उत्पन्न थाय छे. योनिना अने लिंगना गंधने सूंघे त्यारेज जेना लिंगमां बळ आवे ते सौगंधिक केहेवाय छे. (आ नपुंसक 'नासायोनि' ए नामथी पण ओळखाय छे.)

२७ स्वे गुदेऽब्रह्मचर्याद्यः स्त्रीषु पुंवत्प्रवर्तते ।
कुम्भीकः स च विज्ञेय ईर्ष्यकं शृणु चापरम् ॥

कुंभीक नामना नपुंसकनी उत्पत्तिनुं विशिष्ट कारण अने तेवा नपुंसकनुं लक्षण.

२७ स्त्रीने पशुनी पेठे विमुख राखीने करवामां आवेला अथवा पोतानी अन्य स्त्रीमां रुचि छतां करवामां आवेला मैथुनथी जो गर्भ उत्पन्न थाय तो तेथी बीजना दुर्बलपणाने लीधे **कुंभीक** नामनो नपुंसक उत्पन्न थाय छे. जे पुरुष पोतानी गुदामां मैथुन कराव्या पछी पुरुष जेवो बनीने स्त्रीनो संग करी शके ते कुंभीक केहेवाय छे. आ नपुंसक 'गुदयोनि' ए नामथी पण ओळखाय छे.

२८ दृष्ट्वा व्यवायमन्येषां व्यवाये यः प्रवर्तते ।
ईर्ष्यकः स च विज्ञेयः षण्ढकं शृणु पञ्चमम् ॥

ईर्ष्यक नामना नपुंसकनी उत्पत्तिनुं वि-शिष्ट कारण अने तेवा नपुंसकनुं लक्षण.

२८ अरुचिवाळी स्त्रीमां पुरुषे पोतानी पण अरुचि छतां मैथुन करवाथी जो गर्भ उत्पन्न थाय तो तेथी बन्नेना हर्षना मंदपणाने लीधे ईर्ष्यक नामनो नपुंसक उत्पन्न थाय छे. जे पुरुष बीजां स्त्रीपुरुषना मैथुनने जोया पछीज लिंगनो उच्छ्राय पामीने मैथुनमां प्रवर्त्ते ते ईर्ष्यक केहेवाय छे. (आ नपुंसक 'दृग्योनि' ए नामथी पण ओळखाय छे.)

२९ यो भार्यायामृतौ मोहादङ्गनेव प्रवर्तते ।
ततः स्त्रीचेष्टिताकारो जायते पण्ढसंज्ञितः ॥

षंढक नामना नपुंसकनी उत्पत्तिनुं वि-शिष्ट कारण अने तेवा नपुंसकनुं लक्षण.

२९ मोहने लीधे ऋतुसमयमां स्त्रीने उपर राखी, पुरुषे नीचे रहीने करवामां आवेली विपरीत रतिथी जो गर्भ रहे तो तेथी, बीजना अदृढ प्रवेशने लीधे **षंढक** नामनो नपुंसक उत्पन्न थाय छे. जेनी आकृति तथा सघळी चेष्टाओ स्त्रीना जेवीज होय ते षंढक केहेवाय छे अने ते शिश्नवाळो छतां पण पुरुषनी शक्तिथी तमाम रहितज होय छे, स्त्रीनी पेठे चत्तो सुई गुदामां मैथुन करावीने पोताना शिश्न उपरना भाग उपर वीर्यनो उत्सर्ग करावे छे तथा दाढीमूछना वाळोथी पण रहितज होय छे.

३० ऋतौ पुरुषवद्वापि प्रवर्तेताङ्गना यदि ।
तत्र कन्या यदि भवेत्सा भवेन्नरचेष्टिता ॥

स्त्रीनपुंसक(वेंदळ)नी उत्पत्तिनुं वि-शिष्ट कारण अने तेनुं लक्षण.

३० स्त्रीए ऋतुसमयमां पुरुषनी पेठे प्रवर्त्तीने अर्थात् विपरीत रति करावीने पोतानी योनिमां पुरुषना वीर्यनुं ग्रहण करतां तेथी रहेला गर्भथी जो कन्या उत्पन्न थाय तो ते कन्या स्त्रीनपुंसक (वेंदळ) थाय छे. ए कन्या पोते स्त्रीरूप छतां पण बीजी स्त्रीनी उपर पुरुषनी पेठे चडीने तेनी योनिमां पोतानी योनिनुं घर्षण करे छे.

३१ आसेक्यश्च सुगन्धी च कुम्भीकश्चेर्ष्यकस्तथा ।
सरेतसस्त्वमी ज्ञेया अशुक्राः पण्डसंज्ञिताः ॥
अनया विप्रकृत्या तु तेषां शुक्रवहाः शिराः ॥
हर्षात्स्फुटत्वमायान्ति ध्वजोच्छ्रायस्ततो भवेत्॥

पांच पुरुषनपुंसकोमां पेहेला चारने वीर्य होय छे अने पांचमाने तो मुदल होतुंज नथी.

३१ आसेक्य, सौगंधिक, कुंभीक अने ईर्ष्यक ए चार नपुंसकोने वीर्य होय छे अने पंढक नामना पांचमा नपुंसकने तो वीर्य मुदल होतुंज नथी. आसेक्य, सौगंधिक, कुंभीक अने ईर्ष्यक ए चार नपुंसकोनी वीर्यनुं वहन करनारी शिराओ अनुक्रमे मुखमैथुनथी, शिश्नने तथा योनिनो गंध लेवार्थी, गुदमैथुनथी अने अन्य स्त्रीपुरुषना मैथुनना दर्शनथी हर्ष प्राप्त थतां अक्कड थाय छे अने तेथी तेओनां लिंगोनो उच्छ्राय थाय छे. (चरक तो केहे छे के पुरुषोनां आ दुर्लक्षणो स्त्रीओमां पण होय छे. डह्लन.)

३२ आहाराचारचेष्टाभिर्यादशीभिः समन्वितौ ।
स्त्रीपुंसौ समुपेयातां तयोः पुत्रोऽपि तादृशः ॥

जे स्त्री तथा पुरुष, जेवा आहारादिकथी युक्त थईने समागम करे तेओनी प्रजा तेवाज आहारादिकवाळी होवाविषे.

३२ जे स्त्री तथा पुरुष जेवा आहारथी, जेवा आचारथी तथा जेवी चेष्टाओथी युक्त थईने समागम करे तेओनी प्रजा तेवाज आहारथी, तेवाज आचारथी अने तेवीज चेष्टाओथी युक्त थाय छे.

३३ यदा नार्यावुपेयातां वृषस्यन्त्यौ कथंचन ।
मुञ्चन्त्यौ शुक्रमन्योन्यमनस्थिस्तत्र जायते ॥

कोई गर्भ अल्प तथा कोमळ अस्थिओवाळो थायछे तेनुं कारण.

३३ बे स्त्रीओ कामातुर थई कोई रीते परस्परनी साथे मैथुन करतां अने वीर्यनो उत्सर्ग करतां ते मैथुनथी जे गर्भ उत्पन्न थाय ते गर्भ अल्प तथा कोमल अस्थिओवाळो थाय छे.

३४ ऋतुस्नाता तु या नारी स्वप्ने मैथुनमावहेत् ।
आर्तवं वायुरादाय कुक्षौ गर्भं करोति हि ॥
मासि मासि विवर्द्धेत गर्भिण्या गर्भलक्षणम् ।
कललं जायते तस्या वर्जितं पैतृकैर्गुणैः ॥

कोई गर्भ केशोथी, नखोथी तथा स्नायुओ वगेरेथी रहितज थायछे तेनुं कारण.

३४ जो स्त्री ऋतुस्नात थया पछी स्वप्नमां मैथुन पामे तो वायु तेना शुद्ध रजने लईने तेना उदरमां गर्भने उत्पन्न करे छे. [illegible]म थवाथी गर्भिणीनां अंगोमां गर्भनां चिह्नो महीने महीने वधतां जाय छे अने उदरमां लोंट जेवो लोचो उत्पन्न थाय छे के जे केशो, रूवाडां, नखो, शिराओ, स्नायुओ, धमनीओ तथा अस्थिओ वगेरे पिताना गुणोथी रहितज होय छे.

३५ सर्पवृश्चिककूष्माण्डविकृताकृतयश्च ये ।
गर्भास्त्वेते स्त्रियाश्चैव ज्ञेयाः पापकृता भृशम् ॥

कोई गर्भो सर्पादिकना जेवा विकृत आकारोवाळा थायछे तेनुं कारण.

३५ स्त्रीओने कोई समये सर्प, वींछी के कोळांना जेवी विकृत आकृतिओवाळा गर्भोना प्रसवो थाय छे तेओ पापोना अतियोगथी थाय छे अर्थात् ए विचित्रता कर्मजन्यज होय छे.

३६ गर्भो वातप्रकोपेण दौर्हृदे चावमानिते ।
भवेत्कुब्जः कुणिः पङ्गुर्मूको मिण्मिण एव च ॥
मातापित्रोस्तु नास्तिक्यादशुभैश्च पुराकृतैः ।
वातादीनां च कोपेन गर्भो विकृतिमाप्नुयात् ॥

खूंधां तथा ठूंठां वगेरे विकृत अंगोवाळां पण बालको जन्मे छे तेनुं कारण.

३६ वायुना प्रकोपथी अने गर्भिणीने जे कांई खावा पीवा वगेरेनी इच्छा उत्पन्न थाय ते इच्छानुं अपमान थवाथी गर्भमां रहेलां बालको खूंधां, ठूंठां, लूलां, मूंगां तथा गुंगणां थाय छे. मातापिताना नास्तिकपणाथी, वायु वगेरे दोषोना कोपथी अने पूर्वजन्ममां करेलां पापोथी गर्भ विकृति पामे छे.

३७ मलाल्पत्वादयोगाच्च वायोः पक्वाशयस्य च
वातमूत्रपुरीषाणि न गर्भस्थः करोति हि ॥

गर्भस्थ संतान अधोवायु मूकतुं नथी तथा विष्टामूत्र करतुं नथी तेनुं कारण.

३७ गर्भमां रहेलुं संतान मळोना अल्पपणाने लीधे तथा वायुनो अने पक्वाशयनो अल्प योग थवाने लीधे अधोवायु मूकतुं नथी अने विष्टामूत्र पण करतुं नथी.

३८ जरायुणा मुखेच्छन्ने कण्ठे च कफवेष्टिते ।
वायोर्मार्गनिरोधाच्च न गर्भस्थः प्ररोदिति ॥

गर्भस्थ संतान रोतुं नथी तेनुं कारण.

३८ मोहोडुं ओळना पडेडाथी ढंकाएलुं होवाने लीधे, कंठ कफथी घेराएलो होवाने लीधे अने शब्दने उत्पन्न करनारा वायुनो मार्ग रोकाएलो होवाने लीधे गर्भमां रहेलुं संतान रोतुं नथी. (निश्वासादिकरूप वायुने नीकळवानो मार्ग तो रेहेछे एम केहेवामां आवशे. केम के जो ए मार्ग न रेहेतो होय तो गर्भ जीवीज शके नहीं.)

३९ निःश्वासोच्छ्वाससङ्क्षोभस्वप्नान्गर्भोऽधिगच्छति ।
मातुर्निःश्वसितोच्छ्वाससङ्क्षोभस्वप्नसम्भवान् ॥

माताना निश्वास वगेरेथी गर्भमां रहेलां बालकने निश्वास वगेरे प्राप्त थायछे.

३९ माताना निश्वासथी, उच्छ्वासथी, चलनथी अने स्वप्नथी गर्भमां रहेला प्राणीने पण निश्वास, उच्छ्वास, चलन तथा स्वप्न प्राप्त थाय छे.

४० सन्निवेशः शरीराणां दन्तानां पतनोद्भवौ तलेष्वसम्भवो यश्च रोम्णामेतत् स्वभावतः ॥

अवयवोनी रचना वगेरेनुं स्वभावथीज थवुं.

४० शरीरना हाथपग वगेरे अवयवोनी जूदी जूदी रचनाओ, दांतोनुं उत्पन्न थवुं तथा पडवुं अने हाथपगनां तळांओमां रूवाडांओनुं नहीं उत्पन्न थवुं ए सघळुं स्वभावथीज थाय छे.

४१ भाविताः पूर्वदेहेषु सततं शास्त्रबुद्धयः । भवन्ति सत्त्वभूयिष्ठाः पूर्वजातिस्मरा नराः ॥

कोई माणसोने पूर्वजन्मनुं स्मरण प्राप्त थायछे तेनुं कारण.

४१ पूर्वजन्ममां जे मनुष्यो सत्वगुणना बाहुल्यवाळा, निरंतर सारी भावनाओना अभ्यासोवाळा अने सर्वदा शास्त्रोनुंज परिशीलन करनारी बुद्धिवाळा होय तेओने पूर्वजन्मोनुं स्मरण प्राप्त थाय छे.

४२ कर्मणा चोदितो येन तदाप्नोति पुनर्भवे । अभ्यस्ताः पूर्वदेहे ये तानेव भजते गुणान् ॥

सघळां कारणोमां कर्मनुं मुख्यपणुं.

४२ जीव संचितकर्मोना समूहमांथी प्रारब्धरूपे गोठवाएलां जेटलां कर्मोनां फळोने भोगववा माटे अवतर्यो होय तेटलां कर्मोनां फळोने ते जन्ममां प्राप्त थाय छे अने पूर्वजन्ममां जे गुणोनो अभ्यास कर्यो होय ते गुणोनुंज सेवन करे छे."

---

१ गर्भनुं प्राप्त थवुं, गर्भमां जीवनुं आववुं अने तेनां अंगो वगेरेनुं गोठवाणुं इत्यादिक विषयोना निरूपण-विषेनो.

अध्याय ३ जो.

१ अथातो गर्भावक्रान्तिशारीरं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'गर्भावक्रांतिशारीर' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सौम्यं शुक्रमार्तवमाग्नेयमितरेषामप्यत्र भूतानां सान्निध्यमस्त्यणुना विशेषेण परस्परोपकारात्परस्परानुग्रहाच्च परस्परानुप्रवेशात्

वीर्यनुं तथा रजनुं स्वरूप.

२ वीर्य जलसंबंधी पदार्थ छे अने रज अग्निसंबंधी पदार्थ छे एम केहेवाय छे तो पण वीर्य केवळ जळमयज छे अने रज केवळ अग्निमयज छे एम समजवुं नहीं. कारण के वीर्यमां अने रजमां पृथिवी, वायु तथा आकाश एओनुं पण सूक्ष्म प्रकारथी सान्निध्य छे. पांचे महाभूतो परस्परने आश्रय आपनारां तथा परस्परना आश्रयमां रेहेनारां होवाने लीधे परस्परमां अनुप्रविष्टज छे के जेथी सर्व द्रव्योमां सर्व भूतोनुं सान्निध्य स्वीकारवामां आवे छे. (पार्थिव द्रव्यमां पृथिवी बलवत्तर छे तेथी बीजां चार भूतो के जेओ पार्थिव द्रव्यमां अल्प बळवाळां छे तेओने आश्रय आपेछे अने जलनां द्रव्योमां जळ बलवत्तर छे तेथी ते द्रव्यमां पृथ्वी आदि चारे भूतो के जेओ अल्प बळवाळां छे तेओने आश्रय आपे छे ए रीते प्रत्येक भूतोनां द्रव्योमां समजी लेवुं.)

३ तत्र स्त्रीपुंसयोः संयोगे तेजः शरीराद्वायुरुदीरयति । ततस्तेजोऽनिलसन्निपाताच्छुक्रं च्युतं योनिमभिप्रतिपद्यते संसृज्यते चार्तवेन । ततोऽग्नीषोमसंयोगात्संसृज्यमानो गर्भाशयमनुप्रतिपद्यते क्षेत्रज्ञो वेदयिता स्प्रष्टा घ्राता द्रष्टा श्रोता रसयिता पुरुषः स्रष्टा गन्ता साक्षी

धाता वक्ता योऽसावित्येवमादिभिः पर्यायवाचकैर्नामभिरभिधीयते दैवसंयोगादक्षयोऽव्ययोऽचिन्त्यो भूतात्मना सहान्वक्षं सत्त्वरजस्तमोभिर्दैवासुरैरपरैश्च भावैर्वायुनाभिप्रेर्यमाणो गर्भाशयमनुप्रविश्यावतिष्ठते ॥

गर्भनुं अवतरण तथा जीवात्मानो प्रवेश.

३ स्त्री पुरुपनो मैथुनरूप संयोग थतां बन्नेनां इंद्रियोनुं घर्षण थवाथी शरीरमां उत्पन्न थएली गरमीने वायु वधारी दे छे. पछी ए वायुना अने गरमीरूप तेजना संयोगने लीधे पीगळीने शरीरमांथी लिंगद्वारा स्खलित थएलुं वीर्य योनिना त्रीजा आवर्त्तमां (त्रीजी चकरीमां) गर्भशय्यामां प्राप्त थाय छे अने रजनी साथे मळी जाय छे. आ प्रमाणे अग्निमय रजनो अने सोममय वीर्यनो संयोग थतां तुरतज सत्व, रज तथा तम नामना प्रकृतिना गुणोथी अने देवयोनिमां जवानुं होय तो देवसंबंधी भावनाओथी, असुरयोनिमां जवानुं होय तो असुरसंबंधी भावनाओथी तथा मनुष्यआदि योनिमां जवानुं होय तो मनुष्यादिकसंबंधी भावनाओथी संसृष्ट थतो जीवात्मा पोते अक्षय, अव्यय तथा अचिंत्य छतां पण अविद्याथी कल्पी लीधेला धर्माधर्मना संबंधथी लिंगशरीरनी साथे गर्भशय्यामां आवे छे अने आवतांज त्यां थती वायुनी प्रेरणाथी शुक्रशोणितात्मक संयोगमां पेसीने रहे छे के जे जीवात्मा संकल्पने जाणनारो, स्पर्शने जाणनारो, गंधने जाणनारो, रूपने जाणनारो, शब्दने जाणनारो, रसने जाणनारो, कर्मपुरुप, पापपुण्योने करनारो, ते ते योनिओमां जनारो, सर्वने प्रकाश आपनारो, संस्कारोनुं धारण करनारो, बोलनारो, दुर्बोध अने स्वयंप्रकाश इत्यादि पर्याय शब्दोथी शास्त्रोमां केहेवामां आवे छे.

४ तत्र शुक्रबाहुल्यात्पुमानार्तवबाहुल्यात्स्त्री साम्यादुभयोर्नपुंसकमिति । ऋतुस्तु द्वादशरात्रं भवति दृष्टार्तवः ॥

गर्भमां पुरुष, कन्या के नपुंसक थवानां कारणो अने ऋतुसमय.

४ जो वीर्य गर्भाशयमां दाखल थएला रजथी अधिक होय तो गर्भमां पुरुप निष्पन्न थाय छे, जो रज गर्भाशयमां दाखल थएला वीर्यथी अधिक होय तो कन्या निष्पन्न थाय छे अने जो गर्भाशयमां दाखल थएलां वीर्य तथा रज बन्ने समान होय तो नपुंसक निष्पन्न थाय छे. जेमां रज देखवामां आवे एवो समय तो बार रात्रि सुधी रहे छे. (केटलाएक ऋतु समयने सोळ दिवसनो गणे छे पण तेमां एम छे के तेरमो, चौदमो अने पंदरमो ए त्रण दिवस रजनो ह्रास थवाना छे अने सोळमे दिवसे तो योनिनो संकोच थई जाय छे एटले ए चार दिवसो योग्य गर्भनी उत्पत्तिमां नकामाज छे. आ उपरथीज आ स्थानना गया अध्यायना १९मा विषयमां तेरमी वगेरे रात्रिओने मैथुनमां निंदितज गणेली छे.)

५ अदृष्टार्तवाप्यस्तीत्येके भाषन्ते ॥

भवतश्चात्र ॥

पीनप्रसन्नवदनां प्रक्लिन्नात्ममुखद्विजाम् ।
नरकामां प्रियकथां स्रस्तकुक्ष्यक्षिमूर्द्धजाम् ॥
स्फुरद्भुजकुचश्रोणिनाभ्यूरुजघनस्फिचम् ॥
हर्षौत्सुक्यपरां चापि विद्यादृतुमतीमिति ।

रज नहीं देखवामां आवतां छतां पण स्त्री ऋतुमती होवा विषे बीजा आचार्योनो मत.

५ केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'रज नहीं देखवामां आवतां छतां पण स्त्री ऋतुमती होय छे.' आ विषयने टेको आपे एवां ऋतुमतीनां लक्षणो भगवान् धन्वंतरिए पण स्वमुखथी कह्यां छे के 'जेनुं मुख पुष्ट तथा प्रसन्न देखातुं होय, जेनुं शरीर मुख तथा दांतोनां पेढां आर्द्र देखातां होय, जेने संभोगनी इच्छा प्राप्त थई होय, जेने

रमणसंबंधी वातो प्रिय लागती होय, जेनां पेट नेत्रो तथा केशो शिथिल देखातां होय, जेनां हाथ स्तन कमर नाभि साथळ पेडु तथा कूला चलायमान थतां देखातां होय अने जे रतिमां अत्यंत उत्साहवाळी देखाती होय ते स्त्रीने ऋतुमती जाणवी.'

६ नियतं दिवसेऽतीते सङ्कुचत्यम्बुजं यथा ॥
ऋतौ व्यतीते नार्यास्तु योनिः संव्रियते तथा।

ऋतु व्यतीत थतां वीर्यनी गर्भाशयमां प्राप्ति न थवा विषे.

६ जेम दिवस व्यतीत थतां कमळ संकोचाई जाय छे तेम ऋतु व्यतीत थतां स्त्रीनी योनि संकोचाई जाय छे अर्थात् ते पछी वीर्य गर्भाशयमां पोहोचतुं नथी.

७ मासेनोपचितं काले धमनीभ्यां तदार्तवम् ॥
ईषत्कृष्णं विगन्धं च वायुर्योनिमुखं नयेत् ।
तद्वर्षाद् द्वादशात्काले वर्तमानमसृक्पुनः ॥
जरापक्वशरीराणां याति पञ्चाशतः क्षयम् ।

रजनुं योनिना मुखमां आववानुं कारण तथा रजोदर्शननां वर्षोनो पूर्वापर अवधि.

७ महीनाभरमां एकठुं थएलुं रज के जे कांईक काळुं अने खराब गंधवाळुं होय छे तेने वायु महीने महीने ऋतुना समयमां रजनुं वहन करनारी बे धमनीओद्वारा योनिना मुखमां लई आवे छे.

जेओना शरीरना धातुओ वृद्धि पामता होय एवी स्त्रीओने घणुं करी बारमा वर्षथी महीने महीने रज प्रवर्त्तवा लागे छे अने ज्यारे शरीरो जराथी पक्व थवा लागे छे त्यारे घणुं करीने पंचाशमा वर्षथी ते रज पाछुं क्षय पामे छे.

८ युग्मेषु तु पुमान्प्रोक्तो दिवसेष्वन्यथाऽबला ।
पुष्पकाले शुचिस्तस्मादपत्यार्थी स्त्रियं व्रजेत् ॥

ऋतुकालना बेकीना दिवसोमां गर्भ रेहेवाथी पुत्रनो अने एकीना दिवसोमां गर्भ रेहेवाथी कन्यानो संभव.

८ स्त्रीओनुं रज ऋतुकालना बेकीना दिवसोमां अल्प थई जाय छे तेथी ते दिवसोमां रहेला गर्भथी पुत्रनो जन्म थाय छे अने एकीना दिवसोमां ते रज वृद्धि पामे छे तेथी ते दिवसोमां रहेला गर्भथी कन्यानो जन्म थाय छे. (गया अध्यायनो १४मो तथा १९ मो विषय जुवो.) आम छे एटला माटे पुरुषे सघळी रीते पवित्र तथा उज्वल थई जो पुत्रनी इच्छा होय तो ऋतुकालना बेकीना दिवसोमां एक दिवसे स्त्रीसंग करवो अने जो कन्यानी इच्छा होय तो ऋतुकालना एकीना दिवसोमां एक दिवसे स्त्रीसंग करवो. (बेकीनी रात्रिओमां रज अल्प थई जाय छे तेथी वीर्यनुं आधिक्य थतां पुत्रनी उत्पत्ति अने एकीनी रात्रिओमां रजनुं आधिक्य थई जाय छे तेथी वीर्यनुं अल्पत्व थतां कन्यानी उत्पत्ति थाय ए युक्तिसिद्ध छे. गमे ते दिवसमां पण जो रजनुं अने वीर्यनुं समानपणुं होय तो नपुंसकनी उत्पत्ति थाय.)

९ तत्र सद्यो गृहीतगर्भाया लिङ्गानि श्रमो ग्लानिः पिपासा सक्थिसदनं शुक्रशोणितयोरवबन्धः स्फुरणं च योनेः ॥

गर्भ रह्यानी मैथुनना अंतमां तुरतज परीक्षा.

९ जेणे गर्भनुं ग्रहण कर्युं होय ते स्त्रीने तुरतज शरीरमां श्रम थाय छे, अंगोमां ग्लानि थाय छे, तरश लागे छे, साथळो नरम तथा अशक्त थई जाय छे, वीर्य तथा रज योनिनी अंदरज रोकाई जाय छे अने योनि फरकवा लागे छे.

१० स्तनयोः कृष्णमुखता रोमराज्युद्गमस्तथा।
अक्षिपक्ष्माणि चाप्यस्याः संमीलयन्ते विशेषतः॥

अकामतश्छर्दयति गन्धादुद्विजते शुभात् ।
प्रसेकः सदनं चापि गर्भिण्या लिङ्गमुच्यते ॥

गर्भ रह्यानां अमुक काल पछीनां लक्षणो.

१० स्तनोनी डीटडीओ काळी थई जाय, रूवाडांओनी पंक्ति उभी थई जाय, नेत्रोनी पांपणो विशेषे करी वींचाया करे, इच्छा नहीं छतां अने पथ्य भोजन करतां छतां पण उलटी थाय, सारा गंधथी पण उद्वेग थाय, वारंवार थूंकवुं पडे अने अंगोमां ग्लानि थाय ए गर्भवतीनां चिह्नो केहेवाय छे.

११ तदाप्रभृत्येव व्यायामं व्यवायमपतर्पणमतिकर्षणं दिवास्वप्नं रात्रिजागरणं शोकं यानावरोहणं भयमुत्कटकासनं शोणितमोक्षणं चैकान्ततः स्नेहादिक्रियां चाकाले वेगविधारणं च न सेवेत ॥
दोषाभिघातैर्गर्भिण्या यो यो भागः प्रपीड्यते ।
स स भागः शिशोस्तस्य गर्भस्थस्य प्रपीड्यते॥

गर्भवतीए पाळवाना नियमो.

११ गर्भ रह्यो जाणवामां आवे त्यारथीज ते गर्भवतीए मेहेनत, मैथुन, अन्नादिकथी ओछी तृप्ति, अत्यंत उपवासादिक, दिवसनी निद्रा, रातनो उजागरो, शोक, वाहनपर चडवुं, भय, उभडक बेसवुं, अने फस खोलाववा वगेरेथी रुधिरस्त्रावण अने मलमूत्रादिकना वेगोनी अटकायत एओनो तमाम त्याग करवो. समय वगर स्नेहन आदि क्रियाओनो पण त्याग करवो. ('समयवगर' एम कह्युं ते उपरथी एम जणाय छे के आठमा महीनामां योग्य जणाय तो स्नेहन आदि क्रियाओना पेटामां आस्थापन बस्ति अने अनुवासन बस्ति एओनी छूट छे. डल्हन.)

गर्भिणीनो कोई पण शरीरसंबंधी भाग मैथुनादिकथी थता दोषोना आघातप्रत्याघातोथी पीडाय तो गर्भमां रहेला बालकना शरीरनो पण ते ते भाग पीडाय छे.

१२ तत्र प्रथमे मासि कललं जायते । द्वितीये शीतोष्मानिलैरभिप्रपच्यमानानां महाभूतानां सङ्घातो घनः सञ्जायते यदि पिण्डः पुमान्स्त्री चेत्पेशी नपुंसकं चेदर्बुदमिति । तृतीये हस्तपादशिरसां पञ्च पिण्डका निर्वर्तन्तेऽङ्गप्रत्यङ्गविभागश्च सूक्ष्मो भवति । चतुर्थे सर्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागः प्रव्यक्ततरो भवति गर्भहृदयप्रव्यक्तभावाच्चेतनाधातुरभिव्यक्तो भवति कस्मात्तत्स्थानत्वात्तस्माद्गर्भश्चतुर्थे मास्यभिप्रायमिन्द्रियार्थेषु करोति द्विहृदयां च नारीं दौहृदिनीमाचक्षते ।

पेहेला महीनाथी चोथा महिना सुधीमां गर्भनी केवी केवी स्थितिओ थाय छे?

१२ **पेहेले महीने** लींटना जेवा आकारवाळो लोचो थाय छे. **बीजे महीने** कफथी, पित्तथी तथा पवनथी पाकवा लागेलां महाभूतोनो समूह कठण थाय छे. ए गर्भनां महाभूतोनो समूह कठण थईने जो वर्त्तुलाकार थाय तो तेथी पुत्रनी उत्पत्ति थाय छे, जो पेशी जेवा लांबा आकारवाळो थाय तो तेथी कन्यानी उत्पत्ति थाय छे अने जो गोळ फळना अर्द्ध जेवा आकारवाळो थाय तो तेथी नपुंसकनी उत्पत्ति थाय छे. **त्रीजे महीने** बे हाथना, बे पगना अने एक माथानो एवी रीते पांच सूक्ष्म पिंडो थाय छे अने हृदय, पीठ, पेट, हडपची, नाक, होठ, कान, आंगळीओ तथा पेनी इत्यादिक अंगप्रत्यंगोना पण सूक्ष्म विभागो थाय छे. **चोथे महीने** सघळां अंगोनो तथा प्रत्यंगोनो विभाग वधारे स्पष्ट थाय छे. गर्भनुं हृदय अभिव्यक्त थवाथी चैतन्य पदार्थ पण अभिव्यक्त थाय छे. केम के चैतन्यनुं स्थानक हृदय छे. चैतन्य अभिव्यक्त थवाने लीधे गर्भ चोथे महीने शब्दस्पर्शादिक विषयोनी इच्छा करे छे. एक गर्भनुं हृदय अने एक पोतानुं हृदय ए रीते बे हृदयोवाळी होवाने लीधे गर्भिणी स्त्री 'दौहृदिनी' केहेवाय छे.

१३ दौहृदविमाननात्कुब्जं कुणिं खञ्जं जडं वामनं विकृताक्षमनक्षं वा नारी सुतं जनयति। तस्मात्सा यद्यदिच्छेत्तत्तस्यै दापयेत्। लब्धदौहृदा हि वीर्यवन्तं चिरायुषं च पुत्रं जनयति॥

भवन्ति चात्र॥

इंद्रियार्थांस्तु यान्यान्सा भोक्तुमिच्छति गर्भिणी।
गर्भबाधभयात्तांस्तान्भिषगाहृत्य दापयेत्।
सा प्राप्तदौहृदा पुत्रं जनयेत गुणान्वितम्।
अलब्धदौहृदा गर्भे लभेतात्मनि वा भयम्॥
येषु येष्विन्द्रियार्थेषु दौहृदे वै विमानना।
प्रजायेत सुतस्यार्तिस्तस्मिंस्तस्मिंस्तथेन्द्रिये॥
राजसन्दर्शने यस्या दौहृदं जायते स्त्रियाः।
अर्थवन्तं महाभागं कुमारं सा प्रसूयते॥
दुकूलपट्टकौशेयभूषणादिषु दौहृदात्॥
अलङ्कारैषिणं पुत्रं ललितं सा प्रसूयते।
आश्रमे संयतात्मानं धर्मशीलं प्रसूयते॥
देवताप्रतिमायां तु प्रसूते पार्षदोपमम्।
दर्शने व्यालजातीनां हिंसाशीलं प्रसूयते॥
गोधामांसाशने पुत्रं सुषुप्सुं धारणात्मकम्।
गवां मांसे च बलिनं सर्वक्लेशसहं तथा॥
माहिषे दौहृदाच्छूरं रक्ताक्षं लोमसंयुतम्।
वराहमांसात्स्वप्नालुं शूरं सञ्जनयेत्सुतम्॥
मार्गाद्विक्रान्तजङ्घालं सदा वनचरं सुतम्।
सृमराद्विग्नमनसं नित्यभीतं च तैत्तिरात्।
अतोऽनुक्तेषु यन्नारी याभिध्यायति दौहृदम्।
शरीराचारशीलैः सा समानं जनयिष्यति॥
कर्मणा चोदितं जन्तोर्भवितव्यं पुनर्भवेत्।
यथा तथा दैवयोगाद्दौहृदं जनयेद्धृदि॥

गर्भिणीनी इच्छानुं अपमान करवाथी गर्भनी विकृति, इच्छा पूरी पाडवाथी गर्भनुं हित अने इच्छानी वलाणने अनुसरता पुत्रनी उत्पत्ति.

१३ जेनी इच्छानुं अपमान करवामां आवे ते गर्भिणी स्त्री खूंधा, ठुंठा, लंगडा, जड, ठींगणा, विकृत नेत्रोवाळा अथवा आंधला पुत्रने जन्म आपेछे. आम छे एटला माटे वैद्ये गर्भिणी जे जे वस्तुनी इच्छा करे ते ते सघळी वस्तुओ तेने देवरावावी. जेनी इच्छा पार पडेली होय एवी गर्भिणी उत्तम शक्तिवाळा तथा लांबा आयुष्यवाळा पुत्रने जन्म आपे छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "गर्भिणी जे जे विषयोने भोगववानी इच्छा करे ते ते विषयो वैद्ये तेना पति वगेरेनी पासे मगावी मगावीने ते गर्भिणीने अपाववा. केम के जो गर्भिणीनी इच्छाने पूरी पाडवामां न आवे तो गर्भने नुकसान थवानी धास्ती छे. जेनी सघळी इच्छा पार पडी होय एवी गर्भिणी गुणवान् पुत्रने जन्म आपे छे अने जेने जोईती वस्तुओ न मळी होय अर्थात् जेनी इच्छा पार न पडी होय एवी गर्भिणी पोते कांईक खराब हालतने प्राप्त थाय छे अथवा तेनो गर्भ तेवी हालतने प्राप्त थाय छे. जे जे विषयनी बाबतमां गर्भिणीनी इच्छानो विघात थाय ते ते विषयनुं ग्रहण करनारी इंद्रियमां पुत्रने पीडा उत्पन्न थाय छे. जेने राजानुं दर्शन करवानी इच्छा उत्पन्न थाय ते गर्भिणी धनवाळा तथा महाभाग्यशाळी पुत्रने जन्म आपे छे. जेने झीणां वस्त्रोनी, पट्टवस्त्रोनी, रेशमी वस्त्रोनी तथा भूषण वगेरेनी इच्छा उत्पन्न थाय ते गर्भिणी अलंकारोनी इच्छावाळा रूपाळा पुत्रने जन्म आपे छे. जेने ऋषिओना आश्रमो जोवानी के तेओमां रेहेवानी इच्छा उत्पन्न थाय ते गर्भिणी धर्मात्मा पुत्रने जन्म आपे छे. जेने देवताओनी मूर्त्तिओ जोवानी के सेववानी इच्छा उत्पन्न थाय ते गर्भिणी देवपार्षद जेवा पुत्रने जन्म आपे छे. जेने सर्प वगेरे हिंसक प्राणिओना दर्शननी इच्छा उत्पन्न थाय ते गर्भिणी हिंसा करवाना स्वभाववाळा निर्दय पुत्रने जन्म आपे छे. जेने घोनुं मांस खावानी इच्छा उत्पन्न थाय ते गर्भिणी उंघी रेहेवानी इच्छावाळा अने हृदयमां लीधेली वातने नहीं छोडनारा पुत्रने जन्म आपे छे. जेने बळदनुं

मांस खावानी इच्छा थाय ते गर्भिणी सघळा क्लेशोनुं सहन करी शके एवा बळवान् पुत्रने जन्म आपे छे. जेने पाडानुं मांस खावानी इच्छा उत्पन्न थाय ते गर्भिणी शूर, लाल नेत्रोवाळा अने घणां रूवाडांवाळा पुत्रने जन्म आपे छे. जेने सूवरनुं मांस खावानी इच्छा थाय ते स्त्री वीर अने उंघी रेहेवाना स्वभाववाळा पुत्रने जन्म आपे छे. जेने मृगनुं मांस खावानी इच्छा थाय ते गर्भिणी वेगवाळा, तथा हमेश जंगलमां फरवानी टेववाळा उद्योगी पुत्रने जन्म आपे छे. जेने सृमर नामना पशुनुं मांस खावानी इच्छा थाय ते गर्भिणी भयथी चंचल मनवाळा पुत्रने जन्म आपे छे अने जेने तेतरनुं मांस खावानी इच्छा थाय ते गर्भिणी हमेश भयभीत रेहेनारा पुत्रने जन्म आपे छे. संक्षेपथी एटलुं समजवानुं छे के गर्भिणी स्त्री आ प्रकरणमां नहीं कहेला पण कोई पदार्थनी के कोई प्राणीना मांसनी इच्छा करे तो पण धारी लेवुं के जे पदार्थनी के जे प्राणीना मांसनी इच्छा करे छे तेना जेवांज शरीर, रीतभात तथा स्वभाववाळा पुत्रने जन्म आपशे. कर्मोनी प्रेरणाने लीधे गर्भस्थ प्राणीनुं जे कांई भविष्य होय ते भविष्यना अनुसार प्रमाणेज दैवयोगने लीधे गर्भिणीना मनमां इच्छा उत्पन्न थाय छे."

१४ पञ्चमे मनः प्रतिबुद्धतरं भवति । षष्ठे बुद्धिः । सप्तमे सर्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागः प्रव्यक्ततरः । अष्टमेऽस्थिरीभवत्योजस्तत्र जातश्चेन्न जीवेन्निरोजस्त्वान्नैर्ऋतभागत्वाच्च ततो बलिं मांसौदनमस्मै दापयेत् । नवमदशमैकादशद्वादशानामन्यतमस्मिञ्जायते । अतोऽन्यथाविकारी भवति ॥

पांचमा महिनाथी आठमा महिना सुधीमां गर्भनी स्थितिओ केवी केवी थायछे ते अने कया महिनामां थएलो जन्म योग्य गणाय ते.

१४ **पांचमे महिने** गर्भनुं मन वधारे जाग्रत थाय छे. **छठ्ठे महिने** गर्भनी बुद्धि वधारे जाग्रत् थाय छे. **सातमे महिने** सघळां अंगोनो तथा प्रत्यंगोनो विभाग तमाम स्पष्ट थाय छे. **आठमे महिने** गर्भनुं हृदयमां रहेलुं सघळा धातुओना धामरूप ओज अस्थिर थई जाय छे एटले जरावारमां गर्भना हृदयमां पेसे छे अने जरावारमां माताना हृदयमां पेसे छे तेथी जे समये गर्भना हृदयमां ओज न होय ते समये गर्भ जन्मे तो ते जीवतो नथी. आठमे महिने गर्भना शरीर उपर नैर्ऋत नामना राक्षसनो पण भाग लागे छे तेथी पण गर्भनुं जीवन रेहेतुं नथी एटला माटे वैद्ये ते नैर्ऋत नामना राक्षसने मांसवाळा भातनुं बलिदान पण देवराववुं. नवमो, दशमो अगीयारमो के बारमो एओमांना कोई मासमां गर्भनो जन्म थाय ते योग्य गणाय छे. एटला महिना शिवाय बीजा कोई पण महिनामां जन्मे तो ते गर्भ विकारीज होय छे.

१५ मातुस्तु खलु रसवहायां नाड्यां गर्भनाभिनाडी प्रतिबद्धा सास्य मातुराहाररसवीर्यमभिवहति । तेनोपस्नेहेनास्याभिवृद्धिर्भवति । असंजाताङ्गप्रत्यङ्गप्रविभागमा निषेकात् सर्वशरीरावयवानुसारिणीनां रसवहानां तिर्यग्गतानां धमनीनामुपस्नेहो जीवयति ॥

गर्भ निराहारज रेहेछे तो पण उदरमां तेने वधवानुं तथा जीववानुं साधन.

१५ मातानी जे रसनुं वहन करनारी नाडी होय छे ते नाडीमां गर्भनी नाभिनी नाडी बंधाएली होय छे. ए नाडी माताए खाधेला आहारना रसना वीर्यने गर्भमां प्राप्त करे छे एटले ते उपस्नेहथी गर्भनी अभिवृद्धि थाय छे. गर्भ रहे त्यांथी मांडीने ते गर्भनां अंगोनो तथा प्रत्यंगोनो विभाग न थयो होय त्यांसुधीमां पण जेम पूर्ण तळावना जळनो उपस्नेह चौटामां रहेला वृक्षने पण जीवाडे छे तेम माताना सघळा शरीरना

अवयवोमां रहेली रसवहा (रसनुं वहन करनारी) तिरछी धमनीओनो उपस्नेह गर्भने जीवाड्या करे छे. (माताए करेला आहारना रसनुं वीर्य त्रण भागे वेहेंचाईने एक भागथी माताना शरीरनुं पोषण करे छे, बीजा भागथी स्तनोमां दूधरूपे वृद्धि पामे छे अने त्रीजा भागथी गर्भनुं पोषण करे छे.)

१६ गर्भस्य हि सम्भवतः पूर्वं शिरः सम्भवतीत्याह शौनकः शिरोमूलत्वाद्देहेन्द्रियाणाम् ॥ हृदयमिति कृतवीर्यो बुद्धेर्मनसश्च स्थानत्वात् ॥ नाभिरिति पाराशर्यस्ततो हि वर्द्धते देहो देहिनः ॥ पाणिपादमिति मार्कण्डेयस्तन्मूलत्वाच्चेष्टाया गर्भस्य । मध्यशरीरमिति सुभूतिर्गौतमस्तन्निबद्धत्वात्सर्वगात्रसम्भवस्य॥ तत्तु न सम्यक् ॥

गर्भनुं अमुक अंगज प्रथम निष्पन्न थाय छे ए विषयमां अन्य आचार्योना मतोनुं निदर्शन अने ते सघळा मतोनी अयोग्यता.

१६ शौनक मुनि केहे छे के "माताना उदरमां गोठवावा लागेला गर्भनुं माथुं प्रथम उत्पन्न थाय छे. कारण के माथुंज देहनुं तथा इंद्रियोनुं मूळ छे (अने सघळी मुख्य इंद्रियो माथामांज रहे छे.)" कृतवीर्य मुनि केहे छे के "गर्भनुं हृदय प्रथम उत्पन्न थाय छे. कारण के हृदयज बुद्धिनुं अने मननुं स्थानक होवाथी प्रधान छे." पाराशर्य मुनि केहे छे के "गर्भनी नाभि प्रथम उत्पन्न थाय छे. कारण के प्राण नाभिमांज रही उष्माथी (गरमीथी) संयुक्त थईने देहने वधारे छे एटले प्राणिनो देह नाभिथीज वधे छे." मार्कंडेय मुनि केहे छे के "गर्भना हाथ तथा पग प्रथम उत्पन्न थाय छे. कारण के गर्भनी सघळी चेष्टानुं मूळ हाथ पगज छे (अने सघळां प्राणीओमां हाथ पगवाळां प्राणीओज श्रेष्ठ गणाय छे.)" गौतम गोत्रना सुभूति मुनि केहे छे के "गर्भनुं मध्यशरीर (कोठो) प्रथम उत्पन्न थाय छे. कारण के सघळां गात्रोनी उत्पत्ति मध्यशरीरने आधीन छे." आ पांचे मतो यथार्थ नथी.

१७ सर्वाङ्गप्रत्यङ्गानि युगपत्सम्भवन्तीत्याह धन्वन्तरिर्गर्भस्य सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते वंशाङ्कुरवच्चूतफलवच्च । तद्यथा । चूतफले परिपक्वे केशरमांसास्थिमज्जानः पृथग्दृश्यन्ते कालप्रकर्षात्तान्येव तरुणे नोपलभ्यन्ते सूक्ष्मत्वात्तेषां सूक्ष्माणां केशरादीनां कालः प्रव्यक्ततां करोति। एतेनैव वंशाङ्कुरोऽपि व्याख्यातः । एवं गर्भस्य तारुण्ये सर्वेष्वङ्गप्रत्यङ्गेषु सत्स्वपि सौक्ष्म्याद्नुपलब्धिः । तान्येव कालप्रकर्षात्प्रव्यक्तानि भवन्ति ॥

गर्भनां सघळां अंगो तथा प्रत्यंगो एकी वखतेज निष्पन्न थायछे.

१७ भगवान् धन्वंतरिनो सिद्धांत ए छे के गर्भनां सघळां अंगो तथा प्रत्यंगो अनुक्रमथी नहीं पण एकी वखतेज निष्पन्न थाय छे परंतु वांसना अंकुरना अवयवोनी पेठे अने आंबाना फळना अवयवोनी पेठे सूक्ष्मपणाने लीधे जोवामां आवतां नथी. जेम के आंबाना परिपक्व थएला फळमां काळना प्रकर्षने लीधे रेसाओ, गर्भ, ठळीओ अने ठळीआनी अंदरनुं मीज एओ जूदां जूदां जोवामां आवे छे पण तेओज उत्पन्न थवा लागेला नाहाना फळमां सूक्ष्मपणाने लीधे जोवामां आवतां नथी. ए रेसाओ वगेरे के जेओ फळमां सूक्ष्मरूपे प्रथमथी रहेलां होय छे तेओने काळ अभिव्यक्तपणुं आपे छे. वांसना अंकुरनुं व्याख्यान पण आंबाना फळ प्रमाणेज समजी लेवुं. ए प्रमाणे गर्भनी प्रथमनी काची स्थितिमां पण सघळां अंगो तथा प्रत्यंगो विद्यमान होय छे परंतु सूक्ष्मपणाने लीधे जोवामां आवतां नथी. सूक्ष्मपणाथी रहेलां एज अंगो तथा प्रत्यंगो काळना प्रकर्षथी अभिव्यक्त थाय छे.

१८ तत्र गर्भस्य पितृजमातृजरसजात्मजसत्त्वजसात्म्यजानि शरीरलक्षणानि व्याख्यास्यामः

गर्भस्य केशश्मश्रुलोमास्थिनखदन्तशिरास्नायुधमनीरेतःप्रभृतीनि स्थिराणि पितृजानि॥

मांसशोणितमेदोमज्जाहृन्नाभियकृत्प्लीहान्त्रगुदप्रभृतीनि मृदूनि मातृजानि ॥

शरीरोपचयो बलं वर्णः स्थितिर्हानिश्च रसजानि ॥

इन्द्रियाणि ज्ञानं विज्ञानमायुः सुखदुःखादिकं चात्मजानि ॥

सत्त्वजान्युत्तरं वक्ष्यामः ॥

वीर्यमारोग्यं बलवर्णौ मेधा च सात्म्यजानि॥

शरीरमां पिताथी, माताथी, रसथी, आत्माथी, सत्वथी अने सात्म्यथी थता जूदा जूदा विभागो तथा गुणो.

१८ गर्भना शरीरमां पिताथी, माताथी, रसथी, आत्माथी, सत्वथी अने सात्म्यथी जे जे जूदा जूदा विभागो तथा गुणो थाय छे तेओनुं व्याख्यान आपीएछिए. शरीरमां केश, दाढीमूछना वाळ, रूवाडां, अस्थिओ, नखो, दांतो, शिराओ, स्नायुओ, धमनीओ तथा रेत इत्यादि पदार्थो के जेओ स्थिरपणावाळा छे तेओ पिताथी थाय छे.

मांस, रुधिर, मेद, मज्जा, हृदय, नाभि, यकृत् (जमणा पडखांनी गांठ,) प्लीह (डाबा पडखांनी गांठ–बरल,) आंतरडां तथा गुदा इत्यादि पदार्थो के जेओ कोमळ छे तेओ माताथी थाय छे.

शरीरनुं वधवुं, बळ, वर्ण, स्थिति अने हानि (क्षीणता) एओ आहारना रसथी थाय छे.

इंद्रियो, ज्ञान, विज्ञान, आयुष्य अने सुखदुःखादिक एओ आत्माथी (आत्माना सान्निध्यथी) थाय छे.

जे पदार्थो सत्वथी एटले चित्तनी प्रकृतिथी थाय छे तेओनुं निरूपण हवे पछी (चोथा अध्यायना ३९ मा, ४० मा तथा ४१ मा विषयमां) करवामां आवशे.

वीर्य, (शक्ति अथवा उत्साह) आरोग्य, बळनुं सारापणुं, वर्णनुं सारापणुं अने बुद्धिनी धारणाशक्ति एओ सात्म्यथी थाय छे.

१९ तत्र यस्या दक्षिणे स्तने प्राक्पयोदर्शनं भवति दक्षिणाक्षिमहत्त्वं च पूर्वं च दक्षिणं सक्थ्युत्कर्षति बाहुल्याच्च पुन्नामधेयेषु द्रव्येषु दौहृदमभिध्यायति स्वप्नेषु चोपलभते पद्मोत्पलकुमुदाम्रातकादीनि पुन्नामान्येव प्रसन्नमुखवर्णा च भवति तां ब्रूयात्पुत्रमियं जनयिष्यतीति तद्विपर्यये कन्याम् ।

यस्याः पार्श्वद्वयमुन्नतम्पुरस्तान्निर्गतमुदरं प्रागभिहितलक्षणं च तस्या नपुंसकमिति विद्यात् ।

यस्या मध्ये निम्नं द्रोणीभूतमुदरं सा युग्मं प्रसूयत इति ॥

गर्भमां पुरुष छे? कन्या छे? नपुंसक छे? के जोडलुं छे? तेनी परीक्षा करवानां चिह्नो.

१९ जे गर्भवतीना जमणा स्तनमां दूध प्रथम आवे, जमणी आंख मोटी थई जाय, चालवामां प्रथम जमणो साथळ खेंचाय, जमणो साथल पुष्ट थाय, घणुं करीने पुल्लिंग नामोवाळा पदार्थोनीज इच्छा थाय, स्वप्नमां पण पद्म उत्पल कुमुद तथा अंबाडा वगेरे पुल्लिंग पदार्थोज जोवामां आवे अने मुखनी कांति प्रसन्नतावाळी देखाय तेने वैद्ये 'दीकरो आवशे' एम केहेवुं.

उपर कहेलां लक्षणोथी उलटां लक्षणो जोवामां आवे तो 'दीकरी आवशे' एम केहेवुं.

जे गर्भवतीनां बन्ने पडखां उंचां थई गयां होय, पेट आगळ नीकळी गयुं होय अने उपर कहेलां पुरुषगर्भनां केटलांएक लक्षणो तथा कन्यागर्भनां पण केटलांएक लक्षणो जोवामां आवतां होय तेने 'नपुंसक आवशे' एम वैद्ये मनमां जाणवुं.

जे गर्भवतीनुं पेट मध्य भागमां नमी गयुं होय अने पाणीनी कोठी जेवुं थई गयुं होय (तथा रोमावळी पण नमी गई होय) तेने जोडलुं आवशे एम वैद्ये जाणी लेवुं.

२० भवन्ति चात्र ॥

देवताब्राह्मणपराः शौचाचारहिते रताः । महागुणान्प्रसूयन्ते विपरीतास्तु निर्गुणान् ॥

माताओनां धर्माचरणोथी गुणवान् संतानोनी उत्पत्ति अने अधर्माचरणोथी दुष्ट संतानोनी उत्पत्ति.

२० आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "देवताओनी तथा ब्राह्मणोनी सेवामां तत्पर रेहेनारी अने पवित्रतामां, सदाचारमां तथा हितमां आसक्त रेहेनारी गर्भवतीओ उत्तम गुणोवाळां संतानोने जन्म आपे छे अने उपर कहेली देवसेवा आदि क्रियाओथी उलटी क्रियाओमां तत्पर रेहेनारी गर्भवतीओ अधम गुणोवाळां संतानोने जन्म आपे छे.

२१ अङ्गप्रत्यङ्गनिर्वृत्तिः स्वभावादेव जायते ।
अङ्गप्रत्यङ्गनिर्वृत्तौ ये भवन्ति गुणागुणाः ॥
ते ते गर्भस्य विज्ञेया धर्माधर्मनिमित्तजाः ॥

अवयवोनी बनावटनां अने अवयवोमां गुणदोषोनी बनावटनां भिन्न भिन्न कारणो.

२१ गर्भनां अंगोनी तथा प्रत्यंगोनी बनावट स्वभावथीज थाय छे अने ते अवयवोमां जे गुणदोषो थाय छे तेओनी बनावट पूर्वजन्मोमां करेलां पापपुण्योथी थाय छे."

अध्याय ४ थो.

१ अथातो गर्भव्याकरणं नाम शारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'गर्भव्याकरणशारीर' ए नामना चोथा अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अग्निः सोमो वायुः सत्त्वं रजस्तमः पञ्चेन्द्रियाणि भूतात्मेति प्राणाः ॥

प्राणो (शरीरने जीवाडनारा मुख्य पदार्थो.)

२ सघळा आग्नेय पदार्थोनी शक्तिरूपपणाथी रहेलो अग्निदेव, सघळा जलात्मक पदार्थोनी शक्तिरूपपणाथी रहेलो सोमदेव (चंद्र,) प्राणापानादिक रूपे रहेलो वायुदेव, सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण, पांच ज्ञानेंद्रियो अने जीवात्मा एटला पदार्थो शरीरने जीवाडवामां मुख्य अधिकार धरावनारा होवाथी प्राण केहेवाय छे.

३ तस्य खल्वेवम्प्रवृत्तस्य शुक्रशोणितस्याभिपच्यमानस्य क्षीरस्येव सन्तानिकाः सप्त त्वचो भवन्ति ॥

तासां प्रथमाऽवभासिनी नाम या सर्ववर्णानवभासयति पञ्चविधां च छायां प्रकाशयति सा व्रीहेरष्टादशभागप्रमाणा सिध्मपद्मिनीकण्टकाधिष्ठानम् ।

द्वितीया लोहिता नाम षोडशभागप्रमाणा तिलकालकन्यच्छव्यङ्गाधिष्ठानम् ।

तृतीया श्वेता नाम द्वादशभागप्रमाणा चर्मदलाजगल्लीमशकाधिष्ठानम् ।

चतुर्थी ताम्रा नामाष्टभागप्रमाणा विविधकिलासकुष्ठाधिष्ठानम् ।

पञ्चमी वेदिनी नाम व्रीहिपञ्चभागप्रमाणा कुष्ठविसर्पाधिष्ठानम् ।

षष्ठी रोहिणी नाम व्रीहिप्रमाणा ग्रन्थ्यपच्यर्बुदश्लीपदगलगण्डाधिष्ठानम् ।

सप्तमी मांसधरा नाम व्रीहिद्वयप्रमाणा भगन्दरविद्रध्यर्शोधिष्ठानम् ।

१ गर्भसंबंधी प्राणोना, त्वचाओना, कलाओना तथा यकृत् प्लीह वगेरेना व्याख्यानविषेनो.

यदेतत्प्रमाणं निर्दिष्टं तन्मांसलेष्ववकाशेषु न ललाटे सूक्ष्माङ्गुल्यादिषु च। यतो वक्ष्यत्युदरेषु व्रीहिमुखेनाङ्गुष्ठोदरप्रमाणमवगाढं विध्येदिति ॥

सात त्वचाओ (चामडीओ.)

३ जेमां जीवात्माए प्रवेश कर्यो होय छे एवां ए गर्भाशयमां रहेलां वीर्य अने रज पाकवा लागतां जेम पाकवा लागेला दूधनी तर थाय छे तेम ए वीर्यनी तथा रजनी सात त्वचाओ थाय छे.

एओमां पेहेली त्वचानुं नाम **अवभासिनी** छे के जे त्वचा भ्राजक नामना पित्तवते गौर आदि सघळा वर्णोने तथा पंचभूतात्मक कांतिने प्रकाशित करे छे. ए अवभासिनी वीश भागोमां वेहेंचाएली चोखानी साळनी जाडाईना अढार भागोना जेटली जाडाईवाळी छे. ए चामडी सिध्म तथा पद्मिनीकंटक नामना रोगोना स्थानकरूप छे. (जवनुं अने चोखानी शाळनुं प्रमाण एकज छे.)

बीजी त्वचानुं नाम **लोहिता** छे के जे त्वचा वीश भागोमां वेहेंचाएली चोखानी शाळनी जाडाईना सोळ भागोना जेटली जाडाईवाळी छे. ए चामडी तिलकालक, न्यच्छ अने व्यंग नामना रोगोना स्थानकरूप छे.

त्रीजी त्वचानुं नाम **श्वेता** छे के जे त्वचा वीश भागोमां वेहेंचाएली चोखानी साळनी जाडाईना बार भागोना जेटली जाडाईवाळी छे. ए चामडी चर्मदल, अजगल्ली, अने मशक ए नामना रोगोना स्थानकरूप छे.

चोथी त्वचानुं नाम **ताम्रा** छे के जे त्वचा वीश भागोमां वेहेंचाएली चोखानी साळनी जाडाईना आठ भागोना जेटली जाडाईवाळी छे. ए चामडी अनेक प्रकारना किलास नामना कोढोना स्थानकरूप छे.

पांचमी त्वचानुं नाम **वेदिनी** छे के जे त्वचा वीश भागोमां वेहेंचाएली चोखानी साळनी जाडाईना पांच भागोना जेटली जाडाईवाळी छे. ए चामडी विसर्पना तथा उपर लखेला शिवायना बीजा कोढोना स्थानकरूप छे.

छठ्ठी त्वचानुं नाम **रोहिणी** छे के जे त्वचा चोखानी साळनी अथवा जवनी जाडाई जेटली जाडाईवाळी छे. ए चामडी ग्रंथि, अर्बुद, श्लीपद तथा गलगंड ए रोगोना स्थानकरूप छे.

सातमी त्वचानुं नाम **मांसधरा** छे के जे त्वचा चोखानी बे साळनी अथवा बे जवनी जाडाई जेटली जाडाईवाळी छे. ए चामडी भगंदर, विद्रधि अने अरश ए रोगोना स्थानकरूप छे.

त्वचाओनी जाडाईनां जे प्रमाणो केहेवामां आव्यां ते प्रमाणो घणा मांसोवाळा प्रदेशो उपरनी त्वचाओनां समजवां. पण ललाट उपरनी के सूक्ष्म आंगळीओ वगेरे प्रदेशो उपरनी त्वचाओनां समजवां नहीं. केम के उदर रोगोना विषयमां 'व्रीहिमुख नामना शस्त्र थी अंगुठाना मध्य भाग जेटलो उंडो वेध करवो' एम केहेवामां आवशे. (चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायनो १३ मो विषय जुवो.)

४ कलाः खल्वपि सप्त सम्भवन्ति धात्वाशयान्तरमर्यादाः ॥

भवतश्चात्र ॥

यथा हि सारः काष्ठेषु च्छिद्यमानेषु दृश्यते।
तथा धातुर्हि मांसेषु च्छिद्यमानेषु दृश्यते ॥
स्नायुभिश्च प्रतिच्छन्नान्संततांश्च जरायुणा ।
श्लेष्मणा वेष्टितांश्चापि कलाभागांस्तु तान्विदुः॥

तासां प्रथमा मांसधरा नाम यस्यां मांसे शिरास्नायुधमनीस्रोतसां प्रताना भवन्ति ॥

भवति चात्र ॥

यथा बिसमृणालानि विवर्द्धन्ते समन्ततः ।
भूमौ पङ्कोदकस्थानि तथा मांसे शिरादयः ।

द्वितीया रक्तधरा नाम मांसस्याभ्यन्तरतस्तस्यां शोणितं विशेषतश्च शिरासु यकृत्प्लीह्नोश्च भवति ॥

भवति चात्र ॥
वृक्षाद्यथाभिप्रहतात्क्षीरिणः क्षीरमावहेत् ।
मांसादेवं क्षतात्क्षिप्रं शोणितं सम्प्रसिच्यते ॥

तृतीया मेदोधरा नाम मेदो हि सर्वभूतानामुदरस्थमण्वस्थिषु महत्सु च मज्जा भवति ।

भवति चात्र ॥
स्थूलास्थिषु विशेषेण मज्जा त्वभ्यन्तराश्रितः ।
अथेतरेषु सर्वेषु सरक्तं मेद उच्यते ॥
शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वसा परिकीर्तिता ।

चतुर्थी श्लेष्मधरा नाम सर्वसन्धिषु प्राणभृतां भवति ॥

भवति चात्र ॥
स्नेहाभ्यक्ते यथा त्वक्षे चक्रं साधु प्रवर्तते ।
सन्धयः साधु वर्तन्ते संश्लिष्टाः श्लेष्मणा तथा ॥

पञ्चमी पुरीषधरा नाम यान्तःकोष्ठे मलमभिविभजते पक्वाशयस्था ॥

भवति चात्र ॥
यकृत्समन्तात्कोष्ठं च तथान्त्राणि समाश्रिता ।
उण्डुकस्थं विभजते मलं मलधरा कला ॥

षष्ठी पित्तधरा नाम या चतुर्विधमन्नपानमुपयुक्तमामाशयात्प्रच्युतं पक्वाशयोपस्थितं धारयति ॥

भवति चात्र ॥
अशितं खादितं पीतं लीढं कोष्ठगतं नृणाम् ।
तज्जीर्यति यथाकालं शोषितं पित्ततेजसा ॥

सप्तमी शुक्रधरा नाम या सर्वप्राणिनां सर्वशरीरव्यापिनी ॥

भवन्ति चात्र ॥
यथा पयसि सर्पिस्तु गुडश्चेक्षौ रसो यथा ।
शरीरेषु तथा शुक्रं नृणां विद्याद्भिषग्वरः ॥
द्व्यङ्गुले दक्षिणे पार्श्वे बस्तिद्वारस्य चाप्यधः ।
मूत्रस्रोतःपथाच्छुक्रं पुरुषस्य प्रवर्तते ॥
कृत्स्नदेहाश्रितं शुक्रं प्रसन्नमनसस्तथा ।
स्त्रीषु व्यायच्छतश्चापि हर्षात्तत्सम्प्रवर्तते ॥

सात कलाओ (आशयोनां अंतरोमां सीमाडाओरूप क्लेदो)

४ कलाओ पण सात छे के जेओ धातुओना एटले शरीरनुं धारण करनारा पदार्थोना जूदा जूदा आशयोनां (स्थानोनां) अंतरोमां सीमाडाओरूप छे. आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेम कापवामां आवतां काष्ठोमां तेओनी अंदर सार जोवामां आवे छे तेम शरीरनां मांसोने कापतां तेओनी अंदर धातु जोवामां आवे छे. धातुओना जूदा जूदा आशयोनां अंतरोमां स्नायुओथी ढंकाएला, गर्भनी ओळना जेवा पडदाथी वीटाएला अने कफथी पण वीटाएला जे क्लेदोरूप सीमाडाओ छे तेओ 'कलाओ' केहेवाय छे."

सात कळाओमां पेहेली **मांसधरा** नामनी कळा छे के जेनी अंदरना मांसमां शिराओना, स्नायुओना, धमनीओना तथा स्रोतोना विस्तारो छे. आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'जेम पृथ्वीमां कादववाळा पाणीनी अंदर रहेला कमळना तंतु तथा नाळ वगेरे अवयवो चोमेर वध्या करे छे तेम मांसनी अंदर रहेला शिराओ वगेरे भागो चोमेर वध्या करे छे.'

बीजी **रक्तधरा** नामनी कळा छे के जेमां मांसनी अंदर रुधिर रह्युं छे. रुधिर विशेषे करीने तो शिराओमां, यकृत्मां अने प्लीहमां रेहे छे. आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'जेम छीरवाळा वृक्षने टोचो देवातां तेमांथी तुरत छीर स्रवे छे तेम मांसने टोचो देवातां तेमांथी तुरत लोही स्रवे छे.' (धातुओना क्रममां रस पछी रुधिर अने रुधिर पछी मांस गणाव्युं छे ते पोषणना अनुक्रमने अनुसरीने गणाव्युं छे अने अहीं मांस पछी रुधिर गण्युं छे ते शरीरमां धातु-

ओनी स्थितिना क्रमने अनुसरीने गण्युं छे एम समजवुं. डल्हन.)

त्रीजी **मेदोधरा** नामनी कला छे. मेद सर्व प्राणिओनां उदरोमां नाहानां अस्थिओनी अंदर रहेलुं छे. जोके अस्थिओनी अंदर मज्जा रहेली छे एम केहेवामां आव्युं छे तो पण तेमां एम समजवानुं छे के मोटां अस्थिओ-नी अंदर मज्जा रहेली छे. आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कहेलुं छे के 'मज्जा विशेषे करी जाडां अस्थिओनी अंदर रहे छे. बीजां सघळां अस्थिओमां तो रुधिर सहित मेदज रेहे छे. वसा (चरबी) नामनो उप-धातु छे ते तो शुद्ध मांसनो स्नेहज छे.'

चोथी **श्लेष्मधरा** नामनी कला छे. कफनुं धारण करनारी ए कला प्राणिओना सघळा संधिओमां (सांधाओमां) होय छे. आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'जेम पईडानी धरी तेलथी उंगेली होवाने लीधे पईडुं सारी रीते चाले छे तेम शरीरना संधिओ कफथी खरडाएला होवाने लीधे शरीर सारी रीते चाले छे.'

पांचमी **पुरीषधरा** नामनी कला छे. विष्टानुं धारण करनारी ए कला पक्वाशयमां रहेली छे अने मळनी पोटलीमां रहेलां विष्टामूत्रोने जूदां पाडे छे. आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंत-रिए स्वमुखथी कहेलुं छे के 'उपर यकृत् प्लीह वगेरेने तथा आंतरडांओने अने नीचे गुदा सुधीना कोठाने आश्रित थई रहेली पुरीषधरा नामनी कला पोटलीमां रहेला मळोने जूदा पाडे छे.'

छट्ठी **पित्तधरा** नामनी कला छे. जठराग्नि-रूप पित्तनुं धारण करनारी (अने पक्वाशयमां रहेली) ए कला ज्यारे उपयोग करवामां आवेलुं भक्ष्य तथा पेय वगेरे चारे प्रकारनुं अन्नपान आमाशयमांथी भ्रष्ट थईने पक्वाशयमां जवा तैयार थाय छे त्यारे ते अन्नपानने पाकनेमाटे धरी राखे छे. आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'जमेलुं, खाधेलुं, पीधेलुं तथा चाटेलुं जे कांई अन्नपान माणसोना कोठामां रहेलुं होय छे ते अन्नपान ते ते द्रव्योना लघुगुरुपणाने अनुसरता पाकना काळ प्रमाणे तथा जठराग्निना तीव्रत्व-मंदत्वादिकने अनुसरी जठराग्निना तेजथी शोषित थईने (पाकीजईने) पची जाय छे.'

सातमी **शुक्रधरा** नामनी कला छे. वीर्यनुं धारण करनारी ए कला सर्व प्राणिओनां सघळां शरीरमां व्यापी रहेली छे. आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'जेम दूधमां घी रहेलुं छे अने शेलडीमां रसरूप गोळ रहेलो छे[१] तेम माणसोनां शरीरोमां वीर्य रहेलुं छे एम उत्तम वैद्ये जाणवुं. बे आंगळ जेटली जमणी बाजुमां मूत्राशयना द्वारनी नीचे मूत्रना स्रोतना छिद्रमांथी पुरुषनुं वीर्य प्रवर्त्ते छे. वीर्य के जे स-घळा शरीरमां रहेलुं छे ते ज्यारे पुरुष कामदेवथी प्रसन्न मनवाळो थाय छे अने स्त्रीओमां मैथुनरूप व्यायाम करे छे त्यारे हर्षने लीधे शरीरमांथी जूदुं पडीने मूत्रना मार्गथी प्रवर्त्ते छे.'

५ गृहीतगर्भाणामार्तववहानां स्रोतसां व-र्त्मान्यवरुध्यन्ते गर्भेण तस्माद्गृहीतगर्भाणामार्तवं न दृश्यते ।

ततस्तदधः प्रतिहतमूर्ध्वमागतमपरश्चोपची-यमानमपरेत्यधीयते । शेषश्चोर्ध्वतरमागतं प-योधरावभिप्रतिपद्यते तस्माद्गर्भिण्यः पीनोन्न-तपयोधरा भवन्ति ॥

---

१ शेलडीनुं दृष्टांत मंदवीर्यवाळा पुरुषोने माटे छे. केम के जेम शेलडीनो रस बहु पीलायाथी नीकळे छे तेम मंदवीर्यवाळाओनुं वीर्य मैथुनना अतिपरिश्रमथी नीकळे छे.

गर्भवती स्त्रीओने रज नहीं प्रवर्त्तवानुं कारण अने तेओना अंदर रोकाएला रजनी शी व्यवस्था थाय छे ते.

५ जेओने गर्भ रह्यो होय छे एवी स्त्रीओनां शरीरोमां रजनुं वहन करनारां स्रोतोना मार्गो गर्भथी रोकाई जाय छे एटला माटे गर्भिणीओनुं रज बाहार प्रवर्त्ततुं जोवामां आवतुं नथी.

नीचे प्रवर्त्ततां प्रतिघात पामीने उंचुं आवेलुं गर्भ रेहेवाना समयनुं रज तथा ते पछीनुं पण रज मिश्रित थईने वधतां वधतां अपरा बनी जाय छे के जेने स्त्रीओ 'ओळ' एवुं नाम आपे छे. ओळ बनवामांथी अवशेष रेहेलो ए रजनो अमुक भाग अत्यंत उंचे चडीने स्तनोमां जाय छे के जेथी गर्भिणी स्त्रीओ उंचां तथा पुष्ट स्तनोवाळी बनी जाय छे.

६ गर्भस्य यकृत्प्लीहानौ शोणितजौ । शोणितफेनप्रभवः फुप्फुसः । शोणितकिट्टप्रभव उण्डुकः ॥

गर्भमां यकृत्, प्लीहा, पुप्फुस तथा मळनी पोटली एओनी उत्पत्ति.

६ गर्भनी यकृत् (जमणा पडखांनी गांठ) तथा प्लीह (डाबा पडखांनी गांठ–बरल) एओ रुधिरथी निष्पन्न थाय छे. पुप्फुस (फेफसुं) रुधिरना फीणथी निष्पन्न थाय छे अने मळनी पोटली रुधिरना कीटांथी निष्पन्न थाय छे.

७ असृजः श्लेष्मणश्चापि यः प्रसादः परो मतः ।
तं पच्यमानं पित्तेन वायुश्चाप्यनुधावति ॥
ततोऽस्यान्त्राणि जायन्ते गुदं बस्तिश्च देहिनः ।

गर्भमां आंतरडां, गुदा तथा मूत्राशय एओनी उत्पत्ति.

७ रुधिरनो अने कफनो जे अतिउत्तम स्वच्छ भाग होय छे तेने पित्त पकावे छे अने वायु ए पित्तने बळ आप्या करे छे. ए स्वच्छ भागमांथी गर्भनां आंतरडां, गुदा अने मूत्राशय निष्पन्न थाय छे.

८ उदरे पच्यमानानामाध्मानाद्रुक्मसारवत् ॥
कफशोणितमांसानां सारो जिह्वा प्रजायते ।

गर्भनी जीभनी उत्पत्ति.

८ उपर कह्या प्रमाणे वायुए प्रदीप्त करातुं पित्त कफने, रुधिरने अने मांसने पकावे छे. जेम गाळवामां आवता सुवर्णमांथी सार निष्पन्न थाय छे तेम पकाववामां आवतां ए कफ, रुधिर अने मांस एओमांथी जे सार निष्पन्न थाय छे ते सारथी गर्भनी जीभ बने छे.

९ यथार्थमुष्मणा युक्तो वायुः स्रोतांसि दारयेत् ।
अनुप्रविश्य पिशितं पेशीर्विभजते तथा ।
मेदसः स्नेहमादाय शिरा स्नायुत्वमाप्नुयात् ॥
शिराणां च मृदुः पाकः स्नायूनां च ततः खरः ।
आशय्याऽभ्यासयोगेन करोत्याशयसम्भवम् ॥

गर्भनां स्रोतोनी, पेशीओनी, शिराओनी, स्नायुओनी अने आशयोनी उत्पत्ति.

९ पित्तथी संयुक्त थएलो वायु, जेटलां शरीरनी स्थितिमां उपयोगी थाय छे तेटलां स्रोतोने कोतरी आपे छे. ए वायु मांसमां प्रवेश करीने मांसनी पेशीओने जूदी जूदी करी आपे छे. एज वायु मेदमांथी स्नेहने लईने तेमांथी शिराओने तथा स्नायुओने बनावे छे. शिराओनो पाक कोमळ थाय छे अने स्नायुओनो पाक ते करतां कठण थाय छे. वायुज पोताना हमेशना अभ्यासथी स्थिति करीने आशयोने बनावे छे.

१० रक्तमेदःप्रसादाद् बुक्कौ मांसासृक्कफमेदःप्रसादाद्वृषणौ ॥

बुक्काओनी अने वृषणोनी उत्पत्ति.

१० रुधिरना अने मेदना सारमांथी बुक्काओ (कूखना बे गोळाओ) बने छे अने मांस, रुधिर, कफ तथा मेद एओना सारमांथी बे वृषण बने छे.

११ शोणितकफप्रसादजं हृदयं यदाश्रया हि धमन्यः प्राणवहाः । तस्याधो वामतः प्लीहा फुप्फुसश्च दक्षिणतो यकृत्क्लोम च ॥

तद्धृदयं विशेषेण चेतनास्थानमतस्तस्मिंस्तमसावृते सर्वप्राणिनः स्वपन्ति ॥

भवति चात्र ॥

पुण्डरीकेण सदृशं हृदयं स्यादधोमुखम् ।
जाग्रतस्तद्विकसति स्वपतश्च निमीलति ॥

हृदयनी उत्पत्ति, हृदयमां चेतनानुं विशेष रेहेवुं अने निद्राथी हृदयनुं निमीलित थवुं (बीडावुं.)

११ रुधिर अने कफ एओना सारमांथी हृदय निष्पन्न थाय छे. प्राणनुं वहन करनारी धमनीओ हृदयनो आश्रय करीने रहेली छे. हृदयनी नीचे डाबा भाग तरफ प्लीहा (बरल) तथा फेफसुं छे अने जमणा भाग तरफ यकृत् तथा तिलकनामनुं तरश लागवानुं स्थान छे. (आ तिलकनी उत्पत्ति रुधिरथी थाय छे.)

जोके सघळुं शरीर चेतनानुं स्थानक छे तो पण हृदय विशेषे करी चेतनानुं स्थानक छे एटला माटे ते हृदय ज्यारे वृद्धि पामेला तमोगुणथी आवरण पामे छे त्यारे प्राणिओ उंघी जाय छे. आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'हृदय कमळ जेवुं छे अने ते नीचा मोहोडावाळुं अर्थात् उंधा वाळेला कमळ जेवुं छे. जागता माणसनुं हृदय प्रफुल्लित रेहे छे अने उंघेला माणसनुं हृदय बीडाई जाय छे.'

१२ निद्रां तु वैष्णवीं पाप्मानमुपदिशन्ति सा स्वभावत एव सर्वप्राणिनोऽभिस्पृशति ॥

तत्र यदा संज्ञावहानि स्रोतांसि तमोभूयिष्ठः श्लेष्मा प्रतिपद्यते तदा तामसी नाम निद्रा सम्भवत्यनवबोधिनी सा प्रलयकाले ।

तमोभूयिष्ठानामहःसु निशासु च भवति । रजोभूयिष्ठानामनिमित्तम् । सत्त्वभूयिष्ठानामर्द्धरात्रे ।

क्षीणश्लेष्मणामनिलबहुलानां मनः शरीराभितापवतां च नैव सा वैकारिकी भवति ॥

निद्रा, निद्रानुं कारण अने निद्राना भेद.

१२ जे निद्रा छे ते विष्णुनी मायाज छे अने ते सघळा शुभ व्यापारोने रोकनारी होवाने लीधे पापरूपज छे एम केहेवामां आवे छे. ए निद्रा स्वभावथीज सर्व प्राणिओने प्राप्त थाय छे. ए निद्रा तामसी, स्वाभाविकी अने वैकारिकी एम त्रण प्रकारनी छे.

जेमां तमोगुण अधिक छे एवो कफ ज्यारे संज्ञानुं वहन करनारां स्रोतोमां प्राप्त थाय छे त्यारे तामसी निद्रा थाय छे के जे प्राणीओने संज्ञा आववा देतीज नथी. आ तामसी निद्रा प्रलयकालमांज प्राप्त थाय छे. (जोके सघळा प्रकारनी निद्राओ तमोगुणथी थाय छे तो पण आ निद्रामां तमोगुणनुं अत्यंत आधिक्य छे तेथी तेने '**तामसी**' नाम आपेलुं छे,

जे निद्रा माणसोने दररोज आवे छे ते **स्वाभाविकी** केहेवाय छे. जे माणसोमां तमोगुण अधिक होय छे तेओने दिवसोमां तथा रात्रिओमां पण ए निद्रा प्राप्त थाय छे. जे माणसोमां रजोगुण अधिक होय छे तेओने रजोगुणना चंचलपणाने लीधे ए निद्रा कोई वखते दिवसमां प्राप्त थाय छे अने कोई वखते रात्रिमां प्राप्त थाय छे. जे माणसोमां सत्वगुण अधिक होय छे ते माणसोने सत्वगुणनी अल्पता थई जवाना अने तमोगुणनी वृद्धि थवाना समयरूप अधराते ए निद्रा प्राप्त थाय छे अर्थात् सात्विक माणसो अधरातेज सूवे छे.

विकारोवाळां माणसोने जे निद्रा प्राप्त थाय छे ते **वैकारिकी** केहेवाय छे. जेओनो कफ क्षीण थयो होय तथा वायु वृद्धि पाम्यो होय एवां

माणसोने तथा जेओने मनमां के शरीरमां अभिताप होय एवां माणसोने निद्रा आवतीज नथी अने वखतपर जे आवे छे ते वैकारिकीज (विकारोथी थएलीज) होय छे.

(श्रमादिकथी थाकी जवाने लीधे जीवात्मा ज्यारे विषयोथी निवृत्त थाय छे त्यारे पण माणसोने निद्रा आवे छे.)

१३ भवन्ति चात्र ॥

हृदयं चेतनास्थानमुक्तं सुश्रुत देहिनाम् ।
तमोऽभिभूते तस्मिंस्तु निद्रा विशति देहिनः ।
निद्राहेतुस्तमः सत्त्वं बोधने हेतुरुच्यते ।
स्वभाव एव वा हेतुर्गरीयान्परिकीर्त्यते ॥
पूर्वदेहानुभूतांस्तु भूतात्मा स्वपतः प्रभुः ।
रजोयुक्तेन मनसा गृह्णात्यर्थाञ्छुभाशुभान् ॥
करणानां तु वैकल्ये तमसाभिप्रवर्द्धिते ।
अस्वपन्नपि भूतात्मा प्रसुप्त इव चोच्यते ॥

जाग्रत थवानुं अने निद्रामां स्वप्न थवानुं तथा सुषुप्ति थवानुं कारण.

१३ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'हे सुश्रुत! प्राणिओनुं हृदय के जे चेतनानुं मुख्य स्थानक केहेवाय छे ते ज्यारे तमोगुणथी अभिभूत थई जाय छे त्यारे प्राणिओने निद्रा प्राप्त थाय छे. निद्रानुं कारण तमोगुण छे अने जागवानुं कारण सत्वगुण छे अथवा स्वभावज तेओमां प्रबल कारणरूप छे एम केहेवामां आवे छे. सूतेला शरीरपर मालेकी धरावतो जीवात्मा निद्राना समयमां पण रजोगुणे प्रेरेला मनथी, पूर्व देहमां अने वर्त्तमान देहमां पण अनुभवेला शुभाशुभ अर्थोनुं ग्रहण करे छे ए स्वप्न केहेवाय छे. ज्यारे तमोगुण मनसहित तमाम इंद्रियोने विकल करी नाखे छे त्यारे कशा पदार्थनुं ग्रहण बनी शकतुं नथी ए अवस्था सुषुप्ति केहेवाय छे. जीवात्मा के जे पोते निर्विकार होवाने लीधे कदी पण कोई अवस्थाने प्राप्त थतो नथी ते पण ए समयमां जाणे सुषुप्ति पाम्यो होय एवो प्रतीत थाय छे.'

१४ सर्वर्तुषु दिवास्वापः प्रतिषिद्धोऽन्यत्र ग्रीष्मात् । प्रतिषिद्धेष्वपि तु बालवृद्धस्त्रीकर्षितक्षतक्षीणमद्यनित्ययानवाहनाध्वकर्मपरिश्रान्तानामभुक्तवतां मेदःस्वेदकफरसरक्तक्षीणानामजीर्णिनां च मुहूर्तं दिवा स्वपनमप्रतिषिद्धम् । रात्रावपि जागरितवतां जागरितकालादर्द्धमिष्यते दिवास्वप्नः । विकृतिर्हि दिवास्वप्नो नाम तत्र स्वपतामधर्मः सर्वदोषप्रकोपश्च । तत्प्रकोपाच्च कासश्वासप्रतिश्यायशिरोगौरवाङ्गमर्दोऽरोचकज्वराग्निदौर्बल्यानि भवन्ति । रात्रावपि जागरितवतां वातपित्तनिमित्तास्त एवोपद्रवा भवन्ति ॥

दिवसे उंघवानो तथा राते उजागरो करवानो निषेध, निषेधनो प्रतिप्रसव अने निषेधनां कारणो.

१४ ग्रीष्म ऋतु शिवाय बीजी कोई पण ऋतुमां दिवसे उंघवुं नहीं. बालक, वृद्ध, मैथुनथी कर्षित थएल, क्षतथी क्षीण थएल, हमेश मद्य पीवाना अभ्यासी, हमेश फरनारा, वाहन उपर बेसवाथी थाकेला, पंथ करवाथी थाकेला, काम करवाथी थाकेला, उपवासी, क्षीण मेदवाळा, क्षीण पसीनावाळा, क्षीण कफवाळा, क्षीण रसवाळा, क्षीण रुधिरवाळा अने अजीर्णवाळा एओने सघळी ऋतुओमां बे घडीवार सुधी दिवसनी निद्रा करवानो निषेध नथी. जेओए रातनो उजागरो कर्यो होय तेओए पण उजागरो करवाना वखतथी अरधा वखत सुधी दिवसमां सुई रेहेवुं योग्य छे. दिवसमां निद्रा प्राप्त थाय ए एक जातनी विकृतिज छे. दिवसे निद्रा करवाथी अधर्म थाय छे एटलुंज नहीं पण सघळा दोषोनो प्रकोप थाय छे अने ए प्रकोपथी खांसी, श्वास, प्रतिश्याय, (सळीखम) माथानुं भारेपणुं, अंगोनुं भांगवुं, अरुचि, ज्वर अने मंदाग्निपणुं एटला रोगो उत्पन्न थाय छे. राते उजागरो करनाराओने

पण वायुना तथा पित्तना प्रकोपने लीधे उपर कहेलाज उपद्रवो थाय छे.

१५ भवन्ति चात्र ॥

तस्मान्न जागृयाद्रात्रौ दिवास्वप्नं च वर्जयेत् ।
ज्ञात्वा दोषकरावेतौ बुधः स्वप्नं मितं चरेत् ॥
अरोगः सुमना ह्येवं बलवर्णान्वितो वृषः ।
नातिस्थूलकृशः श्रीमान्नरो जीवेत्समाः शतम् ॥

दिवसनी निद्रानो अने रातना उजागरानो त्याग करवाथी लाभ.

१५ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "राते उजागरो करवो नहीं अने दिवसे निद्रा करवी नहीं. रातनो उजागरो अने दिवसनी निद्रा ए बन्नेने दोषकारी जाणीने समजू माणसे निद्रा तथा जागवुं नियम सरज करवां जोईए. आ प्रमाणे करवाथी माणस रोगरहित रेहे छे, प्रसन्न मनवाळो रेहे छे, बळथी तथा सारा वर्णथी युक्त रेहे छे, स्त्रीओनी साथे रमण करवानी शक्तिवाळो रेहे छे, बहु जाडो के बहु पातळो थतो नथी, शरीरमां शोभावाळो रेहे छे अने सो वर्ष सुधी जीवे छे.

१६ निद्रा सात्म्यीकृता यैस्तु रात्रौ च यदि वा दिवा ।
न तेषां स्वपतां दोषो जाग्रतां वा विधीयते ॥

जेओए निद्राने स्वाधीनज करी लीधी होय तेओने गमे त्यारे उजागराथी के निद्राथी कशो रोग थतो नथी.

१६ जेओए अहोरात्रमां धारे ते समयनी निद्राने अभ्यासथी सात्म्यरूपज करी लीधेल होय तेओने दिवसे के राते निद्रा करवाथी के उजागरो करवाथी कशो रोग थतो नथी.

१७ निद्रानाशोऽनिलात्पित्तान्मनस्तापात्क्षयादपि ।
सम्भवत्यभिघाताच्च प्रत्यनीकैः प्रशाम्यति ॥

निंद्राना नाशनां निदानो अने सामान्य चिकित्सा.

१७ वायुना प्रकोपथी, पित्तना प्रकोपथी, मनना परितापथी, क्षयथी अने अभिघातथी निद्रानो नाश थाय छे. ए निद्रानो नाश वायु वगेरे निदानोने टाळनारा अभ्यंग वगेरे उपायोथी शांत थाय छे.

१८ निद्रानाशेऽभ्यङ्गयोगो मूर्ध्नि तैलनिषेवणम् ।
गात्रस्योद्वर्तनं चैव हितं संवाहनानि च ॥
शालिगोधूमपिष्टान्नभक्ष्यैरैक्षवसंस्कृतैः ।
भोजनं मधुरं स्निग्धं क्षीरमांसरसादिभिः ॥
रसैर्बिलेशयानां च विष्किराणां तथैव च ॥
द्राक्षासितेक्षुद्रव्याणामुपयोगो भवेन्निशि ।
शयनासनयानानि मनोज्ञानि मृदूनि च ॥
निद्रानाशे तु कुर्वीत तथान्यान्यपि बुद्धिमान् ।

निद्राना नाशनी चिकित्सानुं निरूपण.

१८ निद्रानो नाश थयो होय तो सारीरीते तैलनो अभ्यंग कराववो, माथामां तैल घसाववुं, शरीरने लोट वगेरे चोळावीने स्वच्छ करवुं अने अंगो चंपाववां ए हितकारी थाय छे. शेलडीना खांड वगेरे पदार्थोथी जेओने संस्कार आप्या होय एवां चोखानां, घउनां तथा अडद वगेरेनां पीठांनां भक्ष्यो खावाथी, दूधथी तथा मांसना रसा वगेरेथी स्निग्ध करेलुं मधुर अन्न जमवाथी, बिलेशय प्राणिओनां तथा विष्किर पक्षीओनां मांसोना रसाओनो उपयोग करवाथी अने राते द्राक्षनो, साकरनो तथा बीजा पण शेलडीना पदार्थोनो उपयोग करवाथी निद्रानो नाश नष्ट थई जाय छे. निद्रानो नाश थयो होय तो बुद्धिमान् पुरुषे शयनो, आसनो तथा वाहनो अतिसुंदर अने कोमळ बनाववां तथा एवाज प्रकारना बीजा उपायो पण करवा.

१९ वमेन्निद्रातियोगे तु कुर्यात्संशोधनानि च ।
लङ्घनं रक्तमोक्षं च मनोव्याकुलनानि च ॥

निद्राना अतियोगनी चिकित्सा.

१९ जेने निद्रानो अतियोग थयो होय अर्थात् बहुज निद्रा आव्या करती होय तेणे वमन विरेचन वगेरे संशोधनो करवां, लंघन करवां, फ्स खोलाववा वगेरेथी लोही कहडाववुं अने जेओथी मन व्याकुल थाय एवा उद्योगो करवा. (सर्वमां वमन मुख्य छे.)

२० कफमेदोविषार्तानां रात्रौ जागरणं हितम्॥
दिवास्वप्नश्च तृट्शूलहिक्काऽजीर्णातिसारिणाम्

अमुक रोगीओने राते उजागरो करवानो अने अमुक रोगीओने दिवसे निद्रा करवानो विधि.

२० कफथी, मेदथी के विषथी पीडाएलाओने रातनो उजागरो हितकारी थाय छे अने तरश, शूळ, हेडकी, अजीर्ण के अतिसार एओथी पीडाएलाओने दिवसनी निद्रा हितकारी थाय छे.

२१ इन्द्रियार्थेष्वसंप्राप्तिर्गौरवं जृम्भणं क्लमः ॥
निद्रार्तस्येव यस्येहा तस्य तन्द्रां विनिर्दिशेत् ।

तंद्रानुं लक्षण.

२१ इंद्रियोथी विषयोनुं बरावर ग्रहण थाय नहीं, शरीरमां भारेपणुं रह्या करे, बगासां आव्या करे, क्लम रह्या करे अने निद्राथी घेराएलाना जेवी चेष्टा थया करे ए **तंद्रा** केहेवाय छे. (निद्रामां अने तंद्रामां मोटो भेद ए छे के निद्राथी उंघी गएला माणसने जगाड्या पछी क्लम रेहेतो नथी अने तंद्राथी उंघी गएला माणसने तो जाग्रत् कर्या पछी पण क्लमज रह्या करे छे.)

२२ पीत्वैकमनिलोच्छ्वासमुद्वेष्टन् विवृताननः॥
यन्मुञ्चति सनेत्रास्रं स जृम्भ इति संज्ञितः ।

बगासांनुं लक्षण.

२२ माणस मोहोडुं फाडी छातीने संकोचतो संकोचतो पवनना एक उच्छ्वासने पीने पाछो नेत्रोनां आंसुओवाळो थई ते उच्छ्वासने फाटेला मोहोडाथीज बाहार काहाडे छे ए **जृंभ (बगासुं)** केहेवाय छे.

२३ योऽनायासः श्रमो देहे प्रवृद्धः श्वासवर्जितः ॥
क्लमः स इति विज्ञेय इन्द्रियार्थप्रबाधकः।

क्लमनुं लक्षण.

२३ कशी पण मेहेनत नहीं कर्या छतां विषयोनुं बराबर ग्रहण न करवा दिये एवो, वृद्धि पामेलो अने श्वास (हांफवा) वगरनो शरीरमां जे श्रम थाय छे ते **क्लम** केहेवाय छे.

२४ सुखस्पर्शप्रसक्तित्वं दुःखद्वेषणलोलता ॥
शक्तस्य चाप्यनुत्साहः कर्मस्वालस्यमुच्यते ।

आलस्यनुं लक्षण.

२४ सुख लेवामां आसक्ति, दुःखोनो द्वेष करवामां मननी प्रवृत्ति अने शरीरमां सामर्थ्य छतां पण कामो करवामां निरुत्साहपणुं ए **आलस्य** केहेवाय छे.

उत्क्लेशनुं लक्षण.

२५ उत्क्लिश्यान्नं न निर्गच्छेत्प्रसेकष्ठीवनेरितम्
हृदयं पीड्यते चास्य तमुत्क्लेशं विनिर्दिशेत् ॥

२५ मोळ आववाने लीधे लाळ झरवाथी तथा थुंकवाथी प्रेराएलुं अन्न उछळीने पण बाहार नीकळे नहीं अने छाती पीडाया करे ए **उत्क्लेश** केहेवाय छे.

२६ वक्त्रे मधुरता तन्द्रा हृदयोद्वेष्टनं भ्रमः ।
न चान्नमभिकाङ्क्षेत ग्लानिं तस्य विनिर्दिशेत्॥

ग्लानिनुं लक्षण.

२६ मोहोडामां मधुरता रहे, तंद्रा थाय, छाती संकोचाया करे (भीडाया करे,) फेर आवे अने अन्ननी इच्छा न थाय ए **ग्लानि** केहेवाय छे.

२७ आर्द्रचर्मावनद्धं हि यो गात्रमभिमन्यते ।
तथा गुरु शिरोऽत्यर्थं गौरवं तद्विनिर्दिशेत् ॥

गौरवनुं (भारेपणानुं) लक्षण.

२७ शरीर जाणे आर्द्र चामडाथी मढाएलुं

होय एवुं जाणवामां आवे अने माथुं अत्यंत भारे थई जाय ए **गौरव** केहेवाय छे.

२८ मूर्छा पित्ततमःप्राया रजःपित्तानिलाद्भ्रमः। तमोवातकफात्तन्द्रा निद्रा श्लेष्मतमोभवा ॥

मूर्छा, भ्रम, तंद्रा अने निद्रा एओनां निदानो.

२८ पित्तना अने तमोगुणना उत्कटपणाथी मूर्छा थाय छे. रजोगुणना, पित्तना तथा वायुना उत्कटपणाथी भ्रमण थाय छे. (फेर आवे छे.) तमोगुणना, वायुना तथा कफना उत्कटपणाथी तंद्रा थाय छे अने कफना तथा तमोगुणना उत्कटपणाथी निद्रा प्राप्त थाय छे."

२९ गर्भस्य खलु रसनिमित्ता मारुताध्माननिमित्ता च परिवृद्धिर्भवति ॥

भवन्ति चात्र ॥

तस्यान्तरेण नाभेस्तु ज्योतिःस्थानं ध्रुवं स्मृतम्
तदा धमति वातस्तु देहस्तेनास्य वर्द्धते ॥
उष्मणा सहितश्चापि दारयत्यस्य मारुतः ।
ऊर्ध्वं तिर्यगधस्ताच्च स्रोतांस्यपि यथा तथा ॥

गर्भनी वृद्धि थवानुं माताए करेला आहारना रस जेवुंज बीजुं पण कारण.

२९ जेम गया त्रीजा अध्यायना १९ मा विषयमां कह्याप्रमाणे माताए करेला आहारनो रस गर्भनी वृद्धिनुं कारण छे तेमज अग्निसहित वायुए करातुं स्रोतोनुं विशालपणुं पण गर्भनी वृद्धिनुं कारण थाय छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "गर्भनी नाभिना मध्यमां अग्निनुं स्थानक होयज छे. ए स्थानकने वायु जेम जेम धमी धमीने फूलावे छे तेम तेम गर्भनो सघळो देह वधतो जाय छे. मध्यस्थानक धमाईने फूलतां, शरीरना सघळा अवयवो फूले छे (वधे छे) तेनुं कारण ए छे के जेम जेम मध्यस्थान फूलतुं जाय छे, तेम तेम ते अग्निनी गरमीथी संयुक्त थएलो वायु शरीरसंबंधी उपरनां, आडेनां तथा नीचेनां स्रोतोने पण वधारे वधारे फाडीने खुल्लां करे छे."

३० दृष्टिश्च रोमकूपाश्च न वर्द्धन्ते कदाचन । ध्रुवाण्येतानि मर्त्यानामिति धन्वन्तरेर्मतम् ॥

जेम शरीर वधे छे तेम दृष्टि वगेरे नहीं वधवाविषे.

३० माणसोनां दृष्टि, (नेत्रोनी अंदरनी कीकी,) अने रूवाडांओनां छिद्रो एओ कदी पण नहीं वधतां, जेवां प्रथमथी होय तेवांज रहे छे एम भगवान् धन्वंतरिनो मत छे.

३१ शरीरे क्षीयमाणेऽपि वर्द्धेते द्वाविमौ सदा। स्वभावं प्रकृतिं कृत्वा नखकेशाविति स्थितिः।

शरीर क्षीण थतुं जतां छतां पण नख अने केश ए बे पदार्थो वध्याज करे छे तेनुं कारण.

३१ शरीर क्षीण थतुं जाय छे त्यारे पण नख अने केश ए पदार्थो सर्वदा वध्याज करे छे तेनुं कारण स्वभावज छे एम स्वीकारवामां आव्युं छे.

३२ सप्त प्रकृतयो भवन्ति । दोषैः पृथग् द्विशः समस्तैश्च ।
शुक्रशोणितसंयोगे यो भवेद्दोष उत्कटः ॥
प्रकृतिर्जायते तेन तस्या मे लक्षणं शृणु ।

सात प्रकृतिओविषे.

३२ एक एक दोषथी, बबे दोषोथी अने त्रणे दोषोथी वातप्रकृति, पित्तप्रकृति, कफप्रकृति, वातपित्तप्रकृति, वातकफप्रकृति, पित्तकफप्रकृति अने वातपित्तकफप्रकृति ए रीते माणसोनी सात प्रकृतिओ थाय छे. प्रकृति थवानुं कारण ए छे के वीर्यना अने रजना संयोगना समयमां जे दोष अधिक होय छे ते दोषथी प्रकृति थाय छे. हवे ए सात प्रकृतिओनां लक्षणो कहुंछुं ते सांभळो.

३३ तत्र जागरूकः शीतद्वेषी दुर्भगः स्तेनो मत्सर्यनार्यो गान्धर्वचित्तः स्फुटितकरचरणोऽतिरूक्षश्मश्रुनखकेशः क्रोधी दन्तनखखादी च भवति ॥

अधृतिरदृढसौहृदः कृतघ्नः कृशपरुषो धमनीततः प्रलापी । द्रुतगतिरटनोऽनवस्थितात्मा वियदपि गच्छति सम्भ्रमेण सुप्तः ॥

अव्यवस्थितमतिश्चलदृष्टिर्मन्दरत्नधनसंचयमित्रः । किंचिदेव विलपत्यनिबद्धं मारुतप्रकृतिरेष मनुष्यः ॥

वातिकाश्चाजगोमायुशशाखूष्ट्रशुनां तथा ।
गृध्रकाकखरादीनामनूकैः कीर्तिता नराः ॥

वातप्रकृतिनुं लक्षण.

३३ जे माणस अत्यंत जाग्या करतो होय, शीतनो द्वेषी होय, करूपडा आकारवाळो होय, चोर होय, पराया उत्कर्षनुं सहन न करे एवो होय, नीच विचारवाळो होय, गायन वगेरेमां अत्यंत रुचिवाळो होय, फाटेला हाथ पगवाळो होय, क्रोधी होय, सूतां सूतां दांत करडतो होय, दांतोवते नखो कापवाना स्वभाववाळो होय अने जेना दाढीमूछना वाळ नखो तथा केश अत्यंत रूक्ष होय ते माणसने वायुप्रकृतिवाळो जाणवो. वायुप्रकृतिवाळो माणस धीरज वगरनो होय छे, प्रेमने लांबा काळ सुधी नभावे नहीं एवो होय छे, जेणे उपकार कर्यो होय तेनुंज भूंडुं करे छे, दूबळो होय छे, जेना शरीरनी धमनीओ त्वचामांथी स्पष्ट वर्त्ताई रहे एवो होय छे, व्यर्थ बकवाद करनारो होय छे, उतावळथी चालनारो तथा उतावळथी बोलनारो होय छे, बहुज फरवाना स्वभाववाळो होय छे, अनवस्थित चित्तवाळो होय छे, स्वप्नमां संभ्रमथी आकाशमां पण जाय छे, अदृढ निश्चयवाळो होय छे, चपल दृष्टिवाळो होय छे, रत्नोना धनोना तथा मित्रोना थोडा संचयवाळो होय छे अने धंगधडा वगरनुं कांईक कांईक बोल्या करे छे.

वायुप्रकृतिवाळा माणसोना स्वभावो बकराओना, शीयाळीआओना, ससलाओना, उंदरोना, ऊंटोना, कूतराओना, गीधपक्षीओना, कागडाओना अने गधेडाओवगेरेना जेवा होय छे.

३४ स्वेदनो दुर्गन्धः पीतशिथिलाङ्गस्ताम्रनखनयनतालुजिह्वौष्ठपाणिपादतलो दुर्भगो वलीपलितखालित्यजुष्टो बहुभुगुष्णद्वेषी क्षिप्रकोपप्रसादो मध्यमबलो मध्यमायुश्च भवति

मेधावी निपुणमतिर्विगृह्य वक्ता तेजस्वी समितिषु दुर्निवारवीर्यः । सुप्तः सन्कनकपलाशकर्णिकारान्सम्पश्येदपि च हुताशविद्युदुल्काः॥

न भयात्प्रणमेदनतेष्वमृदुः प्रणतेषु च सान्त्वनदानरुचिः । भवतीह सदा व्यथितास्यगतिः स भवेदिह पित्तकृतप्रकृतिः ॥

भुजङ्गोलूकगन्धर्वयक्षमार्जारवानरैः ।
व्याघ्रर्क्षनकुलानूकैः पैत्तिकास्तु नराः स्मृताः ॥

पित्तप्रकृतिनुं लक्षण.

३४ पित्तप्रकृतिवाळो माणस घणा पसीनावाळो होय छे, दुर्गंधवाळो होय छे, पीळां तथा शिथिल अंगोवाळो होय छे, खराब आकारवाळो होय छे, घणुं खानारो होय छे, गरमीनो द्वेषी होय छे, जेने कोप तथा प्रसन्नता तुरतज थाय एवो होय छे, मध्यम बळवाळो होय छे, मध्यम आयुष्यवाळो होय छे, बुद्धिमान् होय छे, निपुणविचारोवाळो होय छे, पराया वाक्यने वचमांथी अटकावीने बोलनारो होय छे, तेजस्वी होय छे अने संग्रामोमां कोइथी अटकावी शकाय नहीं एवा पराक्रमवाळो होय छे. ए माणसनां नखो, नेत्रो, ताळवुं, जीभ, होट, हाथनां तळां तथा पगनां तळां रातां होय छे, अंगोमां वळी तथा सफेद वाळ होय छे अने माथामां टाल होय छे. पित्तप्रकृतिवाळो माणस स्वप्नोमां सोनाने, खाखराओने, गरमाळाओने, पांडेरवाओने, अग्निने, वीजळीने तथा खरता ताराओने देखेछे. ए पित्तप्रकृतिवाळो

माणस कोइने पण बीकथी नमतो नथी, जेओ पोताने नमता न होय तेओना उपर क्रूरता वापरे एवो होय छे, जेओ पोताने नमता होय तेओने सांत्वित करवामां तथा धन देवामां रुचिवाळो होय छे अने सर्वदा जेनुं मोहोडुं पाकेलुंज रहे एवो होय छे.

पित्तप्रकृतिवाळा माणसोना स्वभावो सर्पोना, घुवडोना, गंधर्वोना, यक्षोना, बीलाडाओना, वानरोना, वाघोना, रींछोना अने नोळीआओना जेवा होय छे.

३५ दूर्वेन्दीवरनिस्त्रिंशार्द्रारिष्टशरकाण्डानामन्यतमवर्णः सुभगः प्रियदर्शनो मधुरप्रियः कृतज्ञो धृतिमान्सहिष्णुरलोलुपो बलवांश्चिरग्राही दृढवैरश्च भवति ॥

शुक्लाक्षः स्थिरकुटिलातिनीलकेशो लक्ष्मीवाञ्जलदमृदङ्गसिंहघोषः । सुप्तः सन्सकमलहंसचक्रवाकान् सम्पश्येदपि च जलाशयान् मनोज्ञान् ॥

रक्तान्तनेत्रः सुविभक्तगात्रः स्निग्धच्छविः सत्त्वगुणोपपन्नः । क्लेशक्षमो मानयिता गुरूणां ज्ञेयो बलासप्रकृतिर्मनुष्यः ॥

दृढशास्त्रमतिः स्थिरमित्रधनः परिगण्य चिरात्प्रददाति बहु । परिनिश्चितवाक्यपदः सततं गुरुमानकरश्च भवेत् स सदा ॥
ब्रह्मरुद्रेन्द्रवरुणैः सिंहाश्वगजगोवृषैः ।
तार्क्ष्यहंससमानूकाः श्लेष्मप्रकृतयो नराः ॥

कफप्रकृतिनुं लक्षण.

३५ कफप्रकृतिवाळो माणस छेडाओमां रातां नेत्रोवाळो होय छे, गात्रोनी सुंदर रचनावाळो होय छे, स्निग्ध कांतिवाळो होय छे, सत्वगुणी होय छे, दुःखोनुं सहन करी शके एवो होय छे, गुरुओने (वडीलोने) मान आपनारो होय छे, रूपाळो होय छे, भाग्यशाली होय छे, जेनुं दर्शन प्रिय लागे एवो होय छे, मधुर पदार्थोनी उपर प्रेम राखनारो होय छे, बीजाओए करेला उपकारोने वीसारतो नथी, धीरजवाळो होय छे, सहनशक्तिवाळो होय छे, चापल्यथी रहित होय छे, बळवान् होय छे, लांबा कालसूधी वातनुं ग्रहण करे एवो होय छे, लांबे काळे पण शत्रुओनी साथेना वैरने नज छोडे एवो होय छे, सफेद डोळावाळो होय छे, स्थिर वांका तथा अत्यंतश्याम केशोवाळो होय छे, लक्ष्मीवाळो होय छे, मेघना मृदंगना तथा सिंहना जेवा अवाजवाळो होय छे, शास्त्रोना दृढ विचारवाळो होय छे, स्थिर मैत्रीवाळो होय छे, स्थिर धनवाळो होय छे, लांबा वखत सुधी विचार करीने घणुं आपे एवो होय छे, निश्चित करी राखेलांज वाक्योने तथा पदोने बोले छे अने सर्वदा विद्यागुरुओने मान आपे छे. कफप्रकृतिवाळा माणसनो वर्ण ध्रोकडना जेवो, नील कमळना जेवो, खड्गना जेवो, लीला अरीठाना जेवो अथवा तीरकांडाना (बाणना थोथाना) जेवो होय छे. ए माणस स्वप्नोमां कमळोवाळा, हंसोवाळा तथा चक्रवाकपक्षीओवाळा मनोहर जलाशयोने देखे छे.

कफप्रकृतिवाळा माणसोना स्वभावो ब्रह्माना, रुद्रना, इंद्रना, वरुणना, सिंहना, घोडाना, खूंटना, गरुडना अने हंसना जेवा होय छे.

३६ द्वयोर्वा तिसृणां वापि प्रकृतीनां तु लक्षणैः। ज्ञात्वा संसर्गजा वैद्यः प्रकृतीरभिनिर्दिशेत् ॥

वातपित्तप्रकृति, वातकफप्रकृति, पित्तकफप्रकृति, अने वातपित्तकफप्रकृति एओनां लक्षणो.

३६ उपर जे वातप्रकृतिनां, पित्तप्रकृतिनां अने कफप्रकृतिनां जूदां जूदां लक्षणो अनुक्रमथी कह्यां तेओमांथी जे माणसमां वातप्रकृतिनां अने पित्तप्रकृतिनां मिश्रित लक्षणो जोवामां आवे तेने वैद्ये वातपित्तप्रकृतिवाळो जाणवो, जे माणसमां वातप्रकृतिनां अने कफप्रकृतिनां मिश्रित लक्षणो जोवामां आवे तेने वैद्ये वातकफप्रकृतिवाळो जाणवो, जे माणसमां पित्त-

प्रकृतिनां अने कफप्रकृतिनां मिश्रित लक्षणो जोवामां आवे तेने वैद्ये पित्तकफप्रकृतिवाळो जाणवो अने जे माणसमां वातप्रकृति, पित्तप्रकृति अने कफप्रकृति ए त्रणेनां मिश्रित लक्षणो जोवामां आवे तेने वैद्ये वातपित्तकफप्रकृतिवाळो जाणवो.

३७ प्रकोपो वान्यथाभावः क्षयो वा नोपजायते।
प्रकृतीनां स्वभावेन जायते तु गतायुषः ॥
विषजातो यथा कीटो न विषेण विपद्यते ।
तद्वत्प्रकृतयो मर्त्यं शक्नुवन्ति न बाधितुम् ॥

उमरभरसुधी प्रकृतिभूत दोषोनो कशो फेरफार थतो नथी पण मृत्युसमय नजदीक आवे त्यारे फेरफार थाय छे.

३७ प्रकृतिभूत (शरूआतथीज प्रकृतिरूपे गोठवाएला) दोषोनो उमरभरसुधी प्रकोप, अन्यथाभाव (फेरबदली,) के क्षय थतो नथी पण ज्यारे मृत्युनो समय नजदीक आवे छे त्यारे स्वाभाविक रीते तेओनो प्रकोप, अन्यथाभाव के क्षय थई जाय छे अर्थात् जेओनुं मरण नजदीक आव्युं होय तेओनी प्रकृतिओनो फेरफार थई जाय छे. जेम झेरमां जन्मेला कीडाने झेर अत्यंत हरकत करी शकतुं नथी तेम प्रकृतिभूत दोषो माणसने अत्यंत हरकत करी शकता नथी परंतु जेम झेरनो कीडो झेरना स्वभावथी थएला दाहादिकथी कांईक पीडाय छे तेम वात आदि प्रकृतिवाळां माणसो वात आदि प्रकृतिओथी थएला रूक्षता, हाथ पगनुं फाटवुं, पसीनो तथा दुर्गंधपणुं इत्यादिकथी कांईक पीडाय छे.

३८ प्रकृतिमिह नराणां भौतिकीं केचिदाहुः
पवनदहनतोयैः कीर्तितास्तास्तु तिस्रः ।
स्थिरविपुलशरीरः पार्थिवश्च क्षमावान्
शुचिरथ चिरजीवी नाभसः खैर्महद्भिः ॥

केटलाएक आचार्योना मतप्रमाणे पांच भौतिक प्रकृतिओ.

३८ केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'माणसोनी पृथ्वीसंबंधी, जलसंबंधी, अग्निसंबंधी, वायुसंबंधी अने आकाशसंबंधी एम पांच प्रकृतिओ थाय छे.' एओनो मत स्वीकारीए तोपण वायुप्रकृतिनां लक्षणो कह्यां तेथी वायुसंबंधी प्रकृति, कफप्रकृतिनां लक्षणो कह्यां तेथी जलसंबंधी प्रकृति अने पित्तप्रकृतिनां लक्षणो कह्यां तेथी अग्निसंबंधी प्रकृति केहेवाई गइ छे माटे हवे पृथ्वीसंबंधी अने आकाशसंबंधी ए बे प्रकृतिओनांज लक्षणो कहीए छीए. पृथ्वीसंबंधी प्रकृतिवाळो माणस मोटा तथा दृढ शरीरवाळो होय छे तथा क्षमावाळो होय छे अने आकाशसंबंधी प्रकृतिवाळो माणस पवित्र होय छे, लांबा काळसूधी जीवेछे तथा नाक कान वगेरेनां मोटां छिद्रोवाळो होय छे.

३९ शौचमास्तिक्यमभ्यासो वेदेषु गुरुपूजनम्
प्रियातिथित्वमिज्या च ब्रह्मकायस्य लक्षणम् ॥
माहात्म्यं शौर्यमाज्ञा च सततं शास्त्रबुद्धिता ।
भृत्यानां भरणं चापि माहेन्द्रं कायलक्षणम् ॥
शीतसेवा सहिष्णुत्वं पैङ्गल्यं हरिकेशता ।
प्रियवादित्वमित्येतद्वारुणं कायलक्षणम् ॥
मध्यस्थता सहिष्णुत्वमर्थस्यागमसंचयौ ।
महाप्रसवशक्तित्वं कौबेरं कायलक्षणम् ॥
गन्धमाल्यप्रियत्वं च नृत्यवादित्रकामिता ।
विहारशीलता चैव गान्धर्वं कायलक्षणम् ॥
प्राप्तकारी दृढोत्थानो निर्भयः स्मृतिमाञ्छुचिः।
रागमोहभयद्वेषैर्वर्जितो याम्यसत्ववान् ॥
जपव्रतब्रह्मचर्यहोमाध्ययनसेविनम् ।
ज्ञानविज्ञानसम्पन्नमृषिसत्त्वं नरं विदुः ॥
सप्तैते सात्त्विकाः काया राजसांस्तु निबोध मे।

सात्विक सत्वोवाळां एटले सत्वगुणसंबंधी चित्तवृत्तिओवाळां सात शरीरो.

३९ पवित्रपणुं, आस्तिकपणुं, वेदोनो अभ्यास, गुरुओनुं पूजन, अतिथिओनी उपर प्रेम अने

देवताओनुं यजन ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **ब्रह्मसत्व** एटले ब्रह्माना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

महात्मापणुं, शूरपणुं, अभंग आज्ञा, निरंतर शास्त्रोनुं परिशीलन अने जेओनुं भरणपोषण करवुं प्राप्त होय तेओनुं सारी रीते भरणपोषण करवामां उदारता ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **माहेंद्रसत्व** एटले इंद्र जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

शीतनुं सेवन, सहन करनारपणुं, नेत्रोनुं पिंगळापणुं, केशोनुं कपिलवर्णवाळापणुं अने प्रिय बोलनारपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **वारुणसत्व** एटले वरुणना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

सघळी बाबतोमां त्राहेतपणुं (निरभिमानपणुं,) सहन करनारपणुं, धन मेळववानी तथा धननो संचय करवानी संपूर्ण युक्ति अने प्रजाने उत्पन्न करवानी मोटी शक्ति ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **कौबेरसत्व** एटले कुबेरना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

चंदन आदि सुगंध पदार्थोनी उपर तथा सुगंधी पुष्पोनी उपर प्रेम, नृत्यनी तथा वादित्रनी कलामां अभिरुचि अने ते ते प्रदेशोमां फरवा जवानो अभ्यास ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **गांधर्वसत्व** एटले गंधर्वना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

योग्य काम करनारपणुं, दृढ उद्योगवाळापणुं, निर्भयपणुं, स्मरणशक्ति, पवित्रपणुं, आसक्तिथी रहितपणुं अने मोहथी, भयथी तथा द्वेषथी पण रहितपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **याम्यसत्व** एटले यमराजाना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं समजवुं.

जप, व्रत, ब्रह्मचर्य, होम तथा अध्ययन एओने सेवनारपणुं अने ज्ञानथी तथा विज्ञानथी संपन्नपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **ऋषिसत्व** एटले ऋषिना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

आ सात सात्विक सत्ववाळां शरीरो कह्यां. हवे राजस सत्ववाळां शरीरो विषे कहुं छुं ते सांभळो.

४० ऐश्वर्यवन्तं रौद्रञ्च शूरं चण्डमसूयकम् ॥
एकाशिनं चौदरिकमासुरं जनमादिशेत् ।
तीक्ष्णमायासिनं भीरुं चण्डं मायान्वितं तथा॥
विहाराचारचपलं सर्पसत्वं विदुर्नरम् ।
प्रवृद्धकामसेवी चाप्यजस्राहार एव च ॥
अमर्षणोऽनवस्थायी शाकुनं कायलक्षणम् ।
एकान्तग्राहिता रौद्रमसूया धर्मबाह्यता ॥
भृशमात्रं तमश्चापि राक्षसं कायलक्षणम् ।
उच्छिष्टाहारता तैक्ष्ण्यं साहसप्रियता तथा ॥
स्त्रीलोलुपत्वं नैर्लज्ज्यं पैशाचं कायलक्षणम् ।
असंविभागमलसं दुःखशीलमसूयकम् ॥
लोलुपञ्चाप्यदातारं प्रेतसत्त्वं विदुर्नरम् ।
षडेते राजसाः कायास्तामसांस्तु निबोध मे ॥

राजस सत्वोवाळां एटले रजोगुणसंबंधी चित्तवृत्तिओवाळां छ शरीरो.

४० ऐश्वर्यवाळापणुं, क्रूरपणुं, शूरपणुं, तीव्र कोपवाळापणुं, पराया गुणो उपर मत्सर राखनारपणुं, बीजां कोई प्राणीने अन्नादिकमांथी विभाग नहीं आपतां एकलांज जमनारपणुं अने पोतानुं पेट भरवा उपरज लक्ष्य राखनारपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **आसुरसत्व** एटले असुरना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

तीक्ष्णपणुं, बीजाओने परिश्रम आपनारपणुं, बीकणपणुं, दृढवैरपणुं, कपटीपणुं अने विहारमां तथा आचारमां चपलपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **सर्पसत्व** एटले सर्पना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

असहनता, एक ठेकाणे नहीं रेहेनारपणुं, निरंतर आहार करनारपणुं अने कामदेवनी वृद्धिने

लीधे मैथुननुं अतिसेवन ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **शाकुनसत्व** एटले पक्षीना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

एकांतमां रेहेवानो स्वभाव, भयंकरपणुं, गुणोमां दोषोनुं आरोपण करवानी टेव, धर्मथी भ्रष्टपणुं अने अत्यंत क्रोध तथा मूढपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **राक्षससत्व** एटले राक्षसना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

उच्छिष्ट खानारपणुं, तीक्ष्णपणुं, साहस उपर प्रेम राखनारपणुं, स्त्रीओमां लंपटपणुं अने निर्लज्जपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **पैशाचसत्व** एटले पिशाचना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

अन्नादिकमांथी कोइने पण विभाग नहीं आपनारपणुं, आलस्य, निरंतर दुःखितपणुं, गुणोमां दोषोनो आरोप करनारपणुं, खावापीवामां लंपटपणुं अने अदातापणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **प्रेतसत्व** एटले प्रेतना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

आ छ राजस सत्ववाळां शरीरो कह्यां. हवे तामस सत्वोवाळां शरीरो विषे कहुंछुं ते सांभळो.

४१ दुर्मेधस्त्वं मन्दता च स्वप्ने मैथुननित्यता।
निराकरिष्णुता चैव विज्ञेयाः पाशवा गुणाः ॥
अनवस्थितता मौर्ख्यं भीरुत्वं सलिलार्थिता ।
परस्पराभिमर्दश्च मत्स्यसत्त्वस्य लक्षणम् ॥
एकस्थानरतिर्नित्यमाहारे केवले रतः ।
वानस्पत्यो नरः सत्त्वधर्मकामार्थवर्जितः ॥
इत्येते त्रिविधाः कायाः प्रोक्ता वै तामसास्तथा

तामस सत्वोवाळां एटले तमोगुणसंबंधी चित्तवृत्तिओवाळां त्रण शरीरो.

४१ दुर्बुद्धिवाळापणुं, मंदपणुं, नित्य स्वप्नमां मैथुन करनारपणुं अने बीजाओने दूर करनारपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **पशुसत्व** एटले पशुना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

अतिचंचलपणुं, मूर्खता, बीकणपणुं, जलनी अत्यंत इच्छा अने पोतानी जातमांज परस्परनुं मर्दन करनारपणुं ए लणक्षो जेमां होय ते माणसना शरीरने **मत्स्यसत्व** एटले माछलांना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

एकज ठेकाणे रेहेनारपणुं, नित्य केवळ आहारमांज रुचि धरावनारपणुं अने सत्वगुणथी, धर्मथी, कामथी तथा धनथी रहितपणुं ए लक्षणो जेमां होय ते माणसना शरीरने **वानस्पत्यसत्व** एटले झाडना जेवी चित्तनी प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

आ त्रण तामस सत्ववाळां शरीरो कह्यां.

४२ कायानां प्रकृतीर्ज्ञात्वा त्वनुरूपां क्रियां चरेत् ॥
महाप्रकृतयस्त्वेता रजःसत्त्वतमःकृताः ।
प्रोक्ता लक्षणतः सम्यग्भिषक्ताश्च विभावयेत्॥

प्रकृतिओ जाणवानुं प्रयोजन.

४२ वैद्ये रोगीओनां शरीरोनी प्रकृतिओनी परीक्षा करीने पछी ते प्रकृतिने लायक जणाय एवी चिकित्सा करवी. आ (छेवटमां) सत्वगुण, रजोगुण अने तमोगुण एओथी थती महाप्रकृतिओनां पण लक्षणो कह्यां. ए लक्षणो उपरथी वैद्ये ते प्रकृतिओनो पण सारीपेठे निश्चय करी लेवो के जेथी चिकित्सा करवामां केटलीक सगवड पडे.

अध्याय ५ मो.

१ अथातः शरीरसंख्याव्याकरणं शारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शरीरसंख्याव्याकरणशारीर'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे

---

१ शरीरना अवयवोना तथा ते अवयवोमां गोठवाएला पदार्थोना व्याख्यानविषेनो.

व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शुक्रशोणितं गर्भाशयस्थमात्मप्रकृतिविकारसंमूर्च्छितं गर्भ इत्युच्यते ।

तञ्च चेतनावस्थितं वायुर्विभजति तेज एनं पचति आपः क्लेदयन्ति पृथिवी संहन्त्याकाशं विवर्द्धयति । एवं विवर्द्धितः स यदा हस्तपादजिह्वाघ्राणकर्णनितम्बादिभिरङ्गैरुपेतस्तदा शरीरमिति संज्ञां लभते ॥

गर्भनुं लक्षण तथा पंच महाभूतोनी क्रियाओपूर्वक शरीरनुं लक्षण.

२ गर्भाशयमां रहेलो अने जीवात्मा, आठ प्रकृतिओ तथा सोळ विकारो एओए मिश्र थइने गोठवेलो वीर्यनो तथा रजनो समुदाय **गर्भ** केहेवाय छे.

जेमां चेतना शरुआतथीज दाखल थइने कशुं वींखावुं के सडो थवा देती नथी एवा ते गर्भमां वायु दोषोना, धातुओना, मळोना, अंगोना तथा प्रत्यंगो वगेरेना विभागो करे छे. तेज (अग्नि) ए गर्भने एक एक रूपथी अनुक्रमे अन्य अन्य रूपनी प्राप्ति आपवारूप पाक आपे छे. जळ, विभागने करनारा वायुवते तथा परिणाम(पाक)ने करनारा अग्निवते गर्भनुं शोषण थतां छतां पण ते गर्भने आर्द्र राख्या करे छे. पृथ्वी, जळवते आर्द्र थया करता ए गर्भने कठणपणुं आप्या करे छे अने आकाश, वायुए तथा अग्निए फूलाववा मांडेलां स्रोतोने उंचे, नीचे तथा आडे अवकाश आपीने ते गर्भने वृद्धि आप्या करे छे. आ प्रमाणे पंच महाभूतोए वधारेलो ए गर्भ ज्यारे स्पष्ट रीते हाथ, पग, माथुं, जीभ, नाक, कान तथा नितंब वगेरे अवयवोथी युक्त थायछे त्यारे ते 'शरीर' ए नामने प्राप्त थाय छे.

३ तच्च षडङ्गं शाखाश्चतस्रो मध्यं पञ्चमं षष्ठं शिर इति ॥

शरीरमां छ अंगो.

३ शरीरमां बे हाथ, बे पग, कोठो अने डोकसहित आखुं माथुं ए छ **अंगो** गणाय छे. (एओमां बे हाथ अने बे पग ए चार, शाखाओ पण केहेवाय छे.)

४ अतः परं प्रत्यङ्गानि वक्ष्यन्ते । मस्तकोदरपृष्ठनाभिललाटचिबुकबस्तिग्रीवा इत्येता एकैकाः । कर्णनेत्रनासाभ्रूशङ्खांसगण्डकक्षास्तनवृषणपार्श्वस्फिग्जानुबाहूरुप्रभृतयो द्वे द्वे । विंशतिरङ्गुलयः । स्रोतांसि च वक्ष्यमाणानि । एष प्रत्यङ्गविभाग उक्तः ॥

शरीरनां प्रत्यंगो.

४ हवे शरीरनां प्रत्यंगो कहीए छीए. माथुं, पेट, पीठ, नाभि, ललाट, हडपची, मूत्राशय तथा डोक इत्यादि एक एक अवयवो, तेमज बे कान, बे नेत्र, बे नाक, बे भमरो, बे लमणा, बे खभा, बे गाल, बे काख, बे स्तन, बे वृषण, बे पडखां, बे कूला, बे गोठण, बे बाहां तथा बे साथळ, इत्यादि बबे अवयवो वीश आंगळीओ अने हृदय आदिमां रेहेनारां जे स्रोतो केहेवामां आवशे तेओ **प्रत्यंगो** (अंगोना अवयवो) गणाय छे. आ प्रत्यंगोनो विभाग कह्यो.

५ तस्य पुनः संख्यानम् । त्वचः कला धातवो मला दोषा यकृत्प्लीहानौ फुप्फुस उण्डुको हृदयमाशया अन्त्राणि वृक्कौ स्रोतांसि कण्डरा जालानि कूर्चा रज्जवः सेवन्यः सङ्घाताः सीमन्ता अस्थीनि सन्धयः स्नायवः पेश्यो मर्माणि शिरा धमन्यो योगवहानि स्रोतांसि च ॥

शरीर के जे अंगप्रत्यंगात्मक छे तेनुं संख्यान.

५ त्वचाओ, कलाओ, धातुओ, मलो, दोषो, यकृत्, प्लीहा, पुप्फुस, उंडुक (मळनी कोथळी) हृदय, आशयो, अंत्रो, (आंतरडांओ), बुक्काओ, स्रोतो, कंडराओ, जाळो, कूर्चो, रज्जुओ, सीव-

णीओ, संघातो, सीमंतो, अस्थिओ, संधिओ, स्नायुओ, पेशीओ, मर्मो, शिराओ, धमनीओ अने अन्नादिकनुं वहन करनारां धमनीओथी जोडाएलां स्रोतो एटला विभागो अंगप्रत्यंगात्मक शरीरमां गोठवाएला छे.

६ त्वचः सप्त । कलाः सप्त । आशयाः सप्त । धातवः सप्त । सप्त शिराशतानि । पञ्च पेशीशतानि । नव स्नायुशतानि । त्रीण्यस्थिशतानि । द्वे दशोत्तरे सन्धिशते । सप्तोत्तरं मर्मशतम् । चतुर्विंशतिर्धमन्यः । त्रयो दोषाः। त्रयो मलाः । नव स्रोतांसीति समासः । विस्तारोऽत ऊर्ध्वम् ॥

उपर कहेला त्वचा वगेरे विभागोमां केटलाएक विभागोनी संख्यानो निर्देश.

६ त्वचाओ सात छे. कलाओ सात छे. आशयो सात छे. धातुओ सात छे. शिराओ सातसो छे. पेशीओ पांचसो छे. स्नायुओ नवसो छे. अस्थिओ त्रणसो छे. संधिओ बसो दश छे. मर्मो एकसो सात छे. धमनीओ चोवीश छे. दोषो त्रण छे, मलो त्रण छे अने स्रोतो नव छे. विभागोनो संख्यामात्रथी आ प्रमाणे संक्षेप कह्यो. हवे विस्तार केहेवामां आवशे.

७ त्वचोऽभिहिताः कला धातवो मला दोषा यकृत्प्लीहानौ फुप्फुस उण्डुको हृदयं वृक्कौ च ॥

त्वचा वगेरे अमुक विभागोनो विस्तार आगळ केहेवाइ गयो छे तेथी फरी केहेवानी जरूर नथी.

७ त्वचाओ, कलाओ, यकृत्, प्लीहा, पुप्फुस, उंडुक, हृदय अने बुक्का एओनो विस्तार गया अध्यायमां केहेवाई गयो छे अने धातुओ, मलो तथा दोषो एओनो विस्तार सूत्रस्थानना १९ मा अध्याय वगेरेमां केहेवाई गयो छे तेथी फरीवार अहीं केहेवानी जरूर नथी.

८ आशयास्तु वाताशयः पित्ताशयः श्लेष्माशयो रक्ताशय आमाशयः पक्वाशयो मूत्राशयः स्त्रीणां गर्भाशयोऽष्टम इति ॥

आशयोनो विस्तार.

८ वाताशय, पित्ताशय, श्लेष्माशय, (कफाशय) रक्ताशय, आमाशय, पक्वाशय अने मूत्राशय ए प्रमाणे सात आशयो छे. स्त्रीओने ए सात आशयो उपरांत आठमो गर्भाशय छे. (रक्ताशय, कफाशय, आमाशय, पित्ताशय, पक्वाशय, वाताशय अने मूत्राशय ए प्रमाणे आशयोनो अनुक्रम छे. स्त्रीओने आठमो जे गर्भाशय छे ते पित्ताशय अने पक्वाशय एओना मध्यमां छे. वाग्भट.)

९ सार्द्धत्रिव्यामान्यन्त्राणि पुंसां स्त्रीणामर्द्धव्यामहीनानि ॥

अंत्रोनो (आंतरडांओनो) विस्तार.

९ पुरुषोनां आंतरडां साडात्रण वांभ लांबां होय छे अने स्त्रीओनां आंतरडां त्रण वांभ लांबां होय छे.

१० श्रवणनयनवदनघ्राणगुदमेढ्राणि नव स्रोतांसि नराणां बहिर्मुखान्येतान्येव स्त्रीणामपराणि च त्रीणि द्वे स्तनयोरधस्तादृक्तवहं च॥

बाहार देखातां स्रोतोनो विस्तार.

१० पुरुषोने बाहार मुखवाळां बे कान, बे नेत्र, मोहोडुं, बे नाक, गुदा अने उपस्थ ए नव स्रोतो छे अने स्त्रीओने ए नव स्रोतो उपरांत पण बीजां त्रण बाहार मुखवाळां स्रोतो छे ते ए के स्तनोमां बे स्रोत छे अने योनिनी डोडीनी नीचे एक रक्तवह (रजनुं वहन करनारूं) स्रोत छे. (अंदरमुखवाळां जे स्रोतो छे तेओनो विस्तार आ शारीर स्थानना नवमा अध्यायमां केहेवामां आवशे.)

११ षोडश कण्डराः। तासां चतस्रः पादयोस्तावत्यो हस्तग्रीवापृष्ठेषु । तत्र हस्तपादगतानां कण्डराणां नखाः प्ररोहाः । ग्रीवाहृदयनिबन्धिनीनामधोभागगतानां मेढ्रम् । श्रो-

णिपृष्ठनिबन्धिनीनामधोभागगतानां बिम्बः । मूर्द्धोरुवक्षोंऽसपिण्डादीनाञ्च ॥

कंडराओनो (मोटी स्नायुओनो) विस्तार.

११ कंडराओ सोळ छे. एओमां जमणा पगमां बे, डाबा पगमां बे, जमणा हाथमां बे, डाबा हाथमां बे, डोकमां चार अने पीठमां चार छे. हाथना तथा पगना जे नखो छे तेओ हाथमां तथा पगमां रहेली कंडराओना नीचेना भागोना अंकुरोरूप छे. जे उपस्थ छे ते डोकनी साथे हृदयने निश्चल रीते बांधीने रहेली चार कंडराओना नीचेना भागोना अंकुररूप छे. जे नितंबमंडल छे ते कमरनी साथे पीठने निश्चल रीते बांधीने रहेली चार कंडराओना नीचेना भागोना अंकुररूप छे. एवीज रीते मस्तकनुं मंडल डोकमां रहेली चार कंडराओना उपरना भागोना अंकुररूप छे, जमणा साथळनुं मंडल जमणा पगमां रहेली बे कंडराओना उपरना भागोना अंकुररूप छे. डाबा साथळनुं मंडल डाबा पगमां रहेली बे कंडराओना उपरना भागोना अंकुररूप छे. छातीनुं मंडल पीठमां रहेली चार कंडराओना उपरना भागोना अंकुररूप छे. जमणा खभानुं मंडल (टोच) जमणा हाथमां रहेली बे कंडराओना उपरना भागोना अंकुररूप छे अने डाबा खभानुं मंडल डाबा हाथमां रहेली बे कंडराओना उपरना भागोना अंकुररूप छे. स्तनोनुं जे मंडल छे ते पण कंडराओनाज अंकुररूप छे.

१२ मांसशिरास्नाय्वस्थिजालानि प्रत्येकं चत्वारि चत्वारि । तानि मणिबन्धगुल्फसंश्रितानि परस्परनिबद्धानि परस्परसंश्लिष्टानि परस्परगवाक्षितानि चेति यैर्गवाक्षितमिदं शरीरम् ॥

जाळोनो (जाळांओनो) विस्तार.

१२ मांस, शिराओ, स्नायुओ अने अस्थिओ ए प्रत्येकनां चार चार जाळां छे. ए जाळांओ नीचे प्रमाणे एक एक स्थानमां चार चार छे अने सघळां मळीने सोळ छे. जेम के जमणा हाथनां कांडामां एक मांसनुं, बीजुं शिराओनुं, त्रीजुं स्नायुओनुं अने चोथुं अस्थिओनुं जाळुं छे. डाबा हाथनां कांडामां, जमणा पगनी घुंटीमां अने डाबा पगनी घुंटीमां पण एप्रमाणेज चार चार जाळां छे. ए चार चार जाळांओ परस्परथी बंधाएलां छे, परस्परनी साथे चोटेलां छे अने जेओमां परस्पर छिद्रो थयां छे एवां छे के जेओए शरीरना ए भागोने परस्पर अंतर वगरनां जालीआं जेवां अनेक छिद्रोना समूहोवाळा करी मेल्या छे.

१३ षट् कूर्चास्ते हस्तपादग्रीवामेढ्रेषु । हस्तयोर्द्वौ पादयोर्द्वौ ग्रीवामेढ्रयोरेकैकः ॥

कूर्चोनो (गाभाओनो) विस्तार.

१३ बे हाथमां बे, बे पगमां बे, डोकमां एक अने उपस्थमां एक एवी रीते सघळा मळीने छ कूर्चो छे. (ए कूर्चो शिरा, स्नायु, मांस अने अस्थिओमांथी बनेला छे.)

१४ महत्यो मांसरज्जवश्चतस्रः पृष्ठवंशमुभयतः पेशीनिबन्धनार्थं द्वे बाह्ये आभ्यन्तरे च द्वे

रज्जुओनो (दोरीओनो) विस्तार.

१४ बरडानी बे बाजुओमां मांसनी मोटी मोटी चार दोरीओ छे. मांसनी पेशीओने बांधी राखवी ए एओनुं काम छे. एओमां बे दोरीओ बरडाना बाहारना भागमां अने बे दोरीओ अंदरना भागमां छे.

१५ सप्त सेवन्यः । शिरसि विभक्ताः पञ्च जिह्वाशेफसोरेकैका । ताः परिहर्तव्याः शस्त्रेण॥

सीवणीओनो विस्तार.

१५ सीवणीओ कुल सात छे. एओमां माथामां पांच छे, जीभमां एक छे अने उपस्थमां एक छे. शस्त्रक्रिया करवाना समयमां एओने अवश्य छोडी देवी जोइए एटले तेओमां कदीपण कोईपण भागमां शस्त्र नाखवुं नहीं.

१६ चतुर्दशास्थ्नां सङ्घाताः। तेषां त्रयो गुल्फजानुवङ्क्षणेषु । एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ । त्रिकशिरसोरेकैकः ॥

संघातोनो (अस्थिओना जथाओनो) विस्तार.

१६ अस्थिओना संघातो चौद छे, तेओमां पगनी बे घूंटीओमां बे, बे गोठणमां बे, बे साथळनी संधिओमां बे, बे हाथना कांडाओमां बे, बे कोणीओमां बे, हाथोनी तथा खभाओनी बे संधिओमां बे, डोकनां तथा बाहुओनां त्रण अस्थिओ ज्यां भेळां थाय छे त्यां एक अने माथामां एक छे.

१७ चतुर्दशैव सीमन्ताः। ते चास्थिसंघातवद्गणनीया यतस्तैर्युक्ता अस्थिसङ्घाता ये ह्युक्ताः। सङ्घातास्तु खल्वष्टादशैकेषाम् ॥

सीमंतोनो (उपर कहेला चौद संघातोने थोभावी राखनारा सेंथाओनो) विस्तार.

१७ सीमंतो पण चौदज छे. एओने अस्थिओना संघातो जेटला एटले चौदज गणवा जोइए. केमके ए चौद संघातोने एओएज जोडी राखेला छे. केटलाएक आचार्यो केहेछे के सीमंतो अढार छे एटले चार सीमंतो अधिक छे. (ते एवी रीते के एक सीमंत कमरनी दांडीनी उपर छे, बीजो सीमंत छातीनी उपर छे, त्रीजो सीमंत पेटना अने छातीना संधिप्रदेशमां छे अने चोथो सीमंत खभाओना उच्चप्रदेशउपर छे.)

१८ त्रीणि सषष्टीन्यस्थिशतानि वेदवादिनो भाषन्ते। शल्यतन्त्रे तु त्रीण्येव शतानि। तेषां सविंशमस्थिशतं शाखासु । सप्तदशोत्तरं शतं श्रोणिपार्श्वपृष्ठोदरोरस्सु । ग्रीवां प्रत्यूर्ध्वं त्रिषष्टिः। एवमस्थ्नां त्रीणि शतानि पूर्यन्ते ॥

अस्थिओनो विस्तार.

१८ याज्ञवल्क्य मुनि वगेरे वेदवादी आचार्यो तथा आयुर्वेदना पण केटलाएक आचार्यो केहेछे के 'शरीरमां अस्थिओ ३६० त्रणसो साठ छे.' परंतु शल्यतंत्रमां तो त्रणसो अस्थिओज स्वीकारेलां छे. एओमां १२० एकसो वीश अस्थिओ शाखाओमां (हाथपगमां) छे. ११७ एकसो सत्तर अस्थिओ कमर, पडखां, पीठ, पेट अने छाती एओमां छे अने ६३ त्रेसठ अस्थिओ डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां छे. आ प्रमाणे गणतां त्रणसोनो सरवाळो थाय छे.

१९ एकैकस्यां तु पादाङ्गुल्यां त्रीणि त्रीणि तानि पञ्चदश। तलकूर्चगुल्फसंश्रितानि दश। पार्ष्ण्यामेकम् । जङ्घायां द्वे। जानुन्येकम्। एकमूराविति । त्रिंशदेवमेकस्मिन् सक्थ्नि भवन्ति। एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ॥

शाखाओमां एटले हाथ पगमां १२० अस्थिओनी वेहेंचण.

१९ पगनी एक एक आंगळीमां त्रण त्रण, ए रीते पांच आंगळीओनां पंदर १५ अस्थिओ थाय. पगना तळामां अस्थिओनी पांच सळीओ अने ते सळीओना आधारभूत एक अस्थि ए रीते तळामां छ ६ अस्थिओ थाय. पगना कूर्चमां (गाभामां) बे २ अस्थि, घूंटीमां बे २ अस्थि, पेनीमां एक १ अस्थि, पींडीमां बे २ अस्थि, गोठणमां एक १ अस्थि अने साथळमां एक १ अस्थि ए रीते नव ९ अस्थिओ थाय. आप्रमाणे एक पगमां त्रीश ३० अस्थिओ थाय छे. बीजा पगमां पण ए प्रमाणेज त्रीश ३० अस्थिओ छे. ए रीतेज एक एक हाथमां पण त्रीश त्रीश गणी लेवां. एटले कुल सरवाळो करतां शाखाओमां एकसो वीश १२० अस्थिओ थाय छे.

---

१ तस्य षोढा शरीराणि षट् त्वचो धारयन्ति च। षडङ्गानि तथास्थ्नां च सह षष्ट्या शतत्रयम् ॥ (याज्ञवल्क्यस्मृति प्रायश्चित्ताध्याय श्लोक ८४ मो.)

चरके पण पोताना शारीर स्थानना ७ मा अध्यायमां ३६० अस्थिओ गणाव्यां छे.

२० श्रोण्यां पञ्च तेषां गुदभगनितम्बेषु चत्वारि त्रिकसंश्रितमेकम् । पार्श्वे षट्त्रिंशदेवमेकस्मिन् । द्वितीयेऽप्येवम् । पृष्ठे त्रिंशत् । अष्टावुरसि । द्वे अक्षकसंज्ञे ॥

कमर, पडखां, पीठ, पेट अने छाती एओमां अर्थात् कोठामां ११७ अस्थिओनी वेहेंचण.

२० गुदामां एक १, उपस्थ[१]मां एक १, बे नितंबमां बे २ अने बरडानी करोडनो नीचलो भाग के ज्यां त्रण अस्थिओनो संयोग थाय छे त्यां एक १ ए रीते कमरमां पांच अस्थिओ थाय छे. एक पडखामां छत्रीश अने बीजा पडखामां पण छत्रीश ए रीते पडखांओमां बोंतेर ७२ अस्थिओ थाय छे. पीठमां त्रीश ३० अस्थिओ छे, छातीमां आठ ८ अस्थिओ छे अने अक्षक नामनां बे २ अस्थिओ छे. आ अस्थिओनो कुल सरवाळो करतां कोठामां एकसो सत्तर ११७ अस्थिओ थाय छे. (अक्षक एटले खभाओतरफ गयेलां हांसडीनां बे अस्थिओ हशे एम समजाय छे. डह्लन अहीं कशुं नहीं बोलतां चिकित्सास्थानना त्रीजा अध्यायना १७ मा विषयना व्याख्यानमां कहेछे के अक्षक खभाना संधिथी उपर छे.)

२१ ग्रीवायां नवकम् । कण्ठनाड्यां चत्वारि । द्वे हन्वोः। दन्ता द्वात्रिंशत् । नासायां त्रीणि । एकं तालुनि । गण्डकर्णशङ्खेष्वेकैकम्। षट् शिरसि ॥

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां त्रेसठ ६३ अस्थिओनी वेहेंचण.

२१ डोकमां नव ९ अस्थिओ छे. गळानी नळीमां चार ४ अस्थिओ छे. हडपचीना बे भागोमां बे २ अस्थिओ छे. मोहोडामां दांतरूप अस्थिओ बत्रीश ३२ छे. नाकमां त्रण ३ अस्थिओ छे. ताळवामां एक १ अस्थि छे. बे गालोमां बे २ अस्थिओ छे. बे कानोमां बे २ अस्थिओ छे. बे लमणाओमां बे २ अस्थिओ छे अने माथामां छ ६ अस्थिओ छे. आ अस्थिओनो कुल सरवाळो करतां डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां त्रेसठ ६३ अस्थिओ थाय छे.

२२ एतानि पञ्चविधानि भवन्ति । तद्यथा । कपालरुचकतरुणवलयनलकसंज्ञानि । तेषां जानुनितम्बांसगण्डतालुशङ्खशिरस्सु कपालानि । दशनास्तु रुचकानि । घ्राणकर्णग्रीवाक्षिकोशेषु तरुणानि । पाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरोरस्सु वलयानि । शेषाणि नलकसंज्ञानि ॥

अस्थिओना पांच भेद.

२२ अस्थिओना कपालास्थि, रुचकास्थि, तरुणास्थि, वलयास्थि अने नलकास्थि ए नामना पांच भेद छे. एओमां गोठण, नितंब, खभा, गाल, ताळवुं, लमणा अने माथुं ए ठेकाणांओनां अस्थिओ **कपालास्थिओ** केहेवाय छे. दांतो **रुचकास्थिओ** केहेवाय छे. नाक, कान, डोक अने नेत्रोना कोश ए ठेकाणांओनां अस्थिओ **तरुणास्थिओ** केहेवाय छे. हाथ, पग, पडखां, पीठ, पेट अने छाती ए ठेकाणाओनां अस्थिओ **वलयास्थिओ** केहेवाय छे. हाथपगनां तळां, हाथपगनी आंगळीओ, कूर्चा, कांडां, बाहु अने पींडीओ ए ठेकाणांओनां अस्थिओ **नलकास्थिओ** केहेवाय छे.

२३ भवन्ति चात्र ॥

अभ्यन्तरगतैः सारैर्यथा तिष्ठन्ति भूरुहाः ।
अस्थिसारैस्तथा देहा ध्रियन्ते देहिनां ध्रुवम् ॥
तस्माच्चिरविनष्टेषु त्वङ्मांसेषु शरीरिणाम् ।
अस्थीनि न विनश्यन्ति साराण्येतानि देहिनाम् ॥
मांसान्यत्र निबद्धानि शिराभिः स्नायुभिस्तथा।
अस्थीन्यालम्बनं कृत्वा न शीर्यन्ते पतन्ति वा ॥

१ अहीं मूळमां तो भगशब्द छे. उपस्थ शब्दथी लिंग अने योनि ए बन्नेनुं ग्रहण थाय छे.

शरीरनुं धारण करवामां अस्थिओनुं प्राधान्य.

२३ जेम वृक्षो पोतामां रहेला सारोथी टकी रहेछे तेम प्राणिओनां शरीरो पोतामां रहेला अस्थिओरूप सारोथी टकी रहेछे ए वात निस्संशय छे. आम छे एटला माटे प्राणीओनां त्वचा तथा मांसो लांबा काळथी नष्ट थइ गया छतां पण अस्थिओ नष्ट थतां नथी. शरीरमां शिराओथी तथा स्नायुओथी बंधाएलां मांसो पण ए साररूप (मजबूत) अस्थिओना आलंबनने लीधेज वींखाइ जतां नथी के पडी जतां नथी.

२४ सन्धयस्तु द्विविधाश्चेष्टावन्तः स्थिराश्च ॥ शाखासु हन्वोः कट्यां च चेष्टावन्तस्तु सन्धयः शेषास्तु सन्धयः सर्वे विज्ञेया हि स्थिरा बुधैः॥

संधिओना (सांधाओना) बे भेद.

२४ चेष्टावाळा अने स्थिर ए रीते संधिओ बे प्रकारना छे. हाथपगमां, हडपचीना बे प्रदेशोमां अने कमरमां जे संधिओ छे तेओ चेष्टावाळा (चळ) छे अने बाकीना सघळा संधिओ स्थिर (अचळ) छे.

२५ संख्यातस्तु दशोत्तरे द्वे शते। तेषां शाखास्वष्टषष्टिरेकोनषष्टिः कोष्टे ग्रीवां प्रत्यूर्ध्वं त्र्यशीतिः ॥

संधिओनो विस्तार.

२५ संधिओ बसो दश २१० छे. एओमां अडसठ ६८ संधिओ शाखाओमां (हाथपगमां) छे. ओगणसाठ ५९ संधिओ कोठामां छे अने त्र्याशी ८३ संधिओ डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां छे.

२६ एकैकस्यां पादाङ्गुल्यां त्रयस्त्रयो द्वावङ्गुष्ठे ते चतुर्दश। जानुगुल्फवङ्क्षणेष्वेकैकः। एवं सप्तदशैकस्मिन्सक्थ्नि भवन्ति। एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ॥

शाखाओमां एटले हाथपगमां ६८ संधिओनी वेहेंचण.

२६ पगनी एक एक आंगळीमां त्रण त्रण अने अंगुठामां बे ए रीते चौद १४ थाय छे. गोठणमां एक १, घूंटीमां १, अने साथळनी संधिमां एक१ ए रीते त्रण थाय छे. आप्रमाणे एक पगमां सत्तर १७ संधिओ थाय छे. बीजा पगमां पण एप्रमाणे सत्तर १७ज संधिओ छे. ए रीतेज एक एक हाथमां पण सत्तर सत्तर संधिओ गणी लेवा एटले कुल सरवाळो करतां शाखाओमां अडसठ ६८ संधिओ थाय छे.

२७ त्रयः कटीकपालेषु। चतुर्विंशतिः पृष्ठवंशे। तावन्त एव पार्श्वयोः। उरस्यष्टौ॥

कोठामां ५९. संधिओनी वेहेंचण.

२७ कमरनां कपालास्थिओमां त्रण ३ संधिओ छे. बरडामां चोवीश २४ संधिओ छे. बे पडखांओमां मळीने चोवीश २४ संधिओ छे अने छातीमां आठ ८ संधिओ छे एटले कुल सरवाळो करतां कोठामां ओगणसाठ ५९ संधिओ थाय छे.

२८ तावन्त एव ग्रीवायाम्। त्रयः कण्ठे। नाडीषु हृदयक्लोमनिबद्धास्वष्टादश। दन्तपरिमाणा दन्तमूलेषु। एकः काकलके नासायां च। द्वौ वर्त्ममण्डलजौ नेत्राश्रयौ। गण्डकर्णशङ्खेष्वेकैकः। द्वौ हनुसन्धी। द्वावुपरिष्टाद् भ्रुवोः शङ्खयोश्च। पञ्च शिरःकपालेषु। एको मूर्ध्नि।

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां ८३ संधिओनी वेहेंचण.

२८ डोकमां आठ ८ संधिओ छे. गळानी नळीमां त्रण ३ संधिओ छे. गळाना पडखांओनी नाडीओ

१ पगनो अंगुठो त्रण अस्थिओथी युक्त छे तो पण संधिओ बेज थाय अने हाथनो अंगुठो पण त्रण अस्थिओथी युक्त छे तो पण संधिओ बेज गणाय. केमके त्रीजो संधि कांडाना संधिमांज अंतर्भूत थाय छे. (डल्लन.)

के जेओ हृदयमां अने तिलकमां बंधाएली छे तेओमां अढार १८ संधिओ छे. दांतोना पेढांओमां दांतोना जेटलाज संधिओ छे एटले बत्रीश ३२ संधिओ छे. गळानी अंदरना काकडामां एक १ संधि छे. नाकमां एक १ संधि छे. पांपणोनां मंडलोमां थएला अने नेत्रोरूपी आश्रयोवाळा बे २ संधिओ छे. बे गालोमां बे २ संधिओ छे. बे कानोमां बे २ संधिओ छे. बे लमणाओमां बे २ संधिओ छे. हडपचीना बे २ संधिओ छे. भमरोनी उपर बे २ संधिओ छे. लमणाओनी उपर बे २ संधिओ छे. माथानां कपालास्थिओमां पांच ५ संधिओ छे अने माथामां एक १ संधि छे एटले कुल सरवाळो करतां डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां त्र्याशी ८३ संधिओ थाय छे.

२९ त एते सन्धयोऽष्टविधाः । कोरोदूखलसामुद्गप्रतरतुन्नसेवनीवायसतुण्डमण्डलशङ्खावर्ताः । तेषामङ्गुलिमणिबन्धगुल्फजानुकूर्परेषु कोराः सन्धयः। कक्षावङ्क्षणदशनेषूदूखलाः । अंसपीठगुदभगनितम्बेषु सामुद्गाः। ग्रीवापृष्ठवंशयोः प्रतराः। शिरःकटीकपालेषु तुन्नसेवनी। हन्वोरुभयतस्तु वायसतुण्डाः। कण्ठहृदयनेत्रक्लोमनाडीषु मण्डलाः । श्रोत्रशृङ्गाटकेषु शङ्खावर्ताः। तेषां नामभिरेवाकृतयः प्रायेण व्याख्याताः ॥

संधिओना आकृतिओ उपरथी आठ भेद.

२९ संधिओना कोरसंधि, उदूखलसंधि, सामुद्गसंधि, प्रतरसंधि, तुन्नसेवनीसंधि, वायसतुंडसंधि, मंडलसंधि अने शंखावर्त्तसंधि ए नामना आठ भेद छे. एओमां आंगळीओ, हाथनां कांडां, घूंटीओ, गोठण अने कोणी एओना संधिओ कळीओना जेवा आकारोवाळा होवाने लीधे **कोरसंधिओ** केहेवाय छे. काखो, साथळोनां मूळो अने दांतोनां पेढांओ एओना संधिओ खांडणीयाना जेवा आकारोवाळा होवाने लीधे **उदूखलसंधिओ** केहेवाय छे. खभा, गुदा, भग अने नितंब एओना संधिओ संपुट जेवा आकारोवाळा होवाने लीधे **सामुद्गसंधिओ** केहेवाय छे. डोक अने बरडो एओना संधिओ त्रापाजेवा आकारोवाळा होवाने लीधे **प्रतरसंधिओ** केहेवाय छे. माथुं अने कमर एओनां कपालास्थिओना सांधाओ तूनी लीधेला कपडानी सीवणीना जेवा आकारोवाळा होवाने लीधे **तुन्नसेवनीसंधिओ** केहेवाय छे. हडपचीना बे भागोनी बन्ने बाजूना संधिओ कागडानी चांच जेवा आकारोवाळा होवाने लीधे **वायसतुंडसंधिओ** केहेवाय छे. गळुं, हृदय, नेत्रो, अने क्लोम (तिलक) एओनी नाडीओना संधिओ वर्तुल आकारवाळा होवाने लीधे **मंडलसंधिओ** केहेवाय छे. कान तथा शृंगाटक नामनां मर्मोनां संधिओ शंखना आवर्त्तो जेवा आकारोवाळा होवाने लीधे **शंखावर्त्तसंधिओ** केहेवाय छे. (आ विषयमां २१० करतां केटलाएक संधिओ न्यूनाधिक आपेला जणाय छे.)

३० अस्थ्नां तु सन्धयो ह्येते केवलाः परिकीर्तिताः ।
पेशीस्नायुशिराणां तु सन्धिसंख्या न विद्यते ॥

अस्थिओना सांधाओनी संख्या होवाविषे अने पेशीओ वगेरेना सांधाओनी संख्या न होवाविषे.

३० उपर जे सांधाओनी संख्या कही ते केवळ अस्थिओमां रहेला सांधाओनी कही छे एम समजवुं. पेशीओना, स्नायुओना अने शिराओना सांधाओनी संख्या तो छेज नहीं.

३१ नव स्नायुशतानि तासां शाखासु षट्शतानि । द्वे शते त्रिंशच्च कोष्ठे । ग्रीवां प्रत्यूर्ध्वं सप्ततिः ॥

१ आ पछीना अध्यायना २८ मा विषयमां जुवो.

स्नायुओनो विस्तार.

३१ स्नायुओ नवसो छे. एओमां छसो ६०० स्नायुओ शाखाओमां एटले हाथपगमां छे. बसो त्रीश २३० स्नायुओ कोठामां छे अने सीत्तेर ७० स्नायुओ डोकथी मांडीने उंचा प्रदेशोमां छे.

३२ एकैकस्यां तु पादाङ्गुल्यां षण् निचितास्तास्त्रिंशत् । तावत्य एव तलकूर्चगुल्फेषु । तावत्य एव जङ्घायाम् । दश जानुनि । चत्वारिंशदूरौ । दश वङ्क्षणे । शतमध्यर्द्धमेवमेकस्मिन्सक्थ्नि भवन्ति । एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ ॥

शाखाओमां एटले हाथ-पगमां ६०० छसो स्नायुओनी वेहेंचण.

३२ पगनी एक एक आंगळीमां छ छ स्नायुओ बंधाएली छे एटले त्रीश ३० थई. पगना तळामां, कूर्चमां (गाभामां) अने घूंटीमां मळीने त्रीश ३० छे. पींडीमां त्रीश ३० छे. गोठणमां दश १० छे. साथळमां चाळीश ४० छे. साथळनी संधिमां दश छे. एटले एक पगमां दोढसो १५० थई. एवी रीते बीजा पगमां अने बे हाथमां पण दोढसो दोढसो छे. आनो कुल सरवाळो करतां शाखाओमां छसो ६०० थाय छे.

३३ षष्टिः कट्याम् । अशीतिः पृष्ठे । पार्श्वयोः षष्टिः । उरसि त्रिंशत् ॥

कोठामां २३० स्नायुओनी वेहेंचण.

३३ कमरमां साठ ६० स्नायुओ छे, पीठमां एंशी ८० स्नायुओ छे. बे पडखांओमां मळीने साठ ६० स्नायुओ छे अने छातीमां त्रीश ३० स्नायुओ छे. आनो सरवाळो करतां कोठामां २३० बसो त्रीश स्नायुओ थाय छे.

३४ षट्त्रिंशद् ग्रीवायाम् । मूर्द्धि चतुस्त्रिंशत्

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां ७० स्नायुओनी वेहेंचण.

३४ डोकमां छत्रीश ३६ स्नायुओ छे अने माथामां चोंत्रीश ३४ स्नायुओ छे. आनो सरवाळो करतां डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां सीत्तेर ७० स्नायुओ थाय छे.

३५ एवं नव स्नायुशतानि व्याख्यातानि ॥
भवन्ति चात्र ॥
स्नायूश्चतुर्विधा विद्यात्तास्तु सर्वा निबोध मे ।
प्रतानवत्यो वृत्ताश्च पृथ्व्यश्च सुषिरास्तथा ॥
प्रतानवत्यः शाखासु सर्वसन्धिषु चाप्यथ ॥
वृत्तास्तु कण्डराः सर्वा विज्ञेयाः कुशलैरिह ।
आमपक्वाशयान्तेषु बस्तौ च सुषिराः खलु ॥
पार्श्वोरसि तथा पृष्ठे पृथुलाश्च शिरस्यथ ।

स्नायुओना चार भेद.

३५ उपर प्रमाणे स्नायुओनो कुल सरवाळो करतां नवसो थाय छे. ए स्नायुओनां जूदां जूदां स्थानो पण कह्यां. आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'ए सघळी स्नायुओ प्रतानवती, वृत्ता, सुषिरा अने पृथुला ए चार भेदोमां वेहेंचाय छे. शाखाओमां तथा सघला संधिओमां जे स्नायुओ छे तेओ लताओनी पेठे गुंचराओवाळी होवानेलीधे **प्रतानवती** केहेवाय छे. जे कंडराओ छे एटले आ अध्यायना अगीयारमा विषयमां कहेली मोटी स्नायुओ छे तेओ गोळ आकारवाळी होवाने लीधे **वृत्ता** केहेवाय छे. आमाशयना तथा पक्वाशयना अंतोमां अने मूत्राशयमां जे स्नायुओ छे तेओ छिद्रोवाळी (पोली) होवाने लीधे **सुषिरा** केहेवाय छे. पडखांओमां, छातीमां, पीठमां तथा माथामां जे स्नायुओ छे तेओ पोहोळी होवाने लीधे **पृथुला** केहेवाय छे.' (देहमां जे मांस, हाडकां, मेद तथा सांधाओ छे तेओनां बंधनोरूप स्नायुओ छे. स्नायुओ शिराओ करतां अत्यंत दृढ छे.)

३६ नौर्यथा फलकास्तीर्णा बन्धनैर्बहुभिर्युता॥ भारक्षमा भवेदप्सु नियुक्ता सुसमाहिता। एवमेव शरीरेऽस्मिन्यावन्तः सन्धयः स्मृताः॥ स्नायुभिर्बहुभिर्बद्धास्तेन भारसहा नराः॥ नह्यस्थीनि नवा पेश्यो न शिरा न च सन्धयः व्यापादितास्तथा हन्युर्यथा स्नायुः शरीरिणम्॥ यः स्नायूः प्रविजानाति बाह्याश्चाभ्यन्तरास्तथा सगूढं शल्यमाहर्तुं देहाच्छक्नोति देहिनाम्॥

स्नायुओनुं प्रयोजन तथा ते स्नायुओने शस्त्रक्रिया करतां बचावनानी जरूर.

३६ जेम अगाध पाणीमां चलावेलुं लाकडानां पाटीआंओवाळुं वाहाण घणां बंधनोथी बांधेलुं होवाने लीधे घणा बोजाने उपाडी शके छे तेम आ शरीरमां जेटला सांधाओ छे ते सघळा घणी स्नायुओथी बंधाएला होवाने लीधे माणसो बोजानुं सहन करी शके छे.

अस्थिओ, पेशीओ, शिराओ के संधिओ शस्त्रथी वींधाय के कपाय तो माणसने एवुं नुकसान करतां नथी के जेवुं स्नायुओ शस्त्रथी वींधाय के कपाय तो नुकसान करे छे. जे वैद्य बाहारनी तथा अंदरनी स्नायुओने बराबर जाणतो होय ते वैद्यज माणसोनां शरीरमांथी गूढ शल्यने काहाडी शके छे.

३७ पञ्च पेशीशतानि भवन्ति। तासां चत्वारि शतानि शाखासु। कोष्ठे षट्षष्टिः। ग्रीवां प्रत्यूर्ध्वं चतुस्त्रिंशत्॥

पेशीओनो विस्तार.

३७ मांसनी पेशीओ पांचसो ५०० छे. एओमां चारसो ४०० शाखाओमां एटले हाथपगमां छे. छासठ ६६ कोठामां छे अने चोत्रीश ३४ डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां छे.

३८ एकैकस्यां तु पादाङ्गुल्यां तिस्रस्तिस्रस्ताः पञ्चदश। दश प्रपदे। पादोपरि कूर्चसन्निविष्टास्तावत्य एव। दश गुल्फतलयोः। गुल्फजान्वन्तरे विंशतिः। पञ्च जानुनि। विंशतिरूरौ। दश वङ्क्षणे। शतमेवमेकस्मिन्सक्थ्नि भवन्ति। एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ॥

शाखाओमां एटले हाथपगमां ४०० चारसो पेशीओनी वेहेंचण.

३८ पगनी एक एक आंगळीमां त्रण त्रण पेशीओ छे एटले पंदर १५ थई. पगना फणामां दश १० छे. पगनी उपरना कूर्चमां (गाभामां) दश १० छे. घूंटीमां अने तळामां मळीने दश १० छे. घूंटीना अने गोठणना मध्यमां वीश२०छे. गोठणमां पांच ५ छे. साथळमां वीश २० छे अने साथळना सांधामां दश १० छे. एटले एक पगमां सो पेशीयो थई. आप्रमाणे बीजा पगमां अने बे हाथमां सो सो गणी लेवी एटले चारसो ४०० पेशीओ हाथपगमां मळीने थाय छे.

३९ तिस्रः पायौ। एका मेढ्रे। सेवन्यां चापरा। द्वे वृषणयोः। स्फिचोः पञ्च पञ्च। द्वे बस्तिशिरसि। पञ्चोदरे। नाभ्यामेका। पृष्ठोर्ध्वसंनिविष्टाः पञ्च पञ्च दीर्घाः। षट् पार्श्वयोः। दश वक्षसि। अक्षकांसौ प्रति समन्तात्सप्त। द्वे हृदयामाशययोः। षड् यकृत्प्लीहोण्डुकेषु।

कोठामां छासठ ६६ पेशीओनी वेहेंचण.

३९ त्रण३ पेशीओ गुदामां छे. एक १ पेशी लिंगमां छे. एक १ पेशी लिंगनी सीवणीमां छे. बे २ पेशीओ वृषणोमां छे. एक एक कूलामां पांच पांच एटले बन्ने कूलाओमां मळीने दश १० पेशीओ छे. बे २ पेशीओ मूत्राशयना उपरना भागमां छे. पांच ५ पेशीओ उदरमां छे. एक १ पेशी नाभिमां छे. पीठना उपरना भागमां लांबी दश १० पेशीओ छे. बे पडखामां मळीने छ ६ पेशीओ छे. दश १० पेशीओ छातीमां छे. अक्षक नामनां बे अस्थिओनी तथा खभाओनी चो-

मेर सात ७ पेशीओ छे. हृदय अने आमाशय एओमां मळीने बे २ पेशीओ छे. यकृत्‌मां बे २ पेशीओ छे, प्लीहामां बे २ पेशीओ छे अने मळनी पोटलीमां बे २ पेशीओ छे. आनो सरवाळो करतां कोठामां छासठ ६६ पेशीओ थाय छे. (गयदासे तो कोठामां साठ गणी छे अने डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां चाळीश गणी छे. वृद्ध वाग्भटे पण कोठामां साठज गणी छे. डल्हन.)

४० ग्रीवायां चतस्रः । अष्टौ हन्वोः । एकैका काकलकगलयोः । द्वे तालुनि । एका जिह्वायाम् । ओष्ठयोर्द्वे । घोणायां द्वे । द्वे नेत्रयोः । गण्डयोश्चतस्रः । कर्णयोर्द्वे । चतस्रो ललाटे । एका शिरसि ॥

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां ३४ चोंत्रीश पेशीओनी वेहेंचण.

४० डोकमां चार ४ पेशीओ छे. हडपचीना बे भागोमां आठ ८ पेशीओ छे. काकडामां एक १ पेशी छे. गळामां एक १ पेशी छे. ताळवामां बे २ पेशीओ छे. जीभमां एक १ पेशी छे. बे होठमां बे २ पेशीओ छे. नाकमां बे २ पेशीओ छे. नेत्रोमां बे २ पेशीओ छे. बे गालोमां चार ४ पेशीओ छे. बे कानोमां बे २ पेशीओ छे. ललाटमां चार ४ पेशीओ छे अने माथामां एक १ पेशी छे. आनो सरवाळो करतां डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां चोंत्रीश ३४ पेशीओ थाय छे.

४१ शिरास्नाय्वस्थिपर्वाणि सन्धयश्च शरीरिणाम् ।
पेशीभिः संवृतान्यत्र बलवन्ति भवन्त्यतः ॥

पेशीओनुं प्रयोजन.

४१ माणसोनां शिराओ, स्नायुओ, अस्थिओ बीजा विभागो अने संधिओ एओ पेशीओथी वींटाएला होय छे तेथी बळवान् रहे छे.

४२ स्त्रीणां तु विंशतिरधिका । दश तासां स्तनयोरेकैकस्मिन् पञ्च पञ्च । यौवने तासां परिवृद्धिः । अपत्यपथे चतस्रस्तासां प्रसृतेऽभ्यन्तरतो द्वे मुखाश्रिते बाह्ये च वृत्ते द्वे ॥ गर्भच्छिद्रसंश्रितास्तिस्रः । शुक्रार्तवप्रवेशिन्यस्तिस्र एव । पित्तपक्काशयमध्ये गर्भाशयो यत्र गर्भस्तिष्ठति ॥

स्त्रीओने वीश पेशीओ अधिक होवाविषे.

४२ स्त्रीओने उपर कहेली पांचसो पेशीओ करतां वीश पेशीओ अधिक छे. एओमां एक एक स्तनमां पांच पांच एटले बन्ने स्तनोमां मळीने दश १० छे. ज्यारे यौवन प्राप्त थाय छे त्यारे ए पेशीओ वृद्धि पामे छे. योनिमां चार ४ पेशीओ छे तेओमां योनिना मुखमां रही अंदर प्रसार पामेली अर्थात् मूत्रना स्रोतरूप बे पेशीओ छे अने योनिथी बाहार देखाई रेहेली योनिनी डोडीनां बे पडखांओमां बे पेशीओ छे. डोडीनां पडखांओमां रहेली ए बे पेशीओ वर्तुल छे. त्रण ३ पेशीओ गर्भने रेहेवाना मार्गमां त्रण आवर्त्तोरूपे रही छे अने त्रण ३ पेशीओ गर्भाशयनी अंदर वीर्यने तथा रजने प्रवेश करावनारी छे के जे गर्भाशय, पित्ताशय अने पक्काशय ए बेना मध्यमां त्रीजा आवर्त्तनी अंदर छे. ए गर्भाशयमां गर्भ रेहे छे.

४३ तासां बहलपेलवस्थूलाणुपृथुवृत्तह्रस्वदीर्घस्थिरमृदुश्लक्ष्णकर्कशभावाः सन्ध्यस्थिशिरास्नायुप्रच्छादका यथादेशं स्वभावत एव भवन्ति ॥

स्थानकोने अनुसरीने पेशीओनां अनेक रूपो.

४३ घाटापणुं, पांखापणुं, जाडापणुं, झीणापणुं, पोहोळापणुं, गोळपणुं, टुंकापणुं, लांबापणुं, कठणपणुं, कोमळपणुं, लासापणुं तथा खरसटपणुं इत्यादि पेशीओना प्रकारो के जेओ संधिओने, अस्थिओने, शिराओने तथा स्नायुओने ढांकवामां उपयोग पामेला छे तेओ पोतपोतानां

स्थानकोना अनुसार प्रमाणे स्वभावथीज थाय छे.

४४ पुंसां पेश्यः पुरस्ताद्याः प्रोक्ता लक्षणमुष्कजाः ।
स्त्रीणामावृत्य तिष्ठन्ति फलमन्तर्गतं हि ताः ॥

पुरुषोनां लिंगोमां तथा वृषणोमां रेहेनारी पेशीओ स्त्रीओने कया प्रदेशमां छे तेविषे.

४४ उपरना ३९ मा विषयमां पुरुषोनां लिंगोमां तथा वृषणोमां जे पेशीओ कहेली छे ते पेशीओ स्त्रीओना शरीरमां अंदर रहेला गर्भाशयने ढांकी रहेली छे. (गयदास तथा भोज तो एम केहे छे के स्त्रीओने ए त्रण पेशीओ छेज नहीं.)

४५ मर्मशिराधमनीस्रोतसामन्यत्र प्रविभागः ॥

मर्म वगेरेनुं विस्तारादिक हवे पछीना अध्यायोमां केहेवामां आवशे.

४५ मर्मोनो, शिराओनो, धमनीओनो अने अंदर मुखवाळां स्रोतोनो प्रविभाग हवे पछी छठ्ठा, सातमा, आठमा तथा नवमा अध्यायमां केहेवामां आवशे.

४६ शङ्खनाभ्याकृतिर्योनिस्त्र्यावर्ता सा प्रकीर्तिता ।
तस्यास्तृतीये त्वावर्ते गर्भशय्या प्रतिष्ठिता ॥
यथा रोहितमत्स्यस्य मुखं भवति रूपतः ।
तत्संस्थानां तथारूपां गर्भशय्यां विदुर्बुधाः ॥

योनिनुं तथा गर्भाशयनुं स्वरूप.

४६ योनि शंखनी नाभिना जेवा आकारवाळी छे अने तेनी अंदर त्रण आवर्त्तो छे. योनिना त्रीजा आवर्त्तमां गर्भशय्या (गर्भाशय) छे. जेवुं रोहित नामना (रोहीडा) मत्स्यनुं मुख होय छे तेवाज आकारवाळी अने तेवाज रूपवाळी गर्भशय्या छे एम विद्वानोए निश्चय करेलो छे. (गर्भाशय नाहाना मुखवाळो छे अने अंदर मोटा छिद्रवाळो छे.)

४७ आभुग्नोऽभिमुखः शेते गर्भो गर्भाशये स्त्रियाः
स योनिं शिरसा याति स्वभावात्प्रसवं प्रति ॥

मूढ गर्भने काहाडवा माटे गर्भनी स्थितिनुं स्वरूप.

४७ स्त्रीना गर्भाशयमां गर्भ अत्यंत संकोचेलां अंगोवाळो थई, सामे मोहोडेज रेहे छे. ज्यारे प्रसवकाळ प्राप्त थाय छे त्यारे ए गर्भ स्वभावथीज पोताना माथावते योनिना द्वार तरफ आवे छे.

४८ त्वक्पर्यन्तस्य देहस्य योऽयमङ्गविनिश्चयः।
शल्यज्ञानादृते नैष वर्ण्यतेऽङ्गेषु केषुचित् ॥

आयुर्वेदनां सघळां तंत्रोमां शल्यतंत्रनी श्रेष्ठता.

४८ जेना अंतमां त्वचा छे एवा शरीरमां रहेलां सर्व अंगोनो (विभागोनो) जे आ निश्चय केहेवामां आव्यो ते निश्चय शल्यतंत्रविना बीजां कोईपण तंत्रमां कह्यो नथी.

४९ तस्मान्निःसंशयं ज्ञानं हर्त्रा शल्यस्य वाञ्छता ।
शोधयित्वा मृतं सम्यग्द्रष्टव्योऽङ्गविनिश्चयः ॥
प्रत्यक्षतो हि यद् दृष्टं शास्त्रदृष्टं च यद्भवेत् ।
समासतस्तदुभयं भूयो ज्ञानविवर्द्धनम् ॥

शरीरनी अंदरना सघळा विभागोनुं ज्ञान केवळ शास्त्रथीज नहीं पण प्रत्यक्ष अवलोकनथी पण मेळववुं जोइए.

४९ शरीरनी अंदरना सघळा विभागोनी स्थिति जो प्रत्यक्षथी (नजरथी) जोवामां आवी होय तो तमाम संशयोनुं छेदन थई जाय छे एटला माटे शल्यने खेंची काहाडवा वगेरेनी वृत्ति करनारा वैद्ये शरीरनी अंदरना सघळा विभागोनुं निस्संशय ज्ञान मेळववानी इच्छाथी शबने संपूर्ण रीते फाडीतोडी नजरे जोइने सर्व विभागोनो निश्चय करवो जोइए. संक्षेपमां केहेवानुं ए छे के शास्त्र तथा प्रत्यक्ष ए बन्नेने मेळवीने जे कांई

अवलोकन करवामां आव्युं होय तेथी ज्ञाननी अत्यंत वृद्धि थाय छे.

५० तस्मात्समस्तगात्रमविषोपहतमदीर्घव्याधिपीडितमवर्षशतिकं निःसृष्टमूत्रपुरीषं पुरुषमवहन्त्यामापगायां निबद्धं पञ्जरस्थं मुञ्जवल्कलकुशशणादीनामन्यतमेनावेष्टिताङ्गमप्रकाशे देशे कोथयेत्सम्यक्प्रकुथितश्चोद्धृत्य ततो देहं सप्तरात्रादुशीरवालवेणुवल्कलकूर्चीनामन्यतमेन शनैःशनैरवघर्षयंस्त्वगादीन्सर्वानेव बाह्याभ्यन्तराङ्गप्रत्यङ्गविशेषान्यथोक्तान् लक्षयेच्चक्षुषा ॥

केवा शबनुं फाडीतोडीने अवलोकन करवुं तथा ते अवलोकन शी रीते करवुं.

५० जे शब संपूर्ण गात्रोवाळुं होय, झेरथी उपहत थएल न होय, लांबा काळना व्याधिथी पीडाएल न होय, घणां वर्षनी उमरनुं न होय अने पुरुष होय तेनां अंगोमां खरडाएलां विष्ठामूत्र वगेरेने साफ करी नाखी ते शबने पांजरामां राखी, मुंज नामनुं खड, झाडनी छाल, दर्भ अने शण वगेरे एओमांना कोई पदार्थथी तेनां सघळां अंगोने वींटी, झाझा प्रवाह वगरनी नदीमां कोई गुप्त प्रदेशनी अंदर मूकी राखीने फ़गाववुं. सारी पेठे फूगी जाय त्यारे ते शबने बाहार काहाडी लइने पछी सात दिवसनी अंदर धीरे धीरे वाळो, वाळ, वांस, झाडनी छाल के (ब्रास जेवी) कूची एओमांना कोई पदार्थवते घसी घसी खोलीने ते शबना, आ ग्रंथमां कहेला त्वचा वगेरे बाहारना तथा अंदरना सघळा अंगोना तथा प्रत्यंगोना विभागोने अने विशेषोने नेत्रोवते जोवा. (शब जो अपूर्ण गात्रोवाळुं होय तो शास्त्रमां कहेली अवयवोनी संख्या तथा ते संख्याने लगता विशेषो पण प्रत्यक्ष थाय नहीं एटलामाटे संपूर्ण गात्रोवाळुं शब लेवानुं कह्युं छे. विषथी उपहत थएलुं होय तो विषनी ज्वाळाथी त्वचा वगेरे वींखाई गएलां होवाथी विभागोनुं बराबर प्रत्यक्ष थाय नहीं एटलामाटे विषथी उपहत न थएलुं शब लेवानुं कह्युं छे. जो लांबा काळनी व्याधिथी पीडाइने मरण पामेल होय तो त्वचा वगेरेनुं माप बराबर रहेलुं होय नहीं एटला माटे लांबा काळना व्याधिथी न पीडाएलुं शब लेवानुं कह्युं छे. शबने खड वगेरेथी वीटेलुं न होय तो माछलां वगेरे खाई जाय तेथी अवयवो अपूर्ण थई जाय एटला माटे खड वगेरेथी वींटवानुं कह्युं छे. पांजरामां राख्युं न होय तो जळना वेगथी भ्रष्ट थई जाय एटलामाटे पांजरामां राखवानुं कह्युं छे अने अगुप्त प्रदेशमां राख्युं होय तो गरंजो वगेरे प्राणीओ तोडी फाडीने बीगाडी नाखे एटलामाटे गुप्त प्रदेशमां राखवानुं कह्युं छे इत्यादि समजी लेवुं.)

५१ श्लोकौ चात्र भवतः ॥

न शक्यश्चक्षुषा द्रष्टुं देहे सूक्ष्मतमो विभुः ।
दृश्यते ज्ञानचक्षुर्भिस्तपश्चक्षुर्भिरेव च ॥

शरीरना सघळा अवयवोनुं प्रत्यक्षज्ञान मेळवी शकाय छे पण जीवात्मानुं प्रत्यक्ष ज्ञान तो कदीपण मेळवी शकाय एम नथी.

५१ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "शरीरमां जीवात्मा के जे अत्यंत सूक्ष्म छे तेनुं कदी पण चक्षुथी प्रत्यक्ष अवलोकन करी शकाय एम नथी. जीवात्मानुं अवलोकन तो ज्ञानरूप चक्षुओथी तथा तपरूप चक्षुओथीज करी शकाय छे.

५२ शरीरे चैव शास्त्रे च दृष्टार्थः स्याद्विशारदः
दृष्टश्रुताभ्यां सन्देहमवापोह्याचरेत्क्रियाः ॥

शास्त्र तथा प्रत्यक्ष ए बन्नेथी शरीरना अवयवोनुं अवलोकन करवानी वैद्यने भलामण.

५२ जे वैद्ये शास्त्रथी तथा प्रत्यक्षथी पण

शरीरना सघळा विभागोनुं अवलोकन करयुं होय ते वैद्य प्रवीण थाय छे. वैद्ये प्रत्यक्षथी तथा शास्त्रथी सघळा संदेहने दूर करीने पछी क्रियाओ करवी."

अध्याय ६ ट्ठो.

१ अथातः प्रत्येकमर्मनिर्देशं शारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'प्रत्येकमर्मनिर्देशशारीर' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सप्तोत्तरं मर्मशतम् ॥ तानि मर्माणि पञ्चात्मकानि । तद्यथा। मांसमर्माणि । शिरामर्माणि । स्नायुमर्माणि । अस्थिमर्माणि । सन्धिमर्माणि चेति ॥ न खलु मांसशिरास्नाय्वस्थिसन्धिव्यतिरेकेणान्यानि मर्माणि भवन्ति यस्मान्नोपलभ्यन्ते ॥

मर्मोनी संख्या तथा पांच जातो.

२ शरीरमां मर्मो १०७ एकसो सात छे. ए मर्मो मांसमर्म, शिरामर्म, स्नायुमर्म, अस्थिमर्म अने संधिमर्म ए रीते पांच जातनां छे. मांस, शिराओ, स्नायुओ, अस्थिओ अने संधिओ एओ शिवाय मर्मो जोवामां आवतां नथी माटे मर्मोनी आ पांच जातोज गणी छे.

३ तत्रैकादश मांसमर्माणि । एकचत्वारिंशच्छिरामर्माणि । सप्तविंशतिः स्नायुमर्माणि । अष्टावस्थिमर्माणि । विंशतिः सन्धिमर्माणि । तदेतत्सप्तोत्तरं मर्मशतम् ॥

मर्मोनी पांच जातोनी जूदी जूदी संख्या के जेनो सरवाळो करतां १०७ थाय छे.

३ एओमां (११) अगीयार मांसमर्मो छे. (४१) एकतालीस शिरामर्मो छे. (२७) सत्यावीश स्नायुमर्मो छे. (८) आठ अस्थिमर्मो छे अने (२०) वीश संधिमर्मो छे. आ जूदी जूदी संख्याओनो सरवाळो करतां १०७ थाय छे.

४ तेषामेकादशैकस्मिन्सक्थ्नि भवन्ति । एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ । उदरोरसोर्द्वादश । चतुर्दश पृष्ठे । ग्रीवां प्रत्यूर्ध्वं सप्तत्रिंशत् ॥

१०७ मर्मोनी शरीरना प्रदेशोमां वेहेंचण.

४ एओमां (११) अगीयार मर्मो एक पगमां छे. बीजा पगमां पण (११) अगीयार छे. एक एक हाथमां पण अगीयार अगीयार मर्मो छे. आ प्रमाणे शाखाओमां कुल (४४) चुमालीस मर्मो थयां. पेटमां अने छातीमां मळीने (१२) बार मर्मो छे अने पीठमां (१४) चौद मर्मो छे एटले कोठामां कुल (२६) छवीश मर्मो थयां. डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां (३७) साडत्रीश मर्मो छे. आनो सरवाळो करतां (१०७) थाय छे.

५ तत्र सक्थिमर्माणि क्षिप्रतलहृदयकूर्चकूर्चशिरोगुल्फेन्द्रबस्तिजान्वाण्यूर्वीलोहिताक्षाणि विटपं चेति । एतेनेतरत्सक्थि व्याख्यातम् ॥

पगमां रहेलां मर्मोनां नामो.

५ एक पगमां क्षिप्र, तलहृदय, कूर्च, कूर्चशिर, गुल्फ, इंद्रबस्ति, जानु, आणि, ऊर्वी, लोहिताक्ष अने विटप ए नामनां अगीयार मर्मो छे. बीजा पगमां पण एज नामनां अगीयार मर्मो छे.

६ उदरोरसोस्तु गुदबस्तिनाभिहृदयस्तनमूलस्तनरोहितापलापान्यपस्तम्भौ चेति ॥

पेट तथा छाती एओमां रहेलां मर्मोनां नामो.

६ पेट तथा छाती एओमां मळीने गुद, बस्ति, नाभि, हृदय, स्तनमूल, स्तनमूल, स्तनरोहित, स्तनरोहित अपलाप, अपलाप, अपस्तंभ अने अप

---

१ मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि अने संधि ए प्रत्येकनां जूदां जूदां दरएक मर्मोनां निरूपणविषेनो.

स्तंभ ए नामनां बार मर्मो छे. (आमां स्तनमूल नामनां बे मर्मो छे, स्तनरोहित नामनां बे मर्मो छे, अपलाप नामनां बे मर्मो छे अने अपस्तंभ नामनां पण बे मर्मो छे तेथी बबेवार एनां ए नामो लख्यां छे.)

७ पृष्ठमर्माणि तु कटीकतरुणककुन्दरनितम्बपार्श्वसन्धिबृहत्यंसफलकान्यंसौ चेति ॥

पीठमां रहेलां मर्मोनां नामो.

७ पीठमां कटीकतरुण, कटीकतरुण, ककुंदर, ककुंदर, नितंब, नितंब, पार्श्वसंधि, पार्श्वसंधि, बृहती, बृहती, अंसफलक, अंसफलक, अंस अने अंस, ए नामनां चौद मर्मो छे. (आमां कटीकतरुण नामनां बे, ककुंदर नामनां बे, नितंब नामनां बे, पार्श्वसंधि नामनां बे, बृहती नामनां बे, अंसफलक नामनां बे अने अंस नामनां पण बे मर्मो छे तेथी बबे वार एनां ए नामो लख्यां छे.)

८ बाहुमर्माणि तु क्षिप्रतलहृदयकूर्चकूर्चशिरोमणिबन्धेन्द्रबस्तिकूर्पराण्यूर्वीलोहिताक्षाणि कक्षधरं चेति। एतेनेतरो बाहुर्व्याख्यातः ॥

हाथमां रहेलां मर्मोनां नामो.

८ हाथमां क्षिप्र, तलहृदय, कूर्च, कूर्चशिर, मणिबंध, इंद्रबस्ति, कूर्पर, आणि, ऊर्वी, लोहिताक्ष अने कक्षधर ए नामनां अगीयार मर्मो छे. बीजा हाथमां पण एज नामनां अगीयार मर्मो छे. (आमां क्षिप्र, तलहृदय, कूर्च, कूर्चशिर, इंद्रबस्ति, आणि, ऊर्वी अने लोहिताक्ष ए आठ मर्मो तो पगनां मर्मोनी साथे तुल्य नामोवाळांज छे. फकत, मणिबंध, कूर्पर अने कक्षधर ए त्रण मर्मो जूदां नामोवाळां छे.)

९ जत्रूर्ध्वं मर्माणि चतस्रो धमन्योऽष्टौ मातृका द्वे कृकाटिके द्वे विधुरे द्वौ फणौ द्वावपाङ्गौ द्वावावर्तौ द्वावुत्क्षेपौ द्वौ शङ्खावेका स्थपनी पञ्च सीमन्ताश्चत्वारि शृङ्गाटकान्येकोऽधिपतिरिति ॥

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां रहेलां मर्मोनां नामो.

९ डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां धमनी, धमनी, धमनी, धमनी, मातृका, मातृका, मातृका, मातृका, मातृका, मातृका, मातृका, मातृका, कृकाटिका, कृकाटिका, विधुर, विधुर, फण, फण, अपांग, अपांग, आवर्त्त, आवर्त्त, उत्क्षेप, उत्क्षेप, शंख, शंख, स्थपनी, सीमंत, सीमंत, सीमंत, सीमंत, सीमंत, शृंगाटक, शृंगाटक, शृंगाटक, शृंगाटक, अने अधिपति ए नामनां साडत्रीश मर्मो छे. (आमां धमनी नामनां चार, मातृका नामनां आठ, कृकाटिका नामनां बे, विधुर नामनां बे, फण नामनां बे, अपांग नामनां बे, आवर्त नामनां बे, उत्क्षेप नामनां बे, शंख नामनां बे, स्थपनी नामनुं एक, सीमंत नामनां पांच, शृंगाटक नामनां चार अने अधिपति नामनुं एक मर्म छे.)

१० तत्र तलहृदयेन्द्रबस्तिगुदस्तनरोहितानि मांसमर्माणि ॥

सघळां मर्मोमां मांसनां मर्मो कयां कयां छे?

१० तलहृदय नामनां चार, इंद्रबस्ति नामनां चार, गुदनामनुं एक अने स्तनरोहित नामनां बे, ए रीते **अगीयार** मर्मो मांसनां छे. (जो के सघळां मर्मोमां मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि अने संधि ए पांचेनो संबंध होय छे तो पण जेओमां मांसनो संबंध अधिक होय छे तेओ मांसमर्मो केहेवाय छे.)

११ धमनीमातृकाशृङ्गाटकापाङ्गस्थपनीफणस्तनमूलापलापापस्तम्भहृदयनाभिपार्श्वसन्धिबृहतीलोहिताक्षोर्व्यः शिरामर्माणि ॥

सघळां मर्मोमां शिराओनां मर्मो कयां कयां छे?

११ धमनी नामनां चार, मातृका नामनां

आठ, शृंगाटक नामनां चार, अपांग नामनां बे, स्थपनी नामनुं एक, फण नामनां बे, स्तनमूल नामनां बे, अपलाप नामनां बे, अपस्तंभ नामनां बे, हृदय नामनुं एक, नाभिनामनुं एक, पार्श्वसंधि नामनां बे, बृहती नामनां बे, लोहिताक्ष नामनां चार अने ऊर्वी नामनां चार ए रीते **एकतालीस** मर्मो शिराओनां छे. (जो के सघळां मर्मोमां मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि अने संधि ए पांचेनो संबंध होय छे तो पण जेओमां शिराओनो संबंध अधिक होय छे तेओ शिरामर्मो केहेवाय छे.)

१२ आणिविटपकक्षधरकूर्चकूर्चशिरोबस्तिक्षिप्रांसविधुरोत्क्षेपाः स्नायुमर्माणि ॥

सघळां मर्मोमां स्नायुओनां मर्मो कयां कयां छे ?

१२ आणि नामनां चार, विटप नामनां बे, कक्षधर नामनां बे, कूर्च नामनां चार, कूर्चशिर नामनां चार, बस्ति नामनुं एक, क्षिप्र नामनां चार, अंस नामनां बे, विधुर नामनां बे अने उत्क्षेप नामनां बे ए रीते सत्यावीश मर्मो स्नायुओनां छे, (जो के सघळां मर्मोमां मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि अने संधि ए पांचेनो संबंध होय छे तो पण जेओमां स्नायुओनो संबंध अधिक होय छे तेओ स्नायुमर्मो केहेवाय छे.)

१३ कटीकतरुणनितम्बांसफलकशङ्खास्त्वस्थिमर्माणि ॥

सघळां मर्मोमां अस्थिओनां मर्मो कयां कयां छे ?

१३ कटीकतरुण नामनां बे, नितंब नामनां बे, अंसफलक नामनां बे अने शंख नामनां बे ए रीते **आठ** मर्मो अस्थिओनां छे. (जो के सघळा मर्मोमां मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि अने संधि ए पांचेनो संबंध होय छे तो पण जेओमां अस्थिओनो संबंध अधिक होय छे तेओ अस्थिमर्मो केहेवाय छे.)

१४ जानुकूर्परसीमन्ताधिपतिगुल्फमणिबन्धकुकुन्दरावर्तकृकाटिकाश्चेति सन्धिमर्माणि ॥

सघळां मर्मोमां संधिओनां मर्मो कयां कयां छे ?

१४ जानु नामनां बे, कूर्पर नामनां बे, सीमंत नामनां पांच, अधिपति नामनुं एक, गुल्फ नामनां बे, मणिबंध नामनां बे, ककुंदर नामनां बे, आवर्त्त नामनां बे, अने कृकाटिका नामनां बे ए रीते **वीस** मर्मो संधिओनां छे. (जो के सघळां मर्मोमां मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि अने संधि ए पांचेनो संबंध होय छे तो पण जेओमां संधिओनो संबंध अधिक होय छे तेओ संधिमर्मो केहेवाय छे.)

१५ तान्येतानि पञ्च विकल्पानि मर्माणि भवन्ति । तद्यथा । सद्यःप्राणहराणि कालान्तरप्राणहराणि विशल्यघ्नानि वैकल्यकराणि रुजाकराणि चेति ॥

तत्र सद्यःप्राणहराण्येकोनविंशतिः । कालान्तरप्राणहराणि त्रयस्त्रिंशत् । त्रीणि विशल्यघ्नानि । चतुश्चत्वारिंशद्वैकल्यकराणि । अष्टौ रुजाकराणीति ॥

सघळां मर्मोनी बीजी पण पांच जात अने ते एक एक जातमां कटलां मर्मोनी संख्या छे ते.

१५ सघळां मर्मो जेम मांसमर्म, शिरामर्म, स्नायुमर्म, अस्थिमर्म अने संधिमर्म ए पांच जातमां वेहेंचाएलां छे तेम सद्यःप्राणहर, कालांतरप्राणहर, विशल्यघ्न, वैकल्यकर, अने रुजाकर ए रीते बीजी पण पांच जातमां वेहेंचाय छे.

एकसो सात मर्मोमां ओगणीश मर्मो **सद्यःप्राणहर,** (सात दिवसनी अंदर प्राण लेनारां) तेंत्रीश मर्मो **कालांतरप्राणहर,** (पखवाडीआमां अथवा एक महिनामां प्राण लेनारां) त्रण मर्मो **विशल्यघ्न** (काहाडेला शल्यथी रहित थवाथी प्राण लेनारां) चुमालीश मर्मो **वैकल्यकर,** (विकल-

पणुं करनारां एटले खोडखापण करी देनारां) अने आठ मर्मो **रुजाकर,** (पीडा करनारां) छे.

१६ भवन्ति चात्र ॥

शृङ्गाटकान्यधिपतिः शङ्खौ कण्ठशिरा गुदम् ।
हृदयं बस्तिनाभी च घ्नन्ति सद्यो हतानि तु ॥
वक्षोमर्माणि सीमन्ततलक्षिप्रेन्द्रबस्तयः ।
कटीकतरुणे सन्धी पार्श्वजौ बृहती च ये ॥
नितम्बाविति चैतानि कालान्तरहराणि तु ।
उत्क्षेपौ स्थपनी चैव विशल्यघ्नानि निर्दिशेत्॥
लोहिताक्षाणिजानूर्वीकूर्चा विटपकूर्पराः ।
कुकुन्दरे कक्षधरे विधुरे सकृकाटिके ॥
अंसांसफलकापाङ्गा नीले मन्ये फणौ तथा ।
वैकल्यकरणान्याहुरावर्तौ द्वौ तथैव च ॥
गुल्फौ द्वौ मणिबन्धौ द्वौ द्वे द्वे कूर्चशिरांसि च ।
रुजाकराणि जानीयादष्टावेतानि बुद्धिमान् ॥
क्षिप्राणि विद्धमात्राणि घ्नन्ति कालान्तरेण च॥

सद्यःप्राणहर आदि पांचे प्रकारनां मर्मोनुं विवेचन.

१६ आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "चार **शृंगाटक** नामनां मर्मो, एक **अधिपति** नामनुं मर्म, बे **शंख** नामनां मर्मो, आठ **मातृका** नामनां मर्मो, एक **गुद** नामनुं मर्म, एक **हृदय** नामनुं मर्म, एक **बस्ति** नामनुं मर्म अने एक **नाभि** नामनुं मर्म ए ओगणीश मर्मो **सद्यःप्राणहर** छे.

बे **स्तनमूल** नामनां मर्मो, बे **स्तनरोहित** नामनां मर्मो, बे **अपलाप** नामनां मर्मो, बे **अपस्तंभ** नामनां मर्मो, पांच **सीमंत** नामनां मर्मो, चार **तलहृदय** नामनां मर्मो, चार **क्षिप्र** नामनां मर्मो, चार **इंद्रबस्ति** नामनां मर्मो, बे **कटीकतरुण** नामनां मर्मो, बे **पार्श्वसंधि** नामनां मर्मो, बे **बृहती** नामनां मर्मो अने बे **नितंब** नामनां मर्मो ए तेंत्रीश मर्मो **कालांतर प्राणहर** छे.

बे **उत्क्षेप** नामनां मर्मो अने एक **स्थपनी** नामनुं मर्म ए त्रण मर्मो **विशल्यघ्न** छे.

चार **लोहिताक्ष** नामनां मर्मो, चार **आणि** नामनां मर्मो, बे **जानु** नामनां मर्मो, चार **ऊर्वी** नामनां मर्मो, चार **कूर्च** नामनां मर्मो, बे **विटप** नामनां मर्मो, बे **कूर्पर** नामनां मर्मो, बे **ककुंदर** नामनां मर्मो, बे **कक्षधर** नामनां मर्मो, बे **विधुर** नामनां मर्मो, बे **कृकाटिका** नामनां मर्मो, बे **अंस** नामनां मर्मो, बे **अंसफलक** नामनां मर्मो, बे **अपांग** नामनां मर्मो, चार **धमनी** नामनां मर्मो के जेओमां बे नीला तथा बे मन्या नामथी ओळखाय छे तेओ, बे **फण** नामनां मर्मो अने **बे** आवर्त नामनां मर्मो ए चुमालीश मर्मो **वैकल्यकर** छे.

बे **गुल्फ** नामनां मर्मो, बे **मणिबंध** नामनां मर्मो अने चार **कूर्चशिर** नामनां मर्मो ए आठ मर्मो **रुजाकर** छे.

कालांतरप्राणहर मर्मोमां जे क्षिप्र नामनां चार मर्मो छे तेओ जो अत्यंत अभिघात पाम्यां होय तो तुरत पण मारी नाखे छे अने थोडो अभिघात पाम्यां होय तो पखवाडीए अथवा महीने मारी नाखे छे.

१७ मर्माणि नाम मांसशिरास्नाय्वस्थिसन्धिसन्निपातास्तेषु स्वभावत एव विशेषेण प्राणास्तिष्ठन्ति तस्मान्मर्मस्वभिहतास्तांस्तान् भावानापद्यन्ते ॥

मर्मो अभिघात पामवाथी प्राणहरणादिक करे छे ए विषयमां उपपत्तिओ.

१७ मांस, शिरा, स्नायु, अस्थि अने संधि एओनां ज्यां ज्यां अत्यंत मिश्रणो छे ते ते स्थलो **मर्म** केहेवाय छे. ए मर्मस्थलोमां आ शारीरस्थानना चोथा अध्यायना बीजा विषयमां कहेला अग्नि तथा सोम आदि प्राणो स्वभावथीज विशेषे करी रेहे छे एटला माटे मर्मस्थलोमां अभि-

घात पामेलां माणसो आ अध्यायना ३३ माथी ३७ मा सुधीना विषयोमां कहेलां दुःखोने तथा सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायना १६ मा विषयमां कहेलां भ्रमादिक दुःखोने प्राप्त थाय छे.

१८ तत्र सद्यःप्राणहराण्याग्नेयान्यग्निगुणेष्वाशु क्षीणेषु क्षपयन्ति ॥

कालान्तरप्राणहराणि सौम्याग्नेयान्यग्निगुणेष्वाशु क्षीणेषु क्रमेण च सोमगुणेषु कालान्तरेण क्षपयन्ति ॥

विशल्यप्राणहराणि वायव्यानि। शल्यमुखनिरुद्धो यावदन्तर्वायुस्तिष्ठति तावज्जीवत्युद्धृतमात्रे तु शल्ये मर्मस्थानाश्रितो वायुर्निष्क्रामति तस्मात्सशल्यो जीवत्युद्धृतशल्यो म्रियते॥

वैकल्यकराणि सौम्यानि सोमो हि स्थिरत्वाच्छैत्याच्च प्राणावलम्बनं करोति ॥

रुजाकराण्यग्निवायुगुणभूयिष्ठानि विशेषतश्च तौ रुजाकरौ ॥

पाञ्चभौतिकीं च रुजामाहुरेके ॥

सघळां मर्मो उपर कह्याप्रमाणे प्राणोना विशेष स्थानरूपपणाथी तुल्य छतां पण तेओमां केटलांएक तुरत प्राण लेछे, केटलांएक कालांतरे प्राण लेछे, केटलांएक शल्यथी रहित थाय तो प्राण लेछे, केटलांएक विकलता करी नाखे छे अने केटलांएक पीडामात्र करेछे ए विषयमां उपपत्तिओ.

१८ जे **सद्यःप्राणहर** मर्मो छे तेओ आग्नेय छे एटले अग्निना गुणोना आधिक्यवाळां छे तेथी अग्निना गुणो अभिघातथी तुरत क्षीण थई जतां ते मर्मो तुरत (सात दिवसनी अंदर) प्राण लेछे. कारण के आग्नेय पदार्थो झडपथी क्रिया करनारा होय छे.

जे **कालांतरप्राणहर** मर्मो छे तेओ सौम्याग्नेय छे एटले अग्नि तथा सोम ए बन्नेना गुणोना आधिक्यवाळां छे तेथी अग्निना गुणो अभिघातथी तुरत क्षीण थतां अने सोमना गुणो अनुक्रमे क्षीण थतां ते मर्मो कालांतरे (पखवाडीए अथवा महीने) मारे छे. कारण के अग्निना गुणो झडपथी क्रिया करनारा छे अने सोमना गुणो वखत लगाडीने काम करनारा छे.

जे **विशल्यघ्न** मर्मो छे तेओ वायव्य छे एटले वायुना गुणोना आधिक्यवाळां छे माटे शल्यना मुखथी रोकाएलो वायु ज्यांसुधी अंदर रेहे छे त्यांसुधी, ते मर्मोमां अभिघात पामेलो माणस जीवे छे पण शल्य काहाडी लेवामां आवतां ते मर्मस्थलमां रहेलो वायु तुरत बाहार नीकळी जाय छे तेथी तुरतज मरी जाय छे. (पाकवाने लीधे शल्य पोतानी मेळे नीकळी जाय तो पण माणस जीवे छे.)

जे **वैकल्यकर** मर्मो छे तेओ सौम्य छे एटले केवळ सोमना गुणोनां आधिक्यवाळां छे तेथी ते मर्मोमां अभिघात पामेलो माणस विकल (खोडखापणवाळो) थई जाय छे पण मरण पामतो नथी. सोम स्थिर छे अने शीत छे तेथी प्राणने टकावी राखे छे.

जे **रुजाकर** मर्मो छे तेओ आग्नेय छे तथा वायव्य पण छे एटले अग्निना अने वायुना गुणोना आधिक्यवाळां छे. अग्नि अने वायु एओ विशेषे करी पीडा करनारा छे तेथी ए मर्मोमां अभिघात पामेलो माणस पीडाय छे.

केटलाएक आचार्योनो मत एवो छे के पीडा थवी ए पांचे भूतोनो गुण छे माटे **रुजाकर** मर्मो पांचे भूतोना गुणोनां आधिक्यवाळां छे.

१९ केचिदाहुर्मांसादीनां पञ्चानामपि समस्तानां विवृद्धानां वा समवायात्सद्यःप्राणहराणि ॥

एकहीनानामल्पानां वा कालान्तरप्राणहराणि ॥

द्विहीनानां विशल्यप्राणहराणि ।

त्रिहीनानां वैकल्यकराणि ।
एकस्मिन्नेव रुजाकराणीति ॥

केटलाएक आचार्यो, उपर कहेली उपपत्तिओने नहीं पण जूदाज प्रकारनी उपपत्तिओने स्वीकारे छे.

१९ केटलाएक आचार्यो केहे छे के "जे मर्मोमां मांस, शिराओ, स्नायुओ, अस्थिओ अने संधिओ ए पांचे मिश्रित होय छे अथवा अधिक होय छे ते मर्मो **सद्यःप्राणहर** छे[1]. (तुरत प्राण ले छे.)

जे मर्मोमां मांस, शिराओ, स्नायुओ, अस्थिओ अने संधिओ ए पांच पदार्थोमांथी चार पदार्थोज होय छे[2] अथवा ए मांसादिक पांच पदार्थो अल्प होय छे ते मर्मो **कालांतरप्राणहर** (काळांतरे प्राण लेनारां) छे.

जे मर्मोमां मांसादिक पांच पदार्थोमांथी बे पदार्थो मुद्दल होता नथी[3] ते मर्मो विशल्यघ्न (पोतामांथी शल्य काहाडी लेवाय त्यारे प्राण लेनारां) छे.

जे मर्मोमां मांसादिक पांच पदार्थोमांथी त्रण पदार्थो मुद्दल होता नथी ते मर्मो **वैकल्यकर** (खोडखापण करी देनारां) छे.

जे मर्मोमां मांसादिक पांच पदार्थोमांथी चार पदार्थो मुद्दल होता नथी पण एकज पदार्थ होय छे[4] ते मर्मो **रुजाकर** (पीडा करनारां) छे."

२० यतश्चैवमतोऽस्थिमर्मस्वप्यभिहतेषु शोणितागमनं भवति ॥

चतुर्विधा यास्तु शिराः शरीरे
प्रायेण ता मर्मसु सन्निविष्टाः ।
स्नाय्वस्थिमांसानि तथैव सन्धीन्
संतर्प्य देहं प्रतिपालयन्ति ॥

उपर कहेलो अन्य आचार्योनो सिद्धांत बराबर नथी.

२० सघळां मर्मोमां कोइ पण मर्म मांसादिक पांच पदार्थो वगरनुं नथी पण सघळां मर्मो ए पांचे पदार्थोथी गोठवाएलां छे माटे उपर कहेलो अन्य आचार्योनो सिद्धांत ठीक नथी. कटीकतरुण वगेरे मर्मो के जेओ अस्थिमर्मो केहेवाय छे तेओ जो अभिघात पामे तो तेओमांथी पण लोही प्रकट थतुं जोवामां आवे छे तेथी सिद्ध थाय छे के तेओमां पण शिराओ छे. जेमां शिरा न होय तेमांथी लोही प्रकट थवानो संभवज नथी. लोही देखावारूप प्रत्यक्ष प्रमाणथी ज्यारे सर्व मर्मोमां शिराओनी स्थिति सिद्ध थाय छे त्यारे एकदेशनी सिद्धि उपरथी जाणी लेवुं योग्य छे के सघळां मर्मोमां मांसादिक पांचे पदार्थो छे. वातवह, पित्तवह, कफवह अने रक्तवह ए चारे प्रकारनी शिराओ शरीरनी अंदर घणुं करीने मर्मोमां रहेली छे अने त्यां रही स्नायुओने, अस्थिओने, मांसोने तथा संधिओने सारी रीते तृप्त करीने ते तृप्तिद्वारा देहनुं पालन करे छे.

१ गुद, बस्ति, नाभि अने हृदय के जेओ सद्यःप्राणहर मर्मोमांनां छे तेओमां जोके अस्थिओ अभिव्यक्त नथी तो पण शक्तिरूपे रहेलां छे तेथी तेओमां मांसादिक पांचे पदार्थो छे एम समजवुं.

२ स्तनमूळ, अपलाप, अपस्तंभ, सीमंत, कटीकतरुण, पार्श्वसंधि, बृहती अने नितंब एओ मांसवगरनां छे अने स्तनरोहित, तलहृदय, क्षिप्र तथा इंद्रबस्ति एओ अस्थिवगरनां छे एम मान्युं छे.

३ उत्क्षेपोमां मांस तथा संधि नथी अने स्थपनीमां शिरा तथा स्नायु नथी एम मान्युं छे.

४ लोहिताक्षोमां स्नायु, संधि तथा अस्थि नथी. जानुओमां मांस, शिरा तथा स्नायु नथी. उर्वीओमां अस्थि, मांस तथा स्नायु नथी. विटपोमां मांस शिरा तथा अस्थि नथी. कूर्परोमां मांस, शिरा तथा स्नायु नथी अने ककुंदरोमां मांस, संधि तथा शिरा नथी इत्यादि रीते **वैकल्यकर** मर्मोमां त्रण त्रण पदार्थोनो अभाव मान्यो छे.

५ गुल्फो, मणिबंधो तथा कूर्चशिरो एओमां मांस, शिरा, अस्थि अने स्नायु ए चार पदार्थोनो अभाव मान्यो छे.

२१ ततः क्षते मर्मणि ताः प्रवृद्धः
समन्ततो वायुरभिस्तृणोति ।
विवर्द्धमानस्तु स मातरिश्वा
रुजः सुतीव्राः प्रतनोति काये ॥
रुजाभिभूतं तु पुनः शरीरम्
प्रलीयते नश्यति चास्य संज्ञा ।
अतो हि शल्यं विनिहर्तुमिच्छन्
मर्माणि यत्नेन परीक्ष्य कर्षेत् ॥
एतेन शेषं व्याख्यातम् ॥

मर्मरूप एक प्रदेशमां अभिघात थतां पण अनुक्रमथी सघळा शरीरमां वायु आदि दोषो व्यापवाथी पीडा उत्पन्न थईने चेतनानो वियोग थाय छे तेनो प्रकार अने शल्य खेंच्या पेहेलां मर्मोनी परीक्षा करवानी जरूर.

२१ मर्मनो अभिघात थतां वृद्धि पामेलो वायु चोमेर शिराओने ढांकी दे छे अने वृद्धि पामतो पामतो सघळा शरीरमां व्यापीने तीव्र वेदनाओने उत्पन्न करे छे. वेदनाओथी पराभव पा- शरीर वींखाई जाय छे अने ते पांचभौतिक शरीर वींखाई जतां छट्ठो चेतनारूप धातु पण जतो रेहे छे. आम छे एटला माटे वैद्ये शल्य काहाडवाना समयमां यत्नपूर्वक मर्मोनी परीक्षा करीने पछी शल्यने खेंचवुं जोईए.

मर्मना अभिघातथी वृद्धि पामी व्याप्त थएलो वायु जेम तीव्र वेदनाओने करे छे तेम मर्मना अभिघातथी वृद्धि पामी व्याप्त थएलुं पित्त दाहादिकने करे छे अने मर्मना अभिघातथी वृद्धि पामी व्याप्त थएलो कफ स्रोतोनिरोधादिकने करे छे इत्यादि समजी लेवुं.

२२ तत्र सद्यःप्राणहरमन्ते विद्धं कालान्तरेण मारयति ।

कालान्तरप्राणहरमन्ते विद्धं वैकल्यमापादयति ।

विशल्यप्राणहरमन्ते विद्धं कालान्तरेण क्लेशयति रुजां च करोति ।

रुजाकरमतीव्रवेदनं भवति ॥

सद्यःप्राणहर आदि मर्मोनां अभिघात थवाथी जे नियमित कृत्यो छे तेओनो कारणना फेरफारने लीधे फेरफार.

२२ जे मर्म सद्यःप्राणहर छे ते मध्यमां नहीं पण अंतमां (समीपमां) वींधाय तो प्राणनुं तुरत हरण (सात दिवसनी अंदर हरण) नही करतां काळांतरे (पखवाडीए के महीने) करे छे अर्थात् पोते सद्यःप्राणहर छतां पण कालांतरप्राणहरनुं काम करे छे.

जे मर्म कालांतरप्राणहर छे ते मध्यमां नहीं पण अंतमां वींधाय तो कालांतरे पण प्राणनुं हरण नहीं करतां विकलता (खोडखापण) करी आपे छे अर्थात् पोते कालांतरप्राणहर छतां पण वैकल्यकरनुं काम करे छे.

जे मर्म विशल्यघ्न छे ते मध्यमां नहीं पण अंतमां वींधाय तो शल्य काहाड्या पछी पण तुरत प्राणनुं हरण नहीं करतां काळांतरे मरण आपे छे अथवा पीडा कर्या करे छे अर्थात् पोते विशल्यघ्न छतां पण कालांतरप्राणहरनुं के रुजाकरनुं काम करे छे.

जे मर्म रुजाकर छे ते मध्यमां नहीं पण अंतमां वींधाय तो तीव्र वेदना नहीं करतां मध्य के मंद वेदना करे छे.

(सघलां मर्मो जो मध्यमां वींधाय तो पोतपोतानुं कृत्य कर्या वगर रेहेतांज नथी.)

२३ तत्र सद्यःप्राणहराणि सप्तरात्राभ्यन्तरान्मारयन्ति ।

कालान्तरप्राणहराणि पक्षान्मासाद्वा तेष्वपि तु क्षिप्राणि कदाचिदाशु मारयन्ति ।

विशल्यप्राणहराणि वैकल्यकराणि च कदाचिदत्यभिहतानि मारयन्ति ॥

सद्यःप्राणहर मर्मोनी तथा कालांतरप्राणहर मर्मोनी प्राणनुं हरण करवानी मुदत, कालांतरप्राणहरोमां पण क्षिप्रोना कृत्यमां वखतपर वधारे झडप अने विशल्यघ्न तथा वैकल्यकर मर्मोनां कृत्योनो वखतपर फेरफार.

२३ जे मर्मो सद्यःप्राणहर छे तेओ सात रातनी अंदर मारी नाखेछे.

जे मर्मो कालांतरप्राणहर छे तेओ एक पखवाडीआमां अथवा महीनामां मारी राखेछे. कालांतरप्राणहर मर्मोमां पण जे क्षिप्र नामनां मर्मो छे तेओ वखतपर तुरत पण मारी नाखेछे.

जे मर्मो वैकल्यकर छे तेओ अत्यंत अभिघात पामे तो वखतपर मारी पण नाखेछे अने जे मर्मो विशल्यघ्न छे तेओ अत्यंत अभिघात पामे तो वखतपर शल्यना संबंधविना पण मारी नाखेछे.

(आ प्रमाणेज रुजाकर मर्मो पण अत्यंत अभिघात पामे तो खोडखापण करी देछे इत्यादि बीजा पण विशेषो कल्पनाशक्तिथी समजी जेवा.)

२४ अत ऊर्ध्वं प्रत्येकशो मर्मस्थानान्यनुव्याख्यास्यामः ॥

तत्र पादाङ्गुष्ठाङ्गुल्योर्मध्ये क्षिप्रं नाम मर्म तत्र विद्धस्याक्षेपकेण मरणम् ॥

मध्यमाङ्गुलीमनुपूर्वेण मध्ये पादतलस्य तलहृदयं नाम तत्रापि रुजाभिर्मरणम् ॥

क्षिप्रस्योपरिष्टादुभयतः कूर्चो नाम तत्र पादस्य भ्रमणवेपने भवतः ॥

गुल्फसन्धेरध उभयतः कूर्चशिरो नाम तत्र रुजाशोफौ ॥

पादजङ्घयोः सन्धाने गुल्फो नाम तत्र रुजः स्तब्धपादता खञ्जता वा ॥

पार्ष्णि प्रति जङ्घामध्ये इन्द्रबस्तिर्नाम तत्र शोणितक्षये मरणम् ॥

जङ्घोर्वोः सन्धाने जानु नाम तत्र खञ्जता॥

जानुन ऊर्ध्वमुभयतरूयङ्गुलमाणिर्नाम तत्र शोफाभिवृद्धिः स्तब्धसक्थिता च ॥

ऊरुमध्ये ऊर्वी नाम तत्र शोणितक्षयात्सक्थिशोषः ॥

ऊर्व्या ऊर्ध्वमधो वङ्क्षणसन्धेरूरुमूले लोहिताक्षं नाम तत्र लोहितक्षयेण पक्षाघातः ॥

वङ्क्षणवृषणयोरन्तरे विटपं नाम तत्र पाण्ढ्यमल्पशुक्रता वा भवति ॥

एवमेतान्येकादश सक्थिमर्माणि व्याख्यातानि ॥

एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ ॥

पगनां मर्मोनां पगनी अंदर जूदां जूदां स्थानो तथा ते मर्मोना अभिघातोथी थवानी जूदी जूदी व्यथाओ.

२४ हवे पगनी अंदरनां प्रत्येक मर्मोनुं स्थानादिक बताववारूप विवेचन आपीए छीए. पगनो अंगुठो अने अंगुठाने लगती आंगळी एओना मध्यमां **क्षिप्र** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएलो माणस आक्षेपक नामना रोगथी मरी जायछे. (आ स्नायुमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

पगनी वचली आंगळीनी लीटीमां पगना तळाना मध्यमां **तलहृदय** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएलो माणस पीडाओथी मरी जाय छे. (आ मांसमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

क्षिप्रनी उपर बे आंगळने छेटे बन्ने तरफ **कूर्च** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसनो पग भमी जायछे तथा ध्रुजेछे. (आ स्नायुमर्म छे, चार आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

घूंटीना संधिनी नीचे बन्ने तरफ **कूर्चशिर** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसने पीडा तथा

सोजो थाय छे. (आ स्नायुमर्म छे, एक आंगळनुं छे अने रुजाकर छे.)

पग अने पींडी एओना संधिमां **गुल्फ** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसनो पग स्तब्ध थई जायछे अथवा लंगडो थई जायछे. (आ संधिमर्म छे, बे आंगळनुं छे अने रुजाकर छे.)

पेनीने लगती लीटीमां पेनीथी बार आंगळ दूर पींडीना मध्यमां **इंद्रबस्ति** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसनुं लोहीनो क्षय थवाथी मरण थायछे. (आ मांसमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

पींडी अने साथळ एओना संधिमां **जानु** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएलो माणस लंगडो थाय छे. (आ संधिमर्म छे, त्रण आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

जानुथी उपर त्रण आंगळ दूर बन्ने तरफ **आणि** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसने सोजानी वृद्धि थायछे अने साथळ स्तब्ध थई जायछे. (आ स्नायुमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

साथळना मध्यमां **ऊर्वी** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसनो साथळ लोहीनो क्षय थवाथी सूकाई जायछे. (आ शिरामर्म छे, एक आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

ऊर्वीथी उपर अने साथळना संधिथी नीचे साथळना मूळमां **लोहिताक्ष** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसने लोहीनो क्षय थवाथी पक्षाघात नामनो रोग थायछे. (आ शिरामर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

साथळनुं मूळ अने वृषण एओना मध्यमां **विटप** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएलो माणस नपुंसक थई जायछे अथवा अल्पवीर्यवाळो थई जायछे. (आ स्नायुमर्म छे, एक आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

पगमां रहेलां अगीयार मर्मोनुं आ व्याख्यान कर्युं. बीजा पगमां पण ए प्रमाणेज अगीयार मर्मो समजी लेवां.

२५ विशेषतस्तु यानि सक्थ्नि गुल्फजानुविटपानि तानि बाहौ मणिबन्धकूर्परकक्षधराणि । यथा वङ्क्षणवृषणयोरन्तरे विटपमेवं वक्षःकक्षयोर्मध्ये कक्षधरं तस्मिन्विद्धे त एवोपद्रवाः । विशेषतस्तु मणिबन्धे कुण्ठता कूर्पराख्ये कुणिः कक्षधरे पक्षाघातः ॥

एवमेतानि चतुश्चत्वारिंशच्छाखासु मर्माणि व्याख्यातानि ॥

हाथनां मर्मोनां हाथनी अंदर जूदां जूदां स्थानो तथा ते मर्मोना अभिघातोथी थवानी जूदी जूदी व्यथाओ.

२९ हाथमां क्षिप्र, तलहृदय, कूर्च, कूर्चशिर, मणिबंध, इंद्रबस्ति, कूर्पर, आणि, ऊर्वी, लोहिताक्ष अने कक्षधर ए नामनां अगीयार मर्मो छे. एओमां हाथनो अंगुठो अने अंगुठाने लगती आंगळी एओना मध्यमां **क्षिप्र** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएलो माणस आक्षेपक नामना रोगथी मरी जायछे. (आ स्नायुमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

हाथनी वचली आंगळीनी लीटीमां हाथना तळाना मध्यमां **तलहृदय** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएलो माणस पीडाओथी मरी जायछे. (आ मांसमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

क्षिप्रनी उपर बे आंगळने छेटे बन्ने तरफ **कूर्च** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसनो हाथ भमी जायछे तथा ध्रुजेछे. (आ स्नायुमर्म छे, चार आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

कांडाना संधिनी नीचे बन्ने तरफ **कूर्चशिर** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसने पीडा तथा सोजो थायछे. (आ स्नायुमर्म छे, एक आंगळनुं छे अने रुजाकर छे.)

हाथ अने कोणीथी नीचेनो लांबो भाग (क-राई) एओना संधिमां (कांडामां) **मणिबंध** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसनो हाथ स्तब्ध थई जायछे अथवा लूलो के कुंठित थई जायछे. (आ संधिमर्म छे, बे आगळनुं छे अने रुजाकर छे.)

मणिबंधथी बार आंगळने छेटे कोणीथी नी-चेना लांबा भागना (कराईना) मध्यमां **इंद्र-बस्ति** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला मा-णसनुं लोहीनो क्षय थवाथी मरण थायछे. (आ मांसमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने कालांतर-प्राणहर छे.)

कोणीथी नीचेनो लांबो भाग (कराई) अने बाहु (बांहां) एओना संधिमां (कोणीमां) **कूर्पर** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसनो हाथ लूलो थई जायछे अथवा ठूंठो के खराब थई जायछे. (आ संधिमर्म छे, त्रण आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

कूर्परथी उपर त्रण आंगळने छेटे बन्ने तरफ **आणि** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसने सोजानी वृद्धि थायछे अने बाहु स्तब्ध थई जायछे. (आ स्नायुमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

बाहुना मध्यमां **ऊर्वी** नामनुं मर्म छे. ए म-र्ममां वींधाएला माणसनो बाहु लोहीनो क्षय थ-वाथी सूकाई जायछे. (आ शिरामर्म छे, एक आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

ऊर्वीथी उपर अने बाहुना संधिथी नीचे बा-हुना मूळमां **लोहिताक्ष** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएला माणसने लोहीनो क्षय थवाथी पक्षाघात नामनो रोग थायछे. (आ शिरामर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

छाती अने काख एओना मध्यमां **कक्षधर** नामनुं मर्म छे. (वाग्भटे तो अक्षकना अने काखना मध्यमां कह्युं छे.) ए मर्ममां वींधाएला माणसने पक्षाघात नामनो रोग थायछे अने नपुंसकपणुं थायछे अथवा वीर्यनी अल्पता थायछे. (आ स्नायुमर्म छे, एक आंगळनुं छे अने वैकल्यकर छे.)

हाथमां रहेलां अगीयार मर्मोनुं आ व्याख्यान कर्युं. बीजा हाथमां पण ए प्रमाणेज अगीयार मर्मो समजी लेवां. आटला सुधी बे पगनां बा-वीश अने बे हाथनां बावीश ए रीते शाखाओमां रहेलां चुमालीश मर्मोनुं व्याख्यान करवामां आव्युं.

२६ अत ऊर्ध्वमुदरोरसोर्मर्मस्थानान्यनु-व्याख्यास्यामः ॥

तत्र वातवर्चोनिरसनं स्थूलान्त्रप्रतिबद्धं गुदं नाम मर्म तत्र सद्यो मरणम् ॥

अल्पमांसशोणितोऽभ्यन्तरतः कट्यां मूत्रा-शयो बस्तिर्नाम तत्रापि सद्योमरणमश्मरीव्र-णादृते। तत्राप्युभयतो भिन्ने न जीवत्येकतो भिन्ने मूत्रस्रावी व्रणो भवति स तु यत्नेनोप-क्रान्तो रोहति ॥

पक्वामाशययोर्मध्ये शिराप्रभवा नाभिर्नाम तत्रापि सद्य एव मरणम् ॥

स्तनयोर्मध्यमधिष्ठायोरस्यामाशयद्वारं सत्व-रजस्तमसामधिष्ठानं हृदयं नाम तत्र सद्य एव मरणम् ॥

स्तनयोरधस्ताद् द्व्यङ्गुलमुभयतः स्तनमूले नाम मर्मणी तत्र कफपूर्णकोष्ठतया कासश्वा-साभ्यां म्रियते ॥

स्तनचूचुकयोरूर्ध्वे द्व्यङ्गुलमुभयतः स्तन-रोहितौ नाम तत्र लोहितपूर्णकोष्ठतया कास-श्वासाभ्यां च म्रियते ॥

अंसकूटयोरधस्तात्पार्श्वोपरिभागयोरपलापौ नाम तत्र रक्तेन पूयभावं गतेन मरणम् ॥

उभयत्रोरसो नाड्यौ वातवहे अपस्तम्भौ नाम तत्र वातपूर्णकोष्ठतया कासश्वासाभ्यां च मरणम्।

एवमेतान्युदरोरसोर्द्वादश मर्माणि व्या-ख्यातानि ॥

पेट अने छाती एओनां मर्मोनां एओनी अंदर जूदां जूदां स्थानो तथा ते मर्मोनो अभिघात थवाथी जूदी जूदी व्यथाओ.

२६ अधोवायुने तथा विष्ठाने बाहार काहाडनारूं (प्रेरनारूं) अने स्थूल आंतरडामां बंधाएलुं **गुद** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां वींधाएलो माणस तुरत मरी जायछे. (आ मांसमर्म छे, चार आंगळनुं छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

कमर, नाभि, पीठ, वृपण, गुद, साथळनां मूळ अने लिंग एओना मध्यमां थोडा मांसवाळो तथा थोडा रुधिरवाळो जे मूत्राशय छे ते **बस्ति** नामनुं मर्म छे. ए मर्म पथरीना व्रण शिवाय बीजा कोइ प्रकारे भेदाय तो माणस तुरत मरी जायछे. पथरीना व्रणथी पण बन्ने तरफमां भेदाय तो माणस जीवतो नथी. एक तरफमां भेदाय तो माणसने ते व्रणमांथी मूत्रनो स्राव थायछे. जो पूरी काळजीथी चिकित्सा करवामां आवे तो ते व्रण रुझायछे. (आ स्नायुमर्म छे, चार आंगळनुं छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

पक्काशय अने आमाशय एओना मध्यमां सघळी शिराओना आश्रयरूप **नाभि** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां भेदाएलो माणस तुरतज मरी जाय छे. (आ शिरामर्म छे, चार आंगळनुं छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

बे स्तनना मध्यमां उरःस्थलनी अंदर आमाशयना द्वाररूप अने सत्व रज तथा तम एओना स्थानकरूप **हृदय** नामनुं मर्म छे. ए मर्म भेदाय तो माणस तुरतज मरी जायछे. (आ शिरामर्म छे, कमळनी कळी जेवा आकारवाळुं छे, नीचे रहेला मुखवाळुं छे, चार आंगळनुं छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

बन्ने स्तनोनी नीचे बबे आंगळ छेटा प्रदेशमां जूदां जूदां **स्तनमूल** नामनां बे मर्मो छे. एक जमणा स्तननी नीचे अने एक डाबा स्तननी नीचे छे. ए मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो माणस कफथी भरपूर कोठावाळो थईने खांसीथी तथा श्वासथी मरी जायछे. (आ बे शिरामर्मो छे, बबे आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

बन्ने स्तनोनी दीटडीओनी उपर बबे आंगळ छेटा प्रदेशमां जूदां जूदां **स्तनरोहित** नामनां बे मर्मो छे. एक जमणा स्तननी दीटडीनी उपर अने एक डाबा स्तननी दीटडीनी उपर छे. ए मर्मोमांथी कोइ पण मर्म भेदाय तो माणस लोहीथी भरपूर कोठावाळो थई जवाथी, खांसीथी तथा श्वासथी मरी जाय छे. (आ बे मांसमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

बन्ने खभाओनां टोंचरूप अस्थिओनी नीचे पार्श्वोना (पांसांओना) उपरना भागोमां **अपलाप** नामनां बे मर्मो छे. एक जमणा खभाना अस्थिनी नीचे पांसानी उपर छे अने एक डाबा खभाना अस्थिनी नीचे पांसानी उपर छे. आ मर्मोमांथी कोई पण मर्म वींधायतो लोही परू थई जवाथी माणस मरी जायछे. (आ बे शिरामर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

छातीना बन्ने (डाबा तथा जमणा) पांसांओमां वायुनुं वहन करनारी जे एक एक नाडी छे ते बन्ने नाडीओ **अपस्तंभ** नामनां मर्मो केहेवायछे. ए बे मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो कोठो वायुवते भरपूर थई जवाथी, खांसीथी अने श्वासथी माणस मरी जायछे. (आ बे शिरामर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

छाती अने पेट एओनां बार मर्मोनुं आ व्याख्यान आपवामां आव्युं.

२७ अत ऊर्ध्वं पृष्ठमर्माण्यनुव्याख्यास्यामः । तत्र पृष्ठवंशमुभयतः प्रतिश्रोणीकाण्डमस्थिनी

कटीकतरुणे नाम मर्मणी तत्र शोणितक्षयात्पाण्डुर्विवर्णो हीनरूपश्च म्रियते ॥

पार्श्वयोर्जघनबहिर्भागे पृष्ठवंशमुभयतो नातिनिम्ने कुकुन्दरे नाम मर्मणी तत्र स्पर्शाज्ञानमधःकाये चेष्टोपघातश्च ॥

श्रोणीकाण्डयोरुपर्याशयाच्छादनौ पार्श्वान्तरप्रतिबद्धौ नितम्बौ नाम तत्राधःकायशोषो दौर्बल्याच्च मरणम् ॥

अधः पार्श्वान्तरप्रतिबद्धौ जघनपार्श्वमध्ययोस्तिर्यगूर्ध्वं च जघनात्पार्श्वसन्धी नाम तत्र लोहितपूर्णकोष्ठतया म्रियते ॥

स्तनमूलादुभयतः पृष्ठवंशस्य बृहत्यौ नाम तत्र शोणितातिप्रवृत्तिनिमित्तैरुपद्रवैर्म्रियते ॥

पृष्ठोपरि पृष्ठवंशमुभयतस्त्रिकसम्बद्धे अंसफलके नाम तत्र बाह्वोः स्वापः शोषो वा ॥

बाहुमूर्द्धग्रीवामध्येऽसपीठस्कन्धनिबन्धनावंसौ नाम तत्र स्तब्धबाहुता । एवमेतानि चतुर्दश पृष्ठमर्माणि व्याख्यातानि ॥

पीठनां मर्मोनां पीठनी अंदर जूदां जूदां स्थानो तथा ते मर्मोनो अभिघात थवाथी जूदी जूदी व्यथाओ.

२७ बरडाना अस्थिनी बन्ने तरफ (कूलाओनी उपर) कमरना प्रांत भागने लगतां जे बे अस्थिओ छे तेओ **कटीकतरुण** नामनां मर्मो कहेवाय छे. आ बे मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो माणस लोहीनो क्षय थवाथी पांडुवर्णवाळो, बगडी गएला वर्णवाळो अने खराब रूपवाळो थईने मरी जायछे. (आ बे अस्थिमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

डाबी तथा जमणी तरफना कटिपश्चाद्भागोमां बरडाना अस्थिनी बन्ने तरफ झाझी उंडाई वगरना खाडाओरूप **ककुंदर** नामनां बे मर्मो छे. आ मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो माणसने शरीरना नीचेना भागमां कोई पण प्रकारना स्पर्शनी खबर पडती नथी तथा ए भागमां चेष्टानो उपघात थई जायछे. (आ बे संधिमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.)

कमरना डाबा तथा जमणा डांडाओनी उपर आमाशयने ढांकनारां अने पडखांओनी अंदर संबंध पामेलां **नितंब** नामनां बे मर्मो छे. आ बे मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो शरीरनो नीचेनो भाग सूकाई जायछे अने दुर्बलपणाथी मरण थायछे. (आ बे अस्थिमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

नीचेना भागमां पडखांओना मध्यमां संबंध धरावनारां, कटिपश्चाद्भागना डाबा तथा जमणा पांसाना मध्योमां आडां तथा उभां रहेलां अने ते पश्चाद्भागना आश्रयवाळां **पार्श्वसंधि** नामनां बे मर्मो छे. ए मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो माणस लोहीथी कोठो भराई जवाथी मरी जायछे. (आ बे शिरामर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

डाबां तथा जमणां स्तनोना मूळथी बरडानी करोडनी बन्ने तरफ **बृहती** नामनां बे मर्म छे. आ बे मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो लोहीना अतिस्रावने लीधे उत्पन्न थएला उपद्रवोथी माणस मरी जायछे. (आ बे शिरामर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने कालांतर प्राणहर छे.)

पीठना उपरना प्रदेशमां बरडानी करोडनी बन्ने तरफ त्रिकथी (ज्यां डोकनां अने खभानां त्रण अस्थिओनो संयोग थायछे ते भागथी) संबंध धरावनारां **अंसफलक** नामनां बे मर्मो छे. आ बे मर्मोमांथी कोई पण मर्म भेदाय तो बाहुओ जड थई जायछे. अथवा सूकाई जायछे. (आ बे अस्थिमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.)

बे बाहुओना उपरना भागो अने कंठ एओना मध्यमां खभाओनी टोचोने तथा कांधोने बांधनारां **अंस** नामनां बे मर्मो छे. ए

मर्मोमांथी कोई पण मर्म अभिघात पामे तो बाहु स्तब्ध थई जायछे. (आ बे स्नायुमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.) पीठनां चौदमर्मोनुं आ व्याख्यान थयुं.

२८ अत ऊर्ध्वं जत्रुगतानि व्याख्यास्यामः ॥ तत्र कण्ठनाडीमुभयतश्चतस्रो धमन्यो द्वे नीले द्वे च मन्ये व्यत्यासेन तत्र मूकता स्वरवैकृतमरसग्राहिता च ॥

ग्रीवायामुभयतश्चतस्रः शिरा मातृकास्तत्र सद्यो मरणम् ॥

शिरोग्रीवयोः सन्धाने कृकाटिके नाम तत्र चलमूर्धता ॥

कर्णपृष्ठतोऽधःसंश्रिते विधुरे नाम तत्र तत्र बाधिर्यम् ॥

घ्राणमार्गमुभयतः स्रोतोमार्गप्रतिबद्धे अभ्यन्तरतः फणौ नाम तत्र गन्धाज्ञानम् ॥

भ्रूपुच्छान्तयोरधोऽक्ष्णोर्बाह्यतोऽपाङ्गौ नाम तत्रान्ध्यं दृष्ट्युपघातो वा ॥

भ्रुवोरुपरि निम्नयोरावर्त्तौ नाम तत्रान्ध्यं दृष्ट्युपघातश्च ॥

भ्रुवोः पुच्छान्तयोरुपरि कर्णललाटयोर्मध्ये शङ्खौ नाम तत्र सद्यो मरणम् ॥

शङ्खयोरुपरि केशान्त उत्क्षेपौ नाम तत्र सशल्यो जीवति पाकात्पतितशल्यो वा नोद्धृतशल्यः ॥

भ्रुवोर्मध्ये स्थपनी नाम तत्रोत्क्षेपवत् ॥

पञ्च सन्धयः शिरसि विभक्ताः सीमन्ता नाम तत्रोन्मादभयचित्तनाशैर्मरणम् ॥

घ्राणश्रोत्राक्षिजिह्वासन्तर्पणीनां शिराणां शिरसो मध्ये सन्निपाताः शृङ्गाटकानि तानि चत्वारि मर्माणि तत्रापि सद्यो मरणम् ॥

मस्तकाभ्यन्तरोपरिष्टात् शिरासन्धिसन्निपातो रोमावर्त्तोऽधिपतिस्तत्रापि सद्यो मरणम्॥ एवमेतानि सप्तत्रिंशदूर्ध्वजत्रुगतानि मर्माणि व्याख्यातानि ॥

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोनां मर्मोनां जूदां जूदां स्थानो तथा ते मर्मोनो अभिघात थवाथी जूदी जूदी व्यथाओ.

२८ कंठनी नळीनी एक तरफमां बे अने बीजी तरफमां बे एवी रीते चार धमनीओ छे. पेहेली बेमां एक नीला अने एक मन्या नामथी ओळखायछे अने बीजी बेमां पण एक नीला अने एक मन्या नामथी ओळखायछे. आ **धमनीओ** नामनां चार मर्मो छे. ए चारमांथी कोई पण मर्म अभिघात पामे तो मूंगापणुं थई जायछे, स्वरमां विकार थई जायछे अने कशा रसनी खबर पडती नथी. (आ चार शिरामर्मो छे, चार चार आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.)

कंठनां बे पासांओमां एक एक तरफ चार चार एटले एक पासांमां चार अने बीजा पासांमां पण चार ए रीते आठ **मातृका** नामनां मर्मो छे. ए आठमांथी कोई मर्म अभिघात पामे तो तुरत मरण थायछे. (आ आठ शिरामर्मो छे, चार चार आंगळनां छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

माथुं अने कंठ एओना संधिमां (बे बाजुओमां) **कृकाटिका** नामनां बे मर्मो छे. आ मर्मोमांथी कोइ पण मर्म अभिघात पामे तो माथुं कंपवा लागे छे. (आ बे संधिमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.)

बन्ने कानोना पृष्ठ भागनी नीचे **विधुर** नामनां बे मर्मो छे. एओमांथी कोई पण भेदाय तो बेहेरापणुं थायछे. (आ बे स्नायुमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे, कांइक ऊंडा आकारवाळां छे अने वैकल्यकर छे.)

नाकना मार्गनी बन्ने बाजुओमां अंदरना छिद्रना (गळाना) द्वारथी संबंध धरावनारां **फण** नामनां बे मर्मो छे. आ मर्मोमांथी कोई पण भेदाय

तो गंधनुं ज्ञान थतुं नथी. (आ बे शिरामर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.)

बन्ने भमरोनी पुंछडीओना छेडाओनी नीचे अने नेत्रोथी बाहार **अपांग** नामनां बे मर्मो छे. ए बन्नेमां अभिघात थाय तो अंधपणुं थायछे अने एकमां अभिघात थाय तो दृष्टिनो उपघात थायछे. (आ बे शिरामर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.)

बन्ने भमरोनी उपरना खाडाओमां **आवर्त्त** नामनां बे मर्मो छे. ए बन्नेमां अभिघात थाय तो अंधपणुं थायछे अने एकमां अभिघात थाय तो दृष्टिनो उपघात थायछे. (आ बे संधिमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने वैकल्यकर छे.)

बन्ने भमरोनी पुंछडीओना छेडाओनी उपर अने कानोना तथा ललाटना मध्यमां **शंख** नामनां बे मर्मो छे. एओमां अभिघात थाय तो तुरत मरण थायछे. (आ बे अस्थिमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

लमणाओनी उपर अने केशोना अंत भागमां **उत्क्षेप** नामनां बे मर्मो छे. एओमां शल्य पेठुं होय तो ज्यां सुधी ते शल्य काहाडयुं न होय त्यां सुधी जीवायछे अथवा पाकीने शल्य पडी जाय तो जीवायछे पण शल्य जो काहाडी लेवामां आवे तो जीवी शकातुं नथी. (आ बे स्नायुमर्मो छे, अरधा अरधा आंगळनां छे अने विशल्यघ्न छे.)

भमरोना मध्यमां **स्थपनी** नामनुं एक मर्म छे. ए मर्ममां शल्य पेठुं होय तो ज्यां सुधी ते शल्य काहाडयुं न होय त्यां सुधी जीवायछे अथवा पाकीने शल्य पडी जाय तो जीवायछे पण शल्य जो काहाडी लेवामां आवे तो जीवी शकातुं नथी. (आ शिरामर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने विशल्यघ्न छे.)

माथानां कपालास्थिओमां सेंथा जेवा पांच संधिओ छे के जेओविषे गया अध्यायना २८ मा विषयमां कहेलुं छे. तेओ **सीमंत** नामनां पांच मर्मो छे. एओमां अभिघात थाय तो उन्माद, भय तथा मूर्छा उत्पन्न थईने मरण थायछे. (आ पांच संधिमर्मो छे, चार चार आंगळनां छे अने कालांतरप्राणहर छे.)

घ्राण, श्रोत्र, चक्षु अने जिह्वा एओने तृप्त करनारी शिराओनां, मस्तकना मध्यमां जे चार संयोगस्थानो छे ते चार **शृंगाटक** नामनां मर्मो केहेवायछे. ए मर्मोमां अभिघात थाय तो तुरत मरण थायछे. (आ चार शिरामर्मो छे, चार चार आंगळनां छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

मस्तकना अभ्यंतर भागनी उपर शिरानुं अने संधिनुं संयोगस्थान के जेनी ऊपर वाळोनी चकरी छे ते **अधिपति** नामनुं मर्म छे. ए मर्ममां अभिघात थाय तो तुरत मरण थाय छे. (आ संधिमर्म छे, अरधा आंगळनुं छे अने सद्यःप्राणहर छे.)

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोनां साडत्रीश मर्मोनुं आ व्याख्यान थयुं.

२९ भवन्ति चात्र ॥

ऊर्व्यः शिरांसि विटपे च सकक्षपार्श्वे
एकैकमङ्गुलमिताः स्तनपूर्वमूलम् ।
विद्ध्यङ्गुलद्वयमितं मणिबन्धगुल्फं
त्रीण्येव जानु सपरं सह कूर्पराभ्याम् ॥
हृद्बस्तिकूर्चगुदनाभि वदन्ति मूर्ध्नि
चत्वारि पञ्च च गले दश यानि च द्वे ।
तानि स्वपाणितलकुञ्चितसंमितानि
शेषाण्यवेहि परिविस्तरतोऽङ्गुलार्द्धम् ॥

सघळा मर्मोनां जूदां जूदां मानो.

२९ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युंछे के "चार ऊर्वी नामनां मर्मो, चार कूर्चशिर नामनां मर्मो, बे विटप नामनां मर्मो अने बे कक्षधर नामनां मर्मो एओ एक एक आंगळनां छे.

बे स्तनमूल नामनां मर्मो, बे मणिबंध नामनां मर्मो अने बे गुल्फ नामनां मर्मो, एओ बबे आंगळनां छे.

बे जानु नामनां मर्मो अने बे कूर्पर नामनां मर्मो एओ त्रण त्रण आंगळनां छे.

एक हृदय नामनुं मर्म, एक बस्ति नामनुं मर्म, चार कूर्च नामनां मर्मो, एक गुद नामनुं मर्म, एक नाभि नामनुं मर्म, चार शृंगाटक नामनां मर्मो, पांच सीमंत नामनां मर्मो, आठ मातृका नामनां मर्मो अने चार धमनी नामनां मर्मो एओ चार चार आंगळनां छे.

उपर कहेलां मर्मो शिवायनां बीजां सघळां मर्मो अरधा अरधा आंगलनां छे.

३० एतत्प्रमाणमभिवीक्ष्य वदन्ति तज्ज्ञाः
शस्त्रेण कर्मकरणं परिहृत्य मर्म ।
पार्श्वाभिघातितमपीह निहन्ति मर्म
तस्माद्धि मर्मसदनं परिवर्जनीयम् ॥
छिन्नेषु पाणिचरणेषु शिरा नराणां
सङ्कोचमीयुरसृगल्पमतो निरेति ।
प्राप्यामितव्यसनमुग्रमतो मनुष्याः
संछिन्नशाखतरुवन्निधनं न यान्ति ॥
क्षिप्रेषु तत्र सतलेषु हतेषु रक्तं
गच्छत्यतीव पवनश्च रुजं करोति ।
एवं विनाशमुपयान्ति हि तत्र विद्धा
वृक्षा इवायुधविघातनिकृत्तमूलाः ॥
तस्मात्तयोरभिहतस्य तु पाणिपादं
छेत्तव्यमाशु मणिवन्धनगुल्फदेशे ।

मर्मोनां मानो केहेवानुं प्रयोजन अने क्षिप्रमां के तलहृदयमां अभिघात थाय तो विशिष्ट क्रिया.

३० उपर कह्या प्रमाणे मर्मोना मानने जोई ते प्रमाणे मर्मने छोडी दईने शस्त्रक्रिया करवी एम विद्वान् आचार्यो केहेछे. मर्मना पडखामां शस्त्रथी अभिघात करवामां आवे तो पण ते मर्म मोटो अनर्थ करेछे माटे शस्त्रक्रियामां मर्मने तथा तेनी पासेना प्रदेशने पण छोडी देवोज जोइए. हाथ के पग कापी नाखवामां आवे तो पण शिराओ संकोचाई जायछे अने तेथी लोही थोंडु नीकळे छे के जेथी माणसो अपार व्यथा पामतां छतां पण, जेओनी शाखाओ कापी नाखवामां आवी होय एवां वृक्षोनी पेठे मरण पामतां नथी. परंतु हाथमां अने पगमां जे कालांतरे प्राण हरनारां क्षिप्र नामनां तथा तलहृदय नामनां मर्मो छे तेओ अभिघात पामे तो लोही अत्यंत नीकळेछे तथा वायु अत्यंत वेदना करे छे तेथी माणसो, आयुधना अभिघातथी जेओनां मूळो कापी नाखवामां आव्यां होय एवां वृक्षोनी पेठे विनाश पामेछे. आमछे एटला माटे क्षिप्रमां के तलहृदयमां जेने अभिघात थयो होय ते माणसना हाथने मणिबंधना प्रदेशमां अने पगने गुल्फना प्रदेशमां तुरतज कापी नाखवो के जे प्रदेशो रुजाकर होवाथी पीडा करीनेज शांत थई जाय छे.

३१ मर्माणि शल्यविषयार्द्धमुदाहरन्ति
यस्माच्च मर्मसु हता न भवन्ति सद्यः ॥
जीवन्ति तत्र यदि वैद्यगुणेन केचित्
ते प्राप्नुवन्ति विकलत्वमसंशयं हि ।

शल्यनो शस्त्रादिकना प्रयोगथी मरण कारक अने अमरणकारक एम बे प्रकारनो विषय.

३१ शल्यनो शस्त्रादिकना प्रयोगथी मरणकारक अने अमरणकारक ए रीते बे प्रकारनो विषय छे तेमां जो शल्य प्राणहर मर्ममां खूंचेलुं होय तो ते मर्मरूप विषय मरणकारक थायछे अने ते शिवाय बीजा प्रदेशमां खूंचेलुं होय तो ते प्रदेशरूप विषय अमरणकारकछे. प्राणहर मर्ममां अभिघात थया छतां जो कोई माणसो वैद्यना प्रबल गुणथी जीवतां रहे तो तेओ खोडखापणवाळां तो अवश्य थाय छे.

३२ संभिन्नजर्जरितकोष्ठशिरःकपाला
जीवन्ति शस्त्रविहतैश्च शरीरदेशैः ॥
छिन्नैश्च सक्थिभुजपादकरैरशेषै-
र्येषां न मर्मपतिता विविधाः प्रहाराः ॥

जेओने प्राणहर मर्मोमां प्रहार न पड्या होय तेओ अत्यंत घायल थई गया छतां पण जीवेछे.

३२ कोठो तथा मस्तकना प्रदेशो भेदाएला तथा जाजरा थई गया होय, शरीरना बीजा प्रदेशो पण शस्त्रोथी उपघात पाम्या होय अने साथळ, बाहु, पग तथा हाथ तमाम छेदाई गया होय तो पण जो प्राणहर मर्मोमां विविध प्रहारो न पड्या होय तो माणसो जीवेछे.

३३ सोममारुततेजांसि रजःसत्वतमांसि च।
मर्मसु प्रायशः पुंसां भूतात्मा चावतिष्ठते ॥
मर्मस्वभिहतास्तस्मान्न जीवन्ति शरीरिणः ।

बीजा प्रदेशोमां थएला अभिघातो करतां मर्मोमां थएला अभिघातो विशेष अनर्थ करनारा होवानुं कारण.

३३ सोम, वायु, अग्नि, सत्व, रज, तम अने जीवात्मा एओ माणसोनां मर्मस्थलोमां विशेषे करी रेहेछे एटलामाटे बीजा प्रदेशोमां थएला अभिघातो करतां मर्मोमां थएला अभिघातो विशेष अनर्थ करनारा थायछे.

३४ इन्द्रियार्थेष्वसंप्राप्तिर्मनोबुद्धिविपर्ययः ॥
रुजश्च विविधास्तीव्रा भवन्त्याशुहरे हते ।

सद्यःप्राणहर मर्ममां अभिघात थयानुं लक्षण.

३४ जो शब्दस्पर्शादिक विषयोनी खबर पडती न होय, मननुं तथा बुद्धिनुं विपरीतपणुं थई गयुं होय अने विविध प्रकारनी तीव्र वेदनाओ थती होय तो जाणवुं के सद्यःप्राणहर मर्ममां अभिघात थयो छे.

३५ हते कालान्तरघ्ने तु ध्रुवो धातुक्षयो नृणाम्॥
ततो धातुक्षयाज्जन्तुर्वेदनाभिश्च नश्यति ।

कालांतरप्राणहर मर्ममां अभिघात थयानुं लक्षण.

३५ जो कालांतरप्राणहर मर्ममां अभिघात थयो होय तो माणसोना शरीरमां अवश्य धातुओनो क्षय थाय छे अने ए क्षय थवाने लीधे माणस वेदनाओ पामी पामीने नष्ट थई जाय छे. (धातुक्षय आदि लक्षणो जोवामां आवतां होय तो जाणवुं के कालांतरप्राणहर मर्ममां अभिघात थयो छे.)

३६ हते वैकल्यजनने केवलं वैद्यनैपुणात् ॥
शरीरं क्रियया युक्तं विकलत्वमवाप्नुयात् ।

वैकल्यकर मर्ममां अभिघात थयानुं लक्षण.

३६ केवळ वैद्यनी चातुरीथी शरीर चेष्टाओथी युक्त रहे पण खोडखापणवाळुं थई जाय एम होय तो जाणवुं के वैकल्यकर मर्ममां अभिघात थयो छे.

३७ विशल्यघ्नेषु विज्ञेयं पूर्वोक्तं यच्च कारणं ॥

विशल्यघ्न मर्मनां अभिघात थयानुं लक्षण.

३७ शल्यना मुखथी रोकाएलो वायु ज्यां सुधी अंदर रहे त्यांसुधी जीवन रहे पण शल्य काहाडवामां आवतां मरण थई जाय एम होय तो जाणवुं के विशल्यघ्न मर्ममां अभिघात थयो छे.

३८ रुजाकराणि मर्माणि क्षतानि विविधा रुजः।
कुर्वन्त्यन्ते च वैकल्यं कुवैद्यवशगो यदि ॥

रुजाकर मर्ममां अभिघात थयानुं लक्षण.

३८ जो विविध प्रकारनी वेदनाओ थती होय तो जाणवुं के रुजाकर मर्ममां अभिघात थयो छे. जो रुजाकर मर्मोमां अभिघात पामेलो माणस कुवैद्यना कबजामां रह्यो होय तो ते मर्मो अंते खोडखापण पण करी देछे.

३९ छेदभेदाभिघातेभ्यो दहनाद्दारणादपि ।
उपघातं विजानीयान्मर्मणां तुल्यलक्षणम् ॥

मर्मनी पासेना प्रदेशमां थएलो अभिघात पण मर्ममां थएला अभिघातना जेवोज अनर्थ करे छे.

३९ मर्मना समीपना प्रदेशमां छेदन, भेदन, प्रहार, दहन के दारण (चीरावुं) थाय तो पण मर्मोमां थएला ते अभिघातोना जेवाज अनर्थो थाय छे.

४० मर्माभिघातश्च न कश्चिदस्ति
योऽल्पात्ययो वापि निरत्ययो वा ।
प्रायेण मर्मस्वभिताडितास्तु
वैकल्यमृच्छन्त्यथ वा म्रियन्ते ॥

जेने मर्ममां अभिघात थयो होय ते माणसनी चिकित्सा करवामां वैद्ये पूरी काळजी राखवी जोईए.

४० एवो कोई पण मर्माभिघात नथी के जे थोडी खराबीवाळो अथवा खराबी वगरनोज होय. मर्मोमां अभिघात पामेला माणसो जो योग्य चिकित्साथी रहित रहे तो घणुं करीने खोडखापणवाळा थई जाय छे अथवा मरीजाय छे. आम छे एटला माटे मर्ममां अभिघात पामेला माणसनी चिकित्सा करवामां वैद्ये पूरी काळजी राखवी जोईए.

४१ मर्माण्यधिष्ठाय हि ये विकारा
मूर्छन्ति काये विविधा नराणाम् ।
प्रायेण ते कृच्छ्रतमा भवन्ति
नरस्य यत्नैरपि साध्यमानाः ॥

मर्मोमां के मर्मोना समीपना प्रदेशोमां थएला शारीर विकारो पण घणुं करीने अति कष्टसाध्य थई पडेछे.

४१ जे विविध विकारो माणसोना मर्मोमां अथवा मर्मोना समीपना प्रदेशोमां रहीने कायामां फेलाय छे तेओ अनेक यत्नोथी चिकित्सा करवामां आवतां छतां पण घणुं करीने अतिकष्ट साध्य थई पडे छे.

अध्याय ७ मो.

१ अथातः शिरावर्णनविभक्तिं नाम शारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी ' शिरावर्णन विभक्तिशारीर ' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सप्त शिराशतानि भवन्ति । याभिरिदं शरीरमाराम इव जलहारिणीभिः केदार इव च कुल्याभिरुपस्निह्यतेऽनुगृह्यते चाकुञ्चनप्रसारणादिभिर्विशेषैः ॥ द्रुमपत्रसेवनीनामिव च तासां प्रतानास्तासां नाभिर्मूलं ततश्च प्रसरन्त्यूर्ध्वमधस्तिर्यक्च ॥

शिराओनां संख्या, सामान्यकर्म, मूळ अने प्रसार.

२ शरीरमां शिराओ ७०० सातसो छे. जेम मोटी नेहेरो बगीचानुं उपस्नेहन करेछे अने नाहाना धोरीयाओ क्यारानुं उपस्नेहन करेछे तेम मोटी अने नाहानी शिराओ आ शरीरनुं उपस्नेहन करे छे. (तरुण माणसना शरीरने पुष्टि आपे छे अने वृद्ध माणसना शरीरने नभाव्या करे छे.) शिराओज आकुंचन, प्रसारण, भाषण, निद्रा तथा जागवुं इत्यादि प्रकारोथी शरीरपर अनुग्रह करे छे. (शरीरनुं परिपालन करे छे.) झाडना पानडानी नसोना विस्तारो जेवाज ए शरीरनी अंदर रहेली शिराओना (नसोना) विस्तारो छे. जे नाभि छे ते सघळी शिराओनुं मूळ छे. सघळी शिराओ नाभिप्रदेशमांथीज उंचे नीचे तथा आडे प्रसरे छे.

१ शिराओनां वर्णनो तथा वेहेंचणो विषेनो.

३ भवतश्चात्र ॥

यावत्यस्तु शिराः काये संभवन्ति शरीरिणाम् । नाभ्यां सर्वा निबद्धास्ताः प्रतन्वन्ति समन्ततः॥ नाभिस्थाः प्राणिनां प्राणाः प्राणान्नाभिर्व्युपाश्रिता। शिराभिरावृता नाभिश्चक्रनाभिरिवारकैः॥

शिराओनो अने प्राणोनो आधाराधेययभावसंबंध.

३ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं के "प्राणिओना शरीरमां जेटली शिराओ छे ते सघळी नाभिप्रदेशमां बंधाएली छे अने ते प्रदेशमांथी सघळा शरीरमां चोमेर फेलाएली छे. प्राणिओना प्राणो नाभिमां रह्या छे (नाभिनुं आवरण करनारी शिराओमां रह्या छे.) अने नाभि प्राणोना संबंधमां रहेली छे. जेम गाडीना पइडानी नाभि (वचलो भाग) आराओथी आवरण पामेली होयछे तेम प्राणिओनी नाभि शिराओथी आवरण पामेली छे."

४ तासां मूलशिराश्चत्वारिंशत्तासां वातवाहिन्यो दश पित्तवाहिन्यो दश कफवाहिन्यो दश दश रक्तवाहिन्यः । तासां तु वातवाहिनीनां वातस्थानगतानां पञ्चसप्ततिशतं भवति। तावत्य एव पित्तवाहिन्यः पित्तस्थाने कफवाहिन्यश्च कफस्थाने रक्तवाहिन्यश्च यकृत्प्लीह्नोरेवमेतानि सप्त शिराशतानि ॥

मूलशिराओ, मूलशिराओनां जूदां जूदां विशिष्ट कामो तथा स्थानो अने मूळशिराओमांथी बीजी शिराओनो प्रादुर्भाव.

४ ए सातसो शिराओमां मूळशिराओ चाळीश छे. ए चाळीश मूळशिराओमां दश मूळशिराओ वातवाहिनी (वायुमिश्रित रुधिरनुं वहन करनारी) छे, दश मूळशिराओ पित्तवाहिनी (पित्तमिश्रित रुधिरनुं वहन करनारी) छे, दश मूळशिराओ कफवाहिनी (कफमिश्रित रुधिरनुं वहन करनारी) छे अने दश मूळशिराओ रक्तवाहिनी (शुद्ध रुधिरनुं वहन करनारी) छे. एओमां वातवाहिनी शिराओ वायुनां स्थानकोमां जइने १७५ एकसो पंचोतेर थएली छे, पित्तवाहिनी शिराओ पित्तनां स्थानकोमां जइने १७५ एकसोपंचोतेर थएली छे, कफवाहिनी शिराओ कफनां स्थानकोमां जइने १७५ एकसोपंचोतेर थएली छे अने रक्तवाहिनी शिराओ यकृत्मां तथा प्लीहामां जइने १७५ एकसोपंचोतेर थएली छे. आ प्रमाणे कुल सातसो शिराओ थई.

५ तत्र वातवाहिन्यः शिरा एकस्मिन् सक्थ्नि पञ्चविंशतिः । एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ ॥

विशेषतस्तु कोष्ठे चतुस्त्रिंशत्तासां गुदमेढ्राश्रिताः श्रोण्यामष्टौ द्वे द्वे पार्श्वयोः षट् पृष्ठे तावत्य एव चोदरे दश वक्षसि ॥

एकचत्वारिंशज्जत्रुण ऊर्ध्वं तासां चतुर्दश ग्रीवायाम् । कर्णयोश्चतस्रः । नव जिह्वायाम् । षण् नासिकायाम् । अष्टौ नेत्रयोः ॥

एवमेतत् पञ्चसप्तत्यधिकशतं वातवहानां शिराणां व्याख्यातम् ॥

एष एव विभागः शेषाणामपि ॥

विशेषतस्तु पित्तवाहिन्यो नेत्रयोर्दश कर्णयोर्द्वे ॥

एवं रक्तवहाः कफवहाश्च ॥

एवमेतानि सप्त शिराशतानि सविभागानि व्याख्यातानि ॥

सातसो शिराओनी शाखाओमां, कोठामां अने डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां वेहेंचण.

५ एओमां वातवाहिनी शिराओ के जेओ १७५ छे तेओमांथी २५ जमणा पगमां, २५ डाबा पगमां, २५ जमणा हाथमां अने २५ डाबा हाथमां छे एटले शाखाओमां मळीने कुल १०० छे.

कोठामां ३४ छे ते एवी रीते के कमरनी अंदर गुदाना तथा उपस्थना आश्रयवाळी ८ छे, एक एक पडखामां बब्बे एटले पडखांओमां ४ पीठमां ६ छे, पेटमां ६ छे अने वक्षस्थलमां १० छे.

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां ४१ छे ते एवी रीते के डोकमां १४ छे, एक एक कानमां बब्बे एटले बन्ने कानोमां मळीने ४ छे, जीभमां ९ छे, नासिकामां ६ छे अने एक एक नेत्रमां चार चार एटले बन्ने नेत्रोमां मळीने ८ छे.

आ प्रमाणे एकसोपंचोतेर वातवाहिनी शिराओनी वेहेंचण कही.

१७५ पित्तवाहिनी शिराओ पण उपर प्रमाणेज शाखाओमां, कोठामां तथा डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां वेहेंचाएली छे तेमां फेरफार फक्त एटलोज छे के पित्तवाहिनीओ एक नेत्रमां पांच पांच छे अने एक एक कानमां एक एक छे.

१७५ कफवाहिनी शिराओ पण पित्तवाहिनीओप्रमाणेज शाखाओमां, कोठामां तथा डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां वेहेंचाएली छे.

१७५ रक्तवाहिनी शिराओ पण पित्तवाहिनीओ प्रमाणेज शाखाओमां, कोठामां तथा डोकथी उपरना प्रदेशोमां वेहेंचाएली छे.

आ कुल सातसो शिराओनी वेहेंचणनुं व्याख्यान थयुं.

६ भवन्ति चात्र ॥

क्रियाणामप्रतीघातममोहं बुद्धिकर्मणाम् ।
करोत्यन्यान्गुणांश्चापि स्वाः शिराः पवनश्चरन् ॥
यदा तु कुपितो वायुः स्वाः शिराः प्रतिपद्यते।
तदास्य विविधा रोगा जायन्ते वातसम्भवाः ॥

वातवाहिनी शिराओमां वायुनां प्राकृत तथा वैकृत कर्मो.

६ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युंछे के "पोतानी शिराओमां फरतो वायु अंगोने लांबां टूंकां करवा वगेरे क्रियाओमां अडचण आववा देतो नथी, ज्ञानेंद्रियोने मनने तथा बुद्धिने पोतपोताना विषयोनुं ज्ञान करावेछे अने रस आदि पदार्थोने शरीरमां व्याप्त करी शरीरमां पोषण वगेरे गुणोने पण करेछे. (वायुनुं आ प्राकृत कर्म कह्युं.)

ए वायु ज्यारे प्रकोप पामीने पोतानी शिराओमां फरेछे त्यारे शरीरमां वायुसंबंधी विविध रोगोने उत्पन्न करेछे. (वायुनुं आ वैकृत कर्म कह्युं.)

७ भ्राजिष्णुतामन्नरुचिमग्निदीप्तिमरोगताम् ।
संसर्पत्स्वाः शिराः पित्तं कुर्याच्चान्यान्गुणानपि ॥
यदा प्रकुपितं पित्तं सेवते स्ववहाः शिराः ।
तदास्य विविधा रोगा जायन्ते पित्तसम्भवाः ॥

पित्तवाहिनी शिराओमां पित्तनां प्राकृत तथा वैकृत कर्मो.

७ पोतानी शिराओमां गति करतुं पित्त प्रकाशितपणुं करेछे, अन्नमां रुचि उपजावे छे, जठराग्निने दीप्त करेछे, पित्तसंबंधी रोगोने उत्पन्न थवा देतुं नथी अने धारणाशक्ति, समजवानी शक्ति तथा जोवानी शक्ति वगेरे बीजा गुणोने पण करेछे. (पित्तनुं आ प्राकृत कर्म कह्युं.)

ए पित्त ज्यारे प्रकोप पामीने पोतानी शिराओमां गति करेछे त्यारे शरीरमां पित्तसंबंधी विविध रोगोने उत्पन्न करेछे. (पित्तनुं आ वैकृत कर्म कह्युं.)

८ स्नेहमङ्गेषु सन्धीनां स्थैर्यं बलमरोगताम् ।
करोत्यन्यान्गुणांश्चापि बलासः स्वाः शिराश्चरन् ॥
यदा तु कुपितः श्लेष्मा स्वाः शिराः प्रतिपद्यते।
तदास्य विविधा रोगा जायन्ते श्लेष्मसम्भवाः ॥

कफवाहिनी शिराओमां कफनां प्राकृत तथा वैकृत कर्मो.

८ पोतानी शिराओमां गति करतो कफ अंगोमां स्निग्धपणुं राखेछे, संधिओने मजबूत राखेछे, बळ आपेछे, कफसंबंधी रोगोने उत्पन्न थवा

देतो नथी अने पुष्टि वगेरे बीजा गुणोने पण करे-छे. (कफनुं आ प्राकृत कर्म कह्युं.)

ए कफ ज्यारे प्रकोप पामीने पोतानी शिराओमां गति करेछे त्यारे शरीरमां कफसंबंधी विविध रोगोने उत्पन्न करेछे. (कफनुं आ वैकृत कर्म कह्युं.)

९ धातूनां पूरणं वर्णं स्पर्शज्ञानमसंशयम् ।
स्वाः शिराः सञ्चरद्रक्तं कुर्याच्चान्यान्गुणानपि ॥
यदा तु कुपितं रक्तं सेवते स्ववहाः शिराः ।
तदास्य विविधा रोगा जायन्ते रक्तसम्भवाः ॥

रक्तवाहिनी शिराओमां रुधिरनां प्राकृत तथा वैकृत कर्मो.

९ पोतानी शिराओमां गति करतुं लोही धातुओने पूरेछे, वर्णने सारो राखेछे, निस्संशय रीते स्पर्शनुं ज्ञान करावेछे अने बळ तथा मांसनी पुष्टिवगेरे बीजा गुणोने पण करेछे. (रुधिरनुं आ प्राकृत कर्म कह्युं.)

ए रुधिर ज्यारे प्रकोप पामीने पोतानी शिराओमां गति करेछे त्यारे शरीरमां रुधिर संबंधी विविध रोगोने उत्पन्न करेछे. (रुधिरनुं आ वैकृत कर्म कह्युं.)

१०नहि वातं शिराः काश्चिन्न पित्तं केवलं तथा।
श्लेष्माणं वा वहन्त्येता अतः सर्ववहाः स्मृताः॥
प्रदुष्टानां हि दोषाणां मूर्छितानां प्रधावताम् ।
ध्रुवमुन्मार्गगमनमतः सर्ववहाः स्मृताः ॥

सूक्ष्म विचारथी जोइए तो सघळी शिराओ सघळा दोषोनुं वहन करे छे.

१० कोई पण शिरा एकला वायुनुं, एकला पित्तनुं के एकला कफनुं वहन करती नथी पण तेओमां सर्वदा सघळा दोषोनां प्राकृत कार्यो पण जोवामां आवेछे माटे सघळी शिराओने सर्ववह (त्रणे दोषोनुं वहन करनारी) स्वीकारवी जोईए.

वैकृत स्थितिमां पण दुष्ट थएला (प्रकुपित थएला,) परस्परथी मिश्रित थएला, अने दोडवा लागेला त्रणे दोषो उन्मार्गथी अवश्य प्रत्येक शिराओमां गति करता जोवामां आवे छे तेथी पण सघळी शिराओने सर्ववह स्वीकारवी योग्य छे.

११तत्रारुणा वातवहाः पूर्यन्ते वायुना शिराः।
पित्तादुष्णाश्च नीलाश्च शीतागौर्यःस्थिराःकफात्
असृग्वहास्तु रोहिण्यः शिरा नात्युष्णशीतलाः।

शिराओना जूदा जूदा वर्णो.

११ वायुनुं वहन करनारी शिराओ लाल छे अने वायुथी पूराय छे. पित्तनुं वहन करनारी शिराओ आशमानी रंगवाळी छे, गरम छे अने पित्तथी पूराय छे. कफनुं वहन करनारी शिराओ गौरवर्णवाळी छे, थंडी छे, स्थिर छे अने कफथी पूराय छे. रुधिरनुं वहन करनारी शिराओ अत्यंत लाल वर्णवाळी छे, बहु गरम नथी, बहु टाढी पण नथी अने लोहीथी पूराय छे.

१२अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि न विध्येद्याः शिरा भिषक्
वैकल्यं मरणं चापि व्यधात्तासां ध्रुवं भवेत् ।
शिराशतानि चत्वारि विद्याच्छाखासु बुद्धिमान्
षट्त्रिंशच्च शतं कोष्ठे चतुःषष्टिं च मूर्द्धनि ।
शाखासु षोडश शिराः कोष्ठे द्वात्रिंशदेव तु ॥
पञ्चाशज्जत्रुणश्चोर्ध्वमवेध्याः परिकीर्तिताः ॥

वींधवा योग्य अने नहीं वींधवा योग्य शिराओनी ओळखाणमाटे नहीं वींधवा योग्य शिराओनो निर्देश.

१२ हवे हुं एवी शिराओ कहुंछुं के जेओने वैद्ये कदी पण वींधवी नहीं जोईए. जेटली शिराओ वींधवा योग्य नथी तेओने वींधवाथी रोगीने अवश्य खोडखापण अथवा मरण प्राप्त थाय छे. शाखाओमां चारसो, *कोठामां एकसोछत्रीश अने डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां एकसोचोसठ एटले शरीरमां कुल सातसो शिराओ छे तेओमां शाखाओनी सोळ शिराओ वींधवा योग्य नथी, कोठानी बत्रीश शिराओ वींधवा योग्य नथी अने डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोनी पंचाश शिराओ वींधवा योग्य नथी."

१३ तत्र शिराशतमेकस्मिन् सक्थ्नि भवति तासां जालधरा त्वेका तिस्रश्चाभ्यन्तरास्तत्रोर्वीसंज्ञे द्वे लोहिताक्षसंज्ञा चैकैतास्त्ववेध्या एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्याताववमशस्त्रकृत्याः षोडश शाखासु ॥

शाखाओनी जे सोळ शिराओ वींधवा योग्य नथी ते कई कई?

१३ दरएक पगमां अने दरएक हाथमां सो सो शिराओ छे तेओमां बे पगनी तथा बे हाथनी मळीने जे **चार** शिराओ कूर्चशिर नामनां मर्मोमां व्याप्त थएलां मांसादिकनां जाळोने (आ शारीर स्थानना शरीरसंख्याव्याकरणशारीर नामना पांचमा अध्यायनो १२ मो विषय जुवो.) धरनारी छे तेओने वींधवी नही. बे हाथनां तथा बे पगनां मळीने चार ऊर्वी नामनां मर्मोमां रहेली **आठ** शिराओने वींधवी नही. तेमज बे हाथनां तथा बे पगनां मळीने चार लोहिताक्ष नामनां मर्मोमां रहेली **चार** शिराओने पण वींधवी नही. शाखाओमां रहेली जे सोळ शिराओ शस्त्रक्रियाने लायक नथी तेओनुं आ व्याख्यान आप्युं.

१४ द्वात्रिंशच्छ्रोण्यां तासामष्टावशस्त्रकृत्या द्वे द्वे विटपयोः कटीकतरुणयोश्च ॥

अष्टावष्टावेकैकस्मिन् पार्श्वे तासामेकैकामूर्ध्वगां परिहरेत् पार्श्वसन्धिगते च द्वे ॥

चतस्रो विंशतिश्च पृष्ठवंशमुभयतस्तासामूर्ध्वगामिन्यौ द्वे द्वे परिहरेद्बृहतीशिरे ।

तावत्य एवोदरे तासां मेढ्रोपरि रोमराजीमुभयतो द्वे द्वे परिहरेत् ॥

चत्वारिंशद्वक्षसि तासां चतुर्दशाऽशस्त्रकृत्या हृदये द्वे द्वे द्वे स्तनमूले स्तनरोहितापलापापस्तम्भेषूभयतोऽष्टौ ।

एवं द्वात्रिंशदशस्त्रकृत्याः पृष्ठोदरोरःसु भवन्ति ॥

कोठानी जे बत्रीश शिराओ वींधवा योग्य नथी ते कई कई?

१४ कमरमां आठ वातवाहिनी, आठ पित्तवाहिनी, आठ कफवाहिनी अने आठ रक्तवाहिनी एओ मळीने जे बत्रीश शिराओ छे तेओमांनी विटप नामनां बे मर्मोनी चार तथा कटीकतरुण नामनां बे मर्मोनी चार एम मळीने **आठ** शिराओ वींधवा योग्य नथी. (विटप नामनां बे मर्मो जो के गया अध्यायमां कोठानां मर्मोमां नही पण पगनां मर्मोमां गणेलां छे तो पण तेओमां कमरनी शिराओनो संबंध छे तेथी तेओने अहीं कोठानी शिराओनां प्रकरणमां लीधां छे.)

एक एक पडखामां बे वातवाहिनी, बे पित्तवाहिनी, बे कफवाहिनी अने बे रक्तवाहिनी एम मळीने आठ आठ शिराओ छे तेओमां उंचे रहेली एक एक शिराने वींधवी नही के जे **बे** शिराओ पार्श्वसंधि नामनां बे मर्मोमां छे.

पीठमां बरडानी करोडनी एक एक तरफमां त्रण त्रण वातवाहिनी, त्रण त्रण पित्तवाहिनी, त्रण त्रण कफवाहिनी अने त्रण त्रण रक्तवाहिनी एम मळीने चोवीश शिराओ छे तेओमां उंचे रहेली बबे शिराओने वींधवी नही के जे **चार** शिराओ बृहती नामनां बे मर्मोमां छे.

उदरमां पण छ वातवाहिनी, छ पित्तवाहिनी, छ कफवाहिनी अने छ रक्तवाहिनी एम मळीने चोवीस शिराओ छे तेओमां उपस्थ उपरनी रोमावळीनी बन्ने तरफ आवेली बबे शिराओने एटले ए **चार** शिराओने वींधवी नही.

छातीमां दश वातवाहिनी, दश पित्तवाहिनी, दश कफवाहिनी अने दश रक्तवाहिनी, एम मळीने चाळीश शिराओ छे तेओमां हृदय नामना एक मर्मनी **बे**, स्तनमूल नामनां बे मर्मोनी बबे एटले **चार**, स्तनरोहित नामनां बे मर्मोनी बबे एटले **चार**, अपलाप नामनां बे मर्मोनी एक ए-

टले बे अने अपस्तंभ नामनां बे मर्मोनी एक एक एटले बे, एटली शिराओने वींधवी नही.

कोठामां (कमर, पडखां, पीठ, उदर तथा छाती एओमां) रहेली जे बत्रीश शिराओ शस्त्र. क्रियाने लायक नथी तेओनुं आ व्याख्यान आप्युं.

१५ चतुःषष्टिशिराशतं जत्रुण ऊर्ध्वं भवति तत्र षट्पञ्चाशच्छिरोधरायां तासामष्टौ चतस्रश्च मर्मसंज्ञाः परिहरेद् द्वे कृकाटिकयोर्द्वे विधुरयोः ॥

हन्वोरुभयतोऽष्टावष्टौ तासां तु सन्धिधमन्यौ द्वे द्वे परिहरेत् ॥

षट्त्रिंशज्जिह्वायां तासामधः षोडशाऽशस्त्रकृत्या रसवहे द्वे वाग्वहे च द्वे ॥

द्विर्द्वादश नासायां तासामौपनासिकीश्चतस्रः परिहरेत् । तासामेव च तालुन्येकामेकां मृदावुद्देशे ॥

अष्टात्रिंशदुभयोर्नेत्रयोस्तासामेकैकामपाङ्गयोः परिहरेत् ॥

कर्णयोर्दश तासां शब्दवाहिनीमेकैकां परिहरेत् ।

नासानेत्रगतास्तु ललाटे षष्टिस्तासां केशान्तानुगताश्चतस्रः ।

आवर्तयोरेकैका स्थपन्यां चैका परिहर्तव्या।

शङ्खयोर्दश तासां शङ्खसन्धिगतामेकैकां परिहरेत् ॥

द्वादश मूर्ध्नि तासामुत्क्षेपयोर्द्वे परिहरेत् ॥

सीमन्तेष्वेकैकामेकामधिपताविति ।

एवमशस्त्रकृत्याः पञ्चाशज्जत्रुण ऊर्ध्वमिति ॥

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां जे पंचाश शिराओ वींधवा योग्य नथी ते कई कई?

१६ डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां एकतालीश वातवाहिनी, एकतालीश पित्तवाहिनी, एकतालीश कफवाहिनी अने एकतालीश रक्तवाहिनी एम मळीने कुल १६४ एकसो चोसठ शिराओ छे तेओमां डोकनी अंदर जे ५६ छपन शिराओ छे तेओमांथी मातृका नामनां आठ मर्मोनी **आठ**, धमनी नामनां चार मर्मोनी **चार**, कृकाटिका नामनां बे मर्मोनी बे अने विधुर नामनां बे मर्मोनी बे शिराओ वींधवा योग्य नथी.

हडपचीना बे भागोनी बन्ने तरफ जे आठ आठ शिराओ पेहेली छपन शिराओमाहेलीज छे तेओमांथी बन्ने तरफनी बे बे एटले ए **चार** संधिशिराओ वींधवा योग्य नथी.

नीचे सोळ अने उपर वीश एम मळीने जीभनी जे छत्रीश शिराओ छे तेओमांथी नीचे रहेली सोळ शिराओ, रसनुं वहन करनारी बे शिराओ अने वाणीनुं वहन करनारी बे शिराओ वींधवा योग्य नथी.

नाकमां चोवीश शिराओ छे तेओमांथी नाकना समीपमां रहेली **चार** शिराओ वींधवा योग्य नथी. ए चोवीशमाहेलीज एक शिरा ताळवामां छे अने बीजी शिरा घोणा नामनी जग्याना समीपमां छे ते बे पण वींधवा योग्य नथी.

बन्ने नेत्रोमां मळीने आडत्रीश शिराओ छे (आठ वातवाहिनी, दश पित्तवाहिनी, दश कफवाहिनी अने दश रक्तवाहिनी) तेओमांथी एक एक शिरा के जे अपांग नामनां बे मर्मोमां छे ते बे शिराओ वींधवा योग्य नथी.

बन्ने कानोमां मळीने दश शिराओ छे (चार वातवाहिनी, बे पित्तवाहिनी, बे कफवाहिनी अने बे रक्तवाहिनी) तेओमां शब्दनुं वहन करनारी जे एक एक शिरा छे ते बे शिराओ वींधवा योग्य नथी. (अहीं ५० नो सरवाळो थाय छे.)

नाकनी चोवीश शिराओ अने नेत्रोनी आडत्रीशमांनी छत्रीश शिराओ एटले साठ शिराओ के जेओ ललाटमां आवेली छे तेओमांथी आवर्तनामनां मर्मोना समीपमां केशोना पर्यंत भागने प्राप्त थएली जे चार शिराओ छे तेओ वींधवा योग्य

नथी. (आ शिराओ नाकनी तथा नेत्रोनी शिराओनाज अवयवो छे माटे तेओने जूदी गणीने पंचाशनी संख्यामां वधारो लेखवो नहीं.)

आवर्त्त नामनां बे मर्मोमां जे एक एक शिरा छे अने स्थपनी नामना एक मर्ममां जे एक शिरा छे ते त्रण शिराओ वींधवा योग्य नथी. (आ शिराओ पण नाकनी तथा नेत्रोनी शिराओना अवयवोज छे माटे तेओथी पंचाशनी संख्यामां वधारो थतो नथी.)

नाकनी तथा नेत्रोनी शिराओमां जे दश शिराओ शंख नामनां बे मर्मोमां आवेली छे तेओमांथी जे एक एक शिरा ए शंखोना संधिमां छे ते बे शिराओ वींधवा योग्य नथी. (आ शिराओ पण नाकनी तथा नेत्रोनी शिराओनाज अवयवो छे माटे तेओथी पंचाशनी संख्यामां वधारो थाय छे एम समजवुं नहीं.)

नाकनी तथा नेत्रोनी शिराओमां जे बार शिराओ माथामां आवेली छे तेओमांथी उत्क्षेप नामनां मर्मोमां रहेली बे शिराओ, पांच सीमंतनामनां मर्मोमां रहेली पांच शिराओ अने अधिपति नामना मर्ममां रहेली एक शिरा ए आठ शिराओ वींधवा योग्य नथी. (आ शिराओ पण नाकनी तथा नेत्रोनी शिराओनाज अवयवो छे माटे तेओने जूदी गणीने पंचाशनी संख्यामां वधारो लेखवो नहीं.)

डोकथी मांडीने उपरना प्रदेशोमां जे पंचाश शिराओ वींधवा योग्य नथी तेओनुं आ व्याख्यान आप्युं.

भवति चात्र ॥

१६ व्याप्नुवन्त्यभितो देहं नाभितः प्रसृताः शिराः। प्रतानाः पद्मिनीकन्दाद्बिसादीनां यथा जलं ॥

सूक्ष्म दृष्टिथी जोतां शिराओनी संख्या मुकरर करी शकाती नथी.

१६ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेम कमलिनीना कंदमांथी प्रसरेलां बिस वगेरे विभागोना विस्तारो जळमां चोमेर व्याप्त थई रहेला होयछे तेम नाभिथी प्रसरेली शिराओना विस्तारो शरीरमां चोमेर व्याप्त थई रहेला छे तेथी शिराओनी संख्या मुकरर करी शकाय एम नथी."

अध्याय ८ मो

१ अथातः शिराव्यधविधिशारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शिराव्यधविधिशारीर' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ बालस्थविररूक्षक्षतक्षीणभीरुपरिश्रान्तस्त्रीमद्याध्वकर्शितमत्तवान्तविरिक्तास्थापितानुवासितजागरितक्लीबकृशगर्भिणीनां कासश्वासशोषप्रवृद्धज्वराक्षेपकपक्षाघातोपवासपिपासामूर्छाप्रपीडितानां च शिरां न विध्येद्याश्चाव्यध्या व्यध्याश्चादृष्टा दृष्टाश्चायन्त्रिता यन्त्रिताश्चानुत्थिता इति ॥

केवा केवा रोगीओनी शिराओने वींधवी नहीं अने केवी केवी शिराओने वींधवी नहीं.

२ बालक, वृद्ध, रूक्ष, क्षतथी क्षीण थएल, बीकण, थाकीगएल, स्त्रीसंगथी कर्शित थएल, मद्यथी विक्षेप पामेल, पंथ करवाथी कर्शित थएल, मत्त थएल, जेने तुरतज वमन के विरेचन करावामां आव्युं होय ते, जेने निरूहबस्ति (दूध तथा काढा वगेरेथी युक्त करेला तेलनी पीचकारी) मारवामां आवी होय ते, जेने अनुवासन बस्ति (केवळ घी के तेल वगेरे स्नेहनी पिचकारी) मारवामां आवी होय ते, जेणे उजागरो करेल

१ शिराओने वींधवाना एटले फस खोलवाना प्रकार विषेनो.

होय ते, नपुंसक, कृश, गर्भिणी, खांसीथी पीडाएल, श्वासथी पीडाएल, शोषथी पीडाएल, जेने ज्वर अत्यंत वृद्धि पाम्यो होय ते, आक्षेपकथी पीडाएल, पक्षाघातथी पीडाएल, उपवासथी पीडाएल, तरशथी पीडाएल अने मूर्छाथी पीडाएल एओनी शिराने वींधवी नहीं. जे शिराओने गया अध्यायमां नहीं वींधवा योग्य कहेली छे ते शिराओने वींधवी नहीं. जे शिराओ वींधवा लायक छतां पण देखवामां आवती न होय ते शिराओने वींधवी नहीं. जो शिराओ देखवामां आवतां छतां पण बराबर बांधवामां आवेली न होय ते शिराओने वींधवी नहीं अने जे शिराओ बराबर बांधेली छतां पण ऊठेली (चडी आवेली) न होय तेओने पण वींधवी नहीं. (बालक तथा वृद्ध अपूर्ण धातुओवाळा होय छे तेथी, क्षतथी क्षीण थएलो माणस क्षीणधातुओवाळो होय छे तेथी, बीकण माणस लोहीना दर्शनथी मूर्छित थई जाय एवी धास्ती रहे छे तेथी, थाकथी क्लम पामेला माणसनो वायु लोही नीकळवाथी अत्यंत प्रबलपणुं पामीने शरीरनो विनाश करनार थई पडे तेथी, मद्य पीवाथी विक्षेप पामेलानुं तथा मत्तनुं चित्त विक्षिप्त होवाने लीधे तेने लोहीनुं स्रावण अत्यंत मूर्छा करनार थई पडे तेथी, पंथ करवाथी के स्त्रीसंगथी कर्शित थएलाने लोहीनुं स्रावण वायुनो प्रकोप करनार थई पडे तेथी, जेने वमन के विरेचन कराववामां आव्युं होय तेने अन्नसंसर्गादिक कराव्या विना तुरतज लोही स्रवाववामां आवे तो वायुनो प्रकोप थई जाय तेथी, जेने निरूह बस्ति देवामां आवी होय के उजागरो थयो होय तेने पण लोहीना स्रावणथी वायुनो प्रकोप थई जाय तेथी, जेने अनुवासन बस्ति देवामां आवी होय तेनो मंद थएलो अग्नि लोहीना स्रावणथी वधारे मंद थई जाय तेथी, नपुंसक प्रधानधातुना क्षयवाळो होवाने लीधे तथा अल्पसत्ववाळो होवाने लीधे लोहीना स्रावथी मरीज जाय तेथी, कृश तथा गर्भिणी एओ उपक्षीण धातुओवाळां होवाने लीधे तेओनां शरीर पडी जवानी धास्ती रहे तेथी, खांसी श्वास के शोष एओथी पीडाएलां माणसो क्षीण थता धातुओवाळां होवाने लीधे तेओनी पण मरी जवानी धास्ती रहे तेथी अने जेनो ज्वर अत्यंत वृद्धि पाम्यो होय तेने लोहीना स्रावथी प्रलापादिक थई जवानी धास्ती रहे तेथी ए लोकोनी शिराओने वींधवी नहीं. आप्रमाणेज आक्षेपक तथा पक्षाघात वगेरे रोगोथी पीडाएलाओने पण शिरावेध न करवानां कारणोनी कल्पनाओ करी लेवी.)

३ शोणितावसेकसाध्याश्च विकाराः प्रागभिहितास्तेषु चापक्वेष्वन्येषु चानुक्तेषु यथाभ्यासं यथान्यायं च शिरां विध्येत् ॥

केवा केवा रोगोमां शिराओने वींधवी ?

३ सूत्रस्थानना शोणितवर्णनीय नामना १४ मा अध्यायना १७ मा विषयमां जे विकारो लोही स्रवाववाना अभ्यासथी टळे एवा कह्या छे ते विकारो पाका न होय ते पेहेलां स्नेहन तथा स्वेदन आदि योग्य क्रियाओ करीने ते विकारोने लगती आवेली शिराओने वींधवी. तेमज ए अध्यायमां जे विकारो कह्या नथी ते विकारो पण पाकवामां तैयार थाय एवा होय तो पाकवाथी पेहेलां स्नेहन तथा स्वेदन आदि योग्य क्रियाओ करीने ते विकारोने लगती शिराओने वींधवी. (पाकी गएला विकारोमां लोही होतुं नथी माटे पाक्याथी पेहेलांज शिराओने वींधवानुं कह्युं छे.)

४ प्रतिषिद्धानामपि च विषोपसर्गे आत्ययिकेषु च शिराव्यधनमप्रतिषिद्धम् ॥

जे रोगीओनी शिराओ वींधवानो निषेध छे तेओनी शिराओने पण कारणसर वींधवानी छूट.

४ आ अध्यायना बीजा विषयमां जे बालक

तथा वृद्ध आदि रोगीओनी शिराओ वींधवानो निषेध कर्यो छे ते रोगीओने जो झेरसंबंधी उपद्रव थयो होय अथवा जेओथी प्राण जाय एवा अने बीजा कोई पण उपायोथी टळे नहीं एवा विद्रधि वगेरे रोगो थया होय तो ते रोगीओनी शिराओ वींधवानो पण निषेध नथी एम समजवुं.

५ तत्र स्निग्धस्विन्नमातुरं यथादोषप्रत्यनीकं द्रवप्रायमन्नं भुक्तवन्तं यवागूं पीतवन्तं वा यथाकालमुपस्थाप्यासीनं स्थितं वा प्राणानबाधमानो वस्त्रपट्टचर्मान्तर्वल्कललतानामन्यतमेन यन्त्रयित्वा नातिगाढं नातिशिथिलं शरीरप्रदेशमासाद्य यथोक्तं शस्त्रं गृहीत्वा शिरां विध्येत् ॥

शिरा वींधवाथी पेहेलां करवानुं प्रधान कर्म.

५ जेनी शिरा वींधवानी होय ते रोगीने स्नेहनो तथा स्वेदननो संस्कार आपी, रुधिरना उत्क्लेदननेमाटे जे दोष होय तेने टाळे एवुं झाझा द्रववाळुं अन्न जमाडी अथवा रोगीने जो राब सात्म्य होय तो योग्य मात्राथी तिलनी राब पाई, आ अध्यायना ६ ठा तथा १४ मा विषयमां कहेला काळ उपर ध्यान आपी ते काळने अनुसरी, रोगीने हाजर करी, जे प्रदेशमां शिरा वींधवानी होय ते प्रदेशना अनुसारथी बेसाडी अथवा स्थिति करावी, रोगीनां प्राणोने हरकत न आवे तेम वस्त्रना पाटाथी, चामडाथी, झाडनी अंतर छालथी के लताथी बहु दृढ पण नहीं अने बहु शिथिल पण नहीं एवी रीते तेना शरीरना प्रदेशने बांधी, मर्म वगरना प्रदेशने पकडी, योग्य रीते वींधवामां उपयोगी थाय एवा शस्त्रने लईने ते शस्त्रवते शिराने वींधवी.

६ नैवातिशीते नात्युष्णे न प्रवाते न चाभ्रिते।
शिराणां व्यधनं कार्यमरोगे वा कदाचन ॥

अमुक प्रकारना दिवसमां शिरा वींधवानो तथा स्वस्थ माणसनी शिरा वींधवानो निषेध.

६ अत्यंत थंडीवाळा, अत्यंत गरमीवाळा, अत्यंत पवनवाळा के वादळानां घमघोरथी ढंकाएला दिवसमां कदी पण शिराओ वींधवी नहीं. तेम स्वस्थ माणसनी शिराओ पण कदी वींधवी नहीं.

७ तत्र व्यध्यशिरं पुरुषं प्रत्यादित्यमुखमरत्निमात्रोच्छ्रिते उपवेश्यासने सक्थ्नोराकुञ्चितयोर्निवेश्य कूर्परौ सन्धिद्वयस्योपरि हस्तावन्तर्गूढाङ्गुष्ठकृतमुष्टी मन्ययोः स्थापयित्वा यन्त्रणशाटकं ग्रीवामुष्ट्योरुपरि परिक्षिप्यान्येन पुरुषेण पश्चात्स्थितेन वामहस्तेनोत्तानेन शाटकान्तद्वयं ग्राहयित्वा ततो वैद्यो ब्रूयाद्दक्षिणहस्तेन शिरोत्थापनार्थं नात्यायतशिथिलं यन्त्रमावेष्टयेत्यसृक्स्रावणार्थं यन्त्रं पृष्ठमध्ये च पीडयेति कर्मपुरुषं च वायुपूर्णमुखं स्थापयेदेष उत्तमाङ्गगतानामन्तर्मुखवर्ज्यानां शिराणां व्यधने यन्त्रणविधिः ॥

माथांनी शिराओने वींधवी होय तो ते शिराओने उठाडवानी रीति.

७ जेनी शिराने वींधवी होय ते माणसने एक हाथ उंचा आसनपर सूर्यनी सामे मोहोडुं रहे एवी रीते बेसाडी, बन्ने पगनो संकोच करावी, अंगुठाओ अंदर रहे एवी रीते बन्ने हाथनी मूठीओ वळावी, बन्ने हाथनी कोणीओने गोठणोनी उपर रखावी, बन्ने मुठीओने डोकना पाछला भागनी मन्या नामनी बे शिराओनी उपर रखावी, बांधवानेमाटे एक वस्त्र लई, ते वस्त्रने डोकनी तथा मुठीओनी उपर नाखी, बीजा कोई पुरुषने रोगीनी पाछळ उभो राखी, ते पुरुषना सवळा रखावेला डाबा हाथ वते पेला वस्त्रना बे छेडा पकडावीने पछी वैद्ये ते पुरुषने केहेवुं के 'शिराने उठाडवामाटे जमणा

हाथवते बहु पोहोळुं के पोचुं न रहे एवी रीते वस्त्र चोमेर बांधी ले अने लोही स्त्रवाववा माटे ते बंधनने पाछळना भागना मध्यमां दबाववे.' जेनी शिराने वींधवी होय ते माणसने आ समयमां मोहोडुं बंध रखावीने बेसाडवो के जेथी तेनुं मोहोडुं अंदरना पवनथी पूर्ण रहे. मोहोडाना अंदरना भागनी शिराओ शिवाय बीजी सघळी माथानी शिराओ वींधवाना समयमां बंधन करवानो आ प्रकार वापरवो. (वाग्भटे तो बांध्या पछी अंगूठाथी छटकावेली वचली आंगलीवते शिरापर ताडन करवानुं पण कह्युं छे.)

८ तत्र पादव्यध्यशिरस्य पादं समे स्थाने सुस्थिरं स्थापयित्वान्यं पादमीषत्सङ्कुचितमुच्चैः कृत्वा व्यध्यपादं जानुसन्धेरधः शाटकेनावेष्ट्य हस्ताभ्यां प्रपीड्य गुल्फं व्यध्यप्रदेशस्योपरि चतुरङ्गुले प्लोतादीनामन्यतमेन बद्ध्वा पादशिरां विध्येत् ॥

अथोपरिष्टाद्धस्तौ गूढाङ्गुष्ठकृतमुष्टी सम्यगासने स्थापयित्वा सुखोपविष्टस्य पूर्ववद्यन्त्रं बद्ध्वा हस्तशिरां विध्येत् ॥

गृध्रसीविश्वाच्योः सङ्कुचितजानुकूर्परः स्यात्॥

पगनी के हाथनी शिराओने वींधवी होय तो ते शिराओने उठाडवानी रीति.

८ जेना पगनी शिराने वींधवी होय ते माणसना पगने सपाट स्थानमां सारी पेठे स्थिर रखावी, बीजा पगने कांईक संकोच कराववापूर्वक तेनी उपर रखावी, वींधवाना पगने गोठणना संधिनी नीचे वस्त्रवते वींटी लई, बन्ने हाथवते पगना कांडाने दबावी, वींधवाना प्रदेशथी चार आंगळ उपर वस्त्रवते, चामडावते, झाडनी अंतर छालवते के लतावते शिराने बांधीने ते शिराने वींधवी.

हाथनी शिराने वींधवी होय तो हाथ लांबा रखावी, अंगुठाओ अंदर रहे एवी रीते बन्ने हाथनी मूठीओ वळावी. बन्ने हाथने आसनपर सारी रीते रखावी, रोगीने सुखाकारीथी बेसाडी, हाथनी शिराने वस्त्रवते, चामडावते, झाडनी अंतर छालवते के लतावते वींधवाना प्रदेशथी चार आंगळ उपरना प्रदेशमां बांधीने पछी ते शिराने वींधवी.

गृध्रसी नामनो पगनो रोग थयो होय तो रोगीए गोठणने संकोचीने बेसवुं अने विश्वाची नामनो हाथनो रोग थयो होय तो रोगीए कोणीने संकोचीने बेसवुं.

९ श्रोणीपृष्ठस्कन्धेषून्नामितपृष्ठस्यावाक्शिरस्कस्योपविष्टस्य विस्फूर्जितपृष्ठस्य विध्येत् ॥

कमर, पीठ के कांध एओनी शिराओने वींधवी होय तो ते शिराओने उठाडवानी रीति.

९ कमर, पीठ के कांध एओनी शिराओने वींधवी होय तो रोगीने तेनी पीठ ऊंची तथा पोहोळी रहे अने माथुं नमावेलुं रहे एवी रीते बेसाडीने शिराने वींधवी.

१० उदरोरसोः प्रसारितोरस्कस्योन्नमितशिरस्कस्य विस्फूर्जितदेहस्य ॥

पेटनी के छातीनी शिराने वींधवी होय तो ते शिराओने उठाडवानी रीति.

१० पेटनी के छातीनी शिराने वींधवी होय तो रोगीनी छाती पोहोळी रखावी, माथुं ऊंचुं रखावी, शरीरना मध्य भागने विस्तीर्ण रखावी, शिराने वींधवी.

११ बाहुभ्यामवलम्ब्यमानदेहस्य पार्श्वयोः।
अवनामितमेढ्रस्य मेढ्रे ॥
उन्नामितविदष्टजिह्वाग्रस्याधोजिह्वायाम् ।
अतिव्यात्ताननस्य तालुनि दन्तमूलेषु च ।

पडखां, उपस्थ, जीभनो नीचेनो भाग, ताळवुं के दांतनां पेढां एओनी शिराओने वींधवी होय तो ते शिराओने उठाडवानी रीति.

११ कोई पण पडखांनी शिराने वींधवी होय

तो रोगीने तेना शरीरनो भार बाहुओनी उपर आवे एवी रीते स्थिति करावीने ते शिराने वींधवी.

उपस्थनी शिराने वींधवी होय तो उपस्थने स्तब्ध करावीने (उठाडीने) तेनी शिराने वींधवी.

जीभना नीचेना भागनी शिराने वींधवी होय तो जीभनी अणीने उंची रखावी बेबडी वाळेली जीभने दांतोवते दबावीरखावीने ते शिराने वींधवी.

ताळवांनी के दांतोनां पेढांओनी शिराने वींधवी होय तो रोगीना मोहोडाने अत्यंत फाटुं रखावीने ते शिराने वींधवी.

१२ एवं यन्त्रोपायानन्यांश्च शिरोत्थापनहेतून् बुद्ध्यावेक्ष्य शरीरवशेन व्याधिवशेन च विदध्यात् ॥

शरीरना विभागोना अनुसारथी अने रोगना अनुसारथी वैद्ये बीजी पण शिराओने उठाडवानी युक्तिओ गोठवी लेवाविषे.

१२ आप्रमाणे शिराओने बांधवाना उपायो के जेओ शिराओने उठाडवाना हेतुओरूप छे तेओने तथा अमुक प्रकारोथी अंगोने राखवा तथा दबाववा वगेरे बीजा पण शिराओने उठाडवाना उपायोने वैद्ये बुद्धिथी कल्पी लईने शरीरना विभागोना अनुसारथी तथा व्याधिना अनुसारथी गोठववा.

१३ मांसलेष्ववकाशेषु यवमात्रं शस्त्रं निदध्यादतोऽन्येष्वर्द्धयवमात्रं व्रीहिमात्रं वा व्रीहिमुखम् । अस्थ्नामुपरि कुठारिकया विध्येदर्द्धयवमात्रम् ॥

जूदा जूदा प्रदेशोमां शस्त्र घोंचवानुं जूदुं जूदुं प्रमाण अने जूदा जूदा शस्त्रोनो उपयोग.

१३ शरीरना जे प्रदेशोमां मांस अधिक छे ते प्रदेशोमां जव जेटली उंडाई सुधी शस्त्र नाखवुं अने बीजा एटले अल्प मांसवाळा प्रदेशोमां योग्यता जोई अरधा जव जेटली अथवा आखी राता चोखानी साळ जेटली उंडाई सुधी शस्त्र नाखवुं. आवा प्रदेशोमां व्रीहिमुख[1] नामना शस्त्रथी शिराने वींधवी. अस्थिओनी उपर रहेली शिराने वींधवी होय तो कुठारिका[2] नामना शस्त्रथी अरधा जव जेटलो उंडो वींध करवो.

१४ भवन्ति चात्र ॥

व्यभ्रे वर्षासु विध्येत ग्रीष्मकाले तु शीतले ।
हेमन्तकाले मध्याह्ने शस्त्रकालास्त्रयः स्मृताः ॥

शिरा वींधवाना समयो.

१४ आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के " वर्षाऋतुमां शिरा वींधवी होय तो जे दिवसे वादळांनो कशो घमघोर न होय ते दिवसे वींधवी. ग्रीष्मऋतुमां वींधवी होय तो शीतल समयमां एटले दिवसनो त्रीजो पोहोर वीत्या पछी वींधवी. हेमंतऋतुमां अर्थात् शीयाळामां वींधवी होय तो मध्याह्न समयमां वींधवी. शस्त्रथी वेध करवाना आ त्रण समयो कह्या छे. (जो विषकृत पीडा के विद्रधि वगेरे आत्ययिक रोग होय तो तेओने माटे आ समयो कह्या छे एम समजवुं. बीजा रोगोमां तो सूत्रस्थानना १४ मा अध्यायना १७ मा विषयमां कह्या प्रमाणे समय लेवो.)

१५ सम्यक्छस्त्रनिपातेन धारया या स्रवेदसृक् । मुहूर्तं रुद्ध्वा तिष्ठेच्च सुविद्धान्तां विनिर्दिशेत् ॥

बराबर वींधाएली शिरानुं लक्षण.

१५ सारी रीते शस्त्र नखायाने लीधे जे शिरा मुहूर्त्तमात्र लोहीनो अविच्छिन्न स्राव करे अने

१ जेनुं फळुं अरधा आंगळनुं होय अने मोहोडुं चोखानी साळना जेवी अणीवाळुं होय ते शस्त्र व्रीहिमुख केहेवाय छे. आनो उपयोग शिरा वींधवामां तथा उदर वींधवामां करवो. (वा. सू. अ. २६ मो.)

२ पोहोळी, हाथावाळी अने गायना दांत जेवा अरधा आंगळना मोहोडावाळी कुठारिका (कुहाडी) थाय छे. (वा. सू. अ. २६)

रोकवामां आवे त्यारे तुरत स्राव करती बंध पडी जाय ते शिराने बराबर वींधाएली समजवी.

१६ यथा कुसुम्भपुष्पेभ्यः पूर्वं स्रवति पीतिका।
तथा शिरासु विद्धासु दुष्टमग्रे प्रवर्तते ॥

शिरा वींधाया पछी प्रथम दुष्ट लोहीनोज स्राव थाय छे.

१६ जेम कसूंबानां पुष्पोमांथी प्रथम पीलाशवाळो रसज स्रवे छे तेम वींधवामां आवेली शिराओमांथी प्रथम दुष्ट (बगडेलुं) लोहीज स्रवे छे.

१७ मूर्छितस्यातिभीतस्य श्रान्तस्य तृषितस्य च।
न वहन्ति शिरा विद्धास्तथानुत्थितयन्त्रिताः ॥

शिरा सारी रीते वींधाएली छतां पण कोई वखते स्राव करती नथी तेनुं कारण.

१७ मूर्छित माणसनी, अत्यंत भय पामेला माणसनी, थाकेला माणसनी अने तरस्या माणसनी शिरा योग्य रीते वींधाएली छतां पण लोहीनो स्राव करती नथी. कारण के अत्यंत भयादिकथी उत्पन्न थएलो वायु शिराना मुखने रोकी दे छे. जे शिरा बांधेली छतां पण ऊठेली न होय ते शिरा पण योग्य रीते वींधाएली छतां लोहीनो स्राव करती नथी. कारण के नहीं ऊठेली शिरानुं लोही स्रावमां अभिमुख थएलुं होतुं नथी.

१८ क्षीणस्य बहुदोषस्य मूर्छयाभिद्रुतस्य च।
भूयोऽपराह्णे विस्राव्या सा परेद्युरुयहेऽपि वा ॥

लोहीनो स्राव करवानुं आवश्यक छतां क्षीणताने लीधे के मूर्छाने लीधे एकवार स्राव न थाय तो फरीवार करवो.

१८ दोषोनुं घणापणुं होवाने लीधे लोहीनो स्राव करवानुं आवश्यक छतां क्षीणताने लीधे के क्षीणता नहीं छतां पण मूर्छाने लीधे प्रथम प्रयोगमां लोहीनो स्राव न थाय तो अपराह्ण समयमां अथवा बीजे दिवसे के त्रीजे दिवसे पण फरीवार प्रयोग करीने शिरामांथी लोही स्रवाववुं.

१९ रक्तं सशेषदोषं तु कुर्यादपि विचक्षणः।
न चातिप्रस्रुतं कुर्याच्छेषं संशमनैर्जयेत् ॥

लोहीनो अत्यंत स्राव करवानो निषेध.

१९ विचक्षण वैद्ये लोहीमां कांईक दोष अवशेष रही जतो होय तो पण रेहेवा दईने लोही स्रवतुं बंध करी देवुं पण दोषने निश्शेष करवा माटे लोहीनो अतिस्राव करवो नहीं. (कारण के लोहीनो अतिस्राव थवाथी आक्षेपक तथा तिमिर वगेरे रोगो थाय छे अने वखतपर मरण पण थई जाय छे.) लोहीमां थोडोक दोष अवशेष रही गयो होय तो ते दोषने संशमन औषधोथी जीती लेवो.

२० बलिनो बहुदोषस्य वयःस्थस्य शरीरिणः।
परं प्रमाणमिच्छन्ति प्रस्थं शोणितमोक्षणे ॥

काहाडवामां लोहीनुं छेवट वजन.

२० 'जे माणस बळवान् होय, घणा दोषवाळो होय अने वळी जुवान होय तेनुं लोही काहाडवामां पण छेल्लामां छेल्ली चोपन तोला भारनी मात्रा समजवी. कदी पण ए छेवटना प्रमाणथी अधिक स्रवाववुं नहीं एम आचार्यो कहे छे.' (चिकित्सितस्थानना ३९ मा अध्यायनो ३ जो विषय जुवो.)"

२१ तत्र पाददाहपादहर्षावबाहुकचिप्पविसर्पवातशोणितवातकण्टकविचर्चिकापाददारीप्रभृतिषु क्षिप्रमर्मण उपरिष्टाद् द्व्यङ्गुले व्रीहिमुखेन शिरां विध्येत्।

श्लीपदे तच्चिकित्सिते यथा वक्ष्यते।
क्रोष्टुकशिरःखञ्जपङ्गुलवातवेदनासु जङ्घायां गुल्फस्योपरि चतुरङ्गुले।
अपच्यामिन्द्रबस्तेरधस्ताद् द्व्यङ्गुले।
जानुसन्धेरुपर्यधो वा चतुरङ्गुले गृध्रस्यां।
ऊरुमूलसंश्रितां तु गलगण्डे।
एतेनेतरसक्थि बाहू च व्याख्यातौ ॥

विशेषतस्तु वामबाहौ कूर्परसन्धेरभ्यन्तरतः प्लीह्नि कनिष्ठिकानामिकयोर्मध्ये वा । एवं दक्षिणबाहौ यकृद्दाल्ये कफोदरे चैतामेव च कासश्वासयोरप्यादिशन्ति ।

गृध्रस्यामिव विश्वाच्याम् ।

श्रोणिं प्रति समन्तात् द्व्यङ्गुले प्रवाहिकायां शूलिन्याम् ।

परिकर्तिकोपदंशशूकदोषशुक्रव्यापत्सु मेढ्रमध्ये ।

वृषणयोः पार्श्वे मूत्रवृद्ध्याम् ।

नाभेरधश्चतुरङ्गुले सेवन्या वामपार्श्वे दकोदरे ।

वामपार्श्वे कक्षास्तनयोरन्तरेऽन्तर्विद्रधौ पार्श्वशूले च ।

बाहुशोषावबाहुकयोरप्येके वदन्त्यंसयोरन्तरे ।

त्रिकसन्धिमध्यगतां तृतीयके ।

अधःस्कन्धसन्धिगतामन्यतरपार्श्वसंस्थितां चतुर्थके ।

हनुसन्धिमध्यगतामपस्मारे ।

शङ्खकेशान्तसन्धिगतामुरोऽपाङ्गललाटेषु चोन्मादे ।

जिह्वारोगेष्वधोजिह्वायां दन्तव्याधिषु च ।

तालुनि तालव्येषु ।

कर्णयोरुपरि समन्तात् कर्णशूले तद्रोगेषु च ।

गन्धाग्रहणे नासारोगेषु च नासाग्रे ।

तिमिराक्षिपाकप्रभृतिष्वामयेषूपनासिके लालाट्यामपाङ्ग्यां चैता एव शिरोरोगाधिमन्थप्रभृतिषु रोगेष्विति ॥

रोगोना विशेषो उपरथी, वींधवा योग्य शिराओना प्रदेशोनो विशेष.

२१ पाददाह, पादहर्ष, अवबाहुक, चिप्प, विसर्प, वातरक्त, वातकंटक, विचर्चिका अने पाददारी इत्यादि पगना रोगो थएला होय तो क्षिप्र नामना मर्मथी बे आंगळ उपर शिरा वींधवी.

श्लीपद नामना रोगमां शिराने वींधवी होय तो श्लीपदनी चिकित्साना प्रकरणमां जे प्रकार केहेवामां आवशे ते प्रकारथी वींधवी. (चिकित्सितस्थानना १९ ना अध्यायना १६–१७–१८ विषयो जुवो.)

क्रोष्टुकशिर, खंज तथा पंगु नामना वात रोगोमां शिराने वींधवी होय तो गुल्फ नामना मर्मथी उपर चार आंगळ पींडीनी अंदर शिरा वींधवी.

अपची नामना रोगमां शिराने वींधवी होय तो इंद्रबस्ति नामना मर्मथी बे आंगळ नीचे वींधवी. (आ रोगमां शिरा वींधवी होय तो ते रोग उत्पन्न थाय के तुरतज वींधवी. जाम्या पछी करवानी चिकित्सा तो चिकित्सितस्थानना १८ मा अध्यायना ८ मा विषयमां केहेवामां आवशे.)

गृध्रसी नामना रोगमां शिराने वींधवी होय तो जानु नामना मर्मना संधिथी चार आंगळ उपर अथवा नीचे वींधवी.

गलगंड नामना रोगमां शिराने वींधवी होय तो साथळना मूळमां रहेली शिराने वींधवी.

रोगविशेषोमां हाथनी शिराओने वींधवी होय तो पण पगनी शिराओने जे प्रमाणे पगना जे जे प्रदेशोमां वींधवानुं कह्युं ते प्रमाणेज हाथनी शिराओने हाथना ते ते प्रदेशोमां वींधवानुं समजी लेवुं.

पण तेमां एटलो विशेष जाणवानो छे के ‘जो प्लीहोदर थयो होय तो डाबा बाहुनी कोणीना संधिना समीपमां अथवा ते बाहुनी कनिष्ठिका अने अनामिका एओना मध्यमां शिराने वींधवी अने यकृदाल्युदर के कफोदर थएल होय तो जमणा बाहुनी कोणीना संधिना समीपमां के ते बाहुनी कनिष्ठिका अने अनामिका एओना मध्यमां शिराने वींधवी. खांसी के श्वास कफथी थएल होय अथवा कफथी आवृत थ-

एला वायुथी थएल होय तो पण जमणा जानुना मध्यमां रहेली शिरानेज वींधवी.

जेम गृध्रसी नामना रोगमां जानु नामना मर्मना संधिथी चार आंगळ उपर अथवा नीचे शिराने वींधवी तेम विश्वाची नामना रोगमां कोणीना संधिथी चार आंगळ उपर अथवा नीचे शिराने वींधवी.

जो अनुबंधरूप थएला रुधिरथी आवृत थएला वायुने लीधे शूळवाळी प्रवाहिका थएल होय तो कमरथी आसपास बे आंगळ छेटा प्रदेशमां रहेली शिराने वींधवी.

परिकर्तिका, उपदंश, शूकदोष के वीर्यनो बीगाड ए रोगो थएल होय तो उपस्थना मध्यमां रहेली शिराने वींधवी.

मूत्रवृद्धि नामनो रोग थयो होय तो वृषणोना पडखामां रहेली शिराने वींधवी.

दकोदर नामनो रोग थयो होय तो नाभिथी नीचे सीवणीनी लींटीथी डाबा पडखामां चार आंगळ छेटा प्रदेशमां रहेली शिराने वींधवी.

जो अंतर्विद्रधि के पार्श्वशूल थएल होय तो डाबा पडखामां काखना तथा स्तनना मध्यमां रहेली शिराने वींधवी. (जो जमणा पडखामां अंतर्विद्रधि के पार्श्वशूळ थएल होय तो जमणा पडखामां काखना तथा स्तनना मध्यमां रहेली शिराने वींधवी.)

केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'रुधिरथी आवृत थएला वायुथी थएलो बाहुशोष के अवबाहुक ए रोगोमां पण खभाना मध्यमां रहेली शिराने वींधवी.'

तृतीयज्वर एटले एकांतरो ताव आवतो होय तो बे खभाओना मध्यमां जे त्रिक एटले त्रण अस्थिओनो संयोग छे तेना संधिना समीपमां रहेली शिराने वींधवी.

चतुर्थक एटले तरीयो ताव आवतो होय तो डाबी के जमणी बाजूमां कांधना संधिथी नीचे रहेली शिराने वींधवी.

अपस्मार (वाईनुं दरद) थएल होय तो हडपचीनी पासेना संधिना मध्यमां रहेली शिराने वींधवी. (अथवा भ्रकुटीओना मध्यमां रहेली शिराने वींधवी.)

उन्माद नामनो रोग थयो होय तो शंख नामनां मर्म अने माथाना केशोनो पर्यंत भाग एओना संधिना समीपमां रहेली शिराओने वींधवी अने छाती, नेत्रना अंत भाग अने ललाट एओमां रहेली शिराओने पण वींधवी.

कंटक वगेरे जीभना रोगो अथवा कृमिदंतक वगेरे दांतोना रोगो थया होय तो जीभना नीचेना भागमां रहेली शिराने वींधवी.

ताळवाना रोगोमां ताळवामां रहेली शिराने वींधवी.

रुधिरथी आवृत थएला वायुए उत्पन्न करेला कर्णशूलमां अने बीजा पण कानना रोगोमां कानोनी उपरना आसपासना भागोमां शिराने वींधवी.

गंधनुं ग्रहण करी शकातुं न होय अथवा बीजा पण नाकना रोगो थया होय तो नाकना अग्रमां रहेली शिराने वींधवी.

तिमिर के अक्षिपाक वगेरे रोगो थएल होय तो नासिकाना समीपमां रहेली, ललाटमां रहेली के भमरनी पूंछडीना अंतनी पासे रहेली शिराने वींधवी. शिरोरोग, अधिमंथ तथा अरूंपिका वगेरे रोगोमां पण ए शिराओनेज वींधवी.

(उपर कहेला सघळा रोगोमां एटलो सामान्य नियम स्मरणमां राखवो के जो एओमांनो कोई रोग रुधिरना संबंधथी थएल होय तोज तेमां शिराने वींधवी पण रुधिरना संबंध वगर केवळ अन्य दोषोथी उत्पन्न थएल होय तो वींधवी नहीं.)

२२ अत ऊर्ध्वं दुष्टव्यधनमनुव्याख्यास्यामः। तत्र दुर्विद्धाअतिविद्धा कुञ्चिता पिच्चिता कुट्टिता अप्रस्रुता अत्युदीर्णा अन्ताभिहता परिशुष्का

कूणिता वेपिता अनुत्थितविद्धा शस्त्रहता तिर्यग्विद्धा अपविद्धा अविद्धा विद्रुता धेनुका पुनःपुनर्विद्धा मांसशिरास्नाय्वस्थिसन्धिमर्मसु चेति विंशतिर्दुष्टव्यधाः ॥

जेओनुं वींधावुं खराब छे एवी शिराओना भेदो.

२२ हवे खराब रीते वींधाएली शिराओना भेदो कहीए छीए. दुर्विद्धा, अतिविद्धा, कुंचिता, पिच्चिता, कुट्टिता, अप्रस्रुता, अत्युदीर्णा, अंताभिहता, परिशुष्का, कूणिता, वेपिता, अनुत्थितविद्धा, शस्त्रहता, तिर्यग्विद्धा, अपविद्धा, अविद्धा, विद्रुता, धेनुका, पुनःपुनर्विद्धा अने मर्मविद्धा ए वीश प्रकारमांथी कोई पण प्रकारने प्राप्त थएली शिरा दुष्टव्यधा एटले जेनुं वींधावुं खराब छे एवी केहेवाय छे.

२३ तत्र या सूक्ष्मशस्त्रविद्धा न व्यक्तमसृक् स्रवति रुजाशोफवती च सा दुर्विद्धा ।

प्रमाणातिरिक्तविद्धायामन्तःप्रविशति शोणितं शोणितातिप्रवृत्तिर्वा सातिविद्धा ।

कुञ्चितायामप्येवम् ।

कुण्ठशस्त्रप्रमथिता पृथुलीभावमापन्ना पिच्चिता ।

अनासादिता बहुशः शस्त्राभिहता कुट्टिता।

शीतभयमूर्छाभिरप्रवृत्तशोणिता अप्रस्रुता ।

तीक्ष्णमहामुखशस्त्रविद्धा अत्युदीर्णा ।

पुनःपुनरन्तयोः शस्त्राभिहता अन्ताभिहता।

क्षीणशोणितस्यानिलपूर्णा परिशुष्का ।

चतुर्भागावसादिता किंचित्प्रवृत्तशोणिता कूणिता ।

दुःस्थानबन्धनाद्वेपमानायाः शोणितसंमोहो भवति सा वेपिता ।

अनुत्थितविद्धायामप्येवम् ।

छिन्नाऽतिप्रवृत्तशोणिता क्रियासङ्गकरी शस्त्रहता ।

तिर्यक्प्रणिहितशस्त्रा किंचिच्छेषा तिर्यग्विद्धा ।

बहुशः क्षता हीनशस्त्रप्रणिधानेनापविद्धा ।

अल्परक्तस्राविण्यविद्धा ।

अनवस्थितविद्धा विद्रुता ।

प्रदेशस्य बहुशोऽवघट्टनादारोहव्यधा मुहुर्मुहुःशोणितस्रावा धेनुका ।

सूक्ष्मशस्त्रव्यधनाद्बहुशो विच्छिन्ना पुनःपुनर्विद्धा ।

मांसस्नाय्वस्थिशिरासन्धिमर्मसु विद्धा या रुजां शोफं वैकल्यं मरणं वापादयति ॥

शिराओना दुर्विद्धा वगेरे वीश भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

२३ जे शिरा सूक्ष्म शस्त्रथी वींधावाने लीधे लोहीनो स्पष्ट नहीं पण गुप्त स्राव करती होय अने पीडावाळी तथा सोजावाळी थई होय ते **दुर्विद्धा** केहेवाय छे.

जे शिरा प्रमाणथी वधारे वींधातां लोही शरीरनी अंदर पेसे अथवा अत्यंत स्रववा लागे ते शिरा **अतिविद्धा** केहेवाय छे.

जे शिरा वींधावाथी वांकी थई जतां लोही शरीरनी अंदर पेसे अथवा अत्यंत स्रववा लागे ते शिरा **कुंचिता** केहेवाय छे.

जे शिरा कुंठित (बूंठी) धारवाळा शस्त्रथी मथित थवाने लीधे पोहोळी थई गई होय (पीचाई गई होय) ते शिरा **पिच्चिता** केहेवाय छे.

जे शिरा बराबर हाथ नहीं आववाने लीधे वारंवार शस्त्रथी अभिहत थई होय ते शिरा **कुट्टिता** केहेवाय छे.

जे शिरामांथी शीतने लीधे, भयने लीधे अथवा मूर्छाने लीधे लोहीनो स्राव न थयो होय ते शिरा **अप्रस्रुता** केहेवाय छे.

जे शिरा तीक्ष्ण तथा मोटा मोहोडावाळा शस्त्रथी वींधाएली होय ते **अत्युदीर्णा** केहेवाय छे.

जे शिरा छेडाओमां वारंवार शस्त्रथी अभिघात पामेली होय ते शिरा **अंताभिहता** केहेवाय छे.

जे शिरा रोगीनुं रुधिर क्षीण होवाने लीधे वायुथी पूराई गई होय ते शिरा **परिशुष्का** केहेवाय छे.

जे शिरा फक्त चतुर्थांशमात्र हाथ आववाने लीधे तेटलीज वींधावाथी कांईकज लोहीनो स्राव करती होय ते शिरा **कूणिता** केहेवाय छे.

जे शिरा अयोग्य प्रदेशमां बंधावाने लीधे ध्रूजती होवाथी लोहीनो स्राव न करती होय ते शिरा **वेपिता** केहेवाय छे.

जे शिरा ऊठेली (उपडी आवेली) नहीं छतां वींधावाने लीधे लोहीनो स्राव न करती होय ते शिरा **अनुत्थितविद्धा** केहेवाय छे.

जे शिरा बे फाडोरूप थई जवाने लीधे लोहीनो अत्यंत स्राव करती होय तथा एम थवाने लीधे जेथी जवा आववा वगेरे क्रियानो विनाश थई जाय ते शिरा **शस्त्रहता** केहेवाय छे.

जे शिरा पोतामां आडुं शस्त्र नखावाने लीधे आडी कपातां जराक अवशेष रही होय ते शिरा **तिर्यग्विद्धा** केहेवाय छे.

जे शिरा हीन शस्त्र नखावाथी वारंवार जखमी थएली होय ते शिरा **अपविद्धा** केहेवाय छे.

जे शिरा थोडा लोहीनो स्राव करती होय ते शिरा **अविद्धा** केहेवाय छे.

जे शिरा अनवस्थित रीते (धंगधडा वगर) वींधाएली होय ते शिरा **विद्रुता** केहेवाय छे.

जे शिरा पोताना प्रदेशनुं वारंवार अवघट्टन थवाथी उपर उपरना भागोमां शस्त्रथी टोंचाएली होय अने ते टोंचाओमांथी जेम गाय आंचलोमांथी वारंवार स्राव करे तेम वारंवार स्राव करवा लागी होय ते शिरा **धेनुका** केहेवाय छे.

जे शिरा सूक्ष्म शस्त्रथी वींधावाने लीधे एक स्थानमांज घणीवार भेदाएली होय ते शिरा **पुनःपुनर्विद्धा** केहेवाय छे.

जे शिरा मांसना, स्नायुना, अस्थिना, शिराना के संधिना मर्ममां वींधाएली होय ते शिरा **मर्मविद्धा** केहेवाय छे. आ शिरा वेदनाने, शोषने, खोडखापणने अने मरणने पण करी दे छे.

२४ भवन्ति चात्र ॥
शिरासु शिक्षितो नास्ति चला ह्येताः स्वभावतः।
मत्स्यवत् परिवर्तन्ते तस्माद्यत्नेन ताडयेत् ॥
अजानता गृहीते तु शस्त्रे कायनिपातिते ।
भवन्ति व्यापदश्चैता बहवश्चाप्युपद्रवाः ॥

शिराओने वींधवामां बहुज सावचेती राखवानी जरूर.

२४ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "वैद्यने शिराओना विषयनो प्रत्यक्ष अभ्यास शवनी अचल शिराओमां मळे छे. जीवता माणसनी शिराओ तो स्वभावथीज चंचल होय छे अने माछलांओनी पेठे परिवर्त्तन पाम्या करे छे. माटे वैद्यने शिराओना विषयमां जेवुं जोईए तेवुं निपुणपणुं मळी शकतुं नथी. आम छे एटला माटे वैद्ये शिराओने वींधवामां बहुज सावचेती राखवानी जरूर छे. शिराओना विषयथी नहीं जाणीतो थएलो वैद्य शस्त्र पकडीने रोगीना शरीरमां घोंचे तो तेथी उपर कह्या प्रमाणे बीगाडो थाय छे अने बीजा पण घणा घणा उपद्रवो थाय छे.

२५ स्नेहादिभिः क्रियायोगैर्न तथा लेपनैरपि ।
यान्त्याशु व्याधयः शान्तिं यथा सम्यक्शिराव्यधात् ॥
शिराव्यधश्चिकित्सार्धं शल्यतन्त्रे प्रकीर्तितः ।
यथा प्रणिहितः सम्यग्बस्तिः कायचिकित्सिते॥

स्नेहनादिक क्रियाओ करतां पण शिराओनो वेध वधारे लाभकारी छे.

२५ रोगो शिराओना वेधथी तुरतज जेवी शांतिने प्राप्त थाय छे तेवी शांतिने स्नेहनादिक

क्रियाओना योगोथी तथा लेपनादिकथी पण प्राप्त थता नथी. जेम ज्वरादिक विषयोवाळी काय चिकित्सामां सारी रीते मारवामां आवेली पीचकारी प्रधान चिकित्सारूप छे तेम शल्यतंत्रमां शिराओनो वेध प्रधान चिकित्सारूप छे."

२६ तत्र स्निग्धस्विन्नवान्तविरिक्तास्थापितानुवासितशिराविद्धैः परिहर्तव्यानि क्रोधायासमैथुनदिवास्वप्नवाग्व्यायामयानोत्थानासनचंक्रमणशीतवातातपविरुद्धासात्म्याजीर्णान्याबललाभान्मासमेके मन्यन्ते । एतेषां विस्तरमुपरिष्टाद्वक्ष्यामः ॥

जेओना शरीरमां शिरावेध वगेरे क्रियाओ करवामां आवी होय तेओए पाळवानी परेजी.

२६ स्नेहनक्रिया, स्वेदनक्रिया, वमनक्रिया, विरेचनक्रिया, निरूहबस्तिक्रिया, अनुवासनबस्तिक्रिया के शिरावेधक्रिया जेओनां शरीरोमां करवामां आवी होय तेओए क्रोध करवो नहीं, परिश्रम करवो नहीं, मैथुन करवुं नहीं, दिवसे उंघवुं नहीं, घणुं भाषण करवुं नहीं, घोडा वगेरे वाहनपर बेसवुं नहीं, वारंवार उठवुं नहीं, बेसीज रेहेवुं नहीं, बहु फरवुं नहीं, थंडीनो त्याग करवो, पवननो त्याग करवो, तडकानो त्याग करवो, विरुद्ध भोजननो त्याग करवो, असात्म्य भोजननो त्याग करवो अने अजीर्ण थवा देवुंज नहीं. ज्यांसुधी शरीरमां संपूर्ण बळ आवे त्यांसुधी आ परेजी पाळवी. केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'ए क्रियाओ कर्या पछी एक महिना सुधी ए परेजी पाळवी.' आ क्रोध तथा परिश्रम वगेरेनी बाबतमां जे विस्तार केहेवानो छे ते चिकित्सितस्थानना आतुरोपद्रवचिकित्सित नामना ३९ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे.

२७ भवतश्चात्र ॥
शिराविषाणतुम्बैस्तु जलौकाभिः पदैस्तथा ।
अवगाढं यथापूर्वं निर्हरेद्दुष्टशोणितं ॥
अवगाढे जलौका स्यात् प्रच्छन्नं पिण्डिते हितम् ।
शिराङ्गव्यापके रक्ते शृङ्गालाबू त्वचि स्थिते ॥

बीगडेलुं लोही काहाडवाना शिरावेध वगेरे पांच उपायो अने तेमां उत्तरोत्तरथी पूर्वपूर्वनुं प्रबलपणुं.

२७ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "शिरावेध, शींगडुं, तुंबडी, जळो अने पद (शस्त्रथी टोचा) ए पांच उपायोथी शरीरनी अंदर रहेला दुष्ट रुधिरने काहाडवुं. जो बीगडेलुं रुधिर उचुं होय तो पदोथी काहाडवुं, उंडुं होय तो जळोथी काहाडवुं, वधारे उंडुं होय तो तुंबडीथी काहाडवुं, अत्यंत उंडुं होय तो शींगडांथी काहाडवुं अने अत्यंत उंडुं तथा सघळा अंगमां व्यापक होय तो शिरावेधथी काहाडवुं." केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'बीगडेलुं रुधिर उंडुं होय तो जळो मुकाववी ए हितकारी छे, बीगडेलुं रुधिर पिंडरूपे जमा थयुं होय तो शस्त्रथी टोचा देवराववा ए हितकारी छे, बीगडेलुं रुधिर अंगमां व्याप्त थई गयुं होय तो शिरा वींधाववी ए हितकारी छे अने बीगडेलुं रुधिर चामडीमांज रह्युं होय तो शींगडुं मुकाववुं अथवा तुंबडी मुकाववी ए हितकारी थाय छे.'

अध्याय ९ मो

१ अथातो धमनीव्याकरणं शारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'धमनीव्याकरणशारीर[१]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ चतुर्विंशतिर्धमन्यो नाभिप्रभवा अभिहिताः । तत्र केचिदाहुः शिराधमनीस्रोतसा-

१ धमनीओना तथा तेओनी साथे संबंध धरावनारां अंतर्मुख स्रोतोना व्याख्यान विषेनो.

मविभागः शिराविकारा एव धमन्यः स्रोतांसि चेति । तत्तु न सम्यक् । अन्या एव हि धमन्यः स्रोतांसि च शिराभ्यः कस्माद्व्यञ्जनान्यत्वान्मूलसन्नियमात् कर्मवैशेष्यादागमाच्च । केवलं तु परस्परसन्निकर्षात् सदृशागमकर्मत्वात् सौक्ष्म्याच्च विभक्तकर्मणामप्यविभाग इव कर्मसु भवति ॥

धमनीओनुं शिराओथी तथा स्रोतोथी भिन्नपणुं अने तेनां कारणो.

२ धमनीओ के जेओ नाभिथी प्रकट थएली छे तेओ 'चोवीश छे' एम आ शारीरस्थानना शरीरसंख्याव्याकरण नामना पांचमा अध्यायना ६ विषयमां केहेवामां आव्युं छे. धमनीओना विषयमां केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'शिराओ, धमनीओ अने स्रोतो एओ भिन्न भिन्न नथी पण जे धमनीओ तथा स्रोतो छे तेओ शिराओनाज आकारांतरथी परिणामो छे.' पण ते आचार्योनुं ए केहेवुं यथार्थ नथी. धमनीओ अने स्रोतो शिराओथी जूदांज छे. कारण के 'शिराओ राता, आशमानी, सफेद अने अत्यंत लाल वर्णोवाळी छे अने धमनीओ पोतामां रेहेनारा धातुओना जेवा वर्णोवाळी छे तथा स्रोतो पण पोतामां रेहेनारा धातुओना जेवा वर्णोवाळां छे. तेमज मूळ शिराओ चालीश छे अने धमनीओ चोवीश छे तथा स्रोतो बावीश छे. तेमज शिराओनां कामो, धमनीओनुं काम अने स्रोतोनुं काम पण जूदां जूदांज छे. शरीरनुं उपस्नेहन तथा आकुंचनप्रसारणादिक शिराओनां कामो छे अने शब्दादिकनुं वहन करवुं ए धमनीओनुं काम छे तथा प्राणादिकनुं वहन करवुं ए स्रोतोनुं काम छे. आयुर्वेद पण स्पष्ट रीते शिराओनुं, धमनीओनुं अने स्रोतोनुं परस्परथी भिन्नपणुं जणावे छे.' आ प्रमाणे शिराओ, धमनीओ तथा स्रोतो जो के भिन्न भिन्न कामो करनारां छे तो पण तेओ परस्परना अत्यंत समीपमां रेहेनारां होवाने लीधे जेम परस्परना अतिसमीपमां रहेलां सळगेलां खडोनुं सळगवुं परस्परथी जूदुं जूदुं छतां पण अभिन्न जेवुं जणाय छे तेम ते शिरा वगेरेनुं काम अभिन्न जेवुं जणाय छे. आयुर्वेदमां कह्या प्रमाणे शिराओ, धमनीओ तथा स्रोतो अवकाशयुक्तपणामां तुल्य छे तेथी पण तेओनुं काम भिन्न भिन्न छतां पण अभिन्न जेवुं जणाय छे. जेम साथे मळीने गावा लागेला जूदा जूदा गवैयाओनी गायनक्रियाओ परस्परथी जूदी छतां पण तुल्यपणाने लीधे अभिन्न जेवी जणाय छे तेम शिराओनां, धमनीओनां तथा स्रोतोनां कामो जूदां जूदां छतां पण तुल्यपणाने लीधे अभिन्न जेवां जणाय छे. जेम एक घडामां रहेला माटीना अनेक अवयवो पाणीना जूदा जूदा अवयवोने धरवारूप जूदी जूदी क्रियाओने करतां छतां पण सूक्ष्मपणाने लीधे एकज क्रिया करता होय एम जणाय छे तेम शिराओ, धमनीओ तथा स्रोतो जूदां जूदां कामो करतां छतां पण सूक्ष्मपणाने लीधे जाणे एकज काम करतां होय एम जणाय छे. फकत आ प्रमाणे होवानेलीधेज केटलाएक आचार्योए शिराओने, धमनीओने तथा स्रोतोने भिन्न भिन्न गण्यां न होय एम जणाय छे.

३ तासां तु नाभिप्रभवाणां धमनीनामूर्द्ध्वगा दश दश चाधोगामिन्यश्चतस्रस्तिर्यग्गाः ॥

उंचे गएली, नीचे गएली तथा आडे गएली धमनीओनी जूदी जूदी संख्या.

३ नाभिथी प्रकट थएली ए चोवीश धमनीओमां दश धमनीओ शरीरमां उंचे गएली छे, दश धमनीओ शरीरमां नीचे गएली छे अने चार धमनीओ शरीरमां आडे गएली छे.

४ ऊर्ध्वगाः शब्दरूपरसगन्धप्रश्वासोच्छ्वासजृम्भितक्षुद्धसितकथितरुदितादीन्विशेषानभिवहन्त्यः शरीरं धारयन्ति । तास्तु हृदयमभिप्रपन्नास्त्रिधा जायन्ते तास्त्रिंशत् । तासां तु वातपित्तकफशोणितरसान् द्वे द्वे वहतस्ता दश।

शब्दरूपरसगन्धानष्टाभिर्गृह्णीते । द्वाभ्यां भाषते द्वाभ्यां घोषं करोति द्वाभ्यां स्वपिति द्वाभ्यां प्रतिबुध्यते च । द्वे चाश्रुवाहिन्यौ । द्वे स्तन्यं स्त्रिया वहतः स्तनसंश्रिते । ते एव शुक्रं नरस्य स्तनाभ्यामभिवहतः ।

तास्त्वेतास्त्रिंशत्सविभागा व्याख्याता एताभिरूर्ध्वं नाभेरुदरपार्श्वपृष्ठोरःस्कन्धग्रीवाबाहवो धार्यन्ते याप्यन्ते च ॥

भवति चात्र ॥

ऊर्ध्वं गतास्तु कुर्वन्ति कर्माण्येतानि सर्वशः ।
अधोगमास्तु वक्ष्यामि कर्म तासां यथायथम् ॥

उंचे गएली धमनीओनां सामान्य कामो, हृदयमां गया पछी संख्यानो वधारो अने वधीने त्रीश थएली ए धमनीओनां जूदां जूदां कामो.

४ उंचे गएली दश धमनीओ शब्द, रूप, रस, गंध, अंदर जतो श्वास, बाहार नीकळतो श्वास, बगासां, छींक, हसवुं, बोलवुं तथा रोवुं इत्यादि विशेषोनुं अभिवहन करे छे अने ते अभिवहन करती करती शरीरनुं धारण करे छे. ए उंचे गएली दश धमनीओ हृदयमां गया पछी त्रण त्रण थाय छे एटले त्रीश बनी जाय छे. ए त्रीश धमनीओमां बे धमनीओ वायुनुं, बे धमनीओ पित्तनुं, बे धमनीओ कफनुं, बे धमनीओ रुधिरनुं अने बे धमनीओ रसनुं वहन करे छे. जीवात्मा मनथी संयोग पामीने एकी वखते नहीं पण अनुक्रमे बे धमनीओथी शब्दनुं ग्रहण करे छे, बे धमनीओथी रूपनुं ग्रहण करे छे, बे धमनीओथी रसनुं ग्रहण करे छे अने बे धमनीओथी गंधनुं ग्रहण करे छे. ए जीवात्मा बे धमनीओथी भाषण करे छे, बे धमनीओथी अक्षरो वगरनो अवाज करे छे, बे धमनीओथी निद्रा करे छे अने बे धमनीओथी जागे छे. बे धमनीओ आंसुओनुं वहन करे छे, बे धमनीओ स्त्रीओनां स्तनोमां रहीने दूधनुं वहन करे छे अने एनी ए बे धमनीओ पुरुषोनां स्तनोमां रहीने ते द्वारा वीर्यनुं वहन करेछे.

आ त्रीश धमनीओनुं तेओना विभागो सहित व्याख्यान आप्युं. आ धमनीओ नाभिथी उपरनां पेट, पडखां, पीठ, छाती, कांध, डोक तथा बाहु एओने अन्यविभागोनी साथे बांधी दृढ करीने धरी राखे छे अने वायु वगेरेनुं वहन करीने ए भागोने नभाव्या करे छे.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'नाभिथी उंचे गएली धमनीओ आ सघळां कामो करे छे. हवे नाभिथी नीचे गएली धमनीओनुं तथा तेओनां जूदां जूदां कामोनुं व्याख्यान आपुं छुं.'

५ अधोगमास्तु वातमूत्रपुरीषशुक्रार्त्तवादीन्यधो वहन्ति । तास्तु पित्ताशयमभिप्रतिपन्नास्तत्रस्थमेवान्नपानरसं विपक्वमौष्ण्याद्विवेचयन्त्योऽभिवहन्त्यः शरीरं तर्पयन्त्यर्पयन्ति चोर्ध्वगतानां तिर्यग्गतानां रसस्थानं चाभिपूरयन्ति मूत्रपुरीषस्वेदांश्च विवेचयन्त्यामपक्वाशयान्तरे च त्रिधा जायन्ते तास्त्रिंशत् । तासांतु वातपित्तकफशोणितरसान् द्वे द्वे वहतस्ता दश । द्वे अन्नवाहिन्यावन्त्राश्रिते । तोयवहे द्वे मूत्रवस्तिमभिप्रपन्ने । मूत्रवहे द्वे । शुक्रवहे द्वे शुक्रप्रादुर्भावाय । द्वे विसर्गाय ते एव रक्तमभिवहतो नारीणामार्त्तवसंज्ञम् । द्वे वर्चोनिरसन्यौ स्थूलान्त्रप्रतिबद्धे । अष्टावन्यास्तिर्यग्गानां धमनीनां स्वेदमर्पयन्ति ।

तास्त्वेतास्त्रिंशत् सविभागा व्याख्याता एताभिरधो नाभेः पक्वाशयकटीमूत्रपुरीषगुदबस्तिमेढ्रसक्थीनि धार्यन्ते याप्यन्ते च ॥

भवति चात्र ॥

अधोगमास्तु कुर्वन्ति कर्माण्येतानि सर्वशः ।
तिर्यग्गाः संप्रवक्ष्यामि कर्म तासां यथायथम् ॥

नीचे गएली धमनीओनां सामान्य कामो, आमना पाकवाना आशयना अंतरमां गया पछी संख्यानो वधारो अने वधीने त्रीश थएली ए धमनीओनां जूदां जूदां कामो.

९ नीचे गएली दश धमनीओ अधोवायु, मूत्र, विष्ठा, वीर्य तथा रज इत्यादिक विशेषोनुं नीचेना प्रदेशोमां वहन करे छे. ए धमनीओ पित्ताशयने प्राप्त थई त्यांज रहेला अने अग्निनी उष्णताथी पाकेला अन्नपानना रसनुं पृथक्करण करे छे, अभिवहन करे छे, शरीरने तृप्त करे छे, रसना स्थानने परंपरासंबंधे रसथी भरपूर राख्या करे छे, उंचे गएली तथा आडे गएली शिराओने रस आप्या करे छे, मूत्र, विष्ठा तथा पसीनो एओनुं पृथक्करण करे छे अने काचा आहारना पाकवाना आशयना अंतरमां जई त्रण त्रण थाय छे एटले त्रीश बनी जाय छे. ए त्रीश धमनीओमां बे धमनीओ वायुनुं वहन करे छे, बे धमनीओ पित्तनुं वहन करे छे, बे धमनीओ कफनुं वहन करे छे, बे धमनीओ रुधिरनुं वहन करे छे, बे धमनीओ रसनुं वहन करे छे, बे धमनीओ आंतरडांमां रहीने पाका आहारमांथी जूदा पडेला तथा भविष्य विष्ठाना कारणरूप अन्ननुं वहन करेछे, बे धमनीओ पाका आहारमांथी जूदा पडेला तथा मूत्रना कारणरूप द्रवनुं वहन करती करती मूत्राशयने प्राप्त थएली छे, बे धमनीओ मूत्रनुं वहन करे छे, बे धमनीओ वीर्यनुं वहन करे छे के जेओ वीर्यना प्रादुर्भावमां उपयोगी थाय छे, बे धमनीओ वीर्यने बाहार काहाडे छे तथा एज बे धमनीओ स्त्रीओना शरीरमां रज नामना रुधिरनुं वहन करे छे, बे धमनीओ स्थूल आंतरडामां बंधाई रहीने विष्ठाने बाहार काहाडे छे अने बीजी आठ धमनीओ आडे रहेली धमनीओने स्वेद आप्या करे छे.

आ त्रीश धमनीओनुं तेओना विभागो सहित व्याख्यान आप्युं. आ धमनीओ नाभिथी नीचेना पक्वाशय, कमर, मूत्र, विष्ठा, गुद, मूत्राशय, उपस्थ तथा पग एओने अन्य विभागोनी साथे बांधी दृढ करीने धरी राखे छे अने वायु वगेरेनुं वहन करीने तेओने नभाव्या करे छे.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'नाभिथी नीचे गएली धमनीओ आ सघळां कामो करे छे. हवे नाभिथी आडे गएली धमनीओनुं तथा तेओनां जूदां जूदां कामोनुं व्याख्यान आपुं छुं.'

६ तिर्यग्गानां तु चतसृणां धमनीनामेकैका शतधा सहस्रधा चोत्तरोत्तरं विभज्यते तास्त्वसङ्ख्येयास्ताभिरिदं शरीरं गवाक्षितं विबद्धमाततं च । तासां मुखानि रोमकूपप्रतिबद्धानि यैः स्वेदमभिवहन्ति रसं चापि सन्तर्पयन्त्यन्तर्बहिश्च । तैरेव चाभ्यङ्गपरिषेकावगाहालेपनवीर्याण्यन्तःशरीरमभिप्रतिपद्यन्ते त्वचि विपक्वानि तैरेव स्पर्शसुखमसुखं वा गृह्णाति ।

तास्त्वेताश्चतस्रो धमन्यः सर्वाङ्गगताः सविभागा व्याख्याताः ॥

भवतश्चात्र ॥

यथा स्वभावतः खानि मृणालेषु बिसेषु च ।
धमनीनां तथा खानि रसो यैरुपचीयते ॥

आडे गएली धमनीओनुं उत्तरोत्तर असंख्यात थवुं अने ते धमनीओनां कामो.

६ जे चार धमनीओ आडे गएली छे तेओमांनी प्रत्येक धमनी उत्तरोत्तर जतां सेंकडो अने हजारो धमनीओरूपे वेहेंचाई जाय छे के जेओनी संख्याज करी शकाती नथी. ए असंख्यात धमनीओए आ शरीरने अनेक जाळीआंओवाळा जेवुं करेलुं छे, सारी रीते बांधेलुं छे अने विस्तीर्ण करेलुं छे. ए धमनीओनां मुखो रूवाडांओनां छिद्रोमां लागी रह्यां छे के जेओथी

ते धमनीओ स्वेदनुं अभिवहन करे छे अने सारी रीते परिणाम पामेला आहारना द्रवनुं वहन करीने अंदर रस धातुने तथा बाहार त्वचाने तृप्त राख्या करे छे. अभ्यंग, परिषेक, अवगाह अने आलेपन एओनां वीर्यो त्वचामां भ्राजक नामना पित्तथी पाकीने ए धमनीओनां मुखोथीज शरीरनी अंदर प्रवेश करे छे. जीवात्मा सर्व अंगोमां व्यापी रहेली ए धमनीओनां मुखोथीज सुखदायी के असुखदायी स्पर्शनुं ग्रहण करे छे.

आ उत्तरोत्तर जतां असंख्यात बनी जईने सर्व शरीरमां व्यापी रहेली चार धमनीओनुं तेओना विभागो सहित व्याख्यान आप्युं.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेम कमळनां नाळोमां अने तंतुओमां स्वाभाविक रीतेज छिद्रो होय छे तेम आ असंख्यात धमनीओमां स्वाभाविक रीते छिद्रो छे के जे छिद्रोथी रस धातु वध्या करे छे अने अभ्यंग, परिषेक, अवगाह तथा आलेपन एओनी शक्तिओ पण चोमेर फेलाय छे.

७ पञ्चाभिभूतास्त्वथ पञ्चकृत्वः पञ्चेन्द्रियं पञ्चसु भावयन्ति । पञ्चेन्द्रियं पञ्चसु भावयित्वा पञ्चत्वमायान्ति विनाशकाले ॥

जीवात्माने शब्दादिक विषयोनुं ग्रहण करावनारी धमनीओनी प्राकृत तथा वैकृत क्रिया.

७ पांच महाभूतोथी चोतरफ उत्पन्न थएली अथवा पांच महाभूतोथी व्याप्त थएली अथवा शब्दस्पर्शादिक पांच विषयोथी व्याप्त थएली धमनीओ प्राकृत स्थितिमां होय छे त्यारे पांच इंद्रियोवाळा जीवात्माने पांचवार एटले एकी वखते नहीं पण मनोवृत्तिना क्रम प्रमाणे शब्दस्पर्शादिक विषयोमां जोडे छे अने शरीरना विनाशनो समय आवे त्यारे वैकृत स्थितिवाळी बनी श्रोत्र आदि पांचे इंद्रियोने गोलकोमांथी ते ते इंद्रियोनां कारणभूत पंचमहाभूतोमां मेळवी दईने थोडा काळ पछी नष्ट थई जाय छे."

८ अत ऊर्ध्वं स्रोतसां मूलविद्धलक्षणमुपदेक्ष्यामः ॥

तानि तु प्राणान्नोदकरसरक्तमांसमेदोमूत्रपुरीषशुक्रार्तववहानि येष्वधिकार एकेषां बहूनि । एतेषां विशेषा बहवः ।

तत्र प्राणवहे द्वे तयोर्मूलं हृदयं रसवाहिन्यश्च धमन्यः । तत्र विद्धस्य क्रोशनविनमनमोहनभ्रमणवेपनानि मरणं वा भवति ।

अन्नवहे द्वे तयोर्मूलमामाशयोऽन्नवाहिन्यश्च धमन्यस्तत्र विद्धस्याध्मानं शूलान्नद्वेषौ छर्दिः पिपासाऽऽन्ध्यं मरणं वा ।

उदकवहे द्वे तयोर्मूलं तालु क्लोम च । तत्र विद्धस्य पिपासा सद्यो मरणं च ।

रसवहे द्वे तयोर्मूलं हृदयं रसवाहिन्यश्च धमन्यस्तत्र विद्धस्य शोषः प्राणवहविद्धवच्च मरणं तल्लिङ्गानि च ।

रक्तवहे द्वे तयोर्मूलं यकृत्प्लीहानौ रक्तवाहिन्यश्च धमन्यस्तत्र विद्धस्य श्यावाङ्गता ज्वरो दाहः पाण्डुता शोणितातिगमनं रक्तनेत्रता चेति ।

मांसवहे द्वे तयोर्मूलं स्नायुत्वचं रक्तवहाश्च धमन्यस्तत्र विद्धस्य श्वयथुर्मांसशोषः शिराग्रन्थयो मरणं च ।

मेदोवहे द्वे तयोर्मूलं कटी वृक्कौ च तत्र विद्धस्य स्वेदागमनं स्निग्धाङ्गता तालुशोषः स्थूलशोफता पिपासा च ।

मूत्रवहे द्वे तयोर्मूलं बस्तिर्मेढ्रं च तत्र विद्धस्यानद्धबस्तिता मूत्रनिरोधः स्तब्धमेढ्रता च ।

पुरीषवहे द्वे तयोर्मूलं पक्वाशयो गुदं च तत्र विद्धस्यानाहो दुर्गन्धता ग्रथितान्त्रता च ।

शुक्रवहे द्वे तयोर्मूलं स्तनौ वृषणौ च तत्र विद्धस्य क्लीबता चिरात् प्रसेको रक्तशुक्रता च।

आर्त्तववहे द्वे तयोर्मूलं गर्भाशय आर्त्तववा-

हिन्यश्च धमन्यस्तत्र विद्धायां वन्ध्यात्वं मैथुनासहिष्णुत्वमार्त्तवनाशश्च ।

धमनीओमां रेहेनारां अंतर्मुख स्रोतो, ते स्रोतोनां मूळो अने स्रोतो पोतपोताना मूळमां वींधाय त्यारे शाशां लक्षणो थाय छे ते.

८ शल्यतंत्रमां जेटलां अंतर्मुख स्रोतोनुं निरूपण करवानी जरूर छे तेटलां स्रोतोनुं तथा ते स्रोतो पोतपोतानां मूळोमां शल्यथी वींधाय त्यारे जे जे लक्षणो थाय छे ते लक्षणोनुं हवे निरूपण करीएछीए. (मूळो स्थूल होवाने लीधे तेओमां वींधाएलां स्रोतोनां लक्षणोज साध्यासाध्यपणानो माप करावनारां बने छे माटे ते लक्षणोना निरूपणनी अहीं प्रतिज्ञा करी छे. डह्लन.)

बे स्रोतो प्राणनुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो अन्ननुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो जळनुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो रसनुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो रुधिरनुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो मांसनुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो मेदनुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो मूत्रनुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो विष्ठानुं वहन करनारां छे, बे स्रोतो पुरुषना शरीरमां वीर्यनुं वहन करनारां छे अने बे स्रोतो स्त्रीना शरीरमां रजनुं वहन करनारां छे. जो के शरीरमां मन, दोषो, धातुओ, उपधातुओ तथा मळो वगेरे पदार्थोने फरवाना मार्गोरूप स्रोतो असंख्यात छे तो पण शल्यतंत्रमां उपर कहेलां बावीश स्रोतोना व्याख्याननीज जरूर छे. केटलाएक आचार्यो माने छे के 'शल्यतंत्रमां पण बावीशथी वधारे स्रोतोनुं व्याख्यान आपवानी जरूर छे.' उपर कहेलां बावीश स्रोतोना पण घणा घणा भेदो छे.

जे बे स्रोतो प्राणनुं वहन करनारां छे तेओनुं हृदय अने रसनुं वहन करनारी धमनीओ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो माणस आर्त्तस्वरथी रोवा लागे छे, अत्यंत नमी जाय छे, मूर्छित थई जाय छे, भ्रमण पामे छे, ध्रुजवा लागे छे अने वखतपर मरी पण जाय छे.

जे बे स्रोतो अन्ननुं वहन करनारां छे तेओनुं आमाशय तथा अन्ननुं वहन करनारी धमनीओ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो पेटमां आफरो थाय छे, शूळ नीकळे छे, अन्न उपर द्वेष थाय छे, उलटी थाय छे, तरश लाग्या करे छे, अंधपणुं थाय छे अने वखतपर मरण पण थई जाय छे.

जे बे स्रोतो जळनुं वहन करनारां छे तेओनुं ताळवुं अने क्लोम (तरशनुं स्थान) एओ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो तरश लाग्या करे छे अने तुरतज मरण थई जाय छे.

जे बे स्रोतो रसनुं वहन करनारां छे तेओनुं हृदय अने रसनुं वहन करनारी धमनीओ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो शोष थाय छे, आर्त्तस्वरथी रुदन थाय छे, शरीर नमी जाय छे, मूर्छा थाय छे, भ्रमण थाय छे, कंप थाय छे अने वखतपर मरण पण थई जाय छे.

जे बे स्रोतो रुधिरनुं वहन करनारां छे तेओनुं यकृत्, प्लीहा अने रुधिरनुं वहन करनारी धमनीओ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो अंग श्याम थई जाय छे, ज्वर चडी आवे छे, दाह थाय छे, पांडुपणुं थाय छे, लोहीनी अत्यंत प्रवृत्ति थाय छे अने नेत्रो रातां थई जाय छे.

जे बे स्रोतो मांसनुं वहन करनारां छे तेओनुं स्नायु, त्वचा अने रुधिरनुं वहन करनारी धमनीओ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो सोजो थाय छे, मांस सूकाई जाय छे, शिराओनी ग्रंथिओ थई जाय छे अने मरण थायछे.

जे बे स्रोतो मेदनुं वहन करनारां छे तेओनुं कमर अने बे वृक्क (बुक्का) मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो पसीनो वळी जाय छे, अंगो स्निग्ध थई जाय छे, ताळवामां शोष पडे छे, जाडो सोजो थाय छे अने तरश लाग्या करे छे.

जे बे स्रोतो मूत्रनुं वहन करनारां छे तेओनुं

मूत्राशय अने उपस्थ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो मूत्राशयमां आनाह थाय छे, मूत्रनो निरोध थाय छे अने उपस्थ स्तब्ध थई जाय छे.

जे बे स्रोतो विष्ठानुं वहन करनारां छे तेओनुं, पक्काशय अने गुदा मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो आनाह थाय छे, दुर्गंधपणुं थाय छे अने आंतरडामां ग्रंथि थई जाय छे.

जे बे स्रोतो वीर्यनुं वहन करनारां छे तेओनुं मूळ स्तनो अने वृषणो छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो नपुंसकपणुं थाय छे, घणा विलंबथी वीर्यनो स्राव थाय छे अने वीर्य रातुं थई जाय छे.

जे बे स्रोतो रजनुं वहन करनारां छे तेओनुं गर्भाशय अने रजनुं वहन करनारी धमनीओ मूळ छे. ए मूळमां कांई वेध थाय तो वांझणीपणुं थाय छे, मैथुननुं सहन थई शकतुं नथी अने रजनो नाश थाय छे.

९ सेवनीच्छेदाद्रुजाप्रादुर्भावो बस्तिगुदविद्धलक्षणं च प्रागुक्तमिति ॥

सीवणीमां छेदनभेदनादिक थाय तो जे जे लक्षणो थाय छे तेओनुं प्रासंगिक निरूपण.

९ जे सीवणी छे तेमां कांई छेदन भेदनादिक थाय तो पीडा उत्पन्न थाय छे, आनाह थाय छे, मूत्रनो निरोध थाय छे, उपस्थनुं स्तब्धपणुं थाय छे, दुर्गंधपणुं थाय छे अने आंतरडामां ग्रंथि थाय छे.

१० स्रोतोविद्धं तु प्रत्याख्यायोपचरेदुद्धृतशल्यं तु क्षतविधानेनोपचरेत् ॥

जे माणसने स्रोतमां वेध थएल होय तेनी चिकित्सानुं सामान्य सूत्र.

१० जे माणस स्रोतमां वींधाएल होय तेनी चिकित्सा करवानी ना पाडीने अर्थात् असाध्य जणावीने पछी शल्य काहाडवाना प्रकारथी चिकित्सा करवी अने शब्द नीकळया पछी पण प्रथम असाध्य जणावी ना पाडीनेज पछी क्षतनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी.

११ मूलात् खादन्तरं देहे प्रसृतं त्वभिवाहि यत्। स्रोतस्तदिति विज्ञेयं शिराधमनिवर्जितं ॥

स्रोतनुं लक्षण.

११ हृदयना छिद्रमांथी देहनी अंदर पसरेलो अने शिराओ तथा धमनीओ वगरनो जे अभिवहन करनारो अवकाशात्मक भाग होय छे तेने स्रोत जाणवो. शिराओने तथा धमनीओने स्रोतोमां गणवी नहीं. (स्रोतो पोताना धातुओना जेवा वर्णोवाळां, लांबी आकृतिवाळां, गोळ अने लताओना तंतुओ जेवां होय छे. केटलांएक जाडां होय छे अने केटलांएक झीणां पण होय छे.)

अध्याय १० मो.

१ अथातो गर्भिणीव्याकरणं शारीरं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी ' गर्भिणी व्याकरणशारीर[1] ' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ गर्भिणी प्रथमदिवसात् प्रभृति नित्यं प्रहृष्टा शुचिरलङ्कृता शुक्लवसना शान्तिमङ्गलदेवताब्राह्मणगुरुपरा च भवेन्मलिनविकृतहीनगात्राणि न स्पृशेद्दुर्गन्धदुर्दर्शनानि परिहरेदुद्वेजनीयाश्च कथाः शुष्कं पर्युषितं क्वथितं क्लिन्नं चान्नं नोपभुञ्जीत बहिर्निष्क्रमणं शून्यागारचैत्यश्मशानवृक्षाश्रयान् क्रोधभयसङ्करान् भारानुच्चैर्भाष्यादिकं च परिहरेद्यानि च गर्भं व्यापादयन्ति न चाभीक्ष्णं तैलाभ्यङ्गोत्सादनादीनि निषेवेत न चायासयेच्छरीरं पूर्वोक्तानि च प-

१ गर्भिणीने, प्रसूताने तथा बालकने करवाना उपचारोना व्याख्यान विषेनो.

रिहरेच्छयनासनं मृद्वास्तरणं नात्युच्चमपाश्रयोपेतमसम्बाधं विदध्याद्धृद्यं द्रवं मधुरप्रायं स्निग्धं दीपनीयसंस्कृतं च भोजनं भोजयेत् सामान्यमेतदाप्रसवात् ॥

गर्भिणीए पेहेला दिवसथी मांडीने प्रसव थतां सुधी पाळवाना नियमो.

२ गर्भिणीए गर्भ रेहेवाना दिवसथी मांडीने नित्य आनंदयुक्त रेहेवुं, पवित्र रेहेवुं, शणगारेल रेहेवुं, सफेद वस्त्रोनुं धारण करवुं, शांतिकर्मोमां तत्पर रेहेवुं, मंगलकृत्योमां तत्पर रेहेवुं, देवताओना आराधनमां तत्पर रेहेवुं, ब्राह्मणोना आराधनमां तत्पर रेहेवुं, गुरुओना आराधनमां तत्पर रेहेवुं, मलिन अंगोवाळां माणसोनो स्पर्श करवो नहीं, जेओनां अंगो विकारवाळां होय तेओनो स्पर्श करवो नहीं, जेओनां अंगो न्यून होय तेओनो स्पर्श करवो नहीं, दुर्गंध लेवो नहीं, खराब वस्तुओ जोवी नहीं, जेओथी उद्वेग थाय एवी वातो करवी के सांभळवी नहीं, शुष्क अन्न जमवुं नहीं, वाशी अन्न जमवुं नहीं, अत्यंत उकळेलुं अन्न जमवुं नहीं, पचपची गएलुं अन्न जमवुं नहीं, बाहार फरवा नीकळवुं नहीं, उजड घरमां जवुं नहीं, थाळां बांधेलां वृक्षोनी नीचे जवुं नहीं, श्मशानमां जवुं नहीं, वृक्षना आश्रयमां रेहेवुं नहीं, क्रोध छोडी देवो, भय छोडी देवो, कचरानो तथा लोकोनी गरदीनो संसर्ग करवो नहीं, बोजो उपाडवो नहीं, ऊंचा स्वरथी भाषणादिकनो त्याग करवो,आ शारीरस्थानना गर्भावक्रांति नामना त्रीजा अध्यायना ११ मा विषयमां जणावेलां मेहेनत तथा मैथुनादिक कर्मो के जेओ गर्भनो विनाश करनारां छे तेओनो त्याग करवो, वारंवार तैलनो अभ्यंग करवो नहीं, वारंवार लोट वगेरेथी शरीरने चोळाववा वगेरेनो पण त्याग करवो, शरीरने श्रमित थवा देवुं नहीं अने आ शारीरस्थानना शुक्रशोणितशुद्धि नामना बीजा अध्यायना १२ मा विषयमां कहेलां दिवसनी निद्रा तथा अश्रुपात आदिनो पण त्याग करवो. शयन तथा आसन पण कोमळ बीछानावाळां, बहु ऊंचां पण न होय तथा बहुनीचां पण न होय एवां, तकीया तथा गालमशुरीआं वगेरेवाळां अने सांकड वगरनां करवां. भोजन पण हृदयने प्रिय लागे एवुं, द्रववाळुं, घणां मधुर द्रव्योवाळुं, स्निग्ध अने जेने जठराग्निनी प्रदीप्तता करनारा पदार्थोथी संस्कारो आपेला होय एवुं करवुं. आ नियमो गर्भ रेहेवाना दिवसथी ते छेक प्रसव थतां सुधी पाळवा.

३ विशेषतस्तु गर्भिणी प्रथमद्वितीयतृतीयमासेषु मधुरशीतद्रवप्रायमाहारमुपसेवेत । विशेषतस्तु तृतीये षष्टिकौदनं पयसा भोजयेच्चतुर्थे दध्ना पञ्चमे पयसा षष्ठे सर्पिषा चेत्येके। चतुर्थे पयोनवनीतसंसृष्टमाहारयेज्जाङ्गलमांससहितं हृद्यमन्नम् । पञ्चमे क्षीरसर्पिःसंसृष्टम् । षष्ठे श्वदंष्ट्रासिद्धस्य सर्पिषो मात्रां पाययेद्यवागूं वा । सप्तमे सर्पिः पृथक्पर्ण्यादिसिद्धमेवमाप्यायते गर्भः । अष्टमे बदरोदकेन बलातिबलाशतपुष्पापललपयोदधिमस्तुतैललवणमदनफलमधुघृतमिश्रेणास्थापयेत् पुराणपुरीषशुद्ध्यर्थमनुलोमनार्थं च वायोः । ततः पयोमधुरकषायसिद्धेन तैलेनानुवासयेदनुलोमे हि वायौ सुखं प्रसूयते निरुपद्रवा च भवति । अत ऊर्ध्वं स्निग्धाभिर्यवागूभिर्जाङ्गलरसैश्चोपक्रमेदाप्रसवकालात् । एवमुपक्रान्ता स्निग्धा बलवती सुखमनुपद्रवा प्रसूयते ॥

गर्भिणीने सुखप्रसव थवा माटे वैद्ये करवाना उपचारो.

३ गर्भिणीने पेहेला, बीजा तथा त्रीजा महिनामां विशेषे करी मधुर, शीत अने झाझा द्रववाळा आहारनुं सेवन कराववुं. केटलाएक आचार्यो केहेछे के 'गर्भिणीने विशेषे करी त्रीजे महिने दूधनी साथे साठी चोखानो भात जमाडवो,

चोथे महिने दहीनी साथे साठी चोखानो भात जमाडवो, पांचमे महिने दूधनीसाथे साठी चोखानो भात जमाडवो अने छट्टे महिने घीनीसाथे साठी चोखानो भात जमाडवो' पण अमारो मत ए छे के 'त्रीजे महिने उपर कह्या प्रमाणे मधुर शीत तथा झाझा द्रववाळो आहार करावबो, चोथे महिने दूधथी तथा माखणथी संयुक्त करेलुं हृदयने प्रिय लागे एवुं अन्न जांगल प्राणीओनां मांसनी साथे जमाडवुं, पांचमे महिने दूधवाळुं तथा घीवाळुं प्रिय अन्न जमाडवुं अने छट्टे महिने गोखरूनो कल्क नाखीने पकावेला घीनी मात्रा पावी अथवा यवागू पावी.' सातमे महिने विदारिगंधादि गणनां द्रव्यो नाखीने पकावेलुं प्रिय अन्न जमाडवुं. आम करवाथी गर्भ तृप्ति तथा पुष्टि पामेछे. आठमे महिने जूनी विष्ठानी शुद्धिने माटे अने वायुना अनुलोमनने माटे बळदाणा, खपाट, सुवा, मांस, दूध, दहीनुं पाणी, तेल, लूण, मींढोळ, मध तथा घी एओथी मिश्रित करेला बोरना अथवा कपासना छोडना क्वाथथी निरूहबस्ति (पीचकारी) मारवी अने ते पछी दूध तथा मधुर (जीवनीय) द्रव्योनो कल्क नाखीने पकावेला तेलथी अनुवासन नामनी पीचकारी पण मारवी. केमके वायुनुं अनुलोमन थवाथी गर्भिणी सुखेथी जणेछे अने उपद्रवो वगरनी रेहेछे. आटलुं कर्या पछी छेक प्रसवकालपर्यंत स्निग्ध यवागूओथी अने जांगल प्राणिओनां मांसोना रसोथी उपचार करवो. आ प्रमाणे उपचारो करवाथी स्निग्ध थएली अने बळ पामेली गर्भिणी कशो उपद्रव नहीं पामतां सुखेथी जणेछे.

४ नवमे मासि सूतिकागारमेनां प्रवेशयेत् प्रशस्ततिथ्यादौ तत्रारिष्टं ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राणां श्वेतरक्तपीतकृष्णेषु भूमिप्रदेशेषु बिल्वन्यग्रोधतिन्दुकभल्लातकनिर्मितसर्वागारं यथासङ्ख्यं तन्मयपर्यङ्कमुपलिप्तभित्ति सुविभक्तपरिच्छदं प्राग्द्वारं दक्षिणद्वारं वाष्टहस्तायतं चतुर्हस्तविस्तृतं रक्षामङ्गलसम्पन्नं विधेयम् ॥

गर्भिणीनो सूवावडना घरमां प्रवेश अने ते घर केवुं बनाववुं ते.

४ नवमे महिने ज्योतिषशास्त्रनी रीतिप्रमाणे तिथि, नक्षत्र तथा वार वगेरेनी अनुकूलता लईने गर्भिणीने सूवावडना घरमां प्रवेश करावबो. गर्भिणी जो ब्राह्मण वर्णनी होय तो सूवावडनुं घर सफेद माटीवाळा प्रदेशमां करवुं, सघळुं बीलीनां काष्ठोथी बनावेला अवयवोवाळुं करवुं अने तेमां पलंग पण बीलीनां काष्ठोनोज करवो. गर्भिणी जो क्षत्रिय वर्णनी होय तो सूवावडनुं घर राती माटीवाळा प्रदेशमां करवुं, सघळुं वडनां काष्ठोथी बनावेला अवयवोवाळुं करवुं अने तेमां पलंग पण वडनां काष्ठोनोज करवो. गर्भिणी जो वैश्य वर्णनी होय तो सूवावडनुं घर पीळी माटीवाळा प्रदेशमां करवुं, सघळुं टींबरूनां काष्ठोथी बनावेला अवयवोवाळुं करवुं अने तेमां पलंग पण टींबरूनां काष्ठोनोज करवो. गर्भिणी जो शूद्रवर्णनी होय तो सूवावडनुं घर काळी माटीवाळा प्रदेशमां करवुं, सघळुं भीलामांनां काष्ठोथी बनावेला अवयवोवाळुं करवुं अने तेमां पलंग पण भीलामानां काष्ठोनोज करवो. ए घरनी भींतो सारी रीते लींपेली (रंगेली) करवी अने तेमां सूवावडमां उपयोगी थाय एवो सघळो सामान सारी रीते विभागपूर्वक गोठवी राखवो. ए घर उगमणा द्वारवाळुं अथवा दक्षिण तरफ द्वारवाळुं करवुं, आठ हाथ लांबुं तथा चार हाथ पोहोळुं करवुं अने तेने रक्षानी तथा मंगळोनी सामग्रीथी संपन्न करवुं.

५ जाते हि शिथिले कुक्षौ मुक्ते हृदयबन्धने ।
सशूले जघने नारी ज्ञेया सा तु प्रजायिनी ॥

तत्रोपस्थितप्रसवायाः कटीपृष्ठं प्रति समन्ताद्वेदना भवत्यभीक्ष्णं पुरीषप्रवृत्तिर्मूत्रं प्रसिच्यते योनिमुखाच्छ्लेष्मा च ॥

जणावाने तैयार थएली स्त्रीनां लक्षणो.

५ पेट पोचुं पडी जाय, हृदयना बंध मोकळा थई जाय अने पेडुमां शूळ नीकळवा लागे त्यारे स्त्री तुरत जणशे एम समजवुं. जेने जणवानुं पासे आवेलुं होय ते स्त्रीने कमरमां तथा पीठमां चोमेर वेदना थायछे, झाडो तथा पेशाब वारेघडीए थायछे अने योनिना मुखमांथी कफ (झरपटां) पडे छे.

६ प्रजनयिष्यमाणां कृतमङ्गलस्वस्तिवाचनां कुमारपरिवृतां पुन्नामफलहस्तां स्वभ्यक्तामुष्णोदकपरिषिक्तामथैनां सम्भृतां यवागूमाकण्ठात् पाययेत् । ततः कृतोपधाने मृदुविस्तीर्णे शयने स्थितामाभुग्नसक्थीमुत्तानामशङ्कनीयाश्चतस्रः स्त्रियः परिणतवयसः प्रजननकुशलाः कर्तितनखाः परिचरेयुरिति ॥

जणवाने तैयार थएली स्त्रीने उपचारो करवा विषे.

६ स्त्री जणवाने तैयार थाय त्यारे मंगळो तथा स्वस्तिवाचन करावी, तेनी आसपासमां बालकोने उभा राखी, गर्भिणीना हाथमां पुल्लिंग नामवाळां फळो आपी, गात्रोमां मारी पेठे तेलनो अभ्यंग करी, ऊना पाणीथी नवरावीने, तेने जेमां मात्राथी घी नाखेलुं होय एवी अने जरा जरा ऊनी होय एवी यवागू (राब) गळां सूधी पावी. पछी जेमां कोमळ कोमळ ओशीसां मूक्यां होय एवी कोमळ तथा विस्तीर्ण शय्यामां ते गर्भिणीने साथळो पोहोळा रखावी उभडक बेसाडवी अथवा चत्ती सूवाडवी अने ते वखते वृद्ध अवस्थावाळी, जणाववामां निपुणता धरावनारी, जेओए नख सारी पेठे उतरावी नाख्या होय एवी तथा जेओथी गर्भिणी लजाय बीए के कोई प्रकारे गभराय नहीं एवी चार सूयाणीओए ते गर्भिणीना उपचारो करवा तथा सेवा करवी.

७ अथास्या विशिखान्तरमनुलोममनुसुखमभ्यज्याद् ब्रूयाच्चैनामेका सुभगे प्रवाहस्वेति न चाप्राप्तावी प्रवाहस्व ततो विमुक्ते गर्भनाडीप्रबन्धे सशूलेषु श्रोणिवङ्क्षणबस्तिशिरःसु प्रवाहेथाः शनैः शनैस्ततो गर्भनिर्गमे प्रगाढं ततो गर्भे योनिमुखं प्रपन्ने गाढतरमाविशल्यभावात् ॥

सूयाणीओए शुं करवुं ते विषे.

७ पछी ए गर्भिणीना छोकरूं नीकळवाना मार्गमां रूवाडांओनी वलाणना अनुसारथी ते मार्गनी ऊंडाईनी अंदर चोमेर तैलनो अभ्यंग करीने चार सूयाणीओमांनी जे एक श्रेष्ठ सूयाणी होय तेणे ते गर्भिणीने केहेवुं के 'बाई! जो तने बराबर पीड आवती होय तो जोर करजे पण बराबर पीड आव्या विना जोर करीश मां. गर्भनी नाडीओनो बंध छूटी जाय अने तारां कमर, साथळोनां मूळ तथा मूत्राशयनो उपरनो भाग एओमां शूळ नीकळवा लागे त्यारे धीरे धीरे जोर करजे, गर्भ नीकळवा लागे त्यारे वधारे जोर करजे अने पछी गर्भ योनिना मुखमां आवे त्यारथी ते तमाम शल्य नीकळी जाय त्यां सुधी अत्यंत जोर करजे.'

८ अकालप्रवाहणाद्बधिरं मूकं व्यस्तहनुमूर्ध्वाभिघातिनं कासश्वासशोषोपद्रुतं कुब्जं विकटं वा जनयति ॥

पीड न आवतां छतां जोर करवाथी संताननी खराबी थाय छे.

८ समय प्राप्त थयाविना जोर करवाथी बेहेरूं मूंगुं, कथोरी हडपचीवाळुं, डोकनी हांसडीथी उपरना प्रदेशोमां रोगोवाळुं, खांसीना उपद्रववाळुं, श्वासनी पीडावाळुं, शोषथी उपद्रव पामेलुं, खूंधुं के विकट आकारवाळुं छोकरूं आवे छे.

९ तत्र प्रतिलोममनुलोमयेत् ॥

गर्भसङ्गे तु योनिं धूपयेत् कृष्णसर्पनिर्मोकेण पिण्डीतकेन वा । बध्नीयाद्धिरण्यपुष्पीमूलं हस्तपादयोर्धारयेत् सुवर्चलां विशल्यां वा।

गर्भ अवळो होय के अटकी रहे तो शुं करवुं?

९ आ ग्रंथना निदानस्थानना मूढगर्भनिदान

नामना आठमा अध्यायमां कह्या प्रमाण गर्भ प्रतिलोम होय तो चिकित्सितस्थानना मूढगर्भ-चिकित्सित नामना पंदरमा अध्यायमां कह्याप्रमाणे चिकित्सा करीने गर्भने अनुलोम करवो.

जो गर्भ अनुलोम छतां पण अटकी रह्यो होय तो योनिने काळा सर्पनी कांचळीनी अथवा मींढोळनी धूमाडी देवी अने गर्भिणीना हाथ उपर तथा पग उपर भोरींगणीनुं मूल बांधवुं अथवा सूरजमुखी के पाडल बांधवी.

१० अथ जातस्योल्बं मुखं च सैन्धवसर्पिषा विशोध्य घृताक्तं मूर्ध्नि पिचुं दद्यात्ततो नाभिनाडीमष्टाङ्गुलमायम्य सूत्रेण बद्ध्वा छेदयेत्तत्सूत्रैकदेशं च कुमारस्य ग्रीवायां सम्यग्बध्नीयात् ।

अथ कुमारं शीताभिरद्भिराश्वास्य जातकर्मणि कृते मधुसर्पिरनन्ताब्राह्मीरसेन सुवर्णचूर्णमङ्गुल्यानामिकया लेहयेत्ततो बलातैलेनाभ्यज्य क्षीरवृक्षकषायेण सर्वगन्धोदकेन वा रूप्यहेमप्रतप्तेन वा वारिणा स्नापयेदेनं कपित्थपत्रकषायेण वा कोष्णेन यथाकालं यथादोषं यथाविभवं च ॥

जन्मेला बालकने करवाना उपचारो.

१० जन्मेला बालक उपरथी ओळने दूर करी, ते बालकना मोहोडाने सैंधवसहित घीवते कफना जाळावगरनुं करी नाखी, तेना माथा पर घीथी भींजावेलुं रूनुं पूमडुं मूकवुं अने ते पछी नाभिना नाळवाने आठ आंगळ लांबू करी दोराथी बांधीने बाकीना भागमां कापी नाखवुं तथा ते दोराना बीजा छेडाने, नाळवामांथी स्राव न थवानेमाटे बाळकनी डोकमां सारी रीते बांधवो.

पछी योनिरूपी यंत्रमां दबायाने लीधे मूर्छित थएला बालकने शीतळ जळ छांटवाथी आश्वासित करी, जातकर्म नामनो संस्कार कर्या पछी मध, घी, धमासानो अथवा दूर्वानो रस अने ब्राह्मीनो रस एओने मिश्रित करी तेमां सोनुं घसीने ते सुवर्णनुं घसेलुं चूर्ण अनामिका नामनी आंगळी वते एक चणोठीभार चटाडवुं. पछी चिकित्सितस्थानना १९ मा अध्यायमां कहेला बलातैलवते बालकना शरीरपर अभ्यंग करीने शीतकाळादिक समयने, वायुआदि दोषने तथा वैभवने अनुसरी छीरवाळां वड वगेरे पांच वृक्षोना क्वाथथी अथवा जेमां एळादि गणनां सर्व सुगंधद्रव्यो नाख्यां होय एवा गरम जळथी अथवा तपावेलुं रूपुं तथा सोनुं नाखीने झामेला जळथी अथवा जरा जरा ऊना कोठनां पानडांना क्वाथथी ते बालकने नवराववो.

११ धमनीनां हृदिस्थानां विवृतत्वादनन्तरम् । चतूरात्रात्त्रिरात्राद्वा स्त्रीणां स्तन्यं प्रवर्त्तते ॥

तस्मात्प्रथमेऽह्नि मधुसर्पिरनन्तामिश्रं मन्त्रपूतं त्रिकालं पाययेद्द्वितीये लक्ष्मणासिद्धं सर्पिस्तृतीये च । ततः प्राङ्निवारितस्तन्यं मधुसर्पिः स्वपाणितलसंमितं द्विकालं पाययेत् ॥

स्त्रीओने धावण आवतां सुधीमां बालकने तृप्त राखवानी योजना.

११ स्त्रीओना हृदयमां रहेली धमनीओ प्रसव थया पछी त्रण राते अथवा चार राते खुल्ली थाय छे तेथी त्रण रात पछी अथवा चार रात पछी स्त्रीओने दूध प्रवर्त्तेछे एटला माटे पेहेले दिवसे बालकने धमासाना अथवा दूर्वाना रसथी मिश्रित करेलुं घी मधथी संयुक्त करी मंत्रथी पवित्र करीने त्रण वखत पीवराववुं. बीजे दिवसे लक्ष्मणा नामनी औषधीनो कल्क नाखीने पकावेलुं घी मधथी संयुक्त करी मंत्रथी पवित्र करीने त्रण वखत पीवराववुं अने त्रीजे दिवसे पण एप्रमाणेज

१ मूलमां 'हिरण्यपुष्पी' शब्द छे तेनो डल्हने 'भोरींगणी' अर्थ लख्यो छे. निघंटमां जोतां मुसली के नाहानी खजूरी नीकळे छे. भावप्रकाशमां तो दूधिया वछनागनुं मूळ बांधवानुं कह्युं छे.

करवुं. आ प्रमाणे चोथे दिवसे पण मध्याह्नसुधी धावण नहीं धवरावतां प्रभाते तथा मध्याह्ने पोताना हाथना तळामां समाई रहे तेटलुं मधसहित घी पावुं. (पछी चोथा दिवसना त्रीजा पोहोरथी यथेष्ट रीते धावण धवराववुं.)

१२ अथ सूतिकां बलातैलाभ्यक्तां वातहरौषधनिःक्वाथेनोपचरेत् सशेषदोषां तु तदहःपिप्पलीपिप्पलीमूलहस्तिपिप्पलीचित्रकशृङ्गवेरचूर्णं गुडोदकेनोष्णेन पाययेत् । एवं द्विरात्रं त्रिरात्रं वा कुर्यादा दुष्टशोणितात् । विशुद्धे ततो विदारिगन्धादिसिद्धां स्नेहयवागूं क्षीरयवागूं वा पाययेत्त्रिरात्रम् । ततो यवकोलकुलत्थसिद्धेन जाङ्गलरसेन शाल्योदनं भोजयेद्बलमग्निबलं चावेक्ष्य ॥

सूतिकाने करवाना उपचारो.

१२ सूतिकाने चिकित्सितस्थानना १९ मा अध्यायमां कहेला बलातैलनो अभ्यंग करी सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलां वातहर औषधोनो क्वाथ पीवरावो तथा ते क्वाथनुं सेचनादिक करवुं. जो दुष्ट रुधिर अवशेष रही गयुं होय तो पेहेले दिवसे पीपळ, पीपळीमूळ, गजपीपळ, चित्रक अने सूंठ एओनुं चूर्ण गोळना उकाळेला गरम पाणीनी साथे पीवराववुं. आ प्रमाणे बे रात सुधी अथवा त्रण रात सुधी एटले ज्यांसुधी दुष्ट रुधिर होय त्यांसुधी करवुं. त्रीजे दिवसे अथवा चोथे दिवसे रुधिर शुद्ध थई गया पछी विदारिगंधादिगणनां द्रव्योथी पकावेली झाझा घीवाळी राब अथवा दूधवाळी राब त्रण रात सुधी पावी. पछी स्त्रीना बळने तथा तेना जठराग्निना बळने जोई जव, पंचकोल (पीपळ, पीपळीमूळ, चवक, चित्रक तथा सूंठ) अने कळथी एओ नाखीने पकावेला जांगल प्राणिओना मांसना रसनी साथे राता चोखानो भात जमाडवो.

१३ अनेन विधिनाध्यर्द्धमासमुपसंस्कृता विमुक्ताहाराचारा विगतसूतिकाभिधाना स्यात् पुनरार्त्तवदर्शनादित्येके ॥

सूतिकापणुं क्यारे मटे?

१३ आ प्रमाणे दोढ महिना सुधी बराबर उपचार करवामां आवे अने पछी सूवावडसंबंधी आहार तथा आचरण छोडी देवामां आवे त्यार पछी सूतिका केहेवाय नहीं. केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'फरीवार रजोदर्शन थाय त्यारे सूतिका केहेवाय नहीं.'

१४ धन्वभूमिजातां बलवतीं सूतिकां घृततैलयोरन्यतरस्य मात्रां पाययेत् पिप्पल्यादिकषायानुपानां स्नेहनित्या च स्यात्त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा । अबलां यवागूं पाययेत्त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा । अत ऊर्ध्वं स्निग्धेनान्नसंसर्गेणोपचरेत् ॥

जांगल देशमां उत्पन्न थएली सूतिकाना उपचारमां विशेष.

१४ जांगल देशमां उत्पन्न थएली सूतिका देशस्वभावने लीधे भूखी थई जाय तो तेने पेहेले दिवसेज सात्म्यना अनुसारथी घीनी के तेलनी मोटी मात्रा पावी, ए मात्रा पाया पछी पिप्पल्यादि गणना क्वाथनुं अनुपान देवुं अने ते मात्रा जीर्ण थया पछी विदारिगंधादि गणनो कल्क नाखीने पकावेली यवागू पण पावी. आ प्रमाणे त्रण रात सुधी अथवा पांच रात सुधी करवुं अने तेटला दिवसोमां ते सूतिकाने नित्य तैलनां अभ्यंगादिक कराववां. जांगलदेशमां उत्पन्न थएली जे सूतिका बळवाळी होय तेने माटे ए प्रकार छे. पण ते देशमां उत्पन्न थएली सूतिका निर्बल होय तो तेने घीनी के तेलनी मात्रा नहीं पातां त्रण रात सुधी के पांच रात सुधी फक्त विदारिगंधादि गणनां द्रव्योवाळी स्निग्ध यवागूज पावी अने नित्य तैलना अभ्यंगादिक कराववां. त्रण रात के पांच रात व्यतीत थई गया पछी बीजुं स्निग्ध अन्न योग्यताने अनुसरीने जमाडवुं.

१५ प्रायशश्चैनां प्रभूतेनोष्णोदकेन परिषिञ्चेत्। क्रोधायासमैथुनादीन् परिहरेत् ॥

सूतिकानो सामान्य उपचार अने सूतिकाए पाळवानी परेजी.

१५ सूतिकाना शरीरपर घणुं करीने गरम करेला घणा घणा पाणीथी परिषेचन करवुं अने सूतिकाए क्रोध, परिश्रम तथा मैथुन वगेरेनो त्याग करवो. (गर्भथी क्षुब्ध थएला रुधिरने स्रावववा माटे अने वायुने जीती लेवाने माटे गरम पाणीथी परिषेचन करवानुं कह्युं छे.)

१६ भवतश्चात्र ॥

मिथ्याचारात्सूतिकाया यो व्याधिरुपजायते ।
स कृच्छ्रसाध्योऽसाध्यो वा भवेदत्यपतर्पणात्॥
तस्मात्तां देशकालौ च व्याधिसात्म्येन कर्मणा।
परीक्ष्योपचरेदेवं नेयमत्ययमाप्नुयात् ॥

वैद्ये सूवावडीनी बाबतमां बहु संभाळ राखवी.

१६ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "सूतिकाने खोटा आहार विहारथी जे व्याधि उत्पन्न थाय छे ते व्याधि अत्यंत अपतर्पण (कर्षणरूप चिकित्सा) करवाथी कष्टसाध्य अथवा असाध्य थई पडेछे एटला माटे वैद्ये देशकाळ जोईने व्याधि टाळवामां उपयोगी थाय एवी क्रियाथी सूतिकाना उपचारो करवा के जेथी सूतिका विनाश पामे नहीं."

१७ अथापराऽपतन्त्यानाहाध्मानौ कुरुते तस्मात् कण्ठमस्याः केशवेष्टितयाङ्गुल्या प्रमृजेत् । कटुकालाबूकृतवेधनसर्षपसर्पनिर्मोकैर्वा कटुतैलविमिश्रैर्योनिमुखं धूपयेत् । लाङ्गलीमूलकल्केन वास्याः पाणिपादतलमालिम्पेत् । मूर्ध्नि वास्या महावृक्षक्षीरमनुसेचयेत् । कुष्ठलाङ्गलीमूलकल्कं वा मद्यमूत्रयोरन्यतरेण पाययेत् । शालिमूलकल्कं वा पिप्पल्यादिं वा मद्येन । सिद्धार्थककुष्ठलाङ्गलीमहावृक्षक्षीरमिश्रेण सुरामण्डेन वाऽऽस्थापयेत् । एतैरेव सिद्धेन सिद्धार्थकतैलेनोत्तरबस्तिं दद्यात्। स्निग्धेन वा कृत्तनखेन हस्तेनापहरेत् ॥

जण्या पछी ओळ न पडे तो तेथी थता उपद्रवो अने ओळ पाडवाना उपायो.

१७ जेने प्रसव थयो होय ते स्त्रीने पेटमांथी ओळ न पडी होय तो ते ओळ आनाहने, आफराने, शूळने तथा अग्निनी मंदताने करे छे एटला माटे ते ओळने पाडवा माटे केशोथी वींटेली आंगळी वते सूतिकाना कंठने घसवो अथवा कडवी तुंबडी, कडवी घीसोडी, सर्षप तथा सर्पनी कांचली एओनुं चूर्ण करी सरसीआ तेलमां कालवीने तेनो योनिना मुखपर धूमाडो देवो अथवा सूतिकाना हाथपगनां तळाओमां दूधीया बछनागनां मूळीयांना कल्कनो लेप करवो अथवा सूतिकाना माथापर खरसाणी थोरना छीरनुं सेचन करवुं अथवा कठनो अने दूधीया बछनागनां मूळीयांनो कल्क करी मद्यनी साथे के गोमूत्रनी साथे सूतिकाने पावो अथवा चोखाना छोडनां मूळीयांनो के पिप्पल्यादि गणनो कल्क करी मद्यनी साथे पावो अथवा सर्षप, कठ, दूधीयो बछनाग तथा थोरनुं छीर एओथी मिश्रित करेली मद्यनी आछथी गुदमां पीचकारी मारवी अथवा एज औषधोनो कल्क नाखीने पकावेला सरसीया तेलथी योनिमां पीचकारी मारवी अथवा सूयाणीए के वैद्ये हाथना नख सारी पेठे उतरावीनाखी स्निग्ध करेलो ते हाथ नाखीने ओळ काहाडी लेवी.

१८ प्रजातायाश्च नार्या रूक्षशरीरायास्तीक्ष्णैरविशोधितं रक्तं वायुना तद्देशगेनातिसंरुद्धं नाभेरधः पार्श्वयोर्बस्तौ बस्तिशिरसि वा ग्रन्थिं करोति ततश्च नाभिवस्त्युदरशूलानि भवन्ति सूचीभिरिव निस्तुद्यते भिद्यते दीर्यत इव च पक्वाशयः समन्तादाध्मानमुदरे मूत्रसङ्गश्च भवतीति मक्कललक्षणम् ॥

सूतिकाना मक्कल नामना रोगनुं निदान तथा लक्षण.

१८ रूक्ष शरीरवाळी सूतिकानुं रुधिर पीपल वगेरे तीक्ष्ण द्रव्योथी शुद्ध न थयुं होय तो ते रुधिर ते प्रदेशमां रहेला वायुथी अत्यंत रोकाई जईने नाभिनी नीचे, पडखांओमां, मूत्राशयमां अथवा मूत्राशयना उपरना प्रदेशमां ग्रंथिने उत्पन्न करेछे के जे ग्रंथिथी नाभि, मूत्राशय तथा उदर एओमां शूळो थायछे अने पक्काशय जाणे सोईओथी भोंकातो होय, कुहाडाथी भेदातो होय अने करवतथी चीरातो होय तेम व्यथा पामे छे. आथी पेटमां चोमेर आध्मान (फूलीजवुं) थाय छे अने मूत्रनी अटकायत थाय छे. आ मक्कलनुं लक्षण समजवुं. (प्रसवना रुधिरथी उत्पन्न थएलुं शूळ पण मक्कल केहेवाय छे अने रोकाएलुं रुधिर पाकवाथी थएलो विद्रधि पण मक्कल केहेवाय छे. डल्लन.)

१९ तत्र वीरतर्वादिसिद्धं जलमूषकादिप्रतीवापं पाययेद्यवक्षारचूर्णं वा सर्पिषा सुखोदकेन वा लवणचूर्णं वा पिप्पल्यादिक्काथेन पिप्पल्यादिचूर्णं वा सुरामण्डेन वरुणादिक्काथं वा पञ्चकोलैलाप्रतीवापं पृथक्पर्ण्यादिक्काथं वा भद्रदारुमरिचसंसृष्टं पुराणगुडं वा त्रिकटुकचतुर्जातककुस्तुम्बरुमिश्रं खादेदच्छं वा पिबेदरिष्टमिति ॥

मक्कलनी चिकित्सा.

१९ सूतिकाने मक्कल थयो होय तो वैद्ये वीरतर्वादि गणना क्काथमां ऊषकादि गण पण पाछळथी सिद्ध थती वखते नाखी ते क्काथ पावो अथवा सेहेवाय तेवा ऊना जळनी साथे के घीनी साथे जवखारनुं चूर्ण पावुं अथवा पिप्पल्यादि गणना क्काथनी साथे सैंधवनुं चूर्ण पावुं अथवा मदिरानी आछनी साथे पिप्पल्यादि गणनुं चूर्ण पावुं अथवा वरूणादि गणना क्काथमां पाछळथी सिद्ध थती वखते पंचकोल तथा एलची नाखी ते क्काथ पावो अथवा देवदार तथा मरी एओनां चूर्णथी संयुक्त करेलो विदारिगंधादि गणनो क्काथ पावो अथवा सूंठ, मरी, पीपळ, तज, तमालपत्र, एळची, नागकेसर अने धाणा एओना चूर्णथी संयुक्त करेलो जूनो गोळ खवराववो अथवा केवळ अभयारिष्ट वगेरे अरिष्ट पावुं. (दोषादिकनुं अवेक्षण करतां आ घणा योगोमांथी जे योग अनुकूल जणाय ते आपवो.)

२० अथ बालं क्षौमपरिवृतं क्षौमवस्त्रास्तृतायां शय्यायां शाययेत्। पीलुबदरीनिम्बपरूषकशाखाभिश्चैनं वीजयेत्। मूर्ध्नि चास्याहरहस्तैलपिचुमवचारयेत्। धूपयेच्चैनं रक्षोघ्नैर्धूपैः। रक्षोघ्नानि चास्य पाणिपादशिरोग्रीवास्ववसृजेत्। तिलातसीसर्षपकाणांश्चात्र प्रकिरेत्। अधिष्ठाने चाग्निं प्रज्वालयेत्। व्रणितोपासनीयं चावेक्षेत ॥

बालकने करवाना उपचारो.

२० बालकने क्षौम[1] वस्त्रथी वींटी, जेमां क्षौम वस्त्र बीछावेलुं होय एवी शय्यामां सूवडाववो. पीलु, बोरडी, लींबडो के फालसानुं झाड एओनी शाखाओथी बालकनी उपर पवन करवो. बालकना माथामां रोजेरोज तेलथी भींजावेलुं पूमडुं मूकवुं. राक्षसोने हणनारा वज वगेरेना धूपोनी धुमाडी देवी. बालकनां हाथ, पग, माथुं तथा डोक एओनी उपर राक्षसोने हणनारी औषधीओ नाखवी तथा बांधवी. सूवावडना घरमां तिल, अलसी तथा सर्षप एओना दाणा वेरणी राखवा अने अग्निने पण प्रज्वलित राखवो. आ ग्रंथना सूत्रस्थानना व्रणितोपासनीय नामना १९ मा अध्यायमां कहेला विधि उपर पण ध्यान आपवुं.

२१ ततो दशमेऽहनि मातापितरौ कृतम-

१ अलसीना तंतुओथी बनावेलुं वस्त्र क्षौम केहेवाय. डल्लने 'क्षौम एटले दुकूलवस्त्र' एम लख्युं छे.

ङ्गलकौतुकौ स्वस्तिवाचनं कृत्वा नाम कुर्यातां यदभिप्रेतं नक्षत्रनाम वा ॥

दशमे दिवसे बालकनुं नाम पाडवानो विधि.

२१ दशमे दिवसे माताए तथा पिताए मंगळ तथा वाद्य आदि कौतुक करी स्वस्तिवाचन करावीने बालकनुं पोताना मनने गमे तेवुं नाम पाडवुं अथवा ज्योतिःशास्त्रनी तथा धर्मशास्त्रनी रीति प्रमाणे जन्मनक्षत्रने अनुसरतुं नाम पाडवुं.

२२ ततो यथावर्णं धात्रीमुपेयान्मध्यमप्रमाणां मध्यमवयसमरोगां शीलवतीमचपलामलोलुपामकृशामस्थूलां प्रसन्नक्षीरामलम्बोष्ठीमलम्बोर्ध्वस्तनीमव्यङ्गामव्यसनिनीं जीवद्वत्सां दोग्ध्रीं वत्सलामक्षुद्रकर्मिणीं कुले जातामतोभूयिष्ठैश्च गुणैरन्वितां श्यामामारोग्यबलवृद्धये बालस्य। तत्रोर्ध्वस्तनी करालं कुर्यात्। लम्बस्तनी नासिकामुखं छादयित्वा मरणमापादयेत्।

बालकने धवराववा माटे केवी धाव राखवी ?

२२ ब्राह्मणे ब्राह्मणवर्णनी, क्षत्रिये क्षत्रियवर्णनी, वैश्ये वैश्यवर्णनी अने शूद्रे शूद्रवर्णनी धाव राखवी. धाव मध्यम कदवाळी, मध्यम उमरवाळी, रोग वगरनी, सारा स्वभाववाळी, चपळता वगरनी, विषयादिकमां लंपटपणा वगरनी, कृश न होय एवी, जाडी पण न होय एवी, स्वच्छ दूधवाळी, जेना होठ लांबा न होय एवी, जेनां स्तनो लांबां के ऊंचां न होय एवी, खोडखापण वगरनी, व्यसन वगरनी, जेनुं छोकरूं जीवतुं होय एवी, घणा दूधवाळी, प्रेमवाळी, क्षुद्रकामो नहीं करनारी, सारा कुलमां जन्मेली, केहेवामां आवेला आ गुणो करतां पण जेमां अधिक गुणो होय एवी अने श्यामवर्णवाळी राखवी. आवी धाव राखवाथी बालकनुं आरोग्य अने बळ वृद्धि पामे छे. (श्यामवर्णवाळी स्त्रीमां घणुं करीने धावण वधारे होय छे तेथी श्यामवर्णवाळी धाव राखवानुं कह्युं छे.) धाव जो ऊंचां स्तनोवाळी होय तो बालकने विकराल करी नाखे छे अने लांबां स्तनोवाळी होय तो बालकना नाकने तथा मुखने स्तनोवते ढांकी देवाथी बालकना मरणनुं कारण थई पडे छे. (धावमां बीजा दोषो जे केहेवामां आव्या तेओनां कारणोनी कल्पना पण आ पद्धति प्रमाणे करी लेवी.)

२३ ततः प्रशस्तायां तिथौ शिरःस्नातामहतवाससमुदङ्मुखं शिशुमुपवेश्य धात्रीं प्राङ्मुखीमुपवेश्य दक्षिणं स्तनं धौतमीषत्परिस्रुतमभिमन्त्र्य मन्त्रेणानेन पाययेत् ॥

चत्वारः सागरास्तुभ्यं स्तनयोः क्षीरवाहिनः।
भवन्तु सुभगे नित्यं बालस्य बलवृद्धये ॥
पयोऽमृतरसं पीत्वा कुमारस्ते शुभानने।
दीर्घमायुरवाप्नोतु देवाः प्राश्यामृतं यथा ॥

बालकने धावनुं दूध धवराववानो विधि.

२३ ज्योतिःशास्त्रनी रीति प्रमाणे जे दिवसे तिथि, वार तथा नक्षत्र वगेरेनी अनुकूलता होय ते दिवसे, माथे नाहेली तथा जेणे नवीन वस्त्रो पेहेर्यां होय एवी धावने तेनुं मोहोडुं पूर्वतरफ रहे एवी रीते बेसाडी अने बालकने तेनुं मुख उत्तर तरफ रहे एवी रीते राखी, धावना जमणा स्तनने जळथी धोवरावी, तेमांथी प्रथमनुं थोडुंक धावण कहडावी नाखी पछी नीचे लखेला अर्थवाळा बे मंत्रोथी अभिमंत्रण करीने बालकने ते स्तन धवराववुं.

'हे उत्तम भाग्यवाळी! आ बालकना बळनी वृद्धिने माटे चारे समुद्रो नित्य तारां स्तनोमां दूधनी प्राप्ति करनारा थाओ. हे रूडा मोहोडावाळी! जेम देवताओ अमृत पीने लांबुं आयुष्य पाम्या छे तेम आ बालक अमृतना जेवा रसवाळुं तारूं दूध पीने लांबुं आयुष्य पामजो.'

२४ अतोऽन्यथा नानास्तन्योपयोगस्यासात्म्याद्व्याधिजन्म भवति। अपरिस्रुतेऽप्यतिस्त-

ध्यस्तन्यपूर्णस्तनपानादुत्क्लुहितस्रोतसः शिशोः कासश्वासवमीप्रादुर्भावः । तस्मादेवंविधं स्तन्यं न पाययेत् ॥

धावने बदलाववाथी तथा स्तननुं पेहेलुं दूध नहीं कहडावी नाखवाथी नुकसान.

२४ जो एकज धावने मुकरर करीने राखवामां न आवे तो बालकने अनेक स्त्रीओना धावणनो उपयोग असात्म्य होवाने लीधे रोगो उत्पन्न थाय छे. जो धावना स्तनोमांथी पेहेलुं थोडुंक धावण स्रवावी नाखवामां न आवे तो अत्यंत स्तब्ध थएला धावणथी भरभूर थएला स्तनने धाववाथी बालकनां स्रोतो भराई जवाने लीधे बालकने खांसीनो, श्वासनो तथा वमननो प्रादुर्भाव थायछे. आम छे एटला माटे अनेक स्त्रीओनुं धावण धवराववुं नहीं अने स्तनोमां भराएलुं पेहेलुं धावण थोडुंक स्रवावी नाख्या वगर पण धवराववुं नहीं.

२५ क्रोधशोकवात्सल्यादिभिश्च स्त्रियाः स्तन्यनाशो भवति ॥

धवरावनारी स्त्री जो क्रोधादिकथी युक्त होय तो तेथी नुकसान.

२५ धवरावनारी स्त्री जो क्रोधथी, शोकथी के बालक उपर अप्रेम वगेरेथी युक्त होय तो धावणनो नाश थई जाय छे.

२६ अथास्याः क्षीरजननार्थं सौमनस्यमुत्पाद्य यवगोधूमशालिषष्टिकमांसरससुरासौवीरकपिण्याकलशुनमत्स्यकशेरुकशृङ्गाटकबिसबिदारिकन्दमधुकशतावरीनालिकेरालाबूकालशाकप्रभृतीनि विदध्यात् ॥

जे स्त्रीने धावण बराबर न आवतुं होय तेनी धावण वधारे उत्पन्न करवाने माटे चिकित्सा.

२६ जे स्त्रीने धावण बराबर न आवतुं होय ते स्त्रीने धावण उत्पन्न करवाने माटे अनेक युक्तिओथी हर्षयुक्त करवी अने जवना पदार्थो, घऊंना पदार्थो, चोखाना पदार्थो, साठी चोखा, मांसनो रस, मदिरा, सौवीरक[१], तलना पदार्थो, लसण, माछलां, कसेरुकंद, शीगोडां, कमळनां मूळ, फगवेलानो कंद, महुडां, शतावरी, नाळीएर, मीठी तुंबडी तथा शरपंखो इत्यादिक पदार्थोनो उपयोग कराववो.

२७ अथास्याः स्तन्यमप्सु परीक्षेत तच्चेच्छीतलममलं तनु शङ्खावभासमप्सु न्यस्तमेकीभावं गच्छत्यफेनिलमतन्तुमन्नोत्प्लवते न सीदति वा तच्छुद्धमिति विद्यात्तेन कुमारस्यारोग्यं शरीरोपचयो बलवृद्धिश्च भवति ॥

सारा धावणनी परीक्षा.

२७ बालकनी माताना अथवा धावना धावणनी नीचे प्रमाणे परीक्षा करवी. धावण जो शीतल होय, निर्मल होय, पातळुं होय, शंख जेवा सफेद प्रकाशवाळुं होय, पाणीमां नाखतां पाणीनी साथे मळी जतुं होय पण उपर तरतुं के अंदर तळामां बेसी जतुं न होय, फीण वगरनुं होय तथा तांतडाओथी रहित होय तो ते धावणने शुद्ध जाणवुं. एवा धावणथी बालकनुं आरोग्य रेहेछे, शरीरनी पुष्टि थाय छे अने बळनी पण वृद्धि थाय छे.

२८ न च क्षुधितशोकार्तश्रान्तप्रदुष्टधातुगर्भिणीज्वरितातिक्षीणातिस्थूलविदग्धभक्ष्यविरुद्धाहारतर्पितानां स्तन्यं पाययेन्नाजीर्णौषधस्य बालं दोषधातुमलानां तीव्रवेगोत्पत्तिभयात् ॥

भवन्ति चात्र ॥

धात्र्यास्तु गुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषलैस्तथा ।
दोषा देहे प्रकुप्यन्ति ततः स्तन्यं प्रदुष्यति ॥
मिथ्याहारविहारिण्या दुष्टा वातादयः स्त्रियाः ।
दूषयन्ति पयस्तेन शारीरा व्याधयः शिशोः ॥

१ सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायनो १९० मो विषय जुवो.

भवन्ति कुशलस्तांश्च भिषक् सम्यग्विभावयेत्।

केवी स्त्रीनुं धावण धवराववुं नहीं.

२८ भूखी स्त्रीनुं, शोकथी पीडाएली स्त्रीनुं, थाकेली स्त्रीनुं, दुष्ट धातुओवाळी स्त्रीनुं, गर्भिणीनुं, जेने ज्वर आवतो होय ते स्त्रीनुं, अत्यंत क्षीण थएली स्त्रीनुं, अत्यंत जाडी स्त्रीनुं, जेणे अरधां काचां तथा अरधां पाकां भक्ष्यो खाईने पेट भर्युं होय ते स्त्रीनुं, विरुद्ध आहारोथी तृप्त थएली स्त्रीनुं अने जेने अन्ननुं अजीर्ण थयुं होय ते स्त्रीनुं धावण बालकने धवराववुं नहीं. कारण के एवी स्त्रीओनुं धावण धाववाथी दोषोनो, धातुओनो तथा मळोनो तीव्र वेग उत्पन्न थवानी धास्तीनो पूरो संभव छे.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "भारे, विषम तथा दोषोने वधारनारा आहारोथी धवरावनारीना शरीरमां दोषो प्रकुपित थाय छे अने दोषो प्रकुपित थवाथी धावण दूषित थई जायछे. खोटा आहार तथा खोटा विहार करनारी स्त्रीना दुष्ट थएला वायु आदि दोषो ते स्त्रीना धावणने दुष्ट करे छे अने ते दुष्ट धावण धाववाथी बालकना शरीरमां रोगो उत्पन्न थायछे. विचक्षण वैद्ये धावणथी थता व्याधिओनी नीचेप्रमाणे पाकी परीक्षा करी लेवी.

२९ अङ्गप्रत्यङ्गदेशे तु रुजा यत्रास्य जायते ॥
मुहुर्मुहुः स्पृशति तं स्पृश्यमाने च रोदिति ।
निमीलिताक्षो मूर्धस्थे शिरो रोगे न धारयेत्॥
बस्तिस्थे मूत्रसङ्गार्तो रुजा तृष्यति मूर्छति ।
विण्मूत्रसङ्गवैवर्ण्यच्छर्द्याध्मानान्त्रकूजनैः ॥
कोष्ठे दोषान्विजानीयात् सर्वत्रस्थांश्च रोदनैः॥

जेओने बोलतां आवडतुं न होय एवां बालकोना अंदरना रोगोने जाणवानो उपाय.

२९ बालकने जे अंगना के जे प्रत्यंगना प्रदेशमां वेदना थती होय ते प्रदेशने बालक वारंवार हाथथी अडक्या करेछे अने बीजो कोई माणस ते प्रदेशनो स्पर्श करे तो ते बालक रूवेछे. बालकने माथामां दरद होय तो ते बालक आंखो वींची राखेछे अने मांथाने अक्कड राखी शकतो नथी अर्थात् माथुं ढाळी जायछे. बालकने मूत्राशयमां दरद होय तो ते बालक मूत्रनी अटकायतथी पीडाय छे अने पीडाने लीधे वारंवार तरश्यो थायछे तथा मूर्छित थई जाय छे. जो बालकने झाडानी तथा मूत्रनी अटकायत थई होय, शरीरनो वर्ण बदलाई गयो होय, उलटी थती होय, पेट चडी आव्युं होय के आंतरडानो अवाज थतो होय तो एओ उपरथी जाणवुं के बालकना कोठामां रोग छे. जो बालक रोयाज करतो होय तो जाणवुं के तेना सघळा शरीरमां रोग छे."

३० तेषु च यथाभिहितं मृद्वच्छेदनीयमौषधं मात्रया क्षीरपस्य क्षीरसर्पिषा धात्र्याश्च केवलं विदध्यात् क्षीरान्नादस्यात्मनि धात्र्याश्चान्नादस्य कषायादीनात्मन्येव न धात्र्याः ॥

बालकना रोगने टाळवा माटे औषध देवानो प्रकार.

३० बालकने रोग थाय तो जे जे रोग उपर जे जे औषध कह्युं छे ते ते रोग उपर ते ते औषध करवुं पण ते औषध तीक्ष्णताथी रहित होय एवुं करवुं, कफनुं तथा मेदनुं छेदन करे नहीं एवुं करवुं, बालकने दूध तथा घी सात्म्य होय छे एटला माटे घीथी तथा दूधथी संयुक्त करीने पावुं, पावुं ते पण मात्राथी पावुं अने बालकने जे औषध देवुं तेज औषध धवरावनारीने पण देवुं परंतु ते दूधना तथा घीना योग वगरनुं एकलुंज देवुं. आ प्रकार फक्त दूध धावीनेज रेहेनारा नाहाना बालकने माटे समजवो. जे बालक धावण धावतो होय अने अन्न पण खातो होय तेने पण उपर प्रमाणेज तथा दूधथी अने घीथी संयुक्त करीनेज

देवुं अने धवरावनारीने पण देवुं परंतु ते दूधना तथा घीना योग वगरनुं देवुं. जे बालक अन्न खाईने रेहेतो होय तेने पोतानेज क्वाथ वगेरे औषधो देवां पण धवरावनारीने देवां नहीं. (बालको एक वर्षनी उमर थतां सुधी दूध धावीनेज रेहेनारां गणाय छे, बे वर्षनी उमर थतां सुधी दूधथी तथा अन्नथी रेहेनारां गणायछे अने ते पछी अन्न खाईने रेहेनारां गणाय छे.)

३१ तत्र मासादूर्ध्वं क्षीरपायाङ्गुलिपर्वद्वयग्रहणसंमितामौषधमात्रां विदध्यात् कोलास्थिसंमितां कल्कमात्रां क्षीरान्नादाय कोलसंमितामन्नादायेति ॥

बालकने देवाना औषधनी मात्रा.

३१ बालक एक मासनुं थाय ते पछी ते पेहेलुं वर्ष पूरूं थतां सुधी तेने दूधमां तथा घीमां चोळी नाखेला औषधनी पोतानी आंगळीना बे टेरवां उपर आवे तेटली मात्रा देवी, बीजुं वर्ष पूरूं थतां सुधी दूधमां तथा घीमां औषधनो कल्क करीने तेनी नाहाना बोरना ठळीआ जेवडी मात्रा देवी अने बीजा वर्ष पछी नाहाना बोर जेवडी मात्रा देवी. (तंत्रांतरमां तो एम कह्युं छे के बालकने जन्म्या पछी एक महिना सुधीमां वावडींग जेटलुं औषध देवुं अने बीजे महिनेथी एक एक वावडींग जेटलुं वधारतुं जवुं. वळी बीजा ग्रंथमां एम कह्युं छे के बालकने पेहेले महिने एक रति भार औषध देवुं अने ते मध, धावण, साकर तथा घी एओथी अवलेह जेवुं (चटाय एवुं) करीने देवुं. पछी महिने महिने एक एक रति वधारतुं जवुं. पेहेलुं वर्ष पूरूं थतां सुधी ए प्रमाणे करवुं. पेहेलुं वर्ष पूरूं थया पछी सोळ वर्षनी उमर थतां सुधी वर्षे वर्षे पांच पांच चणोठी भार वधारतुं जवुं.)

३२येषां गदानां ये योगाः प्रवक्ष्यन्तेऽगदङ्कराः। तेषु तत्कल्कसंलिप्तौ पाययेत शिशुं स्तनौ ॥

१ सूत्रस्थानना ३५ मा अध्यायनो ११ मो विषय

बालकने औषध देवानी बीजी युक्ति.

३२ जे जे रोगोने माटे जे जे औषधो केहेवामां आवशे ते ते रोगोमां ते ते औषधोना कल्कथी माना अथवा धावना स्तनोपर लेपन करीने ते स्तनो बालकने धवराववां.

३३ एकं द्वे त्रीणि चाहानि वातपित्तकफज्वरे। स्तन्यपाय हितं सर्पिरितराभ्यां यथार्थतः ॥ न च तृष्णाभयादत्र पाययेत शिशुं स्तनौ । विरेकबस्तिवमनान्यृते कुर्याच्च नात्ययात् ॥

बालकने ज्वरना विषयमां विशेष.

३३ एक वर्ष पूरूं थतां सुधीमां बालकने वातज्वर आवे तो एक दिवस घी देवुं ए सारूं छे, पित्तज्वर आव्यो होय बे दिवस सुधी घी देवुं ए सारूं छे अने कफज्वर आव्यो होय तो त्रण दिवससुधी घी देवुं ए सारूं छे. एक वर्ष पछी एटले दूधथी तथा अन्नथी रेहेनारा बालकने अने बीजा वर्ष पछी एटले अन्न खाईने रेहेनारा बालकने प्रयोजनना अनुसार प्रमाणे घी देवुं. ज्वरमां घणी तरश लागवानी धास्तीने लीधे ज्वरवाळा बालकने स्तनपान करावबुं नहीं. (बालकने स्तनपाननी अटकायत नज करवी एम भावप्रकाशमां कह्युं छे.) जेथी विनाशज थई जाय एवो भयंकर रोग थया शिवाय बालकने विरेचन देवुं नहीं, पीचकारी मारवी नहीं अने वमन पण करावबुं नहीं.

३४मस्तुलुङ्गक्षयाद्यस्य वायुस्तालवस्थि नामयेत्। तस्य तृड्दैन्ययुक्तस्य सर्पिर्मधुरकैः शृतम् ॥ पानाभ्यञ्जनयोर्योज्यं शीताम्बूद्वेजनं तथा ।

बालकनुं तालवुं नीचे बेसी जाय तो तेनी निदानपूर्वक चिकित्सा.

३४ मस्तुलुंगनो (माथाना मगजनो) क्षय थवाने लीधे वायु जे बालकना ताळवाना अस्थिने नमावी दिये ते बालकने तरश लाग्या करे छे तथा दीनता उत्पन्न थाय छे. आ बालकने काकोल्यादि गणनां द्रव्योनो कल्क

जुवो.

नाखीने पकावेलुं घी पीवामां तथा अभ्यंगमां योजवुं अने टाढा पाणीनी अंजलियो छांटीने ते बालकने चमकाववुं ए हितकारी थाय छे.

३५ वातेनाध्मापितां नाभिं सरुजां तुंडिसंज्ञिताम् मारुतघ्नैः प्रशमयेत् स्नेहस्वेदोपनाहनैः ।

बालकनी नाभि फूली जाय तो तेनी निदानपूर्वक चिकित्सा.

३९ वायुना प्रकोपने लीधे बालकनी नाभि फूली जाय छे अने दुःखवा लागे छे के जेने आचार्योए 'तुंडि' नाम आपेलुं छे. ए नाभिनी वायुने हणनारां स्नेहनोथी, स्वेदनोथी तथा बंधारणोथी चिकित्सा करवी.

३६ गुदपाके तु बालानां पित्तघ्नीं कारयेत्क्रियाम् रसाञ्जनं विशेषेण पानालेपनयोर्हितम् ॥

बालकनी गुदा पाकी जाय तो तेनी चिकित्सा.

३६ बालकनी गुदा पाकी गई होय तो पित्तने हणनारी चिकित्सा करवी. आ रोग उपर रसवंती पावी अने रसवंती चोपडवी ए विशेषे करी हितकारी छे.

३७ क्षीराहाराय सर्पिः पाययेत् सिद्धार्थकवचामांसीपयस्यापामार्गशतावरीसारिवाब्राह्मीपिप्पलीहरिद्राकुष्ठसैन्धवसिद्धं क्षीरान्नादाय मधुकवचापिप्पलीचित्रकत्रिफलासिद्धमन्नादाय द्विपञ्चमूलीक्षीरतगरभद्रदारुमरिचमधुविडङ्गद्राक्षाद्विब्राह्मीसिद्धम् । तेनारोग्यबलमेधायूंषि शिशोर्भवन्ति ॥

बालकने स्वस्थपणामां पण सात्म्य होवाने लीधे घीज औषधरूप छे.

३७ दूधनो आहार करनारा एटले एक वर्ष सूधीनी उमरना बालकने सर्षप, वज, जटामांसी, खरणेर, अघेडो, शतावरी, कपूरी, ब्राह्मी, पीपळ, हळदर, कठ अने सैंधव एओनो कल्क दूधमां नाखीने ते दूधमां पकावेलुं घी पावुं. दूधनो तथा अन्ननो आहार करनारा एटले बे वर्ष सुधीनी उमरना बालकने जेठीमध, वज, पीपळ, चित्रक अने त्रिफला एओनो कल्क नाखीने दूधमां पकावेलुं घी पावुं. अन्ननो आहार करनारा एटले बे वर्षथी अधिक उमरना बालकने दशमूळ, क्षीरतगर, देवदार, मरी, जेठीमध, वावडींग, द्राक्ष अने बे जातनी ब्राह्मी एओनो कल्क नाखीने दूधमां पकावेलुं घी पावुं. आ प्रमाणे करवाथी बालकने आरोग्य, बळ, बुद्धि अने आयुष्य एओ प्राप्त थाय छे.

३८ बालं पुनर्गात्रसुखं गृह्णीयान्न चैनं तर्जयेत् सहसा न प्रतिबोधयेद्वित्रासभयात् सहसा नापहरेदुत्क्षिपेद्वा वातादिविघातभयान्नोपवेशयेत् कौब्ज्यभयान्नित्यं चैनमनुवर्तेत प्रियशतैरजिघांसुः ॥

परिजनोए बालकनी केवी रीते सेवा करवी ?

३८ बालकने तेडवो होय त्यारे तेनां गात्रोने सुखज रेहे पण कोई रीते स्पर्शादिकथी दुःख उत्पन्न न थाय एवी रीते तेडवो. बालकने चमकी जवानी धास्तीने लीधे कदी पण धमकाववो के तरछोडवो नहीं. वायु वगेरेथी विघात थवानी धास्तीने लीधे कदी पण सहसा जगाडवो नहीं के सहसा खेंची लेवो नहीं. खूंधो थई जवानी धास्तीने लीधे कदी पण बलात्कारथी बेसाडवो नहीं. बालकने कशी हरकत न आववा देवानी इच्छा राखीने सर्वदा रमकडां देवा वगेरे सैकडो प्रिय आचरणोथी तेना मनने राजीज राखवुं.

३९ एवमनभिहतमनास्त्वभिवर्द्धते नित्यमुदग्रसत्वसम्पन्नो नीरोगः सुप्रसन्नमनाश्च भवति ॥

बालकनी सारी रीते सेवा करवाथी लाभ.

३९ ए प्रमाणे परिजन जो बालकनी सारी रीते सेवा करे तो तेथी बालक मनमां कोई जातनो प्रतिघात नहीं पामतां निरंतर वृद्धि पामेछे

अने उंचा सत्वथी संपन्न, रोगोथी रहित तथा सुप्रसन्न मनवाळो थाय छे.

४० वातातपविद्युत्प्रभापादपलताशून्यागारनिम्नस्थानगृहच्छायादिभ्यो दुर्ग्रहोपसर्गतश्च बालं रक्षेत् ॥

नाशुचौ विसृजेद्बालं नाकाशे विषमे न च ।
नोष्ममारुतवर्षेषु रजोधूमोदकेषु च ॥

वायु तथा तडको इत्यादिकथी बालकनुं रक्षण करवुं.

४० पवन, तडको, वीजळीनी प्रभा, झाड, लता, उजड घर, ऊंडुं स्थानक तथा घरनी छाया एओथी अने पूतना आदि दुष्ट बालग्रहोना उपसर्गथी बालकनुं रक्षण करवुं. अपवित्र प्रदेशमां, खुल्ला प्रदेशमां, नीचा ऊंचा प्रदेशमां, गरमीवाळा प्रदेशमां, पवनवाळा प्रदेशमां, वरसादवाळा प्रदेशमां, रजवाळा प्रदेशमां, धूमाडावाळा प्रदेशमां के जळवाळा प्रदेशमां बालकने मूकवो नहीं.

४१ क्षीरसात्म्यतया क्षीरमाजं गव्यमथापि वा ।
दद्यादास्तन्यपर्याप्तेर्बालानां वीक्ष्य मात्रया ॥

बालकने धावण ओछुं मळतुं होय के तमाम मळतुं न होय तो शुं करवुं ?

४१ बालकोने दूध सात्म्य छे एटला माटे जेटलुं धावण ओछुं रेहेतुं होय तेनी मात्रानो विचार करीने तेटलीज मात्राथी बकरीनुं अथवा गायनुं दूध पावुं.

४२ षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेल्लघु हितं च ॥

बालकने अन्न क्यारे देवुं ?

४२ बालक छ महीनानो थाय त्यारे तेने हलकुं तथा हितकारी अन्न खवराववुं.

४३ नित्यमवरोधरतश्च स्यात् कृतरक्ष उपसर्गभयात् । प्रयत्नतश्च ग्रहोपसर्गेभ्यो रक्ष्या बाला भवन्ति ॥

बालकने घणुं करीने जनानामांज राखवानी अने ते बालकनुं बालग्रहोथी रक्षण करवानी जरूर.

४३ बालकने घणुं करीने हमेश अंतःपुरमांज (ज्यां स्त्रीओ रेहेती होय ते स्थलमांज) राखवो अने बालग्रहोना उपसर्गनी धास्तीने लीधे तेना रक्षणनो शास्त्रोक्तविधि हमेशां कर्या करवो. बालग्रहोना उपसर्गोथी बालकोनुं प्रयत्नपूर्वक रक्षण करवानी जरूर छे.

४४ अथ कुमार उद्विजते त्रस्यति रोदिति नष्टसंज्ञो भवति नखदशनैर्धात्रीमात्मानं च परिणुदति दन्तान् खादति कूजति जृम्भते भ्रुवौ विक्षिपत्यूर्ध्वं निरीक्षते फेनमुद्वमति सन्दष्टौष्ठः क्रूरो भिन्नामवर्चा दीनार्तस्वरो निशि जागर्त्ति दुर्बलो म्लानाङ्गो मत्स्यछुच्छुन्दरीमत्कुणगन्धो यथा पुरा धात्र्याः स्तन्यमभिलषति तथा नाभिलषतीति सामान्येन ग्रहोपसृष्टलक्षणमुक्तं विस्तरेणोत्तरे वक्ष्यामः

बालकने बालग्रहोनो उपसर्ग लागू पड्यांनां लक्षणो.

४४ जो बालक चमकीजाय, त्रास पामे, रोया करे, मूर्छित थई जाय, नखोथी के दांतोथी पोताना शरीरने के धवरावनारीना शरीरने वींखरडा के बटकां भरे, दांतोने करडे, घुघव्या करे, बगासां खाधा करे, भमरोना चाळा करे, ऊंचुं जोया करे, मोहोडामांथी फीण काहाड्या करे, होठ डस्या करे, क्रूर थई जाय, पातळा तथा काचा झाडावाळो थई जाय, दीन तथा पीडित स्वरवाळो थई जाय, रातनो जाग्या करे, दुर्बळ थई जाय, अंगोमां ग्लानिवाळो थई जाय, माछलाना जेवा छछुंदरना जेवा के मांकडना जेवा गंधवाळो थई जाय अने धवरावनारीना धावणपर प्रथमना जेवी इच्छा करे नहीं तो जाणवुं के बालकने बालग्रहनो वळगाड लागू पड्योछे.

आ बालग्रहना वळगाडनुं सामान्य लक्षण कह्युं छे. विस्तारथी तो उत्तरतंत्रमांना कौमारभृत्यतंत्रमां केहेवामां आवशे.

४५ शक्तिमन्तं चैनं ज्ञात्वा यथावर्णं विद्यां ग्राहयेत् ।

विद्याभ्यास क्यारे करावको अने कया वर्णना बालकने मुख्यत्वे करी कई विद्यानो अभ्यास करावको.

४५ ज्यारे बालक विद्यानुं संपादन करवाना परिश्रमनुं सहन करी शके एवो थएलो जोवामां आवे त्यारे तेने विद्यानो अभ्यास करावको. ब्राह्मण वर्णना बालकने मुख्यत्वे करी वेदविद्यानो, क्षत्रिय वर्णना बालकने मुख्यत्वे करी राजनीतिसंबंधी विद्यानो, वैश्य वर्णना बालकने मुख्यत्वे करी व्यापारसंबंधी विद्यानो अने शूद्रवर्णना बालकने सेवाधर्म संबंधी तथा कारीगरी वगेरे संबंधी विद्यानो अभ्यास करावको.

४६ अथास्मै पञ्चविंशतिवर्षाय द्वादशवर्षां पत्नीमावहेत् पित्र्यधर्मार्थकामप्रजाः प्राप्स्यतीति

पुत्रनुं योग्य कन्यानी साथे लग्न क्यारे करवुं अने ते कन्या केटली उमरनी जोईए ?

४६ पुत्र बराबर विद्याभ्यास करीने पचीश वर्षनो थाय त्यारे तेनुं बार वर्षनी योग्य कन्यानी साथे लग्न करवुं. बाललग्न नहीं करतां आप्रमाणे लग्न करवाथी पुत्र पितानी मिल्कत संभाळवाने, धर्मक्रियाओ करवाने, नवा धननुं संपादन करवाने, शारीर सुखो मेळववाने अने उत्तम संतानो उत्पन्न करवाने शक्तिमान् थाय छे.

४७ ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पञ्चविंशतिम् ।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ॥
जातो वा न चिरं जीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ।
तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानं न कारयेत् ॥

लग्न कन्या पछी पण तुरत समागम नहीं करतां स्त्री ज्यारे सोळ वर्षनी थाय त्यारेज समागम करवो तथा पचीश वर्षथी ओछी उमरवाळाए स्त्रीनो समागम नहींज करवो अने ते जो करवामां आवे तो प्रजानी सृष्टिमां नुकसान.

४७ पचीश वर्षनी उमरने नहीं प्राप्त थएलो पुरुष, जेनी उम्मर सोळ वर्षथी कमती होय एवी स्त्रीमां गर्भनुं आधान करे तो ते गर्भ पेटमांज मरी जाय छे, कदाच जन्मे तो पण लांबा समय सुधी जीवतो नथी अने कदाच जीवे तो पण नबळी इंद्रियोवाळो रेहेछे. आम छे एटला माटे पचीश वर्षनी उमरने नहीं पोहोचेला पुरुषे सोळ वर्षनी उमरने नहीं पोहोचेली स्त्री के जे अत्यंत बालाज होय छे तेमां गर्भाधान करवुं नहीं अने तेओनां वडीलोए ते करवा देवुं नहीं.

४८ वृद्धायां दीर्घरोगिण्यामन्येन वा विकारेणोपसृष्टायां गर्भाधानं नैव कुर्वीत । पुरुषस्याप्येवंविधस्य त एव दोषाः सम्भवन्ति ॥

अतिवृद्ध, लांबा रोगवाळी के बीजा कोई विकारवाळी स्त्रीमां गर्भाधान करवुं नहीं, तेवा पुरुषे पण गर्भाधान करवुं नहीं अने जो करवामां आवे तो तेथी नुकसान.

४८ जे स्त्री वृद्ध होय अथवा लांबा काळना रोगवाळी होय अथवा बीजा कोई विकारथी युक्त होय ते स्त्रीमां गर्भाधान नहींज करवुं. तेमज जे पुरुष वृद्ध होय, लांबा काळना रोगवाळो होय के बीजा कोई विकारथी युक्त होय तेणे पण स्त्री सर्व प्रकारे योग्य छतां पण गर्भाधान करवुं नहीं. अयोग्य स्त्रीमां के अयोग्य पुरुषथी गर्भाधान थाय तो पण प्रजानी सृष्टिमां उपरना ४७ मा विषयमां कह्या प्रमाणेज दोषो थाय छे.

४९ तत्र पूर्वोक्तैः कारणैः पतिष्यति गर्भे गर्भाशयकटीवङ्क्षणबस्तिशूलानि रक्तदर्शनं च । तत्र शीतैः परिषेकावगाहप्रदेहादिभिरुपचरेज्जीवनीयशृतक्षीरपानैश्च ॥

गर्भस्रावनां तथा गर्भपातनां पूर्वरूपो अने गर्भस्रावनी चिकित्सा.

४९ आ अध्यायना बीजा विषयमां जणावेलां मलिनस्पर्शादिक कारणोथी गर्भ स्रववानो के पडवानो थाय त्यारे गर्भाशयमां, कमरमां, साथळोनां मूळोमां तथा मूत्राशयमां शूळो उत्पन्न थायछे अने योनिमांथी लोही पडतुं जोवामां आवे छे.

आ प्रमाणे बने त्यारे वैद्ये शीतल परिषेको करवारूप, शीतल जलमां स्नानो कराववारूप, शीतळ लेपनादिक कराववारूप, तथा काकोल्यादि गणना कल्कथी पकावेलां दूधो पावारूप चिकित्सा करवी.

५० गर्भस्फुरणे मुहुर्मुहुस्तत्सन्धारणार्थं क्षीरमुत्पलादिसिद्धं पाययेत् ॥

गर्भनुं वारंवार स्फुरण (फरकवुं) थतुं होय तो तेनी चिकित्सा.

५० जो गर्भ वारंवार फरक्या करतो होय तो ते गर्भनी स्थिरता करवानेमाटे वैद्ये गर्भिणीने उत्पलादि गणना कल्कथी पकावेलुं दूध पावुं.

५१ प्रस्रंसमाने सदाहपार्श्वपृष्ठशूलासृग्दरानाहमूत्रसङ्गाः स्थानात् स्थानं चोपक्रामति गर्भे कोष्ठे संरम्भः ।

तत्र स्निग्धशीताः क्रियाः । वेदनायां महासहाक्षुद्रसहामधुकश्वदंष्ट्राकण्टकारिकासिद्धं पयः शर्कराक्षौद्रमिश्रं पाययेत् । मूत्रसङ्गे दर्भादिसिद्धम् । आनाहे हिङ्गुसौवर्चललशुनवचासिद्धम् । अत्यर्थं स्रवति रक्ते कोष्ठागारिकागारमृत्पिण्डसमङ्गाधातकीकुसुमनवमालिकागैरिकसर्जरसरसाञ्जनचूर्णं मधुनावलिह्याद्यथालाभं न्यग्रोधादित्वक्प्रवालकल्कं वा पयसा पाययेदुत्पलादिकल्कं वा कशेरुशृङ्गाटकशालूककल्कं वा शृतेन पयसोदुम्बरफलौदककन्दकाथेन वा शर्करामधुमधुरेण शालिपिष्टं न्यग्रोधादिस्वरसपरिपीतं वा वस्त्रावयवं योन्यां धारयेत् । अथादृष्टशोणितवेदनायां मधुकदेवदारुपयस्यासिद्धं पयः पाययेत् तदेवाश्मन्तकशतावरीपयस्यासिद्धं विदारिगन्धादिसिद्धं वा बृहतीद्वयोत्पलशतावरीसारिवापयस्यामधुकसिद्धं वा एवं क्षिप्रमुपक्रान्ताया उपावर्तन्ते रुजो गर्भश्चाप्यायते ।

व्यवस्थिते च गर्भे गव्येनोदुम्बरशलाटुसिद्धेन पयसा भोजयेत् ॥

गर्भपातना तथा गर्भ एक स्थानमांथी बीजा स्थानमां जाय तना उपद्रवो अने तेओनी चिकित्सा.

५१ गर्भ पडवा लागे त्यारे पडखांओमां तथा पीठमां दाहसहित शूल नीकळे छे, लोहीनो अत्यंत स्राव थाय छे, मलबंध थाय छे अने मूत्रनी अटकायत थाय छे. गर्भ एक स्थानमांथी बीजा स्थानमां जतां आमाशयमां तथा पक्वाशयमां क्षोभ थाय छे अने उपर कहेला उपद्रवो पण थाय छे.

आ प्रमाणे थाय त्यारे स्निग्ध तथा शीतल क्रियाओ करवी. वेदनाने टाळवा माटे जंगली अडदना छोड, जंगली मगना छोड, जेठीमध, गोखरू अने भोरींगणी एओना कल्कथी पकावेला दूधमां साकर तथा मध नाखीने ते दूध पावुं. मूत्रनी अटकायतने टाळवा माटे तृणपंचमूल गणना कल्कथी पकावेला दूधमां साकर तथा मध. नाखीने ते दूध पावुं. मलबंधने शांत करवा माटे हींग, संचळ, लसण तथा वज एओना कल्कथी पकावेलुं दूध पावुं. रुधिरनो अत्यंत स्राव अर्थात् प्रदर थयो होय तो तेने शांत करवा माटे भमरीना दरनी माटीनो पींडो, रीसामणी, धावणीनां फूल, मोगरी, (डोलर)

सोनागेरू, राळ तथा रसवंती एओमांथी जेटला मळी आवे तेटला पदार्थोनुं चूर्ण करी मधमां कालवीने चटाडवुं अथवा न्यग्रोधादि गणनी छाल तथा कुंपळीआं एओनो कल्क करी दूधमां घोळीने पावो अथवा उत्पलादि गणनो कल्क करी गरम करेलां दूधनी साथे पावो अथवा कसेरुकंद, शीगोडां तथा कमळनो कंद एओनो कल्क करी गरम करेला दूधनी साथे पावो अथवा ऊंबरानां फळोनो तथा जळमां थता कमळ वगेरे पदार्थोना कंदोनो क्वाथ करी तेने साकरथी तथा मधथी मधुर करी ते क्वाथनी साथे चोखानो लोट पावो अथवा वस्त्रना टुकडाने न्यग्रोधादि गणना स्वरसथी खूब पलाळीने ते कटको योनिनी अंदर रखाववो. लोही देखाया वगरनी वेदना थती होय तो तेने शांत करवा माटे जेठीमध, देवदार तथा खरणेर एओना कल्कथी पकावेलुं दूध पावुं अथवा आसोंदरो, शतावरी तथा खरणेर एओना कल्कथी पकावेलुं दूध पावुं अथवा विदारीगंधादि गणना कल्कथी पकावेलुं दूध पावुं अथवा ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, कमळ, शतावरी, कपूरी, खरणेर तथा जेठीमध एओना कल्कथी पकावेलुं दूध[1] पावुं. आ प्रमाणे तुरतज चिकित्सा करवामां आवे तो तेथी वेदनाओ शांत थाय छे अने रुधिरना स्रावथी कर्षण पामेलो गर्भ पण पाछो बृंहण पामेलो थाय छे.

गर्भ स्थिर थया पछी गर्भिणीने उंबरानां कोमळ फळोना कल्कथी पकावेला दूधनी साथे हलकुं अन्न जमाडवुं.

५२ अतीते लवणस्नेहवर्जाभिर्यवागूभिरुद्दालकादीनां पाचनीयोपसंस्कृताभिरुपक्रमेत यावन्तो मासा गर्भस्य तावन्त्यहानि । बस्त्युदरशूलेषु पुराणगुडं दीपनीयसंयुक्तं पाययेदरिष्टं वा ॥

गर्भनो पात थई जाय तो ते पछी करवानी चिकित्सा.

५२ गर्भ पडी जाय तो लंघन करावी, लूण तथा घी नाख्या वगरनी जंगली कोदरा वगेरेनी राबो करी ते राबोने पाचन करनारा पदार्थोथी संस्कार आपीने पावी. आ चिकित्सा, जेटला महिनानो गर्भ पड्यो होय तेटला दिवसो सुधी करवी. मूत्राशयमां के पेटमां शूळ नीकळतां होय तो पंचकोल-(पीपळ, पीपळीमूल, चवक, चित्रक अने सुंठ) थी संयुक्त करेलो जूनो गोळ पावो अथवा अभयारिष्टादिक अरिष्ट पावुं.

५३ वातोपद्रवगृहीतत्वात् स्रोतसां लीयते गर्भः सोऽतिकालमवतिष्ठमानो व्यापद्यते तां मृदुना स्नेहादिक्रमेणोपचरेत् । उत्क्रोशरससंसिद्धामनल्पस्नेहां यवागूं पाययेत् । माषतिलबिल्वशलाटुसिद्धान् वा कुल्माषान् भक्षयेन्मधु माध्वीकं चानुपिबेत् सप्तरात्रम् । कालातीतस्थायिनि गर्भे विशेषतः सधान्यमुदूखलं मुसलेनाभिहन्याद्विषमे वा यानासने सेवेत ॥

लीन गर्भनां निदान, लक्षण तथा चिकित्सा.

५३ स्रोतो वायुना उपद्रवोथी पकडाई जवाने लीधे गर्भ लीन थाय छे (संकोच पामे छे) अने ते लांबा काळ सुधी पेटमां रेहेतां फरकतो पण नथी. आ प्रमाणे थयुं होय तो गर्भिणीनी तीक्ष्णता वगरना स्नेहन आदि कोमळ उपचारोरूप चिकित्सा करवी अने टींटोडाना मांसना रसथी पकावेली घणा घीवाळी यवागू पावी अथवा सात रात सुधी अडद, तल, तथा बीलीनां कांचां फळ एओथी सिद्ध करेली घुघरी खवराववी अने ते

[1] औषधना कल्कथी आठ गणुं दूध अने दूधथी चोगणुं पाणी नाखीने पकावतां पाणी तमाम बळी जईने दूधज अवशेष रहे ए पकावेलुं दूध केहेवाय छे.

उपर मध तथा मद्य पावुं. प्रसवनो काळ वीती गया छतां पण गर्भ पेटमां रेहे तो विशेषे करी एम पण करवुं के खांडणीयामां धान्य नखावीने गर्भिणीना हाथथी सांबेलां वते ते धान्य खंडाववुं अथवा गर्भिणीने विषम वाहननुं तथा विषम आसननुं सेवन कराववुं.

५४ वाताभिपन्न एव शुष्यति गर्भः स मातुः कुक्षिं न पूरयति मन्दं स्पन्दते च तं बृंहणीयैः पयोभिर्मांसरसैश्चोपचरेत् ॥

गर्भ वायुथी पेटमांज सूकाय तो तेनां (उपविष्टकनां) लक्षण तथा चिकित्सा.

५४ वखतपर गर्भ वायुथी क्लिष्ट थईने पेटमांज सूकाय छे. ए गर्भ गर्भिणीना उदरने मोटुं करतो नथी अने मंद मंद चलित थया करे छे. आ प्रमाणे थयुं होय तो वैद्ये धातुओनुं बृंहण (पोषण तथा वृद्धि) करनारा पदार्थो नाखीने पकावेलां दूधोथी तथा मांसना रसोथी उपचार करवा.

५५ शुक्रशोणितं वायुनाभिप्रपन्नमवक्रान्तजीवमाध्मापयत्युदरं तत्कदाचिद्यदृच्छयोपशान्तं नैगमेषापहृतमिति भाषन्ते । तमेव कदाचित् प्रलीयमानं नागोदरमित्याहुस्तत्रापि लीनवत् प्रतीकारः ॥

पेट गर्भथी वृद्धि पाम्या पछी नाहानुं थई जवा लागे तो तेनी निदानपूर्वक चिकित्सा.

५५ वखतपर वायुथी क्लिष्ट थवाने लीधे जेमां अंगो उत्पन्न न थयां होय एवो वीर्यनो अने रजनो संघात जीवसहित रहेतां वायु पेटने मोटुं करी देछे. ए मोटुं थएलुं पेट कोई वखते यदृच्छाथी उपशांत थई जाय तो ते जोईने लोको केहेछे के 'आ गर्भने नैगमेष नामना बालग्रहे हरी लीधो.' गर्भ जो कोई वखते वायुथी क्लिष्ट थवाने लीधे संकोच पामतां पेट नाहानुं थई जवा लागे तो लोको तेने **नागोदर** केहे छे.

आ नागोदर होय तो पण उपर आपेला ५३ मा विषयमां कह्या प्रमाणे चिकित्सा करवी.

**५६ अत ऊर्ध्वं मासानुमासिकं वक्ष्यामः ।
मधुकं शाकबीजं च पयस्या सुरदारु च ॥
अश्मन्तकस्तिलाः कृष्णास्ताम्रवल्ली शतावरी ।
वृक्षादनी पयस्या च लता चोत्पलसारिवा ॥
अनन्ता सारिवा रास्ना पद्मा मधुकमेव च ।
बृहत्यौ काश्मरी चापि क्षीरिशुङ्गास्त्वचो घृतम् ॥
पृश्निपर्णी बला शिग्रुः श्वदंष्ट्रा मधुपर्णिका ।
शृङ्गाटकं बिसं द्राक्षा कशेरु मधुकं सिता ॥
वत्सैते सप्त योगाः स्युरर्धश्लोकसमापनाः ।
यथासङ्ख्यं प्रयोक्तव्या गर्भस्रावे पयोयुताः ॥
कपित्थबृहतीबिल्वपटोलेक्षुनिदिग्धिकाः ।
मूलानि क्षीरसिद्धानि पाययेद्भिषगष्टमे ॥
नवमे मधुकानन्तापयस्यासारिवाः पिबेत् ।
क्षीरं शुण्ठीपयस्याभ्यां सिद्धं स्याद्दशमे हितम् ॥
सक्षीरा वा हिता शुण्ठी मधुकं सुरदारु च ।
एवमाप्यायते गर्भस्तीव्रा रुक् चोपशाम्यति ॥**

गर्भिणी स्त्रीने गर्भस्रावादिकना अटकावमाटे महिने महिने करवाना जूदा जूदा उपचारो.

५६ पेहेले महीने जेठीमध, सागनां बीज, खरणेर अने देवदार एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो. (भावप्रकाशमां खरणेरने बदले आसोंद कही छे.)

बीजे महिने आसोंदरो, काळा तल, मजीठ अने शतावरी एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

त्रीजे महिने बांदो (अपरवृक्ष), खरणेर, घउलां अने धोळी उपलसरी (धोळी कपूरी) एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

चोथे महिने धोळी उपलसरी, काली उपलसरी, रास्ना, भारंगी अने जेठीमध एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

पांचमे महिने ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, सीवण, वड आदि पांच क्षीरीवृक्षोनी नहीं उघडेली टीसीओ, एज वृक्षोनी छालो अने घी एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

छठ्ठे महिने पृश्निपर्णी, बळदाणा, सरगवो, गोखरू अने जेठीमध अथवा सीवण एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

सातमे महिने शीगोडुं, कमळनां मूळ, द्राक्ष, कसेरुकंद, जेठीमध अने साकर एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

हे पुत्र सुश्रुत ! आ प्रमाणे करवाथी गर्भनो स्राव के पात थतो नथी.

आठमे महिने वैद्ये कोठ, ऊभी भोरींगणी, बीली, पटोल, शलडी अने बेठी भोरींगणी एओनां मूळोनो एक तोलां भार कल्क बत्रीश पल (चार तोलानुं एक पल थाय छे.) भार जळथी मिश्रित करेला आठ पल भार दूधमां नाखी ते दूधने उकाळी सघळुं जळ बळी जईने केवळ दूध अवशेष रहे त्यारे ते दूध गर्भिणीने पावुं.

नवमे महिने जेठीमध, धोळी उपलसरी, खरणेर अने काळी उपलसरी एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

दशमे महिने सूंठ अने खरणेर एओनो एक तोलां भार कल्क बत्रीश पल भार जळथी मिश्रित करेला आठ पल भार दूधमां नाखी ते दूधने उकाळी सघळुं जळ बळी जईने केवळ दूध अवशेष रहे त्यारे ते दूध गर्भिणीने पावुं अथवा सूंठ, जेठीमध अने देवदार एओनो एक तोलां भार कल्क दूधमां घोळीने पावो.

आम करवाथी गर्भ बृंहण पामे छे अने गर्भसंबंधी तीव्र वेदना पण शांत थई जाय छे.

५७ निवृत्तप्रसवायास्तु पुनः षड्भ्यो वर्षेभ्य ऊर्ध्वं प्रसवमानाया नार्याः कुमारोऽल्पायुर्भवति ॥

प्रसव थया पछी छ वर्षे जेने बीजो प्रसव थाय ते स्त्रीनुं छोकरूं अल्प आयुष्यवाळुं थाय छे.

५७ एक गर्भनो जन्म थया पछी छ वर्षनी अंदर जेने बीजो गर्भ न रहे ते स्त्री निवृत्त प्रसवा एटले जणी रहेली (जेने फरीवार जणवुं रह्युं नथी एवी) केहेवाय छे. ए स्त्री जो छ वर्ष पछी पाछुं जणे तो तेनुं छोकरूं योनिना अने गर्भाशयना दोषने लीधे अल्प आयुष्यवाळुं थाय छे. (वचमां घणी मुदत सुधी गर्भ नहीं रेहेवाथी योनि अने गर्भाशय दुष्ट थई जाय छे. एओनुं योग्य चिकित्साथी शोधन थया विना जो केवळ आहारादिकना गुणथीज बीजो गर्भ रहे तो ते गर्भथी जन्मेला बालकनुं आयुष्य अल्प थाय छे.)

५८ अथ गर्भिण्याः व्याध्युत्पत्तावत्यये छर्दयेन्मधुराम्लेनान्नोपहितेनानुलोमयेच्च संशमनीयं च मृदु विदध्यादन्नपानयोरश्नीयाच्च मृदु वीर्यं मधुरप्रायं गर्भाविरुद्धं च गर्भाविरुद्धाश्च क्रिया यथायोगं विदधीत मृदुप्रायाः ॥

गर्भिणीने वमन आदि क्रियानो जे निषेध छे तेनो प्रतिप्रसव.

५८ जेथी मरण थई जाय एवो कोई भयंकर व्याधि गर्भिणीने उत्पन्न थयो होय तो वैद्ये तेने मधुरपणा तथा खाटापणावाळुं अने तीव्रता वगरनुं वमनद्रव्य अन्ननी साथे खवरावी दईने वमन करावबुं, एवी युक्तिथीज विरेचन देवुं अने संशमनीय औषध पण जे मृदु होय तेनोज अन्नपानमां उपयोग कराववो. भोजन पण मृदुवीर्यवाळुं, घणां मधुरद्रव्योवाळुं अने गर्भनुं विरोधी न होय एवुं आपवुं अने बीजी पण जे जे क्रियाओ करवी ते सघळी घणखरा कोमळपणावाळी अने जेओथी गर्भने विरोध न थाय एवी करवी. क्रियाओमां हीनयोग, अतियोग के मिथ्यायोग न थाय एवी संभाळ राखवी.

५९ भवन्ति चात्र ॥

सौवर्णं सुकृतं चूर्णं कुष्ठं मधु घृतं वचा ।
मत्स्याक्षकः शङ्खपुष्पी मधु सर्पिः सकाञ्चनम् ॥
अर्कपुष्पी मधु घृतं चूर्णितं कनकं वचा ।
हेमचूर्णानि कैटर्यः श्वेता दूर्वा घृतं मधु ॥
चत्वारोऽभिहिताः प्राशाः श्लोकार्द्धेषु चतुर्ष्वपि।
कुमाराणां वपुर्मेधाबलबुद्धिविवर्द्धनाः ॥

बालकने शरीरनी, धारणाशक्तिनी, बळनी तथा बुद्धिनी वृद्धि आपवाना उपायो.

५९ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "सारी रीते करेलुं सुवर्णनुं[१] बारीक चूर्ण, कठनुं बारीक चूर्ण, मध, घी अने वजनुं चूर्ण एकठां करीने खवराववामां आवे तो तेथी बालकोनां शरीर, धारणाशक्ति, बळ अने बुद्धि वृद्धि पामे छे.

सारी रीते करेलुं सुवर्णनुं बारीक चूर्ण, ब्राह्मीनुं चूर्ण, शंखावलीनुं चूर्ण, मध अने घी एओने एकठां करीने खवराववामां आवे तो तेथी बालकोनां शरीर, धारणाशक्ति, बळ अने बुद्धि वृद्धि पामे छे.

सारी रीते करेलुं सुवर्णनुं चूर्ण, सूरजमुखीनुं अथवा खरणेरनुं चूर्ण, मध, घी अने वजनुं चूर्ण एओने एकठां करीने खवराववामां आवे तो तेथी बालकोनां शरीर, धारणाशक्ति, बळ अने बुद्धि वृद्धि पामे छे.

सारी रीते करेलुं सुवर्णनुं चूर्ण, कायफळनुं चूर्ण, धोळी दूर्वानुं चूर्ण, घी अने मध एओने एकठां करीने खवराववामां आवे तो तेथी बालकोनां शरीर, धारणाशक्ति, बळ अने बुद्धि वृद्धि पामे छे."

(आ उपायो एक वर्ष सुधी करवा एम केटलाएक केहेछे अने केटलाएक कहेछे के बार वर्ष सुधी कर्या करवा. बालकने औषधनी केटली मात्रा आपवी ए विषयमां जे मतभेदो छे ते आ अध्यायना ३१ मा विषयमां आपेला छे. ए मतभेदो जोईने तेओमांथी जे प्रकार अनुकूल जणाय ते प्रकारने अनुसरीने बालकने मात्रा देवी.)

१ जो के मूलश्लोकोमां सुवर्णनुं चूर्णज कह्युं छे पण मारेला सुवर्णनुं चूर्ण कह्युं नथी तो पण ग्रंथांतरना मत उपरथी सिद्ध थाय के मारेलुं सुवर्ण लेवुं योग्य छे.

इति सौश्रुत आयुर्वेदे शारीरस्थानं समाप्तम् ॥

सुश्रुत-आयुर्वेद.

चिकित्सित स्थान.

मूळ तथा गुजराती भाषांतर.

अध्याय १ लो.

१ अथातो द्विव्रणीयचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'द्विव्रणीय-चिकित्सित' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ द्वौ व्रणौ भवतः शारीर आगन्तुकश्चेति। तयोः शारीरः पवनपित्तकफशोणितसन्निपातनिमित्तः ॥ आगन्तुरपि पुरुषपशुपक्षिव्यालसरीसृपप्रपतनपीडनप्रहाराग्निक्षारविषतीक्ष्णौषधशकलकपालशृङ्गचक्रेषुपरशुशक्तिकुन्ताद्यायुधाभिघातनिमित्तः ॥

व्रणना बे भेद अने ते भेदोनां कारणो.

२ **शारीर** अने **आगंतुक** ए रीते बे प्रकारना व्रणो थाय छे. वायु, पित्त, कफ, रुधिर के तेओनुं मिश्रण एओथी जे व्रण थयो होय ते **शारीर** केहेवाय छे. माणस, पशु, पक्षी, फाडीखानार जानवरो, सर्प, मघर, पडवुं, दबावुं, प्रहार, अग्नि, क्षार, विष, तीक्ष्ण औषध, काष्ठ वगेरेनो कटको, ठीकरी, शींगडुं, चक्र, बाण, कुहाडो, सांग के भालां वगेरे बीजुं कोई आयुध एओना अभिघातथी जे व्रण थयो होय ते **आगंतुक** केहेवाय छे.

३ तत्र तुल्ये व्रणसामान्ये द्विकारणोत्थानप्रयोजनसामर्थ्याद्विव्रणीय इत्युच्यते ॥

आ अध्यायने 'द्विव्रणीयचिकित्सित' ए नाम आपवानुं कारण.

३ जो के उपर कहेला बन्ने प्रकारना व्रणोमां व्रणपणुं तुल्यज छे तो पण तेओनुं ऊठवुं जूदां जूदां निमित्तोथी थाय छे तेथी तेओनी चिकित्साओमां केटलोक विशेष छे अने आ अध्यायमां बन्ने व्रणने माटे जे सरखी चिकित्सा छे तेज मुख्यत्वे करी कही छे एटला माटे आ अध्याय 'द्विव्रणीयचिकित्सित' केहेवाय छे.

४ सर्वस्मिन्नेवागन्तुव्रणे तत्कालमेव क्षतोष्मणः प्रसृतस्योपशमार्थं पित्तवच्छीतक्रियावचारणविधिविशेषः सन्धानार्थञ्च मधुघृतप्रयोग इत्येतद्विकारणोत्थानप्रयोजनमुत्तरकालं तु दोषोपप्लवविशेषाच्छारीरवत्प्रतीकारः ॥

आगंतुक व्रणमां विशेष चिकित्सानुं दिग्दर्शन.

४ सर्व प्रकारना आगंतुक व्रणना विषयमां जे वखते अभिघातथी क्षत उत्पन्न थाय तेज वखते, फेलाएली क्षतनी गरमीने शांत करवा माटे पित्तनी पेठे शीतल क्रियाओ करवारूप विशेष चिकित्सा करवी उचित छे अने सांधवाने माटे, क्षतनी गरमीने शांत करवामाटे तथा कुपित थ-

१ आगंतुक व्रणनी सात दिवस पछी छेवट सुधीनी अने शारीर व्रणनी आरभथी छेवट सुधीनी जे एकसरखी चिकित्सा छे तेना निरूपण विषेनो. व्रणनां निदानादिक विषे सूत्रस्थानमां घणुं घणुं केहेवाइ गयुं छे.

एला वायुनुं अने रुधिरनुं शमन करवाने माटे मधनो तथा घीनो प्रयोग करवो उचित छे. शारीर व्रणना विषयमां जे वखते व्रण थाय ते वखते ए चिकित्सा करवानी नथी पण जूदी चिकित्सा करवानी छे. आगंतुक व्रणने सात दिवस थई गया पछी तो तेनी चिकित्सा दोषोना प्रसरना विशेषने अनुसरीने शारीर व्रणनी चिकित्सा प्रमाणेज करवी उचित छे.

५ दोषोपप्लवविशेषः पुनः समासतः पञ्चदशप्रकारः प्रसरणसामर्थ्याद्यथोक्तो व्रणप्रश्नाधिकारे । शुद्धत्वात् षोडशप्रकार इत्येके ॥

दोषोना विशेष उपरथी व्रणना पंदर भेद.

५ संक्षेपथी कहीए तो गतिना सामर्थ्यने लीधे दोषोना प्रसरनो विशेष पंदर प्रकारनो छे के जे पंदर प्रकारो आ ग्रंथना सूत्रस्थानना व्रणप्रश्न नामना एकवीशमा अध्यायना १४ मा विषयमां केहेवाई गया छे. ए पंदर प्रकारो उपरथी व्रणना पंदर भेद पण थाय छे. केटलाएक आचार्यो केहेछे के 'जे व्रण दोषोना प्रसरथी रहित थईने तमाम शुद्ध थई गयो होय अर्थात् जेनुं रोपण करवानुंज रह्युं होय तेने सोळमो गणवो एटले व्रणना सोळ भेद थायछे.'

६ तस्य लक्षणं द्विविधं सामान्यं वैशेषिकं च । तत्र सामान्यं रुक् । व्रणगात्रविचूर्णने व्रणयतीति व्रणः । विशेषलक्षणं पुनर्वातादिलिङ्गविशेषः ॥

व्रणनुं सामान्य तथा विशेष लक्षण.

६ व्रणनुं सामान्य अने विशेष ए रीते बे प्रकारनुं लक्षण छे. ए बे लक्षणोमां **पीडा थवी** ए सामान्य लक्षण छे. केमके व्याकरण प्रमाणे गात्रने विचूर्णित बनावी देवारूप अर्थवाळा व्रण धातुमांथी व्रणशब्द सिद्ध थयोछे माटे 'जे विचूर्णनरूप पीडा करे ते व्रण' एवी व्रणशब्दनी व्युत्पत्ति छे. (सूत्रस्थानना २१ मा अध्यायना २० मा विषयमां तो धात्वंतरथी व्युत्पत्ति आपी छे.) व्रणमां वायु आदि दोषोनां जे जूदां जूदां चिह्नो जोवामां आवे ते चिह्नो विशेष लक्षण छे.

७ तत्र श्यावारुणाभस्तनुः शीतपिच्छिलाल्पस्रावी रूक्षश्चटचटायनशीलः स्फुरणायामतोदभेदवेदनाबहुलो निर्मांसश्चेति वातात् ॥

व्रणमां वायुनां चिह्नो.

७ जो व्रण काळी तथा राती कांतिवाळो होय, पातळो होय, टाढा तथा चीकणा अल्प स्राववाळो होय, रूक्ष होय, चटचट थया जेवी घणी वेदना करतो होय, स्फुरणरूप के वारंवार चलित थया जेवी घणी वेदना करतो होय, लांबो करीने तणाया जेवी घणी वेदना करतो होय, भोंकाया जेवी तथा भेदाया जेवी घणी वेदना करतो होय अने मांसवगरनो होय तो ते व्रणने वायुसंबंधी समजवो.

८ क्षिप्रजः पीतनीलाभः किंशुकोदकाभोष्णस्रावी दाहपाकरागविकारी पीतपिडकाजुष्टश्चेति पित्तात् ॥

व्रणमां पित्तनां चिह्नो.

८ जो व्रण तुरतज पेदा थई गयो होय, पीळी तथा आशमानी कांतिवाळो होय, केसूडां (खाखरानां पुष्पो)ना धोणना जेवी कांतिवाळा ऊना स्राववाळो होय, दाह पाक तथा रताशरूपी विकारोवाळो होय अने पीळी फोडलीओवाळो होय तो ते व्रणने पित्तसंबंधी समजवो.

९ प्रततचण्डकण्डूबहुलः स्थूलो घनः स्तब्धशिरास्नायुजालावततः कठिनः पाण्डुभासो मन्दवेदनः शुक्लशीतसान्द्रपिच्छिलास्रावी गुरुश्चेति कफात् ॥

व्रणमां कफनां चिह्नो.

९ जो व्रण लांबी तथा प्रचंड घणी खरजवाळो होय, जाडो होय, घाटो होय, शिराओनां तथा स्नायुओनां कठण जाळांओथी व्याप्त होय, कठण होय, पांडु अवभासवाळो होय, मंद वेदनावाळो होय, सफेद टाढा घाटा तथा चीकणा

स्राववाळो होय अने भारे होय तो ते व्रणने कफ-संबंधी समजवो.

१० प्रवालदलनिचयप्रकाशः कृष्णस्फोटपिडकाजालोपचितस्तुरङ्गस्थानगन्धः सवेदनो धूमायनशीलो रक्तस्रावी पित्तलिङ्गश्चेति रक्तात्॥

व्रणमां रुधिरनां चिह्नो.

१० जो व्रण परवाळांओनां दलोना जेवी कांतिवाळो होय, काळा फोडलाओना तथा काळी फोडलीओना समूहथी व्याप्त होय, तीक्ष्ण क्षारना जेवा गंधवाळो होय, वेदनावाळो होय, जाणे धूमाडा काहाड्या करतो होय एवो होय, राता स्राववाळो होय अने पित्तना प्रसरना जेवां चिह्नोवाळो पण होय तो ते व्रणने रुधिरसंबंधी समजवो.

११ तोददाहधूमायनप्रायः पीतारुणाभासस्तद्वर्णस्रावी चेति वातपित्ताभ्याम् ॥

व्रणमां वायु तथा पित्त ए बन्नेनां चिह्नो.

११ जो व्रण भोकाया जेवी घणी वेदनावाळो होय, घणी बळतरावाळो होय, जाणे बहुज धूंधव्या करतो होय एवो होय, पीळा तथा राता अवभासवाळो होय अने वायु तथा पित्त ए बन्नेने लगता वर्णथी तथा बन्नेने लगता स्रावथी युक्त होय तो ते व्रणने वायु तथा पित्त ए बन्नेसंबंधी समजवो.

१२ कण्डूयनशीलः सनिस्तोदो दारुणो मुहुर्मुहुः शीतपिच्छिलस्रावी चेति वातश्लेष्मभ्याम्

व्रणमां वायु तथा कफ ए बन्नेनां चिह्नो.

१२ जो व्रण खरजथी व्याप्त होय, भोंकाया जेवी व्यथावाळो होय, कठण होय अने वारंवार टाढा तथा चीकणा स्रावने स्रव्या करतो होय तो ते व्रणने वायु तथा कफ ए बन्नेसंबंधी समजवो.

१३ गुरुः सदाह उष्णः पीतः पाण्डुस्रावी चेति पित्तश्लेष्मभ्याम् ॥

व्रणमां पित्त तथा कफ ए बन्नेनां चिह्नो.

१३ जो व्रण भारे होय, बळतरावाळो होय, गरम होय, पीळो होय अने पांडुवर्णवाळा स्रावने स्रवतो होय तो ते व्रणने पित्त तथा कफ ए बन्नेसंबंधी समजवो.

१४ रूक्षस्तनुस्तोदबहुलः सुप्त इव च रक्तारुणाभस्तद्वर्णस्रावी चेति वातशोणिताभ्याम् ॥

व्रणमां वायु तथा रुधिर ए बन्नेनां चिह्नो.

१४ जो व्रण रूक्ष होय, पातळो होय, भोंकाया जेवी पीडाथी बहुज व्याप्त होय, जाणे तेना उपरना स्पर्शनुं ज्ञान नज थतुं होय एवी जडतावाळो होय, राता तथा उगता सूर्यना जेवा अवभासवाळो होय अने वायु तथा रुधिर ए बन्नेने लगता वर्णथी तथा स्रावथी युक्त होय तो ते व्रणने वायु तथा रुधिर ए बन्नेना संबंधवाळो समजवो.

१५ घृतमण्डाभो मीनधावनतोयगन्धिर्मृदुर्विसर्प्युष्णकृष्णस्रावी चेति पित्तशोणिताभ्याम्॥

व्रणमां पित्त तथा रुधिर ए बन्नेनां चिह्नो.

१५ जो व्रण घीनी उपरना आछा भागना जेवा अवभासवाळो होय, माछलांओने धोवाना पाणीना जेवा गंधवाळो होय, कोमळ होय, फेलाया करतो होय अने ऊना तथा काळा स्राववाळो होय तो ते व्रणने पित्त तथा रुधिर ए बन्नेना संबंधवाळो समजवो.

१६ रक्तो गुरुः पिच्छिलः कण्डूप्रायः स्थिरः सरक्तपाण्डुस्रावी चेति श्लेष्मशोणिताभ्याम् ॥

व्रणमां कफ तथा रुधिर ए बन्नेनां चिह्नो.

१६ जो व्रण रातो होय, भारे होय, चीकणो होय, बहु खरजवाळो होय, कठण होय अने रताशथी संयुक्त पांडुवर्णवाळा स्राववाळो होय तो ते व्रणने कफ तथा रुधिर ए बन्नेना संबंधवाळो समजवो.

१७ स्फुरणतोददाहधूमायनप्रायः पीततनुरक्तस्रावी चेति वातपित्तशोणितेभ्यः ॥

व्रणमां वात, पित्त तथा रुधिर ए त्रणेनां चिह्नो.

१७ जो व्रण स्फुरण अथवा चलित थयाना जेवी वेदनाथी बहुयुक्त होय, भोंकायाना जेवी

वेदनाथी बहुयुक्त होय, बळतराथी बहुयुक्त होय, जाणे वारंवार धूमाडा काहाड्या करतो होय एवो होय अने पीळा, पातळा तथा राता स्रावबाळो होय तो तेने वायु, पित्त अने रुधिर ए त्रणेना संबंधवाळो समजवो.

१८ कण्डूस्फुरणचुमचुमायनप्रायः पाण्डुघनरक्तास्रावी चेति वातश्लेष्मशोणितेभ्यः ॥

व्रणमां वायु, कफ तथा रुधिर एओनां चिह्नो.

१८ जो व्रण खरजथी तथा स्फुरणथी अथवा वारंवार चलित थयाना जेवी वेदनाथी अत्यंत युक्त होय, राईना के सर्षपना कल्कथी खरडाएलाना जेवा चमचमाटथी अत्यंत युक्त होय अने पांडु, घाटा तथा राता स्राववाळो होय तो तेने वायु, कफ तथा रुधिर ए त्रणेना संबंधवाळो समजवो.

१९ दाहपाकरागकण्डूप्रायः पाण्डुघनरक्तास्रावी चेति श्लेष्मपित्तशोणितेभ्यः ॥

व्रणमां कफ, पित्त तथा रुधिर ए त्रणेनां चिह्नो.

१९ जो व्रण घणा दाहवाळो होय, घणा पाकवाळो होय, घणी रताशवाळो होय, घणी खरजवाळो होय अने पांडु घाटा तथा राता स्राववाळो होय तो ते व्रणने कफ, पित्त तथा रुधिर ए त्रणेना संबंधवाळो समजवो.

२० त्रिविधवर्णवेदनास्रावविशेषोपेतः पवनपित्तकफेभ्यः ॥

व्रणमां वायु, पित्त तथा कफ ए त्रणेनां चिह्नो.

२० जो व्रण त्रणे दोषोने लगता वर्णोथी, त्रणे दोषोने लगती वेदनाओथी अने त्रणे दोषोने लगता स्रावोथी युक्त होय तो ते व्रणने वायु, पित्त तथा कफ ए त्रणेना संबंधवाळो समजवो.

२१ निर्दहननिर्मथनस्फुरणतोददाहपाकरागकण्डूस्वापबहुलो नानावर्णवेदनास्रावविशेषोपेतः पवनपित्तकफशोणितेभ्यः ॥

व्रणमां वायु, पित्त, कफ तथा रुधिर ए चारेनां चिह्नो.

२१ जो व्रणमां बळीने भस्म थई जवा जेवी, मथी नखाता जेवी, स्फुरणरूप अथवा वारंवार चलायमान थवा जेवी तथा वारंवार भोंकाया जेवी व्यथा घणी थती होय, बळतरा घणी होय, पाक अत्यंत होय, रताश तथा खरज अत्यंत होय, वर्णो अनेक प्रकारना होय अने वेदनाओ तथा स्रावो पण अनेक प्रकारना होय तो ते व्रणने वायु, पित्त, कफ तथा रुधिर ए चारेना संबंधवाळो समजवो.

२२ जिह्वातलाभो मृदुः स्निग्धः श्लक्ष्णो विगतवेदनः सुव्यवस्थितो निरास्रावश्चेति शुद्धो व्रण इति ॥

शुद्ध व्रणनां चिह्नो.

२२ जो व्रण जीभनां तळां जेवो कोमळ स्निग्ध तथा लासो थई गयो होय, वेदना वगरनो थयो होय, सारा आकारवाळो बनी गयो होय अने स्राववगरनो थई गयो होय तो ते व्रणने शुद्ध समजवो.

२३ तस्य व्रणस्य षष्टिरुपक्रमा भवन्ति । तद्यथा । अपतर्पणमालेपः परिषेकोऽभ्यङ्गः स्वेदो विम्लापनमुपनाहः पाचनं विस्रावणं स्नेहो वमनं विरेचनं छेदनं भेदनं दारणं लेखनमेषणमाहरणं व्यधनं स्रावणं सीवनं सन्धानं पीडनं शोणितास्थापनं निर्वापणमुत्कारिका कषायो वर्त्तिः कल्कः सर्पिस्तैलं रसक्रियावचूर्णनं व्रणधूपनमुत्सादनमवसादनं मृदुकर्म दारुणकर्म क्षारकर्माग्निकर्म कृष्णकर्म पाण्डुकर्म प्रतिसारणं रोमसंजननं लोमापहरणं बस्तिकर्मोत्तरबस्तिकर्म बन्धः पत्रदानं कृमिघ्नं बृंहणं विषघ्नं शिरोविरेचनं नस्यं कवलधारणं धूमो मधुसर्पिर्यन्त्रमाहारो रक्षाविधानम् ॥

व्रणनी साठ चिकित्साओनां नामो.

२३ अपतर्पण, आलेप, परिषेक, अभ्यंग, स्वेद, विम्लापन, उपनाह, पाचन, विस्रावण, स्नेह, वमन, विरेचन, छेदन, भेदन, दारण, लेखन, एषण, आहरण, व्यधन, स्रावण, सेवन, संधान, पीडन, शोणितास्थापन, निर्वापण, उत्कारिका, कषाय, वर्त्ति, कल्क, घी, तैल, रसक्रिया, अवचूर्णन, व्रणधूपन, उत्सादन, अवसादन, मृदुकर्म, दारुणकर्म, क्षारकर्म, अग्निकर्म, कृष्णकर्म, पांडुकर्म, प्रतिसारण, रोमसंजनन, लोमापहरण, बस्तिकर्म, उत्तरबस्तिकर्म, बंध, पत्रदान, कृमिघ्न, बृंहण, विषघ्न, शिरोविरेचन, नस्य, कवलधारण, धूम, मधुसर्पि, यंत्र, आहार अने रक्षाविधान ए नामनी व्रणनी साठ चिकित्साओ छे. (आ साठे चिकित्साओनुं निरूपण आ अध्यायना २६ मा विषयथी करवामां आवशे तेथी आ सघळां नामोना गुजराती अर्थो समजवामां आवशे.)

२४ तेषु कषायो वर्त्तिः कल्कः सर्पिस्तैलं रसक्रियावचूर्णनमिति शोधनरोपणानि। तेष्वष्टौ शस्त्रकृत्याः । शोणितास्थापनं क्षारोऽग्निर्यन्त्रमाहारो रक्षाविधानं बन्धाविधानं चोक्तानि ॥ स्नेहस्वेदनवमनविरेचनबस्त्युत्तरबस्तिशिरोविरेचननस्यधूमकवलधारणान्यन्यत्र वक्ष्यामः । यदन्यदवशिष्टमुपक्रमजातं तदिह वक्ष्यते ॥

आ साठ चिकित्साओना निरूपणनी व्यवस्था.

२४ कषाय, वर्त्ति, कल्क, घी, तैल, रसक्रिया अने अवचूर्णन ए सात चिकित्साओ व्रणनुं शोधन करनारी छे अने रोपण करनारी पण छे के जेओ विषे आ ग्रंथना सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां केटलुंक केहेवाई गयुं छे. (शोधन एटले दोषोने टाळवारूप शुद्धि अने रोपण एटले धरती लाववी.) छेदन, भेदन, लेखन, एषण, आहरण, व्यधन, स्रावण अने सेवन ए आठ चिकित्साओ शस्त्रोवते बने छे के जेओ विषे आ ग्रंथना सूत्रस्थानना ८ मा तथा २५ मा अध्यायमां केटलुंक केहेवाई गयुं छे. शोणितास्थापन, क्षारकर्म, अग्निकर्म, यंत्र, आहार, रक्षाविधान अने बंध ए सात चिकित्साओनां निरूपणो पण आ ग्रंथना सूत्रस्थानना शोणितवर्णनीय नामना १४ मा अध्यायमां, क्षारपाकविधि नामना ११ मा अध्यायमां, अग्निकर्मविधि नामना १२ मा अध्यायमां, यंत्रविधि नामना सातमा अध्यायमां, व्रणितोपासनीय नामना १९ मा अध्यायमां, अग्रोपहरणीय नामना ५ मा अध्यायमां अने व्रणालेपनबंधविधि नामना १८ मा अध्यायमां करवामां आवी गएल छे. आप्रमाणे होवाने लीधे उपर लखेली बावीश चिकित्साओनुं निरूपण आ अध्यायमां संक्षेपथी करवामां आवशे. स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, बस्ति, उत्तरबस्ति, शिरोविरेचन, नस्य, धूम, अने कवलधारण ए दश चिकित्साओ आ स्थानना छेल्ला दश अध्यायोमां विस्तारथी केहेवानी छे एटला माटे तेओनुं निरूपण पण आ अध्यायमां संक्षेपथी करवामां आवशे. बाकी जे अठ्यावीश चिकित्साओ रही तेओनुं आ अध्यायमां विस्तारथी निरूपण करीशुं.

२५ षड्विधः प्रागुपदिष्टः शोफस्तस्यैकादशोपक्रमा भवन्त्यपतर्पणादयो विरेचनान्तास्ते च विशेषेण शोथप्रतीकारा वर्त्तन्ते व्रणभावमापन्नस्य च न विरुध्यन्ते शेषास्तु प्रायेण व्रणप्रतीकारहेतव एव ॥

साठ चिकित्साओमां बार चिकित्साओ सोजानी तथा व्रणरूप थएला सोजानी पण छे.अने बाकीनी चिकित्साओ तो घणुं करीने व्रणनीज छे.

२५ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सन्निपातजन्य, रुधिरजन्य अने आगंतुजन्य, ए रीते छ प्रकारनो सोजो प्रथम (सूत्रस्थानना १७ मा

अध्यायमां) केहेवाई गएल छे. उपर कहेली साठ चिकित्साओमां अपतर्पणथी विरेचन सूधीनी बार चिकित्साओ विशेषकरी ए छ प्रकारना सोजाने टाळवानी छे अने पाछळथी व्रणरूप थई गएला सोजानी उपर पण विरुद्ध नथी. बाकीनी अडतालीश चिकित्साओ तो घणुं करीने व्रणने टाळवानीज छे.

२६ अपतर्पणं त्वाद्य उपक्रम एष सर्वशोफानां सामान्यः प्रधानतमश्च ॥
दोषोच्छ्रायोपशान्त्यर्थं दोषानद्धस्य देहिनः ।
अवेक्ष्य दोषं प्राणं च कार्यं स्यादपतर्पणम् ॥
ऊर्ध्वमारुततृष्णाक्षुन्मुखशोषश्रमान्वितैः ।
न कार्यं गर्भिणीवृद्धबालदुर्बलभीरुभिः ॥

अपतर्पण (लंघन) नामनी पेहेली चिकित्सानुं निरूपण.

२६ अपतर्पण (लंघन) कराववुं ए सघळा सोजाओने माटे सर्व अंशोथी संपन्न पेहेली चिकित्सा छे अने रोगनुं तुरत हरण करनारी होवाने लीधे अत्यंत मुख्य छे.

दोषोथी भरपूर थई गएला माणसने दोषोना वधारानी शांतिने माटे ते माणसना दोषने अने बळ वगेरेने जोईने अपतर्पण करावबुं. (वातजन्य सोजामां पण अपतर्पण करावबानो बाध नथी. केमके अपतर्पण विकारने टाळनारूं छे. वात जो साम (आमसहित) होय तो तेमां तो अपतर्पण उचितज छे.)

जेओमां पवन उंचो चालेछे एवा खांसी तथा श्वास वगेरे रोगोथी पीडाएलाओए, तरशथी पीडाएलाओए, भूखथी पीडाएलाओए, जेओना मुखमां शोष पडतो होय तेओए, थाकीगएलाओए, गर्भवती स्त्रीओए, वृद्धोए, बालकोए, नबळाओए अने बीकणोए अपतर्पण करवुं नहीं. (अर्थात् वैद्ये एओने अपतर्पण करावबुं नहीं.)

२७ शोफेषूत्थितमात्रेषु व्रणेषूग्ररुजेषु च ।
यथा स्वैरौषधैर्लेपं प्रत्येकं चैव कारयेत् ॥
यथा प्रज्वलिते वेश्मन्यम्भसा परिषेचनम् ।
क्षिप्रं प्रशमयत्यग्निमेवमालेपनं रुजः ॥
प्रह्लादने शोधने च शोफस्य हरणे तथा ।
उत्सादने रोपणे च लेपः स्यात्तु तदर्थकृत् ॥

आलेप (लेपन) नामनी बीजी चिकित्सानुं निरूपण.

२७ सोजो के उग्र वेदनावाळो व्रण उत्पन्न थाय के तुरतज ते ते दोषोने (जे जे दोषोथी सोजो के व्रण थएल होय ते ते दोषोने) टाळनारां औषधोनो अने तेवां एक एक औषधनो पण लेप करावबो. जेम सळगेला घरनी उपर करवामां आवतुं जळनुं सेचन अग्निने तुरत शांत करेछे, तेम सोजानी के व्रणनी उपर करवामां आवतुं औषधोनुं लेपन वेदनाओने तुरत शांत करे छे. लेपन केवळ पीडाने टाळेछे एटलुंज नहीं परंतु पीडाने टाळीने सुख आपेछे, सोजाने तथा व्रणने शुद्ध करेछे, शुद्ध करीने टाळेछे, ऊंडा व्रणने ऊंचो करेछे अने व्रणमां धरती लावेछे.

२८ वातशोफे तु वेदनोपशमार्थं सर्पिस्तैलधान्याम्लमांसरसवातहरौषधनिःक्वाथैरशीतैः परिषेकान्कुर्वीत ।

पित्तरक्ताभिघातविषनिमित्तेषु क्षीरघृतमधुशर्करोदकेक्षुरसमधुरौषधक्षीरवृक्षनिःक्वाथैरनुष्णैः परिषेकान्कुर्वीत ।

श्लेष्मशोफे तु तैलमूत्रक्षारोदकसुराशुक्तकफघ्नौषधनिःक्वाथैरशीतैः परिषेकान्कुर्वीत ॥
यथाम्बुभिः सिच्यमानः शान्तिमग्निर्नियच्छति ।
दोषाग्निरेवं सहसा परिषेकेण शाम्यति ॥

---

१ जो मुखनो शोष सामदोषथी थयो होय तो तेमां पण लंघन करावबानो बाध नथी.

२ लेपननो प्रयोग सूत्रस्थानना व्रणालेपनबंधविधि नामना १८ मा अध्यायमां जोवो अने लेपननां द्रव्यो सूत्रस्थानना ३६ मा अध्याय वगेरेमां जोई लेवां.

परिषेक (रोग उपर घी वगेरे रेडवा) नामनी त्रीजी चिकित्सानुं निरूपण.

२८ जो सोजो वायुजन्य होय तो वेदनानी शांतिने माटे तेनी उपर ऊना घीथी, ऊना तैलथी, ऊनी कांजीथी, वातहर मांसोना ऊना रसाथी अने वातहर औषधोना ऊना क्काथोथी परिषेको करवा. (ए द्रवो सोजानी उपर रेडवा.)

जो सोजो पित्तथी, रुधिरथी, अभिघातथी के विषथी थएल होय तो वेदनानी शांतिने माटे तेनी उपर टाढा दूधथी, टाढा घीथी, मधथी, साकरना जळथी, शेलडीना रसथी अने काकोल्यादि गणनां मधुर द्रव्योना तथा वड वगेरे पांच क्षीरिवृक्षोना टाढा क्काथोथी परिषेको करवा.

जो सोजो कफथी थएल होय तो वेदनानी शांतिने माटे तेनी उपर ऊना तैलथी, ऊना गोमूत्रथी, क्षार गाळवाना ऊना जळथी, ऊना मद्यथी, ऊना शुक्तथी अने कफने हणनारां औषधोना ऊना क्काथोथी परिषेको करवा. (शुक्तनुं लक्षण सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायना १८७ मा विषयमां जुवो.)

जेम अग्नि जळवते सेचन करवाथी तुरत शांत थई जाय छे तेम दोषरूपी अग्नि परिषेको करवाथी तुरत शांत थई जाय छे.

२९ अभ्यङ्गस्तु दोषमालोक्योपयुक्तो दोषोपशमं मृदुतां च करोति ॥
स्वेदविम्लापनादीनां क्रियाणां प्राक्स उच्यते ।
पश्चात्कर्मसु चादिष्टः स च विस्रावणादिषु ॥

अभ्यंग (घी तथा तेल वगेरे स्नेह पदार्थो लगाववा) नामनी चोथी चिकित्सानुं निरूपण.

२९ दोषने जोईने लगाववामां आवेलो अभ्यंग दोषनी शांतिने करेछे अने सोजानी तथा व्रणनी कोमळताने पण करेछे. (वायुजन्य के कफजन्य सोजो के व्रण होय तो तेनी उपर तैलनो अभ्यंग करवो अने रुधिरजन्य के विषजन्य विगेरे होय तो तेनी उपर सो वार धोएला घीनो अभ्यंग करवो इत्यादि समजी लेवुं).

स्वेद, विम्लापन, उपनाह, पाचन, विस्रावण, वमन अने विरेचन ए क्रियाओ कर्या पेहेलां अभ्यंग करवो अने स्नेहन, वमन तथा विरेचन शिवायनी विस्रावणादिक क्रियाओ कर्या पछी पण अभ्यंग करवो. (परिषेक कर्या पछी पण अभ्यंग करवो.)

३० रुजावतां दारुणानां कठिनानां तथैव च ।
शोफानां स्वेदनं कार्यं ये चाप्येवंविधा व्रणाः ॥

स्वेदन (शेक तथा बाफ देवा) नामनी पांचमी चिकित्सानुं निरूपण.

३० जे सोजाओ के व्रणो वायुसंबंधी के कफसंबंधी वेदनाओवाळा होय, रूक्ष तथा जरठ थई गया होय अने कटण होय तेओनी उपर स्वेदन करवुं.

३१ स्थिराणां रुजतां मन्दं कार्यं विम्लापनं भवेत्
अभ्यज्य स्वेदयित्वा तु वेणुना वा शनैः शनैः ॥
विमर्दयेद्भिषक्प्राज्ञस्तलेनांगुष्ठकेन वा ।

विम्लापन (सोजाने के व्रणने चोळीने करमावी नाखवा) नामनी छठ्ठी चिकित्सानुं निरूपण.

३१ कठण अने मंद वेदनावाळा अर्थात् कफना आधिक्यवाळा अथवा वायुना तथा कफना आधिक्यवाळा सोजाओनुं तथा सोजामांथी थएला व्रणोनुं प्रवीण वैद्य विम्लापन करवुं ते एवी रीते के प्रथम अभ्यंग करी, स्वेदन करीने धीरे धीरे वांसनी नळीथी अथवा हाथना तळाथी के अंगुठाथी ते सोजाने के व्रणने चोळवो के जेथी ते करमाई जाय.

३२ शोफयोरुपनाहं तु कुर्यादामविदग्धयोः ॥
अविदग्धः शमं याति विदग्धः पाकमेति च ।

उपनाह (बाफीने जरा जरा ऊनां राखेलां औषधोने वस्त्रथी बांधीने तेथी बाफ देवा) नामनी सातमी चिकित्सानुं निरूपण.

३२ वायुसंबंधी के कफसंबंधी सोजो काचो होय के कांईक पाको होय तो तेओनी उपर उपनाह करवो. सोजो काचो होय तो उपनाह करवाथी शांत थई जाय छे अने कांईक पाको होय तो उपनाह करवाथी सारी पेठे पाकी जायछे.

३३ निवर्त्तते न यः शोफो विरेकान्तैरुपक्रमैः ॥
तस्य सम्पाचनं कुर्यात्समाहृत्यौषधानि तु ।
दधितक्रसुराशुक्तधान्याम्लैर्योजितानि तु ॥
स्निग्धानि लवणीकृत्य पचेदुत्कारिकां शुभाम् ।
सैरण्डपत्रया शोफं नाहयेदुष्णया तथा ॥
हितं सम्भोजनं चापि पाकायाभिमुखो यदि ।
वेदनोपशमार्थाय तथा पाकशमाय च ॥

पाचन (पकाववा) नामनी आठमी चिकित्सानुं निरूपण.

३३ जे सोजो अपतर्पणथी मांडीने विरेचन सूधीनी चिकित्साओथी शांत न थाय ते सोजाने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायमां कहेलां शणनां बीज तथा मूळांनां बीज आदि पाचन द्रव्योना समूहथी पकाववो ते ए रीते के पाचन द्रव्योने दहीं, छाश, मद्य, शुक्त अने धान्याम्ल एओथी युक्त करी, स्निग्ध करी, लूण नांखीने तेओनी सुंदर उत्कारिका (लाफसी अथवा रोटली) पकाववी. पछी ते सेहेवाय तेवी ऊनी ऊनी लाफसी अथवा रोटली एरंडाना पानडानी साथे सोजानी उपर बांधवी. (सोजामांथी थएला व्रण उपर पण बांधवी.) आ क्रियाथी सोजो के सोजामांथी थएलो व्रण पाकवामां अभिमुख थई गएल होय तो रोगीने यथेष्ट भोजन पण आपवुं के जे भोजन अत्यंत कफ करनारूं न होय अने उपद्रवो करनारूं पण न होय. आवुं भोजन आपवाथी वेदना शांत थायछे अने पाकनो पण उपशम थायछे. (धान्याम्लनुं लक्षण सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायना १९१ मा विषयमां जुवो.)

१ आ पाचन नामनी आठमी चिकित्साने उपनाह नामनी सातमी चिकित्साथी जूदी गणवी योग्य नथी. कारण के पाचन उपनाहथी बने छे. (गयदास.)

३४अचिरोत्पतिते शोफे कुर्याच्छोणितमोक्षणम् ।
सशोफे कठिने श्यामे सरक्ते वेदनावति ॥
संरब्धे विषमे वापि व्रणे विस्रावणं हितम् ।
सविषे च विशेषेण जलौकाभिः पदैस्तथा ॥
वेदनायाः प्रशान्त्यर्थं पाकस्याप्राप्तये तथा ।

विस्रावण (लोही स्रवाववा) नामनी नवमी चिकित्सानुं निरूपण.

३४ सोजो तुरतनो उत्पन्न थएलो होय तो जळो मूकीने अथवा छेरा दईने लोहीनुं विस्रावण करवुं. व्रण सोजावाळो होय, कठण होय, श्याम होय, रताशवाळो होय, वेदनावाळो होय, पोहोळा मूळवाळो होय के नीचो उंचो होय तो पण जळो मूकीने अथवा छेरा दईने लोहीनुं विस्रावण करवुं ए हितकारी छे. जो सोजो के व्रण झेरवाळो होय तो ते विषयमां तो लोहीनुं विस्रावण करवुं ए विशेष हितकारी छे. लोहीनुं विस्रावण करवाथी वेदना शांत थाय छे अने पाक पण थतो नथी.

३५सोपद्रवाणां रूक्षाणां कृशानां व्रणशोषिणाम् ।
यथास्वमौषधैः सिद्धं स्नेहपानं विधीयते ।

स्नेह (घी, तेल, चरबी के मज्जा पीवराववा) नामनी दशमी चिकित्सानुं निरूपण.

३५ जे माणसो सोजाथी के व्रणथी क्षीण थई गया होय, कंप तथा खांसीआदि उपद्रवोथी युक्त होय, रूक्ष थई गया होय के कृश थई गया होय तेओने, ते ते दोषोनुं हरण करनारां औषधोनो

कल्क नाखीने पकावेला घी वगेरे स्नेहोनुं पान करावबुं.

३६ उत्सन्नमांसशोफे तु कफजुष्टे विशेषतः ॥
संक्लिष्टश्यामरुधिरे व्रणे प्रच्छर्दनं हितम् ।

वमन (उलटी करावबा) नामनी अगीयारमी चिकित्सानुं निरूपण.

३६ सोजो के सोजामांथी थएलो व्रण जो ऊंचे चडेला मांसवाळो होय, विशेषे करी कफना प्रकोपवाळो होय के दुष्ट तथा कांईक श्याम रुधिरवाळो होय तो रोगीने वमन करावबुं ए हितकारी छे.

३७ वातपित्तप्रदुष्टेषु दीर्घकालानुबन्धिषु ॥
विरेचनं प्रशंसन्ति व्रणेषु व्रणकोविदाः ।

विरेचन नामनी बारमी चिकित्सानुं निरूपण.

३७ जो सोजाओ के सोजामांथी थएला व्रणो वातसंयुक्त पित्तथी के केवळ पित्तथीयुक्त होय अने लांबा वखत सूधी चालेला होय तो रोगीने विरेचन देवुं उत्तम छे एम व्रणविषयना विद्वानो केहेछे.

३८ अपाकषु तु रोगेषु कठिनेषु स्थिरेषु च ॥
स्नायुकोथादिषु तथा छेदनं प्राप्तमुच्यते ।

छेदन नामनी तेरमी चिकित्सानुं निरूपण.

३८ पाक वगरना ग्रंथि वगेरे रोगोमां, स्थिर तथा कठण व्रण वगेरे रोगोमां, जराक पाकवाळा वल्मीक आदि रोगोमां अने स्नायुओना सडा वगेरे रोगोमां छेदनक्रिया करवी उचित छे एम विद्वानो केहेछे.

३९ अन्तः पूयेष्ववक्रेषु तथैवोत्सङ्गवत्स्वपि ॥
गतिमत्सु च रोगेषु भेदनं प्राप्तमुच्यते ।

भेदन नामनी चौदमी चिकित्सानुं निरूपण.

३९ जे रोगो अंदर परूवाळा होय, मोहोडां वगरना होय, लांबा वखत सूधी रहेला परूथी चीरावाने लीधे ऊंडां छिद्रोवाळा होय के गतिवाळा (नाडीव्रण) होय ते रोगोमां भेदनक्रिया (भेदी नाखवुं.) उचित छे एम केहेवामां आवेछे.

४० बालवृद्धासहक्षीणभीरूणां योषितामपि ॥
मर्मोपरि च जातेषु रोगेषूक्तं च दारणम् ।
सुपक्के पिण्डिते शोफे पीडनैरवपीडिते ॥
पाकोद्वृत्तेषु दोषेषु तत्तु कार्यं विजानता ।
सुपिष्टैर्दारणद्रव्यैर्युक्तैः क्षारेण वा पुनः ॥

दारण (औषधोथी फाडी नाखवा) नामनी पंदरमी चिकित्सानुं निरूपण.

४० बालक, वृद्ध, शस्त्रने खमी न शके एवां माणसो, क्षीण थएलां माणसो, बीकण तथा स्त्रीओ एओने थएला रोगोमां औषधोथी दारण करवुं (फाडी नाखवुं) उचित छे. मर्मस्थलोनी उपर थएला रोगोने पण औषधोथी फाडी नाखवा उचित छे. सोजो सारी पेठे पाकीने पिंडीभूत थयो होय अने सोजाना दोषो पाकवाथी क्षुभित थया होय त्यारे तेने पीडनद्रव्योना जाडा लेपोथी दबावीने पछी प्रवीण वैद्ये सारी रीते वाटेलां दारणद्रव्योथी अथवा क्षारथी फाडी नाखवो.

४१ कठिनान्स्थूलवृत्तोष्ठान्दीर्यमाणान्पुनः पुनः ।
कठिनोत्सन्नमांसांश्च लेखनेनाचरेद्भिषक् ॥
समं लिखेत्सुलिखितं लिखेन्निरवशेषतः ।
वर्त्मनाणुप्रमाणेन समं शस्त्रेण निर्लिखेत् ॥
क्षौमं प्लोतं पिचुं फेनं यावशूकं ससैन्धवम् ।
कर्कशानि च पत्राणि लेखनार्थं प्रदापयेत् ॥

लेखन (उखेडवा तथा खोतरवा) नामनी सोळमी चिकित्सानुं निरूपण.

४१ जे व्रणो कठण होय, जाडा तथा गोळ होठवाळा होय, वारंवार फाटीजता होय के ऊंचां चडेलां कठण मांसोवाळा होय तेओने वैद्ये

१ द्रव्याणां पिच्छिलानां तु त्वङ्मूलानि प्रपीडनम् ।
यवगोधूममाषाणां चूर्णानि च समासतः ॥
(सू. स्था. अ. ३६ विषय ५.)

२ चिरबिल्वोऽग्निको दन्ती चित्रको हयमारकः ।
कपोतगृध्रकङ्कानां पुरीषाणि च दारणम् ॥
(सू. स्थानना ३६ मा अध्यायनो ४ थो विषय जुवो.)

शस्त्रथी उखेडवा तथा खोतरवा. जे व्रणो मांसवगरना अने कठण होय तेओने शस्त्रवते साधारण रीते उखेडवा तथा खोतरवा, जे व्रणो जाडा तथा गोळ होठवाळा होय ते व्रणोने अधिक उखेडवा तथा खोतरवा, जे व्रणो वारंवार फाटी जता होय तेओने निश्शेष उखेडवा तथा खोतरवा अने जे व्रणो ऊंचां चडेलां कठण मांसोवाळा होय तेओने तेओनां चारे पडखांओमां समरीते झीणा शस्त्रवते खोतरवा तथा उखेडवा. शस्त्र हाजर न होय तो व्रणोने उखेडवा माटे तथा खोतरवा माटे अलसीना वस्त्रनो, कपडानो, रूना पूमडानो, समुद्रफीणनो, जवखारनो, सैंधवनो के गळजीभी (भोंपाथरी) वगेरेनां खरसट पानडांओनो योग्यता जोई उपयोग करवो.

४२नाडीव्रणाञ्शल्यगर्भानुन्मार्ग्युत्सङ्गिनः शनैः। करीरबालांगुलिभिरेपण्या वैपयेद्भिषक् ॥
नेत्रवर्त्मगुदाभ्यासनाड्योऽवक्त्राः सशोणिताः। चुच्चूपोदकजैः श्लक्ष्णैः करीरैरेपयेत्तु ताः ॥

एषण (परू तथा शल्य वगेरेने शोधी काहाडवा) नामनी सत्तरमी चिकित्सानुं निरूपण.

४२ नाडीव्रणो, (भरनींगळो) जेओनी अंदर शल्य होय एवा व्रणो, सीधा रस्ताने छोडी दईने आडे रस्ते गएला व्रणो अने लांबा वखतसूधी रहेला परूए फाडीने गंभीर छिद्रोवाळा करेला व्रणो एओनां परू वगेरेनी गतिनो, मध्यादिकनो अने तेओमां रहेलां गुप्त शल्य वगेरेनो वैद्ये छुंछ तथा पोथी वगेरेनी सळीओ नाखीने, वाळ नाखीने, आंगळी नाखीने अथवा एषणी नामनुं सळीरूप शस्त्र के यंत्र नाखीने निश्चय करवो. नेत्रोनी पांपणोना तथा गुदाना समीपना जे नाडीव्रणो नाहानां मुखोवाळा तथा लोहीवाळा होय तेओमां परूवगेरेनी गतिनो तथा शल्यादिकनो छुंछनी अथवा पोथीनी लीसी सळीओथी निश्चय करवो.

४३ संवृतासंवृतास्येषु व्रणेषु मतिमान् भिषक्। यथोक्तमाहरेच्छल्यं प्राप्तोद्धरणलक्षणम् ॥

आहरण (शल्य काहाडवा) नामनी अढारमी चिकित्सानुं निरूपण.

४३ बुद्धिमान् वैद्ये बंध मोहोडांवाळा के खुल्ला मोहोडावाळा व्रणोमां जे शल्य होय ते शल्य ज्यारे काहाडवा लायक स्थितिवाळुं जणाय त्यारे तेने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना शल्यापनयनीय नामना २७ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे काहाडवुं.

४४ रोगे व्यधनसाध्ये तु यथोद्देशं प्रमाणतः। शस्त्रं निदध्याद्दोषं च स्रावयेत्कीर्त्तितं यथा ॥

व्यधन (वींधवा) तथा स्रावण (दोषने स्रवाववा) नामनी ओगणीशमी तथा वीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

४४ वींधवाथी मटाडी शकाय एवा व्रण के दकोदर वगेरे रोगोमां वैद्ये ते ते रोगना प्रदेशना प्रमाणने अनुसरी योग्य ऊंडाई सुधीमां योग्य प्रमाणवाळुं शस्त्र नाखवुं अने ते ते विषयमां कहेला प्रकारथी दोषने स्रवाववो.

४५ अपाकोपद्रुता ये च मांसस्था विवृताश्च ये। यथोक्तं सेवनं तेषु कार्यं सन्धानमेव च ॥

सेवन (सीववा) तथा संधान (सांधवा) नामनी एकवीशमी तथा बावीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

४५ जे व्रणो पाकना उपद्रवो वगरना, मांसमां रहेला अने खुल्लां मोहोडांवाळा होय तेओने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना 'अष्टविधशस्त्रकर्मण्य' नामना २५ मा अध्यायना ११ मा विषयमां कह्याप्रमाणे सीववा अने तेओना होठ वगेरेने सांधी लेवा.

४६ पूयगर्भानणुद्वारान्व्रणान्मर्मगतानपि। यथोक्तैः पीडनद्रव्यैः समन्तात्परिपीडयेत् ॥
शुष्यमाणमुपेक्षेत प्रदेहं पीडनं प्रति। न चाभिमुखमालिम्पेत्तथा दोषः प्रसिच्यते ॥

पीडन (व्रणने लेपोथी दाब देवा) नामनी त्रेवीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

४६ जे व्रणो अंदर परूवाळा, नाहानां द्वारोवाळा तथा मर्मस्थलोमां रह्या होय तेओने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ९ मा विषयमां कहेलां पीडनद्रव्योथी जाडो लेप आपीने चोतरफ दबाववा. दबाववाने माटे जे जाडो लेप करवामां आव्यो होय ते सूकाई जतो होय तो तेनी उपेक्षा करवी एटले सूकावा देवो के जेथी तणाईने व्रण फाटी जाय. ए लेप व्रणना मोहोडानी सामे के मोहोडा उपर नहीं करवो पण आसपास तथा अनुलोम रीते करवो के जेम करवाथी दोष पोतानी मेळे स्रवी जाय.

४७ तैस्तैर्निमित्तैर्बहुधा शोणिते प्रस्रुते भृशम् ।
कार्यं यथोक्तं वैद्येन शोणितास्थापनं भवेत् ॥

शोणितास्थापन (लोहीना अतिस्रावने अटकाववा) नामनी चोवीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

४७ शिरा वींधवा (फस खोलवा) वगेरे अनेक प्रकारनां ते ते कारणोथी लोहीनो अत्यंत स्राव थवा लाग्यो होय तो आ ग्रंथना सूत्रस्थानना शोणितवर्णनीय नामना १४ मा अध्यायना १९ मा विषयमां कह्या प्रमाणे उपचारो करीने वैद्ये ते लोहीने अटकाववुं.

४८ दाहपाकज्वरवतां व्रणानां पित्तकोपतः ।
रक्तेन चाभिभूतानां कार्यं निर्वापणं भवेत् ॥
यथोक्तैः शीतलद्रव्यैः क्षीरपिष्टैर्घृतप्लुतैः ॥
दिह्यादबहलाँल्लेपान्सुशीतांश्चावचारयेत् ।

निर्वापण (व्रणमां थती बळतराने तथा ते संबंधी ज्वरने शांत करवा) नामनी पचीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

४८ जे व्रणो पित्तना के रुधिरना प्रकोपथी बळतरा करता होय अने पाकवाना ज्वरथी अभिभूत थया होय ते व्रणोनुं निर्वापण करवुं ते एवी रीते के आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना बीजा विषयमां कहेलां दूर्वा वगेरे द्रव्योने दूधमां वाटी घीथी संयुक्त करीने तेओना पातळा पातळा अतिशीतल लेपो करवा अने ते उपरांत शीतल द्रव्योथी सेचनो पण करवां.

४९ व्रणेषु क्षीणमांसेषु तनुस्राविष्वपाकिषु ॥
तोदकाठिन्यपारुष्यशूलवेपथुमत्सु च ।
वातघ्नवर्गेऽम्लगणे काकोल्यादिगणे तथा ॥
स्नैहिकेषु च बीजेषु पचेदुत्कारिकां शुभाम् ।

उत्कारिका (औषधोनी पातळी लाफसीनो योग आपवा) नामनी छवीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

४९ व्रणो जो क्षीण मांसवाळा, थोडा तथा पातळा स्रावबाळा, पाकवगरना, भोंकाया जेवी व्यथावाळा, कठण, खरसट, शूळवाळा के कंपवाळा होय तो सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलो वातघ्नवर्ग, सौवीरक तथा तुषोदक आदि अम्लवर्ग, काकोल्यादि गण.. अने स्नैहिक बीजो (तल, अळसी, सर्षप तथा एरडी वगेरे) एओनां चूर्णोमां सुंदर पातळी लाफसी पकावीने तेनो योग आपवो. (सौवीरक तथा तुषोदकविषे सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायनो १९० मो विषय जुवो.)

५० तेषां च स्वेदनं कार्यं स्थिराणां वेदनावताम्
दुर्गन्धानां क्लेदवतां पिच्छिलानां विशेषतः ।
कषायैः शोधनं कार्यं शोधनैः प्रागुदीरितैः ॥

कषाय (व्रणने शुद्ध करवाना क्वाथ) नामनी सत्यावीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

५० जे व्रणो स्थिर (कठण,) वेदनावाळा, दुर्गंधवाळा, क्लेदवाळा अने विशेषे करी चीकाश-

१ द्रव्याणां पिच्छिलानां तु त्वङ्मूलानि प्रपीडनम्
यवगोधूममाषाणां चूर्णानि च समासतः ॥

२ दूर्वा च नलमूलं च मधुकं चंदनं तथा ।
शीतलाश्च गणाः सर्वे प्रलेपः पित्तशोफहृत् ॥

वाळा होय तेओने स्वेदन संस्कार आपीने ते पछी आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां कहेलां शंखिनी (शंखवेल,) अंकोल तथा चमेली वगेरे द्रव्योना शोधन क्काथोथी ते व्रणोनुं शोधन करवुं.

५१ अन्तःशल्याननुमुखान्गंभीरान्मांससंश्रितान्। शोधनद्रव्ययुक्ताभिर्वर्त्तिभिस्तान्यथाक्रमम् ॥

वर्त्ति (व्रणनी अंदर वाट नाखवा) नामनी अठ्यावीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

५१ जे व्रणो अंदर शल्यवाळा, झीणां मोहोडावाळा, ऊंडा तथा मांसमां रहेला होय तेओने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां कहेलां अजगंधा (तलवणी) वगेरे द्रव्योथी युक्त करेली वाटोथी अनुक्रमे (प्रथम झीणी वाटोथी, पछी जाडी वाटोथी अने ते पछी वधारे जाडी वाटोथी) शुद्ध करवा.

५२ पूतिमांसप्रतिच्छन्नान्महादोषांश्च शोधयेत्। कल्कीकृतैर्यथालाभं वर्त्तिद्रव्यैः पुरोदितैः ॥

कल्क (चटणीनी पेठे वाटेलां द्रव्योनी लुगदीओ मूकवा) नामनी ओगणत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

५२ जे व्रणो दुर्गंधि मांसथी ढंकाएला अने प्रबल वात कफथी अति दुष्ट थएला होय तेओने उपर कहेलां अजगंधा वगेरे वाटनां द्रव्योमांथी जेटलां मळी आवे तेटलां द्रव्योना कल्कोथी शुद्ध करवा. (पित्तथी दुष्ट थएला व्रण उपर तो पकावेलुं घीज लगाववुं योग्य छे.)

५३ पित्तप्रदुष्टान् गम्भीरान्दाहपाकप्रपीडितान्। कार्पासीफलमिश्रेण जयेच्छोधनसर्पिषा ॥

घी (औषधोना कल्कथी पकावेलुं घी लगाववा) नामनी त्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

५३ जे व्रणो पित्तथी दुष्ट थएला, गंभीर अने दाहथी तथा पाकथी पीडित होय तेओने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां कहेलां हीराकसी वगेरे द्रव्यो अने ते द्रव्योना जेटलांज कपासनां फळ एओनो कल्क नाखीने पकावेला घीथी शुद्ध करवा. (पकाववानी रीति ए छे के कल्कथी चोगणा घीने घीथी चोगणा जळमां पकाववुं. डल्हन.)

५४ उत्सन्नमांसानस्निग्धानल्पास्रावान् व्रणांस्तथा। सर्षपस्नेहयुक्तेन धीमांस्तैलेन शोधयेत् ॥

तैल (औषधोना कल्कथी पकावेलुं तैल लगाववा) नामनी एकत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

५४ जे व्रणो वृद्धि पामेला मांसवाळा, स्निग्धपणा वगरना तथा अल्प स्राववाळा होय अर्थात् कफना तथा वायुना आधिक्यवाळा होय तेओने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां कहेलां अघेडा वगेरे द्रव्योनो कल्क नाखीने सरसीया तैलनी साथे पकावेला तिलतैलथी बुद्धिमान् वैद्ये शुद्ध करवा.

---

१ शङ्खिन्यङ्कोटसुमनःकरवीरसुवर्चलाः ।
शोधनानि कषायाणि वर्गश्चारग्वधादिकः ॥
२ अजगन्धाऽजशृङ्गी च गवाक्षी लाङ्गलाह्वया ।
पूतीकश्चित्रकः पाठा विडङ्गैलाहरेणवः ॥
कटुत्रिकं यवक्षारो लवणानि मनःशिला ।
कासीसं त्रिवृता दन्ती हरितालं सुराष्ट्रजा ॥
३ कासीसकटुरोहिण्योर्जातीकन्दहरिद्रयोः ।
पूर्वोद्दिष्टेषु चाङ्गेषु कुर्यात्तैलघृतानि वै ।
अर्कोत्तमां स्नुहीक्षीरं पिष्ट्वा क्षारोत्तमानपि ।
जातीमूलं हरिद्रे द्वे कासीसं कटुरोहिणीम् ॥
पूर्वोद्दिष्टानि चान्यानि कुर्यात्संशोधनं घृतम् ।
४ मयूरको राजवृक्षो निम्बः कोशातकी तिलाः ।
बृहती कण्टकारी च हरितालं मनःशिला ।
शोधनानि च योज्यानि तैले द्रव्याणि शोधने ॥

५५ तैलेनाशुध्यमानानां शोधनीयां रसक्रियाम् ।
व्रणानां स्थिरमांसानां कुर्याद्द्रव्यैरुदीरितैः ॥
कषाये विधिवत्तेषां कृते व्यामिश्रयेत्पुनः ।
सुराष्ट्रजां सकासीसां दद्याच्चापि मनःशिलाम् ॥
हरितालं च मतिमांस्ततस्तामवचारयेत् ।
मातुलुङ्गरसोपेतां सक्षौद्रामतिमर्दिताम् ॥
व्रणेषु दत्वा तां तिष्ठेत्रींस्त्रींश्च दिवसान्परम् ।

रसक्रिया (तैयार करेला क्वाथमां बीजां औषधो नाखी फरीवार ते क्वाथने पकावी मलम जेवो घाटो करीने ते लगाववा) नामनी बत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

५५ जे स्थिर मांसवाळा व्रणो तैलथी शुद्ध न थता होय तेओने शुद्ध करवा माटे रसक्रिया करवी ते एवी रीते के आ ग्रंथना सूत्रस्थानना द्रव्यसंग्रहणीय नामना ३८ मा अध्यायमां कहेला शालसारादि गणनां द्रव्योनो, बीजां पण शोधन द्रव्योनो, पटोलनो अने त्रिफलानो विधिपूर्वक क्वाथ तैयार करी तेमां फटकडी, हीराकसी, मणशील तथा हरिताल एओनुं चूर्ण नाखी, फरीवार ते क्वाथने पकावी, घाटो करी, ते मलम जेवा घाटा क्वाथमां बीजोरांनो रस तथा मद्य नाखी तेनुं बहुज मर्दन करीने ते मलम व्रणोनी उपर लगाववो. ए मलम व्रणोनी उपर त्रण त्रण दिवस सूधीज राखवो पण तेथी वधारे वखत राखवो नहीं. (ए मलम वधारे वखतसूधी राखवाथी व्रण फाटी जवानी धास्ती छे.)

५६ गम्भीरान्मेदसा जुष्टान्दुर्गन्धांश्चूर्णशोधनैः॥
उपाचरेद्भिषक् प्राज्ञः श्लक्ष्णैः शोधनवर्त्तिजैः ।

अवचूर्णन (चूर्ण भभराववा) नामनी तेंत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

५६ जे व्रणो गंभीर, मेदवाळा अने दुर्गंधवाळा होय तेओनी उपर समजू वैद्ये शोधनने माटे घी पकाववानां हीराकसी वगेरे शोधन द्रव्योनां बारीक चूर्णो तथा शोधननी वाटमां दाखल करवानां अजगंधा वगेरे औषधिओनां बारीक चूर्णो भभराववां. (आ अध्यायनो ९३ मो तथा ९१ मो विषय जुवो.)

५७ शुद्धलक्षणयुक्तानां कषायं रोपणं हितम् ॥
तत्र कार्यं यथोद्दिष्टैर्द्रव्यैर्वैद्येन जानता ।
अवेदनानां शुद्धानां गम्भीराणां तथैव च ॥
हिता रोपणवर्त्यङ्गकृता रोपणवर्त्तयः ।
अपेतपूतिमांसानां मांसस्थानामरोहताम् ॥
कल्कः संरोहणः कार्यस्तिलजो मधुसंयुतः ।
स माधुर्यात्तथौष्ण्याच्च स्नेहाच्चानिलनाशनः ॥
कषायभावान्माधुर्यात्तिक्तत्वाच्चापि पित्तहृत् ।
औष्ण्यात्कषायभावाच्च तिक्तत्वाच्च कफे हितः ॥
शोधयेद्रोपयेच्चापि युक्तः शोधनरोपणैः ।
निम्बपत्रमधुभ्यां तु युक्तः संशोधनः स्मृतः ॥
पूर्वाभ्यां सर्पिषा चापि युक्तः संरोपणो भवेत् ।
तिलवद्यवकल्कं तु केचिदाहुर्मनीषिणः ॥
शमयेदविदग्धं च विदग्धमपि पाचयेत् ।
पक्वं भिनत्ति भिन्नं च शोधयेद्रोपयेत्तथा ।
पित्तरक्तविषागन्तून्गम्भीरानपि च व्रणान् ।
रोपयेद्रोपणीयेन क्षीरसिद्धेन सर्पिषा ॥
कफवाताभिभूतानां व्रणानां मतिमान्भिषक् ।
कारयेद्रोपणं तैलं भेषजैस्तद्यथोदितैः ॥
अवन्ध्यानां चलस्थानां शुद्धानां च प्रदुष्यताम् ।
द्विहरिद्रायुतां कुर्याद्रोपणार्थं रसक्रियाम् ॥
समानां स्थिरमांसानां त्वक्स्थानां रोपणं भिषक्
चूर्णं विदध्यान्मतिमान्प्राक्स्थानोक्तो विधिर्यथा

कषायथी मांडीने अवचूर्णन सुधीनी सात चिकित्साओ जेम उपरप्रमाणे गोठव्याथी व्रणोनुं शोधन करे छे तेम, नीचे प्रमाणे गोठव्याथी रोपण पण करेछे.

५७ जे व्रणो शुद्धपणानां लक्षणोथी युक्त थया

---

१ शालसारादिसारेषु पटोलत्रिफलासु च ।
रसक्रिया विधातव्या शोधनी शोधनेषु च ॥
(सू. अ. ३६. वि. ६)

२ जे व्रण जीभनां तळां जेवो कोमळ स्निग्ध तथा रातो थई गयो होय, वेदनावगरनो थयो होय, सारा आकारवाळो बनी गयो होय अने स्रावबगरनो थई गयो होय ते व्रणने शुद्ध थएलो समजवो.

होय तेओना रोपणने माटे (रूझावीने धरती लाववाने माटे) प्रवीण वैद्य आ ग्रंथना सूत्रस्थानननां मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां कहेलां वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी छालोनो क्काथ अथवा बीजी रीतनो हितकारी **कषाय** करवो.

जे व्रणो तमाम वेदनावगरना अथवा थोडी वेदनावाळा अने गंभीर होय तेओना रोपणने माटे आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां कहेली सोमवल्ली अथवा ब्राह्मी, गळो अने आसोंद वगेरे द्रव्योनी **वर्त्तिओ** (वाटो) करवी ए हितकारी छे.

जे व्रणो सडेला मांसथी रहित थया होय, मांसमां रह्या होय अने रूझाता न होय तेओना रोपणने माटे वैद्य तिलनो तथा लींबडाना पानडांनो **कल्क** करी तेमां मध तथा घी नाखीने ते **कल्क** लगाववो. तिलनो कल्क मधुर उष्ण तथा स्निग्ध होवाथी वायुनो नाश करे छे, तूरो मधुर तथा कडवो होवाथी पित्तने हरेछे अने उष्ण तूरो तथा कडवो होवाथी कफने पण शांत करे छे अर्थात् त्रिदोषहर छे. तिलनो कल्क जो शोधनद्रव्योथी युक्त करवामां आव्यो होय तो शोधन करेछे अने रोपण द्रव्योथी युक्त करवामां आव्यो होय तो रोपण करेछे अर्थात् योगवाही छे. तिलनो कल्क लींबडानां पानडांओथी तथा मधथी युक्त करवामां आव्यो होय तो व्रणनुं शोधन करेछे अने लींबडानां पानडां, मध तथा घी एओथी संयुक्त करवामां आव्यो होय तो रोपण करेछे. केटलाएक आचार्यो केहेछे के 'जवनो कल्क पण तिलना कल्कनी पेठेज शोधन करेछे अने रोपण पण करेछे अथवा तिलना कल्कथी युक्त करेलो जवनो कल्क पण शोधन करेछे अने रोपण पण करेछे. ए कल्क व्रणनी सघळी स्थितिओमां उपयोगी छे. केमके काचा व्रणने शांत करेछे, कांईक पाकवा लागेला व्रणने सारी रीते पकावे छे, पाकेला व्रणने भेदी नाखे छे अने भेदाएला व्रणनुं शोधन करे छे तथा रोपण पण करे छे. अर्थात् जवना कल्कमां विम्लापन, पाचन, पाटन, शोधन तथा रोपण ए पांचे प्रयोजनो रह्यां छे अने तिलना कल्कमां शोधन तथा रोपण ए बे प्रयोजनोज रह्यां छे.' (आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां **समङ्गा सोमसरला सोमवल्का सचन्दना । काकोल्यादिश्च कल्कः स्यात् प्रशस्तो व्रणरोपणे** ए श्लोकथी कहेला कल्कनो पण व्रणना रोपणमां उपयोग करवो.)

पित्तजन्य, रुधिरजन्य, विषसंबंधी के आगंतुज व्रणो गंभीर होय तोपण तेओनुं आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां कहेलां पृश्निपर्णी तथा कौचां वगेरे द्रव्योनो कल्क नाखीने दूधमां पकावेला **घीथी** रोपण करी शकाय छे.

जे व्रणो कफथी के वायुथी अभिभूत होय तेओनुं रोपण करवाने माटे बुद्धिमान् वैद्ये आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां कहेलां तगर तथा अगरु वगेरे द्रव्योनो कल्क नाखीने विधिप्रमाणे **तेल** बनाववुं.

पित्तजन्य, रुधिरजन्य, विषसंबंधी तथा अभिघातजन्य व्रणो के जेओने पाटा बांधवा उचित नथी तेओनुं, चलसंधिओमां रहेला व्रणोनुं अने जे व्रणो शुद्ध थया छतां पण पाछा दूषित थई जता होय ते व्रणोनुं रोपण करवाने माटे वैद्ये आ ग्रंथना सूत्रस्थानना द्रव्यसंग्रहणीय नामना ३८ मा अध्यायमां कहेला न्यग्रोधादि गणनी छालनो तथा त्रिफ-

१ सोमामृताश्वगन्धासु काकोल्यादौ गणे तथा ।
क्षीरिप्ररोहेष्वपि च वर्त्तयो रोपणाः स्मृताः ॥

२ पृथक्पर्ण्यात्मगुप्ता च हरिद्रे मालती सिता ।
काकोल्यादिश्च योज्यः स्यात् प्रशस्तो रोपणे घृते ।

३ कालानुसार्यागुरुणी हरिद्रे देवदारु च ।
प्रियङ्गवश्च रोध्रं च तैले योज्यानि रोपणे ।

लानो काथ तैयार करी ते काथने पाछो पकावी घाटो थाय त्यारे तेमां हळदर तथा दारूहळदर एओनुं चूर्ण नाखी खूब मर्दन करी ते मलमने मधथी संयुक्त करीने ते लगाववारूप **रसक्रिया** करवी. (जेम शोधनने माटे करवानी रसक्रियामां काळनो अवधि छे तेम आ रसक्रियामां नथी माटे आ रसक्रिया तो ज्यांसूधी व्रणनुं रोपण थाय त्यांसूधी करवी.)

जे व्रणो सम, स्थिरमांसवाळा अने त्वचामां रहेला होय तेओना उपर बुद्धिमान् वैद्ये रोपणने माटे आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां कहेलां कांग. त्रिफला तथा लोदर वगेरे द्रव्योनुं **अवचूर्णन** करवुं. (चूर्ण भभरावबुं.)

५८ शोधनो रोपणश्चैव विधियोंऽयं प्रकीर्त्तितः ।
सर्वव्रणानां सामान्येनोक्तो दोषाविशेषतः ॥
एष आगमसिद्धत्वात्तथैव फलदर्शनात् ।
मन्त्रवत्संप्रयोक्तव्यो न मीमांस्यः कथंचन ॥

उपर कहेला शोधनरोपणनो विधि सर्व प्रकारना व्रणोने माटे एकसरखोज छे.

५८ आ शोधननो तथा रोपणनो जे विधि केहेवामां आव्यो ते शारीर व्रणोने माटे तथा आगंतुज व्रणोने माटे पण एकसरखोज छे, कारण के ए सर्व प्रकारना व्रणोमां वात, पित्त तथा कफ ए त्रण दोषोज दूषक छे. आ विधि शास्त्रसिद्ध छे अने ते प्रमाणे करवाथी संपूर्ण रीते शोधनरोपणो थतां नजरे जोवामां आवे छे माटे तेनो मंत्रनी पेठेज प्रयोग करी देवो एटले जेम मंत्रना अर्थादिकनो विचार नहीं करतां मंत्रनो प्रयोग करी देवामां आवे छे तेम आ विधिमां आपेलां औषधोना गुणदोषादिकनो कशो लांबो लांबो विचार नहीं करतां आ विधिनो पण प्रयोग करी देवो.

५९ स्वबुद्ध्या चापि विभजेत्कषायादिषु सप्तसु ।
भेषजानि यथायोगं यान्युक्तानि पुरा मया ॥
आद्ये द्वे पञ्चमूल्यौ तु गणो यश्चानिलापहः ।
स वातदुष्टे दातव्यः कषायादिषु सप्तसु ॥
न्यग्रोधादिर्गणो यस्तु काकोल्यादिश्च यः स्मृतः ।
तौ पित्तदुष्टे दातव्यौ कषायादिषु सप्तसु ॥
आरग्वधादिस्तु गणो यश्चोष्णः परिकीर्त्तितः ।
तौ देयौ कफदुष्टे तु संसृष्टे संयुता गणाः ॥

कषायथी मांडीने अवचूर्णन सुधीनी सात चिकित्साओमां पोतानी बुद्धिथी औषधोना विभागो करवानो विषय.

५९ कषाय, वर्त्ति, कल्क, घी, तैल, रसक्रिया अने अवचूर्णन ए सात चिकित्साओना विषयोमां, जे जे औषधो सूत्रस्थानमां प्रथम कहेलां छे तेओनो ते ते योगने अनुसरीने वैद्ये पोतानी बुद्धिथी पण विभाग करवो ते ए रीते के लघुपंचमूली, बृहत्पंचमूली तथा विदारिगंधादि गण के जेओ वायुनो विनाश करनारा कह्या छे ते गणोनो वायुथी दूषित थएला व्रण उपर कषायआदि साते चिकित्साओमां प्रयोग करवो. न्यग्रोधादि गण अने काकोल्यादि गण के जेओ पित्तहर केहेवामां आव्या छे तेओनो पित्तथी दूषित थएला व्रण उपर कषायआदि साते चिकित्साओमां प्रयोग करवो. आरग्वधादि गण अने बीजो जे उष्णकारी गण (वरुणादि गण?) केहेवामां आवेलो छे ते बे गणोनो कफथी दूषित थएला व्रण उपर कषायआदि साते चिकित्साओमां प्रयोग करवो. जे व्रणो बे दोषोथी दूषित होय ते व्रणो उपर कषायआदि साते चिकित्साओमां ते बे दोषोने टाळनारा गणोनो प्रयोग करवो अने जे व्रणो त्रणे

१ कङ्गुका त्रिफला रोध्रं कासीसं श्रवणाह्वया ।
धवाश्वकर्णयोस्त्वक्च रोपणं चूर्णमिष्यते ॥
प्रियङ्गुका सर्जरसः पुष्पकासीसमेव च ।
त्वक्चूर्णं धवजं चैव रोपणार्थे प्रशस्यते ॥

दोषोथी दूषित थएला होय ते व्रणो उपर कषाय आदि साते चिकित्साओमां एक एक दोषने हरनारा त्रण गणोने मिश्रित करीने तेओनो प्रयोग करवो.

६० वातात्मकानुग्ररुजान्सास्त्रावानपि च व्रणान् स क्षौमयवसर्पिर्भिर्धूपनांगैश्च धूपयेत् ॥

व्रणधूपन (व्रणने धूमाडी देवा) नामनी चोत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६० वायुथी दुष्ट, उग्रपीडावाळा अने स्राववाळा (कफथी दुष्ट) व्रणोने अलसीना वस्त्रना टुकडा, जव तथा घी एओथी मिश्रित करेला चंद्रस तथा राल वगेरे पदार्थोनी (आ पदार्थो आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां **श्रीवेष्टके सर्जरसे** ए श्लोकमां कह्या छे.) धूमाडी देवी.

६१ परिशुष्काल्पमांसानां गम्भीराणां तथैवच । कुर्यादुत्सादनीयानि सर्पींष्यालेपनानि च ॥ मांसाशिनां च मांसानि भक्षयेद्विधिवन्नरः । विशुद्धमनसस्तस्य मांसं मांसेन वर्द्धते ॥

उत्सादन (ऊंडा व्रणने ऊंचो करवा–व्रणना मांसने वधारवा) नामनी पांत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६१ जे व्रणो सूकाएला अल्पमांसवाळा होय (वातदुष्ट होय) के गंभीर अर्थात् रुधिरदुष्ट अथवा पित्तदुष्ट होय तेओनुं उत्सादन करवा माटे आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ८ मा विषयमां कहेलां अघेडानां मूळ तथा आसोंद वगेरे द्रव्योनो कल्क नाखी घी पकावीने ते घी लगाववां अने ए द्रव्योनां लेपनो पण करवां.

व्रणवाळा माणसने वाघ वगेरे मांसभक्षक प्राणीओनां मांसो पण विधिपूर्वक खवराववां. व्रणवाळो माणस मनमां क्रोध के शोक वगेरे कशुं नहीं राखतां ए मांसोनुं भक्षण करे तो तेथी तेनुं मांस वृद्धि पामे छे.

६२ उत्सन्नमृदुमांसानां व्रणानामवसादनम् । कुर्याद्द्रव्यैर्यथोद्दिष्टैश्चूर्णितैर्मधुना सह ॥

अवसादन (उंचा व्रणने नीचो करवा–मांसने तोडवा) नामनी छत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६२ जे व्रणो ऊंचा तथा कोमळ मांसोवाळा होय ते व्रणोने आ ग्रंथना सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायना ९ मा विषयमां कहेलां हीराकसी तथा सैंधव वगेरे द्रव्योनुं चूर्ण मधमां कालवीने तेनो योग आपवो. आ योगथी व्रणोनुं मांस नीचुं थई जाय छे अने कठण थई जाय छे.

६३ कठिनानाममांसानां दुष्टानां मातरिश्वना । मृद्वी क्रिया विधातव्या शोणितं चापि मोक्षयेत् ॥ वातघ्नौषधसंयुक्तान्स्नेहान्सेकांश्च कारयेत् ।

मृदुकर्म (कठण व्रणने कोमळ करवा) नामनी साडत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६३ वायुथी दुष्ट थएला कठण तथा मांस वगरना व्रणोने तेओनी उपर वारंवार मधुर, स्निग्ध, जरा जरा ऊना अने खारापणावाळा लेपादिक करीने कोमळ करवा अने जळो मूकाववा वगेरेथी रुधिरनुं स्रावण पण करवुं. (वायु जो रुधिरथी संसृष्ट होय तो रुधिरनुं स्रावण करवुं अने कफथी संसृष्ट होय तो स्नेहनो तथा सेचनो करवां.)

६४ व्रणेषु मृदुमांसेषु दारुणीकरणं हितम् ॥ धवप्रियङ्ग्वशोकानां रोहिण्याश्च त्वचस्तथा ।

---

१ श्रीवेष्टके सर्जरसे सरले देवदारुणि ।
सारेष्वपि च कुर्वीत मतिमान् व्रणधूपनम् ॥

२ अपामार्गोऽश्वगन्धा च तालपत्री सुवर्चला ।
उत्सादने प्रशस्यन्ते काकोल्यादिश्च यो गणः ॥

३ कासीसं सैंधवं किण्वं कुरुविन्दो मनःशिला ।
कुक्कुटाण्डकपालानि सुमनोमुकुलानि च ।
फले शैरीषकारञ्जे धातुचूर्णानि यानि च ।
व्रणेषूत्सन्नमांसेषु प्रशस्तान्यवसादने ॥

त्रिफलाधातकीपुष्परोध्रसर्जरसान्समान् ॥
कृत्वा सूक्ष्माणि चूर्णानि व्रणं तैरवचूर्णयेत् ।

दारुणकर्म (कोमळ व्रणने कठण करवा) नामनी आडत्रीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६४ व्रणो जो कोमळ मांसवाळा होय तो तेओने दारुण (कठण) बनाववा ए सारूं छे. धावडानी छाल, घउलानां झाडनी छाल, आसोपालवनी छाल, कडवी तूंबडीनी छाल, त्रिफळा, धावणीनां फूल, लोदर अने राळ एओने समभागे लई चूर्ण करीने ते चूर्ण व्रणोनी उपर भभरावाथी कोमळ व्रणो कठण थई जाय छे.

६५ उत्सन्नमांसान्कठिनान्कण्डूयुक्तांश्चिरोत्थितान् ॥
तथैव खलु दुःशोधान् शोधयेत्क्षारकर्मणा ।

क्षारकर्म (व्रणने क्षारथी शुद्ध करवा) नामनी ओगणचाळीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६५ जे व्रणो ऊंचां मांसोवाळा, कठण, खरजवाळा, लांबा वखतथी थएला के मांड शुद्ध करी शकाय एवा होय तेओने क्षारक्रियाथी शुद्ध करवा.

६६ स्रवतोऽश्मभवान्मूत्रं ये चान्ये रक्तवाहिनः
निःशेषच्छिन्नसन्धींश्च साधयेदग्निकर्मणा ।

अग्निकर्म (व्रणोने डांभवा) नामनी चाळीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६६ पथरी काहाडवाने लीधे मूत्रनो स्राव करता व्रणोने, रुधिरनुं वहन करनारा व्रणोने अने जेओना संधिओ निश्शेष कपाई गया होय ते व्रणोने अग्निनी क्रियाथी शांत करवा. (पथरीना व्रणोनी उपर अग्निक्रिया करवानी जरूर जणाय तो पथरी काहाड्या पछी तुरतज ते क्रिया नहीं करवी पण सात दिवस पछी करवी. केमके ते व्रणो सात दिवस सुधी आगंतुज गणायछे. सात दिवस पछी व्रण नहीं संधावाथी मूत्र पोताना रस्ताने प्राप्त न थतुं होय त्यारेज तेना उपर अग्निक्रिया करवी. डल्लन.)

६७ दुरूढत्वात्तु शुक्लानां कृष्णकर्म हितं भवेत्॥
भल्लातकान्वासयेत्तु क्षीरे प्राङ् मूत्रभावितान् ।
ततो द्विधा छेदयित्वा लौहे कुम्भे निधापयेत् ॥
कुम्भेऽन्यस्मिन्निखाते तु तं कुम्भमथ योजयेत् ।
मुखं मुखेन सन्धाय गोमयैर्दाहयेत्ततः ॥
यः स्नेहश्च्यवते तस्माद् ग्राहयेत्तं शनैर्भिषक् ।
ग्राम्यानूपशफान्दग्धान्सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥
तैलेनानेन संसृष्टं शुक्लमालेपयेद्व्रणम् ।
भल्लातकविधानेन सारस्नेहांस्तु कारयेत् ॥
ये च केचित्फलस्नेहा विधानं तेषु कीर्त्तितम् ।

कृष्णकर्म (रूझाएल छतां सफेद रहेला व्रणने प्रकृतिस्थ करवा माटे काळो करवा) नामनी एकतालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६७ जे व्रणो अयोग्य रीते रूझायाने लीधे सफेद वर्णवाळा रही गया होय तेओने प्रकृतिस्थ करवा माटे कृष्णकर्म करवुं ए हितकारी छे. भीलामानां फळोने प्रथम सात दिवस सूधी गोमूत्रमां अने सात दिवस सूधी दूधमां राखी मेली, पछी तेओना बे बे छेद करीनें तेओने लोढाना घडामां नाखवा. पछी बीजा एक घडाने धरतीना खाडामां नाखी पेहेला घडाना मोहोडाने अनेक छिद्रोवाळां ढांकणांथी ढांकी ते मोहोडाने धरतीना खाडामां नाखेला घडाना मोहोडानी साथे जोडी दईने ते पेहेला घडाना पेटारनी उपर छाणानो अग्नि करवो. आम करतां पेहेला घडामांथी जे स्नेह बीजा घडामां स्रवे तेने वैद्ये धीरजथी लई लेवो. पछी घोडा वगेरे ग्राम्य पशुओनी तथा पाडा वगेरे आनूप पशुओनी खरीओने बाळी ते खरीओनुं सूक्ष्म चूर्ण करी पेला स्नेहमां (भीलामाना तेलमां) कालवीने तेनो सफेद व्रण उपर लेप करवो. आम करवाथी सफेद व्रण काळो थई जाय छे.

कृष्णकर्मने माटे बीजां वृक्षोना सारोना स्नेहो करवा होय तो पण योग्यताने अनुसरी भीलामाःना स्नेहनी रीति प्रमाणेज करवा अने बेहेडां वगेरे फळोना स्नेहो करवा होय तो पीलवा वगेरे योग्य उपायोथी करवा. पछी ए स्नेहोमां उपर लखेलां प्राणीओनी खरीओनी भस्म कालवीने तेनो सफेद व्रणोनी उपर लेप करवो. आम करवाथी पण सफेद व्रण काळो थई जाय छे.

६८ दुरूढत्वात्तु कृष्णानां पाण्डुकर्म हितं भवेत्॥
सप्तरात्रं स्थितं क्षीरे छागले रोहिणीफलम् ।
तेनैव पिष्टं सुश्लक्ष्णं सवर्णकरणं हितम् ॥
नवं कपालिकाचूर्णं वैदुलं सर्जनाम च ।
कासीसं मधुकं चैव क्षौद्रयुक्तं प्रलेपयेत् ॥
कपित्थमुद्धृते मांसे मूत्रेणाजेन पूरयेत् ॥
कासीसं रोचनां तुत्थं हरितालं मनःशिलाम् ।
वेणुनिर्लेखनं चापि प्रपुन्नाडं रसाञ्जनम् ॥
अधस्तादर्जुनस्यैतन्मासं भूमौ निधापयेत् ।
मासादूर्ध्वं ततस्तेन कृष्णमालेपयेद्व्रणम् ॥

पांडुकर्म (रूझाएल छतां काळा रहेला व्रणने प्रकृतिस्थ करवा माटे सफेद करवा) नामनी बेंतालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६८ जे व्रणो अयोग्य रीते रूझायाने लीधे काळा वर्णवाळा थई गया होय तेओने प्रकृतिस्थ करवा माटे पांडुकर्म करवुं ए हितकारी छे. रोहिणी नामनी एक जातनी हरडेनां फळोने अथवा कडवी तूंबडीनां फळोने सात रात सूधी बकरीना दूधमां राखी मेली, पछी ते फळोने बकरीना दूधमांज बारीक वाटीने ते लेप काळा व्रण उपर लगाववो. आम करवाथी काळो व्रण सफेद थई जाय छे.

नवां ठीकरानुं ताजुं चूर्ण, नेतरना मूळनुं चूर्ण, राळना झाडना मूळनुं चूर्ण, हीराकसीनुं चूर्ण अने जेठीमधनुं चूर्ण एओने बारीक वाटी मधमां कालवीने ते लेप व्रणनी उपर करवामां आवे तो तेथी व्रण सफेद थई जाय छे.

कोठनुं फळ लई तेमांथी गर्भ काहाडी नाखीने ते फळना खोखामां बकरीनुं मूत्र भरवुं. पछी हीराकसी, गोरोचन, मोरथुथु, हरताल, मणशील, वांसनी छाल, कुवाडीयो अने रसवंती एओनी साथे ते फळने मूकी ते सघळा पदार्थोने एक महीना सुधी कडायाना झाडना मूळनी नीचे धरतीमां दाटी मूकवा. महिनो पुरो थया पछी ते सर्वने काहाडी लई, वाटी तेओनो काळा व्रणनी उपर लेप करवामां आवे तो तेथी व्रण सफेद थई जाय छे.

६९ कुक्कुटाण्डकपालानि कतकं मधुकं समम् ।
तथा समुद्रमण्डूकीमणिचूर्णं च दापयेत् ॥
गुटिका मूत्रपिष्टास्ता व्रणानां प्रतिसारणम् ।

प्रतिसारण नामनी (धोळा अथवा काळा करेला व्रणने शरीरना जेवा वर्णवाळो बनावनारी) त्रेंतालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

६९ कुकडाना इंडांओनी खोपरीओ, निर्मळी फळ, जेठीमध, छीप अने स्फाटिक वगेरे मणिओ एओने समभागे लई चूर्ण करीने तेनी गोळीओ वाळी राखवी. ए गोळीओने गोमूत्रमां वाटीने व्रणनी उपर प्रतिसारण (घसवा पूर्वक लेप) करवामां आवे तो तेथी व्रण शरीरना जेवा वर्णवाळो थाय छे.

७० हस्तिदन्तमसीं कृत्वा मुख्यं चैव रसाञ्जनम्
रोमाण्येतेन जायन्ते लेपात्पाणितलेष्वपि ।
चतुष्पदानां त्वग्रोमखुरशृङ्गास्थिभस्मना ॥
तैलाक्ता चूर्णिता भूमिर्भवेद्रोमवती पुनः ।
कासीसं नक्तमालस्य पल्लवांश्चैव संहरेत् ॥
कपित्थरसपिष्टानि रोमसञ्जननं परम् ।

रोमसंजनन (रूझाई गएला व्रण उपर रूवाडां उत्पन्न करवा) नामनी चुमालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

७० हाथीना दांतनी मसी बनावी तेने उत्तम

रसवंतीनी साथे बकरीना दूधमां वाटीने तेनो लेप करवामां आवे तो तेथी हाथनां तळांओमां पण रूवाडां उत्पन्न थाय छे.

व्रणनी जग्याने तैलथी खरडीने तेनी उपर घोडा, बळद तथा पाडा वगेरे चतुष्पद प्राणीओनां चामडां, रूवाडां, खरीओ, शींगडां तथा अस्थिओ एओनी भस्म भभराववामां आवे तो ते जग्या पाछी रूवाडांवाळी थाय छे.

हीराकसी अने करंजनां कोमळ पानडां एओने एकठां करी कोठना रसमां वाटीने तेनो लेप करवामां आवे तो तेथी व्रणनी जग्या सारी रीते रूवाडांवाळी थाय छे.

७१ रोमाकीर्णो व्रणो यस्तु न सम्यगुपरोहति
क्षुरकर्त्तरिसन्दंशैस्तस्य रोमाणि निर्हरेत् ।
शङ्खचूर्णस्य भागौ द्वौ हरितालं च भागिकम् ॥
शुक्तेन सह पिष्टानि लोमशातनमुत्तमम् ।
तैलं भल्लातकस्याथ स्नुहीक्षीरं तथैव च ॥
प्रगृह्यैकत्र मतिमान्रोमशातनमुत्तमम् ।
कदलीदीर्घवृन्ताभ्यां भस्मालं लवणं शमी ॥
बीजं शीतोदपिष्टं वा रोमशातनमाचरेत् ।
आगारगोधिकापुच्छं रम्भालं बीजमैङ्गुदम् ॥
दग्ध्वा तद्भस्मतैलाम्बु सूर्यपक्कं कचान्तकृत् ।

लोमापहरण (व्रणनी जग्या उपर ऊगेलां रूवाडांओने दूर करवा) नामनी पिस्तालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

७१ जे व्रण रूवाडांओथी व्याप्त थवाने लीधे बराबर रूझातो न होय ते व्रण उपरना रूवाडांओने अस्त्राथी, कातरथी के चीपीयाथी दूर करी नाखवां.

बे भाग शंखनो भूको अने एक भाग हरताल एओने शुक्तमां वाटीने लगाववां ए रूवाडांओने खेरी नाखवानो उत्तम उपाय छे.

भीलामानुं तेल अने थोरनुं छीर एओने एकठां करीने लगाववामां आवे तो तेथी रूवाडां सारी पेठे नष्ट थई जाय छे.

केळनी तथा अरडूसानी भस्म, हरताल, सैंधव अने रातां फळोवाळा खीजडानां बीज एओने टाढा पाणीमां वाटी लेप करवामां आवे तो तेथी रूवाडां कपाई जाय छे.

ढेढगरोळीनुं पूंछडुं, केळ, हरताल अने इंगोळीयानां बीज एओने बाळी तेनी भस्मने तैलथी तथा जळथी भींजावी सूर्यना तडकामां गरम करीने लगाववामां आवे तो तेथी वालोनो विनाश थई जाय छे.

७२ वातदुष्टो व्रणो यस्तु रूक्षश्चात्यर्थवेदनः ॥
अधःकाये विशेषेण तत्र वस्तिर्विधीयते ।

बस्तिकर्म (गुदामां पीचकारी देवा) नामनी छेतालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

७२ वायुथी दुष्ट थएलो जे व्रण रूक्ष अने अत्यंत वेदनावाळो होय तेने शांत करवा माटे विशेषे करी गुदामां पिचकारी मारवी ए हितकारी छे.

७३ मूत्राघाते मूत्रदोषे शुक्रदोषेऽश्मरीव्रणे ॥
तथैवार्त्तवदोषे च वस्तिरप्युत्तरो हितः ॥

उत्तरबस्तिकर्म (लिंगमां के योनिमां पीचकारी मारवा) नामनी सडतालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

७३ मूत्राघात, मूत्रदोष, वीर्यसंबंधी दोष, पथरीसंबंधी व्रण अने रजसंबंधी दोष एओने शांत करवा माटे लिंगमां के योनिमां पिचकारी देवी ए पण हितकारी छे.

७४ यस्माच्छुध्यति बन्धेन व्रणो याति च मार्दवम्
रोहत्यपि च निःशङ्कस्तस्माद्बन्धो विधीयते ॥

---

१ केश खरी पडवा उपर आ प्रयोगनी घणीवार अजमाएश करी जोई छे अने सघळी अजमाएशोमां कोई वखत पण आ प्रयोग निष्फळ थयो नथी. (डल्हन).

२ रातां फळोवाळो खीजडो लेपनथी अने भक्षणथी पण केशोने हणनारो छे एम वृद्ध वैद्यो केहेछे. (डल्हन.)

बंध (पाटो बांधवा) नामनी अडतालीशमी चिकित्सानुं निरूपण.

७४ पाटो बांधवाथी व्रण शुद्ध थाय छे, कोमळपणुं पामेछे अने अभिघातनी तथा मांखीओ वगेरेनी हरकतथी रहित रहीने रूझाई जाय छे एटला माटे पाटो बांधवो उचित छे. (सू. अ. १८ मो जुवो.)

७५स्थिराणामल्पमांसानां रौक्ष्यादनुपरोहताम् ।
पत्रदानं भवेत्कार्यं यथादोषं यथर्त्तु च ॥
एरण्डभूर्जपूतीकहरिद्राणां तु वातजे ।
पत्रमाश्वबलं यच्च काश्मरीपत्रमेव च ॥
पत्राणि क्षीरवृक्षाणामौदकानि तथैव च ।
दूषिते रक्तपित्ताभ्यां व्रणे दद्याद्विचक्षणः ॥
पाठामूर्वागुडूचीनां काकमाचीहरिद्रयोः ।
पत्रं च शुकनासाया योजयेत्कफजे व्रणे ॥
अकर्कशमविक्लिन्नमजीर्णं सुकुमारकम् ।
अजन्तुजग्धं मृदु च पत्रं गुणवदुच्यते ॥
स्नेहमौषधसारं च पट्टवस्त्रान्तरीकृतम् ।
न दूषयति यत्पत्रं लेपस्योपरि दापयेत् ॥
शैत्यौष्ण्यजननार्थाय स्नेहसंग्रहणाय च ।
दत्तौषधेषु दातव्यं पत्रं वैद्येन जानता ॥

पत्रदान (व्रण उपर पानडां मूकवा) नामनी ओगणपंचाशमी चिकित्सानुं निरूपण.

७५ जे व्रणो कठण होय, अल्प मांसवाळा होय अने रूक्षपणाने लीधे रूझाता न होय ते व्रणोनी उपर दोषने तथा ऋतुने अनुसरीने पानडां मूकवां.

एरडानां पानडां, भोजपत्र, गुच्छकरंजनां पानडां अने हळदरनां पानडां मूकवाथी वातदूषित व्रण शांत थाय छे.

पोथीनां अथवा गदभनां पानडां, सीवणनां पानडां, वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां पानडां अने कमळपत्र वगेरे जलजन्य उद्भिज्जोनां पत्रो मूकवाथी रुधिरदूषित तथा पित्तदूषित व्रण शांत थायछे.

काळीपाडनां पानडां, मोरवेलना पानडां, गळोनां पानडां, पीलुडीनां पानडां, हळदरनां पानडां अने अरडूसानां पानडां मूकवाथी कफदूषित व्रण शांत थाय छे.

जे पानडुं खरसटपणावगरनुं, क्लेदवगरनुं, जीर्ण नहीं थएलुं, पातळुं अने जीवडाओए नहीं खाधेलुं तथा कोमळ होय ते गुणवाळुं केहेवायछे. लेपनी उपर अने पाटानी नीचे एवी रीते पानडुं मूकवुं के जे रीते मूकवाथी ए पानडुं स्नेहने के औषधना सारने खराब न करे. प्रवीण वैद्ये औषधो लगावीने वातकफव्रणमां उष्णता उत्पन्न करवाने माटे अने पित्तरक्तव्रणमां शीतता उत्पन्न करवाने माटे औषधोनी उपर पानडुं मूकवुं. स्नेह जलवाइ रहे ए पण पानडुं मूकवानुं प्रयोजन छे.

७६मक्षिका व्रणजातस्य निःक्षिपन्ति यदा कृमीन् ।
श्वयथुर्भक्षिते तैस्तु जायते भृशदारुणः ॥
तीव्रा रुजो विचित्राश्च रक्तास्रावश्च जायते ।
सुरसादिर्हितस्तत्र धावने पूरणे तथा ॥
सप्तपर्णकरञ्जार्कनिम्बराजादनत्वचः ।
हिता गोमूत्रपिष्टाश्च सेकः क्षारोदकेन वा ॥
प्रच्छाद्य मांसपेश्या च कृमीनपहरेद्व्रणात् ।
विंशतिं कृमिजातीस्तु वक्ष्याम्युपरि भागशः ॥

कृमिघ्न (व्रणमां पडता कीडाओने नष्ट करवा) नामनी पंचाशमी चिकित्सानुं निरूपण.

७६ मांखीओ व्रणमां कीडाओने नाखेछे. ए कीडाओ व्रणने खावा लागेछे त्यारे तेमां अत्यंत दारुण सोजो उत्पन्न थाय छे. सोजो उत्पन्न थवाथी तीव्र अने विचित्र प्रकारनी वेदनाओ थाय छे अने रुधिरनो स्राव पण थाय छे.

जेमां कीडा पड्या होय ते व्रणने धोवामां तथा पूरवामां सुरसादि गण हितकारी छे.

सप्तपर्ण (एक एक डांखळीमां सात सात पानडांओवाळुं आ झाड गोवा तरफना घाटमां थाय छे.) करंज, आकडो, लींबडो अने राण्य एओनी छालोने गोमूत्रमां वाटी ते कल्क लगाववो अथवा क्षारना पाणीथी सेचन करवुं ए पण कीडावाळा व्रणने माटे सारूं छे.

जे व्रणमां कीडा पड्या होय ते व्रणने मांसनी पेशीथी ढांकी, ए पेशीने खावा माटे कीडाओ ऊंचा आवे त्यारे तेओने व्रणमांथी काहाडी लेवा.

कीडाओ वीश जातना थाय छे ते सघळी जातोनुं विवेचन उत्तरतंत्रना कृमिरोगप्रतिषेध नामना ५४ मा अध्यायमां करवामां आवशे.

७७ दीर्घकालातुराणां तु कृशानां व्रणशोषिणाम्
बृंहणीयो विधिः सर्वः कार्योऽग्निं परिरक्षता ॥

बृंहण (व्रणवाळाना शरीरने पुष्टि आपवा) नामनी एकावनमी चिकित्सानुं निरूपण.

७७ व्रणथी क्षीण थएला, लांबा काळथी आतुर थएला अने कृश शरीरवाळा रोगीओनां शरीरोने पुष्टि आपवा माटे वैद्ये सघळा प्रकारनो बृंहणीय विधि (पुष्टिकारक प्रकार) करवो पण तेमां जठराग्निना बचाव उपर पूरतुं ध्यान देतां रेहेवुं.

७८ विषजुष्टस्य विज्ञानं विषनिश्चयमेव च ।
चिकित्सितं च वक्ष्यामि कल्पे तु प्रतिभागशः ॥

विषघ्न (झेरने हणवा) नामनी बावनमी चिकित्सानुं निरूपण.

७८ जेमां झेर पडेलुं होय एवा अन्नपानादिकनी परीक्षा विषे, झेरनो निश्चय करवाविषे अने झेरनी चिकित्साविषे कल्पस्थानमां पूरता विभागोथी व्याख्यान आपवामां आवशे.

७९ कण्डूमन्तः सशोफाश्च ये च जत्रूपरि व्रणाः
शिरोविरेचनं तेषु विदध्यात्कुशलो भिषक् ॥

शिरोविरेचन (माथाना दोषोने खाली करवा) नामनी त्रेपनमी चिकित्सानुं निरूपण.

७९ जो डोकनी हांसडीथी उपरना छेक मस्तकसूधीना भागोमां थएला व्रणो खरजवाळा अने सोजावाळा होय तो प्रवीण वैद्ये रोगीने शिरोविरेचन देवुं.

८० रुजावन्तोऽनिलाविष्टा रूक्षा ये चोर्ध्वजत्रुजाः
व्रणेषु तेषु कर्त्तव्यं नस्यं वैद्येन जानता ॥

नस्य (नाकमां टीपां नाखवा) नामनी चोपनमी चिकित्सानुं निरूपण.

८० जो डोकनी हांसडीथी उपरना छेक मस्तकसूधीना भागोमां थएला व्रणो वायुथी दूषित होवाने लीधे वेदनावाळा अने रूक्ष होय तो प्रवीण वैद्ये रोगीने स्नैहिक नस्य देवुं.

८१ दोषप्रच्यावनार्थाय रुजादाहक्षयाय च ।
जिह्वादन्तसमुत्थस्य हरणार्थं मलस्य च ।
शोधनो रोपणश्चैव व्रणस्य मुखजस्य वै ।
उष्णो वा यदि वा शीतः कवलग्रह इष्यते ॥

कवलधारण (औषधोना कल्कनो कोळीओ अरधो चवरावीने थूंकावी नाखवा) नामनी पंचावनमी चिकित्सानुं निरूपण.

८१ दोषोने पाडी नाखवामाटे, वेदनाओने तथा दाहने नष्ट करवामाटे अने जीभमां तथा दांतोमां थएला मेलनुं हरण करवानेमाटे वैद्ये रोगीने योग्य औषधोना कल्कनो कोळीओ आपी अरधो चवरावीने थूंकावी नाखवो. मुखमां थएला व्रणने शुद्ध करवामाटे तथा धरती लावीने रूझावा माटे आ टाढो अथवा ऊनो कोळीओ भरावो[1]. शोधन करवुं होय तो शोधन द्रव्योथी बनावेलो अने रोपण करवुं होय तो रोपण द्रव्योथी बनावेलो कोळीओ देवो. (वातदूषित तथा कफदूषित व्रण उपर ऊनो कोळीओ देवो अने रुधिरदूषित तथा पित्तदूषित व्रण उपर टाढो कोळीओ देवो. डल्हन.)

१ आ ग्रंथमां तो मोहोडामां चोमेर फेरवी शकाय एवा कोगळाने कवळ कह्यो छे. (चिकित्सितस्थान अध्याय ४० मो विषय ४०–४१.)

८२ ऊर्ध्वजत्रुगतान्रोगान्व्रणांश्च कफवातजान् ।
शोफस्रावरुजायुक्तान्धूमपानैरुपाचरेत् ॥

धूम (धूमाडो पीवरावववा) नामनी छपनमी चिकित्सानुं निरूपण.

८२ डोकनी हांसडीथी ऊपरना छेक मस्तकसूधीना भागोमां थएला रोगोने अने सोजावाळा, स्राववाळा तथा वेदनावाळा कफजन्य तथा वातजन्य व्रणोने शांत करवा माटे रोगीने योग्य औषधोनो धूमाडो पावारूप चिकित्सा करवी.

८३ क्षतोष्मणो निग्रहार्थं सन्धानार्थं तथैव च ।
सद्योव्रणेष्वायतेषु क्षौद्रसर्पिर्विधीयते ॥

मधुसर्पि (मध तथा घी लगाववा) नामनी सत्तावनमी चिकित्सानुं प्रासंगिक निरूपण.

८३ विस्तारवाळा तुरतना थएला जखमोमां प्रहारादिकनी गरमीने अटकाववामाटे तथा चीराई गएला अवयवने सांधवामाटे मध तथा घी ए बन्नेनी योजना करवी. (आ अध्यायनो ४ थो विषय जुवो.)

८४ अवगाढास्त्वणुमुखा ये व्रणाः शल्यपीडिताः
निवृत्तहस्तोद्धरणा यन्त्रं तेषु विधीयते ॥

यंत्र (यंत्रथी शल्य काहाडवा) नामनी अठावनमी चिकित्सानुं निरूपण.

८४ जे व्रणो शल्यथी पीडाएला, ऊंडा, झीणां मुखोवाळा तथा जेओमांथी हाथवते शल्य काहाडी शकाय नहीं एवा होय ते व्रणोमांथी शल्य काहाडवाने माटे यंत्रनो उपयोग करवो.

८५ लघुमात्रो लघुश्चैव स्निग्ध उष्णोऽग्निदीपनः
सर्वव्रणेभ्यो देयस्तु सदाहारो विजानता ॥

आहार नामनी ओगणसाठमी चिकित्सानुं निरूपण.

८५ प्रवीण वैद्ये सघळा प्रकारना व्रणो उपर रोगीने दिवसे तथा राते पण थोडी मात्रावाळो, हलको, स्निग्ध, ऊनो अने अग्निने दीप्त करनारो आहार देवो. (आहारविषे विशेष विवेचन सूत्रस्थानना व्रणितोपासनीय नामना १९ मा अध्यायमां आप्युं छे ते जोवुं.)

८६ निशाचरेभ्यो रक्ष्यस्तु नित्यमेव क्षतातुरः।
रक्षाविधानैरुद्दिष्टैर्यमैः सनियमैस्तथा ॥

रक्षाविधान (व्रणवाळानुं रक्षण करवानी गोठवण) नामनी साठमी चिकित्सानुं निरूपण.

८६ क्षतथी आतुर थएला माणसनुं सूत्रस्थानना व्रणितोपासनीय नामना १९ मा अध्यायमां कह्या प्रमाणे हमेश (राते अने दिवसे पण) रक्षण करवुं. तेमज अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अने व्यवहारनिवृत्ति ए पांच यमो अने अक्रोध, गुरुशुश्रूषा, शौच, हलको आहार तथा अप्रमाद ए पांच नियमो पण सारी रीते पळाववा के जेथी आतुरनुं रक्षण थाय.

८७ षण्मूलोऽष्टपरिग्राही पञ्चलक्षणलक्षितः ।
षष्ट्या विधानैर्निर्दिष्टैश्चतुर्भिः साध्यते व्रणः॥

व्रणनां मूळोनी, स्थानोनी, लक्षणोनी, चिकित्साओनी अने साधकोनी संख्या.

८७ व्रणनां वात, पित्त, कफ, रुधिर, सन्निपात (सन्निपात शब्दथी बबेना संसर्गनुं पण ग्रहण करी शकाय छे.) अने आगंतु ए छ मूळो छे. त्वचा, मांस, शिरा, स्नायु, संधि, अस्थि, कोठो अने मर्म ए आठ स्थानको छे. गंध, वर्ण, स्राव, वेदना अने आकृति ए पांच लक्षणो छे. (सू. अ. २२ मो तथा २८ मो जुवो.) अपतर्पणथी ते रक्षाविधानसूधीनी साठ चिकित्साओ छे अने वैद्य, आतुर, परिचारक तथा औषध ए चार साधको छे. (सू. अ. ३४ मो जुवो.)

८८ योऽल्पौषधकृतो योगो बहुग्रन्थभयान्मया ।
द्रव्याणां तत्समानानां तत्रावापो न दुष्यति ॥

थोडां औषधोवाळा योगमां बीजां पण योग्य औषधो दाखल करवामां बाध नथी.

८८ में ग्रंथनो विस्तार थई जवाना भयने

लीधे जे योग थोडी संख्यानां औषधोथी बतावेल होय ते योगमां ते औषधोना जेवाज रस, गुण, वीर्य अने विपाकवाळां बीजां वधारे औषधो दाखल करवामां कशो बाध समजवो नहीं.

८९ प्रसङ्गाभिहितो यो वा बहुदुर्लभभेषजः ।
यथोपपत्ति तत्रापि कार्यमेव चिकित्सितम् ॥

योगमां दाखल करवा कहेलां औषधोमांथी जेटलां मळी शके तेटलां औषधो ते योगमां दाखल करवानी छूट.

८९ जे योग अनेकसाधारण केहेवामां आव्यो होय अथवा घणां औषधोवाळो होय अथवा केटलांक दुर्लभ औषधोवाळो होय ते योगमां जेटलां मळी शके एम होय तेटलां औषधो दाखल करीने चिकित्सा करवी.

९० गणोक्तमपि यद्द्रव्यं भवेद्व्याधावयौगिकम् ।
तदुद्धरेद्यौगिकं तु प्रक्षिपेदप्यकीर्त्तितम् ॥

कहेलुं औषध पण अयौगिक जणाय तो तेनो त्याग करवानी अने नहीं कहेलुं औषध पण यौगिक जणाय तो तेने दाखल करवानी छूट.

९० जे औषध वर्गमां कहेलुं छतां पण चालता व्याधि उपर देवुं अयोग्य जणाय तो तेने छोडी देवुं अने जे औषध वर्गमां नहीं कहेलुं छतां पण चालता व्याधि उपर देवुं योग्य जणाय तो तेने दाखल करवुं.

९१ उपद्रवास्तु द्विविधा व्रणस्य व्रणितस्य च।
तत्र गन्धादयः पञ्च व्रणस्योपद्रवाः स्मृताः ॥
ज्वरातीसारौ मूर्छा च हिक्का छर्दिररोचकः ।
श्वासकासाविपाकाश्च तृष्णा च व्रणितस्य च ॥

व्रणना तथा व्रणवाळाना जूदा जूदा उपद्रवो.

९१ व्रणना उपद्रवो अने व्रणवाळाना उपद्रवो एम उपद्रवो बे प्रकारना छे. गंध, वर्ण, स्राव, वेदना तथा आकृति ए पांच व्रणना उपद्रवो छे अने ज्वर, अतीसार, मूर्छा, हेडकी, उलटी, अरुचि, श्वास, खांसी, अन्ननुं नहीं पचवुं तथा तरश ए दश व्रणवाळाना उपद्रवो छे.

९२ व्रणक्रियास्वेवमासु व्यासेनोक्तास्वपि क्रियां
भूयोऽप्युपरि वक्ष्यामि सद्योव्रणचिकित्सिते ॥

व्रणनी चिकित्साओ विस्तारथी कहेली छतां पण केटलीएकनो हवे पछीना अध्यायमां विशेष विस्तार केहेवानी प्रतिज्ञा.

९२ आ प्रमाणे आ अध्यायमां पण जो के व्रणनी चिकित्साओ विस्तारथी केहेवामां आवी छे तोपण हवे पछीना 'सद्योव्रणचिकित्सत' नामना बीजा अध्यायमां केटलीएक चिकित्साओनुं विशेष विस्तारथी निरूपण करवामां आवशे.

अध्याय २ जो.

१ अथातः सद्योव्रणचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'सद्योव्रणचिकित्सित'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ धन्वन्तरिर्धर्मभृतां वरिष्ठो वाग्विशारदः ।
विश्वामित्रात्मजमृषिं शिष्यं सुश्रुतमन्वशात् ॥
नानाधारामुखैः शस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ।
नानारूपा व्रणा ये स्युस्तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥

आ ग्रंथनी परंपरानुं स्मरण अने शस्त्रोना व्रणोनां लक्षणो केहेवानी प्रतिज्ञा.

२ धर्मात्माओमां उत्तम अने वचनो बोलवामां महाप्रवीण भगवान् धन्वंतरिए पोताना

---

१ तुरतना थएला व्रणनी अर्थात् आगंतुक व्रणनी चिकित्साविषेनो.

शिष्य अने विश्वामित्रना पुत्र सुश्रुत नामना ऋषिने कह्युं के 'अनेक प्रकारनी धाराओवाळां अने अनेक प्रकारनां मुखोवाळां शस्त्रो शत्रुओना हाथ वगेरेथी शरीरना ते ते प्रदेशोमां पडतां अनेक प्रकारना आकारोवाळा जे व्रणो थाय छे तेओनां लक्षणो कहुंछुं. (आथी जणाव्युं के शस्त्रोनी अनेक प्रकारनी धाराओ, अनेक प्रकारनां मुखो अने ते शस्त्रोनुं शरीरना जूदा जूदा प्रदेशोपर पडवुं एओ व्रणोनी आकृतिओनां कारणो छे.)

३ आयताश्चतुरस्राश्च त्र्यस्रा मण्डलिनस्तथा ।
अर्द्धचन्द्रप्रतीकाशा विशालाः कुटिलास्तथा ॥
शरावनिम्नमध्याश्च यवमध्यास्तथापरे ।
एवं प्रकाराकृतयो भवन्त्यागन्तवो व्रणाः ॥
दोषजा वा स्वयं भिन्ना न तु वैद्यनिमित्तजाः ।

आगंतुज व्रणोनी अने पोतानी मेळे भेदाएला दोषजन्य व्रणोनी जूदी जूदी आकृतिओ.

३ आगंतुज व्रणोमां अने पोतानी मेळे भेदाएला दोषजन्य व्रणोमां पण केटलाएक व्रणो लांबा थाय छे, केटलाएक व्रणो चोरस थाय छे, केटलाएक व्रणो त्रण खुणाओवाळा थाय छे, केटलाएक व्रणो गोळ थाय छे, केटलाएक व्रणो अर्द्धचंद्र जेवा थाय छे, केटलाएक व्रणो पोहोळा थाय छे, केटलाएक व्रणो वांका थाय छे, केटलाएक व्रणो कोडीयांओनी पेठे उंडां मध्योवाळा थाय छे अने केटलाएक व्रणो जवना जेवा जाडां मध्योवाळा थाय छे. वैद्ये रोग मटाडवामाटे आयुर्वेदनी रीतिप्रमाणे शस्त्रोथी करेला व्रणो तो सूत्रस्थानना ९ मा अध्यायमां कह्या प्रमाणे चोकस आकारवाळाज होवा जोईए तेथी तेओनी आकृतिओने आ आकृतिमां गणी नथी.

४ भिषग्व्रणाकृतिज्ञो हि न मोहमधिगच्छति ॥
भृशं दुर्दर्शरूपेषु व्रणेषु विकृतेष्वपि ।

व्रणोनी आकृतिओ जाणवानुं फळ.

४ व्रणोनी आकृतिओने जाणनारो वैद्य अत्यंत खराब देखाववाळा विकृत व्रणोने जोईने पण कशो गभराट के मोह नहीं पामतां योग्य चिकित्सा करी शके छे.

५ अनेकाकृतिरागन्तुः स भिषग्भिः पुरातनैः॥
समासतो लक्षणतः षड्विधः परिकीर्त्तितः ।
छिन्नं भिन्नं तथा विद्धं क्षतं पिच्चितमेव च ॥
घृष्टमाहुस्तथा षष्ठं तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ।

आगंतु व्रणना छ भेद.

५ प्राचीन वैद्योए अनेक आकारोवाळा आगंतुक व्रणनो संक्षेपथी नीचेप्रमाणे छ भेदोमां समावेश कर्यो छे. लक्षणो उपरथी छिन्न, भिन्न, विद्ध, क्षत, पिच्चित अने घृष्ट ए रीते आगंतुक व्रणना छ भेद थाय छे. हवे ए भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो कहुंछुं.

६ तिरश्चीन ऋजुर्वापि यो व्रणश्चायतो भवेत् ॥
गात्रस्य पातनं चापि छिन्नमित्युपदिश्यते ।

छिन्ननुं लक्षण.

६ जे आडो के सीधो व्रण लांबो होय ते छिन्न केहेवाय छे. शस्त्रादिकना प्रहारथी हाथ वगेरे गात्र पडी गएल होय अथवा वळगी रहेल होय ते पण छिन्न केहेवाय छे.

७ कुन्तशक्त्यृष्टिखड्गाग्रविषाणादिभिराशयः ॥
हतः किञ्चित्स्रवेत्तद्धि भिन्नलक्षणमुच्यते ।
स्थानान्यामाग्निपक्वानां मूत्रस्य रुधिरस्य च ॥
हृदुण्डुकः फुप्फुसश्च कोष्ठ इत्यभिधीयते ।
तस्मिन्भिन्ने रक्तपूर्णे ज्वरो दाहश्च जायते ॥
मूत्रमार्गगुदास्येभ्यो रक्तं घ्राणाच्च गच्छति ।
मूर्छाश्वासतृडाध्मानमभक्तच्छन्द एव च ॥
विण्मूत्रवातसङ्गश्च स्वेदास्रावोऽक्षिरक्तता ।
लोहगन्धित्वमास्यस्य गात्रदौर्गन्ध्यमेव च ॥
हृच्छूलं पार्श्वयोश्चापि विशेषं चात्र मे शृणु ।
आमाशयस्थे रुधिरे रुधिरं छर्दयेत्पुनः ।
आध्मानमतिमात्रं च शूलं च भृशदारुणम् ॥

पक्काशयगते चापि रुजो गौरवमेव च ।
शीतता चाप्यधो नाभेः खेभ्यो रक्तस्य चागमः ॥
अभिन्नेऽप्याशयेऽन्त्राणां खैः सूक्ष्मैरन्त्रपूरणम् ।
पिहितास्ये घटे यद्वल्लक्ष्यते तस्य गौरवम् ॥

भिन्ननुं लक्षण.

७ कोठो भालांथी, सांगथी, कडीआरीथी, तरवारथी के शीगडां वगेरेथी भेदाईने कोई रुधिरादिक वस्तुनो स्राव करतो होय ते **भिन्न** केहेवाय छे. काचा आहारनुं स्थान, पाका आहारनुं स्थान, अग्निनुं स्थान, मूत्रनुं स्थान, रुधिरनुं स्थान, हृदय, विष्टाने रेहेवानी पोटली अने फेफसुं एओ मळीने कोठो केहेवाय छे. ए कोठो के जे रुधिरथी पूर्ण होय छे ते भेदायो होय तो ज्वर तथा दाह थाय छे. नाभिथी नीचेना प्रदेशोमां भेदायो होय तो मूत्रना मार्गथी तथा गुदाथी लोही चाले छे अने नाभिथी उपरना प्रदेशोमां भेदायो होय तो मोहोडाथी तथा नाकथी लोही चाले छे. भिन्नमां मूर्छा, श्वास, तरश, आफरो, अन्न उपर अरुचि, विष्टानी अटकायत, मूत्रनी अटकायत, वायुनी अटकायत, पसीनानो स्राव, नेत्रोनुं रातापणुं, मोहोडामां लोढाना जेवो गंध, गात्रोनुं दुर्गंधपणुं, हृदयमां शूळ अने पडखांओमां शूळ एओ पण थाय छे. आ विषयमां विशेष पण कहुंछुं ते सांभळो. व्रणनुं रुधिर आमाशयमां गयुं होय तो रुधिरनुं वमन थाय छे, अत्यंत आफरो थाय छे अने अतिदारुण शूळ नीकळे छे. व्रणनुं रुधिर पक्काशयमां गयुं होय तो वेदनाओ थाय छे, भारेपणुं थायछे शीतलता थई जाय छे अने नाभिथी नीचेनां स्रोतोमांथी लोही नीकळे छे. जेम घडानुं मोहोडुं बंध करी राख्या छतां पण जळ घडानां सूक्ष्म छिद्रोमांथी घडानी अंदर पेसी जाय छे तेम आंतरडांओनुं स्थानक नहीं भेदाया छतां पण रुधिर ते स्थानकनां सूक्ष्म छिद्रोमांथी अंदर पेसी जायछे तेथी आंतरडांओ पूराई जवाने लीधे अंत्राशयनुं भारेपणुं थाय छे.

८ सूक्ष्मास्यशल्याभिहतं यदङ्गं त्वाशयाद्विना ।
उत्तुण्डितं निर्गतं वा तद्विद्धमिति निर्दिशेत् ॥

विद्धनुं लक्षण.

८ उपर कहेलां आमाशयआदि स्थानको शिवाय बीजुं कोई अंग सूक्ष्म मोहोडावाळा शल्यथी अभिघात पामीने उंचा मोहोडावाळुं थई रह्युं होय अथवा तेमांथी शल्य नीकळी गयुं होय तोपण ते अंग **विद्ध** केहेवाय छे.

९ नातिच्छिन्नं नातिभिन्नमुभयोर्लक्षणान्वितम् ।
विषमव्रणमंगं यत्तत्क्षतं त्वभिनिर्दिशेत् ॥

क्षतनुं लक्षण.

९ जे अंग अत्यंत छेदाई गयुं (बे भागवाळुं) न होय तेम अत्यंत चीराई गयुं पण न होय परंतु छेदावुं तथा चीराइजवुं ए बन्नेनां लक्षणोवाळुं होय अने नीचा ऊंचा व्रणवाळुं होय ते अंग **क्षत** कहेवाय छे.

१० प्रहारपीडनाभ्यां तु यदङ्गं पृथुतां गतम् ।
सास्थि तत्पिच्चितं विद्यान्मज्जारक्तपरिप्लुतम् ॥

पिच्चितनुं लक्षण.

१० जे अंग प्रहारथी के भींस आववाथी अस्थिसहित पीचाईने पोहोळुं थई गयुं होय तथा मज्जाथी अने रुधिरथी खरडाई गयुं होय ते अंग **पिच्चित** केहेवाय छे.

११ विगतत्वग्यदङ्गं हि सङ्घर्षादन्यथापि वा ।
उषास्रावान्वितं तत्तु घृष्टमित्युपदिश्यते ॥

घृष्टनुं लक्षण.

११ जे अंग घसावाथी अथवा बीजा कोई पण अभिघातथी चामडीवगरनुं (जेनी चामडी उचडी गई होय एवुं) थई गयुं होय अने दाहथी तथा स्रावथी युक्त थयुं होय ते अंग **घृष्ट** केहेवाय छे.

१२ छिन्ने भिन्ने तथा विद्धे क्षते वाऽसृगतिस्रवेत्
रक्तक्षयाद्रुजस्तत्र करोति पवनो भृशम् ॥
स्नेहपानं हितं तत्र तत्सेको विहितस्तथा ।
वेशवारैः सकृशरैः सुस्निग्धैश्चोपनाहनम् ॥

धान्यस्वेदांश्च कुर्वीत स्निग्धान्यालेपनानि च ।
वातघ्नौषधसिद्धैश्च स्नेहैर्बस्तिर्विधीयते ॥
पिच्चिते च विघृष्टे च नातिस्रवति शोणितम् ॥
अगच्छति भृशं तस्मिन्दाहः पाकश्च जायते ॥
तत्रोष्मणो निग्रहार्थं तथा दाहप्रपाकयोः ।
शीतमालेपनं कार्यं परिषेकश्च शीतलः ॥
षट्स्वेतेषु यथोक्तेषु छिन्नादिषु समासतः ।
ज्ञेयं समर्पितं सर्वं सद्योव्रणचिकित्सितम् ॥

छिन्न, भिन्न, विद्ध, क्षत, पिच्चित अने घृष्ट एओनुं सामान्य लक्षण तथा सामान्य चिकित्सा.

१२ छिन्न, भिन्न, विद्ध के क्षत थएल होय तो लोही बहुज स्रवेछे अने एवी रीते लोहीनो क्षय थवाथी पवन ते प्रदेशमां बहुज पीडाओने उत्पन्न करेछे. एओमां स्नेहपान कराववुं, सेहेवाय तेवा ऊना स्नेहोथी सेचन करवां, सारी पेठे स्निग्ध करेलां तथा बाफेलां अस्थिवगरनां मांसो अने सारी पेठे स्निग्ध करेली तलनी अडदनी तथा चोखानी खीचडी मूकीने पाटा बांधवा, बाफेलां धान्योथी अथवा धान्याम्लथी स्वेदनो करवां, स्निग्ध लेपनो करवां अने वायुने हणनारां औषधोना कल्को नाखीने पकावेला स्नेहोथी पिचकारी देवी ए हितकारी छे. (नाभिथी उपरना प्रदेशोमां छिन्नादिक थएल होय तो स्नेहपान कराववुं अने नाभिथी नीचेना प्रदेशोमां थएल होय तो पिचकारी देवी. आगंतुक व्रणनेमाटे गया अध्यायना चोथा विषयमां जे प्रथम चिकित्सा करवानुं कह्युं छे ते उपर पण ध्यान आपवुं.)

पिच्चित के घृष्ट थएल होय तो लोही बहु स्रवतुं नथी अने ते झाझुं नहीं स्रववाथी दाह तथा पाक थाय छे. एओमां शीतल आलेपन करवुं अने शीतल परिषेक करवो. (गया अध्यायना चोथा विषयपर लक्ष्य राखवुं.)

आ उपर कहेली छिन्न आदि छ प्रकारोनी चिकित्साओमां संक्षेपथी आगंतुक व्रणसंबंधी सघळी सामान्य चिकित्सानो समावेश थाय छे एम समजवुं.

१३ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि छिन्नानां तु चिकित्सितम् ।
ये व्रणा विवृताः केचिच्छिरःपार्श्वावलम्बिनः ।
तान्सीव्येद्विधिनोक्तेन बध्नीयाद्गाढमेव च ॥
कर्णं स्थानादपहृतं स्थापयित्वा यथास्थितम् ।
सीव्येद्यथोक्तं तैलेन स्रोतश्चाप्यभितर्पयेत् ।
कृकाटिकान्ते छिन्ने तु गच्छत्यपि समीरणे ॥
सम्यग्निवेश्य बध्नीयात्सीव्येच्चापि निरन्तरम् ।
आजेन सर्पिषा चैव परिषेकं तु कारयेत् ॥
उत्तानोऽन्नं समश्नीयाच्छयीत च सुयन्त्रितः ।
शाखासु पतितांस्तिर्यक्प्रहारान्विवृतान्भृशम् ॥
सीव्येत्सम्यग्निवेश्याशु सन्ध्यस्थीन्यनुपूर्वशः ।
बद्धा वेल्लितकेनाशु ततस्तैलेन सेचयेत् ॥
चर्मणा गोफणाबन्धः कार्यो यो वा हितो भवेत् ।
पृष्ठे व्रणो यस्य भवेदुत्तानं शाययेत्तु तम् ॥
अतोऽन्यथा चोरसिजे शाययेत्पुरुषं व्रणे ।
छिन्नां निःशेषतः शाखां दग्ध्वा तैलेन बुद्धिमान् ।
बध्नीयात्कोशबन्धेन प्राप्तं कार्यं च रोपणम् ।
चन्दनं पद्मकं रोध्रमुत्पलानि प्रियङ्गवः ॥
हरिद्रा [illegible]कं चैव पयः स्यादत्र चाष्टमम् ।
तैलमेभिर्विपक्वं तु प्रधानं व्रणरोपणम् ॥
चन्दनं कर्कटाख्या च सहे मांस्याह्वयामृते ।
हरेणवो मृणालं च त्रिफला पद्मकोत्पलम् ॥
त्रयोदशाङ्गं त्रिवृतमेतद्वा पयसान्वितम् ।
तैलं विपक्वं सेकार्थे हितं तु व्रणरोपणे ॥

छिन्ननेमाटे खास चिकित्सा.

१३ हवे छिन्न अंगोनी चिकित्सा कहुंछुं. माथानां पडखांओमां अथवा माथामां के पडखांओमां जे कोई व्रणो खुल्ला मोहोडावाळा होय तेओने आ ग्रंथना 'अष्टविधशस्त्रकर्मण्य' नामना २९ मा अध्यायना ११ मा विषयमां कह्याप्रमाणे सीववा अने पाटाओथी मजबूत बांधवा.

जो कान ठेकाणाथी खसी गयो होय तो तेने ठेकाणापर लावी बराबर बेसतो करीने सूत्रस्थानमां कह्याप्रमाणे सीववो अने ते कानना स्रोतने तैलथी सारी पेठे तृप्त करवुं.

डोकनो पाछलनो पर्यंत भाग छिन्न थयो होय तो, कदाच तेमांथी पवन नीकळतो होय तो पण ते भागने सारी रीते बेसतो करीने जरा पण मार्ग न रही जाय एवी रीते सीवी लेवो, पाटाथी बांधी लेवो अने ते भाग उपर बकरीना घीनुं सेचन करवुं. आ प्रमाणे करवामां आव्युं होय त्यारे रोगीए चत्तो सूतां सूतां अन्न खावुं तथा मूत्रादिक करवुं अने चलनवलन न थाय एवी रीते यंत्रित थईने सूवुं. (जेमांथी पवन नीकळतो होय ते व्रण असाध्य होवानुं सू० अ० २४ मामां जे कह्युं छे तेनो आ अपवाद छे एम समजवुं.)

शाखाओमां (हस्तोमां तथा पगोमां) पडेला अने अत्यंत खुल्लापणावाळा आडा प्रहारोने, शाखाओना सांधाओनां अस्थिओने अनुक्रमथी बराबर बेसतां करीने तुरत सीवी लेवा अने पछी तुरत सूत्रस्थानना व्रणालेपनबंधविधि नामना १८ मा अध्यायमां कहेला वेल्लितक नामना पाटाथी बांधवा. पछी तेओना उपर तैलनुं सेचन करवुं. योग्य जणाय तो चामडावते गोफणा नामनो पाटो बांधवो अथवा बीजा कोई प्रकारनो पाटो योग्य जणाय तो ते बांधवो.

जेने पीठमां व्रण थयो होय ते माणसने चत्तो सूवडाववो अने जेने छातीमां व्रण थयो होय ते माणसने ऊंधो सूवडाववो के जेथी दोष स्रवी जाय. दोष नहीं स्रवतां अंदर रहे तो ऊंडो खाडो पाडी दईने वकरे छे. (आ प्रमाणे जेज्जटाचार्ये व्याख्यान आप्युं छे परंतु गयदास तो पाठ बदलावीने एवुं व्याख्यान आपे छे के जेने पीठमां व्रण थएल होय ते माणसने ऊंधो सूवडाववो अने जेने छातीमां व्रण थयो होय ते माणसने चत्तो सूवडाववो.)

हाथ के पग निश्शेष कपाई गएल होय तो बुद्धिमान् वैद्ये शाखाना प्रदेशने तैलथी बाळीने सूत्रस्थानना १८ मा अध्यायमां कहेलो कोशबंध नामनो पाटो बांधवो अने शोधन तो अग्निथीज थई गयुं होय छे माटे पछी रोपणज करवुं.

चंदनादि तैल.

रतांजलि, पद्मकाष्ठ, लोदर, नीलकमळो, घउंलां, हळदर अने जेठीमध एओनो कल्क नाखीने दूधमां पकावेलुं तैल व्रणनुं रोपण करवामां सहुथी मुख्य छे.

त्रयोदशांग तैल.

रतांजलि, काकडाशींगी, अडबाउ मग, अडबाउ अडद, जटामांसी (वालछड,) गळो, मटाणा, कमळनाळ, हरडे, बेहेडां, आमळां, पद्मकाष्ठ अने नीलकमळ ए तेर पदार्थोनो कल्क नाखी तथा घी, चरबी अने मज्जा एओने पण नाखी चोगणा दूधमां तैल पकाववुं. आ तैल व्रणनुं रोपण करवामाटेना सेचनमां हितकारी छे.

१४ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि भिन्नानां तु चिकित्सितम् ।
भिन्नं नेत्रमकर्मण्यमभिन्नं लम्बते तु यत् ॥
तन्निवेश्य यथास्थानमव्याविद्धशिरं शनैः ।
पीडयेत्पाणिना सम्यक्पद्मपत्रान्तरेण तु ॥
ततोऽस्य तर्पणं कार्यं नस्यं चानेन सर्पिषा ।
आजं घृतं क्षीरपात्रं मधुकं चोत्पलानि च ॥
जीवकर्षभकौ चैव पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत् ।
सर्वनेत्राभिघाते तु सर्पिरेतत्प्रशस्यते ॥
उदरान्मेदसो वर्त्तिर्निर्गता यस्य देहिनः ।
कषायभस्ममृत्कीर्णां बद्ध्वा सूत्रेण सूत्रवित् ॥
अग्नितप्तेन शस्त्रेण छिन्द्यान्मधुसमायुतम् ।
बद्ध्वा व्रणं सुजीर्णेऽन्ने सर्पिषः पानमिष्यते ॥
स्नेहपानादृते चापि पयःपानं विधीयते ।
शर्करामधुयष्टिभ्यां लाक्षया वा श्वदंष्ट्रया ॥

चित्रासमन्वितं चैव रुजादाहविनाशनम् ।
आटोपो मरणं वा स्याच्छूलोवाऽच्छिद्यमानया॥
मेदोग्रन्थौ च यत्तैलं वक्ष्यते तच्च योजयेत् ।
त्वचोऽतीत्य शिरादीनि भित्त्वा वा परिहृत्य वा॥
कोष्ठे प्रतिष्ठितं शल्यं कुर्यादुक्तानुपद्रवान् ।
तत्रान्तर्लोहितं पाण्डुं शीतपादकराननम् ॥
शीतोच्छ्वासं रक्तनेत्रमानद्धं च विवर्जयेत् ।
आमाशयस्थे रुधिरे वमनं पथ्यमुच्यते ॥
पक्वाशयस्थे देयं च विरेचनमसंशयम् ।
आस्थापनं च निःस्नेहं कार्यमुष्णैर्विशोधनैः ॥
यवकोलकुलत्थानां निःस्नेहेन रसेन च ।
भुञ्जीतान्नं यवागूं वा पिबेत्सैन्धवसंयुताम् ॥
अतिनिस्रुतरक्तो वा भिन्नकोष्ठः पिबेदसृक् ।
स्वमार्गप्रतिपन्नास्तु यस्य विण्मूत्रमारुताः ॥
व्युपद्रवः स भिन्नेऽपि कोष्ठे जीवति मानवः ।
अभिन्नमन्त्रं निष्क्रान्तं प्रवेश्यं नान्यथा भवेत् ॥
पिपीलिकाशिरोग्रस्तं तदप्येके वदन्ति तु ।
प्रक्षाल्य पयसा दिग्धं तृणशोणितपांशुभिः ॥
प्रवेशयेत्कृत्तनखो घृतेनाक्तं शनैः शनैः ।
प्रवेशयेत्क्षीरसिक्तं शुष्कमन्त्रं घृताप्लुतम् ॥
अङ्गुल्याभिमृशेत्कण्ठं जलेनोद्वेजयेदपि ।
हस्तपादेषु संगृह्य समुत्थाप्य महाबलाः ॥
भवत्यन्तःप्रवेशस्तु यथा निर्धुनुयुस्तथा ।
तथाऽन्त्राणि विशन्त्यन्तः स्वां कलां पीडयन्ति च
व्रणाल्पत्वाद्बहुत्वाद्वा दुष्प्रवेशं भवेत्तु यत् ।
तदापाट्य प्रमाणेन भिषगन्त्रं प्रवेशयेत् ॥
यथास्थानं निविष्टे च व्रणं सीव्येदतन्द्रितः ।
स्थानादपेतमादत्ते प्राणान्गुम्फितमेव वा ॥
वेष्टयित्वा तु पट्टेन घृतसेकं प्रदापयेत् ।
घृतं पिबेत्सुखोष्णं च चित्रातैलसमन्वितम् ॥
मृदुक्रियार्थं शकृतो वायोश्चाधः प्रवृत्तये ।
ततस्तैलमिदं कुर्याद्रोपणार्थं चिकित्सकः ॥
त्वचोऽश्वकर्णधवयोर्मोचकीमेषशृङ्गयोः ।
शल्लक्यर्जुनयोश्चापि विदार्याः क्षीरिणां तथा ॥
बलामूलानि चाहृत्य तैलमेतैर्विपाचयेत् ।
व्रणं संरोपयेत्तेन वर्षमात्रं यतेत च ॥
पादौ निरस्तमुष्कस्य जलेन प्रोक्ष्य चाक्षिणी ।
प्रवेश्य तुन्नसेवन्या मुष्कौ सीव्येत्ततः परम् ॥
कार्यो गोफणिकाबन्धः कट्यामावेश्य यन्त्रकम् ।
न कुर्यात्स्नेहसेकं च तेन क्लिद्यति हि व्रणः ॥
कालानुसार्यागुर्वेलाजातीचन्दनपद्मकैः ।
शिलादार्व्यमृतातुत्थैस्तैलं कुर्वीत रोपणम् ॥

भिन्ननेमाटे खास चिकित्सा.

१४ हवे भिन्नोनी चिकित्सा कहुंछुं. भेदाई गएली (फूटी गएली) आंख असाध्यज छे पण नहीं फूटेली आंख जो लटकी रही होय तो तेने तेनी कोई पण शिरा अस्तव्यस्त न थाय एवी रीते धीरेधीरे बराबर ठेकाणे बेसती करी आडुं कमळपत्र राखीने हाथवते सारी रीते दबाववी अने पछी घीनो तथा मधनो योग आपीने नीचे लखेला घीथी तेनुं तर्पण करवुं तथा नस्य पण तेज घीनुं देवुं. बकरीनुं घी, जेठीमध, नीलकमळो, अने जीवक तथा ऋषभक (विदारीनुं मूळ) एओनो बत्रीश तोलांभार कल्क नाखी चोसठ तोलांभार घीने बसो छपन तोलांभार दूधमां पकाववुं. (आ घीथी आंखनुं तर्पण करवुं तथा नस्य पण तेज घीनुं देवुं.) सर्व प्रकारना नेत्रना अभिघातोमां आ घीनो उपयोग करवो ए उत्तम छे.

कोई माणसने पेटमांथी मेदनी वाट नीकळी होय ते वाट अंदर पेसाडतां छतां पण न पेसे अथवा पेठा छतां पण पाछी नीकळी आवे तो शास्त्र जाणनारा प्रवीण वैद्ये ते वाटनी उपर कडाया वगेरे कषाय वृक्षोनी भस्म तथा काळी माटीनुं चूर्ण नाखी वाटना मूळने दोराथी

१ जोके आ अध्यायना ७ मा विषयमां कोठामां थएला जखमनेज भिन्नना लक्षणमां गण्यो छे तोपण भिन्न थएला नेत्रनी चिकित्साने आ विषयमां दाखल करवी योग्य धारीने आचार्ये तेम कर्युं छे.

बांधी अग्निथी तपावेला[1] शस्त्रवते ते वाटने कापी नाखवी अने पछी व्रणने मधनो योग आपी पाटो बांधीने अन्न सारी पेठे जीर्ण थया पछी रोगीने घी पीवराववुं. कदाच घी पीवराववामां न आवे तो पण जेठीमधनो कल्क नाखीने पकावेलां[2] दूधमां साकर तथा एरंडीयुं तेल नाखीने ते दूध[3] पीवराववुं अथवा गोखरूनो कल्क नाखीने पकावेला दूधमां लाख तथा एरंडीयुं तेल नाखीने ते दूध पीवराववुं अथवा जेठीमध तथा गोखरू ए बन्नेनो कल्क नाखीने पकावेला दूधमां साकर, लाख तथा एरंडीयुं तेल नाखीने ते दूध पीवराववुं. आ दूध वेदनाने तथा दाहने नष्ट करेछे. जो ए मेदनी वाटने कापी नाखवामां न आवे तो तेथी पेटमां आटोप थाय छे, शूळ उत्पन्न थाय छे अने मरण पण थई जाय छे. आ चिकित्सित स्थानना १८ मा अध्यायना ६ ठ्ठा विषयमां मेदनी ग्रंथि उपर बे जातनी करंज वगेरेनुं जे तैल केहेवामां आवशे तेनी पण आ विषयमां योजना करवी.

जे शल्य साते त्वचाओनो अतिक्रम करी शिराओने, मांसने, स्नायुओने, संधिओने तथा अस्थिओने भेदीने[4] अथवा छोडी दईने कोठामां पेठुं होय ते शल्य सूत्रस्थानना प्रणष्टशल्यविज्ञानीय नामना २६ मा अध्यायना त्रीजा विषयमां कहेला आटोप तथा आनाह वगेरे उपद्रवोने उत्पन्न करेछे. शल्य कोठानी अंदर पेसवाथी जे माणस कोठाना मध्यमां पडेला लोहीवाळो, सफेद वर्णवाळो, टाढा हाथ-पगवाळो, टाढा मुखवाळो, शीतल श्वासवाळो, रातां नेत्रोवाळो के जेने मलमूत्रनी प्रवृत्ति योग्यमार्गेथी न थती होय एवो थई गयो होय तेने असाध्य रोगवाळो समजीने तेनी चिकित्सा करवी नहीं. रुधिर आमाशयमां रह्युं होय तो वमन कराववुं ए पथ्य छे, पित्ताशयमां रहेलुं होय तो विरेचन देवुं ए पथ्य छे अने वाताशयमां रहेलुं होय तो स्नेहवगरना ऊना गोमूत्रादिक शोधन पदार्थोथी निरूहबस्ति देवी (पीचकारी मारवी) ए पथ्य छे. ए प्रमाणे शुद्धि कर्या पछी रुधिरनुं अनुलोमन करवानेमाटे जव, बोर अने कळथी एओना स्नेहवगरना रसनी साथे अन्न जमाडवुं अथवा सैंधववाळी यवागू पावी. जेनो कोठो शल्यथी भेदाई गयो होय अने लोही बहुज नीकळ्युं होय ते माणसने तेना जीवनी स्थिरतानेमाटे वैद्ये लोही पावुं. कोठो शल्यथी भेदाई गया छतां पण जे माणसने विष्टा, मूत्र तथा पवन पोतपोताना मार्गेथी बराबर चालतां होय अने उपद्रवो न थया होय ते माणसने साध्य समजवो.

कोई माणसनुं बाहार नीकळेलुं आंतरडुं पाछुं अंदर पेसाडवुं होय तो ते आंतरडुं भेदायुं न होय तोज पेसाडवुं (पण भेदाएलुं होय तो पेसाडवुं नहीं) अने बाहार नीकळया पेहेलां स्वस्थदशामां जे स्थितिथी रहेल होय ते स्थितिथीज बेसतुं करवुं. परंतु केटलाएक आचार्यो केहेछे के 'आंतरडुं भेदाई गयुं होय तो तेने, भेदावाना प्रदेशमां मंकोडो वळगाडी ते आंतरडुं तेना मोहोडारूप चीपीआमां बराबर आवे त्यारे मंकोडाना धडने कातर वगेरेथी कापी नाखी मंकोडाना माथा सहित अंदर पेसाडी देवुं.' आंतरडांने दूधथी धोई, खडना भूकाथी, रुधि-

---

१ नहीं तपावेला शस्त्रथी छेदन करवामां आवे तो पाकी जवानी धास्ती रेहेछे.

२ कल्कथी आठगणुं दूध अने दूधथी चोगणुं पाणी नाखी उकाळतां उकाळतां फक्त दूधज अवशेष रहे त्यारे दूध पाकेलुं गणाय छे. दूधना पाकोमां सर्वत्र आ विधिज समजवो.

३ पकावेलुं दूध नित्य सोळ तोलांभार देवुं अने तेमां साकर तथा एरंडीयुं तेल एक एक तोलांभार देवुं. बीजा प्रयोगोमां पण आप्रमाणेज तोल समजवो.

४ शिराओ वगेरे भेदायां होय तो शां शां चिह्नो थाय छे ते विषे सूत्रस्थानना पच्चीशमा अध्यायना १७ मा विषयथी जुवो.

रथी, घींथी तथा रजथी खरडीने धीरे धीरे अंदर पेसाडी देवुं. जो आंतरडुं शुष्क होय तो तेने दूधनु सेचन आपी घीमां भींजवीने अंदर पेसाडी देवुं. आंतरडुं अंदर पेसाडवुं होय त्यारे वैद्ये पोताना नख उतरावी नाखवा जोईए. घणां आंतरडां बाहार नीकळयां होय तोपण एप्रमाणेज करवुं. आंतरडुं के आंतरडां अंदर पेसतां न होय तो तेओने ठेकाणे पोहोचाडवानेमाटे रोगीना कंठने वैद्ये आंगळीवते जरा जरा घसवो अथवा पाणी छांटीने रोगीने चमकाववो के जेथी आंतरडां बराबर पेसी जाय. अथवा अत्यंत बळवाळा माणसोए ते रोगीने हाथ-पग पकडी उचकावीने एवी रीते हलाववो के जेथी आंतरडांनो अंदर बराबर प्रवेश थई जाय. आम करवाथी आंतरडांओ अंदर पेसेछे अने पेसीने पोतानी पुरीषधरा नामनी पांचमी कळाने दबावेछे. जो आंतरडुं व्रणना नाहानापणाने लीधे अथवा आंतरडांओना घणापणाने लीधे अंदर पेसतुं न होय तो वैद्ये व्रणने प्रमाणसर फाडीचीरीने अंदर पेसाडवुं. आंतरडुं अंदर पोताना स्थानमां बराबर बेसतुं थई जाय त्यारे जरा पण आलस्य के बेदरकारी नहीं राखतां वैद्ये व्रणने सीवी लेवो. स्थानथी खसेलुं अथवा परस्परमां अस्तव्यस्त थएलुं आंतरडुं प्राण लेछे. व्रणने सीव्या पछी पाटाथी बांधीने तेना उपर घीनुं सेचन करवुं अने विष्टाने कोमळ करवामाटे तथा वायुनी नीचेना प्रदेशमां प्रवृत्ति करवामाटे सेहेवाय तेवुं ऊनुं घी एरंडीया तेलनी साथे पावुं.

अश्वकर्णादि तैल.

पछी वैद्ये व्रणना रोपणनेमाटे राळनुं झाड, धावडो, शेमळो, चमारदूधेली, सालेडो, कडायो के साजड, फगवेलो तथा वड वगेरे क्षीरिवृक्षो एओनी छालो लई तथा बळदाणाना छोडनां मूळीयां लई तेओना कल्कथी तैल पकावीने ते तैलनो योग आपवो. आ तैलथी व्रण बराबर रूझाई जाय छे. व्रण रूझाई गया पछी पण एक वर्षसुधी काळजी राखीने मैथुननो तथा मेहेनत वगेरेनो त्याग करवा वगेरे परेजी पळाववी.

जेना वृषणो नीकळी गया होय ते पुरुषना बन्ने पग उपर तथा आंखो उपर पाणीथी सेचन करी वृषणोने अंदर पेसाडीने तूनी लेवा जेवी सीवणीथी सीवी लेवा अने चलन न थवाने माटे कमरमां यंत्र (बंध) लगावीने गोफणा नामनो पाटो (कछोटो) बांधवो. आ उपर स्नेहनुं सेचन करवुं नहीं. केमके तेथी व्रणमां क्लेद थई जाय छे.

तगरादि तैल.

तगर, अगरु, एळची, जाई, रतांजलि, पद्मकाष्ठ, मणशील, दारूहळदर, गळो अने रसवंती एओना कल्कथी तैल पकावीने व्रणना रोपणनेमाटे तेनो योग आपवो.

१५ शिरसोऽपहृते शल्ये वालवर्त्तिं प्रवेशयेत् ।
वालवर्त्यामदत्तायां मस्तुलुङ्गं व्रणात्स्रवेत् ॥
हन्यादेनं ततो वायुस्तस्मादेवमुपाचरेत् ।
व्रणे रोहति चैकैकं शनैर्वालमपक्षिपेत् ॥
गात्राद्यपहृतेऽन्यस्मान्स्नेहवर्त्तिं प्रवेशयेत् ।
कृते निःशोणिते चापि विधिः सद्यःक्षते हितः ॥
दूरावगाढाः सूक्ष्माः स्युर्ये व्रणास्तान्विशोणितान्
कृत्वा सूक्ष्मेण नेत्रेण चक्रतैलेन तर्पयेत् ॥
समङ्गां रजनीं पद्मां त्रिवर्गं तुत्थमेव च ।
विडङ्गं कटुकां पथ्यां गुडूचीं सकरञ्जिकाम् ॥
संहृत्य विपचेत्काले तैलं रोपणमुत्तमम् ।
तालीशं पद्मकं मांसी हरेण्वगुरुचन्दनम् ॥
हरिद्रे पद्मबीजानि सोशीरं मधुकं च तैः ।
पक्वं सद्योव्रणेषूक्तं तैलं रोपणमुत्तमम् ॥

विद्धने माटे खास चिकित्सा.

१९ माथामां शल्य पेठुं होय तो ते शल्यने काहाडीने व्रणनुं मोहोडुं बंध करवा माटे व्रणनी अंदर पूर्ण रीते वाळनी वाट घाली देवी. वा-

१ शारीर स्थानना चोथा अध्यायनो चोथो विषय वांचो.

ळनी वाट घालवामां न आवी होय तो व्रणमांथी मगजनो (माथांने बळ आपनारी घी जेवी जे चीज छे तेनो) स्राव थाय छे अने ए स्राव थवाथी वायु रोगीने मारी नाखे छे माटे वाळनी वाट घालवारूप चिकित्सा करवी. व्रण ज्यारे रूझावा लागे त्यारे धीरे धीरे एक एक वाळ काहाडतो जवो.

बीजा गात्रमांथी शल्य काहाडवामां आव्युं होय तो व्रणमां तैलवाळी कपडांनी वाट खोसवी. ए गात्रने पाकनी धास्तीने लीधे रुधिरवगरनुं करीने पछी सद्यःक्षत उपरनो जे विधि छे ते करवो ए हितकारी छे. जे व्रणो दूरसूधी उतरेला अने सूक्ष्म होय तेओने व्रण धोवाना सूक्ष्म यंत्रथी लोहीवगरना करीने पछी पाणीमांथी तुरत ताजा लई लीधेला तैलथी अथवा अणुतैल के जे आ स्थानना चोथा अध्यायना २२ मा विषयमां केहेवामां आवशे तेथी तृप्त करवा.

समंगादि तैल.

मजीठ, हळदर, भारंगी, बमणी हरडे, बेहेडां आमळां, रसवंती, वावडींग, कडु, गळो अने करंजनां फळ एटलां द्रव्योने एकठां करी तेओना कल्कथी तैल पकाववुं. रूझाववानो समय प्राप्त थाय त्यारे आ तैल घणुं उत्तम काम करेछे.

तालीसादि तैल.

तालीसपत्र, पद्मकाष्ठ, वाळछड, हरेणु, (आनो पर्याय शब्द गुजरातीमां मळतो नथी.) अगरु, रतांजलि, हळदर, दारुहळदर, कमळनां बीज, वाळो अने जेठीमध एओनो कल्क नाखीने तैल पकाववुं. सद्योव्रणोनी (आगंतु व्रणोनी) उपर रूझाववाना कामनेमाटे आ तैल उत्तम छे.

१६ क्षते क्षतविधिः कार्यः पिच्चिते भग्नवद्विधिः

क्षतनी तथा पिच्चितनी खास चिकित्सा.

१६ क्षत थएल होय तो आ अध्यायना १२[1] मा विषयमां कह्या प्रमाणे चिकित्सा करवी. (आ स्थानना पेहेला अध्याय उपर पण ध्यान देवुं.)

पिच्चित थएल होय तो आ चिकित्सितस्थानना त्रीजा अध्यायमां कहेली भग्ननी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी.

१७ घृष्टे रुजो निगृह्याशु चूर्णैरुपचरेद्व्रणम् ॥

घृष्टनी खास चिकित्सा.

१७ घृष्ट थएल होय तो तुरत जेठीमध वगेरेना शीत योगोथी वेदनाने शांत करीने पछी (गयदासाचार्यना मतप्रमाणे घीना सेचन वगेरेथी शांत करीने पछी) राळनुं झाड अने कडायो के साजड ए वगेरेनां चूर्णोथी व्रणनी चिकित्सा करवी.

१८ विश्लिष्टदेहं पतितं मथितं हतमेव च ।
वासयेत्तैलपूर्णायां द्रोण्यां मांसरसाशनम् ॥
अयमेव विधिः कार्यः क्षीणे मर्महते तथा ।

स्थानच्युत अवयवोवाळो, झाड वगेरेनी उपरथी पडेलो, हलबली गएलो तथा प्रहारादिकथी अत्यंत उपघात पामेलो इत्यादिनी चिकित्सा.

१८ जे माणसना अवयवो साहसादिकने लीधे स्थानभ्रष्ट थया होय ते माणसने, जे माणस झाड वगेरेनी उपरथी पडी गयो होय ते माणसने, जे माणसना अवयवो भींसाई जवा वगेरेथी हलबली गया होय ते माणसने अने जे माणसनुं शरीर वेगवाळा पदार्थथी के धोका वगेरेथी उपघात पाम्युं होय ते माणसने तैलथी भरेली कोठीमां राखवो अने तेने मांसनो रसो जमाडवो.

जे माणस पंथ करवा वगेरेथी क्षीण थयो होय अथवा हृदय वगेरे मर्मोमां उपघात पाम्यो होय तेनेमाटे पण आ विधि करवो.

१९ रोपणे सपरीषेके पाने च व्रणिनां सदा ॥
तैलं घृतं वा संयोज्यं शरीरर्त्तूनवेक्ष्य हि ।

[1] आ अध्यायनो १६ मो विषय जुवो.

शरीरने तथा ऋतुने जोईने तैलनी तथा घीनी योजना करवाविषे.

१९ व्रणवाळाओनेमाटे रोपणमां, पीवामां तथा सेचनमां तैलनी के घीनी योजना शरीरने तथा ऋतुने जोईने करवी. (शरीर वातकफ प्रकृतिवाळुं होय अने शिशिरादिक काळ होय तो तैलनी योजना करवी. शरीर रक्तपित्त प्रकृतिवाळुं होय अने शरद्आदि काळ होय तो घीनी योजना करवी.)

२० घृतानि यानि वक्ष्यामि यत्नतः पित्तविद्रधौ
सद्योव्रणेषु देयानि तानि वैद्येन जानता ।

सद्योव्रणोनी उपर देवानां घृतो (घी.)

२० हुं आ चिकित्सास्थानना १६ मा अध्यायना ४ था विषयमां पित्तविद्रधिनी चिकित्साना प्रकरणमां प्रयत्नपूर्वक **प्रपौंडरीकमंजिष्ठा** इत्यादि श्लोकोथी जे घृतो केहेवानो छुं ते घृतो प्रवीण वैद्ये सद्योव्रणोनी उपर पण देवां.

२१ सद्यःक्षतव्रणं वैद्यः सशूलं परिषेचयेत् ॥
सर्पिषा नातिशीतेन बलातैलेन वा पुनः ।

तुरतना क्षतव्रणनी सशूल अवस्थामां घीनां तथा बलातैलनां सेचनो.

२१ वैद्ये जेमां शूळ नीकळतुं होय एवा सद्यःक्षतव्रण उपर, जो शरीर पित्तरक्त प्रकृतिवाळुं होय अने शरद वगेरे काळ होय तो घीथी परिषेक करवो अने जो शरीर वातकफ प्रकृतिवाळुं होय तथा हेमंत वगेरे काळ होय तो बलातैल के जे अत्यंत शीतळतावाळुं नथी तेथी परिषेक करवो. (आ स्थानना १९ मा अध्यायनो ११ मो विषय जुवो.)

२२ समङ्गां रजनीं पद्मां पथ्यां तुत्थं सुवर्चलाम्
पद्मकं रोध्रमधुकं विडङ्गानि हरेणुकम् ।
तालीशपत्रं नलदं चन्दनं पद्मकेसरम् ॥
मञ्जिष्ठोशीरलाक्षाश्च क्षीरिणां चापि पल्लवान् ।
पियालबीजं तिन्दुक्यास्तरुणानि फलानि च ॥
यथालाभं समाहृत्य तैलमेभिर्विपाचयेत् ।
सद्योव्रणानां सर्वेषामदुष्टानां तु रोपणम् ॥

सघळा प्रकारना अदुष्ट सद्योव्रणोना रोपणनेमाटे समंगादि तैल.

२२ रीसामणी, हळदर, भारंगी, हरडे, रसवंती, सूरजमुखी, पद्मकाष्ठ, लोदर, जेठीमध, वावडींग, हरेणुक नामनुं सुगंधिद्रव्य, तालीशपत्र, जटामांसी, रतांजलि, कमळना केसरा, मजीठ, वाळो, लाख, वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां कोमळ पल्लवो, चारोलीनां बीज अने टींबरूनां काचां फळो एओमांथी जेटलां मळे तेओने एकठां करी वाटीने तेओना कल्कथी तैल पकाववुं. आ तैल सघळा प्रकारना अदुष्ट सद्योव्रणोनुं रोपण करेछे.

२३ कषायमधुराः शीताः क्रियाः स्निग्धाश्च योजयेत् ॥
सद्योव्रणानां सप्ताहं पश्चात्पूर्वोक्तमाचरेत् ।

सद्योव्रणो (आगंतुक व्रणो)नी उपर तूरी, मधुर, शीत तथा स्निग्ध क्रियाओ करवानो अवधि.

२३ सद्योव्रणोनी उपर सात दिवस सूधी तूरी, मधुर, शीतल तथा स्निग्ध क्रियाओ करवी. सात दिवस वीती गया पछी द्विव्रणीयचिकित्सित नामना गया अध्यायमां कहेली चिकित्साओ योग्यता प्रमाणे करवी.

२४ दुष्टव्रणेषु कर्त्तव्यमूर्द्ध्वं चाधश्च शोधनम् ॥
विशोषणं तथाहारः शोणितस्य च मोक्षणम् ।
कषायं राजवृक्षादौ सुरसादौ च धावनम् ॥
तयोरेव कषायेण तैलं शोधनमिष्यते ।
क्षारोदकेन वा तैलं क्षारद्रव्येण साधितम् ॥

सर्व प्रकारना दुष्ट व्रणोनी उपर केवी चिकित्साओ करवी.

२४ दुष्ट व्रणोनी उपर वमन देवुं, विरेचन देवुं, लंघन कराववुं, जळो मूकवा वगेरेथी लोही कहडाववुं अने कडवो, तीखो तथा तूरो वगेरे

आहार आपवो. (नाभिथी उपरना प्रदेशोमां थएला कफसंबंधी व्रणोनी उपर वमन देवुं, पित्तसंबंधी व्रणोनी उपर तथा पित्ताशयमां थएला व्रणोनी उपर विरेचन देवुं, नाभिथी नीचेना प्रदेशोमां थएला व्रणोनी उपर तथा वाताशयमां थएला व्रणोनी उपर तथा वातसंबंधी व्रणोनी उपर पिचकारी देवी अने माथामां थएला कफजन्य व्रणोनी उपर शिरोविरेचन देवुं इत्यादि जाणी लेवुं.) दुष्ट व्रणोनी उपर शोधनने माटे आरग्वधादि गणना तथा सुरसादि गणना क्वाथोथी धोवरावावानी अने आरग्वधादि गणना तथा सुरसादि गणना क्वाथथी पकावेला तैलनी अथवा क्षारना जलथी अने मरवा तथा खाखरा वगेरे क्षारनां द्रव्योना कल्कथी पकावेला तैलनी योजना करवी.

२५ द्रवन्ती चिरबिल्वश्च दन्ती चित्रक एव च।
पृथ्वीका निम्बपत्राणि कासीसं तुत्थमेव च ॥
त्रिवृत्तेजोवती नीला हरिद्रे सैन्धवं तिलाः ।
भूमीकदम्बः सुवहा शुकाख्या लाङ्गलाह्वया ॥
नैपाली जालिनी चैव मदयन्ती मृगादनी ।
सुधामूर्वार्ककीटारिहरितालकरञ्जिकाः ॥
यथोपपत्ति कर्त्तव्यं तैलमेतैस्तु शोधनम् ।
घृतं वा यदि वा प्राप्तं कल्काः संशोधनास्तथा ॥

सघळा प्रकारना दुष्टव्रणोनी उपर तैलना, घृतना तथा कल्कोना योगो.

२५ उंदरकन्नी, करंज, नेपाळानां मूळ, चित्रक, कलोंजी जीरूं, नाहानी मालकांकणी, लींबडानां पानडां, हीराकसी, मोरथुथु, नसोतर, काळां फूलवाळी हीरवणी, हळदर, दारूहळदर, सैंधव, तिल, गोरखमुंडी, नोरवेल, राण, दूधीयो वछनाग, मणशील, कडवी घीसोडी, डोलर, इंद्रवारणी, थोर, मोरवेल, आकडो, वावडींग अथवा कीडामारी, हरताल अने करंजनां फळ एओमांथी जेटलां द्रव्यो मळे तेटलांनो कल्क नाखीने शोधन तैल पकाववुं, शरीरना तथा काळना अनुसारथी योग्य जणाय तो एज कल्कथी शोधनघृत पकाववुं अने शोधन कल्को पण ए द्रव्योना करवा. (द्विव्रणीय नामना गया अध्यायना ९४–९३ तथा ९२ मा वगेरे विषयो उपरथी तैलना, घृतना तथा कल्कना विषयो जाणी लेवा.)

२६ सैन्धवत्रिवृदेरण्डपत्रकल्कस्तु वातिके ।
त्रिवृद्धरिद्रामधुककल्कः पैत्ते तिलैर्युतः ॥
कफजे तिलतेजाह्वादन्तीस्वर्जिकचित्रकाः ।

दुष्ट व्रणो उपर दोषोना भेदोथी कल्कोना भेदो.

२६ वातदूषित व्रणने माटे सैंधव, नसोतर तथा एरडानां पानडां एओनो कल्क करवो.

पित्तदूषित व्रणने माटे नसोतर, हळदर, जेठीमध अने तिल एओनो कल्क करवो.

कफदूषित व्रणने माटे तिल, मालकांकणी, नेपाळानां मूळ, साजीखार अने चित्रक एओनो कल्क करवो.

२७ दुष्टव्रणविधिः कार्यो मेहकुष्ठव्रणेष्वपि ॥

प्रमेहना तथा कोढना व्रणोमां आ दुष्टव्रणना विधिनो अतिदेश.

२७ प्रमेहनी फोल्लीओना व्रणो उपर तथा कोढना व्रणो उपर पण उपर कहेली दुष्ट व्रणोनी चिकित्सा करवी.

२८ षड्विधः प्राक्प्रदिष्टो यः सद्योव्रणविनिश्चयः ।
नातः शक्यं परं वक्तुमपि निश्चितवादिभिः ॥
उपसर्गैर्निपातैश्च तत्तु पण्डितमानिनः ।
केचित्संयोज्य भाषन्ते बहुधा मानगर्विताः ॥
बहु तद्भाषितं तेषां षट्स्वेवावतिष्ठते ।
विशेषा इव सामान्ये षट्त्वं तु परमं मतम् ॥

अन्य लोकोए मानेला सद्योव्रणना (आगंतुज व्रणना) अनेक भेदोनो छिन्न आदि छ भेदोमां समावेश थई जाय छे.

२८ अमोए सद्योव्रणना छिन्न, भिन्न, विद्ध, क्षत, पिच्चित अने घृष्ट ए नामना जे छ भेदो

कह्याछे ते भेदोथी न्यारा पडे एवा वधारे भेदो कोई मोटा पंडितोथी पण कही शकाय एम नथी. पोताने पंडित माननारा अने वैद्यपणानो गर्व धरावनारा केटलाएक लोको छिन्न तथा भिन्न वगेरे शब्दोने प्र वगेरे उपसर्गोनो तथा उच्चैस् वगेरे निपातोनो योग आपीने प्रच्छिन्न अने उच्चैश्छिन्न आदि घणा घणा भेदो आपे छे पण ए लोकोनुं ए घणुं बोलवुं अर्थात् तेओए कल्पेला सघळा भेदो जेम आंबो, वड, पीपळो तथा ऊंबरो इत्यादि विशेषो वृक्षरूप सामान्यमां समाई जाय छे तेम छिन्न आदि छ भेदोमां समाई जाय छे माटे छेवट, अमोए कहेला छ भेदोज रेहे छे.

अध्याय ३ जो.

१ अथातो भग्नानां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'भग्नचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अल्पाशिनोऽनात्मवतो जन्तोर्वातात्मकस्य च
उपद्रवैर्वा जुष्टस्य भग्नं कृच्छ्रेण सिध्यति ॥

केवा माणसनुं भग्न कष्टसाध्य थायछे.

२ थोडुं जमनारा माणसनुं, अजितेंद्रिय माणसनुं, (अपथ्योनुं सेवन करनारा माणसनुं,) वायु प्रकृतिवाळा माणसनुं अने ज्वर तथा पेटना आफरा वगेरे उपद्रवोथी युक्त थएला माणसनुं भग्न कष्टसाध्य थई पडेछे.

३ लवणं कटुकं क्षारमम्लं मैथुनमातपम् ।
व्यायामं च न सेवेत भग्नो रूक्षान्नमेव च ॥

भग्नवाळा माणसे परेजी राखवा विषे.

३ भग्नवाळा माणसे लूणनो, तीखानो, क्षारनो, खाटानो, मैथुननो, तडकानो, कसरत वगेरे मेहेनतनो अने रूक्ष अन्ननो त्याग करवो.

४ शालिर्मांसरसः क्षीरं सर्पिर्यूषः सतीनजः ।
बृंहणं चान्नपानं स्याद्देयं भग्नाय जानता ॥

भग्नवाळां माणसोने माटे पथ्य.

४ समजू वैद्ये भग्नवाळां माणसोने चोखा, मांसनो रसो, दूध, घी, वटाणानो यूष अने शरीरने पुष्टि आपनारां अन्नपानो देवां. (जो के दूध व्रणमां निषिद्ध छे तो पण आ वचन अपवादरूप छे तेथी भग्नमां दूध आपवानो बाध नथी. केटलाएक कहेछे के 'व्रणवाळा भग्नमां नहीं पण व्रण वगरना भग्नमां ऊनुं दूध देवानो बाध नथी' केटलाएक केहेछे के 'भग्नमां दूध देवुं ए विरुद्धज छे. कारण के दूध पाकने तथा परूने उत्पन्न करनारूं छे.' केटलाएक केहेछे के 'मूल श्लोकमां क्षीरं सर्पिः एवो व्यस्तपाठ नथी, पण क्षीरसर्पिः एवो समस्त पाठ छे माटे तेनो अर्थ दूधमांथी काहाडेलुं घी भग्नवाळाने देवुं एवो थाय' जो के वटाणा वातकर छे तो पण तेओनो यूष घी वगेरेथी संस्कार पामेलो होवाने लीधे भग्नने सारूं करनारो थाय छे. डल्हन.)

५ मधूकोदुम्बराश्वत्थपलाशककुभत्वचः ।
वंशसर्जवटानां च कुशार्थमुपसंहरेत् ॥

भग्नने बांधवानी पट्टीओ बनाववानी चीजो.

५ वैद्ये भग्नने बांधवानी पट्टीओ बनाववामाटे महुडा, ऊंबरा, पीपळा, खाखरा, साजड अथवा कडाया, वांस, राळनां झाड अने वड एओनी छालो एकठी करावी राखवी.

६ आलेपनार्थं मञ्जिष्ठां मधुकं रक्तचन्दनम्
शतधौतघृतोन्मिश्रं शालिपिष्टं च संहरेत् ॥

भग्न उपर लेप करवाना पदार्थो.

६ वैद्ये भग्नोनी उपर लेप करवा माटे कांजीमां

---

१ भग्नो के जेओनां निदान तथा लक्षणादिक आ ग्रंथना निदानस्थानना १५ मा अध्यायमां विस्तारथी केहेवामां आव्यां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

वाटेलां मजीठ, जेठीमध तथा रतांजलि, अने सोवार धोएला घीथी मिश्रित करेलो चोखानो लोट एओने मंगावी राखवां.

७ सप्ताहादथ सप्ताहात्सौम्येष्वृतुषु बन्धनम् ॥
साधारणेषु कर्त्तव्यं पञ्चमे पञ्चमेऽहनि ।
आग्नेयेषु त्र्यहात्कुर्याद्भग्नदोषवशेन वा ॥

भग्न उपर बांधेलो पाटो केटले केटले दिवसे बदलाववो.

७ थंडी ऋतुओमां सात सात दिवसे, गरम ऋतुओमां त्रण त्रण दिवसे अने साधारण ऋतुओमां पांचमे पांचमे दिवसे भग्न उपर पाटो बांधवो. अथवा भग्नना वातपित्तादिक दोषोने जोईने तेओना अनुसारथी पाटो बदलाववानो समय कल्पी लेवो.

८ तत्रातिशिथिलं बद्धे सन्धिस्थैर्यं न जायते ॥
गाढेनापि त्वगादीनां शोफो रुक्पाक एव च ।
तस्मात्साधारणं बन्धं भग्ने शंसन्ति तद्विदः ॥

गाढ, सम अने शिथिल एओमांथी भग्न उपर केवो पाटो बांधवो?

८ जो भग्ननी उपर अत्यंत शिथिल (पोचो) पाटो बांधवामां आवे तो संधिओनी स्थिरता थती नथी अने गाढ (दृढ-कठण) पाटो बांधवामां आवे तो चामडी वगेरेनो सोजो, वेदना तथा पाक थाय छे एटला माटे विद्वान् वैद्यो भग्न उपर सम (साधारण) पाटो बांधवानी प्रशंसा करेले.

९ न्यग्रोधादिकषायं तु सुशीतं परिषेचनं ।
पञ्चमूलीविपक्कं तु क्षीरं कुर्यात्सवेदने ॥
सुखोष्णमवचार्यं वा चक्रतैलं विजानता ।
विभज्य कालं दोषं च दोषघ्नौषधसंयुतम् ॥
परिषेकं प्रदेहं च विदध्याच्छीतमेव च ।

भग्न उपर सेचन करवानां द्रव्यो.

९ भग्न उपर न्यग्रोधादि गणना अत्यंत शीतल कषायनुं सेचन करवुं. जो रोगी पित्तप्रकृतिवाळो होय अने ऋतु पण उष्ण होय तो वेदनावाळा भग्ननी उपर लघुपंचमूळीना कल्कथी पकावेला दूधनुं सेचन करवुं. जो रोगी वातकफप्रकृतिवाळो होय, शूळ नीकळतुं होय अने ऋतु पण शीत होय तो घाणीमांथी लई लीधेला तुरतना ताजा तैलने जरा गरम करी तेनुं सेचन करवुं. भग्न उपर सेचननो तथा लेपननो सामान्य नियम ए छे के सेचनो तथा लेपनो दोषोने हणनारां औषधोथी युक्त तथा शीतलज करवां, परंतु दोषादिकना अनुसारथी उष्ण करवां योग्य जणाय तो तेम पण करवुं.

१० गृष्टिक्षीरं ससर्पिष्कं मधुरौषधसाधितम् ॥
शीतलं लाक्षया युक्तं प्रातर्भग्नः पिबेन्नरः ।

भग्नवाळा माणसने माटे आभ्यंतर औषध.

१० भग्नवाळा माणसे नित्य प्रभातमां पेलवेतरी गायना दूधने काकोल्यादि मधुर गणना कल्कथी पकावी, अंदर एक एक तोला भार घी तथा लाख नाखी शीतल करीने पीवुं.

११ सव्रणस्य तु भग्नस्य व्रणं सर्पिर्मधूत्तरैः ॥
प्रतिसार्य कषायैस्तु शेषं भग्नवदाचरेत् ।

व्रणवाळा भग्ननी विशेष चिकित्सा.

११ जो भग्न व्रणवाळुं होय तो न्यग्रोधादि गणना कल्कोमां घी तथा मध सारी पेठे मिश्रित करी ते कल्कोथी लेपन करवुं अने बाकीनी आहारादिक क्रिया भग्ननी पेठेज करवी.

१२ प्रथमे वयसि त्वेवं भग्नं सुकरमादिशेत् ॥
अल्पदोषस्य जन्तोस्तु काले च शिशिरात्मके ।
प्रथमे वयसित्वेवं मासात्सन्धिः स्थिरो भवेत् ॥
मध्यमे द्विगुणात्कालादुत्तरे त्रिगुणात्स्मृतः ।

अवस्थाना विशेषथी भग्ननुं सुखसाध्यपणुं तथा भग्नना साजूं थवाना कालनो फेरफार.

१२ पेहेली अवस्थामां भग्न थयुं होय तो तेने

घणा परिश्रम वगर सेहेज साजुं करी शकाय छे. जो रोगी अल्प दोषवाळो होय, ऋतु शीतल होय अने अवस्था पण पेहेली होय तो संधि एक महिने स्थिर थाय छे. जो रोगी अल्प दोषवाळो होय, ऋतु शीतल होय अने अवस्था मध्यम होय तो संधि बे महिने स्थिर थाय छे. जो रोगी अल्प दोषवाळो होय, ऋतु शीतल होय अने अवस्था उत्तर (वृद्ध) होय तो संधि त्रण महिने स्थिर थाय छे. (आमां आहार-विहारनी संभाळ तो अवश्य जोइए.)

१३ अवनामितमुन्नह्येदुन्नतं चावपीडयेत् ॥
आञ्छेदतिक्षिप्तमधो गतं चोपरि वर्त्तयेत् ।

संधिमुक्त तथा कांडभग्न ए बन्नेने टाळवाना उपायो.

१३ जे नमी गयुं होय तेने ऊंचुं करवुं, ऊंचुं थई गयुं होय तेने दबावीने बेसाडवुं, दूर जतुं रह्युं होय तेने योग्य प्रदेशमां खेंची लेवुं अने नीचे गयुं होय तेने उपर चडाववुं.

१४ आञ्छनैः पीडनैश्चैव संक्षेपैर्बन्धनैस्तथा ॥
सन्धीञ्छरीरे सर्वांस्तु चलानप्यचलानपि ।
एतैस्तु स्थापनोपायैः स्थापयेन्मतिमान्भिषक् ॥

संधिमुक्त तथा कांडभग्न ए बन्नेनुं स्थापन पछी बंधन.

१४ बुद्धिमान् वैद्ये शरीरना सघळा चल संधिओने (हाथ पगना, कमरना तथा हडपचीना संधिओ चल छे.) तथा अचल संधिओने पण खेंचवुं, नमाववुं, ऊंचुं करवुं, फेरववुं अने संकुचित करवुं ए उपायोथी स्थापित करीने पछी बांधवानी चिकित्सा करवी. कांडभग्नोने पण एज उपायोथी स्थापीने पछी बांधवानी चिकित्सा करवी. (संकुचित करवानुं जे कह्युं ते पिच्चितने माटे छे.)

१५ उत्पिष्टमथ विश्लिष्टं सन्धिं वैद्यो न घट्टयेत् ।
तस्य शीतान्परीषेकान्प्रदेहांश्चावचारयेत् ॥
अभिघाते हृते सन्धिः स्वां याति प्रकृतिं पुनः ।

उत्पिष्ट तथा विश्लिष्ट संधिओनी चिकित्सा.

१५ उत्पिष्ट थएला के विश्लिष्ट थएला संधिने वैद्ये चलायमान करवो नहीं (हलाववो नहीं) पण तेना उपर शीतल सेचनो तथा शीतल प्रदेहो (जाडां लेपनो) करवां. उत्पिष्ट (भींसाई गएलो) के विश्लिष्ट (जरा जूदो) थएलो संधि शीतल सेचनोथी तथा शीतल लेपनोथी अभिघात टळी जतां पाछो पोतानी मेळेज असल स्थितिने प्राप्त थाय छे.

१६ घृतदिग्धेन पट्टेन वेष्टयित्वा यथाविधि
पट्टोपरि कुशां दत्वा यथावद् बंधमाचरेत् ।

भग्न उपर पाटो बांधवानी रीत.

१६ भग्ननी उपर घीथी खरडेलो पाटो विधिप्रमाणे वींटी ते पाटानी उपर महुडानी छाल वगेरेनी पट्टीओ लगावीने योग्य रीते बंधन करवुं.

१७ प्रत्यङ्गभग्नस्य विधिरत ऊर्द्ध्वं प्रवक्ष्यते ॥
नखसन्धि समुत्पिष्टं रक्तानुगतमारया ।
अवमथ्य स्रुते रक्ते शालिपिष्टेन लेपयेत् ॥
भग्नां वा सन्धिमुक्तां वा स्थापयित्वांगुलीं समम्
अणुनावेष्ट्य पट्टेन घृतसेकं प्रदापयेत् ॥
अभ्यज्य सर्पिषा पादं तलभग्नं कुशोत्तरम् ।
वस्त्रपट्टेन बध्नीयान्न च व्यायाममाचरेत् ॥
अभ्यज्यायामयेज्जङ्घामूरुं च सुसमाहितः ।
दत्वा वृक्षत्वचः शीता वस्त्रपट्टेन वेष्टयेत् ॥
मतिमांश्चक्रयोगेन आञ्छेदूर्वस्थि निर्गतम् ॥
स्फुटितं पिच्चितं चापि बध्नीयात्पूर्ववद्भिषक् ॥
आञ्छेदूर्ध्वमधो वापि कटीभग्नं तु मानवम् ।
ततः स्थानस्थिते सन्धौ बस्तिभिः समुपाचरेत्
पर्शुकास्वथ भग्नासु घृताभ्यक्तस्य तिष्ठतः ।
दक्षिणास्वथ वा वामास्वनुमृज्य निबन्धनीः ॥
ततः कवलिकां दत्वा वेष्टयेत्सुसमाहितः ।
तैलपूर्णे कटाहे वा द्रोण्यां वा शाययेन्नरम् ॥
मुसलेनोत्क्षिपेत्कक्षामंससन्धौ विसंहते ।
स्थानस्थितं च बध्नीत स्वस्तिकेन विचक्षणः ॥

कौर्परं तु तथा सन्धिमंगुष्ठेनानुमार्जयेत् ।
अनुमृज्य ततः सन्धिं पीडयेत्कूर्पराद्युतम् ।
प्रसार्याकुञ्चयेच्चैनं स्नेहसेकं च दापयेत् ॥
एवं जानुनि गुल्फे च मणिबन्धे च कारयेत् ।
उभे तले समे कृत्वा तलभग्नस्य देहिनः ॥
बन्धीयादामतैलेन परिषेकं च कारयेत् ।
प्राग्गोमयमयं पिण्डं धारयेन्मृण्मयं ततः ॥
हस्ते जातबले चापि कुर्यात्पाषाणधारणम् ।
सन्नमुन्नमयेत्स्विन्नमक्षकं मुसलेन तु ॥
तथोन्नतं पीडयेच्च बध्नीयाद्गाढमेव च ।
ऊरुवच्चापि कर्त्तव्यं बाहुभग्नचिकित्सितम् ॥
ग्रीवायां तु विवृत्तायां प्रविष्टायामधोऽपि च ।
अवटावथ हन्वोश्च प्रगृह्योन्नमयेन्नरम् ॥
तथा कुशान्समं दत्वा वस्त्रपट्टेन वेष्टयेत् ॥
उत्तानं शाययेच्चैनं सप्तरात्रमतन्द्रितः ।
हन्वस्थिनी समानीय हनुसन्धौ विसंहते ॥
स्वेदयित्वा स्थिते सम्यक्पञ्चाङ्गीं वितरेद्भिषक् ।
वातघ्नमधुरैः सर्पिः सिद्धं नस्ये च पूजितम् ॥
अभग्नांश्चलितान्दन्तान्सरक्तानवपीडयेत् ।
तरुणस्य मनुष्यस्य शीतैरालेपयेद्बहिः ॥
सिक्त्वाम्बुभिस्ततः शीतैः सन्धानीयैरुपाचरेत् ।
उत्पलस्य च नालेन क्षीरपानं विधीयते ॥
जीर्णस्य तु मनुष्यस्य वर्जयेच्चलितान्द्विजान् ।
नासां सन्नां विवृत्तां वा ऋज्वीं कृत्वा शलाकया
पृथङ् नासिकयोर्नाड्यौ द्विमुख्यौ संप्रवेशयेत् ।
ततः पट्टेन संवेष्ट्य घृतसेकं प्रदापयेत् ॥
भग्नं कर्णं च बध्नीयात्समं कृत्वा घृतप्लुतम् ।
सद्यःक्षतविधानं च ततः पश्चात्समाचरेत् ॥
मस्तुलुङ्गाद्विना भिन्ने कपाले मधुसर्पिषी ।
दत्वा ततो निबध्नीयात्सप्ताहं च पिबेद्धृतम् ॥
पतनादभिघाताद्वा शूनमङ्गं यदक्षतम् ।
शीतान्प्रदेहान्सेकांश्च भिषक्तस्यावचारयेत् ॥
अथ जङ्घोरुभग्नानां कपाटशयनं हितम् ।
कीलका बन्धनार्थं च पञ्च कार्या विजानता ॥
यथा न चलनं तस्य भग्नस्य क्रियते तथा ।
सन्धेरुभयतो द्वौ द्वौ तले चैकश्च कीलकः ॥
श्रोण्यां वा पृष्ठवंशे वा वक्षस्यक्षकयोस्तथा ।
भग्नसन्धिविमोक्षेषु विधिमेनं समाचरेत् ॥
संधींश्चिरविमुक्तांस्तु स्निग्धान्स्विन्नान्मृदूकृतान्
उक्तैर्विधानैर्बुद्ध्या च सम्यक्प्रकृतिमानयेत् ॥
काण्डभग्ने प्ररूढे तु विषमोल्वणसंहिते ।
आपोथ्य समयेद्भग्नं ततो भग्नवदाचरेत् ॥
कल्पयेन्निर्गतं शुष्कं व्रणान्तेऽस्थि समाहितः ।
ऊर्ध्वकाये तु भग्नानां मस्तिक्यं कर्णपूरणम् ।
घृतपानं हितं नस्यं प्रशाखास्वनुवासनम् ॥

एक एक अंगना भग्नने माटे जूदो जूदो विशिष्ट विधि.

१७ उत्पिष्ट (भींसाई गएला) अने दुष्ट रुधिरथी संबद्ध थएला नखना संधिने आरा (मोचीनी आर जेवी आर) नामना शस्त्रवते मथी तेमांथी लोही स्रवावीने तेना उपर घीथी मिश्रित करेला चोखाना लोटनो लेप करवो.

कांडभग्न थएली अथवा संधिमुक्त थएली आंगळीने उपरना चौदमा विषयमां कहेला स्थापनना उपायोथी बराबर रीते स्थापी, झीणा पाटाथी वींटीने पछी तेना उपर घीनुं सेचन कराववुं. (आंगळी उपर जाडो पाटो वींटवाथी वधारे पीडा थाय छे.)

पग जो तळामां (फणामां) भग्न थयो होय तो तेने घीनो अभ्यंग करी वड वगेरेनी छालनी पट्टी लगावी वस्त्रना पाटाथी बांधवो अने बांध्या पछी रोगीने फरवा हरवानी मनाह करवी.

पींडी के साथळ भग्न थएल होय तो वैद्ये सारी पेठे सावधान रही, तेओने घीनो अभ्यंग करी, लांबां करीने पछी वड वगेरे शीतल वृक्षोनी छालोनी योग्य गोठवण करी वस्त्रनो पाटो बांधवो.

साथळनुं हाडकुं नीकळी गयुं होय तो बुद्धिमान् वैद्ये तेने उपरना १४ विषयमां कहेला स्थापनना उपायोथी स्थापीने पछी वड वगेरेनी छालोथी वर्त्तुल रीते बंधन करवुं. साथळनुं हाडकुं

फाटी गयुं होय, पीचाई गयुं होय के बीजा कोई प्रकारना भग्नवाळुं थयुं होय तो पण तेने बराबर रीते स्थापीने समरीते बांधवुं. जो साथळनुं हाडकुं चामडी वगेरेथी तमाम छूटुंज पडीने नीकळ्युं होय तो तेने काहाडी नाखीने पछी पाटो बांधवो.

जो कमरमां भग्न थयुं होय तो अस्थिने ऊंचुं अथवा नीचुं करवुं. (अस्थि ऊंचे गयुं होय तो नीचें करवुं अने नीचे गयुं होय तो ऊंचे करवुं.) संधि बराबर ठेकाणे आवी स्थिर थाय ते पछी स्नेहबस्तिओ देवारूप चिकित्सा करवी. (जो के निदानस्थानना १९ मा अध्यायना १० मा विषयमां कमरमां थएला संधिमुक्तने असाध्य कहेल छे तो पण तेनी अहीं चिकित्सा लखी छे माटे एम समजवुं के ते याप्य पण होय छे अथवा कष्टसाध्य पण होय छे.)

जो डाबी तरफनां के जमणी तरफनां पांसळानां अस्थिओ भग्न थयां होय, तो रोगीने ऊभो राखी घीनो अभ्यंग करी समीकरणने माटे घीथी खरडेला हाथवते पांसळांओना बंधनरूप मांसनी दोरीओनुं अनुमार्जन करी योग्य रीते वंझी वगेरेनां खापीयां लगावी दईने घणी साहुचेतीथी वेल्लितक नामनो पाटो बांधवो. पछी ए रोगीने तैलथी भरेली लांबी कडाईमां अथवा लाकडानी लांबी पेटीमां सूवडाववो.

जो खभानो संधि विश्लिष्ट थयो होय तो मुसल (सांबेलां)वते काखने ऊंची करवी अने पछी संधि ठेकाणे बेसी जाय त्यारे ते उपर स्वस्तिक नामनो पाटो बांधवो.

हाथनी कोणीनो संधि खसी गयो होय तो ते संधिना अस्थिनुं घीथी खरडेला हाथवते अनुमार्जन करीने ते संधिने दबाववो, लांबो करीने पाछो संकुचित पण करवो अने तेना उपर स्नेहनुं सेचन देवुं.

गोठण, पगनी घुंटी अने हाथनुं कांडुं एओमांथी कोईना संधिनो विश्लेष थयो होय तोपण योग्यता प्रमाणे उपर कहेली चिकित्सा करवी.

हाथना तळामां भग्न थयुं होय तो ते भग्न थएला तळांने बीजा साजा तळानी बराबर करी अने बन्ने तळां भग्न थयां होय तो तेओने काष्ठथी बनावेलां बीजां तळांनी बराबर करीने पछी पाटो बांधवो अने तेना उपर काचा तैलनुं सेचन करवुं. ज्यारे तळुं साजुं थाय त्यारे काममां योग्य थयानी परीक्षाने माटे प्रथम माटीना पिंडानुं धारण कराववुं अने ज्यारे हाथमां बळ आव्युं जणाय त्यारे पथरानुं धारण कराववुं.

अक्षक नामनुं खभाना संधिनी ऊपरनुं अस्थि नीचे बेसी गयुं होय तो तेने स्वेदन आपीने मुसल (सांबेला)वते ऊंचुं करवुं अने ऊंचे चडी गयुं होय तो तेने स्वेदन आपीने मुसलवते नीचे दबाववुं. पछी तेने पाटावते दृढ बांधी लेवुं.

बाहुमां भग्न थयुं होय तो तेनी चिकित्सा साथळमां भग्न थयानी चिकित्सानी पेठेज करवी.

डोक वांकी थई गई होय तो अथवा नीचे पेसी गई होय तो रोगीने डोकनी पाछळना ऊंचा खाडामां अने हडपचीना संधिओमां पकडीने ऊंचो करवो. गयदासाचार्य तो एम व्याख्यान आपे छे के "डोक वांकी थई गई होय तो हडपचीना संधिओमां पकडीने अने नीचे पेसी गई होय तो डोकनी पाछळना ऊंचा खाडामां पकडीने रोगीने ऊंचो करवो." पछी बराबर रीते खापीयां के वडवगेरेनी छालो लगावी वस्त्रनो पाटो वींटी लेवो. पछी वैद्ये जरा पण बेदरकारी नहीं राखतां ए रोगीने सात रात सूधी चत्तो सूवाडवो.

हडपचीनो संधि विश्लिष्ट थयो होय तो तेनां बे अस्थिओने भेळां करी, (जमणी बाजूनुं अस्थि विश्लिष्ट थयुं होय तो तेने डाबी बाजूना अस्थिथी तुल्य संलग्न, अने डाबी बाजूनुं अस्थि विश्लिष्ट थयुं होय तो तेने जमणी बाजूना अस्थिथी तुल्य संलग्न करी)

स्वेदन आपी, बराबर बेसी जाय त्यारे पंचांगी नामनो पाटो बांधवो. पछी भद्रदारुआदि वातहर द्रव्योना तथा काकोल्यादि मधुर द्रव्योना कल्कथी तथा क्वाथथी पकावेला घीनुं नस्य देवुं ए उत्तम छे. (सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायनो १० मो तथा ४२ मा अध्यायनो १३ मो विषय जुवो.)

जुवान माणसना दांतो त्रुटी नहीं जतां अभिघातथी चलित थई गया होय तो तेओ लोहीवाळा होय ते समयेज तेओने दबावी देवा अने बाह्यर शीत पदार्थोनुं लेपन करवुं. पछी शीतल जळथी सेचन करीने घीथी, मधथी अने न्यग्रोधादि गणना कल्कोथी तथा चूर्णोथी उपचार करवा अने ते माणसने कमळना नाळथी दूध पावुं. वृद्ध माणसना दांतो चलित थई गया होय तो तेओनी चिकित्सा करवी नहीं.

नाक नमी गयुं होय तो शलाकायंत्रथी ऊंचुं करीने अने वांकुं थई गयुं होय तो शलाकायंत्रथी सीधुं करीने बन्ने नासिकाओमां निःश्वासोच्छ्वासादिक चालवाने माटे जूदी जूदी बे मोहोडांवाळी (पोली) नळी नाखी देवी अने ते पछी पाटो बांधीने घीनुं सेचन करवुं.

कान वांको थई गयो होय अथवा अंदर पेसी गयो होय तो तेने साजा कानना बराबर सरखो करी घीथी भींजवीने पाटाथी बांधवो अने ते पछी सद्योव्रणनी रीति प्रमाणे मधनो तथा घीनो अभ्यंग अने शीतल सेचन इत्यादि चिकित्सा करवी.

माथानुं अस्थि भग्न थवाथी मगजनो स्राव थवा लाग्यो होय तो गया बीजा अध्यायना १९ मा विषयमां कह्याप्रमाणे वाळनी वाट नाखवा रूप चिकित्सा करवी. जो मगजनो स्राव न थतो होय तो मध तथा घी एओनो योग आपीने पाटो बांधवो अने सात दिवस सूधी घी पावुं.

पडवाथी अथवा अभिघातथी जे अंग जखमी नहीं थतां सोजावाळुं थई गयुं होय तेनी उपर वैद्ये शीतल लेपनो तथा शीतल सेचनो करवां.

जेओने पींडीमां के साथळमां भग्न थयुं होय तेओने प्रथम आ विषयना चोथा पारिग्राफमां कह्याप्रमाणे चिकित्सित करीने पछी पाटीयापर सूवाडवा ए हितकारी छे. समजू वैद्ये भग्न थएला अवयवनुं चलन न थवा देवाने माटे ए पाटीयामां पांच खीला नखावी ते खीलाओमां ते अवयवने बांधवो. बबे खीला संधिनी बे बाजूओमां रहे अने एक खीलो संधिनी नीचे रहे एम करवुं.

कमर, बरडो, छाती के अक्षक एओमां संधिमुक्त के कांडभग्न थएल होय तो पण प्रथम ते ते विषयनी योग्य चिकित्सा करीने पछी पांच खीलाओनी योग्य गोठवणवाळा पाटीआपर सूवाडवानो विधि करवो.

जे संधिओ लांबा काळथी छूटा पडीगया होय तेओने पण स्नेहन तथा स्वेदन आपी कोमळ करी पछी उपर कहेला प्रकारोथी तथा पोतानी बुद्धिथी कल्पेला प्रकारोथी पण चिकित्सित करीने सारी रीते प्रकृतिस्थ (स्वस्थ दशामां होय तेवा) करवा.

लांबा काळथी रूझाई गएलुं कांडभग्न जो विषम के उल्बण (खराब देखाय एवुं) संधायुं होय तो तेने पाछुं तोडी नाखीने जेवुं जोईए तेवुं बराबर करवुं अने पछी भग्ननी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी.

व्रणना एक प्रदेशमां सूकाएलुं अस्थि नीकळेलुं होय तो तेने कापी नाखवुं पण तेम करतां बीजा प्रदेशमां व्रण न थाय एवी संभाळ राखवी.

नाभिथी उपरना प्रदेशोमां भग्न थएल होय तो ते सर्वमां सामान्य चिकित्सा ए छे के स्नेहोथी खरडेलां पोतां तथा पूमडा वगेरे मूकीने माथाने स्निग्ध राख्या करवुं, कानोमां स्नेहपूरण करवुं, घी पीवराववुं अने नस्य देवुं. शाखाओमां भग्न थएल होय तो ते सर्वेनी सामान्य चिकित्सा

ए छे के माथाने स्निग्ध राख्या करवुं, कानोमां स्नेहपूरण करवुं, घी पीवरावबुं, नस्य देवुं अने स्नेहबस्ति पण देवो. (नाभिथी उपरना प्रदेशमां भग्न थएल होय तो पण स्नेहबस्ति आपवो एम जेज्जटाचार्य व्याख्यान आपे छे.)

१८ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि तैलं भग्नस्य साधकम्
रात्रौ रात्रौ तिलान्कृष्णान्वासयेदस्थिरे जले ॥
दिवा दिवा शोषयित्वा गवां क्षीरेण भावयेत्।
तृतीयं सप्तरात्रं वा भावयेन्मधुकाम्बुना ।
ततः क्षीरे पुनः पीतान्सुशुष्कांश्चूर्णयेद्भिषक् ॥
काकोल्यादिं सयष्टयाह्वं मञ्जिष्ठां सारिवां तथा।
कुष्ठं सर्जरसं मांसीं सुरदारु सचन्दनम् ॥
शतपुष्पां च संचूर्ण्य तिलचूर्णेन योजयेत् ।
पीडनार्थं च कर्त्तव्यं सर्वगन्धशृतं पयः ॥
चतुर्गुणेन पयसा तत्तैलं विपचेद्भिषक् ।
एलामंशुमतीं पत्रं जीवकं तगरं तथा ॥
रोध्रं प्रपौण्डरीकं च तथा कालानुसारिणम् ।
सैरेयकं क्षीरशुक्लामनन्तां समधूलिकाम् ॥
पिष्ट्वा शृङ्गाटकं चैव पूर्वोक्तान्यौषधानि च ।
एभिस्तद्विपचेत्तैलं शास्त्रविन्मृदुनाग्निना ॥
एतत्तैलं सदा पथ्यं भग्नानां सर्वकर्मसु ।
आक्षेपके पक्षघाते तालुशोषे तथार्दिते ॥
मन्यास्तम्भे शिरोरोगे कर्णशूले हनुग्रहे ।
बाधिर्ये तिमिरे चैव ये च स्त्रीषु क्षयं गताः ॥
पथ्यं पाने तथाभ्यङ्गे नस्ये वास्तिषु भोजने ।
ग्रीवास्कन्धोरसां वृद्धिरमुनैवोपजायते ॥
मुखं च पद्मप्रतिमं सुसुगन्धिसमीरणम् ।
गन्धतैलमिदं नाम्ना सर्ववातविकारनुत् ॥
राजार्हमेतत्कर्त्तव्यं राज्ञामेव विचक्षणैः ।

गंधतैल.

१८ हवे भग्नने साजूं करनारा गंधतैलनो विधि कहुंछुं. सात दिवस सूधी नित्य राते काळा तलने वेहेता पाणीमां भींजवी राखी दिवसे सूकावવા. पछी सात दिवस सूधी ए तिलोने तिलोना जेटलाज गायना दूधनी भावना देवी. पछी ते तिलोने सात दिवस सूधी तेओना जेटलाज जेठीमधना क्काथनी भावना देवी. पछी ते तिलोने पाछी सात दिवस सूधी तेओना जेटलाज दूधनी भावना आपी सारी पेठे सूकावीने तेओनुं चूर्ण करवुं. पछी काकोल्यादि गण, जेठीमध[1], मजीठ, उपलसरी, (कपूरी) कठ, राळ, जटामांसी (वाळछड,) देवदार, सूखड अने सुवा एओनुं तलना चूर्णना द्वितीयांश जेटला वजननुं अथवा त्रण भाग तलना चूर्णना थाय तथा चोथो भाग आ चूर्णनो थाय तेटला वजननुं चूर्ण करीने तलना चूर्णनी साथे मेळवी देवुं. पछी ए तलना चूर्णने एळची वगेरे सघळा सुगंध पदार्थोनो कल्क नाखीने पकावेला ऊना दूधनी साथे मेळवी पीलावीने तैल कहडाववुं. ते पछी एळची, शालिपर्णी, तमालपत्र, जीवक, (आ दुर्लभ छे तेथी तेने बदले फगवेलानुं मूळ) बे भाग तगर, लोदर, पांडेरवो, कांटाअशेरीयो, सफेद फगवेलानो कंद, उपलसरी, जलमां थतुं वेला जेवुं जेठीमध, शींगोडुं अने उपर कहेलां काकोल्यादि गण तथा जेठीमध वगेरे औषधो एओनो कल्क नाखीने ते तैलने चोगणा दूधथी कोमळ अग्निवडे प्रवीण वैद्ये पकाववुं. आ तैल भग्नोनी उपर पान तथा अभ्यंग वगेरे सघळी क्रियाओमां सर्वदा पथ्य छे. आक्षेपक, पक्षाघात, तालुशोष, अर्दित, मन्यास्तंभ, माथाना रोग, कर्णशूळ, हनुग्रह, बेहेरापणुं, तिमिर अने अत्यंत मैथुन करवाथी थएलो क्षय एओनी उपर पण पीवामां, अभ्यंगमां, नस्यमां, पिचकारी देवामां अने भोजनमां पथ्य छे. आ तैलथीज डोक, कांध तथा छाती एओनी

१ काकोल्यादि गणमां जेठीमध आवी जाय छे ते छतां जेठीमध बीजीवार कह्युं माटे जेठीमध बे भागनुं लेवुं एम समजवुं.

वृद्धि थाय छे अने मोहोडुं अत्यंत सुगंधिश्वासवाळुं तथा कमळ जेवुं थाय छे. आ गंधतैल नामनुं तैल सघळा वायुसंबंधी विकारोने टाळनारूं छे. आ तैल राजाओने लायक छे एटला माटे विचक्षण वैद्योए राजाओने माटेज करवुं. (घणी सामग्रीओथी बने एवुं छे माटे 'राजाओने माटेज करवुं' एम कह्युं छे पण तेथी 'बीजाओने माटे नहीं करवुं' एम समजवुं नहीं.)

१९ त्रपुसाक्षप्रियालानां तैलानि मधुरैः सह ॥
वसां दत्त्वा यथालाभं क्षीरे दशगुणे पचेत् ।
स्नेहोत्तममिदं चाशु कुर्याद्भग्नप्रसाधनम् ॥
पानाभ्यञ्जननस्येषु बस्तिकर्मणि सेचने ।

स्नेहोत्तम तैल.

१९ त्रपुसजातनी काकडी, बेहेडां अने चारोळी एओनां तैलो करी ए तैलोने मिश्रित करी तेमां काकोल्यादि मधुर वर्गनो कल्क नाखी तथा जेटली मळी आवे तेटली चरबी नाखीने ते तैलने दशगणा दूधमां पकाववुं एटले ते स्नेहोत्तम नामनुं तैल केहेवाय छे. आ तैल भग्नोने तुरत साजां करेछे माटे भग्नोनी उपर पीवामां, अभ्यंगमां, नस्यमां, बस्तिक्रियामां तथा सेचनमां आ तैलनो उपयोग कराववो.

२० भग्नं नैति यथा पाकं प्रयतेत तथा भिषक् ॥
पक्वमांसशिरास्नायु तद्धि कृच्छ्रेण सिध्यति ।

भग्ननी चिकित्सामां वैद्ये संभाळ राखवानी जरूर.

२० वैद्ये भग्ननी चिकित्सामां एवी पूरी संभाळ राखवी के जेथी भग्न पाकी जाय नहीं. केमके जे भग्नमां मांस, शिरा के स्नायु पाकी जाय ते भग्न कष्टसाध्य थई पडे छे. (वैद्ये भग्न उपर पाक करनारा बाह्य तथा आभ्यंतर उपचारोनो त्याग कराववो अने जेओथी प्रशम थाय तथा पाक थतो अटके एवा उपचारोनुं सेवन कराववुं.)

२१ भग्नं सन्धिमनाविद्धमहीनाङ्गमनुल्बणम् ॥
सुखचेष्टाप्रचारं च संहितं सम्यगादिशेत् ।

भग्नने बराबर संधाएलुं अने बराबर रूझाएलुं क्यारे समजवुं.

२१ ज्यारे अवयवोने लांबा टूंका करतां जरा पण दुखावो न थाय, कोई पण अवयवमां ओछापणुं न रहे, सोजो जरा पण न रहे अने ऊठवा बेसवा वगेरे चेष्टा तथा फरवुं सुखथी थई शके त्यारे भग्नने बराबर संधाएलुं अने बराबर रूझाएलुं समजवुं.

अध्याय ४ थो.

१ अथातो वातव्याधिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वातव्याधिचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ आमाशयगते वाते छर्दयित्वा यथाक्रमम् ।
देयः षड्धरणो योगः सप्तरात्रं सुखाम्बुना ॥
चित्रकेन्द्रयवे पाठाकटुकातिविषाऽभयाः ।
वातव्याधिप्रशमनो योगः षड्धरणः स्मृतः ॥

आमाशयमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

२ दुष्ट वायु आमाशयमां प्राप्त थयो होय तो स्नेहन तथा स्वेदन आदि चिकित्साओना क्रमपूर्वक रोगीने वमन करावीने सात दिवस सूधी पी शकाय एवा सेहेज ऊना पाणीनी साथे नीचे लखेलो षड्धरण नामनो योग देवो. (जो रोगी प्रबल दोषवाळो होय, बळवान् होय अने तेने वमननी हाजत जेवा हेबका आव्या करता होय

१ निदानस्थानना पेहेला अध्यायना ५ मा विषयथी आठमा विषय सूधीमां निदानपूर्वक जणावेला वायुसंबंधी रोगोनी चिकित्सा विषयनो.

तोज वमन कराववुं. आमाशय कफनुं स्थान छे माटे तेमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुने टाळवा माटे वमन उचित छे. सू. अ. २१ वि. ४ तथा १४ मो जुवो.)

षड्धरणयोग.

चित्रक, इंद्रयव, कालीपाड, कडु, अतवस अने हरडे ए छ औषधो मळीने षड्धरणयोग केहेवाय छे. आ योग आमाशयमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुने शांत करेछे. (आ योगने माटे एवी पण युक्ति गोठववामां आवे छे के पेहेले दिवसे उलटी करावीने बीजे दिवसे चित्रकनुं चोवीश चणोठी भार चूर्ण कांईक ऊना पाणीथी पीवराववुं, त्रीजे दिवसे इंद्रयवनुं चोवीश चणोठीभार चूर्ण, चोथे दिवसे काळी पाडनुं चोवीश चणोठीभार चूर्ण, पांचमे दिवसे कडुनुं चोवीश चणोठीभार चूर्ण, छठ्ठे दिवसे अतवसनुं चोवीश चणोठीभार चूर्ण अने सातमे दिवसे हरडेनुं चोवीश चणोठीभार चूर्ण कांईक ऊना पाणीनी साथे पीवराववुं. पण आ प्रमाणे करतां आ योग छ दिवस सूधी चालेछे अने धन्वंतरिनी आज्ञा तो 'सात दिवस सूधी देवो' एवी छे माटे 'षड्धरण' ए शब्दने संज्ञाशब्द समजी चित्रकआदि सघळां औषधो समभागे लईने सात दिवस सूधी देवां ए अर्थ योग्य छे.)

३ पक्वाशयगते चापि देयं स्नेहविरेचनम्।
बस्तयः शोधनीयाश्च प्राशाश्च लवणोत्तराः॥

पक्वाशयमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

३ दुष्ट वायु पक्वाशयमां प्राप्त थयो होय तो आ अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलुं स्नेहविरेचन देवुं, शोधन द्रव्योना कल्कसहित क्वाथोथी स्निग्ध पीचकारीओ देवी अने आ अध्यायना २४–२९ तथा २९ मा विषयोमां कहेलां पत्रलवण आदि लवणो जेओमां प्रधान थाय एवा आहारो देवा.

४ कार्यो बस्तिगते चापि विधिर्बस्तिविशोधनः।

मूत्राशयमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

४ दुष्ट वायु मूत्राशयमां प्राप्त थयो होय तो आ चिकित्सितस्थानना ७ मा अध्यायमां अश्मरी(पथरी)नी चिकित्सामां कह्याप्रमाणे तथा उत्तरतंत्रमां आपेली मूत्राघात वगेरेनी चिकित्सामां कह्याप्रमाणे मूत्राशयने शुद्ध करनारी चिकित्सा करवी. (मूत्राशयमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुविषे निदानस्थानना पेहेला अध्यायना ४ था विषयमां जोवुं.)

५ श्रोत्रादिषु प्रकुपिते कार्यश्चानिलहा क्रमः॥

कान वगेरे इंद्रियोमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा

५ दुष्ट वायु कान वगेरे इंद्रियोमां प्राप्त थयो होय तो आ अध्यायना २० मा विषयमां कहेली वायुने हणनारी स्नेहस्वेद तथा अभ्यंग वगेरे चिकित्सा करवी. (ए चिकित्सा दोषने तथा दूष्यने शांत करे एवी करवी अने इंद्रियोनुं सात्म्य जोईने करवी. जेम के नेत्रोमां स्नेहनो योग आपवो होय तो दूधथी तथा घीथी तर्पण करवारूप आपवो अने कानमां स्नेहनो योग आपवो होय तो तैलथी तर्पण करवारूप आपवो इत्यादि.)

६ स्नेहाभ्यङ्गोपनाहांश्च मर्दनालेपनानि च।
त्वङ्मांसासृक्छिरां प्राप्ते कुर्याच्चासृग्विमोक्षणम्॥

रस, मांस, रुधिर के शिरा एओमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

६ दुष्ट वायु रसमां, मांसमां, रुधिरमां के शिरामां प्राप्त थयो होय तो स्नेहनो, अभ्यंगो, उपनाहो, (द्रव्योने बाफी वस्त्रथी बांधीने तेओथी स्वेदनो) मर्दनो, तथा आलेपनो करवां. रुधिरमां प्राप्त थएलो दुष्ट वायु स्नेहाभ्यंगादिकथी शांत न थाय तो पछी जळो मूकाववा वगेरेथी रुधिरनो स्राव कराववो. (मेदमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा तो आ पछीना 'महावातव्याधिचि-

कित्सित नामना अध्यायमां मेदोवृत वायुना तथा ऊरुस्तंभना विषयमां आपवामां आवशे. मेदमां रहेलो वायु स्नेहादिकना विषयरूप नहीं होवाथी तेनी चिकित्सा आ प्रकरणमां आपी नथी. डल्हन.)

७ स्नेहोपनाहाग्निकर्मबन्धनोन्मर्दनानि च ।
स्नायुसन्ध्यस्थिसंप्राप्ते कुर्याद्वायावतन्द्रितः ॥

स्नायु, संधि के अस्थि एओमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

७ दुष्ट वायु स्नायुओमां, संधिओमां के अस्थिओमां प्राप्त थयो होय तो वैद्ये आलस्य नहीं राखतां लांबा काळ सूधी निरंतर बाह्य तथा आभ्यंतर स्नेहनो, उपनाहो, डांभवारूप अग्निक्रियाओ, बंधनो अने मर्दनो करवां.

८ निरुद्धेऽस्थनि वा वायौ पाणिमन्थेन दारिते।
नाडीं दत्वास्थनि भिषक्चूषयेत्पवनं बली ॥

अस्थिमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुने माटे विशेष चिकित्सा.

८ अथवा जो दुष्ट वायु अस्थिमां रोकायो होय तो वैद्ये शस्त्रवते त्वचाने तथा मांसने चीरी आरनामना शस्त्रवते अस्थिने वींधी ते छिद्रमां बे मोहोडावाळी नळी नाखीने ते नळीवते मुखथी वायुने चूसी लेवो. चूसवामां बळवान् वैद्यनुं काम छे.

९ शुक्रप्राप्तेऽनिले कार्यं शुक्रदोषचिकित्सितम्

वीर्यमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

९ दुष्ट वायु वीर्यमां प्राप्त थयो होय तो शारीरस्थानना 'शुक्रशोणितशुद्धि' नामना बीजा अध्यायमां, तथा आ चिकित्सितस्थानना 'क्षीणबलीयवाजीकरणचिकित्सित' नामना २६ मा अध्यायमां अने उत्तरतंत्रना 'मूत्रदोषप्रतिषेध' नामना ५९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे चिकित्साओ करवी. बीजा अध्यायोमां पण वीर्यना दोषने टाळनारी जे जे चिकित्साओ जोवामां आवे तेओ पण यथायोग्य करवी.

१० अवगाहकुटीकर्षूप्रस्तराभ्यङ्गबस्तिभिः ॥
जयेत्सर्वाङ्गजं वातं शिरामोक्षैश्च बुद्धिमान् ।

सर्व अंगोमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

१० दुष्ट वायु सघळा शरीरमां व्याप्त थयो होय तो तेने बुद्धिमान् वैद्ये अवगाह नामना द्रवस्वेदथी, (वायुने हरनारां द्रव्योना क्राथथी भरेला कोठी वगेरे वासणमां रोगीने बेसाडवाथी के सूवाडवाथी,) कुटी नामना उष्म स्वेदथी, (चार द्वारवाळी अने जेमां वातहर द्रव्योना क्राथनुं सेचन कर्युं होय एवी कोटडीमां चारे द्वारोना अंदरना प्रदेशोमां निर्धूम अंगाराओनी सघडीओ मूकी कोटडीना मध्यमां रोगीने बेसाडवा के सूवाडवाथी,) कर्षू नामना उष्म स्वेदथी, (पुरुषना प्रमाण जेवा लांबा खोदेला, अंदर अग्नि सळगावीने बाळेला अने पछी वातहर द्रव्योना क्राथोथी सिक्त करेला खाडामां रोगीने सूवाडवाथी,) प्रस्तर नामना उष्म स्वेदथी, (बाफेलां धान्यो वगेरेथी बीछावेली धरतीमां रोगीने सूवाडवाथी,) अभ्यंगोथी, स्नेहबस्तिओथी अने शिरामोक्षोथी (फस खोलाववाथी) जीतवो. (अवगाहस्वेद आदि स्वेदोना अमुक प्रकारो आ चिकित्सितस्थानना स्वेदावचारणीय नामना ३२ मा अध्यायमां पण केहेवामां आवशे.)

---

१ आ विषय पछी मज्जामां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा निदानस्थानना क्रमप्रमाणे आपवी जोइए पण ते ए वायुना असाध्यपणाथी नथी आपी ! अन्य ग्रंथोमां तो साध्य गणीने आपी छे.

२ वायुने हरनारा क्राथोथी, दूधथी, तेलथी, घीथी मांसना रसाथी के ऊना पाणीथी भरेली कोठीमां रोगीने बेसाडवो ए 'अवगाहस्वेद' केहेवाय छे.

बहु ऊंचाईवगरनी, बहु विस्तारवगरनी, गोळ आकारवाळी, जाळीयां वगरनी अने घाटी भींतोवाळी कोटडी करावी तेने अंदरना भागमां कठ आदि उष्णवीर्यवाळां द्रव्योथी लींपावी, ते कोटडीमां सारी रीते शय्या बीछावी, ते शय्याने फरती सघळी तरफ अंगाराओथी

११ एकाङ्गगञ्च मतिमान् शृङ्गैश्चावस्थितं जयेत्

एक अंगमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी चिकित्सा.

११ दुष्ट वायु एक अंगमां प्राप्त थयो होय अने ते अनवस्थित (स्थिरतावगरनो) होय तो तेने उपर कहेला अवगाह वगेरे उपायोथी जीतवो अने जो अवस्थित (स्थिर) होय तो तेने शींगडां मूकाववाथी लोहीनां स्रावणो करीने जीतवो.

१२ बलासपित्तरक्तैस्तु संसृष्टमविरोधिभिः।

पित्त वगेरेथी मिश्रित अथवा आवृत थएला वायुनी चिकित्सा.

१२ जो वायु पित्तथी, कफथी के रुधिरथी मिश्रित अथवा आवृत थएल होय तो, जेथी मिश्रित अथवा आवृत थयो होय तेनी चिकित्साने अने वायुनी चिकित्साने जेओथी परस्पर विरुद्धता न थाय एवां द्रव्योथी ते वायुनी चिकित्सा करवी.

१३ सुप्तिवाते त्वसृङ्मोक्षं कुर्यात्तु बहुशो भिषक्
दिह्याच्च लवणागारधूमैस्तैलसमन्वितैः।

सुप्तिवात के जेथी स्पर्शनी खबर पडती नथी तेनी विशिष्ट चिकित्सा.

१३ दुष्ट वायु लोहीथी मिश्रित अथवा आवृत थईने रहेलो होवाथी स्पर्शनी खबर पडती न होय तो वैद्ये रोगीना शरीरमांथी वारंवार थोडुं थोडुं लोही स्रवाववुं (घणुं लोही स्रवाववामां आवे तो वायुनो प्रकोप थवानी धास्ती रेहे छे.) अने सैंधव तथा घरना धूमाडानी धूंस एओने तैलमां कालवी तेनो लेप करवो. (केटलाएक तो आ चिकित्साने रसमां रहेला वायुनीज परिशिष्ट चिकित्सा माने छे के जे वायुनां लक्षणो निदानस्थानना पेहेला अध्यायना पांचमा विषयना पांचमा पारीग्राफमां आपवामां आव्यां छे.)

१४ पञ्चमूलीशृतं क्षीरं फलाम्लो रस एव च॥
सुस्निग्धो धान्ययूषो वा हितो वातविकारिणाम्

वातव्याधिओवाळाओने माटे भोजनो.

१४ लघुपंचमूलीना कल्कथी पकावेलुं दूध, बृहत्पंचमूलीना कल्कथी पकावेलुं दूध, दाडिम वगेरे फळोना रसथी खाटो करेलो सारी पेठे स्निग्धतावाळो मांसनो रसो अने सारी पेठे स्निग्धपणावाळो कळथी वगेरे धान्यनो यूष एओ वातव्याधिओवाळाओने माटे हितकारी छे. (दोषना तथा सात्म्यना अनुसारथी दूध वगेरे देवां.)

१५ काकोल्यादिः सवातघ्नः सर्वाम्लद्रव्यसंयुतः
सानूपौदकमांसस्तु सर्वस्नेहसमन्वितः।
सुखोष्णः स्पष्टलवणः शाल्वणः परिकीर्तितः॥
तेनोपनाहं कुर्वीत सर्वदा वातरोगिणाम्।

भरेली सघडीओ मूकी दई अने ते पछी चोफाळ, चामडां, रेशमी वस्त्रो, झीला, धाबळा तथा गोदडां एओने फरती कनातनी पेठे बांधी दई, रोगीना शरीरपर स्नेहनो अभ्यंग करी ते रोगीने पेली शय्यामां सूवाडवो. आ रीते जे स्वेदनी क्रिया करवामां आवे ते कुटीस्वेद केहेवाय छे.

स्थाननी योग्यता जोई धरतीमां हांडली जेवो गोळाकार खाडो खोदावी, ते खाडामां प्रदीप्त अने निर्धूम अंगारा भरी, ते खाडा उपर योग्य रीते खाटलो मूकावी, ते खाटलामां रोगीने सूवाडवो के जेथी ते ठीक रीते स्वेदित थाय छे. आ रीते जे स्वेदक्रिया करवामां आवे ते **कर्षूस्वेद** केहेवाय छे.

चोखा, जव तथा घउं वगेरे अणीवाळां धान्यो, मग तथा अडद वगेरे शींगनां धान्यो अने चीपटा आकारवाळां तुच्छ धान्यो एओने बाफी, तेओनी पथारी करी अथवा गोळ घी तथा मरी वगेरे नाखीने करेला मांसोना कल्को, दूधपाक, तलनी तथा अडदनी पातळी खीचडी अने लाफसी वगेरे एओनी पथारी करी, ते पथारी उपर रेशमी वस्त्रनो अथवा ऊनना वस्त्रनो ओछाड पाथरी अथवा धोळो एरडो, रातो एरडो अने आकडो एओनां पानडां बीछावी रोगीना आखा शरीरपर स्नेहनो अभ्यंग करी ते रोगीने ते पथारीपर सूवाडी बाफ लेवराववी ए **प्रस्तरस्वेद** केहेवाय छे.

(चरक सूत्रस्थान अध्याय १३ मो.)

वातव्याधिओवाळाओने माटे शाल्वण नामनो उपनाह.

१५ काकोल्यादि गण, विदारिगंधादि गण, भद्रदारुआदि वातसंशमन वर्ग, सघळां दाडिम वगेरे अम्लवर्गनां द्रव्यो अथवा शुक्त तथा सौवीरक वगेरे सघळा अम्ल पदार्थो, पांचे प्रकारनां आनूप मांसो अने सघळा स्नेहो एओने साथे वाटी सारी पेठे सैंधवादिक लवणोथी युक्त करी अग्निथी गरम करीने तेनो सेहेवाय तेवो ऊनो झीणा वस्त्रवते उपनाह बांधवो (अंग उपर बंधारण करवुं. पोटली बांधवी.) ए शाल्वण उपनाह केहेवाय छे. आ उपनाह वातव्याधिओवाळाओने माटे सर्वदा हितकारी छे. (आ उपनाहमां मांसना वजन जेटलां औषधो नाखवां, जेटलाथी खटाश थाय तेटलो अम्लवर्ग नाखवो अने जेटलाथी स्निग्धता थाय तेटलो घी वगेरे चार स्नेहोनो समुदाय नाखवो ए परिभाषा छे.)

१६ कुञ्चमानं रुजार्तं वा गात्रं स्तब्धमथापि वा
गाढं पट्टैर्निबध्नीयात्क्षौमकार्पासकौर्णिकैः ।
बिडालनकुलोष्ट्राणां चर्मगोण्यां मृगस्य वा ॥
प्रवेशयेद्वा स्वभ्यक्तं शाल्वणेनोपनाहितम् ।

वातव्याधिओवाळाओने माटे अग्निवगरनो स्वेद.

१६ जे गात्र वातव्याधिथी संकोचाई जतुं होय, वेदनाथी पीडातुं होय के अक्कड थई गयुं होय ते गात्रने अलसीना, कपासना के ऊनना वस्त्रना पाटाथी मजबूत बांधवुं अथवा स्नेहनो सारी पेठे अभ्यंग करी उपर कहेला शाल्वण उपनाहनां द्रव्योनो कल्क लगावी अलसीना, कपासना के ऊनना वस्त्रना पाटाथी मजबूत रीते बांधी मींदडाना, नोळीयाना, ऊंटना के मृगना चामडानी कोथळीमां पेसाडी मूकवुं. (डल्हन तो ऊंटने बदले पाठांतर बोलीने 'पाणीनो मींदडो' ए अर्थ आपे छे. वायु पित्तथी के रुधिरथी आवृत होय तो बंधननो निषेध छे.)

१७ स्कन्धवक्षस्त्रिकप्राप्तं वायुं मन्यागतं तथा ॥
वमनं हन्ति नस्यं च कुशलेन प्रयोजितम् ।

कांध, छाती, वांसानी उपरनो त्रण अस्थिओनो संयोगदेश के ओड एओमां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी विशेष चिकित्सा.

१७ दुष्ट वायु कांधमां, छातीमां, वांसानी उपरना त्रण अस्थिओना संयोगप्रदेशमां के ओडमां प्राप्त थयो होय तो प्रवीण वैद्ये वमन तथा शिरोविरेचन नस्य देवुं. एथी ए दुष्टवायु नष्ट थई जायछे.

१८ शिरोगतं शिरोबस्तिर्हन्ति वासृग्विमोक्षणम् ॥
स्नेहं मात्रासहस्रं तु धारयेत्तत्र योगतः ।

माथामां प्राप्त थएला दुष्ट वायुनी विशेष चिकित्सा.

१८ दुष्ट वायु माथामां प्राप्त थयो होय तो वमन, शिरोबस्ति, शिरोविरेचन अने जळो मू-

१ बे मोहोडांवाळी, बार आंगळ ऊंची अने माथामां पेहेराय एवडी चामडानी टोपी करवी. ए टोपीने माथामां पेहेरी अडदना लोटनी पाळ करी उपरना मोहोडामां जरा उनाशवाळा स्नेहो भरी देवा ए शिरो बस्ति केहेवाय छे. नाकमांथी, कानमांथी अने मोहोडामांथी पाणी झरे त्यांसूधी अथवा वेदना मटे त्यांसूधी ए बस्तिनुं धारण करवुं अथवा हजार मात्रा थतां सूधी ए बस्तिनुं धारण करवुं. पोताना गोठणने हाथनो आंटो लई एक चपटी वगाडवामां आवे त्यारे एक मात्रा थाय छे अथवा एक लघु अक्षरनुं उच्चारण थई रहे त्यारे एक मात्रा थाय छे अथवा आंख वींचाईने ऊघडे त्यारे एक मात्रा थाय छे. बस्तिना धारणनो समय पूरो थाय त्यारे टोपीने काहाडी नाखी चोतरफथी स्नेह लई लेवो. ते पछी रोगीने जरा जरा ऊनाशवाळा पाणीमां ऊभो राखीने नवराववो. आ बस्ति देवाथी माथाना कंपआदि वायुसंबंधी सघळा रोगो भारे विषम होय तो पण टळी जाय छे. पांच के सात दिवस सूधी बस्तिनी क्रिया कऱ्या छतां पण रोग टळे नहीं तो वधारे दिवसो सूधी पण ए बस्ति देवो. (भावप्रकाश.)

कवा वगेरेथी लोहीनो स्राव एओना प्रयोग करवाथी ते दुष्टवायु टळी जाय छे. (बीजी क्रियाओथी वायु शांत न थतो होय तोज लोहीनो स्राव करवो.) शिरोबस्तिमां युक्तिपूर्वक स्नेहनुं जे धारण कराववुं ते हजार मात्रासूधी कराववुं. (रोगनुं आधिक्य होय तो दश हजार मात्रासूधी धारण कराववानो पण विधि छे.)

१९ सर्वाङ्गगतमेकाङ्गस्थितं वापि समीरणम् ॥
रुणद्धि केवलो वस्तिर्वायुर्वेगमिवाचलः ।

वातव्याधिमां स्नेहवस्तिनीज मुख्यता.

१९ जेम पर्वत एकलोज वायुना वेगने रोकी देछे तेम स्नेहवस्ति एकलोज एक अंगमां रहेला अथवा सर्व अंगमां रहेला पण दुष्ट वायुने रोकी देछे.

२० स्नेहस्वेदस्तथाभ्यङ्गो वस्तिः स्नेहविरेचनम् ॥
शिरोबस्तिः शिरःस्नेहो धूमः स्नैहिक एव च ।
सुखोष्णः स्नेहगण्डूषो नस्यं स्नैहिकमेव च ॥
रसाः क्षीराणि मांसानि स्नेहाः स्नेहान्वितं च यत्
भोजनानि फलाम्लानि स्निग्धानि लवणानि च ॥
सुखोष्णश्च परीषेकस्तथा संवाहनानि च ।
कुङ्कुमागुरुपत्राणि कुष्ठैलातगराणि च ॥
कौशेयौर्णिकरोमाणि कार्पासानि गुरूणि च ।
निवातातपयुक्तानि तथा गर्भगृहाणि च ॥
मृद्वी शय्याग्निसन्तापो ब्रह्मचर्यं तथैव च ।
समासेनैवमादीनि योज्यान्यनिलरोगिषु ॥

कहेला तथा नहीं कहेला सर्व व्यात-व्याधिओने टाळवानो सर्व साधारण प्रयोग.

२० स्नेहस्वेद, स्नेहनो अभ्यंग, स्नेहबस्ति, स्नेहविरेचन, शिरोबस्ति, माथापर स्नेहनुं लगाववुं, स्नैहिकधूमपान[1], स्नैहिकनस्य[2], सेहेज ऊनो स्नेहनो कोगळो[3], मांसना रसो, दूधो, घी वगेरे स्नेहो, बीजुं पण जे कांई स्नेहथी युक्त होय ते, स्नेहगुणवाळुं होय ते, दाडिमादिक फळोथी खाटां करेलां स्निग्ध भोजनो, सैंधव आदि लवणो, सेहेज ऊनां सेचनो, अंगोनुं चापवुं, केसर, अगरु, तमालपत्र, कठ, एळची, तगर, रेशमी वस्त्रो, ऊननां वस्त्रो, भारे-

१ धूमपाननो विधि आ चिकित्सित स्थानना ४० मा अध्यायमां केहेवामां आवशे. चरक केहे छे के जीवनीयगण एटले जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, (विदारीनां मूळ, शतावरीनां मूळ तथा आसोंद) अडवाउ मग, अडवाउ अडद, खरखोडी अने जेठीमध एओने युक्तिथी गोटवी चूर्ण करी तेने चरबी, घी तथा मीणथी मेळवी सळीपर वत्ती करी तेने सुकावी तेमांथी सळी काहाडी लई वत्तीने नळीमां नाखीने तेनो धूमाडो पावो ए स्नैहिकधूम केहेवाय छे.

२ नस्यनो विधि आ चिकित्सित स्थानना ४० मा अध्यायमां केहेवामां आवशे. चरक केहे छे के 'रतांजलि, अगरु, तमालपत्र, दारूहळदरनी छाल, जेठीमध, बलदाणा, पांडेरवो, झीणी एळची, वावडींग, बीली, कमळ, वाळो, वाळानुं मूळ, केवडीमोथ, तज, मोथ, उपलसरी, शालिपर्णी, देवदार, पृश्निपर्णी, खरखोडी, शतावरी, हरेणु, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, रास्ना अने कमळना केसरा एओनो तेओथी सोगणा आंतरीक्ष जळमां क्काथ करवो. जळ बळतां बळतां पाछळथी नाखवाना तैलथी दशगणो क्काथ अवशेष रहे त्यारे ते क्काथने उतारी लेवो. पछी ते क्काथथी तैलने पकावतां क्काथ बळी जाय त्यारे ते तैलने लई लेवुं. वळी पण एवीज रीतना क्काथमां बीजीवार ते तैलने तेज रीते पकावी लई लेवुं. आ प्रमाणे दश वार पकाववुं. दशमी वारना पाकमां तैलना जेटलुंज बकरीनुं दूध नाखवुं. ए दूध सघळुं बळी जाय त्यारे तेलने लई लेवुं ए अणुतैल केहेवाय छे. आ अणुतैलथी नस्य देवुं.' साकरसहित केसरने दूधमां वाटी तेनुं नस्य देवुं ए पण स्नैहिकनस्य केहेवाय छे. आ प्रमाणे नस्यना अनेक प्रकार छे.

३ स्निग्ध अने उष्ण पदार्थोनो सेहेज ऊनो द्रव मोहोडामां खूब भरी जेटलीवार रही शकाय तेटलीवार रहीने अथवा नाकमांथी पाणी झरवा लागे त्यांसूधी रहीने पछी ए द्रवने मोहोडामांथी काहाडी नाखवो ए स्नैहिक गंडूष (कोगळो) केहेवाय छे.

(भावप्रकाश.)

पणावाळां कपासनां वस्त्रो, पवन वगरनां तथा तडकावगरनां अंदरनां घरो, कोमळ शय्या, अग्निनो ताप अने ब्रह्मचर्य इत्यादिक क्रियाओ, द्रव्यो तथा उपचारो वातहर छे एटला माटे वैद्ये वातव्याधिओवाळाओनी अवस्था तथा व्याधिविशेषादिक एओना अनुसारथी ए क्रियाओनो, द्रव्योनो तथा उपचारोनो प्रयोग करवो. आ क्रियाओ, द्रव्यो तथा उपचारो संक्षेपथी कह्यां छे माटे ए उपरथी बीजी क्रियाओनी, बीजां द्रव्योनी तथा बीजा उपचारोनी कल्पना पण करी लेवी.

२१ त्रिवृद्दन्तीसुवर्णक्षीरीसप्तलाशङ्खिनीत्रिफलाविडङ्गानामक्षसमाः कल्का बिल्वमात्रः कल्कस्तिल्वकमूलकंपिल्लकयोस्त्रिफलारसदधिपात्रे द्वे द्वे घृतपात्रमेकं तदैकध्यं संसृज्य विपचेत्तिल्वकसर्पिरेतत्स्नेहविरेचनमुपदिशन्ति वातरोगेषु । तिल्वकविधिरेवाशोकरम्यकयोर्द्रष्टव्यः ॥

तिल्वकसर्पिरूप स्नेहविरेचन.

२१ नसोतर, नेपाळो, दारूडी, हाथला नामनो थोर, शंखवेल, (आंखफुटामणी) त्रिफळा अने वावडींग एओना एक एक तोला भार कल्को करवा. पठाणी लोदरनां मूळ अने कपीलो एओना चार चार तोलां भार कल्को करवा. त्रिफळानो क्वाथ पांचसो बार तोलां भार करवो. दहीं पांचसो बार तोलां भार तैयार करवुं. घी बसो छप्पन तोलां भार लेवुं. पछी ए सघळा पदार्थोने भेळा करी तेथी पकावीने घी सिद्ध करवुं. आ घी **तिल्वकसर्पि** केहेवाय छे. वातव्याधिओ उपर आ घीरूप स्नेहविरेचन देवुं एम आचार्यो केहे छे. आसोपालवनुं घी करवुं होय तो पठाणी लोदरनां मूळीआंना कल्कने बदले आसोपालवनो चार तोलां भार कल्क नाखवो तथा बाकी सघळुं उपर प्रमाणे करवुं अने बकाननुं घी करवुं होय तो पठाणी लोदरनां मूळीयाना कल्कने बदले बकाननो चार तोलां भार कल्क नाखवो तथा बाकी सघळुं उपर प्रमाणे करवुं.

२२ तिलपरिपीडनोपकरणकाष्ठान्याहृत्यानल्पकालं तैलपरिपीतान्यणूनि खण्डशः कल्पयित्वावक्षुद्य महति कटाहे पानीय आप्लाव्य क्राथयेत्ततः स्नेहमम्बुपृष्ठाद्यदुदेति तत्सरकपाण्योरन्यतरेणादाय वातघ्नौषधप्रतीवापं च स्नेहपाककल्पेन विपचेदेतदणुतैलमुपदिशन्ति वातरोगेषु । अणुभ्यस्तैलद्रव्येभ्यो निष्पाद्यत इत्यणुतैलम् ॥

अणुतैल.

२२ तल पीलवानी घाणीनां लाकडां के जेओए घणा काळ सूधी तेल पीधेलुं होय तेओने लावी, तेओना झीणा झीणा टुकडा करी, खांडणीयामां खांडी, मोटा कडायानी अंदर पाणीमां बोळीने तेओने उकाळवा. एम करतां पाणी उपर जे तेल नीकळे तेने कोडीयांथी अथवा हाथथी लई लेवुं. पछी ते तैलने स्नेह पकाववानी पद्धति प्रमाणे एटले वातहर द्रव्योनो क्वाथ, मांसनो रस, दूध अने अम्लरस, एओरूप चोगणा द्रवमां पकाववुं अने पाकी जवा आवे त्यारे तेमां, वायुने हणनारां द्रव्योनो कल्क नाखवो. ए रीते सिद्ध थएलुं तैल **अणुतैल** केहेवाय छे. आ तैलनो वातव्याधिओनी उपर प्रयोग करवो एम आचार्योए कह्युं छे. घाणीना लाकडाना अणु एटले झीणा झीणा विभागोमांथी आ तैल बनाववामां आवेछे तेथी तेनुं नाम 'अणुतैल' राखवामां आव्युं छे.

२३ अथ महापञ्चमूलकाष्ठैर्बहुभिरवदह्यावनिप्रदेशमसितमुषितमेकरात्रमुपशान्तेऽग्नावपोह्य भस्म निर्वृतां भूमिं विदारिगन्धादिसिक्तेन तैलघटशतेन तुल्यपयसाभिषिच्यैकरात्रमवस्थाप्य ततो यावती मृत्तिका स्निग्धा स्यात्तामादायोष्णोदकेन महति कटाहेऽभ्यासिञ्चेत्तत्र यत्तैलमुत्तिष्ठेत्तत्पाणिभ्यां पर्यादाय स्वनुगुप्तं निदध्यात् । ततस्तैलं वातहरौषधक्राथमांसर-

सक्षीराम्लभागसहस्रेण सहस्रपाकं विपचेद्यावता कालेन शक्नोति पक्तुं प्रतिवापश्चात्र हैमवता दक्षिणापथगाश्च गन्धा वातघ्नानि च तस्मिन्सिध्यति शङ्खानाध्मापयेद्दुन्दुभिं घातयेच्छत्रं धारयेद्वालव्यजनैश्च वीजयेद्ब्राह्मणसहस्रं भोजयेत्तत्साधु सिद्धमवतार्य सौवर्णे राजते मृण्मये वा पात्रे स्वनुगुप्तं निदध्यात्तदेतत् सहस्रपाकमप्रतिवार्यवीर्यं राजार्हं तैलमेवं भागशतविपक्वं शतपाकम् ॥

सहस्रपाक अने शतपाक तेल.

२३ काळी माटीवाळा पृथ्वीना प्रदेशने बृहत्पंचमूळीनां घणां घणां काष्ठोथी बाळी, एक रात रेहेवा दई, अग्नि शांत थई जाय त्यारे भस्मने दूर करी नाखी, ठरी गएली ते पृथ्वीमां विदारिगंधादि गणना कल्कथी पकावेलुं सो घडा (एक हजार चोवीश तोलां भारनो एक घडो गणायछे.) तैल अने सो घडा दूध रेडी दई, एक रात सूधी रेहेवा दई, पछी ए तैलसहित दूधथी जेटली माटी स्निग्ध थई होय तेटली माटीने उपाडी लई, मोटा कडायामां नाखीने तेना उपर ऊनुं पाणी रेडवुं. ए पाणीनी उपर जे तैल ऊठे ते तैलने बन्ने हाथवते लेई लईने सारा बंदोवस्तथी राखवुं. पछी वातहर औषधोनो क्वाथ, मांसनो रस, दूध अने खाटी कांजी ए प्रत्येक द्रवने तैलना चतुर्थांश चतुर्थांश जेटला लई अर्थात् चारे मळीने तैलना जेटलाज वजनना थाय तेटला लईने तेओमां ते तैलने पकाववुं. पाकी रह्या पछी उतारी लईने फरीवार पण एज चार द्रवोमां पकाववुं. आ प्रमाणे हजार वार पकाववुं[1]. आ हजार वार पाक, जेटला दिवसे करी शकाय तेटला दिवसे करवा. ए तैलनो हजारमी वारनो पाक थतो होय ते समये तेमां उत्तर दिशामां थतां कस्तूरी वगेरे सुगंध द्रव्योनो, दक्षिण दिशामां थतां चंदन वगेरे सुगंध द्रव्योनो अने वायुने हणनारां द्रव्योनो प्रतिवाप (तैलादिक तथा क्वाथादिक सिद्ध थवा आवे ते समयमां जे कल्कादिक नाखवामां आवे ते प्रतिवाप केहेवाय छे.) नाखवो. आ तैल सिद्ध थतुं होय ते समयमां शंखनादो करावबा, दुंदुभिओ वगडाववां, तैल उपर छत्रनुं धारण करवुं, चमर ढोळाववा, पंखा कराववा अने हजार ब्राह्मणो जमाडवा[2]. ए तैल सारी रीते पाकी रहे त्यारे तेने उतारी लई सुवर्णना, रूपाना अथवा माटीना वासणमां सारा बंदोवस्तथी राखवुं. आ **सहस्रपाक** नामनुं तैल अप्रतिवार्य (कोईथी पण अटकावी न शकाय एवी) शक्तिवाळुं छे अने राजाओने लायक छे. जो हजारवार नहीं पकावतां सोवार पकाव्युं होय तो ते **शतपाक** केहेवाय छे अने ते पण मोटी शक्तिवाळुं थाय छे.

२४ गन्धर्वहस्तकमुष्ककनक्तमालाटरूषकपूतीकारग्वधचित्रकादीनां पत्राण्यार्द्राणि लवणेन सहोदूखलेऽवक्षुद्य स्नेहघटे प्रक्षिप्यावलिप्य गोशकृद्भिर्दाहयेदेतत्पत्रलवणमुपदिशन्ति वातरोगेषु ॥

पत्रलवण.

२४ एरडो, मरखो, करंज, अरडूसी, गुच्छकरंज, गरमाळो अने चित्रक इत्यादिक वृक्षोनां लीलां पांनडां लई तेओनी साथे ते सर्वना जेटला वजननुं सैंधव नाखी, खांडणीयामां खांडी, ते सर्वने स्नेहना रीढा घडामां नाखी ते घडानी उपर छाण वगेरे लीपीने गायनां छाणांना अग्निथी दाह

---

१ जेज्जटाचार्य केहे छे के "हजारवार पकाववाथी तैलनो क्षय थई जाय एटला माटे प्रत्येक हजार चतुर्थांश जेटला सर्व द्रवो नाखीने एक वारज पकाववुं. 'सहस्रपाक' ए तो संज्ञाशब्द छे माटे तेना अर्थ उपर लक्ष्य राखवुं नहीं." पण गयदासाचार्य केहे छे के "वारंवार चोथा भाग जेटलां दूध वगेरे नाखवामां आववाथी तैलनो क्षय थशे नहीं माटे हजार वारज पकाववुं. थोडोक क्षय थाय ए कांई धनवान् लोकोने हिसाबमां नहीं."

२ शंखनादादिकमां कोई असाधारण शक्ति होवानुं स्वीकारेलुं छे.

करवो. आ प्रमाणे करवाथी घडामां जे क्षार (भस्म) उत्पन्न थाय ते **पत्रलवण** केहेवायछे. आ पत्रलवणनो वातव्याधिओनी उपर उपयोग करवो एम आचार्योए कह्युं छे.

२५ एवं स्नुहीकाण्डवार्त्ताकुशिग्रुलवणानि संक्षुद्य घटं पूरयित्वा सर्पिस्तैलवसामज्जाभिः प्रक्षिप्यावलिप्य गोशकृद्भिर्दाहयेदेतत्स्नेहलवणमुपदिशन्ति वातरोगेषु ॥ काण्डलवणम् ॥

स्नेहलवण अथवा कांडलवण.

२५ थोरना सोटा, भोरींगणी अने सरगवो एओने कूटी, घडामां नाखी, ते घडामां ते द्रव्योना जेटला वजननुं कूटेलुं सैंधव नाखी, तेटलाज वजनना घीथी, तेटलाज वजनना तेलथी, तेटलाज वजननी चरबीथी तथा तेटलाज वजननी मज्जाथी ते घडाने पूरी, उपर छाण वगेरनो लेप करी गायनां छाणांना अग्निथी दाह करवो. आ प्रमाणे करवाथी घडामां जे भस्म उत्पन्न थाय ते **स्नेहलवण** अथवा **कांडलवण** केहेवाय छे. आ लवणनो वातव्याधिओनी उपर उपयोग करवो एम आचार्योए कह्युं छे.

२६ गण्डीरपलाशकुटजबिल्वार्कस्नुह्यपामार्गपाटलापारिभद्रकनादेयीकृष्णगन्धानीपनिर्दहन्यटरूषकनक्तमालकपूतीकबृहतीकण्टकारिकाभल्लातकेङ्गुदीवैजयन्तीकदलीवर्षाभूह्रीवेरेक्षुरकेन्द्रवारुणीश्वेतमोक्षकाशोका इत्येवं वर्गं समूलपत्रशाखमार्द्रमाहृत्य लवणेन सह संमृष्टं पूर्ववद्दग्ध्वा क्षारकल्पेन परिस्राव्य विपचेदेतत्प्रतिवापश्चात्र हिंग्वादिभिः पिप्पल्यादिभिर्वा। इत्येतत्कल्याणकलवणं वातरोगेषु गुल्मप्लीहाग्निसङ्गाजीर्णार्शोऽरोचकार्त्तानां कासादिभिरुपद्रुतानां चोपदिशन्ति पानभोजनेष्विति ॥

भवति चात्र ॥

**विष्यन्दनादुष्णभावाद्दोषाणां च विपाचनात् ।
संस्कारपाचनाच्चेदं वातरोगेषु शस्यते ॥**

कल्याणक लवण.

२६ जंगली सूरण, कपूरकाचरी, इंद्रजव, बीली, आकडो, थोर, अघेडो, पाडल, पांडेरवो, नदीना कीनारापर थतुं जलजांबू (नाहानां जांबूनुं झाड,) सरगवो, मोटो कदंब, मोरवेल, अरडूसी, करंज, गुच्छकरंज, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, भीलामुं, इंगोळीयो, अरणी, केळ, साटोडी, वाळो, एखरो, इंद्रवारणी, सफेद मरखो अने आसोपालव एओनां लीलां मूळ, पानडां तथा शाखाओने लावी ए सर्वना जेटला वजनना सैंधवनी साथे तेओने कूटी, उपर कह्याप्रमाणे बाळी, भस्मने क्षार गाळवानी रीती प्रमाणे गाळी लईने क्षारनी पेठे पकाववी अने तेमां हिंग्वादि गणनो अथवा पिप्पल्यादि गणनो[1] प्रतिवाप नाखवो. आ प्रमाणे सिद्ध थएलुं लवण **कल्याणकलवण** केहेवाय छे. आ कल्याणकलवणनो वातव्याधिओनी उपर खावापीवामां उपयोग कराववो एम आचार्योए कह्युं छे. गुल्म, बरल, अग्निनुं मंदपणुं, अजीर्ण, अरश के अरुचि एओथी पीडाएलाओने तथा खांसी वगेरेथी पीडाएलाओने पण खावापीवामां आ लवणनो उपयोग कराववो एम आचार्यो केहे छे.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "आ लवण दोषोनो स्राव करनारूं छे, उष्ण छे, दोषोने पकावनारूं छे अने अन्नादिमां नाखवामां आव्युं होय तो तेओने पण पचावनारूं छे माटे तेनो व्यातव्याधिओनी उपर उपयोग वखाणवामां आवे छे."

अध्याय ५ मो

१ अथातो महावातव्याधिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'महावात-

---

[1] आ पछीना पांचमा अध्यायना २४ मा विषयमां हिंग्वादि गण आप्यो छे ते जुवो.

व्याधिचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ द्विविधं वातशोणितमुत्तानमवगाढं चेत्येके भाषन्ते तत्तु न सम्यक्कुष्ठवदुत्तानं भूत्वा कालान्तरेणावगाढीभवति तस्मान्न द्विविधम् ॥

बीजा आचार्योए मानेला वातरक्तना बे भेदनुं खंडन.

२ छीछरूं अने ऊंडुं ए रीते वातरक्त बे प्रकारनुं थाय छे एम केटलाएक आचार्यो केहेछे पण ते वात बराबर नथी. केमके वातरक्त प्रथम कोढनी पेठे छीछरूं थईने काळांतरे ऊंडुं थई जाय छे. आम छे एटला माटे वातरक्त बे प्रकारनुं नथी.

३ तत्र बलवद्विग्रहादिभिः प्रकुपितस्य वायोर्गुरूष्णाध्यशनशीलस्य प्रदुष्टं शोणितं मार्गमावृत्य वातेन सहैकीभूतं युगपद्वातरक्तनिमित्तां वेदनां जनयतीति वातरक्तं तत्तु पूर्वं हस्तपादयोरवस्थानं कृत्वा पश्चाद्देहं व्याप्नोति ।

वातरक्तनां निदान, संप्राप्ति तथा निरुक्ति.

३ बळवान् लोकोनी सामे युद्ध करवा वगेरेथी वायु प्रकुपित थाय छे अने भारे जमवानी, ऊनुं जमवानी तथा अजीर्ण छतां उपराउपर जमवानी टेवथी रुधिर दुष्ट थाय छे. दुष्ट थएलुं रुधिर वायुना मार्गने रोकी लई वायुनी साथे एकीभूत थईने एकदम, वायुसंबंधी तथा रुधिरसंबंधी वेदनाओने उत्पन्न करेछे एटला माटे ते रोग वातरक्त केहेवाय छे. ए वातरक्त प्रथम हस्तोमां तथा पगोमां स्थिति करीने पाछळथी सघळा देहमां व्याप्त थाय छे.

४ तस्य पूर्वरूपाणि तोददाहकण्डूशोफस्तम्भत्वक्पारुष्यशिरास्नायुधमनिस्पंदनसक्थिदौर्बल्यानि श्यावरक्तमण्डलोत्पत्तिश्चाकस्मात्पाणिपादतलाङ्गुलिगुल्फप्रभृतिषु । तत्राप्रतिकारिणोऽपचारिणश्च रोगो व्यक्तस्तस्य लक्षणमुक्तं तत्राप्रतिकारिणो वैकल्यं भवति ॥

वातरक्तनां पूर्वरूपो अने पछी ते रोगनी स्पष्टता.

४ भोंकाया जेवी व्यथा, बळतरा, खरज, सोजो, अक्कडपणुं, चामडीनुं खरसटपणुं, शिराओनुं स्नायुओनुं तथा धमनीओनुं चलन, साथळोनुं नबळापणुं अने हाथनां तळां, पगनां तळां, आंगळीओ तथा घूंटी ए वगेरेमां अकस्मात् काळां तथा रातां मंडलोनी उत्पत्ति एओ वातरक्तनां पूर्वरूपो छे. ए पूर्वरूपो थाय ते समयमां जे माणस योग्य उपाय न करे अने विरुद्ध रीते वर्त्ते तेने वातरक्त नामनो ए विकार स्पष्ट थायछे के जेनां लक्षणो निदानस्थानमां केहेवाई गयां छे. वातरक्त प्रकट थया पछी जो चिकित्साथी रहित रेहेवामां आवे तो अंगोमां विकलपणुं थाय छे.

५ भवति चात्र ॥

प्रायशः सुकुमाराणां मिथ्याहारविहारिणाम् ।
स्थूलानां सुखिनां चापि वातरक्तं प्रकुप्यति ॥

वातरक्त घणुं करीने कोने थायछे?

५ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "घणुं करीने सुकुमार, मिथ्या आहार विहार करनारा, जाडा अने सुखीआ लोकोनां शरीरोमां वातरक्त प्रकुपित थाय छे."

६ तत्र प्राणमांसक्षयपिपासाज्वरमूर्छाश्वासकासस्तम्भारोचकाविपाकविसरणसङ्कोचनैरनुपद्रुतं बलवन्तमात्मवन्तमुपकरणवन्तं चोपक्रमेत् ॥

१ महावातव्याधिओ के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना पेहेला अध्यायना नवमा विषयथी ४१ मा विषय सुधी केहेवामां आव्यां छे तेओनी अने तेओने लगता मेदोवृतवायु तथा ऊरुस्तंभनी चिकित्सा विषयनो.

२ जो के वातरक्तनां निदानादिक तथा पूर्वरूपो निदानस्थानमां केहेवाई गयां छे तो पण अहीं जे पुनरुक्ति करी छे ते विशेष जणाववा माटे तथा वातरक्तनुं कष्टसाध्यपणुं जणाववा माटे छे.

वातरक्तनो दरदी केवो होय तो तेनी चिकित्सा करवी.

६ जे वातरक्तनो दरदी बळना तथा मांसना क्षयथी, तरशथी, ज्वरथी, मूर्छाथी, श्वासथी, खांसीथी, स्तंभथी, अरुचिथी, अन्नना नहीं पचवाथी, रोगना फेलावाथी अने अंगोना संकोचथी पीडित न थयो होय, बळवान् होय, जितेंद्रिय होय अने जोईती सामग्रीओथी संपन्न होय तेनी चिकित्सा करवी.

७ तत्रादावेव बहुवातरूक्षम्लानाङ्गादृते मार्गावरणाद्दुष्टशोणितमसकृदल्पाल्पमवसिञ्चेद्वातकोपभयात् । ततो वमनादिभिरुपक्रमैरुपपाद्य प्रतिसंसृष्टभक्तम् ॥

वातरक्तमां रुधिर के जे दूष्य छे तेनी प्रथम चिकित्सा तथा ते पछी दोषनी वमनादिक चिकित्सा कर्या पछी बीजी चिकित्साओनो अधिकार.

७ वातरक्तनो रोगी वायुना प्रकोप लीधे रूक्ष तथा करमाई गएलां अंगोवाळो थई गयो न होय तो तेनुं रुधिर के जे वायुना मार्गना आवरणने लीधे दुष्ट थएलुं होय छे तेने वारंवार थोडुं थोडुं स्त्रवाववुं. केमके अधिक स्त्रवाववाथी वायुना अतिप्रकोपनी धास्ती रेहेछे. ए चिकित्सा कर्या पछी दोषनी वमन, विरेचन तथा निरूह बस्ति वगेरे यथोचित चिकित्साओ करीने रोगीने आ स्थानना ३९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे पेया वगेरे आहारनी योजना करी देवी. आ प्रमाणे करवामां आवे ते पछी नीचे लखेली चिकित्साओनो अधिकार प्राप्त थाय छे.

८ वातप्रबले पुराणघृतं पाययेदजाक्षीरं चार्द्धतैलं मधुकाक्षयुक्तं शृगालविन्नासिद्धं वा शर्करामधुमधुरं शुण्ठीशृङ्गाटककशेरुकसिद्धं वा श्यामारास्नासुषवीशृगालविन्नापीलुशतावरीश्वदंष्ट्राद्विपञ्चमूलीसिद्धं वा ॥

द्विपञ्चमूलीकाथाष्टगुणसिद्धेन च पयसा मधुकमेषशृङ्गीश्वदंष्ट्रासरलभद्रदारुवचासुरभिकल्कप्रतीवापं तैलं पाचयित्वा पानादिषूपयुञ्जीत शतावरीमयूरकमधुकक्षीरविदारीबलातिबलातृणपञ्चमूलीकाथसिद्धं वा काकोल्यादिप्रतिवापं बलातैलं शतपाकं वेति ॥

वातहरमूलसिद्धेन च पयसा परिषेचनमम्लेन वा कुर्वीत ॥

यवमधुकैरण्डतिलवर्षाभूभिर्वा प्रदेहः कार्यः तत्र चूर्णितेषु यवगोधूमतिलमुद्गमाषेषु प्रत्येकशः काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकबलातिबलाबिसमृणालशृगालविन्नामेषशृङ्गीपियालशर्कराकशेरुकसुरभिवचाकल्कमिश्रेषूपनाहार्थे सर्पिस्तैलवसामज्जादुग्धसिद्धाः पञ्च पायसा व्याख्याताः । स्नैहिकफलसारोत्कारिका वा । चूर्णितेषु यवगोधूमतिलमुद्गमाषेषु विचित्रमत्स्यपिशितवेशवारो वा । बिल्वपेशिकातगरदेवदारुसरलारास्नाहरेणुकुष्ठशतपुष्पासुरादधिमस्तुयुक्त उपनाहः ॥

मातुलुङ्गाम्लसैन्धवघृतमिश्रं मधुशिग्रुमूलमालेपे तिलकल्कश्चेति ॥

वायुना प्राबल्यवाळा वातरक्तनी चिकित्सा.

८ जो वातरक्त वायुना प्राबल्यवाळुं होय तो रोगीने जूनुं घी पावुं अने जेमां अरधुं तेल मेळव्युं होय एवुं तथा एक तोलाभार जेठीमधनो कल्क मेळव्यो होय एवुं बकरीनुं दूध पावुं अथवा पृश्निपर्णीना कल्कथी पकावेलुं, साकरथी तथा मधथी मधुर करेलुं अने अरधा तैलवाळुं बकरीनुं दूध पावुं अथवा सूंठ, शींगोडां तथा कसेरुकंदे एओना

१ कसेरुकंद ए गुंद्रानामना खडनो मूलरूप कंद छे. ए कंदनो मोथना जेवो गोळ गांठो थाय छे. जे जग्यामां चोमासानुं पाणी भराइ रेहेतुं होय तथा खड घणा दिवसो सूधी रेहेतां होय ते जग्यामां थाय छे. ए कंद स्वादमां मधुर तथा तूरो थाय छे अने तेनुं शाक पण थाय छे.

कल्कथी पकावेलुं, साकरथी तथा मधथी मधुर करेलुं अने अरधा तेलवाळुं बकरीनुं दूध पावुं अथवा नसोतर के वरधारो, रास्ना, कारेली, पृश्निपर्णी, पीलु, शतावरी, गोखरू तथा दशमूळी एओना कल्कथी पकावेलुं, साकरथी तथा मधथी मधुर करेलुं अने अरधा तेलवाळुं बकरीनुं दूध पावुं.

दशमूळीना आठगणा क्राथथी पकावेला दूधथी जेठीमध, काकडाशींगी, गोखरू, चीडो देवदार के जेमांथी गंधाबेरीजा नामनो गुंदर जेवो रस नीकळे छे ते, देवदार, वज अने रास्ना एओना कल्कना प्रतिवापवाळुं तेल पकावीने तेनो पीवा वगेरेमां उपयोग कराववो अथवा शतावरी, अघेडो, जेठीमध, सफेद फगवेलानो कंद, बळदाणा, खपाट अने तृणपंचमूळी एओना क्राथथी पकावेला अने काकोल्यादि गणना प्रतिवापवाळा तेलनो पीवा वगेरेमां उपयोग कराववो अथवा आ चिकित्सितस्थानना मूढगर्भचिकित्सित नामना पंदरमा अध्यायना १२ मा विषयमां कहेला शतपाक बलातैलनो पीवा वगेरेमां उपयोग कराववो अथवा गया अध्यायना २३ मा विषयमां कहेला शतपाक तेलनो पीवा वगेरेमां उपयोग कराववो.

दशमूळीना क्राथादिकथी पकावेला दूधनुं अथवा धान्याम्ल, सौवीरक तथा तुषोदक वगेरे खाटा द्रवोनुं रोगीना शरीर उपर परिषेचन करवुं. (धान्याम्ल वगेरेनां लक्षणो सूत्रस्थानना ४९ मा अध्यायमां जोवां.)

जव, जेठीमध, एरडी, तल अने साटोडी एओने वाटीने तेनो रोगीना शरीर उपर जाडो लेप करवो.

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, (आ चार औषधो अति दुर्लभ छे माटे तेओने बदले फगवेलानुं मूळ अने आसोंद वापरवां.) बळदाणा, खपाट, कमळनां मूळ, कमळनुं नाळ, पृश्निपर्णी, काकडाशींगी, चारोली, साकर, कसेरुकंद, रास्ना अने वज एओना कल्कथी मिश्रित करेला तथा घी, तैल, चरबी अने मज्जा एओथी युक्त करेला जवना चूर्णना दूधपाकनो रोगीना अंगपर उपनाह बांधवो अथवा तेवाज प्रकारना घउंना चूर्णना दूधपाकनो उपनाह बांधवो अथवा तेवाज प्रकारना तलना चूर्णना दूधपाकनो उपनाह बांधवो अथवा तेवाज प्रकारना मगना चूर्णना दूधपाकनो उपनाह बांधवो अथवा तेवाज प्रकारना अडदना चूर्णना दूधपाकनो उपनाह बांधवो अथवा तिल, एरडी, अलसीना दाणा अने बेहेडां वगेरे स्नेहयुक्त फळोनी मज्जाना कल्कने दूधमां पकावी तेनो लाफसी जेवो के रोटली जेवो उपनाह बांधवो अथवा जव, घउं, तिल, मग तथा अडद एओनो लोट बाफी तेने विचित्र माछलांओना मांसना वेशवारथी युक्त करीने तेनो उपनाह बांधवो अथवा काचां बीलां, तगर, देवदार नसोतर, रास्ना, हरेणु नामनुं सुगंधिद्रव्य, कठ तथा सुवा एओने बाफी मद्यथी तथा दहीना पाणीथी युक्त करीने तेनो उपनाह बांधवो. (बाफेलां के रांधेलां औषधोना कल्क वगेरेने गरम करी झीणा वस्त्रवते सेहेवाय तेवी ऊनाशवाळो शरीरपर बांधवो ए उपनाह केहेवाय छे.)

राता सरगवानां मूळीयांओने वाटी बीजोरांना रसथी, धान्याम्ल वगेरे खाटा द्रवोथी, सैंधवथी तथा घीथी संयुक्त करी ते कल्कनो लेप करवो अथवा बीजोरांना रस वगेरेथी मिश्रित करेला तलना कल्कनो के एकला तलना कल्कनो लेप करवो.

९ पित्तप्रबले द्राक्षारेवतकट्फलपयस्यामधुकचन्दनकाश्मर्यकषायं शर्करामधुमधुरं पाययेत् । शतावरीमधुकपटोलत्रिफलाकटुरोहिणी

१ दोषादिकने जोइने आ प्रयोगोनी योजना करवी.

२ अस्थिओ काहाडी नाखीने सारी रीते बाफेलुं, पछी छीपर उपर वाटेलुं अने तेपछी पीपळ, सूंठ, मरी, गोळ तथा घी एओथी संयुक्त करीने सारी रीते पकावेलुं मांस वेशवार केहेवाय छे.

कषायं गुडूचीकषायं वा पित्तज्वरहरचन्दनादिकषायं वा शर्करामधुमधुरम् । तिक्तकषायसिद्धं वा सर्पिः ।

बिसमृणालभद्रश्रियपद्मककषायेणार्द्धक्षीरेण परिषेकः । क्षीरेक्षुरसाभ्यां मधुकशर्करातण्डुलोदकैर्वा द्राक्षेक्षुकषायमिश्रैर्मस्तुमधुधान्याम्लैः ।

जीवनीयसिद्धेन वा सर्पिषाभ्यङ्गः शतधौतघृतेन वा काकोल्यादिकल्कविपक्केन वा सर्पिषा ।

शालिषष्टिकनलवंजुलतालीशशृङ्गाटकगलोड्यगौरीगैरिकशैवलपद्मकपद्मपत्रप्रभृतिभिर्धान्याम्लपिष्टैः प्रदेहो घृतमिश्रः । वातप्रबलेऽप्येष सुखोष्णः प्रदेहः कार्यः ॥

पित्तना प्राबल्यवाळा वातरक्तनी चिकित्सा.

९ जो वातरक्त पित्तना प्राबल्यवाळुं होय तो द्राक्ष, गरमाळो, कायफळ, खरणेर, जेठीमध, रतांजलि अने सीवणनां फळ एओनो क्काथ करी ते क्काथने साकरथी तथा मधथी मधुर करीने पावो. अथवा शतावरी, जेठीमध, पटोल, त्रिफळा अने कडु एओनो क्काथ करी ते क्काथने साकरथी तथा मधथी मधुर करीने पावो. अथवा गळोनो क्काथ करी ते क्काथने साकरथी तथा मधथी मधुर करीने पावो. अथवा पित्तज्वरने हरनारो चंदनादि क्काथ करी ते क्काथने साकरथी तथा मधथी मधुर करीने पावो. (उत्तरतंत्रना ३९ मा अध्यायना ८९ मा विषयमां जे क्काथ प्रथमज लख्यो छे ते अथवा सू० अ० ३९ वि० ११ मामां कहेला पित्तसंशमनवर्गनो क्काथ चंदनादि क्काथ होवो जोईए?) अथवा पटोल आदि तिक्तद्रव्योना तथा त्रिफळाआदि कषाय द्रव्योना कल्कथी तथा क्काथथी पकावेलुं घी पावुं.

कमळनां सूळ, कमळनाळ, सूखड, अने पद्मकाष्ट एओनो क्काथ करी तेमां अरधो अरध दूध नाखीने तेनुं रोगीना शरीरपर परिषेचन करवुं (धाराओ पाडवी.) अथवा दूध तथा शेलडीनो रस एओनुं परिषेचन करवुं अथवा जेठीमध, साकर अने चोखानुं धोण एओनुं परिषेचन करवुं अथवा द्राक्ष तथा शेलडी एओना क्काथथी मिश्रित करेलां मध, दहीनुं पाणी, तथा धान्याम्ल एओनुं परिषेचन करवुं.

जीवनीय (मधुर)[1] गणनां द्रव्योना कल्कथी तथा क्काथथी पकावेला घीनो अभ्यंग करवो अथवा सोवार धोएला घीनो अभ्यंग करवो अथवा काकोल्यादि गणना कल्कथी पकावेला घीनो अभ्यंग करवो.

राताचोखा, साठीचोखा, बरू, नेतर, तालीशपत्र, शीगोडां, गलोड्य नामनां फळ, हळदर, सोनागेरू, शैवाल, पद्मकाष्ठ अने कमळपत्र इत्यादिक पदार्थोने धान्याम्लमां वाटी घीथी मिश्रित करीने तेनो जाडो लेप करवो. आ लेप जरा ऊनो करीने वायुना प्राबल्यवाला वातरक्त उपर पण करवो.

१० रक्तप्रबलेऽप्येवं बहुशश्च शोणितमवसेचयेच्छीततमाश्च प्रदेहाः कार्या इति ॥

रुधिरनी प्रबलतावाळा वातरक्तनी चिकित्सा.

१० जो वातरक्त रुधिरनी प्रबलतावाळुं होय तो पण ए प्रमाणेज एटले पित्तनी प्रबलतावाळा वातरक्तनी चिकित्सा प्रमाणेज चिकित्सा करवी. वारंवार लोहीनो स्राव करवो अने अत्यंत शीतळतावाळा प्रदेहो (लेपो) करवा.

११ श्लेष्मप्रबले त्वामलकहरिद्राकषायं मधुमधुरं पाययेत् । त्रिफलाकषायं वा मधुकशृङ्गवेरहरीतकीतिक्तरोहिणीकल्कं वा सक्षौद्रमूत्रम् । तोयेन गुडहरीतकीं वा भक्षयेत् ।

तैलमूत्रक्षारोदकसुराशुक्तकफघ्नौषधनिःक्काथैः परिषेकः । आरग्वधादिकषायैर्वोष्णैः ।

मस्तुमूत्रसुराशुक्तमधुकसारिवापद्मकासिद्धं वा घृतमभ्यङ्गः ।

---

१ जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली (विदारीनां मूळ, शतावरीनां मूळ तथा आसोंद) अडबाउ मग, अडबाउ अडद, खरखोडी अने जेठीमध. (वाग्भट.)

तिलसर्षपातसीयवचूर्णानि श्लेष्मातककपित्थमधुशिग्रुमिश्राणि क्षारमूत्रपिष्टः प्रदेहः । श्वेतसर्षपकल्कस्तिलाश्वगन्धाकल्कः प्रियालसेलुकपित्थत्वक्कल्को मधुशिग्रुपुनर्नवाकल्को व्योषतिक्तापृथक्पर्णीबृहतीकल्क इत्येते पञ्च प्रदेहाः सुखोष्णाः क्षारोदकपिष्टाः शालिपर्णी पृश्निपर्णी बृहत्यौ च वा क्षीरपिष्टास्तर्पणमिश्राः॥

कफनी प्रबलतावाळा वातरक्तनी चिकित्सा.

११ जो वातरक्त कफना प्राबल्यवाळुं होय तो आमळां तथा हळदरनो क्काथ करी ते क्काथने मधथी मधुर करीने पावो. अथवा त्रिफळानो क्काथ करी तेमां मध तथा गोमूत्र नाखीने ते पावो. अथवा जेठीमध, सूंठ, हरडे अने कडु एओनो कल्क करी तेमां मध तथा गोमूत्र नाखीने ते पावो. अथवा गोळथी मिश्रित करेलुं हरडेनुं चूर्ण गोमूत्रनी के जळनी साथे खवराववुं.

तैल, गोमूत्र, क्षारनुं जळ, मदिरा, शुक्त (सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायनो १८७ मो विषय जुवो.) अने कफने हणनारां ओषधोनो क्काथ एओनुं परिषेचन करवुं अथवा आरग्वधादि गणना ऊना क्काथोनुं परिषेचन करवुं.

दहींनुं पाणी, गोमूत्र, मदिरा, शुक्त, जेठीमध, उपलसरी अने पद्मकाष्ठ एओना कल्कथी तथा क्काथथी पकावेला घीनो अभ्यंग करवो.

तल, सर्षप, अलसीना दाणा अने जव एओनां चूर्णोने गुंदो, कोठ अने रातो सरगवो एओथी मिश्रित करी क्षारमां तथा गोमूत्रमां वाटीने तेनो जाडो लेप करवो. अथवा धोळा सर्षपना चूर्णने क्षारना जळमां वाटी जरा गरम करीने तेनो जाडो लेप करवो. अथवा तल अने आसोंद एओने क्षारना जळमां वाटी जरा गरम करीने तेनो जाडो लेप करवो. अथवा चारोळी, गुंदानी छाल अने कोठनी छाल एओने क्षारना जळमां वाटी जरा गरम करीने तेनो जाडो लेप करवो. अथवा रातो सरगवो अने साटोडी एओने क्षारना जळमां वाटी जरा गरम करीने तेनो जाडो लेप करवो. अथवा सूंठ, मरी, पीपळ, कडु, पृश्निपर्णी अने ऊभी भोरींगणी एओने क्षारना जळमां वाटी जरा गरम करीने तेनो जाडो लेप करवो. अथवा शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, ऊभी भोरींगणी अने बेठी भोरींगणी एओने जवना साथवानी साथे दूधमां वाटी तेनो जाडो लेप करवो.

१२ संसर्गे सन्निपाते च क्रियापथमुक्तं मिश्रं कुर्यात् ॥

बे दोषना तथा त्रणे दोषना प्राबल्यवाळा वातरक्तनी चिकित्सा.

१२ जो वातरक्त बे दोषना प्राबल्यवाळुं होय तो ते बे दोषोने टाळे एवी उपर कहेली बे चिकित्साओ मिश्रित करीने करवी अने जो त्रणे दोषोना प्राबल्यवाळुं होय तो एकएक दोषने टाळे एवी उपर कहेली त्रण चिकित्साओ मिश्रित करीने करवी.

१३ सर्वेषु गुडहरीतकीं वा सेवेत ।

पिप्पलीर्वा क्षीरपिष्टा वारिपिष्टा वा पञ्चाभिवृद्ध्या दशाभिवृद्ध्या वा पिबेत्क्षीरौदनाहारो दशरात्रं भूयश्चापकर्षयेदेवं यावत्पञ्च दश चेति तदेतत्पिप्पलीवर्द्धमानकं वातशोणितविषमज्वरारोचकपाण्डुरोगप्लीहार्शःकासश्वासशोफशोषाग्निसादहृद्रोगोदराण्युपहन्ति ।

जीवनीयप्रतीवापं सर्पिः पयसा पाचयित्वाऽभ्यञ्ज्यात् ।

सहासहदेवाचन्दनमूर्वामुस्ताप्रियालशतावरीकशेरुपद्मकमधुकशतपुष्पाकुष्ठानि क्षीरपिष्टः प्रदेहो घृतमण्डयुक्तः सैरेयकाटरूषकबलातिबलाजीवन्तीसुषवीकल्को वा छागक्षीरपिष्टः काश्मर्यमधुकतर्पणकल्को वा ।

मधूच्छिष्टमञ्जिष्ठासर्जरससारिवाक्षीरसिद्धं पिण्डतैलमभ्यङ्गः ॥

सर्वेषु च पुराणघृतमामलकरसविपक्वं वा पानार्थं ।

जीवनीयसिद्धं परिषेकार्थे काकोल्यादिकाथकल्कसिद्धं वा सुषवीकाथकल्कसिद्धं वा कारवेल्लककाथमात्रसिद्धं वा ।

बलातैलं वा परिषेकावगाहवस्तिभोजनेषु ।

शालिषष्टिकयवगोधूमान्नमनवं भुञ्जीत पयसा जाङ्गलरसेन वा मुद्गयूषेण वा नाम्लेन ।

शोणितमोक्षं चाभीक्ष्णं कुर्वीत ।

उच्छ्रितदोषे च वमनविरेचनास्थापनानुवासनकर्म कर्त्तव्यम् ॥

सघळा प्रकारनां वातरक्तोनी सामान्य चिकित्सा.

१३ गमे ते प्रकारनुं वातरक्त थयुं होय तो रोगीने प्रथम वमन विरेचनादिकथी शुद्ध करीने पछी गोळनी साथे हरडेनुं सेवन कराववुं.

दूधमां अथवा पाणीमां वाटेली पीपळ पेहेले दिवसे पांच, बीजे दिवसे दश, त्रीजे दिवसे पंदर, चोथे दिवसे वीश, पांचमे दिवसे पचीश, छट्ठे दिवसे त्रीश, सातमे दिवसे पांत्रीश, आठमे दिवसे चालीश, नवमे दिवसे पिसतालीश, अने दशमे दिवसे पंचाश पावी. पछी अगीयारमे दिवसे पिसतालीश, बारमे दिवसे चालीश, तेरमे दिवसे पांत्रीश, चौदमे दिवसे त्रीश, पंदरमे दिवसे पचीश, सोळमे दिवशे वीश, सत्तरमे दिवसे पंदर, अढारमे दिवसे दश अने ओगणीशमे दिवसे पांच पावी. अथवा पेहेले दिवसे दश, बीजे दिवसे वीश, त्रीजे दिवसे त्रीश, चोथे दिवसे चालीश, पांचमे दिवसे पंचाश, छठे दिवसे साठ, सातमे दिवसे सीत्तेर, आठमे दिवसे एंशी, नवमे दिवसे नेवुं अने दशमे दिवसे सो पावी. पछी अगीयारमे दिवसे नेवुं, बारमे दिवसे एंशी, तेरमे दिवसे सीत्तेर, चौदमे दिवसे साठ, पंदरमे दिवसे पंचाश, सोळमे दिवसे चालीश, सत्तरमे दिवसे त्रीश, अठारमे दिवसे वीश अने ओगणीशमे दिवसे दश पावी. आ सघळा दिवसोमां फक्त दूध भातनोज आहार कराववो. उपर कहेला बे प्रकारमांथी गमे ते प्रकारे पीपळनो प्रयोग करवामां आवे ते **पिप्पलीवर्द्धमानक** केहेवाय छे. आ पिप्पलीवर्द्धमानक वातरक्तने, विषमज्वरने, अरुचिने, पांडुरोगने, बरलना दरदने, अरशने, खांसीने, श्वासने, सोजाने, क्षयने, अग्निनी मंदताने, छातीनां दरदोने तथा उदररोगोने मटाडे छे.

दूधथी पकावेला अने जेमां पाकती वखते जीवनीयवर्गनो प्रतिवाप नाख्यो होय एवा घीनो अभ्यंग करवो.

अडबाउ अडद, सहदेवी, (बळदाणानी जात छे अने तेमां पीळां फूल थाय छे.) रतांजलि, मोरवेल, मोथ, चारोळी, शतावरी, कसेरुकंद, पद्मकाष्ठ, जेठीमध, सुवा अने कठ एओने दूधमां वाटी तेनो लेप करवो. अथवा कांटाअशेरीयो, अरडूसी, बलदाणा, खपाट, खरखोडी अने कारेली एओने वाटी घीनी उपरना आछा भागथी युक्त करीने ते कल्कनो लेप करवो. अथवा सीवण, जेठीमध अने जवनो साथवो एओने बकरीना दूधमां वाटी ते कल्कनो लेप करवो.

मीण, मजीठ, राळ अने उपलसरी एओनो कल्क नाखीने दूधथी पकावेला पिंडतैलनो अभ्यंग करवो. (घाणीमांथी लीधेलुं तलना कीटासहित तैल पिंडतैल केहेवाय छे.)

सघळां प्रकारनां वातरक्तोमां आमळाना रसथी पकावेलुं जूनुं घी पावुं.

जीवनीयवर्गना काथथी अथवा काकोल्यादि गणना काथथी तथा कल्कथी अथवा कलोंजी जीराना काथथी तथा कल्कथी अथवा फक्त कारेलीना काथथी पकावेला घीनुं परिषेचन करवुं.

अथवा आ चिकित्सितस्थानना मूढगर्भचिकित्सित नामना पंदरमा अध्यायना ११ मा वि-

षयमां कहेला बलातैलनो परिषेचनमां, अवगाहमां (तैलादिक द्रवथी भरेला मोटा वासणमां के पेटीमां बेसवुं के सूवुं ए अवगाह केहेवाय छे) पीचकारीमां अने भोजनमां उपयोग कराववो.

जूना राता चोखा, जूना साठीचोखा, जूना जव अने जूना घउं एओमांथी बनावेलां अन्नो दूधनी साथे, जांगल प्राणीओना मांसना रसानी साथे अथवा मगना खटाश वगरना यूषनी साथे जमाडवां. (पित्तनुं प्राबल्य होय तो दूधनी साथे, वायुनुं प्राबल्य होय तो जांगल प्राणीओना मांसना रसानी साथे अने कफनुं प्राबल्य होय तो मगना खटाश वगरना यूषनी साथे जमाडवां. एओमां सात्म्य तो अवश्य जोवुंज जोइए.)

वारंवार लोहीनो स्राव पण करवो. (जो स्निग्ध पदार्थोनां सेवनोथी वायुने जीती शकाय नहीं अने लोहीनुं प्रबल आवरण थई गयानो निश्चय थाय तोज रोगीना तथा रोगना बळने अने काळने जोईने वारंवार लोहीनो स्राव करवो.)

जो दोषोनुं उत्कटपणुं जोवामां आवे तो वमन, विरेचन, निरूहबस्ति तथा स्नेहबस्ति ए क्रियाओ पण वारंवार करवी. (कफनी उत्कटता होय तो वमनक्रिया, पित्तनी के रुधिरनी उत्कटता होय तो विरेचनक्रिया अने वायुनी उत्कटता होय तो बे प्रकारना बस्तिओनी क्रिया वारंवार करवी.)

१४ भवन्ति चात्र ॥

एवमाद्यैः क्रियायोगैरचिरोत्पतितं सुखम् ।
वातासृक्साध्यते वैद्यैर्याप्यते तु चिरोत्थितम् ॥
उपनाहपरीषेकप्रदेहाभ्यञ्जनानि च ।
शरणान्यप्रवातानि मनोज्ञानि महान्ति च ॥
मृदुगण्डोपधानानि शयनानि सुखानि च ।
वातरक्ते प्रशस्यन्ते मृदुसंवाहनानि च ॥
व्यायामं मैथुनं कोपमुष्णाम्ललवणाशनम् ।
दिवास्वप्नमभिष्यन्दि गुरु चान्नं विवर्जयेत् ॥

वातरक्तनुं साध्यपणुं तथा याप्यपणुं, वातरक्त उपर करवाना उपचारो अने पाळवानी परेजी.

१४ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के “जो वातरक्त थोडा काळथी उत्पन्न थयुं होय तो वैद्यो, उपर कहेला वगेरे क्रियायोगोथी वातरक्तने सरल रीते वश्य करी शके छे अने लांबा काळथी उत्पन्न थयुं होय तो तेने उपर कहेला वगेरे क्रियायोगोथी वृद्धि पामवा नहीं देतां रोगीनो देहपात करवामां समर्थ थवा देता नथी.

उपनाहो, परिषेको, प्रदेहो, (लेपो) अभ्यंगो, वायुवगरनां तथा मनने प्यारां लागे एवां मोटां घरो, कोमळ गालमसूरीयां वगेरेवाळां सुखकारी शयनो अने कोमळ कोमळ अंगचंपीओ ए उपचारो वातरक्त उपर वखाणवामां आवे छे.

वातरक्तना दरदीए मेहेनत करवी नहीं, मैथुन करवुं नहीं, कोप करवो नहीं, उष्णवीर्यवाळुं जमवुं नहीं, खाटुं के खारूं जमवुं नहीं, दिवसे सूवुं नहीं अने भारे तथा स्रोतोने क्लेद आपनारूं अन्न छोडी देवुं.”

१५ **अपतानकिनमस्रस्ताक्षमवक्रभ्रुवमस्तब्धमेढ्रमस्वेदनमवेपनमप्रलापिनमखट्वापातिनमबहिरायामिनं चोपक्रमेत् ।**

तत्र प्रागेव स्नेहाभ्यक्तं स्विन्नशरीरमवपीडनेन तीक्ष्णेनोपक्रमेत शिरःशुद्ध्यर्थम् ।

अनन्तरं च विदारिगन्धादिक्वाथमांसरसक्षीरदधिपक्वं सर्पिरच्छं पाययेत तथा हि नातिमात्रं वायुः प्रसरति ।

ततो भद्रदार्वादिवातघ्नगणमाहृत्य सयवकोलकुलत्थं सानूपौदकमांसपञ्चवर्गमेकतः प्रक्वाथ्य तमादाय कषायमम्लक्षीरैः सहोन्मिश्र्य सर्पिस्तैलवसामज्जभिः सह विपचेन्मधुरकप्रतीवापं तदेतन्नैवृतमपतानकिनां परिषेकावगाहाभ्यङ्गपानभोजनानुवासननस्येषु विदध्यात् ।

यथोक्तैश्च स्वेदविधानैः स्वेदयेत् । बलीयसि वाते सुखोष्णतुषबुसकरीषपूर्णे कूपे निदध्यादामुखात् । तप्तायां वाङ्गारचुल्ल्यां तप्तायां वा शिलायां सुरापरिषिक्तायां पलाशदलच्छन्नायां शाययेत् । कृशरावेशवारपायसैर्वा स्वेदयेत् ।

मूलकोरुबूकस्फूर्जार्जकार्कसप्तलाशङ्खिनीस्वरससिद्धं तैलमपतानकिनां परिषेकादिषूपयोज्यम् ।

अभुक्तवता पीतमम्लं दधि मरिचवचायुक्तमपतानकं हन्ति तैलसर्पिर्वसाक्षौद्राणि च ।

एतच्छुद्धवातापतानकविधानमुक्तम् ।

संसृष्टे संसृष्टं कर्त्तव्यम् ।

वेगान्तेषु चावपीडं दद्यात् ।

ताम्रचूडकर्कटकृष्णमत्स्यशिशुमारवराहवसाश्चासेवेत । क्षीराणि वा वातहरसिद्धानि यवकोलकुलत्थमूलकदधिघृततैलसिद्धां वा यवागूम् । स्नेहविरेचनास्थापनानुवासनानि चैवं दशरात्रं हतवेगमुपक्रमेत् ।

वातव्याधिचिकित्सितं चावेक्षेत रक्षाकर्म च कुर्यादिति ॥

अपतानकनी चिकित्सा.[१]

१९ जो अपतानकनो दरदी शिथिल थएली आंख्योवाळो न होय, वांकी थएली भ्रकुटीओवाळो न होय, स्तब्ध थएला शिश्नवाळो न होय, पसीनाथी व्याप्त थई जतो न होय, ध्रूजतो न होय, असंबद्ध भाषण करतो न होय, बन्ने हाथथी तथा बन्ने पगथी खाटलानी पेठे धरतीपर पडी जतो न होय अने असाध्य बहिरायामवाळो न होय तो तेनी चिकित्सा करवी.

अपतानकना दरदीने प्रथमज स्नेहनो अभ्यंग करी तथा स्वेदन करी तेना माथानी शुद्धिने माटे तीक्ष्ण अवपीडन नस्य देवुं. (माथाने खाली करनारां तीक्ष्ण औषधोने वाटी नीचोवीने जे रस काहाडवामां आवे ते अवपीड केहेवाय छे. नाकमां ए रसनां टीपां नाखवां ए अवपीडन नस्य केहेवाय छे. (वायु कफना स्थानमां गएलो होवाथी नष्ट थएली संज्ञाने जाग्रत करवा माटे आ नस्य देवुं. डल्हन.)

माथाने खाली कर्‍या पछी विदारिगंधादि गणनो क्वाथ, मांसनो रस, दूध अने दहीं एओमां पकावेलुं स्वच्छ घी रोगीने पावुं. घी पावाथी वायु अत्यंत प्रसार पामी शकतो नथी.

पछी सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेला भद्रदारु आदि वातसंशमन वर्गने एकठो करी तेने जव, बोर, कळथी अने पांचे प्रकारनां आनूपवर्गनां मांसो एओथी मिश्रित करी क्वाथ बनावी ते क्वाथने सौवीरक तथा धान्याम्ल आदि अम्लोथी अने दूधथी मिश्रित करी ते क्वाथथी तैल, चरबी अने मज्जा एओनी साथे घी पकाववुं अने ते घीमां जीवनीयगणनो प्रतिवाप नाखवो. आ प्रमाणे पकावेलुं घी **त्रैवृत** केहेवाय छे. अपतानकवाळाओने परिषेचनमां, अवगाहमां, अभ्यंगमां, पीवामां, भोजनमां, स्नेहबस्तिमां अने नस्यमां आ घी आपवुं.

अपतानकवाळाना शरीरनुं आ चिकित्सितस्थानना स्वेदावचारणीय नामना ३२ मा अध्यायमां कहेलां स्वेदनां विधानोथी स्वेदन करवुं. जो वायु प्रबल होय तो ते दरदीने सेहेवाय तेवां ऊनां फोतरां, हुंसां तथा अडायांथी भरेली ऊंडी खाडमां मोहोडासुधी ऊभाडवो. अथवा अग्निथी तपेली लोहारनी चूल उपर के अग्निथी तपावेली शिला उपर मदिरा छांटी ते चूलने के शिलाने खाखरानां पानडांओथी ढांकीने ते उपर सूवाडवो.' (आ उष्मस्वेद केहेवाय छे.) अथवा तेने तलनी तथा अडदनी खीचडी, मांसोना वेशवार अने दूधपाक एओथी उपनाह स्वेद देवो.

१ आक्षेपकनी चिकित्सा तथा अपतानकनी चिकित्सा जूदी जूदी आपी नथी तेनुं कारण तेओनी 'आ एकज चिकित्सा होय' एम धारी शकाय छे.

मूळा, धोळो एरडो, टींबरू, जंगली तुलसी, (तकमरीयां तो नहीं?) आकडो, हाथला नामनो थोर अने आंखफूटामणी एओना स्वरसना क्राथमां तैल पकावीने ते तैलने अपतानकवाळाओना परिषेचन वगेरेमां कामे लगाडवुं.

अपतानकवाळाने जम्या पेहेलां मरीथी तथा वजथी संयुक्त करेलुं खाटुं दहीं पावामां आवे अथवा मरीथी तथा वजथी संयुक्त करेलां तैल, घी, चरबी अने मध पावामां आवे तो तेथी अपतानक मटी जाय छे.

उपर कहेली सघळी चिकित्साओ एकला वायुथी थएला अपतानकवाळाओने माटे छे.

जो वायुनी साथे पित्तनो के कफनो संसर्ग होय तो पित्तने तथा कफने टाळनारी क्रियाओनी साथे उपर कहेली क्रियाओ करवी. (नि० अ० १ वि० १९ नो ९ मो पारिग्राफ जुवो. जेज्जटाचार्य केहे छे के बीजा दोषोना संसर्गवाळा वातरक्तनी पेठे चिकित्सा करवी.)

अपतानकथी आवेला वेगोना अंतमां दरदीने अवपीडन नस्य आप्या करवुं.

अपतानकवाळाने कुकडो, कुडचल, काळां माछलां, शिशुमार (दरीयाई कूतरो) अने सूवर एओनी चरबीओनुं सेवन करावबुं अथवा वातहर द्रव्योना क्राथादिकथी पकावेलां दूधोनुं सेवन करावबुं अथवा जव, बोर, कळथी, मूळा, दहीं, घी अने तैल एओथी सिद्ध करेली यवागूनुं सेवन करावबुं अने स्नेहन, विरेचन, निरूहबस्ति तथा स्नेहबस्ति एओनुं पण सेवन करावबुं. वेग टळी गया पछी पण दश दिवस सूधी आ प्रमाणे चिकित्सा करवी.

वातव्याधिचिकित्सित नामना गया अध्यायमां कहेली चिकित्साओ उपर पण ध्यान आपवुं अने सूत्रस्थानना व्रणितोपासनीय नामना १९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे रक्षाविधान पण करवुं.

१६ पक्षाघातोपद्रुतमम्लानगात्रं सरुजमात्मवन्तमुपकरणवन्तं चोपक्रमेत् ॥

तत्र प्रागेव स्नेहस्वेदोपपन्नं मृदुना शोधनेन संशोध्यानुवास्यास्थाप्य च यथाकालमाक्षेपकविधानेनोपचरेत्।

वैशेषिकश्चात्र मस्तिष्कशिरोबस्तिश्चाणुतैलमभ्यङ्गार्थे शाल्वणमुपनाहार्थे बलातैलमनुवासनार्थे।

एवमतन्द्रितस्त्रींश्चतुरो वा मासान् क्रियापथमुपसेवेत ॥

पक्षाघातनी चिकित्सा.

१६ पक्षाघातनो दरदी जो करमाएलां गात्रवाळो न होय, वेदनासहित होय, जितेंद्रिय होय अने जोइतां साधनोथी संपन्न होय तो तेनी चिकित्सा करवी.

पक्षाघातना दरदीने प्रथमज स्नेहनथी तथा स्वेदनथी उपपन्न करी, समयनुं उल्लंघन नहीं करतां एटले वमन विरेचनादिकना जे समयो छे ते प्रमाणे कोमळ शोधनथी शुद्ध करी, निरूहबस्ति तथा अनुवासनबस्ति (स्नेहबस्ति) आपीने पछी उपर कहेली अपतानकनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी.

आ चिकित्सामां विशेष ए करवुं के स्नेहथी भीजावेलां पोतां तथा पूमडां वगेरे मस्तकपर धरावबां, अभ्यंगमां गया अध्यायना २२ मा विषयमां कहेला अणुतैलनो उपयोग करावबो, उपनाहमां गया अध्यायना १९ मा विषयमां कहेला शाल्वणनो उपयोग करावबो अने स्नेहबस्तिमां आ स्थानना १९ मा अध्यायना ११ मा विषयमां कहेला बलातैलनी योजना करवी.

दरदीए जरा पण आलस्य के बेदरकारी नहीं

१ वमन कराव्या पछी एक पखवाडीए विरेचन देवुं. विरेचन पछी सात रात वीते त्यारे स्नेहबस्ति देवी. स्नेहबस्ति दीधा पछी स्निग्धपणानुं लक्षण प्राप्त थतां निरूहबस्ति देवी अने निरूहबस्ति दीधा पछी पाछी तुरत स्नेहबस्ति देवी.

राखतां त्रण के चार महिना सूधी आ प्रमाणे चिकित्सानुं सेवन करवुं.

१७ मन्यास्तम्भेऽप्येतदेव विधानं विशेषतो वातश्लेष्महरैर्नस्यै रूक्षस्वेदैश्चोपचरेत् ॥

मन्यास्तंभनी चिकित्सा.

१७ मन्यास्तंभमां पण उपर कह्याप्रमाणेज यथोचित विधान करवुं अने विशेषे करी वायुने तथा कफने हरनारां नस्यो देवां तथा रूक्ष स्वेदो देवा.

१८ अपतन्त्रकातुरं नापतर्पयेत् । वमनानुवासनास्थापनानि न निषेवयेत् । वातश्लेष्मोपरुद्धोच्छ्वासं तीक्ष्णैः प्रध्मापनैर्मोक्षयेत् । तुम्बुरुपुष्कराह्वहिंग्वम्लवेतसपथ्यालवणत्रयं यवक्काथेन पातुं प्रयच्छेत् पथ्याशतार्द्धे सौवर्चलद्विपले चतुर्गुणे पयसि सर्पिःप्रस्थं च सिद्धम् । वातश्लेष्मापनुच्च कर्म कुर्यात् ॥

अपतंत्रकनी चिकित्सा.

१८ अपतंत्रकना दरदीने लंघनादिक अपतर्पण कराववुं नहीं अने वमन, स्नेहबस्ति तथा निरूहबस्ति एओनुं पण सेवन कराववुं नहीं. ए दरदीनो श्वास वायुथी तथा कफथी रोकाई गयो होय तो तेने तीक्ष्ण प्रधमन[१] नस्योथी छूटो करवो. यवना काथनी साथे तुंबरूफळ, पुष्करमूळ[२], हींग, अम्लवेतस[३], हरडे अने लवणत्रय एटले सैंधव, बिडलूण तथा संचळ एओ पीवराववां. पंचाश हरडेनुं चूर्ण अने आठ तोलांभार संचळ एओथी संयुक्त करेला चोगणा दूधमां पकावेलुं चोसठ तोलांभार घी पण पावुं. ए उपरांत वायुने तथा कफने हरनारी बीजी चिकित्साओ पण करवी.

१९ अर्दितातुरं बलवन्तमुपकरणवन्तं च वातव्याधिविधानेनोपचरेद्विशेषिकैश्च मस्तिष्कशिरोबस्तिनस्यधूमोपनाहस्नेहनाडीस्वेदादिभिः।

ततः सतृणं महापञ्चमूलं काकोल्यादिं विदारिगन्धादिमौदकानूपमांसं तथैवौदककन्दांश्च संहृत्य द्विगुणोदके क्षीरद्रोणे निक्काथ्य पादावशिष्टमवतार्य परिस्राव्य तैलप्रस्थेनोन्मिश्र्य पुनरग्नावधिश्रयेत् । ततस्तैलं क्षीरानुगतमवतार्य शीतीभूतमभिमथ्रीयात्तत्र यः स्नेह उत्तिष्ठेत्तमादाय मधुरौषधसहाक्षीरयुक्तं विपचेदेतत्क्षीरतैलमर्दितातुराणां पानाभ्यङ्गादिषूपयोज्यम् ॥

तैलहीनं वा क्षीरसर्पिरक्षितर्पणमिति ॥

अर्द्दितनी चिकित्सा.

१९ अर्द्दितनो दरदी जो बळवान् होय अने जोईतां साधनोथी संपन्न होय तो तेनी वातव्याधिचिकित्सित नामना गया अध्यायमां कह्या प्रमाणे चिकित्साओ करवी अने विशेषे करी स्नेहथी भींजावेलां पोतां तथा पूमडां माथा उपर मूकाववां, स्नैहिक नस्यो देवां, स्नैहिक धूमपान कराववां, उपनाह स्वेदो करवा, स्नेहनो करवां अने नाडीस्वेदै[४] (आ स्थानना स्वेदावचारणीय नामना ३२ मा अध्यायमां जुवो.) वगेरे पण करवां.

---

१ छ आंगळनी बे मोहोडांवाळी नळीमां तीक्ष्ण चूर्ण भरी मोहोडानी फूंक दईने ते चूर्णने नाकमां चडावी देवुं ए प्रधमन नस्य केहेवाय छे. विशेष आ स्थानना ४० मा अध्यायमां जुवो.

२ पुष्करमूळने बदले कुलिंजन वापरवुं योग्य छे. केम के पुष्करमूळ क्यांय मळतुं नथी. कोई गांधी वगेरे पुष्करमूळना नामथी कांई आपे छे तेमां पुष्करमूळना गुणो नथी. अर्वाचीन ग्रंथोमां पुष्करमूळने बदले कठ वापरवानुं कह्युं छे पण कठमां पुष्करमूळना जेवा गुणो नथी. कुलिंजनमां पुष्करमूळने मळता गुणो छे. कुलिंजन नामनुं द्राक्षना वेलाना जेवा देखाववाळुं मोटुं झाड थाय छे तेना मूळने कुलिंजन केहे छे.

३ अम्ळवेतस एक जातनी खटाई छे तेना घणा भेद छे. एक जातनी कांजी, एक जातनो क्षारनो खाटो अरक के जे शंखद्रावनी जात छे ते, अने एक जातनुं खाटुं लींबू ए सघळां अम्लवेतस केहेवाय छे.

४ स्वेदन करवानां मूळादिक, मांसादिक, मूत्रादिक तथा दूध वगेरे द्रव्यो एक माटलामां भरी,

पछी तृणपंचमूली गण, बृहत्पंचमूली गण, काकोल्यादि गण, विदारिगंधादि गण, कुडचल तथा सूवर वगेरे आनूपवर्गनां मांसो अने कसेरु तथा शींगोडां वगेरे जळमां उत्पन्न थता कंदो एओने एकठां करी तेओनो बमणा पाणीवाळा एक हजार चोवीश तोला भार दूधमां क्वाथ करी, चोथा भागनुं अवशेष रहे त्यारे उतारी, वस्त्रथी गाळी लई ते क्वाथने चोसठ तोलांभार तैलथी मिश्रित करीने पाछो अग्निपर चडाववो. पछी ते तैल दूधनी साथे एकीभूत थई जाय त्यारे उतारी लई थंडुं थई जाय त्यारे तेने मथवुं. एमांथी जे स्नेह बहार नीकळे तेने लई काकोल्यादि मधुर वर्ग, अडबाऊ अडद अने दूध एओथी मिश्रित करीने पकाववो एटले ते **क्षीरतैल** सिद्ध थाय छे. आ तैल अर्दितना दरदीओने पीवामां तथा अभ्यंग वगेरेमां देवुं.

उपर जे तैल दूधमां पकाववानुं कह्युं ते तैलनी पेठेज दूधमां पकावेलुं घी **क्षीरसर्पि** केहेवाय छे. ए क्षीरसर्पिनो अर्दितवाळा माणसोनां नेत्रोनुं तर्पण करवामां उपयोग करवो.

२० गृध्रसीविश्वाचीक्रोष्टुकशिरःखञ्जपङ्गुलवातकण्टकपाददाहपादहर्षापबाहुकबाधिर्यधमनीगतवातरोगेषु यथोक्तं यथोद्देशं च शिराव्यधं कुर्यादन्यत्रापबाहुकाद्वातव्याधिचिकित्सितं चावेक्षेत ॥

गृध्रसी वगेरे रोगोनी चिकित्सा.

२० गृध्रसी, विश्वाची, क्रोष्टुकशिर, खंज, (खंज तथा कलायखंज) पंगु, वातकंटक, पाददाह, पादहर्ष, अपबाहुक (अंसशोष तथा अपबाहुक) बाधिर्य अने धमनीगत वातरोगो, (मूक, मिन्मिण तथा गद्गद) एओमां शारीरस्थानना आठमा अध्यायमां कह्याप्रमाणे योग्य प्रदेशमां शिराव्यध करवो (नसने वींधवी–फसखोलवी.) अने अंसशोष तथा अपबाहुक ए बे रोग शिवाय बाकीना उपर कहेला गृध्रसी वगेरे रोगोमां गया अध्यायमां कह्या प्रमाणे वातव्याधिनी चिकित्सा पण करवी. (गृध्रसी वगेरे रोगोमां वातव्याधिनी चिकित्सा कर्या छतां शांति न थाय तो पछी रुधिरना आवरणनो निश्चय करीने शिराव्यध करवो. क्रोष्टुकशिर उपर वातरक्तनी चिकित्सा पण करवी. बाधिर्यनी चिकित्सा उत्तरतंत्रना २१ मा अध्यायमां पण केहेवामां आवशे.)

२१ कर्णशूले तु शृङ्गवेररसं तैलमधुसंसृष्टं सैन्धवोपहितं सुखोष्णं कर्णे दद्यादजामूत्रं मधुतैलानि वा मातुलुङ्गदाडिमतिन्तिडीकस्वरसमूत्रसिद्धं तैलं शुक्तसुरातक्रमूत्रलवणसिद्धं वा । नाडीस्वेदैश्च स्वेदयेत् । वातव्याधिचिकित्सां चावेक्षेत । भूयश्चोत्तरे वक्ष्यामः ॥

कर्णशूलनी चिकित्सा.

२१ कर्णशूल थएल होय तो रोगीना कानमां तैलथी, मधथी तथा सैंधवथी संयुक्त करेलो आर्द्रकनो रस सेहेवाय तेवो गरम करीने नाखवो अथवा सैंधवथी संयुक्त करेलुं बकरीनुं मूत्र सेहेवाय तेवुं गरम करीने नाखवुं अथवा सैंधवथी संयुक्त करेलां मीठां तैलो सेहेवाय तेवां गरम करीने नाखवां अथवा बीजोरूं, दाडिम अने को-

तेनुं मोहोडुं बंध करी, खूब उकाळी, ते माटलाना पडखांमां फांकुं पाडी तेमां हाथीनी सूंढना जेवा आकारवाळी, एक अथवा दोढ वाम लांबी अने बे त्रण भागमां नमावेली वातहर पानडांओनी नळी नाखीने तेथी वाफ लेवरावववी ए नाडीस्वेद केहेवाय छे. (चरक सूत्रस्थान अध्याय १३ मो.)

१ वातव्याधिमां जे स्नेहस्वेदादिक करवानुं छे ते अंसशोषमां तथा अपबाहुकमां विरुद्ध छे. कारण के एओ कफस्थानमां कफथी आवृत थएला वायुथी थाय छे. एओमां जे स्वेदन तथा नस्य वगेरे देवां ते रूक्षज देवां जोइए. डल्हन तो एम व्याख्यान आपे छे के अंसशोष तथा अपबाहुक धातुओना क्षयथी थएला वातप्रकोपथी थाय छे माटे तेओमां वातव्याधिनी चिकित्सा करवी पण शिरावेध नहीं करवो.

कम एओना स्वरसमां तथा गायना मूत्रमां पकावेलुं तैल नाखवुं अथवा शुक्त, मद्य, छाश, गोमूत्र अने लूण एओमां पकावेलुं तैल नाखवुं. ए उपायो करवा उपरांत नाडीस्वेदोथी स्वेदन पण करवुं अने वातव्याधिनी जे चिकित्सा कही छे ते पण करवी. फरी पण उत्तरतंत्रमां कर्णरोगोना प्रकरणमां (उत्तरतंत्रना २१ मा अध्यायमां) कर्णशूळनी चिकित्सा कहीशुं.

२२ तूणीप्रतितूण्योः स्नेहलवणमुदकेन पाययेत् पिप्पल्यादिचूर्णं वा हिंगुयवक्षारप्रगाढं वा सर्पिर्बस्तिभिश्चैनमुपक्रमेत् ॥

तूणी तथा प्रतितूणी एओनी चिकित्सा.

२२ तूणी के प्रतितूणी थएल होय तो स्नेह लवण (गया अध्यायनो २९ मो विषय जुवो.) जळनी साथे पावुं अथवा पिप्पल्यादि गणनुं चूर्ण जळनी साथे पावुं अथवा हींग अने जवखार एओथी सारी पेठे मिश्रित करेलुं घी पावुं. ए दरदीने पीचकारीओ पण देवी.

२३ आध्माने त्वपतर्पणदीपनचूर्णफलवर्तिक्रियापाचनीयबस्तिभिरुपचरेत् । लङ्घनानन्तरं चान्नकाले धान्यकजीरकादिदीपनसिद्धान्यन्नानि । प्रत्याध्माने छर्दनापतर्पणदीपनानि कुर्यात् ॥

आध्मान तथा प्रत्याध्मान एओनी चिकित्सा.

२३ आध्मान थएल होय तो लंघनोथी, अग्निने प्रदीप्त करनारां चूर्णोथी, फळवर्त्तिओथी (झाडो आणवाने माटे गुदामां वाट खोसवामां आवे छे ते फळवर्त्ति कहेवाय छे. आ स्थानना १४ मा अध्यायनो ९ मो विषय जुवो.) पाचन चूर्णोथी अने बस्तिओथी चिकित्सा करवी. लंघन कराव्या पछी अन्न देवाना समयमां धाणा तथा जीरा वगेरे पाचन पदार्थोथी सिद्ध करेलां अन्नो देवां. प्रत्याध्मान थएल होय तो वमन, लंघन तथा अग्निने दीप्त करनारां चूर्णादिक एओथी चिकित्सा करवी.

२४ अष्ठीलाप्रत्यष्ठीलयोर्गुल्माभ्यन्तरविद्रधिवत्क्रियाविभाग इति ।

हिंगुत्रिकटुवचाजमोदाधन्याजगन्धादाडिमतिंतिडीकपाठाचित्रकयवक्षारसैन्धवबिडसौवर्चलस्वर्जिकापिप्पलीमूलाम्लवेतसशठीपुष्करमूलहपुषाचव्याजाजीपथ्याश्चूर्णयित्वा मातुलुङ्गाम्लेन बहुशः परिभाव्याक्षमात्रां गुटिकां कारयेत्ततः प्रातरेकैकां वातविकारी भक्षयेत् । अथैष योगः कासश्वासगुल्मोदरारोचकहृद्रोगाध्मानपार्श्वोदरबस्तिशूलानाहमूत्रकृच्छ्रप्लीहार्शस्तूणीप्रतूणीरपहन्ति ॥

अष्ठीला तथा प्रत्यष्ठीलानी चिकित्सा.

२४ अष्ठीला के प्रत्यष्ठीला थएल होय तो गुल्म अने आभ्यंतर विद्रधि एओनी चिकित्सानी पेठे चिकित्सा करवी. (आ चिकित्सित स्थानना १६ मो अध्याय तथा उत्तरतंत्रनो ४२ मो अध्याय जुवो.)

हींग, त्रिकटु (सूंठ, मरी, पीपळ,) वज, बोडीअजमोद अथवा करमाणी, धाणा, यवान, दाडिम, कोकम, काळीपाड, चित्रक, यवक्षार, सैंधव, बिडलूण, संचळ, साजीखार, पीपळीमूळ, अम्लवेतस, कचूरो, पुष्करमूळ (कुलिंजन,) हपुषा, (अप्रसिद्ध छे.) चवक, जीरूं अने हरडे एओनुं चूर्ण करी ते चूर्णने घणी घणीवार बीजोरानी खटाईनी भावना आपीने तेनी एक एक तोला भार गोळीओ करी राखवी. अष्ठीला के प्रत्यष्ठीलाना विकारवाळाने प्रभाते ए गोळीओमांथी एक एक गोळी खवराववी. आ **हिंग्वादि** गणरूप योग कास, श्वास, गुल्म, उदररोग, अरोचक, छातीनां दरदो, आध्मान, पडखानां शूळो, उदरनां शूळो, बस्तिनां शूळो, आनाह, मूत्रकृच्छ्र, बरलनुं दरद, अर्श, तूणी तथा प्रतितूणी एओने पण मटाडे छे.

२५ केवलो दोषयुक्तो वा धातुभिर्वावृतोऽनिलः विज्ञेयो लक्षणोहाभ्यां चिकित्सा वाऽविरोधतः

वायुनी परीक्षा तथा चिकित्सा करवानी सामान्ययुक्ति.

२५ वायु केवळ छे? दोषोथी संयुक्त थएलो छे? के दोषोथी धातुओथी के मळोथी आवरण पामेलो छे? (रोकाईने हठेलो छे?) तेनी परीक्षा दोषोनां, धातुओनां तथा मळोनां लक्षणो उपरथी अने पोतानी कल्पनाशक्तिथी करी लेवी. परीक्षा करतां जो दोषोथी संयुक्त थएलो के दोषोथी, धातुओथी के मळोथी आवरण पामेलो जाणवामां आवे तो वायुनो तथा ते जेओथी संयोग के आवरण पामेलो होय तेओनो परस्परनी चिकित्साथी प्रकोप न थाय एवी संभाळ राखीने चिकित्सा करवी. (संयुक्त तथा आवृत थएला वायुनां केटलांक लक्षणो निदानस्थानना पेहेला अध्यायना ७ मा तथा ८ विषयमां आप्यां छे ते जुवो.)

२६ रुजावन्तं घनं शीतं शोफं मेदोवृतोऽनिलः
करोति यस्य तं वैद्यः शोथवत्समुपाचरेत् ॥

वायुने धातुओथी थएलां आवरणोमां मेदथी थएलुं आवरण के जे अत्यंत विषम छे तेनुं लक्षण तथा चिकित्सा.

२६ जो वायु मेदथी आवरण पामेलो होय तो पीडावाळा, घाटा तथा शीतलतावाळा अपक्व सोजाने उत्पन्न करेछे. आवो सोजो उत्पन्न थयो होय तो वैद्ये सोजानी चिकित्सानी पेठेज तेनी चिकित्सा करवी. (वायुनी गति जेथी रोकाई होय ते दोषादिकथी वायु आवरण पामेलो केहेवाय छे.)

२७ कफमेदोवृतो वायुर्यदोरू प्रतिपद्यते ।
तदाङ्गमर्दशैथिल्यरोमहर्षरुजाज्वरैः ॥
तंद्रया चार्दितः स्तब्धौ शीतलावप्रचेतनौ ।
गुरुकावस्थिरावूरू न स्वाविव च मन्यते ॥
तमूरुस्तम्भमित्याहुराढ्यवातमथापरे ।

ऊरुस्तंभ अथवा आढ्यवातनुं निदान तथा लक्षण.

२७ ज्यारे कफथी तथा मेदथी आवरण पामेलो वायु साथळोमां आवे छे त्यारे अंगोनुं भांगवुं, अंगोनुं शिथिलपणुं, रूवाडांओनुं ऊभुं थवुं, वेदना, ज्वर तथा तंद्रा प्राप्त थाय छे अने साथळो स्तब्ध, शीतल, चेतना वगरना, भारे, अस्थिर अने जाणे पोताना न होय एवा थई जाय छे तथा मानवामां आवे छे. आ रोगने आचार्यो ऊरुस्तंभ केहेछे अने केटलाएक आचार्यो आढ्यवात केहेछे.

२८ स्नेहवर्जं पिबेत्तत्र चूर्णं षड्धरणं नरः
हितमुष्णाम्बुना तद्वत्पिप्पल्यादिगणैः कृतम् ।
लिह्याद्वा त्रैफलं चूर्णं क्षौद्रेण कटुकान्वितम् ॥
मूत्रैर्वा गुग्गुलुं श्रेष्ठं पिबेद्वापि शिलाजतु ।
ततो हन्ति कफाक्रान्तं समेदस्कं प्रभञ्जनम् ॥
हृद्रोगमरुचिं गुल्मं तथाभ्यन्तरविद्रधिम्
सक्षारमूत्रस्वेदांश्च रूक्षाण्युत्सादनानि च ॥
कुर्याद्दिह्याच्च मूत्राढ्यैः करञ्जफलसर्षपैः ।
भोज्याः पुराणश्यामाककोद्रवोद्दालशालयः ॥
शुष्कमूलकयूषेण पटोलस्य रसेन च ।
जाङ्गलैरघृतैर्मांसैः शाकैश्चालवणैर्हितैः ॥
यदा स्यातां परिक्षीणे भूयिष्ठे कफमेदसी ।
तदा स्नेहादिकं कर्म पुनरत्रावचारयेत् ॥
सुगन्धिः सुलघुः सूक्ष्मस्तीक्ष्णोष्णः कटुको रसे ।
कटुपाकः सरो हृद्यो गुग्गुलुः स्निग्धपिच्छिलः ॥
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वपकर्षणः ।
तैक्ष्ण्यौष्ण्यात्कफवातघ्नः सरत्वान्मलपित्तनुत् ॥
सौगन्ध्यात् पूतिकोष्ठघ्नः सौक्ष्म्याच्चानलदीपनः ।
तं प्रातस्त्रिफलादार्वीपटोलकुशवारिभिः ॥
पिबेदावाप्य वा मूत्रैः क्षारैरुष्णोदकेन वा ।
जीर्णे यूषरसक्षीरैर्भुञ्जानो हन्ति मासतः ॥
गुल्मं मेहमुदावर्त्तमुदरं सभगन्दरम् ।
कृमिकण्डूरुचिश्वित्राण्यर्बुदं ग्रन्थिमेव च ॥
नाड्याढ्यवातश्वयथुकुष्ठदुष्टव्रणांश्च सः ।
कोष्ठसंध्यस्थिगं वायुं वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥

ऊरुस्तंभ अथवा आढ्यवातनी चिकित्सा.

२८ ऊरुस्तंभ के जेनुं बीजुं नाम आढ्यवात

केहेवाय छे ते थएल होय तो जरा पण स्नेहिक चिकित्सा नहीं करतां (ऊरुस्तंभमां वातव्याधिना शकथी स्नेहिक चिकित्सा करवामां आवे तो मोटुं नुकसान थाय छे.) ऊना पाणीथी षड्धरणचूर्ण के जे गया चोथा अध्यायना बीजा विषयमां केहेवामां आव्युं छे ते पावुं तेमज पिप्पल्यादि गणनुं चूर्ण पावुं ए हितकारी छे. अथवा कडुना चूर्णथी मिश्रित करेलुं त्रिफळानुं चूर्ण मधमां कालवीने चटाडवुं अथवा मूत्रोनी साथे उत्तम गुगळ पीवराववो के शिलाजीत पीवरावvुं. आ चिकित्सा करवाथी कफना तथा मेदना आवरणवाळो वायु नष्ट थई जाय छे. छातीनां दरदो, अरुचि, गुल्म तथा अंदरनो विद्रधि पण आ चिकित्साथी टळी जाय छे.

ऊरुस्तंभ उपर क्षारसहित मूत्रोना स्वेदो देवा, रूक्षपदार्थोथी साथळो चोळाववा, अने करंजनां फळो तथा सर्षप एओने मूत्रोमां वाटीने तेओना लेपो करवा. जूनो सामो, जूना कोदरा, जूना जंगली कोदरा अने जूना राता चोखा एओना पदार्थो सूका मूळाना यूषनी साथे, पटोलना रसनी साथे, घीवगरनां जांगल प्राणीओनां मांसोनी साथे अने लूणवगरनां हितकारी शाकोनी साथे खवराववा.

ज्यारे कफ अने मेद सारी पेठे परिक्षीण थई जाय त्यारे पछी प्रवीण वैद्ये ए रोगमां स्नेहनादिक क्रियाओ पण करवी.

गुगळ के जे सुगंधवाळो छे, अत्यंत हलको छे, सूक्ष्मगुणवाळो छे, तीक्ष्ण छे, उष्ण छे, रसमां तथा पाकमां तीखो छे, दस्त उतारनार छे, प्रिय लागे एवो छे, स्निग्ध छे, चिकाशवाळो छे, नवो होय तो पुष्टिकारक तथा वीर्य वधारनार छे, जूनो होय तो कर्षण करनार छे, तीक्ष्णपणाथी तथा उष्णपणाथी कफने तथा वायुने हणनार छे, दस्त उतारनार होवाथी मळने तथा पित्तने टाळनार छे, सूक्ष्मपणाथी अग्निने दीप्त करनार छे अने सुगंधपणाथी कोठाना दुर्गंधने हणनार छे तेने त्रिफळा, दारूहळदर, पटोळ अने दर्भ एओना क्वाथमां नाखीने अथवा मूत्रोमां नाखीने अथवा क्षारना पाणीमां नाखीने अथवा ऊनां पाणीमां नाखीने पावो. आ गुगळ जीर्ण थया पछी यूषनी साथे, मांसना रसनी साथे के दूधनी साथे भोजन कराववुं. आम करवाथी एक महीनानी अंदर ऊरुस्तंभ मटी जाय छे. जेम वीजळीनो पात वृक्षने हणी नाखे छे तेम आ गुगळ एक महीनानी अंदर गुल्म, प्रमेह, उदावर्त्त, उदररोग, भगंदर, कृमि, खरज, अरोचक, श्वित्र, अर्बुद, ग्रंथि, नाडीव्रण, ऊरुस्तंभ, सोजो, कोढ, दुष्टव्रणो अने कोठामां सांधामां के अस्थिमां रहेलो वायु एओने हणी नाखे छे.

अध्याय ६ ठ्ठो.

१ अथातोऽर्शसां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अर्शश्चिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ चतुर्विधोऽर्शसां साधनोपायः । तद्यथा भेषजं क्षारोऽग्निः शस्त्रमिति । तत्राचिरकालजातान्यल्पदोषलिङ्गोपद्रवाणि भेषजसाध्यानि । मृदुप्रसृतावगाढान्युच्छ्रितानि क्षारेण । कर्कशस्थिरपृथुकठिनान्यग्निना । तनुमूलान्युच्छ्रितानि छेदयन्ति च शस्त्रेण । तत्र भेषजसाध्यानामर्शसामदृश्यानां च भेषजं भवति । क्षाराग्निशस्त्रसाध्यानां तु विधानमुच्यमानमुपधारय ॥

अरशोने नष्ट करवाना चार उपायो अने ते उपायोनी जूदा जूदा प्रकारनां अरशोनी उपर योजना.

२ अरशोने नष्ट करवाना **औषध, क्षार, अग्नि** अने **शस्त्र** ए चार उपायो छे. जे अरशो

१ निदानस्थानना बीजा अध्यायमां जेओनां निदानादिक कहेलां छे ते अरशोनी चिकित्सा करवा विषयनो.

थोडा काळथी उत्पन्न थएलां, दोषोनां अल्प चिह्नोवाळां अने अल्प उपद्रवोवाळां होय तेओ औषधोथी टाळी शकाय छे. जे अरशो कोमळ, फेलाएलां, ऊंडां तथा ऊंचां होय तेओ क्षारथी टाळी शकाय छे. जे अरशो खरसट, स्थिर, पोहोळां तथा कठण होय तेओ अग्निथी टाळी शकाय छे अने जे अरशो सूक्ष्म मूळवाळां, ऊंचां तथा क्लेदवाळां होय तेओ शस्त्रथी टाळी शकाय छे. एओमां जे अरशो औषधोथी साध्य होय तथा अदृश्य (देखवामां न आवतां) होय तेओने टाळवाने माटे औषधोज करवां के जे औषधो आ अध्यायमां पाछळथी केहेवामां आवशे. जे अरशो क्षारथी, शस्त्रथी के अग्निथी टाळी शकाय एवां जणाव्यां छे तेओने माटे विधान कहीए छीए ते ध्यान दई सांभळो.

३ तत्र बलवन्तमातुरमर्शोभिरुपद्रुतमुपस्निग्धं परिस्विन्नमनिलवेदनाभिवृद्धिप्रशमार्थं स्निग्धमुष्णमल्पमन्नं द्रवप्रायं भुक्तवन्तमुपवेश्य संभृते शुचौ देशे साधारणे व्यभ्रे काले समे फलके शय्यायां वा प्रत्यादित्यगुदमन्यस्योत्सङ्गे निषण्णपूर्वकायमुत्तानं किञ्चिदुन्नतकटिकं वस्त्रकम्बलकोपविष्टं यन्त्रशाटकेन परिक्षिप्तग्रीवासक्थं परिकर्मिभिः सुपरिगृहीतमस्पन्दनशरीरं कृत्वा ततोऽस्य घृताभ्यक्तं यन्त्रमृज्वृणुमुखं पायौ शनैः शनैः प्रवाहमाणस्य प्रणिधाय प्रविष्टे चार्शो वीक्ष्य शलाकयोत्पीड्य पिचुवस्त्रयोरन्यतरेण प्रमृज्य क्षारं पातयेत् पातयित्वा च पाणिना यन्त्रद्वारं पिधाय वाक्छतमात्रमुपेक्षेत । ततः प्रमृज्य क्षारबलं व्याधिबलं चावेक्ष्य पुनरालेपयेत् । अथार्शः पक्वजाम्बवप्रतीकाशमभिसमीक्ष्यावसन्नमीषन्नतमुपावर्त्तयेत् । क्षारं प्रक्षालयेद्धान्याम्लेन दधिमस्तुशुक्तफलाम्लैर्वा । ततो यष्टीमधुकमिश्रेण सर्पिषा निर्वाप्य यन्त्रमपनीयोत्थाप्यातुरमुष्णोदकोपविष्टं शीताभिरद्भिः परिषिञ्चेदशीताभिरित्येके । ततो निर्वातमागारं प्रवेश्याचारिकमादिशेत् । सावशेषं पुनर्दहेत् । एवं सप्तरात्रात्सप्तरात्रादेकैकमुपक्रमेत । तत्र बहुषु पूर्वं दक्षिणं साधयेद्दक्षिणाद्वामं वामात्पृष्ठजं ततोऽग्रजमिति ॥

अरशोनो क्षारथी दाह करवानुं विधान.

३ अरशोथी पीडित थएलो माणस बळवान् होय अर्थात् वृद्धपणाथी रहित होय अने अत्यंत निर्बल न थई गयो होय तथा सत्ववाळो होय तो तेने सारी रीते स्नेहन तथा स्वेदन संस्कारो आप्या पछी, वायुसंबंधी वेदनाओनी वृद्धिनी शांतिने माटे स्निग्ध उष्ण तथा घणा द्रववाळुं अल्प अन्न जमाडी[1], सूत्रस्थानना अग्रोपहरणीय नामना ५ मा अध्यायमां कहेली सामग्रीओथी संपन्न करेला स्वच्छ प्रदेशमां सपाट पाटीआ उपर अथवा शय्या उपर बेसाडी तेनी गुदाने सूर्यनी सामे रखावी, तेनो नाभिथी उपरनो शरीरनो सघळो भाग बीजा कोई माणसना खोळामां रहे, कमर कांईक ऊंची रहे अने ते माणस पोते चत्तो रहे एवी स्थिति करावी, गुदानी नीचे वस्त्रनी हींढोणी के गालमसूरीयुं राखी, बांधवाना वस्त्रथी तेनी डोकने तथा साथळोने योग्य रीते

१ जो के सूत्रस्थानना ५ मा तथा १२ मा अध्यायमां 'अरशोनी उपर जे क्षारशस्त्रादिकनी क्रिया करवी ते क्रिया रोगीना जमवा पेहेलां करवी एम सूचव्युं छे अने जम्या पछी क्रिया करवामां आवे तो हेडकी तथा श्वास वगेरे उत्पन्न थाय एम वृद्ध वैद्यो कहे छे तो पण अहीं जमाड्या पछी क्रिया करवानुं कह्युं तेथी एम समजाय छे के क्रियाना दिवसथी पेहेलां बे चार दिवसो सूधी तेने स्निग्धपणा वगेरे गुणोवाळां भोजनो कराववां. अथवा एम पण कल्पी शकाय छे के सूत्रस्थानमां भोजननी जे मनाइ करी छे ते मोहोडांमां थएलां अरशोने माटे छे माटे बीजा स्थाननां अरशोनी क्रियामां ते दिवसे प्रथम थोडुंक भोजन कराववुं उचित छे. 'वैद्ये शस्त्रकर्मथी पेहेलां रोगीने इष्ट भोजन जमाडवुं' एम पण सूत्रस्थानना १६ मा अध्यायमां सामान्य रीते कह्युं छे.

बांधी, ते माणसने परिचारक लोकोना हाथथी मजबूत रीते पकडावी राखी, तेनुं शरीर जरा पण हले नहीं एवी गोठवण करवी. पछी जेवुं मलोत्सर्ग करवाना समयमां जोर करवामां आवे छे तेवुं जोर ते माणसनी पासे धीरे धीरे करावतां घीथी खरडेलुं, सरल तथा सूक्ष्म मोहोडावाळुं यंत्र तेनी गुदामां दाखल करी, यंत्र बराबर पेसे तथा यंत्रमां अरश दाखल थाय त्यारे अरशने जोई ते अरशने शलाकायंत्रवते ऊंचुं दबावी राखी पूंमडांथी के वस्त्रथी लूंछीने ते अरशनी उपर क्षार पाडवो अने क्षार पाड्या पछी यंत्रना द्वारने हाथवते ढांकी राखीने सो लघु अक्षरोनुं उच्चारण थाय तेटला समय सूधी बीजुं कशुं नही करतां बेसी रेहेवुं. पछी अरश उपरथी क्षारने लूंछी नाखी क्षारना बळने तथा अरशना बळने जोईने जो योग्य जणाय तो ते अरश उपर बीजीवार पण क्षार लगाववो. पछी अरश पाकेला जांबू [1]जेवुं, वींखाएलुं तथा कांईक नमी गयेलुं जोवामां आवे तो तेने बराबर दग्ध थएलुं जाणीने स्थानक उपरथी मरडी नाखवुं. पछी धान्याम्लथी अथवा दहीनुं पाणी, कांजी के दाडिम वगेरे खाटां फळोनो रस एओथी क्षारने धोई नाखी, दाहवाळी जग्याने जेठीमधथी मिश्रित करेला घीना योगथी ठारी, शांत करी, यंत्रने गुदामांथी काहाडी लई, रोगीने ऊठाडी, ऊना पाणीमां बेसाडीने तेना उपर शीतल जळनुं सेचन करवुं. केटलाएक आचार्यो केहेछे के 'ऊना जळनुं सेचन करवुं.' पछी रोगीने पवनवगरना घरमां दाखल करीने तेने आहार विहारादिकनी पद्धति बतावी देवी. जे ऋतु अति शीतल पण न होय अने अति उष्ण पण न होय ते ऋतुमां जे समये वादळां वगेरेनो घमघोर न होय ते समयमां आ दाहक्रिया करवी. आ क्रिया कर्या छतां पण अरश जो कांईक अवशेष रही गएलुं जोवामां आवे तो तेने फरीवार क्षारथी बाळवुं. एक अरशनो दाह कर्या पछी सात रात वीती जाय त्यारे बीजा अरशने बाळवुं अने तेने सात रात वीती जाय त्यारे त्रीजा अरशने बाळवुं. आ प्रमाणे सात सात रात वीत्या पछी एक एक अरशनी चिकित्सा करवी. जो घणां अरशो होय तो प्रथम जमणी तरफना अरशने बाळवुं, पछी डाबी तरफना अरशने बाळवुं, पछी पाछळना भागना अरशने बाळवुं अने ते पछी आगळना भागना अरशने बाळवुं.

४ तत्र वातश्लेष्मनिमित्तान्यग्निक्षाराभ्यां साधयेत् क्षारेणैव मृदुना पित्तरक्तनिमित्तानि ॥

अग्निथी अथवा क्षारथी केवां अरशोने बाळवां अने एकला क्षारथीज केवां अरशोने बाळवां?

४ जे अरशो वायुथी के कफथी थएलां होय तेओने अग्निथी अथवा क्षारथी बाळवां (अग्निथी डांभवानो विधि पण उपर कहेली पद्धतिथीज यथोचित समजी लेवो.) अने जे अरशो पित्तथी के रुधिरथी थएलां होय तेओने कोमळ क्षारथीज बाळवां.

५ तत्र वातानुलोम्यमन्नरुचिरग्निदीप्तिर्लाघवं बलवर्णोत्पत्तिर्मनस्तुष्टिरिति सम्यग्दग्धलिङ्गानि ।

अतिदग्धे तु गुदावदरणं दाहो मूर्छा ज्वरः पिपासा शोणितातिप्रवृत्तिस्तन्निमित्ताश्चोपद्रवा भवन्ति ।

श्यामाल्पव्रणता कण्डूरनिलवैगुण्यमिन्द्रियाणामप्रसादो विकारस्य चाशान्तिर्हीनदग्धे ॥

सम्यग्दग्धनां, अतिदग्धनां तथा हीनदग्धनां जूदां जूदां लक्षणो.

५ जो अरशो सम्यग्दग्ध (बराबर रीते दग्ध)

---

[1] बीजा तंत्रमां तो एम कह्युं छे के जो वायुथी थएल अरश सम्यग्दग्ध थाय तो पाकेला जांबूसमान वर्णवाळुं थाय छे, पित्तथी थएल अरश सम्यग्दग्ध थाय तो मोरना कंठना जेवा वर्णवाळुं थई जाय छे अने कफथी थएल अरश सम्यग्दग्ध थाय तो भोरींगणीना फूलना जेवा वर्णवाळुं थई जाय छे. डल्लन.

थयां होय तो वायुनी अनुकूलता थाय छे, अन्न उपर रुचि थाय छे, जठराग्नि प्रदीप्त थाय छे, शरीरमां हलकापणुं थाय छे, बळनी तथा सारा वर्णनी उत्पत्ति थाय छे अने मननी प्रसन्नता थाय छे.

जो अरशो अतिदग्ध थयां होय तो गुदा फाटी जाय छे, बळतरा थाय छे, मूर्छा आवे छे, ज्वर उत्पन्न थाय छे, तरश लाग्या करेछे, लोहीनो अत्यंत स्राव थाय छे अने सूत्रस्थानना १४ मा अध्यायना १६ मा विषयमां लोहीना अतिस्रावथी जे उपद्रवो थवाना कह्या छे तेओ थाय छे.

जो अरशो हीनदग्ध (जोईए ते करतां ओछां दग्ध) थयां होय तो व्रणोनुं श्यामपणुं तथा अल्पपणुं थाय छे, खरज आवे छे, वायुनुं प्रतिकूलपणुं थाय छे, इंद्रियोनी अप्रसन्नता थाय छे अने विकारनी शांति थती नथी.

६ महान्ति च प्राणवतश्छित्वा दहेत् ।

अरशोनो कापीने अग्निथी दाह.

६ जो अरशो मोटां होय अने रोगी बळवान् होय तो अरशोने प्रथम कापीने पछी तेओने अग्निथी बाळवां. (डांभवां.)

७ निर्गतानि चात्यर्थं दोषपूर्णानि यन्त्राद्विना स्वेदाभ्यङ्गस्नेहावगाहोपनाहविस्रावणालेपक्षाराग्निशस्त्रैरुपाचरेत् ॥

बाहार नीकळेलां अरशोनी चिकित्सा.

७ जो वायुआदि दोषोथी भरपूर थई अरशो गुदाथी बाहार नीकळेलां होय तो यंत्रनो उपयोग नहींज करतां स्वेदनोथी, अभ्यंगोथी, स्नेहनोथी, अवगाहोथी, उपनाहोथी, लोहीनां स्रावणोथी, आलेपोथी, क्षारथी, अग्निथी अने शस्त्रथी तेओनी चिकित्सा करवी.

८ प्रवृत्तरक्तानि च रक्तपित्तविधानेन भिन्नपुरीषाणि चातीसारविधानेन बद्धवर्चांसि स्नेहपानविधानेनोदावर्त्तविधानेन वा ।

जूदा जूदा विकारवाळां अरशोनी उपर जूदा जूदा प्रकारनी चिकित्सानी पद्धति.

८ लोहीना स्राववाळां अरशोनी रक्तपित्तना विधानप्रमाणे चिकित्सा करवी, पातळो दस्त उतारनारां अरशोनी अतिसारना विधानप्रमाणे चिकित्सा करवी अने घाटा दस्तवाळां अरशोनी स्नेहपानना विधानथी अथवा उदावर्त्तोना विधानप्रमाणे चिकित्सा करवी.[1]

९ एष सर्वस्थानगतानामर्शसां दहनकल्पः।

लिंग वगेरे बीजां स्थानकोमां थएला अरशोनी दाहादिक चिकित्साओ पण उपर प्रमाणेज करवी.

९ जे अरशो लिंग वगेरे बीजां स्थानकोमां थयां होय तेओनी पण उपरना बीजा विषयथी आठमा विषय सुधीमां कह्या प्रमाणे क्षारथी दहन, अग्निथी दहन, छेदपूर्वक अग्निथी दहन अने स्वेदन तथा अभ्यंगो वगेरे यथोचित चिकित्साओ करवी.

१० आसाद्य च दर्वीकूर्चकशलाकानामन्यतमेन क्षारं पातयेत् ॥

अरशो उपर क्षार पाडवानां साधनो.

१० अरशने बराबर कबजामां लईने ते अरशनी उपर दर्वी, (कडछी जेवुं यंत्र) कूर्चक (पींछी जेवुं यंत्र) के शलाकायंत्र (सळी जेवुं यंत्र) एओमाना एकवते क्षार पाडवो.

११ अदृष्टगुदस्य तु विना यन्त्रेण क्षारादिकर्म प्रयुञ्जीत ।

---

१ उत्तरतंत्रना ४५ मा अध्यायमां रक्तपित्तनी, ४० मा अध्यायमां अतिसारनी अने ५५ मा अध्यायमां उदावर्तोनी चिकित्सा जोवी. स्नेहपाननुं विधान आ चिकित्सितस्थानना ३१ मा अध्यायमां जोवुं.

जेनी गुदा बाहार नीकळी गई होय तेनां अरशपर यंत्रविनाज क्षारादि क्रिया करवी.

११ अरशवाळा जे रोगीनी गुदा बाहार नीकळी गई होय तेनां अरश उपर क्षारादिक क्रिया करवी होय तो यंत्रविनाज करवी. (कारण के गुदा बाहार नीकळेली होवाने लीधे तेनां अरशो स्पष्ट रीते देखाई रेहे छे.)

१२ सर्वेषु च शालिषष्टिकयवगोधूमान्नं सर्पिः स्निग्धमुपसेवेत पयसा निम्बयूषेण पटोलयूषेण वा यथादोषशाकैर्वास्तूकतंडुलीयकजीवन्त्युपोदिकाश्वबलाबालमूलकपालंक्यसनचिल्लीचुञ्चूकलायवल्लीभिरन्यैर्वा । यच्चान्यदपि स्निग्धमग्निदीपनमर्शोघ्नं सृष्टमूत्रपुरीषं च तदुपसेवेत॥

अरशवाळाओए केवुं भोजन करवुं?

१२ अरशवाळाओए घीथी स्निग्ध करेला राता चोखा, साठी चोखा, जव तथा घउं एओना अन्नोनुं दूधनी साथे, अथवा लींबडाना यूपनी साथे अथवा पटोळना यूपनी साथे सेवन करवुं अथवा जे दोष होय ते दोषने टाळे एवां टांको, तांदळजो, खरखोडी, पोथी, मेथी, नाहाना मूळा, पालख, असन, चील, छुंछ, वटाणा के कारेलां ए शाकोनी साथे अथवा बीजां पण एवाज प्रकारनां शाकोनी साथे सेवन करवुं. बीजुं पण जे कांई अन्नादिक स्निग्ध, अग्निने प्रदीप्त करनार, अरशने हणनार अने मूत्रने तथा विष्टाने प्रवर्त्तावनार होय तेनुं सेवन करवुं.

१३ दग्धेषु चार्शस्स्वभ्यक्तोऽनलसंधुक्षणार्थमनिलप्रकोपसंरक्षणार्थं च स्नेहादीनां सामान्यतो विशेषतस्तु क्रियापथमुपसेवेत ।

सर्पींषि च दीपनीयवातहरसिद्धानि हिंग्वादिभिश्चूर्णैः प्रतिसंसृज्य पिबेत् ।

पित्तार्शस्सु पृथक्पर्ण्यादीनां कषायेण दीपनीयप्रतीवापं भद्रदार्वादिपिप्पल्यादिसर्पिः । शोणितोर्शस्सु मञ्जिष्ठामुरंग्यादीनां कषाये श्लेष्मार्शस्सु सुरसादीनां कषाये सर्पिः । उपद्रवांश्च यथास्वमुपचरेत् ॥

अरशवाळाओए सेववानो चिकित्सामार्ग.

१३ अरशोने बाळवामां आव्यां होय के न बाळवामां आव्यां होय तो पण रोगीए अभ्यंगथी युक्त रही जठराग्निने प्रदीप्त करवा माटे अने वायुनो प्रकोप न थवा देवा माटे अरशोने तोडनारा स्नेहनादिक सामान्य चिकित्सामार्गनुं सेवन करवुं अने विशेषे करी तो आ अध्यायमां कहेला चिकित्सामार्गनुं सेवन करवुं.

जेने वायुसंबंधी अरश होय ते रोगीए अग्निने प्रदीप्त करनारा पिप्पल्यादि गणना अने वायुनुं हरण करनारां भद्रदारुआदि द्रव्योना (सूत्रस्थानननो ३८ मो तथा ३९ मो अध्याय जुवो.) क्वाथथी तथा कल्कथी सिद्ध करेलां घृतोनुं हिंग्वादि गण (आ चिकित्सास्थानना ९ मा अध्यायनो २४ मो विषय जुवो.)नां चूर्णोनो संयोग आपीने पीवा वगेरेथी सेवन करवुं.

जेने पित्तसंबंधी अरश थएल होय ते रोगीए पृश्निपर्णी वगेरे (सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां जुवो.) द्रव्योना क्वाथनी साथे, अग्निने प्रदीप्त करनारां द्रव्योना प्रतिवापवाळा अने भद्रदारु आदि द्रव्योना तथा पिप्पल्यादि गणना क्वाथादिकथी पकावेला घीनुं पीवा वगेरेथी सेवन करवुं.

जेने रुधिरसंबंधी अरश थएल होय ते रोगीए मजीठ अने वरुणादि गणना पेटानां राता सरगवा आदि द्रव्यो एओना क्वाथमां तथा कल्कमां पकावेला घीनुं पीवा वगेरेथी सेवन करवुं.

जेने कफसंबंधी अरश थएल होय ते रोगीए सुरसादि गणना क्वाथमां तथा कल्कमां पकावेला घीनुं पीवा वगेरेथी सेवन करवुं.

आ प्रमाणे करवा उपरांत अरशना उपद्रवोनी पण ते ते दोषोना अनुसारथी चिकित्सा कऱ्या करवी.

१४ परं च यत्नमास्थाय गुदे क्षाराग्निशस्त्राण्यवचारयेत्तद्विभ्रमाद्धि पाण्ड्यशोफदाहमदमूर्छाटोपानाहातीसारप्रवाहणानि भवन्ति मरणं वा ॥

गुदामां क्षारादिकनो प्रयोग करतां वैद्ये पूरी संभाळ राखवानी जरूर.

१४ वैद्ये परिपूर्ण संभाळ राखीने रोगीनी गुदामां क्षारना, अग्निना तथा शस्त्रना प्रयोगो करवा. कारण के ए प्रयोगमां जो दुर्योग थाय तो नपुंसकपणुं, सोजो, बळतरा, मद, मूर्छा, पेटमां गडगडाट, आनाह, अतीसार तथा प्रवाहिका थाय छे अने वखतपर मरण पण थई जाय छे.

१५ अतऊर्ध्वं यन्त्रप्रमाणमुपदेक्ष्यामः ॥ तत्र यन्त्रं लौहं दान्तं शार्ङ्गं वार्क्षं वा गोस्तनाकारं चतुरङ्गुलायतं पञ्चाङ्गुलपरिणाहं पुंसां षडंगुलपरिणाहं नारीणां तलायतं तद् द्विच्छिद्रं दर्शनार्थमेकं छिद्रमेकं छिद्रं तु कर्मणि। एकद्वारे हि शस्त्रक्षाराग्नीनामतिक्रमो न भवति । छिद्रप्रमाणं तु त्र्यङ्गुलायतमंगुष्ठोदरपरिणाहं यदंगुलमवशिष्टं तस्यार्द्धांगुलमधस्ताद्र्द्धांगुलोच्छ्रितोपरिवृत्तकर्णिकमेव यन्त्राकृतिसमासः ॥

गुदामां नाखवाना यंत्रनुं प्रमाण.

१५ हवे यंत्रनुं प्रमाण कहीए छीए. यंत्र सुवर्ण वगेरे धातुओनुं, दांतनुं, शींगडांनुं अथवा शीशम वगेरेना मजबूत काष्ठनुं जोईए. ए यंत्र पुरुषनी गुदाने माटे गायना आंचळ जेवुं, चार आंगळ लांबूं अने पांच आंगळ जाडाईवाळुं (जेने वींटवामां पांच आंगळनो दोरो जोईए एवुं) जोईए. स्त्रीनी गुदाने माटे गायना आंचळ जेवुं, चार आंगळ लांबूं अने छ आंगळ जाडाईवाळुं जोईए. यंत्र नीचे हाथना तळा जेवी सपाटी करवी. ए यंत्रमां बे छिद्र कराववां के जेओमांथी एक छिद्र अरशने जोवाने माटे काम लागे अने बीजुं छिद्र क्रिया करवामां उपयोगी थाय. जो यंत्र एक छिद्रवाळुं होय तो शस्त्र, क्षार अने अग्नि एओने अरशनी उपर लागु पाडी शकाय नहीं. यंत्रनां ए [illegible] त्रण आंगळ लांबां अने अंगूठाना मध्य जेवां जाडां जोईए. यंत्रमां बाकी जे एक आंगळ वध्युं तेमां अरधुं आंगळ नीचे राखवुं अने उपरना अरधा आंगळमां ऊंची तथा उपर गोळपणावाळी डोडी (टोचकुं) जोईए. संक्षेपथी आ यंत्रनो आकार कह्यो.

१ वाग्भटना सूत्रस्थानना २५ मा अध्यायमां तो अरशने जोवा माटे बे छिद्रोवाळुं यंत्र करवुं अने अरश उपर क्रियाने माटे एक छिद्रवाळुं यंत्र करवुं एम द्विच्छिद्रं दर्शने व्याधेरेकच्छिद्रं तु कर्मणि ए श्लोकथी कह्युं छे.

१६ अत ऊर्द्ध्वमर्शसामालेपान्वक्ष्यामः । स्नुहीक्षीरयुक्तं हरिद्राचूर्णमालेपः प्रथमः । कुक्कुटपुरीषगुञ्जाहरिद्रापिप्पलीचूर्णमिति गोमूत्रपित्तपिष्टो द्वितीयः । दन्तीचित्रकसुवर्चिकालाङ्गलीकल्को वा गोपित्तपिष्टस्तृतीयः । पिप्पलीसैन्धवकुष्ठशिरीषफलकल्कः स्नुहीक्षीरपिष्टोऽर्कक्षीरपिष्टो वा चतुर्थः ॥

अरशो उपर करवाना लेपो.

१६ हवे अरशो उपर करवाना लेपो कहीए छीए. थोरना छीरमां कालवेलुं हळदरनुं चूर्ण ए पेहेलो लेप छे. कुकडानी चरक, चणोठी, हळदर अने पीपळ एओनुं गायना मूत्रथी तथा पित्ताथी वाटेलुं चूर्ण ए बीजो लेप छे. नेपाळो, चित्रक, साजीखार अने दूधीयो वछनाग एओनो गायना मूत्रथी तथा पित्ताथी वाटेलो कल्क ए त्रीजो लेप छे. पीपळ, सैंधव, कठ अने सरसडीयानां फळ एओनो थोरना छीरथी अथवा आकडाना छीरथी वाटेलो कल्क ए चोथो लेप छे. (आ प्रत्येक लेप अरशने पाडी नाखे छे अने उत्तरोत्तर बळवान् छे.)

१७ कासीसहरितालसैन्धवाश्वमारकविडङ्गपूतीककृतवेधनजम्ब्वर्कोत्तमारणीदन्तीचित्रकालर्कस्नुहीपयःसु तैलं विपक्वमभ्यञ्जनेनार्शः शातयति ॥

अरशोने कापी नाखनारो अभ्यंग.

१७ हीराकसी, हरताल, सैंधव, कणेर, वावडींग, गुच्छकरंज, कडवी घीसोडी, जांबू, आकडो, चमारदूधेली, नेपाळो, चित्रक, धोळा आकडानुं छीर अने थोरनुं छीर एओथी पकावेलुं तैल अभ्यंग करवाथी अरशने कापी नाखे छे.

१८ अत ऊर्ध्वमदृश्येष्वर्शस्सु योगान्पातनार्थं वक्ष्यामः ।

प्रातः प्रातर्गुडहरीतकीमासेवेत ब्रह्मचारी गोमूत्रद्रोणसिद्धं वा हरीतकीशतं प्रातःप्रातर्यथाबलमुपयुञ्जीत क्षौद्रेण ।

अपामार्गमूलं वा तण्डुलोदकेन सक्षौद्रमहरहः ।

शतावरीमूलकल्कं वा क्षीरेण ।

चित्रकचूर्णयुक्तं वा सीधु परार्ध्यम् ।

भल्लातकयुक्तं सक्तुमन्थमलवणं तक्रेण वा ।

कलशे वान्तश्चित्रकमूलकल्कावलिप्ते निषिक्तं तक्रमम्लमनम्लं वा पानभोजनेषूपयुञ्जीत ।

एष एव भार्ग्यास्फोतायवान्यामलकगुडूचीषु तक्रकल्पः ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकविडङ्गशुण्ठीहरीतकीषु च पूर्ववदेव निरन्नो वा तक्रमहरहर्मासमुपसेवेत ।

शृङ्गवेरपुनर्नवाचित्रककषायसिद्धं वा पयः ।

कुटजमूलत्वक्फाणितं वा पिप्पल्यादिप्रतीवापं क्षौद्रेण ।

वातव्याध्युक्तं हिंग्वादिचूर्णमुपसेवेत तक्राहारः क्षीराहारो वा ।

क्षारलवणांश्चित्रकमूलक्षारोदकसिद्धान्वा कुलमाषान्भक्षयेत् ।

चित्रकमूलक्षारोदकसिद्धं वा पयः ।

पलाशतरुक्षारसिद्धान्वा कुलमाषान् ।

पाटलापामार्गबृहतीपलाशक्षारं वा परिस्नुतमहरहर्घृतसंसृष्टम् ।

कुटजमूलवन्दाककल्कं वा तक्रेण ।

चित्रकपूतीकनागरकल्कं वा पूतिकक्षारेण ।

क्षारोदकसिद्धं वा सर्पिः पिप्पल्यादिप्रतीवापम् ।

कृष्णातिलप्रसृतं प्रकुञ्चं वा प्रातःप्रातरनुसेवेत शीतोदकानुपानम् ।

एभिरभिवर्द्धतेऽग्निरर्शांसि चोपशाम्यन्ति ।

द्विपञ्चमूलीदन्तीचित्रकपथ्यानां तुलामाहृत्य जलचतुर्द्रोणे विपाचयेत् । ततः पादावशिष्टं कषायमादाय सुशीतं गुडतुलया सह्योन्मिश्र्य घृतभाजने निःक्षिप्य मासमुपेक्षेत यवपल्ले । ततः प्रातः प्रातर्मात्रां पाययेत तेनार्शोग्रहणीदोषपाण्डुरोगोदावर्त्तारोचका न भवन्ति दीप्तोऽग्निश्च भवति ।

पिप्पलीमरिचविडंगैलवालुकलोध्राणां द्वे द्वे पले इन्द्रवारुण्याः पञ्च पलानि कपित्थमध्यस्य दश पथ्याफलानामर्द्धप्रस्थः प्रस्थो धात्रीफलानामेतदैकध्यं जलचतुर्द्रोणे विपाच्य पादावशेषं परिस्राव्य सुशीतं गुडतुलाद्वयेनोन्मिश्र्य घृतभाजने निःक्षिप्य पक्षमुपेक्षेत यवपल्ले । ततः प्रातः प्रातर्यथाबलमुपयुञ्जीत । एष खल्वरिष्टः प्लीहाग्निसङ्गार्शोग्रहणीहृत्पाण्डुरोगशोफकुष्ठगुल्मोदरकृमिहरो बलवर्णकरश्चेति ॥

अदृश्य (देखवामां न आवे एवां) अरशोने पाडी नाखवाना योगो.

१८ हवे अदृश्य अरशोने पाडी नाखवा माटे योगो कहीएछीए.

ब्रह्मचर्य पळावीने नित्य प्रभाते प्रभाते गोळसहित हरडेनुं सेवन कराववुं अथवा सो हरडेने एक हजार चोवीश तोलां भार गोमूत्रमां पकावी तेओनो प्रभाते प्रभाते रोगीना बळप्रमाणे मधनी साथे उपयोग कराववो.

अथवा अघेडाना मूळना कल्कने चोखाना धोणमां घोळी मधनी साथे तेनो नित्य उपयोग

कराववो. (पित्त तथा रुधिरसंबंधी अरश उपर आ उपयोग कराववो.)

अथवा शतावरीना मूळना कल्कनो दूधनी साथे नित्य उपयोग कराववो. (वायुना तथा पित्तना अनुबंधवाळा रुधिरथी थएला अरश उपर आ उपयोग कराववो.)

अथवा अति उत्तम मद्यने एक तोला भार चित्रकना चूर्णथी संयुक्त करीने तेनो नित्य उपयोग कराववो. (कफथी मंद अग्निवाळा तथा सखत विष्टावाळा अरश उपर आ उपयोग कराववो.)

अथवा सोळ तोलां भार जवना साथवाना मंथमां एक तोलां भार भीलामानुं चूर्ण नाखीने लूण नहीं नाखतां छाशनी साथे ते नित्य पावो. (मंथनुं लक्षण सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २३२ मा विषयमां जुवो.)

अथवा माटीना घडाने अंदर चित्रकना मूळना कल्कथी लींपी तेमां छाश रेडी ते खाटी अथवा खटाशवगरनी छाशनो पीवामां तथा भोजनोमां उपयोग कराववो.

अथवा भारंगी, उपलसरी (कपूरी) के गरणी, यवान, आमळां तथा गळो एओना कल्कथी माटीना घडाने अंदर लींपी तेमां छाश रेडी ते खाटी अथवा खटाशवगरनी छाशनो पीवामां तथा भोजनोमां उपयोग कराववो.

अथवा पीपळ, पीपळीमूळ, चवक, चित्रक, वावडींग, सूंठ तथा हरडे एओना कल्कथी माटीना घडाने अंदर लींपी तेमां छाश रेडी ते खाटी अथवा खटाश वगरनी छाशनो पीवामां तथा भोजनोमां एक महीनासूधी नित्य उपयोग कराववो अथवा जम्या पेहेलां पीवामांज उपयोग कराववो. (वायुथी के कफथी थएलां सूकां अरशो उपर छाशनो प्रयोग करवो.)

अथवा सूंठ, साटोडी अने चित्रक एओना क्वाथमां पकावेला दूधनो नित्य उपयोग कराववो. (स्राववाळां तथा रुधिरथी के पित्तथी थएलां अरशो उपर आ प्रयोग कराववो.)

अथवा कडा एटले इंद्रजवना झाडना मूळनी अने छालनी राब करी तेमां पिप्पल्यादि गणनो प्रतिवाप नाखी मधनी साथे तेनो नित्य उपयोग कराववो. (कफना तथा पित्तना अनुबंधवाळा रुधिरथी थएलां अरशो उपर आ प्रयोग करवो.)

अथवा आ चिकित्सितस्थानना गया पांचमा अध्यायना चोवीशमा विषयमां कहेला हिंग्वादि चूर्णनुं सेवन कराववुं अने छाशथी अथवा दूधथी आहार कराववो. (वायुथी के कफथी अरश थएल होय तो छाशथी आहार कराववो अने वायुना के पित्तना अनुबंधवाळा रुधिरथी अरश थएल होय तो दूधथी आहार कराववो.)

अथवा जवखार नाखीने खारी करेली के चित्रकना मूळना क्षारना जळमां पकावेली घउं तथा राता चोखा वगेरेनी घूघरी नित्य खवरावववी.

अथवा चित्रकना मूळना क्षारमां पकावेला दूधनो नित्य उपयोग कराववो.

अथवा खाखराना क्षारथी पकावेली घउं वगेरेनी घूघरी नित्य खवरावववी.

अथवा पाडल, अंघेडो, भोरींगणी अने खाखरो एओना क्षारने स्रवावी घीथी संयुक्त करीने तेनो नित्य उपयोग कराववो. (क्षार जीर्ण थया पछी घी, दूध तथा मांसना रसासहित अन्न जमाडवुं. कारण के क्षारथी ओजनो भ्रंश थवानी धास्ती छे.)

अथवा इंद्रजवना झाडनां मूळनो अने बांदा-(अन्यवृक्ष)नो कल्क करी तेनो छाशनी साथे नित्य उपयोग कराववो. (कल्क चार, त्रण के बे तोलां भार लेवो अने छाश आठ तोलां भार लेवी.)

अथवा चित्रक, गुच्छकरंज अने सूंठ एओना कल्कने गुच्छकरंजना क्षारनी साथे पावो (अने घीथी, दूधथी तथा मधुर रसथी संयुक्त भोजन कराववुं.)

अथवा गुच्छकरंजना के पाडल वगेरेना क्षारथी पकावेला घीमां पीवाना समयमां पिप्पल्यादि गणनुं चूर्ण नाखीने ते घी पावुं (अने दूधथी, घीथी तथा मधुर रसथी संयुक्त भोजन कराववुं. वायुसंबंधी रूक्ष अरशो उपर आ योग छे.)

अथवा चार तोलांभार के आठ तोलांभार काळा तल नित्य प्रभाते प्रभाते खवरावVा अने ते उपर टाढुं पाणी पावुं.

आ प्रयोगोथी जठराग्नि वृद्धि पामे छे अने अरशो उपशांत थाय छे.

दशमूळी, नेपालो, चित्रक अने हरडे एओने समभागे चारसो तोलांभार लावीने तेओनो चार हजार छन्नुं तोलांभार पाणीमां उकाळो करवो. चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे ए क्काथने उतारी लई, सारी पेठे थंडो करी, तेमां चारसो तोलाभार गोळ मिश्रित करी दई, तेने घीना रीढा वासणां नाखी, जवना ढगलामां मूकी दईने एक महिना सूधी एमनेएम रेहेवा देवो. पछी तेमांथी नित्य प्रभाते प्रभाते मात्रा लईने रोगीने पावी. आ दंत्यरिष्ट नामना अरिष्टथी अरश, ग्रहणीदोष, पांडुरोग, उदावर्त्त तथा अरोचक एओ टळी जाय छे अने जठराग्नि प्रदीप्त थाय छे.

पीपळ, मरी, वावडींग, एलवालुक (आ कांईक सुगंधि द्रव्य छे पण ते ओळखी शकातुं नथी.) अने लोदर ए औषधोने आठ आठ तोलाभार, इंद्रवारणांने वीश तोलाभार, (वीश तोलाभार लेवाथी बहुज कडवाश थई जाय छे माटे वृद्ध वैद्यो दश तोलाभार लेछे.) कोठना गर्भने दश तोलाभार, हरडेने बत्रीश तोलाभार अने आमळांओने चोसठ तोलाभार लई ए सर्वेने एकठां करी, चार हजार छन्नुं तोलाभार पाणीमां उकाळी, चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे वस्त्रथी गाळी लई, ते क्काथने सारी पेठे थंडो करी, तेमां आठसो तोलाभार गोळ मिश्रित करी दई, तेने घीना रीढा वासणमां नाखी, जवना ढगलामां मूकी दईने एक पखवाडीया सूधी एमनेएम रेहेवा देवो. पछी तेमांथी नित्य प्रभाते प्रभाते रोगीना बळना अनुसारथी मात्रा पावी. आ **अभयारिष्ट** नामना अरिष्टथी बरलनुं दरद, अग्निनी मंदता, अरश, ग्रहणी, छातीनां दरदो, पांडुरोग, सोजा, कोढ, गुल्म, उदररोग अने कृमि एओ नष्ट थाय छे, बळ प्राप्त थाय छे अने वर्ण सारो थाय छे. (आ प्रयोग चरकमां पण लख्यो छे. डल्लन.)

(आ अढारमा विषयना सघळा प्रयोगो फक्त अदृश्य अरशो उपरज नहीं पण सघळा प्रकारना अरशो उपर पण उपयोगी थाय एवा छे.)

१९ तत्र वातप्रायेषु स्नेहस्वेदवमनविरेचनास्थापनानुवासनमप्रतिषिद्धम् । पित्तजेषु विरेचनम् । एवं रक्तजेषु संशमनम् । कफजेषु शृङ्गवेरकुलत्थोपयोगः । सर्वदोषहरं यथोक्तं सर्वजेषु । यथास्वौषधसिद्धं वा पयः सर्वेष्विति॥

अल्प काळथी थएलां तथा अल्प दोषवाळां अरशोने टाळवा माटे अने अदृश्य अरशोनुं यापन करवा माटे स्नेहन आदि कर्मो.

१९ वायुथी थएलां तथा वायुना आधिक्यवाळां अरशो उपर स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, निरूहबस्ति अने अनुवासनबस्ति एओनो निषेध नथी. पित्तथी थएलां अरशो उपर विरेचन निषिद्ध नथी. रुधिरथी थएलां अरशो उपर संशमन (जेथी वमन पण न थाय अने विरेचन पण न थाय एवुं शांत करनार औषध) निषिद्ध नथी. कफथी थएलां अरशो उपर सूंठनो अने कळथीनो उपयोग निषिद्ध नथी. सर्व दोषोथी थएलां अरशो उपर सर्व दोषोने हरनारां औषधोनो निषेध नथी. तेमज सर्व प्रकारनां अरशो उपर, ते अरशो जे दोषथी थएलां होय ते दोषने हरनारां औषधोथी

पकावेलुं दूध निषिद्ध नथी. (जो के अरशोमां वमननो निषेध छे तो पण कफ पडवा वगेरे स्थितिओमां ए निषेध नथी.)

२० अत ऊर्द्ध्वं भल्लातकविधानमुपदेक्ष्यामः। भल्लातकानि परिपक्वान्यनुपहतान्याहृत्यैकमादाय द्विधा त्रिधा चतुर्द्धा वा छेदयित्वा कषायकल्पेन विपाच्य कषायस्य शुक्तिमनुष्णां घृताभ्यक्ततालुजिह्वौष्ठः प्रातः प्रातरुपसेवेत ततोऽपराह्णे क्षीरं सर्पिरोदन इत्याहार एवमेकैकं वर्द्धयेत्तावद्यावत्पञ्चेति ततः पञ्च पञ्चाभिवर्द्धयेद्यावत्सप्ततिरिति प्राप्य च सप्ततिमपकर्षयेद्भूयः पञ्च पञ्च यावत्पञ्चेति पञ्चभ्यश्चैकैकं यावदेकमिति। एवं भल्लातकसहस्रमुपयुज्य सर्वकुष्ठार्शोभिर्विमुक्तो बलवानरोगः शतायुर्भवति।

द्विव्रणीयोक्तेन विधानेन भल्लातकनिश्च्योतितं स्नेहमादाय प्रातः प्रातः शुक्तिमात्रमुपयुञ्जीत जीर्णे पूर्ववदाहारः फलप्रकर्षश्च।

भल्लातकमज्जभ्यो वा स्नेहमादायापकृष्टदोषः प्रतिसंसृष्टभक्तो निवातमागारं प्रविश्य यथाबलं प्रसृतिं प्रकुञ्चं वोपयुञ्जीत। तस्मिञ्जीर्णे क्षीरं सर्पिरोदन इत्याहारः। एवं मासमुपयुज्य मासत्रयमादिष्टाहारो रक्षेदात्मानम्। ततः सर्वोपतापानपहत्य वर्णवान् बलवाञ् श्रवणग्रहणधारणशक्तिसम्पन्नो वर्षशतायुर्भवति। मासे मासे च प्रयोगे वर्षशतं वर्षशतमायुषोऽभिवृद्धिर्भवति। एवं दश मासानुपयुज्य वर्षसहस्रायुर्भवति॥

अल्प काळथी थएलां तथा अल्प दोषवाळां अरशोने टाळवा माटे अने लांबा कालथी थएलां अदृश्य अरशोनुं यापन करवा माटे भल्लातक (भीलामा)नुं विधान.

२० हवे भीलामांओनुं विधान कहीएछीए. पाकेलां अने कीडा वगेरेथी उपघात नहीं पामेलां भीलामांओने एकठां करी (बीजां तंत्रोमां कह्युं छे के जेठमासमां अथवा आषाढमासमां भीलामांनां बीज लई तेओने जवना ढगलामां राखी मूकी मागशीर्ष अथवा पौषमासमां) तेओमांथी एक लई तेना बे, त्रण अथवा चार टुकडा करी क्वाथनी रीति प्रमाणे उकाळीने ते बे तोलांभार क्वाथने लई, थंडो पाडी प्रभाते प्रभाते ताळवाने, जीभने तथा होठोने घीथी खरडीने ते क्वाथ पावो. पछी अपराह्ण समयमां दूधथी तथा घीथी संयुक्त भातनो आहार कराववो. आ प्रमाणे नित्य एक एक भीलामुं वधारतुं जवुं ते त्यांसूधी के ज्यांसूधी पांच भीलामां थाय. पछी नित्य पांच पांच भीलामां वधारतां जवां ते त्यांसूधी के ज्यांसूधी सींतेर भीलामां थाय. सींतेर भीलामां थया पछी नित्य पांच पांच भीलामां कमती करतां जवां ते त्यांसूधी के ज्यांसूधी पांच भीलामां थाय. पछी नित्य एक एक भीलामुं कमती करतुं जवुं ते त्यांसूधी के ज्यांसूधी छेवट एक भीलामुं आवे. आ प्रमाणे हजार भीलामांओनो उपयोग कराववामां आवे तो (पेहेला चार दिवस संस्कार बेसाडवाने माटे छे अने छेला चार दिवस संस्कारने नष्ट करवा माटे छे माटे तेओमां एक एकनोज वधारो घटारो कर्यो छे. पांत्रीश दिवसोमां एक हजार भीलामां पूरां थई रहे छे.) माणस सघळा प्रकारना कोढोथी तथा सघळा प्रकारना अरशोथी मुक्त थाय छे, बळवान् थाय छे, हमेश आरोग्यवाळो रेहे छे अने सो वर्षसुधी जीवेछे. (रुधिरथी के पित्तथी थएलां अरशो उपर आ प्रयोग करवो नहीं. जे कोढो असाध्य छे तेओने टाळवा माटे पण आ प्रयोग करवो नहीं.)

भल्लातक (भीलामां)नो बीजी रीतनो प्रयोग.

आ चिकित्सितस्थानना द्विव्रणीय नामना पेहेला अध्यायना ६७ मा विषयमां कह्याप्रमाणे

भीलामांओमांथी पाडेला स्नेहने लई नित्य प्रभाते प्रभाते जीभने, ताळवांने तथा होठोने घीथी खरडी ते स्नेहमांथी बे तोलांभार स्नेहनो उपयोग करावत्रो अने ते जीर्ण थया पछी अपराह्न समयमां दूधथी तथा घीथी संयुक्त भातनो आहार करावत्रो. आ प्रयोग करवाथी उपर कहेला पेहेला प्रयोगना जेवुंज उत्तम फळ थाय छे.

भल्लातक(भीलामां)नो त्रीजी रीतनो प्रयोग.

प्रथम, दोषनुं अपकर्षण करी योग्य क्रमथी[1] जव वगेरेनो आहार करावी पछी पवनवगरना घरमां राखी, भीलामांओनी मज्जाओमांथी स्नेहने लई रोगीना तथा रोगना बळप्रमाणे नित्य चार तोलांभार अथवा आठ तोलां भार ते स्नेहनो घीथी होठ वगेरेने खरडीने उपयोग करावत्रो (स्नेहमां मध तथा घी मिश्रित करीने तेनो उपयोग करावत्रो.) अने ए स्नेह जीर्ण थया पछी दूध, घी तथा भात एओनो आहार करावत्रो. आ प्रमाणे एक महीना सूधी प्रयोग करीने पछी त्रण महीना सूधी पथ्य आहार करावत्रो अने क्रोधादिकनो त्याग पण रखावत्रो. आ प्रयोग करवाथी माणस सघळा रोगोथी मुक्त थई बळवान् थाय छे, ग्रंथादिकनुं श्रवण ग्रहण तथा धारण करवानी पुरती शक्तिवाळो थाय छे अने सो वर्षना आयुष्यवाळो थाय छे. आ प्रयोग हारोहार नहीं पण अनुक्रमे महीने महीने करवामां आवे तो दरएक महीने सो सो वर्षनुं आयुष्य वधतुं आवे छे. हारोहार नहीं पण अनुक्रमे आ प्रयोग जो दश महीना सूधी करवामां आवे तो हजार वर्षनुं आयुष्य थाय छे.

२१ भवन्ति चात्र ॥

यथा सर्वाणि कुष्ठानि हतः खदिरबीजकौ ।
तथैवार्शांसि सर्वाणि वृक्षकारुष्करौ हतः ॥
असाध्या नातिवर्त्तन्ते प्रमेहा रजनीं यथा ।
क्षाराग्नी नातिवर्त्तन्ते तथा दृश्या गुदोद्भवाः

[1] आ क्रम आ स्थानना ३९ मा अध्यायमां जोवो.

अरशो उपर इंद्रजवना तथा भीलामाना सेवननी अने क्षारनी तथा अग्निनी प्रशंसा.

२१ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जेम खेर अने बीबलो (बीयो) एओ सघळा कोढोने हणे छे तेम इंद्रजव अने भीलामुं एओ सघळा प्रकारनां अरशोने हणेछे. (वायुथी तथा कफथी थएलां अरशो भीलामाथी मटेछे अने रुधिरथी तथा पित्तथी थएलां अरशो इंद्रजवथी मटेछे. असाध्य अरशो भीलामाथी के इंद्रजवथी मटतां नथी अने असाध्य कोढो खेरथी के बीबलाथी मटतां नथी.) जेम असाध्य प्रमेहो पण हळदरना प्रयोगथी मट्यावगर रेहेता नथी तेम देखवामां आवे एवां अरशो क्षारथी तथा अग्निथी मट्यावगर रेहेतां नथी. (वायुथी उत्पन्न थएला चार प्रकारना प्रमेहो शिवाय बीजा प्रमेहो हळदरथी टळे छे.)

२२ घृतानि दीपनीयानि लेह्यायस्कृतयः सुराः ।
आसवाश्च प्रयोक्तव्या वीक्ष्य दोषसमुच्छ्रितिम् ॥

दोषोना वधारा उपरथी बीजी पण अरशनी चिकित्सा.

२२ वैद्ये अरशोमां दोषोनुं प्राबल्य जोईने जठराग्निने प्रदीप्त करनारां घृतो(घी)ना, कुटजावलेह (इंद्रजवना अवलेह) आदि अवलेहोना, महाकुष्ट आदि रोगोनी चिकित्साना विषयमां जे अयस्कृतिओ केहेवामां आवशे तेओना, सुराओना, अने अनेक औषधोना काथो वगेरेथी बनावेला आसवोना पण प्रयोगो करवा.

२३ वेगावरोधस्त्रीपृष्ठयानान्युत्कुटकासनम्
यथास्वं दोषलं चान्नमर्शःसु परिवर्जयेत् ॥

अरशवाळाए पाळवानी परेजी.

२३ अरशवाळा माणसे मलमूत्रादिकना वेगोनो रोध करवो नहीं, स्त्रीसंग करवो नहीं, घोडा

वगेरे वाहनोनी पीठ उपर बेसवुं नहीं, उभडक बेसवुं नहीं अने जे दोषथी अरश थएल होय ते दोषने वधारनारूं अन्न जमवुं नहीं."

अध्याय ७ मो.

१ अथातोऽश्मरीचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अश्मरी-चिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अश्मरी दारुणो व्याधिरन्तकप्रतिमो मतः ।
औषधैस्तरुणः साध्यः प्रवृद्धश्छेदमर्हति ॥

पथरीना संबंधमां औषधोना अने छेदनना विषय-विभाग.

२ पथरी के जे मृत्युसमान दारुण व्याधि छे ते जो तुरतनी उत्पन्न थएल होय तो औषधोने लायक छे अने जो वृद्धि पामेल होय तो छेदनने लायक छे.

३ तस्य पूर्वेषु रूपेषु स्नेहादिक्रम इष्यते ।
तेनास्यापचयं यान्ति व्याधेर्मूलान्यशेषतः ॥

पथरी उपर तेना पूर्वरूपना समयमां करवानी चिकित्सा.

३ ज्यारे पथरीनां पूर्वरूपो जोवामां आवे त्यारे स्नेहन आदि चिकित्सा करवी. एथी ए व्याधिनां सघळां मूळो क्षीण थई जाय छे.

४ पाषाणभेदो वसुको वशिराश्मंतकौ तथा ।
शतावरी श्वदंष्ट्रा च बृहती कण्टकारिका ॥
कपोतवङ्कार्त्तगलः ककुभोशीरकुब्जकाः ।
वृक्षादनी भल्लुकश्च वरुणः शाकजं फलम् ॥
यवाः कुलत्थाः कोलानि कतकस्य फलानि च
ऊषकादिप्रतीवापमेषां क्वाथैर्घृतं कृतम् ॥
भिनत्ति वातसंभूतामश्मरीं क्षिप्रमेव तु ।
क्षारान्यवागूर्यूषांश्च कषायाणि पयांसि च ॥
भोजनानि च कुर्वीत वर्गेऽस्मिन्वातनाशने ।

वायुथी उत्पन्न थएली पथरीने तोडी नाखनारा योगो.

४ पाषाणभेद, बोलसरी, चवक, आसोंदरो, शतावरी, गोखरू, बेठी भोरींगणी; ऊभी भोरींगणी, सूरजमुखी, काळो कांटाअशेरीयो, कडायो, वाळो, गुलाब, बांदो, अरडूसो, वायवरणां, सागनुं फळ, जव, कळथी, बोर अने कतक फळ एओना ऊषकादि गणना प्रतिवापवाळा क्वाथो करी ते क्वाथोमां पकावेलुं घी वायुथी उत्पन्न थएली पथरीने तुरतज भेदी नाखेछे.

वैद्ये वायुथी उत्पन्न थएली पथरीने भेदवामाटे वायुने नष्ट करनारा ए पाषाणभेद आदि वर्गथी क्षारो, यवागूओ, यूषो, क्वाथो, दूधो तथा भोजनो बनाववां.

५ कुशः काशः शरो गुन्द्रा उत्कटो मोरटोऽश्मभित् ।
वरी विदारी वाराही शालिमूलं त्रिकण्टकम् ।
भल्लूकः पाटला पाठा पत्तूरोऽथ कुरण्टिका ॥
पुनर्नवा शिरीषश्च क्वथितास्तेषु साधितम् ।
घृतं शिलाजमधुकबीजैरिन्दीवरस्य च ॥
त्रपुसैर्वारुकादीनां बीजैश्चावापितं शुभम् ।
भिनत्ति पित्तसम्भूतामश्मरीं क्षिप्रमेव तु ॥
क्षारान्यवागूर्यूषांश्च कषायाणि पयांसि च ।
भोजनानि च कुर्वीत वर्गेऽस्मिन् पित्तनाशने ॥

पित्तथी उत्पन्न थएली पथरीने तोडी नाखनारा योगो.

५ दर्भ, कांसडो, पान के जेमां पानबाजरीयुं थायछे ते, ऊंटकंटो, शेलडीनुं मूळ, पाषाणभेद, शतावरी, फगवेलानो कंद, वाराही कंद, राता चोखाना छोडनुं मूळ, गोखरू, अरडूसो, पाडल, काळीपाड, पतंग, कुरंटिका,

१ पथरी के जेनां निदानादिक निदानस्थानना त्रीजा अध्यायमां केहेवामां आव्यां छे तेनी चिकित्सा विषयनो.

(આગિયો) સાટોડી, અને સરસડીઓ એઓના કાથો કરી તેઓમાં પકાવેલું અને શિલાજીત, મહુડાનાં બીજ, નીલકમળનાં બીજ, ત્રુસડાંનાં બીજ અને એર્વારુક વગેરે જાતની કાકડીઓનાં બીજ એઓના ચૂર્ણના પ્રતિવાપવાળું ઘી પિત્તથી ઉત્પન્ન થએલી પથરીને તુરતજ ભેદી નાખે છે.

વૈદ્યે પિત્તથી ઉત્પન્ન થએલી પથરીને તોડવા માટે પિત્તનો નાશ કરનારા એ દર્ભ આદિ વર્ગથી ક્ષારો, યવાગૂઓ, યૂષો, કાથો, દૂધો તથા ભોજનો બનાવવાં.

६ गणो वरुणकादिस्तु गुग्गुल्वेलाहरेणवः ।
कुष्ठभद्रादिमरिचचित्रकैःससुराह्वयैः ॥
एतैः सिद्धमजासर्पिरूषकादिगणेन च ।
भिनत्ति कफसंभूतामश्मरीं क्षिप्रमेव तु ॥
क्षारान्यवागूर्यूषांश्च कषायाणि पयांसि च ।
भोजनानि च कुर्वीत वर्गेऽस्मिन् कफनाशने ॥

કફથી અને વીર્યથી ઉત્પન્ન થએલી પથરીને તોડી નાખનારા યોગો.

૬ વરુણાદિ ગણ, ગુગળ, એળચી, હરેણુ નામનું સુગંધિ દ્રવ્ય (આ દ્રવ્ય ઓળખી શકાતું નથી.) કઠ, ભદ્રદારુ આદિ વાતસંશમન વર્ગ કે જે સૂત્રસ્થાનના ૩૯ મા અધ્યાયના ૧૦ મા વિષયમાં કહ્યો છે તે, મરી, ચિત્રક અને દેવદાર એઓના તથા ઊષકાદિ ગણના કાથોથી પકાવેલું બકરીનું ઘી કફથી ઉત્પન્ન થએલી પથરીને તુરતજ ભેદી નાખે છે.

વૈદ્યે કફથી ઉત્પન્ન થએલી પથરીને તોડવા માટે કફનો નાશ કરનારાં એ વરુણાદિ ગણ વગેરેથી ક્ષારો, યવાગૂઓ, યૂષો, કાથો, દૂધો તથા ભોજનો બનાવવાં.

(વીર્ય અને કફ તુલ્ય છે માટે વીર્યથી થએલી પથરીની ચિકિત્સા પણ આથી કેહેવાઈ ગઈ સમજવી.)

७ पिचुकाङ्कोलकतकशाकेन्दीवरजैः फलैः ।
चूर्णितैः सगुडं तोयं शर्कराशमनं पिबेत् ॥
क्रौञ्चोष्ट्ररासभास्थीनि श्वदंष्ट्रा तालमूलिका ।
अजमोदा कदम्बस्य मूलं नागरमेव च ॥
पीतानि शर्करां भिन्द्युः सुरयोष्णोदकेन वा ।
त्रिकण्टकस्य बीजानां चूर्णं माक्षिकसंयुतम् ॥
अविक्षीरेण सप्ताहमश्मरीभेदनं पिबेत् ।

કાંકરીને (રેતીને પણ) તથા પથરીને પાડનારાં તથા શાંત કરનારાં પાનો.

૭ કપાસનું ફળ, અંકોલનું ફલ, કતકફળ, (નિર્મલીનું ફળ) સાગનું ફળ અને નીલકમળનું ફળ એઓના ચૂર્ણનું પાણી ગરમ કરી ગોળ નાખીને પાવામાં આવે તો તેથી કાંકરી શાંત થઈ જાયછે.

કુંઝ નામના પક્ષીનું હાડકું, ઊંટનું હાડકું, ગધેડાનું હાડકું, ગોખરૂ, કાળીમુસલી, બોડીઅજમોદ, કદંબનું મૂળ, અને સૂંઠ એઓનું ચૂર્ણ મદિરાની સાથે અથવા ઊના પાણીની સાથે પાવામાં આવે તો તેથી કાંકરી ભેદાઈ જાય છે.

ગોખરૂનાં બીજોના ચૂર્ણને મધથી સંયુક્ત કરીને ગાડરના દૂધની સાથે સાત દિવસસૂધી પાવામાં આવે તો તેથી પથરી ભેદાઈ જાય છે.

८ द्रव्याणां तु घृतोक्तानां क्षारोऽवीमूत्रगालितः
ग्राम्यसत्वशकृत्क्षारैः संयुक्तः साधितः शनैः ।
तत्रोषकादिरावापः कार्यस्त्रिकटुकान्वितः ॥
एष क्षारोऽश्मरीं गुल्मं शर्करां च भिनत्त्यपि ।
तिलापामार्गकदलीपलाशयववल्कजः ॥
क्षारः पेयोऽविमूत्रेण शर्करानाशनः परः ।
पाटलाकरवीराणां क्षारमेवं समाचरेत् ॥

પથરીને તથા કાંકરીને નષ્ટ કરનારા ક્ષારો.

૮ જે દોષથી પથરી કે કાંકરી થએલ હોય તે દોષને મટાડનારાં દ્રવ્યો કે જેઓ ચોથા, પાંચમા અને છઠ્ઠા વિષયમાં કેહેવામાં આવ્યાં છે તેઓના ક્ષારને તથા ગાય ભેંસ વગેરે ગ્રામ્ય પશુઓના

छाणना क्षारने संयुक्त करी, गाडरना मूत्रथी गाळी, धीरे धीरे पकावी, तेमां पाकी जवाना समयमां ऊषकादि गण तथा सूंठ मरी अने पीपळ एओना चूर्णनो प्रतिवाप नाखी क्षार सिद्ध करीने पावामां आवे तो ते क्षार पथरीने, गुल्मने अने कांकरीने पण भेदी नाखे छे.

तल, अघेडो, केळ, खाखरो अने जव एओनां वृक्षोनी छालोनो क्षार गाडरना मूत्रमां घोळीने पावामां आवे तो ते क्षार कांकरीनो अत्यंत नाश करे छे.

पाडल अने कणेर एओनी छालोनो क्षार गाडरना मूत्रमां घोळीने पावामां आवे तो तेथी पण पथरीनो तथा कांकरीनो (रेतीनो पण) नाश थायछे.

९ श्वदंष्ट्रायष्टिकाब्राह्मीकल्कं वाक्षसमं पिबेत् ।
सहैडकाख्यौ पेयौ वा शोभाञ्जनकमार्कवौ ॥
कपोतवङ्कामूलं वा पिबेदम्लसुरादिभिः ।
तत्सिद्धं वा पिबेत्क्षीरं वेदनाभिरुपद्रुतः ॥
हरीतक्यादिसिद्धं वा वर्षाभूसिद्धमेव वा ।

पथरीने, रेतीने तथा कांकरीने नष्ट करनारां कल्को तथा दूधो.

९ गोखरू, जेठीमध अने ब्राह्मी एओनो एक तोलांभार कल्क गाडरना मूत्रमां घोळीने पावामां आवे तो तेथी पथरीनो तथा कांकरीनो नाश थाय छे.

एडका, (गुजरातीमां प्रसिद्ध नथी) सरगवो अने भांगरो एओनो कल्क गाडरना मूत्रमां घोळीने पावामां आवे तो तेथी पथरीनो तथा कांकरीनो नाश थाय छे.

सूरजमुखीना मूळनो कल्क कांजी वगेरे अम्ल पदार्थोनी साथे तथा मदिरा वगेरे पदार्थोनी साथे पावामां आवे तो तेथी पथरीनो तथा कांकरीनो नाश थाय छे.

पथरीनी के कांकरीनी वेदनाओथी पीडाएलो माणस जो सूरजमुखीना मूलना कल्कथी तथा काथथी अथवा त्रिफळाना कल्कथी तथा काथथी अथवा साटोडीना कल्कथी तथा काथथी पकावेला गायना दूधने पीए तो पथरीनो तथा कांकरीनो नाश थाय छे. (जो पित्तजन्य होय तो त्रिफळाना कल्कथी तथा काथथी अने वायुजन्य के कफजन्य होय तो साटोडीना अथवा सूरजमुखीना मूळना कल्कथी तथा काथथी पकावेलुं दूध पावुं.)

१० सर्वथैवोपयोज्यः स्याद्गणो वीरतरादिकः ॥

पथरी तथा कांकरी एओनी उपर वीरतर्वादि गणनो उपयोग करवानी भलामण.

१० पथरी के कांकरी थएल होय तो सर्व प्रकारोथी वीरतर्वादि गणनो उपयोग कराववो. (ए गणथी सिद्ध करेलां घी, दूध, काथ, यवागू तथा भोजन एओनो उपयोग कराववो अने अवगाह तथा स्नानादिकमां पण ए गणनीज योजना करवी.)

११ घृतैः क्षारैः कषायैश्च क्षीरैः सोत्तरबस्तिभिः ।
यदि नोपशमं गच्छेच्छेदस्तत्रोत्तरो विधिः ॥

बीजा उपायोथी पथरीनो उपशम न थाय तो छेवट शस्त्रक्रिया करवी.

११ जो पथरी घृतोथी, क्षारोथी, काथोथी, दूधोथी तथा अश्मरीने नष्ट करनारां द्रव्योनी उत्तर बस्तिओथी (लिंगमां के योनिमां पिचकारीओ मारवाथी) शांति न पामे तो छेवट छेदननो विधि करवो.

१२ कुशलस्यापि वैद्यस्य यतः सिद्धिरिहाध्रुवा ।
उपक्रमो जघन्योऽयमतः स परिकीर्त्तितः ॥

छेदनरूप चिकित्सानुं निकृष्टपणुं.

१२ वैद्य प्रवीण होय तो पण तेने पथरीनी छेदनरूप चिकित्सामां सिद्धि मळवी अनिश्चित छे एटला माटे पथरी उपर छेदनरूपी चिकित्सा निकृष्ट गणवामां आवे छे.

१३ अक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत्
तस्मादापृच्छय कर्त्तव्यमीश्वरं साधुकारिणा ॥

छेदन करवुं होय तो राजानी मंजूरी लेवानी जरूर.

१३ जो छेदन न करवामां आवे तो रोगीनुं मरण अवश्य थाय छे अने करवामां आवे तो मरणनो संशय रेहे छे एटला माटे प्रवीणताथी काम करनारा वैद्ये राजानी मंजूरी लईने पथरी उपर छेदनरूप चिकित्सा करवी.

१४ अथ रोगान्वितमुपस्निग्धमपकृष्टदोषमीषत्कर्शितमभ्यक्तस्विन्नशरीरमभुक्तवन्तं कृतबलिमङ्गलस्वस्तिवाचनमग्रोपहरणीयोक्तेन विधानेनोपकल्पितसम्भारमाश्वास्य ततो बलवन्तमविक्लवमाजानु समे फलके प्रागुपवेश्य पुरुषं च तस्योत्सङ्गे निषण्णपूर्वकायमुत्तानमुन्नतकटीकं वस्त्राधारकोपविष्टं संकुचितजानुकूर्परमितरेण सहावबद्धं सूत्रेण शाटकैर्वा ततः स्वभ्यक्तनाभिप्रदेशस्य वामपार्श्वं विमृद्य मुष्टिनावपीडयेदधोनाभेर्यावदश्मर्यधः प्रपन्नेति । ततः स्नेहाभ्यक्ते कृत्तनखे वामहस्तप्रदेशिनीमध्यमे पायौ प्रणिधायानुसेवनीमासाद्य प्रयत्नबलाभ्यां पायुमेढ्रान्तरमानीय निर्वलीकमनायतमविषमं च बस्तिं सन्निवेश्य भृशमुत्पीडयेदङ्गुलिभ्यां यथा ग्रन्थिरिवोन्नतं शल्यं भवति ।

स चेद्गृहीते शल्ये तु विवृताक्षो विचेतनः ।
हतवल्लम्बशीर्षश्च निर्विकारो मृतोपमः ॥
न तस्य निर्हरेच्छल्यं निर्हरेत्तु म्रियेत सः ।
विना त्वेतेन रूपेण निर्हर्तुं समुपाचरेत् ॥

सव्ये पार्श्वे सेवनीं यवमात्रेण मुक्त्वावचारयेच्छस्त्रमश्मरीप्रमाणं दक्षिणतो वा क्रियासौकर्यहेतोरित्येके ।

यथा च न भिद्यते चूर्ण्यते वा तथा प्रयतेत चूर्णमल्पमप्यवस्थितं हि पुनः परिवृद्धिमेति तस्मात्समस्तामग्रवक्रेणाददीत ।

स्त्रीणां तु बस्तिपार्श्वगतो गर्भाशयः सन्निकृष्टस्तस्मात्तासामुत्सङ्गवच्छस्त्रं पातयेदतोऽन्यथा खल्वासां मूत्रस्रावी व्रणो भवेत् ॥

पुरुषस्य वा मूत्रप्रसेकक्षणनान्मूत्रक्षरणम् ।

अश्मरीव्रणादृते भिन्नबस्तिरेकधा न भवति द्विधा भिन्नबस्तिराश्मरिको न सिध्यति ।

अश्मरीव्रणनिमित्तमेकधा भिन्नबस्तिर्जीवति क्रियाभ्यासाच्छास्त्रविहितच्छेदान्निःस्यन्दपरिवृद्धत्वाच्च शल्यस्येति ।

उद्धृतशल्यं तूष्णोदकद्रोण्यामवतार्य स्वेदयेत्तथा हि बस्तिरसृजा न पूर्यते पूर्णे वा क्षीरवृक्षकषायं पुष्पनेत्रेण विदध्यात् ।

भवति चात्र ।

क्षीरवृक्षकषायं तु पुष्पनेत्रेण योजितम् ।
निर्हरेदश्मरीं तूर्णं रक्तं बस्तिगतं च यत् ॥

मूत्रमार्गविशोधनार्थं चास्मै गुडसौहित्यं वितरेत् । उद्धृत्य चैनं मधुघृताभ्यक्तव्रणं मूत्रविशोधनद्रव्यसिद्धामुष्णां सघृतां यवागूं पाययेदुभयकालं त्रिरात्रं त्रिरात्रादूर्ध्वं गुडप्रगाढेन पयसा मृद्वोदनमल्पं भोजयेद्दशरात्रं मूत्रासृग्विशुद्ध्यर्थं व्रणक्लेदनार्थं च दशरात्रादूर्ध्वं फलाम्लैर्जाङ्गलरसैरुपाचरेत् । ततो दशरात्रं चैनमप्रमत्तः स्वेदयेत् स्नेहेन द्रवस्वेदेन वा । क्षीरवृक्षकषायेण चास्य व्रणं प्रक्षालयेत् । रोध्रमधुकमञ्जिष्ठाप्रपौण्डरीककल्कैर्व्रणं प्रतिग्राहयेत् । एतेष्वेव हरिद्रायुतेषु तैलं घृतं वा विपक्वं व्रणाभ्यञ्जनमिति । स्यानशोणितं चोत्तरबस्तिभिरुपाचरेत् । सप्तरात्राच्च स्वमार्गमप्रतिपद्यमाने मूत्रे व्रणं यथोक्तेन विधिना दहेदग्निना । स्वमार्गप्रतिपन्ने चोत्तरबस्त्यास्थापनानुवासनैरुपाचरेन्मधुरकषायैरिति ॥

पथरीनुं छेदन करवानुं पूर्वकर्म तथा उत्तरकर्म सहित विधान.

१४ पथरीना दरदीने स्नेहनक्रियाथी स्निग्ध करी, वमनथी तथा विरेचनथी दोषोनुं अपकर्षण करी, कांईक दूबळो करी, अभ्यंगनो तथा स्वेदननो संस्कार आपी, प्रभातथी भूख्यो राखी,

बलिदान मंगळ तथा स्वस्तिवाचन करावी, मूत्रस्थानना अग्रोपहरणीय नामना ५ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे सघळी सामग्री सज्ज राखी, धैर्य आपनारां वचनोथी आश्वासित करीने पछी बीजा एक बळवान् अने गभराय नहीं एवा माणसने गोठण सूधी ऊंची सपाट पाटीयानी चोकी उपर प्रथम बेसाडी, तेना खोळामां दरदीनुं नाभिथी उपरनुं अंग रहे एवी गोठवणथी दरदीने वस्त्रनी हींढोणी उपर के गालमसूरीया उपर चत्तो बेसाडी, दरदीनी कमरने कांईक ऊंची रखावी, दरदीना गोठणोने तथा कोणीओने संकुचित करावी, ते दरदीने दोरीओथी अथवा वस्त्रोथी पेला बळवान् माणसनी साथे बांधवो. पछी दरदीना नाभिप्रदेशने स्नेहनो मारी पेठे अभ्यंग करी, डाबा पडखाने चोळीने मूठीवते नाभिथी नीचेना प्रदेशमां दबाण करवुं ते त्यांसूधी के ज्यांसूधी पथरी नीचा प्रदेशमां उतरी जाय. पछी वैद्ये पोताना डाबा हाथनी प्रदेशिनी तथा मध्यमा (अंगुठापासेनी तथा वचली) ए बे आंगळीओना नख उतरावी, स्नेहथी खरडी, ते आंगळीओने दरदीनी गुदामां दाखल करी, सीवणीने लगता प्रदेशमां ते आंगळीओवते पथरीने पोहोची, प्रयत्नथी तथा बलथी ते पथरीने गुदाना तथा उपस्थना मध्यमां लावी, मूत्राशयने करचली न पडे तथा नीचाई ऊंचाई के लंबाई न रहे एवी रीते स्थापीने आंगळीओथी एवुं अत्यंत दबाण करवुं के जेथी पथरी गांठनी पेठे ऊंची थई रहे.

आ प्रमाणे करी पथरीने पकडतां जो दरदी फाटेली आंखोवाळो, चेतनावगरनो, मुवेलानी पेठे लटकता माथावाळो, चेष्टावगरनो अने मुवेला जेवोज थई जाय तो तेनी पथरीने काहाडवी नहीं. जो काहाडवामां आवे तो दरदी मरी जाय छे. जो उपर कहेलां रूपो न देखवामां आवे तो पथरी काहाडवाने माटे नीचे प्रमाणे प्रयत्न करवो.

डाबी बाजूमां सीवणीने एक जव जेटली दूर छोडी दईने पथरीना प्रमाणने लगता प्रमाणवाळुं शस्त्र नाखवुं. केटलाएक आचार्यो केहेछे के 'सीवणीने एक जव जेटली दूर छोडी दईने जमणी बाजूमां शस्त्र नाखवुं के जेथी क्रिया सेहेलाइथी थाय.'

पथरी शस्त्रथी के यंत्रथी भेदाई जाय नहीं के चूर्ण थई जाय नहीं एवो प्रयत्न करवो. केम के पथरीनुं चूर्ण पण थोडुंक अवशेष रही जाय तो पाछुं वृद्धि पामे छे. कापेला प्रदेशमांथी पथरीने अतीक्ष्ण अने सर्पना जेवा मोहोडावाळा यंत्रथी आखीने आखी खेंची लेवी.

स्त्रीओने तो मूत्राशयनी बाजूमां नजदीकज गर्भाशय छे एटला माटे स्त्रीओनी पथरी काहाडवामां ऊंचुं के चत्तुं शस्त्र नाखवामां आवे तो मूत्राशयनी त्वचानी साथे गर्भाशयनी त्वचा पण भेदाई जवाथी स्त्रीओने योनिनी अंदर मूत्रनो स्राव करनारो व्रण थाय छे.

पुरुषने तथा स्त्रीने पण जो मूत्राशयना मोहोडा आगल रहेला जे स्थलमां मूत्रनो स्राव थाय छे ते स्थलनुं छेदन थई जाय तो तेमांथी निरंतर मूत्रस्राव थया करे छे.

पथरीने काहाडवाथी जे व्रण थाय छे ते कारण शिवाय बीजा कोई प्रकारथी एक प्रदेशमां पण मूत्राशय भेदाय तो माणस जीवतो नथी अने पथरीने काहाडतां पण जो मूत्राशय बे ठेकाणे भेदाय तो ते पण असाध्यज थई पडे छे. पथरीने काहाडवा माटे मूत्राशयमां एक व्रण थतां पण माणस जीवतो रहेछे तेनुं कारण ए छे के तेना उपर ऊना जळनो स्वेद तथा वड वगेरे क्षीरि वृक्षोना काथनुं सेचन इत्यादिक क्रियाओ

१ वैतरणाचार्य केहे छे के स्त्रीओनी पथरी काहाडवी होय तो प्रवीण वैद्ये मूत्राशयने ऊंचो करी पथरीने नमावीने कूलाना अग्रमां छेदन करवुं ए हितकारी छे. बीजे ठेकाणे छेदन करवामां आवे तो नुकसान थाय छे.

वारंवार थाय छे, पथरीना जेवडाज मुखवाळा शस्त्रथी सीवणीनी डाबी बाजूमां छेद थाय छे अने वृद्धि पामेला मूत्रना स्रावथी वधेली पथरी नीकळी जतां पण ते स्थानमां जामेलो मूत्रनो जथो निश्शेष थई जतो नथी. (शा० अ० ६ वि० २६ मो जुवो.)

पथरीने काहाडी लीधा पछी ते रोगीने ऊना पाणीनी कोठीमां उतारीने स्वेदन आपवुं. आम करवाथी मूत्राशय लोहीथी भराई जतो नथी. स्वेदन आप्या छतां पण मूत्राशय लोहीथी भराई जाय तो वडवगेरे क्षीरिवृक्षोना क्काथनी उत्तरबस्ति देवी. (लिंगमां के योनिमां जे पिचकारी देवामां आवे ते उत्तरबस्ति केहेवाय छे.)

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'उत्तर बस्तिथी दाखल करवामां आवेलो वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनो क्काथ पथरीने तुरत काहाडी नाखे छे अने मूत्राशयमां रहेला रुधिरने पण तुरत काहाडी नाखे छे.'

जेनी पथरी काहाडवामां आवी होय ते माणसने मूत्रनो मार्ग साफ करवा माटे गोळथी तृप्ति आपवी. (गोळवाळो भात खवराववो.)

रोगीने पाणीनी कोठीमांथी काहाडी लई व्रणने मधनो तथा घीनो अभ्यंग करवो अने मूत्रनुं शोधन करनारां औषधोमां पकावेली घीवाळी ऊनी राब पावी. आ राब त्रण दिवस सूधी बब्बे वखत पावी अने ते पछी दश दिवस सूधी सारी पेठे गोलथी मिश्रित करेला दूधनी साथे बेब्बे वखत थोडो थोडो कोमळतावाळो भात जमाडवो के जेथी मूत्रनी तथा रुधिरनी शुद्धि थई जाय अने व्रणनुं क्लेदन थाय. दश दिवस पछी दाडिम वगेरे फळोना रसथी खाटा करेला जांगल प्राणीओना मांसना रसोथी उपचार करवो. पछी दश दिवस सूधी वैद्ये साहुचेती राखीने ए रोगीने स्नेहस्वेदथी अथवा द्रवस्वेदथी स्वेदन देवुं अने वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना क्काथथी एना व्रणने धोवो. लोद्र, जेठीमध, मजीठ अने पांडरवो एओना कल्कोनां व्रण उपर लेपनो करवां. लोद्र, जेठीमध, मजीठ, पांडरवो अने हळद्र एओना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेला तेलनो अथवा घीनो व्रण उपर अभ्यंग करवो. जो रुधिर जामी गयुं होय तो उत्तरबस्तिओथी चिकित्सा करवी. पथरीने काहाड्या पछी सात रात वीत्या छतां पण मूत्र पोताना रस्तापर न आवतुं होय तो व्रणने सूत्रस्थानना १२ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे अग्निथी डांभवो. मूत्र पोताना रस्तापर आवे त्यार पछी काकोली आदि मधुर द्रव्योनी तथा वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी उत्तरबस्तिओ अने निरूहबस्तिओ देवी तथा स्नेहबस्तिओ पण देवी.

१५ यदृच्छया वा मूत्रमार्गप्रतिपन्नामन्तरासक्तां शुक्राश्मरीं शर्करां वा स्रोतसापहरेत्। एवं चाशक्ये विदार्य वा नाडीं शस्त्रेण बडिशेनोद्धरेत् ॥

पथरी जो यदृच्छाथी मूत्रना मार्गमांज आवी गई होय तो तेनी चिकित्सा.

१५ वीर्यनी पथरी अथवा कांकरी जो यदृच्छाथी मूत्रना मार्गमांज आवी गई होय अने अंदर लागी रही होय तो तेने मूत्रना रस्तामांथीज काहाडी लेवी अने जो मूत्रना रस्तामांथी काहाडी शकाय एम न होय तो लिंगमां शस्त्रवते छेदन करीने बडिश नामना यंत्रवते काहाडी लेवी.

१६ रूढव्रणश्चाङ्गनाश्वनगनागरथद्रुमान्नारोहेत वर्षं नाप्सु प्लवेत भुञ्जीत वा गुरु ॥

व्रण रूझाई गया पछी एक वर्षसूधी पाळवानी परेजी.

१६ व्रण रूझाई गया पछी एक वर्षसूधी

१ वड, उंबरो, पीपळो, मोटी पीपर अने पारसपीपळो ए पांच क्षीरिवृक्षो केहेवाय छे.

२ तृणपंचमूली, गोखरू, अने पाषाणभेद इत्यादिक द्रव्यो मूत्रनुं शोधन करनारां छे.

स्त्रीसंग करवो नहीं. घोडा उपर, पर्वत उपर, हाथी उपर, रथ उपर के झाड उपर चडवुं नहीं. पाणीमां तरवुं नहीं अने भारे अन्न जमवुं नहीं.

१७ मूत्रवहशुक्रवहमुष्कस्रोतोमूत्रप्रसेकसेवनीयोनिगुदवस्तीन् परिहरेत् ।

तत्र मूत्रवहच्छेदान्मरणं मूत्रपूर्णबस्तेः । शुक्रवहच्छेदान्मरणं क्लैब्यं वा । मुष्कस्रोत उपघाताद्ध्वजभङ्गः। मूत्रप्रसेकक्षणनान्मूत्रप्रक्षरणम्। सेवनीयोनिच्छेदाद्रुजः प्रादुर्भावः । बस्तिगुदविद्धलक्षणं प्रागुक्तमिति ॥

भवतश्चात्र ।

मर्म्माण्यष्टावसम्बुध्य स्रोतोजानि शरीरिणाम् ।
व्यापादयेद्बहून्मर्त्याञ्छस्त्रकर्माप्टुर्भिषक् ॥
सेवनी शुक्रहरणी स्रोतसी फलयोर्गुदम् ।
मूत्रसेकं मूत्रवहं योनिर्बस्तिस्तथाष्टमः ॥

छेदन करती वखते आठ मर्मोनो बचाव करवानी जरूर अने ते बचाव न थाय तो तेथी नुकसान.

१७ पथरीनुं छेदन करवाना समयमां वैद्ये मूत्रनुं वहन करनारां स्रोत, वीर्यनुं वहन करनारां स्रोत, वृषणनां स्रोत, मूत्रना प्रसेकनुं स्थल, सीवणी, योनि, गुदा अने मूत्राशय एओने छोडी देवां. (एओमां शस्त्रनो घाव न थाय एम करवुं).

जो मूत्रनुं वहन करनारां स्रोतनुं छेदन थई जाय तो मूत्रथी मूत्राशय भराई रेहेतां मरण थाय छे. वीर्यनुं वहन करनारां स्रोतनुं छेदन थई जाय तो मरण थाय छे अथवा नपुंसकपणुं प्राप्त थाय छे. वृषणनां स्रोतनुं छेदन थई जाय तो लिंगनुं उत्थान बंध पडी जाय छे. मूत्रना प्रसेकना स्थलनुं छेदन थई जाय तो मूत्रनो स्राव थयाज करेछे अने सीवणीनुं के योनिनुं छेदन थई जाय तो वेदनानो प्रादुर्भाव थाय छे. मूत्राशयनुं के गुदानुं छेदन थई जाय तो शारीरस्थानना ९ मा अध्यायना आठमा विषयमां कहेलां लक्षणो थाय छे. (मूत्राशयमां कांई वेध थाय तो मूत्राशयमां आनाह थाय छे, मूत्रनो निरोध थाय छे अने उपस्थ स्तब्ध थई जाय छे. गुदामां कांई वेध थाय तो आनाह थाय छे, दुर्गंधपणुं थाय छे अने आंतरडामां ग्रंथि थई जाय छे.)

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'शस्त्रक्रियामां प्रवीणता नहीं पामेलो वैद्य पोताने माणसोना स्रोतोमां रहेलां आठ मर्मोनुं ज्ञान न होवाने लीधे घणां माणसोने मारी नाखे छे. सीवणी, वीर्यनुं वहन करनारां स्रोत, वृषणनां स्रोत, गुदा, मूत्रना प्रसेकनुं स्थल, मूत्रनुं वहन करनारां स्रोत, योनि अने मूत्राशय ए आठ मर्मोनुं रक्षण करवुं जोईए.'

अध्याय ८ मो.

१ अथातो भगन्दराणां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'भगंदरचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पञ्च भगन्दराः ख्यातास्तेष्वसाध्यः शम्बूकावर्त्तः शल्यनिमित्तश्च ये शेषाः कृच्छ्रसाध्याः॥

भगंदरोमां साध्यासाध्यनो विभाग.

२ भगंदरो पांच प्रकारना कह्या छे तेओमां शंबूकावर्त्त नामनो भगंदर अने शल्यथी थएलो (उन्मार्गी नामनो) भगंदर ए बे असाध्य छे. बाकीना त्रण भगंदरो (शतपोनक, उष्ट्रग्रीव अने परिस्रावी) कष्टसाध्य छे.

३ तत्र भगन्दरपिडकोपद्रुतमातुरमपतर्प-

१ भगंदरो के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना चोथा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

णादिविरेचनान्तेनैकादशविधेनोपक्रमेणोपक्रमेतापक्वपिडकम् ॥

भगंदरसंबंधी पिडकानी (फोडलीनी) चिकित्सा.

३ भगंदरसंबंधी फोडलीथी पीडाएला माणसनी ते फोडली पाकी न होय त्यांसूधी आ चिकित्सितस्थानना द्विव्रणीय नामना पेहेला अध्यायना २३ मा विषयमां कहेली अपतर्पणथी मांडीने विरेचनसूधीनी बार प्रकारनी चिकित्सा करवी.

४ पक्वेषु चोपस्निग्धमवगाहस्विन्नं शय्यायां सन्निवेश्यार्शसमिव यन्त्रयित्वा भगन्दरं समीक्ष्य पराचीनमवाचीनं वा बहिर्मुखमन्तर्मुखं वा ततः प्रणिधायैषणीमुन्नम्य साशयमुद्धरेच्छस्त्रेण । अन्तर्मुखे चैवं सम्यग्यन्त्रं प्रणिधाय प्रवाह्यमाणस्य भगन्दरमुखमासाद्यैषणीं दत्त्वा शस्त्रं पातयेत् । आसाद्य वाग्निक्षारं चेत्येतत्सामान्यं सर्वेषु ॥

पाकेली फोडली के जे भगंदर केहेवाय छे तेनी सामान्य चिकित्सा.

४ भगंदरनी फोडली पाके के भेदाय त्यारे रोगीने स्नेहन संस्कार आपी तथा ऊना काथादिकथी भरेली कोठीमां बेसाडवारूप स्वेदन संस्कार आपी, शय्यामां दाखल करी, आ चिकित्सितस्थानना छट्ठा अध्यायना त्रीजा विषयमां जेप्रमाणे अरशवाळाने माटे कह्युं छे तेप्रमाणे निश्चल करी, 'भगंदर ऊंचा मुखवाळो, नीचा मुखवाळो, बाहार मुखवाळो के अंदर मुखवाळो छे?' ए नजरे जोई, पछी एषणी नामनी यंत्राध्यायमां (सूत्रस्थानना ७ मा अध्यायमां) कहेली शलाकाने भगंदरनी अंदर नाखी तेथी भगंदरने ऊंचो करीने शस्त्रवते तेना मूलसहित कापी नाखवो. जो भगंदर अंदर मुखवाळो होय तो अरशना विषयमां कह्याप्रमाणेज रोगीनी पासे दस्तने अधोद्वारथी बाहार काहाडवाना समयना जेवुं जोर करावतां करावतां सारी रीते यंत्रने अंदर दाखल करी भगंदरना मोहोडानो पत्तो मेळवी लई, तेमां एषणी नाखी, भगंदरने ऊंचो करीने शस्त्रवते छेदन करवुं. अथवा भगंदरोना मोहोडाने दृष्टिगोचर करी कबजामां लईने तेना उपर अग्निनो के क्षारनो प्रयोग करवो. आ चिकित्सा सघळा प्रकारना भगंदरोमां सामान्य रीते लागू पाडवानी छे. (भगंदरोने सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायमां छेद्य कह्या छे अने भेद्य पण कहेला छे.)

५ विशेषतस्तु ।

नाड्यन्तरे व्रणान्कुर्याद्भिषक् तु शतपोनके ।
ततस्तेषूपरूढेषु शेषा नाडीरुपाचरेत् ॥
गतयोऽन्योऽन्यसम्बद्धा बाह्याश्छेद्यास्त्वनेकधा ।
नाडीरन्याभिसम्बद्धा यश्छिनत्त्येकधा भिषक् ॥
स कुर्याद्विवृतं जन्तोर्व्रणं गुदविदारणम् ।
तस्य तद्विवृतं मार्गं विण्मूत्रमनुगच्छति ॥
आटोपं गुदशूलं च करोति पवनो भृशम् ।
तत्राधिगततन्त्रोऽपि भिषङ्मुह्येदसंशयम् ॥
तस्मान्न विवृतः कार्यो व्रणस्तु शतपोनके ।
व्याधौ तत्र बहुच्छिद्रे भिषजा वै विजानता ॥
अर्द्धलाङ्गलकश्छेदः कार्यो लाङ्गलकोऽपि वा ।
सर्वतोभद्रको वापि कार्यो गोतीर्थकोऽपि वा ॥
द्वाभ्यां समाभ्यां पार्श्वाभ्यां छेदो लाङ्गलको मतः।
ह्रस्वमेकतरं यच्च सोऽर्द्धलाङ्गलकः स्मृतः ॥
सेवनीं वर्जयित्वा च चतुर्द्धा दारिते गुदे ।
सर्वतोभद्रकं छेदमाहुश्छेदविदो जनाः ॥
पार्श्वागतेन शस्त्रेण छेदो गोतीर्थको भवेत् ।
सर्वतः स्रावमार्गास्तु दहेद्वैद्यस्तथाग्निना ॥
सुकुमारस्य भीरोर्हि दुष्करः शतपोनकः ।
रुजास्रावापहं तत्र स्वेदमाशु प्रयोजयेत् ॥
स्वेदद्रव्यैर्यथोद्दिष्टैः कृशरापायसादिभिः ।
ग्राम्यानूपौदकैर्मांसैर्लावाद्यैर्वापि विष्किरैः ॥
वृक्षादनीमथैरण्डं बिल्वादिं च गणं तथा ।

कषायं सुकृतं कृत्वा स्नेहकुम्भे निषेचयेत् ।
नाडीस्वेदेन तेनास्य तं व्रणं स्वेदयेद्भिषक् ॥
तिलैरण्डातसीमाषयवगोधूमसर्षपान् ।
लवणान्यम्लवर्गं च स्थाल्यामेवोपसाधयेत् ॥
आतुरं स्वेदयेत्तेन तथा सिध्यति कुर्वतः ।
स्विन्नं च पाययेदेनं कुष्ठं च लवणानि च ॥
वचाहिङ्ग्वजमोदं च समभागानि सर्पिषा ।
मार्द्वीकेनाथ वाम्लेन सुरासौवीरकेण वा ॥
ततो मधुकतैलेन तस्य सिञ्चेद्भिषग्व्रणम् ।
परिषिञ्चेद्गुदं चास्य तैलैर्वातरुजापहैः ॥
विधिनानेन विण्मूत्रं स्वमार्गमधिगच्छति ।
अन्ये चोपद्रवास्तीव्राः सिध्यन्त्यत्र न संशयः
शतपोनक आख्यात उष्ट्रग्रीवे क्रियां शृणु ॥

शतपोनकनी विशिष्ट चिकित्सा.

९ जो शतपोनक नामनो भगंदर होय तो वैद्ये वचमां वचमां एक एक नाडीने (परूनुं वहन करनारी नळीने) छोडी दईने बीजी तेवी नळीओमां शस्त्रवते व्रणो करवा. (जो एकी वखते सघळी नळीओमां व्रणो करवामां आवे तो गुदा फाटी जवाथी रोगीनुं मरण थई जाय छे.) बीजी नळीओमां करेला व्रणो रूझाइ गया पछी जे नळीओने छोडी दीधी होय तेओमां व्रणो करवा. (आ स्थलमां डल्हन तो एम व्याख्यान आपे छे के "परूथी भराई जती बे चार नळीओनुं जे मध्य होय तेमां व्रणो करवा अने तेओ रूझाया पछी बीजी नळीओना मध्यमां करवा" पण ए व्याख्यान वाग्भटना अभिप्रायथी विरुद्ध लागे छे.) परस्परनी साथे संबंध धवरावती बाहारनी ? नळीओमां जूदा जूदा प्रकारना छेदो करवा पण सघळी नळीओमां एक प्रकारनाज छेदो करवा नहीं. अन्य नळीओनी साथे संबंध धरावती नळीओने जे वैद्य एक प्रकारथीज कापी नाखे ते वैद्य रोगीनी गुदानुं जेथी विदारण थई जाय एवा फाटेला मोहोडावाळा व्रणने करी दे छे के जेथी विष्टा अने मूत्र ए फाटेला मार्गमांथी नीकळवा लागे छे अने पवन गुदामां भारे शूळने तथा पेटमां प्रबल आध्मानने (आफराने) उत्पन्न करे छे. जो आम बने तो शास्त्रोनो पूर्ण अभ्यासी प्रवीण वैद्य पण तेमां अवश्य मुंझाई जाय छे एटला माटे शतपोनक नामना भगंदरमां व्रणने फाटेला मोहोडावाळो करवो नहीं. प्रवीण वैद्ये घणां छिद्रोवाळा ए शतपोनकमां ते ते प्रदेशने अनुसरीने अर्द्धलांगलक, लांगलक, सर्वतोभद्रक अने गो तीर्थक ए नामना जूदा जूदा छेदो करवा. जे छेदनी बन्ने बाजूओ तुल्य राखवामां आवे ते छेद **लांगलक** केहेवाय छे. जे छेदनी बे बाजूओमां एक बाजू टूंकी राखवामां आवे ते छेद **अर्द्धलांगलक** केहेवाय छे. सीवणीने छोडी दइने गुदानी चार बाजुओमां छेद करवामां आवे ते छेद **सर्वतोभद्र** केहेवाय छे. शस्त्रने एक पडखांथी लगावीने बळदगुतरणा जेवो जे छेद करवामां आवे ते छेद **गोतीर्थक** केहेवाय छे.

छेदो कर्या पछी वैद्ये स्रावना मार्गोने चोतरफ अग्निवते डांभी देवा जोईए के जेथी व्रण पाछो विकृत थायज नहीं. जे रोगी सुकुमार के बीकण होय तेना शतपोनकनी दाहरूप क्रिया दुष्कर थई पडे छे एटला माटे एवा माणसना शतपोनकने काप्या पछी जेथी वेदना अने स्राव शांत थई जाय एवो स्वेदन संस्कार तुरत गोठवी देवो. कृशरा (तल, चोखा तथा अडद एओनी खीचडी) अने दूधपाक इत्यादि स्वेदन औषधो के जेओ आ स्थानना ३२ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे तेओथी अथवा ग्राम्य, आनूप के जलचर प्राणीओनां मांसोथी अथवा लावां वगेरे विष्किर पक्षीओनां मांसोथी स्वेदन संस्कार देवो. (शेक तथा बाफ वगेरे देवां.) बांदो-अपरवृक्ष, एरडो तथा बिल्वादि गण. (आ गण वरुणादि गणना पेटानो छे.) एओनो उत्तम क्काथ बनावीने ते क्काथने स्नेहना रीढा घडामां रेडवो अने पछी

ते घडामां नळी नाखीने वैद्ये ते नळीवते ए माणसना व्रणनुं स्वेदन करवुं. (नाडीस्वेद देवो.) तल, एरडो, अळसी, अडद, जव, घऊं, सर्षप, लवणो अने अम्लवर्ग (सूत्रस्थानना रसविशेषविज्ञानीय नामना ४२ मा अध्यायना १३ मा विषयमां जुवो.) एओने हांडलीमां बाफीने ते क्काथनी वराळथी रोगीने स्वेद संस्कार आपवो. आ प्रमाणे करवाथी वेदनानो तथा स्रावनो नाश थतां रोग शांत थई जाय छे. स्वेद संस्कार आप्या पछी वैद्ये कठ, लवणो, वज, हींग अने बोडी अजमोद एओने समभागे लई घीनी साथे अथवा द्राक्षना मद्यनी साथे अथवा कांजीनी साथे अथवा सामान्य मदिरानी साथे अथवा सौवीरकनी साथे पावां. पछी ए माणसना व्रण उपर जेठीमधना तैलथी सेचन करवुं तथा वायुसंबंधी वेदनाने हणनारां तैलोथी गुदा उपर पण सेचन करवुं. आ प्रमाणे करवाथी रोगीनां विष्टा तथा मूत्र पोतपोताना मार्गने प्राप्त थाय छे अने बीजा तीव्र उपद्रवो पण शांत थई जाय छे एमां कशो संशय नथी. शतपोनक नामना भगंदर उपर आ विशिष्ट क्रिया कही. हवे उष्ट्रग्रीव नामना भगंदर उपर विशिष्ट क्रिया कहुंछुं ते सांभळो.

६ अथोष्ट्रग्रीवमेषित्वा छित्वा क्षारं निपातयेत्
पूतिमांसव्यपोहार्थमग्निरत्र न पूजितः ।
अथैनं घृतसंसृष्टैस्तिलैः पिष्टैः प्रलेपयेत् ॥
बन्धं ततोऽनु कुर्वीत परिषेकं तु सर्पिषा ।
तृतीये दिवसे मुक्त्वा यथास्वं शोधयेद्भिषक् ॥
ततः शुद्धं विदित्वा च रोपयेत्तु यथाक्रमम् ।

उष्ट्रग्रीव नामना भगंदरनी विशिष्ट चिकित्सा.

६ जो उष्ट्रग्रीव नामनो भगंदर थयो होय तो ते भगंदरने शलाकाथी शोधी ऊंचो करी कापीने तेना उपर क्षार पाडवो के जेथी सडेलुं मांस दूर थई जाय. उष्ट्रग्रीव उपर अग्निनो प्रयोग करवो ए सारूं नथी. पछी घीथी संयुक्त करीने वाटेला तिलोनो लेप करी ते उपर छिद्रवाळो गोफणा नामनो पाटो बांधवो अने पाटो बांध्या पछी घीवते सेचन करवुं. वैद्ये त्रीजे दिवसे ए पाटाने छोडीने पछी पित्तने हरनारां द्रव्योथी योग्य रीते शोधन करवुं. ज्यारे व्रण शुद्ध थएलो जाणवामां आवे त्यारे क्रमप्रमाणे तेनुं रोपण करवुं. (धरती लावीने रूझाववो.)

७ उत्कृत्यास्रावमार्गं तु परिस्राविणि बुद्धिमान्
क्षारेण वा स्रावगतिं दहेद्धुतवहेन वा ॥
सुखोष्णेनाणुतैलेन सेचयेद्गुदमण्डलम् ।
उपनाहाः प्रदेहाश्च मूत्रक्षारसमन्विताः ।
वामनीयौषधैः कार्याः परिषेकाश्च मात्रया ॥
मृदुभूतं विदित्वैनमल्पस्रावरुगन्वितम् ।
गतिमन्विष्य शस्त्रेण छिन्द्यात्खर्जूरपत्रकम् ॥
चन्द्रार्धं चन्द्रचक्रं च सूचीमुखमवाङ्मुखम् ।
छित्वाग्निना दहेत्सम्यगेवं क्षारेण वा पुनः ॥
ततः संशोधनैरेव मृदुपूर्वैर्विशोधयेत् ।

परिस्रावी नामना भगंदरनी विशिष्ट चिकित्सा.

७ जो परिस्रावी नामनो भगंदर थयो होय तो बुद्धिमान् वैद्ये वचमां रहेली नळीनी चोतरफ रहेलां स्रावोनां मुखोने शस्त्रवते कापी ते स्रावोनी गतिने क्षारथी अथवा अग्निथी बाळवी. अणुतैल के जे आ स्थानना चोथा अध्यायना २२ मा विषयमां केहेवामां आव्युं छे तेने सेहेवाय तेवुं ऊनुं करीने तेथी गुदाना मंडल उपर सेचन करवुं, गोमूत्रथी तथा क्षारथी संयुक्त करेलां मींढोळ वगेरे औषधोना उपनाहो बांधवा तथा प्रलेपो करवा अने ते मींढोळ वगेरे औषधोना द्रवोथी थोडा थोडा परिषेको पण करवा. स्रावोनां मुखोनो दाह करवा वगेरे आ क्रियाओथी भगंदर

१ सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायनो १९० मो विषय जुवो.

कोमळ, अल्प स्राववाळो तथा अल्प वेदनावाळो थाय त्यार पछी वैद्ये मध्यमां रहेली मुख्य नळीने शलाकावते शोधी ऊंची करीने तेमां शस्त्रवते खजूरीना पानडाना जेवी बे पंक्तिओवाळो, अथवा अर्द्धचंद्र जेवी आकृतिवाळो अथवा चंद्र जेवा गोळ मोहोडावाळो अथवा सोईना जेवा मोहोडावाळो अने जेनुं मोहोडुं नीचे रहे एवो छेद करवो. छेद कर्या पछी उपर कहेली रीति प्रमाणेज फरीवार अग्निवते अथवा क्षारवते सारी रीते दाह करवो. पछी रोगीने प्रथम कोमळ संशोधनोथी शुद्ध करवो अने पछी जो तेनो कोठो क्रूर–कठण जोवामां आवे तो तेने तीक्ष्ण संशोधनोथी शुद्ध करवो.

८ बहिरन्तर्मुखो वापि शिशोर्यस्य भगन्दरः ॥
तस्याहितं विरेकाग्निशस्त्रक्षारावचारणम् ।
यद्यन्मृदु च तीक्ष्णं च तत्तत्तस्यावचारयेत् ॥

बालकने थएला भगंदरनी चिकित्सा.

८ बालकने बाहार मोहोडावाळो के अंदर मोहोडावाळो भगंदर थएल होय तो तेने माटे विरेचन, अग्निक्रिया, शस्त्रक्रिया के क्षारक्रिया हितकारी नथी. जो ए क्रियाओनी जरूर जोवामां आवे तो ए क्रियाओना जे प्रकारो कोमळ पण होय अने तीक्ष्ण पण होय अर्थात् अतिकोमळ पण न होय अने अतितीक्ष्ण पण न होय ते प्रकारोनी योजना करवी. (शस्त्रक्रियानी जरूर होय तो वांसनी सळी वगेरेथी छेदन करवुं अने विरेचननी जरूर होय तो गरमाळा वगेरेनुं विरेचन देवुं इत्यादि.)

९ आरग्वधनिशाकालाचूर्णं मधुघृताप्लुतम् ।
अग्रवर्त्तिप्रणिहितं व्रणानां शोधनं हितम् ॥
योगोऽयं नाशयत्याशु गतिं मेघमिवानिलः ।

भगंदरना व्रणोनुं शोधन करवानो योग.

९ गरमाळो, हळदर अने मजीठ अथवा काळीजीरी एओना चूर्णने मधमां तथा घीमां कालवी, ते वते सूतरनी घाटी वाटने खरडी, ते वाटने व्रणोमां नाखवी ए हितकारी शोधन छे. जेम पवन वादळांने तुरत नष्ट करे तेम आ योग परूनी गतिने तुरत नष्ट करे छे.

१० आगन्तुजे भिषङ् नाडीं शस्त्रेणोत्कृत्य यत्नतः
जाम्बोष्ठेनाग्निवर्णेन तप्तया वा शलाकया ।
दहेद्यथोक्तं मतिमांस्तं व्रणं सुसमाहितः ॥
कृमिघ्नं च विधिं कुर्याच्छल्यानयनमेव च ।
प्रत्याख्यायैष चारभ्यो वर्ज्यश्चापि त्रिदोषजः
एतत्कर्म समाख्यातं सर्वेषामनुपूर्वशः ।

उन्मार्गी नामना भगंदरनी प्रथम ना पाडीने चिकित्सा करवी अने शंबूकावर्त्त नामना भगंदरनी तो चिकित्सा करवीज नहीं.

१० उन्मार्गी नामनो भगंदर के जे आगंतु कारणोथी थाय छे. ते थयो होय तो बुद्धिमान् वैद्ये यत्नपूर्वक शस्त्रवते नळीने कापीने तेने अग्निथी लाल चोळ करेला जांबवौष्ठ नामना पथराथी (जांबूना फळ जेवा अग्रवाळो वाट जेवो लांबो काळो पथरो जांबवौष्ठ केहेवाय छे.) अथवा तपावेली सळीथी डांभवी अने साहुचेत रहीने कीडाओने हणनारी क्रिया पण करवी तथा जो अंदर शल्य होय तो तेने पण काहाडवुं. आ उन्मार्गी नामनो भगंदर असाध्य छे तो पण तेमां वखतपर फावी शकाय एम छे एटला माटे तेनी चिकित्सा करवी पण प्रथम असाध्य जणावी ना पाडीने करवी अने शंबूकावर्त्त नामनो त्रिदोषजन्य भगंदर तो तमाम असाध्यज छे माटे तेनी चिकित्सा तो मुदल करवीज नहीं.

आ सघळा भगंदरोनी क्रिया अनुक्रमथी कही.

११ एषां तु शस्त्रपतनाद्वेदना यत्र जायते ॥
तत्राणुतैलेनोष्णेन परिषेकः प्रशस्यते ।
वातघ्नौषधसंपूर्णां स्थालीं छिद्रशराविकाम् ॥
स्नेहाभ्यक्तगुदस्तत्तामध्यासीत सबाष्पकाम् ।
नाड्या वास्याहरेत्स्वेदं शयानस्य रुजापहम् ॥

उष्णोदकेऽवगाह्यो वा तथा शाम्यति वेदना ।
कदलीमृगलोपाकप्रियकाजिनसंभृतान् ॥
कारयेदुपनाहांश्च शाल्वणादीन् विचक्षणः ।
कटुत्रिकं वचाहिङ्गुलवणान्यथ दीप्यकम् ॥
पाययेद्वाम्लकौलत्थसुरासौवीरकादिभिः ।

सघळा भगंदरोमां शस्त्रपातनी वेदनाओने शांत करवामाटे क्रियाओ.

११ भगंदरोमां शस्त्रपातथी ज्यां वेदना थाय ते स्थल उपर ऊना अणुतैलथी परिषेक करवो ए उत्तम छे. (आ स्थानना चोथा अध्यायनो २२ मो विषय जुवो.)

गुदाने स्नेहनो अभ्यंग करी एक हांडलीमां वायुने हणनारां औषधोनो वराळवाळो क्काथ भरी, उपर छिद्रोवाळुं कोडीयुं ढांकी, ते हांडलीने मांचीनी नीचे राखी रोगीने ते मांचीनी उपर बेसाडीने बाफ लेवराववामां आवे तो शस्त्रपातनी वेदना शांत थई जाय छे.

अथवा वैद्ये शस्त्रपातनी वेदनाथी पीडाता भगंदरना दरदीने सुवडावी तेने नाडीस्वेद आपवो के जेथी शस्त्रपातनी वेदना शांत थई जाय.

अथवा ए दरदीने ऊना पाणीमां बेसाडवो के सुवाडवो एटले तेथी वेदना शांत थई जाय छे.

विचक्षण वैद्ये भगंदरना दरदीने शस्त्रपातनी वेदनाथी मुक्त करवाने माटे कदली नामनो वाघ जेवो काबरचीतरो मृग, लोंकडी के प्रियक नामनो मृग एओनां चामडामां बांधेला शाल्वण-आदि उपनाहो करवा. (शाल्वणनुं स्वरूप आ स्थानना चोथा अध्यायना १९ मा विषयमां जुवो.)

सूंठ, मरी, पीपळ, वज, हींग, सैंधव अने अजमा एओनुं चूर्ण करी कांजी, कळथीनो रस, मदिरा अने सौवीरक इत्यादिकनी साथे पावुं एटले भगंदरमां शस्त्रपातथी थएली वेदना शांत थई जशे.

१२ ज्योतिष्मती लाङ्गलकी श्यामा दन्ती त्रिवृत्तिलाः ॥
कुष्ठं शताह्वा गोलोमी तिल्वको गिरिकर्णिका ।
कासीसकाञ्चनक्षीर्यौ वर्गः शोधन इष्यते ॥
त्रिवृत्तिलानागदन्तीमञ्जिष्ठाः पयसा सह ।
उत्सादनं भवेदेतत्सैन्धवक्षौद्रसंयुतम् ॥
रसाञ्जनं हरिद्रे द्वे मञ्जिष्ठा निम्बपल्लवाः ।
त्रिवृत्तेजोवती दन्ती कल्को नाडीव्रणापहः ॥
कुष्ठं त्रिवृत्तिला दन्ती मागध्यः सैन्धवं मधु ।
रजनी त्रिफला तुत्थं हितं स्याद्व्रणशोधनम् ॥

भगंदरना क्षतोनुं शोधन वगेरे करवाना योगो.

१२ मालकांकणी, दूधीयो वछनाग, काळी नसोतर, नेपाळो, धोळी नसोतर, तिल, कठ, शतावरी, जटामांसी अथवा धोळी दूर्वा, लोदर, गरणी, हीराकसी अने दारूडी एटलां औषधोनो वर्ग भगंदरना क्षतोनुं शोधन करनार छे.

नसोतर, तल, नेपाळो अने मजीठ एओने दूधमां वाटी सैंधवथी तथा मधथी संयुक्त करी क्षतना खाडामां भरवामां आवे तो ते खाडो बूराई जाय छे.

रसवंती, हळदर, दारूहळदर, मजीठ, लींबडानां पानडां, नसोतर, नाहानी मालकांकणी अने नेपाळो एओनो कल्क भगंदरना नाडीव्रणने टाळी नाखे छे.

कठ, नसोतर, तल, नेपाळो, पीपळ, सैंधव, मध, हळदर, त्रिफळा अने रसवंती अथवा मोरथुथु ए गण व्रणनुं शोधन करवामां हितकारी छे.

१३ मागध्यो मधुकं रोध्रं कुष्ठमेला हरेणवः ।
समङ्गा धातकी चैव सारिवा रजनीद्वयम् ॥
प्रियङ्गवः सर्जरसः पद्मकं पद्मकेसरम् ।
सुधा वचा लाङ्गलकी मधूच्छिष्टं ससैन्धवम् ॥
एतान् संभृत्य संभारांस्तैलं धीरो विपाचयेत् ।
एतद्धै गण्डमालासु मण्डलेष्वथ मेहिषु ॥

रोपणार्थं हितं तैलं भगन्दरविनाशनम् ।
न्यग्रोधादिगणश्चैव हितः शोधनरोपणे ॥
तैलं घृतं वा तत्पक्वं भगन्दरविनाशनम् ।
त्रिवृद्दन्ती हरिद्रार्कमूलं लौहाश्वमारकौ ॥
विडङ्गसारं त्रिफला स्नुह्यर्कपयसी मधु ।
मधूच्छिष्टसमायुक्तैस्तैलमेतैर्विपाचयेत् ॥
भगन्दरविनाशार्थमेतद्योज्यं विशेषतः ।
चित्रकार्कौ त्रिवृत्पाठे मलपूं हयमारकम् ।
सुधां वचां लाङ्गलकीं सप्तपर्णं सुवर्चिकाम् ॥
ज्योतिष्मतीं च संभृत्य तैलं धीरो विपाचयेत् ।
एतद्विस्यन्दनं तैलं भृशं दद्याद्भगन्दरे ॥
शोधनं रोपणं चैव सवर्णकरणं तथा ।

भगंदरना व्रणोनुं शोधन तथा रोपण वगेरे करनारां तैलो.

१३ पीपळ, जेठीमध, लोदर, कठ, एळची, हरेणु नामनुं सुगंधी द्रव्य, रीसामणी अथवा मजीठ, धावणी, कपूरी, हळदर, दारूहळदर, घउंलां, राळ, पद्मकाष्ठ, कमळना केसरा, थोर, वज, दूधीयो वछनाग, मीण अने सैंधव एटलां द्रव्योने एकठां करीने धीर वैद्ये तेओना क्वाथथी तथा कल्कथी तैल पकाववुं. आ तैल गंडमाला उपर, मंडलो उपर तथा प्रमेहो उपर व्रणोना रोपणने माटे हितकारी छे अने भगंदरोने पण नष्ट करनारूं छे.

न्यग्रोधादि गण के जे व्रणोना शोधनमां तथा रोपणमां हितकारी छे ते गणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं तैल के घी भगंदरनो विनाश करे छे.

नसोतर, नेपाळो, हळदर, आकडानुं मूळ, अगरु, कणेर, वावडींगनो सार, त्रिफळा, थोरनुं छीर, आकडानुं छीर, मध अने मीण एओथी तैल पकाववुं अने ते तैलनो विशेषे करी भगंदरनो नाश करवा माटे प्रयोग करवो.

चित्रक, आकडो, नसोतर, काळीपाड, काळो उंबरो, कणेर, थोर, वज, दूधीयो वछनाग, सप्तपर्ण, साजीखार अने मालकांकणी एओने एकठां करीने तेओना क्वाथथी तथा कल्कथी तैल पकाववुं. आ तैल दोषोने च्युत करनारूं होवाथी **विस्यंदन** तैल केहेवाय छे. आ विस्यंदन तैलनो भगंदर उपर अत्यंत प्रयोग करवो. आ तैल शोधन करे छे, रोपण करे छे अने व्रणना वर्णने शरीरना वर्ण जेवो बनावी आपे छे.

१४ द्विव्रणीयमवेक्षेत व्रणावस्थासु बुद्धिमान् ॥

भगंदरनी व्रणरूपे स्थिति होय ते समयमां सामान्य चिकित्सानो अतिदेश.

१४ बुद्धिमान् वैद्ये भगंदरोनी व्रणोरूप स्थितिओमां आ चिकित्सितस्थानना द्विव्रणीय नामना पेहेला अध्यायमां कहेली चिकित्साओ उपर ध्यान आपवुं.

१५ छिद्रादूर्ध्वं हरेदोष्ठमर्शोयन्त्रस्य यन्त्रवित् ।
ततो भगन्दरे दद्यादेतदर्धेन्दुसंनिभम् ॥

भगंदरनुं यंत्र अरशना यंत्रमांथीज बनाववुं होय तो थोडोक फेरफार करवाथी बनी जाय छे.

१५ यंत्रविद्याने जाणनारा वैद्ये अरशना यंत्रना होठने ते यंत्रना छिद्रनी पासेना प्रदेशमांथी कापी नाखवो एटले ते अर्द्धचंद्र जेवुं यंत्र बनी जाय छे. आ यंत्रनो भगंदरमां उपयोग करवो.

१६ व्यायामं मैथुनं कोपं पृष्ठयानं गुरूणि च ।
संवत्सरं परिहरेदुपरूढव्रणो नरः ।

भगंदरना व्रणो के व्रण रूझाई गया पछी एक वर्षसुधी पाळवानी परेजी.

१६ जेने भगंदरनो व्रण रूझाई गयो होय ते माणसे एक वर्ष सुधी व्यायाम, (कसरत मेहेनत) मैथुन, कोप, वाहननी पीठपर बेठक अने भारे पडे एवां अन्नादिक एओनो त्याग करवो.

अध्याय ९ मो.

१ अथातः कुष्ठचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कुष्ठचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ विरुद्धाध्यशनासात्म्यवेगविघातैः स्नेहादीनां चायथारम्भैः पापक्रियया पुराकृतकर्मयोगाच्च त्वग्दोषो भवति ॥

कोढनां दूरनां निदानो.

२ विरुद्ध भोजनोथी, अजीर्ण छतां भोजनो करवाथी, सात्म्यवगरनां भोजनादिक करवाथी, मलमूत्रादिकना प्राप्त थएला वेगोनो विघात करवाथी, स्नेहन आदि क्रियाओना मिथ्यायोगादिकथी, वर्तमान जन्मनां पापकर्मोथी अने पूर्वजन्मोनां पापोना योगथी पण त्वचामां दोष उत्पन्न थाय छे.

३ तत्र त्वग्दोषी मांसवसादुग्धदधितैलकुलत्थमाषनिष्पावेक्षुविकाराम्लविरुद्धाध्यशनाजीर्णविदाह्यभिष्यन्दीनि दिवास्वप्नं व्यवायं च परिहरेत् ॥

कोढवाळाए छोडी देवाना आहार विहारो.

३ त्वचाना दोषवाळाए (कोढवाळाए) मांस, चरबी, दूध, दहीं, तैल, कळथी, अडद, चोळा, ओळीया-वाल, गोळ वगेरे शेलडीना पदार्थो, खाटा पदार्थो, विरुद्ध भोजन, अजीर्ण छतां भोजन, अजीर्ण, विदाही पदार्थो, अभिष्यंदी पदार्थो, दिवसनी निद्रा अने मैथुन एओनो त्याग करवो.

४ ततः शालिषष्टिकयवगोधूमकोरदूषश्यामाकोद्दालकादीननवान् भुञ्जीत मुद्गाढक्योरन्यतरस्य यूषेण सूपेन वा निम्बपत्रारुष्करव्यामिश्रेण मण्डूकपर्ण्यवल्गुजाटरूषकरूपिकापुष्पैः सर्पिःसिद्धैः सर्षपतैलसिद्धैर्वा तिक्तवर्गेण वाभिहितेन । मांससात्म्याय वा जाङ्गलमांसममेदस्कं वितरेत् । तैलं वज्रकमभ्यङ्गार्थे । आरग्वधादिकषायमुत्सादनार्थे । पानपरिषेकावगाहादिषु च खदिरकषायमित्येष आहाराचारविभागः ॥

कोढवाळाने माटे आहारादिकनो सामान्य विभाग.

४ कोढवाळाए जूना चोखा, जूना साठी चोखा, जूना जव, जूना घऊं, जूना कोदरा, जूनो सामो अने जूना जंगली कोदरा इत्यादिक धान्योने लींबडानां पानडां तथा भीलामानां बीज एओथी मिश्रित करेला मगना के तुवरना यूषनी साथे जमवां अथवा एओथी मिश्रित करेली मगनी के तुवरनी दाळनी साथे जमवां अथवा घीमां के सरसीया तैलमां पकावेलां ब्राह्मी, बावची, अरडूसो अने आकडानां पुष्पो एओनी साथे जमवां अथवा सूत्रस्थानना ४२ मा अध्यायना १३ मा विषयमां कहेला तिक्तवर्गनी साथे जमवां. कोढवाळो जे माणस मांसना सात्म्यवाळो होय तेने वैद्ये मेदवगरनुं जांगल प्राणीओनुं मांस खावा आपवुं. (जो के कोढवाळाने मांसभक्षणनो निषेध छे तो पण आ वचन उपरथी मेदवगरनुं जांगल प्राणीओनुं मांस खावानो मांसना सात्म्यवाळाने बाध नथी एम समजवुं.) अभ्यंग करवा माटे आ अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलुं वज्रक तैल आपवुं. चोळवाने माटे आरग्वधादि गणनो क्काथ देवो अने पीवामां, परिषेक करवामां तथा अवगाहन आदि करवामां खेरनो क्काथ देवो. कोढवाळा माणसने माटे आ आहारनो तथा आचारनो सामान्य विभाग छे.

---

१ कोढो के जेओनां निदानो तथा लक्षणादिक निदानस्थानना पांचमा अध्यायमां केहेवामां आवेल छे तेओनी चिकित्सा विषयनो. एओमां धातुप्रविष्ट कुष्ठोनी विशिष्ट चिकित्सा तो आ पछीना अध्यायमां केहेवामां आवशे.

५ तत्र पूर्वरूपेषूभयतः संशोधनमासेवेत ॥

कोढनां पूर्वरूपोनी चिकित्सा.

५ कोढनां पूर्वरूपो जोवामां आवे त्यारे वमननुं अने विरेचननुं सेवन करवुं.

६ तत्र त्वक्संप्राप्ते शोधनालेपनानि । शोणितप्राप्ते संशोधनालेपनकषायपानशोणितावसेचनानि । मांसप्राप्ते शोधनालेपनकषायपानशोणितावसेचनारिष्टमन्थप्राशाः । चतुर्थं कर्मगुणप्राप्तं याप्यमात्मवतः संविधानवतश्च । तत्र संशोधनाच्छोणितावसेचनाच्चोर्ध्वं भल्लातकशिलाजतुगुग्गुल्वगुरुतुवरकखदिरासनायस्कृतिविधानमासेवेत । पञ्चमं नैव चोपक्रमेत् ॥

ते ते धातुमां पेठेला कोढनी जूदी जूदी चिकित्सा, मेदमां पेठेला कोढनुं याप्यपणुं अने मेद पछीना धातुओमां पेठेला कोढनुं असाध्यपणुं.

६ कोढ रसमां पेठो होय तो शोधनो तथा आलेपनोरूप चिकित्सा करवी. रुधिरमां पेठो होय तो शोधनो, आलेपनो, क्वाथपानो अने रुधिरनुं स्रावण एओरूप चिकित्सा करवी. मांसमां पेठो होय तो शोधनो, आलेपनो, क्वाथपानो, रुधिरनुं स्रावण, अरिष्ट आसव मदिरा तथा मंथ एओनां पानो अने अवलेहादिकनां भक्षणो एओरूप चिकित्सा करवी. मेदमां पेठो होय तो याप्यज छे माटे तेनी चिकित्सा तोज करवी के जो रोगी सर्वदा शौचाचारथी युक्त होय, अमंगल कार्योमां इच्छावगरनो होय, अपथ्योना परित्यागमां तत्पर रहेनारो होय अने सघळी सामग्रीओथी संपन्न होय. मेदमां पेठेला कोढवाळो रोगी जो उपर कहेला गुणोवाळो होय तोज चिकित्सा ते रोगीने नभावी राखवारूप फळ आपे छे. मेदमां पेठेला कोढने याप्य राखवा माटे संशोधन कर्या पछी अने रुधिरनुं स्रावण कर्या पछी भल्लातकविधान के जे आ स्थानना छठ्ठा अध्यायना २० मा विषयमां कह्युं छे तेनुं, शिलाजितनुं, गुगळनुं, अगरुनुं, आ स्थानना तेरमा अध्यायना चोथा विषयमां कहेला तुवरकविधाननुं अने आ स्थानना दशमा अध्यायमां कहेला खदिरविधाननुं, बींबलाना विधिनुं तथा अयस्कृतिविधाननुं सेवन करावबुं. अस्थि, मज्जा के वीर्य अथवा रज एओमां पठेलो कोढ तो असाध्यज छे माटे तेनी चिकित्सा करवीज नहीं.

७ तत्र प्रथममेव कुष्ठिनं स्नेहपानविधानेनोपपादयेत् । मेषशृङ्गीश्वदंष्ट्राशार्ङ्गेष्टागडूचीद्विपञ्चमूलीसिद्धं तैलं घृतं वा वातकुष्ठिनां पानाभ्यङ्गयोर्विदध्यात् ।

धवाश्वकर्णककुभपलाशपिचुमर्दपर्प्पटकमधुकरोध्रसमङ्गासिद्धं सर्पिः पित्तकुष्ठिनाम् ।

पियालशालारग्वधनिम्बसप्तपर्णचित्रकमरिचवचाकुष्ठसिद्धं श्लेष्मकुष्ठिनाम् ।

भल्लातकाभयाविडङ्गसिद्धं वा सर्वेषाम् । तुवरकतैलं भल्लातकतैलं चेति ॥

ते ते दोषना कोढो उपर खास स्नेहपानो तथा अभ्यंगो.

७ जेने वातजन्य कोढ थएल होय ते माणसने प्रथमज शोधनना अंगरूप स्नेहपान करावी वमनविरेचनादिकथी शुद्ध करवो. मेंढाशींगी, गोखरू, पीलुडी अथवा करंज, गळो अने दशमूळी एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं तेल अथवा घी स्नेहपानमां तथा अभ्यंगमां देवुं. (स्नेहपानमां घी देवुं अने अभ्यंगमां तैल देवुं.)

जेने पित्तजन्य कोढ थएल होय ते माणसने प्रथमज शोधनना अंगरूप स्नेहपान करावी वमन

---

१ अरिष्ट, आसव, सुरा-मदिरा, मंथ तथा अवलेह एओ बनाववाना प्रकारो आ पछीना अध्यायमां केहेवामां आवशे.

विरेचनादिकथी शुद्ध करवो. धावडो, राळनुं झाड, कडायो, खाखरो, लींबडो, खडसलीयो, जेठीमध, लोदर अने रीसामणी एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी स्नेहपानमां तथा अभ्यंगमां देवुं.

जेने कफजन्य कोढ थएल होय ते माणसने प्रथमज शोधनना अंगरूप स्नेहपान करावी वमन विरेचनादिकथी शुद्ध करवो. चारोळी, राळनुं झाड, गरमाळो, लींबडो, सप्तपर्ण, चित्रक, मरी, वज अने कठ एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी स्नेहपानमां तथा अभ्यंगमां देवुं.

अथवा वातजन्य, पित्तजन्य के कफजन्य गमे ते प्रकारनो कोढ जे माणसने थएल होय तेने भीलामां, हरडे अने वावडींग एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी स्नेहपानमां तथा अभ्यंगमां देवुं. अथवा तुवरकनुं (समुद्रना कीनारापर थतां चेरीयानुं) तैल के भीलामानुं तैल स्नेहपानमां तथा अभ्यंगमां देवुं.

८ सप्तपर्णारग्वधातिविषापाठाकटुरोहिण्यमृतात्रिफलापटोलपिचुमर्दपर्पटकदुरालभात्रायमाणामुस्ताचन्दनपद्मकहरिद्रोपकुल्याविशालामूर्वाशतावरीसारिवेन्द्रयवाटरूषकपड्ग्रन्थामधुकभूनिम्बगृष्टिका इति समभागाः कल्कः स्यात्कल्काच्चतुर्गुणं सर्पिः प्रक्षिप्य तद्द्विगुणो धात्रीफलरसस्तच्चतुर्गुणा आपस्तदैकध्यं समालोड्य विपचेदेतन्महातिक्तकं नाम सर्पिः कुष्ठविषमज्वररक्तपित्तहृद्रोगोन्मादापस्मारगुल्मपिडकासृग्दरगलगण्डगण्डमालाश्लीपदपाण्डुरोगविसर्पषाण्ढ्यकण्डूपामादींश्च शमयेदिति ॥

महातिक्तक घृत.

८ सप्तपर्ण, गरमाळो, अतवस, काळीपाड, कडु, गळो, त्रिफळा, पटोल, लींबडो, खडसलीयो, धमासो, त्रायमाण[1], मोथ, रतांजलि, पद्मकाष्ठ[2], हळदर, दारूहळदर, पीपळ, गजपीपळ, इंद्रवारणी, मोरवेल, शतावरी, कपूरी, इंद्रजव, अरडूसो, करंज, जेठीमध, करीयातुं अने वाराहीकंद, एओने समभागे लई तेओनो कल्क करी ते कल्क, कल्कथी चोगणुं घी, घीथी बमणो आमळांनो रस अने आमळांना रसथी चोगणुं जळ एओने एकठां करी घोळी नाखीने पकाववां एटले ते **महातिक्तक** नामनुं घी सिद्ध थाय छे. कोढ, विषमज्वर, रक्तपित्त, छातीना रोग, उन्माद, अपस्मार, गुल्म, पिडका, प्रदर, गलगंड, गंडमाळा, श्लीपद, पांडुरोग, विसर्प, नपुंसकपणुं, खरज अने खस इत्यादिक रोगो आ घीथी शांत थाय छे.

९ त्रिफलापटोलपिचुमन्दाटरूषककटुरोहिणीदुरालभात्रायमाणापर्पटकाश्चैतेषां द्विपलिकान्भागान् जलद्रोणे प्रक्षिप्य पादावशेषं कषायमादाय कल्कपेष्याणीमानि भेषजान्यर्द्धपलिकानि त्रायमाणामुस्तेन्द्रयवचन्दनकिराततिक्तानि पिप्पल्यश्चैतानि घृतप्रस्थे समावाप्य विपचेदेतत्तिक्तकं नाम सर्पिः कुष्ठविषमज्वरगुल्मार्शोग्रहणीदोषशोफपाण्डुरोगविसर्पषाण्ढ्यशमनं चेति ॥

तिक्तक घृत.

९ त्रिफळा, पटोल, लींबडो, अरडूसो, कडु, धमासो, त्रायमाण अने खडसलीयो ए प्रत्येक द्रव्योने आठ आठ तोलांभार लई, कल्क करी, एक हजार चोवीश तोलांभार जळमां नाखी, उकाळी, चोथा भागनुं जळ अवशेष रहे त्यारे ते क्वाथने उतारी लेवो. पछी चोसठ तोलांभार घी

१ त्रायमाण भोंपाथरी जेवुं थाय छे. तेनां पानडां जमीन उपर पथराईने रहे छे अने वचमां ऊभी सळीयो नीकळे छे एम केहेवामां आवे छे.

२ पद्मकनां मोटां झाड थाय छे. तेओनुं लाकडुं काम आवे छे. ए वृक्षोमां फळो थतां नथी एम केहेवाय

लई तेमां त्रायमाण, मोथ, इंद्रजव, रतांजली, करीयातुं अने पीपळ ए प्रत्येक द्रव्योनो बब्बे तोलां-भार कल्क नाखी ते घीने पेला क्वाथमां पकाववुं एटले **तिक्तक** नामनुं घी सिद्ध थाय छे. आ घी कोढने, विषमज्वरने, गुल्मने, अरशने, ग्रहणी-दोषने, सोजाने, पांडुरोगने, विसर्पने तथा नपुंसक-पणाने शांत करे छे.

१० अतोऽन्यतमेन घृतेन स्निग्धस्विन्नस्यैकां द्वे तिस्रश्चतस्रः पंच वा शिरा विध्येन्मण्डलानि चोत्सन्नान्यवलिखेदभीक्ष्णं प्रच्छयेद्वा ।

उपर कहेलां घृतोनो कोढ उपर उपयोग तथा लोहीनुं स्रावण.

१० एओमाना एक घीथी कोढना दरदीने स्निग्ध करी, स्वेदन संस्कार आपी, ते दरदीनी एक, बे, त्रण, चार अथवा पांच शिराओने वींधीने लोहीनो स्राव करवो अथवा उठेलां कोढनां मंडलोने वारंवार खोतरवां अथवा वारंवार शस्त्र-वते टोंचवां.

११ समुद्रफेनशाकगोजीकाकोदुम्बरिका-पत्रैर्वावघृष्यालेपयेल्लाक्षासर्जरसरसाञ्जनप्रपुन्ना-डावल्गुजतेजोवत्यश्वमारकार्ककुटजारेवतमूल-कल्कैर्मूत्रपिष्टैः पित्तपिष्टैर्वा स्वर्जिकातुत्थका-सीसविडङ्गागारधूमचित्रककटुकसुधाहरिद्रा-सैन्धवकल्कैर्वा । एतान्येवावाप्य क्षारकल्पेन निस्रुते पालाशे क्षारे ततो विपाच्य फाणित-मिव संजातमवतार्य लेपयेत् । ज्योतिष्कफल-लाक्षामरिचपिप्पलीसुमनःपत्रैर्वा हरितालमनः-शिलार्कक्षीरतिलशिग्रुमरिचकल्कैर्वा स्वर्जिका कुष्ठतुत्थकुटजचित्रकविडङ्गमरिचमनःशिलाक-ल्कैर्वा हरीतकीकरञ्जिकाविडङ्गसिद्धार्थकलव-णरोचनावल्गुजहरिद्राकल्कैर्वा ॥
सर्वकुष्ठापहाः सिद्धा लेपाः सप्त प्रकीर्त्तिताः ।

कोढो उपर सात सिद्धलेपो.

११ समुद्रफीण, सागनां पानडां, गळजीभीनां (भोंपाथरीनां) पानडां अने काळा उंबरानां पानडां एओथी कोढनां मंडलोने घसीने ते मंड-लोनी उपर लाख, राळ, रसवंती, कुवाडीयानां मूळ, बावचीनां मूळ, तेजबळनां मूळ, कणेरनां मूळ, आकडानां मूळ, इंद्रजवनां मूळ अने गर-माळानां मूळ एओना गायना मूत्रमां के गायना पित्तामां वाटेला कल्कोनो लेप करवो.

अथवा उपर कहेलां पानडांओथी कोढनां मंडलोने घसीने ते मंडलोनी उपर साजीखार, मोरथुथु, हीराकसी, वावडींग, घरना धुमाडानी धूंस, चित्रक, कडु, थोर, हळदर अने सैंधव एओना कल्कोनो लेप करवो.

अथवा साजीखार वगेरे उपर कहेलां द्रव्योने क्षारनी रीतिप्रमाणे स्रवावेला खाखराना क्षारमां नाखी ते क्षारने पकावी राब जेवो थाय त्यारे उतारी लईने ते क्षारनो उपर कहेलां पानडां-ओथी घसेलां कोढनां मंडलोनी उपर लेप करवो.

अथवा उपर कहेलां पानडांओथी कोढनां मंडलोने घसीने तेओनी उपर मालकांकणीनां अथवा रतनजोतनां फळ, लाख, मरी, पीपळ अने जाईनां पानडां एओना कल्कोनो लेप करवो.

अथवा उपर कहेलां पानडांओथी कोढनां मंडलोने घसीने ते मंडलोनी उपर हरताल, मण-शील, आकडानुं छीर, तल, सरगवो अने मरी एओना कल्कोनो लेप करवो.

अथवा उपर कहेलां पानडांओथी कोढनां मंडलोने घसीने ते मंडलोनी उपर साजीखार, कठ, मोरथुथु, इंद्रजव, चित्रक, वावडींग, मरी अने मणशील एओना कल्कोनो लेप करवो.

अथवा उपर कहेलां पानडांओथी कोढनां मंडलोने घसीने ते मंडलोनी उपर हरडे, काकच, वावडींग, सर्षप, सैंधव, गोरोचन, बावची अने हळदर एओना कल्कोनो लेप करवो.

सघळा प्रकारना कोढोने हणनारा आ सात सिद्धलेपो कह्या. (आ लेपोथी कोढोनो नाश अवश्य थाय छे तेथी तेओने 'सिद्धलेप' ए नाम आपेलुं छे.)

१२ वैशेपिकानतस्तूर्द्ध्वं दद्रूश्वित्रेषु मे शृणु ॥
लाक्षा कुष्ठं सर्षपाः श्रीनिकेतम्
रात्रिर्व्योषं चक्रमर्दस्य बीजम् ।
कृत्वैकस्थं तक्रपिष्टः प्रलेपो
दद्रूषूक्तो मूलकाद्बीजयुक्तः ॥
सिन्धूद्भूतं चक्रमर्दस्य बीज-
मिक्षूद्भूतं केशरं तार्क्ष्यशैलम् ।
पिष्टो लेपोऽयङ्कपित्थाद्रसेन-
दद्रूस्तूर्णं नाशयत्येव योगः ॥
हेमक्षीरी व्याधिघातः शिरीषो
निम्बः सर्जो वत्सकः साजकर्णः ।
शीघ्रं तीव्रा नाशयन्तीह दद्रूः
स्नानालेपोद्धर्षणेषु प्रयुक्ताः ॥
भद्रासंज्ञादुम्बरीमूलतुल्यम्
दत्वा मूलं क्षोदयित्वा मलप्वाः ।
सिद्धं तोयं पीतमुष्णे सुखोष्णम्
स्फोटान् श्वित्रे पुण्डरीके च कुर्यात् ॥
द्वैपं दग्धं चर्म मातङ्गजं वा
भिन्ने स्फोटे तैलयुक्तं प्रलेपः ।
पूतिः कीटो राजवृक्षोद्भवेन
क्षारेणाक्तः श्वित्रमेको निहन्ति ॥
कृष्णस्य सर्पस्य मसी सुदग्धा
वैभीतकं तैलमथ द्वितीयम् ।
एतत्समस्तं मृदितं प्रलेपात्
श्वित्राणि सर्वाण्यपहन्ति शीघ्रम् ॥
अध्यर्द्धतोये समतिस्रुतस्य
क्षारस्य कल्पेन तु सप्तकृत्वः ।
तैलं शृतं तेन चतुर्गुणेन
श्वित्रापहं म्रक्षणमेतदग्र्यम् ॥
घृतेन युक्तं प्रपुनाडबीजम्
कुष्ठं च यष्टीमधुकं च पिष्ट्वा ।
श्वेताय दद्याद्गृहकुक्कुटाय
चतुर्थभक्ताय बुभुक्षिताय ॥
तस्योपसंगृह्य च तत्पुरीष-
मुत्पाचितं सर्वत एव लिम्पेत् ।
अभ्यन्तरं मासमिमं प्रयोगम्
प्रयोजयेच्छ्वित्रमथो निहन्ति
क्षारे सुदग्धे गजलेण्डजे तु
गजस्य मूत्रेण बहुस्रुते च ।
द्रोणप्रमाणे दशभागयुक्तम्
दत्वा पचेद्बीजमवल्गुजस्य ॥
एतद्यदा चिक्कणतामुपैति
तदा समस्ता गुटिका विदध्यात्
श्वित्रं प्रलिम्पेदथ संप्रघृष्य
तया व्रजेदाशु सवर्णभावम् ॥
कषायकल्पेन सुभाविता तु
छित्वा त्वचं चूतहरीतकीनाम् ।
तां ताम्रदीपे प्रणिधाय धीमा-
न्वर्त्तिं वटक्षीरसुभाविता तु ॥
आदीप्य तज्जातमसीं गृहीत्वा
तां चापि पथ्याम्भसि भावयित्वा ।
संम्रक्षितं तद्बहुशः किलासम्
तैलेन सिक्तं कटुना प्रयाति ॥
आवल्गुजं बीजमग्र्यं नदीजम्
काकाह्वानोदुम्बरी या च लाक्षा ।
लौहं चूर्णं मागधी तार्क्ष्यशैलम्
तुल्याः कार्याः कृष्णवर्णास्तिलाश्च ॥
वर्त्तिं कृत्वा तां गवां पित्तपिष्टाम्
लेपः कार्यः श्वित्रिणां श्वित्रहारी ।
लेपात्पित्तं शैखिनं श्वित्रहारि
ह्रीवेरं वा दग्धमेतेन युक्तम् ॥
तुत्थालकटुकाव्योषसिंहार्कहयमारकाः ।
कुष्ठावल्गुजभल्लातक्षीरिणीसर्षपाः स्नुही ॥
तिल्वकारिष्टपीलूनां पत्राण्यारग्वधस्य वा ।
बीजं विडङ्गाश्वहन्त्रोर्हरिद्रे बृहतीद्वयम् ॥
आभ्यां श्वित्राणि योगाभ्यां लेपान्नश्यन्त्यशेषतः।

दद्रू तथा श्वित्र (किलास) एओनी उपर विशिष्ट योगो.

१२ हवे दद्रू अने श्वित्र एओनी उपर विशिष्ट प्रयोगो कहुंछुं ते सांभळो. लाख, कठ, सर्षप, चंद्रस-बेरजो, हळदर, सूंठ, मरी, पीपळ, कुवाडीयानां बीज अने मूळानां बीज एओने एकटां करी छाशमां वाटीने लेप करवामां आवे तो तेथी दद्रू नष्ट थई जाय छे.

सैंधव, कुवाडीयानां बीज, गोळ, बोलसरी अने रसवंती एओने कोठना रसमां वाटीने तेओनो लेप करवामां आवे तो तेथी दद्रू तुरतज अवश्य नष्ट थई जाय छे.

दारूडी अथवा पीळीयो, गरमाळो, सरसडीयो, लींबडो, राळ, इंद्रजव-कडो, अने मोटो राळ एओनो नाहावामां, आलेपमां तथा घसवामां प्रयोग करवामां आवे तो तेथी तीव्र दद्रूओ पण तुरत नष्ट थाय छे. (दारूडी वगेरेने खाटी छाशमां अथवा कोठना रसमां वाटवां.)

उष्णकाळमां मोटा काळा उंबरानुं मूळ अने नाहाना काळा उंबरानुं मूळ एओने समभागे लई वाटी पाणीमां उकाळी ते क्काथ सेहेवाय तेवो ऊनो पीने तडकामां बेसवामां आवे तो तेथी श्वित्रमां अने पुंडरीक नामना कोठमां फोडला थाय छे. (सरसीया तैलनो अभ्यंग करी दाडिमना रसनी साथे आ क्काथ पीवो.) ए फोडला भेदाया पछी (मेंढाशींगीनां मूळीयाना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनो अभ्यंग करी) दीपडाना अथवा हाथीना चामडाने बाळी ते मसीने तैलमां कालवीने तेनो प्रलेप करवामां आवे तो तेथी श्वित्र अने पुंडरीक पण नष्ट थई जाय छे.

खडनुं भक्षण करनारो पूतिकीट नामनो काबरचीतरो कीडो के जे वर्षाऋतुमां उत्पन्न थाय छे तेने गरमाळाना क्षारनी साथे मिश्रित करीने तेनो लेप करवामां आवे तो ते एकलोज श्वित्रने नष्ट करी नाखे छे.

काळा सर्पने बाळतां ते ज्यारे अत्यंत काळो थई जाय त्यारे तेनुं चूर्ण करी, ते मसीने बेहेडाना तैलमां काळवी चोळीने तेनो प्रलेप करवामां आवे तो तेथी सघळा प्रकारनां श्वित्रो तुरत नष्ट थई जाय छे.

काळा सर्पने बाळी ते ज्यारे तमाम भस्मरूप थईने सफेद थई जाय त्यारे ते भस्मने क्षारनी रीतिप्रमाणे दोढा पाणीमां नाखी सात वार स्रवावी ए चोगणा क्षारजळमां तैल पकाववुं. आ तैलनुं लेपन श्वित्रनो नाश करवामां मुख्य उपाय छे.

कुवाडीयानां बीज, कठ अने जेठीमध एओने घीमां वाटी कल्क बनावीने ते कल्क दोढ दिवस सूधी भूख्या राखेला सफेद वर्णवाळा घरना कुकडाने खवराववो अने पछी ते कुकडानी चरक लई लेवी. पछी मोटा काळा उंबरानां मूळनो तथा नाहाना काळा उंबराना मूळनो जे क्काथ केहेवामां आव्यो ते क्काथ पावाथी पकावेला श्वित्र उपर चोमेर ते चरकनो नित्य प्रलेप करवो. आ प्रलेप धातुओनी अंदर पेठेला श्वित्रने एक महीनानी अंदर नष्ट करी नाखे छे. (नि० अ० ९ वि० १० मो जुवो.)

हाथीना लादोडाने सारी पेठे बाळी भस्म करी ते भस्मने हाथीनाज मूत्रथी क्षारनी रीतिप्रमाणे घणीवार स्रवावी ते क्षारमूत्र एक हजार चोवीश तोलां भार लई तेमां तेना दशमा भा-

१ पीळीयो ए रेवतचीनीनो शीरो होय एम लागे छे. ए कडवो होय छे अने रंगे पीळो होय छे. एथी जुलाब बहु लागे छे, चकरी आवे छे अने पीळी उलटी पण थाय छे. ग्रंथोमां जे कंकुष्ठ शब्द आवे छे तेनो अर्थ पीळीयो छे एम मानवुं उचित जणाय छे. केटलाएक ग्रंथकारो 'कंकुष्ठ ए हाथीना तुरतना जन्मेला बच्चानुं मळ छे' एम केहे छे अने केटलाएक केहे छे के 'ते घोडाना बच्चानुं नाळ छे' पण ए वात खरी लागती नथी. (निघंटसंग्रह.)

गनां बाबचीनां बीज नाखीने[1] पाक करवो. पाकीने ज्यारे चीकणुं थई जाय त्यारे ते सर्वनी गोळीओ बनाववी. पछी श्वित्रने घसीने तेनी उपर ए गोळीनो लेप करवामां आवे तो तेथी श्वित्र तुरत टळी जाय छे अने शरीरना ते भागनो वर्ण सघळा शरीरना वर्ण जेवो थई जाय छे.

आंबानी तथा हरडेनी छाल कापीने ते छालने तेनाज क्वाथनी सारी पेठे भावना आपवी. पछी त्रांबाना वासणमां सरसीयुं तैल भरी, तेमां रूनी वाटनो दीवो करी, ते दीवाथी पेली छालने बाळी मसी बनावी, ते मसीने वडना छीरनी सारी पेठे भावना आपीने अने ते पछी हरडेना क्वाथनी भावना आपीने, सरसीया तैलथी खरडेला किलास उपर ते मसी वारंवार लगाववामां आवे तो तेथी किलास नष्ट थई जाय छे.

बाबचीनां बीजो, उत्तम सुवर्णमाक्षिक, काळो उंबरो, लाख, लोढानुं चूर्ण, पीपळ अने रसवंती एओने समभागे लई, ते सर्वना वजन जेटला काळा तलमां वाटी, तेनी वाट बनावी, ते वाटने गायना पित्तामां वाटीने तेनो लेप करवामां आवे तो तेथी श्वित्र मटी जाय छे.

मयूर पक्षीना पित्तानो श्वित्र उपर लेप करवामां आवे तो तेथी श्वित्र मटी जाय छे.

वाळो बाळी मयूर पक्षीना पित्तामां वाटीने तेनो श्वित्र उपर लेप करवामां आवे तो तेथी श्वित्र मटी जाय छे.

मोरथुथु, हरताल, कड्डु, सूंठ, मरी, पीपळ, काळो सरगवो, आकडो, कणेर, कठ, बाबची, भीलामुं, दारूडी, सर्षप अने थोर एओने वाटीने श्वित्रो उपर लेप करवाथी सघळां श्वित्रो नष्ट थई जाय छे.

लोदरनां पानडां, लींबडानां पानडां, पीलुनां (खारी जारनां) पानडां, गरमाळानां पानडां, वाडींगनां बीज, सफेद कणेरनां बीज, हळदर, दारूहळदर, ऊभी भोरींगणी अने बेठी भोरींगणी एओने वाटी श्वित्रो उपर लेप करवाथी सघळां श्वित्रो नष्ट थई जाय छे.

१३ वायसीफल्गुतिक्तानां शतं दत्वा पृथक् पृथक् ॥
द्वे लोहरजसः प्रस्थे त्रिफलात्र्याढकं तथा ।
त्रिद्रोणेऽपां पचेद्यावद्भागौ द्वावसनादपि ॥
शिष्टं च विपचेद् भूय एतैः श्लक्ष्णप्रपेषितैः ।
कल्कैरिन्द्रयवव्योषत्वग्दारुचतुरङ्गुलैः ॥
पारावतपदीदन्तीबाकुचीकेशराह्वयैः ।
कण्टकार्या च तत्पक्वं घृतं कुष्ठिषु योजयेत् ॥
दोषधात्वाश्रितं पानादभ्यङ्गात्त्वग्गतं तथा ।
अप्यसाध्यं नृणां कुष्ठं नाम्ना नीलं नियच्छति ॥

नीलघृत.

१३ चारसो तोलां भार पीलुडी, चारसो तोलां भार काळो उंबरो, चारसो तोलां भार कड्डु, एकसो अठ्यावीश तोलां भार लोढानुं चूर्ण, त्रण आढक भार (बसो छपन तोलां भारनुं एक आढक थाय छे.) त्रिफळा अने सर्वथी बमणो बीबलो-बीयो एओनो छ द्रोण भार (एक हजार चोवीश तोलां भारनो एक द्रोण थाय छे.) पाणीमां क्वाथ करवो. उकळतां उकळतां चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे तेने गाळी लई ते क्वाथमां इंद्रयव, सूंठ, मरी, पीपळ, तज, दारूहळदर, गरमाळो, मालकांकणी, नेपाळो, बाबची, बोलसरी अने भोरींगणी एओनो कल्क नाखी ते क्वाथथी तथा कल्कथी घी पकाववुं. ए घी **नीलघृत** केहेवाय छे. आ घी पावामां आवे तो माणसीनो दोषोना तथा धातुओना आश्रयमां रहेलो असाध्य कोढ पण नष्ट थई जाय छे अने आ घीनो अभ्यंग कराववामां आवे तो त्वचामां रहेलो असाध्य कोढ पण नष्ट थई जाय छे.

---

१ वाग्भटनो टीकाकार तो एम केहेछे के बावचीनां बीजोने तेओना दश भाग जेटला क्षारमां पकाववां.

१४ त्रिफला त्वक् त्रिकटुका सुरसा मदयन्तिका।
वायस्यारग्वधानां च तुलां कुर्यात्पृथक् पृथक् ।
काकमाच्यर्कवरुणदन्तीकुटजचित्रकान् ।
दार्वीनिदिग्धिकाभ्यां तु पृथग्दशपलं तथा ॥
त्रिद्रोणेऽपां पचेद्यावत्षट्प्रस्थं परिशेषितम् ।
शकृद्रसदधिक्षीरमूत्राणां पृथगाढकम् ॥
तद्वद्घृतस्य तत्साध्यं भूनिम्बव्योषचित्रकैः ।
करञ्जफलनीलीकाश्यामावल्गुजपीलुभिः ॥
नीलिनीनिम्बकुसुमैः सिद्धं कुष्ठापहं घृतम् ।
म्रक्षणादङ्गसावर्ण्यं श्वित्रिणां जनयेन्नृणाम् ॥
भगन्दरं कृमीनर्शो महानीलं नियच्छति ।

महानील घृत.

१४ त्रिफळा, तज, सूंठ मरी पीपळ, तुलसी, डोलर अथवा मेंदी, मोटी करंज अने गरमाळो ए प्रत्येक द्रव्योने चारसो चारसो तोलां भार लेवां. पीलुडी, आकडो, वायवरणां, नेपाळो, इंद्रजव, चित्रक, दारूहळदर अने भोरींगणी ए प्रत्येक द्रव्योने चाळीस चाळीस तोलां भार लेवां. ए सर्वने छ द्रोण भार पाणीमां उकाळी छ प्रस्थ (चोसठ तोलां भारनुं एक प्रस्थ थाय छे.) पाणी अवशेष राखवुं. पछी तेमां गायना छाणनो रस, गायनुं दही, गायनुं दूध तथा गायनुं मूत्र ए प्रत्येकने एक एक आढक भार नाखी अने करीयातुं, सूंठ, मरी, पीपळ, चित्रक, करंजनां फळ, गळी, नसोतर, बावची, पीलु, बीजी जातनी गळी अने लींबडानां फूल एओनो कल्क नाखीने ते काथमां एक आढक भार गायनुं घी पकाववुं. ए घी सिद्ध थाय त्यारे **महानील घृत** केहेवाय छे. आ महानीलघृत कोढने हणे छे अने भगंदर, कृमिओ तथा अरशो एओने पण हणे छे. श्वित्रना रोगीओ आ घीनो अभ्यंग करे तो श्वित्र मटी जईने तेओना श्वित्रवाळा भागनो असलना जेवो वर्ण थई जाय छे.

१५ मूत्रं गव्यं चित्रकव्योषयुक्तम्
सर्पिःकुम्भे क्षौद्रयुक्तं स्थितं हि ।
पक्षादूर्ध्वं श्वित्रिभिः पेयमेतत्
कुर्याच्चास्मिन्कुष्ठदिष्टं विधानम् ॥

गोमूत्रारिष्ट.

१५ गायना मूत्रने चित्रक, सूंठ, मरी तथा पीपळ एओथी संयुक्त करी तथा मधथी मिश्रित करीने घीना रीढा घडामां एक पखवाडीयासूधी राखी मूकवुं. पछी ए गोमूत्रनुं अरिष्ट नित्य पावुं अने कोढ टाळवानेमाटे जे आहारविहारादिकनो विधि कह्यो छे ते पळाववो. आ प्रमाणे करवाथी कुष्ठ टळी जाय छे. (चित्रक, सूंठ, मरी तथा पीपळ एओनी एटलीज मात्रा नाखवी के जेटली मात्राथी अरिष्टमां कांईक तीखाश थाय.)

१६ पूतीकार्कस्नुग्नरेन्द्रद्रुमाणाम्
मूत्रैः पिष्टाः पल्लवाः सौमनाश्च ।
लेपः श्वित्रं हन्ति दद्रूव्रणांश्च
दुष्टान्यर्शांस्येव नाडीव्रणांश्च ॥

पूतीकादिलेप.

१६ चरेलकरंज, आकडो, थोर, गरमाळो अने जाई एओनां पानडांओने गोमूत्रमां वाटी तेनो लेप करवामां आवे तो तेथी श्वित्र, दद्रू, व्रणो, दुष्ट अरशो अने नाडीव्रणो पण मटी जाय छे.

१७ अस्मादूर्ध्वं निःस्रुते दुष्टरक्ते
जातप्राणं सर्पिषा स्नेहयित्वा ।
तीक्ष्णैर्योगैश्छर्दयित्वा प्रगाढम्
पश्चाद्दोषं निर्हरेच्चाप्रमत्तः ॥
दुर्वान्तो वा दुर्विरिक्तोऽथ वा स्या-
त्कुष्ठी दोषैरुद्धतैर्व्याप्तदेहः ।
निःसन्दिग्धं यात्यसाध्यत्वमाशु
तस्मात्कृत्स्नान्निर्हरेत्तस्य दोषान् ॥
पक्षात्पक्षाच्छर्दनान्यभ्युपेया-
न्मासान्मासात्स्रंसनं चापि देयम् ।
स्राव्यं रक्तं वत्सरे हि द्विरल्पम्
नस्यं दद्याच्च त्रिरात्रात्त्रिरात्रात् ॥

कोढवाळाने वारंवार वमनविरेचनोनी तथा लोहीना स्रावणनी जरूर.

१७ वमन तथा विरेचन दीधा पछी अने लोहीनो स्राव कर्या पछी पण ज्यारे ते कोढवाळो माणस शक्तिमान् थएलो जणाय त्यारे साहुचेतीवाळा वैद्ये फरीवार पण तेने घी पीवराववाथी स्निग्ध करी तीक्ष्ण योगोथी अत्यंत वमन करावीने विरेचनथी तथा लोहीना स्रावणथी तेना दोषनुं शोधन करवुं. जो कोढनो दरदी वमनना असम्यग्योगवाळो अथवा विरेचनना असम्यग्योगवाळो रही गयो होय तो उद्धत थएला दोषोथी घेराईने अवश्य असाध्यपणाने प्राप्त थाय छे माटे वैद्ये ते दरदीना सघळा दोषोनुं सारी पेठे निर्हरण करवुं जोईए. ए दरदीने पखवाडीए पखवाडीए वमन करावकुं, महीने महीने विरेचन देवुं, एक वर्षमां बे वार थोडुं थोडुं लोही स्रवाववुं अने त्रण त्रण दिवसे नस्य आप्या करवुं.

१८ पथ्यां व्योषं सेक्षुजातं सतैलम्
लीढ्वा शीघ्रं मुच्यते कुष्ठरोगात् ।
धात्रीपथ्याक्षोपकुल्याविडङ्गान्
क्षौद्राज्याभ्यामेकतो वावलिह्यात् ॥
पीत्वा मासं वा पलांशां हरिद्राम्
मूत्रेणान्तं पापरोगस्य गच्छेत् ।
एवं पेयश्चित्रकः श्लक्ष्णपिष्टः
पिप्पल्यो वा पूर्ववन्मूत्रयुक्ताः ॥
तद्वत्ताक्ष्यं मासमात्रं च पेयम्
तेनाजस्रं देहमालेपयेच्च ।
आरिष्टत्वक्साप्तपर्णी च तुल्या
लाक्षा मुस्तं पञ्चमूल्यौ हरिद्रे ॥
मञ्जिष्ठाक्षौ वासका देवदारु
पथ्यावह्नी व्योषधात्रीविडङ्गम् ।
सामान्यांशं योजयित्वा विडङ्गै-
श्चूर्णं कृत्वा तत्पलोन्मानमश्नन् ॥
कुष्ठाज्जन्तुर्मुच्यते त्रैफलं वा
सर्पिर्द्रोणं व्योषयुक्तं च युञ्जन् ।
गोमूत्राम्बुद्रोणसिद्धेऽक्षपीडे
सिद्धं सर्पिर्नाशयेच्चापि कुष्ठम् ॥
आरग्वधे सप्तपर्णे पटोले
सवृक्षके नक्तमाले सनिम्बे ।
जीर्णे पक्वं तद्धरिद्राद्वयेन
हन्यात्कुष्ठं मुष्कके चापि सर्पिः ॥

कोढना दरदीने माटे प्रायोगिक योगो.

१८ हरडे, सूंठ, मरी, पीपळ अने गोळ एओने तेलमां कालवीने चटाडवामां आवे तो माणस कोढमांथी तुरत मुक्त थई जाय छे. (जो के तेल अने गोळ एओ कोढने उत्पन्न करनारां छे तोपण हरडे वगेरेना संयोगने लीधे कोढने हरनारां थाय छे. केम के संयोगशक्तिनो महिमा अचिंत्य छे. डल्लन.)

आमळां, हरडे, बहेडां, पीपळ अने वावडींग एओना चूर्णने मधमां तथा घीमां अथवा मधमां के घीमां कालवीने चटाडमां आवे तो तेथी कोढ टळी जाय छे.

एक महिना सूधी नित्य चार चार तोलां भार हळदर लई तेने गोमूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी कोढनो अंत आवे छे.

चित्रकने अथवा पीपळने बारीक वाटी एक महिनासूधी नित्य गोमूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी कोढ टळी जाय छे.

एक महिनासूधी नित्य रसवंतीने वाटी गोमूत्रनी साथे पावामां आवे अने तेनोज निरंतर लेप करवामां आवे तो तेथी कोढ टळी जाय छे.

लींबडानी छाल, सप्तपर्णनी छाल, लाख, मोथ, दशमूळी, हळदर, दारूहळदर, मजीठ, बेहेडां, अरडूसी, देवदार, हरडे, चित्रक, सूंठ मरी पीपळ, आमळां अने वावडींग एओने समभागे लई, तेमां वावडींगनो एक बीजो भाग पण नाखी, चूर्ण करीने ते चूर्ण एक महिनासूधी नित्य चार चार तोलां भार खवराववामां आवे तो तेथी कोढ मटी जाय छे.

त्रिफळानुं चूर्ण करी ते चूर्ण एक महिना-सूधी नित्य चार चार तोलां भार खवराववामां आवे तो तेथी कोढ टळी जाय छे.

एक हजार चोवीश तोलां भार घीने सूंठ, मरी तथा पीपळ एओथी संयुक्त करीने तेमांथी नित्य चार चार तोलां भार खवराववामां आवे तो तेथी कोढ टळी जाय छे.

शंखवेल (आंखफुटामणी)नो एक हजार चोवीश तोलां भार गोमूत्रमां क्राथ करी, ते क्राथथी घी पकावीने ते घीनो नित्य उपयोग कराववामां आवे तो तेथी कोढ नष्ट थई जाय छे.

गरमाळो, सप्तपर्ण, पटोल, इंद्रजव, करंज, लींबडो, हळदर, दारूहळदर अने मखरो एओना क्राथमां पकावेलुं जूनुं घी नित्य खवराववामां आवे तो तेथी कोढ टळी जाय छे.

१९ रोध्रारिष्टं पद्मकं रक्तसारः
सप्ताह्वाक्षौ वृक्षको बीजकश्च ।
योज्याः स्नाने दह्यमानस्य जन्तोः
पेया वा स्यात्क्षौद्रयुक्ता त्रिभण्डी ॥

पित्तना बहुत्वने लीधे तथा निर्बलपणाने लीधे कोढमां दाह थतो होय तो ते दाहने शांत करवानो योग.

१९ कोढना दरदीने दाह थतो होय तो तेने लोदर, अरीठा, पद्मकाष्ठ, रतांजलि, सप्तपर्ण, बेहेडां, इंद्रजव-कडो अने बीबलो एओथी संयुक्त करेला जळथी स्नान कराववुं अथवा नसोतरना चूर्णने मधथी संयुक्त करीने पावुं.

२० खादेत्कुष्ठी मांसपाते पुराणा-
न्मुद्गान्सिद्धान्निम्बतोये सतैलान् ।
निम्बक्वाथं जातसत्वः पिबेद्वा
क्वाथं वार्कालर्कसप्तच्छदानाम् ॥
जग्धेष्वङ्गेष्वश्वमारस्य मूलम्
लेपो युक्तः स्याद्विडङ्गैः समूत्रैः ।
मूत्रैश्चैनं सेचयेद्भोजयेच्च
सर्वाहारान्संप्रयुक्तान्विडङ्गैः ॥
कारञ्जं वा सार्षपं वा क्षतेषु
क्षेप्यं तैलं शिग्रुकोशाम्रयोर्वा ।
पक्कं सर्वैर्वा कटूष्णैः सतिक्तैः
शेषं च स्याद् दुष्टवत्संविधानम् ॥

कोढवाळानुं मांस खरी पडतुं होय के कीडा पड्या होय तो ते उपर योगो.

२० मांस खरी पडतुं होय तो जूना मगने लींबडानां पाणीमां रांधीने तैलनी साथे खवराववा.

कीडा पड्या होय तो लींबडानो क्राथ पावो अथवा आकडो, सफेद फूलनो आकडो अने सप्तपर्ण एओनो क्राथ पावो.

कीडाओ अंगोने खाई जता होय तो कणेरनां मूळ अने वावडींग एओने गोमूत्रमां वाटीने तेओनो लेप कराववो, गोमूत्रोथी सघळां अंगोपर सेचन करवुं अने सघळा आहारो वावडींगोथी संयुक्त करीने खवराववा. अथवा व्रणोमां करंजीयुं तेल, सरसीयुं तैल, सरगवानुं तैल के जंगली लाल आंबानुं तैल नाखवुं-अथवा करंजीया तैलने, सरसीया तैलने, सरगवाना तैलने के जंगली लाल आंबाना तैलने सघळा कटु, उष्ण तथा तिक्त पदार्थोना क्राथथी तथा कल्कथी पकावीने व्रणोमां नाखवुं अने बाकी सघळी दुष्ट व्रणना जेवी चिकित्सा करवी.

२१ सप्तपर्णकरञ्जार्कमालतीकरवीरजम् ।
स्नुहीशिरीषयोर्मूलं चित्रकास्फोतयोरपि ॥
विपलाङ्गलवज्राख्यकासीसालमनःशिलाः ।
करञ्जबीजं त्रिकटु त्रिफलां रजनीद्वयम् ॥
सिद्धार्थकान्विडङ्गानि प्रपुन्नाडं च संहरेत् ।
मूत्रपिष्टैः पचेदेतैस्तैलं कुष्ठविनाशनम् ॥
एतद्वज्रकमभ्यङ्गान्नाडीदुष्टव्रणापहम् ।

वज्रकतैल (अभ्यंगमाटे.)

२१ सप्तपर्णनां मूळ, करंजनां मूळ, आक-

डानां मूळ, मालतीनां मूळ, कणेरनां मूळ, थोरनां मूळ, सरसडीआनां मूळ, चित्रकनां मूळ, कपूरीनां मूळ, वछनाग, दूधीयो वछनाग, सफेद अभ्रक, हीराकसी, हरताल, मणशील, करंजनां बीज, सूंठ मरी पीपळ, त्रिफळा, हळदर, दारूहळदर, सर्षप, वावडींग अने कुवाडीयो एओने एकठां करी गोमूत्रमां वाटी कल्क करी ते कल्क नाखीने चोगणा गोमूत्रमां तलनुं तैल पकाववुं. (गयदासाचार्य केहेछे के सरसीयुं तैल पकाववुं.) आ तैल सिद्ध थाय त्यारे **वज्रकतैल** केहेवाय छे. आ तैल अभ्यंगथी कोढनो विनाश करे छे अने नाडीव्रणोनो तथा दुष्ट व्रणोनो पण विनाश करे छे.

२२ सिद्धार्थकः करञ्जौ द्वौ द्वे हरिद्रे रसाञ्जनम्
कुटजश्च प्रपुन्नाडसप्तपर्णौ मृगादनी ।
लाक्षा सर्जरसोर्कश्च आस्फोतारग्वधौ स्नुही ।
शिरीषस्तुवराख्यस्तु कुटजारुष्करौ वचा ॥
कुष्ठं कृमिघ्नं मञ्जिष्ठा लाङ्गली चित्रकं तथा ।
मालती कटुतुम्बी च गन्धाह्वा मूलकं तथा ॥
सैन्धवं करवीरं च गृहधूमो विषं तथा ॥
कम्पिल्लकं ससिन्दूरं तेजोह्वातुत्थकाह्वये ।
समभागानि सर्वाणि कल्कपेष्याणि कारयेत् ॥
गोमूत्रं द्विगुणं दद्यात्तिलतैलाच्चतुर्गुणम् ।
कारञ्जं वा महावीर्यं सार्षपं वा महागुणम् ॥
अभ्यङ्गात्सर्वकुष्ठानि गण्डमाला भगन्दरान् ।
नाडीदुष्टव्रणान्घोरान्नाशयेन्नात्र संशयः ॥
महावज्रकमित्येतन्नाम्ना तैलं महागुणम् ।

महावज्रक तैल (अभ्यंगमाटे.)

२२ सर्षप, बन्ने जातनी करंज, हळदर, दारूहळदर, रसवंती, इंद्रजव, (बे भाग) कुवाडीओ, सप्तपर्ण, इंद्रवारणी, लाख, राळ, आकडो, उपलसरी-कपूरी, गरमाळो, थोर, सरसडीयो, चेरीयां, भीलामां, वज, कठ, वावडींग, मजीठ, दूधीयो वछनाग, चित्रक, मालती, कडवी तूंबडी, घउलां के जंगली तुळसी, मूळानां बीज, सैंधव, कणेर, घरना धुमाडानी धूंस, वछनाग, कपीलो, सींदोर, मालकांकणी अने मोरथुथु ए सघळां द्रव्योने समभागे लई कल्क करी ते कल्क नाखीने बमणा गोमूत्रमां तैल पकाववुं. तलनुं तैल पकाववुं होय तो चोगणा गोमूत्रमां पकाववुं. आ प्रमाणे पकावेलुं तलनुं तैल अथवा मोटी शक्तिवाळुं करंजीयुं तैल अथवा मोटा गुणवाळुं सरसीयुं तैल **महावज्रक** तैल केहेवाय छे. आ मोटा गुणोवाळुं तैल अभ्यंगथी सघळा कोढोनो, गंडमालानो, भगंदरोनो, घोर नाडीव्रणोनो अने बीजा दुष्ट व्रणोनो पण विनाश करे छे एमां कशो संशय नथी.

२३ पित्तावापैर्मूत्रपिष्टैस्तैलं लाक्षादिकैः कृतम् ॥
सप्ताहं कटुकालाब्वां निदधीत चिकित्सकः ।
पीतवन्तं ततो मात्रां तेनाभ्यक्तं च मानवम् ॥
शोषयेदातपे तस्य दोषा गच्छन्ति सर्वशः ।
स्रुतदोषं समुत्थाप्य स्नातं खदिरवारिणा ।
यवागूं पाययेदेनं साधितां खदिराम्बुना ।

लाक्षादिक तैल (पीवामाटे.)

२३ सूत्रस्थानना ३८ मा अध्यायमां कहेला लाक्षादि गणने अथवा आ अध्यायना ११ मा विषयमां कहेला लाखथी मांडीने गरमाळाना मूळसूधीना पदार्थोने गोमूत्रमां वाटी, कल्करूप करी, ते कल्क नाखीने चोगणा गोमूत्रमां वैद्ये गायना पित्ताना प्रतिवापवाळुं तैल पकाववुं. ए तैल सिद्ध थाय त्यारे **लाक्षादितैल** केहेवाय छे. आ तैलने सात दिवससूधी कडवी तूंबडीमां राखी मेलीने पछी कोढना दरदीने तेनी मात्रा पावी तथा शरीरपर अभ्यंग कराववो अने पछी ते माणसने तडकामां बेसाडी मूकवो. आम करवाथी सघळा दोषो स्रवी जाय छे. दोषो स्रवी गया पछी ते माणसने तडकामांथी उठाडी खेरना थंडा जळथी नवरावयो अने पछी खेरना जळथी पकावेली यवागू पावी. (तडकाथी तपेला

माणसने टाढा जळमां पडवुं निषिद्ध छे पण टाढुं पाणी शरीर उपर रेडीने नाहावुं निषिद्ध नथी.) आ क्रिया करवाथी कोढसंबंधी दुष्ट व्रणोनुं अंतःशोधन थई जाय छे.

२४ एवं संशोधने वर्गे कुष्ठघ्नेष्वौषधेषु च ॥
कुर्यात्तैलानि सर्पींषि प्रदेहोद्धर्षणानि च ।

कोढोने टाळवामाटे बीजां पण तैलो, घृतो, प्रलेपो तथा उद्घर्षणो (चोळवानां तथा घसवानां औषधो) बनाववामां द्रव्योनो निर्देश.

२४ एवी रीते सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायमां कहेलां नसोतर वगेरे संशोधन द्रव्योथी तथा कोढोने हणनारां औषधोथी बीजां पण तैलो, घृतो, प्रलेपो तथा उद्घर्षणो बनावी लेवां.

२५ प्रातः प्रातश्च सेवेत योगान्वैरेचनाञ्छुभान् ।
पञ्च षट् सप्त चाष्टौ वा यैरुत्थानं न गच्छति ।

कोढवाळाए विरेचनना योगोनुं सेवन करवुं.

२५ कोढना दरदीए प्रभाते प्रभाते जेओथी पांच, छ, सात के आठ वार दस्त लागे एवा उत्तम विरेचनना योगोनुं सेवन करवुं जोईए के जेओथी कोढ उत्थान पामे नहीं.

२६ कारभं वा पिबेन्मूत्रं जीर्णे तु क्षीरभोजनम् ।
जातसत्वानि कुष्ठानि मासैः षड्भिरपोहति ।

कृमिवाळा कोढो उपर ऊंटडीना मूत्रनो प्रयोग.

२६ कोढना दरदीने नित्य उंटडीनुं मूत्र पावुं अने ते जीर्ण थया पछी दूधसहित अन्न'जमाडवुं. आ प्रयोग करवामां आवे तो जेओमां कीडा उत्पन्न थया होय एवा कोढो छ महिने मटी जाय छे.

२७ दिदृक्षुरन्तं कुष्ठस्य खदिरं कुष्ठपीडितः ॥
सर्वथैव प्रयुञ्जीत स्नानपानाशनादिषु ।
यथा हन्ति प्रवृद्धत्वात्कुष्ठमातुरमोजसा ॥
तथा हन्त्युपयुक्तस्तु खदिरः कुष्ठमोजसा ।

कोढ उपर खेर सर्वथा उपयोगी छे.

२७ कोढथी पीडाएला माणसे कोढनो छेडो जोवानी इच्छा होय तो स्नान, पान तथा भोजन वगेरेमां सर्वथा खेरनो अवश्य उपयोग करवो. जेम वृद्धि पामेलो कोढ पोताना प्रबल सामर्थ्यथी रोगीने हणी नाखे छे तेम स्नान, पान तथा भोजन वगेरेमां उपयुक्त करवामां आवेलो खेर पोताना प्रबल सामर्थ्यथी कोढने हणी नाखे छे.

२८ नीचरोमनखोऽश्रान्तो हिताश्यौषधतत्परः
योषिन्मांससुरावर्जी कुष्ठी कुष्ठमपोहति ।

कोढना दरदीए पाळवाना नियमो.

२८ कोढना दरदीए नखो तथा मूछो वगेरेना वाळ नीचा राखवा, उपायो करवाथी कंटाळवुं नहीं, पथ्य भोजन करवुं, औषधोमां तत्पर रहेवुं अने मैथुननो, मांसनो तथा अविहित मदिरानो त्याग करवो. आ नियमो पाळवाथी कोढनो नाश थाय छे.

अध्याय १० मो.

१ अथातो महाकुष्ठचिकित्सितं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'महाकुष्ठचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ कुष्ठेषु मेहेषु कफामयेषु
सर्वाङ्गशोफेषु च दारुणेषु ।
कृशत्वमिच्छत्सु च मेदुरेषु
योगानिमानग्र्यमतिर्विदध्यात् ॥

१ मोटा कोढोनी एटले धातुओनी अंदर पेटेला कोढोनी चिकित्सा विषयनो.

कोढ आदि दारुण रोगो उपर तथा मेद उपर आ अध्यायमां कहेला योगो करवानी वैद्यने भलामण.

२ अत्यंत प्रवीण बुद्धिवाळा वैद्ये दारुण कोढो उपर, दारुण प्रमेहो उपर, कफसंबंधी दारुण रोगो उपर, सर्व शरीरमां थएला दारुण सोजाओनी उपर अने मेदनी वृद्धिथी स्थूल थई गएला लोको के जेओ कृश थवानी इच्छा करता होय तेओना मेदने नष्ट करवा उपर, नीचे कहेला योगोना प्रयोगो करवा.

३ क्षुण्णान्यवान्निःपूतान् रात्रौ गोमूत्रपर्युषितान्महति किलिञ्जे शोषयेदेवं सप्तरात्रं भावयेच्छोषयेच्च ततस्तान् कपालभ्रष्टान् सक्तून् कारयित्वा प्रातः प्रातरेव कुष्ठिनं प्रमेहिणं वा सालसारादिकषायेण कण्टकिवृक्षकषायेण वा पाययेत भल्लातकप्रपुन्नाडावल्गुजार्कचित्रकविडङ्गमुस्तचूर्णचतुर्भागयुक्तान् ।

एवमेव सालसारादिकषायपरिपीतानामारग्वधादिकषायपरिपीतानां वा गोशकृद्धृतानां वा यवानां सक्तून् कारयित्वा भल्लातकादीनां चूर्णान्यावाप्य खदिरासननिम्बराजवृक्षरोहितकगडूचीनामन्यतमस्य कषायेण शर्करामधुमधुरेण द्राक्षायुक्तेन दाडिमवेतसाम्लेन सैन्धवलवणान्वितेन पाययेदेष सर्वमन्थकल्पः ॥

यवमंथ[1]नी तथा ते प्रमाणेज बीजा मंथोनी कल्पना.

३ जवने खांडणीयामां ओखणी, फोतरां काहाडी नाखी, राते गोमूत्रमां वासीने राखी मूकवा अने दिवसे वांसना सूंडलामां नाखीने सुकाववा. आ प्रमाणे सात रातमां सात वार भावना देवी अने सात दिवसमां सात वार सुकाववा. पछी तेओने ठीबडामां शेकी, साथवारूप करावी, तेमां तेना चोथा भाग जेटलुं भीलामां, कुवाडीओ, बाबची, आकडो, चित्रक, वावडींग अने मोथ एओनुं चूर्ण भेळवीने ते साथवो कोढवाळाने अथवा प्रमेहवाळाने सालसारादि गणना क्वाथमां घोळीने अथवा खेर तथा बोरडी वगेरे कंटकी वृक्षोना क्वाथमां घोळीने पावो. (आ क्वाथमां योग्यताप्रमाणे मधुरता, अम्लता तथा लवणता करवां.)

एज रीते सालसारादि गणनो क्वाथ पाईने तैयार करेला अथवा आरग्वधादि गणनो क्वाथ पाईने तैयार करेला अथवा गायने जव खवरावीने तेना छाणमांथी वीणी लीधेला जवोने ठीबडामां शेकी, साथवारूप करावी, तेमां ते साथवाना चोथा भाग जेटलुं उपर लखेलां भीलामां वगेरेनुं चूर्ण मिश्रित करी, खेरनो, बीबलानो, लींबडानो, गरमाळानो, रगतरोहिडानो के गळोनो क्वाथ तैयार करी, ते क्वाथने साकरथी तथा मधथी मीठो करी, द्राक्षथी संयुक्त करी, दाडिमना रसथी तथा नेतरनां बीजोथी खाटो करी, सैंधवथी तथा बीजां पण लवणोथी युक्त करीने ते क्वाथमां पेलो भीलामा वगेरेना चूर्णथी मिश्रित करेलो साथवो घोळीने पावो. आ प्रमाणे बीजा पण सघळां मंथोमां गोठवण करी लेवी.

४ यावकांश्च भक्ष्यान्धानोलुंबककुल्माषापूपपूर्णकोशोत्कारिकाशष्कुलिकाकुणावीप्रभृतीन् सेवेत । यवविधानेन गोधूमवेणुयवानुपयुञ्जीत ॥

दारुण कोढवाळाने भक्ष्यो आपवानी गोठवण.

४ जवनां धाणी, पोंख, घुघरी, पुडला, कचोरी, लाफसी तथा ओरमां, सूंवाळीओ, अने कुणावी (लोढीपर शेकेली परसूदीनी रोटली) इत्यादिक भक्ष्यो तैयार करीने कोढवाळाने ते-

[1] जव वगेरेना साथवाने घी लगावी थंडा पाणीमां नाखी तेनो बहु द्रवरूप नहीं अने बहु घाटो पण नहीं एवो जे रस बनाववामां आवे ते मंथ केहेवाय छे. (सूत्रस्थान अध्याय ४६ मो विषय २३२ मो.)

ओनुं सेवन कराववुं. जवनां भक्ष्यो प्रमाणेज घउंनां तथा वांशीया जवनां भक्ष्योनो उपयोग कराववो.

५ अरिष्टानतो वक्ष्यामः । पूतीकचव्यचित्रकसुरदारुसारिवादन्तीत्रिकटुकानां प्रत्येकं षाट्पलिका भागा बदरकुडवस्त्रिफलाकुडव इत्येतेषां चूर्णानि ततः पिप्पलीमधुघृतैरन्तःप्रलिप्ते घृतभाजने प्राकृतसंस्कारे सप्तोदककुडवानयोरजोऽर्द्धकुडवमर्द्धतुलां च गुडस्याभिहितानि चूर्णान्यावाप्य स्वनुगुप्तं कृत्वा यवपल्ले सप्तरात्रं वासयेत्ततो यथाबलमुपयुञ्जीतैषोऽरिष्टः कुष्ठमेहमेदःपाण्डुरोगश्वयथूनपहन्ति । एवं शालसारादौ न्यग्रोधादावारग्वधादौ वारिष्टान्कुर्वीत ॥

दारुण कोढवाळाने माटे अरिष्टोनी कल्पना.

५ हवे अरिष्टोनी कल्पना कहीएछीए. करंज, चवक, चित्रक, देवदार, उपलसरी—कपूरी, नेपाळो अने त्रिकटुक (सूंठ मरी पीपळ) एओने चोवीश चोवीश तोलां भार लई अने बोरने तथा त्रिफळाने सोळ सोळ तोलां भार लई तेओनां चूर्णो करवां. पछी घीनुं रीढुं वासण के जेने लखोटाववा तथा योग्य औषधोनी धूमाडी देवा वगेरे संस्कार प्रथमथीज आपी राख्यो होय तेने पीपळ, मध अने घी एओना कल्कथी अंदरना भागमां लीपी तेमां एकसो बार तोलां भार पाणी, आठ तोलां भार लोढांनुं चूर्ण, बसो तोलां भार गोळ अने उपर कहेलां चूर्णो नाखी, वासणनुं मोहोडुं बंध करवा वगेरेनो सारी रीते बंदोबस्त करीने पछी ते वासणने सात रातसूधी जवना ढगलामां राखी मूकवुं एटले अरिष्ट तैयार थई जाय छे. (आ अरिष्ट **पिंडारिष्ट** केहेवाय छे.) आ अरिष्टमांथी रोगीना जठराग्निना तथा शरीरना बळने अनुसरती मात्रा लई कोढने टाळनारां खेर वगेरे द्रव्योना क्राथमां घोळीने पावी. आ अरिष्ट कोढने, प्रमेहने, मेदने, पांडुरोगने तथा सोजाने हणेछे. आ प्रमाणेज शालसारादि गणना अथवा न्यग्रोधादि गणना अथवा आरग्वधादि गणना अरिष्टो करवा.

६ आसवानतो वक्ष्यामः । पलाशभस्मपरिस्रुतस्योष्णोदकस्य शीतीभूतस्य त्रयो भागा द्वौ फाणितस्यैकध्यमरिष्टकल्पेन विदध्यात् । एवं तिलादीनां क्षारेषु शालसारादौ न्यग्रोधादावारग्वधादौ मूत्रेषु चासवान्विदध्यात् ॥

दारुण कोढवाळाने माटे आसवोनी कल्पना.

६ हवे आसवोनी कल्पना कहीएछीए. खाखरानी भस्ममां नाखीने स्रवावेला ऊना पाणीने थंडुं करीने तेना त्रण आढक लेवा (बसो छपन तोलां भारनो एक आढक थाय छे.) अने गोळनी राब जेवी चासणीना बे आढक लेवा. पछी ए सर्वने एकत्र करी, त्रिफळा वगेरेना चूर्णथी मिश्रित करी, उपर कहेली अरिष्टनी रीतिप्रमाणे घीना रीढा वासणमां नाखीने सात दिवस सूधी ते वासणने जवना ढगलामां दाटी मूकवुं एटले आसव सिद्ध थई जाय छे. आ प्रमाणेज तिल, अघेडो, केळ, खाखरो अने जव एओनां वृक्षोनी छालोना क्षारना पाणीना, शालसारादि गणना, न्यग्रोधादि गणना, आरग्वधादि गणना अने मूत्रोना आसवो बनाववा.

७ अथ सुरा वक्ष्यामः । शिंशपाखदिरयोः सारमादायोत्पाट्य चोत्तमारणीब्राह्मीकोशातकीस्तत्सर्वमेकतः कषायकल्पेन विपाच्योदकमाददीत मण्डोदकार्थे किण्वपिष्टमभिषुणुयाच्च यथोक्तमेवं सुरा । शालसारादौ न्यग्रोधादावारग्वधादौ च विदध्यात् ॥

दारुण कोढवाळाने माटे सुराओ (मदिराओ)नी कल्पना.

७ हवे सुराओनी कल्पना कहीएछीए. शीशम

अने खेर एओना सारना बे भाग लई अने चमारदूधेली, ब्राह्मी तथा कुकडवेल एओने उखेडी एक भाग जेटली लई ए सर्वने एकठां करी काथनी रीतिप्रमाणे चोगणा पाणीमां उकाळी चोथा भाग जेटलुं पाणी अवशेष रहे त्यारे तेने मंडोदकने माटे लई सूत्रस्थानना ४४ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे किण्वनुं (अडद तथा चोखा वगेरेथी करेला मदिराना बीजनुं तथा चोखाना लोटनुं) संधान (आथो) करी मंडोदक नाखी कळशमां राखी मूकवुं एटले सुरा बनी जाय छे. आ प्रमाणेज शालसारादि गणनी, न्यग्रोधादि गणनी अने आरग्वधादि गणनी सुराओ बनाववी.

८ अतोऽवलेहान्वक्ष्यामः । खदिरासननिम्बराजवृक्षशालसारकाथे तत्सारपिण्डान् श्लक्ष्णपिष्टान्प्रक्षिप्य विपचेत् । ततो नातिद्रवं नातिसान्द्रमवतार्य तस्य पाणितलपूर्णमप्रातराशो मधुमिश्रं लिह्यादेवं शालसारादौ न्यग्रोधादावारग्वधादौ च लेहान्कारयेत् ॥

दारुण कोढवाळाने माटे अवलेहोनी कल्पना.

८ हवे अवलेहोनी कल्पना कहीएछीए. खेर, बीवलो, लींबडो, गरमाळो अने राळनुं झाड एओना सारनो काथ करी ते काथमां, तेओनाज सारोना सारी पेठे चीकास थाय एवी रीते वाटीने बनावेला पींडाओने नाखीने पकाववा. पछी ए सघळुं बहु द्रवरूप पण नहीं अने बहु घाटुं पण नहीं एवुं थई जाय त्यारे उतारी लेवुं एटले ए अवलेह सिद्ध थाय छे. रोगी प्रभाते जम्यो न होय ते पेहेलां हाथनी हथेळीमां माय तेटली ए अवलेहनी मात्रा लई तेने मधथी संयुक्त करीने रोगीने चटाडवी. आ प्रमाणेज शालसारादि गणना, न्यग्रोधादि गणना अने आरग्वधादि गणना अवलेहो करवा.

९ अतश्चूर्णक्रियां वक्ष्यामः । शालसारादीनां सारचूर्णप्रस्थमाहृत्यारग्वधादिकषायपरिपीतमनेकशः शालसारादिकषायेणैव पाययेत् । एवं न्यग्रोधादीनां फलेषु पुष्पेष्वारग्वधादीनां चूर्णक्रियां कारयेत् ॥

दारुण कोढवाळाने माटे चूर्णोनी कल्पना.

९ हवे चूर्णोनी कल्पना कहीएछीए. शालसारादि गणना सारनुं चोसठ तोलां भार चूर्ण एकठुं करी तेने आरग्वधादि गणनो काथ पाई वारंवार शालसारादि गणनोज काथ पावो. (चार प्रस्थ एटले बसो छपन तोलां भार पाणीथी एक प्रस्थ एटले चोसठ तोलां भार द्रव्यनो काथ करी आठमा भागनुं जळ अवशेष रहे त्यारे उतारी लई तेथी भींजवीने पाछुं सुकाववुं ए एक वार भावना आपी गणाय छे. ए प्रमाणे सात दिवसमां शालसारादि गणना काथनी सात भावनाओ देवी.) आ प्रमाणे करवाथी चूर्ण सिद्ध थाय छे. आ प्रमाणेज न्यग्रोधादि गणनां फळोनां अने आरग्वधादि गणनां पुष्पोनां पण चूर्णो करवां.

१० अत ऊर्ध्वमयस्कृतीर्वक्ष्यामः । तीक्ष्णलोहपत्राणि तनूनि लवणवर्गप्रदिग्धानि गोमयाग्निप्रतप्तानि त्रिफलाशालसारादिकषायेण निर्वापयेत् षोडशवारांस्ततः खदिराङ्गारतप्तान्युपशान्ततापानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेद्गाढतान्तवपरिस्रावितानि । ततो यथाबलं मात्रां सर्पिर्मधुभ्यां संसृज्योपयुञ्जीत । जीर्णे यथाव्याध्यनम्लमलवणमाहारं कुर्वीत । एवं तुलामुपयुज्य कुष्ठमेहमेदःश्वयथुपाण्डुरोगोन्मादापस्मारानपहत्य वर्षशतं जीवति । तुलायां तुलायां वर्षशतगुणोत्कर्षः । एतेन सर्वलोहेष्वयस्कृतयो व्याख्याताः ॥

त्रिवृच्छ्यामाग्निमन्थसप्तलार्कबुकशङ्खिनीतिल्वकत्रिफलापलाशशिंशपानां स्वरसमादाय पालाश्यां द्रोण्यामभ्यासिच्य खदिराङ्गारतप्त-

मयःपिण्डं त्रिःसप्तकृत्वो निर्वाप्य तमादाय पुनरासिच्य स्थाल्यां गोमयाग्निना विपचेत्। ततश्चतुर्थभागावशिष्टमवतार्य परिस्राव्य भूयोऽग्नितप्तान्ययःपत्राणि प्रक्षिपेत्। सिध्यति चास्मिन्पिप्पल्यादिचूर्णभागौ द्वौ मधुनस्तावद्धृतस्येति दद्यात्। ततः प्रशान्तमायसे पात्रे स्वनुगुप्तं निदध्यात्। ततो यथायोगं शुक्तिं प्रकुञ्चं वोपयुञ्जीत। जीर्णे यथाव्याध्याहारमुपसेवेत। एषौषधायस्कृतिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साधयति स्थूलमपकर्षति शोफमुपहन्ति सन्नमग्निमुद्धरति विशेषेण चोपदिश्यते राजयक्ष्मिणां वर्षशतायुश्चानया पुरुषो भवति ॥

शालसारादिकाथमासिच्य पालाश्यां द्रोण्यामयोघनं तप्तं निर्वाप्य कृतसंस्कारे कलशेऽभ्यासिच्य पिप्पल्यादिचूर्णभागं क्षौद्रं गुडमिति च दत्वा स्वनुगुप्तं निदध्यादेतां महौषधायस्कृतिं मासमर्द्धं मासं वा स्थितां यथाबलमुपयुञ्जीत। एवं न्यग्रोधादावारेवतादिषु च विदध्यात् ॥

दारुण कोढवाळानेमाटे अयस्कृतिओ- (लोढां वगेरे धातुओनी क्रियाओ) नी कल्पना.

लोहरसायन.

१० हवे अयस्कृतिओनी कल्पना कहीएछीए. गजवेलनां पातळां पातळां पतरां करावी तेओने लवणवर्गथी खरडी गायना छाणाना अग्निथी तपावी तपावी, त्रिफळा तथा शालसारादि गणना काथमां सोळ वार ठारवां. पछी ए पतरांओने खेरना अंगाराओथी सोळ वार तपावी ठारी ताप शांत थाय त्यारे तेओनुं बारीक चूर्ण करावी घाटा लुगडाथी चाळी लेवुं. पछी रोगीना शरीरना अने जठराग्निना बळप्रमाणे ते चूर्णमांथी मात्रा लई तेने घी अने मध एओनी साथे खूब मर्दन करी एक करी दईने रोगीने खवरावવી. (ए उपर कोढने हरनारां द्रव्योना काथनुं अनुपान देवुं अने प्रमेहादिक होय तो तेने हरनारां द्रव्योना काथनुं अनुपान देवुं. आ प्रमाणे ते ते रोगोने हरनारां द्रव्योना काथो गोठवी लेवा.) ए मात्रा जीर्ण थया पछी जे रोगने हरवामाटे मात्रा आपी होय ते रोगने हरनारो खटाई वगरनो तथा लवण वगरनो आहार जमाडवो. आ प्रमाणे अनुक्रमथी चारसो तोलां भार लोहनो उपयोग कराववामां आवे तो कोढ, प्रमेह, मेद, सोजा, पांडुरोग, उन्माद तथा अपस्मार ए रोगोथी मुक्त थईने माणस सो वर्षसूधी जीवे छे. एक एक तुला (चारसो तोलांनी एक तुला गणाय छे.) खवाई रहे त्यारे सो सो वर्षनुं आयुष्य वधेछे. आ प्रमाणेज कथील, सीसुं तथा सुवर्ण एओनी अयस्कृतिओ करवी.

औषधायस्कृति.

नसोतर, वरधारो, हाथला, सोपारी, आंखफूटामणी, (शंखवेल) पठाणी लोदर, त्रिफळा, खाखरो अने शीशम एओनो स्वरस लई (स्वरस न मळे तो एओनुं हिम करवुं अथवा काथ करवो.) ते बे हजार तोलां भार स्वरसने लीला खाखरानी पीपमां नाखी तेमां खेरना अंगाराथी तपावेलो बसो तोलां भार लोढानो गोळो ठारवो. आ प्रमाणे गोळाने तपावी तपावी एकवीश वार ठारी ते स्वरसने लई पाछो कडायामां नाखीने छाणाना अग्निवते पकाववो. चोथा भागनो अवशेष रहे त्यारे तेने गाळी लई तेमां अग्निथी तपावेलां गजवेलनां पतरां सोळ वार ठारी ते पतरांओने तेज काथमां बारीक वटावी तेमां नाखी दईने पाछो ते काथने पकाववो. ए पाकतो होय त्यारे तेमां बे भाग पिप्पल्यादि गणनुं चूर्ण, एक भाग मध अने मधथी कांईक न्यून घी नाखी पाकी रहे त्यारे उतारी लई ठरी जाय त्यारे तेने लोढाना पात्रमां उत्तम बंदोबस्तथी राखी मेलवो एटले ते औषधायस्कृति केहेवाय छे. आमांथी रोगीना बळनी तथा जठराग्निनी योग्यता प्रमाणे चार तोलां भार अथवा

बे तोलां भार लई रोगीने देवुं अने ते जीर्ण थाय त्यारे जे रोगने टाळवा मात्रा दीधी होय ते रोगने टाळनारो आहार करावनो. आ औषधायस्कृति असाध्य कोढने तथा असाध्य प्रमेहने पण टाळी नाखे छे, मेदथी जाडा थएला माणसने पातळो करे छे, सोजाने मटाडे छे अने मंद थई गएला जठराग्निने प्रदीप्त करे छे. क्षय रोगवाळाओने माटे आ औषधायस्कृतिनो खसूस उपयोग करावनानुं केहेवामां आवे छे. आथी माणस सो वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे.

महौषधायस्कृति.

शालसारादि गणना क्वाथने खाखरानी पीपमां नाखी, तेमां अग्निथी तपावेला लोढाना घणने एकवीश वार ठारी, क्वाथने थंडो करी, तेमां उपरप्रमाणेज अग्निथी तपावेलां गजवेलनां पतरां सोळ वार ठारी, ते पतरांओने तेज क्वाथमां बारीक वटावी, तेमां नाखी दई जेने प्रथमथी लखोटाववानो तथा धुमाडी देवा वगेरेनो संस्कार आपी मूक्यो होय एवा कलशमां रेडी दई, तेमां जेथी कांईक तीखाश उत्पन्न थाय तेटलुं पिप्पल्यादि गणनुं चूर्ण, क्वाथना चोथा भाग जेटलो जूनो मध अने तेटलोज जूनो गोळ नाखी मोहोडुं बंध करवा वगेरेनो पूरो बंदोबस्त करी तेने शीतकाळमां एक महीना सूधी अने उष्णकाळमां एक पखवाडीया सूधी एमनेएम रेहेवा दईने पछी तेमांथी रोगीना तथा जठराग्नीना बळप्रमाणे मात्रा देवी. आ महौषधायस्कृति केहेवाय छे. आ प्रमाणेज न्यग्रोधादि गणना क्वाथमां तथा आरग्वधादि गणना क्वाथमां पण महौषधायस्कृति करवी.

११ अतः खदिरविधानमुपदेक्ष्यामः । प्रशस्तदेशजातमनुपहतं मध्यमवयसं खदिरं परितः खानयित्वा मध्यममूलं छित्त्वाऽयोमयं कुम्भं तस्मिन्नन्तरे निदध्याद्यथा रसग्रहणसमर्थो भवति । ततस्तं गोमयमृदावलिप्तमवकीर्येन्धनैर्गोमयमिश्रैरादीपयेद्यथास्य दह्यमानस्य रसः स्रवत्यधस्तात् । यदा जानीयात्पूर्णं भाजनमित्यथैवमुद्धृत्य परिस्राव्य रसमन्यस्मिन्पात्रे निधायानुगुप्तं निदध्यात्ततो यथायोगं मात्रामामलकरसमधुसर्पिर्भिः संसृज्योपयुञ्जीत । जीर्णे भल्लातकविधानवदाहारः परिहारश्च। प्रस्थे चोपयुक्ते शतं वर्षाणामायुषोऽभिवृद्धिर्भवति ॥

खदिरसारतुलामुदकद्रोणे विपाच्य षोडशांशावशिष्टमवतार्यानुगुप्तं निदध्यात् । तमामलकरसमधुसर्पिर्भिः संसृज्योपयुञ्जीत । एष एव सर्ववृक्षसारेषु कल्पः ॥

खदिरसारचूर्णतुलां खदिरसारक्वाथमात्रां वा प्रातः प्रातरुपसेवेत खदिरसारक्वाथसिद्धमाविकं वा सर्पिः ॥

दारुण कोढवाळानेमाटे खदिरविधान.

११ हवे खदिरविधान कहीएछीए. सारा प्रदेशमां उत्पन्न थएला, कीडा वगेरेथी नहीं उपहत थएला अने मध्यम अवस्थावाळा खेरना वृक्षने चोतरफ खोदावी, तेना वचला मूलने कापी नाखी, ते मूलना प्रदेशमां लोढांनो घडो एवी रीते मूकवो के जे रीते मूकवाथी खेरना रसनुं ग्रहण करी शके. पछी तेने छाणमाटीथी लींपी लई, चोमेर काष्ठो मूकी दईने ते काष्ठोने सळगाववां ते एवी रीते के जे रीते बळवा लागेला खेरनो रस नीचे राखेला घडामां स्रवे. ए घडो ज्यारे रसथी भराई रहेलो जाणवामां आवे त्यारे तेने काहाडी लई रसने गाळी लई बीजा वासणमां नाखीने सारी रीतना बंदोबस्तथी राखी मूकवो. पछी तेमांथी योग्यताप्रमाणे मात्रा लई ते मात्राने तेना जेटलाज आमळाना रसथी अने योग्य तोलना मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने रोगीने देवी अने ते जीर्ण थया पछी भल्लातकना विधाननी पेठे (आ स्थानना छठ्ठा अध्यायनो वीशमो विषय जुवो.) आहार आपवो तथा परेजी पळाववी.

आ रस चोसठ तोलां भार उपयोगमां लेवामां आववाथी आयुष्यमां सो वर्षनी अभिवृद्धि थाय छे. (दूध जो के कोढवाळाने विरुद्ध छे तोपण आ विधानमां आपवानो बाध नथी. केमके रसायननो महिमा अचिंत्य छे.)

उपर प्रमाणे खेरनो रस न मळी शके एम होय तो पछी चारसो तोलां भार खेरसारनो एक हजार चोवीश तोलां भार पाणीमां क्काथ करी सोळमा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे उतारी गाळी लईने ते क्काथने सारा बंदोबस्तथी राखी मुकवो. ए क्काथनी मात्रा तेना जेटलाज आमळाना रसथी अने योग्य तोलनां घीथी तथा मधथी संयुक्त करीने रोगीने देवी. आ प्रमाणेज असन (बीवला) वगेरे सघळां वृक्षोना सारनी कल्पना करी लेवी.

अथवा चारसो तोलां भार खेरसारनुं चूर्ण तैयार करी तेमांथी वैद्ये प्रभाते प्रभाते रोगीने योग्य मात्रानुं सेवन कराववुं अथवा खेरसारना क्काथनी मात्रानुं नित्य प्रभाते प्रभाते सेवन कराववुं अथवा खेरसारना क्काथमां गाडरनुं घी पकावीने ते घीनो प्रभाते प्रभाते उपयोग कराववो. (गाडरनुं घी अपथ्य छतां पण आ विषयमां पथ्य छे. डल्हन.) आ प्रयोगोमां नित्य अपराह्न समये रोगीने आमळाना यूषनी साथे घीसहित भात जमाडवो. आ प्रमाणे एक महिनासूधी करवामां आवे तो रोगी सघळा प्रकारना कोढोथी मुक्त थाय छे.

१२ अमृतवल्लीस्वरसं क्काथं वा प्रातःप्रातरुपसेवेत तत्सिद्धं वा सर्पिः । अपराह्ने ससर्पिष्कमोदनमामलकयूषेण भुञ्जीतैवं मासमुपयुज्य सर्वकुष्ठैर्विमुच्यत इति ॥

दारुण कोढवाळानेमाटे गळोना स्वरसनुं विधान, गळोना क्काथनुं विधान तथा गळोना घीनुं विधान.

१२ वैद्ये दारुण कोढना दरदीने प्रभाते प्रभाते गळोना स्वरसनुं अथवा गळोना क्काथनुं अथवा गळोना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेला घीनुं सेवन कराववुं अने नित्य अपराह्न समये आमळाना यूषनी साथे घीसहित भात जमाडवो. आप्रमाणे एक महिनासूधी करवामां आवे तो रोगी सघळा प्रकारना कोढोथी मुक्त थाय छे.

१३ कृष्णतिलभल्लातकतैलामलकरससर्पिषां द्रोणं शालसारादिकषायस्य च त्रिफलात्रिकटुकपरूषफलमज्जविडङ्गफलसारचित्रार्कावल्गुजहरिद्राद्वयत्रिवृद्दन्तीन्द्रयवयष्टीमधुकातिविषारसाञ्जनप्रियङ्गूनां पालिकान्भागांस्तानैकध्यं स्नेहपाकविधानेन पचेत्। तत्साधुसिद्धमवतार्य परिस्राव्यानुगुप्तं निदध्यात्। तत उपसंस्कृतशरीरः प्रातः प्रातरुत्थाय पाणिशुक्तिमात्रं क्षौद्रेण प्रतिसंसृज्योपयुञ्जीत। जीर्णे मुद्गामलकयूषेणालवणेन सर्पिष्मन्तं खदिरोदकसिद्धं मृद्वोदनमश्नीयात् खदिरोदकसेवीत्येवं द्रोणमुपयुज्य सर्वकुष्ठैर्विमुक्तः शुद्धतनुः स्मृतिमान् वर्षशतायुररोगी भवति ॥

दारुण कोढवाळानेमाटे स्नेहविधान.

१३ काळा तलनुं तैल, भीलामानुं तैल, आमळानो रस, घी अने शालसारादि गणनो क्काथ ए प्रत्येकने एक एक द्रोण (एक हजार चोवीश तोलां भारनो एक द्रोण थाय छे.) भार लेवां अने त्रिफळा, त्रिकटुक, (सूंठ मरी पीपळ) ध्रामणां (फालसां) नामनां फळोनी मज्जा, वावडींगनां फळोनो सार, चित्रक, आकडो, बावची, हळदर, दारूहळदर, नसोतर, नेपाळो, इंद्रजव, जेठीमध, अतवस, रसवंती तथा घऊलां ए प्रत्येकने चार चार तोलां भार लेवां. पछी पेला स्नेहोने तथा द्रवोने एकठा करी तेओमां त्रिफळा वगेरेना कल्को नाखीने स्नेहपाकनी रीतिप्रमाणे पकाववा. योग्य रीते पाकी रहे त्यारे ते एकठा स्नेहने उतारी गाळी लईने सारा बंदोबस्तथी राखी मूकवो.

वमन विरेचनादिकथी शुद्ध करेला शरीरवाळा रोगीने प्रभाते प्रभाते उठी ए स्नेहमांथी नित्य चार चार तोलां भार लई मधथी संयुक्त करीने तेनो उपयोग कराववो अने ते जीर्ण थाय त्यारे खेरना जळथी पकावेलो घीवाळो कोमळ भात लूणवगरना मगना तथा आमळाना यूषनी साथे जमाडवो अने स्नानपानादिकमां खेरना पाणीनुंज सेवन कराववुं. आ प्रमाणे ए स्नेह एक द्रोण भार उपयोगमां लेवायाथी रोगी सघळा कोढोथी मुक्त थाय छे, शुद्ध शरीरवाळो थाय छे, विशेष स्मरणशक्तिवाळो थाय छे, सो वर्षसूधी जीवे छे अने रोगोथी रहित रेहे छे.

१४ भवति चात्र ॥

सुरामन्थासवारिष्टाँल्लेहांश्चूर्णान्ययस्कृतीः ।
सहस्रशोऽपि कुर्वीत बीजेनानेन बुद्धिमान् ॥

उपर कहेली पद्धतिप्रमाणे बीजां पण अनेक सुराओ तथा आसवो वगेरे बनाववां.

१४ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के 'अमोए उपर जे आ दिक्प्रदर्शन कर्युं (रस्तो बताव्यो) तेने अनुसरीने बुद्धिमान् वैद्ये दारुण कोढवाळाओने माटे बीजां पण हजारो प्रकारनां सुराओ, मंथो, आसवो, अरिष्टो, अवलेहो, चूर्णो, अयस्कृतिओ, सारो तथा स्नेहो बनावी लेवां.'

अध्याय ११ मो.

१ अथातः प्रमेहचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'प्रमेहचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ द्वौ प्रमेहौ सहजोऽपथ्यनिमित्तश्च भवतः। तत्र सहजो मातृपितृबीजदोषकृतः । अहिताहारजोऽपथ्यनिमित्तः ।

तयोः पूर्वेणोपद्रुतः कृशो रूक्षोऽल्पाशी पिपासुर्भृशं परिसरणशीलश्च भवति ।

उत्तरेण स्थूलो बह्वाशी स्निग्धः शय्यासनस्वप्नशीलः प्रायेणेति ॥

प्रमेहनी मुख्य बे जातो अने ते जातोनां लक्षणो.

२ एक सहज अने बीजो अपथ्यनिमित्त एम प्रमेहनी मुख्य बे जातो छे. जे प्रमेह माताना तथा पिताना बीजना दोषथी थयो होय ते **सहज प्रमेह** केहेवाय छे अने जे प्रमेह अहित आहारादिकथी थयो होय ते प्रमेह **अपथ्यनिमित्त प्रमेह** केहेवाय छे.

सहज प्रमेहथी उपद्रुत थएलो माणस कृश, रूक्ष, थोडुं जमनारो, बहु तरशवाळो तथा एक जगोपर स्थिर नहीं रही शकतां अहींथी तहीं अने तहींथी अहीं फरवाना स्वभाववाळो थाय छे.

अपथ्यनिमित्त प्रमेहथी उपद्रुत थएलो माणस घणुं करीने जाडो, घणुं जमनारो, स्निग्ध शरीरवाळो अने शय्यामां पडी रेहेवाना, बेसी रेहेवाना तथा घणी निद्रा करवाना स्वभाववाळो थाय छे.

३ तत्र कृशमन्नपानप्रतिसंस्कृताभिः क्रियाभिश्चिकित्सेत् । स्थूलमपतर्पणयुक्ताभिः ॥

प्रमेहवाळानी चिकित्सानी सामान्य पद्धति.

३ जे माणस कृश होय अर्थात् सहज प्रमेह-

१ प्रमेहो के जेओनां निदान तथा लक्षणादिक निदानस्थानना छट्ठा अध्यायमां केहेवामां आव्यां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

२ केटलाएक कहे छे के 'स्त्रीओनां शरीरो महिने महिने रजना प्रसेकथी शुद्ध थई जाय छे माटे स्त्रीओने प्रमेहो थता नथी' पण ए वात बराबर नथी. केम के स्त्रीओने पण प्रमेहो थता जोवामां आवे छे. डल्हन.

वाळो होय तेनी चिकित्सा अन्नपानोना विविध संस्कारोवाळी क्रियाओथी करवी अने जे माणस जाडो होय अर्थात् अपथ्यनिमित्त प्रमेहवाळो होय तेनी चिकित्सा लंघन, व्यायाम, शोधन तथा तिक्तकटुकादिक अपतर्पणोवाळी क्रियाओथी करवी.

४ सर्व एव च परिहरेयुः सौवीरकतुषोदकशुक्तमैरेयसुरासवपयस्तैलघृतेक्षुविकारदधिपिष्टान्नाम्लपानकानि ग्राम्यानूपौदकमांसानि चेति ॥

प्रमेहवाळानेमाटे परेजी.

४ जे माणसो प्रमेहनां दरदी होय ते सघळांओए सौवीरक, तुषोदक, शुक्त, मैरेय, सुरा, आसव, दूध, तैल, घी, शेलडीना गोळ वगेरे पदार्थो, दहीं, पीठानां अन्नो, खाटां पानको (शरबतो वगेरे) अने ग्राम्यपशुओनां, आनूपपशुओनां तथा जलचर प्राणिओनां मांसो एओनो त्याग करवो.

५ ततः शालिषष्टिकयवगोधूमकोद्रवोद्दालकाननवान्भुञ्जीत । चणकाढकीकुलत्थमुद्गविकल्पेन तिक्तकषायाभ्यां शाकगणाभ्यां निकुम्भेङ्गुदीसर्षपातसीतैलसिद्धाभ्यां बद्धमूत्रैर्वा जाङ्गलैर्मांसैरपहृतमेदोभिरनम्लैरघृतैश्चेति ॥

प्रमेहवाळानेमाटे आहारो.

५ प्रमेहवाळाए चणा, तुवर, कळथी तथा मग एओना यूष वगेरेनी साथे अथवा नेपाळानुं के नेतरनुं तैल, इंगोळीयानुं तैल, सरसीयुं तैल के अळसीनुं तैल एओथी पकावेलां कुवाडीया वगेरे तिक्त शाकोनी साथे अथवा ते तैलोथी पकावेलां वडनी टेसीओ वगेरे कषाय शाकोनी साथे अथवा काळीआर वगेरे जांगलपशुओनां मांसो के जेओ मूत्रने बांधनारां तथा घणा मेदवगरनां होय छे तेओने खटाशवगरनां तथा घीवगरनां राखीने तेओनी साथे जूना चोखा, जूना साठीचोखा, जूना जव, जूना घऊं, जूना कोदरा अने जूना जंगली कोदरा एओना आहारो करवा.

६ तत्रादित एव प्रमेहिणं स्निग्धमन्यतमेन तैलेन प्रियङ्ग्वादिसिद्धेन वा घृतेन वामयेत्प्रगाढं विरेचयेच्च । विरेचनादनन्तरं सुरसादिकषायेणास्थापयेन्महौषधभद्रदारुमुस्तावापेन मधुसैन्धवयुक्तेन दह्यमानं च न्यग्रोधादिकषायेण निःस्नेहेन ।

ततः शुद्धदेहमामलकरसेन हरिद्रां मधुसंयुक्तां पाययेत् त्रिफलाविशालादेवदारुमुस्ताकषायं वा शालकम्पिल्लकमुष्ककल्कमक्षमात्रं वा मधुमधुरमामलकरसेन हरिद्रायुतम् । कुटजकपित्थरोहितबिभीतकसप्तपर्णपुष्पकल्कं वा । निम्बारग्वधसप्तपर्णमूर्वाकुटजसोमवल्कपलाशानां वा त्वक्पत्रमूलफलपुष्पकषायाणि ॥ एते पञ्च प्रयोगाः सर्वमेहानामपहन्तारो व्याख्याताः ॥

सर्व प्रमेहोनी चिकित्सानुं सामान्य सूत्र.

६ प्रमेहना रोगीने जो ते वायुजन्य प्रमेहवाळो होय तो प्रथमज उपर कहेलां नेपाळानां तैल वगेरे तैलोमांना एक तैलथी अथवा आ स्थानना एकत्रीशमा अध्यायना ३ जा विषयमां कहेला प्रमेहहर स्नेहोमांना कोई स्नेहथी स्निग्ध करीने पछी अत्यंत वमनविरेचन करावत्रुं. जो पित्तजन्य प्रमेहवाळो होय तो तेने प्रियंग्वादि गणना क्वाथादिकथी पकावेला घी वते स्निग्ध करीने पछी अत्यंत वमनविरेचन करावतुं अने कफजन्य प्रमेहवाळो होय तो तेने प्रमेहहर स्नेहथी स्निग्ध करीने पछी अत्यंत वमनविरेचन करावतुं. (जो रोगी रूक्ष शरीरवाळो न होय तथा बळवान् होय तोज वमन करावतुं.) विरेचन कराव्या पछी सात दिवस जाय त्यारे सूंठ, देवदार तथा मोथ एओना प्रतिवापवाळा अने मधथी तथा सैंधवथी युक्त करेला सुरसादि गणना क्वाथथी निरूहबस्ति देवी अने जो ते रोगी बळतराथी युक्त होय तो तेने न्यग्रोधादि गणना स्नेहवगरना क्वाथथी निरूहबस्ति देवी.

ए प्रमाणे करवाथी शुद्ध थएला ते रोगीने पछी मधथी मिश्रित करेली हळदर आमळाना रसनी साथे पावी अथवा मधथी मधुर करेलो तथा हळदरथी युक्त करेलो त्रिफला, इंद्रवारणी, देवदार अने मोथ एओनो काथ आमळाना रसनी साथे पावो अथवा रालवृक्ष, कपीलो तथा मखरो एओनो मधथी मधुर करेलो तथा हळदरथी युक्त करेलो एक तोलां भार कल्क आमळाना रसमां घोळीने पावो अथवा इंद्रजवनां फूल, कोठनां फूल, रगतरोहीडानां फूल, बेहेडानां फूल अने सप्तपर्णनां फूल एओनो मधथी मधुर करेलो तथा हळदरथी युक्त करेलो एक तोलां भार कल्क आमळाना रसमां घोळीने पावो अथवा लींबडो, गरमाळो, सप्तपर्ण, मोरवेल, इंद्रजव, खेर अने खाखरो एओनां छाल, पानडां, मूळो, फलो, तथा पुष्पो एओना काथो मधथी मधुर करीने आमळाना रसनी साथे पावा. आ पांचे योगो सर्व प्रमेहोने हणनारा छे. (साध्य प्रमेहोने मटाडनारा छे अने असाध्य प्रमेहोनुं यापन करनारा छे.)

७ विशेषतश्चात ऊर्द्ध्वम् ॥ तत्रोदकमेहिनं पारिजातकषायं पाययेत् । इक्षुमेहिनं वैजयन्तीकषायम् । सुरामेहिनं निम्बकषायम् । सिकतामेहिनं चित्रककषायम् । शनैर्म्मेहिनं खदिरकषायम् । लवणमेहिनं पाठागुरुकषायम् । पिष्टमेहिनं हरिद्रादारुहरिद्राकषायम् । सान्द्रमेहिनं सप्तपर्णकषायम् । शुक्रमेहिनं दूर्वाशैवलप्लवहठकरञ्जकसेरुककषायं ककुभचन्दनकषायं वा । फेनमेहिनं त्रिफलारग्वधमृद्वीकाकषायं कफजेषु मधुमधुरमिति ॥

पैत्तिकेषु नीलमेहिनं शालशारादिकषायमश्वत्थकषायं वा पाययेत् । हरिद्रामेहिनं राजवृक्षकषायम् । अम्लमेहिनं न्यग्रोधादिकषायम् । क्षारमेहिनं त्रिफलाकषायम् । मञ्जिष्ठामेहिनं मञ्जिष्ठाचन्दनकषायम् । शोणितमेहिनं गडूचीतिन्दुकास्थिकाश्मर्यखर्जूरकषायं मधुमिश्रम् ॥

कफजन्य तथा पित्तजन्य प्रमेहोनी जूदी जूदी विशेष चिकित्सा.

७ उदकप्रमेहवाळा माणसने पांडेरवानो काथ पावो. इक्षुप्रमेहवाळा माणसने अरणीनो काथ पावो. सुराप्रमेहवाळा माणसने लींबडानो काथ पावो. सिकताप्रमेहवाळा माणसने चित्रकनो काथ पावो. शनैःप्रमेहवाळा माणसने खेरनो काथ पावो. लवणप्रमेहवाळा माणसने काळी पाडनो तथा अगरूनो काथ पावो. पिष्टप्रमेहवाळा माणसने हळदर तथा दारूहळदर एओनो काथ पावो. सांद्रप्रमेहवाळा माणसने सप्तपर्णनो काथ पावो. शुक्रप्रमेहवाळा माणसने दूर्वा, शैवाळ, वाळो, जलकुंभी नामनी शैवाळनी जात के जे वपराश वगरना जलाशयमां थाय छे ते, करंज अने कसेरुकंद एओनो काथ पावो अथवा कडायो अने रतांजलि एओनो काथ पावो. फेनप्रमेहवाळा माणसने त्रिफळा, गरमाळो तथा द्राक्ष एओनो काथ पावो. आ उदकप्रमेहथी मांडीने फेनप्रमेह सुधीना दश प्रमेहो के जेओ कफजन्य छे तेओ उपर जे जूदा जूदा काथो कह्या ते काथो मधथी मधुर करीने पावा.

नीलप्रमेहवाळा माणसने शालसारादि गणनो काथ अथवा पीपळानो काथ पावो. हरिद्राप्रमेहवाळा माणसने गरमाळानो काथ पावो. अम्लप्रमेहवाळा माणसने न्यग्रोधादि गणनो काथ पावो. क्षारप्रमेहवाळा माणसने त्रिफळानो काथ पावो. मंजिष्ठाप्रमेहवाळा माणसने मजीठ तथा रतांजलि एओनो काथ पावो. शोणितप्रमेहवाळा माणसने गळो, टींबरूना ठळीया, सीवणनां फळ अने खजूर एओनो काथ पावो. आ नीलप्रमेहथी मांडीने शोणितप्रमेह सूधीना छ प्रमेहो के जेओ पित्तजन्य छे तेओ उपर जे जूदा जूदा काथो कह्या ते काथो मधथी मिश्रित करीने पावा.

८ अतऊर्द्ध्वमसाध्येष्वपि योगान्यापनार्थं वक्ष्यामः ॥ तद्यथा ॥ सर्पिर्मेहिनं कुष्ठकुटज-

पाठाहिङ्गुकटुरोहिणीकल्कं गडूचीचित्रककषायेण पाययेत् । वसामेहिनमग्निमन्थकषायं शिंशपाकषायं वा । क्षौद्रमेहिनं खदिरक्रमुककषायम् । हस्तिमेहिनं तिन्दुककपित्थशिरीषपलाशपाठामूर्वादुःस्पर्शाकषायं मधुमिश्रम् । हस्त्यश्वशूकरखरोष्ट्रास्थिक्षारं चेति ॥

सर्पिःप्रमेह वगेरे चार वायुजन्य प्रमेहो के जेओ असाध्य छे तेओनुं यापन करवामाटे योगो.

८ हवे जे प्रमेहो असाध्य छे तेओनुं पण यापन करवा माटे योगो कहीएछीए. सर्पिःप्रमेहवाळा माणसने कठ, इंद्रजव, काळीपाड, हींग अने कडु एओनो कल्क गळोना तथा चित्रकना क्राथनी साथे पावो. वसाप्रमेहवाळा माणमने अरणीनो क्राथ अथवा शीशमनो क्राथ पावो. क्षौद्रप्रमेहवाळा माणसने खेर तथा सोपारी एओनो क्राथ पावो. हस्तिप्रमेहवाळा माणसने टींबरू, कोठ, सरसडीयो, खाखरो, काळीपाड, मोरवेल तथा धमासो एओनो क्राथ पावो. ए सर्वने हाथी, घोडो, सूवर, गधेडो अने ऊंट एओनां अस्थिओना क्षारनुं जळ पण पावुं. आ सर्पिःप्रमेहथी मांडीने हस्तिप्रमेह सूधीना चार प्रमेहो के जेओ वायुजन्य छे तेओ उपर जे जूदा जूदा क्राथो कह्या ते क्राथो मधथी मिश्रित करीने पावा.

९ दह्यमानमौदककन्दक्राथसिद्धां यवागूं क्षीरेक्षुरसमधुरां पाययेत् ॥

प्रमेहवाळाने धातु क्षीण थवाथी अने पित्तनी वृद्धि थवाथी थता दाहनी चिकित्सा.

९ जो प्रमेहवाळाने बळतरा थती होय तो तेने जळमां थएला कमळकंद वगेरे कंदोना क्राथथी पकावेली अने दूधथी तथा शेलडीना रसथी मधुर करेली यवागू पावी.

१० प्रियङ्ग्वनन्तायूथिकापद्मात्रायन्तिकालोहितिकाम्बष्ठादाडिमत्वक्शालपर्णीपद्मतुङ्गकेशरधातकीबकुलशाल्मलीश्रीवेष्टकमोचरसेष्वरिष्टानयस्कृतीर्लेहानासवान्कुर्वीत । शृङ्गाटकगिलोड्यबिसमृणालकसेरुकमधुकाम्रजम्ब्वसनतिनिशककुभकटुङ्गरोध्रभल्लातकचर्मिवृक्षगिरिकर्णिकाशीतशिवनिचुलदाडिमाजकर्णहरिवृक्षराजादनगोपघोण्टाविकङ्कतेषु वा । यवान्नविकारांश्च सेवेत । यथोक्तकषायसिद्धां चास्मै यवागूं प्रयच्छेत् कषायाणि वा पातुम् ॥

प्रमेहवाळाओने माटे अरिष्टादिक तथा अन्नादिक.

१० सघळा प्रमेहवाळाओने माटे घउलां, उपलसरी, जुई, कमुंबो, त्रायमाण, मजीठ, वीलुडी, दाडिमनी छाल, शालिपर्णी, पद्मक, पुन्नाग, नागकेसर, धावणी, बोलसरी, शेमळो, चंद्रस अने मोचरस (शेमळानो गुंदर) एओमां अरिष्टो, अयस्कृतिओ, अवलेहो अने आसवो करवां. अथवा शींगोडां, गिलोड्य, (गुजरातीमां प्रसिद्ध नथी) कमळनां मूळ, कमळनां नाळ, कसेरुकंद, जेठीमध, आंबो, जांबू, बीबलो, मीणोहरमो, कडायो के साजड, अरडूसो, लोदर, भीलामां, भोजपत्रनां वृक्ष, गरणी, पत्थरफूल, पाणीमां थतां नेतर, दाडिम, रालवृक्ष, हळदरवो, राण, सोपारी अने वीकलो एओमां अरिष्टो, अयस्कृतिओ, अवलेहो तथा आसवो करवां. प्रमेहवाळाओने जवनां अन्नोनी रोटली वगेरेनुं सेवन करावबुं, उपर कहेलां घउलां वगेरेना अथवा शींगोडां वगेरेना क्राथोथी पकावेली यवागू देवी अने ए क्राथो पण पीवराववा.

११ महाधनमहिताहारमौषधद्वेषिणमीश्वरं वा पाठाभयाचित्रकप्रगाढमनल्पमाक्षिकमन्यतममासवं पाययेदङ्गारशूल्यावदंशं वा माध्वीकमभीक्ष्णम् । मधुकपित्थमरिचानुविद्धानि चास्मै

पानान्युपहरेत् । उष्ट्राश्वतरखरपुरीषचूर्णानि चास्मै दद्यादशनेषु । हिङ्गुसैन्धवयुक्तैर्यूषैः सार्षपैश्च रागैर्भोजयेत् । अविरुद्धानि चास्मै पानभोजनान्युपहरेद्रसवन्ति ॥

प्रमेहवाळो कोई धनवान् माणस के राजा अपथ्य आहार करनारो तथा औषधोनो द्वेषी होय तो तेने रुचे एवी गोठवण.

११ कोई मोटो धनाढ्य माणस अथवा राजा प्रमेहवाळो छतां अपथ्य आहार करनारो अने औषधोनो द्वेषी होय तो वैद्ये तेने काळीपाड, हरडे तथा चित्रक एओथी सारी पेठे संयुक्त करेलो अने गोळने बदले घणुं मध नाखीने बनावेलो उपर कहेला आसवोमांनो कोई आसव वारंवार पावो अथवा अंगारा उपर कांटामां परोवीने पकावेला भडथांनी साथे मधनुं मद्य सारी पेठे आपवुं. मध कोठ तथा मरी एओथी संयुक्त करेलां शरबतो आपवां. भोजनोमां युक्तिथी ऊंट, खच्चर, तथा गधेडो एओनां लींडांनां चूर्णो भेळवी दईने ते भोजनो जमाडवां. हींग तथा सैंधव एओथी युक्त करेला यूषोथी तथा राईने बदले सर्षपोनो योग आपी तीखा करेला रागोथी (सू. अ. ४५ वि. २२९) भोजनो जमाडवां अने रसवाळां पानभोजनो के जेओ अविरुद्ध होय तेओ आपवां.

१२ प्रवृद्धमेहास्तु व्यायामनियुद्धक्रीडागजतुरगरथपदातिचर्यापरिक्रमणान्यस्त्रोपास्त्रे वा सेवेरन् ॥

प्रमेहवाळा जाडा माणसोनां शरीरोनुं अपकर्षण करवानी युक्ति.

१२ जेओनो प्रमेह वृद्धि पाम्यो होय एवा जाडा माणसोने करसतोनुं, मल्लयुद्धोनुं, मेहेनतवाळी रमतोनुं, हाथीओनी उपर बेसीने फरवानुं, घोडाओनी उपर बेसीने फरवानुं, रथोमां बेसीने फरवानुं, पाळा चालीने फरवानुं अने अस्त्रोनी तथा उपास्त्रोनी कवायदोनुं सेवन करावvुं.

१३ अधनस्त्वबान्धवो वा पादत्राणातपत्रविरहितो भैक्षाशी ग्रामैकरात्रानुवासी मुनिरिव संयतात्मा योजनशतमधिकं वा गच्छेत् । महाधनो वा श्यामाकनीवारवृत्तिरामलककपित्थतिन्दुकाश्मन्तकफलाहारो वा मृगैः सह वसेत्तन्मूत्रशकृद्भक्षी सततमनुव्रजेद्गां ब्राह्मणो वा शिलोञ्छवृत्तिर्भूत्वा ब्रह्मरथमुपधारयेत् पठेत्सततमितरः खनेद्वा कूपम् । कृशं तु सततं रक्षेत् ॥

भवति चात्र ।

अधनो वैद्यसन्देशादेवं कुर्वन्नतन्द्रितः ।
संवत्सरादन्तराद्वा प्रमेहात्प्रतिमुच्यते ॥

औषध वगर प्रमेह टाळवानी धर्मक्रियारूप युक्ति.

१३ जे माणस निर्द्धन के अनाथ होय ते माणस पगरखांथी तथा छत्रथी रहित रही, भीखेलुं अन्नादिक जमवानो तथा गाममां एक रात करतां वधारे नहीं रेहेवानो नियम राखी मुनिनी पेठे जितेंद्रिय रहीने पगे पाळो सो योजनसूधी अथवा तेथी वधारे सूधी तीर्थयात्रादिक प्रवास करे तो तेनो प्रमेह मटी जाय छे.

घणा धनवाळो माणस जो मात्र सामाना के बंटीना आहारथी वृत्ति चलावीने अथवा आमळां, कोठ, टींबरू तथा आंसोदरानां फळो एओनोज आहार राखीने जंगलमां मृगोनी साथे रहे अथवा गायना छाणनुं तथा मूत्रनुं प्राशन करवानो नियम राखी जंगलमां गायनी पछवाडे फरी फरीने तेनी सेवा करे तो ते माणसनो प्रमेह मटी जाय छे.

जो प्रमेहवाळो ब्राह्मण खेतरोमां के पाला वगेरेमां भालेकोए पड्या मूकेला दाणाओथी वृत्ति चलाववानो नियम राखी, जेओमां ब्राह्मणो बेठा होय एवा रथोने के गाडांओने जाते खेंचे अने निरंतर वेद भण्या करे तो तेनो प्रमेह मटी जाय छे.

जो प्रमेहवाळो शूद्रादिक माणस तरश्या लोकोना उपकारने माटे जाते कूवो खोदे तो तेनो प्रमेह मटी जाय छे.

उपर जे तीर्थयात्रादिक करवा वगेरे उपायो कह्या ते सघळा उपायो जाडां शरीरोवाळां प्रमेही माणसोने वैद्ये बताववा. कृश शरीरवाळां प्रमेही माणसनुं तो निरंतर रक्षण करवुं जोईए. (मेदने तथा मूत्रने नहीं वधारनारा पण तेओने न्यून करनारा औषधयुक्त आहारोथी बृंहण करवुं जोईए. वाग्भट.)

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जो निर्धन के धनवान् माणस वैद्यनी आज्ञाथी आलस्य छोडी दईने उपर कह्याप्रमाणे धर्मक्रिया करे तो एक वर्षे अथवा एक वर्षनी अंदर प्रमेहथी मुक्त थाय छे."

अध्याय १२ मो.

१ अथातः प्रमेहपिडकाचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'प्रमेहपिडका चिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शराविकाद्या नव पिडकाः प्रागुक्तास्ताः प्राणवतोऽल्पास्त्वङ्मांसप्राप्ता मृद्व्योऽल्परुजः क्षिप्रपाकभेदिन्यश्च साध्याः ॥

प्रमेहनी फोडलीओ केवी होय तो साध्य थाय?

२ शराविका वगेरे जे नव फोडलीओ निदानस्थानमां कहेली छे तेओ जो बलवान् माणसने थएली होय, अल्प होय, त्वचामां के मांसमांज पोहोचेली होय, कोमळ होय, अल्प वेदनावाळी होय अने तुरत पाकीने फूटती होय तो साध्य छे एम समजवुं.

३ ताभिरुपद्रुतं प्रमेहिणमुपचरेत्तत्र पूर्वरूपेष्वपतर्पणं कषायं बस्तमूत्रं चोपदिशेत् ।

एवमकुर्वतस्तस्य मधुराहारस्य मूत्रं स्वेदः श्लेष्मा च मधुरीभवति प्रमेहश्चाभिव्यक्तो भवति तत्रोभयतः संशोधनमासेवेत ।

एवमकुर्वतस्तस्य दोषाः प्रवृद्धा मांसशोणितं प्रदूष्य शोफं जनयन्त्युपद्रवान्वा कांश्चित्तत्रोक्तः प्रतीकारः शिरामोक्षश्च ।

एवमकुर्वतस्तस्य शोफो वृद्धोऽतिमात्ररुजो विदाहमापद्यते तत्र शस्त्रप्रणिधानमुक्तं व्रणक्रियोपसेवा च ।

एवमकुर्वतस्तस्य पूयोऽभ्यन्तरमवदार्योत्सङ्गं महान्तमवकाशं कृत्वा प्रवृद्धो भवत्यसाध्यः । तस्मादादित एव प्रमेहिणमुपक्रमेत ॥

फोडलीओथी उपद्रुत थएला प्रमेही माणसनी जूदा जूदा समयमां करवानी जूदी जूदी चिकित्साओ.

३ फोडलीओथी उपद्रुत थएला प्रमेही माण-

१ जे फोडलीओ विषे निदानस्थानना ६ ठा अध्यायना १४ मा विषयथी मांडीने १७ मा विषयसूधी व्याख्यान आप्युं छे तेओनी चिकित्सा विषयनो. जो के जेनुं मेद वगड्युं होय ते माणसने प्रमेहविना पण ए फोडलीओ थाय छे एम बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे तो पण प्रमेह पछी थएली फोडलीओनी अने प्रमेहथी पेहेलां थएली फोडलीओनी चिकित्सा एकज छे अने प्रमेहनी जे चिकित्सा छे तेज घणुं करीने ए फोडलीओनी चिकित्सा छे माटे फोडलीओनी चिकित्सामां पण प्रमेहनी चिकित्सा केहेवामां आवशे.

२ निदानस्थानमां प्रमेहनी फोडलीओ दश कही छे ते छतां अहीं नवनी संख्या आपी छे माटे दशमीना दोषोनुं मेद सूधी पोहोचवुं होवाथी असाध्यपणुं होय अथवा ते उपर विद्रधिनी चिकित्साज इष्ट होय एम जणाय छे.

सनी चिकित्सा करवी ते एवी रीते के ज्यारे पूर्वरूपो देखाय त्यारेज वैद्ये तेने उपवासादिक अपतर्पण कराववुं, वडवगेरे कषाय वनस्पतिओना क्काथादिकनुं सेवन कराववुं अने बकरानुं मूत्र पावुं.

जो रोगी ए समयमां वैद्यना केहेवा प्रमाणे वर्ते नहीं अने मधुर आहार कर्या करे तो तेनां मूत्र, पसीनो अने कफ मधुर थई जाय छे अने प्रमेह अभिव्यक्त (जाहेर) थाय छे. आ समयमां वैद्ये ते रोगीने वमनोनुं अने विरेचनोनुं सेवन कराववुं.

जो रोगी ए समयमां वमनोनुं तथा विरेचनोनुं सेवन न करे तो तेना दोषो वृद्धि पामी, मांसने तथा रुधिरने दूषित करीने सोजाने उत्पन्न करे छे तथा केटलाएक उपद्रवोने पण उत्पन्न करे छे. आ समयमां वैद्ये आ स्थानना पेहेला अध्यायमां कह्याप्रमाणे अपतर्पणथी मांडीने विरेचनसूधीनी बार प्रकारनी चिकित्साओ करवी अने शिरावेध करीने (फसखोलीने) लोही स्रवाववारूप चिकित्सा पण करवी. (आ रोगमां जळो मूकीने लोही स्रवाववुं तो अनुकूल नथी. केमके फोडलीओवाळो कायानो नीचेनो भाग अत्यंत मोटो होय छे. डल्हन.)

जो रोगी ए समयमां ए चिकित्साओथी रहित रहे तो तेनो सोजो वृद्धि पामी अत्यंत वेदनाथी संयुक्त थईने विषम पाक पामे छे. आ समयमां वैद्ये शस्त्रक्रिया करवी अने आ स्थानना पेहेला अध्यायमां कहेली व्रणनी साठ चिकित्साओमांथी यथायोग्य चिकित्सा करवी. (सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायना ३ जा विषयमां प्रमेहपिडकाओने भेदनरूप शस्त्रक्रियाना पात्ररूप गणेली छे.)

जो रोगी ए समयमां शस्त्रक्रियारूप चिकित्साथी तथा व्रणनी चिकित्साओथी रहित रहे तो परू अंदरना भागने फाडी नाखी मोटी कोतर पाडी नाखीने असाध्य थई पडे छे. (जो उपद्रवो अत्यंत न थया होय, कोतर बहु मोटी न पडी होय अने आ पछीना अध्यायमां कह्याप्रमाणे शिलाजित वगेरेनुं सेवन करवामां आवे तो याप्य थाय छे.) आम छे एटला माटे ज्यारथी पूर्वरूपो जोवामां आवे त्यारथीज वैद्ये प्रमेहीनी चिकित्सा करवी.

४ भल्लातकबिल्वाम्बुपिप्पलीमूलोदकीर्यावर्षाभूपुनर्नवाचित्रकशटीस्नुहीवरुणकपुष्करदन्तीपथ्या दशपलोन्मिता यवकोलकुलत्थांश्च प्रास्थिकान्सलिलद्रोणे निःक्काथ्य चतुर्भागावशिष्टेऽवतार्य वचात्रिवृत्कम्पिल्लकभार्गीनिचुलशुण्ठीगजपिप्पलीविडङ्गशिरीषाणां भागैरर्द्धपालिकैर्घृतप्रस्थं विपाचयेन्मेहश्वयथुकुष्ठगुल्मोदराशःप्लीहविद्रधिपिडकानां नाशनं नाम्ना धान्वन्तरम् ॥

धान्वंतर घृत.

४ भीलामांनां मूळ, बीलीनां मूळ, रतवेलीयानां मूळ, करंज, साटोडी, धोळी साटोडी, चित्रक, कचूरो, थोर, वायवरणां, पुष्करमूल, नेपाळो अने हरडे एओने चालीश चालीश तोलां भार लई अने जव, बोर तथा कळथी एओने चोसठ चोसठ तोलां भार लई एक हजार चोवीश तोलां भार पाणीमां उकाळी चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे ते क्काथने उतारी लई ते क्काथथी अने वज, नसोतर, कपीलो, भारंगी, जलमां थतुं नेतर, सूंठ, गजपीपळ, वावडींग तथा सरसडीयो एओना बे बे तोलां भार कल्कोथी चोसठ तोलां भार घी पकाववुं. ए घी सिद्ध थाय त्यारे **धान्वंतर घृत** केहेवाय छे. आ घीथी प्रमेह, सोजो, कोढ, गुल्म, उदररोग, *अरश, बरलनो रोग, विद्रधि अने पिडकाओ एओनो नाश थाय छे. (आ योग अनार्ष छे. डल्हन.)

५ दुर्विरेच्या हि मधुमेहिनो भवन्ति मेदोऽभिव्याप्तशरीरत्वात्तस्मात्तीक्ष्णमेतेषां शोधनं

कुर्वीत । पिडकापीडिताः सोपद्रवाः सर्वएव प्रमेहा मूत्रादिमाधुर्ये मधुगन्धसामान्यात्पारिभाषिकीं मधुमेहतां लभन्ते । न चैतान्कथश्चिदपि स्वेदयेत् । मेदोबहुत्वादेवैषां विशीर्यते देहः स्वेदेन ॥

मधुमेहवाळाओने तीक्ष्ण शोधन देवुं अने स्वेदन संस्कार नहीं देवो.

५ मधुमेहना दरदीओनां शरीरो मेदथी अभिव्याप्त होवाने लीधे ते दरदीओने मांड मांड विरेचन लागे छे एटला माटे तेओने जे शोधन देवुं ते तीक्ष्णज देवुं. फोडलीओथी पीडाएला अने उपद्रवोथी युक्त थएला सघळा प्रकारना प्रमेहो मूत्रादिकमां मधुरता थतां मधना जेवा गंधवाळा थई जाय त्यारे मधुमेहो केहेवाय एवी आयुर्वेदनी परिभाषा छे. मधुमेहवाळाओने कोई प्रकारनो पण स्वेदन संस्कार आपवो नहीं. केमके एओनां शरीरो घणा मेदवाळां होवाने लीधे स्वेदन संस्कारथी वींखाईज जाय. (प्रमेहवाळाओने पण तीक्ष्ण शोधनज देवुं अने स्वेदन संस्कार नहीं देवो.)

६ रसायनीनां च दौर्बल्यान्नोर्ध्वमुत्तिष्ठन्ति प्रमेहिणां दोषास्ततो मधुमेहिनामधःकाये पिडकाः प्रादुर्भवन्ति ॥

मधुमेहवाळाओने कायाना नीचेना भागमांज फोडलीओ ऊठे छे तेनुं कारण.

६ प्रमेहवाळाओनी रसरक्तादिकनुं वहन करनारी धमनीओ, उपरना प्रदेशोमां निर्बल थई जाय छे तेथी प्रमेहवाळाओना दोषो उपरना प्रदेशोमां नहीं ऊठतां नीचेना प्रदेशोमांज ऊठे छे के जेथी प्रमेहवाळाओने कायाना नीचेना भागमांज फोडलीओ उत्पन्न थाय छे.

७ अपक्कानां पिडकानां शोफवत्प्रतीकारः पक्कानां व्रणवदिति । तैलं तु व्रणरोपणादौ कुर्वीत । आरग्वधादिकषायमुत्सादनार्थे । शालसारादिकषायं परिषेचने । पिप्पल्यादिकषायं पानभोजनेषु। पाठाचित्रकशार्ङ्गेष्टाक्षुद्रबृहतीसारिवासोमवल्कसप्तपर्णारग्वधकुटजमूलचूर्णानि मधुमिश्राणि प्राश्नीयात् ॥

फोडलीओनी चिकित्सानी सामान्य पद्धति.

७ प्रमेहनी फोडलीओ पाकी न होय त्यांसूधी तेओनी सोजानी चिकित्सा जेवी चिकित्सा करवी अने पाकी गई होय त्यारे व्रणोनी चिकित्सा जेवी चिकित्सा करवी. व्रणोनुं रोपण करवा माटे जे तैल बनाववुं ते रोपण द्रव्योना के एलादिगणना क्काथथी तथा कल्कथी बनाववुं. नीचा व्रणोने ऊंचा करवा माटे आरग्वधादि गणनो क्काथ करवो. परिषेचन करवा माटे शालसारादि गणनो क्काथ करवो. पीवामां तथा भोजनमां पिप्पल्यादि गणना क्काथनो उपयोग कराववो. काळीपाड, चित्रक, पीलुडी, नाहानी भोरींगणी, उपलसरी, खेर, सप्तपर्ण, गरमाळो अने इंद्रजव, एओनां मूळोना चूर्णने मधथी मिश्रित करीने तेनुं प्राशन कराववुं.

८ शालसारादिवर्गकषायं चतुर्भागावशिष्टमवतार्य परिस्राव्य पुनरुपनीय साधयेत् सिध्यति चामलकरोध्रप्रियङ्गुदन्तीकृष्णायस्ताम्रचूर्णान्यावपेदेतदनुपदग्धं लेहीभूतमवतार्यानुगुप्तं निदध्यात्ततो यथायोगमुपयुञ्जीत । एष लेहः सर्वमेहानां हन्ता ॥

सर्व प्रमेहोने हणनारो अवलेह.

८ शालसारादि गणनो क्काथ करी चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे उतारी गाळी लई तेने पाछो बीजीवार पकाववा अग्निपर चडाववो अने ए पाकतो होय त्यारे तेमां आमळां, लोदर, घउंलां, नेपाळो, लोढुं अने त्रांबुं ए प्रत्येकनां चार चार तोलां भार चूर्णो नाखवां. ए सर्व

बळी नहीं जतां लेहरूप (शीरासमान) थई जाय त्यारे उतारी लईने ते अवलेहने सारा बंदोवस्तथी राखी मूकवो अने तेमांथी रोगीने योग्य मात्रा खवराववी. आ अवलेह सघळा प्रमेहोने हणे छे.

९ त्रिफलाचित्रकत्रिकटुविडङ्गमुस्तानां नवभागास्तावन्त एव कृष्णायश्चूर्णस्य तत्सर्वमैकध्यं कृत्वा यथायोगं मात्रां सर्पिर्मधुभ्यां संसृज्योपयुञ्जीत । एतन्नवायसमेतेन जाठर्यं न भवति सन्नोऽग्निराप्यायते दुर्नामशोफपाण्डुकुष्ठरोगाविपाककासश्वासप्रमेहाश्च न भवन्ति ॥

नवायस.

९ त्रिफळा, चित्रक, त्रिकटु, (सूंठ मरी पीपळ) वावडींग अने मोथ एओना नव भागोने तथा काळा लोढाना चूर्णना नव भागोने लई सर्वेने एकठा करी तेनी यथायोग्य मात्रा घीथी तथा मधथी संयुक्त करीने रोगीने खवराववी. आ **नवायस** केहेवाय छे. आथी स्थूलपणुं थतुं नथी, मंद थएलो जठराग्नि प्रदीप्त थाय छे अने अरश, सोजो, पांडुरोग, कोढ, अन्ननुं नहीं पचवुं, खांसी, श्वास अने प्रमेह एओ नष्ट थई जाय छे.

१० शालसारादिनिर्यूहे चतुर्थांशावशेषिते ।
परिस्रुते ततः शीते मधु माक्षिकमावपेत् ॥
फाणितीभावमापन्नं गुडं शोधितमेव च ।
श्लक्ष्णपिष्टानि चूर्णानि पिप्पल्यादिगणस्य च ॥
ऐकध्यमावपेत्कुम्भे संस्कृते घृतभाविते ।
पिप्पलीचूर्णमधुभिः प्रलिप्तेऽन्तःशुचौ दृढे ॥
श्लक्ष्णानि तीक्ष्णलोहस्य तत्र पत्राणि बुद्धिमान् ।
खदिराङ्गारतप्तानि बहुशः सन्निपातयेत् ॥
सुपिधानं तु तं कृत्वा यवपल्ले निधापयेत् ।
मासांस्त्रींश्चतुरो वापि यावदालोहसंक्षयात् ॥
ततो जातरसं तं तु प्रातः प्रातर्यथाबलम् ।
निषेवेत यथायोगमाहारं चास्य कल्पयेत् ॥
कार्श्यकृद्बलिनामेष सन्नस्याग्नेः प्रसाधकः ।
शोफनुद्गुल्महृत्कुष्ठमेहपाण्ड्वामयापहः ॥
प्लीहोदरहरः शीघ्रं विषमज्वरनाशनः ।
अभिष्यन्दापहरणो लोहारिष्टो महागुणः ॥

लोहारिष्ट.

१० शालसारादि गणनो क्वाथ करी चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे तेने वस्त्रथी गाळी लई शीतल थया पछी तेमां मधनुं मद्य नाखवुं. (गयदासाचार्य तो केहे छे के मधज नाखवुं.) पछी गोळनी चासणी करी ते गोळ राब जेवो थाय त्यारे ते गोळने, पेला क्वाथने अने पिप्पल्यादि गणनां बारीक वाटेलां चूर्णोने एकंदर करीने घीथी रीढा, स्वच्छ करेला, योग्य औषधोनी धुमाडीथी धूपेला अने पीपळना चूर्णना तथा मधना कल्कथी अंदर लींपेला घडामां नाखवां. पछी बुद्धिमान् वैद्ये गजवेलनां झीणां, पातळां तथा लासां करेलां पतरांओने खेरना टांडाओथी वारंवार तपावीने ते घडामां नाखवां. पछी ए घडानुं मोहोडुं सारी पेठे बंध करीने ते घडाने त्रण के चार महिना सूधी एटले सघळुं लोढुं गळी जाय त्यांसूधी जवना ढगलामां डाटी मूकवो. सघळुं लोढुं तेमां गळी जईने रसरूप थई जाय एटले **लोहारिष्ट** सिद्ध थाय छे. शरीर वगेरेना बळने अनुसरीने प्रभाते प्रभाते रोगीने आ लोहारिष्टनुं सेवन कराववुं अने तेना उपर योग्य आहारनी कल्पना करी देवी. आ मोटा गुणवाळो लोहारिष्ट जाडा शरीरने पातळुं करे छे, मंद थई गएला जठराग्निने प्रदीप्त करे छे, अभिष्यंदनुं हरण करे छे अने सोजा, कोढ, गुल्म, प्रमेह, पांडुरोग, बरलनुं दरद, उदरना रोग तथा विषमज्वर एओने नष्ट करे छे.

११ प्रमेहिणो यदा मूत्रमपिच्छिलमनाविलम् ।
विशदं तिक्तकटुकं तदारोग्यं प्रचक्षते ॥

---

१ रसनुं वहन करनारी शिराओ चीकाशथी तथा भारेपणाथी रोकाई जतां शरीर भारे थई जाय ए अभिष्यंद केहेवाय छे. डल्हन केहेछे के अहीं तो अभिष्यंदशब्दथी मूत्रनिस्राव समजवो.

प्रमेहवाळाने आरोग्य प्राप्त थयानुं लक्षण.

११ ज्यारे प्रमेहवाळा माणसनुं मूत्र चीकाश-वगरनुं, स्वच्छ, रूक्ष अने तीखुं तथा कडवुं थाय त्यारे ते रोगीने आरोग्य प्राप्त थयुं केहेवाय छे. (मूत्र उपर कीडीओ के मांखीओ आवती बंध पडी जाय त्यारे मूत्रने तीखुं तथा कडवुं थएलुं समजवुं.)

अध्याय १३ मो.

१ अथातो मधुमेहचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मधुमेहचिकित्सित' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मधुमेहित्वमापन्नं भिषग्भिः परिवर्जितम् ।
योगेनानेन मतिमान्प्रमेहिणमुपाचरेत् ॥
मासे शुक्रे शुचौ चैव शैलाः सूर्यांशुतापिताः ।
जतुप्रकाशं स्वरसं शिलाभ्यः प्रस्रवन्ति हि ॥
शिलाजत्विति विख्यातं सर्वव्याधिविनाशनम्
त्रप्वादीनां तु लोहानां षण्णामन्यतमान्वयम् ॥
ज्ञेयं स्वगन्धतश्चापि षड्योनिप्रथितं क्षितौ ।
लोहाद्भवति तद्यस्माच्छिलाजतु जतुप्रभम् ॥
तस्य लोहस्य तद्वीर्यं रसं चापि बिभर्त्ति तत् ।
त्रपुसीसायसादीनि प्रधानान्युत्तरोत्तरम् ॥
यथा तथा प्रयोगोऽपि श्रेष्ठे श्रेष्ठगुणाः स्मृताः ।
तत्सर्वं तिक्तकटुकं कषायानुरसं सरम् ॥
कटुपाक्युष्णवीर्यं च शोषणं छेदनं तथा ।
तेषु यत्कृष्णमलघु स्निग्धं निःशर्करं च यत् ॥
गोमूत्रगन्धि यच्चापि तत्प्रधानं प्रचक्षते ।
तद्भावितं सारगणैर्हृतदोषो दिनोदये ॥
पिबेत्सारोदकेनैव श्लक्ष्णपिष्टं यथाबलम् ।
जाङ्गलेन रसेनान्नं तस्मिञ्जीर्णे तु भोजयेत् ॥
उपयुज्य तुलामेवं गिरिजादमृतोपमात् ।
वपुर्वर्णबलोपेतो मधुमेहविवर्जितः ॥
जीवेद्वर्षशतं पूर्णमजरोऽमरसन्निभः ।
शतं शतं तुलायां तु सहस्रं दशतौलिके ॥
भल्लातकविधानेन परिहारविधिः स्मृतः ।
मेहं कुष्ठमपस्मारमुन्मादं श्लीपदं गरम् ॥
शोषं शोफार्शसी गुल्मं पाण्डुतां विषमज्वरम् ।
अपोहत्यचिरात्कालाच्छिलाजतु निषेवितम् ॥
न सोऽस्ति रोगो यं चापि निहन्यान्न शिलाजतु ।
शर्करां चिरसम्भूतां भिनत्ति च तथाश्मरीम् ॥
भावनालोडने चास्य कर्त्तव्ये भेषजैर्हितैः ।

मधुमेह उपर शिलाजितनो प्रयोग.

२ मधुमेहीपणाने प्राप्त थएला अने असाध्य जाणीने बीजा वैद्योए छोडी दीधेला प्रमेही माणसनी बुद्धिमान् वैद्ये नीचे लखेला योगथी चिकित्सा करवी.

ज्येष्ठ मासमां तथा आषाढ मासमां सूर्यनी किरणोए तपावेला पर्वतो शिलाओमांथी लाख जेवा देखाता स्वरसने स्रवे छे ए शिलाजतु (शिलाजित) केहेवाय छे के जे सघळा व्याधिओने नष्ट करनार छे. (जोके बीजा महिनाओमां पण पर्वतोनी शिलाओमांथी शिलाजितनो स्राव थाय छे तो पण सूर्यनी अति कठोर किरणोवँते तपेली शिलाओमांथी स्रवेलुं शिलाजित विशेष गुणवाळुं थाय छे एम जणाववाने माटे ज्येष्ठ मास तथा आषाढ मास कह्या छे.) ए शिलाजित कथीलना, सीसांना, त्रांबाना, रूपाना, सुवर्णना के काळा लोढाना संबंधवाळुं होय छे तेथी जगतमां छ कारणोवाळुं केहेवामां आवे छे. शिलाजित ए धातुओमांथी कया धातुना संबंधवाळुं छे ए तेना रसादिक उपरथी तथा गंध उपरथी परीक्षा करी लेवी. ए लाख जेवा वर्णवाळुं शिलाजित जे कथील वगेरे धातुमांथी थयुं होय ते धातुना रसनुं अने

१ मधुमेह के जेनुं लक्षण निदानस्थानना ६ ठा अध्यायना १८ मा विषयमां आप्युं छे तेनी चिकित्सा विषेनो.

वीर्यनुं धारण करे छे. कथील करतां सीसुं, सीसा करतां त्रांबुं, त्रांबा करतां रूपुं, रूपा करतां सोनुं अने सोना करतां लोढुं प्रधान छे माटे शिलाजितोमां पण कथीलना संबंधवाळा करतां सीसाना संबंधवाळुं, सीसाना संबंधवाळा करतां त्रांबाना संबंधवाळुं, त्रांबाना संबंधवाळा करतां रूपाना संबंधवाळुं, रूपाना संबंधवाळा करतां सोनाना संबंधवाळुं अने सोनाना संबंधवाळा करतां लोढाना संबंधवाळुं उत्तम गणाय छे. उत्तम शिलाजितमां उत्तम गुणो रह्या होय छे माटे प्रयोगमां उत्तम शिलाजितनो उपयोग करवो. सघळां शिलाजितो कडवां तथा तीखां, पेटामां तूरा रसवाळां, दस्त उतारनारां, पाकमां तीखां, उष्णवीर्यवाळां, दुष्ट रुधिर वगेरेनुं शोषण करनारां अने कफ वगेरेनुं छेदन करनारां होय छे तेओमां जे शिलाजित काळुं, भारे, स्निग्ध, कांकरीओ वगरनुं अने गोमूत्रना जेवा गंधवाळुं होय ते उत्तम (लोढांना संबंधवाळुं होवाने लीधे सर्वथी श्रेष्ठ) गणाय छे. धोवा वगेरे संस्कारोथी शुद्ध करेला ते शिलाजितने शालसारादि गणना काथनी दश, वीश के त्रीश दिवस सूधी भावनाओ आपी बारीक वाटीने, वमनादिकथी शुद्ध करेला शरीरवाळा रोगीने सूर्योदयमां तेना बळप्रमाणे शालसारादि गणनाज काथनी साथे ते पावुं अने ते जीर्ण थया पछी जांगल प्राणीओना मांसना रसानी साथे अन्न जमाडवुं. आ प्रमाणे अमृत जेवा ए शिलाजितमांथी सरवाळे चारसो तोलांभार शिलाजितनो उपयोग कराववामां आवे तो रोगी मधुमेहथी रहित थई, सारा शरीरवाळो, सारा वर्णवाळो, उत्तम बळवाळो, जरावगरनो अने देवसमान शक्तिवाळो थईने पूरेपूरां सो वर्षसूधी जीवे छे. शिलाजितनी एक तुला

१ शिलाजीतमां अनेक मेल मळेला होय छे माटे शुद्ध कर्या विना ते नकामुं छे. शिलाजीतना गांगडा लावी तेओना झीणा झीणा टुकडा करी अत्यंत उकळेला पाणीमां नाखवा अने एक पोहोरसुधी तेमां रेहेवा देवा. पछी पाणीने घोळी वस्त्रथी गाळीने लई लेवुं. ए पाणीने माटीना वासणमां नाखी तडकामां मूकवुं. तडकामां रेहेतां पाणीनी उपर तरनी पेठे जे घाटो भाग आवे तेने लई वळी बीजा वासणमां नाखवो. ते घाटा भागने वळी ऊना पाणीनो संस्कार आपी पाणीमां सारी पेठे घोळी पाणीने वस्त्रथी गाळी लई माटीना वासणमां भरी तडकामां मूकवुं. तडकामां रेहेतां पाणीनी उपर तरनी पेठे जे घाटो भाग आवे तेने लई वळी बीजा वासणमां नाखवो. एवी रीते बे महिना सूधी वारंवार करतां पाणी उपर घाटो भाग नज आवे अने सघळो काळो भाग नीचेज रहे एटले ते काळा भागने शुद्ध थएलुं शिलाजीत समजवुं. जे शिलाजीत अग्नि उपर नाखतां शिवलिंग जेवुं थई जाय अने धुमाडो न नीकळे ते शिलाजीतने शुद्ध थएलुं समजीने कामोमां लेवुं.

शिलाजीतने शुद्ध करवानो बीजो प्रकार ए छे के प्रथम बाहारना मेलने दूर करवा केवळ जळथी शिलाजीतना गांगडाने धोवा अने ते पछी तेनी अंदर रहेला माटी तथा रेती वगेरे दोषने दूर करवा माटे शिलाजीतने लोढाना पात्रमां राखी लींबडो, गळो, घी अने जव एओना क्वाथनी भावना दई सुकाववुं. पछी वादळाना संसर्ग वगरना उष्ण कालमां सूर्यना तडकावाळा अने वायुवगरना समभूमिना भागमां लोढानां चार वासण मेली ते शिलाजीतने एक वासणमां नाखी तेथी बमणुं अरधोअरध बाळीने गरम करेलुं पाणी नाखीने तेमां चोळी नाखवुं. तडकानो ताप लागतां पाणी उपर तरनी पेठे जे काळो भाग आवे तेने लई बीजा वासणमां नाखवो अने तेमां पण जरा ऊनाशवाळुं पाणी नाखी तडकामां मूकवो. ए पाणी उपर जे काळो भाग आवे तेने लई त्रीजा वासणमां नाखवो अने तेमां पण जरा ऊनाशवाळुं पाणी नाखी तेने तडकामां मूकवो. ए पाणी उपर जे काळो भाग आवे तेने लई चोथा वासणमां नाखवो अने तेमां पण जरा उनाशवाळुं पाणी नाखी तेने तडकामां मूकवो. आ प्रमाणे करवाथी आछुं पाणी उपर रेहे छे अने सघळो काळो भाग नीचे रही जाय छे. आम थाय त्यारे पाणीने काढाडी नाखतां जे काळो भाग नीचे रह्यो होय ते शुद्ध शिलाजीत गणाय छे.

(चारसो तोलां भारनी एक तुला थाय छे.) उपयोगमां लेवायाथी सो वर्षनुं आयुष्य थाय छे, बे तुला उपयोगमां लेवायाथी बसो वर्षनुं आयुष्य थाय छे अने एवी रीते दश तुला उपयोगमां लेवायाथी हजार वर्षनुं आयुष्य थाय छे. शिलाजितनुं भक्षण करनारा रोगीने आ स्थानना छठा अध्यायना २० मा विषयमां कहेला भल्लातक विधाननी परेजी प्रमाणे परेजी पळाववी. सेववामां आवेलुं शिलाजित प्रमेहने, कोढने, अपस्मारने, उन्मादने, श्लीपदने, झेरने, शोषने, सोजाने, अरशने, गुल्मने, पांडुरोगने अने विषमज्वरने अल्प समयथीज दूर करी नाखे छे. एवो कोई पण दोष नथी के जेने शिलाजित न टाळीशके. शिलाजित लांबा काळथी उत्पन्न थएली कांकरीने तथा पथरीने पण भेदी नाखे छे. जे दोष उपर के जे रोग उपर शिलाजितनो प्रयोग करवो होय ते दोषने तथा रोगने हरनारां हितकारी औषधोनी शिलाजितने भावनाओ देवी अने तेवांज औषधोना काथमां घोळीने ते शिलाजित पावुं.

३ एवं च माक्षिकं धातुं तापीजममृतोपमम् ॥
मधुरं काञ्चनाभासमम्लं वा रजतप्रभम् ।
पिबन्हन्ति जराकुष्ठमेहपाण्ड्वामयक्षयान् ॥
तद्भावितः कपोतांश्च कुलत्थांश्च विवर्जयेत् ।

मधुमेह उपर सुवर्णमाक्षिकनो (सोनामखी नामना उपधातुनो) प्रयोग.

३ सुवर्णमाक्षिक नामनो उपधातु के जे तापी नदीमां थाय छे अने अमृतसमान छे तेने शुद्ध[1] करी शालसारादि गणना काथनी दश, वीश के त्रीश भावनाओ आपी बारीक वाटीने वमनादिकथी शुद्ध करेला रोगीने सूर्योदयमां तेना बळ प्रमाणे शालसारादि गणनाज काथनी साथे ते पावो. अने ते जीर्ण थया पछी जांगल प्राणीओना मांसना रसानी साथे अन्न जमाडवुं. सुवर्णमाक्षिक के जे मधुर होय तो सुवर्णना जेवी कांतिवाळुं थाय छे अने खाटुं होय तो रूपाना जेवी कांतिवाळुं थाय छे तेने उपर कह्याप्रमाणे रोगी पीये तो तेना जरा, कोढ, प्रमेह, पांडुरोग तथा क्षयरोग एओ टळी जाय छे. जेणे सुवर्णमाक्षिकनो उपयोग कर्यो होय तेणे जीवतां सूधी होलाना मांसनुं के कळथीनुं भक्षण करवुं नहीं. (जेणे शिलाजितनो उपयोग कर्यो होय तेणे पण जीवतां सूधी होलाना मांसनुं के कळथीनुं भक्षण करवुं नहीं.)

४ पञ्चकर्मगुणातीतं श्रद्धावन्तं जिजीविषुम् ॥
योगेनानेन मतिमान्साधयेत्कुष्ठिनं नरम् ।
वृक्षास्तुवरका ये स्युः पश्चिमार्णवभूमिषु ॥
वीचीतरङ्गविक्षेपमारुतोद्धूतपल्लवाः ।
तेषां फलानि गृह्णीयात्सुपक्वान्यम्बुदागमे ॥
मज्ज्ञस्तेभ्योऽपि संहृत्य शोषयित्वा विचूर्ण्य च ।
तिलवत्पीडयेद्द्रोण्यां स्रावयेद्वा कुसुम्भवत् ॥
तत्तैलं संहृतं भूयः पचेदातोयसंक्षयात् ।
अवतार्य करीषे च पक्षमात्रं निधापयेत् ॥
स्निग्धः स्विन्नो हृतमलः पक्षादूर्ध्वं प्रयत्नवान् ।
चतुर्थभक्तान्तरितः शुक्लादौ दिवसे शुभे ॥
मन्त्रपूतस्य तैलस्य पिबेन्मात्रां यथाबलम् ।
तत्र मन्त्रं प्रवक्ष्यामि येनेदमभिमन्त्र्यते ॥
'मज्जसार महावीर्य सर्वान्धातून्विशोधय ।
शङ्खचक्रगदापाणिस्त्वामाज्ञापयतेऽच्युतः' ॥
तेनास्योर्ध्वमधश्चापि दोषा यान्त्यसकृत्ततः ।
अस्नेहलवणां सायं यवागूं शीतलां पिबेत् ॥
पञ्चाहं प्रपिबेत्तैलमनेन विधिना नरः ।
पक्षं परिहरेच्चापि मुद्गयूषौदनाशनः ॥
पञ्चभिर्दिवसैरेवं सर्वकुष्ठैर्विमुच्यते ।

---

१ त्रण भाग सोनामखी अने एक भाग सैंधव लई तेओने बीजोराना अथवा लींबूना रसथी लोढाना वासणमां पकाववां. पकावतां ज्यांसूधी लोढानुं वासण बहुज लाल थई जाय त्यांसूधी हलाव्या करवां. आम करवाथी सोनामखी शुद्ध थई जाय छे.

मधुमेह उपर तुवरकविधान.

४ जे कोढना के प्रमेहना दरदीने संशोधनोथी तथा बीजी क्रियाओथी पण लाभ न थयो होय ते माणस जो जीववानी इच्छा करतो होय अने वैद्यना वचनो उपर श्रद्धावाळो होय तो तेने बुद्धिमान् वैद्ये नीचे लखेला योगथी स्वस्थ करवो.

पश्चिम समुद्रनी भूमिकाओमां समुद्रना कल्लोलोना उछाळाओथी तथा ते कल्लोलोना पवनथी चलायमान थतां पानडांओवाळा जे तुवरक नामना वृक्षो (चेर) थाय छे तेओनां वर्षाऋतुमां सारी पेठे पाकेलां फळोने (चेरीयांओने) लई ते फळोमांथी माज्ज काहाडी, ते मज्जाने सुकावी चूर्ण करीने तिलोनी पेठे पीली अथवा कसुंबानां पुष्पोनी पेठे कोठीमां खवावीने तेओनुं तेल करवुं. पछी ए तेलने लई तेमांथी पाणीनो भाग तमाम बळी जाय त्यांसूधी तेने पकावी उतारी लई, कुंपामां भरी एक पखवाडीयासुधी छाणना गंजमां दाटी मूकवुं. स्नेहनथी, स्वेदनथी तथा वमनथी शुद्ध करेला अने रोग मटाडवामां काळजी राखनारा दरदीने वमन पछी एक पखवाडीयुं वीत्या पछी विरेचन आपी, ते पछी एक पखवाडीयुं जवा दई पेहेले दिवसे प्रभाते तथा सांजे जमाडी, बीजे दिवसे प्रभाते जमाडी अने सांजे मात्र दाडिमादिकनो रस अथवा गरम पाणीज पाई, त्रीजे दिवसे प्रभातमां शरीरना बळना अनुसारथी ए तैलनी मात्रा पावी. ए त्रीजो दिवस शुक्लपक्षना आरंभनो जोईए तथा ज्योतिःशास्त्रनी रीतिप्रमाणे शुभ जोईए. तैलनी जे मात्रा पावानी होय ते मात्राने "हे मोटी शक्तिवाळा मज्जाना सारभूत तैल! भुजाओमां शंखने, चक्रने तथा गदाने धरनारा महाविष्णु तने आज्ञा करे छे के तूं सघळा धातुओने शुद्ध करजे" एवा अर्थवाळा मूलोक्त मंत्रथी मंत्रीने पावी. आ मात्रा पीवाथी सघळा दोषो वारंवार ऊर्ध्वद्वारथी तथा अधोद्वारथी नीकळी जाय छे. दोषो नीकळी गया पछी रोगीने सायंकाळे स्नेहवगरनी तथा लूणवगरनी अथवा थोडा स्नेहवाळी तथा थोडा लूणवाळी शीतल यवागू पावी. आ विधिथी पांच दिवस सूधी ए चेरीयांनुं तेल पीवराववामां आवे अने पछी एक पखवाडीयां सूधी क्रोधादिकनो त्याग करावी मगना यूषनी साथे भातज जमाडवामां आवे तो पांच दिवसोमांज सघळा प्रकारना कोढो तथा प्रमेहो टळी जाय छे.

५ तदेव खदिरकाथे त्रिगुणे साधु साधितम् ॥
निहन्ति पूर्ववत्पकं पिबन्मासमतन्द्रितः ।
तेनाभ्यक्तशरीरश्च कुर्वीताहारमीरितम् ॥
भिन्नस्वरं रक्तनेत्रं विशीर्णं कृमिभक्षितम् ।
अनेनाशु प्रयोगेण साधयेत्कुष्ठिनं नरम् ॥

बीजा प्रकारनुं तुवरकविधान.

५ ए चेरीयांना तैलने खेरना त्रगणा क्राथमां सारी रीते पकावी बराबर पाके त्यारे उतारी लई बराबर काळजी राखीने तेमांथी योग्य मात्रा उपर कहेला विधिप्रमाणे एक महिना सूधी नित्य पावामां आवे, ए तैलनोज अभ्यंग करावावामां आवे अने उपर कह्याप्रमाणेज आहार कराववामां आवे तो ते प्रयोगथी वैद्य बीगडेला स्वरवाळा, रातां थएलां नेत्रोवाळा, वींखाएला शरीरवाळा अने कीडाओए खाधेला कोढीयाने पण तुरत स्वस्थ करी शके छे. (भयंकर प्रमेहवाळा माणसने पण तुरत स्वस्थ करी शके छे.)

६ सर्पिर्मधुयुतं पीतं तदेव खदिराम्बुना ।
पक्षिमांसरसाहारं करोति द्विशतायुषम् ॥

त्रीजा प्रकारनुं तुवरकविधान.

६ ए चेरीयानुं तेल घीथी तथा मधथी संयुक्त करी, उपर कहेला यथोचित विधिथी खेरना क्राथनी साथे पीवराववामां आवे अने ते उपर पक्षीओना मांसोना रसानो आहार आपवामां आवे तो रोगी स्वस्थ थईने बसो वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे.

७ तदेव नस्ये पञ्चाशद्दिवसानुपयोजितम् । वपुष्मन्तं श्रुतिधरं करोति त्रिशतायुषम् ॥

चोथा प्रकारनुं तुवरकविधान.

७ ए चेरीयांना तलने मंत्री तेनुं पंचाश दिवसो सुधी नस्य देवामां आवे तो तेथी रोगी प्रबल तथा उत्तम शरीरवाळो, सांभळतांज ग्रंथादिकनुं धारण करी शके एवो अने त्रणसो वर्षना आयुष्यवाळो थाय छे.

८ शोधयन्ति नरं पीता मज्जानस्तस्य मात्रया । महावीर्यस्तुवरकः कुष्ठमेहापहः परः ॥

पांचमा प्रकारनुं तुवरकविधान.

८ चेरीयांनी मज्जाओने योग्य मात्राथी योग्य क्वाथमां मिश्रित करी दईने पीवराववामां आवे तो ते मज्जाओ रोगीने शुद्ध करे छे. केमके चेरीयां प्रबल शक्तिवाळां छे अने कोढने तथा प्रमेहने टाळवामां अति उत्तम उपायरूप छे.

९ सान्तर्धूमस्तस्य मज्जा तु दग्धः क्षिप्तस्तैले सैन्धवं चाञ्जनं च । ईर्मं हन्यादर्मनक्तान्ध्यकाचान्नीलीरोगं तैमिरं चाञ्जनेन ॥

छठा प्रकारनुं तुवरकविधान.

९ चेरीयांनी मज्जा, सैंधव अने सुरमो एओने एकठां करी धुमाडो अंदर रहे एवी रीते बाळी तेलमां कालवीने अंगपर लगाववामां आवे तो तेथी व्रण तथा नीलिका नामनो क्षुद्ररोग (दाझ) टळी जाय छे अने नेत्रोमां आंजवामां आवे तो तेथी अर्म, काच, नक्तांध्य (रातें आंधळापणुं) तथा तिमिर ए नामना नेत्रोना रोगो टळी जाय छे.

अध्याय १४ मो.

१ अथात उदराणां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

१ उदररोगो के जेओनां निदानो तथा लक्षणादिक निदानस्थानना सातमा अध्यायमां कह्यां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'उदरचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अष्टावुदराणि पूर्वमुद्दिष्टानि तेष्वसाध्यं बद्धगुदं परिस्रावि चावशिष्टानि कृच्छ्रसाध्यानि सर्वाण्येव च प्रत्याख्यायोपक्रमेत । तेष्वाद्यश्चतुर्वर्गो भेषजसाध्यः । कालप्रकर्षात्सर्वाण्येव शस्त्रसाध्यानि वर्जयितव्यानि वा ॥

उदररोगोना साध्यासाध्यपणानुं विवेचन.

२ निदानस्थानमां वातोदर, पित्तोदर, कफोदर, सन्निपातोदर अथवा दूष्युदर, प्लीहोदर, बद्धगुदोदर, परिस्राव्युदर अने दकोदर (जलोदर) ए रीते आठ उदररोगो केहेवामां आव्या छे तेओमां बद्धगुदोदर अने परिस्राव्युदर ए बे घणुं करीने असाध्य छे अने बाकीना छ कष्टसाध्य छे. आम छे माटे ए सघळा उदररोगोनी चिकित्सा प्रथम ना पाडीने पछी करवी. एओमां वातोदर, पित्तोदर, कफोदर अने सन्निपातोदर अथवा दूष्युदर ए चार उदररोगो औषधसाध्य छे (अने प्लीहोदर, बद्धगुदोदर, परिस्राव्युदर अने दकोदर ए चार उदररोगो शस्त्रसाध्य पण छे.) जो औषध करवानो समय व्यतीत थई जाय तो औषधसाध्य उदररोगो शस्त्रसाध्य थई पडे छे अने शस्त्रक्रिया करवानो समय व्यतीत थई जाय तो शस्त्रसाध्य उदररोगो छोडी देवा योग्यज थई पडे छे.

३ उदरी तु गुर्वभिष्यन्दिरूक्षविदाहिस्निग्धपिशितपरिषेकावगाहान् परिहरेत् । शालिषष्टिकयवगोधूमनीवारान्नित्यमश्नीयात् ॥

उदररोगवाळाओए केवां आहारादिक नहीं करवां अने केवां करवां.

३ उदररोगवाळाओए भारे, अभिष्यंदी[1], रूक्ष, विदाही[2], स्निग्ध अने मांसवाळा आहारो करवा नहीं, जलथी शरीरपर परिषेचन करवुं नहीं अने जळमां नाहावुं पण नहीं.

चोखा, साठीचोखा, जव, घऊं अने बंटी ए-ओनां अन्नादिकनुं नित्य भक्षण करवुं.

४ तत्र वातोदरिणं विदारिगन्धादिसिद्धेन सर्पिषा स्नेहयित्वा तिल्वकविपक्केनानुलोम्य चित्राफलतैलप्रगाढेन विदारिगन्धादिकषाये-णास्थापयेदनुवासयेच्च शाल्वणेन चोपनाहये-दुदरम् । भोजयेच्चैनं विदारिगन्धादिसिद्धेन क्षीरेण जाङ्गलरसेन वाभीक्ष्णं स्वेदयेत् ॥

वातोदरनी चिकित्सा.

४ वातोदरवाळा रोगीने विदारिगंधादि गणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीवते स्निग्ध करी, पठाणी लोदरना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला अने नेपाळाना फळना तेलथी सारी पेठे मिश्रित करेला घीथी विरेचित करीने पछी तेज तैलथी मिश्रित करेला विदारिगंधादि गणना क्वाथथी निरूहबस्ति देवी, तेज तेलथी अनुवासन बस्ति देवी अने आ स्थानना चोथा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेला शाल्वणथी तेना पेट-उपर बंधारण करवुं. ए रोगीने विदारिगंधादि ग-णना क्वाथादिकथी पकावेला दूधथी अथवा जां-गल प्राणीओना मांसना रसाथी जमाडवो अने तेने वारंवार स्वेदनसंस्कार आप्या करवो. (आ स्थानना ३१ मा अध्यायना २४ मा विषयमां उदर-रोगवाळाने स्नेहननो, ३२ मा अध्यायना १९ मा विषयमां स्वेदननो अने ३९ मा अध्यायना ९ मा विषयमां निरूहबस्तिनो तथा अनुवासनबस्तिनो जे निषेध छे तेनी योग्य व्यवस्था प्रवीण वैद्योए करी लेवी. डल्हन केहे के 'ए निषेध केवळ परि-स्राव्युदरवाळाने माटे तथा दकोदरवाळाने माटे छे. बीजा उदररोगो उपर तो ते ते अवस्थाओना अनुसारथी स्नेहादिकनो प्रयोग करवो.' ३९ मा अध्यायनो १० मो विषय पण जोवो.)

५ पित्तोदरिणं तु मधुरगणविपक्केन सर्पिषा स्नेहयित्वा श्यामात्रिफलात्रिवृद्धिपक्केनानुलोम्य-शर्करामधुघृतप्रगाढेन न्यग्रोधादिकषायेणा-स्थापयेदनुवासयेच्च पायसेनोपनाहयेदुदरं भो-जयेच्चैनं विदारिगन्धादिसिद्धेन पयसा ॥

पित्तोदरनी चिकित्सा.

५ पित्तोदरवाळा रोगीने काकोल्यादि मधुर गणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीवते स्निग्ध करी, वरधारो, त्रिफळा अने नसोतर ए-ओना क्वाथादिकथी पकावेला घीथी विरेचित करीने पछी साकरथी तथा मधथी सारी पेठे मि-श्रित करेला न्यग्रोधादिगणना क्वाथथी निरूह-बस्ति देवी, त्रिफळा वरधारो अने नसोतर ए-ओना क्वाथादिकथी पकावेला घीथीज अनुवास-नबस्ति देवी, दूधपाकनुं पेट उपर बंधारण करवुं अने विदारिगंधादि गणथी पकावेला दूधथी ज-माडवो.

६ श्लेष्मोदरिणं पिप्पल्यादिकषायसिद्धेन सर्पिषोपस्नेह्य स्नुहीक्षीरविपक्केनानुलोम्य त्रि-कटुकमूत्रक्षारतैलप्रगाढेन मुष्कादिकषायेणा-स्थापयेदनुवासयेच्च शणातसीधातकीकिण्व-सर्षपमूलकबीजकल्कैश्चोपनाहयेदुदरं भोजये-च्चैनं त्रिकटुकप्रगाढेन कुलत्थयूषेण पायसेन वा स्वेदयेच्चाभीक्ष्णम् ॥

---

१ जे आहार रसनुं वहन करनारी शिराओने चीका-शथी तथा भारेपणाथी रोकी दईने शरीरने भारे करी नाखे ते आहार अभिष्यंदी केहेवाय छे.

२ जे आहार कर्याथी खाटा ओडकार आवे, तरस लाग्या करे अने हृदयमां दाह थाय ते आहार विदाही केहेवाय छे.

कफोदरनी चिकित्सा.

६ कफोदरना दरदीने पिप्पल्यादि गणना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेला घीवते स्निग्ध करी, थोरना छीरनी साथे चोगणा पाणीमां पकावेला घीथी विरेचित करीने पछी त्रिकटुक, (सूंठ मरी पीपळ) गोमूत्र, क्षार अने तेल एओथी सारी पेठे मिश्रित करेला मुष्ककादि गणना क्काथथी निरूहबस्ति देवी, ए क्काथथीज पकावेला घीथी अनुवासनबस्ति देवी, तेमज शण, अलसी, धावणी, सुराबीज, (अडद तथा चोखाथी बनावेलुं मदिरानुं बीज) सर्षप तथा मूळानां बीज एओना कल्कोथी पेट उपर बंधारणो करवां, त्रिकटुकथी सारी पेठे मिश्रित करेला कळथीना यूपथी अथवा दूधपाकथी जमाडवो अने वारंवार स्वेदन संस्कार आप्या करवो.

७ दूष्युदरिणं तु प्रत्याख्याय सप्तलाशङ्खिनीस्वरससिद्धेन सर्पिषा विरेचयेन्मासमर्द्धमासं वा महावृक्षक्षीरसुरागोमूत्रसिद्धेन वा । शुद्धकोष्ठं तु मद्येनाश्वमारकगुञ्जाकाकादनीमूलकल्कं पाययेत् । इक्षुकाण्डानि वा कृष्णसर्पेण दंशयित्वा भक्षयेत् । वल्लीफलानि वा । मूलजं कन्दजं वा विषमासेवयेत् । तेनागदी भवत्यन्यं वा भावमापद्यते ॥

सन्निपातोदर के जे बीजा नामथी दूष्युदर केहेवाय छे तेनी चिकित्सा.

७ दूष्युदर (सन्निपातोदर)वाळा दरदीने प्रथम चिकित्सानी ना पाडीने पछी जो तेनो तथा तेना संबंधीओनो अति आग्रह देखाय अने राजानी अनुमति मळे तो हाथला तथा आंखफूटामणी एओना स्वरसथी पकावेला घीथी अथवा थोरनुं छीर, सुरा अने गोमूत्र एओथी पकावेला घीथी एक महिनासूधी अथवा एक पखवाडीयासूधी विरेचित कर्या करवो. (आ विषयमां नहीं कहेली क्रियाओ वातोदरादिकना विषयमां कहेलां औषधोथी करवी.) ज्यारे कोठो तमाम शुद्ध थएलो जाणवामां आवे त्यारे मधनी साथे कणेर, चणोठी तथा पीलुडी एओनां मूळनो कल्क ते दरदीने पावो अथवा शेलडीनी कातरीओ काळा सर्पनी पासे करडावीने खवराववी अथवा वेलामां थतां काकडी वगेरे फळो काळा सर्पनी पासे करडावीने खवराववां अथवा वनस्पतिओनां मूळोथी के कंदोथी उत्पन्न थता झेरनुं सेवन कराववुं. आम करवाथी दरदी साजो थई जाय छे अथवा मरी जाय छे.

८ भवति चात्र ।

कुपितानिलमूलत्वात्सञ्चयित्वान्मलस्य च ।
सर्वोदरेषु शंसन्ति बहुशस्त्वनुलोमनम् ॥

सघळा प्रकारना उदररोगोमां वारंवार तथा घणुं घणुं विरेचन देवुं जोईए.

८ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "सघळा प्रकारना उदररोगोमां प्रकुपित थएलो वायु मूळभूत होय छे अने मळोनो संचय पण घणो होय छे माटे तेओमां वारंवार तथा घणुं घणुं विरेचन देवुं ए उत्तम गणवामां आवे छे.

९ अत ऊर्ध्वं सामान्ययोगान्वक्ष्यामः ॥ तद्यथा । एरण्डतैलमहरहर्मासं द्वौ वा केवलं मूत्रयुक्तं क्षीरयुक्तं वा सेवेतोदकवर्जी ॥

माहिषं वा मूत्रं क्षीरेण कृतोदकान्नः सप्तरात्रम् ॥

उष्ट्रीक्षीराहारो वान्नवारिवर्जी पिप्पलीं वा मासं पूर्वोक्तेन विधानेनासेवेत ॥

सैन्धवाजमोदायुक्तं वा निकुम्भतैलम् ॥

आर्द्रकशृङ्गवेररसपात्रशतसिद्धं वा वातशूलेऽवचार्यम् ॥

शृङ्गवेररसविपक्वं क्षीरमासेवेत ॥

चव्यशृङ्गवेरकल्कं वा पयसा सरलदेवदारुचित्रकमेव वा ॥

सुरङ्गीशालिपर्णीश्यामापुनर्नवाकल्कं वा ॥

ज्यौतिष्कफलतैलं वा क्षीरेण स्वर्जिकाहिङ्गुमिश्रं पिबेत् ॥

गुडद्वितीयां वा हरीतकीं भक्षयेत् ॥

स्नुहीक्षीरभावितानां पिप्पलीनां सहस्रं कालेन ॥

पथ्याकृष्णाचूर्णं वा ॥

स्नुहीभावितामुत्कारिकां पक्कां वा दापयेत्॥

हरीतकीचूर्णप्रस्थमाढके घृतस्याङ्गारेष्वभिविलाप्य खजेनाभिमथ्यानुगुप्तं कृत्वार्द्धमासं यवपल्ले वासयेत् । ततश्चोद्धृत्य परिस्राव्य हरीतकीक्काथाम्लदध्नीन्यावाप्य विपचेत् । तद्यथायोगं मासमर्द्धमासं वा पाययेत् ॥

गव्ये पयसि महावृक्षक्षीरमावाप्य विपचेद्विपक्वं चावतार्य शीतीभूतं मन्थानेनाभिमथ्य नवनीतमादाय भूयो महावृक्षक्षीरेणैव विपचेत्तद्यथायोगं मासं मासार्द्धं वा पाययेत् ॥

चव्यचित्रकदन्त्यतिविषाकुष्ठसारिवात्रिफलाजमोदाहरिद्राशङ्खिनीत्रिवृत्त्रिकटुकानामर्द्धकार्षिका भागा राजवृक्षफलमज्जामष्टौ कर्षा महावृक्षक्षीरपले द्वे गवां क्षीरमूत्रयोरष्टावष्टौ पलानि एतत्सर्वं घृतप्रस्थे समावाप्य विपचेत्तद्यथायोगं मासमर्द्धं मासं वा पाययेत् ॥

एतानि तिल्वकघृतचतुर्थानि सर्पींष्युदरगुल्मविद्रध्यष्ठीलानाहकुष्ठोन्मादापस्मारेषूपयोज्यानि विरेचनार्थम् ॥

मूत्रासवारिष्टसुराश्चाभीक्ष्णं महावृक्षक्षीरसंभृताः सेवेत ॥

विरेचनद्रव्यकषायं वा शृङ्गवेरदेवदारुप्रगाढम् ॥

वमनविरेचनद्रव्याणां पालिका भागाः पिप्पल्यादिवचादिहरिद्रादिपरिपठितानां च द्रव्याणां श्लक्ष्णपिष्टानां यथोक्तानां च लवणानाम्।तत्सर्वं मूत्रगणे प्रक्षिप्य महावृक्षक्षीरप्रस्थं च मृद्वग्निना घट्टयन्विपचेदप्रदग्धकल्कम् । तत्साधुसिद्धमवतार्य शीतीभूतमक्षमात्रां गुटिकां वर्त्तयेत्तासामेकां द्वे तिस्रो वा गुटिका बलापेक्षया मासांस्त्रींश्चतुरो वा सेवेत । एषानाहवर्त्तिक्रिया विशेषेण महाव्याधिषूपयुज्यते कोष्ठजांश्च कृमीनपहन्ति कासश्वासकुष्ठप्रतिश्यायारोचकाविपाकोदावर्त्तांश्च नाशयति ॥

मदनफलमज्जकुटजजीमूतकेक्ष्वाकुधामार्गवत्रिवृत्त्रिकटुसर्षपलवणानि महावृक्षक्षीरमूत्रयोरन्यतरेण पिष्ट्वाङ्गुष्ठमात्रां वर्त्तिं कृत्वोदरिण आनाहे तैललवणाभ्यक्तगुदस्यैकां द्वे वा पायौ निदध्यादेषानाहवर्त्तिक्रिया वातमूत्रपुरीषोदावर्त्ताध्मानानाहेषु विधेया ॥

उदररोगोनी सामान्य चिकित्सा.

९ हवे सघळा प्रकारना उदर रोगोनी सामान्य चिकित्सा कहीएछीए. एक महिनासुधी अथवा बे महिनासुधी नित्य एकला एरंडीया तेलनुं अथवा भेंशना मूत्रथी संयुक्त करेला एरंडीया तेलनुं अथवा भेंशना दूधथी संयुक्त करेला एरंडीया तेलनुं सेवन करवुं अने तेटला दिवसोसुधी, पाणीने बदले दूधनोज उपयोग करवो.

अथवा सात दिवससुधी पाणीने तथा अन्नने बदले दूधनोज उपयोग करवो अने भेंशनुं मूत्र पीवुं. (केटलाएक कहेछे के दूधमां त्रिकटुकनुं चूर्ण पण मिश्रित करवुं.)

अथवा एक महिनासुधी अन्ननो तथा जळनो त्याग करी फक्त ऊंटडीना दूधनोज आहार राखी आ स्थानना पांचमा अध्यायना १३ मा विषयमां कहेला विधान प्रमाणे पीपळनुं सेवन करवुं.

अथवा एक महिनासुधी के एक पखवाडीयासुधी सैंधवथी तथा बोडीअजमोदथी संयुक्त करेलुं नेपाळाना बीजनुं तैल नित्य पीवुं.

अथवा उदररोग वायुसंबंधी शूळथी युक्त होय तो आदाना तथा सूंठना सो आढक भार (बसो छपन तोलां भारनो एक आढक थाय छे.)

रसमां पकावेलुं नेपाळानां बीजनुं तेल एक महिनासूधी के एक पखवाडीयासूधी नित्य पीवुं.

अथवा आदाना चोगणा रसमां पकावी, पकावतां पकावतां तमाम रसने बाळी नाखी, बाकी रहेलुं दूध एक महिनासूधी के एक पखवाडीयासूधी नित्य पीवुं.

अथवा चवक तथा आदु एओनो अथवा चीडीयो देवदार, देवदार अने चित्रक एओनो कल्क चोगणा दूधनी साथे एक महिनासूधी के एक पखवाडीयासूधी नित्य पीवो.

अथवा रातो सरगवो, शालिपर्णी, वरधारो अने साटोडी एओनो कल्क चोगणा दूधनी साथे एक महिनासूधी के एक पखवाडीयासूधी पीवो.

अथवा हींग अने सार्जाखार एओथी मिश्रित करेलुं माल्कांकणीनां के रतनजोतनां फळोनुं तेल दूधनी साथे एक महिनासूधी के एक पखवाडीयासूधी पीवुं.

अथवा एक महिना सूधी के एक पखवाडीयासूधी नित्य गोळनी साथे हरडेना चूर्णनुं भक्षण करवुं.

अथवा हजार पीपळने थोरना छीरनी एकवीश भावनाओ आपी तेओनुं अनुकूलताथी जेटले दिवसे करी शकाय तेटले दिवसे भक्षण करवुं.

अथवा हरडे अने पीपळ एओना चूर्णनुं एक महिनासूधी के एक पखवाडीयासुधी नित्य सेवन करवुं.

अथवा थोरना छीरनी भावना आपीने पकावेली लाफसीनुं एक महिनासूधी के एक पखवाडीयासूधी नित्य भक्षण करवुं.

अथवा हरडेना चोसठ तोलां भार चूर्णने बसो छपन तोलां भार घीमां नाखी, ते घीने अंगाराओनी उपर गरम करी, रवाईथी मथी, वासणमां नाखी, ते वासणनुं मोहोडुं सारी रीते बंध करीने तेने अरधा महिनासूधी जवना ढगलामां डाटी मूकवुं. पछी ते वासणमांथी घी काहाडी, गाळी लई तेमां चोगणां चोगणां हरडेनो क्वाथ, कांजी तथा दही नाखीने ते घीने पकाववुं. आ घी यथायोग्य रीते एक महिनासूधी अथवा अरधा महिनासूधी नित्य पीवुं.

अथवा गायना बसो छपन तोलां भार दूधमां चोसठ तोलां भार थोरनुं छीर नाखीने ते दूधने पकाववुं. पाकी रहे त्यारे उतारी लई थंडुं करी रवाईथी वलोवी, मांखण काहाडीने ते मांखणने तेना चोथा भागना थोरना छीरमां अने चोगणा पाणीमां पकाववुं. ए पकावेलुं मांखण (घी) यथायोग्य रीते एक महिनासूधी के अरधा महिनासूधी नित्य पीवुं.

अथवा चवक, चित्रक, नेपाळो, अतवस, कठ, कपूरी, त्रिफळा, बोडीअजमोद, हळदर, आंखफूटामणी, नसोतर अने सूंठ मरी पीपळ ए प्रत्येक द्रव्योने अरधां अरधां तोलां भार लेवां. गरमाळानां फळोनो मज्जा आठ तोलां भार लेवी. थोरनुं छीर आठ तोलां भार लेवुं. गायनुं दूध अने गायनुं मूत्र, बत्रीश बत्रीश तोलां भार लेवुं. ए सर्वने एकठां करी चोसठ तोलां भार घीमां नाखीने ते घीने चोगणा पाणीमां पकाववुं. आ घी यथायोग्य रीते एक महिनासूधी अथवा अरधा महिनासूधी नित्य पीवुं.

उपर कहेलां त्रण घी अने चोथुं आ स्थानना चोथा अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलुं तिल्वकघृत नामनुं घी एओने उदररोग, गुल्म, विद्रधि, अष्ठीला, आनाह, कोढ, उन्माद अने अपस्मार ए रोगोमां विरेचननेमाटे उपयोगमां लेवां.

गोमूत्ररूप द्रवथी आसवोने, अरिष्टोने तथा सुराओने बनावी, बनावती वखतेज तेओने थोरना छीरनो योग आपी तेओनुं वारंवार सेवन करवुं.

अथवा सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना ४ था विषयमां कहेलां विरेचन द्रव्योनो क्वाथ देवदारना तथा आदाना रसथी युक्त करीने नित्य पीवो.

अथवा सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां कहेलां वमनविरेचन द्रव्योने एक एक तोला भार लेवां. पिप्पल्यादि, वचादि अने हरिद्रादि ए त्रण

गणोनां द्रव्योने पण एक एक तोलां भार लेवां. पछी एओने तथा एक एक तोलां भार पांचे प्रकारनां लवणोने पण बारीक वाटी ते कल्कने चारगणा अथवा आठगणा गाय, भेंश तथा बकरी वगेरेनां मूत्रमां नाखी अने थोरना चोसठ तोलां भार छीरने पण मूत्रमां नाखी ते मूत्रने कोमळ अग्निपर एक वासणमां चडावी कडछावते हलावतां हलावतां तेनी अंदरनो कल्क बहुज बळी न जाय एवी रीते पकाववुं. पाकीने घाटुं थाय त्यारे उतारी लई थंडुं पाडीने तेनी अंगुठा जेवडी एक एक तोलां भारनी गोळीओ (वाटो) करवी. ए वाटोमांथी रोगीनी शक्तिप्रमाणे एक बे अथवा त्रण वाट, त्रण के चार महिनासूधी नित्य खवराववी. आ क्रिया **आनाहवर्त्तिक्रिया** केहेवाय छे अने ते उदररोग तथा प्रमेह वगेरे महाव्याधिओमां उपयोगी थाय छे, कोढमां उत्पन्न थएला कीडाओने नष्ट करे छे तथा खांसी, श्वास, कोढ, प्रतिश्याय, अरोचक, अविपाक अने उदावर्त्त एओने पण नष्ट करे छे. (गाय वगेरेना मूत्रना अनुपानथीज आ वाटोनुं भक्षण कराववुं.)

मींढोळनां फळोनी मज्जा, इंद्रजव, कुकडवेल, कडवी तूंबडी, कडवां तूरीयां, नसोतर, त्रिकटु, सर्षप अने सैंधव अथवा सर्व प्रकारनां लवणो एओने थोरना छीरमां के गाय वगेरेनां मूत्रोमां वाटी गोमूत्रमांज पकावीने तेनी अंगुठा जेवडी वाटो करी, उदररोगवाळा जे माणसनां मूळमूत्र अटक्यां होय तेनी गुदामां सैंधवना चूर्णथी युक्त करेला तैलनो अभ्यंग करी तेमां एक के बे वाट खोसवी. आ आनाहवर्त्तिक्रिया (**फलवर्त्तिक्रिया**) अधोवायुनी अटकायतने, मूत्रनी अटकायतने, मळनी अटकायतने, उदावर्तने तथा आध्मानने मटाडे छे माटे एओनी उपर आनो प्रयोग करवो.

१० प्लीहोदरिणः स्निग्धस्विन्नस्य दध्ना भुक्तवतो वामबाहौ कूर्पराभ्यन्तरतः शिरां विध्येद्विमर्दयेत्पाणिना प्लीहानं रुधिरस्यन्दनार्थम् । ततः संशुद्धदेहं समुद्रशुक्तिकाक्षारं पयसा पाययेत । हिङ्गुना सौवर्चिकाक्षारेण स्रुतेन पलाशक्षारेण वा यवक्षारम् । पारिजातकेक्षुरकापामार्गक्षारं वा तैलसंसृष्टम् । शोभाञ्जनकषायं वा पिप्पलीसैन्धवचित्रकयुक्तम् । पूतिकरञ्जक्षारं वाम्लस्रुतं बिडलवणपिप्पलीप्रगाढम् ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचित्रकशृङ्गवेरयवक्षारसैन्धवानां पालिका भागा घृतप्रस्थं तत्तुल्यं क्षीरं तदेकध्यं विपाचयेदेतत्षट्पलकं नाम सर्पिः प्लीहाग्निसङ्गगुल्मोदरोदावर्त्तश्वयथुपाण्डुरोगकासश्वासप्रतिश्यायोर्ध्ववातविषमज्वरानपहन्ति ।

मन्दाग्निर्वा हिङ्ग्वादिकं चूर्णमुपयुञ्जीत ।

यकृद्दाल्येऽप्येष एव क्रियाविभागः । विशेषतस्तु दक्षिणबाहौ शिराव्यधः ॥

मणिबन्धं समुन्नाम्य वामाङ्गुष्ठसमीरिताम् ।
दहेच्छिरां शरेणाशु प्लीह्नो वैद्यः प्रशान्तये ॥

प्लीहोदरनी तथा तेवाज प्रकारवाळो छतां जूज जुदाईवाळा यकृद्दाल्युदरनी चिकित्सा.

१० प्लीहोदरवाळाओने स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी, दहींवते भोजन करावी, रुधिरनो स्राव करवा माटे तेना डाबा बाहुमां कोणीना संधिना समीपमां (शा. अ. ८ वि. २१) शिराने वींधवी अने हाथवते बरलनुं मर्दन करवुं के जेथी रुधिरनो स्राव थाय. रुधिरनो स्राव कर्या पछी वमन विरेचनथी शुद्ध करीने तेने समुद्रनी छीपनो क्षार दूधनी साथे पावो अथवा हींगनी साथे, साजीखारनी साथे के स्रवावेला खाखराना क्षारनी साथे जवखार पावो. अथवा रगतरोहीडो, एखरो तथा अघेडो एओनो क्षार तैलनी साथे मेळवीने पावो अथवा सरगवानो क्वाथ पीपळथी, सैंधवथी तथा चित्रकथी युक्त करीने पावो अथवा कांजीथी स्रवावेलो चेरलकरंजनो क्षार बिडलूणथी तथा पीप-

ळथी मारी पेठे युक्त करीने पावो. (आ स्थानना ३३ मा अध्यायना ११ मा विषयमां वमननो ज निषेध कर्यो छे तेनी योग्य व्यवस्था करी लेवी.)

पीपळ, पीपळीमूळ, चित्रक, सूंठ, जवखार अने सैंधव ए प्रत्येक द्रव्योने चार चार तोलां भार लेवां. घी चोसठ तोलां भार लेवुं अने दूध पण चोसठ तोलां भार लेवुं. ए सर्वने एकठां करी पकाववां एटले **षट्पलक** नामनुं घी सिद्ध थाय छे. आ घी बरलना दरदने, अग्निनी मंदताने, गुल्मने, उदररोगने. उदावर्त्तने, सोजाने. पांडुरोगने, खांसीने, श्वासने. प्रतिश्यायने, ऊर्ध्ववातने (नीचे नहीं वमतां ऊंचाज चाल्या करता श्वासने) तथा विषमज्वरने मटाडे छे.

प्लीहोदरवाळानो अग्नि मंद थई गयो होय तो ते उपर आ स्थानना पांचमा अध्यायना २४ मा विषयमां कहेला हिंग्वादि गणना चूर्णनो उपयोग कराववो एटले तेथी पण अग्निनुं मंदपणुं टळी जाय छे.

यकृद्दाल्युदरनी पण तेज चिकित्सा छे के जे प्लीहोदरनी केहवामां आवी. पण एटलोज विशेष छे के यकृद्दाल्युदर थएल होय तो जमणा बाहुमां कोणीना संधिना समीपमां शिरा वींधवी.

वैद्ये बरलने शांत करवा माटे रोगीना डाबा हाथना कांडाने जराक नमावी डाबा अंगूठा तरफ प्रेराएली शिराने तुरत तीरकांडुं के जे मोटा मुंझ नामना खडनी एक जात छे तेनी अग्निथी तपावेली डांडीथी डांभवी.

११ बद्धगुदे परिस्राविणि च स्निग्धस्विन्नस्याभ्यक्तस्याधो नाभेर्वामतश्चतुरङ्गुलमपहाय रोमराज्या उदरं पाटयित्वा चतुरङ्गुलप्रमाणान्यन्त्राणि निष्कृष्य निरीक्ष्य बद्धगुदस्यान्त्रप्रतिरोधकरमश्मानं वालं वापोह्य मलजातं वा ततो मधुसर्पिर्भ्यामभ्यज्यान्त्राणि यथास्थानं स्थापयित्वा बाह्यं व्रणमुदरस्य सीव्येत् ॥

बद्धगुदोदरनी चिकित्सा.

११ बद्धगुदोदरवाळाने स्नेहन संस्कार तथा स्वेदन संस्कार आपी, अभ्यंग करी, नाभिथी नीचे डाबी बाजूमां रोमावळीथी चार आंगळ जेटला भागने छोडी दई. शस्त्रवते पेट चीरी, चार चार आंगळ जेटलां आंतरडांओने बाहार खेंची लई, अंदर नजर करी, ए रोगीना आंतरडांनो प्रतिरोध करनारो जे कांकरो, वाळ के मळ होय तेने दूर करी नाखी पछी आंतरडांओने घीनो तथा मधनो अभ्यंग करी पाछां तेओना असलना ठेकाणामां बराबर स्थापी उदरना बाहारना व्रणने सीवी लेवो अने पछी जेठीमधथी मिश्रित करेली काळी माटीनो लेप करीने पाटो बांधी देवो. पछी ते रोगीने पवन वगरना घरमां प्रवेश करावी योग्य वर्त्तणुकनो उपदेश करवो अने फक्त दूधनोज आहार रखाववो ने तेलनी के घीनी कोठीमां राखवो.

१२ परिस्राविण्यप्येवमेव शल्यमुद्धृत्यान्त्रस्रावान्संशोध्य सच्छिद्रमन्त्रं समाधाय कालपिपीलिकाभिर्दंशयेत् । दष्टे च तासां कायानपहरेन्न शिरांसि । ततः पूर्ववत्सीव्येत् । सन्धानं च यथोक्तं कारयेत् । यष्टीमधुकमिश्रया च कृष्णमृदावलिप्य बन्धेनोपचरेत्ततो निवातमागारं प्रवेश्याचारिकमुपदिशेद्वासयेच्चैनं तैलद्रोण्यां सर्पिर्द्रोण्यां वा पयोवृत्तिमिति ॥

परिस्राव्युदरनी चिकित्सा

१२ परिस्राव्युदरवाळाने पण स्नेहन संस्कार तथा स्वेदन संस्कार आपी, अभ्यंग करी, नाभिथी नीचे डाबी बाजूमां रोमावळीथी चार आंगळ जेटला भागने छोडी दई, शस्त्रवते पेट चीरी, शल्यथी जखमी थएला आंतरडांने बाहार काहाडी, तेमांथी शल्य काहाडी लई, आंतरडाना स्रावोने साफ करी, छिद्रना भागोने भेळा करी काळा मंकोडाओनी पासे करडाववा अने मंकोडा ते भागोने बराबर वळगी रहे त्यारे मंकोडाओनां माथांओने नहीं कापतां धडोने कापी नाखवां.

पछी आंतरडांने घीनो तथा मधनो अभ्यंग करी असलना स्थानमां स्थापीने उदरना बाहारना व्रणने सीवी लेवो अने व्रणना प्रकरणमां कह्या-प्रमाणे तेना होठ वगेरेनुं संधान पण करवुं. पछी जेठीमधथी मिश्रित करेली काळी माटीनो लेप करी पाटो बांधी दई रोगीने पवनवगरना घरमां प्रवेश करावी योग्य वर्त्तणुकनो उपदेश करवो अने फक्त दूधनोज आहार रखावीने तैलनी के घीनी कोठीमां राखवो.

१३ उदकोदरिणस्तु वातहरतैलाभ्यक्तस्योष्णोदकस्विन्नस्य स्थितस्याप्तैः सुपरिगृहीतस्याकक्षात्परिवेष्टितस्याधोनाभेर्वामतश्चतुरङ्गुलमपहाय रोमराज्या व्रीहिमुखेनाङ्गुष्ठोदरप्रमाणमवगाढं विध्येत् । तत्र त्रप्वादीनामन्यतमस्य नाडीं द्विद्वारां पक्षनाडीं वा संयोज्य दोषोदकमवसिञ्चेत्ततो नाडीमपहृत्य तैललवणेनाभ्यज्य व्रणबन्धेनोपचरेन्न चैकस्मिन्नेव दिवसे सर्वं दोषोदकमपहरेत् । सहसा ह्यपहृते तृष्णाज्वराङ्गमर्दातीसारश्वासपाददाहा उत्पद्येरन्नापूर्यते वा भृशतरमुदरमसञ्जातप्राणस्य तस्मात्तृतीयचतुर्थपञ्चमषष्ठाष्टमदशमद्वादशषोडशरात्राणामन्यतममन्तरीकृत्य दोषोदकमल्पाल्पमवसिञ्चेत् । निःस्रुते च दोषे गाढतरमाविककौशेयचर्मणामन्यतमेन परिवेष्टयेदुदरं तथा नाध्मापयति वायुः षण्मासांश्च पयसा भोजयेज्जाङ्गलरसेन वा तत्र त्रीन्मासानर्द्धोदकेन पयसा फलाम्लेन जाङ्गलरसेन वावशिष्टं मासत्रयमन्नं लघु हितं वा सेवेतैवं संवत्सरेणागदी भवति ॥

दकोदरनी (जलोदरनी) चिकित्सा.

१३ दकोदरवाळाने वायुनुं हरण करनारां तैलनो अभ्यंग करी, ऊना पाणीथी स्वेदन संस्कार आपी, स्थिति करावी, तेना विश्वासपात्र लोकोना हाथोथी तेने सारी पेठे पकडावी राखी, पेटने काखपर्यंत कपडाथी वींटी लई, नाभिथी नीचे डाबी तरफमां रोमावलीथी चार आंगळ जेटला भागने छोडी दई व्रीहिमुख नामना शस्त्रवते पेटमां अंगुठाना मध्यभाग जेटलो ऊंडो वींध करवो. ए वींधमां कथीळ वगेरे पदार्थोमांथी कोई पदार्थनी पोली नळी अथवा बे द्वारवाळी पांखीयाळी ? नळी नाखीने पेटना दुष्ट जळने स्त्रवाववुं. पछी नळीने काहाडी लई व्रणने सैंधवथी युक्त करेला तैलनो अभ्यंग करी पाटो बांधी लेवो. एक दिवसेज सघळुं दुष्टजळ स्त्रवाववुं नहीं. केमके एकदम स्त्रवाववाथी निर्बल थएला अने जेने बळ पाछुं प्राप्त थएलुं होतुं नथी एवा रोगीने तरश, ज्वर, अंगमर्द, अतीसार, श्वास तथा पाददाह उत्पन्न थाय छे अथवा पेट अत्यंत भरपूर थई जाय छे. आ कारणने लीधे त्रीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, आठमो, दशमो, बारमो अने सोळमो एटला दिवसोमां जे जे दिवसे अनुकूळ जणाय ते ते दिवसे वचमां एक, बे के वधारे दिवसनुं अंतर नाखी नाखीने दुष्टजळनो थोडो थोडो स्राव करवो. दुष्टजळनो स्राव थया पछी ऊनना, रेशमना के चामडाना पाटाथी पेटने मजबूत रीते वींटी लेवुं के जेथी वायु पेटने फूलावी शके नहीं. क्रिया कर्या पछी रोगीने छ महिना सूधी दूधथी अथवा जांगल प्राणिओना मांसना रसाथी आहार कराववो तेमां पेहेला त्रण महिना सूधी फक्त अरधा पाणीमां पकावेला दूधनी साथे पेया पावी तथा जळनुं कार्य दूधथीज करावबुं अने बीजा त्रण महिना सूधी अरधा पाणीमां पकावेला दूधनी साथे अथवा दाडिम वगेरे फळोना रसथी खाटा करेला जांगल प्राणीओना मांसना रसानी साथे हलकूं तथा हितकारी अन्न जमाडवुं. आ प्रमाणे छ महिना सूधी वर्त्ते अने ते पछी पण बीजा छ महिना सूधी योग्य परेजी पाळे तो दकोदरनो दरदी तमाम स्वस्थ थई जाय छे.

१४ भवति चात्र ।
आस्थापने चैव विरेचने च
पाने तथाहारविधिक्रियासु ।
सर्वोदरिभ्यः कुशलैः प्रयोज्यं
क्षीरं शृतं जाङ्गलजो रसो वा ॥

सघळा उदररोगीओने पकावेलुं दूध तथा जांगल प्राणीओना मांसनो रसो हितकारी छे.

१४ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "प्रवीण वैद्योए सघळा उदररोगवाळाओने निरूहबस्तिमां, विरेचनमां, पीवामां अने आहारोनी क्रियाओमां पकावेलुं दूध देवुं अथवा जांगल प्राणीओना मांसनो रसो देवो."

अध्याय १५ मो.

१ अथातो मूढगर्भचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मूढगर्भचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ नातः कष्टतममस्ति यथा मूढगर्भशल्योद्धरणमत्र हि योनियकृत्प्लीहान्त्रविवरगर्भाशयानां मध्ये कर्म कर्त्तव्यं स्पर्शेन । उत्कर्षणापकर्षणस्थानापवर्त्तनोत्कर्त्तनभेदनच्छेदनपीडनर्जूकरणदारणानि चैकहस्तेन गर्भं गर्भिणीं वाऽहिंसता तस्मादधिपतिमापृच्छ्य परं च यत्नमास्थायोपक्रमेत ॥

मूढगर्भरूपी शल्यने काहाडवामां प्रथम राजानी मंजूरी लेवानी जरूर अने पछी पूरो यत्न राखवानी जरूर.

२ मूढगर्भरूपी शल्यने काहाडवा जेवुं बीजूं एके काम विकट नथी. केमके ए काममां योनि, यकृत्, प्लीह, आंतरडांओनो अवकाश अने गर्भाशय एओना मध्यमां हस्तस्पर्शथी क्रिया करवी पडे छे अने गर्भने तथा गर्भिणीने नहीं मरवा देवा उपर ध्यान आपीने एक हाथथीज गर्भने ऊंचो करवो पडे छे, नीचो करवो पडे छे, गर्भनां अंगोने एक स्थानथी खसेडीने बीजा स्थानमां लाववां पडे छे, गर्भना अंगनुं छेदन भेदन करवुं पडे छे, गर्भना अंगना छेदीने बे विभाग करी नाखवा पडे छे, गर्भने दबाववो पडे छे, गर्भने सीधो करवो पडे छे अने गर्भना अवयव फाडी नाखवा पडे छे. आम छे एटला माटे प्रथम राजानी अनुमति लईने अने पछी परमयत्न राखीने ए क्रिया करवी.

३ तत्र समासेनाष्टविधा मूढगर्भगतिरुद्दिष्टा । स्वभावगता अपि त्रयः सङ्गा भवन्ति शिरसो वैगुण्यादंसयोर्जघनस्य वा ॥

मूढगर्भनी गतिना आठ भेद अने मूढ नहीं थएला गर्भनी पण वखतपर त्रण स्वाभाविक अटकायतो.

३ संक्षेपथी जोतां मूढगर्भनी गति आठ प्रकारनी थाय छे के जेओनुं व्याख्यान निदानस्थानना आठमा अध्यायना चोथा विषयमां आपवामां आव्युं छे. मूढ नहीं थएला गर्भनी पण माथांनी विषमस्थितिथी, खभाओनी विषमस्थितिथी अने कमरनी विषमस्थितिथी वखतपर त्रण स्वाभाविक अटकायतो थाय छे.

४ जीवति तु गर्भे सूतिका गर्भनिर्हरणे प्रयतेत निर्हर्त्तुमशक्ये च्यावनान्मन्त्रानुपशृणुयात्तान्वक्ष्यामः ॥

इहामृतं च सोमश्च चित्रभानुश्च भामिनि ।
उच्चैःश्रवाश्च तुरगो मन्दिरे निवसन्तु ते ॥

१ मूढगर्भ के जेनां निदानो तथा लक्षणादिक निदानस्थानना आठमा अध्यायमां केहेवामां आव्यां छे तेनी चिकित्सा विषयनो.

इदममृतमपां समुद्धृतं वै
तव लघुगर्भमिमं प्रमुञ्चतु स्त्रि ।
तदनलपवनार्कवासवास्ते
सह लवणाम्बुधरैर्दिशन्तु शान्तिम् ॥
मुक्ताः पशोर्विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः ।
मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि विरमावितः ॥
औषधानि च विदध्याद्यथोक्तानि ।

जीवतो गर्भ काहाडी शकाय एम न होय तो मंत्रोनुं श्रवण अने शारीरस्थानमां कहेली चिकित्सा.

४ गर्भ जीवतो होय तो सूतिका स्त्रीए ते गर्भने काहाडवानो यत्न करवो. जो काहाडी शकाय नहीं एम होय तो वैद्यना मोहोडाथी, गर्भनुं निस्सरण करनारा नीचे लखेला मंत्रोनुं श्रवण करवुं.

इहामृतं च सोमश्च चित्रभानुश्च भामिनि ॥
उच्चैःश्रवाश्च तुरगो मंदिरे निवसं तु ते ॥ १ ॥

अर्थ—हे उत्तम स्त्री! आ तारा मंदिरमां अमृत, चंद्र, अग्नि अने उच्चैःश्रवा नामनो घोडो निवास करो. १

इदममृतमपां समुद्धृतं वै
तव लघु गर्भमिमं प्रमुञ्चतु स्त्रि ॥
तदनलपवनार्कवासवास्ते
सह लवणाम्बुधरैर्दिशन्तु शान्तिम् ॥२॥

अर्थ—हे स्त्री! जळमांथी काहाडेलुं आ अमृत तारा आ गर्भने तुरत छूटो करो अने अग्नि, पवन, सूर्य तथा इंद्र एओ लवणसमुद्रोनी साथे तने शांति आपो. २

मुक्ताः पशोर्विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः ॥
मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि विरमावितः ॥ ३ ॥

अर्थ—हे गर्भ! पशुना विरुद्ध पाशो छुट्या छे अने सूर्ये किरणोने मूकी छे माटे तूं पण सर्व भयथी मुक्त थईने आव्य आव्य अने प्रसवसंबंधी पीड करवाथी विराम पाम्य. ३

आ मंत्रो वैद्ये सूतिकाने संभळाववा अने शारीरस्थानना १० मा अध्यायना ९ मा विषयमां कह्याप्रमाणे धूपादिक औषधो पण करवां.

५ मृते चोत्तानाया आभुग्नसक्थ्या वस्त्राधारकोन्नमितकट्या धन्वननगशाल्मलीमृत्स्नाघृताभ्यां म्रक्षयित्वा हस्तं योनौ प्रवेश्य गर्भमपहरेत् ।

तत्र सक्थिभ्यामागतमनुलोममेवाञ्छेत् ।

एकसक्थिप्रपन्नस्येतरसक्थि प्रसार्यापहरेत् ।

स्फिग्देशेनागतस्य स्फिग्देशं प्रपीड्योर्द्ध्वमुत्क्षिप्य सक्थिनी प्रसार्यापहरेत् ।

तिर्यगागतस्य परिघस्येव तिरश्चीनस्य पश्चार्द्धमूर्द्ध्वमुत्क्षिप्य पूर्वार्द्धमपत्यपथं प्रत्याजवमानायापहरेत् ।

पार्श्वापवृत्तशिरसमंसं प्रपीड्योर्द्ध्वमुत्क्षिप्य शिरोऽपत्यपथमानीयापहरेत् ।

बाहुद्वयप्रतिपन्नस्योर्द्ध्वमुत्पीड्यांसौ शिरोऽनुलोममानीयापहरेत् ।

द्वावन्त्यावसाध्यौ मूढगर्भौ ॥

मंत्रादिक सघळी क्रियाओ विफळ थाय अथवा मूढगर्भ मरी गयो होय तो गर्भने काहाडवानी क्रिया.

५ मंत्रादिक सघळी क्रियाओ विफळ थाय अथवा मूढगर्भ मरी गयो होय तो गर्भिणीने वैद्ये पोतानी सामे मोहोडे चत्ती राखी, तेना साथळोने संकुचित करी, गालमसूरीयाना के हींडोणी वगेरेना आधारथी तेनी कमरने ऊंची राखी, धामण, सालेडो अने शेमळो एओनी माटीथी तथा घीथी खरडी हाथने योनिमां नाखीने गर्भने काहाडी लेवो.

गर्भ जो बन्ने साथळोथी (पगोथी) योनिमां प्राप्त थयो होय तो तेने सीधी रीतेज खेंची लेवो.

जेनो एक साथळ वांको वळी गयो होय एवो गर्भ बीजा एक साथळथीज योनिमां प्राप्त थयो होय तो पेला साथळने लांबो करीने गर्भने

खेंची लेवो. (आ विषयमां 'साथळ' ए शब्दथी 'पग' लेवानुं योग्य जणाय छे.)

जेना बन्ने साथळ वांका वळी गया होय तथा शरीर पण वांकुं वळी गयुं होय एवो गर्भ आडो आवी कूलाना प्रदेशथी योनिना मुखमां प्राप्त थयो होय तो कूलाना प्रदेशने दबावी ऊंचे करी नाखी, साथळोने लांबा करीने गर्भने खेंची लेवो.

गर्भ जो छातीथी, पडखाथी के पीठथी योनिना द्वारने ढांकी दई अटकी रह्यो होय एटले आडो आवीने भोगळनी पेठे थई रह्यो होय तो तेना टांटाने ऊंचुं करी नाखी, शरीरना पूर्वार्द्धने योनितरफ सीधुं लावीने तेने खेंची लेवो.

जेनुं माथुं योनिनी अंदर पडखामां आडुं आवी गयुं होय एवो गर्भ एक हाथथी योनिना द्वारने ढांकीने अटकी रह्यो होय तो तेना खभाने दबावी ऊंचो करी नाखी, माथाने योनिमां सीधुं लावीने ते गर्भने खेंची लेवो.

जेनुं माथुं वांकुं वळी गयुं होय एवो गर्भ बन्ने हाथथी योनिना द्वारने ढांकी अटकी रह्यो होय तो तेना बन्ने खभाओने दबावी ऊंचा करी माथाने योनिमां सीधुं लावीने ते गर्भने खेंची लेवो.

जेनी कमर वांकी वळी गई होय एवो गर्भ हाथथी, पगथी तथा माथाथी योनिना द्वारने ढांकी दईने अटकी रह्यो होय ते गर्भ अने जे गर्भ एक साथळथी योनिना मुखने अने बीजा साथळथी गुदाने प्राप्त थईने अटकी रह्यो होय ते गर्भ ए बन्ने गर्भो शस्त्रक्रिया विना असाध्यज छे.

६ एवमशक्ये शस्त्रमवचारयेत् ।
सचेतनं च शस्त्रेण न कथञ्चन दारयेत् ।
दार्यमाणो हि जननीमात्मानं चैव घातयेत् ॥

तत्र स्त्रियमाश्वास्य मण्डलाग्रेणाङ्गुलीशस्त्रेण वा शिरो विदार्य शिरःकपालान्याहृत्य शङ्कुना गृहीत्वोरसि कक्षायां वापहरेदभिन्ने शिरसि चाक्षिकूटे गण्डे वा अंससंसक्तस्यांसदेशे बाहुं छित्वा दृतिमिवाततं वातपूर्णोदरं वा विदार्य निरस्यान्त्राणि शिथिलीभूतमाहरेज्जघनसक्तस्य वा जघनकपालानीति ।

यद्यदङ्गं हि गर्भस्य तस्य स्वजति तद्भिषक् ।
सम्यग्विनिर्हरेच्छित्वा रक्षेन्नारीं च यत्नतः ॥
गर्भस्य गतयश्चित्रा जायन्तेऽनिलकोपतः ।
तत्रानल्पमतिर्वैद्यो वर्त्तेत विधिपूर्वकम् ॥

मूढगर्भ उपर शस्त्रक्रिया.

६ जो उपर प्रमाणे क्रियाओथी गर्भ काहाडी शकाय नहीं एम होय तो पछी गर्भ उपर शस्त्रक्रिया करवी. गर्भ जो जीवतो होय तो तेने कोई रीते पण शस्त्रथी विदारित करवो नहीं. केमके शस्त्रथी विदारित करवामां आवतो जीवतो गर्भ पोतानी माताने अने पोताने पण नष्ट करे छे.

शस्त्रक्रिया करवानी होय ते समये स्त्रीने आश्वासना आपी, (धीरज दई) मंडलाग्र नामना शस्त्रथी अथवा अंगुलीशस्त्र नामना शस्त्रथी गर्भना माथाने भेदी नाखी, तेनां अस्थिओ वगेरेने बाहार काहाडी नाखी शंकु नामना यंत्रवते

१ मंडलाग्रं फले तेषां तर्जन्यंतर्नखाकृति फळाना प्रदेशमां तर्जनी आंगळीना अंदरना नखना जेवी आकृतिवाळुं शस्त्र मंडलाग्र केहेवाय छे. (वाग्भट सूत्रस्थान अध्याय २६ मो.)

२ मुद्रिकानिर्गतमुखं फले त्वर्द्धांगुलायतम्। योगतो वृद्धिपत्रेण मंडलाग्रेण वा समम्। तत्प्रदेशिन्यग्रपर्वप्रमाणार्पणमुद्रिकम्। सूत्रबद्धं तर्जनी आंगळीना आगला पर्व जेवडा करडामां नाखेलुं, ते करडामांथी काहाडेला मुखवाळुं, फळामां अरधुं आंगळ लांबुं, पाछळ कांडामां बांधवाना दोरावाळुं अने रचनामां वृद्धिपत्र नामना अथवा मंडलाग्र नामना शस्त्र जेवुं शस्त्र अंगुलीशस्त्र केहेवायछे. (वाग्भट सूत्रस्थान अध्याय २६ मो.)

३ नतोऽग्रे शंकुना तुल्यो गर्भशंकुरितिस्मृतः ॥
अष्टांगुलायतस्तेन मूढगर्भ हरेत् स्त्रियाः ॥
गर्भशंकु आगळना भागमां नमेलो, खीला जेवा आकारवाळो अने आठ आंगळ लांबो जोइए. ए गर्भशंकुवते स्त्रीना मूढगर्भने बाहार खेंची लेवो. (वाग्भट सूत्रस्थान अध्याय २५ मो.)

गर्भनी छातीने के काखने पकडीने ते गर्भने खेंची लेवो. माथाने तोडयुं न होय तो शंकु नामना यंत्रवते गर्भना लमणाने अथवा गालने पकडीने गर्भने खेंची लेवो. गर्भ जो खभाथी अटकी रह्यो होय तो ते प्रदेशमां बाहुने कापीने गर्भने काहाडी लेवो अने जो गर्भनुं पेट वायुथी पूर्ण थई पखालनी पेठे विस्तीर्ण थई गयुं होय तो पेटने चीरी आंतरडांओने बाहार काहाडी नाखवां अने एम करवाथी गर्भ शिथिल थई जाय एटले तेने खेंची लेवो. गर्भ जो कमरथी अटकी रह्यो होय तो तेनी कमरने चीरी कमरनां अस्थिओने बाहार काहाडी नाखीने पछी तेने खेंची लेवो.

गर्भनुं जे जे अंग अटकी रह्युं होय ते ते अंगने वैद्ये कापी नाखीने गर्भने सारी युक्तिथी खेंची लेवो अने पूरो यत्न राखीने स्त्रीनुं रक्षण करवुं. (स्त्रीनुं अंग जरा पण न छेदाय तेम करवुं.) वायुना प्रकोपने लीधे गर्भनी स्थितिओ विचित्र विचित्र प्रकारोनी थाय छे माटे ते विषयमां बुद्धिमान् वैद्ये ते ते स्थितिने अनुसरीने क्रिया करवी अर्थात् जे क्रिया आ प्रकरणमां न कहेली छतां पण योग्यताथी प्राप्त थई जणाय ते करवी.

७ नोपेक्षेत मृतं गर्भं मुहूर्त्तमपि पण्डितः ।
स ह्याशु जननीं हन्ति निरुच्छ्वासं पशुं यथा ॥

मरण पामेला गर्भने जरावार पण अंदर रेहेवा देवो नहीं.

७ समजू वैद्ये मरण पामेला गर्भने जरावार पण अंदर एमने एम रेहेवा देवो नहीं. कारण के जेम निर्दय माणस पशुने श्वासरहित करीने मारी नाखे छे तेम मरण पामेलो गर्भ माताने श्वासरहित करीने मारी नाखे छे.

८ मण्डलाग्रेण कर्त्तव्यं छेद्यमन्तर्विजानता ।
वृद्धिपत्रं हि तीक्ष्णाग्रं नारीं हिंस्यात्कदाचन ॥

गर्भना छेदनमां मंडलाग्र नामना शस्त्रनो उपयोग करवो पण वृद्धिपत्र नामना शस्त्रनो उपयोग करवो नहीं.

८ प्रवीण वैद्ये योनिनी अंदर गर्भनुं जे छेदन करवुं ते मंडलाग्र नामना शस्त्रथी करवुं पण वृद्धिपत्र नामना शस्त्रथी कदी करवुं नहीं. केमके ए वृद्धिपत्र तीक्ष्ण अग्रवाळुं होवाने लीधे वखतपर स्त्रीने मारी नाखे छे.

अथापतन्तीमपरां पातयेत्पूर्ववद्भिषक् ।
हस्तेनापहरेद्वापि पार्श्वाभ्यां परिपीड्य वा ॥
धुनुयाच्च मुहुर्नारीं पीडयित्वांसपिण्डिकाम् ।
तैलाक्तयोनेरेवं तां पातयेन्मतिमान्भिषक् ॥

ओळ न पडती होय तो तेने पाडवानी क्रिया.

९ ओळ जो पडती न होय तो तेने वैद्ये शारीरस्थानना दशमा अध्यायना १७ मा विषयमां कहेली क्रियाथी पाडवो अथवा स्त्रीने बन्ने पडखांओमां दबावी योनिनी अंदर हाथ नाखीने हाथवते ओळने काहाडी लेवी अथवा स्त्रीना खभानां टोंचकांने दबावीने ते स्त्रीने वारंवार हलाववी के जेथी ओळ पडी जाय. ओळ पाडवानी होय त्यारे योनिने तेलनो अभ्यंग आपीने पछी ए प्रमाणे पाडवी.

१० एवं निर्हृतशल्यां तु सिञ्चेदुष्णेन वारिणा ।
ततोऽभ्यक्तशरीराया योनौ स्नेहं निधापयेत् ॥
एवं मृद्वी भवेद्योनिस्तच्छूलं चोपशाम्यति ।
कृष्णातन्मूलशुण्ठ्येलाहिङ्गु भार्गीं सदीप्यकाम्॥
वचामतिविषां रास्नां चव्यं संचूर्ण्य पाययेत् ॥
स्नेहेन दोषस्यन्दार्थं वेदनोपशमाय च ।
क्वाथं चैषां तथा कल्कं चूर्णं वा स्नेहवर्जितम्॥
शाकत्वग्घिङ्ग्वतिविषापाठाकटुकरोहिणीः ॥
तथा तेजोवतीं चापि पाययेत्पूर्ववद्भिषक् ॥
त्रिरात्रं पञ्चसप्ताहं ततः स्नेहं पुनः पिबेत् ।
पाययेद्वासवं नक्तमरिष्टं वा सुसंस्कृतम् ॥

शिरीषककुभाभ्यां च तोयमाचमने हितम् ॥
उपद्रवाश्च येऽन्ये स्युस्तान्यथास्वमुपाचरेत् ।
सर्वतः परिशुद्धा च स्निग्धपथ्याल्पभोजना ॥
स्वेदाभ्यङ्गपरा नित्यं भवेत्क्रोधविवर्जिता ।
पयो वातहरैः सिद्धं दशाहं भोजने हितम् ॥
रसं दशाहं शेषे तु यथायोगमुपाचरेत् ।

गर्भ काहाडीने ओळ पाड्या पछी अमुक दिवसो सूधी करवानी क्रिया.

१० ए प्रमाणे गर्भरूप अने ओळरूप शल्य काहाड्या पछी स्त्रीना शरीर उपर ऊना पाणीनुं सेचन करवुं अने पछी तेना शरीरपर स्नेहनो अभ्यंग करावीने योनिमां स्नेहवाळुं रूनुं पूमडुं खोसाववुं. आम करवाथी योनि कोमळ थाय छे अने तेनी वेदना पण शांत थई जाय छे. दोषने खवाववा माटे तथा वेदनानी शांतिने माटे पीपळ, पीपळीमूळ, सूंठ, एळची, हींग, भारंगी, अजमा, वज, अतवस, रास्ना अने चवक एओनुं चूर्ण करीने स्नेहनी साथे पावुं. जो देशादिकना अनुसार प्रमाणे स्नेह देवो योग्य न जणाय तो ए पीपळ वगेरेनां कल्क, क्वाथ के चूर्ण करीने स्नेहवगरनां पावां. साग, तज, हींग, अवतस, काळीपाड, कडु अने तेजबल, एओनां कल्क, क्वाथ के चूर्ण पण उपर प्रमाणे पावां. त्रण रात व्यतीत थतां सूधी ए प्रमाणे करीने पछी पांच दिवस सूधी के सात दिवस सूधी स्नेहपान कराववुं. सारी रीते संस्कारो आपीने बनावेलो आसव के अरिष्ट राते पावो. ए स्त्रीने योनि धोवामां तथा पानादिकमां सरसडीयो तथा कडायो के साजड एओनुं जळ देवुं ए हितकारी छे. ए स्त्रीने जे जे कोई बीजा उपद्रवो थाय तेओनी पण यथायोग्य चिकित्सा करवी. सर्व प्रकारे शुद्ध थया पछी ए स्त्रीए स्निग्ध, पथ्य तथा अल्प भोजन करवुं, नित्य स्वेदनमां (अग्निनो शेक लेवामां) तथा स्नेहना अभ्यंगमां तत्पर रेहेवुं, क्रोधादिकनो त्याग करवो. ए स्त्रीने वायुनुं हरण करनारां द्रव्योथी पकावेलुं दूध भोजनमां देवुं ए हितकारी थाय छे. ए प्रमाणे दश दिवससूधी करीने पछी बीजा दश दिवससूधी भोजनमां मांसनो रसो देवो हितकारी छे. ए बीजा दश दिवसोमां पण ते स्त्रीने स्वेदनमां तथा स्नेहना अभ्यंगमां तत्पर राखवी, हलकुं पथ्य तथा अल्पभोजन कराववुं अने क्रोधादिकनो त्याग कराववो. बीजा दश दिवस पछी पण योग्य जणाय तेवा उपचारो कर्या करवा अने योग्य परेजी पळाव्या करवी.

११ व्युपद्रवां विशुद्धां च ज्ञात्वा च बलवर्णिनीम्
ऊर्ध्वं चतुर्भ्यो मासेभ्यो विसृजेत्परिहारतः ॥

प्रसूता स्त्रीने चार महिना पछी परेजी छोडाववी.

११ स्त्रीने उपद्रवोवगरनी, दोषादिकथी तमाम रहित थएली अने बलथी तथा सारा वर्णथी युक्त थएली जाणीने चार महिना पछी परेजीथी मुक्त करवी.

१२ योनिसन्तर्पणेऽभ्यङ्गे पाने बस्तिषु भोजने ॥
बलातैलमिदं चास्यै दद्यादनिलवारणम् ।
बलामूलकषायस्य दशमूलीकृतस्य च ॥
यवकोलकुलत्थानां क्वाथस्य पयसस्तथा ।
अष्टावष्टौ शुभा भागास्तैलादेकस्तदेकतः ॥
पचेदावाप्य मधुरं गणं सैन्धवसंयुतम् ।
तथागुरुं सर्जरसं सरलं देवदारु च ॥
मञ्जिष्ठां चन्दनं कुष्ठमेलां कालानुसारिकाम् ।
मांसीं शैलेयकं पत्रं तगरं सारिवां वचाम् ।
शतावरीमश्वगन्धां शतपुष्पां पुनर्नवाम् ॥
तत्साधु सिद्धं सौवर्णे राजते मृण्मयेऽपि वा ॥
प्रक्षिप्य कलशे सम्यक्स्वनुगुप्तं निधापयेत् ।
बलातैलमिदं ख्यातं सर्ववातविकारनुत् ॥
यथाबलमतो मात्रां सूतिकायै प्रदापयेत् ।
या च गर्भार्थिनी नारी क्षीणशुक्रश्च यः पुमान् ॥
वातक्षीणे मर्महते मथितेऽभिहते तथा ।
भग्ने श्रमाभिपन्ने च सर्वथैवोपयुज्यते ॥

एतदाक्षेपकादीन्वै वातव्याधीनपोहति ।
हिक्कां कासमधीमन्थं गुल्मं श्वासं च दुस्तरम्॥
षण्मासानुपयुज्यैतदन्त्रवृद्धिमपोहति ।
प्रत्यग्रधातुः पुरुषो भवेच्च स्थिरयौवनः ॥
राज्ञामेतद्धि कर्त्तव्यं राजमात्राश्च ये नराः ।
सुखिनः सुकुमाराश्च धनिनश्चापि ये नराः ॥

बलातैल.

१२ योनिने तृप्त करवामां, अभ्यंगमां, पीवामां, बस्तिओमां तथा भोजनमां सूतिकाने वायुनुं निवारण करनारूं नीचे लखेलुं बलातैल आपवुं.

बलदाणाना छोडोनां मूळीयांनो क्काथ, दशमूळीनो क्काथ, जव, उत्तम बोर तथा कळथी एओनो क्काथ अने दूध एओना आठ आठ भाग लेवा अने तेलनो एक भाग लेवो. ए सर्वने एकठां करी तेमां काकोल्यादि मधुर गण, सैंधव, अगरू, राळ, चीडो देवदार, देवदार, मजीठ, रतांजलि, कठ, एळची, पत्थरफूल, जटामांसी, शिलाजित, तमालपत्र, तगर, उपलसरी, वज, आसोंद, सुवा, अने साटोडी एओनो कल्क नाखीने ते तेल पकाववुं. सारी रीते पाकी रहे त्यारे उतारी लई सुवर्णना, रूपाना के माटीना वासणमां नाखीने सारा बंदोवस्तथी राखी मेलवुं. आ **बलातैल** नामनुं तेल वायुसंबंधी सघळा विकारोने नष्ट करे छे एटला माटे सूतिकाने तेनी शक्तिप्रमाणे आ तैलनी मात्रा देवी. जे स्त्री गर्भधारणने इच्छती होय तेने अने जे पुरुषनुं वीर्य क्षीण थई गयुं होय तेने पण आ तैलनो उपयोग कराववो. वायुथी क्षीण थएलो, मर्ममां अभिघात पामेलो, कचराएलो, बीजी कोई रीते अभिघात पामेलो, भग्न थएलो अने श्रमथी दुःखी थएलो एओने पण आ तैल सर्वथा उपयोगी छे. आ तैल आक्षेपक वगेरे वातव्याधिओने, हेडकीने, खांसीने, अधिमंथने, गुल्मने अने दुस्तर श्वासने पण मटाडे छे. आ तैलनो छ महिना सूधी उपयोग करवाथी अंत्रवृद्धि मटी जाय छे अने पुरुष नवीन धातुवाळो तथा स्थिर यौवनवाळो थाय छे. राजाओने माटे, राजाओ जेवा पुरुषोने माटे अने जे पुरुषो सुखीया, सुकुमार तथा धनाढ्य होय तेओने माटे आ बलातैल बनाववुं.

१३ बलाकषायपीतेभ्यस्तिलेभ्यो वाप्यनेकशः ।
तैलमुत्पाद्य तत्काथशतपाककृतं शुभम् ॥
निवाते निभृतागारे प्रयुञ्जीत यथाबलम् ।
जीर्णेऽस्मिन्पयसा स्निग्धमश्नीयात्षष्टिकौदनम्॥
अनेन विधिना द्रोणमुपयुञ्ज्यान्नमीरितम् ।
भुञ्जीत द्विगुणं कालं बलवर्णान्वितस्ततः ॥
सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः शतायुः पुरुषो भवेत् ।
शतं शतं तथोत्कर्षो द्रोणे द्रोणे प्रकीर्त्तितः ॥

शतपाकबलातैल.

१३ तिलोने घणी घणीवार बळदाणानां मूळीयांना क्काथोनी भावनाओ आपी, ते तिलोनुं तेल कहडावी, ते तेलने बळदाणानां मूळीआना क्काथोमां सोवार पकाववामां आवे एटले ते **शतपाकबलातैल** केहवाय छे. पवनवगरना गुप्त घरमां रहीने जठराग्निना तथा शरीरना बळप्रमाणे आ तैलनो नित्य उपयोग करवो अने ते जीर्ण थाय त्यारे साठी चोखानो स्निग्ध भात दूधनी साथे जमवो. आ विधिप्रमाणे एक हजार चोवीश तोलां भार आ तैलनो क्रमथी उपयोग करी, ते उपयोग करतां जेटला दिवसो लाग्या होय तेटला दिवसोथी बमणा दिवसोसूधी पथ्य अन्न जमवुं. आ प्रमाणे विधान करवामां आवे तो पुरुष बळवान् थाय छे, सारा वर्णवाळो थाय छे, सघळा दोषोथी मुक्त थाय छे अने सो वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे. आ तैलना एक एक द्रोणना (एक हजार चोवीश तोलां भारनो एक द्रोण थाय छे.) उपयोगथी सो सो वर्षनुं आयुष्य वधे छे.

१४ बलाकल्पेनातिबलागडूच्यादित्यपर्णिषु ।
सैरेयके वीरतरौ शतावर्यां त्रिकण्टके ॥

तैलानि मधुके कुर्यात्प्रसारण्यां च बुद्धिमान् ।

बलातैलना विधिप्रमाणेज बीजां पण केटलांएक तैलो बनाववां.

१४ बुद्धिमान् वैद्ये आ बलातैलना विधिप्रमाणेज खपाट, गळो, सूरजमुखी, सफेद कांटाअशेरीयो, वीरतरु, शतावरी, गोखरू, जेठीमध अने रीमामणी एओनां पण जूदां जूदां तैलो बनाववां. (आ तैलो पण सूतिका वगेरेने उपयोगी छे.)

१५ नीलोत्पलं वरीमूलं गव्यं क्षीरं विपाचयेत्॥
शतपाकं ततस्तेन तिलतैलं पचेद्भिषक् ।
बलातैलस्य कल्कांस्तु सुपिष्टांस्तत्र दापयेत् ॥

शतपाक नीलोत्पलतैल.

१५ नीलकमळ अने शतावरीनां मूळ एओनो गायना दूधमां क्राथ करी ते क्राथथी अने उपर कहेला बलादि तैलमां नाखवाना सारी पेठे वाटेला कल्कोथी सो वार तलना तैलने पकाववुं एटले ते शतपाकनीलोत्पलतैल सिद्ध थाय छे. (आ तैल पण सूतिका वगेरेने उपयोगी छे.)

१६ सर्वेषामेव जानीयादुपयोगं चिकित्सकः ।
बलातैलवदेतेषां गुणांश्चैव विशेषतः ॥

शतपाकबलातैल वगेरे तैलोनो उपयोग तथा विशेष गुणो.

१६ वैद्ये आ शतपाकबलातैल वगेरे तैलोनो उपयोग पोतानी बुद्धिथी योजी लेवो अने तेओना विशेष गुणो बलातैलना जेवाज समजवा.

अध्याय १६ मो.

१ अथातो विद्रधीनां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विद्रधिचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ उक्ता विद्रधयः पञ्चे तेष्वसाध्यस्तु सर्वजः ।
शेषेष्वामेषु कर्त्तव्या त्वरितं शोफवत्क्रिया ॥

काचा विद्रधिओनी सामान्य चिकित्सा.

२ छ प्रकारना विद्रधिओ निदानस्थानमां कह्या छे तेओमां त्रणे दोषोथी थएलो विद्रधि के जे असाध्यज छे तेने छोडी दईने बाकीना पांच विद्रधिओ काचा होय ते समयमां तुरतज सोजानी चिकित्सा जेवी चिकित्सा करवी. (आ स्थानना पहेला अध्यायमां कह्याप्रमाणे अपतर्पणथी मांडीने विरेचन सूधीनी बार चिकित्साओ करवी.)

३ सुरङ्गीमूलकल्कैस्तु घृततैलवसायुतैः ।
सुखोष्णो बहलो लेपः प्रयोज्यो वातविद्रधौ ॥
सानूपौदकमांसस्तु काकोल्यादिः सतर्पणः ।
स्नेहाम्लसिद्धो लवणः प्रयोज्यश्चोपनाहने ॥
वेशवारैः सकृशरैः पयोभिः पायसैस्तथा ।
स्वेदयेत्सततं चापि निर्हरेच्चापि शोणितम् ॥
स चेदेवमुपक्रान्तः पाकायाभिमुखो भवेत् ।
तं पाचयित्वा शस्त्रेण भिन्द्याद्भिन्नं च शोधयेत्॥
पञ्चमूलकषायेण प्रक्षाल्य लवणोत्तरैः ।
तिलैर्भद्रादिमधुकसंयुक्तैः प्रतिलेपयेत् ॥
वैरेचनिकयुक्तेन त्रैवृतेन विशोध्य च ।
पृथक्पर्ण्यादिसिद्धेन त्रैवृतेन च रोपयेत् ॥

वायुथी थएला विद्रधिनी चिकित्सा.

३ वायुथी थएला विद्रधि उपर घी, तेल अने चरबी एओथी संयुक्त करेला सरगवाना मूळना कल्कनो सेहेवाय तेवो ऊनो जाडो जाडो लेप करवो. काकोल्यादि गणने आनूप प्राणीओनां तथा

१ वीरतरु मारवाड तरफ थाय छे. एनां फूल धोळां तथा लाल रंगनां अने जाईनां फूलो जेवां थाय छे.

१ विद्रधिओ के जेओनां निदानो तथा लक्षणादिक निदानस्थानना ९ मा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

जलचर प्राणीओनां मांसोथी अने जवना साथवाथी युक्त करी, स्नेहोमां तथा खाटा रसमां पकावी, लवणथी युक्त करीने तेनो वातविद्रधि उपर उपनाह करवो. अडद, तल तथा चोखा एओनी खीचडीथी, मांसना वेसवारोथी, दूधोथी अने दूधपाकोथी निरंतर वातविद्रधिनुं स्वेदन करवुं अने तेमांथी रुधिरनुं स्रावण पण करवुं. आ प्रमाणे चिकित्सा करतां ए वातविद्रधि जो पाकवामां तैयार थाय तो तेने पकावी शस्त्रथी भेदी नाखवो अने भेद्या पछी तेनुं शोधन करवुं. ए विद्रधिना व्रणने पंचमूलीना क्वाथथी धोई ते व्रण उपर सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेला भद्रदारु आदि वर्गथी तथा जेठीमधथी युक्त करेला अने झाझा सैंधववाळा तिलोना कल्कनो लेप करवो. सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना ४ था विषयमां कहेलां विरेचन द्रव्योथी अने ३६ मा अध्यायना ६ ठ्ठा विषयमां कहेलां आकडानां मूळ वगेरे शोधन द्रव्योथी युक्त करेला त्रैवृत नामना घीथी (आ स्थानना पांचमा अध्यायना १९ मा विषयमां जुवो.) ते व्रणनुं शोधन करीने पछी सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायना ७ मा विषयमां कहेलां पृश्निपर्णी आदि रोपण द्रव्योना क्वाथादिकथी पकावेला एज त्रैवृत नामना घीथी रोपण करवुं.

४ पैत्तिकं शर्करालाजमधुकैः सारिवायुतैः ।
प्रदिह्यात्क्षीरपिष्टैर्वा पयस्योशीरचन्दनैः ॥
पाक्यैः शीतकषायैर्वा क्षीरैरिक्षुरसैस्तथा ।
जीवनीयघृतैर्वापि सेचयेच्छर्करायुतैः ॥
त्रिवृद्धरीतकीनां च चूर्णं लिह्यान्मधुद्रवम् ।
जलौकोभिर्हरेच्चासृक्पक्वं चापाट्य बुद्धिमान् ॥
क्षीरवृक्षकषायेण प्रक्षाल्यौदकजेन वा ।
तिलैः सयष्टिमधुकैः सक्षौद्रैः सर्पिषा युतैः ॥
उपदिह्य प्रतनुना वाससा वेष्टयेद्व्रणम् ।
प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठामधुकोशीरपद्मकैः ॥
सहरिद्रैः कृतं सर्पिः सक्षीरं व्रणरोपणम् ।
क्षीरशुक्लापृथक्पर्णीसमङ्गारोध्रचन्दनैः ॥
न्यग्रोधादिप्रवालेषु तेषां त्वक्ष्वथवा कृतम् ।
नक्तमालस्य पत्राणि तरुणानि फलानि च ॥
सुमनायाश्च पत्राणि पटोलारिष्टयोस्तथा ।
द्वे हरिद्रे मधूच्छिष्टं मधुकं तिक्तरोहिणी ॥
प्रियङ्गुः कुशमूलं च निचुलस्य त्वगेव च ।
मञ्जिष्ठाचन्दनोशीरमुत्पलं सारिवा त्रिवृत् ॥
एतेषां कार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
दुष्टव्रणप्रशमनं नाडीव्रणविशोधनम् ॥
सद्यश्छिन्नव्रणानां च करञ्जाद्यमिदं शुभम् ।
दुष्टव्रणाश्च ये केचिद्ये चोत्सृष्टक्रिया व्रणाः ॥
नाड्यो गम्भीरिका याश्च सद्यश्छिन्नास्तथैव च ।
अग्निक्षारकृताश्चैव ये व्रणा दारुणा अपि ॥
करञ्जाद्येन हविषा प्रशाम्यन्ति न संशयः ।

पित्तथी थएला विद्रधिनी चिकित्सा.

४ साकर, साळनी धाणी, जेठीमध अने उपलसरी एओने दूधमां वाटीने तेओनो अथवा आसोंद, वाळो अने सूखड एओने दूधमां वाटीने तेओनो पित्तथी थएला विद्रधि उपर लेप करवो. सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना ११ मा विषयमां कहेलां पित्तहर द्रव्योना उकाळेला क्वाथोथी, ते द्रव्योना स्वरस तथा हिम आदि शीत कषायोथी, दूधोथी, शेलडीना रसोथी अने साकरथी संयुक्त करेलां काकोल्यादि जीवनीयवर्गनां घृतोथी ए विद्रधि उपर सेचन करवुं. पित्तविद्रधिवाळाने मधमां कालवेलुं नसोतरनुं तथा हरडेनुं चूर्ण चटाडवुं अने जळो मूकीने ते विद्रधिना रुधिरनुं स्रावण करवुं. ए विद्रधि पाके तो तेने शस्त्रथी भेदी, वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना क्वाथथी अथवा जलमां उत्पन्न थएली औषधीओना क्वाथथी धोई जेठीमध, मध तथा घी एओथी संयुक्त करेला तिलोना कल्कनो लेप करीने ते उपर झीणा वस्त्रनो पाटो बांधवो. पांडेरवो, मजीठ, जेठीमध, वाळो, पद्मकाष्ठ अने हळदर एओनो कल्क नाखी दूधमां पकावेला घीथी पित्तविद्रधिना व्रणनुं रोपण करवुं. अथवा सफेद विदारीकंद, पृश्निपर्णी, मजीठ, लोदर

अने सूखड एओनो कल्क नाखी न्यग्रोधादि गणनां पानडांओना के छालोना काथथी पकावेला घीथी पित्तविद्रधिना व्रणनुं रोपण करवुं.

करंजाद्यघृत.

करंजनां पानडां, करंजनां काचां फळो, जाईनां पानडां, पटोलनां पानडां, लींबडानां पानडां, हळदर, दारूहळदर, मीण, जेठीमध, कडु, घउलां, दर्भनां मूळ, नेतरनी छाल, मजीठ, सूखड, वाळो, कमळ, उपमर्री अने नसोतर ए प्रत्येक द्रव्योने एक एक तोलां भार लई कल्क करी ते कल्क नाखीने दूध वगेरे चोगणा द्रवमां चोसठ तोलां भार घी पकाववुं. आ घी **करंजाद्यघृत** केहेवाय छे. आ घी दुष्ट व्रणोने शांत करे छे, नाडीव्रणोनुं शोधन करे छे अने तुरतना थएला (आगंतुज) व्रणो उपर पण हितकारी छे. जे दुष्टव्रणो होय, जेओनी बीजा वैद्योए चिकित्सा छोडी दीधी होय एवा व्रणो होय, गंभीर नाडीव्रणो होय, तुरतना करेला छेदनादिकथी थएला व्रणो होय अने अग्निथी के क्षारथी थएला दारुण व्रणो होय तेओ पण आ करंजाद्यघृतथी शांत थई जाय छे एमां कशो संशय नथी.

५ इष्टकासिकतालोहगोशकृत्तुषपांसुभिः ॥
मूत्रैरुष्णैश्च सततं स्वेदयेच्छ्लेष्मविद्रधिम् ।
कषायपानैर्वमनैरालेपैरुपनाहनैः ॥
हरेद्दोषानभीक्ष्णं चाप्यलाब्वासृक्तथैव च ।
आरग्वधकषायेण पक्वं चापाट्य धावयेत् ॥
हरिद्रात्रिवृतासक्तुतिलैर्मधुसमायुतैः ।
पूरयित्वा व्रणं सम्यग्बध्नीयात्कीर्त्तितं यथा ॥
ततः कुलत्थिकादन्तीत्रिवृच्छ्यामार्कतिल्वकैः ।
कुर्यात्तैलं सगोमूत्रं हितं तत्र ससैन्धवम् ॥

कफथी थएला विद्रधिनी चिकित्सा.

५ कफथी थएला विद्रधिनुं गरम करेली इंटोथी, रेतीथी, लोढांओथी, गायना छाणथी, फोतरांओथी, रजथी अने मूत्रोथी निरंतर स्वेदन करवुं. ए विद्रधिना दरदीना दोषोनुं काथो पीवराववाथी, वमनोथी, लेपोथी तथा उपनाहनोथी वारंवार हरण करवुं अने तेना विद्रधिमांथी तूंबडीवते लोहीनुं हरण करवुं. ए विद्रधि पाके त्यारे तेने शस्त्रथी भेदीने गरमाळाना काथथी धोवो अने पछी हळदर, नसोतर, जवनो साथवो तथा तल एओनो मधथी संयुक्त कल्क करी ते कल्कथी व्रणने पूरीने सूत्रस्थानना १८ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे योग्य पाटाथी बांधवो. ए व्रणनेमाटे कळथी, नेपाळो, नसोतर, वरधारो, आकडो, पाटीयो लोदर तथा सेंधव एओनो कल्क नाखी गोमूत्रमां तेल पकाववुं ए हितकारी थाय छे.

६ पित्तविद्रधिवत्सर्वाः क्रिया निरवशेषतः ।
विद्रध्योः कुशलः कुर्याद्रक्तागन्तुनिमित्तयोः ॥

रुधिरथी थएला तथा क्षतथी थएला विद्रधिनी चिकित्सा.

६ प्रवीण वैद्ये रुधिरथी थएला तथा क्षतथी (अभिघातथी) थएला विद्रधिओनी सघळी क्रियाओ पित्तविद्रधिनी चिकित्साओनी पेठेज संपूर्ण रीते करवी.

७ वरुणादिगणकाथमपक्वेऽभ्यन्तरोत्थिते ।
ऊषकादिप्रतीवापं पिबेद्विद्रधिशान्तये
अनयोर्वर्गयोः सिद्धं सर्पिर्वैरेचनेन च ।
अचिराद्विद्रधिं हन्ति प्रातःप्रातर्निषेवितम् ॥
एभिरेव गणैश्चापि संसिद्धं स्नेहसंयुतम् ।
कार्यमास्थापनं क्षिप्रं तथैवाप्यनुवासनम् ॥
पानालेपनभोज्येषु मधुशिग्रुद्रुमोऽपि वा ।
दत्तावापो यथादोषमपक्वं हन्ति विद्रधिम् ॥
तोयधान्याम्लमूत्रैस्तु पेयो वापि सुरादिभिः ॥
यथादोषगणकाथैः पिबेद्वापि शिलाजतु ॥
प्रधानं गुग्गुलुं चापि शुण्ठीं च सुरदारु च ।
स्नेहोपनाहौ कुर्याच्च सदा चाप्यनुलोमनम् ॥
यथोद्दिष्टां शिरां विध्येत्कफजे विद्रधौ भिषक् ।
रक्तपित्तानिलोत्थेषु केचिद्दाहौ वदन्ति तु ॥

पक्कं वा बहिरुन्नद्धं भित्त्वा व्रणवदाचरेत् ।
स्रुतेषूर्ध्वमधो वापि मैरेयाम्लसुरासवैः ॥
पेयो वरुणकादिस्तु मधुशिग्रुद्रुमोऽपि वा ।
शिग्रुमूलजले सिद्धं ससिद्धार्थकमोदनम् ॥
यवकोलकुलत्थानां यूषैर्भुञ्जीत मानवः ।
प्रातःप्रातश्च सेवेत मात्रया तैल्वकं घृतम् ॥
त्रिवृतादिगणक्वाथसिद्धं वाप्युपशान्तये ।
नोपगच्छेद्यथा पाकं प्रयतेत तथा भिषक् ॥
पर्यागते विद्रधौ तु सिद्धिर्नैकान्तिकी स्मृता ।
प्रत्याख्याय तु कुर्वीत मज्जजातं तु विद्रधिम् ॥
स्नेहस्वेदोपपन्नानां कुर्याद्रक्तावसेचनम् ।
विद्रध्युक्तां क्रियां कुर्यात्पक्के चास्थि तु भेदयेत्
निःशल्यमथ विज्ञाय कर्त्तव्यं व्रणशोधनम् ॥
धावेत्तिक्तकषायेण तिक्तं सर्पिस्तथा हितम् ।
यदि मज्जपरिस्रावो न निवर्त्तेत देहिनः ॥
कुर्यात्संशोधनीयानि कषायादीनि बुद्धिमान् ।
प्रियङ्गुधातकीरोध्रकट्फलं तिनिसैन्धवम् ॥
एतैस्तैलं विपक्तव्यं विद्रधिव्रणरोपणम् ॥

अंदर थएला विद्रधिनी चिकित्सा.

७ अंदर थएलो विद्रधि काचो होय तो तेने शांत करवामाटे ऊषकादि गणना प्रतिवापवाळो वरुणादि गणनो क्वाथ पावो. ऊषकादि गण तथा वरुणादि गण एओना कल्कथी तथा सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायमां कहेलां विरेचन द्रव्योना क्वाथथी बनावेलुं घी नित्य प्रभाते प्रभाते सेववामां आवे तो तेथी विद्रधि तुरत टळी जाय छे. ऊषकादिगण, वरुणादिगण अने विरेचन द्रव्यो एओना क्वाथनी तेओना स्नेहनी साथे तुरत निरूहबस्ति देवी अने एओना क्वाथथी तथा कल्कथी बनावेला स्नेहनी अनुवासनबस्ति देवी. विद्रधिमां जे दोषनो प्रकोप होय ते दोषने हणनारां द्रव्यो नाखीने बनावेला सरगवाना क्वाथादिकनी पीवामां, जमवामां तथा लेपनमां योजना करवामां आवे तो तेथी काचो विद्रधि नष्ट थई जाय छे. ए सरगवानो क्वाथ जळनी साथे, धान्याम्लनी साथे, गोमूत्रनी साथे अथवा सुरा वगेरेनी साथे पावो. अथवा जे दोषनो प्रकोप होय ते दोषने हरनारा गणोना क्वाथोनी साथे शिलाजित पावुं. ए विद्रधिने टाळवामाटे भेंसागुगळ के जे सघळा गुगळोमां प्रधान छे तेनुं, सूंठनुं अने देवदारनुं पण सेवन कराववुं. स्नेहो तथा उपनाहनो पण करवां अने सर्वदा विरेचन पण देवुं. ए विद्रधि कफथी थयो होय तो शारीरस्थानना ८ मा अध्यायना २१ मा विषयमां कह्याप्रमाणे डाबा पडखामां काखना तथा स्तनना मध्यमां शिरानो वेध करवो. केटलाएक आचार्यो कहेछे के "रुधिरथी थएला, पित्तथी थएला तथा वायुथी थएला अंदरना विद्रधिओमां बाहुनी शिरानो वेध करवो." अंदरनो विद्रधि पाकीने बाहार उन्नद्ध थयो होय तो तेने शस्त्रथी भेदीने तेनी व्रणनी पेठे चिकित्सा करवी. अंदरना विद्रधिओ मुखद्वारथी के गुदद्वारथी स्राव करवा लाग्या होय तो वरुणादि गणनो क्वाथ अथवा सरगवानो क्वाथ मेरेय (सुराना तथा आसवनां संधानथी बनावेला मद्य)नी साथे, कांजीनी साथे, सुरानी साथे के आसवनी साथे पावो. ए विद्रधिना दरदीने सरगवाना मूळना क्वाथमां पकावेलो सर्षपसहित भात, जव बोर तथा कळथी एओना यूषोनी साथे जमाडवो. ए विद्रधिनी शांतिने माटे प्रभाते प्रभाते योग्य मात्राथी तैल्वकघृत (आ स्थानना चोथा अध्यायनो २१ मो विषय जुवो.) पावुं अथवा त्रिवृतादि गणना क्वाथथी पकावेलुं घी पावुं. अंदरनो विद्रधि जे प्रकारथी पाके नहीं ते प्रकारनो वैद्ये यत्न करवो. केमके ए विद्रधि पाकी जाय तो पछी तेमां फतेह मळवानुं अनि-

१ विद्रधि मर्मस्थानमां थयो होय तो ते उपर पाचन तथा शस्त्रथी पाटन वगेरे उपचारो पण करवा. डल्हन.

२ सर्षपोने जराक पकावीने भातमां मिश्रित करी देवा. डल्हन.

श्रित छे. जेओने मज्जामां विद्रधि थएल होय तेओनी प्रथम ना पाडीने पछी चिकित्सा करवी ते आ प्रमाणे के स्नेहन संस्कार तथा स्वेदन संस्कार आपीने तेओना रुधिरनुं स्रावण करवुं अने पछी जे दोषनो ए विद्रधि होय ते दोषना बाहारना विद्रधिने माटे जे उपायो कह्या छे ते उपायो करवा. ए मज्जामां थएलो विद्रधि जो पाके तो शस्त्रथी अस्थिनुं भेदन करीने दोषनुं निर्हरण करवुं अने तमाम दोष नीकळी गयो जणाय त्यारे ते व्रणनुं शोधन करवुं. ए व्रणने सूत्रस्थानना ४२ मा अध्यायना १३ मा विषयमां कहेला तिक्तवर्गना क्वाथथी धोवो अने ते उपर तिक्तवर्गना क्वाथादिकथी पकावेला घीनी योजना करवी. जो दरदीने मज्जानो परिस्राव बंध न पडे तो बुद्धिमान् वैद्ये संशोधन करनारां क्वाथादिक करवां. विद्रधिना व्रणनुं रोपण करवामाटे घउलां, धावणी, लोदर, कायफळ, मीणो हरमो अने सैंधव एओना क्वाथादिकथी पकावेला तैलनो प्रयोग करवो.

अध्याय १७ मो.

१ अथातो विसर्पनाडीस्तनरोगचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विसर्पनाडीस्तनरोगचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ साध्या विसर्पास्त्रय आदितो ये
न सन्निपातक्षतजौ हि साध्यौ ।
साध्येषु तत्पथ्यगणैर्विदध्या-
द्घृतानि सेकांश्च तथोपदेहान् ॥

विसर्पोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

चिकित्सानुं सामान्य सूत्र.

२ वायुथी थएलो, पित्तथी थएलो अने कफथी थएलो ए त्रण विसर्पो निदानस्थानमां कहेली सामान्य स्थितिमां होय त्यांसूधी साध्य छे अने त्रणे दोषोथी थएलो तथा क्षतथी थएलो ए बे विसर्पो तो असाध्यज छे. जे विसर्पो साध्य छे तेओने टाळवामाटे वैद्ये ते ते दोषोने हरनारां औषधोना गणोथी घृतो, सेचनो अने लेपो करवां.

३ मुस्ताशताह्वासुरदारुकुष्ठ
वाराहिकुस्तुम्बुरुकृष्णगन्धाः ।
वातात्मके चोष्णगणाः प्रयोज्याः
सेकेषु लेपेषु तथा घृतेषु ॥
यत्पञ्चमूलं खलु कण्टकाख्य-
मल्पं महच्चाप्यथ वल्लिजं च ।
तच्चोपयोज्यं भिषजा प्रदेहे
सेके घृते चापि तथैव तैले ॥

वायुथी थएला विसर्पनी चिकित्सा.

३ वायुथी थएला विसर्प उपर सेचनोमां, लेपोमां तथा घृतोमां मोथ, शतावरी, देवदार, कठ, वाराहीकंद, कोथमरी, सरगवो अने भद्रदार्वादि वर्ग तथा पिप्पल्यादि गण आदि उष्णवर्गो एओना प्रयोगो करवा.

वैद्ये कंटकपंचमूल, लघुपंचमूल, बृहत्पंचमूल

१ निदानस्थानना ९ मा अध्यायनो २१ मो विषय वांचो.

२ आ स्थानना ९ मा अध्यायमां जे महातिक्तक अने तिक्तक घृत कहेलां छे तेओमानुं कोई अहीं संभवे ?

३ विसर्प, नाडीव्रण अने स्तनरोग के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना १० मा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

४ वायुथी थएला विसर्पनी अने पित्तथी थएला विसर्पनी जे असाध्यस्थिति कही छे ते जो द्वंद्वज विसर्पनां लक्षणरूप होय तो एकेक दोषथी थएला विसर्पने साध्यज समजवो.

अने वल्लीपंचमूल एओनो पण लेपोमां, सेचनोमां, घृतोमां तथा तैलोमां प्रयोग करवो.

४ कसेरुशृङ्गाटकपद्मगुन्द्राः
सशैवलाः सोत्पलकर्दमाश्च ।
वस्त्रान्तराः पित्तकृते विसर्पे
लेपा विधेयाः सघृताः सुशीताः ॥
ह्रीबेरलामज्जकचन्दनानि
स्रोतोजमुक्तामणिगैरिकाश्च ।
क्षीरेण पिष्टाः सघृताः सुशीता
लेपाः प्रयोज्यास्तनवः सुखाय ॥
प्रपौण्डरीकं मधुकं पयस्या
मञ्जिष्ठिका पद्मकचन्दने च ।
सुगन्धिका चेति सुखाय लेपाः
पैत्ते विसर्पे भिषजा प्रयोज्याः ॥
न्यग्रोधवर्ग्यैः परिषेचनं च
घृतं च कुर्यात्स्वरसेन तस्य ।
शीतैः पयोभिश्च मधूदकैश्च
सशर्करैरिक्षुरसैश्च सेकान् ॥
घृतस्य गौरीमधुकारविन्द-
रोध्राम्बुराजादनगैरिकेषु ।
तथर्षभे पद्मकसारिवासु-
काकोलिमेदाकुमुदोत्पलेषु ॥
सचन्दनायां मधुशर्करायां
द्राक्षास्थिरापृश्निशताह्वयासु ।
कल्कीकृतासूदकमत्र दत्वा
न्यग्रोधवर्गस्य तथा स्थिरादेः ॥
गणस्य बिल्वादिकपञ्चमूल्या-
श्चतुर्गुणं क्षीरमथापि तद्वत् ।
प्रस्थं विपक्वं परिषेचनेन
पैत्तीर्निहन्यात्तु विसर्पनाडीः ॥
विस्फोटदुष्टव्रणशीर्षरोगान्
पाकं तथास्यस्य निहन्ति पानात् ।
ग्रहार्दिते शोषिणि चापि बाले
घृतं हि गौर्यादिकमेतदिष्टम् ॥

पित्तथी थएला विसर्पनी चिकित्सा.

४ पित्तथी थएला विसर्प उपर झीणुं वस्त्र मूकीने ते वस्त्र उपर कसेरुकंद, शींगोडां, कमळो, नागरमोथ, शैवाळ, उत्पल नामनां कमळो अने कादव एओना अत्यंत थंडा अने घीवाळा लेपो करवा.

पित्तविसर्पना दरदीने सुखित करवा माटे वाळो, पीळो वाळो, सूखड, सुरमो, मोती, अने सोनागेरू एओने दूधमां वाटी घीथी संयुक्त करीने तेओना अत्यंत थंडा अने पातळा पातळा लेपो करवा.

पित्तथी थएला विसर्प उपर वैद्ये पांडेरवो, जेठीमध, खरणेर अथवा सफेद विदारीकंद, मजीठ, पद्मकाष्ठ, चंदन अने धोळी उपलसरी एओना लेपो करवा.

पित्तथी थएला विसर्प उपर न्यग्रोधादि गणना क्राथादिकथी, शीतल दूधोथी, मधथी संयुक्त करेलां जळोथी तथा साकरथी संयुक्त करेला शेलडीना रसोथी सेचनो करवां अने न्यग्रोधादि गणना स्वरसमां पकावेला घीनो पण प्रयोग करवो.

गौर्यादिघृत.

हळदर, जेठीमध, कमळ, लोदर, वाळो, राण, सोनागेरू, ऋषभक, पद्मकाष्ठ, उपलसरी, काकोली, मेदा, पोयणां, उत्पल नामनां कमळो, चंदन, उत्तम साकर, द्राक्ष, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी अने शतावरी एओनो कल्क नाखी न्यग्रोधादि गणना, विदारिगंधादि गणना तथा बृहत्पंचमूलना चोगणा क्राथमां अने गायना चोगणा दूधमां चोसठ तोलां भार घी पकाववुं. आ घी **गौर्यादिघृत** केहेवाय छे. आ घी सेचन करवाथी पित्तसंबंधी विसर्पने तथा पित्तजन्य नाडीव्रणने हणे छे अने पीवाथी विस्फोटकोने, दुष्ट व्रणोने, माथांनां दरदोने तथा मोहोडाना पाकने पण हणे छे. जे बालक बालग्रहोथी के शोषथी

पीडाएलो होय तेनुं पण आ घीना प्रयोगथी हित थाय छे.

५ अजाश्वगन्धा सरला सकाला
सैकैपिका चाप्यथवाजशृङ्गी ।
गोमूत्रपिष्टो विहितः प्रदेहो
हन्याद्विसर्पं कफजं स शीघ्रम् ॥
कालानुसार्यागुरुचोचगुञ्जा-
रास्नावचाशीतशिवेन्द्रपर्ण्यः ।
पालिन्दिमुञ्जातमहीकदम्बा
हिता विसर्पेषु कफात्मकेषु ॥

कफथी थएला विसर्पनी चिकित्सा.

५ तलवणी, आसोंद, नसोतर अने मजीठ एओने अथवा नसोतर अने मेंढाशींगी एओने गोमूत्रमां वाटी लेप करवामां आवे तो ते लेप कफथी थएला विसर्पने तुरत नष्ट करे छे.

तगर, अगरू, तज, चणोठी, रास्ना, वज, सुवा, इंद्रवारणी, कूबो, जंगली सूरण अने गोरखमुंडी अथवा अजमा एओ कफथी थएला विसर्पो उपर हितकारी छे.

६ गणस्तु योज्यो वरुणप्रवृत्तः
क्रियासु सर्वासु विचक्षणेन ।
संशोधनं शोणितमोक्षणं च
श्रेष्ठं विसर्पेषु चिकित्सितं हि ॥
सर्वांश्च पक्वान्परिशोध्य धीमान्
व्रणक्रमेणोपचरेद्यथोक्तम् ।

सघळा प्रकारना विसर्पो उपर सामान्य प्रयोग, सामान्य संशोधन अने पाक्या पछीनी चिकित्सा.

६ विचक्षण वैद्ये सघळा प्रकारना विसर्पोनी सघळी क्रियाओमां वरुणादि गणनो प्रयोग करवो. सघळा प्रकारना विसर्पो उपर जळो मूकाववाथी रुधिरनो स्राव करवारूप संशोधन श्रेष्ठ छे. सघळा प्रकारना विसर्पो पाके त्यारे तेओनुं योग्य रीते शोधन करीने पछी बुद्धिमान् वैद्ये व्रणनी चिकित्सानी रीतिप्रमाणे चिकित्सा करवी. (सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायना ३ जा विषयमां विसर्पोने भेद्य कह्या छे.)

७ नाडी त्रिदोषप्रभवा न सिध्ये-
च्छेषाश्चतस्रः प्रतियत्नसाध्याः ॥

नाडीव्रणोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

नाडीव्रणोनुं साध्यासाध्यपणुं.

७ त्रणे दोषोथी थएलो नाडीव्रण असाध्य छे अने बाकीना चार प्रकारना नाडीव्रणो कष्टसाध्य छे.

८ तत्रानिलोत्थामुपनाह्य पूर्व-
मशेषतः पूयगतिं विदार्य ।
तिलैरपामार्गफलैश्च पिष्टैः
ससैन्धवैर्बन्धनमत्र कुर्यात् ॥
प्रक्षालने चापि सदा व्रणस्य
योज्यं महद्यत्खलु पञ्चमूलम् ।
हिंस्रां हरिद्रां कटुकां बलां च
गोजिह्विकां चापि सबिल्वमूलाम् ।
संहृत्य तैलं विपचेद्व्रणस्य
संशोधनं पूरणरोपणं च ।

वायुथी थएला नाडीव्रणनी चिकित्सा.

८ जो नाडीव्रण वायुथी थएलो होय तो प्रथम वातहर द्रव्योथी तेना उपर उपनाह करी पछी परूनी गतिने शस्त्रवते संपूर्ण रीते भेदी तेना उपर तल तथा अघेडानां फळ एओनो सैंधवसहित लेप करीने पाटो बांधवो. ए व्रणने धोवामां बृहत्पंचमूलीना क्काथनी योजना करवी. जटामांसी, हलदर, कडु, बलदाणा, गळजीभी अने बीलीनां मूळ एओनो तैलना चतुर्थांश जेटलो कल्क नाखी चोगणा पाणीमां तैल पकावीने ते तैलथी व्रणनुं शोधन, पूरण तथा रोपण करवुं. (नाडीव्रणोमां परूनी गतिने शोधीने पछी भेदन करवुं उचित छे तेथी नाडीव्रणोने सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायना १ ला तथा ३ जा विषयमां एष्य अने भेद्य कह्या छे.)

९ पित्तात्मिकां प्रागुपनाह्य धीमा-
नुत्कारिकाभिः सपयोघृताभिः ॥
निपात्य शस्त्रं तिलनागदन्ती-
यष्ट्याह्वकल्कैः परिपूरयेत्ताम् ।
प्रक्षालने चापि ससोमनिम्बा
निशा प्रयोज्या कुशलेन नित्यम् ॥
श्यामात्रिभण्डीत्रिफलासु सिद्धम्
हरिद्रयो रोध्रकवृक्षयोश्च ।
घृतं सदुग्धं व्रणतर्पणेन
हन्याद्गतिं कोष्ठगतापि या स्यात् ॥

पित्तथी थएला नाडीव्रणनी चिकित्सा.

९ जो नाडीव्रण पित्तथी थएलो होय तो तेना उपर दूधथी तथा घीथी संयुक्त करेली लाफशीओनो उपनाह करी पछी परूनी गतिने शस्त्रवते भेदी तेनुं तल, नेपाळो अने जेठीमध एओना कल्कथी पूरण करवुं. (व्रणमां ए कल्क भरवो.) प्रवीण वैद्ये ए नाडीव्रणने नित्य रतांजलि अथवा वेवडी, लींबडो अने हळदर एओना क्काथथी धोवो. वरधारो, नसोतर, त्रिफळा, लोदर, इंद्रजव, दारूहलदर अने हळदर एओथी पकावेला घीथी अने दूधथी व्रणनुं तर्पण करवामां आवे तो ते तर्पण कोठामां रहेली परूनी गतिने पण नष्ट करे छे.

१० नाडीं कफोत्थामुपनाह्य सम्य-
कुलत्थसिद्धार्थकसक्तुकिण्वैः ।
मृदूकृतामेष्य गतिं विदित्वा
निपातयेच्छस्त्रमशेषकारी ॥
दद्याद्व्रणे निम्बतिलान्सुपिष्टान्
सुराष्ट्रजासैन्धवसम्प्रयुक्तान् ।
प्रक्षालने चापि करञ्जनिम्ब-
जात्यक्षपीलुस्वरसाः प्रयोज्याः ॥
सुवर्चिकासैन्धवचित्रकेषु
निकुम्भतालीतलरूपिकासु ।
फलेष्वपामार्गभवेषु चैव
कुर्यात्समूत्रेषु हिताय तैलम् ॥

कफथी थएला नाडीव्रणनी चिकित्सा.

१० जो नाडीव्रण कफथी थएलो होय तो तेना उपर कळथी, सर्षप, जवनो साथवो अने सुराबीज (जेथी संधान करीने सुरा बनाववामां आवे छे ते.) एओनो सारी पेठे उपनाह करी ते उपनाहथी व्रणने कोमळ करी, शलाकावते परूनी गतिनुं एषण करी, जाणी लईने शस्त्रवते ते गतिने संपूर्ण रीते भेदी नाखवी. पछी फडकडी तथा सैंधव एओनी साथे लींबडो तथा तल एओने सारी पेठे वाटी तेथी व्रणने पूरवो. ए व्रणने धोवामां करंज, लींबडो, जाई, बेहेडो अने पीलु एओना स्वरसनी योजना करवी. साजीखार, सैंधव, चित्रक, नेपाळो, भोंआमळीनां मूळ, आकडो, अघेडानां फळ अने गोमूत्र एओथी पकावेलुं तेल ए व्रण उपर हितकारी थाय छे.

११ नाडीं तु शल्यप्रभवां विदार्य
निर्हृत्य शल्यं प्रविशोध्य मार्गम् ।
संशोधयेत्क्षौद्रघृतप्रगाढै-
स्तिलैस्ततो रोपणमस्य कुर्यात् ॥
कुम्भीकखर्जूरकपित्थबिल्व-
वनस्पतीनां च शलाटुवर्गे ।
कृत्वा कषायं विपचेत्तु तैल-
मावाप्य मुस्तासरलाप्रियङ्गूः ॥
सुगन्धिकामोचरसाहिपुष्पं
रोध्रं विदध्यादपि धातकीं च ।
एतेन शल्यप्रभवा च नाडी
रोहेद्व्रणो वा सुखमाशु चैव ॥

शल्यथी थएला नाडीव्रणनी चिकित्सा.

११ जो नाडीव्रण शल्यथी थयो होय तो तेने शस्त्रवते भेदी, शल्यने काहाडी लई, रस्ताने साफ करीने घी तथा मध एओथी सारी पेठे संयुक्त करेला तिलोथी ते व्रणनुं शोधन करवुं. पछी पुंनाग, खजूर, कोठ, बीली अने वड वगेरे

१ उडीसामां पुन्नागनां मोटां वृक्षो थाय छे. एओनां सुकावेलां पुष्पो नागकेसर केहेवाय छे. पुन्नागनां फळो रतनजोतना डोडवा जेवां थाय छे.

क्षीरिवृक्षो एओनां काचां फळोनो क्काथ करी तेमां मोथ, नसोतर, घउलां, सफेद उपलसरी, मोचरस, नागकेसर, लोदर अने धावणी एओनो कल्क नाखी तेल पकाववुं. शल्यथी थएलो नाडीव्रण अने बीजो व्रण पण आ तैलथी रूझाय छे अने व्रणनी पीडा तुरत शांत थाय छे.

१२ कृशदुर्बलभीरूणां नाडी मर्माश्रिता च या।
क्षारसूत्रेण तां छिन्द्यान्न तु शस्त्रेण बुद्धिमान्॥
एषण्या गतिमन्विष्य क्षारसूत्रानुसारिणीम्।
सूचीं निदध्याद्गत्यन्ते तयोन्नम्याशु निर्हरेत्॥
सूत्रस्यान्तं समानीय गाढं बन्धं समाचरेत्।
ततः क्षारबलं वीक्ष्य सूत्रमन्यत्प्रवेशयेत्॥
क्षाराक्तं मतिमान्वैद्यो यावन्न छिद्यते गतिः।
भगन्दरेऽप्येष विधिः कार्यो वैद्येन जानता॥
अर्बुदादिषु चोत्क्षिप्य मूले सूत्रं निधापयेत्।
सूचीभिर्यववक्त्राभिराचितं वा समन्ततः।
मूले सूत्रेण बध्नीयाच्छिन्ने चोपचरेद्व्रणम्॥

कृश वगेरेना तथा मर्मना नाडीव्रणने क्षारथी खरडेला दोरावते कापवो अने ते प्रकारनो अतिदेश.

१२ कृश, दुर्बल अने बीकण एओना नाडीव्रणने तथा मर्ममां रहेला नाडीव्रणने बुद्धिमान् वैद्ये शस्त्रवते नहीं भेदतां क्षारथी खरडेला दोरावते कापवो. एषणी नामनी शलाकाथी परूनी गतिने शोधी काहाडी, क्षारवाळा दोराथी परोवेली सोई ते गतिना अंतप्रदेशमां नाखवी अने सोईथी ते प्रदेशने वींधी ऊंचो करीने तुरत तेमांथी सोई काहाडी लेवी. पछी दोराना छेडाने भेळा करीने ते गतिने मजबूत रीते बांधी लेवी. क्षारनुं बळ ओछुं जणाय तो एक दोराने काहाडी लईने बीजो क्षारथी खरडेलो दोरो नाखवो. ज्यांसूधी गतिनुं छेदन न थाय त्यांसूधी बुद्धिमान् वैद्ये एप्रमाणे वारंवार दोरो नाख्या करवो. प्रवीण वैद्ये भगंदरमां पण ए प्रकार करवो. अर्बुद वगेरे रोगोमां पण एज रीते सोईवते उचकावीने मूळमां दोरो नाखी देवो. जो अर्बुद वगेरे रोगो स्थूलमूळवाळा होय तो जवना जेवां मोहोडांवाळी अनेक सोईओथी चोमेर वेधो करी दोरो नाखीने मूळने ते दोराथी बांधी लेवुं. दोराथी गतिनुं छेदन थई जाय त्यार पछी व्रणनी चिकित्सा करवी.

१३ या द्विव्रणीयेऽभिहितास्तु वर्त्य-
स्ताः सर्वनाडीषु भिषग्विदध्यात्।
घोण्टाफलत्वग्लवणानि लाक्षा
पूगीफलं चालवणं च पत्रम्॥
स्नुह्यर्कदुग्धेन तु कल्क एष
वर्त्तीकृतो हन्त्यचिरेण नाडीः।
बिभीतकाम्रास्थिवटप्रवालं
हरेणुकाशङ्खिनिबीजमिश्रम्॥
वाराहिकन्दश्च तथा प्रदेयो
नाडीषु तैलेन च मिश्रयित्वा।
धत्तूरजं मदनकोद्रवजं च बीजम्
कोशातकी शुकनसा मृगभोजनी च।
अङ्कोटबीजसहितं गतिषु प्रयोज्यम्
लाक्षोदकाह्वतमलासु विकृत्य चूर्णम्॥
चूर्णीकृतैरथ विमिश्रितमेभिरेव
तैलं प्रयुक्तमचिरेण गतिं निहन्ति।
एष्वेव मूत्रसहितेषु विधाय तैलम्
तत्साधितं गतिमपोहति सप्तरात्रात्।
पिण्डीतकस्य तु वराहविभावितस्य
मूलेषु कन्दशकलेषु च सौवहेषु॥
तैलं कृतं गतिमपोहति शीघ्रमेतत्
कन्देषु चामरवरायुधसाह्वयेषु।
भल्लातकार्कमरिचैर्लवणोत्तमेन
सिद्धं विडङ्गरजनीद्वयचित्रकैश्च।
स्यान्मार्कवस्य च रसेन निहन्ति तैलम्
नाडीं कफानिलकृतामपचीं व्रणांश्च॥

सघळा प्रकारना नाडीव्रणोमां सामान्य विधि.

१३ सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा

अध्यायना ६ ठा विषयमां कहेली वाटो के जेओ आ स्थानना द्विव्रणीय नामना पेहेला अध्यायना ९१ मा विषयमां सूचवेली छे ते वाटो वैद्ये सघळा नाडीव्रणोमां नाखवी.

बोर, तज, सैंधवादिक लवणो, लाख, सोपारी अने मालकांकणीनां पानडां एओनो थोरना तथा आकडाना छीरमां कल्क करी तेनी वाट नाखवामां आवे तो ते वाट तुरत नाडीव्रणोने नष्ट करे छे.

बेहेडाना ठळीआ, आंबानी गोटली, वडनां कुंपळीआं, हरेणुका नामनुं सुगंधि द्रव्य, आंख-फूटामणीनां बीज अने वाराहीकंद एओने बारीक वाटी तैलथी मिश्रित करीने नाडीव्रण उपर योजवां.

धत्तूरानां बीज, मींढोलनां बीज, कोद्राना दाणा, कुकडवेलनां बीज, चमारदूधेलीनां बीज, इंद्रवारणीनां बीज अने अंकोलनां बीज एओनुं चूर्ण बनावी, नाडीव्रणोनी गतिओने लाखना पाणीवते धोवाथी तथा भेदनादिकथी शुद्ध करी ते गतिओपर योजवामां आवे तो तेथी नाडीव्रणोनी गतिओ नष्ट थई जाय छे.

उपर कहेलां धत्तूरानां बीज वगेरेनुं चूर्ण करी तेने तैलमां कालवीने नाडीव्रणनी गति उपर योजवामां आवे तो ते चूर्ण तुरतज गतिने नष्ट करी नाखे छे.

उपर कहेला धत्तूरानां बीज वगेरेनो कल्क नाखी गोमूत्रमां पकावेलुं तैल नाडीव्रणनी गति-पर योजवामां आवे तो ते तैल सात दिवसनी अंदर गतिने नष्ट करी नाखे छे.

काला फूलवाळा मीढोळनां मूळीयांओथी, नो-रवेलना कंदना टुकडाओथी अने जंगली सूरणना कंदना टुकडाओथी (एओना कल्कथी) चोगणा पाणीमां पकावेलुं तैल नाडीव्रणोनी गतिओने तुरत नष्ट करी नाखे छे.

भीलामुं, आकडो, मरी, सैंधव, वावडींग, हळदर, दारूहळदर अने चित्रक एओनो कल्क नाखी भांगराना रसमां पकावेलुं तैल कफे तथा पित्ते करेला नाडीव्रणने, अपचीने अने बीजा व्रणोने पण नष्ट करे छे.

१४ स्तन्ये गते विकृतिमाशु भिषक्तु धात्रीं
पीतां घृतं परिणतेऽहनि वामयेत्तु ।
निम्बोदकेन मधुमागधिकायुतेन
वान्ता गतेऽहनि च मुद्गरसाशना स्यात् ॥
एवं त्र्यहं चतुरहं षडहं वमेद्वा
सर्पिः पिबेत्त्रिफलया सह संयुतं वा ।
भार्गीं वचामतिविषां सुरदारु पाठाम्
मुस्तादिकं मधुरसां कटुरोहिणीं च ॥
धात्रीं पिबेत्तु पयसः परिशोधनार्थ-
मारग्वधादिषु वरं मधुना कषायम् ।
सामान्यमेतदुपदिष्ट मतोविशेषात्

स्तनरोगनी चिकित्सानुं प्रकरण. धावणने शुद्धकरवामाटे सामान्य प्रयोग.

१४ धावण विकृति पाम्युं होय तो वैद्ये धव-रावनारीने तुरत घी पाई सायंकाले मधथी तथा पीपळथी संयुक्त करेला लींबडाना क्वाथथी वमन करावबुं अने वमन करावी सूर्यास्त थया पछी मगनो यूष पावो. आ प्रमाणे त्रण, चार के छ दिवससूधी वमन कराववुं अथवा त्रिफळाथी संयुक्त करेलुं घी पावुं अथवा भारंगी, वज, अतवस, देवदार, कालीपाड, मुस्तादिगण, शीव्रण के वरीयाळी अने कडु एओनो कल्क पावो अथवा आरग्वधादि गणनो उत्तम क्वाथ करी ते क्वाथ मधनी साथे पावो. धावणनी शुद्धिने माटे आ सामान्य चिकित्सा केहेवामां आवी. हवे विशिष्ट चिकित्सा कहीए छीए.

१५ दोषांन्पयोनिपतिताञ्छमयेद्यथास्वम् ॥

धावणने शुद्ध करवा माटे विशेष चिकित्सा.

१५ धावणमां जे दोष प्राप्त थएलो जोवामां

आवे ते दोषने तेनां प्रतिद्वंद्वी औषधोथी शांत करवो.

१६ रोगं स्तनोत्थितमवेक्ष्य भिषग्विदध्या-
द्यद्विद्रधावभिहितं बहुशो विधानम् ।
सम्पच्यमानमपि तं तु विनोपनाहैः
सम्भोजनेन खलु पाचयितुं यतेत ॥
शीघ्रं स्तनो हि मृदुमांसतयोपनद्धः
सर्वः प्रकोथमुपयात्यवदीर्यते च ।
पक्के च दुग्धहरिणीः परिहृत्य नाडीः
कृष्णं च चूचुकयुगं निदधीत शस्त्रम् ॥
आमे विदाहिनि तथैव गते च पाकम्
धात्र्याः स्तनौ सततमेव च निर्दुहीत ॥

स्तनमां उठेला विद्रधि जेवा रोगनी चिकित्सा.

१६ स्तनमां रोग उठेलो जोवामां आवे तो वैद्ये योग्य निर्णय करी, विद्रधिना विषयमां (गया अध्यायमां) जे घणां घणां विधानो केहेवामां आव्यां छे ते विधानो करवां. स्तननो रोग पाकवा लागेलो होय तो पण तेना उपर उपनाह (स्वेदन) नहीं करतां औषधो खवराववा वगेरेथीज तेने पकाववानो यत्न करवो. केमके स्तनउपर उपनाह करवामां आवे तो ते स्तन कोमळ मांसवाळो होवाने लीधे तुरत सडी जाय छे अने चीराई जाय छे. स्तननो रोग पाके त्यारे वैद्ये धावणनुं वहन करनारी नाडीओने तथा बे काळी डीटडीओने छोडी दईने ते रोग उपर भेदनरूप शस्त्रक्रिया करवी. स्तननो रोग काचो होय, थोडो पाक्यो होय के बराबर पाक्यो होय त्यारे पण धवरावनारीना स्तनोने वारंवार दोह्या करवां एटले तेओमांथी धावण काहाड्या करवुं.

अध्याय १८ मो.

१ अथातो ग्रन्थ्यपच्यर्बुदगलगण्डचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'ग्रंथ्यपच्यर्बुदगलगंडचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ ग्रन्थिष्वथामेषु भिषग्विदध्या-
च्छोफक्रियायां विहितं विधिज्ञः ।
रक्षेद्बलं चापि नरस्य नित्यम्
तद्रक्षितं व्याधिबलं निहन्ति ॥
तैलं पिबेत्सर्पिरथो द्वयं वा
दत्त्वा वसां वा त्रिवृतं विदध्यात् ।
आमे विदध्याद्दशमूलसिद्धम्
वैद्यश्चतुःस्नेहमथो द्वयं वा ॥

ग्रंथिनी चिकित्सानुं प्रकरण.

काचा ग्रंथिओनी सामान्य चिकित्सा अने तेओ उपर शोधनादिकना अंगरूप स्नेहो.

२ अपतर्पणथी मांडीने विरेचनसूधीनी जे बार क्रियाओ आ स्थानना पेहेला अध्यायमां सोजा उपर करवानी कही छे तेज क्रियाओ विधिने जाणनारा वैद्ये काचा ग्रंथिओ उपर करवी पण ते क्रियाओ करतां रोगीना बळनो बचाव थाय एवी हमेश तजवीज राखवी. केम के रोगीमां बळ बच्युं होय तो ते बळ व्याधिना बळने हणे छे.

वैद्ये ग्रंथिना दरदीने तैल पावुं अथवा घी पावुं अथवा ए बन्ने मिश्रित करीने पावां अथवा घी, तैल, अने चरबी ए त्रण मिश्रित करीने पावां.

अथवा एवी कल्पना करवी के जो ग्रंथि वायुथी थएलो होय तो दशमूळीना क्राथादिकथी पकावेला घी, तैल, चरबी तथा मज्जा ए चारे

१ ग्रंथि, अपची, अर्बुद तथा गलगंड के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना ११ मा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

स्नेहो के एओमांना बे बे स्नेहो पावा. (ग्रंथि जो पित्तथी थएलो होय तो पित्तहर द्रव्योना काथादिकथी पकावेलुं घी पावुं अने ग्रंथि जो कफथी थएल होय तो कफहर द्रव्योना काथादिकथी पकावेलुं तैल पावुं. बीजा ग्रंथिओ उपर पण आ प्रमाणेज योग्य कल्पना करी लेवी.)

३ हिंस्राथ रोहिण्यमृताथ भार्गी
श्योनाकबिल्वागुरुकृष्णगन्धाः ।
गोजी च पिष्टा सह तालपत्र्या
ग्रन्थौ विधेयोऽनिलजे प्रलेपः ॥
स्वेदोपनाहान्विविधांश्च कुर्या-
त्तथा प्रसिद्धानपरांश्च लेपान् ।
विदार्य वा पक्कमपोह्य पूयम्
प्रक्षाल्य बिल्वार्कनरेन्द्रतोयैः ॥
तिलैः स पञ्चाङ्गुलपत्रमिश्रैः
संशोधयेत्सैन्धवसम्प्रयुक्तैः ।
शुद्धं व्रणं चाप्युपरोपयेत्तु-
तैलेन रास्नासरलान्वितेन ॥
विडङ्गयष्टीमधुकामृताभिः
सिद्धेन वा क्षीरसमन्वितेन ।

वायुथी थएला ग्रंथिनी विशिष्ट चिकित्सा.

३ ग्रंथि जो वायुथी थएलो होय तो जटामांसी, कडु, गळो, भारंगी, अरडूसो, बीली, अगरु, सरगवो, गळजीभी (भोंपाथरी) अने मुसली एओने वाटीने तेनो प्रलेप करवो. ए उपरांत अनेक प्रकारना प्रसिद्ध स्वेदो तथा उपनाहो पण करवा अने बीजा प्रसिद्ध प्रलेपो पण करवा.

ए ग्रंथि पाके तो तेने शस्त्रवते भेदी, परूने स्रवावी नाखी, व्रणने बीली, आकडो अने गरमाळो एओना काथथी धोवो. धोया पछी एरडानां पानडांथी तथा सैंधवथी मिश्रित करेला तिलोना लेपथी तेनुं शोधन करवुं अने शुद्ध थया पछी रास्ना तथा नसोतर एओना चूर्णथी संयुक्त करेला तैलवते अथवा वावडींग, जेठीमध अने गळो एओनो कल्क नाखी दूधमां पकावेला तैलवते रोपण करवुं.

४ जलौकसः पित्तकृते हितास्तु
क्षीरोदकाभ्यां परिषेचनं च ॥
काकोलिवर्गस्य च शीतलानि
पिबेत्कषायाणि सशर्कराणि ।
द्राक्षारसेनेक्षुरसेन वापि
चूर्णं पिबेच्चापि हरीतकीनाम् ॥
मधूकजम्ब्वर्जुनवेतसानां
त्वग्भिः प्रदेहानवचारयेत ।
सशर्करैर्वा तृणशून्यकन्दै-
र्दिह्यादभीक्ष्णं मुचुकुन्दजैर्वा ॥
विदार्य वा पक्कमपोह्य पूयम्
धावेत्कषायेण वनस्पतीनाम् ।
तिलैः सयष्टीमधुकैर्विशोध्य
सर्पिः प्रयोज्यं मधुरैर्विपक्वम् ॥

पित्तथी थएला ग्रंथिनी विशिष्ट चिकित्सा.

४ ग्रंथि जो पित्तथी थएलो होय तो जळो मूकावीने लोहीनुं स्रावण करवुं, दूध तथा जळ एओने मिश्रित करीने तेओथी परिषेचन करवुं अने काकोल्यादि गणना शीतल स्वरसादिक कषायो साकरथी संयुक्त करीने पावा अथवा द्राक्षना के शेलडीना रसनी साथे हरडेनुं चूर्ण पावुं. महुडो, जांबू, कडायो अने नेतर एओनी छालोना अथवा साकरथी संयुक्त करेला मोगरानां मूलोना अथवा साकरथी संयुक्त करेला मुचुकुंदनां मूलोना वारंवार लेपो करवा.

ए ग्रंथि पाके तो तेने शस्त्रवते भेदी, परूने स्रवावी नाखी व्रणने वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना काथथी धोवो, धोईने जेठीमधथी संयुक्त करेला तिलोना लेपथी शुद्ध करवो अने शुद्ध करीने मधुरगणथी पकावेला तैलना प्रयोगथी तेनुं रोपण करवुं.

५ निर्हृत्य दोषं च यथानुपूर्व्या
ग्रन्थौ भिषक्श्लेष्मसमुत्थिते तु ।
स्विन्नस्य विम्लापनमेव कुर्या-
दङ्गुष्ठलोहोपलवेणुदण्डैः ॥
विकङ्कतारग्वधकाकनन्ती-
काकादनीतापसवृक्षमूलैः ।
आलेपयेत्पिण्डफलार्कभार्गी-
करञ्जकालामदनैश्च विद्वान् ॥
अमर्मजातं शममप्रयान्त-
मपक्वमेवापहरेद्विदार्य ।
दहेत्स्थिते वासृजि सिद्धकर्मा
सद्यःक्षतोक्तं च विधिं विदध्यात् ॥
या मांसकन्द्यः कठिना बृहत्य-
स्तास्वेव योज्यश्च विधिर्विधिज्ञैः ।
शस्त्रेण वापाट्य सुपक्वमाशु
प्रक्षालयेत्पथ्यतमैः कषायैः ॥
संशोधनैस्तं च विशोधयेत
क्षारोत्तरैः क्षौद्रघृतप्रगाढैः ।
शुद्धे च तैलं त्ववचारणीयम्
विडङ्गपाठारजनीविपक्वम् ॥

कफथी थएला ग्रंथिनी विशिष्ट चिकित्सा.

५ जो ग्रंथि कफथी थएलो होय तो स्नेहन स्वेदनादिकना तथा वमनादिकना अनुक्रमथी दोषनुं निर्हरण करवुं. ग्रंथिने स्वेदन संस्कार आपी अंगूठाथी, लोढाथी, पथराथी के वांसना दंडथी वारंवार मर्दन करीने तेनुं विम्लापन करवुं (ग्रंथिने करमाववो.) अने पछी कडवी तूंबडी, आकडो, भारंगी, करंज, गळी अथवा मजीठ, वीकळानां मूळ, गरमाळानां मूळ, चणोठीनां मूळ, मालकांकणीनां मूळ अने इंगोळीयानां मूळ एओना कल्कनो लेप करवो.

ए कफसंबंधी ग्रंथि कोई मर्ममां न थयो होय अने उपर कहेला उपायोथी शांत न थतो होय तो विद्वान् वैद्ये तेने शस्त्रवते काचोज छेदी नाखीने दूर करवो. छेद्या पछी लोही रह्युं होय तो अग्निथी डांभवो अने आ स्थानना बीजा अध्यायमां सद्योव्रणने माटे जे चिकित्सा कही छे ते करवी. मांसना जे कठण अने मोटा प्ररोहो जोवामां आवे तेओ उपर पण प्रवीण वैद्योए ए विधिनी योजना करवी.

कफसंबंधी ग्रंथि सारी पेठे पाक्यो होय तो तेने तुरतज शस्त्रवते भेदीने कफनुं हरण करनारा अतिपथ्य कार्योथी व्रणने धोवो अने झाझा क्षारवाळां तथा मधथी अने घीथी मिश्रित करेलां संशोधनोथी शुद्ध करवो. (सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायना छठ्ठा विषयमां जुवो.) शुद्ध थया पछी वावडींग, काळीपाड तथा हळदर एओना काथथी तथा कल्कथी पकावेला तेलना प्रयोगवते तेनुं रोपण करवुं.

६ मेदःसमुत्थे तिलकल्कदिग्धं
दत्वोपरिष्टाद्द्विगुणं पटान्तम् ।
हुताशतप्तेन मुहुः प्रमृज्या-
ल्लोहेन धीमान्दहनं हिताय ॥
प्रलिप्य दार्वीमथ लाक्षया वा
प्रतप्तया स्वेदनमस्य कार्यम् ।
निपात्य वा शस्त्रमपोह्य मेदो
दहेत्सुपक्वं त्वथ वा विदार्यम् ॥
प्रक्षाल्य मूत्रेण तिलैः सुपिष्टैः
सुवर्चिकाढ्यैर्हरितालमिश्रैः ।
ससैन्धवैः क्षौद्रघृतप्रगाढैः
क्षारोत्तरैरेनमभिप्रशोध्य ॥
तैलं विदध्याद्धिकरञ्जगुञ्जा-
वंशावलेखेङ्गुदमूत्रसिद्धम् ।

मेदथी थएला ग्रंथिनी विशिष्ट चिकित्सा.

६ ग्रंथि जो मेदथी थएलो होय तो तेनी उपर तिलना कल्कथी खरडेलुं बेवडुं लुगडुं मूकी ते लुगडा उपर, अग्निथी तपावेलुं लोढुं वारंवार फेरव्या करवुं. केमके ए ग्रंथिनुं दहन करवुं ए हितकारी छे. अथवा लाकडाना हाथलाने (चा-

टवाने) तपावेली लाखथी खरडीने तेथी ए ग्रंथिनुं स्वेदन करवुं. अथवा ए काचा ग्रंथिनेज शस्त्रवते उखेडी मेदने काहाडी नाखीने ते ग्रंथिने अग्निथी डांभवो.

ए ग्रंथि पाक्यो होय तो तेने शस्त्रवते भेदी गोमूत्रवते धोवो अने साजीखार, हरताल, सैंधव, मध तथा घी एओना कल्कथी मिश्रित करेला तिलोना कल्कमां झाझो जवखार नाखीने ते कल्कथी शुद्ध करवो. पछी करंज, चरेलकरंज, चणोठी, वांसनी छोल तथा इंगोळीओ एओनो कल्क नाखी गोमूत्रमां पकावेला तैलथी ते व्रणनुं रोपण करवुं.

७ जीमूतकैः कोशवतीफलैश्च
दन्तीद्रवन्तीत्रिवृतासु चैव ॥
सर्पिः कृतं हन्त्यपचीं प्रवृद्धाम्
द्विधा प्रवृत्तं तदुदारवीर्यम् ।
निर्गुण्डिजातीवरहिष्ठयुक्तम्
जीमूतकं माक्षिकसैन्धवाढ्यम् ॥
अभिप्रतप्तं वमनं प्रगाढं
दुष्टापचीषूत्तममादिशन्ति ।
कैडर्यबिम्बीकरवीरसिद्धम्
तैलं हितं मूर्धविरेचनं च ॥
शाखोटकस्य स्वरसेन सिद्धं
तैलं हितं नस्यविरेचनेषु ।
मधूकसारश्च हितोऽवपीडे
फलानि शिग्रोः खरमञ्जरेर्वा ॥

अपचीनी चिकित्सानुं प्रकरण.

अपचीनी शोधनरूप चिकित्सा.

७ कुकडवेल, कडवी घीसोडीनां फळो, नेपाळो, नाहानो नेपाळो अने नसोतर एओना काथादिकथी बनावेलुं घी प्रबल शक्तिवाळुं होवाने लीधे वमन तथा विरेचन ए बन्ने करावीने, वृद्धि पामेली अपचीने पण हणी नाखे छे.

नगड, जाई अने वाळो, एओना काथथी, मधथी तथा सैंधवथी युक्त करेलो कुकडवेलनो कल्क अग्निथी गरम करीने पावो के जेथी अत्यंत वमन थाय. आ प्रमाणे अत्यंत वमन कराववुं ए दुष्ट अपचीओनी उपर उत्तम चिकित्सा केहेवाय छे.

अपचीवाळा दरदीने करंज, कडवी घोली अने कणेर एओना काथादिकथी पकावेलुं तैलरूप नस्य शिरोविरेचनने माटे देवुं ए पण हितकारी छे.

हलका सागना स्वरसमां तेनाज कल्कथी पकावेलुं तैल अपचीना दरदीने नस्यथी अने विरेचनथी हितकारी थाय छे.

महुडानो सार सरगवानां फळो के अघेडानां फळो एओथी अपचीना रोगीने अवपीड नस्य देवुं ए पण हितकारी छे. (जेनी साथे तीक्ष्ण पदार्थो मेळव्या होय एवा औषधनो कल्क करी, तेने नीचोवी रस काहाडी ते रसनां टीपां नाकमां नाखवामां आवे ए अवपीड नस्य केहेवाय छे.)

८ ग्रन्थीनमर्मप्रभवानपक्वा-
नुद्धृत्य चाग्निं विदधीत पश्चात् ।
क्षारेण वापि प्रतिसारयेत्तु-
संलिख्य शस्त्रेण यथोपदेशम् ॥
पार्ष्णि प्रति द्वादश चाङ्गुलानि
मुक्त्वेन्द्रबस्तिं च गदान्यपार्श्वे ।
विदार्य मत्स्याण्डनिभानि वैद्यो
निष्कृष्य जालान्यनलं विदध्यात् ॥
आगुल्फकर्णात्सुमितस्य जन्तो-
स्तस्याष्टभागं खुलकाद्विभज्य ।
घोणार्जवेऽधः सुरराजवस्ते-
र्भित्वाक्षमात्रं त्वपरे वदन्ति ॥

१ निदानस्थानमां पांचमो शिराग्रंथि पण कह्यो छे परंतु तेनी चिकित्सा आ प्रकरणमां कहेली नथी. वाग्भटे तो **शिराग्रंथौ नवे पेयं तैलं साहचरं तथा । उपनाहोनिलहरैर्बस्तिकर्म शिराव्यधः** ए श्लोकथी चिकित्सा लखी छे के शिराग्रंथि नवो होय तो कांटाअशेरीयानुं तैल पावुं, वायुने हरनारां द्रव्योनो उपनाह करवो, बस्तिक्रिया करवी अने शिरावेध करवो.

मणिबन्धोपरिष्टाद्वा कुर्याद्रेखात्रयं भिषक् ।
अङ्गुल्यन्तरितं सम्यगपचीनां निवृत्तये ॥

अपचीनी शस्त्रक्रियादिकरूप चिकित्सा.

८ मर्मोमां नहीं उत्पन्न थएला पण बीजां स्थलोमां उत्पन्न थएला अपचीना काचा ग्रंथिओ जो औषधोथी साध्य न थाय तो तेओने शस्त्रवते भेदी काहाडीने ते प्रदेश उपर अग्निक्रिया करवी अथवा अपचीना तेवा ग्रंथिओने विधिप्रमाणे शस्त्रवते खोतरीने तेओनी उपर प्रतिमारणीय क्षार मूकी देवो.

अपची जो पगनी पींडीना प्रदेशमां थएल होय तो पेनीने लगती लीटीमां पेनीथी बार आंगळ दूर जे इंद्रबस्ति नामनुं मर्म छे तेने छोडी दई, जे बाजूमां अपची थएल होय तेथी बीजी बाजूमां वैद्ये शस्त्रवते विदारण करी, माछलानां इंडाओ जेवां जाळांओने खेंची काहाडीने ते प्रदेश उपर अग्निक्रिया करवी. आ विषयमां बीजा आचार्यो केहेछे के "रोगीने ऊभो राखी नाकना अग्रथी सीधी लीधेली आडी लीटीमां काननो जे भाग आवे ते भागथी पगनी घूंटी सूधीमां ते रोगीने मापतां जेटलां आंगळो थाय तेटलां आंगळोना आठ भागोने मूकी दई पेनीथी उपरना नवमा भागमां पींडीना इंद्रबस्ति नामना मर्मनी नीचे रोगनी बीजी बाजूपर शस्त्रथी भेदन करीने तेमांथी एक तोला भार जाळां काहाडी लईने ते प्रदेश उपर अग्निक्रिया करवी."

अपची जो हाथनी कराईमां थएल होय तो तेनी निवृत्तिने माटे वैद्ये कांडामां जे मणिबंध नामनुं मर्म छे तेथी उपरना प्रदेशमां एक आंगळनुं अंतर राखी शस्त्रवते त्रण रेखाओ करी, माछलानां इंडां जेवां जाळांओ काहाडीने ते प्रदेश उपर अग्निक्रिया करवी. (आ क्रिया पण रोगनी बीजी बाजूमां करवी एम उपरना संबंधथी जणाय छे.)

९ मसीं गवादेः खुरजां च काक-
गोधाहिकूर्मप्रभवां मसीं वा ।
दद्याच्च तैलेन सहेङ्गुदीनां
यद्वक्ष्यते श्लीपदिनां च तैलम् ॥
विरेचनं धूममुपाददीत
भवेच्च नित्यं यवमुद्गभोजी ।

अपची उपर लेपन अने धूमपानादिकरूप चिकित्सा.

९ गाय, गाडर, बकरां तथा घोडा एओनी खरीओनी मसी करी इंगोळीयाना तैलमां कालवीने लगाववामां आवे, अथवा कागडो, घो, सर्प अने काचबो एओनी मसी करी इंगोळीयाना तैलमां कालवीने लगाववामां आवे अथवा आ पछीना अध्यायमां श्लीपद उपर जे तैल केहेवामां आवशे तेमां कालवीने ए मसीओ लगाववामां आवे अने आ स्थानना ४० मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे विरेचन धूम पावामां आवे तथा जवनुं अने मगनुं भोजन कराववामां आवे तो अपची मटी जाय छे.

१० कर्कारुकैर्वारुकनारिकेर-
पियालपञ्चाङ्गुलबीजचूर्णैः ।
वातार्बुदं क्षीरघृताम्बुसिद्धै-
रुष्णैः सतैलैरुपनाहयेत्तु ।
कुर्याच्च मुख्यान्युपनाहनानि
सिद्धैश्च मांसैरथ वेसवारैः ॥
स्वेदं विदध्यात्कुशलस्तु नाड्या
शृङ्गेन रक्तं बहुशो हरेच्च ।
वातघ्ननिर्यूहपयोऽम्लभागैः
सिद्धं शताख्यं त्रिवृतं पिबेद्वा ॥

अर्बुदनी चिकित्सानुं प्रकरण.

वायुथी थएला अर्बुदनी चिकित्सा.

१० जो अर्बुद वायुथी थएलुं होय तो कोळुं, कोठींबुं, नाळीएर, राण अने एरडो एओनां बीजोनुं चूर्ण करी तेने दूध, घी तथा पाणी एओमां पकावी तेलथी मिश्रित करी गरम करीने तेनो अर्बुद

उपर उपनाह करवो. पकावेलां मांसोथी अने वेसवारोथी पण उत्तम उत्तम उपनाहो करवा. प्रवीण वैद्ये अर्बुद उपर आ स्थानना ३२ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे नाडीस्वेद देवो अने शींगडुं मूकीने तेवते वारंवार लोहीनुं स्रावण पण करवुं. वायुने हरनारा काथोथी, दूधोथी अने खाटा रसोथी पकावेलुं शतपाक तैल अथवा त्रैवृत घी पावुं. (आ स्थानना चोथा अध्यायना २३ मा विषयमां अने पांचमा अध्यायना १९ मा विषयमां जुवो.)

११ स्वेदोपनाहा मृदवस्तु पथ्याः
पित्तार्बुदे कायविरेचनं च ।
विघृष्य चोदुम्बरशाकगोजी-
पत्रैर्भृशं क्षौद्रयुतैः प्रलिम्पेत् ॥
श्लक्ष्णीकृतैः सर्जरसप्रियङ्गु-
पतङ्गरोध्राञ्जनयष्टिकाह्वैः ।
विस्राव्य चारग्वधगोजिसोमाः
श्यामा च योज्याः कुशलेन लेपे ।
श्यामागिरिह्वाञ्जनकीरसेषु
द्राक्षारसे सप्तलिकारसे च ।
घृतं पिबेत्क्षीतकसंप्रसिद्धम्
पित्तार्बुदी तज्जठरी च जन्तुः ॥

पित्तथी थएला अर्बुदनी चिकित्सा.

११ जो अर्बुद पित्तथी थएलुं होय तो ते उपर कोमळ स्वेदनो, कोमळ उपनाहो अने कोमळ विरेचन पथ्य छे. ऊंबरानां, सागनां के गळजीभीनां पानडांओथी अर्बुदने अत्यंत घसीने ते उपर राळ, घउलां, पतंग, लोदर, सुरमो तथा जेठीमध एओना बारीक चूर्णने मधमां कालवी तेनो लेप करवो. प्रवीण वैद्ये लोहीनुं स्रावण करीने ते अर्बुद उपर गरमाळो, गळजीभी, बावची अथवा वेवडी अने नसोतर एओना लेपनी योजना पण करवी. पित्तना अर्बुदवाळा रोगीने अने पित्तसंबंधी उदररोगवाळा रोगीने नसोतर, गरणी, काळी हीरवणी, द्राक्ष अने नेवरी एओना रसमां, पाणीमां थता जेठीमधनो कल्क नाखीने पकावेलुं घी पावुं.

१२ शुद्धस्य जन्तोः कफजेऽर्बुदे तु
रक्तेऽवसिक्ते तु ततोऽर्बुदं तत् ।
द्रव्याणि यान्यूर्द्ध्वमधश्च दोषान्
वहन्ति तैः कल्ककृतैः प्रदिह्यात् ॥
कपोतपारावतविड्विमिश्रैः
सकांस्यनीलैः शुकलाङ्गलाख्यैः ।
मूत्रैस्तु काकादनिमूलमिश्रैः
क्षारप्रविष्टैरथ वा प्रदिह्यात् ॥
निष्पावपिण्याककुलत्थकल्कै-
र्मांसप्रगाढैर्दधिमस्तुयुक्तैः ।
लेपं विदध्यात्कृमयो यथात्र
मूर्छन्ति मूर्छन्त्यथ मक्षिकाश्च ॥
अल्पावशिष्टे कृमिभिः कृते च
लिखेत्ततोऽग्निं विदधीत पश्चात् ।
यदल्पमूलं त्रपुताम्रसीस-
पट्टैः समावेष्ट्य तदायसैर्वा ॥
क्षाराग्निशस्त्राण्यसकृद्विदध्यात्
प्राणानहिंसन्भिषगप्रमत्तः ।
आस्फोतजातीकरवीरपत्रैः
कषायमिष्टं व्रणशोधनार्थम् ॥
शुद्धे च तैलं विदधीत भार्गी-
विडङ्गपाठात्रिफलाविपक्वम् ।
यदृच्छया चोपगतानि पाकं
पाकक्रमेणोपचरेद्विधिज्ञः ॥

कफथी थएला अर्बुदनी चिकित्सा.

१२ जो अर्बुद कफथी थएलुं होय तो संशोधन करी रुधिरनुं स्रावण करवुं अने ते पछी अर्बुद उपर उभयतोभागहर (वमन तथा विरेचन ए बन्ने करावनारां) द्रव्योना कल्कनो प्रलेप करवो.

होलानी चरक, कबुतरनी चरक, कांसानी मसी, लोदर, पृश्निपर्णी अने मालकांकणीनां के इंद्रवारणीनां मूळ एओने गोमूत्रमां वाटी तेनो प्रलेप करवो अथवा एओने क्षारमां वाटीने तेनो प्रलेप करवो.

चोळा, तलनो खोळ अने कळथी एओनो मांसयुक्त कल्क करी तेमां दहीनी नीचेनुं पाणी मिश्रित करीने ते कल्कनो लेप करवो के जेथी कीडाओ पडे अने मांखीओ पण बेसीने आसींग मूके. कीडाओ अर्बुदनी टोचोनुं भक्षण करीने अर्बुदने जेनो थोडोज भाग अवशेष रहे एवो करी नाखे त्यारे शस्त्रथी खोंतरीने ते अर्बुद उपर अग्निक्रिया करवी.

जे अर्बुद अल्पमूळवाळुं होय तेने कथीलनी, त्रांबानी के सीसानी पट्टीथी अथवा लोढानी पट्टीथी वींटी लईने ते अर्बुद उपर वारंवार क्षारप्रयोग, अग्निप्रयोग अने छेदात्मक शस्त्रप्रयोग करवा पण ए प्रयोगो करतां रोगीना प्राणोने के बलादिकने हरकत न आवे एवी साहुचेती राखवी. (सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायना बीजा विषयमां मेदोजन्य अर्बुद शिवाय सवळा प्रकारनां साध्य अर्बुदोने छेदवा योग्य गण्यां छे.)

अर्बुदना व्रणना शोधनने माटे उपलसरी, जाई (लवारो) अने कणेर एओनां पानडांओनो कषाय करवो अने व्रण शुद्ध थाय त्यारे भारंगी, वावडींग तथा त्रिफळा एओना क्काथादिकथी पकावेला तैलनी योजना करवी.

अर्बुदो यदृच्छाथी पाकी जाय तो विधिने जाणनारा वैद्ये पाकनी चिकित्साना क्रमप्रमाणे चिकित्सा करवी.

१३ मेदोऽर्बुदं स्विन्नमदो विदार्य
विशोध्य सीव्येद्गतरक्तमाशु ।
ततो हरिद्रागृहधूमरोध्र-
पतङ्गचूर्णैः समनःशिलालैः ॥
व्रणं प्रतिग्राह्य मधुप्रगाढैः
करञ्जतैलं विदधीत शुद्धे ।

मेदथी थएला अर्बुदनी चिकित्सा.

१३ जो अर्बुद मेदथी थएलुं होय तो तेने स्वेदनसंस्कार आपी शस्त्रवते भेदवुं, भेदीने शुद्ध करवुं अने लोहीथी रहित थाय त्यारे तुरत सीवी लेवुं. पछी हळदर, घरना धूमाडानी धूंस, लोदर, पतंग, मणशील अने हरताल एओनुं चूर्ण मधमां कालवीने तेनी व्रणमां योजना करवी अने तमाम शुद्ध थई जाय त्यारे करंजाद्य तैलनो (आ स्थानना १६ मा अध्यायनो चोथो विषय जुवो.) प्रयोग करी ते व्रणनुं रोपण करवुं.

१४ सशेषदोषाणि हि योर्बुऽदानि
करोति तान्याशु पुनर्भवन्ति ॥
तस्मादशेषाणि समुद्धरेत्तु
हन्युः सशेषाणि यथा हि वह्निः ।

अर्बुदोने एवी रीते काहाडवां के जेथी तेओनो दोष जरापण अवशेष रहे नहीं.

१४ जो अर्बुदोनो दोष जरा पण अवशेष रही गयो होय तो ते अर्बुदो पाछां तुरत उत्पन्न थाय छे एटला माटे वैद्ये शस्त्रादिकथी तेओने निश्शेष काहाडी नाखवां जोईए. जो थोडो पण दोष अवशेष रही गयो होय तो तेओ पाछां अग्निनी पेठे मारी दे छे.

१५ संस्वेद्य गण्डं पवनोत्थमादौ
नाड्यानिलघ्नौषधपत्रभङ्गैः ॥
अम्लैः समूत्रैर्विविधैः पयोभि-
रुष्णैः सतैलैः पिशितैश्च विद्वान् ।
विस्रावयेत्स्विन्नमतन्द्रितश्च
शुद्धं व्रणं चाप्युपनाहयेत्तु ॥
शणातसीमूलकशिग्रुकिण्व-
प्रियालमज्जानुयुतैस्तिलैस्तु ।
कालामृताशिग्रुपुनर्नवार्क-
गजादिनामाकरहाटकुष्ठैः ॥
एकैषिकावृक्षकतिल्वकैश्च
सुराम्लपिष्टैरसकृद्विदिह्यात् ॥
तैलं पिबेच्चामृतवल्लिनिम्ब-
हंसाह्वयावृक्षकपिप्पलीभिः ।

सिद्धं बलाभ्यां च सदेवदारु
हिताय नित्यं गलगण्डरोगे ॥

गलगंडनी चिकित्सानुं प्रकरण.

वायुथी थएला गलगंडनी चिकित्सा.

१५ गलगंड वायुथी उत्पन्न थएलो होय तो तेने प्रथम वायुने हणनारी औषधिओनां पानडां, कांजी वगेरे अम्लपदार्थो, मूत्रो, अनेक जातनां दूधो, तैलो अने गरम मांसो एओनो क्वाथ करी आ स्थानना स्वेदावचारणीय नामना ३२ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे नाडीस्वेद आपवो, स्वेद आप्या पछी काळजी राखीने जळो मूकवा वगेरेथी लोहीनुं स्रावण करवुं अने शुद्ध थया पछी शण, अळसी, मूळानां बीज, सरगवो, सुराबीज, चारोळी अने मज्जा एओथी संयुक्त करेला तिलोथी तेना उपर उपनाह करवो.

मजीठ, गळो, सरगवो, साटोडी, आकडो, गजपीपळ, मींढोळ, कठ, नसोतर, इंद्रयव अने पाटीयो लोदर एओने सुरामां तथा कांजीमां वाटीने तेनो वारंवार लेप करवो.

गळो, लींबडो, हंसराज, इंद्रयव, पीपळ, खपाट, बळदाणा अने देवदार एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं तैल नित्य पावुं. आ तैल पावाथी गलगंडना रोगीनुं हित थाय छे.

१६ स्वेदोपनाहैः कफसम्भवं तु
संस्वेद्य विस्रावणमेव कुर्यात् ।
ततोऽजगन्धातिविषाविशल्या-
विषाणिकाकुष्ठशुकाह्वयाभिः ॥
पलाशभस्मोदकपेषिताभि-
र्दिह्यात्सगुञ्जाभिरशीतलाभिः ।
दशार्द्धसङ्ख्यैर्लवणैश्च युक्तं
तैलं पिबेन्मागधिकादिसिद्धम् ॥
प्रच्छर्दनं मूर्द्धविरेचनं च
धूमश्च वैरेचनिको हितस्तु ।

कफथी थएला गलगंडनी चिकित्सा.

१६ गलगंड कफथी उत्पन्न थएलो होय तो तेने स्वेदनसंस्कार आपीने लोहीज स्रवाववुं. लोही स्रवाव्या पछी तलवणी, (कानफोडी) अतवस, दूधीयो वछनाग, मेंढाशींगी, कठ, अरडूसो अने चणोठी एओने खाखराना क्षारना जळमां वाटी गरम करीने तेनो लेप करवो. पिप्पल्यादि गणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलने सिंधालूण, संचळ, बीडलूण, वडागरूं तथा दरीयाईलूण एओथी संयुक्त करीने ते तैल पावुं, वमन करावबुं, शिरोविरेचन देवुं अने आ स्थानना ४० मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे वैरेचनिक धूमाडो पावो ए हितकारी थाय छे.

१७ पाकक्रमो वापि सदा विधेयो
वैद्येन पाकं गतयोः कथञ्चित् ॥
कटुत्रिकक्षौद्रयुताः समूत्रा
भक्ष्या यवान्नानि रसाश्च मौद्गाः ।
सशृङ्गवेराः सपटोलनिम्बा
हिताय देया गलगण्डरोगे ॥

वायुथी थएला तथा कफथी थएला गलगंडनी सामान्य चिकित्सा.

१७ वायुथी थएलो के कफथी थएलो गलगंड कोई रीते पाकी जाय तो ते उपर सर्वदा पाकनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी.

जेने कफथी गलगंड थयो होय के वायुथी गलगंड थयो होय ते रोगीने सूंठ, मरी, पीपळ, मध, गोमूत्र, आदु, पटोळ अने लींबडो एओथी संयुक्त करेलां जवनां भक्ष्यो तथा मगनां यूषादिक देवां ए हितकारी थाय छे.

१८ मेदःसमुत्थे तु यथोपदिष्टां
विध्येच्छिरां स्निग्धतनोर्नरस्य ।
श्यामासुधालोहपुरीषदन्ती-
रसाञ्जनैश्चापि हितः प्रदेहः ॥
मूत्रेण वालोड्य हिताय सारं
प्रातः पिबेच्छालमहीरुहाणाम् ।
शस्त्रेण वापाट्य विदार्य चैनं
मेदः समुद्धृत्य हिताय सीव्येत् ॥

मज्जाज्यमेदोमधुभिर्दहेद्वा
दग्धे च सर्पिर्मधु चावचार्यम् ।
कासीसतुत्थे च ततोऽत्र देये
चूर्णीकृते रोचनया समेते ।
तैलेन चाभ्यज्य हिताय दद्या-
त्सारोद्भवं गोमयजं च भस्म ॥
हितश्च नित्यं त्रिफलाकषायो
गाढश्च बन्धो यवभोजनं च ॥

मेदथी थएला गलगंडनी चिकित्सा.

१८ गलगंड मेदथी उत्पन्न थएलो होय तो रोगीने स्नेहपानथी स्निग्ध करी तेना साथळना मूळमां रहेली शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण करवुं. नमोतर, थोर, लोढानुं कीटुं, नेपाळो अने रसवंती एओनो लेप करवो. शालसारादि गणनो सार गोमूत्रमां घोळीने प्रातःकालमां पावो ए हितकारी छे.

अथवा मेदथी उत्पन्न थएला गलगंडने शस्त्रथी फाडी चीरी तेमांथी मेद काहाडी नाखीने सीवी लेवो अथवा मज्जा, घी, मेद तथा मध एओथी डांभवो अने डांभीने तेउपर मध तथा घी एओनुं अवचारण करवुं. पछी हीराकसी अने मोरथुथु एओनुं गोरोचननी साथे चूर्ण करीने ते लगाववुं अने तैलनो अभ्यंग करीने शालसारादि गणनुं तथा गायना छाणनुं भस्म पण लगाववुं. नित्य त्रिफळाना काथथी व्रणनुं प्रक्षालन करवुं, व्रणने पाटाथी मजबूत रीते बांधवो अने रोगीने यवनुं भोजन देवुं ए हितकारी थाय छे.

अध्याय १९ मो.

१ अथातो वृद्ध्युपदंशश्लीपदानां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वृद्ध्युपदंश-श्लीपदचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अन्त्रवृद्ध्या विना षड्या वृद्धयस्तासु वर्जयेत् ।
अश्वादियानं व्यायामं मैथुनं वेगनिग्रहम्
अत्यासनं चङ्क्रमणमुपवासं गुरूणि च ।

वृद्धिनी चिकित्सानुं प्रकरण.
अंत्रवृद्धि शिवाय बाकीनी छ वृद्धिओमां पाळवानी परेजी.

२ अंत्रवृद्धि के जे असाध्य छे ते शिवाय बाकीनी छ वृद्धिओमांथी कोई पण वृद्धि थएल होय तो रोगीए घोडा वगेरे वाहनपर बेसवुं नहीं, कसरत करवी नहीं, अंगोनी मेहेनत करवी नहीं, मैथुन करवुं नहीं, विष्टा वगेरेनी हाजतोने अटकाववी नहीं, बहु बेसी रेहेवुं नहीं, बहु फरवुं नहीं, उपवास करवा नहीं अने भारे पदार्थो जमवा नहीं.

३ तत्रादितो वातवृद्धौ त्रैवृतस्निग्धमातुरम् ॥
स्विन्नं चैनं यथान्यायं पाययेत विरेचनम् ।
कोशाम्रतिल्वकैरण्डफलतैलानि वा नरम् ॥
सक्षीरं वा पिबेन्मासं तैलमेरण्डसम्भवम् ।
ततः कालेऽनिलघ्नानां काथैः कल्कैश्च बुद्धिमान् ।
निरूहयेन्निरूढं च भुक्तवन्तं रसौदनम् ॥
यष्टीमधुकसिद्धेन ततस्तैलेन योजयेत् ।
स्वेदोपनाहौ कुर्याच्च प्रदेहांश्चानिलापहान् ॥
विदग्धां पाचयित्वा वा सेवनीं परिवर्जयन् ॥
भिन्द्यात्ततः प्रभिन्नायां यथोक्तं क्रममाचरेत् ।

वायुथी थएली वृद्धिनी चिकित्सा.

३ वृद्धि जो वायुथी थएली होय तो रोगीने प्रथम त्रैवृत (आ स्थानना पांचमा अध्यायनो

---

१ आ लेपमां होलानी तथा कबुतरनी चरक मिश्रित करवानुं पण केटलाएक केहे छे.

२ वृद्धि, उपदंश तथा श्लीपद के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना बारमा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

१९ मो विषय जुवो.) नामना घीथी स्निग्ध करी स्वेदन संस्कार आपीने जे विरेचन योग्य जणाय ते देवुं अथवा जंगली आंबानी गोठलीनुं तैल, पाटीयो लोदर अने एरडीयुं तैल एओने मिश्रित करीने एओनुं विरेचन देवुं अथवा एक महिना सूधी एरडीयुं तैल दूधथी मिश्रित करीने पावुं. विरेचन आप्या पछी योग्य समये वायुने हणनारां औषधोना क्वाथोथी अने कल्कोथी निरूहबस्ति देवी. निरूहबस्ति दीधा पछी मांसना रसावाळो भात जमाडीने जेठीमधना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनी अनुवासनबस्ति देवी. वृद्धि उपर स्वेदनो करवां, उपनाहो करवा अने वायुने हणनारा प्रलेपो पण करवा.

वायुथी थएली वृद्धि पाकवा उपर आवे तो तेने पकावी सीवणीने छोडी दईने शस्त्रथी भेदी नाखवी अने भेद्या पछी आ स्थानना पेहेला अध्यायमां कह्याप्रमाणे अथवा सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे चिकित्सानो क्रम करवो.

४ पित्तजायामपक्वायां पित्तग्रन्थिक्रमो हितः ॥
पक्वां वा भेदयेद्भिन्नां शोधयेत्क्षौद्रसर्पिषा ।
शुद्धायां च भिषग्दद्यात्तैलं कल्कं च रोपणम् ॥

पित्तथी थएली वृद्धिनी चिकित्सा.

४ पित्तथी थएली वृद्धि काची होय तो ते उपर पित्तग्रंथिनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी. (गया अध्यायनो चोथो विषय जुवो.) पित्तथी थएली वृद्धि पाके त्यारे तेने शस्त्रवते भेदीने मधथी तथा घीथी व्रणनुं शोधन करवुं अने शुद्ध थया पछी वैद्ये रोपण करवा माटे आ स्थानना पेहेला अध्यायमां कह्याप्रमाणे अथवा सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे तैल तथा कल्क आपवां.

५ रक्तजायां जलौकोभिः शोणितं निर्हरेद्भिषक् ।
पिबेद्विरेचनं वापि शर्कराक्षौद्रसंयुतम् ।
पित्तग्रन्थिक्रमं कुर्यादामे पक्वे च सर्वदा ॥

रुधिरथी थएली वृद्धिनी चिकित्सा.

५ वृद्धि जो पित्तथी थएली होय तो वैद्ये जळो मूकीने लोहीनुं निर्हरण करवुं, साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने विरेचन पावुं अने सर्वदा काची वृद्धि उपर काचा पित्तग्रंथिनी चिकित्सा करवी तथा पाकेली वृद्धि उपर पाकेला पित्तग्रंथिनी चिकित्सा करवी. (गया अध्यायनो चोथो विषय जुवो.)

६ वृद्धिं कफात्मिकामुष्णैर्मूत्रपिष्टैः प्रलेपयेत् ।
पीतदारुकषायं च पिबेन्मूत्रेण संयुतम् ॥
विम्लापनादृते वापि श्लेष्मग्रन्थिक्रमो हितः ।
पक्वायां च विभिन्नायां तैलं शोधनमिष्यते ॥
सुमनारुष्कराङ्कोठसप्तपर्णेषु साधितम् ।

कफथी थएली वृद्धिनी चिकित्सा.

६ वृद्धि जो कफथी थएली होय तो वचादि, पिप्पल्यादि तथा मुष्ककादि ए गणोनां द्रव्यो के जेओ उष्णवीर्य छे तेओने गोमूत्रमां वाटीने ते कल्कनो प्रलेप करवो अथवा सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायना ६ ठ्ठा विषयमां अजगंधा (तलवाणी) वगेरे जे उष्णवीर्य द्रव्यो कहेलां छे तेओने गोमूत्रमां वाटी ते कल्कनो प्रलेप करवो. दारूहळदरनो क्वाथ करी, तेने गोमूत्रथी संयुक्त करीने ते पावो. कफथी थएली वृद्धि उपर विम्लापन शिवाय (अंगुठा वगेरेथी मर्दन करीने करमाववा शिवाय) बाकी कफग्रंथिनी चिकित्सा करवी ए हितकारी छे. (गया अध्यायनो पांचमो विषय जुवो.)

पाकेली कफवृद्धिने शस्त्रथी भेदवामां आवे त्यारे जाई, भीलामुं, अंकोल तथा सप्तपर्ण एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलवते व्रणनुं शोधन करवुं.

७ मेदःसमुत्थां संस्वेद्य लेपयेत्सुरसादिना ॥
शिरोविरेकद्रव्यैर्वा सुखोष्णैर्मूत्रसंयुतैः ।
स्विन्नां चावेष्ट्य पट्टेन समाश्वास्य तु मानवम् ॥

रक्षन्फले सेवनीं च वृद्धिपत्रेण दारयेत् ।
मेदस्ततः समुद्धृत्य दद्यात्कासीससैन्धवे ॥
बध्नीयाच्च यथोद्दिष्टं शुद्धे तैलं च दापयेत् ।
मनःशिलाललवणैः सिद्धमारुष्करेषु च ॥

मेदथी थएली वृद्धिनी चिकित्सा.

७ वृद्धि जो मेदथी थएली होय तो स्वेदन करीने ते उपर गोमूत्रमां वाटेला सुरसादि गणना कल्कनो सेहेवाय तेवो ऊनो लेप करवो अथवा गोमूत्रमां वाटेलां शिरोविरेचन द्रव्योना कल्कनो सेहेवाय तेवो ऊनो लेप करवो.

मेदथी उत्पन्न थएली वृद्धिने स्वेदन आपी वस्त्रथी वींटी, रोगीने धैर्य आपी वृषणोनी गोळीओनो अने सीवणीनो बचाव करतां ते वृद्धिने वृद्धिपत्र[१] नामना शस्त्रथी भेदवी. भेद्या पछी तेमांथी मेद काहाडी नाखीने हीराकसी तथा सैंधव लगाववां अने सूत्रस्थानना अढारमा अध्यायमां कह्याप्रमाणे पाटो बांधवो. (गोफण नामनो पाटो बांधवो अनुकूल आवे छे.) व्रण शुद्ध थया पछी मणशील, हरताळ, सैंधव अने भीलामां एओना क्काथमां तथा कल्कमां पकावेला तेलथी तेनुं रोपण करवुं.

८ मूत्रजां स्वेदयित्वा तु वस्त्रपट्टेन वेष्टयेत् ।
सेवन्याः पार्श्वतोऽधस्ताद्विध्येद्व्रीहिमुखेन तु ॥
अथात्र द्विमुखां नाडीं दत्वा विस्रावयेद्भिषक् ।
मूत्रं नाडीमथोद्धृत्य स्थगिकाबन्धमाचरेत् ॥
शुद्धायां रोपणं दद्यात्

मूत्रथी थएली वृद्धिनी चिकित्सा.

८ वृद्धि जो मूत्रथी थएली होय तो स्वेदन करी, वस्त्रना पाटाथी वींटीने सीवणीनी बाजूमां नीचेना प्रदेशमां व्रीहिमुख[२] नामना शस्त्रथी वींधवी, वींध्या पछी तेमां बे मोहोडांवाळी नळी नाखीने मूत्रने स्रवाववुं अने स्रवाव्या पछी नळी काहाडी लईने सूत्रस्थानना अढारमा अध्यायमां कह्याप्रमाणे स्थगिकाबंध नामनो पाटो बांधवो. शुद्ध थया पछी सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे तेनुं रोपण करवुं.

९ वर्जयेदन्त्रहेतुकीम् ।
अप्राप्तफलकोशायां वातवृद्धिक्रमो हितः ॥
तत्र या वङ्क्षणस्था तां दहेदर्धेन्दुवक्रया ।
मरुन्मार्गावरोधार्थं कोशप्राप्तां तु वर्जयेत् ॥
त्वचं भित्त्वाङ्गुष्ठमध्ये दहेच्चाङ्गविपर्ययात् ।
अनेनैव विधानेन वृद्धी वातकफात्मिके ॥
प्रदहेत्प्रयतः किंतु स्नायुच्छेदोऽधिकस्तयोः ।
शङ्खोपरि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेन सेवनीम् ॥
व्यत्यासाद्वा शिरां विध्येदन्त्रवृद्धिनिवृत्तये ।

आंतरडांथी थएली वृद्धि के जे असाध्य छे तेनी अमुक स्थितिमां चिकित्सा.

९ आंतरडांथी थएली वृद्धि जो वृषणोमां प्राप्त थई होय तो तेनी चिकित्सा करवीज नहीं. परंतु ते वृद्धि वृषणोमां प्राप्त न थई होय तो ते उपर वातवृद्धिनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी ए हितकारी छे. (आ अध्यायनो त्रीजो विषय जुवो.)

ए आंतरडांथी थएली वृद्धि साथळोना मूळमां रहेली होय अने उपर कहेला उपायथी मटती न होय तो तेने वायुना मार्गनो रोध करवा माटे अर्धचंद्र जेवा मुखवाळी शलाकाथी डांभवी पण जो वृषणोमां प्राप्त थई होय तो छोडीज देवी. ए वृद्धिमां डाबी बाजूनुं आंतरडुं वध्युं होय तो जमणा अंगूठाना मध्यमां अने जमणी बाजुनुं आंतरडुं वध्युं होय तो डाबा अंगूठाना म-

१ वृद्धिपत्र नामनुं शस्त्र अस्त्राना जेवा आकारवाळुं करवुं अने तेनो छेदन, भेदन तथा पाटन एओमां उपयोग करवो. सोजो ऊंचो होय तो ए शस्त्र सीधी अणीवाळुं अने ऊंडो होय तो पाछळथी नमेली अणीवाळुं जोइए. (वाग्भट सूत्रस्थान अध्याय २६ मो.)

२ व्रीहिमुख नामनुं शस्त्र चोखानी साळना जेवा मोहोडावाळुं अने दोढ आंगळना फळावाळुं करवुं. (वाग्भट सूत्रस्थान अध्याय २६ मो.)

ध्यमां त्वचाने शस्त्रथी भेदीने ते उपर डांभ देवो ए पण उचित छे. वृद्धि वायुथी के कफथी थएली होय तो पण सावधान वैद्ये ए प्रमाणेज अंगूठाना मध्यमां त्वचाने भेदीने ते उपर डांभ देवो पण तेमां अंगूठाना अग्रमां रहेली स्नायुनुं छेदन पण करवुं एटलुं अधिक छे.

अथवा आंतरडांथी थएली वृद्धिने निवृत्त करवा माटे एम करवुं के डाबी बाजूनुं आंतरडुं वध्युं होय तो जमणा लमणानी उपर कानना छेडा आगळनी शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण करवुं अने जमणी बाजूनुं आंतरडुं वध्युं होय तो डाबा लमणानी उपर कानना छेडा आगळनी शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण करवुं पण तेमां प्रयत्न राखीने सीवणीने बचाववी जोईए.

१० उपदंशेषु साध्येषु स्निग्धस्विन्नस्य देहिनः॥
शिरां विध्येन्मेढ्रमध्ये पातयेद्वा जलौकसः ॥
हरेदुभयतश्चापि दोषानत्यर्थमुच्छ्रितान् ॥
सद्योऽपहृतदोषस्य रुक्शोफावुपशाम्यतः ।
यदि वा दुर्बलो जन्तुर्न वा प्राप्तं विरेचनम् ॥
निरूहेण हरेत्तस्य दोषानत्यर्थमुच्छ्रितान् ।

उपदंशनी चिकित्सानुं प्रकरण.

उपदंशोनी सामान्य चिकित्सा.

१० जो उपदंशो साध्य होय तो रोगीने स्नेहन संस्कार तथा स्वेदन संस्कार आपी पछी लिंगना मध्यमां रहेली शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण करवुं पण जो ते उपदंशो अल्प दोषवाळा होय तो जळो मूकीनेज लोहीनुं स्रावण करवुं. ए उपरांत अत्यंत वृद्धि पामेला दोषोनुं वमनथी तथा विरेचनथी हरण करवुं. केमके दोषोनुं हरण करवाथी वेदना अने सोजो तुरत शांत थई जाय छे. जो रोगी दुर्बल होय अथवा तेने विरेचन देवुं प्राप्त न होय तो तेना अत्यंत वृद्धि पामेला दोषोनुं निरूहबस्तिथी हरण करवुं.

११ प्रपौण्डरीकयष्ट्याह्ववर्षाभूकुष्ठदारुभिः ॥
सरलागुरुरास्नाभिर्वातजं संप्रलेपयेत् ।
निचुलैरण्डबीजानि यवगोधूमसक्तवः ॥
एतैश्च वातजं स्निग्धैः सुखोष्णैः सम्प्रलेपयेत् ।
प्रपौण्डरीकपूर्वैश्च द्रव्यैः सेकः प्रशस्यते ॥

वायुथी थएला उपदंशनी चिकित्सा.

११ जो उपदंश वायुथी थएलो होय तो पांडेरवो, जेठीमध, साटोडी, कठ, दारूहळदर, नसोतर, अगरू अने रास्ना एओनो लेप करवो. वायुथी थएला उपदंश उपर नेतर, एरडी, जवनो साथवो अने घउंनो साथवो एओने घीथी स्निग्ध करी जरा गरम करीने तेओनो लेप पण करवो. वायुथी थएला उपदंश उपर पांडेरवो, जेठीमध, साटोडी, कठ, दारूहळदर, नसोतर, अगरू तथा रास्ना एओना क्काथादिक द्रवोथी सेचन करवुं ए पण उत्तम छे.

१२ गैरिकाञ्जनयष्ट्याह्वसारिवोशीरपद्मकैः ।
सचन्दनोत्पलैः स्निग्धैः पैत्तिकं संप्रलेपयेत् ॥
पद्मोत्पलमृणालैश्च ससर्जार्जुनवेतसैः ।
सर्पिःस्निग्धैः समधुकैः पैत्तिकं सम्प्रलेपयेत् ॥
सेचयेच्च घृतक्षीरशर्करेक्षुमधूदकैः ।
अथवापि सुशीतेन कषायेण वटादिना ॥

पित्तथी थएला उपदंशनी चिकित्सा.

१२ जो उपदंश पित्तथी थएलो होय तो सोनागेरू, रसवंती, जेठीमध, उपलसरी, वाळो, पद्मकाष्ठ, सूखड अने कमळ एओने वाटी स्निग्ध करीने ते उपदंश उपर लेप करवो. ए उपदंश उपर श्वेतकमळ, रक्तकमळ, कमळनां नाल, राळ, कडायो अथवा साजड, नेतर अने जेठीमध एओने वाटी घीथी स्निग्ध करीने तेनो लेप पण करवो. ए उपदंश उपर घीनुं, दूधनुं, साकरना पाणीनुं, शेलडीना रसनुं, मधथी संयुक्त करेला जळनुं अथवा न्यग्रोधादि गणना स्वरस वगेरे शीतल कषायनुं पण सेचन करावबुं.

१३शालाश्वकर्णाअकर्णध्रवत्वग्भिःकफोत्थितम्।
सुरापिष्टाभिरुष्णाभिः सतैलाभिः प्रलेपयेत् ॥
रजन्यतिविषामुस्तासरलासुरदारुभिः ।
सपत्रपाठापत्तूरैरथ वा सम्प्रलेपयेत् ॥
सुरसारग्वधाद्याभ्यां क्वाथाभ्यां परिषेचयेत् ।

कफथी थएला उपदंशनी चिकित्सा.

१३ उपदंश कफथी थएलो होय तो कडायो अथवा साजड, नाहानो राळ, मोटो राळ अने धावडो एओनी छालोने सुरामां वाटी तेलथी संयुक्त करी गरम करीने तेनो लेप करवो अथवा हळदर, अतवस, मोथ, नसोतर, देवदार, तमालपत्र, काळीपाड अने पतंग एओने मदिरामां वाटी तेलथी संयुक्त करी गरम करीने तेनो लेप करवो अने सुरसादि गणनो क्वाथ तथा आरग्वधादि गणनो क्वाथ एओथी उपदंश उपर परिषेचन कराववुं.

१४ एवं संशोधनालेपसेकशोणितमोक्षणैः ॥
प्रतिकुर्यात्क्रियायोगैः प्राक्स्थानोक्तैर्हितैरपि ।
नायाति च यथा पाकं प्रयतेत तथा भिषक् ॥
विदग्धैस्तु शिरास्नायुत्वङ्मांसैः क्षीयते ध्वजः ।
शस्त्रेणोपचरेच्चापि पाकमागतमाशु वै ॥
तदापोह्य तिलैः सर्पिःक्षौद्रयुक्तैः प्रलेपयेत् ।
करवीरस्य पत्राणि जात्यारग्वधयोस्तथा ॥
प्रक्षालने प्रयोज्यानि वैजयन्त्यर्कयोरपि ।
सौराष्ट्रीं गैरिकं तुत्थं पुष्पकासीससैन्धवम् ॥
रोध्रं रसाञ्जनं दार्वीं हरितालं मनःशिलाम् ।
हरेणुकैले च तथा सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥
तच्चूर्णं क्षौद्रसंयुक्तमुपदंशेषु पूजितम् ।
जम्ब्वाम्रसुमनानिम्बश्वेताकाम्बोजिपल्लवाः ॥
शल्लकीबदरीबिल्वपलाशतिनिशत्वचः ।
क्षीरिणां च त्वचो योज्याः क्वाथे त्रिफलया सह ॥
तेन क्वाथेन नियतं व्रणं प्रक्षालयेद्भिषक् ।
अस्मिन्नेव कषाये तु तैलं धीरो विपाचयेत् ॥
गोजीविडङ्गयष्टीभिः सर्वगन्धैश्च संयुतम् ।
एतत्सर्वोपदंशेषु श्रेष्ठं रोपणमिष्यते ॥
सर्जिकातुत्थकासीसं शैलेयं च रसाञ्जनम् ।
मनःशिलासमैश्चूर्णं व्रणवीसर्पनाशनम् ॥
गुन्द्रां दग्ध्वा कृतं भस्म हरितालं मनःशिला ।
उपदंशविसर्पाणामेतच्छान्तिकरं परम् ॥
मार्कवस्त्रिफला दन्ती ताम्रचूर्णमयोरजः ।
उपदंशं निहन्त्येष वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥

उपदंशो उपर शस्त्रक्रिया अने तेनां उत्तर कर्मो.

१४ आ प्रमाणे संशोधनोथी, लेपोथी, परिषेकोथी, लोहीनां स्रावणोथी अने सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायमां कहेला हितकारी क्रियायोगोथी तथा आ स्थानना द्विव्रणीय नामना पेहेला अध्यायमां कहेला हितकारी क्रियायोगोथी पण वैद्ये उपदंशोने टाळवा अने जे रीते ए उपदंशो पाके नहीं एवो प्रयत्न करवो. केम के जो शिराओ, स्नायुओ, त्वचा तथा मांस पाके तो तेथी लिंगनो क्षय थई जाय छे. आम करतां छतां पण उपदंश पाके तो तेना उपर तुरत शस्त्रक्रिया करवी. पछी परुने दूर करी नाखीने मधथी तथा घीथी संयुक्त करेला तिलोना कल्कनो लेप करवो. कणेर, जाई, गरमाळो, अरणी अने आकडो एओनां पानडांओनो क्वाथ करीने तेथी व्रणने धोवो. फटकडी के नेवरी, सोनागेरु, मोरथुथु, सफेद हीराकसी, सैंधव, लोदर, रसवंती, दारुहळदर, हरताल, मणशील, हरेणुका नामनुं सुगंधि द्रव्य अने एळची एओनुं बारीक चूर्ण करी मधमां कालवीने उपदंशना व्रण उपर लगाववुं. जांबू, आंबो, जाई, लींबडो, सफेद गरणी तथा चणोठी अथवा जंगली अडद एओनां पानडां, तेमज सालेडो, बोरडी, बीली, खाखरो, मीणोहरमो अने वड वगेरे क्षीरिवृक्षो एओनी छालो अने त्रिफळा एओनो क्वाथ करीने तेथी पण नित्य व्रणने धोवो. एज क्वाथमां गळजीभी, वावडींग, जेठीमध तथा एलादि गणनां सघळां सुगंधि द्रव्यो एओनो कल्क नाखीने पका-

वेलुं तैल सघळा प्रकारना उपदंशो उपर रोपण करवामां उत्तम गणाय छे. साजीखार, मोरथुथु, हीराकसी, शिलाजीत, रसवंती अने मणशील ए सघळां द्रव्योने समभागे लई तेओनुं बनावेलुं चूर्ण व्रणनो तथा विसर्पनो नाश करे छे. मोथने केपानने बाळीने बनाववामां आवेली भस्म, हरतालनुं चूर्ण अने मणशीलनुं चूर्ण एओने एकठां करीने भभराववामां आवे तो तेथी व्रणोनी अने विसर्पनी सारी पेठे शांति थाय छे. भांगरो, त्रिफळा, नेपाळो, त्रांबानुं चूर्ण अने लोढानुं चूर्ण एओने एकठां करीने भभराववामां आवे तो जेम वीजळी वृक्षने नष्ट करी नाखे छे तेम ए चूर्ण उपदंशने नष्ट करी नाखे छे.

१५ उपदंशद्वयेऽप्येतां प्रत्याख्यायाचरेत्क्रियाम्।
तयोरेव च या योग्या वीक्ष्य दोषबलाबलम् ॥
उपदंशे विशेषेण शृणु भूयस्त्रिदोषजे ।
दुष्टव्रणविधिं कुर्यात्कुथितं मेहनं त्यजेत् ॥
जाम्बौष्ठेनाग्निवर्णेन पश्चाच्छेषं दहेद्भिषक् ।
सम्यग्दग्धं च विज्ञाय मधुसर्पिः प्रयोजयेत् ॥
शुद्धे च रोपणं दद्यात्कल्कं तैलं हितं च यत् ।

लोहीथी थएला उपदंशनी तथा त्रणे दोषोथी थएला उपदंशनी चिकित्सा.

१५ लोहीथी थएलो उपदंश अने त्रणे दोषोथी थएलो उपदंश एओनी चिकित्सा करवानी प्रथम तो ना कहे पाडवी. पछी जो रोगी वगेरेनो आग्रह देखाय तो दोषोनुं बलाबल जोइने उपर लखेली शस्त्रक्रिया तथा बीजी पण जे चिकित्सा करवी योग्य जणाय ते करवी. (रुधिरथी थएला उपदंशनी पित्तोपदंशना जेवी चिकित्सा करवी अने त्रणे दोषोथी थएला उपदंशनी उपर कहेला त्रणे दोषोना उपचारोवाळी चिकित्सा करवी.)

हवे त्रणे दोषोथी थएला उपदंश उपर करवानी विशेष चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो. त्रणे दोषोथी थएला उपदंशनी दुष्ट व्रणनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी अने लिंगनो जेटलो भाग सडी गयो होय तेटला भागने काहाडी नाखीने बाकीना भागने अग्निथी तपावी लालचोळ करेला जांबवोष्ठ नामना गोळ मुखवाळा लांबा पथराथी डांभी देवो अने सम्यग्दग्धपणानो निश्चय करीने तेना उपर मध तथा घी लगावी देवां. शुद्ध थई जाय त्यारे रोपण करवाने माटे हितकारी कल्कनी अने हितकारी तैलनी योजना करवी.

१६ स्नेहस्वेदोपपन्नं तु श्लीपदेऽनिलजे भिषक् ।
कृत्वा गुल्फोपरि शिरां विध्येत्तु चतुरङ्गुले ।
समाप्यायितदेहं च बस्तिभिः समुपाचरेत् ॥
मासमेरण्डजं तैलं पिबेन्मूत्रेण संयुतम् ।
पयसौदनमश्नीयान्नागरक्वथितेन च ॥
त्रैवृतं चोपयुञ्जीत शस्तो दाहस्तथाग्निना ॥

श्लीपदनी चिकित्सानुं प्रकरण.

वायुथी थएला श्लीपदनी चिकित्सा.

१६ श्लीपद वायुथी थएलुं होय तो रोगीने स्नेहनथी तथा स्वेदनथी उपपन्न करी पगनी घूंटीनी उपर चार आंगळने छेटे शिरानो वेध करीने लोही स्रवाववुं अने पछी बृंहण चिकित्साथी रोगीना शरीरनुं पोषण करीने पिचकारीओ मारवी. एक महिना सूधी एरंडीया तैलने गोमूत्रथी मिश्रित करीने ते पावुं अने सूंठनो कल्क नाखीने पकावेला दूधनी साथे भात जमाडवो. ए श्लीपद उपर त्रैवृत नामना (आ स्थानना पांचमा अध्यायनो १९ विषय जुवो) घीनो उपयोग कराववो अने श्लीपदनो अग्निथी दाह करवो ए उत्तम छे.

१७ गुल्फस्याधः शिरां विध्येच्छ्लीपदे पित्तसम्भवे
पित्तघ्नीं च क्रियां कुर्यात्पित्तार्बुदविसर्पवत् ।

पित्तथी थएला श्लीपदनी चिकित्सा.

१७ श्लीपद जो पित्तथी थएलुं होय तो वैद्ये गुल्फनी (घूंटीनी) नीचे रहेली शिराने वींधीने

लोहीनुं स्रावण करवुं अने पित्तार्बुदनी तथा पित्तविसर्पनी चिकित्सानी पेठे पित्तने हणनारी चिकित्सा करवी. (गया अढारमा अध्यायनो ११ मो विषय तथा १७ मा अध्यायनो ४ थो विषय जुवो.)

१८ शिरां सुविदितां विध्येदङ्गुष्ठे श्लैष्मिके भिषक् ॥
मधुयुक्तानि चाभीक्ष्णं कषायाणि पिबेन्नरः ।
पिबेद्वाप्यभयाकल्कं मूत्रेणान्यतमेन च ।

कफथी थएला श्लीपदनी चिकित्सा.

१८ श्लीपद जो कफथी थएलुं होय तो अंगूठानी शिराने पारखी बराबर ध्यानमां लई वींधीने तेमांथी लोही स्रवाववुं अने मधथी संयुक्त करेला काथो वारंवार पावा तथा सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायमां कहेलां मूत्रोमांथी कोई मूत्रनी साथे हरडेनो कल्क पावो.

१९ कटुकाममृतां शुण्ठीं विडङ्गं दारु चित्रकम् ।
हितं वा लेपने नित्यं भद्रदारु सचित्रकम् ॥
विडङ्गमरिचार्केषु नागरे चित्रकेऽथ वा ।
भद्रदार्वेलुकाख्ये च सर्वेषु लवणेषु च ॥
तैलं पक्वं पिबेद्वापि यवान्नं च हितं सदा ।
पिबेत्सर्षपतैलं वा श्लीपदानां निवृत्तये ॥
पूतीकरञ्जपत्राणां रसं वापि यथाबलम् ।
अनेनैव विधानेन पुत्रञ्जीवकजं रसम् ॥
प्रयुञ्जीत भिषक्प्राज्ञः कालसात्म्यविभागवित् ।
केचुकाकन्दनिर्यासं लवणं त्वथ पाकिमम् ॥
रसं दत्वाथ पूर्वोक्तं पेयमेतद्भिषग्जितम् ।
काकादनीं काकजङ्घां बृहतीं कण्टकारिकाम् ॥
कदम्बपुष्पीं मन्दारीं लम्बां शुकनसां तथा ।
दग्ध्वा मूत्रेण तद्भस्म स्रावयेत्क्षारकल्पवित् ॥
तत्र दद्यात्प्रतीवापं काकोदुंबरिकारसम् ।
मदनाच्च फलात्काथं शुकाख्यास्वरसं तथा ॥
एष क्षारस्तु पानीयः श्लीपदं हन्ति सेवितः ।
अपचीं गलगण्डं च ग्रहणीदोषमेव च ॥
भक्तस्यानशनं चैव हन्यात्सर्वविषाणि च ।
एष्वेव तैलं संसिद्धं नस्याभ्यङ्गेषु पूजितम् ॥
एतानेवामयान्हन्ति ये च दुष्टव्रणा नृणाम् ।
द्रवन्तीं त्रिवृतां दन्तीं नीलीं श्यामां तथैव च ॥
सप्तलां शङ्खिनीं चैव दग्ध्वा मूत्रेण गालयेत् ।
दद्याच्च त्रिफलाक्वाथमेष क्षारस्तु साधितः ॥
अधो गच्छति पीतस्तु पूर्वैश्चाप्याशिषः समाः ।

सघळां प्रकारनां श्लीपदोनी सामान्य चिकित्सा.

१९ कडु, गळो, सूंठ, वावडींग, दारुहळदर अने चित्रक एओनुं अथवा चित्रकसहित देवदारनुं नित्य लेपन करवुं ए हितकारी छे.

वावडींग, मरी, आकडो, सूंठ, चित्रक, देवदार, एलवालुक नामनुं सुगंधि द्रव्य (प्रसिद्ध नथी) अने सघळां प्रकारनां लूणो एओमां पकावेलुं तेल नित्य पावुं अने जवनुं अन्न जमाडवुं ए हितकारी छे.

नित्य सरसीयुं तेल पावामां आवे अथवा कांटावाळी करंजनां पानडांओनो स्वरस अथवा पुत्रंजीवक(जेने हिंदी भाषामां जीवापोता तथा पुतजीया कहे छे ते)नो स्वरस शक्तिप्रमाणे आठ, चार अथवा बे तोलां भार लई सरसीया तैलमां नाखीने पावामां आवे तो तेथी सघळा प्रकारनां श्लीपदोनी निवृत्ति थाय छे. काळना तथा सात्म्यना विभागने जाणनारा प्रवीण वैद्ये आ प्रयोगोमांथी जे प्रयोगो योग्य जणाय ते करवा.

केचुका (कसेरुकंद हशे?) नामना कंदनो गुंदर तथा बीडलूण एओने एकठां करी तेमां कांटावाळी करंजनां पानडांओनो रस अथवा पुत्रंजीवकनो रस नाखीने पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनां श्लीपदो नष्ट थई जाय छे.

इंद्रवारणी, अघेडी, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, महामुंडी, (बोडीयो कलार) मंदारी, (गुजरातीमां पर्याय मळयो नथी.) कडवी तूंबडी अने

अरडूसो एओने बाळी तेनी भस्मने गोमूत्रथी क्षारनी रीति प्रमाणे स्त्रवावी लेवी. पछी तेमां काळा ऊंबरानो रस, मींढोळनां फळोनो काथ अने सरसडीयानो स्वरस नाखीने पीवानो क्षार बनाववो. सेववामां आवेलो आ क्षार श्लीपदने, अपचीने, गलगंडने, ग्रहणीदोषने, अन्नादिक उपरनी अरुचिने अने सर्व प्रकारनां विषोने हणे छे.

उपर लखेलां इंद्रवारणी वगेरे द्रव्योना काथमां तथा काळा ऊंबरा वगेरेना स्वरसमां तैल पकावीने ते तैलनां नस्यो देवामां आवे तथा अभ्यंगो कराववामां आवे तो ए तैल उपर कहेला रोगोने अने दुष्ट व्रणोने नष्ट करे छे.

ऊंदरकन्नी, नसोतर, नेपाळो, गळी, वरधारो, हाथला अने आंखफूटामणी एओने बाळी गोमूत्र नाखी गाळी लई तेमां त्रिफळानो काथ नाखीने क्षार पकाववो. आ क्षार पावाथी विरेचन थाय छे अने उपर कहेला सघळा गुणो पण थाय छे.

अध्याय २० मो.

१ अथातः क्षुद्ररोगचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'क्षुद्ररोगचिकित्सित' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अत्राजगल्लिकामामां जलौकोभिरुपाचरेत् ।
शुक्तिसुघ्नीयवक्षारकल्कैश्चालेपयेद्भिषक् ॥
श्यामालाङ्गलकीपाठाकल्कैर्वापि विचक्षणः ।
पक्कां व्रणविधानेन यथोक्तेन प्रसाधयेत् ॥

अजगल्लिकानी चिकित्सा.

२ अजगल्लिका काची होय तो वैद्ये जळो मूकीने लोहीनुं स्त्रावण करवुं अने छीपनो क्षार, साजीखार तथा जवखार एओना कल्कोथी अथवा नसोतर, दूधीयो वछनाग तथा कालीपाड एओना कल्कोथी लेपो कराववा.

अजगल्लिका पाके तो तेने सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां तथा आ स्थानना पेहेला अध्यायमां कहेली व्रणनी चिकित्साथी शांत करवी.

३ अन्धालजीं यवप्रख्यां पनसीं कच्छपीं तथा ।
पाषाणगर्दभं चैव पूर्वं स्वेदेन योजयेत् ॥
मनःशिलातालकुष्ठदारुकल्कैः प्रलेपयेत् ।
परिपाकगतान्भित्त्वा व्रणवत्समुपाचरेत् ॥

अंधालजी, यवप्रख्या, पनसी, कच्छपी तथा पाषाणगर्दभ एओनी चिकित्सा.

३ अंधालजी, यवप्रख्या, पनसी, कच्छपी के पाषाणगर्दभ थएल होय तो प्रथम स्वेदननी योजना करीने पछी मणशील, हरताल, कठ अने दारूहळदर एओना कल्कनो लेप करवो.

एओ जो पाक्यां होय तो तेओने शस्त्रवते भेदीने व्रणनी चिकित्सा जेवी चिकित्सा करवी.

४ विवृतामिन्द्रवृद्धां च गर्दभीं जालगर्दभम् ।
इरिविल्लीं गन्धनाम्नीं कक्षां विस्फोटकांस्तथा ॥
पित्तजस्य विसर्पस्य क्रियया साधयेद्भिषक् ।
रोपयेत्सर्पिषा पक्वान्सिद्धेन मधुरौषधैः ॥

विवृता, इंद्रवृद्धा, गर्दभी, जालगर्दभ, इरिवेल्लिका, गंधनाम्नी, कक्षा अने विस्फोटक एओनी चिकित्सा.

४ विवृता, इंद्रवृद्धा, गर्दभी, जालगर्दभ, इरि-

१ क्षुद्ररोगो के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना तेरमा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

२ गयदासे तो एम व्याख्यान आप्युं छे के प्रथम छीपना क्षार वगेरेना लेपो करवा अने पछी जळो मूकीने लोहीनुं स्त्रावण करवुं.

३ निदानस्थानमां गर्दभीनुं निदानादिक कह्युं नहीं आप्या छतां तेनुं नाम अहीं दाखल कर्युं छे माटे तेनुं निदान तथा लक्षण भावप्रकाश उपरथी लखीए छीए. वायुथी तथा पित्तथी गोळ, ऊंचुं, अत्यंत रातुं, फोडलीओथी व्याप्त अने वेदना करनारूं जे मंडल थाय छे ते गर्दभिका केहेवाय छे.

४ इरिवेल्लिकानुं पण ए प्रमाणेज छे माटे भावप्रकाश उपरथी लखीए छीए. त्रणे दोषोथी माथामां गोळ, उग्र वेदनावाळी, उग्र ज्वरवाळी अने त्रणे दो-

वेलिका, गंधनाम्नी, कक्षा के विस्फोटक थएल होय तो वैद्य तेओनी उपर पित्तविसर्पनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी. (गया १७ मा अध्यायनो ४ थो विषय जुवो.)

एओ पाके त्यारे तेओने काकोल्यादि मधुरगणनां द्रव्योथी पकावेला घी वते रुझाववां.

५ चिप्यमुष्णाम्बुना सिक्तमुत्कृत्य स्रावयेद्भिषक्।
चक्रतैलेन चाभ्यज्य सर्जचूर्णेन चूर्णयेत् ॥
बन्धनोपचरैश्चैनमशक्यं चाग्निना दहेत् ।
मधुरौषधसिद्धेन ततस्तैलेन रोपयेत् ॥

चिप्यनी चिकित्सा.

५ चिप्य थएल होय तो तेने वैद्य ऊना जळथी पलाळी शस्त्रवते कापीने तेमांथी लोही काढवुं, घाणीना ताजा लीधेला तेलथी खरडीने तेना उपर राळनुं चूर्ण भभराववुं अने पछी पाटाथी बांधवो.

जो ए ते चिकित्साथी शांत न थाय तो पछी अग्निथी दग्ध करीने काकोल्यादि गणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलवते रुझाववो.

६ कुनखे विधिरप्येष कार्यो हि भिषजा भवेत्।

कुनखनी चिकित्सा.

६ प्रवीण वैद्य कुनखनी उपर पण चिप्यनी चिकित्सा प्रमाणेज चिकित्सा करवी.

७विदारिकां समभ्यज्य स्विन्नां विम्लाप्य लेपयेत्
नगवृत्तिकवर्षाभूबिल्वमूलैः सुपेषितैः ।
व्रणभावगतायां वा कृत्वा संशोधनक्रियाम् ॥
रोपणार्थे हितं तैलं कषायमधुरैः शृतम् ।
प्रच्छानैर्वा जलौकोभिः स्राव्याऽपक्वा विदारिका
अजकर्णैः सपालाशैर्मूलकल्कैः प्रलेपयेत् ।
पक्वां विदार्य शस्त्रेण पटोलपिचुमन्दयोः ॥
कल्केन तिलयुक्तेन सर्पिर्मिश्रेण लेपयेत् ।
बद्ध्वा च क्षीरवृक्षस्य कषायैः खदिरस्य च ॥
व्रणं प्रक्षालयेच्छुद्धां ततस्तां रोपयेत्पुनः ।

विदारिकानी चिकित्सा.

७ विदारिका थएल होय तो तेने तेलथी खरडी, स्वेदन आपी, अंगूठा वगेरेथी खूब मर्दन करवाथी करमावीने पछी गरणी, साटोडी अने बीली, एओनां मूळोने सारी पेठे वाटीने तेना उपर लेप करवो.

जो विदारिका व्रणपणाने पामी होय तो संशोधन क्रिया करीने न्यग्रोधादि गणनां तथा काकोल्यादि गणनां द्रव्योथी पकावेला तैलवते तेनुं रोपण करवुं.

अथवा काची विदारिकाने शस्त्रना टोंचा दईने के जळो लगावीने तेमांथी लोही स्रवाववुं अने पछी राळनुं झाड तथा कपूरकाचरी एओनां मूळोना कल्कोनो तेना उपर लेप करवो.

विदारिका पाकी होय तो तेने शस्त्रथी भेदी तिलथी तथा घीथी संयुक्त करेला पटोलना तथा लींबडाना कल्कनो तेना उपर लेप करीने पाटो बांधवो. ए व्रणने वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना तथा खेरना क्वाथोथी धोवो अने शुद्ध थाय त्यारे तेनुं सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे रोपण करवुं.

८ मेदोऽर्बुदविधानेन साधयेच्छर्करार्बुदम् ॥

शर्करार्बुदनी चिकित्सा.

८ शर्करार्बुद थएल होय तो तेनी मेदथी थएला अर्बुदनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी. (आ स्थानना अढारमा अध्यायनो १३ मो विषय जुवो.)

षोनां चिह्नोवाळी जे फोडली थाय छे ते इरिवेल्लिका केहेवाय छे.

५ गंधनाम्नीनुं पण ए प्रमाणेज छे माटे भावप्रकाश उपरथी लखीए छीए. बाहुओमां, काखोमां, खभाओमां के पडखांओमां त्वचानी अंदर पित्तना प्रकोपथी काळी अने वेदनावाळी जे फोडला जेवी एक फोडली थाय छे ते गंधनाम्नी केहेवाय छे.

९ कच्छूं विचर्चिकां पामां कुष्ठवत्समुपाचरेत् ।
लेपश्च शस्यते सिक्थशताह्वागौरसर्षपैः ॥
वचादार्वीसर्षपैर्वा तैलं वा नक्तमालजम् ।
सारतैलमथाभ्यङ्गे कुर्वीत कटुकैः शृतम् ॥

कच्छू, विचर्चिका अने पामा एओनी चिकित्सा.

९ कच्छू, विचर्चिका अने पामा एओनी चिकित्सा कुष्ठनी चिकित्सा प्रमाणे करवी. (आ स्थाननो नवमो अध्याय जुवो.) एओनी उपर मीण, शतावरी अने सफेद सर्षप एओनो अथवा वज, दारुहळदर अने सर्षप एओनो लेप करवो ए उत्तम छे. पिप्पल्यादि गणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला करंजीया तैलनो अथवा देवदारना सारना तैलनो तेना उपर अभ्यंग करवो.

१० पाददार्यां शिरां विद्ध्वा स्वेदाभ्यङ्गौ प्रयोजयेत् ।
मधूच्छिष्टवसामज्जसर्जचूर्णघृतैः कृतः ॥
यवाह्वगैरिकोन्मिश्रैः पादलेपः प्रशस्यते ।

पाददारिकानी चिकित्सा.

१० पाददारिका थएल होय तो शिरानो वेध करी लोही स्रवावीने स्वेदनी तथा अभ्यंगनी योजना करवी. मीण, वसा, मज्जा तथा घी एओने राळना चूर्णथी, जवखारथी तथा सोनागेरुना चूर्णथी मिश्रित करीने पग उपर लेप करवो.

११ पादौ सिक्त्वारनालेन लेपनं ह्यलसे हितम्
कल्कीकृतैर्निम्बतिलकासीसालैः ससैन्धवैः ।
लाक्षारसोऽभया वापि कार्यं स्याद्रक्तमोक्षणम् ॥
सिद्धं रसे कण्टकार्यास्तैलं वा सार्षपं हितम् ।
कासीसरोचनशिलाचूर्णैर्वा प्रतिसारणम् ॥

अलसनी चिकित्सा.

११ अलस थएल होय तो फोतरावगरना काचा अथवा पकावेला घउंना आथाना पाणीनो पगोनी उपर परिषेक करीने पछी सैंधवथी मिश्रित करेला लींबडो, तिल, हीराकसी तथा मणशील एओना कल्कनो लेप करवो अथवा लाखना रसनो के हरडेना कल्कनो लेप करवो. लोहीनुं स्रावण पण करवुं. भोरींगणीना स्वरसमां पकावेलुं सरसीयुं तैल पण अलस उपर हितकारी छे. हीराकसी, गोरोचन अने हरडे एओना चूर्ण घसवां ए पण उत्तम छे.

१२ उद्धृत्य दग्ध्वा स्नेहेन जयेत्कदरसंज्ञकम् ।

कदरनी चिकित्सा.

१२ कदर थएल होय तो शस्त्रवते कापी नाखी स्नेहवते दाह करवो ए उत्तम छे.

१३ इन्द्रलुप्ते शिरां मूर्ध्नि स्निग्धस्विन्नस्य मोक्षयेत्
कल्कैः समरिचैर्दिह्याच्छिलाकासीसतुत्थकैः ।
कुटन्नटादारुकल्कैर्लेपनं वा प्रशस्यते ॥
प्रच्छयित्वावगाढं वा गुञ्जाकल्कैर्मुहुर्मुहुः ।
लेपयेदुपशान्त्यर्थं कुर्याद्वापि रसायनम् ॥
मालतीकरवीराग्निनक्तमालविपाचितम् ।
तैलमभ्यञ्जने शस्तमिन्द्रलुप्तापहं परम् ॥

इंद्रलुप्तनी चिकित्सा.

१३ इंद्रलुप्त थएल होय तो स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी, माथानी शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण करवुं. मरी, गळी, हीराकसी अने मोरथुथु एओना कल्कथी अथवा केवडीमोथ अने दारुहळदर एओना कल्कथी लेपन करवुं उत्तम छे.

अथवा शस्त्रवते सारी पेठे टोंचीने चणोठीना कल्कोथी वारंवार लेपन करवुं के जेथी इंद्रलुप्त शांत थई जाय.

ए उपायोथी इंद्रलुप्त शांत न थाय तो पछी रसायन प्रयोग करवो.

१ कच्छूनुं निदानादिक निदानस्थानमां क्षुद्ररोगोना प्रकरणमां आप्युं नथी पण ते स्थानना पांचमा अध्यायना आठमा विषयमां आप्युं छे ते जोई लेवुं.

मालती, कणेर, चित्रक अने करंज एओना काथथी तथा कल्कथी पकावेलुं तैल लगाववामां आवे तो इंद्रलुप्तनो सारी पेठे विनाश थाय छे.

१४ अरूंषिकां हृते रक्ते सेचयेन्निम्बवारिणा ।
दिह्यात्सैन्धवयुक्तेन वाजिविष्टारसेन तु ॥
हरितालनिशानिम्बकल्कैर्वा सपटोलजैः ॥
यष्टीनीलोत्पलैरण्डमार्कवैर्वा प्रलेपयेत् ।

अरूंषिकानी चिकित्सा.

१४ अरूंषिका थएल होय तो लोहीनुं स्रावण करीने लींबडाना काथथी सेचन करवुं अने घोडानी लादना रसने सैंधवथी युक्त करीने तेनुं लेपन करवुं अथवा हरताल, हळदर, लींबडो तथा पटोल एओना कल्कनुं लेपन करवुं अथवा जेठीमध, नीलकमळ, एरंडो अने भांगरो एओना कल्कनुं लेपन करवुं. (मालती वगेरेनुं तैल के जे इंद्रलुप्तनी चिकित्सामां केहेवामां आव्युं छे तेना अभ्यंगथीज अरूंषिकानुं शोधन रोपण करवुं.)

१५शिरां दारुणके विद्ध्वा स्निग्धस्विन्नस्य मूर्द्धनि
अवपीडं शिरोवस्तिमभ्यङ्गं च प्रयोजयेत् ।
क्षालने कोद्रवभवक्षारतोयं प्रशस्यते ॥

दारुणकनी चिकित्सा.

१५ दारुणक थएल होय तो स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी माथानी शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण करवुं, अवपीडनस्य देवुं, (आ स्थानना ४० मा अध्यायमां जुवो.) शिरोबस्तिनो प्रयोग करवो अने उपर कहेला मालती वगेरेना तैलनो अभ्यंग करवो. दारुणकने कोदराना क्षारना पाणीथी धोवो ए उत्तम गणाय छे.

१६ उपरिष्टात्प्रवक्ष्यामि विधिं पलितनाशनम्।

पलितनी चिकित्सा.

१६ पलितने नष्ट करवानी चिकित्सा आ स्थानना मिश्रकचिकित्सित नामना २९ मा अध्यायना १९ मा तथा १६ मा विषयमां केहेवामां आवशे.

१७ मसूरिकायां कुष्ठघ्नलेपनादिक्रिया हिता ॥
पित्तश्लेष्मविसर्पोक्ता क्रिया वा सम्प्रशस्यते ।

मसूरिकानी चिकित्सा.

१७ मसूरिका थएल होय तो कोढने हणनारां लेपनो वगेरे करवारूप चिकित्सा हितकारी थाय छे अथवा पित्तना विसर्प उपर तथा कफना विसर्प उपर जे क्रिया केहेवामां आवी छे ते करवी ए उत्तम छे. (आ स्थानना नवमो तथा सत्तरमो अध्याय जुवो.)

१८ जतूमणिं समुत्कृत्य मशकं तिलकालकम्॥
क्षारेण प्रदहेद्युक्त्या वह्निना वा शनैः शनैः ।

जतुमणि, मशक तथा तिलकालक एओनी चिकित्सा.

१८ जतुमणि, मशक के तिलकालक थएल होय तो तेने शस्त्रवते कापी योग्य युक्ति गोठवीने क्षारथी बाळवो अथवा धीरे धीरे अग्निथी बाळवो.

१९ न्यच्छे व्यङ्गे शिरामोक्षो नीलिकायां च शस्यते ॥
यथान्यायं यथाभ्यासं लालाट्यादिशिराव्यधः ।
घृष्ट्वा दिह्यात्त्वचं पिष्ट्वा क्षीरिणां क्षीरसंयुताम् ॥
बलातिबलयष्ट्याह्वरजनीर्वा प्रलेपनम् ।
पयस्यागुरुकालीयलेपनं वा सगैरिकम् ॥
क्षौद्राज्ययुक्तया लिम्पेद्दंष्ट्रया शूकरस्य च ।
कपित्थराजादनयोः कल्को वा हित उच्यते ॥

न्यच्छ, व्यंग अने नीलिंका[१] एओनी चिकित्सा.

१९ न्यच्छ, व्यंग के नीलिका थएल होय तो शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण करवुं ए उत्तम छे. शिराने वींधवामां एवी समजण राखवी के ललाट वगेरेनी शिराओमां रोगने जे शिरा लगती होय ते शिराने योग्य रीते वींधवी. रोगने गळजी-

१ व्यंग अने नीलिका एओ दाझनाज भेद छे. (निदानस्थानना तेरमा अध्यायनो ३७ मो विषय जुवो.)

भीनां पानडां वगेरेथी घसीने ते उपर वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी छीरथी संयुक्त छालोना कल्कनो लेप करवो अथवा बळदाणा, खपाट, जेठीमध अने हळदर एओना कल्कनो लेप करवो अथवा खरणेर, अगरू, दारूहळदर अने सोनागेरू एओना कल्लनो लेप करवो अथवा सूवरनी दाढने घसी मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने तेनो लेप करवो अथवा कोठ अने राण एओना कल्कनो लेप करवो ए हितकारी छे.

२० यौवने पिडकास्वेष विशेषाच्छर्दनं हितम्
लेपनं च वचारोध्रसैन्धवैः सर्षपान्वितैः ॥
कुस्तुम्बुरुवचालोध्रकुष्ठैर्वा लेपनं हितम् ।

यौवनपिडकानी चिकित्सा.

२० यौवनपिडका थएल होय तो उपर कहेली न्यच्छ वगेरेनी चिकित्सामांथी योग्य चिकित्सा करवी अने विशेषे करी वमन कराववुं ए हितकारी छे. वज, लोदर अने सैंधव एओने सर्षपोथी युक्त करी तेओनुं लेपन करवुं अथवा कोथमरी, वज, लोदर अने कठ एओनुं लेपन करवुं पण हितकारी छे.

२१ पद्मिनीकण्टके रोगे छर्दयेन्निम्बवारिणा ॥
तेनैव सिद्धं सक्षौद्रं सर्पिःपानं प्रदापयेत् ।
निम्बारग्वधयोः क्वाथो हित उत्सादने भवेत् ॥

पद्मिनीकंटकनी चिकित्सा.

२१ पद्मिनीकंटक थएल होय तो लींबडानो क्वाथ पाईने वमन करावavुं, लींबडाना क्वाथमां पकावेलुं घी मधथी संयुक्त करीने पावुं अने लींबडो तथा गरमाळो एओना क्वाथथी अंग चोळाववुं ए हितकारी छे.

२२ परिवृत्तिं घृताभ्यक्तां सुस्विन्नामुपनाहयेत्
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा वातघ्नैः शाल्वणादिभिः ॥
ततोऽभ्यज्य शनैश्चर्म चानयेत्पीडयन्मणिम् ।
प्रविष्टे च मणौ चर्म स्वेदयेदुपनाहनैः ॥
दद्याद्वातहरान्बस्तीन्स्निग्धान्यन्नानि भोजयेत् ।

परिवर्त्तिकानी चिकित्सा.

२२ परिवर्त्तिका थएल होय तो लिंगनी चामडीने घीथी खरडी, सारी पेठे स्वेदन आपीने तेनी उपर त्रण रातसूधी अथवा पांच रातसूधी वायुने हणनारा शाल्वण आदि उपनाहो करवा. (आ स्थानना चोथा अध्यायनो १९ मो विषय जुवो.) पछी चामडीपर अभ्यंग करी धीरे धीरे लिंगना टोचकाने दबावतां दबावतां चामडीने योग्य रीते टोचका उपर लाववी. टोचकुं चामडीमां पेठा पछी उपनाहस्वेदो देवा, वायुने हणनारी पिचकारीओ देवी अने स्निग्ध अन्नो जमाडवां.

२३ वपाटिकां जयेदेवं यथादोषं चिकित्सकः ॥

अवपाटिकानी चिकित्सा.

२३ अवपाटिका थएल होय तो वैद्ये दोषने टाळनारा स्नेहोथी अने स्वेदोथी तेनी चिकित्सा करवी.

२४ निरुद्धप्रकशे नाडीं लौहीमुभयतोमुखीम् ।
दारवीं वा जतुकृतां घृताभ्यक्तां प्रवेशयेत् ॥
परिषेके वसामज्जशिशुमारवराहयोः ।
चक्रतैलं तथा योज्यं वातघ्नद्रव्यसंयुतम् ॥
त्र्यहात्त्र्यहात्स्थूलतरां सम्यङ्नाडीं प्रवेशयेत् ।
स्रोतो विवर्द्धयेदेवं स्निग्धमन्नं च भोजयेत् ॥
भित्त्वा वा सेवनीं मुक्त्वा सद्यः क्षतवदाचरेत् ।

निरुद्धप्रकशनी चिकित्सा.

२४ निरुद्धप्रकश थएल होय तो तेमां बन्ने तरफ मोहोडांवाळी अने घीथी खरडेली लोढांनी, लाकडानी अथवा लाखनी नळी पेसाडवी. पछी तेना उपर शिशुमारनी (दरीयाई कूतरानी)

---

१ अवपाटिका वायुना संबंधवाळी होय तो खरसट, रूक्ष, सूक्ष्म, काळी तथा वेदनावाळी थाय छे. पित्तना संबंधवाळी होय तो पीळी के राती अने दाहथी तथा तृषाथी संयुक्त थाय छे. कफना संबंधवाळी होय तो कठण, स्निग्ध, खरजवाळी तथा अल्प वेदनावाळी थाय छे. (भा. प्र.)

तथा सूवरनी चरबीनुं अने मज्जानुं सेचन करवुं तथा घाणीना ताजा तेलने वातहर द्रव्योथी युक्त करीने तेनी पण योजना करवी. त्रण त्रण दिवसे तेमां वधारे वधारे जाडी नळी सारी रीते नाखती जवी. ए रीते मार्गने पोहोळो करवो अने रोगीने स्निग्ध अन्न जमाडवुं.

अथवा मीवणीने छोडी दई शस्त्रवते भेदन करीने तुरतना थएला क्षतनी चिकित्सा जेवी चिकित्सा करवी.

२५ सन्निरुद्धगुदं रोगं वल्मीकं वह्निरोहिणीम् ॥
प्रत्याख्याय यथायोगं चिकित्सितमथाचरेत् ।
विसर्पोक्तेन विधिना साधयेदग्निरोहिणीम् ॥
संनिरुद्धगुदे योज्या निरुद्धप्रकशक्रिया ।
शस्त्रेणोत्कृत्य वल्मीकं क्षाराग्निभ्यां प्रसाधयेत् ॥
विधानेनार्बुदोक्तेन शोधयित्वा च रोपयेत् ।
वल्मीकं तु भवेद्यस्य नातिवृद्धममर्मजम् ॥
तत्र संशोधनं कृत्वा शोणितं मोक्षयेद्भिषक् ।
कुलत्थिकाया मूलैश्च गडूच्या लवणेन च ॥
आरेवतस्य मूलैश्च दन्तीमूलैस्तथैव च ।
श्यामामूलैः सपललैः सक्तुमिश्रैः प्रलेपयेत् ॥
सुस्निग्धैश्च सुखोष्णैश्च भिषक्तमुपनाहयेत् ।
पक्वं वा तद्विजानीयाद्गतीः सर्वा यथाक्रमम् ॥
अभिज्ञाय ततश्छित्त्वा प्रदहेन्मतिमान्भिषक् ।
संशोध्य दुष्टमांसानि क्षारेण प्रतिसारयेत् ॥
व्रणं विशुद्धं विज्ञाय रोपयेन्मतिमान्भिषक् ।
सुमना ग्रन्थयश्चैव भल्लातकमनःशिले ॥
कालानुसारी सूक्ष्मैला चन्दनागुरुणी तथा ।
एतैः सिद्धं निम्बतैलं वल्मीके रोपणं हितम् ॥
पाणिपादोपरिष्टात्तु छिद्रैर्बहुभिरावृतम् ।
वल्मीकं यत्सशोफं स्याद्वर्ज्यं तत्तु विजानता ॥

निरुद्धगुद, वल्मीक अने अग्निरोहिणी एओनी चिकित्सा.

२५ निरुद्धगुद, वल्मीक अने अग्निरोहिणी एओनी चिकित्सा करवानी प्रथम तो नाज पाडवी अने पछी रोगी वगेरेनो आग्रह देखाय तो दोषादिकना योगप्रमाणे करवी.

निरुद्धगुद उपर (वायुने हरनारां तैलोथी सेचन करवुं) अने निरुद्धप्रकशनी जे चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते करवी.

वल्मीकने शस्त्रवते कापीने क्षारथी के अग्निथी बाळवो अने पछी अर्बुदनी चिकित्साप्रमाणे विधान करी शुद्ध करीने व्रणनुं रोपण करवुं. (अर्बुदनी चिकित्सा आ स्थानना १८ मा अध्यायमां १० मा विषयथी १४ मा विषय सूधीमां कही छे ते जुवो.)

वल्मीक जो अत्यंत वृद्धि पामेल न होय अने मर्मस्थलमां न थएल होय तो वैद्ये संशोधन करीने पछी तेमांथी लोही स्रवाववुं. कळथीनां मूळीयां, गळो, सैंधव, गरमाळानां मूळीयां, नेपालानां मूळीयां, नसोतरनां मूळीयां, वाटेला तल अने जवनो साथवो एओने मिश्रित करीने लेप कराववो अने सारी पेठे स्निग्धतावाळा तथा सेहेवाय तेवा गरम करेला एज पदार्थोनो उपनाह कराववो.

वल्मीक पाकी गएलुं जाणवामां आवे त्यारे अनुक्रमे तेना परूनी सघळी गतिओने जाणी लई बुद्धिमान् वैद्ये शस्त्रवते छेदीने अग्निथी बाळवी अने पछी दुष्ट मांसोने दूर करी नाखीने क्षार मूकवो. व्रण शुद्ध थई गएलो जाणवामां आवे त्यारे ते व्रणनुं रोपण करवुं. जाई, मोथ, भीलामुं, मणशील, तगर, झीणी एळची, चंदन अने अगरु एओथी पकावेलुं लींबडानुं तेल वल्मीकनुं रोपण करवामां हितकारी छे.

हाथनी के पगनी उपर जे वल्मीक घणां छिद्रोथी व्याप्त होय अने सोजाथी युक्त होय तेनी तो समजू वैद्ये चिकित्सा करवीज नहीं.

अग्निरोहिणीने पित्तथी थएला विसर्प उपर कहेली चिकित्साथी (आ स्थानना सत्तरमा अध्यायनो ४ थो विषय जुवो.) मटाडवी. (अग्निरोहिणीने मटाडवा माटे लंघन करावvuं, लोही स्रवा-

ववुं तथा वमन विरेचनोथी संशोधन पण करवुं. परंतु जो अग्निरोहिणी अत्यंत वृद्धि पामी होय तो तेनी चिकित्सा करवीज नहीं.)

२६ धात्र्याः स्तन्यं शोधयित्वा बाले साध्याहिपूतना।
पटोलपत्रत्रिफलारसाञ्जनविपाचितम् ॥
पीतं घृतं नाशयति कृच्छ्रामप्यहिपूतनाम् ।
त्रिफलाकोलखदिरकषायं व्रणरोपणम् ॥
कासीसरोचनातुत्थहरितालरसाञ्जनैः ।
लेपोऽम्लपिष्टो बदरीत्वग्वा सैन्धवसंयुता ॥
कपालतुत्थजं चूर्णं चूर्णकाले प्रयोजयेत् ।

अहिपूतननी चिकित्सा.

२६ बालकने अहिपूतन थएल होय तो प्रथम संशोधनोथी माताना दूधने सारूं करवुं.

पटोल, तमालपत्र, त्रिफळा अने रसवंती एओना क्काथमां घी पकावीने ते घी पावामां आवे तो अतिदुष्ट अहिपूतन पण नष्ट थई जाय छे.

त्रिफळा, बोर अने खेर एओना क्काथथी अहिपूतनना व्रणोनुं रोपण करवुं. हीराकसी, गोरोचन, मोरथुथु, हरताल अने रसवंती एओने खाटा रसमां (कांजीमां) वाटीने तेनो लेप करवामां आवे अथवा बोरडीनी छालने कांजीमां वाटी सैंधवथी संयुक्त करीने तेनो लेप करवामां आवे तो अहिपूतनना व्रणो रुझाई जाय छे.

अहिपूतनना व्रणो उपर चूर्ण भभराववानो समय थाय त्यारे पकावेला माटीना वासणना टुकडा अने मोरथुथु एओनुं चूर्ण भभराववुं.

२७ चिकित्सेन्मुष्ककच्छूंचाप्यहिपूतनपानवत्

वृषणकच्छूनी चिकित्सा.

२७ वृषणकच्छू थएल होय तो पटोल, तमालपत्र, त्रिफळा अने रसवंती एओना क्काथमां पकावेलुं घी पावुं. (राळ, कठ, सैंधव अने सफेद सर्षप एओनो योग करीने वृषणोनी उपर चोळाववो.)

२८ गुदभ्रंशे गुदं स्विन्नं स्नेहाभ्यक्तं प्रवेशयेत् ।
कारयेद्गोफणाबन्धं मध्यच्छिद्रेण चर्मणा ॥
विनिर्गमार्थं वायोश्च स्वेदयेच्च मुहुर्मुहुः ।
क्षीरं महापञ्चमूलं मूषिकां चान्त्रवर्जिताम् ॥
ततस्तस्मिन्पचेत्तैलं वातघ्नौषधसंयुतम् ।
गुदभ्रंशमिदं कृच्छ्रं पानाभ्यङ्गात्प्रसाधयेत् ॥

गुदभ्रंशनी चिकित्सा.

२८ गुदभ्रंश थएल होय तो गुदाने स्वेदन संस्कार आपी घीथी खरडीने अंदर पेसाडी देवी अने जेमां वायुना नीकासने माटे मध्यमां छिद्र राखेलुं होय एवा चामडाथी गोफणा नामनो पाटो बांधी देवो. वारंवार गुदाने स्वेदनसंस्कार आप्याज करवो.

बृहत्पंचमूल अने जेना आंतरडां काहाडी नाख्यां होय एवी ऊंदरडी दूधमां नाखीने ते दूधमां वायुने हणनारां औषधोना कल्कथी संयुक्त करेलुं तेल पकाववुं. आ तेल पीवाथी अने तेनो गुदा उपर अभ्यंग करवाथी भयंकर गुदभ्रंश पण टळी जाय छे. (साकरनी साथे कमळनुं कोमळ पत्र खावामां आवे अथवा गुदभ्रंश उपर ऊंदरडीनी चरबी चोपडवामां आवे अथवा बाफेला उंदरडीना मांसथी शेक करवामां आवे अथवा कोकम, चित्रक, चुको, बीली, काळीपाड अने जवखार एओने छाशमां वाटीने पीवानो अभ्यास राखवामां आवे तो गुदभ्रंश मटी जाय छे'.)

१ क्षुद्ररोगोमां अनुशयीनी चिकित्सा केहेवामां आवी नथी माटे भावप्रकाश उपरथी लखीए छीए. 'वैद्ये कफविद्रधिनी चिकित्साथी अनुशयीनो नाश करवो.' कफविद्रधिनी चिकित्सा (आ स्थानना १५ मा अध्यायना ५ मा श्लोकमां जोवी.) रकसा एक जातनो क्षुद्र कोढ छे अने चर्मकील एक जातनो अरश छे के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना ५ मा तथा २ जा अध्यायमां कहेलां छे. एओमां रकसानी चिकित्सा आ स्थानना नवमा अध्यायमां कहेली कोढनी चिकित्साप्रमाणेज करवानी छे अने चर्मकीलनी चिकित्सा आ

अध्याय २१ मो.

१ अथातः शूकरोगचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शूकरोगचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ संलिख्य सर्षपीं सम्यक्कषायैरवचूर्णयेत् ।
कषायेष्वेव तैलं च कुर्वीत व्रणरोपणम् ॥

सर्षपिकानी चिकित्सा.

२ सर्षपिका थएल होय तो तेने सारी पेठे खोंतरीने तेनी उपर वड वगेरे कषाय वृक्षोनां चूर्णो भभराववां अने व्रणनुं रोपण करवा माटे ते वृक्षोनाज क्वाथमां सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कहेलां रोपण द्रव्योनो कल्क नाखीने तेल पकाववुं.

३ अष्ठीलिकां जलौकोभिर्ग्राहयेत्कुशलो भिषक् ।
तथा चानुपशाम्यन्तीं कफग्रन्थिवदुद्धरेत् ॥

अष्ठीलिकानी चिकित्सा.

३ अष्ठीलिका थएल होय तो प्रवीण वैद्ये जळो मूकीने लोहीनुं स्रावण करवुं. एम कर्या छतां पण शांत न थाय तो पछी तेने कफग्रंथिनी पेठे शस्त्रथी कापी नाखवी. (आ स्थानना अढारमा अध्यायनो ५ मो विषय जुवो.)

४ स्वेदयेद्ग्रथितं शश्वन्नाडीस्वेदेन बुद्धिमान् ।
सुखोष्णैरुपनाहैश्च सुस्निग्धैरुपनाहयेत् ॥

ग्रथितनी चिकित्सा.

४ ग्रथित थएल होय तो बुद्धिमान् वैद्ये हमेश नाडीस्वेदथी (आ स्थानना ३२ मा अध्यायना ४ था विषयमां जुवो.) स्वेदन आप्या करवुं अने सारी पेठे स्निग्धपणावाळा उपनाहो सेहेवाय तेवा गरम राखीने बांधवा.

५ कुम्भीकां पाकमापन्नां भिन्द्याच्छुद्धां तु रोपयेत् ।
तैलेन त्रिफलालोध्रतिन्दुकाम्रातकेन तु ॥

कुंभीकानी चिकित्सा.

५ पाकेली कुंभीकाने शस्त्रवते भेदी नाखवी अने शुद्ध थया पछी त्रिफळा, लोदर, टींबरू अने अंबाडां एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलवते रोपण करवुं.

६ ग्राहयित्वा जलौकोभिरलजीं सेचयेत्ततः ।
कषायैस्तेषु सिद्धं च तैलं रोपणमिष्यते ॥

अलजीनी चिकित्सा.

६ अलजी थएल होय तो तेने जळो वळगाडीने तेमांथी लोहीनुं स्रावण करवुं, पछी वड वगेरे कषाय वृक्षोना क्वाथोथी तेनापर सेचन करवुं अने पछी तेज वृक्षोना क्वाथमां पकावेला तैलथी व्रणनुं रोपण करवुं. (सूत्रस्थानना २५ मा अध्यायना ३ जा विषयमां आने भेद्य कहेली छे.)

७ बलातैलेन कोष्णेन मृदितं परिषेचयेत् ।
मधुरैः सर्पिषा स्निग्धैः सुखोष्णैरुपनाहयेत् ॥

मृदितनी चिकित्सा.

७ मृदित थएल होय तो तेना उपर जरा गरम करेला बलातैलनुं (आ स्थानना पंदरमा अध्यायनो १२ मो विषय जुवो.) परिषेचन करवुं अने घीथी स्निग्ध करेलां काकोल्यादि गणनां मधुर द्रव्योने सेहेवाय तेवां गरम राखीने तेओनो उपनाह करवो.

८ संमूढपिडकां क्षिप्रं जलौकोभिरुपाचरेत् ।
भित्त्वा पर्यागतां चापि लेपयेत्क्षौद्रसर्पिषा ॥

संमूढपिडकानी चिकित्सा.

८ संमूढपिडका थएली होय तो तुरतज जळो वळगाडीने लोहीनुं स्रावण करवुं अने पाकी ग-

स्थानना छठा अध्यायमां कहेली अरशनी दहन तथा छेदन आदिरूप चिकित्साथी जूदी नथी एटला माटे आ अध्यायमां कही नथी.

१ शूकरोगो के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना चौदमा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो.

एली होय तो तेने शस्त्रवते भेदीने ते उपर घीनो तथा मधनो लेप करवो.

९ अवमन्थे गते पाकं भिन्ने तैलं विधीयते ।
धवाश्वकर्णपत्तङ्गसल्लकीतिन्दुकीकृतम् ॥

अवमंथनी चिकित्सा.

९ अवमंथ पाकी गएल होय तो तेने शस्त्रवते भेदीने तेना उपर धावडो, राळ, पतंग, सालेडो अने टींबरू एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनी योजना करवी.

१० क्रियां पुष्करिकायां तु शीतां सर्वां प्रयोजयेत् ।
जलौकोभिर्हरेच्चासृक्सर्पिषा चावसेचयेत् ॥

पुष्करिकानी चिकित्सा.

१० पुष्करिका थएल होय तो सघळी शीत चिकित्सा करवी, जळो वळगाडीने लोहीनुं निर्हरण करवुं अने घीवते परिषेचन करवुं. (सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायना ३ जा विषयमां आने भेद्य कहेली छे माटे अहीं नहीं कह्या छतां पण तेनुं भेदन करवानुं समजी लेवुं.)

११ स्पर्शहान्यां हरेद्रक्तं प्रदिह्यान्मधुरैरपि ।
क्षीरेक्षुरससर्पिर्भिः सेचयेच्च सुशीतलैः ॥

स्पर्शहानिनी चिकित्सा.

११ स्पर्शहानि थएल होय तो लोहीनुं निर्हरण करवुं, मधुर द्रव्योना (काकोल्यादिना) प्रलेपो करवा अने अत्यंत शीतलतावाळां दूध, शेलडीनो रस तथा घी एओनुं परिषेचन करवुं.

१२ पिडकामुत्तमाख्यां च बडिशेनोद्धरेद्भिषक् ।
उद्धृत्य मधुसंयुक्तैः कषायैरवचूर्णयेत् ॥

उत्तमानी चिकित्सा.

१२ उत्तमा थएल होय तो वैद्ये तेने अंकुशनी पेठे नमेला मोहोडावाळा बडिश नामना शस्त्रवते काहाडी नाखवी अने काहाडी नाख्या पछी ते प्रदेश उपर सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे मधथी संयुक्त करेलां शोधन द्रव्योनां चूर्णो भभराववां. (रोपणना समयमां रोपण द्रव्योनी योजना करवी.)

१३ रसक्रिया विधातव्या लिखिते शतपोनके ।
पृथक्पर्ण्यादिसिद्धं च देयं तैलमनन्तरम् ॥

शतपोनकनी चिकित्सा.

१३ शतपोनक थएल होय तो वैद्ये तेने खोतरीने तेना उपर सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे शोधन द्रव्योथी रसक्रिया करवी, रोपणना समयमां रोपण द्रव्योथी रसक्रिया करवी (क्वाथने सारी पेठे पकावी तेमांथी मलम जेवुं बनावीने चोपडवुं ए रसक्रिया केहेवाय छे.) अने ते पछी पृश्निपर्णी, कौंचां, हळदर, दारुहळदर, मालती, साकर अथवा सफेद धोकड एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनी योजना करवी.

१४ क्रियां कुर्याद्भिषक्प्राज्ञस्त्वक्पाकस्य विसर्पवत् ।

त्वक्पाकनी चिकित्सा.

१४ त्वक्पाक थएल होय तो विद्वान् वैद्ये तेनी पित्तविसर्पनी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी. (आ स्थानना १७ मा अध्यायनो चोथो विषय जुवो.)

१५ रक्तविद्रधिवच्चापि क्रिया शोणितजेऽर्बुदे ॥

शोणितार्बुदनी चिकित्सा.

१५ शोणितार्बुद थएल होय तो रक्तविद्रधिनी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी. (आ स्थानना १६ मा अध्यायनो छठ्ठो विषय जुवो.)

१६ कषायकल्कसर्पींषि तैलं चूर्णं रसक्रियाम् ॥
शोधनं रोपणं चैव वीक्ष्य वीक्ष्यावचारयेत् ॥
यथास्वं सर्पिषः पानं पथ्यं चापि विरेचनम् ।
हितः शोणितमोक्षश्च यच्चापि लघु भोजनम् ॥

शूकदोषोनी सामान्य चिकित्सा.

१६ निदानादिकनी स्थितिने जोई जोईने क्वाथोनी, कल्कोनी, घृतोनी, तैलोनी, चूर्णोनी, रस-

क्रियानी, शोधननी अने रोपणनी योजना करवी. निदानादिकनी स्थितिने अनुसरीने घी पीवराववुं, विरेचन देवुं अने लोहीनुं स्रावण करवुं ए पण हितकारी थाय छे. भोजनोमां जे कोई हलकां भोजनो छे तेओमांथी योग्य जणाय ते कराववुं.

१७ अर्बुदं मांसपाकं च विद्रधिं तिलकालकम् ।
प्रत्याख्याय प्रकुर्वीत भिषक्सम्यक्प्रतिक्रियाम् ॥

मांसार्बुद आदि शूकरोगो उपर प्रथम ना पाडीने पछी चिकित्सा करवी.

१७ मांसार्बुद, मांसपाक, विद्रधि अने तिलकालक ए चार शूकदोषोनी चिकित्सा प्रथम ना पाडीने पछी रोगी वगेरेनो आग्रह देखाय तो घणी संभाळ राखी मांसने (मांसार्बुदमांज) अने त्रणे दोषोने टाळवामां उचित जणाय तेवी करवी.

अध्याय २२ मो.

१ अथातो मुखरोगाणां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मुखरोगचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ चतुर्विधेन स्नेहेन मधूच्छिष्टयुतेन च ।
वातजेऽभ्यञ्जनं कुर्यान्नाडीस्वेदं च बुद्धिमान् ॥
मतिमानोष्ठकोपे तु शाल्वणं चोपनाहने ।
मस्तिष्क्यं चैव नस्ये च तैलं वातहरं हितम् ॥
श्रीवेष्टकं सर्जरसं सुरदारु सगुग्गुलु ।
यष्टीमधुकचूर्णं तु विदध्यात्प्रतिसारणम् ॥

होठना रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

वायुथी थएला होठना रोगनी चिकित्सा.

२ जो होठनो रोग वायुथी थएलो होय तो बुद्धिमान् वैद्ये मीणथी संयुक्त करेला घी, तैल, वसा अने मज्जा ए चारे प्रकारना स्नेहथी (वायुने हरनारां औषधोना क्वाथथी तथा मीणना कल्कथी पकावेला ए चारे प्रकारना स्नेहथी). होठ उपर अभ्यंग करवो, आ स्थानना ३२ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे नाडीस्वेद देवो, चोथा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेला शाल्वणनो उपनाह करवो, वायुने हरनारा तथा मगजने तर करनारा तैलनुं नस्य देवुं अने चंद्रस (बेरजो,) राळ, देवदार, गुगळ तथा जेठीमध एओना चूर्णथी प्रतिसारण कराववुं. (आंगळी वते धीरे धीरे होठ वगेरेनी उपर चूर्णादिक घसाववुं ए प्रतिसारण केहेवाय छे.)

३ पित्तरक्ताभिघातोत्थं जलौकोभिरुपाचरेत् ।
पित्तविद्रधिवच्चापि क्रियां कुर्यादशेषतः ॥

पित्तथी, रुधिरथी तथा अभिघातथी थएला होठना रोगनी चिकित्सा.

३ होठनो रोग पित्तथी, रुधिरथी के अभिघातथी थएलो होय तो वैद्ये जळो वळगाडीने लोहीनुं स्रावण करवुं अने पित्तविद्रधिना विषयमां (आ स्थानना १६ मा अध्यायना चोथा विषयमां) जे चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते सघळी करवी.

४ शिरोविरेचनं धूमः स्वेदः कवल एव च ।
हृते रक्ते प्रयोक्तव्यमोष्ठकोपे कफात्मके ॥
त्र्यूषणं स्वर्जिक्षाक्षारो यवक्षारो बिडं तथा ।
क्षौद्रयुक्तं विधातव्यमेतच्च प्रतिसारणम् ॥

कफथी थएला होठना रोगनी चिकित्सा.

४ होठनो रोग कफथी थएलो होय तो लोहीनुं स्रावण करवुं अने ते कर्या पछी शिरोविरेचन देवुं, कफने कापनारो धुमाडो पावो, कफने हरनारूं स्वेदन करवुं, कफने हरनारो कोळीओ देवो (आ स्थानना चाळीशमा अध्यायना ३८ मा विषयथी जुवो) अने सूंठ, मरी, पीपळ, साजी-

१ मोहोडाना रोगो के जेओनां निदानादिक निदानस्थानना १६ मा अध्यायमां कहेलां छे तेओनी चिकित्सा विषयनो।

खार, जवखार तथा बिडलूण एओने मधमां कालवीने तेथी प्रतिसारण कराववुं.

५ मेदोजे स्वेदिते भिन्ने शोधिते ज्वलनो हितः। प्रियङ्गुत्रिफलारोध्रं सक्षौद्रं प्रतिसारणम् ॥

मेदथी थएला होठना रोगनी चिकित्सा.

५ होठनो रोग मेदथी थएलो होय तो स्वेदन आपी, शस्त्रवते भेदन करी, शोधन करीने (मेद काहाडी नाखीने) अग्निथी दहन करवुं अने घउलां, त्रिफळा तथा लोदर एओना चूर्णने मधमां कालवीने तेथी प्रतिसारण कराववुं.

६ एतद्दोषप्रकोपाणां साध्यानां कर्म कीर्त्तितम्। दन्तमूलगतानां तु रोगाणां कर्म वक्ष्यते ॥

होठना रोगोनी चिकित्सानो उपसंहार अने दांतनां मूळोना रोगोनी चिकित्सानो उपक्रम.

६ होठना आठ रोगोमां उपर कहेला छ रोगो के जेओ साध्य छे तेओनी आ चिकित्सा कही. (बाकीना बे रोगो असाध्य छे तेथी तेओनी चिकित्सा कही नथी.) हवे दांतोनां मूळोमां (पेढांओमां) जे रोगो थाय छे तेओनी चिकित्सा कहुं छुं.

७ शीतादे हृतरक्ते तु तोये नागरसर्षपान्। निःक्वाथ्य त्रिफलामुस्तं गण्डूषः सरसाञ्जनम् ॥ प्रियङ्गवश्च मुस्ता च त्रिफला च प्रलेपनम्। नस्यं च त्रिफलासिद्धं मधुकोत्पलपद्मकैः ॥

दांतोनां मूळोना रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

शीतादनी चिकित्सा.

७ शीताद थएल होय तो लोहीनुं स्रावण कर्या पछी जळमां सूंठ तथा सर्षप एओनो क्वाथ करी तेमां त्रिफळा, मोथ तथा रसवंती एओनुं चूर्ण नाखीने तेनो कोगळो कराववो. घउलां, मोथ अने त्रिफळा एओनुं लेपन कराववुं अने त्रिफळाना क्वाथथी तथा जेठीमध, रक्तकमळ अने पद्मकाष्ठ एओना कल्कथी पकावेला घीनुं नस्य देवुं.

८ दन्तपुप्पुटके कार्यं तरुणे रक्तमोक्षणम् ॥ सपञ्चलवणः क्षारः सक्षौद्रः प्रतिसारणम् ॥ हितः शिरोविरेकश्च नस्यं स्निग्धं च भोजनम्।

दंतपुप्पुटकनी चिकित्सा.

८ दंतपुप्पुटक थएल होय तो ते काचो होय ते समयमांज तेमांथी लोहीनुं स्रावण करवुं. पंचलवण (सैंधव, संचळ, बिडलूण, वडागरूं अने दरीयाई लूण) तथा जवखार एओने मधमां कालवीने तेथी प्रतिसारण कराववुं. शिरोविरेचन देवुं, नस्य देवुं अने स्निग्ध भोजन कराववुं.

९ विस्राविते दन्तवेष्टे व्रणांस्तु प्रतिसारयेत् ॥ रोध्रपत्तङ्गयष्ट्याह्वलाक्षाचूर्णैर्मधूत्तरैः। गण्डूषे क्षीरिणो योज्याः सक्षौद्रघृतशर्कराः ॥ काकोल्यादौ दशक्षीरसिद्धं सर्पिश्च नस्यतः।

दंतवेष्टनी चिकित्सा.

९ दंतवेष्ट थएल होय तो लोहीनुं स्रावण करी व्रणो उपर मधमां कालवेला लोदर, पतंग, जेठीमध तथा लाख एओना चूर्णथी प्रतिसारण कराववुं. वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना क्वाथमां के स्वरसादिकमां मध, घी तथा साकर नाखीने तेनो कोगळो कराववो अने दशगणा दूधमां काकोल्यादिगणनो कल्क नाखीने पकावेला घीनुं नस्य देवुं.

१० शौषिरे हृतरक्ते तु रोध्रमुस्तरसाञ्जनैः ॥ सक्षौद्रैः शस्यते लेपो गण्डूषे क्षीरिणो हिताः। सारिवोत्पलयष्ट्याह्वसावरागुरुचन्दनैः ॥ क्षीरे दशगुणे सिद्धं सर्पिर्नस्ये च पूजितम्।

शौषिरनी चिकित्सा.

१० शौषिर थएल होय तो लोहीनुं स्रावण करी लोदर, मोथ तथा रसवंती एओने मधमां कालवीने तेनो लेप कराववो, वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना क्वाथादिकनो कोगळो कराववो अने दश-

गणा दूधमां उपलसरी, रक्तकमळ, जेठीमध, लोद्र, अगरु तथा रसांजलि एओनो कल्क नाखीने पकावेला घीनुं नस्य देवुं.

११ क्रियां परिदरे कुर्याच्छीतादोक्तां विचक्षणः

परिदरनी चिकित्सा.

११ परिदर थएल होय तो विचक्षण वैद्ये शीतादना विषयमां (उपरना सातमा विषयमां) कहेली चिकित्सा करवी.

१२ संशोध्योभयतः कायं शिरश्चोपकुशे तथा ।
काकोदुम्बरिकागोजीपत्रैर्विस्रावयेदसृक् ॥
क्षौद्रयुक्तैश्च लवणैः सव्योपैः प्रतिसारयेत् ।
पिप्पली सर्षपाश्चैव नागरं नैचुलं फलम् ॥
सुखोदकेन संसृष्टं कवलं चापि धारयेत् ।
घृतं मधुरकैः सिद्धं हितं कवलनस्ययोः ॥

उपकुशनी चिकित्सा.

१२ उपकुश थएल होय तो वमनथी तथा विरेचनथी कायाने शुद्ध करीने शिरोविरेचन पण देवुं. काळो ऊंबरो अने गळजीभी एओनां पानडांओवडे घसीने लोहीनुं स्रावण करवुं. सूंठ, मरी, पीपळ तथा लूण एओने मधमां कालवीने तेथी प्रतिसारण कराववुं. ऊना पाणीमां पीपळ, सर्षप, सूंठ तथा नेतरनां फळ एओनुं चूर्ण वाटी, तेमां सेहेवातुं ऊनुं पाणी नाखीने तेनो कोळीओ मोहोडामां रखाववो. काकोल्यादि द्रव्योना काथथी तथा कल्कथी पकावेला घीनुं नस्य देवुं. आ घी कोळीयामां पण हितकारी छे.

१३ शस्त्रेण दन्तवैदर्भे दन्तमूलानि शोधयेत् ।
ततः क्षारं प्रयुञ्जीत क्रियाः सर्वाश्च शीतलाः ॥

दंतवैदर्भनी चिकित्सा.

१३ दंतवैदर्भ थएल होय तो दांतोनां पेढांओने शस्त्रवते खोतरीने शुद्ध करवां, शुद्ध कर्या पछी क्षार मूकवो अने पछी सघळी शीतल क्रियाओनो प्रयोग करवो.

१४ उद्धृत्याधिकदन्तं तु ततोऽग्निमवचारयेत् ।
कृमिदन्तकवच्चापि विधिः कार्यो विजानता ॥

वर्द्धन–खलिवर्द्धननी चिकित्सा.

१४ वर्द्धन थएल होय तो विचक्षण वैद्ये अधिक उत्पन्न थएला दांतने काहाडी नाखी ते प्रदेश उपर अग्निनी क्रिया करवी अने कृमिदंतकनी चिकित्सा के जे हवे पछीना २१ मा विषयमां केहेवामां आवशे तेनी योजना पण करवी.

१५ छित्वाधिमांसं सक्षौद्रैरेभिश्चूर्णैरुपाचरेत् ।
वचातेजोवतीपाठासर्जिकायावशूकजैः ॥
क्षौद्रद्वितीयाः पिप्पल्यः कवलश्चात्र कीर्त्तितः ।
पटोलत्रिफलानिम्बकषायश्चात्र धावने ॥
हितः शिरोविरेकश्च धूमो वैरेचनश्च यः ।

अधिमांसकनी चिकित्सा.

१५ अधिमांसक थएल होय तो तेने शस्त्रवते छेदी वज, तेजबल, कालीपाड, साजीखार अने जवखार एओनुं चूर्ण लगाववुं. पीपळोने वाटी मधमां कालवीने कोळीओ देवो. पटोल, त्रिफळा तथा लींबडो एओना काथथी व्रणनुं प्रक्षालन करवुं. शिरोविरेचन देवुं अने वैरेचन धुमाडो पण पावो.

१६ सामान्यं कर्म नाडीनां विशेषं चात्र मे शृणु
यं दन्तमधिजायेत नाडी तं दन्तमुद्धरेत् ।
छित्त्वा मांसानि शस्त्रेण यदि नोपरिजो भवेत् ।
शोधयित्वा दहेद्वापि क्षारेण ज्वलनेन वा ।
भिनत्त्युपेक्षिते दन्ते हनुकास्थि गतिर्ध्रुवम् ॥
समूलं दशनं तस्मादुद्धरेद्भग्नमस्थि च ।
उद्धृते तूत्तरे दन्ते शोणितं प्रस्रवेदति ॥
रक्तातियोगात्पूर्वोक्ता रोगा घोरा भवन्ति हि ।
काणः सञ्जायते जन्तुरर्दितं चास्य जायते ॥
चलमप्युत्तरं दन्तमतो नापहरेद्भिषक् ।
धावने जातिमदनस्वादुकण्टकखादिरम् ॥
कषायं जातिमदनकंटकिस्वादुकण्टकैः ।
यष्ट्याह्वरोध्रमञ्जिष्ठाखदिरैश्चापि यत्कृतम् ॥
तैलं संशोधनं तद्धि हन्याद्दन्तगतां गतिम् ।

चार प्रकारनी दंतनाडीओनी चिकित्सा.

१६ त्रणे दोषोथी थएली दंतनाडी शिवाय बीजी चार प्रकारनी दंतनाडीओमांथी कोई पण दंतनाडी थई होय तो नाडीव्रणना विषयमां (आ स्थानना १७ मा अध्यायना आठमा विषयथी बारमा विषयसूधीमां) जे चिकित्साओ केहेवामां आवी छे तेओमांथी दोषने अनुसरती चिकित्सा करवी.

जे दांतना समीपमां नाडी थएली होय ते दांत जो उपरनी पंक्तिनो न होय तो तेने काहाडी नाखी, मांसोने शस्त्रवते कापी शुद्ध करीने क्षारथी अथवा अग्निथी दाह करवो. जो ए दांतनी उपेक्षा करवामां आवे तो परुनी गति दाढीना अस्थिने अवश्य भेदी नाखे छे एटला माटे दांतने तेना मूळसहित यंत्रवते काहाडी नाखवो अने भांगेला अस्थिने पण काहाडी नाखवुं. जो उपरनी पंक्तिनो दांत काहाडी नाखवामां आवे तो लोहीनो अत्यंत स्राव थाय छे. लोहीना अतियोगथी सूत्रस्थानना १४ मा अध्यायना १६ मा विषयमां कहेला भयंकर रोगो उत्पन्न थाय छे, रोगी काणो थई जाय छे अने तेने अर्दित नामनो रोग पण थाय छे. आ प्रमाणे थाय छे एटलामाटे उपरनी पंक्तिनो दांत हलतो होय तो पण तेने वैद्ये काहाडवो नहीं.

चमेलीनां पानडां, धत्तूरानां पानडां, खेर अने गोखरूना सघळा अवयवो एओना क्वाथथी व्रणनुं प्रक्षालन करवुं अने चमेलीनां पानडां, धत्तूरानां पानडां, ऊभी भोरींगणीनां मूळ, गोखरूना सघळा अवयवो, जेठीमध, लोदर, मजीठ अने खेर एओना क्वाथमां तथा कल्कमां पकावेला तैलथी व्रणनुं संशोधन करवुं. संशोधन करनारूं आ **जात्यादि** नामनुं तैल दांतना समीपमां थएली परुनी गतिने हणी नाखे छे.

१७ कीर्त्तिता दन्तमूले तु क्रिया दन्तेषु वक्ष्यते

दांतोनां मूळोना रोगोनी चिकित्सानो उपसंहार अने दांतोना रोगोनी चिकित्सानो उपक्रम.

१७ दांतोनां मूळोना पंदर रोगोमां उपर लखेला तेर रोगो साध्य छे माटे तेओनी आ चिकित्सा कही. (बाकीना बे रोगो असाध्य छे तेथी तेओनी चिकित्सा कही नथी.). हवे दांतोमां जे रोगो थाय छे तेओनी चिकित्सा कहुं छुं.

१८ स्नेहानां कवलाः कोष्णाः सर्पिषस्त्रैवृतस्य वा
निर्यूहाश्चानिलघ्नानां दन्तहर्षप्रमर्दनाः ॥
स्नैहिकश्च हितो धूमो नस्यं स्निग्धं च भोजनम्।
रसो रसयवाग्वश्च क्षीरं सन्तानिका घृतम्।
शिरोबस्तिर्हितश्चापि क्रमो यश्चानिलापहः ॥

दांतोना रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

दंतहर्षनी चिकित्सा.

१८ चारे प्रकारना स्नेहोना सेहेवाय तेवा ऊना कोळीया, (चारे स्नेहोथी मिश्रित करेला वातहर द्रव्योना कोळीया) अथवा त्रैवृत नामनुं घी के जे आ स्थानना पांचमा अध्यायना पंदरमा विषयमां कहेलुं छे तेथी मिश्रित करेला वातहर द्रव्योना कोळीआ अने वातहर द्रव्योना क्वाथो एओ दंतहर्षने टाळी नाखे छे.

स्नैहिक धूम, स्नैहिक नस्य, स्निग्ध भोजन, मांसनो रसो, मांसना रसवाळी यवागूओ, दूध, दूधनी तर, घी, शिरोबस्ति अने बीजी पण जे कोई वायुने हणनारी चिकित्साओ छे तेओ दंतहर्ष उपर हितकारी छे.

१९ अहिंसन्दन्तमूलानि शर्करामुद्धरेद्भिषक्।
लाक्षाचूर्णैर्मधुयुतैस्ततस्तां प्रतिसारयेत् ॥
दन्तहर्षक्रियां वापि कुर्यान्निरवशेषतः।

दंतशर्करानी चिकित्सा.

१९ दंतशर्करा थएल होय तो वैद्ये दांतोनां पेढांओने हरकत न आवे एवी रीते दंतशर्कराने

काहाडी लेवी अने पछी मधथी संयुक्त करेलां लाखना चूर्णथी प्रतिसारण कराववुं. उपर लखेली दंतहर्षनी चिकित्सा पण आ रोग उपर संपूर्ण रीते करवी.

२० कपालिका कृच्छ्रतमा तत्राप्येषा क्रिया हिता

कपालिकानी चिकित्सा.

२० कपालिका थएल होय तो ते जो के अत्यंत कष्टसाध्य छे तो पण ते उपर दंतशर्करानी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी ए हितकारी थाय छे.

२१ जयेच्छिस्रावणैः स्विन्नमचलं कृमिदन्तकम् ।
तथावपीडैर्वातघ्नैः स्नेहगण्डूषधारणैः ॥
भद्रदार्वादिवर्षाभूलेपैः स्निग्धैश्च भोजनैः ।
चलमुद्धृत्य च स्थानं विदहेच्छुषिरस्य च ॥
ततो विदारीयष्ट्याह्वशृङ्गाटककसेरुकैः ।
तैलं दशगुणे क्षीरे सिद्धं नस्ये हितं भवेत् ॥

कृमिदंतकनी चिकित्सा.

२१ कृमिदंतक जो अचल होय तो तेने स्वेदन संस्कार आपी लोहीना स्रावणोथी, वायुने हणनारां. अवपीड नामनां नस्योथी, स्नेहोना कोगळा मोहोडामां रखाववाथी, भद्रदारु आदि वर्ग के जे सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलो छे तेना तथा साटोडीना लेपोथी अने स्निग्ध भोजनो देवाथी मटाडवो.

कृमिदंतक जो चळ होय तो तेने चीपीयावते के बीजा यंत्रवते काहाडी नाखी छिद्रना स्थानक उपर अग्निक्रिया करवी अने ते पछी दशगणा दूधमां फगवेलानो कंद, जेठीमध, शींगोडां अने कसेरुकंद एओनो कल्क नाखीने पकावेला तैलनुं नस्य देवुं.

२२ हनुमोक्षे समुद्दिष्टां कुर्याच्चार्दितवत्क्रियाम् ।

हनुमोक्षनी चिकित्सा.

२२ हनुमोक्ष थएल होय तो आ स्थानना चोथा अध्यायना वीशमा विषयमां कहेली स्नेहन आदि चिकित्साओ करवी अने पांचमा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेली अर्दितनी चिकित्सा प्रमाणे पण चिकित्सा करवी.

२३ फलान्यम्लानि शीताम्बु रूक्षान्नं दन्तधावनम् ॥
तथातिकठिनान्भक्ष्यान्दन्तरोगी विवर्जयेत् ।

दांतना रोगवाळाए पाळवानी परेजी.

२३ दांतना रोगवाळा माणसे खाटां फळो खावां नहीं, टाढुं पाणी पीवुं नहीं, रूक्ष अन्न जमवुं नहीं, दांतण करवुं नहीं अने जे भक्ष्यो अत्यंत कठण होय ते पण खावां नहीं.

२४ साध्यानां दन्तरोगाणां चिकित्सितमुदीरितम् ॥
जिह्वागतानां साध्यानां कर्म वक्ष्यामि सिद्धये ।

दांतोना रोगोनी चिकित्सानो उपसंहार अने जीभना रोगोनी चिकित्सानो उपक्रम.

२४ दांतोना आठ रोगोमां उपर लखेला पांच रोगो के जेओ साध्य छे तेओनी आ चिकित्सा कही. (बाकीना त्रण रोगो असाध्य छे माटे तेओनी चिकित्सा कही नथी.) हवे जीभना पांच रोगोमां जेओ साध्य छे तेओने टाळवा माटे चिकित्सा कहुं छुं.

२५ ओष्ठप्रकोपेऽनिलजे यदुक्तं प्राक् चिकित्सितम् ॥
कण्टकेष्वनिलोत्थेषु तत्कार्यं भिषजा भवेत् ।

जीभना रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

वातकंटकनी चिकित्सा.

२५ वातकंटक थएल होय तो विचक्षण वैद्ये आ अध्यायना बीजा विषयमां वायुथी थएला होठना रोगनी जे चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते चिकित्सा करवी. (गळो; पीपळ अने लींबडो एओनो तीखा पदार्थोनी साथे कोळीयो पण आपवो.)

२६ पित्तजेषु विघृष्टेषु निःसृते दुष्टशोणिते ॥
प्रतिसारणगण्डूषं नस्यं च मधुरं हितम् ।

पित्तकंटकनी चिकित्सा.

२६ पित्तकंटक थएल होय तो ते कांटाओने काळा ऊंबरानां तथा गळजीभीनां पानडांओ वगेरेथी घसी दुष्ट रुधिर काहाडी नाखवुं अने ते पछी मधुर द्रव्योथी प्रतिसारण करावचुं, मधुर द्रवोनो कोगळो करावचो अने मधुर नस्य देवुं ए हितकारी छे.

२७ कण्टकेषु कफोत्थेषु लिखितेष्वसृजः क्षये ॥
पिप्पल्यादिर्मधुयुतः कार्यस्तु प्रतिसारणे ।
गृह्णीयात्कवलांश्चापि गौरसर्षपसैन्धवैः ॥
पटोलनिम्बवार्त्ताकुक्षारयूषैश्च भोजयेत्

कफकंटकनी चिकित्सा.

२७ कफकंटक थएल होय तो ते कांटाओने शस्त्रथी खोंतरीने तेओमांथी लोहीनुं स्रावण करवुं. बगडेलुं लोही नीकळी जाय त्यारे पिप्पल्यादि गणना चूर्णने मधमां कालवीने तेथी प्रतिसारण करावचुं. सफेद सर्षपो तथा सैंधव एओना कोळीआ देवा अने पटोल, लींबडो, रींगणां तथा जवखार एओथी सारी पेठे संयुक्त करेला यूषोनी साथे भोजनो करावचां.

२८ उपजिह्वां तु संलिख्य क्षारेण प्रतिसारयेत् ॥
शिरोविरेकगण्डूषधूमैश्चैनामुपाचरेत् ।

उपजिह्विकानी चिकित्सा.

२८ उपजिह्विका थएल होयतो शस्त्रवते खोतरीने जवखारथी प्रतिसारण करावचुं अने शिरोविरेचन, कफने तथा रुधिरने हणनारां द्रवोना कोगळा तथा तेवाज प्रकारनां धूमपानो एओ पण करावचां.

२९ जिह्वागतानां कर्मोक्तं तालव्यानां प्रवक्ष्यते ॥

जीभना रोगोनी चिकित्सानो उपसंहार अने ताळवाना रोगोनी चिकित्सानो उपक्रम.

२९ जीभना पांच रोगोमां उपर कहेला चार रोगो के जेओ साध्य छे तेओनी आ चिकित्सा कही. (बाकीनो एक रोग असाध्य छे माटे तेनी चिकित्सा कही नथी.) हवे ताळवाना रोगोमां जेओ साध्य छे तेओनी चिकित्सा कहुं छुं.

३० अङ्गुष्ठाङ्गुलिसन्दंशेनाकृष्य गलशुण्डिकाम्।
छेदयेन्मण्डलाग्रेण जिह्वोपरि तु संस्थिताम् ॥
नोत्कृष्टं चैव हीनं च त्रिभागं छेदयेद्भिषक् ।
अत्यादानात्स्रवेद्रक्तं तन्निमित्तं म्रियेत च ॥
हीनच्छेदाद्भवेच्छोफो लाला निद्रा भ्रमस्तमः ।
तस्माद्वैद्यः प्रयत्नेन दृष्टकर्मा विशारदः ॥
गलशुण्डीं तु संछिद्य कुर्यात्प्राप्तमिमं क्रमम् ।
मरिचातिविषापाठावचाकुष्ठकुटन्नटैः ॥
क्षौद्रयुक्तैः सलवणैस्ततस्तां प्रतिसारयेत् ।
वचामतिविषां पाठां रास्नां कटुकरोहिणीम् ॥
निःक्काथ्य पिचुमन्दं च कवलं तत्र योजयेत् ।
इङ्गुदीकिणिहीदन्तीसरलासुरदारुभिः ॥
पञ्चाङ्गीङ्कारयेत्पिष्टैर्वर्त्तिं गन्धोत्तरां शुभाम् ।
ततो धूमं पिबेज्जन्तुर्द्विरह्नः कफनाशनम् ॥
क्षारसिद्धेषु मुद्गेषु यूषश्चाप्यशने हितः ।

ताळवाना रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

गलशुंडिकानी चिकित्सा.

३० गलशुंडिका थएली होय तो जीभनी उपर रहेली ते गलशुंडिकाने अंगूठाना तथा आंगळीना चीपीआवते खेंची मंडलाग्र[1] नामना शस्त्रवते कापी नाखवी. तेमां वधारे भाग पण न कपाई जाय अने ओछुं पण न कपाय एम करवुं एटले तेना त्रण भागमां अढी भागने अवशेष रेहेवा दईने बाकीनो भाग कापी नाखवो ? (वाग्भट केहे छे के ग-

१ फळाना प्रदेशमां तर्जनी आंगळीना अंदरना नखना जेवी आकृ[illegible]वाळुं शस्त्र मंडलाग्र केहेवाय छे. (वाग्भट सूत्रस्थान अध्याय २६ मो.)

लशुंडिकाने अत्यंत मूळमां पण न कापवी अने अत्यंत अग्रमां पण न कापवी.) अत्यंत कापी नाखवामां आवे तो लोहीनो स्राव थाय छे के जेथी रोगी मरी जाय छे अने ओछी कापवामां आवे तो सोजो, लाल, निद्रा, भ्रम तथा अंधकारनो देखाव उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे थाय छे एटला माटे जेणे वृद्ध अने विद्वान् वैद्योना हाथथी थती घणी घणी क्रियाओ जोएली होय एवा प्रवीण वैद्येज गलशुंडिका कापवी. गलशुंडिकाने काप्या पछी मरी, अतवस, काळीपाड, वज, कठ, अरडूसो अने सैंधव एओना चूर्णने मधमां कालवीने तेथी प्रतिसारण कराववुं. वज, अतवस, काळीपाड, रास्ना, कडु अने लींबडो एओनो क्वाथ करी ते क्वाथथी संयुक्त करेला कोळीयानी योजना करवी. इंगोळीयो, वावुंगां, नेपाळो, नमोतर अने देवदार ए पांच द्रव्योने वाटी तेओनी बीजां घणां सुगंध द्रव्यवाळी सुंदर पोली वाट बनावी ते वाटने छेडामां सळगावीने तेनो दिवसमां बे वार धूमाडो पावो के जेथी कफनो नाश थई जाय. जवखारना जलमां पकावेला मगनो यूष गलशुंडिकाना रोगीने भोजनमां देवो ए हितकारी छे.

३१ तुण्डिकेर्यध्रुषे कूर्मे सङ्घाते तालुपुप्पुटे ॥
एष एव विधिः कार्यो विशेषः शस्त्रकर्मणि ।

तुंडिकेरी, अध्रुष, मांसकच्छप, मांससंघात अने तालुपुप्पुट एओनी चिकित्सा.

३१ तुंडिकेरी, अध्रुष, मांसकच्छप, मांससंघात के तालुपुप्पुट थएल होय तो उपर लखेली गलशुंडिकानी चिकित्सा प्रमाणेज चिकित्सा करवी पण तेमां शस्त्रक्रियामां जे फेरफार सूत्रस्थानना २९ अध्यायमां कहेलो छे ते उपर ध्यान आपवुं. (मांससंघात अने अध्रुष एओनुं छेदन करवुं, तालुपुप्पुट अने तुंडिकेरी एओनुं भेदन करवुं अने मांसकच्छप के जे मांसनी ऊंचाईरूप छे तेनुं लेखन करवुं तथा छेदन करवा जेवी स्थिति होय तो छेदन पण करवुं.)

३२ तालुपाके तु कर्तव्यं विधानं पित्तनाशनम्

तालुपाकनी चिकित्सा.

३२ तालुपाक थएल होय तो पित्तने नष्ट करे एवी चिकित्सा करवी. (वाग्भट केहे छे के तालुपाक काचो होय तो ते उपर हीराकसी, मध तथा रसवंती एओथी प्रतिसारण–घर्षण कराववुं तथा पित्तने हरनारा स्वरसादिक शीत कषायोथी तथा काकोल्यादि मधुर द्रव्योथी बनावेलो कोळीयो देवो अने पाको होय तो तेने चोपाटनी पेठे भेदवो, तीक्ष्ण तथा उष्ण द्रव्योथी प्रतिसारण कराववुं अने अरडूसो, लींबडो तथा पटोल आदि तिक्त पदार्थोनो कोळीयो देवो.)

३३ स्नेहस्वेदौ तालुशोषे विधिश्चानिलनाशनः ।

तालुशोषनी चिकित्सा.

३३ तालुशोष थएल होय तो स्नेहन तथा स्वेदन करवां अने वायुने तथा पित्तने नष्ट करनारी चिकित्सा करवी. (वाग्भट केहे छे के तालुशोष थएल होय तो जम्या पछी घी पावुं, पीपळ तथा सूंठ नाखी पकावेलुं जळ पावुं, कांजी वगेरे अम्ल पदार्थोना कोगळानुं धारण कराववुं, जांगल प्राणीओनां मांसोना स्निग्ध रसो भोजनमां देवा अने दूधनुं तथा घीनुं नस्य देवुं.)

३४ कीर्त्तितं तालुजानां तु कण्ठ्यानां कर्म वक्ष्यते ॥

ताळवाना रोगोनी चिकित्सानो उपसंहार अने कंठना रोगोनी चिकित्सानो उपक्रम.

३४ ताळवाना नव रोगोमां उपर कहेला आठ रोगो के जेओ साध्य छे तेओनी आ चिकित्सा कही. (बाकीनो एक रोग असाध्य छे तेनी चिकित्सा कही नथी.) हवे कंठना रोगोमां जेओ साध्य छे तेओनी चिकित्सा कहुं छुं.

३५ साध्यानां रोहिणीनां तु हितं शोणितमोक्षणम्।
छर्दनं धूमपानं च गण्डूषो नस्य कर्म च ॥

कंठना रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

चार रोहिणीओनी सामान्य चिकित्सा.

३५ वातरोहिणी, पित्तरोहिणी, कफरोहिणी अने रक्तरोहिणी ए चार रोहिणीओ के जेओ साध्य छे तेओमांथी कोई पण थएली होय तो शस्त्रवते लेखन करी लोहीनुं स्रावण करवुं, वमन कराववुं, धूमपान कराववुं, कोळीयो देवो अने नस्य देवुं. (जे निदाननी रोहिणी होय ते निदानने टाळे एवां धूमपानादिक कराववां.)

३६ वातिकीं तु हृते रक्ते लवणैः प्रतिसारयेत् ।
सुखोष्णान्स्नेहगण्डूषान्धारयेच्चाप्यभीक्ष्णशः ॥

वातरोहिणीनी विशिष्ट चिकित्सा.

३६ वात-रोहिणी थएली होय तो लोहीनुं निर्हरण कर्या पछी वारंवार लूणो घसाववां अने सेहेवाय तेवा ऊना स्नेहना कोगळाओ वारंवार मोहोडामां धारण कराववा.

३७ पतङ्गशर्कराक्षौद्रैः पैत्तिकीं प्रतिसारयेत् ।
द्राक्षापरूषककाथो हितश्च कवलग्रहे ॥

पित्तरोहिणीनी विशिष्ट चिकित्सा.

३७ पित्तरोहिणी थएली होय तो पतंग तथा साकर एओने मधमां कालवीने तेथी प्रतिसारण कराववुं अने द्राक्षना तथा फालसां(धामणा)ना काथथी गोठवेलो कोळीओ मुखमां धराववो ए हितकारी छे.

३८ आगारधूमकटुकैः श्लैष्मिकीं प्रतिसारयेत्।
श्वेताविडङ्गदन्तीषु तैलं सिद्धं ससैन्धवम् ॥
नस्यकर्मणि योक्तव्यं तथा कवलधारणे ।

कफरोहिणीनी विशिष्ट चिकित्सा.

३८ कफरोहिणी थएली होय तो घरना धुमाडानी धूंस, सूंठ, मरी तथा पीपळ एओथी प्रतिसारण कराववुं (घसाववुं) अने सफेद गरणी, वावडींग तथा नेपाळो एओना काथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलमां सैंधव मिश्रित करीने ते तैलनी नस्यमां तथा कोळीआमां योजना करवी.

३९पित्तवत्साधयेद्वैद्यो रोहिणीं रक्तसम्भवाम्॥

रक्तरोहिणीनी विशिष्ट चिकित्सा.

३९ रक्तरोहिणी थएली होय तो वैद्ये उपर कहेली पित्तरोहिणीनी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी.

४०विस्राव्य कण्ठशालूकं साधयेत्तुण्डिकेरिवत्।
एककालं यवान्नं च भुञ्जीत स्निग्धमल्पशः ॥

कंठशालूकनी चिकित्सा.

४० कंठशालूक थएल होय तो लोहीनुं स्रावण करीने पछी तुंडिकेरीनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी (आ अध्यायनो ३१ मो विषय जुवो.) अने एक वखतज स्निग्ध तथा थोडुं जवनुं अन्न जमाडवुं.

४१ उपजिह्विकवच्चापि साधयेदधिजिह्विकाम् ।

अधिजिह्वनी चिकित्सा.

४१ अधिजिह्व थएल होय तो तेनी उपजिह्विकानी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी. (आ अध्यायनो २८ मो विषय जुवो.)

४२ एकवृन्दं तु विस्राव्य विधिं शोधनमाचरेत्

एकवृंदनी चिकित्सा.

४२ एकवृंद थएल होय तो लोहीनुं स्रावण करीने पछी शोधन चिकित्सा करवी. (आ रोगने सूत्रस्थानना २५ मा अध्यायना ३ जा विषयमां भेद्य कह्यो छे.)

४३ गिलायुश्चापि यो व्याधिस्तं च शस्त्रेण साधयेत् ।

गिलायुनी चिकित्सा.

४३ गिलायु थएल होय तो तेने शस्त्रवते भेदी नाखवो.

४४ अमर्मस्थं सुपक्कं च भेदयेद्गलविद्रधिम् ॥

गलविद्रधिनी चिकित्सा.

४४ गलविद्रधि जो मर्मस्थलमां न होय अने सारी पेठे पाको होय तो तेने शस्त्रवते भेदी नाखवो. (वाग्भट केहे छे के गलविद्रधि थएल होय तो शस्त्रवते लोहीनुं स्रावण करीने सैंधव, गोरोचन, रसवंती, सोनागेरु, लोदर, शाहाजीरूं, पतंग अने पीपळ एओथी प्रतिसारण कराववुं तथा एओनीज योजना करीने कोगळो देवो.)

(कंठना रोगोमां उपर कहेला नव रोगो के जेओ साध्य छे तेओनी आ चिकित्सा कही. बाकीना रोगो असाध्य छे तेथी चिकित्सा कही नथी. सूत्रस्थानना २९ अध्यायना ३ जा विषयमां वृंदनी भेदन करवारूप चिकित्सा तो कही छे. भावप्रकाशमां वृंदनी चिकित्सा एकवृंदनी चिकित्सा प्रमाणे करवानुं कह्युं छे.)

४५ घातात्सर्वसरं चूर्णैर्लवणैः प्रतिसारयेत् ।
तैलं वातहरैः सिद्धं हितं कवलनस्ययोः ॥
ततोऽस्मै स्नैहिकं धूममिमं दद्याद्विचक्षणः ।
शालराजादनैरण्डसारेङ्गुदिमधूकजाः ॥
मज्जानो गुग्गुलुध्याममांसीकालानुसारिवाः ।
श्रीसर्जरसशैलेयमधूच्छिष्टानि वाहरेत् ॥
तत्सर्वं सुकृतं चूर्णं स्नेहेनालोड्य युक्तितः ।
टुण्टूकवृन्तं सक्षौद्रं मतिमांस्तेन लेपयेत् ॥
एष सर्वसरे धूमः प्रशस्तः स्नैहिको मतः ।
कफघ्नो मारुतघ्नश्च मुखरोगविनाशनः ॥

सघळा मोहोडामां थएला रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

वायुथी थएला सर्वसरनी चिकित्सा.

४५ जो सर्वसर वायुथी थएलो होय तो सैंधव, संचळ, बीडलूण, वडागरूं अने दरीयाई लूण एओनां चूर्णथी प्रतिसारण कराववुं, (ए चूर्ण घसाववुं) वातहर द्रव्योना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनी कोळीयामां तथा नस्यमां योजना करवी अने पछी नीचेप्रमाणे स्नैहिक धुमाडो पावो.

राळ, राण, एरडो, बेहेडां वगेरे फलो, इंगोळीयो अने महुडो एओनी मज्जा लाववी. अथवा गुगळ, रोहिष नामनुं सुगंधी खड, जटामांसी, काळी उपलसरी, लवींग, राळ, शीलाजीत अने मीण एओने लाववां. ए सर्वने एकठां करी बारीक चूर्ण करी जोईता घीथी तथा मधथी मिश्रित करी ते चूर्णने अरडूसानी डांडली उमर चोमेर चडावी देवुं अने तेनो धुमाडो पावो. सर्वसर उपर आ स्नैहिक धुमाडो अति उत्तम छे. आ धुमाडो कफने तथा वायुने मटाडे छे अने मुखना रोगोनो विनाश करे छे.

४६ पित्तात्मके सर्वसरे शुद्धकायस्य देहिनः ।
सर्वः पित्तहरः कार्यो विधिर्मधुरशीतलः ॥
प्रतिसारणगण्डूषधूमसंशोधनानि च ।

पित्तथी थएला सर्वसरनी चिकित्सा.

४६ जो सर्वसर पित्तथी थएलो होय तो रोगीने वमनादिकथी शुद्ध करीने पछी पित्तनुं हरण करनारी सघळी मधुर तथा शीतल चिकित्सा करवी. पित्तहर द्रव्योथीज प्रतिसारण, धूमपान, कोगळो तथा संशोधन करावनां.

४७ कफात्मके सर्वसरे विधिं कुर्यात्कफापहम् ।
पिवेदतिविषां पाठां मुस्तं च सुरदारु च ।
रोहिणीं कटुकाख्यां च कुटजस्य फलानि च ॥
गवां मूत्रेण मनुजो भागैर्धरणसम्मितैः ।
एष सर्वान्कफकृतान्रोगान्योगोऽपकर्षति ॥

कफथी थएला सर्वसरनी चिकित्सा.

४७ जो सर्वसर कफथी थएलो होय तो कफनुं हरण करनारो विधि करवो. अतवस, काळीपाड, मोथ, देवदार, कडु अने कडाफल एटले इंद्रजव एओनुं चूर्ण करी तेमांथी चोवीश चोवीश चणोठी भार लईने नित्य गोमूत्रनी साथे पावुं. आ योग कफथी उत्पन्न थएला सघळां रोगोने नष्ट करेछे.

४८ क्षीरेक्षुरसगोमूत्रदधिमस्त्वम्लकाञ्जिकैः ।
विदध्यात्कवलान्वीक्ष्य दोषं तैलघृतैरपि ।

सघळा मुखरोगो उपर कवळो (कोळीयाओ) बनाववानी गोठवण.

४८ वैद्ये दोषोनां बलाबल जोईने दूध, शेलडीनो रस, गोमूत्र, दहीं, दहींनी तर, दहींनुं पाणी तथा खाटी कांजी एओनी तथा तैल अने घी एओनी पण कोळीयाओमां योजना करवी.

४९ रोगाणां मुखजातानां साध्यानां कर्म कीर्त्तितम् ॥
असाध्या अपि वक्ष्यन्ते रोगा ये यत्र कीर्तिताः ।
ओष्ठप्रकोपा वर्ज्याः स्युर्मांसरक्तत्रिदोषजाः ॥
दन्तमूलेषु वर्ज्यौ तु त्रिलिङ्गगतिशौषिरौ ।
दन्तेषु च न सिध्यन्ति श्यावदालनभञ्जनाः ॥
जिह्वागतेष्वलासस्तु तालव्येष्वर्बुदं तथा ।
स्वरघ्नो वलयो वृन्दो बलासश्च विदारिका ॥
गलौघो मांसतानश्च शतघ्नी रोहिणी गले ॥
असाध्याः कीर्त्तिता ह्येते रोगा नव दशैव च ।

मुखना रोगोनी चिकित्सानो उपसंहार अने तेओमां असाध्य रोगोनी संख्या.

४९ मुखना रोगोमां जेटला रोगो साध्य छे तेओनी चिकित्सा केहेवामां आवी. हवे मुखना रोगोमां जेटला असाध्य रोगो छे तेओनी कुल संख्या आपीएछीए.

होठना रोगोमां मांसथी थएलो, रुधिरथी थएलो अने त्रणे दोषोथी थएलो ए त्रण रोगो असाध्य छे. (रुधिरथी थएला होठना रोगनी चिकित्सा तो केहेवामां आवी छे!!)

दांतोनां मूळोना रोगोमां त्रणे दोषोथी थएली नाडी अने महाशौषिर ए बे रोगो असाध्य छे.

दांतोना रोगोमां श्यावदंतक, दालन अने भंजनक ए त्रण रोगो असाध्य छे.

जीभना रोगोमां अलास नामनो एक रोग असाध्य छे.

ताळवाना रोगोमां तात्वर्बुद नामनो एक रोग असाध्य छे.

कंठना रोगोमां स्वरघ्न, वलय, वृंद, बलास, विदारिका, गलौघ, मांसतान, शतघ्नी अने त्रणे दोषोथी थएली रोहिणी ए नव रोगो असाध्य छे. (सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायना ३ जा विषयमां वृंदनी भेदन करवारूप चिकित्सा लखी छे ते छतां अहीं तेने असाध्य गण्यो छे!)

आ प्रमाणे मुखना रोगोमां कुल १९ रोगो असाध्य छे.

५० तेषां चापि क्रियां वैद्यः प्रत्याख्याय समाचरेत्

उपर कहेला असाध्य रोगोनी चिकित्सा करवानी वखतपर छूट.

५० मुखरोगोमां उपर जे ओगणीश रोगो असाध्य जणाव्या तेओनी चिकित्सा करवानी प्रथम तो वैद्ये नाज पाडवी. पछी जो रोगी वगेरेनो आग्रह देखाय तो दोषानुसार चिकित्सा करवी.

अध्याय २३ मो.

१ अथातः शोफानां चिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शोफचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ षड्विधोऽवयवसमुत्थः शोफोऽभिहितो-लक्षणतः प्रतीकारतश्च । सर्वसरस्तु पञ्चविधः । तद्यथा । वातपित्तश्लेष्मसन्निपातविषनिमित्तः ॥

सर्वसर[1] (सघळा शरीरमां अथवा शरीरना मोटा भागमां फेलाएला) सोजानां मुख्य निदानो.

२ शरीरना एकाद अवयवमां ऊठेला छ प्रका-

---

१ आखा शरीरमां अथवा शरीरना मोटा भागमां फेलाएला सोजाओनां निदान तथा चिकित्सादिक विषयनो.

रना सोजानां लक्षणो तथा चिकित्साओ आ स्थानना पेहेला अध्यायमां केहेवाई गएल छे. (हवे सर्वसर एटले सघळा शरीरमां अथवा शरीरना मोटा भागमां फेलाएलो सोजो के जे उपर कहेला सोजाथी भिन्न लक्षणोवाळो तथा भिन्न चिकित्साओवाळो छे ते विषे कहीए छीए.)

वायुथी थएल, पित्तथी थएल, कफथी थएल, त्रणे दोषोथी थएल अने विषथी थएल ए रीते सर्वसर सोजो पांच प्रकारनो छे.

३ तत्रापि तर्पितस्याध्वगमनादतिमात्रमभ्यवहरतो वा पिष्टान्नहरितकशाकलवणानि क्षीणस्य वातिमात्रमम्लमुपसेवमानस्य मृत्पकलोष्टशर्करानूपौदकमांससेवनादजीर्णिनो वा ग्राम्यधर्मसेवनाद्विरुद्धाहारसेवनाद्धस्त्यश्वोष्ट्ररथपदातिसङ्क्षोभणाद्दोषा धातून्प्रदूष्य श्वयथुमापादयन्त्यखिले शरीरे ॥

विषथी थएला सर्वसर सोजा शिवाय बाकीना पांच प्रकारना सर्वसर सोजाओनां दूरनां निदानो तथा संप्राप्ति.

३ अन्नादिक वते तृप्त थया पछी पंथ करवाथी, पीठांनां अन्नो लीलां शाको तथा लूणो एओनुं अत्यंत भक्षण करवाथी, शरीरमां क्षीणता छतां खाटा रसनुं अत्यंत सेवन करवाथी, माटीनुं अतिसेवन थयाथी, पाकेली माटीना टुकडाओनुं अतिसेवन थयाथी, कांकरीओनुं अतिसेवन थयाथी, आनूप के जलचर प्राणीओनां मांसोनुं अत्यंत सेवन करवाथी, अजीर्ण छतां मैथुननुं सेवन करवाथी, सूत्रस्थानना २० मा अध्यायमां कहेला विरुद्ध आहारोनुं सेवन करवाथी, हाथी घोडो ऊंट के रथ इत्यादिक उपर बेसवाने लीधे लागेला हडदोलाथी अने प्यादल चालतां लागेला हडदोलाथी प्रकुपित थएला दोषो धातुओने दूषित करीने सघळा शरीरमां सोजाने उत्पन्न करे छे.

४ तत्र वातश्वयथुररुणः कृष्णो वा मृदुरनवस्थितस्तोदादयश्चात्र वेदनाविशेषाः ॥

वायुथी थएला सर्वसर सोजानुं लक्षण.

४ जो सघळा शरीरमां थएलो सोजो रातो अथवा काळो होय, कोमळ होय, चंचल होय अने तेमां सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा वगेरे वेदनाओ थती होय तो जाणवुं के ए सोजो वायुथी थएलो छे.

५ पित्तश्वयथुः पीतो रक्तो वा शीघ्रानुसारी पचोषादयश्चात्र वेदनाविशेषाः ॥

पित्तथी थएला सर्वसर सोजानुं लक्षण.

५ जो सघळा शरीरमां थएलो सोजो पीळो अथवा रातो होय, शीघ्र गति करनारो होय अने तेमां बळतरा तथा चोस वगेरे वेदनाओ थती होय तो जाणवुं के ए सोजो पित्तथी थएलो छे.

६ श्लेष्मश्वयथुः पाण्डुः शुक्लो वा स्निग्धः कठिनः शीतो मन्दानुसारी कण्ड्वादयश्चात्र वेदनाविशेषाः ॥

कफथी थएला सर्वसर सोजानुं लक्षण.

६ जो सघळा शरीरमां थएलो सोजो पांडु अथवा सफेद होय, स्निग्ध होय, कठण होय, शीतल होय, मंद मंद गति करनारो होय अने तेमां खरज तथा भारेपणा वगेरे वेदनाओ थती होय तो जाणवुं के ए सोजो कफथी थएलो छे

७ सन्निपातश्वयथुः सर्ववर्णवेदनः ॥

त्रणे दोषोथी थएला सर्वसर सोजानुं लक्षण.

७ जो सघळा शरीरमां थएलो सोजो उपर कहेला सर्व वर्णोवाळो तथा उपर कहेली सर्व वेदनाओवाळो होय तो जाणवुं के ए सोजो त्रणे दोषोथी थएलो छे.

८ विषनिमित्तस्तु गरोपयोगाद्दुष्टतोयसेवनात्प्रकोथोदकावगाहनात्सविषसत्वदिग्धचू-

र्णेनावचूर्णनाद्वा सविषमूत्रपुरीषशुक्रस्पृष्टानां तृणकाष्ठादीनां संस्पर्शनात् । स तु मृदुः क्षिप्रोत्थानोऽवलम्बी चलो वा दाहपाकप्रायश्च भवति ॥

विषथी थएला सोजानां दूरनां निदानो तथा लक्षण.

८ बाहार अथवा अंदर झेरनो उपयोग थवाथी, दुष्ट जळना सेवनथी, दुर्गंधवाळा सडेला पाणीमां नाहावाथी, झेरी प्राणीनां मूत्रादिकथी खरडाएलां चूर्णो वते शरीर खरडायाथी अने झेरी प्राणीओनां मूत्रोनो विष्टाओनो के वीर्योनो स्पर्श पामेला खड तथा काष्ठ वगेरे पदार्थोनो स्पर्श थवाथी झेर सघळा शरीरमां सोजाने उत्पन्न करे छे.

जो सघळा शरीरमां थएलो सोजो कोमळ होय, तुरत ऊठेलो होय, लटकतो अथवा चंचल होय, बहु बळतरावाळो होय अने बहु पाकवाळो होय तो जाणवुं के ए सोजो झेरथी थएलो छे.

९ भवन्ति चात्र ॥

दोषाः श्वयथुमूर्द्ध्वं हि कुर्वन्त्यामाशयस्थिताः ।
पक्वाशयस्था मध्ये च वर्चःस्थानगतास्त्वधः ॥
कृत्स्नं देहमनुप्राप्ताः कुर्युः सर्वसरं तथा ।

कया प्रदेशमां रहेला दोषो कया प्रदेशमां सोजाने उत्पन्न करे छे.

९ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "दोषो आमाशयमां रहेला होय तो छातीथी उपरना भागमां सोजाने उत्पन्न करे छे, पक्वाशयमां रहेला होय तो छातीनी अने पक्वाशयनी वचमां सोजाने उत्पन्न करे छे, विष्टाना स्थानकमां रहेला होय तो पक्वाशयथी नीचेना भागमां सोजाने उत्पन्न करे छे अने सघळा देहमां व्याप्या होय तो सघळा देहमां सोजाने उत्पन्न करे छे.

१० श्वयथुर्मध्यदेशे यः स कष्टः सर्वगश्च यः ॥
अर्द्धाङ्गेऽरिष्टभूतश्च यश्चोर्द्ध्वं परिसर्पति ।

सोजानुं कष्टसाध्यपणुं तथा अरिष्टरूपपणुं.

१० जे सोजो छातीना तथा पक्वाशयना मध्यमां थयो होय अथवा जे सोजो सघळा शरीरमां व्याप्यो होय ते सोजो कष्टसाध्य छे. जे सोजो अर्द्धनारीश्वरने आकारे अरधा शरीरमां थयो होय ते सोजो पण मरणना चिह्न जेवो छे[१].

११ श्वासः पिपासा दौर्बल्यं ज्वरश्छर्दिररोचकः ।
हिक्कातिसारः कासश्च शूनं सङ्क्षपयन्ति हि ॥

सोजाने असाध्य क्यारे गणवो?

११ श्वास, तरश, दुर्बलपणुं, ज्वर, उलटी, अरुचि, हेडकी, अतीसार अने खांसी एओ सोजावाळाने मारी नाखे छे."

१२ सामान्यतो विशेषाच्च तेषां वक्ष्यामि भेषजम् ।

सोजाओनुं सामान्य तथा विशेष चिकित्सित केहेवानी प्रतिज्ञा.

१२ सोजाओनी विशिष्ट चिकित्सा प्रथम कहीश अने ते पछी सामान्य चिकित्सा कहीश.

१३ शोफिनः सर्व एव परिहरेयुरम्ललवणदधिगुडवसापयस्तैलघृतपिष्टमयगुरूणि ॥

सोजाना दरदीओए छोडी देवाना पदार्थो.

१३ सोजावाळा सघळा लोकोए खाटा पदा-

१ आ विषयमां एटलुं विशेष समजवानुं छे के "पुरुषने पगमां थएलो सोजो जो मुखतरफ जाय अने ते सोजो जो अतीसार, ग्रहणी तथा अरश आदि बीजा रोगोना उपद्रवरूपे न थयो होय अर्थात् पोतानां निदानोथीज थयो होय तो पुरुषने मारी नाखे छे. स्त्रीने मुखमां थएलो सोजो जो पग तरफ जाय अने ते सोजो जो अतीसार, ग्रहणी तथा अरश आदि बीजा रोगोना उपद्रवरूपे न थयो होय अर्थात् पोतानां निदानोथीज थयो होय तो स्त्रीने मारी नाखे छे. मूत्राशयमां थएलो जे सोजो बीजा रोगोना उपद्रवरूपे न थयो होय पण पोतानां निदानोथीज थयो होय ते सोजो पुरुषने अने स्त्रीने बन्नेने मारी नाखे छे.

र्थोनो, खारा पदार्थोनो, दहींनो, गोळनो, चरबीनो, दूधनो, तैलनो, घीनो, पिष्टमय पदार्थोनो अने भारेपणांवाळां अन्नादिकनो त्यागज करवो जोइए.

१४ तत्र वातश्वयथौ त्रैवृतमैरण्डतैलं वा मासमर्द्धं मासं वा पाययेत् । न्यग्रोधादिकषायसिद्धं सर्पिः पित्तश्वयथौ । आरग्वधादिसिद्धं श्लेष्मश्वयथौ । सन्निपातश्वयथौ स्नुहीक्षीरपात्रे द्वादशभिरम्लपात्रैः प्रतिसंसृष्टे दन्तीप्रतिवापं सर्पिः पाचयित्वा पाययेत् । विषनिमित्ते कल्पेषु प्रतीकारः ॥

सर्वसर सोजाओनी विशिष्ट चिकित्सा.

१४ जो वायुथी सर्वसर सोजो थयो होय तो एक महिनासूधी के अरधा महिनासूधी त्रैवृत घी पावुं. (आ स्थानना पांचमा अध्यायनो पंदरमो विषय जुवो.) अथवा एरंडीयुं तैल पावुं.

जो सर्वसर सोजो पित्तथी थयो होय तो न्यग्रोधादि गणना क्वाथमां पकावेलुं घी एक महिनासूधी के अरधा महिनासूधी पावुं.

• जो सर्वसर सोजो कफथी थयो होय तो आरग्वधादि गणना क्वाथमां पकावेलुं घी एक महिनासूधी के अरधा महिनासूधी पावुं.

जो सर्वसर सोजो सन्निपातथी एटले त्रणे दोषोथी थयो होय तो थोरनुं बसो छप्पन्न तोलांभार छीर लई तेने तेथी बारगणी खाटी कांजीथी मिश्रित करी तेमां नेपाळाना प्रतिवापवाळुं घी पकावीने ते घी एक महिनासूधी के अरधा महिनासूधी पावुं. (पाक सिद्ध थवा आवे ते वखते जे द्रव्य नाखवामां आवे ते प्रतिवाप केहेवाय छे.)

जो सर्वसर सोजो विषथी थयो होय तो तेनी कल्पस्थानमां जे चिकित्सा केहेवामां आवशे ते करवी. (कल्पस्थानना ७ मा अध्यायनो २ जो विषय जुवो. बीजा पण अनेक अगदो ए स्थानमां केहेवामां आवशे.)

१५ अथातः सामान्यचिकित्सितं व्याख्यास्यामः॥

तिल्वकघृतचतुर्थानि यान्युक्तान्युदरेषु तु ततोऽन्यतममुपयुज्यमानं श्वयथुमपहन्ति । मूत्रवर्त्तिक्रियां वा सेवयेत् । नवायसं वाहरहर्मधुना । विडङ्गातिविषाकुटजफलभद्रदारुनागरमरिचचूर्णं वा धरणमुष्णाम्बुना । त्रिकटुक्षारायश्चूर्णानि वा त्रिफलाकषायेण । मूत्रं तुल्यक्षीरं हरीतकीं वा तुल्यगुडामुपयुञ्जीत । देवदारु शुण्ठीं वा गुग्गुलुं वा मूत्रेण । वर्षाभूकषायानुपानं तुल्यगुडं शृङ्गबेरं वा वर्षाभूककषायं मूलकल्कं वा सशृङ्गबेरं पयोऽनुपानमहरहर्मासम् । व्योषवर्षाभूकषायसिद्धेन वा सर्पिषा मुद्गोलुम्बान्भक्षयेत् । पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकमयूरकवर्षाभूसिद्धं वा क्षीरं पिबेत् । महौषधमुरङ्गीमूलसिद्धं वा । त्रिकटुकैरण्डमूलश्यामामूलसिद्धं वा । वर्षाभूशृङ्गबेरसह्वादेवदारुसिद्धं वा । तथालाबूविभीतकफलकल्कं वा तण्डुलाम्बुना ॥

क्षारपिप्पलीमरिचशृङ्गबेरानुविद्धेन च मुद्गयूषेणालवणेनाल्पस्नेहेन भोजयेद्यवान्नं गोधूमान्नं वा । वृक्षकार्कनक्तमालनिम्बवर्षाभूक्वाथैश्च परिषेकः सर्षपसौवर्चलसैन्धवशार्ङ्गेष्टाभिश्च प्रदेहः कार्यः । यथादोषं च विरेचनास्थापनानि तीक्ष्णान्यजस्रमुपसेवेत स्नेहस्वेदोपनाहांश्च शिराभिश्चाभीक्ष्णं शोणितमवसेचयेदन्यत्रोपद्रवशोफादिति ।

सर्वसर सोजाओनी सामान्य चिकित्सा.

१५ हवे सर्वसर सोजाओनी सामान्य चिकित्सा कहीए छीए. आ स्थानना उदररोगोनी चिकित्साविषयना १४ मा अध्यायना नवमा विषयमां जे त्रण प्रकारनां घी कहेलां छे ते त्रण अने चोथुं आ स्थानना चोथा अध्यायना एकवीशमा विषयमां कहेलुं तिल्वक नामनुं घी ए चार घीमांथी गमे ते घीनो नित्य उपयोग कराववामां आवे तो ते घी सोजाने नष्ट करें छे.

आ स्थानना उदररोगोनी चिकित्साविषयना १४ अध्यायना नवमा विषयना वीशमा पारिग्राफमां जे आनाहवर्त्ति (खवराववानी वाटो) केहेवामां आवी छे तेओनुं नित्य सेवन करावामां आवे तो तेओ सोजाने नष्ट करे छे.

आ स्थानना प्रमेहपिडकाचिकित्सित नामना १२ मा अध्यायना नवमा विषयमां जे नवायस केहेवामां आव्युं छे तेनो मधनी साथे नित्य उपयोग करावामां आवे तो ते नवायस सोजाने नष्ट करे छे.

वावडींग, अतवस, इंद्रजव, देवदार, सूंठ अने मरी एओनुं चूर्ण करी तेमांथी एक महिनासूधी नित्य चोवीश चणोठी भार चूर्णनो ऊना पाणीनी साथे उपयोग करावामां आवे तो ते चूर्ण सोजाने नष्ट करे छे.

सूंठ, मरी, पीपळ, जवखार अने लोढुं एओना चूर्णनो एक महिनासूधी नित्य त्रिफळाना काथनी साथे उपयोग करावामां आवे तो ते चूर्ण सोजाने नष्ट करे छे.

आठ तोलांभार गोमूत्र अने आठ तोलांभार दूध एओने मिश्रित करी पावामां आवे अने ते उपर सोजाने हरनारां द्रव्योनुं अनुपान पावामां आवे तो तेथी एक महिनानी अंदर सोजो नष्ट थई जाय छे.

नित्य एक तोलांभार हरडेनुं चूर्ण अने एक तोलांभार गोळ एओने मिश्रित करी खवरावामां आवे अने ते उपर सोजाने हरनारां द्रव्योनुं अनुपान पावामां आवे तो तेथी एक महिनामां सोजो नष्ट थई जाय छे.

नित्य देवदारनो, सूंठनो के गुगळनो कल्क गोमूत्रनी साथे पावामां आवे अने ते उपर सोजाने हरनारां द्रव्योनुं अथवा सेहेज ऊना करेला पाणीनुं अनुपान पावामां आवे तो तेथी एक महिनामां सोजो नष्ट थई जाय छे.

नित्य एक तोलांभार आदु अने एक तोलांभार गोळ एओने मिश्रित करीने खवरावामां आवे अने ते उपर साटोडीना काथनुं अनुपान पावामां आवे तो तेथी एक महिनामां सोजो नष्ट थई जाय छे.

आदुथी मिश्रित करेलो साटोडीनो काथ अथवा साटोडीनां मूळनो कल्क नित्य पावामां आवे अने ते उपर दूधनुं अनुपान देवामां आवे तो तेथी एक महिनामां सोजो नष्ट थई जाय छे.

सूंठ, मरी, पीपळ अने साटोडी एओना काथमां पकावेला घीनी साथे नित्य मगना ओळाओनुं (पोंखनुं) भक्षण करावामां आवे तो तेथी सोजो नष्ट थई जाय छे.

पीपळ, पीपळीमूळ, चवक, चित्रक, अघेडो अने साटोडी एओना काथमां पकावेलुं दूध नित्य पावामां आवे तो तेथी सोजो नष्ट थई जाय छे.

सूंठ अने सरगवानां मूळ एओना काथमां पकावेलुं दूध नित्य पावामां आवे तो तेथी सोजो नष्ट थई जाय छे.

सूंठ, मरी, पीपळ, एरडानां मूळ अने नसोतरनां मूळ एओना काथमां पकावेलुं दूध नित्य पावामां आवे तो तेथी सोजो नष्ट थई जाय छे.

साटोडी, आदु, जंगली अडद अने देवदार एओना काथमां पकावेलुं दूध नित्य पावामां आवे तो तेथी सोजो नष्ट थई जाय छे.

कडवी तूंबडी अने बेहेडाना फळनो कल्क चोखाना धोणनी साथे नित्य पावामां आवे तो तेथी सोजो नष्ट थई जाय छे.

सोजावाळा माणसने जवखार, पीपळ, मरी, तथा आदु एओथी संयुक्त करेला, लूणवगरना अने थोडा स्नेहवाळा मगना यूपनी साथे जवनुं अथवा घउंनुं अन्न जमाडवुं. इंद्रजव, आकडो, करंज, लींबडो अने साटोडी एओना काथोथी सोजावा-

ळाना शरीर उपर परिषेचन करवुं. सर्षप, संचळ, सैंधव अने पीलुडी एओनो सोजावाळाना शरीर उपर प्रलेप करवो. जे दोषथी सोजो थयो होय ते दोषने टाळे एवां तीक्ष्ण विरेचनो तथा तीक्ष्ण निरूहबस्तिओ एओनुं तथा तेवाज प्रकारना स्नेहोनुं, स्वेदोनुं अने उपनाहोनुं पण सर्वदा सेवन करावvुं. सोजावाळो माणस जो बळवान् होय तो शिराओने वींधीने वारंवार लोहीनुं स्रावण पण करवुं.

जे सोजो पोतानां निदानोथी थयेलो होय तेने माटे उपर कहेली चिकित्सा छे पण जे सोजो बीजा रोगना उपद्रवरूपे थएल होय तेने माटे ए चिकित्सा नथी एम समजवुं.

१६ भवति चात्र ॥

पिष्टान्नमम्लं लवणानि मद्यं मृदं दिवास्वप्नमजाङ्गलं च । स्त्रियो घृतं तैलपयोगुरूणि शोफं जिघांसुः परिवर्जयेत्तु ॥

सोजावाळाए पाळवानी परेजीनुं विशेष निरूपण.

१६ सोजाने नष्ट करवानी इच्छावाळा रोगीए पिष्टमय अन्नो, लूणो, मद्य, माटी, दिवसनी निद्रा, जांगल प्राणिओविना बीजां प्राणिओनुं मांस, स्त्रीप्रसंग, घी, तेल, दूध अने भारे पडे एवा पदार्थो एओनो त्याग करवो.

अध्याय २४ मो.

१ अथातोऽनागताबाधप्रतिषेधनीयं चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अनागताबाधप्रतिषेधनीयं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२उत्थायोत्थाय सततं स्वस्थेनारोग्यमिच्छता । धीमता यदनुष्ठेयं तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यते ॥

आ अध्यायनो समुदायात्मक विषय.

२ सर्वदा आरोग्यने इच्छनारा बुद्धिमान् स्वस्थ माणसे पूर्ण प्रयत्न राखीने नित्य जे कांई करवुं जोइए ते सघळुं आ अध्यायमां केहेवामां आवशे.

३ तत्रादौ दन्तपवनं द्वादशाङ्गुलमायतम् ।
कनिष्ठिकापरीणाहमृज्वग्रथितमव्रणम् ॥
अयुग्मग्रन्थि यच्चापि प्रत्यग्रं शस्तभूमिजम् ।
अवेक्ष्यर्तुं च दोषं च रसं वीर्यं च योजयेत् ॥
कषायं मधुरं तिक्तं कटुकं प्रातरुत्थितः ।
निम्बश्च तिक्तके श्रेष्ठः कषाये खदिरस्तथा ॥
मधूको मधुरे श्रेष्ठः करञ्जः कटुके तथा ।
क्षौद्रव्योषत्रिवर्गाक्तं सतैलं सैन्धवेन च ॥
चूर्णेन तेजोवत्याश्च दन्तान्नित्यं विशोधयेत् ।
एकैकं घर्षयेद्दन्तं मृदुना कूर्चकेन च ॥
दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमांसान्यबाधयन् ॥
तद्दौर्गन्ध्योपदेहौ तु श्लेष्माणं चापकर्षति ।
वैशद्यमन्नाभिरुचिं सौमनस्यं करोति च ॥
न खादेद्गलताल्वोष्ठजिह्वारोगसमुद्भवे ।
अथास्यपाके श्वासे च कासहिक्कावमीषु च ॥
दुर्बलोऽजीर्णभक्तश्च मूर्छार्तो मदपीडितः ।
शिरोरुगार्त्तस्तृषितः श्रान्तः पानक्लमान्वितः ॥
अर्दिती कर्णशूली च दन्तरोगी च मानवः ।

दातण करवानो विधि तथा कोणे कोणे दातण नहीं करवुं ते.

३ प्रभातमां ऊठीने दातण करवुं ते बार आं-

१ डल्हन तो सौवर्चलने बदले 'सुवर्चला' एवो पाठ मानीने 'सुवर्चला एटले सूरजमुखी' एवो अर्थ आपे छे.

२ भविष्य विकारोने अटकावनारी पद्धति बताववारूप विषयवाळो अथवा अहोरात्रमां अनुक्रमथी सर्व ऋतुओनुं संक्रमण थवाने लीधे ते ते समयमां दोषोनां जे थोडां थोडां संचय प्रकोपादिक थाय छे ते संबंधी विकारोने अटकाववानी पद्धति बताववारूप विषयवाळो.

गळ लांबुं, टचली आंगळीनी अणी जेवुं जाडुं, सरल, गांठवगरनुं, कोतरवगरनुं, गांठवगरनुं न मळे तो एकथी वधारे गांठवगरनुं, नवुं अने सारा प्रदेशमां उगेला वनस्पतिनुं करवुं. ऋतु, दोष, रस तथा वीर्य एओ उपर ध्यान आपीने तूरा, मधुर, कडवा के तीखा दातणनी योजना करवी. कडवां दातणोमां लींबडानुं दातण श्रेष्ठ छे, तूरां दातणोमां खेरनुं दातण श्रेष्ठ छे. मधुर दातणोमां महुडानुं दातण श्रेष्ठ छे अने तीखां दातणोमां करंजनुं दातण श्रेष्ठ छे. मध, सूंठ, मरी, पीपळ, तज, तमालपत्र, एळची, तेल अने सैंधव एओमांथी जे पदार्थो प्रकृतिने अनुकूल जणाय ते पदार्थोथी दातणना कुचाने खरडीने तेथी दांतोने घसवा. नित्य तेजबळना चूर्णथी पण दांतोने शुद्ध करवा. दातणना कोमळ कुचामां दांतोने शुद्ध करनारूं चूर्ण चडावी, दांतोनां पेढांओने हरकत न आवे एवी रीते ते कुचावते एक एक दांतने घसवो. दातण करवाथी मोहोडानुं दुर्गंधपणुं, मळथी खरडाएलापणुं तथा अंदरनो दुष्ट कफ टळी जाय छे, स्वच्छपणुं थाय छे, अन्न उपर रुचि थाय छे अने मनमां प्रसन्नता थाय छे.

परंतु गळानो, ताळवानो, होठनो के जीभनो रोग उत्पन्न थयो होय, मोहोडुं पाक्युं होय, श्वास थयो होय, खांसी थई होय, हेडकी थई होय के उलटीनुं दरद होय तो दांतण करवुं नहीं. नबळा माणसे, जेने अन्न पच्युं न होय ते माणसे, मूर्छाना दरदीए, मदथी पीडाएलाए, माथाना दरदीए, तृषाथी पीडाएलाए, थाकेलाए, कोई पण द्रव पीवाथी जेने क्लम थयो होय तेणे, अर्दित रोगवाळाए, कानना शूळवाळाए अने दांतना रोगवाळाए दातण करवुं नहीं.

४ जिह्वानिर्लेखनं रौप्यं सौवर्णं वार्क्षमेव च ॥
तन्मलापहरं शस्तं मृदु श्लक्ष्णं दशाङ्गुलम् ।
मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यशोफजाड्यहरं सुखम् ॥

जीभनी ओळ उतारवानुं साधन केवुं राखवुं अने तेथी शा शा लाभो थाय.

४ जीभनी ओळ उतारवानी सळी दश आंगळ लांबी राखवी अने ते रूपानी, सोनानी अथवा झाडनी राखवी. कोमळ तथा लीसी राखेली ए सळीवते ओळ उतारवाथी मोहोडानुं विरसपणुं, दुर्गंध, सोजो तथा जडपणुं टळे छे अने सुख प्राप्त थाय छे.

५ दन्तदार्ढ्यकरं रुच्यं स्नेहगण्डूषधारणम् ।
क्षीरवृक्षकषायैर्वा क्षीरेण च विमिश्रितैः ॥

मोहोडामां स्नेहनो अथवा काथादिकनो कोगळो धरवाथी लाभ.

५ मोहोडामां स्नेहनो अथवा दूधथी मिश्रित करेला वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना काथादिकनो कोगळो धरवो. ए कोगळो धरवाथी रुचि उत्पन्न थाय छे अने दांतोनुं दृढपणुं थाय छे. (क्षीरिवृक्षोना काथादिकथी रुधिरनी दुष्टता पण टळी जाय छे.)

६ भिल्लोदककषायेण तथैवामलकस्य वा ।
प्रक्षालयेन्मुखं नेत्रे स्वस्थः शीतोदकेन वा ॥
नीलिकां मुखशोषं च पिडकां व्यङ्गमेव च ।
रक्तपित्तकृतान्रोगान्सद्य एव विनाशयेत् ॥

मोहोडुं तथा नेत्रो धोवाना द्रवो अने तेओवते धोवाथी लाभ.

६ स्वस्थ माणसे भिल्लोदकना[1] काथादिकथी मोहोडुं धोवुं अने आमळाना काथादिकथी नेत्रो धोवां अथवा ए बन्नेने शीतल जळवते धोवां. आम करवाथी नीलिका, मोहोडानो शोष, फोडलीओ, व्यंग अने रुधिरथी तथा पित्तथी थएला रोगो तुरतज नष्ट थई जाय छे.

१ डल्हन आ विषयमां कशो विशेष खुलासो नहीं आपतां एटलुंज केहे छे के पर्वतमां केदारभूमिमां भिल्लोदक प्रसिद्ध छे.

७ सुखं लघु निरीक्षेत दृढं पश्यति चक्षुषा ।
मतं स्रोतोऽञ्जनं श्रेष्ठं विशुद्धं सिन्धुसम्भवम्॥
दाहकण्डूमलघ्नं च दृष्टिक्लेदरुजापहम् ।
अक्ष्णो रूपावहं चैव सहते मारुतातपौ ॥
न नेत्ररोगा जायन्ते तस्मादञ्जनमाचरेत् ।
भुक्तवाञ्छिरसा स्नातः श्रान्तश्छर्दनवाहनैः ॥
रात्रौ जागरितश्चापि नाञ्ज्याज्ज्वरित एव च ।

नेत्रोमां सुरमो आंजवाविषे.

७ सिंधुनदना समीप देशमां उत्पन्न थतो काळो सुरमो के जे श्रेष्ठ अने शुद्ध छे ते नेत्रोमां आंजवो. ए सुरमो आंजवाथी नेत्रोवते अत्यंत झीणी चीज पण सारी रीते जोवामां आवे छे, जोवानी शक्ति दृढ थाय छे अने नेत्रोनां बळतरा, खरज, मळ, क्लेद, तथा व्यथा टळी जाय छे. सुरमो आंजवाथी नेत्रोनो सारो देखाव थाय छे, नेत्रोने पवननुं तथा तडकानुं सहन करवानी शक्ति प्राप्त थाय छे अने नेत्रोमां रोगो उत्पन्न थता नथी एटला माटे सुरमो आंजवो जोइए.

परंतु जमेलाए, माथे नाहेलाए, उलटी के पंथ करवा वगेरेथी थाकेलाए, जेणे रात्रे उजागरो कर्यो होय तेणे अने जेने ज्वर आवतो होय तेणे सुरमो आंजवो नहीं.

८ कर्पूरजातिकक्कोललवङ्गकटुकाह्वयैः ॥
सचूर्णपूगैः सहितं पत्रं ताम्बूलजं शुभम् ।
मुखवैशद्यसौगन्ध्यकान्तिसौष्ठवकारकम् ॥
हनुदन्तस्वरमलजिह्वेन्द्रियविशोधनम् ।
प्रसेकशमनं हृद्यं गलामयविनाशनम् ।
पथ्यं सुप्तोत्थिते भुक्ते स्नाते वान्ते च मानवे ।
रक्तपित्तक्षतक्षीणतृष्णामूर्छापरीतिनाम् ॥
रूक्षदुर्बलमर्त्यानां न हितं चास्यशोषिणाम् ।

नागरवेलनुं पान चाववा विषे.

८ कपूर, जायफळ, चणकबाब, लवींग, सूंठ, मरी, पीपळ तथा सोपारीनुं चूर्ण एओथी संयुक्त करेलुं नागरवेलनुं पान चाववुं ए शुभकारी छे. पान चाववाथी मोहोडानुं स्वच्छपणुं, सुगंधपणुं, कांति तथा सारापणुं थाय छे, होठनो तथा दांतनो मेल दूर थाय छे, स्वर साफ थाय छे, जीभ शुद्ध थाय छे, लाळनुं झरवुं शांत थाय छे, हृदयमां आनंद थाय छे अने गळाना रोगो टळी जाय छे. सुई उठ्या पछी, जम्या पछी, नाह्या पछी अने उलटी कर्या पछी पान चाववुं ए पथ्य छे.

परंतु लोहीना दरदी, पित्तना दरदी, क्षतथी क्षीण थएला, तरशथी घेराएला, मूर्छाथी पीडाएला, रूक्ष, दुर्बळ अने मोहोडाना शोषवाळा एओने पान चाववुं हितकारी नथी.

९ शिरोगतांस्तथा रोगाञ्छिरोऽभ्यङ्गोऽपकर्षति
केशानां मार्दवं दैर्घ्यं बहुत्वं स्निग्धकृष्णताम् ।
करोति शिरसस्तृप्तिं सुत्वक्कमपि चाननम् ॥
सन्तर्पणं चेन्द्रियाणां शिरसः प्रतिपूरणम् ।
मधुकं क्षीरशुक्लां च सरलं देवदारु च ॥
क्षुद्रकं पञ्चनामानं समभागानि संहरेत् ।
तेषां कल्ककषायाभ्यां चक्रतैलं विपाचयेत् ॥
सदैव शीतलं जन्तोर्मूर्ध्नि तैलं प्रदापयेत् ।

माथामां तैलना अभ्यंग विषे.

९ माथामां करवामां आवेलो तैलनो अभ्यंग माथांनां दरदोने मटाडे छे, केशोने कोमळ लांबा घणा स्निग्ध तथा काळा करे छे, माथाने तृप्त करे छे, मोहोडाने सुंदर त्वचावाळुं करे छे, इंद्रियोने तृप्त करे छे, अने माथामां शून्यताने टाळीने पूर्णता करे छे.

जेठीमध, सफेद विदारीकंद, चंद्रस, देवदार अने लघुपंचमूळ एओने सम भागे लई तेओना क्वाथथी अने कल्कथी घाणीनुं ताजुं तैल पकाववुं. आ शीतल तैलथी नित्य माणसना माथामां अभ्यंग कराववो.

१० केशप्रसाधनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ॥

वाळ ओळवानी कांकसी विषे.

१० वाळ ओळवानी कांकसी केशोनुं हित

करनारी छे अने रज, जू वगेरे जंतुओ तथा मेल एओने हणनारी छे.

११ हनुमन्याशिरःकर्णशूलघ्नं कर्णपूरणम् ।

कानोमां तैल नाखवा विषे.

११ कानोमां तैल नाखवाथी दाढीनां, ओडनां, माथानां अने कानोनां शूळो टळी जाय छे.

१२ अभ्यङ्गो मार्दवकरः कफवातनिरोधनः ॥
धातूनां पुष्टिजननो मृजावर्णबलप्रदः ।

शरीरपर तैलनो अभ्यंग.

१२ शरीरपर तैलनो अभ्यंग करवाथी कोमळता थाय छे, कफनो तथा वायुनो निरोध थाय छे, धातुओनी पुष्टि थाय छे, स्वच्छता थाय छे, वर्ण सारो थाय छे अने बळनी वृद्धि थाय छे.

१३ सेकः श्रमघ्नोऽनिलहृद्भग्नसन्धिप्रसाधकः ॥
क्षताग्निदग्धाभिहतविघृष्टानां रुजापहः ।
जलसिक्तस्य वर्द्धन्ते यथा मूलेऽङ्कुरास्तरोः ॥
तथा धातुविवृद्धिर्हि स्नेहसिक्तस्य जायते ।
शिरामुखै रोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयन् ॥
शरीरे बलमाधत्ते युक्तः स्नेहोऽवगाहने ।
तत्र प्रकृतिसात्म्यर्त्तुदेशदोषविकारवित् ॥
तैलं घृतं वा मतिमान्युञ्ज्यादभ्यङ्गसेकयोः ।
केवलं सामदोषेषु न कथञ्चन योजयेत् ॥
तरुणज्वर्यजीर्णी च नाभ्यक्तव्यौ कथञ्चन ।
तथा विरिक्तो वान्तश्च निरूढो यश्च मानवः ॥
पूर्वयोः कृच्छ्रता व्याधेरसाध्यत्वमथापि वा ।
शेषाणां तदहः प्रोक्ता अग्निमान्द्यादयो गदाः ॥

तैलनुं के घीनुं अंगोपर सेचन अने नाहावामां पण तेओनो उपयोग.

१३ अंगो उपर तैलनुं अथवा घीनुं सेचन श्रमने टाळे छे, वायुनुं हरण करे छे, भांगेला सांधाओने साजा करे छे अने जखमी थएल, अग्निथी दग्ध थएल, अभिघात पामेल तथा छोलाएल एओनी वेदनाने पण टाळे छे. जेम मूळमां जळनुं सेचन करवाथी वृक्षना अंकुरो वृद्धि पामे छे तेम अंगोपर स्नेहनुं सेचन करवाथी माणसोना धातुओ वृद्धि पामे छे.

नाहावामां गोठवेलो स्नेह शिराओनां मुखोथी, रुवाडांओनां छिद्रोथी अने धमनीओथी शरीरमां पेसी शरीरने तृप्त करीने शरीरमां बळने दाखल करे छे.

बुद्धिमान् वैद्ये प्रकृति, सात्म्य, ऋतु, देश, दोष अने विकार एओनी उपर ध्यान आपीने अभ्यंगमां तथा सेचनमां तैलनी अथवा घीनी गोठवण करी देवी.

जे दोषो आमवाळा होय तेओनी उपर केवल स्नेहना अभ्यंगनी के सेचननी योजना करवी नहीं. तरुण ज्वरवाळा तथा अजीर्णवाळा माणसने कदी पण अभ्यंग कराववो नहीं. विरेचित थएलाने, जेणे वमन कर्युं होय तेने अने जेने निरूहबस्ति दीधी होय तेने पण अभ्यंग कराववो नहीं. तरुण ज्वरवाळाने के अजीर्णवाळाने अभ्यंग कराववामां आवे तो तेओना व्याधिओ कष्टसाध्य थई पडे छे अथवा असाध्य पण थई जाय छे. विरेचित थएला वगेरेने तेज दिवसे अभ्यंग करावदामां आवे तो अग्निनी मंदता वगेरे रोगो उत्पन्न थाय छे.

१४ सन्तर्पणसमुत्थानां रोगाणां नैव कारयेत् ।
शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम् ॥
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात्समन्ततः ।
शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता ॥
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ।
श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता ॥
आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते ।
न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित्स्थौल्यापकर्षणम् ॥
न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो भयात् ।
नचैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ॥
स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ।
व्यायामक्षुण्णगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्त्तितस्य च ॥
व्याधयो नोपसर्पन्ति सिंहं क्षुद्रमृगा इव ।
वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम् ॥

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥
व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ।
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः ॥
सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः ।
बलस्यार्द्धेन कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥
हृदि स्थानस्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते ।
व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्द्धस्य लक्षणम् ॥
वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च ।
समीक्ष्य कुर्याद्व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात् ॥
क्षयस्तृष्णारुचिच्छर्दिरक्तपित्तभ्रमक्लमाः ।
कासशोपज्वरश्वासा अतिव्यायामसम्भवाः ॥
रक्तपित्ती कृशः शोषी श्वासकासक्षतातुरः ।
भुक्तवान्स्त्रीषु च क्षीणो भ्रमार्त्तश्च विवर्जयेत् ॥

कसरतनो विधि अने निषेध.

१४ कसरत करवारूप काम के जे शरीरने परिश्रम आपनारूं छे ते काम जेओने भोजनादिकथी अत्यंत तृप्त थवाने लीधे रोगो उत्पन्न थया होय तेओनी पासे कराववुं नहीं.

कसरत कर्‍या पछी शरीरनुं कोमळ रीते चोतरफ मर्दन कराववुं (शरीरने चंपाववुं.)

कसरत करवाथी शरीरनी पुष्टि थाय छे, कांति वधे छे, गात्रोनी सारी घटना थाय छे, अग्नि प्रदीप्त थाय छे, आलस्य उत्पन्न थतुं नथी, अवयवोनी स्थिरता हलकाई तथा साफाई थाय छे, श्रम क्लम तरश उष्ण तथा शीत इत्यादिकनुं सहन करवानी शक्ति उत्पन्न थाय छे अने परम आरोग्य प्राप्त थाय छे. शरीरना जाडापणाने टाळनारूं कसरत जेवुं बीजूं कांई पण साधन नथी. शत्रुओ कसरत करनारा माणसथी भय पामे छे तेथी कदी पण तेने पीडता नथी. जरा (घडपण) पण कसरत करनारा माणसने एकदम दबावीने तेनापर चडी शकती नथी. कसरत करवाना अभ्यासीनुं मांस पण दृढ थई जाय छे. जेम क्षुद्र मृगो सिंहनी पासे जई शकता नथी तेम व्याधिओ कसरतथी कसाएलां गात्रोवाळा अने पगोने तैलथी चोळावी चूर्णादिकथी स्वच्छ करावनारा माणसनी पासे जई शकता नथी. जे माणस नित्य कसरत करतो होय ते माणस यौवनथी, रूपथी तथा गुणोथी रहित होय तोपण कसरत तेने सारा देखाववाळो करी दे छे. विरुद्ध, बराबर नहीं पाकेलुं तथा काचुं अन्न पण नित्य कसरत करनारा माणसने निर्दोष रीते पची जाय छे.

बळवाळा अने स्निग्ध भोजन करनारा माणसोने कसरत सर्वदा पथ्यरूप छे अने वसंतऋतुमां तथा शीतकाळमां तो अत्यंत पथ्यरूप छे. पोताना हितने इच्छनारा पुरुषोए सघळी ऋतुओमां नित्य अरधा बळथी कसरत करवी जोइए. जो अरधा बळथी उपरांत कसरत करवामां आवे तो ते कसरतज पुरुषोने मारी नाखे छे. हृदयमां स्थानपर रहेलो वायु ज्यारे कसरत करतां करतां मुखमां प्राप्त थाय अर्थात् माणस हांफवा लागे त्यारे अरधुं बळ थई रह्युं केहेवाय छे.[1]

कसरत करवी ते अवस्थाने, बळने, शरीरने, देशने, काळने तथा भोजनने जोइने करवी. एओने जोया विना कसरत करवामां आवे तो रोगनी प्राप्ति थाय छे. कसरतनो अतियोग थयाथी क्षय, तरश, अरुचि, उलटी, रक्तपित्त, भ्रम, क्लम, खांसी, शोष, ज्वर अने श्वास एओ उत्पन्न थाय छे.

रक्तपित्तवाळाए, कृश शरीरवाळाए, शोषवाळाए, श्वासवाळाए, खांसीवाळाए, क्षतवाळाए, जमेलाए, स्त्रीओना अतिप्रसंगथी क्षीण थएलाए अने भ्रमथी पीडालाए कसरत करवी नहीं.

१ केटलाएक अहीं एवा अर्थवाळो पाठ बोले छे के 'ज्यारे कसरत करतां करतां काख, ललाट, नासिका अने हाथ पग वगेरेना संधिओ एओमां पसीनो आवे अने मोहोडामां शोष पडे त्यारे अरधुं बळ थई रह्युं केहेवाय छे.'

१५ उद्वर्त्तनं वातहरं कफमेदोविलापनम् ।
स्थिरीकरणमङ्गानां त्वक्प्रसादकरं परम् ॥

अंगोने तैलादिकथी चोळाववं.

१५ अंगोने तैलादिकवते चोळाववाथी वायुनुं हरण थाय छे, कफ तथा मेद पीगळी जाय छे, अवयवोनी दृढता थाय छे अने चामडी अत्यंत स्वच्छ थाय छे.

१६ शिरामुखविविक्तत्वं त्वक्स्थस्याग्नेश्च तेजनम्
उद्धर्षणोत्सादनाभ्यां जायेयातामसंशयम् ॥
उत्सादनाद्भवेत्स्त्रीणां विशेषात्कान्तिमद्वपुः ।
प्रहर्षसौभाग्यमृजालाघवादिगुणान्वितम् ॥
उद्धर्षणंतु विज्ञेयं कण्डूकोठानिलापहम् ।
ऊर्वोः सञ्जनयत्याशु फेनकः स्थैर्यलाघवे ॥
कण्डूकोठानिलस्तम्भमलरोगापहश्च सः ।
तेजनं त्वग्गतस्याग्नेः शिरामुखविरेचनम् ॥
उद्धर्षणं त्विष्टिकया कण्डूकोठविनाशनम् ।

स्नेहथी, साबूथी, अरीठाथी अने औषधोना चूर्णादिकथी संस्कारनां फलो.

१६ औषधोना चूर्णथी तथा औषधोना स्नेहयुक्त कल्कथी शरीरने घसाववाथी शिराओनां मोहोडांओ चोखां थाय छे अने त्वचामां रहेलो अग्नि प्रदीप्त थाय छे ए निस्संशय छे.

औषधोना स्नेहयुक्त कल्कवते चोळाववाथी स्त्रीओनुं शरीर विशेष कांतिवाळुं, आनंदवाळुं, सौभाग्यवाळुं, साफाईवाळुं अने हलकापणा वगेरे गुणोवाळुं थाय छे.

औषधोना चूर्णवते घसाववाथी खरज, धामठां अने दुष्ट वायु नष्ट थाय छे. साबू अने अरीठा एओना चोलवाथी साथळोमां दृढता तथा हलकाई प्राप्त थाय छे अने खरज, धामठां, वायुथी स्तब्धपणुं तथा मेलसंबंधी रोगो नष्ट थई जाय छे.

शरीरने इंटना चूर्णवते घसाववाथी त्वचामां रहेलो अग्नि प्रदीप्त थाय छे, शिराओनां मोहोडांओ स्वच्छ थई जाय छे अने खरज तथा धामठां नष्ट थई जाय छे.

१७ निद्रादाहश्रमहरं स्वेदकण्डूतृषापहम् ॥
हृद्यं मलहरं श्रेष्ठं सर्वेन्द्रियविशोधनम् ।
तन्द्रापापोपशमनं तुष्टिदं पुंस्त्ववर्द्धनम्
रक्तप्रसादनं चापि स्नानमग्नेश्च दीपनम् ।
उष्णेन शिरसः स्नानमहितं चक्षुषः सदा ॥
शीतेन शिरसः स्नानं चक्षुष्यमिति निर्दिशेत् ।
श्लेष्ममारुतकोपे तु ज्ञात्वा व्याधिबलाबलम् ॥
काममुष्णं शिरःस्नानं भैषज्यार्थं समाचरेत् ।
अतिशीताम्बु शीते च श्लेष्ममारुतकोपनम् ॥
अत्युष्णमुष्णकाले च पित्तशोणितवर्द्धनम् ।
तच्चातिसारज्वरितकर्णशूलानिलार्त्तिषु ॥
आध्मानारोचकाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ।

स्नान.

१७ नाहावाथी निद्रा, दाह, श्रम, पसीनो, खरज तथा तरश मटी जाय छे, हृदय प्रसन्न थाय छे, मेल टळी जाय छे, सघळी इंद्रियो शुद्ध थाय छे, तंद्रा तथा पाप शांत थाय छे, संतोष थाय छे, पुरुषपणानी वृद्धि थाय छे, रुधिर स्वच्छ थाय छे अने अग्नि प्रदीप्त थाय छे.

सर्वदा ऊना पाणीथी माथापर नाहावुं ए चक्षुनुं अहित करनार छे अने टाढा पाणीथी माथे नाहावुं ए चक्षुनुं हित करनार छे. परंतु कफनो के वायुनो प्रकोप थयो होय त्यारे वैद्ये व्याधिना बलाबळने जाणी औषधने माटे पोतानी इच्छा प्रमाणे ऊना पाणीथी रोगीने माथे नवराववो.

अत्यंत शीतकाल होय त्यारे अत्यंत शीतल पाणीथी स्नान करवामां आवे तो कफनो तथा वायुनो प्रकोप थाय छे अने अत्यंत उष्णकाल होय त्यारे अत्यंत ऊना पाणीथी स्नान करवामां आवे तो पित्तनी तथा रुधिरनी वृद्धि थाय छे.

अतिसारवाळाए, ज्वरवाळाए, कानना शूळवाळाए, वायुना रोगवाळाए, आध्मानवाळाए, अरुचिवाळाए, अजीर्णवाळाए अने जमेलाए स्नान करवुं नहीं.

१८ सौभाग्यदं वर्णकरं प्रीत्योजोबलवर्द्धनम् ॥
स्वेददौर्गन्ध्यवैवर्ण्यश्रमघ्नमनुलेपनम् ।
स्नानं येषां निषिद्धं तु तेषामप्यनुलेपनम् ॥

लेपन.

१८ चंदनादिकनुं अनुलेपन करवाथी सौभाग्य थाय छे, वर्ण सारो थाय छे, प्रीतिनी ओजनी तथा बळनी वृद्धि थाय छे अने पसीनो, दुर्गंधपणुं, विवर्णपणुं तथा श्रम मटी जाय छे. जेओने स्नाननो निषेध छे तेओने अनुलेपननो पण निषेध समजवो.

१९ रक्षोघ्नमथ चौजस्यं सौभाग्यकरमुत्तमम् ।
सुमनोऽम्बररत्नानां धारणं प्रीतिवर्द्धनम् ॥

पुष्पो, रत्नो तथा वस्त्रो एओनुं धारण.

१९ पुष्पो, रत्नो तथा वस्त्रो एओनुं धारण करवाथी राक्षसोनो (दुष्ट वासनाओनो) विनाश थाय छे, ओज वधे छे, उत्तम सौभाग्य प्राप्त थाय छे अने प्रीतिनी वृद्धि थाय छे.

२० मुखालेपाद्दृढं चक्षुः पीनगण्डं तथाननम् ।
अव्यङ्गपिडकं कान्तं भवत्यम्बुजसन्निभम् ॥

मुखने तैल तथा पाणी वगेरे लगावीने साफ करवुं.

२० मुखने तैल तथा पाणी वगेरे लगावीने साफ करवाथी चक्षु दृढ थाय छे अने मुख पुष्ट गालोवाळुं, दाझवगरनुं, फोडलीओ वगरनुं तथा कमळ जेवुं सुशोभित रेहे छे.

२१ पक्ष्मलं विशदं कान्तममलोज्ज्वलमण्डलम् ।
नेत्रमञ्जनसंयोगाद्भवेच्चामलतारकम् ॥

आंजण.

२१ आंजण आंजवाथी नेत्रो सारी तथा घाटी पांपणोवाळां, चोखां, सुशोभित, निर्मळ तथा उज्वळ मंडलोवाळां अने निर्मल कीकीओवाळां रेहे छे.

२२ यशस्यं स्वर्ग्यमायुष्यं धनधान्यविवर्द्धनम् ।
देवतातिथिविप्राणां पूजनं गोत्रवर्द्धनम् ॥

देवता, अतिथि तथा ब्राह्मण एओनुं पूजन.

२२ देवताओ, अतिथिओ तथा ब्राह्मणो एओनुं पूजन करवाथी यश वधे छे, स्वर्गनी प्राप्ति थाय छे, आयुष्य वधे छे अने धननी, धान्यनी तथा वंशनी वृद्धि थाय छे.

२३ आहारः प्रीणनः सद्यो बलकृद्देहधारकः ।
आयुस्तेजःसमुत्साहस्मृत्योजोऽग्निविवर्द्धनः ॥

आहार.

२३ आहार करवाथी तुरत तृप्ति थाय छे, बळ वधे छे देहनुं धारण थाय छे अने आयुष्य, तेज, उत्साह, स्मृति, ओज तथा अग्नि एओनी वृद्धि थाय छे.

२४ पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।
चक्षुःप्रसादनं वृष्यं रक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥

पग धोवा.

२४ पग धोवाथी पगना मेल तथा रोग टळे छे, परिश्रम मटे छे, नेत्रो निर्मळ रेहे छे, वीर्यनी वृद्धि थाय छे, राक्षसोनो विनाश थाय छे अने आनंद वृद्धि पामे छे. (पगनी नाडीनी साथे नेत्रोनी नाडीने संबंध छे माटे पग धोवाथी नेत्रो निर्मल थवानुं कह्युं छे.)

२५ निद्राकरो देहसुखश्चक्षुष्यः श्रमसुप्तिनुत् ।
पादत्वङ्मृदुकारी च पादाभ्यङ्गः सदा हितः ॥
पादरोगहरं वृष्यं रक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ।
सुखप्रचारमोजस्यं सदा पादत्रधारणम् ॥
अनारोग्यमनायुष्यं चक्षुषोरुपघातकृत् ।
पादाभ्यामनुपानद्भ्यां सदा चंक्रमणं नृणाम् ॥

पगोमां तैल मालेस करावबुं तथा पगरखां पेहेरवां.

२५ पगोमां तैल मालेस करावबाथी सारी रीतनी निद्रा प्राप्त थाय छे, शरीरने सुख थाय छे,

नेत्रो सारां रेहे छे, श्रम तथा जडता टळी जाय छे अने पगोनी चामडी कोमळ थाय छे. आम छे एटला माटे सर्वदा पगोमां तैल मालेस कराववुं ए हितकारी छे.

सर्वदा पगरखां पेहेरवाथी सारी रीते फरी शकाय छे अने ओजनी वृद्धि थाय छे.

सर्वदा पगरखां वगरना उघाडा पगोथीज फरवामां आवे तो आरोग्यनी तथा आयुष्यनी हानि थाय छे अने नेत्रोनो उपघात थाय छे.

२६ पापोपशमनं केशनखरोमापमार्जनम् ॥

वाळ, नख तथा रुवाडां एओने कतराववा वगेरेथी साफ राखवां.

२६ वाळ, नख अने रुवाडां एओने कतराववा वगेरेथी साफ राखवामां आवे तो तेथी पापोनी (दुःख तथा मेल वगेरेनी) शांति थाय छे.

२७ हर्षलाघवसौभाग्यकरमुत्साहवर्द्धनम् ॥
वारवाणं मृजावर्णतेजोबलविवर्द्धनम् ।

अंगरखुं पेहेरी राखवुं.

२७ अंगरखानुं धारण करवाथी हर्ष थाय छे, शरीरमां हलकाई थाय छे, सौभाग्यनी प्राप्ति थाय छे, उत्साह वधे छे, स्वच्छता रेहे छे, वर्ण सारो रेहे छे अने तेजनी तथा बळनी वृद्धि थाय छे.

२८ पवित्रं केश्यमुष्णीषं वातातपरजोऽपहम् ॥

पाघडी पेहेरवी.

२८ पाघडी पेहेरवाथी पवित्रता थाय छे, केश सारा रहे छे अने वायु, तडको तथा रज एओथी उपघात थतो नथी.

२९ वर्षानिलरजोघर्महिमादीनां निवारणम् ।
वर्ण्यं चक्षुष्यमौजस्यं शङ्करं छत्रधारणम् ॥

छत्र धरवुं.

२९ छत्र धरवाथी वरसाद, वायु, रज, गरमी तथा थंडी इत्यादिकनुं निवारण थाय छे, वर्ण सारो रेहे छे, नेत्रो सारां रेहे छे, ओज वधे छे अने सुख थाय छे.

३० शुनः सरीसृपव्यालविषाणिभ्यो भयापहम् ।
श्रमस्खलनदोषघ्नं स्थविरे च प्रशस्यते ॥
सत्वोत्साहबलस्थैर्यधैर्यवीर्यविवर्द्धनम् ।
अवष्टम्भकरं चापि भयघ्नं दण्डधारणम् ॥

हाथमां लाकडी राखवी.

३० हाथमां लाकडी राखवाथी कूतरां, सर्पादिक, बीजां फाडी खानार जानवरो तथा शींगडांवाळां जानवरो एओनो भय थतो नथी, परिश्रम थतो नथी, मार्गमां लथडवुं पडतुं नथी के पतन पण थतुं नथी, टेको मळे छे, भय उत्पन्न थतो नथी अने सत्व, उत्साह, बळ, स्थिरता, धैर्य तथा शक्ति एओनी वृद्धि थाय छे. वृद्ध माणसोने तो हाथमां लाकडीनुं धारण बहुज उत्तम छे.

३१ आस्या वर्णकफस्थौल्यसौकुमार्यकरी सुखा ।
अध्वा तु विपरीतोऽस्याजरादौर्बल्यकृच्च सः ॥
यत्तु चंक्रमणं नातिदेहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥

बेसी रेहेवाना तथा फरवाना गुणदोष.

३१ बेसी रेहेवाथी वर्ण सारो थाय छे, कफनी वृद्धि थाय छे, शरीरनी स्थूलता थाय छे, सुकुमारपणुं रेहे छे अने सुख थाय छे.

पंथ करवाथी वर्ण, कफ, स्थूलता, सुकुमारपणुं तथा सुख एओनो नाश थाय छे, घडपण तुरत आवे छे अने दुर्बलपणुं थाय छे.

आ प्रमाणे बेसी रेहेवाथी पण केटलीक हानि छे अने पंथ करवाथी पण केटलीक हानि छे माटे बहु बेसी पण नहीं रेहेतां अने बहु पंथ पण नहीं करतां सामान्य रीते फरवानी टेव राखवी योग्य छे. जेथी देहने अत्यंत पीडा न थाय एवुं चोतरफ आम तेम फरवुं ए आयुष्यनी, बळनी,

बुद्धिनी तथा जठराग्निनी वृद्धि करे छे अने इंद्रियोने जाग्रत राखे छे.

३२ श्रमानिलहरं वृष्यं पुष्टिनिद्राधृतिप्रदम् ।
सुखं शय्यासनं दुःखं विपरीतगुणं मतम् ॥

शय्या तथा आसन स्वच्छता अने सुकोमळता आदि गुणोवाळां राखवां.

३२ स्वच्छता तथा सुकोमळता आदि गुणोवाळी शय्या तथा तेवाज गुणोवाळुं आसन श्रमने तथा वायुने हरे छे, वीर्यने वधारे छे अने पुष्टि, निद्रा तथा धीरज एओने आपे छे.

एथी विपरीत गुणोवाळी शय्या अने विपरीत गुणोवाळुं आसन परिश्रम आपे छे, वायुने उत्पन्न करे छे, वीर्यनी हानि करे छे अने पुष्टि, निद्रा तथा धीरज एओनो विनाश करे छे.

३३ वालव्यजनमोजस्यं मक्षिकादीनपोहति ।
शोषदाहश्रमस्वेदमूर्छाघ्नो व्यजनानिलः ॥

चमरीना तथा पंखाना गुणो.

३३ वाळनी चमरी ओजनी वृद्धि करे छे तथा मांखीओ वगेरेने दूर करे छे अने पंखानो पवन शोषने, दाहने, श्रमने, पसीनाने तथा मूर्छाने दूर करे छे.

३४ प्रीतिनिद्राकरं वृष्यं कफवातश्रमापहम् ।
संवाहनं मांसरक्तत्वक्प्रसादकरं सुखम् ॥

अंगचंपी कराववी.

३४ अंगचंपी कराववाथी प्रीति उपजे छे, निद्रा प्राप्त थाय छे, वीर्य वधे छे, कफ नष्ट थाय छे, वायु शांत थाय छे, परिश्रम मटी जाय छे, सुख थाय छे अने मांस, रुधिर तथा चामडी एओ निर्मळ थाय छे.

३५ प्रवातं रौक्ष्यवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपक्तिनुत् ।
स्वेदमूर्छापिपासाघ्नमप्रवातमतोऽन्यथा ॥
सुखं प्रवातं सेवेत ग्रीष्मे शरदि मानवः ।
निवातं ह्यायुषे सेव्यमारोग्याय च सर्वदा ॥

खुली हवावाळी अने खुली हवावगरनी जग्या.

३५ खुली हवावाळी जग्या रूक्षपणाने, विवर्णपणाने तथा स्तब्धपणाने करे छे, बळतराने तथा अन्नना परिपाकने मटाडे छे अने पसीनाने, मूर्छाने तथा तरशने हणे छे.

खुली हवावगरनी जग्या रूक्षपणाने, विवर्णपणाने तथा स्तब्धपणाने टाळे छे, बळतराने तथा अन्नना परिपाकने करे छे अने पसीनाने, मूर्छाने तथा तरशने उत्पन्न करे छे.

माणसे मोजने माटे ग्रीष्मऋतुमां अने शरद्ऋतुमां खुली हवावाळी जग्यानुं सेवन करवुं पण आरोग्यने माटे अने आयुष्यनी वृद्धिने माटे सर्वदा खुली हवावगरनी जग्यानुं सेवन करवुं.

३६ आतपः पित्ततृष्णाग्निस्वेदमूर्छाभ्रमास्रकृत् ।
दाहवैवर्ण्यकारी च छाया चैतानपोहति ॥

तडको अने छाया.

३६ तडको पित्तने, तरशने, अग्निने, पसीनाने, मूर्छाने, भ्रमने, रुधिरना बीगाडने, दाहने तथा विवर्णपणाने उत्पन्न करे छे अने छाया ए सघळांओने टाळे छे.

३७ अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यन्दजरणो रक्तपित्तप्रदूषणः ॥

अग्नि.

३७ अग्नि वायुने, कफने, स्तंभने शीतने तथा कंपने टाळे छे, आमने पकावे छे, अभिष्यंदने[१] मटाडे छे अने रुधिरने तथा पित्तने दूषित करे छे.

३८ पुष्टिवर्णबलोत्साहमग्निदीप्तिमतंद्रिताम् ।
करोति धातुसाम्यं च निद्रा काले निषेविता ॥

निद्रा.

३८ समयसर सेववामां आवती निद्रा पुष्टि

१ रसनुं वहन करनारी शिराओ चीकाशथी तथा भारेपणाथी रोकाई जतां शरीरमां जे भारेपणुं थाय छे ते अभिष्यंद केहेवाय छे.

आपे छे, वर्णने सारो करे छे, बळ वधारे छे, उत्साह आपे छे, जठराग्निने प्रदीप्त करे छे, आलस्यने टाळे छे अने धातुओनी समता करे छे.

३९ तत्रादित एव नीचनखरोम्णा शुचिना शुक्लवाससा लघूष्णीषच्छत्रोपानत्केन दण्डपाणिना काले हितमितमधुरपूर्वाभिभाषिणा बन्धुभूतेन भूतानां तु गुरुवृद्धानुमतेन सुसहायेनानन्यमनसा खल्वपचरितव्यं तदपि न रात्रौ न केशास्थिकण्टकाश्मतुषभस्मोत्करकपालाङ्गारामेध्यस्थानबलिभूमिषु न विषमेन्द्रकीलचतुष्पथश्वभ्राणामुपरिष्टात् ॥

न राजद्विष्टपरुषपैशुन्यानृतानि वदेत् । न देवब्राह्मणपितृपरिवादांश्च । न नरेन्द्रद्विष्टोन्मत्तपतितक्षुद्रनीचाचारानुपासीत ॥

वृक्षपर्वतप्रपातविषमवल्मीकदुष्टवाजिकुञ्जराद्यधिरोहणानि परिहरेत् पूर्णनदीसमुद्राविदितपल्वलश्वभ्रकूपावतरणानि भिन्नशून्यागारश्मशानविजनारण्यवासाग्निसंभ्रमव्यालभुजङ्गकीटसेवाग्रामाघातकलहशस्त्रसन्निपाताग्निसंभ्रमव्यालसरीसृपशृङ्गिसन्निकर्षांश्च ॥

नाग्निगोगुरुब्राह्मणप्रेङ्खादम्पत्यन्तरेणाभियायात् । न शवमनुयायात् । देवगोब्राह्मणचैत्यध्वजरोगिपतितपापकारिणां च च्छायां नाक्रमेत । नास्तं गच्छन्तमुद्यन्तं वादित्यं वीक्षेत । गान्धयन्तीं परशस्यं वा चरन्तीं परस्मै न कस्मै चिदाचक्षीत न चोल्कापातेन्द्रधनूंषि । नाग्निं मुखेनोपधमेत् । नापो भूमिं वा पाणिपादेनाभिहन्यात् ॥

न वेगान्धारयेत् । न बहिर्वेगान्ग्रामनगरदेवतायतनश्मशानचतुष्पथसलिलाशयपथिसन्निकृष्टानुत्सृजेन्न प्रकाशं न वाय्वग्निसलिलसोमार्कगोगुरुप्रतिमुखम् ॥

न भूमिं विलिखेत् । नासंवृतमुखः सदसि जृम्भोद्गारश्वासक्षवथूनुत्सृजेत् । न पर्यस्तिकावष्टम्भपादप्रसारणानि गुरुसन्निधौ कुर्यात् ॥

न वालकर्णनासास्रोतोदशनविवराण्यभिकुष्णीयात् । न चैजयेत्केशमुखनखरवस्त्रगात्राणि । न गात्रनखवक्त्रवादित्रं कुर्यात् । न काष्ठलोष्टतृणादीनभिहन्याच्छिन्द्याद्वा ॥

न प्रतिवातातपं सेवेत । न भुक्तमात्रेऽग्निमुपासीत । नोत्कटकस्तिष्ठेत् । नाल्पकाष्ठासनमध्यासीत । न ग्रीवां विषमं धारयेत् । न विषमकायः क्रियां भजेद्भुञ्जीत वा । न प्रततमीक्षेत विशेषाज्ज्योतिर्भास्करसूक्ष्मचलभ्रान्तानि । न भारं शिरसा वहेत् । न स्वप्नजागरणशयनासनचङ्क्रमणयानवाहनप्रधावनलङ्घनप्लवनप्रतरणहास्यभाष्यव्यवायव्यायामादीनुचितानप्यतिसेवेत ॥

उचितादप्यहितात् क्रमशो विरमेद्धितमनुचितमप्यासेवेत क्रमशो न चैकान्ततः पादहीनात् ॥

नावाक्शिराः शयीत न भिन्नपात्रे नाञ्जलिपुटेनापः पिबेत् । काले हितमितस्निग्धमधुरप्रायमाहारं वैद्यप्रत्यवेक्षितमश्नीयात् । ग्रामगणगणिकापणिकशत्रुशठपतितभोजनानि परिहरेत् । शेषाण्यपि चानिष्टरूपरसगन्धस्पर्शशब्दमानसान्यन्यान्येवङ्गुणान्यपि वा सम्भूय दत्तानि तान्यपि मक्षिकावालोपहतानि । नाप्रक्षालितपाणिपादो भुञ्जीत न मूत्रोच्चारपीडितो न सन्ध्ययोर्नापाश्रितो नातीतकालं हीनमतिमात्रं चेति न भुञ्जीतोद्धृतस्नेहम् ॥
नोदके पश्येदात्मानं न नग्नः प्रविशेज्जलम् ।
न नक्तं दधि भुञ्जीत न वाप्यघृतशर्करम् ॥
नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं नोष्णं नामलकैर्विना ।
अन्यथा कुष्ठविसर्पादीञ्जनयेत् ।

द्यूतमद्यातिसेवाप्रतिभूसाक्षित्वसमाह्वानगोष्ठीवादित्राणि न सेवेत ।

स्रजं छत्रोपानहं कनकमतीतवासांसि न चान्यैर्धृतानि धारयेत् । ब्राह्मणमग्निं गां च नोच्छिष्टः स्पृशेत् ॥

सदाचार.

३९ शरुआतथीज वाळ अने नख सादा राखवा. पवित्र रेहेवुं. सफेद वस्त्रो पेहेरवां. पाघडी, छत्र तथा पगरखां हलकां राखवां. हाथमां लाकडी राखवी. समयसर सामा माणसनी साथे प्रथम भाषण करवुं अने ते भाषण मधुर, हितकारी तथा मापसर करवुं. सर्व प्राणीओनी साथे बंधुनी पेठे वर्त्तवुं. बाहार जवुं होय त्यारे गुरुनी तथा वृद्ध लोकोनी रजा लई, सारा सहायने साथे राखी एकाग्रचित्तथी जवुं. राते बाहार फरवुं नहीं. वाळ, हाडकां, कांटा, पथरा, फोतरां, भस्मादिक, कचरानो समूह, ठीकरां, कोलसा के बलिदान जे जग्यामां पडेल होय ते जग्यामां फरवुं नहीं. मूत्रादिक अपवित्र पदार्थो पडवानी जग्यामां फरवुं नहीं. विषम प्रदेश, झाड के रोपा वगेरेनां ठोंडीयांवाळो प्रदेश, चौटो के खाडो एओनी उपर फरवुं नहीं.

जे वात उपर राजाने अरुचि होय ते वात करवी नहीं. कठोर बोलवुं नहीं. चाडी करवी नहीं. खोटुं बोलवुं नहीं. देवताओनी, ब्राह्मणोनी के पितृओनी निंदा करवी नहीं. राजानी जेना उपर अरुचि होय तेनी, उन्मत्तनी, पतितनी, क्षुद्रनी के नीच आचारवाळानी पासे बेसवुं नहीं.

झाड, पर्वत, पाणीनां झरणां, विषम प्रदेशो, राफडा, दुष्ट घोडा के दुष्ट हाथी इत्यादिकनी उपर चडवुं नहीं. भरपूर नदीमां, समुद्रमां, अजाण्या खातरामां, खाडामां के कूवामां उतरवुं नहीं. भांगेला के उजड पडेला घरनी पासे जवुं नहीं. श्मसानना समीपमां जवुं नहीं. उजड प्रदेशमां जवुं नहीं. अरण्यमां वास करवो नहीं. दावानलथी संभ्रम थई पड्यो होय त्यां जवुं नहीं. फाडी खानारां जनावरोनी, सर्पनी के कीडाओनी सोबत करवी नहीं. मरकी वगेरेने लीधे जे गाम ऊटतुं होय तेनी पासे पण जवुं नहीं. कर्जीयो थतो होय त्यां जवुं नहीं. शस्त्रो पडतां होय के अग्निनी लाई लागी होय त्यां जवुं नहीं. फाडी खानारां जानवरनी, सर्पनी के शींगडांवाळां जानवरनी पासे जवुं नहीं.

अग्निओनी, गायोनी, गुरुओनी, ब्राह्मणोनी, हींदोलाओनी के स्त्रीपुरुषनी वचमां थईने जवुं नहीं. जरूरी वगर शबनी पछवाडे जवुं नहीं. देव, गाय, ब्राह्मण, थाळुं बांधेल वृक्ष, ध्वज, रोगी, पतित के पापी एओनी छायामां पग मूकवो नहीं. उगता के आथमता सूर्यने जोवो नहीं. गाय वाछडांने धवरावी देती होय, परायुं पाणी पीजती होय के परायुं धान्य खाई जती होय तेनी चेतवणी कोईने आपवी नहीं. उल्कापात-(प्रबळ ताराना खरवा)नी के इंद्रधनुष प्रकट थयानी खबर देवी नहीं. अग्निने मोहोडाथी धमवो नहीं. जळमां के पृथ्वीमां हाथ के पग पछाडवा नहीं.

मळमूत्रादिकनी हाजतोने अटकाववी नहीं. गाम, शेहेर, देवस्थान, श्मसान, चौटो, जलाशय के मार्ग एओना समीपमां मळमूत्रादिक करवां नहीं. बीजा लोको देखे एवी रीते मलमूत्रादिक करवां नहीं अने वायु, अग्नि, जळ, चंद्र, सूर्य, गाय के गुरु एओनी सामे पण करवां नहीं.

पृथ्वीने नखादिकथी खोतरवी नहीं. सभामां मोहोडुं ढांक्यावगर बगासुं, ओडकार, श्वास के छींक खावां नहीं. गुरुना समीपमां पीठ दईने, पगोनी कमान वाळीने के ओटींगण लईने (आलींने) बेसवुं नहीं. गुरुना समीपमां पग लांबा करवा नहीं.

वाळोनां, काननां, नाकनां, गुदा वगेरेनां के दांतोनां छिद्रोने खोतरवां नहीं (मळनो स्पर्श नहीं करवो.) केश, मुख, नख, वस्त्र के गात्र एओने हलाववां नहीं. गात्रो, नखो के मोहोडुं एओनो टक टक वगेरे अवाज करवो नहीं. काष्ठो, माटीना टुकडा के खड इत्यादिक उपर हाथ के पग ठोकवां नहीं अने तेओनुं नखादिकथी छेदन पण करवुं नहीं.

सामा वायुनुं के सामा तडकानुं सेवन करवुं नहीं. जमीने तुरतज अग्निनी पासे बेसवुं नहीं. उभडक बेसवुं नहीं. नाहाना काष्ठना आसनपर बेसवुं नहीं. डोकने विषम राखवी नहीं. शरीरने विषम राखीने जमवुं नहीं तथा बीजी क्रिया पण करवी नहीं. आंखो ताणीने कोई वस्तुने जोवी नहीं. विशेषे करी अग्निनी शिखा वगेरे तेज, सूर्य, सूक्ष्म पदार्थ, चंचल पदार्थ के भमतो पदार्थ एओने आंख मांडीने जोवां नहीं. माथापर बोजो उपाडवो नहीं. सूवुं, जागवुं, लेटवुं, बेसवुं, फरवुं, पंथ करवो, वाहनपर बेसवुं, दोडवुं, ठेकवुं, कूदवुं, तरवुं, हसवुं, बोलवुं, मैथुन अने कसरत इत्यादिकनो अभ्यास छतां पण तेओनुं अतिसेवन करवुं नहीं.

अहितनो अभ्यास होय तो पण अनुक्रमे तेमांथी एक एक अंश कमती करी करीने अंते तेने तमाम छोडी देवुं अने हितनो अभ्यास न होय तो पण तेमां अनुक्रमे एक एक अंश वधारी वधारीने अंते तेनुं संपूर्ण रीते सेवन करवुं. जेनो अभ्यास पडी रह्यो होय एवी अहितक्रियाने एकदम नहीं छोडतां अने जेनो अभ्यास न होय एवी हितक्रियाने एकदम नहीं पकडतां पेहेली क्रियाना एक एक अंशनो घटारो अने बीजी क्रियामां एक एक अंशनो वधारो करतो जवो.

ऊंधे माथे सूवुं नहीं. फूटेला वासणथी के खोबाथी पाणी पीवुं नहीं. आहार करवो ते समयसर करवो, वैद्यनी नजरे करीने अथवा वैद्यनी सलाह प्रमाणे करवो, मापसर करवो अने जेमां हित, स्निग्ध तथा मधुर पदार्थो घणा आवे एवो करवो. गामना घणा लोकोए मळीने जे जमणवार करी होय तेमां जमवुं नहीं. चारणो के सुथारो वगेरे गणात्मक लोकोनुं अन्न जमवुं नहीं. वेश्याओनुं के (वंचक) दुकानदारोनुं अन्न जमवुं नहीं. शत्रुओनुं, आचारभ्रष्टोनुं के पतित लोकोनुं अन्न जमवुं नहीं. बाकीनां बीजां पण जे भोजनो एवा प्रकारनां होय, घणा जणाओए मळीने आपेलां होय, अप्रिय रूपवाळां होय, अप्रिय रसवाळां होय, अप्रिय गंधवाळां होय, अप्रिय स्पर्शवाळां होय, अप्रिय शब्दोवाळां होय, मांखीओथी के वाळोथी उपहत थएलां होय के जेओना उपर मनथी विपरीत कल्पना थई होय ते भोजनो जमवां नहीं. हाथ पग धोयावगर जमवुं नहीं. मूत्रनी के विष्टानी हाजत लागी होय तो तेने दबावीने जमवुं नहीं. प्रातःसंध्यामां के सायंसंध्यामां जमवुं नहीं. आळीने जमवुं नहीं. जमवानो जे समय होय ते समयने व्यतीत करीने जमवुं नहीं. ओछुं जमवुं नहीं, वधारे जमवुं नहीं अने जेमांथी स्नेह काहाडी लेवामां आव्यो होय ते अन्नादिक पण जमवुं नहीं.

पाणीमां पोतानुं प्रतिबिंब जोवुं नहीं. नग्न थईने जळमां प्रवेश करवो नहीं.

राते तो दहीं खावुंज नहीं. दिवसे पण जो खावुं होय तो घीवगरनुं, साकरवगरनुं, मगनी दाळवगरनुं, मधवगरनुं, ऊनुं के आमळांवगरनुं खावुं

१ पेहेले दिवसे अहितनो एक भाग काहाडी अने हितनो एक भाग नाखीने वर्त्तवुं. पछी वचमां एक दिवस आडो नाखीने त्रीजे दिवसे अहितना बे भाग काहाडी हितना बे भाग दाखल करवा. ए प्रमाणे चालतां वचमां बे दिवस जवा दईने छठ्ठे दिवसे अहितना त्रण भाग काहाडीने हितना त्रण भाग दाखल करवा. पछी ए प्रमाणे चालतां वचमां त्रण दिवस जवा दईने दशमे दिवसे अहितने सघळुं काहाडी नाखीने सघळुं हितज दाखल करवुं. आ रीते अनुक्रमथी घट्याडी नाखवामां आवेला अहित पदार्थो सात्म्यना त्यागथी थती हानिने उत्पन्न करी शकता नथी अने वधारवामां आवेला हित पदार्थो असात्म्यना सेवनथी थती हानिने उत्पन्न करी शकता नथी, एटलुंज नहीं पण अहित पदार्थोनी टेव छूटी जाय छे अने हित पदार्थोनी टेव दृढ थई जाय छे. (चरक सूत्रस्थान अध्याय ७ मो.)

२ राते दहींमां अलक्ष्मी रेहे छे तेथी राते दहीं खावानो निषेधज करवामां आवे छे. दहीं के जे स्वभावथीज कफने वधारनार, वायुनो नाश करनार अने पि-

नहीं. जो उपर केहेला विधिनुं उल्लंघन करीने दहीं खावामां आव्युं होय तो ते दहीं कोढ तथा विसर्प आदि रोगोने उत्पन्न करे छे.

जुगार रमवुं नहीं. मद्यनुं अतिसेवन करवुं नहीं. कोईनुं जामीन पडवुं नहीं. कोईनुं साक्षी थवुं नहीं. कोई प्रकारनी सरत बकवी नहीं. गोठ करवा वगेरेनुं सेवन करवुं नहीं. वाजांओनुं सेवन करवुं नहीं.

बीजाए पेहेरेली माळा, बीजाए ओढेलुं छत्र, बीजाए पेहेरेलां पगरखां, बीजाए पेहेरेलुं सुवर्ण अने बीजाए धरेलां जूनां वस्त्रो एओनुं धारण करवुं नहीं. ज्यांसूधी मुख उच्छिष्ट होय त्यांसूधी ब्राह्मणनो, अग्निनो के गायनो स्पर्श करवो नहीं.

४० भवति चात्र ॥

सुखमत्र समासेन सद्वृत्तस्यैतदीरितम् ।
आरोग्यमायुरर्थो वा नासद्भिः प्राप्यते नृभिः ॥

सदाचारथी कल्याणनी प्राप्ति.

४० आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "सदाचारवाळा माणसने जगतमां सर्व सुखनी प्राप्ति थाय छे एटला माटे संक्षेपथी आ सदाचारनुं निरूपण कह्युं छे. सदाचार वगरनां माणसो कदी पण आरोग्यने, आयुष्यने के धनने प्राप्त थई शकतां नथी."

४१ यस्मिन्यस्मिन्नृतौ ये ये दोषाः कुप्यन्ति देहिनाम् ॥
तेषु तेषु प्रदातव्या रसास्ते ते विजानता ॥

प्रत्येक ऋतुमां वैद्ये पोताना आश्रित माणसोनी संभाळ राखवा विषे.

४१ जे जे ऋतुमां माणसोना जे जे दोषो प्रकुपित थाय छे ते ते ऋतुमां ते ते दोषोने शांत राखवा माटे प्रवीण वैद्ये माणसोने मधुरादिक योग्य रसो देवा.

४२ वर्षासु न पिबेत्तोयं पिबेच्छरदि मात्रया ।
उष्णे हैमे वसन्ते च कामं ग्रीष्मे तु शीतलम् ।
हेमन्ते च वसन्ते च सीध्वरिष्टौ पिबेन्नरः ॥
शृतशीतं पिबेद्ग्रीष्मे प्रावृट्काले रसं पिबेत् ।
यूषं वर्षति तस्यान्ते प्रपिबेच्छीतलं जलम् ॥

ते ते ऋतुओमां जळ पीवानो नियम.

४२ भाद्रपद अने आश्विन ए बे मास के जेओ वर्षाऋतु केहेवाय छे तेओमां थोडुं पाणी पीवुं. कार्तिक अने मार्गशीर्ष के जेओ शरद्-ऋतु केहेवाय छे तेओमां पण मात्राथीज पीवुं. ग्रीष्म, (वैशाख तथा ज्येष्ठ) हेमंत (पोष तथा माघ) अने वसंत (फाल्गुन अने चैत्र) एओमां पण अत्यंत जळ पीवुं नहीं परंतु इच्छापूरी थाय त्यांसूधी पीवुं. तेमां पण ग्रीष्म ऋतुमां तो शीतल जळज पीवुं.

अथवा घणुंकरीने हेमंतऋतु अने वसंत-ऋतु एओमां सीधुं[1] तथा अरिष्ट पीवां. ग्रीष्मऋतुमां प्रथम उकाळीने पछी थंडुं करेलुं जळ पीवुं. आषाढ तथा श्रावण के जेओ प्रावृष्ऋतु छे तेओमां जांगलमांसनो रस पीवो. वरसाद वरसतो होय त्यारे तो यूषज पीवो. यूष पीधा पछी शीतल जळ पीवुं.

४३ स्वस्थ एवमतोऽन्यस्तु दोषाहारमतानुगः ॥

रोगीए तो सर्व काळमां वैद्यना मत-प्रमाणेज वर्तवुं.

४३ आ अध्यायमां जे जे कोई नियमो केहेवामां आव्या तेओ स्वस्थ माणसने माटे छे. रो-

त्तने प्रदीप्त करनार छे तेमां जो घी नाखवामां आवे तो ते दहीं कफनी वृद्धि अने वायुनो नाश करे छे, पित्तने प्रदीप्त करतुं नथी अने अग्निने वधारीने आहारने पचावी दे छे. साकरथी संयुक्त दहीं खावामां आवे तो तरशनुं तथा दाहनुं निवारण थाय छे. मधथी संयुक्त खावामां आवे तो वातरक्तनुं निवारण थाय छे. मधथी संयुक्त खावामां आवे तो सारा रसवाळुं अने कफने थोडो उत्पन्न करनारूं थाय छे. ऊनुं दहीं रक्तपित्तने उत्पन्न करे छे अने आमळांथी संयुक्त दहीं दोषोनुं निर्हरण करे छे. (च. सू. अ: ७ मो.)

१ शेलडीना रसथी बनावेलुं मद्य सीधु केहेवाय छे.

गीए तो दोषोनुं हरण करनाराना (वैद्यना) मतने अनुसरीनेज सर्वदा वर्त्तवुं.

४४ स्नेहं सैन्धवचूर्णेन पिप्पलीभिश्च संयुतम् ॥
पिबेदग्निविवृद्ध्यर्थं न च वेगान्विधारयेत् ।
अग्निदीप्तिकरं नृणां रोगाणां शमनं प्रति ॥
प्रावृट्शरद्वसन्तेषु सम्यक्स्नेहादिमाचरेत् ।
कफे प्रच्छर्दनं पित्ते विरेको बस्तिरीरणे ॥
शस्यते त्रिष्वपि सदा व्यायामो दोषनाशनः ।
भुक्तं विरुद्धमप्यन्नं व्यायामान्न प्रकुप्यति ॥

स्वस्थ अने रोगी एओने माटे सामान्य शोधन.

४४ अग्निनी वृद्धिने माटे सैंधवना तथा पीपळना चूर्णनी साथे स्नेहपान करवुं अने वेगोने अटकाववा नहीं. वैद्ये प्रावृष, शरद् अने वसंत ए ऋतुओमां माणसोना जठराग्निने प्रदीप्त करवा माटे अने रोगोनुं शमन करवा माटे स्नेहन आदि क्रियाओ करवी. कफ उपर वमन देवुं, पित्त उपर विरेचन देवुं अने वायु उपर पिचकारी देवी ए हितकारी छे. योग्य रीतनी कसरत तो त्रणे दोषोने शांत करवा माटे सर्वदा उत्तम गणाय छे. विरुद्ध अन्न जमवामां आव्युं होय तो पण व्यायाम करवामां आवे तो तेथी दोषोनो चय थतो नथी.

४५ उत्सर्गमैथुनाहारशोधने स्यात्तु तन्मनाः ।
नेच्छेद्रोगभयात्प्राज्ञः पीडां वाक्कायमानसीम् ॥

मलोत्सर्गादि कृत्यो पूरूं ध्यान आपीने करवां अने शरीर के मन पीडित न थाय एवी संभाळ राखवी.

४५ विचक्षण माणसोए रोगो थवानो भय राखी मलोत्सर्ग, मैथुन, आहार तथा शोधन एओ पूरूं ध्यान आपीने करवां अने कोई रीते वाणी, शरीर के मन पीडित न थाय एवी संभाळ राखवी.

४६ अतिस्त्रीसंप्रयोगाच्च रक्षेदात्मानमात्मवान् ।
शूलकासज्वरश्वासकार्श्यपाण्ड्वामयक्षयाः ॥
अतिव्यवायाज्जायन्ते रोगाश्चाक्षेपकादयः ।
आयुष्मन्तो मन्दजरा वपुर्वर्णबलान्विताः ॥
स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्ति स्त्रीषु संयताः ।
त्रिभिस्त्रिभिरहोभिर्हि समीयात्प्रमदां नरः ॥
सर्वेष्वृतुषु घर्मे तु पक्षात्पक्षाद् व्रजेद्बुधः ।

स्त्रीप्रसंगनो नियम.

४६ बुद्धिमान् माणसे अत्यंत मैथुनथी पोतानो बचाव करवो. केमके अत्यंत मैथुन करवाथी शूळ, खांसी, ज्वर, श्वास, कृशता, पांडुरोग, क्षय तथा आक्षेपक आदि रोगो उत्पन्न थाय छे. जेओ मैथुनप्रसंगमां नियमित रहे छे तेओ लांबा आयुष्यवाळा, थोडी जरावाळा, सारां शरीरोवाळा, सारा वर्णवाळा, बळवान् अने कठण तथा स्थिर मांसोवाळा थाय छे. पुरुषे सघळी ऋतुओमां त्रण त्रण दिवसे स्त्रीसंग करवो पण ग्रीष्मऋतुमां तो पखवाडीए पखवाडीए करवो.

४७ रजस्वलामकामां च मलिनामप्रियां तथा ॥
वर्णवृद्धां वयोवृद्धां तथा व्याधिप्रपीडिताम् ।
हीनाङ्गीं गर्भिणीं द्वेष्यां योनिदोषसमन्विताम् ॥
सगोत्रां गुरुपत्नीं च तथा प्रव्रजितामपि ।
सन्ध्यापर्वस्वगम्यां च नोपेयात्प्रमदां नरः ॥

केवी स्त्रीनो संग न करवो.

४७ पुरुषे रजस्वला, कामनावगरनी, मलिन, अप्रिय, ऊंचा वर्णनी, पोताथी अधिक अवस्थावाळी, व्याधिथी पीडाएली, ओछां अंगवाळी, गर्भवाळी, जेना उपर अरुचि थाय ते, योनिना दोषवाळी, पोताना समान गोत्रवाळी, (समान गोत्रमां जन्मेली तथा समान गोत्रमां परणेली,) गुरुपत्नी, भेखवाळी अने अगम्या एटली स्त्रीओनो संग करवो नहीं.

४८ गोसर्गे चार्द्धरात्रे च तथा मध्यन्दिनेषु च ।

कया कया काळमां स्त्रीसंग न करवो.

४८ प्रातःसंध्यामां, सायंसंध्यामां, पर्वणीओमां, गायो छूटवाना समयमां, अधराते अने मध्याह्नसमयमां स्त्रीसंग करवो नहीं.

४९ लज्जासमावहे देशे विवृतेऽशुद्ध एव च ॥

केवा प्रदेशमां स्त्रीसंग न करवो.

४९ जे स्थलमां लाज उपजे एम होय ते स्थलमां, खुल्ला स्थलमां अने अशुद्ध स्थलमां स्त्रीसंग करवो नहीं.

५० क्षुधितो व्याधितश्चैव क्षुब्धचित्तश्च मानवः।
वातविण्मूत्रवेगी च पिपासुरतिदुर्बलः ॥

केवा पुरुषे स्त्रीसंग करवो नहीं.

५० भूख्याए, रोगवाळाए, भयादिकथी क्षोभ पामेला चित्तवाळाए, तरशवाळाए, अतिदुर्बल शरीरवाळाए अने वायुनी, विष्ठानी के मूत्रनी हाजतवाळाए स्त्रीसंग करवो नहीं.

५१ तिर्यग्योनावयोनौ च प्राप्तं शुक्रविधारणम्।
दुष्टयोनौ विसर्गं तु बलवानपि वर्जयेत् ॥
रेतसश्चातिमात्रं तु मूर्द्धावरणमेव च ।
स्थितावुत्तानशयने विशेषेणैव गर्हितम् ॥
क्रीडायामपि मेधावी हितार्थी परिवर्जयेत् ।

अयोग्य अवयवमां के अयोग्य रीते वीर्योत्सर्ग न करवो.

५१ बकरी के गधेडी वगेरे पशुजातिनी योनिमां अने मनुष्य जातिना पण मुख के गुदा आदि स्थलमां वीर्योत्सर्ग करवो नहीं. बळवान् पुरुषे पण रोगादिकथी दुष्ट थएली योनिमां वीर्योत्सर्ग करवो नहीं अने सारी योनिमां पण वारंवार वीर्योत्सर्ग (मैथुन) करवो नहीं.

मुष्टिमैथुनथी वीर्योत्सर्ग करवो नहीं. ऊभां ऊभां वीर्योत्सर्ग करवो के विपरीत रतिथी वीर्योत्सर्ग करवो ए पण अत्यंत खराब परिणाम आपे छे.

बुद्धिमान् अने हित इच्छनारा पुरुषे क्रीडाने माटे पण एवी रीते वीर्योत्सर्ग कदी पण करवो नहीं.

५२ रजस्वलां प्राप्तवतो नरस्यानियतात्मनः ॥
दृष्ट्यायुस्तेजसां हानिरधर्मश्च ततो भवेत् ।
लिङ्गिनीं गुरुपत्नीं च सगोत्रामथ पर्वसु ॥
वृद्धां च सन्ध्ययोश्चापि गच्छतो जीवितक्षयः।
गर्भिण्यां गर्भपीडा स्याद् व्याधितायां बलक्षयः॥
हीनाङ्गीं मलिनां द्वेष्यां क्षामां वन्ध्यामसंवृते ।
देशेऽशुद्धे च शुक्रस्य मनसश्च क्षयो भवेत् ॥
क्षुधितः क्षुब्धचित्तश्च मध्याह्ने तृषितोऽबलः ।
स्थितश्च हानिं शुक्रस्य वायोः कोपं च विन्दति
अतिप्रसङ्गाद्भवति शोषः शुक्रक्षयावहः ।
व्याधितस्य रुजा प्लीहा मृत्युर्मूर्छा च जायते ॥
प्रत्युपस्यर्द्धरात्रे च वातपित्ते प्रकुप्यतः ॥
तिर्यग्योनावयोनौ च दुष्टयोनौ तथैव च ।
उपदंशस्तथा वायोः कोपः शुक्रस्य च क्षयः ॥
उच्चारिते मूत्रिते च रेतसश्च विधारणे ।
उत्ताने च भवेच्छीघ्रं शुक्राश्मर्यास्तु सम्भवः ॥
सर्वं परिहरेत्तस्मादेतल्लोकद्वये हितम् ।

अयोग्य स्त्रीमां, अयोग्य काळमां, अयोग्य स्थलमां, अयोग्य स्थितिमां, अयोग्य अवयवमां तथा अयोग्य रीते वीर्योत्सर्ग करवाथी हानिओ.

५२ जे अजितेंद्रिय पुरुष रजस्वलानो संग करे तेने दृष्टिनी, आयुष्यनी तथा तेजनी हानि थाय छे अने ते उपरांत अधर्मनी प्राप्ति थाय छे. जे पुरुष भेखवाळी, (व्रतादिकवाळी,) गुरुपत्नी, समान गोत्रवाळी, उत्तम वर्णवाळी के मोटी अवस्थावाळी स्त्रीनो संग करे अथवा पर्वणीओमां, प्रभाते के सायंकाळे स्त्रीनो संग करे तेना जीवितनो क्षय थाय छे. गर्भिणी स्त्रीनो संग करवाथी गर्भने पीडा थाय छे. रोगिणी स्त्रीनो संग करवाथी बळनो क्षय थाय छे. ओछां अंगवाळी, मलिन, जेना उपर अरुचि थाय ते, नबळी के वांझणी एओनो संग करवाथी अने खुल्ला प्रदेशमां के अशुद्ध प्रदेशमां स्त्रीसंग करवाथी वीर्यनो तथा मननो क्षय थाय छे. भूख्यो, भयादिकथी क्षोभ पामेला चित्तवाळो, तरश्यो के नबळो पुरुष स्त्री-

संग करे तो तेने वीर्यनी हानि अने वायुनो प्रकोप थाय छे. मध्याह्न समयमां के ऊभां ऊभां स्त्रीसंग करवाथी पण वीर्यनी हानि अने वायुनो प्रकोप थाय छे. स्त्रीओनो अत्यंत प्रसंग करवाथी वीर्यनो क्षय करनारो शोष नामनो रोग थाय छे. रोगी पुरुष स्त्रीनो संग करे तो तेने वेदना, बरलनुं दरद, मूर्छा अने मरण पण प्राप्त थाय छे. परोढीए के अधराते स्त्रीनो संग करवाथी वायुनो तथा पित्तनो प्रकोप थाय छे. योनिव्यतिरिक्त मुखादिक अवयवमां, बकरी वगेरेनी योनिमां के रोगथी खराब थएली योनिमां वीर्योत्सर्ग करवाथी चांदी थाय छे, वायुनो प्रकोप थाय छे अने वीर्यनो क्षय थाय छे. झाडानी के मूत्रनी हाजत लाग्या छतां तेने रोकीने मैथुन करवाथी, विपरीत रति करवाथी अने बीजा पण केटलाएक अयोग्य प्रकारना वीर्योत्सर्ग करवाथी तुरत शुक्राश्मरी(वीर्यसंबंधी पथरी)नी उत्पत्ति थाय छे. आम छे एटला माटे ए सघळा प्रकारोनो त्याग करवो के जेथी आ लोकमां पण शुभ थाय अने परलोकमां पण शुभ थाय.

५३शुक्रं चोपस्थितं मोहान्न सन्धार्यं कथञ्चन ॥

चलित थएला वीर्यने रोकवुं नहीं.

५३ चलित थएला वीर्यने पडवाज देवुं पण तेने भूल करीने कोई रीते पण रोकवुं नहीं.

५४ वयोरूपगुणोपेतां तुल्यशीलां गुणान्विताम्
अभिकामोऽभिकामां तु हृष्टो हृष्टामलङ्कृताम् ॥
सेवेत प्रमदां युक्त्या वाजीकरणबृंहितः ।

केवी स्थितिवाळो पुरुषे केवी स्थितिवाळी स्त्रीनो संग करवो.

५४ वाजीकरणो के जेओ आ स्थानना २६ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे तेओथी पुष्टि पामेला, अत्यंत कामनाथी घेराएला अने हर्षथी व्याप्त थएला पुरुषे जुवान, रूपाळी, सद्गुणोवाळी, पोताने मळता स्वभाववाळी, कामनाथी घेराएली, हावभावादिक गुणोवाळी, हर्षथी व्याप्त थएली अने शणगारोथी संपन्न थएली स्त्रीनुं युक्तिपूर्वक सेवन करवुं.

५५ भक्ष्याः सशर्कराः क्षीरं ससितं रस एव च॥
स्नानं सव्यजनं स्वप्नो व्यवायान्ते हितानि तु ।

मैथुनना अंतमां हितकारी पदार्थो.

५५ पुरुषे तथा स्त्रीए मैथुन थई रह्या पछी साकरवाळां भक्ष्योनुं, साकरवाळा दूधनुं अने मांसना रसानुं सेवन करवुं तथा पंखानो पवन लेवो अने निद्रा करवी ए हितकारी छे. वीर्यना अत्यंत आधिक्यने लीधे विधिनुं उल्लंघन करीने दिवसमां मैथुन कर्युं होय तो स्नान करवुं अने ते पछी उपर कह्याप्रमाणे करवुं ए हितकारी छे[१].

अध्याय २५ मो.

१ अथातो मिश्रकचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मिश्रकचिकित्सित'[२] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पाल्यामयास्तु विस्राव्या इत्युक्तं प्राङ् निबोध तान् ।
परिपोटस्तथोत्पात उन्मन्थो दुःखवर्द्धनः ।
पञ्चमः परिलेही च कर्णपाल्या गदाः स्मृताः ॥

काननी बूटोना रोगोनी चिकित्सानुं प्रकरण.

काननी बूटोना पांच रोगोनां नामो.

२ काननी बूटोना रोगोमांथी शस्त्रवते स्रावण करवुं एम सूत्रस्थानना २५ मा अध्यायना ८ मा विषयमां केहेवामां आव्युं छे[३]. ए रो-

१ राते नाहावाथी अजीर्णादिक दोष प्राप्त थाय छे.
२ परचूरण रोगोनी चिकित्सा विषयनो.
३ सूत्रस्थानना १६ मा अध्यायना १६ मा तथा १७ मा विषयनी नोट वांचो.

गोनां नामो आपुं छुं ते सांभळो. परिपोट, उत्पात, उन्मंथ, दुःखवर्धन अने परिलेही ए नामना पांच रोगो कानोनी बूटोमां थाय छे.

३ सौकुमार्याच्चिरोत्सृष्टे सहसाभिप्रवर्द्धिते ।
कर्णशोफो भवेत्पाल्यां सरुजः परिपोटवान् ॥
कृष्णारुणनिभः स्तब्धः स वातात्परिपोटकः ।

परिपोटकनुं निदान तथा लक्षण.

३ जेने वधारवानुं सुकुमारपणाने लीधे लांबो काळ थया छोडी दीधुं होय ते कानने एकदम वधारवाथी वायुनो प्रकोप थतां बूटमां वेदनावाळो, उफसेली फाटवाळो, काळी तथा राती कांतिवाळो अने अक्कडपणावाळो जे सोजो उत्पन्न थाय ते **परिपोटक** केहेवाय छे.

४ गुर्वाभरणसंयोगात्ताडनाद्घर्षणादपि ॥
शोफः पाल्यां भवेच्छयावो दाहपाकरुगन्वितः ।
रक्तो वा रक्तपित्ताभ्यामुत्पातः सगदो मतः ॥

उत्पातनुं निदान तथा लक्षण.

४ भारवाळुं आभरण पेहेरवाथी, ताडनथी के घसावाथी रुधिरनो तथा पित्तनो प्रकोप थतां काननी बूटमां बळतरावाळो, पाकवाळो, वेदनावाळो अने काळो अथवा रातो जे सोजो उत्पन्न थाय ते **उत्पात** केहेवाय छे.

५ बलाद्वर्द्धयतः कर्णं पाल्यां वायुः प्रकुप्यति ।
गृहीत्वा स कफं कुर्याच्छोफं तद्वर्णवेदनम् ॥
उन्मन्थकः सकण्डूको विकारः कफवातजः ।

उन्मंथनुं निदान तथा लक्षण.

५ बलात्कारथी कानने वधारवा जतां काननी बूटमां वायुनो प्रकोप थाय छे. ए प्रकुपित थएलो वायु कफने पोतानी साथे लईने कफने लगता वर्णवाळा, कफने लगती वेदनावाळा अने खरजवाळा सोजाने उत्पन्न करे छे. ए कफथी तथा वायुथी थएलो विकार **उन्मंथक** केहेवाय छे. (वाग्भट केहे छे के आ सोजो व्यथावगरनो, स्थिर, स्तब्ध, खरजवाळो अने कानना जेवाज वर्णवाळो थाय छे.)

६ वर्ध्यमाने यदा कर्णे कण्डूदाहरुगन्वितः ॥
शोफो भवति पाकश्च त्वक्स्थोऽसौ दुःखवर्द्धनः

दुःखवर्द्धननुं निदान तथा लक्षण.

६ खराब रीते वींधाएला कानने वधारवा मांडतां त्वचामां खरज, बळतरा तथा वेदनावाळो सोजो थाय छे अने पाक थाय छे ते **दुःखवर्द्धन** केहेवाय छे. (वाग्भट केहे छे के आ सोजो व्रण दोषोथी थाय छे.)

७ कफासृक्कृमयः कुर्युः सर्षपाभा विकारिणीः ॥
स्राविणीः पिडकाः पाल्यां कण्डूदाहरुगन्विताः ।
कफासृक्कृमिसम्भूतः स विसर्पान्वितस्ततः ॥
लिह्यात्सशष्कुलीं पालीं परिलेहीति स स्मृतः ।

परिलेहीनुं निदान तथा लक्षण.

७ कफ, रुधिर अने कृमिओ एओ काननी बूटमां सर्षप जेवा देखाववाळी, विकारोवाळी, स्राववाळी, खरजवाळी, बळतरावाळी अने वेदनावाळी फोडलीओने उत्पन्न करे छे. कफ, रुधिर तथा कृमिओथी उत्पन्न थएलो अने अनुक्रमे फेलातो जाय एवो आ रोग काननी शष्कुलीने तथा बूटने चाटे छे. (वळगे छे–खराब करे छे) तेथी **परिलेही** केहेवाय छे.

८ पाल्यामया ह्यमी घोरा नरस्याप्रतिकारिणः ॥
मिथ्याहारविहारस्य पालिं हिंस्युरुपेक्षिताः ।
तस्मादाशु भिषक्तेषु स्नेहादिक्रममाचरेत् ॥
तथाभ्यङ्गपरीषेकप्रदेहासृग्विमोक्षणम् ।
सामान्यतो विशेषाच्च वक्ष्याम्यभ्यञ्जनं प्रति ॥

काननी बूटोना ए पांचे रोगोनी सामान्य चिकित्सा.

८ कानोनी बूटोना आ भयंकर रोगोनी जो उपेक्षा करवामां आवे तो तेओ चिकित्साथी रहित रेहेनारा अने मिथ्या आहार विहार करनारा माणसना काननी बूटने खराब अथवा नष्ट करी

नाखे छे एटला माटे वैद्ये ए रोगो उपर तुरतज स्नेहन आदि क्रम करवो अने अभ्यंग, परिषेक, प्रलेप तथा लोहीनुं स्रावण एओ करवां. आ सामान्य चिकित्सा कही. हवे अभ्यंगना संबंधे विशेष चिकित्सा कहुं छुं.

९ खरमञ्जरियष्ट्याह्वसैन्धवामरदारुभिः ।
सुपिष्टैः साश्वगन्धैश्च मूलकावल्गुजैः फलैः ॥
सर्पिस्तैलवसामज्जमधूच्छिष्टानि पाचयेत् ।
सक्षीराण्यथ तैः पालिं प्रदिह्यात्परिपोटके ॥

परिपोटकनी विशिष्ट चिकित्सा.

९ सफेद अघेडो, जेठीमध, सैंधव, देवदार, आसोंद, मूळानां बीज अने बावचीनां फळ एओने सारी पेठे वाटी ते कल्क नाखीने दूधमां घी, तेल, चरबी, मज्जा तथा मीण एओ पकाववां अने पछी तेओनो परिपोटक उपर अभ्यंग करवो.

१० मञ्जिष्ठातिलयष्ट्याह्वसारिवोत्पलपद्मकैः ।
सरोध्रैः सकदम्बैश्च बलाजम्ब्वाम्रपल्लवैः ॥
सिद्धं धान्याम्लसंयुक्तं तैलमुत्पातनाशनम् ।

उत्पातनी विशिष्ट चिकित्सा.

१० मजीठ, तल, जेठीमध, उपलसरी, रक्तकमळ, पद्मकाष्ठ, लोदर, कदंबनां पानडां, बलदाणानां पानडां, जांबूनां पानडां अने आंबानां पानडां एओना कल्कने तथा क्वाथने धान्याम्लथी संयुक्त करीने तेथी तैल पकाववुं. आ तैलनो उत्पात उपर अभ्यंग करवाथी उत्पात नष्ट थाय छे.

११ तालपत्र्यश्वगन्धार्कबाकूचीतिलसैन्धवैः ।
तैलं कुलीरगोधानां वसया सह पाचितम् ॥
सरलालाङ्गलीभ्यां च हितमुन्मन्थनाशनम् ।

उन्मंथनी विशिष्ट चिकित्सा.

११ उंदरकन्नी, आसोंद, आकडो, बावची, तिल, सैंधव, नसोतर अने दूधीयो वछनाग एओना कल्कथी तथा क्वाथथी कुडचलनी तथा चंदनघोनी चरबीनी साथे तेल पकाववुं. आ तेलनो उन्मंथ उपर अभ्यंग करवाथी उन्मंथ नष्ट थाय छे.

१२ तथाश्मन्तकजम्ब्वाम्रपत्रक्वाथेन सेचनम् ॥
प्रपौण्डरीकमधुकमञ्जिष्ठारजनीद्वयैः ।
चूर्णैर्दुर्वर्द्धने पालीं तैलाक्तामवचूर्णयेत् ॥
लाक्षाविडङ्गकल्केन तैलं पक्त्वावचारयेत् ।

दुःखवर्द्धननी विशिष्ट चिकित्सा.

१२ दुःखवर्द्धन थएल होय तो काननी बूट उपर आसोंदरानां पानडां, जांबूनां पानडां तथा आंबानां पानडां एओना क्वाथनुं सेचन करी पछी काननी बूटने तेलथी खरडीने ते उपर पांडरवो, जेठीमध, मजीठ, हळदर तथा दारूहळदर एओनुं चूर्ण भभराववुं. लाखनो तथा वावडींगनो कल्क नाखी चोगणा द्रवमां तेल पकावीने ते तेल बूट उपर लगाववुं.

१३ स्विन्नां गोमयपिण्डेन प्रदिह्यात्परिलेहिकाम्
पिष्टैर्विडङ्गैरथ वा त्रिवृच्छ्यामार्कसंयुतैः ।
करञ्जेङ्गुदिबीजैर्वा कुटजारग्वधायुतैः ॥
सर्वैर्वा सार्षपं तैलं सिद्धं मरिचसंयुतम् ॥
सनिम्बपत्रैरभ्यङ्गे मधूच्छिष्टान्वितं हितम् ।

परिलेहीनी विशिष्ट चिकित्सा.

१३ परिलेही थएल होय तो तेने गरम करेला छाणना पींडाथी वारंवार स्वेदन आपीने ते पछी गाडरना मूत्रमां वाटेलां वावडींग, नसोतर, वरधारो तथा आकडो एओनो लेप करवो अथवा गाडरना मूत्रमां वाटेलां करंजनां बीज, इंगोळीयानां बीज, इंद्रजव अने गरमाळो एओनो लेप करवो अथवा उपर कहेला वावडींग वगेरे सर्वे पदार्थो, मरी, लींबडानां पानडां अने मीण एओनो कल्क

१ वायुजन्यमां अभ्यंग, स्नेहबस्ति तथा प्रलेप करवां, पित्तजन्यमां विरेचन देवुं, कफजन्यमां वमन देवुं अने रुधिर तथा पित्त एओथी थएल होय तेमां लोहीनुं स्रावण करवुं एम डल्हन विषयविभाग आपे छे.

२ सूत्रस्थानना ४९ मा अध्यायना १९१ मा विषयमां जुवो.

नाखी चोगणा गाडरना मूत्रमां पकावेला सरसीया तैलनो अभ्यंग करवो ए हितकारी छे.

१४ पालीषु व्याधियुक्तासु तन्वीषु कठिनासु च
पुष्ट्यर्थं मार्दवार्थं च कुर्यादभ्यञ्जनं हितम् ।
लोपाकानूपमज्जानं वसां तैलं नवं घृतम् ॥
पचेद्दशगुणं क्षीरमावाप्य मधुरं गणम् ।
अपामार्गाश्वगन्धे च तथा लाक्षारसं शुभम् ॥
तत्सिद्धं परिपूतं च स्वनुगुप्तं निधापयेत् ।
तेनाभ्यञ्ज्यात्सदा पालीं सुस्विन्नामतिमर्दिताम्
एतेन पाल्यो वर्द्धन्ते नीरुजो निरुपद्रवाः ।
मृद्व्यः पुष्टाः समाः स्निग्धा जायन्ते भूषणक्षमाः ॥

व्याधियुक्त थवाथी पातळी थई गएली तथा कठण थई गएली कानंनी बूट उपर अभ्यंगने माटे स्नेह.

१४ कानंनी बूटो व्याधियुक्त थवाथी पातळी के कठण थई गएली होय तो तेओने पुष्ट करवा माटे तथा कोमळ करवा माटे नीचे प्रमाणे स्नेह बनावीने तेनो अभ्यंग करवो ए हितकारी छे.

दशगणा दूधमां काकोल्यादि मधुर गण, अघेडो तथा आसोंद एओनो कल्क तथा लाखनो सुंदर रस नाखीने तेमां लोंकडीनी मज्जा, आनूप प्राणीओनी मज्जा, चरबी, तैल अने ताजुं घी पकाववुं. ए पाकी रहे त्यारे गाळी लईने ते स्नेहने सारा बंदोबस्तथी राखी मेलवो. पछी कानंनी बूटने सारी पेठे स्वेदन आपी तथा आंगळीओ वगेरेथी अत्यंत चोळी तेना उपर ए स्नेहनो अभ्यंग करवो. आ अभ्यंग करवाथी कानोनी बूटो रोगोथी तथा उपद्रवोथी रहित थईने वधे छे, कोमळ थाय छे, पुष्ट थाय छे, सम थाय छे, स्निग्ध थाय छे अने एवी थवाथी भूषणने लायक थाय छे.

१५ नीलीदलं भृङ्गरजोऽर्जुनत्वक्
पिण्डीतकं कृष्णमयो रजश्च ।
बीजोद्भवं साहचरं च पुष्पम्
पथ्याक्षधात्रीसहितं विचूर्ण्य ॥
एकीकृतं सर्वमिदं प्रमाय
पङ्केन तुल्यं नलिनीभवेन ।
संयोज्य पक्षं कलशे निधाय
लौहे घटे सद्मनि सापिधाने ॥
अनेन तैलं विपचेद्विमिश्रं
रसेन भृङ्गत्रिफलाभवेन ।
आसन्नपाके च परीक्षणार्थं
पत्रं बलाकाभवमाक्षिपेच्च ॥
भवेद्यदा तद् भ्रमराङ्गनीलं
तदा विपक्वं विनिधाय पात्रे ।
कृष्णायसे मासमवस्थितं त-
दभ्यङ्गयोगात्पलितानि हन्यात् ॥

पलितनी (सफेद थई गएला वाळोनी) अने टालनी चिकित्सानुं प्रकरण.

पलितनी चिकित्सा. (नीलीतैल.)

१५ गळीनां पानडां, भांगरो, कडायानी छाल, काळा फूलवाळुं मींढोळ, लोह, बीबलानो सार, सफेद कांटाअशेरीयानां फूल, हरडे, बेहेडां तथा आमळां एओनुं चूर्ण करी ते चूर्णने तेनाज जेटला वजनना कमळनी नीचेना कादवनी साथे मिश्रित करी दई, लोढाना घडामां नाखी, घडानुं मोहोडुं बंध करी दईने एक पखवाडीयासूधी घरमां राखी मेलवुं. पछी भांगराना तथा त्रिफळाना रसथी मिश्रित करेला तैलने, पेला घडामांथी काहाडी लीधेलो चूर्णसहित कादवरूप कल्क नाखी ज्यांसूधी अत्यंत श्याम थई जाय त्यांसूधी वारंवार भांगरानो तथा त्रिफळानो रस नाखी नाखीने पकाववुं. ज्यारे पाकवा उपर आवे त्यारे परीक्षाने माटे तेमां बगलीनुं पींछडुं नाखी जोवुं. ए पींछडुं ज्यारे भमराना अंग जेवुं श्याम थई जाय त्यारे ए तैलने बराबर पाकी रहेलुं समजवुं. पछी ए तैलने उतारी लई काळा लोढाना वासणमां एक महिनासूधी राखी मेलवुं. महिनो पूरो थया पछी आ तैलनो अभ्यंग करवामां आवे तो वाळो सफेद टळीने श्याम थई जाय छे.

१६ सैरीयजम्ब्वर्जुनकाश्मरीजं
पुष्पं तिलान्मार्कवचूतबीजे ।
पुनर्नवा कर्दमकण्टकार्यौ
कासीसपिण्डीतकबीजसारम् ॥
फलत्रयं लोहरजोऽञ्जनं च
यष्ट्याह्वयं नीरजसारिवे च ।
पिष्ट्वाथ सर्वं सह मोदयन्त्या
साराम्भसा बीजकसम्भवेन ॥
साराम्भसः सप्तभिरेव पश्चा-
त्प्रस्थैः समालोड्य दशाहगुप्तम् ।
लौहे सुपात्रे विनिधाय तैल-
मक्षोद्भवं तच्च पचेत्प्रयत्नात् ॥
पक्वं च लौहेऽभिनवे निधाय
नस्यं विदध्यात्परिशुद्धकायः ।
अभ्यङ्गयोगैश्च नियोजयेत
भुञ्जीत माषान्कृशरामथो वा ॥
मासोपरिष्टाद्घनकुंचिताग्राः
केशा भवन्ति भ्रमराञ्जनाभाः ।
केशास्तथान्ये खलतौ भवेयु-
र्जरा न चैनं सहसाभ्युपैति ॥
बलं परं सम्भवतीन्द्रियाणाम्
भवेच्च वक्त्रं वलिभिर्विमुक्तम् ।
नाकामिनेऽनर्थिनि नाकृताय
नैवारये तैलमिदं प्रदेयम् ॥

पलितनी तथा टालनी चिकित्सा.

(सैरीयकादि तैल.)

१६ कांटाअशेरीयो, जांबू, कडायो, सीवणनां फल, तलनां फूल, भांगरो, आंबानी गोठली, सफेद तथा राती साटोडी, कमळनी नीचेनो कादव, भोरींगणी, हीराकसी, मींढोळ, बीबलानो सार, त्रिफळा, लोढानुं चूर्ण, रसवंती, जेठीमध, कमळ, उपलसरी अने मोगरो (डोलर) एओने बीबलाना सारना जळथी वाटी ते कल्कने बीबलाना सारना सात प्रस्थ (चोसठ तोलां भारनुं एक प्रस्थ थाय छे.) भार जळमां घोळी नाखी ते जळने लोढाना उत्तम पात्रमां भरी मोहोडुं बंध करीने दश दिवससुधी गुप्त रीते राखी मेलवुं. पछी ए जळमां बेहेडानुं तैल नाखी लोहपात्रमां प्रयत्नपूर्वक पकाववुं अने पाकी रहे त्यारे लोढाना नवा पात्रमां नाखीने एक महिनासूधी राखी मेलवुं. वमनविरेचनादिकथी शरीरने शुद्ध करी आ तैलनां नस्यो देवामां आवे, आ तैलनाज अभ्यंगो कराववामां आवे अने खावामां अडद अथवा तल अडद अने चोखा एओनी खीचडी देवामां आवे तो एक महिना पछी वाळो भ्रमरो जेवा तथा आंजण जेवा काळा, घाटा तथा वांकां अग्रोवाळा थई जाय छे अने टाल पडी होय तो तेमां नवा वाळो उत्पन्न थाय छे. ए माणसने जरावस्था तुरत आवती नथी, इंद्रियो अत्यंत बळवान् थाय छे अने तेनुं मोहोडुं पण वळीओथी (करचलीओथी) रहित थई जाय छे. वैद्ये आ तेल कामनावगरना माणसने, आजीजीपूर्वक मागणी नहीं करनारा माणसने, कबजामां नहीं रेहेनारा माणसने के शत्रुने कदी पण देवुं नहीं.

१७ लाक्षा रोध्रं द्वे हरिद्रे शिलाले
कुष्ठं नागं गैरिकं कुङ्कुमं च ।
मञ्जिष्ठोग्रा स्यात्सुराष्ट्रोद्भवा च
पत्तङ्गो गोरोचना चाञ्जनं च ॥
हेमाङ्गत्वक्पाण्डुपत्रं वटस्य
कालीयं स्यात्पद्मकं पद्ममध्यम् ।
रक्तं श्वेतं चन्दनं पारदश्च
काकोल्यादिः क्षीरपिष्टश्च वर्गः ॥
मेदो मज्जा सिक्थकं गोघृतं च
दुग्धं क्वाथः क्षीरिणां च द्रुमाणाम् ।
एतत्सर्वं पक्वमैकध्यतस्तु
वक्त्राभ्यङ्गे सर्पिरुक्तं प्रधानम् ॥
हन्याद्व्यङ्गं नीलिकां चातिवृद्धाम्
वक्त्रे जाताः स्फोटिकाश्चापि काश्चित् ।
पद्माकारं निर्वलीकं च वक्त्रं
कुर्यादेतत्पीनगण्डं मनोज्ञम् ॥
राज्ञामेतद्योषितां चापि नित्यं
कुर्याद्वैद्यस्तत्समानां नृणां च ।

कुष्ठघ्नं वै सर्पिरेतत् प्रधानम्
येषां पादे सन्ति वैपादिकाश्च ॥

व्यंग, नीलिका, फोडलीओ तथा मोहोडा उपरनी करचलीओ वगेरेनी चिकित्सानुं प्रकरण.

लाक्षादि घृत.

१७ लाख, लोदर, हळदर दारूहळदर, मणशील, हरताल, कठ, नागकेसर, सोनागेरू, केसर, मजीठ, वज, फटकडी, पतंग, गोरोचन, रसवंती, दारूडीनी छाल, वडनां पीळां पानडां, काळो अगरू, पद्मकाष्ठ, कमळनो मध्य भाग, रतांजलि, सूखड, पारद अने काकोल्यादि गण ए सर्वेने दूधमां वाटी, ए कल्कने दूधथी. मेदथी, मज्जाथी तथा मांणथी मिश्रित करेला वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना क्वाथमां नाखी ते क्वाथमां गायनुं घी पकाववुं. मोहोडा उपर अभ्यंग करवाने माटे आ घी मुख्य छे. आ घी मोहोडापर अत्यंत वृद्धि पामेलां व्यंग तथा नीलिका (दाझ) एओने नष्ट करे छे. मोहोडाउपरनी केटलीएक फोडलीओने पण नष्ट करे छे. मोहोडाने करचलीओ वगरनुं, पुष्ट गालोवाळुं तथा मनोहर करे छे. कोढने टाळे छे अने जेओना पगोमां विपादिका (फाटो पडवारूप रोग) थएल होय तेओने माटे पण मुख्य हितकारी छे. वैद्ये आ घी राजाओने माटे, राजाओनी स्त्रीओने माटे अने राजाओ जेवां माणसोने माटे बनाववुं.

१८ हरीतकीचूर्णमरिष्टपत्रं
चूतत्वचं दाडिमपुष्पवृन्तम् ।
पत्रं च दद्यान्मदयन्तिकाया
लेपाङ्गरागो नरदेवयोग्यः ॥

फोडलीओ वगेरेने नष्ट करनारूं तथा शरीरने शोभा आपनारूं लेपन.

१८ हरडेनुं चूर्ण, लींबडानां पानडां, आंबानी छाल, दाडिमना पुष्पनां दिटीयां अने मोगरानां अथवा मेंदीनां पानडां एओने वाटी तेओनुं लेपन कराववुं. आ शरीरने सुशोभित देखाडनारूं अने फोडलीओ वगेरेने नष्ट करनारूं लेपन राजाओने लायक छे.

वाजीकरण तंत्र.

अध्याय २६ मो.

१ अथातः क्षीणबलीयं वाजीकरणचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'क्षीणबलीयवाजीकरणचिकित्सित' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ कल्पस्योदग्रवयसो वाजीकरणसेविनः ।
सर्वेष्वृतुष्वहरहर्व्यवायो न निवारितः ॥

नित्य मैथुन करवानो कोने निषेध नथी.

२ जे पुरुष रोगोथी रहित, जुवान अने वाजीकरणोनुं सेवन करनार होय तेने सघळी ऋतुओमां प्रत्येक दिवसे मैथुन करवानो निषेध नथी.

३ स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वाल्लभ्यमिच्छताम् ।
योषित्प्रसङ्गात्क्षीणानां क्लीबानामल्परेतसाम् ॥
विलासिनामर्थवतां रूपयौवनशालिनाम् ।
नृणां च बहुभार्याणां योगा वाजीकरा हिताः

१ जेओ मैथुन करवामां हीन शक्तिवाळा होय तेओ जेथी मैथुन करवामां घोडा जेवा समर्थ बने एवी चिकित्सा विषयनो. वाग्भट केहे छे के 'जेथी पुरुष अत्यंत बलवान थईने घोडानी पेठे अप्रतिहत रीते स्त्रीओनो संग करी शके, जेथी स्त्रीओने अत्यंत प्यारो लागे अने जेथी शरीरमां पुष्टि तथा परमशक्ति पामे ते वाजीकरण केहेवाय छे. सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायनो ११ मो विषय वांचो.

वाजीकरण योगो कोने कोने माटे हितकारी छे.

३ जेओ वृद्ध छतां रमण करवानी तथा स्त्रीओना प्रेमनी इच्छा राखता होय तेओने माटे, जेओ स्त्रीओना प्रसंगथी क्षीण थएला होय तेओने माटे, जेओ अल्प वीर्यवाळा होय तेओने माटे, जेओ साध्य नपुंसको होय तेओने माटे, जेओ विलासी धनवान् रूपाळा तथा जुवान होय तेओने माटे अने जेओ घणी स्त्रीओवाळा होय तेओने माटे वाजीकरण योगो हितकारी छे.

४ सेवमानो यदौचित्याद्वाजीवात्यर्थवेगवान् ।
नारीस्तर्पयते तेन वाजीकरणमुच्यते ॥

वाजीकरण शब्दनो व्युत्पत्तिसिद्ध अर्थ.

४ पुरुष जेनुं जेनुं योग्य रीते सेवन करवाथी घोडानी पेठे अत्यंत वेगवाळो बनीने स्त्रीओने तृप्त करे ते ते औषधादिक वाजीकरण केहेवाय छे.

५भोजनानि विचित्राणि पानानि विविधानि च।
वाचःश्रोत्रानुगामिन्यस्त्वचः स्पर्शाः सुखास्तथा
यामिनी सेन्दुतिलका कामिनी नवयौवना ।
गीतं श्रोत्रमनोहारि ताम्बूलं मदिराः स्रजः ॥
मनसश्चाप्रतीघातो वाजीकुर्वन्ति मानवम् ॥

सामान्य वाजीकरणो.

५ विचित्र भोजनो, विविध प्रकारना पीवाना पदार्थो, कानने प्रिय लागे एवां वचनो, चामडीने सुख आपे एवा स्पर्शो, चंद्रनी प्रभाथी शोभी रहेली रात्रि, नवीन यौवनवाळी स्त्री, काननुं तथा मननुं हरण करे एवुं गायन, नागरवेलनां पान, मदिराओ, माळाओ अने मननो अप्रतिघात एओ पुरुषने मैथुनमां घोडा जेवो करे छे.

६ तैस्तैर्भावैरहृद्यैस्तु रिरंसोर्मनसि क्षते ।
द्वेष्यस्त्रीसम्प्रयोगाच्च क्लैब्यं तन्मानसं स्मृतम् ॥
कटुकाम्लोष्णलवणैरतिमात्रोपसेवितैः ।
सौम्यधातुक्षयो दृष्टः क्लैब्यं तदपरं स्मृतम् ॥
अतिव्यवायशीलो यो नच वाजिक्रियारतः ।
ध्वजभङ्गमवाप्नोति स शुक्रक्षयहेतुकम् ॥
महता मेढ्ररोगेण मर्मच्छेदेन वा पुनः ।
क्लैब्यमेतच्चतुर्थं स्यान्नृणां पुंस्त्वोपघातजम् ॥
जन्मप्रभृति यः क्लीबः क्लैब्यं तत्सहजं स्मृतम् ।
बलिनः क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः ॥
षष्ठं क्लैब्यं मतं तत्तु स्थिरशुक्रनिमित्तजम् ।
असाध्यं सहजं क्लैब्यं मर्मच्छेदाच्च यद्भवेत् ॥
साध्यानामितरेषां तु कार्यो हेतुविपर्ययः ।

नपुंसकपणाना सात भेद अने तेओमांना पांच साध्य भेदोनी चिकित्सा करवानी पद्धति.

६ मैथुन करवानी इच्छावाळा पुरुषनुं मन भय, शोक तथा क्रोध वगेरे दुःखदायी विकारोथी अस्वस्थ थतां अथवा मनमां जेना उपर अरुचि थाय एवी स्त्रीनो समागम थतां शिश्न नर्मा जाय छे ए मानसिक नपुंसकपणुं केहेवाय छे. १.

तीखा, खाटा, गरम तथा खारा पदार्थोनुं अत्यंत सेवन करवाथी वृद्धि पामेला पित्तने लीधे वीर्य बळीजतां जे नपुंसकपणुं थाय छे ते पित्तज नपुंसकपणुं केहेवाय छे. २.

जे पुरुष अत्यंत मैथुन करवाना स्वभाववाळो होय अने वाजीकरणोना उपयोगने जारी राखतो न होय ते पुरुषनुं शिश्न बराबर ऊंचुं थवाने असमर्थ थतां जे नपुंसकपणुं थाय छे ते वीर्यक्षयजन्य नपुंसकपणुं केहेवाय छे. ३.

शिश्नमां कोई मोटो रोग उत्पन्न थवाथी शिश्ननुं ऊठवामां असमर्थपणुं थाय छे ते रोगजन्य नपुंसकपणुं केहेवाय छे. ४.

वीर्यनुं वहन करनारी नसनुं छेदन थवाथी शिश्ननुं ऊठवामां जे असमर्थपणुं थाय छे ते शिराच्छेदजन्य नपुंसकपणुं केहेवाय छे. ५.

जे नपुंसकपणुं जन्मथीज होय ते सहज नपुंसकपणुं केहेवाय छे. (शारीरस्थानना २ जा अध्यायना २५ थी २९ मा विषयसूधी वांचो.) ६.

शरीर बळवान् छतां अने मन कामदेवथी

क्षुब्ध थतां छतां मननो निरोध करीने ब्रह्मचर्य पाळवाथी वीर्यनुं स्तंभन थतां जे नपुंमकपणुं थाय छे ते शुक्रस्तंभजन्य नपुंसकपणुं केहेवाय छे. ७.

ए सात प्रकारनां नपुंमकपणांओमां महज अने शिराच्छेदजन्य ए बे नपुंमकपणां अर्थात् पांचमुं अने छठुं ए बे असाध्य छे. बाकीनां पांच नपुंमकपणां के जेओ साध्य छे तेओने मटाडवाने माटे तेओ जेओथी थयां होय ते निदानोने टाळे एवी चिकित्सा करवी. (मूलमां ४ था तथा ५ मा भेदनो समावेश करीने ६ नी संख्या आपी छे.

७ विधिर्वाजीकरो यस्तु तं प्रवक्ष्याम्यतः परम् ।

वाजीकरण प्रयोगो केहेवानो उपक्रम.

७ हवे पुरुषो जे प्रयोगोथी मैथुन करवामां घोडा जेवा समर्थ थाय छे ते प्रयोगो कहुं छुं.

८ तिलमाषविदारीणां शालीनां चूर्णमेव वा ।
पौण्ड्रकेक्षुरसेनार्द्रं मर्दितं सैन्धवान्वितम् ॥
वराहमेदसा युक्तां घृतेनोत्कारिकां पचेत् ।
तां भक्षयित्वा पुरुषो गच्छेत्तु प्रमदाशतम् ॥

वाजीकरणनो पेहेलो तथा बीजो प्रयोग.

८ तिल, अडद अने विदारीकंद (फगवेलानो कंद) एओना बारीक चूर्णने पौंड्रक नामनी मिश्रवर्णवाळी शेलडीना रसथी भींजवी, खूब मसळी, सैंधवथी तथा सूवरना मेदथी युक्त करीने घीथी तेनी रोटली पकाववी. आ रोटलीनुं भक्षण करवाथी पुरुष अनेक स्त्रीओनो संग करी शके छे.

अथवा एवीज रीते राता चोखाना लोटनी रोटली पकावीने तेनुं भक्षण करवाथी पुरुष अनेक स्त्रीओनो संग करी शके छे.

९. बस्ताण्डसिद्धे पयसि भावितानसकृत्तिलान् ।

वाजीकरणनो त्रीजो प्रयोग.

९ बकराना वृषणो नाखीने पकावेला दूधनी सात दिवस सूधी तिलोने भावना आपी ते तिलोनुं भक्षण करवाथी पुरुष पेहेली वारनी पेठेज उत्सुक बनीने अनेक स्त्रीओनो संग करी शके छे.

१० शिशुमारवसापक्काः शष्कुलीस्तैस्तिलैः कृताः
यः खादेत्स पुमान्गच्छेत्स्त्रीणां शतमपूर्ववत् ।

वाजीकरणनो चोथो प्रयोग.

१० बकराना वृषणो नाखीने पकावेला दूधनी सात दिवस सूधी तिलोने भावना आपी ते तिलोनी शिशुमारनी (दरीयाई कूतरानी) चरबीमां सुंवाळीओ पकाववी. आ सुंवाळीओनुं भक्षण करवाथी पुरुष पेहेली वारनी पेठेज उत्सुक बनीने अनेक स्त्रीओनो संग करी शके छे.

११ पिप्पलीलवणोपेतं बस्ताण्डं क्षीरसर्पिषा ॥
साधितं भक्षयेद्यस्तु स गच्छेत्प्रमदाशतम् ।

वाजीकरणनो पांचमो प्रयोग.

११ बकराना वृषणोने पीपळथी तथा सैंधवथी युक्त करी दूधमां तथा घीमां पकावीने खावा. आ खावाथी पुरुष अनेक स्त्रीओनो संग करी शके छे.

१२ पिप्पलीमाषशालीनां यवगोधूमयोस्तथा ॥
चूर्णभागैःसमैस्तैस्तु घृतेपूपालिकां पचेत् ।
तां भक्षयित्वा पीत्वा तु शर्करामधुरं पयः ॥
नरश्चटकवद्गच्छेद्दश वारान्निरन्तरम् ।

वाजीकरणनो छठो प्रयोग.

१२ पीपळ, अडद, राता चोखा, जव अने घउं एओनां बारीक चूर्णोने समभागे लई तेओनी घीमां पोळी पकावी ते पोळीनुं भक्षण करवुं अने ते उपर साकरथी मधुर करेलुं दूध पीवुं. आम करवाथी पुरुष चकलानी पेठे तुरत तुरत दश वार मैथुन करी शके छे.

१३ चूर्णं विदार्याः सुकृतं स्वरसेनैव भावितम् ।
सर्पिर्मधुयुतं लीढ्वा दश स्त्रीरधिगच्छति ॥

वाजीकरणनो सातमो प्रयोग.

१३ फगवेलाना कंदनुं बारीक चूर्ण करी तेने तेज कंदना स्वरसनी भावना आपी मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने चाटवुं. आ चाटवाथी पुरुष दश स्त्रीओनो संग करी शके छे.

१४ एवमामलकं चूर्णं स्वरसेनैव भावितम् । शर्करामधुसर्पिर्भिर्युक्तं लीढ्वा पयः पिबेत् ॥ एतेनाशीतिवर्षोऽपि युवेव परिहृष्यति ।

वाजीकरणनो आठमो प्रयोग.

१४ ए प्रमाणेज आमळांनुं बारीक चूर्ण करी तेने आमळांनाज स्वरसनी भावना आपी साकर, घी तथा मध एओथी संयुक्त करीने चाटवुं अने ते उपर दूध पीवुं. आ प्रयोग करवाथी एंशी वर्षनो पुरुष पण जुवाननी पेठे मैथुनमां उत्सुक तथा समर्थ बनी जाय छे.

१५ पिप्पलीलवणोपेते बस्ताण्डे घृतसाधिते ॥

वाजीकरणनो नवमो प्रयोग.

१५ बकराना वृषणो पीपळना तथा सैंधवना चूर्णथी संयुक्त करी घीमां पकावीने खावा अने तेनी उपर दूध पीवुं तथा माखण खावुं. आम करवाथी पुरुष घोडानी पेठे मैथुन करवामां सारी पेठे समर्थ थाय छे.

१६ शिशुमारस्य वा खादेत्ते तु वाजीकरं भृशम् ।

वाजीकरणनो दशमो प्रयोग.

१६ शिशुमारना (दरीयाई कूतराना) वृषणो पीपळना तथा सैंधवना चूर्णथी संयुक्त करी घीमां पकावीने खावा अने तेनी उपर दूध पीवुं तथा माखण खावुं. आम करवाथी पुरुष मैथुन करवामां घोडा जेवो अत्यंत समर्थ थाय छे.

१७ कुलीरकूर्मनक्राणामण्डान्येवं तु भक्षयेत् ॥

वाजीकरणनो अगीयारमो प्रयोग.

१७ कुडचल, काचबो अने मघर एओनां इंडांओ पीपळना तथा सैंधवना चूर्णथी संयुक्त करी घीमां पकावीने खावां अने तेनी उपर दूध पीवुं. आम करवाथी पुरुष मैथुन करवामां घोडा जेवो समर्थ थाय छे.

१८ महिषर्षभवस्तानां पिबेच्छुक्राणि वा नरः ।

वाजीकरणनो बारमो प्रयोग.

१८ पाडो, खूंट अने बकरो एओनां वीर्यो पीवामां आवे तो तेथी पुरुष मैथुन करवामां घोडा जेवो समर्थ थाय छे. (डल्हन केहे छे के एओना वृषणोने पीपळना तथा सैंधवना चूर्णथी संयुक्त करी घीमां पकावीने खावा.)

१९ अश्वत्थफलमूलत्वक्छुङ्गासिद्धं पयो नरः ॥ पीत्वा सशर्कराक्षौद्रं कुलिङ्ग इव हृष्यति ।

वाजीकरणनो तेरमो प्रयोग.

१९ पीपळानां फळ, मूळ, छाल अने टीशीओ एओनो कल्क नाखीने पकावेला दूधमां साकर तथा मध नाखीने ते दूध पीवुं. आम करवाथी पुरुष चकलानी पेठे वारंवार तुरत तुरत मैथुन करी शके छे.

२० विदारीमूलकल्कं तु घृतेन पयसा नरः ॥ उदुम्बरसमं पीत्वा वृद्धोऽपि तरुणायते ।

वाजीकरणनो चौदमो प्रयोग.

२० फगवेलाना मूळनो उंबराना फळ जेटलो कल्क दूधमां तथा घीमां बनावी तेने दूधनी तथा घीनी साथे पीवो. आम करवाथी वृद्ध पुरुष पण मैथुन करवामां जुवान जेवो बनी जाय छे.

२१ माषाणां पलमेकं तु संयुक्तं क्षौद्रसर्पिषा ॥ अवलिह्य पयः पीत्वा तेन वाजीभवेन्नरः ।

वाजीकरणनो पंदरमो प्रयोग.

२१ चार तोलां भार अडदनो लोट मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने चाटवो अने तेनी उपर दूध पीवुं. आम करवाथी पुरुष मैथुन करवामां घोडा जेवो समर्थ थाय छे.

२२ क्षीरपक्कांस्तु गोधूमानात्मगुप्ताफलैः सह ॥ शीतान्घृतयुतान्खादेत्ततः पश्चात्पयः पिबेत् ।

वाजीकरणनो सोळमो प्रयोग.

२२ घउने कौचांनां फळोनी साथे दूधमां पकावी थंडा करी तेमां घी नाखीने खावा अने तेनी उपर दूध पीवुं. आम करवाथी पुरुष मैथुन करवामां घोडा जेवो समर्थ थाय छे.

२३ नक्रमूषिकमण्डूकचटकाण्डकृतं घृतम् ॥

पादाभ्यङ्गेन कुरुते वलं भूमिं तु न स्पृशेत् ।
यावत्स्पृशति नो भूमिं तावद्गच्छेन्निरन्तरम् ॥

वाजीकरणनो सत्तरमो प्रयोग.

२३ मघर, उंदर, डेडको अने चकलीनां इंडां एओना कल्कथी तथा क्वाथथी घी पकावीने ते घीनो बन्ने पगमां अभ्यंग करी पृथ्वीनो स्पर्श नहीं करतां मैथुन करवुं. ज्यांसूधी पृथ्वीनो स्पर्श न करवामां आवे त्यांसूधी पुरुष वारंवार मैथुन करी शके छे.

२४ स्वयंगुप्तेक्षुरकयोः फलचूर्णं सशर्करम् ॥
धारोष्णेन नरः पीत्वा पयसा न क्षयं व्रजेत् ॥

वाजीकरणनो अढारमो प्रयोग.

२४ कौचांनां फळ अने एखरानां फळ एओनुं चूर्ण साकरथी मिश्रित करी तुरत दोहेला (शेडकढ्या) दूधनी साथे पीवुं. आ पीवाथी पुरुष मैथुन करवामां हीनशक्तिवाळो थतोज नथी.

२५ उच्चटाचूर्णमप्येवं क्षीरेणोत्तममिष्यते ।

वाजीकरणनो ओगणीशमो प्रयोग.

२५ सफेद चणोठीनां बीजोनां फोतरां उतारी बीजोनो लोट करी तेनी दूधमां राबडी करी साकर नाखीने पीवामां आवे तो तेथी पुरुष मैथुन करवामां अतिसमर्थ थाय छे.

२६ शतावर्युच्चटामूलं पेयमेवं बलार्थिना ॥

वाजीकरणनो वीशमो प्रयोग.

२६ शतावरी अने सफेद चणोठी एओनां मूळीआंओनो कल्क दूधमां घोळीने पीवामां आवे तो तेथी पुरुष मैथुन करवामां बलवत्तर थाय छे.

२७ स्वयंगुप्ताफलैर्युक्तं माषसूपं पिबेन्नरः ॥

वाजीकरणनो एकवीशमो प्रयोग.

२७ कौचांनां फळोथी युक्त करीने रांधेली अडदनी दाळ पीवामां आवे तो तेथी पुरुष मैथुन करवामां घोडा जेवो समर्थ थाय छे.

२८ गुप्ताफलं गोक्षुरकाच्च बीजं
तथोच्चटां गोपयसा विपाच्य ।
खजाहतं शर्करया च युक्तं
पीत्वा नरो हृष्यति सर्वरात्रम् ॥

वाजीकरणनो बावीशमो प्रयोग.

२८ कौचांनां फळ, गोखरूनां बीज अने सफेद चणोठीनां बीज एओना चूर्णने गायना दूधमां पकावी, ते दूध रवाईथी वलोवी साकरथी संयुक्त करीने पीवामां आवे तो तेथी पुरुष सघळी रातमां वारंवार मैथुन करी शके छे.

२९ माषान्विदारीमपि सोच्चटां च
क्षीरे गवां क्षौद्रघृतोपपन्नाम् ।
पीत्वा नरः शर्करया सुयुक्तां
कुलिङ्गवद्धृष्यति सर्वरात्रम् ॥

वाजीकरणनो त्रेवीशमो प्रयोग.

२९ अडद, फगवेलानो कंद अने धोळी चणोठीनां बीज एओना चूर्णने गायना दूधमां पकावी ते दूधने मध, घी तथा साकर एओथी संयुक्त करी पीवामां आवे तो तेथी पुरुष आखी रातमां चकलानी पेठे वारंवार मैथुन करवामां उत्सुक थाय छे.

३० गृष्टीनां वृद्धवत्सानां माषपर्णभृतां गवाम् ।
यत्क्षीरं तत्प्रशंसन्ति बलकामेषु जन्तुषु ॥

वाजीकरणनो चोवीशमो प्रयोग.

३० पेलवेतरी, जेओनां वाछडां एक वर्षनां थई गयां होय एवी अने जेओने अडदना लीला छोड खवराववामां आवता होय एवी गायोनुं दूध बळने इच्छनारां माणसोने माटे बहु उत्तम छे.

३१ क्षीरमांसगणः सर्वः काकोल्यादिश्च पूजितः ।
वाजीकरणहेतोर्हि तस्मात्तं तु प्रयोजयेत् ॥

सामान्य वाजीकरण प्रयोगो.

३१ सघळां दूधोनो वर्ग, सघळां मांसोनो वर्ग अने काकोल्यादि गण एओ उत्तम बळ आपनार छे एटला माटे तेओना पण वाजीकरण प्रयोगो करवा.

३२ एते वाजीकरा योगाः प्रीत्यपत्यबलप्रदाः ।
सेव्या विशुद्धोपचितदेहैः कालाद्यपेक्षया ॥

वाजीकरण प्रयोगोनी फलस्तुति तथा पद्धति.

३२ उपर कहेला वाजीकरणना प्रयोगो आनंदने, संतानने तथा बळने आपनारा छे. प्रथम शरीरने वमनविरेचनादिकथी शुद्ध करी पछी पुष्ट करीने देशकालादिकना अनुसार प्रमाणे ते प्रयोगोनुं सेवन करवुं.

(वाजीकरणतंत्र समाप्त.)

रसायनतंत्र.

अध्याय २७. मो.

१ अथातः सर्वोपघातशमनीयं रसायनं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'सर्वोपघातशमनीयरसायन'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पूर्वे वयसि मध्ये वा मनुष्यस्य रसायनम् ।
प्रयुञ्जीत भिषक्प्राज्ञः स्निग्धशुद्धतनोः सदा ॥
नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रासायनो विधिः ।
न भाति वाससि क्लिष्टे रङ्गयोग इवाहितः ॥

रसायन देवानी अवस्था तथा रसायन प्रयोगथी पेहेलां स्नेहन-शोधननी जरूर.

२ प्रवीण वैद्ये माणसने तेनी पेहेली अवस्थामां अथवा मध्य अवस्थामां रसायनयोगो देवा अने तेओ शरीरोनुं स्नेहन तथा शोधन करीनेज देवा. जेम रंग सारा योगोथी चडावेलो छतां पण मेला वस्त्रमां बराबर लागू पडतो नथी अने पोतानुं संपूर्ण काम करी शकतो नथी तेम रसायन प्रयोग सारी रीते गोठवेलो छतां पण अशुद्ध शरीरमां बराबर लागू पडतो नथी अने पोतानुं संपूर्ण काम करी शकतो नथी.

३ शरीरस्योपघाता ये दोषजा मानसास्तथा ।
उपदिष्टाः प्रदेशेषु तेषां वक्ष्यामि वारणम् ॥

रसायन प्रयोगो केहेवानो फळनिर्देश-पूर्वक उपक्रम.

३ आ ग्रंथना ते ते प्रदेशोमां शरीरना दोषजन्य (रोगारूप) तथा मानसिक (क्रोधादिकरूप) जे जे उपघातो कह्या छे तेओनुं जेओथी जीवनपर्यंत निवारण थाय एवा रसायन प्रयोगो कहुं छुं.

४ शीतोदकं पयः क्षौद्रं सर्पिरित्येकशो द्विशः।
त्रिशः समस्तमथ वा प्राक्पीतं स्थापयेद्वयः ॥

शीतजळादिकना सेवनरूप रसायन प्रयोगो.

४ शीतल जळ, दूध, मध अने घी ए चार पदार्थोमांथी एक पदार्थ, बे पदार्थो, त्रण पदार्थो अथवा ए चारे पदार्थो भोजन कर्याथी पेहेलां पावामां आवे तो यौवन लांबा काळ सूधी टकी रहे छे.

५ तत्र विडङ्गतण्डुलचूर्णमाहृत्य यष्टीमधुयुक्तं यथाबलं शीततोयेनोपयुञ्जीत शीततोयं चानुपिबेदेवमहरहर्मासम् । तदेव मधुयुक्तं भल्लातककाथेन वा मधुद्राक्षाकाथयुक्तं वा मध्वामलकरसाभ्यां वा गूडूचीकाथेन वा ।

---

[1] रोग तथा क्रोधभयादिक सघळा उपघातो जेओथी प्राप्त थाय नहीं एवा रसायन प्रयोगोना निरूपण विषेनो. जे औषध जरानो तथा व्याधिओनो विध्वंस करनार होय, जुवानीने स्थिर राखनार होय, नेत्रोनुं हित करनार होय, धातुओने पुष्टि आपनार होय अने वीर्यने वधारनार होय ते औषध रसायन केहेवाय छे. वाग्भट केहे छे के लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम् शरीरमां श्रेष्ठ रसरुधिरादिकने मेळववानो जे उपाय ते रसायन केहेवाय छे. (उत्तरस्थान अध्याय ३९ मो.) आ ग्रंथना सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायनो १० मो विषय पण वांचो.

एवमेते पञ्च प्रयोगा भवंति। जीर्णे मुद्गामलकयूषेणालवणेनाल्पस्नेहेन घृतवन्तमोदनमश्नीयात् । एते खल्वर्शांसि क्षपयन्ति कृमीनुपघ्नन्ति ग्रहणधारणशक्तिं जनयन्ति मासे मासे प्रयोगे वर्षशतमायुषोऽभिवृद्धिर्भवति ॥

वावडींगना पांच रसायन प्रयोगो अने तेओनां फळो.

५ वावडींगना दाणाओनुं चूर्ण करी, तेने जेठीमधना चूर्णथी संयुक्त करीने तेनो जठराग्निना बळ प्रमाणे टाढा पाणीनी साथे उपयोग कराववो अने अनुपान पण टाढा पाणीनुंज कराववुं. आ प्रमाणे एक महीना सूधी नित्य करवुं १.

अथवा वावडींगना दाणाओनुं चूर्ण करी, तेने मधथी संयुक्त करीने तेनो भीलामाना क्राथनी साथे जठराग्निना बळ प्रमाणे उपयोग कराववो अने टाढा पाणीनुं अनुपान कराववुं. आ प्रमाणे एक महीना सूधी नित्य करवुं. २.

अथवा वावडींगना दाणाओनुं चूर्ण करी, तेने मधथी तथा द्राक्षना क्राथथी संयुक्त करीने तेनो जठराग्निना बळ प्रमाणे उपयोग कराववो अने टाढा पाणीनुं अनुपान कराववुं. आ प्रमाणे एक महीनासूधी नित्य करवुं. ३.

अथवा वावडींगना दाणाओनुं चूर्ण करी, तेने मधथी तथा आमळाना रसथी युक्त करीने तेनो जठराग्निना बळ प्रमाणे उपयोग कराववो अने टाढा पाणीनुं अनुपान कराववुं. आ प्रमाणे एक महीना सूधी नित्य करवुं. ४.

अथवा वावडींगना दाणाओनुं चूर्ण करी, तेने गळोना क्राथथी संयुक्त करीने तेनो जठराग्निना बळ प्रमाणे उपयोग कराववो अने टाढा पाणीनुं अनुपान कराववुं. आ प्रमाणे एक महीना सूधी नित्य करवुं. ५.

आ रीते आ पांच प्रयोगो कह्या. दरएक प्रयोगमां चूर्णादिक उदरमां पची जाय त्यारे लूण वगरना तथा थोडा स्नेहवाळा मगना तथा आमळाना यूषनी साथे घीवाळो भात नित्य जमाडवो. आ दरएक प्रयोग अरशोने टाळे छे, कृमिओने हणे छे अने ग्रंथादिकनुं ग्रहण करवानी तथा धारण करवानी शक्तिने उत्पन्न करे छे. आ प्रयोगोमांनो कोई पण प्रयोग महीने महीने करवामां आवे तो दरएक महीने आयुष्यमां सो वर्षनो वधारो थाय छे.

६ विडङ्गतण्डुलानां द्रोणं पिष्टपचने पिष्टवदुत्स्वेद्य विगतकषायं स्विन्नमवतार्य दृषदि पिष्टमायसे दृढे कुम्भे मधूदकोत्तरं प्रावृषि भस्मराशावन्तर्गृहे चतुरो मासान्निदध्यात् । वर्षापगमे चोद्धृत्योपसंस्कृतशरीरः सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा प्रातः प्रातर्यथाबलमुपयुञ्जीत । जीर्णे मुद्गामलकयूषेणालवणेनाल्पस्नेहेन घृतवन्तमोदनमश्नीयात् पांशुशय्यायां च शयीत । तस्य मासादूर्ध्वं सर्वाङ्गेभ्यः कृमयो निष्क्रामन्ति तानणुतैलेनाभ्यक्तस्य वंशविदलेनापहरेत् । द्वितीये पिपीलिकास्तृतीये यूकास्तथैवापहरेत् । चतुर्थे दन्तनखरोमाण्यवशीर्यन्ते । पंचमे प्रशस्तगुणलक्षणानि जायन्ते । अमानुषं चादित्यप्रकाशं वपुरधिगच्छति । दूराच्छ्रवणानि दर्शनानि चास्य भवन्ति । रजस्तमसी चापोह्य सत्वमधितिष्ठति । श्रुतिनिगादीपूर्वोत्पादी गजबलोऽश्वजवः पुनर्युवाष्टौ वर्षशतान्यायुरवाप्नोति । तस्याणुतैलमभ्यङ्गार्थे । अजकर्णकषायमुत्सादनार्थे । सोशीरं कूपोदकं स्नानार्थे । चन्दनमुपलेपनार्थे । भल्लातकविधानवदाहारः परिहारश्च ॥

वावडींगनो प्रकारांतरथी रसायन प्रयोग अने तेनां फळो.

६ एक हजार चोवीश तोलां भार वावडींगना दाणाओने लोट पकाववाना वासणमां लोटनी पेठे बाफवा मेली, उपर आवेला क्राथने काहाडी लई, बफाई रहे त्यारे उतारी लई, छीपर उपर वाटी, लोढाना मजबूत घडामां भरी, तेनी उपर ते घ-

डामां मध तथा पेलो क्काथ नाखी, घडानुं मोहोडुं बंध करी दईने तेने प्रावृष् ऋतुमां (आषाढ मासमां) अंदरना घरमां भस्मना ढगलानी अंदर राखी मेलवो. चार महीना सूधी एमने एम रेहेवा दई आश्विन मास व्यतीत थई जाय त्यारे काहाडी लई, वमनविरेचनादिकथी शरीरने शुद्ध करी, ऋग्वेदना सहस्रसंपात नामना अध्यायमां कहेला मंत्रोथी सहस्रहोम करीने पछी ते घडामां रहेला अरिष्टनो नित्य प्रभाते प्रभाते जठराग्निना बळ प्रमाणे उपयोग कराववो. ए पची जाय त्यारे तृण वगरना अने अल्प स्नेहवाळा मगना तथा आमळाना यूषनी साथे घीवाळो भात जमाडवो अने धूळवाळी शय्यामां शयन कराववुं. ए माणसने एक मास पूरो थतां सघळां अंगोमांथी कीडाओ नीकळे छे. कीडाओ नीकळे त्यारे वैद्ये ते माणसना शरीरपर अणुतैलनो (आ स्थानना चोथा अध्यायनो २२ मो विषय जुवो.) अभ्यंग करी वांसनी सळी वगेरे वते कीडाओने काहाडी लेवा. बीजे महिने ए माणसना शरीरमांथी कीडीओ नीकळे छे अने त्रीजे महीने जू नीकळे छे. एओने पण उपर प्रमाणेज काहाडी लेवां. चोथे महिने ए माणसनां दांतो, नखो तथा रूवाडांओ पडी जाय छे. पांचमे महिने श्रेष्ठ गुणोवाळां तथा श्रेष्ठ लक्षणोवाळां दांतो, नखो अने रूवाडांओ नवां उत्पन्न थाय छे. ए माणस सूर्यना जेवा तेजस्वी दिव्य शरीरवाळो थई जाय छे, दूर प्रदेशमां थती वातोने पण सांभळे छे, दूर प्रदेशमां रहेला पदार्थोने पण देखे छे, रजोगुणने तथा तमोगुणने छोडी दईने सत्वगुणनी प्रधानतावाळो थाय छे, एकवार सांभळेला ग्रंथादिकने पाछो मोहोडे बोली देछे, अपूर्व कार्योने उत्पन्न करनारो थाय छे, हाथीना जेवा बळवाळो थाय छे, घोडाना जेवा वेगवाळो थाय छे, पाछो जुवान थाय छे अने आठसो वर्षनुं आयुष्य पामे छे. ए माणसने अभ्यंगने माटे अणुतैल देवुं, शरीरपरना मेलने दूर करवा माटे मोटा राळना झाडनो कल्क चोळवा देवो, स्नानने माटे जेमां वाळो नाख्यो होय एवुं कूवानुं जळ देवुं, अनुलेपनने माटे श्वेतचंदन देवुं अने आ स्थानना ६ ट्ठा अध्यायना २० मा विषयमां कहेला भल्लातकविधानमां जे आहार कह्यो छे ते आहार देवो तथा परेजी पण ए भल्लातकविधानमां कह्या प्रमाणेज पळाववी.

७ काश्मर्याणां निष्कुलीकृतानामेष एव कल्पः पांशुशय्यायोजनवर्जम् । अत्र हि पयसा शृतेन भोक्तव्यम् । आशिषश्च पूर्वेण समानाः । शोणितपित्तनिमित्तेषु विकारेष्वेतेषामुपयोगः ॥

सीवणनां फळोनो रसायन प्रयोग.

७ सीवणनां फळोमांथी ठळीया काहाडी नाखीने ते फळोनो कल्प पण उपर लखेला वावडींगना कल्प प्रमाणेज करवो. आ कल्पमां माणसने धूळवाळी शय्यामां सूवाडवो नहीं अने पकावेला दूधनी साथे भात जमाडवो. आ कल्प करवाथी पण उपर लखेला वावडींगना कल्पना जेवांज फळो थाय छे. रुधिरथी के पित्तथी थएला रोगो उपर सीवणनां फळोनो प्रयोग करवो उत्तम छे.

८ यथोक्तमागारं प्रविश्य बलामूलार्द्धपलं पलं वा पयसालोड्य पिबेत् । जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः । एवं द्वादशरात्रमुपयुज्य द्वादश वर्षाणि वयस्तिष्ठति । एवं दिवसशतमुपयुज्य वर्षशतं वयस्तिष्ठति ॥

१ मूळमां 'सहस्रसंपाताभिहुतं' ए शब्द छे तेनो गयदासाचार्य एवो अर्थ करे छे के लक्ष्मीनी इच्छा होय तो श्रीसूक्तना मंत्रोथी हजार' आहुतिओ होमवी अने पापक्षयादिकनी इच्छा होय तो त्रिपदागायत्रीथी हजार आहुतिओ होमवी.

२ सीवणनुं झाड मोटुं थाय छे. तेना पानडां समुद्रशोषना घाटनां तथा पीपळानां पानडांओथी कांईक मोटां थाय छे, फूलो पीळां थाय छे अने फळो तूरां तथा खटाशवाळां थाय छे. शीवण पोते कडवा स्वादवाळी होय छे.

बळदाणाना छोडनां मूळीयांओनो रसायन प्रयोग.

८ एकमां बीजूं अने बीजामां त्रीजूं एवी रीते त्रेवडा बनावेला घरमां प्रवेश करावी बळदाणाना छोडनां बे तोलां भार अथवा चार तोलां भार मूळीयाना कल्कने दूधमां घोळीने पावो अने ते पची जाय त्यारे दूध, घी तथा भात एओनो आहार करावचो. आ प्रमाणे बार रात सूधी उपयोग करावघामां आवे तो बार वर्ष सूधी जुवानी स्थिर रहे छे अने सो दिवस सूधी उपयोग करावचामां आवे तो सो वर्ष सुधी जुवानी स्थिर रहे छे.

९ एवमेवातिबलानागबलाविदारीशतावरीणामुपयोगः। विशेषस्त्वतिबलामुदकेन नागबलाचूर्णं मधुना विदारीचूर्णं वा क्षीरेण शतावरीमप्येवं पूर्वेणान्यत्समानमाशिषश्च समाः। एतास्त्वोषधयो बलकामानां शोणितं छर्दयतां विरिच्यमानानां चोपदिश्यन्ते॥

खपाट, गंगेटी, फगवेलानो कंद अने शतावरी, एओना रसायन प्रयोगो.

९ खपाट, गंगेटी, फगवेलानो कंद अने शतावरी एओना रसायन प्रयोगो उपर लखेला बळदाणाना मूळीयानां प्रयोग प्रमाणेज करवा. एओमां विशेष ए छे के खपाटना चूर्णनो जळनी साथे उपयोग करावचो, गंगेटीना चूर्णनो मधनी साथे उपयोग करावचो, फगवेलाना कंदना चूर्णनो दूधनी साथे उपयोग करावचो अने शतावरीनो पण दूधनी साथेज उपयोग करावचो. बीजूं सघळुं उपर लखेला बळदाणाना छोडना मूळीयाना प्रयोग प्रमाणेज समजी लेवुं. आ प्रत्येक प्रयोगथी फळ पण बळदाणाना छोडना मूळीयाना प्रयोगथी जे थाय तेज थाय छे. बळनी इच्छा राखनाराओने माटे, लोहीनी उलटी करता होय तेओने माटे अने जेओने वारंवार दस्त लाग्या करतो होय तेओने माटे आ खपाट, गंगेटी, फगवेलानो कंद अने शतावरी ए औषधोनी योजना करवानुं केहेवामां आवे छे.

१० वाराहीमूलतुलाचूर्णं कृत्वा ततो मात्रां मधुयुक्तां पयसालोड्य पिबेत्। जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः। प्रतिषेधोऽत्र पूर्ववत्। क्रियाप्रयोगमुपसेवमानो वर्षशतमायुरवाप्नोति स्त्रीषु चाक्षयताम्॥

एतेनैव चूर्णेन पयोऽवचूर्ण्य शृतशीतमभिमथ्याज्यमुत्पाद्य मधुयुतमुपयुञ्जीत सायम्प्रातरेककालं वा। जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः। एवं मासमुपयुज्य वर्षशतायुर्भवति॥

---

१ बळदाणाना छोड थाय छे. तेमां पीळां फूल थाय छे अने काळां तथा राई जेवडां बीजो थाय छे. ए बीजो बळदाणा केहेवाय छे. बळदाणाना छोडना सावरणा थाय छे. बळदाणाने केटलाएक लोको खरेटी पण केहे छे.

२ खपाटना मोटा छोड थाय छे अने ते बे त्रण जातना थाय छे. फळो चकर जेवां गोळ थाय छे अने कांकसी केहेवाय छे. फूलो पाकां पीळा रंगनां थाय छे. पानडां कोमळ कोमळ अने पीपळाना पानडा जेवा आकारवाळां थाय छे. बीजी जातनी खपाटनां पानडां बपोरीयाना जेवां थाय छे. त्रीजी जातनी खपाट पीळाशवाळां तथा मोटां पानडांवाळी थाय छे.

३ गंगेटीना झाडनां फूलो सफेद थाय छे अने फळो भ्रामणां सरखां चार चार भेळां थाय छे. खाटां, मीटां तथा तूरां ए फळो दीटींयाओनी साथे लटकतां होय छे. भ्रामणानां फळो तो झाडनी डाल साथे चोट्याज रहे छे एटलो फरक छे.

४ फगवेलानो कंद विदारीकंद केहेवाय छे अने भोंकोळुं पण केहेवाय छे. सफेद विदारीकंद क्षीरविदारी केहेवाय छे.

५ शतावरीना सफेद रंगवाळा वेला थाय छे. पानडां शरूना पांनडां जेवां थाय छे. शतावरीने केटलाएक एकलकंटो केहे छे.

वाराहीनां मूळीयाना बे रसायन प्रयोगो.

१० वाराहीनां मूळीयांओनुं चारसो तोलां भार चूर्ण करी तेमांथी अनुकूल पडती मात्रा मधथी संयुक्त करी दूधमां घोळीने पावी अने ते मात्रा पची गया पछी दूध, घी अने भात एओनो आहार कराववो. आ प्रयोगमां भल्लातकना विधान प्रमाणेज परेजी पळाववी. (आ स्थानना छट्ठा अध्यायनो २० मो विषय जुवो.) आ प्रयोगनुं सेवन करनारो पुरुष सो वर्षनुं आयुष्य भोगवे छे अने मैथुनमां क्षीणशक्तिवाळो थतो नथी.

वाराहीना मूळीयानुं चूर्ण दूधमां भभरावी, ते दूधने ऊनुं कर्या पछी थंडुं पाडी, वलोवी, तेमांथी घी उत्पन्न करी, ते घी मधथी संयुक्त करीने सांजे तथा प्रभाते अथवा सांजे के प्रभाते खवराववुं अने पची गया पछी दूध, घी तथा भात एओनो आहार कराववो. आ प्रयोग एक महिना सूधी नित्य करवामां आवे तो तेथी सो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे.

११ चक्षुःकामः प्राणकामो वा बीजकसाराग्निमन्थमूलं निष्क्वाथ्य माषप्रस्थं साधयेत्। तस्मिन्सिध्यति चित्रकमूलानामक्षमात्रं कल्कं दद्यादामलकरसचतुर्थभागम्। ततः स्विन्नमवतार्य सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा शीतीभूतं मधुसर्पिर्भ्यां संसृज्योपयुञ्जीत यथाबलम्। लवणं परिहरन्भक्षयेत्। जीर्णे मुद्गामलकयूषेणालवणेन घृतवन्तमोदनमश्नीयात् पयसा वा मासत्रयमेवमाभ्यां प्रयोगाभ्यां चक्षुः सौपर्णवद्भवत्यनल्पबलः स्त्रीषु चाक्षयो वर्षशतायुर्भवतीति ॥

अडदना बे रसायन प्रयोगो.

११ नेत्रोने अथवा शरीरने बलवत्तर करवानी जेने इच्छा होय तेने माटे बीबलाना (बियाना) सारनो तथा अरणीनां मूळनो क्वाथ करी तेमां चोसठ तोलां भार अडद बाफवा. ए बफाता होय ते समयमां चोथा भागनो आमळांनो रस अने एक तोलां भार चित्रकनां मूळीयांनो कल्क नाखवो. बफाइ रहे त्यारे उतारी लई ऋग्वेदना सहस्रसंपात नामना अध्यायमां कहेला मंत्रोथी सहस्रहोम करी, अडदने थंडा पाडी, लूण नहीं नाखतां मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने तेओनो जठराग्निना बळ प्रमाणे उपयोग कराववो. पची जाय त्यारे लूण वगरना मगना तथा आमळाना यूषनी साथे घीवाळो भात जमाडवो. १.

अथवा ए अडद पची जाय त्यारे दूधनी साथे घीवाळो भात जमाडवो. २.

आ बे प्रयोगोमांथी गमे ते प्रयोग त्रण मगळीना जेवो काळो रंग थाय छे. स्त्रीओ ए रंगथी सोईवते हाथपगमां छुंदणां (त्राजवां) पाडे छे. बीबलानो गुंदर हीरादखण केहेवाय छे. काळा सारवाळो बीयलो वधारे गुणकारी छे.

---

१ पाहाडोमां वाराहीना वेला थाय छे. एनां पानडां नागरवेलनां पान सरखां थाय छे. ए वेला जमीन उपर चाले छे. ए वेला हाथ हाथने छेटे जमीनमां मूळीयां मूकता जाय छे अने ज्यां ज्यां ते मूळीयां होय त्यां त्यां गायनी खरीनी पेठे जोडाजोड बबे कंद थाय छे. ए कंदोउपर रुंछाड घणी होय छे. वाराहीकंदो डुकरकंद पण केहेवाय छे. कारण के एओ रुंछाडवाळा होय छे तथा तेओने डुकरो खाई जाय छे. 'वाराहीकंद' ए नाम पण ए उपरथीज छे.

२ बीबलानां झाड मोटां थाय छे. तेनां पानडां पीपरना पानडां जेवां पण जरा नाहानां थाय छे. फूल पीळां तथा आवळना जेवां थाय छे. एना लाकडानो सार पीळो थाय छे. एनुं लाकडुं पाणीमां पलाळवाथी

३ अरणीनां मोटां झाड थाय छे. पानडां गोळ, झीणां करकरीयां वाळां तथा गंधवाळां थाय छे. फूलो सफेद थाय छे अने फळो नाहाना करमदा जेवडां थाय छे.

४ चित्राना छोड सफेद फूलवाळा, काळां फूलवाळा अने रातां फूलवाळा एम त्रण जातना थाय छे. चित्रानां मूळीयां वाटी अंग उपर थेपली मूकवाथी बळतरा उठे छे अने एक कलाक रहे तो फोडलो उपडे छे. आथीज तेनुं 'अग्नि' ए नाम छे. सफेदथी काळो अने काळाथी रातो उत्तम छे. सफेदनो अनुभव पण मळेलो छे.

हिना सूधी करवामां आवे तो चक्षुओ गरुड पक्षीनां चक्षुओ जेवां बलवत्तर थाय छे. शारीरबळ अत्यंत वधे छे. मैथुन करवामां शक्ति अक्षीणज रह्या करे छे अने सो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे.

१२ भवति चात्र ॥

पयसा सह सिद्धानि नरोऽसनफलानि यः ।
भक्षयंत्पयसा सार्द्धं वयस्तस्य न शीर्यते ॥

बीबलानां फळोनो रसायन प्रयोग.

१२ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के जे माणस दूधमां पकावेलां बीबलानां फळोने दूधनी साथे खावानो प्रयोग करे ते माणसनुं यौवन वींखाई जतुं नथी.

अध्याय २८ मो.

१ अथातो मेधायुष्कामीयं रसायनं चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मेधायुष्कामीयरसायनचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मेधायुःकामः श्वेतावल्गुजफलान्यातपपरिशुष्काण्यादाय सूक्ष्मचूर्णानि कृत्वा गुडेन सह समालोड्य स्नेहकुम्भे सप्तरात्रं धान्यराशौ निदध्यात् । सप्तरात्रादुद्धृत्य हृतदोषस्य यथाबलं पिण्डं प्रयच्छेदनुदिते सूर्ये । उष्णोदकं चानुपिबेत् । भल्लातकविधानवच्चागारप्रवेशः । जीर्णौषधश्चापराह्णे हिमाभिरद्भिः परिषिक्तगात्रः शालीनां षष्टिकानां वा पयसा शर्करामधुरेणौदनमश्नीयादेवं षण्मासानुपयुज्य विगतपाप्मा बलवर्णोपेतः श्रुतिनिगादी स्मृतिमानरोगो वर्षशतायुर्भवति ॥

कुष्ठिनं पाण्डुरोगिणमुदरिणं वा कृष्णाया गोमूत्रेणालोड्यार्द्धपलिकं पिण्डं विगतलौहित्ये सवितरि पाययेत । पराह्णे चालवणेनामलकयूषेण सर्पिष्मन्तमोदनमश्नीयात् । एवं मासमुपयुज्य स्मृतिमानरोगो वर्षशतायुर्भवति ॥

बुद्धि अने आयुष्य ए बन्नेनी वृद्धिने माटे रसायनप्रयोगोनुं प्रकरण.

बावचीना[2] बे रसायन प्रयोगो.

२ जो बुद्धि तथा आयुष्य ए बन्नेनी वृद्धिनी इच्छा होय तो सफेद फूलोवाळी बावचीनां तडकामां सुकाएलां फळोने लई, तेओनुं सूक्ष्म चूर्ण करी, ते चूर्णने गोळथी मिश्रित करी, घीना टीढा घडामां नाखी, घडानुं मोहोडुं बंध करी, ते घडाने धान्यना ढगलामां सात रात सूधी दाटी मूकवो. सात रात थई गया पछी काहाडी लई, वमनविरेचनादिकथी शरीरनुं शोधन करी, सूर्योदयथी पेहेलां जठराग्निना बळप्रमाणे तेमांथी पींडो खवरावो अने खाधा पछी ते उपर ऊनुं पाणी पावुं. आ प्रयोगमां पण भल्लातकना विधान (आ स्थानना छठ्ठा अध्यायनो २० मो विषय जुवो) प्रमाणे पवन वगरना घरमां रेहेवुं. औषध पची गया पछी अपराह्ण समये टाढां जळवते स्नान तथा परिषेचन करी साकरथी मधुर करेला दूधनी साथे राता चोखानो के साठी चोखानो भात जमाडवो. आ प्रमाणे छ महिना सूधी करवामां आवे तो पापो टळी जाय छे, उत्तम बळ तथा उत्तम वर्ण प्राप्त थाय छे, ग्रंथादिकनुं एकवार श्रवण थतांज ते ग्रंथादिक मोहोडे बोली देखाडवानी शक्ति प्राप्त थाय छे, स्मरणशक्ति बहुज प्राप्त थाय छे, आरोग्य रेहे छे अने सो वर्षनुं आयुष्य थाय छे. १.

१ प्रतिघात न पामे एवी बुद्धि तथा घणुं आयुष्य आपे एवा रसायन प्रयोगोना निरूपण विषेनो.

२ बावचीना छोड सफेद फूलवाळा अने काळां फूलवाळा एम बे जातना थाय छे. एनां पानडां गुवारना जेवां थाय छे अने फळो झीणां तथा जराक गंधवाळां थाय छे.

जो कोढ, पांडुरोग के उदररोग थएल होय तो काळां फूलवाळी बाबचीनां तडकामां सुकाएलां फळोने लई तेओनुं सूक्ष्म चूर्ण करी, गोमूत्रथी मेळवी दई तेने घीना रीटा घडामां भरी, मोहोडुं बंध करीने ते घडाने धान्यना ढगलामां सात रात सूधी डाटी मुकवो. सात रात थई गया पछी काहाडी लई, वमनविरेचनादिकथी शरीरनुं शोधन करी, पवन वगरना घरमां राखी, सूर्यनी रताश मटी जाय ते समये एटले थोडोक दिवस चड्या पछी जठराग्निना बळ प्रमाणे तेमांथी पींडो लईने गोमूत्रनी साथे पावो अने अपराह्ण समयमां लूण वगरना आमळाना यूषनी साथे घीवाळो भात जमाडवो. आ प्रमाणे एक महीना सूधी प्रयोग करवामां आवे तो रोगो टळी जाय छे, स्मरणशक्ति बहुज प्राप्त थाय छे अने आयुष्य सो वर्षनुं थाय छे. २.

३ एष एवोपयोगश्चित्रकमूलानां चित्रकमूले विशेषो द्विपलिकं पिण्डं परं प्रमाणं शेषं पूर्ववत्॥

चित्रक (चित्रा)नां मूळीयाना बे रसायन प्रयोगो.

३ चित्रकनां मूळीयांओना पण उपर प्रमाणेज बे रसायन प्रयोगो करवा. आ प्रयोगोमां बीजूं सघळुं उपर प्रमाणेज लेवुं. परंतु एटलो विशेष छे के चित्रकनो जे पींडो लेवो ते वधारेमां वधारे आठ तोलां सूधी लेवो.

४ हृतदोष एव प्रतिसंसृष्टभक्तो यथाक्रममागारं प्रविश्य मण्डूकपर्णीस्वरसमादाय सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा यथाबलं पयसालोड्य पिबेत्पयोऽनुपानम् । तस्यां जीर्णायां पयः सर्पिरोदन इत्याहारः । एवं त्रीन्मासानुपयुञ्जानो ब्रह्मवर्चस्वी श्रुतनिगादी भवति वर्षशतमायुरवाप्नोति । त्रिरात्रोपोषितश्च त्रिरात्रमेनां पयसोपयुञ्जीत तिलैर्वा सह । जीर्णे यवान्नं पयसा भक्षयेत् । त्रिरात्रादूर्ध्वं पयः सर्पिरोदनं चोपयुञ्जीत॥

बिल्वमात्रं पिण्डं वा पयसालोड्य पिबेदेवं दशरात्रमुपयुज्य मेधावी वर्षशतायुर्भवति ॥

हृतदोष एवागारं प्रविश्य प्रतिसंसृष्टभक्तो ब्राह्मीस्वरसमादाय सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा यथाबलमुपयुञ्जीत । जीर्णेस्मिश्चापराह्णे यवागूमलवणां पिबेत् क्षीरसात्म्यो वा पयसा पिबेत् । एवं सप्तरात्रमुपयुज्य ब्रह्मवर्चस्वी मेधावी भवति । द्वितीयं सप्तरात्रमुपयुज्य ग्रन्थमीप्सितमुत्पादयति । नष्टं चास्य प्रादुर्भवति । तृतीयं सप्तरात्रमुपयुज्य द्विरुच्चारितं शतमप्यवधारयति । एवमेकविंशतिरात्रमुपयुज्यालक्ष्मीरपक्रामति । मूर्त्तिमती चैनं वाग्देव्यनुप्रविशति । सर्वाश्चैनं श्रुतय उपतिष्ठन्ति । श्रुतधरः पञ्चवर्षशतायुर्भवति ॥

ब्राह्मीस्वरसप्रस्थद्वये घृतप्रस्थं विडङ्गतण्डुलानां कुडवं द्वे द्वे पले वचात्रिवृतयोर्द्वादश हरीतक्यामलकविभीतकानि श्लक्ष्णपिष्टान्यावाप्यैकध्यं साधयित्वा स्वनुगुप्तं निदध्यात् । ततः पूर्वविधानेन मात्रां यथाबलमुपयुञ्जीत । जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः । एतेनोर्ध्वमधस्तिर्यक्कृमयो निष्क्रामन्ति । अलक्ष्मीरपक्रामति । पुष्करकर्णः स्थिरवयाः श्रुतनिगादी त्रिवर्षशतायुर्भवत्येतदेव कुष्ठविषमज्वरापस्मारोन्मादविषभूतग्रहेष्वन्येषु च महाव्याधिषु संशोधनमादिशन्ति ॥

विद्याब्राह्मीना[2] पांच रसायन प्रयोगो.

४ क्रम प्रमाणे वमनविरेचनादिकथी दोषोनुं संशोधन करी, संशोधनथी उत्पन्न थएली निर्बळताने आ स्थानना ३९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे आहा-

१ मूळमां जे 'कृष्णा' शब्द छे तेनो अर्थ 'काळी बावची' नथी पण 'पीपळ' छे एम जेज्जटाचार्य केहे छे. परंतु गयदासाचार्ये ए वात स्वीकारी नथी.

२ ब्राह्मी के जे विद्याब्राह्मी पण केहेवाय छे तेना छोड थाय छे. पानडां नाहानां, गोळ तथा करकरीआळां थाय छे. स्वाद कडवो अने तूरो होय छे.

रथी टाळी, पवन वगरना अंदरना घरमां प्रवेश करावी, विद्याब्राह्मीनो स्वरस लई, ऋग्वेदना सहस्रसंपात नामना अध्यायमां कहेला मंत्रोथी सहस्रहोम करी, जठराग्निना बळ प्रमाणे स्वरसनी मात्रा लई, दूधमां मेळवी दईने पावी अने स्वरसनी मात्रा पीधा पछी तेनी उपर दूध पावुं. ए मात्रा पची गया पछी दूध, घी अने भात एओनो आहार कराववो. आ प्रमाणे त्रण महिना सूधी अखंड प्रयोग करवामां आवे तो ब्रह्मतेज प्राप्त थाय छे, एकवार सांभळेला ग्रंथादिकनो ते प्रमाणेज पाछो अनुवाद करी देवानी शक्ति प्राप्त थाय छे अने आयुष्य सो वर्षनुं थाय छे. १.

अथवा त्रण रात सूधी उपवास करावी, पवन वगरना घरमां राखी, त्रण रात्रि सूधी विद्याब्राह्मीना स्वरसनो दूधनी साथे अथवा तिलोनी साथे उपयोग कराववो अने पची गया पछी दूधनी साथे जवनुं अन्न खवराववुं. ते पछी त्रण रात सुधी दूध, घी अने भात एओनो आहार कराववो. आ प्रयोग करवाथी उत्तम बुद्धि अने सो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे. २.

अथवा त्रण रात सूधी उपवास करावी, पवन वगरना घरमां राखी, नित्य चार तोलां भार विद्याब्राह्मीनो कल्क दूधमां घोळीने पावो अने जीर्ण थया पछी दूध, घी तथा भात एओनो आहार कराववो. आ प्रमाणे दश दिवस सूधी प्रयोग करवामां आवे तो उत्तम धारणाशक्तिवाळी बुद्धि प्राप्त थाय छे अने सो वर्षनुं आयुष्य मळे छे. ३.

अथवा वमनविरेचनादिकथी दोषोनुं संशोधन करी, संशोधनथी उत्पन्न थएली निर्बळताने आ स्थानना ३९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे आहारथी टाळी, पवन वगरना घरमां राखी, विद्याब्राह्मीनो स्वरस लई, ऋग्वेदना सहस्रसंपात नामना अध्यायमां कहेला मंत्रोथी सहस्रहोम करी, जठराग्निना बळ प्रमाणे ते स्वरस पावो अने जीर्ण थया पछी अपराह्ण समयमां लूण वगरनी यवागू पावी अथवा दूधनुं सात्म्य होय तो दूधनी साथे लूण वगरनी यवागू पावी. आ प्रमाणे सात दिवस सूधी प्रयोग करवामां आवे तो ब्रह्मतेज अने उत्तम धारणाशक्ति प्राप्त थाय छे. चौद रात सूधी प्रयोग करवामां आवे तो धारेलो ग्रंथ रची शकाय छे अने नष्ट थएलुं ज्ञान पण पाछुं प्रकट थाय छे. एकवीश रात सूधी प्रयोग करवामां आवे तो सो श्लोकोनुं पण बे वार बोलायाथी अवधारण करी शकाय छे. आ एकवीश रातना प्रयोगथी अलक्ष्मी पण जती रहे छे, साक्षात् देहधारिणी सरस्वती देवी हृदयमां प्रवेश करे छे, सघळा वेदो उपस्थित थई जाय छे, एकवार सांभळेलो गंभीर विषय पण बराबर ठसी जाय छे अने पांचसो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे. ४.

अथवा विद्या ब्राह्मीना एकसो अठ्यावीश तोलांभार स्वरसमां ६४ तोलां भार घी, सोळ तोलां भार वावडींगना दाणानुं बारीक चूर्ण, आठ तोलां भार वजनुं बारीक चूर्ण, आठ तोलां भार नसोतरनुं बारीक चूर्ण अने अडतालीश तोलां भार त्रिफळानुं बारीक चूर्ण नाखी, एकंदर पकावी, सिद्ध थएला घीने सारा बंदोबस्तथी राखी मेलवुं. पछी वमनविरेचनादिकथी शरीरनुं संशोधन करी, संशोधनथी उत्पन्न थएली निर्बळताने आ स्थानना ३९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे आहारथी टाळी, उपर कह्याप्रमाणे सहस्रहोम करी, जठराग्निना बळप्रमाणे ते घीनी मात्रानो उपयोग कराववो अने पची गया पछी दूध, घी तथा भात एओनो आहार कराववो. आ प्रयोग करवाथी कृमिओ ऊंचा, नीचा तथा आडा मार्गोथी नीकळी जाय छे, अलक्ष्मी दूर थई जाय छे, कान कमळ जेवा थाय छे, यौवन स्थिर थाय छे, एकवार सांभळीनेज ते पाछुं बोली देखाडवानी शक्ति प्राप्त थाय छे अने त्रणसो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे. कोढ, विषमज्वर, अपस्मार, उन्माद, विष, भूतो तथा ग्रहो एओमां अने बीजा पण महाव्याधिओमां आ घीथीज संशोधन करवुं एम आचार्यो कहे छे. ५.

५ हृतदोष एवागारं प्रविश्य हैमवत्या वचायाः पिण्डमामलकमात्रमभिहुतं पयसालोड्य पिबेज्जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहार एवं द्वादशरात्रमुपयुञ्जीत ततोऽस्य श्रोत्रं विव्रियते द्विरभ्यासात्स्मृतिमान् भवति त्रिरभ्यासाच्छतमादत्ते चतुर्द्वादशरात्रमुपयुज्य सर्वं तरति किल्विषं तार्क्ष्यदर्शनमुत्पद्यते शतायुश्च भवति ॥

द्वे द्वे पले इतरस्या वचाया निष्क्वाथ्य पिबेत् पयसा। समानं भोजनं समाः पूर्वेणाशिषश्च ॥

वचाशतपाकं वा सर्पिर्द्रोणमुपयुज्य पञ्चवर्षशतायुर्भवति गलगण्डापचीश्लीपदस्वरभेदांश्चापहन्तीति ॥

वजनां त्रण रसायन प्रयोगो.

५ वमनविरेचनादिकथी दोषोनुं संशोधन करी, पवन वगरना घरमां प्रवेश करावी, सफेद खुरसाणी वजनो आमळां जेवडो पिंडो करी, उपर कह्याप्रमाणे सहस्रहोम करी ते पिंडाने ब्राह्मीना स्वरसमां पकावेला दूधमां घोळीने पावो अने जीर्ण थया पछी दूध, घी तथा भात एओनो आहार करावबो. आ प्रमाणे बार रात सूधी करावबामां आवतां कान दूरनी वातो सांभळवाने शक्तिमान् थाय छे, चोवीश रात सूधी करावबामां आवतां उत्तम स्मरणशक्ति प्राप्त थाय छे, छत्रीश रात सूधी करावबामां आवतां सो श्लोकोनुं धारण करवानी शक्ति प्राप्त थाय छे अने अडतालीश रात सूधी करावबामां आवतां सघळुं पाप टळी जाय छे, गरुडपक्षीना जेवी दूरदर्शन शक्ति उत्पन्न थाय छे तथा सो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे.

वमनविरेचनादिकथी दोषोनुं संशोधन करी, पवन वगरना घरमां राखी, खुरसाणीथी जूदी बीजी जातनी वजने (घोडावजने के बालावजने) एक आमळा जेटली लई, उपर कह्या प्रमाणे सहस्रहोम करी, ते वजने दूधमां पकावी, दूधनी साथे पावी अने जीर्ण थया पछी दूध, घी तथा भात एओनो आहार करावबो. आ प्रमाणे बार रात सूधी करावबामां आवतां कान दूरनी वातो सांभळवाने शक्तिमान् थाय छे, चोवीश रात सूधी करावबामां आवतां उत्तम स्मरणशक्ति प्राप्त थाय छे, छत्रीश रात सूधी करावबामां आवतां सो श्लोकोनुं धारण करवानी शक्ति प्राप्त थाय छे अने अडतालीश रात सूधी करावबामां आवतां सघळुं पाप टळी जाय छे, गरुडपक्षीना जेवी दूरदर्शन शक्ति उत्पन्न थाय छे तथा सो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे.

वजना क्वाथथी तथा कल्कथी सो वार पकावेला एक हजार चोवीश तोलां भार घीनो जठराग्निने अनुसरी अविच्छिन्न रीते योग्य मात्राथी उपयोग करावबामां आवे तो पांचसो वर्षनुं आयुष्य प्राप्त थाय छे तथा बुद्धिनी वृद्धि थाय छे. आ प्रयोगथी गलगंड, अपची, श्लीपद अने स्वरभेद एओ पण नष्ट थई जाय छे. (आ प्रयोगनो बीजो सघळो विधि उपर प्रमाणे समजी लेवो.)

६ अथायुःकामीयं वक्ष्यामः ॥

मन्त्रौषधसमायुक्तं संवत्सरफलप्रदम्।

आयुष्यनी वृद्धि माटेना रसायन प्रयोगोनुं प्रकरण.

६ हवे आयुष्यनी वृद्धि माटेना रसायन प्रयोगो मंत्रोनी तथा औषधोनी साथे कहीए छीए के जे प्रयोगो एक वर्षे फळ आपे छे.

७ बिल्वस्य चूर्णं पुष्ये तु हुत्वा वारान्सहस्रशः।
श्रीसूक्तेन नरः काल्ये ससुवर्णं दिने दिने।
सर्पिर्मधुयुतं लिह्यादलक्ष्मीनाशनं परम् ॥

बीलांना चूर्णनो रसायन प्रयोग.

७ जे दिवसे पुष्य नक्षत्र होय ते दिवसे ऋग्वेदमां कहेला श्रीसूक्तथी दशसहस्र होम करी प्रभातमां सुवर्णथी, घीथी तथा मधथी मिश्रित करेलुं काचां बीलांनुं चूर्ण चाटवामां आवे तो आयु-

१ वज घणा पाणावाळी जग्यामां थाय छे अने तं रेतामा मूळरूपे थाय छे.

प्यनी वृद्धि थाय छे अने अलक्ष्मीनो पण सारी पेठे विनाश थाय छे.

८त्वचं बिल्वस्य मूलं च क्वाथयित्वा दिने दिने।
प्रपिबेत्पयसा सार्द्धं स्नात्वा हुत्वा समाहितः॥
दशसाहस्रमायुष्यं स्मृतं युक्तरथं भवेत्।

बीलीनी छालना तथा मूळना क्काथनो रसायन प्रयोग.

८ जे दिवसे नक्षत्रादिकनो सारो योग होय ते दिवसे नाही, दश हजार आहुतिओनो होम करी, नित्य बीलीनी छालनो तथा मूळनो क्काथ दूधनी साथे पीवामां आवे तो ते रसायनथी आयुष्य वधे छे.

९हुत्वा बिसानां क्वाथं तु मधुलाजैश्च संयुतम्॥
अमोघं शतसाहस्रं युक्तं युक्तरथं स्मृतम्।

कमळनां मूळोना क्काथनो रसायन प्रयोग.

९ जे दिवसे नक्षत्रादिकनो सारो योग होय ते दिवसे नाही. लाख आहुतिओनो होम करी, दिवसे दिवसे कमळनां मूळोनो क्काथ बनावी ते क्काथ मधथी तथा साळनी धाणीथी युक्त करीने पीवामां आवे तो ते रसायनथी अवश्य आयुष्यनी वृद्धि थाय छे.

१० सुवर्णं पद्मबीजानि मधु लाजाः प्रियङ्गवः॥
गव्येन पयसा पीतमलक्ष्मीं प्रतिषेधयेत्।

सुवर्ण, कमळकाकडी, मध, साळनी धाणी तथा घउलां एओनो रसायन प्रयोग.

१० प्रातःस्नान करी सुवर्ण, कमळकाकडीनी अंदरथी जे गर्भ नीकळे छे ते, मध, साळनी धाणी तथा घउलां एओने गायना दूधमां वाटी, गायना दूधनी साथे नित्य पीवामां आवे तो तेथी आयुष्य वधे छे अने अलक्ष्मी पण नष्ट थाय छे.

११ नीलोत्पलदलक्काथो गव्येन पयसा शृतः॥
स सुवर्णतिलैः सार्द्धमलक्ष्मीनाशनः स्मृतः।

नील कमळना क्काथनो रसायन प्रयोग.

११ गायना दूधथी पकावेला नील कमळना क्काथमां सुवर्ण तथा तिल नाखीने ते क्काथ नित्य पीवामां आवे तो आयुष्यनी वृद्धि थाय छे अने अलक्ष्मीनो पण नाश थाय छे.

१२ गव्यं पयः सुवर्णं च मधूच्छिष्टं च माक्षिकम्
पीतं शतसहस्राभिहुतं युक्तरथं स्मृतम्।

सुवर्ण, मीण अने मध एओनो रसायन प्रयोग.

१२ जे दिवसे नक्षत्रादिकनो सारो योग होय ते दिवसे लाख आहुतिओनो होम करी दिवसे दिवसे सुवर्ण, मीण अने मध एओने गायना दूधमां मिश्रित करी ते दूध पीवामां आवे तो ते रसायनथी आयुष्य वधे छे.

१३ वचाघृतं सुवर्णं च बिल्वचूर्णमिति त्रयम्॥
मेध्यमायुष्यमारोग्यपुष्टिसौभाग्यवर्द्धनम्।

वजनुं घी, सुवर्ण अने काचां बीलानुं चूर्ण एओनो रसायन प्रयोग.

१३ वजनुं घी, सुवर्ण अने काचां बीलानुं चूर्ण एओनो नित्य उपयोग करवामां आवे तो तेथी बुद्धि, आयुष्य, आरोग्य, पुष्टि अने सौभाग्य वृद्धि पामे छे.

१४ वासामूलतुलाक्काथे तैलमावाप्य साधितम्।
हुत्वा सहस्रमश्नीयान्मेध्यमायुष्यमुच्यते।

अरडूसीना तैलनो रसायन प्रयोग.

१४ चारसो तोलां भार अरडूसीनां मूळीयांना क्काथमां पकावेलुं तैल नित्य जमवामां आवे तो तेथी आयुष्य वधे छे अने बुद्धि पण वधे छे. आ प्रयोगना आरंभमां हजार आहुतिओनो होम करवो जोइए.

१५ यावकांस्तावकान्भक्षेदभिभूय यवांस्तथा॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तान् शिक्षाचरणवद्भवेत्।

जवनो रसायन प्रयोग.

१५ चारसो तोलांभार जवने कूटी, तेओनां

भक्ष्यो बनावी ते भक्ष्योने पीपळथी तथा मधथी संयुक्त करीने नित्य योग्य मात्राथी खावामां आवे तो तेथी आयुष्य वधे छे अने शास्त्राभ्यास पण अनायासे थाय छे.

१६ मध्वामलकचूर्णानि सुवर्णमिति च त्रयम्॥ प्राश्यारिष्टगृहीतोऽपि मुच्यते प्राणसंशयात् ।

मध, आमळांनुं चूर्ण अने सुवर्ण एओनो रसायन प्रयोग.

१६ आमळांनुं चूर्ण अने सुवर्ण एओने मधमां कालवीने नित्य खवराववामां आवे तो रिष्टग्रस्त माणस पण बची जाय छे.

१७ शतावरीघृतं सम्यगुपयुक्तं दिने दिने ॥ सक्षौद्रं ससुवर्णं च नरेन्द्रं स्थापयेद्वशे ।

शतावरीना घीनो रसायन प्रयोग.

१७ शतावरीना क्वाथथी तथा कल्कथी घी पकावी ते घी सुवर्णथी तथा मधथी संयुक्त करीने योग्य रीते नित्य खावामां आवे तो तेथी आयुष्य वधे छे अने राजा पण वश्य थाय छे.

१८ गोचन्दना मोहनिका मधुकं माक्षिकं मधु ॥ सुवर्णमिति संयोगो लेह्यः सौभाग्यमिच्छता ।

घउलां, पुत्रजीवी, जेठीमध, मध अने सुवर्ण एओनो रसायन प्रयोग.

१८ जेने आयुष्यनी तथा सौभाग्यनी इच्छा होय तेणे घउलां, पुत्रजीवी (के जेने हिंदुस्तानीमां जियापोता कहे छे ते,) जेठीमध अने सुवर्ण एओने मधमां कालवीने नित्य चाटवां.

१९ पद्मनीलोत्पलक्वाथे यष्टीमधुकसंयुते । सर्पिरासादितं गव्यं ससुवर्णं सदा पिबेत् ॥ पयश्चानुपिबेत्सिद्धं तेषामेव समुद्भवे । अलक्ष्मीघ्नं सदायुष्यं राज्याय सुभगाय च ॥

पद्मादि घृतनो रसायन प्रयोग.

१९ श्वेतकमळ, नीलकमळ अने जेठीमध एओना क्वाथमां गायनुं घी पकावी ते घी सुवर्णथी संयुक्त करीने नित्य पीवुं अने ते उपर ए श्वेतकमळ वगेरेनां फळोना क्वाथथी पकावेलुं दूध पीवुं. आ प्रयोग करवाथी आयुष्य सारी रीते वधे छे, अलक्ष्मी टळे छे, राज्यमां मान मळे छे अने सौभाग्य प्राप्त थाय छे.

२० यत्र नोदीरितो मन्त्रो योगेष्वेतेषु साधने । शब्दिता तत्र सर्वत्र गायत्री त्रिपदा भवेत् ॥

जे जे प्रयोगना विषयमां होम करवानुं कह्युं छे पण मंत्र कह्यो नथी ते ते प्रयोगना विषयमां गायत्रीमंत्र लेवो.

२० आ रसायन प्रयोगोमांना जे जे प्रयोगना विषयमां होम करवानुं कह्युं छे पण ते होमनो मंत्र जणाव्यो नथी ते ते प्रयोगना विषयमां त्रिपदागायत्रीमंत्रनुं ग्रहण करवुं.

२१ पाप्मानं नाशयन्त्येता द्युश्चौषधयः श्रियम् कुर्युर्नागबलं चापि मनुष्यममरोपमम् ॥

उपर कहेली औषधिओनी फळश्रुति.

२१ आ रसायन प्रयोगोमां जणावेली औषधिओ पापने नष्ट करे छे, लक्ष्मी आपे छे. अने माणसने हाथीना जेवा बळवाळो तथा देव जेवा प्रभाववाळो बनावी दे छे.

२२ सतताध्ययनं वादः परतन्त्रावलोकनम् । तद्विद्याचार्यसेवा च बुद्धिमेधाकरो गणः ॥

निरंतर अध्ययनादिक पण रसायन प्रयोगोनी पेठेज बुद्धिनी वृद्धि करे छे.

२२ निरंतर अध्ययन, वाद, पराया तंत्रोनुं (न्याय, सांख्य तथा व्याकरण वगेरेनुं) अवलोकन अने ते ते विद्याओने जाणनारा आचार्योनुं सेवन ए वर्ग पण रसायन प्रयोगोनी पेठेज बुद्धिनी तथा धारणाशक्तिनी वृद्धि करे छे.

२३ आयुष्यं भोजनं जीर्णे वेगानां चाविधारणम् । ब्रह्मचर्यमहिंसा च साहसानां च वर्जनम् ॥

ब्रह्मचर्यादिक पण रसायन प्रयोगोनी पेठेज आयुष्यनी वृद्धि करे छे.

२३ ब्रह्मचर्य, अहिंसा, साहसोनो त्याग, प्रथमनुं भोजन पचीगया पछीज बीजूं भोजन अने मलमूत्रादिकना वेगोनुं नहीं अटकाववुं. ए वर्ग पण रसायन प्रयोगोनी पेठेज आयुष्यनी वृद्धि करे छे.

अध्याय २९ मो.

१ अथातः स्वभावव्याधिप्रतिषेधनीयं रसायनं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्वभावव्याधिप्रतिषेधनीयरसायन' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ ब्रह्मादयोऽसृजन्पूर्वममृतं सोमसंज्ञितम् ।
जरामृत्युविनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते ॥

सोमरूप रसायननुं विधान कहेवानी प्रतिज्ञा.

२ पूर्वे जराना तथा मृत्युना विनाशने माटे ब्रह्मादिक महात्माओए सोम (सोमवल्ली–सोमलता) नामनुं जे अमृत उत्पन्न कर्युं छे तेनुं विधान कहीएछीए. (सोमनी ओळखाण आ अध्यायमांज पाछळथी आपवामां आवशे.)

३ एक एव खलु भगवान् सोमः स्थाननामाकृतिवीर्यविशेषैश्चतुर्विंशतिधा भिद्यते ।

तद्यथा ।

अंशुमान्मुञ्जवांश्चैव चन्द्रमा रजतप्रभः ।
दूर्वासोमः कनीयांश्च श्वेताक्षः कनकप्रभः ॥
प्रतानवांस्तालवृन्तः करवीरोऽशवानपि ।
स्वयम्प्रभो महासोमो यश्चापि गरुडाहृतः ॥
गायत्रस्त्रैष्टुभः पाङ्क्तो जागतः शाक्करस्तथा ।
अग्निष्टोमो रैवतश्च यथोक्त इति संज्ञितः ॥
गायत्र्या त्रिपदा युक्तो यश्चोडुपतिरुच्यते ।
एते सोमाः समाख्याता वेदोक्तैर्नामभिः शुभैः ॥

सोमना चोवीश भेद.

३ सोम के जे मोटा सामर्थ्यवाळो छे ते पोते एक छतां पण स्थानोना, नामोना, आकृतिओना तथा वीर्यना विशेषोथी चोवीश प्रकारनो थाय छे.

एकज सोमना अंशुमान्, मुंजवान्, चंद्रमा, रजतप्रभ, दूर्वासोम, कनीयान्, श्वेताक्ष, कनकप्रभ, प्रतानवान्, तालवृंत, करवीर, अंशवान्, स्वयंप्रभ, महासोम, गरुडाहृत, गायत्र, त्रैष्टुभ, पांक्त, जागत, शाकर, अग्निष्टोम, रैवत, यथोक्त अने उडुपति ए नामना चोवीश भेद छे. आ सवळां शुभ नामो वेदमां कहेलां छे अने वेदमाता त्रिपदा गायत्री पण सोमनुं प्रतिपादन करे छे.

४ सर्वेषामेव चैतेषामेको विधिरुपासने ।
सर्वे तुल्यगुणाश्चैव विधानं तेषु वक्ष्यते ॥

सघळा प्रकारना सोमोना सेवननो विधि तथा ते सोमोना गुणोनी तुल्यता.

४ ए सघळा प्रकारना सोमोना सेवननो विधि एकज छे अने तेओना गुणो पण तुल्यज छे. ए सोमोना सेवननुं विधाभ नीचेप्रमाणे छे.

५ अतोऽन्यतमं सोममुपयुयुक्षुः सर्वोपकरणपरिचारकोपेतः प्रशस्तदेशे त्रिवृतमागारं कारयित्वा हृतदोषः प्रतिसंसृष्टभक्तः प्रशस्तेषु तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रेषु सोममादायाध्वरकल्पेनाहृतमभिषुतमभिहुतं चान्तरागारे कृतमङ्गलः सोमकन्दं सुवर्णसूच्या विदार्य पयो गृह्णीयात्सौवर्णे पात्रेऽञ्जलिमात्रं ततः सकृदेवोपयुञ्जीत नास्वादयंस्तत उपस्पृश्य शेषमप्स्ववसाद्य यमनियमाभ्यामात्मानं संयोज्य वाग्यतोऽभ्यन्तरतः सुहृद्भिरुपास्यमानो विहरेत् ॥

१ भूख, तरश, जरा तथा मृत्यु वगेरे स्वाभाविक व्याधिओनो लांबा काळ सूधी अटकाव करनारा रसायनना निरूपण विषयनो.

रसायनं पीतवांस्तु निवाते तन्मनाः शुचिः ।
आसीत तिष्ठेत्क्रामेच्च न कथञ्चन संविशेत् ॥

सायं च भुक्तवान् श्रुतशान्तिः कुशशय्यायां कृष्णाजिनोत्तरायां सुहृद्भिरुपास्यमानः शयीत। तृषितो वा शीतोदकमात्रां पिबेत् । ततः प्रातरुत्थायोपश्रुतशान्तिः कृतमङ्गलो गां स्पृष्ट्वा तथैवासीत । तस्य जीर्णे सोमे छर्दिरुत्पद्यते । ततः शोणिताक्तं कृमिव्यामिश्रं छर्दितवतः सायं शृतशीतं क्षीरं वितरेत् । ततस्तृतीयेऽहनि कृमिव्यामिश्रमतिसार्यते । स तेनानिष्टप्रतिग्रहभुक्तप्रभृतिभिर्विशेषैर्मुक्तः शुद्धतनुर्भवति । ततः सायं स्नातस्य पूर्ववदेव क्षीरं वितरेत् । क्षौमवस्त्रास्तृतायां चैनं शय्यायां शाययेत । ततश्चतुर्थेऽहनि तस्य श्वयथुरुत्पद्यते । ततः सर्वाङ्गेभ्यः कृमयो निष्क्रामन्ति । तदहश्च शय्यायां पांशुभिरवकीर्यमाणः शयीत । ततः सायं पूर्ववदेव क्षीरं वितरेत् । एवं पंचमषष्ठयोर्दिवसयोर्वर्त्तेत । केवलमुभयकालमस्मै क्षीरं वितरेत्।ततः सप्तमेऽहनि निर्मांसस्त्वगस्थिभूतः केवलं सोमपरिग्रहादेवोच्छ्वसिति । तदहश्च क्षीरेण सुखोष्णेन परिषिच्य तिलमधुकचन्दनानुलिप्तदेहं पयः पाययेत् । ततोऽष्टमेऽहनि प्रातरेव क्षीरपरिषिक्तं चन्दनप्रदिग्धगात्रं पयः पाययित्वा पांशुशय्यां समुत्सृज्य क्षौमास्तृतायां शाययेत् । ततो मांसमाप्यायते त्वक्चावदलति । दन्तनखरोमाणि चास्य पतन्ति । तस्य नवमदिवसात्प्रभृत्यणुतैलाभ्यङ्गः सोमवल्ककषायपरिषेकश्च । ततो दशमेऽप्येतदेव वितरेत् । ततोऽस्य त्वक्स्थिरतामुपैति । एवमेकादशद्वादशयोर्वर्त्तेत । तत्र त्रयोदशात् प्रभृति सोमवल्ककषायपरिषेकः । एवमाषोडशाद्वर्त्तेत । ततः सप्तदशाष्टादशयोर्दिवसयोर्दशना जायन्ते शिखरिणः स्निग्धवज्रवैदूर्यस्फटिकनिकाशाः समाः स्थिराः सहिष्णवः । तदा प्रभृति चानवैः शालितण्डुलैः क्षीरयवागूमुपसेवेत यावत् पंचविंशतिरिति । ततोऽस्मै दद्याच्छाल्योदनं मृदूभयकालं पयसा । ततोऽस्य नखा जायन्ते विद्रुमेन्द्रगोपकतरुणादित्यप्रकाशाः स्थिराः स्निग्धा लक्षणसम्पन्नाः केशाश्च जायन्ते त्वक्च नीलोत्पलातसीपुष्पवैदूर्यप्रकाशा । ऊर्ध्वं च मासात्केशान्वापयेद्वापयित्वा चोशीरचन्दनकृष्णतिलकल्कैः शिरः प्रदिह्यात् पयसा वा स्नापयेत् ॥

ततोऽस्यानन्तरं सप्तरात्रात्केशा जायन्ते भ्रमरांजननिभाः कुंचिताः स्निग्धाः । ततस्त्रिरात्रात्प्रथमपरिसरान्निष्क्रम्य मुहूर्तं स्थित्वा पुनरेवान्तःप्रविशेत् । ततोऽस्य बलातैलमभ्यङ्गार्थेऽवचार्यम् । यवपिष्टमुद्वर्त्तनार्थं । सुखोष्णं च पयः परिषेकार्थं । अजकर्णकषायमुत्सादनार्थं । सोशीरं कूपोदकं स्नानार्थं । चन्दनमनुलेपार्थं । आमलकरसविमिश्राश्चास्य यूषसूपविकल्पा भोजने । क्षीरमधुकसिद्धं च कृष्णतिलतैलमवचारणार्थं । एवं दशरात्रम्।ततोऽन्यद्दशरात्रं द्वितीये परिसरे वर्त्तेत । ततस्तृतीये परिसरे स्थिरीकुर्वन्नात्मानमन्यद्दशरात्रमासीत । किंचिदातपपवनान् सेवेत पुनश्चान्तः प्रविशेत् । नचात्मानमादर्शेषु वा निरीक्षेत रूपशालित्वात् । ततोऽन्यद्दशरात्रं क्रोधादीन् परिहरेत् ॥

एवं सर्वेषामुपयोगः । विशेषतस्तु वल्लीप्रतानक्षुपादयः सोमा भक्षयितव्याः । तेषां तु प्रमाणमर्द्धचतुर्थमुष्टयः । अंशुमन्तं सौवर्णे पात्रे चन्द्रमसं राजते चोपयुज्याष्टगुणमैश्वर्यमवाप्येशानं देवमनुप्रविशति । शेषांस्तु ताम्रमये मृण्मये वा रोहिते वा चर्मणि वितते । शूद्रवर्जं त्रिभिर्वर्णैः सोमा उपयोक्तव्याः ।

ततश्चतुर्थे मासे पौर्णमास्यां शुचौ देशे ब्राह्मणानर्चयित्वा कृतमङ्गलो निष्क्रम्य यथेष्टं व्रजेदिति ॥

सोमरूप रसायननुं विधान.

९ ए चोवीश प्रकारना सोमोमांथी कोई पण सोमना रसनो उपयोग करवानी इच्छा थाय

त्यारे गाय वगेरे सघळां उपकरणोनी तथा काम करनारा परिचारकोनी सगवडनुं संपादन करी, वास्तुशास्त्रमां कह्याप्रमाणे सारा प्रदेशमां त्रेवडुं घर बनावी, वमनविरेचनादिकथी दोषोनुं संशोधन करी, संशोधनथी थएली निर्बलताने आ स्थानना ३९मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे आहारथी टाळी, जे दिवसे तिथि, करण अने नक्षत्र एओनो सारो योग होय ते दिवसे सारा मुहूर्त्तमां यज्ञना विधानमां कहेली रीतिप्रमाणे सोमने लावी, तेमांथी ऋत्विजोना हाथथी नीचोवावी रस कहडावी, होम करावी, अंदरना घरमां सघळुं मंगलकृत्य करी, सोमना कंदने सोनानी सोईथी चीरी तेमांथी सोळ तोळां भार रस सुवर्णना पात्रमां लईने तेनो कशो स्वाद नहीं जोतां एकदम पी जावो. पछी आचमन लई, मोहोडुं साफ करी, रसनो जे कांई भाग पात्रमां रही गयो होय तेने जळमां फेंकी दई, अहिंसा आदि यमोथी तथा गुरुपूजन आदि नियमोथी चित्तने तथा शरीरने नियमित करी, मौन धरीने तेज घरमां हरवुं फरवुं अने मित्रलोकोए राजी राखवा माटे ते माणसनी पासे हाजर रेहेवुं. सोमरसरूपी रसायन पीधा पछी सोममांज ध्यान राखी पवित्र रहीने ते पवन वगरना घरमां बेसवुं, ऊभवुं तथा फरवुं पण कोई रीते सूवुं नहीं.

सायंकाल थाय त्यारे भोजन करी, ब्राह्मणोना मोहोडाथी शांतिमंगलपाठनुं श्रवण करी, जेना उपर काळीयारनुं चर्म बीछावेलुं होय एवी दर्भनी शय्यामां मित्रलोको तरफथी थती सेवानुं सुख लेतां सूवुं. जो तरश लागी होय तो शीतल जळनी मात्रा पीवी. पछी प्रभाते ऊठी, ब्राह्मणोना मोहोडाथी शांतिमंगलपाठनुं श्रवण करी, मंगलकृत्य करी, गायनो स्पर्श करीने पाछुं पेहेला दिवस प्रमाणे तेज घरमां बेसवुं तथा फरवुं हरवुं. ए माणसने सोमरस जीर्ण थाय त्यारे लोहीथी खरडाएली अने कीडाओवाळी उलटी थाय छे. ए माणसने एवी उलटी थया पछी सायंकाले वैद्ये गरम करेलुं अने पछी थंडुं पाडेलुं दूध पीवा देवुं. पछी त्रीजे दिवसे ए माणसने कीडाओवाळो पातळो झाडो आवे छे. आम थवाथी ए माणस दुष्ट प्रतिग्रह तथा दुष्ट भोजन आदि पापोथी मुक्त थईने शुद्ध शरीरवाळो थाय छे. पछी सायंकाळे तेने स्नान करावीने वैद्ये प्रथमनी पेठेज तैयार करेलुं दूध पीवा देवुं अने जेना उपर अळसीनुं वस्त्र बीछावेलुं होय एवी शय्यामां सूवाडवो. पछी चोथे दिवसे ते माणसने सोजो उत्पन्न थाय छे अने सघळां अंगोमांथी कीडाओ नीकळे छे. ए दिवसे ए माणसे पोतानी उपर घणी धूळ पडे एवी रीते शय्यामां सूवुं. पछी सायंकाले वैद्ये ते माणसने प्रथमनी पेठेज तैयार करेलुं दूध पावुं. ते माणसे पांचमे तथा छठ्ठे दिवसे पण ए प्रमाणेज वर्त्तवुं. फकत ए बे दिवसोमां तेने वैद्ये उपर प्रमाणे तैयार करेलुं दूध बे वखत पीवा देवुं. पछी सातमे दिवसे ए माणस मांसवगरनो अने जेनां त्वचा तथा अस्थि अवशेष रह्यां होय एवो थई जाय छे. केवळ सोमना प्रभावने लीधेज श्वास लेछे. ते दिवसे वैद्ये सेहेवाय तेवा गरम दूधनुं ए माणसना शरीरपर परिषेचन करी अने तल, जेठीमध• तथा चंदन एओनुं लेपन करीने दूध पावुं. पछी आठमे दिवसे प्रभातमांज तेनां गात्रोपर दूधनुं परिषेचन करी सघळां गात्रोने चंदनथी खरडी, दूध पाई, धूळवाळी शय्याने काहाडी नाखीने तेने अलसीना वस्त्रथी बीछावेली शय्यामां सूवाडवो. पछी ते माणसनुं मांस वधे छे, चामडी फाटी जाय छे अने दांतो, नखो तथा वाळो पडी जाय छे. नवमा दिवसथी तेना शरीरपर अणुतैलनो (आ स्थानना चोथा अध्यायनो २२ मो विषय जुवो.) अभ्यंग करवो अने सफेद सारवाळा खेरना क्वाथनुं परिषेचन करवुं. दशमे दिवसे पण अणुतैलनो अभ्यंग करवो अने सफेद सारवाळा खेरना• क्वाथनुं परिषेचन करवुं. आम करवाथी तेनी चामडी दृढपणाने प्राप्त थाय छे. अगीयारमे तथा बारमे दिवसे पण ते माण-

सने ए प्रमाणेज वर्त्तावयो. तेरमा दिवसथी सफेद सारवाळा खेरना क्वाथथीज तेने नवराववो. आ प्रमाणे सोळमा दिवस सूधी चलाववुं. पछी सत्तरमो तथा अढारमो ए बे दिवसोमां ए माणसने अणीओवाळा, स्निग्ध, हीरा जेवा, लसणीया मणि जेवा, स्फाटिक जेवा, मरखा, मजबूत अने प्रबल शक्तिवाळा नवा दांतो उत्पन्न थाय छे. त्यारथी मांडीने पचीशमा दिवस सूधी जूना राता चोखानी दूधमां बनावेली यवागूनुं सेवन कराववुं. छवीशमा दिवसथी ए माणसने बन्ने वखत दूधनी साथे राता चोखाना कोमळ भातनुं सेवन कराववुं. ए दिवसथी ए माणसने परवाळा जेवा लाल, इंद्रगोपक नामना वरसादमां थता लाल कीडाना जेवी कांतिवाळा तथा उगता सूर्यना जेवी कांतिवाळा नवा मजबूत नखो उत्पन्न थाय छे, स्निग्ध तथा शुभ लक्षणोवाळा नवा केशो उत्पन्न थाय छे अने चामडी पण नील कमळना, अलसीना फूलना तथा लसणीया नामना मणिना जेवा प्रकाशवाळी नवी उत्पन्न थाय छे. महीनो पूरो थया पछी तेना केशो मुंडावी नाखवा. मुंडाव्या पछी माथापर वाळो, चंदन तथा काळा तल एओना कल्कनो लेप करवो अथवा दूधथी स्नान कराववुं.

सात रात व्यतीत्त थया पछी ए माणसने भ्रमरोना तथा आंजणना जेवा काळा, वांकां अग्रोवाळा अने स्निग्धपणावाळा केशो उत्पन्न थाय छे. पछी त्रण रात वीतवा दई चोथे दिवसे ते माणसने छेला अंदरना घरमांथी बाहार लावी बे घडीवार ऊभाडीने पाछो अंदर पेसाडी देवो. त्यारथी ए माणसने बलातैलनो (आ स्थानना पंदरमा अध्यायनो १२ मो विषय जुवो.) अभ्यंग कराववो, मेलने दूर करवा माटे शरीरपर चोळवा सारू जवनो लोट देवो, परिषेचनने माटे सेहेज उनाशवाळुं दूध देवुं, मलिन अंगने धोवा माटे मोटा राळना झाडनी छालनो क्वाथ देवो, नाहावा माटे वाळाथी वासेलुं कूवानुं जळ देवुं, लेपनने माटे चंदन देवुं, भोजनमां आमळाना रसथी मिश्रित करेला जातजातना यूषो तथा आमळाना रसथी मिश्रित करेली जूदी जूदी जातनी दाळो देवी अने ते यूषो वगेरेमां नाखवाने माटे दूधथी तथा जेठीमधथी पकावेलुं काळा तलनुं तैल देवुं. आ प्रमाणे दश रात्रि सूधी कराववुं. पछी बीजी दश रात सूधी एवीज रीते छेला घरमांथी तेनी पेहेली ओशरीमां लावीने ते प्रमाणेज ते माणसने वर्त्तावयो. ते पछी त्रीजी दश रात सूधी ते ओशरीमांथी बीजी ओशरीमां लावीने तेना मननी स्थिरता करावतां ते प्रमाणेज वर्त्तावयो. आ त्रीजा दश दिवसमां ए माणसे जरा जरा तडकानुं तथा पवननुं सेवन करवुं अने पाछुं अंदर पेसी जवुं. आ मुदतमां ते माणसे अरीशामां पोतानुं स्वरूप जोवुं नहीं. केम के पोतानुं अतिउत्तम थएलुं रूप जोवामां आवतां मनमां स्मयादिक उत्पन्न थई जाय. ते पछी चोथी दश रात्रि सूधी क्रोधादिकनो त्याग कराववो.

सर्व जातना सोमोना उपयोगनी आ एकज पद्धति छे. विशेषे करी लांबा वेलारूप, लांबां गुंचरावाळा, तथा जेओनां मूळो अने शाखाओ टुंकां होय एवा सोमोनो उपयोग कराववो उत्तम छे. एवा उत्तम सोमोनो रस चौद तोलां भारज पीवो. अंशुमान् नामनो सोम होय तो तेनो रस सुवर्णना पात्रमां लईने पीवो अने चंद्रमा नामनो सोम होय तो तेनो रस रूपाना पात्रमां लईने पीवो. आम करवाथी आठ महासिद्धिओ प्राप्त थाय छे अने अंते सदाशिवना स्वरूपमां सायुज्य मुक्ति मळे छे. बाकीना सोमोना रसने त्रांबाना, माटीना, के राता चामडाना विस्तीर्ण पात्रमां लईने पीवो. शूद्रशिवाय त्रणे वर्णोने सोमपान करवानो अधिकार छे.

पछी (संशोधनना आरंभथी) चोथे महिने पुनेमने दिवसे पवित्र प्रदेशमां ब्राह्मणोनुं पूजन करी, मंगळ कृत्यो करी, ते घरमांथी बाहार नीकळीने ज्यां पोतानी इच्छा होय त्यां जवुं.

६ ओषधीनां पतिं सोममुपयुज्य विचक्षणः ।
दश वर्षसहस्राणि नवां धारयते तनुम् ॥
नाग्निर्न तोयं न विषं न शस्त्रं नास्त्रमेव च ।
तस्यालमायुःक्षपणे समर्थानि भवन्ति हि ॥
भद्राणां षष्टिवर्षाणां प्रस्रुतानामनेकधा ।
कुंजराणां सहस्रस्य बलं समधिगच्छति ॥
क्षीरोदं शक्रसदनमुत्तरांश्च कुरूनपि ।
यत्रेच्छति स गन्तुं वा तत्राप्रतिहता गतिः ॥
कन्दर्प इव रूपेण कान्त्या चन्द्र इवापरः ।
प्रह्लादयति भूतानां मनांसि स महाद्युतिः ॥
साङ्गोपाङ्गांश्च निखिलान्वेदान्विन्दति तत्त्वतः ।
चरत्यमोघसङ्कल्पो देववच्चाखिलं जगत् ॥

सोमरूप रसायनना प्रयोगनी फलश्रुति.

६ विचक्षण पुरुष ओषधिओना अधिपति सोमनो उपयोग करे तो तेथी दश हजार वर्ष सूधी शरीरनुं धारण करी शके छे. एना आयुष्यने तोडवामां अग्नि, जळ, विष, शस्त्र के अस्त्र कोई पण समर्थ थतां नथी. सोमनो प्रयोग करनार माणस साठ वर्षना अने घणां अंगोमांथी मदनो स्राव करता भद्रजातना हजार हाथीओनुं बळ पामे छे. क्षीरसागरमां, इंद्रलोकमां, उत्तरकुरुखंडमां के बीजा पण कोई प्रदेशमां ज्यां जवानी इच्छा थाय त्यां जई शके छे. एनी गतिनो क्यांय पण प्रतिघात थतो नथी. रूपथी कामदेव जेवो लागतो अने कांतिथी जाणे बीजो चंद्र होय एवो लागतो ए महातेजस्वी पुरुष प्राणिओनां अंतःकरणोने प्रसन्न करे छे. ए पुरुष सांगोपांग वेदोने यथार्थ रीते पामी तथा समजी शके छे, अमोघ संकल्पवाळो थाय छे अने देवनी पेठे सघळा जगत्मां फरी शके छे.

७ सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दश पञ्च च ।
तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च ॥
एकैकं जायते पत्रं सोमस्याहरहस्तदा ।
शुक्लस्य पौर्णमास्यां तु भवेत्पंचदशच्छदः ॥
शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः ।
कृष्णपक्षक्षये चापि लता भवति केवला ॥

सोमनी ओळखाण.

७ सघळां सोमोमां कोई वखते पण पंदरथी वधारे पानडां थतांज नथी. सोमनां पानडां शुक्लपक्षमां उत्पन्न थाय छे अने कृष्णपक्षमां पाछां खरी जाय छे. सोममां दिवसे दिवसे एक एक पानडुं उत्पन्न थाय छे एटले शुक्लपक्षनी पुनेमने दिवसे ते सोम बराबर पंदर पानडांवाळो थाय छे. पछी दिवसे दिवसे तेनुं एक एक पानडुं खरतुं जाय छे तेथी अमावास्याने दिवसे ते केवळ पानडां वगरनी लता रूपेज रेहे छे.

८ अंशुमानाज्यगन्धस्तु कन्दवान्रजतप्रभः ।
कदल्याकारकन्दस्तु मुञ्जवाल्लशुनच्छदः ॥
चन्द्रमाः कनकाभासो जले चरति सर्वदा ।
गरुडाहृतनामा च श्वेताक्षश्चापि पाण्डुरौ ॥
सर्पनिर्म्मोकसदृशौ तौ वृक्षाग्रावलम्बिनौ ।
तथान्यैर्मण्डलैश्चित्रैश्चित्रिता इव भान्ति ते ॥
सर्वे एव तु विज्ञेयाः सोमाः पञ्चदशच्छदाः ।
क्षीरकन्दलतावन्तः पत्रैर्नानाविधैः स्मृताः ॥

सोमोनी अमुक जातोनी ओळखाण.

८ **अंशुमान्** नामनो सोम घीना जेवा गंधवाळो, कंदवाळो अने रूपाना जेवी प्रभावाळो होय छे. **मुंजवान्** नामनो सोम केळना जेवा कंदवाळो अने लसणना जेवां पानडांवाळो होय छे. **चंद्रमा** नामनो सोम सुवर्ण जेवी प्रभावाळो होय छे अने सर्वदा जळमांज रेहे छे. **गरुडाहृत** अने **श्वेताक्ष** ए नामना बे सोमो सफेद प्रभावाळा होय छे, सर्पनी कांचळीओ जेवा होय छे अने वृक्षोना अग्रो उपर लटके छे. आ चारे सोमोमां जूदां जूदां विचित्र मंडळो एवां होय छे के जेओथी जाणे तेओ चित्रेलाज होय एवा देखाय छे.

सघळां सोमो चंद्रनी कळाओना हिसाब प्रमाणे पुनेमने दिवसे पंदर पांनडांवाळाज होय छे. छीरवाळा, कंदवाळा अने लतावाळा होय छे. सोमोमां पांनडां तो अनेक प्रकारनां थाय छे.

९ हिमवत्यर्बुदे सह्ये महेन्द्रे मलये तथा ।
श्रीपर्वते देवगिरौ गिरौ देवसहे तथा ॥
पारियात्रे च विन्ध्ये च देवसुन्दे ह्रदे तथा ।
उत्तरेण वितस्तायाः प्रवृद्धा ये महीधराः ॥
पञ्च तेषामधो मध्ये सिन्धुनामा महानदः ॥
ह्रठवत्प्लवते तत्र चन्द्रमाः सोमसत्तमः ॥
तस्योद्देशेषु वाप्यस्ति मुंजवानंशुमानपि ॥
काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्ना क्षुद्रकमानसम् ॥
गायत्रस्त्रैष्टुभः पांक्तो जागतः शाक्करस्तथा ॥
अत्र सन्त्यपरे चापि सोमाः सोमसमप्रभाः ।

सोमो हाथ लागवाना मुख्य प्रदेशो.

९ हिमालय, आबु, सह्याद्रि, महेंद्राचल, मलयाचल, पारियात्र, विंध्याचल, श्रीशैल, देवगिरि अने देवसह ए पर्वतोमां अने देवसुंद नामना ह्रदमां सोमो छे. वितस्ता नदीनी उत्तर तरफना पांच मोटा पर्वतोना नीचाणना मध्यभागमां जे सिंधु नामनो मोटो नद छे तेमां चंद्रमा नामनो उत्तम सोम शैवाळनी पेठे तऱ्या करे छे. मुंजवान् अने अंशुमान् नामना बे सोमो पण ए सिंधुनदना प्रदेशोमां मळे छे. काश्मीरदेशमां क्षुद्रकमानस नामनुं एक दिव्य सरोवर छे तेमां गायत्र, त्रैष्टुभ, पांक्त, जागत अने शाक्कर ए नामना सोमो मळे छे. चंद्र-जेवी प्रभावाळा बीजा सोमो पण ए प्रदेशमां छे.

१० न तान्पश्यन्त्यधर्मिष्ठाः कृतघ्नाश्चापि मानवाः
भेषजद्वेषिणश्चापि ब्राह्मणद्वेषिणस्तथा ।

सोमो दुष्ट माणसोनी नजरे पडता नथी.

१० जे प्रदेशमां सोमो होय छे ते प्रदेशोमां पण ते सोमो अधर्मी माणसोना, कृतघ्न माणसोना, औषधोनो द्वेष करनारा माणसोना अने ब्राह्मणोनो द्वेष करनारा माणसोना जोवामां आवता नथी.

अध्याय ३० मो.

१ अथातो निवृत्तसन्तापीयं रसायनं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'निवृत्तसंतापीयरसायन' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ यथा निवृत्तसन्तापा मोदन्ते दिवि देवताः ।
तथौषधीरिमाः प्राप्य मोदन्ते भुवि मानवाः ॥

आ अध्यायमां जे ओषधीओ केहेवाशे तेओनो उपोद्घात.

२ जेम स्वर्गमां देवताओ अमृतादिकने प्राप्त थई संतापोथी मुक्त थइने आनंद भोगवे छे तेम पृथ्वीमां माणसो जे ओषधीओने प्राप्त थई संतापोथी मुक्त थइने आनंद भोगवे ते ओषधीओनुं निरूपण करुं छुं.

३ अथ सप्त पुरुषा रसायनं नोपयुञ्जीरन् । तद्यथा । अनात्मवानलसो दरिद्रः प्रमादी व्यसनी पापकृद्भेषजापमानी चेति । सप्तभिरेव कारणैर्न सम्पद्यते । अज्ञानादनारम्भादस्थिरचित्तत्वाद्दारिद्र्यादनायत्तत्वादधर्मादौषधालाभाच्चेति ॥

कया कया पुरुषो रसायनोनो उपयोग करी शकता नथी अने शा कारणोथी करी शकता नथी.

३ अजितेंद्रिय, आलसु, दरिद्र, प्रमादी, व्यसनी, पापी अने औषधद्वेषी ए सात पुरुषो रसायनोनो उपयोग करी शकता नथी. अज्ञानने लीधे, उद्योग नहीं करवाने लीधे, चित्तनी अस्थिरताने लीधे, दारिद्र्यने लीधे, परतंत्रपणाने लीधे, अधर्मने लीधे अने औषध नहीं मळवाने लीधे ए पुरुषोने रसायननी प्राप्ति थती नथी.

१ 'निवृत्तसंताप' ए शब्दने लइने करेलो रसायनसंबंधी अध्याय के जेमां सोमना जेवी शक्तिवाळी बीजी अढार दिव्य ओषधिओनुं निरूपण करवामां आवशे.

४ अथौषधीर्व्याख्यास्यामः । श्वेतकापोती कृष्णकापोती गोनसी वाराही कन्या छत्रातिच्छत्रा करेणुरजा चक्रका आदित्यपर्णिनी ब्रह्मसुवर्चला श्रावणी महाश्रावणी गोलोमी चाजलोमी महावेगवती अजगरी चेत्यष्टादश सोमसमवीर्या महौषधयो व्याख्याताः । तासां सोमवत्क्रियाशीःस्तुतयः शास्त्रेऽभिहिताः ॥

अढार दिव्य ओषधिओ तथा तेओनां सोमनी पेठेज विधानादिक.

४ श्वेतकापोती, कृष्णकापोती, गोनसी, वाराही, कन्या, छत्रा, अतिच्छत्रा, करेणु, अजा, चक्रका, आदित्यपर्णिनी, ब्रह्मसुवर्चला, श्रावणी, महाश्रावणी, गोलोमी, अजलोमी, महावेगवती अने अजगरी ए अढार दिव्य ओषधिओ सोमना जेवीज शक्तिवाळी छे अने शास्त्रोमां एओनां विधानो तथा फलस्तुतिओ पण सोमनां विधानोथी तथा फलश्रुतिओथी तुल्य कहेलां छे.

५ तासामागारेऽभिहुतानां याः क्षीरवत्यस्तासां क्षीरकुडवं सकृदेवोपयुञ्जीत । यास्त्वक्षीरा मूलवत्यस्तासां प्रदेशिनीप्रमाणानि त्रीणि काण्डानि प्रमाणमुपयोगे ।

श्वेतकापोती समूलपत्रा भक्षयितव्या ।

गोनस्यजगरीकृष्णकापोतीनां सनखमुष्टि खण्डशः कल्पयित्वा क्षीरेण विपाच्य परिस्रावितमभिहुतं च सकृदेवोपयुञ्जीत ।

कन्यकायाः पायसं सकृदेव ।

ब्रह्मसुवर्चला सप्तरात्रमुपयोक्तव्या भक्ष्यकल्पेन ।

शेषाणां पंच पलानि क्षीराढककथितानि प्रस्थेऽवशिष्टेऽवतार्य परिस्राव्य सकृदेवोपयुञ्जीत।

सोमवदाहारविहारौ व्याख्यातौ केवलं तु नवनीतमभ्यङ्गार्थे शेषं सोमवदानिर्गमादिति ॥

दिव्य ओषधिओना उपयोगनो संप्रदाय.

५ पवन वगरना त्रेवडा घरमां सहस्रहोम कर्या पछी ए ओषधिओमां जेटली छीरवाळी छे तेओनुं सोळ तोलांभार छीर लईने तेनो एक वखतेज उपयोग करी लेवो. जेटली छीर वगरनी अने दृढ मूळीयांवाळी छे तेओनी तर्जनी आंगळी जेटली त्रण दांडलीओनो उपयोग करवो.

श्वेतकापोतीनुं तेनां मूळसहित तथा पानडां सहित भक्षण करवुं.

गोनसी, अजगरी अने कृष्णकापोती एओनो जेटलो भाग नख सहित मूठीमां समाय तेटलो भाग लई तेना टुकडा टुकडा करी, दूधमां पकावी, गाळी लईने होम कर्या पछी तेनो एक वखतेज उपयोग करवो.

कन्यानां फळोनो कल्क करी तेने तेथी बमणा चोखावाळा दूधमां पकावी ते दूधपाकनो एक वखतेज उपयोग करवो.

ब्रह्मसुवर्चलानां पूडला वगेरे भक्ष्यो बनावीने तेओनो सात दिवस सूधी उपयोग करवो.

बाकीनी ओषधिओनां पांच पांच पल (चार तोलानुं एक पल थाय छे.) लई, तेओने बसो छपन तोलांभार दूधमां उकाळी, चोसठ तोलांभार दूध अवशेष रहे त्यारे उतारी गाळी लईने तेनो एक वखतेज उपयोग करवो.

आ रसायनोनो उपयोग करनाराए सोमना विधानमां कह्या प्रमाणेज आहारविहार करवा. मात्र अभ्यंग करवो ते मांखणथी करवो एटलोज विशेष छे. बाकी आरंभथी ते छेक त्रेवडा घरमांथी बाहार नीकळतां सूधीमां सघळो विधि सोमना विधानमां कह्या प्रमाणेज करवो.

६ भवन्ति चात्र ॥

युवानं सिंहविक्रान्तं कान्तं श्रुतनिगादिनम् ।
कुर्युरेताः क्रमेणैव द्विसहस्रायुषं नरम्
अङ्गदी कुण्डली मौली दिव्यस्रक्चन्दनाम्बरः ।
चरत्यमोघसङ्कल्पो नभस्यम्बुदुर्गमे ॥

---

१ आ ओषधिओनी ओळखाण आ अध्यायना ७ मा विषयमां आपवामां आवशे.

व्रजन्ति पक्षिणो येन जललम्बाश्च तोयदाः ।
गतिः सौषधिसिद्धस्य सोमसिद्धगतिः परा ॥

उपर कहेली ओषधिओनी फलश्रुति अने तेओनां फळथी पण सोमना फळनुं आधिक्य.

६ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "आ ओपधिओ अनुक्रमथी पुरुषने जुवान, सिंह जेवो पराक्रमी, रूपाळो, सांभळेला ग्रंथादिकने तुरत मोहोडे बोली शके एवो अने बे हजार वर्षनां आयुष्यवाळो करे छे. आ ओपधिओनो उपयोग करनारो पुरुप जे कांई संकल्प करे ते सिद्ध थाय छे अने ते पुरुष बाजुबंधो, कुंडलो, मुकुट, दिव्य माळाओ, दिव्य चंदन तथा दिव्य वस्त्रो एओने धरीने वादळांओनी मोटी भीडवाळा आकाशमां फरी शके छे. आ ओपधिओथी सिद्ध थएला पुरुषनी गति ते मार्गमां थाय छे के जे मार्गमां पक्षीओ अने जळथी नमी रहेलां वादळांओ फरे छे. जे पुरुष सोमथी सिद्ध थएलो होय तेनी गति तो स्वर्गादिकमां पण अप्रतिहत थाय छे.

७ अथ वक्ष्यामि विज्ञानमोषधीनां पृथक्पृथक् ।
मण्डलैः कपिलैश्चित्रैः सर्पाभा पञ्चपर्णिनी ॥
पञ्चारत्निप्रमाणा च विज्ञेयाजगरी बुधैः ।
निष्पत्रा कनकाभासा मूले द्व्यङ्गुलसंमिता ॥
सर्पाकारा लोहितान्ता श्वेतकापोतिरुच्यते ।
द्विपर्णिनीं मूलभवामरुणां कृष्णमण्डलाम् ॥
द्व्यरत्निमात्रां जानीयाद्गोनसीं गोनसाकृतिम् ।
सक्षीरां रोमशां मृद्वीं रसेनेक्षुरसोपमाम् ॥
एवंरूपरसां चापि कृष्णकापोतिमादिशेत् ।
कृष्णसर्पस्वरूपेण वाराही कन्दसम्भवा ॥
एकपत्रा महावीर्या भिन्नांजनसमप्रभा ।
छत्रातिच्छत्रके विद्याद्रक्षोघ्ने कन्दसम्भवे ॥
जरामृत्युनिवारिण्यौ श्वेतकापोतिसंस्थिते ।
कान्तैर्द्वादशभिः पत्रैर्मयूराङ्गरुहोपमा ॥
कन्दजा कांचनक्षीरी कन्या नाम महौषधी ।
करेणुः सुबहुक्षीरा कन्देन गजरूपिणी ॥
हस्तिकर्णपलाशस्य तुल्यपर्णा द्विपर्णिनी ॥
अजास्तनाभकन्दा तु सक्षीरा क्षुपरूपिणी ।
अजा महौषधी ज्ञेया शङ्खकुन्देन्दुपाण्डुरा ॥
श्वेतां विचित्रकुसुमां काकादन्या समां क्षुपाम् ।
चक्रकामोषधीं विद्याज्जरामृत्युनिवारिणीम् ॥
मूलिनी पंचभिः पत्रैः सुरक्तांशुककोमलैः ।
आदित्यपर्णिनी ज्ञेया सदादित्यानुवर्त्तिनी ॥
कनकाभा जलान्तेषु सर्वतः परिसर्पति ।
सक्षीरा पद्मिनीप्रख्या देवी ब्रह्मसुवर्चला ॥
अरत्निमात्रक्षुपका पत्रैर्द्व्यङ्गुलसम्मितैः ।
पुष्पैर्नीलोत्पलाकारैः फलैश्चांजनसन्निभैः ।
श्रावणी महती ज्ञेया कनकाभा पयस्विनी ।
श्रावणी पाण्डुराभासा महाश्रावणिलक्षणा ॥
गोलोमी चाजलोमी च रोमशे कन्दसम्भवे ।
हंसपादीव विच्छिन्नैः पत्रैर्मूलसमुद्भवैः ॥
अथवा शङ्खपुष्प्या च समाना सर्वरूपतः ।
वेगेन महताविष्टा सर्पनिर्मोकसन्निभा ॥
एषा वेगवती नाम जायते ह्यम्बुदक्षये ।

उपर कहेली ओषधिओनी ओळखाण.

७ हवे ए ओषधिओनी जूदी जूदी ओळखाण कहुं छुं. **अजगरी** नामनी ओपधी केटलांएक कपिलवर्णनां मंडलोवाळी, सर्पना जेवी आकृतिवाळी, पांच पांनडांओवाळी अने पांच अरत्नि (जेनी कनिष्ठा अंगुली लांबी राखी होय एवो मूठी वाळेलो हाथ अरत्नि केहेवाय छे.) जेवडी लांबी होय छे. **श्वेतकापोती** ओषधी पानडां वगरनी, सुवर्णना जेवी कांतिवाळी, मूळमां बे आंगळना प्रमाणवाळी, सर्पना जेवी आकृतिवाळी अने राता छेडावाळी होय छे. **गोनसी** ओपधि बे अरत्नि जेवडी लांबी, बे पानडांवाळी, दृढ मूळ नाखीने उत्पन्न थएली, राती प्रभावाळी, काळां मंडलोवाळी अने गोनस जातना सर्पना जेवी आकृतिवाळी थाय छे. **कृष्णकापोती** ओषधि छी-

रवाळी, रुंछाडवाळी, कोमळ अने शेलडीना रस जेवा मीठा तथा ते रस जेवाज देखाता रसवाळी थाय छे. मोटी शक्तिवाळी **वाराही** ओषधि काळा सर्पना जेवा स्वरूपवाळी, कंदोनी उत्पत्तिवाळी, एक पानडांवाळी अने आंगळीथी चुंटेला आंजणना जेवी प्रभावाळी होय छे. (जेमां वाराहीकंद थाय छे तेज वेलो आ हशे?) **छत्रा** अने **अतिच्छत्रा** नामनी बे ओषधिओ कंदोनी उत्पत्तिवाळी, राक्षसोने हणनारी, जरानुं तथा मृत्युनुं निवारण करनारी अने श्वेतकापोतीना जेवाज आकारवाळी होय छे. **कन्या** ओषधि कंदथी उत्पन्न थएली, सुवर्णना जेवा पीळा छीरवाळी अने सुंदर बार पानडांओथी मोरपींछ जेवा देखाववाळी होय छे. **करेणु** ओषधि अत्यंत घणा छीरवाळी. हाथी जेवा देखाता कंदवाळी अने एरडानां पानडां जेवां बे पानडांवाळी होय छे. **अजा** ओषधि बकरीना आंचळ जेवा कंदवाळी, छीरवाळी, टूंकी शाखाओ तथा टूंकां मूळोवाळी अने शंख, कुंदकागडानां पुष्प तथा चंद्र एओना जेवी सफेद होय छे. (चरक चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायना आयुर्वेदसमुत्थानीय नामना रसायनपादमां **अजा नामौषधि रजशृंगीति विज्ञायते** ए वाक्यथी केहे छे के अजा नामनी जे ओषधि छे ते 'अजशृंगी' ए नामथी ओळखाय छे.) **चक्रका** ओषधि सफेद, विचित्र पुष्पोवाळी, चणोठी जेवी, टूंकी शाखाओ तथा टूंकां मूळोवाळी अने जरानुं तथा मृत्युनुं निवारण करनारी होय छे. **आदित्यपर्णिनी** ओषधि दृढ मूलवाळी, अत्यंत रंगेलां वस्त्रो जेवां कोमळ पांच पानडांओवाळी अने सर्वदा सूर्यने अनुसरनारी होय छे. (चरक चिकित्सा स्थानना पेहेला अध्यायना आयुर्वेदसमुत्थानीय नामना रसायनपादमां आ ओषधीने **आदित्यमूळी** नाम आपीने **आदित्यमूळी नामौषधिर्या सूर्यकांता विज्ञायते सुवर्णक्षीरा सूर्यमंडलाकारपुष्पी** ए वाक्यथी केहे छे के सूर्यथी दीपती, सुवर्णना जेवा छीरवाळी अने जेना पुष्पोनो आकार सूर्यमंडलना जेवो होय छे ते आदित्यमूळी नामनी ओषधी छे. आ सुश्रुत अने चरक ए बन्नेनां वाक्यो जोतां जणाय छे के आदित्यपर्णिनी सूरजमुखीथी जूदी न होवी जोइए.) **ब्रह्मसुवर्चला** ओषधि सुवर्णना जेवी प्रभावाळी, छीरवाळी, कमलिनीना जेवा देखाववाळी तथा सुंदर होय छे अने ते जलाशयोनां समीपोमां चोतरफ फेलाय छे. (चरक चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायना आयुर्वेदसमुत्थानीय नामना रसायनपादमां **ब्रह्मसुवर्चला नामौषधिर्या हिरण्यक्षीरा पुष्करसदृशत्रा** ए वाक्यथी केहे छे के ब्रह्मसुवर्चला नामनी औषधि सुवर्ण जेवा छीरवाळी अने कमळनां जेवां पानडांओवाळी होय छे. आ ओषधी ब्राह्मीनी जात होय एम जणाय छे.) **महाश्रावणी** ओषधी सुवर्णना जेवी प्रभावाळी, छीरवाळी, बबे आंगळनां पानडांओवाळी, नीलकमळना जेवा आकारनां पांनडांओवाळी, अंजन जेवां फळोवाळी अने एक हाथ लांबी शाखाओवाळी होय छे. (मोटी गोरखमुंडीना छोड हशे?) **श्रावणी** ओषधी सफेद प्रभावाळी होय छे अने उपर कहेलां महाश्रावणीनां लक्षणोवाळी होय छे. (नाहानी गोरखमुंडीना छोड हशे?) **गोलोमी** अने **अजलोमी** नामनी बे ओषधिओ रुंछाडवाळी अने कंदोनी उत्पत्तिवाळी होय छे. (महा) **वेगवती** ओषधी मूलमांथी उत्पन्न थएलां विच्छिन्न

१ सूरजमुखी वेलारूप थाय छे अने छोडरूप पण थाय छे. घणुं करी तेनां फूल प्रभातमां उगमणां होय छे अने सूर्य आथमती वखते आथमणां थाय छे. वेलानां फूल आसमानी रंगनां अने छोडनां फूल पीळा रंगनां थाय छे. फूलनो आकार सूर्यबिंब जेवो तथा हाथे बांधवाना मोटा राखडा जेवो थाय छे. फूल बहु मोटां होय छे.

विच्छिन्न पांनडांओथी हंसराज जेवी होय छे अथवा सघळा रूपथी शंखावळी जेवी होय छे, मोटा वेगवाळी होय छे, सर्पनी कांचळी जेवी होय छे अने वरसादना अंतमां उत्पन्न थाय छे.

८तत्रादौ शुभरूपिण्यो या ह्योषध्यः प्रकीर्त्तिताः
तासामुद्धरणं कार्यं मन्त्रेणानेन सर्वदा ।
महेन्द्ररामकृष्णानां ब्राह्मणानां गवामपि ॥
तपसा तेजसा चापि प्रशाम्यध्वं शिवाय वै ।
मन्त्रेणानेन मतिमान् सर्वा अप्यभिमन्त्रयेत् ॥

ए ओषधीओने उखडवा तथा लेवानो मंत्र.

८ आ जे शुभ रूपोवाळी तथा शुभ करनारी दिव्य ओषधीओ कही तेओने सर्वदा 'हे ओषधीओ! तमो शुभ करवा माटे इंद्र, राम, कृष्ण, ब्राह्मणो अने गायो एओना तपथी तथा तेजथी शांति करनारी थाओ' ए अर्थवाळो **महेंद्ररामकृष्णानां ब्राह्मणानां गवामपि। तपसा तेजसा चापि प्रशाम्यध्वं शिवाय वै ।** ए मंत्र भणीने बुद्धिमान् वैद्ये उखेडवी तथा लेवी. सघळी ओषधिओनुं अभिमंत्रण ए मंत्रथीज करवुं.

९ अश्रद्दधानैरलसैः कृतघ्नैः पापकर्मभिः ।
नैवासादयितुं शक्याः सोमाः सोमसमास्तथा ॥

सोमो तथा आ अढार ओषधिओ दुष्ट लोकोने मळती नथी.

९ जे लोको विश्वास वगरना, आलसु, कृतघ्न के पापकर्म करनारा होय तेओने सोमो तथा सोमोना जेवाज रसोवाळी आ अढार ओषधिओ मळती नथी.

१० पीतावशेषममृतं दैवैर्ब्रह्मपुरोगमैः ।
निहितं सोमवीर्यासु सोमे चाप्योषधीपतौ ॥

सोमोनो तथा आ अढार ओषधिओनो दिव्य महिमा होवानुं कारण.

१० सोम के जे ओषधीओनो राजा छे तेमां अने सोमना जेवीज शक्तिवाळी आ अढार ओषधीओमां ब्रह्मा आदि देवताओए पोताना पीवाथी अवशेष रहेलुं अमृत नाखेलुं छे.

११ देवसुन्दे ह्रदवरे तथा सिन्धौ महानदे ।
दृश्यते च जलान्तेषु मध्ये ब्रह्मसुवर्चला ॥
आदित्यपर्णिनी ज्ञेया तथैव हि हिमक्षये ।
दृश्यतेऽजगरी नित्यं गोनसी चाम्बुदागमे ॥
काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्ना क्षुद्रकमानसम् ।
करेणुस्तत्र कन्या च छत्रातिच्छत्रके तथा ॥
गोलोमी चाजलोमी च महती श्रावणी तथा ॥
वसन्ते कृष्णसर्पाख्या गोनसी च प्रदृश्यते ।
कौशिकीं सरितं तीर्त्वा सञ्जयन्त्यास्तु पूर्वतः॥
क्षितिप्रदेशो वल्मीकैराचितो योजनत्रयम् ।
विज्ञेया तत्र कापोती श्वेता वल्मीकमूर्द्धसु ॥
मलये नलसेतौ च वेगवत्योषधी ध्रुवा ॥

आ अढार ओषधीओमां अमुक ओषधिओ मळवाना देश तथा काळ.

११ **ब्रह्मसुवर्चला** देवसुंद नामना उत्तम ह्रदमां, सिंधु नामना मोटा ह्रदमां अने बीजा पण केटलाएक जलाशयोना समीपोमां जोवामां आवे छे. **आदित्यपर्णिनी** (सूरजमुखी) वसंत ऋतुमां जलनां प्रदेशोना समीपमां जोवामां आवे छे. **अजगरी** अने **गोनसी** ए बे ओषधिओ चोमासामां केटलाएक प्रदेशोमां जोवामां आवे छे. **करेणु, कन्या, छत्रा,** अने **अतिच्छत्रा** ए चार ओषधिओ क्षुद्रकमानस नामना दिव्य सरोवरमां जोवामां आवे छे के जे सरोवर काश्मीर देशमां छे. **गोलोमी, अजलोमी, महाश्रावणी, श्रावणी, वाराही** अने **गोनसी** एओ वसंतऋतुमां जोवामां आवे छे. कौशिकी नामनी नदीने उतरीने परली तरफ जइए त्यां संजयंतीथी पूर्व भागमां त्रण योजन सुधीनो राफडाओथी व्याप्त जे भूप्रदेश छे तेमां राफडाओनां शिखरोपर **श्वेतकापोती** ओषधी जोवामां आवे छे. मलयाचलमां अने सेतुबंधने लगतां स्थलोमां **वेगवती** ओषधी अवश्य जोवामां आवे छे.

१२कार्त्तिक्यां पौर्णमास्यां च भक्षयेत्तामुपोषितः सोमवच्चात्र वर्त्तेत फलं तावच्च कीर्त्तितम् ॥

वेगवतीना भक्षणनो विधि तथा विशेष फळ.

१२ उपवास करीने कार्तिक शुदि पुनेमने दिवसे वेगवतीनुं भक्षण करवुं अने ते विषयमां सोमना विधाननी पेठेज वर्त्तवुं. वेगवतीना रसायन प्रयोगथी सोमना रसायन प्रयोग जेटलुं फळ थाय छे.

१३सर्वा विज्ञेयास्त्वोषध्यः सोमश्चाप्यर्बुदे गिरौ स शृङ्गैर्देवचरितैरम्बुदानीकभेदिभिः ॥ व्याप्तस्तीर्थैश्च विख्यातैः सिद्धर्षिसुरसेवितैः । गुहाभिर्भीमरूपाभिः सिंहोन्नादितकुक्षिभिः ॥ गजालोडिततोयाभिरापगाभिः समन्ततः । विविधैर्धातुभिश्चित्रैः सर्वत्रैवोपशोभितः ॥

सघळी ओषधिओ आबूमां शोधवाथी मळशे.

१३ सोम अने बीजी पण सघळी ओषधिओ आबू नामना पाहाडमां शोधवाथी मळशे. केम के ए पर्वत वादळांओने भेदनारां (अत्यंत ऊंचां) तथा जेओमां देवताओ विचरे छे एवां शिखरोथी, सिद्धोए ऋषिओए तथा देवताओए सेवेलां प्रख्यात तीर्थोथी, सिंहोए गजावी मुकेलां भयंकर गुफाओथी, हाथीओए डोळेलां जळोवाळी नदीओथी अने विचित्र प्रकारना विविध धातुओथी सर्व प्रदेशोमां चोमेर शोभी रह्यो छे.

१४ नदीषु शैलेषु सरस्सु चापि पुण्येष्वरण्येषु तथाश्रमेषु । सर्वत्र सर्वाः परिमार्गितव्याः सर्वत्र भूमिर्हि वसूनि धत्ते ॥

पृथ्वी बहुरत्ना छे एटला माटे बीजां स्थलोमां पण ओषधिओ शोधवी.

१४ पवित्र नदीओ, पवित्र पर्वतो, पवित्र सरोवरो, पवित्र अरण्यो तथा पवित्र आश्रमो इत्यादि सर्व स्थलोमां सघळी ओषधीओनो शोध करवो. केम के पृथ्वी सर्वत्र अनेक रत्नोनुं (उत्तम पदार्थोनुं) धारण करी रही छे."

(रसायनतंत्र समाप्त.)

अध्याय ३१ मो.

१ अथातः स्नेहोपयोगिकं चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्नेहोपयौगिकचिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्नेहसारोऽयं पुरुषः प्राणाश्च स्नेहभूयिष्ठाः स्नेहसाध्याश्च भवन्ति । स्नेहो हि पानानुवासनमस्तिष्कशिरोवस्त्युत्तरबस्तिनस्यकर्णपूरणगात्राभ्यङ्गभोजनेषूपयोज्यः ॥

तत्र द्वियोनिश्चतुर्विकल्पोऽभिहितः स्नेहो-गुणाश्च । तत्र जङ्गमेभ्यो गव्यं घृतं प्रधानम् । स्थावरेभ्यस्तिलतैलं प्रधानमिति ॥

स्नेहनां प्रयोजनो अने बे जातना मुख्य स्नेह.

२ आ जीवतो मनुष्यदेह स्नेहरूप सारवाळो छे अने प्राणो पण स्नेहना आधिक्यवाळा छे तथा स्नेहथीज टकावी शकाय एवा छे. पीवामां, अनुवासनबस्ति देवामां, मगजनी भरती करवामां, शिरोबस्ति देवामां, उत्तरबस्ति देवामां, नस्य देवामां, कर्णपूरण करवामां, गात्रोपर अभ्यंग करवामां अने भोजनोमां स्नेहनो उपयोग छे.

स्थावरथी उत्पन्न थएलो अने जंगमथी उत्पन्न थएलो एम स्नेह प्रथम बे भेदनो गणवामां आव्यो छे. ते स्नेहना घी, तैल, चरबी तथा मज्जा ए ए चार प्रकारो केहेवामां आव्या छे अने गुणो

---

१ स्नेह के जे शोधनना मुख्य अंगरूप छे तेना उपयोगसंबंधी चिकित्साना निरूपण विषयनो.

पण केहेवामां आव्या छे. जंगमजन्य स्नेहोमां गायनुं घी प्रधान छे अने स्थावरजन्य स्नेहोमां तिलनुं तैल प्रधान छे. (सूत्रस्थाननो ४९ मो अध्याय जुवो.)

३ अत ऊर्ध्वं यथाप्रयोजनं यथाविधानं च स्थावरस्नेहानुपदेक्ष्यामः ।

तत्र तिल्वकैरण्डकोशाम्रदन्तीद्रवन्तीसप्तलाशङ्खिनीपलाशविषाणिकागवाक्षीकम्पिल्लकशम्याकनीलिनीस्नेहा विरेचयन्ति । जीमूतककुटजकृतवेधनेक्ष्वाकुधामार्गवमदनस्नेहा वामयन्ति । विडङ्गखरमञ्जरीमधुशिग्रुसूर्यवल्लीपीलुसिद्धार्थकज्योतिष्मतीस्नेहाः शिरोविरेचयन्ति । करंजपूतिकक्तमालमातुलुङ्गेङ्गुदीकिराततिक्तकस्नेहा दुष्टव्रणेषूपयुज्यन्ते । तुवरककपित्थकम्पिल्लकभल्लातकपटोलस्नेहा महाव्याधिषु । त्रपुसैर्वारुककर्कारुकतुम्बीकूष्माण्डस्नेहा मूत्रसङ्गेषु । कपोतवङ्कावल्गुजहरीतकीस्नेहाः शर्कराश्मरीषु । कुसुम्भसर्षपातसीपिचुमर्दातिमुक्तकभाण्डीकटुतुम्बीकटभीस्नेहाः प्रमेहेषु । तालनालिकेरपनसमोचाचंपियालांबिल्वमधूकश्लेष्मातकाम्रातकफलस्नेहाः पित्तसंसृष्टे वायौ । विभीतकभल्लातकपिण्डीतकस्नेहाः कृष्णीकरणे। श्रवणकङ्कुकटुण्टुकस्नेहाः पाण्डुकरणे । शिंशपागुरुसारस्नेहा दद्रूकुष्ठकिटिभेषु ॥

प्रयोजनोने तथा विधानोने अनुसरी स्थावर स्नेहोनुं निरूपण.

३ हवे प्रयोजनोने तथा विधानोने अनुसरी स्थावर स्नेहोविषे कहीए छीए.

मोटो लोदर, एरडो, पाहाडी आंबो, नाहानो नेपाळो, मोटो नेपाळो, हाथला, आंखफूटामणी, खाखरो, मेंढाशींगी, इंद्रवारणी, कपीलो, गरमाळो अने गळी एओना स्नेहो विरेचन करे छे.

कुकडवेल, कडो, (इंद्रजवनुं झाड) कडवी घीसोडी, कडवी तूंबडी, कडवां तूरीयां अने मींढोळ एओना स्नेहो वमन करावे छे.

वावडींग, सफेद अघेडो, सफेद तथा रातो सरगवो, सूरजमुखी, पीलु, मर्षप अने मालकांकणी एओना स्नेहो शिरोविरेचन (माथानुं विरेचन) करे छे.

करंज, पूतीकरंज, गरमाळो, बीजोरूं, इंगोळीयो अने करीयातुं एओना स्नेहो दुष्ट व्रणोमां उपयोगी थाय छे.

चेरीयां, कोठ, कपीलो, भीलामुं अने पटोल एओना स्नेहो महाव्याधिओमां उपयोगी थाय छे.

त्रसडां, काकडी, पतकाळुं, तूंबडी अने भूरूं कोळुं एओना स्नेहो मूत्रनी अटकायत उपर उपयोगी थाय छे.

सूरजमुखी, बावची अने हरडे एओना स्नेहो कांकरीना तथा पथरीनां दरदो उपर उपयोगी थाय छे.

कसुंबो, सर्षप, अलसी, लींबडो, टींबरू, भांडी, (भींडी?) कडवी तूंबडी अने वापुंगां एओनां स्नेहो प्रमेहो उपर उपयोगी थाय छे.

ताड, नाळीएर, फनस, रातो सरगवो, चारोळी, बीली, महुडो, गुंदो अने अंबाडो एओना फळोना स्नेहो पित्तथी संयुक्त थएला वायु उपर उपयोगी थाय छे.

बेहेडो, भीलामुं अने मींढोळ एओना स्नेहो व्रणोने काळो करवामां उपयोगी थाय छे.

मुंडीना डोडवा, राळ अने पीळो लोदर, अथवा अरडूसो एओना स्नेहो व्रणने सफेद करवामां उपयोगी थाय छे.

शीशम अने अगरू एओना सारोना स्नेहो दादर, कोढ अने किटिभ एओ उपर उपयोगी थाय छे.

४ सर्व एव स्नेहा वातमुपघ्नन्ति । तैलगुणाश्च समासेन व्याख्याताः ॥

स्नेहोना सामान्य गुणो.

४ सकळा स्नेहो वायुने हणे छे. तैलोना गुणो तो सूत्रस्थानना ४९ मा अध्यायमां पण संक्षेपथी केहेवाई गया छे.

५ अत ऊर्ध्वं कषायस्नेहपाकक्रममुपदेक्ष्यामः ॥

क्ाथोने तथा स्नेहोने पकाववानो विधि केहेवानी प्रतिज्ञा.

९ हवे क्ाथोने तथा स्नेहोने पकाववाना क्रमनो उपदेश करीए छीए.

६ तत्र केचिदाहुस्त्वक्पत्रमूलादीनां भागं तच्चतुर्गुणजलमावाप्य चतुर्भागावशेषं निष्काथ्यापहरेदित्येष कषायपाककल्पः। स्नेहप्रसृतेषु षट्सु चतुर्गुणं द्रवमावाप्य चतुरश्चाक्षसमान् भेषजपिण्डानित्येष स्नेहपाककल्पः। एतत्तु न सम्यक्कस्मादागमासिद्धत्वात् ॥

क्ाथोने तथा स्नेहोने पकाववाना क्रमविषे परमत अने ते परमतनुं खंडन.

६ केटलाएक आचार्यो केहे छे के "छाल, पानडां तथा मूळ वगेरेनो एक भाग लई, तेमां तेथी चार गणुं पाणी नाखी उकाळतां चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे ते क्ाथने उतारी लेवो ए क्ाथ पकाववानो क्रम छे. तेमज छ पसला स्नेहमां चोगणो द्रव नाखी अने बेहेडाना फळो जेवडा चार ओषधना पिंडा नांखी स्नेह पकाववो ए स्नेह पकाववानो क्रम छे." पण ए आचार्योनुं आ केहेवुं योग्य नथी. केम के तेमां आयुर्वेदनी सम्मति नथी.

७ पलकुडवादीनामतो मानं तु व्याख्यास्यामः॥ तत्र द्वादश धान्यमाषा मध्यमाः सुवर्णमाषकः। ते षोडश सुवर्णम्।

अथ मध्यमनिष्पावा एकोनविंशतिर्द्धरणम्। तान्यर्द्धतृतीयानि कर्षः। ततश्चोर्ध्वं चतुर्गुणमभिवर्द्धयन्तः पलकुडवप्रस्थाढकद्रोणा अभिनिष्पद्यन्ते। तुला पलशतम्। ता विंशतिर्भारः। शुष्काणामिदं मानमार्द्रद्रवाणां च द्विगुणमिति॥

तोलनी परिभाषा.

७ आयुर्वेदमां कह्याप्रमाणे क्ाथोने तथा स्नेहोने पकाववानो क्रम केहेवामां तोलनी परिभाषा केहेवानी जरूर छे माटे प्रथम पल अने कुडव इत्यादिकनुं प्रमाण कहीए छीए.

जाडा पण नहीं अने झीणा पण नहीं एटले मध्यम प्रमाणना अडदना बार दाणा जेटला वजननो **सुवर्णमाषक** थाय छे. ए सुवर्णमाषक सोळ थाय त्यारे एक **सुवर्ण** गणाय छे. (आ तोल सोनाने माटे छे.)

जाडा पण नहीं अने झीणा पण नहीं एटले मध्यम प्रमाणना ओगणीश चोलाना दाणा जेटलुं वजन थाय ए तोल **धरण** केहेवाय छे. साडात्रण धरण थाय त्यारे **कर्ष** (तोलो) केहेवाय छे. चार कर्ष थाय त्यारे **पल** केहेवाय छे. चार पल थाय त्यारे **कुडव** केहेवाय छे. चार कुडव थाय त्यारे **प्रस्थ** केहेवाय छे. चार प्रस्थ थाय त्यारे **आढक** केहेवाय छे. चार आढक थाय त्यारे **द्रोण** केहेवाय छे. सो पल थाय त्यारे **तुला** केहेवाय छे अने वीश तुला थाय त्यारे **भार** केहेवाय छे. आ वजन सूकां द्रव्योने माटे समजवुं. लीलां द्रव्यो तथा द्रवरूप पदार्थोने माटे तो ते ते विषयमां जेटलो तोल कह्यो होय तेथी बमणो तोल लेवो. (गळो, कडो, अरडूसी, कोलुं, शतावरी, आसोंद, कांटा अशेरीयो, लींबडो, पटोल, केवडो, बलदाणा, इंद्रवारणी, सुवा, साटोडी, जटामांसी, गंगेटी, गुगल, हींग, आदु अने गोल एटला पदार्थो तो रस भरेलाज नाखवा पण सूका के बमणा नाखवा नहीं.)

८ तत्रान्यतमपरिमाणसंमितानां यथायोगं त्वक्पत्रमूलादीनामातपपरिशोषितानां छेद्यानि खण्डशश्छेदयित्वा भेद्यान्यणुशो भेदयित्वावकुल्याष्टगुणेन षोडशगुणेन वाम्भसाभिषिच्य स्थाल्यां चतुर्भागावशिष्टं क्ाथयित्वापहरेदित्येष कषायपाककल्पः।

स्नेहाच्चतुर्गुणोद्रवः स्नेहचतुर्थांशो भेषजकल्कस्तदैकध्यं संसृज्य विपचेदित्येष स्नेहपाककल्पः।

अथ वा तत्रोदकद्रोणे त्वक्पत्रमूलादीनां

तुलांमावाप्य चतुर्भागावशिष्टं निष्काथ्याण्हरेदित्येष कषायपाककल्पः । स्नेहकुडवे भेषजपलं पिष्टं कल्कं चतुर्गुणं द्रवमावाप्य विपचेदित्येष स्नेहपाककल्पः ॥

काथ पकाववानी तथा स्नेह पकाववानी परिभाषा.

८ उपर कहेला तोलोमांथी योगने अनुसरता अमुक तोलथी छाल, पानडां, मूळीआं तथा कंद वगेरे पदार्थोने लई, तडकामां सूकावी, कापवालायक होय तेओना टुकडा टुकडा कापी अने भेदवा लायक होय तेना झीणा झीणा विभागो करी नाखी, कूटी, तेमां आठगणुं अथवा सोळगणुं पाणी नाखी, हांडलामां उकाळी, चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे क्काथने सिद्ध थएलो समजीने उतारी लेवो ए क्काथ पकाववानी परिभाषा छे.

जे स्नेह पकाववानो होय तेमां स्नेहथी चोगणो द्रव अने स्नेहना चतुर्थांश जेटलो औषधोनो कल्क नाखी ते स्नेहने पकाववो ए स्नेह पकाववानी परिभाषा छे.

अथवा एक द्रोण भार (एक हजार चोवीश तोलांभार) पाणीमां एक तुलाभार (चारसो तोलांभार) छाल, पानडां अने मूळीआं वगेरे नाखी उकाळतां उकाळतां चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे ते क्काथने सिद्ध थएलो समजीने उतारी लेवो ए क्काथ पकाववानी परिभाषा छे अने सोळ तोलांभार स्नेहमां चार तोलां भार औषधनो कल्क तथा चोगणो द्रव नाखीने स्नेहने पकाववो ए स्नेह पकाववानी परिभाषा छे.

९ भवतश्चात्र ॥

स्नेहभेषजतोयानां प्रमाणं यत्र नेरितम् ।
तत्रायं विधिरास्थेयो निर्दिष्टे तत्तदेव तु ॥
अनुक्तद्रवकार्ये तु सर्वत्र सलिलं मतम् ।
कल्कक्काथावनिर्देशे गणात्तस्मात्प्रयोजयेत् ॥

स्नेहादिकनो तोल उपर प्रमाणे क्यां लेवो अने द्रव, कल्कनां द्रव्यो के क्काथनां द्रव्यो न बताव्यां होय त्यां केम करवुं.

९ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जे पाठमां स्नेह औषध अने जळ एओनो तोल न जणाव्यो होय ते पाठमां उपर प्रमाणे तोल लेवो पण ज्यां तोल बताव्यो होय त्यां तो बताव्या प्रमाणेज तोल लेवो. जे पाठमां कयो द्रव लेवो एम स्पष्ट न जणाव्युं होय त्यां सर्वत्र जळज लेवुं अने कल्कनां के क्काथनां द्रव्यो स्पष्ट न जणाव्यां होय त्यां जे गणनो स्नेह बनाववानुं कह्युं होय ते गणनां द्रव्योनोज कल्क तथा क्काथ लेवो."

१० अत ऊर्ध्वं स्नेहपाकक्रममुपदेक्ष्यामः ॥

स तु त्रिविधस्तद्यथा मृदुर्मध्यमः खर इति । तत्र स्नेहौषधिविवेकमात्रं यत्र भेषजं स मृदुरिति । मधूच्छिष्टमिव विशदमविलेपि यत्र भेषजं स मध्यमः । कृष्णमवसन्नमीषद्विशदं चिक्कणं च यत्र भेषजं स खर इति । अत ऊर्ध्वं दग्धस्नेहो भवति । तं पुनः साधु साधयेत् ।

तत्र पानाभ्यवहारयोर्मृदुः । नस्याभ्यङ्गयोर्मध्यमः । बस्तिकर्णपूरणयोस्तु खर इति ॥

स्नेह पकाववानो क्रम तथा तेना त्रण प्रकारना पाकोनो उपयोग.

१० हवे स्नेहपाकनो क्रम कहीए छीए. मृदु (कोमळ,) मध्यम अने खर (आकरो) ए रीते त्रण प्रकारनो स्नेहपाक थाय छे. जे पाकमां औषधोनो कल्क कांईक रस भरेलो रहे ते पाकने **मृदु** समजवो. जे पाकमां औषधोनो कल्क मीण जेवो जराक कठण, तांतणा वगरनो अने आंगळीने चोटे नहीं एवो अर्थात् रसवगरनो थई जतां पण कोमळतावाळो रहे ते पाकने **मध्यम** समजवो. जे पाकमां औषधोनो कल्क जराक काळो, जराक शेकाई गएलो, तांतणा वगरनो तथा

चीकाशवाळो रहे अर्थात् जराक विशेष कठण थई जाय ते पाकने **खर** समजवो. औषधनो कल्क एथी वधारे कठण तथा बळेलो थई जाय तो पछी दग्धस्नेहज थई जाय छे. जो दग्धस्नेह थई गयो होय तो तेने पाछो बीजा काथमां तथा कल्कमां पकावीने योग्य करवो.

पीवामां तथा भोजनमां स्नेह देवो होय तो मृदुपाकवाळो देवो, नस्यमां के अभ्यंगमां देवो होय तो मध्यम पाकवाळो देवो अने बस्तिमां के कर्णपूरणमां देवो होय तो खरपाकवाळो देवो.

११ भवतश्चात्र ॥

शब्दस्योपशमे प्राप्ते फेनस्योपरमे तथा ।
गन्धवर्णरसादीनां सम्पत्तौ सिद्धिमादिशेत् ॥
घृतस्यैवं विपक्वस्य जानीयात्कुशलो भिषक् ।
फेनोऽतिमात्रं तैलस्य शेषं घृतवदादिशेत् ॥

घीना पाकने तथा तैलना पाकने सिद्ध थएलो क्यारे समजवो.

११ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "घीनो पाक करतां ज्यारे घीनो अवाज बंध पडी जाय, फीण शांत थई जाय अने गंध, वर्ण तथा रस वगेरेनी जेवी जोइए तेवी तेमां संपत्ति थाय त्यारे घीना पाकने सिद्ध थएलो समजवो.

तैलनो पाक करतां ज्यारे तैलनो अवाज बंध पडी जाय, बहुज फीण चडे अने गंध, वर्ण तथा रस वगेरेनी जेवी जोइए तेवी तेमां संपत्ति थाय त्यारे प्रवीण वैद्ये तैलना पाकने सिद्ध थएलो समजवो.

(कल्कने आंगळीथी चोळतां कल्क वाट जेवो थई जाय अने अग्निमां नाखतां जरा पण अवाज न करे ए पण स्नेहना पाकनी सिद्धि थयानुं लक्षण छे.)"

१२ अत ऊर्ध्वं स्नेहपानक्रममुपदेक्ष्यामः ॥

अथ लघुकोष्ठायातुराय कृतमङ्गलस्वस्तिवाचनायोदयगिरिशिखरसंस्थिते प्रतप्तकनकनिकरपीतलोहिते सवितरि यथाबलं तैलस्य घृतस्य वा मात्रां पातुं प्रयच्छेत् । पीतमात्रे चोष्णोदकेनोपस्पृश्य सोपानत्को यथासुखं विहरेत् ॥

स्नेहपाननो क्रम.

१२ हवे स्नेह पीवानो क्रम कहीए छीए. जेनो कोठो पूर्व दिवसनुं खाधेलुं अन्नादिक पची जवाथी हलको थई गयो होय अने जेने मंगळ तथा स्वस्तिवाचन कर्यां होय एवा आतुरने, ज्यारे सूर्य उदयाचळना शिखर उपर आवी तपावेला सुवर्णना समूह जेवो पीळो तथा लाल देखावा लागे त्यारे एटले थोडोक दिवस चडे ते समये जठराग्निना तथा शरीरना बळने अनुसरी तैलनी के घीनी मात्रा पीवा आपवी. आतुरे मात्रा पीधा पछी ऊना जळथी आचमन करी (मोहोडुं साफ करीने) पगरखां पेहेरीने पोतानी अनुकूलता प्रमाणे फरवुं हरवुं. (थोडोक दिवस चडे त्यारे स्नेहपान करावुवानुं कह्युं ते साधारण ऋतुमां समजवुं. केम के उष्णकाल वगेरेमां स्नेहपानने माटे भिन्न भिन्न समयो नीमवामां आवशे. जुवो आ अध्यायनो विषय १९ मो.)

१३ रूक्षक्षतविषार्तानां वातपित्तविकारिणाम् ।
हीनमेधास्मृतीनां च सर्पिःपानं प्रशस्यते ॥
क्रिमिकोष्ठानिलाविष्टाः प्रवृद्धकफमेदसः ।
पिबेयुस्तैलसात्म्याश्च तैलं दार्ढ्यार्थिनश्च ये ॥
व्यायामकर्षिताः शुष्करेतोरक्ता महारुजः ।
महाग्निमारुतप्राणा वसायोग्या नराः स्मृताः ॥
क्रूराशयाः क्लेशसहा वातार्त्ता दीप्तवह्नयः ।
मज्जानमाप्नुयुः सर्वे सर्पिर्वा स्वौषधान्वितम् ॥

घी, तैल, चरबी तथा मज्जा ए चार स्नेहो पावामां सामान्य व्यवस्था.

१३ रूक्ष, क्षतवाळो, झेरथी पीडाएल, वा-

---

१ दग्धस्नेहने फरीवार पकावीने योग्य करवानुं कह्युं तेथी एम जणाय छे के 'स्नेह दग्ध थाय तो औषधना गुणोज जता रेहे छे पण स्नेहना गुणो जता रेहेता नथी एम आचार्य माने छे.'

युना तथा पित्तना विकारवाळो, जेनी बुद्धि हीन थई गई होय ते अने जेनी स्मरणशक्ति ओछी थई गई होय ते, एटला दरदीओने घी पीवरावववुं ए उत्तम छे.

कोठामां कृमिओवाळो, वायुथी घेराएलो, कफनी वृद्धिवाळो, मेदनी वृद्धिवाळो, तैलना सात्म्यवाळो अने दृढ थवानी इच्छावाळो, एटला दरदीओने तैल पीवरावववुं ए उत्तम छे.

कसरत करवाथी कर्षित थएल, जेनुं रेत के रुधिर सूकाई गएल होय ते, मोटां दरदोवाळो, प्रबल जठराग्निवाळो, प्रबल वायुवाळो अने घणा बळवाळो, एओने चरबी देवी ए उत्तम छे.

क्रूर कोठावाळो, क्लेशोनुं सहन करनारो, वायुथी पीडाएलो अने प्रदीप्त अग्निवाळो, एओने सारां औषधोथी युक्त करेली मज्जा देवी योग्य छे अने तेवुं घी देवुं पण योग्य छे.

१४ केवलं पैत्तिके सर्पिर्वातिके लवणान्वितम्।
देयं बहुकफे चापि व्योषक्षारसमायुतम् ॥
दोषाणामल्पभूयस्त्वं संसर्गं समवेक्ष्य च ।
युञ्ज्यात्त्रिषष्टिधा भिन्नैः समासव्यासतो रसैः ॥
स्नेहसात्म्यः क्लेशसहः काले नात्युष्णशीतले ।
अच्छमेव पिबेत्स्नेहमच्छपानं हि पूजितम् ॥

अन्य पदार्थोथी अमिश्रित तथा मिश्रित स्नेहो पावानी व्यवस्था.

१४ पित्तसंबंधी रोगवाळाने एकलुं घीज पावुं. वायुसंबंधी दरदवालाने घी पावुं होय तो सैंधवथी मिश्रित करीने पावुं. घणा कफवाळाने घी पावुं होय तो सूंठ, मरी, पीपळ तथा जवखार एओथी मिश्रित करीने पावुं.

दोषोनुं अल्पपणुं, घणापणुं अने अन्य दोषोथी संयुक्त थएलापणुं जोईने प्रवीण वैद्ये स्नेहोने त्रेसठ प्रकारना रसोमांथी ओछा वधता रसोथी संयुक्त करीने ते स्नेहो पावा. (रसोना त्रेसठ भेदो उत्तरतंत्रना ६३ मा अध्यायमां केहेवाशे आवशे.)

जे माणस स्नेहोना सात्म्यवाळो अने क्लेशोनुं सहन करनारो होय तेने साधारण ऋतुमां तो केवळ (अन्य पदार्थोथी मिश्रित नहीं करेलो) स्नेह पावो एज उत्तम छे. केमके एवा माणसने केवळ स्नेहनुं पान हितकारी थाय छे.

१५ शीतकाले दिवा स्नेहमुष्णकाले पिबेन्निशि ।
वातपित्ताधिके रात्रौ वातश्लेष्माधिके दिवा ।
वातपित्ताधिकस्योष्णे तृण्मूर्च्छोन्मादकारकः ॥
शीते वातकफार्त्तस्य गौरवारुचिशूलकृत् ।

शीतकालमां तथा उष्णकालमां स्नेहपान करावववाना जूदा जूदा समयो.

१५ शीतकाल होय त्यारे दिवसे स्नेह पावो अने उष्णकाल होय त्यारे राते स्नेह पावो. परंतु वायुनी तथा पित्तनी अधिकता होय तो रातेज स्नेह पावो अने वायुनी तथा कफनी अधिकता होय तो दिवसेज स्नेह पावो. केम के वायुनी तथा पित्तनी अधिकतावाळाने जो दिवसे स्नेह पीवरावववामां आवे तो तेथी तरश, मूर्छा तथा उन्माद थाय छे अने वायुनी तथा कफनी अधिकतावाळाने राते स्नेह पीवरावववामां आवे तो तेथी भारेपणुं, अरुचि तथा शूळ उत्पन्न थाय छे.

१६ स्नेहपीतस्य चेत्तृष्णा पिबेदुष्णोदकं नरः॥
एवं चानुपशाम्यन्त्यां स्नेहमुष्णाम्बुना वमेत् ।
दिह्याच्छीतैः शिरः शीतं तोयं चाप्यवगाहयेत्

स्नेह पीधा पछी बहु तरश लाग्या करे तो तेनी चिकित्सा.

१६ स्नेहपान कराव्या पछी ते माणसने तरश लाग्या करे तो ऊनुं पाणी पावुं अने एम करतां पण तरश शांत न थाय तो ऊनुं पाणी पाईने स्नेहनुं वमन करावववुं, शीतल पदार्थोनो माथापर लेप करवो तथा शीतल जळमां स्नान करावववुं.

१७ या मात्रा परिजीर्येत चतुर्भागगतेऽहनि ।
सा मात्रा दीपयत्यग्निमल्पदोषे च पूजिता ॥

या मात्रा परिजीर्येत तथार्द्धदिवसे गते ।
सा वृष्या बृंहणी चैव मध्यदोषे च पूजिता ॥
या मात्रा परिजीर्येत चतुर्भागावशेषिते ।
स्नेहनीया च सा मात्रा बहुदोषे च पूजिता ॥
या मात्रा परिजीर्येत्त तथा परिणतेऽहनि ।
ग्लानिमूर्छामदान्हित्वा सा मात्रा पूजिता भवेत्
अहोरात्रादसंदुष्टा या मात्रा परिजीर्यति ।
सा तु कुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी ॥

दोष वगेरेनी स्थिति उपरथी स्नेहनी मात्राओनी व्यवस्था.

१७ स्नेहनी जे मात्रा एक पोहोर दिवस चडतां पची जाय ते मात्रा अग्निने प्रदीप्त करे छे अने अल्प दोषवाळाने माटे उत्तम छे.

स्नेहनी जे मात्रा अरधो दिवस जतां पची जाय ते मात्रा वीर्यने वधारे छे, शरीरने पुष्ट करे छे अने मध्यम दोषवाळाने माटे उत्तम छे.

स्नेहनी जे मात्रा दिवसनो चोथो भाग अवशेष रहे त्यारे पची जाय ते मात्रा अत्यंत स्निग्ध करे छे अने घणा दोषवाळाने माटे उत्तम छे.

सामान्य रीते स्नेहनी ए मात्राने उत्तम समजवी के जे मात्रा ग्लानिने, मूर्छाने के मदने उत्पन्न नहीं करतां दिवस नमवाना समयमां पची जाय.

कोढ, विष, उन्माद, ग्रह तथा अपस्मार एओने नष्ट करवा माटे तो स्नेहनी एवी मात्रा देवी के जे मात्रा एक अहोरात्रे (चोवीश कलाके) पचे अने कशा दुष्ट व्याधिने उत्पन्न न करे.

१८ यथाग्नि प्रथमां मात्रां पाययेत विचक्षणः ।
पीतो ह्यतिबहुः स्नेहो जनयेत्प्राणसंशयम् ॥

कोठानी परीक्षाने माटे प्रथम तो थोडीज मात्रा देवी.

१८ विचक्षण वैद्ये प्रथम तो जठराग्निना बळने अनुसरीने स्नेहनी थोडीज मात्रा देवी के जेथी कोठाना मृदुपणा वगेरेनी परीक्षा मळी शके. घणो स्नेह पेहेलेज वखते पावामां आवे तो ते स्नेह प्राणना संशयने उत्पन्न करे छे अर्थात् तेथी मरणनी धास्ती थाय छे.

१९ मिथ्याचाराद्बहुत्वाद्वा यस्य स्नेहो न जीर्यति ।
विष्टभ्य वापि जीर्येत्तं वारिणोष्णेन वामयेत् ॥
जीर्णाजीर्णविशङ्कायां स्नेहस्योष्णोदकं पिबेत् ।
तेनोद्गारो भवेच्छुद्धो भक्तं प्रति रुचिस्तथा ॥
स्युः पच्यमाने तृड्दाहभ्रमसादारतिक्लमाः ।
परिषिच्याद्भिरुष्णाभिर्जीर्णेस्नेहं ततो नरम् ॥
यवागूं पाययेच्चोष्णां कामं क्लिन्नाल्पतण्डुलाम् ।
देयौ यूषरसौ वापि सुगन्धी स्नेहवर्जितौ ॥
कृतौ वाल्पसर्पिष्कौ यवागूर्वा विधीयते ।

स्नेह योग्य समयमां न पचे अथवा मलबंध करीने पचे अथवा पचतां पचतां तृषा वगेरेने उत्पन्न करे तो शु करवु.

१९ जे माणसने खोटा आहारविहारने लीधे अथवा घणापणाने लीधे स्नेह पचे नहीं अथवा पेटमां मलबंध करीने पचे ते माणसने ऊना पाणीथी वमन कराववुं.

जो स्नेह पच्यो छे के नहीं? एवी शंका रेहेती होय तो ऊनुं पाणी पावुं. ऊनुं पाणी पावाथी चोख्खो ओडकार आवे छे अने अन्न उपर रुचि थाय छे.

जो स्नेह उदरमां पाकवा लागतां तरश, दाह, भ्रम, ग्लानि, तथा क्लम उत्पन्न थाय तो ते माणसना शरीरपर ऊना जळनुं परिषेचन करवुं अने स्नेह जीर्ण थया पछी ऊनी तथा पचपचता थोडा चोखावाळी यवागू इच्छा प्रमाणे पावी अथवा स्नेहवगरज बनावेला के अत्यंत थोडुं घी नाखीने बनावेला सुगंधी यूष अने रस देवा. यूष के रस नहीं आपतां यवागूज देवी ए वधारे उत्तम छे.

२० पिबेत् त्र्यहं चतुरहं पंचाहं षडहं तथा ॥
सप्तरात्रात्परं स्नेहः सात्मीभवति सेवितः ।

स्नेहपान केटला दिवसो सूधी कराववुं.

२० त्रण दिवससूधी, चार दिवससूधी, पांच दिवससूधी के छ दिवससूधी स्नेह पावो पण तेथी वधारे दिवससूधी पावो नहीं. केम के सेवन करवामां आवतो स्नेह सात रात पछी सात्म्यरूप थई जाय छे.

२१ सुकुमारं कृशं वृद्धं शिशुं स्नेहद्विषं तथा ।
तृष्णार्त्तमुष्णकाले च सह भक्तेन पाययेत् ।

सुकुमार वगेरेने तथा उष्णकाळमां स्नेह अन्ननी साथे पावो.

२१ सुकुमार, कृश, वृद्ध, बालक, स्नेहनो द्वेषी अने तरशथी पीडाएलो एओने अन्ननी साथे स्नेह पावो. उष्णकालमां पण अन्ननी साथे पावो.

२२ पिप्पल्यो लवणं स्नेहाश्चत्वारो दधिमस्तुकः
पीतमैकध्यमेतद्धि सद्यःस्नेहनमुच्यते ।
भृष्टमांसरसे स्निग्धा यवागूः सूपकल्पिता ॥
सक्षौद्रा पीयमाना तु सद्यःस्नेहनमुच्यते ।
सर्पिष्मती पयःसिद्धा यवागूः स्वल्पतण्डुला ॥
सुखोष्णा सेव्यमाना तु सद्यःस्नेहनमुच्यते ।
शर्कराचूर्णसंसृष्टे दोहनस्थे घृते तु गाम् ॥
दुग्ध्वा क्षीरं पिबेद्रूक्षः सद्यःस्नेहनमुच्यते ।
यवकोलकुलत्थानां क्वाथो भागत्रयान्वितः ॥
पयोदधिसुराक्षीरघृतभागैः समन्वितः ।
सिद्धमेतैर्घृतं पीतं सद्यःस्नेहनमुत्तमम् ॥
राज्ञे राजसमेभ्यो वा देयमेतद्घृतोत्तमम् ।

सद्यःस्नेहन (जे दिवसे पीवामां आवे ते दिवसेज स्निग्ध करे एवा) प्रयोगो.

२२ पीपळ, सैंधव, घी, तेल, चरबी, मज्जा अने दहींनी तर एओने एकठां करीने पावामां आवे तो ते प्रयोग सद्यःस्नेहन छे.

शेकेला मांसना रसामां सारी पेठे पकावेली स्निग्ध यवागू मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो ते प्रयोग सद्यःस्नेहन छे.

थोडा चोखावाळी, दूधमां पकावेली अने घीवाळी यवागू सेहेवाय तेवी गरम राखीने पावामां आवे तो ते प्रयोग सद्यःस्नेहन छे.

रूक्ष थएला माणसने जो दोहोवाना वासणमां साकरना बूराथी मिश्रित करेलुं घी नाखी, तेमां गायने दोहीने ते दूध पावामां आवे तो ते प्रयोग सद्यःस्नेहन छे.

जव, बोर तथा कळथी एओना क्वाथना त्रण भाग नाखी अने दूध, दहीं, सुरा तथा दूधमांथी काहाडेलुं घी एओनो एक एक भाग नाखी तेओमां पकावेलुं घी पावामां आवे तो ते प्रयोग सद्यःस्नेहन छे. आ उत्तम घी राजाओने अथवा राजाओ जेवा माणसोने देवा योग्य छे.

२३ बलहीनेषु वृद्धेषु मृद्वग्निस्त्रीमहात्मसु ॥
अल्पदोषेषु योज्याः स्युर्ये योगाः सम्यगीरिताः

उपर कहेला सद्यःस्नेहन प्रयोगोनी योजनाना विषयो.

२३ बळवगरनां माणसोने, वृद्ध माणसोने, कोमळ जठराग्निवाळां माणसोने, स्त्रीओने, महात्माओने अने अल्प दोषवाळां माणसोने उपर कहेला सद्यःस्नेहन प्रयोगो देवा.

२४ विवर्जयेत्स्नेहपानमजीर्णी चोदरी ज्वरी ॥
दुर्बलोऽरोचकी स्थूलो मूर्छार्त्तो मदपीडितः ।
छर्द्यर्दितः पिपासार्त्तः श्रान्तः पानक्लमान्वितः ॥
दत्तबस्तिर्विरिक्तश्च वान्तो यश्चापि मानवः ।
अकाले दुर्दिने चैव न च स्नेहं पिबेन्नरः ॥
अकाले च प्रसूता स्त्री स्नेहपानं विवर्जयेत् ।
स्नेहपानाद्भवन्त्येषां नृणां नानाविधा गदाः ॥
गदा वा कृच्छ्रतां यान्ति न सिध्यन्त्यथवा पुनः
गर्भाशये सरोषाः स्यू रक्तक्लेदमलास्ततः ॥
स्नेहं जह्याच्चिषेवेत पाचनं रूक्षमेव च ।
दशरात्रात्ततः स्नेहं यथावदवचारयेत् ॥

कोने कोनें स्नेहपान नहीं कराववुं तथा केवा समयमां नहीं कराववुं.

२४ अजीर्णवाळो, उदरना रोगवाळो, तरुण ज्वरवाळो, दुर्बल, अरोचकवाळो, जाडो, मूर्छानो दरदी, मदथी पीडाएलो, वमनथी पीडाएलो, तृषार्थी पीडाएलो, थाकेलो, मद्य वगेरे पीवाना क्लमवाळो, जेने पीचकारी मारवामां आवी होय ते, जेणे विरेचन कर्युं होय ते अने जेणे वमनप्रयोगथी वमन कर्युं होय ते, एटला माणसोने स्नेहपान कराववुं नहीं. योग्य समयवगर के जे दिवसे वादळांओनो घमघोर होय ते दिवसे पण स्नेहपान कराववुं नहीं. जे स्त्रीने अकालप्रसव एटले कसूवावड थई होय तेने पण स्नेहपान कराववुं नहीं. ए माणसोने स्नेहपान कराववामां आवे तो तेओने अनेक प्रकारना रोगो थाय छे अथवा जे रोगो होय ते कष्टसाध्य के असाध्य थई जाय छे. जेने कसूवावड थएली होय ते स्त्रीने गर्भाशयमां रुधिर, क्लेद अने मळ स्नेहथी प्रकुपित थाय छे माटे ते स्त्रीने दश रातसूधी स्नेह नहीं आपतां रूक्ष पाचननुं सेवन कराववुं अने दश रात्रि व्यतीत थया पछी योग्य रीते स्नेहनो उपयोग कराववो. (आ विषयमां उदररोगवाळाने स्नेहपाननो निषेध कर्यो छे अने आ स्थानना १४ मा अध्यायमां उदररोगवाळाओने स्नेहनसंस्कार आपवानुं कह्युं छे तेथी कया कया उदररोगवाळाओने स्नेहपान कराववुं अने कया कयाने नही? ए विषे सोपपत्तिक व्यवस्थानी जरूर रेहे छे. डल्हन तो एम कहे छे के फक्त परिस्राव्युदरवाळाने अने दकोदरवाळाने स्नेहपान कराववुं नहीं एवी आ निषेधनी व्यवस्था छे.)

२५ पुरीषं ग्रथितं रूक्षं कृच्छ्रादन्नं विपच्यते ।
उरो विदहते वायुः कोष्ठादुपरि धावति ॥
दुर्वर्णो दुर्बलश्चैव रूक्षो भवति मानवः ।

रूक्ष कोने समजवो? के जेने माटे स्नेहपाननो विधि कह्यो छे.

२५ जेने दस्त गांठाओवाळो तथा रूक्ष उतरतो होय, अन्न मांड मांड पचतुं होय, छातीमां दाह थतो होय, वायु कोठाथी उपर दोड्या करतो होय, वर्ण बगडी गयो होय अने दुर्बळता थई गई होय तेने रूक्ष समजवो.

२६ ग्लानिः सदनमङ्गानामधस्तात्स्नेहदर्शनम् ॥
सम्यक्स्निग्धस्य लिङ्गानि स्नेहद्वेषस्तथैव च ।

स्नेहननो सम्यग्योग थयानां लक्षणो.

२६ अंगोमां ग्लानि तथा क्लम, विष्टामां स्नेहनुं देखावुं अने स्नेह उपर अरुचि एटलां स्नेहननो सम्यग्योग थयानां लक्षणो छे अर्थात् ए लक्षणो देखाय त्यारे समजवुं के जेवुं जोइये तेवुं बराबर स्नेहन थयुं छे.

२७ भक्तद्वेषो मुखस्रावो गुददाहः प्रवाहिका ॥
पुरीषातिप्रवृत्तिश्च भृशस्निग्धस्य लक्षणम् ।

स्नेहननो अतियोग थयानां लक्षणो.

२७ अन्न उपर अरुचि, मोहोडामांथी लाळनो स्राव, गुदामां बळतरा, प्रवाहिका[1] अने दस्तनी अत्यंत प्रवृत्ति थाय तो जाणवुं के स्नेहननो अतियोग थयो छे.

२८ रूक्षस्य स्नेहनं स्नेहैरतिस्निग्धस्य रूक्षणम् ॥
श्यामाककोरदूषान्नतक्रपिण्याकसक्तुभिः ॥

रूक्षनी अने अतिस्निग्धनी चिकित्सा.

२८ जे माणस रुक्ष होय तेने स्नेहोनी योजनाओथी स्निग्ध करवो अने जे माणस अतिस्निग्ध होय तेने सामो, कोदरा, छाश, खोळ अने साथवो एओनी योजनाओथी रूक्ष करवो.

---

१ ज्यारे अधोवायु मूकवानुं जोर करवामां आवे त्यारे गुदामांथी विष्टाथी खरडाएलो कफ वारंवार थोडो थोडो नीकळे ते प्रवाहिका केहेवाय छे.

२९ दीप्तान्तरग्निः परिशुद्धकोष्ठः
प्रत्यग्रधातुर्बलवर्णयुक्तः ।
दृढेन्द्रियो मन्दजरः शतायुः
स्नेहोपयोगी पुरुषो भवेत्तु ॥

स्वस्थ दशामां स्नेहना उपयोगनां फळो.

२९ स्नेहोनो उपयोग करनारो माणस प्रदीप्त जठराग्निवाळो, शुद्ध कोठावाळो, नवीन धातुओवाळो, बळवान्, सारा वर्णवाळो, दृढ इंद्रियोवाळो, थोडी जरावाळो अने सो वर्षना आयुष्यवाळो थाय छे.

३० स्नेहो हितो दुर्बलवह्निदेह-
सन्धुक्षणो व्याधिनिपीडितस्य ।
बलान्वितौ भोजनदोषजातैः
प्रमर्दितुं तौ सहसा न साध्यौ ॥

रोगीने स्नेहनथी जठराग्निना तथा शरीरना बळनो लाभ.

३० स्नेह रोगी माणसना निर्बळ थएला जठराग्निने अने शरीरने बळ आपवामां उपयोगी छे. केम के जठराग्नि अने शरीर एओ स्नेहना उपयोगथी बळ पाम्यां होय तो तेओने दुष्ट भोजनो के दोषो सहसा हरकत करी शकतां नथी.

अध्याय ३२ मो.

१ अथातः स्वेदावचारणीयं चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्वेदावचारणीयचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ चतुर्विधः स्वेदस्तद्यथा । तापस्वेद उष्मस्वेद उपनाहस्वेदो द्रवस्वेद इति । अत्र सर्वस्वेदविकल्पावरोधः ॥

स्वेदना चार भेद.

२ तापस्वेद, उष्मस्वेद, उपनाहस्वेद अने द्रवस्वेद ए रीते स्वेदना चार भेद छे. ए चार भेदोमां स्वेदना सघळा प्रकारोनो समावेश थई जाय छे.

३ तत्र तापस्वेदः पाणिकांस्यकन्दुकपालवालुकावस्त्रैः प्रयुज्यते शयानस्य चाङ्गतापो बहुशः खादिराङ्गारैरिति ॥

तापस्वेद.

३ हाथवते, कांसावते, कडाईवते, ठीकरांवते, रेतीवते के वस्त्रवते शेक करवामां आवे ते तापस्वेद केहेवाय छे. माणसने खाटला वगेरेमां सूवाडी नीचे घणा घणा खेरना अंगाराओ नाखीने तेओनो शेक देवामां आवे ते पण **तापस्वेद** केहेवाय छे.

४ उष्मस्वेदस्तु कपालपाषाणेष्टकालोहपिण्डानग्निवर्णानद्भिरासिञ्चेदम्लद्रव्यैर्वा तैरार्द्रैरलुकपरिवेष्टितमङ्गप्रदेशं स्वेदयेत् ।

मांसरसपयोदधिधान्याम्लवातहरपत्रभङ्गक्राथपूर्णां वा कुम्भीमनुतप्तां प्रावृत्योष्माणं गृह्णीयात् ।

पार्श्वच्छिद्रेण वा कुम्भेनाधोमुखेन तस्या मुखमपिधाय तस्मिंश्छिद्रे हस्तिशुण्डाकारां नाडीं प्रणिधाय तं स्वेदयेत् ॥

सुखोपविष्टं स्वभ्यक्तं गुरुप्रावरणावृतम् ।
हस्तिशुण्डिकया नाड्या स्वेदयेद्वातरोगिणम् ॥
सुखा सर्वाङ्गगा ह्येषा न च क्लिश्नाति मानवम् ।
व्यामार्द्धमात्रा त्रिवंका हस्तिहस्तसमाकृतिः ॥
स्वेदनार्थे हिता नाडी कैलिंजी हस्तिशुण्डिका ।
पुरुषायाममात्रां च भूमिमुत्कीर्य खादिरैः ॥
काष्ठैर्दग्ध्वा तथाभ्युक्ष्य क्षीरधान्याम्लवारिभिः ।
पत्रभङ्गैरवच्छाद्य शयानं स्वेदयेत्ततः ॥
पूर्ववत्स्वेदयेद्दग्ध्वा भस्मापोह्यापि वा शिलाम् ।

१ शेक तथा बाफ देवा वगेरे चिकित्साना निरूपण विषयनो.

कुटीं वा चतुर्द्वारां कृत्वा तस्यामुपविष्टस्यान्तश्चतुर्द्वारेऽङ्गारानुपसन्धाय तं स्वेदयेत् ।

धान्यानि वा सम्यगुपस्वेद्यास्तीर्य किलिञ्जेऽन्यस्मिन्वा तत्प्रतिरूपके शयानं प्रावृत्य स्वेदयेत्।

एवं पांशुगोशकृत्तुषबुसपलालोष्मभिः स्वेदयेत् ॥

उष्मस्वेद.

४ ठीकरूं, पथरो, इंट के लोढानो गोळो एओने अग्निथी तपावी, लालचोळ करी, पछी कांजी वगेरे खाटा द्रवोथी अथवा जळथी भीजावी तेओवते, रोगीना अंगप्रदेश उपर भीनो धाबळो वीटीने ते प्रदेश उपर शेक करवो ए **उष्मस्वेद** केहेवाय छे.

उकाळेल मांसनो रसो, दूध, दहीं, धान्याम्ल के वायुने हरनारां एरडा वगेरेनां पानडांनो क्वाथ एओमाना कोई द्रवथी भरेली धगधगती हांडलीने रोगीनी पासे मूकी ते हांडलीने तथा रोगीने चोफाळ के गोदडां वगेरेथी ढांकी दईने ते हांडलीमांथी रोगीने जे बाफ लेवराववामां आवे ते पण **उष्मस्वेद** केहेवाय छे. (आ स्वेदने उष्मस्वेदना भेदरूप कुंभीस्वेद केहे छे.)

एवीज रीते ऊना द्रवथी भरेली धगधगती हांडलीना मोहोडा उपर जेना पडखामां छिद्र कर्युं होय एवो बीजो ऊंधो घडो ढांकी ते घडाना छिद्रमां हाथीनी सूंढ जेवी नळी नाखीने ते नळीथी बांफ देवामां आवे ते पण **उष्मस्वेद** केहेवाय छे. वायुना रोगवाळा दरदीने सारी रीते बेसाडी, तेना शरीरपर सारी पेठे अभ्यंग करी, सघळा शरीरपर चोफाळ वगेरे भारे वस्त्र ओढाडी दई, हाथीनी सूंढ जेवी ए नळी अंदर आपीने तेनी बाफ लेवराववी. आ नळी सुखकारी रीते सर्व अंगोमां बाफ आपे छे अने दरदीने गभरावती नथी. अरधी वांभ जेटली लांबी, बाफना वेगनो विघात करवा माटे त्रण ठेकाणे वांकी वाळेली, हाथीनी सूंढना जेवी आकृतिवाळी अने वांस वगेरे द्रव्योथी बनावेली आ नळी स्वेदनना काममां हितकारी छे. (आ स्वेदने उष्मस्वेदना भेदरूप **नाडीस्वेद** केहे छे.)

धरतीमां साडात्रण अथवा चार हाथ लांबो खाडो खोदी, तेमां खेरनां लाकडां बाळी, पछी अग्निने बाहार काहाडी लई, खाडामां दूध, धान्याम्ल के जळ छांटी, तेमां वायुने हरनारां एरडा वगेरेनां पानडां पाथरी, ते उपर रोगीने सूवडावी, उपर जाडुं वस्त्र ओढाडी देवुं. आ रीते खाडानी बाफ लेवराववामां आवे ते पण **उष्मस्वेद** केहेवाय छे. (आ स्वेदने उष्मस्वेदना भेदरूप **भूस्वेद** केहे छे.)

मोटी शिला उपर खेरनां लाकडां बाळी, पछी भस्मने काहाडी नाखी, उपर दूध, धान्याम्ल के जळ छांटी, एरडा वगेरेनां पानडां बीछावी, ते शिला उपर रोगीने सूवडावी, उपर जाडुं वस्त्र ओढाडीने शिलानी बाफ लेवराववी ए पण **उष्मस्वेद** केहेवाय छे. (आ स्वेदने उष्मस्वेदना भेदरूप **अश्मस्वेद** केहे छे.)

चार द्वारवाळी कोटडी करावी, चार द्वारोनी अंदर शघडीओ वगेरेमां निर्धूम अंगारा मूकी, रोगीने कोटडीमां सारी रीते बेसाडी, तेओनी वराल लेवराववी ए पण **उष्मस्वेद** केहेवाय छे. (आ स्वेदने उष्मस्वेदना भेदरूप **कुटीस्वेद** केहे छे.)

अडद वगेरे धान्योने सारी पेठे बाफी तेओने वांस वगेरेना अथवा तेवाज बीजा कोई लांबा पात्रमां पाथरी, ते उपर ओछाड बीछावी, ते उपर रोगीने सूवडावी, माथे चोफाळ वगेरे नाखीने बाफ लेवराववी ए पण **उष्मस्वेद** केहेवाय छे.

१ सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायनो १९१ मो विषय जुवो.

(आ स्वेदने उष्मस्वेदना भेदरूप **संस्तरस्वेद** केहे छे.)

एवीज रीते धूळ, गायनुं छाण, फोतरां, ढुंसां अने पलाल एओनी बाफो लेवराववी ए पण उष्मस्वेद केहेवाय छे.

५ उपनाहस्वेदस्तु वातहरमूलकल्कैरम्लपिष्टैर्लवणप्रगाढैः सुस्निग्धैः सुखोष्णैः प्रदिह्य स्वेदयेत्। एवं काकोल्यादिभिः सुरसादिभिस्तिलातसीसर्षपकल्कैः कृशरापायसोत्कारिकाभिर्वेशवारैः शाल्वणैर्वा तनुवस्त्रावनद्धैः स्वेदयेत्

उपनाहस्वेद.

५ वायुने हरनारां एरडा वगेरेनां मूळोने कांजी अथवा छाश वगेरे खाटा रसोमां वाटी ते कल्कोमां सारी पेठे सैंधव नाखी, घी तथा मांसना रसा वगेरेथी ते कल्कोने सारी पेठे स्निग्ध करी, सेहेवाय तेवा गरम करी, रोगीना अंग उपर योग्य रीते लगावी, झीणा वस्त्रना पाटाथी बांधीने शेक देवो ए **उपनाहस्वेद** केहेवाय छे.

एवीज रीते काकोल्यादि गणना कल्कोने, सुरसादि गणना कल्कोने, तिलना कल्कोने, अलसीना कल्कोने, सर्षपना कल्कोने, खीचडीओने, दूधपाकोने, लाफसीओने, वेशवारोने के आ स्थानना चोथा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेलां शाल्वण द्रव्योने योग्य रीते अंगोनी उपर लगावी झीणा वस्त्रना पाटाथी बांधीने शेक देवा ए पण **उपनाहस्वेदो** केहेवाय छे.

६ द्रवस्वेदस्तु कोष्णवातहरद्रव्यक्राथपूर्णे कटाहे द्रोण्यां वा विगाह्य स्वेदयेत् । एवं पयोमांसरसयूषतैलधान्याम्लघृतवसामूत्रेष्ववगाहयेत सुखोष्णैश्च कषायैः परिषिञ्चेदिति ॥

द्रवस्वेद.

६ कडायामां अथवा कोठीमां वायुने हरनारां द्रव्योनो सेहेवाय तेवो ऊनो क्राथ भरी तेमां रोगीने सारी रीते पेसाडीने स्वेदित करवो ए **द्रवस्वेद** केहेवाय छे.

एवीज रीते कडायामां अथवा कोठीमां सेहेवाय तेवां ऊनां दूध, मांसनो रसो, यूष, तैल, धान्याम्ल, घी, चरबी के मूत्र भरी तेमां रोगीने वेसाडवो अने उपर सेहेवाय तेवा ऊना क्राथोनुं परिषेचन करवुं ए पण **द्रवस्वेदो** केहेवाय छे.

७ तत्र तापोष्मस्वेदौ विशेषतः श्लेष्मघ्नौ । उपनाहस्वेदो वातघ्नः । अन्यतरस्मिन् पित्तसंसृष्टे द्रवस्वेद इति ॥

चारे प्रकारना स्वेदोना जूदा जूदा गुणो.

७ तापस्वेद अने उष्मस्वेद एओ विशेषे करी कफने नष्ट करे छे, उपनाहस्वेद विशेषे करी वायुने नष्ट करे छे अने द्रवस्वेद पित्तथी संयुक्त थएला कफने नष्ट करे छे तथा पित्तथी संयुक्त थएला वायुने पण नष्ट करे छे.

८ कफमेदोऽन्विते वायौ निवातातपगुरुप्रावरणनियुद्धाध्वव्यायामभारहरणामर्षैः स्वेदमुत्पादयेदिति ॥

कफथी तथा मेदथी संयुक्त थएला वायु उपर अग्निवगरनो स्वेद.

८ वायु कफथी तथा मेदथी संयुक्त होय तो (ऊरुस्तंभादिक रोग होय तो.) पवनवगरनी जग्यामां निवास कराववाथी, तडकाथी, जाडां वस्त्रो धराववाथी, मल्लयुद्ध कराववाथी, पंथ करावववाथी, कसरत कराववाथी, भार उपडाववाथी अने क्रोध उत्पन्न कराववाथी स्वेद उत्पन्न करवो.

९ भवन्ति चात्र ॥

चतुर्विधो योऽभिहितो द्विधा स्वेदः प्रयुज्यते । सर्वस्मिन्नेव देहे तु देहस्यावयवे तथा ॥

शरीरमां स्वेदनो बे प्रकारथी प्रयोग.

९ आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "उपर जे चार प्रकारनो स्वेद कह्यो

तेनो सघळा शरीरमां अने शरीरना अवयवमां, ए रीते बे प्रकारनो प्रयोग थाय छे.

१० येषां नस्यं विधातव्यं बस्तिश्चैव हि देहिनाम्
शोधनीयाश्च ये केचित्पूर्वं स्वेद्यास्तु ते मताः ॥
पश्चात्स्वेद्या हृते शल्ये मूढगर्भानुपद्रवा ।
सम्यक्प्रजाता काले या पश्चात्स्वेद्या विजानता ॥
स्वेद्यः पूर्वं च पश्चाच्च भगन्दर्यर्शसस्तथा ।
अश्मर्या चातुरो जन्तुः शेषाऽन्छास्त्रे प्रचक्ष्महे ॥

पूर्वस्वेदन, पश्चात्स्वेदन अने पूर्वपश्चात् स्वेदन.

१० जे माणसोने नस्य देवानुं होय, पिचकारी देवानी होय के वमनविरेचनादिक शोधन देवानुं होय ते माणसोने प्रथम स्वेदन देवुं.

जे माणसनुं शल्य काहाड्युं होय ते माणस, मूढगर्भवाळी छतां उपद्रवो वगरनी स्त्री अने जेने समयसर प्रसव थयो होय ते स्त्री एओने समजू वैद्ये पाछळथी स्वेदन देवुं.

भगंदरवाळो, अरशवाळो अने पथरीवाळो एओने प्रथम पण स्वेदन देवुं अने पाछळथी पण स्वेदन देवुं. बाकी पण कोने कोने कया कया समयमां स्वेदन देवुं ए विषे ते ते प्रकरणोमां केहेवामां आव्युं छे ते उपरथी जाणी लेवुं.

११ नानभ्यक्ते नापि चास्निग्धदेहे
स्वेदो योज्यः स्वेदविद्भिः कथञ्चित् ।
दृष्टं लोके काष्ठमस्निग्धमाशु
गच्छेद्भङ्गं स्वेदयोगैर्गृहीतम् ॥

अभ्यंग अने स्नेहन कर्या पछीज स्वेदन करवुं.

११ जे माणसना शरीरने अभ्यंग न कर्यो होय के स्नेहन न कर्युं होय ते माणसने प्रवीण ए कदी पण स्वेदन करवुं नहीं. लोकमां जोवामां आवे छे के काष्ठने पण जो स्निग्ध कर्या वगरज स्वेदनना योगो देवामां आवे तो ते काष्ठ तुरत भांगी जाय छे. (आमवाळा व्याधिओमां आ नियम लागू पाडवो नहीं.)

१२ अग्नेर्दीप्तिं मार्दवं त्वक्प्रसादं
भक्तश्रद्धां स्रोतसां निर्मलत्वम् ।
कुर्यात्स्वेदो हन्ति निद्रां सतन्द्रां
सन्धीन्स्तब्धांश्चेष्टयेदाशु युक्तः ॥

संशमनीय स्वेद के जे आमवाळा व्याधिओमां रूक्षज देवो योग्य छे तेना गुणो.

१२ योजवामां आवेलो स्वेद तुरत अग्निने दीप्त करे छे, शरीरमां कोमळता करे छे, चामडीने स्वच्छ करे छे, अन्न उपर रुचि उपजावे छे, स्रोतोने निर्मळ करे छे, निद्राने तथा तंद्राने हणे छे अने स्तब्ध (अक्कड) थई गएला सांधाओने छूटा करीने चेष्टावाळा करे छे.

१३ स्नेहक्लिन्ना धातुसंस्थाश्च दोषाः
स्वस्थानस्था ये च मार्गेषु लीनाः ।
सम्यक्स्वेदैर्योजितैस्ते द्रवत्वं
प्राप्ताः कोष्ठं यान्ति देहादशेषात् ॥

शोधनना अंगरूप स्वेदना गुणो.

१३ जे दोषो पोतानां स्थानकोमां रह्या होय, धातुओमां रह्या होय के स्रोतोमां लीन थईने रह्या होय ते दोषोने स्नेहोनी योजनाओथी आर्द्र करीने पछी योग्य रीते स्वेदोनी योजना आपवाथी द्रवरूप करवामां आवे छे. द्रवरूप थईने तेओ संशोधनना बळने लीधे सघळा शरीरमांथी कोठामां प्राप्त थाय छे अने पछी संशोधनना बळने लीधेज बाहार नीकळी जाय छे.

१४ स्वेदास्रावो व्याधिहानिर्लघुत्वं
शीतार्थित्वं मार्दवं चातुरस्य ।
सम्यक् स्विन्ने लक्षणं प्राहुरेत-
न्मिथ्या स्विन्ने व्यत्ययेनैतदेव ॥
स्विन्नेऽत्यर्थं सन्धिपीडा विदाहः
स्फोटोत्पत्तिः पित्तरक्तप्रकोपः ।

मूर्छा भ्रान्तिर्दाहतृष्णे क्लमश्च
कुर्यात्तूर्णं तत्र शीतं विधानम् ॥

स्वेदनना सम्यग्योगनां, मिथ्यायोगनां तथा अतियोगनां जूदां जूदां लक्षणो अने मिथ्यायोगनी तथा अतियोगनी चिकित्सा.

१४ स्वेदननो **सम्यग्योग** थयो होय तो रोगीने पसीनानो सारी पेठे स्राव थाय छे, व्याधि ओछो थई जाय छे, शरीरमां हलकापणुं थाय छे, शीतनी इच्छा थाय छे, अने शरीरमां कोमळपणुं थाय छे. स्वेदननो **मिथ्यायोग** थयो होय तो पसीनानो स्राव थतो नथी, व्याधि वृद्धि पामे छे, शरीरमां भारेपणुं थाय छे, गरमीनी इच्छा थाय छे अने शरीरमां कठणपणुं थाय छे. स्वेदननो **अतियोग** थयो होय तो सांधाओमां पीडा थाय छे, अन्नादिकनो खाटो पाक थाय छे, फोडलाओ उत्पन्न थाय छे, पित्तनो तथा रुधिरनो प्रकोप थाय छे, मूर्छा आवे छे, भ्रम थाय छे, बळतरा थाय छे, तरश बहु लागे छे अने क्लम (शारीरस्थानना चोथा अध्यायनो २३ मो विषय जुवो.) थाय छे. स्वेदननो अतियोग के मिथ्यायोग थएल होय तो तुरतज शीतल चिकित्सा करवी.

१५ पाण्डुमेही पित्तरक्ती क्षयार्त्तः ।
क्षामोऽजीर्णी चोदरार्त्तो विषार्त्तः ॥
तृट्छर्द्यार्त्तो गर्भिणी पीतमद्यो
नैते स्वेद्या यश्च मर्त्योऽतिसारी ॥
स्वेदादेषां यान्ति देहा विनाशं
वासाध्यत्वं यान्ति चैषां विकाराः ।

कया कया रोगीओने स्वेदन करवुं नहीं.

१५ पांडुरोगवाळो, प्रमेहवाळो, रक्तपित्तवाळो, क्षयथी पीडाएलो, कृश, अजीर्णवाळो, उदररोगी, विषथी पीडाएलो, तरशथी पीडाएलो, उलटीथी पीडाएलो, गर्भिणी, जेणे मद्यपान करेल होय ते अने अतिसारवाळो एओने स्वेदन करवुं नहीं. एओने स्वेदन करवाथी एओना विकारो असाध्य थई जाय छे अथवा शरीरो नष्ट थई जाय छे. (अहीं उदररोगवाळाने स्वेदननो निषेध कर्यो छे अने आ स्थानना १४ मा अध्यायमां उदररोगोनी चिकित्सामां स्नेहन तथा स्वेदन करवां एम कह्युं छे तेथी डल्हन व्यवस्था आपे छे के परिस्राव्युदर अने दकोदर एओमां स्वेदननो आ निषेध छे.)

१६ एतेषां स्वेदसाध्या ये व्याधयस्तेषु बुद्धिमान्
मृदून्स्वेदान्प्रयुञ्जीत तथा हृन्मुष्कदृष्टिषु ॥

जेओने स्वेदन न देवुं जोइए तेओना रोगो स्वेदनथीज मटे एवा होय तो केम करवुं तथा हृदयादिक कोमळ अंगोपर केवा स्वेदोनी योजना करवी.

१६ उपर जेओने स्वेदन करवानो निषेध कर्यो तेओना कोई रोगो स्वेदनथीज मटे एम जणाय तो बुद्धिमान् वैद्ये ते रोगो उपर कोमळ स्वेदोनी योजना करवी. कोईनां पण हृदय, वृषणो के दृष्टि एओ उपर स्वेदन करवानी जरूर जणाय तो कोमळ स्वेदोनीज योजना करवी.

१७ सर्वान्स्वेदान्निवाते च जीर्णान्नस्यावचारयेत् ।
स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य शीतैराच्छाद्य चक्षुषी
स्विद्यमानस्य च मुहुर्हृदयं शीतलैः स्पृशेत् ।
सम्यक् स्विन्नं विमृदितं स्नातमुष्णाम्बुभिः शनैः
स्वभ्यक्तं प्रावृताङ्गं च निवातशरणस्थितम् ।
भोजयेदनभिष्यन्दि सर्वं चाचारमादिशेत् ॥

स्वेदो केवा स्थलमां देवा, केवी रीते देवा अने स्वेदो दीधा पछी शा उपचारो करवा ?

१७ सघळा स्वेदो पवनवगरनी जग्यामां देवा अने खाधेलुं अन्न पची गया पछी देवा. प्रथम स्नेहथी शरीरपर अभ्यंग करी शीतल वस्त्रो

वगेरेथी नेत्रोने ढांकीने स्वेद देवो अने स्वेद देवातो होय ते समयमां पण रोगीनी छातीपर शीतल पदार्थोनो स्पर्श वारंवार आप्या करवो. योग्य रीतनुं स्वेदन देवाई रहे त्यारे रोगीना शरीरने चोळीने धीरे धीरे ऊनां पाणीथी स्नान कराववुं. पछी वैद्ये अभ्यंग करी वस्त्रादिकथी अंगोने ढंकावी पवनवगरनी जग्यामां बेसाडी अभिष्यंदने उत्पन्न न करे एवुं अन्न जमाडवुं अने सघळो योग्य आहार विहार बतावी देवो. (रसनुं वहन करनारी शिराओ चीकाशथी तथा भारेपणाथी रोकाई जतां शरीर भारे थई जाय ए अभिष्यंद केहेवाय छे.)"

अध्याय ३३ मो.

१ अथातो वमनविरेचनसाध्योपद्रवचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वमनविरेचनसाध्योपद्रवचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ दोषाः क्षीणा बृंहयितव्याः कुपिताः प्रशमयितव्या वृद्धा निर्हर्त्तव्याः समाः परिपाल्या इति सिद्धान्तः । प्राधान्येन वमनविरेचने वर्त्तेते निर्हरणे दोषाणाम् । तस्मात् तयोर्विधानमुच्यमानमुपधारय ॥

वमननुं तथा विरेचननुं विधान केहेवानी कारणपूर्वक प्रतिज्ञा.

२ क्षीण थएला दोषोने वधारवा, कुपित थएला दोषोने शांत करवा, वृद्धि पामेला दोषोने शरीरमांथी काहाडवा अने समस्थितिमां रहेला दोषोनुं परिपालन करवुं ए वैद्यशास्त्रनो सिद्धांत छे. दोषोने शरीरमांथी बाहार काहाडवाना काममां वमन अने विरेचन प्रधान छे एटला माटे वमननुं अने विरेचननुं विधान कहुं छुं ते सांभळो.

३ तथातुरं स्निग्धं स्विन्नमभिष्यन्दिभिराहारैरनवबद्धदोषमवलोक्य श्वो वमनं पाययितास्मीति सम्भोजयेत् तीक्ष्णाग्निं बलवन्तं बहुदोषं महाव्याधिपरीतं वमनसात्म्यं च ॥

वमननुं पूर्व कर्म.

३ रोगीने योग्य रीते स्निग्ध, स्वेदित थएलो अने जेना दोषो प्रचलित थया होय एवो जोई वमन कराववुं. ए कराववुं होय त्यारे तेथी आगले दिवसे तीक्ष्ण अग्निवाळा, बळवान्, मोटा व्याधिथी घेराएला अने वमनना सात्म्यवाळा रोगीने अभिष्यंदी (कफनो उत्क्लेश करनारा) आहारो जमाडवा.

४ भवति चात्र ॥

पेशलैर्विविधैरन्नैर्दोषानुत्क्लेश्य देहिनः ।
स्निग्धस्विन्नाय वमनं दत्तं सम्यक्प्रवर्त्तते ॥

वमन देवाथी पेहेलां स्नेहन, स्वेदन तथा अभिष्यंदी आहारो देवानी जरूर.

४ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "रोगीने स्नेहन तथा स्वेदन आप्या पछी विविध प्रकारनां कोमळ अन्नोथी (अभिष्यंदी आहारोथी) तेना कफने उत्क्लिष्ट (स्थानथी प्रचलित) करीने पछी वमन देवामां आवे तो ते वमन सारी रीते प्रवर्त्ते छे."

५ अथापरेद्युः पूर्वाह्णे साधारणे काले वमनद्रव्यकषायकल्कचूर्णस्नेहानामन्यतमस्य मात्रां पाययित्वा वामयेत् । यथायोगं कोष्ठविशेषमवेक्ष्यासात्म्यबीभत्सदुर्गन्धदुर्दर्शनानि च वमनानि विदध्यात् । अतो विपरीतानि विरेचनानि ॥

वमननुं विधान अने ते वमननां द्रव्यो केवां जोइए तथा विरेचननां द्रव्यो केवां जोइए ते.

५ पछी बीजे दिवसे साधारण कालमां (शीत

---

१ जे रोगो के उपद्रवो वमनथी तथा विरेचनथी टाळी शकाय एवा होय तेओ उपर वमन तथा विरेचनरूप चिकित्सानो विधि.

पण न होय अने उष्ण पण न होय एवा काळमां) पूर्वाह्न समये वमन द्रव्योना काथनी, कल्कनी, चूर्णनी के स्नेहनी मात्रा पाईने वमन कराववुं. योगने अनुसरी तथा रोगीना कोठाना मृदु मध्यम तथा क्रूरपणाने जोई वमननां द्रव्यो एवां गोठववां के जेओ असात्म्य, सूगामणां, दुर्गंधवाळां तथा खराब देखाववाळां होय. विरेचननां द्रव्यो गोठववां होय त्यारे तो सात्म्य, रुचिकारक, सुगंधवाळां तथा सारा देखाववाळां गोठववां.

६ तत्र सुकुमारं कृशं बालं वृद्धं भीरुं वा वमनसाध्येषु विकारेषु क्षीरदधितक्रयवागूनामन्यतममाकण्ठं पाययेत् ॥

सुकुमार तथा कृश वगेरे माणसोने वमन कराववानो प्रकार.

६ जे माणस सुकुमार, कृश, बालक, वृद्ध के बीकण होय तेनो रोग जो वमनथी टळे एवो जणाय तो ते माणसने वमन द्रव्योथी पकावेलां दूध, दहीं, छाश के यवागू एओमांथी एक द्रव्य गळासूधी पावुं. (वाग्भट केहे छे वृद्ध के बालक वगेरेने रोगना अनुसारथी मद्य, दूध, शेलडीनो रस के मांसनो रसो गळासूधी पाईने पछी योग्यता प्रमाणे वमन द्रव्यनी मात्रा पावी.)

७ पीतौषधं च पाणिभिरग्नितप्तैः प्रताप्यमानं मुहूर्त्तमुपेक्षेत ।

तस्य च स्वेदप्रादुर्भावेण शिथिलतामापन्नं स्वेभ्यः स्थानेभ्यः प्रचलितं कुक्षिमनुसृतं जानीयात्ततः प्रवृत्तहृल्लासं ज्ञात्वा जानुमात्रासनोपविष्टमाप्तैर्ललाटे पृष्ठे पार्श्वयोः कण्ठे च पाणिभिः सुपरिगृहीतमङ्गुलीगन्धर्वहस्तोत्पलनालानामन्यतमेन कण्ठमभिस्पृशन्तं वामयेत्तावद्यावत्सम्यग्वान्तलिङ्गानीति ॥

वमनद्रव्यनी मात्रा पाया पछीनुं विधान.

७ रोगी औषध पीजाय त्यार पछी अग्निथी तपावेला हस्तोवते तेना शरीरने शेक्या करवुं अने थोडीवारसूधी रोगीने एमने एम रेहेवा देवो.

ज्यारे रोगीने पसीनो आववा लागे त्यारे जाणवुं के एनो दोष शिथिल थई, पोतानां स्थानोथी प्रचलित थईने पेटमां आवी चूको छे.

ज्यारे मोळ आवती अने थूक थूक थतुं जणवामां आवे त्यारे रोगीने गोठण जेटला ऊंचा आसनपर बेसाडवो, एना स्नेही लोकोना हस्तोर्थी तेना ललाटनुं पीठनुं पासांओनुं तथा कंठनुं योग्य रीते ग्रहण कराववुं अने रोगीना हाथथीज तेना गळामां आंगळी, एरडानी डांडली के कमळनुं नाळ एओमाना एकवते स्पर्श करावतां करावतां वमन कराववुं ते त्यां सूधी के ज्यां सूधी वमननो सम्यग्योग थयानां चिह्नो जोवामां आवे.

८ भवतश्चात्र ॥

कफप्रसेकं हृदयाविशुद्धिं
कण्डूं च दुश्छर्दितलिङ्गमाहुः ।
पित्तातियोगं च विसंज्ञतां च
हृत्कण्ठपीडामपि चातिवान्ते ॥
पित्ते कफस्यानुसुखं प्रवृत्ते
शुद्धेषु हृत्कण्ठशिरःसु चापि ।
लघौ च देहे कफसंस्रवे च
स्थिते सुवान्तं पुरुषं व्यवस्येत् ॥

वमनना मिथ्यायोगनां, अतियोगनां अने सम्यग्योगनां जूदां जूदां लक्षणो.

८ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "वमन कर्या पछी जो कफनो स्राव थतो होय, हृदय चोख्खुं न थयुं होय अने खरज आव्या करती होय तो जाणवुं के वमननो मिथ्यायोग थयो छे. जो पित्त बहुज पडे, बेभानपणुं थई जाय अने हृदयमां तथा कंठमां पीडा थाय तो जाणवुं के वमननो अतियोग थयो छे. जो कफ पड्या पछी पित्त सेहेज पड्युं होय,

छाती गळुं तथा माथुं शुद्ध थई गयां होय, शरीर हलकुं थई गयुं होय अने कफनो स्राव बंध पडी गयो होय तो जाणवुं के वमननो सम्यग्योग थयो छे."

९ सम्यग्वान्तं चैनमभिसमीक्ष्य स्नेहनविरेचनशमनानां धूमानामन्यतमं सामर्थ्यतः पाययित्वाचारिकमादिशेत् ॥

भवन्ति चात्र ॥

ततोऽपराह्ले शुचिशुद्धदेह-
मुष्णाभिरद्भिः परिषिक्तगात्रम् ।
कुलत्थमुद्गाढकिजाङ्गलानां
यूषै रसैर्वाप्युपभोजयेत्तु ॥

जेवुं जोइए तेवुं वमन थया पछी करवाना उपचारो.

९ वमननो सम्यग्योग एटले जेवुं जोइए तेवुं वमन थएलुं जोवामां आवे ते पछी स्रोतोमां लागी रहेला कफनुं हरण करवा माटे रोगीने तेनी शक्तिप्रमाणे स्नैहिक, वैरेचनिक अने संशमनीय ए त्रण जातनां धूमपानोमांथी योग्य जणाय ते प्रकारनुं धूमपान करावvुं अने पछी तेने आहारविहारो बतावी देवा.

आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "रोगीनुं शरीर पवित्र अने शुद्ध थया पछी अपराह्ण समयमां तेनां गात्रोपर शीतल जळनुं परिषेचन करी, नवरावी, तेना जठराग्नि वगेरेनी स्थितिप्रमाणे पेया पावी अथवा कळथी, मग अने तुवर एओना यूषोथी के जांगल प्राणीओनां मांसोना रसाओथी भोजन करावvुं.

१० कासोपलेपस्वरभेदनिद्रा-
तन्द्रास्यदौर्गन्ध्यविषोपसर्गाः ।
कफप्रसेकग्रहणीप्रदोषा
न सन्ति जन्तोर्वमतः कदाचित् ॥
यथा विनाशं सहसा व्रजन्ति
छिन्ने तरौ पुष्पफलप्ररोहाः ।
तथाहृते श्लेष्मणि शोधनेन
तज्जा विकाराः प्रशमं प्रयान्ति ॥

वमनना फळो.

१० वमन करनारा माणमने खांसी, स्रोतोमां मळोनी वृद्धि, स्वरभंग, अतिनिद्रा, तंद्रा, मुखनुं दुर्गंधपणुं, विषनो उपद्रव, शीतळा आदि उपद्रवो, कफनो स्राव अने ग्रहणीदोष एओ कदी पण थता नथी. जेम वृक्षने कापी नाखवामां आवतां पुष्पो, फलो तथा अंकुरो तुरतज नष्ट थई जाय छे तेम शोधनथी कफनुं हरण थतां कफथी थएला विकारो तुरतज नष्ट थई जाय छे.

११ न वामयेत्तैमिरिकोर्ध्ववात-
गुल्मोदरप्लीहकृमिश्रमार्त्तान् ।
स्थूलक्षतक्षीणकृशातिवृद्ध-
मूत्रातुरान्केवलवातरोगान् ॥
स्वरोपघाताध्ययनप्रसक्त-
दुश्छर्दिदुष्कोष्ठतृडार्त्तबालान् ।
ऊर्ध्वास्रपित्तिक्षुधितातिरूक्ष-
गर्भिण्युदावर्त्तिनिरूहितांश्च ॥
अवम्यवमनाद्रोगाः कृच्छ्रतां यान्ति देहिनाम् ।
असाध्यतां वा गच्छन्ति नैते वाम्यास्ततः स्मृताः

वमन कोने कोने करावvुं नहीं अने तेओने कराववामां आवे तो शी हानि थाय छे?

११ तिमिरवाळो, ऊर्ध्ववातवाळो[1], गुल्मवाळो, उदररोगी, बरलनो दरदी, कृमिओथी पीडाएलो, श्रमथी पीडाएलो, स्थूल, क्षतथी क्षीण थएलो, कृश, अतिवृद्ध, मूत्ररोगी, केवळ वायुनो दरदी, स्वरना उपघातवाळो, भणवामां लागेलो, वमनथी अत्यंत गभराट पामनारो, क्रूर कोठावाळो, तरशथी पीडाएलो, बालक, ऊंचे चालता रक्तपित्तवाळो, भूख्यो, अत्यंत रूक्ष, गर्भिणी, उदावर्त्तवाळो अने जेने निरूहबस्ति आपेल होय ते, एओने वमन करावvुं नहीं.

१ अंदर कफादिकथी प्रतिघात पामेलो वायु वारंवार ओडकार आण्या करे छे ए रोग. उर्ध्ववात केहेवाय छे.

जेओने वमन कराववानो निषेध कह्यो तेओने वमन कराववामां आवे तो तेथी तेओना रोगो कष्टसाध्य अथवा असाध्य थई जाय छे एटला माटे तेओने वमन कराववुं नहीं.

१२ एतेऽप्यजीर्णव्यथिता वाम्या ये च विषातुराः अतीव चोल्बणकफास्ते च स्युर्मधुकाम्बुना ॥

अमुक लोकोने जेठीमधना क्काथथी वमन कराववुं.

१२ तिमिरवाळा तथा ऊर्ध्ववातवाळा वगेरे जे लोकोने वमन कराववानो निषेध कह्यो ते लोको जो अजीर्णथी व्यथित थया होय तो तेओने जेठीमधनो क्वाथ पाईने वमन कराववुं. तेमज एवा लोको विषथी आतुर थया होय के अत्यंत उल्बण कफवाळा होय तो पण जेठीमधनो क्वाथ पाईने वमन कराववुं."

१३ वाम्यास्तु विषशोषस्तन्यदोषविषममन्दाग्न्युन्मादापस्मारश्लीपदार्बुदविदारिकामेदोमेहनवज्वरारुच्यपच्यामातीसारहृद्रोगचित्तविभ्रमविसर्पविद्रध्यजीर्णमुखप्रसेकहृल्लासश्वासकासपीनसपूतीनासकण्ठौष्ठवक्त्रपाककर्णस्रावाधिजिह्वोपजिह्विकागलशुण्डिकाधःशोणितपित्तिनः कफस्थानजेषु विकारेष्वन्ये च कफव्याधिपरीता इति ॥

कोने कोने वमन कराववुं.

१३ विष, शोष, धावणनो दोष, विषमाग्नि, मंदाग्नि, उन्माद, अपस्मार, श्लीपद, अर्बुद, विदारिका, मेद, प्रमेह, तरुणज्वर, अरुचि, अपची, आमातीसार, छातीना रोगो, चित्तविभ्रम, विसर्प, विद्रधि, अजीर्ण, मोहोडांमांथी लाळनो स्राव, मोळ, श्वास, खांसी, पीनस, नाकनुं दुर्गंधपणुं, कंठपाक, ओष्ठपाक, मुखपाक, कर्णस्राव, अधिजिह्व, उपजिह्विका, गळशुंडिका के नीचे गतिवाळुं रक्तपित्त एओथी पीडाएलाओने वमन कराववुं. जेओने कफनां स्थानकोमां विकारो थया होय तेओने अने बीजा पण जेओ कफजन्य व्याधिओथी घेराएला होय तेओने पण वमन कराववुं.

१४ विरेचनमपि स्निग्धस्विन्नाय वान्ताय च देयम् ॥

विरेचन केटला संस्कारो आप्या पछी देवुं.

१४ रोगीने स्नेहोथी स्निग्ध, स्वेदनोथी स्विन्न अने वमनथी वांत करीने पछी विरेचन देवुं एटले स्नेहन, स्वेदन अने वमन कराव्या विना विरेचन देवुं नहीं.

१५ अथातुरं श्वो विरेचनं पाययितास्मीति लघु भोजयेत् फलाम्लमुष्णोदकं चैनमनुपाययेत् ॥

विरेचननुं पूर्वकर्म.

१५ रोगीने बीजे दिवसे विरेचन पावानुं होय त्यारे पेहेले दिवसे पूर्वाह्ण कालमां तेने हलकुं भोजन जमाडवुं अने ते उपर बीजोरां वगेरे फलोनो रस तथा ऊनुं पाणी पावुं. (सायंकाले भोजन देवुंज नहीं.)

१६ अथापरेऽहनि विगतश्लेष्माणमातुरोपक्रमणीयादवेक्ष्यातुरमथास्मा औषधमात्रां पातुं प्रयच्छेत् ॥

विरेचननुं विधान.

१६ पछी वमनथी जेनो कफ पडी गयो होय एवा ते रोगी माणसने बीजे दिवसे सूत्रस्थानना आतुरोपक्रमणीय नामना ३५ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे जोई तपासीने विरेचननी मात्रा पीवा देवी. (विरेचननी मात्रा आठ तोलांनी उत्तम, चार तोलांनी मध्यम अने बे तोलांनी अल्प गणाय छे. माणसनां बळादिक जोइने ए मात्राओनी योजना करवी.)

१७ तत्र मृदुः क्रूरो मध्य इति त्रिविधः कोष्ठो भवति । तत्र बहुपित्तो मृदुः स दुग्धेनापि विरिच्यते । बहुवातश्लेष्मा क्रूरः स दुर्विरेच्यः । समदोषो मध्यमः स साधारण

इति । तत्र मृदौ मात्रा मृद्वी तीक्ष्णा क्रूरे मध्ये मध्या कर्त्तव्येति ॥

रोगीना कोठा उपरथी विरेचननी मात्राओनी व्यवस्था.

१७ कोठो मृदु, क्रूर अने मध्यम एम त्रण प्रकारनो होय छे. जे कोठो घणां पित्तवाळो होय ते **मृदु** केहेवाय छे. मृदु कोठावाळा माणसने दूध पावाथी पण विरेचित करी शकाय छे. जे कोठो घणा वायुथी के कफथी युक्त होय ते कोठो **क्रूर** केहेवाय छे. क्रूर कोठावाळा माणसने मांड मांड विरेचित करी शकाय छे. जे कोठो सम दोषोवाळो होय ते **मध्यम** अथवा साधारण केहेवाय छे. एओमां मृदु कोठावाळाने मृदु गुणवाळी मात्रा देवी, क्रूर कोठावाळाने तीक्ष्ण गुणवाळी मात्रा देवी अने मध्यम कोठावाळा माणसने मध्यवर्ती एटले जेमां मृदु गुण पण होय अने तीक्ष्ण गुण पण होय एवी मात्रा देवी.

१८ पीतौषधश्च तन्मनाः शय्याभ्यासे विरिच्येत ॥

विरेचनं पीतवांस्तु न वेगान्धारयेद्बुधः ।
निवातशायी शीताम्बु न स्पृशेन्न प्रवाहयेत् ॥

विरेचन औषध पीधा पछी केम वर्त्तवुं.

१८ जेणे विरेचन पीधुं होय ते माणसे विरेचनमांज चित्त राखवुं, शय्याना समीपमांज खरचु बेसवुं, वेगोने अटकाववा नहीं, पवनवगरनी जग्यामां सूवुं, शीतल जळनो स्पर्श पण करवो नहीं अने दस्त लाववाने माटे जोर पण करवुं नहीं.

१९ यथा च वमने प्रसेकौषधकफपित्तानिलाः क्रमेण गच्छन्ति । एवं विरेचने मूत्रपुरीषपित्तौषधकफा इति ॥

वमनमां अने विरेचनमां पदार्थो पडवानो अनुक्रम.

१९ वमन औषध पीधुं होय तो अनुक्रमे लाळ, औषध, कफ, पित्त अने पवन नीकळे छे. तेमज विरेचन औषध पीधुं होय तो अनुक्रमे मूत्र, विष्टा, पित्त, औषध अने कफ पडे छे.

२० भवन्ति चात्र ॥

स्याद्दुर्विरिक्ते कफपित्तकोपो
दाहोऽरुचिर्गौरवमग्निसादः ।
हृत्कुक्ष्यशुद्धिः परिदाहकण्डू-
विण्मूत्रसङ्गाश्च नसद्विरिक्ते ॥
मूर्छागुदभ्रंशकफातियोगाः
शूलोद्गमश्चातिविरिक्तलिङ्गम् ।
गतेषु दोषेषु कफान्वितेषु
नाभ्या लघुत्वे मनसश्च तुष्टौ ॥
गतेऽनिले चाप्यनुलोमभावं
सम्यग्विरिक्तं मनुजं व्यवस्येत् ॥

विरेचनना मिथ्यायोगनां, हीनयोगनां, अतियोगनां तथा सम्यग्योगनां जूदां जूदां लक्षणो.

२० आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "जो विरेचननो मिथ्यायोग थयो होय तो कफनो तथा पित्तनो कोप थाय छे, दाह थाय छे, अरुचि थाय छे, शरीरमां भारेपणुं थाय छे अने जठराग्निनुं मंदपणुं थाय छे. जो विरेचननो हीनयोग थयो होय तो हृदयनी तथा पेटनी अशुद्धि रेहे छे, बळतरा थाय छे, खरज आवे छे अने विष्टानी तथा मूत्रनी अटकायत थाय छे. जो विरेचननो अतियोग थयो होय तो मूर्छा आवे छे, गुदा बाहार नीकळी जाय छे, कफ अत्यंत पडे छे, अने शूळ उत्पन्न थाय छे. जो कफसहित दोष पडी गया होय, नाभि हलकी थई गई होय, मन प्रसन्न थयुं होय अने पवन अनुलोम थयो होय तो जाणवुं के विरेचननो सम्यग्योग थयो छे.

२१ मन्दाग्निमक्षीणमसद्विरिक्तं
न पाययेताहनि तत्र पेयाम् ।
क्षीणं तृडार्त्तं सुविरेचितं च
तन्वीमशीतां लघु पाययेत ॥

विरेचनना पश्चात्कर्ममां आवश्यिक विशेष.

२१ मंद अग्निवाळो तथा क्षीणतावगरनो जे माणस विरेचनना हीनयोगने प्राप्त थयो होय तेने ते दिवसे पेया पावी नहीं. सारी रीते विरेचित थएलो माणस जो क्षीण तथा तरशथी घेराएलो होय तो तेने ते दिवसे तुरत पातळी तथा ऊनी पेया पावी.

२२ बुद्धेः प्रसादं बलमिन्द्रियाणां
धातुस्थिरत्वं बलमग्निदीप्तिम् ।
चिराच्च पाकं वयसः करोति
विरेचनं सम्यगुपास्यमानम् ॥
यथौदकानामुदकेऽपनीते
चरस्थिराणां भवति प्रणाशः ।
पित्ते हृते त्वेवमुपद्रवाणां
पित्तात्मकानां भवति प्रणाशः ॥

विरेचननां फळो.

२२ योग्य रीते सेववामां आवतुं विरेचन बुद्धिने प्रसन्न करे छे, इंद्रियोने बळ आपे छे, धातुओने स्थिर करे छे, शरीरमां बळ आपे छे, जठराग्निने प्रदीप्त करे छे अने जरावस्थाने बहुज मोडी आववा दे छे. जेम जळने खेंची लेवामां आवतां स्थावर तथा जंगम जलचर जीवोनो नाश थई जाय छे तेम विरेचनथी पित्तनुं हरण थतां पित्तसंबंधी उपद्रवोनो नाश थई जाय छे.

२३ मन्दाग्न्यतिस्नेहितबालवृद्ध
स्थूलाः क्षतक्षीणभयोपतप्ताः ।
श्रान्तस्तृडार्तोऽपरिजीर्णभक्तो
गर्भिण्यधो गच्छति यस्य चासृक् ॥
नवप्रतिश्यायमदात्ययी च
नवज्वरी या च नवप्रसूता ।
शल्यार्दिताश्चाप्यविरेचनीयाः
स्नेहादिभिर्ये त्वनुपस्कृताश्च ॥

कोने कोने विरेचन देवुं नहीं.

२३ मंद अग्निवाळो, अत्यंत स्निग्ध थएलो, बालक, वृद्ध, जाडो, क्षतथी क्षीण थएल, भयथी तप्त थएल, थाकेल, तरशथी पीडाएल, जेने अन्न पच्युं न होय ते, गर्भिणी, जेने गुदामांथी रक्तपित्त पडतुं होय ते, नवा प्रतिश्यायवाळो, मदात्ययवाळो, नवा ज्वरवाळो, जेना प्रसवने थोडा दिवस थया होय ते स्त्री, शल्यथी पीडाएल अने स्नेहनादिकना संस्कारो नहीं पामेल एओने विरेचन देवुं नहीं.

२४ अत्यर्थपित्ताभिपरीतदेहा-
न्विरेचयेत्तानपि मन्दवीर्यैः ।
विरेचनैर्यान्ति नरा विनाश-
मज्ञप्रयुक्तैरविरेचनीयाः ॥

विरेचननो प्रतिप्रसव.

२४ जेओने विरेचन देवानो निषेध छे तेओ (मंद अग्निवाळा वगेरे) जो अत्यंत पित्तथी व्याप्त शरीरवाळा थई गया होय तो तेओने पण मंदवीर्यवाळां विरेचनो आपीने विरेचित करवा. जेओने विरेचित करवानो निषेध छे तेओने जो मूर्ख वैद्योना हाथथी विरेचनो आपवामां आवे तो तेओ ते विरेचनोथी विनाश पामे छे.

२५ विरेच्यास्तु ज्वरगरारुच्यर्शोऽर्बुदोदरग्रन्थिविद्रधिपाण्डुरोगापस्मारहृद्रोगवातरक्तभगन्दरच्छर्दियोनिरोगविसर्पगुल्मपक्वाशयरुग्विबन्धविसूचिकालसकमूत्राघातकुष्ठविस्फोटकप्रमेहानाहप्लीहशोफवृद्धिशस्त्रक्षतक्षाराग्निदग्धदुष्टव्रणाक्षिपाककाचतिमिराभिष्यन्दशिरःकर्णाक्षिनासास्यगुदमेढ्रदाहोर्ध्वरक्तपित्तकृमिकोष्ठिनः पित्तस्थानजेषु विकारेष्वन्ये च पैत्तिकव्याधिपरीता इति ॥

कोने कोने विरेचनो देवां.

२५ नवीनज्वर शिवायनो ज्वर, झेर, अरुचि, अरश, अर्बुद, उदररोग, ग्रंथि, विद्रधि, पांडुरोग, अपस्मार, हृदयरोग, वातरक्त, भगंदर, उलटी, योनिरोग, विसर्प, गुल्म, पक्वाशयना रोग, मलबंध, विसूचिका, अलसक, मूत्राघात, कुष्ठ, विस्फोटक,

प्रमेह, आनाह, बरलनुं दरद, सोजो, वधराळ, शस्त्रनो जखम, क्षारथी दाह, अग्निथी दाह, दुष्ट व्रण, अक्षिपाक, काच, तिमिर, अभिष्यंद, मस्तकनी बळतरा, काननी बळतरा, नाकनी बळतरा, मोहोडानी बळतरा, गुदानी बळतरा, लिंगनी बळतरा, ऊंचुं चालतुं रक्तपित्त के कोठामां पडेला कृमिओ एओथी पीडाएलाओने विरेचनो देवां. जेओने पित्तनां स्थानकोमां विकारो थया होय तेओने अने बीजा पण जे लोको पित्तसंबंधी व्याधिओथी घेराएला होय तेओने विरेचन देवां.

२६ सरत्वसौक्ष्म्यतैक्ष्ण्यौष्ण्यविकाशिन्वैर्विरेचनम् ।
वमनं तु हरेद्दोषं प्रकृत्या गतमन्यथा ॥
यात्यधो दोषमादाय पच्यमानं विरेचनम् ।
गुणोत्कर्षाद्व्रजत्यूर्ध्वमपक्कं वमनं पुनः ॥

वमनद्रव्यो अने विरेचनद्रव्यो तुल्यगुणोवाळां छतां पण वमनद्रव्यो ऊंचे जाय छे अने विरेचनद्रव्यो नीचे जाय छे तेनुं कारण.

२६ वायुने अनुलोम करनारपणुं, सूक्ष्म स्रोतोमां पेसनारपणुं, दोषोनो तुरत स्राव करनारपणुं, उष्णपणुं अने सांधाओना बंधोने पोचा पाडी नाखनारपणुं एटला गुणोने लीधे वमनद्रव्य पण दोषोनुं निर्हरण करे छे अने विरेचनद्रव्य पण दोषोनुं निर्हरण करे छे ते छतां विरेचनद्रव्य पोते पाकवा लागे ते समयमां दोषने लईने नीचे जाय छे अने वमनद्रव्य पोते काचुं होय ते समयमांज दोषने लईने ऊंचे जाय छे तेनुं कारण तेओना प्रभाव विना बीजुं कशुं नथी. (वमनद्रव्यमां एवीज कोई शक्ति छे के जेथी ते काचुं होय ते समयमांज दोषने लईने ऊंचे जाय छे अने विरेचनद्रव्यमां एवीज कोई शक्ति छे के जेथी ते पोते पाकवा लागे ते समयमां दोषने लईने नीचे जाय छे.) अथवा विरेचनद्रव्योमां पृथ्वीना तथा जळना गुणो अधिक होवाने लीधे ते द्रव्यो पाकवाना समयमां भारे थवाथी दोषने लईने नीचे जाय छे अने वमनद्रव्योमां वायुना तथा अग्निना गुणो अधिक होवाने लीधे ते द्रव्यो शीघ्रगामी तथा हलकां होवाथी काचां होय ते समयमांज दोषने लईने ऊंचां जाय छे. (सूत्रस्थानना ४१ मा अध्यायनो १० मो विषय वांचो.)

२७ मृदुकोष्ठस्य दीप्ताग्नेरतितीक्ष्णं विरेचनम् ।
न सम्यङ्निर्हरेद्दोषानतिवेगप्रधावितान् ॥

जेनो कोठो मृदु होय के अग्नि प्रदीप्त होय तेने अतितीक्ष्ण विरेचन नहीं देवानुं कारण.

२७ जे माणसनो कोठो मृदु होय ते माणसना दोषो कोठाना मृदुपणाने लीधे अत्यंत वेगथी दोडे छे अने जे माणसनो अग्नि प्रदीप्त होय ते माणसना दोषो अग्निनी दीप्तिथी तुरतज पक्क थईने अत्यंत वेगथी दोडे छे एटला माटे ते माणसोने अतितीक्ष्ण विरेचन देवामां आवे तो ते विरेचन पण झडपदार होवाथी दोषोनुं सम्यग्निर्हरण करतुं नथी. (आ कारणने लीधे एवां माणसोने मृदु तथा स्वल्प विरेचनज देवुं जोइए.)

२८ पीतं यदौषधं प्रातर्भुक्तपाकसमे क्षणे ।
पक्किं गच्छति दोषांश्च निर्हरेत्तत्प्रशस्यते ॥

केवा विरेचनने सारूं समजवुं.

२८ प्रभाते पीवामां आवेलुं जे विरेचनौषध खाधेला अन्नना पाकना समयमां पाकवा उपर आवीने दोषोनुं निर्हरण करे ते विरेचनौषध उत्तम गणाय छे.

२९ दुर्बलस्य चलान्दोषानल्पानल्पान्पुनः पुनः ।
हरेत्प्रभूतानल्पांस्तु शमयेत्प्रच्युतानपि ॥
हरेद्दोषांश्चलान्पक्कान्बलिनो दुर्बलस्य च ।
चला ह्युपेक्षिताः दोषाः क्लेशयेयुश्चिरं नरम् ॥

चलित थएला दोषोनुं निर्हरण अने शमन करवामां विशेष समजण.

२९ नबळा माणसना प्रचलित थएला अपक्व दोषो जो घणा होय तो संशोधनोथी नहीं पण तीक्ष्ण भोजनोथी तेओनुं वारंवार थोडुं थोडुं निर्हरण करवुं पण जो थोडा होय तो चलित थएला छतां पण तेओनुं शमनज करवुं. बळवान् माणसना के नबळा माणसना पण प्रचलित थएला दोषो जो पक्व होय तो तेओनुं योग्य संशोधनोथीज निर्हरण करवुं. केम के प्रचलित थएला दोषोनी जो उपेक्षा राखवामां आवे तो ते दोषो माणसने लांबा काळसूधी हेरान करे छे.

३० मन्दाग्निं क्रूरकोष्ठं च सक्षारलवणैर्घृतैः ।
सन्धुक्षिताग्निं स्निग्धं च स्विन्नं चैव विरेचयेत्॥

क्रूर कोठावाळा अने मंदाग्निवाळा माणसनुं संशोधन करवानो प्रकार.

३० जे माणस मंद जठराग्निवाळो के क्रूर कोठावाळो होय तेना अग्निने क्षारवाळां तथा लवणोवाळां घृतोथी प्रदीप्त करवो अने पछी ते माणसने स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपीने संशोधनोथी विरेचित करवो.

३१ स्निग्धस्विन्नस्य भैषज्यैर्दोषस्तूत्क्लेशितो बलात् ।
विलीयते न मार्गेषु स्निग्धे भाण्ड इवोदकम् ॥

संशोधनोथी पेहेलां स्नेहननी तथा स्वेदननी जरूर.

३१ माणसने स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आप्या पछी तेना बळ वगेरेने जोइने आपेलां औषधोए पडवामां उन्मुख करेलो तेनो दोष, जेम चीकणा वासणमां जळ वळगी रेहेतुं नथी तेम स्रोतोमां वळगी रेहेतो नथी माटे स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आप्या पछीज संशोधन देवुं.

३२ न चातिस्नेहपीतस्तु पिबेत्स्नेहविरेचनम् ।
दोषाः प्रचलिताः स्थानाद्भूयः श्लिष्यन्ति वर्त्मसु

अत्यंत स्निग्ध थएलाए स्नेहात्मक विरेचन पीवुं नहीं.

३२ जे माणसे स्नेहपान अत्यंत कर्युं होय तेणे स्नेहात्मक विरेचन पीवुं नहीं. केम के ए माणसना स्थानोथी प्रचलित थएला दोषो स्नेहात्मक विरेचनने लीधे पाछा स्रोतोमां चोटी जाय छे.

३३ विषाभिघातपिडकाशोफपाण्डुविसर्पिणः ।
नातिस्निग्धा विशोध्याः स्युस्तथा कुष्ठप्रमेहिणः॥

अमुक आतुरोने अतिस्निग्ध करीने नहीं पण जराक स्निग्ध करीनेज संशोधनो देवां.

३३ विषथी पीडाएल, अभिघातथी पीडाएल, फोडलीओवाळो, सोजावाळो, पांडुरोगवाळो, विसर्पवाळो कोढीयो अने प्रमेही एओने अतिस्निग्ध करीने नहीं पण जराक स्निग्ध करीनेज संशोधनोथी शुद्ध करवा.

३४ विरूक्ष्य स्नेहसात्म्यं तु भूयःसंस्नेह्य शोधयेत्।
तेन दोषा हृतास्तस्य भवन्ति बलवर्द्धनाः ॥

स्नेहना सात्म्यवाळा माणसने रूक्ष कर्या पछी स्निग्ध करीने संशोधन देवुं.

३४ जे माणस स्नेहना सात्म्यवाळो होय तेने प्रथम रूक्ष करीने स्निग्ध करवो अने ते पछी संशोधनथी शुद्ध करवो. केम के तेने रूक्ष कर्या पछी स्निग्ध करीने तेना दोषोनुं निर्हरण करवामां आवे तो तेथी बळनी वृद्धि थाय छे.

३५ प्रागपीतं नरं शोध्यं पाययेदौषधं मृदु ।
ततो विज्ञातकोष्ठस्य कार्यं संशोधनं पुनः ॥

कोठांनी परीक्षा करवा माटे प्रथम मृदु संशोधन पावुं.

३५ जेणे पूर्वे संशोधन औषध पीधुं न होय ते माणसने शुद्ध करवो होय तो तेने प्रथम मृदु संशोधन पाईने तेना कोठानी परीक्षा करवी. ए

उपायथी 'कोठो मृदु छे, मध्यम छे के क्रूर छे?' ए नक्की जणाय ते पछी ते माणसने फरी योग्य संशोधन आपीने शुद्ध करवो.

३६ सुखं दृष्टफलं हृद्यमल्पमात्रं महागुणम् ।
व्यापत्स्वल्पात्ययं चापि पिबेन्नृपतिरौषधम् ॥

राजाने केवुं विरेचन पावुं.

३६ राजा के जे अत्यंत सुकुमार होय छे तेने एवुं विरेचन पावुं के जे सुखदायी होय, अनुभवेला फळवाळुं होय, रुचि उपजे एवुं होय, थोडी मात्रावाळुं होय, मोटा गुणवाळुं होय अने कदाच कोई बगाड थाय तो पण थोडुंज नुकसान करे एवुं होय.

३७ स्नेहस्वेदावनभ्यस्य यस्तु संशोधनं पिबेत् ।
दारु शुष्कमिवानामे देहस्तस्य विशीर्यते ॥
स्नेहस्वेदप्रचलिता रसैः स्निग्धैरुदीरिताः ।
दोषाः कोष्ठगता जन्तोः सुखा हर्तुं विशोधनैः॥

स्नेहन तथा स्वेदन कर्या विना संशोधन पावाथी नुकसान.

३७ योग्य रीते स्नेहनसंस्कार तथा स्वेदनसंस्कार आप्या विना जे माणसने संशोधन पावामां आवे ते माणसनुं शरीर, जेम नमाववा जतां सूकुं लाकडुं त्रूटी जाय छे तेम शुद्ध करवा जतां त्रूटी जाय छे. दोषो स्नेहनथी तथा स्वेदनथी प्रचलित थईने अने ते संबंधमां स्निग्ध रसोथी ठेलाईने कोठामां आवी जाय छे के जेथी संशोधनोवते तेओनुं निर्हरण अनायासे करी शकाय छे.

अध्याय ३४ मो.

१ अथातो वमनविरेचनव्यापच्चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वमनविरेचनव्यापच्चिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वैद्यातुरनिमित्तं वमनं विरेचनं च पंचदशधा व्यापद्यते तत्र वमनस्याधोगतिरूर्ध्वं विरेचनस्येति पृथक् । सामान्यमुभयोः सावशेषौषधत्वं जीर्णौषधत्वं हीनदोषापहृतत्वं वातशूलमयोगातियोगौ जीवादानमाध्मानं परिकर्त्तिका परिस्रावः प्रवाहिका हृदयोपसरणं विबन्ध इति ॥

वैद्य वगेरेना दोषथी वमनना तथा विरेचनना पंदर प्रकारना बगाडो.

२ वैद्य, आतुर, औषध अने परिचारक एओना दोषोने लीधे वमनना तथा विरेचनना पंदर प्रकारना बगाडो थाय छे. वमनद्रव्य नीचे जाय ए वमननो अधोगति नामनो बगाड समजवो अने विरेचन द्रव्य ऊंचे जाय ए विरेचननो ऊर्ध्वगति नामनो बगाड समजवो. बाकीना सावशेषौषधत्व, जीर्णौषधत्व, हीनदोषापहृतत्व, वातशूल, अयोग, अतियोग, जीवादान, आध्मान, परिकर्त्तिका, परिस्राव, प्रवाहिका, हृदयोपसरण अने विबंध ए नामना तेर बगाडो तो बन्नेना एनाएज अर्थात् तुल्यज थाय छे.

३ तत्र बुभुक्षापीडितस्यातितीक्ष्णाग्नेर्मृदुकोष्ठस्य चावतिष्ठमाने दुर्बलस्य वा गुणसामान्यभावाद्वमनमधो गच्छति । तत्रेप्सितानवाप्तिर्दोषोत्क्लेशश्च । तमाशु स्नेहयित्वा भूयस्तीक्ष्णतरैर्वामयेत् ।

अपरिशुद्धामाशयस्योत्कृष्टश्लेष्मणः सशेषान्नस्य वाऽहृद्यमतिप्रभूतं च विरेचनं पीतमूर्ध्वं गच्छति । तत्राशुद्धामाशयमुल्बणश्लेष्माणमाशु वामयित्वा भूयस्तीक्ष्णतरैर्विरेचयेत् । आमान्वये त्वामवत्संविधानम् । अहृद्येऽतिप्रभूते

---

१ वमनना तथा विरेचनना पंदर प्रकारना बगाडोनी चिकित्सा विषयनो.

च हृद्यं प्रमाणयुक्तं च । अत ऊर्ध्वमुत्तिष्ठत्यौषधे न तृतीयं पाययेत् । ततस्त्वेनं मधुघृतफाणितयुक्तैर्लेहैर्विरेचयेत् ॥

अधोगति तथा ऊर्ध्वगति नामना बे बगाडोनुं जूदुं जूदुं सकारण निरूपण अने जूदी जूदी चिकित्सा.

३ जे माणस भूखथी पीडाएलो, अत्यंत तीक्ष्ण अग्निवाळो के कोमळ कोठावाळो होय अथवा नबळो छतां अजीर्णवाळो होय तेने देवामां आवेलुं वमन पोताना वातानुलोमकत्व आदिगुणो विरेचनना जेवाज होवाने लीधे नीचे जाय [1]. आ प्रमाणे वमन नीचे जाय तो धारेलुं फळ थतुं नथी अने दोषना उत्क्लेशरूप अनर्थ थाय छे. आम थयुं होय तो ते माणसने तुरत स्नेहन स्वेदन करी फरीवार अतितीक्ष्ण वमनद्रव्यो पाईने वमन कराववुं.

जे माणस अशुद्ध आमाशयवाळो, घणा कफवाळो के अजीर्णवाळो होय तेने पावामां आवेलुं विरेचन अथवा जे विरेचन अप्रिय के अत्यंत घणुं होय ते विरेचन ऊंचे जाय छे. आ प्रमाणे विरेचन ऊंचे जाय तो धारेलुं फळ थतुं नथी अने दोषना उत्क्लेशरूप अनर्थ थाय छे. आम थयुं होय तो अशुद्ध आमाशयवाळाने तथा घणा कफवाळाने तुरत वमन करावी फरीवार अतितीक्ष्ण विरेचनद्रव्यो पाईने विरेचन कराववुं, अजीर्णवाळा नबळा माणसनी लंघन पाचनादिकरूप चिकित्सा करवी अने अप्रिय के अत्यंत घणुं पावामां आव्युं होय तो पाछुं प्रिय लागे एवुं तथा प्रमाणसर विरेचन पावुं. आ प्रमाणे कर्या छतां पण विरेचनद्रव्य ऊंचुं चडे तो पछी त्रीजी वार विरेचन औषध नहीं पावुं पण ते माणसने मध, घी तथा गोळनी राब एओथी मिश्रित करेला सात्म्य तथा प्रिय अवलेहोथी विरेचित करवो.

४ दोषविग्रथितमल्पमौषधमवस्थितमूर्ध्वभागिकमधोभागिकं वा न स्रंसयति दोषान् । तत्र तृष्णा पार्श्वशूलं छर्दिर्मूर्छा पर्वभेदो हृल्लासोऽरतिरुद्गाराविशुद्धिश्च भवति । तमुष्णाभिरद्भिराशु वामयेत् । सावशेषौषधमतिप्रधावितदोषमतिबलमसम्यग्विरिक्तमप्येवं वामयेत् ।

वमनना तथा विरेचनना सावशेषौषधत्व नामना त्रीजा बगाडनुं सकारण निरूपण अने जूदी जूदी चिकित्सा.

४ घणुं आपवुं जोइए तेने बदले अल्प आपवामां आवेलुं औषध दोषोथी मिश्रित थई जईने कोठामां एमने एम रही जाय तो ते वमनद्रव्य होय के विरेचनद्रव्य होय पण दोषोने पाडतुं नथी. ए **सावशेषौषधत्व** नामनो बगाड केहेवाय छे.

वमनद्रव्यनो के विरेचनद्रव्यनो ए बगाड थवाथी तरश लाग्या करे छे, पासांओमां शूळ नीकळे छे, उलटी थया करे छे, मूर्छा आवे छे, सांधाओ त्रूटे छे, मोळ आव्या करे छे, अरति थाय छे अने अशुद्ध ओडकार आव्या करे छे. (चिंताथी जे अत्यंत अस्वस्थपणुं ते अरति केहेवाय छे.)

जे माणसने वमनद्रव्यनो ए बगाड थयो होय ते माणसने तुरत ऊनुं पाणी पाईने वमन कराववुं. जे माणसने विरेचनद्रव्यनो ए बगाड थयो होय ते माणस जो अत्यंत प्रचलित थएला दोषवाळो तथा अत्यंत बळवान् होय तो तेने पण तुरत ऊनुं पाणी पाईने वमन कराववुं. (विरेचन-

---

१ भूख्या माणसने भूखने लीधे वमनद्रव्य तुरत नीचे जाय छे. तीक्ष्ण अग्निवाळाने अग्निना तीक्ष्णपणाने लीधे वमनद्रव्य तुरतज पाकी जईने नीचे जाय छे. कोमळ कोठावाळाने कोठानी कोमळताने लीधे वमनद्रव्य नीचे जाय छे. अजीर्णवाळा नबळा माणसने वमनद्रव्य अजीर्णनी साथेज पाकवा लागीने नीचे जाय छे.

द्रव्यना ए बगाडवाळो माणस जो अत्यंत प्रचलित थएला दोषवाळो तथा अत्यंत बळवान् न होय तो फरीवार विरेचनज देवुं ?)

५ **क्रूरकोष्ठस्यातितीक्ष्णाग्नेरल्पमौषधमल्पगुणं वा भक्तवत्पाकमुपैति तत्र समुदीर्णा दोषा यथाकालमनिर्ह्रियमाणा व्याधिं बलविभ्रमं चापादयन्ति ।**

तमनल्पममन्दमौषधं च पाययेत् ॥

वमनना तथा विरेचनना जीर्णौषधत्व नामना चोथा बगाडनुं सकारण निरूपण अने जूदी जूदी चिकित्सा.

५ जे माणस क्रूर कोठावाळो अने अत्यंत तीक्ष्ण अग्निवाळो होय तेने आपवामां आवेलुं अल्पमात्रावाळुं के अल्पगुणवाळुं वमननुं के विरेचननुं द्रव्य अन्ननी पेठे पची जाय छे ए **जीर्णौषधत्व** नामनो बगाड केहेवाय छे के जे बगाडथी दोषो उच्छृंखल थाय छे.

ए उच्छृंखल थएला दोषोनुं जो समयसर निर्हरण न करवामां आवे तो तेओ व्याधिने अने सूत्रस्थानना १५ मा अध्यायना २२ मा विषयमां कहेला बलविस्रंसने उत्पन्न करे छे.

जो वमनद्रव्यनो ए बगाड थयो होय तो फरीवार घणुं तथा तीक्ष्ण वमनद्रव्य पावुं अने जो विरेचनद्रव्यनो ए बगाड थयो होय तो फरीवार घणुं तथा तीक्ष्ण विरेचनद्रव्य पावुं.

६ **अस्निग्धस्विन्नेनाल्पगुणं वा भेषजमुपयुक्तमल्पान्दोषान्हन्ति ।**

तत्र वमने दोषशेषो गौरवमुत्क्लेशं हृदयाविशुद्धिं व्याधिवृद्धिं च करोति। तत्र यथायोगं पाययित्वा वामयेद् दृढतरम् ।

विरेचने गुदपरिकर्त्तनमाध्मानं शिरोगौरवमनिस्सरणं वायोर्व्याधिवृद्धिं च करोति ।

तमुपपाद्य भूयः स्नेहस्वेदाभ्यां विरेचयेद् दृढतरम् ।

दृढं बहुप्रचलितदोषं वा तृतीये दिवसेऽल्पगुणं चेति ।

वमनना तथा विरेचनना हीनदोषापहृतत्व नामना पांचमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने तेनी जूदी जूदी चिकित्सा.

६ स्नेहन तथा स्वेदन कर्या विना वमनद्रव्य के विरेचनद्रव्य पावामां आव्युं होय अथवा अल्पगुणवाळुं ते द्रव्य पावामां आव्युं तो तेथी अल्प दोषोनुं निर्हरण थतां दोषोनो बाकीनो भाग अवशेष रही जाय छे ए **हीनदोषापहृतत्व** नामनो बगाड केहेवाय छे.

जो वमनद्रव्यनो ए बगाड थयो होय तो ते बगाड शरीरना भारेपणाने, उत्क्लेशने, (शारीरस्थानना चोथा अध्यायनो २९ मो विषय जुवो.) हृदयनी अशुद्धिने अने व्याधिनी वृद्धिने करे छे. ए थएल होय तो स्नेहन तथा स्वेदन करी फरीवार तीक्ष्ण वमनद्रव्य पाईने सारी पेठे वमन करावvुं.

जो विरेचनद्रव्यनो ए बगाड थयो होय तो गुदामां वाढ थवा जेवी वेदना थाय छे, पेट आफरे छे, माथुं भारे थई जाय छे, वायु नीकळतो नथी अने व्याधिनी वृद्धि थाय छे. ए थएल होय तो स्नेहन तथा स्वेदन करी फरीवार तीक्ष्ण विरेचनद्रव्य पाईने सारी पेठे विरेचन करावvुं.

जो आतुर साधारण दृढ शरीरवाळो तथा अत्यंत प्रचलित थएला दोषवाळो होय तो वमनना तथा विरेचनना दिवसथी त्रीजे दिवसे अल्प गुणवाळुं औषध पावुं.

७ **अस्निग्धस्विन्नेन रूक्षमौषधमुपयुक्तमब्रह्मचारिणा वा वायुं कोपयति । तत्र वायुः प्रकुपितः पार्श्वपृष्ठश्रोणिमन्याममर्शूलं मूर्छां भ्रमं संज्ञानाशं च करोति ।**

तमभ्यज्य धान्यस्वेदेन स्वेदयित्वा यष्टीमधुकविपक्वेन तैलेनानुवासयेत् ।

---

१ विश्लेषसादौ गात्राणां दोषविस्रंसनं श्रमः । अप्राचुर्यं क्रियाणां तु बलविस्रंसलक्षणम् ।

वमनना तथा विरेचनना वातशूल नामना छठ्ठा बगाडनुं सकारण निरूपण अने तेनी चिकित्सा.

७ स्नेहन तथा स्वेदन कऱ्या विना अथवा ब्रह्मचर्य पाळ्या विना वमननुं के विरेचननुं रूक्षपणावाळुं औषध पावामां आव्युं होय तो ते औषधथी वायु प्रकुपित थाय छे अने प्रकुपित थएलो वायु पासांओमां, पीठमां, ठांठामां, ओडमां अने हृदयमां शूळने उत्पन्न करे छे, मूर्छित करी नाखे छे, भ्रमणने उत्पन्न करे छे अने संज्ञानो नाश करे छे ए **वातशूल** नामनो बगाड केहेवाय छे.

ए बगाड थयो होय तो आतुरने अभ्यंग करी, अडद वगेरे धान्यनी बाफथी स्वेदित करी जेठीमधना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनी अनुवासनबस्ति देवी.

८ स्नेहस्वेदाभ्यामविभावितशरीरेणाल्पमौषधमल्पगुणं वा पीतमूर्ध्वमधो वा नाभ्येति दोषांश्चोत्क्लिश्य बलक्षयमापादयति। तत्राध्मानं हृदयग्रहस्तृष्णा मूर्छा दाहश्च भवति तमयोग इत्याचक्षते।

तमाशु वामयेन्मदनफललवणाम्बुभिर्विरेचयेत्तीक्ष्णतरैः कषायैश्च।

दुर्वान्तस्य तु समुत्क्लिष्टा दोषा व्याप्य शरीरं कण्डूश्वयथुकुष्ठपिडकाज्वराङ्गमर्दनिस्तोदनानि कुर्वन्ति।

ततस्तानवशेषान्महौषधेनापहरेत्।

अस्निग्धस्विन्नस्य मृदुविरिक्तस्याधो नाभेः स्तब्धपूर्णोदरता शूलं वातपुरीषसङ्गः कण्डूमण्डलप्रादुर्भावो भवति तमास्थाप्य पुनः संस्नेह्य विरेचयेत्तीक्ष्णेन।

नातिप्रवर्त्तमाने तिष्ठति वा दुष्टसंशोधने तत्सन्तेजनार्थमुष्णोदकं पाययेत पाणितापैश्च पार्श्वोदरमुपस्वेदयेत्। ततः प्रवर्त्तते दोषाः। अनुप्रवृत्ते चाल्पदोषे जीर्णौषधं बहुदोषमहःशेषं बलं चावेक्ष्य भूयो मात्रां विदध्यात्।

अप्रवृत्तदोषं दशरात्रादूर्ध्वमुपसंस्कृतदेहं स्नेहस्वेदाभ्यां भूयः शोधयेत्।

दुर्विरेच्यमास्थाप्य पुनः संस्नेह्य विरेचयेत्।

ह्रीभयलोभैर्वेगाघातशीलाः प्रायशः स्त्रियो राजसमीपस्था वणिजः श्रोत्रियाश्च भवन्ति। त एते दुर्विरेच्या बहुवातत्वादत एव ताननतिस्निग्धान् स्वेदोपपन्नाञ्छोधयेत्।

वमनना तथा विरेचनना अयोग नामना सातमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने तेनी जूदी जूदी सामान्य तथा विशिष्ट चिकित्सा.

८ जेना शरीरने स्नेहनरूप तथा स्वेदनरूप संस्कार न अपाएल होय ते आतुर अल्पमात्रावाळुं अथवा अल्पगुणवाळुं वमननुं औषध पीये तो ते औषध ऊंचे जतुं नथी अने विरेचननुं औषध पीये तो ते औषध नीचे जतुं नथी एटलुंज नहीं पण दोषोने उत्क्लिष्ट करीने बळनो क्षय[1] करे छे अने एम थतां आध्मान, हृदयनुं पकडाई जवुं, तरश, मूर्छा तथा दाह थाय छे ए **अयोग** नामनो बगाड केहेवाय छे.

ए बगाड जो वमननो होय तो आतुरने तुरतज मींढोळना फळनुं तथा सैंधवनुं जळ पाईने वमन करावबुं अने ए बगाड जो विरेचननो होय तो आतुरने तुरतज अतितीक्ष्ण क्वाथो पाईने विरेचन करावबुं.

जो ओछा वमनरूप दुर्योग थयो होय तो उत्क्लिष्ट (प्रचलित) थएला दोषो सघळा शरीरमां व्याप्त थईने खरज, सोजो, कोढ, फोडलीओ,

---

१ गुरुत्वं स्तब्धता गात्रे मुखग्लानिर्विवर्णता। तंद्रा निद्रा वातशोफो बलव्यापदि लक्षणम्।

सूत्रस्थान अध्याय १५ मो, विषय २२ मो.

ज्वर, अंगोनुं भांगवुं तथा सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा एओने उत्पन्न करे छे. (आ प्रासंगिक छे.)

ए ओछुं वमन थवारूप दुर्योग थयो होय तो अवशेष रहेला दोषोनुं सूंठनो उपयोग करावीने निर्हरण करवुं.

जो ओछुं विरेचन थवारूप दुर्योग थयो होय तो नाभिनी नीचेना उदरनो भाग स्तब्ध तथा पूर्ण थई जाय छे, शूळ नीकळे छे, अधोवायुनी तथा विष्टानी अटकायत थाय छे खरज आवे छे अने मंडलो (चकरडां) उत्पन्न थाय छे.

ए ओछुं विरेचन थवारूप दुर्योग थयो होय तो आतुरने निरूह नामनी पिचकारी दई स्नेहन स्वेदन करी॰ फरीवार तीक्ष्ण विरेचनद्रव्य पाईने विरेचन कराववुं.

उपर प्रमाणे कर्या छतां पण जो पेलुं दुष्ट संशोधन संपूर्ण रीते नीकळे नहीं अथवा जरा पण नहीं नीकळतां अंदरज रहे तो तेने बाहार नीकळवानो वेग आपवा माटे आतुरने ऊनुं पाणी पावुं अने अग्निथी तपावेली हथेळीओवते आतुरना पांसापर तथा पेटपर शेक करवो. आ प्रमाणे करवाथी दोषो नीकळी जाय छे.

जो थोडोक दोष नीकळ्या पछी औषध पची जाय अने ते आतुर घणा दोषवाळो जोवामां आवे तो तेना बळ उपर अने बाकी रहेला दिवसना भाग उपर ध्यान आपीने फरीवार मात्रा देवी.

एम कर्या छतां पण दोष न नीकळे तो पछी दश रात जवा दई स्नेहननो तथा स्वेदननो संस्कार आपी फरीवार वमनविरेचन आपीने ते आतुरना शरीरनुं संशोधन करवुं.

जो आतुर दुर्विरेच्य (जेने बहुज मुशकेलीथी विरेचित करी शकाय एवो) होय तो तेने निरूह नामनी पीचकारी दई फरीवार स्नेहन तथा स्वेदन आपी विरेचननी योग्य मात्रा आपीने विरेचित करवो.

घणुं करीने स्त्रीओ, राजाओनी पासे रेहेनारां माणसो, व्यापारीओ अने वेदीया ब्राह्मणो एओ लाज, भय तथा लोभादिक एओने लीधे वेगोनी अटकायत करवानी आदतवाळांज होय छे अने तेथी वायुनी प्रबळताने लीधे दुर्विरेच्य थई जाय छे एटला माटे तेओने अत्यंत स्निग्ध तथा स्वेदित करीने ते पछी संशोधनोथी शुद्ध करवां.

९ स्निग्धस्विन्नस्यातिमात्रमतिमृदुकोष्ठस्य वा तीक्ष्णाधिकदत्तमौषधमतियोगं कुर्यात् ।

तत्र वमनातियोगे पित्तातिप्रवृत्तिर्बलविस्रंसो वातकोपश्च बलवान् भवति ।

तं घृतेनाभ्यज्यावगाह्य शीतास्वप्सु शर्करामधुमिश्रैर्लेहैरुपचरेद्यथास्वम् ।

विरेचनातियोगे कफस्यातिप्रवृत्तिरुत्तरकालं च सरक्तस्य तत्रापि बलविस्रंसो वातकोपश्च बलवान् भवति ।

तमतिशीताम्बुभिः परिषिच्यावगाह्य वा शीतैस्तण्डुलाम्बुभिर्म्मधुमिश्रैश्छर्दयेत्। पिच्छाबस्तिं चास्मै दद्यात् । क्षीरसर्पिषा चैनमनुवासयेत् । प्रियङ्ग्वादिं चास्मै तण्डुलाम्बुना पातुं प्रयच्छेत् । क्षीररसयोश्चान्यतरेण भोजयेत् ॥

वमनना तथा विरेचनना अतियोग नामना आठमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने तेनी जूदी जूदी चिकित्सा.

९ जे माणस अत्यंत स्नेहन तथा अत्यंत स्वेदन पाम्यो होय अथवा अत्यंत कोमळ कोठावाळो होय ते माणसने आपवामां आवेलुं तीक्ष्ण तथा अधिक संशोधन **अतियोग** नामना बगाडने उत्पन्न करे छे.

जो वमननो अतियोग थयो होय तो पित्त बहुज पडे छे, बलविस्रंस थाय छे अने वायुनो प्रबल प्रकोप थाय छे.

ए थएल होय तो आतुरने घीनो अभ्यंग

करी, शीतल जळमां अवगाहन करावीने दोषोना अनुसार प्रमाणे साळनी धाणीना साथवाना, साकरथी के मधथी मिश्रित करेला अवलेहो चटाडवा.

जो विरेचननो अतियोग थयो होय तो कफनी अत्यंत प्रवृत्ति थाय छे, छेवट रुधिरवाळो कफ पडवा लागे छे अने एम थतां बलविस्रंस थाय छे तथा वायुनो बळवान् प्रकोप थाय छे.

ए थएल होय तो आतुरने अतिशीतल जलोनुं परिषेचन करी अथवा अतिशीतल जळमां अवगाहन करावी मधथी मिश्रित करेलां चोखाना धोणनां शीतल पाणी पाईने वमन कराववुं, आ स्थानना ३८ मा अध्यायना २१ मा विषयमां कह्याप्रमाणे पिच्छिलबस्ति देवी, दूधमां पकावेला घीनी अनुवासनबस्ति पण देवी, चोखाना धोणनी साथे प्रियंग्वादि गणनो कल्क पावो अने दूधथी अथवा मांसना रसाथी भोजन कराववुं.

१० तस्मिन्नेव वमनातियोगे प्रवृद्धे शोणितं ष्ठीवति च्छर्दयति वा तत्र जिह्वानिःसरणमक्ष्णोर्व्यावृत्तिर्हनुसंहननं तृष्णा हिक्का ज्वरो वैसंज्ञ्यमित्युपद्रवा भवन्ति ।

तमजासृक्चन्दनोशीरांजनलाजचूर्णैः सशर्करोदकैर्मन्थं पाययेत् फलरसैर्वा सघृतक्षौद्रशर्करैः। शुङ्गाभिर्वा वटादीनां पेयां सिद्धां सक्षौद्रां वर्चोग्राहिभिर्वा । पयसा जाङ्गलरसेन वा भोजयेत् । अतिस्रुतशोणितविधानेनोपचरेत् । जिह्वामतिसर्पितां त्रिकटुकलवणचूर्णप्रघृष्टां तिलद्राक्षाप्रलिप्तां वा पीडयेत् प्रविष्टायां चाम्लमन्ये तस्य पुरस्तात्स्वादयेयुः । व्यावृत्ते चाक्षिणी घृताभ्यक्ते पीडयेत् । हनुसंहनने वातश्लेष्महरं नस्यं स्वेदांश्च विदध्यात्। तृष्णादिषु च यथास्वं प्रतिकुर्वीत । विसंज्ञे वेणुवीणागीतस्वनं श्रावयेत् ।.

विरेचनातियोगे च सचन्द्रकं सलिलमधः स्रवति ततो मांसधावनप्रकाशमुत्तरकालं जीवशोणितं च ततो गुदनिःसरणं वेपथुर्वमनातियोगोपद्रवाश्चास्य भवन्ति ।

तमपि अतिस्रुतशोणितविधानेनोपचरेत् । निःसर्पितगुदस्य गुदमभ्यज्य परिस्वेद्यान्तः पीडयेत् क्षुद्ररोगचिकित्सितं वा वीक्षेत । वेपथौ वातव्याधिविधानं कुर्वीत । जिह्वानिस्सरणादिषूक्तः प्रतीकारः । अतिप्रवृत्ते वा जीवशोणिते काश्मरीफलबदरीदूर्वोशीरैः शृतेन पयसा घृतमण्डांजनयुक्तेन सुशीतेनास्थापयेत् । न्यग्रोधादिकषायक्षीरेक्षुरसघृतशोणितसंसृष्टैश्चैनं बस्तिभिरुपाचरेत् ।

शोणितष्ठीवने रक्तपित्तरक्तातीसारक्रियाश्चास्य विदध्यात् । न्यग्रोधादिं चास्य विदध्यात्पानभोजनेषु ।

जीवशोणितरक्तपित्तयोश्च जिज्ञासार्थं तस्मिन् पिचु प्लोतं वा क्षिपेत् । यदुष्णोदकप्रक्षालितमपि वस्त्रं रञ्जयति तज्जीवशोणितमवगन्तव्यम् । सभक्तं च शुने दद्यात् सक्तुसंमिश्रं वा स यद्युपभुञ्जीत तज्जीवशोणितमवगन्तव्यम्

वमनना तथा विरेचनना जीवादान नामना नवमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने सामान्य तथा विशिष्ट चिकित्सा.

१० उपरना विषयमां कहेलो वमननो अतियोग वृद्धि पामतां माणस लोहीने थूंके छे अथवा लोहीनी उलटी करे छे अने एम थतां जीभनुं बाहार नीकळी जवुं, आंख्योनुं उथली जवुं, हडपचीनुं स्तब्धपणुं, तरश, हेडकी, ज्वर अने बेभानपणुं ए उपद्रवो थाय छे. आ बगाड **जीवादान** केहेवाय छे:

ए थएल होय तो बकरीनुं लोही, चंदन, वाळो, सुरमो तथा साळनी धाणीनुं चूर्ण एओमां साकरनुं जळ नाखीने बनावेलो मंथ पावो अथवा घी, साकर अने मध एओथी मिश्रित क-

रेला दाडिम वगेरे फळोना रसोथी बनावेलो ते मंथ पावो अथवा वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी टेशीओ वगेरेनी के ग्राही पदार्थोनी पेया बनावी मधथी संयुक्त करीने पावी, दूधनी साथे के जांगल प्राणीओना मांसना रसानी साथे भोजन कराववुं अने अत्यंत स्रववा लागेला रुधिरने अटकाववानी जे शीतल परिषेक तथा शीतल अवगाहनादिक चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते पण करवी. जीभ बाहार नीकळी गई होय तो तेने सूंठ, मरी, पीपळ तथा सैंधव एओना चूर्णथी घसी अथवा तल अने द्राक्ष एओना कल्कथी खरडी दबावीने अंदर पेसाडवी अने पेसी गया पछी आतुरनी आगळ बीजा लोकोने खाटा पदार्थो खवरावंवा. आंख्यो उथली पडी होय तो तेओने घीथी खरडीने दबावी देवी. हडपची स्तब्ध थई गई होय तो वायुने तथा कफने हरनारूं नस्य देवुं अने स्वेदोनी योजना करवी. तरश, हेडकी के ज्वर होय तो तेओने तेओनी पोतपोतानी चिकित्साथी शांत करवां अने बेभानपणुं थयुं होय तो गायनो संभळाववां तथा वीणाना अने वेणुओना मधुर नादो संभळाववा.

ए प्रमाणेज उपरना विषयमां कहेलो विरेचननो अतियोग वृद्धि पामतां आतुरनी गुदामांथी मोरपींछना चांडला जेवी आकृतिओवाळुं जळ स्रवे छे, पछी मांसना धोण जेवा देखाववाळुं स्रवे छे अने छेवट जीवात्मक रुधिर स्रवे छे अने एम थतां गुदा बाहार नीकळी जाय छे, कंप थाय छे तथा उपर कहेला वमनना अतियोगनी वृद्धिना जीभ बाहार नीकळी जवा वगेरे उपद्रवो पण थाय छे. आ बगाड पण **जीवादान** केहेवाय छे.

ए थएल होय तो तेनी पण अत्यंत स्रववा लागेला रुधिरने अटकाववानी जे शीतल परिषेक तथा शीतल अवगाहन आदि चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते चिकित्सा करवी. गुदा बाहार नीकळी गई होय तो तेनापर अभ्यंग तथा स्वेदन करी तेने दबावीने अंदर पेसाडी देवी अथवा आ स्थानना वीशमा अध्यायना २८ मा विषयमां कहेली बीजी चिकित्सा करवी. कंप थएल होय तो आ स्थानना चोथा अध्यायमां कह्याप्रमाणे वातहर चिकित्सा करवी. जीभना नीकळी जवा वगेरे उपद्रवोनी उपरना बीजा पारिग्राफमां कह्याप्रमाणेज चिकित्साओ करवी. जीवात्मक रुधिर अत्यंत नीकळवा लाग्युं होय तो सीवणनां फळ, बोरडी, धोकड अने वाळो एओनो कल्क नाखीने पकावेला अने घीना उपरना भागथी तथा सुरमाथी युक्त करेला अत्यंत थंडा दूधनी पीचकारी देवी. न्यग्रोधादि गणनो क्काथ, दूध, शेलडीनो रस, घी अने बकरां वगेरेनां रुधिर एओथी संयुक्त करेली पीचकारीओ पण देवी.

वमननो अतियोग वृद्धि पामतां जो थुंकवामां लोही पडतुं होय तो रक्तातिसारनी अने रक्तपित्तनी जे चिकित्साओ उत्तरतंत्रना ४० मा अध्यायमां अने तेज तंत्रना ४५ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे तेओ करवी अने ए रोगीना खावा पीवामां न्यग्रोधादि गणनी योजना पण करवी.

रोगीने पडवा लागेलुं रुधिर 'जीवात्मकरुधिर छे के पित्तने लगतुं रुधिर छे?' ए परीक्षा करवा माटे ते रुधिरमां रूनुं पूमडुं अथवा सफेद वस्त्र नाखवुं. पछी ए पुमडाने के वस्त्रने सूकावी ऊना पाणीथी धोतां पण जो डाघ रहे तो जाणवुं के 'ए जीवात्मक रुधिर छे[२].' अथवा रोगीना थूंक वगेरेमां के दस्तमां पडेला ते रुधिरने

१ खाटा पदार्थो खवाता जोवामां आवतां मोहोडामां पाणी आववाथी जीभ कोमळ थईने ठेकाणे आवे छे.

२ वाग्भट तो एम कहे छे के 'जो पूमडुं के वस्त्र ऊना पाणी वते धोवाथी तमाम शुद्ध थई जाय तो जाणवुं के जीवात्मक रुधिर छे अने विवर्ण रहे तो जाणवुं के पित्तने लगतुं रुधिर छे.'

भातनी साथे अथवा साथवानी साथे मिश्रित करीने कूतराने देवुं. जो कूतरो ए भातने के साथवाने खाय तो जाणवुं के 'ए जीवात्मक रुधिर छे.'

११ सशेषान्नेन बहुदोषेण रूक्षेणानिलप्रायकोष्ठेनानुष्णमस्निग्धं वा पीतमौषधमाध्मापयति तत्रानिलमूत्रपुरीषसङ्गः समुन्नद्धोदरता पार्श्वभङ्गो गुदबस्तिनिस्तोदनं भक्तारुचिश्च भवति तं चाध्मानमित्याचक्षते ।

तमुपस्वेद्यानाहवर्त्तिदीपनबस्तिक्रियाभिरुपचरेत् ॥

वमनना तथा विरेचनना आध्मान नामना दशमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने चिकित्सा.

११ अजीर्णवाळा, घणा दोषवाळा, रूक्ष तथा जेनो कोठो घणा वायुवाळो होय ते माणसने उष्णता वगरनुं के स्निग्धता वगरनुं वमननुं के विरेचननुं औषध पावामां आवे तो ते औषध आध्मान करे छे. आध्मान थतां अधोवायु, मूत्र तथा विष्टा एओनी अटकायत थाय छे, पेट फूली जाय छे, पांसां भागे छे, गुदामां तथा मूत्राशयमां सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे अने अन्न उपर अरुचि थाय छे. आ **आध्मान** नामनो बगाड केहेवाय छे.

जेने आध्मान थएल होय ते माणसने स्वेदन आपी आ स्थानना चौदमा अध्यायना ९ मा विषयमां कह्याप्रमाणे फलवर्त्तिनी योजना करवी, अग्निने दीप्त करनारां औषधो देवां अने पीचकारीओ पण देवी.

१२ क्षामेणातिमृदुकोष्ठेन मन्दाग्निना रूक्षेण वातितीक्ष्णोष्णातिलवणमतिरूक्षं वा पीतमौषधं पित्तानिलौ प्रदूष्य परिकर्त्तिकामापादयति तत्र गुदनाभिमेढ्रबस्तिशिरःसु परिकर्त्तनमनिलसङ्गो वायुविष्टम्भो भक्तारुचिश्च भवति।

तत्र पिच्छाबस्तिर्यष्टीमधुककृष्णतिलकल्कमधुघृतयुक्तः । शीताम्बुपरिषिक्तं चैनं पयसा भुक्तवन्तं घृतमण्डेन यष्टीमधुकसिद्धेन तैलेन वानुवासयेत् ॥

वमनना तथा विरेचनना परिकर्त्तिका नामना अगीयारमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने चिकित्सा.

१२ क्षीणबळवाळो, अत्यंत कोमळ कोठावाळो, मंद अग्निवाळो के रूक्ष माणस अतितीक्ष्ण, अतिउष्ण, अतिखारूं के अतिरूक्ष वमननुं के विरेचननुं औषध पीये तो ते औषध पित्तने तथा वायुने प्रकुपित करीने **परिकर्त्तिका** नामना बगाडने उत्पन्न करे छे. ए थवाथी गुदामां, नाभिमां, उपस्थमां तथा मूत्रशयना उपरना भागमां वाढ थाय छे, (वमनथी परिकर्त्तिका थएल होय तो गुदामां वाढ नहीं थतां कंठमां वाढ मूकाया जेवी व्यथा थाय छे.) अधोवायुनी अटकायत थाय छे, कोठामां पवन स्तब्ध थई जाय छे अने अन्न उपर अरुचि थाय छे.

जेने परिकर्त्तिका थएल होय ते माणसने जेठीमधनो कल्क, काळा तलनो कल्क, मध अने घी एओथी संयुक्त करेली पिच्छिल[1] बस्ति देवी अने गात्रोपर शीतल जळनुं परिषेचन करी दूधथी भोजन करावीने पछी घीना उपरना भागथी अथवा जेठीमधना क्काथमां तथा कल्कमां पकावेला तैलथी अनुवासन बस्ति देवी.

१३ क्रूरकोष्ठस्यातिप्रभूतदोषस्य वा मृद्वौषधमवचारितं समुत्क्लिश्य दोषान्न निःशेषानपहरति ततस्ते दोषाः परिस्रावमापादयन्ति । तत्र दौर्बल्योदरविष्टम्भारुचिगात्रसदनानि भवन्ति सवेदनौ चास्य पित्तश्लेष्माणौ परिस्रवतस्तं परिस्रावमित्याचक्षते ।

तमजकर्णधवतिनिशपलाशकषायैर्मधुसंयुक्तैरास्थापयेत् । उपशान्तदोषं स्निग्धं च भूयः संशोधयेत् ॥

१ (आ स्थानना ३८ मा अध्यायनो २१ मो विषय जुवो.)

वमनना तथा विरेचनना परिस्राव नामना बारमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने चिकित्सा.

१३ क्रूर कोठावाळा के अत्यंत घणा दोषवाळा माणसने वमननुं के विरेचननुं मृदु औषध देवामां आव्युं होय तो ते औषध दोषोने उत्क्लिष्ट (पतनोन्मुख) करीने पछी ते दोषोने निश्शेष पाडी नाखतुं नथी. आ प्रमाणे थवाथी ते दोषो परिस्रावने उत्पन्न करे छे. परिस्राव थतां दुर्बलपणुं, पेटनुं स्तब्धपणुं, अरुचि तथा गात्रोमां ग्लानि थाय छे अने पित्त तथा कफ वेदना करी करीने गुदामांथी स्रवे छे. (वमनथी परिस्राव थयो होय तो गुदामांथी पित्तनो तथा कफनो स्राव थवाने बदले मोहोडामांथी कफनो स्राव थाय छे.) आ **परिस्राव** नामनो बगाड केहेवाय छे.

जेने परिस्राव थएल होय ते माणस जो क्रूर कोठावाळो होय तो तेने राळ, धावडो, मीणोहरमो तथा खाखरो एओना मधथी संयुक्त करेला काथोथी पिचकारी देवी अने अत्यंत घणा दोषवाळो होय तो तेने संशमन पाचनो देवां. दोष शांत थया पछी स्नेहन तथा स्वेदन करीने तेने पाछो स्निग्ध तथा तीक्ष्ण संशोधनोथी शुद्ध करवो.

१४ अतिरूक्षेऽतिस्निग्धे वा भेषजमवचारितमप्राप्तं वा वातवर्चं उदीरयेत् । वेगाघातेन वा प्रवाहिका भवति । तत्र सवातं सदाहं सशूलं सश्वेतं सपिच्छिलं कृष्णं रक्तं वा भृशं प्रवाहमाणः कफमुपविशति ।

तं परिस्राव विधानेनोपचरेत् ॥

वमनना तथा विरेचनना प्रवाहिका नामना तेरमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने चिकित्सा.

१४ अतिरूक्ष माणसने आपवामां आवेलुं विरेचननु औषध वेगनी प्राप्ति थयावगरज वायुसहित विष्टाने धकेले छे अने अतिस्निग्ध माणसने आपवामां आवेलुं विरेचननुं औषध वेगनो आघात थवाथी वायुसहित विष्टाने धकेले छे ए विरेचनसंबंधी **प्रवाहिका** नामनो बगाड केहेवाय छे.

तेमज अतिरूक्ष माणसने आपवामां आवेलुं वमननुं औषध वेगनी प्राप्ति थयावगरज वायुने धकेले छे अने अतिस्निग्ध माणसने आपवामां आवेलुं वमननुं औषध वेगनो आघात थवाथी वायुने धकेले छे ए वमनसंबंधी **प्रवाहिका** नामनो बगाड केहेवाय छे.

विरेचनसंबंधी प्रवाहिका थएल होय तो विष्टाने बाहार काहाडवाने माटे अत्यंत जोर करवुं पडतां वायुवाळो, दाहवाळो, शूळवाळो, तांतडावाळो अने सफेद, काळो अथवा रातो कफ गुदामांथी पडे छे. (वमनसंबंधी प्रवाहिका थएल होय तो गुदामांथी कफनो स्राव थवाने बदले मोहोडाथी सूका ओडकार आव्या करे छे.)

जेने प्रवाहिका थएल होय ते माणसने माटे उपर कहेली परिस्रावनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी. (अतिरूक्षने माटे क्रूर कोठावाळाना परिस्रावनी चिकित्सा प्रमाणे अने अतिस्निग्धने माटे अत्यंत घणा दोषवाळाना परिस्रावनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी.)

१५ यस्तूर्ध्वमधो वा भेषजवेगं प्रवृत्तमज्ञत्वाद्विनिहन्ति तस्योपसरणं हृदि कुर्वन्ति दोषाः । तत्र प्रधानमर्मसन्तापाद्वेदनाभिरत्यर्थं पीड्यमानो दन्तान् किटकिटायते उद्वृताक्षो जिह्वां खादति प्रताम्यत्यचेताश्च भवति तं परिवर्जयन्ति मूर्खाः ।

तमभ्यज्य धान्यस्वेदेन स्वेदयेद्यष्टिमधुकसिद्धेन च तैलेनानुवासयेत् । शिरोविरेचनं चास्मै तीक्ष्णं विदध्यात् । ततो यष्टिमधुकमिश्रेण तण्डुलाम्बुना छर्दयेद्यथादोषोच्छ्रायं चैनं बस्तिभिरुपाचरेत् ॥

वमनना तथा विरेचनना हृदयोपसरण नामना चौदमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने चिकित्सा.

१५ जे माणस मुखथी अथवा गुदाथी प्रवर्त्तवा लागेला औषधना वेगने पोतानी मूर्खताने लीधे अटकावे छे तेना हृदयमां दोषो उपसरण (प्राप्तिपूर्वक जमाव) करे छे ए **हृदयोपसरण** नामनो बगाड केहेवाय छे. आ बगाड थतां माणस हृदयना संतापने लीधे वेदनाओथी अत्यंत पीडाय छे, पीडातां पीडातां दांतोनी कडकडाटी बोलावे छे, आंख्यो फाडीने जीभ करडवा लागे छे, अत्यंत क्लेश पामे छे अने मूर्छित पण थई जाय छे. रोगीनी आ स्थितिने जोई मूर्ख वैद्यो तो तेनी चिकित्सा करवी छोडीज देछे.

प्रवीण वैद्ये तो जरा पण नहीं गभरातां तेने अभ्यंग करी अडद वगेरे धान्यनी वाफ देवी, जेठीमधना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनी अनुवासन बस्ति देवी अने तीक्ष्ण शिरोविरेचन पण देवुं. पछी दोषना प्रबलपणाना अनुसार प्रमाणे ए माणसने जेठीमधथी मिश्रित करेला चोखाना धोणथी उलटी करावची अने आस्थापन बस्तिओ तथा स्नेहबस्तिओ पण देवी.

१६ यस्तूर्ध्वमधो वा प्रवृत्तदोषः शीतागारमुदकमनिलमन्यद्वा सेवेत तस्य दोषाः स्रोतःस्ववलीयमाना घनीभावमापन्ना वातमूत्रशकृद्ग्रहमापाद्य विबध्यन्ते । तस्याटोपो दाहो ज्वरो वेदनाश्च तीव्रा भवन्ति ।

तमाशु वामयित्वा प्राप्तकालां क्रियां कुर्वीत ।

अधोभागेत्वधोभागहरद्रव्यसैन्धवाम्लमूत्रसंसृष्टं विरेचनं पाययेत् । आस्थापनमनुवासनं च यथादोषं विदध्यात् । यथादोषमाहारक्रमं च ।

उभयतोभागे तूपद्रवविशेषान्यथास्वं प्रतिकुर्वीत ॥

वमनना तथा विरेचनना विबंध नामना पंदरमा बगाडनुं सकारण निरूपण अने जूदी जूदी चिकित्सा.

१६ जे माणस वमनथी अथवा विरेचनथी प्रवृत्ति थतां थंडा घरने, थंडा पाणीने, थंडा पवनने अथवा बीजा कोई थंडा पदार्थने सेवे ते माणसना दोषो स्रोतोमां लीन थतां थतां घाटा थई वायुने, मूत्रने तथा विष्टाने अटकावी दई वमनविरेचननी प्रवृत्तिनुं निवारण करी देछे ए **विबंध** नामनो बगाड केहेवाय छे. आ बगाड थतां आटोप (गडगडाट) थाय छे, दाह थाय छे, ज्वर आवे छे अने तीव्र वेदनाओ थाय छे.

जे माणसने वमनथी विबंध थयो होय तेने तुरत वमन करावीने ते समयमां जे चिकित्सा प्राप्त होय ते करवी.

जे माणसने विरेचनथी विबंध थयो होय तेने विरेचनने माटे विरेचन द्रव्योथी, सैंधवथी, खाटा पदार्थोथी तथा गोमूत्रथी संयुक्त करेलुं क्काथादिक पावुं, दोषने अनुसरीने निरूहबस्ति तथा अनुवासन बस्ति पण देवी अने यथायोग्य आहारनी योजना पण करी देवी.

वमन तथा विरेचन ए बन्नेथी विबंध थयो होय तो फरीवार वमन विरेचन कराववां अने ते विबंधना उपद्रवोने, ते उपद्रवो जे जे दोषथी थएल होय ते ते दोषने हणनारी चिकित्साओथी टाळवा.

१७ या तु विरेचने गुदपरिकर्त्तिका तद्वमने कण्ठक्षणनं यदधः परिस्रवणं स ऊर्ध्वभागे श्लेष्मप्रसेको या त्वधः प्रवाहिका सा तूर्ध्वे शुष्कोद्गारा इति ॥

वमनथी थएल परिकर्त्तिका, परिस्राव अने प्रवाहिका एओमां नहीं कहेला विशेषोनुं निरूपण.

१७ विरेचनसंबंधी परिकर्त्तिकामां गुदामां

वाढ थाय छे तेनी बदले वमनसंबंधी परिकर्त्तिकामां कंठमां वाढ मूकाया जेवी व्यथा थाय छे. विरेचनसंबंधी परिस्रावमां गुदामांथी स्राव थाय छे तेने बदले वमनसंबंधी परिस्रावमां मोहोडामांथी कफनो स्राव थाय छे. विरेचनसंबंधी प्रवाहिकामां गुदामांथी कफ पडे छे तेने बदले वमनसंबंधी प्रवाहिकामां सूका ओडकार आव्या करे छे[1].

१८ भवति चात्र ॥

यास्त्वेता व्यापदः प्रोक्ता दश पंच च तत्त्वतः।
एता विरेकातियोगदुर्योगायोगजाः स्मृताः ॥

आ अध्यायमां कहेला पंदर बगाडोनां जूदां जूदां मुख्य कारणो.

१८ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "आ अध्यायमां वमनसंबंधी तथा विरेचनसंबंधी जे पंदर बगाडो कह्या तेओनां मुख्य कारणोनो विचार करतां 'अतियोग, दुर्योग अने अयोग ए त्रणज मुख्य कारणो छे' एम सिद्ध थाय छे." (केटलाएक बगाडो अतियोगथी थाय छे, केटलाएक बगाडो दुर्योगथी थाय छे अने केटलाएक बगाडो अयोगथी थाय छे.)

अध्याय ३५ मो.

१ अथातो नेत्रबस्तिप्रमाणप्रविभागचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'नेत्रबस्तिप्रमाणप्रविभागचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ तत्र स्नेहादीनां कर्मणां बस्तिकर्म प्रधानतममाहुराचार्याः । कस्मादनेककर्मकरत्वाद्बस्तेः। इह बस्तिर्नानाविधद्रव्यसंयोगाद्दोषाणां संशोधनसंशमनसंग्रहणानि करोति । क्षीणशुक्रं वाजीकरोति कृशं बृंहयति स्थूलं कर्षयति चक्षुः प्रीणयति वलीपलितमुपहन्ति वयः स्थापयति शरीरोपचयं वर्णबलमारोग्यमायुषः परिवृद्धिं च करोति बस्तिः सम्यगुपासितः । तथा ज्वरातीसारतिमिरप्रतिश्यायशिरोरोगाधिमन्थार्दिताक्षेपकपक्षाघातैकाङ्गसर्वाङ्गरोगाध्मानोदरशर्कराशूलवृद्ध्युपदंशानाहमूत्रकृच्छ्रगुल्मवातशोणितवातमूत्रपुरीषोदावर्त्तशुक्रार्त्तवस्तन्यनाशहृद्ग्रहहनुमन्याग्रहार्शोऽश्मरीमूढगर्भप्रभृतिषु चात्यर्थमुपयुज्यते ॥

भवति चात्र ॥

बस्तिर्वाते च पित्ते च कफे रक्ते च शस्यते ।
संसर्गे सन्निपाते च बस्तिरेव हितः सदा ॥

बस्तिकर्मनुं अत्यंत प्रधानपणुं अने ते कर्मथी थता लाभो.

२ स्नेहन तथा स्वेदन आदि शोधननां अंगभूत कर्मोमां वमन अने विरेचन वधारे प्रधान छे अने तेओथी पण बस्तिकर्म (पिचकारीनी क्रिया) विशेष प्रधान छे एम आचार्यो केहे छे. कारण के बस्तिथी अनेक कार्यो सिद्ध थाय छे. बस्तिमां अनेक प्रकारनां द्रव्योनो संयोग थाय छे तेथी ते बस्ति दोषोनुं संशोधन करे छे, संशमन करे छे, अने दोषो जो अत्यंत प्रवर्त्तवा लाग्या होय तो तेओनो अटकाव पण करे छे. योग्य प्रकारथी सेववमां आवेली बस्ति क्षीणवीर्यवाळा माणसने घोडा जेवो वीर्यवत्तर बनावे छे, कृश थएला माणसने पुष्ट करे छे, स्थूल माणसने पातळो करे छे. चक्षुओने तृप्त करे छे, वळीओने तथा वाळोनी सफेदीने टाळी नाखे छे, यौवनने स्थिर करे छे, शरी-

---

[1] आ विशेषो अमे ते ते विषयना व्याख्यानमां कौंस करीने जणावी आप्या छे के जेथी वांचनाराओने आ सत्तरमो विषय वांचवानी जरूरज न पडे.

[2] पिचकारीनी नळीना तथा पिचकारीमां नाखवाना द्रव्यना प्रमाणनो विभाग बताववारूप चिकित्साविषेनो.

रमां उत्तम धातुओनो उपचय करे छे, बळनी वृद्धि करे छे, वर्णने सारो करे छे, आरोग्य आपे छे अने आयुष्यनी वृद्धि करे छे. तेमज ज्वर, अतीसार, तिमिर, प्रतिश्याय, माथाना रोगो, अधिमंथ, अर्दित, आक्षेपक, पक्षाघात, एकांगरोग, सर्वांगरोग, आध्मान, उदररोग, शर्करा, शूळ, वृद्धि, उपदंश, आनाह, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म, वातरक्त, वातोदावर्त, मूत्रोदावर्त, पुरीषोदावर्त्त, वीर्यनाश, रजोनाश, स्तन्यनाश, हृदयग्रह, हनुग्रह, मन्याग्रह, अरश, अश्मरी तथा मूढगर्भ, इत्यादिकने टाळवामां पण अत्यंत उपयोगी थाय छे.

आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "वायुउपर, पित्तउपर, कफउपर, रुधिरउपर, बब्बे दोषोना संसर्गउपर अने संन्निपातउपर पण बस्ति सर्वदा हितकारीज छे."

३ तत्र सांवत्सरिकाष्टद्विरष्टवर्षाणां षडष्टदशाङ्गुलप्रमाणानि कनिष्ठिकानामिकामध्यमाङ्गुलपारणाहान्यग्रेऽध्यर्द्धाङ्गुलद्यङ्गुलार्द्धतृतीयाङ्गुलसन्निविष्टकर्णिकानि कङ्कश्येनबर्हिपत्रनाडीतुल्यप्रवेशानि मुद्गमाषकलायमात्रस्रोतांसि विदध्यान्नेत्राणि तेषु त्वास्थापनद्रव्यप्रमाणमातुरहस्तसंमितेन प्रसृतेन संमितौ प्रसृतौ द्वौ चत्वारोऽष्टौ विधेयाः ।

वर्षांतरेषु नेत्राणां बस्तेर्मानस्य चैव हि ।
वयोबलशरीराणि समीक्ष्य वर्द्धयेद्विधिम् ॥

पंचविंशतेरूर्ध्वं द्वादशाङ्गुलं मूलेऽङ्गुष्ठोदरपरिणाहमग्रे कनिष्ठिकोदरपरिणाहमग्रे त्र्यङ्गुलसन्निविष्टकर्णिकं गृध्रपत्रनाडीतुल्यप्रवेशं कोलास्थिमात्रच्छिद्रं क्लिन्नकलायमात्रच्छिद्रमित्येके । सर्वाणि मूले बस्तिनिबन्धनार्थं द्विकर्णिकानि । आस्थापनद्रव्यप्रमाणं तु विहिता द्वादशप्रसृताः । सप्ततेस्तूर्ध्वं नेत्रप्रमाणमेतदेव द्रव्यप्रमाणं तु द्विरष्टवर्षवत् ॥

बस्तिनी नळी अने निरूहबस्तिना द्रव्यनुं प्रमाण.

३ एक वर्षनी उमरनाने माटे छ आंगळ लांबी, ते माणसनी टचली आंगळी जेवी जाडी, दोढ आंगळ जेटला अग्रभागने छोडी दईने ते प्रदेशमां गोठवेली छत्राकार दोडीवाळी[१], कंकपक्षीनी पांखनी नसना जेवा प्रवेशप्रदेशवाळी अने मग पेसी जाय तेवडा छिद्रवाळी नळी करवी.

आठ वर्षनी उमरनाने माटे आठ आंगळ लांबी, ते माणसनी अनामिका आंगळी जेवी जाडी, बे आंगळ जेटला अग्रभागने छोडी दईने ते प्रदेशमां गोठवेली छत्राकार दोडीवाळी, बाज्ञ पक्षीनी पांखनी नसना जेवा प्रवेशप्रदेशवाळी अने अडद पेसी जाय तेवडा छिद्रवाळी नळी करवी.

सोळ वर्षनी उमरनाने माटे दश आंगळ लांबी, ते माणसनी वचली आंगळी जेवी जाडी, अढी आंगळ जेटला अग्रभागने छोडी दईने ते प्रदेशमां गोठवेली छत्राकार दोडीवाळी, मोरनी पांखनी नसना जेवा प्रवेशप्रदेशवाळी अने वटाणो पेसी जाय तेवडा छिद्रवाळी नळी करवी.

निरूहबस्तिमां भरवानुं क्वाथादिक द्रव्य एक वर्षनी उमरना बालकने माटे बे प्रसृत जेटलुं आठ वर्षनी उमरना बालकने माटे चार प्रसृत जेटलुं अने सोळ वर्षनी उमरना माणसने माटे आठ प्रसृत जेटलुं तैयार करवुं. (एक व्याख्यानकार कहे छे के 'अहीं **प्रसृत** शब्दथी आठ तोलां समजवां' अने बीजो व्याख्यानकार केहे छे के 'अहीं **प्रसृत** शब्दथी आतुरना हाथनी पसली समजवी.' छेल्ला मतमां मूलग्रंथनुं सारस्य आवे छे.)

एकथी आठ सूधीनां, आठथी सोळ सूधीनां अने सोळथी पचीश सूधीनां वर्षोमां बस्तिनी नळीनां अने क्वाथादिक द्रव्यनां प्रमाणोनो वधारो उपर कहेली पद्धतिने अनुसरी माणसोनी

[१] आ दोडी नळीने गुदामां प्रमाण करतां अधिक पेसती अटकाववाने माटे छे.

अवस्थाने, बळने तथा कायाने जोईने करवो.

पचीश वर्षथी वधारे उमरना माणसने माटे बार आंगळ लांबी, मूळमां अंगुठाना मध्य जेवी जाडी, अग्रमां टचली आंगळीना मध्य जेवी जाडी, त्रण आंगळ जेटला अग्र भागने छोडी दईने ते प्रदेशमां गोठवेली छत्राकार दोडीवाळी, गीधपक्षीनी पांखनी नसना जेवा प्रवेशप्रदेशवाळी अने बोरनो ठळीयो पेसी जाय तेवडा छिद्रवाळी नळी करवी. केटलाएक आचार्यो केहे छे के पाणीमां पलाळेलो वटाणो पेसी जाय तेवडा छिद्रवाळी करवी.

सघळी नळीओ बस्तिना (बळद के बकरा वगेरेना मूत्राशयनी कोथळीना) छेडाओने बांधवा माटे मूळमां बबे दोडीओवाळी करवी.

पचीश वर्षथी वधारे उमरना माणसने माटे निरूहबस्तिमां भरवानुं क्काथादिक द्रव्य बार प्रसृत जेटलुं करवुं. सीत्तेर वर्षथी उपरनी उमरना माणसने माटे नळीनुं प्रमाण तो पचीश वर्षथी वधारे उमरना माणसने माटे जे कह्युं तेज करवुं. परंतु निरूहबस्तिमां भरवाना क्काथादिक द्रव्यनुं प्रमाण तो सोळ वर्षनी उमरना माणसने माटे जे कह्युं तेज करवुं.

४ तत्र नेत्राणि सुवर्णरजतताम्रायोरीतिदन्तशृङ्गमणितरुसारमयानि श्लक्ष्णानि दृढानि गोपुच्छाकृतीन्यृजूनि गुटिकामुखानि ।

बस्तयश्चावृद्धानां मृदवो नातिबहला दृढाः प्रमाणवन्तो गोमहिषवराहाजोरभ्राणाम् ॥

नेत्रालाभे हिता नाडी नलवंशास्थिसंभवा ।

बस्त्यलाभे हितं चर्म सूक्ष्मं वा तान्तवं घनम् ॥

नळीओ कया कया पदार्थोनी करवी तथा केवी करवी अने मूत्राशयो कया कया प्राणीओना लेवा तथा केवा लेवा.

४ नळीओ सोनानी, रूपानी, त्रांबानी, लोढानी, पीतळनी, दांतनी, शींगडांनी, मणिनो के दृढपणांवाळां वृक्षोनां काष्ठोनी करवी. ए नळीओ लासी, मजबूत, गायनां पूंछडांजेवी आकृतिवाळी, सीधी अने गोळीना जेवां मोहोडांवाळी करवी.

मूत्राशयो अवृद्ध प्राणीओना अने तेओमां पण बळदना, पाडाना, सूवरना, बकराना के घेंटाना लेवा. ए मूत्राशयो कोमळ, बहु जाडा के लांबा न होय एवा, दृढ अने योग्य प्रमाणवाळा लेवा.

सोना वगेरेनी नळी न मळे एम होय तो पछी नाळीनी, वांसनी के हाडकांनी नळी करवी.

उपर कहेला प्राणीओना मूत्राशयो न मळे एम होय तो पछी तेने बदले पातळा चामडानी के घाटा कपडानी कोथळीनो उपयोग करवो.

५ बस्तिं निरुपदिग्धं तु शुद्धं सुपरिमार्जितम् ।

मृद्वनुद्धतहीनं च मुहुः स्नेहविमर्दितम् ।

नेत्रमूले प्रतिष्ठाप्य न्युब्जं तु विवृताननम् ॥

बद्ध्वा लोहेन तप्तेन चर्मस्त्रोतसि निर्दहेत् ।

परिवर्त्य ततो बस्तिं बद्ध्वा गुप्तं निधापयेत् ॥

आस्थापनं च तैलं च यथावत्तेन दापयेत् ।

बस्तिने राखी मेलवानी रीत.

५ मांसादिकना लेपवगरना, आत्रळथी रंगेला, सारी पेठे साफ करेला, कोमळ, उचकपणावगरना, हीनपणावगरना अने जेने वारंवार तेल चोळ्युं होय एवा बस्तिने नळीना मूळमां राखी ऊंधो करी तेना खुल्ला मोहोडाने बांधी लई, तपावेला धातुनुं रेण दई ? घडी वाळी बांधीने गुप्त रीते मेलवो. ते बस्तिथी योग्य रीते तैलादिकसंयुक्त क्काथनी के एकला स्नेहनी पिचकारी मारवी.

६ मृदुर्बस्तिः प्रयोक्तव्यो विशेषाद्बालवृद्धयोः तयोस्तीक्ष्णः प्रयुक्तस्तु बस्तिर्हिंस्याद्बलायुषी ॥

बालकने तथा वृद्धने मृदु पिचकारी.

६ विशेषे करी बालकने अने वृद्धने कोमळ

द्रव्योनी पीचकारी मारवी. एओने जो तीक्ष्ण द्रव्योनी पीचकारी मारवामां आवे तो तेथी तेओना बळनी तथा आयुष्यनी हानि थाय छे.

७ तत्र द्विविधो बस्तिः । नैरूहिकः स्नैहिकश्च । आस्थापनं 'निरूह इत्यनर्थान्तरम् । तस्य विकल्पो माधुतैलिकः । तस्य पर्यायशब्दाः स्थापनो युक्तरथः सिद्धबस्तिरिति । स दोषनिर्हरणाच्छरीररोगहरणाद्वा निरूहः । वयःस्थापनादायुःस्थापनाद्वास्थापनम् । माधुतैलिकविधानं च निरूहक्रमचिकित्सिते वक्ष्यामः । तत्र यथाप्रमाणगुणविहितः स्नेहबस्तिरेवाऽनुवासनः पादावकृष्टः । अनुवसन्नपि न दुष्यत्यनुदिवसं वा दीयत इत्यनुवासनः । तस्यापि विकल्पोऽर्द्धार्द्धमात्रावकृष्टोऽपरिहार्यो मात्राबस्तिरिति ॥

बस्तिना बे भेदो, भेदोना पर्यायो, बे भेदोनी व्युत्पत्तिओ अने बे भेदोना पेटाना भेदो.

७ निरूह अने स्नेहबस्ति ए रीते बस्तिना मुख्य बे भेद छे. (क्काथने, तैलने तथा दूध वगेरेने मिश्रित करीने जे पिचकारीनुं द्रव्य तैयार करवामां आवे ते निरूहबस्ति केहेवाय छे अने एकला स्नेहनीज जे पिचकारी तैयार करवामां आवे ते स्नेहबस्ति केहेवाय छे.) **आस्थापन** अने **निरूह** ए बे शब्दो परस्परना पर्याय छे. **माधुतैलिक बस्ति** ए निरूहनो अथवा आस्थापननो भेद छे. **स्थापन, युक्तरथ** अने **सिद्धबस्ति** इत्यादिक बस्तिओ माधुतैलिकनाज भेदो छे. क्काथ तथा तैल वगेरेनो बस्ति दोषोनुं हरण करे छे अथवा शरीरना रोगोनुं हरण करे छे तेथी निरूह केहेवाय छे अने यौवनने स्थिर राखे छे अथवा आयुष्यने स्थिर राखे छे तेथी आस्थापन केहेवाय छे. माधुतैलिकनुं विधान आ स्थानना निरूहक्रमचिकित्सित नामना ३८ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे.

१०२

जे जे अवस्थावाळा माणसने जेटला जेटला तोलनी निरूहबस्ति देवामां आवे ते ते अवस्थावाळा माणसने निरूहबस्तिना तोलथी चोथा भागना तोलनी **स्नेहबस्ति** देवामां आवे छे. **अनुवासनबस्ति** ए स्नेहबस्तिनोज पर्याय शब्द छे. वधारे वखत सूधी अंदर रहे तो पण हरकत करती नथी अथवा दिवसे दिवसे देवी योग्य छे तेथी स्नेहबस्तिनुं बीजुं नाम अनुवासनबस्ति छे. **मात्राबस्ति** के जे स्नेहबस्तिना अर्द्ध जेटला तोलनी अथवा चतुर्थांश जेटला तोलनी देवामां आवे छे ते स्नेहबस्तिनोज भेद छे अने ते सर्वदा सेववा योग्य छे.

८ निरूहः शोधनो लेखी स्नेहनो बृंहणो मतः । निरूहशोधितान्मार्गान्सम्यक्स्नेहोऽनुगच्छति । अपेतसर्वदोषासु नाडीष्विव वहज्जलम् । सर्वदोषहरश्चासौ शरीरस्य च जीवनः ॥ तस्माद्विशुद्धदेहस्य स्नेहबस्तिर्विधीयते ॥

निरूहबस्ति दीधा पछी स्नेहबस्ति देवा विषे अने ते बन्ने बस्तिओना गुणो विषे.

८ निरूहबस्ति शरीरने शुद्ध करे छे, मळोने उखेडे छे, शरीरने स्निग्ध करे छे अने धातुओने पुष्टि आपे छे. जेम परनाळो कचरा वगेरे सर्व दोषोथी रहित करवामां आवी होय तो वेहेतुं जळ तेओमां सारी रीते गति करे छे तेम शरीरनी अंदरना मार्गो निरूहबस्तिथी शुद्ध करवामां आव्या होय तो ते मार्गोमां स्नेह सारी रीते गति करे छे. स्नेहबस्ति सघळा दोषोने हरनार छे अने शरीरने जीवन आपनार छे एटला माटे निरूहबस्तिथी शुद्ध थएला शरीरवाळा माणसने स्नेहबस्ति देवानुं विधान करवामां आवे छे.

९ तत्रोन्मादभयशोकपिपासारोचकाजीर्णार्शःपाण्डुरोगभ्रममदमूर्छाच्छर्दिकुष्ठमेहोदरस्थौल्यश्वासकासकण्ठशोषशोफोपसृष्टक्षतोर-

स्कचतुस्त्रिमासगर्भिणीदुर्बलाग्न्यसहा बालवृद्धौ च वातरोगादृते क्षीणा नानुवास्या नास्थापयितव्याः ॥

बस्ति कोने कोने नहीं देवी.

९ उन्मादवाळो, भयवाळो, शोकथी पीडाएल, तरशथी पीडाएल, अरोचकवाळो, अजीर्णवाळो, अरशवाळो, पांडुरोगवाळो, भ्रमवाळो, मदवाळो, मूर्छानो दरदी, उलटीनो दरदी, कोढनो दरदी, प्रमेहवाळो, उदररोगी, अतिस्थूल शरीरवाळो, श्वासनो दरदी, खांसीनो दरदी, कंठशोषवाळो, सोजावाळो, छातीमां क्षतवाळो, सात मास सूधीनी गर्भिणी, नबळा जठराग्निवाळो, सहन न करी शके एवो, बालक, वृद्ध अने अत्यंत क्षीण शरीरवाळो एओने वायुसंबंधी रोग विना निरूहबस्ति पण देवी नहीं अने अनुवासन बस्ति पण देवी नहीं.

१० उदरी च प्रमेही च कुष्ठी स्थूलश्च मानवः।
अवश्यं स्थापनीयाश्च नानुवास्याः कथंचन ॥
असाध्यता विकाराणां स्यादेषामनुवासनात् ।
असाध्यत्वेऽपि भूयिष्ठं गात्राणां सदनं भवेत् ॥

निरूहबस्ति निषिद्ध छतां पण जरूर पडे तो अमुक रोगीओने देवी.

१० उदररोगवाळो, प्रमेहवाळो, कोढवाळो अने अतिस्थूल शरीरवाळो, एओने बस्ति देवानो निषेध छे तो पण तेओना रोगादिकनी स्थिति उपरथी बस्ति देवानुं आवश्यक जणाय तो तेओने निरूहबस्ति देवी पण स्नेहबस्ति तो कदी देवी नहीं. केम के एओने स्नेहबस्ति देवामां आवे तो तेथी तेओना रोगो असाध्य थई जाय छे एटलुंज नहीं परंतु तेओनां गात्रोने पण अत्यंत ग्लानि थाय छे.

११ पक्काशये तथा श्रोण्यां नाभ्यधस्ताच्च सर्वतः।
सम्यक्प्रणिहितो बस्तिः स्थानेष्वेतेषु तिष्ठति ॥
पक्काशयाद्बस्तिवीर्यं खैर्देहमुपसर्पति ।
वृक्षमूले निषिक्तानामपां वीर्यमिव द्रुमम् ॥
स चापि सहसा बस्तिः केवलः समलोऽपि वा ।
प्रत्येति त्वनिलैर्वीर्यमपानाद्यैर्विनीयते ॥
वीर्येण बस्तिरादत्ते दोषानापादमस्तकात् ।
पक्काशयस्थोऽम्बरगो भूमेरर्को रसानिव ॥
स कटीपृष्ठकोष्ठस्थान्वीर्येणालोड्य सञ्चयान् ।
उत्खातमूलान्हरति दोषाणां साधु योजितः ॥
दोषत्रयस्य यस्माच्च प्रकोपे वायुरीश्वरः ।
तस्मात्तस्यातिवृद्धस्य शरीरमभिनिघ्नतः
वायोर्विघहते वेगं नान्या बस्तेर्ऋते क्रिया ।
पवनाविद्धतोयस्य वेला वेगमिवोदधेः ॥
शरीरोपचयं वर्णं बलमारोग्यमायुषः ।
कुरुते परिवृद्धिं च बस्तिः सम्यगुपासितः ॥

बस्तिनो महिमा.

११ सारी रीते आपवामां आवेली बस्ति पक्काशयमां, कटिपश्चाद्भागमां तथा नाभिनी नीचे सर्वत्र रहे छे अने ते स्थानकोमां रहीने गुण करे छे. जेम वृक्षना मूळमां रेडवामां आवेला जळनो प्रभाव मूळमांथी ते वृक्षनी अंदरनां छिद्रोद्वारा सघळा वृक्षमां फेलाय छे तेम पक्काशयमां रहेली बस्तिनो प्रभाव पक्काशयमांथी शरीरनां छिद्रोद्वारा सघळा शरीरमां फेलाय छे. जो के ए बस्ति केवळ अथवा मलसहित तुरतज पाछी नीकळे छे तोपण अपान आदि वायुओ ए बस्तिना प्रभावने सघळा शरीरमां पोहोचाडी दे छे. जेम आकाशमां रहेलो सूर्य पोतानी शक्तिवते पृथ्वीना सर्व प्रदेशोमांथी रसने खेंची ले छे तेम पक्काशयमां रहेली बस्ति पोतानी शक्तिवते शरीरना पगथी ते मस्तकसूधीना सर्व प्रदेशोमांथी दोषोने खेंची ले छे. सारी रीते योजवामां आवेली बस्ति कमरमां, पीठमां तथा कोठामां रहेला दोषोना संचयोने पोतानी शक्तिवते वलोवी मूळमांथी उखेडी नाखीने हरी ले छे. त्रणे दोषोना प्रकोपमां वायुनीज मालेकी होवाने लीधे वायु अत्यंत वृद्धि पामीने शरीरने तोडवा लागे छे ते समयमां बस्ति विना बीजी कोई पण क्रिया वायुना वेगने अट-

काववामां समर्थ थती नथी. जेम पवनना झपाटाथी उछळवा अने वधवा लागेला समुद्रना वेगने किनारा शिवाय बीजुं कोई पण अटकावी शकतुं नथी तेम त्रणे दोषोनो प्रकोप थतां वधवा लागेला वायुना वेगने बस्ति विना बीजी कोई पण क्रिया अटकावी शकती नथी. सारी रीते सेववामां आवेली बस्ति शरीरने पुष्ट करे छे, वर्णने सारो करे छे, बळने बधारे छे, आरोग्य आपे छे अने आयुष्यनी वृद्धि करे छे.

१२ अत ऊर्ध्वं व्यापदो वक्ष्यामः ॥

तत्र नेत्रं चलितं विवर्त्तितं पार्श्वावपीडितमत्युत्क्षिप्तमवसन्नं तिर्यक्क्षिप्तमिति षट् प्रणिधानदोषाः ।

अतिस्थूलं कर्कशमवनतमणु भिन्नं सन्निकृष्टविप्रकृष्टकर्णिकं सूक्ष्मातिच्छिद्रमतिदीर्घमतिह्रस्वमित्येकादश नेत्रदोषाः ।

बहलतालपता सच्छिद्रता प्रस्तीर्णता दुर्बद्धतेति पञ्च बस्तिदोषाः ।

अतिपीडितता शिथिलपीडितता भूयोभूयोऽवपीडनं कालातिक्रम इति चत्वारः पीडनदोषाः ।

आमता हीनतातिमात्रताऽतिशीततात्युष्णतातितीक्ष्णतातिमृदुतातिस्निग्धतातिरूक्षतातिसान्द्रतातिद्रवतेत्येकादश द्रव्यदोषाः ।

अवाक्शीर्षोच्छीर्षन्युब्जोत्तानसङ्कुचितदेहस्थितता दक्षिणपार्श्वशायिनः प्रदानमिति सप्त शय्यादोषाः ।

एवमेताश्चतुश्चत्वारिंशद्व्यापदो वैद्यनिमित्ताः।

आतुरनिमित्ताः पंचदश आतुरोपद्रवचिकित्सिते वक्ष्यन्ते ।

स्नेहस्त्वष्टाभिः कारणैः प्रतिहतो न प्रत्यागच्छति त्रिभिर्दोषैरशनाभिभूतो मलव्यामिश्रो दूरानुप्रविष्टोऽस्विन्नस्यानुष्णोऽल्पो मृदुरल्पाशनस्य चेति वैद्यातुरनिमित्ता भवन्ति ।

अयोगस्त्वभयोराध्मानं परिकर्त्तिका परिस्रावः प्रवाहिका हृदयोपसरणमङ्गप्रग्रहोऽतियोगो जीवादानमिति नव व्यापदो वैद्यनिमित्ता भवन्ति ॥

बस्तिमां भूलो थाय तेसंबंधी छोंतेर व्यापत्तिओ. (दोषो.)

१२ नळी कंपित थई जाय, अवळी फरी जाय, पडखामां दबाई जाय, अत्यंत ऊंची थई जाय, नीचे आवी जाय अने आडी नखाई जाय. ए छ, नळी दाखळ करवाना दोषो छे. ६.

नळी अत्यंत जाडी होय, खरसट होय, नमेली होय, झीणी होय, भेदाएली होय, नजदीकमां रहेली छत्राकार डोडीवाळी होय, दूरमां रहेली छत्राकार डोडीवाळी होय, झीणा छिद्रवाळी होय, मोटा छिद्रवाळी होय, अत्यंत लांबी होय अने अत्यंत टूंकी होय ए अगीयार, नळीना दोषो छे. ११.

मूत्राशय (बस्ति) मोटो होय, नाहानो होय, छिद्रवाळो होय, पोहोळो होय अने अयोग्य रीते बंधाएलो होय ए पांच, मूत्राशयना दोषो छे. ५.

मूत्राशय अत्यंत दबाय, पोचो पोचो दबाय, वारंवार दबाय अने लांबा वखतसूधी दबाय ए. चार, दबाववाना दोषो छे. ४.

बस्तिनुं द्रव्य काचुं होय, ओछी मात्रावाळुं होय, अधिक मात्रावाळुं होय, अतिथंडुं होय, अतिउष्ण होय, अतितीक्ष्ण होय, अतिकोमळ होय, अत्यंत स्निग्ध होय, अत्यंत रूक्ष होय, अत्यंत घाटुं होय अने अत्यंत द्रवरूप होय ए अगीयार, द्रव्यना दोषो छे. ११.

आतुर शय्यामां ऊंधे माथे सूतो होय, माथाने ऊंचुं राखी सूतो होय, ऊंधो सूतो होय, चत्तो सूतो होय, शरीरने संकोचीने सूतो होय, बेठो होय अने जमणुं पडखुं दबावीने सूतो होय ए सात, शय्याना दोषो छे. ७.

उपर कहेली चुमाळीश व्यापत्तिओ वैद्यनी भूलथी थाय छे.

आतुरनी भूलथी जे पंदर व्यापत्तिओ थाय छे तेओनुं निरूपण[1] आ स्थानना आतुरोपद्रवचिकित्सित नामना २९ मा अध्यायना ९ मा विषयमां करवामां आवशे. १९.

स्नेहबस्तिथी शरीरनी अंदर दाखल करेलो स्नेह आठ कारणोथी प्रतिघात पामीने पाछो नीकळतो नथी. जेम के वायुथी पराभव पामीने, पित्तथी पराभव पामीने, कफथी पराभव पामीने, अतिभोजनथी पराभव पामीने, मळनी साथे मिश्रित थई जवाथी, दूर पेसी जवाथी, जेने स्वेदन संस्कार न अपायो होय एवा रोगीने शीतळ थोडो के कोमळ द्रव्योथी पकावेलो अपायाथी, अने थोडुं जमेला रोगीने अल्प के मंदगुणोवाळो अपायाथी पाछो नीकळतो नथी. आ आठ व्यापत्तिओ वैद्यनी भूलथी थाय छे अने आतुरनी भूलथी पण थाय छे. ८.

निरूहबस्ति अने अनुवासनबस्ति एओमां अयोग, आध्मान, परिकर्त्तिका, परिस्राव, प्रवाहिका, हृदयोपसरण, अंगप्रग्रह, अतियोग अने जीवादान न नव व्यापत्तिओ वैद्यनी भूलथी थाय छे. (आ व्यापत्तिओमां केटलीएक निरूहबस्तिमांज थाय छे, केटलीएक अनुवासन बस्तिमांज थाय छे अने केटलीएक बन्नेमां थाय छे. आ व्यापत्तिओनां स्वरूपो आ पछीना अध्यायना ९ मा विषयमां चिकित्सानी साथेज आपवामां आवशे.) ९.

१३ षट्सप्ततिः समासेन व्यापदः परिकीर्त्तिताः
तासां वक्ष्यामि विज्ञानं सिद्धिं च तदनन्तरम्॥

उपर कहेली छोंतेर व्यापत्तिओनां लक्षणो तथा चिकित्साओ केहेवानी प्रतिज्ञा.

१३ बस्तिना विषयमां संक्षेपथी आ जे छोंतेर व्यापत्तिओ केहेवामां आवी तेओनां लक्षणो तथा चिकित्साओ हवे पछी कहीशुं.

अध्याय ३६ मो.

१ अथातो नेत्रबस्तिव्यापच्चिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'नेत्रबस्तिव्यापच्चिकित्सितं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अथ नेत्रे विचलिते तथा चैव विवर्त्तिते ।
गुदे क्षतं रुजा वा स्यात्तत्र सद्यःक्षतक्रियाः ॥
अत्युत्क्षिप्तेऽवसन्ने च नेत्रे पायौ भवेद्रुजा ।
विधिस्तत्रापि पित्तघ्नः कार्यः स्नेहैश्च सेचनम् ॥
तिर्यक्प्रणिहिते नेत्रे तथा पार्श्वावपीडिते ।
मुखस्यावरणाद्बस्तिर्न सम्यक्प्रतिपद्यते ॥
ऋजु नेत्रं विधेयं स्यात्तत्र सम्यग्विजानता ।

नळी दाखल करवानी छ व्यापत्तिओनी चिकित्सा.

२ नळी **कंपित थई जाय** के **अवळी फरी जाय** तो गुदामां जखम थाय छे अथवा पीडा थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो मध तथा घी एओनो अभ्यंग करवा वगेरे सद्यःक्षतनी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी.

नळी **अत्यंत ऊंची थई जाय** के **नीचे आवी जाय** तो गुदामां वेदना थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो पित्तने हणनारी चिकित्सा करवी अने मधुर तथा शीतत्वादिकवाला स्नेहोनुं सेचन करवुं.

नळी **आडी नखाई जाय** के **पडखामां दबाई** जाय तो नळीनुं मोहोडुं ढंकाई जवाथी बस्ति (पीचकारी) योग्य रीते पोहोंचती नथी. जो आ प्रमाणे थएल होय तो प्रवीण वैद्ये नळीने सरल करवी.

३ अतिस्थूले कर्कशे च नेत्रे चावनते तथा ॥

[1] नळी तथा बस्ति वगेरेनी उपर कहेली व्यापत्तिओनी चिकित्सा विषयनो.

गुदे भवेत्क्षतं रुक्च साधनं पूर्ववत्स्मृतम् ।
आसन्नकर्णिके नेत्रे भिन्नेऽणौ वाप्यपार्थकः ॥
अवसेको भवेद्बस्तेस्तस्माद्दोषान्विवर्जयेत् ।
प्रकृष्टकर्णिके रक्तं गुदमर्मप्रपीडनात् ॥
क्षरत्यत्रापि पित्तघ्नो विधिर्बस्तिश्च पिच्छिलः ।
ह्रस्वे त्वणुस्त्रोतसि च क्लेशो बस्तिश्च पूर्ववत् ॥
प्रत्यागच्छंस्ततः कुर्याद्रोगान्वस्तिविघातजान् ।
दीर्घे महास्त्रोतसि च ज्ञेयमत्यवपीडवत् ॥

नळीनी अगीयार व्यापत्तिओनी चिकित्सा.

३ नळी **अत्यंत जाडी, खरसट** के **नमेली** होय तो गुदामां क्षत थाय छे अने वेदना पण थाय छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो मध तथा घी एओनो अभ्यंग करवा वगेरे सद्यःक्षतनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी.

नळी **नजदीकमां रहेली छत्राकार डोडीवाळी, भेदाएली** के **झीणी** होय तो दाखल करेलो बस्तिनो क्राथादिक पदार्थ व्यर्थ थाय छे माटे नळीने ए दोषोथी रहितज राखवी.

नळी **दूरमां रहेली छत्राकार डोडीवाळी** होय तो गुदाना मर्मनुं पीडन थवाथी लोहीनो स्राव थाय छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो पित्तने हणनारी चिकित्सा करवी अने आ स्थानना ३८ मा अध्यायना २१ मा विषयमां कह्या-प्रमाणे पिच्छिल बस्ति देवी.

नळी **झीणा छिद्रवाळी** के **अत्यंत टूंकी** होय तो दुःख थाय छे, दीधेली बस्ति व्यर्थ थाय छे अने ते बस्ति पाछी वळतां मूत्राघात तथा मूत्रकृच्छ्र आदि रोगोने उत्पन्न करे छे. जो आप्रमाणे थएल होय तो मूत्राघातादिकनी चिकित्सा प्रमाणे योग्य चिकित्सा करवी अने पिच्छिल बस्ति देवी.

नळी **मोटा छिद्रवाळी** के **अत्यंत लांबी** होय तो बस्तिनुं क्राथादिक द्रव्य आमाशयमां जाय छे अने तेम थतां नाकमांथी के मोहोडामांथी नीकळे छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो बळद वगेरेना मूत्राशयनी कोथळी अत्यंत दबाई जवानी बाबतमां जे चिकित्सा केहेवामां आवशे ते चिकित्सा करवी. (नीचेना ९ मा विषयनो पेहेलो पारिग्राफ जुवो.)

४ प्रस्तीर्णे बहले चापि बस्तौ दुर्बद्धदोषवत् ।
बस्तावल्पेऽल्पता वापि द्रव्यस्याल्पगुणा मताः ॥
दुर्बद्धे चाणुभिन्ने च विज्ञेयं भिन्ननेत्रवत् ।

मूत्राशयनी पांच व्यापत्तिओनी चिकित्सा.

४ मूत्राशय **पोहोळो** के **मोटो** होय तो दाखल करेलो क्राथादिक पदार्थ व्यर्थ थाय छे माटे तेने ए दोषोथी रहितज राखवो.

मूत्राशय **नाहानो** होय तो तेनुं द्रव्य अंदर थोडुं दाखल थाय छे अने थोडा दाखल थएला द्रव्यथी गुणो पण थोडाज थाय छे माटे मूत्राशयने ए दोषथी रहितज राखवो.

मूत्राशय **अयोग्य रीते बंधाएलो** के **छिद्रवाळो** होय तो दाखल करलो क्राथादिक पदार्थ व्यर्थ थाय छे माटे तेने ए दोषोथी रहितज राखवो.

५ अतिप्रपीडितो बस्तिः प्रयात्यामाशयं ततः ॥
वातेरितो नासिकाभ्यां मुखतो वा प्रपद्यते ।
तत्र पूर्णं गलापीडं कुर्याच्चाप्यवधूननम् ॥
शिरःकायविरेकौ च तीक्ष्णौ सेकांश्च शीतलान् ।
शनैः प्रपीडितो बस्तिः पक्वाधानं न गच्छति ॥
न च सम्पादयत्यर्थांस्तस्माद्युक्तं प्रपीडयेत् ।
भूयो भूयोऽवपीडेन वायुरन्तः प्रपीड्यते ।
तेनाध्मानं रुजश्चोग्रा यथास्वं तत्र बस्तयः ॥
कालातिक्रमणात्क्लेशो व्याधिश्चाभिप्रवर्द्धते ।
तत्र व्याधिवलघ्नं तु भूयो बस्तिं निधापयेत् ॥

दबाववानी चार व्यापत्तिओनी चिकित्सा.

५ मूत्राशय **अत्यंत दबाय** तो पिचकारी आ-

माशयमां जाय छे अने त्यांथी वायुनी प्रेरणाने लीधे उपर जईने नाकमांथी के मोहोडामांथी नीकळे छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो तुरत आतुरने प्राणायाम कराववो तथा माथाना वाळ पकडी ऊंचो करीने कंपाववो. हाथथी के वस्त्र वगेरेथी एनुं गळुं दबाववुं पण ते एवी रीते दबाववुं के जे रीते दबाववाथी मरी जाय नहीं. तीक्ष्ण अधोविरेचन तथा तीक्ष्ण शिरोविरेचन पण देवुं अने शीतल सेचनो पण करवां.

मूत्राशय **पोचो पोचो** दबाय तो क्वाथ के स्नेह आदि द्रव्य पक्वाशयमां जतुं नथी अने तेथी धारेलां प्रयोजनो पार पडतां नथी एटला माटे ए मूत्राशयने योग्य रीतेज दबाववो.

मूत्राशय **वारंवार दबाय** तो शरीरनी अंदरनो वायु पण दबाय छे अने ते दबायाथी पेट आफरे छे तथा उग्र वेदनाओ थाय छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो दोषना अनुसारथी बस्तिओ देवी.

मूत्राशय दबाववामां **वधारे वखत लगाडवामां** आवे तो एटले लांबा वखतसूधी गुदामां नळी रहे तो तेथी व्याधि वधे छे. आ प्रमाणे थएल होय तो फरीवार ते व्याधिना बळने हणनारी बस्ति देवी.

६ गुदोपदेहशोफौ तु स्नेहोऽपक्वः करोति हि ।
तत्र संशोधनो बस्तिर्हितं चापि विरेचनम् ।
हीनमात्रावुभौ बस्ती नातिकार्यकरौ मतौ ॥
अतिमात्रौ तथानाहक्लमातीसारकारकौ ।
मूर्छा दाहमतीसारं पित्तं चात्युष्णतीक्ष्णकौ ।
मृदुशीतावुभौ वातविबन्धाध्मानकारकौ ।
तत्र हीनादिषु हितः प्रत्यनीकः क्रियाविधिः ॥
तत्र सान्द्रे तनुं बस्तिं तनौ सान्द्रं च दापयेत् ।
स्निग्धोऽतिजाड्यकृद्रूक्षः स्तम्भाध्मानकृदुच्यते॥
बस्तिं रूक्षमतिस्निग्धे स्निग्धं रूक्षे च दापयेत् ।

द्रव्यनी अगीयार व्यापत्तिओनी चिकित्सा.

६ बस्तिनो स्नेह **काचो होय** तो तेथी गुदामां लेप थाय छे तथा सोजो थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो संशोधन बस्ति (आ स्थानना ३८ मा अध्यायनो १७ मो विषय जुवो.) देवी अने विरेचन पण देवुं ए हितकारी छे.

निरूहबस्तिनुं के अनुवासनबस्तिनुं द्रव्य ओछी मात्रावाळुं होय तो तेथी जेवुं जोइए तेवुं कार्य थतुं नथी. जो आ प्रमाणे थएल होय तो फरी अधिक मात्रावाळी बस्ति देवी.

निरूहबस्तिनुं के अनुवासनबस्तिनुं द्रव्य **अधिक मात्रावाळुं** होय तो तेथी आनाह, क्लम तथा अतीसार थाय छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो फरी ओछी मात्रावाळी बस्ति देवी.

निरूहबस्तिनुं के अनुवासन बस्तिनुं द्रव्य **अत्यंत उष्ण** के **अत्यंत तीक्ष्ण** होय तो तेथी मूर्छा, दाह, अतीसार अने पित्त उत्पन्न थाय छे. अत्यंत उष्ण द्रव्यथी मूर्छादिक थएल होय तो फरी अतिशीत बस्ति देवी अने अत्यंत तीक्ष्ण द्रव्यथी मूर्छादिक थएल होय तो फरी अत्यंत कोमळ बस्ति देवी.

निरूहबस्तिनुं के अनुवासन बस्तिनुं द्रव्य **अतिकोमळ** के **अतिशीत** होय तो तेथी वातकोप, मलबंध अने आध्मान थाय छे. जो अतिकोमळ द्रव्यथी ए थएल होय तो फरी अतितीक्ष्ण बस्ति देवी अने अतिशीत द्रव्यथी ए थएल होय तो फरी अतिउष्ण बस्ति देवी.

बस्तिनुं द्रव्य **अत्यंत घाटुं** के **अत्यंत द्रवरूप** (बहुज पातळुं) होय तो उदरमां वेदनाने उत्पन्न करे छे. जो अत्यंत घाटा द्रव्यथी वेदना थएल होय तो फरीवार पातळा द्रव्यनी बस्ति देवी अने अत्यंत द्रवरूप द्रव्यथी वेदना थएल होय तो फरीवार घाटा द्रव्यनी बस्ति देवी.

बस्तिनुं द्रव्य **अत्यंत स्निग्ध** होय तो अत्यंत जडता थाय छे अने **अत्यंत रूक्ष** होय तो स्तंभ तथा आध्मान थाय छे. अत्यंत जडता थ-

एल होय तो फरी रूक्ष बस्ति देवी अने स्तंभ तथा आध्मान थएल होय तो फरी स्निग्ध बस्ति देवी.

७ अतिपीडितवद्दोषा विधिश्चाप्यवशीर्षके ॥
उच्छीर्षके समुन्नाहं बस्तिः कुर्याच्च मेहनम् ।
तत्रोत्तरो हितो बस्तिः सुस्विन्नस्य सुखावहः ॥
न्युब्जस्य बस्तिर्नाप्नोति पक्वाधानं विमार्गगः ॥
हृद्गुदं बाधते चात्र वायुः कोष्ठमथापि च ।
उत्तानस्यावृते मार्गे बस्तिर्नान्तः प्रपद्यते ॥
नेत्रसंवेजनभ्रान्तो वायुश्चान्तः प्रकुप्यति ।
देहे सङ्कुचिते दत्तः सक्थ्नोरप्युभयोस्तथा ॥
न सम्यगनिलाविष्टो बस्तिः प्रत्येति देहिनः ।
स्थितस्य बस्तिर्दत्तस्तु क्षिप्रमायात्यवाङ्मुखः ॥
न चाशयं तर्पयति तस्मान्नार्थकरो हि सः ।
नाप्नोति बस्तिर्दत्तस्तु कृत्स्नं पक्वाशयं पुनः ॥
दक्षिणाश्रितपार्श्वस्य वामपार्श्वानुगो हि सः ।
न्युब्जादीनां प्रदानं च बस्तेर्नैव प्रशस्यते ॥
पश्चादनिलकोपोऽत्र यथास्वं तत्र कारयेत् ।

शय्यानी सात व्यापत्तिओनी चिकित्सा.

७ शय्यामां **ऊंधुं माथुं राखीने सूतेला** आतुरने बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति आमाशयमां जाय छे अने त्यांथी वायुनी प्रेरणाने लीधे उपर जईने नाकमांथी के मोहोडामांथी नीकळे छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो तुरत आतुरने प्राणायाम कराववो तथा माथाना वाळ पकडी ऊंचो करीने कंपाववो. हाथथी के वस्त्र वगेरेथी एनुं गळुं दबाववुं पण ते एवी रीते दबाववुं के जेथी मरी जाय नहीं. तीक्ष्ण अधोविरेचन तथा तीक्ष्ण शिरोविरेचन पण देवुं अने शेलडीनो रस तथा धान्याम्ल वगेरेनां सेचनो पण करवां.

शय्यामां **ऊंचुं माथुं राखीने सूतेला** आतुरने बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति उपस्थने स्तब्ध करी नाखे छे[१]. जो ए प्रमाणे थएल होय तो आतुरने सारी पेठे स्निग्ध करीने उत्तरबस्ति देवी (उपस्थमां पीचकारी मारवी.) ए सुखदायी अने हितकारी छे.

शय्यामां **ऊंधा सूतेला** आतुरने बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति पक्वाशयमां नहीं पोचतां विरुद्ध मार्गोमां जईने हृदयमां तथा गुदामां पीडा करे छे अने वायु कोठामां पीडा करे छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो वायुना प्रकोपने टाळनारी अने उत्पन्न थएली वेदनाने टाळनारी चिकित्सा करवी.

शय्यामां **चत्ता सूतेला** आतुरने बस्ति देवामां आवे तो मार्ग ढंकाएलो होवाने लीधे बस्ति अंदर पोहोचती नथी अने नळीना कंपथी भ्रमण पामेलो वायु अंदर प्रकुपित थाय छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो वायुना प्रकोपने टाळनारी अने उत्पन्न थएली वेदनाने शांत करनारी चिकित्सा करवी.

शय्यामां **शरीरने तथा बन्ने साथळोने संकोचीने सूतेला** आतुरने बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति वायुथी आविष्ट थवाने लीधे पाछी बराबर नीकळती नथी अने वायुने प्रकुपित करे छे. जो आ प्रमाणे थएल होय तो वायुना प्रकोपने टाळनारी अने उत्पन्न थएली वेदनाने टाळनारी चिकित्सा करवी.

शय्यामां **बेठेला** आतुरने बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति तुरंतज पाछी वळीने बाहार नीकळे छे अने पक्वाशयने तृप्त करती नथी माटे ते बस्ति कशा कामनी नथी पण वायुने प्रकुपित करे छे. आमां वायुना प्रकोपने तथा उत्पन्न थएली वेदनाने शांत करनारी चिकित्सा करवी.

१ अहीं जेज्जटाचार्य पाठभेद मानीने केहे छे के 'उपस्थ स्तब्ध थाय छे अने मूत्रनी वृद्धि थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो आतुरने सारी पेठे स्निग्ध करीने संशोधन निरूहबस्ति देवी.' वृद्ध वैद्यो तो वळी जूदोज पाठ मानीने एम केहे छे के 'मूत्राशय स्तब्ध थई जाय छे अने घणा कष्टथी मूतरी शकाय छे.'

शय्यामां जमणुं पडखुं दबावीने सूतेला आतुरने बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति पक्काशयने प्राप्त थती नथी. कारण के पक्काशय डाबा पडखाने लगतो छे. आ बस्तिथी वायु प्रकुपित थाय छे. आमां पण वायुना प्रकोपने तथा उत्पन्न थएली वेदनाने शांत करनारी चिकित्सा करवी.

८ व्यापदः स्नेहबस्तेस्तु वक्ष्यन्तेऽत्र चिकित्सिते॥

स्नेहबस्तिओनी आठ व्यापत्तिओनी चिकित्साविषे.

८ जो के स्नेहबस्तिओनी आठ व्यापत्तिओनी चिकित्सा अनुक्रमप्रमाणे अहीं केहेवी प्राप्त छे तो पण प्रकरणसंगतिने अनुसरीने आ अध्याय पछीना अनुवासनोत्तरबस्तिचिकित्सित नामना साडत्रीशमा अध्यायमां केहेवामां आवशे. (ए अध्यायनो १७ मो विषय जुवो.)

९ अयोगाद्यास्तु वक्ष्यामि व्यापदः सचिकित्सिताः
अनुष्णोऽल्पौषधो हीनो बस्तिर्नैति प्रयोजितः ॥
विष्टम्भाध्मानशूलैश्च तमयोगं प्रचक्षते ।
तत्र तीक्ष्णो हितो बस्तिस्तीक्ष्णं चापि विरेचनम्
सशेषान्ने तथा भुक्ते बहुदोषे च योजितः ।
अत्याशितस्यातिबहुर्बस्तिर्मन्दोष्ण एव च ॥
अनुष्णलवणस्नेहो ह्यतिमात्रोऽथवा पुनः ।
तथा बहुपुरीषे च क्षिप्रमाध्मापयेन्नरम् ॥
हृत्कटीपार्श्वपृष्ठेषु शूलं तत्रातिदारुणम् ।
तत्र तीक्ष्णतरो बस्तिर्हितं चाप्यनुवासनम् ॥
अतितीक्ष्णोष्णलवणो रूक्षो बस्तिः प्रयोजितः ।
सपित्तं कोपयेद्वायुं कुर्याच्च परिकर्त्तिकाम् ॥
नाभिबस्तिगुदं तत्र छिनत्तीवाति देहिनः ।
पिच्छाबस्तिर्हितस्तत्र स्नेहश्च मधुरैः शृतः ॥
अत्यम्ललवणस्तीक्ष्णः परिस्रावाय कल्पते ।
दौर्बल्यमङ्गसादश्च जायते तत्र देहिनः ॥
परिस्रवेत्ततः पित्तं दाहं संजनयेद्गुदे ।
पिच्छाबस्तिर्हितस्तत्र बस्तिः क्षीरघृतस्य च ॥
प्रवाहिका भवेत्तीक्ष्णान्निरूहात्सानुवासनात् ।
सदाहशूलं कृच्छ्रेण वासकृत्रोपवेश्यते ॥
पिच्छाबस्तिर्हितस्तत्र पयसा चैव भोजनम् ।
सर्पिर्मधुरकैः सिद्धं तैलं चाप्यनुवासनम्
अतितीक्ष्णो निरूहो वा सवाते चानुवासनः ।
हृदयस्योपसरणं कुरुते चाङ्गपीडनम् ॥
दोषैस्तत्र रुजस्तास्ता मदो मूर्छाङ्गगौरवम् ।
सर्वदोषहरं बस्तिं शोधनं तत्र दापयेत् ॥
रूक्षस्य बहुवातस्य तथा दुःशयितस्य च ।
बस्तिरङ्गग्रहं कुर्याद्रूक्षो मृद्वल्पभेषजः
तत्राङ्गसादः प्रस्तम्भो जृम्भोद्वेष्टनवेपकाः ।
पर्वभेदश्च तत्रेष्टाः स्वेदोऽभ्यञ्जनबस्तयः ॥
अत्युष्णतीक्ष्णोऽतिबहुर्दत्तोऽतिस्वेदितस्य च ।
अल्पदोषस्य वा बस्तिरतियोगाय कल्पते ॥
विरेचनातियोगेन समानं तच्चिकित्सितम् ।
पिच्छाबस्तिप्रयोगश्च तत्र शीतः सुखावहः ॥
अतियोगात्परं यत्र जीवादानं विरिक्तवत् ।
देयस्तत्र हितश्चापि पिच्छाबस्तिः सशोणितः ॥
नवैता व्यापदो यास्तु निरूहं प्रत्युदाहृताः ।
स्नेहबस्तिष्वपि हिता विज्ञेयाः कुशलैरिह ॥

अयोग आदि नव व्यापत्तिओनां लक्षणो तथा चिकित्साओ.

९ हवे अयोग वगेरे व्यापत्तिओनां लक्षणो तथा चिकित्साओ कहुं छुं. वायुनी अधिकता छतां शीत अथवा अल्प औषधवाळी बस्ति देवामां आवे, पित्तनी अधिकता छतां अति उष्ण अथवा अल्प बस्ति देवामां आवे अने कफनी अधिकता छतां मृदु अथवा अल्प बस्ति देवामां आवे तो ते **अयोग** केहेवाय छे. अयोग थतां बस्ति पाछी नीकळती नथी, मलबद्ध थाय छे, पेट चडी आवे छे अने शूळ नीकळे छे. अयोग थएल होय तो तीक्ष्ण बस्ति देवी अने तीक्ष्ण विरेचन देवुं ए हितकारी छे.

अन्न नहीं पच्या छतां बस्ति देवामां आवे अथवा जम्या पछी बस्ति देवामां आवे अथवा

१ भोजन कर्या पछी बस्तिनो जे निषेध छे ते केवळ निरूहबस्तिने माटेज छे. अनुवासन बस्ति तो योग्य भोजन कराव्या पछीज देवी.

दोषो घणा छतां बस्ति देवामां आवे अथवा जेणे अत्यंत भोजन कर्युं होय तेने अत्यंत घणी तथा मंद उष्णतावाळी बस्ति देवामां आवे अथवा जेने विष्टानो बहुज संचय थयो होय तेने बस्ति देवामां आवे अथवा उष्ण वगरनी सैंधव वगरनी तथा स्नेह वगरनी बस्ति देवामां आवे अथवा अत्यंत अधिक मात्रावाळी बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति तुरतज **आध्मानने** (पेटना आफराने) उत्पन्न करे छे. आध्मान थतां हृदयमां, कमरमां, पासांओमां तथा पीठमां अतिदारुण शूळ उत्पन्न थाय छे. आध्मान थएल होय तो अतितीक्ष्ण निरूह बस्ति देवी अने पछी अनुवासन बस्ति देवी ए हितकारी छे.

अत्यंत तीक्ष्ण, अत्यंत उष्ण अने अत्यंत लवणवाळी रूक्ष बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति पित्तने तथा वायुने प्रकुपित करे छे अने **परिकर्त्तिकाने** (वाढने) उत्पन्न करे छे के जे परिकर्त्तिका उत्पन्न थतां जाणे नाभि, मूत्राशय अने गुदा अत्यंत कपाई जतां होय एवी व्यथा थाय छे. परिकर्त्तिका थएल होय तो पिच्छिलबस्ति अने मधुरद्रव्योथी पकावेला स्नेहनी बस्ति हितकारी थाय छे.

अत्यंत खाटा रसवाळी अने अत्यंत लवण रसवाळी तीक्ष्ण बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति **परिस्रावने** उत्पन्न करे छे. परिस्राव थतां दुर्बलपणुं थाय छे, अंगोमां ग्लानि थाय छे, गुदामांथी पित्त स्रवे छे अने गुदामां दाह थाय छे. परिस्राव थएल होय तो पिच्छिल बस्ति देवी अने दूधनी तथा घीनी बस्ति देवी ए हितकारी छे.

तीक्ष्ण निरूहबस्तिथी अने तीक्ष्ण अनुवासन बस्तिथी **प्रवाहिका** थाय छे. प्रवाहिका उत्पन्न थतां दस्तमां दाहवाळुं तथा शूळवाळुं रुधिर पडे छे अथवा बहुज कष्टथी रुधिर पडे छे. प्रवाहिका थएल होय तो पिच्छिलबस्ति देवी, दूधथी भोजन आपवुं अने काकोल्यादि जीवनीय गणनां द्रव्योथी पकावेला घीनी तथा तैलनी अनुवासनबस्ति देवी एं हितकारी थाय छे.

वायुना रोगवाळा माणसने अतितीक्ष्ण निरूहबस्ति अथवा अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति **हृदयोपसरण** (हृदयमां दोषोनो जमाव) करे छे के जेथी दोषोने लीधे अंगोमां पीडा थाय छे, अनेक प्रकारनी भोकाया जेवी व्यथा वगेरे वेदनाओ थाय छे, घणां सोपारी खाधाना जेवो मीणो चडे छे, मूर्छा आवे छे अने अंगोमां भारेपणुं थाय छे. हृदयोपसरण थएल होय तो सर्व दोषोने हणनारी शोधनबस्ति देवी.

रूक्ष, घणा वायुवाळा अने अयोग्य रीते सूतेला आतुरने रूक्ष अने कोमळ तथा अल्प औषधवाळी बस्ति देवामां आवे तो ते बस्ति **अंगप्रग्रहने** (अंगोना झलाई जवाने) उत्पन्न करे छे के जेथी अंगोमां व्यथा थाय छे, स्तंभ थाय छे, जृंभ (शारीरस्थानना चोथा अध्यायनो २२ मो विषय जुवो.) थाय छे, छातीमां भीडो आवे छे, कंप थाय छे अने सांधाओ त्रुट्या करे छे. अंगप्रग्रह थएल होय तो स्वेदन करवुं, अभ्यंगो करवा· अने बस्ति देवी.

अत्यंत उष्ण बस्ति देवामां आवे, अत्यंत तीक्ष्ण बस्ति देवामां आवे, अत्यंत घणी बस्ति देवामां आवे, अत्यंत स्वेदन संस्कार पामेलाने बस्ति देवामां आवे के अल्प दोषवाळाने बस्ति देवामां आवे तो ते **अतियोग** थयो केहेवाय छे. अतियोग थएल होय तो विरेचनना अतियोगनी जे चिकित्सा कही छे ते करवी (आ स्थानना ३४ मा अध्यायनो नवमो विषय जुवो.) अने शीतल पिच्छिल बस्तिनो प्रयोग करवो ए सुखदायी थाय छे

उपर कहेलो बस्तिनो अतियोग वृद्धि पामतां विरेचनना अतियोगथी थता जीवादान जेवुंज **जीवादान** थाय छे. (आ स्थानना ३४ मा

अध्यायनो दशमो विषय जुवो.) जीवादान थएल होय तो सूवर वगेरेना रुधिरवाळी पिच्छिलबस्ति देवी. (आ स्थानना ३८ मा अध्यानो २१ मो विषय जुवो.)

निरूहबस्तिनी आ जे नव व्यापत्तिओ केहेवामां आवी तेओमांनी केटलीएक व्यापत्तिओ अनुवासन बस्तिना विषयमां पण थाय छे ए कुशल वैद्योए समजी लेवुं.

१० इत्युक्ता व्यापदः सर्वाः सलक्षणचिकित्सिताः ।
भिषजा च तथा कार्यं यथैता न भवन्ति हि ॥

व्यापत्तिओना विषयनो उपसंहार अने वैद्यने भलामण.

१० आ बस्तिसंबंधी सघळी व्यापत्तिओ तेओनां लक्षणो सहित तथा चिकित्साओ सहित केहेवामां आवी. वैद्ये प्रथमथीज एवी रीतनी योजना राखवी जोइए के जेथी व्यापत्तिओ उत्पन्नज न थाय.

११ पक्षाद्विरेको वान्तस्य ततश्चापि निरूहणम् ।
सद्यो निरूढोऽनुवास्यः सप्तरात्राद्विरेचितः ॥

विरेचन, निरूहबस्ति अने अनुवासनबस्ति एओना अनुक्रमपूर्वक समयो.

११ वमन कराव्या पछी एक पखवाडीयुं वीती जाय त्यारे विरेचन करावvुं (केम के वमन कराव्या पछी आ स्थानना ३९ मा अध्यायमां कह्या प्रमाणे पेया वगेरेनो क्रम करतां सात दिवसे प्रकृतिभोजन प्राप्त थाय छे अने ते पछीना सात दिवसो एकांतरा अनुवासनथी स्निग्ध करवामां जाय छे.) अने विरेचन कराव्या पछी एक पखवाडीयुं वीती जाय त्यारे निरूहबस्ति देवी. (केम के विरेचन कराव्या पछी सात दिवसे प्रकृतिभोजन प्राप्त थाय छे अने ते पछीना सात दिवसो एकांतरा अनुवासनथी स्निग्ध करवामां जाय छे.) निरूहबस्ति दीधा पछी अनुवासन बस्ति तुरतज देवी अने विरेचन कराव्या पछी सात दिवस वीती जाय त्यारे अनुवासन बस्ति देवी.

अध्याय ३७ मो.

१ अथातोऽनुवासनोत्तरबस्तिचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अनुवासनोत्तरबस्तिचिकित्सित'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ विरेचनात्सप्तरात्रे गते जातबलाय च ।
कृतान्नायानुवास्याय सम्यग्देयोऽनुवासनः ॥

अनुवासनबस्तिनो सामान्य क्रम.

२ विरेचन दीधा पछी सात रात व्यतीत थाय त्यारे, जेने बळ प्राप्त थयुं होय एवा रोगीने यथोचित स्नेहवाळुं[2] अन्न जमाडीने सारी रीते अनुवासनबस्ति देवी. (जो बळ प्राप्त न थयुं होय तो नज देवी.)

३ यथावयो निरूहाणां या मात्राः परिकीर्तिताः ।
पादावकृष्टास्ताः कार्याः स्नेहबस्तिषु देहिनाम् ॥

अनुवासनबस्तिनी मात्राओ.

३ गया पांत्रीशमा अध्यायना त्रीजा विषयमां अवस्थाओना अनुसार प्रमाणे निरूहबस्तिनी जे मात्राओ केहेवामां आवी छे ते मात्राओ अनुवासन बस्तिओमां तेटलीने तेटलीज नहीं पण पोतपोताना चतु-

---

१ अनुवासन बस्तिरूप तथा उत्तरबस्ति (उपस्थमां देवाना बस्ति)रूप चिकित्सा विषयनो.

२ भोजन अने बस्ति ए बन्नेमां स्नेह देवाथी मद अने मूर्छा उत्पन्न थाय छे अने अत्यंत रूक्ष भोजन करावीने अनुवासन बस्ति देवामां आवे तो बळनी तथा वर्णनी हानि थाय छे माटे यथोचित स्नेहवाळुं अन्न जमाडवानुं कह्युं छे.

थांशो जेटली करी नाखवी. (निरूहबस्तिमां सोळ तोलां भार मात्रा देवानी होय त्यां अनुवासन बस्तिमां चार तोलांभार मात्रा देवी इत्यादि.)

४ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रे नरे बस्तिं विधापयेत् ।
एतैर्हि विहतः स्नेहो नैवान्तः प्रतिपद्यते ॥
स्नेहबस्तिर्विधेयस्तु नाविशुद्धस्य देहिनः ॥
स्नेहवीर्यं तथा दत्ते देहं चानुविसर्पति ।

शुद्ध थएला माणसने अनुवासन बस्ति देवी.

४ जेणे अधोवायुनो, विष्टानो अने मूत्रनो संपूर्ण उत्सर्ग करी लीधो होय एवा माणसने स्नेहबस्ति (अनुवासनबस्ति) देवी. केम के जो स्नेह अधोवायुथी, विष्टाथी के मूत्रथी प्रतिघात पामे तो पक्वाशयमां पोहोचतो नथी. जे माणस शुद्ध न थयो होय तेने स्नेहबस्ति देवी नहीं. केम के शुद्ध थएला माणसने स्नेह पोतानो प्रभाव आपे छे के जे प्रभाव सघळा शरीरमां फेलाय छे.

५ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि तैलानीह यथाक्रमम्॥
पानान्वासननस्येषु यानि हन्युर्गदान्बहून् ।
शटीपुष्करकृष्णाह्वामदनामरदारुभिः ॥
शताह्वाकुष्ठयष्ट्याह्ववचाबिल्वहुताशनैः ॥
सुपिष्टैर्द्विगुणक्षीरं तैलं तोयचतुर्गुणम् ।
पक्त्वा बस्तौ विधातव्यं मूढवातानुलोमनम् ॥
अर्शांसि ग्रहणीदोषमानाहं विषमज्वरम् ।
कट्यूरुपृष्ठकोष्ठस्थान्वातरोगांश्च नाशयेत् ॥
वचापुष्करकुष्ठैलामदनामरसिन्धुजैः ।
काकोलीद्वययष्ट्याह्वमेदायुग्मनराधिपैः ॥
पाठाजीवकजीवन्तीभार्गीचन्दनकट्फलैः ।
सरलागुरुबिल्वाम्बुवाजिगन्धाग्निवृद्धिभिः ॥
विडङ्गारग्वधश्यामात्रिवृन्मागधिकर्द्धिभिः ।
पिष्टैस्तैलं पचेत्क्षीरं पञ्चमूलरसान्वितम् ॥
गुल्मानाहाग्निसङ्गार्शोग्रहणीमूत्रसङ्गिनाम् ।
अन्वासनविधौ युक्तं शस्यतेऽनिलरोगिणाम् ॥
चित्रकातिविषापाठादन्तीबिल्ववचामिषैः ।
सरलांशुमतीरास्नानीलिनीचतुरङ्गुलैः ॥
चव्याजमोदाकाकोलीमेदायुग्मसुरद्रुमैः ।
जीवकर्षभवर्षाभूबस्तगन्धाशताह्वयैः ॥
रेण्वश्वगन्धामञ्जिष्ठाशटीपुष्करतस्करैः ।
सक्षीरं विपचेत्तैलं मारुतामयनाशनम् ॥
गृध्रसीखञ्जकुब्जाढ्यमूत्रोदावर्त्तरोगिणाम् ।
शस्यतेऽल्पबलाग्नीनां बस्तावाशु नियोजितम् ॥
भूतिकैरण्डवर्षाभूरास्नावृषकरोहिषैः ।
दशमूलसहाभार्गीषड्ग्रन्थामरदारुभिः ॥
बलानागबलामूर्वावाजिगन्धामृताह्वयैः ।
सहाचरवरीविश्वाकाकनासाविदारिभिः ॥
यवमाषातसीकोलकुलत्थैः क्वथितैः शृतम् ।
जीवनीयप्रतीवापं तैलं क्षीरचतुर्गुणम् ॥
जङ्घोरुत्रिकपार्श्वांसबाहुमन्याशिरःस्थितान् ।
हन्याद्वातविकारांस्तु बस्तियोगैर्निषेवितम् ॥
जीवन्त्यतिबलामेदाकाकोलीद्वयजीवकैः ।
ऋषभातिविषाकृष्णाकाकनासावचामरैः ॥
रास्नामदनयष्ट्याह्वसरलाभीरुचन्दनैः ।
स्वयङ्गुप्ताशटीशृङ्गीकलशीसारिवाह्वयैः ॥
पिष्टैस्तैलघृतं पक्वं क्षीरेणाष्टगुणेन तु ।
तच्चानुवासने देयं शुक्राग्निबलवर्द्धनम् ॥
बृंहणं वातपित्तघ्नं गुल्मानाहहरं परम् ।
नस्ये पाने च संयुक्तमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ॥
मधुकोशीरकाश्मर्यकटुकोत्पलचन्दनैः ।
श्यामापद्मकजीमूतशक्राह्वातिविषाम्बुभिः ॥
तैलपादं पचेत्सर्पिः पयसाष्टगुणेन च ।
न्यग्रोधादिगणक्वाथयुक्तं बस्तिषु योजितम् ॥
दाहासृग्दरवीसर्पवातशोणितविद्रधीन् ।
पित्तरक्तज्वराद्यांश्च हन्यात्पित्तकृतान्गदान् ॥
मृणालोत्पलशालूकसारिवाद्वयकेशरैः ।
चन्दनद्वयभूनिम्बपद्मबीजकसेरुकैः ॥
पटोलकटुकारक्तागुन्द्रापर्पटवासकैः ।
पिष्टैस्तैलमिदं पक्वं तृणमूलरसेन च ॥
क्षीरद्विगुणसंयुक्तं बस्तिकर्मणि योजितम् ।
नस्येऽभ्यञ्जनपाने वा हन्यात्पित्तगदान्बहून् ॥

त्रिफलातिविषामूर्वात्रिवृच्चित्रकवासकैः ।
निम्बारग्वधषड्ग्रन्थासप्तपर्णनिशाद्वयैः ॥
गुडूचीन्द्रसुराकृष्णाकुष्ठसर्षपनागरैः ॥
तैलमेभिः समैः पक्वं सुरसादिरसाप्लुतम् ।
पानाभ्यञ्जनगण्डूषनस्यबस्तिषु योजितम् ॥
स्थूलतालस्यकण्ड्वादीञ्जयेत्कफकृतान्गदान् ।
पाठाजमोदाशार्ङ्गष्टापिप्पलीद्वयनागरैः ॥
सरलागुरुकालीयभार्गीचव्यामरद्रुमैः ।
मरिचैलाभयाकट्वीशटीग्रन्थिककट्फलैः ॥
तैलमेरण्डतैलं वा पक्वमेभिः समायुतम् ।
वल्लीकण्टकमूलाभ्यां क्वाथेन द्विगुणेन च ॥
हन्यादन्वसनैर्दत्तं सर्वान्कफकृतान्गदान् ।
विडङ्गोदीच्यसिन्धूत्थशटीपुष्करचित्रकैः ॥
कट्फलातिविषाभार्गीवचाकुष्ठसुराह्वयैः ।
मेदामदनयष्ट्याह्वश्यामानिचुलनागरैः ॥
शताह्वानीलिनीरास्नाकदलीवृषरेणुभिः ।
बिल्वाजमोदाकृष्णाह्वादन्तीचव्यनराधिपैः ॥
तैलमेरण्डतैलं वा मुष्ककादिरसाप्लुतम् ।
प्लीहोदावर्त्तवातासृग्गुल्मानाहकफामयान् ॥
प्रमेहशर्कराशांसि हन्यादाश्वनुवासनात् ।

पीवामां, अनुवासन बस्तिमां तथा नस्यमां उपयोगी जूदां जूदां तैलो.

९ हवे वातादिक दोषोना अनुक्रमथी जूदां जूदां तैलो कहुं छुं के जे तैलो पीवामां, अनुवासन बस्तिमां तथा नस्यमां जोडायाथी घणा घणा रोगोने टाळे छे.

कचूरो, कुलिंजन, पीपळ, मींढोळ, देवदार, शतावरी, कठ, जेठीमध, वज, बीली अने चित्रक एओने सारी पेठे वाटी ते कल्क नाखी बमणा दूधमां तथा चोगणा पाणीमां तैल पकाववुं अने ते तैलनी अनुवासनबस्ति देवी. आ तैल प्रतिलोम थएला वायुनुं अनुलोमन करे छे अने अरशोने, ग्रहणीदोषने, आनाहने, (मलमूत्रनी अटकायतने) विषमज्वरने तथा कमर, साथळ, पीठ अने कोठो एओमां रहेला वायुसंबंधी रोगोने नष्ट करे छे.

वज, कुलिंजन, कठ, एळची, मींढोळ, देवदार, सैंधव, बे जातनी काकोली, जेठीमध, मेदा, महामेदा, बे भाग गरमाळो, कालीपाड, जीवक, खरखोडी, भारंगी, चंदन, कायफळ, बे भाग नसोतर, अगरू, बीली, वाळो, आसोंद, चित्रक, सूरजमुखी, वावडींग, वरधारो, पीपळ, अने ऋद्धि एओनो कल्क नाखी चोगणा बृहत्पंचमूलना क्वाथमां तथा दूधमां तैल पकाववुं अने ते तैलनी अनुवासन बस्ति देवी. आ तैल गुल्मने, मलनी अटकायतने, अग्निना मंदपणाने, अरशने, ग्रहणीने, मूत्रनी अटकायतने अने वायुसंबंधी रोगोने नष्ट करे छे.

चित्रक, अतवस, काळी पाड, नेपाळो, बीली, वज, गुगळ, नसोतर, शालिपर्णी, रास्ना, गळी, गरमाळो, चवक, अजमा, काकोली, मेदा, महामेदा, देवदार, जीवक, ऋषभक, साटोडी, जंगली तुलसी अथवा तलवणी, शतावरी, हरेणु नामनुं सुगंधी द्रव्य, आसोंद, मजीठ, कचूरो, कुलिंजन अने करमाणी, एओनो कल्क नाखी चोगणा दूधमां तैल पकाववुं. आ तैलनी अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो तेथी वायुसंबंधी रोगो, गृध्रसी, खंज, कुब्ज, आढ्यवात, मूत्रोदावर्त, बळनुं अल्पपणुं अने अग्निनुं अल्पपणुं तुरत नष्ट थई जाय छे.

नाहानुं रोहिसखड, एरडो, साटोडी, रास्ना, अरडूसी, रोहिसखड, दशमूळ, जंगली अडदना छोड, भारंगी, वज, देवदार, बळदाणा, गंगेटी, मोरवेल, आसोंद, हरडे, गळो, सफेद कांटाअशेरीयो, शतावरी, सूंठ, काकनासा, (गुजरातीमां प्रसिद्ध नथी.) फगवेलानो कंद, जव, अडद, अलसी, बोर अने कळथी एओना चोगणा क्वाथमां तथा चोगणा दूधमां जीवनीय गणनो प्रतिवाप नाखीने तैल पकाववुं अने ते तैलनो अनुवासन बस्तिओमां उपयोग करवो. अनुवासन बस्तिना योगोथी सेववामां आवेलुं आ तैल जांघमां, साथळमां, बरडाना त्रिकमां, पासांओमां, बाहुओमां

खभाओमां, ओडमां तथा माथामां रहेला वायुसंबंधी रोगोने नष्ट करे छे.

खरखोडी, खपाट, मेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, अतवस, पीपळ, काकनासा, वज, देवदार, रास्ना, मीढोळ, जेठीमध, नसोतर, शतावरी, चंदन, कौचां, कचूरो, काकडाशींगी, पृश्निपर्णी अने उपलसरी (कपूरी) एओनो कल्क नाखी आठगणा दूधमां तैल तथा घी पकाववां अने तेनी अनुवासन बस्ति देवी. आ अनुवासन बस्ति वीर्यने तथा अग्निना बळने वधारे छे, शरीरने पुष्ट करे छे, वायुने तथा पित्तने हणे छे अने गुल्मने तथा मलमूत्रनी अटकायतने तमाम टाळे छे. आ तैलघृतनो नस्यमां तथा पीवामां उपयोग करवामां आवे तो तेथी डोकनी हांसडीथी उपरना रोगो नष्ट थई जाय छे.

जेठीमध, वाळो, सीवण, कडु, रक्तकमळ, चंदन, घउलां, पद्मकाष्ठ, मोथ, इंद्रजव, अतिवस अने काळो वाळो एओनो कल्क नाखी आठगणा दूधमां तैल अने तैलना चोथा भाग जेटलुं घी न्यग्रोधादि गणना क्राथनी साथे पकाववुं. आनो बस्तिमां उपयोग करवामां आवे तो तेथी दाह, रक्तप्रदर, विसर्प, वातरक्त, विद्रधि, रक्तपित्त अने ज्वर इत्यादि पित्ते करेला रोगो नष्ट थाय छे.

कमळनाळ, रक्तकमळ, कमळकंद, बे जातनी कपूरी, नागकेसर अथवा बोलसरी, सूखड, रतांजलि, करीयातुं, कमळकाकडी, कसेरुकंद, पटोल, कडु, ऊंटकंटो अथवा मजीठ, मोथ, खडसलीयो अने अरडूसी एओनो कल्क नाखी तृणपंचमूलना क्राथमां तथा बमणा दूधमां तैल पकावीने ते तैलनो अनुवासन बस्तिमां, नस्यमां, अभ्यंगमां तथा पीवामां उपयोग करवामां आवे तो ते तैल पित्ते करेला घणा घणा रोगोने हणे छे.

त्रिफळा, अतवस, मोरवेल, (गुजरातीमां प्रसिद्ध नथी.) नसोतर, चित्रक, अरडूसी, लींबडो, गरमाळो, वज, सप्तपर्ण, हळदर, दारूहळदर, गळो, इंद्रवारणी, पीपळ, कठ, सर्षप अने सूंठ एओने समभागे लई तेओनो कल्क करी ते कल्क नाखी सुरसादि गणना क्राथमां तैल पकावीने ते तैलनो पीवामां, अभ्यंगमां, कोगळामां, नस्यमां अने बस्तिमां उपयोग करवामां आवे तो ते तैल कफे करेला स्थूलता, आलस्य तथा खरज इत्यादि रोगोने नष्ट करे छे.

काळीपाड, अजमा, पीलूडी, पीपळ, गजपीपळ, सूंठ, नसोतर, अगरू, दारुहळदर, भारंगी, चवक, देवदार, मरी, एळची, गळो, कडु, कचूरो, पीपलीमूळ अने कायफळ एओनो कल्क नाखी वल्लीपंचमूल तथा कंटकपंचमूल ए बे गणोना क्राथमां तलनुं तैल अथवा एरडीयुं तैल पकावीने तेनो अनुवासन बस्तिओमां उपयोग करवामां आवे तो तेथी कफे करेला सघळा रोगो नष्ट थई जाय छे.

वावडींग, वाळो, सैंधव, कचूरो, कुलिंजन, चित्रक, कायफळ, अतवस, भारंगी, वज, कठ, देवदार, मेदा, मीढोळ, जेठीमध, वरधारो, नेतर, सूंठ, बीली, अजमा, शतावरी, गळी, रास्ना, केळ, अरडूसी, खडसलीयो, पीपळ, नेपाळो, चवक अने गरमाळो एओनो कल्क नाखी मुष्ककादि गणना क्राथमां तलनुं तैल अथवा एरडीयुं तैल पकावीने ते तैलनो अनुवासन बस्तिमां उपयोग करवामां आवे तो ते तैल बरलना दरदने, उदावर्त्तने, वातरक्तने, गुल्मने, मलमूत्रनी अटकायतने, कफसंबंधी रोगोने, प्रमेहोने, शर्कराने अने अरशोने तुरत नष्ट करे छे.

६ अशुद्धमपि वातेन केवलेनातिपीडितम् ॥
अहोरात्रस्य कालेषु सर्वेष्वेवानुवासयेत् ।
रूक्षस्य बहुवातस्य द्वौ त्रीनप्यनुवासनम् ॥
दत्वा स्निग्धतनुं ज्ञात्वा ततः पश्चान्निरूहयेत् ।
अस्निग्धमपि वातेन केवलेनातिपीडितम् ॥

स्नेहप्रगाढैर्मतिमान्निरूहैः समुपाचरेत् ।
अथ सम्यग्निरूढं तु वातादिष्वनुवासयेत् ॥
बिल्वयष्ट्याह्वमदनफलतैलैर्यथाक्रमम् ।

अशुद्ध तथा अस्निग्ध माणसने पण रोगनी स्थिति उपरथी बस्तिओ देवानी अभ्यनुज्ञा.

६ अशुद्ध माणस पण जो धातुओना क्षयथी उत्पन्न थएला वायुथी अत्यंत पीडाएलो होय तो तेने अहोरात्रना सघळा समयोमां अनुवासनबस्ति देवी. रूक्ष माणस पण जो घणा वायुवाळो होय तो तेने बे त्रण अनुवासनबस्तिओ आपी स्निग्ध थएलो जाणीने पछी निरूहबस्ति देवी. अस्निग्ध माणस पण धातुओना क्षयथी उत्पन्न थएला वायुथी अत्यंत पीडाएलो होय तो तेने बुद्धिमान् वैद्ये घणा स्नेहवाळी निरूहबस्तिओ देवी. पछी निरूहबस्तिनो सम्यग्योग थएलो जाणवामां आवे त्यारे वायुने टाळवा माटे बीलांना तैलथी, पित्तने टाळवा माटे जेठीमधना तैलथी अने कफने टाळवा माटे मींढोळना तैलथी अनुवासनबस्ति देवी.

७ रात्रौ बस्तिं न दद्यात्तु दोषोत्क्लेशो हि रात्रिजः ।
स्नेहो वीर्ययुतः कुर्यादाध्मानं गौरवं ज्वरम् ।
अह्नि स्थानस्थिते दोषे वह्नौ चान्नरसान्विते ।
स्फुटस्रोतोमुखे देहे स्नेहौजः परिसर्पति ॥
पित्तेऽधिके कफे क्षीणे रूक्षे वातरुगर्दिते ।
नरे रात्रौ च दातव्यं काले चोष्णेऽनुवासनम्॥
उष्णे पित्ताधिके वापि दिवा दाहादयो गदाः ।
सम्भवन्ति यतस्तस्मात्प्रदोषे योजयेद्भिषक् ॥
शीते वसन्ते च दिवा ग्रीष्मे प्रावृड्घनात्यये ।
स्नेहो दिनान्ते पानोक्तान्दोषान्परिजिहीर्षता ॥
अहोरात्रेषु कालेषु सर्वेष्वेवानिलाधिकम् ।
तीव्रायां रुजि जीर्णान्नं भोजयित्वानुवासयेत् ॥

अनुवासन बस्ति देवाना मुख्य समयो.

७ राते अनुवासनबस्ति देवी नहीं. कारण के राते दोषोनो उत्क्लेश थाय छे तेथी ते समये आपवामां आवेलो प्रभाववाळो स्नेह आफराने, शरीरना भारेपणाने तथा ज्वरने उत्पन्न करे छे. दिवसे दोष पोताना ठेकाणापर रहेलो होय छे, जठराग्नि अन्नना रसथी संयुक्त होय छे अने शरीरमां सघळां स्रोतोनां मुखो खुल्लां होय छे तेथी स्नेहनो प्रभाव शरीरमां चोतरफ फेलाय छे माटे दिवसे अनुवासन बस्ति देवी. परंतु पित्तनुं आधिक्य होय, कफ क्षीण होय, शरीर रूक्ष होय, वायुसंबंधी रोगनी पीडा होय अथवा उष्णकाळ होय तो प्रदोषकाळमां अनुवासनबस्ति देवी. उष्णकाल होय अथवा पित्तनुं आधिक्य होय तो दिवसे अनुवासन बस्ति देवाथी दाह वगेरे रोगो उत्पन्न थाय छे एटला माटे वैद्ये प्रदोषकाळमां अनुवासन बस्तिनी योजना करवी. शीतकाळ तथा वसंत एओमां दिवसे अनुवासन बस्ति देवी. अने ग्रीष्म, वर्षा तथा शरद् एओमां प्रदोषकाळे (रातना पेहेला पोहोरमां) अनुवासन बस्ति देवी के जेथी तरश, मूर्छा, उन्माद, भारेपणुं, अरुचि के शूल ए कशुं उत्पन्न न थाय. वायुनी अधिकता होय अने वेदना तीव्र होय तो अहोरात्रना सघळा समयोमां, जेने अन्न पची गयुं होय एवा रोगीने जमाडीने अनुवासनबस्ति देवी.

८ न वाऽभुक्तवतः स्नेहः प्रणिधेयः कथञ्चन ।
शुद्धत्वाच्छून्यकोष्ठस्य स्नेह ऊर्ध्वमथोत्पतेत् ॥
सदानुवासयेच्चापि भोजयित्वार्द्रपाणिनम् ।
ज्वरं विदग्धभुक्तस्य कुर्यात्स्नेहः प्रयोजितः ॥
न चातिस्निग्धमशनं भोजयित्वानुवासयेत् ।
मदं मूर्छां च जनयेद्द्विधा स्नेहः प्रयोजितः ॥
रूक्षं भुक्तवतो ह्यन्नं बलं वर्णं च ह्रापयेत् ।
युक्तस्नेहमतो जन्तुं भोजयित्वानुवासयेत् ॥
यूषक्षीररसैस्तस्माद्यथा व्याधिमवेक्ष्य वा ।
यथोचितात्पादहीनं भोजयित्वानुवासयेत् ॥

अनुवासन बस्ति देवाथी पेहेलां भोजन कराववानी जरूर अने केवुं भोजन कराववुं ते.

८ आतुरने जमाड्या वगर कदी पण अनुवा-

सनबस्ति देवी नहीं. केम के शुद्ध थएलो आतुर शून्य कोठावाळो होय तो तेना शरीरमां दाखल करेलो स्नेह ऊंचो चडी जाय छे. जमाड्या पछी तेना हाथ भीना होय ते समये एटले तुरतज अनुवासनबस्ति देवी.• केमके जेना उदरमां खाधेलुं अन्न पाकवा लागेलुं होय ते माणसने आपवामां आवेलो स्नेह ज्वरने उत्पन्न करे छे. अत्यंत स्निग्ध भोजन करावीने पण अनुवासनबस्ति देवी नहीं अने रूक्ष भोजन करावीने पण अनुवासनबस्ति देवी नहीं. केम के एक वार भोजनमां अने बीजी वार बस्तिमां देवामां आवेलो अर्थात् बेवडो थएलो स्नेह मदने तथा मूर्छाने उत्पन्न करे छे अने जेणे रूक्ष अन्ननुं भोजन कर्युं होय तेने आपवामां आवेलो अनुवासन बस्तिरूप स्नेह बळनी तथा वर्णनी हानि करे छे. आ प्रमाणे छे एटला माटे आतुरने यथोचित स्नेहवाळुं अन्न जमाडीने अनुवासनबस्ति देवी. कफ होय तो मगना रूक्ष यूषनी साथे, पित्त होय तो गायना दूधनी साथे अने वायु होय तो मांसना रसानी साथे भोजन करावीने अनुवासनबस्ति देवी अथवा व्याधिनुं बळ जोई तेमां घटतुं भोजन करावीने अनुवासन बस्ति देवी पण ते भोजन एटली मात्राथी करावव्रुं के जे मात्रा हमेशना माह्यवरा करतां एक भागथी, बे भागथी के त्रण भागथी न्यून होय.

९ अथानुवास्यं स्वभ्यक्तमुष्णाम्बुस्वेदितं शनैः।
भोजयित्वा यथाशास्त्रं कृतचङ्क्रमणं ततः ॥
विसर्ज्य च शकृन्मूत्रं योजयेत्स्नेहबस्तिना ।
प्रणिधानविधानं तु निरूहे च प्रवक्ष्यते ॥
ततः प्रणिहिते स्नेह उत्तानो वाक्छतं भवेत् ।
प्रसारितैः सर्वगात्रैस्तथा वीर्यं विसर्पति ॥
ताडयेत्तलयोरेनं त्रींस्त्रीन्वाराञ्छनैः शनैः ।
स्फिजोश्चैनं ततः शय्यां त्रीन्वारानुत्क्षिपेत्ततः॥
एवं प्रणिहिते बस्तौ मन्दायासोऽथ मन्दवाक्
स्वास्तीर्णे शयने काममासीताचारिके रतः ॥

अनुवासनबस्तिनुं पूर्वकर्म तथा उत्तरकर्मसहित विधान.

९ जेने अनुवासनबस्ति देवानो होय तेने अभ्यंग करी ऊना जळथी धीरे धीरे नवरावी, शास्त्रमां कह्याप्रमाणे जमाडी, टेलावी, झाडे फरावी, मूतरावी अने पवन छोडावीने अनुवासनबस्ति देवी. अनुवासन बस्तिनी नळी आतुरनी गुदामां दाखल करवानुं विधान आ अध्याय पछीना निरूहक्रमचिकित्सित नामना अध्यायना बीजा विषयमां जे विधान केहेवामां आवशे ते प्रमाणेज करवुं. अनुवासनबस्ति देवाया पछी रोगीए सो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थाय तेटला कालसूधी सघळां गात्रो लांबां करीने चत्तुं सूवुं -के जेथी स्नेहनो प्रभाव सघळा शरीरमां पसरी जाय. पछी वैद्ये आतुरना बन्ने हाथनां तथा पगनां तळांओमां धीरे धीरे त्रण त्रण वार पोताना हाथनां तळां ठोकवां अने रोगीना कूलाओ उपर पण त्रण त्रण वार ठोकवां[१]. पछी रोगीनी शय्याने त्रण वार उचकाववी. आ प्रमाणे विधान थया पछी आतुरे परिश्रम नहीं करतां तथा झाझुं भाषण पण नहीं करतां सारी रीते बीछावेला शयनमां पोतानी इच्छाप्रमाणे सूवुं अने क्रोधादिकनो त्याग करवो.

१० स तु सैन्धवचूर्णेन शताह्वेन च योजितः ।
देयः सुखोष्णश्च तथा निरेति सहसा सुखम् ॥

अनुवासनबस्तिना स्नेहमां सैंधवादिकनी योजना.

१० अनुवासनबस्तिमां जे पकस्नेह देवानो होय तेमां सैंधवना अने सुवाना चूर्णनी योजना करी ते स्नेहने जरा गरम करीने देवो. आम करवाथी ए स्नेह जरा पण पीडा नहीं करतां तुरत पाछो नीकळे छे.

११ यस्यानुवासनो दत्तः सकृदन्वक्षमाव्रजेत् ।
अत्यौष्ण्याद्तितैक्ष्ण्याद्वा वायुना वा प्रपीडितः

---

१ रोगीनी कोणीओने तथा गोठणोने पण त्रण त्रण वार पछाडवां एवो वृद्ध वैद्योनो संप्रदाय छे.

सवातोऽधिकमात्रो वा गुरुत्वाद्वा सभेषजः ।
तस्यान्योऽल्पतरो देयो नहि स्निह्यत्यतिष्ठति ॥

स्नेह वायुसहित झाझो के औषधसहित एकदम पाछो नीकळे तो बीजी वार थोडीक अनुवासनबस्ति देवी.

११ जे रोगीने देवामां आवेलो स्नेह अत्यंत उष्णपणाने लीधे, अत्यंत तीक्ष्णपणाने लीधे के वायुना दबाणने लीधे केवळ वायुसहित के झाझो एकदम पाछो नीकळे अथवा भारेपणाने लीधे सैंधवादिक औषधसहित एकदम पाछो नीकळे ते रोगीने बीजी अत्यंत थोडी अनुवासनबस्ति देवी. केम के स्नेह अंदर न रहे तो रोगी स्निग्ध थतो नथी.

१२ विष्टब्धानिलविण्मूत्रस्नेहो हीनोऽनुवासनः
दाहक्लमप्रवाहार्त्तिकरश्चात्यनुवासनः ॥

अनुवासनबस्तिना हीनयोगनां तथा अतियोगनां लक्षणो.

१२ अधोवायु, विष्टा, मूत्र अने स्नेह एओनी अटकायत थई जाय तो जाणवुं के अनुवासनबस्तिनो **हीनयोग** थयो छे. जो दाह, क्लम, (शारीरस्थानना चोथा अध्यायनो २३ मो विषय जुवो.) प्रवाहिका अने पीडा थाय तो जाणवुं के अनुवासनबस्तिनो **अतियोग** थयो छे.

१३ सानिलः सपुरीषश्च स्नेहः प्रत्येति यस्य तु ।
औषचोषौ विना शीघ्रं स सम्यगनुवासितः ॥

अनुवासनबस्तिना सम्यग्योगनुं लक्षण.

१३ जो बळतराने के चोसने उत्पन्न नहीं करतां स्नेह अंदर रही अधोवायुनी साथे अने विष्टानी साथे तुरत पाछो नीकळे तो जाणवुं के अनुवासनबस्तिनो सम्यग्योग थयो छे.

१४ जीर्णान्नमथ सायाह्ने स्नेहे प्रत्यागते पुनः ।
लघ्वन्नं भोजयेत्कामं दीप्ताग्निस्तु नरो यदि ॥
प्रातरुष्णोदकं देयं धान्यनागरसाधितम् ।
तेनास्य दीप्यते वह्निर्भक्ताकाङ्क्षा च जायते ।

स्नेह पाछो नीकळया पछी करवाना उपचारो.

१४ स्नेह गुदामांथी पाछो नीकळया पछी अने खाधेलुं अन्न पची गया पछी जो आतुर प्रदीप्त अग्निवाळो होय तो तेने सायंकाळे हलकुं अन्न तेनी इच्छाप्रमाणे जमवा आपवुं. ए माणस मंद अग्निवाळो होय तो तेने प्रभाते धाणाथी तथा सूंठथी पकावेलुं ऊनुं पाणी देवुं. आम करवाथी तेनो अग्नि प्रदीप्त थाय छे अने जमवानी इच्छा थाय छे.

१५ स्नेहबस्तिक्रमेष्वेवं विधिमाहुर्मनीषिणः ।
अनेन विधिना षड् वा सप्त वाष्टौ नवैव वा ॥
विधेया बस्तयस्तेषामन्तरा तु निरूहणम् ।
दत्तस्तु प्रथमो बस्तिः स्नेहयेद्बस्तिवङ्क्षणौ ॥
सम्यग्दत्तो द्वितीयस्तु मूर्द्धस्थमनिलं जयेत् ।
जनयेद्बलवर्णौ च तृतीयस्तु प्रयोजितः ॥
रसं चतुर्थो रक्तं तु पञ्चमः स्नेहयेत्तथा ।
षष्ठस्तु स्नेहयेन्मांसं मेदः सप्तम एव च ॥
अष्टमो नवमश्चास्थि मज्जानं च यथाक्रमम् ।
एवं शुक्रगतान्दोषान्द्विगुणः साधु साधयेत् ॥
अष्टादशाष्टादशकान्बस्तीनां यो निषेवते ।
यथोक्तेन विधानेन परिहारक्रमेण तु ॥
स कुंजरबलोऽश्वस्य जवैस्तुल्योऽमरप्रभः ।
वीतपाप्मा श्रुतिधरः सहस्रायुर्नरो भवेत् ॥

अनुवासनबस्तिओ अनेकवार देवाथी लाभो.

१६ आ अनुवासनबस्तिना क्रमोमां उपर प्रमाणे विद्वान् वैद्योए जे विधि कह्यो छे ते विधिप्रमाणे छ, सात, आठ अथवा नव बस्तिओ देवी पण ते अनुवासनबस्तिओ नित्य नहीं आपतां वचमां वचमां निरूहबस्ति देवी. पेहेली वारनी अनुवासनबस्तिथी मूत्राशय तथा साथळोनां मूळो स्निग्ध थाय छे. बीजी वारनी अनुवासनबस्तिथी मस्तकमां रहेलो वायु शांत थई जाय छे. त्रीजी वा-

रनी अनुवासनबस्तिथी बळ अने वर्ण उत्तम प्राप्त थाय छे. चोथी वारनी अनुवासनबस्तिथी रस स्निग्ध थाय छे. पांचमी वारनी अनुवासनबस्तिथी रुधिर स्निग्ध थाय छे. छठ्ठी वारनी अनुवासनबस्तिथी मांस स्निग्ध थाय छे. सातमी वारनी अनुवासनबस्तिथी मेद स्निग्ध थाय छे. आठमी वारनी अनुवासनबस्तिथी अस्थि स्निग्ध थाय छे अने नवमी वारनी अनुवासनबस्तिथी मज्जा स्निग्ध थाय छे. आ प्रमाणे अढार अनुवासनबस्तिओ लेवामां आवे तो तेथी वीर्यमां रहेला दोषो पण सारी पेठे नष्ट थई जाय छे. जे पुरुष उपर कहेला विधान प्रमाणे योग्य नियमो पाळीने त्रणसो चोवीश बस्तिओनुं सेवन करे ते माणस हाथीना जेवा बळवाळो, घोडाना जेवा वेगवाळो, देवना जेवी कांतिवाळो, निष्पाप, ग्रंथादिकने एक वार सांभळवाथीज मनमां धरी शके एवो अने हजार वर्षनां आयुष्यवाळो थाय छे.

१६ स्नेहबस्तिं निरूहं वा नैकमेवातिशीलयेत् ।
स्नेहादग्निवधोत्क्लेशौ निरूहात्पवनाद्भयम् ॥
तस्मान्निरूढोऽनुवास्यो निरूह्यश्चानुवासितः ।
नैव पित्तकफोत्क्लेशौ स्यातां न पवनाद्भयम् ॥
रूक्षाय बहुवाताय स्नेहबस्तिं दिने दिने ।
दद्याद्वैद्यस्ततोऽन्येषामग्न्याबाधभयात्त्र्यहात् ॥
स्नेहोऽल्पमात्रो रूक्षाणां सर्वकालमनत्ययः ।
तथा निरूहः स्निग्धानां स्वल्पमात्रः प्रशस्यते ॥

एकली अनुवासनबस्तिनुंज तथा एकली निरूहबस्तिनुंज सेवन करवानो निषेध तथा विधि.

१६ एकली अनुवासनबस्तिनुंज के एकली निरूहबस्तिनुंज अतिसेवन करवुं नहीं. एकली अनुवासनबस्तिनुंज अतिसेवन करवाथी अग्निनो नाश थाय छे तथा दोषनो उत्क्लेश थाय छे अने एकली निरूहबस्तिनुंज अतिसेवन करवाथी वायुनो भय थाय छे. आ कारणने लीधे निरूहबस्ति दीधा पछी अनुवासनबस्ति देवी अने अनुवासनबस्ति दीधा पछी निरूहबस्ति देवी. आम करवाथी पित्तनो तथा कफनो उत्क्लेश थतो नथी अने वायुनो प्रकोप पण थतो नथी. जे माणस रूक्ष अने घणा वायुवाळो होय तेने वैद्ये दिवसे दिवसे अनुवासनबस्ति देवी अने ते शिवाय बीजां माणसोने अग्निनी मंदता थई जवाना भयने लीधे त्रण त्रण दिवसे अनुवासनबस्ति देवी. रूक्ष माणसोने सर्वदा थोडी मात्रावाळा स्नेहनी अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो कशी हरकत नहीं करतां गुणकारी थाय छे अने स्निग्ध माणसोने सर्वदा अल्प मात्रावाळी निरूहबस्ति देवामां आवे तो कशी हरकत नहीं करतां गुणकारी थाय छे.

१७ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि व्यापदः स्नेहबस्तिजाः
बलवन्तो यदा दोषाः कोष्ठे स्युरनिलादयः ॥
अल्पवीर्यं तदा स्नेहमभिभूय पृथग्विधान् ।
कुर्वन्त्युपद्रवान्स्नेहः स चापि न निवर्त्तते ॥
तत्र वाताभिभूते तु स्नेहे मुखकषायता ।
जृम्भा वातरुजस्तास्ता वेपथुर्विषमज्वरः ॥
पित्ताभिभूते स्नेहे तु मुखस्य कटुता भवेत् ।
दाहस्तृष्णा ज्वरः स्वेदो नेत्रमूत्राङ्गपीतता ॥
श्लेष्माभिभूते स्नेहे तु प्रसेको मधुरास्यता ।
गौरवं छर्दिरुच्छ्वासः कृच्छ्रः शीतज्वरोऽरुचिः॥
तत्र दोषाभिभूते तु स्नेहे बस्तिं निधापयेत् ।
यथास्वं दोषशमनान्युपयोज्यानि यानि च ॥
अत्याशितेऽन्नाभिभवात्स्नेहो नैति यदा तदा ।
गुरुरामाशयः शूलं वायोश्चाप्रतिसञ्चरः ।
हृत्पीडा मुखवैरस्यं श्वासो मूर्छा भ्रमोऽरुचिः।
तत्रापतर्पणस्यान्ते दीपनो विधिरिष्यते ॥
अशुद्धस्य मलोन्मिश्रः स्नेहो नैति यदा पुनः ।
तदाङ्गसदनाध्माने श्वासः शूलं च जायते ॥
पक्वाशयगुरुत्वं च तत्र दद्यान्निरूहणम् ।
अतितीक्ष्णौषधैरेवं सिद्धं चाप्यनुवासनम् ।
शुद्धस्य दूरानुसृते स्नेहे स्नेहस्य दर्शनम् ।
गात्रेषु सर्वेन्द्रियाणामुपलेपोऽवसादनम् ॥

स्नेहगन्धि मुखं तत्र कासश्वासावरोचकः ।
अतिपीडितवत्तत्रं विधिरास्थापनं तथा ॥
अस्विन्नस्याविशुद्धस्य स्नेहोऽल्पः सम्प्रयोजितः
शीतो मृदुश्च नाभ्येति ततो मन्दं प्रवाहयेत् ।
विबन्धगौरवाध्मानशूलाः पक्वाशयं प्रति ॥
तत्रास्थापनमेवाशु प्रयोज्यं सानुवासनम् ।
अल्पं भुक्तवतोऽल्पो हि स्नेहो मन्दगुणस्तथा ॥
दत्तो नैति क्रमोत्क्लेशौ भृशं वाऽरतिमावहेत् ।
तत्रैवास्थापनं कार्यं शोधनीयेन बस्तिना ॥
अन्वासनं च स्नेहेन शोधनीयेन शस्यते ।
अहोरात्रादपि स्नेहः प्रत्यागच्छन्न दुष्यति ॥
कुर्याद्बस्तिगुणांश्चापि जीर्णस्त्वल्पगुणो भवेत् ।
यस्य नोपद्रवं कुर्यात्स्नेहबस्तिरनिःसृतः ॥
सर्वोऽल्पो वाऽऽवृतो रौक्ष्यादुपेक्ष्यः स विजानता
अनायान्तं त्वहोरात्रात्स्नेहं संशोधनैर्जयेत् ॥
स्नेहबस्तावनायाते नान्यः स्नेहो विधीयते ।
इत्युक्ता व्यापदः सर्वाः सलक्षणचिकित्सिताः ॥

स्नेहबस्तिनी (अनुवासनबस्तिनी) आठ व्यापत्तिओनां लक्षणो तथा चिकित्साओ.

१७ हवे स्नेहबस्तिथी उत्पन्न थती व्यापत्तिओनां लक्षणो तथा चिकित्साओ कहुं छुं. ज्यारे वायु आदि दोषो कोठामां बळवान् होय त्यारे ते दोषो अल्प शक्तिवाळा स्नेहनो पराभव करी नाखीने जूदा जूदा प्रकारना उपद्रवोने उत्पन्न करे छे अने ते स्नेह गुदामांथी पाछो नीकळतो नथी.

जो स्नेह **वायुथी पराभव पाम्यो होय** तो मोहोडुं तूरूं थई जाय छे, बगासां आव्या करे छे, अनेक प्रकारनी वायुसंबंधी वेदनाओ थाय छे, कंप थाय छे अने विषमज्वर प्राप्त थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो वातहर द्रव्योना तथा संशोधन द्रव्योना क्वाथादिकनी निरूहबस्ति देवी अने जे जे चिकित्साओ वायुने शांत करनारी छे तेओनी योग्य योजना करवी.

जो स्नेह **पित्तथी पराभव पाम्यो होय** तो मोहोडुं तीखुं थई जाय छे, दाह थाय छे, तरश लाग्या करे छे, ज्वर आवे छे, पसीनो आव्या करे छे अने नेत्रो, मूत्र तथा अंगो पीळां थई जाय छे. आ प्रमाणे थएल' होय तो पित्तहर द्रव्योना तथा संशोधन द्रव्योना क्वाथादिकनी निरूहबस्ति देवी अने जे जे चिकित्साओ पित्तने शांत करनारी छे तेओनी योग्य योजना करवी.

जो स्नेह **कफथी पराभव पाम्यो होय** तो मोहोडामांथी कफनो स्राव थाय छे, मोहोडुं मधुर थई जाय छे, शरीरमां भारेपणुं थाय छे, उलटी थाय छे, श्वास ऊंचो चाले छे, शीतज्वर आवे छे अने अरुचि उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो कफहर द्रव्योना तथा संशोधन द्रव्योना क्वाथादिकनी निरूहबस्ति देवी अने जे जे चिकित्साओ कफने शांत करनारी छे तेओनी योग्य योजना करवी.

ज्यारे स्नेह **अत्यंत जमवामां आवेला अन्नथी पराभव पामवाने लीधे पाछो आवे नहीं** त्यारे आमाशय भारे थई जाय छे, शूळ नीकळे छे, कोठामां वायुनो संचार थतो नथी, हृदयमां पीडा थाय छे, मोहोडुं विरस थई जाय छे, श्वास थाय छे, मूर्छा आवे छे, भ्रम थाय छे अने अरुचि थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो लंघन कराववुं अने लंघनने अंते दीपन (अग्निने दीप्त करनारी) चिकित्सा करवी.

ज्यारे अशुद्ध माणसने स्नेह **मळनी साथे मिश्रित थई जवाने लीधे पाछो आवे नहीं** त्यारे अंगोमां ग्लानि थाय छे, पेट चडी आवे छे, श्वास थाय छे, शूळ नीकळे छे अने पक्वाशय भारे थई जाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो अत्यंत तीक्ष्ण औषधोना क्वाथादिकनी निरूहबस्ति देवी अने अत्यंत तीक्ष्ण औषधोथी पकावेला स्नेहनी अनुवासनबस्ति पण देवी.

शुद्ध थएला माणसने आपवामां आवेलो स्नेह

अत्यंत दूर सुधी पेसी जाय तो सर्व गात्रोमां स्नेह नजरे पडे छे, सघळी इंद्रियोमां उपलेप (मळनी वृद्धि) थाय छे, ग्लानि थाय छे, मोहोडुं स्नेहना गंधवाळुं थई जाय छे अने खांसी, श्वास तथा अरोचक थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो अतिपीडितनी चिकित्साओमांथी योग्य चिकित्सा करवी (गया अध्यायनो ९ मो विषय जुवो) अने निरूहबस्ति देवी.

जेने स्वेदन संस्कार न अपायो होय एवा अशुद्ध माणसने आपवामां आवेलो अल्प, शीतल के कोमळ स्नेह पाछो आवतो नथी अने एम थवाथी ए माणस खरचूने माटे थोडुंथोडुं जोर कऱ्या करे छे अने तेना पक्वाशयमां मलबंध, भारेपणुं, आफरो तथा शूळ उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो तुरत निरूहबस्ति देवी अने अनुवासनबस्ति पण देवी.

अत्यंत थोडुं जमेला माणसने अल्प के मंदगुणवाळो स्नेह आपवामां आव्यो होय तो ते स्नेह पाछो नहीं आवतां क्लमने तथा उत्क्लेशने उत्पन्न करे छे अथवा अत्यंत अरतिने[1] उत्पन्न करे छे. आ प्रमाणे थएल होय तो शोधनीय निरूहबस्ति देवी अने शोधनीय स्नेहथीज अनुवासनबस्ति देवी.

अनुवासनबस्तिथी आपवामां आवेलो स्नेह एक अहोरात्र सूधीमां पण पाछो आवे तो ते स्नेह व्यापत्तिने उत्पन्न करतो नथी पण बस्तिथी थता लाभो आपे छे अने जो अल्पगुणवाळो होय तो जठराग्निमां होमाईज जाय छे. जेने अनुवासन बस्तिथी आपवामां आवेलो स्नेह शरीरना रूक्षपणाने लीधे घेराई जईने एक अहोरात्र सूधीमां कशो उपद्रव नहीं करतां सघळो के थोडोक पाछो नीकळे नहीं तेनी प्रवीण वैद्ये उपेक्षाज करवी. परंतु एक अहोरात्र वीती गया पछी पण पाछो न नीकळे अने उपद्रव करे तो तेने संशोधन करनारी निरूहबस्तिओथीज पाछो काहाडवो पण तेने काहाडवा माटे फरीवार अनुवासनबस्ति देवी नहीं.

स्नेहबस्तिनी सघळी व्यापत्तिओनुं लक्षणोसहित अने चिकित्साओसहित आ निरूपण संपूर्ण थयुं.

१८ बस्तेरुत्तरसंज्ञस्य विधिं वक्ष्याम्यतः परम्।
चतुर्दशाङ्गुलं नेत्रमातुराङ्गुलसंमितम्
मालतीपुष्पवृन्ताग्रं छिद्रं सर्षपनिर्गमम्।
मेढ्रायामसमं केचिदिच्छन्ति खलु तद्विदः॥
स्नेहप्रमाणं परमं कुञ्चश्चात्र प्रकीर्त्तितः।
पञ्चविंशादधो मात्रां विदध्याद् बुद्धिकल्पिताम्
निविष्टकर्णिकं मध्ये नारीणां चतुरङ्गुले॥
मूत्रस्रोतःपरीणाहं मुद्गवाहि दशाङ्गुलम्।
तासामपत्यमार्गे तु निदध्याच्चतुरङ्गुलम्॥
द्व्यङ्गुलं मूत्रमार्गे तु कन्यानां त्वेकमङ्गुलम्।
स्नेहस्य प्रसृतं चात्र स्वाङ्गुलीमूलसंमितम्॥
देयं प्रमाणं परममर्वाग्बुद्धिविकल्पितम्॥

उत्तरबस्ति (लिंगमां के योनिमां आपवानी बस्ति)ना विषयमां नळीनुं तथा स्नेहनुं प्रमाण.

१८ हवे उत्तरबस्तिनो विधि कहुं छुं. उत्तरबस्ति पुरुषने देवी होय तो तेनी नळी आतुरनां चौद आंगळ जेटली लांबी, मालतीना फूलना दींटीयाना जेवा अग्रवाळी अने अंदरथी सर्षप नीकळी जाय एवडा छिद्रवाळी करवी. केटलाएक आचार्यो केहे छे 'लिंगनी लंबाई जेटली लांबी करवी.' ए नळीना मध्यमां डोडी करवी के जेथी छ आंगळथी वधारे अंदर पेसे नहीं. जो स्नैहिक उत्तरबस्ति देवानी होय तो तेमां वधारेमां वधारे चार तोलांभार स्नेहनी मात्रा करवी. पचीश वर्षथी नीचेनी उमरवाळाने माटे बुद्धिथी विचार करीने योग्य मात्रानी कल्पना करवी.

उत्तरबस्ति स्त्रीने देवी होय तो तेनी नळी दश आंगळ लांबी, उपर चार आंगळ जेटला प्रदेशना

१ चिंताथी जे अत्यंत अस्वस्थपणुं थाय ते अरति केहेवाय छे.

मध्यमां राखेली[1] डोडीवाळी, मूत्रना मार्गना जेटली जाडाईवाळी अने अंदरथी मगनो दाणो नीकळी जाय एवडा छिद्रवाळी करवी. स्त्रीओना छोकरूं नीकळवाना मार्गमां नळी नाखवी होय तो चार आंगळ ऊंडी नाखवी अने मूत्रना मार्गमां नाखवी होय तो बे आंगळ ऊंडी नाखवी. कन्याओने उत्तरबस्ति देवी होय तो नळी एक आंगळ ऊंडी नांखवी. जो स्नेहिक उत्तरबस्ति देवानी होय तो वधारेमां वधारे पोतानी आंगळीओनां मूळोने स्नेह अडे एवी एक पसली जेटली स्नेहनी मात्रा करवी. अवस्थादिकना अनुसार प्रमाणे एथी ओछी मात्रा करवी योग्य जणाय तो पछी पोतानी बुद्धिनी कल्पना प्रमाणे करवी.

१९ औरभ्रः शौकरो वापि बस्तिराजश्च पूजितः
तदलाभे प्रयुञ्जीत गलचर्म तु पक्षिणाम् ॥
अस्यालाभे दृतेः पादो मृदु चर्म ततोपि वा ।

उत्तरबस्तिना मूत्राशयनी कोथळी.

१९ उत्तरबस्तिमां मूत्राशय घेंटानो, सूवरनो के बकरानो होय तो ते उत्तम गणाय छे. मूत्राशय न मळे तो तेने बदले पक्षीओना गळाना चामडानी योजना करवी. ए पण न मळे तो पछी पखालना भागनी के तेथी पण कोमल चामडानी योजना करवी.

२० अथातुरमुपस्निग्धं सुस्विन्नं प्रथिताशयम् ॥
यवागूं सघृतक्षीरां पीतवन्तं यथाबलम् ।
निषण्णमाजानुसमे पीठे स्थानाश्रये समे ॥
स्वभ्यक्तबस्तिमूर्द्धानं तैलेनोष्णेन मानवम् ।
ततः समं स्थापयित्वा नालमस्य प्रहर्षितम् ॥
पूर्वं शलाकयान्विष्य ततो नेत्रमनन्तरम् ।
शनैः शनैर्घृताभ्यक्तं निदध्यादङ्गुलानि षट् ॥
ततोऽवपीडयेद्बस्तिं शनैर्नेत्रं च निर्हरेत्
ततः प्रत्यागतस्नेहमपराह्णे विचक्षणः ॥
भोजयेत्पयसा मात्रां यूषेणाथ रसेन वा ।
अनेन विधिना दद्याद्बस्तींस्त्रींश्चतुरोऽपि वा ॥
ऊर्ध्वजान्वै स्त्रियै दद्यादुत्तानायै विचक्षणः ।
कन्येतरस्यै कन्यायै दद्यात्सुमृदु पीडितम् ॥
त्रिकर्णिकेन नेत्रेण दद्याद्योनिमुखं प्रति ।
गर्भाशयविशुद्ध्यर्थं स्नेहेन द्विगुणेन तु ॥

उत्तरबस्तिनुं पूर्वकर्म तथा उत्तरकर्मसहित विधान.

२० जेने सारी रीते स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपवामां आव्या होय एवा रोगीने तेनुं मन मोटुं रखावी, तेनी शारीरशक्ति प्रमाणे घी तथा दूधसहित यवागू पाई, गोठण जेवडा ऊंचा अने गादी वगेरे आश्रयवाळा सपाट आसनपर बेसाडी तेना उपस्थ उपरनी पाटलीपर गरम तैलनो सारी पेठे अभ्यंग करी, उपस्थ ऊठे त्यारे तेमां प्रथम सळी नाखी, सळीवते मार्गने शुद्ध करीने पछी घीथी खरडेली नळी धीरे धीरे छ आंगळसूधी ऊंडी नाखवी. नळी नाख्या पछी बस्तिने दबाववो अने पछी धीरेकथी नळी काहाडी लेवी. स्नेह पाछो नीकळे ते पछी विचक्षण वैद्ये अपराह्ण समयमां ते रोगीने दोषना अनुसारप्रमाणे दूधथी, यूषथी के मांसना रसाथी योग्य मात्रावाळुं भोजन करावबुं. आवी रीतेज त्रण अथवा चार उत्तर बस्तिओ देवी.

स्त्रीने उत्तरबस्ति देवानी होय तो तेने पण उपर प्रमाणे स्नेहनथी मांडीने भोजनपर्यंत क्रिया करी, गोठण ऊंचा रखावी, चत्ती सुवडावीने योनिमां बस्ति देवी. कन्याने उत्तरबस्ति देवी होय तो बस्तिने बहुज कोमळ रीते दबावीने देवी. उत्तरबस्ति त्रण डोडीवाळी नळीथी योनिना मुखमां देवी. स्त्रीओना गर्भाशयने शुद्ध करवो होय तो छोकरूं आववाना मार्गमां बमणा स्नेहथी बस्ति देवी.

[1] त्रण डोडीओमां बे डोडीओ बस्ति बांधवाना काममां अने एक डोडी नळीना वधारे प्रवेशने रोकवाना काममां उपयोगी थाय छे.

२१ अप्रत्यागच्छति भिषग्बस्तावुत्तरसंज्ञिते ॥
भूयो बस्ति निदध्यात्तु संयुक्तं शोधनैर्गणैः ।
गुदे वर्ति निदध्याद्वा शोधनद्रव्यसंभृताम् ॥
प्रवेशयेद्वा मतिमान्बस्तिद्वारमथैषणीम् ।
पीडयेद्वाप्यधो नाभेर्बलेनोत्तरमुष्टिना ॥
आरग्वधस्य पत्रेषु निर्गुण्ड्याः स्वरसेषु च ।
कुर्याद्गोमूत्रपिष्टेषु वर्त्तीर्वापि ससैन्धवाः ॥
मुद्गैलासर्षपसमाः प्रविभज्य वयांसि तु ।
बस्तेरागमनार्थाय ता निदध्याच्छलाकया ॥
आगारधूमबृहतीपिप्पलीफलसैन्धवैः ।
कृता वा शुक्तगोमूत्रसुरापिष्टैः सनागरैः ॥

उत्तरबस्ति पाछी न आवे तो तेनी चिकित्सा.

२१ आपवामां आवेली उत्तरबस्ति पाछी न नीकळे तो वैद्ये शोधनगणोथी संयुक्त करेली बस्ति फरीवार देवी अथवा शोधन द्रव्योथी संयुक्त करेली सूतरनी वाट गुदामां नाखवी अथवा मूत्राशयना द्वारमां सळी नाखवी अथवा नाभिथी नीचेना भागने उपर मूठीवते जोरथी दबाववो अथवा गरमाळानां पानडांओने नगडना स्वरसमां तथा गोमूत्रमां वाटी सैंधवथी संयुक्त करी तेनी, अवस्थाना अनुसार प्रमाणे मग जेवडी, एळची जेवडी के सर्षप जेवडी गोळीओ बनावी सळीवते ते गोळीओने मूत्रना मार्गमां अंदर नाखवी अथवा घरना धुमाडानी धूंस, भोरींगणी, पीपळ, मीढोळ, सैंधव अने सूंठ एओने शुक्तथी, गोमूत्रथी तथा सुराथी वाटी तेओनी गोळीओ वाळी ते गोळीओने सळीवते अंदर नाखवी के जेथी बस्ति पाछी नीकळशे. (छोकरूं आववाना मार्गमां तो चार आंगळ जाडी वाट नाखवी.)

२२ अनुवासनसिद्धिं च वीक्ष्य कर्म प्रयोजयेत् ।
शर्करामधुमिश्रेण शीतेन मधुकाम्बुना ॥
दह्यमाने तदा बस्तौ दद्याद्बस्तिं विचक्षणः ।
क्षीरवृक्षकषायेण पयसा शीतलेन च ॥

उत्तरबस्तिमां अनुवासनबस्तिनी पेठेज केटलुंक उत्तरकर्म अने दाहनी चिकित्सा.

२२ अनुवासनबस्तिनी सिद्धिने माटे आतुरना कूलापर हाथनां तळांओथी त्रण त्रण वार ताडन करवा वगेरे जे कर्म आ अध्यायना नवमा विषयमां कह्युं छे ते कर्म उत्तरबस्तिनी सिद्धिने माटे पण करवुं.

जो उत्तरबस्ति दीधा पछी दाह थतो होय तो जेठीमधना शीतल स्वरसने साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने तेथी, वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना थंडा क्काथथी अने थंडा दूधथी नैरूहिक उत्तरबस्ति देवी.

२३ शुक्रं दुष्टं शोणितं चाङ्गनानां
पुष्पोद्रेकं तस्य नाशं च कष्टम् ।
मूत्राघातान्मूत्रदोषान्प्रवृद्धा-
न्योनिव्याधिं संस्थितिं चापरायाः ॥
शुक्रोत्सेकं शर्करामश्मरीं च
शूलं बस्तौ वङ्क्षणे मेहने च ।
घोरानन्यान्बस्तिजांश्चापि रोगान्
हित्वा मेहानुत्तरो हन्ति बस्तिः ॥

उत्तरबस्तिना गुणो.

२३ उत्तरबस्ति पुरुषोना दुष्ट थएला वीर्यने, स्त्रीना दुष्ट थएला रजने, रजना वधाराने, रजना कष्टकारी नाशने, मूत्राघातोने, वृद्धि पामेला मूत्रदोषोने, योनिना व्याधिने, ओळ पडवानी अटकायतने, वीर्यना व्याधिने, शर्कराने, पथरीने, मूत्राशयना शूळने, साथळोना शूळने, उपस्थना शूळने अने मूत्राशयमां उत्पन्न थएला बीजा पण भयंकर रोगोने नष्ट करे छे. उत्तरबस्ति प्रमेहवाळाओने माटे हितकारी नथी.

२४ सम्यग्दत्तस्य लिङ्गानि व्यापदः क्रम एव च ।
बस्तेरुत्तरसंज्ञस्य समानं स्नेहबस्तिना ॥

१ सो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थाय तेटला वखत-सूधीमां पाछी न नीकळे तो.

उत्तरबस्तिना सम्यग्योगनां लक्षणो, व्यापत्तिओ अने ते व्यापत्तिओनी चिकित्सा.

२४ उत्तरबस्तिनो सम्यग्योग थयानां लक्षणो अनुवासनबस्तिनो सम्यग्योग थयानां लक्षणो प्रमाणेज समजी लेवां. (आ अध्यायनो १३ मो विषय जुवो.) उत्तरबस्तिनी व्यापत्तिओ पण अनुवासनबस्तिनी व्यापत्तिओ जेवीज थाय छे माटे तेओनी चिकित्साओ पण अनुवासनबस्तिनी व्यापत्तिओनी चिकित्साओ प्रमाणेज करवी. (आ अध्यायनो १७ मो विषय जुवो.)

अध्याय ३८ मो.

१ अथातो निरूहक्रमचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'निरूहक्रमचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अथानुवासितमास्थापयेत्स्वभ्यक्तस्विन्नशरीरमुत्सृष्टबहिर्वेगमप्रवाते शुचौ वेश्मनि मध्याह्ने प्रततायां शय्यायामधः सुपरिग्रहायां श्रोणिप्रदेशव्यूढायामनुपधानायां वामपार्श्वशायिनमाकुञ्चितदक्षिणसक्थं प्रसारितेतरसक्थं सुमनसं जीर्णान्नं वाग्यतं सुनिषण्णदेहं विदित्वा ततो वामपादस्योपरि नेत्रं कृत्वेतरपादाङ्गुष्ठाङ्गुलिभ्यां कर्णिकामुपरि निष्पीड्य सव्यपाणिकनिष्ठिकानामिकाभ्यां बस्तेर्मुखार्द्धं सङ्कोच्य मध्यमाप्रदेशिन्यङ्गुष्ठैरर्द्धं तु विवृतास्यं कृत्वा बस्तावौषधं प्रक्षिप्य दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठप्रदेशिनीभ्यां चानुसिक्तमनायतमबुद्बुदमसंकुचितमवातमौषधासन्नमुपसंगृह्य पुनरितरेण गृहीत्वा दक्षिणेनावसिञ्चेत्ततः सूत्रेणैवौषधान्ते द्विस्त्रिर्वावेष्ट्य बध्नीयात्। अथ दक्षिणेनोत्तानेन पाणिना बस्तिं गृहीत्वा वामहस्तमध्यमाङ्गुलिप्रदेशिनीभ्यां नेत्रमुपसंगृह्याङ्गुष्ठेन नेत्रद्वारं पिधाय घृताभ्यक्ताग्रनेत्रं घृताक्तगुदाय प्रयच्छेदनुपृष्ठवंशं सममुन्मुखमाकर्णिकं नेत्रं प्रणिधत्स्वेति ब्रूयात् ।

बस्तिं सव्ये करे कृत्वा दक्षिणेनावपीडयेत् ।
एकेनैवापीडेनेन न द्रुतं न विलम्बितम् ॥

ततो नेत्रमपनीय त्रिंशन्मात्राः पीडनकालादुपेक्ष्योत्तिष्ठेत्यातुरं ब्रूयात् । आतुरमुपवेशयेदुत्कटकं बस्त्यागमनार्थम् । निरूहप्रत्यागमनकालस्तु मुहूर्तो भवति ॥

अनेन विधिना बस्तिं दद्याद्बस्तिविशारदः ।
द्वितीयं वा तृतीयं वा चतुर्थं वा यथार्थतः ॥
सम्यङ्निरूढलिङ्गे तु प्राप्ते बस्तिं निवारयेत् ।

निरूहबस्तिनुं पूर्वकर्म तथा उत्तरकर्मसहित विधान.

२ निरूहबस्ति देवानी होय त्यारे योग्यता जोई प्रथम अनुवासनबस्ति आपी, जेने अन्न पची गयुं होय एवा आतुरने अभ्यंग तथा स्वेदन करी, मलमूत्रादिकनो उत्सर्ग करावी, बहु पवन वगरना स्वच्छ घरमां मध्याह्न समये विस्तीर्ण, नीचेथी सारी रीते उपाडी शकाय एवी, ठांठुं रेहेवाना प्रदेशमां दृढ करीने जमावेली अने ओशीसावगरनी शय्यामां डाबा पडखाभर सुवडावी, जमणो साथळ संकुचित रखावी, डाबो साथळ लांबो करावी, मौन धरावी, तेनुं मन स्वस्थ थएलुं अने शरीर शय्यामां सारी रीते विश्राम पामेलुं जणाय त्यारे वैद्ये बस्तिनी नळीने पोताना डाबा पग उपर मूकी, डोडीने उपरना भागमां जमणा पगना अंगूठाथी तथा आंगळीथी दबावी, डाबा हाथनी कनिष्ठिका अने अनामिका ए बे आंगळीओवते बस्तिना

१ रोगनी निरूहबस्तिनी गोठवणरूप चिकित्सा विषयनो.

पुटनां अरधा मोहोडाने संकुचित करी बाकीना अर्द्ध भागने डाबा हाथनी मध्यमाथी, तर्जनीथी तथा अंगूठाथी खुल्ला मोहोडावाळो राखी, जमणा हाथना अंगूठाथी तथा तर्जनीथी बस्तिमां औषध रेडवुं ते एवी रीते के•जे रीते धार ऊंची न थाय, त्रूटी न जाय, लांबी थई न जाय, संकुचित न थई जाय, परपोटाने के फीणने उत्पन्न न करे अने पवननो संसर्ग पण न पामे. पछी औषधना नजदीकना प्रदेशमां बस्तिना पुटने पकडी, पाछो डाबा हाथथी झाली, बीजी तरफना तेना अर्द्ध भागना मोहोडामां जमणा हाथना अंगूठाथी तथा तर्जनीथी एवी रीते औषध रेडवुं. पछी औषधना अंतप्रदेशमां बस्तिपुटने झीणा दोराना बे के त्रण आंटाथी वींटी लईने तेना छेडाओने डोडीओमां बांधवा. पछी चत्ता राखेला जमणा हाथमां बस्तिपुटनुं ग्रहण करी तेनी नळीने डाबा हाथनी मध्यमाथी तथा तर्जनीथी झाली, नळीना द्वारने अंगूठाथी ढांकी, नळीनी अणीने घी लगावी, रोगीनी गुदाने घीनो अभ्यंग करीने ते नळी रोगीना हाथमां देवी अने केहेवुं के 'तारी पीठने लगता गुदाना प्रदेशमां आ नळीने उपरनी डोडीपर्यंत सीधी तथा सन्मुख पेसाडी दे'. रोगी नळीने गुदामां एप्रमाणे घाली दीये ते पछी वैद्ये बस्तिना पुटने पोताना डाबा हाथमां लई जमणा हाथवते एकज भींसथी एवी रीते दबाववो के जेथी झडप पण न थाय अने विलंब पण न थाय.

पछी रोगीनी गुदामांथी नळीने काहाडी लई दबाववाना समयथी त्रीश मात्रा थतां सूधी खोभरी जईने ते पछी रोगीने 'ऊठ्य' एम केहेवुं अने ते ऊठे एटले बस्तिने पाछो आणवा माटे ते रोगीने उभडक बेसाडवो. निरूहबस्तिने पाछा आववानो समय बे घडीनोज छे.

बस्तिक्रियामां प्रवीणपणुं धरावनारा वैद्ये प्रयोजनने अनुसरीने आ विधिप्रमाणेज बीजी, त्रीजी के चोथी बस्ति पण देवी. ज्यारे निरूहबस्तिनो सम्यग्योग थयानां लक्षणो जोवामां आवे त्यारे बस्ति देवानुं बंध करवुं.

३ अपि हीनक्रमं कुर्यान्न तु कुर्यादतिक्रमम् ॥ विशेषात्सुकुमाराणां हीन एव क्रमो हितः ।

वखतपर बस्तिनो कांइक हीनयोग करवो पण अतियोग तो नज थवा देवो.

३ वैद्ये आतुरनी स्थिति वगेरे जोईने वखतपर बस्तिनो कांईक हीनयोग करवो पण अतियोग तो नज थवा देवो. विशेषे करी सुकुमार लोकोने माटे बस्तिनो कांईक हीनक्रम करवो एज उचित छे.

४ यस्य स्याद्बस्तिरत्यल्पवेगो हीनमलानिलः ॥ दुर्निरूढः स विज्ञेयो मूत्रार्त्यरुचिजाड्यवान् । यान्येव प्राग्भयोक्तानि लिङ्गान्यतिविरेचिते ॥ तान्येवातिनिरूढेऽपि विज्ञेयानि विपश्चिता । यस्य क्रमेण गच्छन्ति विट्पित्तकफवायवः ॥ लाघवं चोपजायेत सुनिरूढं तमादिशेत् ।

बस्तिना हीनयोगनां, अतियोगनां तथा सम्यग्योगनां लक्षणो.

४ जो रोगीने बस्ति अत्यंत थोडा वेगवाळी, ओछा मळवाळी तथा ओछा पवनवाळी बाहार नीकळे अने मूत्रनी पीडा, अरुचि तथा जडता उत्पन्न थाय तो जाणवुं के 'बस्तिनो **हीनयोग** थयो छे.'

आ स्थानना गया ३४ मा अध्यायना नवमा तथा दशमा विषयमां विरेचननो अतियोग थयानां जे लक्षणो कह्यां छे तेज लक्षणो बस्तिना अतियोगथी थाय छे एम विद्वान वैद्ये समजवुं **अर्थात्**

---

१ गोठणने हाथनो आंटो लई एक चपटी वगाडवामां आवे अथवा आंख वींचीने ऊघाडवामां आवे अथवा फक्त चपटीज वगाडवामां आवे, अथवा एक गुरु अक्षरनुं उच्चारण करवामां आवे तेटलो समय **एक** मात्रा केहेवाय छे.

बस्ति दीधा पछीं ए लक्षणो जोवामां आवे तो जाणवुं के 'बस्तिनो **अतियोग** थयो छे.'

रोगीने जो बस्ति पाछी वळतां प्रथम विष्टा, पछी पित्त, पछी कफ अने ते पछी वायु नीकळे अने शरीरमां हलकाई प्राप्त थाय तो जाणवुं के बस्तिनो **सम्यग्योग** थयो छे.

५ सुनिरूढं ततो जन्तुं स्नातवन्तं तु भोजयेत् ॥
पित्तश्लेष्मानिलाविष्टं क्षीरयूषरसैः क्रमात् ।
सर्वं वा जाङ्गलरसैर्भोजयेदविकारिभिः ॥
त्रिभागहीनमर्द्धं वा हीनमात्रमथापि वा ।
यथाग्निदोषं मात्रेयं भोजनस्य विधीयते ॥
अनन्तरं ततो युञ्ज्याद्यथास्वं स्नेहबस्तिना ॥
विविक्तता मनस्तुष्टिः स्निग्धता व्याधिनिग्रहः।
आस्थापनस्नेहबस्त्योः सम्यग्दाने तु लक्षणम्।
तदहस्तस्य पवनाद्भयं बलवदिष्यते ।
रसौदनस्तेन शस्तस्तदहश्चानुवासनम् ।
पश्चादग्निबलं मत्वा पवनस्य च चेष्टितम् ॥
अन्नोपस्तम्भिते कोष्ठे स्नेहबस्तिर्विधीयते ।

बस्तिनो सम्यग्योग थया पछी करवानी क्रिया.

५ निरूहबस्तिनो सम्यग्योग थयो जाणवामां आवे ते पछी रोगीने नवरावीने जमाडवो. रोगी जो पित्तना आधिक्यवाळो होय तो दूधथी, कफना आधिक्यवाळो होय तो यूषथी अने वायुना आधिक्यवाळो होय तो मांसना रसाथी भोजन देवुं. अथवा रोगी गमे ते दोषवाळो होय तो पण तेने विकार न करे एवा जांगल प्राणीओना मांसना रसाथी भोजन देवुं. रोगीना जठराग्निने अने दोषने अनुसरीने भोजननी हमेशना माहावरा करतां चतुर्थांश जेटली, अरधी अथवा कांईक ओछी मात्रा देवी. भोजन कराव्या पछी दोषना अनुसार प्रमाणे अनुवासनबस्ति देवी. रस वगेरे धातुओ तथा सघळां स्रोतो आवरण वगरनां थई जाय, मनमां आनंद उत्पन्न थाय, स्निग्धपणुं थाय अने व्याधिनो निग्रह थाय तो जाणवुं के 'निरूहबस्ति अने अनुवासनबस्ति एओ योग्य रीते अपाएल छे.' जे दिवसे निरूहबस्ति देवामां आवी होय ते दिवसे पवनथी मोटी धास्ती उत्पन्न थवानो संभव छे एटला माटे ते दिवसे तेने मांसना रसावाळो भात जमाडवो अने ते दिवसेज अनुवासनबस्ति देवी. ए अनुवानबस्ति देवी ते अग्निनुं बळ जोई तथा पवननी चेष्टा जोई, कोठाने अन्ननो टेको आपीने ते पछी देवी.

६ अनायान्तं मुहूर्त्तात्तु निरूहं शोधनैर्हरेत् ॥
तीक्ष्णैर्निरूहैर्मतिमान्क्षारमूत्राम्लसंयुतैः ।
विगुणानिलविष्टब्धं चिरं तिष्ठन्निरूहणम् ॥
शूलारतिज्वरानाहं मरणं वा प्रवर्त्तयेत् ।

निरूहबस्ति बे घडी सूधीमां पाछी न आवे तो शुं करवुं?

६ आपेली निरूहबस्ति बे घडी वीती जतां पण पाछी न आवे तो तेनुं बुद्धिमान् वैद्ये क्षार, गोमूत्र तथा खाटी कांजी एओथी संयुक्त करेली तीक्ष्ण शोधन निरूहबस्तिओ आपीने निर्हरण करवुं. केम के दुष्ट थएला वायुए अटकावेलुं निरूहद्रव्य वधारे वखत सूधी अंदर रहे तो शूळने, अरतिने, ज्वरने तथा मलबंधने उत्पन्न करे छे अने वखतपर मरण पण करी दे छे.

७ नतु भुक्तवते देयमास्थापनमिति स्थितिः
विसूचिकां वा जनयेच्छर्दिं वापि सुदारुणाम् ।
कोपयेत्सर्वदोषान्वा तस्माद्द्यादभोजिते ॥
जीर्णान्नस्याशये दोषाः पुंसः प्रव्यक्तिमागताः ॥
निःशेषाः सुखमायान्ति भोजनेनाप्रपीडिताः ॥
न वास्थापनविक्षिप्तमन्नमग्निः प्रधावति ।
तस्मादास्थापनं देयं निराहाराय जानता ॥

जम्या पछी निरूहबस्ति देवी नहीं.

७ जेणे भोजन कर्युं होय एवा माणसने निरूहबस्ति देवी नहीं एवो नियम छे. जम्या पछी निरूहबस्ति देवामां आवे तो विसूचिकाने उत्पन्न करे छे अथवा अतिदारुण उलटीने उत्पन्न करे

छे अथवा सर्व दोषोने प्रकुपित करे छे एटला-माटे भोजनथी पेहेलांज निरूहबस्ति देवी. जेने पूर्व दिवसे खाधेलुं अन्न पची गयुं होय एवा माणसना कोठामां भोजनथी नहीं दबायाने लीधे स्पष्ट थई रेहेला दोषो निरूहबस्तिथी निश्शेष शांत थई जाय छे. जो भोजन कर्या पछी निरूहबस्ति देवामां आवे तो ते बस्तिथी खाधेलुं अन्न आमतेम वीखाई जतां ते अन्नने जठराग्नि पण पोहोंचतो नथी एटला माटे प्रवीण वैद्ये निराहार रहेला रोगीने निरूहबस्ति देवी.

८ आवस्थिकं क्रमं चापि मत्वा कार्यं निरूहणम्।
मलेऽपकृष्टे दोषाणां बलवत्त्वं न विद्यते ॥

वमनविरेचनादिकथी शुद्धि कर्या पछी निरूहबस्ति देवी.

८ रोगनी अवस्थाने अनुसरी शोधन करवानो जे वमनविरेचनादि क्रम छे ते उपर ध्यान आपीने निरूहबस्ति देवी. केम के वमनविरेचनादिकथी मळनुं अपकर्षण करवामां आव्युं होय तो पछी दोषोनुं प्रबलपणुं रेहेतुं नथी एटले निरूहबस्ति सेहेलाईथी काम करी शके छे.

९ क्षीराण्यम्लानि मूत्राणि स्नेहाः क्वाथा रसास्तथा ।
लवणानि फलं क्षौद्रं शताह्वा सर्षपं वचा ॥
एला त्रिकटुकं रास्ना सरलं देवदारु च ।
रजनी मधुकं हिङ्गु कुष्ठं संशोधनानि च ॥
कटुका शर्करा मुस्तमुशीरं चन्दनं शठी ।
मञ्जिष्ठा मदनं चण्डा त्रायमाणा रसाञ्जनम् ॥
बिल्वमध्यं यवानी च फलिनी शक्रजा यवाः ।
काकोली क्षीरकाकोली जीवकर्षभकावुभौ ॥
तथा मेदा महामेदा ऋद्धिर्वृद्धिर्मधूलिका ।
निरूहेषु यथालाभमेष वर्गो विधीयते ॥

निरूहबस्तिनां द्रव्यो.

९ दूधो, कांजी वगेरे अम्ल पदार्थो, मूत्रो, स्नेहो, काथो, रसो, लवणो, त्रिफळा, मध, शतावरी, सर्षप, वज, एळची, सूंठ, मरी, पीपळ, रास्ना, सालेडो, देवदार, हळदर, जेठीमध, हींग, कठ, नसोतर वगेरे संशोधन द्रव्यो, कडु, साकर, चोथ, वाळो, चंदन, कचूरो, मजीठ, मींढोळ, करमाणी, त्रायमाण, रसवंती, बीलांनो गर्भ, यवान, घउलां, इंद्रजव, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि अने सुफेद गरणी ए वर्गमांथी जेटलां द्रव्यो मळे तेओनी निरूहबस्तिओमां दोषोना अनुसारथी गोठवण करवी.

१० स्वस्थे क्वाथस्य चत्वारो भागाः स्नेहस्य पंचमः ।
क्रुद्धेऽनिले चतुर्थस्तु षष्ठः पित्ते कफेऽष्टमः ॥
सर्वेषु चाष्टमो भागः कल्कानां लवणं पुनः ।
क्षौद्रं मूत्रं फलं क्षीरमम्लं मांसरसं तथा ॥
युक्त्या प्रकल्पयेद्धीमान् निरूहे कल्पना त्वियम्।
कल्कस्नेहकषायाणामविवेकाद्भिषग्वरैः ॥
बस्तिस्तु कल्पितः सम्यक्तस्य दानं यथार्थकृत्।
दत्वादौ सैन्धवस्याक्षं मधुनः प्रसृतद्वयम् ॥
पात्रे तलेन मथ्नीयादनुस्नेहं शनैः शनैः ।
सम्यक्सुमथिते दद्यात्फलकल्कमतः परम् ॥
ततोयथोचितान्कल्कान्भागैःस्वैःश्लक्ष्णपेषितान्।
गम्भीरे भाजनेऽन्यस्मिन्मथ्नीयात्तं खजेन च ॥
यथा च साधु मन्येत न सान्द्रो न तनुः समः।
कषायप्रसृतान्पश्च सुपूतांस्तत्र दापयेत् ।
रसक्षीराम्लमूत्राणां दोषावस्थामवेक्ष्य तु ॥

निरूहबस्तिमां द्रव्योनी मात्राओ तथा निरूह बनाववानी रीत.

१० स्वस्थ माणसने निरूहबस्ति देवानी होय तो काथना चार भाग अने स्नेहनो पांचमो भाग नाखवो. वायुना प्रकोप उपर निरूहबस्ति देवी होय तो स्नेहनो चोथो भाग, पित्तना प्रकोप उपर निरूहबस्ति देवी होय तो स्नेहनो छट्ठो भाग अने कफना प्रकोप उपर निरूहबस्ति देवी होय तो

स्नेहनो आठमो भाग नाखवो. सघळा निरूहोमां कल्कनो आठमो भाग जोइए. सैंधव, मध, गोमूत्र, मींढोल, दूध, कांजी वगेरे अम्लद्रव अने मांसनो रसो एओनी पण योग्य गोठवण करवी. (सर्व द्रव्यो एकंदर मळीने बार प्रसृत थाय एम करवुं)

उत्तम वैद्योए निरूह एवो बनाववो के जेमां कल्को, स्नेहो अने क्वाथो जूदां जूदां नहीं रेहेतां एकंदर द्रवरूप थई जाय. आवा द्रवथी गोठवाएली निरूहबस्ति आपवामां आवे तो तेथी धारेलुं काम पार पडे छे. सर्वने नीरक्षीर न्यायथी मिश्रित करी देवानी युक्ति ए छे के प्रथम एक तोलांभार सैंधव तथा बे प्रसृत जेटलुं मध नाखी मथन करी पछी स्नेहनो योग आपी हाथना तळावते धीरे धीरे मथवां. सारी पेठे मथाई जाय त्यारे तेमां मींढोळनो कल्क नाखीने तेनुं मथन करवुं. पछी पोतपोताना भागो प्रमाणे लई बारीक वाटेला बीजा यथोचित कल्को नाखी ते सर्व द्रव्यने बीजा ऊंडा वासणमां नाखीने रवाईवते मथवां ते एवी रीते मथवां के जे रीते ठीक मिश्रण थयुं मनाय अने द्रव घाटो के पातळो नहीं थतां समस्थितिमां रहे. पछी तेमां वस्त्रथी सारी पेठे गाळेलो चाळीश प्रसृत जेटलो क्वाथ नाखवो अने दोषोनी स्थिति जोइने मांसनो रस, दूध, कांजी वगेरे अम्लद्रव अने गोमूत्र एओनी मात्राओ पण नाखवी. (गया ३९ मा अध्यायनो त्रीजो विषय वांचो.)

११ अत ऊर्ध्वं द्वादश प्रसृतान्वक्ष्यामः ॥
दत्वादौ सैन्धवस्याक्षं मधुनः प्रसृतिद्वयम् ।
विनिर्मथ्य ततो दद्यात्स्नेहस्य प्रसृतित्रयम् ॥
एकीभूते ततः स्नेहे कल्कस्य प्रसृतिं क्षिपेत् ।
संमूर्छिते कषायं तु चतुःप्रसृतिसंमितम् ॥
वितरेच्च तदावापमन्ते द्विप्रसृतोन्मितम् ।
एवं प्रकल्पितो बस्तिर्द्वादशप्रसृतो भवेत् ॥
ज्येष्ठायाः खलु मात्रायाः प्रमाणमिदमीरितम् ।
अपह्रासे भिषक्कुर्यात्तद्वत्प्रसृतिहापनम् ॥
यथावयो निरूहाणां कल्पनेयमुदाहृता ।
सैन्धवादिद्रवान्तानां सिद्धिकामैर्भिषग्वरैः ॥

निरूहनी एकंदर बार प्रसृतरूप मोटी मात्रामां स्नेहादिकनी जूदी जूदी मात्राओनी सामान्य गोठवण.

११ हवे बार प्रसृतोनी गोठवण कहीएछीए. प्रथम एक तोलांभार सैंधव तथा बे प्रसृत मध नाखी सारी पेठे मथीने तेमां त्रण प्रसृत स्नेह नाखवो. स्नेह एकरूप थई जाय त्यारे एक प्रसृत कल्क नाखवो. ए सघळुं तमाम मळी जाय त्यारे तेमां चार प्रसृत क्वाथ नाखीने मथन करवुं अने छेवट बे प्रसृत क्वाथ नाखवो एटले बार प्रसृत अने ते उपर एक तोलो थाय छे. निरूहनी मोटामां मोटी मात्रानुं आ प्रमाण केहेवामां आव्युं छे. जो अवस्था वगेरेना अनुसारथी नाहानी मात्रा करवी होय तो वैद्ये उपर कहेली पद्धतिने अनुसरीने द्रव्योना वजननो घटारो करवो. सिद्धिने इच्छनारा उत्तम वैद्योए रोगीओनी अवस्था प्रमाणे सैंधवथी मांडीने क्वाथपर्यंत पदार्थोनी आ कल्पना कही छे.

१२ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यन्ते बस्तयोऽत्र विभागशः
यथादोषं प्रयुक्ता ये हन्युर्नानाविधान्गदान् ॥
शम्याकोरुबुवर्षाभूवाजिगन्धानिशाच्छदैः ।
पञ्चमूलीवलारास्नागडूचीसुरदारुभिः ॥
क्वथितैः पालिकैरेभिर्मदनाष्टकसंयुतैः ।
कल्कैर्मागधिकामोदहपुषामिसिसैन्धवैः ॥
वत्साह्वयप्रियङ्ग्वायष्ट्याह्वयरसाञ्जनैः ।
दद्यादास्थापनं कोष्णं क्षौद्राद्यैरभिसंस्कृतम् ॥
पृष्ठोरुत्रिकशूलाश्मविण्मूत्रानिलसङ्गिनाम् ।

१ प्रथम थोडुं थोडुं नाखीनाखीने मथन करवुं अने जेम जेम मथातुं जाय तेम तेम बीजुं नाखीने मात्रा पूरी करवी.

ग्रहणीमारुतार्शोघ्नं रक्तमांसबलप्रदम् ॥
गडूचीत्रिफलारास्नादशमूलबलापलैः ।
क्वथितैः श्लक्ष्णपिष्टैस्तु प्रियङ्ग्वञ्जनसैन्धवैः ॥
शतपुष्पावचाकृष्णायवानीकुष्ठबिल्वजैः ।
सगुडैरक्षमात्रैस्तु मदनार्द्धपलान्वितैः ॥
क्षौद्रतैलघृतक्षीरशुक्तकाञ्जिकमस्तुभिः ।
समालोड्य च मूत्रैस्तु दद्यादास्थापनं परम् ॥
तेजोवर्णबलोत्साहवीर्याग्निप्राणवर्द्धनम् ।
सर्वमारुतरोगघ्नं वयःस्थापनमुत्तमम् ॥
कुशादिपञ्चमूलाब्दत्रिफलोत्पलवासकैः ।
सारिवोशीरमञ्जिष्ठारास्नारेणुपरूपकैः ॥
पालिकैः क्वथितैः सम्यग्द्रव्यैरेभिश्च पेषितैः ।
शृङ्गाटकात्मगुप्तेभकेसरागुरुचन्दनैः ॥
विदारीमिसिमञ्जिष्ठाश्यामेन्द्रयवसिन्धुजैः ।
फलपञ्चकयष्ट्याह्वैः क्षौद्रक्षीरघृताप्लुतैः ॥
दत्तमास्थापनं शीतमम्लहीनैस्तथा द्रवैः ।
दाहासृग्दरपित्तासृक्पित्तगुल्मज्वराञ्जयेत् ॥
रोध्रचन्दनमञ्जिष्ठारास्नानन्ताबलर्द्धिभिः ।
सारिवावृषकाश्मर्यमेदामधुकपद्मकैः ॥
स्थिरादितृणमूलैश्च क्वाथैः कर्षत्रयोन्मितैः ।
पिष्टैर्जीवककाकोलीयुगर्द्धिमधुकोत्पलैः ॥
प्रपौण्डरीकजीवन्तीमेदारेणुपरूपकैः ।
अभीरुमिसिसिन्धूत्थवत्सकोशीरपद्मकैः ॥
कसेरुशर्करायुक्तैः सर्पिर्मधुपयःप्लुतैः ।
द्रवैस्तीक्ष्णाम्लवर्ज्यैश्च दत्तो बस्तिः सुशीतलः ॥
गुल्मासृग्दरहृत्पाण्डुरोगान्सविषमज्वरान् ।
असृक्पित्तातिसारौ च हन्यात्पित्तकृतान्गदान् ॥
भद्रानिम्बकुलत्थार्ककोशातक्यमृतामरैः ।
सारिवाबृहतीपाठामूर्वारग्वधवत्सकैः ॥
क्वाथः कल्कस्तु कर्त्तव्यो बलामदनसर्षपैः ।
सैन्धवामरकुष्ठैलापिप्पलीबिल्वनागरैः ॥
कटुतैलमधुक्षारमूत्रतैलाम्बुसंयुतैः ।
कार्यमास्थापनं तूर्णं कफमलापाण्डुमेहिनाम् ॥
मेदस्विनामनग्नीनां कफरोगाशनद्विषाम् ।
गलगण्डगरग्लानिश्लीपदोदररोगिणाम् ॥
दशमूलीनिशाबिल्वपटोलत्रिफलामरैः ।
क्वथितैः कल्कपिष्टैस्तु मुस्तसैन्धवदारुभिः ॥
पाठामागधिकेन्द्राह्वैस्तैलक्षारमधुप्लुतैः ।
कुर्यादास्थापनं सम्यङ्मूत्राम्लफलयोजितम् ॥
कफपाण्डुमदालस्यमूत्रमारुतसङ्गिनाम् ।
आमाटोपापचीश्लेष्मगुल्मक्रिमिविकारिणाम् ॥
वृषाश्मभेदवर्षाभूधान्यगन्धर्वहस्तकैः ।
दशमूलबलामूर्वायवकोलनिशाच्छदैः ॥
कुलत्थबिल्वभूनिम्बैः क्वथितैः पलसंमितैः ।
कल्कैर्मदनयष्ट्याह्वषड्ग्रन्थामरसर्षपैः ॥
पिप्पलीमूलसिन्धूत्थयवानीमिसिवत्सकैः ।
क्षौद्रेक्षुक्षीरगोमूत्रसर्पिस्तैलरसप्लुतैः ॥
तूर्णमास्थापनं कार्यं संसृष्टबहुरोगिणाम् ।
गृध्रसीशर्कराष्ठीलातूणीगुल्मगदापहम् ॥
रास्नारग्वधवर्षाभूकटुकोशीरवारिदैः ।
त्रायमाणामृतारक्तापञ्चमूलबिभीतकैः ॥
सबलैः पालिकैः क्वाथः कल्कस्तु मदनान्वितैः
यष्ट्याह्वमिसिसिन्धूत्थफलिनीन्द्रयवाह्वयैः ॥
रसाञ्जनरसक्षौद्रद्राक्षासौवीरसंयुतैः ।
युक्तो बस्तिः सुखोष्णोऽयं मांसशुक्रबलौजसाम्
आयुषोऽग्नेश्च संस्कर्ता हन्ति चाशु गदानिमान्
गुल्मासृग्दरवीसर्पमूत्रकृच्छ्रक्षतक्षयान् ॥
विषमज्वरमर्शांसि ग्रहणीं वातकुण्डलीम् ।
जानुजङ्घाशिरोबस्तिग्रहोदावर्त्तमारुतान् ॥
वातासृक्छर्कराष्ठीलाकुक्षिशूलोदरारुचीः ।
रक्तपित्तकफोन्मादप्रमेहाध्मानहृद्ग्रहान् ॥

जूदा जूदा रोगोने हणनारी जूदी जूदी निरूहबस्तिओ.

१२ हवे दोषोना विभाग प्रमाणे जूदी जूदी निरूहबस्तिओ कहीए छीए के जे बस्तिओ दोषोना अनुसारथी देवामां आवे तो अनेक प्रकारना रोगोने नष्ट करे छे.

गरमाळो, एरडो, साटोडी, आसोंद, कचूरो, लघुपंचमूल, बलदाणा, रास्ना, गळो तथा देवदार

एओने चार चार तोलांभार लई तथा मींढोळने आठ तोलांभार लई तेओनो क्वाथ करी अने पीपळ, मोथ, हपुषा, (प्रसिद्ध नथी.) वरीयाळी, सैंधव, इंद्रजव, घउलां, वज, जेठीमध अने रसवंती एओनो एक एक तोलांभार कल्क करी, मध, तथा गोमूत्र वगेरेथी संस्कार आपी मिश्रित करीने जरा ऊनाशवाळा ते क्वाथनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी पीठनुं शूळ, साथळनुं शूळ, बरडाना त्रिकनुं शूळ, पथरी, विष्टानी अटकायत, मूत्रनी अटकायत, अधोवायुनी अटकायत, ग्रहणी तथा वायुसंबंधी अरश एओनो नाश थाय छे अने उत्तम रुधिर, मांस तथा बळ एओनी प्राप्ति थाय छे.

गळो, त्रिफळा, रास्ना, दशमूळी अने बलदाणाना छोड एओने चार चार तोलांभार लई तेओनो क्वाथ करी एक एक तोलांभार घउलां, रसवंती, सैंधव, सुवा, वज, पीपळ, यवान, कठ, बीलुं तथा गोळ लई अने बे तोलांभार मींढोळ लई कल्क बनावी, मध, तैल, घी, दूध, शुक्त, कांजी अने दहींनी तर एओनो योग आपी सर्वने गोमूत्रमां घोळी नाखीने तेनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी तेज, बल, सारो वर्ण, उत्साह, वीर्य, जठराग्नि तथा प्राण एओनी वृद्धि थाय छे, सघळा प्रकारना वायुसंबंधी रोगो नष्ट थाय छे अने यौवन सारी पेठे स्थिर रहे छे.

तृणपंचमूल, लघुपंचमूल, मोथ, त्रिफळा, रक्तकमळ, अरडूसी, उपलसरी, वाळो, मजीठ, रास्ना, खडसलीयो अने फालसां एओने चार चार तोलांभार लई तेओनो क्वाथ करी, शीगोडां, कौचां, नागकेसर, अगरु, सूखड, फगवेलानो कंद, वरीयाळी, मजीठ, घउलां, सैंधव, मींढोळ, पद्मकाष्ठ अने जेठीमध एओनो एक एक तोलां भार कल्क करी ए सर्वने मध, दूध तथा घी एओनो योग आपी खटाश वगरना शेलडीना रस वगेरे द्रवोमां घोळी नाखीने तेनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी दाह, रक्तप्रदर, रक्तपित्त, पित्तसंबंधी गुल्म अने ज्वर एओनो नाश थाय छे.

लोदर, सूखड, मजीठ, रास्ना, दूर्वा, बळदाणा, ऋद्धि, उपलसरी, अरडूसी, सीवण, मेदा, जेठीमध, पद्मकाष्ठ, लघुपंचमूल अने तृणपंचमूल ए प्रत्येकने त्रण त्रण तोलांभार लई तेओनो क्वाथ करी, जीवक, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, जेठीमध, रक्तकमळ, पांडेरवो, खरखोडी, मेदा, खडसलीयो, फालसां, मोटी शतावरी, वरीयाळी, सैंधव, इंद्रजव, वाळो, पद्मकाष्ठ, कसेरुकंद अने साकर एओनो कल्क करी ए सर्वने घी, मध तथा दूध एओनो योग आपी तीक्ष्ण तथा अम्ल वगरना द्रवोमां घोळी नाखीने तेनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो ते अतिशीतल बस्तिथी पित्ते करेला गुल्म, रक्तप्रदर, हृदयरोग, पांडुरोग, विषमज्वर, रक्तपित्त अने अतिसार एओनो नाश थाय छे.

वज, लींबडो, कळथी, आकडो, कडवी घीसोडी, गळो, देवदार, उपलसरी, भोरींगणी, कालीपाड, मोरवेल, गरमाळो अने इंद्रजव एओनो क्वाथ करी, बलदाणा, मींढोळ, सर्षप, सैंधव, देवदार, कठ, एळची, पीपळ, बीलुं अने सूंठ एओनो कल्क करी ए सर्वने सरसीयुं तैल, मध, जवखार, गोमूत्र, तैल तथा जळ एओथी मिश्रित करी नाखी तेनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी कमळो, पांडुरोग, प्रमेह, मेद, अग्निनुं मंदपणुं, कफसंबंधी रोगो, भोजन उपर अरुचि, गलगंड, विष, ग्लानि, श्लीपद अने उदर रोग एओनो नाश थाय छे.

दशमूळ, हळदर, बीलुं, पटोळ, त्रिफळा अने देवदार एओनो क्वाथ करी, मोथ, सैंधव, दारूहळदर, काळीपाड अने इंद्रजव एओनो कल्क करी ए सर्वने तैल, जवखार अने मध एओथी

१ सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायनो १८७ मो विषय जुवो.

मिश्रित करी, गोमूत्र, खाटी कांजी अने नीढोळनो रस एओनो योग आपी तेनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी, कफ, पांडुरोग, मद, आलस्य, मूत्रनी अटकायत, अधोवायुनी अटकायत, आम, गडगडाट, [२]अपची, कफसंबंधी गुल्म अने कृमिविकार एओनो नाश थाय छे.

अरडूसी, पाषाणभेद[१], साटोडी, धाणा, एरडो, दशमूळ, बलदाणा, मोरवेल, जव, बोर, कचूरो, कळथी, बीलुं अने करीयातुं ए प्रत्येक द्रव्यने चार चार तोलांभार लई क्वाथ करी, मींढोळ, जेठीमध, वज, देवदार, सर्षप, पीपळीमूळ, सैंधव, यवान, वरीयाळी अने इंद्रजव एओनो कल्क करी ते सर्वने मध, शेलडीनो रस, गोमूत्र, घी, तैल अने मांसनो रसो एओथी मिश्रित करी दईने तेनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी बबे दोषोनां दरद, सन्निपातनां दरद, गृध्रसी, शर्करा, अष्ठीला, तूणी तथा गुल्म एओनो नाश थाय छे.

रास्ना, गरमाळो, साटोडी, कडु, वाळो, मोथ, त्रायमाण, गळो, मजीठ, पंचमूळ, बेहेडां अने बळदाणा ए प्रत्येक द्रव्यने चार चार तोलांभार लई क्वाथ करी, मींढोळ, जेठीमध, वरीयाळी, सैंधव, घउलां, इंद्रजव, रसवंती अने द्राक्ष एओनो कल्क करी ए सर्वने मांसनो रसो, मध, तथा सौवीररूप द्रवमां मिश्रित करी दईने तेनी सेहेवाय तेवी ऊनी निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी मांस, वीर्य, बळ, ओज, आयुष्य तथा जठराग्नि एओनी वृद्धि थाय छे अने गुल्म, रक्तप्रदर, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, क्षत, क्षय, विषमज्वर, अरश, ग्रहणी, वातकुंडली, वातरक्त, गोठणनुं झलाई जवुं, साथळनुं झलाई जवुं, माथानुं झलाई जवुं, मूत्राशयनुं झलाई जवुं, उदावर्त्त, वायु, शर्करा, अष्ठीला, कुक्षिनुं शूळ, उदररोग, अरुचि, रक्तपित्त, कफ, उन्माद, प्रमेह, आफरो अने छातीनो भीडो एओनो नाश थाय छे.

१३ वातघ्नौषधनिष्क्वाथाः सैन्धवत्रिवृता युताः ।
साम्लाःसुखोष्णायोज्याःस्युर्बस्तयःकुपितेऽनिले

वायुना प्रकोप उपर विशिष्ट बस्तिओ.

१३ वायुनो प्रकोप थयो होय तो वायुने हणनारां औषधोना क्वाथो करी तेओने सैंधवनो तथा नसोतरनो योग आपी कांजी वगेरे अम्ल पदार्थोथी मिश्रित करी तेओनी सेहेवाय तेवी ऊनी बस्तिओ देवी.

१४न्यग्रोधादिगणक्वाथाःकाकोल्यादिसमायुताः
विधेया बस्तयः पित्ते ससर्पिष्काः सशर्कराः ॥

पित्तना प्रकोप उपर विशिष्ट बस्तिओ.

१४ पित्तनो प्रकोप थयो होय तो न्यग्रोधादि गणना क्वाथो करी तेओमां काकोल्यादि गणना कल्को नाखी घीथी तथा साकरथी मिश्रित करीने तेओनी बस्तिओ देवी.

१५ आरग्वधादिनिष्क्वाथाः पिप्पल्यादिसमायुताः ।
सक्षौद्रमूत्रा देयाः स्युर्बस्तयः कुपिते कफे ॥

कफना प्रकोप उपर विशिष्ट बस्तिओ.

१५ कफनो प्रकोप थयो होय तो आरग्वधादि गणना क्वाथो करी तेओमां पिप्पल्यादि गणना कल्को नाखी मधथी तथा गोमूत्रथी संयुक्त करीने तेओनी बस्तिओ देवी.

१६ शर्करेक्षुरसक्षीरघृतयुक्ताः सुशीतलाः ।
क्षीरिवृक्षकषायाढ्या बस्तयः शोणिते हिताः ॥

---

१ पाषाणभेदने नामे लाकडाना कटका परदेशथी आवे छे पण ते पाषाणभेदज छे के नहीं एवी कशी खातरी थती नथी. पाषाणभेदने बदले गोरखगांजाना छोड वपराय तो विरुद्ध नथी. अनुभव करतां गोरखगांजाना गुणो पाषाणभेदना गुणोथी तमाम मळता जोवामां आव्या छे. गोरखगांजानुं नाम संस्कृत ग्रंथोमां जोवामां आवतुं नथी.

२ सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायनो १९० मो विषय जुवो.

रुधिरना प्रकोप उपर विशिष्ट बस्तिओ.

१६ रुधिरनो प्रकोप थयो होय तो वड वगेरे क्षीरि वृक्षोना काथो करी तेओने साकर, शेलडीनो रस, दूध तथा घी एओथी मिश्रित करी तेओनी अतिशीतल बस्तिओ देवी.

१७ शोधनद्रव्यनिष्काथास्तत्कल्कस्नेहसैन्धवैः । युक्ताः खजेन मथिता बस्तयः शोधनाः स्मृताः॥

शोधनबस्तिओ.

१७ दोषोनुं संशोधन करवुं होय तो संशोधन द्रव्योना काथो करी तेओने तेओनाज कल्कोथी, स्नेहथी तथा सैंधवथी युक्त करी रवाईथी वलोवीने बस्तिओमां योजवा. आ **शोधनबस्तिओ** केहेवाय छे.

१८ त्रिफलाक्वाथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुताः । ऊषकादिप्रतीवापा बस्तयो लेखनाः स्मृताः ॥

लेखनबस्तिओ.

१८ त्रिफळानो क्वाथ करी तेमां ऊषकादि गणनो प्रतिवाप नाखी गोमूत्र, मध तथा जवखार एओथी संयुक्त करीने तेनी बस्तिओ देवी. आ बस्तिओ दोषोने तथा मळोने उखेडनारी होवाथी **लेखनबस्तिओ** केहेवाय छे.

१९ बृंहणद्रव्यनिष्काथाः कल्कैर्मधुरकैर्युताः । सर्पिर्मांसरसोपेता बस्तयो बृंहणाः स्मृताः ॥

बृंहणबस्तिओ.

१९ धातुओने वधारनारां द्रव्योना काथो करी, जीवनीय गणना कल्को नाखी घीथी तथा मांसना रसाथी युक्त करीने तेओनी बस्तिओ देवामां आवे तो तेथी धातुओनी वृद्धि थाय छे. आ **बृंहणबस्तिओ** केहेवाय छे.

२० चटकाण्डोच्चटाक्वाथाः सक्षीरघृतशर्कराः । आत्मगुप्ताफलावापाः स्मृता वाजीकरा नृणाम्॥

वाजीकरबस्तिओ.

२० चकलीओनां इंडां अने सफेद चणोठी एओना काथो करी, कौचांनां फळोनो कल्क नाखी ते सर्वने दूधथी, घीथी तथा साकरथी मिश्रित करीने तेओनी बस्तिओ देवामां आवे तो तेथी पुरुषो मैथुन करवामां घोडाओ जेवा समर्थ थाय छे. आ **वाजीकरबस्तिओ** केहेवाय छे.

२१ विदार्यैरावतीशेलुशाल्मलीधन्वनाङ्कुराः । क्षीरसिद्धाः क्षौद्रयुताःसास्राःपिच्छिलसंज्ञिताः वाराहमाहिषौरभ्रबैडालैणेयकौक्कुटम् । सद्यस्कमसृगादाय देयं पिच्छिलबस्तिषु ॥

पिच्छिलबस्तिओ.

२१ फगवेलो, नारंगी अथवा गंगेटी, गुंदो, शेमळो अने धामण एओनां अग्रपल्लवोने (कुंपळीआंओने) दूधमां पकावी मधथी संयुक्त करी सूवरना, पाडाना, घेटाना, मींदडाना, काळीआर हरणना के कुकडाना ताजा रुधिरमां मिश्रित करीने तेनी बस्तिओ देवी. आ बस्तिओ जीवनने आपनारी छे तेथी **पिच्छिलबस्तिओ** केहेवायछे.

२२ प्रियङ्ग्वादिगणक्वाथा अम्बष्ठाद्येन संयुताः । सक्षौद्राः सघृताश्चैव ग्राहिणो बस्तयः स्मृताः

ग्राहीबस्तिओ.

२२ प्रियंग्वादि गणना क्वाथो करी, अंबष्ठादि गणना कल्कोथी संयुक्त करी मधथी तथा घीथी मिश्रित करीने तेओनी बस्तिओ देवी. आ बस्तिओ अतीसारने रोकनारी होवाथी **ग्राहीबस्तिओ** केहेवाय छे.

२३एतेष्वेव च योगेषु स्नेहाः सिद्धाः पृथक्पृथक् समस्ता अथवा सम्यग्विधेयाः स्नेहबस्तिषु ॥

निरूहबस्तिओमां नाखवाना स्नेहो कयां औषधोथी पकावेला जोईए?

२३ दोषोने अनुसरी उपर कहेलां द्रव्योना क्वाथथी तथा कल्कथी जूदा जूदा पकावेला अथवा सघळा मिश्रित करीने पकावेला स्नेहोनो निरूहबस्तिओमां सारी रीते उपयोग करवो.

२४ वन्ध्यानां शतपाकेन शोधितानां यथाक्रमम्।
बलातैलेन देयाः स्युर्बस्तयस्त्रैवृतेन च ॥

स्त्रीओनुं वंध्यापणुं टाळनारी बस्तिओ.

२४ वांझणी स्त्रीओने स्नेहन, स्वेदन, वमन तथा विरेचन एओथी शुद्ध करीने पछी आ स्थानना चोथा अध्यायना २३ मा विषयमां कहेला शतपाक नामना तैलनी, पंदरमा अध्यायना १२ मा विषयमां कहेला बलातैलनी अने पांचमा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेला त्रैवृत नामना घीनी बस्तिओ देवामां आवे तो तेओनुं वाझणीपणुं मटी जाय छे.

२५नरस्योत्तमसत्त्वस्य तीक्ष्णं बस्तिं निधापयेत्
मध्यमं मध्यसत्त्वस्य विपरीतस्य वै मृदुम् ॥
एवं कालं बलं दोषं विकारं च विकारवित्।
बस्तिद्रव्यबलं चैव वीक्ष्य बस्तीन्प्रयोजयेत् ॥

सत्व तथा ऋतु वगेरेनो विचार करीने बस्तिओना प्रयोगो करवाविषे.

२५ उत्तम सत्ववाळा माणसने तीक्ष्णबस्ति देवी, मध्यम सत्ववाळा माणसने मध्यम बस्ति देवी अने हीन सत्ववाळा माणसने मृदुबस्ति देवी. विकारोने जाणनारा वैद्ये ए प्रमाणेज ऋतु, बळ, दोष, विकार अने बस्तिना द्रव्यनुं बळ एओनुं अवेक्षण करीने बस्तिओना प्रयोगो करवा.

२६ दद्यादुत्क्लेशनं पूर्वं मध्ये दोषहरं पुनः।
पश्चात्संशमनीयं च दद्याद्बस्तिं विचक्षणः ॥

प्रकारांतथी बस्तिना त्रण भेदो अने ते भेदोना प्रयोगोनो अनुक्रम.

२६ विचक्षण वैद्ये प्रथम दोषोने पडवामां उन्मुख करवा माटे **उत्क्लेशन**बस्ति देवी. पछी उत्क्लिष्ट थएला दोषोने पाडवा माटे **दोषहर**बस्ति देवी अने ते पछी अवशेष रहेला दोषोनुं संशमन करवा माटे **संशमन**बस्ति देवी.

२७ एरण्डबीजं मधुकं पिप्पली सैन्धवं वचा।
हपुषा फलकल्कश्च बस्तिरुत्क्लेशनः स्मृतः ॥

उत्क्लेशनबस्तिनुं स्वरूप.

२७ एरडानां बीज, जेठीमध, पीपळ, सैंधव, हपुषा, तथा वज एओना क्वाथने मीढोलना कल्कथी युक्त करीने तेनी बस्ति देवी ए **उत्क्लेशन**बस्ति केहेवाय छे.

२८ शताह्वा माधुकं बीजं कौटजं फलमेव च।
सकाञ्जिकः सगोमूत्रो बस्तिर्दोषहरः स्मृतः ॥

दोषहरबस्तिनुं स्वरूप.

२८ वरीयाळी, जेठीमधनां बीज अने कुटज फल (इंद्रजव) एओना क्वाथने तथा कल्कने कांजीमां तथा गोमूत्रमां घोळीने तेनी बस्ति देवी ए **दोषहरबस्ति** केहेवाय छे.

२९ प्रियङ्गु मधुकं मुस्ता तथैव च रसाञ्जनम्।
सक्षीरः शस्यते बस्तिर्दोषाणां शमनः परः ॥

संशमनीयबस्तिनुं स्वरूप.

२९ घउलां, जेठीमध, मोथ अने रसवंती एओना क्वाथने तथा कल्कने दूधमां घोळीने तेनी बस्ति देवी ए **संशमनीय**बस्ति केहेवाय छे.

३० नृपाणां तत्समानानां तथा सुमहतामपि।
नारीणां सुकुमाराणां शिशुस्थविरयोरपि ॥
दोषनिर्हरणार्थाय बलवर्णोदयाय च।
समासेनोपदेक्ष्यामि विधानं माधुतैलिकम् ॥
यानस्त्रीभोज्यपानेषु नियमश्चात्र नोच्यते।
फलं च विपुलं दृष्टं व्यापदां चाप्यसम्भवः
योज्यस्त्वतः सुखेनैव निरूहक्रममिच्छता।
यदेच्छति तदेवैष प्रयोक्तव्यो विपश्चिता
मधुतैले समे स्यातां क्वाथश्चैरण्डमूलजः।
पलार्द्धं शतपुष्पायास्ततोऽर्द्धं सैन्धवस्य च ॥
फलेनैकेन संयुक्तः खजेन च विलोडितः।
देयः सुखोष्णो भिषजा माधुतैलिकसंज्ञितः ॥

माधुतैलिकबस्ति.

३० दोषोनुं निर्हरण करवा माटे तथा बळनो अने वर्णनो उदय करवाने माटे राजाओने, राजा

जेवा माणसोने, महात्मालोकोने, स्त्रीओने, सुकुमार शरीरवाळाओने, बालकोने अने वृद्धोने देवा योग्य जे **माधुतैलिक** नामनी बस्ति छे तेनुं विधान संक्षेपथी कहुंछुं. आ बस्तिमां वाहननी, जवा आववानी के खावापीवावगेरेनी कशी परेजी पाळवानी जरूर नथी, फळ घणुं उत्तम थाय छे अने व्यापत्तिओ उत्पन्न थती नथी एटला माटे निरूहबस्तिरूप चिकित्साने इच्छनारो वैद्य आ बस्तिनी अनायासथीज योजना करी शके छे. ज्यारे इच्छा थाय त्यारे विद्वान वैद्ये आ बस्तिनो प्रयोग करवो.

मध अने तैल एओने सम भागे लई तेओने तेओना वजनथी बमणा एरडानां मूळीयाना काथमां नाखवां. बे तोलां भार सुवानुं चूर्ण नाखवुं, एक तोलांभार सैंधव नाखवुं अने एक तोलांभार मींढोळनुं चूर्ण नाखवुं. ए सर्वने मिश्रित करी रवाईथी वलोववामां आवे एटले माधुतैलिक निरूह सिद्ध थयो केहेवाय छे. वैद्ये आ निरूहने सेहेवाय तेवो गरम करीने तेनी बस्ति देवी.

३१ वचा मधु च तैलं च क्राथः सरससैन्धवः ।
पिप्पलीफलसंयुक्तो बस्तिर्युक्तरथः स्मृतः ॥

माधुतैलिकना भेदरूप युक्तरथ नामनो बस्ति.

३१ एरडानां मूळीयांनो क्राथ करी तेमां मध तैल, मांसनो रसो तथा सैंधव नाखवां अने वज, पीपळ तथा मींढोळ एओनो कल्क पण नाखवो. आ सर्वने रवाईथी वलोवीने तेनी बस्ति देवामां आवे ते **युक्तरथ** बस्ति केहेवाय छे.

३२ सुरदारु वरा रास्ना शतपुष्पा वचा मधु ।
हिङ्गुसैन्धवसंयुक्तो बस्तिर्दोषहरः स्मृतः ॥

माधुतैलिकना भेदरूप दोषहर नामनो बस्ति.

३२ एरडानां मूळीयांनो क्राथ करी तेमां देवदार, त्रिफळा, रास्ना, सुवा, वज तथा हींग एओनो कल्क नाखी अने मध, तैल तथा सैंधव नाखी सर्वने रवाईथी वलोवीने तेनी बस्ति देवामां आवे ते **दोषहर** बस्ति केहेवाय छे.

३३ पंचमूलीकषायं च तैलं मागधिका मधु ।
बस्तिरेष विधातव्यः सशताह्वः ससैन्धवः ॥

माधुतैलिकना भेदरूप पांचमौलिक नामनो बस्ति.

३३ लघुपंचमूळनो क्राथ करी तेमां पीपळ तथा वरीयाळी एओनो कल्क नाखी अने तैल, मध तथा सैंधव पण नाखी ए सर्वने रवाईथी वलोवीने तेनी बस्ति देवामां आवे ए **पांचमौलिक** बस्ति केहेवाय छे.

३४ यवकोलकुलत्थानां क्राथो मागधिका मधु ।
ससैन्धवः समधुकः सिद्धबस्तिरिति स्मृतः ॥

माधुतैलिकना भेदरूप सिद्धबस्ति.

३४ जव, बोर तथा कळथी एओनो क्राथ करी तेमां पीपळ तथा जेठीमध एओनो कल्क नाखी अने तैल, मध तथा सैंधव पण नाखी ए सर्वने रवाईथी वलोवीने तेनी बस्ति देवामां आवे ए **सिद्धबस्ति** केहेवाय छे.

३५ मुस्तापाठामृतातिक्ताबलारास्नापुनर्नवाः ।
मञ्जिष्ठारग्वधोशीरत्रायमाणाक्षगोक्षुरान् ॥
पालिकान्पञ्चमूलाल्पसहितान्मदनाष्टकम् ।
जलाढके पचेत्क्राथं पादशेषं पुनः पचेत् ॥
क्षीरप्रस्थेन संयुक्तं क्षीरशेषं परिस्रुतम् ।
पादेन जाङ्गलरसस्तथा मधुघृतं समम् ॥
शताह्वाफलिनीयष्टीवत्सकैः सरसाञ्जनैः ।
कार्षिकैः सैन्धवयुतैः कल्कैर्बस्तिः प्रयोजितः ॥
वातासृङ्मोहशोफार्शोगुल्ममूत्रविबन्धनुत् ।
विसर्पज्वरविट्सङ्गरक्तपित्तविनाशनः ॥
बल्यः संजीवनो वृष्यश्चक्षुष्यः शूलनाशनः ।
स्थापनानामयं राजा बस्तिर्मुस्तादिको मतः ॥

माधुतैलिकना भेदरूप मुस्तादिक नामनी स्थापन बस्ति.

३९ मोथ, काळीपाड, गळो, कडु, बळदाणा, रास्ना, साटोडी, मजीठ, गरमाळो, वाळो, त्रायमाण, बेहेडां, गोखरू अने लघुपंचमूल ए प्रत्येक द्रव्यने चार चार तोलां भार लई अने आठ मींढोळनां फळो लई तेओनो बसो छपन तोलां भार जळमां क्राथ करवो. उकळतां उकळतां चतुर्थांश अवशेष रहे त्यारे उतारी लई तेमां चोसठ तोलां भार दूध नाखीने तेनो फरीवार पाक करवो. जळ तमाम बळी जाय अने दूधज अवशेष रहे त्यारे उतारी गाळीने तेमां चतुर्थांश जेटलो जांगल प्राणीओना मांसनो रसो नाखवो अने मध तथा घी पण समभागे नाखवां. पछी वरीयाळी, घउलां, जेठीमध, इंद्रजव, रसवंती तथा सैंधव ए प्रत्येक द्रव्यने एक एक तोलां भार लई कल्करूप करीने तेमां मिश्रित करी देवां एटले मुस्तादिक निरूह सिद्ध थाय छे. आनी बस्ति देवामां आवे तो तेथी वातरक्त, मोह, सोजो, अरश, गुल्म, मूत्रनी अटकायत, विसर्प, ज्वर, विष्टानी अटकायत अने रक्तपित्त एओनो नाश थाय छे. आ मुस्तादिकबस्ति बळ आपनार छे, जीवनने उत्तेजन आपनार छे, वीर्यने वधारनार छे, नेत्रोनुं हित करनार छे अने शूळोने नष्ट करनार छे. यौवनने स्थिर राखनारी तथा आयुष्यने वधारनारी जे जे बस्तिओ छे ते सर्वनी आ राजा छे. (तेलनो प्रक्षेप नहीं आव्या छतां पण आ बस्ति माधुतैलिकना भेदरूप गणाय ?)

३६ अवेक्ष्य भेषजं बुद्ध्या विकारं च विकारवित्
बीजेनानेन मतिमान्कुर्याद्बस्तिशतान्यपि ॥

उक्तपद्धति उपरथी बीजी अनेक बस्तिओ गोठवी लेवा विषे.

३६ रोगोने जाणनारा विद्वान् वैद्ये आ जे बस्तिओनां द्रव्यो गोठववानी पद्धति केहेवामां आवी ते रूप बीजउपरथी बुद्धिवते औषधोनो तथा रोगोनो विचार करीने बीजो पण बस्तिओ देवामां सैकडो द्रव्यो गोठवी लेवां.

३७ अजीर्णं न प्रयुञ्जीत दिवास्वप्नं च वर्जयेत्।
आहाराचारिकं शेषमन्ययुक्तं समाचरेत् ॥

जेने बस्ति देवामां आवी होय तेणे पाळवानी परेजी.

३७ जेने बस्ति देवामां आवी होय ते माणसे अजीर्ण नहीं थवा देवुं अने दिवसनी निद्रा करवी नहीं. बाकी पण आहार विहारादिक सघळुं योग्य रीते करवुं.

३८ यस्मान्मधु च तैलं च प्राधान्येन प्रदीयते।
माधुतैलिक इत्येवं भिषग्भिर्बस्तिरुच्यते ॥
रथेष्वपि च युक्तेषु हस्त्यश्वे चापि कल्पिते ।
यस्मान्न प्रतिषिद्धोऽयमतो युक्तरथः स्मृतः ॥
बलोपचयवर्णानां यस्माद्व्याधिशतस्य च ।
भवत्येतेन सिद्धिस्तु सिद्धबस्तिरतो मतः ॥

माधुतैलिक, युक्तरथ अने सिद्धबस्ति ए शब्दोना व्युत्पत्ति सिद्ध अर्थो.

३८ माधुतैलिकबस्तिमां मध अने तैल मुख्यत्वे करी देवामां आवे छे एटला माटे वैद्यो ते बस्तिने माधुतैलिक केहे छे.

संग्रामादिकमां जवा माटे रथो जोडाया पछी अने हाथी घोडा वगेरे वाहनो सज्ज थया पछी पण माधुतैलिकना बीजा भेदरूप बस्ति आपवामां कशी अडचण नडती नथी एटला माटे ते भेदने **युक्तरथ** ए नाम आपेलुं छे.

माधुतैलिकना पांचमा भेदरूप बस्तिथी बळ, पुष्टि तथा उत्तम वर्ण एओनी प्राप्ति थाय छे अने सैकडो व्याधिओनुं निवारण थाय छे एटला माटे ते भेद **सिद्धबस्ति** ए नामथी ओळखाय छे.

३९ सुखिनामल्पदोषाणां नित्यं स्निग्धाश्च ये नराः
मृदुकोष्ठाश्च ये तेषां विधेया माधुतैलिकाः ॥

माधुतैलिक बस्तिओना अधिकारिओ.

३९ सुखीआ¹ लोकोने, अल्पदोषोवाळा लोकोने, सर्वदा स्निग्ध रेहेनारा लोकोने अने कोमळ कोठावाळा लोकोने माधुतैलिक बस्तिओ देवी.

४० मृदुत्वात्पादहीनत्वादकृत्स्नविधिसेवनात्।
एकबस्तिप्रदानाच्च सिद्धबस्तिष्वयन्त्रणा ॥

सघळा प्रकारना माधुतैलिक बस्तिओमां सखत परेजी पाळवानी जरूर नथी.

४० सघळा प्रकारनी माधुतैलिक बस्तिओ कोमळ द्रव्योवाळी छे, बीजा निरूहबस्तिओथी एक चतुर्थांश ओछी मात्रावाळी छे, अपूर्ण विधिनी योजनावाळी छे अने घणुं करीने एक वार देवायाथी काम करी आपे एवी छे एटला माटे ते बस्तिओमां सखत परेजी पाळवानी जरूर नथी.

अध्याय ३९ मो.

१ अथात आतुरोपद्रवचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'आतुरोपद्रवचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्नेहपीतस्य वान्तस्य विरिक्तस्य स्रुतासृजः।
निरूढस्य च कायाग्निर्मन्दो भवति देहिनः ॥
सोऽन्नैरत्यर्थगुरुभिरुपयुक्तैः प्रशाम्यति ।
अल्पो महद्भिर्बहुभिश्छादितोऽग्निरिवेन्धनैः ॥
स चाल्पैर्लघुभिश्चान्नैरुपयुक्तैर्विवर्द्धते ।
काष्ठैरणुभिरल्पैश्च सन्धुक्षित इवानलः ॥
हृतदोषप्रमाणेन सदाहारविधिः स्मृतः ।

स्नेहपानादिकथी अवश्य मंद थई जता जठराग्निने वधारवा माटे वजनसर आहारनी जरूर.

२ स्नेहपान करवाथी, वमन करवाथी, विरेचित थवाथी, लोहीनुं स्रावण करवाथी अने निरूहबस्तिथी माणसनो जठराग्नि अवश्य मंद थई जाय छे. जेम अल्प अग्नि मोटां तथा घणां काष्ठोथी आच्छादित थाय तो शांत थई जाय छे तेम ए मंद थएलो जठराग्नि अत्यंत भारे अन्नोथी आच्छादित थाय तो शांत थई जाय छे. जेम अल्प अग्नि नाहानां तथा थोडां काष्ठोवते सळगाववाथी वृद्धि पामे छे तेम ए मंद थएलो जठराग्नि अल्प तथा हलकां अन्नोनो उपयोग करवाथी वृद्धि पामे छे. आ प्रमाणे छे एटला माटे जेटला दोषनुं हरण करवामां आव्युं होय तेना प्रमाणमां हलको तथा थोडो आहार करवानुं केहेवामां आवे छे.

३ त्रीणि चात्र प्रमाणानि प्रस्थोऽर्द्धाढकमाढकम्
तत्रावरं प्रस्थमात्रं द्वे शेषे मध्यमोत्तमे ॥
प्रस्थे परिस्रुते देया यवागूः स्वल्पतण्डुला ।
द्वे चैवार्द्धाढके देये तिस्रश्चाप्याढके गते ॥
विलेपी मुचिताद्भक्ताच्चतुर्थांशकृतां ततः ।
दद्यादुक्तेन विधिना क्लिन्नसिक्थामपिच्छिलाम्
अस्निग्धलवणां स्वच्छमुद्गयूषयुतां ततः ।
अंशद्वयप्रमाणेन दद्यात्सुस्निग्धमोदनम् ॥
ततस्तु कृतयूषेण हृद्येनेन्द्रियबोधिना ॥
त्रीनंशान्वितरेद्भोक्तुमातुरायौदनं मृदुम् ।
ततो यथोचितं भक्तं भोक्तुमस्मै विचक्षणः ॥
लावैणहरिणादीनां रसैर्दद्यात्सुसंस्कृतैः ।

लोहीना स्रावणना प्रमाण उपर आहारनुं जूदुं जूदुं वजन तथा तेनी मुदत.

३ चोपन तोलांभार लोहीनुं स्रावण करवुं ए

१ रोगोने टाळवा माटे करवामां आवतां कर्मोनी व्यापत्तिओ जे करवाथी न थाय एवी चिकित्साना निरूपण विषयनो.

निकृष्ट प्रमाण छे, एकसो आठ तोलां भार लोहीनुं स्रावण करवुं ए मध्यम प्रमाण छे अने बसो सोल तोलां भार लोहीनुं स्रावण करवुं ए उत्तम प्रमाण छे. जो चोपन तोलां भार लोहीनुं स्रावण करवामां आव्युं होय तो एक टंक थोडा चोखा- वाळी यवागू पावी, जो एकसो आठ तोलांभार लोहीनुं स्रावण करवामां आव्युं होय तो बे टंक थोडा चोखावाळी यवागू देवी अने जो बसो सोल तोलां भार लोहीनुं स्रावण करवामां आव्युं होय तो त्रण टंक थोडा चोखावाळी यवागू देवी. ते पछी हमेशना आहारना वजन करतां चतुर्थांश जेटला वजनना चोखाथी बनावेली, पचपचती कणीओवाळी, चीकाश वगरनी अने स्नेह तथा लूण वगरनी विलेपी स्वच्छ मगना यूपनी साथे उपर कहेला विधि प्रमाणे एटले एक, बे अने त्रण टंक सूधी देवी. (जेने एक टंक यवागू पाई होय तेने एक टंक, बे टंक यवागू पाई होय तेने बे टंक अने त्रण टंक यवागू पाई होय तेने त्रण टंक देवी.) पछी हमेशना आहारना वजनना एक द्वितीयांश जेटला चो- खानो सारी पेठे स्निग्ध करेलो भात उपर कहेला अनुक्रम प्रमाणे एटले एक, बे अने त्रण टंक सूधी देवो. पछी हमेशना आहारना वजनना त्रण चतुर्थांश जेटला चोखानो कोमळ भात हृदयने प्रिय लागे एवा अने इंद्रियोने जाग्रत् करे एवा कृत (सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायनो २२६ मो विषय जुवो.) यूषनी साथे उपर कहेला क्रम- प्रमाणे एटले एक, बे अने त्रण टंकसूधी देवो. पछी विचक्षण वैद्ये ए रोगीने लावां, काळीयार अने हरण वगेरेनां मांसोना सारी पेठे संस्कार आपेला रसाओनी साथे हमेशना माहावरा प्रमाणे संपूर्ण भात जमवा देवो. (आ प्रमाणे विधि क- रवाथी जेनुं चोपन तोलां भार लोही काहाड्युं होय तेने पांचमे टंके संपूर्ण भातनुं भोजन प्राप्त थाय छे, जेनुं एकसो आठ तोलां भार लोही काहाड्युं होय तेने नवमे टंके संपूर्ण भातनुं भोजन प्राप्त थाय छे अने जेनुं बसो सोल तोलां भार लोही काहाड्युं होय तेने तेरमे टंके संपूर्ण भातनुं भो- जन प्राप्त थाय छे.)

४ हीनमध्योत्तमेष्वेष विरेकेषु विधिः स्मृतः ॥
एकद्वित्रिगुणः सम्यगाहारस्य क्रमो हितः ।
कफपित्ताधिकान्मद्यनित्यान्हीनविशोधितान् ॥
पेयाभिष्यन्दयेत्तेषां तर्पणादिक्रमो हितः ।
वेदनालाभनियमशोकवैचित्त्यहेतुभिः ॥
नरानुपोषितांश्चापि विरिक्तवदुपाचरेत् ।
आढकार्द्धाढकप्रस्थसङ्ख्या नैपा विरेचने ॥
एको विरेकः श्लेष्मान्तो न द्वितीयोऽस्तिकश्चन।
बलं यत्रिविधं प्रोक्तमतस्तत्र क्रमस्त्रिधा ॥
तत्रानुक्रममेकं तु बलस्थः सकृदाचरेत् ।
द्विराचरेन्मध्यबलस्त्रीन्वारान्दुर्बलस्तथा ॥
केचिदेवं क्रमं प्राहुर्मन्दमध्योत्तमाग्निषु ।

विरेचनमां बळना के अग्निना प्रमाण उपर आहारनुं जूदुं जूदुं वजन तथा तेनी मुदत.

४ जेने विरेचित करवामां आव्यो होय ते माणसने हीनबळना, मध्यबळना तथा उत्तम- बळना हिसाब प्रमाणे पेयानो, विलेपीनो, सारी पेठे स्निग्ध करेला भातनो अने कृतयूपनी साथेना भातनो एक एक टंक, बबे टंक अने त्रण त्रण टंक, उपर कहेला वजनवाळो आहार देवो ए हितकारी थाय छे. परंतु जेओ कफना के पित्तना आधिक्यवाळा अथवा हमेश मद्यना अभ्यासी होय तेओ जो हीनशुद्धि पाम्या होय तो तेओने पेया अभिष्यंद करनारी थई पडे छे एटला माटे तेओने पेयाने बदले जवना साथवा वगेरे तर्पणथी क्रम क- रवो ए हितकारी थाय छे. वेदनाने लीधे, लाभना उत्साहने लीधे, नियमने लीधे, शोकने लीधे के संभ्रमादिकने लीधे जेओए उपवास करेला होय ते माणसोने माटे पण विरेचित थएला माणसोना

जेवोज आहारक्रम करवो. विरेचनमां लोहीना स्रावणनी पेठे बसो सोल तोलां भार, एकसो आठ तोलां भार अने चोपन तोलां भार दोष पड्यानी संख्या नथी. केमके छेवट कफ पडे त्यारेज बराबर विरेचन थयुं गणाय छे माटे विरेचन एकज छे. विरेचननो बीजो भेद कोई पण नथी. आ प्रमाणे छे एटला माटे विरेचित थएला माणसने आहार देवानो अनुक्रम दोष पडवाना तोल उपरथी त्रण प्रकारनो थतो नथी पण त्रण प्रकारनुं जे बळ कह्युं छे ते उपरथी त्रण प्रकारनो थाय छे. जेम के विरेचित थएलो माणस उत्तम बळवाळो होय तो तेने पेया, विलेपी, सारी पेठे स्निग्ध करेलो भात अने कृतयूषनी साथेनो भात एक एक टंकसूधी वजनसर आपीने पांचमे टंके लावां वगेरेना मांसना रसावाळो संपूर्ण भात देवो. ए माणस मध्यम बळवाळो होय तो ए पेया वगर चार पदार्थो बब टंक सूधी वजनसर आपीने नवमे टंके लावां वगेरेना मांसना रसावाळो संपूर्ण भात आपवो अने हीन बळवाळो होय तो ए पेया वगेरे पदार्थो त्रण त्रण टंकसूधी वजनसर आपीने तेरमे टंके लावां वगेरेना मांसना रसावाळो संपूर्ण भात आपवो. केटलाएक आचार्यो कहे छे के "बळ उपरथी ए क्रम नहीं लेवो पण ते माणसना जठराग्निना उत्तमपणा, मध्यमपणा अने मंदपणा उपरथी लेवो."

५ संसर्गेण विवृद्धेऽग्नौ दोषकोपभयाद्व्रजेत् ॥
प्राक्स्वादुतिक्तौ दत्वाम्ललवणौ कटुकं ततः ।
स्वाद्वम्ललवणान्भूयः स्वादुतिक्तावतः परम् ॥
स्निग्धरूक्षान्रसांश्चैवं व्यत्यासात्स्वस्थवत्तत. ।

उपर कहेला क्रमप्रमाणे अन्ननो संसर्ग आप्या पछी जूदा जूदा रसो आपवानो अनुक्रम.

५ उपर प्रमाणे अन्ननो संसर्ग आपवाथी अग्नि वृद्धि पामतां दोषोना कोपनी धास्तीने लीधे ते माणसने वाराफरती परस्परथी विरुद्ध रसो भोजनमां देवा. जेमके प्रथम मधुर तथा कडवो रस देवो. पछी खाटो, खारो अने तीखो रस देवो. पछी मधुर, खाटो तथा खारो रस देवो. पछी मधुर तथा कडवो रस देवो. एवी रीते स्निग्ध तथा रूक्ष रसोनो वाराफरती योग आपवो. वैद्ये आवी रीतनी योजना करीने, शुद्ध थएला माणसने स्वस्थ बनाववो. आतुरे स्वस्थ थया पछी पोताना हमेशना माहावरा प्रमाणे भोजन करवुं.

६ केवलं स्नेहपीतो वा वान्तो यश्चापि केवलम्
स सप्तरात्रं मनुजो भुञ्जीत लघु भोजनम् ॥

फकत स्नेहपान कर्या पछी तथा फक्त वमन कर्या पछी आहारनो क्रम तथा तेनी मुदत.

६ जेणे दोषनुं के रोगनुं संशमन करवा माटे केवळ स्नेहपान कर्युं होय ते माणसे अने जेणे अजीर्णने टाळवा माटे केवळ वमन कर्युं होय ते माणसे उपर कहेला रसोना क्रमने अनुसरीने सात रात वीततांसूधी थोडी मात्रावाळुं हलकुं भोजन करवुं. (जेणे शोधननुं अंगभूत वमन कर्युं होय ते माणसे तो वाग्भटना कह्याप्रमाणे करवुं. वाग्भट **पेयां पिलेपीमकृतं कृतं च यूषं रसं त्रींनुभयं तथैकम् । क्रमेण सेवेत नरोन्नकालान् प्रधानमध्यावरशुद्धिशुद्धः** ए श्लोकथी कहे छे के "उत्तम, मध्यम अने हीन एम त्रण प्रकारनी शुद्धि छे. तेमां उत्तम शुद्धि पामेला माणसे त्रण टंक पेया पीवी. पछी त्रण टंक विलेपीनो उपयोग करवो. पछी त्रण टंक अकृतयूषनो उपयोग करवो. पछी त्रण टंक कृतयूषनो उपयोग करवो अने पछी त्रण टंक मांसना रसानो उपयोग करवो. मध्यशुद्धि पामेला माणसे बे टंक पेयानो, बे टंक विलेपीनो, बे टंक अकृतयूषनो, बे टंक कृतयूषनो अने बे टंक मांसना रसानो उपयोग करवो. हीनशुद्धि पामेला माणसे एक

टंक पेयानो, एक टंक विलेपीनो, एक टंक अकृत-यूषनो, एक टंक कृतयूषनो अने एक टंक मांमना रसानो उपयोग करवो." (आप्रमाणे करवामां आवे त्यारेज आ स्थानना ३६ मा अध्यायना ११ मा विषयमां कह्या प्रमाणे उत्तम शुद्धिवाळाना वमन अने विरेचन वच्चे एक पखवाडीयानो अंतर पडे.)

७ कृतः शिराव्यधो यस्य कृतं यस्य च शोधनम् ।
स ना परिहरेन्मासं यावद्वा बलवान्भवेत् ।

शिरावेध (फस खोलवा) उपर तथा विरेचन उपर परेजीनी मुदत.

७ जेनो शिरावेध करवामां आव्यो होय अथवा जेने विरेचित करवामां आव्यो होय ते माणसे एक माससूधी अथवा ज्यांसूधी पोते बळवान् थाय त्यांसुधी नीचेना नवमा विषयमां कहेला क्रोधादिकनो त्याग करवारूप परेजी पाळवी.

८ एकैकस्मिन्परिहरेद्वस्तौ वस्तौ त्र्यहं त्र्यहम् ॥
तृतीये तु परीहारे यथायोगं समाचरेत् ।

जेने बस्ति देवामां आवी होय तेने माटे परेजीनी मुदत.

८ एक एक बस्ति देवाया पछी त्रण त्रण दिवस सूधी नीचेना नवमा विषयमां कहेला क्रोधादिकनो त्याग करवारूप परेजी पाळवी. त्रीजी चोथी वगेरे बस्तिओ देवाया पछी तो ज्यांसूधी सम्यग्योग थयानां लक्षणो प्राप्त थाय त्यांसूधी ए परेजी पाळवी.

९ तैलपूर्णाममृद्भाण्डसधर्माणो व्रणातुराः ॥
स्निग्धशुद्धाक्षिरोगार्त्ता ज्वरातीसारिणश्च ये ।
क्रुध्यतः कुपितं पित्तं कुर्यात्तांस्तानुपद्रवान् ॥
आयास्यतः शोचतो वा चित्तं विभ्रममृच्छति ।
मैथुनोपगमाद्धोरान्व्याधीनाप्नोति दुर्मतिः ॥
आक्षेपकं पक्षघातमङ्गप्रग्रहमेव च ।
गुह्यप्रदेशे श्वयथुं कासश्वासौ च दारुणौ ॥
शुक्रवच्चापि रुधिरं सरजस्कं प्रवर्त्तते ।
लभते च दिवास्वप्नात्तांस्तान्व्याधीन्कफात्मकान् ।
प्लीहोदरं प्रतिश्यायं पाण्डुतां श्वयथुं ज्वरम् ।
मोहं सदनमङ्गानामविपाकं तथाऽरुचिम् ॥
तमसा चाभिभूतस्तु स्वप्नमेवाभिनन्दति ।
उच्चैः सम्भाषणाद्वायुः शिरस्यापादयेद्रुजम् ॥
आन्ध्यं जाड्यमजिघ्रत्वं बाधिर्यं मूकतां तथा ॥
हनुमोक्षमधीमन्थमर्दितं च सुदारुणम् ।
नेत्रस्तम्भं निमेषं वा तृष्णां कासं प्रजागरम् ॥
लभते दन्तचालं च तांस्तांश्चान्यानुपद्रवान् ।
यानयानात्तु लभते छर्दिमूर्छाभ्रमक्लमान् ॥
तथैवाङ्गग्रहं घोरमिन्द्रियाणां च विभ्रमम् ।
चिरासनात्तथा स्थानाच्छ्रोण्यां भवति वेदना॥
अतिचङ्क्रमणाद्वायुर्जङ्घयोः कुरुते रुजः ।
सक्थिप्रशोषं शोफं वा पादहर्षमथापि वा ॥
शीतसम्भोगतोयानां सेवा मारुतवृद्धये ।
ततोऽङ्गमर्दविष्टम्भशूलाध्मानप्रवेपकाः ॥
वातातपाभ्यां वैवर्ण्यं ज्वरं चापि समाप्नुयात् ।
विरुद्धाध्यशनान्मृत्युं व्याधिं वा घोरमृच्छति ॥
असात्म्यभोजनं हन्याद्बलवर्णमसंशयम् ।
अनात्मवन्तः पशुवद्भुञ्जते येऽप्रमाणतः ॥
रोगानीकस्य ते मूलमजीर्णं प्राप्नुवन्ति हि ।

आतुरनी भूलथी थती पंदर व्यापत्तिओनुं निरूपण.

९ व्रणथी आतुर थएला माणसो, स्निग्ध थएला माणसो, शुद्ध थएला माणसो, नेत्रना रोगथी पीडाएला माणसो, ज्वरवाळा माणसो अने अतिसारवाळा माणसो तैलथी भरेला माटीना काचा वासणना जेवी स्थितिवाळा होय छे एटला माटे तेओए क्रोध, परिश्रम, शोक, मैथुन, दिवसनी निद्रा, ऊंचा स्वरथी भाषण, वाहनपर चडीने गमन, लांबा काळ सूधी बेसवुं तथा ऊभुं रेहेवुं, अत्यंत फरवुं, शीतनुं सेवन, वायुनुं सेवन, तडकानुं सेवन, विरुद्धाशन, अध्यशन अने असात्म्य भोजन ए

पंदर व्यापत्तिओनो त्याग करवो जोईए. (बीजा पण रोगीओए ए व्यापत्तिओनो त्याग करवो जोईए.)

रोगी जो **क्रोध** करे तो पित्त प्रकुपित थईने दाह तथा तरश वगेरे अनेक उपद्रवोने उत्पन्न करे छे.

रोगी जो **परिश्रम** के **शोक** करे तो तेनुं चित्त मोह तथा उन्माद आदि विभ्रमने प्राप्त थाय छे.

रोगी जो **मैथुन** करे तो आक्षेपक, पक्षघात, अंगोनुं झलाई जवुं, गुह्य स्थलमां सोजो, दारुण खांसी तथा दारुण श्वास ए भयंकर व्याधिओने प्राप्त थाय छे. पुरुषना शिश्नमांथी वीर्यवाळुं रुधिर नीकळे छे अने स्त्रीनी योनिमांथी रजवाळुं रुधिर नीकळे छे.

रोगी जो **दिवसनी निद्रा** करे तो कफसंबंधी अनेक व्याधिओ, प्लीहोदर, प्रतिश्याय, पांडुपणुं, सोजो ज्वर, मोह, अंगोनी ग्लानि, अन्ननुं नहीं पचवुं तथा अरुचि प्राप्त थाय छे अने ए रोगी मोहना दबाणने लीधे सुई रेहेवानेज पसंद करे छे.

रोगी जो **उंचा स्वरथी भाषण** करे तो वायु तेना माथामां वेदनाने उत्पन्न करे छे अने अंधपणुं, जडपणुं, गंधनुं अज्ञान, बेहेरापणुं, मूंगापणुं, हनुमोक्ष, अधिमंथ, अतिदारुण अर्दित, नेत्रस्तंभ, निमेष, तरश, खांसी, उजागरो, दांतोनुं हली जवुं तथा बीजा पण केटलाएक उपद्रवो प्राप्त थाय छे.

रोगी जो **वाहनपर चडीने गमन** करे तो उलटी, मूर्छा, भ्रम, क्लम, भयंकर रीते अंगोनुं झलाई जवुं अने इंद्रियोनो विभ्रम उत्पन्न थाय छे.

रोगी जो लांबा काळसूधी **बेसी रहे के ऊभो रहे** तो कमरना पाछला भागमां वेदना थाय छे.

रोगी जो **अत्यंत फरे** तो वायु जांघोमां वेदनाने, साथळोना शोषणने, सोजाने अथवा पादहर्ष नामना रोगने उत्पन्न करे छे.

रोगी जो **माळा तथा चंदन वगेरे शीत पदार्थोनुं के शीत जळनुं सेवन करे** तो तेथी वायुनी वृद्धि थतां अंगोनुं भांगवुं, झलाई जवुं, शूळ, आफरो तथा कंप एओनी उत्पत्ति थाय छे.

रोगी जो **वायुनुं** के **तडकानुं** सेवन करे तो तेथी विवर्णपणुं तथा ज्वर प्राप्त थाय छे.

रोगी जो **परस्पर विरुद्ध पदार्थोने जमे** तो मरण पामे छे अथवा अत्यंत भयंकर व्याधिने प्राप्त थाय छे.

रोगी जो **अध्यशन** (अजीर्णमां भोजन) करे तो तेथी पण मरण अथवा भयंकर व्याधि प्राप्त थाय छे.

रोगी जो असात्म्य पदार्थोनुं भोजन करे तो तेथी अवश्य बळनी तथा वर्णनी हानि थाय छे.

सघळां माणसोए अस्वस्थपणामां तथा स्वस्थपणामां पण अजीर्ण तो नज थवा देवुं जोईए. जे लोको मनने वश्य नहीं राखी पशुओनी पेठे प्रमाण वगरनुं (घणुं) जमे छे तेओ रोगोनी सेनाना मूळरूप अजीर्णने प्राप्त थाय छे.

१० व्यापदां कारणं वीक्ष्य व्यापत्स्वेतासु बुद्धिमान् ॥
प्रयतेतातुरारोग्ये प्रत्यनीकेन हेतुना ॥

क्रोधादिक पंदर व्यापत्तिओथी थएला उपद्रवोनुं चिकित्सासूत्र.

१० उपरना नवमा विषयमां जे उपद्रवो केहेवामां आव्या तेओनां दूरनां कारणोरूप क्रोधादिकनुं अने नजदीकनां कारणोरूप पित्तादिकनुं अवेक्षण करीने बुद्धिमान् वैद्ये ते उपद्रवोने तथा तेओनां कारणोने शांत करनारी चिकित्साथी आतुरने स्वस्थ बनाववानो प्रयत्न करवो.

११ विरिक्तवान्तैर्हरिणैणलावकाः
शशश्च सेव्यः समयूरतित्तिरिः ।
सषष्टिकाश्चैव पुराणशालय-
स्तथैव मुद्गा लघु यच्च कीर्त्तितम् ॥

वमनविरेचनथी शुद्ध थएलाओने कया कया आहारो सेव्य छे.

११ वमनविरेचनथी शुद्ध थएलां माणसोए हरिणनुं मांस, काळीयारनुं मांस, लावां पक्षीओनुं मांस, ससलानुं मांस, मोरनुं मांस, तेतरनुं मांस, साठीचोखा, जूना चोखा, मग, अने मांसोमां तथा धान्योमां बीजां पण जे कोई हलकां गणवामां आव्यां छे तेओनुं सेवन करवुं.

अध्याय ४० मो.

१ अथातो धूमनस्यकवलग्रहचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'धूमनस्यकवलग्रहचिकित्सित[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ धूमः पञ्चविधो भवति । तद्यथा । प्रायोगिकः स्नेहनो वैरेचनः कासघ्नो वामनीयश्चेति ॥

धूमनुं प्रकरण.
धूमाडाना पांच भेदो.

२ प्रायोगिक (कोप पामेला दोषोने शांत करनार होवाथी नित्य प्रयोगने लायक,) स्नेहन (स्निग्ध करीने धातुओने पुष्ट करनार,) वैरेचन (दोषोने काहाडी नाखनार,) कासघ्न (खांसीने हणनार) अने वामनीय (वमन करावनार) ए रीते धूमाडाना पांच भेद छे. (जेथी व्रणने धूमाडी देवाय छे ते धूमाडाने बीजा ग्रंथोमां छट्ठा प्रकारनो गण्यो छे.)

३ तत्रैलादिना कुष्ठतगरवर्जेण श्लक्ष्णपिष्टेन द्वादशाङ्गुलं शरकाण्डं क्षौमेणाष्टाङ्गुलं वेष्टयित्वा लेपयेदेषा वर्त्तिः प्रायोगिके । स्नेहफलसारमधूच्छिष्टसर्जरसगुग्गुलुप्रभृतिभिः स्नेहमिश्रैः स्नेहने। शिरोविरेचनद्रव्यैर्वैरेचने। बृहतीकण्टकारिकात्रिकटुककासमर्दहिङ्ग्विङ्गुदीत्वङ्मनःशिलाच्छिन्नरुहाकर्कटशृङ्गीप्रभृतिभिः कासहरैश्च कासघ्ने । स्नायुचर्मखुरशृङ्गकर्कटकास्थिशुष्कमत्स्यवल्लूरकृमिप्रभृतिभिर्वामनीयैश्च वामनीये ॥

धूमाडो पीवाने माटे नाळ वगेरेमां नाखवानी जूदी जूदी बत्तीओ.

३ प्रायोगिक धूमाडो पीवाने माटे एलादिगणमांथी कठ तथा तगर ए बे द्रव्योने काहाडी नाखी बाकीनां द्रव्योने खूब लासां वाटी कल्क करी, बार आंगळनी कांसडानी सळीने आठ आंगळसूधी अळसीना तंतुओना झीणा पाटाथी वींटी ते उपर कल्कनुं लेपन करीने ते सळीने पवनवगरना प्रदेशमां छायामां सूकाववी अने सूकाई गया पछी सळीने काहाडीने पोली बत्ती राखवी.

स्नेहन धूमाडो पीवाने माटे सरगवो तथा बेहेडां वगेरे स्निग्ध फळोनो गर्भ, मीण, राळ तथा गुगळ वगेरे द्रव्योनो स्नेहथी मिश्रित कल्क करी, बार आंगळनी कांसडानी सळीने आठ आंगळसूधी अळसीना तंतुओना झीणा पाटाथी वींटी ते उपर कल्कनुं लेपन करीने ते सळीने पवनवगरना प्रदेशमां छायामां सूकाववी अने

---

१ धूमाडो पावा तथा देवारूप, नस्य देवारूप, कवळ देवारूप, कोगळो देवारूप तथा प्रतिसारण-(मोहोडामां औषध घसाववा)रूप चिकित्साओ विषयनो.

सूकाई गया पछी सळीने काहाडी नाखीने पोली वत्ती राखवी.

वैरेचन धूमाडो पीवाने माटे सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना ८ मा विषयमां कहेलां शिरोविरेचन द्रव्योनो कल्क करी, बार आंगळनी कांसडानी सळीने आठ आंगळसूधी अलसीना तंतुओना झीणा पाटाथी वींटी ते उपर कल्कनुं लेपन करीने ते सळीने पवनवगरना प्रदेशमां छायामां सूकाववी अने सूकाई गया पछी सळीने काहाडी नाखीने पोली वत्ती राखवी.

कासघ्न धूमाडो पीवाने माटे ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, सूंठ, मरी, पीपळ, कामोदरी, हींग, ईंगोळीयो, तज, मणशील, गळो अने काकडाशींगी इत्यादि तथा बीजां पण खांसीने हरनारां द्रव्योनो कल्क करी, बार आंगळनी कांसडानी सळीने आठ आंगळसूधी अलसीना तंतुओना झीणा पाटाथी वींटी ते उपर कल्कनुं लेपन करीने ते सळीने पवनवगरना प्रदेशमां छायामां सूकाववी अने सूकाई गया पछी सळीने काहाडी नाखीने पोली वत्ती राखवी.

वामनीय धूमाडो पीवाने माटे स्नायु, चामडुं, खरी, शींगडुं, कुडचलनुं हाडकुं, सूकाएलां माछलां, शुष्कमांस अने कीडा वगेरे तथा बीजांपण वमन करावनारां द्रव्योनो कल्क करी, बार आंगळनी कांसडानी सळीने आठ आंगळसूधी अलसीना तंतुओना झीणा पाटाथी वींटी ते उपर कल्कनुं लेपन करीने ते सळीने पवनवगरना प्रदेशमां छायामां सूकाववी अने सूकाई गया पछी सळीने काहाडी नाखीने पोली वत्ती राखवी.

४ तत्र बस्तिनेत्रद्रव्यैर्धूमनेत्रद्रव्याणि व्याख्यातानि भवन्ति । धूमनेत्रं तु कनिष्ठिकापरिणाहमग्रे कलायमात्रस्रोतो मूलेऽङ्गुष्ठपरिणाहं धूमवर्त्तिप्रवेशस्रोतोऽङ्गुलान्यष्टचत्वारिंशत्प्रायोगिके । द्वात्रिंशत्स्नेहने । चतुर्विंशतिवैरेचने । षोडशाङ्गुलं कासघ्ने वामनीये च । एते अपि कोलास्थिमात्रच्छिद्रे भवतः । व्रणनेत्रमष्टाङ्गुलं व्रणधूपनार्थं कलायपरिमण्डलं कुलत्थवाहिस्रोत इति ॥

धूमाडो पीवानी नळीओ(नाळो)नां द्रव्यो, प्रमाण तथा छिद्रो.

४ आ स्थानना ३९ मा अध्यायना चोथा विषयमां बस्तिनी नळी बनाववा माटे जे सुवर्ण वगेरे द्रव्यो कह्यां छे ते द्रव्योनीज धूमाडो पीवानी नळीओ बनाववी. **प्रायोगिक** धूमाडो पीवानी नळी अग्रमां टचली आंगळी जेवी जाडी तथा वटाणानो दाणो पेसे तेवडा छिद्रवाळी, मूळमां अंगूठा जेवी जाडी तथा वत्ती पेसे तेवडा छिद्रवाळी अने अडताळीश आंगळ लांबी करवी. **स्नेहन** धूमाडो पीवानी नळी अग्रमां टचली आंगळी जेवी जाडी तथा वटाणानो दाणो पेसे तेवडा छिद्रवाळी, मूळमां अंगूठा जेवी जाडी तथा वत्ती पेसे तेवडा छिद्रवाळी अने बत्रीश आंगळ लांबी करवी. **वैरेचन** धूमाडो पीवानी नळी अग्रमां टचली आंगळी जेवी जाडी तथा वटाणानो दाणो पेसे तेवडा छिद्रवाळी, मूळमां अंगूठा जेवी जाडी तथा वत्ती पेसे तेवडा छिद्रवाळी अने चोवीश आंगळ लांबी करवी. **कासघ्न** धूमाडो पीवानी नळी बोरनो ठळीयो पेसे तेवडा छिद्रवाळी अने सोळ आंगळ लांबी करवी. **वामनीय** धुमाडो पीवानी नळी पण कासघ्न धूमाडो पीवानी नळी जेवीज करवी. **व्रणने धूमाडो देवानी** नळी आठ आंगळ लांबी, वटाणा जेवा गोळ मोहोडावाळी अने कळथीनो दाणो पेसे तेवडा छिद्रवाळी करवी.

५ अथ सुखोपविष्टः सुमना ऋज्वधोदृष्टिरतन्द्रितः स्नेहाक्तां प्रदीप्ताग्रां वर्त्तिं नेत्रस्रोतसि प्रणिधाय धूमं पिबेत् ।

मुखेन तं पिबेत्पूर्वं नासिकाभ्यां ततः पिबेत् ।
मुखपीतं मुखेनैव वमेत्पीतं च नासया ॥

मुखेन धूममादाय नासिकाभ्यां न निर्हरेत् । तेन हि प्रतिलोमेन दृष्टिस्तत्र विहन्यते ॥ विशेषतस्तु प्रायोगिकं घ्राणेनाददीत स्नेहनं मुखनासाभ्यां नासिकया वैरेचनं मुखेनैवेतरौ ॥

धूमाडो कईरीते पीवो?

५ सुख मळे एवी रीते बेसी, मनने आनंदयुक्त राखी, दृष्टिने सरल तथा नीची राखी, आलस्यादिकथी रहित थईने धूमाडो पीवो. प्रायोगिक, स्नेहन के वैरेचनिक धूमाडो पीवो होय तो बत्तीने स्नेहथी खरडी, तेना अग्रने सळगावी ते बत्तीने नळीना छिद्रमां नाखीने पीवो. ए धूमाडो प्रथम मुखथी पीवो अने पछी बे नाकवते पीवो. मोहोडाथी पीधेला धूमाडाने मोहोडाथीज काहाडवो अने नाकथी पीधेला धूमाडाने पण मोहोडाथीज काहाडवो. मुखथी धूमाडाने लईने नासिकाओथी काहाडवो नहीं. केमके प्रतिलोम चालेला धूमाडाथी दृष्टिनो प्रतिघात थाय छे. प्रायोगिक धूमाडाने विशेषे करी नाकथीज पीवो, स्नेहन धूमाडाने विशेषे करी मुख तथा नाक ए बन्नेथी पीवो, वैरेचन धूमाडाने विशेषे करी नाकथीज पीवो अने कासघ्न तथा वामनीय धूमाडाने विशेषे करी मुखथीज पीवो.

६ तत्र प्रायोगिकें वर्त्तिं व्यपगतशरकाण्डां निवातातपशुष्कामङ्गारेष्ववदीप्य नेत्रमूलस्रोतसि प्रयुज्य धूममाहरेति ब्रूयात् । एवं स्नेहनं वैरेचनिकं च कुर्यादिति । इतरयोर्व्यपेतधूमाङ्गारे स्थिरे समाहिते शरावे प्रक्षिप्य वर्त्तिं मूलच्छिद्रेणान्येन शरावेण पिधाय तस्मिंश्छिद्रे नेत्रमूलं संयोज्य धूममासेवेत । प्रशान्ते धूमे वर्त्तिमवशिष्टां प्रक्षिप्य पुनरपि धूमं पाययेदादोषविशुद्धेरेष धूमपानोपायविधिः ॥

बत्ती राखवामां विशेष तथा धूमपाननो अवधि.

६ प्रायोगिक, स्नेहन के वैरेचनिक धूमाडो

पावो होय तो जेमांथी कांसडानी सळी काहाडी नाखी होय एवी अने पवनवगरना प्रदेशमां छायामां सूकावेली बत्तीने अंगाराओमां सळगावी नळीनां मूळना छिद्रमां नाखीने वैद्ये केहेवुं के "धूमाड़ानी फूंक ले." (प्रायोगिक धूमाडो दिवसमां बे वार, वैरेचनिक धूमाडो दिवसमां त्रण चार वार अने स्नेहन धूमाडो दिवसमां एक वार पीवो. वाग्भट.)

कासघ्न के वामनीय धूमाडो पावो होय तो बत्तीने निर्धूम अंगारावाळा, दृढ अने सारी रीते राखेला कोडीयाना संपुटमां नाखी, उपला कोडीयाना मूळमां करेला छिद्रमां नळीनुं मूळ जोडी दईने ते नळीवते धूमाडो पीवानी वैद्ये आज्ञा करवी. (गोळीनो के चूर्णनो धूमाडो पावो होय तो पण गोळीने तथा चूर्णने कोडीयाना संपुटमां नाखीने एवी रीतेज पावो.) धूमाडो शांत थई जाय त्यारे बाकी रहेली बत्तीने नाखीने फरीवार पण धूमाडो पावो ते त्यांसूधी के ज्यांसूधी दोषनी शुद्धि थई जाय. धूमाडो पावाना उपायनो आ विधि कह्यो.

७ तत्र शोकश्रमभयामर्षौष्ण्यविषरक्तपित्तमदमूर्छादाहपिपासापाण्डुरोगतालुशोषच्छर्दिशिरोऽभिघातोद्गारापतर्पिततिमिरप्रमेहोदराध्मानोर्ध्ववातार्त्ता बालवृद्धदुर्बलविरिक्तास्थापितजागरितगर्भिणीरूक्षक्षीणक्षतोरस्कमधुघृतदधिदुग्धमत्स्यमद्यवागूपीताल्पकफाश्च न धूममासेवेरन् ॥

धूमाडो कोणे कोणे नहीं पीवो?

७ शोकथी, श्रमथी, भयथी, क्रोधथी, उष्णथी, विषथी, रक्तपित्तथी, मदथी, मूर्छाथी, दाहथी, तरशथी, पांडुरोगथी, तालुशोषथी, उलटीथी, माथाना अभिघातथी, ओडकारथी, तिमिरथी, प्रमेहथी, उदररोगथी, आध्मानथी के ऊर्ध्ववातथी पीडाएलाए धूमाडो पीवो नहीं. जेणे

लंघन कर्युं होय तेणे, बालके, वृद्धे, दुर्बळे, विरेचित थएलाए, जेने निरूहबस्ति देवामां आवेल होय तेणे, उजागरावाळाए, गर्भिणीए, रूक्ष शरीरवाळाए, क्षीण थएलाए, छातीना क्षतवाळाए, जेणे मध घी दहीं दूध के माछलां खाधेल होय तेणे, जेणे मद्यपान के यवागूपान कर्युं होय तेणे अने थोडा कफवाळाए धूमाडो पीवो नहीं.

८ अकालपीतः कुरुते भ्रममूर्छाशिरोरुजः ।
घ्राणश्रोत्राक्षिजिह्वानामुपघातं च दारुणम् ॥

धूमाडो समय वगर पीवाथी नुकसान.

८ समय वगर पीवामां आवेलो धूमाडो भ्रमने, मूर्छाने, माथानी वेदनाने अने घ्राणेंद्रिय, श्रोत्रेंद्रिय, चक्षुइंद्रिय तथा जीभ एओना दारुण उपघातने उत्पन्न करे छे.

९ आद्यास्तु त्रयो धूमा द्वादशसु कालेषूपादेयाः । तद्यथा । क्षुतदन्तप्रक्षालननस्यस्नानभोजनदिवास्वप्नमैथुनच्छर्दिमूत्रोच्चाररुषितशस्त्रकर्मान्तेष्विति । तत्र मूत्रोच्चारक्षवथुरुषितमैथुनान्तेषु स्नैहिकः । स्नानच्छर्दनदिवास्वप्नान्तेषु वैरेचनः । दन्तप्रक्षालननस्यस्नानभोजनशस्त्रकर्मान्तेषु प्रायोगिक इति ॥

धूमाडो पीवाना समयो.

९ छींक खाधा पछी, दांतोने धोया पछी, नस्य लीधा पछी, स्नान कर्या पछी, भोजन कर्या पछी, दिवसनी निद्रा कर्या पछी, मैथुन कर्या पछी, उलटी कर्या पछी, मूतरी आव्या पछी, झाडे जई आव्या पछी, क्रुद्ध थया पछी अने शस्त्रक्रिया कराव्या पछी ए बार समयोमां धूमाडो पीवो. ए समयोमां मूतरी आव्या पछी, झाडे जई आव्या पछी, छींक खाधा पछी, क्रुद्ध थया पछी अने मैथुन कर्या पछी स्नेहन धूमाडो पीवो. स्नान कर्या पछी, उलटी कर्या पछी अने दिवसनी निद्रा कर्या पछी वैरेचन धूमाडो पीवो. दांतोने धोया पछी, नस्य लीधा पछी, स्नान कर्या पछी, भोजन कर्या पछी अने शस्त्रक्रिया कराव्या पछी प्रायोगिक धूमाडो पीवो.

१० तत्र स्नेहनो वातं शमयति स्नेहादुपलेपाच्च । वैरेचनः श्लेष्माणमुत्क्लेश्यापकर्षति रौक्ष्यात्तैक्ष्ण्यादौष्ण्याद्वैशद्याच्च । प्रायोगिकः श्लेष्माणमुत्क्लेशयत्युत्क्लिष्टं चापकर्षति साधारणत्वात्पूर्वाभ्यामिति ॥

स्नेहन, वैरेचन अने प्रायोगिक ए त्रणे धूमाडाओना जूदा जूदा गुणो.

१० **स्नेहन** धूमाडो स्निग्ध करनार तथा उपलेप करनार होवाथी वायुनुं शमन करे छे. **वैरेचन** धूमाडो रूक्ष होवाने लीधे, तीक्ष्ण होवाने लीधे, उष्णपणाने लीधे अने विशद गुणवाळो होवाने लीधे कफने उत्क्लिष्ट करीने बाहार खेंची लेछे. **प्रायोगिक** धूमाडो उपर कहेला बन्ने धूमाडा जेवो होवाने लीधे (सामान्य रीते) कफने उत्क्लिष्ट करे छे अने उत्क्लिष्ट कर्या पछी खेंची लेछे.

११ भवति चात्र ॥
नरो धूमोपयोगाच्च प्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनाः ।
दृढकेशद्विजश्मश्रुः सुगन्धिविशदाननः ॥

धूमाडो पीवाथी लाभ.

११ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "धूमाडानो उपयोग करवाथी माणस प्रसन्न इंद्रियोवाळो, प्रसन्न वाणीवाळो, प्रसन्न मनवाळो, दृढ केशवाळो, दृढ दांतोवाळो, दृढ श्मश्रुवाळो अने सुगंधी तथा स्वच्छ मुखवाळो थाय छे."

१२ कासश्वासारोचकास्योपलेपस्वरभेदमुखास्रावक्षवथुतन्द्रानिद्राहनुमन्यास्तम्भपीनसशिरोरोगकर्णाक्षिशूलानि वातकफनिमित्ताश्चास्य मुखरोगा न भवन्ति ॥

धूमाडो पीवाथी कया कया रोगो थता नथी.

१२ धूमाडो पीनारा माणसने खांसी, श्वास, अरोचक, मोहोडामां उपलेप, स्वरभेद, मोहोडामांथी लाळनो स्राव, ऊलटी, तंद्रा, निद्रा, हडपचीनुं झलाई जवुं, ओडनुं झलाई जवुं, पीनस, माथानां दरदो, काननां शूळो तथा नेत्रनां शूळो उत्पन्न थतां नथी. वायुथी तथा कफथी थता मुखरोगो पण थता नथी.

१३ तस्य योगातियोगौ विज्ञातव्यौ तत्र योगो रोगप्रशमनोऽतियोगो रोगाप्रशमनस्तालुगलशोषपरिदाहपिपासामूर्छाभ्रममदकर्णाक्षिदृष्टिनासारोगदौर्बल्यानि जनयति ॥

धूमाडाना सम्यग्योगनां तथा अतियोगनां जूदां जूदां लक्षणो.

१३ धूमाडाना सम्यग्योगनां तथा अतियोगनां लक्षणो नीचे प्रमाणे जाणवां. जो रोगनी शांति थई जाय तो जाणवुं के धूमाडानो **सम्यग्योग** थयो छे. जो रोग शांत न थाय, ताळवामां तथा गळामां शोष तथा दाह थाय, तरश लाग्या करे, मूर्छा आवे, भ्रम थाय, मीणो चडे, कानना रोग थाय, दृष्टिना रोग थाय, नाकना रोग थाय अने दृष्टिनुं दुर्बलपणुं थाय तो जाणवुं के धूमाडानो **अतियोग** थयो छे.

१४ प्रायोगिकं त्रींस्त्रीनुच्छ्वासानाददीत । मुखनासिकाभ्यां च पर्यायांस्त्रींश्चतुरो वेति । स्नैहिकं यावदश्रुप्रवृत्ति । वैरेचनिकमादोषदर्शनात् । तिलतण्डुलयवागूपीतेन पातव्यो वामनीयः । ग्रासान्तरेषु कासघ्न इति ॥

प्रायोगिक, स्नेहन तथा वैरेचनिक पीवानी मर्यादाओ अने वामनीय तथा कासघ्न पीवामां विशेष.

१४ प्रायोगिक धूमाडानी त्रण त्रण फूंक लेवी अने मूकवी. तेमां त्रण के चार वार मोहोडाथी लेवी अने त्रण के चार वार नाकथी लेवी.

स्नेहन धूमाडो ज्यांसूधी आंख्योमांथी आंसू पडे त्यांसूधी पीवो.

वैरेचनिक धूमाडो ज्यांसूधी दोष पडे त्यांसूधी पीवो.

वामनीय धूमाडो प्रथम तलनी तथा चोखानी यवागू पीने पछी पीवो.

कासघ्न धूमाडो ग्रासोनां मध्योमां पीवो.

१५ व्रणधूमं शरावसम्पुटोपनीतेन नेत्रेण व्रणमानयेद्धूपनाद्वेदनोपशमो व्रणवैशद्यमास्रावोपशमश्च भवति ॥

व्रणने धूमाडी देवानी रीत तथा धूमाडी देवानुं फळ.

१५ व्रणने धूमाडी देवी होय तो अंगाराथी सळगावेला कल्कने कोडीयाना संपुटमां नाखी उपला कोडीयामां करेला छिद्रमां नळी नाखीने तेथी व्रणने धूमाडी पोहोचाडवी. व्रणने धूमाडी देवाथी वेदनानी शांति थाय छे, व्रणनुं स्वच्छपणुं थाय छे अने स्राव थतो बंध पडे छे.

१६ विधिरेप समासेन धूमस्याभिहितो मया । नस्यस्यातः प्रवक्ष्यामि विधिं निरवशेषतः ॥

धूमाडाना विधिनो उपसंहार अने नस्यना विधिनो उपक्रम.

१६ में संक्षेपथी आ धूमनो विधि कह्यो. हवे नस्यनो विधि संपूर्ण रीते कहुं छुं.

१७ औषधमौषधसिद्धः स्नेहो वा नासिकाभ्यां दीयत इति नस्यम् । तद् द्विविधं रेचनं स्नेहनं च । तद्द्विविधमपि पंचधा । तद्यथा नस्यं शिरोविरेचनं प्रतिमर्शोऽवपीडः प्रधमनं च । तेषु नस्यं प्रधानं शिरोविरेचनं च । नस्यविकल्पः प्रतिमर्शः शि-

रोविरेचनविकल्पोऽवपीडः प्रधमनं च । ततो नस्यशब्दः पंचधा निपातितः । तत्र यः स्नेहनार्थं शून्यशिरसां ग्रीवास्कन्धोरसां बलजननार्थं दृष्टिप्रसादजननार्थं वा स्नेहो विधीयते तस्मिन्वैशेषिको नस्यशब्दः ॥

नस्यनुं प्रकरण.

नस्य शब्दनी व्युत्पत्ति अने नस्यना मुख्य भेदो तथा ते भेदोना पेटाना भेदो.

१७ जे औषध अथवा औषधथी पकावेलो स्नेह नाकमां देवामां आवे छे ते नस्य केहेवाय छे. रेचन, (दोषने पाडनार) अने स्नेहन (स्निग्ध करनार) ए रीते नस्यना मुख्य बे भेद छे. ए बे भेदोमांथी पाछा नस्य, शिरोविरेचन, प्रतिमर्श, अवपीड अने प्रधमन ए पांच भेदो थाय छे. तेओमां नस्य अने शिरोविरेचन ए बे मुख्य छे. प्रतिमर्श नस्यनो भेद छे अने अवपीड तथा प्रधमन ए बे शिरोविरेचनना भेदो छे. आ प्रमाणे जो के नस्य शब्द पांचे प्रकारोने लागू पडे छे तो पण पांच प्रकारोमांनो पहेलो वैशेषिक नस्य शब्द ते स्नेहने लागू पडे छे के जे स्नेह शून्य थएलां मस्तकोनुं स्नेहन करवा माटे, डोक कांध तथा छाती एओने बळयुक्त करवा माटे अने दृष्टिने स्वच्छ करवा माटे देवामां आवे छे.

१८ तत्तु नस्यं देयं वाताभिभूते शिरसि दन्तकेशश्मश्रुप्रपातदारुणकर्णशूलकर्णक्ष्वेडतिमिरस्वरोपघातनासारोगास्यशोषापबाहुकाकालवलीपलितप्रादुर्भावकृच्छ्रप्रबोधेषु वातपैत्तिकेषु मुखरोगेष्वन्येषु च वातपित्तहरद्रव्यसिद्धेन स्नेहेनेति ॥

वैशेषिक नस्य(पांच नस्योमांना पेहेला नस्य)ना विषयो.

१८ माथुं वायुथी अभिभूत थयुं होय, दांतो केशो के दाढीमूछना वाळो पडी जता होय, कानमां दारुण शूळ नीकळतुं होय, कर्णक्ष्वेड नामनो काननो रोग थएल होय, तिमिर होय, स्वरनो उपघात थयो होय, नाकनो रोग थएल होय, मुखशोष थएल होय, अपबाहुक थएल होय, समय प्राप्त थया वगर वळी तथा पलित प्रकट थयां होय, आंखो मांड मांड उघडती होय, वायु तथा पित्तसंबंधी मुखरोगो थया होय के एवाज बीजा रोगो थया होय तो वायुने तथा पित्तने हरनारां द्रव्योथी पकावेला स्नेहथी नस्य देवुं.

१९ शिरोविरेचनं श्लेष्मणाभिव्याप्ततालुकण्ठशिरसामरोचकशिरोगौरवशूलपीनसार्द्धावभेदककृमिप्रतिश्यायापस्मारगन्धाज्ञानेष्वन्येषु चोर्ध्वजत्रुगतेषु कफजेषु विकारेषु शिरोविरेचनद्रव्यैस्तत्सिद्धेन वा स्नेहेनेति ॥

शिरोविरेचन(पांच नस्योमांना बीजा नस्य)ना विषयो.

१९ ताळवुं गळुं के माथुं कफथी व्याप्त थएल होय, अरोचक थएल होय, माथामां भारेपणुं के शूळ उत्पन्न थएल होय, पीनस थएल होय, अर्द्धावभेदक थएल होय, माथामां कृमिओ पड्या होय, प्रतिश्याय थएल होय, अपस्मार थएल होय, गंधनी खबर पडती न होय के डोकनी हांसडीथी उपरना मस्तकसूधीना प्रदेशोमां कफसंबंधी बीजा कोई विकारो उत्पन्न थया होय तो शिरोविरेचन (सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायनो ८ मो विषय जुवो.) द्रव्योथी अथवा ते द्रव्यवते पकावेला स्नेहथी शिरोविरेचन (माथाने दोषोथी खाली करनार) नस्य देवुं.

२० तत्रैतद्द्विविधमभुक्तवतोऽन्नकाले पूर्वाह्णे श्लेष्मरोगिणां मध्याह्ने पित्तरोगिणामपराह्णे वातरोगिणाम् ॥

उपर कहेलां बन्ने नस्योना समयो.

२० उपर कहेलां बे नस्योमांथी कोई नस्य

देवुं होय तो माणस जम्यो न होय ते समयमां देवुं अने ते जमवानो वखत थाय त्यारे देवुं. कफसंबंधी रोगवाळाओने पूर्वाह्णमां देवुं, पित्तसंबंधी रोगवाळाओने मध्याह्न समयमां देवुं अने वायुसंबंधी रोगवाळाओने अपराह्ण समयमां देवुं.

२१ अथ पुरुषाय शिरोविरेचनीयाय दन्तकाष्ठधूमपानाभ्यां विशुद्धवक्त्रस्रोतसे पाणितापपरिस्विन्नमृदितगलकपोलललाटप्रदेशाय वातातपरजोहीनवेश्मन्युत्तानशायिने प्रसारितकरचरणाय किंचित् प्रविलम्बितशिरसे वस्त्राच्छादितनेत्राय वामहस्तप्रदेशिन्यग्रोन्नामितनासाग्राय विशुद्धस्रोतसि दक्षिणहस्तेन स्नेहमुष्णानुतप्तं रजतसुवर्णताम्रमृत्पात्रशुक्तीनामन्यतमस्थं शुक्त्या पिचुना वा सुखोष्णमद्रुतमासिञ्चेदव्यवच्छिन्नधारं यथा नेत्रे न प्राप्नोति ॥

शिरोविरेचन नस्यनुं विधान.

२१ जेने शिरोविरेचन नस्य देवानुं होय ते माणसनां मुखनां स्रोतोने दांतण कराववाथी तथा धूमपानथी स्वच्छ करावी, तेना गळाने कपोळोने तथा ललाटने गरम करेला हाथना शेकथी सारी पेठे स्वेदित करी तथा स्नेहवते सारी पेठे चोळी, वायु वगरना तडका वगरना तथा रज वगरना घरमां तेने चत्तो सुवडावी, हाथ तथा पग लांबा करावी, माथाने कांईक लटकतुं रखावी, वस्त्रवते आंखोने ढांकी दई, डाबा हाथनी तर्जनीना अग्रवते नाकनी अणीने ऊंची करावी, रूपाना पात्रमां, सुवर्णना पात्रमां, त्रांबाना पात्रमां, माटीना पात्रमां के छीपमां राखेला, ऊना पाणीथी गरम करेला अने सेहेवाई शके एटली ऊनाशवाळा स्नेहने ए माणसना शुद्ध करावेला नाकमां जमणा हाथवते छीपथी के रूनां पूमडाथी झडप नहीं करतां तथा धारने तूटवा नहीं देतां रेडवो ते एवी रीते रेडवो के ते रीते नेत्रोमां तेनो रेगाडो जाय नहीं. (क्वाथादिक नाखवुं होय तो पण ए प्रमाणेज नाखवुं. अढारमा विषयमां कहेलुं नस्य देवुं होय तो पण तेमां योग्य जणाय तेटलुं आ प्रमाणेज विधान करवुं.)

२२स्नेहेऽवसिच्यमाने तु शिरो नैव प्रकम्पयेत्। न कुप्येन्न प्रभाषेच्च न क्षुणुयान्न हसेत्तथा ॥ एतैर्हि विहतः स्नेहो न सम्यक्प्रतिपद्यते । ततः कासप्रतिश्यायशिरोऽक्षिगदसम्भवः ॥

नस्य लेवाना समयमां रोगीए केवी चेष्टा नहीं करवी?

२२ नाकमां स्नेह के क्वाथादिक नस्य देवानुं होय ते समयमां रोगीए माथुं नहींज हलाववुं, कोप करवो नहीं, भाषण करवुं नहीं, छींक खावी नहीं अने हसवुं पण नहीं. केमके माथुं हलाववा वगेरेथी स्नेहादिकनो विघात थाय छे अने विघात पामेलुं स्नेहादिक ज्यां पोहोचवुं जोईए त्यां बराबर पोहोचतुं नथी. स्नेहादिक बराबर न पोहोचतां आडुं अवळुं जवाथी खांसी, प्रतिश्याय, माथाना रोगो तथा नेत्रना रोगो एओनी उत्पत्ति थाय छे.

२३ तस्य प्रमाणमष्टौ बिन्दवः प्रदेशिनीपर्वद्वयनिःसृताः प्रथममात्रा द्वितीया षड् बिंदवस्तृतीया चत्वारो बिंदव इत्येतास्तिस्रो मात्रा यथाबलं प्रयोज्याः ॥

स्नेहादिक द्रवना नस्यनी मात्रा.

२३ जो स्नेहादिक द्रवनुं नस्य देवुं होय तो प्रत्येक नाकमां आठ आठ बिंदु (टीपां) नाखवा ए उत्तम मात्रा छे, छ छ बिंदु नाखवा ए मध्यम मात्रा छे अने चार चार बिंदु नाखवा ए निकृष्ट मात्रा छे. तर्जनी आंगळीने स्नेहादिकमां तेनां बे पर्वे (आंका) सूधी बोळी काहाडी लेतां ते आंगळीमांथी जेटलो द्रव पडे ते एक बिंदु गणाय छे. आ मात्राओनो रोगीना बळने अनुसरीने उपयोग करवो. (भोज केहेछे के स्नेहन नस्यमां आथी बमणी मात्रा करवी.)

२४ स्नेहनस्यं न चोपगिलेत्कथंचिदपि ॥ शृङ्गाटकमभिप्लाव्य निरेति वदनाद्यथा । कफोत्क्लेशभयाच्चैव निष्ठीवेदविधारयन् ॥

नस्यने गळीजवुं नहीं पण थूंकी नाखवुं.

२४ नस्यने कोई रीते पण गळीजवुं नहीं. नाक, कान, नेत्र तथा एओने तृप्त करनारी शिराओनुं मध्य के जे शृंगाटक केहेवाय छे तेने सारी पेठे भीजवीने नस्य मोहोडामां आवे के तुरतज तेने जरा पण नहीं रोकतां डाबे के जमणे पडखे थूंकी नाखवुं. जो गळी जवामां आवे तो कफनो उत्क्लेश थाय छे.

२५ दत्ते च पुनरपि संस्वेद्य गलकपोलादीन्धूममासेवयेत भोजयेच्चैनमभिष्यन्दि ततोऽस्याचारिकमादिशेत् । रजोधूमस्नेहातपमद्यद्रवपानशिरःस्नानातियानक्रोधादीनि च परिहरेत् ॥

नस्य देवाया पछी उत्तरकर्म तथा परेजी.

२५ नस्य दीधा पछी फरीवार पण गळानुं तथा कपोळ वगेरेनुं स्वेदन, तथा तैलथी मर्दन करवुं, धूमाडो पावो, उपलेप करनारूं अन्न जमाडवुं अने पछी ते माणसने आचारादिक बतावी देवुं. जेणे नस्य लीधुं होय ते माणसे रजनो, अग्निना धूमाडानो, स्नेहनो, तडकानो, मद्यनो, द्रव पीवानो, माथे नाहावानो, अत्यंत फरवानो अने क्रोधादिकनो त्याग करवो.

२६ तस्य योगातियोगायोगानां विज्ञानं भवति। लाघवं शिरसो योगे सुखस्वप्नप्रबोधनम् । विकारोपशमः शुद्धिरिन्द्रियाणां मनःसुखम् ॥ कफप्रसेकः शिरसो गुरुतेन्द्रियविभ्रमः । लक्षणं मूर्ध्न्यतिस्निग्धे रूक्षं तत्रावचारयेत् ॥ अयोगे चैव वैगुण्यमिन्द्रियाणां च रूक्षता। रोगाशान्तिश्च तत्रेष्टं भूयो नस्यं प्रयोजयेत् ॥

वैशेषिक नस्यना सम्यग्योग, अतियोग तथा हीनयोग एओनां लक्षणो तथा अतियोगनी अने हीनयोगनी चिकित्सा.

२६ जो वैशेषिक नस्यनो सम्यग्**योग** थयो होय तो माथानुं हलकापणुं थाय छे, सुखथी निद्रा आवे छे, सुखथी जागवुं थाय छे, विकारोनी शांति थाय छे, इंद्रियोनी शुद्धि थाय छे अने मनमां आनंद थाय छे.

जो वैशेपिक नस्यनो **अतियोग** थयो होय तो कफनो स्राव थाय छे, माथामां भारेपणुं थाय छे अने इंद्रियोनो विभ्रम थाय छे. आ अतियोग थयो होय तो पाछुं रूक्ष नस्य देवुं.

जो वैशेपिक नस्यनो **हीनयोग** थयो होय तो विगुणपणुं थाय छे, इंद्रियोनी रूक्षता थाय छे अने रोगनी शांति थती नथी. आ प्रमाणे अयोग थयो होय तो फरीवार नस्य देवुं.

२७ नस्ये त्रीण्युपदिष्टानि लक्षणानि प्रयोगतः शुद्धहीनातिसंज्ञानि विशेषाच्छास्त्रचिन्तकैः ॥ लाघवं शिरसः शुद्धिः स्रोतसां व्याधिनिर्जयः । चित्तेन्द्रियप्रसादश्च शिरसः शुद्धिलक्षणम् ॥ कण्डूपदेहौ गुरुता स्रोतसां कफसंस्रवः । मूर्ध्नि हीनविशुद्धे तु लक्षणं परिकीर्त्तितम् ॥ मस्तुलुङ्गागमो वातवृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः । शून्यता शिरसश्चापि मूर्ध्नि गाढविरेचिते ॥ हीने तु शुद्धे शिरसि कफवातघ्नमाचरेत् । अतिशुद्धे तु शिरसि सर्पिर्नस्यं निषेचयेत् ॥

शिरोविरेचन नस्यना सम्यग्योग, हीनयोग तथा अतियोग एओनां लक्षणो अने हीनयोगनी तथा अतियोगनी चिकित्सा.

२७ शास्त्रनुं चिंतन करनाराओए प्रयोग उपरथी शिरोविरेचन नस्यना सम्यग्योग, हीनयोग

अने अतियोग एओनां जूदां जूदां लक्षणो नीचे प्रमाणे कह्यां छे.

शिरोविरेचन नस्यनो **सम्यग्योग** थयो होय तो माथानुं हलकापणुं थाय छे, स्रोतोनी शुद्धि थाय छे, व्याधि नष्ट थई जाय छे अने चित्त तथा इंद्रियो प्रसन्न थाय छे.

शिरोविरेचन नस्यनो **हीनयोग** थयो होय तो माथामां खरज आवे छे, कफनो लेप थाय छे, भारेपणुं थाय छे अने स्रोतोमांथी कफनो स्राव थाय छे.

शिरोविरेचन नस्यनो **अतियोग** थयो होय तो माथाना मगजनो स्राव थाय छे, वायुनी वृद्धि थाय छे, इंद्रियोनो विभ्रम थाय छे अने माथानुं शून्यपणुं थाय छे.

शिरोविरेचन नस्यनो हीनयोग थयो होय तो कफने तथा वायुने हणनारी योजना करवी अने अतियोग थयो होय तो घीनुं नस्य देवुं.

२८ एकान्तरं द्व्यन्तरं वा सप्ताहं वा पुनः पुनः एकविंशतिरात्रं वा यावद्वा साधु मन्यते ॥ मारुतेनाभिभूतो वात्यन्तं यः स्यात्तु मानवः । द्विकालं चापि दातव्यं नस्यं तस्य विजानता ॥

दोषनी अपेक्षाथी नस्यना कालनो नियम.

२८ दोषनी अधिकता जोवामां आवे तो ते अधिकताना प्रमाणने अनुसरी वचमां एक एक दिवसनुं अथवा बबे दिवसनुं अंतर नाखीने सात दिवससूधी अथवा एकवीश दिवससूधी अथवा जे मुदत योग्य लागे त्यांसूधी नस्य आप्या करवुं. जे माणस वायुथी अत्यंत पराभव पाम्यो होय तेने तो प्रवीण वैद्ये एक एक दिवसमां बबे वखत पण नस्य देवुं.

२९ अवपीडं तु शिरोविरेचनवदभिष्यन्द-सर्पदष्टविसंज्ञेभ्यो दद्याच्छिरोविरेचनद्रव्याणा-मन्यतममवपीड्यावपिष्य चेतोविकारकृमिवि-षाभिपन्नानां चूर्णं प्रधमेत् ।

अवपीड नस्य तथा प्रधमन नस्य के जेओ शिरोविरेचन नस्यना भेदो छे तेओनुं विधान.

२९ जेनुं माथुं कफथी तथा मेदथी व्याप्त थयुं होय तेने, जेने सर्पदंश थयो होय तेने अने जे संज्ञारहित थयो होय तेने **अवपीड** नस्य देवुं. पीपळ तथा वावडींग वगेरे शिरोविरेचन द्रव्योमांना कोई द्रव्यनो कल्क करी तेने नीचोवी रस काहाडीने ते रसनुं शिरोविरेचन नस्यना विधिप्रमाणे जे नस्य देवामां आवे ते अवपीड नस्य केहेवाय छे.

चित्तना विकारवाळाने, माथामां कृमिवाळाने अने विषथी व्याप्त थएलाने **प्रधमन** नस्य देवुं. पीपळ तथा वावडींग वगेरे शिरोविरोचन द्रव्योमांना कोई द्रव्यनुं बारीक चूर्ण करी, छ आंगळ लांबी बे मोहोडावाळी नळीमां अडतालीश चणोठी भार ए चूर्ण भरी मोहोडानी फूंक दईने ते चूर्णने नाकमां चडावी देवुं ए प्रधमन नस्य केहेवाय छे.

३० शर्करेक्षुरसक्षीरघृतमांसरसानामन्यतमं क्षीणानां शोणितपित्ते च विदध्यात् ॥

वैशेषिक (स्नेहन) नस्यना प्रकारांतर-रूप बृंहण नस्य.

३० क्षीण थएलां माणसोने अने रक्तपित्तवाळां माणसोने साकरनुं पाणी, शेलडीनो रस, दूध, घी अने मांसनो रस एओमांना कोई पदार्थनुं नस्य देवुं.

३१ कृशदुर्बलभीरूणां सुकुमारस्य योषिताम् । शृताः स्नेहाः शिरःशुद्धौ कल्कस्तेभ्यो यथा हितः॥

अमुक माणसोने स्नेहोनुं शिरोविरेचन नस्य देवुं.

३१ जेम बीजां माणसोने कल्कनुं शिरोविरेचन नस्य विशेष हितकारी छे तेम कृशने, दुर्ब-

ळने, बीकणने, सुकुमारने अने स्त्रीओने पकावेला स्नेहोनुं शिरोविरेचन नस्य विशेष हितकारी छे.

३२ नस्येन परिहर्त्तव्यो भुक्तवानपतर्पितोऽत्यर्थतरुणप्रतिश्यायी गर्भिणी पीतस्नेहोदकमद्यद्रवोऽजीर्णी दत्तवस्तिः क्रुद्धो गरार्त्तस्तृषितः शोकाभिभूतः श्रान्तो बालो वृद्धो वेगावरोधितः शिरःस्नातः स्नातुकामश्चेति । अनार्त्तवे चाभ्रे नस्यधूमौ परिहरेत् ॥

नस्य कोने कोने नहीं देवुं? तथा केवा समयमां नहीं देवुं?

३२ जेणे भोजन कर्युं होय तेने, जेणे लंघन कर्युं होय तेने, अत्यंत ताजा प्रतिश्यायवाळाने, गर्भिणीने, जेणे स्नेह जळ मद्य के बीजो कोई द्रव पीधो होय तेने, अजीर्णवाळाने, जेने बस्ति देवामां आवी होय तेने, क्रोध पामेलाने, झेरथी[1] पीडाएलाने, तरश्याने, शोकथी घेराएलाने, थाकेलाने, सात वर्षथी ओछी उमरना बालकने, एंशी वर्षथी अधिक उमरना वृद्धने, मूत्रादिकनी हाजतवाळाने, माथे नाहेलाने अने माथे नाहावानी इच्छावाळाने नस्य देवुं नहीं. (वाग्भट केहेछे के एओने पण नस्यथीज टळे एवो भयंकर रोग उत्पन्न थयो होय तो नस्य देवुं.) ऋतुवगर वादळांओनो घमघोर थयो होय ते समये पण नस्य देवुं नहीं अने धूमपान पण कराववुं नहीं. (आवश्यक जणाय तो एवा समयमां पण नस्य देवुं तथा धूमपान पण करावबुं.)

३३ तत्र हीनातिमात्रातिशीतोष्णसहसाप्रदानादतिप्रविलम्बितशिरस उच्छिंघतो विचलतोऽभ्यवहरतो वा प्रतिषिद्धप्रदानाच्च व्यापदो भवन्ति तृष्णोद्गारादयो दोषनिमित्ताः क्षयजाश्च ।

भवतश्चात्र ।

नस्ये शिरोविरेके च व्यापदो द्विविधाः स्मृताः
दोषोत्क्लेशात्क्षयाच्चैव विज्ञेयास्ता यथाक्रमम्
दोषोत्क्लेशनिमित्तास्तु जयेच्छमनशोधनैः ।
अथ क्षयनिमित्तासु यथास्वं बृंहणं हितम् ॥

वैशेषिक नस्यनी तथा वैरेचनिक नस्यनी व्यापत्तिओ अने तेओनी चिकित्सा.

३३ हीनयोगथी, अतियोगथी, अतिशीतथी, अतिउष्णथी, झडपथी देवायाथी, अत्यंत लटकता माथावाळाने देवायाथी, नाकथी श्वासने ऊंचो चडाववा लागेलाने देवायाथी, चलित थताने देवायाथी, भोजन करताने देवायाथी अने जेओने तथा जे काळमां देवानो निषेध छे तेओने तथा ते काळमां देवायाथी वैशेषिक नस्यनी तथा शिरोविरेचन नस्यनी तरश तथा ओडकार वगेरे व्यापत्तिओ थाय छे. वैशेषिक नस्यमां दोषनो उत्क्लेश थवाने लीधे अने वैरेचनिकमां दोषनो क्षय थवाने लीधे ए व्यापत्तिओ थाय छे.

आ विषयमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "वैशेषिक नस्यमां दोषना उत्क्लेशने लीधे अने वैरेचनिक नस्यमां दोषना क्षयने लीधे व्यापत्तिओ थाय छे. जो व्यापत्तिओ दोषना उत्क्लेशथी थएली होय तो संशमनोथी तथा संशोधनोथी तेओने टाळवी अने दोषना क्षयथी थएली होय तो क्षय पामेला दोषनुं बृंहण करवुं ए हितकारी थाय छे."

३४ प्रतिमर्शश्चतुर्दशसु कालेषूपादेयः । तद्यथा । कल्योत्थितेन प्रक्षालितदन्तेन गृहान्निर्गच्छता व्यायामव्यवायाध्वपरिश्रान्तेन मूत्रोच्चारकवलांजनान्तेऽभुक्तवता छर्दितवता दिवास्वप्नोत्थितेन सायं चेति ।

तत्र कल्योत्थितेनासेवितः प्रतिमर्शो रात्रावुपचितं नासास्रोतोगतं मलमुपहन्ति मनःप्रसादं च करोति । प्रक्षालितदन्तेनासेवितो-

[1] झेरथी पीडाएलाने अवपीड तथा प्रधमन नस्य देवानुं तो उपरना २९ मा विषयमां कह्युं छे.

दन्तानां दृढतां वदनसौगन्ध्यं चापादयति । गृहान्निर्गच्छता सेविते नासास्रोतसः क्लिन्नतया रजो धूमो वा नाबाधते । व्यायामान्मैथुनादध्वनश्च परिश्रान्तेनासेवितः श्रममुपहन्ति । मूत्रोच्चारान्ते सेवितो दृष्टेर्गुरुत्वमपनयति । कवलांजनान्ते सेवितो दृष्टिं प्रसादयति । अभुक्तवता सेवितः स्रोतसां विशुद्धिं लघुतां चापादयति । वान्तेनासेवितः स्रोतोविलग्नं श्लेष्माणमपोह्य भक्तकाङ्क्षामापादयति । दिवास्वप्नोत्थितेनासेवितो निद्राशेषं गुरुत्वं मलं चापोह्य चित्तैकाग्र्यं जनयति । सायं चासेवितः सुखनिद्राप्रबोधं चेति ॥

प्रतिमर्श नस्य के जे वैशेषिक अथवा स्नेहन नस्यनो भेद छे तेना समयो तथा समयपरत्वे गुणो.

३४ (नासिकानां प्रत्येक छिद्रमां स्नेह फक्त बबे टीपां नाखवामां आवे ए प्रतिमर्शनस्य केहेवाय छे एम वाग्भट केहेछे पण आ ग्रंथमां तो प्रतिमर्शनुं जूदुं प्रमाण आप्युं छे ते नीचेना विषयमां जुवो.) प्रभातमां शयनमांथी ऊठीने, दांतो धोईने, घरमांथी बाहार नीकळतां, कसरत करवाथी थाक्या पछी, मैथुन करवाथी थाक्या पछी, पंथ करवाथी थाक्या पछी, मूतरी आवीने, झाडे जई आवीने, कवलना अंतमां, अंजन आंज्या पछी, जमवाथी पेहेलां, उलटी कर्या पछी, दिवस्नी निद्रा कर्या पछी अने सायंकाळे, एम चौद समयोमां प्रतिमर्श नस्य लेवुं.

प्रभातमां शयनमांथी ऊठीने प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो ते प्रतिमर्श रातमां जमा थएला नाकना स्रोतना मळने टाळे छे अने मनने प्रसन्न करे छे.

दांतो धोया पछी (दातण कर्या पछी) प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो ते प्रतिमर्श दांतोने दृढ करे छे अने मोहोडाने सुगंधवाळुं करेछे.

घरमांथी बाहार नीकळतां प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी नाकनुं स्रोत आर्द्रतावाळुं रेहे छे के जेथी रज के धूमाडो कशी हरकत करी शकतां नथी.

कसरत करवाथी, मैथुनथी के पंथ करवाथी थाकी रह्या पछी प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी श्रम नष्ट थाय छे.

मूतरी आवीने तथा झाडे जई आवीने प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी दृष्टिनुं भारेपणुं टळी जाय छे.

कवलना अंतमां तथा अंजन आंज्या पछी प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी दृष्टि स्वच्छ थाय छे.

जम्याथी पेहेलां प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी स्रोतोनी शुद्धि अने हलकापणुं थाय छे.

उलटी कर्या पछी प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी स्रोतोमां वळगी रहेलो कफ दूर थई जाय छे अने जमवानी इच्छा उत्पन्न थायछे.

दिवसनी निद्रा कर्या पछी प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी बाकी रहेली निद्रा, भारेपणुं तथा मेल दूर थई जाय छे अने चित्तनी एकाग्रता थाय छे.

सायंकाळे प्रतिमर्शनुं सेवन करवामां आवे तो सुखथी निद्रा आवे छे अने जागवुं पण सुखथी थाय छे.

३५ ईषदुच्छिंघतः स्नेहो यावद्वक्त्रं प्रपद्यते । नस्ये निषिक्तं तं विद्यात्प्रतिमर्शं प्रमाणतः ॥

प्रतिमर्श नस्यनुं प्रमाण.

३५ जरीक ऊंचो श्वास लेतां नाकमांथी मोहोडामां आवे तेटलो स्नेह नासिकानां बन्ने छिद्रोमां नाखवो ए प्रतिमर्शनुं प्रमाण समजवुं.

३६ नस्येन रोगाः शाम्यन्ति नराणामूर्ध्वजत्रुजाः इन्द्रियाणां च वैमल्यं कुर्यादास्यं सुगन्धि च ॥

हनुदन्तशिरोग्रीवात्रिकबाहूरसां बलम् ।
वलीपलितखालित्यव्यङ्गानां चाप्यसम्भवः ॥

नस्य लेवाथी थता लाभो.

३६ नस्य लेवाथी डोकनी हांसडी उपरना मस्तकपर्यंत भागोमां थएला रोगो शांत थई जाय छे. इंद्रियो निर्मळ थाय छे, मोहोडुं सुगंधी थाय छे, शरीरमां वळीओ पडती नथी, सफेद वाळ आवता नथी, टाल पडती नथी, दाझ पडती नथी अने हडपची, दांतो, माथुं, डोक, बरडानुं त्रिक, बाहु तथा छाती एओने बळ प्राप्त थाय छे.

३७ तैलं कफे सवाते स्यात्केवले पवने वसाम् दद्यात्सर्पिः सदा पित्ते मज्जानं च समारुते ॥
चतुर्विधस्य स्नेहस्य विधिरेष प्रकीर्त्तितः ।
श्लेष्मस्थानाविरोधित्वात्तेषु तैलं प्रशस्यते ॥

जूदा जूदा दोषो उपर नस्यमां जूदा जूदा स्नेहोनुं अने स्वस्थनेमाटे तैलनुं विधान.

३७ जो कफ वायुसहित होय तो तैलनुं नस्य देवुं, एकलो वायु होय तो चरबीनुं नस्य देवुं, एकलुं पित्त होय तो सर्वदा घीनुं नस्य देवुं अने वायुसहित पित्त होय तो हाडकानी अंदरना मज्जा नामना स्नेहनुं नस्य देवुं. नस्यमां आ चार प्रकारना स्नेहनुं विधान कह्युं. स्वस्थ माणसने नित्य नस्य देवामां तो तैलनोज उपयोग करवो ए स्तुतिपात्र छे. कारण के माथुं कफनुं स्थानक छे अने तैल कफने टाळनार छे. बीजा स्नेहो कफना विरोधी नथी.

३८ अतः परं प्रवक्ष्यामि कवलग्रहणे विधिम् ।

नस्यप्रकरणनो उपसंहार अने कवलप्रकरणनो उपक्रम.

३८ नस्यनुं प्रकरण समाप्त थयुं. हवे कवलना तथा कोगळाना विधिनुं प्रकरण कहुं छुं.

३९ चतुर्द्धा कवलः स्नेही प्रसादी शोधिरोपणौ स्निग्धोष्णैः स्नैहिको वाते स्वादुशीतैः प्रसादनः। पित्ते कट्वम्ललवणै रूक्षोष्णैः शोधनः कफे ॥
कषायतिक्तमधुरैः कटूष्णै रोपणो व्रणे ।
चतुर्विधस्य चैवास्य विशेषोऽयं प्रकीर्त्तितः ॥

कवलनुं तथा कोगळानुं प्रकरण.

कवलना चार भेदो, लक्षणो अने भेदोनो जूदां जूदां कार्योमां उपयोग.

३९ स्नेही, प्रसादी, शोधी अने रोपण ए रीते कवल चार प्रकारनो छे. स्निग्ध तथा उष्ण पदार्थोथी जे कोळीओ बनाववामां आवे ते **स्नेही** कवल केहेवाय छे. मधुर तथा तथा शीतल पदार्थोथी जे कोळीयो बनाववामां आवे ते **प्रसादी** कवल केहेवाय छे. तीखा, खाटा, खारा, रूक्ष तथा उष्ण पदार्थोथी जे कोळीयो बनाववामां आवे ते **शोधी** कवल केहेवाय छे अने तूरा, कडवा, मधुर, तीखा तथा उष्ण पदार्थोथी जे कोळीयो बनाववामां आवे ते **रोपण** कवल केहेवाय छे. वायु उपर स्नेही कवलनी, पित्त उपर प्रसादी कवलनी, कफ उपर शोधी कवलनी अने व्रण उपर रोपण कवलनी योजना करवी. आ चार प्रकारना कोळीयानो विशेष कह्यो.

४० तत्र त्रिकटुकवचासर्षपहरीतकीकल्कमालोड्य तैलशुक्तसुरामूत्रक्षारमधूनामन्यतमेन सलवणमभिप्रतप्तमुपस्विन्नमृदितगलकपोलललाटप्रदेशो धारयेत् ॥

चार प्रकारना कवलोमां शोधी कवलनुं उदाहरण.

४० सूंठ मरी पीपळ, वज, सर्षप अने हरडे एओनो कल्क करी ते कल्कने तैल, शुक्त, सुरा, गोमूत्र, क्षार के मध एओमाना एकमां घोळी सैंधवथी युक्त करीने अग्निथी गरम करवो. रोगीना गळाने, कपोळने तथा ललाटने स्वेदन

आपी तथा तैलथी मर्दन करीने ते गरम कोळीओ रोगीना मोहोडामां रखाववो. आ कोळीआथी मोहोडाना कफनुं संशोधन थाय छे.

४१सुखं संचार्यते या तु मात्रा सा कवले स्मृता असंचार्या तु या मात्रा गण्डूषः स प्रकीर्त्तितः॥

कवल अने कोगळो एओमां तफावत.

४१ मोहोमामां चोतरफ फेरवी शकाय तेटली मात्रा राखवी ए कवल केहेवाय छे अने मोहोडामां चोतरफ फेरवी शकाय नहीं एवी एटले जेथी सघळुं मोहोडुं भरपूर थई रहे तेटली मात्रा धरवी ए कोगळो केहेवाय छे.

४२ तावच्च धारयितव्योऽनन्यमनसोन्नतदेहेन यावद्दोषपरिपूर्णकपोलत्वं नासास्रोतोनयनपरिस्रावश्च भवति तदा विमोक्तव्यः पुनश्चान्यो ग्रहीतव्य इति ॥

कवल शी रीते अने क्यांसूधी मोहोडामां राखवो अने पछी बीजो कवल क्यारे लेवो?

४२ चित्तने एकाग्र राखी तथा शरीरने उन्नत राखीने ते कोळीयाने त्यांसूधी मोहोडामां धरी राखवो के ज्यांसूधी गलोफां कफथी भरपूर थई जाय अने नासिकामांथी तथा नेत्रोमांथी पाणी झरवा लागे. पछी ए कोळीआने काहाडी नाखीने बीजो कोळीयो लेवो. (वाग्भटे तो 'अथवा नासिकामांथी तथा नेत्रोमांथी पाणी झरवा लागे' एम कह्युं छे.)

४३ एवं स्नेहपयःक्षौद्ररसमूत्राम्लसम्भृताः । कषायोष्णोदकाभ्यां च कवला दोषतो हिताः॥

दोषोने अनुसरीने एवीज रीते बीजा कवलो गोठवी लेवा.

४३ ए प्रमाणे जे जे दोषनुं हरण करवुं होय ते ते दोषने हरनारां औषधोनो कल्क करी तेने स्नेह, दूध, मध, मांसनो रस, मूत्र, कांजी वगेरे अम्लद्रव, क्काथ अने ऊनुं पाणी एओमांथी जे द्रव योग्य लागे ते द्रवमां घोळीने तेनुं मोहोडामां धारण करवुं ए हितकारी थाय छे.

४४ व्याधेरपचयस्तुष्टिर्वैशद्यं वक्त्रलाघवम् । इन्द्रियाणां प्रसादश्च कवले शुद्धिलक्षणम् ॥ हीने जाड्यकफोत्क्लेशावरसज्ञानमेव च । अतियोगान्मुखे पाकः शोषतृष्णारुचिक्लमाः ॥ शोधनीयविशेषेण भवन्त्येवं न संशयः ।

कवलना सम्यग्योग, हीनयोग तथा अतियोग एओनां जूदां जूदां लक्षणो.

४४ कवलनो **सम्यग्योग** थयो होय तो व्याधिनो घटारो थाय छे, संतोष थाय छे, स्वच्छता थाय छे, मोहोडानुं हलकापणुं थाय छे अने इंद्रियोनुं प्रसन्नपणुं थाय छे.

कवलनो हीनयोग थयो होय तो जडता थाय छे, कफनो उत्क्लेश थाय छे अने खावामां आवता पदार्थोना रसनुं ज्ञान थतुं नथी.

कवलनो अतियोग थयो होय तो मोहोडामां पाक तथा शोष थाय छे, तरश लाग्या करे छे, अन्नादिक उपर अरुचि थाय छे अने क्लम थायछे.

जे दोषनुं हरण करवानुं होय ते दोषने हरनारां द्रव्योना स्वभावप्रमाणे उपर लखेलां लक्षणो थाय छे एमां संशय नथी.

४५तिला नीलोत्पलं सर्पिः शर्करा क्षीरमेव च सक्षौद्रो दग्धवक्त्रस्य गण्डूषो दाहनाशनः ।

घणा प्रकारना कोगळाओमां दाहनो नाश करनारा कोगळानुं उदाहरण.

४५ तिल, नीलकमळ, घी, साकर, दूध अने

१ भावप्रकाशमां तो 'कोळीआने अरधो मोहोडामां नाखी चावीने थूंकी नाखवो' एम कह्युं छे तेथी तेनो मत एवो जणाय छे के 'कल्कना पींडाने तैल वगेरेमां नहीं घोळता एमने एम मोहोडामां घालवो.' पींडारूप अर्थ लेवामां कवल शब्दनुं वधारे सारस्य आवे छे.

मध एओने मिश्रित करी दईने ते द्रवनो मोहोडुं भरपूर थई रहे तेटलो कोगळो नेत्रमांथी अने नाकमांथी पाणी झरवा लागे त्यांसूधी मोहोडामां धरी राखवामां आवे तो क्षारादिकथी बळी गएला मोहोडानो दाह शांत थाय छे.

४६ कवलस्य विधिर्होष समासेन प्रकीर्त्तितः ॥

कवलना तथा कोगळाना प्रकरणनो उपसंहार अने प्रतिसारणना प्रकरणनो उपक्रम.

४६ आ कवलनो तथा कोगळानो विधि संक्षेपथी कह्यो. हवे प्रतिसारण (मोहोडामां आंगळीना अग्रथी औषध घसवा)नो विधि कहुं छुं.

४७ विभज्य भेपजं बुद्ध्या कुर्वीत प्रतिसारणम्
कल्को रसक्रिया क्षौद्रं चूर्णं चेति चतुर्विधम् ॥
अङ्गुल्यग्रप्रणीतं तु यथास्वं मुखरोगिणाम् ।

प्रतिसारणना चार प्रकार अने तेओनुं विधान.

४७ वैद्ये औषधोनां रस, वीर्य, गुण अने विपाक एओनो बुद्धिवते विचार करी ते ते दोषोनुं हरण करवा माटे ते ते द्रव्योनां कल्कादिक आंगळीना अग्रवते रोगीना मोहोडामां घसाववां ए प्रतिसारण केहेवाय छे. कल्क, रसक्रिया, (क्वाथने पकावीने तेमांथी बनावेलो मलम) मध अने चूर्ण ए रीते प्रतिसारणना चार भेद छे. मोहोडाना रोगवाळा माणसोने दोषोना अनुसार प्रमाणे योग्य द्रव्योथी बनावेलुं कल्कादिक तेओनी आंगळीना अग्रवते धीरे धीरे मोहोडामां घसाववुं.

४८ तस्मिन्योगमयोगं च फवलोक्तं विभावयेत् ।

प्रतिसारणना सम्यग्योगादिकनां लक्षणो.

४८ प्रतिसारणना सम्यग्योगनां, हीनयोगनां तथा अतियोगनां लक्षणो कवलना सम्यग्योगनां, हीनयोगनां तथा अतियोगनां लक्षणो प्रमाणेज समजी लेवां. (आ अध्यायनो ४४ मो विषय जुवो.)

४९ तानेव शमयेद्व्याधीन्कवलो यानपोहति ।
दोषघ्नमनभिष्यन्दि भोजयेच्च तथा नरम् ॥

प्रतिसारणनुं फळ अने प्रतिसारण कराव्या पछी देवानुं भोजन.

४९ जे व्याधिओने कवल शांत करे छे तेज व्याधिओने प्रतिसारण शांत करे छे.

प्रतिसारण कराव्या पछी रोगीने एवुं अन्न जमाडवुं के जे अन्न अभिष्यंदी न होय अने जे दोषथी मुखरोग थयो होय ते दोषनुं हरण करे एवुं होय. (जे अन्न रसनुं वहन करनारी शिराओने चीकाशथी तथा भारेपणाथी रोकी दईने शरीरमां भारेपणुं करे ते अन्न अभिष्यंदी केहेवाय छे.)

इति सौश्रुत आयुर्वेद चिकित्सितस्थानं समाप्तम् ॥

सुश्रुत-आयुर्वेद.

कल्प स्थान[1].

मूळ तथा गुजराती भाषांतर.

अध्याय १ लो.

१ अथातोऽन्नपानरक्षाकल्पं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अन्नपान रक्षाकल्प[2]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ धन्वन्तरिः काशिपतिस्तपोधर्मभृतांवरः।
सुश्रुतप्रभृतीञ्छिष्यानशशासाहतशासनः॥

संवादनुं स्मारण.

२ तपनुं तथा धर्मनुं धारण करनाराओमां उत्तम अने जेनी आज्ञानो क्यांय पण प्रतिघात थतो न हतो एवा भगवान् काशिपति धन्वंतरिए सुश्रुतआदि शिष्योने नीचे प्रमाणे उपदेश कर्यो.

३ रिपवो विक्रमाक्रान्ता ये च स्वे कृत्यतां गताः
सिसृक्षवः क्रोधविषं विवरं प्राप्य तादृशम्॥
विषैर्निहन्युर्निभृतं नृपतिं दुष्टचेतसः।
स्त्रियो वा विविधैर्योगैः कदाचित्सुभगेच्छया॥
विषकन्योपयोगाद्वा क्षणाजह्यादसून्नरः।
तस्माद्वैद्येन सततं विषाद्रक्ष्यो नराधिपः॥

राजवैद्ये विषना संपर्कथी राजाने बचाववो जोइए.

३ राजाए पराक्रमथी 'दबावेला शत्रुओ अने राजानी नोकरीमां रह्या छतां राजानो द्वेष करनारा माणसो पण पोतानो लाग फावतां कपटकृत्योनी योजनाओ करीने गुप्त रीते पोताना क्रोधरूपी झेरने सफळ करवा माटे अनेक प्रकारना विषप्रयोगोथी राजाने मारी नाखे छे. वखतपर राजानी स्त्रीओ पण क्रोधादिकथी अथवा ऐश्वर्यनो कबजो लेवानी इच्छाथी विविध विषप्रयोगोवते राजाने मारी नाखे छे. वखतपर एम पण बने छे के कोई राजा कामनाथी अंध बनी विषकन्यानो संभोग करे तो तेथी पण क्षणमात्रमां मरी जाय छे. (अमुक नक्षत्रादिकमां जन्मेली कन्या विषकन्या केहेवाय छे. आ विषय ज्योतिःशास्त्रना ग्रंथोउपरथी जाणी लेवो. केटलांएक सामुद्रिकादिक लक्षणो उपरथी पण विषकन्यानी परीक्षा थाय छे.) आ प्रमाणे बने छे एटलामाटे राजवैद्ये राजाने सर्वदा विषना संपर्कथी बचाववो जोइए.

४ यस्माच्च चेतोऽनित्यत्वमश्ववत्प्रथितं नृणाम्।
न विश्वस्यात्ततो राजा कदाचिदपि कस्यचित्॥

राजाए अन्नपानादिकमां राजवैद्य शिवाय बीजा कोईनो पण विश्वास करवो नहीं.

४ माणसोनुं चित्त घोडा जेवुं चंचल छे ए वात प्रख्यात छे एटलामाटे राजाए अन्नपानादिकना विषयमां राजवैद्य शिवाय बीजा कोईनो पण कदी विश्वास करवो नहीं.

१ आ स्थान अगदतंत्र छे. सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायनो ९ मो विषय वांचो.

२ अन्नपानादिकनुं विषना संपर्कथी रक्षण करवा विषेनो.

५ कुलीनं धार्मिकं स्निग्धं सुभृतं सततोत्थितम् ।
अलुब्धमशठं भक्तं कृतज्ञं प्रियदर्शनम् ॥
क्रोधपारुष्यमात्सर्यमदालस्यविवर्जितम् ।
जितेन्द्रियं क्षमावन्तं शुचिं शीलदयान्वितम् ॥
मेधाविनमसंभ्रान्तमनुरक्तं हितैषिणम् ।
पटुं प्रगल्भं निपुणं दक्षं मायाविवर्जितम् ॥
पूर्वोक्तैश्च गुणैर्युक्तं नित्यं सन्निहितागदम् ।
महानसे प्रयुञ्जीत वैद्यं तद्विद्यपूजितम् ॥

राजाए रसोडानी देखरेख केवा वैद्यने सोंपवी ?

५ जे वैद्य आयुर्वेदनुं अध्ययन करनारा उत्तम कुलमां जन्मेलो होय, धर्मात्मा होय, मित्रभावना स्नेहथी सर्वदा पोतानी साथे रेहेनारो होय, ऊंचा पगारवाळो होय, सर्वदा वैद्यपणाने लगती बाबतोमां परम उद्योगी रेहेतो होय, लोभवगरनो होय, लुच्चाईवगरनो होय, राजभक्त होय, करेला उपकारोने विसारतो न होय, भव्य देखाववाळो होय, क्रोध कठोरता अदेखाई मद तथा आलस्य एओथी रहित होय, जितेंद्रिय होय, क्षमावाळो होय, पवित्र होय, सुशीलथी तथा दयाथी संयुक्त होय, अतिबुद्धिमान् होय, काम करवामां संभ्रम पामे नहीं एवो होय, प्रीतिवाळो होय, हितेच्छु होय, सारो वक्ता होय, खरी बाबतमां कोईथी पण न दबाय एवो होय, चतुर होय, समर्थ होय, कपटवगरनो होय, सूत्रस्थानना ते ते विषयोमां कहेला शास्त्रज्ञानादिक गुणोथी संपन्न होय, सघळां औषधोने हाजरज राखतो होय अने वैद्यशास्त्रना तथा पाकशास्त्रना विद्वानोए पण पूजेलो होय तेने रसोडानी देखरेख सोंपवी.

६ प्रशस्तदिग्देशकृतं शुचिभाण्डं महच्छुचि ।
सजालकं गवाक्षाढ्यमात्मवर्गनिषेवितम् ॥
विसृष्टकक्षसंसृष्टं सवितानं कृतार्चनम् ।
परीक्षितस्त्रीपुरुषं भवेच्चापि महानसम् ॥

राजाए रसोडुं केवुं राखवुं.

६ रसोडुं ज्योतिःशास्त्रमां कहेली दिशामां एटले अग्निखुणामां उत्तम प्रदेशनी अंदर करवुं. रसोडा खातानां सघळां वासणो तथा सघळी सामग्रीओ स्वच्छ रखाववी. ए रसोडुं मोटुं, पवित्र, जाळीयांओवाळुं, गोखोवाळुं, राज्यनुं हित इच्छनारां माणसोना वर्गवाळुं, जेनी आसपास खडनो संसर्ग न होय एवुं, उलेचोवाळुं, जेमां अग्निनुं पूजन थतुं होय एवुं अने जेमां स्त्रीओ तथा पुरुषो परीक्षा लीधा पछीज दाखल करवामां आव्यां होय एवुं जोइए.

७ तत्राध्यक्षं नियुञ्जीत प्रायो वैद्यगुणान्वितम् ।
शुचयो दक्षिणा दक्षा विनीताः प्रियदर्शनाः ॥
संविभक्ताः सुमनसो नीचकेशनखाः स्थिराः ।
स्नाता दृढं संयमिनः कृतोष्णीषाः सुसंयताः
तस्य चाज्ञाविधेयाः स्युर्विविधाः परिकर्मिणः ।

रसोडानो उपरी अने तेना ताबानां माणसो.

७ राजाए रसोडा खातामां घणुं करीने उपर लखेला वैद्यना जेवाज गुणोवाळो उपरी राखवो. रसोडानां जूदां जूदां कार्यो करनारा सघळा लोको पवित्र, चतुर, सरलतावाळा, केळवाएला, सारा देखाववाळा, जेओने जूदां जूदां कामो वेहेंची आप्यां होय एवा, प्रसन्न मनवाळा, सादा केशोवाळा, सादा नखोवाळा, चपळताथी रहित, नाहेला, इंद्रियोना दृढ निग्रहवाळा, माथापर पाघडीयोवाळा, प्रतिज्ञा लेवरावीने सारी पेठे बांधेला अने उपरीनी आज्ञाप्रमाणे वर्त्ते एवा राखवा.

८ आहारस्थितयश्चापि भवन्ति प्राणिनो यतः॥
तस्मान्महानसे वैद्यः प्रमादरहितो भवेत् ।
माहानसिकवोढारः सौपौदनिकपौपिकाः ।
भवेयुर्वैद्यवशगा ये चाप्यन्ये तु केचन ।

वैद्ये रसोडा खातामां सावधान रेहेवुं अने ते खातानां सघळां माणसोए वैद्यनी आज्ञामां रेहेवुं.

८ प्राणीओनां शरीरोनी स्थिति आहार उपरज छे एटला माटे वैद्ये राजाना रसोडामां बहुज सावधानपणाथी रेहेवुं. रसोडामां सरसामान देनारा, रसोडानुं काम चलावनारा, दाळ रांधनारा, भात रांधनारा, पूडा वगेरे बनावनारा अने बीजा पण जे कोई काम करनारा होय तेओए वैद्यनी आज्ञामां रेहेवुं.

९ इङ्गितज्ञो मनुष्याणां वाक्चेष्टामुखवैकृतैः ॥
विद्याद्विषस्य दातारमेभिर्लिङ्गैश्च बुद्धिमान् ॥
न ददात्युत्तरं पृष्टो विवक्षन्मोहमेति च ॥
अपार्थं बहु सङ्कीर्णं भाषते चापि मूढवत् ।
स्फोटयत्यङ्गुलीर्भूमिमकस्माद्विलिखेद्धसेत् ॥
वेपथुर्जायते तस्य त्रस्तश्चैकैकमीक्षते ।
क्षामो विवर्णवक्त्रश्च नखैः किञ्चिच्छिनत्त्यपि ॥
आलभेतासकृद्दीनः करेण च शिरोरुहान् ।
निर्यियासुरपद्वारैर्वीक्षते च पुनः पुनः ॥
वर्त्तते विपरीतस्तु विषदाता विचेतनः ।

झेर देनारनी परीक्षा.

९ माणसोनी चेष्टा वगेरे उपरथी तेओना अभिप्रायोने जाणी लेवानी कळा धरावनारा बुद्धिमान् वैद्ये वचनो उपरथी, चेष्टाओ उपरथी, मुखनी विकृतिओ उपरथी नीचे लखेलां चिह्नो उपर ध्यान आपी, झेर देनाराने पारखी लेवो. झेर देनारो माणस पूछया छतां उत्तर आपतो नथी, उत्तर देवा जतां गभराई जाय छे, मूढ माणसनी पेठे व्यर्थ घणुं तथा गडबडवाळुं बोले छे, आंगळीओना टचाका फोडे छे, अकस्मात् धरती खोतरवा लागे छे, अकस्मात् हसे छे, ध्रुजी जाय छे, त्रास पामीने एक एकनी सामे जोया करे छे, दुबळो पडी जाय छे, विवर्ण मुखवाळो थई जाय छे, नखोवते कांई चीजने काप्या करे छे, रांक बनीने हाथवते वारंवार केशोनो स्पर्श कर्या करे छे, अयोग्य द्वारोथी नीकळी जवानी इच्छा धरीने ते द्वारोने वारंवार जोया करे छे, माणसोनी पद्धति करतां विपरीत रीते वर्त्ते छे अने बुद्धि वगरनो थई जाय छे.

१० केचिद्भयात्पार्थिवस्य त्वरिता वा तदाज्ञया
असतामपि सन्तोऽपि चेष्टां कुर्वन्ति मानवाः ।
तस्मात्परीक्षणं कार्यं भृत्यानामादितो नृपैः ॥

राजाओए पण ए चिह्नो उपरथी झेर देनारनी परीक्षा करवी पण शिक्षा तो पाकी साबेती मळे त्यारेज करवी.

१० केटलाएक लोको पोते निर्दोष छतां पण राजानी बीकने लीधे अथवा राजानी आज्ञानी उतावळा थई जवाने लीधे उपर लखेली चेष्टाओ करवा लागे छे माटे ए चेष्टाओ देखाया उपरथीज राजाओए ते माणसोने शिक्षा नहीं करी देवी, परंतु शरूआतथी जुबानी वगेरे लई सर्व प्रकारनी चोकसी करीने जो अपराध साबेत थाय तोज तेओने शिक्षा करवी.

११ अन्ने पाने दन्तकाष्ठे तथाभ्यङ्गेऽवलेखने ।
उत्सादने कषाये च परिषेकेऽनुलेपने ॥
स्रक्षु वस्त्रेषु शय्यासु कवचाभरणेषु च ।
पादुकापादपीठेषु पृष्ठेषु गजवाजिनाम् ॥
विषजुष्टेषु चान्येषु नस्यधूमाञ्जनादिषु ।
लक्षणानि प्रवक्ष्यामि चिकित्सामप्यनन्तरम् ॥

अन्नादिकमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो अने ते संसर्गनी चिकित्सा केहेवानी प्रतिज्ञा.

११ हवे अन्न, पान, दातण, अभ्यंग, केशोने साफ करवानां दांतीआ वगेरे साधनो, मेल टाळवाने माटे शरीरपर चोळवानां चूर्णादिक, कल्क, सेचन करवानो द्रव, लेपन, माळाओ, वस्त्रो, शा-

य्याओ, बखतरो, आभरणो, पादुकाओ, चरण-चोकीओ, हाथी घोडाओनी पीठो, नस्यो, धूमाडाओ तथा अंजनो वगेरे पदार्थो झेरनो संसर्ग पाम्या होय तो तेओमां शां शां लक्षणो थाय छे ते कहुं छुं अने तेओनी जूदी जूदी चिकित्साओ पण कहुं छुं.

१२ नृपभक्ताद्बलिं न्यस्तं सविषं भक्षयन्ति ये।
तत्रैव ते विनश्यन्ति मक्षिकावायसादयः॥
हुतभुक्तेन चान्नेन भृशं चटचटायते।
मयूरकण्ठप्रतिमो जायते चापि दुस्सहः॥
भिन्नार्चिस्तीक्ष्णधूमश्च न चिराच्चोपशाम्यति।
चकोरस्याक्षिवैराग्यं जायते क्षिप्रमेव तु॥
दृष्ट्वान्नं विषसंसृष्टं म्रियन्ते जीवजीवकाः।
कोकिलः स्वरवैकृत्यं क्रौंचस्तु मदमृच्छति॥
हृष्येन्मयूर उद्विग्नः क्रोशतः शुकसारिके।
हंसः क्ष्वेडति चात्यर्थं भृङ्गराजस्तु कूजति॥
पृषतो विसृजत्यश्रु विष्ठां मुञ्चति मर्कटः।
सन्निकृष्टांस्ततः कुर्याद्राजा तान्मृगपक्षिणः॥
वेश्मनोऽथ विभूषार्थं रक्षार्थं चात्मनः सदा।

अन्नमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो.

१२ अन्नमां झेर पड्युं होय तो ते अन्नमांथी नाखवामां आवेला अपोशान वगेरे बळिने जे मांखीओ के कागडाओ वगेरे प्राणीओ खाय ते प्राणीओ त्यांज मरी जाय छे. विषवाळुं अन्न अग्निमां नाखवामां आवतां तेथी अग्नि चटचट अवाज करे छे, मोरना गळाना जेवा वर्णवाळो थई जाय छे, सहन करी शकाय नहीं एवो थाय छे, जूदी रीतनी ज्वाळाओवाळो थई जाय छे, तीक्ष्ण धूमाडावाळो थई जाय छे अने तुरतज बुझाई जाय छे. विषथी संयुक्त थएला अन्नने जोईने चकोर-पक्षीनां नेत्रो तुरतज रताशवगरनां थई जाय छे, जीवजीवक नामनां पक्षीओ मरी जाय छे, कोयलनो स्वर बदली जाय छे, कुंझ पक्षी मदयुक्त थई जाय छे, मोर चलित थईने प्रसन्न थाय छे, पोपट तथा मेना चीसो पाडवा लागे छे, हंस अत्यंत बराडा पाडे छे, भृंगराज नामनी चकली अवाज करवा लागे छे, पृषत नामनो छांटणांवाळो नाहानो मृग आंसु पाडवा लागे छे अने वानर विष्टा करवा लागे छे. आ प्रमाणे पशुपक्षीओद्वारा पण विषनी परीक्षा थाय छे एटला माटे राजाए ते पशुपक्षीओने हमेश पासे राखवां के जेथी दरबार सुशोभित लागे अने पोतानुं रक्षण पण थाय.

१३ उपक्षिप्तस्य चान्नस्य बाष्पेणोर्ध्वं प्रसर्पता॥
हृत्पीडा भ्रान्तनेत्रत्वं शिरोदुःखं च जायते।
तत्र नस्याञ्जने कुष्ठं रामठं नलदं मधु॥
कुर्याच्छिरीषरजनीचन्दनैश्च प्रलेपनम्।
हृदि चन्दनलेपं तु तथा सुखमवाप्नुयात्॥
पाणिप्राप्तं पाणिदाहं नखशातं करोति च।
अत्र प्रलेपः श्यामेन्द्रगोपासोमोत्पलानि च॥
स चेत्प्रमादान्मोहाद्वा तदन्नमुपसेवते।
अष्ठीलावत्ततो जिह्वा भवत्यरसवेदिनी॥
तुद्यते दह्यते चापि श्लेष्मा चास्यात्प्रसिच्यते।
तत्र बाष्पेरितं कर्म यच्च स्याद्दान्तकाष्ठिकम्॥
मूर्छां छर्दिमतीसारमाध्मानं दाहवेपथू।
इन्द्रियाणां च वैकृत्यं कुर्यादामाशयं गतम्॥
तत्राशु मदनालाबूबिम्बीकोशातकीफलैः।
छर्दनं दध्युदश्विद्भ्यामथ वा तण्डुलाम्बुना॥
दाहं मूर्छामतीसारं नृणामिन्द्रियवैकृतम्।
आटोपं पाण्डुतां कार्श्यं कुर्यात्पक्वाशयं गतम्॥
विरेचनं ससर्पिष्कं तत्रोक्तं नीलिनीफलम्।
दध्ना दूषीविषारिश्च पेयो वा मधुसंयुतः॥

विषवाळा अन्नना बाफथी, स्पर्शथी तथा भोजनथी थता जूदा जूदा उपद्रवो अने तेओनी जूदी जूदी चिकित्सा.

१३ विषवाळुं अन्न पीरसातां तेनी ऊंचे चालती बाफथी हृदयमां पीडा थाय छे, नेत्रो चकरवकर भमवा लागे छे अने माथामां व्यथा थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो कठ, हींग, वाळो अने मध एओनुं नस्य देवुं, नेत्रोमां ए पदार्थो आंजवा, सरसडीयो, सूखड, रतांजलि अने हळदर एओनुं लेपन करवुं तथा हृदयपर चंदननुं वधारे लेपन करवुं. आम करवाथी सघळा उपद्रवो टळीने सुख थाय छे.

विषवाळुं अन्न हाथमां लेवामां आवतां तेथी हाथमां बळतरा थाय छे अने नखो फाटी जाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो घउलां, इंद्रवारणी, उपलसरी, ब्राह्मी अने नीलकमळ एओनो जाडो लेप करवो.

जो गफलतथी अथवा मोहथी ते अन्न खावामां आवे तो तेथी जीभ लांबी पथरी जेवी थई जतां रसनुं ज्ञान जतुं रहे छे, जीभमां व्यथा थाय छे, बळतरा थाय छे तथा मोहोडामांथी कफनो स्राव थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो उपरना बीजा पारिग्राफमां कहेली बाफनी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी अने दातणनी चिकित्साप्रमाणे पण चिकित्सा करवी. (आ अध्यायनो १६ मो विषय जुवो.)

जो विषवाळुं अन्न गळाथी उतरीने आमाशयमां जाय तो तेथी मूर्छा थाय छे, उलटी थाय छे, अतीसार थाय छे, आफरो थाय छे, बळतरा थाय छे, कंप थाय छे अने इंद्रियोनुं विकृतपणुं थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो मींढोळ, कडवी तूंबडीनां फळ, कडवी घोलीनां फळ तथा कडवी घीसोडीनां फळ एओने दहींमां तथा अरधा पाणीवाळी छाशमां वाटी अथवा चोखाना धोणमां वाटी ते पाईने उलटी कराववी.

जो विषवाळुं अन्न पक्वाशयमां जाय तो तेथी बळतरा थाय छे, मूर्छा थाय छे, अतीसार थाय छे, इंद्रियोमां विकृति थाय छे, अधोवायु वगेरे बंध पडी जाय छे, पांडुपणुं थाय छे अने कृशपणुं थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो घीनी साथे गळीनां फळ खवरावीने विरेचन करवुं अने दूषीविषारि नामनो अगद के जे आ स्थानना बीजा अध्यायना १७ मा विषयमां केहेवामां आवशे ते जेठीमधथी संयुक्त करीने दहींनी साथे पावो.

१४ द्रवद्रव्येषु सर्वेषु क्षीरमद्योदकादिषु ।
भवन्ति विविधा राज्यः फेनबुद्बुदजन्म च ।
छायाश्चात्र न दृश्यन्ते दृश्यन्ते यदि वा पुनः॥
भवन्ति यमलाश्छिद्रास्तन्व्यो वा विकृतास्तथा ।

पानोमां (पीवाना पदार्थोमां) विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो.

१४ दूध, मद्य तथा जळ आदि सघळा द्रव पदार्थोमां विषनो संसर्ग थयो होय तो तेओमां अनेक प्रकारनी (राता, काळा, पीळा तथा सफेद वगेरे वर्णवाळी) रेखाओ[1] थाय छे, फीणनी तथा परपोटाओनी उत्पत्ति थाय छे, प्रतिबिम्बो देखातां नथी अने जो देखाय तो बेवडां, छिद्रोवाळां, झीणां तथा विकृतिओवाळां (क्रूरनां सौम्य अने सौम्यनां भयंकर) देखाय छे.

(आनी चिकित्सा मूलग्रंथमां लखी नथी तेथी एम समजाय छे के विषथी संयुक्त थएलां अन्नोनी चिकित्साप्रमाणेज तेओनी चिकित्सा करवी.)

१५ शाकसूपान्नमांसानि क्लिन्नानि विरसानि च
सद्यः पर्युषितानीव विगन्धानि भवन्ति च ।
गन्धवर्णरसैर्हीनाः सर्वे भक्ष्याः फलानि च ॥
पक्वान्याशु विशीर्यन्ते पाकमामानि यान्ति च।

१ वाग्भट केहे छे के रसमां नीला रंगनी, दूधमां तथा दहींमां राता रंगनी, छाशमां काळी पीळी तथा सफेद, घीमां पाणी जेवी, मद्यमां तथा जळमां काळी, मधमां हरितरंगनी अने तैलमां अरुण वर्णवाळी रेखा थाय छे.

शाक आदि पदार्थोमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो.

१५ शाक, दाळ, अन्न के मांस आदि पदार्थोमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते पदार्थो ताजा छतां पण तुरत वाशी रहेला जेवा थई जाय छे, क्लेदवाळा थई जाय छे, रसवगरना थई जाय छे अने खराब गंधवाळा तथा खराब स्पर्शवाळा थई जाय छे.

भक्ष्योमां के फळोमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते सर्व पदार्थो गंधथी, वर्णथी, रसथी तथा स्पर्शथी भ्रष्ट थई जाय छे. फळो पाकेलां होय तो तुरत फाटी जाय छे अने काचां होय तो तुरत पाकी जाय छे.

(शाकादिकनी, भक्ष्योनी तथा फळोनी चिकित्सा मूलग्रंथमां आपी नथी तेथी एम समजाय छे के उपर कहेली विषथी संयुक्त थएलां अन्नोनी चिकित्साप्रमाणेज तेओनी चिकित्सा करवी.)

१६ विशीर्यते कूर्चकस्तु दन्तकाष्ठगते विषे ।
जिह्वादन्तौष्ठमांसानां श्वयथुश्चोपजायते ।
अथास्य धातकीपुष्पपथ्याजम्बूफलास्थिभिः ॥
सक्षौद्रैः प्रच्छिते शोफे कर्त्तव्यं प्रतिसारणम् ।
अथ वाङ्कोठमूलानि त्वचः सप्तच्छदस्य वा ॥
शिरीषमाषका वापि सक्षौद्राः प्रतिसारणम् ।

दातणमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

१६ दातणमां विषनो संसर्ग थयो होय तो कुचो फाटी जाय छे. ए दातण चसवामां आवे तो तेथी जीभमां, दांतोनां पेढांओमां अने होठनां मांसोमां सोजो उत्पन्न थाय छे.

आ प्रमाणे सोजो उत्पन्न थयो होय तो ते सोजाने शस्त्रथी टोंचीने ते उपर धावणीनां फूल, हरडे अने जांबूना ठळीया एओनो मधमां करेलो कल्क आंगळीवते घसाववो अथवा अंकोलनां मूळ, सप्तपर्णनी छाल के सरसडीयानां बीज एओनो मधमां करेलो कल्क आंगळीवते घसाववो.

१७ जिह्वानिर्लेखकवलौ दन्तकाष्ठवदादिशेत् ।

जीभनी ओळ उतारवानी सळीमां के मोहोडामां लेवाना कवलमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

१७ जीभनी ओळ उतारवानी सळीमां के मोहोडामां लेवाना औषधना कवलमां विषनो संसर्ग थयो होय तो तेओना उपयोगथी जीभमां, दांतोनां पेढांओमां तथा होठनां मांसोमां सोजो थाय छे.

आ प्रमाणे सोजो उत्पन्न थयो होय तो उपर लखेला १६ मा विषयमां दातणथी थएला सोजानी जे चिकित्सा कही छे तेज चिकित्सा करवी.

१८ पिच्छिलो बहुलोऽभ्यङ्गो विवर्णो वा विषान्वितः ॥
स्फोटजन्मरुजास्रावत्वक्पाकाः स्वेदनं ज्वरः ।
दरणं चापि मांसानामभ्यङ्गे विषसंयुते ॥
तत्र शीताम्बुसिक्तस्य कर्त्तव्यमनुलेपनम् ।
चन्दनं तगरं कुष्ठमुशीरं वेणुपत्रिका ॥
सोमवल्ल्यमृता श्वेता पद्मं कालीयकं त्वचम् ।
कपित्थरसमूत्राभ्यां पानमेतच्च युज्यते ॥

अभ्यंगमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

१८ अभ्यंगमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते अभ्यंग (तैलादिक पदार्थ) चीकाशवाळो, घाटो तथा विवर्ण बनी जाय छे. ए अभ्यंग शरीरपर चोळवामां आवे तो तेथी फोडला ऊठे छे, वेदना थाय छे, स्राव थाय छे, चामडी पाकी जाय छे, पसीनो वळे छे, ज्वर आवे छे अने मांसो फाटी जाय छे.

जो आ प्रमाणे फोडला के वेदना वगेरे थएल होय तो शरीरपर टाढा जळनुं सेचन करीने पछी चंदन, तगर, कठ, वाळो, वंशपत्री, सोमवल्ली, गळो, सफेद गरणी, श्वेतकमळ, दारूहळदर तथा तज एओनुं लेपन करवुं अने कोठना रसनी साथे तथा गोमूत्रनी साथे ए चंदनादिक पदार्थोनो कल्क पावो.

१९ उत्सादने परीषेके कषाये चानुलेपने । शय्यावस्त्रतनुत्रेषु ज्ञेयमभ्यङ्गलक्षणैः ॥

शरीरपरथी मेल टाळवानेमाटे चोळवानुं चूर्ण, सेचन करवानो पदार्थ, कल्क, लेपन, शय्या, वस्त्र के बखतर एओमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

१९ मेल टाळवानेमाटे चोळवाना चूर्णमां, सेचन करवाना द्रवमां, कल्कमां, लेपन करवाना पदार्थोमां, शय्यामां, वस्त्रमां के बखतरमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते पदार्थो चीकाशवाळा, घाटा तथा विवर्ण बनी जाय छे.

ए पदार्थोनो संसर्ग थयाथी फोडला ऊठे छे, वेदना थाय छे, स्राव थाय छे, चामडी पाकी जाय छे, पसीनो वळे छे, ज्वर आवे छे अने मांसो फाटी जाय छे.

जो आ प्रमाणे फोडला के वेदनादिक थएल होय तो शरीरपर टाढा जळनुं सेचन करीने पछी चंदन, तगर, कठ, वाळो, वंशपत्री, सोमवल्ली, गळो, सफेद गरणी, श्वेतकमळ, दारूहळदर तथा तज एओनुं लेपन करवुं अने कोठना रसनी साथे तथा गोमूत्रनी साथे ए चंदनादिक पदार्थोनो कल्क पावो.

२० केशशातः शिरोदुःखं खेभ्यश्च रुधिरागमः ग्रन्थिजन्मोत्तमाङ्गेषु विषजुष्टे तु लेखने ॥ प्रलेपो बहुशस्तत्र भाविताः कृष्णमृत्तिकाः ॥ ऋष्यपित्तघृतश्यामापालिन्दीतण्डुलीयकैः ॥ गोमयस्वरसो वापि हितो वा मालतीरसः रसो मूषिकपर्ण्या वा धूमो वागारसम्भवः ॥

केशोने साफ करवानां दांतीया वगेरे साधनोमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

२० दांतीया वगेरेमां विषनो संसर्ग थयो होय तो तेओना स्पर्शादिकथी वाळ खरी पडे छे, माथामां व्यथा थाय छे, नासिका वगेरे छिद्रोमांथी लोही निकळवा लागे छे अने माथामां ग्रंथिओ उत्पन्न थाय छे.

आप्रमाणे थएल होय तो रोझनुं पित्तुं ? घी, घउलां, सफेद गरणी अने तांदळजो एओनी जेने सात दिवससुधी भावना आपी होय एवी काळी माटीनो वारंवार प्रलेप करवो अथवा गायना छाणनो स्वरस, उंदरकन्नीनो स्वरस के मालतीनो स्वरस लगाववो अथवा घरना धूमाडानो धूंम लगाववी ए हितकारी थाय छे.

२१ शिरोऽभ्यङ्गः शिरस्त्राणं स्नानमुष्णीषमेवं च स्रजश्च विषसंसृष्टाः साधयेदनुलेखवत् ॥

माथापर करवानो अभ्यंग, टोपी वगेरे, नाहावानुं जळ वगेरे, पाघडी के माळाओ एओमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

२१ माथापर लगाववाना अभ्यंगमां, टोपी वगेरेमां, नाहावाना जळ वगेरेमां, पाघडीमां के माळाओमां विषनो संसर्ग थयो होय तो वाळो खरी पडे छे, माथामां व्यथा थाय छे, नासिका वगेरे छिद्रोमांथी लोही पडवा लागे छे अने माथामां ग्रंथिओ उत्पन्न थाय छे.

आप्रमाणे थएल होय तो रोझनुं पित्तुं? घी, घउलां, सफेद गरणी तथा तांदळजो एओनी जेने सात दिवससूधी भावना आपी होय एवी काळी माटीनो वारंवार प्रलेप करवो अथवा गायना छाणनो स्वरस, मालतीनो स्वरस, उंदरकन्नीनो स्वरस के घरना धूमाडानी धूंस लगाववी.

२२ मुखलेपे मुखं श्यावं युक्तमभ्यङ्गलक्षणैः ।
पद्मिनीकण्टकप्रख्यैः कण्टकैश्चोपचीयते ॥
तत्र क्षौद्रघृतं पानं प्रलेपश्चन्दनं घृतम् ।
पयस्या मधुकं फंजी बन्धुजीवः पुनर्नवा ॥

मुख उपर करवाना लेपमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

२२ मुख उपर करवाना लेपमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते लेपथी मुख काळुं थइ जाय छे, फोडला उत्पन्न थाय छे, वेदना थाय छे, स्राव थाय छे, चामडी पाकी जाय छे, पसीनो वळे छे, ज्वर आवे छे, मांसो फाटी जाय छे अने मोहोडुं पद्मिनीकंटक नामना क्षुद्ररोगना (निदानस्थानना १३ मा अध्यायनो ३१ मो विषय जुवो.) कांटाओ जेवा कांटाओथी व्याप्त थइ जाय छे.

आप्रमाणे थएल होय तो मध तथा घी पावां, चंदननो प्रलेप करवो अने खरणेर, जेठीमध, भारंगी, बपोरीयो तथा साटोडी एओने घीमां कालवीने तेनो प्रलेप पण करवो.

२३ अस्वास्थ्यं कुञ्जरादीनां लालास्रावोऽक्षिरक्तता ।
स्फिक्पायुमेढ्रमुष्केषु युक्तेषु स्फोटसम्भवः ॥
तत्राभ्यङ्गवदेवेष्टा यातृवाहनयोः क्रिया ।

हाथी वगेरे वाहनोनी पीठोमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो अने ते वाहनोनेमाटे तथा स्वारनेमाटे चिकित्सा.

२३ हाथी वगेरे वाहनोनी पीठोमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते वाहनो अस्वस्थ थइ जाय छे, तेओने लाळ झरवा लागे छे तथा नेत्रोमां रताश थाय छे. ए वाहनोपर जेओ स्वार थाय तेओने कूलाओमां, गुदाओमां, शिश्नोमां तथा वृषणोमां फोडला उत्पन्न थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो वाहनोनी पीठो उपर तथा स्वारोनां कूला वगेरे अंगो उपर शीतळ जळनुं सेचन करीने पछी चंदन, तगर, कठ, वाळो, वंशपत्री, सोमवल्ली, गळो, सफेद गरणी, श्वेतकमळ, दारूहळदर तथा तज एओनो प्रलेप करवो अने ते वाहनोने तथा स्वारोने कोठनो रस तथा गोमूत्र एओनी साथे ए चंदनादिक पदार्थोना कल्को पावा.

२४ शोणितागमनं खेभ्यः शिरोरुक्कफसंस्रवः
नस्यधूमगते लिङ्गमिन्द्रियाणां तु वैकृतम् ।
तत्र दुग्धैर्गवादीनां सर्पिः सातिविषैः शृतम् ॥
पाने नस्ये च सश्वेतं हितं समदयन्तिकम् ॥

नस्योमां के पीवाना धूमाडाओमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो अने चिकित्सा.

२४ नस्योमां के पीवाना धूमाडाओमां विषनो संसर्ग थयो होय तो तेओना उपयोगथी नासिका वगेरे छिद्रोमांथी लोही पडवा लागे छे, माथामां व्यथा थाय छे, कफनो स्राव थाय छे अने इद्रियोमां विकृति थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो गाय वगेरेनां दूधोथी तथा अतवसना कल्कथी पकावेलुं घी पावुं अने गाय वगेरेनां दूधोथी तथा वज अने डोलर (मोगरो) एओना कल्कथी पकावेला घीनुं नस्य देवुं ए हितकारी थाय छे.

२५गन्धहानिर्विवर्णत्वं पुष्पाणां म्लानता भवेत्
जिघ्रतश्च शिरोदुःखं वारिपूर्णे च लोचने ।
तत्र बाष्पेरितं कर्म मुखालेपे च यत्स्मृतम् ॥

पुष्पोमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

२५ पुष्पोमां विषनो संसर्ग थयो होय तो पुष्पो सुगंधथी रहित थई जाय छे, विवर्ण बनी जाय छे अने करमाई जाय छे. ए पुष्पो सूंघवाथी माथामां व्यथा थाय छे अने नेत्रोमां पाणी भराई आवे छे.

आ प्रमाणे माथामां व्यथा तथा नेत्रोमां पाणीनुं आववुं थएल होय तो आ अध्यायना १३ मा विषयमां झेरवाळा अन्ननी बाफनी बाबतमां जे चिकित्सा कही छे ते करवी अने २२ मा विषयमां जे चिकित्सा कही छे ते पण करवी.

२६ कर्णतैलगते श्रोत्रवैगुण्यं शोफवेदने ।
कर्णस्रावश्च तत्राशु कर्त्तव्यं प्रतिपूरणम् ॥
स्वरसो वहुपुत्रायाः सघृतः क्षौद्रसंयुतः ।
सोमवल्करसश्चापि सुशीतो हित इष्यते ॥

कानमां नाखवाना तैलमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

२६ कानमां नाखवाना तेलमां विषनो संसर्ग थयो होय तो श्रोत्रइंद्रिय वगडी जाय छे, सोजो थाय छे, वेदना थाय छे अने कानमांथी स्राव पण थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो तुरतज घीथी तथा मधथी संयुक्त करेलो कायफळनो अथवा खेरनो शीतल स्वरस कानमां नाखवो ए हितकारी थाय छे.

२७ अश्रूपदेहो दाहश्च वेदना दृष्टिविभ्रमः ।
अञ्जने विषसंसृष्टे भवेदान्ध्यमथापि वा ॥
तत्र सद्योघृतं पेयं तर्पणं च समागधम् ।
अञ्जनं मेषशृङ्गस्य रसो वै वरुणस्य च ॥
मुष्ककस्याजकर्णस्य फेनो गोपित्तसंयुतः ।
कपित्थमेषशृङ्गयोश्च पुष्पं भल्लातकस्य वा ॥
एकैकं कारयेत्पुष्पं बन्धूकाङ्कोठयोरपि ।

अंजनमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

२७ अंजनमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते अंजन आंजवाथी आंसुओ आवे छे, चीपडा वगेरेनी वृद्धि थाय छे, बलतरा थाय छे, वेदना थाय छे, दृष्टिनो विभ्रम थाय छे अने वखतपर अंधपणुं पण थई जाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो तुरतज ताजुं घी पावुं, ओटेला दूधमां पकावेला पीपळना कल्कथी सिद्ध करेला घीवते नेत्रोनुं तर्पण करवुं अने मेंढाशीगींनो रस अथवा वायवरणानो रस अथवा मरवानो रस अथवा राळना झाडनो रस अथवा समुद्रफीणनो रस गायना पित्ताथी संयुक्त करीने आंजवो. अथवा कोठनुं, मेंढाशींगीनुं, भीलामानुं, बपोरीयानुं के अंकोलनुं पुष्प आंजवुं. सघळां पुष्पो भेळां करीने आंजवां नहीं पण एक एक पुष्प आंजवुं.

२८ शोफः स्रावस्तथा स्वापः पादयोः स्फोटजन्म च
भवन्ति विषजुष्टाभ्यां पादुकाभ्यामसंशयम् ।
उपानत्पादपीठानि पादुकावत्प्रसाधयेत् ॥
भूषणानि हतार्चींषि न विभान्ति यथा पुरा ।
स्वानि स्थानानि हन्युश्च दाहपाकावदारणैः ॥
पादुकाभूषणे युक्तमभ्यङ्गविधिमाचरेत् ।

पादुका, पगरखां, चरणचोकी तथा आभरणो एओमां विषनो संसर्ग थयानां चिह्नो तथा चिकित्सा.

२८ पादुकाओमां विषनो संसर्ग थयो होय तो ते पादुकाओ पेहेरवाथी पगोमां सोजो थाय छे, स्राव थाय छे, जडता थाय छे अने फोडला उपडे छे. पगरखांओमां के चरणचोकीमां विषनो संसर्ग थयो होय तो पण एज चिह्नो थाय छे.

भूषणोमां विषनो संसर्ग थयो होय तो प्रभा हणाई जवाने लीधे ते भूषणो प्रथमनी पेठे शोभतां नथी अने जे अंगोमां पहेरवामां आव्यां होय ते अंगोने दाहथी, पाकथी तथा फाडी नाखवाथी खराब करी नाखे छे.

उपर प्रमाणे थएल होय तो आ अध्यायना १८ मा विषयमां जे चिकित्सा कही छे ते करवी एटले शीतल जळनुं सेचन करीने पछी चंदन, तगर, कठ, वाळो, वंशपत्री, सोमवल्ली, गळो, सफेद गरणी, श्वेतकमळ, दारूहळदर अने तज एओनुं लेपन करवुं अने कोठनो रस तथा गोमूत्र एओनी साथे ए चंदनादिक पदार्थोनो कल्क पावो.

२९ विषोपसर्गो वाष्पादिर्भूषणान्तो य ईरितः ॥
समीक्ष्योपद्रवांस्तस्य विदधीत चिकित्सितम् ।

विषथी थएली पीडामां उपद्रवोनी अवस्था जोईने उपर कहेली चिकित्साओमांथी योग्य चिकित्सा करवी.

२९ बाफथी मांडीने आभरण सूधीमां विषनो जे उपसर्ग केहेवामां आव्यो तेमां उपद्रवोनी स्थिति जोईने उपर कहेली प्रत्येकनी अनेक चिकित्साओमांथी योग्य जणाय ते चिकित्सा करवी.

३० महासुगन्धिमगदं यं प्रवक्ष्यामि तं भिषक् ।
पानालेपननस्येषु विदधीताञ्जनेषु च ।
विरेचनानि तीक्ष्णानि कुर्यात्प्रच्छर्दनानि च ॥
शिराश्च व्यधयेत्क्षिप्रं प्राप्तं विस्रावणं यदि ।

विषोनी सामान्य चिकित्सा.

३० विषसंबंधी पीडा थई होय तो आ स्थानना सातमा अध्यायना पांचमा विषयमां महासुगंधी नामनो जे अगद केहेवामां आवशे तेनो वैद्ये पीवामां, नस्यमां, लेपनमां अने अंजनोमां उपयोग कराववो, तीक्ष्ण विरेचनो पण देवां, तीक्ष्ण वमनो पण देवां अने लोहीनुं स्रावण करवुं योग्य जणाय तो तुरत शिराओने पण वींधवी.

३१ मूषिकाजरुहा वापि हस्ते बद्धा तु भूपतेः
करोति निर्विषं सर्वमन्नं विषसमायुतम् ।

विषने टाळवामां बे औषधिओनो माटा प्रभाव.

३१ मूषिकानामनी औषधी अथवा अजरुहानामनी औषधी राजाना हाथपर बांधी राखवामां आवी होय तो ते, विषथी संयुक्त थएला सघळा अन्नादिकने विषवगरनुं करी नाखे छे. (अजरुहा औषधि उपरना भागमां सफेद अने अंदरना भागमां आंजण जेवा काळा कंदवाळी थाय छे अने मूषिका औषधी रुंछाडवाळी तथा काळी थाय छे एम केहेवामां आवे छे. मूषिका ए उंदरकन्नी तो नहीं होय?)

३२ हृदयावरणं नित्यं कुर्याच्च मित्रमध्यगः ॥
पिबेद्धृतमजेयाख्यममृताख्यं च बुद्धिमान् ।
सर्पिर्दधिपयःक्षौद्रं पिबेद्वा शीतलं जलम् ॥
मयूरान्नकुलान्गोधाः पृषतान्हरिणानपि ।
सततं भक्षयेच्चापि रसांस्तेषां पिबेदपि ।
गोधानकुलमांसेषु हरिणस्य च बुद्धिमान् ।
दद्यात्सुपिष्टां पालिन्दीं मधुकं शर्करां तथा ॥
शर्करातिविषे देये मायूरे समहौषधे ।
पार्षते चापि देयाः स्युः पिप्पल्यः समहौषधाः
सक्षौद्रः सघृतश्चैव शिम्बीयूषो हितः सदा ।
विषघ्नानि च सेवेत भक्ष्यभोज्यानि बुद्धिमान् ॥

विष जेथी हृदयमां लागूज न पडे ऐवी योजना.

३२ राजाए पोताना मित्रोना मंडलमां रहीने नीचेप्रमाणे सर्वदा हृदयावरण एटले जेथी कोई पण विष हृदयमां लागू न पडे एवी योजना राखवी. ए योजना ए छे के आ स्थानना बीजा अध्यायना १६ मा विषयमां कहेलुं अजेय नामनुं घी तथा सातमा अध्यायना ४ था विषयमां कहेलुं अमृत नामनुं घी नित्य पीवुं. घी, दहीं, दूध अने मध ए नित्य पीवां अथवा हमेश शीतळ जळ पीवा-

नीज टेव राखवी. मोर, नोळीयां, घो, छाटणां-वाळां पृषत नामनां नाहानां हरिणो अने सामान्य हरिणो एओनां मांसो नित्य खावां तथा ते मांसोना रसा नित्य पीवा. घो, नोळीयां तथा हरिण एओनां मांसोने सफेद गुरणी, जेठीमध तथा साकर एओना कल्कनो योग आपीने खावां. मोरनां मांसोने साकर, अतवस तथा सूंठ एओना कल्कनो योग आपीने खावां. पृपतोनां मांसोने पीपळ तथा सूंठ एओना कल्कनो योग आपीने खावां. जंगली मगनो यूष करावी तेमां मध तथा घी नाखीने नित्य पीवामां आवे तो ते पण हितकारी थाय छे. एवीज रीते बीजां पण जे कोई भक्ष्य भोज्यो विपने हणनारां द्रव्योनी साथे पकावेलां होय तेओनुं बुद्धिमान् राजाए सेवन करवुं.

३३ पिप्पलीमधुकक्षौद्रशर्करेक्षुरसाम्बुभिः ।
छर्दयेद्गुप्तहृदयो भक्षितं यदि वा विषम् ॥

उपर कहेली योजना राखतां विप खवाई जाय तो उलटी करी नाखवी.

३३ उपर कहेली योजना राखतां प्रमादादिकने लीधे विप खवाई जाय तो पीपळ, जेठीमध तथा मध एओथी संयुक्त करेला साकरना पाणीथी, शेंलडीना रसथी तथा जळथी उलटी करी नाखवी.

अध्याय २ जो.

१ अथातः स्थावरविषविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्थावरविषविज्ञानीयं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानमाद्यं तु द्वितीयं षोडशाश्रयम् ॥

विषना बे भेद अने ते भेदोना आश्रयोनी संख्या.

२ विष स्थावर अने जंगम एम बे प्रकारनुं केहेवाय छे तेमां स्थावर विषना आश्रयो दश छे अने जंगम विषना आश्रयो सोळ छे. (जंगम विषना सोळ आश्रयो आ पछीना अध्यायना त्रीजा विषयमां केहेवामां आवशे.)

३ मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीरं सार एव च ।
निर्यासो धातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृतः ॥

स्थावरविषना दश आश्रयोनो निर्देश.

३ मूळ, पत्र, फळ, पुष्प, त्वचा, (छाल) छीर, सार, गुंदर, धातु अने कंद ए दश, स्थावरविषना आश्रयो छे.

४ तत्र क्लीतकाश्वमारगुंजासुबन्धगर्गरककरघाटविद्युच्छिखाविजयानीत्यष्टौ मूलविषाणि ।

विषपत्रिकालम्बावरदारुककरम्भमहाकरम्भाणि पंच पत्रविषाणि ।

कुमुद्वतीवेणुकाकरम्भमहाकरम्भककोंटकरेणुकखद्योतकचर्मरीभगन्धासर्पघातिनन्दनसारपाकानीति द्वादश फलविषाणि ।

वेत्रकादम्बवल्लिजकरम्भमहाकरम्भाणि पंच पुष्पविषाणि ।

अन्त्रपाचककर्त्तरीयसौरीयककरघाटकरम्भनन्दनवराटकानि सप्तत्वक्सारनिर्यासविषाणि

कुमुदघ्नीस्नुहीजालक्षीर्याणि त्रीणि क्षीरविषाणि ।

फेनाश्मभस्म हरितालं च द्वे धातुविषे ।

कालकूटवत्सनाभसर्षपपालककर्दमकवैराटकमुस्तकशृङ्गीविषप्रपौण्डरीकमूलकहालाहलमहाविषकर्कटकानीति त्रयोदश कन्दविषाणि ।

---

१ स्थावरविषोनी समजण आपवा विषेनो तथा विषसंबंधी केटलीएक चिकित्साओ विषेनो.

इत्येवं पंचपंचाशत्स्थावरविषाणि भवन्ति॥
चत्वारि वत्सनाभानि मुस्तके द्वे प्रकीर्त्तिते।
षट् चैव सर्षपाण्याहुः शेषाण्येकैकमेव तु ॥

स्थावर विषना दश आश्रयोनुं विवेचन.

४ क्लीतक, अश्वमार, (कणेर) गुंजा, (चणोठी?) सुगंध, गगरक, करघाट, विद्युच्छिखा, (कलगारी?) अने विजय (भांग?) ए आठ वनस्पतिओनां मूळीयांओमां विष रहेलुं छे तेथी ते वनस्पतिओ **मूलविष** केहेवाय छे. (चणोठीनां मूळीयां मोहोडामां राखवाथी तो शोष मटे छे!)

विषपत्रिका, लंबा, वरदारुक, करंभ अने महाकरंभ ए पांच वनस्पतिओनां पानडांओमां विष रहेलुं छे तेथी तेओ **पत्रविष** केहेवाय छे.

कुमुद्वती, वेणुका, करंभ, महाकरंभ, कर्कोटक, (कुकडवेल?) रेणुक, खद्योतक, चर्मरी, इभगंधा, सर्पघाती, नंदन अने सारपाक ए बार वनस्पतिओनां फळोमां विष रहेलुं छे तेथी तेओ **फलविष** केहेवाय छे.

वेत्र, कादंब, वल्लिज, करंभ अने महाकरंभ ए पांच वनस्पतिओनां पुष्पोमां विष रहेलुं छे तेथी तेओ **पुष्पविष** केहेवाय छे.

अन्नपाचक, कर्त्तरीय, सौरीयक, करघाट, करंभ, नंदन अने वराटक ए सात वनस्पतिओनां छाल, सार तथा गुंदर एओमां विष रहेलुं छे तेथी तेओ **त्वक्सारनिर्यासविष** केहेवाय छे.

कुमुदघ्नी, स्नुही, (थोर) अने जालक्षीर्य ए त्रण वनस्पतिओनां क्षीरमां विष रहेलुं छे तेथी तेओ **क्षीरविष** केहेवाय छे.

फेनाश्मभस्म (सोमल?) अने हरताल ए बे **धातुविष** केहेवाय छे.

कालकूट, वछनाग, सर्षप, पालक, कर्दमक, वैराटक, मुस्तक, शृंगीविष, प्रपौंडरीक, मूलक, हालाहल, महाविष अने कर्कटक ए तेर वनस्पतिओना कंदोमां विष रहेलुं छे तेथी तेओ **कंदविष** केहेवाय छे.

आ रीते पंचावन स्थावरविषो छे. एओमां जे तेर कंदविषो कह्यां तेओमां वछनाग चार प्रकारना थाय छे, मुस्तक बे प्रकारना थाय छे, सर्षप छ प्रकारना थाय छे अने बाकीनां सघळां एक एक प्रकारनां थाय छे.

५ उद्वेष्टनं मूलविषैः प्रलापो मोह एव च।
जृम्भाङ्गोद्वेष्टनश्वासा ज्ञेयाः पत्रविषेण तु ॥
मुष्कशोफः फलविषैर्दाहोऽन्नद्वेष एव च।
भवेत्पुष्पविषैश्छर्दिराध्मानं मोह एव च ॥

---

१ डल्हन कहे छे के 'आ प्रकरणमां जे जे विषवाळी वनस्पतिओनां नामो कह्यां छे ते वनस्पतिओ पूरेपूरी ओळखी शकाती नथी माटे हिमालय वगेरेमां जइ पाहाडी लोकोने पूछीपूछीने तेओनी ओळखाण मेळववी जोइए.' डल्हननुं आ केहेवुं खरूं छे.

२ कंदविषोमां फक्त वछनागज ओळखी शकाय छे अने ते 'शींगडीयो वछनाग' ए नामथी केहेवाय छे. आ वछनाग औषधोमां बहु उपयोगी छे. शींगडीया वछनागनो छोड खडसरखो थाय छे अने ते झाडने वींटाई रहे छे. एनुं मूळ काळा रंगवाळुं अने नाहाना हरिणनी शींगडी जेवुं होय छे ते काचुं के हलकुं न होय तो उत्तम गुण करे छे. विषना प्रयोगवाळी दवाओमां हाल घणुं करीने सर्वत्र वछनागज वापरवामां आवे छे. वछनागने वस्त्रनी पोटलीमां बांधी दोलायंत्रमां दूधमां बाफवाथी तेनी शुद्धि थाय छे अथवा समभाग मरी अने टंकण एओमां खांडवाथी शुद्धि थाय छे अथवा वछनागना चणा जेवडा टुकडा करी त्रण दिवससूधी नवा नवा गोमूत्रमां पलाळी राखी चोथे दिवस तडकामां खूब सूकाववाथी शुद्धि थाय छे. विषनी मात्रा बहुज संभाळथी नाखवी जोइए. जो अधिक नाखवामां आवे तो तेथी भारे हानि थाय छे. विषवाळुं औषध तुरत पोतानो चमत्कार देखाडे छे. हाल ज्वरांकुश वगेरे केटलांएक औषधोमां सोमल पण वापरवामां आवे छे.

त्वक्सारनिर्यासविषैरुपयुक्तैर्भवन्ति हि ।
आस्यदौर्गन्ध्यपारुष्यशिरोरुक्कफसंस्रवाः ॥
फेनागमः क्षीरविषे विड्भेदो जिह्वाजिह्मता ।
हृत्पीडनं धातुविषैर्मूर्छा दाहश्च तालुनि ॥

मूलविषादिक एकएक विषना उपयोगथी थतां जूदां जूदां लक्षणो.

५ **मूलविषना** उपयोगथी अंगो मरडाय छे, प्रलाप थाय छे अने मोह थाय छे. **पत्रविषना** उपयोगथी बगासां आवे छे, अंगो मरडाय छे अने श्वास थाय छे. **फलविषना** उपयोगथी वृषणोमां सोजो थाय छे, दाह थाय छे अने अन्न उपर अरुचि थाय छे. **पुष्पविषना** उपयोगथी उलटी थाय छे, आफरो थाय छे अने मोह थाय छे. **त्वक्सारनिर्यासविषना** उपयोगथी मोहोडानुं दुर्गंधपणुं, कठोरपणुं, माथामां वेदना अने कफनो स्राव थाय छे. **क्षीरविषना** उपयोगथी फीण आवे छे, पातळो दस्त आव्या करे छे अने जीभ वांकी थई जाय छे. **धातुविषना** उपयोगथी हृदयमां पीडा थाय छे, मूर्छा आवे छे अने ताळवामां दाह थाय छे. (कंदविषोथी थतां जूदां जूदां लक्षणो ७ मा विषयमां केहेवामां आवशे.)

६ प्रायेण कालघातीनि विषाण्येतानि निर्दिशेत् ।
कन्दजानि तु तीक्ष्णानि तेषां वक्ष्यामि विस्तरम् ॥

विषोनो सामान्य अने विशेष धर्म.

६ सघळां विषो घात करनारां छे परंतु तेओमां कंदविषो शिवायनां बीजां विषो जे दिवसे खावामां आवे ते दिवसेज मारतां नथी पण ते पछी अमुक दिवसोमां, अमुक पखवाडीयामां के अमुक मास वगेरेमां मारे छे. (एओमां पण जे विषो आठमा विषयमां कहेला दश गुणोथी भरपूर होय छे तेओ तो जलदीज मारी नाखे छे.) एओ करतां कंदविषो अतितीक्ष्ण छे माटे तेओ (कंदविषो) तुरतज प्राण लेछे. हवे एकएक कंदविषोना उपयोगथी थतां लक्षणो कहुं छुं.

७ स्पर्शाज्ञानं कालकूटे वेपथुः स्तम्भ एव च ।
ग्रीवास्तम्भो वत्सनाभे पीतविण्मूत्रनेत्रता ॥
सर्षपे वातवैगुण्यमानाहो ग्रन्थिजन्म च ।
ग्रीवादौर्बल्यवाक्सङ्गौ पालके तु मताविह ॥
प्रसेकः कर्दमाख्ये तु विड्भेदो नेत्रपीतता ।
वैराटकेनाङ्गदुःखं शिरोरोगश्च जायते ॥
गात्रस्तम्भो वेपथुश्च जायते मुस्तकेन तु ।
शृङ्गीविषेणाङ्गसाददाहोदरविवृद्धयः ॥
पुण्डरीकेण रक्तत्वमक्ष्णोर्वृद्धिस्तथोदरे ।
वैवर्ण्यं मूलकैश्छर्दिर्हिक्काशोफप्रमूढताः ॥
चिरेणोच्छ्वसिति श्यावो नरो हालाहलेन वै ।
महाविषेण हृदये ग्रन्थिशूलोद्गमौ भृशम् ॥
कर्कटेनोत्पतत्यूर्ध्वं हसन्दन्तान्दशत्यपि ।
कन्दजान्युग्रवीर्याणि प्रयुक्तानि त्रयोदश ॥

कालकूट आदि एकएक कंदविषना उपयोगथी थतां जूदां जूदां लक्षणो.

७ **कालकूटना** उपयोगथी स्पर्शनुं अज्ञान थाय छे, कंप थाय छे अने शरीर स्तब्ध थई जाय छे. **वछनागना** उपयोगथी डोक झलाई जाय छे अने विष्ठा, मूत्र तथा नेत्रो पीळां थई जाय छे. **सर्षपना** उपयोगथी वायु प्रकुपित थाय छे, विष्ठा वगेरेनी अटकायत थई जाय छे अने ग्रंथिओ उत्पन्न थाय छे. **पालकना** उपयोगथी डोकनुं निर्बलपणुं थाय छे अने वाणी अटकी जाय छे. **कर्दमकना** उपयोगथी कफनो स्राव थाय छे, पातळो दस्त आव्या करे छे अने नेत्रो पीळां थई जाय छे. **वैराटना** उपयोगथी अंगोमां दुःख थाय छे अने माथामां व्यथा थाय छे. **मुस्तकना** उपयोगथी गात्रो स्तब्ध थई जाय छे अने कंप थाय छे. **शृंगीविषना** उपयोगथी अंगोमां ग्लानि थाय छे, बळतरा थाय छे अने पेट वधी जाय छे. **पुंडरीकना** उपयोगथी नेत्रो लाल

थई जाय छे अने पेट वधी जाय छे. **मूलकना** उपयोगथी शरीरनो वर्ण बदली जाय छे, उलटी थाय छे, हेडकी थाय छे, मोजो थाय छे अने अत्यंत मूढपणुं थाय छे. **हालाहलना** उपयोगथी शरीर श्याम थई जाय छे अने लांबे लांबे समये श्वास लई शकाय छे. **महाविषना** उपयोगथी हृदयमां ग्रंथि तथा शूळ अत्यंत उत्पन्न थाय छे. **कर्कटकना** उपयोगथी माणस ऊंचे उछळे छे, हसे छे अने दांतोने पण करडे छे. आ तेर कंदविषो नीचे कहेला दश गुणोथी संयुक्त होवानेलीधे उग्रशक्तिवाळां छे.

८ सर्वाणि कुशलैर्ज्ञेयान्येतानि दशभिर्गुणैः ।
रूक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायि च ॥
विकाशि विशदं चैव लघ्वपाकि च तत्स्मृतम् ।
तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तं सशोणितम् ॥
मानसं मोहयेत्तैक्ष्ण्यादङ्गबन्धांश्छिनत्त्यपि ।
शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोति च ।
आशुत्वादाशु तद्धन्ति व्यवायात्प्रकृतिं भजेत् ।
क्षपयेच्च विकाशित्वाद्दोषान्धातून्मलानपि ॥
वैशद्यादतिरिच्येत दुश्चिकित्स्यं च लाघवात् ।
दुर्जरं चाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयते चिरम् ॥
स्थावरं जङ्गमं यच्च कृत्रिमं चापि यद्विषम् ।
सद्यो व्यापादयेत्तत्तु ज्ञेयं दशगुणान्वितम् ॥

विषोनां दश गुणो अने ते गुणोनां कार्यो.

८ विष रूक्ष छे, उष्ण छे, तीक्ष्ण छे, सूक्ष्म (शरीरना झीणा मार्गोमां पण पेसी जनारूं) छे, आशु (सर्व प्रदेशोमां झडपथी पोहोंची जनारूं) छे, व्यवायी (प्रथम सघळा शरीरमां व्यापीने पछी परीणामने पामनारूं) छे, विकाशी (ओजने सूकावी नाखी शरीरना संधिबंधोने शिथिल करी नाखनारूं) छे, विशद (आर्द्रपणाथी रहित तथा आर्द्रपणाने टाळी नाखनारूं) छे, लघु (हलकुं) छे अने अपाकी (आहारने) पकावनारा जठराग्निथी पकावी शकाय नहीं एवुं छे.

ए विष पोताना रूक्षपणाने लीधे वायुने प्रकुपित करे छे, उष्णपणाने लीधे पित्तने तथा रुधिरने प्रकुपित करे छे, तीक्ष्णपणाने लीधे मनने मूढ करी नाखे छे तथा अंगेना बंधोने कापी नाखे छे, सूक्ष्मपणाने लीधे शरीरना अवयवोमां पेसी जईने तेओने विकृत करी नाखे छे, आशुपणाने लीधे तुरत मारी नाखे छे, व्यवायीपणाने लीधे सघळा शरीरमां व्यापे छे, विकाशीपणाने लीधे दोषोने धातुओने तथा मळोने क्षीण करी नाखे छे, विशदपणाने लीधे क्यांय अटकतुं नथी, हलकापणाने लीधे अतिअस्थिर होवाथी चिकित्साना कबजामां मांड मांड आवे छे अने अपाकी होवाने लीधे जठराग्निथी जीर्ण थतुं नथी तथा लांबा काळसूधी दुःख दीधा करे छे.

जे कोई स्थावरविष, जंगमविष के कृत्रिम (बनावटनुं) विष होय ते जो आ दशे गुणोथी संपूर्ण युक्त होय तो तुरतज मारी नाखे छे अने जो ते गुणोथी ओछुं युक्त होय तो अथवा तेओमांना बे चार वगेरे गुणोथी युक्त होय तो काळांतरे मारे छे. प्रवीण वैद्योए सघळां विषोने ए दश गुणो उपरथी जाणी लेवां.

९ यत्स्थावरं जङ्गमं कृत्रिमं वा
देहादशेषं यदनिर्गतं तत् ।
जीर्णं विषघ्नौषधिभिर्हतं वा
दावाग्निवातातपशोषितं वा ॥
स्वभावतो वा गुणविप्रहीनम्
विषं हि दूषीविषतामुपैति ।
वीर्याल्पभावान्न निपातयेत्तत्
कफावृतं वर्षगणानुबन्धि ॥
तेनार्दितो भिन्नपुरीषवर्णो
विगन्धवैरस्यमुखः पिपासी ।
मूर्छन्वमन्गद्गदवाग्विषण्णो
भवेच्च दूष्योदरलिङ्गजुष्टः ॥

आमाशयस्थे कफवातरोगी
पक्वाशयस्थेऽनिलपित्तरोगी ।
भवेन्नरो ध्वस्तशिरोरुहाङ्गो
विलूनपक्षस्तु यथा विहङ्गः ॥
स्थितं रसादिष्वथ वा यथोक्तान्
करोति धातुप्रभवान्विकारान् ।

दूषीविषनुं लक्षण अने दूषीविषथी थतां लक्षणो.

९ जे स्थावर, जंगम के कृत्रिम विष शरीरमांथी पूरेपूरूं नहीं नीकळी जतां कांईक अवशेष रही गयुं होय अथवा जूनुं (पुराणुं) होय अथवा दावाग्निथी वायुथी के तडकाथी सूकाई गयुं होय अथवा स्वाभाविक रीतेज उपर कहेला दश गुणोमाना थोडा गुणोथीज युक्त होय अथवा दशे गुणोवाळुं छतां पण विषने हणनारी औषधीओथी हतवीर्य थई गयुं होय ते विष दूषीविष केहेवाय छे. ए दूषीविष अल्प शक्तिवाळुं होवाने लीधे तथा कफथी वींटाई गएलुं होवाने लीधे मारी नाखतुं नथी पण घणां वर्षो सूधी दुःख दीधा करे छे. ए दूषीविषथी पीडाएलो माणस पातळा झाडावाळो, बदली गएला वर्णवाळो, दुर्गंध तथा विरस मुखवाळो, तरशवाळो, मूर्छा पामतो, वमन करतो, गद्गद वाणीवाळो, खेदवाळो अने निदानस्थानना सातमा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलां दूष्योदरनां लक्षणोवाळो थाय छे. ए दूषीविष आमाशयमां रहेलुं होय तो तेथी माणस कफसंबंधी तथा वायुसंबंधी रोगोवाळो थाय छे अने पक्वाशयमां रहेलुं होय तो वायुसंबंधी तथा पित्तसंबंधी रोगोवाळो, केशोथी रहित, नबळां अंगोवाळो अने जेनी पांखो कपाई गई होय एवा पक्षीना जेवी स्थितिवाळो थाय छे. दूषीविष रस वगेरे धातुओमां रह्युं होय तो सूत्रस्थानना व्याधिसमुद्देशीय नामना २४ मा अध्यायना चोथा विषयमां कहेला धातुसंबंधी विकारोने (अन्न उपर अरुचि वगेरे विकारोने) उत्पन्न करे छे.

१० कोपं च शीतानिलदुर्दिनेषु
यात्याशु पूर्वं शृणु तत्र रूपम् ॥
निद्रा गुरुत्वं च विजृम्भणं च
विश्लेषहर्षावथ चाङ्गमर्दः ।

दूषीविषना प्रकोपना समयो तथा प्रकुपित थएला दूषीविषनुं पूर्वरूप.

१० ए दूषीविष अतिशीतना समयमां, अतिपवनना समयमां अने वादळांओना घेरावना समयमां तुरत प्रकोप पामे छे. हवे प्रकोप पामेला दूषीविषनुं पूर्वरूप कहुं छुं ते सांभळो. निद्रा, शरीरमां भारेपणुं, बगासां, गात्रोना सांधाओनुं प्रसारणादिकमां नहीं प्रवर्त्तवुं, रुवाडांओनुं ऊभुं थवुं तथा अंगोनुं भांगवुं ए प्रकोप पामेला दूषीविषनुं पूर्वरूप छे.

११ ततः करोत्यन्नमदाविपाका-
वरोचकं मण्डलकोठमोहान् ॥
धातुक्षयं पादकरास्यशोफम्
दकोदरं छर्दिमथातिसारम् ।
वैवर्ण्यमूर्छाविषमज्वरान्वा
कुर्यात्प्रवृद्धां प्रबलां तृषां वा ॥
उन्मादमन्यज्जनयेत्तथान्य-
दानाहमन्यत्क्षपयेच्च शुक्रम् ।
गाद्गद्यमन्यज्जनयेच्च कुष्ठम्
तांस्तान्विकारांश्च बहुप्रकारान् ॥

प्रकोप पामेला दूषीविषनुं रूप.

११ प्रकोप पामेलुं दूषीविष भोजन कर्या बाद बहु सोपारी खाधाना जेवा मीणाने उत्पन्न करे छे, अन्नने पचवा देतुं नथी, अरोचकने उत्पन्न करे छे अने मंडलो, ध्रामठां, मोह, धातुओनो क्षय, हाथनो सोजो, पगनो सोजो, मोहोडानो

सोजो, जलोदर, उलटी, अतिसार, विवर्णपणुं, मूर्छा, विषमज्वर तथा अत्यंत प्रबल तरश एओने पण उत्पन्न करे छे. कोई दूषीविष उन्मादने उत्पन्न करे छे, कोई दूषीविष मलमूत्रादिकनी अटकायतने उत्पन्न करे छे, कोई दूषीविष वीर्यने क्षीण करे छे, कोई दूषीविष बोलवामां गद्गदपणुं करे छे अने कोई दूषीविष कोढने उत्पन्न करे छे. ए विष बीजा पण घणा प्रकारना विकारोने उत्पन्न करे छे.

१२ दूषितं देशकालान्नदिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः ।
यस्माद् दूषयते धातूंस्तस्माद् दूषीविषं स्मृतम्

ए विष दूषीविष शा माटे केहेवाय छे?

१२ जलप्राय वगेरे देशोने लीधे, वादळांओना घेरावना समय वगेरे काळोने लीधे, तिल तथा मसूर आदि अन्नोना भोजनने लीधे, दिवसनी निद्रा करवाने लीधे अने एवांज केटलांएक बीजां कारणोनेलीधे ए विष वारंवार दूषित थईने धातुओने दूषित करे छे एटला माटे दूषीविष केहेवाय छे.

१३ स्थावरस्योपयुक्तस्य वेगे तु प्रथमे नृणाम् ।
श्यामा जिह्वा भवेत्स्तब्धा मूर्छा श्वासश्च जायते
द्वितीये वेपथुः स्वेदो दाहः कण्डू रुजस्तथा ।
विषमामाशयप्राप्तं कुरुते हृदि वेदनाम् ॥
तालुशोषं तृतीये तु शूलं चामाशये भृशम् ।
दुर्बले हरिते शूने जायेते चास्य लोचने ॥
पक्वाशयगते तोदो हिक्का कासोऽन्त्रकूजनम् ।
चतुर्थे जायते वेगे शिरसश्चातिगौरवम् ॥
कफप्रसेको वैवर्ण्यं पर्वभेदश्च पञ्चमे ।
सर्वदोषप्रकोपश्च पक्वाधाने च वेदना ॥
षष्ठे प्रज्ञाप्रणाशश्च भृशं चाप्यतिसार्यते ।
स्कन्धपृष्ठकटीभङ्गः सन्निरोधश्च सप्तमे ॥

स्थावरविषना वेगोनां जूदां जूदां चिह्नो.

१३ स्थावरविष खवाया पछी तेनो **पेहेलो वेग** लागे त्यारे जीभ काळी तथा स्तब्ध थई जाय छे, मूर्छा आवे छे अने श्वास थाय छे. **बीजो वेग** लागे त्यारे कंप थाय छे, पसीनो वळे छे, बळतरा थाय छे, खरज आवे छे अने व्यथाओ थाय छे. आ समयमां विष आमाशयने प्राप्त थई हृदयमां वेदनाने उत्पन्न करे छे. **त्रीजो वेग** लागे त्यारे ताळवामां शोष थाय छे, आमाशयमां अत्यंत शूल उत्पन्न थाय छे अने नेत्रो दुर्बल, हरित वर्णवाळां तथा सोजावाळां थई जाय छे. आ समयमां विष पक्वाशयने प्राप्त थतां भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे, हेडकी थाय छे, खांसी थाय छे अने आंतरडांओमां अवाज थाय छे. **चोथो वेग** लागे त्यारे माथुं बहुज भारे थई जाय छे अने उपर कहेली व्यथाओ पण थाय छे. **पांचमो वेग** लागे त्यारे कफनो स्राव थाय छे, विवर्णपणुं थाय छे, सघळा दोषोनो प्रकोप थाय छे, पक्वाशयमां वेदना थाय छे अने उपर कहेली व्यथाओ पण थाय छे. **छठ्ठो वेग** लागे त्यारे संज्ञा जती रहे छे अने अत्यंत अतीसार थाय छे. **सातमो वेग** लागे त्यारे कांध, पीठ तथा कमर भांगी जाय छे अने श्वास रोकाई जाय छे. (मरण थाय छे.)

१४ प्रथमे विषवेगे तु वान्तं शीताम्बुसेचितम्
अगदं मधुसर्पिर्भ्यां पाययेत समायुतम् ॥
द्वितीये पूर्ववद्वान्तं पाययेत्तु विरेचनम् ।
तृतीयेऽगदपानं तु हितं नस्यं तथाञ्जनम् ॥
चतुर्थे स्नेहसंमिश्रं पाययेतागदं भिषक्
पंचमे क्षौद्रमधुकक्काथयुक्तं प्रदापयेत् ॥
षष्ठेऽतीसारवत्सिद्धिरवपीडश्च सप्तमे ।
मूर्ध्नि काकपदं कृत्वा सासृग्वा पिशितं क्षिपेत् ॥

स्थावरविषना एक एक वेगनी जूदी जूदी चिकित्सा.

१४ **पेहेलो वेग** लागे त्यारे वमन करावी,

१ एक पछी बीजो अने बीजा पछी त्रीजो एम सात वेग शा कारणथी थाय छे ए विषय आ स्थानना चोथा अध्यायना २६ मा विषयमां जुवो.

शीतल जळनुं सेचन करी मधथी तथा घीथी संयुक्त करेलो दूषीविषारि नामनो अगद पावो. (आ अध्यायनो १७ मो विषय जुवो.) **बीजो वेग** लागे त्यारे वमन करावी मधथी संयुक्त करेलुं विरेचन पावुं. **त्रीजो वेग** लागे त्यारे दूषीविषारि नामनो अगद पावो, विषने हणनारूं नस्य देवुं अने संज्ञाने जाग्रत् करनारूं अंजन पण आंजवुं. **चोथो वेग** लागे त्यारे गायना घीथी मिश्रित करेलो दूषीविषारि नामनो अगद पावो. **पांचमो वेग** लागे त्यारे मधथी तथा जेठीमधना क्राथथी संयुक्त करेलो दूषीविषारि नामनो अगद पावो. **छठ्ठो वेग** लागे त्यारे अतीसारनी जे चिकित्सा छे ते करवी, अवपीड नस्य देवुं, माथामां शस्त्रवते कागडाना पगना जेवा छेरा दईने तेमां अन्य प्राणीना लोहीवाळुं मांस अथवा अन्य प्राणीना लोहीवाळुं चामडुं नाखवुं अने आ स्थानना पांचमा अध्यायना २० मा विषयमां कहेली चिकित्साओमांथी जे जे चिकित्साओ योग्य जणाय ते पण करवी. **सातमो वेग** लागे त्यारे ते वेग असाध्य छे माटे प्रथम ना पाडीने पछी रोगीना संबंधीओ वगेरेनो आग्रह जणाय तो छट्ठा वेगनी चिकित्साप्रमाणेज चिकित्सा करवी.

१५ वेगान्तरे त्वन्यतमे कृते कर्मणि शीतलाम् ।
यवागूं सघृतक्षौद्रामिमां दद्याद्विचक्षणः ॥
कोपातक्योऽग्निकः पाठासूर्यवल्ल्यमृताभयाः ।
शिरीषः किणिही शेलुर्गिर्याह्वा रजनीद्वयम् ॥
पुनर्नवे हरेणुश्च त्रिकटुः सारिवे बला ।
एषां यवागूर्निष्क्काथे कृता हन्ति विषद्वयम् ॥

विषना बे वेगोना[1] मध्यमां देवानी यवागू.

१५ विषना बे वेगोना मध्यमां, जे वेग लागी गयो होय तेनी खास चिकित्सा कर्या पछी विचक्षण वैद्ये घीथी तथा मधथी संयुक्त करेली नीचे लखेली शीतल यवागू पावी.

कडवी घीसोडीनां फळ, चित्रक, काळीपाड, सूरजमुखी, गळो, हरडे, सरसडीयो, वापुंगां, गुंदो, गरणी, हळदर, दारूहळदर, सफेद साटोडी, पीळी साटोडी, हरेणु, सूंठ, मरी, पीपळ, सफेद उपलसरी, काळी उपलसरी अने बळदाणा एओना क्राथथी पकावेली यवागू स्थावरविषने तथा जंगमविषने पण हणे छे.

१६ मधुकं तगरं कुष्ठं भद्रदारु हरेणवः ।
पुन्नागैलैलवालूनि नागपुष्पोत्पले सिता ॥
विडङ्गं चन्दनं पत्रं प्रियङ्गु ध्यामकं तथा ।
हरिद्रे द्वे बृहत्यौ च सारिवे च स्थिरा सहा ॥
कल्कैरेषां घृतं सिद्धमजेयमिति विश्रुतम् ।
विषाणि हन्ति सर्वाणि शीघ्रमेवाजितं क्वचित् ॥

अजेयघृत.

१६ जेठीमध, तगर, कठ, देवदार, हरेणु, पुन्नाग, (जेनां फूलनी कळी नागकेसर केहेवाय छे ते) एळची, एलवालुक, नागकेसर, नीलकमळ, साकर, वावडींग, चंदन, तमालपत्र, घउलां, रोहीस नामनुं खड, हळदर, दारूहळदर, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, काळी उपलसरी, सफेद उपलसरी, शालिपर्णी अने जंगली अडद एओनो कल्क नाखी चोगणा पाणीमां घी पकाववुं. आ घी **अजेयघृत** केहेवाय छे. आ घी तुरतज सघळां विषोने नष्ट करे छे अने ते घी क्यांय पण विषथी जीती शकातुं नथी.

१७ दूषीविषार्त्तं सुस्विन्नमूर्ध्वं चाधश्च शोधितम् ।
पाययेतागदं नित्यमिमं दूषीविषापहम् ॥
पिप्पल्यो ध्यामकं मांसी सावरः परिपेलवम् ।
सुवर्चिका ससूक्ष्मैला तोयं कनकगैरिकम् ॥
क्षौद्रयुक्तोऽगदो ह्येष दूषीविषमपोहति ।
एष नाम्ना विषारिस्तु नचान्यत्रापि वार्यते ॥

दूषीविषारि अगद.

१७ दूषीविषथी पीडाएला माणसने सारी

[1] वेगोना मध्यनुं लक्षण आ स्थानना चोथा अध्यायना २७ मा विषयमां जुवो.

पछे स्वेदन आपी, वमनथी तथा विरेचनथी शुद्ध कर्या पछी नित्य आ दूषीविषारि नामनो अगद पावो.

पीपळ, रोहीस नामनुं खड, जटामांसी, पठाणी लोदर, केवडीमोथ, साजीखार, झीणी एळची, वाळो अने सोनागेरू एओने वाटीने मधमां कालववां एटले **दूषीविषारि** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद दूषीविषने नष्ट करे छे अने अन्य प्रकारनां स्थावरजंगमादिक विषोमां के तेओना उपद्रवोमां पण अटकावातो नथी अर्थात् तेओने पण मटाडे छे.

१८ ज्वरे दाहे च हिक्कायामानाहे शुक्रसंक्षये ।
शोफेऽतिसारे मूर्छायां हृद्रोगे जठरेऽपि वा ॥
उन्मादे वेपथौ चैव ये चान्ये स्युरुपद्रवाः ।
यथास्वं तेषु कुर्वीत विषघ्नैरौषधैः क्रियाम् ।

दूषीविषना उपद्रवोनी चिकित्सा.

१८ दूषीविषथी ज्वर, दाह, हेडकी, मलमूत्रादिकनी अटकायत, वीर्यनो क्षय, सोजो, अतीसार, मूर्छा, छातीनुं दरद, उदररोग, उन्माद, कंप के बीजा पण जे कोई उपद्रवो थाय तेओने टाळवा माटे, जे उपद्रवनी जे चिकित्सा कही छे ते करवी पण ते चिकित्सा विषने हणनारा औषधोथी संयुक्त करवी.

१९ साध्यमात्मवतः सद्यो याप्यं संवत्सरोत्थितम् ॥
दूषीविषमसाध्यं तु क्षीणस्याहितसेविनः ।

दूषीविषनुं साध्यपणुं, याप्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

१९ जितेंद्रिय रेहेनारा माणसनुं तुरतनुं दूषीविष साध्य छे, जेने लागू पड्याने एक वर्ष थई गयुं होय एवुं दूषीविष याप्य छे पण जे माणस क्षीण थयो होय के अहित पदार्थोनुं सेवन करतो होय तेनुं दूषीविष तो असाध्यज थई पडे छे.

अध्याय ३ जो.

१ अथातो जङ्गमविषविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'जंगमविषविज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ जङ्गमस्य विषस्योक्तान्यधिष्ठानानि षोडश ।
समासेन मया यानि विस्तरस्तेषु वक्ष्यते ॥

तत्र दृष्टिनिश्वासदंष्ट्रानखमूत्रपुरीषशुक्रलालार्त्तवमुखसन्दंशविशर्द्धितगुदास्थिपित्तशूकशवानीति ॥

जंगमविषना सोळ आश्रयोनुं निरूपण.

२ में संक्षेपथी कह्युं छे के जंगमविषना सोळ आश्रयो छे. (गया अध्यायनो बीजो विषय जुवो). हवे ए सोळ आश्रयोनुं विस्तारथी निरूपण करुं छुं.

दृष्टि, निश्वास, दाढ, नख, मूत्र, विष्ठा, वीर्य, लाळ, रज, मुखरूपी चीपीयो, अधोवायु, गुदा, अस्थि, पित्त, तीखो आंकडो अने शब ए सोळ पदार्थो जंगमविषना आश्रयो छे.

३ तत्र दृष्टिनिश्वासविषास्तु दिव्याः सर्पाः । भौमास्तु दंष्ट्राविषाः ।

मार्जारश्ववानरमकरमण्डूकपाकमत्स्यगो-

---

१ जो के विषोमां स्वेदननो निषेध छे (चिकित्सास्थानना ३२ मा अध्यायनो १५ मो विषय जुवो.) तो पण दूषीविषमां स्वेदन करवुं योग्य छे. केम के दूषीविषनुं आवरण करनारा कफने पीगळाववामाटे स्वेदननो उपयोग छे.

२ जंगमविषोनी समजण आपवा विषेनो तथा विषोनी चिकित्साओ विषेनो.

ग्राशम्बूकप्रचलाकगृहगोधिकाचतुष्पादकीटा-स्तथान्ये दंष्ट्रानखविषाः ।

चिपिटपिच्चटककषायवासिकसर्षपवासिक-तोटकवर्चःकीटकौण्डिल्यकाः शकृन्मूत्रविषाः॥

मूषिकाः शुक्रविषाः ।

लूताश्च लालामूत्रपुरीषमुखसन्दंशनखशु-क्रार्त्तवविषाः ।

वृश्चिकविश्वंभराराजीवमत्स्योच्चिटिङ्गाः स-मुद्रवृश्चिकाश्चालविषाः ।

चित्रशिरःशरावकूर्दिशतदारुकारिमेदकसा-रिकामुखा मुखसन्दंशविशर्द्धितगुदमूत्रपुरीष-विषाः ।

मक्षिकाकणभजलायुका मुखसन्दंशविषाः ।

विषहतास्थिसर्पकण्टकवरटीमत्स्यास्थि चे-त्यस्थिविषाणि ।

शकुलीमत्स्यरक्तराजीचरकीमत्स्याश्च पि-त्तविषाः ।

सूक्ष्मतुण्डोच्चिटिङ्गवरटीशतपदीशूकवलभि-काशृङ्गीभ्रमराः शूकतुण्डविषाः ।

कीटसर्पदेहा गतासवः शवविषाः ।

शेषास्त्वनुक्ता मुखसन्दंशविषेष्वेव गण-यितव्याः ॥

कया प्राणिओना कया पदार्थोमां विष रह्युं छे.

३ दिव्य सर्पोनी **दृष्टिओमां** अने **निश्वासोमां** विष रह्युं छे. पृथ्वीना सर्पोनी **दाढोमां** विष रह्युं छे.

(वाघ दीपडा वगेरे,) मींदडां, कूतरां, वानर, मघर, देडकां, पाकमत्स्य, घो, शंबूक, प्रचलाक, टेढगरोळी, चार पगवाळा कीडा तथा बीजा पण केटलाएक कीडाओ एओनी **दाढोमां** तथा **नखोमां** विष रह्युं छे.

चिपिट, पिच्चटक, कषायवासिक, सर्षपवासिक, तोटक, वर्चःकीट अने कौंडिल्यक एओनी **विष्ठामां** तथा **मूत्रमां** विष रह्युं छे.

उंदरोना **वीर्यमां** विष रह्युं छे.

लूताओनां (लूता ए करोळीयाओनी जातो छे.) **लाळ, मूत्र, विष्ठा, मुखनो चीपियो, नख, वीर्य** अने **रज** एओमां विष रह्युं छे.

वींछी, विश्वंभरा, राजीवमत्स्य, उच्चिटिंग अने दरीयाई वींछी एओना **तीखा आंकडाओमां** (कांटाओमां) विष रह्युं छे.

चित्रशिर, शरावकूर्दि, शतदारुक, अरिमेदक, अने सारिकामुख एओनां **मुखनो चीपियो, अधोवायु, गुदा, मूत्र** अने **विष्ठा** एओमां विष रह्युं छे.

मांखी, कणभ अने जळो एओना **मुखना चीपियामां** विष रह्युं छे.

विषथी मरण पामेलां प्राणिओ, सर्प, कंटक अने वरटीमत्स्य एओनां अस्थिओमां विष रह्युं छे.

शकुलीमत्स्य, रक्तराजी अने चरकीमत्स्य एओनां पित्तामां विष रह्युं छे.

सूक्ष्मतुंड, उच्चिटिंग, भमरी, कानखजूरा, शूकवलभिका अने श्रृंगीभ्रमर एओना आंकडाओमां (कांटाओमां) तथा मुखना चीपीयाओमां विष रह्युं छे.

मरण पामेला कीडाओनां अने सर्पोनां शबोमां विष रह्युं छे.

जे झेरी प्राणीओनां नामो आ विषयमां आपवामां आव्यां नथी तेओने मुखना चीपीयानां विषोवाळां प्राणीओमां गणी लेवां. (आ स्थानना आठमा अध्यायमां केटलीएक वधारे जातो आपवामां आवी छे ते जुवो.)

(आ विषयमां आपेलां घणखरां प्राणीओ ओळखी शकातां नथी अने तेओनां नामो पण गुजरातीमां मळतां नथी माटे तेओनी ओळखाण शोधक लोकोने तथा देशांतरना लोकोने पूछीने मेळवी लेवी. केटलाएक प्राणीयो तो देशांतरोमां थतां हशे एम जणाय छे.)

४ भवन्ति चात्र ॥
राज्ञोऽरिदेशे रिपवस्तृणाम्बु-
मार्गान्नधूमश्वसनान्विषेण ।
संदूषयन्त्येभिरतिप्रदुष्टान्
विज्ञाय लिङ्गैरभिशोधयेच्च ॥

राजा शत्रुओना देशमां चडाइ लई जाय त्यारे शत्रुओ तरफथी थता विषसंबंधी दगानी परीक्षा करीने विषनो नाश करवो.

४ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "राजा ज्यारे शत्रुओना देशमां फोज लईने पेसे त्यारे शत्रुओ जलोने, मार्गोने, तृणोने, अन्नोने, धूमाडाओने तथा पवनने विषथी दूषित करे छे. ए जळ वगेरे पदार्थोने राजवैद्ये नीचे लखेलां चिह्नो उपरथी विषथी दूषित थएला जाणी लईने नीचे लखेला उपायोथी शुद्ध करवा.

५ दुष्टं जलं पिच्छिलमुग्रगन्धि
फेनान्वितं राजिभिरावृतं च ।
मण्डूकमत्स्यं म्रियते विहङ्गा
मत्ताश्च सानूपचरा भ्रमन्ति ॥
मज्जन्ति ये चात्र नराश्वनागा-
स्ते छर्दिमोहज्वरदाहशोफान् ।
गच्छन्ति तेषामपहृत्य दोषान्
दुष्टं जलं शोधयितुं यतेत ॥
धवाश्वकर्णासनपारिभद्राः
सपाटलाः सिद्धकमोक्षकौ च ।
दग्धाः सराजद्रुमसोमवल्का-
स्तद्भस्म शीतं वितरेत्सरस्सु ॥
भस्मांजलिं चापि घटे निधाय
विशोधयेदीप्सितमेवमम्भः ।

विषथी दूषित थएलां जळनी परीक्षा तथा शोधन.

५ जळ विषथी दूषित थयुं होय तो चीकणुं, उग्रगंधवाळुं, फीणोवाळुं अने रेखाओवाळुं थई जाय छे. ए जळमां देडकां तथा माछलां मरी जाय छे अने पक्षिओ तथा कीनारापर फरनारां पशुओ विषना वेगथी मत्त थईने भमतां रेहे छे. ए जळमां जे माणसो, घोडाओ के हाथीओ नाहाय तेओने उलटी, मोह, ज्वर, दाह तथा सोजा थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो मनुष्य वगेरे प्राणीओना दोषोनुं योग्य चिकित्साओथी हरण करीने पछी दुष्ट जळने शुद्ध करवा माटे नीचेप्रमाणे प्रयत्न करवो.

धावडो, राळनुं झाड, बीबलो, लींबडो, पाडळ, काळो धंतूरो, मरखो, गरमाळो अने खेर एओने अग्निथी बाळी भस्मने थंडी पाडीने ते भस्म तळावो वगेरेमां नाखवी. (नदीओ वगेरेनां वेहेतां जळो तो विषथी दूषित करवां अशक्यज छे माटे तेओनी चिकित्सा कही नथी.) जळाशयोमांथी वासणोमां भरेलुं जळ विषथी दूषित थएलुं जणाय तो एक हजार चोवीश तोलां भार जळमां सोळ तोलांभार उपर कहेली भस्म नाखवाथी ते जळ शुद्ध थई जाय छे. (वासणमां भरेला जळने ए हिसाब प्रमाणे भस्म नाखीने शुद्ध करवुं. एक घडा पाणीमां उपर लखेली भस्म एक खोबो नाखवामां आवे तो तेथी ते घडानुं पाणी शुद्ध थई जाय एवो अर्थ पण करी शकाय छे.)

६ क्षितिप्रदेशं विषदूषितं तु
शिलास्थलीं तीर्थमथेरिणं वा ॥
स्पृशन्ति गात्रेण तु येन येन
गोवाजिनागोष्ट्रखरा नरा वा ।
तच्छूनतां यात्यथ दह्यते च
विशीर्यते रोम नखास्तथैव ॥
तत्राप्यनन्तां सह सर्वगन्धैः
पिष्ट्वा सुराभिर्विनियोज्य मार्गम् ।
सिञ्चेत्पयोभिस्तु मृदन्वितैस्तं
विडङ्गपाठाकटभीजलैर्वा ॥

विषथी दूषित थएला स्थळनी परीक्षा तथा शोधन.

६ माटीवाळो प्रदेश, पथरावाळो प्रदेश, जळाशयनो आरो के खारी जमीन विषथी दूषित थएल होय तो बळदो, घोडाओ, हाथीओ, ऊंटो, गधेडाओ के माणसो जे जे गात्रथी तेनो स्पर्श करे ते ते गात्र सोजावाळुं थई जाय छे तथा बळतराथी युक्त थाय छे अने ते गात्रनां रुवाडां तथा नखो वींखाईने त्रूटी जवा लागे छे.

आ प्रमाणे स्थल विषथी दूषित थयुं होय तो राजवैद्ये उपलसरी अथवा अरणीने सघळा सुगंध पदार्थोथी संयुक्त करी जातजातनी मदिराओमां वाटी ते कल्कने राफडानी माटीथी संयुक्त करेला जळमां डोई नाखी ते जळ ते प्रदेशमां सारी पेठे छंटाववुं अथवा वावडींग, काळीपाड तथा बापुंगा एओनो कल्क करी ते कल्कने राफडानी माटीथी संयुक्त करेला जळमां डोई नाखीने ते जळ ते प्रदेशमां सारी पेठे छंटाववुं.

७ तृणेषु भक्तेषु च दूषितेषु
सीदन्ति मूर्छन्ति वमन्ति चान्ये ।
विड्भेदमृच्छन्त्यथवा म्रियन्ते
तेषां चिकित्सां प्रणयेद्यथोक्ताम् ॥
विषापहैर्वाप्यगदैर्विलिप्य
वाद्यानि चित्राण्यपि वादयेत ।
तारः सुतारः ससुरेन्द्रगोपः
सर्वैश्च तुल्यः कुरुविन्दभागः ॥
पित्तेन युक्तैः कपिलान्वयेन
वाद्यप्रलेपो विहितः प्रशस्तः ।
वाद्यस्य शब्देन हि यान्ति नाशम्
विषाणि घोराण्यपि यानि सन्ति ॥

विषथी दूषित थएलां तृणोनी तथा अन्नोनी परीक्षा अने शोधन.

७ तृणो (खडो) के अन्नो विषथी दूषित थएलां होय तो तेओना उपयोगथी पशुओ अने माणसो सीदाय छे. केटलांएक मूर्च्छित थई जाय छे, केटलांएक वमन करवा लागे छे, केटलांएकने पातळो झाडो थई पडे छे अने केटलांएक मरी पण जाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो ते ते उपद्रवोनी जे जे चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते ते चिकित्सा विषहर द्रव्योथी संयुक्त करीने करवी अने पछी आ स्थानना सातमा अध्यायना बीजा विषयमां कहेलां औषधोनो विचित्र वाजांओनी उपर लेप करावीने ते विचित्र वाजांओ वगडाववां. (पशुओनी चिकित्साने माटे शालिहोत्र आदि ग्रंथोमां जोवुं. पशुओने माटे कांईक तो-आ स्थानना ९ मा अध्यायना १६ मा विषयमां केहेवामां आवशे पण तेमांथी आ बाबतमां केटलुं उचित छे ते विचारी लेवुं.)

एक भाग रूपुं, एक भाग पारो, एक भाग इंद्रगोप नामना राता जीवडा अथवा इंद्रजव के उपलसरी अने त्रण भाग रताश तथा पीळाशवाळां माणक एओने कपिला गायना गोरोचनमां वाटी तेनो विचित्र वाजांओनी उपर लेप करावीने ते वाजांओ वगडाववां ए पण हितकारी छे.

केम के एवां वाजांओना शब्दथी जे विषो भयंकर होय तेओ पण नाश पामे छे.

८ धूमेऽनिले वा विषसम्प्रयुक्ते
खगाः श्रमार्त्ताः प्रपतन्ति भूमौ ।
कासप्रतिश्यायशिरोरुजश्च
भवन्ति तीव्रा नयनामयाश्च ॥
लाक्षाहरिद्रातिविषाभयाब्द-
हरेणुकैलादलवल्ककुष्ठम् ।
प्रियङ्गुकां चाप्यनले निधाय
धूमानिलौ चापि विशोधयेत ॥

विषथी दूषित थएला धूमाडानी तथा पवननी परीक्षा अने शोधन.

८ धूमाडो के पवन विषथी दूषित थएलो होय तो पक्षीओ श्रमथी पीडाईने धरती उपर पडे छे. एवा धूमाडाथी अने पवनथी खांसी प्रतिश्याय, माथानां दरदो अने नेत्रोना तीव्र रोगो पण थाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो लाख, हळदर, अतवस, सफेद नगड, मोथ, हरेणु, एळची, भूर्जे, (भोजपत्र) कठ अने घउलां एओने अग्निमां नाखीने बाळवां एटले धूमाडो तथा पवन शुद्ध थई जाय छे.

**९ प्रजापिमामात्मयोनेर्ब्रह्मणः सृजतः किल ।
अकरोदसुरो विघ्नं कैटभो नाम दर्पितः ॥
ततः क्रुद्धस्य वै वक्त्राद्ब्रह्मणस्तेजसो निधेः ।
क्रोधो विग्रहवान्भूत्वा निष्पपाताथ दारुणः ॥
स तं ददाह गर्जन्तमन्तकाभं महाबलम् ।
ततोऽसुरं घातयित्वा तत्तेजोऽवर्द्धताद्भुतम् ॥
ततो विषादो देवानामभवत्तं निरीक्ष्य वै ।
विषादजननत्वाच्च विषमित्यभिधीयते ॥
ततः सृष्ट्वा प्रजाः शेषास्तदा तं क्रोधमीश्वरः ।
विन्यस्तवान्स भूतेषु स्थावरेषु चरेषु च ॥**

विषनी मूळ उत्पत्ति.

९ पूर्वे स्वयंभू ब्रह्मा आ सृष्टिने उत्पन्न करता हता ते समयमां गर्व पामेला कैटभ नामना एक दैत्ये तेमने सृष्टि करवाना काममां मोटुं विघ्न कर्युं. आथी क्रोध पामेला ए तेजोना भंडाररूप ब्रह्माना मुखमांथी दारुण क्रोध देहधारी थईने बाहार नीकळ्यो अने तेणे गर्जना करता ए काळ जेवा महाबळवान् कैटभ दैत्यने बाळी नाख्यो. ए दैत्यने मार्या पछी ए अद्भुत क्रोधरूप तेज वृद्धि पामवा लागतां तेने जोईने देवताओने विषाद (खेद) उत्पन्न थयो. विषाद उत्पन्न करवाने लीधे तेनुं 'विष' ए नाम केहेवाय छे. पछी मोटी शक्तिवाळा ब्रह्माए बाकी रहेली प्रजाओने सृजीने अमुक स्थावर तथा जंगम पदार्थोमां ते विषने नाख्युं.

**१० यथाऽव्यक्तरसं तोयमन्तरीक्षान्महीगतम् ।
तेषु तेषु प्रदेशेषु रसं तं तं नियच्छति ॥
एवमेव विषं यद्यद्द्रव्यं व्याप्यावतिष्ठते ।
स्वभावादेव तं तस्य रसं समनुवर्त्तते ॥**

विष जे द्रव्यमां होय ते द्रव्यना रसने अनुसरवानो विषनो स्वभाव.

१० जेम अंतरीक्षमांथी पृथ्वीपर ते ते प्रदेशोमां पडेलुं अव्यक्त रसवाळुं जळ ते ते प्रदेशना रसने स्वभावथीज अनुसरे छे एवीज रीते विष पण जे जे द्रव्यमां व्यापीने रह्युं होय ते ते द्रव्यना रसने स्वभावथीज अनुसरे छे.

**११ विषे यस्माद्गुणाः सर्वे तीक्ष्णाः प्रायेण- सन्ति हि ।
विषं सर्वमतो ज्ञेयं सर्वदोषप्रकोपणम् ॥**

विषथी सर्व दोषो प्रकुपित होवानुं कारण.

११ विषमां सघळा गुणो घणुं करीने झडपदारज रह्या छे एटला माटे सर्व प्रकारनुं विष सघळा दोषोने प्रकुपित करे छे.

**१२ ते तु वृत्तिं प्रकुपिता जहति स्वां विषार्दिताः
नोपयाति विषं पाकमतः प्राणान्रुणद्धि च ॥**

विष प्राणरोधक होवानुं कारण.

१२ विषथी पीडाईने प्रकुपित थएला वात, पित्त अने कफ ए त्रणे दोषो पोतपोतानां चलन, पाचन तथा संधिश्लेषण आदि कार्योने छोडी दे छे तेथी विष पाकतुं नथी अने नहीं पाकवाने लीधे प्राणोने रोकी दिये छे.

**१३ श्लेष्मणावृतमार्गत्वादुच्छ्वासोऽस्य निरुध्यते
विसंज्ञः सति जीवेऽपि तस्मात्तिष्ठति मानवः ॥**

जेने विष चड्युं होय ते प्राणी जीवतां छतां बेभान थई जाय छे तेनुं कारण.

१३ जेने विष चड्युं होय तेना श्वासनो मार्ग विषथी पीगळेला कफवते रोकाई जाय छे तेने लीधे ते माणस जीवतां छतां पण संज्ञावगरनो थई जाय छे.

१४ शुक्रवत्सर्वसर्पाणां विषं सर्वशरीरगम् ।
क्रुद्धानामेति चाङ्गेभ्यः शुक्रं निर्मन्थनादिव ॥
तेषां बडिशवद्दंष्ट्रास्तासु सज्जति चागतम् ।
अनुद्वृत्ता विषं तस्मान्न मुञ्चन्ति च भोगिनः ॥

सर्पो दंश करीने चत्ता थया विना विष नाखी शकता नथी तेनुं कारण.

१४ सघळा सर्पोने विष वीर्यनी पेठे सघळा शरीरमां रहेलुं छे. जेम पुरुषो स्त्रीप्रसंगादिक करे छे त्यारे तेओनुं वीर्य सघळां अंगोमांथी नीचे आवे छे तेम सर्पो क्रोध करे छे त्यारे तेओनुं विष सघळां अंगोमांथी दाढोमां आवे छे. सर्पोनी दाढो माछलां पकडवानी कुंडीओ जेवी होय छे तेने लीधे, आवेलुं विष दाढोमांज अटकी रहे छे एटला माटे तेओ चत्ता थयाविना (उथलीने ऊंधा थयाविना) दंशोमां विष नाखी शकता नथी.

१५ यस्मादत्यर्थमुष्णं च तीक्ष्णं च पठितं विषम् ।
अतः सर्वविषेषूक्तः परिषेकस्तु शीतलः ॥

जेने विष चड्युं होय तेना उपर शीतल सेचन करवानुं कारण.

१५ विष अत्यंत उष्ण अने तीक्ष्ण छे एटलामाटे सघळा प्रकारनां विषो उपर शीतल परिषेको करवानुं कह्युं छे.

१६ मन्दं कीटेषु नात्युष्णं बहुवातकफं विषम् ।
अतः कीटविषे चापि स्वेदो न प्रतिषिध्यते ॥

विषो उपर स्वेदननो निषेध छतां कीडाओनां विषो उपर ते निषेध नहीं होवानुं कारण.

१६ कीडाओनुं विष मंद होय छे, अतिउष्ण होतुं नथी अने घणा वायुवाळुं तथा घणा कफवाळुं होय छे तेथी कीडाओनां विषो उपर स्वेदन करवानो निषेध नथी. (अहीं आ स्थानना आठमा अध्यायनो २९ मो विषय जोवो.)

१७ कीटैर्दंष्टानुग्रविषैः सर्पवत्समुपाचरेत् ।

केटलाएक कीडाओना विष उपर स्वेदन नहीं करतां शीतल चिकित्साज करवी.

१७ जेओने उग्र विषवाळा कीडाओ करड्या होय तेओने सर्पदंशना जेवाज उपचारो करवा एटले शीतल चिकित्साओज करवी.

१८ स्वभावादेव तिष्ठेत्तु प्रहारादंशयोर्विषम् ।
व्याप्य सावयवं देहं दिग्धविद्धाहिदष्टयोः ॥
लौल्याद्विषान्वितं मांसं यः खादेन्मृतमात्रयोः ।
यथाविषं स रोगेण क्लिश्यते म्रियतेऽपि वा ॥
अतश्चाप्यनयोर्मांसमभक्ष्यं मृतमात्रयोः ।
मुहूर्त्तात्तदुपादेयं प्रहारादंशवर्जितम् ॥

विषथी खरडेला शस्त्रथी वींधाएलानुं अने सर्पदंशथी मरण पामेलानुं मांस खावुं होय तो क्यारे खावुं अने कया प्रदेशनुं छोडी देवुं.

१८ जे प्राणी विषथी खरडेला शस्त्रथी वींधाईने के सर्पदंश पामीने मरण पामेल होय ते प्राणीना शरीरमां विष प्रथम सर्व अवयवोमां व्याप्त थई, पछी संकोच पामीने केवळ ज्यां शस्त्रनो प्रहार थयो होय ते प्रदेशमां अने ज्यां सर्पनो दंश थयो होय ते प्रदेशमांज स्वभावथी रहे छे. जे माणस विषथी खरडाएला शस्त्रथी मरण पामेला प्राणीना के सर्पदंशथी मरण पामेला प्राणीना मांसने जीभनी लोलताने लीधे तुरतज लईने खाय ते माणस ते विषने अनुसरता रोगथी पीडाय छे अने वखतपर मरी पण जाय छे. आ प्रमाणे थाय छे एटला माटे ए प्राणी मरी जाय के

तुरतज तेनुं मांस नहीं लेवुं परंतु बे घडीवार पछी लेवुं अने ते पण जे प्रदेशमां शस्त्रनो प्रहार थयो होय के जे प्रदेशमां सर्पदंश थयो होय ते प्रदेशनुं नहीं लेवुं.

**१९ सवातं गृहधूमाभं पुरीषं योऽतिसार्यते ।
आध्मातोऽत्यर्थमुष्णास्रो विवर्णः साङ्गपीडितः
उद्वमत्यथ फेनं च विषपीतं तमादिशेत् ।**

विष पीवाथी जेनां प्राण जवा लाग्यां होय तेनुं अने जेनां जतां रह्यां होय तेनुं जूदुं जूदुं लक्षण.

१९ जे माणसने पवनवाळो तथा घरना धूमाडानी धूंस जेवा वर्णवाळो पातळो झाडो वारंवार आव्या करतो होय, पेट फूली गयुं होय, अत्यंत ऊनां आंसु चाल्यां जतां होय, अंगो ग्लानिथी पीडायां होय अने फीणनी उलटी थती होय ते माणसने विष पीवाथी मरवा लागेलो केहेवो अने जेनो वर्ण अत्यंत काळो के पीळो थई गयो होय तेने विष पीवाथी मरण पामेलो केहेवो.

**२० नचास्य हृदयं वह्निर्विषदुष्टं दहत्यपि ॥
तद्धि स्थानं चेतनायाः स्वभावाद्व्याप्य तिष्ठति ।**

विष खावाथी मरण पामेलाना हृदयने अग्नि तुरत बाळतो नथी तेनुं कारण.

२० विषनो स्वभावज एवो छे के विष चेतनाना स्थानमां व्याप्त थईने रहे छे. आवा स्वभावने लीधे, जे माणस विष खाधाथी मरण पाम्यो होय तेना हृदयमां विष व्यापी रहेलुं होय छे तेथी अग्नि ते माणसना हृदयने तुरत बाळतो नथी.

**२१ अश्वत्थदेवायतनश्मशान-
वल्मीकसन्ध्यासु चतुष्पथेषु ।
याम्ये सपित्र्ये परिवर्जनीया
ऋक्षे नरा मर्मसु ये च दष्टाः ॥
दर्वीकराणां विषमाशुघाति
सर्वाणि चोष्णे द्विगुणीभवन्ति ।
अजीर्णपित्तातपपीडितेषु
बालेषु मेहिष्वथ गर्भिणीषु ॥
वृद्धातुरक्षीणबुभुक्षितेषु
रूक्षेषु भीरुष्वथ दुर्दिनेषु ।
शस्त्रक्षते यस्य न रक्तमस्ति
राज्यो लताभिश्च न सम्भवन्ति ॥
शीताभिरद्भिश्च न रोमहर्षो
विषाभिभूतं परिवर्जयेत्तम् ।
जिह्वा सिता यस्य च केशशातो
नासावभङ्गश्च सकण्ठभङ्गः ॥
कृष्णः सरक्तः श्वयथुश्च दंशे
हन्वोः स्थिरत्वं च स वर्जनीयः ।
वर्त्तिर्घना यस्य निरेति वक्त्रा-
द्रक्तं स्रवेदूर्ध्वमधश्च यस्य ॥
दंष्ट्रानिपाताः सकलाश्च यस्य
तं चापि वैद्यः परिवर्जयेत्तु ।
उन्मत्तमत्यर्थमुपद्रुतं वा
हीनस्वरं वाप्यथ वा विवर्णम् ॥
सारिष्टमत्यर्थमवेगिनं च
जह्याच्च तं कर्म न तत्र कुर्यात् ॥**

अमुक देश, काळ तथा स्थिति उपरथी सर्पदंशनुं असाध्यपणुं.

२१ पीपळाना प्रदेशमां, देवस्थानना प्रदेशमां, श्मशानना प्रदेशमां, राफडाना प्रदेशमां, संध्यासमयमां, चौटामां, भरणी नक्षत्रमां के मघा नक्षत्रमां जे माणसोने सर्पदंश थयो होय तेओनी चिकित्सा करवी नहीं. जेओने मर्मस्थलमां सर्पदंश थयो होय तेओनी पण चिकित्सा करवी नहीं. सघळा सर्पोमां दर्वीकर जातना सर्पो के जेओनां लक्षणो आ स्थानना चोथा अध्यायना नवमा विषयमां केहेवामां आवशे तेओनुं विष तुरत प्राण लेनारूं छे. सघळा प्रकारनां विषो उष्णकाळमां, अजीर्णवाळाना शरीरमां, पित्तथी पीडाएलाना शरीरमां, तडकाथी पीडाएलाना शरीरमां, बाल-

कना शरीरमां, प्रमेहवाळाना शरीरमां, गर्भिणीना शरीरमां, वृद्धना शरीरमां, आतुरना शरीरमां, भूख्याना शरीरमां, रूक्षना शरीरमां, बीकणना शरीरमां अने वादळांओनो घेराव होय ते समयमां बमणी शक्तिवाळां थई पडे छे. जेने सर्पदंश थयो होय तेने शरीरमां शस्त्रथी टोंचो देतां लोही नीकळे नहीं तो तेना सर्पदंशने असाध्य समजीने तेनी चिकित्सा करवी नहीं. तेमज टाढा पाणीनुं सेचन करवाथी जेनां रुवाडां ऊभां न थाय तेनी अने लताओथी प्रहार कर्या छतां जेनां अंगोमां रेखाओ न ऊठे तेनी पण चिकित्सा करवी नहीं. जेनी जीभ सफेद के काळी थई गई होय, वाळो खरी पडता होय, नाक वांकुं वळी गयुं होय, मोहोडाथी सघळा अक्षरो अनुनासिकज नीकळता होय, कंठ भांगी गयो होय, दंशमां काळो तथा रातो सोजो थयो होय अने मोहोडाना संधिओ (हडपचीओ) अचळ थई गयेल होय तेनी पण चिकित्सा करवी नहीं. जेना मोहोडामांथी घाटी कफनी वाट नीकळती होय, मोहोडामांथी तथा गुदामांथी लोही स्रवतुं होय अने दाढोना जखमो पूरेपूरा थया होय तेनी पण वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं. सर्पे डंसेलो जे माणस उन्मत्त थई गयो होय, अत्यंत उपद्रवो पामेलो होय, बेसी गएला अवाजवाळो थई गयो होय, विवर्ण बनी गयो होय, मरणनां लक्षणोथी युक्त थएलो होय के विषनी लेहेरोथी तमाम रहित थई गयो होय तेने पण वैद्ये छोडी देवो. एवा माणसनी चिकित्सा करवी नहीं."

अध्याय ४ थो.

१ **अथातः सर्पदष्टविषविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः**

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'सर्पदष्टविषविज्ञानीय[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ **धन्वन्तरिं महाप्राज्ञं सर्वशास्त्रविशारदम् ।**
पादयोरुपसंगृह्य सुश्रुतः परिपृच्छति ॥
सर्पसङ्ख्यां विभागं च दष्टलक्षणमेव च ।
ज्ञानं च विषवेगानां भगवन्वक्तुमर्हसि ॥

सर्पोनां संख्या वगेरे जाणवा माटे सुश्रुतनो प्रश्न.

२ महाप्रवीण अने सघळां शास्त्रोना तलस्पर्शी भगवान् धन्वंतरिने तेमनां चरणोमां प्रणाम करीने सुश्रुते पूछयुं के "हे भगवन्! मने कृपा करीने सर्पोनी संख्या, सर्पोनी जातिओना विभागो, सर्पना दंशनुं लक्षण अने विषना वेगोनां लक्षणो कहो."

३ **तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्राब्रवीद्भिषजां वरः ।**
असङ्ख्या वासुकिमुखा विख्यातास्तक्षकादयः ॥
महीधराश्च नागेन्द्रा हुताग्निसमतेजसः ।
ये चाप्यजस्रं गर्जन्ति वर्षन्ति च तपन्ति च ॥
ससागरा गिरिद्वीपा यैरियं धार्यते मही ।
क्रुद्धा निःश्वासदृष्टिभ्यां ये हन्युरखिलं जगत् ॥
नमस्तेभ्योऽस्ति नो तेषां कार्यं किंचिच्चिकित्सया
ये तु दंष्ट्राविषा भौमा ये दशन्ति च मानुषान्
तेषां सङ्ख्यां प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ।

पृथ्वीना सर्पोनी संख्या केहेवानी भगवान् धन्वंतरिनी प्रतिज्ञा.

३ सुश्रुतनुं वचन सांभळी वैद्योमां उत्तम भगवान् धन्वंतरि बोल्या के "पृथ्वीने धरनारा शेष, वासुकि तथा तक्षक आदि मोटा दिव्य सर्पो असंख्यात छे के जेओ होमथी प्रज्वलित थएला अग्निसमान तेजवाळा छे, समुद्रो पर्वतो तथा द्वीपोसहित आ पृथ्वीने धरी रह्या छे, मेघोरूप थईने निरंतर गाजे छे तथा वर्षे छे, सूर्यरूप थईने

[1] सर्पोना भेदोनी तथा विषवेगो वगेरेनी समजण आपवा विषेनो.

तपे छे अने क्रोधयुक्त थाय तो निश्वासथी (फूत्कारथी) तथा दृष्टिथीज सर्व जगतने नष्ट करी शके एवा छे तेओने तो प्रणामज करूं छुं. एओनी चिकित्सा नहीं होवाथी ते केहेवानुं प्रयोजनज नथी. परंतु पृथ्वीमां रेहेनारा सर्पो के जेओ दाढोमां विषवाळा छे अने माणसोने डसे छे तेओनां अनुक्रमपूर्वक संपूर्ण संख्यादिक कहुं छुं.

४अशीतिस्त्वेव सर्पाणां भिद्यते पञ्चधा तु सा ॥
दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तस्तथैवच ।
निर्विषा वैकरञ्जाश्च त्रिविधास्ते पुनः स्मृताः ॥
दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।
तेषु दर्वीकरा ज्ञेया विंशतिः षट् च पन्नगाः ॥
द्वाविंशतिर्मण्डलिनो राजिमन्तस्तथा दश ।
निर्विषा द्वादश ज्ञेया वैकरञ्जास्त्रयस्तथा ॥
वैकरञ्जोद्भवाः सप्त चित्रा मण्डलिराजिलाः ।

सर्पोनी पांच जातो, पांच जातोनो त्रण जातोमां समावेश अने पांच जातोना पेटाना एंशी भेदोनो निर्देश.

४ दर्वीकर, मंडली, राजिमान्, निर्विष अने वैकरंज ए रीते सर्पोनी पांच जातो छे. ए पांच जातोनो दर्वीकर, मंडली अने राजिमान् ए त्रण जातोमां समावेश थाय छे. पांच जातोमां दर्वीकरो छवीश जातना छे, मंडलीओ बावीश जातना छे, राजिमानो दश जातना छे, निर्विषो बार जातना छे, वैकरंजो (जूदी जातनी सर्पिणीमां जूदी जातना सर्पोथी उत्पन्न थएला) त्रण जातना छे अने वैकरंजोथी उत्पन्न थएला विचित्र सर्पो सात प्रकारना छे के जेओमां चार मंडली छे अने त्रण राजिमान् छे. ए रीते सर्पोना एंशी भेदो थाय छे. (फेणोवाळा सर्पो दर्वीकर केहेवाय छे, फेणवगरना सर्पो मंडली केहेवाय छे, विविध मंडलोवाळी विचित्र रेखाओवाळा सर्पो राजिल केहेवाय छे, विषवगरना अथवा थोडा विषवाळा सर्पो निर्विष केहेवाय छे अने जूदी जातनी सर्पिणीमां जूदी जातना सर्पोथी उत्पन्न थएला सर्पो वैकरंज केहेवाय छे. वैकरंजोथी उत्पन्न थएली सात जातोनो वैकरंजोमांज समावेश करी वैकरंजोनो अने निर्विषोनो दर्वीकर आदि त्रण जातोमां समावेश करतां मुख्यत्वे ए त्रण जातोज रहे छे.)

५पदाभिमृष्टा दुष्टा वा क्रुद्धा ग्रासार्थिनोऽपि वा
ते दशन्ति महाक्रोधास्त्रिविधमुच्यते ।

सर्पो कयां कयां कारणोथी करडे छे.

५ सर्पो के जेओ महाक्रोधी जात छे तेओ पगथी कचराया होय, क्रोध पाम्या होय, भक्ष्यने इच्छता होय, बहुज नजदीक आवी गया होय, बीना होय के एवां कोई बीजां कारणोथी उद्विग्न थया होय तो करडे छे. केटलाएक सर्पो केवळ पोतानी जातनी दुष्टताने लीधेज करडे छे. ए सर्पोनो दंश नीचेप्रमाणे त्रण प्रकारनो थाय छे.

६ सर्पितं रदितं वापि तृतीयमथ निर्विषम् ॥
सर्पाङ्गाभिहतं केचिदिच्छन्ति खलु तद्विदः ।
पदानि यत्र दन्तानामेकं द्वे वा बहूनि च ॥
निमग्नान्यल्परक्तानि यान्युद्वृत्य करोति हि ।
चंचुमालकयुक्तानि वैकृत्यकरणानि च ॥
सङ्क्षिप्तानि सशोफानि विद्यात्तत्सर्पितं भिषक्।
राज्यः सलोहिता यत्र नीलाः पीताः सितास्तथा
विज्ञेयं रदितं तत्तु ज्ञेयमल्पविषं च तत् ।
अशोफमल्पदुष्टासृक्प्रकृतिस्थस्य देहिनः ॥
पदं पदानि वा विद्यादविषं तच्चिकित्सकः ।
सर्पस्पृष्टस्य भीरोर्हि भयेन कुपितोऽनिलः ॥
कस्यचित्कुरुते शोफं सर्पाङ्गाभिहतं तु तत् ।

सर्पना दंशना त्रण प्रकार, केटलाएकना मत प्रमाणे चार प्रकार अने ते प्रकारोनां जूदां जूदां लक्षणो.

६ सर्पोना दंशना सर्पित, रदित अने निर्विष ए रीते त्रण प्रकार छे. केटलाएक विद्वानोए

सर्पांगाभिहत नामनो चोथो प्रकार पण मान्यो छे.

दांतोना एक बे के घणा जखमो के जेओ सर्पे चोट्या पछी उथळी पडीने करेला होय तेओ ऊंडा, अल्प रुधिरवाळा, उपर फोडलीओ जेवा भागोवाळा, विकारोने, उत्पन्न करनारा, झीणा अने सोजावाळा होय तो ते दंश **सर्पित** केहेवाय छे.

जे दंशमां लाल, नीली, पीळी तथा सफेद रेखाओ होय ते दंश **रदित** केहेवाय छे. रदित दंश ऊंडो नहीं होवाने लीधे अल्प विषवाळो होय छे.

दांतनो जखम अथवा जखमो सोजाथी रहित होय, लोही जराक दुष्ट थयुं होय अने जेने दंश थयो होय ते माणस विकारोथी रहित रह्यो होय तो ते दंशने वैद्ये **निर्विष** (विषवगरनो) जाणवो.

कोई बीकण माणसने सर्पनो स्पर्शमात्र थतां भयने लीधे प्रकुपित थएलो वायु ते माणसना अंगमां सोजाने उत्पन्न करे छे ए शंकारूप दंश **सर्पांगाभिहत** केहेवाय छे. (कांटा वगेरेथी वींधाया छतां सर्पदंशनी शंकाथी पण बीकण माणसने सोजो उत्पन्न थाय छे.)

७व्याधितोद्विग्नदष्टानि ज्ञेयान्यल्पविषाणि तु ॥
तथातिवृद्धातिबालदष्टमल्पविषं स्मृतम् ।

अल्प विषवाळा दंशो.

७ रोगवाळा सर्पे करेलो दंश, उद्वेग पामेला सर्पे करेलो दंश, अत्यंत वृद्ध सर्पे करेलो दंश अने अत्यंत बालक सर्पे करेलो दंश ए दंशो अल्प विषवाळा होय छे.

८ सुपर्णदेवब्रह्मर्षियक्षसिद्धनिषेविते ॥
विषघ्नौषधियुक्ते च देशे न क्रमते विषम् ।

कोई चमत्कारी प्रदेशोमां सर्प करडे तोपण तेनुं विष गति करी शकतुं नथी.

८ गरुड, देव, ब्रह्मर्षि, यक्ष के सिद्ध एओए सेवेली जग्यामां अथवा जे जग्यामां विषने हणनारी औषधि होय ते जग्यामां कोई प्राणीने सर्प करडे तो पण तेनुं विष जरा पण वेग करी शकतुं नथी.

९ रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाङ्कुशधारिणः ॥
ज्ञेया दर्वीकराः सर्पाः फणिनः शीघ्रगामिनः ।
मण्डलैर्विविधैश्चित्राः पृथवो मन्दगामिनः ॥
ज्ञेया मण्डलिनः सर्पा ज्वलनार्कसमप्रभाः ।
स्निग्धा विविधवर्णाभिस्तिर्यगूर्ध्वं तु राजिभिः ॥
चित्रिता इव ये भान्ति राजिमन्तस्तु ते स्मृताः

दर्वीकर, मंडली अने राजिमान् एओनां जूदां जूदां लक्षणो.

९ जे सर्पो चक्र, हळ, छत्र, साथीओ के अंकुश एओनां चिह्नोवाळा होय, फेणोवाळा होय अने शीघ्रगतिवाळा होय ते सर्पो **दर्वीकर** केहेवाय छे.

जे सर्पो विविध मंडलोथी विचित्रतावाळा, पोहोळा, मंद गतिवाळा अने अग्नि जेवी तथा सूर्य जेवी प्रभावाळा होय ते सर्पो **मंडली** केहेवाय छे.

जे सर्पो विविध वर्णोवाळी आडी तथा ऊभी रेखाओथी चित्रेला जेवा लागे अने स्निग्ध शरीरवाळा होय ते सर्पो **राजिमान्** केहेवाय छे.

१० मुक्तारूप्यप्रभा ये च कपिला येच पन्नगाः
सुगन्धिनः सुवर्णाभास्ते जात्या ब्राह्मणाः स्मृताः।
क्षत्रियाः स्निग्धवर्णास्तु पन्नगा भृशकोपनाः ॥
सूर्यचन्द्राकृतिच्छत्रं लक्ष्म तेषां तथांम्बुजम् ।
कृष्णा वज्रनिभा ये च लोहिता वर्णतस्तथा ।
धूम्राः पारावताभाश्च वैश्यास्ते पन्नगाः स्मृताः
महिषद्वीपिवर्णाभास्तथैव परुषत्वचः ।
भिन्नवर्णाश्च ये केचिच्छूद्रास्ते परिकीर्त्तिताः ॥

सर्पोमां ब्राह्मणादिक चार वर्णोनी कल्पना.

१० जे सर्पो मोतीना जेवी के रूपाना जेवी कांतिवाळा होय अथवा कपिल वर्णवाळा के सु-

वर्ण जेवी प्रभावाळा होय अने सुगंधवाळा होय ते सर्पो **ब्राह्मण** जातिवाळा केहेवाय छे.

जे सर्पो सूर्य, चंद्र, छत्र के शंख एओनां चिह्नोवाळा होय, स्निग्ध वर्णवाळा होय अने अत्यंत क्रोधी होय ते सर्पो **क्षत्रिय** जातिवाळा केहेवाय छे.

जे सर्पो काळा वर्णवाळा, राता वर्णवाळा, धूम्र वर्णवाळा के कबुतरना जेवा वर्णवाळा होय अने वज्र जेवा होय ते सर्पो **वैश्य** जातिवाळा केहेवाय छे.

जे सर्पो पाडाना जेवा के दीपडाना जेवा वर्णवाळा होय अथवा भिन्न भिन्न वर्णवाळा होय अने खरसट चामडीवाळा होय ते सर्पो **शूद्र** जातिवाळा केहेवाय छे.

११कोपयन्त्यनिलं जन्तोः फणिनः सर्व एव तु।
पित्तं मण्डलिनश्चापि कफं चानेकराजयः ॥
अपत्यमसवर्णाभ्यां द्विदोषकरलक्षणम् ।
ज्ञेयौ दोषौ च दम्पत्योर्विशेषश्चात्र वक्ष्यते ॥

कया सर्पनुं विष कया दोषने प्रकुपित करे छे?

११ सघळा दर्वीकरोनुं विष प्राणिओना वायुने प्रकुपित करे छे, मंडलीओनुं विष पित्तने प्रकुपित करे छे अने राजिमानोनुं विष कफने प्रकुपित करे छे. वैकरंजो के जेओ जूदी जातना सर्पथी जूदी जातनी सर्पिणीमां उत्पन्न थएला होय छे तेओनुं विष बे दोषोने उत्पन्न करे छे के जेओमां एक दोष ए सर्पोनी माताना संबंधथी अने एक दोष ए सर्पोना पिताना संबंधथी प्राप्त थएलो होय छे. (जेम के दर्वीकर जातना सर्पथी मंडली जातनी सर्पिणीमां उत्पन्न थएला वैकरंजनुं विष वायुने तथा पित्तने प्रकुपित करे छे इत्यादि.) हवे समयो उपरथी सर्पोनी जातिनी परीक्षा कहुं छुं.

१२रजन्याः पश्चिमे यामे सर्पाश्चित्राश्चरन्ति हि।
शेषेषूक्ता मण्डलिनो दिवा दर्वीकराः स्मृताः॥

समयो उपरथी सर्पोनी जातिओनी परीक्षा.

१२ राजिमान् सर्पो रात्रिना छेला पोहोरमां फरे छे, मंडली सर्पो रात्रिना पेहेला बीजा तथा त्रीजा पोहोरमां फरे छे अने दर्वीकर सर्पो दिवसे फरे छे.

१३ दर्वीकरास्तु तरुणा वृद्धा मण्डलिनस्तथा।
राजिमन्तो वयोमध्ये जायन्ते मृत्युहेतवः ॥

दर्वीकर आदि सर्पो केई केई उमरमां होय तो मरणना कारणरूप थाय छे?

१३ दर्वीकर सर्पो तरुण उमरना होय तो मरणना कारणरूप थाय छे, मंडली सर्पो वृद्ध उमरना होय तो मरणना कारणरूप थाय छे अने राजिमान् सर्पो आधेड उमरना होय तो मरणना कारणरूप थाय छे.

१४ नकुलाकुलिता बाला वारिविप्रहताःकृशाः।
वृद्धा मुक्तत्वचो भीताःसर्पास्त्वल्पविषाः स्मृताः

सर्पो अमुक स्थितिओमां सामान्य रीते अल्प विषवाळा होय छे.

१४ नोळीयाओए व्याकुल करी नाख्या होय त्यारे, बालक होय त्यारे, जळ पडवाथी दुःखी थया होय त्यारे, कृश होय त्यारे, वृद्ध होय त्यारे, कांचळी उतारी नाखी होय त्यारे अने भय पामेला होय त्यारे सर्पो अल्प विषवाळा होय छे.

१५ तत्र दर्वीकराः। कृष्णसर्पो महाकृष्णः कृष्णोदरः श्वेतकपोतो महाकपोतो बलाहको महासर्पः शङ्खपालो लोहिताक्षो गवेधुकः परिसर्पः खण्डफणः ककुदः पद्मो महापद्मो दर्भपुष्पो दधिमुखः पुण्डरीको भ्रुकुटीमुखो विष्किरः पुष्पाभिकीर्णो गिरिसर्प ऋजुसर्पः श्वेतोदरो महाशिरा अलगर्द आशीविष इति ॥

मण्डलिनस्तु । आदर्शमण्डलः श्वेतमण्डलो रक्तमण्डलश्चित्रमण्डलः पृषतो रोध्र-

पुष्पो मिलिन्दको गोनसो वृद्धगोनसः पनसो महापनसो वेणुपत्रकः शिशुको मदनः पालिंहिरः पिङ्गलस्तन्तुकः पुष्पपाण्डुः षडगोऽग्निको बभ्रुः कषायः कलुषः पारावतो हस्ताभरणश्चित्रक एणीपद इति ।

राजिमन्तस्तु । पुण्डरीको राजिचित्रोऽङ्गुलराजिर्बिन्दुराजिः कर्दमकस्तृणशोषकः सर्षपकः श्वेतहनुर्दर्भपुष्पश्चक्रको गोधूमकः किक्किसाद इति ।

निर्विषास्तु । गलगोली शूकपत्रोऽजगरो दिव्यको वर्षाहिकः पुष्पशकली ज्योतीरथः क्षीरिकः पुष्पकोऽहिपताकोन्धाहिको गौराहिको वृक्षेशय इति ।

वैकरञ्जास्तु त्रयाणां दर्वीकरादीनां व्यतिकराज्जाताः । तद्यथा । माकुलिः पोटगलः स्निग्धराजिरिति । तत्र कृष्णसर्पेण गोनस्यां वैपरीत्येन वा जातो माकुलिः । राजिलेन गोनस्यां वैपरीत्येन वा जातः पोटगलः । कृष्णसर्पेण राजिमत्यां वैपरीत्येन वा जातः स्निग्धराजिरिति । तेषामाद्यस्य पितृवद्विषोत्कर्षो द्वयोर्मातृवदित्येके ।

त्रयाणां वैकरञ्जानां पुनर्दिव्येलकरोध्रपुष्पकराजिचित्रकाः पोटगलः पुष्पाभिकीर्णो दर्भपुष्पो वेल्लितकः सप्त तेषामाद्यास्त्रयो राजिलवच्छेषा मण्डलिवत् ।

एवमेतेषां सर्पाणामशीतिरिति ॥

सर्पोना एंशी भेदोनां नामो.

१९ कृष्णसर्प, महाकृष्ण, कृष्णोदर, श्वेतकपोत, महाकपोत, बलाहक, महासर्प, शंखपाल, लोहिताक्ष, गवेधुक, परिसर्प, खंडफण, ककुद, पद्म, महापद्म, दर्भपुष्प, दधिमुख, पुंडरीक, भ्रकुटीमुख, विष्किर, पुष्पाभिकीर्ण, गिरिसर्प, ऋजुसर्प, श्वेतोदर, महाशिरा, अलगर्द अने आशीविष एटला दर्वीकरोना भेदो छे. (आ अध्यायना ४ था विषयमां दर्वीकरोना २६ भेदो होवानुं कह्युं छे अने अहीं गणतां २७ थाय छे.)

आदर्शमंडल, श्वेतमंडल, रक्तमंडल, चित्रमंडल, पृषत, रोध्रपुष्प, मिलिंदक, गोनस, वृद्धगोनस, पनस, महापनस, वेणुपत्रक, शिशुक, मदन, पालिहिर, पिंगल, तंतुक, पुष्पपांडु, षडग, अग्निक, बभ्रु, कषाय, कलुष, पारावत, हस्ताभरण, चित्रक अने एणीपद एटला मंडलिओना भेदो छे. (आ अध्यायना ४ था विषयमां मंडलीओना २२ भेद होवानुं कह्युं छे अने अहीं गणतां २७ थाय छे.)

पुंडरीक, राजिचित्र, अंगुलराजि, बिंदुराजि, कर्दमक, तृणशोषक, सर्षपक, श्वेतहनु, दर्भपुष्प, चक्रक, गोधूमक अने किक्किसाद एटला राजिमानोना भेदो छे. (आ अध्यायना ४ था विषयमां राजिमानोना १० भेदो होवानुं कह्युं छे अने अहीं गणतां १२ थाय छे.)

गलगोली, शूकपत्र, अजगर, दिव्यक, वर्षाहिक, पुष्पशकली, ज्योतीरथ, क्षीरिक, पुष्पक, अहिपताक, अंधाहिक, गौराहिक अने वृक्षेशय एटला निर्विषोना भेद छे. (आ आध्यायना ४ था विषयमां निर्विषोना १२ भेद कह्या छे अने अहीं गणतां १३ थाय छे.)

माकुलि, पोटगल अने स्निग्धराजि एटला वैकरंजोना भेदो छे के जे वैकरंजो दर्वीकर वगेरेना संकरथी थाय छे. कृष्णसर्प नामना दर्वीकरथी गोनसी नामनी मंडली जातनी सर्पिणीमां उत्पन्न थएलो अथवा गोनस नामना मंडलीथी कृष्णसर्पिणी नामनी दर्वीकर जातनी सर्पिणीमां उत्पन्न थएलो वैकरंज **माकुलि** केहेवाय छे. राजिमानथी गोनसीमां अथवा गोनसथी राजिमतीमां उत्पन्न थएलो वैकरंज **पोटगल** केहेवाय छे. कृष्णसर्प नामना दर्वीकरथी राजिमतीमां अथवा राजिमानथी कृष्णसर्पिणीमां उत्पन्न थएलो वैकरंज **स्निग्धराजि** केहेवाय छे. केटलाएक

केहे छे के 'एओमां माकुलिनुं विष तेना पिताना जेवुं होय छे अने पोटगलनुं तथा स्निग्धराजिनुं विष तेओनी माताओना जेवुं होय छे.'

ए त्रण वैकरंजोथी उत्पन्न थएला दिव्येलक, रोध्रपुष्पक, राजिचित्रक, पोटगल, पुष्पाभिकीर्ण, दर्भपुष्प अने वेल्लितक ए सात भेदो छे. आ सात भेदोमां त्रण भेदो राजिमान् जेवा छे अने चार भेदो मंडली जेवा छे.

आ रीते सर्पोना एंशी भेदो थया. (एंशीने बदले नेवाशी थाय छे माटे कोई पण नव भेदो प्रक्षिप्त छे एम जणाय छे.)

१६ तत्र महानेत्रजिह्वास्यशिरसः पुमांसः । सूक्ष्मनेत्रजिह्वास्यशिरसः स्त्रियः । उभयलक्षणा-मन्दविषा अक्रोधा नपुंसका इति ॥

सर्पोमां नरजाति, नारीजाति अने नपुंसकजाति.

१६ जे सर्पोनां नेत्रो, जीभो, मोहोडुं अने माथुं मोटां होय तेओ **नरजाति** गणाय छे. जे सर्पोनां नेत्रो, जीभो, मोहोडुं अने माथुं झीणां होय तेओ **नारीजाति** गणाय छे. जे सर्पो नरनां तथा नारीनां पण लक्षणोथी युक्त होय, मंद विषवाळा होय अने क्रोधवगरना होय तेओ **नपुंसक–जाति** गणाय छे.

१७ तत्र सर्वेषां सर्पाणां सामान्यत एव दष्टलक्षणं वक्ष्यामः ।

किं कारणं विषं हि निशितनिस्त्रिंशाशनिहुतवहदेश्यमाशुकारि मुहूर्त्तमप्युपेक्षितमातुरमतिपातयति । नचावकाशोऽस्ति वाक्समूहमनुसर्त्तुम् ।

प्रत्येकमपि दष्टलक्षणेऽभिहिते सर्पत्रैविध्यं भवति । तस्मात्रैविध्यमेव वक्ष्यामः । एतद्ध्यातुरहितममोहकरं च । अपि चात्रैव सर्वसर्पव्यञ्जनावरोधः ।

तत्र दर्वीकरविषेण त्वङ्नयननखदशनमूत्रपुरीषदंशकृष्णत्वं रौक्ष्यं शिरसो गौरवं सन्धिवेदना कटीपृष्ठग्रीवादौर्बल्यं जृम्भणं वेपथुः स्वरावसादो घुर्घुरको जडता शुष्कोद्गारः कासश्वासौ हिक्का वायोरूर्ध्वगमनं शूलोद्वेष्टने तृष्णा लालास्रावः फेनागमनं स्रोतोऽवरोधस्तास्ताश्च वातवेदना भवन्ति ।

मण्डलिविषेण त्वगादीनां पीतत्वं शीताभिलाषः परिधूपनं दाहस्तृष्णा मदो मूर्छा ज्वरः शोणितागमनमूर्ध्वमधश्च मांसानामवशातनं श्वयथुर्दंशकोथः पीतरूपदर्शनमाशुकोपस्तास्ताश्च पित्तवेदना भवन्ति ।

राजिमद्विषेण शुक्लत्वं त्वगादीनां शीतज्वरो रोमहर्षः स्तब्धत्वं गात्राणामादंशशोफः सान्द्रकफप्रसेकश्छर्दिरभीक्ष्णमक्ष्णोः कण्डूः कण्ठे श्वयथुर्घुर्घुरक उच्छ्वासनिरोधस्तमःप्रवेशस्तास्ताश्च कफवेदना भवन्ति ॥

दर्वीकर, मंडली अने राजिमान् एओना दंशोनां जूदां जूदां लक्षणो.

१७ सर्पोना उपर कहेला एंशी भेदोनो दर्वीकर आदि मुख्य त्रण भेदोमांज अंतर्भाव गणी लईने सामान्य रीतेज तेओना दंशोनां लक्षणो कहीए छीए.

केम के विष सजावेली तरवार जेवुं, वीजळी जेवुं तथा अग्नि जेवुं झडपदार होवाथी जो तेनी जरावार पण उपेक्षा करवामां आवे तो आतुरने मारी नाखे छे अने एवी झडपमां वैद्यने अनेक लक्षणो तपासवानो अवकाश मळे एम नथी.

प्रत्येकना दंशोनां लक्षणो कहीये तो पण छेवट दर्वीकर, मंडलि अने राजिमान् ए त्रण भेदोज उभा रहे एम छे माटे ए त्रण भेदोना दंशोनांज जूदां जूदां लक्षणो कहीशुं के जेथी वैद्यनी बुद्धिमां भ्रम न थई जाय अने आतुरनुं हित थाय. ए त्रण भेदोना दंशोनां लक्षणोमांज सघळा

भेदोना दंशोनां लक्षणोनो समावेश थई जाय छे तेथी चिकित्सा करवामां पण कशी खामी रही जाय एम नथी.

दर्वीकरना विषथी चामडी, नेत्रो, नखो, दांतो, मूत्र, विष्टा तथा दंश एओमां श्यामपणुं थाय छे, रूक्षता थाय छे, माथुं भारे थई जाय छे, सांधाओमां वेदना थाय छे, कमर पीठ तथा डोक निर्बळ थई जाय छे, बगासां आव्या करे छे, कंप थाय छे, अवाज बेसी जाय छे, छातीमां तथा गळामां घरघराट थया करे छे, अंगो जड थई जाय छे, सूका ओडकार आवे छे, खांसी थाय छे, श्वास थाय छे, हेडकी थाय छे, वायु ऊंचो चाले छे, शूळ नीकळे छे, गात्रो भांगे छे, तरश लागे छे, लाळ झर्या करे छे, फीण आवे छे, स्रोतो रोकाई जाय छे अने तोदन भेदन आदि बीजी पण वायुसंबंधी वेदनाओ थाय छे.

मंडलीना विषथी चामडी वगेरे पीळां थई जाय छे, शीतनी इच्छा थाय छे, सघळां अंगोमां संताप थाय छे, दाह थाय छे, तरश लाग्या करे छे, घेन चडे छे, मूर्छा आवे छे, ज्वर उत्पन्न थाय छे, मुखादिकमांथी तथा गुदामांथी लोही नीकळे छे, मांसो त्रूटी पडवा लागे छे, सोजो थाय छे, दंशमां सडो तथा दुर्गंधपणुं थाय छे, सघळां रूपो पीळां जोवामां आवे छे, तुरतज प्रकोप थाय छे अने चोस आदि बीजी पण पित्तसंबंधी वेदनाओ थाय छे.

राजिमान्ना विषथी चामडी वगेरे सफेद थई जाय छे, शीतज्वर आवे छे, रूवाडां ऊभां थाय छे, गात्रो स्तब्ध थई जाय छे, दंशमां सोजो थाय छे, घाटा कफनो स्राव थाय छे, वारंवार उलटी थाय छे, नेत्रोमां खरज आवे छे, कंठमां सोजो तथा घरघराट थाय छे, श्वास रोकाई जाय छे, अंधकारमां प्रवेश थाय छे अने बीजी पण कफसंबंधी ते ते वेदनाओ थाय छे.

१८ पुरुषाभिदष्ट ऊर्ध्वं प्रेक्षतेऽधस्तात् स्त्रिया शिराश्चोत्तिष्ठन्ति ललाटे । नपुंसकाभिदष्टस्तिर्यक्प्रेक्षी भवति । गर्भिण्या पाण्डुमुखो ध्मातश्च । सूतिकया शूलार्त्तो रुधिरं मेहत्युपजिह्विका चास्य भवति ॥

नरजाति, नारीजाति, नपुंसकजाति, गर्भिणी तथा सूतिका एओना दंशोनां जूदां जूदां लक्षणो.

१८ **नरजाति सर्प** करड्यो होय तो आतुर ऊंचे जोया करे छे अने **नारीजाति सर्प** करड्यो होय तो आतुर नीचे जोया करे छे. एना ललाटमां शिराओ उपडे छे. **नपुंसकजाति सर्प** करड्यो होय तो आतुर आडुं जोया करे छे. **गर्भिणी सर्पिणी** करडी होय तो मोहोडुं पांडु थई जाय छे तथा पेट फूली जाय छे. **सुवावडी सर्पिणी** करडी होय तो शूळ नीकळे छे, मूत्रद्वारमांथी लोही पडे छे अने उपजिह्विका थाय छे. (उपजिह्विकानुं लक्षण निदानस्थानना १६ मा अध्यायना ३८ मा विषयमां जुवो.)

१९ ग्रासार्थिनान्नं काङ्क्षति । वृद्धेन शनैर्मन्दा वेगाश्च । बालेनाशु मृदवश्च ॥

आहारने इच्छनारो, वृद्ध तथा बालक एओना दंशोनां जूदां जूदां लक्षणो.

१९ **आहारनी इच्छावाळो सर्प** करड्यो होय तो आतुरने अन्न खावानी इच्छा थाय छे, **वृद्ध सर्प** करड्यो होय तो विषना वेगो घणी घणी वारे तथा मंद मंद थाय छे अने **बालक सर्प** करड्यो होय तो विषना वेगो तुरत तुरत थाय छे तथा कोमळ कोमळ थाय छे.

२० निर्विषेणाविषलिङ्गम् । अन्धाहिकेनान्धत्वमित्येके । ग्रसनादजगरः शरीरप्राणहरो न विषात् ॥

निर्विष सर्पोना दंशोनुं लक्षण.

२० निर्विष सर्प करड्यो होय तो विषनां चिह्न थतां नथी अथवा अल्प थाय छे. केटलाएक कहे छे के 'अंधाहिक नामनो निर्विष सर्प करड्यो होय तो आतुर अंध थई जाय छे.' अजगर नामनो निर्विष सर्प प्राण ले छे खरो पण ते विषथी लेतो नथी परंतु गळी जवाथी शरीरने तथा प्राणने बंनेने लई ले छे.

२१ तत्र सद्यः प्राणहराहिदष्टः पतति शस्त्राशनिहत इव भूमौ स्रस्ताङ्गः स्वपिति ॥

तुरत प्राण लेनारा सर्पना दंशनां चिह्नो.

२१ जेने तुरत प्राण लेनारो सर्प करड्यो होय ते आतुर शस्त्रथी तथा वीजळी पडवाथी हणाएलानी पेठे स्रस्त अंगोवाळो थईने पडी जाय छे अने मरी जाय छे.

२२ तत्र सर्वेषां सर्पाणां विषस्य सप्त वेगा भवन्ति ॥

सर्पोना विषना वेगोनी संख्या.

२२ सघळा सर्पोना विषना वेगो सात थाय छे.

२३ तत्र दर्वीकराणां प्रथमे वेगे विषं शोणितं दूषयति तत्प्रदुष्टं कृष्णतामुपैति तेन कार्ष्ण्यं पिपीलिकापरिसर्पणमिव चाङ्गे भवति ।

द्वितीये मांसं दूषयति तेनात्यर्थं कृष्णता शोफो ग्रन्थयश्चाङ्गे भवन्ति ।

तृतीये मेदो दूषयति तेन दंशक्लेदः शिरोगौरवं स्वेदश्चक्षुर्ग्रहणं च ।

चतुर्थे कोष्ठमनुप्रविश्य कफप्रधानान्दोषान्दूषयति तेन तन्द्राप्रसेकसन्धिविश्लेषा भवन्ति ।

पञ्चमेऽस्थीन्यनुप्रविशति प्राणमग्निं च दूषयति तेन पर्व्वभेदो हिक्का दाहश्च भवति ।

षष्ठे मज्जानमनुप्रविशति ग्रहणीं चात्यर्थं दूषयति तेन गात्राणां गौरवमतीसारो हृत्पीडा मूर्छा च भवति ।

सप्तमे शुक्रमनुप्रविशति व्यानं चात्यर्थं कोपयति कफं च सूक्ष्मस्रोतोभ्यः प्रच्यावयति तेन श्लेष्मवर्त्तिप्रादुर्भावः कटिपृष्ठभङ्गः सर्वचेष्टाविघातो लालास्वेदयोरतिप्रवृत्तिरुच्छ्वासनिरोधश्च भवति ॥

दर्वीकरोना विषना सात वेगोनां जूदां जूदां लक्षणो.

२३ कोई पण दर्वीकर सर्प करड्यो होय तो तेनुं विष **पहेला** वेगमां रुधिरने दूषित करे छे अने दूषित थएलुं रुधिर काळाशवाळुं थई जाय छे के जेथी अंग काळुं थई जाय छे अने जाणे अंगमां कीडीओ चडी होय एवुं लागे छे.

ए विष **बीजा** वेगमां मांसने दूषित करे छे तेथी अंगमां अत्यंत काळापणुं थई जाय छे, सोजो थाय छे अने ग्रंथिओ उत्पन्न थाय छे.

ए विष **त्रीजा** वेगमां मेदने दूषित करे छे तेथी दंशमां क्लेद थाय छे, माथामां भारेपणुं थाय छे, पसीनो आवे छे अने नेत्रो पकडाई जाय छे.

ए विष **चोथा** वेगमां कोठामां पेसी जईने कफ आदि दोषोने दूषित करे छे तेथी तंद्रा थाय छे, कफनो स्राव थाय छे अने सांधाओ जूदा पडी जाय छे.

ए विष **पांचमा** वेगमां अस्थिओनी अंदर पेसीने प्राणने तथा अग्निने दूषित करे छे तेथी पर्वो त्रूटे छे, हेडकी आवे छे अने बळतरा थाय छे.

ए विष छट्ठा वेगमां मज्जानी अंदर पेसीने ग्रहणीने (पित्तधरा कळाने) दूषित करे छे तेथी गात्रोमां भारेपणुं थाय छे, अतीसार थाय छे, हृदयमां पीडा थाय छे अने मूर्छा आवे छे.

ए विष **सातमा** वेगमां वीर्यनी अंदर प्रवेश करे छे, व्यान वायुने अत्यंत प्रकुपित करे छे अने कफने सूक्ष्म स्रोतोमांथी खसेडी नाखे छे तेथी मोहोडामांथी कफनी वाट नीकळे छे, कमर तथा

पीठ भांगी जाय छे, सघळी चेष्टाओनो विघात थाय छे, लाळनी तथा पसीनानी अत्यंत प्रवृत्ति थाय छे अने श्वासनो निरोध थई जाय छे.

२४ तत्र मण्डलिनां प्रथमे वेगे विषं शोणितं दूषयति तत्तत्र प्रदुष्टं पीततामुपैति तत्र परिदाहः पीतावभासता चाङ्गानां भवति ।

द्वितीये मांसं दूषयति तेनात्यर्थं पीततापरिदाहौ दंशे श्वयथुश्च भवति ।

तृतीये मेदो दूषयति तेन पूर्ववच्चक्षुर्ग्रहणं तृष्णा दंशे क्लेदः स्वेदश्च ।

चतुर्थे कोष्ठमनुप्रविश्य ज्वरमापादयति ।

पञ्चमे परिदाहं सर्वगात्रेषु करोति ।

षष्ठसप्तमयोः पूर्ववत् ॥

मंडली सर्पोना विषना सात वेगोनां जूदां जूदां लक्षणो.

२४ कोई पण मंडली सर्प करड्यो होय तो तेनुं विष **पेहेला** वेगमां रुधिरने दूषित करे छे अने दूषित थएलुं रुधिर पीळुं थई जाय छे. आ प्रमाणे थवाथी अत्यंत बळतरा थाय छे अने अंगो पीळा अवभासवाळां थई जाय छे.

ए विष **बीजा** वेगमां मांसने दूषित करे छे तेथी अत्यंत पीळापणुं थाय छे, चोमेर बळतरा थाय छे अने दंशमां सोजो थाय छे.

ए विष **त्रीजा** वेगमां मेदने दूषित करे छे तेथी दर्वीकरना विषना त्रीजा वेगनी पेठेज नेत्रो पकडाई जाय छे, तरश लागे छे, दंशमां क्लेद थाय छे अने पसीनो वळे छे.

ए विष **चोथा** वेगमां कोठानी अंदर प्रवेश करी पित्तने दूषित करीने ज्वरने उत्पन्न करे छे.

ए विष **पांचमा** वेगमां अस्थिओनी अंदर प्रवेश करी प्राणने तथा अग्निने दूषित करीने सर्व गात्रोनी अंदर चोमेर बळतराने उत्पन्न करे छे.

ए विष **छठा** वेगमां मज्जानी अंदर पेसीने ग्रहणीने दूषित करे छे तेथी गात्रोमां भारेपणुं थाय छे, अतीसार थाय छे, हृदयमां पीडा थाय छे अने मूर्छा आवे छे.

ए विष **सातमा** वेगमां वीर्यनी अंदर प्रवेश करे छे, व्यानवायुने अत्यंत प्रकुपित करे छे अने कफने सूक्ष्म स्रोतोमांथी खसेडी नाखे छे तेथी मोहोडामांथी कफनी वाट नीकळे छे, कमर तथा पीठ भांगी जाय छे, सघळी चेष्टाओनो विघात थाय छे, लाळनी तथा पसीनानी अत्यंत प्रवृत्ति थाय छे अने श्वासनो निरोध थई जाय छे.

२५ राजिमतां प्रथमे वेगे विषं शोणितं दूषयति तत्प्रदुष्टं पाण्डुतामुपैति तेन रोमहर्षः शुक्लावभासश्च पुरुषो भवति ।

द्वितीये मांसं दूषयति तेन पाण्डुतात्यर्थं जाड्यं शिरःशोफश्च भवति ।

तृतीये मेदो दूषयति तेन चक्षुर्ग्रहणं दंशक्लेदः स्वेदो घ्राणाक्षिस्रावश्च भवति ।

चतुर्थे कोष्ठमनुप्रविश्य मन्यास्तम्भं शिरोगौरवं चापादयति ।

पञ्चमे वाक्सङ्गं शीतज्वरं च करोति ।

षष्ठसप्तमयोः पूर्ववदिति ॥

राजिमान् सर्पोना विषना सात वेगोनां जूदां जूदां लक्षणो.

२५ कोई पण राजिमान् सर्प करड्यो होय तो तेनुं विष **पेहेला** वेगमां रुधिरने दूषित करे छे अने दूषित थएलुं रुधिर पांडुपणाने पामे छे तेथी रुवाडां ऊभां थई जाय छे अने शरीर पांडु देखाववाळुं थई जाय छे.

ए विष **बीजा** वेगमां मांसने दूषित करे छे तेथी शरीरमां अत्यंत पांडुपणुं थाय छे, जडपणुं थाय छे अने माथामां सोजो थाय छे.

ए विष **त्रीजा** वेगमां मेदने दूषित करे छे तेथी नेत्रो पकडाई जाय छे, दंशमां क्लेद थाय

छे, पसीनो वळे छे अने नाकमांथी तथा नेत्रोमांथी स्राव थाय छे.

ए विष **चोथा** वेगमां कोठामां प्रवेश करीने ओडनुं स्तब्धपणुं करे छे अने माथामां भारेपणुं करे छे.

ए विष **पांचमा** वेगमां वाणीनी अटकायत करे छे अने शीतज्वरने उत्पन्न करे छे.

ए विष **छठ्ठा** वेगमां मज्जानी अंदर पेसीने ग्रहणीने दूषित करे छे तेथी गात्रोमां भारेपणुं थाय छे, अतीसार थाय छे, हृदयमां पीडा थाय छे अने मूर्छा आवे छे.

ए विष **सातमा** वेगमां वीर्यनी अंदर प्रवेश करे छे, व्यानवायुने अत्यंत प्रकुपित करे छे अने कफने सूक्ष्म स्रोतोमांथी खसेडी नाखे छे तेथी मोहोडामांथी कफनी वाट नीकळे छे, कमर तथा पीठ भांगी जाय छे, सघळी चेष्टाओनो विघात थाय छे, लाळनी तथा पसीनानी अत्यंत प्रवृत्ति थाय छे अने श्वासनो निरोध थई जाय छे.

२६ भवन्ति चात्र ॥

धात्वन्तरेषु याः सप्त कलाः सम्परिकीर्त्तिताः
तास्वेकैकामतिक्रम्य वेगं प्रकुरुते विषम् ॥

विषना वेगो सातज शा कारणथी थाय छे.

२६ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "शारीरस्थानना गर्भव्याकरणशारीरनामना चोथा अध्यायना चोथा विषयमां शरीरनुं धारण करनारा पदार्थोनां स्थानोनां अंतरोमां सीमाडाओरूप जे सात कळाओ कहेली छे तेओमां अनुक्रमे एक एक कळाने भेदी आगळ वधीने विष पोताना एक एक वेगने करे छे. एटले कळाओ सात होवाथी सातज वेगो थाय छे." (विष रसना तथा मांसना अंतरमां रहेली पेहेली कळाने भेदीने आगळ वधे त्यारे पेहेलो वेग थाय छे, मांसना तथा रक्तना अंतरमां रहेली बीजी कळाने भेदीने आगळ वधे त्यारे बीजो वेग थाय छे, रक्तना तथा मेदना अंतरमां रहेली त्रीजी कळाने भेदीने आगळ वधे त्यारे त्रीजो वेग थाय छे, मेदना तथा कफना अंतरमां रहेली चोथी कळाने भेदीने आगळ वधे त्यारे चोथो वेग थाय छे, कफना तथा विष्टाना अंतरमां रहेली पांचमी कळाने भेदीने आगळ वधे त्यारे पांचमो वेग थाय छे, विष्टाना तथा पित्तना अंतरमां रहेली छठ्ठी कळाने भेदीने आगळ वधे त्यारे छठ्ठो वेग थाय छे अने पित्तना तथा वीर्यना अंतरमां रहेली सातमी कळाने भेदीने आगळ वधे त्यारे सातमो वेग थाय छे. जे कळा विष्टाने धरनारी छे तेज अस्थिने धरनारी छे तेथी पांचमा वेगमां अस्थिनी अंदर प्रवेश करवानुं कह्युं छे अने जे कळा पित्तने धरनारी छे तेज मज्जाने धरनारी छे तेथी छठ्ठा वेगमां मज्जानी अंदर प्रवेश करवानुं कह्युं छे. डल्हन.)

२७येनान्तरेण हि कलां कालकल्पं भिनत्ति हि
समीरणेनोह्यमानं तत्तु वेगान्तरं स्मृतम्

बबे वेगोना मध्यनुं लक्षण.

२७ वायुए प्रेरातुं काळजेवुं विष जेटला अंतरथी कळाने भेदे छे ते अंतर बबे वेगोनुं मध्य केहेवाय छे एटले भूतवेगना अने भविष्यवेगना मध्यमां जे समय रहे छे ते समय बबे वेगोनुं मध्य गणाय छे.

२८ शूनाङ्गः प्रथमे वेगे पशुर्ध्यायति दुःखितः
लालास्रावो द्वितीये तु कृष्णाङ्गः पीड्यते हृदि
तृतीये च शिरोदुःखं कण्ठग्रीवं च भज्यते ।
चतुर्थे वेपते मूढः खादन्दन्ताञ्जहात्यसून् ॥
केचिद्वेगत्रयं प्राहुरन्तं चैतेषु तद्विदः ।

पशुओने विषना चारज वेगो अने ते वेगोनां लक्षणो.

२८ जेने विषसंसर्ग थयो होय ते पशु

विषनो पेहेलो वेग लागे त्यारे अंगमां सोजावाळो तथा दुःखित थईने ध्यान कर्या करे छे. बीजो वेग लागे त्यारे लाळने स्रवे छे, काळां अंगवाळो थई जाय छे तथा हृदयमां पीडाय छे. त्रीजो वेग लागे त्यारे माथाना दुःखथी पीडाय छे तथा भांगेली डोकवाळो थई जाय छे अने चोथो वेग लागे त्यारे मूढ थई जाय छे, दांतोने करडे छे तथा प्राणमुक्त थई जाय छे. केटलाएक विद्वानो केहे छे के 'पशुओने विषना त्रण वेगोज थाय छे अने त्रण वेगो थतांज तेओनुं मरण थाय छे.'

२९ ध्यायति प्रथमे वेगे पक्षी मुह्यत्यतःपरम् ॥
द्वितीये विह्वलः प्रोक्तस्तृतीये मृत्युमृच्छति ।
केचिदेकं विहङ्गेषु विषवेगमुशन्ति हि ॥

पक्षीओने विषना त्रणज वेगो अने ते वेगोनां लक्षणो.

२९ जेने विषसंसर्ग थयो होय ते पक्षी विषनो पेहेलो वेग लागे त्यारे मूढ बनी जाय छे, बीजो वेग लागे त्यारे विह्वल थई जाय छे अने त्रीजो वेग लागे त्यारे मरण पामे छे. केटलाएक केहे छे के 'पक्षीने विषनो एकज वेग थाय छे अने तेमां ते मरी जाय छे.'

३० मार्जारनकुलादीनां विषं नातिप्रवर्त्तते ।

केटलांएक प्राणीओनां शरीरोमां स्वभावथीज विषनी अत्यंत प्रवृत्ति थती नथी.

३० मींदडां तथा नोळीयां वगेरे प्राणीओनां शरीरोमां स्वभावथीज विषनी अत्यंत प्रवृत्ति थती नथी.

अध्याय ५ मो.

१ अथातः सर्पदष्टकल्पचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'सर्पदष्टकल्पचिकित्सित' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सर्वैरेवादितः सर्पैः शाखादष्टस्य देहिनः ।
दंशस्योपरि बध्नीयादरिष्टाश्चतुरङ्गुले ॥
प्लोतचर्मान्तवल्कानां मृदुनान्यतमेन च ।
न गच्छति विषं देहमरिष्टाभिर्निवारितम् ॥
दहेद्दंशमथोत्कृत्य यत्र बन्धो न जायते ।

सर्पना दंशथी उपर चार आंगळने छेटे पाटो बांधवो अने ज्यां पाटो बांधी शकाय नहीं ते अंगमां दंशने कापीने डांभी देवो.

२ जेने कोई पण सर्प हाथपग वगेरे शाखाओमां करडेल होय ते माणसने दंशथी उपर चार आंगळने छेटे कोमळ वस्त्रनो, कोमळ चामडानो के कोमळ वल्कलनो (झाडनी छालनो) पाटो मंत्रीने बांधी देवो के जेथी लोही उपरना भागोमां चडतुं अटकतां विष देहमां व्याप्त थाय नहीं. ज्यां पाटो बांधी शकाय नहीं एवा प्रदेशमां सर्पदंश थयो होय तो दंशने शस्त्रवते कापीने अग्निथी डांभी देवो. (मंडलीसर्पोनो दंश पैत्तिक छे माटे तेने डांभवो नहीं.)

३ आचूषणच्छेददाहाः सर्वत्रैव तु पूजिताः ॥
प्रतिपूर्य मुखं वस्त्रैर्हितमाचूषणं भवेत् ।
स दष्टव्योऽथ वा सर्पो लोष्टो वापि हि तत्क्षणम्

१ सर्पना दंशनी चिकित्साओ केहेवा विषयनो.

दंशने चूसवो, कापवो तथा डांभवो अथवा करडनारा सर्पने के ढेफांने बटकुं भरवुं.

३ शरीरना गमे ते प्रदेशमां सर्पदंश थतां ते दंशने मोहोडाथी चूसवो, शस्त्रथी कापवो अने अग्निथी डांभवो ए उत्तम छे. चूसवो होय त्यारे मोहोडाने वस्त्रथी पूर्ण करीने पछी तेथी चूसवो ए हितकारी छे. अथवा जे सर्प करड्यो होय तेनेज बटकुं भरवुं अथवा धरतीनुं ढेफुं लईने ते ढेफांने बटकुं भरवुं. (वाग्भट केहे छे के बटकुं भर्या पछी तुरतज थूंकनो अथवा कानना मेलनो दंशनी उपर लेप करी देवो.)

४ अथ मण्डलिना दष्टं न कथंचन दाहयेत् ।
स पित्तविषबाहुल्याद्दंशो दाहाद्विसर्पति ॥

मंडलीसर्प करड्यो होय तो तेना दंशने डांभवो नहीं.

४ जो मंडली सर्पे दंश कर्यो होय तो ते दंशने कदी कोई रीते पण डांभवो नहीं. केम के मंडलीसर्पनो दंश पित्तनो प्रकोप करनारा विषथी भरपूर होय छे तेथी जो तेने डांभवामां आवे तो ते वधारे फेलाय छे.

५ अरिष्टामपि मन्त्रैश्च बध्नीयान्मन्त्रकोविदः ।
सा तु रज्ज्वादिभिर्बद्धा विषप्रतिकरी मता ॥

सर्पदंशथी उपर चार आंगळने छेटे मंत्रेलो पाटो बांधवानी जरूर.

५ मंत्रोने जाणनारा वैद्ये सर्पदंशथी उपर चार आंगळने छेटे मंत्रोच्चारपूर्वक पाटो बांधवो. दोरी वगेरेथी बांधेलो ए पाटो विषनी गतिने अटकावी दे छे. (उपरना बीजा विषयमां वस्त्रनो चामडानो के झाडनी छालनो पाटो बांधवानुं कह्युं छे.)

६ देवब्रह्मर्षिभिः प्रोक्ता मन्त्राः सत्यतपोमयाः ।
भवन्ति नान्यथा क्षिप्रं विषं हन्युः सुदुस्तरम् ॥
विषं तेजोमयैर्मन्त्रैः सत्यब्रह्मतपोमयैः ।
यथा निवार्यते क्षिप्रं प्रयुक्तैर्न्न तथौषधैः ॥

मंत्रोनी दिव्य शक्ति.

६ देवताओए तथा ब्रह्मर्षिओए कहेला मंत्रो के जेओ सत्यमय अने तपोमय छे तेओ अतिदुस्तर विषने पण तुरत नष्ट करवामां विफळ थता नथी. मंत्रो के जेओ तेजोमय, सत्यमय, ब्रह्ममय अने तपोमय छे तेओना प्रयोगथी जेवुं विषनुं निवारण थाय छे तेवुं औषधोना प्रयोगथी पण थतुं नथी.

७ मन्त्राणां ग्रहणं कार्यं स्त्रीमांसमधुवर्जिना ।
जिताहारेण शुचिना कुशास्तरणशायिना ।
गन्धमाल्योपहारैश्च बलिभिश्चापि देवताः ॥
पूजयेन्मन्त्रसिद्धयर्थं जपहोमैश्च यत्नतः ॥

मंत्रोना ग्रहणनो तथा साधननो विधि.

७ स्त्रीप्रसंग, मांस तथा मद्य एओनो त्याग करी, आहारने नियमित राखी, पवित्र रही, दर्भना बीछानापर शयन करवानो नियम राखीने गुरुना मुखथी मंत्रोनुं ग्रहण करवुं जोइए. ग्रहण करेला मंत्रने सिद्ध करवा माटे चंदनादिक सुगंधोथी, पुष्पोथी, नैवेद्योथी, बलिदानोथी, जपोथी अने होमोथी प्रयत्नपूर्वक देवताओनुं पूजन करवुं.

८ मन्त्रास्त्वविधिना प्रोक्ता हीना वा स्वरवर्णतः ।
यस्मान्न सिद्धिमायान्ति तस्माद्योज्योऽगदक्रमः ॥

केवळ मंत्रोउपर भरोसो नहीं राखतां औषधोथी चिकित्सा करवानी जरूर.

८ गुरुए विधि पाळ्यावगर कहेला, शिष्योए विधि पाळ्यावगर ग्रहण करेला अथवा कोई उदात्त आदि स्वरथी के अकार आदि वर्णथी रहित उच्चारवामां आवेला मंत्रो सिद्ध थता नथी एटला माटे केवल मंत्रोउपर भरोसो नहीं राखतां औषधोनी योजना पण करवी जोइए.

९ समन्ततः शिरा दंशाद्विध्येत्तु कुशलो भिषक्।
शाखाग्रे वा ललाटे वा वेध्यास्ता विसृते विषे
रक्ते निर्ह्रियमाणे तु कृत्स्नं निर्ह्रियते विषम्।
तस्माद्विस्रावयेद्रक्तं सा ह्यस्य परमा क्रिया ॥

सर्पदंशमां लोहीनुं स्रावण करवानी जरूर.

९ प्रवीण वैद्ये दंशथी चोमेरनी शिराओने शस्त्रथी वींधवी अने विष शरीरमां फेलाई गयुं होय तो हाथपग वगेरे शाखाओना अग्रमां अथवा ललाटमां शिराओने वींधवी. लोहीनुं निर्हरण करवाथी सघळा विषनुं निर्हरण थई जाय छे एटला माटे लोहीनुं निर्हरण (स्रावण) करवुं ए विषनी सर्वोत्तम चिकित्सा छे.

१० समन्तादगदैर्दंशं प्रच्छयित्वा प्रलेपयेत्।
चन्दनोशीरयुक्तेन वारिणा परिषेचयेत् ॥
पाययेतागदांस्तांस्तान्क्षीरक्षौद्रघृतादिभिः।
तदलाभे हिता वा स्यात्कृष्णा वल्मीकमृत्तिका॥
कोविदारशिरीषार्ककटभीर्वापि भक्षयेत्।

सर्पोनां विषोनी सामान्य चिकित्सा.

१० दंशने शस्त्रथी टोचीने चोमेर अगदोनो (विषघ्न औषधोनो) प्रलेप करवो, चंदनथी तथा वाळाथी युक्त करेला जळनुं सेचन करवुं अने दूध, मध, तथा घी वगेरेनी साथे एक एक तोलो भार ते ते अगदो पावा. अगदो हाजर न होय तो राफडानी काळी माटी पावी अथवा कांचनार, सरसडीओ, आकडो, धोळी गरणी अने वापुंगां एओनुं भक्षण कराववुं.

११ न पिबेत्तैलकौलत्थमद्यसौवीरकाणि च ॥
द्रवमन्यत्तु यत्किञ्चित्पीत्वा पीत्वा तदुद्वमेत्।
प्रायो हि वमनेनैव सुखं निर्ह्रियते विषम् ॥

अमुक द्रवो विना बीजा द्रवो पाईने वमन कराववुं.

११ तैल, कळथीनो रस, मद्य के सौवीरक नहीं पातां बीजो गमे ते द्रव पाई पाईने वमन कराववुं. विष घणुं करीने वमन कराववाथीज अनायासे हरी शकाय छे.

१२ फणिनां विषवेगे तु प्रथमे शोणितं हरेत्।
द्वितीये मधुसर्पिर्भ्यां पाययेतागदं भिषक् ॥
नस्यकर्माञ्जने युञ्ज्यात्तृतीये विषनाशने।
वान्तं चतुर्थे पूर्वोक्तां यवागूमथ दापयेत् ॥
शीतोपचारं कृत्वादौ भिषक्पञ्चमषष्ठयोः।
दापयेच्छोधनं तीक्ष्णं यवागूं चापि कीर्त्तिताम्॥
सप्तमे त्ववपीडेन शिरस्तीक्ष्णेन शोधयेत्।
तीक्ष्णमेवाञ्जनं दद्यात्तीक्ष्णशस्त्रेण मूर्ध्नि च ॥
कुर्यात्काकपदं चर्म सासृग्वा पिशितं क्षिपेत्।

दर्वीकरोना विषना प्रत्येक वेगनी जूदी जूदी चिकित्सा.

१२ वैद्ये दर्वीकरोना विषनो **पेहेलो** वेग लागे त्यारे लोहीनुं स्रावण करवुं, **बीजो** वेग लागे त्यारे मधनी तथा घीनी साथे अगद पावो, **त्रीजो** वेग लागे त्यारे विषने नष्ट करनारां द्रव्युनं नस्य देवुं तथा अंजन आंजवुं, **चोथो** वेग लागे त्यारे वमन करावीने आ स्थानना बीजा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेली यवागू पावी, **पांचमा** तथा **छठ्ठा** वेगमां प्रथम शीतोपचार करीने पछी तीक्ष्ण शोधन देवुं तथा उपर कहेली यवागू पण देवी अने **सातमो** वेग लागे त्यारे प्रथम ना पाडीने पछी तीक्ष्ण अवपीड नस्यथी माथानुं शोधन करवुं, तीक्ष्ण अंजन आंजवुं तथा तीक्ष्ण शस्त्रवते माथामां कागडाना पग जेवा आकारवाळो छेरो करीने तेमां अन्य प्राणीना लोहीवाळुं मांस के चामडुं नाखवुं. (अन्य प्राणीना लोहीवाळुं मांस के चामडुं नाखवाथी विषनुं ते मांसमां के चामडामां संक्रमण थाय छे. आस्थानना २ जा अध्यायनो १४ मो विषय वांचो.)

१३ पूर्वे मण्डलिनां वेगे दर्वीकरवदाचरेत् ॥
अगदं मधुसर्पिर्भ्यां द्वितीये पाययेत च।
वामयित्वा यवागूं च पूर्वोक्तामथ दापयेत् ॥

तृतीये शोधितं तीक्ष्णैर्यवागूं पाययेद्धिताम् ।
चतुर्थे पञ्चमे वापि दर्वीकरवदाचरेत् ॥
काकोल्यादिर्हितः षष्ठे पेयश्च मधुरो गणः ।
हितोऽवपीडे त्वगदः सप्तमे विषनाशनः ॥

मंडलीओना विषना प्रत्येक वेगनी जूदी जूदी चिकित्सा.

१३ मंडलीना विषनो पेहेलो वेग लागे त्यारे दर्वीकरना विषना पेहेला वेगना जेवीज चिकित्सा करवी. एटले लोहीनुं स्रावण करवुं, **बीजो** वेग लागे त्यारे मधनी तथा घीनी साथे अगद पावो तथा वमन करावीने आ स्थानना बीजा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेली यवागू पावी, **त्रीजो** वेग लागे त्यारे तीक्ष्ण औषधोथी वमन करावीने उपर कहेली हितकारी यवागू पावी, **चोथा** तथा **पांचमा** वेगमां दर्वीकरना चोथा तथा पांचमा वेगना जेवीज चिकित्सा करवी, **छठ्ठो** वेग लागे त्यारे काकोल्यादि मधुर गण पावो तथा महागद आदि अगदो के जेओ आ अध्यायमां केहेवामां आवशे तेओमांनो तीक्ष्ण अगद पावो अने **सातमो** वेग लागे त्यारे प्रथम ना पाडीने पछी विषने नष्ट करनारा तीक्ष्ण अगदनुं अवपीड नस्य देवुं. (दर्वीकरना विषना सातमा वेगमां जे विशिष्ट चिकित्सा कही छे ते करवी पण योग्य छे.)

१४ अथ राजिमतां वेगे प्रथमे शोणितं हरेत् ।
अगदं मधुसर्पिर्भ्यां संयुक्तं पाययेत च ॥
वान्तं द्वितीये त्वगदं पाययेद्विषनाशनम् ।
तृतीयादिषु त्रिष्वेव विधिर्दार्वीकरो हितः ॥
षष्ठेऽञ्जनं तीक्ष्णतममवपीडश्च सप्तमे ।

राजिमानोना विषना प्रत्येक वेगनी जूदी जूदी चिकित्सा.

१४ राजिमान्‌ना विषनो **पेहेलो** वेग लागे त्यारे लोहीनुं स्रावण करवुं अने मधथी तथा घीथी युक्त करेलो अगद पावो, **बीजो** वेग लागे त्यारे वमन करावीने विषनो नाश करनारो अगद पावो, **त्रीजा चोथा** तथा **पांचमा** वेगमां दर्वीकरना विषना ए वेगोमां जे चिकित्सा कही छे तेज करवी, **छठ्ठो** वेग लागे त्यारे अतितीक्ष्ण अंजननी तथा अवपीड नस्यनी योजना करवी अने **सातमो** वेग लागे त्यारे पण ए प्रमाणेज करवुं तथा दर्वीकरना विषना सातमा वेगमां जे विशिष्ट चिकित्सा कही छे ते पण करवी.

१५ गर्भिणीबालवृद्धानां शिराव्यधविवर्जितम् ॥
विषार्त्तानां यथोद्दिष्टं विधानं शस्यते मृदु ।

गर्भिणी, बालक तथा वृद्ध एओने माटे विषनी चिकित्सामां कांईक भेद.

१५ गर्भिणी, बालक के वृद्ध एओने विषनी पीडा थई होय तो शिराओनो वेध न करतां बीजी सघळी उपर कहेली चिकित्सा करवी पण ते कोमळ कोमळ करवी ए उत्तम छे.

१६ रक्तावसेकाञ्जनानि नरतुल्यान्यजाविके ॥
गवाश्वयोश्च द्विगुणं त्रिगुणं महिषोष्ट्रयोः ।
चतुर्गुणं तु नागानां केवलं सर्वपक्षिणाम् ॥
परिषेकान्प्रदेहांश्च सुशीतानवचारयेत् ।

पशुपक्षीओने माटे विषनी चिकित्सामां अमुक विशेष.

१६ बकरूं के गाडर विषथी पीडित थएल होय तो माणसने माटे रुधिरस्रावणनी तथा अंजननी जे मात्रा छे तेज मात्रा एओना रुधिरस्रावणमां तथा अंजनमां लेवी. बळद, गाय के घोडो विषथी पीडित थएल होय तो रुधिरस्रावणमां तथा अंजनमां बमणा वजननी मात्रा लेवी. पाडो, पाडो के ऊंट विषथी पीडित थएल होय तो रुधिरस्रावणमां तथा अंजनमां त्रणगणा वजननी मात्रा लेवी. हाथीओ विषथी पीडित थएल होय तो रुधिर स्रावणमां तथा अंजनमां चोगणा वजननी मात्रा लेवी. (आ प्रमाणेज बीजा उप-

चारोमां योग्य मात्राओ गोठवी लेवी.) पक्षीओ विषथी पीडित थएल होय तो तेओने केवळ अतिशीतल परिषेचनो तथा अतिशीतल लेपोज करवा.

१७ माषकं त्वञ्जनस्येष्टं द्विगुणं नस्यतो हितम् पाने चतुर्गुणं पथ्यं वमनेऽष्टगुणं पुनः ।

विषनी बाबतमां माणसोने माटे अंजनादिकनी मात्राओ.

१७ अंजन पांच अथवा छ चणोठी भार आंजवुं, नस्य तेनी मात्राथी बमणुं देवुं, पीवानुं औषध तेनी मात्राथी चोगणुं देवुं अने वमननुं औषध तेनी मात्राथी आठ गणुं देवुं. (डल्हन तो एम केहे छे तेओनी मात्राओनां जे मोटां वजनो छे ते वजनोनी मात्राओनुं ग्रहण करवुं एटले कल्क, मोदक अने चूर्ण एओनी मात्रा चार चार तोलां भार देवी, रुधिरस्रावणनी मात्रा छपन तोलां भारनी समजवी अने क्वाथनी मात्रा सोळ तोलां भार देवी इत्यादि.)

१८ देशप्रकृतिसात्म्यर्तुविषवेगबलाबलम् ॥ प्रधार्य निपुणो बुद्ध्या ततः कर्म समाचरेत् ।

विषनी चिकित्सामां देशादिकनो विचार करवानी सूचना.

१८ प्रवीण वैद्ये बुद्धिथी देशना, अंगना, प्रकृतिना, सात्म्यना, ऋतुना, विषना तथा तेना वेगना बलाबलनो संपूर्ण निश्चय करीने पछी विषनी चिकित्सा करवी.

१९ वेगानुपूर्वमित्येतत्कर्मोक्तं विषनाशनम् ॥ कर्मावस्थाविशेषेण विषयोरुभयोः शृणु ।

वेगोनी चिकित्सानो उपसंहार अने विषथी थएली ते ते स्थितिने लगती चिकित्सानो उपक्रम.

१९ वेगोना अनुक्रमने अनुसरी विषनो नाश करनारी आ चिकित्सा कही. हवे ते ते स्थितिने लगती बन्ने प्रकारना (स्थावर तथा जंगम) विषोनी चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो.

**२० विवर्णे कठिने शूने सरुजेऽङ्गे विषार्दिते ॥
तूर्णं विस्रावणं कार्यमुक्तेन विधिना ततः ।
क्षुधार्त्तमनिलप्रायं तद्विषार्त्तं समाहितः ॥
पाययेद्दधि तक्रं वा सर्पिः क्षौद्रं तथा रसम् ।
तृड्दाहघर्मसंमोहे पैत्तं पैत्तविषातुरम् ॥
शीतैः संवाहनस्नानप्रदेहैः समुपाचरेत् ।
शीते शीतप्रसेकार्त्तं श्लैष्मिकं कफकृद्विषम् ॥
वामयेद्वमनैस्तीक्ष्णैस्तथा मूर्छामदान्वितम् ।
कोष्ठदाहरुजाध्मानमूत्रसङ्गरुगन्वितम् ॥
विरेचयेच्छकृद्वायुसङ्गपित्तातुरं नरम् ।
शूनाक्षिकूटं निद्रार्त्तं विवर्णाविललोचनम् ॥
विकृतं चापि पश्यन्तमञ्जनैः समुपाचरेत् ।
शिरोरुग्गौरवालस्यहनुस्तम्भगलग्रहे ॥
शिरो विरेचयेत्क्षिप्रं मन्यास्तम्भे च दारुणे ।
नष्टसंज्ञं विवृत्ताक्षं भग्नग्रीवं विरेचनैः ॥
चूर्णैः प्रधमनैस्तीक्ष्णैर्विषार्त्तं समुपाचरेत् ।
ताडयेच्च शिराः क्षिप्रं तस्य शाखाललाटजाः ॥
तास्वप्रसिच्यमानासु मूर्ध्नि शस्त्रेण शस्त्रवित् ।
कुर्यात्काकपदाकारं व्रणमेवं स्रवन्ति ताः ॥
सरक्तं चर्म मांसं वा निक्षिपेच्चास्य मूर्ध्नि च ।
चर्मवृक्षकषायं वा चूर्णं वा कुशलो भिषक् ॥
वादयेच्चागदैर्लिप्तान् दुन्दुभींस्तस्य पार्श्वयोः ।
लब्धसंज्ञं पुनश्चैनमूर्ध्वं चाधश्च शोधयेत् ॥
निःशेषं निर्हरेच्चैव विषं परमदुर्जयम् ।
अल्पमप्यवशिष्टं हि भूयो वेगाय कल्पते ॥
कुर्याद्वा सादवैवर्ण्ये ज्वरकासशिरोरुजः ।
शोफशोषप्रतिश्यायतिमिरारुचिपीनसान् ॥
तेषु चापि यथादोषं प्रतिकर्म प्रयोजयेत् ।
विषार्त्तोपद्रवांश्चापि यथास्वं समुपाचरेत् ॥**

विषथी थएली ते ते स्थितिने लगती चिकित्साओ.

२० विषथी पीडाएलुं अंग विवर्ण, कठण,

सोजावाळुं तथा वेदनावाळुं होय तो शारीरस्थानना आठमा अध्यायमां कहेला विधिप्रमाणे तुरतज लोहीनुं स्रावण करवुं.

आतुर वायुने प्रकुपित करनारा विषथी पीडाएलो होय, भूखथी गभराएलो होय अने वायुप्रकृतिवाळो होय तो तेने वैद्ये सावधानी राखीने दहीं, छाश, घी, मध के मांसनो रसो पावो. (आ दहीं वगेरेनुं पान ज्यारे विषनो वेग आवे त्यारे अनायासे वमन थवाने माटे छे.)

आतुर पित्तने प्रकुपित करनारा विषथी पीडायेलो होय तथा पित्तप्रकृतिवाळो होय, ऋतु गरम होय अने तृषा, दाह, घाम तथा मोह प्रवर्त्तेलां होय तो वैद्ये सावधानी राखीने शीतल स्पर्शोथी, शीतल स्नानोथी तथा शीतल लेपोथी चिकित्सा करवी.

आतुर कफने प्रकुपित करनारा विषथी पीडाएलो होय तथा कफप्रकृतिवाळो होय, ऋतु शीत होय, शीतल सेचनोथी अति दुःख थतुं होय अने मूर्छा तथा मद उत्पन्न थएल होय तो तीक्ष्ण वमनद्रव्योथी वमन कराववुं.

विषना संसर्गवाळो माणस कोठानी बळतराथी, वेदनाथी, आफराथी, मूत्रनी अटकायतथी, विष्टानी अटकायतथी, अधोवायुनी अटकायतथी तथा पित्तथी पीडातो होय तो विरेचन अने विरेचनबस्ति एओनी योग्य योजना करवी.

विषथी पीडायेलो माणस निद्राथी घेरातो होय, विवर्ण तथा मलिन नेत्रोवाळो थई गयो होय तथा विकृत रीते जोया करतो होय अने आंखोना डोडला सोजाथी सूणी गया होय तो अंजनो आंजवानी योजना करवी.

विषथी पीडाएला माणसने माथामां व्यथा थती होय, शरीरमां भारेपणुं थयुं होय, आलस्य उत्पन्न थयुं होय, हडपची स्तब्ध थई गई होय, गळुं झलाई गयुं होय अने ओड दारुण रीते स्तब्ध थई गई होय तो तुरत शिरोविरेचन देवुं.

विषथी पीडाएला माणसनी संज्ञा जती रही होय, आंखो फाटी गई होय अने डोक भांगी गई होय तो शिरोविरेचन (माथांने खाली करनारां) तीक्ष्ण चूर्णोना प्रधमन नस्यो देवां तथा ते माणसना हाथपगनी अने ललाटनी शिराओनो तुरत वेध करवो. शिराओमांथी लोहीनो स्राव न थाय तो शस्त्रक्रिया जाणनारा वैद्ये शस्त्रवते ते माणसना माथामां कागडाना पगना जेवा आकारवाळो व्रण करवो. आम करवाथी ते शिराओमांथी लोहीनो स्राव थाय छे. पछी ए व्रणमां लोहीवाळुं चामडुं अथवा मांस नाखवुं के जेथी ते चामडामां अथवा मांसमां विषनुं संक्रमण थाय. अथवा ते व्रणमां प्रवीण वैद्ये भोजपत्रना झाडनो गुंदर के चूर्ण भरवुं. ए माणसनी बाजुओमां जेओने अगदोनो लेप (आ अध्यायनो २९ मो विषय तथा आ स्थानना ७ मा अध्यायनो बीजो विषय जुवो.) कर्यो होय एवां मोटां नगारां पण वगडाववां. संज्ञा आवे त्यार पछी ए माणसने वमनविरेचनोरूप शोधनोथी शुद्ध करवो. विष के जे अत्यंत दुर्जय (जीतवाने अशक्य) छे ते जरा पण अवशेष न रहे एवी रीते तेनुं निर्हरण करवुं. केम के विष जरा पण अवशेष रही गयुं होय तो पाछुं वेग करवाने समर्थ थाय छे अथवा ग्लानि, विवर्णपणुं, ज्वर, खांसी, माथानी वेदना, सोजो, शोष, प्रतिश्याय, तिमिर, अरुचि अने पीनस ए रोगोने उत्पन्न करे छे. विषना अवशेष रही जवाथी ए रोगो उत्पन्न थया होय तो दोषोना अनुसार प्रमाणे तेओनी पण चिकित्सा करवी अने वेगो थवा लागे तो तेओनी पण आ अध्यायना १२—१३—तथा १४ मा विषयोमां कह्याप्रमाणे योग्य चिकित्सा करवी.

२१ अथारिष्टां विमुच्याशु प्रच्छयित्वाङ्कितं तथा दिह्यात्तत्र विषं स्कन्नं भूयो वेगाय कल्पते ॥

पाटो बांधवाथी जामी गयेला रुधिरनी चिकित्सा.

२१ पछी मंत्रोच्चारपूर्वक बांधेला पेला पाटाने छोडी नाखी ते प्रदेशपर नीशानी करी शस्त्रथी टोचा दईने ते उपर विषने हणनारा अगदोनो लेप करवो के जेथी विषना संसर्गवाळुं रुधिर स्रवी जाय. ए रुधिर जामेलुंज रहे तो फरीवार वेग करवाने समर्थ थाय छे.

२२ एवं क्रियाक्रमैर्मन्त्रैरोषधीभिश्च यत्नतः ।
विषे हृतगुणे देहाद्यदा दोषः प्रकुप्यति ॥
तदा पवनमुद्भृत्तं स्नेहाद्यैः समुपाचरेत् ।
तैलमत्स्यकुलत्थाम्लवर्जैर्मारुतनाशनैः ॥
पित्तज्वरहरैः पित्तं कषायैः स्नेहवस्तिभिः ।
कफमारग्वधाद्येन सक्षौद्रेण गणेन तु ॥
श्लेष्मघ्नैरगदैश्चापि तिक्तरूक्षैश्च भोजनैः ।

शरीरमांथी विषनुं निर्हरण थया पछी दोषो प्रकुपित थाय तो तेओनी जूदी जूदी चिकित्साओ.

२२ ए प्रमाणे यत्नपूर्वक क्रियाओना क्रमोथी, मंत्रोथी तथा औषधीओथी देहमांथी विषना गुणोनुं निर्हरण थया पछी जो **वायु** प्रकुपित थाय तो वायुने नष्ट करनारा स्नेहादिक उपायोथी वायुने जीतवो पण ते उपायोमां तैल, माछलां, कळथी के खाटा पदार्थो एओनो जरा पण संसर्ग न आवे एम करवुं. **पित्त** प्रकुपित थयुं होय तो पित्तज्वरने हरनारा काथादिक कषायोथी तथा स्नेहबस्तिओथी तेने जीतवुं अने **कफ** प्रकुपित थयो होय तो मधथी मिश्रित करेला आरग्वधादि गणथी, कफने हणनारां औषधोथी अने तिक्त तथा रूक्ष भोजनोथी तेने जीतवो.

२३ वृक्षप्रपातविषमपतितं मृतमम्भसि ॥
उद्वृत्तं च मृतं सद्यश्चिकित्सेन्नष्टसंज्ञवत् ॥

ऊंचेथी पाडवाथी के कूदवा वगेरेथी जेनी संज्ञा जती रही होय तेनी चिकित्सा.

२३ झाड वगेरे ऊंचा प्रदेशोपरथी पडवाथी, विषम प्रदेशोमां पडवाथी, पाणीमां पडवाथी के बीजी कोई रीते मस्ती वगेरे करवाथी जे माणसनी संज्ञा जती रही होय ते माणसनी पण नस्यादिकरूप योग्य चिकित्सा करवी के जेथी तेनी नष्ट थयेली संज्ञा पाछी प्राप्त थाय.

२४ गाढं बद्धेऽरिष्टया प्रच्छितेऽपि
तीक्ष्णैर्लेपैस्तद्विधैर्वा विशेषैः ।
शूने गात्रे क्लिन्नमत्यर्थपूति
ज्ञेयं मांसं तद्विषात्पूति कष्टम् ॥
सद्यो विद्धं निःस्रवेत्कृष्णरक्तम्
पाकं यायाद्दह्यते चाप्यभीक्ष्णम् ।
कृष्णीभूतं क्लिन्नमत्यर्थपूति
शीर्णं मांसं यात्यजस्रं क्षताच्च ॥
तृष्णा मूर्छा भ्रान्तिदाहौ ज्वरश्च
यस्य स्युस्तं दिग्धविद्धं व्यवस्येत् ।
पूर्वोद्दिष्टं लक्षणं सर्वमेत-
द्दृष्टं यस्यालं विषेण व्रणाः स्युः ॥
लूतादष्टा दिग्धविद्धा विषैर्वा
जुष्टा ये स्युस्ते व्रणाः पूतिमांसाः ।
तेषां युक्त्या पूतिमांसान्यपोह्य
वार्यौकोभिः शोणितं चापहृत्य ॥
हृत्वा दोषान्क्षिप्रमूर्ध्वं त्वधश्च
सम्यक्सिञ्चेत्क्षीरिणां त्वक्कषायैः ।
अन्तर्वस्त्रं दापयेच्च प्रदेहा-
ञ्शीतैर्द्रव्यैराज्ययुक्तैर्विषघ्नैः ॥

जेओनां मांसो विषना योगथी सडेलां होय तेओनेमाटे चिकित्सा.

२४ विषने न चडवा देवानेमाटे जे गात्रने पाटाथी मजबूत बांध्युं होय ते गात्रने पाटो छोडीने शस्त्रथी टोंचा दीधा छतां, तीक्ष्ण

लेपो दीधा छतां तथा तेवाज प्रकारना वीजा विशेषो कर्या छतां पण ते गात्र सोजावाळुं रहे तो तेमां विषनो योग रहेलो होवाने लीधे मांस अत्यंत क्लेदवाळुं तथा अत्यंत दुर्गंधवाळुं थई जाय छे अने ते कष्टसाध्य थई पडे छे.

जेने शस्त्रवते वींधावाथी तुरतज काळा लोहीनो स्राव थाय, व्रण पाकी जाय, व्रणमां वारंवार बळतरा थया करे, तरश लाग्या करे, मूर्छा आवे, भ्रांति थाय, शरीरमां बळतरा थाय, ज्वर प्राप्त थाय के क्षतमांथी काळुं थई गयेलुं, क्लेदवाळुं तथा अत्यंत दुर्गंधवाळुं मांस सडी सडी त्रूटी त्रूटीने निरंतर पड्या करे तेने विषथी खरडाएला शस्त्रथी वींधाएलो जाणवो.

जेने विषथी अत्यंत व्रणो थया होय तेने पण उपर कहेलां सघळां लक्षणो प्राप्त थाय छे. जेओने लूताओनो दंश थयो होय, जेओ विषथी खरडाएला शस्त्रथी वींधाएला होय तथा जेओ पाटाना प्रदेशमां विषना योगना सोजावाळा होय तेओना व्रणो सडेला दुर्गंध मांसवाळा होय छे.

आवा लोकोना व्रणोनां सडेलां मांसोने युक्तिथी काहाडी नाखी, जळो मूकवाथी लोहीनुं पण निर्हरण करी अने वमनथी तथा विरेचनथी तुरतज दोषोनुं हरण करीने व्रणो उपर सारी रीते वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी छालोना क्काथोनुं सेचन करवुं अने पछी ते व्रणो उपर सूक्ष्म वस्त्रो राखीने विषने हणनारां शीतल द्रव्योना, घीमां कालवेला लेपो करवा.

२५ भिन्नेऽस्थ्ना वै दुष्टजातेन कार्यः
पूर्वो मार्गः पैत्तिके यो विषे च ।

अस्थि वगेरेमां विषवाळां प्राणिओनां अस्थि वगेरेथी थएला व्रणनी चिकित्सा.

२५ अस्थि वगेरेमां विषवाळां प्राणिओ के जेओ आ स्थानना त्रीजा अध्यायना त्रीजा विषयमां कहेलां छे तेओनां अस्थि वगेरेथी व्रण थयो होय तो उपरना २४ मा विषयमां कहेली चिकित्सा करवी अने पैत्तिक विष उपर जे चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते पण करवी.

२६ त्रिवृद्विशल्ये मधुकं हरिद्रे
रक्ता नरेन्द्रो लवणश्च वर्गः ॥
कटुत्रिकं चैव विचूर्णितानि
शृङ्गे निदध्यान्मधुसंयुतानि ।
एषोऽगदो हन्ति विषं प्रयुक्तः
पानाञ्जनाभ्यञ्जननस्ययोगैः
अवार्यवीर्यो विषवेगहन्ता
महागदो नाम महाप्रभावः ।

अगदकोश.

महागद नामनो अगद.

२६ नसोतर, नाहानो नेपाळो, जेठीमध, हळदर, दारूहळदर, मजीठ, गरमाळो, सैंधव आदि लवणवर्ग, (सूत्रस्थानना ४२ मा अध्यायना १३ मां विषय जुवो.) सूंठ, मरी अने पीपळ एओनुं चूर्ण करी मधमां कालवी तेने गायना शींगडामां भरी गायना शींगडानोज दाटो दई एक पखवाडीयासूधी राखी मूकवुं एटले **महागद** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. पीवामां, अंजनमां, अभ्यंगमां तथा नस्यमां आ अगदनो प्रयोग करवामां आवे तो ते अगद विषने हणे छे. आ महागद जेनी शक्ति क्यांय पण प्रतिघात पामे नहीं एवो छे, मोटा प्रभाववाळो छे अने विषना वेगने हणनार छे.

२७ विडङ्गपाठात्रिफलाजमोदा-
हिङ्गूनि चक्रं त्रिकटूनि चैव ॥
सर्वश्च वर्गो लवणश्च सूक्ष्मः
साचत्रकः क्षौद्रयुतो निधेयः ।

शृङ्गे गवां शृङ्गमयेन चैव
प्रच्छादितः पक्षमुपेक्षितश्च ॥
एषोऽगदः स्थावरजङ्गमानाम्
जेता विषाणामजितोहि नाम्ना ।

अजित नामनो अगद.

२७ वावडींग, काळीपाड, त्रिफळा, अजमोद, हींग, तगर, सूंठ, मरी, पीपळ, सूत्रस्थानता ४२ मा अध्यायना १३ मा विषयमां कहेलो सघळो लवणवर्ग अने चित्रक एओनुं बारीक चूर्ण करी मधमां कालवी तेने गायना शींगडामां भरी गायना शींगडानोज दाटो दईने एक पखवाडीयासूधी राखी मूकवुं एटले **अजित** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद सघळां स्थावर जंगम विषोने जीतनारो छे.

२८ प्रपौण्डरीकं सुरदारु मुस्ता
कालानुसार्या कटुरोहिणी च ॥
स्थौणेयकध्यामकपद्मकानि
पुन्नागतालीशसुवर्चिकाश्च ।
कुटन्नटैलासितसिन्धुवाराः
शैलेयकुष्ठे तगरं प्रियङ्गु ॥
रोध्रं जलं काञ्चनगैरिकं च
समागधं चन्दनसैन्धवं च ।
सूक्ष्माणि चूर्णानि समानि कृत्वा
शृङ्गे निदध्यान्मधुसंयुतानि ॥
एषोऽगदस्तार्क्ष्य इति प्रदिष्टो
विषं निहन्यादपि तक्षकस्य ।

तार्क्ष्य नामनो अगद.

२८ पांडेरवो, देवदार, मोथ, उपलसरी, (कपूरी) कडु, भरूंठ, (मारवाडमां प्रसिद्ध छे) रोहिसखड, पद्मकाष्ठ, पुन्नाग, (जेनी कळी नागकेसर केहेवाय छे ते) तालीसपत्र, साजीखार, अरडूसो, एलची, सफेद नगड, पत्थरफूल, कठ, तगर, घउलां, लोदर, वाळो, सोनागेरू, जीरूं, चंदन अने सैंधव एओने समभागे लई सूक्ष्म चूर्ण करी मधमां कालवी तेने गायना शींगडामां भरी गायना शींगडानोज दाटो दई एक पखवाडीयासूधी राखी मूकवुं एटले **तार्क्ष्य** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद तक्षकनागना विषने पण हणी नाखे छे.

२९ मांसीहरेणुत्रिफलामुरङ्गी-
रक्तालतायष्टिकपद्मकानि ॥
विडङ्गतालीशसुगन्धिकैला-
त्वक्कुष्ठपत्राणि सचन्दनानि ।
भार्गी पटोलं किणिही सपाठा
मृगादनी कर्कटिका पुरश्च
पालिन्द्यशोकौ क्रमुकं सुरस्याः
प्रसूनमारुष्करजं च पुष्पम् ।
चूर्णान्यथैषां निहितानि शृङ्गे
न्यसेच्च पित्तानि समाक्षिकाणि ॥
वराहगोधाशिखिशल्लकानाम्
मार्जारजं पार्षतनाकुले च ।
यस्यागदोऽयं सुकृतो गृहे स्या-
न्नाम्नर्षभो नाम नरर्षभस्य ॥
न तत्र सर्पाः कुत एव कीटा-
स्त्यजन्ति वीर्याणि विषाणि चैव ।
एतेन भेर्यः पटहाश्च दिग्धा
नानद्यमाना विषमाशु हन्युः ॥
दिग्धाः पताकाश्च निरीक्ष्य सद्यो
विषाभिभूता ह्यविषा भवन्ति ।

ऋषभ नामना अगद.

२९ जटामांसी, हरेणु, त्रिफळा, सरगवो, मजीठ, घउलां, जेठीमध, पद्मकाष्ठ, वावडींग, तालीसपत्र, काळी नगड अथवा उपलसरी, एळची, तज, कठ, तमालपत्र, चंदन, भारंगी, पटोल, वापुंगां, काळीपाड, इंद्रवारणी, कमळनी डोडी, पीळो कांटाअशेरीयो, सफेद गरणी, आसोपालव, सोपारी, तुलसीनां मांजर अने भीलामांनां फूल एओनुं चूर्ण करी तेने सूवर,

घो, मोर, शेळो, मींदडो, छांटणांवाळो पृषत नामनो नाहानो हरिण तथा नोळीयो एओना पित्ताथी संयुक्त करी, मधमां कालवी, गायना शींगडामां भरी, गायना शींगडानोज दाटो दई, एक पखवाडीयासूधी राखी मूकवुं एटले **ऋषभ** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. सारी रीते बनावेलो आ अगद राजाओए तथा उत्तम माणसोए राखवो योग्य छे. आ अगद जे घरमां होय ते घरमां सर्पो आवता नथी त्यारे कीडाओ तो क्यांथीज आवी शके. जो ए घरमां सर्पो के कीडाओ आवे तो तेओ शक्तिथी तथा विषथी रहित थई जाय छे. ए अगदथी सघळां विषो निर्वीर्य थई जाय छे. आ अगदथी पताकाओने खरडवामां आवे तो जेओने विषनो संसर्ग थयो होय ते प्राणीयो ए पताकाओने जोवाथी विषवगरनां थई जाय छे. मोटां नगारांओने तथा ढोलोने आ अगदथी खरडीने वगाडवामां आवे तो तेओ तुरत विषने नष्ट करी नाखे छे.

३० लाक्षा हरेणुर्नलदं प्रियङ्गु
शिग्रुद्वयं यष्टिकपृथ्विकाश्च ॥
चूर्णीकृतोऽयं रजनीविमिश्रो
वर्गो विधेयो मधुसर्पिषाक्तः ।
शृङ्गे गवां पूर्ववदापिधान-
स्ततः प्रयोज्योऽञ्जननस्यपानैः ॥
संजीवनो नाम गतासुकल्प-
मेषोऽगदो जीवयतीह मर्त्यम् ।

संजीवन नामनो अगद.

३० लाख, हरेणु, जटामांसी, घउलां, बे जातनो सरगवो, जेठीमध, एळचीओ अने हळदर एओनुं चूर्ण करी मधमां तथा घीमां कालवी, तेने गायना शींगडामां भरी, गायना शींगडानोज दाटो दई, एक पखवाडीयासूधी राखी मूकवुं एटले **संजीवन** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगदनो अंजनमां, पीवामां तथा नस्यमां प्रयोग करवो. विषना योगथी कंठप्राण थएला माणसने पण आ अगद जीवाडे छे.

३१ श्लेष्मातको कट्फलमातुलुङ्गौ
श्वेता गिरिह्वा किणिही सिता च ॥
सतण्डुलीयोऽगद एष मुख्यो
विषेषु दर्वीकरराजिलानाम् ।

दर्वीकरराजिमद्विषहर नामनो अगद.

३१ गुंदो, कायफळ, बीजोरूं, सफेद गरणी, वापुंगां, साकर अने तांदळजो अथवा वावडींग एओनुं चूर्ण करी मधमां तथा घीमां कालववुं एटले **दर्वीकरराजिमद्विषहर** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद दर्वीकर सर्पोनां तथा राजिमान् सर्पोनां विषो उपर मुख्य छे. (बीजां विषोने पण टाळे छे.)

३२ द्राक्षा सुगन्धा नगवृत्तिका च
पिष्टा समङ्गा समभागयुक्ता ॥
देयो द्विभागः सुरसाच्छदस्य
कपित्थविल्वादपि दाडिमाच्च ॥
तथार्द्धभागोऽसितसिन्धुवारा-
दङ्कोठमूलादपि गैरिकाच्च ।
एषोऽगदः क्षौद्रयुतो निहन्ति
विशेषतो मण्डलिनां विषाणि ॥

मंडलिविषहर नामनो अगद.

३२ द्राक्ष, नाहानी नोरवेल, सफेद गरणी अने मजीठ एओने समभागे लई चूर्ण करी तेमां बे बे भाग जेटलां तुलसीपत्र, कोठ, बीलुं, तथा दाडिम एओनां चूर्णो नाखवां अने अरध अरध भाग जेटलां काळी नगड, अंकोलनां मूळीयां अने सोनागेरू एओनां चूर्णो नाखवां. पछी ए सर्व चूर्णने मधमां कालववुं एटले **मंडलिविषहर** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद मंडलीसर्पोनां विषो उपर मुख्य छे. (बीजां विषोने पण टाळे छे.)

३३ वंशत्वगार्द्रामलकं कपित्थम्
कटुत्रिकं हैमवती सकुष्ठा ।
करञ्जबीजं तगरं शिरीष-
पुष्पं च गोपित्तयुतं निहन्ति ॥
विषाणि लूतोन्दुरुपन्नगानाम्
कीटं च लेपाञ्जननस्ययोगैः ।
पुरीषमूत्रानिलगर्भसङ्गा-
न्निहन्ति वर्त्यञ्जननाभिलेपैः ॥
काचार्मकोथान्पटलांश्च घोरान्
पुष्पं च हन्त्यञ्जननस्ययोगैः ।

सार्वकामिक नामनो अगद.

३३ वांसनी लीली छाल, आमळां, कोठ, सूंठ, मरी, पीपळ, व्रज, कठ, करंजनां बीज, तगर अने सरसडीयानां फूल एओना चूर्णने गायना पित्तथी (गोरोचनथी) संयुक्त करवां एटले **सार्वकामिक** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद लेपथी, अंजनथी अने नस्यथी लूताओनां, उंदरोनां, सर्पोनां तथा कीडाओनां विषोने हणे छे. वाट करीने गुदामां मूकवाथी, अंजनथी अने नाभि-उपर लेप करवाथी विष्ठानी अटकायतने, मूत्रनी अटकायतने, वायुनी अटकायतने अने गर्भनी अटकायतने मटाडे छे. अंजनथी तथा नस्यथी भयंकर काच, अर्म, सडो, पडल तथा फूलां एटला नेत्रसंबंधी रोगोने टाळे छे.

३४ समूलपुष्पाङ्कुरवल्कबीजात्
क्वाथः शिरीषात्त्रिकटुप्रगाढः ॥
सलावणः क्षौद्रयुतोऽथ पीतो
विशेषतः कीटविषं निहन्ति ॥

पंचशिरीष नामनो अगद.

३४ सरसडीयानां मूळ, फूल, कुंपळीयां, छाल तथा बीज एओनो क्वाथ करी तेमां सूंठ, मरी तथा पीपळ एओनुं चूर्ण सारी पेठे नाखी तेने लवणवर्गथी तथा मधथी मिश्रित करवो एटले **पंचशिरीष** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद पीवाथी विशेषे करी कीडाओनुं विष नष्ट थाय छे.

३५ कुष्ठं त्रिकटुकं दार्वी मधुकं लवणद्वयम् ।
मालती नागपुष्पं च सर्वाणि मधुराणि च ।
कपित्थरसपिष्टोऽयं शर्कराक्षौद्रसंयुतः ।
विषं हन्त्यगदः सर्वं मूषिकाणां विशेषतः ।

बीजा प्रकारनो सार्वकामिक अगद.

३५ कठ, सूंठ, मरी, पीपळ, दारूहळदर, जेठीमध, सैंधव, संचळ, मालती, नागकेसर अने काकोल्यादि सघळो मधुर गण एओने कोठना रसमां वाटी साकरथी तथा मधथी संयुक्त करवामां आवे एटले **सार्वकामिक** अगद सिद्ध थाय छे. आ अगद सर्व विषने हणे छे तेमां उंदरोना विषने तो विशेषे करी हणे छे.

३६ सोमराजीफलं पुष्पं कटभी सिन्धुवारकः ।
चोरको वरुणः कुष्ठं सर्पगन्धा ससप्तला ॥
पुनर्नवा शिरीषस्य पुष्पमारग्वधार्कजम् ।
श्यामाम्बष्ठा विडङ्गानि तथाम्राश्मन्तकानि च ॥
भूमी कुरवकश्चैव गण एकसरः स्मृतः ।
एकशो द्विस्त्रिशो वापि प्रयोक्तव्यो विषापहः॥

एकसर अगदगण.

३६ बावचीनुं फळ, बावचीनुं फूल, वावुंगां, सफेद नगड, तगरनां मूळ, वायवरणां, कठ, नोळवेल, डोलर, साटोडी, सरसडीयानुं फूल, गरमाळानुं फूल, आकडानुं फूल, वउलां, काळीपाड, वावडींग, आंबो, आंसोदरो, काळी माटी अने कांटाअशेरीयो ए प्रत्येक औषध **एकसर** केहेवाय छे एटले एओमांना एक औषधनो प्रयोग पण विषने हणे छे. आ एकसर औषधोमांथी एक एकनो, बबेनो अथवा त्रण त्रणनो प्रयोग करवो. ए प्रयोगथी विष नष्ट थई जाय छे.

अध्याय ६ ट्ठो.

१ अथातो मूषिककल्पं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मूषिककल्प' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पूर्वमुक्ताः शुक्रविषा मूषिका ये समासतः।
नामलक्षणभैषज्यैरष्टादश निबोध तान् ॥

अढार जातना उंदरोनां नामो, तेओना विषना संसर्गनां लक्षणो तथा औषधो केहेवानी प्रतिज्ञा.

२ उंदरो वीर्यमां विषवाळा होवा विषे आ स्थानना त्रीजा अध्यायना त्रीजा विषयमां संक्षेपथी कहेलुं छे. हवे आ अध्यायमां ए उंदरोनी अढार जातोनां नामो, उंदरोना विषना संसर्गनां लक्षणो तथा ते संसर्गनां औषधो कहुं छुं ते सांभळो.

३ लालनः पुत्रकः कृष्णो हंसिरश्चिक्किरस्तथा ।
छुच्छुन्दरोऽलसश्चैव कषायदशनोऽपि च ॥
कुलिङ्गश्चाजितश्चैव चपलः कपिलस्तथा ।
कोकिलोऽरुणसंज्ञश्च महाकृष्णस्तथोन्दुरुः ॥
श्वेतेन महता सार्द्धं कपिलेनाखुना तथा ।
मूषिकश्च कपोताख्यस्तथैवाष्टादश स्मृताः ॥

उंदरोनी अढार जातो.

३ लालन, पुत्रक, कृष्ण, हंसिर, चिक्किर, छुच्छुंदर, (छछुंदर) अलस, कषायदशन, कुलिंग, अजित, चपल, कपिल, कोकिल, अरुण, महाकृष्ण, श्वेत, महाकपिल अने कपोत ए रीते उंदरो अढार जातना केहेवामां आवे छे. (उंदरोनी जातोनी ओळखाण शोधकलोकोथी मेळवी लेवी.)

४ शुक्रं पतति यत्रैषां शुक्रघृष्टैः स्पृशन्ति वा।
नखदन्तादिभिस्तस्मिन्गात्रे रक्तं प्रदुष्यति ॥
जायन्ते ग्रन्थयः शोफाः कर्णिका मण्डलानि च ।
पिडकोपचयश्चोग्रा विसर्पाः किटिभानि च ॥
पर्वभेदो रुजस्तीव्रा ज्वरो मूर्छा च दारुणा ।
दौर्बल्यमरुचिः श्वासो वमथुर्लोमहर्षणम् ॥
दष्टरूपं समासोक्तमेतच्च व्यासतः शृणु ।

उंदरोना विषनो संसर्ग केवी रीते थाय छे ते तथा ते संसर्गथी थतां सामान्य लक्षणो.

४ ए उंदरोनुं वीर्य माणसोना जे अंगपर पडे अथवा ए उंदरो वीर्यमां घसेला नख के दांत वगेरेथी माणसोना जे अंगनो स्पर्श करे ते अंगमां रुधिर दूषित थाय छे अने रुधिर दूषित थवाथी ग्रंथिओ, सोजा, अनेक छिद्रोवाळी डोडीओ, मंडलो, फोडलीओ, उग्र विसर्पो, किटिभो, पर्वोनुं भेदावुं, तीव्र वेदनाओ, ज्वर, दारुण मूर्छा, दुर्बलपणुं, अरुचि, श्वास, उलटी अने रुवाडांओनुं ऊभुं थवुं ए लक्षणो थाय छे. उंदरोना विषना संसर्गनुं आ लक्षण संक्षेपथी कह्युं. हवे विस्तारथी कहुं छुं ते सांभळो.

५ लालास्रावो लालनेन हिक्का छर्दिश्च जायते
तण्डुलीयककल्कं तु लिह्यात्तत्र समाक्षिकम् ।

लालनना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

५ **लालन** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो लाळनो स्राव थाय छे, हेडकी थाय छे अने उलटी थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो तांदळजाना अथवा वावडींगना कल्कने मधथी संयुक्त करीने चटाडवो.

६ पुत्रकेणाङ्गसादश्च पाण्डुर्वर्णश्च जायते ॥
चीयते ग्रन्थिभिश्चाङ्गमाखुशावकसन्निभैः ।
शिरीषेङ्गुदकल्कं तु लिह्यात्तत्र समाक्षिकम् ॥

१ उंदरोनी जातो, उंदरोना तथा हडकीया कूतरां वगेरेना विषना संसर्गनां लक्षणो अने ते विषना संसर्गोनी जूदी जूदी चिकित्साओ विषेनो.

पुत्रकना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

६ **पुत्रक** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो अंगोमां ग्लानि थाय छे, वर्ण पांडु थई जाय छे अने उंदरना बच्चाओना जेवा आकारवाळा ग्रंथिओथी अंग व्याप्त थई जाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो सरसडीयाना अने इंगोळीयाना कल्कने मधथी संयुक्त करीने चटाडवो.

७ कृष्णेनासृक्छर्दयति दुर्दिनेषु विशेषतः ।
शिरीषफलकुष्ठं तु पिबेत्किंशुकभस्मना ॥

कृष्णना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

७ **कृष्ण** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो लोहीनी उलटी थाय छे अने ज्यारे वादळांओनो घेराव थाय त्यारे ते उलटी विशेषे करी थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो सरसडीयानां फळ अने कठ एओनो कल्क खाखरानां फूलोनी (केसुडांओनी) भस्मना जळनी साथे पावो.

८ हंसिरेणान्नविद्वेषो जृम्भा लोम्नां च हर्षणम् ।
पिबेदारग्वधादिं तु सुवान्तस्तत्र मानवः ॥

हंसिरना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

८ **हंसिर** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो अन्न उपर अरुचि थाय छे, बगासां आवे छे अने रुवाडां ऊभां थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो सारी पेठे वमन करावीने पछी आरग्वधादि गणनो कल्क पावो.

९चिक्किरेण शिरोदुःखं शोफो हिक्का वमी तथा
जालिनीमदनाङ्कोठकषायैर्वामयेत्तु तम् ॥

चिक्किरना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

९ **चिक्किर** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो माथामां व्यथा थाय छे, सोजो थाय छे, हेडकी थाय छे अने उलटी थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो वैद्ये ते माणसने कडवी घीसोडी, मींढोळ अने अंकोल एओना क्वाथ पाईने वमन कराववुं.

१० छुच्छुन्दरेण विड्भङ्गो ग्रीवास्तम्भो विजृम्भणम् ।
यवनालर्षभीक्षारं बृहत्याश्चात्र दापयेत् ॥

छछुंदरना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

१० **छछुंदर** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो विष्टा त्रुटेली त्रुटेली नीकळे छे, डोक झलाई जाय छे अने बगासां आवे छे. आ प्रमाणे थएल होय तो जवखारनुं अने कौंचां तथा ऊभी भोरींगणी एओना क्षारनुं पाणी पावुं.

११ ग्रीवास्तम्भोऽलसेनोर्ध्ववायुर्दंशे रुजा ज्वरः
महागदं ससर्पिष्कं लिह्यात्तत्र समाक्षिकम् ॥

अलसना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

११ **अलस** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो ऊर्ध्ववायु थाय छे, दंशमां वेदना थाय छे अने ज्वर आवे छे. आ प्रमाणे थएल होय तो गया अध्यायना २६ मा विषयमां कहेला महागद नामना अगदने घीथी तथा मधथी मिश्रित करीने चटाडवो.

१२ निद्रा कषायदन्तेन हृच्छोषः कार्श्यमेव च
क्षौद्रोपेताः शिरीषस्य लिह्यात्सारफलत्वचः ।

कषायदंतना विषना संसर्गनुं विविष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

१२ **कषायदंत** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो हृदयमां शोष थाय छे अने कृशपणुं थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो सरसडीयानां सार, फळ अने छाल एओनुं चूर्ण मधथी संयुक्त करीने चटाडवुं.

१३ कुलिङ्गेन रुजः शोफो राज्यश्च दंशमण्डले॥
सहे ससिन्धुवारे च लिह्यात्तत्र समाक्षिके।

कुलिंगना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

१३ **कुलिंग** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो दंशना मंडलमां वेदनाओ थाय छे, सोजो थाय छे अने रेखाओ थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो जंगली मग, जंगली अडद अने नगड एओनुं चूर्ण मधथी संयुक्त करीने चटाडवुं.

१४ अजितेन वमी मूर्छा हृद्ग्रहः कृष्णनेत्रता॥
तत्र स्नुहीक्षीरपिष्टां पालिन्दीं मधुना लिहेत्।

अजितना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

१४ **अजित** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो उलटी थाय छे, मूर्छा आवे छे हृदय स्तब्ध थई जाय छे अने नेत्रो काळां थई जाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो काळी नसोतर थोरना छीरमां वाटी मधथी मिश्रित करीने चटाडवी.

१५ चपलेन भवेच्छर्दिर्मूर्छा च सह तृष्णया॥
सभद्रकाष्ठां सजटां क्षौद्रेण त्रिफलां लिहेत्।

चपलना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

१५ चपल जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो उलटी थाय छे, मूर्छा आवे छे अने तरश पण लाग्या करे छे. आ प्रमाणे थएल होय तो देवदार, जटामांसी तथा त्रिफळा एओनुं चूर्ण मधथी संयुक्त करीने चटाडवुं.

१६कपिलेन व्रणे कोथो ज्वरो ग्रन्थ्युद्गमस्तथा॥
क्षौद्रेण लिह्यात्त्रिफलां श्वेतां चापि पुनर्नवाम्।

कपिलना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

१६ **कपिल** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो व्रणमां सडो थाय छे, ज्वर आवे छे अने ग्रंथिओ उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो त्रिफळा अने सफेद साटोडी एओनुं चूर्ण मधथी संयुक्त करीने चटाडवुं.

१७ ग्रन्थयः कोकिलेनोग्रा ज्वरो दाहश्च दारुणः
वर्षाभूनीलिनीक्वाथसिद्धं तत्र घृतं पिबेत्।

कोकिलना विषना संसर्गनुं विशिष्ट लक्षण अने तेनी चिकित्सा.

१७ **कोकिल** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो उग्र ग्रंथिओ थाय छे, ज्वर आवे छे अने दारुण दाह थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो साटोडी अने गळी एओना क्वाथथी पकावेलुं घी पावुं.

१८ अरुणेनानिलः क्रुद्धो वातजान्कुरुते गदान्
महाकृष्णेन पित्तं च श्वेतेन कफ एव च।
महता कपिलेनासृक्कपोतेन चतुष्टयम्॥
भवन्ति चैषां दंशेषु ग्रन्थिमण्डलकर्णिकाः।
पिडकोपचयाश्चोग्राः शोफश्च भृशदारुणः॥
दधिक्षीरघृतप्रस्थास्त्रयः प्रत्येकशो मताः॥
करञ्जारग्वधव्योषबृहत्यंशुमतीस्थिराः।
निष्क्वाथ्य चैषां क्वाथस्य चतुर्थांशः पुनर्भवेत्॥
त्रिवृत्तिलामृताचक्रसर्पगन्धाः समृत्तिकाः।
कपित्थदाडिमत्वक्च सुपिष्टानि तु दापयेत्॥
तत्सर्वमेकतः कृत्वा शनैर्मृद्वग्निना पचेत्।
पञ्चानामरुणादीनां विषमेतद्व्यपोहति॥
काकादनीकाकमाचीस्वरसेष्वथ वा कृतम्।
शिराश्च स्रावयेत्प्राज्ञः कुर्यात्संशोधनानि च॥

अरुण, महाकृष्ण, श्वेत, महाकपिल अने कपोत एओनां विषनां संसर्गनां जूदां जूदां विशिष्ट लक्षणो अने चिकित्सा.

१८ **अरुण** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो वायुनो प्रकोप थाय छे अने तेथी वायुसंबंधी रोगो थाय छे. **महाकृष्ण** जातना उंदरना विषनो

संसर्ग थयो होय तो पित्तनो प्रकोप थाय छे अने तेथी पित्तसंबंधी रोगो थाय छे. **श्वेत** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो कफनो प्रकोप थाय छे अने तेथी कफसंबंधी रोगो थाय छे. **महाकपिल** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो रुधिरनो प्रकोप थाय छे. अने तेथी रुधिरसंबंधी रोगो थाय छे. **कपोत** जातना उंदरना विषनो संसर्ग थयो होय तो वायु, पित्त, कफ अने रुधिर ए चारेनो प्रकोप थाय छे अने तेथी ए चारेसंबंधी रोगो थाय छे. ए पांचे जातना उंदरोना दंशोमां ग्रंथिओ, मंडलो, (चकरडां) कमळकाकडीनी डोडीओ जेवी घणां छिद्रोवाळी डोडीयो, उग्र फोडलीओनी पंक्तिओ अने अतिदारुण सोजो उत्पन्न थाय छे.

करंज, गरमाळो, सूंठ, मरी, पीपळ, भोरींगणी, शालिपर्णा अने उंदरकन्नी एओनो क्काथ करी तेमां एक एक प्रस्थ दहीं, दूध तथा घी नाखी फरीवार उकाळी, क्काथनो चतुर्थांश अवशेष रहे त्यारे तेमां नसोतर, तिल, गळो, तगर, नोरवेल, राफडानी काळी माटी, कोठनी छाल अने दाडिमनी छाल एओनो कल्क नाखी सर्वने एकठां करीने पाछो कोमळ अग्निथी पाक करवो एटले **करंजादिघृत** सिद्ध थाय छे. आ घी अरुण आदि पांचे जातना उंदरोना विषने नष्ट करे छे.

अथवा मालकांकणी अने पीलुडी के अघेडी एओना स्वरसमां घी पकाववुं. आ घी पण अरुणआदि पांचे जातना उंदरोना विषने नष्ट करे छे.

विद्वान् वैद्ये ए उंदरोनां विषोने नष्ट करवा माटे शिराओमांथी लोहीनुं स्रावण पण करवुं अने संशोधनो पण करवां.

१९ सर्वेषां च विधिः कार्यो मूषिकाणां विषेष्वयम् ।
दग्ध्वा विस्रावयेद्दंशं प्रच्छितं च प्रलेपयेत् ॥
शिरीषरजनीकुष्ठकुङ्कुमैरमृतायुतैः ।
छर्दनं जालिनीकाथैः शुकाख्याङ्कोठयोरपि ॥
शुकाख्यकोषवत्योश्च मूलं मदनमेव च ॥
देवदालीफलं चैव दध्ना पीत्वा विषं वमेत् ।
फलं वचा देवदाली कुष्ठं गोमूत्रपेषितम् ।
पूर्वकल्पेन योज्याः स्युः सर्वोन्दुरुविषच्छिदः ॥
विरेचनं त्रिवृद्दन्तीत्रिफलाकल्क इष्यते ।
शिरोविरेचने सारः शिरीषफलमेव च ॥
कटुत्रिकाढ्यश्च हितो गोमयस्वरसोऽञ्जने ।
कपित्थगोमयरसः सक्षौद्रो लेह इष्यते ॥
रसाञ्जनहरिद्रेन्द्रयवकट्वीषु वा कृतम् ।
कल्कं सातिविषं प्रातर्लिह्याद्य क्षौद्रसंयुतम् ॥
तण्डुलीयकमूलेषु सर्पिः सिद्धं पिबेन्नरः ।
आस्फोतामूलसिद्धं वा पञ्चकापित्थमेव वा ॥

सघळी जातना उंदरोनां विषो उपर दोषप्रत्यनीक सामान्य चिकित्सा.

१९ सघळी जातना उंदरोनां विषो उपर शिरावेध करीने लोहीनुं स्रावण करवुं, दंशने अग्निथी तपावेला घीथी डांभीने स्रवाववो, दंशने शस्त्रथी टोचीने तेना उपर सरसडीयो, हळदर, कठ, केसर तथा गळो एओनो लेप करवो. कडवी घीसोडीना, लींबडाना तथा अंकोलना क्काथोथी वमन कराववुं. लींबडानुं मूळ, कडवी घीसोडीनुं मूळ, मींढोळ अने कुकडवेलनुं फळ एओना कल्कने दहीनी साथे पाईने विषनुं वमन कराववुं. मींढोळ, वज, कुडवेल तथा कठ एओने गोमूत्रमां वाटीने ते कल्क दहींनी साथे चटाडवो. आथी सघळी जातना उंदरोनां विषो नष्ट थई जाय छे. विरेचनने माटे नसोतर, नेपाळो तथा त्रिफळा एओनो कल्क देवो. शिरोविरेचनने माटे सरसडीयाना सारनी तथा फळनी योजना करवी. गायना छाणनो स्वरस लई तेमां सारी पेठे सूंठ, मरी तथा पीपळ मिश्रित करीने तेनुं अंजन करवुं. कोठनो स्वरस

तथा गायना छाणनो स्वरस लई तेने मधथी संयुक्त करीने चटाडवो. रमवंती, हळदर, दारूहळदर, इंद्रजव, कडु अने अतवस एओनो कल्क करी मधथी संयुक्त करीने नित्य प्रभाते चटाडवो. तांदळजानां मूळीआंना काथमां तथा कल्कमां पकावेलुं घी पावुं. अथवा गरणीनां मूळीयांओना काथमां तथा कल्कमां पकावेलुं घी पावुं. अथवा कोठनां पानडां, मूळीयां, फूल, फळ, अने छाल एओना कल्कमां तथा काथमां पकावेलुं घी पावुं. आ घी **पंचकापित्थ** केहवाय छे.

२० मूषिकाणां विषं प्रायः कुप्यत्यभ्रेषु निर्हृतम्।
तत्राप्येष विधिः कार्यो यश्च दूषीविषापहः ॥

उंदरनुं विष शांत थया पछी पण पाछुं प्रकुपित थाय तो शोधन आदि चिकित्सा करवी.

२० उंदरोनुं विष शांत करवामां आव्युं होय तो पण घणुं करीने पाछुं वादळांओना घेरावना समयोमां प्रकुपित थाय छे. पाछुं प्रकुपित थाय तो पण वमनआदि संशोधनरूप चिकित्सा करवी अने दूषीविषने टाळवा माटे आ स्थानना बीजा अध्यायमां जे विधि कह्यो छे ते पण करवो.

२१ स्थिराणां रुजतां वापि व्रणानां कर्णिका भिषक् ।
पाटयित्वा यथादोषं व्रणवच्चापि शोधयेत् ॥

उंदरना विषथी थएला व्रणमां तथा बीजा पण विषदुष्टव्रणमां थती डोडीयोनी चिकित्सा.

२१ जे व्रणो कफात्मक होवाथी स्थिर होय अथवा वातात्मक होवाथी वेदना करता होय तेओनी डोडीओने वैद्ये शस्त्रवते चीरीने पछी दोषना अनुसार प्रमाणे व्रणोनी पेठे तेओनुं शोधन करवुं.

२२ शृगालश्वतरक्ष्वृक्षव्याघ्रादीनां यदानिलः ।
श्लेष्मप्रदुष्टो मुष्णाति संज्ञां संज्ञावहाश्रितः ॥
तदा प्रस्रस्तलाङ्गूलहनुस्कन्धोऽतिलालवान् ।
अत्यर्थबधिरोऽन्धश्च सोऽन्योन्यमभिधावति ॥

कूतरां तथा शीयाळ वगेरेने हडकवा थवानां निदान, संप्राप्ति अने लक्षणो.

२२ कूतरां, शीयाळ, झरख, रींछ अने वाघ वगेरे पशुओनो वायु ज्यारे कफथी दूषित थई संज्ञानुं वहन करनारी नाडीओमां रहीने संज्ञानुं हरण करे छे त्यारे ते पशुओने हडकवा चाले छे. हडकवा चालतां ए पशुओ वींखाई गएलां पूछडांवाळां, वींखाएली हडपचीओवाळां, वींखाएली कांधोवाळां, अत्यंत लाळवाळां, अत्यंत बेहेरां तथा आंधळां थई जाय छे अने अन्योन्यनी सामे करडवा दोडे छे.

२३ तेनोन्मत्तेन दष्टस्य दंष्ट्रिणा सविषेण तु ।
सुप्तता जायते दंशे कृष्णं चातिस्रवत्यसृक् ॥
दिग्धविद्धस्य लिङ्गेन प्रायशश्चोपलक्षितः ।
येन चापि भवेद्दष्टस्तस्य चेष्टारुतं नरः ॥
बहुशः प्रतिकुर्वाणः क्रियाहीनो विनश्यति ।

हडकीया प्राणीना दंशनां लक्षणो तथा दंशथी थता उपद्रवो.

२३ उन्मत्त थएलो विषवाळो ए दाढाळो प्राणी करडे तो तेना दंशमां जडता थाय छे अने ते दंशमांथी काळा रुधिरनो अतिस्राव थाय छे. जेने हडकीयानो दंश थयो होय ते माणस घणुं करी विषथी खरडाएला शस्त्रवते वींधाएलानां लक्षणोथी युक्त थाय छे[1]. (गया अध्यायनो २४ मो विषय वांचो.) ए माणस जे प्राणीए दंश कर्यो होय ते प्राणीना जेवी चेष्टा करवा लागे छे, ते प्राणीना जेवोज अवाज करवा लागे छे अने एवी रीते चेष्टाओनुं तथा अवाजनुं अनुकरण करतां करतां पोताना शरीरादिकना व्यापारोथी रहित थईने मरी जाय छे. (हडकीयाना

१ हडकीया जानवरनुं विष तुरत अथवा कालांतरे पण प्रकुपित थाय छे (तंत्रांतर.)

दंशवाळा माणसने हडकीया प्राणीना जेवां चेष्टा तथा अवाज वगेरे थाय ए अरिष्ट छे.)

२४ दंष्ट्रिणा येन दष्टश्च तद्रूपं यदि पश्यति ॥
अप्सु वा यदि वादर्शे रिष्टं तस्य विनिर्दिशेत् ।
त्रस्यत्यकस्माद्योऽभीक्ष्णं श्रुत्वा दृष्ट्वापि वा जलम्
जलत्रासं तु विद्यात्तं रिष्टं तदपि कीर्त्तितम् ।

हडकीयाना दंशवाळा माणसनां अरिष्टसूचक चिह्नो.

२४ जेने हडकीयानो दंश थयो होय ते माणस पोताने जेनो दंश थयो होय ते प्राणीना रूपने जळमां के अरीशामां देखे तो जाणवुं के तेनुं मरण थवानुं छे. हडकीयाना दंशवाळो माणस जो जळनुं नाम सांभळीने अथवा जळने जोइने अकस्मात् त्रास पामे तो ए त्रासने पण अरिष्टरूप (मरणना चिह्नरूप) समजवो.

२५ अदष्टो वा जलत्रासी न कथंचन सिध्यति
प्रसुप्तोऽथोत्थितो वापि स्वस्थस्त्रस्तो न सिध्यति

हडकीयाना दंशवगरनो बीजो रोगी के स्वस्थ माणस पण जलत्रासरूप अरिष्टवाळो थाय तो मरी जाय छे.

२५ हडकीयाना दंश वगरनो बीजो पण कोई रोगी जळ विना पण जळथी त्रास पामतो होय तो तेना जीववानी आशा छोडी दईने तेनी चिकित्सा करवी नहीं. तेमज स्वस्थ माणस पण जो सूतो के जागतो जळथी त्रास पाम्या करतो होय तो ते पण वधारे जीवतो नथी. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के 'जळ विना पण कफनो संचय थवाथी जलत्रास थाय छे. ज्यारे केवळ कफ बुद्धिना स्थानमां आवे छे त्यारे कफथी बुद्धि रोकाई जतां माणस सूतो के जागतो पण पोताना शरीरने जळमां डूबता जेवुं देखे छे अने तेथी त्रास पामे छे.' आ माणसने माटे आहारादिकना विधानथी कफना शमनरूप तथा संशोधनरूप चिकित्सा करवी.)

२६ विस्राव्य दंशं तैर्दंष्टे सर्पिषा परिदाहितम्
प्रदिह्यादगदैः सर्पिः पुराणं वापि पाययेत् ।
अर्कक्षीरयुतं चास्य दद्याच्छीर्षविरेचनम् ॥
श्वेतां पुनर्नवां चास्य दद्याद्धत्तूरकायुताम् ।
पललं तिलतैलं च रूपिकायाः पयो गुडः ॥
निहन्ति विषमालर्कं मेघवृन्दमिवानिलः ।
मूलस्य शरपुङ्खायाः कर्षं धत्तूरकार्द्धिकम् ॥
तण्डुलोदकमादाय पेषयेत्तण्डुलैः सह ।
उन्मत्तकस्य पत्रैस्तु संवेष्ट्यापूपकं पचेत् ॥
खादेदौषधकाले तदलर्कविषदूषितः ।
करोत्यन्यान्विकारांस्तु तस्मिञ्जीर्यति चौषधे ॥
विकाराः शिशिरे याप्या गृहे वारिविवर्जिते ।
ततः शान्तविकारस्तु स्नात्वा चैवापरेऽहनि ॥
शालिषष्टिकयोर्भक्तं क्षीरेणोष्णेन भोजयेत् ।

हडकीयाना दंशनी चिकित्सा.

२६ कोई पण कूतरा वगेरे हडकीया प्राणीनो दंश थयो होय तो दंशने दबावी तेमांथी लोही स्रवावी नाखवुं, दंशने अग्निथी तपावेला घीथी डांमवो, दंश उपर गया अध्यायमां कहेला महागद आदि अगदोनो लेप करवो, जूनुं घी पावुं, आकडाना छीरथी संयुक्त करेलुं शिरोविरेचन देवुं अने ए माणसने धंतूरानां मूळीयांनी साथे अथवा धंतूराना डोडवानी साथे धोळी साटोडी पण खवरावबी.

तिलनो कल्क, तिलनुं तेल, आकडानुं छीर अने गोळ एओने एकंदर करीने खवरावबामां आवे तो ते औषध जेम पवन वादळांओना वृंदने नष्ट करे छे तेम हडकीयाना विषने नष्ट करे छे.

शरपंखाना एक तोला भार मूळने अने धंतूराना अर्धा तोला भार मूळने अथवा फळने लई तेओने चोखाना धोणमां चोखाओनी साथे वाटी पूडलो (बाटी ?) बनावी ते पूडलीने धंतूरानां पानडांओथी वीटीने पकाववो. जेने हडकीयाना विषनो संसर्ग थयो होय ते माणसने औषधना

समयमां ते पूडलो खवराववो. आ पूडलो पचवा लागे ते समयमां दंशवाळो माणस हडकीया कूतरा वगेरेनी चेष्टाओ करवा लागे छे. आ समयमां ते माणसने पाणीवगरना शीतल घरमां राखीने ते चेष्टाओ करवा देवी. ए चेष्टाओरूप विकारो शांत थाय त्यारे नवरावीने बीजे दिवसे ऊना दूधनी साथे राता चोखानो तथा साठीचोखानो भात जमाडवो.

२७ दिनत्रये पञ्चके वा विधिरेषोऽर्द्धमात्रया ॥
कर्त्तव्यो भिषजावश्यमलर्कविषनाशनः ।
कुप्येत्स्वयं विषं यस्य न स जीवति मानवः ॥
तस्मात्प्रकोपयेदाशु स्वयं यावन्न कुप्यति ।

उपर कहेलो पूडलो वधारे दिवसोसूधी पण खवराववो.

२७ जो ए शरपंखानो तथा धंतूरानो उपर कहेलो पूडलो खवराववाथी हडकीयानी चेष्टाओरूप विकारो उत्पन्न न थाय तो वैद्ये पछी त्रण दिवससूधी अथवा पांच दिवससूधी पण उपर कहेली मात्राथी अरधी मात्रावालो ए पूडलो अवश्य खवराववो के जेना बळथी हडकीयानुं विष प्रकुपित थईने नष्ट थई जाय. जे माणसने हडकीयानुं विष पोतानी मेळे प्रकुपित थाय ते माणस जीवतो नथी एटला माटे ते विष पोतानी मेळे प्रकुपित न थाय ते पेहेलां तुरतज औषधना बळथी तेने प्रकुपित करवुं.

२८ बीजरत्नौषधीगर्भैः कुम्भैः शीताम्बुपूरितैः
स्नापयेत्तं नदीतीरे समन्त्रैर्वा चतुष्पथे ।
बलिं निवेद्य तत्रापि पिण्याकं पललं दधि ॥
माल्यानि च विचित्राणि मांसं पक्कामकं तथा ।
अलकाधिपते यक्ष सारमेयगणाधिप ॥
अलर्कजुष्टमेतं मे निर्विषं कुरु मा चिरात् ।
दद्यात्संशोधनं तीक्ष्णमेवं स्नातस्य देहिनः ॥
अशुद्धस्य सुरूढेऽपि व्रणे कुप्यति तद्विषम् ।

हडकीयाना विषना संसर्गमां दैविक विधान तथा लौकिक चिकित्सा करवी.

२८ जेने हडकीया प्राणीना विषनो संसर्ग थयो होय ते माणसने नदीने किनारे अथवा चौटामां लई जई मंत्रेलां शीतल जळोथी भरेला अने जेओमां बीज, रत्नो तथा औषधीओ नाख्यां होय एवा कुंभोथी मंत्रोच्चारपूर्वक नवराववो अने नवराव्या पछी मंत्रोच्चारपूर्वक कुबेरजीने तलना खोळनुं, तलना कल्कनुं, दहींनुं अने काचा तथा पाका मांसनुं विचित्र पुष्पोथी संयुक्त बलिदान देवुं. 'हे अलका नगरीना अधिपति! हे कूतरांओना टोळाना अधिपति! हे कुबेरजी! हडकीयाना विषनो संसर्ग पामेला मारा आ माणसने विषथी रहित करो. विलंब नहीं करो.” एवा अर्थवाळा मूलोक्त मंत्रथी जलने तथा बलिदानने अभिमंत्रित करवां. आ प्रमाणे ए माणसने नवरावी तथा कुबेरजीने बलिविधानथी पूजीने पछी ते माणसने तीक्ष्ण विरेचन देवुं. (बीजी पण उपर लखेली चिकित्साओ करवी.) हडकीयाना विषना संसर्गवाळा माणसने संशोधनोथी शुद्ध न कर्यो होय तो व्रण सारी पेठे रुझाई गया पछी पण विष प्रकुपित थाय छे.

२९ श्वादयोऽभिहिता व्याला वातपित्तप्रकोपणाः ॥
अतः करोति दष्टस्तु तेषां चेष्टां रुतं नरः ।
बहुशः प्रतिकुर्वाणो नचिरान्म्रियते च सः ॥

जेने हडकीयानो दंश थयो होय ते माणस विषनो अतिप्रकोप थतां हडकीयानी पेठे चेष्टा तथा अवाज करे छे तेनुं कारण.

२९ कूतरां वगेरे हडकीयां फाडी खानारां जानवरो वायुने तथा पित्तने प्रकुपित करनारां

छे एटला माटे तेओ जेने करड्यां होय ते माणस ते जानवरोनी चेष्टाओने तथा ते जानवरोना शब्दने करे छे अने ए प्रमाणे वारंवार करतो करतो थोडी मुदतमां मरी जाय छे.

३० नखदन्तक्षतं व्यालैर्यत्कृतं तद्विमर्दयेत् । सिञ्चेत्तैलेन कोष्णेन ते हि वातप्रकोपकाः ॥

कूतरां वगेरे फाडी खानारां जानवरोए करेला जखमोनी सामान्य चिकित्सा.

३० कूतरां वगेरे फाडी खानारां जानवरोए नखोथी के दांतोथी जे जखम करेल होय ते जखमने आंगळी वगेरेथी चोळवो अने तेना उपर सेहेवाई शकें तेवा ऊना तैलनुं सेचन करवुं. केम के ए जानवरो वायुने प्रकुपित करनारां छे.

अध्याय ७ मो.

१ अथातो दुन्दुभिस्वनीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'दुंदुभिस्वनीय'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ धवाश्वकर्णतिनिशपलाशपिचुमर्दपाटलिपारिभद्रकाम्रोदुम्बरकरहाटकार्जुनककुभसर्जकपीतनश्लेष्मातकाङ्कोठामलकप्रग्रहकुटजशमीकपित्थाश्मन्तकार्कचिरबिल्वमहावृक्षारुष्करालुमधुकमधुशिग्रुशाकगोजीमूर्वातिल्वकेक्षुरकगोपघण्टारिमेदानां भस्मान्याहृत्य गवां मूत्रेण क्षारकल्पेन परिस्राव्य विपचेद्याद्यात्र पिप्पलीमूलतण्डुलीयकवराङ्गचोचकमञ्जिष्ठाकरञ्जिकाहस्तिपिप्पलीमरिचोत्पलसारिवाविडङ्गगृहधूमानन्तासोमसरलावाह्लीकगुहाकोशाम्रश्वेतसर्षपवरुणलवणप्लक्षनिचुलकवर्द्धमानवञ्जुलपुत्रश्रेणीसप्तपर्णदण्डकैलवालुकनागदन्त्यतिविषाभयाभद्रदारुकुष्ठहरिद्रावचाचूर्णानि लोहानां च समभागानि ततः क्षारवदागतपाकमवतार्य लोहकुम्भे निदध्यात् ॥

अनेन दुन्दुभिं लिम्पेत्पताकास्तोरणानि च ॥
श्रवणाद्दर्शनात्स्पर्शाद्विषात्सम्प्रतिमुच्यते ।
एष क्षारागदो नाम शर्करास्वश्मरीषु च
अर्शस्सु वातगुल्मेषु कासशूलोदरेषु च ।
अजीर्णे ग्रहणीदोषे भक्तद्वेषे च दारुणे ।
शोफे सर्वसरे चापि देयः श्वासे च दारुणे ।
एष सर्वविषार्त्तानां सर्वथैवोपयुज्यते ॥
तथा तक्षकमुख्यानामयं दर्पाङ्कुशोऽगदः ।

क्षारागद.

२ धावडो, राळनुं झाड, मीणोहरमो, खाखरो, लींबडो, राती पाडल, देवदार, आंबो, ऊंबरो, मींढोळ, साजड, कडायो, राल, पारसपीपळो, गुंदो, अंकोळ, आमलां, गरमाळो, इंद्रजव, खीजडी, कोठ, आसोंदरो, आकडो, चरेल करंज, थोर, भीलामुं, अरडूसो, जेठीमध, रातो सरगवो, साग, गळजीभी, (भोंपाथरी) मोरवेल, लोदर, एखरो, घुंटबोरडी अने गंधीलो खेर एओनी भस्मोने एकठी करी क्षारनी रीतिप्रमाणे गायोनां मूत्रो नाखी स्त्रवावी लईने पकाववी अने पकावतां तेमां पीपळीमूळ, तांदळजो, तज, जाडी तज, मजीठ, करंज, गजपीपळ, मरी, उपलसरी, वावडींग, घरना धूमाडानी धूंस, दूर्वा, रतांजलि, नसोतर, केसर, शालिपर्णी, जंगली आंबो, सफेद सर्षप, वायवरणां, पंचलवण, मोटी पीपर, पाणीमां थतुं नेतर, बीजोरूं, आसोपालव, उंदरकन्नी, सप्तपर्ण, अरडूसो, एलवालुक, नागदमण, अतवस, हरडे अथवा सफेद नगड, देवदार, कठ, हळदर

---

[1] दुंदुभि बजाववा वगेरेथी विषोने नष्ट करवाना प्रयोगो विषेनो.

अने वज एओनां तथा पोलाद वगेरे धातुओनां समभाग (क्षारना पाणीथी त्रीशमा भाग जेटलां) चूर्णोनो प्रतिवाप नाखवो. क्षारनी पेठे पाक आवी जाय त्यारे उतारी लई ते क्षारने लोढाना घडामां नाखवो एटले **क्षारागद** सिद्ध थाय छे. आ क्षारागदनो दुंदुभिओनी उपर, पताकाओनी उपर तथा तोरणोनी उपर लेप करवो एटले ए दुंदुभिओ वगेरेना श्रवणथी, दर्शनथी तथा स्पर्शथी प्राणीओ विषना संसर्गथी मुक्त थई जाय छे. कांकरी, पथरी, अरश, वातगुल्म, खांसी, शूळ, उदररोग, अजीर्ण, ग्रहणीदोष, दारुण अन्नद्वेष, सर्वसर सोजो अने दारुण श्वास एओनी उपर पण आ क्षारागद देवो योग्य छे. सघळा प्रकारनां विषोथी पीडाएलां प्राणीयोने माटे आ क्षारागद सर्वथा उपयोगी छे अने तक्षक आदि दिव्य नागोना गर्वने पण मरडी नाखे एवो छे.

३ विडङ्गत्रिफलादन्तीभद्रदारुहरेणवः ॥
तालीशपत्रमञ्जिष्ठाकेशरोत्पलपद्मकम् ।
दाडिमं मालतीपुष्पं रजन्यौ सारिवे स्थिरे ॥
प्रियङ्गुस्तगरं कुष्ठं बृहत्यौ चैलवालुकम् ।
सचन्दनगवाक्षीकैरेतैः सिद्धं विषापहम् ॥
सर्पिः कल्याणकं ह्येतद्ग्रहापस्मारनाशनम् ।
पाण्ड्वामयगरश्वासमन्दाग्निज्वरकासनुत् ॥
शोषिणां स्वल्पशुक्राणां वन्ध्यानां च प्रशस्यते ।

कल्याणक घृत.

३ वावडींग, त्रिफला, नेपाळो, देवदार, हरेणु, तालीसपत्र, मजीठ, बोलसरी, कमळ, पद्मकाष्ठ, दाडिम, मालतीनां पुष्प, हळदर, दारूहळदर, काळी तथा धोळी उपलसरी, शालिपर्णी, उंदरकन्नी, घउलां, तगर, कठ, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, एलवालुक, चंदन अने इंद्रवारणी एओना काथथी तथा कल्कथी घी पकाववुं एटले ते **कल्याणकघृत** केहेवाय छे. आ कल्याणकघृत सर्व विषोने, ग्रहोने, अपस्मारने, पांडुरोगने, श्वासने, अग्निनी मंदताने, ज्वरने तथा खांसीने नष्ट करे छे. शोषवाळाओने माटे, अल्प वीर्यवाळाओने माटे अने वांझणी स्त्रीओने माटे पण बहु उत्तम गणवामां आवे छे. (आज नामनुं पण जुज तफावतवाळुं घी उत्तरतंत्रना ३९ मा अध्यायमां आपवामां आवशे.)

४ अपामार्गस्य बीजानि शिरीषस्य तथैव च ॥
श्वेते द्वे काकमाचीं च गवां मूत्रेण पेषयेत् ।
सर्पिरेतैस्तु संसिद्धं विषसंशमनं परम् ॥
अमृतं नाम विख्यातमपि संजीवयेन्मृतम् ।

अमृत घृत.

४ अवेडानां बीज, सरसडीयानां बीज, सफेद गरणी, सफेद व्रज अने पीलुडी एओने गायना मूत्रमां वाटी ते कल्क नाखी चोगणा द्रवमां घी पकाववुं एटले ए घी **अमृतघृत** केहेवाय छे. आ घी विषोने अत्यंत शांत करनार छे अने मुवेलाने पण जीवाडे एवुं छे.

५ चन्दनागुरुणी कुष्ठं तगरं तिलपर्णकम् ॥
प्रपौण्डरीकं नलदं सरलं देवदारु च ।
भद्रश्रियं यवफलां भार्गीं नीलीं सुगन्धिकाम् ॥
कालेयकं पद्मकं च मधुकं नागरं जटाम् ।
पुन्नागैलैलवालूनि गैरिकं ध्यामकं बलाम् ॥
तोयं सर्जरसं मांसीं सितपुष्पां हरेणुकाम् ।
तालीशपत्रं क्षुद्रैलां प्रियङ्गुं सकुटन्नटाम् ॥
शैलपुष्पं सशैलेयं पत्रं कालानुसारिवाम् ।
कटुत्रिकं शीतशिवं काश्मर्यं कटुरोहिणीम् ॥
सोमराजीमतिविषां पृथ्विकामिन्द्रवारुणीम् ।
उशीरं वरुणं मुस्तं नखं कुस्तुम्बुरुं तथा ॥
श्वेते हरिद्रे स्थौणेयं लाक्षां च लवणानि च ।
कुमुदोत्पलपद्मानि पुष्पं चापि तथार्कजम् ॥
चम्पकाशोकसुमनस्तिलकप्रसवानि च ।
पाटलीशाल्मलीशेलुशिरीषाणां तथैव च ॥
सुरस्यास्तृणशूल्याश्च सिन्धुवारस्य यानि च ।
धवाश्वकर्णयोश्चापि पुष्पाणि तिनिशस्य च ॥

गुग्गुलुं कुङ्कुमं बिम्बीं सर्पाक्षीं गन्धनाकुलीम् ।
एतत्सम्भृत्य सम्भारं सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥
गोपित्तमधुसर्पिर्भिर्युक्तं शृङ्गे निधापयेत् ।
भग्नस्कन्धं विवृत्ताक्षं मृत्योर्दंष्ट्रान्तरं गतम् ॥
अनेनागदमुख्येन मनुष्यं पुनराहरेत् ।
एषोऽग्निकल्पं दुर्वारं क्रुद्धस्यामिततेजसः ॥
विषं नागपतेर्हन्यात्प्रसभं वासुकेरपि ।
महासुगन्धिनामायं पञ्चाशीत्यङ्गयोजितः ॥
राजाऽगदानां सर्वेषां राज्ञो हस्ते भवेत्सदा ।
तेनानुलिप्तस्तु नृपो भवेत्सर्वजनप्रियः ॥
भ्राजिष्णुतां च लभते शत्रुमध्यगतोऽपि सन् ।

महासुगंधी अगद.

९ रतांजलि, अगरू, कठ, तगर, देवदारनो गुंदर, पांडेरवो, वाळो, शरू, देवदार, सूखड, दूधेली, भारंगी, गळी, नोरवेल, दारूहळदर, पद्मकाष्ठ, जेठीमध, नागरमोथ, जटामांसी, पुन्नाग, एळची, एलवालुक, सोनागेरू, रोहिसखड, बळदाणा, काळो वाळो, राळ, मुरामांसी, गायवसुकडां, हरेणु, तालीसपत्र, नाहानी एळची, घउलां, अरडूसो, हीराकसी, पत्थरफूल, तमालपत्र, पिंडीतगर, सूंठ, मरी, पीपळ, कपूर, सीवण, कडु, बाबची, अतवस, काळीजीरी, इंद्रवारणी, पीळो वाळो, वायवरणां, मोथ, नखलां, धाणा, सफेद गरणी, सफेद वज, हळदर, दारूहळदर, भरूंठ, (थुणेर) लाख, सैंधव, बीडलूण, संचळ, पोयणां, रक्तकमळ, श्वेतकमळ, आकडानां फूल, चंपकनां फळफूल, आसोपालवनां फळफूल, जाइनां फूल, तिलकवृक्षनां फळफूल, तुलसीनां मांजर, मोगरानां फूल, शेमळानां फूल, पाडळनां फूल, गुंदानां फूल, सरडीयानां फूल, नगडनां फूल, धावडानां फूल, राळना झाडनां फूल, मीणाहरमानां फूल, गुगळ, केसर, कडवी घोली, शंखावळी अने कडवी नई ए पंचाशी द्रव्योनुं सूक्ष्म चूर्ण करावी तेने गोरोचनथी, मधथी तथा घीथी संयुक्त करी, गायना शींगडामां भरी, गायना शींगडानोज दाटो दईने एक पखवाडीयासूधी राखी मेलवुं एटले **महासुगंधी** नामनो अगद सिद्ध थाय छे. विषना संसर्गने लीधे कांध भांगी गई होय तथा आंखो फाटी गई होय अने तेथी जे माणस मृत्युनी दाढोना मध्यमां आवी गयो होय तेने पण आ अगदथी जीवाडी शकाय छे. क्रोध पामेला, मोटा प्रभाववाळा नागपति वासुकिना अग्नि जेवा दुर्वार्य विषने पण आ अगद बलात्कारथी हणी नाखे छे. आ अगद सघळा अगदोनो राजा छे. आ अगद राजाए सर्वदा हाथमां राखवो जोइए. आ अगदनुं राजाना अंगपर लेपन कर्युं होय तो ते राजा सर्व लोकोने प्यारो थाय छे अने शत्रुओना मध्यमां गयो होय तोपण तेजस्वीज रहे छे.

६ उष्णवर्ज्यो विधिः कार्यो विषार्त्तानां विजानता
मुक्त्वा कीटविषं तद्धि शीतेनाभिप्रवर्द्धते ।

कीडाना विष शिवाय बीजा विषथी पीडाएलाओने स्वेदन करवुं नहीं.

६ विचक्षण वैद्ये विषथी पीडाएलाओने माटे उष्णवगरनीज सघळी चिकित्सा करवी एटले शोधनना अंगरूपे पण स्वेदनसंस्कार कदी आपवो नहीं. परंतु कीडाओना विषथी पीडाएलाओने स्वेदनसंस्कार आपवो. केम के ते विष शीतथी वृद्धि पामे छे.

७ अन्नपानविधावुक्तमुपधार्य शुभाशुभम् ॥
शुभं देयं विषार्त्तेभ्यो विरुद्धेभ्यश्च वारयेत् ।

विषथी पीडाएलाओने हितकारी अन्नपानो देवां अने विरुद्ध अन्नपानोथी अटकाववां.

७ वैद्ये सूत्रस्थानना अन्नपानविधि नामना ४६ मा अध्यायप्रमाणे शुभाशुभ अन्नपानोनो निर्णय करीने जे हितकारी जणाय तेज अन्नपान

विषथी पीडाएलां माणसोने देवुं अने ते माणसोने अहित अन्नपानोथी अटकाववां.

८ फाणितं शिग्रुसौवीरमजीर्णाध्यशनं तथा ॥
वर्जयेच्च समासेन नवधान्यादिकं गणम् ।
दिवास्वप्नं व्यवायं च व्यायामं क्रोधमातपम् ॥
सुरातिलकुलत्थांश्च वर्जयेद्धि विषातुरः ।

विषथी पीडाएलाओए पाळवानी परेजी.

८ राब, सरगवो, सौवीरक, अजीर्ण, अधिक भोजन, नवां धान्य वगेरे गण, दिवसनी निद्रा, मैथुन, कसरत आदि परिश्रम, क्रोध, तडको, मदिरा, तिल अने कळथी एओनो विषथी पीडाएला माणसे त्याग करवो एटली संक्षिप्त परेजी छे. (केटलांएक औषधोमां सरगवानो तथा तिलनो प्रयोग आवेलो छे तेनो आथी बाध समजवो नहीं.)

९ प्रसन्नदोषं प्रकृतिस्थधातु-
मन्नाभिकाङ्क्षं सममूत्रजिह्वम् ॥
प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टम्
वैद्योऽवगच्छेदविषं मनुष्यम् ॥

माणसने विषथी रहित थएलो क्यारे जाणवो?

९ ज्यारे सघळा दोषो प्रकृतिस्थ थाय, सघळा धातुओ प्रकृतिस्थ थाय, अन्न जमवानी इच्छा थाय, मूत्र समस्थितिमां आवे, जीभ सारी पेठे रसना ज्ञानवाळी थाय अने वर्ण, इंद्रियोनी चेष्टा तथा चित्तनी चेष्टा सुप्रसन्न थाय त्यारे वैद्ये माणसने विषथी रहित थएलो जाणवो.

अध्याय ८ मो.

१ अथातः कीटकल्पं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कीटकल्प'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सर्पाणां शुक्रविण्मूत्रशवपूत्यण्डसम्भवाः ।
वाय्वग्न्यम्बुप्रकृतयः कीटास्तु विविधाः स्मृताः
सर्वदोषप्रकृतिभिर्युक्ताश्च परिणामतः ।
कीटत्वेऽपि सुघोरास्ते सर्व एव चतुर्विधाः ॥

सर्पोनां वीर्यादिकथी उत्पन्न थएला कीडाओनी चार प्रकृतिओ.

२ दर्वीकरोनां वीर्य, विष्टा, मूत्र, शबनो सडो के इंडां एओथी उत्पन्न थएला कीडाओ वायुप्रकृतिवाळा होय छे. मंडलिओनां वीर्य, विष्टा, मूत्र, शबनो सडो के इंडां एओथी उत्पन्न थएला कीडाओ पित्तप्रकृतिवाळा होय छे. राजिमानोनां वीर्य, विष्टा, मूत्र, शबनो सडो के इंडां एओथी उत्पन्न थएला कीडाओ कफप्रकृतिवाळा होय छे. वैकरंजोनां वीर्य, विष्टा, मूत्र, शबनो सडो के इंडां एओथी उत्पन्न थएला कीडाओ पोतामां त्रणे जातना सर्पोना स्वभावोनुं मिश्रण होवाने लीधे त्रिदोषप्रकृतिवाळा होय छे. एओ जाते कीडाओ छतां पण बीजा कीडाओथी वधारे भयंकर होय छे. आ रीते वायुप्रकृतिवाळा, पित्तप्रकृतिवाळा, कफप्रकृतिवाळा अने त्रिदोषप्रकृतिवाळा ए चार भेदोमां सघळा सर्पजन्य कीडाओनो समावेश थायछे. (अहिंथी आ स्थानना ३ जा अध्यायनो ३ जो विषय वांचीने चालो.)

३ कुम्भीनसस्तुण्डिकेरी शृङ्गी शतकुलीरकः ।
उच्चिटिङ्गोऽग्निनामा च चिच्चिटिङ्गो मयूरिका ॥
आवर्तकस्तथोरभ्रः सारिकामुखवैदलौ ।
शरावकुद्दाऽभीराजी परुषश्चित्रशीर्षकः ॥
शतबाहुश्च यश्चापि रक्तराजिः प्रकीर्तितः ।
अष्टादशेति वायव्याः कीटाः पवनकोपनाः ॥
तैर्भवन्तीह दष्टानां रोगा वातनिमित्तजाः ।

---

[1] १ कीडाओनां संख्या वगेरेना निरूपण विषे तथा कीडाओनां विषोनी चिकित्साओ विषेनो.

वायुप्रकृतिवाळा कीडाओनी अढार जातोनां नामो अने तेओना दंशोथी थता रोगो.

३ कुंभीनस, तुंडिकेरी, शृंगी, शतकुलीरक, उच्चिटिंग, अग्निनामा, चिच्चिटिंग, मयूरिका, आवर्त्तक, उरभ्र, सारिकामुख, वैदल, शरावकूर्द, अभीराजी, परुष, चित्रशीर्षक, शतबाहु अने रक्तराजि ए अढार जातना कीडाओ वायुप्रकृतिवाळा होवाने लीधे वायुने प्रकुपित करनारा छे. ए कीडाओए दंशेलां प्राणीओने वायुसंबंधी रोगो थायछे.

४ कौण्डिल्यकः कणभको वरटी पत्रवृश्चिकः॥
विनासिका ब्राह्मणिका बिन्दुलो भ्रमरस्तथा ।
वाह्यकी पिच्चिटः कुम्भी वर्चः कीटोऽरिमेदकः॥
पद्मकीटो दुन्दुभिको मकरः शतपादकः ।
पञ्चालकः पाकमत्स्यः कृष्णतुण्डोऽथ गर्दभी ॥
क्लीतः कृमिशरारिश्च यश्चाप्युत्क्लेशकः स्मृतः ।
एते ह्यग्निप्रकृतयश्चतुर्विंशाः प्रकीर्त्तिताः ॥
तैर्भवन्तीह दष्टानां रोगाः पित्तनिमित्तजाः ।

पित्तप्रकृतिवाळा कीडाओनी चोवीश जातोनां नामो अने तेओना दंशोथी थता रोगो.

४ कौंडिल्यक, कणभक, वरटी, पत्रवृश्चिक, विनासिका, ब्राह्मणिका, बिंदुल, भ्रमर, वाह्यकी, पिच्चिट, कुंभी, वर्चःकीट, अरिमेदक, पद्मकीट, दुंदुभिक, मकर, शतपादक, पंचालक, पाकमत्स्य, कृष्णतुंड, गर्दभी, क्लीत, कृमिशरारि अने उत्क्लेशक ए चोवीश जातना कीडाओ पित्तप्रकृतिवाळा होवाने लीधे पित्तने प्रकुपित करनारा छे. ए कीडाओए दंशेलां प्राणिओने पित्तसंबंधी रोगो थायछे.

५ विश्वम्भरः पञ्चशुक्लः पञ्चकृष्णोऽथ कोकिलः
सैरेयकः प्रचलाको बलभः किटिभस्तथा ।
सूचीमुखा कृष्णगोधा यश्च काषायवासिकः ॥
कीटगर्दभकश्चैव तथा त्रोटक एव च ।
त्रयोदशैते सौम्याः स्युः कीटाः श्लेष्मप्रकोपणाः
तैर्भवन्तीह दष्टानां रोगाः कफनिमित्तजाः ॥

कफप्रकृतिवाळा कीडाओनी तेर जातोनां नामो अने तेओना दंशोथी थता रोगो.

५ विश्वंभर, पंचशुक्ल, पंचकृष्ण, कोकिल, सैरेयक, प्रचलाक, बलभ, किटिभ, सूचीमुखा, कृष्णगोधा, काषायवासिक, कीटगर्दभक अने त्रोटक ए तेर जातना कीडाओ कफप्रकृतिवाळा होवाने लीधे कफने प्रकुपित करनारा छे. ए कीडाओए दंशेलां प्राणीओने कफसंबंधी रोगो थायछे.

६ तुङ्गीनासो विचिलकस्तालको वाहकस्तथा ।
कोष्ठागारी क्रिमिकरो यश्च मण्डलपुच्छकः ॥
तुङ्गनाभः सर्षपिकोऽवल्गुली शम्बुकस्तथा ।
अग्निकीटश्च घोराः स्युर्द्वादश प्राणनाशनाः ॥
तैर्भवन्तीह दष्टानां वेगज्ञानानि सर्पवत् ।
तास्ताश्च वेदनास्तीव्रा रोगा वै सान्निपातिकाः॥
क्षाराग्निदग्धवद्दंशो रक्तपीतसितारुणः ।

त्रिदोषप्रकृतिवाळा कीडाओनी बार जातोनां नामो अने तेओना दंशोथी थता रोगो.

६ तुंगीनास, विचिलक, तालक, वाहक, कोष्ठागारी, (चमरी?) क्रिमिकर, मंडलपुच्छक, तुंगनाभ, सर्षपिक, अवल्गुली, शंबुक अने अग्निकीट ए बार जातना कीडाओ त्रिदोषप्रकृतिवाळा होवाने लीधे अतिभयंकर छे अने प्राणोने नष्ट करनारा छे. ए कीडाओए दंशेलां प्राणीओने सर्पना विषना जेवा वेगो जणाय छे, अनेक प्रकारनी तीव्र वेदनाओ थाय छे अने त्रणे दोषोसंबंधी रोगो थाय छे. ए कीडाओनो दंश क्षारथी के अग्निथी थएला दग्धना जेवी आकृतिवाळो अने राता, पीळा, सफेद तथा अरुणवर्णवाळो होय छे.

७ ज्वराङ्गमर्दरोमाञ्चवेदनाभिः समन्वितः ॥
छर्द्यतीसारतृष्णाश्च दाहो मोहो विजृम्भिका ॥

वेपथुश्वासहिक्काश्च तथा शीतं च दारुणम् ॥
पिडकोपचयः शोफो ग्रन्थयो मण्डलानि च ।
दद्रवः कर्णिकाश्चैव विसर्पाः किटिभानि च ॥
तैर्भवन्तीह दष्टानां यथास्वं चाप्युपद्रवाः ।
योगैर्नानाविधैरेषां चूर्णानि गरमादिशेत् ॥
दूषीविषप्रकोपाच्च तथैव विषलेपनात् ।
लिङ्गं तीक्ष्णविषेष्वेतच्छृणु मन्दविषेष्वतः ॥

कीडाओमां तीक्ष्णविषवाळा कीडाओना दंशादिकनां विशिष्ट लक्षणो.

७ जे कीडाओ तीक्ष्णविषोवाळा छे तेओनां दंशादिकथी ज्वर आवे छे, अंगो भांगे छे, रुवाडां ऊभां थायछे, वेदनाओ थायछे, उलटी थायछे, अतीसार थायछे, तरश लाग्या करेछे, दाह थायछे, मोह थायछे, बगासां आवेछे, कंप थायछे, श्वास थायछे, हेडकी थायछे, दारुण शीत पण थायछे, फोडलीओ घणी थायछे, सोजो थायछे, ग्रंथिओ थायछे, मंडलो थायछे, दादरो थायछे, डोडीओ थायछे, विसर्पो थायछे, कीटीओ थायछे अने ते ते दोषप्रमाणे बीजा उपद्रवो पण थायछे. मरण पामेला ए कीडाओनां चूर्णो पण अनेक प्रकारना योगोथी विषोरूप थायछे. ते विषो खावामां आववाथी दूषीविषना प्रकोपनां जेवां लक्षणो थायछे (आ स्थानना बीजा अध्यायनो ११ मो विषय जुवो.) अने अंगपर लेपायाथी लेपनमां आवेला विषना जेवां लक्षणो थाय छे. (आ स्थानना पेहेला अध्यायनो १९ मो तथा २२ मो विषय वांचो.) तीक्ष्ण विषवाळाओना दंशादिकनां आ लक्षणो कह्यां. हवे मंद विषवाळाओनां दंशादिकनां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो.

८ प्रसेकोऽरोचकश्छर्दिः शिरोगौरवशीतते ।
पिडकाकोठकण्डूनां जन्म दोषविभागतः ॥
योगैर्नानाविधैरेषां चूर्णानि गरमादिशेत् ।
दूषीविषप्रकोपाच्च तथैवाप्यनुलेपनात् ॥

कीडाओमां मंदविषवाळा कीडाओना दंशादिकनां विशिष्ट लक्षणो.

८ कीडाओमां मंदविषवाळा कीडाओना दंशादिकथी कफनो स्राव थायछे, अरोचक थायछे, उलटी थायछे, माथामां भारेपणुं थायछे, शीतपणुं थायछे, फोडलीओ थायछे, ध्रामठां थाय छे अने खरज आवे छे. आ लक्षणो कीडाओना वातादिक दोषोना विभागप्रमाणे थाय छे. मरण पामेला ए कीडाओनां चूर्णो पण अनेक प्रकारना योगोथी विषोरूप थायछे. ते विषो खावामां आववाथी दूषी विषना प्रकोपना जेवां लक्षणो थायछे (आ स्थानना बीजा अध्यायनो ११ मो विषय जुवो.) अने अंगपर लेपायाथी लेपनमां आवेला विषना जेवां लक्षणो थाय छे. (आ स्थानना पेहेला अध्यायनो १९ मो तथा २२ मो विषय जुवो.)

९ एकजातीनतस्तूर्ध्वं कीटान्वक्ष्यामि भेदतः ।
सामान्यतो दष्टलिङ्गैः साध्यासाध्यक्रमेण च ॥

उपर लखेला ६७ जातना कीडाओथी जूदी जातना कीडाओना भेदो, चिह्नो, तथा साध्यासाध्यपणुं केहेवानी प्रतिज्ञा.

९ हवे उपर कहेला ६७ कीडाओथी जूदी जातना कीडाओना भेदो, दंशादिकनां चिह्नो, तथा साध्यासाध्यपणुं सामान्य रीतिथी कहीश.

१० त्रिकण्टकः कुणी चापि हस्तिकक्षोऽपराजितः
चत्वार एते कणभा व्याख्यातास्तीव्रवेदनाः ॥
तैर्दष्टस्य श्वयथुरङ्गमर्दो गुरुता गात्राणां दंशः कृष्णश्च भवति ॥

कणभ जातना ४ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१० त्रिकंटक, कुणी, हस्तिकक्ष अने अपराजित ए चार कणभ जातना कीडाओ केहेवाय

छे. ए कीडाओ तीव्र वेदना करनारा छे. जे प्राणीने एओमांना कोई कीडानो दंश थाय तेने सोजो थायछे, अंगो भांगे छे, गात्रोनुं भारेपणुं थाय छे अने दंश काळो थायछे.

११ प्रतिसूर्यः पिङ्गभासो बहुवर्णो महाशिराः। तथा निरुपमश्चापि पञ्च गौधेरकाः स्मृताः ॥ तैर्भवन्तीह दष्टानां वेगज्ञानानि सर्पवत् । रुजश्च विविधाकारा ग्रन्थयश्च सुदारुणाः ॥

गौधेरक जातना ५ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

११ प्रतिसूर्य, पिंगभास, बहुवर्ण, महाशिरा अने निरुपम ए पांच गौधेरक जातना कीडाओ केहेवाय छे. जे प्राणीने एओमांना कोई कीडानो दंश थाय तेने विषना वेगो सर्पना विषना वेगो जेवाज थायछे, अनेक प्रकारनी वेदनाओ थायछे अने अतिदारुण ग्रंथिओ थायछे. (वाग्भट केहे छे के 'गौधेरक चार पगवाळो थाय छे, घोमांथी उत्पन्न थाय छे अने दर्वीकरना जेवाज विषवाळो होय छे' आ सघळी काचंडानी जातो जणाय छे.)

१२ गलगोल्यस्तु श्वेता कृष्णा रक्तराजी रक्तमण्डला सर्वश्वेता सर्षपिकेत्येवं षट् । ताभिर्दष्टे सर्षपिकावर्ज्जं दाहशोफक्लेदा भवन्ति । सर्षपिकया हृदयपीडातिसारश्च ॥

गलगोली जातना ६ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१२ श्वेता, कृष्णा, रक्तराजी, रक्तमंडला, सर्वश्वेता अने सर्षपिका ए छ गलगोली जातना कीडाओ केहेवाय छे. जे माणसने श्वेताआदि पांचमांना कोई कीडानो दंश थाय तेने दाह, सोजो तथा क्लेद थायछे अने जेने सर्षपिकानो दंश थाय तेने हृदयमां पीडा थायछे तथा अतीसार थायछे.

१३ शतपद्यस्तु परुषा कृष्णा चित्रा कपिलिका पीतिका रक्ता श्वेता अग्निप्रभा इत्यष्टौ । ताभिर्दष्टे शोफो वेदना दाहश्च हृदये । श्वेताग्निप्रभाभ्यामेतदेव दाहो मूर्छा चातिमात्रं श्वेतपिडकोत्पत्तिश्च ॥

शतपदी (कानखजूरा) जातना ८ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१३ परुषा, कृष्णा, चित्रा, कपिलिका, पीतिका, रक्ता, श्वेता अने अग्निप्रभा ए आठ शतपदी जातना कीडाओ केहेवाय छे. जे माणसने परुषा, कृष्णा, चित्रा, कपिलिका, पीतिका के रक्ता एओनो दंश थाय तेने सोजो थायछे, वेदना थायछे अने हृदयमां दाह थायछे. जे माणसने श्वेता के अग्निप्रभा एओनो दंश थयो होय तेने ए लक्षणो उपरांत अत्यंत दाह तथा मूर्छा थायछे अने सफेद फोडलीओनी उत्पत्ति थाय छे.

१४ मण्डूकाः कृष्णः सारः कुहको हरितो रक्तो यववर्णाभो भ्रकुटी कोटिकश्चेत्यष्टौ । तैर्दष्टस्य दंशकण्डूर्भवति पीतफेनागमश्च वक्रात् । भ्रकुटीकोटिकाभ्यामेतदेव दाहश्छर्दिर्मूर्छा चातिमात्रम् ॥

मंडूक (देडका) जातना ८ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१४ कृष्ण, सार, कुहक, हरित, रक्त, यववर्णाभ, भ्रकुटी अने कोटिक ए आठ मंडूक जातना कीडाओ केहेवाय छे. जे माणसने कृष्ण, सार, कुहक, हरित, रक्त के यववर्णाभ एओनो दंश थाय तेने जखममां खरज आवे छे अने मोहोडामां पीळुं फीण आवे छे. जेने भ्रकुटीनो के कोटिकनो दंश थाय तेने ए लक्षणो उपरांत अत्यंत दाह, अत्यंत उलटी अने अत्यंत मूर्छा थायछे.

१५ विश्वम्भराभिर्दष्टे दंशः सर्षपाकाराभिः पिडकाभिश्चीयते शीतज्वरार्त्तश्च पुरुषो भवति । अहिण्डुकाभिर्दष्टे तोददाहकण्डूश्वयथवो मोहश्च । कण्डूमकाभिर्दष्टे पीताङ्गश्छर्द्यतीसारज्व-

रादिभिरभिहन्यते । शूकवृन्ताभिर्दष्टे कण्डू-कोठाः प्रवर्द्धन्ते शूकं चात्र लक्ष्यते ॥

विश्वंभरा जातना ४ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१५ विश्वंभरा, अहिंडुका, कंडूमका अने शूकवृंता ए चार विश्वंभरा जातना कीडाओ केहेवाय छे. जे माणसने **विश्वंभरानो** दंश थाय तेने ए दंश सर्षपोना जेवा आकारोवाळी फोडलीओथी व्याप्त थायछे अने शीतज्वरनी पीडा थायछे. जे माणसने **अहिंडुकानो** दंश थाय तेने भोकाया जेवी व्यथा, दाह, खरज, सोजो तथा मोह थायछे. जेने **कंडूमकानो** दंश थाय तेनुं अंग पीळुं थई जाय छे, उलटी थाय छे, अतीसार थायछे अने ज्वरादिक पण प्राप्त थायछे. जेने **शूकवृंतानो** दंश थाय तेने खरज तथा धामठां वृद्धि पामे छे अने दंशमां झीणो कांटो जोवामां आवे छे.

१६ पिपीलिकाः स्थूलशीर्षा संवाहिका ब्राह्मणिकाङ्गुलिका कपिलिका चित्रवर्णेति षट् । ताभिर्दष्टे दंशे श्वयथुरग्निस्पर्शवद्दाहशोफौ भवतः ॥

पिपीलिका (मंकोडा तथा कीडीयो) जातना ६ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१६ स्थूलशीर्षा, संवाहिका, ब्राह्मणिका, अंगुलिका, कपिलिका अने चित्रवर्णा ए छ पिपीलिका जातना कीडाओ केहेवाय छे. एओनो दंश थाय तो दंशमां सोजो थायछे अने अग्निना स्पर्शनी पेठे दाह तथा शोफ थायछे.

१७ मक्षिकाः कान्तारिका कृष्णा पिङ्गलिका मधूलिका काषायी स्थालिकेत्येवं षट् । ताभिर्दष्टस्य दाहशोफौ भवतः । स्थालिकाकाषायीभ्यामेतदेव पिडकाश्च सोपद्रवा भवन्ति ॥

मक्षिका (मांखी) जातना ६ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१७ कांतारिका, कृष्णा, पिंगलिका, मधूलिका, काषायी अने स्थालिका ए छ मक्षिका जातना कीडाओ केहेवाय छे. एओनो दंश थाय तो दाह तथा सोजो थायछे अने एओमांनी स्थालिका तथा कषायी एओना दंशथी तो दाह तथा सोजा उपरांत उपद्रवोवाळी फोडलीओ पण थायछे.

१८ मशकाः सामुद्रः परिमण्डलो हस्तिमशकः कृष्णः पार्वतीय इति पञ्च । तैर्दष्टस्य तीव्रकण्डूर्दंशशोफश्च । पार्वतीयस्तु कीटैः प्राणहरैस्तुल्यलक्षणः ॥

मशक (मच्छर) जातना ५ कीडाओ तथा तेओना दंशनां लक्षणो.

१८ सामुद्र, परिमंडल, हस्तिमशक, कृष्ण अने पार्वतीय ए पांच मशक जातना कीडाओ छे. एओमां पेहेला चारमांथी कोईनो दंश थाय तो तीव्र खरज आवे छे तथा दंशमां सोजो थाय छे. पार्वतीय नामना मशकना दंशथी तो प्राण हरनारा कीडाओना दंशोना जेवांज लक्षणो थाय छे. (आ अध्यायनो छठ्ठो विषय जुवो.)

१९ नखावकृष्टेऽत्यर्थं पिडकाः सदाहपाका भवन्ति ॥

कीडाओना नखोथी जखम थयो होय तो तेनां लक्षणो.

१९ ए विषवाळा कीडाओना नखोथी जखम थएल होय तो दाह तथा पाकवाळी फोडलीओ थाय छे.

२० जलौकसां दष्टलक्षणमुक्तं चिकित्सितं च ॥

जळो नामना कीडाओ विषे सघळुं केहेवाई गयुं छे.

२० जळो नामना कीडाओमां जेटला झेरी

छे तेओना दंशोनां लक्षणो तथा ते दंशोनी चिकित्सा ए सघळुं सूत्रस्थानना 'जलौकावचारणीय' नामना १३ मा अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां केहेवाई गयुं छे तेथी अहीं फरीवार केहेवानी जरूर नथी.

२१ भवन्ति चात्र ॥

गौधेरकः स्थालिका च ये च श्वेताग्निसंप्रभे ।
भ्रकुटी कोटिकश्चैव न सिध्यन्त्येकजातिषु ॥

उपर लखेला बावन कीडाओमां बार असाध्य छे.

२१ आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "कणभथी मांडीने मशक सूधीना उपर कहेला बावन जातना कीडाओमां पांच गौधेरक, स्थालिका, काषायी, श्वेता, अग्निप्रभा, भ्रकुटी, कोटिक अने सर्षपिका ए बार कीडाओ असाध्य छे." (पार्वतीय मशक पण असाध्य गणावो जोइए.)

२२ शवमूत्रपुरीषैस्तु सविषैरवमर्पणात् ।
स्युः कण्डूदाहकोठारुःपिडकातोदवेदनाः ॥
प्रक्लेदवांस्तथास्रावो भृशं सम्पाचयेत्त्वचम् ।
दिग्धविद्धक्रियास्तत्र यथावदवचारयेत् ॥

विषवाळा कीडाओनां शबादिकना स्पर्शथी थता रोगो अने तेओनी चिकित्सा.

२२ विषवाळा कीडाओनां शबोनो, मूत्रोनो के विष्ठाओनो स्पर्श थाय तो तेथी खरज, बळतरा, ध्रामठां, व्रणो, फोडलीओ, सोईओवते भोंकाया जेवी व्यथा तथा बीजा प्रकारनी वेदनाओ पण थायछे अने क्लेदवाळो स्राव थायछे. स्रावथी चामडी पण पाकी जाय छे.

आ प्रमाणे थएल होय तो विषथी खरडाएला शस्त्रथी वींधाएलाने माटे जे चिकित्साओ कही छे ते सघळी यथायोग्य रीते करवी. (आ स्थानना पांचमा अध्यायनो २४ मो विषय जुवो.)

२३ नावसन्नं न चोत्सन्नमतिसंरम्भवेदनम् ।
दंशादौ विपरीतार्त्ति कीटदष्टं सुबाधकम् ॥

केवा प्रकारनो झेरी कीडाओनो दंश कष्टसाध्य छे?

२३ झेरी कीडाओनो जे दंश अत्यंत भेदाएलो न होय, अत्यंत ऊंचो न होय, अत्यंत सोजावाळो होय, अत्यंत वेदनावाळो होय अने शरूआतमां विपरीत पीडावाळो होय तेने कष्टसाध्य समजवो.

२४ कीटैर्दष्टानुग्रविषैः सर्पवत्समुपाचरेत् ।
त्रिविधानां तु सर्पाणां त्रैविध्येन क्रिया हिता ॥

तीक्ष्ण विषवाळा कीडाओनी चिकित्सा.

२४ जेओने उग्र विषवाळा कीडाओनो दंश थयो होय तेओनी सर्पोना वेगोमां कहेली क्रियाओथी चिकित्सा करवी. (आ स्थानना पांचमा अध्यायनो १२ मो, १३ मो तथा १४ मो विषय जुवो.) दर्वीकरोथी उत्पन्न थएला कीडाओ वातप्रधान होय छे एटला माटे तेओना दंशो उपर खोळनुं लेपन, तैलनो अभ्यंग अने नाडीस्वेद इत्यादि वातसंबंधी चिकित्सा करवी ए हितकारी छे. मंडलीओथी उत्पन्न थएला कीडाओ पित्तप्रधान होय छे एटला माटे तेओना दंशो उपर अत्यंत शीतल सेचन अने अत्यंत शीतल प्रलेप आदि पित्तसंबंधी चिकित्सा करवी ए हितकारी छे. राजिमानोथी उत्पन्न थएला कीडाओ कफप्रधान होय छे एटला माटे तेओना दंशो उपर छेदन, स्वेदन तथा वमनरूप कफसंबंधी चिकित्सा करवी ए हितकारी छे.

२५ स्वेदमालेपनं सेकं चोष्णमत्रावचारयेत् ।
अन्यत्र मूर्छितादंशात्पाककोथप्रपीडितात् ॥
विषघ्नं च विधिं सर्वं कुर्यात्संशोधनानि च ॥
शिरीषः कटुकं कुष्ठं वचा रजनिसैन्धवे ।
क्षीरमज्जवसासर्पिः शुण्ठीपिप्पलिदारु च ॥
उत्कारिका स्थिरादौ वा सुकृता स्वेदने हिता ॥

विषवाळा कीडाओना दंशो उपर सामान्य चिकित्सा.

२५ विषवाळा कीडाओना दंशो उपर स्वेदनो, आलेपनो अने सेचनो करवां ते घणुं करीने सेहेवाई शके तेवां ऊनां करवां. परंतु आतुर मूर्छित थई गयो होय अथवा दंश पाकवाथी के के सडाथी प्रपीडित थयो होय तो लेपनादिक थंडांज करवां. विष जे दोषवाळुं होय ते दोषने हरनारां द्रव्योथी योजेलो पान, नस्य, अभ्यंग, लेपन तथा परिषेक वगेरे सघळो विषहर विधि करवो अने वमन, विरेचन तथा आस्थापन एओ पण तेवाज प्रकारनां करवां. सरसडीयो, कड्डु, कठ, वज, हैळदर, सैंधव, सूंठ, पीपळ अने देवदार एओनी अथवा विदारिगंधादि गणनी दूध, मज्जा, चरबी तथा घी एओमां मारी रातनी लाफसी बनावीने ते लाफसीथी स्वेदन करवुं ए हितकारी छे.

२६न स्वेदयेत्तथा दंशं धूमं वक्ष्यामि वृश्चिके ॥
अगदानेकजातीषु प्रवक्ष्यामि पृथक्पृथक् ।

अमुक वीछीना दंशमां स्वेदन नहीं देतां धूमाडी देवी.

२६ उग्र के मध्यम विषवाळा वींछीनो दंश थयो होय तो स्वेदन नहीं देतां आ अध्यायना ३९ मा विषयमां मोरपींछ वगेरेनी जे धूमाडी केहेवामां आवशे ते देवी. हवे कणभआदि अन्य जातना कीडाओना दंशोने माटे जूदी जूदी विशिष्ट चिकित्साओ कहुं छुं.

२७ कुष्ठं चक्रं वचा बिल्वमूलं पाठा सुवर्चिका।
गृहधूमो हरिद्रे द्वे त्रिकण्टकविषे हिताः ।

कणभ जातना त्रिकंटक कीडाना विषनी विशिष्ट चिकित्सा.

२७ कठ, तगर, वज, बीलीनुं मूळ, काळीपाड, साजीखार, घरना धूमाडानी धूंस, हळदर अने दारूहळदर एओथी बनावेलो योग त्रिकंटकना विषने नष्ट करे छे. (आ चिकित्सा सघळा कणभोने लागू पडे छे.)

२८ अगारधूमरजनीचक्रं कुष्ठं पलाशजम् ॥
गलगोलिकदष्टानामगदो विषनाशनः ।

गलगोलीओना विषनी विशिष्ट चिकित्सा.

२८ घरना धूमाडानी धूंस, हळदर, तगर, कठ अने खाखरानुं बीज एओथी बनावेलो योग गलगोलिओना दंशोना विषने नष्ट करे छे.

२९ कुङ्कुमं तगरं शिग्रु पद्मकं रजनीद्वयम् ॥
अगदो जलपिष्टोऽयं शतपद्विषनाशनः ।

शतपदीओ(कानखजूराओ)ना विषनी विशिष्ट चिकित्सा.

२९ केसर, तगर, सरगवो, पद्मकाष्ठ, हळदर अने दारूहळदर एओने जळमां वाटीने बनावेलो योग शतपदीओना विषने नष्ट करे छे.

३० मेषशृङ्गी वचा पाठा निचुलो रोहिणी जलम् ॥
सर्वमण्डूकदष्टानामगदो विषनाशनः ।

मंडूको(देडका)ना विषनी विशिष्ट चिकित्सा.

३० मेंढाशींगी, वज, काळीपाड, जळमां थएलुं नेतर, कड्डु अने वाळो एओथी बनावेलो योग सघळा मंडूकोना दंशोना विषने नष्ट करे छे.

३१ वचाश्वगन्धातिबलाबलाःसातिगुहागुहाः॥
विश्वम्भराभिदष्टानामगदो विषनाशनः ।
शिरीषस्तगरं कुष्ठं हरिद्रेऽशुमती सहे ॥
अहिण्डुकाभिदष्टानामगदो विषनाशनः ॥
कण्डूमकाभिदष्टानां रात्रौ शीताः क्रिया हिताः।
दिवा तेनैव सिध्यन्ति सूर्यरश्मिबलार्दिताः ॥
चक्रं कुष्ठमपामार्गः शूकवृन्ताविषेऽगदः ।
भृङ्गस्वरसपिष्टा वा कृष्णवल्मीकमृत्तिका ॥

विश्वंभराओना विषनी विशिष्ट चिकित्सा.

३१ वज, आसोंद, खपाट, बळदाणा, शालिपर्णी अने पृश्निपर्णी एओथी बनावेलो योग **विश्वंभराओना** विषने नष्ट करे छे.

सरसडीयो, तगर, कठ, हळदर, दारूहळदर, शालिपर्णी, जंगली अडद अने जंगली मग एओथी बनावेलो योग **अहिंडुकाओना** विषने नष्ट करे छे.

कंडूमकाओना दंशो उपर राते शीतल क्रियाओ करवी ए हितकारी थाय छे. जो दिवसे शीतल क्रियाओ करवामां आवे तो सूर्यनी किरणोना बळने लीधे सिद्ध थती नथी.

तगर, कठ अने अघेडो एओथी बनावेलो योग अथवा भांगराना स्वरसमां वाटेली राफडानी काळी माटी **शूकवृंताना** विषने नष्ट करे छे.

३२ पिपीलिकाभिर्दष्टानां मक्षिकामशकैस्तथा। गोमूत्रेण युतो लेपः कृष्णवल्मीकमृत्तिका ॥

पिपीलिका, मक्षिका अने मशक एओना विषनी विशिष्ट चिकित्सा.

३२ **पिपीलिका,** (कीडी तथा मंकोडा) **मांखीओ** अने **मच्छरो** एओना दंशो उपर गोमूत्रमां वाटेली राफडानी काळी माटीनो लेप करवो ए हितकारी छे.

३३ प्रतिसूर्यकदष्टानां सर्पदष्टवदाचरेत्।

प्रतिसूर्यकना विषनी चिकित्सा.

३३ **प्रतिसूर्यक**(काचंडा) नो दंश थयो होय तो तेनी सर्पदंशना जेवी चिकित्सा करवी. (जो के पांचे गौधेरको असाध्य छे तो पण तेओमांना प्रतिसूर्यकने यदृच्छासाध्य गणीने तेनी अहीं चिकित्सा कही छे.)

३४ त्रिविधा वृश्चिकाः प्रोक्ता मन्दमध्यमहाविषाः। गोशकृत्कोथजा मन्दा मध्याः काष्ठेष्टिकोद्भवाः। सर्पकोथोद्भवास्तीक्ष्णा ये चान्ये विषसम्भवाः॥ मन्दा द्वादश मध्यास्तु त्रयः पञ्चदशोत्तमाः। दशविंशतिरित्येते सङ्ख्यया परिकीर्तिताः॥

वींछीओना त्रण भेद अने ते भेदोना पेटानी संख्या.

३४ मंद विषवाळा, मध्य विषवाळा अने उग्र विषवाळा ए रीते वींछीओना मुख्य त्रण भेदो छे. गाय बळद वगेरेना छाणना तथा मूत्रना सडामांथी उत्पन्न थएला वींछीओ मंदविषवाळा छे, लाकडामांथी के इंटोमांथी उत्पन्न थएला वींछीओ मध्य विषवाळा छे अने सर्पोना सडाओमांथी उत्पन्न थएला वींछीओ उग्र विषवाळा छे. विषथी मरेलां के मारेलां प्राणीओमांथी उत्पन्न थएला वींछीओ पण उग्र विषवाळा होय छे. मंद विषवाळा वींछीओ बार जातना छे, मध्य विषवाळा वींछीओ त्रण जातना छे अने उग्र विषवाळा वींछीओ पंदर जातना छे एटले वींछीनी कुल जातिओ ३० छे.

३५ कृष्णः श्यावः कर्बुरः पाण्डुवर्णो
गोमूत्राभः कर्कशो मेचकश्च।
श्वेतो रक्तो रोमशः शाद्वलाभो-
ऽरक्तश्चैते मन्दवीर्या मतास्तु ॥
एभिर्दष्टे वेदना वेपथुश्च
गात्रस्तम्भः कृष्णरक्तागमश्च।
शाखादष्टे वेदना चोर्ध्वमेति
दाहस्वेदौ दंशशोफो ज्वरश्च॥

मंद विषवाळा वींछीओनी बार जातो अने तेओना दंशोनां लक्षणो.

३५ मंदविषवाळा वींछीओनी कृष्ण, (काळो) श्याव, (जरा काळो) कर्बुर, (काबरो) पांडुवर्ण, (पांडुवर्णवाळो) गोमूत्राभ, (गोमूत्रना जेवी प्रभावाळो) कर्कश, (खरसट) मेचक, (आशमानी वर्णवाळो) श्वेत, (सफेद) रक्त, (रातो) रोमश, (रुंछाडवाळो) शाद्वलाभ, (लीला खडना जेवी

प्रभावाळो) अने अरक्त (थोडी रताशवाळो) ए रीते बार जातो छे.

एओमांना कोईनो दंश थयो होय तो वेदना थाय छे, कंप थाय छे, गात्रोनुं स्तब्धपणुं थाय छे अने काळुं लोही नीकळे छे. हाथमां के पगमां दंश थयो होय तो वेदना ऊंचे चडे छे, बळतरा थाय छे, पसीनो वळे छे, दंशमां सोजो थाय छे अने ज्वर आवे छे.

३६ रक्तः पीतः कापिलश्चोदरेण
सर्वे धूम्राः पर्वभिश्च त्रिभिः स्युः ।
एते मूत्रोच्चारपूत्यण्डजाता
मध्या ज्ञेयास्त्रिप्रकारोरगाणाम् ॥
यस्यैतेषामन्वयाद्यः प्रसूतो
दोषोत्पत्तिं तत्सरूपां च कुर्यात् ।
जिह्वाशोफो भोजनस्यावरोधो
मूर्छा चोग्रा मध्यवीर्याभिदष्टे ॥

मध्य विषवाळा वींछीओनी त्रण जातो अने तेओना दंशोनां लक्षणो.

३६ मध्यविषवाळा वींछीओनी रक्त, (रातो) पीत, (पीळो) अने कपिल, (कपिलवर्णवाळो) ए रीते त्रण जातो छे. मध्यविषवाळा सघळा वींछीओनां उदरो धूम्रवर्णवाळां होय छे अने पर्वो (शरीर उपरना आंकाओ) त्रण त्रण होय छे. ए वींछीओ जेम काष्ठोमांथी तथा इंटोमांथी उत्पन्न थाय छे तेम वखतपर दर्वीकर, मंडली अने राजिमान् ए त्रण जातना सर्पोना मूत्रोमांथी, विष्टामांथी अने सडेलां इंडांओमांथी पण उत्पन्न थाय छे. सर्पोनां ए मूत्रादिकमांथी उत्पन्न थएला होय तो जे जातना सर्पनां मूत्रादिकमांथी उत्पन्न थया होय ते जातना सर्पना विषने लगती दोषोनी उत्पत्ति करे छे.

मध्य विषवाळा वींछीओमाना कोई वींछीनो दंश थयो होय तो जीभमां सोजो थाय छे, भोजननो अटकाव थाय छे अने उग्र मूर्छा आवे छे.

३७ श्वेतश्चित्रः श्यामलो लोहिताभो
रक्तः श्वेतो रक्तनीलोदरौ च ।
पीतोऽरक्तो नीलपीतोऽपरस्तु
रक्तो नीलो नीलशुक्लस्तथा च ॥
रक्तो बभ्रुः पूर्ववच्चैकपर्वा
यश्चापर्वा पर्वणी द्वे च यस्य ।
नानारूपा वर्णतश्चापि घोरा
ज्ञेयाश्चैते वृश्चिकाः प्राणचौराः ॥
जन्मैतेषां सर्पकोथात्प्रदिष्टं
देहेभ्यो वा घातितानां विषेण ।
एभिर्दष्टे सर्पवेगप्रवृत्तिः
स्फोटोत्पत्तिर्भ्रान्तिदाहौ ज्वरश्च ।
खेभ्यः कृष्णं शोणितं चापि तीव्रं
तस्मात्प्राणैस्त्यज्यते शीघ्रमेव ॥

उग्र विषवाळा वींछीओनी पंदर जातो अने तेओना दंशोनां लक्षणो.

३७ उग्र विषवाळा वींछीओनी श्वेत, (सफेद) चित्र, (विचित्र वर्णवाळो) श्यामल, (काळो) लोहिताभ, (अत्यंत लाल वर्णवाळो) रक्त, (साधारण लाल वर्णवाळो) श्वेत, (साधारण सफेद वर्णवाळो) रक्तोदर, (लाल पेटवाळो) नीलोदर, (आशमानी वर्णना पेटवाळो) पीत, (पीळो) अरक्त, (थोडी रताशवाळो) नीलपीत, (आशमानी तथा पीळा वर्णवाळो) रक्त, (अरुणवर्णवाळो) नील, (आकाशी वर्णवाळो) नीलशुक्ल (आशमानी तथा सफेद वर्णवाळो) अने रक्तबभ्रु, (राता तथा पिंगळा वर्णवाळो) ए रीते पंदर जातो छे. उग्र विषवाळा वींछीओमां केटलाएक वींछीओ शरीरमां एक पर्व(आंका)वाळा होय छे, केटलाएक वींछीओ पर्ववगरना पण होय छे अने केटलाएक वींछीओ बे पर्वोवाळा पण होय छे. सघळा उग्रविषवाळा वींछीओ अनेक प्रकारनी आकृतिओवाळा, भयंकर वर्णोवाळा अने प्राणोनुं हरण करनारा होय छे. एओनो जन्म

सर्पोना सडामांथी थाय छे अने विषथी मरेलां के मारेलां प्राणीओनां शरीरोमांथी पण थाय छे.

उग्र विषवाळा वींछीओमांना कोई वींछीनो दंश थयो होय तो सर्पोना विषोना जेवा वेगो प्रवर्ते छे, फोडला उत्पन्न थाय छे, भ्रमण थाय छे, बळतरा थाय छे, ज्वर प्राप्त थाय छे अने शरीरनां छिद्रोमांथी काळुं तथा तीव्र लोही नीकळे छे के जेथी तुरतज प्राण जतां रेहे छे.

३८ उग्रमध्यविषैर्दष्टं चिकित्सेत्सर्पदष्टवत् ।
दंशं मन्दविषाणां तु चक्रतैलेन सेचयेत् ॥
विदार्यादिसुसिद्धेन सुखोष्णेनाथ वा पुनः ।
कुर्याच्चोत्कारिकास्वेदं विषघ्नैरुपनाहनैः ॥

उग्र विषवाळा, मध्य विषवाळा तथा मंदविषवाळा वींछीओनी जूदी जूदी चिकित्सा.

३८ उग्र के मध्य विषवाळा वींछीनो दंश थयो होय तो सर्पदंशनी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी. (आ स्थाननो पांचमो अध्याय वांचो.) मंदविषवाळा वींछीनो दंश थयो होय तो दंश उपर घाणीमांथी तुरतना लीधेला तैलथी अथवा विदारिगंधादि गणना क्काथमां तथा कल्कमां पकावेला जरा गरम करेला तैलथी सेचन करवुं अने विषने हणनारां द्रव्योनी लाफसी दंश उपर वस्त्रवते बांधीने तेथी स्वेदन करवुं.

३९ आदंशं स्वेदितं चूर्णैः प्रच्छितं प्रतिसारयेत् ।
रजनीसैन्धवव्योषशिरीषफलपुष्पजैः ॥
मातुलुङ्गाम्लगोमूत्रपिष्टं च सुरसाग्रजम् ।
लेपे स्वेदे सुखोष्णं च गोमयं हितमिष्यते ॥
पाने क्षौद्रयुतं सर्पिः क्षीरं वा बहुशर्करम् ।
गुडोदकं वा सुहिमं चातुर्जातकवासितम् ॥
पानमस्मै प्रदातव्यं क्षीरं वा सगुडं हिमम् ।
शिखिकुक्कुटबर्हाणि सैन्धवं तैलसर्पिषी ॥
धूपो हन्ति प्रयुक्तोऽयं शीघ्रं वृश्चिकजं विषम् ।
कुसुम्भपुष्पं रजनी निशा वा कोद्रवं तृणम् ॥
एभिर्घृताक्तैर्धूपस्तु पायुदेशे प्रयोजितः ।
नाशयेदाशु कीटोत्थं वृश्चिकस्य च यद्विषम् ॥

मंद विषवाळा वींछीना दंशनी सामान्य चिकित्सा.

३९ वींछीना दंशने स्वेदन आपी शस्त्रवते टोंचा दईने ते उपर हळदर, सैंधव, सूंठ, मरी, पीपळ अने सरसडीयानां फूल तथा फळ एओनां चूर्णो घसवां. तुलसीनां पानडांओने अथवा डोलरनां फूलोने बीजोराना रसमां, कांजीमां तथा गोमूत्रमां वाटीने तेनो लेप करवो. गायना छाणने जरा गरम करीने तेथी स्वेदन करवुं ए हितकारी छे. वींछीना दंशवाळाने मधथी संयुक्त करेलुं घी पावुं अथवा घणी साकरथी संयुक्त करेलुं दूध पावुं अथवा तज, एळची, तमालपत्र तथा नागकेसर एओथी वासेलुं अत्यंत शीतळ गोळनुं पाणी पावुं अथवा गोळथी संयुक्त करेलुं शीतल दूध पावुं. वीछीना दंश उपर स्वेदन करवाने बदले मोरपींछ, कुकडानां पीछडां सैंधव, तैल अने घी एओनी धूमाडी देवामां आवे तो तेथी पण वीछीनुं विष तुरत नष्ट थई जाय छे. कसुंबानुं फूल, हळदर, दारूहळदर, कोदरा नामनुं धान्य अने रोहिस नामनुं खड एओने घीथी खरडी आतुरनी गुदामां तेओनी धूमाडी देवामां आवे तो ते धूमाडी लूता वगेरे कीडाओना तथा वींछीना विषने तुरत नष्ट करे छे. (वाग्भट केहे छे के "कबूतरनी चरक, हरडे, तगर अने सूंठ एओने बीजोराना रसमां वाटी ते कल्कनो लेप करवाथी वीछीनुं विष नष्ट थई जाय छे. ऊंटनी दाढने शैवाळनी साथे वाटी तेनो लेप करवाथी वीछीनुं विष नष्ट थई जाय छे. हींग अने हरताल एओनी बीजोराना रसमां गोळी वाळी ते गोळीनां लेप तथा अंजन करवामां आवे तो तेथी वीछीनुं विष नष्ट थई जाय छे. करंज, कडायो, गुंदो, वापुंगां, इंद्रयव अने सरसडीयो एओनां पुष्पोने

दहींनी तरमां वाटी तेनो दंश उपर लेप करवाथी वीछीनुं झेर नष्ट थई जाय छे. आतुर वीछीना दंशथी बहुज गभरातो होय तो हरडे, हळदर, पीपळ, मजीठ, अतवस, मरी अने कडवी तूंबडीनुं डीटीयुं एओने रीगणाना रसमां वाटीने तेनुं लेपन करवुं. सूंठ, कबूतरनी चरक, हरताल अने सैंधव एओने बीजोराना रसमां वाटी तेनो लेप करवाथी वीछीनुं विष नष्ट थई जाय छे." वजना ककडाने चावी मोहोडामां राखी आतुरना कानमां फूंको मारवामां आवे तो तेथी वीछीनुं विष उतरी जाय छे ए अनुभवसिद्ध छे.)

४० लूताविषं घोरतमं दुर्विज्ञेयतमं तु तत् ।
दुश्चिकित्स्यतमं चापि भिषग्भिर्मन्दबुद्धिभिः ॥
सविषं निर्विषं चैतदित्येवं परिशङ्किते ।
विषघ्नमेव कर्तव्यमविरोधि यदौषधम् ॥
अगदानां हि संयोगो विषजुष्टस्य युज्यते ।
निर्विषे मानवे युक्तोऽगदः सम्पद्यतेऽसुखम् ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ज्ञातव्यो विषनिश्चयः ।
अज्ञात्वा विषसद्भावं भिषग्व्यापादयेन्नरम् ॥
प्रोद्भिद्यमानस्तु यथाङ्कुरेण
न व्यक्तजातिः प्रविभाति वृक्षः ।
तद्वद्दुरालक्ष्यतमं हि तासां
विषं शरीरे प्रविकीर्णमात्रम् ॥

लूता(झेरी करोळीया)नुं विष तुरत जाणी शकातुं नथी अने तेनी चिकित्सा पण मांड थाय छे एटला माटे विषनो शक पडे तो केम करवुं?

४० लूताओनुं विष अत्यंत भयंकर छे अने मंदबुद्धिवाळा वैद्योथी ए मांड जाणी शकाय एवुं छे तथा जेनी चिकित्सा पण मांड करी शकाय एवुं छे. कोई पण दंशमां 'विष छे के नथी?' एवो शक उत्पन्न थाय तो जे औषध विषने हणनारूं होय अने धातुओनुं विरोधी न होय ते औषध करवुं. जेने विषनो संसर्ग थयो होय तेने माटे धातुविरुद्ध विषघ्न औषधोनी योजना करवी योग्य छे पण जेने विषनो संसर्ग न थयो होय एवा माणसने तेवां औषधो देवामां आवे तो तेथी दुःख उत्पन्न थाय छे. आम छे एटलामाटे सर्व प्रयत्नथी विषनो निश्चय करवो जोइए. जे वैद्य विषनो निश्चय कर्या विना धातुविरुद्ध विषघ्न औषधो आपे छे ते वैद्य माणसने मारीज नाखे छे. जेम अंकुर प्रकट थतां वृक्षनी जातिनो निश्चय मांड बनी शके छे तेम लूताओनुं विष शरीरमां प्रथम प्राप्त थतां तेनो निश्चय मांड मांड बनी शके एम छे.

४१ ईषच्च कण्डूः प्रचलं सकोठ-
मव्यक्तवर्णं प्रथमेऽहनि स्यात् ।
अन्तेषु शूनं परिनिम्नमध्यं
प्रव्यक्तरूपं च दिने द्वितीये ॥
त्र्यहेण तद्दर्शयतीह दंशं
विषं चतुर्थेऽहनि कोपमेति ।
अतोऽधिकेऽह्नि प्रकरोति जन्तो-
र्विषप्रकोपप्रभवान्विकारान् ॥
षष्ठे दिने विप्रसृतं च सर्वान्
मर्मप्रदेशान्भृशमावृणोति ।
तत्सप्तमेऽत्यर्थपरीतगात्रं
व्यापादयेन्मर्त्यमतिप्रवृद्धम्

लूताओना विषनो संसर्ग थयो होय तो तेनां प्रत्येक दिवसे थतां जूदां जूदां लक्षणो.

४१ लूताओना विषनो संसर्ग थयो होय तो पेहेले दिवसे जराक खरज आवे छे अने दंशनुं स्थान चंचळतावाळुं, अव्यक्त वर्णवाळुं तथा झीणां धामठांवाळुं थाय छे. बीजे दिवसे छेडाओमां सोजावाळुं, मध्यमां नमेलुं अने स्पष्टरूपवाळुं थाय छे. त्रीजे दिवसे ए स्थानमां दंश नजरे पडे छे. चोथे दिवसे विष प्रकुपित थाय छे. पांचमे दिवसे विषना प्रकोपसंबंधी अनेक विकारो उत्पन्न थाय छे. छट्ठे

दिवसे ए विष फेलाईने सघळा मर्मप्रदेशोने अत्यंत घेरी लेछे अने सातमे दिवसे शरीरमां अत्यंत फेलाई अत्यंत वृद्धि पामीने माणसने मारी नाखे छे.

४२ यास्तीक्ष्णचण्डोग्रविषा हि लूता-
स्ताः सप्तरात्रेण विनाशयन्ति ।
अतोऽधिकेनापि निहन्युरन्या
यासां विषं मध्यमवीर्यमुक्तं ॥
यासां कनीयो विषवीर्यमुक्तम्
ताः पक्षमात्रेण विनाशयन्ति ॥
तस्मात्प्रयत्नं भिषगत्र कुर्या-
दादंशपाताद्विषघातियोगैः ॥

मध्य विषवाळी तथा मंद विषवाळी लूताओ वधारे दिवसे मारे छे.

४२ जे लूताओ तीक्ष्ण, प्रचंड अने उग्रविषवाळी होय छे तेओ उपर प्रमाणे सात दिवसे मारी नाखे छे. जे लूताओ मध्य विषवाळी होय छे तेओ सात दिवसो करतां कांईक वधारे दिवसे पण मारी नाखे छे. जे लूताओ मंदविषवाळी होय छे तेओ एक पखवाडीए मारी नाखे छे. आ प्रमाणे छे एटला माटे वैद्ये ज्यारथी दंश थाय त्यारथीज विषने नष्ट करनारा योगोथी प्रयत्न करवो.

४३ विषं तु लालानखमूत्रदंष्ट्रा
रजःपुरीषैरथ चेन्द्रियेण ।
सप्तप्रकारं विसृजन्ति लूता-
स्तदुग्रमध्यावरवीर्ययुक्तम् ॥
सकण्डुकोठं स्थिरमल्पमूलं
लालाकृतं मन्दरुजं वदन्ति ।
शोफश्च कण्डूश्च पुलानिका च
धूमायनं चैव नखाग्रदंशे ॥
दंशं तु मूत्रेण सकृष्णमध्यं
सरक्तपर्यन्तमवेहि दीर्णम्
दंष्ट्राभिरुग्रं कठिनं विवर्णं
जानीहि दंशं स्थिरमण्डलं च ॥
रजःपुरीषेंद्रियजं हि विद्धि
स्फोटं विपक्वामलपीलुपाण्डुम् ।
एतावदेतत्समुदाहृतं तु
वक्ष्यामि लूताप्रभवं पुराणम् ॥
सामान्यतो दृष्टमसाध्यसाध्यं
चिकित्सितं चापि यथाविशेषम् ।

लूताओना विषोना सात प्रकारो अने ते प्रकारोनां जूदां जूदां लक्षणो.

४३ लूताओ लाळथी, नखोथी, मूत्रथी, दाढथी, रजथी, विष्टाथी, अने वीर्यथी ए रीते सात प्रकारोथी उग्रशक्तिवाळा, मध्यशक्तिवाळा तथा मंदशक्तिवाळा विषने नाखे छे. ळाळथी नाखेलुं विष खरजवाळा ध्रामठांवाळुं, स्थिर, अल्प मूळवाळुं अने मंद वेदनावाळुं होय छे. नखोथी नाखेलुं विष सोजावाळुं, खरजवाळुं, रुवाडांओने ऊभां करनारूं अने जाणे अंगोमांथी धूमाडा काहाडतुं होय एवुं होय छे. मूत्रथी नाखेलुं विष काळा मध्यवाळां, राता छेडावाळां अने फाटेलां ध्रामठांवाळुं होय छे. दाढोथी नाखेलुं विष उग्र, कठण, विवर्ण तथा स्थिरमंडलवाळा दंशवाळुं होय छे. रजथी, विष्टाथी के वीर्यथी नाखेलुं विष पाकेला आमळा जेवा तथा पाकेला पीलु जेवा फोडलावाळुं होय छे. लूताओना विषनां लक्षणो विषे आटलुं कह्युं. हवे लूताओनी उत्पत्तिनो इतिहास, दंशोनुं साध्यासाध्यपणुं अने ते ते विशेषो प्रमाणे चिकित्साओ कहीश.

४४ विश्वामित्रो नृपवरः कदाचिदृषिसत्तमम् ।
वसिष्ठं कोपयामास गत्वाश्रमपदं किल ॥
कुपितस्य मुनेस्तस्य ललाटात्स्वेदबिन्दवः ।
अपतन्दर्शनादेवमधस्तात्तीक्ष्णवर्चसः ॥
लूने तृणे महर्षीणां धेन्वर्थे सम्भृतेऽपि च ।
ततो जातास्त्विमा घोरा नानारूपा महाविषाः ॥
अपकारायावर्तन्त नृपसाधनवाहने ।
यस्माल्लूनं तृणं प्राप्ता मुनेः प्रस्वेदबिन्दवः ॥
तस्माल्लूतेति भाष्यन्ते सङ्ख्यया ताश्च षोडश ।

लूताओनी उत्पत्तिनो इतिहास, लूता नामनुं कारण अने लूता-ओनी संख्या.

४४ राजाओमां उत्तम विश्वामित्रे कोई समये ऋषिओमां उत्तम वसिष्ठ मुनिना आश्रमस्थानमां जईने तेमने प्रकुपित कर्या हता. विश्वामित्रने देखतांज कोप पामेला वसिष्ठ मुनिना ललाटमांथी तीक्ष्ण तेजवाळा पसीनाना बिंदुओ पड्या. ए बिंदुओ महर्षिओनी गायोने माटे कापीने राखेला खडमां पड्या तेथी ते खडमांथी अनेक रूपोवाळी तथा मोटां विषवाळी आ भयंकर लूताओ उत्पन्न थई अने तेओए विश्वामित्रना सैन्यनां वाहनोने पोताना विषथी मारी नाख्यां. वसिष्ठ मुनिना पसीनाना बिंदुओ लून (कापेला) खडमां पडतां तेओथी उत्पन्न होवाने लीधे ए कीडाओ 'लूता' केहेवाय छे. ए लूताओ सोळ जातनी छे.

४५ कृच्छ्रसाध्यास्तथाऽसाध्या लूतास्तु द्विविधाः स्मृताः।
तासामष्टौ कृच्छ्रसाध्या वर्ज्यास्तावत्य एव तु॥

आठ लूताओ कष्टसाध्य छे अने आठ लूताओ असाध्य छे.

४५ लूताओ कष्टसाध्य अने असाध्य ए रीते बे प्रकारनी छे. एओमां आठ जातनी लूताओ कष्टसाध्य छे अने आठ जातनी लूताओ असाध्य छे.

४६ त्रिमण्डला तथा श्वेता कपिला पीतिका तथा॥
आलमूत्रविषा रक्ता कसना चाष्टमी स्मृता।

आठ जातनी कष्टसाध्य लूताओनां नामो.

४६ त्रिमंडला, श्वेता, कपिला, पीतिका, आलविषा, मूत्रविषा, रक्ता अने कसना ए आठ जातनी लूताओ कष्टसाध्य छे.

४७ ताभिर्दष्टे शिरोदुःखं कण्डूर्दंशे च वेदना।
भवन्ति च विशेषेण गदाः श्लैष्मिकवातिकाः।

कष्टसाध्य लूताओना दंशनां लक्षणो.

४७ कष्टसाध्य लूताओनो दंश थयो होय तो माथामां दुःख थाय छे, दंशमां खरज आवे छे, वेदना थाय छे अने विशेषे करी कफसंबंधी तथा वायुसंबंधी रोगो उत्पन्न थाय छे.

४८ सौवर्णिकी लाजवर्णा जालिन्येणीपदी तथा
कृष्णाग्निवर्णा काकाण्डा मालागुणाष्टमी स्मृता।

आठ जातनी असाध्य लूताओनां नामो.

४८ सौवर्णिकी, लाजवर्णा, जालिनी, एणीपदी, कृष्णा, अग्निवर्णा, काकांडा अने मालागुणा ए आठ जातनी लूताओ असाध्य छे.

४९ ताभिर्दष्टे दंशकोथः प्रवृत्तिः क्षतजस्य च।
ज्वरो दाहोऽतिसारश्च गदाः स्युश्च त्रिदोषजाः।

असाध्य लूताओना दंशनां लक्षणो.

४९ असाध्य लूताओनो दंश थयो होय तो दंशमां सडो थाय छे, लोही नीकळया करे छे, ज्वर आवे छे, बळतरा थाय छे, अतिसार थाय छे अने त्रणे दोषोसंबंधी रोगो उत्पन्न थाय छे.

५० पिडका विविधाकारा मण्डलानि महान्ति च
शोफा महान्तो मृदवो रक्ताः श्यावाश्चलास्तथा।
सामान्यं सर्वलूतानामेतद्दंशलक्षणम्॥

सघळी लूताओना दंशोनुं सामान्य लक्षण.

५० लूताना दंश थया होय तो अनेक आकृतिओवाळी फोडलीओ थाय छे, मोटां मोटां मंडलो थाय छे अने मोटा, कोमळ, राता, काळा तथा चंचल सोजा थाय छे. सघळी लूताओना दंशोनुं आ सामान्य लक्षण छे.

५१ विशेषलक्षणं तासां वक्ष्यामि सचिकित्सितम्।
त्रिमण्डलाया दंशेऽसृक्कृष्णं स्रवति दीर्यते।

बाधिर्यं कलुषा दृष्टिस्तथा दाहश्च नेत्रयोः ।
तत्रार्कमूलं रजनी नाकुली पृश्निपर्णिका ॥
नस्यकर्मणि शस्यन्ते पानाभ्यङ्गाञ्जनेषु च ।
श्वेतायाः पिडका दंशे श्वेता कण्डूमती भवेत् ।
दाहमूर्छाज्वरवती विसर्पक्लेदरुक्करी ।
तत्र चन्दनरास्नैलाहरेणुनलवञ्जुलाः ॥
कुष्ठं लामज्जकं चक्रं नलदं चागदो हितः ।
आदंशे पिडका ताम्रा कपिलायाः स्थिरा भवेत् ॥
शिरसो गौरवं दाहस्तिमिरं भ्रम एव च ॥
तत्र पद्मककुष्ठैलाकरञ्जककुभत्वचः ।
स्थिरार्कपर्ण्यपामार्गदूर्वा ब्राह्मी विषापहाः ॥
आदंशे पीतिकायास्तु पिडका जायते स्थिरा ।
तथा छर्दिर्ज्वरः शूलं रक्ते स्यातां च लोचने ॥
तत्रेष्टाः कुटजोशीरतुङ्गपद्मकवञ्जुलाः ।
शिरीषकिणिहीशेलुकदम्बककुभत्वचः ॥
रक्तमण्डनिभे दंशे पिडकाः सर्षपा इव ।
जायन्ते तालुशोषश्च दाहश्चालविषान्विते ॥
तत्र प्रियङ्गु ह्रीवेरं कुष्ठं लामज्जवञ्जुलाः ।
अगदः शतपुष्पा च सपिप्पलवटाङ्कुराः ॥
पूतिर्मूत्रविषादंशो विसर्पी कृष्णशोणितः ।
कासश्वासवमीमूर्छाज्वरदाहसमन्वितः ॥
मनःशिलालमधुककुष्ठचन्दनपद्मकैः ।
मधुमिश्रैः सलामज्जैरगदस्तत्र कीर्त्तितः ॥
दंशश्च पाण्डुपिडको दाहक्लेदसमन्वितः ।
रक्ताया रक्तपर्यन्तो विज्ञेयो रक्तसंयुतः ॥
कार्यस्तत्रागदस्तोयचन्दनोशीरपद्मकैः ।
तथैवार्जुनशेलुभ्यां त्वग्भिराम्रातकस्य च ॥
पिच्छिलं कसनादंशाद्रुधिरं शीतलं स्रवेत् ।
कासश्वासौ च तत्रोक्तं रक्तलूताचिकित्सितम् ॥

कष्टसाध्य लूताओना दंशोनां जूदां जूदां विशिष्ट लक्षणो अने जूदी जुदी चिकित्सा.

९१ हवे कष्टसाध्य लूताओना दंशोनां जूदां जूदां विशिष्ट लक्षणो तथा चिकित्साओ कहुं छुं.

त्रिमंडलानो दंश थयो होय तो काळुं लोही स्रवे छे, दंश फाटी जाय छे, बेहेरापणुं थाय छे, दृष्टि मलिन थई जाय छे अने नेत्रोमां दाह थाय छे. ए दंश थएल होय तो आकडानुं मूळ, हळदर, नोरवेल अने पृश्निपर्णी एओनां नस्य, पान, अभ्यंग अने अंजन करवां ए हितकारी छे.

श्वेतानो दंश थयो होय तो दंशमां सफेद तथा खरजवाळी फोडली थाय छे के जे फोडलीथी दाह, मूर्छा, ज्वर, विसर्प, क्लेद अने वेदना उत्पन्न थाय छे. ए थएल होय तो चंदन, रास्ना अथवा नोरवेल, एलची, हरेणु, नाली, आसोपालव अथवा जलमां थएलुं नेतर, कठ, वाळो, तगर अने जटामांसी एओनी योजना हितकारी थाय छे.

कपिलानो दंश थयो होय तो दंशमां राती तथा स्थिर फोडली थाय छे, माथामां भारेपणुं थाय छे, बळतरा थाय छे, तिमिर प्राप्त थाय छे अने भ्रम थाय छे. ए दंश थएल होय तो पद्मकाष्ठ, कठ, एलची, करंज, कडायो, तज, शालिपर्णी, आकडो, अघेडो, दूर्वा अने ब्राह्मी एओनी योजना हितकारी थाय छे.

पीतिकानो दंश थयो होय तो दंशमां स्थिर फोडली थाय छे, उलटी थाय छे, ज्वर आवे छे, शूळ नीकळे छे अने नेत्रो रातां थई जाय छे. ए दंश थएल होय तो इंद्रजव, वाळो, कमळना केसरा अथवा पुन्नाग, पद्मकाष्ठ, आसोपालव, सरसडीयानी छाल, वापुंगानी छाल, गुंदानी छाल, कदंबनी छाल, अने कडायानी छाल, एओनी योजना करवी.

आलविषानो दंश थयो होय तो रुधिरना मंड जेवा राता ए दंशमां सर्षपो जेवी फोडलीओ थाय छे, ताळवामां शोष थाय छे अने दाह थाय छे. ए दंश थएल होय तो घउलां, वाळो, कठ, पीळो वाळो, जलमां थएलुं नेतर, वरीयाळी, पीपळानां कुंपळीयां अने वडनां कुंपळीयां एओनी योजना करवी.

मूत्रविषानो दंश थयो होय तो ते दंश दुर्गंधवाळो थाय छे तथा फेलाय छे, दंशमांथी काळुं लोही नीकळे छे, खांसी थाय छे, श्वास थाय छे, उलटी थाय छे, मूर्छा आवे छे, ज्वर आवे छे अने बळतरा थाय छे. ए दंश थएल होय तो मणशील, हरताल, जेठीमध, कठ, चंदन, पद्मकाष्ठ, मध अने पीळो वाळो एओनी योजना करवी.

रक्तानो दंश थयो होय तो ते दंश पांडुवर्णनी फोडलीवाळो, दाहवाळो, क्लेदवाळो, राता छेडावाळो तथा रुधिरवाळो थाय छे. ए दंश थएल होय तो वालो, चंदन, काळो वाळो, पद्मकाष्ठ, कडायानी छाल, गुंदानी छाल अने अंबाडानी छाल एओनी योजना करवी.

कसनानो दंश थयो होय तो दंशमांथी चीकणुं तथा शीतल लोही स्रवे छे, खांसी थाय छे अने श्वास थाय छे. ए दंश थएल होय तो वाळो, चंदन, काळो वाळो, पद्मकाष्ठ, कडायानी छाल, गुंदानी छाल अने अंबाडानी छाल एओनी योजना करवी.

५२ पुरीषगन्धिरल्पासृक्कृष्णाया दंश एव तु।
ज्वरमूर्छावमीदाहकासश्वाससमन्वितः ॥
तत्रैलाचक्रसर्पाक्षीगन्धनाकुलिचन्दनैः ।
महासुगन्धिसहितैः प्रत्याख्यायागदः स्मृतः ॥
दंशे दाहोऽग्निवर्णायाः स्रावोऽत्यर्थं ज्वरस्तथा
चोषकण्डूरोमहर्षा दाहश्च स्फोटजन्म च ॥
कृष्णाप्रशमनं चात्र प्रत्याख्याय प्रयोजयेत् ।

असाध्य लूताओमांनी कृष्णा तथा अग्निवर्णा ए बे के जेओ यदृच्छाथी साध्य पण थाय छे तेओना दंशोनां जूदां जूदां विशिष्ट लक्षणो अने जूदी जूदी चिकित्सा.

५२ **कृष्णानो** दंश थयो होय तो ते दंश विष्ठाना जेवा गंधवाळो तथा अल्प रुधिरवाळो होय छे के जे दंशथी ज्वर, मूर्छा, उलटी, दाह, खांसी तथा श्वास उत्पन्न थाय छे. ए दंश थएल होय तो प्रथम चिकित्सा करवानी ना पाडीने पछी एलची, तगर, शंखावळी, नोरवेल, चंदन अने आ स्थानना ७ मा अध्यायना ९ मा विषयमां कहेलो महासुगंधि, नामनो अगद एओनी पान, नस्य, अभ्यंग तथा परिषेचन आदिमां योजना करवी.

अग्निवर्णानो दंश थयो होय तो दाह थाय छे, अत्यंत स्राव थाय छे, ज्वर आवे छे, चोस थाय छे, खरज आवे छे, रुवाडां ऊभां थाय छे अने फोडलानी उत्पत्ति थाय छे. ए दंश थएल होय तो प्रथम चिकित्सा करवानी ना पाडीने पछी उपर कहेली कृष्णाना दंशनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी.

५३ सारिवोशीरयष्ट्याह्वचन्दनोत्पलपद्मकम् ॥
सर्वासामेव युञ्जीत विषे श्लेष्मातकत्वचम् ।
भिषक्सर्वप्रकारेषु तथा च क्षीरपिप्पलम् ॥

उपर कहेली दश जातनी लूताओनी सामान्य चिकित्सा.

५३ उपर कहेली दश जातनी लूताओमांथी गमे ते लूतानां विषनो संसर्ग थयो होय तो वैद्ये उपलसरी, वाळो, जेठीमध, चंदन, रक्तकमळ, पद्मकाष्ठ अने गुंदानी छाल एओनी पान, नस्य तथा अभ्यंग आदि सर्व प्रकारोमां योजना करवी अने जे प्रदेशमां दूध पडतुं होय ते प्रदेशमां उत्पन्न थएला पीपळानी छालो वगेरेनी पण योजना करवी.

५४ कृच्छ्रसाध्यविषा ह्यष्टौ प्रोक्ता द्वे च यदृच्छया ।
अवार्यविषवीर्याणां लक्षणानि निबोध मे ॥
ध्मातः सौवर्णिकादंशः सफेनो मत्स्यगन्धकः ।
श्वासकासौ ज्वरस्तृष्णा मूर्छा चात्र सुदारुणा
आदंशे लाजवर्णाया आमं पूति स्रवेदसृक् ॥
दाहो मूर्छातिसारश्च शिरोदुःखं च जायते ।

घोरो दंशस्तु जालिन्या राजिमानवदीर्यते ॥
स्तम्भः श्वासस्तमोवृद्धिस्तालुशोषश्च जायते ।
एणीपद्यास्तथा दंशो भवेत्कृष्णतिलाकृतिः ॥
तृष्णामूर्छाज्वरच्छर्दिकासश्वाससमन्वितः ।
दंशः काकाण्डकादष्टे पाण्डुरक्तोऽतिवेदनः ॥
रक्तो मालागुणादंशो धूम्रगन्धोऽतिवेदनः ।
विदीर्यते च बहुधा दाहमूर्छाज्वरान्वितः ॥

असाध्य लूताओना दंशोनां लक्षणो.

९४ आठ कष्टसाध्य लूताओ अने बे लूताओ के जेओ असाध्य छतां पण वखतपर दैवयोगथी साध्य थाय छे तेओना दंशोनां लक्षणो तथा चिकित्साओ कही. हवे बाकीनी छ लूताओ के जेओ अवार्य विषवाळी होवाथी कदी पण साध्य थती नथी तेओना दंशोनां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो.

सौवर्णिकानो दंश थयो होय तो ते बळेली इंट जेवो, फीणवाळो तथा माछलांना जेवा गंधवाळो होय छे के जेथी श्वास, खांसी, ज्वर, तरश अने दारुण मूर्छा एओनी उत्पत्ति थाय छे.

लाजवर्णानो दंश थयो होय तो काचुं तथा दुर्गंधवाळुं रुधिर स्त्रवे छे, दाह थाय छे, मूर्छा आवे छे, अतिसार थाय छे अने माथामां दुःख थाय छे.

जालिनीनो दंश थयो होय तो ए दंश अत्यंत भयंकर तथा रेखाओवाळो होय छे अने फाटी जाय छे. ए दंशथी स्तंभ, श्वास, वारंवार अंधकारनुं दर्शन अने ताळवामां शोष थाय छे.

एणीपदीनो दंश काळो तथा काळा तलना जेवी आकृतिवाळो होय छे, ए दंशथी तरश, मूर्छा, ज्वर, उलटी, खांसी तथा श्वास उत्पन्न थाय छे.

काकांडानो दंश पांडु तथा राता वर्णवाळो अने अत्यंत वेदनावाळो होय छे.

मालागुणानो दंश रातो, धूमाडाना जेवा गंधवाळो तथा अतिवेदनावाळो होय छे अने घणा प्रकारोथी सडे छे. ए दंशथी दाह, मूर्छा तथा ज्वर प्राप्त थाय छे.

५५ असाध्यानां भिषक्प्राज्ञः प्रयुञ्जीत चिकित्सितम् ।
दोषोच्छ्रायविशेषेण च्छेदकर्मविवर्जितम् ।

प्रवीण वैद्ये असाध्य लूताओनी पण चिकित्सा करवी.

९५ प्रवीण वैद्ये दोषोना प्रकोप जोईने तेना अनुसारथी असाध्य लूताओनी पण चिकित्सा करवी, परंतु तेमां छेदनक्रिया कदी पण करवी नहीं.

५६ साध्याभिरपि लूताभिर्दष्टमात्रस्य देहिनः ॥
वृद्धिपत्रेण मतिमान्सम्यगादंशमुद्धरेत् ।
जाम्बोष्ठेनाग्नितप्तेन दहेदा करवारणात् ॥
अमर्मणि विधानज्ञो वर्जितस्य ज्वरादिभिः ।
दंशस्योत्कर्त्तनं कुर्यादल्पश्वयथुकस्य च ॥
मधुसैन्धवसंयुक्तैरगदैर्लेपयेत्ततः
प्रियङ्गुरजनीकुष्ठसमङ्गामधुकैस्तथा ।
सारिवां मधुकं द्राक्षां पयस्यां क्षीरमोरटम् ॥
विदारीगोक्षुरक्षौद्रमधुकं पाययेत वा ।
क्षीरिणां त्वक्कषायेण सुशीतेन च सेचयेत् ॥
उपद्रवान्यथादोषं विषघ्नैश्च प्रसाधयेत् ॥
नस्याञ्जनाभ्यञ्जनपानधूमम्
तथावपीडं कवलग्रहं च ।
संशोधनं चोभयतः प्रयुञ्ज्या-
द्रक्तं हरेच्चापि जलायुकाभिः

कष्टसाध्य लूताओनी तात्कालिक चिकित्सा.

९६ कोई माणसने कष्टसाध्य लूताओमांनी कोई पण लूतानो दंश थाय के तुरतज बुद्धिमान् वैद्ये वृद्धिपत्र नामना शस्त्रवते सारी रीते दंशने काहाडी नाखवो. पछी अग्निथी तपावेला जांबोष्ठ नामना लंबगोळ पथराथी त्यांसूधी डांभवो के

ज्यांसूधी आतुर पोताना हाथथी निवारण करे. आतुर ज्वर वगरनो होय अने दंश अल्प सोजावाळो होय तो विधान जाणनारा वैद्ये मर्मस्थलमां शस्त्र न पडे एवी रीते ते दंशने कापी नांखवो अने मध तथा सैंधव एओथी संयुक्त करेला महासुगंधि (आ स्थानना ७ मा अध्यायनो ९ मो विषय जुवो.) आदि अगदोनो लेप करवो तथा बे दिवस पछी घउलां, हळदर, कठ, मजीठ तथा जेठीमध एओनो लेप करवो. उपलसरी, जेठीमध, द्राक्ष, खरणेर, विदारीकंद, गोखरू, मध अने जळमां उत्पन्न थएलुं जेठीमध एओनो कल्क फाटी गएला दूधना पाणीमां घोळीने पावो. वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी छालोना शीतल क्काथथी सेचन पण करवुं. उपद्रवोने पण दोषोना अनुसार प्रमाणे विषने हणनारां औषधोथी नष्ट करवा. लूताओना विषने टाळवा माटे नस्य, अंजन, अभ्यंग, पान, धूमाडा, अवपीड नस्य, कवलग्रह, वमन, विरेचन अने जळो मूकवाथी लोहीनुं निर्हरण ए दश जातनी चिकित्साओ करवी. नस्यादिकमां विषहर द्रव्योनी योजना करवी.

५७ कीटदष्टव्रणान्सर्वानहिदष्टव्रणानि च ।
आदाहपाकं यत्नेन चिकित्सेद्व्रणदुष्टवत् ॥

ज्यां सूधी दाह तथा पाक रहे त्यां सूधी दंशना व्रणोनी दुष्ट व्रणनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी.

५७ कीडाओना दंशोथी थएला व्रणोनी तथा सर्पोना दंशोथी थएला व्रणोनी ज्यांसूधी दाह अने पाक रहे त्यांसूधी यत्नपूर्वक दुष्ट व्रणनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा चलावी राखवी.

५८ विनिवृत्ते ततः शोफे कर्णिकापातनं हितम् ।
निम्बपत्रं त्रिवृद्दन्ती कुसुम्भं रजनी मधु ।
गुग्गुलुः सैन्धवं किण्वं वर्चः पारावतस्य च ॥
विषवृद्धिकरं चान्नं हित्वा सम्भोजनं हितम् ॥
विषेभ्यः खलु सर्वेभ्यो कर्णिकामरुजां स्थिराम् ।
प्रच्छयित्वा मधुयुतैः शोधनीयैरुपाचरेत् ॥

दंशनो सोजो मटी गया पछी करवानी चिकित्सा.

५८ दंशनो सोजो निवृत्त थया पछी लींबडानां पानडां, नसोतर, नेपाळो, कसूंबो, हळदर, मध, गुगळ, सैंधव, सुराबीज अने कबूतरनी चरक एओनी योजना करीने दंशनी डोडीने पाडी नाखवी अने जे अन्नो विषनी वृद्धि करनारां छे तेओ विना बीजां अन्नोनुं भोजन कराववुं. गमे ते प्रकारना विषयुक्त दंशथी थएली डोडी वेदना वगरनी तथा स्थिर होय तो तेने टोचीने ते उपर मधथी संयुक्त करेलां शोधन द्रव्योथी लेपादिक करवां.

५९ सप्तषष्टस्य कीटानां शतस्यैतद्विभागशः ।
दष्टलक्षणमाख्यातं चिकित्सा चाप्यनन्तरम् ॥

आ अध्यायनो उपसंहार.

५९ आ अध्यायमां एकसो सणसठ जातना कीडाओनां दंशोनां लक्षणो कह्यां अने ते लक्षणो कह्या पछी ते दंशोनी चिकित्साओ पण कही. (६७ सर्पजन्य कीडाओ, ९२ अन्य जातिना कीडाओ, ३० वीछीओ अने १६ लूताओ ए रीते गणतां कुल १६५ थाय छे. आ संख्यामां सविष अने निर्विष एम बे जातनी जळोने उमेरीए तो १६७ थाय छे.)

६० सविंशमध्यायशतमेतदुक्तं विभागशः ।
इहोद्दिष्टाननिर्दिष्टान्सर्वान्वक्ष्याम्यथोत्तरे ॥

सूत्रस्थानथी कल्पस्थानपर्यंत पांचे स्थानोनो उपसंहार अने उत्तरतंत्रमां केहेवाना विषयो.

६० आ एकसोवीश अध्यायोमां सूत्रस्थान, निदानस्थान, शारीरस्थान, चिकित्सास्थान अने कल्पस्थान ए पांचे स्थानो विभागपूर्वक कह्यां

हवे ए एकसोवीश अध्यायोमां जे विषयो नाम-मात्रथी कहेला छे पण निरूपणथी कहेला नथी ते सघळा विषयोनुं उत्तरतंत्रमां निरूपण करवामां आवशे.

६१ सनातनत्वाद्वेदानामक्षरत्वात्तथैव च ॥
तथा दृष्टफलत्वाच्च हितत्वादपि देहिनाम् ।
वाक्समूहार्थविस्तारात्पूजितत्वाच्च देहिभिः ॥
चिकित्सितात्पुण्यतमं न किंचिदपि शुश्रुम ।

चिकित्सानी सर्वोत्कृष्ट पवित्रता.

६१ आयुर्वेदनां शल्यतंत्रादिक सघळां अंगो सनातन परंपराथी आवेलां छे तथा सर्वदा उपयोगमां आव्या करे छे तेथी, चिकित्सा यज्ञादिक कर्मोनी पेठे अदृष्ट फळवाळी नथी पण प्रत्यक्ष फळवाळी छे तेथी, चिकित्साथी माणसोनुं हित थाय छे तेथी, चिकित्साशास्त्रनी वाणीना नाहाना समूहमां अर्थनो बोहोळो विस्तार रह्यो छे तेथी अने सर्व प्राणीओ चिकित्सानुं पूजन करे छे तेथी चिकित्सा सघळां पवित्र कृत्योथी वधारे पवित्र छे. अमोए बीजुं कशुं कृत्य चिकित्साथी वधारे पवित्र सांभळेलुं नथी.

६२ ऋषेरिन्द्रप्रभावस्यामृतयोनेर्भिषग्गुरोः ॥
धारयित्वा तु विमलं मतं परमसम्मतम् ।
उक्ताहारसमाचार इह प्रेत्य च मोदते ॥

आ शास्त्रनुं धारण करवाथी तथा तेमां कह्या प्रमाणे वर्त्तवाथी बन्ने लोकमां कल्याणनी प्राप्ति.

६२ इंद्रना जेवा प्रभाववाळा, अमृतने लावनारा अने वैद्योना गुरु धन्वंतरि भगवानना आ निर्मळ अने महात्माओए अत्यंत स्वीकारेला मतनुं अभ्यासादिकथी धारण करी तेमां कह्या प्रमाणे आहार तथा आचार राखवामां आवे तो आ लोकमां पण कल्याण थाय छे अने परलोकमां पण कल्याण थाय छे.

इति सौश्रुत आयुर्वेदे कल्पस्थानं समाप्तम् ॥

सुश्रुत-आयुर्वेद.

उत्तर[1] तंत्र.

मूळ तथा गुजराती भाषांतर.

अध्याय १ लो.

१ अथात औपद्रविकमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'औपद्रविक' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अध्यायानां शते विंशे यदुक्तमसकृन्मया ।
वक्ष्यामि बहुधा सम्यगुत्तरेऽर्थानिमानिति ॥
इदानीं तत्प्रवक्ष्यामि तन्त्रमुत्तरमुत्तमम् ।
निखिलेनोपदिश्यन्ते यत्र रोगाः पृथग्विधाः ॥
शालाक्यशास्त्राभिहिता विदेहाधिपकीर्त्तिताः ।
ये च विस्तरतो दृष्टाः कुमाराबाधहेतवः ॥
षट्सु कायचिकित्सासु ये चोक्ताः परमर्षिभिः ।
उपसर्गादयो रोगा ये चाप्यागन्तवः स्मृताः ॥
त्रिषष्टी रससंसर्गाः सुस्थवृत्तं तथैव च ।
युक्तार्था युक्तयश्चैव दोषभेदास्तथैव च ॥

उत्तरतंत्रनी अवसरसंगति अने ते तंत्रना प्रतिपाद्य विषयो.

२ उपरना एकसोवीश अध्यायोमां में स्थले स्थले 'अमुक विषयोनुं उत्तरतंत्रमां सारी रीते घणा घणा प्रकारोथी निरूपण करीश' एम कह्युं छे माटे हवे उत्तम उत्तरतंत्र कहुं छुं के जे तंत्रमां शौनक आदि मुनिओए शालाक्यशास्त्रमां तथा विदेहदेशना अधिपति जनकराजाए पोताना ग्रंथमां कहेला नेत्ररोगादिक रोगो, पार्वतक तथा जीवक आदि आचार्योए कौमारभृत्यमां कहेला स्कंदग्रह आदि बालग्रहोरूप रोगो, अग्निवेश भेड जातूकर्ण्य पराशर हारीत तथा क्षारपाणि नामना महर्षिओए पोतानी बनावेली जूदी जूदी छ कायचिकित्साओमां कहेला ज्वर आदि रोगो अने बीजा पण देवोपसर्गादिक तथा उन्मादादिक रोगो चिकित्साओनी साथे संपूर्ण रीते केहेवामां आवशे अने रसोना त्रेसठ जातना संसर्गो, स्वस्थ माणसोनी स्वस्थतानुं रक्षण करवाना विधिओ, तंत्रनां वाक्योनी तथा अर्थोनी योजनाओ करवानी प्रमाणसिद्ध युक्तिओ तथा दोषोना भेदो पण संपूर्ण रीते केहेवामां आवशे.

३ यत्रोक्ता विविधा अर्था रोगसाधनहेतवः ।
महतस्तस्य तन्त्रस्य दुर्गाधस्याम्बुधेरिव ॥
आदावेवोत्तमाङ्गस्थान्रोगानभिदधाम्यहम् ।
संख्यया लक्षणैश्चापि साध्यासाध्यक्रमेण च ॥

प्रथम माथाना रोगोनां संख्या, निदानादिक तथा चिकित्साओ केहेवानी हेतुपूर्वक प्रतिज्ञा.

३ ए उत्तरतंत्र के जे समुद्रनी पेठे मोटुं तथा अगाध छे तेना आरंभमांज माथाना रोगोनां

---

१ आ तंत्रनो पेहेला अध्यायथी छवीशमा अध्याय सूधीनो भाग शालाक्यतंत्र केहेवाय छे. सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायनो ५ मो विषय तथा त्रीजा अध्यायनो ८ मो विषय वांचो.

२ नेत्रना रोगोनां स्थान तथा संख्यादिकना निरूपण विषेनो.

संख्या, निदानो, पूर्वरूपो, रूपो, संप्राप्तिओ तथा साध्यासाध्यना क्रमपूर्वक चिकित्साओ कहुं छुं. कारण के सघळां अंगोमां माथुं सर्व इंद्रियोना तथा प्राणोना अधिष्ठानरूप होवाथी प्रधान छे.

४ विद्याद् द्व्यङ्गुलबाहुल्यं स्वाङ्गुष्ठोदरसम्मितम् ।
द्व्यङ्गुलं सर्वतः सार्द्धं भिषङ्नयनबुद्बुदम् ॥
सुवृत्तं गोस्तनाकारं सर्वभूतगुणोद्भवम् ।

नेत्रना गोलकनुं प्रमाण.

४ नेत्रनुं गोलक के जे गायना आंचळना जेवा वृत्त आकारवाळुं छे, (लंबगोळ छे) अने पृथ्वी आदि पांचे महाभूतोना भागोथी गोठवाएलुं छे ते बे आंगळ जेटली जाडाईवाळुं अथवा पोतपोताना अंगूठाना पेट जेटली जाडाईवाळुं होय छे अने फरता अढी आंगळ जेटला माप वाळुं होय छे एम वैद्ये समजवुं. (आंगळीओनी जाडाईमां फेरफार होय छे तेथी पोतपोताना अंगूठाना पेट जेटली जाडाईवाळुं होय छे' एम फरीवार कह्युं छे.)

५ पलं भुवोऽग्नितो रक्तं वातात्कृष्णं सितं जलात् ॥
आकाशादश्रुमार्गाश्च जायन्ते नेत्रबुद्बुदे ।

नेत्रगोलकमां पांचे महाभूतोना जूदा जूदा भागो.

५ नेत्रगोलकमां जे मांस छे ते पृथ्वीनो भाग छे, जे रुधिर छे ते पित्तरूप अग्निनो भाग छे, जे काळो भाग छे ते वायुनो भाग छे, जे धोळो भाग छे ते जळनो भाग छे अने जे आंसु आववानां स्त्रोतो छे तेओ आकाशनो भाग छे.

६ दृष्टिं चात्र यथा वक्ष्ये तथा ब्रूयाद्विशारदः ॥
नेत्रायामत्रिभागं तु कृष्णमण्डलमुच्यते ।
कृष्णात्सप्तममिच्छन्ति दृष्टिं दृष्टिविशारदाः ॥

दृष्टि (कीकी)नुं लक्षण, काळा डोळानुं प्रमाण अने दृष्टिनुं प्रमाण.

६ दृष्टिनुं लक्षण आ उत्तरतंत्रना सातमा अध्यायना बीजा विषयमां जे प्रमाणे केहेवामां आवशे ते प्रमाणे विचक्षण वैद्ये समजवुं. काळा डोळानुं मंडल उपर कहेला नेत्रगोलकना प्रमाणना (मापना) त्रीजा भाग जेटला प्रमाणवाळुं छे अने दृष्टिनुं मंडल काळा डोळाना मंडलना प्रमाणना सातमा भाग जेटला प्रमाणवाळुं छे एम शालाक्यशास्त्रीओ केहे छे.

७ मण्डलानि च सन्धींश्च पटलानि च लोचने यथाक्रमं विजानीयात्पञ्च षट् च षडेव च ॥

नेत्रगोलकमां मंडलोनी, संधिओनी अने पटलो (पडो)नी संख्या.

७ नेत्र गोलकमां मंडलो पांच छे, संधिओ (सांधाओ) छ छे अने पटलो छ छे एम समजवुं.

८ पक्ष्मवर्त्मश्वेतकृष्णदृष्टीनां मण्डलानि तु ।
अनुपूर्वं तु ते मध्याश्चत्वारोऽन्त्या यथोत्तरम् ॥

नेत्रगोलकमां कयां कयां पांच मंडलो छे?

८ पांपणना वाळोनुं, पांपणोनुं, सफेद डोळानुं, काळा डोळानुं अने कीकीनुं ए रीते पांच मंडलो छे. पेहेला मंडलथी गणीये तो बीजां चार मंडलो अनुक्रमे नेत्रगोलकनी वचमां वचमां आवतां जाय छे अने छेला मंडलथी गणीये तो बीजां चार मंडलो अनुक्रमे नेत्रगोलकना छेला छेला भागमां आवतां जाय छे.

९ पक्ष्मवर्त्मगतः सन्धिर्वर्त्मशुक्लगतोऽपरः ।
शुक्लकृष्णगतस्त्वन्यः कृष्णदृष्टिगतोऽपरः ॥
ततः कनीनकगतः षष्ठश्चापाङ्गगः स्मृतः ।

नेत्रगोलकमां कया कया छ संधिओ छे?

९ एक संधि पांपणोना वाळोना तथा पांपणोना मध्यमां छे, बीजो संधि पांपणोना तथा सफेद डोळाना मध्यमां छे, त्रीजो संधि सफेद

डोळाना तथा काळा डोळाना मध्यमां छे, चोथो संधि काळा डोळाना तथा कीकीना मध्यमां छे, पांचमो संधि कीकीमां छे अने छट्ठो संधि नेत्रना अंतमां छे.

१० द्वे वर्त्मपटले विद्याच्चत्वार्यन्यानि चाक्षिणि
जायन्ते तिमिरं येषु व्याधिः परमदारुणः ।
तेजोजलाश्रितं बाह्यं तेष्वन्यत्पिशिताश्रितम् ॥
मेदस्तृतीयं पटलमाश्रितं त्वस्थि चापरम् ।
पञ्चमांशसमं दृष्टेस्तेषां बाहुल्यमिष्यते ॥

नेत्रगोलकमां कयां कयां छ पटलो छे? ते तथा अने तेओनी स्थिति.

१० बे पटलो पांपणोमां छे अने बीजां चार पटलो नेत्रमां छे. नेत्रमां जे चार पटलो छे तेओमां परमदारुण तिमिर नामनो व्याधि के जे छेवट लिंगनाश अथवा नीलिकाकाच केहेवाय छे ते उत्पन्न थाय छे. नेत्रनां ए चार पटलोमां सहुथी उपरनुं पटल रुधिरना तथा रसना आश्रयथी रहेलुं छे, बीजुं पटल मांसना आश्रयथी रहेलुं छे, त्रीजुं पटल मेदना आश्रयथी रहेलुं छे अने चोथुं पटल अस्थिना आश्रयथी रहेलुं छे. ए चारे पटलोनी एकंदर जाडाई पोतपोताना अंगूठाना पेट जेवा जाडा नेत्रगोलकना पंचमांश जेटली मानवामां आवे छे.

११ शिराणां कण्डराणां च मेदसः कालकस्य च
गुणाः कालात्परः श्लेष्मा बन्धनेऽक्ष्णोःशिरायुतः

काळा डोळाने कोण टकावी राखे छे अने सफेद डोळाने कोण टकावी राखे छे?

११ शिराओ, स्नायुओ अने मेद एओना गुणथी काळो डोळो टकी रह्यो छे अने काळा डोळा पछीनो सफेद डोळो कफना तथा शिराओना गुणथी टकी रह्यो छे.

१२ शिरानुसारिभिर्दोषैर्विगुणैरूर्ध्वं मागतैः ।
जायन्ते नेत्रभागेषु रोगाः परमदारुणाः ॥

नेत्रना रोगोनी सामान्य संप्राप्ति.

१२ नेत्रनी शिराओमां रहेला दोषो बिगडी प्रकुपित थईने ऊंचा भागोमां जवाथी आखा नेत्रमां तथा नेत्रना अवयवोमां (सांधाओमां, कीकीमां, काळा डोळामां, सफेद डोळामां, पांपणोमां अने पांपणोना वाळोमां) अतिदारुण रोगो उत्पन्न थाय छे.

१३ तत्राविलं ससंरम्भमश्रुपूर्णोपदेहवत् ।
गुरूषातोदरागाद्यैर्जुष्टं चाव्यक्तलक्षणैः ॥
सशूलं वर्त्मकोषेषु शूकपूर्णाभमेव च ।
विहन्यमानं रूपे वा क्रियास्वक्षि यथा पुरा ॥
दृष्ट्वैव धीमान्बुध्येत दोषेणाधिष्ठितं च तत् ।

नेत्रना रोगोनुं सामान्य पूर्वरूप.

१३ नेत्रमां कोई पण रोग थवानो होय त्यारे नेत्र आकुल थई जाय छे, कांईक सोजावाळुं थई जाय छे, आंसुओथी पूर्ण थई जाय छे, चीपडानी वृद्धिवाळुं थई जाय छे अने भारेपणा वगेरेथी, दाह वगेरेथी, भोकाया जेवी व्यथा वगेरेथी तथा रताश वगेरेथी युक्त थई जाय छे के जे भारेपणां वगेरे, दाह वगेरे, भोकाया जेवी व्यथा वगेरे तथा रताश वगेरे अस्फुट लक्षणोवाळां होय छे. (कफथी भारेपणा वगेरे थाय छे, पित्तथी दाह वगेरे थाय छे, वायुथी भोकाया जेवी व्यथा वगेरे थाय छे अने रुधिरथी रताश वगेरे थाय छे.) बुद्धिमान् वैद्ये नेत्रने पांपणोमां शूळवाळुं, कांटाओथी भरपूर थएला जेवी प्रभावाळुं अने दर्शनमां अथवा चलन आदिक्रियाओमां विघात पामतुं अर्थात् प्रथमनी पेठे नहीं प्रवर्ती शकतुं जोईनेज जाणी लेवुं के 'ए नेत्र दोषथी अधिष्ठित थई गयुं छे.'

१४ तत्र सम्भवमासाद्य यथादोषं भिषग्जितम्
विदध्यान्नेत्रजा रोगा बलवन्तः स्युरन्यथा ।
संक्षेपतः क्रियायोगो निदानपरिवर्जनम् ॥
वातादीनां प्रतीघातः प्रोक्तो विस्तरतः पुनः ।

पूर्वरूप थतां चिकित्सानी जरूर अने ते चिकित्सानो संक्षेप तथा विस्तार.

१४ वैद्ये नेत्रना रोगोनुं पूर्वरूप थएलुं जाणीने तुरतज दोषना अनुसार प्रमाणे औषध करवुं. जो ए समयमां औषध न करवामां आवे तो नेत्रना रोगो बळवान् थई पडे छे. जे कारणोथी दोष प्रबल थएल होय तथा रोगनी उत्पत्ति थएल होय ते कारणोनो (तेवां आहारविहारादिकनो) त्याग करावयो ए संक्षिप्त चिकित्सा छे अने जे औषधना प्रयोगथी दोषना कोपनो तथा रोगनो प्रतिघात थाय ते औषधनो प्रयोग करवो ए विस्तीर्ण चिकित्सा छे.

१५ उष्णाभितप्तस्य जलप्रवेशाद्
दूरेक्षणात्स्वप्नविपर्ययाच्च ॥
प्रसक्तसंरोदनशोककोप-
क्लेशाभिघातादतिमैथुनाच्च ।
शुक्तारनालाम्लकुलत्थमाष-
निषेवणाद्वेगविनिग्रहाच्च ॥
स्वेदाद्रजोधूमनिषेवणाच्च
च्छर्देर्विघाताद्वमनातियोगात् ।
बाष्पग्रहात्सूक्ष्मनिरीक्षणाच्च
नेत्रे विकाराञ्जनयन्ति दोषाः ॥

नेत्रना रोगोनां दूरनां तथा पासेनां सामान्य निदानो.

१५ तडका वगेरेथी अतिताप थाय त्यारे थंडा जळमां प्रवेश करतां तडका वगेरेथी उत्पन्न थएली गरमीनी साथे बाहार आवेला नेत्रना तेजनो जळथी पराभव थाय छे तेथी, दूर रहेला पदार्थोने जोवाथी, समयसर निद्रा नहीं करवाथी, अयोग्य समये निद्रा करवाथी, लांबा काळ सूधी रोया करवाथी, लांबा काळ सूधी शोक करवाथी, निरंतर कोप करवाथी, लांबा काळ सूधीना क्लेशथी, अभिघातथी, अत्यंत मैथुन करवाथी, संधाणाना द्रवना अतिसेवनथी, घउना आथाना अतिसेवनथी, खाटा रसना अतिसेवनथी, कळथीना अतिसेवनथी, अडदना अतिसेवनथी, मूत्र वगेरेनी हाजतोनो अटकाव करवाथी, अग्नि वगेरेना तापथी, नेत्रवते रजना सेवनथी, धूमाडाना अतिसेवनथी, वमननो विघात थवाथी, वमननो अतियोग थवाथी, अश्रुओना वेगने रोकवाथी अने सूक्ष्म पदार्थोनुं अवलोकन करवाथी दोषो नेत्रमां विकारोने उत्पन्न करे छे.

१६ वाताद्दश तथा पित्तात्कफाच्चैव त्रयोदश ।
रक्तात्षोडश विज्ञेया सर्वजाः पञ्चविंशतिः ॥
तथा बाह्यौ पुनर्द्वौ च रोगाः षट्सप्ततिः स्मृताः

नेत्रोना छोंतेर रोगो अने तेओनां जूदां जूदां वातादिक निदानो.

१६ नेत्रोना कुल छोंतेर रोगो छे तेओमां दश वायुथी थाय छे, दश पित्तथी थाय छे, तेर कफथी थाय छे, सोळ रुधिरथी थाय छे, पचीस सघळा दोषोथी थाय छे अने बे आगंतु कारणोथी थाय छे.

१७हताधिमन्थो निमिषो दृष्टिर्गम्भीरिका च या
यच्च वातहतं वर्त्म न ते सिध्यन्ति वातजाः ।
याप्योऽथ तन्मयः काचः साध्याः स्युः सान्य-
मारुताः ॥
शुष्काक्षिपाकाधीमन्थस्यन्दमारुतपर्ययाः ।

वायुथी थता दश नेत्ररोगोमां असाध्य, याप्य अने साध्य.

१७ वायुथी थता दश नेत्ररोगोमां हताधिमंथ, निमिष, गंभीरिका अने वातहतवर्त्म ए चार रोगो असाध्य छे. लिंगनाश नामनो एक रोग याप्य छे. अन्यमारुत, (अन्यतोवात) शुष्काक्षिपाक, वाताधिमंथ, वाताभिष्यंद अने मारुतपर्यय (वातपर्यय) ए पांच रोगो साध्य छे.

१८ असाध्यो ह्रस्वजात्यो यो जलस्रावश्च
पैत्तिकः ।

परिम्लायी च नीलश्च याप्यः काचोऽथ तन्मयः
अभिष्यन्दोऽधिमन्थोऽम्लाध्युषितं शुक्तिकाह्वया
दृष्टिः पित्तविदग्धा च साध्याः स्युर्धूमरश्च यः।

पित्तथी थता दश नेत्ररोगोमां असाध्य, याप्य अने साध्य.

१८ पित्तथी थता दश नेत्ररोगोमां ह्रस्वजात्य अने पैत्तिकस्राव ए बे रोगो असाध्य छे. परिम्लायीलिंगनाश अने नीललिंगनाश ए बे रोगो याप्य छे. पित्ताभिष्यंद, पित्ताधिमंथ, अम्लाध्युषित, शुक्तिका, पित्तविदग्धदृष्टि अने धूमदर्शी ए छ रोगो साध्य छे.

१९ असाध्यः कफजः स्रावो याप्यः काचोऽथ तन्मयः ॥
अभिष्यन्दोऽधिमन्थश्च बलासग्रथितं च यत् ।
दृष्टिः श्लेष्मविदग्धा च पोथक्यो लगणश्च यः ॥
क्रिमिग्रन्थिपरिक्लिन्नवर्त्मशुक्लार्मपिष्टकाः ।
श्लेष्मोपनाहः साध्यास्तु कथिताः श्लेष्मजेषु तु

कफथी थता तेर नेत्ररोगोमां असाध्य, याप्य अने साध्य.

१९ कफथी थता तेर नेत्ररोगोमां श्लैष्मिकस्राव नामनो एक रोग असाध्य छे, कफलिंगनाश नामनो एक रोग याप्य छे. कफाभिष्यंद, कफाधिमंथ, बलासग्रथित, श्लेष्मविदग्धदृष्टि, पोथकी, लगण, क्रिमिग्रंथि, प्रक्लिन्नवर्त्म, शुक्लार्म, पिष्टक अने श्लेष्मोपनाह ए अगीयार रोगो साध्य छे.

२० रक्तस्रावोऽजकाजातं शोणितार्शोऽवलम्बितम् ।
शुक्रं न साध्यं काचश्च याप्यस्तज्जः प्रकीर्त्तितः
मन्थस्यन्दौ क्लिष्टवर्त्म हर्षोत्पातौ तथैव च ।
सिराजावञ्जनाख्या च सिराजालं च यत्स्मृतम्
पर्वण्यथाव्रणं शुक्रं शोणितार्मार्ज्जुनश्च यः ॥
एते साध्या विकारेषु रक्तजेषु भवन्ति हि ॥

रुधिरथी थता सोळ नेत्ररोगोमां असाध्य, याप्य अने साध्य.

२० रुधिरथी थता सोळ नेत्ररोगोमां रक्तस्राव, अजकाजात, शोणितार्श अने सव्रणशुक्र ए चार रोगो असाध्य छे. रक्तलिंगनाश नामनो एक रोग याप्य छे. रक्ताधिमंथ, रक्ताभिष्यंद, क्लिष्टवर्त्म, शिराहर्ष, शिरोत्पात, अंजनिका, शिराजाल, पर्वणी, अव्रणशुक्र, शोणितार्म अने अर्जुन ए अगीयार रोगो साध्य छे.

२१ पूयस्रावो नाकुलान्ध्यमक्षिपाकात्ययोऽलजी
असाध्याः सर्वजो याप्यौ काचः कोपश्च पक्ष्मणः
वर्त्मावबन्धो यो व्याधिः शिरासु पिडका च या
प्रस्तार्यर्माधिमांसार्म स्नाय्वर्मोत्सङ्गिनी च या ॥
पूयालसश्चार्बुदं च श्यावकर्दमवर्त्मनी ।
तथार्शोवर्त्म शुष्कार्शः शर्करावर्त्म यच्च वै ॥
सशोफश्चाप्यशोफश्च पाको बहलवर्त्म च ।
अक्लिन्नवर्त्म कुम्भीका बिसवर्त्म च सिद्ध्यति ॥

सर्व दोषोथी थता पचीश नेत्ररोगोमां असाध्य, याप्य अने साध्य.

२१ सर्व दोषोथी थता पचीस नेत्ररोगोमां पूयस्राव, नाकुलांध्य, अक्षिपाकात्यय अने अलजी ए चार रोगो असाध्य छे. सान्निपातिक लिंगनाश अने पक्ष्मकोप ए बे रोगो याप्य छे. वर्त्मावबंध, शिरापिडका, प्रस्तार्यर्म, अधिमांसार्म, स्नाय्वर्म, उत्संगिनी, पूयालस, अर्बुद, श्याववर्त्म, कर्दमवर्त्म, अर्शोवर्त्म, शुष्कार्श, शर्करावर्त्म, सशोफपाक, अशोफपाक, बहलवर्त्म, अपरिक्लिन्नवर्त्म, कुंभीका अने बिसवर्त्म ए ओगणीश रोगो साध्य छे.

२२ सनिमित्तोऽनिमित्तश्च द्वावसाध्यौ तु बाह्यजौ

आगंतु कारणोथी थता बन्ने नेत्र रोगो असाध्य छे.

२२ आगंतु कारणोथी थता सनिमित्तलिंगनाश अने अनिमित्तलिंगनाश ए बन्ने रोगो असाध्य छे.

२३ षट्सप्ततिविकाराणामेषा संग्रहकीर्तना ॥
नव सन्ध्याश्रयास्तेषु वर्त्मजास्त्वेकविंशतिः ।
शुक्लभागे दशैकश्च चत्वारः कृष्णभागजाः ॥
सर्वाश्रयाः सप्तदश दृष्टिजा द्वादशैव तु ।
बाह्यजौ द्वौ समाख्यातौ रोगौ परमदारुणौ ॥
भूय एतान्प्रवक्ष्यामि संख्यारूपचिकित्सितैः ॥

आश्रयोना भेदो उपरथी नेत्ररोगोनो संग्रह.

२३ जेम उपर दोषोना भेदो उपरथी छोंतेर नेत्ररोगोनो संग्रह कह्यो तेम हवे आश्रयोना भेदो उपरथी छोंतेर नेत्ररोगोनो संग्रह कहीए छीए.

छोंतेर नेत्ररोगोमां नव रोगो संधिओमां थाय छे, एकवीस रोगो पांपणोमां थाय छे, अगीयार रोगो सफेद डोळामां थाय छे, चार रोगो काळा डोळामां थाय छे, सत्तर रोगो सघळा नेत्रमां थाय छे, बार रोगो कीकीमां थाय छे अने बे परमदारुण आगंतुज रोगो सघळां नेत्रमां थतां छतां पण कीकीमां थाय छे एम मानवामां आवे छे. हवे छोंतेर नेत्ररोगोनुं संख्याथी, (नामोथी) रूपोथी तथा चिकित्सितोथी व्याख्यान आपुं छुं.

अध्याय २ जो.

१ अथातः सन्धिगतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'संधिगतरोगविज्ञानीय[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पूयालसः सोपनाहः स्रावाः पर्वणिकालजी।
क्रिमिग्रन्थिश्च विज्ञेया रोगाः सन्धिगता नव ॥

[1] सांधाओमां थता नेत्ररोगोनां लक्षणादिक विषेनो.

संधिओमां थता नव रोगो.

२ पूयालस, श्लेष्मोपनाह, पैत्तिकस्राव, श्लैष्मिकस्राव, रक्तस्राव, पूयस्राव, पर्वणी, अलजी अने क्रिमिग्रंथि ए नव रोगो संधिओमां थाय छे.

३ पक्वः शोफः सन्धिजः संस्रवेद्यः
सान्द्रं पूयं पूति पूयालसःसः ।

पूयालसनुं लक्षण.

३ सांधामां थएलो अने पाकेलो जे सोजो दुर्गंधी तथा घाटा परूने स्रवे छे ते **पूयालस** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

४ ग्रन्थिर्नाल्पो दृष्टिसन्धावपाकः
कण्डूप्रायो नीरुजस्तूपनाहः ॥

श्लेष्मोपनाहनुं लक्षण.

४ कीकीना सांधामां मोटो, थोडा पाकवाळो, घणी खरजवाळो, कठण, रातो अने अल्प वेदनावाळो जे ग्रंथि (गांठो) थाय छे ते **श्लेष्मोपनाह** केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

५ गत्वा सन्धीनश्रुमार्गेण दोषाः
कुर्युः स्रावान्रुग्विहीनान्स्वलिङ्गान् ।
तान्वै स्रावान्नेत्रनाडीमथैके
तेषां लिङ्गं कीर्तयिष्ये चतुर्धा ॥
पक्वः सन्धौ संस्रवेद्यश्च पूयं
पूयस्रावो नैकरूपः प्रदिष्टः ।
श्वेतं सान्द्रं पिच्छिलं यः स्रवेच्च
श्लेष्मस्रावो नीरुजः स प्रदिष्टः ॥
रक्तस्रावः शोणितोत्थः सरक्तं
कोष्णं नाल्पं संस्रवेन्नातिसान्द्रम् ।
पीताभासं नीलमुष्णं जलाभं
पित्तस्रावं स स्रवेत्सन्धिमध्यात् ॥

चार स्रावोनी संप्राप्ति तथा जूदां जूदां लक्षणो.

५ दोषो अश्रुना मार्गथी (शिराओथी) संधिओमां

जईने पोतपोतानां लक्षणोवाळा पीडा वगरना स्रावोने उत्पन्न करे छे के जे स्रावोने केटलाएक आचार्योए 'नेत्रनाडी' ए नाम आपेलुं छे. ए स्रावोनां चार जूदां जूदां लक्षणो कहुं छुं.

सांधामां पाकेलो जे सोजो परूने स्रवे छे अने अनेक रूपोवाळो होय छे ते **पूयस्राव** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने असाध्य छे.)

सांधामां थएलो जे सोजो सफेद, घाटा तथा चीकणा स्राववाळो होय अने वेदना वगरनो होय ते **श्लैष्मिकस्राव** केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने असाध्य छे.)

सांधामांथी लोहीवाळो, जरा ऊनो, घणो अने थोडा घाटापणावाळो स्राव थतो होय ते **रक्तस्राव** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने असाध्य छे.)

सांधाना मध्यमांथी पीळा आभासवाळो, श्याम, ऊनो अने पाणी जेवो स्राव थतो होय ते **पैत्तिकस्राव** केहेवाय छे. (आ पित्तजन्य छे अने असाध्य छे.)

६ ताम्रा तन्वी दाहशूलोपपन्ना
रक्ताज्ज्ञेया पर्वणी वृत्तशोफा ।

पर्वणीनुं लक्षण.

६ काळा डोळाना तथा सफेद डोळाना सांधामां राती, झीणी, बळतरावाळी, शूळवाळी अने गोळ सोजावाळी जे फोडली रुधिरने स्रवती होय ते **पर्वणी** केहेवाय छे, (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

७ जाता सन्धौ कृष्णशुक्लेऽलजी स्या-
त्तस्मिन्नेवाख्यापिता पूर्वलिङ्गैः ॥

अलजीनुं लक्षण.

७ निदानस्थानना छट्ठा अध्यायना पंदरमा विषयमां कह्याप्रमाणे राती तथा काळी, बीजा फोडकाओथी पण व्याप्त अने दारुणपणावाळी फोडली एज सांधामां (काळा डोळाना तथा सफेद डोळाना सांधामां) थई होय ते **अलजी** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने असाध्य छे.)

८ क्रिमिग्रन्थिर्वर्त्मनः पक्ष्मणश्च
कण्डूं कुर्युः क्रमयः सन्धिजाताः ।
नानारूपा वर्त्मशुक्लस्य सन्धौ
चरन्तोऽन्तर्नयनं दूषयन्ति ॥

क्रिमिग्रंथिनुं लक्षण.

८ पांपणना तथा पांपणना वाळोना सांधामां उत्पन्न थएला अनेक रूपोवाळा कीडाओ (सावां) खरजने उत्पन्न करे छे, पांपणना अने सफेद डोळाना सांधामां प्राप्त थाय छे अने अंदर भक्षण करता करता नेत्रने खराब करी नाखे छे ए रोग **क्रिमिग्रंथि** केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

अध्याय ३ जो.

१ अथातो वर्त्मगतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वर्त्मगतरोगविज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पृथग्दोषाः समस्ताश्च यदा वर्त्मव्यपाश्रयाः।
शिरा व्याप्यावतिष्ठन्ते वर्त्मस्वधिकमूर्छिताः
विवर्ध्य मांसं रक्तं च तदा वर्त्मव्यपाश्रयान् ।
विकाराञ्जनयन्त्याशु नामतस्तान्निबोधत ॥

पांपणोमां थता एकवीश नेत्ररोगोनी संप्राप्ति.[1]

२ ज्यारे एक एक अथवा सघळा दोषो अत्यंत प्रकुपित थई पांपणोना मध्यमां रहेली शिराओमां व्याप्त थई पांपणोमां रहे छे त्यारे

---

१ पांपणोमां थता नेत्ररोगोनां संप्राप्ति तथा लक्षणो विषेनो.

तेओ मांसने तथा रुधिरने वधारीने तुरत पांपणोना रोगोने उत्पन्न करे छे. ए रोगोनां नामो कहुं छुं ते सांभळो.

३ उत्सङ्गिन्यथ कुम्भीका पोथक्यो वर्त्मशर्करा तथार्शोवर्त्म शुष्कार्शस्तथैवाञ्जननामिका ॥ बहलं वर्त्म यच्चापि व्याधिर्वर्त्मावबन्धकः । क्लिष्टकर्दमवर्त्माख्यौ श्याववर्त्म तथैव च ॥ प्रक्लिन्नमपरिक्लिन्नं वर्त्म वातहतं तु यत् । अर्बुदं निमिषश्चापि शोणितार्शश्च यत्स्मृतम् ॥ लगणो बिसनामा च पक्ष्मकोपस्तथैव च । एकविंशतिरित्येते विकारा वर्त्मसंश्रयाः ॥ नामभिस्ते समुद्दिष्टा लक्षणैस्तान्प्रचक्ष्महे ।

पापणोमां थता एकवीस रोगो.

३ उत्संगिनी, कुंभीका, पोथकी, शर्करावर्त्म, अर्शोवर्त्म, शुष्कार्श, अंजनिका, बहलवर्त्म, वर्त्मावबंध, क्लिष्टवर्त्म, कर्दमवर्त्म, श्याववर्त्म, प्रक्लिन्नवर्त्म, अपरिक्लिन्नवर्त्म, वातहतवर्त्म, अर्बुद, निमिष, शोणितार्श, लगण, बिसवर्त्म अने पक्ष्मकोप ए एकवीस रोगो पांपणोमां थाय छे पांपणोनां रोगोनां आ नामो कह्यां. हवे ए रोगोनां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो.

४ पिडकाभ्यन्तरमुखी बाह्याधोवर्त्मसंश्रया ॥ विज्ञेयोत्सङ्गिनी नाम तद्रूपपिडकान्विता ।

उत्संगिनीनुं लक्षण.

४ पांपणनी अंदर रहेला मोहोडावाळी, ऊंचापणाने लीधे जाणे बाहार होय एवी जणाती, नीचेनी पांपणमां थएली, अंदर परूवाळी, पोतामां पोताना जेवीज अनेक फोडलीओवाळी अने खरजवाळी जे फोडली होय ते **उत्संगिनी** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

५ कुम्भीकबीजप्रतिमाः पिडकाः पक्ष्मवर्त्मनोः आध्मायन्ते तु भिन्ना याः कुम्भीकपिडकास्तुताः ।

कुंभीकानुं लक्षण.

५ पांपणमां तथा पांपणना वाळोमां, कठोर प्रदेशमां उत्पन्न थती दाडिमना जेवां फळोवाळी कुंभीका नामनी लतानां बीजो जेवी जे फोडलीओ फोडवाथी सूजी जाय छे अने फूटीफूटीने स्रव्या करे छे ते फोडलीओ **कुंभीका** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

६ कण्डूस्रावान्विता गुर्व्यो रक्तसर्षपसन्निभाः ॥ पिडकाश्च रुजावत्यः पोथक्य इति संज्ञिताः ।

पोथकीनुं लक्षण.

६ खरजवाळी, स्रावबाळी, भारे, राता सर्षपो जेवी अने वेदनावाळी जे फोडलीओ पांपणमां थाय छे तेओ पोथकी केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

७ पिडकाभिः सुसूक्ष्माभिर्घनाभिरभिसंवृता ॥ पिडका या खरा स्थूला सा ज्ञेया वर्त्मशर्करा ।

शर्करावर्त्मनुं लक्षण.

७ अत्यंत झीणी झीणी घाटी फोडलीओथी चोतरफ वींटाएली, खरसट अने जाडी जे फोडली पांपणमां थाय छे ते **शर्करावर्त्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

८ ऊर्वारुबीज प्रतिमाः पिडका मंदवेदनाः ॥ सूक्ष्माः खराश्च वर्त्मस्थास्तदर्शोवर्त्म कीर्त्यते ।

अर्शोवर्त्मनुं लक्षण.

८ ऊनाळानी काकडीनां बीजो जेवी, मंदवेदनावाळी, झीणी अने तीक्ष्ण अणीओवाळी जे फोडलीओ पांपणमां थाय छे ते **अर्शोवर्त्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

९ दीर्घोऽङ्कुरः खरः स्तब्धो दारुणो वर्त्मसम्भवः व्याधिरेष समाख्यातः शुष्कार्श इति संज्ञितः ॥

शुष्कार्शनुं लक्षण.

९ पांपणना अंदरना भागमां लांबो, **खरसट,** अक्कड अने दारुण जे अंकुर उत्पन्न थाय **छे ते शुष्कार्श** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

१० दाहतोदवती ताम्रा पिडका वर्त्मसम्भवा। मृद्वी मन्दरुजा सूक्ष्मा ज्ञेया साऽञ्जननामिका ॥

अंजनिकानुं लक्षण.

१० बळतरावाळी, भोकाया जेवी व्यथावाळी, राती, कोमळ अने मंद वेदनावाळी जे झीणी फोडली पांपणमां थाय छे ते **अंजनिका** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

११ वर्त्मोपचीयते यस्य पिडकाभिः समन्ततः सवर्णाभिः स्थिराभिश्च विद्याद् बहलवर्त्म तत्

बहलवर्त्मनुं लक्षण.

११ पांपणनां जेवा वर्णवाळी अने कठणपणावाळी फोडलीओथी पांपण चोमेर जाडी थई जाय छे ए **बहलवर्त्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

१२ कण्डूमताल्पतोदेन वर्त्मशोफेन यो नरः । न समं छादयेदक्षि भवेद् बन्धः स वर्त्मनः ॥

वर्त्मावबंधनुं लक्षण.

१२ खरजवाळा अने अल्प व्यथावाळा पांपणना जे सोजाने लीधे आंख सरखी रीते वीची शकाती न होय ते सोजो **वर्त्मावबंध** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

१३ मृद्वल्पवेदनं ताम्रं यद्वर्त्म सममेव च । अकस्माच्च भवेद्रक्तं क्लिष्टवर्त्म तदादिशेत् ॥

क्लिष्टवर्त्मनुं लक्षण.

१३ पांपण कोमळ रहे, अल्प वेदनावाळी रहे, सीधी रहे, राती रहे अने अकस्मात् राती पण थई जाय ए **क्लिष्टवर्त्म** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

१४ क्लिष्टं पुनः पित्तयुक्तं विदहेच्छोणितं यदा तदा क्लिन्नत्वमापन्नमुच्यते वर्त्मकर्दमम् ॥

कर्दमवर्त्मनुं लक्षण.

१४ उपर क्लिष्टवर्त्मनां जे लक्षणो कह्यां ते लक्षणो होवा उपरांत ज्यारे पित्तथी संयुक्त लोही बळतरा करे त्यारे पांपण क्लेदवाळी रेहेती होय तो ते रोग **कर्दमवर्त्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

१५ यद्वर्त्म बाह्यतोऽन्तश्च श्यावं शूनं सवेदनम् दाहकण्डूपरिक्लेदि श्याववर्त्मेति तन्मतम् ॥

श्याववर्त्मनुं लक्षण.

१५ पांपण जो बाहार तथा अंदर काळाशवाळी रहे, सोजावाळी होय, वेदनावाळी होय अने दाहथी, खरजथी तथा क्लेदथी युक्त रह्या करे तो ते रोग **श्याववर्त्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

१६ अरुजं बाह्यतः शूनमन्तः क्लिन्नं स्रवत्यपि कण्डूनिस्तोदभूयिष्ठं क्लिन्नवर्त्म तदुच्यते ॥

प्रक्लिन्नवर्त्मनुं लक्षण.

१६ पांपण थोडीक वेदनावाळी होय, बाहार सोजावाळी होय, अंदर क्लेदवाळी होय, खरजथी तथा भोकाया जेवी व्यथाथी अत्यंत युक्त होय तथा स्रवती पण होय तो ते रोग **प्रक्लिन्नवर्त्म** केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

१७यस्य धौतानि धौतानि सम्बध्यन्ते पुनःपुनः वर्त्मान्यपरिपक्वानि विद्यादक्लिन्नवर्त्म तत् ॥

अपरिक्लिन्नवर्त्मनुं लक्षण.

१७ पांपणो वारंवार धोया छतां पण वारंवार परस्परमां चोटी जती होय अने काचीज रेहेती होय तो ते **अपरिक्लिन्नवर्त्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

१८ विमुक्तसन्धि निश्चेष्टं वर्त्म यत्र निमील्यते एतद्वातहतं विद्यात्सरुजं यदि वाऽरुजम् ।

वातहतवर्त्मनुं लक्षण.

१८ पांपण ठेकाणाथी खसी गएला संधिवाळी होय, क्रियावगरनी होय, वींचाती न होय तथा वणी पीडावाळी के थोडी पीडावाळी होय ते **वातहतवर्त्म** केहेवाय छे. (आ वायुजन्य छे अने असाध्य छे.)

१९ वर्त्मान्तरस्थं विषमं ग्रन्थिभूतमवेदनम् ॥
विज्ञेयमर्बुदं पुंसां सरक्तमवलम्बितम् ।

अर्बुदनुं लक्षण.

१९ पांपणनी अंदर वर्त्तुलपणा वगरनो, थोडी वेदनावाळो, जराक रातो अने वलगी रहेलो कठण गांठो उत्पन्न थाय छे ते अर्बुद केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

२० निमेषणीः शिरा वायुः प्रविष्टो वर्त्मसंश्रयाः
चालयेदति वर्त्मानि निमिषः स गदो मतः ॥

निमिषनुं लक्षण.

२० वायु पांपणोमां रहेली शिराओ के जेओ पांपणोने वीचावनारी छे तेओमां पेसीने पांपणोने अत्यंत चलायमान कर्‍या करे ए रोग निमिष केहेवाय छे. (आ वायुजन्य छे अने असाध्य छे.)

२१ छिन्नाश्छिन्ना विवर्द्धन्ते वर्त्मस्था मृदवोऽङ्कुराः ।
दाहकण्डूरुजोपेतास्तेऽर्शः शोणितसम्भवम् ॥

शोणितार्शनुं लक्षण.

२१ पांपणोमां रहेला, बळतरावाळा, खरजवाळा अने वेदनावाळा जे कोमळ अंकुरो वारंवार काप्या छतां वारंवार वध्या करता होय ते शोणितार्श केहेवाय छे. आ रुधिरजन्य छे अने असाध्य छे.)

२२ अपाकः कठिनः स्थूलो ग्रन्थिर्वर्त्मभवोऽरुजः ।
सकण्डूः पिच्छिलः कोलप्रमाणो लगणस्तु सः

लगणनुं लक्षण.

२२ पांपणमां पाक वगरनो, कठण, जाडो, थोडी वेदनावाळो, खरजवाळो, चीकणो अने बोर जेवडो गांठो थाय छे ते लगण केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

२३ शूनं यद्वर्त्म बहुभिः सूक्ष्मैश्छिद्रैः समन्वितम्
बिसमन्तर्जल इव बिसवर्त्मेति तन्मतम् ॥

बिसवर्त्मनुं लक्षण.

२३ जे पांपण सोजावली होय, जळनी अंदर रहेला कमळना मूळनी पेठे घणां घणां सूक्ष्म छिद्रोथी युक्त होय अने स्राव कर्‍या करती होय ते बिसवर्त्म केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

२४ पक्ष्माशयगता दोषास्तीक्ष्णाग्राणि खराणि च
निर्वर्तयन्ति पक्ष्माणि तैर्जुष्टं चाक्षि दूयते ॥
उत्पाटितैः पुनः शान्तिः पक्ष्मभिश्चोपजायते ।
वातातपानलद्वेषी पक्ष्मकोपः स उच्यते ॥

पक्ष्मकोपनुं लक्षण.

२४ पांपणोमां रहेला दोषो पांपणोमां तीक्ष्ण अग्रोवाळा खरसट वाळोने उत्पन्न करे छे, ए वाळो अंदर पेसवाथी आंख दुःख पामे छे, ए वाळोने चीपीया वते छोटी लेवामां आवे त्यारे शांति थाय छे, वळी पाछा ते वाळो उगी आवे छे अने ते उपद्रवने लीधे पवननुं, तडकानुं के अग्निनुं सहन करी शकातुं नथी तथा पवन, तडको अने अग्नि एओनी उपर द्वेष रह्या करे छे ए रोग पक्ष्मकोप केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने याप्य छे.)

अध्याय ४ थो.

१ अथातः शुक्लगतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शुक्लगतरोगविज्ञानीय'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ प्रस्तारिशुक्लक्षतजाधिमांस-
स्नाय्वर्मसंज्ञाः खलु पञ्च रोगाः ।

१ धोळा डोळामां थता नेत्ररोगोनां संप्राप्ति लक्षणादिक विषेनो.

स्युः शुक्तिका चार्जुनपिष्टकौ च
जालं शिराणां पिडकाश्च याः स्युः ॥
रोगा बलासग्रथितेन सार्द्ध-
मेकादशाक्ष्णोः खलु शुक्लभागे ।

सफेद डोळामां थता अगीयार रोगो.

२ प्रस्तार्यर्म, शुक्लार्म, शोणितार्म, अधिमांसार्म, स्नाय्वर्म, शुक्तिका, अर्जुन, पिष्टक, शिराजाल, शिरापिडका अने बलासग्रथित ए अगीयार रोगो आंखोना सफेद डोळामां थाय छे.

३ प्रस्तारि ग्रथितमिहार्म शुक्लभागे
विस्तीर्णं तनु रुधिरप्रभं सनीलम् ॥

प्रस्तार्यर्मनुं लक्षण.

३ सफेद डोळाउपर गुंथाएलुं, विस्तीर्ण, पातळुं, लोही जेवी प्रभावाळुं अने कांईक काळाशवाळुं वधेलुं मांस थाय छे ते **प्रस्तार्यर्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे तथा साध्य छे.)

४ शुक्लाख्यं मृदु कथयन्ति शुक्लभागे
सश्वेतं सममिह वर्द्धते चिरेण ।

शुक्लार्मनुं लक्षण.

४ सफेद डोळा उपर कोमळ, कांईक सफेदपणावाळुं अने समस्थितिवाळुं मांस उत्पन्न थाय छे अने लांबे काळे वृद्धि पामे छे ए **शुक्लार्म** केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

५ यन्मांसं प्रचयमुपैति शुक्लभागे
पद्माभं तदुपदिशन्ति लोहितार्म ॥

शोणितार्मनुं लक्षण.

५ सफेद डोळाउपर राता कमळना जेवी प्रभावाळुं जे कोमळ मांस जमा थाय छे ते **शोणितार्म** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

६ विस्तीर्णं मृदु बहुलं यकृत्प्रकाशं
श्यावं वा तदधिकमांसजार्म विद्यात् ।

अधिमांसार्मनुं लक्षण.

६ सफेद डोळा उपर कोमळ, जाडुं, पोहोळुं अने जराक काळाश सहित रताशवाळुं अथवा काळाशवाळुं मांस वृद्धि पामे छे ते **अधिमांसार्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

७ शुक्ले यत्पिशितमुपैति वृद्धिमेत-
त्स्नाय्वर्मेत्यभिपठितं खरं प्रपाण्डु ॥

स्नाय्वर्मनुं लक्षण.

७ सफेद डोळाउपर कठण, खरसट अने अत्यंत पांडु वर्णवाळुं जे मांस वधे छे ते **स्नाय्वर्म** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

८ श्यावाः स्युः पिशितनिभास्तु बिन्दवो ये
शुक्तिर्वा सितनयने स शुक्तिसंज्ञः ।

शुक्तिकानुं लक्षण.

८ सफेद डोळा उपर कांईक काळाशवाळा, मांस जेवा अने छीपनी पेठे कांईक लांबा जे सफेद बिंदुओ थाय छे ते **शुक्तिका** केहेवाय छे. (आ पित्तजन्य छे अने साध्य छे.)

९ एको यः शशरुधिरोपमस्तु बिन्दुः
शुक्लस्थो भवति तमर्जुनं वदन्ति ॥

अर्जुननुं लक्षण.

९ सफेद डोळा उपर ससलाना लोही जेवो रातो जे एक बिंदु थाय छे ते **अर्जुन** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

१० उत्सन्नः सलिलनिभोऽथ पिष्टशुक्लो
बिन्दुर्यः स भवति पिष्टकः सुवृत्तः ।

पिष्टकनुं लक्षण.

१० सफेद डोळा उपर ऊंचो, चोखाना लोट जेवो सफेद, गोळ अने पाणी जेवो आछो जे बिंदु थाय छे ते **पिष्टक** केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

११ जालाभः कठिनशिरो महान्सरक्तः
संतानः स्मृत इह जालसंज्ञितस्तु ॥

शिराजालनुं लक्षण.

११ सफेद डोळाउपर जाळां जेवो, कठण शिराओवाळो, मोटो अने रताशवाळो, शिराओनो जे जथो थाय छे ते **शिराजाल** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

१२ शुक्लस्थाः सितपिडकाः शिरावृता या-
स्ता विद्यादसितसमीपजाः शिराजाः ।

शिरापिडकानुं लक्षण.

१२ सफेद डोळामां काळा डोळानी नजदीक शिराओथी वींटाएली जे सफेद फोडलीओ थाय ते **शिरापिडका** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य अने साध्य छे.)

१३ कांस्याभो भवति शिरावृतः सिते यो
बिन्दुर्वा स तु निरुजो बलासकाख्यः॥

बलासग्रथितनुं लक्षण.

१३ सफेद डोळा उपर कांसाना जेवी प्रभावाळो, शिराओथी वींटाएलो, पाणीना बिंदु जेवो कांईक ऊंचो अने वेदनावगरनो जे बिंदु थाय छे ते **बलासग्रथित** केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

अध्याय ५ मो.

१ अथातः कृष्णगतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कृष्णगत-रोगविज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे केहेलुं छे.

२ यत्सव्रणं शुक्रमथाव्रणं वा
पाकात्ययश्चाप्यजका तथैव
चत्वार एतेऽभिहिता विकाराः
कृष्णाश्रयाः संग्रहतः पुरस्तात् ॥

काळा डोळामां थता चार रोगो.

२ सव्रणशुक्र, अव्रणशुक्र, अक्षिपाकात्यय अने अजकाजात ए चार रोगो काळा डोळामां उत्पन्न थाय छे के जेओ विषे आ तंत्रना पेहेला अध्यायना २३ मा विषयमां संक्षेपथी कह्युं छे.

३ निमग्नरूपं हि भवेत्तु कृष्णे
सूच्येव विद्धं प्रतिभाति यद्वै ।
स्रावं स्रवेदुष्णमतीवरुक्च
तत्सव्रण शुक्रमुदाहरन्ति

सव्रणशुक्रनुं लक्षण.

३ जे फूलूं काळा डोळामां डूबेला रूपवाळुं होय अर्थात् जराक देखवामां आवतुं होय, जाणे सोईथी वींधाएलुं होय एवुं लागे, निरंतर ऊना जळने स्रवतुं होय अने अत्यंत वेदनावाळुं होय ते **सव्रणशुक्र** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने घणुं करीने असाध्य छे.)

४ दृष्टेः समीपे न भवेत्तु यच्च
न चावगाढं न च संस्रवेत्
अवेदनावन्न च युग्मशुक्रं
तत्सिद्धिमाप्नोति कदाचिदेव ॥

सव्रणशुक्रना साध्यपणानुं तथा असाध्यपणानुं लक्षण.

४ जे सव्रणशुक्र कीकीना समीपमां **न होय**, ऊंडुं न होय, अत्यंत स्राववाळुं न होय, वेदना वगरनुं होय अने एकज होय ते कोई समये साध्य थाय छे. पण जे सव्रणशुक्र कीकीना समीपमां होय, ऊंडुं होय, वेदनावाळुं होय, अत्यंत

१ काळा डोळामां थता रोगोनां लक्षणो तथा साध्यासाध्यत्व जणाववा विषेनो.

त्राववाळुं होय अने जोटारूप होय ते कदी पण साध्य थतुं नथी.

५ सितं यदाभात्यसितप्रदेशे
स्यन्दात्मकं नातिरुगश्रुयुक्तम् ।
वैहायसाल्पाभ्रदलानुकारि
तदव्रणं साध्यतमं वदन्ति ॥

अव्रणशुक्रनुं लक्षण तथा सुखसाध्यपणुं.

५ काळा डोळामां अभिष्यंदथी (अभिष्यंदनां लक्षणो आ पछीना अध्यायमां केहेवामां आवशे.) थएलुं जे फूलुं आकाशमां रहेला वादळाना नाहाना टुकडा जेवुं सफेद देखातुं होय, अत्यंत पीडावाळुं न होय अने अश्रुओथी युक्त होय ते **अव्रणशुक्र** केहेवाय छे. आवा प्रकारनुं अव्रणशुक्र अत्यंत साध्य छे एम केहेवामां आवे छे. (जो के नेत्रना सघळा रोगो अभिष्यंदथी थाय छे तो पण आ फूलुं तो अभिष्यंदथीज थाय छे एवो नियम जणाववाने माटे 'अभिष्यंदथी थएलुं' ए विशेषण आप्युं छे. आ रुधिरजन्य छे.)

६ गम्भीरजातं बहलं च शुक्रं
चिरोत्थितं चापि वदन्ति कृच्छ्रम् ॥

अव्रणशुक्र अत्यंत साध्य छतां पण कोई स्थितिमां कष्टसाध्य होय छे.

६ जे अव्रणशुक्र ऊंडुं होय, जाडुं होय अने लांबा काळथी थएलुं होय ते कष्टसाध्य छे एम केहेवामां आवे छे.

७ विच्छिन्नमध्यं पिशितावृतं वा
चलं शिरासक्तमदृष्टिकृच्च ।
द्वित्वग्गतं लोहितमन्ततश्च
चिरोत्थितं चापि विवर्जनीयम् ॥
उष्णाश्रुपातः पिडका च कृष्णे
यस्मिन्भवेन्मुद्गनिभं च शुक्रम् ।
तदप्यसाध्यं प्रवदन्ति केचि-
दन्ये च यत्तित्तिरिपक्षतुल्यम् ॥

अव्रणशुक्रनुं अमुक स्थितिमां असाध्यपणुं.

७ जे अव्रणशुक्र मांस वीखाई जवाने लीधे ऊंडा मध्यवाळुं के मध्यमां छिद्रवाळा जेवुं होय, अथवा मांसथी वींटाएलुं होय, चंचल होय, शिरामां लागी रहेलुं होय, पदार्थोने देखवा न आपे एवुं होय, बे पटलोमां पोहोंचेलुं होय, छेडामां रातुं होय अने लांबा काळथी थएलुं होय ते असाध्य छे माटे तेनी चिकित्सा करवी नहीं. (मात्र बे पटलोमां पोहोचेलुं के लांबा काळथी थएलुं होय तो कष्टसाध्य छे पण बे पटलोमां पोहोचेलुं के लांबा काळथी थएलुं छतां उपर कहेलां विशेषणोवाळुं होय तो असाध्य छे.) केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'जो नेत्रमांथी ऊनां आंसुओ पडतां होय, फोडली थई होय अने फूलुं मग जेवा आकारवाळुं होय तो ते पण असाध्य छे.' बीजा केटलाएक आचार्यो तो एम केहे छे के 'तेतरनी पांख जेवुं थई गयुं होय ते अव्रणशुक्र पण असाध्य थाय छे.'

८ संछाद्यते श्वेतनिभेन सर्वं-
दोषेण यस्यासितमण्डलं तु ।
तमक्षिपाकात्ययमक्षिकोप-
समुत्थितं तीव्ररुजं वदन्ति ॥

अक्षिपाकात्ययनुं लक्षण.

८ अभिष्यंदथी उत्पन्न थएलुं, तीव्र वेदनावाळुं अने जेमां सर्व दोषोए उत्पन्न करेलां सफेद जेवा आकारथी काळो डोळो सारी पेठे ढंकाई गयो होय एवुं जे आंखनुं दरद थाय छे तेने **अक्षिपाकात्यय** केहे छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने असाध्य छे.)

९ अजापुरीषप्रतिमो रुजावान्
सलोहितो लोहितपिच्छिलास्रः ।
विदार्य कृष्णं प्रचयोऽभ्युपैति
तं चाजकाजातमिति व्यवस्येत् ॥

अजकाजातनुं लक्षण.

९ बकरीनी चोखी लींडी जेवी, पीडावाळी, कांइक रताशवाळी अने लाल तथा चीकणां अश्रुवाळी जे ऊंचाई काळा डोळाने चीरीने प्राप्त थाय छे ते **अजकाजात** केहेवाय छे. (आ ऊंचाई मेदनी थाय छे एम समजवुं?- कारण के विदेहराजाए ए ऊंचाईनी उत्पत्ति त्रीजा पटलमां कहेली छे. आ रुधिरजन्य छे अने असाध्य छे.)

अध्याय ६ ट्ठो.

१ अथातः सर्वगतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'सर्वगतरोग विज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्यन्दास्तु चत्वार इहोपदिष्टा-
स्तावन्त एवेह तथाधिमन्थाः ।
शोफान्वितोऽशोफयुतश्च पाका-
वित्येवमेते दश सम्प्रदिष्टाः ॥
हताधिमन्थोऽनिलपर्ययश्च
शुष्काक्षिपाकोऽन्यत एव वातः ।
दृष्टिस्तथाम्लाध्युषिता शिराणा-
मुत्पातहर्षावपि सर्वभागाः ॥
प्रायेण सर्वे नयनामयास्ते
भवन्त्यभिष्यन्दनिमित्तमूलाः ।
तस्मादभिष्यन्दमुदीर्यमाण-
मुपाचरेदाशु हिताय धीमान् ॥

सघळा नेत्रमां थता सत्तर रोगो अने तेओमां अभिष्यंदोनी तुरत चिकित्सा करवानी जरूर.

२ वाताभिष्यंद, पित्ताभिष्यंद, कफाभिष्यंद, रक्ताभिष्यंद, वाताधिमंथ, पित्ताधिमंथ, कफाधिमंथ, रक्ताधिमंथ, सशोफपाक, अशोफपाक, हताधिमंथ, वातपर्यय, शुष्काक्षिपाक, अन्यतोवात, अम्लाध्युषित, शिरोत्पात अने शिराहर्ष ए सत्तर रोगो सघळां नेत्रमां थाय छे. सघळा नेत्ररोगो घणुं करीने अभिष्यंदोथी थाय छे एटला माटे बुद्धिमान् वैद्ये उत्पन्न थता अभिष्यंदोनी तुरतज चिकित्सा करवी जोइए के जेथी हितनी प्राप्ति थाय.

३ निस्तोदनं स्तम्भनरोमहर्ष-
सङ्घर्षपारुष्यशिरोऽभितापाः ।
विशुष्कभावः शिशिराश्रुता च
वाताभिपन्ने नयने भवन्ति ॥

वाताभिष्यंदनुं लक्षण.

३ सोईवते भोंकाया जेवी व्यथा, स्तब्धपणुं, रुवाडांओनुं ऊभुं थवुं, नेत्रोनुं करकरीथी युक्त जेवापणुं, नेत्रोनुं रूक्षपणुं, माथामां व्यथा, नेत्रोनुं चीपडाथी रहितपणुं अने अश्रुओनुं टाढापणुं एटलां चिह्नो थयां होय तो जाणवुं के नेत्रमां **वाताभिष्यंद** थयो छे. (आ वायुजन्य छे अने साध्य छे.)

४ दाहप्रपाकौ शिशिराभिनन्दा
धूमायनं बाष्पसमुच्छ्रयश्च ।
उष्णाश्रुता पीतकनेत्रता च
पित्ताभिपन्ने नयने भवन्ति ॥

पित्ताभिष्यंदनुं लक्षण.

४ नेत्रमां बळतरा तथा पाकवुं, शीतल पदार्थोनी इच्छा, नेत्रमांथी जाणे धूमाडा नीकळता होय एवुं जणावुं, आंसुओनो अतिस्राव तथा ऊनापणुं अने नेत्रोनुं पीळापणुं ए चिह्नो उपरथी जाणवुं के नेत्रमां **पित्ताभिष्यंद** थयो छे. (आ पित्तजन्य छे अने साध्य छे.)

१ सघळा नेत्रमां थता रोगोनां नामो तथा लक्षणो जणाववा विषेनो.

५ उष्णाभिनन्दा गुरुताक्षिशोफः
कण्डूपदेहौ सिततातिशैत्यम् ।
स्रावो मुहुः पिच्छिल एव चापि
कफाभिपन्ने नयने भवन्ति ॥

कफाभिष्यंदनुं लक्षण.

५ ऊना पदार्थोनी इच्छा, भारेपणुं, आंखोमां सोजो, खरज, चीपडाओथी खरडाएलापणुं, सफेदपणुं, अत्यंत शीतलपणुं अने वारंवार चीकणो स्राव ए चिह्नो उपरथी जाणवुं के नेत्रमां **कफाभिष्यंद** थयो छे. (आ कफजन्य छे तथा साध्य छे.)

६ ताम्राश्रुता लोहितनेत्रता च
राज्यः समन्तादतिलोहिताश्च ।
पित्तस्य लिङ्गानि च यानि तानि
रक्ताभिपन्ने नयने भवन्ति ॥

रक्ताभिष्यंदनुं लक्षण.

६ आंसुओनुं रातापणुं, नेत्रोनुं लालपणुं, नेत्रमां चोतरफ अत्यंत राती रेखाओ अने उपरना चोथा विषयमां कहेलां पित्ताभिष्यंदनां लक्षणो ए चिह्नो उपरथी जाणवुं के नेत्रमां **रक्ताभिष्यंद** थयो छे. (आ रुधिरजन्य छे तथा साध्य छे.)

७ वृद्धैरेतैरभिष्यन्दैर्नराणामक्रियावताम् ।
तावन्तस्त्वधिमन्थाः स्युर्नयने तीव्रवेदनाः ॥

चारे अधिमंथो अभिष्यंदोथी थता होवा विषे.

७ जे माणसो अभिष्यंदोनी उपर औषधादि उपचारो न करे तेओने ए अभिष्यंदोनी वृद्धि थतां आंखोमां तीव्र वेदनावाळा चार अधिमंथो थाय छे. (वाताभिष्यंदनी वृद्धिथी वायुसंबंधी तीव्र वेदनाओवाळो वाताधिमंथ थाय छे, पित्ताभिष्यंदनी वृद्धिथी पित्तसंबंधी तीव्र वेदनाओवाळो पित्ताधिमंथ थाय छे, कफाभिष्यंदनी वृद्धिथी कफसंबंधी तीव्र वेदनाओवाळो कफाधिमंथ थाय छे अने रक्ताभिष्यंदनी वृद्धिथी रुधिरसंबंधी तीव्र वेदनाओवाळो रक्ताधिमंथ थाय छे.)

८ उत्पाट्यत इवात्यर्थं नेत्रं निर्मथ्यते तथा ।
शिरसोऽर्द्धं तु तं विद्यादधिमन्थं स्वलक्षणैः ॥

सघळा अधिमंथोनुं सामान्य लक्षण.

८ जे अधिमंथ जे अभिष्यंदथी थयो होय ते अधिमंथमां ते अभिष्यंदनां लक्षणो होवा उपरांत तथा नेत्र जाणे अत्यंत उखेडी के फाडी नखातुं होय तथा मथी नखातुं होय एवी पीडा थाय छे अने जाणे अरधुं माथुं अत्यंत उखेडी के फाडी नाखवामां आवतुं होय तथा अत्यंत मथी नखातुं होय एवी वेदना थाय छे. (माथानो अर्द्ध भाग तथा नेत्र जाणे उखेडी, फाडी के मथी नखातां होय एवी वेदना थवी एटली अभिष्यंदोथी अधिमंथोनी जूदाई छे. आ जूदा प्रकारनी वेदनारूप लक्षण चारे अधिमथोमां तुल्य छे. माथाना अर्द्धमां वेदना व्याधिना प्रभावथी थाय छे एम समजवुं.)

९ नेत्रमुत्पाट्यत इव मथ्यतेऽरणिवच्च यत् ।
सङ्घर्षतोदनिर्भेदमांससंरब्धमाविलम् ॥
कुंचनास्फोटनाध्मानवेपथुव्यथनैर्युतम् ।
शिरसोऽर्द्धं च येन स्यादधिमन्थः स मारुतात्

वाताधिमंथनुं विशिष्ट लक्षण.

९ नेत्र जाणे उखेडी नखातुं होय तथा अरणीनी पेठे मथातुं होय एवी वेदना थाय, तेमज जाणे करकरीओथी युक्त थयुं होय तेम पीडाय, सोई वते भोकाया जेवी व्यथाथी तथा भेदाया जेवी व्यथाथी युक्त थाय, मांसना सोजावाळुं थाय तथा मलिन थई जाय अने अरधुं माथुं संकोचावा जेवी व्यथाथी, फाटथी, सोजाना जेवी व्यथाथी, कंपथी तथा एवाज प्रकारनी वातजन्य व्यथाओथी युक्त थयुं होय तो जाणवुं के **वाताधिमंथ** थयो छे. (आ वायुजन्य छे तथा साध्य छे.)

१० रक्तराजिचितं स्रावि वह्निनेवावदह्यते ।
यकृत्पिण्डोपमं दाहि क्षारेणाक्तमिव क्षतम् ॥
प्रपक्कोच्छूनवर्णान्तं सस्वेदं पीतदर्शनम् ।
मूर्छाशिरोदाहयुतं पित्तेनाक्ष्यधिमन्थितम् ॥

पित्ताधिमंथनुं विशिष्ट लक्षण.

१० नेत्र राती रेखाओथी व्याप्त थाय, स्त्रव्या करे, जाणे अग्निथी दाह पामतुं होय एवुं जणाय, जमणा पडखानी गांठना पिंड जेवुं थई जाय, क्षारथी खरडाएला जखमनी पेठे बळतराथी युक्त थाय, छेडाओमां पाकथी तथा सोजाथी युक्त थाय, पाका तथा जाडा वर्णवाळुं थई जाय, स्वेदवाळुं थई जाय तथा सघळा पदार्थोने पीळा पीळा दीठा करे अने मूर्छा आवे तथा माथामां दाह थाय तो जाणवुं के **पित्ताधिमंथ** थयो छे. (आ पित्तजन्य छे तथा साध्य छे.)

११ शोफवन्नातिसंरब्धं स्रावकण्डूसमन्वितम्
शैत्यगौरवपैच्छिल्यदूषिकाहर्षणान्वितम् ॥
रूपं पश्यति दुःखेन पांशुपूर्णमिवाविलम् ।
नासाध्मानशिरोदुःखयुतं श्लेष्माधिमन्थितम् ॥

कफाधिमंथनुं विशिष्ट लक्षण.

११ नेत्र सोजावाळुं, कांईक ओछी उग्रतावाळुं, स्राववाळु, खरजवाळुं, शीतपणावाळुं, भारेपणावाळुं, चीकाशवाळुं, चीपडाओवाळुं, फूली गएला जेवुं, जाणे रजथी भरपूर थई गयुं होय एवुं मलिन तथा सघळा पदार्थोनां रूपोने मांड मांड देखे एवुं थई जाय अने नाक फूली जाय तथा माथामां फाट वगेरे वेदना थाय तो जाणवुं के **कफाधिमंथ** थयो छे. (आ कफजन्य छे तथा साध्य छे.)

१२ बन्धुजीवप्रतीकाशं ताम्यति स्पर्शनाक्षमम्
रक्तास्रावं सनिस्तोदं पश्यत्यग्निनिभा दिशः ॥
रक्तमग्नारिष्टवच्च कृष्णभागश्च लक्ष्यते ।
यद्दीप्तं रक्तपर्यन्तं तद्रक्तेनाभिमन्थितम् ॥

रक्ताधिमंथनुं विशिष्ट लक्षण.

१२ नेत्र बपोरीयाना फूल जेवुं थई जाय, ग्लानि पामे, स्पर्शनुं सहन करी शके नहीं, राता स्रावने स्त्रव्या करे, भोकाया जेवी व्यथाथी युक्त रह्या करे, सघळी दिशाओने अग्नि जेवी देखे, दीप्त थई जाय तथा राता छेडाओवाळुं थई जाय अने काळो डोळो रुधिरमां डूबेला अरीठा जेवो देखाय तो जाणवुं के **रक्ताधिमंथ** थयो छे. (आ रुधिरजन्य छे तथा साध्य छे.)

१३ हन्याद्दृष्टिं सप्तरात्रात्कफोत्थो
ऽधीमन्थोऽसृक्सम्भवः पञ्चरात्रात् ।
षड्रात्राद्वा मारुतोत्थो निहन्या-
न्मिथ्याचारात्पैत्तिकः सद्य एव ॥

अधिमंथोना उपचारोमां भूल थाय तो ते ते अधिमंथो अमुक अमुक मुदतमां दृष्टिनो विनाश करे छे.

१३ जो वैद्यनी के आतुरनी भूलथी खोटा उपचार थाय तो कफाधिमंथ सात रातनी अंदर दृष्टिने हणी नाखे छे, रक्ताधिमंथ पांच रातनी अंदर दृष्टिने हणी नाखे छे, वाताधिमंथ छ रातनी अंदर दृष्टिने हणी नाखे छे अने पित्ताधिमंथ त्रण रातनी अंदर दृष्टिने हणी नाखे छे.

१४ कण्डूपदेहाश्रुयुतः पक्वोदुम्बरसन्निभः ।
दाहसंहर्षताम्रत्वशोफनिस्तोदगौरवैः ॥
जुष्टो मुहुः स्रवेद्वास्रमुष्णशीतं सपिच्छिलम् ।
संरम्भी पच्यते यश्च नेत्रपाकः सशोफकः ॥

सशोफपाकनुं लक्षण.

१४ जो नेत्र खरजथी युक्त होय, चीपडाथी खरडाएल होय, अश्रुओथी युक्त होय, पाकेलां उंबरानां फळ जेवुं रातुं होय, सोजावाळुं होय, बळतराळुं होय, फूली गयेला जेवुं थयुं होय, रताशथी युक्त होय, सोजामां भोंकाया जेवी व्यथाथी युक्त होय, भारेपणावाळुं होय, वारंवार ऊनां टाढां तथा चीकणां आंसुने स्त्रव्या करतुं होय अने पाकवाळुं थई गयुं होय तो जाणवुं के

रूशोफपाक थयो छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने साध्य छे.)

१५ शोफहीनानि लिङ्गानि नेत्रपाके त्वशोफजे

अशोफपाकनुं लक्षण.

१५ उपर कहेलां सशोफपाकनां सघळां लक्षणो थयां होय अने केवळ सोजो न थयो होय तो जाणवुं के अशोफपाक थयो छे.

१६ उपेक्षणादक्षि यदाधिमंथो
वातात्मकः शोषयति प्रसह्य ।
रुजाभिरुग्राभिरसाध्य एव
हताधिमन्थो गदितो गदो हि ॥
अन्तः शिराणां श्वसनः स्थितो दृष्टिं प्रतिक्षिपन् ॥
हताधिमन्थं जनयेत्तमसाध्यं विदुर्बुधाः ।

हताधिमंथनुं लक्षण.

१६ वाताभिष्यंदथी थएलो अधिमंथ योग्य उपचारोनी उपेक्षा करवाथी ज्यारे उग्र वेदनाओ करी आंखने बलात्कारथी सूकावी नाखीने नष्ट करे छे त्यारे ए अधिमंथ **हताधिमंथ** केहेवाय छे अने जे अधिमंथ थतां शिराओनी अंदर रहेलो वायु उग्र वेदनाओ करीने आंखने बाहार काहाडी नाखे छे ए अधिमंथ पण **हताधिमंथ** केहेवाय छे. (आ बन्ने प्रकारनो अधिमंथ वायुजन्य छे अने असाध्य छे.)

१७ पक्ष्मद्वयाक्षिभ्रुवमाश्रितस्तु
यत्रानिलः संचरति प्रदुष्टः ।
पर्यायशश्चापि रुजः करोति
तं वातपर्यायमुदाहरन्ति ॥

वातपर्ययनुं लक्षण.

१७ बे पांपणो, नेत्रो तथा भमरो एओमां रहेलो दुष्ट वायु ए पांपणो वगेरेमां फरी फरीने कोई समये पांपणोमां, कोई समये नेत्रोमां अने कोई समये भमरोमां अनेक प्रकारनी तीव्र वेदनाओने उत्पन्न करे छे ए रोग **वातपर्यय** केहेवाय छे. (आ वायुजन्य छे अने साध्य छे.)

१८ यत्कूणितं दारुणरूक्षवर्त्म
संदह्यते चाविलदर्शनं यत् ।
सुदारुणं यत्प्रतिबोधने च
शुष्काक्षिपाकोपहतं तदक्षि ॥

शुष्काक्षिपाकनुं लक्षण.

१८ पांपणो दारुण तथा रूक्ष थई जाय, आंख संकोचाएली रहे, बळतरा थया करे, आंखथी जे देखाय ते मेलुंज देखाय अने उघाडवाना समयमां आंख अत्यंत विकृत देखाय ए रोग **शुष्काक्षिपाक** केहेवाय छे. (आ वायुजन्य छे अने साध्य छे,)

१९ यस्यावटूकर्णशिरोहनुस्थो
मन्यागतो वाप्यनिलोऽन्यतो वा ।
कुर्याद्रुजोऽति भ्रुवि लोचने वा
तमन्यतोवातमुदाहरन्ति ॥

अन्यतोवातनुं लक्षण.

१९ घांटामां, कानमां, माथामां, हडपचीमां, ओडमां के पीठ वगेरे बीजा स्थलमां रहेलो दुष्ट वायु भमरमां अथवा नेत्रमां अत्यंत वेदनाने उत्पन्न करे छे ए रोग **अन्यतोवात** केहेवाय छे. (आ वायुजन्य छे तथा साध्य छे. अन्य स्थलमां रहेलो दुष्ट वायु अन्य स्थलमां वेदनाने उत्पन्न करे छे तेथी आ रोगनुं 'अन्यतोवात' ए नाम सार्थक छे.)

२० अम्लेन भुक्तेन विदाहिना वा
संछाद्यते सर्वत एव नेत्रम् ।
शोफान्वितं लोहितकैः सनीलै-
रेताद्दगम्लाध्युषितं वदन्ति ॥

अम्लाध्युषितनुं लक्षण.

२० अत्यंत खाटुं अथवा विदाही अन्नादिक खावामां आवतां नेत्र कांईक श्यामतावाळी रता-

शोथी चोमेर ढंकाई जाय छे अने सोजावाळुं थाय छे ए रोग **अम्लाध्युषित** केहेवाय छे. (आ पित्तजन्य छे अने साध्य छे.)

२१ अवेदना वापि सवेदना वा
यस्याक्षिराज्यो हि भवन्ति ताम्राः ।
मुहुर्विरज्यन्ति च ताः समन्ता-
द्व्याधिः शिरोत्पात इति प्रदिष्टः ॥

शिरोत्पातनुं लक्षण.

२१ नेत्रनी शिराओ वेदनावगरनी अथवा वेदनावाळी रही राती थई जाय अने वळी वारंवार चोमेर विकृत वर्णवाळी थई जाय ए रोग **शिरोत्पात** केहेवाय छे. (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

२२ मोहाच्छिरोत्पात उपेक्षितस्तु
जायेत रोगस्तु शिराप्रहर्षः ।
ताम्राच्छमस्रं स्रवति प्रगाढम्
तथा न शक्नोत्यभिवीक्षितुं च ॥

शिराहर्षनुं लक्षण.

२२ जो प्रमादथी शिरोत्पातनी उपेक्षा करवामां आवे तो ते शिरोत्पातज **शिराहर्ष** थाय के जे शिराहर्ष थतां रातां तथा आछां आसुओनो अत्यंत स्राव थाय छे अने नेत्रथी जोई शकातुं नथी. (आ रुधिरजन्य छे अने साध्य छे.)

अध्याय ७ मो.

१ अथातो दृष्टिगतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'दृष्टिगतरोगविज्ञानीयं'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे केहेलुं छे.

२ मसूरदलमात्रां तु पञ्चभूतप्रसादजाम् ।
खद्योतविस्फुलिङ्गाभां सिद्धां तेजोभिरव्ययैः ॥
आवृतां पटलेनाक्ष्णोर्बाह्येन विवराकृतिम् ।
शीतसात्म्यां नृणां दृष्टिमाहुर्नयनचिन्तकाः ॥

दृष्टिनुं (कीकीनुं) प्रमाण, कारण तथा लक्षण

२ माणसोनी दृष्टि मसूरनी दाल जेवडी छे, पांचे महाभूतोना सारथी उत्पन्न थएली छे, पांचे महाभूतोना सारोवाळी छतां पण तेओमां तेजना अधिक सारोथी गोठवाएली छे, निमेषो आवे त्यारे पतंगीया जेवी लागे छे, पतंगीया जेवी छतां पण लांबा काळसूधी स्थिर रहे एवा तेजना सारोथी गोठवाएली होवाने लीधे दिवसे पण प्रकाशित रेहे छे, जेम पतंगीयो तेजवाळो छतां पण कोईने बाळतो नथी तेम कोईने बाळती नथी, पांपणो खुल्ली होय त्यारे अग्निना तणखा जेवी प्रकाशे छे, रसना तथा रुधिरना आश्रयथी रहेला बाहारना पटलथी वींटाएली छे, ए पटलना आछापणाने लीधे रूपोनुं ग्रहण करवामां उपघात पामती नथी, जाणे छिद्रवाळी होय एवा आकारवाळी छे, जेने सर्वदा शीतज अनुकूल रेहे छे एवी छे अने तेजोमय छतां पण स्वभावना बळने लीधे शीतनी साथे विरोध धरावती नथी एम नेत्रना विषयमां विद्वत्ता धरावनारा शालाक्यशास्त्रीओ केहे छे.

३ रोगांस्तदाश्रयान्घोरान्षट् च षट् च प्रचक्ष्महे।
पटलानुप्रविष्टस्य तिमिरस्य च लक्षणम् ॥

तिमिरनुं लक्षण तथा दृष्टिमां थता बार रोगोनां लक्षणो केहेवानी प्रतिज्ञा.

३ हवे दृष्टिमां पेठेला दुष्ट दोषना स्वभावरूप तिमिरनुं लक्षण अने दृष्टिमां थता बार भयंकर रोगोनां लक्षणो पण कहीए छीए.

---

[1] कीकीना स्वरूपनी अने कीकीना रोगोनी समजण विषेनो.

४ शिराभिरभिसम्प्राप्य विगुणोऽभ्यन्तरे भृशम्
प्रथमे पटले दोषो यस्य दृष्टौ व्यवस्थितः ॥
अव्यक्तानि स रूपाणि सर्वाण्येव प्रपश्यति ।

पेहेला (सहुथी अंदरना) पटलमां रहेला दोषना स्वभावरूप तिमिरनुं लक्षण.

४ अत्यंत दुष्ट थएलो दोष जेनी दृष्टिमां शिराओद्वारा अंदर पेसीने पेहेला (सहुथी अंदरना, अस्थिना आश्रयथी रहेला) पटलमां रह्यो होय ते माणस सघळां रूपोने झांखां देखे छे अने दोष अल्प होय तो कोई समये स्पष्ट पण देखे छे.

५ दृष्टिर्भृशं विह्वलति द्वितीयं पटलं गते ।
मक्षिका मशकान्केशाञ्जालकानीवपश्यति ।
मण्डलानि पताकाश्च मरीचीः कुण्डलानि च ॥
परिप्लवांश्च विविधान्वर्षमभ्रं तमांसि वा ।
दूरस्थान्यपि रूपाणि मन्यते च समीपतः ॥
समीपस्थानि दूरे च दृष्टेर्गोचरविभ्रमात् ।
यत्नवानपि चात्यर्थं सूचीपाशं न पश्यति ॥

बीजा (मेदना आश्रयथी रहेला) पटलमां स्थिति पामेला दोषना स्वभावरूप तिमिरनुं लक्षण.

५ दोष जो बीजा पटलमां आव्यो होय तो दृष्टि पेहेलाना करतां वधारे विकृत थई जाय छे एटले मांखीओ, मच्छरो तथा वाळो करोळीयाए रचेलां जाळांओ जेवां जोवामां आवे छे. वर्तुल पदार्थो, पताकाओ, किरणो, कुंडलो तथा नक्षत्रादिकना अने पडछाया वगेरेना संचारो ऊंचे, नीचे तथा आडां रहेलां तथा अनेक वर्णोवाळां जोवामां आवे छे. वरसाद, वादळां तथा अंधकार न होय तो पण जाणे होय एवां जोवामां आवे छे. रूपोनुं यथार्थग्रहण नहीं करवारूप विभ्रम थवाने लीधे दूर रहेलां रूपो समीपमां रहेलां जणाय छे, समीपमां रहेलां रूपो दूर रहेलां जोवामां आवे छे अने अत्यंत यत्न करतां छतां पण सोईनुं नाकुं जोवामां आवतुं नथी.

६ ऊर्ध्वं पश्यति नाधस्तात्तृतीयं पटलं गते ।
महान्त्यपि च रूपाणि च्छादितानीव वाससा॥
कर्णनासाक्षियुक्तानि विपरीतानि वीक्षते ।
यथादोषं च रज्येत दृष्टिर्दोषे बलीयसि ॥
अधःस्थिते समीपस्थं दूरस्थं चोपरिस्थिते ।
पार्श्वस्थिते तथा दोषे पार्श्वस्थानि न पश्यति
समन्ततः स्थिते दोषे सङ्कुलानीव पश्यति ।
दृष्टिमध्यगते दोषे महद्ध्रस्वं च पश्यति ।
दोषे दृष्टिस्थिते तिर्यक् स एकं मन्यते द्विधा॥
द्विधास्थिते त्रिधा पश्येद्बहुधा चानवस्थिते ।

त्रीजा (मांसना आश्रयथी रहेला) पटलमां स्थिति पामेला दोषना स्वभावरूप तिमिरनुं लक्षण.

६ दोष जो त्रीजा पटलमां आव्यो होय तो जे ऊंचे होय ते जोवामां आवे छे पण जे नीचे होय ते जोवामां आवतुं नथी. ऊंचे रहेलां जे रूपो जोवामां आवे छे तेओ अत्यंत मोटां होय तो पण जाणे वस्त्रोथी ढंकाएलां होय एवां जोवामां आवे छे. कानवाळां, नाकवाळां तथा नेत्रोवाळां शरीरो जाणे कानथी, नाकथी अने नेत्रोथी रहित होय एवां अथवा कानवगेरेमां विकृतिओवाळां होय एवां जोवामां आवे छे. जो दोष बळवान् होय तो दृष्टि दोषना स्वभाव प्रमाणे रंगाई जाय छे. दोष जो नीचेना भागमां रह्यो होय तो समीपमां रहेला पदार्थो जोवामां आवता नथी. दोष जो ऊंचेना भागमां रह्यो होय तो दूर रहेला पदार्थो जोवामां आवता नथी. दोष जो बाजूना भागमां रह्यो होय तो बाजूमां रहेला पदार्थो जोवामां आवता नथी. दोष जो चोमेर रह्यो होय तो उपर, नीचे तथा बाजूमां रहेला पदार्थो जूदा जूदा छतां पण मिश्रित जेवा जोवामां आवे छे. दोष जो दृष्टिना मध्यमां रह्यो होय तो मोटा पदार्थो नाहाना जोवामां आवे छे. दोष जो दृष्टिमां आडो रह्यो होय तो एक पदार्थ बे पदार्थो जेवो जोवामां आवे छे. दोष जो दृष्टिना बे भा-

गमां रह्यो होय तो एक पदार्थ त्रण पदार्थो जेवो जोवामां आवे छे अने दोष जो अनियमित रीते रह्यो होय तो एक पदार्थ घणा पदार्थो जेवो जोवामां आवे छे.

७ तिमिराख्यः स वै दोषश्चतुर्थपटलं गतः ॥ रुणद्धि सर्वतो दृष्टिं लिङ्गनाशः स उच्यते । तस्मिन्नपि तमोभूते नातिरूढे महागदे ॥ चन्द्रादित्यौ सनक्षत्रावन्तरिक्षे च विद्युतः । निर्मलानि च तेजांसि भ्राजिष्णूनि च पश्यति स एव लिङ्गनाशस्तु नीलिकाकाचसंज्ञितः ।

चोथा (रुधिरना तथा रसना आश्रयवाळा वाहारना) पटलमां रहेला दोषना स्वभावरूप तिमिरनुं लक्षण अने नामांतर.

७ जो ए तिमिरात्मक दोष दृष्टिना चोथा पटलमां आव्यो होय तो ते चोमेरथी दृष्टिने रोकी . आ समयमां ते दोष नीलिकाकाच अने लिंगनाश ए बे नामोवाळो रोग केहेवाय छे. अंधकारनी उपमा धरावनारो आ मोटो रोग अत्यंत वृद्धि पाम्यो न होय त्यां सूधी माणस अंतरिक्षमां चंद्रने, सूर्यने, नक्षत्रोने अने वीजळीओने देखे छे, (केम के अंतरिक्ष प्रकाशमय होवाथी अंधकारनुं जोर चालतुं नथी.) अग्नि वगेरेनां निर्मळ तेजोने पण देखे छे अने रत्नो तथा सुवर्ण वगेरे प्रकाशित पदार्थोने पण देखे छे. (आ रोग जूनो थाय त्यारे ए चंद्रादिक पदार्थो पण जोवामां आवता नथी.)

८ तत्र वातेन रूपाणि भ्रमन्तीव स पश्यति ॥ आविलान्यरुणाभानि व्याविद्धानि च मानवः

वायुथी थएला तिमिरनुं विशिष्ट लक्षण.

८ रूपो जाणे भ्रमण करतां होय एवां, मेलां, अस्पष्ट रताशवाळां अने वांकां जोवामां आवतां होय तो जाणवुं के वायुथी थएलुं तिमिर छे.

९ पित्तेनादित्यखद्योतशक्रचापतडिद्गुणान् ॥ शिखिबर्हविचित्रांश्च नीलकृष्णांश्च पश्यति ।

पित्तथी थएला तिमिरनुं विशिष्ट लक्षण.

९ सूर्यनां रूप, पतंगीयांओनां रूप, इंद्रधनुपनां रूप अने वीजळीनां रूप एओ मोरपींछ जेवां विचित्र, नील अने काळां जोवामां आवतां होय तो जाणवुं के पित्तथी थएलुं तिमिर छे.

१० गौरचामरगौराणि श्वेताभ्रप्रतिमानि च ॥ पश्येदसूक्ष्माण्यत्यर्थं व्यभ्रे चैवाभ्रसंप्लवम् । सलिलप्लावितानीव परिजाड्यानि मानवः ॥ कफेन पश्येद्रूपाणि स्निग्धानि च सितानि च

कफथी थएला तिमिरनुं विशिष्ट लक्षण.

१० जो रूपो सफेद चामर जेवां गौर, सफेद वादळां जेवां, अत्यंत जाडां, जळमां डूबेलां जेवां, अत्यंत शीतलतावाळां, स्निग्ध तथा सफेद जोवामां आवे अने आकाशमां वादळांनो घेराव नहीं छतां पण वादळांनो घेराव जोवामां आवतो होय तो जाणवुं के कफथी थएलुं तिमिर छे.

११ तथा रक्तेन रक्तानि तमांसि विविधानि च हरितश्यावकृष्णानि धूमधूम्राणि चेक्षते ॥

रुधिरथी थएला तिमिरनुं विशिष्ट लक्षण.

११ जो अनेक प्रकारना अंधकारो जोवामां आवता होय अने रूपो रातां, हरितवर्णवाळां, थोडी काळाशवाळां, घणी काळाशवाळां अने धूमाडाथी घेराएला जेवां जोवामां आवतां होय तो जाणवुं के रुधिरथी थएलुं तिमिर छे. (जो के आ तिमिर रुधिरनी अंदर रहेला दोषथी थतुं होवाने लीधे रुधिरथी थएलुं केहेवाय नहीं तो पण रुधिरना घणापणाने लीधे तेने रुधिरथी थएलुं कह्युं छे.)

१२ सन्निपातेन चित्राणि विप्लुतानीव पश्यति। बहुधा वा द्विधा वापि सर्वाण्येव समन्ततः । हीनाधिकाङ्गान्यथवा ज्योतींष्यपि च पश्यति॥

सन्निपातथी थएला तिमिरनुं विशिष्ट लक्षण.

१२ जो चोमेर सघळां रूपो विचित्र वर्णोवाळां, वीखराएलां जेवां, बबे प्रकारनां अथवा

घणां प्रकारनां अने ओछां अंगोवाळां अथवा अधिक अंगोवाळां जोवामां आवतां होय तथा तारा आदि तेजो पण तेवां जोवामां आवतां होय तो जाणवुं के सन्निपातथी (त्रणे दोषोथी) थएलुं तिमिर छे. (आथी एम समजाय छे के केवळ त्रीजा पटलमां रहेला दोषथीज रूपो ओछां अंगोवाळां जोवामां आवे छे एम नथी पण जो सन्निपात होय तो अन्य पटलोमां पण दोषोनी स्थितिथी रूपो न्यूनाधिक अंगोवाळां जोवामां आवे छे.)

१३ पित्तं भवेत्परिम्लायि मूर्छितं रक्ततेजसा पीता दिशस्तथोद्यन्तमादित्यमिव पश्यति ॥ विकीर्यमाणान्खद्योतैर्वृक्षांस्तेजोभिरेव च ।

रुधिरना सारना मिश्रणवाळा पित्तथी थएला तिमिरनुं विशिष्ट लक्षण.

१३ जो सघळी दिशाओ पीळी जोवामां आवती होय, सूर्य जाणे उगतो होय एवो जोवामां आवतो होय अने वृक्षो पतंगीयांओथी तथा अग्नि वगेरे तेजोथी व्याप्त थतां जोवामां आवतां होय तो जाणवुं के रुधिरना सारना मिश्रणवाळा पित्तथी थएलुं तिमिर छे. आ पित्त कोई वखते पोतानी मेळे पण क्षीण थाय छे.

१४ वक्ष्यामि षड्विधं रागैर्लिङ्गनाशमतः परम् ॥
रागोऽरुणो मारुतजः प्रदिष्टः
पित्तात्परिम्लाय्यथवापि नीलः ।
कफात्सितः शोणितजस्तु रक्तः
समस्तदोषोऽथ विचित्ररूपः ॥

त्रीजा पटलमां रहेला ते ते दोषथी दृष्टिना जूदा जूदा वर्णो.

१४ हवे त्रीजा पटलमां रहेला दोषोनी छ प्रकारना दृष्टिना वर्णो उपरथी व्यवस्था कहुं छुं. ते पछी (पंदरमा विषयमां) छ प्रकारना लिंगनाश नामना दृष्टिरोगोनां लक्षणो आपीश. वायु त्रीजा पटलमां रह्यो होय तथा बळवान् होय तो दृष्टिनो वर्ण अरुण थई जाय छे. पित्त त्रीजा पटलमां रह्युं होय तथा बळवान् होय तो दृष्टिनो वर्ण नील थई जाय छे. कफ त्रीजा पटलमां रह्यो होय तथा बळवान् होय तो दृष्टिनो वर्ण सफेद थई जाय छे. रुधिर त्रीजा पटलमां रह्युं होय तथा बळवान् होय तो दृष्टिनो वर्ण लाल थई जाय छे. त्रणे दोषो त्रीजा पटलमां रह्या होय तथा बलवान् होय तो दृष्टिनो वर्ण विचित्र थई जाय छे. रुधिरना सारना मिश्रणवाळुं पित्त त्रीजा पटलमां रह्युं होय तथा बलवान् होय तो दृष्टिनो वर्ण ग्लानिवाळो थई जाय छे. (आ अध्यायना छट्ठा विषयमां 'जो दोष बळवान् होय तो दृष्टि दोषना स्वभावप्रमाणे रंगाई जाय छे.) एम जे कह्युं छे तेनुं आ व्याख्यान आप्युं छे एम समजवुं. तिमिरो पेहेला के बीजा पटलमां होय तो साध्य छे, त्रीजा पटलमां होय तथा उपर प्रमाणे वर्णप्राप्ति थई होय तो याप्य छे तथा काच केहेवाय छे अने चोथा पटलमां होय तो दृष्टिने चोमेरथी रोकी देतां लिंगनाश अथवा नीलिकाकाच नामनो दृष्टिरोग केहेवाय छे. त्रीजा पटल सूधी तिमिरोने दृष्टिमां थता बार रोगोमां नहीं गणतां लिंगनाशोनां पूर्वरूपो जेवां मानेलां छे?)

१५ रक्तजं मण्डलं दृष्टौ स्थूलकाचानलप्रभम् परिम्लायिनि रोगे स्यान्म्लाय्यानीलं च मण्डलम् दोषक्षयात्कदाचित्स्यात्स्वयं तत्र च दर्शनम् ॥ अरुणं मण्डलं वाताच्चंचलं परुषं तथा । पित्तान्मण्डलमानीलं कांस्याभं पीतमेव वा ॥ श्लेष्मणा बहलं स्निग्धं शङ्खकुन्देन्दुपाण्डुरम् । चलत्पद्मपलाशस्थः शुक्लो बिन्दुरिवाम्भसः ॥ मृद्यमाने च नयने मण्डलं तद्विसर्पति । प्रवालपद्मपत्राभं मण्डलं शोणितात्मकम् ॥ दृष्टिरागो भवेच्चित्रो लिङ्गनाशे त्रिदोषजे । यथास्वं दोषलिङ्गानि सर्वेष्वेव भवन्ति हि ॥

छ प्रकारना लिंगनाशोनां जूदां जूदां लक्षणो.

१५ जो दृष्टिनुं मंडल जाडा काच जेवुं स्थूल

अने अग्निना जेवी तथा कांईक नीलतावाळी प्रभावाळुं थई गयुं होय तो जाणवुं के **परिम्लायी लिंगनाश** थयो छे. आ लिंगनाशमां कोई वखते पोतानी मेळेज दोषनो क्षय थतां दृष्टि पदार्थोने जोई शके छे. (आ रुधिरना सारथी मिश्रित थएला पित्तथी थाय छे अने याप्य छे.)

जो दृष्टिनुं मंडल अरुणवर्णवाळुं, चंचल तथा खरसट स्पर्शवाळुं थई गयुं होय तो जाणवुं के **वातलिंगनाश** थयो छे. (आ वायुजन्य छे अने याप्य छे.)

जो दृष्टिनुं मंडल कांईक नीलतावाळुं, कांसाना जेवा वर्णवाळुं के पीळुंज थई गयुं होय तो जाणवुं के **पित्तनीललिंगनाश** थयो छे. (आ पित्तथी थाय छे अने याप्य छे.)

जो दृष्टिनुं मंडल जाडुं, स्निग्ध अने शंखनी पेठे, कुंदपुष्पनी पेठे तथा चंद्रनी पेठे सफेद वर्णवाळुं थई गयुं होय, चलायमान थता कमलपत्र उपर रहेला जळना सफेद बिंदु जेवुं लागतुं होय अने आंगळीथी नेत्रने चोळतां आघुं पाछुं थतुं होय तो जाणवुं के **कफलिंगनाश** थयो छे. (आ कफथी थाय छे अने याप्य छे.)

जो दृष्टिनुं मंडल परवाळा जेवुं तथा राता कमळनी पांखडी जेवुं थई गयुं होय तो जाणवुं के **रक्तलिंगनाश** थयो छे. (आ रुधिरजन्य छे अने याप्य छे.)

जो दृष्टिनुं मंडल विचित्र वर्णवाळुं थई गयुं होय तो जाणवुं के **सान्निपातिकलिंगनाश** थयोछे. (आ त्रणे दोषोथी थाय छे अने याप्य छे.)

दरएक लिंगनाशमां ते लिंगनाश जे दोषथी थयो होय ते दोषनां बीजां चिह्नो पण अवश्य थाय छे.

१६ षड् लिङ्गनाशाः षडिमे च रोगा
दृष्ट्याश्रयाः षट् च षडेव च स्युः ।
तथा नरः पित्तविदग्धदृष्टिः
कफेन चान्यस्त्वथ धूमदर्शी ॥
यो ह्रस्वजात्यो नकुलान्धता च
गम्भीरसंज्ञा च तथैव दृष्टिः ॥

दृष्टिमां थता बार रोगो के जेओमां छ तो लिंगनाशोज छे.

१६ उपर कहेला छ लिंगनाशो, पित्तविदग्धदृष्टि, श्लेष्मविदग्धदृष्टि, धूमदर्शी, ह्रस्वजात्य, नाकुलांध्य अने गंभीरिका ए बार रोगो दृष्टिमां थाय छे. (एओमां छ लिंगनाशोनां लक्षणो तो उपर अपाई गयां छे माटे हवे पित्तविदग्धदृष्टि वगेरे छ रोगोनां लक्षणो आपवामां आवशे.)

१७ पित्तेन दुष्टेन गतेन दृष्टिम्
पीता भवेद्यस्य नरस्य दृष्टिः ।
पीतानि रूपाणि च मन्यते यः
स मानवः पित्तविदग्धदृष्टिः ॥
प्राप्ते तृतीयं पटलं तु दोषे
दिवा न पश्येन्निशि वीक्षते च ।
रात्रौ सशीतानुगृहीतदृष्टिः
पित्ताल्पभावात्सकलानि पश्येत् ॥

पित्तविदग्धदृष्टिनुं लक्षण.

१७ दुष्ट थएलुं पित्त दृष्टिना पेहेला तथा बीजा पटलमां प्राप्त थवाथी जे माणसनी दृष्टि पीळी थई गएली होय ते माणस सघळां रूपोने पीळां माने छे अने एज पित्त त्रीजा पटलमां आवतां माणस दिवसे देखतो नथी पण राते ते समयना स्वाभाविक शीतथी दृष्टिने आनुकूल्य मळवाथी पित्त कमती पडतां सघळा पदार्थोने देखे छे. आ बन्ने प्रकारनो रोग **पित्तविदग्धदृष्टि** केहेवाय छे. (आ पित्तजन्य छे अने साध्य छे.)

१८ तथा नरः श्लेष्मविदग्धदृष्टि-
स्तान्येव शुक्लानि हि मन्यते तु ॥
त्रिषु स्थितो यः पटलेषु दोषो
नक्तान्ध्यमापादयति प्रसह्य ।

दिवा स सूर्यानुगृहीतदृष्टि-
र्वीक्षेत रूपाणि कफाल्पभावात् ॥

श्लेष्मविदग्धदृष्टिनुं लक्षण.

१८ दुष्ट थएलो (वृद्धि पामेलो) कफ दृष्टिना पेहेला तथा बीजा पटलमां प्राप्त थवाथी जे माणसनी दृष्टि बगडेली थई गई होय ते माणस सघळां रूपोने सफेद माने छे. आ रोग **श्लेष्मविदग्धदृष्टि** केहेवाय छे. एज कफ दृष्टिनां त्रणे पटलोमां आव्यो होय तो बलात्कारथी नक्तांध्य (राते आंधळापणुं) करे छे. दिवसे तो दृष्टि उपर सूर्यनो अनुग्रह थवाने लीधे कफ कमती थवाथी सघळां रूपोने देखे छे. आ राते आंधळापणुं पण श्लेष्मविदग्धदृष्टिज केहेवाय छे. (आ कफजन्य छे अने साध्य छे.)

१९ शोकज्वरायासशिरोभितापै-
रभ्याहता यस्य नरस्य दृष्टिः ।
सधूमकान्पश्यति सर्वभावां-
स्तं धूमदर्शीति वदन्ति रोगम् ॥

धूमदर्शीनुं लक्षण.

१९ शोकथी, ज्वरथी, परिश्रमथी के माथामां तडका वगेरेना संतापो थवाथी जे माणसनी दृष्टि अभिघात पामेली होय ते माणस सघळा पदार्थोने धूमाडावाळा देखे छे. आ रोग **धूमदर्शी** केहेवाय छे. (आ पित्तजन्य छे अने साध्य छे.)

२० स ह्रस्वजात्यो दिवसेषु कृच्छ्रा-
द्ध्रस्वानि रूपाणि च यो न पश्येत् ।

ह्रस्वजात्यनुं लक्षण.

२० माणस जे विकारथी दिवसे मांड मांड देखे छे अने झीणां रूपोने तो देखतोज नथी ते विकार **ह्रस्वजात्य** केहेवाय छे. (अहीं केटलाएक ग्रंथकारोए **रात्रौ च शीतानुगृहीतदृष्टिः पित्ताल्पभावादपि तान्नि पश्येत्** एवुं उत्तरार्ध कल्पीने मान्युं छे के "ह्रस्वजात्यवाळो माणस राते दृष्टिने शीतनो अनुग्रह मळवाथी पित्त कमती थवाने लीधे सघळा पदार्थोने देखे छे" तेमज भावप्रकाशादिक ग्रंथोमां **यो वासरे पश्यति कष्टतोऽथ रूपं महच्चापि निरीक्षतेऽल्पम्। रात्रौ पुनर्यः सकलानि पश्येत् स ह्रस्वजात्यो मुनिभिः प्रदिष्टः** इत्यादि श्लोकोथी कह्युं छे के 'ह्रस्वजात्यवाळो माणस दिवसे मांड मांड देखे, मोटां रूपोने पण नाहानां देखे अने राते तो सघळां रूपोने तेओ जेवां होय तेवांज बराबर देखे ए ह्रस्वजात्य रोग' केहेवाय छे.' परंतु विदेहनो ग्रंथ जोतां जणाय छे के 'ह्रस्वजात्यवाळो माणस राते तो कशुं पण देखे नहीं.' **नक्तमन्धास्तु चत्वारो ये पुरस्तात् प्रकीर्तिताः । तेषामसाध्यो नकुलो ह्रस्वजात्यस्तथैव च ।** ए श्लोकथी विदेहे ह्रस्वजात्यवाळा माणसने स्पष्ट रीते नक्तांधना (राते आंधळाना) भेदोमां गण्यो छे. आ रोग पित्तजन्य छे अने चारे पटलोमां पित्तना रेहेवाना प्रभावने लीधे असाध्य छे.)

२१ विद्योतते येन नरस्य दृष्टि-
र्दोषाभिपन्ना नकुलस्य यद्वत् ।
चित्राणि रूपाणि दिवा स पश्येत्
स वै विकारो नकुलान्ध्यसंज्ञः ।

नाकुलाध्यनुं लक्षण.

२१ दृष्टि दोषोथी व्याप्त थवाने लीधे नोळीयानी दृष्टि जेवी प्रकाशे, दिवसे सघळां रूपो विचित्र देखवामां आवे अने राते तो कशुं देखायज नहीं ए रोग **नाकुलांध्य** केहेवाय छे. (आ सन्निपातजन्य छे अने असाध्य छे.)

२२ दृष्टिर्विरूपा श्वसनोपसृष्टा
सङ्कुच्यतेऽभ्यन्तरतश्च याति ॥
रुजावगाढा च तमक्षिरोगम्
गम्भीरिकेति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ।

गंभीरिकानुं लक्षण.

२२ दृष्टि वायुथी उपहत थवाने लीधे विकृतरूपवाळी रह्या करे, संकोच पाम्या करे, ऊंडी

उतरी जाय अने ऊंडी वेदनाथी युक्त रह्या करे ए नेत्ररोगने विद्वान् वैद्यो **गंभीरिका** केहेछे. (आ वायुजन्य छे अने असाध्य छे.)

२३ बाह्यौ पुनर्द्वाविह सम्प्रदिष्टौ
निमित्ततश्चाप्यनिमित्ततश्च ।
निमित्ततस्तत्र शिरोऽभितापा-
ज्ज्ञेयस्त्वभिष्यन्दनिदर्शनैश्च ।
सुरर्षिगन्धर्वमहोरगाणाम्
सन्दर्शनेनापि च भासुराणाम् ॥
हन्येत दृष्टिर्मनुजस्य यस्य
स लिङ्गनाशस्त्वनिमित्तसंज्ञः ।
तत्राक्षि विस्पष्टमिवावभाति
वैदूर्यवर्णा विमला च दृष्टिः ।
विदीर्यते सीदति हीयते वा
नृणामभीघातहता तु दृष्टिः ।

बे आगंतुज रोगो (सनिमित्तलिंगनाश अने अनिमित्तलिंगनाश) के जेओ सघळा नेत्रमां थतां छतां पण दृष्टिरोगोमां गणाय छे तेओनां निदानो तथा लक्षणो.

२३ आ तंत्रना पेहेला अध्यायना २२ मा तथा २३ मा विषयमां सनिमित्तलिंगनाश अने अनिमित्तलिंगनाश ए नामना जे बे बाह्य (आगंतुज) नेत्ररोगो कहेला छे तेओनां निदानो तथा लक्षणो नीचे प्रमाणे छे.

झेरी फूलना गंधवाळा पवनादिकना स्पर्शरूप निमित्तथी माथामां अभिताप थतां जे नेत्ररोग थायछे ते **सनिमित्तलिंगनाश** केहेवाय छे. अभिष्यंद नामना नेत्ररोगनां जे लक्षणो कह्यां छे तेज लक्षणो आ रोगनां पण थाय छे. (गदाधर वैद्य केहे छे के "रक्ताभिष्यंदनां लक्षणो के जेओ गया अध्यायना छट्ठा विषयमां आपेलां छे तेओ उपरथी आ रोगने जाणी लेवो." आ असाध्य छे.)

देव, ऋषि, गंधर्व, मोटा नाग के बीजा प्रकाशमय पदार्थो एओना आकस्मिक अने जेमां तेओनुं स्वरूप बराबर ओळखी शकाय नहीं एवा दर्शनथी माणसनां नेत्रोनो उपघात थई जाय छे ए रोग **अनिमित्तलिंगनाश** केहेवाय छे. (देव वगेरे लोको के मेरुपर्वत आदि पदार्थो घणुं करीने सर्व जनोने प्रत्यक्ष थता नथी माटे तेओना आकस्मिक दर्शनने अनिमित्तरूप मानेलुं छे.) अनिमित्तलिंगनाश थयो होय तो आंखो स्वस्थ माणसनी आंखो जेवी, लसणीया मणिना जेवा वर्णवाळी तथा निर्दोष देखातां छतां पण कशुं जोई शकती नथी. (आ असाध्य छे.)

नेत्रो बीजा पण कोई प्रकारना बाहारना अभिघातथी उपहत थईने फाटी जाय, दुःखित थई जाय के हीन थई जाय ए रोगने पण सनिमित्तलिंगनाश गणी लेवो (के जेथी नेत्ररोगोनी छोंतेरनी संख्यामां वधारो न थाय.)

२४ इत्येते नयनगता महाविकाराः
संख्याताः पृथगिह षट् च सप्ततिश्च ।
एतेषां पृथगिह विस्तरेण सर्वं
वक्ष्येऽहं तदनु चिकित्सितं च तावत् ॥

नेत्ररोगोनां संख्या, निदानो तथा लक्षणादिक एओनो उपसंहार अने ते रोगोना संबंधमां अवशिष्ट विषय तथा चिकित्साओ केहेवानी प्रतिज्ञा.

२४ आ प्रमाणे नेत्रोमां थता छोंतेर मोटा विकारो नामो आपी आपीने गणी बताव्या अने ते रोगोनां निदानो तथा लक्षणो वगेरे पण जूदां जूदां जणावी आप्यां. हवे ए रोगोनी बाबतमां चिकित्साविभाग केहेवानो रह्यो छे ते सघळो विस्तारथी कहीश अने ते पछी तेओनी चिकित्साओ पण विस्तारथी कहीश.

अध्याय ८ मो.

१ अथातश्चिकित्सितप्रविभागविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'चिकित्सित प्रविभागविज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ षट्सप्ततिर्येऽभिहिता व्याधयो नामलक्षणैः । चिकित्सितमिदं तेषां समासाद्यासतः शृणु ॥

नेत्ररोगोमां नोखनोखी चिकित्साओनी वेहेंचणनुं मथाळुं.

२ नेत्रोमां थता छोंतेर रोगो के जेओ नामोथी, निदानो वगेरेथी तथा लक्षणोथी केहेवामां आव्या तेओनी हवे संक्षिप्त तथा विस्तीर्ण चिकित्साओ कहुं छुं ते सांभळो. (संक्षिप्त चिकित्साओ आ अध्यायमां केहेवामां आवशे अने विस्तीर्ण चिकित्साओ आ अध्याय पछीना अध्यायोमां केहेवामां आवशे.)

३ छेद्यास्तेषु दशैकश्च नव लेख्याः प्रकीर्तिताः
भेद्याः पञ्च विकाराः स्युर्व्यध्याः पंचदशैव तु ॥
द्वादशाऽशस्त्रकृत्याश्च याप्याः सप्त भवन्ति हि।
रोगा वर्जयितव्याश्च दश पञ्च च जानता ॥
असाध्यौ वा भवेतां तु याप्यौ वागन्तुसंज्ञितौ॥

नेत्रना छोंतेर रोगोने माटे चिकित्साओनुं पृथक्करण.

३ नेत्रना उपर कहेला छोंतेर रोगोमां अगीयार रोगो छेदन नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे, नव रोगो लेखन (उखेडवा तथा खोंतरवा) नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे, पांच रोगो भेदन नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे, पंदर रोगो वेधन (वींधवा) नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे, बार रोगो शस्त्रक्रियाने लायक नथी पण बीजी क्रियाओनेज लायक छे, सात रोगो याप्यज छे, पंदर रोगो कोई पण प्रकारनी चिकित्साने लायक नथी (असाध्य छे.) अने छेल्ला बे आगंतुक रोगो असाध्य छे तथा शस्त्रक्रियाविना बीजी क्रियाओथी याप्य पण छे.

४ अर्शोऽन्वितं भवति वर्त्म तु यत्तथार्शः
शुष्कं तथार्बुदमथो पिडकाः शिराजाः ।
जालं शिराजमपि पञ्चविधं तथार्म
छेद्या भवन्ति सह पर्वणिकामयेन ॥

कया अगीयार रोगो छेदनक्रियाने लायक छे?

४ अर्शोवर्त्म, शुष्कार्श, अर्बुद, शिरापिडका, शिराजाल, प्रस्तार्यर्म, शुक्लार्म, शोणितार्म, [१]अधिमांसार्म, स्नाय्वर्म अने पर्वणी ए अगीयार रोगो छेदन नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे.

५ उत्सङ्गिनी बहलकर्दमवर्त्मनी च
श्यावं च यच्च पठितं त्विह बद्धवर्त्म ।
क्लिष्टं च पोथकियुतं खलु यच्च वर्त्म
कुम्भीकिनी च सहशर्करया च लेख्याः ॥

कया नव रोगो लेखनक्रियाने लायक छे?

५ उत्संगिनी, बहलवर्त्म, कर्दमवर्त्म, श्याववर्त्म, वर्त्मावबंध, क्लिष्टवर्त्म, पोथकी, कुंभीका अने शर्करावर्त्म ए नव रोगो लेखन नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे.

६ श्लेष्मोपनाहलगणौ च बिसं च भेद्या
ग्रन्थिश्च यः कृमिकृतोऽञ्जननामिका च ॥

कया पांच रोगो भेदनक्रियाने लायक छे?

६ श्लेष्मोपनाह, लगण, बिसवर्त्म, क्रिमिग्रंथि अने अंजनिका ए पांच रोगो भेदन नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे.

७ आदौ शिरा निगदिताश्च ययोः प्रयोगे
पाकौ च यौ नयनयोः पवनोऽन्यतश्च ।

---

१ कया कया नेत्ररोगमां केई केई चिकित्सा करवी ए जणाववा विषेनो.

पूयालसानिलविपर्ययमन्थसंज्ञाः
स्यन्दास्तु यान्त्युपशमं हि शिराव्यधेन ॥

कया पंदर रोगो वेधनक्रियाने लायक छे?

७ शिरोत्पात, शिराहर्ष, सशोफपाक, अशोफपाक, अन्यतोवात, पूयालस, वातपर्यय, वाताधिमंथ, पित्ताधिमंथ, कफाधिमंथ, रक्ताधिमंथ, वाताभिष्यंद, पित्ताभिष्यंद, कफाभिष्यंद अने रक्ताभिष्यंद ए पंदर रोगो वेधन नामनी शस्त्रक्रियाने लायक छे. (केम के शिरावेध करवाथी शांत थाय छे.)

८ शुष्काक्षिपाककफपित्तविदग्धदृष्टि-
ष्वम्लाख्यशुक्रसहितार्जुनपिष्टकेषु ।
अक्लिन्नवर्त्महुतभुग्ध्वजदर्शिशुक्ति
प्रक्लिन्नवर्त्मसु तथैव बलाससंज्ञे ।
आगन्तुनामययुगेन च दूषितायां
दृष्टौ न शस्त्रपतनं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥

कया बार रोगो शस्त्रक्रियाने लायक नथी पण बीजी क्रियाओनेज लायक छे?

८ शुष्काक्षिपाक, श्लेष्मविदग्धदृष्टि, पित्तविदग्धदृष्टि, अम्लाध्युषित, अव्रणशुक्र, अर्जुन, पिष्टक, अपरिक्लिन्नवर्त्म, धूमदर्शी, प्राक्लिन्नवर्त्म, शुक्तिका अने बलासग्रथित ए बार रोगो शस्त्रक्रियाने लायक नथी पण बीजी क्रियाओनेज लायक छे. सनिमित्तलिंगनाश अने अनिमित्तलिंगनाश ए बे आगंतुक रोगो कदाच याप्य जणाय तो पण शस्त्रक्रियाथी याप्य नथी पण बीजी क्रियाओथी याप्य छे.

९ सम्पश्यतः षडपि येऽभिहितास्तु काचास्ते पक्ष्मकोपसहितास्तु भवन्ति याप्याः ॥

कया सात रोगो याप्यज छे?

९ वातलिंगनाश, परिम्लायीलिंगनाश, नीललिंगनाश, कफलिंगनाश, रक्तलिंगनाश तथा सान्निपातिकलिंगनाश ए छ नीलिकाकाचो[1] के जेओ केहेवामां आव्या छे तेओ जो रोगी कांई पण देखतो होय तो याप्यज छे. पक्ष्मकोप नामनो नेत्ररोग पण याप्यज छे.

१० चत्वार एव पवनप्रभवास्त्वसाध्या
द्वौ पित्तजौ कफनिमित्तज एक एव ।
अष्टार्द्धका रुधिरजाश्च गदास्त्रिदोषा-
स्तावन्त एव गदितावपि बाह्यजौ द्वौ ॥

कया पंदर रोगो कोइ पण क्रियाने लायक नथी?

१० हताधिमंथ, निमिष, गंभीरिका अने वातहतवर्त्म ए चार वायुजन्य रोगो, ह्रस्वजात्य तथा पैत्तिकजलस्राव ए बे पित्तजन्य रोगो, श्लैष्मिकस्राव नामनो एक कफजन्य रोग, रक्तस्राव, अजकाजात, शोणितार्श तथा सव्रणशुक्र ए चार रुधिरजन्य रोगो अने पूयस्राव, नाकुलांध्य, अक्षिपाकात्यय तथा अलजी ए चार सान्निपातिक रोगो एटले ए कुल पंदर रोगो कोई पण क्रियाने लायक नथी अर्थात् असाध्यज छे. सनिमित्तलिंगनाश तथा अनिमित्तलिंगनाश ए नामना बे आगंतुज रोगो पण घणुं करीने असाध्य छे.

अध्याय ९ मो.

१ अथातो वाताभिष्यन्दप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'वाताभिष्यंदप्रतिषेध'[2] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पुराणसर्पिषा स्निग्धौ स्यन्दाधीमन्थपीडितौ स्वेदयित्वा यथान्यायं शिरामोक्षेण योजयेत् ॥

---

[1] वाताभिष्यंद, वाताधिमंथ, अन्यतोवात, वातपर्यय, शुष्काक्षिपाक अने बीजा पण दृष्टिनो नाश करनारा

[2] वातजन्य व्याधिओ एओनी चिकित्सा विषेनो.

सम्पादयेद्वस्तिभिश्च सम्यक्स्नेहविरेचितौ ।
तर्पणैः पुटपाकैश्च धूमैराश्च्योतनैस्तथा ॥
नस्यस्नेहपरीषेकैः शिरोबस्तिभिरेव च ।
वातघ्नानूपजलजमांसाम्लक्काथसेचनैः ॥
स्नेहैश्चतुर्भिरुष्णैश्च तत्पीताम्बरधारणैः ॥
पयोभिर्वेसवारैश्च शाल्वणैः पायसैस्तथा ॥
भिषक्सम्पादयेदेतावुपनाहैश्च पूजितैः ।
तथा चोपरि भुक्तस्य सर्पिः पानं प्रशस्यते ।
त्रिफलाक्काथसंसिद्धं केवलं जीर्णमेव वा ।
सिद्धं वातहरैः क्षीरं प्रथमेन गणेन वा ॥

वाताभिष्यंद तथा वाताधिमंथ एओनी चिकित्सा.

२ जे माणस वाताभिष्यंदथी के वाताधिमंथथी पीडाएल होय तेने वैद्ये योग्य रीते जूनुं[1] घी पावाथी स्नेहन संस्कार आपी, ते पछी स्वेदन संस्कार आपी फस खोलीने लोहीनुं स्रावण करवुं, सारी रीते स्नेहात्मक विरेचनोथी विरेचित करवो, बस्तिओ देवा अने तर्पणोथी,[2] पुटपाकोथी,[3] धूमपानोथी, आश्च्योतनोथी,[4] नस्योथी, स्नेहनां सेचनोथी, शिरोबस्तिओथी, वायुने हणनारां आनूप तथा जलचर प्राणीओनां मांसोथी, कांजी वगेरेनां तथा वातहर क्काथोनां सेचनोथी, ऊना करेला चार प्रकारना स्नेहोथी, स्नेहोमां भीजावेलां वस्त्रोनुं नेत्रादिकपर धारण कराववाथी, दूधोथी, वेसवारोना[5] उपनाहोथी, शाल्वण[6] उपनाहोथी, दूधपाकोना उपनाहोथी अने बीजा प्रकारना पण योग्य उपनाहोथी[7] उपचारो करवा. जमाड्या पछी त्रिफळाना क्काथथी पकावेलुं घी पावुं अथवा एकलुं जूनुं घी पावुं अथवा वायुने हरनारां द्रव्योथी के विदारिगंधादिगणथी पकावेलुं दूध पावुं ए उत्तम छे.[8]

---

१ जे घी एक वर्षसूधी राखी मूकवामां आव्युं होय ते जूनुं घी केहेवाय छे. केटलाएक केहे छे के दश वर्षसूधी राखी मूकवामां आवेलुं घी जूनुं केहेवाय छे.

२ रोगीने जेमां वायु, तडको के रज न होय एवा घरमां चत्तो सुवडावी पळाळेला अडदना लोटनी सरखी, दृढ अने सांकड वगरनी पाळो नेत्र उपर करवी. पछी रोगीनी आंखो वीचावी तेओना उपर पांपणो बूडी जतां सुधी पाळोमां स्नेह भरवो. भराई रह्या पछी धीरेथी रोगीनी आंखो उघडाववी ए तर्पणनो प्रकार छे. आ विषयनो विस्तार आ तंत्रना १८ मा अध्यायमां आपवामां आवशे ते जोवो.

३ स्नेहथी भरेलुं बे बीलां जेटलुं मांस लई तेमां बीजां औषधो चार तोलां भार अने द्रव पदार्थो सोळ तोलां भार नाखी सर्वने एकठां करी लोंदो करवो. ए लोंदाने पांनडांओथी सारी पेठे वींटी ते उपर बे आंगळनो के अंगूठा जेटलो माटीनो थर चडावी अग्निमां मूकवो. माटीनो थर धगधगता अंगारा जेवा वर्णवाळो थई जाय त्यांसूधी अग्निमां राखी पछी ते गोळाने बाहार काहाडी लेवो. पछी माटीने तथा पांनडांने दूर करी कल्कना रसने नीचोवी लई तेनो तर्पणनी रीतिप्रमाणे नेत्रमां उपयोग करवो ए पुटपाक केहेवाय छे. आ विषयनो विस्तार आ तंत्रना १८ मा अध्यायमां आपवामां आवशे ते जोवो.

४ रोगीनी आंखोने बे आंगळां वते ऊघाडी राखीने तेओमां क्काथनां, मधनां के स्नेहनां टीपां नाखवां ए आश्च्योतन केहेवाय छे. आ विषयनो विस्तार आ तंत्रना १८ मा अध्यायमां केहेवाशे ते जोवो.

५ वेसवारनुं लक्षण तथा गुणो सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २२६ मा विषयमां जुवो.

६ चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायनो १५ मो विषय जुवो.

७ चिकित्सास्थानना ३२ मा अध्यायनो ५ मो विषय जुवो.

८ नेत्रो जो आमवाळां होय तो घी पीवराववा वगेरे विधिओ करवा अने अंजन आंजवा वगेरे विधिओ नही करवा. केम के तंत्रांतरमां कह्युं छे के "स्वेद, भोजनमां कडवो रस, धूम अने चार दिवससूधी लंघन एओ आमवाळां नेत्रोने पकाववाने माटे छे. अंजन, घीनुं पान, कषाय, भारे भोजन अने स्नान एओनो ज्यांसूधी नेत्रो आमवाळां होय त्यांसूधी त्याग करवो. नेत्रमां घणी वेदना थती होय, रताश घणी होय, खरज आवती होय अने आंसु पडतां होय तो

३ स्नेहास्तैलाद्विना सिद्धा वातघ्नैस्तर्पणे हिताः ।
स्नैहिकः पुटपाकश्च धूमो नस्यं च तद्विधम् ॥

वाताभिष्यंद तथा वाताधिमंथ एओ उपर तर्पण, पुटपाक, धूम तथा नस्य एओ केवा प्रकारनां गोठववां ?

३ तेल शिवाय बीजा स्नेहोने वायुनुं हरण करनारां द्रव्योथी पकावीने तेओथी नेत्रोनुं तर्पण करवु ए हितकारी थाय छे. पुटपाक, धूम अने नस्य एओ पण स्नैहिकज गोठववां ए हितकारी छे. (स्नैहिक धूमविषे तथा स्नैहिक नस्यविषे चिकित्सास्थानना ४० मा अध्यायमां जुवो.)

४ नस्यादिषु स्थिराक्षीरमधुरैस्तैलमिष्यते ।

वाताभिष्यंद तथा वाताधिमंथ एओ उपर नस्यादिकमां केवुं तेल गोठववुं ?

४ शालिपर्णी, दूध अने काकोल्यादि मधुरगण एओथी पकावेला तेलनी नस्यादिकमां योजना करवी.

५ एरण्डपल्लवे मूले त्वचि चाजं पयः शृतम् ॥
कण्टकार्याश्च मूलेषु सुखोष्णं सेचने हितम् ।
सैन्धवोदीच्ययष्ट्याह्वपिप्पलीभिः शृतं पयः ॥
हितमर्द्धोदकं सेके तथाश्च्योतनमेव च ।
ह्रीबेरचक्रमञ्जिष्ठोदुम्बरत्वक्षु साधितम् ॥
साम्भश्छागं पयो वापि शूलाश्च्योतनमुत्तमम् ।

वाताभिष्यंद तथा वाताधिमंथ एओ उपर सेचनमां तथा आश्च्योतनमां केवुं दूध गोठववुं ?

५ एरडानां पानडां, एरडानां मूळ, एरडानी छाल अने भोरींगणीनां मूळीयां एओमां दूधने पकावी सेहेवाय तेवुं ऊनुं राखीने तेथी सेचन करवुं ए हितकारी छे. जेमां अरधुं पाणी नाख्युं होय एवा दूधने सैंधव, वाळो, जेठीमध तथा पीपळ एओथी पकावी तेथी सेचन करवुं तथा आश्च्योतन करवुं ए पण हितकारी छे. जेमां अरधुं पाणी नाख्युं होय एवा बकरीना दूधने वाळो, तगर, मजीठ तथा उंबरानी छाल एओथी पकावी तेनुं आश्च्योतन करवाथी नेत्रोनुं शूळ नष्ट थई जाय छे.

६ मधुकं रजनीं पथ्यां देवदारु च पेषयेत् ॥
आजेन पयसा श्रेष्ठमभिष्यन्दे तदञ्जनम् ।
गैरिकं सैन्धवं कृष्णां नागरं च यथोत्तरम् ॥
द्विगुणं पिष्टमद्भिस्तु गुटिकाञ्जनमिष्यते ।
स्नेहाञ्जनं हितं चात्र वक्ष्यते तद्यथाविधि ॥

वाताभिष्यंद तथा वाताधिमंथ एओ उपर अंजनो.

६ जेठीमध, हळदर, हरडे अने देवदार एओ बकरीना दूधमां वाटीने नेत्रोमां आंजवां. आ अंजन अभिष्यंद उपर उत्तम छे. सोनागेरू, सोनागेरूथी बमणुं सैंधव, सैंधवथी बमणी पीपळ अने पीपळथी बमणी सूंठ एओने एकठां करी जळमां वाटी गुटिका बनावीने ते गुटिका नेत्रोमां आंजवी. वाताभिष्यंद उपर तथा वाताधिमंथ उपर स्नेहांजन पण हितकारी छे के जे आ अध्यायना ८ मा विषयमां छेल्ले केहेवामां आवशे. (एक महीनासूधी त्रांबाना वासणमां राखेला घीमां सैंधव नाखीने ते घी आंजवुं ए पण स्नेहांजन केहेवाय छे. अंजननो विस्तीर्ण विधि आ तंत्रना १८ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे ते जोवो.)

७ रोगो यश्चान्यतोवातो यश्च मारुतपर्ययः ।
अनेनैव विधानेन भिषक्तावपि साधयेत् ॥
पूर्वभक्तं हितं सर्पिः क्षीरं वाप्यथ भोजने ।

नेत्रने आमवाळुं जाणवुं. वेदनानुं मंदपणुं, खरजनुं शांतपणुं, सोजानुं शांतपणुं, आंसुओनुं शांतपणुं अने वर्णनुं निर्मळपणुं एओ उपरथी जाणवुं के नेत्र आमवगरनुं थएलुं छे. ”

१ सेचननो विधि आ तंत्रना १८ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे ते जोवो.

वृक्षादन्यां कपित्थे च पञ्चमूले महत्यपि ॥
सक्षीरं कर्कटरसे सिद्धं चात्र घृतं पिबेत् ।
सिद्धं वा हितमत्राहुः पत्तूरार्तगलाग्निकैः ॥
सक्षीरं मेषशृङ्ग्या वा सर्पिर्वीरतरेण वा ।

अन्यतोवात तथा वातपर्यय एओनी चिकित्सा.

७ अन्यतोवात तथा वातपर्यय ए रोगोनी पण वैद्ये उपर कहेला वाताभिष्यंदना विधान प्रमाणेज चिकित्सा करवी. ए रोगोमां भोजनथी पेहेलां घी पावुं अने भोजनमां दूध देवुं ए हितकारी थाय छे. बांदो, कोठ अने बृहत्पंचमूल एओना क्वाथथी, दूधथी तथा काकडाशींगीना रसथी पकावेलुं घी पावुं अथवा रतवेलीयो, कांटाअशेरीयो अने अजमोद एओना क्वाथथी तथा दूधथी पकावेलुं घी पावुं अथवा मेंढाशीगीना क्वाथथी तथा दूधथी पकावेलुं घी पावुं अथवा वेलतरु (आ वृक्ष मारवाडमां थाय छे.) ना क्वाथथी तथा दूधथी पकावेलुं घी पावुं ए अन्यतोवात उपर तथा वातपर्यय उपर हितकारी थाय छे.

८ सैन्धवं दारु शुण्ठी च मातुलुङ्गरसे घृतम् ॥
स्तन्योदकाभ्यां कर्तव्यं शुष्कपाके तदञ्जनम् ।
पूजितं सर्पिषश्चात्र पानमक्ष्णोश्च तर्पणम् ॥
घृतेन जीवनीयेन नस्यं तैलेन चाणुना ।
परिषेके हितं चात्र पयः शीतं ससैन्धवम् ॥
रजनीदारुसिद्धं वा सैन्धवेन समायुतम् ।
सर्पिर्युतं स्तन्यघृष्टमञ्जनं च महौषधम् ॥
वसा वानूपजलजा सैन्धवेन समायुता ।
नागरोन्मिश्रिता किंचिच्छुष्कपाके तदञ्जनम् ॥

शुष्काक्षिपाकनी चिकित्सा.

८ बीजोरांनो रस, घी, स्त्रीनुं दूध अने जळ एओमां सैंधव, देवदार तथा सूंठ एओनो कल्क पकावी रसक्रिया करीने ते आंजवुं ए शुष्काक्षिपाक उपर हितकारी छे. काकोल्यादि जीवनीय गणथी पकावेलुं घी पावुं, तेवा घीथीज नेत्रोनुं तर्पण करवुं अने तेवा घीथी अथवा अणुतैलथी नस्य देवुं ए शुष्काक्षिपाक उपर हितकारी थाय छे. (डल्हन केहेछे के चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २२ मा विषयमां जे अणुतैल कहेलुं छे तेथी नस्य नही देवुं पण जे अणुतैल शालाक्यशास्त्रमां कह्युं छे तेथी नस्य देवुं.) पकावीने टाढा करेला दूधने सैंधवथी युक्त करीने तेथी अथवा हळदर तथा देवदार एओना क्वाथथी पकावेला दूधने सैंधवथी युक्त करीने तेथी नेत्रोनुं परिषेचन करवुं ए पण शुष्काक्षिपाक उपर हितकारी छे. सूंठने स्त्रीना दूधमां घसी घीथी संयुक्त करीने नेत्रोमां आंजवी ए पण हितकारी छे. आनूप प्राणीओनी तथा जलचर प्राणीओनी चरबी लई तेने जराक सैंधवथी तथा सूंठथी युक्त करीने आंजवी ए पण शुष्काक्षिपाक उपर हितकारी छे. (आ चरबीनुं अंजन स्नेहांजन केहेवाय छे.)

९ पवनप्रभवा रोगा ये केचिद्दृष्टिनाशनाः ।
बीजेनानेन मेधावी तेषु कर्म प्रयोजयेत् ॥

वायुथी उत्पन्न थएला बीजा केटला एक दृष्टिनाशक रोगो उपर चिकित्सानी पद्धति.

९ वायुथी उत्पन्न थएला तिमिर वगेरे केटलाएक दृष्टिनाशक व्याधिओ उपर पण बुद्धिमान् वैद्ये औषधोना ऊहापोह करी वाताभिष्यंदनी चिकित्सारूप बीजने अनुसरीने ते पद्धतिथी चिकित्सा करवी.

अध्याय १० मो.

१ अथातः पित्ताभिष्यन्दप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'पित्ताभिष्यंदप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे

१ पित्ताभिष्यंद, पित्ताधिमंथ, अम्लाध्युषित, शुक्तिका अने धूमदर्शी एओनी चिकित्सा विषनो.

व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पित्तस्यन्दे पैत्तिके चाधिमन्थे
रक्तास्रावः स्रंसनं चापि कार्यम् ।
अक्ष्णोः सेकालेपनस्याञ्जनानि
पैत्ते च स्याद्यद्विसर्पे विधानम् ॥

पित्ताभिष्यंद तथा पित्ताधिमंथ एओनी चिकित्सा.

२ पित्ताभिष्यंद के पित्ताधिमंथ थएल होय तो रुधिरनुं स्रावण करवुं, विरेचन देवुं, नेत्रोपर सेचनो तथा लेपनो करवां, नस्य देवुं, अंजनो आंजवां, आश्च्योतनो करवां अने चिकित्सा स्थानना १७ मा अध्यायना ४ था विषयमां पित्त-विसर्प उपर जे विधान कह्युं छे ते पण करवुं. (डह्लन कहे छे के वाळो, पीळो वाळो, चंदन, सुरमो, मोती, तथा सोनागेरू एओने दूधमां वाटी घीथी संयुक्त करीने थंडो तथा पातळो लेप करवो.)

३ गुन्द्रां शालिं शैवलं शैलभेदं
दार्वीमेलामुत्पलं रोध्रमभ्रम् ।
पद्मात्पत्रं शर्करां दर्भमिक्षुं
तालं रोध्रं वेतसं पद्मकं च ॥
द्राक्षां क्षौद्रं चन्दनं यष्टिकाह्वं
योषित्क्षीरं रात्र्यनन्ते च पिष्ट्वा ।
सर्पिः सिद्धं तर्पणे सेकनस्ये
शस्तं क्षीरं सिद्धमेतेषु वाजम् ॥
योज्यो वर्गो व्यस्त एषोऽन्यथा वा
सम्यङ्नस्येऽष्टार्द्धसङ्ख्येऽपि नित्यम् ।
क्रियाः सर्वाः पित्तहर्यः प्रशस्ता-
स्त्र्यहाच्चोर्ध्वं क्षीरसर्पिश्च नस्यम् ॥

पित्ताभिष्यंद तथा पित्ताधिमंथ एओनी उपर तर्पणमां, सेचनमां, तथा नस्यमां उपयोगी द्रव्यो.

३ मोथ, जवासो, शेवाळ, पाषाणभेद अथवा गोरखगांजो, दारूहळदर, एळची, नीलकमळ, बमणो लोदर, कपूर, श्वेत कमळनां पत्र, साकर, दर्भ, ताड, जळमां थतुं नेतर, पद्मकाष्ठ, द्राक्ष, चंदन, जेठीमध, हळदर अने उपलसरी एओने मधमां तथा स्त्रीना दूधमां वाटी ते कल्क नाखी शेलडीना रसमां पकावेलुं घी अथवा एज कल्क नाखी शेलडीना रसमां पकावेलुं बकरीनुं दूध तर्पणमां, सेचनमां अने नस्यमां हितकारी थाय छे. प्रतिमर्श आदि चार प्रकारनां नस्योमां उपर कहेला सघळा वर्गनी, अरधा वर्गनी, अथवा ए वर्गमांथी जेटलां द्रव्यो मळी शके तेटलां द्रव्योनी योजना करवी. सघळी पित्तनुं हरण करनारी क्रियाओ करवी ए उत्तम छे. दूधनुं तथा घीनुं नस्य देवानुं जे कह्युं ते नस्य त्रण दिवस पछी देवुं.

४ पालाशं स्याच्छोणितं चाञ्जनार्थे
शल्लक्या वा शर्कराक्षौद्रयुक्तम् ।
रसक्रियां शर्कराक्षौद्रयुक्तां
पालिंद्यां वा मधुके वापि कुर्यात् ॥
मुस्ता फेनः सागरस्योत्पलं च
कृमिघ्नैलाधात्रिबीजाद्रसश्च ।
कासीसैलागैरिकोशीरशङ्खै-
रेवं युञ्ज्यादञ्जनं स्तन्यपिष्टैः ॥
चूर्णं कुर्यादञ्जनार्थे रसो वा
स्तन्योपेतो धातकीस्यन्दनाभ्याम् ।
योषित्स्तन्ये शातकुम्भं विघृष्टं
क्षौद्रोपेतं कैंशुकं चापि पुष्पम् ॥
रोध्रं द्राक्षां शर्करामुत्पलं च
नार्याः क्षीरे यष्टिकाह्वं वचां च ।
पिष्ट्वा क्षीरे वर्णकस्य त्वचं वा
तोयोन्मिश्रे चन्दनोदुम्बरे च ॥
कार्यः फेनः सागरस्याञ्जनार्थे
नारीस्तन्ये माक्षिके चापि घृष्टः ।

पित्ताभिष्यंद तथा पित्ताधिमंथ एओनी उपर अंजननां द्रव्यो.

४ खाखरानां फूलो (केसुडांओ) ना अथवा

साळेडाना रसमां साकर तथा मध नाखी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा गरणीना के जेठीमधना रसमां साकर तथा मध नाखी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं. मोथ, समुद्रफीण, नीलकमळ, वावडींग, एळची, आमळी अने बीबलो एओनो रस करी हीराकसी, एळची, सोनागेरू, वाळो अने शंख एओने स्त्रीना दूधमां वाटी ते कल्क पेला रसमां नाखी, पकाववाथी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं ए पण हितकारी छे. धावणी अने मीणोहरमो एओना चूर्णनुं अथवा एओना रसने स्त्रीना दूधथी मिश्रित करी पकाववाथी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं. सुवर्णने स्त्रीना दूधमां घसीने ते आंजवुं. खाखराना फूलने त्रांबाना वासण उपर मधमां घसीने ते आंजवुं. लोदर, द्राक्ष, साकर, नीलकमळ, जेठीमध अने वज एओने स्त्रीना दूधमां वाटीने तेनुं अंजन करवुं. आमळीनी छालने स्त्रीना दूधमां वाटीने ते आंजवी. रतांजलि तथा उंबरानुं फळ एओने वाळानी साथे वाटीने ते चूर्ण आंजवुं. समुद्रफीणने स्त्रीना दूधमां तथा मधमां घसीने ते आंजवुं.

५ योषित्स्तन्ये स्थापितं यष्टिकाह्वं
रोध्रं द्राक्षां शर्करामुत्पलं च ॥
क्षौमाबद्धं पथ्यमाश्च्योतने वा
सर्पिर्घृष्टं यष्टिकाह्वं सरोध्रम् ।
तोयोन्मिश्राः काश्मरीधात्रिपथ्या-
स्तद्वच्चाहुः कट्फलं चाम्बुनैव ॥

पित्ताभिष्यंद तथा पित्ताधिमंथ एओनी उपर आश्च्योतननां द्रव्यो.

९ जेठीमध, लोदर, द्राक्ष, साकर अने नीलकमळ एओना कल्कने स्त्रीना दूधमां नाखी अलसीना वस्त्रथी बांधीने तेनां टीपां नाखवां. जेठीमध तथा लोदर एओने घीमां घसीने तेनां टीपां नाखवां. सीवण, आमळी तथा हरडे एओने जळमां वाटीने तेनां टीपां नाखवां. कायफळने जळमां वाटीने तेनां टीपां नाखवां.

६ एषोऽम्लाख्येऽनुक्रमश्चापि शुक्तौ
कार्यः सर्वः स्याच्छिरामोक्षवर्ज्यः ।
सर्पिः पेयं त्रैफलं तैल्वकं वा
पेयं वा स्यात्केवलं यत्पुराणम् ॥
दोषेऽधस्ताच्छुक्तिकायामपास्ते
शीतैर्द्रव्यैरञ्जनं कार्यमाशु ।
वैडूर्यं यत्स्फाटिकं वैद्रुमं च
मौक्तं शाङ्खं राजतं शातकुम्भम् ॥
चूर्णं सूक्ष्मं शर्कराक्षौद्रयुक्तं
शुक्तिं हन्यादञ्जनं चैतदाशु ।

अम्लाध्युषित अने शुक्तिका एओनी सामान्य तथा विशेष चिकित्सा.

६ अम्लाध्युषित अने शुक्तिका ए बे रोगोनी पण उपर कहेला पित्ताभिष्यंदना विधान प्रमाणेज चिकित्सा करवी. परंतु ए बे रोगो शस्त्रक्रियाने लायक नथी तेथी तेओमां शिरावेध (फस खोलीने लोहीनो स्राव) करवो नही.

अम्लाध्युषित अने शुक्तिका ए बे रोगोमां विशेष चिकित्सा ए करवी के त्रिफळाना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी पावुं अथवा चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलुं तैल्वक घी पावुं अथवा एकलुं जूनुं घी पावुं.[1] शुक्तिकामां खास विशेष चिकित्सा ए करवी के विरेचन आपीने दोषने दूर कर्या पछी तुरत शीतल द्रव्योनुं अंजन करवुं. तेमज लसणीया मणिना बारीक चूर्णने, स्फाटिक मणिना बारीक चूर्णने, परवाळाना बारीक चूर्णने, मोतीना बारीक चूर्णने, शंखना बारीक चूर्णने, रूपाना बारीक चूर्णने के सुवर्णना बारीक चूर्णने साकरथी तथा मधथी युक्त करीने आंजवुं. आ चूर्णात्मक अंजन शुक्तिकाने तुरत नष्ट करे छे.

१ त्रिफळानुं घी तथा तैल्वक घी एओ संशोधन छे अने एकलुं जूनुं घी संशमन छे.

७ युञ्ज्यात्सर्पिर्द्धूमदर्शी नरस्तु
शेषं कुर्याद्रक्तपित्ते विधानम् ॥
यच्चैवान्यत्पित्तहृच्चापि सर्वं
यद्वीसर्पे पैत्तिके वै विधानम् ॥

धूमदर्शीनी चिकित्सा.

७ धूमदर्शी नामनो नेत्ररोग थयो होय तो घी पावा उपरांत रक्ताभिष्यंदना विधान (आ तंत्रनो बारमो अध्याय वांचो) प्रमाणे विधान करवुं, बीजी पण सघळी पित्तनुं हरण करनारी क्रियाओ करवी अने चिकित्सास्थानना १७ मा अध्यायना चोथा विषयमां पित्तविसर्प उपर जे विधान कह्युं छे ते पण करवुं. (आ रोग शस्त्रक्रियाने लायक नथी.)

अध्याय ११ मो.

१ अथातः श्लेष्माभिष्यन्दप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'श्लेष्माभिष्यंदप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्यन्दाधिमन्थौ कफजौ प्रवृद्धौ
जयेच्छिराणामथ मोक्षणेन ।
स्वेदावपीडाञ्जनधूमसेक
प्रलेपयोगैः कवलग्रहैश्च ॥
रूक्षैस्तथाश्च्योतनसंविधानै-
स्तथैव रूक्षैः पुटपाकयोगैः ।
त्र्यहात्त्र्यहाच्चाप्यपतर्पणान्ते
प्रातस्तयोस्तिक्तघृतं प्रशस्तम् ॥
तदन्नपानं च समाचरेद्धि
यच्छ्लेष्मणो नैव करोति वृद्धिम् ।

कफाभिष्यंद तथा कफाधिमंथ एओनी चिकित्सा.

२ कफाभिष्यंद के कफाधिमंथ थएल होय तो स्वेदनोथी, अवपीडनस्योथी, अंजनोथी, धूमाडाना पानोथी, सेचनोथी, प्रलेपोथी, कवलग्रहोथी, रूक्ष आश्च्योतनोथी तथा रूक्ष पुटपाकोथी उपचारो करवा. ए उपचारो कर्या छतां पण ते रोगो वृद्धि पामे तो तिक्तकघृतथी स्नेहन करी एक पखवाडीया पछी शिराओने वींधी लोहीनुं स्रावण करवाथी तेओने जीती लेवा. ए रोगोमां त्रण त्रण दिवससुधी लंघन करावीने पछी प्रभाते प्रभाते तिक्तकघृतनो (तिक्तद्रव्योथी पकावेला घीनो) उपयोग कराववो. अन्नपान पण एवुं आपवुं के जे अन्नपान कफनी वृद्धि नज करे.

३ कुटन्नटास्फोतफणिज्जबिल्व-
पत्तूरपीलवर्ककपित्थभङ्गैः ॥
स्वेदं विदध्यादथवानुलेपं
बर्हिष्ठशुण्ठीसुरकाष्ठकुष्ठैः ।

कफाभिष्यंद तथा कफाधिमंथ एओनी उपर स्वेदननां तथा लेपनां द्रव्यो.

३ अरडूसो, गरणी अथवा उपलसरी, मरवो, बीली, रतवेलीयो अथवा पतंग, पीलुनां पानडां, आकडानां पानडां अने कोठनां पानडां एओथी स्वेदन करवुं अने वाळो, सूंठ, देवदार तथा कठ एओनो प्रलेप करवो.

४ सिन्धूत्थहिङ्गुत्रिफलामधूक-
प्रपौण्डरीकाञ्जनतुत्थताम्रैः ॥
पिष्टैर्जलेनाञ्जनवर्त्तयः स्युः
पथ्याहरिद्रामधुकाञ्जनैर्वा ।
त्रीण्यूषणानि त्रिफला हरिद्रा
विडङ्गसारश्च समानि च स्युः ॥
बर्हिष्ठकुष्ठामरकाष्ठशङ्ख-

१ कफाभिष्यंद, कफाधिमंथ, बलासग्रथित, पिष्टक तथा प्रक्लिन्नवर्त्म ए वगेरे कफजन्य नेत्ररोगोनी अने ते रोगोना उपद्रवोरूप खरजनी तथा सोजानी चिकित्साओ विषेनो.

पाठानलव्योषमनःशिलाश्च ।
पिष्ट्वाम्बुना वा कुसुमानि जाती-
करञ्जशोभाञ्जनजानि युञ्ज्यात् ॥
फलं प्रकीर्यादथ वापि शिग्रोः
पुष्पं च तुल्यं बृहतीद्वयस्य ।
रसाञ्जनं चन्दनसैन्धवं च
मनःशिलाले लशुनं च तुल्यं ॥
पिष्ट्वाञ्जनार्थं कफजेषु धीमा-
न्वर्त्तीर्विदध्यान्नयनामयेषु ।

कफाभिष्यंद तथा कफाधिमंथ एओनी उपर अंजननां द्रव्यो.

४ सैंधव, हींग, त्रिफळा, जेठीमध, पांडेरवो, रतांजलि, मोरथुथु अने त्रांबुं एओने जळमां वाटी वाट बनावीने ते वाट आंजवी अथवा हरडे, हळदर, जेठीमध तथा रसवंती एओने जळमां वाटी वाट बनावीने ते वाट आंजवी अथवा सूंठ, मरी, पीपळ, हरडे, वेहेडां, आमळां, हळदर अने वावडींगनो सार एओने सम भागे लई जळमां वाटी वाट बनावीने ते वाट आंजवी अथवा वाळो, कठ, देवदार, शंख, काळी पाड, चित्रक, सूंठ, मरी, पीपळ तथा मणशील एओने जळमां वाटी वाट बनावीने ते वाट आंजवी अथवा जाईनां फूल, करंजनां फूल तथा सरगवानां फूल एओने जळमां वाटी वाट बनावीने ते वाट आंजवी अथवा करंजनां फळ, ऊभी भोरींगणीनां फूल फळ, बेठी भोरींगणीनां फूल फळ, रसवंती, चंदन, सैंधव, मणशील, हरताल तथा लसण एओने सम भागे लई जळमां वाटी वाट बनावीने ते वाट आंजवी अथवा सरगवानां फळ, ऊभी भोरींगणीनां फूल फळ, बेठी भोरींगणीनां फूल फळ, रसवंती, चंदन, सैंधव, मणशील, हरताल तथा लसण एओने सम भागे लई जळमां वाटी वाट बनावीने ते वाट आंजवी. बुद्धिमान् वैद्ये कफथी उत्पन्न थएला नेत्ररोगो उपर आ वाटो आंजवानी योजना करवी.

५ रोगे बलासग्रथितेऽञ्जनक्षैः
कर्तव्यमेतत्सुविशुद्धकाये ॥
नीलान्यवान्गव्यपयोऽनुपीता-
ञ्शलाकिनः शुष्कतनून्विदह्य ।
तथार्जकास्फोतकपित्थबिल्व-
निर्गुण्डिजातीकुसुमानि चैव ॥
तत्क्षारवत्सैन्धवतुत्थरोचनं
पक्कं निदध्यादथ लोहनाड्या ।

बलासग्रथितनी चिकित्सा.

५ बलासग्रथित नामनो नेत्ररोग थयो होय तो प्रवीण वैद्योए रोगीनी कायानुं सारी पेठे संशोधन करीने पछी नीचेप्रमाणे क्षारांजननी योजना करवी.

सळीयोवाळा नीला यवोने सात दिवससूधी अथवा चौद दिवससूधी काळी गायना दूधनी भावना आपीने बाळवा अने तेओनी साथे रामतुलसी, गरणी, कोठ, बीली, नगड तथा जाईनां पुष्पो एओने पण बाळवां. पछी ते भसने ऊना जळनी साथे मेळवी क्षारनी रीतिप्रमाणे वारंवार स्त्रवावी तेमां सैंधव, मोरथुथु अने गोरोचना नाखी लोढानी नळीथी हलावीने क्षार पकाववो. अने ते क्षार नेत्रोमां आंजवो. (आ **क्षारांजन** केहेवाय छे.)

६ महौषधं मागधिकां च मुस्तां
ससैन्धवं यन्मरिचं च शुक्लम् ।
तन्मातुलुङ्गस्वरसेन पिष्टं
नेत्राञ्जनं पिष्टकमाशु हन्यात् ॥
फलं बृहत्या मगधोद्भवाना-
मादाय कल्कं फलपाककाले ।
स्रोतोजयुक्तं खलु सप्तरात्रा-
त्तदुद्धृतं स्यात्तु तथैव पथ्यम् ॥

पिष्टकनी चिकित्सा.

६ सूंठ, पीपळ, मोथ, सैंधव अने धोळां मरी अथवा सरगवानां बीज एओने बीजोराना

रसमां वाटीने नेत्रोमां आंजवामां आवे तो तेथी पिष्टक तुरत नष्ट थई जाय छे. फळो पाकवाना समयमां भोरींगणीनां फळो लई तेओमां सुरमानी साथे पीपळनो कल्क भरी सात दिवससूधी रेहेवा दईने काहाडी लेवो अने पछी ते नेत्रोमां आंजवो. आ अंजन उपर कहेला सूंठ वगेरेना अंजननी पेठेज पिष्टक उपर पथ्य छे.

७ वार्ताकुशिग्विन्द्रसुरापटोल-
किराततिक्तामलकीफलेषु ।
कासीससामुद्ररसाञ्जनानि
जात्यास्तथा कोरकमेव चापि ॥
प्रक्लिन्नवर्त्मन्युपदिश्यते तु
योगाञ्जनं तन्मधुनावघृष्टम् ।

प्रक्लिन्नवर्त्मनी चिकित्सा.

७ रींगणी, सरगवो, इंद्रवारुणी, करीयातुं, पटोल अने आंमळां एओनी साथे हीराकसी, दरीयाई लूण, रसवंती तथा जाईनी कळीओ वाटी गोळी करी सूकावी तेने मधमां घसीने आंजवामां आवे तो तेथी प्रक्लिन्नवर्त्म नष्ट थई जाय छे. आ अंजन '**योगांजन**' ए नामथी ओळखाय छे.

८ नादेयमग्र्यं मरिचं च शुक्लं
नेपालजाता च समप्रमाणा ॥
समातुलुङ्गद्रव एष योगः
कण्डूं निहन्यात्सकृदञ्जनेन ।
सशृङ्गवेरं सुरदारु मुस्तं
सिन्धुप्रसूतं मुकुलानि जात्याः ॥
सुरासु पिष्टं त्विदमञ्जनं हि
कण्डूं च शोफे च हितं वदन्ति ।

कफजन्य नेत्ररोगोना उपद्रवोरूप खरजनी तथा सोजानी चिकित्सा.

८ उत्तम सैंधव, सफेद मरी अथवा सरगवानां बीज अने मणशल एओने सम भागे लई बीजोराना रसमां वाटीने नेत्रोमां आंजवां. आ अंजन एकवार आंजवाथीज खरज नष्ट थई जाय छे.

सूंठ, देवदार, मोथ, सैंधव अने जाईनी कळीओ एओने मदिरामां वाटीने नेत्रोमां आंजवामां आवे तो तेथी खरज अने सोजो मटी जाय छे.

९ स्यन्दाधिमन्थक्रममाचरेच्च
सर्वेषु चैतेषु सदाऽप्रमत्तः ॥

बलासग्रथित, पिष्टक, प्रक्लिन्नवर्त्म तथा बीजा पण कफजन्य नेत्ररोगो एओनी सामान्य चिकित्सा.

९ ए सघळा रोगो उपर (बलासग्रथित, पिष्टक अने प्रक्लिन्नवर्त्म एओनी उपर तथा बीजा पण कफजन्य नेत्ररोगो उपर) वैद्ये सावधान रहीने कफाभिष्यंदनी तथा कफाधिमंथनी चिकित्सा प्रमाणे चिकित्सा करवी. (शस्त्रक्रियामां गया आठमा अध्याय उपर लक्ष्य आपवुं.)

अध्याय १२ मो.

१ अथातो रक्ताभिष्यन्दप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'रक्ताभिष्यंद प्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मन्थं स्यन्दं शिरोत्पातं शिराहर्षं च रक्तजम्
एकैकेन विधानेन चिकित्सेच्चतुरो गदान् ॥

रक्ताधिमंथ आदि चार रुधिरजन्य रोगो उपर नीचे लखेली प्रत्येक चिकित्साओ करवा विषे.

२ रक्ताधिमंथ, रक्ताभिष्यंद, शिरोत्पात अने

---

१ रक्ताभिष्यंद, रक्ताधिमंथ, शिरोत्पात, शिराहर्ष, अर्जुन, अव्रणशुक्र, सव्रणशुक्र, अजकाजात, सशोफपाक, अशोफपाक, पूयालस, अपरिक्लिन्नवर्त्म अने प्रक्लिन्नवर्त्म एओनी चिकित्सा विषेनो.

शिराहर्ष ए चारे रुधिरजन्य रोगो उपर नीचे लखेली प्रत्येक चिकित्साओ करवी. (जो के रक्ताभिष्यंद पछी रक्ताधिमंथ थाय छे तो पण अहीं रक्ताधिमंथनुं नाम प्रथम कह्युं ते, रक्ताधिमंथने रक्ताभिष्यंद करतां अत्यंत दुःखदायी जणाववाने माटे छे.)

३ व्याध्यार्त्ताश्चतुरोऽप्येतान्स्निग्धान्कौम्भेन सर्पिषा ।
रसैरुदारैरथवा शिरामोक्षेण योजयेत् ॥
विरिक्तानां प्रकामं च शिरांस्येषां विशोधयेत् ।
वैरेचनिकसिद्धेन सितायुक्तेन सर्पिषा ॥
ततः प्रदेहाः परिषेचनानि
नस्यानि धूमाश्च यथास्वमेव ।
आश्च्योतनाभ्यञ्जनतर्पणानि
तथैव कार्याः पुटपाकयोगाः ॥

रक्ताधिमंथ आदि चारे रोगोने माटे सामान्य चिकित्सा.

३ रक्ताधिमंथ, रक्ताभिष्यंद, शिरोत्पात के शिराहर्ष थएल होय तो रोगीने घडामां राखी मूकेला जूना घीथी अथवा अत्यंत स्नेहवाळा मांसोना रसोथी स्निग्ध कर्या पछी शिरावेध करीने लोहीनुं स्रावण करवुं, सारी पेठे विरेचन आपवाथी शुद्ध करीने शिरोविरेचन द्रव्योथी पकावेला अने साकरथी संयुक्त करेला घीथी तेना मस्तकने शुद्ध करवुं. पछी दोषोना अनुसार प्रमाणे प्रलेपो, परिषेचनो, नस्यो, धूमो, आश्च्योतनो, अंजनो, तर्पणो अने पुटपाको एओनी योजनाओ करवी.

४ नीलोत्पलोशीरकटङ्कटेरी
कालीययष्टीमधुमुस्तरोध्रैः ।
सपद्मकैर्धौतघृतप्रदिग्धै
रक्ष्णोः प्रलेपं परितः प्रकुर्यात् ॥

रक्ताधिमंथ आदि चारे रोगोने माटे प्रलेपनां द्रव्यो.

४ नीळकमळ, वाळो, दारूहळदर, पीतचंदन, जेठीमध, मोथ, लोदर अने पद्मकाष्ठ एओने धोएला घीथी मिश्रित करीने ते कल्कनो आंखोनी चोतरफ प्रलेप करवो.

५ रुजायां चाप्यतिभृशं स्वेदाश्च मृदवो हिताः
अक्ष्णोः समन्ततः कार्यं पातनं च जलौकसाम् ॥
घृतस्य महती मात्रा पीता चार्त्तिं नियच्छति ।
पित्ताभिष्यन्दशमनो विधिश्चाप्युपपादितः ॥

रक्ताधिमंथ आदि चारे रोगोमां अत्यंत पीडा थती होय तो तेने शांत करवाना उपचारो.

५ रक्ताधिमंथ आदि चारे रोगोमां अत्यंत वेदना थती होय तो कोमळ स्वेदो देवा ए हितकारी छे. रुधिरना वणापणाने लीधे अत्यंत वेदना थती होय तो आंखोनी चोमेर जळो मूकीने लोहीनुं स्रावण करवुं ए हितकारी छे. घीनी मोटी मात्रा पावामां आवे तो ते मात्रा पण पीडाने शांत करे छे. पित्ताभिष्यंदने शांत करवा माटे गया १० मा अध्यायमां जे विधि केहेवामां आव्यो छे ते विधि आ रोगो उपर करवामां आवे तो तेथी पण वेदना शांत थई जाय छे.

६ कसेरुमधुकाभ्यां वा चूर्णमम्बरसंवृतम् ।
न्यस्तमप्स्वान्तरिक्षासु हितमाश्च्योतनं भवेत् ॥

रक्ताधिमंथ आदि चारे रोगोपर आश्च्योतननां द्रव्यो.

६ कसेरुकंद अने जेठीमध एओना चूर्णने वस्त्रनी पोटलीमां बांधी, आकाशमांथी झीली राखेला वरसादना जळमां ते पोटली नाखीने तेनां टीपां नाखवां ए हितकारी थाय छे.

७ पाटल्यर्जुनश्रीपर्णीधातकीधात्रिबिल्वतः ।
पुष्पाण्यथ बृहत्योश्च बिम्बीलोटाञ्च तुल्यशः ॥
समञ्जिष्ठानि मधुना पिष्टानीक्षुरसेन वा ।
रक्ताभिष्यन्दशान्त्यर्थमेतदञ्जनमिष्यते ॥
चन्दनं कुमुदं पत्रं शिलाजतु सकुङ्कुमम् ।

अयस्ताम्ररजस्तुत्थं निम्बनिर्यासमञ्जनम् ॥
त्रपु कांस्यमलं चापि पिष्ट्वा पुष्परसेन तु ।
विपुला याः कृता वर्त्यः पूजिताश्चाञ्जने सदा ॥

अंजननां द्रव्यो.

७ पाडल, कडायो, सीवण, धावणी, आमळी, बीली, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी अने हिमालयमां उत्पन्न थतुं बिंबीलोट एओनां पुष्पो अने मजीठ एओने सम भागे लई मधमां अथवा शेलडीना रसमां वाटी तेनुं अंजन करवाथी रक्ताभिष्यंदनी शांति थाय छे. चंदन, पोयणां, तमालपत्र, शिलाजीत, केसर, लोहचूर्ण, ताम्रचूर्ण, मोरथुथु, लींबडानो गुंदर, रसवंती, कथीळ, अने कांसानो मेल एओने मधमां वाटी मोटी वाटो करवी. आ वाटोनुं अंजन रक्ताधिमंथ आदि चारे रोगो उपर हितकारी थाय छे.

८ स्यादञ्जनं घृतं क्षौद्रं शिरोत्पातस्य भेषजम् ।
तद्वत्सैन्धवकासीसं स्तन्यघृष्टं च पूजितम् ॥
मधुना शङ्खनेपालीतुत्थदार्व्यः ससैन्धवाः ।
रसः शिरीषपुष्पाच्च सुरामरिचमाक्षिकैः ॥
युक्तं तु मधुना वापि गैरिकं हितमञ्जनम् ।

शिरोत्पातनी विशेष चिकित्सा.

८ रसवंती, घी अने मध एओनुं अंजन शिरोत्पातने शांत करे छे. सैंधव अने हीराकसी एओने स्त्रीना दूधमां घसीने आंजवामां आवे तो तेथी पण शिरोत्पात शांत थाय छे. शंख, मणशील, मोरथुथु, दारूहळदर अने सैंधव एओने मधमां वाटीने आंजवाथी पण शिरोत्पात शांत थाय छे. सरसडीयानां फूलनो रस, सुरा, सफेद मरीके सरगवानां बीज अने मध, एओनुं अंजन करवाथी पण शिरोत्पात शांत थाय छे. सोनागेरूने मधमां वाटीने आंजवो ए पण शिरोत्पात उपर हितकारी छे.

९ शिराहर्षेऽञ्जनं कुर्यात्फाणितं मधुसंयुतम् ॥
मधुना तार्क्ष्यजं वापि कासीसं वा ससैन्धवम् ।
वेत्राम्लस्तन्यसंयुक्तं फाणितं तु ससैन्धवम् ॥

शिराहर्षनी विशेष चिकित्सा.

९ दहीनी तरने मधथी संयुक्त करीने आंजवाथी शिराहर्ष शांत थाय छे. रसवंतीने मधथी संयुक्त करीने आंजवाथी शिराहर्ष शांत थाय छे. हीराकसीने सैंधवथी संयुक्त करीने आंजवाथी शिराहर्ष शांत थाय छे. दहीनी तर, सैंधव अने अम्लवेतस एओने दूधमां वाटीने आंजवाथी शिराहर्ष शांत थाय छे.

१० पैत्तं विधिमशेषेण कुर्यादर्जुनशान्तये ।
इक्षुक्षौद्रसितास्तन्यदार्वीमधुकसैन्धवैः ॥
सेकाञ्जनं चात्र हितमम्लैराश्च्योतनं तथा ।
सितामधुककट्वङ्गमस्तुक्षौद्राम्लसैन्धवैः ॥
बीजपूरककोलाम्लदाडिमाम्लैश्च युक्तितः ।
एकशो वा द्विशो वापि योजितं वा त्रिभिस्त्रिभिः
स्फटिकं विद्रुमं शङ्खो मधुकं मधु चैव हि ।
शङ्खक्षौद्रसितायुक्तः सामुद्रः फेन एव च ॥
द्वाविमौ विहितौ योगावञ्जनेऽर्जुननाशनौ ।
सैन्धवक्षौद्रकतकाः सक्षौद्रं वा रसाञ्जनम् ॥
कासीसं मधुना वापि योज्यमत्राञ्जने सदा ।
लोहचूर्णानि सर्वाणि धातवो लवणानि च ॥
रत्नानि दन्ताः शृङ्गाणि गणश्चाप्यवसादनः ॥
कुक्कुटाण्डकपालानि लशुनं कटुकत्रयम् ॥
करञ्जबीजमेलाश्च लेख्याञ्जनमिदं स्मृतम् ।
पुटपाकावसानेन रक्तविस्रावणादिना
सम्पादितस्य विधिना कृत्स्नेन स्यन्दघातिना ।

अर्जुननी चिकित्सा.

१० अर्जुन थएल होय तो तेने शांत करवा माटे सघळी पित्ताभिष्यंदनी चिकित्सा (गयो दशमो अध्याय वांचो) करवी. (आ रोग शस्त्रक्रियाने लायक नथी.) शेलडीनो रस, मध, साकर, दूध, दारूहळदर, जेठीमध अने सैंधव एओथी परिषेचन करवुं अने अंजन पण एओथी करवुं. धान्याम्ल आदि खाटा पदार्थोनां टीपां

नाखवां. अथवा साकर, जेठीमध, अरडूसो, दहींनी तर, मध, धान्याम्ल, सैंधव, बीजोरानो रस, बोरनो रस अने दाडिमनो रस एओमांथी एक एक, बे बे अथवा त्रण त्रण पदार्थोनी युक्तिपूर्वक योजना करीने तेनुं आश्च्योतन करवुं (टीपां नाखवां) ए हितकारी थाय छे. स्फाटिक, परवाळां, शंख, जेठीमध अने मध एओना अंजनथी अर्जुन नष्ट थाय छे. शंख, मध, साकर, अने समुद्रफीण एओना अंजनथी पण अर्जुन नष्ट थाय छे. सैंधव, मध अने निर्मळी एओनुं अंजन हितकारी थाय छे. रसवंती अने मध एओनुं अंजन हितकारी थाय छे. हीराकसी अने मध एओनुं अंजन हितकारी थाय छे. सुवर्ण, कथीळ, सींसुं, त्रांबुं, रूपुं तथा लोढुं एओनां चूर्णो, मणशीळ तथा सोनागेरू वगेरे धातुओनां चूर्णो, सैंधव आदि पांच लवणोनां चूर्णो, लसणीआ वगेरे रत्नोनां चूर्णो, गायना तथा घोडा वगेरेना दांतोनां चूर्णो, गाय वगेरेना शींगडाओनां चूर्णो अने सूत्रस्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायमां छेल्ले कहेलो हीराकसी तथा सैंधव वगेरे अवसादन गण एओनुं अंजन अर्जुन उपर हितकारी थाय छे. (आ **लेख्यांजन** केहेवाय छे. आ अंजन बीजा नेत्ररोगो उपर पण हितकारी थाय छे.) कुकडीना इंडाना खोपरां, लसण, सूंठ, मरी, पीपळ, करंजनां बीज अने एळची एओनुं अंजन पण अर्जुन उपर हितकारी थाय छे. (आ अंजन पण **लेख्यांजन** केहेवाय छे.) लोहीना स्रावणथी मांडी पुटपाक सूधीनो विधि के जे अभिष्यंदनो विनाश करनार छे ते सघळा विधिनी योजना कर्या पछी जरूर जणाय तो आ बे जातनां लेख्यांजनोमांथी कोई लेख्यांजननी योजना करवी.

११ अनेनापहरेच्छुक्रमव्रणं कुशलो भिषक् ॥
उत्तानमवगाढं वा कर्कशं वापि सव्रणम् ।
शिरीषबीजमरिचपिप्पलीसैन्धवैरपि ॥
शुक्रस्य घर्षणं कार्यमथवा सैन्धवेन तु ।
कुर्यात्ताम्ररजःशङ्खशिलामरिचसैन्धवैः ॥
अन्त्याद्द्विगुणितैरेभिरञ्जनं शुक्रनाशनम् ।
कुर्यादञ्जनयोगौ वा सम्यक्श्लोकार्द्धकाविमौ ॥
शङ्खकोलास्थिकतकद्राक्षामधुकमाक्षिकैः ।
क्षौद्रदन्तार्णवमलशिरीषकुसुमैरपि ॥
क्षाराञ्जनं वा वितरेद् बलासग्रथितापहम् ।
मुद्गान्वा निस्तुषान्भृष्टाञ्शङ्खक्षौद्रसितायुतान्॥
मधूकसारं मधुना योजयेच्चाञ्जने सदा ।
बिभीतकास्थिमज्जा वा सक्षौद्रः शुक्रनाशनः ॥
शङ्खशुक्तिमधुद्राक्षामधूककतकानि च ।
द्वित्वग्गते सशूले वा वातघ्नं तर्पणं हितम् ॥
वंशजारुष्करौ तालं नारिकेलं च दाहयेत् ।
विस्राव्य क्षारवच्चूर्णं भावयेत्करभास्थिजम् ॥
बहुशोऽञ्जनमेतत्स्याच्छुक्रवैवर्ण्यनाशनम् ।

अव्रणशुक्रनी तथा सव्रणशुक्रनी चिकित्सा.

११ अव्रणशुक्र थएल होय तो प्रवीण वैद्ये लोहीना स्रावणथी मांडी पुटपाक सूधीना सघळा विधिनी योजना कर्या पछी उपर कहेलां लेख्यांजनथीज ते अव्रणशुक्रने टाळवुं. (आ रोग शस्त्रक्रियाने लायक नथी.) सव्रणशुक्र के जे असाध्य छे ते जो एक पटलमां के बे पटलमां रहेल होय अने खरसट होय तो तेनी पण अव्रणशुक्रनी चिकित्सा प्रमाणेज चिकित्सा करवी. (सव्रणशुक्र खरसट होय ते समयमां तेनी लेख्यांजनरूप चिकित्सा करीने पछी संतर्पणरूप चिकित्सा करवी.)

सरसडीयांना बीज, मरी, पीपळ अने सैंधव एओना चूर्णथी अथवा एकला सैंधवना चूर्णथी फूलांने घसवुं.

सैंधवथी बमणां मरी, मरीथी बमणुं मणशील, मणशीलथी बमणो शंख अने शंखथी बमणुं ताम्रचूर्ण एओनुं अंजन करवाथी फूलुं नष्ट थई

जाय छे. शंख, बोरनो ठळीयो, निर्मळी, द्राक्ष, जेठीमध अने मध एओना अंजनथी फूलुं नष्ट थई जाय छे. मध, गाय वगेरेना दांत, समुद्रफीण अने सरसडीयांनां फूल एओनुं अंजन करवाथी फूलुं नष्ट थई जाय छे. गया अध्यायना ९ मा विषयमां बलासग्रथितनी चिकित्सामां जे क्षारांजन केहेवामां आव्युं छे ते आंजवाथी पण फूलुं नष्ट थई जाय छे. शेकेला फोतरा वगरना मग, शंख, मध अने साकर एओनुं अथवा महुडानो सार तथा मध एओनुं नित्य अंजन आंजवाथी फूलुं नष्ट थई जाय छे. बेहेडाना ठळीयानी मज्जा अने मध एओना अंजनथी फूलुं नष्ट थई जाय छे. शंख, छीप, मध, द्राक्ष, जेठीमध अने निर्मळी एओनुं अंजन करवाथी पण फूलुं नष्ट थई जाय छे.

जो फूलुं बे पटलोमां रहेलुं के शूळवाळुं होय तो वायुने हणनारां द्रव्योना क्राथादिकथी नेत्रोनुं तर्पण करवुं ए हितकारी थाय छे.

वांसना अंकुर, पाका भीलामाना ठळीया, ताड अने नाळीयेर एओने बाळी ते भस्मने क्षारनी पेठे स्रवावी ते क्षारोदकनी सात दिवससूधी ऊंटना अस्थिना चूर्णने भावना देवी. आ चूर्णने मधथी खरडेली आंगळीवते अथवा सळीवते लईने तेथी फूलांने वारंवार घसवामां आवे अने त्रिफळाना पाणीथी धोवामां आवे तो फूलानुं विवर्णपणुं नष्ट थई जाय छे. (आथी फूलुं मटतुं नथी पण काळुं थई जाय छे.)

१२ अजकां पार्श्वतो विद्ध्वा सूच्या विस्राव्य चोदकम् ॥
व्रणं गोमांसचूर्णेन पूरयेत्सर्पिषा सह ।
बहुशोऽवलिखेच्चापि वर्त्मास्योपगतं यदि ॥

अजकाजात के जे असाध्य छे तेना विकृतपणानी चिकित्सा.

१२ अजकाजात थएल होय तो तेने बाजूमां सोईवते वींधी, जळने स्रवावी नाखी, व्रणने घीथी अने बळदना मांसना चूर्णथी पूरवो. जो अजकाजातनुं मोहोडुं ऊंचुं थई गयुं होय तो तेने शस्त्रवते वारंवार खोतरवुं.

१३ सशोफश्चाप्यशोफश्च द्वौ पाकौ यौ प्रकीर्तितौ ।
स्नेहस्वेदोपपन्नस्य तत्र विद्ध्वा शिरां भिषक् ॥
सेकाश्च्योतननस्यानि पुटपाकांश्च कारयेत् ॥
सर्वतश्चापि शुद्धस्य कर्तव्यमिदमञ्जनम् ॥
ताम्रपात्रस्थितं मासं सर्पिःसैन्धवसंयुतम् ।
मैरेयं वापि दध्येवं दध्युत्तरकमेव च ॥
घृतं कांस्यमलोपेतं स्तन्यं वापि ससैन्धवम् ।
मधूकसारं मधुना तुल्यांशं गैरिकेण वा ॥
सर्पिःसैन्धवताम्राणि योपित्स्तन्ययुतानि च ।
दाडिमारेवताश्मन्तकोलाम्लैश्च ससैन्धवाम् ॥
रसक्रियां वा वितरेत्सम्यक्पाकजिघांसया ।
मासं सैन्धवसंयुक्तं स्थितं सर्पिषि नागरम् ॥
आश्च्योतनाञ्जनं योज्यमबलाक्षीरसंयुतम् ।
जात्याः पुष्पं सैन्धवं शृङ्गवेरं
कृष्णाबीजं कीटशत्रोश्च सारम् ।
एतत्पिष्टं नेत्रपाकेऽञ्जनार्थे
क्षौद्रोपेतं निर्विशङ्कं प्रयोज्यम् ॥

सशोफपाक अने अशोफपाक एओनी चिकित्सा.

१३ सशोफपाक अने अशोफपाक नामना जे बे नेत्ररोगो केहेवामां आव्या छे तेओमांथी कोई थएल होय तो वैद्ये रोगीने सारी रीते स्नेहन तथा स्वेदन आपी शिराने वींधी लोहीनुं स्रावण करीने, सेचनो करवां, आश्च्योतनो करवां, नस्यो देवां अने पुटपाको पण करवा. आतुरने सघळी रीते शुद्ध करीने नीचे प्रमाणे अंजनोनी योजना करवी.

एक महीनासूधी त्रांबाना वासणमां राखी मूकेला घीने सैंधवथी युक्त करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा एक महीनासूधी त्रांबाना वासणमां राखेला मैरेयने (सुरा अने आसव एओनो

एकठो आथो मैरेय केहेवाय छे.) सैंधवथी युक्त करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा एक महीनासूधी त्रांबाना वासणमां राखी मूकेला दहीने सैंधवथी युक्त करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा एक महीनासूधी त्रांबाना वासणमां राखी मूकेली दहीनी तरने सैंधवथी युक्त करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा एक महीनासूधी त्रांबाना वासणमां राखी मूकेला घीने कांसाना मेलथी संयुक्त करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा स्त्रीना दूधने सैंधवथी युक्त करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा महुडाना सारने तेना जेटलाज सोनागेरूथी युक्त करी मधमां कालवीने तेनुं अंजन करवुं अथवा घी, सैंधव अने त्रांबुं एओने स्त्रीना दूधथी मिश्रित करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा दाडिम, गरमाळो, आसोंदरो अने बोर एओना रसमां सैंधव नाखी पकाववाथी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं. आ रसक्रियाना अंजनथी पाक सारी पेठे टळी जाय छे.

एक महीनासूधी सैंधवनी साथे घीमां राखी मूकेली सूंठने स्त्रीना दूधमां वाटी तेनुं आश्च्योतन करवुं (टीपां नाखवां) अने अंजन पण तेनुं करवुं. जाईनुं फूल, सैंधव, सूंठ, पीपळनां बीज अने वावडींगनो सार एओने मधमां वाटीने तेनुं सशोफपाक उपर तथा अशोफपाक उपर निश्शंक रीते अंजन करवुं.

१४ पूयालसे शोणितमोक्षणं च
हितं तथैवाप्युपनाहनं च ।
कृत्स्नो विधिश्चेक्षणपाकघाती
यथाविधानं भिषजा प्रयोज्यः ॥
कासीससिन्धुप्रभवार्द्रकैस्तु
हितं भवेदञ्जनमेव चात्र ॥
क्षौद्रान्वितैरेभिरथोपयुञ्ज्या-
दन्यत्तु ताम्रायसचूर्णयुक्तैः ॥

पूयालसनी चिकित्सा.

१४ पूयालस थएल होय तो वैद्ये स्नेहन तथा स्वेदन करीने लोहीनुं स्रावण करवुं, दोषोनुं हरण करनारां अने नेत्रोनुं हित करनारां द्रव्योनो प्रलेप करवो अथवा ते द्रव्योनी ऊनी लुगदी मूकीने पाटो बांधवो अने संशोधन कर्या पछी उपर कहेली सशोफपाकनी तथा अशोफपाकनी जे चिकित्सा छे ते पण करवी. हीराकसी, सैंधव अने आर्द्रक एओ मधथी संयुक्त करीने आंजवां अथवा त्रांबानुं चूर्ण, लोढानुं चूर्ण अने मध एओ संयुक्त करीने आंजवां.

१५ स्नेहादिना सम्यगपास्य दोषां-
स्तृप्तं विधायाथ यथास्वमेव ।
अक्लिन्नवर्त्मानमुपक्रमेत
सेकाञ्जनाश्च्योतननस्यधूमैः ॥
मुस्ताहरिद्रामधुकप्रियङ्गु
सिद्धार्थरोध्रोत्पलसारिवाभिः ।
क्षुण्णाभिराश्च्योतनमेव कार्य-
मत्राञ्जनं चाञ्जनमाक्षिकं स्यात् ॥
पत्रं फलं चामलकस्य पक्त्वा
क्रियां विदध्यादथवाञ्जनार्थे
वंशस्य मूलेन रसक्रियां वा
वर्तीकृतां ताम्रकपालपक्वाम्
रसक्रियां वा त्रिफलाविपक्वां
पलाशपुष्पैः खरमञ्जरेर्वा ।
पिष्ट्वा छगल्याः पयसा मलं वा
कांस्यस्य दग्ध्वा सह तान्तवेन ॥
प्रत्यञ्जने तन्मरिचैरुपेतं
चूर्णेन ताम्रस्य सहोपयोज्यम् ।
समुद्रफेनं लवणोत्तमं च
शङ्खोऽथ मुद्गो मरिचं च शुक्लम् ॥
चूर्णाञ्जनं योज्यमथापि कण्डू-
मक्लिन्नवर्त्मन्युपहन्ति शीघ्रम् ।

अपरिक्लिन्नवर्त्मनी चिकित्सा.

१५ अपरिक्लिन्नवर्त्म थएल होय तो स्नेहन आदि क्रियाओथी सारी रीते दोषोनुं निर्हरण

करी दोषोना अनुसार प्रमाणे नेत्रोनुं तर्पण करीने पछी सेचनो करवां, अंजनो आंजवां, आश्च्योतनो करवां, नस्यो देवां अने धूमपान कराववां. मोथ, हळदर, जेठीमध, घउलां, सर्षप, लोदर अने उपलसरी एओने कूटी स्वरस काढीने ते स्वरसनुं आश्च्योतन करवुं. रसवंती अने मध एओनुं अंजन करवुं अथवा आमळीना फळोनो तथा फूलोनो क्वाथ करी तेनी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा वांसनां मूळोना रसने त्रांबाना कडायामां पकावी रसक्रिया करी वाट बनावीने तेनुं अंजन करवुं अथवा त्रिफळाना, खाखरानां फूलोना के अघेडाना क्वाथने पकावी रसक्रिया करी वाट बनावीने तेनुं अंजन करवुं. तीक्ष्ण अंजनोथी दुर्बळ थएलां नेत्रोनुं आश्वासन करवा माटे कांसाना मेलने कपासना वस्त्रनी साथे बाळी सफेद मरीना अने त्रांबाना चूर्णनी साथे बकरीना दूधमां वाटी तेनुं प्रत्यंजन करवुं. (दोषो शांत थया पछी पाछळथी जे अंजन आंजवामां आवे ते प्रत्यंजन केहेवाय छे.) समुद्रफीण, सैंधव, शंख, मग अने सफेद मरी एओनुं चूर्ण आंजवामां आवे तो ते चूर्ण अपरिक्लिन्नवर्त्मनी खरजने तुरत नष्ट करे छे.

१६ प्रक्लिन्नवर्त्मन्यपि चैत एव
योगाः प्रयोज्याश्च समीक्ष्य दोषान् ॥
सकज्जलं ताम्रघटे च घृष्टं
सर्पिर्युतं तुत्थकमञ्जनं च ॥

प्रक्लिन्नवर्त्मनी चिकित्सा.

१६ अपरिक्लिन्नवर्त्मनी चिकित्सामां उपर जे जे योगो कह्या तेओमां जेटला योगो कफने हरनारा छे तेटला योगो प्रक्लिन्नवर्त्म उपर करवा. कारण के प्रक्लिन्नवर्त्म कफथी थाय छे. प्रक्लिन्नवर्त्मनी विशेष चिकित्सा ए छे के काजळने अने मोरथुथुने त्रांबाना कलसा उपर घसी घीथी संयुक्त करीने तेनुं अंजन करवुं. (गया अध्यायनो ७ मो विषय जुवो.)

अध्याय १३ मो.

१ अथातो लेख्यरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'लेख्यरोगप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ न वर्येऽभिहिता लेख्याः सामान्यस्तष्वय विधिः ।
स्निग्धवान्तविरिक्तस्य निवातातपसद्मनि ॥
सुखोदकप्रतप्तेन वाससा सुसमाहितः ।
स्वेदयेद्वर्त्म निर्भुज्य वामाङ्गुष्ठाङ्गुलिस्थितम् ॥
अङ्गुल्यङ्गुष्ठकाभ्यां तु निर्भुग्नं वर्त्म यत्नतः ।
प्लोतान्तरीकृतं नैव चलति स्रंसतेऽपि वा ॥
ततः प्रमृज्य प्लोतेन वर्त्म शस्त्रपदाङ्कितम् ।
लिखेच्छस्त्रेण पत्रैर्वा ततो रक्ते स्थिते पुनः ॥
स्विन्नं मनोह्वाकासीसव्योषाञ्जनकसैन्धवैः ।
श्लक्ष्णपिष्टैः समाक्षीकैः प्रतिसार्योष्णवारिणा ॥
प्रक्षाल्य हविषा सिक्तं व्रणवत्समुपाचरेत् ।
स्वेदावपीडप्रभृतींस्त्र्यहादूर्ध्वं प्रयोजयेत् ॥
व्यासतस्ते समुद्दिष्टं विधानं लेख्यकर्मणि ।

नव लेख्य नेत्ररोगोनी सामान्य चिकित्सा.

२ आ तंत्रना ८ मा अध्यायना ९ मा विषयमां लेखन नामनी शस्त्रक्रियाने लायक जे नव नेत्ररोगो कह्या छे ते सघळाओनी नीचे प्रमाणे सामान्य चिकित्सा छे.

जेने लेख्य रोगोमांनो कोई पण रोग थएल

---

१ लेखन करवा योग्य (उखेडवा–खोतरवा योग्य) नेत्ररोगोनी चिकित्सा विषयनो. जो के आ तंत्रना आठमा अध्यायमां कहेला क्रम प्रमाणे छेद्य रोगोनी चिकित्सा कह्या पछी लेख्य रोगोनी चिकित्सा केहेवी जोइए तो पण छेद्यादिक रोगोमां पण छेल्ले लेखननो उपयोग छे माटे लेख्य रोगोनी चिकित्सा प्रथम कहेली छे.

होय ते आतुरने स्नेहन, स्वेदन, वमन तथा विरेचन नामनी क्रियाओथी शुद्ध करी, पवन वगरना तथा तडका वगरना घरमां स्थिति करावी, नेत्रने पीडा न थाय एवी रीते डाबा अंगूठाथी तथा आंगळीथी तेनी पांपणोने उथलावी सेहेवाई शके तेवा गरम पाणीथी तपावेला वस्त्रवते ते पांपणोनुं स्वेदन करवुं. झीणा पाटाथी वींटेला अंगुठावते तथा तेवाज पाटाथी वींटेली आंगळीवते पांपणने उथलाववाथी ते चलित पण न थाय अने पडे पण नही. एवी रीते यत्नपूर्वक स्वेदन करी, वस्त्रना पोताथी साफ करी, शस्त्रवते टोचा देवा होय तो टोचा दई, भेदन करवुं होय तो भेदन करी अने छेदन करवुं होय तो छेदन करी ते पछी ते पापणनुं शस्त्रथी अथवा भोंपाथरी (गलजीभी) वगेरेनां पानडांओथी लेखन करवुं. पछी लोही बंध पडे त्यारे मणशील, हीराकसी, सूंठ, मरी, पीपळ, रसवंती तथा सैंधव एओने झीणां वाटी मधथी संयुक्त करी तेथी घसी तथा ऊना पाणीथी धोई घीथी सेचन करीने सात दिवसोसूधी सद्योव्रणनी पेठे तेनापर उपचारो करवा अने सात दिवस पछी शारीरव्रणनी पेठे तेनापर उपचारो करवा. (चिकित्सा स्थानननो पेहेलो तथा बीजो अध्याय जुवो.) त्रण दिवस पछी स्वेदन तथा अवपीडन नस्य वगेरे उपचारो करवा. लेखन करवा योग्य रोगोना विषयमां जे स्वेदन तथा अवपीडन नस्य वगेरे देवां जोइए तेओनुं विधान चिकित्सा स्थानमां विस्तारथी केहेवामां आव्युं छे माटे अहीं विस्तारथी नही केहेतां संक्षेपथी कह्युं छे.

३ असृगास्रावरहितं कण्डूशोफविवर्जितम् ॥
समं नखनिभं वर्त्म लिखितं सम्यगिष्यते ।

पांपणना लेखननो सम्यग्योग थयानां लक्षणो.

३ जो पांपण लोहीना स्रावथी रहित थई जाय, खरजथी तथा सोजाथी रहित थई जाय, नीचापणाथी तथा ऊंचापणाथी रहित थई जाय अने नख जेवा देखाववाळी थई जाय तो लेखननो सम्यग्योग थयो जाणवो. (सम्यग्योग थया पछीज व्रणनी पेठे उपचारो करवा.)

४ रक्तमक्षि स्रवेत्स्कन्नं क्षताच्छस्त्रकृताद्ध्रुवम्
रागशोफपरिस्रावास्तिमिरं व्याध्यनिर्जयः ।
वर्त्म श्यावं गुरु स्तब्धं कण्डूहर्षोपदेहवत् ॥
नेत्रपाकमुदीर्णं वा कुर्वीताप्रतिकारिणः ।
एतद्दुर्लिखितं ज्ञेयं स्वेदयित्वा पुनर्लिखेत् ॥

पांपणना लेखननो दुर्योग थयानां लक्षणो तथा तेनी चिकित्सा.

४ जो आंख राती थई जाय, शस्त्रवते थएला क्षतमांथी जामेला लोहीनो स्राव थाय, सोजो थाय, जळनो स्राव थया करे, तिमिर थाय, व्याधि शांत न थाय अने पांपण काळाशवाळी, भारे, स्तब्ध, खरजवाळी, उफसेली तथा मेलथी खरडाएली रहे तो जाणवुं के लेखननो दुर्योग थयो छे. जेना लेखननो दुर्योग थयो होय ते पांपणनी चिकित्सा करवामां आवे नही तो आंखो अत्यंत पाकी जाय छे. आ प्रमाणें लेखनक्रियानो दुर्योग थयो होय तो फरीवार स्वेदन करीने लेखन करवुं.

५ व्यावर्त्तते यदा वर्त्म पक्ष्म चापि विमुञ्चति ।
स्यात्सरुक्स्रावभूयिष्ठं तदतिस्रावितं विदुः ॥
स्नेहस्वेदादिरिष्टः स्यात्क्रमस्तत्रानिलापहः ।

पांपणना लेखनना अतियोगनां लक्षणो तथा चिकित्सा.

५ जो पांपण उथली पडे, वेदना थया करे, घणो स्राव थया करे अने पांपण उपरना वाळ खरी पडता होय तो जाणवुं के लेखननो अतियोग थयो छे. आ प्रमाणे अतियोग थयो होय तो वायुने नष्ट करनारी स्नेहन तथा स्वेदन आदि चिकित्सा करवी. (स्वेदन आदि चिकित्साथी

वायुने जीतीने पछी व्रणनी पेठे उपचारो करवा.)

६ वर्त्मावबन्धं क्लिष्टं च बहलं यच्च कीर्त्तितम्
पोथकीं चाप्यवलिखेत्प्रच्छयित्वाग्रतः शनैः ।

नव रोगोमांना चार रोगोमां प्रथम टोचीने पछी लेखन करवुं.

६ वर्त्मावबंध, क्लिष्टवर्त्म, बहलवर्त्म अने पोथकी ए चार रोगोमां प्रथम शस्त्रवते धीरे धीरे टोचीने पछी लेखन करवुं.

७ समं लिखेत्तु मेधावी श्यावकर्दमवर्त्मनी ।

नव रोगोमांना बे रोगोमां फकत लेखनज करवुं.

७ बुद्धिमान् वैद्ये श्याववर्त्म अने कर्दमवर्त्म ए बे रोगोमां कफत सम रीते लेखनज करवुं पण प्रथम टोचा, छेदन के भेदन करवुं नही.

८कुम्भीकिनीं शर्करां च तथैवोत्साङ्गिनीमपि ।
कर्त्तयित्वा तु शस्त्रेण लिखेत्पश्चादतन्द्रितः ॥

नव रोगोमांना त्रण रोगोमां प्रथम छेदन करीने पछी लेखन करवुं.

८ कुंभीका, वर्त्मशर्करा अने उत्संगिनी ए त्रण रोगोमां वैद्ये आलस्य रहित थई प्रथम शस्त्रवते छेदन करीने पछी लेखन करवुं.

९ भवेयुर्वर्त्मसु च याः पिडकाः कठिना भृशम्
ह्रस्वास्ताम्राश्च ताः पक्का भिन्द्याद्भित्त्वा लिखेदपि

पांपणना रोगोमां फोडलीओनी स्थिति उपरथी भेदनपूर्वक लेखन.

९ पांपणोमां जे फोडलीओ अत्यंत कठण, नाहानी तथा राती होय तेओने पाक्या पछी शस्त्रवते भेदवी अने भेद्या पछी तेओनुं लेखन पण करवुं.

१० तरुणीश्चाल्पसंरम्भाः पिडका बाह्यवर्त्मजाः
लिखित्वैताः प्रशमयेत्स्वेदालेपनशोधनैः ॥

पांपणना रोगोमां फोडलीओनी स्थिति उपरथी केवळ लेखन.

१० पांपणोमां जे फोडलीओ काची होय, अल्प सोजावाळी होय अने बाहारना भागमां थएली होय तेओनुं फकत लेखन करी स्वेदनोथी, लेपनोथी तथा शोधनोथी शमन करवुं.

अध्याय १४ मो.

१ अथातो भेद्यरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'भेद्यरोग प्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्वेदयित्वा बिसग्रन्थि छिद्राण्यस्य निराश्रयम् ।
पक्वं भित्त्वा तु शस्त्रेण सैन्धवेनावचूर्णयेत् ॥
कासीसमागधीपुष्पनैपाल्येलायुतेन तु ।
ततः क्षौद्रघृतं दत्वा सम्यग्बन्धमुपाचरेत् ॥

बिसवर्त्मनी चिकित्सा.

२ बिसवर्त्म थएल होय तो पाके त्यारे तेने स्वेदन आपी तेनां छिद्रोने तेओनी अंदर परूनी गति जरा पण न रहे एवी रीते शस्त्रवते भेदवां. भेद्या पछी हीराकसी, पीपळ, जसतनां फूल, मणशील अने एळची एओथी संयुक्त करेलुं सैंधव घसवुं. पछी सांधवाने माटे मध तथा घी लगावीने योग्य रीते पाटो बांधवो.

३ रोचनाक्षारतुत्थानि पिप्पल्यः क्षौद्रमेव च ।
प्रतिसारणमेकैकं भिन्ने लगण इष्यते ॥
महत्यपि च युञ्जीत क्षाराग्नी विधिकोविदः ।

लगणनी चिकित्सा.

३ लगण थएल होय तो विधि जाणनारा वैद्ये प्रथम शस्त्रवते तेने भेदीने पछी तेना उपर

---

१ आ तंत्रना ८ मा अध्यायना छठा विषयमां कहेला पांच भेद्य नेत्ररोगोनी चिकित्सा विषेनो.

गोख नोखुं गोरोचनानुं, जवखारनुं, मोरथुथुनुं अने पीपळनुं चूर्ण घसवुं अने मध पण घसवुं.

मोटो लगण थएल होय तो तेने शस्त्रवते भेदीने तेना उपर क्षारनो अने अग्निनो प्रयोग करवो. (ते पछी तुरतज क्षारथी तथा अग्निथी बाळेला व्रणना जेवी चिकित्सा करवी अने ते पछी सामान्य व्रणना जेवी चिकित्सा करवी.)

४ स्विन्नां भिन्नां विनिष्पीड्य भिषगञ्जननामिकाम् ॥
शिलैलानतसिन्धूत्थैः सक्षौद्रैः प्रतिसारयेत् ।
रसाञ्जनमधुभ्यां वा भिन्नां वा शस्त्रकर्मवित् ॥
प्रतिसायाञ्जनैर्युञ्ज्यादुष्णैर्दीपशिखोद्भवैः ।

अंजनिकानी चिकित्सा.

४ अंजनिका जो पोतानी मेळे भेदाएली होय तो तेने स्वेदन आपी, दबावी दोषने काहाडी नाखीने पछी तेना उपर मणशील, एळची, तगर तथा सैंधव एओने मधथी संयुक्त करीने घसवां. अंजनिका जो पोतानी मेळे भेदाएली न होय तो शस्त्रकर्म जाणनारा वैद्ये शस्त्रवते तेने भेदीने तेना उपर मधमां वाटेली रसवंती घसवी अने पछी दीवानी ज्वालाथी उत्पन्न थएलुं ऊनुं काजळ लगाववुं.

५ सम्यक्स्विन्ने कृमिग्रन्थौ भिन्ने स्यात्प्रतिसारणम् ॥
त्रिफलातुत्थकासीससैन्धवैस्तु रसक्रिया ।

क्रिमिग्रंथिनी चिकित्सा.

५ क्रिमिग्रंथि थएल होय तो तेने सारी रीते स्वेदन आपी शस्त्रवते भेदीने तेना उपर त्रिफळा, मोरथुथु, हीराकसी अने सैंधव एओनी रसक्रियाथी (पकावीने करेला मलमथी) प्रतिसारण (अवघर्षण—घसवुं) करवुं.

६ भित्त्वोपनाहं कफजं पिप्पलीमधुसैन्धवैः ॥
लेखयेन्मण्डलाग्रेण समन्तात् प्रच्छयेदपि ।
संस्नेह्य पत्रभङ्गैश्च स्वेदयेच्च यथासुखम् ॥

श्लेष्मोपनाहनी चिकित्सा.

६ श्लेष्मोपनाह थएल होय तो तेने स्वेदन आपी व्रीहिमुख नामना शस्त्रथी भेदीने मंडलाग्र नामना शस्त्रथी लेखन करवुं अने चोमर टोचा पण देवा. पछी पीपळ, मध अने सैंधव एओने संयुक्त करी तेथी प्रतिसारण करवुं अने स्निग्ध करीने पानडांओवते यथासुख (आतुरने गभराट न थाय एवी रीते) स्वेदन पण करवुं.

७ आपाकाद्विधिनोक्तेन पञ्च भेद्यानुपाचरेत् ।
सर्वेष्वेतेषु विहितं विधानं स्नेहपूर्वकम् ।
सम्पक्के प्रयतो भूत्वा कुर्वीत व्रणरोपणम् ॥

उपर कहेला पांचे रोगोनी चिकित्सानी सामान्य समजण.

७ उपर कहेला पांच रोगो ज्यांसूधी पाक्या न होय त्यांसूधी चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायमां सोजाने माटे कहेली अपतर्पण आदि चिकित्सा करवी. तेमज स्नेहन, स्वेदन, रुधिरस्रावण अने विरेचन आदि विधान पण ए सघळाओमां करवुं. ए रोगो पाके त्यारे सावधान रही शस्त्रवते भेदीने पछी व्रणोनुं रोपण करवुं.

अध्याय १९ मो.

१ अथातश्छेद्यरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'छेद्यरोगप्रतिषेध[१]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्निग्धं भुक्तवतो ह्यन्नमुपविष्टस्य यत्नतः ।
संरोपयेत्तु नयनं भिषक्चूर्णैस्तु लावणैः ॥

१ आ तंत्रना आठमा अध्यायना चोथा विषयमां जे अगीयार नेत्ररोगो छेदनक्रियाने लायक केहेला छे तेओनी चिकित्साओ विषेनो.

ततः संरोषितं तूर्णं सुस्विन्नं परिघट्टितम् ।
अर्म यत्र वलीजातं तत्रैतल्लगयेद्भिषक् ॥
अपाङ्गं प्रेक्षमाणस्य बडिशेन समाहितः ।
मुचुण्ड्याऽऽगृह्य मेधावी सूचीसूत्रेण वा पुनः ॥
नचोत्थापयता क्षिप्रं कार्यमभ्युन्नतं तु तत् ।
शस्त्रपातभयाच्चास्य वर्त्मनी ग्राहयेद्दृढम् ॥
ततः प्रशिथिलीभूतं त्रिभिरेव विलम्बितम् ।
उल्लिखन्मण्डलाग्रेण तीक्ष्णेन परिशोधयेत् ॥
विमुक्तं सर्वतश्चापि कृष्णाच्छुक्लाच्च मण्डलात्
नीत्वा कनीनकोपान्तं छिन्द्यान्नान्तिकनीनकम्
चतुर्भागस्थिते मांसे नाक्षि व्यापत्तिमर्हति ॥
कनीनकवधादस्रं नाडी चाप्युपजायते ।
हीनच्छेदात्पुनर्वृद्धिं शीघ्रमेवाधिगच्छति ॥
अर्म यज्जालवच्चापि तदप्युन्माज्र्य लम्बितम् ।
छिन्द्याद्वक्रेण शस्त्रेण वर्त्मशुक्लान्तमाश्रितम् ॥
प्रतिसारणमक्ष्णोस्तु ततः कार्यमनन्तरम् ।
यवनालस्य चूर्णेन त्रिकटोर्लवणस्य च ॥
स्वेदयित्वा ततः पश्चाद्बध्नीयात्कुशलो भिषक् ।
देशर्तुबलकालज्ञः स्नेहं दत्वा यथाहितम् ॥
व्रणवत्संविधानं तु तस्य कुर्यादतः परम् ।
त्र्यहान्मुक्त्वा करस्वेदं दत्वा शोधनमाचरेत् ॥
करञ्जबीजामलकमधुकैः साधितं पयः ।
हितमाश्च्योतनं शूले द्विरह्नः क्षौद्रसंयुतम् ॥
मधुकोत्पलकिञ्जल्कदूर्वाकल्कैश्च मूर्द्धनि ।
प्रलेपः सघृतः शीतः क्षीरपिष्टः प्रशस्यते ॥
लेख्याञ्जनैरपहरेदर्म शेषं भवेद्यदि ।
अर्म चाल्पं दधिनिभं नीलं रक्तमथापि वा ॥
धूसरं तनु यच्चापि शुक्रवत्तदुपाचरेत् ।
चर्माभं बहलं यत्तु स्नायुमांसघनावृतम् ॥
छेद्यमेव तदर्म स्यात्कृष्णमण्डलगं च यत् ॥
विशुद्धवर्णमक्लिष्टं क्रियास्वक्षि गतक्लमम् ॥
छिन्नेऽर्मणि भवेत्सम्यग्यथास्वमनुपद्रवम् ।

पांचे प्रकारनां अर्मोनी चिकित्सा.

२ जेने पांच प्रकारनां अर्मोमांथी कोई पण अर्म थएल होय ते रोगीने स्नेहनस्वेदनादिक क्रमथी शुद्ध करी, स्निग्ध अन्न जमाडी, यत्नपूर्वक बेसाडी, वैद्ये तेना नेत्रने सारी रीते स्वेदन आपी सैंधवनुं (अथवा बीजोराना रससहित सैंधवनुं) चूर्ण आंजीने चोळाववाथी सारी पेठे रोषित (क्षुब्ध) करी नेत्रनी अणी तरफ नजर कराववी अने ते नजर करतां जे प्रदेशमां मांसनी करचली वळे ते प्रदेशना मांसमां बडिशमुख नामनुं यंत्र योजीने अथवा जेमां दोरो परोवेलो होय एवी सोई योजीने अथवा समाणीथी पकड करीने ते रोगरूप मांसने उचकाववुं. उचकावती वखते उतावळ न करवी अने अत्यंत ऊंचुं पण करवुं नहीं. केम के उतावळ करवामां आवे अथवा अत्यंत ऊंचुं करवामां आवे तो मांस त्रूटी जाय छे. पछी डोळामां शस्त्र घोंचाई जवानी बीकने लीधे आतुरनी पांपणोने मजबूत रीते पकडावी राखवी के जेथी शस्त्रप्रयोगना समयमां वींचायज नहीं. पछी उचकाववाथी शिथिल थएला ते मांसना एक चतुर्थांशने आंखमां चोटेलोज रेहेवा दई बाकीना त्रण भागोनेज खेची लांबा करी पेला चतुर्थांशने मंडलाग्र नामना तीक्ष्ण शस्त्रवते उखेडी उखेडीने सघळा काळा तथा धोळा डोळामांथी छूटो पाडवो. ए रीते ए चतुर्थांशने छूटो पाडी कीकीना समीपमां लई जईने पेला लांबा करेला त्रण भागोने मंडलाग्रथीज कापी नाखवा. तेमां एवी संभाळ राखवी के मांसनुं छेदन कीकीना अत्यंत समीपमां न थाय. चोथा भागनुं मांस कीकीना समीपमां राखी देवाथी कीकीने कोई जातनी हरकत थती नथी. जो चोथा भागनुं मांस न रेहेवा देवामां आवे तो कीकीने नुकसान थाय छे, कीकीने नुकसान थवाथी रुधिर नीकळे छे, नाडीव्रण थाय छे अने वेदना पण थाय छे. ए मांसने चोथा भाग करतां ओछुं अवशेष रेहेवा देवाथी कीकीने नुकसान थाय छे अने त्रण भाग करतां ओछुं कापवामां आवे तो ते मांस पाछुं तुरतज वधी

ज्ञाय [1]छे. पांपणना समीपमां तथा धोळा डो-ळामां जे अर्म माछळां पकडवाना जाळनी पेठे व्यापी रह्युं होय अर्थात् जेनी करचली न वळे एवुं होय तेने पण सैंधवना चूर्णथी घसी पोचुं पाडी बडिशमुख नामना यंत्रनी योजनाथी लांबुं करीने वांका मंडलाग्र शस्त्रवते कापी नाखवुं. पछी नेत्रमां जार के जवखार? सूंठ, मरी, पीपळ तथा सैंधव एओना चूर्णथी प्रतिसारण करी, योग्य रीते स्वेदन आपीने तथा स्नेहनी योजना करीने अने उपर त्रिफळा, लोदर तथा चंदन वगेरे कषाय द्रव्योना कल्कनी थेपली मूकीने योग्य प्रकारनो पाटो बांधवो. देश, ऋतु, सामर्थ्य तथा काळ एओने जाणनारा प्रवीण वैद्ये ते पछी व्रणनी पेठे शोधन तथा रोपण वगेरे विधान करवुं. पेहेलो पाटो त्रण दिवस पछी छोडवो अने छोडी अ-ग्निथी तपावेली हथेलीथी स्वेदन आपीने शोधन करवुं.

जो शूळ थतुं होय तो करंजनां बीज, आ-मळां अने जेठीमध एओथी पकावेला दूधने मधथी संयुक्त करीने तेनुं दिवसमां बे वार आश्च्योतन करवुं अने जेठीमध, नीळकमळ, कमळना केसरा अने दूर्वा एओने दूधमां वाटी घीथी संयुक्त करीने ते कल्कनो माथापर शीतल प्रलेप करवो ए हितकारी थाय छे.

शस्त्रकर्म कर्‍या पछी जो अर्म अवश्य राखवा योग्य चोथा भाग करतां वधारे अवशेष रही गयुं होय तो आ तंत्रना १२ मा अध्यायना दशमा विषयमां कहेलां लेख्यांजनोथी तेनुं हरण करवुं.

जो पांच प्रकारनां अर्मोमांनुं कोई पण अर्म अविस्तीर्ण के पातळुं होय तो शस्त्रक्रिया नहीं करतां फूलानी चिकित्सा जेवी तेनी चिकित्सा करवी. (लेख्यांजनो आंजवारूप चिकित्सा क-रवी) परंतु जे अर्म चामडांना टुकडा जेवुं, जाडुं, स्नायुओथी तथा मांसथी घाटुं वींटाएलुं अने दृष्टिना मार्गने रोकनारूं होय तेनुं तो छेदनज करवुं जोइए.

अर्मनुं छेदन थवाथी नेत्र शुद्ध वर्णवाळुं, वींचावा तथा उघडवा वगेरे क्रियाओमां आयास वगरनुं, क्लम वगरनुं अने अतियोगनां तथा ही-नयोगनां लक्षणो वगरनुं थई जाय तो जाणवुं के छेदननो सम्यग्योग थयो छे.

३ शिराजाले शिरा यास्तु कठिनास्ताश्च बुद्धिमान्
उल्लिखेन्मण्डलाग्रेण बडिशेनावलम्बिताः।
शिरासु पिडका जाता या न सिध्यन्ति भेषजैः
अर्मवन्मण्डलाग्रेण तासां छेदनमिष्यते।
रोगयोश्चैतयोः कार्यमर्मोक्तं प्रतिसारणम्॥
विधिश्चापि यथादोषं लेखनद्रव्यसंभृतः।

शिराजाळनी तथा शिरापिडकानी चिकित्सा.

३ शिराजाल थएल होय तो रोगीने स्नेहन स्वेदनादि क्रमथी शुद्ध करी, स्निग्ध अन्न जमाडी, यत्नपूर्वक बेसाडी, नेत्रने स्वेदन आपी तथा सैंधवनुं चूर्ण आंजवाथी क्षुब्ध करी वैद्ये ते रोगनी कठण शिराओने बडिशमुख नामना यंत्रथी धरी राखीने मंडलाग्र नामना शस्त्रथी तेओनुं लेखन करवुं. (कोमळ शिराओनुं तो आ तंत्रना १२ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलां लेख्यांजनोथीज हरण करवुं.)

शिरापिडका थएल होय तो तेओनुं लेख्यां-जनोथी हरण करवुं. पण जेओ लेख्यां-जनोथी टळे नहीं तेओनुं अर्मनी पेठे मंडलाग्र नामना शस्त्रथी छेदन करवुं. (छेदन करवुं होय तो रोगीने प्रथम स्नेहन स्वेदन आदि क्रमथी शुद्ध करी स्निग्ध अन्न जमाडी यत्नपूर्वक बेसाडवो जोइए.)

आ बे रोगोमां शस्त्रक्रिया कर्‍या पछी नेत्रमां

१ अतियोगनां अने हीनयोगनां आ लक्षणो कह्यां एम समजवुं.

जारके जवखार? सूंठ, मरी, पीपळ, तथा सैंधव एओना चूर्णथी प्रतिसारण करवुं अने दोषोना अनुसारथी वाताभिष्यंद वगेरेमां जे विधि कह्यो छे ते पण लेखन द्रव्योथी संपादित करीने करवो.

४ सन्धौ संस्वेद्य शस्त्रेण पर्वणीकां विचक्षणः
उत्तरे च त्रिभागे च बडिशेनावलम्बिताम् ।
छिन्द्यात्ततोऽर्द्धमग्रे स्यादश्रुनाडी ह्यतोऽन्यथा ।
प्रतिसारणमत्रापि सैन्धवक्षौद्रमिष्यते ।
लेखनीयानि चूर्णानि व्याधिशेषस्य भेषजम् ॥
शङ्खं समुद्रफेनं च मण्डूकीं च समुद्रजाम् ।
स्फटिकं कुरुविन्दं च प्रवालं चाश्मकं तथा ॥
वैदूर्यंपलकं मुक्तामयस्ताम्ररजांसि च ।
समभागानि सम्पिष्य सार्द्धं स्रोतोऽञ्जनेन तु ॥
चूर्णाञ्जनं कारयित्वा भाजने मेषशृङ्गजे ।
संस्थाप्योभयतःकालमञ्जयेत्सततं बुधः ॥
अर्माणि पिडका हन्याच्छिराजालानि तेन वै ।

पर्वणीनी चिकित्सा.

४ पर्वणी थएल होय तो विचक्षण वैद्ये दृष्टिने पीडा न थाय एवी रीते काळा तथा धोळा डोळानी संधिमां स्वेदन करी पर्वणीने बाहारनी संधिना त्रीजा भागमां बडिशवते पकडी ते पछी तेनो अर्द्धभाग वृद्धिपत्र नामना शस्त्रवते कापी नाखवो. जो अर्द्ध करतां अधिक भागनुं छेदन करवामां आवे तो आंसुनी गतिवाळो? नाडीव्रण थाय छे. आ रोगनुं छेदन कर्या पछी नेत्रमां मध सहित सैंधवथी प्रतिसारण करवुं. शस्त्रकर्म कर्या छतां हीन छेदन थवाथी पर्वणी जो अर्द्ध करतां ओछी कपाई होय तो नीचे लखेला चूर्णांजनथी तेनी चिकित्सा करवी.

शंख, समुद्रफीण, मोतीनी छीप, स्फाटिक, कांईक पीळाशवाळुं माणक, परवाळुं, अश्मक नामनो मणि, लसणीयो, मोती, लोह, ताम्र अने सुरमो एओनां चूर्णोने सम भागे लई वाटी ते चूर्णने मेंढाशींगीना काष्ठथी अथवा घेटाना शींगडाथी बनावेला पात्रमां राखी मूकवुं एटले ते **चूर्णांजन** केहेवाय छे. विद्वान् वैद्ये आ चूर्णथी नित्य बे वखत आतुरना नेत्रोमां अंजन करवुं. आ अंजनथी अर्मो, शिरापिडका अने शिराजाल एओ पण टळी जाय छे.

५ अर्शस्तथा यच्च नाम्ना शुष्कार्शोऽर्बुदमेव च
अभ्यन्तरं वर्त्मशया विधानं तेषु वक्ष्यते ।
वर्त्मोपस्वेद्य निर्भुज्य सूच्योत्क्षिप्य प्रयत्नतः ॥
मण्डलाग्रेण तीक्ष्णेन मूले छिन्द्याद्भिषग्वरः ।
ततः सैन्धवकासीसकृष्णाभिः प्रतिसारयेत् ॥
स्थिते च रुधिरे वर्त्म दहेत्सम्यक्शलाकया ।
क्षारेणावलिखेच्चापि व्याधिशेषो भवेद्यदि ॥

अर्शोवर्त्म, शुष्कार्श अने अर्बुद एओनी चिकित्सा.

५ अर्शोवर्त्म, शुष्कार्श अने अर्बुद ए त्रण रोगो के जेओ पांपणनी अंदर थाय छे तेओनी चिकित्सा कहीये छीए. पांपणने स्वेदन संस्कार आपी उथलावी रोगोमां प्रयत्नपूर्वक सोई भरावी ऊंचा करीने मंडलाग्र नामना तीक्ष्ण शस्त्रवते ए त्रणे रोगोनुं मूळमां छेदन करवुं. पछी सैंधव, हीराकसी अने पीपळ एओना चूर्णथी प्रतिसारण करवुं. लोही बंध पड्या पछी व्याधि अवशेष रहेल होय तो सारी रीते सळीवते व्याधिने डांभवो अने तेनुं लेखन पण करवुं.

६ तीक्ष्णैरुभयतोभागैस्ततो दोषमधिक्षिपेत् ।
वितरेच्च यथादोषमभिष्यन्दक्रियाविधिम् ॥

उपर कहेला अगीयारे रोगोने माटे अवशिष्ट चिकित्सा.

६ उपर कहेला अगीयारे छेद्य रोगोनुं छेदन कर्या पछी तथा प्रतिसारणादिक कर्या पछी तीक्ष्ण उभयतोभाग (वमन विरेचन) द्रव्योना कल्क तथा काथादिकथी व्रणना कफादिक दोषोनी शुद्धि करवी अने दोषोना अनुसार प्रमाणे वाताभिष्यंद वगेरे नेत्ररोगोमां जे

क्रियाविधि केहेवामां आव्यो छे ते पण करवो.

७ शस्त्रकर्मण्युपरते मासं च स्यात्सुयन्त्रितः ॥

शस्त्रकर्म थया पछी परेजी पाळवानी मुदत.

७ शस्त्रक्रिया थया पछी रोगीए एक महिनासूधी व्रणविधानमां कहेली परेजी संपूर्ण रीते पाळवी.

अध्याय १६ मो.

१ अथातः पक्ष्मकोपप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'पक्ष्मकोपप्रतिषेध' नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ याप्यस्तु यो वर्त्मभवो विकारः
पक्ष्मप्रकोपोऽभिहितः पुरस्तात् ।
तत्रोपविष्टस्य नरस्य चर्म
वर्त्मोपरिष्टादनु तिर्यगेव ॥
भ्रुवोरधस्तात्परिमुच्य भागौ
पक्ष्माश्रितं चैकमतोऽवकृन्तेत् ।
कनीनकापाङ्गसमं समन्ता-
द्यवाकृतिं स्निग्धतनोर्नरस्य ॥
उत्कृत्य शस्त्रेण यवप्रमाणं
वालेन सीव्येद्भिषगप्रमत्तः ।
दत्वा च सर्पिर्मधुनावशेषं
कुर्याद्विधानं विदितं व्रणे यत् ॥
ललाटदेशे च निबध्य पट्टं
प्राक्स्यूतमत्राप्यपरं च बद्ध्वा ।
स्थैर्ये गते चाप्यथ शस्त्रमार्गे
वालान्विमुञ्चेत्कुशलोऽभिवीक्ष्य ॥

पक्ष्मकोप उपर शस्त्रक्रिया.

२ पांपणमां थतो पक्ष्मकोप नामनो जे याप्य रोग प्रथम केहेवामां आव्यो छे ते थएल होय तो वैद्ये रोगीने स्निग्ध करी, यत्नपूर्वक बेसाडी, पांपणोमां भमरोनी नीचेना बे भागोने तथा पांपणना वाळोवाळा एक भागने छोडी दई उपरना भागनी चामडीमां, कीकीना तथा नेत्रनी अणीना सम प्रदेशपर ध्यान राखी शस्त्रवते जवना जेवी आकृतिवाळो अने जवना जेवा प्रमाणवाळो आडो काप देवो. (आखी पांपणमां पक्ष्मकोप होय तो उपर कहेला आखा भागमां अने पांपणना थोडा प्रदेशमां पक्ष्मकोप होय तो उपर कहेला भागना थोडा प्रदेशमां काप देवो.) शस्त्रवते काप दईने पछी ते व्रणने सोईवते घोडा वगेरेना वाळथी सीवी लेवो अने ते व्रण उपर संधानने माटे मधनुं तथा घीनुं सेचनादिक करवुं. पछी रोगीना ललाटमां वस्त्रनो पाटो बांधी व्रणने वधारे सीववो योग्य जणाय तो वाळोवते वधारे पण सीवी लई वाळोना छेडाओने पेला ललाट उपर बांधेला पाटामां सोईवते टांकी देवा अने पछी व्रणना विषयमां जे विधान कह्युं छे ते करवुं. शस्त्रथी करेलो काप कठण थइ जाय त्यारे कुशल वैद्ये जोई तपासी, व्रणमां सीवेला वाळोने व्रणमांथी खेचीने काहाडी नाखवा.

३ एवं नचेच्छाम्यति तस्य वर्त्म
निर्भुज्य दोषोपहतां वलिं च ।
ततोऽग्निना वा प्रतिसारयेत्तां
क्षारेण वा सम्यगवेक्ष्य धीरः ॥

पक्ष्मकोप उपर अग्निक्रिया तथा क्षारक्रिया.

३ उपर कह्या प्रमाणे शस्त्रक्रिया करवाथी

---

१ पक्ष्मकोप के जे गुजरातीमां आंखोना परवाळां केहेवाय छे अने जेनुं लक्षण आ तंत्रना त्रीजा अध्यायना २४ मा विषयमां आप्युं छे तथा जेने आ तंत्रना आठमा अध्यायना नवमा विषयमां याप्य कहेलो छे तेनुं यापन करवानी चिकित्सा विषेनो.

पक्ष्मकोप शांत न थाय तो पछी पांपणने उथलावी दोषथी उपहत थएला तेना प्रदेशने धीर वैद्ये शास्त्ररीति प्रमाणे सारी रीते अग्निवते डांभवो अथवा तेना उपर क्षारनी योजना करवी.

४ छित्वा समं वाप्युपपक्ष्ममालां
सम्यग्गृहीत्वा बडिशैस्त्रिभिश्च ।
पथ्याफलेन प्रतिसारयेत्तु
पिष्टेन वा तौवरकेण सम्यक् ॥

पक्ष्मकोप उपर औषधक्रिया.

४ अग्निथी तथा क्षारथी पण पक्ष्मकोप शांत न थाय तो पांपणना प्रदेशोमां उत्पन्न थएला तीक्ष्ण तथा खरमट रोगरूप वाळोने चीपीयावते छोटी नाखी पांपणने त्रण बडिशमुख यंत्रोथी सारी रीते पकडी, वाटेली हरडेना कल्कथी अथवा चेरना फळना (चेरीयांना) कल्कथी तेना उपर सारी पेठे प्रतिसारण (घर्षण) करवुं.

५ चत्वार एते विधयो विहन्तुं
पक्ष्मोपरोधं पृथगेव शस्ताः ।
विरेचनाश्च्योतननस्यधूम-
लेपाञ्जनस्नेहरसक्रियाश्च ॥

उपर कहेली चार क्रियाओ तथा बीजी पण केटलीएक क्रियाओ पक्ष्मकोपनुं यापन करे छे पण तेने सर्वथा टाळी शकती नथी.

५ उपर जे चार क्रियाओ केहेवामां आवी तेओ अने बीजी पण विरेचन, आश्च्योतन, नस्य, धूम, लेपन, अंजन, स्नेहक्रिया, रसक्रिया तथा चीपीयावते छोटी नाखवानी क्रिया ए प्रत्येक क्रियाओ पक्ष्मकोपने तुरत वेळा नष्ट करवाने समर्थ छे पण ते पाछो कदी उत्पन्नज न थाय एवी रीते तमाम शांत करवाने समर्थ नथी. कारण के पक्ष्मकोप याप्यज छे.

अध्याय १७ मो.

१ अथातो दृष्टिगतरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'दृष्टिगतरोगप्रतिषेधं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ त्रयः साध्यास्त्रयोऽसाध्या याप्याः षट् च भवन्ति हि ।
तत्रैकस्य प्रतीकारः कीर्तितो धूमदर्शिनः ॥

कीकीमां थता बार रोगोना साध्यत्वादिकनुं तथा केहेवाई गयेली धूमदर्शीनी चिकित्सानुं स्मारण.

२ कीकीमां थता बार रोगोमां धूमदर्शी, पित्तविदग्धदृष्टि अने श्लेष्मविदग्धदृष्टि ए त्रण रोगो साध्य छे. ह्रस्वजात्य, नाकुलांध्य अने गंभीरिका ए त्रण रोगो असाध्य छे. वातलिंगनाश, पित्तजन्य **परिम्लायी** नामनो लिंगनाश, कफलिंगनाश, रक्तलिंगनाश, सान्निपातिक लिंगनाश अने बीजो पित्तजन्य **नील** नामनो लिंगनाश ए छ रोगो पोतानी तिमिररूप पेहेली अवस्थाओमां साध्य छे, रोगी कांईक देखतो होय ते अवस्थामां याप्य छे अने बिलकुल देखतो न होय ते अवस्थामां असाध्य छे. ए बार रोगोमां धूमदर्शीनी चिकित्सा आ तंत्रना दशमा अध्यायना ७ मा विषयमां केहेवाई गई छे. (अने त्रण असाध्य रोगोनी चिकित्सा केहेवानी नथी माटे आ अध्यायमां बाकीना आठ रोगोनी चिकित्सा केहेवामां आवशे.)

३ दृष्टौ पित्तविदग्धायां विदग्धायां कफेन च ।
पित्तश्लेष्महरं कुर्याद्विधिं शस्त्रक्षतादृते ॥

१ कीकीमां थता नेत्ररोगो के जेओनां लक्षणादिक गया ७ मा अध्यायमां आपेलां छे तेओनी चिकित्सा विषेनो.

नस्यसेकाञ्जनालेपपुटपाकैः सतर्पणैः ।
आद्ये तु त्रैफलं पेयं सर्पिस्त्रैवृतमुत्तरे ॥
तैल्वकं चोभयोः पथ्यं केवलं जीर्णमेव वा ।
गैरिकं सैन्धवं कृष्णा गोदन्तस्य मसी तथा ॥
गोमांसं मरिचं बीजं शिरीषस्य मनःशिला ।
वृन्तं कपित्थान्मधुना स्वयङ्गुप्ताफलानि च ॥
चत्वार एते योगाः स्युरुभयोरञ्जने हिताः ।
कुब्जकाशोकशालाम्रप्रियङ्गुनलिनोत्पलैः ॥
पुष्पैर्हरेणुकृष्णाह्वापथ्यामलकसंयुतैः ।
सर्पिर्मधुयुतैश्चूर्णैर्वेणुनाड्यामवस्थितैः ॥
अञ्जयेद् द्वावपि भिषक्पित्तश्लेष्मविभावितौ ।
आम्रजम्बूद्भवं पुष्पं तद्रसेन हरेणुकाम् ॥
पिष्ट्वा क्षौद्राज्यसंयुक्तं प्रयोज्यमथवाञ्जनम् ।
नलिनोत्पलकिञ्जल्कगैरिकैर्गोशकृद्रसैः ॥
गुडिकाञ्जनमेतद्वा दिनरात्र्यन्धयोर्हितम् ।
रसाञ्जनरसक्षौद्रतालीसस्वर्णगैरिकम् ॥
गोशकृद्रससंयुक्तं पित्तोपहतदृष्टये ।
शीतं सौवीरकं वापि पिष्ट्वाथ रसभावितम् ॥
कूर्मपित्तेन मतिमान्भावयेद्रौहितेन वा ।
चूर्णाञ्जनमिदं नित्यं प्रयोज्यं पित्तशान्तये ॥
काश्मरीपुष्पमधुकदार्वीरोध्ररसाञ्जनैः ।
सक्षौद्रमञ्जनं तद्वद्धितं नेत्रामये सदा ॥
स्रोतोजं सैन्धवं कृष्णां रेणुकां चापि पेषयेत् ।
अजमूत्रेण ता वर्त्यः क्षणदान्ध्याञ्जने हिताः ॥
कालानुसारिवा कृष्णा नागरं मधुकं तथा ।
तालीसपत्रं क्षणदे गाङ्गेयं च शकृद्रसे ॥
कृतास्ता वर्तयः पिष्टाश्छायाशुष्काः सुखावहाः
मनःशिलाभयाव्योषवलाकालानुसारिवाः ॥
सफेना वर्तयः पिष्टाश्छागक्षीरसमन्विताः ।
गोमूत्रपित्तमदिराशकृद्धात्रीरसे पचेत् ॥
क्षुद्राञ्जनं रसे चान्यद्यकृतस्त्रैफलेऽपि वा ।
गोमूत्राज्यार्णवमलपिप्पलीक्षौद्रकट्फलम् ॥
सैन्धवोपहितं युञ्ज्यान्निहितं वेणुगह्वरे ।
मेदो यकृद्भृतं चाजं पिप्पल्यः सैन्धवं मधु ॥
रसमामलकं चापि पक्कं सम्यङ् निधापयेत् ।
कोशे खदिरनिर्माणे तद्वत्क्षुद्राञ्जनं हितम् ॥
हरेणुमगधाजास्थिमज्जैलायकृदन्वितम् ।
शकृद्रसेनाञ्जनं वा श्लेष्मोपहतदृष्टये ॥
विपाच्य गोधायकृदर्धपाटितं
सुपूरितं मागधिकाभिरग्निना ।
निषेवितं तत्सकृदञ्जनेन
निहन्ति नक्तान्ध्यमसंशयं खलु ॥
तथा यकृच्छागभवं हुताशने
विपाच्य सम्यङ्मगधासमन्वितम् ।
प्रयोजितं पूर्ववदाश्वसंशयं
जयेत्क्षपान्ध्यं सकृदञ्जनान्नृणाम् ॥
प्लीहा यकृच्चाप्युपलक्ष्य ते उभे
प्रकल्प्य शूल्ये घृततैलसंयुते ।
ते सार्षपस्नेहसमाप्लुतेऽञ्जने
नक्तान्ध्यमाश्वेव हतः प्रयोजिते ॥
नदीजशिम्बीकटुकान्यथाञ्जनं
मनःशिला द्वे च निशे यकृद्रसे ।
सचन्दनेयं गुटिकाथ वाञ्जनं
प्रशस्यते वै दिवसेष्वपश्यताम् ॥

पित्तविदग्धदृष्टिनी तथा श्लेष्मविदग्धदृष्टिनी चिकित्सा.

३ पित्तविदग्धदृष्टि थएल होय तो तेमां शस्त्रक्रिया नहीं करतां (शिरावेध नहीं करतां) पित्तने हणनारी (पित्ताभिष्यंदने हणनारी) चिकित्सा करवी अने श्लेष्मविदग्धदृष्टि थएल होय तो तेमां शिरावेध नहीं करतां कफाभिष्यंदने हणनारी चिकित्सा करवी. (पित्ताभिष्यंदनी अने कफाभिष्यंदनी चिकित्सा आ तंत्रना दशमा तथा अगीयारमा अध्यायमां केहेवाई गई छे ते जुवो.) ए चिकित्साओ नस्योथी, सेचनोथी, अंजनोथी, आलेपोथी, पुटपाकोथी तथा तर्पणोथी करवी.

त्रिफळाना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी पित्तविदग्धदृष्टि उपर पीवाथी हितकारी थाय छे, नसोतरना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी श्लेष्मविदग्धदृष्टि उपर पीवाथी हितकारी

थाय छे अने पाटीया लोदरना क्राथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी अथवा केवळ जूनुं घी ए बन्ने रोगो उपर पीवाथी हितकारी थाय छे.

सोनागेरू, सैंधव, पीपळ अने गायना दांतनी मसी एओनुं अंजन ए बन्ने रोगो उपर हितकारी छे. बळदनुं मांस, मरी, सरसडीयानां बीज अने मणशील एओनुं अंजन पण ए बन्ने रोगो उपर हितकारी थाय छे. कोठनां दीटीयां अने मध एओनुं अंजन पण ए बन्ने रोगो उपर हितकारी थाय छे. कौचांनां फळो अने मध एओनुं अंजन पण ए बन्ने रोगो उपर हितकारी थाय छे. (केटलाएक केहे छे के ए अंजनो पित्तविदग्धदृष्टि उपर राते आंजवां अने श्लेष्मविदग्धदृष्टि उपर दिवसे आंजवां.)

मोशमी गुलाबनां फूल, आसोपालवनां फूल, राळना झाडना फूल, आंबानां फूल, घउलानां फूल, कांईक रताशवाळां कमळनां फूल, नील कमळनां फूल, हरेणु, पीपळ, हरडे अने आमळां एओना चूर्णने मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने वांसनी नळीमां राखी मूकवुं. आ अंजन पित्तविदग्धदृष्टि तथा श्लेष्मविदग्धदृष्टि ए बन्नेनी उपर आंजवुं. आ **पुष्पांजन** केहेवाय छे.

आंबानां फूलोना अने जांबूनां फूलोना रसथी हरेणुकाने वाटी पकाववाथी रसक्रिया करी तेने मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने आंजवाथी पित्तविदग्धदृष्टि अने श्लेष्मविदग्धदृष्टि ए बन्ने रोगो शांत थाय छे.

कांईक रताशवाळुं कमळ तथा तेना केसरा, नीलकमळ तथा तेना केसरा अने सोनागेरू एओने गायना छाणना रसमां अथवा बकरा वगेरे पशुओना यकृत्ना रसमां वाटी गोळी बनावीने ते आंजवाथी पित्तविदग्धदृष्टि तथा श्लेष्मविदग्धदृष्टि ए बन्ने रोगो शांत थाय छे.

रसवंती, जाईनी कळीओनो रस, मध, तालीसपत्र अने सोनागेरू एओने गायना छाणना रसथी संयुक्त करी बनाववामां आवेलुं अंजन पित्तविदग्धदृष्टि उपर हितकारी थाय छे. (आमां जेटलां कठण द्रव्यो छे तेओने जाईनी कळीओना रस वगेरे द्रव्योनी भावना आपीने तेओनुं चूर्णरूप अंजन करवुं.)

रसवंती अथवा कपूर, अने सुरमो एओनुं चूर्ण करी चतुष्पद मृगपक्षीओना मांसना रसनी भावना आपी अने ते पछी काचबाना के रोहित नामना मत्स्यना पित्तनी भावना आपीने ते चूर्ण पित्तविदग्धदृष्टिनी शांतिने माटे नित्य आंजवुं.

सीवणनां फूल, जेठीमध, दारूहळदर, लोदर अने रसवंती एओने मधमां वाटीने ते कल्क आंजवामां आवे तो पित्तविदग्धदृष्टि शांत थाय छे. (आ **कल्कांजन** केहेवाय छे. केटलाएक केहे छे के सीवणना फूल वगेरेनी पकाववाथी रसक्रिया करी ते अंजन मधथी संयुक्त करीने आंजवुं.)

सुरमो, सैंधव, पीपळ अने रेणुकाबीज (प्रसिद्ध नथी) एओने बकराना मूत्रमां वाटी वाट बनावीने आंजवामां आवे तो ते श्लेष्मविदग्धदृष्टि उपर हितकारी थाय छे. (आ **वर्त्त्यंजन** केहेवाय छे.)

तगर, पीपळ, सूंठ, जेठीमध, तालीसपत्र, हळदर, दारूहळदर अने भद्रमोथ एओने गायना छाणना रसमां वाटी वाटो बनावीने छायामां सूकाववी. आ वर्त्त्यंजन श्लेष्मविदग्धदृष्टिने शांत करे छे.

मणशील, हरडे, सूंठ, मरी, पीपळ, बलदाणा, तगर अने समुद्रफीण एओने बकरीना दूधमां वाटी वाटो बनावीने ते वर्त्त्यंजन आंजवामां आवे तो तेथी श्लेष्मविदग्धदृष्टि शांत थाय छे.

गोमूत्र, बकरा वगेरेनां पित्तां, मदिरा अने गायना छाणनो रस, एओने आमळीना रसमां

पकावीने तेनी रसक्रिया करवी. आ आंजवाथी श्लेष्मविदग्धदृष्टि शांत थाय छे.

गोमूत्र, बकरा वगेरेनां पित्तां, मदिरा अने गायना छाणनो रस एओने बकरा वगेरेना यकृत्‌ना रसमां पकावी रसक्रिया करवी. आ आंजवाथी श्लेष्मविदग्धदृष्टि शांत थाय छे.

गोमूत्र, बकरा वगेरेनां पित्तां, मदिरा अने गायना छाणनो रस एओने त्रिफळाना क्काथमां पकावी रसक्रिया करवी. आ आंजवाथी श्लेष्मविदग्धदृष्टि शांत थाय छे.

गोमूत्र, गायनुं घी, समुद्रफीण, पीपळ, मध, कायफळ अने सैंधव एओने मिश्रित करी पकाववाथी रसक्रिया करीने ते रसक्रिया वांसनी नळीमां राखी मूकवी. आ आंजवाथी श्लेष्मविदग्धदृष्टि शांत थाय छे.

बकरीनुं मेद, बकरीनुं यकृत्, बकरीनुं घी, पीपळ, सैंधव, मध अने आमळानो रस एओने पकावी रसक्रिया करीने ते रसक्रिया खेरना काष्ठथी बनावेला सांकडा मोहोडावाळा ऊंडा पात्रमां सारी रीते राखी मेलवी. आ अंजन श्लेष्मविदग्धदृष्टि उपर हितकारी थाय छे.

हरेणु नामनुं सुगंधि द्रव्य, पीपळनां फोतरां वगरनां बीज अने एळची एओने यकृत्‌ना रसमां वाटी कल्क करी गायना छाणना रसमां पकावी रसक्रिया करवी. आ अंजन श्लेष्मविदग्धदृष्टि उपर हितकारी थाय छे.

घोना यकृत्‌ने (जमणा पडखानी गांठने) अरधुं चीरी तेमां पीपळनुं चूर्ण भरी ए लोंदाने कपडमट्टी करीने अग्निमां पकाववो. आ पाकेला लोंदानो रस मधनी साथे एकवार आंजवाथीज श्लेष्मविदग्धदृष्टिने अवश्य शांत करे छे.

बकराना यकृत्‌मां पीपळनुं चूर्ण भरी ए लोंदाने कपड मट्टी करीने अग्निमां पकाववो. आ पाकेला लोंदानो रस मधनी साथे एकवार आंजवाथीज तुरत श्लेष्मविदग्धदृष्टिने अवश्य नष्ट करे छे.

घोना तथा बकराना डाबा जमणा पडखानी गांठोने पथराथी कचरी छूंदो छूंदो करी घीथी तथा तेलथी संयुक्त करी लोहोडाना कांटा उपर पकाववी. पछी एओने सरसीया तैलथी मिश्रित करीने आंजवामां आवे तो तेथी श्लेष्मविदग्धदृष्टि तुरतज नष्ट थई जाय छे.

सैंधव, लीला मग, कडु, सुरमो, मणशील, हळदर अने दारूहळदर एओने यकृत्‌मां वाटी चंदनथी संयुक्त करी गोळी बनावीने अथवा चूर्णरूपज राखीने आंजवामां आवे तो तेथी पित्तविदग्धदृष्टि शांत थई जाय छे. पित्तविदग्धदृष्टि उपर आ प्रयोग उत्तम छे.

४ भवन्ति याप्याः खलु ये षडामया
हरेदसृक्तेषु शिराविमोक्षणैः ।
विरेचयेच्चापि पुराणसर्पिषा
विरेचनाङ्गोपहितेन सर्वदा ॥
पयोविमिश्रं पवनोद्भवे हितं
वदन्ति पञ्चाङ्गुलतैलमेव तु ।
भवेद्घृतं त्रैफलमेव शोधनं
विशेषतः शोणितपित्तरोगयोः ॥
त्रिवृद्विरेकः कफजे प्रशस्यते
त्रिदोषजे तैलमुशन्ति तत्कृतम् ।
पुराणसर्पिस्तिमिरेषु सर्वतो
हितं भवेदायसभाजनस्थितम् ॥
हितं च विद्यात्त्रिफलाघृतं सदा
कृतं च यन्मेषविषाणनामभिः ।
सदावलिह्यात्त्रिफलां सुचूर्णितां
घृतप्रगाढां तिमिरेऽथ पित्तजे ॥
समीरजे तैलयुतां कफात्मके
मधुप्रगाढां विदधीत युक्तितः ।
गवां शकृत्काथविपक्कमुत्तमं
हितं तु तैलं तिमिरेषु नावनम् ॥
हितं घृतं केवल एव पैत्तिके
ह्यजाविकं यन्मधुरैर्विपाचितम् ।

तैलं स्थिरादौ मधुरे च यद्गणे
तथाणुतैलं पवनासृगुत्थयोः ॥
सहाश्वगन्धातिवलावरीशृतम्
हितं च नस्ये त्रिवृतं यदीरितम् ।
जलोद्भवानूपजमांससंस्कृताद्
घृतं विधेयं पयसो यदुत्थितम् ॥
ससैन्धवः क्रव्यभुगेणमांसयो-
र्हितः ससर्पिः समधुः पुटाह्वयः ।
वसाथ गृध्रोरगताम्रचूडजा
सदा प्रशस्ता मधुकान्विताञ्जने ॥
प्रत्यञ्जनं स्रोतसि यत्समुत्थितं
क्रमाद्रसक्षीरघृतेषु भावितम् ।
स्थितं दशाहत्रयमेतदञ्जनं
कृष्णोरगास्ये कुशसंप्रवेष्टिते ॥
तन्मालतीक्षारकसैन्धवायुतम्
सदाञ्जनं स्यात्तिमिरेऽथ रागिणि ।
सुभावितं वा पयसा दिनत्रयं
काचापहं शास्त्रविदः प्रचक्षते ॥
हविर्हितं क्षीरभवं तु पैत्तिके
वदन्ति नस्यं मधुरौषधैः कृतम् ।
तत्तर्पणे चैव हितं प्रयोजितं
सजाङ्गलस्तेषु च यः पुटाह्वयः ॥
रसाञ्जनक्षौद्रसितामनःशिलाः
क्षुद्राञ्जनं तन्मधुकेन संयुतम् ।
समाञ्जनं वा कनकाकरोद्भवं
सुचूर्णितं श्रेष्ठमुशन्ति तद्विदः ॥
भिल्लोटगन्धोदकसेकसेवितं
प्रत्यञ्जनं चात्र हितं तु तुत्थकम् ।
समेषशृङ्गाजनभागसम्मितं
जलोद्भवं काचमलं व्यपोहति ॥
पलाशरोहीतमधूकजा रसाः
क्षौद्रेण युक्ता मदिराग्रमिश्रिताः ।
उशीरलोध्रत्रिफलाप्रियङ्गुभिः
पचेत्तु नस्यं कफरोगशान्तये ॥
विडङ्गपाठाकिणिहीङ्गुदीत्वचः
प्रयोजयेद्धूममुशीरसंयुतम् ।
वनस्पतिक्वाथविपाचितं घृतं
हितं हरिद्रानलदेऽवतर्पणे ॥
समागधो माक्षिकसैन्धवाढ्यः
सजाङ्गलः स्यात्पुटपाक एव च ।
मनःशिलाव्यूषणशङ्खमाक्षिकैः
ससिन्धुकासीसरसाञ्जनैः क्रियाः ॥
हिते च कासीसरसाञ्जने तथा
वदन्ति पथ्यागुडनागरैर्युते ।
यदञ्जनं वा बहुशो निषेचित
समूत्रवर्गे त्रिफलोदके शृते
निशाचरास्थिस्थितमेतदञ्जनं
क्षिपेच्च मास सलिले स्थिरे पुनः ।
मेषस्य पुष्पैर्मधुकेन संयुतं
तदञ्जनं सर्वकृते प्रयोजयेत् ॥
क्रियाश्च सर्वाः क्षतजोद्भवे हिताः
क्रमः परिम्लायिनि चापि पित्तहृत् ।
क्रमो हितः स्यन्दहरः प्रयोजितः
समीक्ष्य दोषेषु यथास्वमेव च ॥
दोषोदये नैव च विप्लुतिं गते
द्रव्याणि नस्यादिषु योजयेद् बुधः ।
पुनश्च कल्पेऽञ्जनविस्तरः शुभः
प्रवक्ष्यतेऽन्यस्तमपीह योजयेत् ॥
घृतं पुराणं त्रिफलां शतावरीं
पटोलमुद्रामलकं यवानपि ।
निषेवमाणस्य नरस्य यत्नतो
भयं सुघोरात्तिमिरान्न विद्यते ॥
शतावरीपायस एव केवल-
स्तथा कृतो वामलकेषु पायसः ।
प्रभूतसर्पिस्त्रिफलोदकोत्तरो
यवौदनो वा तिमिरं व्यपोहति ॥
जीवन्तिशाकं सुनिषण्णकश्च
सतण्डुलीयं वरवास्तुकं च ।
चिल्ली तथा मूलकपोतिका च
दृष्टेर्हितं शाकुनजाङ्गलं च ॥
पटोलकर्कोटककारवेल्ल-
वार्ताकुतर्कारिकरीरजानि ।

शाकानि शिग्रुवार्तगलानि चैव
हितानि दृष्टेर्घृतसाधितानि ॥

तिमिरो के जेओ लिंगनाशोनी पूर्वावस्थाओरूप छे तेओनी अने याप्यस्थितिवाळा लिंगनाशोनी चिकित्सा.

४ दृष्टिना छ रोगो के जेओ तिमिरोरूप साध्यस्थितिमांथी याप्यलिंगनाशोरूप थाय छे अने ते पछी असाध्य पण बनी जाय छे तेओ तिमिरो रूपे पेहेला तथा बीजा पटलमां होय त्यांसूधी वैद्ये शारीरस्थानना आठमा अध्यायना २१ मा विषयमां कह्या प्रमाणे शिरावेधो करीने लोहीनुं निर्हरण करवुं अने विरेचन द्रव्योथी पकावेला जूना घीथी विरेचनरूप शोधन पण करवुं. (आ सामान्य संशोधन छे.)

जो तिमिर वायुथी उत्पन्न थएल होय तो दूधथी मिश्रित करेला एरंडीया तैलथी विरेचन करवुं, रुधिरथी के पित्तथी उत्पन्न थएल होय तो त्रिफळाथी पकावेला घीथी विरेचन करवुं, कफथी उत्पन्न थएल होय तो नसोतरथी पकावेला घीथी विरेचन करवुं अने सन्निपातथी उत्पन्न थएल होय तो नसोतरथी पकावेला तैलथी विरेचन करवुं. (आ विशेष संशोधन छे. तिमिर बे दोषथी थएल होय तो मिश्रद्रव्यथी पकावेला स्नेहथी विरेचन करवुं.)

लोढाना वासणमां रहेलुं जूनुं घी सघळा प्रकारनां तिमिरोनुं संशमन करे छे. त्रिफळाना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी अने मेंढाशींगीनां फळोना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी पण सघळा प्रकारनां तिमिरो उपर हितकारी थाय छे.

तिमिर पित्तथी के रुधिरथी उत्पन्न थएल होय तो त्रिफळानुं चूर्ण सारी पेठे घीथी मिश्रित करीने सर्वदा (नित्यस्थितिमां तथा आवस्थिक स्थितिमां पण) चटाडवुं, वायुथी उत्पन्न थएल होय तो त्रिफळानुं चूर्ण सारी पेठे तैलथी संयुक्त करीने सर्वदा चटाडवुं अने कफथी उत्पन्न थएल होय तो त्रिफळानुं चूर्ण सारी पेठे मधथी संयुक्त करीने सर्वदा चटाडवुं.

गायना छाणना क्वाथथी पकावेला तैलथी नस्य देवुं ए कफजन्य तिमिर उपर सर्वदा हितकारी थाय छे. मधुरगणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला बकरीना तथा गाडरना घीथी नस्य देवुं ए एकला (बीजा दोषथी मिश्रित नहि थएला) पित्तजन्य तिमिर उपर सर्वदा हितकारी थाय छे. विदारिगंधादिगणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलथी अथवा काकोल्यादि मधुरगणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलथी अथवा चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २२ मा विषयमां कहेला अणुतैलथी नस्य देवुं ए वायुथी तथा रुधिरथी उत्पन्न थएलां तिमिरो उपर हितकारी थाय छे. जंगली मग, आसोंद, खपाट अने शतावरी एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलथी अथवा चिकित्सास्थानना पांचमा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेला त्रैवृत नामना घीथी नस्य देवुं ए वायुथी उत्पन्न थएला तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

जलचर तथा आनूप प्राणीओना मांसना कल्कथी दूधने पकावी ते दूधनुं मथन करीने घी काहाडवुं अने ते घीने जंगली मग, आसोंद, खपाट तथा शतावरी एओना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावीने तेनुं नस्य देवुं ए वातजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

१ आ विषयमां याप्यतिमिरोनी जे चिकित्सा केहेवामां आवशे तेज याप्यलिंगनाशोनी चिकित्सा छे माटे याप्यलिंगनाशोना यापनने माटे जूदी चिकित्सा केहेवामां आवशे नहीं.

गरंज आदि मांसभक्षकोना तथा काळीयार मृगना मांसनो सैंधवथी, मधथी तथा घीथी संयुक्त पुटपाक पण वातजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

गरंज, सर्प अने कुकडो एओमांथी गमे तेनी चरबीने अथवा एओमांना बेनी के त्रणेनी चरबीने जेठीमधथी संयुक्त करीने आंजवी ए वातजन्य तिमिर उपर सर्वदा हितकारी थाय छे.

वातजन्य तिमिरमां स्नेहांजनोथी चक्षु जड थई गएल होय तो सुरमाने नेत्रोनुं हित करनारा मृगपक्षीओना मांसना रसानी, दूधनी अने घीनी सात सात दिवसोसूधी जूदी जूदी भावनाओ आपीने ते सुरमानुं प्रत्यंजन करवुं ए हितकारी थाय छे. (तीक्ष्ण अंजन पछी मृदु अंजन अने मृदु अंजन पछी तीक्ष्ण अंजन आंजवामां आवे ए प्रत्यंजन केहेवाय छे.)

जो वायुथी उत्पन्न थएलुं तिमिर रंगवाळुं थयुं होय अर्थात् त्रीजा पटलमां आव्युं होय तो सुरमाने दर्भथी वींटेला मरण पामेला काळा सर्पना मुखमां एक महीनासूधी राखी पछी जाईनी कळीओथी तथा सैंधवथी संयुक्त करीने ते सुरमो आंजवो ए हितकारी थाय छे. अथवा उपर प्रमाणे सर्पना मोहोडामां राखेला सुरमाने त्रण दिवससूधी दूधनी भावना आपीने ते सुरमो आंजवो ए हितकारी थाय छे.

दूधने मथी तेमांथी काहाडेला घीने काकोल्यादि मधुरगणना क्काथथी तथा कल्कथी पकावीने तेनुं नस्य देवुं ए पित्तजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे एम आचार्यो कहे छे. एवा घीथी नेत्रोनुं तर्पण करवुं ए पण पित्तजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे अने काकोल्यादि गणथी तथा काळीयारना मांसथी बनावेलो पुटपाक पण पित्तजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे. (पुटपाकनुं लक्षण आ पछीना अध्यायना चोथा विषयमां केहेवामां आवशे.) रसवंती, मध, साकर, मणशील अने जेठीमध एओनी रसक्रिया करीने ते आंजवी ए पण पित्तजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

पित्तजन्य तिमिरमां उपर कहेलां अंजनोथी चक्षु गभराएल होय तो सुरमो अने मोरथुथु एओने सम भागे लई चूर्ण करीने ते चूर्णनुं प्रत्यंजन करवुं अथवा भिल्लोट नामनुं झाड के जे हिमालयमां उत्पन्न थाय छे ते अने एलादिगण एओना क्काथनी जेने भावना आपी होय एवा मोरथुथुनुं प्रत्यंजन करवुं ए हितकारी थाय छे.

जो पित्तथी उत्पन्न थएलुं तिमिर रंगवाळुं थयुं होय अर्थात् त्रीजा पटलमां आव्युं होय तो मेंढाशींगी, सुरमो अने शंख एओनुं चूर्ण आंजवुं अथवा खाखरानो रस, रगतरोहीडानो रस, महुडानो रस, मध अने मदिरानी आछ एओने पकावी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं ए हितकारी थाय छे.

वाळो, लोदर, त्रिफळा अने घउलां एओना क्काथथी तथा कल्कथी तलनुं तैल पकावीने तेनुं नस्य देवामां आवे तो तेथी कफजन्य तिमिर शांत थाय छे.

वावडींग, काळी पाड, अघेडो, ईंगोळीओ, तज अने वाळो एओनो धूमाडो पीवराववाथी कफजन्य तिमिर शांत थाय छे. (तिमिर उपर धूमपानो जे निषेध छे ते पित्तजन्य तिमिर उपरज छे माटे कफजन्य तिमिर उपर धूमपान करावानो बाध नथी.)

वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना क्काथथी तथा हळदर अने वाळो एओना कल्कथी घी पकावीने ते घीथी नेत्रनुं तर्पण करवुं ए कफजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

पीपळ, मध अने सैंधव एओथी मिश्र करीने

बनावेलो जांगल प्राणीओनां मांसनो पुटपाक कफजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

मणशीळ, सूंठ, मरी, पीपळ, शंख, सैंधव, हीराकसी अने रसवंती एओना चूर्णने पाणीमां पकावी रसक्रिया करी तेनुं मधसहित अंजन करवुं ए कफजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे. हीराकसी, रसवंती, हरडे, गोळ अने सूंठ एओना कल्कने पाणीमां पकावी रसक्रिया करीने तेनुं अंजन करवुं ए पण कफजन्य तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

सुरमाने अग्निथी वारंवार गरम करी आठे प्रकारनां मूत्रोथी संयुक्त करेला त्रिफळाना काथमां वारंवार ठारवो. पछी ते सुरमाने गरंजना हाडकानी नळीमां भरी, नळीनुं मोहोडुं बंध करी ते नळीने स्थिर जळमां एक महीना सूधी राखी मेलवी. पछी ए नळीमांथी सुरमाने काहाडी सूकावी मेंढाशींगीनां फूलोथी तथा जेठीमधथी संयुक्त करीने आंजवामां आवे तो तेथी सान्निपातिक (त्रणे दोषोथी थएलुं) तिमिर शांत थाय छे. वातजन्य तिमिर उपर, पित्तजन्य तिमिर उपर तथा कफजन्य तिमिर उपर जे जूदी जूदी तर्पण आदि क्रियाओ केहेवामां आवी ते सघळी क्रियाओ आ सान्निपातिक तिमिर उपर हितकारी थाय छे.

जो रुधिरजन्य तिमिर थयुं होय तो पित्तजन्य तिमिरने हणनारी तर्पण आदि क्रियाओ करवी ए हितकारी थाय छे.

जो रुधिरना सारना मिश्रणवाळा पित्तथी तिमिर उत्पन्न थएलुं होय तो ते उपर पण पित्तजन्य तिमिरने हणनारी तर्पण आदि क्रियाओ करवी ए हितकारी थाय छे.

तिमिर वायुथी उत्पन्न थएल होय तो ते उपर वाताभिष्यंदनी चिकित्सा करवी, पित्तथी उत्पन्न थएल होय तो ते उपर पित्ताभिष्यंदनी चिकित्सा करवी, कफथी उत्पन्न थएल होय तो ते उपर कफाभिष्यंदनी चिकित्सा करवी अने रुधिरथी उत्पन्न थएल होय तो ते उपर रक्ताभिष्यंदनी चिकित्सा करवी ए पण हितकारी थाय छे परंतु ते चिकित्साओ दोषनो उदय थतांज नहीं करवी अने दोष सघळा नेत्रमां फेलाई गया पछी पण नहीं करवी एटले दोषनो उदय थया पछी लंघन, विरेचन, निरूहबस्ति, अनुवासनबस्ति तथा शिरोविरेचन वगेरे क्रियाओ करीने ते पछी करवी. ए चिकित्साओ एवी रीते करवी के तिमिर जो वायुथी उत्पन्न थएल होय तो आ तंत्रना नवमा अध्यायमां वाताभिष्यंद उपर नस्य आदि देवानां जे द्रव्यो कह्यां छे ते द्रव्योनी नस्य आदि क्रियाओमां योजना करवी, जो पित्तथी उत्पन्न थएल होय तो आ तंत्रना दशमा अध्यायमां पित्ताभिष्यंद उपर नस्य आदि देवानां जे द्रव्यो कह्यां छे ते द्रव्योनी नस्य आदि क्रियाओमां योजना करवी, जो कफथी थएल होय तो आ तंत्रना अगीयारमा अध्यायमां कफाभिष्यंद उपर नस्य आदि देवानां जे द्रव्यो कह्यां छे ते द्रव्योनी नस्य आदि क्रियाओमां योजना करवी अने रुधिरथी थएल होय तो आ तंत्रना बारमा अध्यायमां रक्ताभिष्यंद उपर नस्य आदि देवानां जे द्रव्यो कह्यां छे ते द्रव्योनी नस्य आदि क्रियाओमां योजना करवी. आ अध्याय पछीना 'क्रियाकल्प' नामना अढारमा अध्यायमां अनेक प्रकारनां जे अंजनो केहेवामां आवशे तेओनी पण तिमिरो उपर यथायोग्य योजनाओ करवी. (आ सामान्य क्रियाओ दोषसंबंधी वर्णोवाळां तिमिरोनी उपर तथा याप्यलिंगनाशोनी उपर पण यापनने माटे लागू पडे छे.)

जूनुं घी, त्रिफळा, शतावरी, पटोल, मग, आमळां तथा यव एओनुं यत्नपूर्वक सेवन करनारा माणसने अतिभयंकर तिमिर पण भयकारी

थतुं नथी. शतावरीनां मूळीयांओथी पकावेला दूधनो दूधपाक एकलोज तिमिरने नष्ट करे छे. आमळांथी पकावेला दूधनो दूधपाक पण एकलो ज तिमिरने नष्ट करे छे. घणा घी-वाळी अने त्रिफळाना घणा क्वाथमां पकावेली जवनी तथा चोखानी खीचडी पण एकलीज तिमिरने नष्ट करे छे. राहारूडी, खरखोडी, सुनिषण्णक, (ओटींगण) तांदळजो, टांको, चील अने नाहाना मूळा एओनां शाको घीथी पकावीने खावामां आवे तो तेओ दृष्टिनुं हित करे छे. लावां वगेरे पक्षीओनुं तथा काळीयार वगेरे जांगल पशुओनुं मांस पण घीथी पकावीने खावामां आवे तो ते दृष्टिनुं हित करे छे. पटोल, कंटोलां, कारेलां, रीगणां, फांग, केरडानां फूल, सरगवो अने काळो कांटा अशेरीयो एओनां शाको घीमां पकावीने खावामां आवे तो तेओ पण दृष्टिनुं हित करे छे.

५ विवर्जयेच्छिरामोक्षं तिमिरे रागमागते ।
यत्नेनोत्पीडितो दोषो निहन्यादाशु दर्शनम् ॥

तिमिरनी अमुक स्थितिमां शिरावेधनो निषेध.

५ तिमिर आ तंत्रना ७ मा अध्यायना १४ मा विषयमां कह्या प्रमाणे त्रीजा पटलमां आवी दोषसंबंधी वर्णवाळुं थई गयुं होय तो शिराओनो वेध (फस खोलवी) करवो नहीं. केम के ए समयमां दोष शिरावेधथी उत्पीडित थाय तो तुरतज दृष्टिने हणी नाखे छे.

६ अरागि तिमिरं साध्यमाद्यं पटलमाश्रितम् ।
कृच्छ्रं द्वितीये स्याद्रागि तृतीये याप्यमुच्यते ॥

तिमिरोनुं साध्यपणुं, कष्टसाध्यपणुं तथा याप्यपणुं.

६ पेहेला पटलमां रहेलुं तिमिर राग वगरनुं होवाने लीधे साध्य छे, बीजा पटलमां रहेलुं तिमिर राग वगरनुं (दोषसंबंधी वर्णवगरनुं) छतां पण जरा दृढ थएलुं होवाने लीधे कष्टसाध्य छे अने त्रीजा पटलमां रहेलुं तिमिर रागवाळुं थवाने लीधे याप्यज छे.

७ रागप्राप्तेष्वपि हितास्तिमिरेषु तथा क्रियाः ।
यापनार्थं यथोद्दिष्टाः सेव्याश्चापि जलौकसः ॥

रागवाळां तिमिरो उपर केवी क्रियाओ करवी ?

७ त्रीजा पटलमां रागने (ते ते दोषसंबंधी वर्णने) प्राप्त थएलां तिमिरो उपर फकत तेओनुं यापन करवा माटे उपरना चोथा विषयमां कहेली यथोचित क्रियाओ करवी पण तेओमां शिरावेध करवो नहीं. जो ए तिमिरोमां लोहीनुं आकर्षण करवानी जरूर जणाय तो वखते वखते जळो मूकीने लोहीनुं आकर्षण करवुं.

८ श्लैष्मिके लिङ्गनाशे तु कर्म वक्ष्यामि सिद्धये
न चेदर्द्धेन्दुघर्माम्बुविन्दुमुक्ताकृतिः स्थिरः ॥
विषमो वा तनुर्मध्ये राजिमान्वा बहुप्रभः ।
दृष्टिस्थो लक्ष्यते दोषः सरुजो वा सुलोहितः ॥
स्निग्धस्विन्नस्य तस्याथ काले नात्युष्णशीतले ।
यन्त्रितस्योपविष्टस्य स्वां नासां पश्यतः समम् ॥
मतिमाञ्छुक्लभागौ द्वौ कृष्णान्मुक्त्वा ह्यपाङ्गतः ।
उन्मील्य नयने सम्यक् शिराजालविवर्जिते ॥
नाधो नोर्ध्वं च पार्श्वाभ्यां छिद्रे दैवकृते ततः ।
शलाकया प्रयत्नेन विश्वस्तं यववक्त्रया ॥
मध्यप्रदेशिन्यङ्गुष्ठस्थिरहस्तगृहीतया ।
दक्षिणेन भिषक्सव्यं विध्येत्सव्येन चेतरत् ॥
वारिबिन्द्वागमः सम्यग्भवेच्छब्दस्तथा व्यधे ।
संसिच्य विद्धमात्रं तु योषित्स्तन्येन कोविदः ॥
स्थिरे दोषे चले वापि स्वेदयेदक्षि बाह्यतः ।
सम्यक्शलाकां संस्थाप्य भङ्गैरनिलनाशनैः ॥
शलाकाग्रेण तु ततो निर्लिखेद्दृष्टिमण्डलम् ।
विध्यतो योऽन्यपार्श्वेऽक्ष्णस्तं रुद्ध्वा नासिका-पुटम् ॥
उच्छिङ्घनेन हर्तव्यो दृष्टिमण्डलजः कफः ।

निरभ्र इव घर्मांशुर्यदा दृष्टिः प्रकाशते ॥
तदासौ लिखिता सम्यग्ज्ञेया या चापि निर्व्यथा
ततो दृष्टेषु रूपेषु शलाकामाहरेच्छनैः ॥
घृतेनाभ्यज्य नयनं वस्त्रपट्टेन वेष्टयेत् ।
ततो गृहे निरावाधे शयीतोत्तान एव च ॥
उद्गारकासक्षवथुष्ठीवनोज्जृम्भणानि च ।
तत्कालं नाचरेदूर्ध्वं विधिश्च स्नेहपीतवत् ॥
त्र्यहात्त्र्यहाच्च धावेत कषायैरनिलापहैः ।
वायोर्भयात्त्र्यहादूर्ध्वं स्वेदयेदक्षि पूर्ववत् ॥
दशाहमेवं संयम्य हितं दृष्टिप्रसादनम् ।
पश्चात्कर्म च सेवेत लघ्वन्नं चापि मात्रया ॥

कफसंबंधी लिंगनाशनी चिकित्सा.

८ जो के सघळा प्रकारना लिंगनाशो याप्य छे अने दृष्टि नष्टज थई गई होय तो असाध्य छे तो पण कफसंबंधी याप्य लिंगनाश कोई वखते यदृच्छासाध्य थतो जोवामां आवे छे तेथी तेने माटे शस्त्रक्रियारूप विशेष चिकित्सा कहुं छुं.

जो कफसंबंधी लिंगनाशमां दृष्टिमां रहेलो दोष अर्द्धचंद्र जेवा, पसीनाना बिंदु जेवा के मोती जेवा आकारवाळो न देखातो होय, तेमज स्थिर, (कठण) ऊंचो नीचो, मध्यमां पातळो, रेखाओवाळो, घणा प्रकारनी प्रभावाळो, वेदनावाळो के अत्यंत रातो न देखातो होय तो बुद्धिमान् वैद्ये आतुरने वसंतादिक अनुष्णाशीत समयमां स्नेहनसंस्कार तथा स्वेदनसंस्कार आपी, सारी पेठे बांधी, बेसाडी, नाकनी उपरज सीधी दृष्टि रखावी, नेत्रोने सारी रीते उघाडी, मोहोडानी फूंकोथी दृष्टिने स्वेदन आपी, काळा डोळानी नीचे धोळा डोळाना अरधा आंगळ जेटला भागने तथा नेत्रनी अणीथी आंगळना चतुर्थांश जेटला भागने छोडी दई ऊंचेना प्रदेशमां के नीचेना प्रदेशमां नहीं पण बाजूना प्रदेशमां जे भाग दैवे करेला छिद्र जेवो प्रतीत थाय छे ते भागमां प्रयत्नपूर्वक तथा धैर्यपूर्वक जवना जेवा मोहोडावाळी अने स्थिर हाथमां मध्यमाथी, तर्जनीथी तथा अंगूठाथी पकडेली शलाकावते वेध करवो. डाबा नेत्रमां जमणा हाथथी अने जमणा नेत्रमां डाबा हाथथी वेध करवो. नेत्रो जो शिराओनां जाळवाळां होय तो वेध करवो नहीं. जेवो जोइए तेवो योग्य रीतनो वेध थाय तो नेत्रमांथी पाणीनुं टीपुं नीकळे छे तथा शब्द थाय छे अने अयोग्य रीतनो वेध थाय तो नेत्रमांथी लोही नीकळे छे तथा शब्द थाय छे. वेध कर्या पछी दोष अचळ होय के चळ होय तो पण हाथमांथी शलाकाने सारी रीते नीचे मूकी दई तुरतज स्त्रीना दूधथी नेत्रपर सेचन करवुं अने वायुने नष्ट करनारां पानडांओवते बाहारना भागमां शेक करवो. पछी शलाकाना अग्रवते लेखन करीने दृष्टिना मंडलमांथी कफने जूदो पाडवो अने नाकतरफ लई जवो. पछी जूदा पाडेला कफने बाहार काहाडवो ते एवी रीते के रोगीना जे नेत्रमां वेध कर्यो होय ते नेत्रनी बीजी बाजूमां नाकनो जे पुट (फोणवुं) होय छे तेने रोकी नाक सुं सुं करावीने काहाडवो. कफनुं बराबर लेखन थयुं त्यारे जाणवुं के ज्यारे दृष्टि व्यथा वगरनी थाय तथा जेम स्वच्छ आकाशमां सूर्य प्रकाशे छे तेम प्रकाशवा लागे. ज्यारे दृष्टिथी रूपो देखाय त्यारे धीरे धीरे शलाकाने (सळीने) बाहार काहाडी लेवी अने नेत्रने घीनो अभ्यंग करीने वस्त्रनो पाटो बांधी देवो. पछी रोगीने धूमाडा तथा वायु वगेरेथी रहितपणावाळा घरमां चत्तोज सूवाडवो. ज्यांसूधी शस्त्रक्रिया थती होय त्यांसूधीमां रोगीए ओडकार खावो नहीं, उधरस खावी नहीं, छींक खावी नहीं, थुंकवुं नहीं अने बगासुं पण खावुं नहीं. पछी तो स्नेहपानना जेटली परेजी पाळवी एटले कसरत के मेहेनत करवी नहीं, शीतनो त्याग करवो, हाजतने रोकवी नहीं, उजागरो करवो नहीं, दिवसे निद्रा करवी नहीं अने रूक्ष अथवा अभिष्यंदी अन्नादिकनो उपयोग

करवो नहीं. वायुने हणनारा क्वाथोवते त्रण त्रण दिवसे नेत्रो धोवां अने वायुना प्रकोपनी बीकने लीधे त्रण दिवस पछी नेत्रना बाहारना भागोमां शेक करवो. दश दिवससूधी रोगीने चत्ता सूवा वगेरे नियमोमां बराबर राखी ते पछी दृष्टिने स्वच्छ करनारी नस्य तथा तर्पण वगेरे क्रियाओ करवी अने हलकुं अन्न मात्राथी जमाडवुं.

९ शिराव्यधविधौ पूर्वं नरा ये च विवर्जिताः।
न तेषां नीलिकां विध्येन्नान्यत्राभिहिताद्भिषक्॥

केटलांएक माणसोना कफसंबंधी लिंगनाश उपर पण शस्त्रक्रिया करवी नहीं.

९ शारीरस्थानना आठमा अध्यायना बीजा विषयमां जे माणसोनी शिराओ वींधवानो निषेध कह्यो छे ते माणसोना कफसंबंधी लिंगनाश उपर शस्त्रक्रिया करवी नहीं. ए माणसो शिवायनां बीजां माणसोना कफसंबंधी लिंगनाश उपर शस्त्रक्रिया करवी ते पण नेत्रना जे प्रदेशमां शस्त्रक्रिया करवानुं कह्युं छे ते प्रदेश वगर बीजा कोई प्रदेशमां करवी नहीं.

१० पूर्यते शोणितेनाक्षि शिरावेधाद्विसर्पता ।
तत्र स्त्रीस्तन्ययष्ट्याह्वपक्वं सेके हितं घृतम् ॥
अपाङ्गासन्नविद्धे तु शोफशूलाश्रुरक्तताः ।
तत्रोपनाहं भ्रूमध्ये कुर्याच्चोष्णाज्यसेचनम् ॥
व्यधेनासन्नकृष्णेन भागः कृष्णश्च पीड्यते ।
तत्राधः शोधनं सेकः सर्पिषा रक्तमोक्षणम् ॥
अथाप्युपरि विद्धे तु कष्टा रुक्संप्रवर्तते ।
तत्र कोष्णेन हविषा परिषेकः प्रशस्यते ॥
शूलाश्रुरागास्त्वत्यर्थमधोविद्धे भवन्ति हि ।
विदधीत भिषग्धीमांस्तत्र पूर्वचिकित्सितम् ॥
रागाश्रुवेदनास्तम्भहर्षाश्चातिविघट्टिते ।
स्नेहस्वेदौ हितौ तत्र हितं वाप्यनुवासनम् ॥

नेत्र अयोग्य प्रदेशमां वींधायाथी थती व्यापत्तिओ अने ते व्यापत्तिओनी चिकित्साओ.

१० कफलिंगनाशमां नेत्रमां शलाकावते वेध करवानो दैवे करेला छिद्र जेवो जे प्रदेश उपरना आठमा विषयमां केहेवामां आव्यो छे ते प्रदेश शिवाय बीजा कोई प्रदेशमां प्रमादथी वेध थई जाय तो शिरा वींधाई जवाने लीधे वेहेवा लागेला लोहीथी नेत्र पूराई जाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो स्त्रीनुं दूध अने जेठीमध एओथी पकावेला घीनुं सेचन करवुं ए हितकारी छे.

नेत्रनी अणीना समीपमां प्रमादथी वेध करवामां आवे तो सोजो थाय छे, शूळ नीकळे छे, रताश थाय छे अने अश्रुओ नीकळे छे. आ प्रमाणे थएल होय तो भ्रकुटीओना मध्यमां उपनाह स्वेद करवो अने ऊना घीनुं सेचन करवुं.

काळा डोळाना समीपमां प्रमादथी वेध करवामां आवे तो काळो डोळो पीडाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो विरेचन देवुं, घीनुं सेचन करवुं अने जळो लगावीने लोही स्त्रवाववुं.

ऊंचेना प्रदेशमां वेध करवामां आवे तो प्रबल वेदना उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो सेहेवाई शके तेवा ऊना घीनुं सेचन करवुं ए उत्तम छे.

नीचेना प्रदेशमां वेध करवामां आवे तो अत्यंत शूळ नीकळे छे, अश्रु अत्यंत प्रवर्ते छे अने रताश पण अत्यंत थाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो बुद्धिमान् वैद्ये स्त्रीना दूधथी तथा जेठीमधथी पकावेला घीनुं सेचन करवुं.

नेत्र वेधथी अत्यंत चलित थई जाय तो रताश थाय छे, अश्रु पडवा लागे छे, वेदना थाय छे, स्तब्धपणुं थई जाय छे अने रुवाडां उभां थई जाय छे. आ प्रमाणे थएल होय तो स्नेहन करवुं, स्वेदन करवुं अने अनुवासन बस्तिनी योजना करवी ए हितकारी थाय छे.

११ दोषस्त्वथापकृष्टोऽपि तरुणः पुनरूर्ध्वगः।
कुर्याच्छुक्लारुणं तत्तु तीव्ररुग्नष्टदर्शनम् ॥
मधुरैस्तत्र सिद्धेन घृतेनाक्ष्णः प्रसेचनम् ॥
शिरोबस्तिं च तेनैव दद्यान्मांसैश्च भोजनम् ॥

काचा दोषनुं शस्त्रवते लेखन करवाथी थती व्यापत्ति अने ते व्यापत्तिनी चिकित्सा.

११ कफ चोथा पटलमां आवी लिंगनाशपणाने प्राप्त न थयो होय, ते पेहेलां शस्त्रवते लेखन करवामां आवे तो ते कफ फरीवार प्रबळ थई ऊंचे चडीने नेत्रने इंद्रगोप नामना जीवडा जेवुं रातुं, तीव्र वेदनावाळुं अने दर्शननी शक्ति वगरनुं करी नाखे छे. आ प्रमाणे थएल होय तो काकोल्यादि मधुरगणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीनुं सेचन करवुं, एज घीथी शिरोबस्ति देवो अने मांसोथी भोजन देवुं. (शिरोबस्तिनुं लक्षण आ पछीना अध्यायना ६ ठ्ठा विषयमां आपवामां आवशे.)

१२ दोषस्तु सञ्जातबलो घनः सम्पूर्णमण्डलः।
प्राप्य नश्येच्छलाकाग्रं तन्वभ्रमिव मारुतम् ॥

केवो कफ शलाकाथी नष्ट थाय छे?

१२ कफ जो बळ पाम्यो होय, घाटो थयो होय अने संपूर्ण मंडलवाळो थयो होय तो अर्थात् परिपक्व थयो होय तो जेम पातळुं वादळुं पवनने पामीने नष्ट थई जाय छे तेम ते दोष शलाकानी अणीने प्राप्त थईने नष्ट थई जाय छे.

१३ मूर्द्धाभिघातव्यायामव्यवायवमिमूर्छनैः।
दोषः प्रत्येति कोपाच्च विद्धोऽपि तरुणश्च यः ॥

कफ शस्त्रथी लेखन पाम्या छतां पण अमुक कारणोथी पाछो प्राप्त थाय छे.

१३ कफ शस्त्रथी लेखन पाम्या छतां पण मस्तकनो अभिघात थयाथी, कसरत के मेहेनत करवाथी, मैथुन करवाथी, वमन करवाथी, मूर्छा आववाथी अने क्रोध करवाथी पाछो प्राप्त थाय छे. कफ, लिंगनाशपणाने प्राप्त न थयो होय अर्थात् काचो होय ते समयमां शस्त्रथी वींधाय तो पण पाछो प्राप्त थाय छे.

१४ शलाका कर्कशा शूलं खरा दोषपरिप्लुतिम्।
व्रणं विशालं स्थूलाग्रा तीक्ष्णा हिंस्यादनेकधा ॥
जलास्रावं तु विषमा क्रियासङ्गमथास्थिरा ।
करोति वर्जिता दोषैस्तस्मादेभिर्हिता भवेत् ॥

खराब शलाकाथी थती व्यापत्तिओ.

१४ नेत्रमांथी कफनुं लेखन करवानी शलाका (सळी) कठण होय तो शूळने उत्पन्न करे छे, खरसट होय तो कफने फेलावी दे छे, जाडी अणीवाळी होय तो पोहोळो व्रण करी दे छे, तीक्ष्ण होय तो अनेक प्रकारना जखम करे छे, विषम (ऊंची नीची) होय तो जळनो स्राव करे छे अने अस्थिर होय तो क्रियानी अटकायत करे छे. आम छे एटला माटे शलाका ए दोषोथी रहित होय तोज हितकारी थाय छे.

१५ अष्टाङ्गुलायता मध्ये सूत्रेण परिवेष्टिता ।
अङ्गुष्ठपर्वसमिता वक्त्रयोर्मुकुलाकृतिः ॥
ताम्रायसी शातकुम्भी शलाका स्यादनिन्दिता।

शलाका कया धातुओनी, केवा प्रमाणवाळी अने केवी आकृतिवाळी जोइए?

१५ शलाका त्रांबानी, लोढानी अथवा सुवर्णनी जोइए, आठ आंगळ लांबी जोइए, अंगुठाना पर्व जेवी जाडी जोइए, मध्यमां दोराथी वींटेली जोइए अने बन्ने तरफनां मोहोडांओमां कळी जेवी आकृतिवाळी जोइए. आवी शलाका निंदानुं पात्र थती नथी.

१६ रागः शोफोऽर्बुदं चोषो बुद्बुदं शूकराक्षिता ॥
अधिमन्थादयश्चान्ये रोगाः स्युर्व्यधदोषजाः ।
अहिताचारतो वापि यथास्वं तानुपाचरेत् ॥

वींधवाना दोषथी तथा अहित आहार विहारथी थती व्यापत्तिओ अने तेओनी चिकित्सा.

१६ अयोग्य रीते वेध थाय अथवा वेध क-

रवामां आव्या पछी अहित आहार के अहित विहार थाय तो नेत्रमां रातापणुं, सोजो, अर्बुद, चोस, परपोटो, कीकीनुं मोटापणुं अने अधिमंथ आदि बीजा रोगो पण थाय छे. आ प्रमाणे कोई व्याधि थएल होय तो दोषना अनुसार प्रमाणे तेनी चिकित्सा करवी.

१७ रुजायामक्षिरागे वा योगान्भूयो निबोध मे।
गैरिकं सारिवा दूर्वा यवपिष्टं घृतं पयः ॥
मुखालेपः प्रयोज्योऽयं वेदनारागशान्तये ।
मृदुभृष्टैस्तिलैर्वापि सिद्धार्थकसमायुतैः
मातुलुङ्गरसोपेतैः सुखालेपस्तदर्थकृत् ।
पयस्यासारिवापत्रमञ्जिष्ठामधुकैरपि ॥
अजाक्षीरान्वितैर्लेपः सुखोष्णः पथ्य उच्यते ।
दारुपद्मकशुण्ठीभिरेवमेव कृतोऽपि वा ॥
द्राक्षामधुककुष्ठैर्वा तद्वत्सैन्धवसंयुतैः ।
शतावरीपृश्निपर्णीमुस्तामलकपद्मकैः ।
साजक्षीरैः शृतं सर्पिर्दाहशूलनिबर्हणम् ॥
वातघ्नसिद्धे पयसि सिद्धं सर्प्पिश्चतुर्गुणे ।
काकोल्यादिप्रतीवापं तद्युञ्ज्यात्सर्वकर्म्मसु ॥
शाम्यत्येवं न चेच्छूलं स्निग्धस्विन्नस्य मोक्षयेत्।
ततः शिरां दहेद्वापि मतिमान् कीर्त्तितं यथा ॥

शलाकाना कठोरपणाथी थएला शूळनी तथा वेधना दोषथी थएली रताशनी खास चिकित्साओ.

१७ शूळ उत्पन्न थएल होय के रताश उत्पन्न थएल होय तो ते उपर बीजा योगो कहुं छुं ते सांभळो.

सोनागेरू, उपलसरी, दूर्वा, (धो) जवनो लोट, घी अने दूध एओने मिश्रित करी गरम करीने तेनो सेहेवाई शके तेवो ऊनो लेप करवामां आवे तो तेथी शूळ अने रताश शांत थाय छे.

तलने तथा सर्षपने थोडा थोडा शेकी बीजोराना रसमां वाटी गरम करीने तेनो सेहेवाई शके तेवो ऊनो लेप करवामां आवे तो तेथी वेदना अने रताश शांत थई जाय छे.

खरणेर, उपलसरी, तमालपत्र, मजीठ अने जेठीमध एओने बकरीना दूधमां वाटी गरम करीने तेनो सेहेवाई शके तेवो ऊनो लेप करवामां आवे तो तेथी वेदना अने रताश शांत थई जाय छे.

दारूहळदर, पद्मकाष्ठ अने सूंठ एओने अथवा द्राक्ष, जेठीमध, कठ अने सैंधव एओने बकरीना दूधमां वाटी गरम करीने तेनो सेहेवाई शके तेवो ऊनो लेप करवामां आवे तो तेथी वेदना अने रताश नष्ट थई जाय छे.

शतावरी, पृश्निपर्णी, मोथ, आमळां अने पद्मकाष्ठ एओनो कल्क नाखी बकरीना दूधमां पकावेलुं घी लगाववामां आवे तो तेथी बळतरा अने शूळ नष्ट थई जाय छे.

भद्रदारु आदि वर्ग (सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायनो १० मो विषय जुवो.) के जे वायुने शांत करनार छे तेथी पकावेला चोगणा दूधमां पकावी काकोल्यादि गणनो प्रतिवाप नाखीने सिद्ध करेला घीनी नस्य तथा लेपन आदि सघळी क्रियाओमां योजना करवामां आवे तो तेथी वेदना तथा रताश नष्ट थई जाय छे.

आ प्रमाणे चिकित्साओ कर्या छतां पण वेदना शांत न थाय तो बुद्धिमान् वैद्ये आतुरने स्नेहन संस्कार तथा स्वेदन संस्कार आपी शारीरस्थानना आठमा अध्यायना २१ मा विषयमां कह्या प्रमाणे शिरानो वेध करवो अथवा सूत्रस्थानना बारमा अध्यायना ८ मा विषयमां कहेलां भ्रकुटी वगेरे स्थानोमां डांभवानी क्रिया करवी.

१८ दृष्टेरतः प्रसादार्थमञ्जने शृणु मे शुभे ।
मेषशृङ्गस्य पुष्पाणि शिरीषधवयोरपि ॥
सुमनायाश्च पुष्पाणि मुक्ता वैदूर्यमेव च ।
अजाक्षीरेण सम्पिष्य-ताम्रे सप्ताहमावपेत् ॥
प्रविधाय च तद्वर्त्तीर्योजयेच्चाञ्जने भिषक् ।
स्रोतोजं विद्रुमं फेनं सागरस्य मनःशिला ॥

मरिचानि च तद्वर्त्तीः कारयेच्चापि पूर्ववत् ।
दृष्टिस्थैर्यार्थमेतत्तु विदध्यादञ्जने हितम् ॥
भूयो वक्ष्यामि मुख्यानि विस्तरेणाञ्जनानि च।
कल्पे नानाप्रकाराणि तान्यपीह प्रयोजयेत् ॥

चिकित्साओ कर्या छतां पण अवशेष रहेला दोषथी दृष्टि कलुष रेहेती होय तो तेने निर्मल करवा माटे अंजनो.

१८ हवे दृष्टिने निर्मल करवा माटे बे अंजनो कहुं छुं ते सांभळो.

मेंढाशींगीनां फूल, सरसडीयानां फूल, धावडानां फूल, जाईनां फूल, मोतीनुं चूर्ण अने लसणीया मणिनुं चूर्ण एओने बकरीना दूधमां वाटी ते कल्कने सात दिवससूधी त्रांबाना वासणमां राखी मूकवो. पछी ए कल्कनी वाटो बनावीने वैद्ये तेओनी अंजनमां योजना करवी.

सुरमो, परवाळां, समुद्रफीण, मणशील अने मरी एओने बकरीना दूधमां वाटी ते कल्कने सात दिवससूधी त्रांबाना वासणमां राखी मूकवो. पछी ए कल्कनी वाटो बनावीने वैद्ये तेओनी अंजनमां योजना करवी. दृष्टिने स्थिर करवाना कामने माटे पण आ हितकारी अंजननी योजना करवी.

वळी पण हवे पछीना 'क्रियाकल्प' नामना अध्यायमां अनेक प्रकारनां जे मुख्य अंजनो विस्तारथी केहेवामां आवशे तेओनी पण, दृष्टिनी निर्मळता करवाने माटे योजना करवी.

अध्याय १८ मो.

१ अथातः क्रियाकल्पं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'क्रियाकल्प' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञस्तपोदृष्टिरुदारधीः ।
वैश्वामित्रं शशासाथ शिष्यं काशिपतिर्मुनिः ॥
तर्पणं पुटपाकश्च सेक आश्च्योतनाञ्जने ।
तत्र तत्रोपदिष्टानि तेषां व्यासं निबोध मे ॥

नेत्ररोगोनी चिकित्साओरूपे कहेलां तर्पण, पुटपाक, सेचन, आश्च्योतन, शिरोबस्ति तथा अंजन एओनुं विस्तारथी निरूपण करवानी प्रतिज्ञा.

२ सघळां शास्त्रोना अर्थोना तत्वने जाणनारा, दिव्य ज्ञानवाला, उदारबुद्धिवाळा अने काशिकुलना क्षत्रियोना अधिपति राजर्षि धन्वंतरिए विश्वामित्रना पुत्र अने पोताना शिष्य सुश्रुतने कह्युं के "नेत्ररोगोनी चिकित्साओनां ते ते प्रकरणोमां जे तर्पणो, पुटपाको, सेचनो, आश्च्योतनो, शिरोबस्तिओ तथा अंजनो संक्षेपथी कहेलां छे तेओनुं हवे विस्तारथी निरूपण करूं छुं ते सांभळो.

३ संशुद्धदेहशिरसो जीर्णान्नस्य शुभे दिने ।
पूर्वाह्णे चापराह्णे वा कार्य्यमक्ष्णोश्च तर्प्पणम् ॥
वातातपरजोहीने वेश्मन्युत्तानशायिनः ।
आधारौ माषचूर्णेन क्लिन्नेन परिमण्डलौ ॥
समौ दृढावसम्बाधौ कर्त्तव्यौ नेत्रकोशयोः ।
पूरयेद्घृतमण्डस्य विलीनस्य सुखोदकैः ॥
आपक्ष्माग्रात्ततः स्थाप्यं पञ्च तद्वाक्शतानि च ।
स्वस्थे कफे षट् पित्तेऽष्टौ दश वाते तदुत्तमम् ॥
रोगस्थानविशेषेण केचित्कालं प्रचक्षते ।
यथाक्रमोपदिष्टेषु त्रीण्येकं पञ्च सप्त च ॥
दश दृष्ट्यामथाष्टौ च वाक्शतानि विभावयेत् ।
ततश्चापाङ्गतः स्नेहं स्रावयित्वाक्षि शोधयेत् ॥
स्विन्नेन यवपिष्टेन स्नेहवीर्य्यैरितं ततः ।

---

१ नेत्ररोगो उपर तर्पण, पुटपाक, सेचन, आश्च्योतन, शिरोबस्ति तथा अंजन केवी रीतनां गोठववां तथा शी रीते करवां तेना विस्तीर्ण निरूपण विषेनो.

यथास्वं धूमपानेन कफमस्य विशोधयेत् ॥
एकाहं वा त्र्यहं वापि पञ्चाहं चेष्यते परम् ।
तर्पणे तृप्तिलिङ्गानि नेत्रस्येमानि लक्षयेत् ॥
सुखस्वप्नावबोधत्वं वैशद्यं वर्णपाटवम् ।
निर्वृतिर्व्याधिविध्वंसः क्रियालाघवमेव च ॥
गुर्वाविलमतिस्निग्धमश्रुकण्डूपदेहवत् ।
ज्ञेयं दोषसमुत्क्लिष्टं नेत्रमत्यर्थतर्पितम् ॥
रूक्षमाविलमस्राढ्यमसहं रूपदर्शने ।
व्याधिवृद्धिश्च तज्ज्ञेयं हीनतर्पितमक्षि च ॥
अनयोर्दोषबाहुल्यात्प्रयतेत चिकित्सिते ।
धूमनस्याञ्जनैः सेकै रूक्षैः स्निग्धैश्च योगवित् ॥
ताम्यत्यतिविशुष्कं च यद्रूक्षं चातिदारुणम् ।
शीर्णपक्ष्माविलं जिह्मं रोगक्लिष्टं च यद् भृशम् ॥
तदक्षि तर्पणादेव लभेतोर्जामसंशयम् ।
दुर्दिनात्युष्णशीतेषु चिन्तायां संभ्रमेषु च ॥
अशान्तोपद्रवे चाक्षिण तर्पणं न प्रशस्यते ।

तर्पणनुं निरूपण.

३ शिरावेधथी, विरेचनथी, तथा निरूहबस्तिथी जेना शरीरनुं शोधन करवामां आव्युं होय अने शिरोविरेचनथी जेना मस्तकने शुद्ध करवामां आव्युं होय एवा माणसने जे दिवसे आकाशनी निर्मळता वगेरे गुणो होय ते दिवसे, पूर्व दिवसनुं खाधेलुं अन्न जीर्ण थई गया पछी पूर्वाण्हकाळमां अथवा अपराण्हकाळमां पवन वगरना, तडका वगरना तथा रज वगरना घरमां चत्तो सुवडावी तेना नेत्रोनुं तर्पण करवुं ते ए रीते के पळाळीने मेंदारूप करेला अडदना लोटनी दृढ, सरखी, गोळ अने सांकड वगरनी फरती पाळो बन्ने नेत्रोनी आसपास करी, ते माणसनी आंखो वींचावी थोडा ऊना जळथी पीगळावेला घीनी उपरनो आछो भाग पांपणना वाळो डूबी जतांसूधी ते पाळोमां भरवो अने भराई रह्या पछी आंखो उघडाववी ए तर्पण केहेवाय छे.

ए तर्पण स्वस्थ माणसनां नेत्रोने सारां राखवा माटे कर्युं होय तो पांचसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी नेत्रो उपर राखवुं, कफने शांत करवा माटे कर्युं होय तो छसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी नेत्रो उपर राखवुं. पित्तने शांत करवा माटे कर्युं होय तो आठसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी नेत्रो उपर राखवुं अने वायुने शांत करवा माटे कर्युं होय तो एक हजार गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी नेत्रो उपर राखवुं ए उत्तम प्रमाण [1] छे. केटलाएक आचार्यो नेत्ररोगोनां स्थानकोना विशेष उपरथी तर्पण राखवानो काळ मुकरर करे छे के " संधिगत रोगोने टाळवा माटे कर्युं होय तो त्रणसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी, पांपणोमां रेहेनारा रोगोने टाळवा माटे कर्युं होय तो सो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी, धोळा डोळामां रेहेनारा रोगोने टाळवा माटे कर्युं होय तो पांचसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी, काळा डोळामां रेहेनारा रोगोने टाळवा माटे कर्युं होय तो सातसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी, सघळा नेत्रमां रेहेनारा रोगोने टाळवा माटे कर्युं होय तो हजार गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी अने कीकीमां रेहेनारा रोगोने टाळवा माटे कर्युं होय तो आठसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी राखवुं."

तर्पणनो समय पूरो थई रह्या पछी नेत्रोनी पूंछडी उपरनी पाळोमां सळीथी छिद्रो करीने ते छिद्रोमांथी तर्पणद्रव्यने स्त्रवावी नाखी शेकेला जवना लोटथी नेत्रोने साफ कराववां अने ते पछी स्नेहना जोरथी प्रेराएला कफनुं शिरोविरेचनधूमपान करावावाथी शोधन करवुं.

ए तर्पण वायु उपर एक दिवस करवुं, पित्त

१ दोष निर्बल होय तो एथी ओछा वखतसूधी पण राखवुं.

उपर वधारेमां वधारे त्रण दिवस सूधी करवुं अने कफ उपर वधारेमां वधारे पांच दिवस सूधी करवुं अथवा दोष न्यून होय तो एक दिवस करवुं, दोष मध्यवर्त्ती होय तो वधारेमां वधारे त्रण दिवस करवुं अने दोष प्रबळ होय तो वधारेमां वधारे पांच दिवस करवुं.

जो निद्रा सुखथी आवे, जागवुं पण सुखथी थाय, नेत्रनुं निर्मलपणुं थाय, नेत्रथी सफेद तथा राता पीळा वगेरे वर्णोनुं बराबर ग्रहण थाय, आराम थाय, व्याधिनी शांति थाय अने ऊघाडवा तथा वींचवा वगेरे क्रियाओमां नेत्रनुं हलकापणुं थाय तो जाणवुं के तर्पणनो **सम्यग्योग** थयो छे.

जो नेत्र भारे थई जाय, आकुल थई जाय, अत्यंत चोंकाशवाळां थई जाय, आंसु आव्या करे, नेत्रमां खरज आव्या करे, चीपडा भराई जाय तथा दोषनो उत्क्लेश थाय तो जाणवुं के तर्पणनो **अतियोग** थयो छे.

जो नेत्र रूक्ष थई जाय, मलिन रहे, आंसुओथी व्याप्त रहे, रूपना दर्शननुं सहन न करी शके अने व्याधिना वधारावाळुं थाय तो जाणवुं के तर्पणनो **हीनयोग** थयो छे.

तर्पणनो हीनयोग के अतियोग थयो होय तो घणी अडचणो थाय छे एटला माटे प्रवीण वैद्ये तेओनी चिकित्सा करवामां काळजी राखवी. जो अतियोग थयो होय तो रूक्ष धूमपान करावavां, रूक्ष नस्यो देवां, रूक्ष अंजनो आंजवां तथा रूक्ष सेचनो करवां अने हीनयोग थयो होय तो स्निग्ध धूमपान कराववां, स्निग्ध नस्यो देवां, स्निग्ध अंजनो आंजवां तथा स्निग्ध सेचनो करवां.

जे नेत्र अंधारा जेवुं देख्या करतुं होय, अत्यंत सूकाई गयुं होय, (आंसु वगरनुं थई गयुं होय) अस्निग्ध कांतिवाळुं थई गयुं होय, अतिदारुण थई गयुं होय, पांपणोना वाळोथी रहित थई जतुं होय, मलिन थई गयुं होय, वांकुं थई गयुं होय के रोगथी अत्यंत क्लिष्ट थई गयुं होय ते नेत्र तर्पणथी उत्तम शक्तिने प्राप्त थाय छे ए निस्संशय छे.

वादळांओना घमघोरवाळा दिवसमां, अत्यंत गरमीना समयमां, अत्यंत थंडीना समयमां, चिंता होय त्यारे, संभ्रम होय त्यारे अने उपद्रवो शांत थया पेहेलां नेत्रोनुं तर्पण करवुं योग्य गणातुं नथी.

४ पुटपाकस्तथैतेषु नस्यं येषु च गर्हितम् ॥
तर्प्पणार्हा न ये प्रोक्ताः स्नेहपानाक्षमाश्च ये ।
ततः प्रशान्तदोषेषु पुटपाकक्षमेषु च ॥
पुटपाकः प्रयोक्तव्यो नेत्रेषु भिषजा भवेत् ।
स्नेहनो लेखनीयश्च रोपणीयश्च स त्रिधा ॥
हितः स्निग्धोऽतिरूक्षस्य स्निग्धस्यापि च लेखनः ।
दृष्टेर्बलार्थमितरः पित्तासृग्व्रणवातनुत् ॥
स्नेहमांसवसामज्जमेदःस्वाद्वौषधैः कृतः ।
स्नेहनः पुटपाकस्तु धार्य्यो द्वे वाक्शते तु सः ॥
जाङ्गलानां यकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसम्भृतैः ।
कृष्णलोहरजस्ताम्रशङ्खविद्रुमसिन्धुजैः ॥
समुद्रफेनकासीसस्रोतोजदधिमस्तुभिः ।
लेखनो वाक्शतं तस्य परं धारणमुच्यते ॥
स्तन्यजाङ्गलमध्वाज्यतिक्तद्रव्यविपाचितः ।
लेखनात्रिगुणो धार्य्यः पुटपाकस्तु रोपणः ॥
वितरेत्तर्प्पणोक्तं तु धूमं हित्वा तु रोपणम् ।
स्नेहस्वेदौ द्वयोः कार्य्यौ कार्य्यौ नैव च रोपणे ॥
एकाहं वा त्र्यहं वापि द्व्यहं वाप्यवचारणम् ।
यन्त्रणं तु क्रियाकालाद्विगुणं कालमिष्यते ॥
तेजांस्यनिलमाकाशमादर्शं भास्वराणि च ।
नेक्षेत तर्पिते नेत्रे पुटपाककृते तथा ॥
मिथ्योपचारादनयोर्यो व्याधिरुपजायते ।
अञ्जनाश्च्योतनस्वेदैर्य्यथास्वं तमुपाचरेत् ॥
प्रसन्नवर्णं विशदं वातातपसहं लघु ।
सुखस्वप्नावबोध्यक्षि पुटपाकगुणान्वितम् ॥

अतियोगाद्रुजः शोफः पिडकास्तिमिरोद्गमः ।
पाकोऽश्रु हर्षणं चापि हीने दोषोद्गमस्तथा ॥
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि पुटपाकप्रसाधनम् ।
द्वौ बिल्वमात्रौ श्लक्ष्णस्य पिण्डौ मांसस्य पेषितौ॥
द्रव्याणां बिल्वमात्रं तु द्रवाणां कुडवो मतः ।
तदेकत्र समालोड्य पत्रैः सुपरिवेष्टितम् ॥
काश्मरीकुमुदैरण्डपद्मिनीकदलीभवैः ।
मृदावलिप्तमङ्गारैः खादिरैरवकूलयेत् ॥
कतकाश्मन्तकैरण्डपाटलावृषबादरैः ।
सक्षीरद्रुमकाष्ठैर्वा गोमयैर्वापि युक्तितः ॥
स्विन्नमुद्धृत्य निष्पीड्य रसमादाय तं नृणाम् ।
तर्पणोक्तेन विधिना यथावदवचारयेत् ॥
कनीनके निषेच्यः स्यान्नित्यमुत्तानशायिनः ।
रक्ते पित्ते च तौ शीतौ कोष्णौ वातकफापहौ ॥
अत्युष्णतीक्ष्णौ सततं दाहपाककरौ स्मृतौ ।
अत्यन्तं शीतलौ चाश्रुस्तम्भरुग्घर्षकारकौ ॥
अतिमात्रौ कषायत्वसङ्कोचस्फुरणावहौ ।
हीनप्रमाणौ दोषाणामुत्क्लेशजननौ भृशम् ॥
युक्तौ कृतौ दाहशोफरुग्घर्षस्रावनाशनौ ।
कण्डूपदहदूषीकारक्तराजिविनाशनौ
तस्मात्परिहरन्दोषान् विदध्यात्तौ सुखावहौ ।
व्यापदश्च यथादोषं नस्यधूमाञ्जनैर्जयेत् ॥
आद्यन्तयोश्चाप्यनयोः स्वेद उष्णाम्बुचैलिकः ।
तथा हितोऽवसाने च धूमः श्लेष्मसमुच्छ्रितौ ॥

पुटपाकनुं निरूपण अने तेना पेटामां तर्पणने पण लगतो केटलोक विषय.

४ जेवां नेत्रो तर्पणने लायक छे तेवां नेत्रो पुटपाकने पण लायक छे अर्थात् जे नेत्रो अंधारा जेवुं देख्या करतां होय, आंसु वगरनां थई गयां होय, अस्निग्ध कांतिवाळां थई गयां होय, अति दारुण थई गयां होय, पांपणोना वाळोथी रहित थई जतां होय, मलिन थई गयां होय, वांकां थई गयां होय के रोगथी अत्यंत क्लिष्ट थई गयां होय ते नेत्रो पुटपाकने लायक छे. चिकित्सा-स्थानना ४० मा अध्यायना ३२ मा विषयमां जे माणसो नस्यने अयोग्य कहेलां छे ते माणसो पुटपाकने पण अयोग्य छे. वादळांओना धम-घोरवाळा दिवसमां, अत्यंत गरमीना समयमां, अत्यंत थंडीना समयमां, चिंता होय त्यारे, संभ्रम होय त्यारे अने उपद्रवो शांत थया पेहेलां नेत्रोने पुटपाक देवो योग्य नथी. तेमज चिकित्सास्था-नना ३१ मा अध्यायना २४ मा विषयमां जे माणसोने माटे स्नेहपाननो निषेध कह्यो छे ते माणसोने माटे पुटपाकनो पण निषेध समजवो.

जेओना दोषो शांत थवा लाग्या होय एवां अने पुटपाकने माटे योग्यता धरावनारां नेत्रोमां वैद्ये पुटपाकनी योजना करवी.

स्नेहन, (स्निग्ध करनारो) लेखन, (दोषने उखेडनार) अने रोपण (योग्य पदार्थोनी भरती करनार) ए रीते पुटपाक त्रण प्रकारनो थाय छे. स्नेहन पुटपाक अत्यंत रूक्ष थएलाने माटे हितकारी छे, लेखन पुटपाक अतिस्निग्धने माटे हितकारी छे अने रोपण पुटपाक दृष्टिने बळ आपवा माटे उत्तम छे. आ पुटपाक पित्तने, रुधिरने, व्रणने तथा वायुने नष्ट करे छे.

मांस, वसा, मज्जा, मेद अने मधुर द्रव्यो एओथी करेलो पुटपाक **स्नेहन** केहेवाय छे. स्नेहन पुटपाकने बसो गुरु अक्षरोनुं उच्चा-रण थतां सूधी नेत्रोपर धरी राखवो.

जांगल प्राणीओनी जमणा पडखानी गांठो, जांगल प्राणीओनां मांसो, लेखन करनारां द्रव्यो, ऊंचा लोढानुं चूर्ण, त्रांबानुं चूर्ण, शंखनुं चूर्ण, परवाळानुं चूर्ण, सैंधव, समुद्रफीण, हीराकसी, सुरमो अने दहीनी तर एओथी करेलो पुटपाक **लेखन** केहेवाय छे. लेखन पुटपाकने वधारेमां वधारे सो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी नेत्रोपर धरी राखवो. .

स्त्रीनुं दूध, जांगल प्राणीओनुं मांस, मध, घी, लींबडो, गळो, अरडूसो, पटोळ अने भोरीं-

गणी एओने पकावी करवामां आवेलो पुटपाक **रोपण** केहेवाय छे. रोपण पुटपाकने त्रणसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी नेत्रोपर धरी नाखवो.

रोपण पुटपाक शिवाय बीजा बे पुटपाको (स्नेहन अने लेखन पुटपाको) नी योजनामां धूमपान शिवाय बीजी तर्पणना विषयमां कहेली सघळी क्रियाओ करवी. स्नेहन संस्कार तथा स्वेदन संस्कार पण ए बे पुटपाकोनी योजनामां करवा पण रोपण पुटपाकनी योजनामां करवा नहीं.

जो नेत्रंरोग कफसंबंधी होय तो पुटपाकनी एक दिवस योजना करवी, पित्तसंबंधी होय तो पुटपाकनी बे दिवस योजना करवी अने वायुसंबंधी होय तो पुटपाकनी त्रण दिवससूधी योजना करवी अथवा लेखन पुटपाकनी योजना एक दिवस करवी, स्नेहन पुटपाकनी योजना बे दिवस करवी अने रोपण पुटपाकनी योजना त्रण दिवस करवी.

ज्यारथी स्नेहन आदि पूर्वक्रियाओनी शरुआत थाय त्यारथी मांडी तर्पणनी के पुटपाकनी क्रिया थतां सूधीमां जेटलो वखत लागे ते वखतथी बमणा वखतसूधी परेजी पाळवी एटले जेनां नेत्रोपर तर्पणनी के पुटपाकनी क्रिया करवामां आवी होय ते माणसे तेटला वखत सूधी दीवानी ज्वाळा वगेरे तेजोने, सामा वायुने, आकाशने, अरीशाने के सूर्य आदि भास्वर पदार्थोने जोवा नहीं.

तर्पणनो तथा पुटपाकनो अतियोग के हीनयोग थवाथी जे व्याधि उत्पन्न थाय ते व्याधिनी दोषना अनुसार प्रमाणे अंजनोथी, आश्च्योतनोथी तथा स्वेदनोथी चिकित्सा करवी.

जो नेत्र प्रसन्न वर्णवाळुं, निर्मल, पवननुं तथा तडकानुं सहन करी शके एवुं, हलकुं अने जेने निद्रा तथा जागवुं सुखथी प्राप्त थाय एवुं थई जाय तो जाणवुं के पुटपाकनो **सम्यग्योग** थयो छे.

जो नेत्रमां वेदना थाय, सोजो थाय, फोडलीओ थाय अने अंधकारनो उद्गम थाय तो जाणवुं के पुटपाकनो **अतियोग** थयो छे.

जो नेत्रमां पाक थाय, आंसु आव्या करे, रोमहर्ष थाय अने दोषनो उद्गम थाय तो जाणवुं के पुटपाकनो हीनयोग थयो छे.

हवे पुटपाकने सिद्ध करवानो प्रकार कहुं छुं. चीकाशवाळा लासा मांसने वाटीने बीलांना-फळो जेवडा तेना बे पिंड करवा. चार तोलां भार औषधो लेवां अने सोळ तोलां भार द्रवो लेवा. ए सर्वने एकठां करी लोंदारूप बनावी ते लोंदाने सीवणनां, एरडानां, पोयणांनां, कमलिनीनां तथा केळनां पांनडाओवते सारी पेठे वींटी ते उपर बे आंगळ जाडो अथवा अंगूठा जेटलो जाडो पळाळेली माटीनो थर चडावी अग्निमां मूकवो. ए अग्नि खेरना कोलसाओनो, कतक (निर्मळी) वृक्षनां काष्ठोनो, आसोंदरानां काष्ठोनो, एरडानां काष्ठोनो, पाडळनां काष्ठोनो, अरडूसानां काष्ठोनो, वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां काष्ठोनो के अडायानो युक्तिपूर्वक गोठववो. माटीनो थर धगधगता अंगारा जेवां वर्णवाळो थई जाय त्यांसूधी अग्निमां राखी पछी ते गोळाने काहाडी लेवो अने माटीने तथा पानडांओने दूर करी नाखी गोळाना रसने नीचोवी लेवो एटले पुटपाक सिद्ध थयो केहेवाय छे. माणसने चत्तो सुवडावी तर्पणना निरूपणमां कहेली री-

१ स्नेहन पुटपाकनां औषधोने वाटवा वगेरेमां मांसना रस तथा दूध वगेरेनो उपयोग करवो. लेखन पुटपाकनां औषधोने वाटवा वगेरेमां त्रिफळाना रसनो तथा मध वगेरेनो उपयोग करवो अने रोपण पुटपाकनां औषधोने वाटवा वगेरेमां कडवां द्रव्योना कषायनो उपयोग करवो.

तिप्रमाणे ए रसनुं ते माणसनी कीकीपर सेचन करवुं.

रुधिर उपर के पित्त उपर तर्पणनी के पुटपाकनी योजना करवी होय तो थंडा तर्पणनी तथा थंडा पुटपाकनी योजना करवी. वायु उपर के कफ उपर तर्पणनी के पुटपाकनी योजना करवी होय तो जरा ऊनाशवाळा तर्पणनी तथा पुटपाकनी योजना करवी. जो अत्यंत ऊना के अत्यंत तीक्ष्ण तर्पणनी के पुटपाकनी योजना करवामां आवे तो तेथी अवश्य दाह तथा पाक थाय छे अने अतिशीतल तर्पणनी के पुटपाकनी योजना करवामां आवे तो तेथी अवश्य अश्रुओ उत्पन्न थाय छे, स्तब्धपणुं थाय छे, वेदना थाय छे तथा घर्षण अथवा रोमहर्ष थाय छे.

जो तर्पणनी के पुटपाकनी मात्रा अधिक थाय तो नेत्रोमां मलिनपणुं, संकोच तथा स्फुरण (फरकवुं) थाय छे अने ओछी मात्रा थाय तो नेत्रोमां दोषोनो अत्यंत उत्क्लेश थाय छे. जो तर्पण तथा पुटपाक योग्य मात्राथी थाय तो तेओ बळतराने, सोजाने, वेदनाने, घर्षणने अथवा रोमहर्षने, स्रावने, खरजने, चीपडांओने, चीकाशवाळा उपलेपने अने राती रेखाओने नष्ट करे छे. आम छे एटला माटे वैद्ये अतियोग के हीनयोग न थाय एवी रीते तर्पणनी तथा पुटपाकनी गोठवण करवी के जेथी सुखनीज प्राप्ति थाय.

जो तर्पणनी के पुटपाकनी कोई प्रकारनी अयोग्यताने लीधे संकोचादिक तथा दाहादिक व्यापत्तिओ थाय तो दोषना अनुसार प्रमाणे नस्योथी, धूमोथी तथा अंजनोथी ते व्यापत्तिओने दूर करवी.

तर्पणना तथा पुटपाकना आदिमां अने अंतमां नेत्रोने ऊना जळमां पळाळेला कपडावते शेक देवो. एओना अंतमां कफनो वधारो थएलो जोवामां आवे तो धूमपान कराववुं ए हितकारी छे.

५ यथादोषोपयुक्तं तु नातिप्रबलमोजसा ।
रागमाश्च्योतनं हन्ति सेकस्तु बलवत्तरम् ॥
तौ त्रिधैवोपयुज्येते रोगेषु पुटपाकवत् ।
लेखने सप्त चाष्टौ वा बिन्दवः स्नैहिके दश ॥
आश्च्योतने प्रयोक्तव्या द्वादशैव तु रोपणे ।
सेकस्य द्विगुणः कालः पुटपाकात्परो मतः ॥
अथ वाऽऽकार्य्ये निर्वृत्तेरुपयोगो यथाक्रमम् ।
पूर्वापराह्णे मध्याह्ने रुजाकालेषु चोभयोः ॥
योगायोगान् स्नेहसेके तर्प्पणोक्तान् प्रचक्षते ।

आश्च्योतन तथा सेचन एओनुं निरूपण.

५ नेत्ररोग जे दोषथी थयो होय ते दोषने हणनारां द्रव्योथी गोठवेलुं आश्च्योतन अत्यंत प्रबळ नहीं थएला दोषने पोतानी शक्तिथी नष्ट करे छे (माणसनी आंखोने बे आंगळांवते ऊघाडी राखी तेओमां क्वाथनां, मधनां, आसवनां के स्नेह वगेरेनां टीपां नाखवां ए आश्च्योतन केहेवाय छे.) अने नेत्ररोग जे दोषथी थयो होय ते दोषने हणनारां द्रव्योथी गोठवेलुं सेचन अत्यंत प्रबळ थएला दोषने पण पोतानी शक्तिथी नष्ट करे छे. (आंखोने वींचावी तेओनी उपर चार आंगळ ऊंचेथी क्वाथ वगेरेनी झीणी झीणी धाराओ करवी ए सेचन केहेवाय छे.)

आश्च्योतन अने सेचन ए बन्ने, पुटपाकनी पेठे स्नेहन, लेखन अने रोपण ए रीते त्रण प्रकारनां थाय छे. (स्निग्ध द्रव्योथी गोठवेलां होय ते स्नेहन, लेखन द्रव्योथी गोठवेलां होय ते लेखन अने रोपण द्रव्योथी गोठवेलां होय ते रोपण केहेवाय छे.)

जो आश्च्योतन लेखन होय तो तेनां सात के आठ टीपां नाखवां, स्नेहन होय तो तेनां दश टीपां नाखवां अने रोपण होय तो तेनां बार टीपां नाखवां. (विदेह केहे छे के घणुं करीने नेत्ररोगोमां त्रण दिवससूधी उपवास कराव्या पछी

અ[illegible]या त्रण दिवससूधी लघुभोजन कराव्या प[illegible] अथवा त्रण दिवससूधी रात्रि भोजन कराव्या पछी चोथे दिवसे आश्च्योतन के सेचन करवां.)

आश्च्योतनुं धारण करवानो काळ पुटपाकनुं धारण करवाना काळ जेटलोज समजवो अने सेचननो काळ पुटपाकनुं धारण करवाना काळथी बमणो समजवो. (स्नेहन आश्च्योतननो काळ बसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधीनो, लेखन आश्च्योतननो काळ सो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधीनो अने रोपण आश्च्योतननो काळ त्रणसो. गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधीनो समजवो. तेमज स्नेहन सेचननो काल चारसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधीनो, लेखन सेचननो काळ बसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधीनो अने रोपण सेचननो काळ छसो गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधीनो समजवो.) अथवा आश्च्योतननो अने सेचननो उपयोग ज्यांसूधी कार्य सिद्ध थाय त्यांसूधी धीरे धीरे करवो एटले व्याधिनो उपशम थाय, स्वाभाविक वर्णनी प्राप्ति थाय, उघाडवा वींचवा वगेरे क्रियाओमां योग्य सामर्थ्य प्राप्त थाय अने वेदना नष्ट थाय तेटला समय सूधी करवो.

जो नेत्ररोग कफजन्य होय तो पूर्वाण्ह समयमां, रुधिरजन्य के पित्तजन्य होय तो मध्याह्न समयमां अने वायुजन्य होय तो अपराण्ह समयमां आश्च्योतन तथा सेचन करवां. (कफजन्य उपर लेखन आश्च्योतन तथा लेखन सेचन करवां, पित्तजन्य उपर तथा रुधिरजन्य उपर रोपण आश्च्योतन तथा रोपण सेचन करवां अने वातजन्य उपर स्नेहन आश्च्योतन तथा स्नेहन सेचन करवां.) अथवा जे समयमां वेदना उत्पन्न थाय ते समयमां आश्च्योतन तथा सेचन करवां.

स्नेहन सेचनना सम्यग्योग, अतियोग अने हीनयोग एओनां लक्षणो तर्पणना सम्यग्योग, अतियोग अने हीनयोग एओनां लक्षणो प्रमाणेज समजी लेवां. (अहीं 'स्नेहन सेचन' ए शब्दथी घीनुं सेचनज समजवुं. दूधना तथा शेलडीना रस वगेरेना सेचनना सम्यग्योगादिकनां लक्षणो तो पुटपाकना सम्यग्योगादिकनां लक्षणो प्रमाणेज समजवां. आश्च्योतनना सम्यग्योगादिकनां लक्षणो अने लेखन सेचनना तथा रोपण सेचनना सम्यग्योगादिकनां लक्षणो अहीं कह्यां नथी माटे कल्पनाथी समजी लेवां.)

६ रोगाञ्छिरसिसम्भूतान्हत्वातिप्रबलान्गुणान्॥
करोति शिरसो बस्तिरुक्ता ये मूर्द्धतैलिकाः।
शुद्धदेहस्य सायाह्ने यथाव्याध्यशितस्य तु॥
ऋज्वासीनस्य बध्नीयाद्वस्तिकोशं ततो दृढम्।
यथाव्याधिशृतस्नेहपूर्णं संयम्य धारयेत्॥
तर्पणोक्तं दशगुणं यथादोषं विधानवित्।

शिरोबस्तिनुं निरूपण.

६ शिरोबस्ति मस्तकमां उत्पन्न थएला अतिप्रबल रोगोने पण नष्ट करीने चिकित्सास्थानना २४ अध्यायना नवमा विषयमां कहेला गुणोने उत्पन्न करे छे.

वमनादिकथी शरीरने शुद्ध करी अथवा नस्यादिकथी मस्तकने शुद्ध करी सायंकाळे दोषना अनुसार प्रमाणे नेत्ररोगोने नष्ट करनारूं भोजन जमाडी बीजे दिवसे ते माणसने सरळ रीते बेसाडी तेना मस्तकपर चामडानी टोपी मजबूत रीते बांधवी. पछी नेत्ररोग जे दोषथी उत्पन्न थएल होय ते दोषने नष्ट करनारां द्रव्योथी पकावेला स्नेहने ते टोपीमां संपूर्ण रीते भरी, माथाना वाळोने बांधी, तेओ सघळा स्नेहमां डूबी जाय एवी गोठवण करी ते कोथळीनुं धारण करावबुं ए शिरोबस्ति केहेवाय छे. कफने शांत करवानो होय तो छ हजार गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी, पित्तने के रुधिरने शांत करवानुं होय तो आठ हजार गुरु अक्षरोनुं उ-

च्चारण थतां सूधी अने वायुने शांत करवानो होय तो दश हजार गुरु अक्षरोनुं उच्चारण थतां सूधी शिरोबस्तिनुं धारण कराववुं.

(बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के बे मोहोडांवाळी, बार आंगळ ऊंची अने माथामां पेहेराय एवडी चामडानी टोपी बनावी, माथामां पेहेरावी, अडदना पळाळेला लोटथी तेना सांधाओने रोकी तथा तेना नीचला मोहोडानी नीचे अडदना पळाळेला लोटनी पाळ करी ऊपला मोहोडामां थोडी थोडी ऊनाशवाळो तैलादिक स्नेह भरी देवो ए शिरोबस्ति केहेवाय छे.)

७ व्यक्तरूपेषु दोषेषु शुद्धकायस्य केवलम् ॥
नेत्र एव स्थिते दोषे प्राप्तमञ्जनमाचरेत् ।
लेखनं रोपणं चापि प्रसादनमथापि वा ॥
तत्र पञ्च रसान्व्यस्तानाद्यैकरसवर्जितान् ।
पञ्चधा लेखनं युञ्ज्याद्यथादोषमतन्द्रितः ॥
नेत्रवर्त्मशिराकोशस्रोतःशृङ्गाटकाश्रितम् ।
मुखनासाक्षिभिर्दोषमोजसा स्रावयेत्तु तत् ॥
कषायतिक्तकं चापि सस्नेहं रोपणं मतम् ।
तत्स्नेहशैत्याद्वर्ण्यं स्याद्दृष्टेश्च बलवर्द्धनम् ॥
मधुरं स्नेहसम्पन्नमञ्जनं तु प्रसादनम् ।
दृष्टिदोषप्रसादार्थं स्नेहनार्थं च तद्धितम् ॥
यथादोषं प्रयोज्यानि तानि दोषविशारदैः ।
अञ्जनानि यथोक्तानि प्राह्णसायाह्नरात्रिषु ॥
गुटिकारसचूर्णानि त्रिविधान्यञ्जनानि तु ।
यथापूर्वं बलं तेषां श्रेष्ठमाहुर्मनीषिणः ॥
हरेणुमात्रा वर्त्तिः स्याल्लेखनस्य प्रमाणतः ।
प्रसादनस्य चाध्यर्द्धा द्विगुणा रोपणस्य च ॥
रसाञ्जनस्य मात्रा तु वेल्लमात्रा प्रकीर्त्तिता ।
द्वित्रिचतुःशलाकाश्च चूर्णस्याप्यनुपूर्वशः ॥
तेषां तुल्यगुणान्येव विदध्याद्भाजनान्यपि ।
सौवर्णं राजतं शार्ङ्गं ताम्रं वैदूर्य्यकांस्यजम् ॥
आयसानि च योज्यानि शलाकाश्च यथाक्रमम् ।
वक्त्रयोर्मुकुलाकारा कलायपरिमण्डला ॥
अष्टाङ्गुला तनुर्मध्ये सुकृता साधुनिग्रहा ।
औदुम्बर्य्यश्मजातापि शारीरी वा हिता भवेत् ॥
वामेनाक्षि विनिर्भुज्य हस्तेन सुसमाहितः ।
शलाकया दक्षिणेन क्षिपेत् कानीनमञ्जनम् ॥
आपाङ्गं वा यथायोग्यं कुर्य्याच्चापि गतागतम् ।
वर्त्मोपलेपि वा यत्तदङ्गुल्यैव प्रयोजयेत् ॥
अक्षि नात्यन्तयोरञ्ज्याद्बाधमानोऽपि वा भिषक् ।
नवा निर्वान्तदोषेऽक्षिण धावनं सम्प्रयोजयेत् ॥
दोषः प्रतिनिवृत्तः सन् हन्याद्दृष्टेर्बलं तथा ।
गतदोषमपेताश्रु पश्येद्यत्सम्यगम्भसा ॥
प्रक्षाल्याक्षि यथादोषं कार्य्यं प्रत्यञ्जनं ततः ।
श्रमोदावर्त्तरुदितमद्यक्रोधभयज्वरैः ॥
वेगाघातशिरोदोषैश्चार्त्तानां नेष्यतेऽञ्जनम् ।
रागरुक्तिमिरास्रावशूलसंरम्भसम्भ्रमान् ॥
निद्राक्षये क्रियासक्ति प्रवाते दृग्बलक्षयम् ।
रजोधूमहते रागस्रावाधीमन्थसम्भवम् ॥
संरम्भशूलौ नस्यान्ते शिरोरुजि शिरोरुजम् ।
शिरःस्नातेऽतिशीते च रवावनुदितेऽपि च ॥
दोषस्थैर्य्यादपार्थं स्याद्दोषोत्क्लेशं करोति च ।
अजीर्णेप्येवमेव स्यात्स्रोतोमार्गावरोधनात् ।
दोषवेगोदये दत्तं कुर्यात्तांस्तानुपद्रवान् ।
तस्मात्परिहरन्दोषानञ्जनं साधु योजयेत् ॥
लेखनस्य विशेषेण काल एव प्रकीर्त्तितः ।
व्यापदश्च जयेदेताः सेकाश्च्योतनलेपनैः ॥
यथास्वं धूमकवलैर्नस्यैश्चापि समुत्थिताः ।
विशदं लघु नास्रावि क्रियापटु सुनिर्म्मलम् ॥
संशान्तोपद्रवं नेत्रं विरिक्तं सम्यगादिशेत् ।
जिह्मं दारुणदुर्वर्णं स्रस्तं रूक्षमतीव च ॥
नेत्रं विरेकातियोगे स्यन्दते चातिमात्रशः ।
तत्र सन्तर्पणं कार्यं विधानं चानिलापहम् ॥
अक्षि मन्दविरिक्तं स्यादुदग्रतरदोषवत् ।
धूमनस्याञ्जनैस्तत्र हितं दोषावसेचनम् ॥
स्नेहवर्णबलोपेतं प्रसन्नं दोषवर्जितम् ।
ज्ञेयं प्रसादने सम्यगुपयुक्तेऽक्षि निर्वृतम् ॥
किञ्चिद्धीनविकारं स्यात्तर्पणाद्धि कृतादति ।
तत्र दोषहरं रूक्षं भेषजं शस्यते मृदु ॥

साधारणमपि ज्ञेयमेवं रोपणलक्षणम् ।
प्रसादनवदाचष्टे तस्मिन्युक्तेऽति भेषजम् ॥
स्नेहनं रोपणं वापि हीनयुक्तमपार्थकम् ।
कर्त्तव्यं मात्रया तस्मादञ्जनं सिद्धिमिच्छता ॥
पुटपाकक्रियाद्यासु क्रियास्वेतेन कल्पनाः ।
सहस्रशश्चाञ्जनेषु बीजेनोक्तेन पूजिताः ॥

अंजननुं निरूपण.

७ जेना शरीरनुं वमनविरेचनादिकथी शोधन करवामां आव्युं होय एवा माणसने दोष पाकी गयो होय तथा ते दोष केवळ नेत्रमांज रह्यो होय ते समयमां योग्य अंजन आंजवुं. लेखन अंजनो, रोपण अंजनो अने प्रसादन अंजनो ए रीते अंजनो त्रण प्रकारनां थाय छे.

लेखन अंजनो मधुर रस शिवायना बीजा पांच रसोवाळां द्रव्योथी बनाववां अने तेओनो प्रयत्नपूर्वक दोषोना अनुसार प्रमाणे पांच प्रकारनो प्रयोग करवो एटले वायु उपर खाटा के खारा रसवाळा अंजननो प्रयोग करवो, पित्त उपर तूरा रसवाळा अंजननो प्रयोग करवो, कफ उपर तीखा कडवा के तूरा रसवाळा अंजननो प्रयोग करवो, रुधिर उपर तूरा रसवाळा अंजननो प्रयोग करवो अने सन्निपात उपर योग्यता जोई एओमांना त्रण रसोवाळा अंजननो प्रयोग करवो. लेखन अंजन नेत्रोना तथा पांपणोना कोशोमां, स्रोतोमां तथा शिराओमां रहेला दोषने अने श्रृंगाटक नामना मर्ममां रहेला दोषने पोतानी शक्तिवते मोहोडारूप द्वारथी, नासिकारूप द्वारथी तथा नेत्रोरूप द्वारथी स्रवावी नाखे छे.

रोपण अंजनो जराक घीथी संयुक्त करेलां तूरां द्रव्योथी तथा कडवां द्रव्योथी बनाववां. ए अंजनो स्नेहना तथा शीतपणाना योगने लीधे नेत्रना वर्णने सारो करे छे अने दृष्टिना बळने वधारे छे.

प्रसादन अंजनो स्नेहथी संयुक्त करेलां मधुर द्रव्योथी बनाववां. ए अंजनो दोषने शांत करीने दृष्टिने निर्मळ करे छे अने स्निग्ध पण करे छे.

दोषोना तत्वने जाणनारा वैद्योए ए उपर कहेलां अंजनोनो दोषोना अनुसारथी पूर्वाह्न समयमां, सायंकाले अने राते प्रयोग करवो एटले नेत्ररोग कफजन्य होय तो पूर्वाह्न समयमां, वातजन्य होय तो सायंकाळे अने पित्तजन्य होय तो राते प्रयोग करवो.

उपर कहेलां लेखन, रोपण तथा प्रसादन ए त्रणे अंजनोना गुटिकांजन, रसांजन अने चूर्णांजन ए नामना त्रण त्रण भेदो थाय छे. (जे अंजन गोळीरूप के वाटरूप होय ते गुटिकांजन केहेवाय छे, रसक्रियारूप होय ते रसांजन केहेवाय छे अने चूर्णरूप होय ते चूर्णांजन केहेवाय छे.) एओमां चूर्णांजनथी रसांजन बलवत्तर छे तथा श्रेष्ठ छे अने रसांजनथी गुटिकांजन बलवत्तर छे तथा श्रेष्ठ छे एम विद्वानो केहे छे. (आथी एम केहेवायुं के बलवत्तर रोगो उपर गुटिकांजननो, मध्य बळवाळा रोगो उपर रसांजननो अने हीन बळवाळा रोगो उपर चूर्णांजननो प्रयोग करवो.)

लेखन अंजन गोळीरूप के वाटरूप होय तो तेनी वटाणा जेटली मात्रा करवी, प्रसादन अंजन गोळीरूप के वाटरूप होय तो तेनी डोढ वटाणा जेटली मात्रा करवी अने रोपण अंजन गोळीरूप के वाटरूप होय तो तेनी बे वटाणा जेटली मात्रा करवी. जे अंजन रसांजन अर्थात् रसक्रियारूप होय तेनी वावडींग जेटली मात्रा करवी. चूर्णांजन जो प्रसादन होय तो तेनी चार सळीयो आंखमां नाखवी, रोपण होय तो तेनी त्रण सळीयो आंखमां नाखवी अने लेखन होय तो तेनी बे सळीयो आंखमां नाखवी.

मधुर अंजनने सुवर्णना वासणमां, खाटा अं-

जनने रूपाना वासणमां, खारा अंजनने घेंटाना शींगडाना वासणमां, तूरा अंजनने त्रांबाना के लोढाना वासणमां, तीखा अंजनने लसणीया मणिना वासणमां अने कडवा अंजनने कांसाना वासणमां राखवुं. अंजन आंजवा माटेनी सळीयो पण एज क्रमथी करवी एटले अंजन मधुर होय तो सोनानी, खाटुं होय तो रूपानी, खारूं होय तो घेंटाना शींगडानी, तूरूं होय तो त्रांबानी के लोढानी, तीखुं होय तो लसणीया मणिनी अने कडवुं होय तो कांसानी सळीथी आंजवुं. अंजनमां जे रस होय ते रसवाळा पात्रमां अंजन राखवुं योग्य छे अने अंजननी सळीयो पण अंजनना रस प्रमाणेज रसवाळी राखवी योग्य छे तेथी उपर प्रमाणे विधान कह्युं छे.

अंजन आंजवानी सळी बन्ने तरफमां डोलर वगेरेनां फूलनी कळी जेवां मोहोडांओवाळी, वटाणाना दाणा जेवी गोळ, आठ आंगळ लांबी, मध्यमां पातळी, लासी तथा सारी रीते पकडी शकाय एवी जोईए अने ते उपर कह्या प्रमाणे त्रांबानी, सोनानी, रूपानी, शींगडानी, लोढानी, मणिनी तथा कांसानी जूदी जूदी जोइए अथवा सर्व अंजनोने माटे त्रांबानी, मणिनी के शींगडानी होय तो पण हितकारी छे. (केटलाएक ग्रंथोमां आंगळीना अग्रथी पण अंजन आंजवानुं कह्युं छे अने आ ग्रंथना मूल श्लोकना 'शारीरी' ए पदमांथी तेवो अर्थ लई शकाय एम पण छे परंतु आ ग्रंथना टीकाकार गयदासाचार्ये ए अर्थ स्वीकार्यो नथी.)

वैद्ये सारी पेठे सावधान रही डाबा हाथथी रोगीनी आंख फाडी राखी, हीनयोग के अतियोग न थाय एवी रीते जमणा हाथशी सळीवते अंजन नाखवुं ते एवी रीते के कीकीनी बाजूथी नेत्रनी अणीना प्रदेशसूधी लई जवुं अथवा नेत्रनी अणीना प्रदेशथी कीकीनी बाजूसूधी लई जवुं. अथवा सळीने डाबी तरफथी जमणी तरफ अने जमणी तरफथी डाबी तरफ एम बे चार वार पण फेरववी. परंतु जे अंजन फकत पांपणमांज लगाववानुं होय ते अंजन तो आंगळीवतेज आंजवुं. कीकीना अत्यंत समीपमां अंजन आंजवुं नहीं तेम कीकीने दबाण आवे एवी रीते पण अंजन आंजवुं नहीं.

अंजननो सम्यग्योग थवाथी नेत्रमां आंसु तथा चीपडां वगेरे नीकळयां होय ते समयमां नेत्रने धोवुं नहीं. केम के ए समयमां धोवामां आवे तो दोष पाछो वळीने दृष्टिना बळने हणी नाखे छे. ज्यारे नेत्र औषधना तथा दोषना क्षोभथी रहित थाय, अश्रुओथी रहित थाय अने रूपोने सारी पेठे देखवा लागे त्यारे दोषने हरनारा जळथी नेत्रने धोईने तेमां यथायोग्य प्रत्यंजन करवुं. (तीक्ष्णादिक अंजनथी गभराई गयेला नेत्रनुं आश्वासन करवा माटे जे अंजन आंजवामां आवे ते प्रत्यंजन केहेवाय छे.)

जे माणसो श्रमथी, उदावर्त्तथी, रोवाथी, मद्यथी, क्रोधथी, भयथी, ज्वरथी, मूत्रादिकना वेगोना आघातथी के मस्तकना दोषोथी पीडायेलां होय ते माणसोने अंजन आंजवुं नहीं. एवां माणसोने आंजवामां आवेलुं अंजन रताशने, वेदनाने, तिमिरने, स्रावने, शूळने, नेत्रना ऊठवाने तथा संभ्रमने उत्पन्न करे छे. निद्रानो अंत थाय ते समये अंजन आंजवामां आवे तो तेथी निमेष तथा उन्मेष आदि क्रियाओनी अटकायत थाय छे. जेमां पवन घणो होय तेवा भूप्रदेशमां अंजन आंजवामां आवे तो तेथी दृष्टिना बळनो क्षय थाय छे. नेत्र रजथी के धूमथी उपहत थयुं होय ते समयमां अथवा तेओथी उपहत प्रदेशमां अंजन आंजवामां आवे तो तेथी रताश, आस्राव तथा अधिमंथ उत्पन्न थाय छे. नस्यना अंतमां अंजन आंजवामां आवे तो तेथी आंखो क्षुब्ध थाय छे तथा तेओमां शूळ उत्पन्न थाय छे. माथामां दरद होय ते समयमां अंजन आवे तो तेथी माथामां वधारे व्यथा थाय

छे. माथे नाहाया पछी, अत्यंत शीतमां के सूर्यनो उदय थया पेहेलां अंजन आंजवामां आवे तो दोषना स्थिरपणाने लीधे अंजन व्यर्थ थाय छे एटलुंज नहीं परंतु तेथी दोषनो उत्क्लेश पण थाय छे. अजीर्ण छतां अंजन आंजवामां आवे तो पण स्रोतोना मार्गो रोकाएला होवाने लीधे अंजन व्यर्थ थाय छे अने दोषनो उत्क्लेश करे छे. दोषना वेगनो उदय थयो होय ते समयमां अंजन आंजवामां आवे तो ते अंजन रताश तथा सोजा वगेरे उपद्रवोने उत्पन्न करे छे. आ प्रमाणे छे एटला माटे वैद्ये जेथी कशी व्यापत्ति न थाय एवी उत्तम योजनाथी अंजन आंजवुं. उपर जे निषेधो कह्या तथा व्यापत्तिओ जणावी ए सघळुं लेखन अंजनने माटेज छे. प्रसादन अंजनने माटे के रोपण अंजनने माटे नथी. लेखन अंजनना उपर जणावेला अपप्रयोगोथी व्यापत्तिओ उत्पन्न थाय तो तेओने दोषोना अनुसार प्रमाणे सेचनोथी, आश्च्योतनोथी, लेपनोथी, धूमोथी, कवलोथी तथा नस्योथी टाळवी.

लेखन अंजननो **सम्यग्योग** थयो होय तो नेत्रो निर्मळ, हलकां, स्राव वगरनां, ऊघाडवा मींचवा वगेरे क्रियाओमां समर्थ, चींपडा वगेरेथी अत्यंत रहित अने उपद्रवो वगरनां थाय छे. जो लेखन अंजननो **अतियोग** थयो होय तो नेत्रो वांकां, दारुण, खराब वर्णवाळां, शिथिल तथा अत्यंत रूक्ष थई जाय छे अने तेओमांथी स्राव पण अत्यंत थाय छे. लेखन अंजननो अतियोग थयो होय तो नेत्रोनुं तर्पण करवुं अने वायुने नष्ट करनारी बीजी पण चिकित्सा करवी. जो लेखन अंजननो हीनयोग थयो होय तो नेत्रो अत्यंत वृद्धि पामेला दोषवाळां थई जाय छे. आ प्रमाणे लेखन अंजननो हीनयोग थयो होय तो धूमोथी, नस्योथी. तथा अंजनोथी दोषोनुं स्रावण करवुं ए हितकारी थाय छे.

प्रसादन अंजननो **सम्यग्योग** थयो होय तो नेत्रो सुख पामे छे अने अतियोग थयो होय तो विकार संपूर्ण रीते नहीं पण कांईक ओछो थाय छे. आ प्रमाणे प्रसादन अंजननो **अतियोग** थयो होय तो कफने हणनारूं, रूक्ष तथा कोमळ वीर्यवाळुं औषध करवुं.

रोपण अंजननो **सम्यग्योग** थयो होय तो प्रसादन अंजननो सम्यग्योग थयाना जेवां लक्षणो थाय छे अने रोपण अंजननो **अतियोग** थयो होय तो प्रसादन अंजननो अतियोग थयाना जेवां लक्षणो थाय छे. आ प्रमाणे रोपण अंजननो अतियोग थयो होय तो प्रसादन अंजनना अतियोगनी जे चिकित्सा केहेवामां आवी ते करवी एटले कफने हणनारूं, रूक्ष तथा कोमळ वीर्यवाळुं औषध करवुं.

प्रसादन अंजननो के रोपण अंजननो **हीनयोग** थाय तो अंजन विफळज थाय छे.

एटला माटे विकारनी निवृत्तिने इच्छनारा वैद्ये हीनयोग के अतियोग न थाय एवी मात्राथी अंजन आंजवुं.

लेखन अंजनो मधुर रसशिवायना पांच रसोनां द्रव्योथी गोठववां, रोपण अंजनो जराक घीथी संयुक्त करेलां तूरां द्रव्योथी तथा कडवां द्रव्योथी गोठववां अने प्रसादन अंजनो स्नेहथी संपन्न करेलां मधुर द्रव्योथी गोठववां ए रूप जे बीज केहेवामां आव्युं छे ते बीज उपरथी बुद्धिमान् वैद्ये अंजनोना हजारो योग्य प्रकारो गोठवी लेवा अने पुटपाक आदि क्रियाओना पण हजारो योग्य प्रकारो गोठवी लेवा.

८ दृष्टेर्बलविवृद्ध्यर्थं याप्यरोगक्षयाय च ।
राजार्हाण्यञ्जनाग्र्याणि निबोधैतान्यतःपरम् ॥
अष्टौ भागानञ्जनस्य नीलोत्पलसमत्विषः ।
औदुम्बरं शातकुम्भं राजतं च समासतः ॥
एकादशैतान् भागांस्तु योजयेत्कुशलो भिषक् ।
मूषाक्षिप्तं तदाध्मातमाप्लुतं जातवेदसि ॥

खदिराश्मन्तकाङ्गारैर्गोशकृद्भिरथापि वा ।
गवां शकृद्रसे मूत्रे दध्नि सर्पिषि माक्षिके ॥
तैलमद्यवसामज्जसर्वगन्धोदकेषु च ।
द्राक्षारसेक्षुत्रिफलारसेषु सुहिमेषु च ॥
सारिवादिकषाये च कषाये चोत्पलादिके ।
निषेचयेत्पृथक्चैनं ध्मातं ध्मातं पुनः पुनः ॥
ततोऽन्तरिक्षे सप्ताहं प्रोतबद्धं स्थितं जले ।
विशोष्य चूर्णयेन्मुक्तां स्फटिकं विद्रुमं तथा ॥
कालानुसारिवां चैव शुचिरावाप्य योगतः ।
एतच्चूर्णाञ्जनं श्रेष्ठं निहितं भाजने शुभे ॥
दन्तस्फटिकवैदूर्यशङ्खशैलासनोद्भवे ।
शातकुम्भेऽथ शार्ङ्गे वा राजते वा सुसंस्कृते ॥
सहस्रपाकवत्पूजां कृत्वा राज्ञः प्रयोजयेत् ।
तेनाञ्जिताक्षो नृपतिर्भवेत्सर्वजनप्रियः ॥
अधृष्यः सर्वभूतानां दृष्टिरोगविवर्जितः ।
कुष्ठं चन्दनमेलाश्च पत्रं मधुकमञ्जनं ॥
मेषशृङ्गस्य पुष्पाणि चक्रं रत्नानि सप्त च ।
उत्पलस्य बृहत्योश्च पद्मस्यापि च केशरम् ॥
नागपुष्पमुशीराणि पिप्पली तुत्थमुत्तमम् ।
कुक्कुटाण्डकपालानि दार्वीं पथ्यां सरोचनाम् ॥
मरिचान्यक्षमज्जानं तुल्यां च गृहगोधिकाम् ।
कृत्वा सूक्ष्मं शुचिश्चूर्णं न्यसेदभ्यर्च्य पूर्ववत् ॥
एतद्भद्रोदयं नाम सदैवार्हति भूमिपः ॥
चक्रं समरिचं चैव मांसीं शैलेयमेव च ।
तुल्यांशानि समाना तैः समग्रैश्च मनःशिला ।
पत्रस्य भागाश्चत्वारो द्विगुणं सर्वतोऽञ्जनम् ॥
तावच्च यष्टीमधुकं पूर्ववच्चैतदञ्जनम् ।
मनःशिलां देवकाष्ठं रजन्यौ त्रिफलोषणम् ॥
लाक्षालशुनमञ्जिष्ठासैन्धवैलाः समाक्षिकाः ।
रोध्रं सावरकं चूर्णमायसं ताम्रमेव च ॥
कालानुसारिवां चैव कुक्कुटाण्डदलानि च ।
तुल्यानि पयसा पिष्ट्वा गुटिकां कारयेद्बुधः ॥
कण्डूतिमिरशुक्रार्मरक्तराज्युपशान्तये ।
कांस्यापमार्जनमसीं मधुकं सैन्धवं नतम् ॥
एरण्डमूलं च समं बृहत्यंशद्वयान्वितम् ।
आजेन पयसा पिष्ट्वा ताम्रपात्रं प्रलेपयेत् ॥
सप्तकृत्वस्तुता वर्त्यश्छायाशुष्का रुजापहाः ।
पथ्यातुत्थकयष्ट्याह्वैस्तुल्यैर्मरिचषोडशा ॥
पथ्या सर्वविकारेषु वर्त्ती शीताम्बुपेषिता ।
रसक्रिया विधानेन यथोक्तविधिकोविदः ॥
पिण्डाञ्जनानि कुर्वीत यथायोगमतन्द्रितः ॥

राजाओने तथा राजाओ जेवां माणसोने लायक उत्तम अंजनो.

८ हवे स्वस्थ माणसोनी दृष्टिना बळने वधारवा माटे अने याप्य नेत्ररोगोना यापनने माटे उत्तम अंजनो कहुं छुं ते सांभळो के जे अंजनो राजाओने तथा राजाओ जेवा माणसोने लायक छे.

नीलकमळना जेवी कांतिवाळा सुरभाना आठ भाग, त्रांबानो एक भाग, सुवर्णनो एक भाग अने रूपानो एक भाग ए रीते अगीयार भागोने एकठा करी मूसमां नाखी ते मूसने खेरना तथा आसोंद्राना कोळसाओना अग्निमां अथवा गायना छाणना अडायाना अग्निमां मूकीने पछी धमणथी अग्निने धमवो. पीगळीने रस थई जाय त्यारे ते रसने गायना छाणना रसमां नाखीने ठारवो. वळी पण पीगळावी गायना मूत्रमां नाखीने ठारवो. वळी पण पीगळावी गायना दहींमां नाखीने ठारवो. एज अनुक्रम प्रमाणे पीगळावी पीगळावीने गायना घीमां, मधमां, तेलमां, मद्यमां, चरबीमां, मज्जामां, सघळां सुगंध पदार्थोना शीतल जळमां, द्राक्षना शीतल रसमां, शेलडीना शीतल रसमां, त्रिफळाना शीतल रसमां, सारिवादि गणना काथमां अने उत्पलादि गणना काथमां पण ठारवो. ए रीते वारंवार पीगळावी तथा जूदा जूदा द्रवमां वारंवार ठारी तेने वस्त्रमां बांधी सात दिवससूधी अंतरीक्षमां जळनी अंदर राखी मूकवो. सात दिवस पछी तेने सूकावी तेमां स्वच्छतापूर्वक अल्पमात्राथी मोती, स्फाटिक, परवाळां अने तगरनां मूळ नाखी सर्वेनुं चूर्ण करवुं अने पछी ते चूर्णने सारी रीते

सुधारी राखेला दांतना, स्फटिकना, लसणीया मणिना, शंखना, पथराना, बीबलाना, सुवर्णना, शींगडाना के रूपाना वासणमां भरी राखवुं. वासणमां भर्या पछी चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २३ मा विषयमां सहस्रपाक नामना तैलने माटे जेवी धामधूम कही छे तेवी धामधूम करवी तथा हजार ब्राह्मणोने जमाडवा एटले **चूर्णांजन** सिद्ध थाय छे. आ चूर्णांजन वैद्ये राजाने देवुं. नेत्रोमां आ अंजन आंजवाथी राजा सर्व लोकोने प्यारो थाय छे, दृष्टिना रोगोथी रहित थाय छे अने कोई पण प्राणीयो ए राजाने डरावी शकतां नथी के तेनो पराभव करी शकतां नथी.

कठ, चंदन, एळची, तमालपत्र, जेठीमध, सुरमो, मेंढाशींगीनां फूल, तगर, सप्त रत्नो, (माणक, मरकतमणि, नीलमणि, लसणीयो, मोती, परवाळां तथा सोनुं) नीळकमळनां फूल, ऊभी भोरींगणीनां फूल, बेठी भोरींगणीनां फूल, श्वेत कमळना केसरा, नागकेसर, वाळो, पीपळ, मोरथुथु, खापरीयो, कुकडीना ईंडानां खोपरां, दारूहळदर, हरडे, गोरोचना, मरी अने बेहेडानां फळोनी अंदरनां बीज एओने सम भागे लई तेओमां तेओना जेटलाज वजननुं पल्ली (ढेढगरोळी)नुं मांस नाखी स्वच्छत्रपणाथी ए सर्वनुं बारीक चूर्ण करवुं. चूर्ण तैयार थाय त्यारे चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २३ मा विषयमां सहस्रपाक नामना तैलने माटे जेवी धामधूम कही छे तेवी धामधूम करी, हजार ब्राह्मणोने जमाडी ते चूर्णने उपर कहेलां पात्रोमांना कोई पात्रमां राखी मूकवुं एटले भद्रोदय नामनुं चूर्णांजन सिद्ध थाय छे. आ अंजन सर्वदा राजाए आंजवुं जोइए.

तगर, मरी, जटामांसी अने पत्थरफूल एओने सम भागे लेवां, ए सर्वना जेटला वजननुं मणशील लेवुं, चार भाग तमालपत्र लेवुं, ए सर्वथी बमणो सुरमो लेवो अने सुरमा जेटलुंज जेठीमध लेवुं. ए सर्वनुं चूर्ण करी उपर प्रमाणेज सिद्ध करीने तेने दांत वगेरेना वासणमां राखी मूकवुं. आ अंजन पण प्रथम कहेला चूर्णांजनना जेवाज गुणो करे छे.

मणशील, देवदार, हळदर, दारूहळदर, त्रिफळा, मरी, लाख, लसण, मजीठ, सैंधव, एळची, सुवर्णमाक्षिक, पठाणी लोदर, लोढानुं चूर्ण, त्रांबानुं चूर्ण, तगर अने कुकडीना ईंडानां खोपरां एओने सम भागे लई दूधमां वाटीने गोळी बनाववी. आ गुटिकांजन खरजने, तिमिरने, शुक्रार्मने अने राती रेखाओने शांत करे छे.

कांसा उपरथी उखेडी नाखेला मेलनी मसी, जेठीमध, सैंधव, तगर अने एरडानुं मूळ एओने सम भागे लेवां अने बे जातनी भोरींगणीनां पुष्पोना अथवा मूळीयांना बे बे भाग लेवा. ए सर्वने बकरीनां दूधमां वाटी त्रांबाना वासण उपर ते कल्कना सातवार लेप करी तेनी वाटो बनावी छायामां सूकावी राखी मूकवी. आ वाटरूप अंजन नेत्रोनी सघळी वेदनाओने नष्ट करे छे.

हरडे, मोरथुथु अने जेठीमध एओने सम भागे लई तेमां षोडशांश जेटलां मरी नाखी ए सर्वने टाढा पाणीमां वाटीने तेनी वाट बनाववी. आ वाटरूप अंजन नेत्रोना सघळा विकारो उपर पथ्य छे.

जे कोई वाटरूप के गोळीरूप अंजन होय तेने प्रवीण वैद्ये आलस्य छोडी दई छीपर उपर टाढा पाणीमां के स्त्रीना दूधमां घसी रसक्रिया जेवुं अर्थात् बहु घाटुं पण नहीं, बहु पातळुं पण नहीं, सळीपर चडे एवुं अने आंगळीने चोटे तेवुं लासा मलमसमान बनावीने माणसोनी आंखोमां आंजवुं के जेथी आंखोमां क्षत वगेरे कशुं थाय नहीं.

अध्याय १९ मो.

१ अथातो नयनाभिघातप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'नयनाभिघात प्रतिषेध ' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे केहेलुं छे.

२ अभ्याहते तु नयने बहुधा नराणां
संरम्भरागतुमुलासु रुजासु धीमान् ।
नस्यप्रलेपपरिषेचनतर्पणाद्य-
मुक्तं पुनः क्षतजपित्तजशूलपथ्यम् ॥
दृष्टिप्रसादजननं विधिमाशु कुर्यात्
स्निग्धैर्हिमैश्च मधुरैश्च तथा प्रयोगैः ।
स्वेदाग्निधूमभयशोकरुजाभिघातै-
रभ्याहतामपि तथैव भिषक्चिकित्सेत् ॥
सद्योहते नयन एष विधिस्तदूर्ध्वं
स्यन्देरितो भवति दोषमवेक्ष्य कार्यः ।
अभ्याहतं नयनमीषदथास्यवाष्प-
संस्वेदितं भवति तन्निरुजं क्षणेन ॥

नेत्रना अभिघातरूप आगंतुज रोगनी चिकित्सा.

२ (आ तंत्रना सातमा अध्यायना २३ मा विषयना छेला पारीग्राफमां कह्युं छे के 'नेत्रो बीजा पण कोई प्रकारना अभिघातथी उपहत थईने फाटी जाय, दुःखित थई जाय के हीन थई जाय ए रोगने पण सनिमित्तलिंगनाश गणी लेवो के जेथी नेत्ररोगोनी छोंतेरनी संख्यामां वधारो न थाय' ए सनिमित्तलिंगनाशनी चिकित्सा अहीं केहेवामां आवे छे. ए विषयना पेहेला बे पारीग्राफोमां जे सनिमित्तलिंगनाश तथा अनिमित्तलिंगनाश कहेला छे तेओ तो असाध्यज छे.)

नेत्रपर लाकडी वगेरे कोई पदार्थ वागवाने लीधे नेत्रमां क्षोभथी तथा रताशथी तुमुलता धरावनारी वेदनाओ थई होय तो बुद्धिमान् वैद्ये तुरतज रक्ताभिष्यंद उपर तथा पित्ताभिष्यंद उपर केहेवामां आवेलो नस्य, प्रलेप, परिषेचन तथा तर्पण वगेरे विधि करवो (आ तंत्रनो १२ मो तथा दशमो अध्याय जुवो.) अने स्निग्ध, शीतल तथा मधुर प्रयोगोथी दृष्टिने निर्मळ करवानो विधि पण तुरतज करवो. जे दिवसे अभिघात थयो होय ते दिवसथी सात दिवससूधी आ प्रमाणे विधि करीने पछी तो आ तंत्रना नवमा अध्यायमां वाताभिष्यंद उपर जे विधि कह्यो छे ते विधि दोषनुं बलाबल जोईने करवो.

गरमीथी, अग्निथी, धूमाडाथी, भयथी, शोकथी के एवाज प्रकारना कोई पीडाकारक बीजा अभिघातथी नेत्र अभ्याहत थयुं होय तो पण बुद्धिमान् वैद्ये तुरतज रक्ताभिष्यंद उपर तथा पित्ताभिष्यंद उपर केहेवामां आवेलो नस्य, प्रलेप, परिषेचन तथा तर्पण वगेरे विधि करवो (आ तंत्रनो १२ मो तथा १० मो अध्याय जुवो.) अने स्निग्ध, शीतल तथा मधुर प्रयोगोथी दृष्टिने निर्मळ करवानो विधि पण तुरतज करवो. जे दिवसे अभिघात थयो होय ते दिवसथी सात दिवससूधी आ प्रमाणे विधि करीने पछी तो आ तंत्रना नवमा अध्यायमां वाताभिष्यंद उपर जे विधि कह्यो छे ते विधि दोषनुं बलाबल जोइने करवो.

नेत्रमां वस्त्र वगेरेनी झपाट लागवाथी झोंका वगेरे जराक अभिघात थयो होय तो मोहोडानी फूंकोथी मात्र स्वेदनज करवुं एटले ते नेत्र क्षणमात्रमां वेदनाथी रहित थई जाय छे.

१ लाकडी वगेरेथी थएला नेत्राभिघातनी, भयशोकादिकथी थएला नेत्राभिघातनी, अल्प नेत्राभिघातनी, बालकने थता कुकूणक नामना जूदाज नेत्ररोगनी अने बालकना फूलानी चिकित्सा विषेनो.

३ साध्यं क्षतं पटलमेकमुभे तु कृच्छ्रे
त्रीणि क्षतानि पटलानि विवर्जयेत्तु ।
स्यात्पिच्चितं च नयनं ह्यति चावसन्नं
स्रस्तं च्युतं च हतदृक्च भवेत्तु याप्यम् ॥
विस्तीर्णदृष्टि तनुरागमसत्प्रदर्शि
साध्यं यथास्थितमनाविलदर्शनं च ।

अभिघातनुं साध्यपणुं, कष्टसाध्यपणुं, असाध्यपणुं अने याप्यपणुं.

३ जे अभिघातथी नेत्रनुं एक पटल क्षत थयुं होय ते अभिघात साध्य छे. जे अभिघात थया छतां पण नेत्र यथास्थित रह्युं होय तथा स्वच्छ दर्शनवाळुं रह्युं होय ते अभिघात पण साध्य छे. जे अभिघातथी नेत्रनां बे पटल क्षत थयां होय ते अभिघात कष्टसाध्य छे. जे अभिघातथी नेत्रनां त्रण पटल क्षत थयां होय ते अभिघात असाध्य छे. जे अभिघातथी नेत्र पीचाई गयुं होय, अत्यंत ऊंडुं उतरी गयुं होय, शिथिल थई गयुं होय, लटकी गयुं होय, हणाएली कीकीवाळुं थयुं होय, विस्तीर्ण कीकीवाळुं थयुं होय, पातळी रताशवाळुं थयुं होय के रूपोने बीजा प्रकारनां देखे एवुं थयुं होय ते अभिघात याप्य छे.

४ प्राणोपरोधवमनक्षवकण्ठरोधै-
रुन्नम्यमाशु नयनं यदति प्रविष्टम् ॥
नेत्रे विलम्बिनि विधिर्विहितः पुरस्ता-
दुच्छिङ्घनं शिरसि वार्य्यवसेचनं च ।

अत्यंत ऊंडा पेसी गयेला नेत्रने माटे तथा लटकी गयेला नेत्रने माटे तुरत करवानी चिकित्सा.

४ जो नेत्र अभिघातने लीधे अत्यंत ऊंडुं पेसी गयुं होय तो प्राणायाम कराववाथी, वमन कराववाथी, हेडकी खवराववाथी तथा कंठने रोकी राखवाथी तेने तुरतज ऊंचुं करवुं.

जो नेत्र अभिघातथी लटकी गयुं होय तो तेने माटे चिकित्सास्थानना बीजा अध्यायना १४मा विषयमां जे चिकित्सा कही छे ते तुरत करवी, नाकथी श्वास ऊंचो लेवराववो अने माथापर जळनुं सेचन पण करवुं.

५ षट्सप्ततिर्नयनजा य इमे प्रदिष्टा
रोगा भवन्त्यमहतां महतां च तेभ्यः ॥
स्तन्यप्रकोपकफमारुतपित्तरक्तै-
र्बालाक्षिवर्त्मभव एव कुकूणकोऽन्यः ।
मृद्नाति नेत्रमतिकण्डुमथाक्षिकूट-
नासाललाटमपि तेन शिशुः स नित्यम् ॥
सूर्यप्रभां न सहते स्रवति प्रवृद्धं
तस्याहरेद्रुधिरमाशु विनिर्लिखेच्च ।
क्षौद्रायुतैश्च कटुभिः प्रतिसारयेत्तु
मातुः शिशोरभिहितं च विधिं विदध्यात् ॥
तं वामयेत्तु मधुसैन्धवसम्प्रयुक्तैः
पीतं पयः खलु फलैः खरमञ्जरीणाम् ॥
स्यात्पिप्पलीलवणमाक्षिकसंयुतैर्वा-
नैनं वमन्तमपि वामयितुं यतेत ।
दत्त्वा वचामशनदुग्धभुजे प्रयोज्य-
मूर्ध्वं ततः फलयुतं वमनं विधिज्ञैः ॥
जम्ब्वाम्रधात्र्यणुदलैः परिधावनार्थे
कार्यं कषायमवसेचनमेव चापि ।
आश्च्योतने च हितमत्र घृतं गुडूची-
सिद्धं तथाहुरपि च त्रिफलाविपक्वम् ॥
नेपालजामरिचशङ्खरसाञ्जनानि
सिन्धुप्रसूतगुडमाक्षिकसंयुतानि ।
स्यादञ्जनं मधुरसामधुताम्रकैर्वा
कृष्णायसं घृतपयोमधु वापि दग्धम् ॥
व्योषं पलाण्डुमधुकं लवणोत्तमं च
लाक्षां च गैरिकयुतां गुटिकाञ्जनं वा ।
निम्बच्छदं मधुकदार्वि सताम्रलोध्र-
मिच्छन्ति चात्र भिषजोऽञ्जनमंशतुल्यम् ॥

कुकूणकनां निदानो, लक्षणो तथा चिकित्साओ.

५ नेत्रमां थता जे छोंतेर रोगो केहेवामां

आव्या तेओ मोटी ऊमरनां माणसोने पण थाय छे अने नाहानी ऊमरनां माणसोने पण थाय छे. एओथी जूदो कुकूणक नामनो एक नेत्ररोग छे ते केवळ बालकनीज आंखोनी पांपणोमां थाय छे. आ रोग माताना धावणना दोषथी प्रकुपित थएला कफथी, वायुथी, पित्तथी अने रुधिरथी थाय छे.

जेने कुकूणक थयो होय ते बालक अत्यंत खरज आववाने लीधे पोताना नेत्रने हाथवते हमेश चोळ्या करे छे, नेत्रना डोडलाओने, नाकने तथा ललाटने पण हमेश चोळ्या करे छे, सूर्यनी प्रभानुं सहन करतो नथी अने नेत्रमांथी जळने स्रव्या करे छे.

कुकूणक थएल होय तो वैद्ये तुरत जळो लगावीने लोहीनुं स्रावण करवुं, गळजीभीनां पानडांओथी लेखन करवुं, सूंठ मरी तथा पीपळ एओना चूर्णने मधथी संयुक्त करीने तेथी प्रतिसारण (घर्षण) करवुं, चिकित्सास्थानना १७ मा अध्यायना १४ मा विषयमां कह्या प्रमाणे बालकनी माताने पण विधि कराववो अने अघेडानां फळोना चूर्णने मधथी तथा सैंधवथी युक्त करी अथवा पीपळ मध तथा सैंधव एओथी युक्त करी ते चूर्णने धावणमां मिश्रित करी दई ते धावण पाईने बालकने वमन पण कराववुं. बालक जो वमन करतो होय तो पछी तेने आ प्रकारथी वमन कराववानो प्रयत्न करवो नहीं. बालक जो अन्न पण खातो होय अने धावण पण धावतो होय अर्थात् एक वर्षथी उपरनो अने बे वर्षनी अंदरनो होय तो अघेडानां फळोना चूर्णने वजथी संयुक्त करी ते चूर्णने धावणमां मिश्रित करी दई ते धावण पाईने वमन कराववुं. बालक जो बे वर्षथी उपरनो होय तो अघेडानां फळोना चूर्णने मींढोळना चूर्णथी संयुक्त करी धावणनी साथे अथवा धावण वगरज पाईने वमन कराववुं. जांबू, आंबो, आमली तथा आसोंदरो एओनां पानडांओनो क्वाथ करी तेथी पांपणोने धोवी अने परिषेचन पण ए क्वाथथीज करवुं. गळोना अथवा त्रिफळाना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीनां टीपां नाखवां. मणशील, मरी, शंख अने रसवंती एओने सैंधव, गोळ तथा मध एओथी संयुक्त करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा मोरवेल, मध अने त्रांबानुं चूर्ण एओनुं अंजन करवुं अथवा गजवेलनुं चूर्ण, घी, दूध तथा मध एओने बाळी ते चूर्णनुं अंजन करवुं अथवा सूंठ, मरी, पीपळ, डुंगळी, (कांदो) जेठीमध, सैंधव, लाख अने सोनागेरू एओनी गोळी करीने तेनुं अंजन करवुं अथवा लींबडानां पानडां, जेठीमध, हळदर, दारूहळदर, ताम्रचूर्ण अने लोदर एओने सम भागे लई वाटी वाट बनावीने तेनुं अंजन करवुं.

६ स्रोतोजशङ्खदधिसैन्धवमर्द्धपक्षं
शुक्रं शिशोर्नुदति भावितमञ्जनेन ।
स्यन्दे कफादभिहितं क्रममाचरेच्च
बालस्य रोगकुशलोऽक्षिगदं जिघांसुः ॥

बालकना नेत्रमां पडेला फूलांनी चिकित्सा.

६ शंखना चूर्णने तथा सैंधवने दहींमां वाटी तेनी पुरमाने साडासात दिवससूधी वारंवार भावना दई पछी ते आंजवामां आवे तो तेथी बालकनुं फूलुं नष्ट थई जाय छे. प्रवीण वैद्ये बालकना फूलाने नष्ट करवा माटे कफाभिष्यंदना विषयमां कहेली चिकित्सा पण करवी. (आ तंत्रनो ११ मो अध्याय जुवो.)

७ समुद्र इव गम्भीरं नैव शक्यं चिकित्सितम् ।
वक्तुं निरवशेषेण श्लोकानामयुतैरपि ॥
सहस्रैरपि च प्रोक्तमर्थमल्पमतिर्नरः ।
तर्कग्रन्थार्थरहितो नैव गृह्णात्यपण्डितः ॥
तदिदं बहुगूढार्थं चिकित्साबीजमीरितम् ।
कुशलेनाभिपन्नं तद्बहुधाभिप्ररोहति ॥
तस्मान्यतिमता नित्यं नानाशास्त्रार्थदर्शिना ।
सर्वमूह्यमगाधार्थं शास्त्रमागमबुद्धिना ॥

आ ग्रंथमां कहेला संक्षिप्त चिकित्सारूप बीज उपरथी बुद्धिमान् वैद्ये ऊहापोह करी ते ते रोगोनी अनेक चिकित्साओ गोठवी लेवा विषे.

७ चिकित्सारूप विषय समुद्र जेवो अत्यंत गंभीर अने अपार होवाने लीधे करोड श्लोकोथी पण संपूर्ण कही शकाय एम नथी. कदाच असंख्य श्लोकोथी संपूर्ण कही बतावीए तो पण अल्पबुद्धिवाळो, तर्कशक्ति वगरनो अने ग्रंथना अर्थनुं रहस्य नहीं समजी शकनारो अपंडित माणस कदी पण संपूर्ण विषयनुं ग्रहण करी शके नहीं. आ प्रमाणे होवाने लीधे अत्यंत गूढ अर्थवाळुं आ मात्र चिकित्सारूप बीज केहेवामां आव्युं छे. आ बीजने प्रवीण माणस जो बराबर समजीने धारी लीये तो ते बीज अनेक प्रकारे ऊगे एम छे. आ कारणने लीधे अनेक शास्त्रोना अर्थनुं अवलोकन करनारा बुद्धिमान् पुरुषे बुद्धिथी आ शास्त्रनो तलस्पर्श करीने अगाध अर्थवाळा आ सघळा शास्त्र उपरथी ऊहापोहद्वारा चिकित्साओनी अनेक योजनाओ करी लेवी.

अध्याय २० मो.

उपक्रम.

१ अथातः कर्णगतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कर्णगतरोगविज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

१ कानना रोगोनां नामो, संख्या, निदानो, संप्राप्ति तथा लक्षणोना निरूपण विषयनो.

२ जो के बाधिर्य, विद्रधि, अरशो, अर्बुदो अने शोथो एओ विषे निदानस्थानमां तथा चिकित्सास्थानमां केहेवाई गयुं छे तो पण कानना रोगोना संग्रहने माटे तथा तेओना साध्यासाध्यपणाना विभागने माटे अहीं फरीवार निर्देश कर्यो छे. शूळनी तो पुनरुक्ति नथी. कारण के निदानस्थानमां वातव्याधिओना निदानमां केवळ वायुथी उत्पन्न थतुं शूळ कहेल छे अने अहीं दोषोथी आवृत थएला वायुथी थतुं शूळ कह्युं छे. (डल्लन.)

२ कर्णशूलं प्रणादश्च बाधिर्यं क्ष्वेड एव च ।
कर्णस्रावः कर्णकण्डूः कर्णगूथस्तथैव च ॥
कृमिकर्णप्रतीनाहौ विद्रधिर्द्विविधस्तथा ।
कर्णपाकः पूतिकर्णस्तथैवार्शश्चतुर्विधम् ॥
तथार्बुदं सप्तविधं शोफश्चापि चतुर्विधः ।
एते कर्णगता रोगा अष्टाविंशतिरीरिताः

कानना रोगोनां नामो तथा संख्या.

२ कर्णशूल, कर्णनाद, बाधिर्य, क्ष्वेड, कर्णस्राव, कर्णकंडू, कर्णगूथ, प्रतीनाह, कृमिकर्ण, क्षतथी के अभिघातथी थएलो विद्रधि, दोषथी थएलो विद्रधि, कर्णपाक, पूतिकर्ण, वातजन्य अरश, पित्तजन्य अरश, कफजन्य अरश, सन्निपातजन्य अरश, वातजन्य अर्बुद, पित्तजन्य अर्बुद, कफजन्य अर्बुद, रक्तजन्य अर्बुद, मांसजन्य अर्बुद, मेदोजन्य अर्बुद, सर्वात्मक अर्बुद, वातजन्य शोथ, पित्तजन्य शोथ, कफजन्य शोथ अने रुधिरजन्य शोथ ए रीते कानना अठ्यावीश रोगो [२] छे.

३ समीरणः श्रोत्रगतोऽन्यथाचरः
समन्ततः शूलमतीव कर्णयोः ।
करोति दोषैश्च यथास्वमावृतः
स कर्णशूलः कथितो दुराचरः ॥

कर्णशूळनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३ कानमां चोमेर अवळी रीते फरतो अने पोतपोतानां निदानोथी प्रकोप पामेला पित्त, कफ अने रुधिर ए दोषोथी वींटाएलो वायु कानमां ते ते दोषना संबंधवाळां शूळने उत्पन्न करे छे ए रोग कर्णशूळ केहेवाय छे. आ रोग कष्टसाध्य छे. (कर्णशूळमां जो मूर्छा, दाह, ज्वर, खांसी, श्वास अने वमन ए उपद्रवो थएल होय तो कर्णशूळने असाध्यज समजवुं.)

४ यदा तु नाडीषु विमार्गमागतः
स एव शब्दाभिवहासु तिष्ठति ।
शृणोति शब्दान्विविधांस्तदा नरः
प्रणादमेनं कथयन्ति चामयम् ॥

कर्णनादनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

४ प्रकोप पामेलो वायु विरुद्ध मार्गमां चालनार थईने ज्यारे कानना शब्दवाहिनी नामनी नाडीओमां रहे छे त्यारे भेरी, मृदंग, शंख तथा भ्रमर वगेरेना जेवा नाद सांभळवामां आवे छे ए **कर्णनाद** केहेवाय छे.

५ स एव शब्दाभिवहा यदा शिराः
कफानुयातो व्यनुसृत्य तिष्ठति ।
तदा नरस्याप्रतिकारसेविनो
भवेत्तु बाधिर्यमसंशयं खलु ॥

बाधिर्यनां (बेहेरापणानां) निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

५ केवळ वायु अथवा कफथी संसृष्ट थएलो वायु ज्यारे शब्दनुं वहन करनारी शिराओने वींटाईने रहे छे त्यारे माणस जो योग्य चिकित्सानुं सेवन न करे तो ते वायुथी अवश्य **बाधिर्य** नामनो रोग उत्पन्न थाय छे. (बालकने थएलुं, वृद्धने थएलुं अने लांबा काळथी थएलुं बाधिर्य असाध्य छे.)

६ श्रमात्क्षयाद्रूक्षकषायभोजनात्
समीरणः शब्दपथे व्यवस्थितः ।
विरिक्तशीर्षस्य च शीतसेविनः
करोति हि क्ष्वेडमतीव कर्णयोः ॥

क्ष्वेडनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

६ श्रमथी, धातुक्षयथी, रूक्षभोजनथी, कषायभोजनथी के शिरोविरेचन कऱ्या पछी शीतनुं सेवन करवाथी वायु प्रकुपित थई शब्दनुं वहन करनारा स्रोतमां रहीने कानोमां वांसना जेवा अवाजने अत्यंत उत्पन्न करे छे ए **क्ष्वेड** केहेवाय छे. (कर्णनाद केवळ वायुथी थाय छे तथा तेमां भेरी वगेरेना जेवा अनेक शब्दो थाय छे अने क्ष्वेड तो पित्तादिकथी संसृष्ट थएला वायुथी थाय छे तथा तेमां एकलो वांसना अवाज जेवोज अवाज थाय छे एटलुं कर्णनाद अने क्ष्वेड एओ वच्चे अंतर छे.)

७ शिरोऽभिघातादथ वा निमज्जतो
जले प्रपाकादथ वापि विद्रधेः ।
स्रवेत्तु पूयं श्रवणोऽनिलावृतः
स कर्णसंस्राव इति प्रकीर्तितः ॥

कर्णस्रावनुं निदान तथा लक्षण.

७ माथाने अभिघात थवाथी अथवा जळमां डूबवाथी अथवा कानना विद्रधिना पाकवाथी वायुवते घेराएलो कान परूनो, जळनो के रसनो स्राव करे ए **कर्णस्राव** केहेवाय छे.

८ कफेन कण्डूः प्रचितेन कर्णयो-
र्भृशं भवेत्स्रोतसि कर्णसंज्ञिते ।

कर्णकंडूनुं निदान तथा लक्षण.

८ कानमां अत्यंत जमा थएला कफथी कानना स्रोतमां बहुज खरज आवे ए **कर्णकंडू** केहेवाय छे. (बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के कफथी संयुक्त थएला वायुथी आ रोग उत्पन्न थाय छे.)

९ विशोषिते श्लेष्मणि पित्ततेजसा
नृणां भवेत्स्रोतसि कर्णगूथकः ॥

कर्णगूथनुं निदान तथा लक्षण.

९ कानना स्रोतमां एकठो थएलो कफ पित्तनी गरमीथी सूकातां कानना स्रोतमां मेल उत्पन्न थाय छे ए **कर्णगूथ** केहेवाय छे.

१० स कर्णगूथो द्रवतां यदा गतो
विलायितो घ्राणमुखं प्रपद्यते ।
तदा स कर्णप्रतिनाहसंज्ञितो
भवेद्विकारः शिरसोऽभितापनः ॥

प्रतीनाहनुं निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

१० ए कानो मेल ज्यारे स्वेदादिकथी पी-

મળી દ્રવરૂપ થઈને નાકમાં તથા મોહોડામાં આવે છે ત્યારે તે **પ્રતીનાહ** કેહેવાય છે. આ વિકાર સઘળા માથામાં અભિતાપને ઉત્પન્ન કરે છે. (બીજા ગ્રંથોમાં કહ્યું છે કે પ્રતીનાહથી 'અર્દ્ધાવભેદક' નામનો માથાનો રોગ કે જે આધાશીશી કેહેવાય છે તે થાય છે. પ્રતીનાહ કફથી તથા વાયુથી થાય છે અથવા સન્નિપાતથી થાય છે.)

११ यदा तु मूर्छन्त्यथ वापि जन्तवः
सृजन्त्यपत्यान्यथ वापि मक्षिकाः ।
तदञ्जनत्वाच्छ्रवणो निरुच्यते
भिषग्भिराद्यैः कृमिकर्णकस्तु सः ॥

કૃમિકર્ણનું નિદાન તથા લક્ષણ.

११ જ્યારે કાનમાં માંસના સડાને લીધે કીડા પડે છે અથવા માંખીઓ કાનમાં પોતાનાં બચ્ચાં કે ઝીણા જીવડા મૂકે છે ત્યારે કાન કીડાઓથી સંયુક્ત થઈ જાય છે એ રોગને વિદેહ આદિ પ્રાચીન વૈદ્યો કીડા ઉપરથી **કૃમિકર્ણક** કેહે છે. (વિદેહે આ રોગને સાન્નિપાતિક કહ્યો છે.)

१२ क्षताभिघातप्रभवस्तु विद्रधि-
र्भवेत्तथा दोषकृतोऽपरः पुनः ।
स रक्तपीतारुणमस्रमास्रवे-
त्प्रतोदधूमायनदाहचोषवान् ॥

બે પ્રકારના વિદ્રધિઓનાં નિદાનો તથા લક્ષણો.

१२ એક વિદ્રધિ ક્ષતથી કે અભિઘાતથી થાય છે અને બીજો વિદ્રધિ દોષથી થાય છે. ક્ષતથી કે અભિઘાતથી વિદ્રધિ થયો હોય તો કાનમાંથી રાતા, પીળા તથા અરુણ વર્ણના રુધિરનો સ્રાવ થાય છે અને ભોંકાયા જેવી વ્યથા, ધૂમાડા નીકળવા જેવું, બળતરા તથા અગ્નિના સમીપથી થતા તાપ જેવું થાય છે. દોષથી વિદ્રધિ થયો હોય તો તે વિદ્રધિ જે દોષથી થયો હોય તે દોષનાં લક્ષણો તેમાં જોવામાં આવે છે કે જે લક્ષણો નિદાનસ્થાનના નવમા અધ્યાયમાં કેહેવામાં આવ્યાં છે. ક્ષતથી કે અભિઘાતથી થએલો વિદ્રધિ **ક્ષતવિદ્રધિ** કેહેવાય છે અને દોષથી થએલો વિદ્રધિ **દોષવિદ્રધિ** કેહેવાય છે. (વિદ્રધિ ક્ષતથી થયો હોય કે અભિઘાતથી થયો હોય તો પણ તે આગંતુક છે માટે તેને એક ગણવામાં આવ્યો છે..)

१३ भवेत्प्रपाकः खलु पित्तकोपतो
विकोथविक्लेदकरश्च कर्णयोः ।

કર્ણપાકનું નિદાન તથા લક્ષણ.

१३ પિત્તના પ્રકોપથી કાનોમાં પાક, સંડેલાપણું તથા કચકચતાપણું થાય છે એ રોગ **કર્ણપાક** કેહેવાય છે.

१४ स्थिते कफे स्रोतसि पित्ततेजसा
विलाप्यमाने भृशसम्प्रतापनात् ॥
अवेदनो वाप्यथ वा सवेदनो
घनं स्रवेत्पूति स पूतिकर्णकः ।

પૂતિકર્ણકનું નિદાન તથા લક્ષણ.

१४ કાનના સ્રોતમાં રહેલો કફ પિત્તના તેજથી અત્યંત તપીને પીગળવા લાગતાં કાનમાંથી વેદનાવાળો અથવા વેદના વગરનો અને દુર્ગંધવાળો ઘાટા પરૂનો સ્રાવ થાય છે એ રોગ **પૂતિકર્ણક** કેહેવાય છે.

१५ प्रादिष्टलिङ्गान्यर्शांसि तत्वत-
स्तथैव शोफार्बुदलिङ्गमीरितम् ॥
मया पुरस्तात्प्रसमीक्ष्य योजये-
दिहैव तानि प्रयतो भिषग्वरः ॥

ચાર પ્રકારના અરશો, સાત પ્રકારના અર્બુદો અને ચાર પ્રકારના સોજાઓ એઓનાં નિદાનો તથા લક્ષણો.

१५ વાતજન્ય અરશ, પિત્તજન્ય અરશ, કફજન્ય અરશ અને સન્નિપાતજન્ય અરશ એઓનાં નિદાનો તથા લક્ષણો વિચક્ષણ વૈદ્યે સાહુચેતી રાખીને નિદાનસ્થાનના બીજા અધ્યાયના ९–१–७

अने १४ मा विषयो उपरथी जाणी लेवां अने तेओनी योजना करी लेवी. (कानमां ए चार प्रकारनांज अरशो थाय छे पण अन्य प्रकारनां अरशो थतां नथी ए स्थानकनोज प्रभाव छे.)

वातजन्य अर्बुद, पित्तजन्य अर्बुद, कफजन्य अर्बुद, रक्तजन्य अर्बुद, मांसजन्य अर्बुद अने मेदोजन्य अर्बुद एओनां निदानो तथा लक्षणो विचक्षण वैद्ये साहुचेती राखीने निदानस्थानना ११ मा अध्यायना १०–११–१२–१३ अने १४ मा विषयो उपरथी जाणी लेवां अने तेओनी योजना करी लेवी. सर्वात्मक अर्बुदनुं निदान तथा लक्षण के जे निदानस्थानमां कह्युं नथी ते विदेहादिप्रणीत शालाक्यशास्त्र उपरथी जाणी लेवुं.

वातजन्यशोथ, पित्तजन्यशोथ, कफजन्यशोथ अने रुधिरजन्यशोथ एओनां निदानो तथा लक्षणो विचक्षण वैद्ये साहुचेती राखीने सूत्रस्थानना १७ मा अध्यायना त्रीजा विषय उपरथी जाणी लेवां अने तेओनी योजना करी लेवी. (कानमां ए चार प्रकारनाज शोथो थाय छे पण अन्य प्रकारना थता नथी ए स्थानकनोज प्रभाव छे.)

अध्याय २१ मो.

उपक्रम.

१ अथातः कर्णगतरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कर्णगतरोगप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सामान्यं कर्णरोगेषु घृतपानं रसायनम्।
अव्यायामोऽशिरःस्नानं ब्रह्मचर्यमकत्थनम्॥

सघळा कानना रोगोनी सामान्य चिकित्सा.[1]

२ घी पीवुं, (जम्या पछी घी पीवुं,) रसायन प्रयोगो करवा, माथे नाहावुं नहीं, मेहेनत के कसरत करवी नहीं, ब्रह्मचर्य पाळवुं अने घणुं के ऊंचा अवाजथी बोलवुं नहीं ए सघळा कर्णरोगोनी सामान्य चिकित्सा छे. (मूलमां जे रसायन शब्द छे तेने बदले रसाशन शब्द बोलीने केटलाएक व्याख्यान करे छे के मांसना रसानी साथे भोजन करवुं.)

३ कर्णशूले प्रणादे च बाधिर्यक्ष्वेडयोरपि।
चतुर्णामपि रोगाणां सामान्यं भेषजं विदुः॥
स्निग्धं वातहरैः स्नेहैर्नरं स्नेहविरेचितम्।
नाडीस्वेदैरुपचरेत्पिण्डस्वेदैस्तथैव च॥
बिल्वैरण्डार्कवर्षाभूदधित्थोन्मत्तशिग्रुभिः।
बस्तगन्धाश्वगन्धाभ्यां तर्कारीयववेणुभिः॥
आरनालैः शृतैरेभिर्नाडीस्वेदः प्रयोजितः।
कफवातसमुत्थानं कर्णशूलं निरस्यति॥
मीनकुक्कुटलावानां मांसजैः पयसापि वा।
पिण्डैः स्वेदं च कुर्वीत कर्णशूलनिवारणम्॥
अश्वत्थपत्रखल्लं वा विधाय बहुपत्रकम्।
तैलाक्तं मस्तुसम्पूर्णं निदध्याच्छ्रवणोपरि॥
यत्तैलं च्यवते तस्मात् खल्लादङ्गारसाधितात्।
तत्प्राप्तं श्रवणस्रोतः सद्यो गृह्णाति वेदनाम्॥
क्षौमगुग्गुलवगुरुभिः सघृतैर्धूपयेच्च तम्।
भक्तोपरि हितं सर्पिर्बस्तिकर्म्म च पूजितम्॥
निरन्नो निशि तत्सर्प्पिः पीत्वोपरि पयः पिबेत्।
मूर्द्धबस्तिषु नस्ये च मस्तिष्के परिषेचने॥
शतपाकं बलातैलं प्रशस्तं चापि भोजने।
कण्टकारीमजाक्षीरे पक्त्वा क्षीरेण तेन च॥
विपचेत्कुक्कुटवसां कर्णयोस्तत्प्रपूरणम्।
तण्डुलीयकमूलानि फलमङ्कोठजं तथा॥
अहिंस्रा केन्दुकामूलं सरलं देवदारु च।
लशुनं शृङ्गवेरं च तथा वंशावलेखनम्॥
कल्कैरेषां तथाम्लैश्च पचेत्स्नेहं चतुर्विधम्।
वेदनायाः प्रशान्त्यर्थं हितं तत्कर्णपूरणम्॥

[1] कानना रोगोनी चिकित्सा विषेनो.

लशुनार्द्रकशिग्रूणां मुरुङ्गया मूलकस्य च ।
कदल्याः स्वरसः श्रेष्ठः कदुष्णः कर्णपूरणे ॥
शृङ्गवेररसः क्षौद्रं सैन्धवं तैलमेव च ।
कदुष्णं कर्णयोर्देयमेतद्वा वेदनापहम् ॥
वंशावलेखसंयुक्ते मूत्रे चाजाविके भिषक् ।
सर्पिः पचेत्तेन कर्णं पूरयेत्कर्णशूलिनः ॥
महतः पञ्चमूलस्य काण्डमष्टादशाङ्गुलम् ।
क्षौमेणावेष्ट्य संसिच्य तैलेनादीपयेत्ततः ॥
यत्तैलं च्यवते तेभ्यो धृतेभ्यो भाजनोपरि ।
ज्ञेयं तद्दीपिकातैलं सद्यो गृह्णाति वेदनाम् ॥
कुर्यादेवं भद्रकाष्ठे कुष्ठे काष्ठे च सारले ।
मतिमान्दीपिकातैलं कर्णशूलनिबर्हणम् ॥
अर्काङ्कुरानम्लपिष्टांस्तैलाक्तान् लवणान्वितान्।
सन्निदध्यात्स्नुहीकाण्डे कोरिते तच्छदावृते ॥
पुटपाकक्रमस्विन्नान्पीडयेदा रसागमात् ।
सुखोष्णं तद्रसं कर्णे दापयेच्छूलशान्तये ॥
कपित्थमातुलुङ्गाम्लशृङ्गवेररसैः शुभैः ।
सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णं तच्छूलविनिवृत्तये ॥
कर्णं कोष्णेन चुक्रेण पूरयेत्कर्णशूलिनः ।
समुद्रफेनचूर्णेन युक्त्या वाप्यवचूर्णयेत् ॥
अष्टानामिह मूत्राणां मूत्रेणान्यतमेन वा ।
कोष्णेन पूरयेत्कर्णं कर्णशूलोपशान्तये ॥
मूत्रेष्वम्लेषु वातघ्ने गणे च क्वथिते भिषक् ।
पचेच्चतुर्विधं स्नेहं पूरणं तच्च कर्णयोः ॥
एता एव क्रियाः कुर्यात् पित्तघ्नैः पित्तसंयुते ।
काकोल्यादौ दशक्षीरं तिक्तं चात्र हितं हविः॥
क्षीरवृक्षप्रवालेषु मधूके चन्दने तथा ।
कल्कक्वाथे परं पक्वं शर्करामधुकैः सरैः ॥
इङ्गुदीसर्षपस्नेहौ सकफे पूरणे हितौ ।
तिक्तौषधानां यूषाश्च स्वेदाश्च कफनाशनाः ॥
सुरसादौ कृतं तैलं पञ्चमूले महत्यपि ।
मातुलुङ्गरसः शुक्तं लशुनार्द्रकयो रसः ॥
एकैकः पूरणे पथ्यस्तैलं तेष्वथवा कृतम् ।
तीक्ष्णा मूर्द्धविरेकाश्च कवलाश्चात्र पूजिताः ॥
कर्णशूलविधिः कृत्स्नः पित्तघ्नः शोणितावृते ।
शूलप्रणादबाधिर्य्यक्ष्वेडानां तु प्रकीर्तितम् ॥
सामान्यतो विशेषेण बाधिर्ये पूरणं शृणु ।

कर्णशूल, कर्णनाद, बाधिर्य अने क्ष्वेड एओनी सामान्य चिकित्सा.

३ काननां दरदीने वायुनुं हरण करनारां द्रव्योथी पकावेला स्नेहोना पानथी तथा अभ्यंगथी स्निग्ध करी अने स्नेहोथीज विरेचित करीने पछी नाडीस्वेदो (चिकित्सास्थानना ३२ मा अध्यायनो चोथो विषय जुवो.) देवा अने तलनी, अडदनी तथा चोखानी खीचडी वगेरेना पिंडोथी स्वेदो देवा.

बीली, एरडो, आकडो, साटोडी, कोठ, धंतूरो, सरगवो, तलवणी, आसोंद, अरणी,. जव अने वांस एओने आरनालमां (फोतरा वगरना काचा अथवा पाका घऊंना आथामां) पकावी तेनो नाडीस्वेद देवामां आवे तो ते स्वेद कफथी तथा वायुथी उत्पन्न थएला कर्णशूलने नष्ट करे छे.

माछलां, कुकडो अने लावांपक्षी एओनां मांसोना पिंडोथी अथवा ओटेला दूधना पिंडोथी स्वेद देवामां आवे तो ते स्वेद कर्णशूलनुं निवारण करे छे.

पीपळानां घणां पानडांओनो दूनो बनावी, तेने अंदरना भागमां तैलथी खरडी, तेमां दहींनी तर भरी, ते दूनाने अंगारापर गरम करी कान उपर मुकवो. ए दूनामांथी झरतुं तैल कानना स्रोतमां प्राप्त थईने वेदनाने तुरत बंध पाडे छे.

अलसीना तंतु, गुगळ अने अगरु एओने घीथी संयुक्त करी तेओनी कानने धुमाडी देवी. (स्वेदन कर्या पछी आ धुमाडी देवी.)

जम्या पछी वायुने हरनारां द्रव्योथी पकावेलुं घी पावुं ए उत्तम छे.

शिरोबस्ति देवो ए पण उत्तम छे. (आ तंत्रना १८ मा अध्यायनो छट्ठो विषय वांचो.)

राते भोजन नहीं देतां, वायुने हरनारां द्रव्योथी पकावेलुं घी पाईने ते उपर दूध पावुं.

शिरोबस्तिओमां, नस्यमां, माथापर पोतां मूकवा वगेरेमां, परिषेचनमां तथा भोजनमां पण शतपाकतैल(चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायनो २३ मो विषय जुवो.)नी अने बलातैल-(चिकित्सास्थानना १९ मा अध्यायनो १२ मो विषय जुवो.)नी योजना करवी ए उत्तम छे. चिकित्सास्थानना १९ मा अध्यायना ११ मा विषयमां कहेला शतपाकबलातैलनी योजना करवी ए पण उत्तम छे.

बकरीना दूधमां भोरींगणीने पकावी ते दूधथी कुकडानी चरबीने पकावीने ते चरबी कानमां रेडवी.

वावडींगनां मूळ, अंकोळनां फळ, कंथार, टींबरूनां मूळ, लूखोदेवदार, देवदार, लसण, सूंठ अने वांसनी छोल एओनो कल्क नाखी दही तथा छाश वगेरे अम्ल पदार्थोमां चारे प्रकारनो स्नेह पकावी ते स्नेहथी कर्णपूरण करवुं (स्नेह कानमां नाखवो) ए वेदनानी शांतिने माटे उत्तम छे.

लसण, आदु, सरगवो, रातो सरगवो, मूळा अने केळ एओनो स्वरस काहाडी ते स्वरसने सेहेवाय तेवो गरम करी तेथी कर्णपूरण करवुं ए पण श्रेष्ठ छे. (लसण वगेरेमांथी एकएकना स्वरसथी कर्णपूरण करवुं ए पण श्रेष्ठ छे.)

आदुनो रस, मध, सैंधव अने तैल एओने सेहेवाय तेवां गरम करी तेथी कर्णपूरण करवामां आवे तो वेदना नष्ट थई जाय छे.

घीने प्रथम वांसनी छोलथी युक्त करेला गाहरना मूत्रमां पकावी अने ते पछी वांसनी छोलथी संयुक्त करेला बकरीना मूत्रमां पकावी ते घीथी कर्णपूरण करवामां आवे तो तेथी कर्णशूल नष्ट थई जाय छे. (घीने बदले तैल पण पकावाय छे.)

बृहत्पंचमूलनां अढार अढार आंगळनां काष्ठो लई तेओने अलसीना वस्त्रथी वींटी तैलथी भींजावीने सळगाववां अने पछी एक वासण उपर धरी राखवां. एओमांथी जे तैल झरे ते **दीपिकातैल** केहेवाय छे. आ तैल वेदनाने तुरत अटकावे छे.

एवीज रीते बुद्धिमान् वैद्ये तेलीयो देवदार, कठ अने लूखोदेवदार एओनां अढार अढार आंगळनां काष्ठोने अलसीना वस्त्रथी वींटी तैलथी भींजावी, सळगावी, वासणपर धरी राखीने तेओनुं तैल झराववुं. आ दीपिकातैलथी पण काननुं शूळ नष्ट थाय छे.

आकडानां कोमळ पल्लवोने कांजी तथा दही वगेरे अम्लरसोमां वाटी तैलथी तथा सैंधवथी संयुक्त करी, कोतरेला थोरना काष्ठमां भरी ते काष्ठपर आंकडानां पानडां वींटी ते काष्ठने पुटपाकनी रीति प्रमाणे पकावी नीचोवीने रस काहाडी लेवो. आ रसने सेहेवाय तेवो गरम राखी कानमां नाखवामां आवे तो तेथी शूळनी शांति थाय छे.

कोठ, बीजोरूं, चुको (खाटी लूणी) अने आदु एओना स्वच्छ रसोने सेहेवाय तेवा गरम करी कानमां नाखवामां आवे तो तेथी कर्णशूलनी निवृत्ति थाय छे.

समुद्रफीणनुं चूर्ण बनावी ते चूर्ण युक्तिथी कानमां भभराववामां आवे तो तेथी कर्णशूलनी निवृत्ति थाय छे.

सूत्रस्थानना ४९ मा अध्यायमां गाय वगेरेनां जे आठ मूत्रो केहेवामां आव्यां छे तेओमांना कोई पण मूत्रने सेहेवाय तेवुं गरम करीने कानमां नाखवामां आवे तो तेथी कर्णशूलनी निवृत्ति थाय छे.

आठे प्रकारोनां मूत्रो, सुरा तथा आरनाल वगेरे अम्ल पदार्थो अने विदारिगंधादि गण एओनो काथ करी तेमां चारे प्रकारनो स्नेह पकावी

तेथी जो कर्णपूरण करवामां आवे तो कर्णशूळनी निवृत्ति थाय छे.

जो पित्तथी संसृष्ट थएला वायुथी कर्णशूल उत्पन्न थयुं होय तो उपर कहेली क्रियाओने पित्तनुं हरण करनारां द्रव्योथी गोठवीने तेओनी योजना करवी ए सामान्य चिकित्सा छे. विशेष चिकित्सा ए छे के काकोल्यादिगणनो कल्क नाखी दशगणा दूधमां पकावेलुं घी अथवा तिक्तद्रव्योना कल्कथी तथा क्काथथी पकावेलुं घी अथवा वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां कोमळ पल्लव, महुडो, चंदन, साकर, जेठीमध अने विरेचनद्रव्यो एओना कल्कथी तथा क्काथथी पकावेलुं घी ए कर्णशूळ उपर योजवुं.

जो कफथी संसृष्ट थएला वायुथी कर्णशूल उत्पन्न थयुं होय तो इंगोळीयाना तैलथी अथवा सरसीया तैलथी कर्णपूरण करवुं, तिक्त औषधोना यूषो देवा अने कफने नष्ट करनारा रूक्ष स्वेदो देवा. सुरसादिगणना कल्कथी तथा क्काथथी पकावेलुं तैल अथवा बृहत्पंचमूलना कल्कथी तथा क्काथथी पकावेलुं तैल हितकारी थाय छे. बीजोरानो रस अथवा ते रसमां पकावेलुं तैल हितकारी थाय छे. अथाणानुं पाणी अथवा ते पाणीमां पकावेलुं तैल हितकारी थाय छे. लसणनो तथा आदुनी रस अथवा ते रसमां पकावेलुं तैल पण हितकारी थाय छे. तीक्ष्ण शिरोविरेचनो अने तीक्ष्ण कवळो पण ए कर्णशूळ उपर हितकारी थाय छे.

रुधिरथी संसृष्ट थएला वायुथी कर्णशूल उत्पन्न थयुं होय तो पित्तथी संसृष्ट थएला वायुथी थएला कर्णशूल उपर जे चिकित्सा केहेवामां आवी ते सघळी चिकित्सा हितकारी थाय छे.

कर्णशूळ, कर्णनाद, बाधिर्य अने क्ष्वेड ए चारे रोगोने उपर कहेली चिकित्साओ नष्ट करे छे. आ सामान्य चिकित्सा कही. हवे बाधिर्य उपर विशेष चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो.

४ गवां मूत्रेण बिल्वानि पिष्ट्वा तैलं विपाचयेत्॥
सजलं च सदुग्धं च बाधिर्य्ये कर्णपूरणम् ।
सितामधुकबिम्बीभिः सिद्धं.वाजे पयस्यथ ॥
सिद्धं वा बिल्वनिःक्काथे शीतीभूतं तदुद्धृतम् ।
पुनः पचेद्दशक्षीरं सितामधुकचन्दनैः ॥
बिल्वाम्बुगाढं तत्तैलं बाधिर्य्ये कर्णपूरणम् ।
वक्ष्यते यः प्रतिश्याये विधिः सोऽप्यत्र पूजितः॥
वातव्याधिषु यश्चोक्तो विधिः स च हितो भवेत् ।

बाधिर्यनी विशेष चिकित्सा.

४ गायोना मूत्रमां बीलां वाटी ते कल्क नाखी जळमां तथा दूधमां तैल पकाववुं. आ तैल कानमां नाखवाथी बेहेरापणुं नष्ट थाय छे.

साकर, जेठीमध अने कडवी घोली एओनो कल्क नाखी बकरीना दूधमां अने बीलांना क्काथमां तैल पकाववुं. ए तैलने बीलांना क्काथमांथी थंडुं पाडी हाथवते काहाडी लई वळी पण बीलांना क्काथमां मिश्रित करी तेमां साकर, जेठीमध तथा चंदन एओनो कल्क नाखी फरीवार दशगणा दूधमां पकाववुं. आ तैल कानमां नाखवामां आवे तो बेहेरापणुं टळी जाय छे.

आ तंत्रना २४ मा अध्यायना १२ मा विषयमां प्रतिश्याय उपर जे चिकित्सा केहेवामां आवशे ते चिकित्सा पण बेहेरापणा उपर हितकारी थाय छे.

चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २० मा विषयमां वातव्याधिओ उपर जे चिकित्साओ कही छे ते चिकित्साओ पण बेहेरापणा उपर हितकारी थाय छे.

५ कर्णस्रावे पूतिकर्णे तथैव क्रिमिकर्णके ॥
समानं कर्म कुर्वीत योगान्वैशेषिकानपि ।
शिरोविरेचनं चैव धूपनं पूरणं तथा ॥
प्रमार्जनं धावनं च वीक्ष्य वीक्ष्यावचारयेत्
राजवृक्षादितोयेन सुरसादिगणेन वा ॥
कर्णप्रक्षालनं कार्यं चूर्णैरेषां च पूरणम् ।

चूर्णं पञ्चकषायोत्थं कपित्थरसयोजितम् ॥
कर्णस्रावे प्रशंसन्ति पूरणं मधुना सह ।
सर्जत्वक्चूर्णसंयुक्तः कार्पासीफलजो रसः ॥
योजितो मधुना वापि कर्णस्रावे प्रशस्यते ।
लाक्षासर्जरसौ वापि चूर्णितौ कर्णपूरणम् ॥
सशैवलमहावृक्षजम्ब्वाम्रप्रसवायुतम् ।
कुलीरक्षौद्रमण्डूकीसिद्धं तैलं च पूजितम् ॥
तिन्दुकान्यभया रोध्रं समङ्गामलकं मधु ।
पूरणं चात्र पथ्यं स्यात्कपित्थरसयोजितम् ॥
रसमाम्रकपित्थानां मधूकधवशालजम् ।
पूरणार्थं प्रशंसन्ति तैलं वा तैर्विपाचितम् ॥
प्रियङ्गुमधुकाम्बष्ठाधातकीशिलपर्णिभिः ।
मञ्जिष्ठालोध्रलाक्षाभिः कपित्थस्य रसेन वा ॥
पचेत्तैलं तदास्रावमवगृह्णाति पूरणात् ।
घृष्टं रसाञ्जनं नार्य्याः क्षीरेण क्षौद्रसंयुतम् ॥
प्रशस्यते चिरोत्थेऽपि सास्रावे पूतिकर्णके ।
निर्गुण्डीस्वरसे तैलं सिन्धुधूमरजो गुडः ॥
पूरणः पूतिकर्णस्य शमनो मधुसंयुतः ।
कृमिकर्णकनाशार्थं कृमिघ्नं योजयेद्विधिम्
वार्त्ताकुधूमश्च हितः सार्षपस्नेह एव च ।
कृमिघ्नं हरितालेन गवां मूत्रयुतेन च ॥
गुग्गुलुः कर्णदौर्गन्ध्ये धूपनं श्रेष्ठमुच्यते ।
छर्दनं धूमपानं च कवलस्य च धारणम् ॥

कर्णस्राव, पूतिकर्ण तथा कृमिकर्ण एओनी चिकित्सा.

९ कर्णस्राव, पूतिकर्ण अने कृमिकर्णक एओनी उपर सामान्य चिकित्साओ पण करवी अने विशेष चिकित्साओ पण करवी.

शिरोविरेचन देवुं, धूमाडी देवी, कर्णपूरण करवुं, पीछी वगेरेथी कानने साफ करवा अने क्वाथथी कानोने धोवा ए सामान्य चिकित्साओ छे. दोषोने तथा दूष्यो वगेरेने जोई जोईने आ चिकित्साओनी योजना करवी. आरग्वधादि गणना क्वाथथी अथवा सुरसादि गणना क्वाथथी कानोने धोवा अने ए गणोनांज चूर्णोथी कर्णपूरण करवुं. हवे विशेष चिकित्साओ कहीए छीए.

टींबरू, हरडे, लोदर, मजीठ अने आमळां एओना चूर्णने कोठना रसथी तथा मधथी संयुक्त करीने तेथी कर्णपूरण करवुं ए कर्णस्राव उपर हितकारी थाय छे.

राळना झाडनी छालनुं चूर्ण करी तेने वणना फळना रसथी अथवा मधथी संयुक्त करीने कानमां नाखवुं ए कर्णस्राव उपर हितकारी थाय छे.

लाखनुं तथा राळनुं चूर्ण करी तेथी कर्णपूरण करवामां आवे तो कर्णस्राव शांत थाय छे.

शेवाल? थोरनां पानडां, जांबूनां पानडां अने आंबानां पानडां एओना क्वाथथी अने काकडाशींगी, मध तथा ब्राह्मी एओना कल्कथी तैल पकावीने ते तैलथी कर्णपूरण करवुं ए कर्णस्राव उपर हितकारी थाय छे.

आंबानां पानडां, कोठनां पानडां, महुडानां पानडां, धावडानां पानडां अने राळना झाडनां पानडां एओना स्वरसथी कर्णपूरण करवुं ए कर्णस्राव उपर हितकारी थाय छे.

आंबानां पानडां,. कोठनां पानडां, महुडानां पानडां, धावडानां पानडां अने राळना झाडनां पानडां एओना क्वाथथी तथा कल्कथी तैल पकावी ते तैलथी कर्णपूरण करवामां आवे तो तेथी कर्णस्राव टळी जाय छे.

मोटी कंथार, महुडो, चुको, धावणी, मणशील, शालिपर्णी, मजीठ, लोदर अने लाख एओनो कल्क नाखी चोगणा कोठना पानडांना रसमां तैल पकावी तेथी कर्णपूरण करवामां आवे तो कर्णस्राव निवृत्त थाय छे.

रसवंतीने स्त्रीना दूधमां घसी मधथी संयुक्त करीने तेथी कर्णपूरण करवामां आवे तो लांबा काळथी थएलो अने स्राववाळो पूतिकर्ण पण शांत थई जाय छे.

नगडना स्वरसथी अने सैंधव, धूमाडानी ंस तथा गोळ एओना कल्कथी तैल पकावी तेने मधथी संयुक्त करीने तेथी कर्णपूरण करवामां आवे तो पूतिकर्ण शांत थई जाय छे.

आ तंत्रना ५४ मा अध्यायमां कृमिओने हणवा माटे जे चिकित्सा केहेवामां आवशे ते चिकित्सानी योजना करवाथी कृमिकर्ण नष्ट थई जाय छे.

पाकेला अने सुकाएला रींगडानो धूमाडो पावामां आवे अने कानमां पण एज धूमाडी देवामां आवे तो तेथी कृमिकर्ण नष्ट थई जाय छे.

सरसीयुं तैल कानमां नाखवामां आवे तो तेथी कृमिकर्णक नष्ट थई जाय छे.

वावडींग अने हरताल एओना चूर्णने गायना मूत्रथी संयुक्त करी तेथी कर्णपूरण करवामां आवे तो तेथी कानमां कीडाओए करेलुं दुर्गंधपणुं नष्ट थई जाय छे.

वमन करावबुं, दोषोने हरनारूं धूमपान करावबुं अने दोषोने हरनारूं कवलधारण करावबुं एओथी पण कीडाओए करेलुं दुर्गंधपणुं नष्ट थई जाय छे.

६ कर्णक्ष्वेडे हितं तैलं सार्षपं चैव पूरणम् ।

क्ष्वेडनी विशेष चिकित्सा.

६ सरसीया तैलथी कर्णपूरण करवुं ए क्ष्वेड उपर हितकारी थाय छे.

७विद्रधौ वापि कुर्वीत विद्रध्युक्तं चिकित्सितम्॥

विद्रधिनी चिकित्सा.

७ कानमां विद्रधि थएल होय तो सरसीया तैलथी कर्णपूरण करवुं अने चिकित्सास्थानना १६ मा अध्यायमां विद्रधिओने माटे जे चिकित्साओ कहेली छे तेओ पण दोषादिकना अनुसारथी करवी. (विद्रधि जो वायुथी उत्पन्न थएलो, काचो अने वेदनावाळो होय तो तिलना तैलथी सेचन करवुं.)

८ प्रक्लेद्य धीमांस्तैलेन स्वेदेन प्रविलाप्य च ।
शोधयेत्कर्णविट्कं तु भिषक् सम्यक्छलाकया ॥

कर्णगूथनी चिकित्सा.

८ बुद्धिमान् वैद्ये कर्णगूथने तैलथी प्रक्लिन्न करी, स्वेदनथी पीगळावीने सारी रीते सळीवते तेनुं निर्हरण करवुं. (कानना मेलने सळीवते काहाडवो.)

९ नाडीस्वेदोऽथ वमनं धूमो मूर्द्धविरेचनम् ।
विधिश्च कफहृत्सर्वः कर्णकण्डूमपोहति ॥

कर्णकंडूनी चिकित्सा.

९ नाडीस्वेद, वमन, वैरेचनिक धूमपान, शिरोविरेचन अने कफनुं हरण करनारो सघळो विधि एओ कर्णकंडूने नष्ट करे छे.

१० अथ कर्णप्रतीनाहे स्नेहस्वेदौ प्रयोजयेत् ।
ततो विरिक्तशिरसः क्रियां प्राप्तां समाचरेत् ॥

प्रतीनाहनी चिकित्सा.

१० प्रतीनाह थएल होय तो स्नेहनी तथा स्वेदनी योजना करवी अने शिरोविरेचन कऱ्या पछी नस्य वगेरे उचित क्रियाओ पण करवी.

११ कर्णपाकस्य भैषज्यं कुर्यात्पित्तविसर्पवत् ।

कर्णपाकनी चिकित्सा.

११ कर्णपाक थएल होय तो चिकित्सास्थानना १७ मा अध्यायना चोथा विषयमां पित्तविसर्प उपर जे चिकित्सा कही छे ते करवी.

१२ कर्णच्छिद्रे वर्त्तमानं कीटं क्लेदमलादि वा॥
शृङ्गेणापहरेद्धीमानथ वापि शलाकया ।

कानमां आगंतुक अर्थात् बाहारथी दाखल थएला कीडा वगेरेनी प्रसंगोपात्त चिकित्सा.

१२ कानना छिद्रमां जे कीडो, क्लेद के मेल वगेरे बाहारथी दाखल थएल होय तेनुं बुद्धिमान् वैद्ये शींगडावते चूसीने निर्हरण करवुं अथवा सळीथी निर्हरण करवुं. (कानमां पेसी गएला

कीडानां लक्षणो विषे बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के पतंगीयो के कानखजूरा वगेरे कोई जीवडो कानमां पेसी गयो होय तो सघळी वस्तुओनी तथा क्रियाओनी उपर अणगमो थाय छे, व्याकुलपणुं थाय छे, अत्यंत वेदना थाय छे, कानमां भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे, फरफराट थया करे छे, कीडो अंदर फरतो होय ते समयमां तीव्र पीडा थाय छे अने कीडो स्थिर रहे त्यारे मंदवेदना थाय छे.)

१३ शेषाणां तु विकाराणां प्राक् चिकित्सितमीरितम् ॥

कानमां थता चार प्रकारना अरशो, सात प्रकारनां अर्बुदो अने चार प्रकारना सोजाओ एओनी चिकित्सा.

१३ कानमां थता चार प्रकारना अरशोनी चिकित्सा चिकित्सास्थानना छठ्ठा अध्यायमां कह्या प्रमाणे दोषोना अनुसारथी करवी. छ प्रकारना अर्बुदोनी चिकित्सा चिकित्सास्थानना अढारमा अध्यायमां कह्या प्रमाणे दोषोना अनुसारथी करवी (सातमा सर्वात्मक अर्बुदनी चिकित्सा केहेवामां आवी नथी माटे ते विदेहादिप्रणीत शालाक्य शास्त्रमां जोईने करवी) अने चार प्रकारना सोजाओनी चिकित्सा चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायमां कह्या प्रमाणे दोषोना अनुसारथी करवी.

अध्याय २२ मो.

उपक्रम.

१ अथातो नासागतरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'नासागतरोगविज्ञानीय' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे केहेलुं छे.

२ अपीनसः पूतिनस्यं नासापाकस्तथैव च ।
तथा शोणितपित्तं च पूयशोणितमेव च ॥
क्षवथुर्भ्रंशथुर्दीप्तो नासानाहः परिस्रवः ।
नासाशोषेण सहिता दशैकश्चेरिता गदाः ॥
चत्वार्यर्शांसि चत्वारः शोफाः सप्तार्बुदानि च ।
प्रतिश्यायाश्च ये पञ्च वक्ष्यन्ते सचिकित्सिताः ॥
एकत्रिंशन्मितास्ते तु नासारोगाः प्रकीर्तिताः ।

नाकना रोगोनां नामो तथा संख्या.

२ अपीनस, (आ रोग पीनस पण केहेवाय छे.) पूतिनस्य, नासापाक, रक्तपित्त, पूयशोणित, क्षवथु, भ्रंशथु, दीप्त, नासानाह, परिस्राव, नासाशोष, वातजन्य अरश, पित्तजन्य अरश, कफजन्य अरश, सन्निपातजन्य अरश, वातजन्य शोफ, पित्तजन्य शोफ, कफजन्य शोफ, रुधिरजन्य शोफ, वातजन्य अर्बुद, पित्तजन्य अर्बुद, कफजन्य अर्बुद, रक्तजन्य अर्बुद, मांसजन्य अर्बुद, मेदोजन्य अर्बुद, सर्वात्मक अर्बुद, वातजन्य प्रतिश्याय, पित्तजन्य प्रतिश्याय, कफजन्य प्रतिश्याय, सान्निपातिक प्रतिश्याय अने रक्तजन्य प्रतिश्याय ए रीते नाकना एकत्रीश रोगो छे.

३ आनह्यते यस्य विधूप्यते च
पापच्यते क्लिद्यति चापि नासा ॥
न वेत्ति यो गन्धरसांश्च जन्तु-
र्जुष्टं व्यवस्येत्तमपीनसेन ।
तं चानिलश्लेष्मभवं विकारं
ब्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिङ्गम् ॥

अपीनस के जे पीनस पण केहेवाय छे तेनुं निदान तथा लक्षण.

३ नाक सज्जड रीते बंधाई जाय, संतापयुक्त

---

१ नाकना रोगोनां नामो, संख्या, निदानो तथा लक्षणोना निरूपण विषयनो.

२ जो के चार प्रकारना अरशो अने छ प्रकारना अर्बुदो एओ विषे निदानस्थानमां केहेवाई गयुं छे तो पण नाकना रोगोना संग्रहने माटे अहीं तेओनो फरीवार निर्देश कर्यो छे.

स्त्या करे, जाणे रंधाई जतुं होय तेम पाकी जाय, क्लेदयुक्त थई जाय अने एम थवाथी सुगंधनी के दुर्गंधनी परीक्षा करी शके नहीं तथा तेने लीधे जीभ पण मधुर आदि रसोने जाणी शके नहीं ए रोग **अपीनस** केहेवाय छे. आ रोग के जे मुख्यत्वे करी वायुथी तथा कफथी थाय छे तेमां वायुथी उत्पन्न थएला तथा कफथी उत्पन्न थएला प्रतिश्यायना जेवां लक्षणो पण होय छे. (प्रतिश्यायनां लक्षणो आ तंत्रना २४ मा अध्यायना ९ मा तथा ७ मा विषयमां जुवो.)

४ दोषैर्विदग्धैर्गलतालुमूले
संवासितो यस्य समीरणस्तु ।
निरेति पूतिर्मुखनासिकाभ्यां
तं पूतिनस्यं प्रवदन्ति रोगम् ॥

पूतिनस्यनुं निदान तथा लक्षण.

४ गळाना तथा ताळवाना मूळमां बगडीने स्वरूपथी भ्रष्ट थएला तथा मूर्छित थएला पित्त, कफ अने रुधिर ए दोषोए पोताना विकृत गंधथी संयुक्त करेलो दुर्गंधवाळो पवन मोहोडामांथी तथा नाकमांथी नीकळया करे ए रोग **पूतिनस्य** केहेवाय छे. (दोषोनी साथे रेहेवाने लीधे रुधिरने पण दोषशब्दथी कह्युं छे.)

५ घ्राणाश्रितं पित्तमरूंषि कुर्या-
द्यस्मिन्विकारे बलवांश्च पाकः ।
तं नासिकापाकमिति व्यवस्ये-
द्विक्लेदकोथावपि यत्र दृष्टौ ॥

नासापाकनु लक्षण.

९ नाकमां रहेलुं पित्त व्रणोने उत्पन्न करे, नाक अत्यंत पाकी जाय, नाकमां क्लेद रह्या करे अने दुर्गंध पण रह्या करे ए रोग **नासापाक** केहेवाय छे.

६ चतुर्विधं द्विप्रभवं द्विमार्गं
वक्ष्यामि भूयः खलु रक्तपित्तम् ।

रक्तपित्तनुं निदान तथा लक्षण.

६ रक्तपित्तनुं लक्षण आ तंत्रना ४९ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे के जे रक्तपित्त वातात्मक, पित्तात्मक, कफात्मक अने सन्निपातात्मक एम चार प्रकारनुं छे, यकृत्थी तथा प्लीहाथी उत्पन्न थाय छे अने गुदा वगेरे नीचा मार्गोथी पण चाले छे तथा नाक वगेरे ऊंचा मार्गोथी पण चाले छे.

७ दोषैर्विदग्धैरथ वापि जन्तो-
र्ललाटदेशेऽभिहतस्य तैस्तैः ॥
नासा स्रवेत्पूयमसृग्विमिश्रं
तं पूयरक्तं प्रवदन्ति रोगम् ।

पूयशोणितनुं लक्षण.

७ पित्तना तथा रुधिरना आधिक्यथी विरुद्ध परिणामने प्राप्त थएला दोषोने लीधे अथवा ललाटमां ते ते पदार्थोनो अभिघात थवाने लीधे नाक लोहीथी मिश्रित थएला परूने स्रवे ए रोग **पूयशोणित** केहेवाय छे.

८ घ्राणाश्रिते मर्म्मणि सम्प्रदुष्टो
यस्यानिलो नासिकया निरेति ॥
कफानुयातो बहुशः सशब्द-
स्तं रोगमाहुः क्षवथुं विधिज्ञाः ।
तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतो वा
भावान्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा ॥
सूत्रादिभिर्वा तरुणास्थिमर्म्म-
ण्युद्घाटिते यः क्षवथुर्निरेति ।

क्षवथुनुं निदान तथा लक्षण.

८ नाकना आश्रयभूत शृंगाटक नामना मर्ममां बीगडेलो कफसहित वायु घणी घणी छींकोना शब्द करीने नाकमांथी नीकळया करे ए रोगने विद्वान् लोको **दोषजन्य क्षवथु** केहे छे.

राई वगेरे तीक्ष्ण पदार्थोनो उपयोग करवाथी अथवा तीखा पदार्थोने अत्यंत सुंघवाथी अथवा सूर्यनी सामे जोवाने लीधे कफ पीगळवाथी अथवा

दोरा वगेरेवते नाकना तरुणास्थि मर्मनुं (शृंगाटकनी शिरानुं) घर्षण के चालन थवाथी छींको आव्या करे छे ए रोगने वैद्यलोको **आगंतुक क्षवथु** केहे छे.

९ प्रभ्रश्यते नासिकयैव यश्च
सान्द्रो विदग्धो लवणः कफस्तु ॥
प्राक्सञ्चितो मूर्ध्नि च पित्ततप्ते
तं भ्रंशथुं व्याधिमुदाहरन्ति ।

भ्रंशथुनुं निदान तथा लक्षण.

९ प्रथम माथामां जमा थएलो, विरुद्ध पाक पामेलो, घाटो अने खारापणावाळो कफ माथुं पित्तथी तपतां नाकमांथी अत्यंत पडवा लागे ए रोग **भ्रंशथु** केहेवाय छे.

१० घ्राणे भृशं दाहसमन्विते तु
विनिःसरेद्धूम इवेह वायुः ॥
नासा प्रदीप्तेव च यस्य जन्तो-
र्व्याधिं तु तं दीप्तमुदाहरन्ति ।

दीप्तनुं लक्षण.

१० नाक अत्यंत बळतराथी संयुक्त थतां नाकमांथी धूमाडा जेवो पवन नीकळे अने नाक जाणे प्रज्वलित थतुं होय एवी वेदना थाय ए रोग **दीप्त** केहेवाय छे.

११ कफावृतो वायुरुदानसंज्ञो
यदा स्वमार्गे विगुणः स्थितः स्यात् ॥
घ्राणं वृणोतीव तदा स रोगो
नासाप्रतीनाह इति प्रदिष्टः ।

नासानाहनुं निदान तथा लक्षण.

११ कफथी वींटाएलो उदान नामनो वायु पोताना मार्गमां (श्वास लेवाना मार्गमां) बगडेलो थईने रहे अने तेथी जाणे नाकने बांधी लईनेज बेठो होय एम जणाय ए रोग **नासानाह** केहेवाप छे.

१२ अजस्रमच्छं सलिलप्रकाशं
यस्याविवर्णं स्रवतीह नासा ॥
रात्रौ विशेषेण हि तं विकारं
नासापरिस्रावमिति व्यवस्येत् ॥

परिस्राव के जे नासापरिस्राव पण केहेवाय छे तेनुं लक्षण.

१२ नाक (शृंगाटक मर्म) आछा, पाणी जेवा तथा बगडेला वर्ण वगरना स्रावने निरंतर स्रव्या करे अने राते तो विशेष स्रव्या करे ए रोग **परिस्राव** केहेवाय छे.

१३ घ्राणाश्रिते श्लेष्मणि मारुतेन
पित्तेन गाढं परिशोषिते च ॥
समुच्छ्वसित्यूर्द्ध्वमधश्च कृच्छ्रा-
द्यस्तस्य नासापरिशोष उक्तः ।

नासाशोषनुं निदान तथा लक्षण.

१३ नाकमां रहेलो कफ वायुथी तथा पित्तथी अत्यंत सूकाई जतां ऊंचो तथा नीचो श्वास मांड मांड लई शकाय छे ए रोग **नासाशोष** केहेवाय छे.

१४ दोषैस्त्रिभिस्तैः पृथगेकशश्च
ब्रूयात्तथार्शांसि तथैव शोफान् ॥
शालाक्यसिद्धान्तमवेक्ष्य वापि
सर्वात्मकं सप्तममर्बुदं तु ।
रोगः प्रतिश्याय इह प्रदिष्टः
स वक्ष्यते पञ्चविधः पुरस्तात् ॥
शोफाश्च शोफविज्ञाने नासास्रोतोव्यवस्थिताः ।
निदानेऽर्शांसि निर्दिष्टान्येवं तानि विभावयेत् ॥

चार प्रकारना अरशो, चार प्रकारना सोजाओ, सात प्रकारनां अर्बुदो तथा पांच प्रकारना प्रतिश्यायो एओनां लक्षणो तथा निदानो.

१४ वातजन्य अरश, पित्तजन्य अरश, कफजन्य अरश अने सन्निपातजन्य अरश एओनां लक्षणो तथा निदानो निदानस्थानना बीजा अध्यायना ५–६–७ अने १४ मा विषयो उपरथी जाणी लेवां अने तेओनी योजना करी लेवी.

(नाकमां ए चार प्रकारनांज अरशो थाय छे पण अन्य प्रकारनां अरशो थतां नथी ए स्थानकनोज प्रभाव छे.).

वातजन्य शोफ, पित्तजन्य शोफ, कफजन्य शोफ अने रुधिरजन्य शोफ एओनां निदानो तथा लक्षणो सूत्रस्थानना १७ मा अध्यायना त्रीजा विषय उपरथी जाणी लेवां अने तेओनी योजना करी लेवी. (नाकमां ए चार प्रकारनाज शोफो थाय छे पण बीजा प्रकारना थता नथी ए स्थानकनोज प्रभाव छे.)

वातजन्य अर्बुद, पित्तजन्य अर्बुद, कफजन्य अर्बुद, रक्तजन्य अर्बुद, मांसजन्य अर्बुद अने मेदोजन्य अर्बुद एओनां निदानो तथा लक्षणो निदानस्थानना ११ मा अध्यायना ११–१२–१३ अने १४ मा विषयो उपरथी जाणी लेवां अने तेओनी योजना करी लेवी. सातमा सर्वात्मक अर्बुदनुं निदान तथा लक्षण के जे निदानस्थानमां कह्युं नथी ते विदेहादिप्रणीत शालाक्यशास्त्र उपरथी जाणी लेवुं.

पांचे प्रकारना प्रतिश्यायोनां निदानो तथा लक्षणो आ तंत्रना २४ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे ते उपरथी जाणी लेवां.

अध्याय २३ मो.

उपक्रम

१ अथातो नासागतरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'नासागतरोगप्रतिषेधं[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ पूर्वोद्दिष्टे पूतिनस्ये च जन्तोः
स्नेहस्वेदौ छर्दनं स्रंसनं च।
युक्तं भक्तं तीक्ष्णमल्पं लघु स्या-
दुष्णं तोयं धूमपानं च काले ॥
हिङ्गु व्योषं वत्सकाख्यं शिवाटी
लाक्षा बीजं सौरभं कट्फलं च।
उग्रा कुष्ठं तीक्ष्णगन्धा विडङ्ग
श्रेष्ठं नित्यं चावपीडे करञ्जम् ॥
एतैर्द्रव्यैः सार्षपं मूत्रयुक्तं
तैलं धीमान्नस्यहेतोः पचेच्च।

अपीनसनी तथा पूतिनस्यनी चिकित्सा.

२ अपीनस के पूतिनस्य थएल होय तो स्नेहन करवुं, स्वेदन करवुं, वमन कराववुं, विरेचन कराववुं, तीक्ष्ण अल्प मात्रावाळुं तथा हलकुं योग्य भोजन देवुं, ऊनुं पाणी पावुं अने योग्य समये धूमपान पण कराववुं. हींग, सूंठ, मरी, पीपळ, इंद्रजव, धोळी साटोडी, लाख, बीबलो, तुंबरूफळ, कायफळ, वज, कठ, सरगवो, वावडींग अने करंज एओनुं नित्य अवपीडन नस्य देवुं ए पण श्रेष्ठ छे. गाय वगेरेनां मूत्रोमां उपर कहेलां हींग वगेरे द्रव्योनो कल्क नाखी ते मूत्रोमां सरसीयुं तैल पकावीने विद्वान् वैद्ये तेनुं नस्य पण देवुं.

३ नासापाके पित्तहृत्संविधानं
कार्यं सर्वं बाह्यमाभ्यन्तरं च ॥
हृत्वा रक्तं क्षीरवृक्षत्वचश्च
साज्याः सेका योजनीयाश्च लेपाः।

नासापाकनी चिकित्सा

३ नासापाक थएल होय तो पित्तनुं हरण करे एवी बाहारनी तथा अंदरनी सघळी क्रियाओ करवी, (अभ्यंग तथा परिषेक वगेरे क्रियाओ बाहारनी केहेवाय छे अने आहार तथा स्नेहपान वगेरे क्रियाओ अंदरनी केहेवाय छे.) अने लोहीनुं स्रावण करीने घीथी मिश्रित करेली वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी छालोना लेपो करवा तथा सेचनो पण तेओनांज करवां.

---

१ नाकना रोगोनी चिकित्साविषेनो.

४ वक्ष्याम्यूर्ध्वं रक्तपित्तोपशान्तिं
नाडीवत्स्यात्पूयरक्ते चिकित्सा ॥
वान्ते सम्यक् चावपीडं वदन्ति
तीक्ष्णं धूमं शोधनं चात्र नस्यम् ।

रक्तपित्तनी तथा पूयशोणितनी चिकित्सा.

४ रक्तपित्तनी चिकित्सा आ तंत्रना ४९ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे.

पूयशोणित थएल होय तो चिकित्सास्थानना १७ मा अध्यायना ९ मा विषयमां पैत्तिक नाडीनी जे चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते करवी, वमन कराव्या पछी सारी रीते अवपीड नस्य देवुं, तीक्ष्ण धूमपान करावबुं अने शोधन नस्यनी पण योजना करवी. (केटलाएक केहे छे के वमन कराव्या पछी अवपीड नस्य देवुं इत्यादिक जे चिकित्सा कही ते पूयशोणितने माटे नथी पण क्षवथुने माटे तथा भ्रंशथुने माटे छे.)

५ क्षेप्यं नस्यं मूर्द्धवैरेचनीयै-
र्नाड्या चूर्णं क्षवथौ भ्रंशथौ च ॥
कुर्यात्स्वेदान्मूर्ध्नि वातामयघ्नान्
स्निग्धान्धूमान्यद्यदन्यद्धितं च ।

क्षवथुनी तथा भ्रंशथुनी चिकित्सा.

५ क्षवथु के भ्रंशथु थएल होय तो शिरोविरेचन द्रव्योना चूर्णने नळीमां भरीने ते चूर्णोनुं प्रधमन नस्य देवुं, माथामां वायुना रोगने हणनारा स्वेदो देवा, स्निग्ध धूमपानो कराववां अने बीजूं पण शिरोबस्ति वगेरे जे कांई विधान हितकारी जणाय ते करवुं.

६ दीप्ते रोगे पैत्तिकं संविधानं
कुर्यात्सर्वं स्वादु यच्छीतलं च ॥

दीप्तनी चिकित्सा.

६ दीप्त थएल होय तो पित्तसंबंधी सघळुं विधान के जे मधुर अने शीतल होय छे ते करवुं.

७ नासानाहे स्नेहपानं प्रधानं
स्निग्धा धूमा मूर्द्धवस्तिश्च नित्यम्
बलातैलं सर्वथैवोपयोज्यं
वातव्याधावन्यदुक्तं च यद्यत् ॥

नासानाहनी चिकित्सा.

७ नासानाह थएल होय तो जम्या पछी स्नेहपान करावबुं ए मुख्य चिकित्सा छे. ए उपरांत नित्य स्निग्ध धूमपानो कराववां, शिरोबस्ति देवो, पीवामां तथा अभ्यंग वगेरेमां सर्वथा बलातैलनो उपयोग कराववो (बलातैल विषे चिकित्सास्थानना पंदरमा अध्यायनो १२ मो विषय जुवो.) अने चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायमां वातव्याधिओ उपर जे जे अणुतैलादिक विधानो कह्यां छे तेओनी पण योजना करवी.

८ नासास्रावे घ्राणतश्चूर्णमुक्तं
नाड्या देयं योऽवपीडश्च तीक्ष्णः ।
तीक्ष्णं धूमं देवदार्वग्निकाभ्यां
मांसं वाजं युक्तमत्रादिशन्ति ॥

परिस्रावनी चिकित्सा.

८ नासास्राव (परिस्राव) थएल होय तो शिरोविरेचन द्रव्योनां चूर्णने नळीमां भरीने ते चूर्णनुं प्रधमन नस्य देवुं, आ अध्यायना बीजा विषयमां कहेलुं हींग वगेरे द्रव्योनुं तीक्ष्ण अवपीड नस्य पण देवुं, देवदार तथा चित्रक अथवा अजमोद एओनो तीक्ष्ण धूमाडो पीवराववो अने भोजनमां योग्य प्रकारथी बकरानुं मांस देवुं.

९ नासाशोषे क्षीरसर्पिः प्रधानं
सिद्धं तैलं चाणुकल्पेन नस्ये ।
सर्पिःपानं भोजनं जाङ्गलैश्च
स्नेहस्वेदः स्नैहिकश्चापि धूमः ॥

नासाशोषनी चिकित्सा.

९ नासाशोष थएल होय तो दूधने मथीने काहाडेला घीनुं अथवा चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २२ मा विषयमां कहेला अणुतैलनुं नस्य देवुं ए मुख्य चिकित्सा छे. ए उपरांत

भोजनना मध्यमां घी पीवराववुं, जांगल प्राणीओनां मांसोनी साथे भोजन देवुं, स्नैहिक स्वेद देवो अने स्नैहिक धूमपान कराववुं.

१० शेषान् रोगान् घ्राणजान् सन्नियच्छेदुक्तं तेषां यद्यथा संविधानम् ।

अरशोनी, शोफोनी, अर्बुदोनी अने प्रतिश्यायोनी चिकित्सा.

१० नाकमां थता चार प्रकारना अरशोनी चिकित्सा चिकित्सास्थानना छट्ठा अध्यायमां कह्याप्रमाणे दोषोना अनुसारथी करवी.

नाकमां थता चार प्रकारना शोफोनी चिकित्सा चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायमां कह्याप्रमाणे दोषोना अनुसारथी करवी.

नाकमां थता सात प्रकारनां अर्बुदोमां छ प्रकारनां अर्बुदोनी चिकित्सा चिकित्सास्थानना अढारमा अध्यायमां कह्याप्रमाणे दोषोना अनुसारथी करवी अने सातमा सर्वात्मक अर्बुदनी चिकित्सा केहेवामां आवी नथी माटे ते विदेहादिप्रणीत शालाक्यशास्त्रमां जोईने ते प्रमाणे करवी.

पांच प्रकारना प्रतिश्यायोनी चिकित्सा आ तंत्रना २४ मा अध्यायमां एटले आ अध्याय पछीना अध्यायमां केहेवामां आवशे ते प्रमाणे दोषोना अनुसारथी करवी.

अध्याय २४ मो.

उपक्रम.

१ अथातः प्रतिश्यायप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'प्रतिश्यायप्रतिषेध[१]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ नारीप्रसङ्गः शिरसोऽभितापो
धूमो रजः शीतमतिप्रतापः ।
संधारणं मूत्रपुरीषयोश्च
सद्यः प्रतिश्यायनिदानमुक्तम् ॥

प्रतिश्यायनां सद्योजनक निदानो[२].

२ मैथुनमां अत्यंत प्रवृत्तिथी, धूमाडा वगेरेने लीधे माथाने संताप थवाथी, अत्यंत धूमाडो के रज नाकमां पेसवाथी, शीतथी, अत्यंत तापथी अने मूत्रना तथा विष्ठाना वेगने रोकी राखवाथी तुरतज प्रतिश्याय उत्पन्न थाय छे.

३ चयं गता मूर्द्धनि मारुतादयः
पृथक् समस्ताश्च तथैव शोणितम् ।
प्रकोप्यमाणा विविधैः प्रकोपणै-
र्नृणां प्रतिश्यायकरा भवन्ति हि ॥

प्रतिश्यायनां चयादिक्रमजनक निदानो[३].

३ वायु अथवा पित्त अथवा कफ अथवा ए त्रणे दोषो अथवा रुधिर एओ पोतपोतानां स्था-

---

१ प्रतिश्यायोनां निदानो, लक्षणो तथा चिकित्सा विषेनो.

२ एक सद्योजनक (तुरत उत्पन्न करनार) अने बीजूं चयादिक्रमजनक (संचय वगेरेना क्रमे करी उत्पन्न करनार) एम बे प्रकारनुं निदान होय छे. एओमां सद्योजनक निदान प्रबल होवाथी क्रमनी गरज राखतुं नथी. कह्युं छे के 'प्राणीयोना वायु वगेरे दोषो केवल संचय पामीनेज प्रकुपित थाय छे एम नथी पण जो दोषोना हेतुओ जथाबंध थई जाय तो ते हेतुओना जोरने लीधे समय प्राप्त थया वगर पण प्रकुपित थाय छे.'

३ चयादिक्रमजनक निदानमां ए क्रम छे के निदानथी दोषोनो संचय थाय छे, संचयथी प्रकोप थाय छे, प्रकोपथी प्रसर थाय छे, प्रसरथी स्थानसंश्रय थाय छे, स्थानसंश्रयथी व्यक्ति थाय छे अने व्यक्ति थया पछी भेद थाय छे. (संचय, प्रकोप, प्रसर, स्थानसंश्रय, व्यक्ति अने भेद एओनां लक्षणो सूत्रस्थानना एकवीशमा अध्यायमां कहेलां छे ते जोवां.)

नकोमां संचय पामी ज्यारे पोतपोताने प्रकुपित करनारां अनेक प्रकारनां निदानोथी प्रकुपित थाय छे त्यारे माथामां प्रतिश्यायने उत्पन्न करे छे.

४ शिरोगुरुत्वं क्षवथोः प्रवर्त्तनं
तथाङ्गमर्दः परिहृष्टरोमता ।
उपद्रवाश्चाप्यपरे पृथग्विधा
नृणां प्रतिश्यायपुरःसराः स्मृताः ॥

प्रतिश्यायनुं पूर्वरूप.

४ माथानुं जाणे मोटो बोजो पड्यो होय एवुं जडपणुं, छीकोनुं प्रवृत्त थवुं, अंगोनुं भांगवुं, रुवाडांओनुं ऊभुं थवुं अने बीजा पण जूदा जूदा प्रकारना उपद्रवो, ज्यारे प्रतिश्याय थवानो होय त्यारे पेहेलांथी थाय छे.

५ आनद्धा पिहिता नासा तनुस्रावप्रवर्तिनी।
गलताल्वोष्ठशोषश्च निस्तोदः शङ्खयोस्तथा ॥
स्वरोपघातश्च भवेत् प्रतिश्यायेऽनिलात्मके ।

वायुथी थएला प्रतिश्यायनुं लक्षण.

५ नाक रोकाई जाय, मळना चयथी भरपूर थई जाय, स्तब्ध थई जाय, नाकमांथी पातळो स्राव थया करे, गळुं ताळवुं तथा होठ सूकाया करे, लमणाओमां भोकाया जेवी व्यथा थाय अने स्वरनो उपघात थई जाय तो जाणवुं के वायुथी थएलो प्रतिश्याय छे.

६ उष्णः सपीतकः स्रावो घ्राणात् स्रवति पैत्तिके॥
कृशोऽतिपाण्डुः संतप्तो भवेत्तृष्णाभिपीडितः।
सधूमं सहसा वह्निं वमतीव च मानवः ॥

पित्तथी थएला प्रतिश्यायनुं लक्षण.

६ नाकमांथी ऊनो तथा जराक पीळाशवाळो स्राव थया करे, शरीर दुबळुं अत्यंत पांडुवर्णवाळुं तथा संतप्त थई जाय, तरश बहु लाग्या करे अने नाकमांथी जाणे धूमाडावाळो अग्नि एकदम नीकळतो होय एम जणाय तो जाणवुं के पित्तथी थएलो प्रतिश्याय छे.

७ कफः कफकृते घ्राणाच्छुक्लः शीतःस्रवेन्मुहुः।
शुक्लावभासः शूनाक्षो भवेद्गुरुशिरोमुखः ॥
शिरोगलौष्ठताल्वूनां कण्डूयनमतीव च ।

कफथी थएला प्रतिश्यायनुं लक्षण.

७ नाकमांथी सफेद तथा टाढो कफ वारंवार स्रव्या करे, शरीर सफेद जेवुं थई जाय, आंखो सोजावाळी थाय, माथुं तथा मोहोडुं भारे थई जाय अने माथामां, गळामां, होठमां तथा ताळवामां अत्यंत खरज आवती होय तो जाणवुं के कफथी थएलो प्रतिश्याय छे.

८ भूत्वा भूत्वा प्रतिश्यायो योऽकस्माद्विनिवर्त्तते।
संपक्को वाप्यपक्को वा स सर्वप्रभवः स्मृतः ।
लिङ्गानि चैव सर्वेषां पीनसानां च सर्वजे ॥

त्रणे दोषोथी थएला प्रतिश्यायनुं लक्षण.

८ जे प्रतिश्याय उत्पन्न थई थईने पाक्या पछी अथवा पाक्या विनाज अकस्मात् बंध पडी जाय अने जेमां उपर लखेला त्रणे प्रतिश्यायोनां लक्षणो जोवामां आवे ते प्रतिश्यायने त्रणे दोषोथी उत्पन्न थएलो समजवो. (आ घणुं करीने असाध्य छे.)

९ रक्तजे तु प्रतिश्याये रक्तास्रावः प्रवर्त्तते ।
ताम्राक्षश्च भवेज्जन्तुरुरोघातप्रपीडितः ॥
दुर्गन्धोच्छ्वासवदनस्तथा गन्धान्न वेत्ति च ।
मूर्छन्ति चात्र क्रमयः श्वेताः कृष्णास्तथाणवः॥
कृमिमूर्द्धविकारेण समानं चास्य लक्षणम् ।

रुधिरथी थएला प्रतिश्यायनुं लक्षण.

९ नाकमांथी रुधिरनो स्राव थाय, आंखो लाल थई जाय, खांसी तथा ज्वर प्राप्त थाय, मोहोडामांथी दुर्गंधवाळो श्वास नीकळे अने सारा नरसा गंधोनी पण खबर न पडे तो जाणवुं के रुधिरथी थएलो प्रतिश्याय छे.

आ प्रतिश्यायमां सफेद तथा काळा झीणा झीणा कीडाओ पण पडे छे अने जो कीडा पड्या होय तो एनुं लक्षण कृमिओथी थएला शिरोरोगना लक्षण जेवुं थाय छे के जे लक्षण आ

पछीना अध्यायना नवमा विषयमां केहेवामां आवशे. (केटलाएक केहे छे के सघळा प्रतिश्यायोमां कीडा पडवानो संभव छे माटे आ वात एकला रुधिरजन्य प्रतिश्यायने माटेज नथी पण सघळा प्रतिश्यायोने माटे छे.)

१० प्रक्लिद्यति पुनर्नासा पुनश्च परिशुष्यति ॥
मुहुरानह्यते चापि मुहुर्विव्रियते तथा ।
निश्वासोच्छ्वासदौर्गन्ध्यं तथा गन्धान्न वेत्ति च॥
एवं दुष्टं प्रतिश्यायं जानीयात् कृच्छ्रसाधनम्।

प्रतिश्यायनुं कष्टसाध्यपणुं.

१० जो नाक वारंवार क्लेदवाळुं थई जतुं होय, वारंवार सूकाई जतुं होय, वारंवार रोकाईने सजड थई जतुं होय, वारंवार खुल्लुं थई जतुं होय, निश्वास तथा उच्छ्वास दुर्गंध थई गया होय अने सारा नरसा गंधोनी खबर न पडती होय तो ते दुष्ट प्रतिश्यायने कष्टसाध्य समजवो. (एक दोषथी थएलो प्रतिश्याय पण जो आवां लक्षणोवाळो होय तो तेने कष्टसाध्यज समजवो.)

११ सर्व एव प्रतिश्याया नरस्याप्रतिकारिणः॥
कालेन रोगजनना जायन्ते दुष्टपीनसाः ।
बाधिर्य्यमान्ध्यमघ्राणं घोरांश्च नयनामयान् ॥
कासाग्निसादश्वेफांश्च वृद्धाः कुर्वन्ति पीनसाः॥

वृद्धि पामेला प्रतिश्यायो बीजा रोगोने पण उत्पन्न करे छे.

११ जे माणस प्रतिश्यायोनी चिकित्साथी रहित रहे ते माणसना सघळा प्रतिश्यायो काळे करी वृद्धि पामीने दुष्ट पीनसोरूप थाय छे अने तेओ बेहेरापणाने, अंधपणाने, गंधनुं ग्रहण करवानी अशक्तिने, बीजा पण केटलाएक भयंकर नेत्ररोगोने, खांसीने, अग्निनी मंदताने अने सोजाने उत्पन्न करे छे.

१२ नवं प्रतिश्यायमपास्य सर्व-
मुपाचरेत्सर्प्पिष एव पानैः ।
स्वेदैर्विचित्रैर्वमनैश्च युक्तैः
कालोपपन्नैरवपीडनैश्च ॥

सघळा प्रतिश्यायोनी सामान्य चिकित्सा.

१२ सघळा प्रकारना प्रतिश्यायो नवा न होय अर्थात् पाकेला होय तो तेओनी घी पावाथी, विचित्र प्रकारना स्वेदोथी, योग्य वमनोथी अने ते ते समयमां योग्यता धरावनारां अवपीड नस्योथी चिकित्सा करवी. (काचा प्रतिश्यायनुं लक्षण बीजा ग्रंथमां कह्युं छे के 'माथामां भारेपणुं होय, अरुचि होय, नाकमांथी पातळो स्राव थतो होय, स्वर खराब थई गयो होय अने वारंवार थूकवुं पडतुं होय तथा शरीर कृश थई गयुं होय तो जाणवुं के प्रतिश्याय काचो छे.')

१३ अपच्यमानस्य हि पाचनार्थं
स्वेदो हितोऽम्लैरहिमं च भोज्यः ।
निषेव्यमाणं पयसार्द्रकं वा
संपाचयेदिक्षुविकारयोगैः ॥

नवा एटले काचा प्रतिश्यायने पकाववा माटे चिकित्सा.

१३ जो प्रतिश्याय पाकतो न होय तो तेने पकाववा माटे अम्ल पदार्थोथी स्वेदन देवुं, उष्ण भोजन कराववुं, दूधनी साथे पकावेला आर्द्रकनुं सेवन कराववुं अने शेलडीना गोळ वगेरे विकारोनी साथे पकावेला आर्द्रकनी पण योजना करवी. आ उपचारोथी प्रतिश्याय पाकी जाय छे. (पाकेला प्रतिश्यायनुं लक्षण बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के 'माथानुं भारेपणुं इत्यादिक चिह्नो के जेओ काचापणानां छे तेओथी युक्त कफ पाछळथी घाटो थई जाय, नाकनां छिद्रोमां चोटी रहे, अवाज साफ थई जाय अने कफनो वर्ण स्वाभाविक थई जाय त्यारे जाणवुं के प्रतिश्याय पाकी गयो छे.')

१४ पक्वं घनं चाप्यवलम्बमानं
शिरोविरेकैरपकर्षयेत्तम् ।

विरेचनास्थापनधूमपानै-
रवेक्ष्य दोषान् कवलग्रहैश्च ॥

पाकेला प्रतिश्यायनुं निर्हरण करवाना उपचारो.

१४ पाकेलो घाटो प्रतिश्याय नाकनां छिद्रोमां लागू रह्यो होय तो तेनुं दोषोने जोईने शिरोविरेचनोथी, विरेचनोथी, निरूहबस्तिओथी, धूमपानोथी अने कवलधारणोथी निर्हरण (अपकर्षण) करवुं.

१५ निवातशय्यासनचेष्टनानि
मूर्ध्नो गुरूष्णं च तथैव वासः ।
तीक्ष्णा विरेकाः शिरसः सधूमा
रूक्षं पलान्नं विजया च सेव्या ॥

पाका प्रतिश्यायवाळाए केवा केवा उपचारानुं सेवन करवुं.

१५ पाका प्रतिश्यायवाळाए पवन वगरना घरमां सूवुं बेसवुं तथा हरवुं फरवुं, माथापर गरम तथा भारे वस्त्र राख्या करवुं, तीक्ष्ण शिरोविरेचनो लेवां, तीक्ष्ण धूमपानो करवां, मांसोथी युक्त करेलुं रूक्ष अन्न जमवुं अने विजयानुं (हरडेनुं अथवा भांगनुं) सेवन करवुं.

१६ शीताम्बुयोषिच्छिशिरावगाह
चिन्तातिरूक्षाशनवेगरोधान् ।
शोकं च मद्यानि नवानि चैव
विवर्जयेत्पीनसरोगजुष्टः ॥

प्रतिश्यायवाळाए पाळवानी परेजी.

१६ प्रतिश्यायवाळाए शीत जळ, मैथुन, शीत जळथी स्नान, चिंता, अत्यंत रूक्ष भोजन, वेगोनी अटकायत, शोक अने नवां मद्यो एओनो त्याग करवो.

१७ छर्द्यङ्गसादज्वरगौरवार्त्त-
मरोचकारत्यतिसारयुक्तम् ।
विलङ्घनैः पाचनदीपनीयै-
रुपाचरेत्पीनसिनं यथावत् ॥

उपद्रवोवाळा पाका प्रतिश्यायनी आवस्थिक चिकित्सा.

१७ प्रतिश्यायवाळो जे माणस उलटीथी, अंगोनी ग्लानिथी, ज्वरथी, भारेपणाथी, अरोचकथी, अरतिथी तथा अतिसारथी युक्त होय तेने योग्य रीते लंघनो कराववां अने पाचन तथा दीपन द्रव्योनो उपयोग कराववो.

१८ बहुद्रवैर्वातकफोपसृष्टं
प्रच्छर्दयेत्पीनसिनं वयःस्थम् ।
उपद्रवांश्चापि यथोपदेशं
स्वैर्भेषजैर्भोजनसंविधानैः ॥
जयेद्विदित्वा मृदुतां गतेषु
प्राग्लक्षणेषूक्तमथादिशेच्च ।

काचा प्रतिश्यायनी आवस्थिक चिकित्सा तथा उत्तर चिकित्सानो समय.

१८ वायुथी तथा कफथी घेराएला काचा प्रतिश्यायवाळा माणसने घणा द्रवो पाईने वमन कराववुं अने शास्त्रोक्त रीतिप्रमाणे दोषोने नष्ट करनारां औषधोनां विधानोथी तथा भोजनोथी तेना उपद्रवोने जीतवा. उपद्रवो जीताएला जणाय अने काचा प्रतिश्यायनां लक्षणो नरम पडी जाय त्यारे नीचे लखेली चिकित्साओ करवी. वमन जुवानने ज कराववुं.

१९ वातिके तु प्रतिश्याये पिबेत्सर्पिर्यथाक्रमम् ।
पञ्चभिर्लवणैः सिद्धं प्रथमेन गणेन च ॥
नस्यादिषु विधिं कृत्स्नमवेक्षेतार्दितेरितम् ।

वायुथी थएला प्रतिश्यायनी चिकित्सा.

१९ जो प्रतिश्याय वायुथी थएलो होय तो सैंधव आदि पांच लवणोथी अने विदारिगंधादि गणथी पकावेलुं घी स्नेहपाननी पद्धतिप्रमाणे पावुं अने चिकित्सास्थानना ९ मा अध्यायना १९ मा विषयमां अर्दित उपर जे नस्य आदि सघळुं विधान कह्युं छे तेनी उपर पण ध्यान आपीने तेमांथी उचित योजनाओ करवी.

२० पित्तरक्तोत्थयोः पेयं सर्पिर्मधुरकैः शृतम्॥
परिषेकान् प्रदेहांश्च कुर्यादपि च शीतलान् ।
श्रीसर्जरसपत्तङ्गप्रियङ्गुमधुशर्कराः ॥
द्राक्षामधूलिकागोजीश्रीपर्णीमधुकास्तथा ।
युज्यन्ते कवलाश्चात्र विरेको मधुरैरपि ॥
धवत्वक्त्रिफलाश्यामातिल्वकैर्मधुकेन च ।
श्रीपर्णीरजनीमिश्रैः क्षीरे दशगुणे पचेत् ॥
तैलं कालोपपन्नं तन्नस्यं स्यादनयोर्हितम् ।

पित्तथी उत्पन्न थएला तथा रुधिरथी उत्पन्न थएला प्रतिश्यायनी चिकित्सा.

२० जो प्रतिश्याय पित्तथी के रुधिरथी उत्पन्न थएलो होय तो काकोल्यादि मधुर गणनां द्रव्योथी पकावेलुं घी पावुं, शीतल परिषेको करवा अने प्रलेपो पण शीतल करवा. चंद्रस, राळ, रतांजलि, घउलां, मध, साकर, द्राक्ष, गरणी, गळजीभी, सीवण अने जेठीमध एओना कवलोनी योजनाओ करवी. मधुर द्रव्योथी विरेचन देवुं. धावडानी छाल, त्रिफळा, नसोतर, लोदर, जेठीमध, सीवण अने हळदर एओनो कल्क नाखी दशगणा दूधमां तैल पकावीने ते तैलनुं योग्य समयमां (प्रतिश्याय आम वगरनो थाय ते समयमां) नस्य देवुं ए पित्तथी उत्पन्न थएला तथा रुधिरथी उत्पन्न थएला प्रतिश्याय उपर हितकारी थाय छे.

२१ कफजे सर्पिषा स्निग्धं तिलमाषविपक्वया॥
यवाग्वा वामयेद्वान्तः कफघ्नं क्रममाचरेत् ।
उभे बले बृहत्यौ च विडङ्गं सत्रिकण्टकम् ॥
श्वेतामूलं सहां भद्रां वर्षाभ्वं चात्र संहरेत् ।
तैलमेभिर्विपक्वं तु नस्यमस्योपकल्पयेत् ॥
सरलाकिणिहीदारुनिकुम्भेङ्गुदिभिः कृताः ।
वर्त्तयश्चोपयोज्याः स्युर्धूमपाने यथाविधि ॥

कफथी उत्पन्न थएला प्रतिश्यायनी चिकित्सा.

२१ जो प्रतिश्याय कफथी उत्पन्न थएल होय तो रोगीने घीथी स्निग्ध करी तल तथा अडदनी यवागू पाईने वमन कराववुं अने वमन कराव्या पछी कफने हणनारो आहार आपवो. बळदाणा, खपाट, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, वावडींग, गोखरू, गरणीनां मूळ, जंगली मगना छोड, सीवण अने साटोडी एओना कल्कथी तथा काथथी पकावेला तैलनुं नस्य देवुं. नसोतर, वापुंगां, देवदार, नेपाळो अने ईंगोळीयो एओनी वाटो बनावीने तेओनी धूमपानमां विधिपूर्वक योजना करवी.

२२ सर्पींषि कटुतिक्तानि तीक्ष्णा धूमाः कटूनि च
भेषजान्युपयुक्तानि हन्युः सर्वप्रकोपजम् ॥
रसाञ्जने सातिविषे मुस्तायां भद्रदारुणि ।
तैलं विपक्वं नस्यार्थे विदध्याच्चात्र बुद्धिमान् ॥
मुस्ता तेजोवती पाठा कट्फलं कटुका वचा ।
सर्षपाः पिप्पलीमूलं पिप्पल्यः सैन्धवाग्निकौ ॥
तुत्थं करञ्जबीजं च लवणं भद्रदारु च ।
एतैः कृतं कषायं तु कवले संप्रयोजयेत् ॥
हितं मूर्द्धविरेकेण तैलमेभिर्विपाचितम् ।

त्रणे दोषोथी थएला (सान्निपातिक) प्रतिश्यायनी चिकित्सा.

२२ जो प्रतिश्याय त्रणे दोषोथी उत्पन्न थएलो होय तो तीखां तथा कडवां द्रव्योथी पकावेलां घी पावां, तीक्ष्ण धूमपानो कराववां अने तीखां औषधो खवराववां. (एक एक दोषथी थएला प्रतिश्यायनी जें चिकित्साओ केहेवामां आवी ते सघळी पण संयुक्त करीने करवी.) बुद्धिमान् वैद्ये रसवंती, अतवस, मोथ, अने देवदार एओना कल्कथी तथा काथथी तैल पकावीने तेनी नस्यमां योजना करवी. मोथ, तेजबल, काळी पाड, कायफळ, कडु, वज, सर्षप, पीपळीमूळ, पीपळ, सैंधव, अजमोद, मोरथुथु, करंजनां बीज, दरीयाई लूण अने देवदार एओनो काथ बनावी तेनी कवलमां योजना

करवी अने एज द्रव्योना काथथी तथा कल्कथी तेल पकावी तेनुं नस्य आपीने शिरोविरेचन करवुं. (केटलाएक केहे छे के उपर कहेला मोथ वगेरेना काथनो कवल सघळा प्रतिश्यायो उपर हितकारी छे.)

२३ क्षीरमर्द्धजले काथ्यं जाङ्गलैर्मृगपक्षिभिः ॥
पुष्पैर्विमिश्रं जलजैर्वातघ्नैरौषधैरपि ।
हिमे क्षीरावशिष्टेऽस्मिन् घृतमुत्पाद्य यत्नतः ॥
सर्वगन्धसितानन्ता मधूकं चन्दनं तथा ।
आवाप्य विपचेद्भूयो दशक्षीरं तु तद्धृतम् ॥
नस्यप्रयुक्तमुद्रिक्तान् प्रतिश्यायान् व्यपोहति ।
यथास्वं दोषशमनैस्तैलं कुर्य्याच्च यत्नतः

सघळा प्रतिश्यायोनी परिशिष्ट चिकित्सा.

२३ जांगल पशुपक्षीओनां मांसो, जलमां उत्पन्न थतां उद्भिज्जोनां पुष्पो अने वायुने हणनारां औषधो एओना कल्कथी संयुक्त करेलुं आठगणुं दूध अरधो अरध पाणीमां पकाववुं. पाणी बळी जईने दूधज अवशेष रहे त्यारे तेने उतारी लई थंडुं पाडी यत्नपूर्वक मथीने तेमांथी घी काहाडी लेवुं. पछी एलादिगण, साकर, उपलसरी, जेठीमध तथा रतांजलि एओनो कल्क नाखी दशगणा दूधमां ते घीने फरीवार पकाववुं. आ घीनो नस्यमां प्रयोग करवामां आवे तो तेथी सघळा प्रकारना प्रबल प्रतिश्यायो पण शांत थाय छे. प्रतिश्यायोमां आ नस्य देवा उपरांत जे जे दोष होय ते ते दोषनुं शमन करनारां औषधोथी पकावेला तैलनी पण प्रयत्नपूर्वक योजना करवी.

२४ समूत्रपित्तास्तूद्दिष्टाः क्रियाः क्रिमिषु योजयेत् ।
यापनार्थं कृमिघ्नानि भेषजानि च बुद्धिमान् ॥

प्रतिश्यायना कृमिओनी चिकित्सा.

२४ बुद्धिमान् वैद्ये कृमिओने शांत करवा माटे कृमिओने हणनारी क्रियाओने अथवा उपर कहेली क्रियाओने गायना मूत्रथी तथा पित्तांथी संयुक्त करीने तेओनी योजनाओ करवी. कृमिओनुं यापन करवा माटे कृमिओने हणनारा सुरसादिगणनां द्रव्योनी पण योजनाओ करवी. (आ २४ मा विषयनुं सारस्य जोतां जणाय छे के केवळ, रुधिरथी उत्पन्न थएला प्रतिश्यायमांज कीडाओ पडे छे एम नथी परंतु सघळा प्रकारना प्रतिश्यायोमां कीडाओ पडवानो संभव छे अने तेथी आ अध्यायना ९ मा विषयमां जणावेलुं केटलाएकनुं मत वास्तविक छे.)

अध्याय २५ मो.

उपक्रम.

१ अथातः शिरोरोगविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शिरोरोगविज्ञानीय[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शिरो रुजति मर्त्यानां वातपित्तकफैस्त्रिभिः ।
सन्निपातेन रक्तेन क्षयेण क्रिमिभिस्तथा ॥
सूर्य्यावर्त्तानन्तवाताद्धवभेदकशङ्खकैः ।
एकादशप्रकारस्य लक्षणं संप्रवक्ष्यते ॥

शिरोरोगोनां (माथाना रोगोनां) निदानो तथा संख्या.

२ वातजन्य शिरोरोग, पित्तजन्य शिरोरोग, कफजन्य शिरोरोग, सन्निपातजन्य शिरोरोग, रुधिरजन्य शिरोरोग, रसादिक्षयजन्य (रस वगेरेना क्षयथी थएलो) शिरोरोग, कृमिजन्य शिरोरोग, सूर्यावर्त्त, अनंतवात, अर्द्धावभेदक अने शंखक ए अगीयार शिरोरोगो छे. एओनां लक्षणो, नीचे केहेवामां आवशे.

[1] माथाना रोगोनां निदानो तथा लक्षणो विषेनो.

३ यस्यानिमित्तं शिरसो रुजश्च
भवन्ति तीव्रा निशि चातिमात्रम् ।
बन्धोपतापैश्च भवेद्विशेषः
शिरोऽभितापः स समीरणेन ॥

वातजन्य शिरोरोगनुं लक्षण.

३ अतर्कित रीते माथामां तीव्र वेदना थती होय, राते शीतने लीधे वायुना अधिकपणाथी ए वेदना अत्यंत थती होय अने माथे पाटो बांधवाथी तथा शेक करवाथी ए वेदना शांत थती होय तो जाणवुं के ए शिरोरोग वातजन्य छे.

४ यस्योष्णमङ्गारचितं यथैव
भवेच्छिरो धूमवती च नासा ।
शीतेन रात्रौ च भवेद्विशेषः
शिरोऽभितापः स तु पित्तकोपात् ॥

पित्तजन्य शिरोरोगनुं लक्षण.

४ जाणे अंगाराओथी व्याप्त थयुं होय तेम माथुं अत्यंत उष्ण थई जाय, नाक जाणे धूमाडावाळुं होय एवुं तप्त रह्या करे अने राते शीतने लीधे वेदना शांत थती होय तो जाणवुं के ए शिरोरोग पित्तजन्य छे.

५ शिरोगलं यस्य कफोपदिग्धं
गुरु प्रतिष्टब्धमथो हिमं च ।

शिरोऽभितापः स कफप्रकोपात् ॥

कफजन्य शिरोरोगनुं लक्षण.

५ माथुं तथा गळुं कफथी खरडाएलुं रहे, भारे रहे, स्तब्ध रहे तथा थंडुं रहे अने आंखोना डोडला तथा मोहोडुं सोजाथी संयुक्त रेहे तो जाणवुं के ए शिरोरोग कफजन्य छे.

६ शिरोऽभितापे त्रितयप्रवृत्ते
सर्वाणि लिङ्गानि समुद्भवन्ति ।

सन्निपातजन्य शिरोरोगनुं लक्षण.

६ शिरोरोगमां उपर कहेलां त्रणे प्रकारनां लक्षणो देखातां होय तो जाणवुं के ए शिरोरोग सन्निपातजन्य छे.

७ रक्तात्मकः पित्तसमानलिङ्गः
स्पर्शासहत्वं शिरसो भवेच्च ॥

रुधिरजन्य शिरोरोगनुं लक्षण.

७ बीजां चिह्नो पित्तजन्य शिरोरोगनां जेवां देखातां होय अने माथुं कोईना पण स्पर्शनुं सहन न करी शके एवुं थई गयुं होय तो जाणवुं के ए शिरोरोग रुधिरजन्य छे. (माथुं कोईना पण स्पर्शनुं सहन न करी शके एवुं थई जाय एटलोज पित्तजन्य शिरोरोगथी रुधिरजन्य शिरोरोगमां भेद छे.)

८ वसाबलासक्षतसम्भवानां
शिरोगतानामिह संक्षयेण ।
क्षयप्रवृत्तः शिरसोऽभितापः
कष्टो भवेदुग्ररुजोऽतिमात्रम् ॥
संस्वेदनच्छर्दनधूमनस्यै-
रसृग्विमोक्षैश्च विवृद्धिमेति ।

रसादिक्षयजन्य शिरोरोगनुं लक्षण.

८ माथामां अत्यंत उग्र वेदना थती होय अने ते वेदना स्वेदनोथी, वमन कराववाथी, धूमपान कराववाथी, नस्य देवाथी तथा लोहीनुं स्रावण करवाथी वृद्धि पामती होय तो जाणवुं के माथामां रहेलां चरबी, कफ, रुधिर, मेद, मज्जा, वीर्य अने मगज एओनो अत्यंत क्षय थवाथी आ शिरोरोग थयो छे. (आ शिरोरोग कष्टसाध्य छे. आ रोगमां शरीर भमे छे, माथुं भोकाया करे छे, आंखो फऱ्या करे छे, मूर्छा आवे छे अने ग्लानि पण थाय छे.)

९. निस्तुद्यते यस्य शिरोऽतिमात्रं
संभक्ष्यमाणं स्फुटतीव चान्तः ॥
घ्राणाच्च गच्छेत्सलिलं सरक्तं
शिरोऽभितापः कृमिभिः स घोरः ।

कृमिजन्य शिरोरोगनुं लक्षण.

९ माथुं अत्यंत भोंकाया करतुं होय, कीडाओए खवातुं होवाने लीधे जाणे अंदर फाटतुं होय एवुं जणाय अने नाकमांथी लोहीसहित पाणी नीकळे तथा कीडाओ पण नीकळे तो जाणवुं के ए शिरोरोग कृमिजन्य छे. आ रोग भयंकर छे.

१० सूर्योदयं वा प्रतिमन्दमन्द-
मक्षिभ्रुवं रुक् समुपैति गाढम् ॥
विवर्द्धते चांशुमता सहैव
सूर्य्यापवृत्तौ विनिवर्त्तते च ।
शीतेन शान्तिं लभते कदाचि-
दुष्णेन जन्तुः सुखमाप्नुयाच्च ॥
तं भास्करावर्त्तमुदाहरन्ति
सर्वात्मकं कष्टतमं विकारम् ।

सूर्यावर्त्तनुं निदान तथा लक्षण.

१० सूर्योदयथी मांडीने आंखोमां तथा भमरोमां मंद मंद पीडा प्राप्त थती आवे, जेम जेम आकाशमां सूर्य ऊंचो चडतो आवे तेम तेम ए पीडा अधिक अधिक वृद्धि पामती जाय, सूर्य पश्चिमदिशामां लटकतो आवे तेम तेम ए पीडा शांत थती जाय, कोई समये ए पीडा शीतथी शांत थती होय अने कोई समये उष्णथी पण सुख थतुं होय तो जाणवुं के सूर्यावर्त्त थयो छे. आ रोग त्रणे दोषोना प्रकोपथी थाय छे अने अत्यंत कष्टसाध्य छे.

११ दोषास्तु दुष्टास्त्रय एव मन्यां
संपीड्य घाटां स्वरुजां सुतीव्राम् ॥
कुर्वन्ति साक्षिभ्रुवशङ्खदेशे
स्थितिं करोत्याशु विशेषतस्तु ।
गण्डस्य पार्श्वेषु करोति कम्पं
हनुग्रहं लोचनजांश्च रोगान् ॥
अनन्तवातं तमुदाहरन्ति
दोषत्रयोत्थं शिरसो विकारम् ।

अनंतवातनुं निदान तथा लक्षण.

११ दुष्ट थएला त्रणे दोषो ओडने तथा घांटाने अत्यंत पकडी दबावीने पोतपोताना स्वभावप्रमाणे व्यथा, दाह तथा भारेपणा वगेरे अतितीव्र वेदनाओने उत्पन्न करे छे, ए वेदना तुरत आंखोमां, भमरोमां तथा लमणाओमां स्थिति करे छे अने विशेषे करी गालोनां पडखांओमां स्थिति करे छे तथा ए स्थिति करीने कंपने, हनुग्रहने (हडपचीना झलाई जवाने) तथा नेत्रनां दरदोने उत्पन्न करे छे. आवा प्रकारनो शिरोरोग अनंतवात केहेवाय छे.

१२ यस्योत्तमाङ्गार्द्धमतीव जन्तोः
सम्भेदतोदभ्रमशूलजुष्टम् ॥
पक्षाद्दशाहादथवाप्यकस्मा-
त्तस्यार्द्धभेदं त्रितयाद्व्यवस्येत्

अर्द्धावभेदकनुं निदान तथा लक्षण.

१२ पखवाडीये, दश दश दिवसे अथवा अकस्मात् अरधुं माथुं भेदन जेवी व्यथाथी, भोंकाया जेवी व्यथाथी, भ्रमणथी तथा शूळथी युक्त थई जतुं होय तो जाणवुं के अर्द्धावभेदक नामनो शिरोरोग छे. आ रोग त्रणे दोषोथी अथवा बे दोषोथी थाय छे. (बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के रूक्ष भोजनो वगेरेथी प्रकोप पामेलो बलवान् वायु पोते एकलो अथवा कफनी सहायता लई माथाना अर्द्ध भागने पकडीने ओड, भमर, लमणो, कान, आंख अने कपाळनुं अर्द्ध एओमां शस्त्रघातना जेवी तीव्र वेदनाने उत्पन्न करे छे ए रोग अर्द्धावभेदक केहेवाय छे. आ रोग वृद्धि पामे तो आंखनो तथा काननो विनाश करी नाखे छे.)

१३ शङ्खाश्रितो वायुरुदीर्णवेगः
कृतानुयात्रः कफपित्तरक्तैः ॥
रुजः सुतीव्राः प्रतनोति मूर्ध्नि
विशेषतश्चापि हि शङ्खयोस्तु ।

सुकष्टमेनं खलु शङ्खकाख्यं
महर्षयो वेदविदः पुराणाः ॥
व्याधिं वदन्त्युद्गतमृत्युकल्पं
भिषक्सहस्रैरपि दुर्निवारम् ॥

शंखकनुं निदान तथा लक्षण.

१३ कफ, पित्त अने रुधिर एओनी सहायतावाळो अने प्रकुपित थएलो लमणाओमां रहेलो वायु प्रबल वेग धरीने माथामां तीव्र वेदनाओने उत्पन्न करे छे अने लमणाओमां तो विशेषे करी तीव्र वेदनाओने उत्पन्न करे छे ए रोग शंखक केहेवाय छे. आयुर्वेदने जाणनारा प्राचीन महर्षिओ केहे छे के आ शंखक नामनो व्याधि अत्यंत कष्टरूप छे, पासे आवी पोहोचेला मृत्यु जेवो छे अने हजारो वैद्योथी पण अटकावी शकाय नहीं एवो छे. (बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के दुष्ट थएलां अने लमणाओना प्रदेशोमां वृद्धि पामेलां पित्त, रुधिर, वायु अने कफ एओ तीव्र रताशवाळा दारुण सोजाने उत्पन्न करे छे. ए सोजो झेरनी पेठे पोताना वेगथी तुरत माथाने तथा गळांने रोकीने त्रण रातनी अंदर प्राण हरी ले छे. आ शिरोरोग शंखक केहेवाय छे. आ रोगवाळो माणस त्रण दिवससूधीज जीवे छे माटे वैद्ये प्रथम ना पाडीने पछी तेनी चिकित्सा करवी.)

अध्याय २६ मो.

१ अथातः शिरोरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शिरोरोगप्रतिषेध[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वातव्याधिविधिः कार्य्यः शिरोरोगेऽनिलात्मके ।
पयोऽनुपानं सेवेत घृतं तैलमथापि वा ॥
मुद्गान्कुलत्थान्माषांश्च खादेच्च निशि केवलान्॥
कटूष्णांश्च ससर्पिष्कानुष्णं चानु पयः पिबेत् ।
पिबेद्वा पयसा तैलं तत्कल्कं वापि मानवः ॥
वातघ्नसिद्धैः क्षीरैश्च सुखोष्णैः सेकमादिशेत् ।
तत्सिद्धैः पायसैर्वापि सुखोष्णैर्लेपयेच्छिरः ॥
स्विन्नैर्वा मत्स्यपिशितैः कृशरैर्वा ससैन्धवैः ।
चन्दनोत्पलकुष्ठैर्वा सुश्लक्ष्णैर्मगधायुतैः ॥
स्निग्धस्य तैलं नस्यं स्यात्कुलीररससाधितम् ।
वरुणादौ गणे क्षुण्णे क्षीरमर्द्धोदकं पचेत् ॥
क्षीरशेषं च तन्मथ्यं शीतं सारमुपाहरेत् ।
ततो मधुरकैः सिद्धं नस्ये तत्पूजितं हविः ॥
तस्मिन्विपक्वे क्षीरे च पेयं सर्पिः सशर्करम् ।
धूमं चास्य यथाकालं स्नैहिकं योजयेद्भिषक् ॥
पानाभ्यञ्जननस्येषु बस्तिकर्मणि सेचने ।
विदध्यात्त्रैवृतं धीमान् बलातैलमथापि वा ॥
भोजयेच्च रसैः स्निग्धैः पयोभिर्वा सुसंस्कृतैः ।

वातजन्य शिरोरोगनी चिकित्सा.

२ वातजन्य शिरोरोग थयो होय तो वातव्याधिने लगती सघळी बाहारनी तथा अंदरनी चिकित्सा करवी. (स्नेहन, स्वेदन, अभ्यंग, परिषेक, उपनाह, शिरोबस्ति तथा नस्य वगेरे बाहारनी क्रियाओ करवी अने स्नेहपान, अनुवासनबस्ति तथा निरूहबस्ति वगेरे अंदरनी क्रियाओ पण करवी.) जो वायु पित्तना संसर्गवाळो होय तो प्रथम घी पाईने ते उपर ऊनुं दूध पावुं अने वायु कफना संसर्गवाळो होय तो प्रथम तैल पाईने ते उपर ऊनुं दूध पावुं. राते उष्ण तथा तीखां द्रव्योथी जेओने संस्कार आप्यो होय एवा एकला मग, एकली कळथी के एकलां अडद[2] घीथी संयुक्त करीने खवराववा अने ते उपर ऊनुं दूध पावुं. ए माणसने दूधनी साथे तैल पीवराववुं अथवा दूधनी साथे मग

१ शिरोरोगोनी चिकित्सा विषेनो.

२ जो के मग वायुने करनार छे अने अडद कफने करनार छे तो पण योगशक्ति अचिंत्य होवाने लीधे तेओनो उपयोग कराववानुं कह्युं छे.

वगेरेनो कल्क पीवराववो. वायुने हणनारां औषधोथी पकावेलां गायनां दूधोने जरा गरम राखीने तेओनुं मस्तक उपर सेचन करवुं अथवा वायुने हणनारां औषधोथी पकावेलां गायनां दूधोने ओटवाथी पिंडरूप करी जरा गरम राखीने तेओनुं मस्तक उपर लेपन करवुं. (उपनाह स्वेद देवो.) अथवा बाफेलां माछलानां मांसोथी अथवा सैंधववाळी तल चोखा तथा अडद एओनी खीचडीथी उपनाह स्वेद देवो. अथवा चंदन, नीलकमळ, कठ अने पीपळ एओने बारीक वाटी जरा गरम करीने तेथी उपनाह स्वेद देवो. रोगीने स्निग्ध करीने कुडचलना मांसना रसाथी पकावेला तेलनुं नस्य देवुं. वरुणादिगणने पथरा वगेरेथी कचरी दूधमां नाखी ते दूधने अरधो अरध पाणीमां पकावी, पाणी बळी जईने दूधज अवशेष रहे त्यारे उतारी लई, थंडुं पाडी, मथी, घी काहाडी लई ते घीने काकोल्यादि मधुर द्रव्योना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावी ते घीनुं नस्य देवुं ए उत्तम छे. उपर प्रमाणे वरुणादि गणमां पकावेला दूधमां घी तथा साकर नाखीने ते दूध पावुं. वैद्ये रोगनी स्थितिने अनुसरी स्नैहिक धूमपाननी पण योजना करवी. बुद्धिमान् वैद्ये पावामां, अभ्यंगमां, नस्यमां, बस्तिकर्ममां अने सेचनमां त्रैवृत घी के जे चिकित्सास्थानना ९ मा अध्यायना १९ मा विषयमां कहेलुं छे तेनी अथवा बलातैल के जे चिकित्सास्थानना १९ मा अध्यायना १२ मा विषयमां कहेलुं छे तेनी योजना करवी. स्निग्ध करेलां मांसोना रसाओनी साथे अथवा वायुने हरनारां द्रव्योथी पकावेलां दूधोनी साथे भोजन देवुं.

३ पित्तरक्तसमुत्थानौ शिरोरोगौ निवारयेत् ॥
शिरोलेपैः ससर्पिष्कैः परीषेकैश्च शीतलैः ।
क्षीरेक्षुरसधान्याम्लमस्तुक्षौद्रसिताजलैः ॥
नलवञ्जुलकल्हारचन्दनोत्पलपद्मकैः ।
शङ्खशैवलयष्ट्याह्वमुस्ताम्भोरुहसंयुतैः ॥
शिरःप्रलेपः सघृतैर्वैसर्पैश्च तथाविधैः ।
मधुरैश्च सुखालेपैर्नस्यकर्मभिरेव च ॥
आस्थापनैर्विरेकैश्च पथ्यैश्च स्नेहबस्तिभिः ।
क्षीरसर्पिर्हितं नस्यं वसा वा जाङ्गली शुभा ॥
उत्पलादिविपक्केन क्षीरेणास्थापनं हितम् ।
भोजनं जाङ्गलरसैः सर्पिषा चानुवासनम् ॥
मधुरैः क्षीरसर्पिस्तु स्नेहने च सशर्करम् ।
पित्तरक्तघ्नमुद्दिष्टं यच्चान्यदपि तद्धितम् ॥

पित्तथी के रुधिरथी उत्पन्न थएला शिरोरोगनी एकसरखी चिकित्सा.

३ जो पित्तजन्य के रुधिरजन्य शिरोरोग थयो होय तो माथापर घीथी संयुक्त करेला लेपो करवा अने शीतल परिषेको पण करवा. दूध, शेलडीनो रस, धान्याम्ल, दहींनी नीचेनुं पाणी, मध अने साकरनुं जळ एओनो परिषेक करवो. नाली, जळमां थतुं नेतर, रक्तकमळ, रतांजलि, नीलकमळ, पद्मकाष्ठ, शंखनुं चूर्ण, शैवाळ, जेठीमध, मोथ अने श्वेतकमळ एओने वाटी घीथी संयुक्त करीने तेनो लेप करवो. चिकित्सास्थानना १७ मा अध्यायना चोथा विषयमां पित्तविसर्प उपर जे लेपो कह्या छे ते लेपो करवा अने काकोल्यादि मधुर वर्गना पण सुखदायी लेपो करवा. मधुर द्रव्योना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला स्नेहोनां नस्यो पण देवां. पथ्यात्मक निरूहबस्तिओ, विरेचनो तथा स्नेहबस्तिओ देवा. दूधने मथीने काहाडेला घीथी अथवा जांगलप्राणीओनी चरबीथी नस्य देवुं ए उत्तम छे. (घीनुं के चरबीनुं नस्य देवुं ते पण मधुर द्रव्योना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावीने देवुं.) उत्पलादिगणथी पकावेला दूधनो आस्थापन (निरूह) बस्ति देवो ए हितकारी थाय छे. जांगलप्राणीओनां मांसोना रसाओथी भोजन देवुं. घीथी अनुवासन बस्ति देवो अने मधुर द्रव्योथी पकावेला दूधने मथी तेमांथी घी काहाडी लई सा-

करथी मिश्रित करीने ते घीथी स्नेहन करवुं ए हितकारी छे. पित्त उपर तथा रुधिर उपर बीजी पण जे कोई चिकित्साओ आ ग्रंथमां केहेवामां आवी छे तेओमांथी पण योग्य चिकित्साओनी योजना करवी.

४ कफोत्थितं शिरोरोगं जयेत्कफनिवारणैः ।
शिरोविरेकैर्वमनैस्तीक्ष्णैर्गण्डूषधारणैः ॥
अच्छं च पाययेत्सर्पिः स्वेदयेच्चाप्यभीक्ष्णशः ।
शिरो मधुकसारेण स्निग्धं चापि विरेचयेत् ॥
इङ्गुदस्य त्वचा वापि मेषशृङ्ग्या च वा भिषक् ।
आभ्यामेव कृता वर्त्तीर्धूमपाने प्रयोजयेत् ॥
घ्रेयं कट्फलचूर्णं च कवलाश्च कफापहाः ।
सरलाकुष्ठशार्ङ्गेष्टादेवकाष्ठैः सरोहिषैः ॥
क्षारपिष्टैः सलवणैः सुखोष्णैर्लेपयेच्छिरः ।
यवषष्टिकयोश्चान्नं व्योषक्षारसमायुतम् ॥
पटोलमुद्गकौलत्थैर्मात्रावद्भोजयेद्रसैः ।

कफजन्य शिरोरोगनी चिकित्सा.

४ जो कफजन्य शिरोरोग थयो होय तो कफनुं निवारण करनारा शिरोबस्तिओथी, वमनोथी, तथा तीक्ष्ण कोगळाओना प्रयोगोथी तेनुं निवारण करवुं. वमनथी जीताएला कफने लीधे प्रकोप पामेला वायुने जीतवा माटे नकरूं (बीजां द्रव्योथी संसृष्ट नहीं करेलुं) घी पावुं, वारंवार स्वेदनो करवां अने माथाने स्निग्ध करीने महुडाना सारनुं, इंगोळीयानी छालनुं के मेंढाशींगीनी छालनुं शिरोविरेचन देवुं. अवशेष रहेला कफने दूर करवा इंगोळीयानी छालनी तथा मेंढाशींगीनी छालनी वाटो बनावीने तेओनो धूमाडो पावो. कायफळना चूर्णनुं प्रधमन नस्य देवुं. कफने हणनारां द्रव्योथी गोठवेला कवलो देवा. नसोतर, कठ, पीलुडी अथवा इंद्रवारणी, देवदार अने रोहिस नामनुं खड एओने पानीय क्षारमां वाटी सैंधवथी संयुक्त करी सेहेवाय तेवां गरम करीने तेओनो मस्तकपर लेप करवो. जवना तथा साठीचोखाना अन्नने सूंठथी, मरीथी, पीपळथी तथा जवखारथी संयुक्त करीने पटोलना, मगना तथा कळथीना यूषोनी साथे योग्य मात्राथी तेनुं भोजन करावडुं.

५ शिरोरोगे त्रिदोषोत्थे त्रिदोषघ्नो विधिर्हितः ॥
सर्पिः पानं विशेषेण पुराणं वा दिशन्ति हि ।

सन्निपातजन्य शिरोरोगनी चिकित्सा.

५ जो त्रिदोषजन्य शिरोरोग थयो होय तो उपर एक एक दोषना शिरोरोगने टाळवा माटे जे विधिओ कह्या तेओ सघळा मिश्रित करीने करवारूप सामान्य चिकित्सा करवी अने जूनुं घी पावारूप विशेष चिकित्सा पण करवी.

६ क्षयजे क्षयमासाद्य कर्त्तव्यो बृंहणो विधिः ॥
पाने नस्ये च सर्पिः स्याद्वातघ्नमधुरैः शृतम् ।
क्षयकासापहं चात्र सर्पिः पथ्यतमं विदुः ॥

रक्तादिक्षयजन्य शिरोरोगनी चिकित्सा.

६ जो क्षयजन्य शिरोरोग थयो होय तो 'रुधिर वगेरेमांथी कोनो क्षय थयो छे' ए निश्चय करीने, जेनो क्षय थयो होय तेने वृद्धि आपनारी चिकित्सा करवी. (केटलाएक केहे छे. के आ तंत्रना ४१ मा अध्यायमां शोषनी जे आहार तथा औषधरूप चिकित्सा कही छे ते करवी.) वायुने हणनारां द्रव्योथी तथा मधुर द्रव्योथी पकावेला घीनो पीवामां तथा नस्यमां उपयोग करावचो. (मधुर द्रव्योथी पकावेला तेलनो पण पीवामां तथा नस्यमां उपयोग करावचो.) आ तंत्रना ५२ मा अध्यायमां कहेलुं क्षयजन्य खांसीने हणनारूं घी पण आ रोग उपर अत्यंत पथ्य गणाय छे. (काकोल्यादि वर्गनो कल्क नाखी शेलडीनो रस, जळ अने दूध एओमां घी पकावी साकरथी संयुक्त करीने प्रभातमां पावामां आवे तो तेथी क्षयजन्य खांसी मटी जाय छे.)

७ कृमिभिर्भक्ष्यमाणस्य वक्ष्यन्ते शिरसः क्रियाः ।
नस्यं हि शोणितं दद्यात्तेन मूर्छन्ति जन्तवः ॥

मत्ताः शोणितगन्धेन समायान्ति यतस्ततः ।
तेषां निर्हरणं कार्य्यं ततो मूर्द्धविरेचनैः ॥
ह्रस्वशिग्रुकबीजैर्वा कांस्यनीलीसमायुतैः ।
कृमिघ्नैरवपीडैश्च मूत्रपिष्टैरुपाचरेत् ॥
पूतिमत्स्ययुतान् धूमान्कृमिघ्नांश्च प्रयोजयेत् ।
भोजनानि कृमिघ्नानि पानानि विविधानि च ॥

कृमिजन्य शिरोरोगनी चिकित्सा.

७ कीडाओए खवाता माथानी चिकित्साओ आ तंत्रमां आगळ जतां पण केहेवामां आवशे. जो कृमिजन्य शिरोरोग थयो होय तो रुधिरनुं नस्य देवुं. रुधिरनुं नस्य देवाथी कीडाओ रुधिरना गंधवते मूर्छित तथा मत्त थईने चोतरफथी नाकनां स्रोत वगेरेमां आवे छे. आ प्रमाणे कीडाओ नाकना स्रोत वगेरेमां आवे त्यारे पींछी वगेरे साधनवते तेओने बाहार काहाडी लेवा. जेओने पींछी वगेरे साधन लागू पडे नहीं तेओने बाहार काहाडवा माटे वावडींग, मरी, अघेडानां बीज तथा सरगवानां बीज इत्यादिकनां शिरोविरेचनो आपवां अथवा नाहाना सरगवानां बीजोने कांसाना मेलथी संयुक्त करीने तेथी शिरोविरेचन करवुं. एवीज रीते कीडाओने हणनारां वावडींग वगेरे द्रव्योने गोमूत्रमां वाटीने तेओनां अवपीड नस्यो देवां. कीडाओने हणनारां नस्य द्रव्योने दुर्गंधी माछलांओथी युक्त करीने तेओना धूमोनी योजनाओ करवी, कीडाओने हणनारां भोजनो देवां अने विविध प्रकारना पीवाना पदार्थो पण तेवाज गोठववा.

८ सूर्य्यावर्तें विधातव्यं नस्यकर्म्मादि भेषजम् ।
भोजनं जाङ्गलप्रायं [illegible]
तथार्द्धभेदके व्याधौ प्राप्तमन्यच्च यद्भवेत् ।
शिरीषमूलकफलैरवपीडोऽनयोर्हितः ॥
वंशमूलककर्पूरैरवपीडं प्रयोजयेत् ।
अवपीडो हितश्चात्र वचामागधिकायुतः ॥
मधूकेनावपीडो वा मधुना सह संयुतः ।
मनःशिलावपीडो वा मधुना चन्दनेन वा ॥
तेषामन्ते हितं नस्यं सर्पिर्मधुरसान्वितम् ।
सारिवोत्पलकुष्ठानि मधुकं चाम्लपेषितम् ॥
सर्पिस्तैलयुतो लेपो द्वयोरपि सुखावहः ।
एष एव प्रयोक्तव्यः शिरोरोगे कफात्मके ॥

सूर्यावर्त्त तथा अर्द्धावभेदक एओनी चिकित्सा.

८ सूर्यावर्त्त थयो होय तो नस्य, लेप, परिषेक, कवलग्रह तथा शिरोबस्ति वगेरे उपचारो करवा, जेमां जांगलप्राणीयोनुं मांस विशेष आवे एवुं भोजन देवुं अने दूधना तथा अन्नना पदार्थोनी साथे घी पण तेवुं देवुं के जे जांगलप्राणीओनां मांसोथी पकावेलुं होय.

अर्द्धावभेदक थयो होय तो पण उपर प्रमाणेज करवुं अने बीजी पण अवपीड नस्य, दीपिकातैल (आ तंत्रना २१ मा अध्यायनो त्रीजो विषय जुवो.) तथा शिरावेध वगेरे जे चिकित्सा योग्य जणाय ते पण करवी.

सरसडीयानां बीज अने मूळानां बीज एओथी, अथवा वांस, मूळानां बीज अने कपूर एओथी, अथवा वज अने पीपल एओथी अवपीड नस्य देवुं ए उपर कहेला बन्ने रोगो उपर हितकारी थाय छे. महुडाना सारने मधथी संयुक्त करीने तेनुं अथवा मणशीलने मधथी संयुक्त करीने तेनुं अथवा मणशीलने चंदनथी युक्त करीने तेनुं अवपीड नस्य देवुं ए पण उपर कहेला बन्ने रोगो उपर हितकारी थाय छे.

बन्ने रोगो उपर अवपीड नस्यो आप्या पछी काकोल्यादि मधुर वर्गना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीनुं नस्य देवुं.

उपलसरी, नीलकमळ, कठ अने जेठीमध एओने कांजीमां वाटी घीथी तथा तैलथी संयुक्त करीने लेप करवाथी उपर कहेला बन्ने रोगोमां सुखनी प्राप्ति थाय छे. (उपर कहेला घीना

नस्यनो अने आ लेपनो प्रयोग वायुनी तथा पित्तनी उत्तरावस्थामां करवो.) कफजन्य शिरोरोग के जेनी चिकित्सा आ अध्यायना ४ था विषयमां आपी छे ते उपर पण आ लेप हितकारी थाय छे.

९ अनन्तवाते कर्तव्यः सूर्य्यावर्त्तेरितो विधिः।
शिराव्यधश्च कर्त्तव्योऽनन्तवातप्रशान्तये ॥
आहारश्च विधातव्यो वातपित्तविनाशनः ।
मधुमस्तकसंयावघृतपूरैश्च भोजनैः ॥

अनंतवातनी चिकित्सा.

९ अनंतवात थएल होय तो सूर्यावर्त्त उपर जे चिकित्सा केहेवामां आवी ते करवी, शिरावेध करीने लोहीनुं स्रावण पण करवुं अने वायुने तथा पित्तने नष्ट करनारा आहारनी योजना करवी. खाजां अथवा मेशूब, ओरमां अने घेवर एओनां भोजनो देवां.

१० क्षीरसर्पिः प्रशंसन्ति नस्ये पाने च शङ्खके।
जाङ्गलानां रसैः स्निग्धैराहारश्चात्र शस्यते ॥
शतावरीं तिलान्कृष्णान्मधुकं नीलमुत्पलम् ।
दूर्वां पुनर्नवां चैव लेपे साध्ववचारयेत् ॥
महासुगन्धामथ वा पालिन्दीं चाम्लपेपिताम् ।
शीतांश्चात्र परीषेकान् प्रदेहानत्र योजयेत् ॥
अवपीडश्च देयोऽत्र सूर्य्यावर्त्तनिवारणः ।

शंखकनी चिकित्सा.

१० शंखक थएल होय तो नस्यमां तथा पीवामां दूधने मथीने काहाडेला घीनी योजना करवी. जांगलप्राणीओनां मांसोना स्निग्ध रसाओथी आहार कराववो. शतावरी, काळा तल, जेठीमध, नीलकमळ, दूर्वा अने साटोडी एओनो अथवा नोरवेलने अने सफेद गरणीने कांजीमां वाटीने तेनो लेप करवो. काकोल्यादि वगेरे गणोनां शीतल परिषेचनोनी तथा शीतल प्रलेपोनी पण योजना करवी. सूर्यावर्त्तनुं निवारण करनारां जे अवपीड नस्यो केहेवामां आव्यां तेओनी पण योजनाओ करवी.

११ कृमिक्षयकृतौ हित्वा शिरोरोगेषु बुद्धिमान् ॥
मधुतैलसमायुक्तैः शिरांस्यतिविरेचयेत् ।
पश्चात्सर्षपतैलेन ततो नस्यं प्रयोजयेत् ॥
नचेच्छान्तिं व्रजत्येवं स्निग्धस्विन्नांस्ततो भिषक्।
पश्चादुपाचरेत्सम्यक् शिराणामथ मोक्षणैः ॥

कृमिजन्य शिरोरोग अने रक्तादिक्षयजन्य शिरोरोग एओ शिवाय बीजा शिरोरोगोनी सामान्य चिकित्सा.

११ कृमिजन्य शिरोरोग अने रक्तादिक्षयजन्य शिरोरोग एओ शिवाय बीजा शिरोरोगोमां बुद्धिमान् वैद्ये मधथी तथा तेलथी संयुक्त करेलां शिरोविरेचन द्रव्योनां नस्यो आपीने मस्तकोने सारी पेठे दोषोथी खाली करवां अने पछी सरसीया तेलनुं नस्य देवुं. आम कर्या छतां रोग शांत न थाय तो पछी स्नेहन तथा स्वेदन करी शिरावेध करीने लोहीनुं स्रावण करवुं.

१२ षट्सप्ततिर्नेत्ररोगा दशाष्टादश कर्णजाः ।
एकत्रिंशद् घ्राणगताः शिरस्येकादशेह तु ॥
इति विस्तरतो दृष्टाः सलक्षणचिकित्सिताः ।
संहितायामभिहिताः सप्तषष्टिर्मुखामयाः ॥
एतावन्तो यथास्थूलमुत्तमाङ्गगता गदाः ।
अस्मिञ्छास्त्रे निगदिताःसङ्ख्यारूपचिकित्सितैः॥

शालाक्यतंत्रनो उपसंहार.

१२ आ प्रमाणे छोंतेर नेत्ररोगोनुं, अठ्यावीश कर्णरोगोनुं, एकत्रीश नासिकारोगोनुं अने अगीयार शिरोरोगोनुं तेओनां लक्षणो सहित तथा चिकित्साओ सहित निरूपण कर्युं के जे निरूपण विदेहादिप्रणीत शालाक्यशास्त्रोमां विस्तारथी करवामां आव्युं छे. सणसठ प्रकारना मुखरोगो के जेओ विदेहादिप्रणीत शालाक्यशास्त्रोमां लखेला छे तेओनुं लक्षणो सहित तथा चिकित्साओ सहित निरूपण तो अमोए अमारी पंचस्थानात्मक संहितामांज आपेलुं छे तेथी आ तंत्रमां तेनी

पुनरुक्ति करी नथी. (निदानस्थानना १६ मा अध्यायना बीजा विषयमां पांसठ मुखरोगो गणाव्या छे अने चिकित्सास्थानना २२ मा अध्यायमां तेओनीज चिकित्साओ कही छे माटे आ ग्रंथ प्रमाणे तो मुखरोगोनी संख्या पांसठनीज थाय छे. ए संख्यामां ग्रंथांतरो उपरथी दंतविद्रधि नामना एक दंतमूलज रोगने उमेरीये अने एकवृंदने तथा वृंदने जूदा गणीये तोज सणसठनी संख्या पूरी थाय. निदानस्थानना १६ मा अध्यायनो ४९ मो विषय वांचो.) उत्तमांग के जे मुख, नेत्र, कान, नाक अने मस्तक ए सर्व अवयवोना समुदायरूप छे तेमां थता रोगोनो जो बहुज बारीकीथी विचार करीए तो ते रोगो असंख्यात थई जाय एम छे माटे स्थूल पण चिकित्साना उपयोगने माटे पूर्ण थाय एवा विचारथी तेओने टुंकामां लईने आ शास्त्रमां तेओनां संख्याओ, लक्षणादिक तथा चिकित्साओ केहेवामां आव्यां छे.

(शालाक्यतंत्र समाप्त)

कौमारभृत्य तंत्र.

अध्याय २७ मो.

१ अथातो नवग्रहाकृतिविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'नवग्रहाकृतिविज्ञानीयं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ बालग्रहाणां विज्ञानं साधनं चाप्यनन्तरम् ।
उत्पत्तिं कारणं चैव सुश्रुतैकमनाः शृणु ॥

बालग्रहोना वळगाडनां चिह्नो वगेरे केहेवानी प्रतिज्ञा.

२ हे सुश्रुत! हवे बालकोने बालग्रहोनो वळगाड थयानां चिह्नो, वळगाड टाळवाना उपायो, बालग्रहोनी उत्पत्ति अने तेओनो वळगाड थवानां कारणो कहुं छुं ते एकाग्र चित्तथी सांभळो. (मोटी उमरनां माणसोने देव वगेरेना जे वळगाडो थाय छे तेओ विषे तो भूतविद्यातंत्रमां केहेवामां आवशे.)

३ स्कन्दग्रहस्तु प्रथमः स्कन्दापस्मार एव च॥
शकुनी रेवती चैव पूतना चान्धपूतना ॥
पूतना शीतनाम्नी च तथैव मुखमण्डिका ।
नवमो नैगमेषश्च यः पितृग्रहसंज्ञितः ॥

नव बालग्रहोना नामो.

३ स्कंद, स्कंदापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अंधपूतना, शीतपूतना, मुखमंडिका अने नैगमेष ए नव बालग्रहो केहेवाय छे. नवमो नैगमेष नामनो बालग्रह 'पितृग्रह' ए नामथी पण ओळखाय छे.

४ धात्रीमात्रोः प्राक्प्रदिष्टाचारा-
च्छौचभ्रष्टान्मङ्गलाचारहीनान् ।
त्रस्तान् हृष्टांस्तर्जितान्क्रन्दितान्वा
पूजाहेतोर्हिंस्युरेते कुमारान् ॥

बालग्रहो बालकोने शा कारणथी वळगे छे?

४ मातानी अने धात्रआदिनी कर्त्तव्यमां भूलो के जेओ शारीरस्थानना १० मा अध्यायमां सूचववामां आवी छे तेओथी बालग्रहो बालकोने पीडे छे. जेओने विष्ठामूत्र वगेरे धोईने बराबर स्वच्छ राखवामां

---

१ बालकोने उछेरवाना प्रकारो, धावणना दोषोने शुद्ध करवाना प्रकारो अने दुष्ट धावणथी के बालग्रहोना वळगाडथी उत्पन्न थएला व्याधिओने शांत करवाना प्रकारो इत्यादि सघळा विषयो जेमां आवे ते कौमारभृत्यतंत्र केहेवाय छे. आ विषयोमां जेटला विषयो शारीरस्थानादिकमां केहेवाई गया छे तेओने छोडी दईने बाकीना विषयोनुं आ तंत्रमां निरूपण करवामां आवशे. सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायनो ८ मो विषय तथा त्रीजा अध्यायनो ८ मो विषय वांचो.

२ बालग्रहोना वळगाडनां जूदां जूदां चिन्हो तथा ते वळगाडोनी सामान्य चिकित्सा विषेनो.

न॰ आवता होय ते बालकोनां शरीरोमां, जेओने मंगळोथी तथा आचारोथी रहित राखवामां आवता होय ते बालकोनां शरीरोमां, त्रास पामेला बालकोनां शरीरोमां, अत्यंत राजी थएला बालकोनां शरीरोमां, कोइए बीवडावेला बालकोनां शरीरोमां अने अत्यंत रोमरावेला के रोवा लागेला बालकोनां शरीरोमां बालग्रहो पोताना पूजनना लोभथी तथा बलिदान मेळववाना लोभथी प्रवेश करीने बालकोने पीडे छे. (बालकीओने पण पीडे छे.)

५ ऐश्वर्य्यस्थास्ते न शक्या विशन्तो
देहं द्रष्टुं मानुषैर्विश्वरूपाः ।
आप्तं वाक्यं तत्समीक्ष्याभिधास्ये
लिङ्गान्येषां यानि देहे भवन्ति ॥

शरीरमां पेसता बालग्रहो प्रत्यक्ष देखाता नथी माटे चिह्नो उपरथी तेओनी परीक्षा केहेवा विषे.

५ अणिमा आदि ऐश्वर्यवाळा होवाने लीधे अनेक रूपो धरवानी शक्तिवाळा अने तेवां रूपोथी बालकोनां शरीरोमां प्रवेश करता ए बालग्रहो माणसोने प्रत्यक्ष थता नथी एटला माटे हुं शिष्ट (यथार्थवादी) लोकोनां वचनोनुं अवलोकन करीने ते बालग्रहोनां चिह्नो कहुं छुं के जे चिह्नो बालकोनां शरीरोमां थाय छे.

६ शूनाक्षः क्षतजसगन्धिकः स्तनद्विड्
वक्रास्यो हतचलितैकपक्ष्मनेत्रः ।
उद्विग्नः सुलुलितचक्षुरल्परोदी
स्कन्दार्त्तो भवति च गाढमुष्टिवर्चाः ॥

स्कंदना वळगाडनां चिह्नो.

६ जो बालक सूणेली आंखोवाळो, लोहीना जेवा गंधवाळो, स्तन धाववा उपर अरुचिवाळो, वांका मोहोडावाळो, जेनी एक पांपण खराब देखाती तथा चलित थती होय एवो, उद्वेग पामेलो, पाणीथी भराएलां नेत्रोवाळो, थोडुं रोनारो, दृढ मुठीओवाळो अने कठण विष्टावाळो थई गयो होय तो जाणवुं के तेने स्कंद नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

७ निःसंज्ञो भवति पुनर्भवेत्ससंज्ञः
संरब्धः करचरणैश्च नृत्यतीव ।
विण्मूत्रे सृजति विनद्य जृम्भमाणः
फेनं च प्रसृजति तत्सखाभिपन्नः ॥

स्कंदापस्मारना वळगाडनां चिह्नो.

७ जो बालक संज्ञा वगरनो थई जतो होय, वळी संज्ञावाळो थतो होय, वेगवाळो थई जतो होय, हाथोथी तथा पगोथी जाणे नाचतो होय एवो देखातो होय, ऊंचा स्वरथी बराडा पाडीने विष्टा तथा मूत्र करतो होय, बगासां खाधां करतो होय अने मोहोडामांथी फीण काहाड्या करतो होय तो जाणवुं के तेने स्कंदापस्मार नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

८ स्रस्ताङ्गो भयचकितो विहङ्गगन्धिः
संस्राविव्रणपरिपीडितः समन्तात् ।
स्फोटैश्च प्रततनुः सदाहपाकै-
र्विज्ञेयो भवति शिशुः क्षतः शकुन्या ॥

शकुनीना वळगाडनां चिह्नो.

८ जो बालक शिथिल अंगोवाळो, भयथी चकित थई जतो, मांसभक्षक पक्षीना अथवा जलचर पक्षीना जेवा गंधवाळो, चोमेर स्राववाळा व्रणोथी पीडाएलो अने बळतरावाळा तथा पाकवाळा फोडलाओथी व्याप्त शरीरवाळो थई गयो होय तो जाणवुं के तेने शकुनी नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

९ रक्तास्यो हरितमलोऽतिपाण्डुदेहः
श्यावो वा ज्वरमुखपाकवेदनार्त्तः ।
रेवत्या व्यथिततनुश्च कर्णनासं
मृद्नाति ध्रुवमभिपीडितः कुमारः ॥

रेवतीना वळगाडनां चिह्नो.

९ जो बालक राता मोहोडावाळो, हरित

वर्णनी विष्टावाळो, अत्यंत पांडु वर्णवाळो अथवा श्यामवर्णवाळो अने ज्वरनी तथा मोहोडुं पाकवानी वेदनाथी पीडाएलो होय तेमज शरीरमां व्यथाने लीधे काननुं तथा नाकनुं मर्दन करी नाखतो होय तो जाणवुं के तेने रेवती नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

१० स्रस्ताङ्गः स्वपिति सुखं दिवा न रात्रौ
　विड् भिन्नं सृजति च काकतुल्यगन्धः ।
छर्द्यार्तो हृषिततनूरुहः कुमार-
　स्तृष्णालुर्भवति च पूतनागृहीतः ॥

पूतनाना वळगाडनां चिह्नो.

१० जो बालक शिथिल अंगोवाळो थई गयो होय, राते के दिवसे पण सुखे सूतो न होय, पातळा झाडावाळो थई गयो होय, कागडाना जेवा गंधवाळो थई गयो होय, उलटीओथी पीडातो होय, वारंवार तरश्यो थया करतो होय अने तेनां रुवाडां वारंवार ऊभां थई जतां होय तो जाणवुं के तेने पूतना नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

११ यो द्वेष्टि स्तनमतिसारकासहिक्का
　छर्दीभिर्ज्वरसहिताभिरर्द्यमानः ।
दुर्वर्णः सततमधःशयोऽम्लगन्धि-
　स्तं ब्रूयुर्ननु भिषजोऽन्धपूतनार्त्तम् ॥

अंधपूतनाना वळगाडनां चिह्नो.

११ जो बालक स्तन धाववा उपर अरुचिवाळो, खराब वर्णवाळो, सर्वदा ऊंधे मोहोडे सूवानी टेववाळो तथा खाटा गंधवाळो थई गयो होय अने अतिसारथी, खांसीथी, हेडकीथी, उलटीथी तथा ज्वरथी पीडाया करतो होय तो जाणवुं के तेने अंधपूतना नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

१२ उद्विग्नो भृशमतिवेपते प्ररुद्यात्
　संलीनः स्वपिति च यस्य चान्त्रकूजः ।
विस्राङ्गो भृशमतिसार्य्यते च यस्तं
　जानीयाद्भिषगिह शीतपूतनार्त्तम् ॥

शीतपूतनाना वळगाडनां चिह्नो.

१२ जो बालक बहु उद्वेग पामी पामीने अत्यंत ध्रुजतो होय, रोतो होय, शयनमां लीन जेवो थईने सुई रेहेतो होय तथा काचा मांसना जेवा गंधवाळो थई गयो होय अने तेने वारंवार तथा अत्यंत पातळो दस्त उतर्या करतो होय तथा पेटमां आंतरडांओनो अवाज थया करतो होय तो जाणवुं के तेने शीतपूतना नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

१३ म्लानाङ्गः सुरुचिरपाणिपादवक्त्रो
　बह्वाशी कलुषशिरावृतोदरो यः ।
सोद्वेगो भवति च मूत्रतुल्यगन्धः
　स ज्ञेयः शिशुरथ वक्त्रमण्डिकार्त्तः ॥

मुखमंडिकाना वळगाडनां चिह्नो.

१३ जो बालकनां अंगो ग्लानि पाम्यां होय, हाथ पग तथा मोहोडुं अत्यंत सुंदर देखातां होय, झाझुं खावानी टेव पडी गई होय, पेट मलिन शिराओथी व्याप्त थई गयुं होय, वारंवार उद्वेगनी प्राप्ति जोवामां आवती होय अने शरीरमांथी मूत्रना जेवो गंध नीकळतो होय तो जाणवुं के ते बालकने मुखमंडिका नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

१४ यः फेनं वमति विनम्यते च मध्ये
　सोद्वेगं विलपति चोर्द्ध्वमीक्षमाणः ।
ज्वर्य्येत प्रततमथो वसासगन्धिर्निः
　संज्ञो भवति हि नैगमेषजुष्टः ॥

नैगमेषना वळगाडनां चिह्नो.

१४ जो बालक फीणनुं वमन करतो होय, शरीरना मध्यभागमां नमी जतो होय, उद्वेग पामी ऊंचे जोई जोईने रोया करतो होय, अत्यंत ज्वरथी पीडातो होय, चरबीना जेवा गंधवाळो थई गयो होय अने बेभान थई जतो होय तो जाणवुं के तेने नैगमेष नामना बालग्रहनो वळगाड थयो छे.

१५ प्रस्तब्धो यः स्तनद्वेषी मुह्यते चाविशन्मुहुः
तं बालं नचिराद्धन्ति ग्रहः सम्पूर्णलक्षणः ॥

बालग्रहना असाध्य वळगाडनुं लक्षण.

१५ जो बालक अक्कड थई गयो होय, स्तन धाववा उपर अरुचिज धरावतो होय, वारंवार बेभान थई जतो होय, वारंवार गभरातो होय, वारंवार आवेश पाम्या करतो होय अने उपर कहेला वळगाडनां चिह्नो संपूर्ण देखातां होय तो जाणवुं के वळगेलो बालग्रह ते बालकने थोडी मुदतमां मारीज नाखशे.

१६ विपरीतमतः साध्यं चिकित्सेदचिरार्दितम्।

बालग्रहना साध्य वळगाडनुं लक्षण.

१६ बालक अक्कड न थई गयो होय, धावतो होय, कोई वखतेज बेभान थई जतो होय, कोई वखतेज गभरातो होय, कोई वखतेज आवेश पामतो होय अने वळगाडनां सघळां चिह्नोवाळो न होय तथा थोडो समय थया पीडायो होय तो तेने थएला वळगाडने साध्य समजीने वैद्ये चिकित्सा करवी.

१७ गृहे पुराणहविषाभ्यज्य बालं शुचौ शुचिः॥
सर्षपान् प्रकिरेत्तेषां तैलैर्दीपं च कारयेत् ।
सदा सन्निहितं चापि जुहुयाद्धव्यवाहनम् ॥
सर्वगन्धौपधीर्बीजैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृतम् ।
अग्नये कृत्तिकाभ्यश्च स्वाहा स्वाहेति संस्मरन्॥
नमः स्कन्दाय देवाय ग्रहाधिपतये नमः ।
शिरसा त्वाभिवन्देऽहं प्रतिगृह्णीष्व मे बलिम् ॥
नीरुजो निर्विकारश्च शिशुर्मे जायतां ध्रुवम् ॥

बालग्रहना वळगाडनी सामान्य चिकित्सा.

१७ वैद्ये पवित्र थई, वळगाडवाळा बालकने जूना घीनो अभ्यंग करी घरनी अंदर पवित्र प्रदेशमां राखी तेनी आगळ सर्षपो वेरणवा, सरसीया तैलथी दीवो कराववो, अग्निने निरंतर हाजर रखाववो अने अग्निनुं चंदनथी तथा पुष्पोथी पूजन करीने एलादिगणनां द्रव्योनो तथा जवतल वगेरे धान्योनो **अग्नये स्वाहा कृत्तिकाभ्यः स्वाहा** एम मंत्रोच्चार करी करीने वारंवार होम करवो. होम कर्या पछी मध्याह्न समयमां "हुं स्कंददेवने प्रणाम करूं छुं. बालग्रहोना अधिपतिने प्रणाम करूं छुं. हे स्कंद! हुं तमने, मस्तकथी अभिवंदन करूं छुं. हुं आ बलिदान आपुं छुं तेनो स्वीकार करो. मारो बालक अवश्य, वेदना वगरनो तथा विकारो वगरनो थाओ" एवा अर्थवाळो मूलोक्त संस्कृतमंत्र बोलीने स्कंददेवने बलिदान देवुं.

अध्याय २८ मो.

१ अथातः स्कन्दग्रहप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्कंदग्रहप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्कन्दग्रहोपसृष्टानां कुमाराणां च शस्यते ॥
वातघ्नद्रुमपत्राणां निष्क्वाथः परिषेचने ॥

परिषेचन.

२ स्कंदग्रहना वळगाडवाळा बालकोना शरीरपर, वायुने हणनारां बीली वगेरे वृक्षोनां पानडांओना काथनुं परिषेचन करवुं ए उत्तम गणाय छे.

३ तेषां मूलेषु सिद्धं च तैलमभ्यञ्जने हितम् ।
सर्वगन्धसुरामण्डकैटर्य्यावापमिष्यते ॥

अभ्यंग.

३ बीली वगेरे वृक्षो के जेओ वायुने हणनारां

१ स्कंद नामना बालग्रहना वळगाडनी चिकित्सा विषेनो.

२ वायुने हणनारां वृक्षो अचिंत्य शक्तिवाळां होवाने लीधे व्याधिने पण शांत करे छे अने ग्रहने पण शांत करे छे.

छे तेओनां मूळोनो क्काथ करी तेमां पकावेलुं अने पाकी रेहेवा आवे ते समयमां जेमां एलादिगण, सुरानी आछ अने लींबडो एओनो प्रतिवाप नाखेलो होय एवुं तैल स्कंदग्रहना वळगाडवाळा बालकोने अभ्यंगमां हितकारी थाय छे.

४ देवदारुणि रास्नायां मधुरेषु द्रुमेषु च ।
सिद्धं सर्पिश्च सक्षीरं पानमस्मै प्रयोजयेत् ॥

पावानुं घी.

४ देवदार, रास्ना अने काकोल्यादि मधुरगण एओना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेला घीने दूधथी मिश्रित करीने स्कंदग्रहना वळगाडवाळा बालकने ते पीवा आपवुं.

५सर्षपाः सर्पनिर्म्मोको वचा काकादनी घृतम् ।
उष्ट्राजाविगवां चैव रोमाण्युद्धूपनं शिशोः ॥

धूमाडी.

५ सर्षपो, सर्पनी कांचळी, वज, सफेद चणोठी, घी, ऊंटनां रुवाडां, बकरानां रुवाडां अने गाडरनां रुवाडां एओनी धूमाडी देवाथी स्कंदग्रहनो वळगाड शांत थाय छे.

६सोमवल्लीमिन्द्रवल्लीं शमीं बिल्वस्य कण्टकान् ।
मृगादन्याश्च मूलानि ग्रथितान्येव धारयेत् ॥

हार–माळा.

६ गळो, आसोंदरो, खीजडी, बीलीना कांटा अने इंद्रवारणीनां मूळ एओने दोरामां गूंथीने तेनी माळा पेहेरावी रखाववाथी स्कंदग्रहना वळगाडवाळा बालकनुं हित थाय छे.

७ रक्तानि माल्यानि तथा पताका
रक्ताश्च गन्धा विविधाश्च भक्ष्याः ।
घण्टा च देवाय बलिर्निवेद्यः
सकुक्कुटः स्कन्दग्रहे हिताय ॥
स्नानं त्रिरात्रं निशि चत्वरेषु
कुर्य्यात्पुनः शालियवैर्नवैस्तु ।
अद्भिश्च गायत्र्यभिमन्त्रिताभिः
प्रज्वालनं चाहुतिभिश्च वह्नेः ॥

बलिदान, स्नान तथा होम.

७ रातां पुष्पो, राती पताकाओ, रातां सुगंधी लेपनो, विविध भक्ष्यो, घंटा अने कुकडो एओनो चौटामां स्कंदने बलि देवामां आवे तो तेथी स्कंदना वळगाडवाळा बालकनुं हित थाय छे. आ बलिदाननो विधि राते करवो अने ते त्रण रातसूधी लागठ करवो. (वैद्ये नाही पवित्र थई हाथमां शस्त्र राखीने बलिदान देवुं.)

राते चौटामां जई नवा चोखानुं तथा जवनुं मंडल करी तेनी अंदर बालकने गायत्रीमंत्रथी मंत्रेला जळवते नवराववो अने अग्निमां नवा चोखानी तथा जवनी त्रण, सात अथवा दश आहुतिओ होमवी. आ विधि पण राते करवो अने त्रण रातसूधी लागठ करवो.

८ रक्षामतः प्रवक्ष्यामि बालानां पापनाशनीम् ।
अहन्यहनि कर्तव्या या भिषग्भिरतन्द्रितैः ॥
तपसां तेजसां चैव यशसां वपुषां तथा ।
निधानं योऽव्ययो देवः स ते स्कन्दः प्रसीदतु॥
ग्रहसेनापतिर्देवो देवसेनापतिर्विभुः ।
देवसेनारिपुहरः पातु त्वां भगवान् गुहः ॥
देवदेवस्य महतः पावकस्य च यः सुतः ।
गङ्गोमाकृत्तिकानां च स ते शर्म्म प्रयच्छतु ॥
रक्तमाल्याम्बरः श्रीमान् रक्तचन्दनभूषितः ।
रक्तदिव्यवपुर्देवः पातु त्वां क्रौञ्चसूदनः ॥

स्कंदग्रहसंबंधी दरएक विधानमां बोलवाना अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवाना रक्षामंत्रो.

८ हवे बालकोने माटे दुःखोने नष्ट करनारो रक्षापाठ कहुं छुं. वैद्योए आलस्य नहीं राखतां नित्य बालकोनी पासे नीचे लखेलो रक्षापाठ बोलवो.

" देव कार्तिकेयस्वामी के जे तपोना, तेजोना, यशोना तथा शरीरसामर्थ्योना भंडाररूप छे अने अविनाशी छे ते देव तने प्रसन्न होजो. ग्रहोनी

सेनाना पति, देवताओनी सेनाना पति, देवता-ओनी सेनाना शत्रुओने हणनारा, क्रीडा करनारा अने महासमर्थ कार्तिकेयदेव तारूं रक्षण करजो. कार्तिकेयस्वामी के जे देवाधिदेव सदाशिवना, अग्निना, गंगाना, पार्वतीना अने कृत्तिकाओना पण पुत्र छे ते तारूं भलुं करजो. रातां पुष्पोने तथा रातां वस्त्रोने धरनारा, ऐश्वर्यवाळा, रातां चंदनथी शणगारेला अने दिव्य रातां शरीरवाळा कार्तिकेयदेव तारूं रक्षण करजो." (आ अ-र्थवाळो मूलोक्त संस्कृत पाठ बोलवो.)

अध्याय २९ मो.

उपक्रम.

१ अथातः स्कन्दापस्मारप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः।

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्कंदापस्मार-प्रतिषेध[१]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्या-ख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ बिल्वः शिरीषो गोलोमी सुरसादिश्च यो गणः।
परिषेके प्रयोक्तव्यः स्कन्दापस्मारशान्तये ॥

परिषेचन.

२ स्कंदापस्मार नामना बालग्रहनी शांतिने माटे बालकना शरीर उपर बीली, सरसडीयो, अने सुरसादिगण एओना काथनुं परिषे-चन करवुं.

३ सर्वगन्धविपक्वं तु तैलमभ्यञ्जने हितम्।

अभ्यंग.

३ एलादिगणना काथथी तथा कल्कथी तैल पकावीने ते तैलनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवाथी स्कंदापस्मारनी शांति थाय छे.

४ क्षीरवृक्षकषाये च काकोल्यादौ गणे तथा॥
विपक्तव्यं घृतं वापि पानीयं पयसान्वितम्।

पावानुं घी.

४ वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना चोगणा काथमां अने चोगणा दूधमां काकोल्यादिगणनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. आ घी दूधथी मिश्रित करीने स्कंदापस्मारना वळगाडवाळा बालकने पावाथी स्कंदापस्मारनी शांति थाय छे.

५ उत्सादनं वचाहिङ्गुयुक्तं स्कन्दग्रहे हितम्॥

शरीरपर चोळवुं.

५ वज अने हींग एओनो पातळो कल्क करीने बालकना शरीरपर चोळवाथी स्कंदापस्मा-रना वळगाडवाळा बालकनुं हित थाय छे. (स्कंदनो वळगाड पण आ चोळवाथी शांत थाय छे.)

६ गृध्रोलूकपुरीषाणि केशा हस्तिनखा घृतम्।
वृषभस्य च रोमाणि योज्यान्युद्धूपनेऽपि च ॥

धूमाडी.

६ गरजनी चरक, घूवडनी चरक, वाळ, हाथीना नख, घी अने बळदनां रुवाडां एओनी धूमाडी देवाथी स्कंदापस्मारनो वळगाड शांत थाय छे.

७ अनन्तां कुक्कुटीं बिम्बीं मर्कटीं चापि धारयेत्।

हार-माळा.

७ उपलसरी, कुकडवेल, कडवी घोली अने कौवच एओने दोरामां गूंथीने तेनी बालकने माळा पेहेरावी राखवी ए पण स्कंदापस्मारवाळा बालकनुं हित करे छे.

८ पक्वापक्वानि मांसानि प्रसन्नं रुधिरं पयः ॥
भूतौदनो निवेद्यश्च स्कन्दापस्मारिणोऽवटे।
चतुष्पथे च कर्त्तव्यं स्नानमस्य यतात्मना ॥

बलिदान तथा स्नान.

८ स्कंदापस्मारना वळगाडनी शांतिने माटे काचां तथा पाकां मांसो, बकरानुं ताजुं रुधिर,

१ स्कंदापस्मारना वळगाडनी चिकित्सा विषेनो.

दूध अने वाफेला अडदना भातसहित बाकळा एओनुं स्कंदापस्मारने खाडामां बलिदान देवुं.

वैद्ये सावधान अंतःकरण राखी स्कंदापस्मारना वळगाडवाळा बालकने राते चौटामां लई जई नवा चोखानुं तथा जवनुं मंडल करी तेमां बेसाडी गायत्रीमंत्रथी मंत्रेला जळवते नवरावबो.

९स्कन्दापस्मारसंज्ञो यः स्कन्दस्य दयितः सखा। विशाखसंज्ञश्च शिशोः शिवोऽस्तु विकृताननः॥

स्कंदापस्मारसंबंधी दरएक विधानमां बोलवानो अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवानो मंत्र.

९ कार्तिकेयस्वामीनो विशाख नामनो जे प्यारो-मित्र 'स्कंदापस्मार' ए नामथी ओळखाय छे अने विकृत मोहोडावाळो छे ते देव आ बालकने सुखदाई थजो. (आ अर्थवाळो मूलोक्त संस्कृत मंत्र बोलवो.)

अध्याय ३० मो.

उपक्रम.

१ अथातः शकुनीप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शकुनीप्रतिषेध'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ शकुन्यभिपरीतस्य कार्य्यो वैद्येन जानता। वेतसाम्रकपित्थानां निष्क्वाथः परिषेचने ॥

परिषेचन.

२ जे बालकने शकुनीनो वळगाड थयो होय ते बालकना शरीरपर प्रवीण वैद्ये नेतर, आंबो अने कोठ एओना काथनुं परिषेचन करवुं.

३ कषायमधुरैस्तैलं कार्य्यमभ्यञ्जने शिशोः ।

अभ्यंग.

३ वड वगेरे कषायवृक्षोना काथथी अने काकोल्यादि मधुरगणना कल्कथी तैल पकावीने ते तैलनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवामां आवे तो तेथी शकुनीना वळगाडनी शांति थाय छे.

४ मधुकोशीरह्रीबेरसारिवोत्पलपद्मकैः ॥ रोध्रप्रियङ्गुमञ्जिष्ठागैरिकैः प्रदिहेच्छिशुम् । व्रणेषूक्तानि चूर्णानि पथ्यानि विविधानि च॥

लेपन तथा आहार.

४ जेठीमध, वाळो, काळो वाळो, उपलसरी, नीलकमळ, पद्मकाष्ठ, लोद्र, घउलां, मजीठ अने सोनागेरू एओनो बालकना शरीरपर लेप करवो. चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायमां व्रणोनी उपर करवानां जे शोधन रोपण चूर्णो कह्यां छे तेओनी पण योजना करवी अने सूत्रस्थानना २० अध्यायमां राता चोखा, मग तथा दाडिम वगेरे जे पथ्यो कहेलां छे तेओनो आहार करावबो.

५स्कन्दग्रहे धूपनानि तानीहापि प्रयोजयेत् ।

धूमाडी.

५ गया अठ्यावीशमा अध्यायना ५ मा विषयमां स्कंदना वळगाड उपर जे धूमाडी वामां आवी छे तेज धूमाडी शकुनीना वळगाड उपर पण योजवी.

६ शतावरीमृगैर्वारुनागदन्तीनिदिग्धिकाः ॥ लक्ष्मणां सहदेवां च बृहतीं चापि धारयेत् ।

हार—माळा.

६ शतावरी, इंद्रवारणी, नागदमण, बेठी भोरींगणी, लक्ष्मणा, सहदेवी के जे महाबला केहेवाय छे ते, अने ऊभी भोरींगणी एओने दोरामां गूंथीने तेओनी बालकने माळा पण पेहेरावी राखवी.

७ तिलतण्डुलकं माल्यं हरितालं मनःशिला ॥ बलिरेष करञ्जेषु निवेद्यो नियतात्मना । निकुञ्जे च प्रयोक्तव्यं स्नानमस्य यथाविधि ॥

---

[1] शकुनीना वळगाडनी चिकित्सा विषेनो.

बलिदान तथा स्नान.

७ अंतःकरणने सावधान राखीने वैद्ये तल, चोखा, फूल, हरताल अने मणशील एओनो बलि करंजनां वृक्षोमां देवो अने स्कंदग्रहना विषयमां कहेला विधिप्रमाणे बालकने वृक्षोना निकुंजमां स्नान करावबुं.

८ स्कन्दग्रहोपशमनं घृतं तच्चेह पूजितम् ।

पावानुं घी.

८ स्कंदग्रहना वळगाडना विषयमां जे घी केहेवामां आव्युं छे ते घी शकुनीना वळगाड उपर पण पावुं ए हितकारी छे.

९कुर्य्याच्च विविधां पूजां शकुन्याः कुसुमैः शुभैः

पूजा.

९ शुभ पुष्पोथी शकुनीनी विविध प्रकारनी पूजा पण करवी.

१० अन्तरिक्षचरा देवी सर्वालङ्कारभूषिता ।
अधोमुखी तीक्ष्णतुण्डा शकुनी ते प्रसीदतु ॥
दुर्दर्शना महाकाया पिङ्गाक्षी भैरवस्वरा ।
लम्बोदरी शङ्कुकर्णी शकुनी ते प्रसीदतु ॥

शकुनीसंबंधी दरएक विधानमां बोलवाना अने बालकनी पासे नित्य पाठ करावाना मंत्रो.

१० अंतरीक्षमां फरनारी, सघळा अलंकारोथी शणगारेली अने नीचा तथा तीक्ष्ण मोहोडावाळी शकुनी देवी तने प्रसन्न थजो. भयंकर दर्शनवाळी, मोटी कायावाळी, पींगळी आंखोवाळी, भयंकर अवाजवाळी, लांबा पेटवाळी अने खीला जेवा कानोवाळी शकुनी तने प्रसन्न थाओ. (आ अर्थवाळा मूलोक्त संस्कृत मंत्रो बोलवा.)

अध्याय ३१ मो.

उपक्रम.

१ अथातो रेवतीप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'रेवतीप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अश्वगन्धाजशृङ्गी च सारिवा सपुनर्नवा ।
सहे विदारी च तथा कषायाः सेचने हिताः॥

परिषेचन.

२ जे बालकने रेवतीनो वळगाड थयो होय ते बालकना शरीरपर आसोंद, मेंढाशींगी अथवा काकडाशींगी, उपलसरी, साटोडी, जंगली मग, जंगली अडद अने फगवेलानो कंद एओना काथोनुं परिषेचन करवुं ए हितकारी थाय छे.

३ तैलमभ्यञ्जने कार्य्यं कुष्ठे सर्जरसेऽपि वा ॥

अभ्यंग.

३ कठ अथवा राळ, एओना काथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवो.

४ धवाश्वकर्णककुभधातकीतिन्दुकीषु च ।
काकोल्यादिगणे चैव पानीयं सर्पिरिष्यते ॥

पावानुं घी.

४ धावडो, राळनुं झाड, कडायो, धावणी अने टींबरू एओना काथथी अने काकोल्यादिगणना कल्कथी पकावेलुं घी रेवतीना वळगाडवाळा बालकने पावुं.

५ कुलत्थाः शङ्खचूर्णं च प्रदेहाः सार्वगन्धिकाः ।

लेप.

५ कळथी, शंखनुं चूर्ण अने एलादिगण एओना प्रलेपो करवा ए हितकारी छे.

६ गृध्रोलूकपुरीषाणि यवा यवफलो घृतम् ॥
सन्ध्ययोरुभयोः कार्य्यमेतदुद्धूपनं शिशोः ।

धूमाडी.

६ गरंजनी चरक, घूवडनी चरक, जव, वांस

---

१ रेवतीना वळगाडनी चिकित्सा विषेनो.

अने घी एओनी धूमाडी प्रभातकाळे तथा सायंकाळे बालकने देवी ए हितकारी थाय छे.

७ वरुणारिष्टकमयं रुचकं सेन्दुकं तथा ॥
सततं धारयेच्चापि कृतं वा पौत्रजीविकम् ।

गळामां मादळीयुं.

७ वायवरणाना, लींबडाना, अरीठाना, नगडना के जीयापोताना काष्ठनुं मादळीयुं घडावीने बालकना गळामां हमेश पेहेरावी राखवुं ए पण हितकारी छे.

८शुक्लाः सुमनसो लाजाः पयः शाल्योदनं तथा॥
बलिर्निवेद्यो गोतीर्थे रेवत्यै प्रयतात्मना ।

बलिदान.

८ वैद्ये उपवासादिकथी पवित्र थई रेवतीने सफेद फूलो, शाळनी धाणी, दूध अने चोखानो भात एओनुं गायोना वाडामां बलिदान देवुं.

९सङ्गमे च भिषक् स्नानं कुर्य्याद्धात्रीकुमारयोः॥

स्नान.

९ वैद्ये समुद्रना अने नदीना, अथवा बे नदीओना संगममां बालकने अने तेनी माने नवराववां. (स्कंदग्रहना विषयमां कहेलो विधि जुवो.)

१० नानावस्त्रधरा देवी चित्रमाल्यानुलेपना ।
चलत्कुण्डलिनी श्यामा रेवती ते प्रसीदतु ॥
लम्बा कराला विनता तथैव बहुपुत्रिका ।
रेवती सततं माता सा ते देवी प्रसीदतु ॥

शकुनीसंबंधी दरएक विधानमां बोलवाना अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवाना मंत्रो.

१० विविध वस्त्रोने धरनारी, विचित्र पुष्पोने धरनारी, विचित्र लेपनवाळी, चलित कुंडलोवाळी अने श्याम वर्णवाळी अथवा सोळ वर्षनी रेवतीदेवी तने प्रसन्न थाओ. लांबी, विकराळ, मध्यमां नमी रहेली अने घणा पुत्रोवाळी रेवती माता तने प्रसन्न थाओ. (आ अर्थवाळा मूलोक्त संस्कृत मंत्रो बोलवा.)

अध्याय ३२ मो.

उपक्रम.

१ अथातः पूतनाप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'पूतनाप्रतिषेध'[1] नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ कपोतवङ्काऽरलुको वरुणः पारिभद्रकः ।
आस्फोता चैव योज्याः स्युर्बालानां परिषेचने ॥

परिषेचन.

२ जे बालकोने पूतनानो वळगाड थयो होय तेओनां शरीरोपर ब्राह्मी, अरडूसो, वायवरणो, लींबडो अने गरणी अथवा उपलसरी एओना काथोनी परिषेचनमां योजना करवी.

३वचा वयस्था गोलोमी हरितालं मनःशिला।
कुष्ठं सर्जरसश्चैव तैलार्थे वर्ग इष्यते ॥

अभ्यंग.

३ वज, गळो, दूर्वा, हरताल, मणशील, कठ अने राळ ए सर्वने एकठां करी तेओना काथथी तथा कल्कथी तैल बनावीने ते तैलनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवो.

४ हितं घृतं तुगाक्षीर्य्यां सिद्धं मधुरकेषु च ।
कुष्ठतालीशखदिरचन्दनस्यन्दने तथा ॥

पावानुं घी.

४ वंशलोचन, काकोल्यादि मधुरगण, कठ, तालीसपत्र, खेर, चंदन अने मीणोहरमो एओना काथथी तथा कल्कथी घी पकावीने ते घी पूतनाना वळगाडवाळा बालकने पावुं. (जो के काकोल्यादिगणमां पण 'वंशलोचन आवे छे तो-

---

१ पूतनाना वळगाडनी चिकित्सा विषेनो.

पण वंशलोचननुं फरीवार ग्रहण कर्युं छे माटे वंशलोचन बे भाग जेटलुं लेवुं एम समजवुं.)

५ देवदारुवचाहिङ्गुकुष्ठं गिरिकदम्बकः ।
एला हरेणवश्चापि योज्या उद्धूपने सदा ॥
गन्धनाकुलिकुम्भीका मज्जानो बदरस्य च ।
कर्कटास्थि घृतं चैव धूपनं सर्षपैः सह ॥

धूमाडी.

५ देवदार, वज, हींग, कठ, धाराकदंब, एळची अने हरेणु नामनुं सुगंध द्रव्य एओनी दर वखते धूमाडी देवी तेमज नोरवेल अथवा रास्ना, शेवाळ, बोरना ठळीआनी अंदरनी मज्जा, कुडचलनुं हाडकुं, घी अने सर्षप एओनी पण धूमाडी देवी.

६ काकादनीं चित्रफलां बिम्बीं गुञ्जां च धारयेत् ।

हार–माळा.

६ मालकांकणी, इंद्रवारणी, कडवी घोली अने चणोठी एओनी माळा पूतनाना वळगाडवाळा बालकने हमेश पेहेरावी राखवी.

७ मत्स्यौदनं च कुर्वीत कृशरां पललं तथा ॥
शरावसम्पुटे कृत्वा बलिं शून्यगृहे हरेत् ॥

बलिदान.

७ माछलांओनी साथे पकावेलो भात, तल अडद तथा चोखानी खीचडी अने तलवट एओने कूंडांओना संपुटमां राखीने उजड घरमां पूतनाने बलिदान देवुं.

८ उच्छिष्टेनाभिषेकेण शिरसि स्नानमिष्यते ।
पूज्या च पूतना देवी बलिभिः सोपहारकैः ।

स्नान तथा पूजन.

८ पूतनाना वळगाडवाळा बालकने आचमनना पाणीथी अथवा एठवाडथी माथे नवराववो अने नवरावीने पुष्पादिक उपहारोसहित बलिओथी पूतनानुं पूजन करवुं.

९ मलिनाम्बरसंवीता मलिना रूक्षमूर्द्धजा ॥
शून्यागाराश्रिता देवी दारकं पातु पूतना ।
दुर्दर्शना सुदुर्गन्धा कराला मेघकालिका ॥
भिन्नागाराश्रया देवी दारकं पातु पूतना ॥

पूतनासंबंधी दरएक विधानमां बोलवाना अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवाना मंत्रो.

९ मेलां वस्त्रोथी वींटाएली, मेली, रूक्षवाळोवाळी अने उजड घरमां रेहेनारी पूतना देवी बालकनी रक्षा करजो. क्रूर देखाववाळी, अत्यंत दुर्गंधवाळी, विकराल, मेघ जेवी काळी अने त्रूटेलां घरमां रेहेनारी पूतना देवी बालकनुं रक्षण करजो. (आ अर्थवाळा मूलोक्त संस्कृत मंत्रो बोलवा.)

अध्याय ३३ मो.

उपक्रम.

१ अथातोऽन्धपूतनाप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अंधपूतनाप्रतिषेध[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ तिक्तकद्रुमपत्राणां कार्यः क्वाथोऽवसेचने ।

परिषेचन.

२ लींबडो, गळो, अरडूसो, पटोल अने भोरींगणी एओना क्वाथनुं अंधपूतनाना वळगाडवाळा बालकना शरीरपर परिषेचन करवुं.

३ सुरा सौवीरकं कुष्ठं हरितालं मनःशिला ॥
तथा सर्जरसश्चैव तैलार्थमुपदिश्यते ।

अभ्यंग.

३ सुरा, फोतरां वगरना काचा अथवा पकावेला घउंनो आथो, कठ, हरताल, मणशील

---

१ अंधपूतनाना वळगाडनी चिकित्सा विषयनो.

अने राळ एओथी पकावेला तैलनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवो.

४ पिप्पल्यः पिप्पलीमूलं वर्गो मधुरको मधु ॥ शालपर्णी बृहत्यौ च घृतार्थमुपदिश्यते ।

पावानुं घी.

४ पीपळ, पीपळीमूळ, काकोल्यादि सघळो मधुरवर्ग, शालिपर्णी, बेठी भोरींगणी अने ऊभी भोरींगणी एओना क्राथथी तथा कल्कथी घी पकावी, थंडुं पाडी तेमां मध नाखीने ते घी अंधपूतनाना वळगाडवाळा बालकने पावुं.

५ सर्वगन्धैः प्रदेहश्च गात्रेष्वक्ष्णोश्च शीतलैः ॥

लेप.

५ अंधपूतनाना वळगाडवाळा बालकना शरीरपर केसर, अगरु, कपूर, कस्तूरी अने चंदन एओनुं लेपन करवुं अने नेत्रो उपर चंदननुं तथा कपूरनुं लेपन करवुं.

६ पुरीषं कौक्कुटं केशांश्चर्म सर्प्पत्वचं तथा । जीर्णां च भिक्षुसङ्घाटीं धूपनायोपकल्पयेत्

धूमाडी.

६ कूकडानी चरक, वाळ, चामडुं, सर्पनी कांचळी अने बौद्धसाधुनी अथवा कोई संन्यासीनी जूनी कंथानुं चींथरूं एओनी बालकने धूमाडी देवी.

७ कुक्कुटीं मर्कटीं बिम्बीमनन्तां चापि धारयेत् ।

हार-माळा.

७ कूकडवेल, कौवच, कडवी घोली अने उपलसरी एओने दोरामां गूंथी माळा बनावीने ते माळा बालकना गळामां पेहेरावी राखवी.

८ मांसमामं तथा पक्कं शोणितं च चतुष्पथे ॥ निवेद्यमन्तश्च गृहे शिशो रक्षानिमित्ततः ।

बलिदान.

८ बालकनी रक्षाने माटे काचुं तथा पाकुं मांस अने लोही एओनुं चौटामां तथा अंदरना घरमां अंधपूतनाने बलिदान देवुं.

९ शिशोश्च स्नपनं कुर्य्यात् सर्वगन्धादिकैः शुभैः ।

स्नान.

९ एलादिगणनां सघळां सुंदर द्रव्योथी संयुक्त करेला जलवते अंधपूतनाना वळगाडवाळा बालकने चौटामां अथवा अंदरना घरमां नवराववो.

१० कराला पिङ्गला मुण्डा काषायाम्बरवासिनी । देवी बालमिमं प्रीता संरक्षत्वन्धपूतना ॥

अंधपूतनासंबंधी दरएक विधानमां बोलवानो अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवानो मंत्र.

१० विकराळ, पींगळा वर्णवाळी, मूंडी अने भगवां वस्त्रो पेहेरनारी अंधपूतना देवी प्रसन्न थईने आ बालकनुं रक्षण करजो. (आ अर्थवाळो मूलोक्त संस्कृत मंत्र बोलवो.)

अध्याय ३४ मो.

उपक्रम.

१ अथातः शीतपूतनाप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शीतपूतनाप्रतिषेध[१]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ कपित्थं सुवहां बिम्बीं तथा बिल्वं प्रचीबलम् । नन्दीं भल्लातकीं चापि परिषेके प्रयोजयेत् ॥

परिषेचन.

२ कोठ, रास्ना, कडवी घोली, बीली, अघेडी, पारसपीपळो अने भल्लातकी एओना क्राथनुं शीतपूतनाना वळगाडवाळा बालकना शरीरपर परिषेचन करवुं.

३ बस्तमूत्रं गवां मूत्रं मुस्तं च सुरदारु च ॥ कुष्ठं च सर्वगन्धांश्च तैलार्थमवचारयेत् ।

---

१ शीतपूतनाना वळगाडनी चिकित्सा विषयनो.

अभ्यंग.

३ बकरानुं मूत्र अने गायनुं मूत्र एओमां मोथ, देवदार, कठ अने एलादिगणनां द्रव्यो एओनो कल्क नाखी तैल पकावीने तेनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवो.

४ रोहिणीसर्जखदिरपलाशककुभत्वचः ॥
निष्काथ्य तस्मिन्निष्काथे सक्षीरं विपचेद् घृतम् ॥

पावानुं घी.

४ हरडे अथवा कडु, राळ, खेर, खाखरो अने कडायानी छाल एओनो क्काथ करी ए क्काथना त्रण भाग लई तेमां एक भाग जेटलुं दूध नाखीने तेमां घी पकाववुं. आ घी शीतपूतनाना वळगाडवाळा बालकने पावुं.

५ गृध्रोलूकपुरीषाणि बस्तगन्धामहेस्त्वचः ॥
निम्बपत्राणि मधुकं धूपनार्थे प्रयोजयेत् ।

धूमाडी.

५ गरंजनी चरक, घूवडनी चरक, तलवणी, सर्पनी कांचळी, लींबडानां पानडां अने जेठीमध एओनी बालकने धूमाडी देवी.

६धारयेदपि लम्बां च गुञ्जां काकादनीं तथा ॥

हार-माळा.

६ कडवी तूंबडी, चणोठी अने मालकांकणी अथवा कांटाळो टींबरवो एओने दोरामां गूंथी माळा बनावीने ते माळा शीतपूतनाना वळगाडवाळा बालकना गळामां पेहेरावी राखवी.

७ नद्यां मुद्गकृतैश्चान्नैस्तर्पयेच्छीतपूतनाम् ।
देव्यै देयश्चोपहारो वारुणी रुधिरं तथा ।

बलिदान.

७ नदीने कीनारे जई मगनां अन्नोनुं शीतपूतनाने बलिदान देवुं अने मदिरा तथा लोही एओसहित उपहार देवो.

८ जलाशयान्ते बालस्य स्नपनं चोपदिश्यते ॥

स्नान.

८ शीतपूतनाना वळगाडवाळा बालकने विधिप्रमाणे जलाशयना समीपमां नवराववो.

९ मुद्गौदनाशना देवी सुराशोणितपायिनी ।
जलाशयालया देवी पातु त्वां शीतपूतना ॥

शीतपूतनासंबंधी दरएक विधानमां बोलवानो अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवानो मंत्र.

९ मगवाळा भातने खानारी, मद्यनुं तथा रुधिरनुं पान करनारी अने जलाशयोमां रेहेनारी शीतपूतना देवी तारूं रक्षण करजो. (आ अर्थवालो मूलोक्त संस्कृत मंत्र बोलवो.)

अध्याय ३९ मो.

१ अथातो मुखमण्डिकाप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मुखमंडिकाप्रतिषेध'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ कपित्थबिल्वतर्कारीवांशीगन्धर्वहस्तकाः ।
कुबेराक्षी च योज्याः स्युर्बालानां परिषेचने ॥

परिषेचन.

२ कोठ, बीली, अरणी, वंशलोचन, सफेद एरडो अने काकच एओना क्काथनुं मुखमंडिकाना वळगाडवाळा बालकना शरीरपर परिषेचन करवुं.

३ स्वरसैर्भृङ्गपत्राणां तथाजहरिगन्धयोः ।
तैलं वसां च संयोज्य पचेदभ्यञ्जने शिशोः ॥

अभ्यंग.

३ भांगरानां पानडां, तलवणीनां पानडां तथा आसोंदनां पानडां एओना स्वरसमां तैलने तथा चरबीने मिश्रित करी पकावीने तेनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवो.

---

१ मुखमंडिकाना वळगाडनी चिकित्सा विषयनो.

४ मधूलिकायां पयसि तुगाक्षीर्यां गणे तथा ।
मधुरे पञ्चमूले च कनीयसि घृतं पचेत् ॥

पावानुं घी.

४ गरणी, वंशलोचन, सघळो मधुरवर्ग अने लघुपंचमूल एओना क्काथमां दूध नाखी तेमां घी पकाववुं अने ते घी मुखमंडिकाना वळगाडवाळा बालकने पावुं.

५ वचा सर्जरसः कुष्ठं सर्पिश्चोद्धूपने हितम् ।

धूमाडी.

५ वज, राळ, कठ अने घी एओनी बालकने धूमाडी देवी ए हितकारी छे.

६ धारयेदपि जिह्वाश्च चाषचीरलिसर्पजाः ॥

हार–माळा.

६ चाप जातना गृध्रपक्षीनी जीभ, चील-(समळा)नी जीभ अने सर्पनी जीभ एओनी माळा बनावीने मुखमंडिकाना वळगाडवाळा बालकना गळामां हमेश पेहेरावी राखवी.

७ वर्णकं चूर्णकं माल्यमञ्जनं पारदं तथा ।
मनःशिलां चोपहरेद्गोष्ठमध्ये बलिं तथा ॥
पायसं सपुरोडाशं बल्यर्थमुपहारयेत् ।

बलिदान.

७ गायोना वाडामां गलाल, वाटेला चोखानो लोट, फूल, अंजन, पारो अने मणशील एओनो उपहार आपी दूधपाक अने घऊंना लोटनी रोटली एओनुं बलिदान देवुं.

८ मन्त्रपूताभिरद्भिश्च तत्रैव स्नपनं हितम् ॥

स्नान.

८ मुखमंडिकाना वळगाडवाळा बालकने गायत्रीमंत्रथी अथवा नीचे आपेला मंत्रथी मंत्रेला जळवते गायोना वाडामां नवराववो ए हिंतकारी छे.

९ अलङ्कृता रूपवती सुभगा कामरूपिणी ।
गोष्ठमध्यालयरता पातु त्वां मुखमण्डिका ॥

मुखमंडिकासंबंधी दरएक विधानमां बोलवानो अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवानो मंत्र.

९ शणगारेली, रूपाळी, सौभाग्यवाळी, धा-र्याप्रमाणे रूपो धरवानी शक्तिवाळी अने गायोना वाडाओमां रेहेवामां रुचिवाळी मुखमंडिकादेवी तारूं रक्षण करजो. (आ अर्थवाळो मूलोक्त संस्कृत मंत्र बोलवो.)

अध्याय ३६ मो.

१ अथातो नैगमेषप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'नैगमेषप्रतिषेध'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ बिल्वाग्निमन्थपूतीकाः कार्याः स्युः परिषेचने ।
सुरासौवीरधान्याम्लैः परिषेकश्च शस्यते ॥

परिषेचन.

२ बीली, अरणी अने करंज एओना क्काथनुं नैगमेषना वळगाडवाळा बालकना शरीरपर परिषेचन करवुं. सुरा, फोतरावगरना काचा अथवा पकावेला घऊंनो आथो अने धान्याम्ल (चोखाना चूर्णनो तथा कोदरा वगेरेना चूर्णनो आथो) एओनुं परिषेचन करवुं ए पण उत्तम गणाय छे.

३ प्रियङ्गुसरलानन्ताशतपुष्पाकुटन्नटैः ।
पचेत्तैलं सगोमूत्रैर्दधिमस्त्वम्लकाञ्जिकैः ॥

अभ्यंग.

३ घउलां, नसोतर, उपलसरी, सूवा अने अरडूसो एओनो कल्क नाखी गोमूत्र, दहींनुं पाणी अने खाटी कांजी एओमां तैल पकाववुं अने ते तैलनो बालकना शरीरपर अभ्यंग करवो.

१ नैगमेषना वळगाडनी चिकित्सा विषयनो.

४ पञ्चमूलद्वयक्काथे क्षीरे मधुरकेषु च ।
पंचेद्घृतं च मेधावी खर्जूरीमस्तकेऽपि च ॥

पावानुं घी.

४ बृहत्पंचमूल तथा लघुपंचमूल एओना क्काथमां काकोल्यादि मधुरवर्गनो कल्क, खजूरीना उपरना भागनी मज्जा तथा दूध नाखी तेमां घी पकाववुं. बुद्धिमान् वैद्ये आ घी नैगमेषना वळगाडवाळा बालकने पावुं.

५वचां वयःस्थां गोलोमीं जटिलां चापि धारयेत् ।

हार—माळा.

५ वज, आमली अथवा गळो, दूर्वा अने जटामांसी एओने दोरामां गूंथी तेनी माळा नैगमेषना वळगाडवाळा बालकने निरंतर पेहेरावी राखवी.

६उत्सादनं हितं चात्र स्कन्दापस्मारनाशनम्॥

शरीरपर चोळवुं.

६ गया २९ मा अध्यायना ९ मा विषयमां स्कंदापस्मारना वळगाडने नष्ट करवा माटे बालकना शरीरपर जे द्रव्योनो कल्क चोळवानुं कह्युं छे तेज द्रव्योनो कल्क नैगमेषना वळगाडवाळा बालकना शरीरपर चोळवो ए हितकारी थाय छे.

७ सिद्धार्थकवचाहिङ्गु कुष्ठं चैवाक्षतैः सह ।
भल्लातकाजमोदाश्च हितमुद्धूपनं शिशोः ॥
मर्कटोलूकगृध्राणां पुरीषाणि नवग्रहे ।
धूपः सुप्ते जने कार्यो बालस्य हितमिच्छता ॥

धूमाडी.

७ सर्षप, वज, हींग, कठ, अक्षत, भीलामुं अने अजमोद एओनी धूमाडी देवी ए नैगमेषना वळगाडवाळा बालकने हितकारी थाय छे. राते लोको सूई रह्या होय ते समये बालकनुं हित इच्छनारा वैद्ये वानरानी विष्टा, घूवडनी चरक अने गरंजनी चरक एओनी धूमाडी पण देवी.

८ तिलतण्डुलकं माल्यं भक्ष्यांश्च विविधानपि।
कुमारपितृमेषाय वृक्षमूले निवेदयेत् ॥
बलिं न्यग्रोधवृक्षे तु तिथौ षष्ठ्यां निवेदयेत् ।

बलिदान.

८ तूळ, चोखा, पुष्पो अने अनेक प्रकारनां भक्ष्यो एओनुं बलिदान नैगमेषने तृप्त करवा माटे वृक्षना मूळमां देवुं. छठने रोज ए बलिदान वडना झाडनी नीचे देवुं. (आ नैगमेष नामनो बालग्रह वखतपर बालकोनुं रक्षण पण करे छे तेथी ते कुमारपिता पण केहेवाय छे.)

९ अधस्ताद्वटवृक्षस्य स्नपनं चोपदिश्यते ।

स्नान.

९ नैगमेषना वळगाडवाळा बालकने वडना झाडनी नीचे गायत्रीथी अथवा नीचे आपेला मंत्रथी मंत्रेला जलवते नवराववो.

१०अजाननश्चलाक्षिभ्रूः कामरूपी महायशाः ।
बालं पालयिता देवो नैगमेषोऽभिरक्षतु ॥

नैगमेषसंबंधी दरएक विधानमां बोलवानो अने बालकनी पासे नित्य पाठ करवानो मंत्र.

१० बकराना जेवा मोहोडावाळो, चंचल आंखोवाळो, चंचल भ्रकुटीओवाळो, यथेष्ट रूपो धरनारो, मोटी कीर्तिवाळो अने बालकनुं पालन करनारो नैगमेषदेव आ बालकनुं रक्षण करजो. (आ अर्थवाळो मूलोक्त संस्कृत मंत्र बोलवो.)

अध्याय ३७ मो.

१ अथातो ग्रहोत्पत्तिमध्यायं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी '[1]ग्रहोत्पत्ति' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

---

[1] ग्रहोनी उत्पत्ति, बालकोने वळगाडनुं कारण अने वळगाडोनुं कष्टसाध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

२नव स्कन्दादयः प्रोक्ता बालानां य इमे ग्रहाः।
श्रीमन्तो दिव्यवपुषो नारीपुरुषविग्रहाः ॥
एते गुहस्य रक्षार्थं कृत्तिकोमाग्निशूलिभिः ।
सृष्टाः शरवणस्थस्य रक्षितस्यात्मतेजसा ॥

बालग्रहोने कोणे उत्पन्न कर्या छे?

२ ऐश्वर्यवाळा, दिव्य शरीरोवाळा अने जेओमां छनो आकार स्त्रीओना जेवो छे तथा [1]त्रणनो आकार पुरुषोना जेवो छे एवा आ स्कंद आदि जे नव बालग्रहो केहेवामां आव्या तेओने, कांसडाओना वनमां रहेला अने पोतानी शक्तिथीज रक्षण पामेला कार्त्तिकेयस्वामीना रक्षणने माटे कृत्तिकाओए, गंगाए, पार्वतीए, अग्निए तथा सदाशिवे उत्पन्न करेला छे.

३स्त्रीविग्रहा ग्रहा ये तु नानारूपा मयेरिताः।
गङ्गोमाकृत्तिकानां च ते भागा राजसा मताः ॥
नैगमेषस्तु पार्वत्या सृष्टो मेषाननो ग्रहः ।
कुमारधारी देवस्य गुहस्यात्मसमः सखा ॥
स्कन्दापस्मारसंज्ञो यः सोऽग्निनाग्निसमद्युतिः।
स च स्कन्दसखो नाम विशाख इति चोच्यते ॥
स्कन्दः सृष्टो भगवता देवेन त्रिपुरारिणा ।
बिभर्ति चापरां संज्ञां कुमार इति स ग्रहः ॥
बाललीलाधरो योऽयं देवो रुद्राग्निसम्भवः ।
मिथ्याचारेषु भगवान् स्वयं नैष प्रवर्त्तते ॥
कुमारः स्कन्दसामान्यादत्र केचिदपण्डिताः ।
गृह्णातीत्यल्पविज्ञाना ब्रुवते देहचिन्तकाः ॥

नव बालग्रहोमां कोने कोने कोणे कोणे उत्पन्न कर्या छे?

३ अनेक प्रकारनां रूपोवाळा अने स्त्रीओना जेवां शरीरोवाळा शकुनी, रेवती, पूतना, अंधपूतना, शीतपूतना अने मुखमंडिका ए छ ग्रहोने गंगाए, पार्वतीए अने कृत्तिकाओए मळीने उत्पन्न करेला छे. जो के सघळा ग्रहो रजोगुणवाळा छे तो पण तेओमां ए छ ग्रहो विशेष रजोगुणवाळा छे एम मानवामां आवे छे.

घेंटाना जेवा मोहोडावाळो नैगमेष नामनो ग्रह के जे पुरुषना जेवा शरीरवाळो छे, वखतपर बालकोनुं रक्षण पण करे छे अने कार्त्तिकेयस्वामीनो प्राणसमान प्यारो मित्र छे तेने पार्वतीएज उत्पन्न कर्यो छे.

अग्निना जेवी कांतिवाळो स्कंदापस्मार नामनो ग्रह के जे पुरुषना जेवा शरीरवाळो छे तेने अग्निए उत्पन्न करेलो छे अने ते स्कंदसख तथा विशाख ए नामोथी पण ओळखाय छे.

स्कंद नामनो बालग्रह के जे पुरुषना जेवा शरीरवाळो छे तेने त्रिपुरनो संहार करनारा साक्षात् सदाशिवेज उत्पन्न करेलो छे. ए ग्रह बीजा 'कुमार' ए नामथी पण ओळखाय छे. स्कंद अने कुमार ए बे नामो कार्त्तिकेयस्वामीनां पण छे ते उपरथी कार्त्तिकेयस्वामीने बालग्रहोमां गणी लेवा नहीं. केम के बालकना जेवी लीलाने धरनारा अने सदाशिवथी तथा अग्निथी उत्पन्न थएला ए मोटा ऐश्वर्यवाळा देव कार्त्तिकेयस्वामी बालकोने दुःख देवारूप दुष्ट कृत्योमां पोते कदी पण प्रवर्त्तता नथी. केटलाएक अल्प ज्ञानवाळा अपंडित वैद्यो 'कुमार अने स्कंद' ए बे नामो उपरथी भूल खाईने केहे छे के 'कार्त्तिकेयस्वामी बालकोने वळगे छे.'

४ ततो भगवता स्कन्दे सुरसेनापतौ कृते ।
उपतस्थुर्ग्रहाः सर्वे दीप्तशक्तिधरं गुहम् ॥
ऊचुः प्राञ्जलयश्चैनं वृत्तिं नः संविधत्स्व वै ।

[1] शकुनी, रेवती, पूतना, अंधपूतना, शीतपूतना अने मुखमंडिका ए छ बालग्रहो स्त्रीओना आकारवाळा छे अने स्कंद, स्कंदापस्मार तथा नैगमेष ए त्रण ग्रहो पुरुषोना आकारवाळा छे.

२ जो के पोतानीज शक्तिथी रक्षित होवाने लीधे तेमने बीजा कोई पण रक्षकोनी जरूर न हती तोपण कृत्तिका वगेरेए पुत्रप्रेमने लीधे तेमना रक्षणने माटे नव बालग्रहोने उत्पन्न करेला छे.

तेषामर्थे ततः स्कन्दः शिवं देवमचोदयत् ॥
ततो ग्रहांस्तानुवाच भगवान् भगनेत्रहृत् ।
तिर्य्यग्योनि मानुषं च दैवं च त्रितयं जगत् ॥
परस्परोपकारेण वर्त्तते धार्यतेऽपि च ।
देवा मनुष्यान् प्रीणन्ति तिर्य्यग्योनींस्तथैव च॥
वर्त्तमानैर्यथाकालं शीतवर्षोष्णमारुतैः ।
इज्याञ्जलिनमस्कारजपहोमव्रतादिभिः ॥
नराः सम्यक् प्रयुक्तैश्च प्रीणन्ति त्रिदिवेश्वरान्।
भागधेयं विभक्तं च शेषं किञ्चिन्न विद्यते ॥
तद्युष्माकं शुभा वृत्तिर्बालेष्वेव भविष्यति ।
कुलेषु येषु नेज्यन्ते देवाः पितर एव च ॥
ब्राह्मणाः साधवश्चैव गुरवोऽतिथयस्तथा ।
निवृत्ताचारशौचेषु परपाकोपभोजिषु ॥
उच्छिन्नबलिभिक्षेषु भिन्नकांस्योपभोजिषु ।
गृहेषु तेषु ये बालास्तान् गृह्णीध्वमशङ्किताः ॥
तत्र वो विपुला वृत्तिः पूजा चैव भविष्यति ।
एवं ग्रहाः समुत्पन्ना बालान् गृह्णन्ति चाप्यतः॥

बालग्रहो बालकोने वळगे छे तेनुं कारण.

४ जे समयमां भगवान् सदाशिवे कार्त्तिकेयस्वामीने देवताओना सेनापति कर्या ते समयमां ए सघळा बालग्रहोए प्रदीप्त सांगने धरनारा कार्त्तिकेयस्वामीना समीपमां आवी हाथ जोडीने कार्त्तिकेयस्वामीने विज्ञप्ति करी के 'अमोने आजीविका करी आपो.' ए उपरथी तेओने माटे कार्त्तिकेयस्वामीए सदाशिवनी प्रार्थना करतां मोटा ऐश्वर्यवाळा अने भगदेवनां नेत्रोनुं हरण करनारा सदाशिवे ते बालग्रहोने कह्युं के "आ जगत् के जे पशुपक्षी वगेरेनी जाति, मनुष्यजाति अने देवजाति ए रीते त्रण जातिओवाळुं छे ते परस्परे करेला उपकारथी वर्त्ते छे अने ते उपकारथी टकी रह्युं छे. देवताओ ते ते योग्य समयोमां गरमीने, वरसादने, थंडीने तथा पवनने उत्पन्न करीने मनुष्योने तथा पशुपक्षीओ वगेरेने तृप्त करे छे. मनुष्यो यजन, हाथ जोडवा, नमस्कार, जप, होम तथा व्रत इत्यादि क्रियाओने सारी रीते करीने देवताओने तृप्त करे छे. पशुपक्षी वगेरे जातिओ पोतानां दूध वगेरेथी तथा मांसादिकथी माणसोने तथा देवताओने तृप्त करे छे अने माणसो पण पालन आदिथी पशुपक्षी वगेरेने तृप्त करे छे. आ प्रमाणे होवाथी सघळुं ते ते भागोमां वेहेंचाई गयुं छे अने तेने लीधे कांई अवशेष रह्युं नथी, माटे तम लोकोनी सारी पेठे आजीविका तो बालकोनी उपरज चालशे. जे कुलोमां देवताओनुं, पितृओनुं, ब्राह्मणोनुं, साधुओनुं, गुरुओनुं तथा अतिथिओनुं पूजन न थतुं होय तथा जे कुलो पवित्रताथी तथा आचारथी रहित होय, नीच वृत्तिओवाळां होय, पराई रसोईओमांज जमनारां होय, कोईने भिक्षा के बलिदान न आपतां होय अने फूटी गयेलां कांसानां वासणोमां जमनारां होय ते कुलोमां तथा तेवां घरोमां जे जे बालको होय ते ते बालकोने तमो निश्शंकपणाथी पकडजो (वळगजो) एटले तेओमां तमारी मोटी आजीविका चालशे अने पूजा पण थशे." उत्पन्न थएला बालग्रहो आ प्रमाणे सदाशिवनी आज्ञाने अनुसरीने बालकोने वळगे छे.

५ग्रहोपसृष्टा बालास्तु दुश्चिकित्स्यतमा मताः।
वैकल्यं मरणं चाशु ध्रुवं स्कन्दग्रहे मतम् ॥
स्कन्दग्रहोऽत्युग्रतमः सर्वेष्वेव यतः स्मृतः ।
अन्यो वा सर्वरूपस्तु न साध्यो ग्रह उच्यते

बालग्रहोना वळगाडोनुं कष्टसाध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

५ बालग्रहोनो वळगाड अत्यंत कष्टसाध्यज छे. तेओमां पण स्कंद नामना बालग्रहनो वळगाड थयो होय तो बालकोनां शरीरोमां खोडखापण अवश्य थाय छे अने मरण पण थाय छे. कारण के सघळा बालग्रहोमां स्कंदग्रह अत्यंत उग्र छे. स्कंदग्रह शिवाय बीजा कोई

बालग्रहनो वळगाड पण जो पोतानां सघळां लक्षणोथी युक्त थयो होय तो असाध्यज छे.

अध्याय ३८ मो.

१ अथातो योनिव्यापत्प्रतिषेधं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'योनिव्यापत्प्रतिषेधं' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ प्रवृद्धलिङ्गं पुरुषं यात्यर्थमुपसेवते ॥
रूक्षदुर्बलबालायास्तस्या वायुः प्रकुप्यति ॥
स दुष्टो योनिमासाद्य योनिरोगाय कल्पते ।

योनिरोगोनां दोषोरूप मुख्य निदानो अने ते निदानोमां वायुनी प्रधानता.

२ जाडा तथा लांबा लिंगवाळा पुरुषनुं अत्यंत सेवन करवा वगेरे कारणोथी रूक्ष, दुर्बल तथा नाहानी उमरनी स्त्रीना शरीरमां वायु प्रकुपित थाय छे अने प्रकुपित थएलो वायु पोतपोतानां कारणोथी प्रकुपित थएला पित्तने तथा कफने पोतानी साथे लई योनिमां आवीने योनिरोगोने उत्पन्न करे छे.

३त्रयाणामपि दोषाणां यथास्वं लक्षणेन तु ॥
विंशतिर्व्यापदो योनेर्निर्दिष्टा रोगसङ्ग्रहे ।

योनिरोगोनी संख्या.

३ योनिरोगो के जेओ वातप्रधान छतां पण त्रणे दोषोनां पोतपोतानां जूदां जूदां लक्षणोथी संयुक्त होवाने लीधे वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक अने सान्निपातिक एम मुख्य चार भेदोमां वेहेंचाय छे तेओ, प्रत्येक भेदना पेटाना पांच पांच भेदो उपरथी रोगसंग्रहमां वीशनी संख्याने प्राप्त थाय छे. (योनिरोगो वीश छे.)

४मिथ्याचारेण ताः स्त्रीणां प्रदुष्टेनार्त्तवेन च ॥
जायन्ते बीजदोषाच्च दैवाच्च शृणु ताः पृथक् ।

योनिरोगोनां दूरनां निदानो अने तेओमां दैवनुं पण निदानपणुं.

४ स्त्रीओने जाडा तथा लांबा लिंगवाळा पुरुषोना सेवन वगेरे दुराचारोथी, दुष्ट थएला रजथी, पुरुषना दुष्ट थएला वीर्यथी अने वखतपर दैवगतिथी पण योनिरोगो उत्पन्न थाय छे. हवे ए योनिरोगोनुं विस्तारथी निरूपण करुं छुं ते सांभळो.

५उदावर्त्ता तथा वन्ध्या विप्लुता च परिप्लुता॥
वातला चेति वातोत्था पित्तोत्था रुधिरक्षरा ।
वामिनी स्रंसिनी चापि पुत्रघ्नी पित्तला च या॥
अत्यानन्दा च या योनिः कर्णिनी चरणाद्वयम्
श्लैष्मिका सकफा ज्ञेया षण्डी च फलिनी तथा॥
महती सूचिवक्त्रा च सर्वजेति त्रिदोषजा ।

वातिक आदि योनिरोगोमां प्रत्येकना पेटाना पांच पांच रोगोनां नामो.

५ **वातिक** योनिरोगोना उदावर्त्ता, वंध्या, विप्लुता, परिप्लुता अने वातला ए पांच भेदो छे. पैत्तिक योनिरोगोना रुधिरक्षरा, वामिनी, स्रंसिनी, पुत्रघ्नी अने पित्तला ए पांच भेदो छे. श्लैष्मिक (कफसंबंधी) योनिरोगोना अत्यानंदा, कर्णिका, आनंदचरणा, अतिचरणा अने श्लेष्मला ए पांच भेदो छे. सान्निपातिक योनिरोगोना षंडी, फलिनी, महती, सूचीवक्त्रा अने त्रिदोषिणी ए पांच भेदो छे.

६सफेनिलमुदावर्ता रजः कृच्छ्रेण मुञ्चति ॥
वन्ध्यां नष्टार्त्तवां विद्याद्विप्लुतां नित्यवेदनाम् ।
परिप्लुतायां भवति ग्राम्यधर्मे रुजा भृशम् ॥
वातला कर्कशा स्तब्धा शूलनिस्तोदपीडिता ।
चतसृष्वपि चाद्यासु भवन्त्यनिलवेदनाः ॥

---

१ योनिरोगोनां संख्या, निदानो, लक्षणो तथा चिकित्सा विषेनो. योनिरोगो बालकोनां शरीरोमां विकारोनां कारणोरूप थाय छे एटला माटे योनिरोगोना अध्यायने कौमारभृत्य तंत्रमां दाखल कर्यो छे.

वातिक योनिरोगोना पांच भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

६ योनिमांथी अत्यंत कष्टपूर्वक फीणवाळुं रज नीकळतुं होय तो ते योनिरोग **उदावर्त्ता** केहेवाय छे. योनि सर्वदा रज वगरनीज रेहेती होय एटले कदी पण रजवाळी न थती होय ए योनिरोग **वंध्या** केहेवाय छे. योनि सर्वदा वेदनायुक्तज रह्या करे ए योनिरोग **विप्लुता** केहेवाय छे. मैथुनना समयमां योनिमां अत्यंत वेदना थती होय ते योनिरोग **परिप्लुता** केहेवाय छे. योनि कठण, खरसट, अक्कड अने वायुसंबंधी शूळथी तथा सोईवते भोंकाया जेवी वेदनाथी युक्त रहेती होय ए योनिरोग **वातला** केहेवाय छे. जो के वायुरूप दोषवाळा उपर कहेला उदावर्त्ता, वंध्या, विप्लुता अने परिप्लुता ए चारे योनिरोगोमां सोईथी भोकाया जेवी पीडा वगेरे वायुसंबंधी वेदनाओ थाय छे तो पण आ पांचमा प्रकारना वातिक योनिरोगमां तो ए वेदनाओ अत्यंत थाय छे माटे तेने नामांतर नहीं आपतां 'वातला' एज नाम आप्युं छे.

७ सदाहं प्रक्षरत्यस्रं यस्याः सा लोहितक्षरा ॥
सवातमुद्गिरेद्वीजं वामिनी रजसा युतम् ॥
प्रस्रंसिनी स्पन्दते तु क्षोभिता दुष्प्रसूश्च या ।
स्थितं स्थितं हन्ति गर्भं पुत्रघ्नी रक्तसंस्रवात् ॥
अत्यर्थं पित्तला योनिर्दाहपाकज्वरान्विता ।
चतसृष्वपि चाद्यासु पित्तलिङ्गोच्छ्रयो भवेत् ॥

पैत्तिक योनिरोगना पांच भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

७ योनिमांथी दाहवाळुं लोही झरतुं होय तो ते योनिरोग **रुधिरक्षरा** केहेवाय छे. योनिमांथी पुरुषनुं वीर्य रजनी साथे तथा पवननी साथे बाहार नीकळी जतुं होय तो ते योनिरोग **वामिनी** केहेवाय छे. योनि मर्दन पामवाने लीधे ठेकाणापरथी कांइक चलित थईने बाहार नीकळी होय अने मांड प्रसव करे एवी थई गई होय ते योनिरोग **स्रंसिनी** केहेवाय छे. योनि वारंवार रहेता गर्भने रुधिरना स्रावथी नष्ट करी नाखती होय ते योनिरोग **पुत्रघ्नी** केहेवाय छे. योनि दाहथी, पाकवाथी तथा ज्वरथी अत्यंत युक्त होय ए योनिरोग **पित्तला** केहेवाय छे. जो के पित्तरूप दोषवाळा उपर लखेला रुधिरक्षरा, वामिनी, स्रंसिनी अने पुत्रघ्नी ए चारे योनिरोगोमां दाह तथा पाकवा वगेरे पित्तसंबंधी वेदनाओ थाय छे तो पण आ पांचमा प्रकारना पैत्तिक योनिरोगमां तो ए वेदनाओ अत्यंत थाय छे माटे तेने नामांतर नहीं आपतां 'पित्तला' एज नाम आप्युं छे.

८अत्यानन्दा न सन्तोषं ग्राम्यधर्म्मेण गच्छति।
कर्णिन्यां कर्णिका योनौ श्लेष्मासृग्भ्यां तु जायते॥
मैथुनाचरणात्पूर्वं पुरुषादतिरिच्यते ।
बहुशश्चातिचरणादन्या बीजं न विन्दति ॥
श्लेष्मला पिच्छिला योनिः कण्डूयुक्तातिशीतला
चतसृष्वपि चाद्यासु श्लेष्मलिङ्गोच्छ्रितिर्भवेत् ॥

श्लैष्मिक योनिरोगना पांच भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

८ योनि मैथुनथी संतोषज न पामती होय ए योनिरोग **अत्यानंदा** केहेवाय छे. योनिमां कफथी तथा रुधिरथी डोडी जेवा आकारवाळी गांठ थई होय ए योनिरोग **कर्णिका** केहेवाय छे. योनि मैथुनना समयमां पुरुषनुं वीर्य पड्याथी पेहेलांज रज मूकती होय ते योनिरोग **आनंदचरणा** केहेवाय छे. आ रोगवाळी योनिमां पुरुषनुं वीर्य स्थिति पामी शकतुं नथी. वारंवार मैथुन कराववाने लीधे सोजो थई जवाथी योनिमां पुरुषनुं वीर्य स्थिति पामी शकतुं न होय ए योनिरोग **अतिचरणा** केहेवाय छे. योनि चीकाशवाळी, खरजवाळी तथा अतिशीतल होय ए योनिरोग **श्लेष्मला** केहेवाय छे. जो के

कफरूप दोषवाळा उपर लखेला अत्यानंदा, कर्णिका, आनंदचरणा अने अतिचरणा ए चारे योनिरोगोमां चीकाश तथा खरज वगेरे कफनां चिह्नो होय छे तो पण आ पांचमा प्रकारना श्लैष्मिक योनिरोगमां तो ए चिह्नो अत्यंत होय छे माटे तेने नामांतर नहीं आपतां 'श्लेष्मला' एज नाम आप्युं छे.

९ अनार्त्तवस्तना षण्डी खरस्पर्शा च मैथुने ।
अतिकायगृहीतायास्तरुण्याः फलिनी भवेत् ॥
विवृतातिमहायोनिः सूचीवक्रातिसंवृता ।
सर्वलिङ्गसमुत्थाना सर्वदोषप्रकोपजा ॥
चतसृष्वपि चाद्यासु सर्वलिङ्गोच्छ्रितिर्भवेत् ।

सान्निपातिक योनिरोगना पांच भेदोनां जूदां जूदां लक्षणो.

९ योनि रजवगरनी रेहेती होय, मैथुनमां योनिनो स्पर्श खरसट थतो होय अने जेथी स्तनो पण स्वाभाविक करतां बहुज अल्प कदवाळां होय ए योनिरोग **षंडी** केहेवाय छे. आ रोगवाळी स्त्रीने मैथुन उपर द्वेष होय छे. तरुण अवस्थावाळी स्त्रीनी योनिमां जाडा तथा लांबा लिंगवाळो पुरुष मैथुन करे तेथी योनि वृषणनी पेठे लटकती थई जाय छे ए योनिरोग **फलिनी** केहेवाय छे. योनि अत्यंत मोटां छिद्रवाळी होय ए योनिरोग **महती** केहेवाय छे. योनि अत्यंत सूक्ष्म छिद्रवाळी होय ए योनिरोग **सूचीवक्रा** केहेवाय छे. योनिमां सघळा दोषोना प्रकोपने लीधे सघळा दोषोनां चिह्नो ऊठेलां होय ए योनिरोग **त्रिदोषिणी** केहेवाय छे. जो के त्रणे दोषोवाळा उपर लखेला षंडी, फलिनी, महती तथा सूचीवक्रा ए चारे योनिरोगोमां रजथी रहितपणा वगेरे त्रणे दोषोनां चिह्नो होय छे तो पण आ पांचमा प्रकारना त्रैदोषिक (सान्निपातिक) रोगमां तो ए चिह्नो अत्यंत होय छे माटे तेने नामांतर नहीं आपतां 'त्रिदोषिणी' एज नाम आप्युं छे. (आ त्रिदोषिणी नामना योनिरोगमां रूक्षपणुं तथा सोईथी भोंकाया जेवी व्यथा वगेरे वायुनां चिह्नो होय छे, दाह तथा चोस वगेरे पित्तनां चिह्नो पण होय छे अने चीकाश तथा खरज वगेरे कफनां चिह्नो पण होय छे.)

१० पञ्चासाध्या भवन्तीमा योनयः सर्वदोषजाः ।

वीश योनिरोगोमां पांच रोगो असाध्य छे.

१० षंडी, फलिनी, महती, सूचीवक्रा अने त्रिदोषिणी ए पांच सान्निपातिक योनिरोगो असाध्य छे.

११ प्रतिदोषं तु साध्यासु स्नेहादिक्रम इष्यते ।
दद्यादुत्तरबस्तींश्च विशेषेण यथोदितान् ॥
कर्कशां शीतलां स्तब्धामपस्पर्शां च मैथुने ।
कुम्भीस्वेदैरुपचरेत्सानूपौदकसंयुतैः ॥
मधुरौषधसंयुक्तान् वेशवारांश्च योनिषु ।
निक्षिपेद्धारयेच्चापि पिचुतैलमतन्द्रितः ॥
धावनानि च पथ्यानि कुर्वीतापूरणानि च ।
ओषचोषान्वितासूक्तं कुर्याच्छीतं विधिं भिषक्
दुर्गन्धां पिच्छिलां चापि चूर्णैः पञ्चकषायजैः ॥
पूरयेद्राजवृक्षादिकषायैश्चापि धावनम् ॥
योन्यां तु पूयस्राविण्यां शोधनद्रव्यसंभृतैः ।
सगोमूत्रैः सलवणैः पिण्डैरापूरणं हितम्
बृहतीफलकल्कस्य द्विहरिद्रायुतस्य च ।
कण्डूमतीमपस्पर्शां पूरयेद्धूपयेत्तथा
वर्त्तिं प्रदद्यात्कर्णिन्यां शोधनद्रव्यसम्भृताम् ।
प्रस्रंसिनीं घृताभ्यक्तां क्षीरस्विन्नां प्रवेशयेत् ॥
पिधाय वेशवारेण ततो बन्धं समाचरेत् ।
प्रतिदोषं विदध्याच्च सुरारिष्टासवान् भिषक् ॥
प्रातःप्रातर्निषेवेत रसोनादुद्धृतं रसम् ।
क्षीरमांसरसप्रायमाहारं विदधीत च ॥
शुक्रार्त्तवादयो दोषाः स्तनरोगाश्च कीर्त्तिताः ।
क्लैब्योत्थानानि मूढस्य गर्भस्य विधिरेव च ॥
गर्भिणीप्रतिरोगेषु चिकित्सा चाप्युदाहृता ।
तां सर्वथा प्रयुञ्जीत योनिव्यापत्सु बुद्धिमान्
अपप्रजातारोगांश्च चिकित्सेदुत्तराद्भिषक् ।

योनिरोगोनी सामान्य तथा विशिष्ट चिकित्साओ.

११ पांच सान्निपातिक शिवाय बाकीना पंदर योनिरोगो के जेओ साध्य छे तेओमांनो कोई योनिरोग थयो होय तो ते योनिरोग जे दोष-संबंधी होय ते दोषने टाळनारा स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी वमन विरेचनादिक क्रियाओ पण तेज दोषने हणनारां द्रव्योथी गोठवीने करवी अने विशेषे करी उत्तरबस्तिओ देवा ते पण तेवाज प्रकारना देवा.

योनि खरसट, शीतल, अक्कड तथा मैथुनमां खराब स्पर्शवाळी होय तो तेने आनूप तथा जलचर प्राणिओनां मांसोथी तथा वायुने हणनारां द्रव्योना काथथी कुंभीस्वेदो देवा. (आनूप तथा जलचर प्राणीओना मांसना रसने ऊकाळी तेथी तथा वायुने हणनारां द्रव्योना काथथी भरेली धगधगती हांडलीने धरतीमां नाखी तेना उपर मांची वगेरे आसनपर स्त्रीने बेसाडी काथमां अग्निथी तपावेला लोढाना ककडा अथवा पथराना ककडा नाखीने तेनी बाफ योनिमां लेवरावची ए कुंभीस्वेद केहेवाय छे.)

सूंठ, मरी, पीपळ, धाणा, जीरूं, दाडिम अने पीपळीमूळ एओना चूर्णने मधुर औषधोथी संयुक्त करीने बनावेलो ते वेसवार अथवा सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २२६ मा विषयमां कहेलो वेसवार अथवा एवाज प्रकारना बीजा पण वेसवारो योनिमां नखाववा अने आलस्य छोडी दईने वायुने हरनारां द्रव्योना काथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलनुं पोतुं पण योनिमां धराववुं. वायुने हणनारां द्रव्योना काथोथी योनिने धोवराववी अने वायुने हणनारां द्रव्योनां चूर्णादिक योनिमां भराववां.

जो योनि दाहथी तथा चोसथी युक्त होय तो वैद्ये पित्तने हणनारी शीतल क्रियाओ करवी.

योनि दुर्गंधवाळी के चीकणी होय तो तेमां वड, ऊंबरो, मोटी पीपर, बोलसरी अने पारस-पीपळो एओनां चूर्णो भराववां अने आरग्वधादि गणना काथोथी योनिने धोवराववी.

योनिमांथी परूनो स्राव थतो होय तो सूत्र-स्थानना मिश्रक नामना ३६ मा अध्यायमां कहेलां शोधन द्रव्योना गोमूत्रसहित तथा सैंधवसहित पिंडो बनावीने ते पिंडो योनिमां नखाववा ए हितकारी थाय छे.

योनि खरजवाळी तथा खराब स्पर्शवाळी होय तो तेमां भोरींगणीनां फळोनो, हळदरनो तथा दारूहळदरनो कल्क करीने ते भराववो अने ए भोरींगणीनां फळ वगेरे द्रव्योना चूर्णनीज धूमाडी देवी.

जो कर्णिका नामनो योनिरोग थयो होय तो योनिमां शोधन द्रव्योनी वाट नखाववी. (शोधन द्रव्यो सूत्रस्थानना ३६ मा अध्यायमां कहेलां छे.)

जो स्रंसिनी नामनो योनिरोग थयो होय तो तेने घीनो अभ्यंग करी दूधनी बाफ दईने अंदर पेसाडी देवी अने पछी सूंठ, मरी, पीपळ, धाणा, जीरूं, दाडिम अने पीपळीमूळ एओना हवेजथी तेना मोहोडाने बंध करीने पाटो बांधवो. योनिने घीनो अभ्यंग करी, दूधनी बाफ दई अंदर पेसाडी देवी अने पछी सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २२६ मा विषयमां कहेला वेसवारथी तेना मोहोडाने बंध करीने पाटो बांधवो ए पण हितकारी छे.

योनिरोग जे जे दोषथी उत्पन्न थयो होय ते ते दोषने टाळे एवां सुराओ, अरिष्टो अने आसवो एओनी योजनाओ करवी अने प्रभाते प्रभाते लसणमांथी रस कहाडीने तेनुं पण सेवन कराववुं.

योनिरोगवाळी स्त्रीने जेमां मांसनो रसो अने दूध अधिक आवे एवो आहार वैद्ये गोठवी देवो.

बीजा पण घणा घणा विषयो आ कौमारभृत्य

तंत्रने लगता छे परंतु तेओ अमारी पंचस्थानात्मक संहितामां केहेवाई गया छे तेथी अहीं तेओनी पुनरुक्ति करवी छोडी दईए छीए. वीर्य तथा रज वगेरेना दोषो शारीरस्थानना 'शुक्रशोणितशुद्धिशारीर' नामना बीजा अध्यायमां लक्षणोसहित तथा चिकित्साओसहित केहेवाई गया छे. स्तनरोगोनां लक्षणो निदानस्थानना दशमा अध्यायमां अने तेओनी चिकित्साओ चिकित्सास्थानना १७ मा अध्यायमां केहेवाई गएल छे. नपुंसकपणानां निदानो तथा तेओनी चिकित्साओ चिकित्सास्थानना २६ मा अध्यायमां केहेवाई गयां छे. मूढ गर्भनां लक्षणो निदानस्थानना ८ मा अध्यायमां अने चिकित्साओ चिकित्सास्थानना १५ मा अध्यायमां केहेवाई गयेल छे. गर्भिणीनी मासानुमासिक वगेरे चिकित्साओ तथा तेना स्वस्थपणामां करवानी चिकित्साओ शारीरस्थानना १० मा अध्यायमां केहेवाई गई छे के जे चिकित्साओ बुद्धिमान् वैद्ये योनिरोगो उपर पण सर्वथा यथायोग्य योजवी योग्य छे.

स्त्रीने अकाळ प्रसवथी अपतानक आदि रोगो थएल होय तो तेओनी चिकित्साओ पण अहीं केहेवी अवशेष रेहेती नथी. केम के ए चिकित्साओ चिकित्सास्थानमां कहेली अपतानक आदि रोगोनी चिकित्साओथी जूदी पडती नथी. तेमज अकाळ प्रसवथी ज्वर वगेरे रोगो थया होय तो तेओनी चिकित्साओ पण अहीं केहेवी रेहेती नथी. केम के ए चिकित्साओ हवे पछीना अध्यायोमां केहेवानी ज्वर वगेरेनी चिकित्साओ उपरथी गोठवी शकाय एम छे.

(कौमारभृत्यतंत्र समाप्त.)

कायचिकित्सा तंत्र.

अध्याय ३९ मो.

१ अथातो ज्वरप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'ज्वरप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ येनामृतमपां मध्यादुद्धृतं पूर्वजन्मनि ।
यतोऽमरत्वं सम्प्राप्तास्त्रिदशास्त्रिदिवेश्वराः ॥
शिष्यास्तं देवमासीनं पप्रच्छुः सुश्रुतादयः ।
व्रणस्योपद्रवाः प्रोक्ता व्रणिनामप्यतः परम् ॥
समासाद्व्यासतश्चैव ब्रूहि नो भिषजां वर ।
उपद्रवेण जुष्टस्तु व्रणः कृच्छ्रेण सिध्यति ॥
उपद्रवास्तु व्रणिनः कृच्छ्रसाध्याः प्रकीर्तिताः ।
प्रक्षीणबलमांसस्य दोषधातुपरिक्षयात् ॥
तस्मादुपद्रवान्कृत्स्नान्ब्रूहि नः सचिकित्सितान् ।
सर्वकायचिकित्सासु ये दृष्टाः परमर्षिभिः ॥

सुश्रुत आदि शिष्योनो प्रश्न.

२ पोताना स्थानमां बीराजेला देव धन्वंतरि भगवान् के जेमणे पूर्व जन्ममां क्षीरसागरमांथी अमृत काहाडयुं हतुं अने जेमनी ए अमृत आपवारूप कृपाथी देवताओ अमरपणुं पामीने स्वर्गनुं आधिपत्य मेळवी शक्या हता तेमने सुश्रुत आदि शिष्योए पूछयुं के "आपे सूत्रस्थानना २२ मा अध्यायमां व्रणना गंध, वर्ण, स्राव तथा वेदना वगेरे उपद्रवो कह्या छे अने ते पछी चिकित्सास्थानना पेहेला अध्यायना २१ मा विषयमां व्रणवाळाओना ज्वर, अतीसार, मूर्छा

---

१ आ अध्यायथी ते छेक ओगणसाठमा अध्यायसुधीनो विभाग कायचिकित्सातंत्र केहेवाय छे. काय एटले दोषो, धातुओ तथा मळो एओना संघातमां रहेनारा रोगोनी अथवा काय एटले जठराग्निने प्राप्त थईने रेहेनारा रोगोनी आ विभागमां चिकित्सा कही छे तेथी आ विभाग कायचिकित्सातंत्र केहेवाय छे. सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायनो ६ ठो विषय तथा त्रीजा अध्यायनो ८ मो विषय वांचो.

२ ज्वरनां निदानो, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्सा एओनां निरूपण विषेनो.

तथा हेडकी वगेरे उपद्रवो पण संक्षेपथी कह्या छे. हे वैद्योमां उत्तम ! हवे व्रणवाळाओना ए ज्वरादिक उपद्रवो विषे अमारी पासे विस्तारथी निरूपण करो. जेम व्रण जो उपद्रवोथी संयुक्त थयो होय तो कष्टसाध्य थई पडे छे एम आपे कह्युं छे तेमज जेनुं बळ तथा मांस क्षीण थयुं होय अने बीजा धातुओ पण क्षीण थया होय एवा व्रणवाळा माणसने थएला ज्वरआदि उपद्रवो पण कष्टसाध्य थई पडे छे एम पण आपे कह्युं छे. ज्वर वगेरेना कष्टसाध्यपणाने लीधे तेओनां निदानो तथा चिकित्सादिक जाणवानी अमोने इच्छा थई छे माटे उपद्रवोरूप थता तथा मूलव्याधिओरूप पण थता ते सघळा रोगोनां निदानादिक तथा चिकित्साओ अमोने कही संभळावो अने सघळा प्रकारनी कायचिकित्साओना विषयमां अग्निवेश, भेड तथा जातूकर्ण्य आदि महात्मा ऋषिओए बीजा पण जे जे रोगो विषे कह्युं होय तेओनां पण निदानादिक तथा चिकित्साओ कही संभळावो."

२ तेषां तद्वचनं श्रुत्वा प्राब्रवीद्भिषजां वरः ।
ज्वरमादौ प्रवक्ष्यामि स रोगानीकराट् स्मृतः ॥

प्रथम ज्वरनां निदानादिक तथा चिकित्साओ केहेवानी भगवान् धन्वंतरिनी सकारण प्रतिज्ञा.

३ ए प्रमाणे सुश्रुत आदि शिष्योनुं वचन सांभळी वैद्योमां उत्तम धन्वंतरि भगवान् बोल्या के हुं प्रथम तमोने ज्वरनां निदानादिक तथा चिकित्साओ कही संभळावुं छुं. केम के ज्वर रोगोनां सैन्यनो राजा केहेवाय छे.

४ रुद्रकोपाग्निसम्भूतः सर्वभूतप्रतापनः ।
तैस्तैर्नामभिरित्येषां सत्वानां परिकीर्त्यते ॥
जन्मादौ निधने चैव प्रायो विशति देहिनः ।
अतः सर्वविकाराणामयं राजा प्रकीर्त्तितः ॥

ज्वर सर्व रोगोनो राजा होवानुं कारण.

४ ज्वर दक्षना यज्ञमां अपमान थवाथी प्रकुपित थएला सदाशिवना कोपरूपी अग्निमांथी उत्पन्न थयो छे, केवळ माणसोनेज नहीं पण सघळां प्राणिओने तपावनारो छे, अने घणुं करीने जन्मना आरंभमां तथा मरण समयमां पण प्राणिओनां शरीरोमां प्रवेश करे छे एटला माटे सघळा विकारोनो राजा केहेवाय छे. ए ज्वर मनुष्यशिवाय बीजांओने लागू पडे त्यारे 'ज्वर' ए नामथी नहीं पण बीजां नामोथी केहेवामां आवे छे. (जेम के हाथीओना शरीरोमां लागू पड्यो होय त्यारे 'पाकल' ए नामथी, घोडाओना शरीरोमां लागू पड्यो होय त्यारे 'अभितापक' ए नामथी, गायोनां शरीरोमां लागू पड्यो होय त्यारे 'गोकर्णक' ए नामथी, पक्षीओनां शरीरोमां लागू पड्यो होय त्यारे 'मकर' ए नामथी, कूतराओनां शरीरोमां लागू पड्यो होय त्यारे 'अलर्क' ए नामथी, जलजंतुओनां शरीरोमां लागू पड्यो होय त्यारे 'इंद्रमद' ए नामथी, औषधीओमां लागू पड्यो होय त्यारे 'ज्योति' ए नामथी, धान्योमां लागू पड्यो होय त्यारे 'चूर्णक' ए नामथी अने जळमां लागू पड्यो होय त्यारे 'नीलिका' ए नामथी केहेवाय छे इत्यादि.)

५ ऋते देवमनुष्येभ्यो नान्यो विषहते तु तम् ।
कर्म्मणा लभते यस्माद्देवत्वं मानुषादपि ॥
पुनश्चैव च्युतः स्वर्गान्मानुष्यमनुवर्त्तते ।
तस्मात्ते देवभागेन सहन्ते मानुषा ज्वरम् ॥
शेषाः सर्वे विपद्यन्ते तैर्य्यग्योना ज्वरार्दिताः ।

ज्वरनुं सहन माणसो तथा देवताओज करी शके छे.

५ माणसो तथा देवताओ शिवाय बीजां कोई पण प्राणी ज्वरनुं सहन करी शकतां नथी. माणसो यज्ञ आदि कर्मो करवानां अधि-

कारी होवाने लीधे तेवां कर्मो करीने देवपणाने प्राप्त थाय छे अने पुण्यो क्षीण थया पछी देवपदवीथी भ्रष्ट थई स्वर्गमांथी पडे तो पण पाछां मनुष्यजन्मनेज प्राप्त थाय छे. अर्थात् केटलांएक माणसो देवपदवी भोगववानी लायकता धरावनारां होय छे तथा केटलांएक माणसो देवपदवीमांथी आवेलां होय छे तेथी पोतामां रहेला दिव्य भागने लीधे ज्वरनुं सहन करवानी शक्ति धरावे छे अने देवताओ तो पोताना दिव्य महिमाने लीधे ज्वरनुं सहन करी शके छे. एओविना बीजां पशुपक्षी वगेरे सघळां प्राणीओ पोताने ज्वर लागू पडतां मरीज जाय छे.

६ स्वेदावरोधः सन्तापः सर्वाङ्गग्रहणं तथा ॥
विकारा युगपद्यस्मिञ्ज्वरः स परिकीर्त्तितः ।

ज्वरनुं सामान्य लक्षण.

६ जेमां स्वेदनो अवरोध, (पसीनानुं रोकाई जवुं—नहीं नीकळवुं) संताप अने सघळां अंगोनुं वेदनाथी झलाई जवुं ए सघळां लक्षणो एकीवखते उत्पन्न थाय ते रोग **ज्वर** केहेवाय छे. (जो के पित्तज्वरमां पसीनो नीकळे छे तो पण तेटलाथी आ लक्षणनो व्यभिचार थाय छे एम समजवुं नहीं. कारण के स्वेदनो अवरोध ए उत्सर्ग छे अने पित्तज्वरना लक्षणमां कहेली स्वेदनी उत्पत्ति अपवादरूप छे एम जेज्जट केहे छे. डल्हन तो केहे छे के आ पसीनो नहीं नीकळवारूप लक्षणांश प्रायिक छे एटले घण खरा ज्वरोमां लागू पडे छे माटे एक पित्तज्वरमां लागू नहीं पडवाथी तेमां खामी आवे छे तो पण हानि नथी. बीजा ग्रंथकारो तो 'स्वेदनो अवरोध' एटले 'दोषोथी जठराग्निनुं ढंकाई जवुं' एवो अर्थ करीने आ सामान्य लक्षणने संपूर्ण रीते लागू पाडे छे. केटलाएक तो मूळमां **स्वेदावरोधः** ए पदने बदले **वेगोपरोधः** एवो पाठ बोले छे अने ए पाठनो 'वायु, मूत्र तथा विष्टा वगेरेनुं रोकाई जवुं' एवो अर्थ करे छे के जेथी भांजगड आवे नहीं. वाग्भटे तो पोते आपेला ज्वरना सामान्य लक्षणमां चोख्खी रीते **स्रोतोविबन्धात् प्रायेण ततः स्वेदो न जायते** ए वाक्यथी 'ज्वरोमां घणुं करीने पसीनो नीकळतो नथी' एम कहीने कशो वांधो रेहेवा दीधो नथी. 'ताप' शब्द नहीं मूकतां 'संताप' शब्द मूक्यो छे ते देह, इंद्रियो अने मन ए त्रणेनो ताप समजाववाने माटे मूक्यो छे. कारण के ज्वर देहने, इंद्रियोने तथा मनने पण संताप उपजावे छे. देहमां जे उष्णपणुं थाय छे तेने देहनो संताप समजवो, इंद्रियोमां जे विकृतपणुं थाय छे तेने इंद्रियोनो संताप समजवो अने जे बेभानपणुं, अरति तथा ग्लानि थाय छे तेने मननो संताप समजवो. जो के वायुकृत ज्वरमां वायुना योगवाहीपणाने लीधे अने पित्तकृत ज्वरमां पित्तना अग्नितुल्यपणाने लीधे देहमां संताप थवो संभवे छे पण कफकृत ज्वरमां कफनी शीतलताने लीधे संताप थवो संभवतो नथी तो पण ज्वरना प्रभावने लीधे संताप थाय छे एम समजवुं. ज्वरनो स्वभाव अचिंत्यज छे के जेथी संतापने अवश्य उत्पन्न करे छे. जेम के वायु पोते आकार वगरनो छतां पण वायुकृत गुल्ममां श्यामपणुं तथा रक्तपणुं जोवामां आवे छे ए व्याधिनोज प्रभाव छे. केवळ पसीनानो अवरोध कोढना पूर्वरूपमां पण थाय छे, केवळ संताप दाहमां पण थाय छे अने केवळ अंगोनुं झलाई जवुं सर्वांगरोग नामना वातव्याधिमां पण थाय छे एटला माटे 'आ लक्षणो जेमां सघळां उत्पन्न थाय ते रोग ज्वर केहेवाय' एम कह्युं छे.)

७ दोषैः पृथक् समस्तैश्च द्वन्द्वैरागन्तुरेव च ॥
अनेककारणोत्पन्नः स्मृतस्त्वष्टविधो ज्वरः ।

ज्वरना अनेक प्रकारोनो मुख्य आठ भेदोमां समावेश.

७ ज्वर जो के अनेक कारणोथी उत्पन्न थतो होवाने लीधे अनेक प्रकारोवाळो छे तो पण

सूक्ष्म विचार करतां ते सघळा प्रकारोनो मुख्यत्वेकरी वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, वातपित्तजन्य, वातकफजन्य, पित्तकफजन्य, सान्निपातिक अने आगंतुज ए आठ भेदोमां समावेश थाय छे.

(जो के चरके वातोल्बण, पित्तोल्बण, कफोल्बण, वातपित्तोल्बण, वातश्लेष्मोल्बण, पित्तश्लेष्मोल्बण, अधिकवातमध्यपित्तहीनकफ, अधिकवातमध्यकफहीनपित्त, अधिकपित्तमध्यवातहीनकफ, अधिकपित्तमध्यकफहीनवात, अधिककफमध्यवातहीनपित्त, अधिककफमध्यपित्तहीनवात अने व्युल्बण ए रीते सान्निपातिक ज्वरना तेर भेद कहेला छे अने आ ग्रंथमां पण सान्निपातिकना अभिन्यास आदि अमुक भेद आपवामां आवशे तो पण अहीं सर्वमां त्रणे दोषोथी उत्पन्न थवारूप समताने लीधे तथा सघळा सान्निपातिक ज्वरोनी चिकित्सा पण प्रायशः एकसरखीज आपवानी छे तेथी सान्निपातिक एकज गणेलो छे. जो के आगंतुज ज्वर पण प्रहार वागवा आदि अनेक कारणोना योगने लीधे अनेक प्रकारनो थाय छे तो पण बाहारनां कारणोथी उत्पन्न थवारूप समताने लीधे अहीं आगंतुज पण एकज गणेलो छे. जो के आगंतुज ज्वरमां पण वायु आदि दोषोनां लक्षणो जोवामां आवे छे तो पण तेमां दोषोनो संबंध पाछळथी थाय छे माटे तेने दोषोथी उत्पन्न थता ज्वरोथी जूदो गण्यो छे. दोषजन्यव्याधिमां प्रथम दोषोनो प्रकोप थया पछी शरीरमां पीडा थाय छे अने आगंतुज ज्वरमां अभिघातादिकथी प्रथम शरीरमां व्यथा थतां ज्वर उत्पन्न थया पछी दोषोनो प्रकोप थाय छे एटलो भेद छे.)

८ दोषाः प्रकुपिताः स्वेषु कालेषु स्वैः प्रकोपणैः ॥
व्याप्य देहमशेषेण ज्वरमापादयन्ति हि ।
दुष्टाः स्वहेतुभिर्दोषाः प्राप्यामाशयमूष्मणा ॥
सहिता रसमागत्य रसस्वेदप्रवाहिणाम् ।
स्रोतसां मार्गमावृत्य मन्दीकृत्य हुताशनम् ॥
निरस्य बहिरूष्माणं पक्तिस्थानाच्च केवलम् ।
शरीरं समभिव्याप्य स्वकालेषु ज्वरागमम् ॥
जनयन्त्यथ वृद्धिं च स्ववर्णं च त्वगादिषु ।

ज्वरनुं प्राकृतवैकृतपणुं अने दूरनां तथा पासेनां कारणो केहेवापूर्वक ज्वरनी संप्राप्ति.

८ प्रावृष् (आषाढ तथा श्रावण) ऋतुरूप, शरदऋतुरूप तथा वसंतऋतुरूप पोतपोताना समयोमां तथा जेओमां प्रावृष्नां, शरद्नां तथा वसंतनां लक्षणो देखाय छे एवा अहोरात्रना ते ते समयोमां, अनुचित आहार तथा अनुचित विहाररूप पोतपोतानां प्रकोपणोथी प्रकुपित थएला दोषो सघळा शरीरमां व्याप्त थईने जे ज्वरने उत्पन्न करे छे ते ज्वर प्राकृत केहेवाय छे. प्रावृष्आदि समयोथी जूदा समयोमां तथा अहोरात्रना पण तेवाज समयोमां अने प्रावृष्आदि समयोमां पण पोतपोताना क्रमनुं उल्लंघन करीने, अनुचित आहार तथा अनुचित विहाररूप पोतपोतानां प्रकोपणोथी प्रकुपित थएला दोषो सघळा शरीरमां व्याप्त थईने जे ज्वरने उत्पन्न करे छे ते ज्वर वैकृत केहेवाय छे. पोतपोतानां प्रकोपणोथी प्रकुपित थएला ए दोषो नाभिना तथा स्तनोना मध्यमां रहेला आमाशयमां प्रवेश करी, उत्पन्न थनारा व्याधिना प्रभावने लीधे विशेष ऊनाशथी संयुक्त थई, हृदयमां रहेला रसमां आवी, रसनुं तथा स्वेदनुं वहन करनारां स्रोतोना मार्गने ढांकी दई, जठराग्निने मंद करी नाखी, ते अग्निनी ऊनाशने अन्न पाकवाना ठेकाणामांथी बाहार काहाडी पोतपोताना समयोमां ते ऊनाशनी साथे सघळा शरीरमां व्यापीने ज्वरने उत्पन्न करे छे, जो ज्वर प्रथमथीज आवेलो होय तो तेने वधारे छे अने चामडीमां तथा नेत्र वगेरेमां पोतापोताना वर्णने उत्पन्न करे छे.

९ मिथ्यातियुक्तैरपि च स्नेहाद्यैः कर्मभिर्नृणाम्॥
विविधादभिघाताच्च रोगोत्थानात्प्रपाकतः ।
श्रमात्क्षयादजीर्णाच्च विषात्सात्म्यर्तुपर्ययात् ॥
ओषधीपुष्पगन्धाच्च शोकान्नक्षत्रपीडनात् ।
अभिचाराभिशापाभ्यां मनोभूताभिशङ्कया ॥
स्त्रीणामपप्रजातानां प्रजातानां तथाऽहितैः ।
स्तन्यावतरणे चैव ज्वरो दोषैः प्रवर्तते ॥

उपर कहेलां कारणोथीज नहीं, परंतु बीजां कारणोथी पण दोषो प्रकुपित थईने ज्वरनी प्रवृत्ति करे छे.

९ स्नेहन, स्वेदन, वमन तथा विरेचन आदि कर्मोनो मिथ्यायोग के अतियोग थवाथी, शस्त्र के पथरा वगेरेना अभिघातथी, विद्रधि आदि रोग उत्पन्न थवाथी, विद्रधि वगेरे रोग पाकवाथी, पंथ करवा वगेरेना परिश्रमथी, धातुओना क्षयथी, अजीर्णथी, विषथी, सात्म्यना फेरफारथी, ऋतुना फेरफारथी, झेरी ओषधिनो के झेरी पुष्पनो गंध आववाथी, शोकथी, शनि आदि दुष्ट ग्रहे करेला जन्मनक्षत्रना पीडनथी, शत्रुओए करेला आभिचारिक होमादिकथी, गुरु तथा ब्राह्मण वगेरेना शापथी, मनमां कामक्रोधादिकनो अभिषंग थवाथी, भूत वगेरेनो आवेश थवाथी अने कसुवावड थया पछी के प्रसव थया पछी अहित आहारादिक करवाथी प्रकुपित थएला दोषो ज्वरनी प्रवृत्ति करे छे. प्रसव थया पछी पेहेलुं धावण आववाना समयमां पण दोषोना प्रकोपथी ज्वरनी प्रवृत्ति थाय छे.

१० तैर्वेगवद्भिर्बहुधा समुद्भ्रान्तैर्विमार्गगैः ।
विक्षिप्यमाणोऽन्तरग्निर्भवत्याशु बहिश्चरः ॥
रुणद्धि चाप्यपां धातुं यस्मात्तस्माज्ज्वरातुरः ।
भवत्यत्युष्णगात्रश्च न च स्विद्यति सर्वशः ॥

ज्वरथी गात्रोमां अति उष्णता केम थाय छे ?

१० वेगवाळा, अहींतहीं विक्षेप पामता अने विरुद्ध मार्गमां चालवा लागेला ते दोषोए अन्न पाकवाना स्थानकमांथी बाहार फेंकाती जठराग्निनी ऊनाश तुरत रुवाडांओनां छिद्रोद्वारा बांहार नीकळवा लागे छे अने बाहार नीकळवा लागीने पसीनानां स्रोतोने रोकी दे छे के जेथी ज्वरवाळो माणस अत्यंत ऊष्ण गात्रोवाळो थई जाय छे अने घणुं करीने पसीनाथी रहितज थई जाय छे. (साधारण ऊनाश के जे स्वस्थ माणसोनां शरीरोमां पण होय छे तेथी विशेष ऊनाश थवी ए ज्वरनुं स्वरूप छे.)

११ श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः ।
इच्छाद्वेषौ मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु ॥
जृम्भाङ्गमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः ।
अप्रहर्षश्च शीतं च भवन्त्युत्पत्स्यति ज्वरे ॥
सामान्यतो विशेषात्तु जृम्भात्यर्थं समीरणात् ।
पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥

ज्वरनुं सामान्य तथा विशिष्ट पूर्वरूप.

११ गमे ते प्रकारनो ज्वर उत्पन्न थवानो होय त्यारे आगळथीज कामकाज कर्या वगर पण थाक लागी जाय छे, चित्तनुं अस्वस्थपणुं थाय छे, गात्रोमां ग्लानि थाय छे, मोहोडुं विरस थई जाय छे, नेत्रो अश्रुओथी भराई जाय छे, थंडीमां वायुमां तथा तडका वगेरेमां वारंवार इच्छा अने वारंवार अरुचि थया करे छे, बगासां आव्या करे छे, अंगो मरडाया करे छे, शरीरमां भारेपणुं थाय छे, रुवाडां ऊभां थई जाय छे, भोजनमां अरुचि थाय छे, अंधकारमां डुबेलाना जेवुं भानरहितपणुं थाय छे, हर्षनो अभाव थाय छे अने थंडी प्राप्त थाय छे. आ सामान्य चिह्नो कह्यां. हवे विशेष चिह्नो कहुं छुं. वातज्वर आववानो होय त्यारे अत्यंत बगासां आववारूप विशेष पूर्वरूप थाय छे, पित्तज्वर आववानो होय त्यारे नेत्रोमां अत्यंत बलतरा थवारूप विशेष पूर्वरूप थाय छे अने कफज्वर आववानो होय त्यारे तमाम

अन्ननी आकांक्षा नथवारूप विशेष पूर्वरूप थाय छे.

(चरक केहे छे के अग्निमां, तडकामां, वायुमां अने जळमां वारंवार अनिश्चित रीते प्रेम अने द्वेष उत्पन्न थया करे छे. बीजा वैद्यो केहे छे के थंडी, वायु, तडको अने शयनादिक एओनी उपर वारंवार इच्छा अने द्वेष थया करे छे. वाग्भट ए लक्षणो उपरांत बीजां पण केटलांक लक्षणो आपे छे के खाधेलुं अन्न पचतुं नथी, बळ अल्प थई जाय छे, निद्रा बहु आवे छे, अंगो नमी जाय छे, गुरुना के मातापिता वगेरेना उपदेशोनुं सहन थतुं नथी, अम्लादिक द्रव्योमां रुचि थाय छे, मधुर द्रव्यो उपर द्वेष थाय छे, बालको के जेओ सर्व लोकोने प्यारां होय छे तेओना उपर पण द्वेष थाय छे, पींडीओमां गोठलीओ चडवा जेवुं थाय छे अने तरश बहु लाग्या करे छे. अत्यंत बगासां आववा वगेरे जे विशिष्ट पूर्वरूपो कह्यां तेओ, उपर कहेलां थाक लागवा आदि सामान्य पूर्वरूपोनी साथेज थाय छे. कारण के विशेष धर्म सामान्य धर्मथी संयुक्तज होय एवी मर्यादा छे. पूर्वरूपो थया पछी ज्वरनी स्पष्टता थाय छे एटले वातजन्य आदि प्रकारोमांथी जे प्रकारनो ज्वर होय ते स्पष्ट जणाई रहे छे.

१२ सर्वलिङ्गसमावायः सर्वदोषप्रकोपजे ।

सान्निपातिक ज्वरनुं पूर्वरूप.

१२ सान्निपातिक एटले सर्व दोषोना प्रकोपसंबंधी ज्वर आववानो होय त्यारे पूर्वरूपमां उपर कहेलां सर्व चिह्नो थाय छे एटले अत्यंत बगासां, नेत्रोमां अत्यंत बळतरा तथा अन्न उपर अत्यंत अरुचि एओनी साथे थाक लागवा आदि सघळां सामान्य पूर्वरूपोनुं एकठापणुं थाय छे.

१३ द्वयोर्द्वयोस्तु रूपेण संसृष्टं द्वन्द्वजं विदुः॥

द्वंद्वज ज्वरनुं (बबे दोषोथी उत्पन्न थनारा ज्वरनुं) पूर्वरूप.

१३ उपर कहेलां थाक लागवा आदि सामान्य पूर्वरूपो जो अत्यंत बगासां आववाथी तथा नेत्रोनी अत्यंत बळतराथी संयुक्त होय तो वायु तथा पित्त ए बन्ने दोषनो ज्वर आववानो छे एम समजवुं. सामान्य पूर्वरूपो अत्यंत बगासां आववाथी तथा अन्न उपर अत्यंत अरुचिथी संयुक्त होय तो वायु तथा कफ ए बन्ने दोषनो ज्वर आववानो छे एम समजवुं. सामान्य पूर्वरूपो जो नेत्रोनी अत्यंत बळतराथी तथा अन्न उपर अत्यंत अरुचिथी युक्त होय तो पित्त तथा कफ ए बन्ने दोषनो ज्वर आववानो छे एम समजवुं.

१४ वेपथुर्विषमो वेगः कण्ठोष्ठमुखशोषणम् ।
निद्रानाशः क्षवस्तम्भो गात्राणां रौक्ष्यमेव च ॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं बद्धविट्कता ।
जृम्भाध्मानं तथा शूलं भवन्त्यनिलजे ज्वरे ॥

वातज्वरनुं लक्षण.

१४ वातजन्य ज्वरमां कंप थाय छे, ज्वरनो वेग कोई समये तीव्र अने कोई समये मंद थाय छे, कंठ होठ तथा मोहोडुं सूकावा लागे छे, निद्रानो नाश थाय छे, छींक आवती नथी, गात्रोमां रूक्षता थाय छे, अंगोमां पीडा थाय छे, माथामां तथा हृदयमां वधारे पीडा थाय छे, मोहोडुं विरस अथवा तूरूं थई जाय छे, विष्टा बंधाई जाय छे, बगासां आवे छे, पेट चडी आवे छे अने शूळ नीकळे छे.

(चरके एथी उपरांत पण लक्षणो आप्यां छे के पींडीयोमां कळतर थाय छे, कानमां अवाज थाय छे, हडपची स्तब्ध थई जाय छे, सांधाओनो तथा गोठणोनो विश्लेष थाय छे, खाली ऊधरस आवे छे, वमन थाय छे, दांतो अंबाई जाय छे, भ्रम थाय छे, मूत्र तथा नेत्रो

रातां थई जाय छे, तरश लाग्या करे छे अने बकवाद थाय छे. वाग्भटे तो एथी पण वधारे लक्षणो आप्यां छे के सघळां अंगोमां एकी वखते संताप आवतो नथी पण कोई वखते माथामां प्रथम आवे छे, कोई वखते खभाओमां प्रथम आवे छे अने कोई वखते पगोमां प्रथम आवे छे, ज्वर जवाना समयमां कोई वखते पगमांथी प्रथम जाय छे, कोई वखते बरडामांथी प्रथम जाय छे अने कोई वखते माथामांथी प्रथम जाय छे, वेदनाओ पण एकी वखते सघळां अंगोमां थती नथी पण कोई वखते एक अंगमां तो कोई वखते बीजा अंगमां थाय छे. कोई वखते पग एवा तो जड थई जाय छे के तेओमां नख वगेरे वागवानी पण खबर पडती नथी, कोई वखते सांधाओनुं विच्छेदन थतुं होय एवुं जणाय छे, कोई वखते साथळो पोतानी क्रियामां अशक्त थई जाय छे, कोई वखते कमर झलाई जाय छे, कोई वखते पीठ जाणे खंडाई जती होय एम लागे छे, कोई वखते पेट जाणे पीलाई जतुं होय एम लागे छे, कोई वखते अस्थिओ जाणे करवतीथी वेरातां होय एम लागे छे, कोई वखते पांसांनां अस्थिओ जाणे छेदातां होय एम लागे छे, कोई वखते हृदयपर जाणे चाबूकनो मार पडतो होय एवुं लागे छे, कोई वखते खभाओ जाणे मथाई जता होय एम लागे छे, कोई वखते बाहुओ चीरी नखाता होय एवी वेदना थाय छे, कोई वखते लमणाओ जाणे भोंकाता होय एवी वेदना थाय छे, चामडी तथा मुख वगेरे रातां थई जाय छे, लाळ झर्‍या करे छे, अन्न पचतुं नथी, गरमीनी इच्छा थाय छे अने अंगो नमी जाय छे.)

१५ वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः ।
कण्ठोष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥
प्रलापः कटुता वक्त्रे मूर्छा दाहो मदस्तृषा ।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वं पैत्तिके भ्रम एव च ॥

पित्तज्वरनुं लक्षण.

१५ पित्तजन्य ज्वरमां ज्वरनो वेग तीक्ष्ण थाय छे, द्रववाळो मळ पडे छे, निद्रा अल्प थई जाय छे, पित्त कफना स्थानमां जाय त्यारे वमन थाय छे, कंठ होठ मोहोडुं तथा नाक पाकी आवे छे, पसीनो थाय छे, बकवाद थाय छे, मोहोडुं तीखुं थई जाय छे, रूप वगेरेनी खबर पडती नथी, बळतरा थाय छे, घणुं सोपारी खाधाना जेवो मीणो चडे छे, तरश लाग्या करे छे, विष्टा मूत्र तथा नेत्रो पीळां थई जाय छे अने चाकडे चडेलाना जेवुं भ्रमण थाय छे.

(वाग्भट एथी वधारे लक्षणो आपे छे के संताप एकी वखते सघळां अंगोमां व्यापे छे, शीतनी इच्छा थाय छे, अरति थाय छे, लोही थुंकाय छे, खटाश थाय छे, रातां धामठां उपडे छे, चामडी वगेरे पीळां तथा हरित वर्णवाळां थाय छे अने निश्वासमां दुर्गंधपणुं थाय छे.)

१६ गौरवं शीतमुत्क्लेशो रोमहर्षोऽतिनिद्रता ।
स्रोतोरोधो रुगल्पत्वं प्रसेको मधुरास्यता ॥
नात्युष्णगात्रता छर्दिरङ्गसादोऽविपाकता ।
प्रतिश्यायोऽरुचिः कासः कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता

कफज्वरनुं लक्षण.

१६ कफजन्य ज्वरमां अंगोनुं भारेपणुं थाय छे, टाढ वाय छे, वमन थवानी तैयारी जेवुं थई रेहे छे, रुवाडां ऊभां थई जाय छे, निद्रा अधिक थाय छे, प्रतिश्याय नामनो नाकनो रोग (स्राव) थाय छे, खावानी इच्छा थती नथी, खांसी आवे छे, आंखो सफेद थई जाय छे, स्रोतो रोकाई जाय छे, वेदना अल्प थाय छे, लाळ झर्‍या करे छे, कफ थुंकाय छे, मोहोडुं मधुर थई जाय छे, गात्रो बहु ऊनां थई जतां नथी, वमन थाय छे, अंगोमां ग्लानि थाय छे अने खाधेलुं अन्न पचतुं नथी.

(बीजा ग्रंथमां कह्युं छे के अंगो जाणे भीनां कपडाथी वींटाएलां होय एवां थई जाय छे, ज्वरनो वेग. मंद होय छे, शक्ति छतां पण काम करवामां उत्साह थतो नथी, मूत्र तथा विष्टा सफेद थई जाय छे, अवयवो अक्कड थई जाय छे अने भोजननी इच्छा छतां पण अन्न उपर रुचि थती नथी. वाग्भटे एथी पण वधारे लक्षणो आप्यां छे के हृदय कफथी लेपाएलुं थई जाय छे, श्वास थाय छे, चामडी वगेरे सफेद थई जाय छे, अंगोमां फोडलीओ थाय छे अने अंगोमां शीळस नीकळे छे.)

१७ निद्रानाशो भ्रमः श्वासस्तन्द्रा सुप्ताङ्गताऽरुचिः ।
तृष्णा मोहो मदः स्तम्भो दाहः शीतं हृदि व्यथा॥
पक्तिश्चिरेण दोषाणामुन्मादः श्यावदन्तता ।
रसना परुषा कृष्णा सन्धिमूर्द्धास्थिजा रुजः ॥
निर्भुग्नकलुषे नेत्रे कर्णौ शब्दरुगन्वितौ ।
प्रलापः स्रोतसां पाकः कूजनं चेतनाच्युतिः ॥
स्वेदमूत्रपुरीषाणामल्पशः सुचिरात्स्रुतिः ।
सर्वजे सर्वलिङ्गानि विशेषं चात्र मे शृणु ॥

सान्निपातिक ज्वरनुं लक्षण.

१७ सान्निपातिक ज्वरमां निद्रानो नाश थाय छे, चाकडे चडेलांना जेवुं भ्रमण थाय छे, श्वास थाय छे, शारीरस्थानना चोथा अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलां लक्षणोवाळी तंद्रा थाय छे, अंगोने स्पर्शनी खबर पडती नथी, भोजनादिक उपर अरुचि थाय छे, तरश लाग्या करे छे, मूर्छा थाय छे, मीणो चडे छे, अंगोमां ग्लानि थाय छे, बळतरा थाय छे, टाढ आवे छे, हृदयमां व्यथा थाय छे, दोषो घणे काळे पाके छे, गावा नाचवा तथा हसवा वगेरे विकृत चेष्टाओरूप उन्माद थाय छे, दांतो काळा थई जाय छे, जीभ खरसट तथा काळी थई जाय छे, सांधाओमां माथामां तथा अस्थिओमां वेदनाओ थाय छे, नेत्रो अस्वच्छ वांकां तथा बाहार नीकळेलां जेवां थई जाय छे, कानो वेदनाथी तथा अवाजथी युक्त थई जाय छे, बकवाद थाय छे, मुख तथा नाक वगेरे स्रोतो पाकी जाय छे, कंठमांथी अव्यक्त शब्द नीकळ्या करे छे, बेभानपणुं थई जाय छे अने पसीनो, मूत्र तथा विष्टा एओ लांबे लांबे काळे थोडां थोडां स्रवे छे.

(जो के सान्निपातिक ज्वर त्रणे दोषोथी उत्पन्न थएलो होवाने लीधे तेमां त्रण दोषोनां लक्षणो के जेओ १४ मा, १५ मा तथा १६ मा विषयमां अनुक्रमथी आपेलां छे तेओ सघलां आववां जोइए अने ते लक्षणो शिवायनां कोई पण लक्षणो न आववां जोइए ते छतां अहीं ते लक्षणोथी केटलांएक न्यूनाधिक लक्षणो आपेलां छे तेनुं कारण ए छे के विकृतिविषमसमवेत सन्निपातनुं आ लक्षण आपेलुं छे. वैद्यशास्त्रोमां विकृतिविषमसमवेत अने प्रकृतिसमसमवेत ए रीते बे प्रकारनो दोषोनो समवाय एटले कार्यकारण संबंध मानवामां आवे छे. जेम सफेद तंतुओरूप समवायी कारणथी बनेलुं वस्त्र ते कारणने मळतुं एटले सफेदज थाय छे तेम कारणना स्वभावने अनुसरतुंज कार्य उत्पन्न थाय ए प्रकृतिसमसमवाय केहेवाय छे. जेम संयोगने लीधे विकार पामेलां हळदर अने चूनो एओमांथी ते कारणोने नहीं अनुसरतुं राता रंगरूप कार्य उत्पन्न थाय छे तेम कारणना स्वभावने नहीं मळतुं कार्य उत्पन्न थाय ए विकृतिविषमसमवाय केहेवाय छे. विकृतिविषम समवायमां सघळां लक्षणो जूदांज आववां जोइए एम पकडी बेसवुं नहीं पण मूललक्षणोथी केटलांएक लक्षणो न्यूनाधिक आववां जोइए एम समजवुं. तंत्रांतरमां विकृतिविषमसमवेत सान्निपातिक ज्वरनां अधिक लक्षणो पण आपेलां छे के कंठ जाणे धान्योनी अणीओथी व्याप्त होय एवो थई जाय छे, जीभ वळी गएली जेवी थई जाय छे, कफसहित रुधिर तथा पित्त

थुंकाय छे, माथुं आम तेम हल्या करे छे, गात्रो अत्यंत कृश थई जतां नथी, मधमांखीना करड जेवां पींगळां तथा रातां धामठां उपडे छे, शरीरमां चकरडां थाय छे, नथीज बोलातुं अथवा थोडुंज बोली शकाय छे अने पेटमां भारेपणुं थई जाय छे. जो के वात, पित्त अने कफ के जेओ परस्परथी विरुद्ध गुणोवाळा छे तेओ मळीने एक कार्यनो आरंभ करे ए संभवतुं नथी पण परस्परनो उपघात करे ए संभवे छे तो पण तेओ मळीने एक सान्निपातिक ज्वरनो आरंभ करे छे तेनुं कारण ए छे के तेओ परस्परथी विरुद्ध गुणोवाळा छतां पण सान्निपातिक ज्वरमां दैवनी गतिथी अथवा पोतपोताना तेवा प्रकारना स्वभावथी परस्परनो उपघात नहीं करतां परस्परना मददगार थई पडे छे. जो के वात, पित्त अने कफ के जेओनो चयकाल अने प्रकोपकाल भिन्न भिन्न छे तेओनो एकी वखते प्रकोप थवो संभवित नथी तो पण आहार विहार आदि निदानोना बळने लीधे सान्निपातिक ज्वरमां तेओनो एकी वखते प्रकोप थाय छे एम समजवुं.)

त्रणे दोषोथी थएलो सान्निपातिक ज्वर जो प्रकृतिसमसमवेत होय तो तेमां केवळ त्रणे दोषोनांज लक्षणो थाय छे पण तेओथी विलक्षण प्रकारनां कोई लक्षणो थतां नथी. हवे सान्निपातिक ज्वरना केटलाएक भेदो कहुं छुं ते सांभळो.

१८ नात्युष्णशीतोऽल्पसंज्ञो भ्रान्तप्रेक्षी हतस्वरः ।
खरजिह्वः शुष्ककण्ठः स्वेदविण्मूत्रवर्जितः ॥
सास्रो निर्भुग्नहृदयो भक्तद्वेषी हतप्रभः ।
श्वसन् निपतितः शेते प्रलापोपद्रवायुतः ॥
तमभिन्यासमित्याहुर्हतौजसमथापरे ।
सन्निपातज्वरं कृच्छ्रमसाध्यमपरे विदुः ॥
निद्रोपेतमभिन्यासं क्षीणमेनं हतौजसम् ।
संन्यस्तगात्रं संन्यासं विद्यात्सर्वात्मके ज्वरे ॥

अभिन्यास, हतौजस् तथा संन्यास नामना ज्वरो के जेओ सान्निपातिक ज्वरना भेदो छे तेओनां लक्षणो अने सघळा सान्निपातिक ज्वरोनुं कष्टसाध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

१८ जेमां बहु उष्णता न होय, बहु शीतलता पण न होय, संज्ञा अल्प थई गई होय, सघळा पदार्थो जेवा होय तेवा नहीं पण जूदी रीतना देखाता होय, स्वरभंग थई गयो होय, जीभ खरसट थई गई होय, कंठ सूकातो होय, पसीनो विष्टा के मूत्र कशुं आवतुं न होय, नेत्रो आंसुवाळां थई गयां होय, हृदय कठण थई गयुं होय, अन्न उपर तमाम अरुचि थई गई होय, कांति नष्ट थई गई होय, हंफारो चालतो होय, ऊंधमुंध पडचुं रेहेवुं के सुई रेहेवुं पडतुं होय, निरर्थक बकवाद चाल्या करतो होय अने उपद्रवोए पण घेरो घाल्यो होय ते सान्निपातिक ज्वरने केटलाएक आचार्यो **अभिन्यास** केहे छे अने केटलाएक आचार्यो **हतौजस्** केहे छे. वास्तविक जोतां एवा सान्निपातिक ज्वरना अभिन्यास, हतौजस् अने संन्यास ए नामना त्रण भेदो थाय छे. एवा सान्निपातिक ज्वरमां रोगी जो निद्राथीज युक्त रेहेतो होय तो ते ज्वर **अभिन्यास** केहेवाय छे, रोगीनुं ओज क्षीण थई गयुं होय तो ते ज्वर **हतौजस्** केहेवाय छे अने रोगीए गात्रो नाखीज दीधां होय तो ते ज्वर **संन्यास** केहेवाय छे. सान्निपातिक ज्वरोने केटलाएक आचार्यो कष्टसाध्य केहे छे अने केटलाएक आचार्यो असाध्य केहे छे तेमां एम समजवानुं छे के जो सर्व लक्षणोथी भरपूर होय तो असाध्य छे अने कांईक अल्प लक्षणोवाळो होय तो कष्टसाध्य छे.

१९ ओजो विस्रंसते यस्य पित्तानिलसमुच्छ्रयात् ॥

म गात्रस्तम्भशीताभ्यां शयनेच्छुरचेतनः ।
अपि जाग्रत्स्वपञ्जन्तुस्तन्द्रालुश्च प्रलापवान्॥
संहृष्टरोमा स्रस्ताङ्गो मन्दसन्तापवेदनः ।
ओजोनिरोधजं तस्य जानीयात्कुशलो भिषक्॥

हतौजस् नामना सान्निपातिक ज्वरनुं सविस्तर लक्षण.

१९ पित्तना तथा पवनना अति प्रकोपने लीधे ओज भ्रष्ट थई गयुं होय, गात्रो स्तब्ध थई जवाने लीधे तथा शीतने लीधे शयननीज इच्छा रेहेती होय, भान जतुं रह्युं होय, जागवामां तथा सूवामां तंद्रा तथा प्रलापज रेहेतां होय, रुवाडां खडां थई गयां होय, अंगो शिथिल थई गयां होय अने संताप तथा वेदना मंद होय तो प्रवीण वैद्ये जाणवुं के ए सान्निपातिक ज्वर **हतौजस्** नामनो छे.

२० सप्तमे दिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशेऽपि वा।
पुनर्घोरतरो भूत्वा प्रशमं याति हन्ति वा ॥

सान्निपातिक ज्वर अमुक मुदतमां छोडी दे छे अथवा मारी नाखे छे.

२० वायुना आधिक्यवाळो सान्निपातिक ज्वर वायुना तीव्रशक्तिवाळापणाने लीधे सातमो दिवस प्राप्त थतां पाछो अत्यंत घोर थईने छोडी दे छे अथवा मारी नाखे छे. पित्तना आधिक्यवाळो सान्निपातिक ज्वर पित्तना मध्यशक्तिवाळापणाने लीधे दशमो दिवस प्राप्त थतां पाछो अत्यंत घोर थईने छोडी दे छे अथवा मारी नाखे छे अने कफना आधिक्यवाळो सान्निपातिक ज्वर कफना मंदशक्तिवाळापणाने लीधे बारमो दिवस प्राप्त थतां पाछो अत्यंत घोर थईने छोडी दे छे अथवा मारी नाखे छे.

(उपर कहेली मुदतोमां जो रसथी ते वीर्यपर्यंत सघळा धातुओ पाकी जाय तो सान्निपातिक ज्वर मारी नाखे छे .अने मळो (दोषो) पाकी जाय तो ते ज्वर छोडी दे छे. धातुओना अने मळोना पाकवामां पूर्वजन्मनुं प्रारब्धकर्मज कारणरूप थाय छे. जो जीवनने वधारनारूं प्रारब्धकर्म होय तो मळो पाके छे अने जीवननी हानि करनार प्रारब्धकर्म होय तो धातुओ पाके छे. निद्रानो नाश, हृदयनुं स्तब्धपणुं, पेटनुं कठणपणुं, गात्रोनुं भारेपणुं, अरुचि, सुखनो अभाव अने बळनी हानि ए लक्षणो थयां होय तो जाणवुं के धातुओ पाक्या छे. एम पण केहेवाय छे के ज्वरथी पीडित थएलो माणस हृदयमां, नाभि उपर अथवा पाकने लीधे दूखतां गात्रोमां आंगळीओवते दबावतां पीडा पामे तो ते माणसना धातुओ पाकी गया छे एम समजवुं तेमज नाभिथी उपर तथा हृदयनी नीचे दबावतां जो व्यथा थाय तो पण जाणवुं के ते माणसना धातुओ पाकी गया छे. वायु आदि दोषो के जेओनो स्वभाव तंद्रा, दाह तथा भारेपणुं वगेरे करवानो छे तेओनुं ते स्वभावथी रहितपणुं, ज्वरनुं तथा शरीरनुं हलकापणुं, इंद्रियोनुं निर्मळपणुं तथा पोतपोतानां कार्योमां समर्थपणुं, जठराग्निनुं समर्थपणुं अने अनुक्रमे तरश वगेरेनुं शांतपणुं ए लक्षणो थयां होय तो जाणवुं के मळो पाक्या छे. अरुणदत्त केहे छे के स्रोतोनुं रोधथी रहितपणुं, अंगोनुं हलकापणुं, बलयुक्तपणुं, वायुनुं अनुलोमपणुं, काया वगेरेनी चेष्टाओमां आलस्यनो अभाव, जठराग्निनुं प्रदीप्तपणुं, मुखनुं स्वच्छपणुं, मूत्र तथा विष्टा आदि मळोनी प्रवृत्ति, भूखनुं उत्पन्न थवुं अने ग्लानिथी रहितपणुं एओमांनुं कोई पण चिह्न देखाय तो जाणवुं के ज्वरनी ऊनाश मळोने पकाववामां तैयार थई छे अने एथी विपरीत लक्षणो देखाय तो जाणवुं के ज्वरनी ऊनाश धातुओने पकाववामां तैयार थई छे. सातमो दशमो अने बारमो दिवस के जे छोडी देवानी अथवा मारी नाखवानी अवधिरूप छे तेओनुं आमना आधिक्यने लीधे उल्लंघन थाय तो पछी सन्निपातज्वर पोताना आववाना दिवसथी चौदमी, वीशमी अने चो-

वीशमी रात सूधीमां छोडी दे छे अथवा मारी नाखे छे ए सन्निपातज्वरनी मर्यादा छे.)

२१ **द्विदोषोच्छ्रायलिङ्गास्तु द्वन्द्वजास्त्रिविधाः स्मृताः ।**

तृष्णा मूर्छा भ्रमो दाहो निद्रानाशः शिरोरुजा ।
कंठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तथा ।
पर्वभेदश्च जृम्भा च वातपित्तज्वराकृतिः ॥
स्तैमित्यं पर्वणां भेदो निद्रा गौरवमेव च ।
शिरोग्रहः प्रतिश्यायः कासः स्वेदाप्रवर्त्तनम् ॥
संतापो मध्यवेगश्च वातश्लेष्मज्वराकृतिः ।
तिक्तलिप्तास्यता तंद्रा मोहः कासोऽरुचिस्तृषा ।
मुहुर्दाहो मुहुः शीतं पित्तश्लेष्मज्वराकृतिः ।

बे बे दोषोथी उत्पन्न थएला एटले वातपित्तजन्य, वातकफजन्य अने पित्तकफजन्य ज्वरोनां जूदां जूदां लक्षणो.

२१ **वातपित्तजन्य ज्वरमां** वात अने पित्त ए बन्ने दोषोनां पोतपोतानां लक्षणो के जेओ आ अध्यायना १४ मा अने १५ मा विषयमां कहेलां छे तेओ होय छे. **वातकफजन्य ज्वरमां** वात अने कफ ए बन्ने दोषोनां पोतपोतानां लक्षणो के जेओ आ अध्यायना १४ मा अने १६ मा विषयमां कहेलां छे तेओ होय छे. **पित्तकफजन्य ज्वरमां** पित्त अने कफ ए बन्ने दोषोनां लक्षणो के जेओ आ अध्यायना १५ मा अने १६ मा विषयमां कहेलां छे तेओ होय छे. (आ प्रकृतिसमसमवेत द्वंद्वज ज्वरोनां लक्षणो कह्यां. हवे विकृतिविषमसमवेत द्वंद्वज ज्वरोनां लक्षणो केहेवामां आवे छे. प्रकृतिसमसमवेत अने विकृतिविषमसमवेत ए बे शब्दोनुं व्याख्यान आ अध्यायना १७ मा विषयमां जुवो.)

वातपित्तजन्य ज्वरमां तरश, मूर्छा, भ्रम, दाह, निद्रानो नाश, माथामां पीडा, कंठनो तथा मुखनो शोष, वमन, रुवाडांओनुं ऊभुं थवुं, अरुचि, जाणे सांधाओ त्रूटता होय एवी सांधाओमां व्यथा अने बगासां आववां एटलां लक्षणो थाय छे. (आमां रुवाडांओनुं ऊभुं थवुं अने अरुचि ए बे लक्षणो पूर्वोक्त लक्षणोथी अधिक छे अने केटलांएक लक्षणो न्यून पण छे.)

वातकफजन्य ज्वरमां अंगो जाणे भीनां कपडांथी वींटाएलां होय एवां थई जाय छे, सांधाओ त्रूटवा लागेला जेवा थई जाय छे, निद्रा आवे छे, भारेपणुं थाय छे, माथुं पकडाई जाय छे, प्रतिश्याय नामनो नाकनो रोग (स्राव) थाय छे, खांसी आवे छे, आखा शरीरमां पसीनो प्रवर्त्ते छे अने संतापनो वेग मध्यमप्रकारनो होय छे. (आमां पसीनानी आखा शरीरमां प्रवृत्ति थवी ए लक्षण पूर्वोक्त लक्षणोथी अधिक छे अने केटलांएक लक्षणो न्यून पण छे.)

पित्तकफजन्य ज्वरमां मोहोडामां तिक्तपणुं थाय छे, मोहोडुं कफथी लेपाएला जेवुं थई जाय छे, तंद्रा थाय छे, मूर्छा आवे छे, खांसी आवे छे, अरुचि थाय छे, तरश लाग्या करे छे, वारंवार दाह थाय छे अने वारंवार शीतनी उत्पत्ति थाय छे. (आमां तंद्रारूप लक्षण अधिक छे के जे पित्तजन्य ज्वरनां लक्षणोमां पण नथी तथा कफजन्य ज्वरनां लक्षणोमां पण नथी अने केटलांएक लक्षणो न्यून पण छे.)

२२ **क्षामाणां ज्वरमुक्तानां मिथ्याहारविहारिणाम् ।**

दोषः स्वल्पोऽपि संवृद्धो देहिनामनिलेरितः ।
सततान्येद्युष्कत्र्याख्यचातुर्थान्सप्रलेपकान् ॥
कफस्थानविभागेन यथासङ्ख्यं करोति हि ।
अहोरात्रादहोरात्रात्स्थानात् स्थानं प्रपद्यते ॥
ततश्चामाशयं प्राप्य घोरं कुर्य्याज्ज्वरं नृणाम् ।
तत्र प्रलेपको ज्ञेयः शोषिणां प्राणनाशनः ॥
दुश्चिकित्स्यतमो मन्दः सुकष्टो धातुशोषकृत् ।
कफस्थानेषु वा दोषस्तिष्ठन् द्वित्रिचतुर्षु वा ॥
विपर्ययाख्यान् कुरुते विषमान् कृच्छ्रसाधनान् ।
परो हेतुः स्वभावो वै विषमे कैश्चिदीरितः ॥
आगन्तुश्चानुबन्धो हि प्रायशो विषमज्वरे ।

भेड तथा भालुकि वगेरे तंत्रकारोना मतप्रमाणे कफनां स्थानकोमां रहेला दोषोथी विषमज्वरोनी संप्राप्ति तथा भेदो वगेरे.

२२ जे लोको कृश छतां मिथ्या आहार तथा मिथ्या विहार करे तेओना अने जे लोको ज्वरथी मुक्त थया पछी मिथ्या आहार तथा मिथ्या विहार करे तेओना दोषो अल्प होय तो पण मिथ्या आहारथी तथा मिथ्या विहारथी वृद्धि पामी जूदा वायुथी प्रेराईने कफना स्थानकोना विभाग प्रमाणे अनुक्रमे सतत[१], अन्येद्युष्क[२], तृतीय[३], चातुर्थिक[४] अने प्रलेपक[५] नामना विषम ज्वरोने उत्पन्न करे छे. दोषो के जेओ एक एक अहोरात्रे एक स्थानमांथी बीजा स्थानमां आवे छे तेओ आमाशयमां आवीने विषम ज्वरोने उत्पन्न करे छे. (आ विषयमां एम समजवानुं छे के आमाशय, हृदय, कंठ, माथुं अने सांधाओ ए पांच, कफनां स्थानको छे. एओमां रहेला दोषो अनुक्रमे सतत आदि पांच ज्वरोने उत्पन्न करे छे. आमाशयनी अंदर रहेला दोषो बे वखत आवनारा सतत ज्वरने उत्पन्न करे छे. कारण के एक अहोरात्रमां बे वार ते दोषोनो प्रकोप थाय छे. हृदयमां रहेला दोषो आमाशयमां आवीने अहोरात्रमां एक वखत आवनारा अन्येद्युष्क ज्वरने उत्पन्न करे छे. जो के एक अहोरात्रमां दोषोना प्रकोपना समय बे छे तो पण एक समयमां दोषो हृदयमां रहे छे तेथी ज्वरने उत्पन्न नहीं करी शकतां बीजा समयमां आमाशयमां आवीने ज्वरने उत्पन्न करे छे. कारण के दोषोनी स्थिति आमाशयमां होय त्यारेज ज्वर थाय छे. कंठमां रहेला दोषो एक अहोरात्रे हृदयमां आवे छे अने बीजे अहोरात्रे आमाशयमां आवे छे एटले त्यां आवीने पोताना प्रकोपना समयोमां एक समयेज तृतीय ज्वरने उत्पन्न करे छे. जो के ए दोषो आमाशयमां एक अहोरात्रसूधी रेहे छे तोपण ते अहोरात्रना बे समयमां ज्वरने उत्पन्न नहीं करी शकतां एक समयमांज उत्पन्न करे छे एवो तेओनो स्वभाव थाय छे. ए प्रमाणेज माथामां रहेला दोषो एक अहोरात्रे कंठमां आवे छे, बीजे अहोरात्रे हृदयमां आवे छे अने त्रीजे अहोरात्रे आमाशयमां आवे छे एटले त्यां आवीने पोताना प्रकोपना समयोमां एक समयेज चातुर्थिक ज्वरने उत्पन्न करे छे. जो के ए दोषो आमाशयमां एक अहोरात्रसूधी रेहे छे तोपण ते अहोरात्रना बे समयोमां ज्वरने उत्पन्न नहीं करी शकतां एक समयमांज उत्पन्न करे छे एवो तेओनो स्वभावज थाय छे. दोषोने ते ते स्थानकमांथी आमाशयमां आवतां जेटलो विलंब लागे छे तेटलोज विलंब ते स्थानके पाछा जवामां पण लागवो जोइए तो ए हिसाबे त्रीजे अने चोथे दिवसे ज्वरनी प्राप्ति थवी केम संभवे? एवी अहीं शंका थाय तो तेनुं समाधान ए छे के दोषो आमाशयमां आवी प्रकोपना समयमां पोताना प्रबल वेगने देखाडीने पाछा तेज दिवसे तेवाज वेगथी पोताने ठेकाणे जता रेहे छे. सांधाओमां रहेला दोषो प्रलेपक नामना ज्वरने

१ जे ज्वर एक अहोरात्रमां बे वार आवे ते ज्वर **सतत** केहेवाय छे. अरुणदत्त केहे छे. के आ ज्वर. कोई समये दिवसमांज बे वार आवे छे, कोई समये रात्रिमांज बे वार आवे छे अने कोई समये दिवसमां तथा रात्रिमां पण बे वार आवे छे.

२ जे ज्वर एक अहोरात्रमां एक वखत आवे छे ते ज्वर **अन्येद्युष्क** केहेवाय छे.

३ एकांतरा आवनारो ज्वर **तृतीय** केहेवाय छे.

४ वचमां बे दिवस छोडी दईने आवतो तरीयो ताव **चातुर्थक** कहेवाय छे.

५ कफथी तथा भारेपणाथी जाणे मात्रोने लींपतो होय एवो, सर्वदा मंद वेगवाळो अने शीतवाळो जे ज्वर होय ते **प्रलेपक** केहेवाय छे.

उत्पन्न करे छे अने ए सांधाओ आमाशयने लगताज होय छे माटे प्रलेपक ज्वर सर्वदा रेहे छे.)

ए पांच विषम ज्वरोमां प्रलेपक नामनो ज्वर क्षयरोगवाळाओनां प्राणोने हरनारो छे, अत्यंत कष्टसाध्य छे, मंद वेगवाळोज होय छे, अत्यंत दुःखदायी छे अने धातुओनुं शोषण करनारो छे. (जो के सघळा विषम ज्वरो क्षयरोगवाळां माणसोने बहु दुःख देनारा छे तोपण तेओमां प्रलेपक तो क्षयरोगवाळाओना प्राणनोज नाश करनार छे. डल्हन केहे छे के प्रलेपक क्षयरोगवाळाओनेज थाय छे.)

कफनां बे, त्रण अथवा चार स्थानकोमां रहेता दोषो विपर्यय नामना कष्टसाध्य विषमज्वरोने उत्पन्न करे छे. (आमाशय अने हृदय ए बे स्थानकोमां रहेता दोषो **अन्येद्युष्कविपर्यय** नामना विषमज्वरने उत्पन्न करे छे के जे ज्वर एक अहोरात्रमां एक वखत छोडी दे छे अने बाकी सघळा अहोरात्रमां रहे छे. आ ज्वर अन्येद्युष्कथी उलटो होवाने लीधे अन्येद्युष्कविपर्यय केहेवाय छे. आमाशय, हृदय अने कंठ ए त्रण स्थानकोमां रहेता दोषो **तृतीयविपर्यय** नामना विषमज्वरने उत्पन्न करे छे के जे ज्वर बे बे दिवसोसूधी रहीने त्रीजे त्रीजे दिवसे छोडी दे छे. आ ज्वर तृतीय एटले एकांतराज्वरथी उलटो होवाने लीधे तृतीयविपर्यय केहेवाय छे. आमाशय, हृदय, कंठ अने माथुं ए चार स्थानकोमां रहेता दोषो चातुर्थिकविपर्यय नामना विषमज्वरने उत्पन्न करे छे के जे ज्वर त्रण त्रण दिवसोसूधी रहीने चोथे चोथे दिवसे छोडी दे छे. आ ज्वर चातुर्थिकथी उलटो होवाने लीधे चातुर्थिकविपर्यय केहेवाय छे. केटलाएक ग्रंथोमां तो उपर कहेला तृतीयविपर्ययनेज चातुर्थिकविपर्यय गण्यो छे. मूळना अभिप्राय प्रमाणे जोतां सतत ज्वर आमाशय नामना एक स्थानमां रहेनारा दोषोथी उत्पन्न थतो होवाने लीधे तेनो विपर्यय एटले सततविपर्यय नामनो ज्वर थतोज नथी एम मानी शकाय छे पण भावप्रकाश आदि बीजा ग्रंथोमां तो सततविपर्यय पण मानेलो छे के जे ज्वर एक अहोरात्रमां बे वखत छोडी दिये अने बाकी ते सघळा अहोरात्रमां रहे. बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के "विषमज्वरोनी संख्याने मुकरर समजवी नहीं. कारण के रात्रिज्वर आदि बीजा पण घणा घणा प्रकारना विषमज्वरो थाय छे. जे माणसने वायु तथा कफ सम होय अने पित्त क्षीण होय ते माणसने घणुं करीने रातेज ज्वर प्राप्त थाय छे. जे माणसने वायु तथा पित्त सम होय अने कफ क्षीण होय ते माणसने घणुं करीने दिवसेज ज्वर प्राप्त थाय छे. आहारथी थएलो रस दुष्ट थतां देहमां कफ तथा पित्त दुष्ट थईने रेहे छे ते कारणथी अरधुं शरीर शीत थाय छे अने अरधुं शरीर उष्ण थाय छे ते एवी रीते के जेम अर्द्धनारीश्वरना शरीरनुं एक फाडीयुं स्त्रीरूप छे अने बीजुं फाडीयुं पुरुषरूप छे तेम आ ज्वरवाळाना शरीरनुं एक फाडीयुं शीत थाय छे अने बीजुं फाडीयुं उष्ण थाय छे अथवा जेम नृसिंहजीना शरीरना उपरना तथा नीचेना बे भागोमां एक भाग मनुष्यरूप छे अने एक भाग सिंहरूप छे तेम आ ज्वरवाळाना शरीरना उपरना तथा नीचेना बे भागोमां एक भाग शीत थाय छे अने एक भाग उष्ण थाय छे. जो दुष्ट थएलुं पित्त कायामां रह्युं होय अने दुष्ट थएलो कफ हाथपगमां रह्यो होय तो काया उष्ण रेहे छे अने हाथपग शीतल रेहे छे. जो दुष्ट थएलो कफ कायामां रह्यो होय अने दुष्ट थएलुं पित्त हाथपगमां रह्युं होय तो काया शीतल थाय छे अने हाथपग उष्ण थाय छे. इत्यादि." आ सघळा विषमज्वरोज केहेवाय छे.)

निवृत्ति पामेलो विषमज्वर पाछो नियमित समये आवे छे तेमां दोषोनो स्वभावज कारणरूप छे एम केटलाएक माने छे पण अमो तो (भेड

वगेरे तंत्रकारो) तो मानीये छीए के विषमज्वरोमां घणुं करीने भूतादिकनो आवेश कारणरूप होय छे.

२३ वाताधिकत्वात्प्रवदन्ति तज्ज्ञा-
स्तृतीयकं चापि चतुर्थकं च ।
औपत्यके मद्यसमुद्भवे च
हेतुं ज्वरे पित्तकृतं वदन्ति
प्रलेपकं वातबलासकं च
कफाधिकत्वेन वदन्ति तज्ज्ञाः ।
मूर्छानुबन्धा विषमज्वरा ये
प्रायेण ते द्वन्द्वसमुत्थितास्तु ॥

तृतीय आदि ज्वरोना आरंभक दोषोमां अमुक दोषनुं प्रबलपणुं.

२३ तृतीयज्वर तथा चातुर्थिकज्वर एओमां घणुं करीने पित्त तथा कफ सम के न्यूनाधिक होय छे अने वायु प्रबल होय छे. पाहाडी जमीनमां रेहेनाराओने त्यानां जळना तथा ओषधीओना योगथी जे ज्वर आवे छे तेमां घणुं करीने वायु तथा कफ सम के न्यूनाधिक होय छे अने पित्त प्रबल होय छे. मद्यथी थएला ज्वरमां पण घणुं करीने वायु तथा कफ सम के न्यूनाधिक होय छे अने पित्त प्रबल होय छे. प्रलेपकमां अने वातबलासक नामना जीर्णज्वरमां घणुं करीने वायु तथा पित्त सम के न्यूनाधिक होय छे अने कफ प्रबल होय छे. जे विषमज्वरो निरंतर मूर्छाना संबंधवाळा होय छे तेओमां घणुं करीने बबे दोषोनुं प्राबल्य होय छे. (वातबलासक नामना जीर्णज्वरनुं लक्षण तंत्रांतरमां कह्युं छे के "जेने वातबलासक नामनो जीर्णज्वर थयो होय ते माणस नित्य मंदज्वरवाळो, रूक्ष, सोजावाळो, स्तब्ध अंगोवाळो अने घणा कफवाळो थाय छे. आ ज्वर कष्टसाध्य छे." जेज्जट केहे छे के आ वचनमां 'घणुं करीने' एम कह्युं छे ते उपरथी समजाय छे के विषमज्वरो त्रणे दोषोथी, बे दोषोथी अने एक दोषथी पण थाय छे. वाग्भटे तो 'सघळा विषमज्वरो त्रणे दोषोथीज थाय छे' एम जणाव्युं छे. ग्रंथांतरमां कह्युं छे के "कफ तथा पित्त ए बे दोषनी उल्बणतावाळो तृतीयज्वर वेदनाथी बरडाना प्रांतभागने पकडीने उत्पन्न थाय छे, वायु तथा कफ ए बे दोषनी उल्बणतावाळो तृतीयज्वर वेदनाथी पीठमां व्यापीने उत्पन्न थाय छे अने वायु तथा पित्त ए बे दोषनी उल्बणतावाळो तृतीयज्वर वेदनाथी माथाने पकडीने उत्पन्न थाय छे. जो चातुर्थिकज्वर कफनी उल्बणतावाळो होय तो प्रथम वेदनाथी पींडीओमां व्यापीने पछी सघळा शरीरमां व्याप्त थाय छे, जो वायुनी उल्बणतावाळो होय तो प्रथम वेदनाथी माथामां व्यापीने पछी सघळा शरीरमां व्याप्त थाय छे अने जो पित्तनी उल्बणतावाळो होय तो प्रथम वेदनाथी कायाना मध्यभागने पकडीने पछी सघळा शरीरमां व्याप्त थाय छे.")

२४ त्वक्स्थौ श्लेष्मानिलौ शीतमादौ जनयतो ज्वरं ॥
तयोः प्रशान्तयोः पित्तमन्तर्दाहं करोति च ।
करोत्यादौ तथा पित्तं त्वक्स्थं दाहमतीव च ॥
तस्मिन्प्रशान्ते त्वितरौ कुरुतः शीतमन्ततः ।
द्वावेतौ दाहशीतादी ज्वरौ संसर्गजौ स्मृतौ ॥
दाहपूर्वस्तयोः कष्टः कृच्छ्रसाध्यतमः स्मृतः ।

विषमज्वरोमां वखतपर प्रथम शीत अने छेल्ले दाह थाय छे अने वखतपर प्रथम दाह अने छेल्ले शीत थाय छे तेनुं कारण अने तेवा ज्वरोनुं साध्यत्वादिक.

२४ विषमज्वरमां कफ तथा वायु त्वचामां रह्या होय अने पित्त कोठामां रह्युं होय तो कफ तथा वायु प्रथम शीतने उत्पन्न करे छे अने ते कफ तथा वायु पोतानो वखत जतो रेहेवाथी अथवा विरोधीनी प्राप्तिथी अथवा पित्तवते कफनुं शोषण थवाने लीधे शांत थतां अंते पित्त

कोठानी अंदर दाहने उत्पन्न करे छे तथा तेनी साथे मोह तथा तरश वगेरेने पण उत्पन्न करे छे.

विषमज्वरमां पित्त त्वचामां रह्युं होय अने वायु तथा कफ कोठामां रह्या होय तो पित्त प्रथम दाहने उत्पन्न करे छे अने पछी पीगळवा लागेला कफथी अथवा पोतानो वख्त जतो रेहेवाथी के बीजा कोई विरोधीनी प्राप्तिथी पित्त शांत थतां अंते वायु तथा कफ कोठानी अंदर शीतने उत्पन्न करे छे तथा तेनी साथे तंद्राने तथा वमन वगेरेने पण उत्पन्न करे छे.

आरंभमां शीतवाळो अने अंतमां दाहवाळो विषमज्वर तथा आरंभमां दाहवाळो अने अंतमां शीतवाळो विषमज्वर ए बन्ने त्रिदोषजन्य छे. एओमां आरंभमां दाहवाळो विषमज्वर कष्टसाध्य छे अने अत्यंत कष्टसाध्य पण केहेवामां आवे छे. (आरंभमां शीतवाळो विषमज्वर तो साध्यज छे.)

२५ प्रसक्तश्चाभिघातोत्थश्चेतनाप्रभवस्तु यः ॥

अभिघात ज्वरनुं तथा कामादिजन्य ज्वरनुं अत्यंत कष्टसाध्यपणुं.

२५ शस्त्र के काष्ठ वगेरेना अभिघातथी थएलो ज्वर तथा काम के शोक वगेरे चित्तना विकारोथी उत्पन्न थएलो ज्वर पण जो लांबा काळथी लागू रहेलो होय तो अत्यंत कष्टसाध्य छे.

२६ रात्र्यह्नोः षट्सु कालेषु कीर्तितेषु यथा पुरा।
प्रसह्य विषमोऽभ्येति मानवं बहुधा ज्वरः ॥

विषमज्वरना आववाना समयो अने प्रकारो.

२६ अहोरात्रना पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष, अर्द्धरात्र तथा परोढीयारूप छ काळो के जेओ दोषोना प्रकोपना समयोरूप कह्या छे अने ते ते दोषोना प्रकोपनां बीजां पण जे जे कारणो कह्यां छे तेओने अनुसरीने विषमज्वर बलात्कारथी मनुष्यने प्राप्त थाय छे एटले कफना प्राधान्यवाळो विषमज्वर पूर्वाह्नमां तथा प्रदोषमां पोतपोतानां कारणोने अनुसरीने आवे छे, पित्तना प्राधान्यवाळो विषमज्वर मध्याह्नमां तथा अधराते पोतपोतानां कारणोने अनुसरीने आवे छे अने वायुना प्राधान्यवाळो विषमज्वर अपराह्नमां तथा परोढीए पोतपोतानां कारणोने अनुसरीने आवे छे. ए विषमज्वरनुं आववुं पण अनेक प्रकारोथी थाय छे एटले कोई विषमज्वर अहोरात्रना बे समयोमां आवे छे, कोई विषमज्वर अहोरात्रना एक समयमां आवे छे, कोई विषमज्वर एक दिवसनुं अंतर नाखीने आवे छे, कोई विषमज्वर बे दिवसनुं अंतर नाखीने आवे छे, कोई विषमज्वर शीतपूर्वक आवे छे, कोई विषमज्वर उष्णपूर्वक आवे छे, कोई विषमज्वर उष्ण तथा शीत आवे छे, कोई विषमज्वर प्रथम पीठ वगेरेमां आवे छे, कोई विषमज्वर खभा वगेरे अवयवोमां प्रथम आवे छे, कोई विषमज्वर लांबा काळसूधी रेहे छे अने कोई विषमज्वर अल्प काळसूधी पण रेहे छे. इत्यादि. (आथी विषमज्वरोनुं असंख्यपणुं जणाव्युं छे.) तंत्रांतरमां कह्युं छे के "जे ज्वर अनियमित मुदतवाळो होय, शीतना के ऊष्णना नियम वगरनो होय अने वेगथी पण विषम होय ते विषमज्वर केहेवाय छे. जेम वातज्वर सात दिवससूधी, पित्तज्वर दश दिवससूधी, कफज्वर बार दिवससूधी अने दोषोनी प्रबलता होय तो वातज्वर चौद दिवससूधी, पित्तज्वर वीश दिवससूधी अने कफज्वर चोवीश दिवससूधी रेहे छे तेम विषमज्वर नियमित अवधिथी रेहेतो नथी. ए ज्वरमां शीत तथा उष्ण पण अनियमित रेहे छे अने ते ज्वरनो वेग पण विषम होय छे एटले कोई समये अत्यंत होय छे अने कोई समये अल्प पण होय छे."

२७ स चापि विषमो देहं न कदाचिद्विमुञ्चति।
ग्लानिगौरवकार्श्येभ्यः स यस्मान्न प्रमुच्यते ॥
वेगे तु समतिक्रान्ते गतोऽयमिति लक्ष्यते ।
धात्वन्तरस्थो लीनत्वान्न सौक्ष्म्यादुपलभ्यते ॥
अल्पदोषेन्धनः क्षीणः क्षीणेन्धन इवानलः ।

वेग शांत थया पछी पण विषमज्वरनी शरीरमां स्थिति रेहे छे के जेथी पाछो हाजर थाय छे.

२७ ए विषमज्वर पोतानो वेग शांत थया पछी पण शरीरने कदी छोडतो नथी के जेने लीधे रोगी ग्लानिथी, भारेपणाथी, कृशताथी तथा अरुचि वगेरेथी मुक्त थतो नथी. ज्यारे वेग शांत थई जाय छे त्यारे विषमज्वर जतो रह्यो जणाय छे पण तेटलाथी तेने जतो रह्यो समजवो नहीं. ए विषमज्वर रस आदि धातुओनी अंदर छुपी रेहे छे अने ते समये क्षीण थएलो तथा अल्प दोषरूपी आश्रयवाळो होय छे तेथी जेमां काष्ठो क्षीण थयां होय एवा अग्निनी पेठे सूक्ष्मपणाने लीधे प्रत्यक्ष मालुम पडतो नथी. (ज्यारे रोगी ग्लानि वगेरेथी तमाम मुक्त थाय त्यारेज विषमज्वरने खरी रीते नष्ट थयो समजवो.)

२८ दोषोऽल्पोऽहितसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः ॥
धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम् ।
सन्ततं रसरक्तस्थः सोऽन्येद्युः पिशिताश्रितः॥
मेदोगतस्तृतीयेऽह्नि त्वस्थिमज्जगतः पुनः ।
कुर्य्याच्चातुर्थिकं घोरमन्तकं रोगसङ्करम् ॥
केचिद्भूताभिषङ्गोत्थं ब्रुवते विषमज्वरम् ।

औपधेनव आदि तंत्रकारोना मतप्रमाणे धातुओमां रहेला दोषोथी विषमज्वरोनी उत्पत्ति अने सतत आदि चार भेदो.

२८ जे माणस ज्वरथी मुक्त थया पछी अहित आहार तथा अहित विहार करे तेना शरीरमां अवशेष रहेला स्वल्प दोषो पण अहित आहार विहारना सेवनथी संपूर्ण थई रस तथा रुधिर आदि धातुओमांना धातुओने प्राप्त थई दूषित करीने विषमज्वरने उत्पन्न करे छे. (स्वल्प दोष विषमज्वरनो पासेनो हेतु छे अने अहित आहार विहार विषमज्वरना दूरना हेतुरूप छे. मूल श्लोकमां 'वा' शब्द छे तेथी समजाय छे के विषमज्वर आरंभथीज एटले आ अध्यायना २२ मा विषयथी पेहेलांना विषयोमां कहेला वातज्वर आदि संततज्वरोमांनो कोई पण ज्वर आव्या विना पण कोई माणसने शरुआतथीज आवे छे.)

रसने तथा रुधिरने प्राप्त थई दूषित करीने तेओमां रहेला दोषो अहोरात्रमां बे वखत आवनारा **सतत** नामना विषमज्वरने उत्पन्न करे छे. (दोषो केवळ रसमां रह्या होय तो सात दिवस वगेरे अवधिसूधी अखंड रेहेनारा वातज्वर आदि संततज्वरने उत्पन्न करे छे अने रस तथा रुधिर ए बन्नेमां रह्या होय तो जेनी अखंड स्थिति होती नथी एवा सततज्वरने उत्पन्न करे छे तेनुं कारण ए छे के रस समीपमां छे तेथी तेमां रहेला दोषो अखंड रीते शरीरमां व्याप्त थई शके छे अने रसमां तथा रस पछीना रुधिरमां रहेला दोषोने कांईक दूरतावाळा रुधिरमां पण रेहेवुं पडतुं होवाथी तेओ अखंड रीते शरीरमां व्यापी शकता नथी.)

मांसने प्राप्त थई दूषित करीने तेमां रहेला दोषो रसथी वधारे दूरमां रहेला होवाने लीधे अहोरात्रमां एक वखत आवनारा **अन्येद्युष्क** नामना विषमज्वरने उत्पन्न करे छे.

मेदने प्राप्त थई दूषित करीने तेमां रहेला दोषो रसथी बहु दूरमां रहेला होवाने लीधे एक दिवसना अंतरवाळा **तृतीय** नामना ज्वरने (एकांतरा तावने) उत्पन्न करे छे.

अस्थिओने के मज्जाने प्राप्त थई दूषित करीने तेमां रहेला दोषो रसथी अत्यंत दूरमां रहेला होवाने लीधे बे दिवसना अंतरवाळा **चातुर्थिक** नामना ज्वरने (तरीया तावने) उत्पन्न करे छे के जे ज्वर साक्षात् काळ जेवो छे अने अनेक रोगोना समुदाय जेवो छे.

भेड तथा भालुकि वगेरे केटलाएक आचार्यो विषमज्वरने भूतना आवेशना संबंधवाळो केहे छे पण अमो तो (औपधेनव आदितो) तेने केवळ दोषोथीज थतो मानीए छीए.

२९ सप्ताहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा॥
सन्तत्या योऽविसर्गी स्यात्सन्ततः स निगद्यते।

सतत आदि विषमज्वरो कोनी अपेक्षाथी विषम छे? ए जणाववा माटे संततनुं लक्षण.

२९ जे ज्वर सात दिवससूधी, दश दिवससूधी, बार दिवससूधी, के तेओथी बमणी बमणी अवधिसूधी अविच्छिन्न रीते शरीरने छोडतो नथी ते ज्वर **संतत** केहेवाय छे अर्थात् वातज्वर, पित्तज्वर अने कफज्वर संतत केहेवाय छे. (वातपित्तजन्य ज्वर, वातकफजन्य ज्वर अने पित्तकफजन्य ज्वर ए द्वंद्वजन्य ज्वरोने तथा सान्निपातिक ज्वरोने पण संततज्वरोमांज गणी लेवा. कारण के जेम वातज्वर सात दिवसे, पित्तज्वर दश दिवसे अने कफज्वर बार दिवसे पाके छे तेम वातपित्तजन्य ज्वर पांचमे दिवसे, वातकफज्वर नवमे दिवसे अने पित्तकफज्वर दशमे दिवसे पाके छे. सान्निपातिक ज्वर पण आ अध्यायना २० मा विषयमां कह्याप्रमाणे सातमे, दशमे के बारमे दिवसे पाके छे. सतत आदि ज्वरो आ संततज्वरोथी विषमस्थितिवाळा छे तेथी विषमज्वरो केहेवाय छे. वाग्भट **शुद्ध्यशुद्धौ ज्वरः कालं दीर्घमप्यनुवर्त्तते** ए वाक्यथी जणावे छे के 'वातज्वर आदि संततज्वरो धातुओनी शुद्धिना तथा अशुद्धिना अनेक फेरफारोने लीधे उपर कहेली मुदतोनुं उल्लंघन करीने वधारे मुदतोसूधी पण रेहे छे.' जो बराबर मुदतसरज ज्वरो पाकता होय तो पछी सामनां अने निरामनां लक्षणो केहेवानी पण जरूर रेहेती नथी माटे वाग्भटनुं केहेवुं बराबर छे. वैद्योए ज्वरोनो पाक जाणवामां मुदतो उपर अने सामनां तथा निरामनां लक्षणो उपर पण ध्यान आपीने मार्ग लेवो जोइए. जो के संततज्वर विषमज्वरोथी भिन्नज छे अने वाग्भटे स्पष्ट वचन बोलीने संततने विषमज्वरोथी जूदो कह्यो छे तो पण भावप्रकाशना कर्त्ताए ताणखेच करीने संततज्वरने विषमज्वरोमां बेसाड्यो छे ए आश्चर्य छे.)

३० अहोरात्रे सततको द्वौ कालावनुवर्त्तते॥
अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालं प्रवर्त्तते।
तृतीयकस्तृतीयेऽह्नि चतुर्थेऽह्नि चतुर्थकः॥

स्पष्टीकरणने माटे सतत आदि चार विषमज्वरोनां जूदां जूदां स्वरूपो.

३० **सततज्वर** एक अहोरात्रमां बे वखत आवे छे. **अन्येद्युष्कज्वर** एक अहोरात्रमां एकवार आवे छे. **तृतीयज्वर** (एकांतरो ताव) त्रीजे दिवसे एटले वचमां एक दिवस छोडी दईने आवे छे अने **चातुर्थिकज्वर** (तरीयो ताव) चोथे दिवसे एटले वचमां बे दिवस छोडी दईने आवे छे. (वाग्भट केहे छे के जेम वड वगेरेनुं बीज जल वगेरे सामग्री मळे त्यारे बळ पामीने विशिष्ट काळमां ऊगे छे अने ए सामग्री न होय तो पृथ्वीमांज रहे छे तेम विषमज्वरने करनारा दोषो पण पोताना पक्षनां रसादिक दूष्यो वगेरेनुं बळ पामीने विशिष्ट काळमां पोतानुं काम करे छे अने पोताथी विरुद्ध पक्षनां रसादिक दूष्यो वगेरेनुं बळ वधे त्यारे प्रतिघात पामी, पोताना कामने बंध पाडी, शरीरमांज छुपाई रहे छे.)

३१ वातेनोद्धूयमानस्तु यथा पूर्य्येत सागरः।
वातेनोदीरितास्तद्वद्दोषाः कुर्वन्ति वै ज्वरान्॥
यथा वेगागमे वेलां छादयित्वा महोदधेः।
वेगहानौ तदेवाम्भस्तत्रैवान्तर्निलीयते॥
दोषवेगोदये तद्वदुदीर्य्येत ज्वरोऽस्य वा।
वेगहानौ प्रशाम्येत यथाम्भः सागरे तथा॥

विषमज्वर करनारा दोषोनी विशिष्ट कालमां वृद्धि थवामां अने ज्वरनी विशिष्ट कालमां वृद्धि तथा हानि थवामां स्पष्ट दृष्टांत.

३१ जेम पवने (अथवा चंद्रे) ऊछाळातो समुद्र भरपूर थाय छे अने भरपूर थईने झपाटा मारे छे तेम शरीरमां अन्य स्थानोमां रहेला वायुए ऊछाळाता वात, पित्त अने कफ ए दोषो भरपूर थाय छे अने भरपूर थईने झपाटा मारे छे. जेम वेग प्राप्त थतां समुद्रनुं जल कीनाराने ढांकी दईने ऊछळे छे पण वेग शांत थाय त्यारे समुद्रनी अंदरज निलीन थईने रेहे छे तेम वेग प्राप्त थाय त्यारे ज्वर उद्भूत थाय छे पण वेग शांत थाय त्यारे शरीरनी अंदरज निलीन थईने रेहे छे.

३२ विविधेनाभिघातेन ज्वरो यः संप्रवर्त्तते ।
यथा दोषप्रकोपस्तु तथा मन्येत तं ज्वरम् ॥

आगंतुज ज्वरोमां दोषोनी परीक्षा.

३२ अनेक प्रकारनां अभिघात आदि कारणोथी जे ज्वर प्रवर्त्ते छे तेमां जे दोषना प्रकोपनां लक्षणो प्रकट थएलां जोवामां आवे ते दोषनो संबंध थएलो जाणवो. (चरक केहे छे के आगंतुज ज्वरो प्रथम कोई जातनी व्यथा थयाथी उत्पन्न थाय छे अने पाछळथी नोखनोखा दोषोनी साथे संबंध पामे छे.' आगंतुज ज्वरमां दोषोनो संबंध पाछळथी थाय छे एटला माटे तेने दोषजन्य ज्वरोथी जूदो गण्यो छे.)

३३ श्यावास्यता विषकृते दाहातीसारहृद्ग्रहाः।
अभक्तरुक् पिपासा च तोदो मूर्छा बलक्षयः ॥

कारणोना भेदने लीधे आगंतुज ज्वरोनां नोखनोखां लक्षणो थाय छे तेओमां विषजन्य ज्वरनां लक्षणो.

३३ स्थावर अथवा जंगम विषना भक्षणथी थएला ज्वरमां मोहोडुं काळुं अथवा कांइक सफेद अंशवाळी काळाशवाळुं थाय छे, बळतरा थाय छे, अतीसार थाय छे, अन्न उपर अरुचि थाय छे, तरश लागे छे, मूर्छा आवे छे, जाणे सोइओ भोंकाती होय एवी व्यथा थाय छे, छाती पकडाई जाय छे अने बळनो क्षय थई जाय छे. (अतीसार तो स्थावर विषनुं भक्षण करवाथीज थाय छे. कारण के ते विष नीचेना भागमां गति करनार छे.)

३४ ओषधीगन्धजे मूर्छा शिरोरुक् क्षवथुर्वमिः।

झेरी ओषधीना गंधथी थएला ज्वरनां लक्षणो.

३४ झेरी ओषधीना गंधथी थएला ज्वरमां मूर्छा थाय छे, माथामां व्यथा थाय छे, हेडकी थाय छे अने वमन थाय छे.

३५ कामजे चित्तविभ्रंशस्तन्द्रालस्यमभक्तरुक्॥
हृदये वेदना चास्य गात्रं च परिशुष्यति ।

कामथी थएला ज्वरनां लक्षणो.

३५ कामथी प्राप्त थएला ज्वरमां चित्तनुं मूढपणुं थाय छे, तंद्रा थाय छे, आलस्य थाय छे, भोजनमां अरुचि थाय छे, हृदयमां वेदना थाय छे अने गात्र तुरत सूकावा लागे छे. (अत्यंत इच्छेला स्त्री वगेरे पदार्थो प्राप्त न थवाथी जे ज्वर आवे छे ते कामथी प्राप्त थएलो ज्वर केहेवाय छे. मूळमां 'च' शब्द छे ते उपरथी वाग्भटे कहेलां कामज्वरनां लक्षणोनो पण संग्रह थाय छे. वाग्भट केहे छे के 'कामथी भ्रम, अरुचि, दाह, लाजनो क्षय, निद्रानो क्षय, बुद्धिनो क्षय अने धीरजनो क्षय थाय छे.' स्त्रीओने कामज्वर थयो होय तो मूर्छा, अंगोनुं भांगवुं, तरश, नेत्रोमां चपलता, स्तनोमां पसीनो, मोहोडामां पसीनो अने हृदयमां दाह थाय छे.)

३६ भयात्प्रलापः शोकाच्च भवेत्कोपाच्च वेपथुः॥

भयथी, शोकथी तथा कोपथी. थएला ज्वरोनां जूदां जूदां लक्षणो.

३६ भयथी अथवा शोकथी प्राप्त थएला

ज्वरमां प्रलाप थाय छे अने कोपथी प्राप्त थएला ज्वरमां कंप थाय छे तथा माथामां व्यथा थाय छे.

३७ अभिचाराभिशापाभ्यां मोहस्तृष्णाभिजायते ।

अभिचारथी थएला तथा शापथी थएला ज्वरनां लक्षणोः

३७ अभिचारथी अथवा शापथी थएला ज्वरमां मोह थाय छे तथा तरश लाग्या करे छे. (आभिचारिक ज्वरमां फोडला, भ्रम, दाह तथा मूर्छा पण थाय छे अने दररोज ज्वर वधतो आवे छे.)

३८ भूताभिषङ्गादुद्वेगहास्यकम्पनरोदनम् ॥

भूतना आवेशथी थएला ज्वरनां लक्षणो.

३८ भूतना आवेशथी थएला ज्वरमां उद्वेग थाय छे, हास्य थाय छे, कंप थाय छे तथा रोदन (रोवुं) थाय छे.

३९ श्रमक्षयाभिघातेभ्यो देहिनां कुपितोऽनिलः
पूरयित्वाखिलं देहं ज्वरमापादयेद्भृशम् ॥
रोगाणां तु समुत्थानाद्विदाहागन्तुतस्तथा ।
ज्वरोऽपरः सम्भवति तैस्तैरन्यैश्च हेतुभिः ॥
दोषाणां स तु लिङ्गानि कदाचिन्नातिवर्त्तते ।

कोई पण आगंतुज ज्वर दोषोनां चिह्नो वगरनो होतो नथी.

३९ श्रमथी, शस्त्रादिकथी थएला धातुओना क्षयथी तथा अभिघातथी वायु प्रकुपित थाय छे अने ते वायु पोताथी सघळा शरीरने भरपूर करीने ज्वरनी प्रबल प्रवृत्ति करे छे अर्थात् श्रमजन्य, क्षयजन्य तथा अभिघातजन्य ज्वर वायुना प्रकोपनां चिह्नो वगरना होता नथी. (तेमज भूतावेशजन्य ज्वर, ओषधिगंधजन्य ज्वर अने विषजन्य ज्वर त्रणे दोषोना प्रकोपनां चिह्नो वगरना होता नथी. भयजन्य, शोकजन्य अने कामजन्य ज्वर वायुना प्रकोपनां चिह्नो वगरना होता नथी. कोपजन्य ज्वर पित्तना तथा वायुना प्रकोपनां चिह्नो वगरनो होतो नथी.) आप्रमाणे विद्रधि वगेरे रोगोना उत्पन्न थवाथी, ए रोगोना पाकवाथी, ए रोगो अभिघातवते फाटी जवाथी तथा बीजां पण ते ते कारणोथी जे कोई ज्वर उत्पन्न थाय छे ते ज्वर दोषोनां चिह्नोनुं कदी पण उल्लंघन करतो नथी.

४० गम्भीरस्तु ज्वरो ज्ञेयो ह्यन्तर्दाहेन तृष्णया ॥
आनद्धत्वेन चात्यर्थं श्वासकासोद्गमेन च ।

ज्वरना गंभीर (ऊंडा) वेगनुं लक्षण.

४० अंदर थतो दाह, तरश, दुष्ट दस्तनी अत्यंत अटकायत अने खांसीनी तथा श्वासनी उत्पत्ति ए लक्षणो उपरथी जाणवुं के ज्वर गंभीर (ऊंडा) वेगवाळो छे.

४१ हतप्रभेन्द्रियं क्षामं दुरात्मानमुपद्रुतम् ।
गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तं ज्वरितं परिवर्जयेत् ।

जे लक्षणो उपरथी ज्वरवाळानुं मरण अवश्य थवानुं समजाय छे ते लक्षणो.

४१ जेनी कांति हणाई गई होय, जेनी इंद्रियोनी पोतपोताना विषयोनुं ग्रहण करवानी शक्ति हणाई गई होय, जे क्षीण थई गयो होय, जे गंभीर वेगथी तथा तीक्ष्ण वेगथी पण पीडातो होय अने जे उपद्रवोथी संयुक्त थयो होय तथा दुष्ट स्वभाववाळो थई गयो होय ते ज्वरितनी चिकित्सा करवी नहीं. (बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे के ' जे ज्वर घणां बलवान् कारणोथी थयो होय, घणां लक्षणोवाळो होय अने जेणे उत्पन्न थतांज चिकित्साओने नहीं गणकारीने इंद्रियोनी शक्तिनो नाश कर्यो होय ते ज्वरने प्राण लई जनार समजवो. जे माणस बेभान थई गयो होय, हर्षथी अत्यंत रहित थई गयो होय, ऊठवानी शक्ति नहीं रेहेवाने लीधे पड्योज रेहेतो होय अथवा सूईज रेहेतो होय, बाहार टाढथी पीडातो होय अने अंदर दाहवाळो होय ते माणस ज्वरथी मरी जाय छे. जे माणसनां रुवाडां ऊभां थई गयां होय, आंखो लाल थई गई होय, हृदयमां

सन्निपातसंबंधी शूळथी पीडा होय अने नाकथी नहीं पण मोहोडाथीज श्वास लेवातो होय ते माणसने ज्वर मारी नाखे छे. जे माणस हेडकीथी, श्वासथी तथा तरशथी युक्त होय, मूढ थई गयो होय, भमती आंखोवाळो थई गयो होय, निरंतर ऊंचा श्वास लीधा करतो होय अने क्षीण थयो होय ते माणसने ज्वर नष्ट करी नाखेछे. ज्वर जो वीर्यना स्थानमां प्राप्त थयो होय तो लिंगमां स्तब्धपणुं थाय छे अने वीर्य वधारे नीकळया करे छे. आवी रीतनो ज्वर होय तो माणसनुं मरणज थाय छे. प्रथम संततज्वर आव्या विना आरंभथीज थएलो विषमज्वर लांबा काळसूधी चाल्या करतो होय तो ते ज्वर पण मारी नाखे छे.)

४२ हीनमध्याधिकैर्दोषैस्त्रिसप्तद्वादशाहिकः
ज्वरवेगो भवेत्तीव्रो यथापूर्वं सुखक्रियः ।

दोषोनी हीनता, मध्यता तथा अधिकता उपरथी ज्वरना तीव्र वेगनी मुदतो अने ते वेगना सुख साध्यपणाना विशेषो.

४२ दोषो हीन होय तो ज्वरनो वेग त्रण दिवससूधी तीव्र रेहे छे, दोषो मध्य होय तो ज्वरनो वेग सात दिवससूधी तीव्र रहेछे अने दोषो अधिक होय तो ज्वरनो वेग बार दिवससूधी तीव्र रेहे छे. बार दिवससूधीना तीव्र वेगवाला ज्वर करतां सात दिवससूधीना तीव्र वेगवालो ज्वर वधारे सुखसाध्य थाय छे अने सात दिवससूधीना तीव्र वेगवाला ज्वर करतां त्रण दिवससूधीना तीव्र वेगवालो ज्वर वधारे सुखसाध्य थाय छे. (आ अवधि नियमित छे एम समजवुं नहीं. केम के वखतपर ए अवधिओथी अधिक, वधारे अधिक अने अत्यंत अधिक अवधिसूधी पण तीव्र वेग रेहे छे. परंतु आथी एटलुं समजाय छे के गंभीर वेगवाळा ज्वर करतां तीव्र वेगवाळो ज्वर सुचिकित्स्य छे.)

४३ इति ज्वराः समाख्याताः कर्म्मेदानीं प्रवक्ष्यते ॥

ज्वरनां निदानो, भेदो तथा लक्षणो वगेरे केहेवानो उपसंहार अने चिकित्साओ केहेवानो उपक्रम.

४३ अहीं सूधी ज्वरोनां निदानो, भेदो तथा लक्षणो वगेरे कह्यां. हवे ज्वरोनी चिकित्साओ केहेवामां आवे छे.

४४ ज्वरस्य पूर्वरूपेषु वर्त्तमानेषु बुद्धिमान् ।
पाययेत घृतं स्वच्छं ततः स लभते सुखम् ॥
विधिर्मारुतजेष्वेष पैत्तिकेषु विरेचनम्.
मृदु प्रच्छर्दनं तद्वत्कफजेषु विधीयते ॥
सर्वं द्विदोषजेषूक्तं यथादोषं विकल्पयेत्
अस्नेहनीयोऽशोध्यश्च संयोज्यो लङ्घनादिना ॥
रूपप्राग्रूपयोर्विद्यान्नानात्वं वह्निधूमवत् ।

ज्वरोनां पूर्वरूपोना समयमां करवानी चिकित्सा.

४४ वातज्वरोनां पूर्वरूपो देखाय ते समयमां बुद्धिमान् वैद्ये केवळ योग्य संस्कारोवाळुं घी पावुं. (जो आमवाळा वातज्वरनां पूर्वरूपो देखातां होय तो घी पावुं नहीं पण उपवासरूप लंघनज करावबुं.) आप्रमाणे करवाथी. रोगीने सुखनी प्राप्ति थाय छे.

पित्तज्वरोनां पूर्वरूपो देखाय ते समयमां बुद्धिमान् वैद्ये रोगीने कोमळ विरेचन देवुं.

कफज्वरोनां पूर्वरूपो देखाय ते समयमां बुद्धिमान् वैद्ये रोगीने कोमळ वमन करावबुं.

सन्निपातज्वरोनां पूर्वरूपोमां तथा द्वंद्वज ज्वरोनां पूर्वरूपोमां बुद्धिमान् वैद्ये दोषोना अनुसार प्रमाणे घृतपान, विरेचन तथा वमन आदि शास्त्रोक्त क्रियाओनी योग्य गोठवण करवी.

जे रोगी घी पीवरावत्रामां अयोग्य जणाय अने वमन विरेचनरूप शोधनमां पण अयोग्य जणाय तेने माटे बुद्धिमान् वैद्ये लंघन वगेरेनी योजना करवी.

तरुण ज्वरमां संशोधननो निषेध छे ते उपरथी

पूर्वरूपोमां संशोधननो निषेध समजवो नहीं. केम के जेम धूमाडामां अने अग्निमां भेद छे तेम पूर्वरूपोमां अने रूपोमां भेद छे. (ज्वर सात दिवससूधीमां तरुण केहेवाय छे, बार दिवससूधीमां मध्य अवस्थावाळो केहेवाय छे अने बार दिवस वीत्या पछी जीर्ण केहेवाय छे.)

४५ प्रव्यक्तरूपेषु हितमेकान्तेनापतर्पणम् ॥
आमाशयस्थे दोषे तु सोत्क्लेशे वमनं परम्।
आनद्धः स्तिमितैर्दोषैर्यावन्तं कालमातुरः ॥
कुर्यादनशनं तावत्ततः संसर्गमाचरेत् ।

ज्वरोनां रूपो प्रकट थाय ते समयमां करवानी चिकित्सा.

४५ ज्वरो ज्यारे स्पष्टरूपोवाळा थाय त्यारे उपवासोरूप लंघन कराववुं एज हितकारी थाय छे. (वाग्भट केहे छे के ज्वरोनां पूर्वरूपोमां अथवा ज्वरोना आरंभोमां जे लंघन कराववुं ते जेथी रोगीना बळनो अत्यंत क्षय न थई जाय एवी रीतनुं करावचुं. केम के जेनेमाटे चिकित्सा करवामां आवे छे ते आरोग्यनो मुख्य आधार बळज छे.) जो आमाशयमां रहेलो दोष उत्क्लेशवाळो होय तो अर्थात् लाळना झरवा तथा मोळ आववा वगेरे चिह्नोथी युक्त होय तो वमन करावचुं ए उत्तम छे. आतुर ज्यांसूधी आमथी सज्जड थईने अचलितरूपे रहेला दोषोथी बंधाई रहेला जेवो रहे त्यांसूधी तेने उपवासो करावबा अने ज्यारे दोषोथी बंधाई रहेला जेवापणुं निवृत्त थाय त्यारे औषधनो तथा हलकां अन्न वगेरेनो संसर्ग करावचो.

४६ न लङ्घयेन्मारुतजे क्षयजे मानसे तथा ॥
अलङ्घ्याश्चापि ये पूर्वं द्विव्रणीये प्रकीर्तिताः ।

लंघन के जे ज्वरना आरंभमां अत्यंत उचित छे तेनो पण अमुक विषयमां निषेध.

४६ जो ज्वर निराम (आम वगरनो) वायुथी थएलो होय, क्षयथी थएलो होय के कामक्रोधादिक मनना विकारोथी थएलो होय तो लंघन करावचुं नहीं. चिकित्सास्थानना द्विव्रणीय नामना पेहेला अध्यायना २१ मा विषयमां जेओने लंघन करावबानो निषेध कह्यो छे तेओने पण लंघन करावचुं नहीं.

४७ अनवस्थितदोषाग्नेर्लङ्घनं दोषपाचनम् ॥
ज्वरघ्नं दीपनं काङ्क्षारुचिलाघवकारकम्

लघनना गुणो.

४७ ज्वरवाळो माणस के जेना दोषो स्थानांतरमां जवाथी अने अग्नि विक्षिप्त होवाथी अनवस्थित होय छे ते जो लांघण करे तो तेथी दोषो पाकी जाय छे, ज्वर टळी जाय छे, अग्नि प्रदीप्त थाय छे, अन्न खावा उपर रुचि थाय छे, आम पाकी जवाने लीधे मोहोडाना शोष वगेरेनो नाश थतां मोहोडानी प्रथमना जेवी शोभा थाय छे अने शरीरमां हलकाई थाय छे. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के 'दुष्ट थई आमाशयमां गएलो दोष अग्निने ढांकी दई अन्न वगेरेना अपक्व भागथी युक्त थई स्रोतोने ढांकी दईने ज्वरने उत्पन्न करे छे माटे ज्वरमां लांघण करवी उचित छे.' अग्नि आहारने पकावे छे पण आहारथी रहित होय तो दोषोने पकावे छे माटे वृद्धि पामीने अग्निने ढांकी देनारा दोषनो लांघणने लीधे क्षय थवाथी अग्नि प्रदीप्त थतां ज्वरनी प्राप्तिनी सामग्रीओ त्रूटी जवाथी ज्वर उतरी जाय, शरीर हलकुं थई जाय अने भूख पण लागे ए संभवितज छे.)

४८ सृष्टमारुतविण्मूत्रं क्षुत्पिपासाऽसहं लघुम्
प्रसन्नात्मेन्द्रियं क्षामं नरं विद्यात्सुलङ्घितम् ।

लंघननो सम्यग्योग थयानां लक्षणो.

४८ अधोवायु, मूत्र तथा विष्टा योग्य रीते नीकळवा लागे, भूखनुं तथा तरशनुं सहन थई शके नहीं, शरीर हलकुं थई जाय, अंतःकरण तथा इंद्रियो प्रसन्न थाय अने कृशता थाय तो

लंघननो सम्यग्योग थएलो जाणवो. (आ लक्षणोमांथी एकाद लक्षण थाय त्यारे नहीं पण ए सघळां लक्षणो सामटां थाय त्यारे लंघननो सम्यग्योग थएलो समजवो.)

४९ बलक्षयस्तृषा शोषस्तन्द्रानिद्राभ्रमक्लमाः ॥
उपद्रवाश्च श्वासाद्याः सम्भवन्त्यतिलङ्घनात् ।

लंघननो अतियोग थयानां लक्षणो.

४९ ओजनो क्षय थई जाय, तरश लाग्या करे, मोहोडामां शोष पडे, तंद्रा थाय, निद्रा आवे नहीं, भ्रम थाय, क्लम थाय अने श्वास आदि उपद्रवो थाय तो लंघननो अतियोग थयो समजवो. (लंघननो हीनयोग थयो होय तो उलटीना जेवा उछाळा आव्या करे छे, मोळ आवे छे, वारंवार कफ पडे छे, तंद्रा थाय छे अने कंठ तथा मोहोडुं अशुद्ध रेहे छे.)

५० दीपनं कफविच्छेदि पित्तवातानुलोमनम्
कफवातज्वरार्तेभ्यो हितमुष्णाम्बु तृट्छिदम् ।
तद्धि मार्दवकृद्दोषस्रोतसां शीतमन्यथा ॥
सेव्यमानेन तोयेन ज्वरः शीतेन वर्द्धते ।

कफज्वरवाळाओने तथा वातज्वरवाळाओने ऊनुं पाणी पीवा देवुं ए हितकारी छे अने टाढुं पाणी अहितकारी छे.

५० ऊनुं पाणी अग्निने प्रदीप्त करे छे, कफनुं छेदन करे छे, पित्तने तथा वायुने अनुलोम करे छे, तरशने टाळे छे अने दोषोने तथा स्रोतोने कोमळ करे छे माटे कफज्वरथी के वातज्वरथी पीडाएलाओने ऊनुं पाणी हितकारी छे. टाढुं पाणी ऊना पाणीना गुणोथी विपरीत गुणोवाळुं छे. जो टाढा पाणीनुं सेवन करवामां आवे तो तेथी ज्वरनी वृद्धि थाय छे. (पाणी उकळतां उकळतां धीरे धीरे फीण वगरनुं, निर्मळ तथा अर्द्ध अवशेष रहेलुं थाय त्यारे ते ऊनुं पाणी गणाय छे. उकाळ्या वगरना टाढा पाणीनो निषेध छे माटे उकाळीने पछी टाढुं करेलुं पाणी पावुं एम प्राप्त थाय छे. दिवसे उकाळेलुं पाणी राते भारे थई जाय छे अने राते उकाळेलुं पाणी दिवसे भारे थई जाय छे माटे तेवा पाणीनो त्याग करवो.)

५१ पित्तमद्यविषोत्थेषु शीतलं तिक्तकैः शृतम्
गाङ्गेयनागरोशीरपर्पटोदीच्यचन्दनैः ।

पित्तज्वर वगेरेमां मोथ वगेरेना संस्कारवाळुं ऊकाळेलुं पाणी पावुं.

५१ जे ज्वर पित्तथी, मद्यथी के विषथी उत्पन्न थयो होय तेमां तिक्तक पदार्थोथी पकावेलुं पाणी पावुं एटले मोथ, सूंठ, रातो वाळो, खडसलीओ, काळो वाळो अने रतांजलि ए छ पदार्थो नाखी ऊकाळेलुं अने पछी थंडुं पाडेलुं पाणी पावुं. (जो के सूंठ तीखी छे तो पण पाकमां मधुर होवाने लीधे पित्तने उत्पन्न करनार नथी एम गणीने आमां सूंठने दाखल करी छे एम जणाय छे. केटलाएक वैद्यो तो सूंठने बदले धाणा नाखवानुं केहे छे. कोई ग्रंथमां एम पण कह्युं छे के ' पाणीने ऊकाळी ते चोसठ तोलां भार पाणीमां मोथ आदि छ पदार्थोने काचाज कूटी सर्व मळीने एक तोलाभार नाखवा. ' आप्रमाणे पाणीने प्रथम ऊकाळी पछी तेमां मोथ आदि पदार्थो नाखवानो पक्ष लेवो होय तो रतांजलिने बदले सूखड नाखवी. मोथ वगेरे छ पदार्थोना संस्कारवाळुं पाणी **षडंगपानीय** केहेवाय छे.)

५२ दीपनी पाचनी लघ्वी ज्वरार्त्तानां ज्वरापहा
अन्नकालेऽहिता पेया यथास्वं पाचनैः कृता ।

ज्वरवाळाओने लंघनादिक कराव्या पछी अन्न देवाना समयमां पेया देवी.

५२ ज्वरथी पीडाएलाओने अन्न देवाना स-

मयमां दोषोना अनुसारप्रमाणे पंचमूळी वगेरे पाचनोथी जेने संस्कार आप्यो होय एवी पेया देवी ए हितकारी छे: ए पेया अग्निने दीप्त करे छे, दोषोनुं पाचन करे छे, हलकी छे अने एवा गुणोने लीधे ज्वरने टाळे छे.

५३ बहुदोषस्य मन्दाग्नेः सप्तरात्रात्परं ज्वरे ॥
लङ्घनाम्बुयवागूभिर्यदा दोषो न पच्यते ।
तदा तं मुखवैरस्यतृष्णारोचकनाशनैः ॥
कषायैः पाचनैर्हृद्यैर्ज्वरघ्नैः समुपाचरेत् ।

ज्वरवाळाओने पाचनक्राथो क्यारे देवा?

५३ ज्वरमां, दोष बहु होवाने लीधे अने अग्नि मंद होवाने लीधे लंघनथी, उष्ण जळथी तथा पेयाओथी दोष नहीं पाकतां सात दिवस उपरांत पण नहीं पाकेलो जोवामां आवे तो पछी मुखना विरसपणाने, तरशने तथा अरुचिने टाळनारा, प्रिय लागे एवा अने ज्वरने हणे एवा नीचे लखेला पाचनक्राथो पावा.

५४ पञ्चमूलीकषायं तु पाचनं पवनज्वरे ॥
सक्षौद्रं पैत्तिके मुस्तकटुकेन्द्रयवैः कृतम् ।
पिप्पल्यादिकषायं तु कफजे परिपाचनम् ॥
द्वन्द्वजेषु तु संसृष्टं दद्यात् ।

ज्वरो उपर पाचनक्राथो.

५४ **वातज्वर** उपर बृहत्पंचमूळीना क्राथरूप पाचन देवुं. **पित्तज्वर** उपर मोथ, कडु अने इंद्रजव एओना क्राथने मधथी संयुक्त करीने तेरूप पाचन देवुं. **कफज्वर** उपर पिप्पल्यादि गणना क्राथरूप पाचन देवुं. **बबे दोषोथी** थएला ज्वरो उपर दोषोना अनुसारप्रमाणे उपर कहेला क्राथोने मिश्रित करीने तेरूप पाचन देवुं. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के वातपित्तज्वर उपर लघुपंचमूळीना क्राथरूप पाचन देवुं. कफपित्तज्वर उपर पीपळना तथा धाणाना क्राथरूप पाचन देवुं. कफवातज्वर उपर बृहत्पंचमूळीना क्राथरूप पाचन देवुं अने सान्निपातिक ज्वर उपर भोरींगणी, जवासो तथा गोखरू एओना क्राथरूप पाचन देवुं.)

५५ अथविवर्जयेत् ।
पीताम्बुर्लङ्घितो भुक्तोऽजीर्णी क्षीणः पिपासितः

केवी स्थितिमां पाचनक्राथो नहीं देवा.

५५ जेणे तुरत पाणी पीधुं होय तेने, जेणे लांघण करी होय तेने, जेणे भोजन कर्युं होय तेने, अजीर्णवाळाने, क्षीण थएलाने अने तरश्याने पाचनक्राथो देवा नहीं.

५६ मृदौ ज्वरे लघौ देहे प्रचलेषु मलेषु च ।
पक्वं दोषं विजानीयाज्ज्वरे देयं तदौषधम् ॥
दोषप्रकृतिवैकृत्यादेकेषां पक्वलक्षणम् ।

ज्वरवाळाने औषध क्यारे देवुं? ते अने दोषनो पाक थयानुं लक्षण.

५६ ज्वरवाळाने औषध देवुं ते दोष पाकी गया पछीज देवुं. दोषने पाकी गएलो त्यारे जाणवो के ज्यारे ज्वर कोमळ पडी जाय, देह हलको थई जाय अने वायु, पित्त, कफ, मूत्र तथा विष्टा ए मळो पोतपोताना मार्गोमां ठीक रीते चालवा लागे. केटलाएक वैद्यो केहे छे

१ चरक केहे छे के रस, दोषो अने मळ पाकी जाय त्यारे भूख लागे छे माटे समयसर अथवा समय वगर पण ज्यारे भूख लागे त्यारे रोगीने अन्न देवानो समय छे एम समजवुं.

२ चौदगणा पाणीमां राता चोखा वगेरे धान्यो पकावीने अधिक द्रववाळी अने थोडी कणीओवाळी जे राब बनाववामां आवे ते पेया केहेवाय छे.

३ तरुण ज्वरवाळाने क्राथ देवानो निषेध छे पण क्राथनां द्रव्योथी पेया वगेरेने संस्कार आपीने ते पेया वगेरे देवामां कशो बाध नथी. तरुण ज्वरमां क्राथ न देवो ते एटला माटे के दोषो क्राथथी वृद्धि पामी पोतपोताना मार्गने छोडी दईने शरीरमां आम तेम दोडवा लागे छे के जेथी तेओ दुश्चिकित्स्य थई पडे छे.

के दुष्ट थएला वात, पित्त अने कफ एओनो ज्वरने तथा ज्वरना उपद्रवोने सबल करवानो जे स्वभाव छे ते स्वभाव बदलाई जाय त्यारे दोषोनो पाक थएलो जाणवो. (केटलाएक ग्रंथोमां उत्साहने अने क्षुधाथी देहना कृशपणाने दोषोना पाकनां लक्षणोमां उमेरेल छे. तंत्रांतरमां दोषोना निरामपणांनां एटले पाकी गएलापणानां जूदां जूदां पण लक्षणो आप्यां छे के निराम वायु स्वच्छ होय छे, रूक्ष होय छे, दुर्गंधथी रहित होय छे, घणीज थोडी वेदना करनारो होय छे, पोताथी विपरीत गुणोवाळा पदार्थोथी शांति पामे छे अने स्निग्ध पदार्थोथी विशेष शांति पामे छे. निराम पित्त बहु उष्ण होय छे, सारक होय छे, रताशवाळुं तथा तीखुं होय छे, दुर्गंधवाळुं होय छे अने अग्निना बळने वधारे छे. निराम कफ दुर्गंध वगरनो होय छे, फीणवाळो होय छे, टुकडाओवाळो होय छे, गांठा जेवो होय छे, सफेद होय छे अने मोहोडाना विरसपणाने नष्ट करे छे.)

५७ हृदयोद्वेष्टनं तन्द्रा लालास्रुतिररोचकः
दोषाप्रवृत्तिरालस्यं विबन्धो बहुमूत्रता ।
गुरूदरत्वमस्वेदो न पक्तिः शकृतोऽरतिः ॥
स्वापः स्तम्भो गुरुत्वं च गात्राणां वह्निमार्दवम् ॥
मुखस्याशुद्धिरग्लानिः प्रसङ्गी बलवाञ्ज्वरः ॥
लिङ्गैरेभिर्विजानीयाज्ज्वरं सामं विचक्षणः ।

साम (आमवाळा) ज्वरनुं लक्षण.

५७ छातीमां भीडो, तंद्रा, लाळनुं झरवुं, अरुचि, वायु वगेरेनुं निश्चलपणुं, आलस्य, दस्तनी कबजीयत, मूत्रनुं घणापणुं, पेटनुं भारेपणुं, पसीनानो अभाव, दस्तनुं काचापणुं, कोई पण पदार्थमां चित्तनुं नहीं लागवुं, निद्रा, गात्रोनुं स्तब्धपणुं तथा भारेपणुं, जठराग्निनुं मंदपणुं, मोहोडानी अशुद्धि, शांतिनुं अल्पपणुं अने बळवान् ज्वरनुं लागू रेहेवुं एटलां लक्षणो उपरथी विचक्षण वैद्ये ज्वरने आमवाळो जाणवो. (आहारनो साररूप रस अग्निनी न्यूनताने लीधे पाकेलो न होय ते आम केहेवाय छे के जे आमथी घणा रोगो उत्पन्न थाय छे. केटलाएक वैद्यो मळोना समूहने आम केहे छे अने केटलाएक वैद्यो दोषोनी जे प्रथम खराबी थाय छे तेने आम केहे छे. जे पदार्थ नहीं पाकेलो, परस्पर नहीं चोटेला अवयवोवाळो, दुर्गंधवाळो, बहु चीकणो अने सघळां गात्रोने पीडा आपनारो होय छे. अर्थात् आम होय छे तेथी संयुक्त थएला दोषोने, माणसोने अने तेथी उत्पन्न थएला रोगोने पण विद्वान् लोको साम केहे छे.)

५८ सप्तरात्रात्परं केचिन्मन्यन्ते देयमौषधम् ।
दशरात्रात्परं केचिद्दातव्यमिति निश्चितम् ।

ज्वरमां औषध देवाना समय विषे परमतो.

५८ केटलाएक आचार्यो माने छे के ज्वरमां सात रात्रिओ व्यतीत थया पछी औषध देवुं अने केटलाएक आचार्योए निश्चय कर्यो छे के ज्वरमां दश रात्रिओ व्यतीत थया पछी औषध देवुं.

५९ पैत्तिके वा ज्वरे देयमल्पकालसमुत्थिते ॥
अचिरज्वरितस्यापि देयं स्याद्दोषपाकतः ।

ज्वरमां औषध देवाना समय विषे स्वमत.

५९ पित्तज्वरनी उत्पत्तिने थोडीज मुदत थई होय तो पण दोषनो पाक थएलो जोवामां आवे तो तेमां दश दिवसो व्यतीत थयानी राह नहीं जोतां औषध आपवुं. वातज्वर तथा कफज्वर आदि ज्वरोमां पण दोषनो पाक थएलो जोवामां आवे तो थोडी मुदत थया छतां पण एटले सात दिवस तथा बार दिवस पूरा नहीं थएला छतां पण औषध देवुं अनुचित नथी.

६० भेषजं ह्यामदोषस्य भूयो ज्वलयति ज्वरम् ॥
शोधनं शमनीयं तु करोति विषमज्वरम् ।

दोष पाक्या पेहेलां औषध नहीं देवानुं कारण.

६० आम (काचा) दोषवाळा माणसने

शोधन औषध देवामां आवे तो ते औषध ज्वरने वधारे प्रज्वलित करे छे अने शमन औषध देवामां आवे तो ते औषध संततज्वरमांथी विषमज्वर करी दे छे. (तंत्रांतरमां प्रत्येक दोषना आमपणानां जूदां जूदां लक्षणो आप्यां छे के 'वायु साम होय तो दस्तनी कबजीयत करे छे, अग्निने मंद करे छे, तंद्राने उत्पन्न करे छे, आंतरडांओने शब्द करावे छे अने अनुक्रमे वेदनाथी, सोजाथी तथा सोईथी भोकायाना जेवी व्यथाथी अंगोने पीडे छे. पित्त साम होय तो खाटुं होय छे, दुर्गंधवाळुं होय छे, हरित वर्णवाळुं होय छे, कांइक श्यामतावाळुं पण होय छे, स्थिर होय छे, खाटा घचरका आणे छे अने कंठमां तथा हृदयमां दाह करे छे. कफ साम होय तो मेलो होय छे, तंतुओवाळो होय छे, घाटो होय छे, कंठमां जामी रहे छे, दुर्गंधवाळो होय छे अने भूखने तथा तरशने लागवा देतो नथी.')

६१ च्यवमानं ज्वरोत्क्लिष्टमुपेक्षेत मलं सदा ॥
अतिप्रवर्तमानं च साधयेदतिसारवत् ।

ज्वरवाळाने पातळो दस्त पड्या करतो होय तो केम करवुं ?

६१ ज्वरने लीधे स्थानथी प्रचलित थएलो मळ पड्या करतो होय तो दोषोनी आमपणारूप स्थितिमां तेनी उपेक्षाज करवी एटले औषध नहीं करतां पडवाज देवो. दोषोनी पक्वतारूप स्थितिमां मळ बहुज पड्या करतो होय तो अतिसारनी पेठे पाचनो आपीने तेने शांत करवो.

६२ यदा कोष्ठानुगाः पक्वा विबद्धाः स्रोतसां मलाः ॥
अचिरज्वरितस्यापि तदा दद्याद्विरेचनम् ।
पक्वो ह्यनिर्हृतो दोषो देहे तिष्ठन् महात्ययम् ॥
विषमं वा ज्वरं कुर्य्याद् बलव्यापदमेव च ।
तस्मान्निर्हरणं कार्य्यं दोषाणां वमनादिभिः ॥
प्राक्कर्म वमनं चास्य कार्य्यमास्थापनं तथा ।
विरेचनं तथा कुर्य्याच्छिरसश्च विरेचनम् ॥

मळो पाकी गया छतां नीकळता न होय तो केम करवुं ?

६२ मळो पाकी गया छतां स्रोतोमां बंधाई जईने कोठामांथी नीकळता न होय तो थोडी मुदत थया ज्वरित थएला माणसने पण शोधन देवुं. केम के पाकेलो छतां नहीं काढवामां आवेलो दोष देहमां रहीने मोटो अनर्थ करे छे अथवा विषमज्वरने उत्पन्न करे छे अथवा बळनो क्षय करे छे. आप्रमाणे छे एटला माटे वमन वगेरेथी दोषोनुं निर्हरण करवुं जोइए. दोषोनुं निर्हरण करवा माटे यथायोग्य रीते वमन कराववुं, निरूहबस्ति देवो, अनुवासनबस्ति देवो, विरेचन देवुं अने शिरोविरेचन पण देवुं.

६३ क्रमेण बलिने देयं वमनं श्लैष्मिके ज्वरे ।
पित्तप्राये विरेकस्तु कार्य्यः प्रशिथिलाशये ॥
सरुजेऽनिलजे कार्य्यं सोदावर्ते निरूहणम् ।
कटीपृष्ठग्रहार्तस्य दीप्ताग्नेरनुवासनम् ॥
शिरोगौरवशूलघ्नमिन्द्रियप्रतिबोधनम् ।
कफाभिपन्ने शिरसि कार्य्यं मूर्द्धविरेचनम् ॥

वमन आदि क्रियाओना जूदा जूदा विषयो.

६३ जो रोगी बलवान् होय, ज्वर कफथी थएलो होय अने कफ लाळना झरवा वगेरे उत्क्लेशवाळो थई रह्यो होय तो योग्य क्रमथी वमन कराववुं.

जो ज्वरमां घणो भाग पित्तनो होय अने पक्वाशय शिथिल होय तो विरेचन देवुं.

जो ज्वर वायुथी थएलो होय, वेदनावाळो होय अने वायु प्रतिलोम थईने ऊर्ध्व भ्रमण कर्या करतो होय तो निरूहबस्ति देवो.

जो ज्वरमां कमर तथा पीठ झलाई जवानी पीडा थई होय अने रोगीनो जठराग्नि प्रदीप्त होय तो अनुवासनबस्ति (स्नेहबस्ति) देवो.

जो ज्वरमां माथुं कफथी भारे थई गयुं होय

तो ते भारेपणाने तथा व्यथाने मटाडे एवुं अने इंद्रियोने जाग्रत करे एवुं शिरोविरेचन देवुं.

६४ दुर्बलस्य समाध्मातमुदरं सरुजं दिहेत् ।
दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिङ्गुसैन्धवैः ॥
अम्लपिष्टैः सुखोष्णैश्च पवने तूर्द्ध्वमागते ।
रुद्धमूत्रपुरीषाय गुदे वर्त्तिं निधापयेत् ॥
पिप्पलीपिप्पलीमूलयवानीचव्यसाधिताम् ।
पाययेत यवागूं वा मारुताद्यनुलोमनीम् ॥

ज्वरमां पेट चडी आव्युं होय के मळ-मूत्र रोकाई गयां होय तो केम करवुं?

६४ रोगी नबळो होय, पेट चडी आव्युं होय अने वेदना थती होय तो देवदार, वज, कठ, शतावरी, हींग तथा सैंधव एओने कांजीमां वाटी गरम करी सेहेवाय तेवां गरम राखीने तेओनो पेट उपर प्रलेप करवो.

जो पवन ऊंचे भ्रमण करतो होवाथी विष्टा तथा मूत्र रोकाई गयां होय तो उपर कहेलां देवदार वगेरे द्रव्योनी अथवा मींढोळ वगेरे द्रव्योनी वाट बनावीने गुदामां खोसाववी अथवा पीपळ, पीपळीमूळ, यवान अने चवक एओना संस्कारवाळी यवागू के जे वायु वगेरेनुं अनुलोमन करनारी थाय छे ते पावी.

६५ शुद्धस्योभयतो यस्य ज्वरः शान्तिं न गच्छति ।
सशेषदोषरूक्षस्य तस्य तं सर्पिषा जयेत् ॥
कृशं चैवाल्पदोषं च शमनीयैरुपाचरेत् ।
उपवासैर्बलस्थं तु ज्वरे सन्तर्पणोत्थिते ॥

वमन विरेचन कर्या छतां पण रूक्ष-पणाथी तथा दोष अवशेष रही गएलो होवाथी ज्वर शांत न थाय तो केम करवुं?

६५ वमनथी तथा विरेचनथी शुद्धि कर्यां छतां पण रूक्षपणाने लीधे तथा दोष अवशेष रही गएलो होवाने लीधे ज्वर शांत न थतो होय तो घीना प्रयोगथी दोषनुं शोधन करीने ते ज्वरने नष्ट करवो. रोगी कृश तथा अल्प दोषवाळो होय तो तेना अवशेष रहेला दोषने शमन औषधोथी शांत करवो. ज्वर अतिभोजनादिकने लीधे उत्पन्न थयो होय अने रोगी बळवान् होय तो तेना अवशेष रहेला दोषने उपवासो कराववाथी शांत करवो.

६६ क्लिन्नां यवागूं मन्दाग्निं तृषार्त्तं पाययेन्नरम् ।
तृट्छर्दिदाहघर्म्मार्त्तं मद्यपं लाजतर्प्पणम् ॥
सक्षौद्रमम्भसा पश्चाज्जीर्णे यूषरसौदनम् ।

ज्वरवाळो तरशथी, उलटीथी, दाहथी, तथा गरमीथी पीडातो होय तो करवाना उपचारो.

६६ रोगी मंद अग्निवाळो होय अने तरशथी पीडातो होय तो तेने पातळी यवागू[1] पावी. तृषाथी, उलटीथी, दाहथी के गरमीथी पीडाता तथा मद्य पीवानी टेववाळा रोगीने जमवाना समयमां सालनी धाणीनो साथवो पाणीमां घोळी मधथी संयुक्त करीने पावो अने ते पची गया पछी यूषनी साथे मांसना रसावाळो भात जमाडवो. (ग्रंथांतरमां कह्युं छे के सालनी धाणीनो साथवो, द्राक्ष, दाडिम अने खजूर एओने पाणीमां घोळी तेमां साकर, मध तथा घी नाखीने रोगीने पावां.)

६७ उपवासश्रमकृते क्षीणं वाताधिके ज्वरे ॥
दीप्ताग्निं भोजयेत्प्राज्ञो नरं मांसरसौदनम् ।
मुद्गयूषौदनं चापि हितं कफसमुत्थिते ॥
स एव सितया युक्तः शीतः पित्तज्वरे हितः ।
दाडिमामलमुद्गानां यूषश्चानिलपैत्तिके ।
ह्रस्वमूलकयूषेण भोजयेत्कफवातिके ॥

---

१ धान्यने छगणां पाणीमां पकावतां घाटी कणीयो रहे अने पाणी थोडुं थोडुं पचपच्या करतुं देखातुं होय त्यारे ते यवागू केहेवाय छे.

पटोलनिम्बयूषस्तु पथ्यः पित्तकफात्मके ।

जूदा जूदा ज्वरोमां जूदां जूदां पथ्य भोजनो.

६७ ज्वर उपवासथी के श्रमथी थएलो होय अथवा वायुना आधिक्यथी थएलो होय अने रोगी क्षीण थएलो तथा प्रदीप्त अग्निवाळो होय तो तेने मांसना रसाथी संयुक्त करेलो भात जमाडवो.

ज्वर कफथी उत्पन्न थएलो होय तो मगना यूषनी साथे भात जमाडवो.

ज्वर पित्तथी उत्पन्न थएलो होय तो साकरथी संयुक्त करेलो शीतल भात मगना यूषनी साथे जमाडवो.

ज्वर वातपित्तजन्य होय तो दाडिम, आमळां अने मग एओना यूषनी साथे भात जमाडवो.

ज्वर वातकफजन्य होय तो नाहाना मूळाना यूषनी साथे भात जमाडवो.

ज्वर पित्तकफजन्य होय तो पटोल अने लींबडाना यूषनी साथे भात जमाडवो.

६८ दाहच्छर्दियुतं क्षामं निरन्नं तृष्णयार्दितम् ।
सिताक्षौद्रयुतं लाजतर्पणं पाययेत च ।

कृश शरीरवाळा रोगीने अमुक स्थितिमां पथ्यांतर.

६८ ज्वरवाळो रोगी कृश शरीरवाळो होय अने दाहथी, उलटीथी तथा तरशथी पीडातो होय तो तेने सालनी धाणीनो साथवो पाणीमां घोळी साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावो.

६९ कफपित्तपरीतस्य ग्रीष्मेऽसृक्पित्तिनस्तथा॥
मद्यनित्यस्य न हिता यवागूस्तमुपाचरेत् ।
यूषैरम्लैरनम्लैर्वा जाङ्गलैर्वा रसैर्हितैः ॥

यवागू जो के ज्वरवाळाने पथ्यरूप छे तो पण अमुक विषयमां तेनो निषेध.

६९ कफथी तथा पित्तथी घेराएला ज्वरित माणसने, रक्तपित्तवाळा ज्वरित माणसने अने नित्य मद्य पीवानी टेववाळा ज्वरित माणसने यवागू देवी ए हितकारी नथी. ज्वरवाळा माणसने ग्रीष्मऋतुमां पण यवागू देवी नहीं. एवा ज्वरितोने तेओना सात्म्य उपर तथा अग्निना बळ उपर ध्यान आपीने दाडिम वगेरेनी खटाशवाळा अथवा खटाश वगरना यूषो देवा अथवा जांगलप्राणीओनां मांसोना हितकारी रसो देवा.

७० मद्यं पुराणं मन्दाग्नेर्यवान्नोपहितं हितम् ।
सव्योषं वितरेत्तक्रं कफारोचकपीडिते ॥

अमुक विषयमां मद्यनुं तथा छाशनुं हितकारीपणुं.

७० ज्वरवाळो माणस मंद अग्निवाळो होय तो तेने जवनां अन्नोनी साथे जूनुं मद्य देवुं ए हितकारी थाय छे. ज्वरवाळो माणस जो कफथी तथा अरोचकथी पीडाएलो होय तो तेने सूंठ, मरी अने पीपळ एओना चूर्णथी संयुक्त करेली छाश देवी ए हितकारी थाय छे.

७१ कृशोऽल्पदोषो दीनश्च नरो जीर्णज्वरार्दितः
विबद्धः सृष्टदोषश्च रूक्षः पित्तानिलज्वरी ॥
पिपासार्त्तः सदाहो वा पयसा स सुखी भवेत् ।

केवा ज्वरवाळाने दूध हितकारी थाय छे ?

७१ जीर्णज्वरथी पीडाएलो जे माणस कृश होय, अल्प दोषवाळो होय के दीन होय ते माणस दूधथी सुखी थाय छे. पित्तज्वरवाळो के वातज्वरवाळो जे माणस मलबंधवाळो होय, जेना मळो पडी गया होय एवो होय, रूक्ष होय,

१ मगने अढारगणा पाणीमां पकावतां तेनो थोडी कणीयोवाळो अने पेयाथी कांइक घाटो जे रस थाय ते मगनो यूष केहेवाय छे. यूषना बीजा पण अनेक प्रकारो छे.

२ जे ज्वर बार दिवसथी उपर अने त्रण दोषोनी जे क्रमणी अवधि छे तेथी पण उपर माणसोनां शरीरोमां मंद वेगथी रहे छे ते जीर्णज्वर केहेवाय छे.

दाहवाळो होय के तरशथी पीडातो होय ते माणस पण दूधथी सुखी थाय छे.

७२ तदेव तु पयः पीतं तरुणे हन्ति मानवम् ।

तरुणज्वरमां दूधनो निषेध.

७२ दूध जो तरुणज्वरमां पीवामां आवे तो ते दूध रोगीने मारीज नाखे छे. (ज्वर सात दिवससूधी तरुणज्वर केहेवाय छे.)

७३ सर्वज्वरेषु सप्ताहं मात्रावद्भोजनं हितम् ।
वेगापायेऽन्यथा तद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥

विषमज्वरोमां अन्ननो विधि.

७३ सघळा प्रकारना विषमज्वरोमां सात दिवससूधी, ज्वरनो वेग शांत थई जाय त्यारे योग्य मात्रावाळुं हलकुं भोजन देवुं. ज्वरनो वेग शांत थया विना भोजन देवामां आवे तो ते भोजन ज्वरना वेगने वधारे छे.

७४ ज्वरितो हितमश्नीयाद्यद्यप्यस्यारुचिर्भवेत् ।
अन्नकाले ह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽथवा ॥
गुर्वभिष्यन्द्यकाले च ज्वरी नाद्यात्कथञ्चन ।
नतु तस्याहितं भुक्तमायुषे वा सुखाय वा ॥

जीर्णज्वरवाळाए भोजनना समयमां हितकारी अन्न अवश्य जमवुंज जोइए.

७४ जीर्णज्वरवाळा माणसे जो के पोताने जमवा उपर अरुचि होय तो पण भोजनना समयमां हितकारी अन्न अवश्य जमवुंज जोइए. केम के भोजनना समयमां पण भोजन नहीं करतो रोगी बलहीन थवाथी क्षीण थई जाय छे अने वखतपर मरी पण जाय छे. ज्वरवाळा माणसे पोताने भारे के अभिष्यंदी (दोष वगेरेने क्लेद आपनारा) अन्नादिक उपर रुचि थाय तो पण ते कोई रीते खावुं नहीं. केम के जमवामां आवेलुं अहित अन्नादिक जीवन पण आपतुं नथी अने सुख पण आपतुं नथी. (ज्वरवाळाने हितकारी अन्न उपर अरुचि होय तो तेने अनेक प्रकारनी रसोईनी युक्तिओथी मोहोडाने प्रिय लागे एवुं बनावीने संबंधिओए देवुं. केटलाएक तो आ श्लोकनो एवो अर्थ करे छे के जीर्णज्वरवाळाने हितकारी अन्न उपर अरुचि होय तो तेणे जीवनना बचावने माटे अहित अन्न पण जमवुं परंतु भारे के अभिष्यंदी अन्न जमवुं नहीं. केम के भारे के अभिष्यंदी अन्न जीवन पण आपतुं नथी अने सुख पण आपतुं नथी.)

७५ संततं विषमं वापि क्षीणस्य सुचिरोत्थितम् ।
ज्वरं संभोजनैः पथ्यैर्लघुभिः समुपाचरेत् ॥

लांबा काळना ज्वरवाळा क्षीण माणसने माटे भोजनोपचार.

७५ ज्वरवाळो माणस क्षीण थई गयो होय अने तेनो संतत के विषमज्वर लांबा काळथी उत्पन्न थयो होय तो पथ्य तथा हलकां यथेष्ट भोजनो आपीने ते माणसनुं बृंहण करवुं.

७६ मुद्गान्मसूरांश्चणकान्कुलत्थान्समकुष्ठकान् ।
आहारकाले यूषार्थं ज्वरिताय प्रदापयेत् ॥

ज्वरवाळाने माटे पथ्य धान्यो.

७६ ज्वरवाळा माणसने आहारना समयमां मग, मसूर, चणा, कळथी तथा मठ एओना यूषोनी योजना करी आपवी.

७७ लावान्कपिञ्जलानेणान्पृषताञ्शरभाञ्शशान् ।
कालपुच्छान् कुरङ्गांश्च तथैव मृगमात्रिकान् ॥
मांसार्थे मांससात्म्यानां ज्वरितानां प्रदापयेत् ।
सारसक्रौञ्चशिखिनः कुक्कुटांस्तित्तिरींस्तथा ॥
गुरूष्णत्वान्न शंसन्ति ज्वरे केचिच्चिकित्सकाः ।
ज्वरितानां प्रकोपं तु यदा याति समीरणः ॥
तदैतेऽपि हि शस्यन्ते मात्राकालोपपादिताः ।

क्षीण थएला ज्वरित माणसनुं बृंहण करवा माटे मांसो.

७७ क्षीण थएला ज्वरित माणसनुं मांस वधारवाने माटे, जो ते माणस मांसना सात्म्यवाळो होय तो लावां, गोरां' तेतर, काळीयार, छांटणांवाळां पृषत नामनां नाहानां हरिणो, शरभो,

ससलां, कालपुच्छ, चार शींगडांवाळां मृगो अने मृगमात्रिका एओनां मांसोनी भोजनमां योजना करवी. सारस, कुंझ, मोर, कूकडां अने काळां तेतर एओनां मांसो भारे छे तथा उष्ण छे तेथी केटलाएक वैद्यो ज्वरमां तेओनो उपयोग न करावावानुं केहे छे परंतु ज्यारे ज्वरित माणसनो वायु प्रकुपित थयो होय त्यारे समयने अनुसरीने योग्य मात्राथी तेओनो उपयोग कराववो पण उचित छे.

७८ परिषेकावगाहांश्च स्नेहान् संशोधनानि च
स्नानाभ्यङ्गदिवास्वप्नशीतव्यायामयोषितः ।
न भजेत ज्वरोत्सृष्टो यावन्नो बलवान्भवेत् ॥
त्यक्तस्यापि ज्वरेणाशु दुर्बलस्याहितैर्ज्वरः ।
प्रत्यापन्नो दहेद्देहं शुष्कं वृक्षमिवानलः ॥
तस्मात्कार्यः परीहारो ज्वरमुक्तेन जन्तुना ।
यावन्न प्रकृतिस्थः स्याद्दोषतः प्राणतस्तथा ॥

ज्वरथी मुक्त थएला माणसे पाळवानी परेजी.

७८ ज्वरथी मुक्त थएला माणसे ज्यांसूधी पोते बळवान् न थयो होय त्यांसूधी शरीरपर जळनी धाराओ पाडवी नहीं, नदी वगेरेमां डुबकी मारवी नहीं, स्नेहपान करवुं नहीं, वमन आदि संशोधनोनो उपयोग करवो नहीं, नाहावुं नहीं, अभ्यंग करवो नहीं, दिवसनी निद्रा करवी नहीं, शीतनुं सेवन करवुं नहीं, कसरत करवी नहीं अने स्त्रीप्रसंग करवो नहीं. केम के नबळो माणस ज्वरथी मुक्त थयो होय तोपण अहित आचरणोना योगने लीधे तेने ज्वर तुरतज पाछो प्राप्त थईने, जेम अग्नि सूका वृक्षने बाळी नाखे छे तेम तेना शरीरने बाळी नाखे छे. आप्रमाणे छे एटला माटे ज्वरथी मुक्त थएला माणसे दोषोनुं प्रकृतिस्थपणुं तथा बळनी प्राप्ति थतांसूधी परेजी अवश्य पाळवी जोइए.

७९ ज्वरे प्रमोहो भवति स्वल्पैरप्युपचेष्टितैः ।
निषण्णं भोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौ च कारयेत् ॥

ज्वरवाळा माणसने जरा पण परिश्रम करवा देवो नहीं.

७९ ज्वरमां थोडी पण हरफर करवाथी प्रमोह (मूर्छित जेवापणुं) थई जाय छे एटला माटे ज्वरवाळो माणस ज्यां बेठो होय त्यांज तेने जमाडवो अने मूत्र तथा मलोत्सर्ग पण त्यांज कराववां. भोजनादिक कराववा माटे तेने बीजे ठेकाणे लई जवो नहीं.

८० अरोचके गात्रसादे वैवर्ण्येऽङ्गमलादिषु ।
शान्तज्वरोऽपि शोध्यः स्यादनुबन्धभयान्नरः ॥

ज्वर शांत थया पछी पण अरुचि वगेरे रहेल होय तो शोधन करवुं.

८० ज्वर शांत थया पछी पण अन्नादिक उपर अरुचि, गात्रोनी ग्लानि, विवर्णपणुं अने शरीरमां मळनी भरती वगेरे रहेल होय तो ज्वरने अंदर छुपी रहेलो समजीने तेना फरी लागू पडवानी बीकथी संशोधन करवुं उचित छे.

८१ न जातु तर्पयेत्प्राज्ञः सहसा ज्वरकर्शितम्
तेन सन्दूषितो ह्यस्य पुनरेव भवेज्ज्वरः

ज्वरथी निर्बळ थएला माणसने कदी पण सहसा तृप्त थवा देवो नहीं.

८१ प्रवीण वैद्ये ज्वरथी कर्शित थएला माणसने कदी पण सहसा अधिक भोजनादिकथी तृप्त थवा देवो नहीं. केम के ज्वर अधिक भोजनादिकथी दूषित थईने पाछो उत्पन्न थाय छे.

८२ चिकित्सेच्च ज्वरान्सर्वान्निमित्तानां विपर्ययैः

सर्व प्रकारना ज्वरोनी चिकित्सानुं मूळ तत्व.

८२ सर्व प्रकारना ज्वरोनी, ते ज्वरो जे गुणोवाळां कारणोथी उत्पन्न थया होय ते गुणोथी विपरीत गुणोवाळां कर्मोथी चिकित्साओ करवी. (भोजनथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो लंघनथी चिकित्सा करवी अने लंघनथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो भोजनथी चिकित्सा करवी इत्यादि.)

८३ श्रमक्षयाभिघातोत्थे मूलव्याधिमुपाचरेत्॥
स्त्रीणामपप्रजातानां स्तन्यावतरणे च यः।
तत्र संशमनं कुर्याद्यथादोषं विधानवित् ॥

केटलाएक ज्वरो उपर चिकित्सानी पद्धति.

८३ श्रमथी, रुधिरस्रावादिक थवाथी के अभिघात थवाथी जे ज्वर उत्पन्न थयो होय ते ज्वरमां मूलव्याधिनी एटले वायुनी चिकित्सा करवी. स्त्रीओने कसूवावडथी जे ज्वर उत्पन्न थाय छे तेमां अने प्रथम धावण उतरवाना समयमां जे ज्वर उत्पन्न थाय छे तेमां विधानने जाणनारा वैद्ये ते ज्वर जे दोषना प्रकोपवाळो होय ते दोषने शांत करनारूं संशमन तथा पाचन देवुं.

८४ अतः संशमनीयानि कषायाणि निबोध मे।
सर्वज्वरेषु देयानि यानि वैद्येन जानता ॥

संशमन क्राथो केहेवानो उपक्रम.

८४ हवे अनेक प्रकारना संशमन क्राथो कहुं छुं ते सांभळो के जे क्राथो प्रवीण वैद्ये ते ते प्रकारना ज्वरो उपर देवा योग्य छे.

८५ पिप्पलीसारिवाद्राक्षाशतपुष्पाहरेणुभिः।
कृतः कषायः सगुडो हन्याच्छ्वसनजं ज्वरम् ॥
शृतशीतकषायो वा गुडूच्याः पेय एव तु।
बलादर्भश्वदंष्ट्राणां कषायं पादशेषितम् ॥
शर्कराघृतसंयुक्तं पिबेद्वातज्वरापहम्।
शतपुष्पावचाकुष्ठदेवदारुहरेणुकाः ॥
कुस्तुम्बुरूणि नलदं मुस्तं चैवाशु साधयेत्।
क्षौद्रेण सितया चापि युक्तःक्राथोऽनिलात्मके॥
द्राक्षागुडूचीकाश्मर्यत्रायमाणाः ससारिवाः ॥
निष्क्राथ्य सगुडं क्राथं पिबेद्वातकृते ज्वरे।
गुडूच्याः स्वरसो ग्राह्यः शतावर्याश्च तत्समः
निहन्यात्सगुडः पीतः सद्योऽनिलकृतं ज्वरम्॥
घृताभ्यङ्गस्वेदलेपानवस्थासु च योजयेत्।

वातजन्य ज्वर उपर देवाना संशमन क्राथो अने बीजा पण उपचारो.

८५ पीपळ, उपलसरी, द्राक्ष, सुवा अने हरेणु एओनो क्राथ करी तेमां गोळ मिश्रित करीने ते क्राथ पावामां आवे तो तेथी वातजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

गळोनो क्राथ बनावी तेने रातवाशी राखी प्रभातमां पावामां आवे तो तेथी वातजन्य ज्वर शांत थई जाय छे. (वातज्वरमां कफनो संबंध होय तो ऊनो क्राथ पावो अने पित्तनो संबंध होय तो रातवाशी राखेलो क्राथ पावो.)

बळदाणा, दर्भ अने गोखरू एओने पाणीमां उकाळी चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे उतारी साकरथी तथा घीथी संयुक्त करीने ते क्राथ पावामां आवे तो तेथी वातजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

सुवा, वज, कठ, देवदार, हरेणु, कोथमीर, वाळो अने मोथ एओनो क्राथ करी तेने मधथी तथा साकरथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

द्राक्ष, गळो, सीवणनां फळ, त्रायमाण अने उपलसरी एओनो क्राथ करी तेने गोळथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

गळोनो स्वरस लेवो अने ते स्वरस जेटलोज शतावरीनो स्वरस लेवो. ए स्वरसोने मिश्रित करी तेमां गोळ नाखीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

वातजन्य ज्वरने शांत करवा माटे ते ज्वरनी ते ते अवस्थाओना अनुसार प्रमाणे घीना अभ्यंगनी, स्वेदनोनी अने लेपोनी योजनाओ पण करवी. (टाढ आवे ते समयमां स्वेदनोनी, पेट चडवा वगेरेना समयमां लेपोनी अने जीर्णज्वर त्वचामां होय तो घीना अभ्यंगनी योजना करवी इत्यादि.)

८६ श्रीपर्णीचन्दनोशीरपरूपकमधूकजः ॥
शर्करामधुरो हन्ति कषायः पैत्तिकं ज्वरम्।
पीतं पित्तज्वरं हन्यात्सारिवाद्यं सशर्करम् ॥

सयष्टीमधुकं हन्यात्तथैवोत्पलपूर्वकम् ।
शृतशीतकषायं वा सोत्पलं शर्करायुतम् ॥
गुडूचीपद्मरोध्राणां सारिवोत्पलयोस्तथा ।
शर्करामधुरः क्काथः शीतः पित्तज्वरापहः ॥
द्राक्षारग्वधयोश्चापि काश्मर्यस्याथ वा पुनः ।
स्वादुतिक्तकषायाणां कषायैः शर्करायुतैः ॥
सुशीतैः शमयेत्तृष्णां प्रवृद्धां दाहमेव च ।
शीतं मधुयुतं तोयमाकण्ठाद्वा पिपासितम् ॥
वामयेत्पाययित्वा तु तेन तृष्णा प्रशाम्यति ।
क्षीरैः क्षीरिकषायैश्च सुशीतैश्चन्दनायुतैः ॥
अन्तर्दाहे विधातव्यमेतैश्चान्यैश्च शीतलैः ।
निदध्यादप्सु चालोड्य निशापर्युषितं ततः ॥
क्षौद्रेण युक्तं पिबतो ज्वरदाहौ प्रशाम्यतः ।
पद्मकं मधुकं द्राक्षां पुण्डरीकमथोत्पलम् ॥
यवान्भृष्टानुशीराणि समङ्गां काश्मरीफलम् ।
जिह्वातालुगलक्लोमशोषे मूर्ध्नि च दापयेत् ॥
केशरं मातुलुङ्गस्य मधुसैन्धवसंयुतम् ।
शर्करादाडिमाभ्यां वा द्राक्षाखर्जूरयोस्तथा ॥
वैरस्ये धारयेत्कल्कं गण्डूषं च यथाहितम् ।

पित्तजन्य ज्वर उपर देवाना संशमन क्काथो अने बीजा पण उपचारो.

८६ सीवण, रतांजलि, वाळो, धामणां अने जेठीमध एओनो क्काथ बनावी तेने साकर नाखवाथी मधुर करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

जेमां जेठीमध बमणुं नाखवामां आव्युं होय एवो सारिवादिगणनो क्काथ बनावी, साकरथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तज्वर शांत थई जाय छे.

जेमां जेठीमध बमणुं नाखवामां आव्युं होय एवो उत्पलादिगणनो क्काथ बनावी, साकरथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तज्वर शांत थई जाय छे.

जेमां जेठीमध बमणुं नाखवामां आव्युं होय एवो उत्पलादिगणनो क्काथ बनावी तेने रातवाशी राखी प्रभातमां साकरथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी अत्यंत दाहवाळो पित्तज्वर शांत थई जाय छे.

गळो, श्वेतकमळ, लोदर, उपलसरी अने नीलकमळ एओनो क्काथ बनावी तेने रातवाशी राखी प्रभातमां साकरथी मधुर करीने पावामां आवे तो तेथी अत्यंत दाहवाळो पित्तज्वर शांत थाय छे.

द्राक्ष तथा गरमाळानां फळ एओनो क्काथ उकाळी रातवाशी राखी साकरथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तज्वरमां थतो दाह टळी जाय छे अने वृद्धि पामेली तरश पण शांत थई जाय छे.

सीवणना फळोनो क्काथ उकाळी रातवाशी राखी साकरथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तज्वरमां थतो दाह टळी जाय छे अने वृद्धि पामेली तरश पण शांत थई जाय छे.

द्राक्ष वगेरे मधुर, धमासा वगेरे कडवां तथा कमळ वगेरे तूरां द्रव्योना क्काथ उकाळी रातवाशी राखी साकरथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तज्वरमां थतो दाह टळी जाय छे अने वृद्धि पामेली तरश पण शांत थई जाय छे.

पित्तज्वरमां तरशथी व्याकुळ थता माणसने मधथी संयुक्त करेलुं शीतल जळ गळासूधी पाईने वमन कराववामां आवे तो तेथी तरश शांत थई जाय छे.

अंदर दाह थतो होय तो शीतल दूधोथी पान, लेपन, परिषेक तथा अवगाहन वगेरे कराववां. वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना क्काथोने सारी पेठे शीतल करी सूखडथी संयुक्त करीने तेओथी पान, लेपन, परिषेक तथा अभ्यंग वगेरे कराववां. तेमज बीजा शीतल पदार्थोथी पण पान, लेपन तथा अभ्यंग वगेरे कराववां.

पद्मकाष्ठ, जेठीमध, द्राक्ष, श्वेतकमळ अने नीलकमळ एओना कल्कने उष्ण जळमां घोळी

नाखी, रातवाशी राखी मेली, प्रभातमां मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी ज्वर अने दाह शांत थई जाय छे.

जीभ, ताळवुं, गळुं अने तरश लागवानुं स्थान एओमां शोष पडतो होय तो शेकेला जव, वाळो, रीसामणी अने सीवणना फळनी मज्जा एओनो कल्क करीने मोंथापर लगाववो.

पित्तज्वरमां मोहोडुं विरस थई गयुं होय तो बीजोराना केसरानो कल्क करी ते कल्कने मधथी तथा सैंधवथी संयुक्त करीने मोहोडामां रखाववो अथवा साकर, दाडिम, द्राक्ष अने खजूर एओनो कल्क करी ते कल्क मोहोडामां रखाववो अने हितकारी द्रव्योनो कोगळो पण मोहोडामां धराववो.

८७ सप्तच्छदं गुडूचीं च निम्बं स्फूर्जकमेव च ॥
क्राथयित्वा पिबेत्क्राथं सक्षौद्रं कफजे ज्वरे ।
कटुत्रिकं नागपुष्पं हरिद्रा कटुरोहिणी ॥
कौटजं च फलं हन्यात्सेव्यमानं कफज्वरम् ।
हरिद्रां चित्रकं निम्बमुशीरातिविषे वचाम् ॥
कुष्ठमिन्द्रयवान्मूर्वां पटोलं चापि साधितम् ।
पिबेन्मरिचसंयुक्तं सक्षौद्रं कफजे ज्वरे ॥
सारिवातिविषाकुष्ठपुराख्यैः सदुरालभैः ।
मुस्तेन च कृतः क्राथः पीतो हन्यात्कफज्वरम् ॥
मुस्तं वृक्षकबीजानि त्रिफला कटुरोहिणी ।
परूषकानि च क्राथः कफज्वरविनाशनः ॥

कफजन्य ज्वर उपर दवाना संशमन क्राथो.

८७ सप्तपर्ण, गळो, लींबडो अने कांटावाळो टींबरवो एओनो क्राथ उकाळी तेने मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी कफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

सूंठ, मरी, पीपळ, नागकेसर, हळदर, कडु अने इंद्रजव एओना क्राथनुं सेवन कराववामां आवे तो तेथी कफज्वर शांत थई जाय छे.

हळदर, चित्रक, लींबडो, वाळो, अतवस, वज, कठ, इंद्रजव, मूर्वा अने पटोल एओनो क्राथ करी मरीना चूर्णथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी कफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

उपलसरी, अतवस, कठ, गुगळ, धमासो अने मोथ एओनो क्राथ करीने पावामां आवे तो तेथी कफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

मोथ, इंद्रजव, त्रिफळा, कडु अने [1]भ्रामणां एओनो क्राथ करीने पावामां आवे तो तेथी कफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

८८ राजवृक्षादिवर्गस्य कषायं मधुसंयुतम् ।
कफवातज्वरं हन्याच्छीघ्रं कालेऽवचारितम् ॥
नागरं धान्यकं भार्गीमभयां सुरदारु च ।
वचां पर्पटकं मुस्तं भूतीकमथ कट्फलम् ॥
निष्काथ्य कफवातोत्थे क्षौद्रहिङ्गुसमन्वितम् ।
पातव्यं श्वासकासघ्नं श्लेष्मोत्सेके गलग्रहे ॥
हिक्कासु कण्ठश्वयथौ शूले हृदयपार्श्वजे ।

वातकफजन्य [1]ज्वर उपर दवाना संशमन क्राथो.

८८ आरग्वधादिगणनो क्राथ करी तेने मधथी संयुक्त करीने योग्य समयमां पावामां आवे तो तेथी वातकफज्वर तुरत शांत थई जाय छे.

सूंठ, धाणा, भारंगी, हरडे, देवदार, वज, खडसलीयो, मोथ, रोहिस नामनुं खड अने कायफळ एओनो क्राथ करी तेने मधथी तथा हींगथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातकफज्वर शांत थई जाय छे. आ क्राथ श्वासने, खांसीने, कफना वधाराने, गळाना झपण

१ जो के लक्षणोना निर्देशमां सान्निपातिक ज्वर पछी द्वंद्वजन्य ज्वरो कहेला छे तो पण अहीं सान्निपातिक ज्वरनी चिकित्साथी पेहेलां द्वंद्वज ज्वरोनी चिकित्सा कही छे तेनुं कारण ए छे के सान्निपातिक ज्वरमां पण द्वंद्वजन्य ज्वरोनी चिकित्सा करवी एम जणाववानुं छे. वातपित्तजन्य ज्वरनी चिकित्सा कह्या पैहेलां वातकफजन्य ज्वरनी चिकित्सा केहेवाथी जणाव्युं छे के केवळ कफजन्यमां पण आ चिकित्सा करवी.

लाई जवाने, हेडकीने अने कंठना सोजाने पण मटाडे छे. हृदयमां के पडखामां शूळ नीकळतुं होय तो आ क्काथ हींग वगरनो पीवो.

८९ एलापटोलत्रिफलायष्ट्याह्वानां वृषस्य च ॥
क्काथो मधुयुतः पीतो हन्ति पित्तकफज्वरम् ।
कटुकाविजयाद्राक्षामुस्तपर्पटकैः कृतः ॥
कषायो नाशयेत्पीतः श्लेष्मपित्तभवं ज्वरम् ।
भार्गीवचापर्पटकधान्यहिङ्ग्वभयाघनैः ॥
काश्मर्यनागरैः क्काथः सक्षौद्रः श्लेष्मपित्तजे ।
सशर्करामक्षमात्रां कटुकामुष्णवारिणा ॥
पीत्वा ज्वरं जयेज्जन्तुः कफपित्तसमुद्भवम् ।

पित्तकफजन्य ज्वर उपर देवाना संशमन क्काथो.

८९ एळची, पटोल, त्रिफळा, जेठीमध अने अरडूसी एओनो क्काथ उकाळी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तकफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

कडु, हरडे, द्राक्ष, मोथ अने खडसलीयो एओनो क्काथ करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तकफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

भारंगी, वज, खडसलीयो, धाणा, हींग, हरडे, मोथ, सीवणनां फळ अने सूंठ एओनो क्काथ उकाळी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तकफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

एक तोलांभार कडुनुं चूर्ण साकरथी संयुक्त करीने ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी पित्तकफजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

९० किराततिक्तममृतं द्राक्षामामलकं शटीम् ॥
निष्काथ्य वातपित्तोत्थे तं क्काथं सगुडं पिबेत् ।
रास्नावृषोत्थत्रिफलाराजवृक्षफलैः सह ॥
कषायः साधितः पीतो वातपित्तज्वरं जयेत् ।

वातपित्तजन्य ज्वर उपर देवाना संशमन क्काथो.

९० कडु, हरडे अथवा गळो, द्राक्ष, आमळां अने कपूरकाचरी एओनो क्काथ करी तेने गोळथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातपित्तजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

रास्ना, अरडूसी, त्रिफळा अने गरमाळानां फळो एओनो क्काथ करीने पावामां आवे तो तेथी वातपित्तजन्य ज्वर शांत थई जाय छे.

९१ सर्वदोषसमुत्थे तु संसृष्टानवचारयेत् ॥
यथादोषोच्छ्रयं चापि ज्वरान्सर्वानुपाचरेत् ।

सान्निपातिक ज्वर उपर देवाना संशमन क्काथा.

९१ सान्निपातिक ज्वर जो तुल्य दोषोवाळो होय तो वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य तथा द्वंद्वजन्य ज्वरो उपर जे संशमन क्काथो केहेवामां आव्या तेओने योग्य रीते मिश्रित करीने पावा अने जो न्यूनाधिक दोषोवाळो होय तो जे दोषनुं आधिक्य होय ते दोषनी चिकित्सानी प्रथम योजना करवी.

९२ वृश्चीकबिल्ववर्षाभ्वः पयश्चोदकमेव च ॥
पचेत्क्षीरावशिष्टं तु तद्धि सर्वज्वरापहम् ।
उदकांशास्त्रयः क्षीरं शिशपासारसंयुतम् ॥
तत्क्षीरशेषं क्कथितं पेयं सर्वज्वरापहम् ।
नलवेतसयोर्मूले मूर्वायां देवदारुणि ॥
कषायं विधिवत्कृत्वा पेयमेतज्ज्वरापहम् ।
त्रैफलो वा ससर्पिष्कः क्काथः पेयस्त्रिदोषजे ॥
अनन्तां वालकं मुस्तां नागरं कटुरोहिणीम् ।
सुखाम्बुना प्रागुदयात्पाययेताक्षसंमितम् ॥
एष सर्वज्वरान्हन्ति दीपयत्याशु चानलम् ।
द्रव्याणि दीपनीयानि तथा वैरेचनानि च ॥
एकशो वा द्विशो वापि ज्वरघ्नानि प्रयोजयेत् ।
सर्पिर्मध्वभयातैललेहोऽयं सर्वजं ज्वरम् ॥
शान्तिं नयेत्त्रिवृच्चापि सक्षौद्रा प्रबलं ज्वरम् ।

सर्व ज्वरो उपर चिकित्साओ.

९२ धोळी साटोडी, बीलुं, राती साटोडी, दूध अने पाणी ए सर्वने भेळां करी पकावतां

पाणी बळी जई दूध अवशेष रहे त्यारे उतारी लईने ते दूध पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारना ज्वरो नष्ट थई जाय छे. (चार तोलां औषध नाखी तेथी आठ गणुं दूध नाखवुं अने दूधथी चोगणुं पाणी नाखवुं. पाणी बळी जई दूध अवशेष रहे त्यारे उतारी लेवुं ए दूध पकाववानो विधि छे.)

एक तोलांभार शीशमनो सार, आठ तोलांभार दूध अने चोवीश तोलांभार पाणी ए सर्वने एकठां करी पकावतां पाणी बळी जई दूध अवशेष रहे त्यारे उतारी लईने ते दूध पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारना ज्वरो नष्ट थई जाय छे.

नालीनां मूळ, नेतरनां मूळ, मूर्वा अने देवदार एओनो विधिपूर्वक काथ करीने पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारना ज्वरो नष्ट थई जाय छे.

त्रिफळानो काथ उकाळी तेने घीथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी सान्निपातिक ज्वर नष्ट थई जाय छे.

धमासो, वाळो, मोथ, सूंठ अने कडु एओनो एक तोलांभार कल्क करी सूर्योदयथी पेहेलां सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारना ज्वरो नष्ट थई जाय छे अने अग्नि पण प्रदीप्त थाय छे.

पीपळ वगेरे दीपनीय द्रव्यो अने नसोतर तथा हरडे वगेरे वैरेचन द्रव्यो एओमां एक के बे द्रव्यनी गोठवण करी तेओनो प्रयोग करवामां आवे तो तेथी जीर्णज्वर नष्ट थई जाय छे.

घी, मध, हरडे अने तैल एओनो अवलेह चाटवामां आवे तो तेथी सान्निपातिक ज्वर नष्ट थई जाय छे.

नसोतरना चूर्णने मधथी संयुक्त करीने चाटवामां आवे तो तेथी प्रबल जीर्णज्वर पण नष्ट थई जाय छे.

९३ज्वरे तु विषमे कार्यमूर्ध्वं चाधश्च शोधनम्
घृतं प्लीहोदरोक्तं वा निहन्याद्विषमज्वरम् ॥
गुडप्रगाढां त्रिफलां पिबेद्वा विषमार्दितः ॥
गुडूचीनिम्बधात्रीणां कषायं वा समाक्षिकम् ॥
प्रातः प्रातः ससर्पिष्कं रसोनमुपयोजयेत् ।
त्रिचतुर्भिः पचेत्काथं पञ्चभिर्वा समन्वितैः ॥
मधुकस्य पटोलस्य रोहिण्या मुस्तकस्य च ॥
हरीतक्याश्च सर्वोऽयं त्रिविधो योग इष्यते ।
सर्पिःक्षीरसिताक्षौद्रमागधीर्वा यथाबलम् ॥
दशमूलीकषायेण मागधीर्वा प्रयोजयेत् ।
पिप्पलीवर्द्धमानं वा पिबेत्क्षीररसाशनः ॥
ताम्रचूडस्य मांसेन पिबेद्वा मद्यमुत्तमम् ।
कोलाग्निमन्थत्रिफलाकाथे दध्ना घृतं पचेत् ॥
तिल्वकावापमेतद्धि विषमज्वरनाशनम् ।

विषमज्वरोनी चिकित्साओ.

९३ विषमज्वरमां वमनरूप शोधन करवुं अने विरेचनरूप शोधन पण करवुं.

चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना १० मा विषयमां प्लीहोदर उपर जे घी केहेवामां आव्युं छे ते घी पण विषमज्वरने नष्ट करी नाखे छे. (आ योग कफना आधिक्यवाळा विषमज्वरमां देवो.)

त्रिफळानो काथ करी तेमां सारी पेठे गोळ नाखीने ते काथ पावामां आवे तो तेथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे.

गळो, लींबडो अने आमली एओनो काथ करी मधथी संयुक्त करीने पीवामां आवे तो तेथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे. (आ योग चातुर्थिक ज्वरने हणे छे एम तंत्रांतरमां कह्युं छे.)

नित्य प्रभाते प्रभाते घीनी साथे लसणनो उपयोग कराववामां आवे तो तेथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे.

जेठीमध, पटोल अने कडु एओनो काथ विषमज्वरने नष्ट करे छे.

जेठीमध, पटोल, कडु अने मोथ एओनो काथ विषमज्वरने नष्ट करे छे.

जेठीमध, पटोल, कडु, मोथ अने हरडे एओनो काथ विषमज्वरने नष्ट करे छे.

रोगीना बळने अनुसरीने घी, दूध, साकर, मध अने पीपळ एओनो योग आपवामां आवे तो तेथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे.

नित्य दशमूलीना काथनी साथे एक तोलांभार पीपळनुं चूर्ण पावामां आवे तो तेथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे.

चिकित्सास्थानना पांचमा अध्यायना १३ मा विषयमां कह्याप्रमाणे पिप्पलीवर्द्धमानक पावामां आवे अने दूधनी तथा मांसना रसानी साथे भोजन करावामां आवे तो तेथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे.

कूकडाना मांसनी साथे उत्तम मद्य पावामां आवे तो तेथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे. (जे रोगी मंद अग्निवाळो अने वायुना आधिक्यवाळो होय तेने माटे आ प्रयोग उत्तम छे.)

पीपळ, पीपळीमूळ, चवक, चित्रक, सूंठ, अरणी अने त्रिफळा एओना काथने दहींथी संयुक्त करीने घी पकाववुं अने ते घी पाकवा उपर आवे त्यारे तेमां पाटीयो लोदर नाखवो. आ रीते पकावेला घीनो उपयोग करवाथी विषमज्वर नष्ट थई जाय छे.

(आ सघळा प्रयोगो जीर्णज्वरो उपर पण लागू पडे छे.)

९४पिप्पल्यतिविषाद्राक्षासारिवाबिल्वचन्दनैः
कटुकेन्द्रयवोशीरसिंहीतामलकीघनैः ।
त्रायमाणास्थिराधात्रीविश्वभेषजचित्रकैः ॥
पक्वमेतैर्घृतं पीतं विजित्य विषमाग्निताम् ।
जीर्णज्वरशिरःशूलगुल्मोदरहलीमकम् ॥
क्षयकासं ससन्तापं पार्श्वशूलानपास्यति ।
गुडूचीत्रिफलावासात्रायमाणायवासकैः ॥
कथितैर्विधिवत्पक्वमेतैः कल्कीकृतैः समैः ।
द्राक्षामागधिकाम्भोदनागरोत्पलचन्दनैः ॥
पीतं सर्पिः क्षयश्वासकासजीर्णज्वराञ्जयेत् ।
कलशीबृहतीद्राक्षात्रायन्तीनिम्बगोक्षुरैः ॥
बलापपटकाम्भोदशालिपर्णीयवासकैः ।
पक्वमुत्कथितैः सर्पिः कल्कैरेभिः समन्वितैः ॥
शटीतामलकीभार्गीमेदाकतकपौष्करैः ।
क्षीरद्विगुणसंयुक्तं जीर्णज्वरमपोहति ॥
शिरःपार्श्वरुजाकासक्षयप्रशमनं परम् ।

जीर्णज्वर उपर घृतो.

९४ पीपळ, अतवस, द्राक्ष, उपलसरी, बीली, रतांजलि, कडु, इंद्रजव, वाळो, ऊभी भोरींगणी, भोंआमली, मोथ, त्रायमाण, शालिपर्णी, आमली, सूंठ अने चित्रक एओना काथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी पावामां आवे तो ते घी अग्निना विषमपणाने टाळी नाखीने जीर्णज्वरने, माथाना शूळने, गुल्मने, उदररोगने, हलीमकने, संतापवाळी क्षयसंबंधी खांसीने अने पडखांनां शूळोने दूर करे छे.

गळो, त्रिफळा, अरडूसी, त्रायमाण अने जवासो एओना काथमां द्राक्ष, पीपळ, मोथ, सूंठ, नीलकमळ अने रतांजलि एटलां समभागवाळां द्रव्योनो कल्क नाखी विधिप्रमाणे घी पकाववुं. आ घी पावामां आवे तो तेथी क्षय, श्वास, खांसी अने जीर्णज्वर नष्ट थई जाय छे.

पृश्निपर्णी, भोरींगणी, द्राक्ष, त्रायमाण, लींबडो, गोखरू, बलदाणा, खडसलीयो, मोथ, शालिपर्णी अने जवासो एओना काथमां कचूरो, भोंआमली, भारंगी, मेदा, पुष्करमूळ तथा निर्मली अथवा कासोंदरी एओनो कल्क तथा बमणुं दूध नाखीने तेमां घी पकाववुं. आ घी जीर्णज्वरने, माथानी व्यथाने, पडखानी व्यथाने, खांसीने अने क्षयने अत्यंत नष्ट करे छे.

९५ पटोलीपर्पटारिष्टगुडूचीत्रिफलावृषैः ॥
कटुकाम्बुदभूनिम्बयासयष्ट्याह्वचन्दनैः ।
दार्वीशक्रयवोशीरत्रायमाणाकणोत्पलैः ॥

धात्रीभृङ्गरजोभीरुकाकमाचीरसैर्घृतम् ।
सिद्धमाश्वपचीकुष्ठज्वरशुक्रार्जुनव्रणान् ॥
हन्यान्नयनवदनकर्णजान्घ्राणजान्गदान् ।

सर्व प्रकारना ज्वरो उपर पटोल्यादि घृत.

९९ पटोलवेल, खडसलीयो, लींबडो, गळो, त्रिफळा, अरडूसी, कडु, मोथ, करीआतुं, धमासो, जेठीमध, रतांजलि, दारुहळदर, इंद्रजव, वाळो, त्रायमाण, पीपळ अने नीलकमळ एओना कल्कथी अने आमली, भांगरो, शतावरी तथा पीलुडी एओना स्वरसोथी घी पकाववुं. आ घी तुरतज अपचीने, कोढने, ज्वरोने, शुक्र तथा अर्जुन नामना नेत्ररोगोने, व्रणोने, बीजा पण नेत्ररोगोने, मुखरोगोने, कर्णरोगोने तथा नाकना रोगोने नष्ट करे छे.

९६ विडङ्गत्रिफलामुस्तमञ्जिष्ठादाडिमोत्पलैः।
प्रियङ्ग्वेलैलवालूकचन्दनामरदारुभिः ॥
बर्हिष्ठकुष्ठरजनीपर्णिनीसारिवाद्वयैः ॥
हरेणुकात्रिवृद्दन्तीवचातालीशकेसरैः ॥
द्विक्षीरं विपचेत्सर्पिर्मालतीकुसुमैः सह ।
विषमज्वरकश्वासगुल्मोन्मादगरापहम् ॥
एतत्कल्याणकं नाम सर्पिर्माङ्गल्यमुत्तमम् ।
अलक्ष्मीग्रहरक्षोग्निमान्द्यापस्मारपापनुत् ॥
शस्यते नष्टशुक्राणां वन्ध्यानां गर्भदं परम् ।
मेध्यं चक्षुष्यमायुष्यं रेतोमार्गरुजापहम् ॥

विषमज्वरो उपर कल्याणक घृत.

९६ वावडींग, त्रिफळा, मोथ, मजीठ, दाडिम, नीलकमळ, घउलां, एळची, एलवालुक नामनुं सुगंधी द्रव्य, रतांजलि, देवदार, वाळो, कठ, हळदर अथवा दारुहळदर, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, धोळी उपलसरी, काळी उपलसरी, हरेणु, नसोतर, दंतिमूळ, वज, तालीसपत्र, नागकेसर अने मालतीनां फूल एओनो बत्रीश तोलांभार कल्क अने घीथी बमणुं दूध नाखी चार प्रस्थ (चोसठ तोलांभारनुं एक प्रस्थ थाय छे.) जलमां एक प्रस्थ गायनुं घी पकाववुं एटले ते **कल्याणक घृत** केहेवाय छे. आ घी विषमज्वरोने, श्वासने, गुल्मने, उन्मादने, विषने, अलक्ष्मीने, ग्रहोना वळगाडने, राक्षसोना वळगाडने, अग्निनी मंदताने, अपस्मारने तथा पापोने नष्ट करे छे. आ घी उत्तम मांगलिक छे, जेओनुं वीर्य नष्ट थई गयुं होय तेओने माटे उत्तम छे, वांझणी स्त्रीओने उत्तम रीते गर्भ आपनारूं छे, बुद्धिने वधारे छे, नेत्रोनुं हित करे छे, आयुष्यने वधारे छे अने वीर्यना मार्गनां दरदोने नष्ट करे छे.

९७ एतैरेव यथाद्रव्यैः सर्वगन्धैश्च साधितम् ।
कपिलाया घृतप्रस्थं सुवर्णमणिसंयुतम् ॥
तत्क्षीरेण सहैकध्यं प्रसाध्य कुसुमैरिमैः ।
सुमनश्चम्पकाशोकशिरीषकुसुमैर्घृतम् ॥
तथा नलदपद्मानां केशरैर्दाडिमस्य च ।
तिथौ प्रशस्ते नक्षत्रे साधकस्यातुरस्य च ॥
कृतं मनुष्यदेवाय ब्राह्मणैरभिमन्त्रितम् ।
एतं सर्वज्वरान्हन्ति महाकल्याणकं घृतम् ॥
दर्शनस्पर्शनाभ्यां तु सर्वरोगहरं शिवम् ।
अधृष्यः सर्वभूतानां वलीपलितवर्जितः ॥
अस्याभ्यासाद्धृतस्येह जीवेद्वर्षशतत्रयम् ।

सर्व प्रकारना ज्वरो उपर महाकल्याणक घृत.

९७ उपर कहेलां द्रव्योथी, एलादिगणनां द्रव्योथी, सुवर्णथी तथा मणिओनां चूर्णथी कपिला गायनुं चोसठ तोलांभार घी पकाववुं. पछी ए पकावेला घीने दूधमां नाखी, मालतीनां फूल, चंपकनां फूल, आसोपालवनां फूल, सरसडीयानां फूल, जटामांसीनी रुंछाड, श्वेतकमळना केसरा अने दाडिमना केसरा एओना कल्कनी साथे फरीवार पकाववुं. आ घी ज्योतिश्शास्त्र प्रमाणे उत्तम तिथि अने वैद्यने तथा आतुर थएला राजाने शुभकारी नक्षत्र होय ते समयमां तैयार करवुं. आ घी **महाकल्याणक** केहेवाय छे. आ

घी ब्राह्मणोनी पासे अभिमंत्रित करावीने राजाने देवामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारना ज्वरो नष्ट थई जाय छे. आ घी दर्शनथी तथा स्पर्शथी पण सघळा रोगोने हरे छे अने मांगल्यरूप छे. आ घीनुं लांबा काळसूधी सेवन करनारो राजा कोईथी पण जीती शकातो नथी, वळीओथी तथा सफेद वाळोथी रहित रेहे छे अने त्रणसो वर्षसूधी जीवे छे.

९८ गव्यं दधि च मूत्रं च क्षीरं सर्पिः शकृद्रसः॥
समभागानि पाच्यानि कल्कांश्चैतान्समावपेत् ।
त्रिफलां चित्रकं मुस्तं हरिद्रे द्वे विषां वचाम्॥
विडङ्गं त्र्यूषणं चव्यं सुरदारु तथैव च ।
पञ्चगव्यमिदं पानाद्विषमज्वरनाशनम् ॥

विषमज्वरो उपर पंचगव्य घृत.

९८ गायनां दहीं, मूत्र, दूध, घी अने छाणनो रस एओने समभागे लई मिश्रित करी त्रिफळा, चित्रक, मोथ, हळदर, दारुहळदर, अतवस, वज, वावडींग, सूंठ, मरी, पीपळ, चवक अने देवदार एओनो कल्क नाखीने पकाववां एटले **पंचगव्य** नामनुं घी सिद्ध थाय छे. आ घी पावाथी विषमज्वरो नष्ट थई जाय छे.

९९ पञ्चगव्यमृते गर्भात्पाच्यमन्यद्वृषेण च ।
बलयाथ परं पाच्यं गुडूच्या तद्वदेव तु ॥
जीर्णज्वरे च शोफे च पाण्डुरोगे च पूजितम् ।

जीर्णज्वरो उपर बीजा चार प्रकारनां पंचगव्य घृतो.

९९ गायनां दहीं, मूत्र, दूध, घी अने छाणनो रस, एओने समभागे लई कशो कल्क नहीं नाखतां पकाववां एटले **अगर्भपंचगव्य** नामनुं घी सिद्ध थाय छे.

गायनां दहीं, मूत्र, दूध, घी अने छाणनो रस एओने समभागे लई मिश्रित करी अरडूसीना स्वरसमां नाखी, त्रिफळा, चित्रक, मोथ, हळदर, दारुहळदर, अतवस, वज, वावडींग, सूंठ, मरी, पीपळ, चवक अने देवदार एओनो कल्क नाखीने पकाववां एटले **वृषपंचगव्य** नामनुं घी सिद्ध थाय छे.

गायनां दहीं, मूत्र, दूध, घी अने छाणनो रस एओने समभागे लई मिश्रित करी बळदाणाना छोडना स्वरसमां नाखी, त्रिफळा, चित्रक, मोथ, हळदर, दारुहळदर, अतवस, वज, वावडींग, सूंठ, मरी, पीपळ, चवक अने देवदार एओनो कल्क नाखीने पकाववां एटले **बलापंचगव्य** नामनुं घी सिद्ध थाय छे.

गायनां दहीं, मूत्र, दूध, घी अने छाणनो रस एओने समभागे लई मिश्रित करी गळोना स्वरसमां नाखी, त्रिफळा, चित्रक, मोथ, हळदर, दारुहळदर, अतवस, वज, वावडींग, सूंठ, मरी, पीपळ, चवक अने देवदार एओनो कल्क नाखीने पकाववां एटले **गडूचीपंचगव्य** नामनुं घी सिद्ध थाय छे.

आ चारे प्रकारनां घृतो जीर्णज्वर उपर, सोजा उपर अने पांडुरोग उपर बहु उत्तम छे.

१०० एतेनैव तु कल्पेन घृतं पञ्चाविकं पचेत् ॥
पञ्चाजं पञ्चमाहिषं चतुरुष्ट्रमथापि वा ।

जीर्णज्वरो उपर पंचाविक, पंचाज, पंचमहिष अने चतुरुष्ट्र नामनां घृतो.

१०० गाडरनां दहीं, मूत्र, दूध, घी अने लींडीनो रस एओने समभागे लई मिश्रित करी उपर कहेलां द्रव्योना कल्कनी साथे अरडूसीना, बळदाणाना के गळोना स्वरसमां पकाववां एटले **पंचाविक** नामनुं घृत सिद्ध थाय छे.

बकरीनां दहीं, मूत्र, दूध घी, अने लींडीनो रस एओने समभागे लई मिश्रित करी उपर कहेलां द्रव्योना कल्कनी साथे अरडूसीना, बलदाणाना के गळोना स्वरसमां पकाववां एटले **पंचाज** नामनुं घृत सिद्ध थाय छे.

भेंशनां दहीं, मूत्र, दूध, घी अने छाणनो रस

एओने समभागे लई मिश्रित करी उपर लखेलां द्रव्योना कल्कनी साथे अरडूसीना, बळदाणाना के गळोना स्वरसमां पकाववां एटले **पंचमहिष** नामनुं घृत सिद्ध थाय छे.

उंटडीनां दहीं, मूत्र, दूध अने घी ए चार पदार्थोने समभागे लई मिश्रित करी उपर लखेलां द्रव्योना कल्कनी साथे अरडूसीना, बळदाणाना के गळोना स्वरसमां पकाववा एटले **चतुरुष्ट्र** नामनुं घृत सिद्ध थाय छे.

(आ चारे प्रकारनां घृतो जीर्णज्वरोने नष्ट करे छे.)

१०१ त्रिफलोशीरशम्याककटुकातिविषान्वितैः
शतावरीसप्तपर्णगुडूचीरजनीद्वयैः ।
चित्रकत्रिवृतामूर्वापटोलारिष्टवालकैः ॥
किराततिक्तकवचाविशालापद्मकोत्पलैः ।
सारिवाद्वययष्ट्याह्वचविकारक्तचन्दनैः ॥
दुरालभापर्पटकत्रायमाणाटरूषकैः ।
रास्नाकुङ्कुममञ्जिष्ठामागधीनागरैस्तथा ॥
धात्रीफलरसैः सम्यग्द्विगुणैः साधितं हविः ।
परिसर्पज्वरश्वासगुल्मकुष्ठनिवारणम् ॥
पाण्डुप्लीहाग्निमान्द्येभ्य एतदेव परं हितम् ।

सर्व प्रकारना ज्वरो उपर त्रिफळादि घृत.

१०१ त्रिफळा, वाळो, गरमाळो, कडु, अतवस, शतावरी, सप्तपर्ण, गळो, हळदर, दारुहळदर, चित्रक, नसोतर, मूर्वा, पटोल, लींबडो, काळो वाळो, करीयातुं, वज, इंद्रवारणी, पद्मकाष्ठ, नीलकमळ, धोळी उपलसरी, काळी उपलसरी, जेठीमध, चवक, रतांजलि, धमासो, खडसलीयो, त्रायमाण, अरडूसो, रास्ना, केसर, मजीठ, पीपळ अने सूंठ एओनो कल्क नाखी आमळांना बमणा रसमां अने बमणा पाणीमां घी पकाववुं. आ घी विसर्पनुं, ज्वरोनुं, श्वासनुं, गुल्मनुं अने कुष्ठनुं निवारण करे छे. पांडुरोग, बरलनुं दरद अने अग्निनुं मंदपणुं एओनी उपर पण आ घी परम हितकारी थाय छे.

१०२ पटोलकटुकादार्वीनिम्बवासाफलत्रिकम् ॥
दुरालभापर्पटकत्रायमाणाः पलोन्मिताः ।
प्रस्थमामलकानां च क्राथयेत्सलिलार्मणे ॥
तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
रक्तपित्तकफस्वेदक्लेदपूयाङ्गशोषणम् ॥
कामलाज्वरवीसर्पगण्डमालाहरं परम् ।

सर्व प्रकारना ज्वरो उपर पटोलादि घृत.

१०२ पटोल, कडु, दारुहळदर, लींबडो, अरडूसी, त्रिफळा, धमासो, खडसलीयो अने त्रायमाण एओने चार चार तोलांभार लई कल्क करी ते कल्कनी साथे चोसठ तोलांभार आमळांनो कल्क नाखी एक हजार चोवीश तोलांभार पाणीमां क्राथ उकाळवो. चोथा भाग जेटलुं पाणी अवशेष रहे त्यारे ते क्राथमां चोसठ तोलांभार घी पकाववुं. आ घी रक्तपित्तने, कफने, पसीनाने, क्लेदने, अंगमां थता परूने, कामळाने, ज्वरोने, विसर्पने अने गंडमालाने अत्यंत नष्ट करे छे.

१०३ शृतं पयः शर्करा च पिप्पल्यो मधुसर्पिषी
पञ्चसारमिदं पेयं मथितं विषमज्वरे ।
क्षतक्षीणे क्षये श्वासे हृद्रोगे चैतदिष्यते ॥

विषमज्वरो उपर पंचसार पान.

१०३ उकाळेलुं दूध, साकर, पीपळ, मध अने घी एओने एकठां करी हाथवते मथीने पीवा जेवो रस करवो ए **पंचसार** केहेवाय छे. आ पंचसार पावाथी विषमज्वरो नष्ट थई जाय छे. क्षतथी थएली क्षीणता, क्षयरोग, श्वास अने हृदयना रोगो एओनी उपर पण आ पंचसार ए उत्तम गणाय छे.

१०४ लाक्षाविश्वनिशामूर्वामञ्जिष्ठास्वर्जिकामयैः ।
षड्गुणेन च तक्रेण सिद्धं तैलं ज्वरान्तकृत् ॥

ज्वरो उपर अभ्यंगने माटे षट्तक्र तैल.

१०४ लाख, सूंठ, हळदर, मूर्वा, मजीठ, साजीखार अने कठ एओनो कल्क नाखी छगणी

छाशमां तैल पकाववुं ए षट्तक्र तैल केहेवाय छे. आ तैलनो अभ्यंग करवाथी ज्वरो नष्ट थई जाय छे. (आ अभ्यंग शीतज्वरनो नाश करे छे.)

१०५ क्षीरिवृक्षासनारिष्टजम्बूसप्तच्छदार्जुनैः ।
शिरीषखदिरास्फोतामृतवल्ल्याटरूषकैः ॥
कटुकापर्पटोशीरवचातेजोवतीघनैः ।
साधितं तैलमभ्यङ्गादाशु जीर्णज्वरापहम् ॥

जीर्णज्वरो उपर अभ्यंगने माटे क्षीरिवृक्षादि तैल.

१०५ वड वगेरे क्षीरिवृक्षो, बीबलो, लींबडो, जांबू, सप्तपर्ण, कडायो, सरसडीयो, खेर, उपलसरी, अमरवेल अथवा गळो, अरडूसो, कडु, खडसलीयो, वाळो, वज, तेजबल अने मोथ एओनो बत्रीश तोलांभार कल्क नाखी चोगणा पाणीमां चोसठ तोलांभार तैल पकाववुं. आ तैलनो अभ्यंग करवाथी जीर्णज्वरो तुरत नष्ट थाय छे.

१०६ निर्विषैर्भुजगैर्नागैर्विनीतैः कृततस्करैः ।
त्रासयेदागमे चैनं तदह्नर्भोजयेन्न च ॥
अत्यभिष्यन्दिगुरुभिर्वामयेद्वा पुनः पुनः ।
मद्यं तीक्ष्णं पाययेत घृतं वा ज्वरनाशनम् ॥
पुराणं वा घृतं काममुदारं वा विरेचनम् ।
निरूहयेद्वा मतिमान्सुस्विन्नं तदहर्नरम् ॥

ज्वर आववाना समयनुं स्मरण करतां करतां ज्वरित थतो होय तेने विस्मरण कराववाना उपायो.

१०६ जे माणस ज्वरना वेगनुं तथा ज्वर आववाना समयनुं स्मरण करतां करतां ज्वरित थतो होय तेने ज्वर आववानो समय थाय ते वखते विषवगरना सर्पोथी, माहावतोए सारी रीते केळवेला हाथीओथी अने खोटा तैयार करी राखेला लूटाराओथी बीवडाववो के जेथी क्षुभित थएलो वायु ज्वरनो आरंभ करनारा दोषनुं विक्षेपण करी नाखतां ज्वरनुं विसरण थई जवाथी ज्वर उत्पन्न न थाय. अवशेष रहेला दोषनो क्षय करवा माटे ते दिवसे रोगीने भोजन देवुं नहीं. अथवा अत्यंत अभिष्यंद करनारा वगेरे पदार्थो पाईने वारंवार वमन कराववुं अथवा तीक्ष्ण मद्य पावुं अथवा उपर कहेलां ज्वरोनो नाश करनारां घृतोमांथी कोई घृत पावुं अथवा केवळ जूनुं घी यथेष्ट रीते पावुं अथवा जो कोठो मृदु होय तो पीडा न करे एवुं विरेचन देवुं अथवा सारी पेठे स्वेदन संस्कार आपीने निरूहबस्ति देवी.

१०७ अजाव्योश्चर्मरोमाणि वचा कुष्ठं पलङ्कषा ।
निम्बपत्रं मधुयुतं धूपनं तस्य दापयेत् ॥
बैडालं वा शकृद्योज्यं वेपमानस्य धूपनम् ।

विषमज्वरो उपर धूमाडी.

१०७ बकरीनां रुवाडां, गाडरनां रुवाडां, बकरीनुं चामडुं, गाडरनुं चामडुं, वज, कठ, गुगळ अने लींबडानां पानडां एओने मधथी संयुक्त करीने तेनी धूमाडी देवामां आवे तो तेथी विषमज्वर जतो रहे छे. विषमज्वरवाळो माणस धूजतो होय तो मींदडानी विष्टानी धूमाडी देवी. (आ योगो जीर्णज्वरो उपर अने भूतजन्य विषमज्वरो उपर पण उपयोगी थाय छे.)

१०८ पिप्पली सैन्धवं तैलं नैपाली चेक्षणाञ्जनम्

विषमज्वरो उपर अंजन.

१०८ पीपळ, सैंधव अने मणशील एओने तैलमां कालवी नेत्रोमां आंजवामां आवे तो तेथी विषमज्वर टळी जाय छे.

१०९ उदरेषु तु सर्पींषि यान्युक्तानि पुरा मयः ।
कल्पोक्तं चाजितं सर्पिः सेव्यमानं ज्वरं जयेत् ॥

विषमज्वरो उपर उदररोगना विषयमां तथा कल्पस्थानमां कहेली चिकित्सानो अतिदेश.

१०९ चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायमां उदररोगो उपर जे घृतो केहेवामां आव्यां छे ते

घृतोनुं सेवन करवाथी विषमज्वरो टळी जाय छे. तेमज कल्पस्थानना बीजा अध्यायना १६ मा विषयमां जे अजित (अजेय) घृत केहेवामां आव्युं छे तेना सेवनथी पण विषमज्वरो टळी जाय छे.

११० भूतविद्यासमुद्दिष्टैर्बन्धावेशनताडनैः । जयेद्भूताभिषङ्गोत्थं विज्ञानाद्यैश्च मानसम् ॥

भूतना आवेशथी थएला आगंतुज्वरनी तथा कामादिकथी थएला आगंतुज्वरोनी चिकित्सा.

११० भूतना आवेशथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो आ ग्रंथमां जे भूतविद्यातंत्र केहेवामां आवशे तेमां कह्याप्रमाणे बांधी मूकवाथी, मंत्रेला सर्पपो वगेरे छांटवाथी तथा प्रहार देवाथी ते ज्वरने नष्ट करवो.

कामनाथी, शोकथी, क्रोधथी के भयथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो तेने ज्ञानोपदेश वगेरेथी दूर करवो.

(आगंतुज्वरमां माणसने लंघन करावबुंज नहीं. जेने कामज्वर प्राप्त थयो होय ते स्त्रीने सायंकाले अत्यंत सुगंधी पुष्पोनी शय्यामां सूवडाववी अने राते तेना प्यारानी साथे क्रीडा कराववी. क्रोधथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो पित्तने टाळनारी क्रिया करवी अने महात्माओना उपदेशो संभळाववा. क्रोधथी अथवा भयथी थएला ज्वरो आश्वासन करवाथी, इष्टवस्तुना लाभथी, वायुनुं शमन करवाथी अने हर्ष उपजावनारां साधनो करवाथी शांत थाय छे. क्रोधथी उत्पन्न थएलो ज्वर धिक्कार भरेलां वचनो तथा भयने उत्पन्न करनारां वचनो संभळाववाथी शांत थाय छे. कामदेवथी क्रोधज्वरनो नाश थाय छे, क्रोधथी कामज्वरनो नाश थाय छे अने मननो निग्रह करवाथी कामज्वर तथा क्रोधज्वर ए बन्नेनो नाश थाय छे.)

१११ श्रमक्षये च भुञ्जीत घृताभ्यक्तो रसौदनम् ।

श्रमथी थएला के रुधिर वगेरेना क्षयथी थएला आगंतुज्वरनी चिकित्सा.

१११ श्रमथी के रुधिर वगेरेना क्षयथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो रोगीना शरीरपर घीनो अभ्यंग करीने मांसना रसावाळो भात जमाडवो. (दिवसनी निद्रा पण कराववी.)

११२ अभिशापाभिचारोत्थौ ज्वरौ होमादिना जयेत् ॥

अभिशापथी तथा अभिचारथी थएला आगंतुज्वरोनी चिकित्सा.

११२ गुरु वगेरेना शापथी के शत्रुओए करेला अभिचार प्रयोगथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो होम आदि क्रियाओथी तेनी शांति करवी.

११३ दानस्वस्त्ययनातिथ्यैरुत्पातग्रहपीडजौ ।

उल्कापात वगेरे उत्पातथी थएला तथा सूर्य आदि ग्रहोना दुष्टचारथी थएला ज्वरनी चिकित्सा.

११३ उल्कापात वगेरे उत्पातथी के जन्मसमयमां तथा वर्षादिकमां सूर्य आदि ग्रहोना दुष्टचारथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो दानोथी, स्वस्तिवाचनोथी तथा अतिथिपूजनोथी शांति करवी.

११४ अभिघातज्वरे कुर्यात्क्रियामुष्णविवर्जिताम् ॥ कषायमधुरां स्निग्धां यथादोषमथापि वा ।

अभिघातथी थएला आगंतुज्वरनी चिकित्सा.

११४ अभिघातथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो उष्णता वगरनी कषाय, मधुर तथा स्निग्ध क्रिया करवी अने दोषोना अनुसार प्रमाणे पण चिकित्सा करवी.

११५ ओषधीगन्धविषजौ विषपित्तप्रसाधनैः । जयेत्कषायं च हितं सर्वगन्धकृतं तथा ॥

ओषधीना गंधथी थएला तथा विषथी थएला आगंतुज्वरनी चिकित्सा.

११६ ओषधीना गंधथी के विषथी ज्वर उत्पन्न थयो होय तो विषनी तथा पित्तनी चिकित्साओथी ते ज्वरनी शांति करवी. (केटलाएक **विषपीतप्रसाधनैः** एवुं पाठांतर कल्पीने केहे छे के जेणे झेर पीधुं होय ते माणसने माटे जे चिकित्साओ छे ते चिकित्साओथी शांति करवी.) एलादिगणनां द्रव्योनो क्वाथ पण ए ज्वर उपर हितकारी थाय छे.

११६ निम्बदारुकषायं वा हितं सौमनसं तथा
यवान्नविकृतिः सर्पिर्मद्यं च विषमे हितम् ॥
सम्पूजयेद्द्विजान्गाश्च देवमीशानमम्बिकाम् ।

विषमज्वरोनी बीजी चिकित्साओ.

११६ लींबडो अने देवदार एओनो क्वाथ विषमज्वरो उपर हितकारी छे. जाईनो क्वाथ पण विषमज्वरो उपर हितकारी छे. जववाळो भात, घी अने मद्य एओ पण विषमज्वरो उपर हितकारी छे. ब्राह्मणोनुं, गायोनुं, सदाशिवनुं तथा चंडीनुं पूजन करवुं ए पण विषमज्वरो उपर चिकित्सारूप छे.

(आगंतुज ज्वरोनी चिकित्साओ कहीने वळी पण विषमज्वरोनी चिकित्साओ कही तेनुं कारण ए छे के भूताभिषंगादिकथी थएला आगंतुज्वरो पण घणुं करीने विषमज्वरोरूपज होय छे एम जणाववानुं छे.)

११७ कफवातोत्थयोश्चापि ज्वरयोः शीतपीडितम् ॥
दिह्यादुष्णेन वर्गेण परश्चोष्णो विधिर्हितः ।
सिंचेत्कोष्णैरारनालशुक्तगोमूत्रमस्तुभिः ॥
दिह्यात्पलाशैरथ वा सुरसार्जकशिग्रुजैः ।
क्षारतैलेन चाभ्यङ्गः सशुक्तेन विधीयते ॥
पानमारग्वधादेश्च क्वथितस्य विशेषतः ।
अरगादः सुखोष्णश्च वातघ्नक्वाथसंयुतः ॥
जित्वा शीतं क्रमैरेभिः सुखोष्णजलसेचितम् ।
प्रवेश्यौर्णिककार्पासकौशेयाम्बरसंवृतम् ॥
शाययेद् ग्लानदेहं च कालागुरुविभूषितम् ।
स्तनाढ्या रूपसम्पन्नाः कुशला नवयौवनाः ॥
भजेयुः प्रमदा गात्रैः शीतदैन्यापहारिभिः ।
शरच्छशाङ्कवदना नीलोत्पलदलेक्षणाः ।
स्फुरितभ्रूलताभङ्ग ललाटतटशोभनाः ॥
प्रलम्बिविलसत्काञ्च्यो बिंबीफलनिभाधराः ॥
कृशोदर्योऽतिविस्तीर्णजघनोद्वहनालसाः ।
कुङ्कुमागुरुदिग्धाङ्ग्यो घनतुङ्गपयोधराः ॥
सुगन्धिधूपितश्लक्ष्णस्रस्तांशुकविभूषणाः ।
गाढमालिङ्गयेयुस्तं तरुं वनलता इव ॥
प्रह्लादं चास्य विज्ञाय ताः स्त्रीरपनयेत्पुनः ।
तासामङ्गवरश्लेषनिवारितहिमज्वरम् ॥
भोजयेद्धितमन्नं च तथा सुखमवाप्नुयात् ।

आरंभमां शीतवाळा विषमज्वरो उपर विशिष्ट क्रिया.

११७ आ अध्यायना २४ मा विषयमां कह्याप्रमाणे विषमज्वरवाळो जे माणस आरंभमां शीतथी पीडातो होय ते माणसना शरीरपर भद्रदारु आदि, सुरसादि तथा एलादिगणनो प्रलेप करवो. स्वेदन करवुं ए पण अत्यंत हितकारी थाय छे. घऊंना खाटा आथानुं पाणी, सौवीरकथी तथा दहींथी करेला अने पीपळ वगेरेना चूर्णथी मिश्रित करेला चोखाना आथानुं पाणी, गोमूत्र अने दहींनी नीचेनुं पाणी एओने गरम करी सेहेवाय तेवां ऊनां राखीने तेओथी सेचन करवुं अथवा खाखरानां, काळी तुलसीनां, तुलसीनां तथा सरगवानां पानडां एओने वाटी गरम करीने तेओनो लेप करवो. क्षारमां पकावेला तैलने सौवीरकथी तथा दहींथी करेला अने पीपळ वगेरेना चूर्णथी मिश्रित करेला चोखाना आथाना पाणीथी संयुक्त करीने तेनो अभ्यंग करवो. आरग्वधादिगणनो क्वाथ विशेषे करीने पावो. वायुने हणनारां द्रव्योनो क्वाथ

करी तेने सेहेवाय तेवो गरम राखी कोठीमां भरीने तेमां अवगाहन कराववुं. आ उपचारोथी शीतने शांत करी सेहेवाय तेवा गरम जळनुं सेचन करी, रोगीने पवन वगरना घरमां लई जवो अने पछी ऊननां, कपासनां तथा रेशमनां वस्त्रो पेहेरावी ओढाडीने सूवडाववो. जो रोगीनुं शरीर म्लानि पाम्युं होय तो तेनापर कृष्णागरुनुं लेपन करीने ऊंचां पुष्ट तथा कठण स्तनोवाळी, उत्तम रूपवाळी, कामशास्त्रमां प्रवीणता धरावनारी, नवीन यौवनवाळी, शरद्ऋतुना चंद्र जेवां मुखोवाळी, नीलकमळनी पांखडीओ जेवां नेत्रोवाळी, चलायमान थती भमरोना विलासोथी शोभतां ललाटोवाळी, लांबी सुशोभित कटिमेखलाओवाळी, घोलां जेवा राता अधरोवाळी, पातळां उदरोवाळी, अतिविस्तीर्ण जघनस्थलोना बोजाथी मंदगतिवाळी, केसरथी तथा अगरुथी लिप्त अंगोवाळी अने जेओए सुगंधी पदार्थोथी धूपेलां कोमळ तथा शिथिल वस्त्रो धर्यां होय तथा तेवाज सुंदर अलंकारो धर्या होय एवी सुंदरीओना हस्तोथी चंपी कराववी तथा शीतनुं अने चित्तना क्लेशनुं हरण करनारां ते प्रमदाओनां गात्रोथी कोमळ कोमळ मर्दन कराववुं तथा जेम बगीचानी लताओ वृक्षनुं आलिंगन करे छे तेम तेवी स्त्रीओनी पासे ते रोगीनुं दृढ आलिंगन कराववुं. ज्यारे रोगीने कामदेवथी प्रहर्ष थयो जणाय त्यारे वैद्ये ते स्त्रीओने तेनी पासेथी दूर करी नाखवी. (मैथुन करवा देवुं नहीं. केम के मैथुनथी मोटो अनर्थ थाय छे.) स्त्रीओनां अंगोनां उत्तम आलिंगन कराववाथी ए प्रमाणे शीतज्वरनुं निवारण करीने पछी ते रोगीने वायुनुं तथा कफनुं हरण करनारो हितकारी आहार जमाडवो. आ प्रमाणे करवाथी रोगीने सुखनी प्राप्ति थाय छे. (पछी दाह थाय तो शीत क्रिया करवी.)

११८ दाहाभिभूते तु विधिं कुर्याद्दाहविनाशनम् ॥
मधुफाणितयुक्तेन निम्बपत्राम्भसापि वा ।
दाहज्वरार्त्तं मतिमान्वामयेत्क्षिप्रमेव च ॥
शतधौतघृताभ्यक्तं दिह्याद्वा यवशक्तुभिः ।
कोलामलकसंयुक्तैः शूकधान्याम्लसंयुतैः
अम्लपिष्टैः सुशीतैश्च फेनिलापल्लवैस्तथा ।
अम्लपिष्टैस्तु शीतैर्वा पलाशतरुजैर्दिहेत् ॥
बदरीपल्लवोत्थेन फेनेनारिष्टकस्य च ।
लिप्तेऽङ्गे दाहतृण्मूर्छा सर्वथैव प्रशाम्यति ॥
यवार्द्धकुडवं पिष्ट्वा मञ्जिष्ठार्द्धपलं तथा ।
अम्लप्रस्थशतोन्मिश्रं तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥
एतत्प्रह्लादनं तैलं ज्वरदाहविनाशनम् ।
न्यग्रोधादिर्गणो यस्तु काकोल्यादिश्च यो गणः
उत्पलादिर्गणो यस्तु पिष्टैर्वा तैः प्रलेपयेत् ।
तत्कषायाम्लसंसिद्धाः स्नेहाश्चाभ्यञ्जने हिताः॥
तेषां शीतकषाये वा दाहार्त्तमवगाहयेत् ।
दाहवेगे त्वतिक्रान्ते तस्मादुद्धृत्य मानवम् ॥
परिषिच्याम्बुभिः शीतैः प्रलिम्पेच्चन्दनादिभिः ।
सानन्दा दीनमनसमाश्लिष्येयुर्वराङ्गनाः ॥
पेलवक्षौमसंवीताश्चन्दनार्द्रपयोधराः ।
बिभ्रत्योऽब्जस्रजश्चित्रा मणिहारविभूषिताः ॥
भजेयुस्ताः स्तनैः शीतैः स्पृशन्त्योऽम्बुरुहैर्मुखैः
प्रह्लादं त्वस्य विज्ञाय ताः स्त्रीरपनयेत्पुनः ॥
हितं च भोजयेदन्नं तथाप्नोति सुखं महत् ।
पित्तज्वरोक्तं शमनं विरेकोऽन्यद्धितं च यत् ॥

आरंभमां दाहवाळा विषमज्वरो उपर विशिष्ट क्रिया.

११८ आ अध्यायना २४ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे जे माणस आरंभमां दाहथी पीडातो होय तेने माटे वैद्ये नीचेप्रमाणे दाहने नष्ट करनारो विधि करवो. बुद्धिमान् वैद्ये दाहज्वरथी पीडाता रोगीने मधथी तथा पाकता गोळनी राबथी संयुक्त करेलुं लींबडाना पानडांनुं जळ पाईने तुरतज वमन कराववुं. (वमनथी पण पित्तनुं निर्हरण थाय छे.) रोगीना शरीरपर सोवार धोएला घीनो अभ्यंग करवो अने बोरथी,

आमळांथी तथा घऊ वगेरे अणीवाळां धान्योना धान्याम्लथी[1] संयुक्त करेला जवना साथवानो लेप करवो. अथवा पोथीनां के बोरडीनां पानडांओने खाटी कांजीमां वाटी तेओनो अतिशीतल लेप करवो. अथवा खाखरानां पानडांओने खाटी कांजीमां वाटी तेओनो शीतल लेप करवो. बोरडीनां पानडांओनां फीणनुं तथा अरीठानां फीणनुं अंगपर लेपन करवामां आवे तो तेथी दाह, तृषा तथा मूर्छा सर्वथा शांत थई जाय छे. आठ तोलांभार जव तथा बे तोलांभार मजीठ एओने वाटी सो प्रस्थ (चोसठ तोलांभारनुं एक प्रस्थ थाय छे.) भार खाटी कांजीमां मिश्रित करी दई ते कांजीथी चोसठ तोलांभार तेल पकावीने ते तेलनी अभ्यंगमां योजना करवी. आ तैल '**प्रह्लादन तैल**' ए नामथी केहेवाय छे अने तेथी दाहज्वर नष्ट थई जाय छे. अथवा न्यग्रोधादिगण, काकोल्यादिगण अने उत्पलादिगण एओने वाटीने तेओनो प्रलेप करवो. ए त्रण गणोना क्वाथथी तथा कांजीथी पकावेला स्नेहोनो अभ्यंग पण हितकारी थाय छे. ए त्रण गणोना हिम आदि शीतल कषायमां अवगाहन करावत्रामां आवे तो तेथी दाह शांत थई जाय छे. ए प्रमाणे अवगाहन करावी दाहनो वेग शांत थया पछी रोगीने अवगाहननी कोठीमांथी काहाडी शीतल जळोनुं सेचन करीने पछी चंदनादिगणनां द्रव्योनुं अथवा चंदन वगेरे शीतल द्रव्योनुं लेपन करवुं. जो रोगीनुं मन दीन थई गयुं होय तो आनंदवाळी उत्तम स्त्रीओनी पासे रोगीनुं आलिंगन करावबुं. जेओए सुकुमार पट्टवस्त्रो धर्यां होय एवी, चंदनना लेपनथी आर्द्र स्तनोवाळी, विचित्र कमळोनी माळाओने धरनारी अने मणिओना हारोथी शणगारेली ते स्त्रीओए कमळो सरखां मुखोथी रोगीनो स्पर्श करवो अने शीतल स्तनोथी तेनुं सेवन करवुं. रोगीने कामदेवथी प्रहर्ष थयो जणाय त्यारे वैद्ये ते स्त्रीओने तेनी पासेथी दूर करी नाखवी. (मैथुन करवा देवुं नहीं. केम के मैथुनथी मोटो अनर्थ थाय छे.) स्त्रीओने दूर कर्या पछी रोगीने पित्तहर अन्न जमाडवुं. आ प्रमाणे करवाथी रोगीने सुखनी प्राप्ति थाय छे. आ अध्यायना ८६ मा विषयमां पित्तज्वर उपर जे संशमनो कह्यां छे तेओ देवां, विरेचन देवुं अने बीजुं पण जे कांई हितकारी जणाय ते पण आ दाहज्वर उपर करवुं.[2] (पछी शीत आवे तो उष्ण क्रिया करवी.)

११९ निर्हरेत्पित्तमेवादौ ज्वरेषु समवायिषु ।
दुर्निवारतरं तद्धि ज्वरार्त्तेषु विशेषतः ॥

दोषोना संसर्गवाळा ज्वरोमां अने कोई वखते सन्निपातमां पण प्रथम पित्तनुं निर्हरण करवानी जरूर.

११९ दोषोना परस्पर संसर्गवाळा, सन्निपातज्वर शिवायना ज्वरोमां अने कोई वखते सन्निपातज्वरमां पण प्रकृति तथा काल वगेरे उपर ध्यान आपीने प्रथम पित्तनुंज निर्हरण करवुं. केम के पित्तनुं निवारण करवुं अत्यंत मुशकेली भरेलुं छे अने ज्वरथी पीडाएलाओना पित्तनुं निवारण करवुं तो तेथी पण वधारे मुशकेली भरेलुं छे. (सामान्य रीते तो सन्निपातज्वरमां प्रथम आमभूत कफनुंज निर्हरण करवुं योग्य छे. केटलाएक वैद्यो तो **निर्हरेत्** ने बदले **शमयेत्** एवो पाठ बोलीने व्याख्यान आपे छे के सन्निपातज्वरोमां प्रथम पित्तनुं निर्हरण नहीं करवुं पण शमन एटले प्रकृतिस्थापन तो प्रथमज करवुं जोइए. केम के अग्निनो उपघात करीनेज ज्वर उत्पन्न थाय छे अने जे अग्नि छे ते पित्तनोज पेटाभाग छे.)

१२० छर्दिमूर्छापिपासादीनविरोधाज्ज्वरस्य तु
उपद्रवाञ्जयेच्चापि प्रत्यनीकेन हेतुना ॥

१ धान्यनुं चूर्ण आथेलुं होय ते धान्याम्ल केहेवाय छे.

२ आ सघळां विधानो सद्योज्वर वगरना दाहज्वरमां करवां. (डल्लन.)

विशेषमपरं चात्र शृणूपद्रवनाशनम् ।

ज्वरना उपद्रवोनी चिकित्सानी सामान्य पद्धति.

१२० वमन, मूर्छा तथा तरश वगेरे ज्वरना उपद्रवोने चिकित्सामां विरोध न आवे एवी रीते हेतुविपरीत आदि औषधोथी जीतवा. हवे उपद्रवोने नष्ट करनारी विशिष्ट चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो. (जो ज्वरनी साथेज वमन आदि उत्पन्न थयां होय तो तेओ ज्वरनां लक्षणो केहेवाय छे अने ज्वर उत्पन्न थया पछी वमन आदि उत्पन्न थयां होय तेओ उपद्रवो गणाय छे. जेमां उपद्रवो उत्पन्न थया होय एवा रोगने पण वैद्ये छोडी देवो नहीं. व्याधि शांत थाय तो सघळा उपद्रवो पण नष्ट थई जाय छे एटला माटे प्रथम यत्नपूर्वक व्याधिने जीतवो अने पछी उपद्रवोने जीतवा. पण जे प्रवीण वैद्य होय ते तो प्रथम उपद्रवने जीते छे. उपद्रवो घणा होय तो तेओमां जे उपद्रव झडपदार तथा बळवान् होय तेने प्रथम जीतवो. एवुं पण वचन छे के प्रथम मूलव्याधिने जीतवो अथवा तेमां जे बलवत्तर उपद्रव होय तेने जीतवो अथवा विरोध न आवे एवी रीते मूलव्याधिनी तथा उपद्रवनी एकी वखते चिकित्सा करवी.)

१२१ मधुकं रजनी मुस्तं दाडिमं चाम्लवेतसम् अञ्जनं तित्तिडीकं च नलदं पत्रमुत्पलम् । त्वचं व्याघ्रनखं चैव मातुलुङ्गरसो मधु ॥ दिह्यादेभिर्ज्वरार्त्तस्य मधुशुक्तयुतैः शिरः । शिरोऽभितापसंमोहवमिहिक्काप्रवेपथून् ॥ प्रदेहो नाशयत्येष ज्वरितानामुपद्रवान् ।

माथानी वेदना वगेरे ज्वरना उपद्रवोनी विशिष्ट चिकित्सा.

१२१ जेठीमध, हळदर, मोथ, दाडिम, अम्लवेतस, रसवंती, कोकम, जटामांसी, तमालपत्र, नीलकमळ, तज, वाघनखनी के थोरनी ? भस्म, बीजोरानो रस अने मध एओने लींबूना रसथी करेला पीपळसहित मधना आथाना[१] रसथी संयुक्त करीने ज्वरवाळा माणसना माथापर लेप करवामां आवे तो ते लेप माथानी वेदनाने, मूर्छाने, वमनने, हेडकीने तथा कंपने नष्ट करे छे.

१२२ मधूकमथ ह्रीवेरमुत्पलानि मधूलिकाम् ॥ लीढ्वा चूर्णानि मधुना सर्पिषा च जयेद्वमिम् । कफप्रसेकासृक्पित्तहिक्काश्वासांश्च दारुणान्

वमन वगेरे ज्वरना उपद्रवोनी विशिष्ट चिकित्सा.

१२२ महुडानुं फळ, वाळो, नीळकमळो अने राईके सर्षप एओनुं चूर्ण करी मधनी तथा घीनी साथे चटाडवामां आवे तो तेथी वमन, कफनुं झरवुं, रक्तपित्त, हेडकी अने श्वास एटला ज्वरना उपद्रवो दारुण होय तोपण नष्ट थई जाय छे.

१२३ लिहञ्ज्वरार्त्तस्त्रिफलां पिप्पलीं च समाक्षिकाम् ॥ कासे श्वासे च मधुना सर्पिषा स सुखी भवेत् ।

ज्वरना उपद्रवरूप खांसी तथा श्वास एओनी विशिष्ट चिकित्सा.

१२३ त्रिफळा तथा पीपळ एओना चूर्णने घीथी तथा बमणा मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो ज्वरथी पीडाएलो माणस खांसीथी तथा श्वासथी मुक्त थईने सुखी थाय छे.

१२४विदारी दाडिमं लोध्रं दाधित्थं बीजपूरकम् एभिः प्रदिह्यान्मूर्द्धानं तृड्दाहार्त्तस्य देहिनः ।

ज्वरना उपद्रवरूप तरश तथा दाह एओनी विशिष्ट चिकित्सा.

१२४ विदारीकंद, दाडिम, लोदर, कोठ अने बीजोरूं एओने वाटी माथापर लेप करवामां

१ पीपळथी संयुक्त करेला मधने लींबूना रसथी युक्त करी वासणमां नाखी ते वासणने एक महिनासुधी धान्यना ढगलामां राखी मूकतां जे रस सिद्ध थाय ते मधनो आथो गणाय छे.

आवे तो तेथी ज्वरना उपद्रवरूप तरश तथा दाह नष्ट थई जाय छे.

१२५ दाडिमस्य सितायाश्च द्राक्षामलकयोस्तथा ॥

वैरस्ये धारयेत्कल्कं गण्डूषं च यथाहितम् ।
क्षीरेक्षुरसमाध्वीकसर्पिस्तैलोष्णवारिभिः ॥

ज्वरना उपद्रवरूप मोहोडाना विरसपणानी विशिष्ट चिकित्सा.

१२५ दाडिम, द्राक्ष, साकर तथा आमळां एओनो कल्क करी मोहोडामां रखाववामां आवे तो तेथी ज्वरना उपद्रवरूप मोहोडानुं विरसपणुं नष्ट थई जाय छे.

योग्यताने अनुसरी दूध, शेलडीनो रस, मध, घी, तैल अने उष्ण जळ एओनो कोगळो मोहोडामां रखाववामां आवे तो तेथी पण ज्वरना उपद्रवरूप मोहोडानुं विरसपणुं नष्ट थई जाय छे.

१२६ शून्ये मूर्ध्नि हितं नस्यं जीवनीयशृतं घृतम् ।

ज्वरना उपद्रवरूप माथानी शून्यतानी विशिष्ट चिकित्सा.

१२६ काकोल्यादि जीवनीयवर्गना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीनुं नस्य देवामां आवे तो ते नस्य ज्वरना उपद्रवरूप माथानी शून्यता उपर हितकारी थाय छे.

१२७ चूर्णितत्रिफलाश्यामात्रिवृत्पिप्पलिसंयुतः ॥

सक्षौद्रः शर्करायुक्तो विरेकस्तु प्रशस्यते ।
पक्वे पित्तज्वरे रक्ते चोर्ध्वगे वेपथौ तथा ॥

पित्तज्वरना उपद्रवरूप कंपनी तथा नाक वगेरेमांथी वेहेता रक्तपित्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

१२७ त्रिफळा, वरधारो, नसोतर अने पीपळ एओनुं चूर्ण करी मधथी तथा साकरथी संयुक्त करीने ते विरेचन देवामां आवे तो तेथी पित्तज्वरना उपद्रवरूप कंप अने नाक वगेरे ऊंचा मार्गथी वेहेतुं रक्तपित्त नष्ट थई जाय छे. आ विरेचन पित्तज्वर पाक्या पछी हितकारी थाय छे.

१२८ कफवातोत्थयोरेवं स्नेहाभ्यङ्गैर्विशोधयेत्।

कफज्वरमां तथा वातज्वरमां ए उपद्रवो थया होय तो अवयवपर करवानी विशिष्ट चिकित्सा.

१२८ कफथी के वायुथी थएला ज्वरमां कोई अवयवमां ए उपद्रवो थया होय तो ते अवयवमां रहेला दोषनुं स्नेहना अभ्यंगोथी शमन करवुं.

१२९ हृतदोषो भ्रमार्त्तस्तु लिह्यात्क्षौद्रसिताभयाः ॥

ज्वरमां दोषनुं हरण कर्या पछी चकरी आवती होय तो तेनी विशिष्ट चिकित्सा.

१२९ दोषनुं हरण कर्या पछी ज्वरवाळो माणस भ्रमथी पीडातो होय तो तेने मधथी तथा साकरथी मिश्रित करेलुं हरडेनुं चूर्ण चटाडवुं.

१३० वातघ्नमधुरैर्योज्या निरूहा वातजे ज्वरे
विभज्य दोषं प्राणं च यथास्वं चानुवासनम् ॥

वातज्वर उपर बस्तिओ.

१३० ज्वर वायुथी उत्पन्न थयो होय तो दोषना बळनुं तथा रोगीना बळनुं अवेक्षण करीने वायुने हणनारा भद्रदारु आदि वर्गथी तथा काकोल्यादि मधुरवर्गथी निरूहबस्तिओनी योजना करवी. दोषना अनुसार प्रमाणे अनुवासनबस्तिनी पण योजना करवी.

१३१ उत्पलादिकषायाढ्याश्चन्दनोशीरसंयुताः
शर्करामधुराः शीताः पित्तज्वरहरा मताः ॥
आम्रादीनां त्वचं शङ्खं चन्दनामलकोत्पलैः ।
गैरिकाञ्जनमञ्जिष्ठामृणालान्यथ पद्मकम् ॥

श्लक्ष्णपिष्टं तु पयसा शर्करामधुसंयुतम् ।
सुपूतं शीतलं बस्तिं दूयमानाय दापयेत् ॥
ज्वरदाहापहं तेषु सिद्धं चैवानुवासनम्

पित्तज्वर उपर बस्तिओ.

१३१ ज्वर पित्तथी उत्पन्न थयो होय तो उत्पलादिगणना, चंदननां तथा वाळाना स्वरसादिकवाळी अने साकरथी मधुर करेली शीतल निरूहबस्तिओनी योजना करवी.

आंबा वगेरे वृक्षोनी छाल, शंख, रतांजलि, आमळां, नीलकमळ, सोनागेरू, रसवंती अथवा सुरमो, मजीठ, कमळना नाळना तंतुओ अने पद्मकाष्ठ एओने दूधमां बारीक वाटी साकरथी तथा मधथी संयुक्त करी सारी पेठे वस्त्रथी गाळीने तेनी शीतल निरूहबस्ति देवामां आवे तो तेथी पित्तज्वरसंबंधी परिताप नष्ट थई जाय छे.

आंबा वगेरे वृक्षोनी छाल आदि द्रव्यो के जेओ उपर केहेवामां आव्यां तेओना क्राथथी तथा कल्कथी सिद्ध करेला स्नेहनी अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो तेथी ज्वरसंबंधी दाह नष्ट थई जाय छे.

१३२आरग्वधगणक्राथाः पिप्पल्यादिसमायुताः
सक्षौद्रा एव देयाः स्युः कफज्वरविनाशनाः ।
कफघ्नैरेव संसिद्धा द्रव्यैश्चाप्यनुवासनाः ॥

कफज्वर उपर बस्तिओ.

१३२ पिप्पल्यादिगण अने आरग्वधादिगण एओना क्राथोने मधथी संयुक्त करी तेओनी निरूहबस्तिओ देवामां आवे तो तेओथी कफज्वर नष्ट थई जाय छे.

कफने हणनारा उपर कहेला गणोनां द्रव्योना क्राथथी तथा कल्कथी सिद्ध करेला स्नेहोनी अनुवासनबस्तिओ देवामां आवे तो तेओथी कफज्वर नष्ट थई जाय छे.

१३३ संसर्गे सन्निपाते च संसृष्टा बस्तयो हिताः
संसृष्टैरेव संसृष्टा द्रव्यैश्चाप्यनुवासनाः ॥

द्वंद्वजज्वर तथा सन्निपातज्वर उपर बस्तिओ.

१३३ जे दोषोना संयोगथी द्वंद्वजज्वर उत्पन्न थयो होय ते दोषोने हणनारां द्रव्योने मिश्रित करी तेओनी निरूहबस्तिओ देवामां आवे तो तेओथी द्वंद्वज ज्वरो नष्ट थई जाय छे. सन्निपातज्वर होय तो एक एक दोषने हणनारां त्रणे जातनां द्रव्योने मिश्रित करी तेओनी निरूहबस्तिओ देवी ए हितकारी थाय छे.

द्वंद्वजज्वर उपर तथा सन्निपातज्वर उपर अनुवासनबस्तिओनी पण ए प्रमाणेज योजनाओ करवी.

१३४वातरोगापहाः सर्वे स्नेहा ये सम्यगीरिताः
विना तैलं त एव स्युर्योज्या मारुतजे ज्वरे ॥
निखिलेनोपयोज्याश्च त एवाभ्यञ्जनादिषु ।

वातज्वर उपर अनुवासनबस्तिमां तैलनो निषेध अने अभ्यंगादिकमां सर्व स्नेहोनी अनुज्ञा.

१३४ वायुजन्य रोगोने हणनारा जे चार स्नेहो (घी, तैल, चरबी अने मज्जा) विवेचनपूर्वक केहेवामां आव्या छे तेओमां तैल शिवाय बीजा सघळा स्नेहोनी वातज्वर उपर अनुवासनबस्तिमां योजना करवी. वातज्वर उपर अनुवासनबस्तिमांज तैलनो निषेध छे माटे वातज्वर उपरना अभ्यंगादिकमां तो ए चारे स्नेहोनो व्यस्त रीते अथवा समस्त रीते उपयोग करवो.

१३५ पैत्तिके मधुरैस्तिक्तैः सिद्धं सर्पिः प्रयुज्यते
श्लैष्मिके कटुतिक्तैश्च संसृष्टानीतरेषु च ॥

पित्तज्वरादिक ज्वरो उपर अभ्यंगादिकने माटे विशिष्ट स्नेहो.

१३५ पित्तज्वर उपर सूत्रस्थानना ४२ मा

१ आंबा वगेरे वृक्षो न्यग्रोधादिगणना पेटामां केहेला छे ते लेवा.

अध्यायमां कहेला मधुरवर्गथी तथा तिक्तवर्गथी पकावेला घीनो अभ्यंगमां प्रयोग कराववो. कफज्वर उपर सूत्रस्थानना ४२ मा अध्यायमां कहेला कटुवर्गथी तथा तिक्तवर्गथी पकावेला घीनो अभ्यंगमां तथा पीवामां उपयोग कराववो. (जो के घी कफना जेवाज गुणोवाळुं छे तोपण द्रव्योथी थएला विशिष्ट संस्कारोने लीधे कफज्वरमां पण घीनो उपयोग कराववानुं कह्युं छे. केटलाएक तो कफज्वरमां तैलनो उपयोग कराववानुं पण केहे छे.) द्वंद्वज ज्वरोमां जे बे दोषोथी ज्वर उत्पन्न थयो होय ते दोषोने हरनारां द्रव्योने मिश्रित करी तेओथी पकावेला घी वगेरे मिश्रित स्नेहोनो उपयोग कराववो. सन्निपातज्वरोमां एक एक दोषने हरनारां त्रण जातनां द्रव्योने मिश्रित करी तेओथी पकावेला घी वगेरे स्नेहोनो उपयोग कराववो.

१३६ हृतावशेषं पित्तं तु त्वक्स्थं जनयति ज्वरम् ॥
पिबेदिक्षुरसं तत्र शीतं वा शर्करोदकम् ।
शालिषष्टिकयोरन्नमश्नीयात्क्षीरसंप्लुतम् ॥

निर्हरण कर्‍या छतां पण पित्त कांइक अवशेष रही गयुं होय तो ज्वरनी उत्पत्ति तथा तेनो प्रतीकार.

१३६ जो निर्हरण कर्‍या छतां पण पित्त कांइक अवशेष रही गयुं होय तो ते पित्त त्वचामां रहीने ज्वरने उत्पन्न करे छे. आवा ज्वरमां शेलडीनो रस पावो अथवा साकरनुं थंडुं जल पावुं अने राता चोखानो के साठीचोखानो भात दूधनी साथे जमाडवो.

१३७ कफवातोत्थयोरेवं स्वेदाभ्यङ्गौ प्रयोजयेत्

निर्हरण कर्‍या छतां पण वायु के कफ अवशेष रही गएल होय तो तेओथी ज्वरनी उत्पत्ति तथा तेनो प्रतीकार.

१३७ जो निर्हरण कर्‍या छतां पण वायु के कफ अवशेष रही गएल होय तो तेओ ज्वरने उत्पन्न करे छे. आवा ज्वरमां वैद्ये स्वेदनो तथा अभ्यंगनो प्रयोग करवो.

१३८ घृतं द्वादशरात्रात्तु देयं सर्वज्वरेषु च ॥
तेनान्तरेणाशयं स्वं गता दोषा भवन्ति हि ।

ज्वरवाळा माणसने केटली मुदत पछी घी देवुं ?

१३८ सघळा ज्वरोमां बार रात व्यतीत थया पछी घी देवुं. (जे ज्वरो लंघनथी, उष्णोदकथी तथा पाचनोथी पक्व थया होय ते सघळा ज्वरोमां बार रात व्यतीत थया पछी घी देवुं.) केम के एटलो काळ थतां वात आदि दोषो पोतपोतानां स्थानोमां प्राप्त थई जाय छे. (जो के वातज्वरादिकनो पाक ओछी मुदते पण थाय छे तो पण 'सन्निपातज्वरनो पाक बार राते थाय छे' एम जणाववाने माटे बार रातनुं ग्रहण कर्‍युं छे.)

१३९ धातून्प्रक्षोभयन्दोषो मोक्षकाले बलीयते तेन व्याकुलचित्तस्तु म्रियमाण इवेहते ।

ज्वरथी मुक्त थवानुं पूर्वरूप.

१३९ ज्वर ज्यारे छोडी जवानो थाय छे त्यारे धातुओने चलायमान करतो दोष बळवान् जेवो थाय छे अने तेम थतां व्याकुल चित्तवाळो रोगी जाणे मरवा तैयार थयो होय एवी चेष्टाओ करे छे. (दाह, पसीनो, भ्रम, तरश, कंप, विष्टानुं भेदन, बेभानपणुं, पीडित अवाज अने शरीरनुं अत्यंत दुर्गंधपणुं ए ज्वरथी मुक्त थवानुं पूर्वरूप छे अर्थात् ज्वर छोडी जवानो होय त्यारे ए लक्षणो देखाय छे. **शंका**–दोषोनो क्षय थया विना व्याधिनी निवृत्ति थती नथी माटे व्याधिनी निवृत्तिना समयमां क्षीण थएला दोषो उपर कह्याप्रमाणे दाह आदि भयंकररूप केम पकडे छे? **समाधान**–कोई क्षीण थया छतां पण पोताना विनाशना समयमां पोतानी शक्ति देखाडे छे. जेम के तैल खूटी जतां दीवो ठरी

जवानी स्थितिमां आवे छे त्यारे मोटी ज्वाला देखाडीने ठरी जाय छे. वाग्भटे पण कह्युं छे के 'धातुओने क्षुब्ध करतो दोष ज्यारे रोगीने छोडी देवा तैयार थाय छे त्यारे विलीन थई जवा लागे छे अने तेथी रोगी ते समये हांफे छे, कणकणे छे, वमन करे छे, पसीनावाळो थई जाय छे अने चेष्टारहित थाय छे.' त्रणे दोषोथी थएलो ज्वर, अंदर वेगवाळो ऊंडो ज्वर, अने धातुओमां रहेलो ज्वर एओ ज्यारे टळी जवाना थाय छे त्यारे तेओमांज उपर कहेलां दाहादिक लक्षणो थाय छे. बीजा प्रकारना ज्वरो ज्यारे टळी जवाना थाय छे त्यारे तो केवळ पसीनोज जोवामां आवे छे एम समजवुं.)

१४० लघुत्वं शिरसः कंडूर्मुखमापाण्डु पाकि च क्षवथुश्चान्नकाङ्क्षा च ज्वरमुक्तस्य लक्षणम् ।

ज्वरथी मुक्त थएलानां लक्षणो.

१४० ज्यारे रोगी ज्वरथी मुक्त थाय छे त्यारे शरीर हलकुं थई जाय छे, खरज आवे छे, मोहोडुं कांइक पांडु तथा पाकवाळुं थई जाय छे, छींक आवे छे अने अन्न खावानी इच्छा थाय छे. (ग्रंथांतरमां कह्युं छे के ज्यारे रोगी ज्वरथी मुक्त थाय छे त्यारे शरीर हलकुं थई जाय छे, क्लम मोह तथा ताप टळी जाय छे, मोहोडुं पाके छे, इंद्रियो समर्थ थाय छे, व्यथा रेहेती नथी, पसीनो प्राप्त थाय छे, मन स्वाभाविक स्थितिने प्राप्त थाय छे, छींक आवे छे, अन्न खावानी इच्छा थाय छे अने माथामां खरज आवे छे.)

१४१ शम्भुक्रोधोद्भवो घोरो बलवर्णाग्निसादकः रोगराड् रोगसंघातो ज्वर इत्युपदिश्यते ।
व्यापित्वात्सर्वसंस्पर्शात्कृच्छ्रत्वादन्तसम्भवात् । अन्तको ह्येष भूतानां ज्वर इत्युपदिश्यते ।

ज्वरनी चिकित्सामां मोटी काळजी राखवानी जरूर.

१४१ जे रोग सदाशिवना क्रोधथी उत्पन्न थएलो, घोर, बळने वर्णने तथा अग्निने नष्ट करनारो, रोगोना समूहरूप अने सघळा रोगोनो राजा छे ते 'ज्वर' केहेवाय छे. ए महारोग सघळां प्राणीओने प्राप्त थाय छे, सघळा शरीरमां व्याप्त थाय छे, अत्यंत पीडा करनारो छे, अन्य रोगवाळाने पण मरणसमयमां अवश्य प्राप्त थईने मारी नाखनार छे अने एवो होवाथी प्राणिओनो खरेखर काळज छे तेथी 'ज्वर' केहेवाय छे. ज्वर आप्रमाणे अति दुष्ट छे एटला माटे तेनी चिकित्सामां मोटी काळजी राखवानी जरूर छे.

अध्याय ४० मो.

१ अथातोऽतीसारप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अतीसारप्रतिषेध'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ गुर्वतिस्निग्धरूक्षोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः विरुद्धाध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चापि भोजनैः ॥
स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्च मिथ्यायुक्तैर्विषाद्भयात् । शोकाद्दुष्टाम्बुमद्यातिपानात्सात्म्यर्तुपर्ययात् ॥
जलाभिरमणैर्वेगविघातैः कृमिदोषतः । नृणां भवत्यतीसारो लक्षणं तस्य वक्ष्यते ॥

अतिसारनां दूरनां निदानो.

२ गुरुभोजनथी, (जे भोजन मात्राथी अथवा संस्कारथी भारेपणावाळुं होय ते गुरुभोजन केहेवाय छे.) अतिस्निग्ध भोजनथी, अति-

[1] जळनी पेठे वेहेता पातळा झाडानां अने तेना प्रकारांतरोरूप प्रवाहिका वगेरे रोगोनां निदानो, संप्राप्ति, लक्षणो तथा चिकित्सा वगेरेना निरूपण विषेनो.

रूक्ष भोजनथी, अतिउष्ण भोजनथी, अतिद्रवरूप भोजनथी, अतिस्थूल भोजनथी, (बराबर नहीं दळाएलां घऊं वगेरे धान्योना भोजनथी) अतिशीतल भोजनथी, विरुद्ध भोजनथी, (दूध अने माछलां इत्यादि संयुक्त पदार्थोनुं भोजन विरुद्ध भोजन केहेवाय छे.) अजीर्णमां भोजन करवाथी, समय वगर भोजन करवाथी, स्नेहन तथा स्वेदन आदि क्रियाओनो अतियोग थवाथी, ए क्रियाओनो विधिरहित प्रयोग करवाथी, विषथी, भयथी, शोकथी, दुष्ट जळ अत्यंत पीवाथी, मदिरानुं अत्यंत पान करवाथी, प्रकृतिविरुद्ध आहार करवाथी, ऋतुविरुद्ध आहार आदिथी, मूत्र तथा विष्टा आदिनी हाजतने बलात्कारे रोकवाथी, जळमां अत्यंत रमवाथी अने पक्वाशयना दुष्ट थएला कृमिओथी माणसोने अतिसार थाय छे के जेनुं लक्षण केहेवामां आवशे. (ए गुरुभोजन आदि जे कह्यां तेओ संभवने अनुसरीने वायु वगेरे दोषोने बगाडवानां कारणो थाय छे अने तेओथी बगडेला वायु वगेरे दोषो अतिसारना पासेनां निदानोरूप थाय छे. 'पोतानां कारणोथी दुष्ट थएला वायु आदिथी अतिसार थाय छे' एटलुंज केहेवुं जोइए ते छतां गुरुभोजन वगेरे कारणो नाम आपीने कह्यां तेनुं कारण ए छे के गुरुभोजन वगेरे कारणोथीज दूषित थएला वायु आदि दोषो घणुं करीने अतिसारने उत्पन्न करे छे पण लंघन, तरश, क्रोध, अभिघात, दहीं के अथाणां वगेरे पदार्थोथी कोप पामेला दोषो अतिसारने उत्पन्न करता नथी एम जणाववानुं छे. बीजां स्थलोमां पण ज्यां ज्यां दूरनां निदानो केहेवामां आव्यां छे त्यां पण ए प्रमाणेज समजवुं.)

३ संशम्यापां धातुरन्तः कृशानुम्
वर्चोमिश्रो मारुतेन प्रणुन्नः ।
वृद्धोऽतीवाधः सरत्येव यस्मा-
द्व्याधिं घोरं तं त्वतीसारमाहुः ॥

अतिसारनी संप्राप्ति तथा सामान्यरूप.

३ रस, जळ, मूत्र, स्वेद, मेद, कफ, पित्त अने रुधिर इत्यादि द्रवरूप धातुओनो समूह वृद्धि पामी, अंदरना अग्निने मंद करी नाखी, विष्टाथी युक्त थई, वायुना बळथी नीचे प्रेराई, पोताना स्वभावने छोडीने नदीनी पेठे प्रवाहरूपे गुदामांथी नीकळे छे ए भयंकर व्याधि अतिसार केहेवाय छे.

४ एकैकशः सर्वशश्चापि
शोकेनान्यः षष्ठ आमेन चोक्तः ।
केचित्प्राहुर्नैकरूपप्रकारं
नैवेत्येवं काशिराजस्त्ववोचत् ॥
दोषावस्थास्तस्य नैकप्रकाराः
काले काले व्याधितस्योद्भवन्ति ।

अतिसारनी संख्या.

४ ए अतिसार वायुथी थएलो, पित्तथी थएलो, कफथी थएलो, त्रणे दोषोथी थएलो, शोकथी थएलो अने आमथी थएलो ए रीते छ प्रकारनो केहेवाय छे. केटलाएक आचार्योए ए छ प्रकारोथी पण अधिक प्रकारो (रक्तातिसारादिक) कह्या छे पण भगवान् धन्वंतरिए तो ए छ भेदज राखीने अधिक भेदोनो निषेध कर्यो छे. कारण के जे वधारे प्रकारो छे तेओ अतिसारना भेदोरूप नथी पण अतिसारवाळाने समये समये दोषोनी जे अनेक स्थितिओ थाय छे तेओरूपज छे. (जो के घणुं करीने सघळा अतिसारोमां आमनो संभव छे तो पण छट्ठा भेदमां वधारे आम होय छे तेथी अने तेनी चिकित्सा पण घणुं करीने ग्राही औषध वगरनी करवी उचित छे तेथी तेने जूदो गण्यो छे.)

५ हृन्नाभिपायूदरकुक्षितोद-
गात्रावसादानिलसन्निरोधाः ॥
विट्सङ्ग आध्मानमथाविपाको
भविष्यतस्तस्य पुरःसराणि ॥

अतिसारनुं

५ ज्यारे अतिसार थवानो होय त्यारे प्रथमथी

हृदय, नाभि, गुदा, पेट अने कूख एओमां व्यथा, गात्रोमां ग्लानि, पवननो रोध, दस्तनी अटकायत, आफरो अने खाधेला अन्ननुं योग्यरीते नहीं पाकवुं एटलां चिह्नो थाय छे.

६ शूलाविष्टः सक्तमूत्रोऽन्त्रकूजी
स्रस्तापानः सन्नकट्यूरुजङ्घः ।
वर्चो मुञ्चत्यल्पमल्पं सफेनम्
रूक्षं श्यावं सानिलं मारुतेन ॥

वायुथी थएला अतिसारनुं लक्षण.

६ अतिसार वायुथी थएलो होय तो शूळ अत्यंत नीकळे छे, मूत्रनी अटकायत थाय छे, पेटमां आंतरडांओनो गडगड अवाज थाय छे, गुदा बाहार नीकळी जाय छे, कमर साथळ तथा पींडीओ शिथिल थई जाय छे अने विष्टा थोडी थोडी, फीणवाळी, रूक्ष, श्याम वर्णवाळी तथा पवनना अवाजवाळी नीकळे छे.

७ दुर्गन्ध्युष्णं वेगवन्मांसतोय-
प्रख्यं भिन्नं स्विन्नदेहोऽतितीक्ष्णम् ।
पित्तात्पीतं नीलमालोहितं वा
तृष्णामूर्छादाहपाकज्वरार्त्तः ॥

पित्तथी थएला अतिसारनुं लक्षण.

७ अतिसार पित्तथी थएलो होय तो पसीनो वळ्या करे छे, तरश लागे छे, मूर्छा आवी जाय छे, बळतरा थाय छे, गुदा पाकी जाय छे, ज्वर आवे छे अने विष्टा दुर्गंधवाळी, ऊनी, वेगवाळी, मांसना धोण जेवी, फाटेली, जेना उपरथी मांखीओ पण दूर थई जाय एवी अति तीक्ष्ण, तथा नील, पीत के राता वर्णवाळी नीकळे छे.

८ तन्द्रानिद्रागौरवोत्क्लेशसादी
वेगाशङ्की सृष्टविट्कोऽपि भूयः ।
शुक्लं सान्द्रं श्लेष्मणा श्लेष्मयुक्तं
भक्तद्वेषी निःस्वनं हृष्टरोमा ॥

कफथी थएला अतिसारनुं लक्षण.

८ अतिसार कफथी थएलो होय तो तंद्रा तथा निद्रा आव्या करे छे, शरीरमां भारेपणुं थाय छे, मोळ तथा हेबका आव्या करे छे, मलोत्सर्ग कर्या छतां पण वारंवार हाजतनी शंका रह्या करे छे, अन्न उपर द्वेष थाय छे, रुवाडां ऊभां थई जाय छे अने विष्टा सफेद, घाटी, कफवाळी तथा अवाजवगरनी नीकळे छे.

९ तन्द्रायुक्तो मोहसादास्यशोषी
वर्चः कुर्यान्नैकवर्णं तृषार्त्तः ।
सर्वोद्भूतः सर्वलिङ्गोपपत्तिः
कृच्छ्रश्चायं बालवृद्धेष्वसाध्यः ॥

त्रणे दोषोथी थएला अतिसारनुं लक्षण अने ते अतिसारनुं अतिकष्टसाध्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

९ अतिसार त्रणे दोषोथी थएलो होय तो तंद्रा थाय छे, मोह थाय छे, ग्लानि थाय छे, मोहोडुं सूकाय छे, तरशनी पीडा थया करे छे, सर्व दोषोना वर्णोवाळी विष्टा नीकळे छे अने उपर कहेलां सर्व दोषोनां चिह्नो जोवामां आवे छे. आ अतिसार (सन्निपातातिसार) अतिकष्टसाध्य छे अने बालकने के वृद्धने थयो होय तो असाध्य छे.

१० तैस्तैर्भावैः शोचतोऽल्पाशनस्य
बाष्पो वेगः पक्तिमाविध्य जन्तोः ।
कोष्ठं गत्वा क्षोभयेत्तस्य रक्तम्
तच्चाधस्तात्काकनन्तीप्रकाशम् ॥
वर्चोमिश्रं निष्पुरीषं सगन्धं
निर्गन्धं वा सार्यते तेन कोष्ठात् ।
शोकोत्पन्नो दुश्चिकित्स्योऽतिमात्रं
रोगो वैद्यैः कष्ट एष प्रदिष्टः ॥

शोकथी थएला अतिसारनुं संप्राप्तिपूर्वक लक्षण अने अतिकष्टसाध्यपणुं.

१० बंधुओना तथा धनना क्षय आदि ते ते कारणोथी शोक उत्पन्न थतां देहनी गरमीनी वराळरूप आंसु वेगथी कोठामां जई जठराग्निनी पाकशक्तिने मंद करी नाखी, ए अग्निना मंदपणाने लीधे थोडुं जमीशकता ते माणसना रुधि-

रने तेना (रुधिरना) स्थानकमांथी चलायमान करे छे. ए चलायमान थएलुं रुधिर गुदारूप मार्गेथी विष्टावाळुं अने गंधवाळुं अथवा विष्टा वगरनुं अने गंध वगरनुं चणोठी जेवुं रातुं नीकळे छे ए शोकथी थएलो अतिसार केहेवाय छे. आ शोकातिसार चिकित्सा करवामां अत्यंत मुशकेली भरेलो छे. कारण के शोक टाळयाविना एकला औषधथी तेनो प्रतीकार बनी शकतो नथी. आ कारणथी वैद्यो शोकातिसारने अतिकष्टसाध्य केहे छे. (आ अतिसार आगंतुज गणाय अने तेथी भयजन्य आदि सघळा आगंतुज अतिसारोनुं उपलक्षण छे एम समजवुं.)

११ आमाजीर्णैः प्रद्रुताः क्षोभयन्तः
कोष्ठं दोषाः संप्रदुष्टाः सभक्तम् ।
नानावर्णं नैकशः सारयन्ति
कृच्छ्राज्जन्तोः षष्ठमेनं वदन्ति ॥

आमथी थएला अतिसारनुं लक्षण.

११ आम नामना बहु अजीर्णथी चलायमान थएला अने कोठामां अन्नसहित मळने क्षोभावता दुष्ट थएला दोषो अनेक वार अनेक वर्णोवाळा अने अन्ननी कणीयोवाळा झाडाने गुदाथी वेहेवरावे छे अने ते झाडो अति कष्टथी नीकळे छे ए अतिसार आमथी थएलो केहेवाय छे अने छठ्ठो छे.

१२ संसृष्टमेभिर्दोषैस्तु न्यस्तमप्स्ववसीदति ।
पुरीषं भृशदुर्गन्धं विच्छिन्नं चामसंज्ञितम् ॥
एतान्येव तु लिङ्गानि विपरीतानि यस्य तु ।
लाघवं च मनुष्यस्य तस्य पक्कं विनिर्दिशेत् ॥

अतिसारनी चिकित्सा करवामां विष्टानुं आमपणुं तथा पक्कपणुं जाणवानी मोटी जरूर छे माटे आमनां तथा पक्कनां जूदां जूदां लक्षणो.

१२ विष्टा जो अतिप्रबल दोषोना संसर्गवाळी होय, पाणीमां नाखतां डूबी जती होय, अत्यंत दुर्गंधवाळी होय, चीकणी होय अने अल्प अल्प नीकळया करती होय तो तेने **आम** (काची) समजवी.

विष्टा जो उपर कहेलां चिह्नोथी विपरीत चिह्नोवाळी होय एटले पाणीमां नाखतां डूबती न होय, बहु दुर्गंधवाळी न होय, विशेषे करी चीकणी न होय जथाबंध नीकळती होय अने दोषोथी अत्यंत दूषित न होय तो तेने **पक्क** समजवी. (कफना संसर्गवाळी विष्टा पक्क होय तो पण पाणीमां डूबी जाय छे माटे तेना पक्कपणानी परीक्षा थोडा दुर्गंध वगेरे बीजां लक्षणो उपरथी करी लेवी.)

१३ सर्पिर्मेदोवेसवाराम्बुतैल-
मार्जं क्षीरं क्षौद्ररूपं स्रवेद्यत् ।
मञ्जिष्ठाभं मस्तुलुङ्गोपमं वा
विस्रं शीतं प्रेतगन्ध्यञ्जनाभम् ॥
राजीमद्वा चन्द्रकैः सन्ततं वा
पूयप्रख्यं कर्दमाभं तथोष्णम् ।
हन्यादेतद्यत्प्रतीपं भवेच्च
क्षीणं हन्युश्चोपसर्गाः प्रभूताः ॥
असंवृतगुदं क्षीणं दुरात्मानमुपद्रुतम् ।
गुदे पक्के गतोष्माणमतीसारकिणं त्यजेत् ॥

असाध्य अतिसारनां लक्षणो.

१३ जो विष्टा घीवाळा के मेदवाळा जल जेवी, मांसना वेशवारना पाणी जेवी, तैल जेवी, बकरीना दूध जेवी, मध जेवी, मजीठ जेवा वर्णवाळी, माथाना मगज जेवी, काचा मांसना जेवा गंधवाळी, टाढी, सडेला शबना जेवा गंधवाळी, आंजण जेवा वर्णवाळी, रेखाओवाळी अथवा मोरपींछना जेवा चांडलाओवाळी, परू जेवी, कादव जेवा वर्णवाळी, घणी उष्णतावाळी के दोषनां चिह्नोथी विपरीत चिह्नोवाळी स्रवती होय तो ते अतिसार रोगीने मारी नाखे छे. रोगी क्षीण थई गयो होय अने सोजो, शूळ, ज्वर, तरश, श्वास, खांसी, अरुचि, उलटी, हेडकी तथा मूर्छा ए उपद्रवो घणा होय

तो पण रोगी मरी जाय छे. अतिसारवाळो जे माणस गुदाने बीडी शकतो न होय, बलरहित थयो होय, अजितेंद्रिय होय, शूळ वगेरेथी उपद्रव पामेलो होय अने गुदाने पकावनारूं पित्त• विद्यमान छतां पण टाढां गात्रोवाळो अथवा जठराग्नि वगरनो थई गयो होय.तेने वैद्ये छोडी देवो.

१४ शरीरिणामतीसारः संभूतो येन केनचित्
दोषाणामेव लिङ्गानि कदाचिन्नातिवर्त्तते
स्नेहाजीर्णनिमित्तस्तु बहुशूलः प्रवाहिकः।
विसूचिकानिमित्तस्तु चान्योऽजीर्णनिमित्तजः॥
विषार्शःकृमिसम्भूतो यथास्वं दोषलक्षणः।

अतिसार गमे ते कारणथी उत्पन्न थयो होय तो पण तेमां दोषोनां चिह्नो अवश्य होय छे माटे तेना छथी वधारे भेदो कल्पवा नहीं.

१४ प्राणीओने अतिसार गमे ते कारणथी उत्पन्न थयो होय तो पण ते अतिसार दोषोनां चिह्नोनो कदी अतिक्रम करतो नथी. स्नेहना अजीर्णथी उत्पन्न थएलो अतिसार, घणां शूळवाळो अतिसार, प्रवाहिका के जेनुं लक्षण आ अध्यायना २४ मा विषयमां केहेवामां आवशे तेवाळो अतिसार, विषूचिकाथी (कालेराथी) उत्पन्न थएलो अतिसार, अन्नना अजीर्णथी उत्पन्न थएलो अतिसार, विषथी उत्पन्न थएलो अतिसार, अरशथी थएलो अतिसार अने कृमिओथी थएलो अतिसार इत्यादि घणा घणा प्रकारना अतिसारो थाय छे पण तेओ सघळा पोतपोताना संभवप्रमाणे ते ते दोषोनां लक्षणोवाळाज होय छे. (आ विषय अगीयारमा विषय पछी दाखल कर्यो होय तो वधारे संबद्ध लागे एम छे.)

१५ आमपक्वक्रमं हित्वा नातिसारे क्रिया यतः
अतः सर्वातिसारास्तु ज्ञेयाः पक्वामलक्षणैः।

सघळा अतिसारोमां विष्टानुं आमपणुं तथा पक्वपणुं जाणवानी जरूर.

१५ आमना तथा पक्वना क्रमने छोडी दईने अतिसारमां चिकित्सा बनी शकतीज नथी माटे आ अध्यायना १२ मा विषयमां कह्याप्रमाणे आमनां तथा पक्वनां लक्षणो उपरथी वैद्योए अतिसारोनुं आमपणुं तथा पक्वपणुं जाणी लेवुं अने ते पछी चिकित्सा करवी.

१६ तत्र लङ्घनमेवादौ पूर्वरूपेषु देहिनाम्॥
ततः पाचनसंयुक्तो यवाग्वादिक्रमो हितः।
अथ वा वामयित्वा तु शूलाध्माननिपीडितम्॥
पिप्पलीसैन्धवाम्भोभिर्लङ्घनाद्यैरुपाचरेत्।

खडयूषयवागूषु पिप्पल्याद्येव योजयेत्।
अनेन विधिना चामं यस्य वै नोपशाम्यति॥
हरिद्रादिं वचादिं वा पिबेत्प्रातः स मानवः।
आमातिसारिणां कार्यं नादौ सङ्ग्रहणं नृणाम्॥
तेषां दोषा विबद्धाः प्राग्जनयन्त्यामयानिमान्।
प्लीहपाण्ड्वामयानाहमेहकुष्ठोदरज्वरान्॥
शोफगुल्मग्रहण्यर्शःशूलालसकहृद्ग्रहान्।
सशूलं बहुशः कृच्छ्राद्विबद्धं योतिसार्यते॥
दोषान्सन्निचितांस्तस्य पथ्याभिः संप्रवर्त्तयेत्।
योऽतिद्रवं प्रभूतं च पुरीषमतिसार्यते॥
तस्यादौ वमनं कुर्यात्पश्चाल्लङ्घनपाचनम्।
स्तोकं स्तोकं विबद्धं वा सशूलं योऽतिसार्यते॥
अभयापिप्पलीकल्कैः सुखोष्णैस्तं विरेचयेत्।
आमे च लङ्घनं शस्तमादौ पाचनमेव वा॥
योगाश्चात्र प्रवक्ष्यन्ते त्वामातीसारनाशनाः।
देवदारुवचामुस्तानागरातिविषाभयाः॥
कलिङ्गातिविषाहिङ्गुसौवर्चलवचाभयाः।
अभया धान्यकं मुस्तं वालकं बिल्वमेव च॥
मुस्तं पर्पटकं शुण्ठी वचा सातिविषाभया।
अभयातिविषा हिङ्गु वचा सौवर्चलं तथा॥
चित्रकं पिप्पलीमूलं वचा कटुकरोहिणी।
पाठा वत्सकबीजानि हरीतकी महौषधम्॥
मूर्वा निर्दहनी पाठा त्र्यूषणं गजपिप्पली।
सिद्धार्थका भद्रदारु शताह्वा कटुरोहिणी॥
एला सावरकं कुष्ठं हरिद्रे कौटजा यवाः।

मेषशृङ्गी त्वगेला च कृमिघ्नं वृक्षकाणि च ॥
वृक्षादनी वीरतरुर्बृहत्यौ द्वे सहे तथा ।
एरण्डी त्वक्च तैन्दुकी दाडिमी कौटजी शमी॥
पाठा तेजोवती मुस्तं पिप्पली कौटजं फलम् ।
पटोलं दीप्यको बिल्वं हरिद्रे देवदारु च ॥
विडङ्गमभया पाठा शृङ्गवेरं घनं वचा ।
वचा वत्सकबीजानि सैन्धवं कटुरोहिणी ॥
हिङ्गु वत्सकबीजानि वचा बिल्वशलाटु च ।
नागरातिविषे मुस्तं पिप्पल्यो वात्सकं फलम्
महौषधं प्रतिविषे मुस्तं चेत्यामपाचनाः ।
प्रयोज्या विंशतिर्योगाः श्लोकार्द्धविहितास्त्विमे
धान्याम्लोष्णाम्बुमद्यानां पिबेदन्यतमेन वा ।
निष्क्काथान्वा पिबेदेषां सुखोष्णान्साम्बुसाधितान् ॥
निखिलेनोपदिष्टोऽयं विधिरामोपशान्तये ।

अतिसारमां आमनी सामान्य चिकित्सा.

१६ माणसोने अतिसारनां पूर्वरूपो देखाय के प्रथम तुरतज लंघन कराववुं अने ते पछी पाचनोथी (पकावनारा योगोथी) संयुक्त करेलां यवागू तथा यूष आदि पावारूप चिकित्सा करवी ए हितकारी थाय छे. (अतिसारमां प्रायशः आम होयज छे.)

माणस अतिसारमां शूळथी तथा आफराथी पीडातो होय तो तेने पीपळथी संयुक्त करेलां सैंधवनां जळथी वमन करावीने लंघन, स्वेदन तथा उष्ण जलपान आदि चिकित्सा करवी. घणुं करी वमनने अंते खडयूष तथा यवागूरूप हलकुं भोजन कराववुं अने ते खडयूष तथा यवागू एओमां पिप्पल्यादिगणनीज योजना करवी. (खडयूष तथा यवागू एओनां लक्षणो सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २२७ तथा २२९ मा विषयोमां जुवो. अतिसारवाळाओने भोजनमां द्रवोनो जे निषेध छे ते केवळ द्रवोनोज छे पण संस्कार आपेला द्रवोनो नथी एम आ उपरथी समजाय छे.)

आ विधिथी जे माणसनुं आम उपशांत न थाय ते माणसने प्रभातमां हरिद्रादि अथवा वचादिगण पीवराववो.

आमातिसारवाळां माणसोने प्रथम संग्रहण- (झाडानी अटकायत करनारूं) औषध देवुं नहीं. केम के एओना दोषोने जो शरुआतमां अटकाववामां आवे तो ते दोषो बरलना दरदने, पांडुरोगने, आनाहने, प्रमेहने, कोठने, उदररोगोने, ज्वरने, सोजाने, गुल्मने, ग्रहणीने, अरशोने, शूळने, अलसकने तथा हृद्ग्रहने उत्पन्न करे छे.

जे माणसने घणा कष्टथी शूळवाळो थोडो थोडो झाडो प्रवर्त्ततो होय ते माणसना एकठा थएला दोषोने हरडेना प्रयोगथी पाडी नाखवा. (शूळ करनारा जमा थएला दोषो विरेचनथी पडी जाय छे एटला माटे अतिसारमां पण विरेचननो प्रयोग करवानुं कह्युं छे.)

जे माणसने अत्यंत द्रवरूप घणो झाडो चालतो होय ते माणसने प्रथम वमन कराववुं अने पछी लंघन तथा पाचनरूप चिकित्सा करवी.

जे माणसने शूळवाळो थोडो थोडो झाडो अटकी अटकीने प्रवर्त्ततो होय ते माणसने सेहेज गरम करेला हरडेना तथा पीपळना कल्कोथी विरेचन देवुं.

आममां प्रथम लंघन कराववुं उचित छे पण शरीर लंघन करवामां समर्थ न होय तो प्रथमथीज पाचन देवुं उचित छे. हवे आमने नष्ट करनारा वीश पाचन योगो कहीए छीए.

देवदार, वज, मोथ, सूंठ, अतवस अने हरडे ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १

इंद्रजव, अतवस, हींग, संचळ, वज अने हरडे ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. २

हरडे, धाणा, मोथ, वाळो अने बीलुं ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ३

मोथ, खडसलीयो, सूंठ, वज, अतवस अने हरडे ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ४

', अतवस, हींग, वज अने संचळ ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ५

चित्रक, पीपळीमूळ, वज अने कडु ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ६

काळीपाड, इंद्रजव, हरडे अने सूंठ ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ७

मूर्वा, चित्रक, काळीपाड, सूंठ, मरी, पीपळ अने गजपीपळ ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ८

सफेद सर्षप, देवदार, शतावरी अने कडु ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ९

एळची, पठाणी लोदर, कठ, हळदर, दारूहळदर अने इंद्रजव ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १०

काकडाशींगी, तज, एळची, वावडींग अने इंद्रजव ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. ११

बांदो, वेलतरू अथवा आसोपालव, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी, जंगली अडदना छोड अने जंगली मगना छोड ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १२

एरडानी छाल, टींबरूनी छाल, दाडिमनी छाल, इंद्रजवना झाडनी छाल (कडाछाल) अने खीजडानी छाल ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १३

काळीपाड, तेजबल, मोथ, पीपळ अने इंद्रजव ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १४

पटोल, अजमा, बीलुं, हळदर, दारूहळदर तथा देवदार ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १५

वावडींग, हरडे, काळीपाड, सूंठ, मोथ अने वज ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १६

वज, इंद्रजव, सैंधव अने कडु ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १७

हींग, इंद्रजव, वज अने काचुं बीलुं ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १८

सूंठ, अतवस, मोथ, पीपळ अने इंद्रजव ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. १९

सूंठ, अतवस अने मोथ ए योगथी आमातिसार नष्ट थाय छे. २०

आ जे वीश योगो कह्या तेओनां चूर्णो धान्याम्लथी अथवा ऊना पाणीथी अथवा मद्यथी पावां अथवा जळमां एओना काथो करी ते काथो सेहेवाय तेवा गरम राखीने पावा.

आमनी शांतिने माटे आ सघळो विधि वामां आव्यो.

१७ हरीतकीमतिविषां हिङ्गु सौवर्चलं वचाम्
पिबेत्सुखाम्बुना जन्तुरामातीसारपीडितः ।
पटोलं दीप्यकं बिल्वं वचापिप्पलिनागरम्
मुस्तं कुष्ठं विडङ्गं च पिबेद्वापि सुखाम्बुना ।
शृङ्गवेरं गुडूचीं च पिबेदुष्णेन वारिणा ॥
लवणान्यथ पिप्पल्यो विडङ्गानि हरीतकी ।
चित्रकं शिंशपा पाठा शार्ङ्गेष्टा लवणानि च ॥
हिङ्गु वृक्षकबीजानि लवणानि च भागशः ।
हस्तिदन्त्यथ पिपल्यः कल्कावक्षसमौ स्मृतौ ॥
वचा गुडूचीकाण्डानि योगोऽयं परमो मतः ।
एते सुखाम्बुना योगा देयाः पञ्च सतां मताः ।
पयस्युत्क्वाथ्य मुस्तानां विंशतिं त्रिगुणाम्भसि ॥
क्षीरावशिष्टं तत्पीतं हन्त्यामं शूलमेव च ।
निवृत्तेष्वामशूलेषु यस्य न प्रगुणोऽनिलः ॥
स्तोकं स्तोकं रुजावच्च सशूलं योऽतिसार्यते ।
सक्षारलवणैर्युक्तं मन्दाग्निः प्रपिबेद्घृतम् ॥
क्षीरनागरचाङ्गेरीकोलदध्यम्लसाधितम् ।
सर्पिरच्छं पिबेद्वापि शूलातीसारशान्तये ।
दध्ना तैलघृतं पक्वं सव्योषजातिचित्रकैः ॥
सवेल्लपिप्पलीमूलदाडिमैर्वा रुगन्वितैः ।
निखिलो विधिरुक्तोऽयं वातश्लेष्मोपशान्तये ॥

वायुथी थएला तथा कफथी थएला आमातिसारनी विशिष्ट चिकित्सा.

१७ आमातिसारथी पीडाएला माणसने हरडे,

अतवस, हींग, संचळ तथा वज एओनुं चूर्ण सेहेवाय तेवा गरम पाणीथी पावुं. अथवा पटोल, अजमा, बीलानो गर्भ, वज, पीपळ, सूंठ, मोथ, कठ अने वावडींग एओनो कल्क सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावो. अथवा सूंठ अने गळो, एओनो कल्क ऊना पाणीनी साथे पावो. हवे उत्तम वृद्ध वैद्योए स्वीकारेला पांच योगो कहीए छीए.

पंचलवण, पीपळ, वावडींग अने हरडे एओनुं चूर्ण सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावाथी आमातिसार शांत थई जाय छे. १

चित्रक, शीशम, काळीपाड, इंद्रवारणी अथवा पीलुडी अने पंचलवण ए योग सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावाथी आमातिसार शांत थाय छे. २

हींग, इंद्रजव अने पंचलवण एओनो सम भागे योग करी सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावाथी आमातिसार शांत थई जाय छे. ३

एक तोलांभार मोटी इंद्रवारणीनो कल्क अने एक तोलांभार पीपळनो कल्क सेहेवाय तेवा ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी आमातिसार शांत थई जाय छे. ४

वज अने गळोनां डींडलां ए योग सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी आमातिसार नष्ट थई जाय छे. आ योग बहु उत्तम मानवामां आवेलो छे. ५

वीश मोथ अर्थात् चार तोलांभार मोथने त्रणगणा पाणीवाळा दूधमां उकाळी पाणी बळी जतां दूधज अवशेष रहे त्यारे ते दूधने उतारी पावामां आवे तो तेथी आम तथा शूळ नष्ट थई जाय छे.

आम तथा शूळ नष्ट थया पछी जेने वायु अनुलोम न थयो होय तेने अने जेने शूळवाळो तथा वेदनावाळो थोडो थोडो झाडो आव्या करतो होय तेने जो अग्नि मंद होय तो जवखारथी तथा पंचलवणोथी संयुक्त घी पावुं.

दूध, सूंठ, चुका नामनी खाटी भाजी, बोर, दहीं अने कांजी एओथी पकावेलुं चोखुं घी पावामां आवे तो तेथी शूळवाळो अतिसार शांत थई जाय छे.

दहीं, सूंठ, मरी, पीपळ, जायफल अने चित्रक एओथी पकावेलुं अथवा दहीं, वावडींग, पीपळीमूळ, दाडिम अने कठ एओथी पकावेलुं तैल तथा घी पावामां आवे तो तेथी आमातिसार नष्ट थई जाय छे.

वायुथी थएला तथा कफथी थएला आमातिसारनी आ सघळी विशिष्ट चिकित्सा केहेवामां आवी.

१८ तीक्ष्णोष्णवर्ज्यमेनं तु विदध्यात्पित्तजे भिषक् ।
यथोक्तमुपवासान्ते यवागूश्च प्रशस्यते ॥
बलयोरंशुमत्यां च श्वदंष्ट्राबृहतीषु च ।
शतावर्यां च संसिद्धा सुशीता मधुसंयुता ॥
मुद्गादिषु च यूषाः स्युर्दीपनीयैः सुसंस्कृताः ।
मृदुभिर्दीपनैस्तिक्तैर्द्रव्यैः स्यादामपाचनम् ॥
हरिद्रातिविषापाठावत्सबीजरसाञ्जनम् ।
रसाञ्जनं हरिद्रे द्वे बीजानि कुटजस्य च ।
पाठा गुडूची भूनिम्बस्तथैव कटुरोहिणी ॥
एतैः श्लोकार्द्धनिर्दिष्टैः क्राथाः स्युः पित्तपाचनाः
मुस्तं कुटजबीजानि भूनिम्बं सरसाञ्जनम् ॥
दार्वी दुरालभा बिल्वं वालकं रक्तचन्दनम् ।
चन्दनं वालकं मुस्तं भूनिम्बं सदुरालभम् ॥
मृणालं चन्दनं रोध्रं नागरं नीलमुत्पलम् ।
पाठा मुस्तं हरिद्रे द्वे पिप्पली कौटजं फलम् ॥
फलत्वचं वत्सकस्य शृङ्गवेरघृते वचा ।
षडेतेऽभिहिता योगाः पित्तातीसारनाशनाः ॥
बिल्वशक्रयवाम्भोदवालकातिविषाकृतः ।
कषायो हन्त्यतीसारं सामं पित्तसमुद्भवम् ॥
मधुकोत्पलबिल्वाम्रह्रीबेरोशीरनागरैः ।
कृतः क्राथो मधुयुतः पित्तातीसारनाशनः ॥

पित्तथी थएला आमातिसारनी विशिष्ट चिकित्सा.

१८ जो आमातिसार पित्तथी थएलो होय तो उपर कहेला विधिमांथी तीक्ष्ण तथा उष्ण पदार्थो काहाडी नाखीने बाकी सर्व विधिनी योजना करवी. प्रथम उपवास करावेल होय त्यारे उपवासने अंते बळदाणा, सहदेवी, शालिपर्णी, गोखरू, ऊभी भोरींगणी अने शतावरी एओथी सिद्ध करेली तथा मधथी संयुक्त करेली शीतल यवागू देवी ए उत्तम छे. तेमज यवागूने बदले गळो वगेरे दीपनीय द्रव्योथी जेओने संस्कार आपेला होय एवा मग वगेरेना यूषो देवा ए पण उत्तम छे.

पित्तथी थएला आमातिसारमां मृदुलपणावाळां दीपनीय तथा तिक्तद्रव्योथी आमने पकाववुं.

हळदर, अतवस, काळीपाड, इंद्रजव अने रसवंती एओनो क्राथ पावामां आवे तो तेथी पित्तकृत आमातिसारनुं पाचन थाय छे.

रसवंती, हळदर, दारूहळदर अने इंद्रजव एओनो क्राथ पावामां आवे तो तेथी पित्तकृत आमातिसारनुं पाचन थाय छे.

काळीपाड, गळो, करीयातुं अने कडु एओनो क्राथ पावामां आवे तो तेथी पित्तकृत आमातिसारनुं पाचन थाय छे.

मोथ, इंद्रजव, करीयातुं अने रसवंती एओनो योग पित्तकृत आमातिसारने नष्ट करवामां सिद्ध उपाय छे.

दारूहळदर, धमासो, बीलुं, वाळो अने रतांजलि एओनो योग पित्तकृत आमातिसारने नष्ट करवामां सिद्ध उपाय छे.

रतांजलि, वाळो, मोथ, करीयातुं अने धमासो एओनो योग पित्तकृत आमातिसारने नष्ट करवामां सिद्ध उपाय छे.

कमळनाळना तंतुओ, रतांजलि, लोदर, सूंठ अने नीलकमळ एओनो योग पित्तकृत आमातिसारने नष्ट करवामां सिद्ध उपाय छे.

काळीपाड, मोथ, हळदर, दारूहळदर, पीपळ अने इंद्रजव एओनो योग पित्तकृत आमातिसारने नष्ट करवामां सिद्ध उपाय छे.

इंद्रजव, कडाछाल, सूंठ, घी अने वज एओनो योग पित्तकृत आमातिसारने नष्ट करवामां सिद्ध उपाय छे.

सूंठ, इंद्रजव, मोथ, वाळो अने अतवस एओनो क्राथ प्रबल पित्तथी उत्पन्न थएला आमातिसारने नष्ट करे छे.

जेठीमध, नीलकमळ, बीलुं, आंबो, वाळो, काळोवाळो अने सूंठ एओनो क्राथ करी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तकृत आमातिसार नष्ट थाय छे.

१९ यदा पक्वोऽप्यतीसारः सरत्येव मुहुर्मुहुः।
ग्रहण्या मार्दवाज्जन्तोस्तत्र संस्तम्भनं हितम्
समङ्गा धातकीपुष्पं माञ्जिष्ठा लोध्रमुस्तकम्।
शाल्मलीवेष्टकं रोध्रं वृक्षदाडिमयोस्त्वचौ॥
आम्रास्थिमध्यं लोध्रं च बिल्वमध्यं प्रियङ्गवः।
मधुकं शृङ्गवेरं च दीर्घवृन्तत्वगेव च॥
चत्वार एते योगाः स्युः पक्वातीसारनाशनाः।
उक्ता य उपयोज्यास्ते सक्षौद्रास्तण्डुलाम्बुना॥
मौस्तं कषायमेकं वा पेयं मधुसमायुतम्।
लोध्राम्बष्ठाप्रियङ्ग्वादीन्गणानत्र प्रयोजयेत्॥
पद्मां समङ्गां मधुकं बिल्वजम्बूशलाटु वा।
पिबेत्तण्डुलतोयेन सक्षौद्रमगदङ्करम्॥
कच्छुरामूलकल्कं वा उदुम्बरफलोपमम्।
पयस्या चन्दनं पद्मा सिता मुस्ताब्जकेशरम्।
पक्वातिसारं योगोऽयं जयेत्पीतः सशोणितम्॥
निरामरूपं शूलार्त्तं लङ्घनाद्यैश्च कर्षितम्।
नरं रूक्षमवेक्ष्याग्निं सक्षारं पाययेद्घृतम्॥
बलाबृहत्यंशुमतीकच्छुरामूलसाधितम्।
मधूक्षितं समधुकं पिबेच्छूलैरभिद्रुतः॥

दार्वीबिल्वकणाद्राक्षीकटुकेन्द्रयवैर्घृतम् ।
साधितं हन्त्यतीसारं वातपित्तकफात्मकम् ॥
पयो घृतं च मधु च पिबेच्छूलैरभिद्रुतः ।
सिताजमोदकट्वङ्गमधुकैरवचूर्णितम् ॥
अवेदनं सुसम्पक्कं दीप्ताग्नेः सुचिरोत्थितम् ।
नानावर्णमतीसारं पुटपाकैरुपाचरेत् ॥
त्वक्पिण्डं दीर्घवृन्तस्य पद्मकेसरसंयुतम् ।
काश्मरीपद्मपत्रैश्चावेष्ट्य सूत्रेण तं दृढम् ॥
मृदावलिप्तं सुकृतमङ्गारेष्ववकूलयेत् ।
स्विन्नमुद्धृत्य निष्पीड्य रसमादाय तं ततः ॥
शीतं मधुयुतं कृत्वा पाययेतोदरामये ।
जीवन्तीमेषशृङ्ग्यादिष्वेवं द्रव्येषु साधयेत् ॥
तित्तिरं लुञ्चितं सम्यक् निष्कृष्टान्त्रं तु पूरयेत्॥
न्यग्रोधादित्वचां कल्कैः पूर्ववच्चावकल्पयेत् ।
रसमादाय तस्याथ सुस्विन्नस्य समाक्षिकम् ॥
शर्करोपहितं शीतं पाययेच्चोदरामये ॥
लोध्रचन्दनयष्ट्याह्वदार्वीपाठासितोत्पलात् ।
तण्डुलोदकसम्पिष्टाद्दीर्घवृन्तत्वगन्वितात् ॥
पूर्ववत्कूलितात्तस्माद्रसमादाय शीतलम् ।
मध्वक्तं पाययेच्चैतत्कफपित्तोदरामये ॥
एवं प्ररोहैः कुर्वीत वटादीनां विधानवित् ।
पुटपाकान् यथायोगं जाङ्गलोपहिताञ्शुभान् ॥
बहुश्लेष्मसरक्तं च मन्दवातं चिरोत्थितम् ।
कौटजं फाणितं चापि हन्त्यतीसारमोजसा ॥
अम्बष्ठादिमधुयुतं पिप्पल्यादिसमन्वितम् ।
पृश्निपर्णीबलाबिल्ववालकोत्पलधान्यकैः ॥
सनागरैः पिबेत्पेयां साधितामुदरामयी ।
अरलुत्वक्प्रियङ्गू च मधुकं दाडिमाङ्कुरान् ॥
आवाप्य पिष्ट्वा दधनि यवागूं साधयेद्द्रवाम् ।
एषा सर्वानतीसारान् हन्ति पक्वानसंशयम् ॥
रसाञ्जनं सातिविषं त्वग्बीजं कौटजं तथा ।
धातकीं नागरं चैव पाययेत्तण्डुलाम्बुना ॥
सशूलरक्तजं हन्ति योगोयं मधुसंयुतः ।
मधुकं बिल्वपेश्यश्च शर्करामधुसंयुताः ॥
अतीसारं निहन्युश्च शालिषष्टिकयोः कणाः ।
तद्वल्लीढं मधुयुतं बदरीमूलमेव तु ॥
बदर्य्यर्जुनजम्ब्वाम्रशल्लकीवेतसत्वचः ।
शर्कराक्षौद्रसंयुक्ताः पीता घ्नन्त्युदरामयम् ॥
एतैरेव यवागूश्च मण्डान् यूषांश्च कारयेत् ।
पानीयानि च तृष्णासु द्रव्येष्वेतेषु बुद्धिमान्॥
कृतं शाल्मलिवृन्तेषु कषायं हिमसंज्ञकम् ।
निशापर्युषितं पेयं सक्षौद्रं मधुकान्वितम् ॥

पक्वातिसारनी चिकित्सा.

१९ जो अतिसार पाकी गएलो छतां पण ग्रहणीना कोमळपणाने लीधे वारंवार स्त्रव्या करतो होय तो ते उपर संस्तंभन (झाडाने रोकनारी) चिकित्सा करवी ए हितकारी थाय छे. हवे पक्व अतिसारने नष्ट करनारा चार योगो कहीए छीए.

रीसामणी, धावणीनां फूल, मजीठ, लोदर अने मोथ ए योगने मधथी मिश्रित करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी पक्व अतिसार नष्ट थई जाय छे. १

मोचरस, लोदर, कडाछाल अने दाडिमनी छाल ए योगने मधथी मिश्रित करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी पक्व अतिसार नष्ट थई जाय छे. २

आंबानी गोठलीनी मज्जा, लोदर, बीलांनो गर्भ अने घऊलां ए योगने मधथी मिश्रित करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी पक्व अतिसार नष्ट थई जाय छे. ३

जेठीमध, सूंठ, अने अरडूसानी छाल ए योगने मधथी मिश्रित करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी पक्व अतिसार नष्ट थई जाय छे. ४

एकलो मोथनो क्वाथ मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पक्व अतिसार नष्ट थई जाय छे. (आ योग पाकेला पित्तरक्तातिसार उपर विशेष उपयोगी छे.)

लोध्रादि, अंबष्ठादि अने प्रियंग्वादि ए गणोना क्वाथोनो पण पक्व अतिसार उपर प्रयोग करवो.

भारंगी, रीसामणी, जेठीमध, काचुं बीलुं अने काचुं जांबूनुं फळ एओने मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी पक्क अतिसार नष्ट थई जाय छे.

धमासो अथवा कांकसी के जे बलानी जात छे तेनां मूलीयांनो एक तोलांभार कल्क मधथी संयुक्त करी पावामां आवे तो तेथी पक्क अतिसार नष्ट थई जाय छे.

खरणेर, रतांजलि, भारंगी अथवा मजीठ, साकर, मोथ अने कमळना केसरा ए योग पावामां आवे तो तेथी रुधिरवाळो पित्तकृत पक्क अतिसार नष्ट थई जाय छे.

पक्क अतिसारवाळो तमाम आम वगरनो होय, रूक्ष होय, लंघन वगेरेथी कर्षित थयो होय, प्रबल अग्निवाळो होय अने शूळथी पीडातो होय तो तेने जवखारसहित अथवा साजीखारसहित घी पावुं.

बळदाणा, ऊभी भोरींगणी, शालिपर्णी अने धमासानां अथवा पीळां फूलवाळी कांकसीनां मूळो एओना काथथी तथा कल्कथी घी पकावी तेमां जेठीमधनुं चूर्ण नाखी मधथी संयुक्त करीने ते घी पावामां आवे तो तेथी पक्क अतिसारनां शूळो टळी जाय छे अने अतिसार पण टळी जाय छे.

दारूहळदर, बीलुं, पीपळ, द्राक्ष, कडु अने इंद्रजव एओना काथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी एक एक दोषवाळा पक्कातिसारने अने त्रणे दोषोवाळा पक्कातिसारने पण नष्ट करे छे.

पक्कअतिसारमां शूळोथी दुखी थता माणसने दूध, घी अने मध समभागथी लई तेमां साकर, बोडीअजमोद, अरडूसो तथा जेठीमध एओनुं चूर्ण भभरावीने पावामां आवे तो तेथी सुख थाय छे.

प्रदीप्त अग्निवाळा माणसनो अतिसार वेदना वगरनो होय, अत्यंत पाकी गएलो होय, बहुज लांबा काळथी थयो होय अने अनेक वर्णोवाळो होय तो तेने शांत करवा माटे नीचे प्रमाणे पुटपाकोनी योजनाओ करवी.

अरडूसानी छाल अने कमळना केसरा एओने वाटी पिंड करी तेने सीवणनां तथा श्वेत कमळनां पानडांओमां वींटी, दोराथी मजबूत बांधी, योग्य रीते माटीनो थर दईने अंगाराओमां पकाववो. सारी पेठे लाल थई जाय त्यारे काहाडी लई, माटी वगेरे दूर करी नाखी, पिंडने नीचोवी, रस लई ते रसने थंडो पाडी मधथी संयुक्त करीने पावो. एवीज रीते कडवी खरखोडी अने काकडाशींगी इत्यादिक पदार्थोनो पुटपाक करीने तेनो रस पावो. काळा तेतरने मारी पीछडां, मोहोडुं तथा पग काहाडी नाखी अने कोठामांथी आंतरडां खेंची काहाडी नाखी, ते कोठामां न्यग्रोधादिगणनी छालोनो कल्क भरी उपर कहेली पुटपाकनी रीते पकावी, बराबर पाकी रहे त्यारे तेने नीचोवी रस लई ते रसने थंडो पाडी मधथी तथा साकरथी युक्त करीने पावो.

कफकृत के पित्तकृत पक्कातीसार होय तो लोदर, रतांजलि, जेठीमध, दारूहळदर, काळीपाड, श्वेत कमळ अने अरडूसानी छाल एओने चोखाना धोणमां वाटी पिंड करी तेने सीवणनां तथा श्वेतकमळनां पानडांओमां वींटी दोराथी मजबूत बांधी उपर माटीनो थर चडावी अंगाराओमां पकाववो. सारी पेठे लाल थई जाय त्यारे काहाडी लई, माटीने तथा पानडांओने दूर करी नाखी, पिंडने नीचोवी, रस लई ते रसने थंडो पाडी मधथी संयुक्त करीने पावो. एवीज रीते वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनी शाखाओना नीचेना भागोमांथी नीकळता अंकुरोने जांगलप्राणिओनां मांसोथी संयुक्त करी योग्य रीते तेओना सुंदर पुटपाको बनावीने तेओना रसोनो उपयोग कराववो.

जो पक्कातिसार घणा कफवाळो, रुधिरवाळो, मंद वायुवाळो अने लांबा काळथी थएलो होय तो इंद्रजवनी घाटी राब बनावी तेमां अंबष्ठादिगणनुं तथा पिप्पल्यादिगणनुं चूर्ण नाखी चूलाप-

रथी उतारी मधथी संयुक्त करीने पावी. आ राब पोताना प्रभावथी अतिसारने नष्ट करे छे.

पृश्निपर्णी, बळदाणा, बीलांनो गर्भ, वाळो, नीलकमळ, सूंठ अने धाणा एओथी सिद्ध करेली पेया पावामां आवे तो तेथी पक्वातिसार नष्ट थई जाय छ.

अरडूसानी छाल, धऊलां, जेठीमध अने दाडिमना अंकुरो एओने एकठां करी वाटी तेओनी दहींमां द्रवरूप यवागू पकावीने पावामां आवे तो ते यवागू पाकेला सघळा अतिसारोने हणे छे एमां कशो संशय नथी.

रसवंती, अतवस, कडाछाल, इंद्रजव, धावणी अने सूंठ एओने वाटी मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी शूळवाळो तथा रुधिरवाळो पक्वातिसार नष्ट थई जाय छे.

जेठीमध, काचां बीलांनो गर्भ, साकर अने मध एओथी संयुक्त करेला चोखाना तथा साठीचोखाना कणो पक्वातिसारने नष्ट करे छे.

बोरडीनां मूळोने वाटी मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी पक्वातिसार नष्ट थई जाय छे.

बोरडीनी छाल, कडायानी छाल, जांबूनी छाल, आंबानी छाल, सालेडानी छाल अने नेतरनी छाल एओने साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पक्वातिसार नष्ट थई जाय छे.

बुद्धिमान् वैद्ये पक्वातिसारने नष्ट करवा माटे उपर कहेलां द्रव्योथीज यवागूओ, मंडो तथा यूषो कराववा. अतिसारना उपद्रवरूप तरशने शांत करवा माटे पण ए द्रव्योथीज पाणि बनाववां.

शेमळाना फळनां दीटीआंओनुं रातवाशी हिम बनावी तेमां जेठीमधनुं चूर्ण तथा मध नाखीने पावामां आवे तो तेथी पक्वातिसार नष्ट थई जाय छे.

२० विबद्धवातविट् शूलपरीतः सप्रवाहिकः ।
सरक्तपित्तश्च पयः पिबेत्तृष्णासमन्वितः ॥
यथामृतं तथा क्षीरमतीसारेषु पूजितम् ।
चिरोत्थितेषु तत्पेयमपां भागैस्त्रिभिः शृतम् ॥
दोषशेषं हरेत्तद्धि तस्मात्पथ्यतमं स्मृतम् ।
हितः स्नेहविरेको वा बस्तयः पिच्छिलाश्च ये॥
पिच्छिलस्वरसे सिद्धं हितं च घृतमुच्यते ।
शकृता यस्तु संसृष्टमतिसार्य्येत शोणितम् ॥
प्राक् पश्चाद्वा पुरीषस्य सरुक्सपरिकर्त्तिकः ।
क्षीरिशुङ्गाशृतं सर्पिः पिबेत्सक्षौद्रशर्करम् ॥
दार्वीत्वक्पिप्पलीशुण्ठीलाक्षाशक्रयवैर्घृतम् ।
संयुक्तं भद्ररोहिण्या पक्वं पेयादिमिश्रितम् ॥
त्रिदोषमप्यतीसारं पीतं हन्ति सुदारुणम् ।
गौरवे वमनं पथ्यं यस्य स्यात्प्रबलः कफः ॥
ज्वरे दाहे सविड्बन्धे मारुताद्रक्तपित्तवत् ।
सम्पक्वे बहुदोषे च विबन्धे मूत्रशोधनैः ।
कार्यमास्थापनं क्षिप्रं तथा चैवानुवासनम् ॥
प्रवाहणे गुदभ्रंशे मूत्राघाते कटिग्रहे ।
मधुराम्लशृतं तैलं सर्पिर्वाप्यनुवासनम्
गुदपाकस्तु पित्तेन यस्य स्यादहिताशिनः ।
तत्र पित्तहराः सेकास्तत्सिद्धाश्चानुवासनाः
दधिमण्डसुराबिल्वसिद्धं तैलं समारुते ।
भोजने च हितं क्षीरं कच्छूरामूलसाधितम् ॥
अल्पाल्पं बहुशो रक्तं सरुग्य उपवेश्यते ।
यदा वायुर्विबद्धश्च पिच्छाबस्तिस्तदा हितः ।
प्रायेण गुददौर्बल्यं दीर्घकालातिसारिणाम् ।
भवेत्तस्माद्धितं तेषां गुदे तैलावचारणम् ॥

अतिसारनी अमुक अवस्थाओमां विशिष्ट चिकित्सा.

२० अधोवायुनो रोध थतो होय, विष्टा अटकी अटकीने नीकळती होय, शूळ बहु नीकळतां होय, प्रवाहिका थई होय, तरश लागती होय अने रक्तपित्त पण होय तो त्रण भाग पाणीमां पकावेलुं दूध पावुं. आ दूध लांबा काळथी थएला अतीसारो उपर पावुं. अतीसारो उपर दूध

अमृत जेवुं गुणकारी छे. आ दूध अवशेष रहेला दोषोने हरे छे एटला माटे अत्यंत पथ्य कहेलुं छे. एवा अतिसारो उपर विरेचनद्रव्योना संस्कारवाळा स्नेहथी विरेचन देवुं, अरडूसा तथा शेमळा वगेरे पिच्छिल द्रव्योना स्वरसोमां सिद्ध करेलुं घी देवुं अने चिकित्सास्थानना ३८ मा अध्यायमां कहेली तथा आ अध्यायना २६ मा विषयमां कहेली पिच्छिलबस्ति देवी ए हितकारी छे.

जे अतिसारवाळा माणसने विष्टानी साथे, विष्टाथी पेहेलां के विष्टाथी पछी लोही पडतुं होय तथा वाढ अने वेदना थती होय ते माणसने वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां नवीन पत्रोना तथा अंकुरोना क्वाथादिकथी पकावेलुं अने मधथी तथा साकरथी संयुक्त करेलुं घी पावुं. दारूहळदरनी छाल, पीपळ, सूंठ, लाख, इंद्रजव अने कडु एओनो कल्क नाखी चोगणा पाणीमां पकावेलुं घी पेया वगेरेमां मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी उपर कहेली स्थितिवाळो अतिसार त्रणे दोषोनां चिह्नोवाळो तथा अतिदारुण होय तो पण नष्ट थई जाय छे.

ज्वर, दाह, कफनी प्रबळताने लीधे पेटनुं भारेपणुं अने पवनना प्रतिलोमपणाने लीधे विष्टानी अटकायत पण होय तो जेम रक्तपित्तमां वमन पथ्य छे तेम पक्वातिसारमां पण वमन पथ्य छे.

जो पाकी गएलो अतिसार घणा दोषवाळो होय अने विष्टा अटकी अटकीने प्रवर्त्तती होय तो मूत्रने शुद्ध करनारां द्रव्योथी तुरत आस्थापन बस्ति देवी अने तेज द्रव्योथी संस्कार आपेला स्नेहथी अनुवासनबस्ति पण देवी.

जोर करावी झाडो वारंवार स्रवी जतो होय, आमण नीकळती होय, मूत्रनी अटकायत होय अने कमर झलाई गई होय तो काकोली आदि मधुर द्रव्योथी तथा बीजोरां आदि अम्ल द्रव्योथी पकावेला तैलथी के घीथी अनुवासनबस्ति देवी.

असाध्यपणाने लीधे नहीं पण अहित पदार्थोना भक्षणने लीधे पित्तथी गुदा पाकी गई होय तो पित्तने हरनारां दूध तथा शेलडीना रस वगेरे द्रव्योथी सेचनो करवां अने तेज द्रव्योथी सिद्ध करेला स्नेहोथी अनुवासनबस्तिओ देवी. तेमां पवनवाळो अतिसार होय तो दहींनो मंड, सुरा अने बीलांनो गर्भ एओथी पकावेला तैलथी अनुवासनबस्तिनो प्रयोग करवो अने धमासो के पीळां फूलवाळी कांकसी एओनां मूळोथी पकावेलुं दूध भोजनमां देवुं ए हितकारी छे.

जो अल्प अल्प अने लोहीवाळी विष्टा वारंवार नीकळती होय, वेदना थती होय अने वायुनी अटकायत होय तो पिच्छाबस्ति देवी ए हितकारी थाय छे.

घणुं करीने लांबा काळना अतिसारवाळा माणसोनी गुदा नबळी थाय छे माटे तेवा अतीसारने लीधे नबळी गुदावाळा माणसोनी गुदामां तैलनुं अवचारण करवुं ए हितकारी थाय छे.

२१कपित्थशाल्मलीफञ्जीवनकार्पासिदाडिमाः ।
पृथिका कच्छुरा शेलुः शणश्चुञ्चूः सदाधिका ॥
शालपर्णी पृश्निपर्णी बृहती कण्टकारिका ।
बला श्वदंष्ट्रा बिल्वानि पाठा नागरधान्यकम् ॥
एष आहारसंयोगो हितः सर्वातिसारिणाम् ।
तिलकल्को हितश्चात्र मौद्गो मुद्गरसस्तथा ॥

अतिसारवाळाओने माटे आहारमां संयुक्त करवानां द्रव्यो.

२१ कोठ, शेमळो, भारंगी, हीरवणी, दाडिम, पोथी, धमासो अथवा पीळां फूलवाळी कांकसी, गुंदो, शण, छूंछ, दहींथी संस्कार आपेला पदार्थो, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, ऊभीभोरींगणी, बेठीभोरींगणी, बळदाणा, गोखरू, बीलां, काळीपाड, सूंठ, धाणा, तलनो कल्क, मगनो कल्क अने मगना यूषादिक रस ए द्रव्योनो आहारमां संयोग आपवो ए सघळा अतिसारवाळाओने माटे हितकारी छे.

२२ पित्तातिसारी यो मर्त्यः पित्तलानि निषेवते
पित्तं प्रदुष्टं तस्याशु रक्तातीसारमावहेत् ॥
ज्वरं शूलं तृषं दाहं गुदपाकं च दारुणम् ।
यो रक्तं शकृतः पूर्वं पश्चाद्वाप्यतिसार्यते ॥
स पल्लवैर्वटादीनां ससर्पिः साधितं पयः ।
पिबेत्स शर्कराक्षौद्रमथ वाप्यभिमथ्य तत् ॥
नवनीतमथो लिह्यात्तक्रं चानुपिबेत्ततः ।
पियालशाल्मलीप्लक्षशल्लकीतिनिशत्वचः ॥
क्षीरे विमृदिताः पीताः सक्षौद्रा रक्तनाशनाः।
मधुकं शर्करां लोध्रं पयस्यामथ सारिवाम् ॥
पिबेच्छागेन पयसा सक्षौद्रां रक्तनाशनीम् ।
मञ्जिष्ठां सारिवां लोध्रं पद्मकं कुमुदोत्पलम् ॥
पिबेत्पद्मां च दुग्धेन छागेनासृक्प्रशान्तये ॥
शर्करोत्पललोध्राणि समङ्गा मधुकं तिलाः ॥
तिला मोचरसो लोध्रं तथैव मधुकोत्पलम् ।
सारिवा यष्टिकं लोध्रः प्रसवाश्च वटादिजाः
कच्छुरातिलकल्कश्च योगाश्चत्वार एव तु ॥
आजेन पयसा पेयाः सरक्ते मधुसंयुताः ।
द्रवे सरक्ते स्रवति बालबिल्वं सफाणितम् ॥
सक्षौद्रतैलं प्रागेव लिह्यादाशु हितं हि तत् ।
कौशकारो घृते भृष्टं लाजचूर्णं सिता मधु ॥
सशूलं रक्तपित्तोत्थं लीढं हन्त्युदरामयम् ।
बिल्वमध्यं समधुकं शर्कराक्षौद्रसंयुतम् ॥
तण्डुलाम्बुयुतो योगः पित्तरक्तोत्थितं जयेत् ।
गुदपाके च ये उक्तास्तेऽत्रापि विधयः स्मृताः
रुजायां वाऽप्रशाम्यन्त्यां पिच्छाबस्तिर्हितो भवेत्
रक्तविड्दोषबहुलं दीप्ताग्निर्योऽतिसार्य्यते ॥
विडङ्गत्रिफलाकृष्णाकषायैस्तं विरेचयेत् ।
अथवैरण्डसिद्धेन पयसा केवलेन वा ॥
यवागूर्विंतरेत्तस्य वातघ्नैर्दीपनैः कृताः ।

रक्तातिसार के जे पित्तातिसारनीज अवस्था छे तेनुं कारण, उपद्रवो तथा विशिष्ट चिकित्सा.

२२ पित्तातिसारवाळो जे माणस पित्तकर पदार्थोनुं अत्यंत सेवन करे ते माणसनुं पित्त अति दुष्ट थईने तुरत रक्तातिसारने (लोहीना झाडाने) उत्पन्न करे छे. लोहीनो झाडो थतां ज्वर, शूळ, तृषा, दाह अने गुदानो दारुण पाक ए उपद्रवो थाय छे.

अतिसारवाळा जे माणसने विष्टा नीकळवाथी पेहेलां अथवा पछी वारंवार लोही पडे ते माणसने वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां कोमळ पल्लवोना कल्कथी पकावेलुं दूध घीथी, साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावुं. अथवा ते दूधने मथी तेनुं मांखण काहाडीने चटाडवुं अने तेनी उपर छाश पावी.

चारोलीनी छाल, शेमळानी छाल, पीपर नामना क्षीरिवृक्षनी छाल, सालेडानी छाल अने मीणाहरमानी छाल एओना कल्कने दूधमां चोळी नाखी ते दूध मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तातिसार नष्ट थाय छे.

जेठीमध, साकर, लोदर, खरणेर अने उपलसरी एओना कल्कने बकरीना दूधमां चोळी नाखी ते दूध मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तातिसार नष्ट थाय छे.

मजीठ, उपलसरी, लोदर, पद्मकाष्ठ, कुमुद नामनुं कमळ, नीलकमळ अने भारंगी एओनो कल्क बकरीना दूधमां घोळीने पावामां आवे तो तेथी रुधिरनी शांति थाय छे.

साकर, नीलकमळ, लोदर, मजीठ, जेठीमध अने काळा तल एओनो कल्क बकरीना दूधमां घोळी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तातिसार नष्ट थई जाय छे.

काळा तल, मोचरस, लोदर, जेठीमध अने नीलकमळ एओनो कल्क बकरीना दूधमां घोळी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तातिसार नष्ट थई जाय छे.

उपलसरी, जेठीमध, लोदर अने वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां कोमल पल्लवो एओनो कल्क ब-

करीना दूधमां घोळी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तातिसार नष्ट थई जाय छे.

धमासो अथवा पीळां फूलवाळी कांकसी अने काळा तल एओनो कल्क बकरीना दूधमां घोळी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तातिसार नष्ट थई जाय छे.

वाळो द्रव स्रवतो होय तो काचां बीलांनो गर्भ अने पकावीने कांइक घाटो करेलो शेलडीनो रस एओने मधथी तथा तैलथी संयुक्त करी भोजनथी पेहेलां तुरत ते चटाडवुं ए हितकारी थाय छे.

कोशकार नामनी शेलडीनो रस, घीमां शेकेलुं साळनी धाणीनुं चूर्ण, साकर अने मध एओने संयुक्त करी चटाडवामां आवे तो तेथी शूलवाळो अने रुधिरथी तथा पित्तथी उत्पन्न थएलो रक्तातिसार नष्ट थई जाय छे.

बीलांनो गर्भ, जेठीमध, साकर अने मध एओने मिश्रित करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी रक्तातिसार नष्ट थई जाय छे.

गुदाना पाकवा उपर दूध तथा शेलडीना रस वगेरेनां सेचनरूप जे विधिओ आ अध्यायना २० मा विषयमां कहेला छे तेओ रक्तातिसार उपर पण हितकारी थाय छे.

रक्तातिसारनी वेदना शांत न थती होय तो पिच्छिलबस्ति देवी ए हितकारी छे.

प्रदीप्त जठराग्निवाळा जे माणसने रुधिरवाळो तथा घणी विष्टावाळो अतिसार प्रवर्त्ततो होय ते माणसने वावडींग, त्रिफळा तथा पीपळ एओना क्काथोथी विरेचन देवुं अथवा एरडानां मूळोथी पकावेला एकला दूधनुं विरेचन देवुं अने विरेचित थया पछी वायुने हणनारां दीपनीय द्रव्योथी बनावेली यवागूओ पावी.

२३ दीप्ताग्निर्निष्पुरीषो यः सार्यते फेनिलं शकृत् ॥
स पिबेत्फाणितं शुण्ठीदधितैलपयोघृतम् ।
स्विन्नानि गुडतैलाभ्यां भक्षयेद्बदराणि च ॥
स्विन्नानि पिष्टवद्वापि समं बिल्वशलाटुभिः ।
दध्नोपयुज्य कुल्माषान् श्वेतामनुपिबेत् सुराम् ॥
शशमांसं सरुधिरं समङ्गां सघृतं दधि ।
खादेद्धिपाच्य सेवेत मृद्वन्नं शकृतः क्षये ॥
संस्कृतो यमके माषयवकोलरसः शुभः ।
भोजनार्थं च दातव्यो दधिदाडिमसाधितः ॥
बिडं बिल्वशलाटूनि नागरं चाम्लपेषितम् ।
दध्नः सरश्च यमके भृष्टो वर्चःक्षये हितः ॥
सशूलं क्षीणवर्चा यो दीप्ताग्निरतिसार्यते ।
स पिबेद्दीपनैर्युक्तं सर्पिस्सङ्ग्राहकैः सह ॥

विष्टाना क्षयने लीधे पडता फीणवाळा मळनी चिकित्सा.

२३ प्रदीप्त अग्निवाळा अने विष्टाथी रहित थएला जे अतिसारवाळा माणसने फीणवाळो मळ नीकळया करतो होय ते माणसने अरधो पाकेलो राब जेवो शेलडीनो रस, सूंठ, दहीं, तैल, दूध अने घी एओ मिश्रित करीने पावां अथवा गोळमां तथा तैलमां सारी पेठे बाफेलां बोर खवराववां अथवा लोटनी पेठे काचां बीलांनी साथे बाफेलां बोर गोळनी तथा तैलनी साथे खवराववां अथवा जवनी बाफेली घूघरी दहींनी साथे खवराववी ने ते उपर लोटनी सफेद सुरा पावी अथवा ससलानुं लोहीथी संयुक्त मांस अने रीसामणी एओना कल्कने घीमां तथा दहींमां पकावीने तेनुं भक्षण कराववुं अने ते उपर विष्टाने उत्पन्न करनारा कोमळ अन्ननुं सेवन कराववुं.

जे माणसनी विष्टा क्षय पामी होय तेने उपर प्रमाणे औषधो देवा उपरांत घीमां तथा तैलमां दहींनी तथा दाडिमना रसनी साथे सिद्ध करेलो अडद, जव तथा बोर एओनो रस भोजनने माटे देवो ए पण हितकारी छे.

बीडलूण, कांचां बीलां तथा सूंठ एओना

कल्कने दहींनी तरथी मिश्रित करी घीमां तथा तैलमां शेकीने खवराववो ए पण विष्टाना क्षय उपर हितकारी छे.

प्रदीप्त जठराग्निवाळा अने क्षीण विष्टावाळा जे माणसने फीणवाळो तथा वेदनावाळो मळ नीकळ्या करतो होय ते माणसने चित्रक आदि दीपन पदार्थोथी तथा काचा बीलां वगेरे ग्राही पदार्थोथी संयुक्त करेलुं काचुं घी पावुं.

२४ वायुः प्रवृद्धो निचितं बलासं
नुदत्यधस्तादहिताशनस्य ।
प्रवाहमाणस्य मुहुर्मलाक्तं
प्रवाहिकां तां प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥

प्रवाहिका के जे अतिसारनीज विशिष्ट अवस्था छे तेनुं लक्षण.

२४ अत्यंत अहित पदार्थोने खानारा माणसनो अत्यंत वृद्धि पामेलो वायु ज्यारे ते माणस जोर करीने गुदामांथी अधोवायु मूकवा जाय त्यारे ते माणसनी गुदामांथी विष्टावते खरडाएला जमा थएला कफादिकने वारंवार थोडुं थोडुं नीचे काहाडे छे ते रोगने वैद्यो **प्रवाहिका** केहे छे.

२५ प्रवाहिका वातकृता सशूला
पित्तात्सदाहा सकफा कफाच्च ।
सशोणिता शोणितसम्भवा तु
ताः स्नेहरूक्षप्रभवा मतास्तु ॥
तासामतीसारवदादिशेच्च
लिङ्गं क्रमं चामविपक्वतां च ।

दोषोना संबंध उपरथी प्रवाहिकानां नोखनोखां रूपो, निदानो तथा अतिदेशथी चिकित्सादिक.

२५ जे प्रवाहिका शूळवाळी होय तेने वायुए करेली समजवी अने ते रूक्ष पदार्थोथी थाय छे. जे प्रवाहिका दाहवाळी होय तेने पित्तना संबंधथी समजवी अने ते तीक्ष्ण तथा उष्ण पदार्थोथी थाय छे. जे प्रवाहिका कफवाळी होय तेने कफना संबंधथी समजवी अने ते स्नेहवाळा पदार्थोथी थाय छे. जे प्रवाहिका लोहीवाळी होय तेने लोहीना संबंधथी समजवी अने ते तीक्ष्ण तथा उष्ण पदार्थोथी थाय छे. प्रवाहिकाओनां चिह्नो, चिकित्सादिक अने काचापणानी तथा पाकापणानी रीति अतिसारनी पेठेज समजी लेवां.

२६ न शान्तिमायाति विलङ्घनैर्या
योगैरुदीर्णा यदि पाचनैर्वा ॥
तां क्षीरमेवाशु शृतं निहन्ति
तैलं तिलाः पिच्छिलबस्तयश्च ।
आर्द्रैः कुशैः संपरिवेष्टितानि
वृन्तान्यथार्द्राणि हि शाल्मलीनाम् ॥
पक्वानि सम्यक्पुटपाकयोगे
नापोथ्य तेभ्यो रसमाददीत ॥
क्षीरं शृतं तैलहविर्विमिश्रं
कल्केन यष्टीमधुकस्य चापि ।
बस्तिं विदध्याद्भिषगप्रमत्तः
प्रवाहिकामूत्रपुरीषसङ्गे ॥
द्विपञ्चमूलीकथितेन शूले
प्रवाहमाणस्य समाक्षिकेण ।
क्षीरेण चास्थापनमग्र्यमुक्तं
तैलेन युञ्ज्यादनुवासनं च ॥
वातघ्नवर्गे लवणेषु चैव
तैलं च सिद्धं हितमन्नपाने ।
लोध्रं बिडं बिल्वशलाटु चैव
लिह्याच्च तैलेन कटु त्रिकालम् ॥
दध्ना ससारेण समाक्षिकेण
भुञ्जीत निःसारकपीडितस्तु ।
सुतप्तकुप्यक्वथितेन वापि
क्षीरेण शीतेन मधुप्लुतेन ॥
शूलार्दितो व्योषविदारिगन्धा
सिद्धेन दुग्धेन हिताय भोज्यः ।
वातघ्नसंग्राहकदीपनीयैः
कृतान्रसांश्चाप्युपभोजयेच्च ॥

खादेच्च मत्स्यान्रसमाशुयाच्च
वातघ्नसिद्धं सघृतं सतैलम् ।
एणाव्यजानां तु वटप्रवालैः
सिद्धानि सार्द्धं पिशितानि खादेत् ॥
मेध्यस्य सिद्धं त्वथ वापि रक्तं
बस्तस्य दध्ना घृततैलयुक्तम् ।
खादेत्प्रयुक्तैः शिखिलावजैश्च
भुञ्जीत यूषैर्दधिभिश्च मुख्यैः ॥
माषान्सुसिद्धान्घृतमण्डयुक्तान्
खादेच्च दध्ना मरिचोपदंशान् ॥
महारुजे मूत्रकृच्छ्रे भिषग्बस्तिं प्रदापयेत् ।
पयोमधुघृतोन्मिश्रं मधुकोत्पलसाधितम् ॥
स बस्तिः शमयेत्तस्य रक्तं दाहमथो ज्वरम् ।
मधुरौषधसिद्धं च हितं तस्यानुवासनम् ॥
रात्रावहनि वा नित्यं रुजार्तो यो भवेन्नरः ।
यथा यथा सतैलः स्याद्वातशान्तिस्तथा तथा ॥
प्रशान्ते मारुते चापि शान्तिं याति प्रवाहिका ।
तस्मात्प्रवाहिकारोगे मारुतं शमयेद्भिषक् ॥
पाठाजमोदा कुटजस्य बीजं
शुण्ठी समा मागधिकाश्च पिष्टाः ।
सुखाम्बुपीताः शमयन्ति रोगं
मेध्याण्डसिद्धं सघृतं पयो वा ॥
शुण्ठी घृतं सक्षवकं सतैलं
विपाच्य लीढ्वामयमाशु हन्यात् ।
गजाशनाकुम्भिकदाडिमानां
रसैः कृता तैलघृते सदध्नि ॥
बिल्वान्विता पथ्यतमा यवागू-
र्धारोष्णदुग्धस्य तथा च पानम् ।

प्रवाहिकानी विशिष्ट चिकित्सा.

२६ अत्यंत वृद्धि पामेली जे प्रवाहिका लंघनोथी के अतिसार उपर कहेला पाचन योगोथी शांति पामे नहीं ते प्रवाहिका पकावेलां दूधोथी, तैलथी, तिलोथी तथा पिच्छाबस्तिओथी नष्ट थई जाय छे. शेमळानां फळोनां आर्द्र (लीलां) डीटीयांओने आर्द्र दर्भोथी वींटी, ते उपर काळी माटीनो थर चडावी, पुटपाकनी रीति प्रमाणे सारी रीते पकावी, पाक्या पछी काहाडी लई कचरीने तेओमांथी रस लेवो: ए रसने दूधमां मेळवी दई ते दूधने पकावी तैलथी, घीथी तथा जेठीमधना कल्कथी मिश्रित करी वस्त्रथी गाळी लेवुं अने पछी वैद्ये सावधानपणुं राखी ते दूधथी पिच्छाबस्ति देवी. आ प्रमाणे करवाथी प्रवाहिका अने मूत्रनी तथा विष्टानी अटकायत नष्ट थई जाय छे. जो प्रवाहिका शूळवाळी होय तो दूधने दशमूळीना क्वाथथी पकावी मधथी मिश्रित करीने ते दूधथी बस्ति देवी. दशमूळीना क्वाथथी पकावेला तैलथी अनुवासनबस्ति पण देवी. वायुने हणनारा विदारिगंधादिगणथी तथा सैंधव आदि पंचलवणोथी पकावेलुं तैल प्रवाहिकावाळाने अन्नपानमां देवुं ए हितकारी थाय छे.

प्रवाहिकावाळा माणसने लोदर, बिडलूण, काचां बीलांनो गर्भ, सूंठ, मरी अने पीपळ एओ तैलथी मिश्रित करीने दिवसमां त्रण वखत चटाडवामां आवे तो तेथी प्रवाहिका नष्ट थई जाय छे.

जो रोगी प्रवाहिकाना भेदरूप निस्सारकथी (गळकाथी ?) पीडातो होय तो तेने घाटी तरवाळा दहींमां मध नाखी ते दहींथी भोजन करावvुं अथवा सोनारूपा शिवायना धातुने सारी पेठे तपावी, ते धातु दूधमां नाखी, तेथी तपेला दूधने थंडुं पडवा दई तेमां मध नाखीने ते दूधथी भोजन करावvुं. (केटलाएक ग्रंथोमां तो कह्युं छे के सोनाने के रूपाने सारी पेठे तपावी तेने दूधमां नाखी तेथी तपेला दूधने थंडुं पडवा दई तेमां मध नाखीने ते दूधथी भोजन करावvुं.) जो निस्सारकवाळो माणस शूळथी पीडातो होय तो तेने सूंठ, मरी, पीपळ तथा विदारिगंधादिगण एओथी पकावेला दूधथी भोजन देवुं ए हितकारी छे. ए माणसने वायुने हणनारां, ग्राही तथा दीपनीय औषधोथी संस्कार आपेला मांसना

रसा जमाडवा, माछलां खवडाववां अने वायुने हणनारां द्रव्योथी मांसना रसाने पकावी घीथी तथा तैलथी मिश्रित करीने ते पण पावो. काळीयार, गाडर अने बकरां एओनां मांसोने वडनां कोमळ पल्लवोनी साथे पकावीने ते मांसो खवडाववां. जाडा बकराना लोहीने सकावी तेने वायुने हणनारा पदार्थोथी पकावेला घीमां तथा तैलमां पकावी तथा दहींनो संस्कार आपीने ते लोही खवराववुं. मयूरोनां तथा लावा नामनां पक्षीओनां मांसोनी गोठवणोनी साथे, खडयूषोनी साथे तथा उत्तम प्रकारनां दहींओनी साथे भोजन कराववुं. सारी पेठे बाफेला अडदोने घीनी उपरन्ना मंडथी युक्त करी मरीनुं चूर्ण भभरावीने ते अडदो पण दहींनी साथे खवडाववा. निस्सारकमां मोटी वेदनावाळुं मूत्रकृच्छ्र थयुं होय तो जेठीमधना तथा नीलकमळना कल्कथी पकावेला अने मधथी तथा घीथी मिश्रित करेला दूधथी बस्ति देवी. आ बस्तिथी रुधिर, दाह अने ज्वर शांत थई जाय छे. जे रोगी निस्सारकनी वेदनाथी निरंतर पीडातो होय तेने काकोल्यादि मधुर औषधोना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेला तैलथी दिवसे अथवा राते पण अनुवासनबस्ति देवी ए हितकारी थाय छे. (जो के अनुवासनबस्ति देवानो रात्रिमां निषेध छे तो पण आवा विषयमां रात्रिए देवानी पण छूट छे.)

जेम जेम तैलनी योजनाओ करवामां आवे तेम तेम वायुनी शांति थाय छे अने वायुनी शांति थाय तो प्रवाहिकानी शांति थाय छे माटे वैद्ये प्रवाहिकामां वायुनी शांति करवी.

काळीपाड, बोडीअजमोद, इंद्रजव, सूंठ अने पीपळ एओने समभागे लई वाटी सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी प्रवाहिका शांत थाय छे.

जाडा बकराना वृषणोना कल्कथी दूध पकावी घीथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो ते दूध प्रवाहिकाने तुरत नष्ट करे छे.

सूंठ तथा नाकछीकणी एओना क्काथथी तथा कल्कथी तैलने तथा घीने पकावी ते चटाडवामां आवे तो तेथी प्रवाहिका तुरत नष्ट थई जाय छे.

सालेडो, कायफळ अने दाडिम एओना क्काथमां बनावेली, बीलांना गर्भथी युक्त करेली अने दहीं तैल तथा घी एओथी संस्कृत करेली यवागू प्रवाहिका उपर अत्यंत पथ्य छे.

शेडकढ्युं दूध पीवराववुं ए पण प्रवाहिका उपर अत्यंत पथ्य छे.

२७ लघूनि पथ्यान्यथ दीपनानि
स्निग्धानि भोज्यान्युदरामयेषु ॥
हिताय नित्यं वितरेच्च भोज्यम्
योगांश्च तांस्तान् भिषगप्रमत्तः ।
तृष्णापनयनी लघ्वी दीपनी बस्तिशोधनी ।
ज्वरे चैवातिसारे च यवागूः सर्वदा हिता ॥

अतिसारनी व्याधिविपरीत चिकित्सानो उपसंहार.

२७ वैद्ये सावधान रही दोषोनुं तथा अवस्थाओनुं विवेचन करीने अतिसारो उपर हितने माटे सर्वदा हलका, पथ्य, अग्निने दीप्त करनारा तथा स्निग्धपणावाळा आहारो देवा अने औषधोना ते ते योगो पण देवा. यवागू तरशने टाळनारी छे, हलकी छे, अग्निने दीप्त करनारी छे अने मूत्राशयने शुद्ध करनारी छे एटला माटे ज्वरमां अने अतिसारमां सर्वदा हित करनारी गणवामां आवे छे.

२८रौक्ष्याज्जाते क्रिया स्निग्धा रूक्षा स्नेहनिमित्तजे
भयजे सान्त्वनापूर्वा शोकजे शोकनाशनी ॥
विषार्शःकृमिसंभूते हिता चोभयशर्मदा ।

अतिसारोनी हेतुविपरीत चिकित्सा.

२८ अतिसार जो रूक्षथी उत्पन्न थयो होय तो स्निग्ध क्रिया करवी, स्नेहथी उत्पन्न थयो होय

तो रूक्ष क्रिया करवी, भयथी उत्पन्न थयो होय तो सांत्वना पूर्वक क्रिया करवी, शोकथी उत्पन्न थयो होय. तो शोकने नष्ट करनारी क्रिया करवी अने विषथी, अरशोथी के कृमिओथी थयो होय तो ते विषादिकने तथा अतिसारने पण नष्ट करनारी क्रिया करवी ए हितकारी छे.

२९ छर्दिमूर्छातृडाद्यांश्च साधयेदविरोधतः ॥

अतिसारना उपद्रवोनी चिकित्सानी पद्धति.

२९ उलटी, मूर्छा तथा तरश वगेरे उपद्रवोने मूलव्याधिनी चिकित्साथी विरुद्ध न थाय एवी चिकित्साओथी शांत करवा.

३०समवाये तु दोषाणां पूर्वं पित्तमुपाचरेत् ।
ज्वरे चैवातिसारे च सर्वत्रान्यत्र मारुतम्

अतिसारमां बे के त्रण दोषोनो संयोग होय तो कया दोषनी प्रथम चिकित्सा करवी?

३० अतिसारमां के ज्वरमां बे के त्रण दोषोनो संयोग होय तो प्रथम पित्तनी चिकित्सा करवी अने बाकीना रोगोमां बे के त्रण दोषोनो संयोग होय तो प्रथम वायुनी चिकित्सा करवी. (अतिसारमां केवळ वायुनो तथा कफनो संयोग होय तो प्रथम वायुनीज चिकित्सा करवी.)

३१यस्योच्चारं विना मूत्रं सम्यग्वायुश्च गच्छति।
दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामयः ॥

अतिसारथी मुक्त थएला माणसनुं लक्षण.

३१ जेनो अग्नि प्रदीप्त थयो होय, कोठो हलको थयो होय अने साथे विष्टाना संबंधविना मूत्र अने अधोवायु चोखी रीते नीकळवा लाग्यां होय ते माणसने अतिसारथी मुक्त थएलो समजवो.

३२कर्मजा व्याधयः केचिद्दोषजाः सन्ति चापरे
कर्मदोषोद्भवाश्चान्ये कर्मजास्तेष्वहेतुकाः ॥
नश्यन्ति त्वक्रियाभिस्ते क्रियाभिः कर्मसङ्क्षये ।
शाम्यन्ति दोषसम्भूता दोषसंक्षयहेतुभिः ॥
तेषामल्पनिदाना ये प्रतिकष्टा भवन्ति च ।
मृदवो बद्धदोषा वा कर्मदोषोद्भवास्तु ते ॥
कर्मदोषक्षयकृता तेषां सिद्धिर्विधीयते ।

व्याधिओना त्रण भेदो, तेओनां लक्षणो अने तेओनी शांतिना प्रकारोनुं विवेचन.

३२ केटलाएक व्याधिओ कर्मथी उत्पन्न थएला होय छे, केटलाएक व्याधिओ दोषोथी उत्पन्न थएला होय छे अने केटलाएक व्याधिओ ए बन्नेथी (कर्मथी तथा दोषथी) उत्पन्न थएला होय छे.

जे व्याधिओ हेतुओविना उत्पन्न थएला होय छे तेओ कर्मज (कर्मथी उत्पन्न थएला) केहेवाय छे. ए व्याधिओ प्रायश्चित्तादिकथी कर्मनो क्षय थतां चिकित्साओ विनाज नष्ट थाय छे.

जे व्याधिओ दोषोथी उत्पन्न थएला होय छे तेओ दोषोनो क्षय करनारी चिकित्साओथी नष्ट थाय छे.

जे मोटा अथवा नाहाना व्याधिओ अल्प निदानोवाळा छतां पण अत्यंत दुःखदायी होय तेओ कर्म अने दोष ए बन्नेथी उत्पन्न थएला होय छे. ए व्याधिओ प्रायश्चित्तादिक अने चिकित्सा ए बन्नेना संयोगथी नष्ट थाय छे.

३३ दुष्यति ग्रहणी जन्तोरग्निसादनहेतुभिः ॥
अतिसारे निवृत्तेऽपि मन्दाग्नेरहिताशिनः ।
भूयः संदूषितो वह्निर्ग्रहणीमभिदूषयेत् ॥

अतिसारमां ग्रहणीरोगनी धास्ती अने ते रोगनी संप्राप्ति.

३३ अतिसार मटी गया पछी अने मटी गया विना पण, मंद अग्निवाळा अने अहित पदार्थोनुं भक्षण करनारा माणसनो फरीवार दूषित थएलो अग्नि ग्रहणीने दूषित करे छे. वखतपर अतिसार उत्पन्न नहीं थया छतां पण अग्निने मंद करनारां निदानोथी ग्रहणी दूषित थई जाय छे.

३४तस्मात्कार्यः परीहारस्त्वतीसारे विरिक्तवत्
यावन्नप्रकृतिस्थः स्याद्दोषतः प्राणतस्तथा ॥

अतिसारमां परेजी अने तेनी मुदत.

३४ अतिसारमां उपर कह्या प्रमाणे ग्रहणीरोगनी धास्ती छे एटला माटे अतिसारना रोगीए ज्यां सूधी दोष प्रकृतिस्थ न थएल होय अने स्वाभाविक बळ प्राप्त न थएल होय त्यां सूधी घणा पवनवाळी जग्यानुं सेवन करवुं नहीं, टाढा पाणीनो त्याग करवो, अजीर्ण करनारा अन्ननो त्याग करवो, कसरत करवी नहीं, मैथुन करवुं नहीं अने अभ्यंग करवो नहीं.

३५षष्ठी पित्तधरा नाम या कला परिकीर्त्तिता
पक्वामाशयमध्यस्था ग्रहणी सा प्रकीर्त्तिता ॥
ग्रहण्या बलमग्निर्हि स चापि ग्रहणीश्रितः ।
तस्मात्संदूषिते वह्नौ ग्रहणी संप्रदुष्यति ॥

ग्रहणीनुं निरूपण तथा तेना दूषित अग्निथी दूषित थवामां उपपत्ति.

३५ शारीरस्थानना चोथा अध्यायना चोथा विषयमां 'पित्तधरा' नामनी जे छठ्ठी कळा पक्वाशयना तथा आमाशयना मध्यमां रहेली कही छे ते ग्रहणी केहेवाय छे. ए ग्रहणीनुं बळ जठराग्नि छे अने ते जठराग्नि ग्रहणीमां रहेलो छे तेथी ते अग्नि दूषित थाय तो ग्रहणी पण दूषित थाय छे.

३६ एकशः सर्वशश्चैव दोषैरत्यर्थमूर्छितैः ।
सा दुष्टा बहुशो भुक्तमाममेव विमुञ्चति ॥
पक्वं वा सरुजं पूति मुहुर्बद्धं मुहुर्द्रवम् ।
ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदो जनाः ॥

ग्रहणीरोगनुं संख्यापूर्वक सामान्य लक्षण.

३६ ए ग्रहणी अत्यंत वृद्धि पामेला वायुथी, पित्तथी, कफथी के त्रणे दोषोथी दूषित थईने, खाधेला अन्नादिकने घणीवार काचूं ने काचूंज मूके छे, पाकूं पण मूके छे अने ते अन्नादिक वेदनासहित, दुर्गंधवाळुं, वारंवार बंधातुं अने वारंवार द्रवरूप पडे छे. आ रोगने आयुर्वेद जाणनारा विद्वानो ग्रहणीरोग केहे छे. (वाग्भट केहे छे के 'ग्रहणीदोष होय तो अन्नना अजीर्णपणाना समयमां आमवाळो मळ पडे छे अने कोई वखते अन्नवाळो मळ पडे छे. अन्नना जीर्णपणाना समयमां पाको मळ पडे छे, कोई वखते मुदल पडतो नथी, कोई वखते अकस्मात् वारंवार बंधाएलो पडे छे अने कोई वखते अकस्मात् वारंवार शिथिलपणावाळो पडे छे' भावमिश्र केहे छे के 'अतिसारमां द्रवधातुनीज प्रवृत्ति थाय छे अने ग्रहणीमां तो बंधाएला मळनी पण प्रवृत्ति थाय छे' एटलो अतिसारने अने ग्रहणीने भेद छे.)

३७तस्योत्पत्तौ विदाहोऽन्ने सदनालस्यतृट्क्लमाः
बलक्षयोऽरुचिः कासः कर्णक्ष्वेडोऽन्त्रकूजनम् ॥

ग्रहणीरोगनुं पूर्वरूप.

३७ ग्रहणीरोग उत्पन्न थवानो होय त्यारे अन्न बराबर पचतुं नथी, ग्लानि थाय छे, आलस्य थाय छे, तरश लाग्या करे छे, क्लम थाय छे, बळनो क्षय थाय छे, अरुचि थाय छे, खांसी थाय छे, कानमां अनेक प्रकारनो अवाज थतो संभळाय छे अने आंतरडांओमां गडगडाट थाय छे.

३८ अथ जाते भवेज्जन्तुः शूनपादकरः कृशः ।
पर्वरुग्लौल्यतृट्छर्दिज्वरारोचकदाहवान् ॥
उद्गिरेच्छुक्ततिक्ताम्ललोहधूमामगन्धिकम् ।
प्रसेकमुखवैरस्यतमकारुचिपीडितः ॥

ग्रहणीरोगनुं स्पष्ट थएलुं रूप.

३८ ग्रहणीरोग उत्पन्न थाय त्यारे माणस सूजेला (सोजावाळा) हाथपगवाळो तथा कृश थई जाय छे, सांधाओमां वेदना थाय छे, सघळा रसोमां लोलुपपणुं थाय छे, तरश लागे छे, उलटी थाय छे, ज्वर आवे छे, बळतरा थाय छे, वारंवार थूकवुं पडे छे, मोहोडुं विरस थई जाय छे, तमकश्वास थाय छे, अत्यंत अरुचि थाय छे अने अथाणाना पाणीना जेवा गंधवाळा, कडवा

गंधवाळा, खाटा गंधवाळा, लोढाना जेवा गंध-वाळा, धूमाडाना जेवा गंधवाळा तथा काचा मांसादिकना जेवा गंधवाळा घचरका आवे छे.

३९ वाताच्छूलाधिकैः पायुहृत्पार्श्वोदरमस्तकैः॥
पित्तात्सदाहैर्गुरुभिः कफात्त्रिभ्यास्त्रिलक्षणैः ।

दोषोना भेदथी ग्रहणीरोगनां जूदां जूदां विशिष्ट लक्षणो.

३९ ग्रहणीरोग वाथुथी थयो होय तो गुदा, हृदय, पडखां, उदर तथा माथुं एओमां अत्यंत शूळ नीकळे छे. ग्रहणीरोग पित्तथी थयो होय तो गुदा, हृदय, पडखां, उदर तथा माथुं एओमां दाह थाय छे. ग्रहणीरोग कफथी थयो होय तो गुदा, हृदय, पडखां, उदर तथा माथुं एओमां भारेपणुं थाय छे अने ग्रहणीरोग त्रणे दोषोथी थयो होय तो गुदा, हृदय, पडखां, उदर तथा मस्तक एओमां शूळ, दाह तथा भारेपणुं ए त्रणे थाय छे.

४० यथादोषोच्छ्रयं तस्य विशुद्धस्य यथाक्रमम्
पेयादिं वितरेत्सम्यग्दीपनीयोपसम्भृतम् ।
ततः पाचनसङ्ग्राहिदीपनीयगणत्रयम् ॥
पिबेत्प्रातः सुरारिष्टस्नेहमूत्रसुखाम्बुभिः ।
तक्रेण वाथ तक्रं वा केवलं हितमुच्यते ॥
कृमिगुल्मोदरार्शोघ्नीः क्रियाश्चात्रावचारयेत् ॥
चूर्णं हिङ्ग्वादिकं चात्र घृतं वा प्लीहनाशनम् ।
कल्केन मगधादेश्च चाङ्गेरीस्वरसेन वा ॥
चतुर्गुणेन दध्ना च घृतं सिद्धं हितं भवेत् ।
सर्वथा दीपनं सर्वं ग्रहणीरोगिणां हितम् ॥
ज्वरादीनविरोधाच्च साधयेत्स्वैश्चिकित्सितैः ।

ग्रहणीरोगनी चिकित्सा.

४० ग्रहणीदोषना रोगीने दोषनी वृद्धिना अनुसारथी योग्य क्रम प्रमाणे वमन विरेचनादिक शोधन संस्कार आपीने पछी योग्य रीते दीपनीय द्रव्योथी संस्कृत करेलां पेया वगेरे द्रव्यो आपवां. पछी प्रभातमां सुरा, अरिष्ट, स्नेह, मूत्र, सेहेवाय तेवुं उष्ण जळ अथवा छाश एओनी साथे पाचन वर्गनां, संग्राहि वर्गनां तथा दीपनीय वर्गनां औषधोना कल्को पावा. अथवा केवळ छाश पावी ए पण हितकारी केहेवाय छे.

ग्रहणीदोष उपर कृमि, गुल्म, उदर अने अरश एओने हणनारी क्रियाओनुं पण अवचारण करवुं.

चिकित्सास्थानना ९ मा अध्यायना २४ मा विषयमां कहेलुं हिंग्वादि चूर्ण ग्रहणीदोष उपर हितकारी थाय छे.

चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलुं षट्पलक नामनुं घी ग्रहणीदोष उपर हितकारी थाय छे.

पिप्पल्यादि गणनो कल्क, चुका नामनी खाटी भाजीनो स्वरस अने चोगणुं दही एओथी पकावेलुं घी पण ग्रहणीदोष उपर हितकारी थाय छे.

जे जे कांई दीपन (अग्निने प्रदीप्त करनार) छे ते सघळुं ग्रहणीदोषवाळाओने सर्वथा हितकारी थाय छे.

ग्रहणीदोषमां ज्वर वगेरे जे उपद्रवो होय तेओने वैद्ये मूळव्याधिनी (ग्रहणीदोषनी) चिकित्साथी विरोध न आवे एवी रीते पोतपोतानी (ज्वरादिकनी) चिकित्साओथी नष्ट करवा.

अध्याय ४१ मो.

१ अथातः शोषप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'शोषप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अनेकरोगानुगतो बहुरोगपुरोगमः ।
दुर्विज्ञेयो दुर्निवारः शोषो व्याधिर्महाबलः ॥

---

१ खेनना रोगनां निदान, लक्षणो तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषेनो.

शोष (खेनना दरद)नो स्वभाव.

२ शोष अनेक उपद्रवोवाळो होय छे, श्वास आदि घणा रोगोरूपी पूर्वरूपवाळो होय छे, त्रणे दोषोनां चिह्नोवाळो होवाने लीधे जेमां अंशांशिनी कल्पना करवी कठण पडे एवो होय छे, निवारण करवामां अशक्य थई पडे एवो होय छे अने ए कारणोने लीधे बलवत्तर व्याधि गणाय छे.

३ संशोषणाद्रसादीनां शोष इत्यभिधीयते ।
क्रियाक्षयकरत्वाच्च क्षय इत्युच्यते पुनः ॥
राज्ञश्चन्द्रमसो यस्मादभूदेष किलामयः ।
तस्मात्तं राजयक्ष्मेति केचिदाहुर्मनीषिणः ॥

ए व्याधि शोष, क्षय अने राजयक्ष्मा ए त्रण नामोथी केहेवावानुं कारण.

३ ए व्याधि रस आदि धातुओनुं शोषण करे छे तेथी **शोष** केहेवाय छे, आतुरनी शारीरादिक चेष्टाओनो तथा वैद्यनी औषधयुक्तिरूप क्रियाओनो क्षय करे छे तेथी **क्षय** केहेवाय छे अने चंद्र के जे ब्राह्मणोनो तथा वृक्षोनो राजा छे तेने प्रथम थयो हतो तथा पोताना टाळनारा वैद्योनी पूजा करावावना कारणरूप छे तेथी केटलाएक विद्वानोए तेने 'राजयक्ष्मा' ए नाम आपेलुं छे.

४ स व्यस्तैर्जायते दोषैरिति केचिद्वदन्ति हि ।
एकादशानामेकस्मिन् सान्निध्यात्तत्रयुक्तितः ।
क्रियाणां चाविभागेन प्रागेवोत्पादनेन च ।
एक एव मतः शोषः सन्निपातात्मको ह्यतः ॥
उद्रेकात्तत्र लिङ्गानि दोषाणां निपतन्ति हि ।

शोष सान्निपातिकज होवा विषे.

४ शोष रोग एक एक दोषथी थाय छे एम केटलाएक आचार्यो केहे छे पण ते वात बराबर नथी. केम के ते रोगमां त्रणे दोषोनां चिह्नोरूप अगीयार लक्षणो अथवा छ लक्षणो के जेओ आ अध्यायना ८ मा तथा ७ मा विषयमां आपवामां आवशे तेओ दाखल थएलां जोवामां आवे छे, वळी शास्त्रयुक्ति जोतां शोषनी चिकित्साओ एक एक दोषने अनुसरती जूदी जूदी जोवामां आवती नथी पण सघळी त्रणे दोषोने अनुसरती एकरूपज जोवामां आवे छे अने वळी दक्षप्रजापतिए प्रथम उत्पन्न करेलो ए रोग त्रिदोषात्मकरूपथीज चंद्रना शरीरमां प्रकट थयो हतो. आ त्रणे कारणोने लीधे शोषने एक प्रकारनोज एटले सन्निपातात्मकज मानवामां आवे छे. ए शोषमां त्रणे दोषोनां चिह्नो दोषोना प्रकोपने लीधे दाखल थाय छे.

५ क्षयाद्वेगप्रतीघाताद्व्यायामाद्विषमाशनात् ॥
जायते कुपितैर्दोषैर्व्याप्तदेहस्य देहिनः ।

शोषनां दूरनां तथा पासेनां निदानो.

५ अत्यंत मैथुनादिक करवाथी, मळमूत्रादिकनी हाजतोने रोकवाथी, साहस भरेला मल्लयुद्ध वगेरे आयासो करवाथी अने विषमभोजनो करवाथी प्रकुपित थएला दोषो माणसना शरीरमां व्याप्त थाय छे अने ते दोषोथी शोष उत्पन्न थाय छे.

१ अहीं नीचेप्रमाणे शास्त्रोक्त इतिहास छे. 'पूर्वे दक्ष नामनो एक प्रजापति हतो. ए प्रजाप्रतिए पोतानी घणी दीकरीओमांथी अश्विनी आदि सत्यावीश दीकरीओ चंद्रने आपी हती. चंद्र एओमां बीजी सघळी स्त्रीओनो अनादर करीने केवळ रोहिणीमांज आसक्त रेहेतां अश्विनी वगेरेए पोताना पिता दक्षनी पासे ते वृत्तांतनुं निवेदन कर्युं. दक्षे दीकरीओनी वात सांभळी चंद्रने बोलावी पोतानी सघळी दीकरीओमां सम रीते वर्त्तवानी भलामण करी. चंद्र ए भलामणनो स्वीकार करीने गयो पण पाछो दक्षना वचननो अनादर करीने रोहिणीमांज आसक्त रेहेवा लाग्यो. आथी दक्षप्रजापतिनो क्रोध मूर्तिमान् थई रोहिणीमां अतिप्रसंगने लीधे क्षयरोगरूप बनीने चंद्रना शरीरमां पेठो. आ रोगथी अभिभूत थएलो चंद्र निस्तेज, निर्बळ अने निरुत्साह थई गयो. चंद्र पोताने गुरुना (दक्षना) वचनना अतिक्रमने लीधे क्षयथी घेराएलो जोई दक्षनी शरणे गयो. दक्षे चंद्रने शरणागत थएलो जोई अश्विनीकुमारोने भलामण करीने तेओना हाथथी चिकित्सा करावतां चंद्र ए रोगथी मुक्त थयो.' आथी एम सिद्ध थयुं के क्षयरोग कर्म अने दोषो ए बन्नेना संयोगथी थाय छे. डल्हन.

६ कफप्रधानैर्दोषैर्हि रुद्धेषु रसवर्त्मसु ॥
अतिव्यवायिनो वापि क्षीणे रेतस्यनन्तराः ।
क्षीयन्ते धातवः सर्वे ततः शुष्यति मानवः ॥

शोषनी संप्राप्ति.

६ जेओमां कफ प्रधान होय छे एवा त्रणे दोषोथी रसनुं वहन करनारी धमनीओ रोकाई जवाने लीधे रस क्षीण थतां रस पछीना सर्वे धातुओ पण क्षीण थाय छे अने धातुओ क्षीण थतां माणस सूकाई जाय छे. जेम कारणभूत रसना क्षयथी कार्यभूत रुधिरआदि धातुओनो सवळे क्रमे क्षय थाय छे तेम उलटे क्रमे कार्यभूत वीर्यना क्षयथी कारणभूत धातुओनो क्षय पण थाय छे. जेम के अत्यंत मैथुनने लीधे पुरुषनुं वीर्य क्षीण थतां वायुना प्रकोपपूर्वक बीजा दोषो पण कुपित थतां मज्जा क्षीण थाय छे, मज्जा क्षीण थतां अस्थिओ क्षीण थाय छे, अस्थिओ क्षीण थतां मेद क्षीण थाय छे, मेद क्षीण थतां मांस क्षीण थाय छे, मांस क्षीण थतां रुधिर क्षीण थाय छे, रुधिर क्षीण थतां रस क्षीण थाय छे अने ए रीते धातुओ क्षीण थतां माणस सूकाई जाय छे.

७भक्तद्वेषो ज्वरः श्वासः कासः शोणितदर्शनम् ।
स्वरभेदश्च जायन्ते षड् जाते राजयक्ष्मणि ॥

जेमां मध्य बळवाळा दोषो होय एवा शोषमां दोषोनां चिन्होरूप छ लक्षणो.

७ माणसने शोष उत्पन्न थाय त्यारे अन्न उपर द्वेष, ज्वर, खांसी, श्वास, लोहीनुं पडवुं अने स्वरभेद (अवाजनुं घोघरापणुं) ए छ लक्षणो दोषोना प्रकोपने लीधे थाय छे. (एओमां अन्न उपर द्वेष अने खांसी एओ कफना प्रकोपथी थाय छे, ज्वर अने रुधिरनुं पडवुं एओ पित्तना प्रकोपथी थाय छे अने स्वरभेद तथा श्वास एओ वायुना प्रकोपथी थाय छे.)

८ स्वरभेदोऽनिलाच्छूलं सङ्कोचश्चांसपार्श्वयोः
ज्वरो दाहोऽतिसारश्च पित्ताद्रक्तस्य चागमः ॥
शिरसः परिपूर्णत्वमभक्तच्छन्द एव च ।
कासः कण्ठस्य चोद्ध्वंसो विज्ञेयः कफकोपतः ॥

जेमां अत्यंत बळवाळा दोषो होय एवा शोषमां दोषोनां चिन्होरूप अगीयार लक्षणो.

८ माणसने शोष उत्पन्न थाय त्यारे खभा तथा पडखां एओनुं संकुचित जेवापणुं, शूळ अने स्वरभेद ए त्रण लक्षणो वायुना प्रकोपथी थाय छे. ज्वर, दाह, अतिसार अने रुधिरनुं पडवुं ए चार लक्षणो पित्तना प्रकोपथी थाय छे अने माथानुं पूर्णपणुं, (भारेपणुं) अन्न उपर अरुचि, खांसी तथा कंठनो ध्वंस ए चार लक्षणो कफना प्रकोपथी थाय छे.

९ एकादशभिरेतैर्वा षड्भिर्वापि समन्वितम् ।
त्रिभिर्वा पीडितं लिङ्गैर्ज्वरकासासृगामयैः ।
जह्याच्छोषार्दितं जन्तुमिच्छन् सुविपुलं यशः ॥

शोषने क्यारे असाध्य समजवो.

९ जे वैद्य उत्तम कीर्तिनी इच्छा करतो होय तेणे उपरना सातमा विषयमां कहेलां छ, अथवा आठमा विषयमां कहेलां अगीयार अथवा तंत्रांतरना मतप्रमाणे ज्वर, अतिसार अने लोहीनुं पडवुं ए त्रण लक्षणोथी पीडाएला शोषना दरदीनी चिकित्सा करवी नहीं. (सघळां लक्षणो थया छतां पण ज्यां सूधी मांस अने बळ विद्यमान होय त्यां सूधी चिकित्सा करवानी छूट बीजा तंत्रकारोए आपेली छे. आ अध्यायना २० मा विषयमां बीजां पण शोषना असाध्यपणानां लक्षणो केहेवामां आवशे तेओ उपर पण ध्यान आपवुं.)

१० व्यवायशोकस्थाविर्यव्यायामाध्वप्रवासतः ।
व्रणोरःक्षतपीडाभ्यां शोषानन्ये वदन्ति हि ॥

अन्य आचार्योना मतप्रमाणे निदानोना भेदो उपरथी शोषना भेदो.

१० केटलाएक आचार्यो केहे छे के अतिमैथुन करवाथी थएलो शोष 'व्यवायशोष' केहे-

वाय छे, शोकथी थएलो शोष 'शोकशोष' केहेवाय छे, वृद्धपणाथी थएलो शोष 'जराशोष' केहेवाय छे, कसरत करवाथी थएलो शोष 'व्यायामशोष' केहेवाय छे, पंथ करवाथी थएलो शोष 'अध्वशोष' केहेवाय छे, व्रण थवाथी थएलो शोष 'व्रणशोष' केहेवाय छे अने छातीमां क्षत थवाथी थएलो शोष 'उरःक्षतशोष' केहेवाय छे.

११ व्यवायशोषः शुक्रस्य क्षयलिङ्गैरुपद्रुतः।
पाण्डुदेहो यथापूर्वं क्षीयन्ते चास्य धातवः॥

व्यवायशोषनुं लक्षण.

११ जेने व्यवायशोष थयो होय ते माणसने वीर्यनां क्षयनां जे चिह्नो कह्यां छे तेओ थाय छे एटले लिंगमां तथा वृषणोमां वेदना थाय छे, मैथुनमां अशक्ति थाय छे अथवा घणीवारे वीर्य पडे छे अने वीर्य पडे ते पण थोडुं तथा रातुं पडे छे. ए माणसनो देह पांडु थई जाय छे अने प्रथम वीर्य क्षीण थतां तेनी उपरना मज्जा आदि धातुओ पण अनुक्रमे क्षीण थाय छे.

१२ प्रध्यानशीलः स्रस्ताङ्गः शोकशोष्यपि तादृशः
विना शुक्रक्षयकृतैर्विकारैरभिलक्षितः॥

शोकशोषनुं लक्षण.

१२ जेने शोकशोष थयो होय ते माणस जे वस्तुना अभावथी शोक थयो होय ते वस्तुनुं ध्यान कर्या करे छे, शिथिल अंगोवाळो थई जाय छे अने व्यवायशोषवाळा माणसनी पेठे वीर्य आदि सघळा धातुओना क्षयथी युक्त थाय छे पण व्याधिना स्वभावने लीधे तेने लिंगमां तथा वृषणोमां वेदना थवाआदि विकारो थता नथी.

१३ जराशोषी कृशो मन्दवीर्यबुद्धिबलेन्द्रियः।
श्वसनोऽरुचिमान् भिन्नकांस्यपात्रहतस्वरः॥
ष्ठीवति श्लेष्मणा हीनं तथैवारतिपीडितः।
संप्रस्रुतास्यनासाक्षः शुष्करूक्षमलच्छविः॥

जराशोषनुं लक्षण.

१३ जेने जराशोष थयो होय ते माणसनुं शरीर कृश थई जाय छे, वीर्य बळ बुद्धि तथा इंद्रियो मंद थई जाय छे, हांफ थाय छे, कांतिरहितपणुं थाय छे, स्वर फूटेला कांसाना वासणना जेवो खोखरो थई जाय छे. ए माणस वारंवार कफ वगरनुं थुंक्या करे छे, अरुचिथी पीडाय छे, मोहोडुं नाक तथा आंखो एओमां स्रावावाळो थाय छे अने तेनां विष्टा तथा वर्ण शुष्क तथा रूक्ष थई जाय छे.

१४ अध्वप्रशोषी स्रस्ताङ्गः संभृष्टपरुषच्छविः।
प्रसुप्तगात्रावयवः शुष्कक्लोमगलाननः॥

अध्वशोषवाळानुं लक्षण.

१४ जेने अध्वशोष थयो होय ते माणसनां अंगो शिथिल थई जाय छे, कांति अग्निमां शेकाएलाना जेवी परुष थई जाय छे, गात्रोमां तथा अवयवोमां स्पर्शनुं ज्ञान होतुं नथी अने तरश लागवानुं ठेकाणुं गळुं तथा मोहोडुं शुष्क थई जाय छे.

१५ व्यायामशोषी भूयिष्ठमेभिरेव समन्वितः।
उरःक्षतकृतैर्लिङ्गैः संयुक्तश्च क्षताद्विना॥

व्यायामशोषवाळानुं लक्षण.

१५ जेने व्यायामशोष थयो होय ते माणस घणुं करीने उपर कहेलां अध्वशोषवाळांना लक्षणोथी युक्त थाय छे अने क्षत नहीं थया छतां पण जे उरःक्षतशोषवाळानां लक्षणो केहेवामां आवशे तेओथी संयुक्त थाय छे.

१६ रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवाहारयन्त्रणात्।
व्रणितस्य भवेच्छोषः सचासाध्यतमः स्मृतः

व्रणशोषनुं निदान.

१६ व्रणवाळा माणसने रुधिरनो क्षय थयाथी, वेदनाओथी तथा आहारना प्रतिबंधथी व्रणशोष थाय छे. आ शोष अत्यंत असाध्य केहेवाय छे.

१७ व्यायामभाराध्ययनैरभिघातातिमैथुनैः।
कर्मणा चाप्युरस्येन वक्षो यस्य विदारितम्॥

तस्योरसि क्षते रक्तं पूयः श्लेष्मा च गच्छति ।
कासमानश्छर्दयेच्च पीतरक्तासितारुणम् ॥
संतप्तवक्षाः सोऽत्यर्थं दूयते परिताम्यति ।
दुर्गन्धवदनोच्छ्वासो भिन्नवर्णस्वरो नरः ॥

उरःक्षत शोषनुं निदान तथा लक्षण.

१७ अत्यंत कसरत वगेरे करवाथी, अत्यंत बोजो उपाडवाथी, अत्यंत ऊंचे स्वरे अध्ययन करवाथी, अत्यंत अभिघात पाम्याथी, अत्यंत मैथुन करवाथी के एवाज प्रकारना छातीने भींस आवे एवा बीजा कोई कामथी जेनुं वक्षःस्थल विदीर्ण थई जाय छे ते माणसने वक्षःस्थलना क्षतने लीधे परू तथा कफ पडे छे, खांसी आवे छे, खांसी आवतां पीळुं रातुं काळुं तथा काईक रातुं द्रव्य पडे छे, छाती तप्या करे छे, अत्यंत परिताप थाय छे, ग्लानि थाय छे, मोहोडानो श्वास दुर्गंधवाळो थई जाय छे अने वर्ण तथा स्वर बदली जाय छे.

१८ केचाश्चिदेव शोषो हि कारणैर्भेदमागतः ।
न तत्र दोषलिङ्गानां समस्तानां निपातनम् ॥
क्षया एव हि ते ज्ञेयाः प्रत्येकं धातुसंक्षयात् ।
चिकित्सितं तु तेषां हि प्रागुक्तं धातुसंक्षये ॥

उपर कहेला अन्य आचार्योना मतनुं खंडन.

१८ उपर प्रमाणे केटलाएक आचार्योए निदानोना भेदो उपरथी जूदा जूदा शोषो मानेला छे परंतु वास्तविक विचार करतां ए शोषोमां त्रणे दोषोनां आ अध्यायना ७ मा तथा ८ मा विषयमां कहेलां लक्षणो होतां नथी तेथी एओने शोषोज कही शकाता नथी. आ प्रमाणे ए व्यवायशोष आदि शोषो खरी रीते 'शोषो'ज नथी पण ए प्रत्येकमां धातुओनो क्षय होय छे तेथी धातुक्षयोरूपज छे. धातुक्षयोनी चिकित्साओ तो सूत्रस्थानना 'दोषधातुमलक्षयवृद्धिविज्ञानीय' नामना १५ मा अध्यायमां केहेवाई गई छे.

१९ श्वासाङ्गसादकफसंस्रवतालुशोष-
च्छर्द्यग्निसादमदपीनसकासनिद्राः ।
शोषे भविष्यति भवन्ति स चापि जन्तुः
शुक्लेक्षणो भवति मांसपरो रिरंसुः ॥
स्वप्नेषु काकशुकशल्लकिनीलकण्ठ-
गृध्रास्तथैव कपयः कृकलासकाश्च ।
तं वाहयन्ति स नदीर्विजलाश्च पश्ये-
च्छुष्कांस्तरून्पवनधूमदवार्दितांश्च ॥

शोषनां पूर्वरूपो.

१९ शोष थवानो होय त्यारे श्वास, अंगोमां अनुत्साह, कफनुं स्रववुं, ताळवानुं शोषण, वमन, अग्निनुं मंदपणुं, घणुं सोपारी खाधाना जेवो मद, (मीणो) पीनस, उधरस अने निद्रा एओ थाय छे. ए माणस मांस खावानी इच्छावाळो तथा रमण करवानी इच्छावाळो थाय छे अने तेनी आंखो सफेद थई जाय छे. ए माणसने स्वप्नमां कागडा, पोपट, शेढाई, मयूर, गरंजो, वानराओ तथा काचंडाओ खेंची जाय छे अने पाणी वगरनी नदीयो तथा सूकाएलां अने पवनथी, धूमाडाथी तथा दावानळथी खराब थएलां वृक्षो जोवामां आवे छे.

२० महाशनं क्षीयमाणमतीसारनिपीडितम् ।
शूनमुष्कोदरं चैव यक्ष्मिणं परिवर्जयेत् ॥

शोषना असाध्यपणानां बीजां पण लक्षणो.

२० जे माणस झाझुं खातां छतां क्षीण थतो जतो होय तेना शोषनी चिकित्सा करवी नहीं. शोषवाळो जे माणस अतिसारथी पीडातो होय तेनी पण चिकित्सा करवी नहीं. जेना वृषण अने पेट सूकाई गएल होय तेना शोषनी पण चिकित्सा करवी नहीं.

२१ उपाचरेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशं नरम् ।

शोषनो दरदी केवो होय तो तेनी चिकित्सा करवी.

२१ जे माणस जितेंद्रिय होय, प्रदीप्त अग्नि-

वाळो होय, कृश नहीं थई गएलो होय, (ज्वरना संबंधथी रहित होय, बलवान् होय अने चिकित्सा-संबंधी क्रियाओनुं सहन करी शके एवो होय) तेनी चिकित्सा करवी.

२२ स्थिरादिवर्गसिद्धेन घृतेनाजाविकेन च ॥
स्निग्धस्य मृदु कर्तव्यमूर्ध्वं चाधश्च शोधनम् ।
आस्थापनं तथा कार्यं शिरसश्च विरेचनम् ॥
यवगोधूमशालीश्च रसैर्भुञ्जीत शोधितः ।
दृढेऽग्नौ बृंहयेच्चापि निवृत्तोपद्रवं नरम् ॥
व्यवायशोषिणं प्रायो भजन्ते वातजा गदाः ।
बृंहणीयो विधिस्तस्मै हितः स्निग्धोऽनिलापहः॥

काकानुलूकान्नकुलान्बिडालान्
गण्डूपदान् व्यालबिलेशयाखून् ।
गृध्रांश्च दद्याद्विविधैः प्रकारैः
ससैन्धवान् सर्षपतैलभृष्टान् ॥
देयानि मांसानि च जाङ्गलानि
मुद्गाढकीसूपरसाश्च हृद्याः ॥
खरोष्ट्रनागाश्वतराश्वजानि
देयानि मांसानि सुकल्पितानि ।
मांसोपदंशांश्च पिबेदरिष्टा-
न्माध्वीकयुक्ता मदिराश्च सेव्याः ॥
अर्कामृताक्षारजलोषितेभ्यः
कृत्वा यवेभ्यो विविधांश्च भक्ष्यान् ।
खादेत् पिबेत्सर्पिरजाविकं वा
कृशो यवाग्वा सह भक्तकाले ॥
सर्पिर्मधुभ्यां त्रिकटु प्रलिह्या-
च्चव्याविडङ्गोपहितं क्षयार्तः ।
मांसादमांसेषु घृतं च सिद्धम्
शोषापहं क्षौद्रकणासमेतम् ।
द्राक्षासितामागधिकावलेहः
सक्षौद्रतैलः क्षयरोगघाती ।
घृतेन चाजेन समाक्षिकेण
तुरङ्गगन्धातिलमाषचूर्णम् ॥
सिताश्वगन्धामगधोद्भवानां
चूर्णं घृतक्षौद्रयुतं प्रलिह्यात्
क्षीरं पिबेद्वाप्यथ वाजिगन्धा-
विपक्कमेवं लभते च पुष्टिम् ॥
तदुत्थितं क्षीरघृतं सिताढ्यम्
प्रातः पिबेद्वाथ पयोऽनुपानम् ।
उत्सादने चापि तुरङ्गगन्धा
योज्या यवाश्चैव पुनर्नवे च ॥
कृत्स्ने वृषे तत्कुसुमैश्च सिद्धम्
सर्पिः पिबेत्क्षौद्रयुतं हिताशी ।
यक्ष्माणमेतत्प्रबलं च कासं
श्वासं च हन्यादपि पाण्डुतां च ॥
शकृद्रसा गोऽश्वगजाव्यजानाम्
क्काथा मिताश्चापि तथैव भागैः ।
मूर्वाहरिद्राखदिरद्रुमाणां
क्षीरस्य भागस्त्वपरो घृतस्य ॥
भागान् दशैतान् विपचेद्विधिज्ञो
दत्वा त्रिवर्गं मधुरं च कृत्स्नम् ।
कटुत्रिकं चैव सभद्रदारु
घृतोत्तमं यक्ष्मनिवारणाय ॥
द्वे पञ्चमूल्यौ वरणं करञ्जं
भल्लातकं बिल्वपुनर्नवे च ।
यवान्कुलत्थान्बदराणि भार्गीं
पाठां हुताशं समहीकदम्बम् ॥
कृत्वा कषायं विपचेद्धि तस्य
षड्भिर्हि पात्रैर्घृतपात्रमेकम् ।
व्योषं महावृक्षपयोऽभयां च
चव्यं सुराख्यं लवणोत्तमं च ।
एतद्धि शोषं जठराणि चैव
हन्यात्प्रमेहांश्च सहानिलेन ॥
गोश्वाव्यजेभैणखरोष्ट्रजातैः
शकृद्रसक्षीररसक्षतोत्थैः ।
द्राक्षाश्वगन्धामगधासिताभिः
सिद्धं घृतं यक्ष्मविकारहारि ॥
एलाजमोदामलकाभयाक्ष-
गायत्र्यरिष्टासनशालसारान् ॥
विडङ्गभल्लातकचित्रकोग्रा-
कटुत्रिकाम्भोदसुराष्ट्रजाश्च ।

पक्त्वा जले तेन पचेद्धि सर्पि-
स्तस्मिन् सुसिद्धे त्ववतारिते च ॥
त्रिंशत्पलान्यत्र सितोपलाया
दत्वा तुगाक्षीरिपलानि षट् च ।
प्रस्थे घृतस्य द्विगुणं च दद्यात्
क्षौद्रं ततो मन्थहतं विदध्यात् ॥
पलं पलं प्रातरतः प्रलिह्यात्
पश्चात्पिबेत्क्षीरमतन्द्रितश्च ।
एतद्धि मेध्यं परमं पवित्रं
चक्षुष्यमायुष्यमथो यशस्यम् ॥
यक्ष्माणमाशु व्यपहन्ति चैतत्
पाण्ड्वामयं चैव भगन्दरं च ।
श्वासं च हन्ति स्वरभेदकास-
हृत्प्लीहगुल्मग्रहणीगदांश्च ॥
न चात्र किंचित्परिवर्जनीयं
रसायनं चैतदुपास्यमानम् ।
ह्रोदरोक्तं विहितं च सर्पि-
र्षीण्येव चान्यानि हितानि चात्र ॥
उपद्रवांश्च स्वरवैकृतादीन्
जयेद्यथास्वं प्रसमीक्ष्य शास्त्रम् ।
अजाशकृन्मूत्रपयोघृतासृ-
ङ्मांसालयानि प्रतिसेवमानः ॥
स्नानादिनानाविधिना जहाति
मासादशेषं नियमेन शोषम् ।
रसोनयोगं विधिवत्क्षयार्तः
क्षीरेण वा नागबलाप्रयोगम् ॥
सेवेत वा मागधिकाविधानम्
तथोपयोगं जतुनोऽश्मजस्य ।

शोषनी चिकित्सा.

२२ शोषवाळा माणसने विदारिगंधादि वर्गना काथथी तथा कल्कथी पकावेला बकरीना तथा गाडरना घीथी स्निग्ध करीने पछी कोमळ योगोथी तेनुं वमन विरेचनरूप शोधन करवुं. ए माणसने निरूहबस्ति देवी अने शिरोविरेचन नस्य पण देवुं. शुद्ध कर्या पछी मांसोना रसाओनी साथे जव, घऊं तथा राता चोखानां अन्नो जमाडवां. अग्नि दृढ थाय अने उपद्रवो टळी जाय त्यारे तेनुं बृंहण पण करवुं.

जेने अतिमैथुनथी शोष थयो होय ते माणसने घणुं करीने वायुजन्य उपद्रवो प्राप्त थाय छे एटला माटे तेनी स्निग्ध, वायुने हणनारी अने बृंहण आपनारी चिकित्सा करवी ए हितकारी थाय छे. (आ वाक्य प्रक्षिप्त होवुं जोइए. केम. के 'शोषमां क्रियाओनो विभागज नथी' एम प्रथम आ अध्यायना चोथा विषयमां कहेलुं छे.)

कागडा, घूवड, नोळीयां, मींदडा, अणशीयां, वाघ वगेरे हिंसक पशुओ, शेढाई वगेरे बिलेशय प्राणीयो, ऊंदरो अने गीधो एओनां मांसोने अनेक प्रकारोथी गोठवी, सरसीया तैलमां पकावी, सैंधवथी संयुक्त करीने खवराववां. ते मांसो मृग तथा कूकडा वगेरेनां छे एम रोगीने खोटुं समजाववुं के जेथी जुगुप्सा उत्पन्न न थाय. विष्किर तथा प्रतुद पक्षीओनां मांसो अने मनने प्रिय लागे एवा मग तथा तुवरनी दाळना यूष वगेरे रसो पण देवा. गधेडो, ऊंट, हाथी, खच्चर तथा घोडो एओनां मांसो पण सारी रीते गोठवीने खवराववां. अरिष्टो पीवराववा अने तेओ उपर घुंटडे घुंटडे मांसना उपदंशो (दांतोथी तोडीने खवाय एवा अथाणा जेवा पदार्थो उपदंश केहेवाय छे.) खवराववा. द्राक्षना रसथी संयुक्त करेली मदिराओनुं पण सेवन करावंवुं. आकडो तथा गळो एओना क्षारना पाणीमां जवो पलाळी ते जवोनां अनेक भक्ष्यो बनावीने खवरावां. रोगी अतिकृश होय तो तेने भोजनना समयमां यवागूनी साथे बकरीनुं तथा गाडरनुं घी पावुं.

सूंठ, मरी, पीपळ, चवक अने वावडींग एओना चूर्णने घीथी तथा मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी शोष टळी जाय छे.

मांसभक्षक गीध आदि प्राणीओनां मांसोना

रसामां घी पकावी ते घीने मधथी तथा पीपळथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी शोष टळी जाय छे.

द्राक्ष, साकर तथा पीपळ एओनो अवलेह करी मधनी तथा तैलनी साथे चटाडवामां आवे तो तेथी शोष नष्ट थाय छे.

आसोंद, तिल तथा अडद एओना चूर्णने मधसहित बकरीना घीथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी शोष शांत थई जाय छे.

साकर, आसोंद अने पीपळ एओना चूर्णने घीथी तथा मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी शोष नष्ट थई जाय छे.

आसोंदना कल्कथी दूध पकावीने पावामां आवे तो तेथी शोष शांत थाय छे अने पुष्टि प्राप्त थाय छे.

आसोंदना कल्कथी पकावेला दूधमांथी घी काहाडी, साकरथी संयुक्त करी ते घी प्रभातमां पावामां आवे अने उपर दूधनुं अनुपान देवामां आवे तो तेथी शोष नष्ट थई जाय छे.

शोषवाळा रोगीने आसोंद, जव, धोळी साटोडी अने राती साटोडी एओनुं चूर्णादिक शरीरपर चोळवा माटे देवुं.

अरडूसीना पंचागना क्वाथथी तथा अरडूसीनां फूलोना कल्कथी घी पकावी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे अने पथ्य भोजन कराववामां आवे तो तेथी शोष नष्ट थई जाय छे. आ घीथी प्रबल खांसी, श्वास अने पांडुता पण टळी जाय छे. (क्वाथ चोगणो करवो अने कल्क आठमा भाग जेटलो करवो.)

एक भाग गायना छाणनो रस, एक भाग घोडानी लादनो रस, एक भाग हाथीना लादोडानो रस, एक भाग बकरीनी लींडीनो रस, एक भाग गाडरनी लींडीनो रस, एक भाग मूर्वानो रस, एक भाग हळदरनो रस, एक भाग खेरनो रस; एक भाग दूध अने एक भाग घी ए दश भागोने मिश्रित करी तेमां त्रिफळा, सघळो मधुरवर्ग, सूंठ, मरी, पीपळ अने देवदार एओनो कल्क नाखीने पाक करवो. आथी जे घी सिद्ध थाय ते घी शोषनुं निवारण करे छे.

दशमूळी, वरणो, करंज, भीलामुं, बीलुं, साटोडी, जव, कळथी, बोर, भारंगी, काळीपाड, चित्रक अने भूमिकदंब एओनो क्वाथ करवो. पछी ए छ आढक (बसो छपन तोलांभारनो एक आढक थाय छे.) क्वाथमां सूंठ, मरी, पीपळ, थोरनुं छीर, हरडे, चवक, देवदार अने सैंधव एओनो कल्क नाखी एक आढकभार घी पकाववुं. आ घी शोषने तथा उदररोगोने नष्ट करे छे. वायुनी साथे प्रमेहोने पण नष्ट करे छे. (वायुजन्य प्रमेहो असाध्य छतां तेओनी आ चिकित्सा कही छे ए मात्र स्तुति छे. डल्हन.)

गाय, घोडी, गाडर, बकरी, हाथणी, काळीआर हरणी, गधेडी अने ऊंटडी एओनां छाणना रस, दूध, मांसरस अने रुधिर एओमां द्राक्ष, आसोंद, पीपळ अने साकर एओनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. आ घी शोषविकारने नष्ट करे छे.

एळची, बोडीअजमोद, आमळां, बेहेडां, हरडे, खेरनो सार, लींबडानो सार, बीबलानो सार, शालवृक्षनो सार, वावडींग, भीलामुं, चित्रक, वज, सूंठ, मरी, पीपळ, मोथ अने फटकडी एओनो क्वाथ करीने ते क्वाथमां चोसठ तोलांभार घी पकाववुं. पाकी रहे त्यारे उतारी लई तेमां एकसोवीश तोलांभार खडीसाकर, चोवीश तोलांभार वंशलोचन अने घीथी बमणुं मध नाखी तेने रवाईवते खूब वलोवी राखवुं. आलस्य छोडी दई नित्य प्रभातमां आ घीमांथी चार चार तोलांभार चटाडवामां आवे अने ते उपर दूध पावामां आवे तो तेथी शोष तुरत नष्ट थाय छे. आ घी बुद्धिने वधारे छे, परम पवित्र छे, च-

ष्णुओनुं हित करे छे, आयुष्यनी तथा यशनी वृद्धि करे छे अने पांडुरोग, भगंदर, श्वास, स्वरभेद, कास, हृद्रोग, बरलनुं दरद, गुल्म तथा ग्रहणीरोग एओने पण तुरत नष्ट करे छे. आ घीनो उपयोग करतां कशी परेजी पाळवानी जरूर नथी. आ घीनुं सेवन रसायनरूप छे.

चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना १० मा विषयमां प्लीहोदर उपर जे षट्पलक नामनुं घी कह्युं छे तेना उपयोगथी पण शोष शांत थाय छे.

चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना ९ मा विषयमां त्रण प्रकारनां जे बीजां घी कहेलां छे तेओ पण शोष उपर हितकारी थाय छे.

वैद्ये शास्त्रनुं अवलोकन करी स्वरभेद आदि शोषना उपद्रवोने पण पोतपोतानी चिकित्साओथी नष्ट करवा. (जेम के स्वरभेदने स्वरभेदनी चिकित्साथी नष्ट करवो अने खांसीने खांसीनी चिकित्साथी नष्ट करवी इत्यादि.)

बकरीनी लींडीयो, बकरीनां मूत्रो, बकरीनां दूधो, बकरीनां घी, बकरीनां रुधिर, बकरीनां मांस अने बकरीओ रेहेवानां ठेकाणां एओनुं स्नान आदि प्रकारोथी नियमपूर्वक सेवन करावामां आवे तो तेथी अवश्य एक मासनी अंदर सघलो शोष नष्ट थई जाय छे.

शोषथी पीडाएला माणसने विधिपूर्वक दूधनी साथे लसणना प्रयोगनुं अथवा दूधनी साथे गंगेटीना प्रयोगनुं अथवा दूधनी साथे पीपळना प्रयोगनुं अथवा दूधनी साथे शिलाजीतना प्रयोगनुं सेवन करावामां आवे तो तेथी शोष टळी जाय छे.

२३ शोकं स्त्रियं क्रोधमसूयनं च
त्यजेदुदारान्विषयान्भजेत ॥
वैद्यान्द्विजातींस्त्रिदशान् गुरूंश्च
वाचश्च पुण्याः शृणुयाद्द्विजेभ्यः ।

शोषवाळाए केवी रीते वर्त्तवुं.

२३ शोषवाळाए शोक, स्त्रीप्रसंग, क्रोध तथा ईर्ष्या एओनो त्याग करवो. धर्मथी अविरुद्ध अने हृदयने प्रिय लागे एवा शब्दस्पर्शादिक विषयोनुं सेवन करवुं. वैद्योनी, ब्राह्मणोनी, देवताओनी तथा मातापिता वगेरे गुरुजनोनी सेवा करवी अने ब्राह्मणोनां मुखोथी रुद्राध्याय आदि वेदोक्त स्तोत्र सांभळवां.

अध्याय ४२ मो.

१ अथातो गुल्मप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'गुल्मप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं[1] ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ यथोक्तैः कोपनैर्दोषाः कुपिताः कोष्ठमागताः ।
जनयन्ति नृणां गुल्मं स पञ्चविध उच्यते ॥

गुल्मनां दूरनां तथा पासेनां निदानो, संप्राप्ति अने संख्या.

२ दोषोने प्रकुपित करनारा आहार विहारो के जेओ सूत्रस्थानना व्रणप्रश्न नामना २१ मा अध्यायमां कहेला छे तेओथी प्रकुपित थएला दोषो कोठामां (हृदयथी मूत्राशयसूधीना भागमां) आवी कोठानी अंदर ग्रंथिना रूपवाळा गुल्मने उत्पन्न करे छे. ए गुल्म पांच प्रकारनो केहेवाय छे.

३ हृद्बस्त्योरन्तरे ग्रन्थिः संचारी यदि वाऽचलः ।
चयापचयवान्वृत्तः स गुल्म इति कीर्तितः ॥

गुल्मनुं सामान्य लक्षण.

३ हृदय अने मूत्राशय एओना मध्यमां (आखा कोठामां) अमुक ठेकाणे चलनवाळो अथवा स्थिरपणावाळो, कोई समये वृद्धि पाम-

---

[1] गुल्मनां तथा शूलनां निदानो, पूर्वरूपो, संप्राप्ति, लक्षणो तथा चिकित्सा एओनां निरूपणविषेनो.

नारो अने कोई समये ओछो थई जनारो जे गोळ ग्रंथि (गोळो) थाय छे ते गुल्म केहेवाय छे.

४ पञ्च गुल्माश्रया नृणां पार्श्वहृन्नाभिबस्तयः ।

गुल्मनां पांच स्थानको.

४ माणसोना कोठामां, हृदय, बे पडखां, नाभि अने मूत्राशय ए पांच, गुल्मनां ठेकाणां छे.

५ कुपितानिलमूलत्वाद्गूढमूलोदयादपि ॥
गुल्मवद्वा विशालत्वाद्गुल्म इत्यभिधीयते ।

ए रोग गुल्म केहेवावानुं कारण.

५ ए रोग मुख्यत्वे करी प्रकोप पामेला वायुरूप मूलवाळो होय छे अथवा गूढ मूलवाळा कंदादिकनी पेठे उदय पामे छे अथवा लता वगेरेना गुल्म (गुच्छ)नी पेठे विशाल होय छे तेथी गुल्म केहेवाय छे.

६ स यस्मादात्मनि चयं गच्छत्यप्स्विव बुद्बुदः ॥
अन्तः सरति यस्माच्च न पाकमुपयात्यतः ।

गुल्म पाकतो नथी तेनुं कारण.

६ जेम परपोटो पाणीमांज वृद्धि पामे छे तेम ए गुल्म पोतामांज वृद्धि पामे छे अने वळी अंदर भम्या करे छे एटला माटे पाकतो नथी. ('घणुं करीने वातजन्य गुल्मज पाकतो नथी. बीजा गुल्मो तो कोई वखते पाके छे' एम केटलाएक माने छे. अहीं निदानस्थानना नवमा अध्यायनो १९ मो विषय वांचवो.)

७ स व्यस्तैर्जायते दोषैः समस्तैरपि चोच्छ्रितैः॥
पुरुषाणां तथा स्त्रीणां ज्ञेयो रक्तेन चापरः ।

गुल्मना पांच प्रकार.

७ ए गुल्म पुरुषोने तथा स्त्रीओने प्रकोप पामेला वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी अने रुधिरथी (धातुरूप रुधिरथी) पण थाय छे. स्त्रीओने रजरूप रुधिरथी पण गुल्म थाय छे. (पुरुषोने तथा स्त्रीओने धातुरूप रुधिरथी जे गुल्म थाय छे तेनां लक्षणो तथा चिकित्सा आ ग्रंथमां केहेवामां आवशे नहीं. कारण के ए गुल्म पित्तजन्य गुल्मना जेवांज लक्षणोवाळो होय छे अने तेनी चिकित्सा पण पित्तजन्य गुल्मनी चिकित्साथी जूदी पडती नथी.)

८ सदनं मन्दता वह्नेराटोपोऽन्त्रविकूजनम् ॥
विण्मूत्रानिलसङ्गश्च सौहित्यासहता तथा ।
द्वेषोऽन्ने वायुरूर्ध्वश्च पूर्वरूपेषु गुल्मिनाम् ॥

गुल्मनां पूर्वरूपो.

८ गुल्म थवानो होय त्यारे प्रथम ग्लानि थाय छे, अग्निनुं मंदपणुं थाय छे, पेट भरपूर थई जाय छे, आंतरडांओनो गडगडाट थाय छे, विष्टानी, मूत्रनी तथा अधोवायुनी अटकायत थाय छे, तृप्तिनुं सहन थई शकतुं नथी, अन्न उपर द्वेष थाय छे अने पवन ऊंचो चाले छे.

९ हृत्कुक्षिशूलं मुखकण्ठशोषो
वायोर्निरोधो विषमाग्निता च ।
ते ते विकाराः पवनात्मकाश्च
भवन्ति गुल्मेऽनिलसम्भवे तु ॥

वायुजन्य गुल्मनुं लक्षण.

९ जो गुल्म वायुथी उत्पन्न थएलो होय तो हृदयमां तथा कूखमां शूल थाय छे, मोहोडुं तथा गळुं सूकाय छे, अधोवायु अटके छे, जठराग्निनुं विषमपणुं थाय छे, मोहोडुं विरस थई जाय छे अने कंप आदि बीजा पण वायुसंबंधी विकारो थाय छे.

१० स्वेदज्वराहारविदाहदाहा-
स्तृष्णाङ्गरागः कटुवक्त्रता च ।
पित्तस्य लिङ्गान्यखिलानि यानि
पित्तात्मके तानि भवन्ति गुल्मे ॥

पित्तजन्य गुल्मनुं लक्षण.

१० जो गुल्म पित्तथी उत्पन्न थएलो होय तो पसीनो वळे छे, ज्वर आवे छे, आहारनो खाटो पाक थाय छे, बळतरा थाय छे, तरश

लागे छे, अंगोमां रताश थाय छे, मोहोडामां तीखाश थाय छे अने श्रम तथा मूर्छा वगेरे बीजा पण सघळा पित्तसंबंधी विकारो थाय छे.

११ स्तैमित्यमन्नेऽरुचिरङ्गसाद-
श्छर्दिः प्रसेको मधुरास्यता च।
कफस्य लिङ्गानि च यानि तानि
भवन्ति गुल्मे कफसम्भवे तु॥

कफजन्य गुल्मनुं लक्षण.

११ जो गुल्म कफथी उत्पन्न थएलो होय तो स्तब्धपणुं थाय छे, अन्न उपर अरुचि थाय छे, अंगोमां ग्लानि थाय छे, उलटी थाय छे, लाळ झरे छे, मोहोडुं मधुर थई जाय छे अने वेदनानुं अल्पपणुं, अग्निनुं मंदपणुं तथा खांसी वगेरे बीजा पण कफसंबंधी विकारो थाय छे.

१२ सर्वात्मकः सर्वविकारयुक्तः
सोऽसाध्य उक्तः क्षतजं च वक्ष्ये।

त्रिदोषजन्य गुल्मनुं लक्षण तथा असाध्यपणुं.

१२ जो गुल्म त्रणे दोषोथी उत्पन्न थएलो होय तो उपर कहेलां त्रणे दोषोनां लक्षणो थाय छे. त्रिदोषजन्य गुल्म असाध्य छे. हवे स्त्रीओने रजरूप रुधिरथी जे गुल्म उत्पन्न थाय छे ते-विषे कहुं छुं.

१३ नवप्रसूताऽहितभोजना या
या चामगर्भं विसृजेदृतौ वा॥
वायुर्हि तस्याः परिगृह्य रक्तं
करोति गुल्मं सरुजं सदाहम्।
पैत्तस्य लिङ्गेन समानलिङ्गं
विशेषणं चाप्यपरं निबोध॥
न स्पन्दते नोदरमेति वृद्धिं
भवन्ति लिङ्गानि च गर्भिणीनाम्।
तं गर्भकालातिगमे चिकित्स्य-
मसृग्भवं गुल्ममुशन्ति तज्ज्ञाः॥

रजरूप रुधिरथी उत्पन्न थएला गुल्मनां निदान, लक्षण तथा चिकित्सानो समय.

१३ जे स्त्री तुरतनी सुवावडी छतां अहित आहार-विहार करे अथवा जे स्त्री पोताने कसुवावड (नवमा महीनाथी पेहेलां प्रसव) थया छतां अहित आहार-विहार करे अथवा जे स्त्री रजस्वलापणाना समयमां अहित आहार विहार करे ते स्त्रीना रुधिरनुं ग्रहण करीने वायु गर्भाशयमां गोळा जेवा गुल्मने उत्पन्न करे छे के जे गुल्म व्यथावाळो होय छे, बळतरावाळो होय छे अने पित्तथी थएला गुल्मना जेवां चिह्नोवाळो होय छे. आ गुल्ममां बीजो पण विशेष कहुं छुं ते सांभळो. रज पडवाना समयमां रजनुं नहीं देखावुं, मोहोडानुं पीळापणुं, स्तनोनी डींटडीओनुं काळापणुं तथा खावा पीवा वगेरेना भावाभाव इत्यादि जे जे गर्भनां चिह्नो छे ते सघळां चिह्नो व्याधिना प्रभावने लीधे आ गुल्ममां पण थाय छे. आ गुल्ममां पेटनी अंदर हाथ पग आदि अंगोनुं चलन थवुं नहीं जणातां घणी वारे केवळ पिंडाकारनुंज चलन (फरकवुं) थतुं जणाय छे अने उदर वृद्धि पामतुं नथी. आ गुल्म रजोजन्यगुल्म केहेवाय छे अने तेनी चिकित्सा दशमो महिनो व्यतीत थया पछी करवी. (केटलाएक केहे छे के "गर्भ होवानो संशय न रहे एटला माटे दशमो महिनो व्यतीत थया पछी चिकित्सा करवानुं कह्युं छे" पण ए केहेवुं अयोग्य छे. कारण के पिंडाकारनुं चलन अने उदरनी वृद्धिनो अभाव इत्यादि चिह्नोथीज गर्भना संशयनुं निवारण थाय छे. नवमे के दशमे महिने प्रसव थाय ए पण सामान्य वात छे पण नियमरूप नथी. केम के दशमा महिनाथी वधारे काल व्यतीत थतां पण प्रसव थता जोवामां आवे छे. आ प्रमाणे छे एटला माटे दशमो महिनो व्यतीत थया पछी आ गुल्मनी चिकित्सा करवानुं जे

कह्युं छे ते, गर्भनो संशय टाळवाने माटे कह्युं नथी पण दशमे महिने सुगमताथी चिकित्सा करी शकाय छे तेथी कह्युं छे एम समजवुं. रुधिरसंबंधी गुल्म जो जूनो होय तोज सुखसाध्य थाय छे. जेज्जटाचार्ये पण कह्युं छे के दशमो महिनो व्यतीत थया पछी आ गुल्मनी जमावट थाय छे एटले पछी तैल वगेरेथी स्त्रीना शरीरने संस्कार आपीने रुधिरने भेदवामां आवे तो तेथी गर्भाशयने नुकसान थतुं नथी.)

१४ वातगुल्मार्दितं स्निग्धं युक्तं स्नेहविरेचनैः।
उपाचरेद्यथाकालं निरूहैः सानुवासनैः ॥
पित्तगुल्मार्दितं स्निग्धं काकोल्यादिघृतेन तु ।
विरिक्तं मधुरैर्योगैर्निरूहैः समुपाचरेत् ॥
श्लेष्मगुल्मार्दितं स्निग्धं पिप्पल्यादिघृतेन तु ।
तीक्ष्णैर्विरिक्तं तद्रूपैर्निरूहैः समुपाचरेत् ॥
सन्निपातोत्थिते गुल्मे त्रिदोषघ्नो विधिर्हितः ।
पित्तवद्रक्तगुल्मिन्या नार्याः कार्यः क्रियाविधिः॥
विशेषमपरं चास्याः शृणु रक्तविभेदनम् ।
पलाशभस्मतोयेन सिद्धं सर्पिः प्रयोजयेत् ॥
दद्यादुत्तरबस्तिं च पिप्पल्यादिघृतेन तु ।
उष्णैर्वा भेदयेद्भिन्ने विधिरासृग्दरो हितः ॥
आनूपौदकमज्जानो वसा तैलं घृतं दधि ।
विपक्वमेकतः शस्तं वातगुल्मेऽनुवासनम् ॥
जाङ्गलैकशफानां तु वसा सर्पिश्च पैत्तिके ।
तैलं जाङ्गलमज्जान एवं गुल्मे कफोत्थिते ॥
धात्रीफलानां स्वरसे षडङ्गं विपचेद्घृतम् ।
शर्करासैन्धवोपेतं तद्धितं वातगुल्मिने ।
चित्रकव्योषसिन्धूत्थपृथ्वीकाचव्यदाडिमैः ।
दीप्यकग्रन्थिकाजाजीहवुषाधान्यकैः समैः ॥
दध्यारनालबदरमूलकस्वरसैर्घृतम् ।
तत्पिबेद्वातगुल्माग्निदौर्बल्याटोपशूलनुत् ॥
हिङ्गुसौवर्चलाजाजीविडदाडिमदीप्यकैः ।
पुष्करव्योषधान्याम्लवेतसक्षारचित्रकैः ॥
शटीवचाजगन्धैलासुरसैश्च विपाचितम् ।
शूलानाहहरं सर्पिर्दध्ना चानिलगुल्मिनाम् ॥
बिडदाडिमसिन्धूत्थहुतभुग्व्योषजीरकैः ।
हिङ्गुसौवर्चलक्षाररुग्वृक्षाम्लाम्लवेतसैः ॥
बीजपूररसोपेतं सर्पिर्दधिचतुर्गुणम् ।
साधितं दाधिकं नाम गुल्महृत्प्लीहशूलजित् ॥
रसोनस्वरसे सर्पिः पञ्चमूलरसान्वितम् ।
सुरारनालदध्यम्लमूलकस्वरसैः सह ॥
व्योषदाडिमवृक्षाम्लयवानीचव्यसैन्धवैः ॥
हिङ्ग्वम्लवेतसाजाजीदीप्यकैश्च समांशकैः ।
सिद्धं गुल्मग्रहण्यर्शःश्वासोन्मादक्षयज्वरान् ॥
कासापस्मारमन्दाग्निप्लीहशूलानिलाञ्जयेत् ।
दधि सौवीरकं सर्पिः क्वाथौ माषकुलत्थजौ ॥
पञ्चाढकानि विपचेदावाप्य द्विपलान्यथ ।
सौवर्चलं स्वर्जिकां च देवदार्वथ सैन्धवम् ॥
वातगुल्मापहं सर्पिरेतद्दीपनमेव च ।
तृणमूलकषाये तु जीवनीयैः पचेद्घृतम् ॥
न्यग्रोधादिगणे वापि गणे वाप्युत्पलादिके ।
रक्तपित्तोत्थितं घ्नन्ति घृतान्येतान्यसंशयम् ॥
आरग्वधादौ विपचेद्दीपनीययुतं घृतम् ।
क्षारवर्गे पचेच्चान्यत्पचेन्मूत्रगणेऽपरम् ॥
घ्नन्ति गुल्मं कफोद्भूतं घृतान्येतान्यसंशयम् ।
यथादोषोच्छ्रयं चापि चिकित्सेत्सान्निपातिकम्।
चूर्णं हिङ्ग्वादिकं वापि घृतं वा प्लीहनाशनम् ।
पिबेद्गुल्मापहं काले सर्पिस्तैल्वकमेव वा ॥
तिलेक्षुरकपालाशसार्षपं यवनालजम् ।
भस्म मूलकजं चापि गोजाविखरहस्तिनाम् ॥
मूत्रेण महिषीणां च पालिकैश्चावचूर्णितैः ।
कुष्ठसैन्धवयष्ट्याह्वनागरक्रिमिघातिभिः ॥
साजमोदैश्च दशभिः सामुद्राच्च पलैर्युतम् ;
अयःपात्रेऽग्निनाल्पेन पक्त्वा लेह्यमथोद्धरेत् ॥
तस्य मात्रां पिबेद्दध्ना सुरया सर्पिषापि वा ।
धान्याम्लेनोष्णतोयेन कौलत्थेन रसेन वा ॥
गुल्मं वातविकारांश्च क्षारोऽयं हन्त्यसंशयम् ।
स्वर्जिकाकुष्ठसहितः क्षारः केतकजोऽपि वा ॥
तैलेन शमयेत्पीतो गुल्मं पवनसम्भवम् ।
पीतं सुखाम्बुना वापि स्वर्जिकाकुष्ठसैन्धवम् ॥

वृश्चीकंमूरुबूकं च वर्षाभ्वं बृहतीद्वयम् ।
चित्रकं च जलद्रोणे पक्त्वा पादावशेषितम् ॥
मागधीचित्रकक्षौद्रलिप्ते कुम्भे निधापयेत् ।
मधुनः प्रस्थमावाप्य पथ्याचूर्णार्द्धसंयुतम् ॥
तुषोषितं दशाहं तु जीर्णभक्तः पिबेन्नरः ।
अरिष्टोऽयं जयेद्गुल्ममविपाकमरोचकम् ॥
पाठानिकुम्भरजनीत्रिकटुत्रिफलाग्निकम् ।
लवणं वृक्षबीजं च तुल्ये स्यादनवे गुडे ॥
पथ्याभिः सहितं चूर्णं गवां मूत्रयुतं पचेत् ।
गुटिकास्तद्घनीभूतं कृत्वा खादेदभुक्तवान् ॥
गुल्मप्लीहाग्निसादांस्ता नाशयेयुरशेषतः ।
हृद्रोगं ग्रहणीदोषं पाण्डुरोगं च दारुणम् ॥
सशूले सोन्नतास्यन्दे दाहपाकरुगन्विते ।
गुल्मे रक्तं जलौकोभिः शिरामोक्षेण वा हरेत् ॥
सुखोष्णा जाङ्गलरसाः सुस्निग्धा व्यक्तसैन्धवाः ।
कटुत्रिकसमायुक्ता हिताः पाने च गुल्मिनाम्
पेया वातहरैः सिद्धाः कौलत्थाः संस्कृता रसाः ।
खलाः सपञ्चमूलाश्च गुल्मिनां भोजने हिताः ॥
बद्धवर्चोऽनिलानां तु सार्द्रकं क्षीरमिष्यते ।
कुम्भीपिण्डेष्टकास्वेदान्कारयेत्कुशलो भिषक् ॥
गुल्मिनः सर्व एवोक्ता दुर्विरेच्यतमा भृशम् ।
अतश्चैतांस्तु सुस्विन्नान्स्रंसनेनोपपादयेत् ॥
विलेपनाभ्यञ्जनानि तथा संदहनानि च ।
उपनाहाश्च कर्तव्याः सुखोष्णाः शाल्वणादयः ॥
उदरोक्तानि सर्पींषि मूत्रवर्तिक्रियास्तथा ।
लवणानि च योज्यानि यान्युक्तान्यनिलामये ॥
वातवर्चोनिरोधे तु सामुद्रार्द्रकसर्षपैः ।
कृत्वा पायौ निधातव्या वर्तयो मरिचोत्तराः ॥
दन्तीचित्रकमूलेषु तथा वातहरेषु च ।
कुर्यादरिष्टान्सर्वांश्च सूत्रस्थाने यथेरितान् ॥
खादेद्वाप्यङ्कुरान्भृष्टान्पूतीकनृपवृक्षजान् ।
ऊर्ध्ववातं मनुष्यं च गुल्मिनं न निरूहयेत् ॥
पिबेत्त्रिवृन्नागरं वा सगुडां वा हरीतकीम् ।
गुग्गुलुं त्रिवृतां दन्तीं द्रवन्तीं सैन्धवं वचाम् ॥
मूत्रमद्यपयोद्राक्षारसैर्वीक्ष्य बलाबलम् ॥

एवं पीलूनि पिष्टानि पिबेत्सलवणानि तु ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकसैन्धवैः ॥
युक्ता हन्ति सुरा गुल्मं शीघ्रं काले प्रयोजिता ।
बद्धविण्मारुतो गुल्मी भुञ्जीत पयसा यवान् ॥
कुल्माषान्वा बहुस्नेहान् भक्षयेल्लवणोत्तरान् ।

गुल्मोनी चिकित्साओ.

१४ वायुजन्य गुल्मथी पीडाएला माणसने समयसर स्निग्ध करी, स्नेहात्मक विरेचनोथी विरेचित करीने ते ते अवस्थाओना अनुसारथी आस्थापनबस्तिओ तथा अनुवासनबस्तिओ देवी.

पित्तजन्य गुल्मथी पीडाएला माणसने काकोल्यादिगणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीवते स्निग्ध करी, मधुर योगोथी विरेचित करीने निरूहबस्तिओ देवी.

कफजन्य गुल्मथी पीडाएला माणसने पिप्पल्यादिगणना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेला घीवते स्निग्ध करी, तीक्ष्ण योगोथी विरेचित करीने तीक्ष्ण क्वाथोथीज निरूहबस्तिओ देवी.

जो गुल्म सन्निपातथी एटले त्रणे दोषोथी थएलो होय तो त्रणे दोषोने टाळनारी चिकित्सा करवी ए हितकारी थाय छे. (बारमा विषयमां त्रिदोषजन्य गुल्मने असाध्य कह्यो छे अने आ विषयमां त्रिदोषजन्य गुल्मनी चिकित्सा कही तेथी पूर्वापर विरोध आवे छे एम समजवुं नहीं. कारण के प्रकुपित समत्रिदोषजन्य गुल्म असाध्य छे अने प्रकुपित विषमत्रिदोषजन्य गुल्म नवो तथा बळवान् माणसने थयो होय तो कष्टसाध्य छे.)

स्त्रीने रजथी गुल्म उत्पन्न थयो होय तो तेनी पित्तगुल्मनी चिकित्सा प्रमाणेज चिकित्सा करवी. आ विषयमां रुधिरनुं भेदन करनारी बीजी विशेष चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो. खाखराना क्षारना पाणीथी घी पकावीने ते घी पावुं अने पिप्पल्यादिगणथी पकावेला घीनी उत्तरबस्ति देवी. अथवा पिप्पल्यादि वगेरे उष्ण गणोना प्रयोगोथी ए रजसंबंधी गुल्मनुं भेदन करवुं अने भेदाया पछी नीचेना

द्वारथी चालता रक्तपित्तना जेवी चिकित्सा करवी के जे चिकित्सा आ तंत्रना ४९ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे.

आनूप तथा जलचर प्राणीओनी मज्जाओ, एओनी चरबीओ, घी, तैल अने दहीं एओने एकठां करी पकावीने ते स्नेहथी अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो तेथी वातजन्य गुल्म नष्ट थाय छे.

जंघालप्राणीओ, विष्किरो अने एक खरीवाळां घोडा तथा खच्चर वगेरे प्राणीओ एओनी चरबी अने घी एओने पित्तहर द्रव्योथी पकावीने ते स्नेहथी अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य गुल्म शांत थाय छे.

तैल अने जांगलप्राणीओनी मज्जा एओने कफहर द्रव्योथी पकावीने ते स्नेहथी अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो तेथी कफजन्य गुल्म टळी जाय छे.

आमळांओना चोगणा स्वरसमां पंचकोल (पीपळ, पीपळीमूळ, चवक, चित्रक, सूंठ) अने जवखार एओनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. ए घीने साकरथी तथा सैंधवथी युक्त करीने देवामां आवे तो तेथी वातगुल्मवाळानुं हित थाय छे. (आ घी **षडंग घृत** केहेवाय छे.)

चित्रक, सूंठ, मरी, पीपळ, सैंधव, हींगपत्री अथवा काळीजीरी, चवक, दाडिम, अजमा, पीपळीमूळ, जीरूं, हवुषा (प्रसिद्ध नथी) अने धाणा एओनो समभाग कल्क नाखी दहीं, आरनाल, बोरनो स्वरस अने मूळानो स्वरस एओमां घी पकाववुं. आ घी पावामां आवे तो तेथी वातगुल्म, अग्निनुं दुर्बळपणुं, पेटनुं चडवुं अने शूळ एओनो नाश थाय छे. (आ घी **चित्रकादि घृत** केहेवाय छे.)

हींग, संचळ, जीरूं, बिड्लूण, दाडिम, अजमा, पुष्करमूळ, सूंठ, मरी, पीपळ, धाणा, अम्लवेतस, जवखार, चित्रक, कचूरो, वज, तलवणी, एळची अने तुलसी एओनो कल्क नाखी चोगणा दहींमां घी पकाववुं. आ घी पावाथी वातगुल्मवाळाओनां शूळो तथा मळमूत्रोनी अटकायतो नष्ट थई जाय छे. (आ **हिंग्वादि घृत** केहेवाय छे.)

बिडलूण, दाडिम, सैंधव, चित्रक, सूंठ, मरी, पीपळ, जीरूं, हींग, संचळ, जवखार, कठ, कोकम अने अम्लवेतस एओनो कल्क नाखी बीजोराना चोगणा रसमां अने चोगणा दहींमां घी पकाववुं. आ घी **दाधिक** केहेवाय छे. आ घी पावाथी गुल्म, बरलनुं दरद अने शूळ नष्ट थई जाय छे.

लसणनो स्वरस, बृहत्पंचमूलनो क्काथ, सुरा, आरनाल, दहींनुं पाणी अने मूळानो स्वरस एओमां सम भागे लीधेलां सूंठ, मरी, पीपळ, दाडिम, कोकम, अजमा, चवक, सैंधव, हींग, अम्लवेतस, जीरूं अने बोडीअजमोद एओनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. आ घी गुल्मने, ग्रहणीरोगने, अरशने, श्वासने, उन्मादने, क्षयने, ज्वरने, खांसीने, अपस्मारने, अग्निना मंदपणाने, बरलना दरदने, शूळने, अने वायुने नष्ट करवामां सिद्ध उपाय छे. (आ घी **रसोनादि घृत** केहेवाय छे.)

दहीं, सौवीरक, मगनो क्काथ अने कळथीनो क्काथ ए चार द्रव्योने एक एक आढकभार (बसो छपन तोलांभारनो एक आढक गणाय छे.) लई तेमां संचळ, साजीखार, देवदार अने सैंधव एओना आठ आठ तोलांभार कल्को नाखीने एक आढकभार घी पकाववुं. आ घी वातगुल्मने नष्ट करे छे अने जठराग्निने प्रदीप्त करे छे.

तृणपंचमूलगणना क्काथमां जीवनीयवर्गनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. अथवा न्यग्रोधादिगणना क्काथमां जीवनीयवर्गनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. अथवा उत्पलादिगणना क्काथमां जीवनीयवर्गनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. आ त्रण प्रकारना घीमांथी गमे ते घी पावामां आवे

तो तेथी रुधिरजन्य तथा पित्तजन्य गुल्म टळी जाय छे ए निस्संशय छे.

आरग्वधादिगणना क्राथमां पिप्पल्यादिगणनो कल्क नांखीने घी पकाववुं. अथवा मुष्ककादिगणना क्राथमां पिप्पल्यादिगणनो कल्क नांखीने घी पकाववुं. अथवा सूत्रस्थानना ४९ मा अध्यायमां कहेला मूत्रवर्गमां पिप्पल्यादिगणनो कल्क नाखीने घी पकाववुं. आ त्रण प्रकारनां घीमांथी गमे ते घी पावामां आवे तो तेथी कफजन्य गुल्म टळी जाय छे ए निस्संशय छे.

गुल्म जो सन्निपातथी उत्पन्न थएल होय तो प्रथम वायुने जीतीने पछी जे दोष उल्बण होय तेनी चिकित्सा करवी.

गुल्म उत्पन्न थतांज चिकित्सास्थानना पांचमा अध्यायना २४ मा विषयमां कहेलुं हिंग्वादि चूर्ण पावामां आवे अथवा चिकित्सास्थानना चौदमा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलुं पट्पलक नामनुं घी पावामां आवे अथवा पाटीया लोदरना क्राथमां तथा कल्कमां पकावेलुं के चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलुं तिल्वकघृत पावामां आवे तो तेथी गुल्म नष्ट थाय छे.

तिल, एखरो, खाखरो, सर्षप, जार नामना सफेद धान्यना डांडा अने मूळा एओनी भस्मने गाय, बकरी, गाडर, गधेडो, हाथी अने भेंस एओना चोगणा मूत्रमां नाखी स्रवावी लई तेमां कठ, सैंधव, जेठीमध, सूंठ, वावडींग अने बोडीअजमोद ए प्रत्येकनुं चार चार तोलांभार चूर्ण अने दरीयाईलूणनुं चालीश तोलांभार चूर्ण नाखी लोढाना वासणमां अल्प (कोमळ) अग्निथी पकावी ते अवलेह जेवुं थाय त्यारे उतारी अथवा तल वगेरेनी चारसो तोलांभार भस्म लई तेने गाय वगेरेना चोगणा मूत्रमां उकाळी एक भाग अवशेष रहे त्यारे ते क्राथमां कठ वगेरेनुं चूर्ण नाखी पकावी अवलेह जेवुं थाय त्यारे उतारी लेवुं. आ क्षारनी मात्रा दहींनी साथे अथवा सुरानी साथे अथवा घीनी साथे अथवा धान्याम्लनी साथे अथवा ऊना जळनी साथे अथवा कळथीना रसनी साथे पावी. आ क्षार गुल्मने अने वातजन्य विकारोने नष्ट करी नाखे छे ए निस्संशय छे.

साजीखार, कठ अने जवखार एओने मिश्रित करी तैलनी साथे पावामां आवे अथवा केतकीनो क्षार तैलनी साथे पावामां आवे अथवा साजीखार, कठ अने केतकीनो क्षार एओने मिश्रित करी तैलनी साथे पावामां आवे तो तेथी वातजन्य गुल्म शांत थई जाय छे.

साजीखार, कठ अने सैंधव एओनुं चूर्ण सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी गुल्म शांत थाय छे.

धोळी साटोडी, धोळो एरडो, राती साटोडी, ऊभी भोरींगणी, बेठी भोरींगणी अने चित्रक एओने एक हजार चोवीश तोलांभार पाणीमां उकाळी चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे ते क्राथने पीपळ, चित्रक तथा मध एओना कल्कथी अंदरना भागमां लींपेला घडामां नाखी तेमां चोसठ तोलांभार मध तथा बत्रीश तोलांभार हरडेनुं चूर्ण नाखवुं अने पछी ते घडाने धान्यनां फोतरांओना गंजमां दश दिवससूधी राखी मेलवो एटले अरिष्ट सिद्ध थाय छे. पूर्वे दिवसे खाधेलुं अन्न पची जईने जेनो कोठो हलको थयो होय एवा माणसने प्रभातमां आ अरिष्ट पावामां आवे तो तेथी गुल्म, अन्ननो अविपाक अने अरोचक एओ नष्ट थई जाय छे.

काळीपाड, नेपाळो, हळदर, सूंठ, मरी, पीपळ, त्रिफळा, चित्रक, सैंधव अने इंद्रजव एओना चूर्णने ते सर्वना जेटला जूना गोळमां मिश्रित करीने प्रभातमां नरणे कोठे खवराववामां आवे तो तेथी गुल्म, बरलनुं दरद अने अग्निनी मंदता एओ संपूर्ण रीते नष्ट थई जाय छे. अथवा उपर

कहेला काळीपाड वगेरेना चूर्णने तथा हरडेना चूर्णने गायना मूत्रमां पकावी घाटुं करी तेनी गोळीओ वाळीने प्रभातमां नरणे कोठे खवराववामां आवे तो ते गोळीओथी गुल्म, बरलनुं दरद अने अग्निनी मंदता एओ तमाम नष्ट थई जाय छे. आ प्रयोगथी हृद्रोग, ग्रहणीदोष अने दारुण पांडुरोग पण निश्शेष नष्ट थई जाय छे.

जो गुल्म शूळवाळो, ऊंचो, अचल अने दाहथी, पाकथी तथा वेदनाथी युक्त होय तो जळो मूकीने अथवा शिरावेध करीने लोहीनुं स्रावण करवुं.

जंघालप्राणीओनां तथा विष्किरोनां मांसोना रसोने जरा गरम करी, सारी पेठे स्निग्ध करी, सैंधव नाखवाथी ठीक रीते खारा करी, सूंठथी, मरीथी तथा पीपळथी युक्त करीने पावा ए गुल्मवाळाओने पथ्य छे.

वातहर द्रव्योथी सिद्ध करेली पेयाओ, स्नेहादिकथी संस्कृत करेला कळथीना रसो अने पंचमूळथी तथा कोठ वगेरेथी संस्कृत करेला खडयूषो गुल्मवाळाओने भोजनमां देवा ए हितकारी छे.

जे गुल्मवाळाओनां विष्टा तथा अधोवायु अटकी गयां होय तेओने प्रवीण वैद्ये आर्द्रकसहित दूध भोजनमां देवुं अने चिकित्सास्थानना ३२ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे कुंभीस्वेद, पिंडस्वेद तथा इष्टकास्वेद कराववा.

गुल्मना सघळा रोगीओने विरेचन बहुज मुशकेलीथी लागू पडे छे एटला माटे वैद्ये एओने सारी पेठे स्निग्ध तथा स्वेदित करीने पछी विरेचनना योगो देवा. (शूळवाळा अने कठणपणावाळा वातकफात्मक गुल्ममां विरेचनने माटे आ भलामण छे एम डल्लने कह्युं छे.)

गुल्मो उपर विलेपनो कराववां, अभ्यंगो करावरा, कांसडानी सळी वगेरेथी डांभवानी क्रियाओ पण करवी, गुल्मो पाकवामां अभिमुख थाय त्यारे सेहेज उष्णतावाळा शाल्वण आदि उपनाहो पण करवा, (शाल्वणनुं स्वरूप चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना पंदरमा विषयमां कह्युं छे ते जोवुं.) चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना ९ मा विषयमां उदररोगो उपर जे घी तथा मूत्रवर्त्तिक्रियाओ कहेल छे तेओनी पण योजनाओ करवी अने चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायमां वातव्याधिओ उपर जे पत्रलवण आदि लवणो कहेलां छे तेओनी पण योजनाओ करवी.

अधोवायुनो तथा विष्टानो निरोध थई गयो होय तो दरीयाइलूण, आर्द्रक अने सर्षप एओनी जेओमां मरी अधिक आवे एवी वाटो बनावीने गुदामां खोसाववी.

नेपाळानां मूळ, चित्रकनां मूळ अने वातहर द्रव्यो एओना अरिष्टो बनावीने गुल्मवाळाने पावा अने सूत्रस्थानना ४४ मा अध्यायमां कहेला बीजा पण सघळा योग्य अरिष्टोनी योजनाओ करवी.

चरेल करंज (गुच्छ करंज) अने गरमाळो एओनां कोमळ पल्लवोने स्नेहमां शेकीने खवराववां.

निरूहबस्ति जो के गुल्मवाळानुं हित करनारी छे तोपण ऊर्ध्ववातवाळा गुल्मना दरदीने ते बस्ति देवी नहीं.

गुल्मना दरदीने नसोतर अने सूंठ गोमूत्रादिकनी साथे पावां अथवा हरडेनुं चूर्ण गोळथी मिश्रित करीने गोमूत्रादिकनी साथे पावुं. (गोमूत्रादिक द्रवो आ नीचेना पारिग्राफमां केहेवामां आवशे.)

गुगळ, नसोतर, मोटो नेपाळो, नाहानो नेपाळो, (नेपाळानां मूळ) सैंधव अने वज ए पदार्थो दोषादिकनुं बलाबल जोईने गोमूत्र, मद्य, दूध के द्राक्षनो रस एओनी साथे पावा.

पीलुनां फळोने गोमूत्रादिकमां वाटी सैंधवथी मिश्रित करीने उपर कहेला गोमूत्र वगेरे द्रवोनी साथे पावां.

गुल्ममां पेट चडी आववा वगेरे अवस्था थई होय तो पीपळ, पीपळीमूळ, चवक, चित्रक अने

सैंधव, एओथी संयुक्त करेली सुरा पावी. आ सुरा समयसर देवामां आवे तो तुरतज गुल्मने नष्ट करे छे.

जेनां विष्टा तथा अधोवायु रोकाई गयां होय एवा गुल्मवाळाने दूधनी साथे जवनां अन्नो जमाडवां अथवा जेमां सारी पेठे सैंधव नाख्युं होय एवी जवनी घणा स्नेहवाळी घुघरीयो खवराववी.

१५ अथास्योपद्रवः शूलः कथंचिदुपजायते ॥
शूलं निखानितमिव सुखं येन न वेत्त्यसौ ।
तत्र विण्मूत्रसंरोधः कृच्छ्रोच्छ्वासः स्थिराङ्गता ॥
तृष्णा दाहो भ्रमोऽन्नस्य विदग्धपरिवृद्धता ।
रोमहर्षोऽरुचिश्छर्दिर्भुक्तवृद्धिर्जडाङ्गता ॥
वाय्वादिभिर्यथासङ्ख्यं मिश्रैर्वा वीक्ष्य योजयेत् ।
पथ्या त्रिलवणं क्षारं हिङ्गु तुम्बुरु पौष्करम् ॥
यवान्यथ हरिद्रा च विडङ्गान्यम्लवेतसम् ।
विदारी त्रिफला भीरुः शृङ्गाटी गुडशर्करा ॥
काश्मरीफलयष्ट्याह्वपरूषकहिमानि च ।
षड्ग्रन्थातिविषादारुपथ्यामरिचवृक्षकान् ॥
कृष्णामलकचव्यं च नागरक्षारचित्रकान् ।
उष्णाम्लकांजिकक्षीरतोयैः श्लोकसमापनात् ॥
यथाक्रमं विमिश्रांश्च द्वन्द्वे सर्वांश्च सर्वजे ।
तथैव सेकावगाहप्रदेहाभ्यङ्गयोजनम् ॥
शिशिरोदकपूर्णानां भाजनानां च धारणम् ।
वमनोन्मर्दनस्वेदलङ्घनक्षपणक्रियाः ॥
स्नेहादिश्च क्रमः सर्वो विशेषेणोपदिश्यते ।

गुल्मना उपद्रवरूप शूळनुं सामान्य लक्षण तथा दोषोना भेदोथी विशिष्ट लक्षणो अने विशिष्ट चिकित्साओ.

१९ गुल्मना रोगीने कोई प्रकारे शूळ नामनो उपद्रव एवो थाय छे के जे अत्यंत खोडेला खीला जेवो पीडाकारी होय छे. आ शूळवाळाने कोई पण विषयादिकथी सुख प्राप्त थतुं नथी.

जो शूळमां विष्टानो तथा मूत्रनो रोध थयो होय, ऊंचो श्वास मांड मांड लेवातो होय अने अंग कठण थई गएल होय तो जाणवुं के ए शूळ **वायुजन्य** छे. जो तरश लाग्या करती होय, बळतरा थती होय, भ्रम थतो होय अने खाधेलुं अन्न पाकवा लागे त्यारे शूळनी वृद्धि थती होय तो जाणवुं के ए शूळ **पित्तजन्य** छे. जो रुवाडां खडां थई जतां होय, अन्न उपर अरुचि होय, उलटी थती होय, जम्या पछी शूळनी वृद्धि थती होय अने अंगो जड थई गयां होय तो जाणवुं के ए शूळ **कफजन्य** छे. उपर कहेलां त्रण जातनां लक्षणोमांथी बे जातनां लक्षणो देखातां होय तो ते शूळने **द्विदोषजन्य** जाणवुं अने त्रणे जातनां लक्षणो देखातां होय तो ते शूळने **त्रिदोषजन्य** जाणवुं.

जो शूळ वायुजन्य होय तो हरडे, सैंधव, संचळ, बीडलूण, जवखार, हींग, तुंबरूफळ, पुष्करमूळ, अजमा, हळदर, वावडींग अने अम्लवेतस एओनो कल्क ऊनी खाटी कांजीनी साथे पावो.

जो शूळ पित्तजन्य होय तो फगवेलानो कंद, हरडे, बेहेडां, आमळां, शतावरी, शींगोडुं, गंगेटीनुं मूळ, सीवणनुं फळ, जेठीमध, फालसां अने चंदन एओनो कल्क ऊना दूधनी साथे पावो.

जो शूळ कफजन्य होय तो वज, अतवस, देवदार, हरडे, मरी, इंद्रजव, पीपळीमूळ, चवक, सूंठ, जवखार अने चित्रक एओनो कल्क ऊना पाणीनी साथे पावो.

जो शूळ द्विदोषजन्य होय तो जे बे दोषोथी ते थएल होय ते बे दोषोने मटाडनारा उपर लखेला बे कल्कोने मिश्रित करी उपर लखेला बे द्रवोनी साथे पावा.

जो शूळ त्रिदोषजन्य होय तो उपर लखेला त्रणे कल्कोने मिश्रित करी उपर कहेला त्रणे द्रवोनी साथे पावा.

जो शूळ वातजन्य होय तो सेचन, अवगाहन, प्रलेप अने अभ्यंग एओनी योजना पण करवी.

जो शूळ पित्तजन्य होय तो शूळनी उपर थंडां जळथी भरेलां रूपां वगेरेनां वासणोनुं धारण कराववुं.

जो शूळ कफजन्य होय तो वमन, मर्दन, स्वेदन, लंघन अने बीजी पण कर्षणक्रियाओ करवी.

जो शूळ द्विदोषजन्य होय तो जे बे दोषोथी थएल होय ते बे दोषोने टाळनारी बे जातनी क्रियाओ करवी.

जो शूळ त्रिदोषजन्य होय तो त्रणे दोषोने टाळनारी उपर लखेली त्रणे जातनी क्रियाओ करवी.

दोषोना अनुसारथी तथा अवस्थाओना अनुसारथी स्नेहन आदि क्रम पण सघळा प्रकारनां शूळो उपर विशेषे करी करवो.

१६ वल्लूरं मूलकं मत्स्यान् शुष्कशाकानि वैदलम् न खादेदालुकं गुल्मी मधुराणि फलानि च ॥

गुल्मवाळाए पाळवानी परेजी.

१६ गुल्मवाळा माणसे सूकाएलुं मांस, मोटा मूळा, माछलां, शाकोनी सूकवणीओ, मग तथा मठ वगेरे द्विदलधान्य, आलू अने मधुर फळो एओनुं भक्षण करवुं नहीं. (अडद अने कळथी एओ विदलधान्यो छतां पण तेओनो गुल्मना दरदीने निषेध नथी.)

केवळ शूळना निदानादिकनुं प्रकरण.

१७ विना गुल्मेन यच्छूलं गुल्मस्थानेषु जायते निदानं तस्य वक्ष्यामि रूपं च सचिकित्सितम् ॥

केवळ शूळ के जे गुल्म विना पण थाय छे तेनां निदानादिक केहेवानी प्रतिज्ञा.

१७ गुल्मविना पण पडखां वगेरे गुल्मनां स्थानकोमां जे शूळ थाय छे तेनां निदानो, रूपो तथा चिकित्साओ कहुं छुं.

१८ वातमूत्रपुरीषाणां निग्रहादतिभोजनात् । अजीर्णाध्यशनायासविरुद्धान्नोपसेवनात् ॥ पानीयपानात्क्षुत्काले विरूढानां च सेवनात् ॥ पिष्टान्नशुष्कमांसानामुपयोगात्तथैव च ॥ एवंविधानां द्रव्याणामन्येषां चोपसेवनात् । दोषाः प्रकुपिताः कोष्ठे शूलं सञ्जनयन्ति हि ॥

शूळनां दूरनां तथा पासेनां निदानो अने संप्राप्ति.

१८ अधोवायु मूत्र अने विष्टा एओना वेगोनो निग्रह करवाथी, अतिभोजन करवाथी, आम तथा विदग्ध आदि अजीर्णथी, अजीर्णमां भोजन करवाथी, आयास करवाथी, विरुद्ध अन्नोना सेवनथी, क्षुधा लागी होय ते समयमां पाणी पीवाथी, कोंटा फुटाडेलां धान्यो खावाथी, वाटेलां अन्नो खावाथी, सूकाएलां मांसो खावाथी अने एवीज रीते ते ते दोषोने प्रकुपित करनारां बीजां द्रव्योना सेवनथी कोठामां प्रकुपित थएला दोषो शूळने उत्पन्न करे छे.

१९ निरुच्छ्वासो भवेत्तेन वेदनापीडितो नरः । शङ्कुस्फोटनवत्तस्य यस्मात्तीव्राश्च वेदनाः ॥ शूलासक्तस्य लक्ष्यन्ते तस्माच्छूलमिहोच्यते ।

ए रोग 'शूळ' शा माटे केहेवाय छे ?

१९ ए रोगनी वेदनाथी पीडाएलो माणस रोकाएला श्वासवाळो थई जाय छे अने तेने जाणे अंदर खीलो ठोकायो होय एवी तीव्र वेदनाओ थाय छे माटे ए रोग 'शूळ' केहेवाय छे.

२० निराहारस्य यस्यैव तीव्रं शूलमुदीर्यते ॥ प्रस्तब्धगात्रो भवति कृच्छ्रेणोच्छ्वसितीव च । वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेण कुरुते नरः ॥ एतैर्लिङ्गैर्विजानीयाच्छूलं वातसमुद्भवम् ।

वायुजन्य शूळनुं लक्षण.

२० आहार न कर्यो होय ते समयमांज तीव्र शूळ वृद्धि पामे, गात्रो स्तब्ध थई जाय, ऊंचो श्वास मांड मांड लेवाई शके अने अधोवायु विष्टा

तथा मूत्र एओनो उत्सर्ग बहुज कष्टथी करी शकाय तो जाणवुं के शूळ वायुथी उत्पन्न थएलुं छे.

२१ तृष्णा दाहो मदो मूर्छा तीव्रं शूलं तथैव च । शीताभिकामो भवति शीतेनैव प्रशाम्यति । एतैर्लिङ्गैर्विजानीयाच्छूलं पित्तसमुद्भवम् ।

पित्तजन्य शूळनुं लक्षण.

२१ तरश लाग्या करे, बळतरा थाय, सोपारी खाधाना जेवो मीणो चडे, मूर्छा आवे, शूळ तीव्र होय, शीतनी इच्छा थाय अने शूळ शीतथीज शांत थतुं होय तो जाणवुं के ए शूळ पित्तथी उत्पन्न थएलुं छे.

२२ शूलेनोत्पीड्यमानस्य हृल्लास उपजायते । अतीव पूर्णकोष्ठत्वं तथैव गुरुगात्रता ॥ एतच्छ्लेष्मसमुत्थस्य शूलस्योक्तं निदर्शनम् ।

कफजन्य शूळनुं लक्षण.

२२ शूळथी पीडातां मोळ आवे तथा लाळ झरे, कोठो अत्यंत पूर्ण थई जाय अने गात्रो भारे रहे तो जाणवुं के ए शूळ कफथी उत्पन्न थएलुं छे.

२३ सर्वाणि दृष्ट्वा रूपाणि निर्दिशेत्सान्निपातिकम् सन्निपातसमुत्थानमसाध्यं तं विनिर्दिशेत् ।

सान्निपातिक (त्रिदोषजन्य) शूळनुं लक्षण अने असाध्यपणुं.

२३ जे शूळमां उपर कहेलां त्रणे दोषोनां लक्षणो देखाय ते शूळने सान्निपातिक जाणवुं. सान्निपातिक शूळ असाध्य छे.

२४ शूलानां लक्षणं प्रोक्तं चिकित्सां च निबोध मे आशुकारी हि पवनस्तस्मात्तं त्वरया जयेत् । तस्य शूलाभिपन्नस्य स्वेद एव सुखावहः ॥ पायसैः कृशरापिण्डैः स्निग्धैर्वा पिशितैर्हितः । त्रिवृच्छाकेन वा स्निग्धमुष्णं भुञ्जीत भोजनम्॥ चिरबिल्वाङ्कुरान् वापि तैलभृष्टांस्तु भक्षयेत् वैहङ्गांश्च रसान्स्निग्धाञ्जाङ्गलाञ्शूलपीडितः ॥ यथालाभं निषेवेत मांसानि बिलशायिनाम् । सुरा सौवीरकं शुक्तं मस्तूदश्वित्तथा दधि ॥ सकाललवणं पेयं शूले वातसमुद्भवे । कुलत्थयूषो युक्ताम्लो लावकीयूषसंस्कृतः ॥ ससैन्धवः समरिचो वातशूलविनाशनः । विडङ्ग.शिग्रुकम्पिल्लपथ्याश्यामाम्लवेतसान् ॥ सुरसामश्वकर्णं च सौवर्चलयुतान्पिबेत् ॥ मद्येन वातजं शूलं क्षिप्रमेव प्रशाम्यति । पृथ्वीकाजाजिचविकायवानीव्योषचित्रकाः ॥ पिप्पल्यः पिप्पलीमूलं सैन्धवं चेति चूर्णयेत् । तानि चूर्णानि पयसा पिबेत्काम्बलिकेन वा ॥ मध्वासवेन चुक्रेण सुरासौवीरकेण वा । अथ वै तानि चूर्णानि मातुलुङ्गरसेन वै ॥ तथा बदरयूषेण भावितानि पुनः पुनः । तानि हिंगुप्रगाढानि सह शर्करया पिबेत् ॥ सह दाडिमसारेण वर्तिः कार्या भिषग्जिता । सा वर्त्तिर्वातिकं शूलं क्षिप्रमेव व्यपोहति ॥ गुडतैलेन वा लीढा पीता मद्येन वा पुनः । बुभुक्षाप्रभवे शूले लघु सन्तर्पणं हितम् । उष्णैः क्षीरैर्यवागूभिः स्निग्धैर्मांसरसैस्तथा वातशूले समुत्पन्ने रूक्षं स्निग्धेन योजयेत् ॥ सुसंस्कृताः प्रदेयाः स्युर्घृतपूरा विशेषतः । वारुणीं च पिबेज्जन्तुस्तथा सम्पद्यते सुखी ॥ एतद्वातसमुत्थस्य शूलस्योक्तं चिकित्सितम् ।

वातजन्य शूळनी चिकित्सा.

२४ शूळोनां लक्षणो कह्यां. हवे वातजन्य शूळनी चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो. वायु झडपदार छे एटला माटे वातजन्य शूळनी तुरत चिकित्सा करवी. वातजन्य शूळथी पीडाएला माणसने दूधपाकोथी, तल अडद तथा चोखा एओनी खीचडीना पिंडोथी अथवा स्निग्ध मांसोथी स्वेद देवो ए परम हितकारी छे. ए माणसने नसोतरना शाकनी साथे स्निग्ध तथा उष्ण अन्न जमाडवुं. चरेल करंज (गुच्छ करंज)-ना कोमळ अंकुरोने तेलमां शेकीने खवराववा.

वातजन्य शूळथी पीडाएला माणसने लावां वगेरे पक्षीओनां तथा जांगलप्राणिओनां मांसोना स्निग्ध रसोनुं अने बिलेशय प्राणिओमांथी जे जे प्राणिओनुं मांस मळी शके ते ते प्राणीना मांसनुं सेवन कराववुं.

सुरा, सौवीरक, शुक्त, दहींनुं पाणी, अरधा पाणीवाळी छाश अने दहीं एओमांथी जेटला पदार्थो मळी आवे तेटला पदार्थोने संचळथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य शूळ नष्ट थई जाय छे.

जेने लावांपक्षीना मांसना यूषथी संस्कार आप्यो होय एवो अने दाडिम वगेरे अम्लथी युक्त करेलो कळथीनो यूष सैंधवथी तथा मरीथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य शूळनो विनाश थाय छे.

वावडींग, सरगवो, कपीलो, हरडे, पीपळ, अम्लवेतस, जंगली तुलसी अने राळ एओ संचळथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य शूळ शांत थई जाय छे.

वातजन्य शूळ मद्य पावाथी तुरतज शांत थई जाय छे.

हींगपत्री अथवा काळीजीरी, जीरूं, चवक, अजमा, सूंठ, मरी, बमणी पीपळ, चित्रक, पीपळीमूळ अने सैंधव एओनुं चूर्ण दूधनी, कांबलिक यूषनी, मधना आसवनी, कांजीनी के सूत्रस्थानना ४९ मा अध्यायमां कहेला सौवीरकनी साथे पावामां आवे तो तेथी वातजन्य शूळ नष्ट थई जाय छे.

अथवा उपर कहेलां चूर्णने बीजोराना रसनी के बोरना यूषनी वारंवार भावनाओ आपी, हींगथी सारी पेठे संयुक्त करी, साकरनी साथे तथा बीजोराना रसनी साथे पावामां आवे तो तेथी वातजन्य शूळ नष्ट थई जाय छे.

अथवा उपर कहेलां चूर्णने दाडिमना सारथी संयुक्त करी गोळी बनावी ते गोळी गोळथी संयुक्त करेला तैलमां कालवीने चटाडवामां आवे अथवा मद्यनी साथे पावामां आवे तो तेथी वातजन्य शूळ तुरतज शांत थई जाय छे.

भूखथी उत्पन्न थएलुं शूळ के जे एक जातनुं वातजन्य शूळज छे ते थएल होय तो तुरतज ऊनां दूधोथी, यवागूओथी तथा स्निग्ध करेला मांसना रसोथी संतर्पण करवुं ए हितकारी थाय छे.

रूक्ष माणसने वातजन्य शूळ थएल होय तो स्निग्ध द्रव्योनी योजना करवी अने विशेषे करी जेओने सूंठ तथा मरी वगेरेनो संस्कार आप्यो होय एवां घेवर जमाडवां तथा मदिरा पावी. आ प्रमाणे करवाथी वातजन्य शूळवाळो रोगी सुखी थाय छे.

आ सघळी वातजन्य शूळनी चिकित्साओ केहेवामां आवी.

२५ अथ पित्तसमुत्थस्य क्रियां वक्ष्याम्यतः परम्‌
स सुखं छर्दयित्वा तु पीत्वा शीतोदकं नरः ॥
शीतलानि च सेवेत सर्वाण्युष्णानि वर्जयेत्‌ ।
मणिराजतताम्राणि भाजनानि च सर्वशः ॥
वारिपूर्णानि तान्यस्य शूलस्योपरि निक्षिपेत्‌ ।
गुडशालियवाः क्षीरं सर्पिः पानं विरेचनम्‌ ॥
जाङ्गलानि च मांसानि भेषजं पित्तशूलिनाम्‌ ।
रसान्सेवेत पित्तघ्नान्‌ पित्तलानि विवर्जयेत्‌ ॥
पालाशं धान्वनं वापि पिबेद्यूषं सशर्करम्‌ ।
परूषकाणि मृद्वीकाखर्जूरोदकजान्यपि ॥
तत्पिबेच्छर्करायुक्तं पित्तशूलनिवारणम्‌ ॥

पित्तजन्य शूळनी चिकित्सा.

२५ हवे पित्तजन्य शूळनी चिकित्साओ कहुं छुं. पित्तजन्य शूळवाळा माणसने टाढुं पाणी पाई सेहेज वमन करावीने शीतल पदार्थोनुं सेवन कराववुं अने उष्ण पदार्थोनो त्याग कराववो.

मणिओ, रूपुं के त्रांबुं एओनां वासणोने शीतल जळथी भरपूर करी ते वासणो शूळनी

उपर धराववां. ए पित्तजन्य शूळ उपर हितकारी छे.

गोळ, राता चोखानां अन्नो, जवनां अन्नो, दूध, घी, विरेचन अने जांगलप्राणिओनां मांसो एओ पित्तजन्य शूळवाळाओने औषधरूप छे.

पित्तजन्य शूळवाळा माणसने पित्तनुं हरण करनारा मांसरसोनुं सेवन करावबुं अने पित्त करनारा पदार्थोनो त्याग करावबो.

मांसभक्षक प्राणिओना अथवा जांगलप्राणिओना मांसनो यूष साकरथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य शूळ शांत थई जाय छे.

फालसां, द्राक्ष, खजूर अने जळमां उत्पन्न थतां कमळ वगेरेनां पत्रो एओनो कल्क साकरना पाणीथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य शूळ नष्ट थाय छे.

२६ **अशने भुक्तमात्रे तु प्रकोपः श्लैष्मिकस्य च ॥**
वमनं कारयेत्तत्र पिप्पलीवारिणा भिषक् ।
रूक्षःस्वेदःप्रयोज्यःस्यादन्याश्चोष्णाःक्रियाहिताः
पिप्पली शृङ्गवेरं च श्लेष्मशूले भिषग्जितम् ।
पाठां वचां त्रिकटुकं तथा च कटुरोहिणीम् ॥
चित्रकस्य च निर्यूहं पिबेच्चूर्षं समार्जकम् ।
एरण्डफलमूलानि मूलं गोक्षुरकस्य च ॥
शालिपर्णी पृश्निपर्णी बृहतीं कण्टकारिकाम् ।
दद्याच्छृगालविन्नां च सहदेवां तथैव च ॥
महासहां क्षुद्रसहां मूलं चेक्षुरकस्य च ।
एतत्सम्भृत्य सम्भारं जलद्रोणे विपाचयेत् ॥
चतुर्भागावशेषं तु यवक्षारयुतं पिबेत् ॥
वातिकं पैत्तिकं वापि श्लैष्मिकं सान्निपातिकम्
प्रसह्य नाशयेच्छूलं छिन्नाभ्रमिव मारुतः ॥
पिप्पल्यः स्वर्जिकाक्षारो यवाश्चित्रक एव च ।
सेव्यं चैव समानीय भस्म कुर्याद्विचक्षणः ॥
तदुष्णवारिणा पीतं श्लेष्मशूले भिषग्जितम् ।

कफजन्य शूळनी चिकित्सा.

२६ भोजन जमवामां आवे के तुरतज कफजन्य शूळनो प्रकोप थाय छे. आ प्रमाणे थतुं होय तो वैद्ये पीपळना पाणीथी अथवा पीपळना क्वाथथी अथवा मींढोळना पाणीथी वमन करावबुं.

पीपळ अने सूंठ एओ कफजन्य शूळ उपर औषधरूप छे.

काळीपाड, वज, सूंठ, मरी, पीपळ अने कडु एओनुं चूर्ण करी चित्रकना क्वाथमां पावामां आवे तो तेथी कफजन्य शूळ नष्ट थई जाय छे.

समभागे जंगली तुलसीनो (तकमरीयानो?) कल्क नाखी शूळने हरनारां शिंबी धान्योनो यूष पावामां आवे तो तेथी कफजन्य शूळ टळी जाय छे.

एरडानां फळ, एरडानां मूळ, गोखरूनुं मूळ, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, ऊभीभोरींगणी, बेठीभोरींगणी, शृगालविन्ना नामनी पृश्निपर्णीनी जात, सहदेवा, जंगली अडदना छोड, जंगली मगना छोड अने एखरानुं मूळ एओने चोसठ तोलांभार अथवा चारसो तोलांभार एकठां करी एक हजार चोवीश तोलांभार पाणीमां पकाववां. चोथा भागनुं पाणी अवशेष रहे त्यारे तेमां जवखार नाखवो. ज्यारे तरश लागे त्यारे आ क्वाथ पावामां आवे तो ते क्वाथ जेम पवन त्रूटेला वादळाने नष्ट करे छे तेम वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य अने सान्निपातिक शूळने पण नष्ट करी नाखे छे. (जो के आ **एरंडद्वादश** नामनो योग सघळा प्रकारनां शूळोने हरनार छे तो पण कफजन्य शूळने तो अत्यंत हरनार छे तेथी कफजन्य शूळ उपर कह्यो छे.)

पीपळ, साजीखार, जव, चित्रक अने वाळो एओने एकठां करी भस्म बनावीने ते भस्म ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी कफजन्य शूळ नष्ट थई जाय छे.

पक्षांतरथी ते ते शूळोनां निदानादिकनुं प्रकरण[1].

२७ रुणद्धि मारुतं श्लेष्मा कुक्षिपार्श्वव्यवस्थितः ॥
स संरुद्धः करोत्याशु ध्मानं गुडुगुडायनम् ।
सूचीभिरिव निस्तोदः कृच्छ्रोच्छ्वासी तदा नरः॥
नान्नं वाञ्छति नो निद्रामुपैत्यार्त्तिनिपीडितः।
पार्श्वशूलः स विज्ञेयः कफानिलसमुद्भवः ॥
तत्र पुष्करमूलानि हिंगु सौवर्चलं बिडम् ।
सैन्धवं तुम्बुरुः पथ्या चूर्णं कृत्वा तु पाययेत्॥
पार्श्वहृद्बस्तिशूलेषु यवक्काथेन संयुतम् ।
सर्पिः प्लीहोदरोक्तं वा घृतं वा हिङ्गुसंयुतम् ॥
बीजपूरकसारं वा पयसा सह साधितम् ।
एरण्डतैलमथ वा मद्यमस्तुपयोरसैः ॥
भोजयेच्चापि पयसा जाङ्गलेन रसेन वा ।

पार्श्वशूळनां निदान, संप्राप्ति, लक्षण तथा चिकित्सा.

२७ कूखना पडखामां रहेलो कफ वायुने रोकी दे छे. ए रोकाएलो वायु पेटमां आफराने तथा गड्गडाटने उत्पन्न करे छे. आ समयमां माणस मांड मांड श्वास लई लई शके छे, जाणे सोईओथी भोंकातो होय तेम व्यथा पामे छे, अन्नने इच्छतो नथी अने पीडाने लीधे ऊंघतो पण नथी. आ कफथी तथा वायुथी उत्पन्न थतुं शूळ पार्श्वशूळ केहेवाय छे.

पार्श्वशूळ थयुं होय तो पुष्करमूळ, हींग, संचळ, बिडलूण, सैंधव, तुंबरुफळ अने हरडे एओनुं चूर्ण करी जवना काथनी साथे पावुं.

पडखां, हृदय तथा मूत्राशय एओमां शूळ थयुं होय तो चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलुं षट्पलक नामनुं घी अथवा हींगनुं चूर्ण नाखीने एकलुं काचूं घीज पावुं अथवा बीजोरांना फळने दूधमां पकावीने ते दूध पावुं अथवा सात्म्यने अनुसरी मद्यनी, दहींनी तरनी, दूधनी के मांसना रसनी साथे एरडीयुं तैल पावुं. जे पाएलुं होय ते जीर्ण थई जाय त्यारे दूधनी के जांगलप्राणिओना मांसना रसनी साथे भोजन कराववुं.

२८ प्रकुप्यति यदा कुक्षौ वह्निमाक्रम्य मारुतः॥
तदास्य भोजनं भुक्तं सोपष्टम्भं न पच्यते ।
सित्यामशकृता शूलेनाहन्यते मुहुः ॥
नैवासने न शयने तिष्ठन्न लभते सुखम् ।
कुक्षिशूल इति ख्यातो वातादामसमुद्भवः ॥
वमनं कारयेत्तत्र लङ्घयेद्वा यथाबलम् ।
संसर्गपाचनं कुर्यादम्लैर्दीपनसंयुतैः ॥
नागरं दीप्यकं चव्यं हिङ्गु सौवर्चलं बिडम् ।
मातुलुङ्गयाश्च बीजानि तथा श्यामोरुवूकयोः॥
बृहत्याः कण्टकार्याश्च क्काथं शूलहरं पिबेत् ।
वचा सौवर्चलं हिङ्गु कुष्ठं सातिविषाऽभया ॥
कुटजस्य च बीजानि सद्यःशूलहराणि तु ।
विरेचनं प्रयुञ्जीत ज्ञात्वा दोषबलाबलम् ॥
स्नेहबस्तीन्निरूहांश्च कुर्याद्दोषनिबर्हणम् ।
उपनाहाः स्नेहसेका धान्याम्लपरिषेचनम् ।

कुक्षिशूळनां निदान, संप्राप्ति, लक्षण तथा चिकित्सा.

२८ ज्यारे वायु जठराग्निने दबावीने कूखमां प्रकुपित थाय छे त्यारे खाधेलुं अन्न स्तब्ध थई रेहेवाने लीधे पचतुं नथी, श्वास ऊंचोज चाल्या करे छे, काची विष्टाथी थएला शूळथी वारंवार भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे अने आसनपर बेसतां के शयनमां सूतां पण सुख थतुं नथी. वायुना प्रकोपने लीधे काची विष्टाथी थतुं आ शूळ कुक्षिशूळ केहेवाय छे.

कुक्षिशूळ थएल होय तो बलने अनुसरीने वमन करावबुं अथवा बळने अनुसरीने लंघन करावबुं. पिप्पल्यादिगणथी संयुक्त करेला अम्ल पदार्थो खवरावीने अन्नादिकनुं पाचन करवुं.

[1] आ प्रकरण आ अध्यायना ३४ मा विषयसूधी चालशे.

सूंठ, अजमा अने चवक एओना क्वाथमां हींग, संचळ तथा बिडलूण एओनुं चूर्ण नाखीने ते क्वाथ पावामां आवे तो तेथी कुक्षिशूळ टळी जाय छे.

बीजोरानां बीज, वरधारानां बीज, धोळा एरडानां बीज, ऊभीभोरींगणीनां बीज अने बेठीभोरींगणीनां बीज एओनो क्वाथ पावामां आवे तो तेथी कुक्षिशूळ टळी जाय छे.

वज, संचळ, हींग, कठ, अतवस, हरडे अने इंद्रजव एओनुं विरेचन दोषादिकनुं बलाबल जाणीने देवामां आवे तो तेथी कुक्षिशूळ तुरत नष्ट थई जाय छे.

स्नेहबस्तिओथी, निरूहबस्तिओथी, उपनाह स्वेदोथी, स्नेहोनां सेचनोथी तथा धान्याम्लना सेचनथी पण दोषनुं निबर्हण करवुं.

२९ कफपित्तावरुद्धस्तु मारुतो रसमूर्छितः ॥
हृदिस्थः कुरुते शूलमुच्छ्वासरोधकं परम् ।
स हृच्छूल इतिख्यातो रसमारुतसम्भवः
तत्रापि कर्म्माभिहितं यदुक्तं हृद्विकारिणाम् ।

हृदयशूळनां निदान, संप्राप्ति, लक्षण तथा चिकित्सा.

२९ कफे तथा पित्ते रोकेलो रससंयुक्त वायु हृदयमां रही उच्छ्वासने अत्यंत रोकनारां शूळने उत्पन्न करे छे. रसथी तथा वायुथी उत्पन्न थतुं आ शूळ **हृच्छूल** केहेवाय छे.

हृच्छूल थएल होय तो आ पछीना अध्यायमां हृद्रोगवाळाओनी जे चिकित्सा केहेवामां आवशे ते करवी.

३० संरोधात्कुपितो वायुर्बस्तिमावृत्य तिष्ठति ॥
बस्तिवंक्षणनाभीषु ततः शूलोऽस्य जायते ।
विण्मूत्रवातसंरोधी बस्तिशूलः स मारुतात् ॥

बस्तिशूळनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३० मळमूत्रोना वेगोने रोकवाथी प्रकुपित थएलो वायु मूत्राशयने घेरीने रहे छे तेथी मूत्राशयमां, साथळोना संधिओमां अने नाभिमां शूळ उत्पन्न थाय छे के जे शूळथी विष्टा, मूत्र तथा अधोवायु रोकाई जाय छे. वायुथी थतुं आ शूळ **बस्तिशूळ** केहेवाय छे.

३१ नाभ्यां वंक्षणपार्श्वेषु कुक्षौ मेढ्राग्रमर्दकः ।
मूत्रमावृत्य गृह्णाति मूत्रशूलः स मारुतात् ॥

मूत्रशूलनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३१ प्रकुपित थएलो वायु उपस्थना आंतरडानुं मर्दन करी मूत्रने घेरे छे त्यारे नाभिमां, साथळोना संधिओमां, पडखांओमां अने कूखमां शूळ उत्पन्न थाय छे के जे शूळथी मूत्र रोकाई जाय छे. वायुथी उत्पन्न थतुं आ शूळ **मूत्रशूळ** केहेवाय छे.

३२ वायुः प्रकुपितो यस्य रूक्षाहारस्य देहिनः
मलं रुणद्धि कोष्ठस्थं मन्दीकृत्य तु पावकम् ॥
शूलं सञ्जनयंस्तीव्रं स्रोतांस्यावृत्य तस्य हि ।
दक्षिणं यदि वा वामं कुक्षिमादाय जायते ॥
सर्वत्र वर्द्धते क्षिप्रं शूलं तत्र च घोषवत् ।
पिपासा वर्द्धते तीव्रा भ्रमो मूर्छा च जायते ॥
उच्चारितो मूत्रितश्च न शान्तिमधिगच्छति ।
विट्शूलमेतज्जानीयाद्भिषक्परमदारुणम् ॥

विट्शूळनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३२ रूक्ष आहारोथी प्रकुपित थएलो वायु जठराग्निने मंद करी, स्रोतोने घेरी लई तीव्र शूळने उत्पन्न करतो करतो कोठामां रहेला मळने रोकी दे छे तेथी जमणा अथवा डाबा पडखांमां शूळ उत्पन्न थाय छे. आ शूळ झडपथी चोतरफ फरे छे तथा वृद्धि पामे छे अने अवाजवाळुं होय छे. आ शूळथी तीव्र तरश वृद्धि पामे छे, भ्रम थाय छे, मूर्छा थाय छे अने विष्टानो तथा मूत्रनो वेग थतां शांति मळतीज नथी. वैद्ये आ परम दारुण शूळने **विट्शूळ** जाणवुं.

३३ क्षिप्रं दोषहरं कार्यं भिषजा साधु जानता ।
स्वेदनं वमनं चैव निरूहाः स्नेहबस्तयः ॥

पूर्वोद्दिष्टान्पाययेत योगान्कोष्ठविशोधनान् ।
उदावर्त्तहराश्चास्य क्रियाः सर्वाः सुखावहाः ॥

बस्तिशूळ, मूत्रशूळ तथा विट्शूळ एओनी चिकित्सा.

३३ बस्तिशूळ, मूत्रशूळ के विट्शूळ उत्पन्न थएल होय तो तुरत दोषनुं हरण करनारी चिकित्सा करवी तथा शमन चिकित्सा पण करवी. स्वेदन करवुं, वमन कराववुं, निरूहबस्तिओ देवी, स्नेहबस्तिओ (अनुवासनबस्तिओ) देवी अने कोठाने शुद्ध करनारा जे योगो प्रथम केहेवामां आव्या छे तेओ पण पावा. आ तंत्रना ५५ मा अध्यायमां उदावर्त्तनुं हरण करनारी जे चिकित्साओ केहेवामां आवशे ते सघळी चिकित्साओ बस्तिशूळ उपर, मूत्रशूळ उपर तथा विट्शूळ उपर हितकारी छे.

३४ अतिमात्रं यदा भुक्तं पावके मृदुतां गते ।
स्थिरीभूतं तु तत्कोष्ठे वायुरावृत्य तिष्ठति ॥
अविपाकगतं ह्यन्नं शूलं तीव्रं करोत्यति ।
मूर्छाध्मानं विदाहं च हृदुत्क्लेशं विलम्बिकाम् ॥
विरिच्यते छर्दयति कम्पतेऽथ विमुह्यति ।
क्षाराश्चूर्णानि गुटिकाः शस्यन्ते शूलनाशनाः ॥

आमशूळनां निदान, संप्राप्ति, लक्षण तथा चिकित्सा.

३४ अत्यंत घणा जमवामां आवेला अन्नने जठराग्नि मंद थई जवाथी वायु कोठामां स्थिर करी दई चोमेरथी वींटी लईने रहे छे के जेथी ते अन्न नहीं पाकतां अतितीव्र शूळने उत्पन्न करे छे. आ शूळमां मूर्छा, आफरो, बळतरा, हृदयमां उत्क्लेश, विलंबिका, (एक जातनुं कालेरा) अतिसार, उलटी, कंप अने मोह थाय छे. आ शूळ उत्पन्न थएल होय तो शूळने नष्ट करनारां क्षारो, चूर्णो अने गोळीओ एओनी योजनाओ करवी ए उत्तम छे.

३५ गुल्मावस्थाः क्रियाः कार्या यथावत्सर्वशूलिनाम् ॥

सघळा प्रकारनां शूळो उपर सामान्य चिकित्सा.

३५ आ अध्यायमां गुल्मो उपर जे क्रियाओ केहेवामां आवी छे ते क्रियाओ अवस्थाओना अनुसारथी सघळा प्रकारनां शूळो उपर पण करवी.

अध्याय ४३ मो.

१ अथातो हृद्रोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'हृद्रोगप्रतिषेध'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे केहेलुं छे.

२ वेगाघातोष्णरूक्षान्नैरतिमात्रोपसेवितैः ।
विरुद्धाध्यशनाजीर्णैरसात्म्यैश्चापि भोजनैः ॥
दूषयित्वा रसं दोषा विगुणा हृदयं गताः ।
कुर्वन्ति हृदये बाधां हृद्रोगं तं प्रचक्षते ॥

हृद्रोगनां निदान तथा संप्राप्ति.

२ विष्ठा तथा मूत्र वगेरेना वेगोने अटकाववाथी, लाकडी वगेरेना प्रहारोथी, उष्ण के रूक्ष अन्नोनुं अत्यंत सेवन करवाथी, विरुद्ध भोजनोथी, अजीर्णमां भोजनो करवाथी, आम तथा विदग्ध आदि अजीर्णोथी अने असात्म्य भोजनोथी प्रकुपित थएला दोषो हृदयमां आवी, रसने दूषित करीने हृदयमां पीडाने उत्पन्न करे छे ए रोग **हृद्रोग** केहेवाय छे.

३ चतुर्विधः स दोषैश्च पंचमः क्रिमिभिस्तथा ।
पृथग्लिङ्गं प्रवक्ष्यामि चिकित्सितमनन्तरम् ॥

---

१ छातीनां दरदनां निदान, संख्या, लक्षण तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषेनो.

हृद्रोगोनी संख्या.

३ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सन्निपातजन्य अने कृमिजन्य ए रीते हृद्रोग पांच प्रकारना थाय छे. ए पांच हृद्रोगोनां जूदां जूदां लक्षणो केहेवामां आवशे अने ते पछी चिकित्सा पण जूदी जूदी केहेवामां आवशे.

४ आयम्यते मारुतजे हृदयं तुद्यते तथा ।
निर्मथ्यते दीर्यते च स्फोट्यते पाट्यतेऽपि च ॥

वातजन्य हृद्रोगनुं लक्षण.

४ वातजन्य हृद्रोग थयो होय तो हृदय जाणे व्यथाथी विस्तार पामतुं होय, जाणे सोईओथी भोंकातुं होय, जाणे रवाईथी मथातुं होय, जाणे करवतथी चीरातुं होय, जाणे शस्त्रथी फाडी नखातुं होय अने जाणे कुहाडाथी अनेक प्रकारे कपातुं होय एवुं व्यथित थाय छे.

५ तृष्णोषादाहचोषाः स्युः पैत्तिके हृदयक्लमः ।
धूमायनं च मूर्छा च स्वेदः शोषो मुखस्य च ॥

पित्तजन्य हृद्रोगनुं लक्षण.

५ पित्तजन्य हृद्रोग थयो होय तो तरश लाग्या करे छे, जेथी थंडा पवननी इच्छा थाय एवी अंदर कांइक उनाश रह्या करे छे, जाणे अग्नि शरीरना समीपमांज रह्यो होय एवो संताप थाय छे, जाणे कोई चूसी लेतुं होय एवी पीडा थाय छे, हृदयमां क्लम थाय छे, कंठमांथी धूमाडा नीकळता होय एम लागे छे, मूर्छा आवे छे, कांइक दुर्गंधवाळो पसीनो नीकळे छे अने मोहोडुं सूकाय छे.

६ गौरवं कफसंस्रावोऽरुचिः स्तम्भोऽग्निमार्दवम् ।
माधुर्यमपि चास्यस्य बलासावतते हृदि ॥

कफजन्य हृद्रोगनुं लक्षण.

६ कफजन्य हृद्रोग थयो होय, तो हृदयमां भारेपणुं थाय छे, कफनो स्राव थाय छे, अरुचि थाय छे, गात्रोमां जडपणुं थाय छे, जठराग्नि जाणे जळथी भीजायो होय एवो कोमळ थई जाय छे अने मोहोडामां मीठाश रह्या करे छे.

७ विद्यात्रिदोषमप्येकं सर्वलिंगं हृदामयम् ॥

सन्निपातजन्य हृद्रोगनुं लक्षण.

७ जो त्रणे दोषोना प्रकोपथी हृद्रोग थयो होय तो उपर केहेलां त्रणे दोषोनां चिह्नो सामटां देखाय छे.

८ उत्क्लेशः ष्ठीवनं तोदः शूलो हृल्लासकस्तमः ।
अरुचिः श्यावनेत्रत्वं शोषश्च कृमिजे भवेत् ॥

कृमिजन्य हृद्रोगनुं लक्षण.

८ कृमिजन्य हृद्रोग थयो होय तो जाणे वमननी तैयारी होय एवुं रह्या करे छे, वारंवार थूंकवुं पडे छे, सोईओथी भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे, शूळ नीकळे छे, मोळ आव्या करे छे, अंधारां आवे छे, अरुचि थाय छे, आंखो काळाशवाळी थई जाय छे अने मोहोडामां शोष पण थाय छे. (ग्रंथांतरमां कह्युं छे के 'जे अजितेंद्रिय माणस तल तथा गोळ वगेरे पदार्थोनुं सेवन करे तेनो रस हृदयना एक भागमां सडी जाय छे अने ते सडवाथी बगडेली छातीवाळा माणसने कृमिओ उत्पन्न थाय छे के जे कृमिओथी हृद्रोग थाय छे.')

९ भ्रमक्लमौ सादशोषौ ज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः ।
कृमिजे कृमिजातीनां श्लैष्मिकीणां च ये मताः ॥

हृद्रोगना उपद्रवो.

९ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य तथा सन्निपातजन्य हृद्रोगमां जाणे चाकडापर चडवामां आव्युं होय एवुं भ्रमण, क्लम, अंगोमां ग्लानि अने मोहोडामां शोष ए उपद्रवो थाय छे. (जो के भ्रमादिक उपद्रवो वातपित्तात्मक छे तो पण व्याधिना स्वभावने लीधे तेओ कफजन्य हृद्रोगमां पण थाय छे.) कृमिजन्य हृद्रोगमां तो कफथी थएला कृमिओना मोळ अने मोहोडानो स्राव इत्यादि जे उपद्रवो छे तेओज थाय छे.

१० वातोपसृष्टे हृदये वामयेत्स्निग्धमातुरम् ।
द्विपञ्चमूलक्काथेन सस्नेहलवणेन तु ॥
पिप्पल्येलावचाहिङ्गुयवभस्मानि सैन्धवम् ॥
सौवर्चलमथो शुण्ठीमजमोदां च चूर्णितम् ।
फलधान्याम्लकौलत्थदधिमद्यासवादिभिः ॥
पाययेत विशुद्धं च स्नेहेनान्यतमेन वा ।
भोजयेज्जीर्णशाल्यन्नं जाङ्गलैः सघृतै रसैः ॥
वातघ्नसिद्धं तैलं च दद्याद्बस्तिं प्रमाणतः ।

वातजन्य हृद्रोगनी चिकित्सा.

१० जो वातजन्य हृद्रोग थयो होय तो रोगीने स्निग्ध करी स्नेहथी तथा सैंधवथी युक्त करेलो दशमूळीनो क्काथ पाईने वमन करावबुं. (जो के वायुमां वमन प्रशस्त नथी तो पण आ रोगमां वायु कफना स्थानमां रहेलो होय छे तेथी वमन प्रशस्तज छे.)

रोगीने वमनथी शुद्ध कर्या पछी पीपळ, एळची, वज, हींग, जवखार, सैंधव, संचळ, सूंठ अने बोडीअजमोद एओनुं चूर्ण बीजोरांना रसनी साथे, धान्याम्लनी साथे, कळथीना क्काथनी साथे, दहींनी साथे, मद्यनी साथे, आसवादिकनी साथे के चार स्नेहोमांना कोई स्नेहनी साथे पावुं, घीसहित जांगलप्राणिओना मांसना रसोनी साथे जूना राता चोखानुं अन्न जमाडवुं अने वायुने हरनारां द्रव्योथी पकावेला तैलनी योग्य प्रमाणथी बस्ति देवी.

११ श्रीपर्णीमधुकक्षौद्रसितोत्पलजलैर्वमेत् ।
पित्तोपसृष्टे हृदये सेवेत मधुरैः शृतम् ॥
घृतं कषायांश्चोद्दिष्टान्पित्तज्वरविनाशनान् ।
तृप्तस्य च रसैर्मुख्यैर्जाङ्गलैः सघृतैर्भिषक् ॥
सक्षौद्रं वितरेद्बस्तिं तैलं मधुकसाधितम् ।

पित्तजन्य हृद्रोगनी चिकित्सा.

११ जो पित्तजन्य हृद्रोग थयो होय तो रोगीने सीवणनो, जेठीमधनो तथा नीळकमळनो क्काथ, मध, अने साकरनुं जळ एओथी वमन करावबुं (जो के पित्तजन्य रोग उपर वमन प्रशस्त नथी तो पण आ रोगमां विशेष कारणने लीधे वमन करावबानुं कह्युं छे.) काकोल्यादि मधुर द्रव्योथी पकावेला घीनुं सेवन करावबुं अने आ तंत्रना ३९ मा अध्यायना ८६ मा विषयमां पित्तज्वरने नष्ट करनारा जे क्काथो कह्या छे तेओनुं पण सेवन करावबुं. वैद्ये रोगीने काळीयार वगेरे जांगलप्राणिओनां मांसोना घीसहित उत्तम रसोथी तृप्त करीने जेठीमधथी पकावेला अने मधथी संयुक्त करेला, तैलनी बस्ति पण देवी.

१२ वचानिम्बकषायाभ्यां वान्तं हृदि कफात्मके ॥
चूर्णं तु पाययेतोक्तं वातजे भोजयेद् घृतम् ॥
फलादिमथ मुस्तादिं त्रिफलां वा पिबेन्नरः ॥
श्यामात्रिवृत्कल्कयुतं घृतं वापि विरेचनम् ।
बलातैलैर्विदध्याच्च बस्तिं बस्तिविशारदः ।

कफजन्य हृद्रोगनी चिकित्सा.

१२ जो कफजन्य हृद्रोग थयो होय तो वजना तथा लींबडाना क्काथोथी वमन करावीने वातजन्य हृद्रोग उपर कहेलुं पीपळ वगेरेनुं चूर्ण पावुं अने घीनी साथे भात जमाडवो. ए रोगीने विरेचनने माटे सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायमां कहेलो मदनफळ (मींढोळ) आदि वर्ग पावो अथवा ३८ मा अध्यायमां कहेलो मुस्तादिगण पावो अथवा त्रिफळा पावी अथवा वरधाराना तथा नसोतरना कल्कथी युक्त करेलुं घी पावुं. बस्तिकर्ममां प्रवीणता धरावनारा वैद्ये बलातैलोनी बस्ति पण देवी. (चिकित्सास्थानना १९ मा अध्यायमां जे बलातैलो कहेलां छे तेओनी बस्ति देवी ?)

१३ क्रिमिहृद्रोगिणं स्निग्धं भोजयेत्पिशितौदनम् ॥
दध्ना वा पललोपेतं त्र्यहं पश्चाद्विरेचयेत् ।
सुगन्धिभिः सलवणैर्योगैः साजाजिशर्करैः ॥

विडङ्गगाढैर्धान्याम्लं पाययेताप्यनन्तरम् ।
हृदयस्थाः पतन्त्येवमधस्तात्क्रिमयो नृणाम् ॥
यवान्नं वितरेच्चास्य सविडङ्गमतः परम् ।

कृमिजन्य हृद्रोगनी चिकित्सा.

१३ जो कृमिजन्य हृद्रोग थयो होय तो रोगीने स्निग्ध करी कृमिओनुं उत्क्लेशन करवा माटे मांसवाळो भात त्रण दिवससूधी जमाडवो अथवा शेकेला तलना चूर्णथी युक्त करेलो भात त्रण दिवससूधी दहींनी साथे जमाडवो. पछी सूत्रस्थानना ४४ मा अध्यायमां कहेला सुगंधी योगोने सैंधवथी, जीराथी, साकरथी तथा घणां वावडींगोथी युक्त करीने तेओनुं विरेचन देवुं अने ते पछी धान्याम्ल पण पावुं. आ प्रमाणे करवाथी माणसोनां हृदयोमां रहेला कृमिओ नीचेना द्वारथी पडी जाय छे. विरेचन थया पछी ए रोगीने वावडींगथी युक्त करेलुं जवनुं अन्न जमाडवुं.

(हृद्रोगो पांच प्रकारना कह्या छे ते छतां अहीं चार प्रकारनाज हृद्रोगोनी चिकित्सा कही पण सन्निपातजन्य हृद्रोगनी चिकित्सा कही नथी तेथी ग्रंथकारे ए हृद्रोगने असाध्य मान्यो होय एम पण जणाय छे. डल्हन कहे छे के सन्निपातजन्य हृद्रोग थयो होय तो एक एक दोषथी थएला हृद्रोगनी जे जूदी जूदी चिकित्सा केहेवामां आवी छे ते सर्व चिकित्साओनुं मिश्रण करीने तेनी योजना करवी.)

अध्याय ४४ मो.

१ अथातः पाण्डुरोगप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'पांडुरोगप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ व्यवायमम्लं लवणानि मद्यं
मृदं दिवास्वप्नमतीव तीक्ष्णम् ।
निषेवमाणस्य विदूष्य रक्तं
कुर्वन्ति दोषास्त्वचि पाण्डुभावम् ॥

पांडुरोगनां दूरनां तथा पासेनां निदानो अने संप्राप्ति.

२ मैथुननुं अतिसेवन करवाथी, खाटा पदार्थोनुं अतिसेवन करवाथी, खारा पदार्थोनुं अतिसेवन करवाथी, मद्यनुं अतिसेवन करवाथी, माटी खावानी टेवथी, दिवसनी निद्रा करवानी टेवथी अने अतितीक्ष्ण पदार्थोना सेवनथी प्रकुपित थएला दोषो लोहीने दूषित करीने त्वचामां पांडुपणारूप पांडुरोगने उत्पन्न करे छे. (मैथुनथी त्रणे दोषोनो अथवा वातपित्तनो प्रकोप थाय छे, खाटा तथा खारा पदार्थोथी पित्तनो तथा कफनो प्रकोप थाय छे, मद्यथी तथा तीक्ष्ण पदार्थोथी पित्तनो प्रकोप थाय छे अने दिवसनी निद्रा करवाथी त्रणे दोषोनो प्रकोप थाय छे.)

३ पाण्ड्वामयोऽष्टार्द्धविधः प्रदिष्टः
पृथक्समस्तैर्युगपच्च दोषैः ।

पांडुरोगोनी संख्या.

३ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य अने सान्निपातिक ए रीते पांडुरोग चार प्रकारनो थाय छे. (माटीना भक्षणथी प्रकुपित थएला दोषो विशेषे करी पांडुरोगनेज उत्पन्न करे छे अने वळी माटीना भक्षणथी उत्पन्न थएला पांडुरोगनी चिकित्सा पण जूदा प्रकारनी छे एवा अभिप्रायथी चरके माटीना भक्षणथी उत्पन्न थनारा पांडुरोगने पांचमो गण्यो छे पण भगवान् धन्वंतरिए तो

---

१ पांडुरोगनां निदान, संप्राप्ति, पूर्वरूप, लक्षण तथा चिकित्सा एओनां निरूपण विषेनो. कामळा, कुंभकामळा, लाघरक अने हलीमक के जेओ पांडुरोगनाज भेदो छे तेओनां निदानो, लक्षणो तथा चिकित्साओ पण आ अध्यायमांज केहेवामां आवशे.

ए पांडुरोगने सान्निपातिकमांज गण्यो छे अने तेनी चिकित्साने पण सान्निपातिकनी चिकित्साथी गतार्थ गणी छे.)

४ सर्वेषु चैवेष्विह पाण्डुभावो
यतोऽधिकोऽतः खलु पाण्डुरोगः ॥

आ रोगनुं 'पांडुरोग' ए नाम होवानुं कारण.

४ जो के पांडुरोगोमां वायु आदि दोषोना भेदने लीधे काळो, धोळो, पीळो तथा ए त्रणे वर्णो पण थाय छे तो पण पांडुपणुं तो अधिकज रेहे छे तेथी सर्व प्रकारना ए रोगोने 'पांडुरोग' ए नाम आपवामां आव्युं छे.

५ त्वक्स्फोटनं ष्ठीवनगात्रसादौ
मृद्भक्षणं प्रेक्षणकूटशोथाः ।
विण्मूत्रपीतत्वमथाविपाको
भविष्यतस्तस्य पुरःसराणि ॥

पांडुरोगनुं पूर्वरूप.

५ पांडुरोग थवानो होय त्यारे चामडी फाटे छे, वारंवार थूंकवुं पडे छे, गात्रोमां ग्लानि थाय छे, माटी खावानी इच्छा थाय छे, आंखोना डोडलाओ उपर सोजो थाय छे, विष्टानुं तथा मूत्रनुं पीळापणुं थाय छे अने खाधेलुं अन्न बराबर पाकतुं नथी.

६ सकामलापालकिपाण्डुरोगः
कुम्भाह्वयो लाघरकोऽलसाख्यः ।
विभाष्यते लक्षणमस्य कृत्स्नं
निबोध वक्ष्याम्यनुपूर्वशस्तत् ॥

अवस्थाओना भेदो उपरथी आ रोगनां नामांतरो.

६ आ रोग अवस्थाओना भेदो उपरथी पांडुरोग, कामळा, पालकि, कुंभकामळा अने लाघरक ए नामोथी केहेवाय छे. अलस अने (हलीमक) एओ लाघरकनाज पर्यायो छे. हवे अनुक्रमथी एनां सघळां लक्षणो कहुं छुं ते सांभळो. (पालकि नामना पांडुरोगनुं लक्षण आ ग्रंथमां नहीं केहेवामां आवे एटला माटे ते लक्षण तंत्रांतर उपरथी जाणी लेवुं. तंत्रांतरमां कह्युं छे के संताप, दस्तनुं पातळापणुं, बाहार तथा अंदर पीळापणुं, पांडुपणुं अने नेत्रना रोगो ए पालकि नामना पांडुरोगनुं लक्षण छे.)

७ कृष्णेक्षणं कृष्णशिरावनद्धं
तद्वर्णविण्मूत्रनखाननं च ।
वातेन पाण्डुं मनुजं व्यवस्ये-
द्युक्तं तथान्यैस्तदुपद्रवैश्च ॥

वातजन्य पांडुरोगनुं लक्षण.

७ जो माणसने वातजन्य पांडुरोग उत्पन्न थयो होय तो आंख्यो काळी थई जाय छे, शरीर काळी शिराओथी व्याप्त थाय छे, विष्टा, मूत्र, नखो तथा मोहोडुं काळा वर्णवाळां थई जाय छे अने वायुसंबंधी कंप, पेटनुं चडवुं तथा शूळ आदि बीजा उपद्रवो पण थाय छे.

८ पीतेक्षणं पीतशिरावनद्धं
तद्वर्णविण्मूत्रनखाननं च ।
पित्तेन पाण्डुं मनुजं व्यवस्ये-
द्युक्तं तथान्यैस्तदुपद्रवैश्च ॥

पित्तजन्य पांडुरोगनां लक्षण.

८ जो माणसने पित्तजन्य पांडुरोग उत्पन्न थयो होय तो आंख्यो पीळी थई जाय छे, शरीर पीळी शिराओथी व्याप्त थाय छे, विष्टा, मूत्र, नखो तथा मोहोडुं पीळा वर्णवाळां थई जाय छे अने पित्तसंबंधी दाह तथा तरश आदि बीजा उपद्रवो पण थाय छे.

९ शुक्लेक्षणं शुक्लशिरावनद्धं
तद्वर्णविण्मूत्रनखाननं च ।
कफेन पाण्डुं मनुजं व्यवस्ये-
द्युक्तं तथान्यैस्तदुपद्रवैश्च ॥

कफजन्य पांडुरोगनुं लक्षण.

९ जो माणसने कफजन्य पांडुरोग उत्पन्न थयो होय तो आंख्यो धोळी थई जाय छे, शरीर

धोळी शिराओथी व्याप्त थई जाय छे, विष्टा, मूत्र, नखो तथा मोहोडुं धोळां थई जाय छे अने कफसंबंधी तंद्रा तथा बडखानुं पडवुं इत्यादि बीजा उपद्रवो पण थाय छे.

१० सर्वात्मके सर्वमिदं व्यवस्येत्

सान्निपातिक पांडुरोगनुं लक्षण.

१० जो माणसने त्रणे दोषोथी पांडुरोग थयो होय तो उपर कहेलां वातजन्य, पित्तजन्य तथा कफजन्य ए त्रणे जातना पांडुरोगनां लक्षणो थाय छे.

११ वक्ष्यामि लिङ्गान्यथ कामलायाः ।
यो ह्यामयान्ते सहसाऽन्नमम्ल-
मद्यादपथ्यानि च तस्य पित्तम् ॥
करोति पाण्डुं वदनं विशेषा-
त्तन्द्राऽबलत्वं प्रथमोदितांश्च ॥

कामळानुं निदान तथा लक्षण.

११ हवे कामळानां लक्षणो कहुं छुं. जे माणस पांडुरोगना अंतमां अथवा बीजा कोई रोगना अंतमां सहसा खाटुं अन्न खाय तथा बीजां अपथ्योनुं पण भक्षण करे ते माणसनुं पित्त प्रकुपित थईने देहमां पांडुपणाने उत्पन्न करे छे, मोहोडाने अत्यंत पांडु करी नाखे छे, तंद्राने उत्पन्न करे छे, निर्बलपणुं करे छे अने पांडुरोगनां विशिष्ट लक्षणोने पण उत्पन्न करे छे.

१२ भेदस्तु तस्याः खलु कुम्भसाह्वः
शोफो महांस्तत्र च पर्वभेदः ।

कुंभकामळानुं लक्षण.

१२ कामळाज काळांतरे दृढ थई जाय, सोजावाळी थई जाय अने जेमां सांधाओ तूट्या करे एवी थई जाय एटले कुंभकामळा केहेवाय छे. कुंभकामळा कामळानोज भेद छे.

१३ ज्वराङ्गमर्दभ्रमसादतन्द्रा-
क्षयान्वितो लाघरकोऽलसाख्यः ॥

लाघरक के जे अलस पण केहेवाय छे तेनुं लक्षण.

१३ जो पांडुरोग ज्वरथी, अंगोनां भांगवाथी, चाकडापर चडेलाना जेवा भ्रमणथी, अंगोनी ग्लानिथी, तंद्राथी तथा क्षीणताथी युक्त होय तो लाघरक अथवा अलस केहेवाय छे.

१४ तं वातपित्ताभिपरीतलिङ्गं
हलीमकं नाम वदन्ति तज्ज्ञाः ।

हलीमकनुं लक्षण.

१४ पांडुरोगवाळानुं अथवा कुंभकामळावाळानुं शरीर ज्यारे पीत तथा श्याम रंगवाळुं थई जाय त्यारे ते रोगने आयुर्वेदशास्त्रीओ हलीमक केहे छे. (वाग्भटे तो लाघरकनां तथा हलीमकनां लक्षणोने एकठां लखीने लाघरकने तथा हलीमकने परस्परना पर्यायरूपज मानेला छे. आ ग्रंथमां पण हलीमकनी जूदी चिकित्सा आपी नथी तेथी वाग्भटना मानवाने पुष्टि मळे छे. डल्लने, लाघरकने तथा हलीमकने जूदा जूदा मान्या छे.)

१५ उपद्रवास्तेष्वरुचिः पिपासा
छर्दिर्ज्वरो मूर्द्धरुजाग्निसादः ॥
शोफस्तथा कण्ठगतोऽबलत्वम्
मूर्छा क्लमो हृदयपीडनं च ।

पांडुरोगना उपद्रवो.

१५ पांडुरोगोमां अरुचि, तरश, उलटी, ज्वर, माथामां पीडा, अग्निनुं मंदपणुं, गळामां सोजो, बळथी रहितपणुं, मूर्छा, क्लम अने छातीमां दबाण ए उपद्रवो थाय छे.

१६ साध्यं तु पाण्ड्वामयिनं समीक्ष्य
स्निग्धं घृतेनोर्द्ध्वमधश्च शुद्धम् ॥
सम्पादयेत्क्षौद्रघृतप्रगाढै-
र्हरीतकीचूर्णयुतैः प्रयोगैः ।
पिबेद्घृतं वा रजनीविपक्कं
यत्त्रैफलं तैल्वकमेव वापि ॥

विरेचनद्रव्यकृतं पिबेद्धि
योगांश्च वैरेचनिकान्घृतेन ।
मूत्रे निकुम्भार्द्धपलं विपाच्य
पिबेदभीक्ष्णं कुडवार्द्धमात्रम् ।
खादेद्गुडं वाप्यभयाविमिश्र-
मारग्वधादिक्कथितं पिबेद्वा ॥
अयोरजो व्योषविडङ्गचूर्णं
लिह्याद्धरिद्रां त्रिफलान्वितां वा ।
सर्पिर्मधुभ्यां विदधीत वापि
शास्त्रप्रदर्शाभिहितांश्च योगान् ॥
हरेच्च दोषान् बहुशोऽल्पमात्रा-
ञ्श्वयेद्धि दोषेष्वतिनिर्हृतेषु ।
धात्रीफलानां रसमिक्षुजं च
मन्थं पिबेत् क्षौद्रयुतं हिताशी ॥
उभे बृहत्यौ रजनीं शुकाख्यां
शुकादनीं चापि सकाकमाचीम् ।
आदारिबिम्बीं सकदम्बपुष्पीं
विपाच्य सर्पिर्विपचेत्कषाये ॥
तत्पाण्डुतां हन्त्युपयुज्यमानं
क्षीरेण वा मागधिका यथाग्नि ।
हितं च यष्टीमधुकं कषायं
चूर्णं समं वा मधुनावलिह्यात् ॥
गोमूत्रयुक्तं त्रिफलादलानां
दत्वायसं चूर्णमनल्पकालम् ।
प्रवालमुक्ताञ्जनशङ्खचूर्णं
लिह्यात्तथा काञ्चनगैरिकोत्थम् ॥
आजं शकृद्वा कुडवप्रमाणं
विडं हरिद्रा लवणोत्तमं च ।
पृथक्पलांशानि समग्रमेत-
च्चूर्णं हिताशी मधुनावलिह्यात् ॥
मण्डूरलोहाग्निविडङ्गपथ्या-
व्योषांशकः सर्वसमानताप्यः ।
मूत्रासुतोऽयं मधुनावलेहः
पाण्ड्वामयं हन्त्यचिरेण घोरम् ।
बिभीतकायोमलनागराणां
चूर्णं तिलानां च गुडश्च मुख्यः ।
तक्रानुपानो वटिकाप्रयुक्तः
क्षिणोति घोरानपि पाण्डुरोगान् ॥
सौवर्चलं हिङ्गु किराततिक्तं
कलायमात्राणि सुखाम्बुना वा ।
मूर्वाहरिद्रामलकं च लिह्यात्
स्थितं गवां सप्त दिनानि मूत्रे ।
मूलं बलाचित्रकयोः पिबेद्वा
पाण्ड्वामयार्तोऽक्षसमं हिताशी ॥
सुखाम्बुना वा लवणेन तुल्यं
शिग्रोः फलं क्षीरभुजोपयोज्यम् ।
न्यग्रोधवर्गस्य पिबेत् कषायं
शीतं सिताक्षौद्रयुतं हिताशी ॥
शालादिकं चाप्यथ सारचूर्णं
धात्रीफलं वा मधुनावलिह्यात् ॥
विडङ्गमुस्तात्रिफलाजमोद-
परूपकव्योषविनिर्दहन्यः ।
चूर्णीकृता वा गुडशर्करे च
तथैव सर्पिर्मधुनी शुभे च ॥
सम्भारमेतद्विपचेन्निधाय
सारोदके सारवतो गणस्य ।
जातं च लेह्यं मतिमान्विदित्वा
निधापयेन्मोक्षकजे समुद्गे ॥
हन्त्येष लेहः खलु पाण्डुरोगं
सशोथमुग्रामपि कामलां च ।

पांडुरोगनी तथा कामलानी चिकित्सा.

१६ पांडुरोगवाळो माणस साध्य जोवामां आवे तो तेने घीथी स्निग्ध करी वमनथी[1] तथा विरेचनथी शुद्ध करीने पछी मधथी तथा घीथी सारी पेठे संयुक्त करेला हरडेना चूर्ण आदि प्रयोगोनुं सेवन कराववुं.

हळदरना काथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी अथवा त्रिफलाना काथथी तथा कल्कथी पकावेलुं

१ जो के पांडुरोगमां वमन कराववुं निषिद्ध छे तोपण देश, प्रकृति, काळ तथा शरीर एओ उपर ध्यान आपतां जरूर जणाय तो मृदुवमन देवुं. (डह्लन.)

घी अथवा चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलुं तैल्वक नामनुं घी अथवा एकला पाटीया लोदरना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी पावुं. बीजां पण विरेचन द्रव्योना क्काथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी पावुं. सूत्रस्थानना ४४ मा अध्यायमां कहेला विरेचनयोगो पण घीनी साथे पावा. सोळगणां भेंशना मूत्रमां बे तोलांभार ? नेपाळानां मूल नाखी उकाळी आठ तोलांभार मूत्र अवशेष रहे त्यारे ते पावुं. गोळने हरडेना चूर्णथी मिश्रित करीने ते खवराववो. गोळने आरग्वधादिगणनी साथे उकाळीने ते क्काथ पावो. लोहचूर्ण, तथा सूंठ, मरी, पीपळ अने वावडींग एओनुं चूर्ण मधनी तथा घीनी साथे चटाडवुं. हळदर अने त्रिफळा एओनुं चूर्ण मधनी तथा घीनी साथे चटाडवुं. उपर कहेला विरेचनयोगोमांथी जे योग योग्य जणाय तेथी विरेचित करीने शास्त्रज्ञ लोकोए कहेला नवायस आदि योगोनी पण योजनाओ करवी. (नवायस विषे चिकित्सास्थानना १२ मा अध्यायनो नवमो विषय जुवो.)

पांडुरोगमां दोषोनुं वारंवार निर्हरण करवुं पण ते थोडा थोडा दोषोनुं करवुं. केम के दोषोनुं अधिक निर्हरण करवामां आवे तो पांडुरोगवाळो माणस सोजाथी युक्त थई जाय छे.

आमळांओनो रस अथवा शेलडीनो रस अथवा घीथी संयुक्त करी शीतल जळथी पलाळेलो सातू मधनी साथे पावामां आवे अने पथ्य भोजन कराववामां आवे तो तेथी पांडुरोग नष्ट थई जाय छे.

ऊभीभोरींगणी, बेठीभोरींगणी, हळदर, सीवण, शुकादनी, (राण ?) पीलुडी, कडवी घोली अने गोरखमुंडी एओना क्काथमां घी पकावी ते घीनो उपयोग कराववामां आवे तो तेथी पांडुरोग नष्ट थई जाय छे.

दूधनी साथे पीपळनो उपयोग अग्निना अनुसारथी कराववामां आवे तो तेथी पांडुरोग टळी जाय छे.

जेठीमधनो क्काथ मधनी साथे पावामां आवे अथवा जेठीमधनुं चूर्ण मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग नष्ट थई जाय छे.

त्रिफळानां पानडांओनुं चूर्ण करी, लोहचूर्णथी मिश्रित करी गोमूत्रमां कालवीने लांबा काळसूधी चटाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग नष्ट थई जाय छे.

परवाळां, मोती, रसवंती अने शंख एओनुं चूर्ण गोमूत्रमां कालवीने लांबा काळसूधी चटाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग नष्ट थई जाय छे.

सोनागेरूनुं चूर्ण गोमूत्रमां कालवीने लांबा काळसूधी चटाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग टळी जाय छे.

सोळ तोलांभार बकरीनी लींडी, चार तोलांभार बिडलूण, चार तोलांभार हळदर अने चार तोलांभार सैंधव एओनुं चूर्ण करी ए सघळां मधमां कालवीने चटाडवामां आवे अने पथ्यभोजन कराववामां आवे तो तेथी पांडुरोग नष्ट थई जाय छे.

एक भाग मंडूरलोह, (लोढानुं कीटुं) एक भाग चितरो, एक भाग वावडींग, एक भाग हरडे, एक भाग सूंठ मरी तथा पीपळ अने पांच भाग सोनामखी एओने गोमूत्रमां आथी मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी भयंकर पांडुरोग पण तुरत नष्ट थई जाय छे. (आ योग अतिसिद्ध छे.)

बेहेडां, लोढानुं कीटुं, सूंठ अने तल एओनी जूना गोळमां गोळीओ वाळी खवराववामां आवे अने ते उपर छाश पावामां आवे तो तेथी भयंकर पांडुरोगो पण नष्ट थई जाय छे. (आ योग पण सिद्ध छे.)

संचळनुं चूर्ण, हींगनुं चूर्ण अने करीयातानुं चूर्ण एओने एक एक वटाणा जेटलां लई जरा

ऊना पाणीमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग टळी जाय छे.

मूर्वा, हळदर अने आमळां एओने सात दिवससूधी गोमूत्रमां राखी तेनो कल्क चटाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग टळी जाय छे.

बळदाणानां मूळ अने चित्रकनां मूळ एओनो एक तोलांभार कल्क गोमूत्रनी के जरा ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे अने पथ्यभोजन करावबामां आवे तो तेथी पांडुरोग नष्ट थई जाय छे.

सैंधव अने सरगवानुं फळ एओने एक एक वटाणाभार लई कल्क करी जरा ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे अने दूध जमाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग टळी जाय छे. (आ योग कफजन्य पांडुरोग उपर काम करे छे.)

न्यग्रोधादिवर्गनो काथ करी तेने सारी पेठे थंडो पाडी मधथी तथा साकरथी युक्त करीने पावामां आवे अने पथ्यभोजन करावबामां आवे तो तेथी पांडुरोग टळी जाय छे.

शालसारादिगणनुं चूर्ण अथवा आमळांओनुं चूर्ण मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पांडुरोग टळी जाय छे.

वावडींग, मोथ, त्रिफळा, बोडीअजमोद, फालसां, सूंठ, मरी, पीपळ अने चित्रक एओना चूर्णने शालसारादिगणना क्काथमां नाखी अने गोळ, साकर, निर्मळ मध तथा निर्मळ घी एओने पण ए क्काथमां नाखी पकावीने चाटण करवुं अने ए चाटण मरखाना डाब्रलामां राखी मेलवुं. आ अवलेह (चाटण) चटाडवामां आवे तो तेथी सोजावाळो पांडुरोग अने उग्र कामळा पण नष्ट थई जाय छे.

(पांडुरोगना नाशने माटे आ जे जूदी जूदी चिकित्साओ केहेवामां आवी तेओनी दोषोना अनुसारथी योजनाओ करवी.)

१७ सशर्करा कामलिनां त्रिभण्डी
हिता गवाक्षी सगुडा च शुण्ठी
कालेयके चापि घृतं विपक्कं
हितं च तत्स्याद्रजनीविमिश्रम् ।

कामळानी चिकित्सा.

१७ नसोतरना चूर्णनो साकरनी साथे उपयोग करावबामां आवे तो ते कामळाना दरदीओने हितकारी थाय छे.

इंद्रवारणीना चूर्णनो गोळनी साथे उपयोग करावबामां आवे तो ते कामळाना दरदीओने हितकारी थाय छे.

सूठना चूर्णनो गोळनी साथे उपयोग करावबामां आवे तो ते कामळाना दरदीओने हितकारी थाय छे.

योग्य द्रवमां दारूहळदरना कल्कथी घी पकावी हळदरथी मिश्रित करीने तेनो उपयोग करावबामां आवे तो तेथी कामळाना दरदीओनुं हित थाय छे.

१८ धातुं नदीजं जतु शैलजं वा
कुम्भाह्वये मूत्रयुतं पिबेद्वा ॥
मूत्रस्थितं सैन्धवसम्प्रयुक्तं
मासं पिबेद्वापि हि लोहकिट्टम् ।
दग्ध्वाक्षकाष्ठैर्मलमायसं वा
गोमूत्रनिर्वापितमष्टवारान्
विचूर्ण्य लीढं मधुनाचिरेण
कुम्भाह्वयं पाण्डुगदं निहन्यात् ।
सिन्धूद्भवं वाग्निसमं च कृत्वा
सिक्त्वा च मूत्रे सकृदेव तप्तम् ॥
लौहं च किट्टं बहुशश्च तप्ता
निर्वाप्य मूत्रे बहुशस्तथैव ।
एकीकृतं गोजलपिष्टमेत-
दैकध्यमावाप्य पचेदुखायाम् ॥
यथा न दह्येत तथा विशुष्कं
चूर्णीकृतं पेयमुदश्विता तत् ।
तक्रादनाशी विजयेत रोगं
पाण्डुं तथा दीपयतेऽनलं च ॥

कुंभकामळानी चिकित्सा.

१८ सोनामखीनुं चूर्ण गोमूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी कुंभकामळा नष्ट थई जाय छे.

शिलाजीतनुं चूर्ण गोमूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी कुंभकामळा नष्ट थई जाय छे.

लोढाना कीटाने आखी रात गोमूत्रमां राखी सैंधवथी युक्त करीने एक माससूधी पावामां आवे तो तेथी कुंभकामळा नष्ट थई जाय छे.

लोढाना कीटाने बेहेडानां काष्ठोना अग्निथी तपावी तपावी अग्नि जेवुं लाल करी करीने आठ वार गोमूत्रमां ठारवुं. पछी तेनुं चूर्ण करी मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी कुंभकामळा नामनो पांडुरोग तुरत नष्ट थई जाय छे. (आ सिद्धयोग छे.)

सैंधवना कठण गांठाने एकवार बेहेडानां काष्ठोना अग्निथी तपावी अग्नि जेवो करी गोमूत्रमां नाखीने ठारवो अने लोढाना कीटाने बेहेडानां काष्ठोना अग्निथी वारंवार तपावी अग्नि जेवुं लाल करी करी गोमूत्रमां नाखी नाखीने घणीवार ठारवुं. ए सैंधवने तथा लोढाना कीटाने एकठां करी गोमूत्रमां वाटी, पेला ठारवाथी बचेला पांचगणा गोमूत्रमां नाखी, ते गोमूत्रने हांडलीमां नाखी, बाफ बाहार न नीकळे एवी रीते ढांकी अग्निथी पकाववुं. तमाम बळी न जाय पण सारी पेठे घाटुं थई जाय त्यांसूधी पकावी पछी तेने सूकावी चूर्ण करीने ते चूर्ण अरधा जळवाळी छाशनी साथे पावामां आवे अने जीर्ण थया पछी छाशनी साथे भात जमाडवामां आवे तो तेथी कुंभकामळा नामनो पांडुरोग नष्ट थई जाय छे अने जठराग्नि प्रदीप्त थाय छे.

१९ द्राक्षागुडूच्यामलकीरसैश्च
सिद्धं घृतं लाघरके हितं च ।

लाघरकनी चिकित्सा.

१९ द्राक्ष, गळो अने आमली एओना स्वरसोमां घी पकावीने ते घीनो उपयोग कराववामां आवे तो तेथी लाघरक नष्ट थई जाय छे.

२०. गौडानरिष्टान्मधुशर्कराश्च
मूत्रासवान् क्षारकृतांस्तथैव ।
स्निग्धान् रसानामलकैरुपेतान्
कोलान्वितान् वापि हि जाङ्गलानाम् ॥
सेवेत शोफाभिहितांश्च योगान्
पाण्डामयी शालियवांश्च नित्यम्

सघळा प्रकारना पांडुरोगो उपर तंत्रांतरोमां कहेला योगोनो संग्रह अने पथ्यभोजन.

२० पांडुरोगवाळा माणसने गोळथी बनावेला अभयारिष्टादिक अरिष्टोनुं, मध्वासवोनुं, शर्करासवोनुं, मूत्रासवोनुं, क्षारासवोनुं, जांगलप्राणिओना मांसोना स्निग्ध रसोने आमळांओथी अथवा बोरोथी संयुक्त करीने तेओनुं, सोजानी चिकित्सामां कहेला योगोनुं, राता भातनुं अने जवनां अन्नोनुं नित्य सेवन कराववुं.

२१ श्वासातिसारारुचिकासमूर्छा-
तृट्छर्दिशूलज्वरशोफदाहान् ।
तथाऽविपाकस्वरभेदसादान्
जयेद्यथास्वं प्रसमीक्ष्य शास्त्रम् ॥

पांडुरोगना उपद्रवोनी चिकित्सा.

२१ श्वास, अतिसार, अरुचि, खांसी, मूर्छा, तरश, उलटी, शूळ, ज्वर, सोजो, दाह, खाधेला अन्ननुं नहीं पचवुं, स्वरभेद अने ग्लानि ए पांडुरोगना उपद्रवोने वैद्ये शास्त्रानुसारी चिकित्साओथी (श्वासप्रतिषेधादिक अध्यायोमां कहेली सहुसहुनी चिकित्साओथी) नष्ट करवा. (जो के अतिसारवाळो तथा ज्वरवाळो पांडुरोग नीचेना विषयमां असाध्य केहेवामां आवशे तो पण अहीं पांडुरोगना उपद्रवरूप अतिसारनी तथा

ज्वरनी चिकित्सा करवानुं कह्युं माटे एम समजवुं के पांडुरोगमां अतिसार के ज्वर लांबा काळथी लागू पड्यो होय तो ते पांडुरोग असाध्य छे पण तुरतनो लागू पडेलो होय तो असाध्य नथी.)

२२ अन्तेषु शूनं परिहीनमध्यं
म्लानं तथान्तेषु च मध्यशूनम् ।
गुदेऽथ शेफस्यथ मुष्कयोश्च
शूनं प्रताम्यन्तमसंज्ञकल्पम् ॥
विवर्जयेत्पाण्डुकिनं यशोर्थी
तथातिसारज्वरपीडितं च ।

पांडुरोगना असाध्यपणानुं लक्षण.

२२ जे पांडुरोगनो दरदी हाथ पग तथा मुख वगेरेमां सोजावाळो अने मध्यमां कृशतावाळो अथवा मध्यमां सोजावाळो अने हाथ पग तथा मुख वगेरेमां कृशतावाळो होय तेमज गुदामां, लिंगमां अने वृषणोमां सोजावाळो होय, ग्लानि पाम्या करतो होय, बेभान जेवो थई गयो होय के अतिसारथी अथवा ज्वरथी पीडाएलो होय तेने यशनी इच्छावाळा वैद्ये छोडी देवो.

अध्याय ४५ मो.

१ अथातो रक्तपित्तप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'रक्तपित्तप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ क्रोधशोकभयायासविरुद्धान्नातपानलान् ।
कट्वम्ललवणक्षारतीक्ष्णोष्णातिविदाहिनः ॥
नित्यमभ्यस्यतो दुष्टो रसः पित्तं च कोपयेत् ।
विदग्धं स्वगुणैः पित्तं विदहत्याशु शोणितम् ॥

रक्तपित्तनां निदानो तथा संप्राप्ति.

२ क्रोध, शोक, भय, परिश्रम, विरुद्ध अन्नो, तडको, अग्नि, तीखा पदार्थो, खाटा पदार्थो, लवण पदार्थो, क्षारो, तीक्ष्ण पदार्थो, उष्ण पदार्थो के अत्यंत विदाही पदार्थो एओनुं नित्य सेवन करनारा माणसनो रस दूषित थईने पित्तने प्रकुपित करे छे अने एवी रीते प्रकुपित थएलुं पित्त पोताना तीक्ष्ण तथा उष्ण आदि गुणोथी तुरत रुधिरने दूषित करे छे.

३ ततः प्रवर्त्तते रक्तमूर्द्ध्वं चाधो द्विधापि वा ।

रक्तपित्तनु सामान्य लक्षण.

३ ए प्रमाणे पित्तथी दूषित थएलुं रुधिर अने तेनी साथे मळेलुं पित्त नाक तथा मोहोडा वगेरे ऊंचा मार्गोथी, गुदा तथा उपस्थ वगेरे नीचा मार्गोथी, अथवा ए बन्ने मार्गोथी (रुवाडांओनां छिद्रोमांथी पण) वेहेवा लागे छे ए रोग रक्तपित्त केहेवाय छे.

४ आमाशयाद् व्रजेदूर्द्ध्वमधः पक्वाशयाद्व्रजेत् ।
विदग्धयोर्द्वयोश्चापि द्विधाभागं प्रवर्त्तते ।
केचित्सयकृतः प्लीह्नः प्रवदन्त्यसृजो गतिम् ॥

जूदा जूदा मार्गोथी रक्तपित्तना वेहेवाना जूदा जूदा कारणा.

४ रक्तपित्तथी आमाशय दुष्ट थयो होय तो तेमांथी रक्तपित्त ऊंचा मार्गोथी प्रवर्त्ते छे, पक्वाशय दुष्ट थयो होय तो तेमांथी रक्तपित्त नीचा मार्गोथी प्रवर्त्ते छे अने आमाशय तथा पक्वाशय बन्ने दुष्ट थया होय तो तेओमांथी रक्तपित्त बन्ने मार्गोथी प्रवर्त्ते छे. केटलाएक आचार्यो केहे छे के रुधिरनी गति आमाशयमांथी के पक्वाशयमांथी नहीं पण यकृत्मांथी तथा प्लीह (बरल) मांथी थाय छे. (जो के यकृत् तथा प्लीह रुधिरनां स्थानको छे तेथी तेओमांथीज रुधिरनी गति संभवे छे तो पण

---

१ रक्तपित्तनां निदानो, संप्राप्ति, लक्षण तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषेनो अने अरश, रक्तप्रदर तथा शस्त्रक्रियाथी लोहीनी अतिप्रवृत्ति एओ उपर रक्तपित्तनी चिकित्साना अतिदेश विषेनो.

प्रकुपित थएला रुधिरनुं जवुं आमाशयमां तथा पक्वाशयमां थाय छे माटे आमाशयमांथी तथा पक्वाशयमांथी गति कही ते पण विरुद्ध नथी.)

५ ऊर्द्ध्वं साध्यमधो याप्यमसाध्यं युगपद्गतम्।

रक्तपित्तनुं साध्यपणुं, याप्यपणुं तथा असाध्यपणुं.

५ रक्तपित्त जो ऊंचा मार्गोथी वेहेतुं होय तो साध्य छे, नीचा मार्गोथी वेहेतुं होय तो याप्य छे अने बन्ने मार्गोथी वेहेतुं होय तो असाध्य छे. (ग्रंथांतरमां कह्युं छे के कफना संसर्गवाळुं रक्तपित्त ऊंचा मार्गोथी वेहे छे, वायुना संसर्गवाळुं रक्तपित्त नीचा मार्गोथी वेहे छे अने कफना तथा वायुना संसर्गवाळुं रक्तपित्त बन्ने मार्गोथी वेहे छे. जो रक्तपित्त एक दोषना संबंधवाळुं होय तो साध्य छे, बे दोषना संबंधवाळुं होय तो याप्य छे अने त्रणे दोषोना संबंधवाळुं होय तो असाध्य छे. रुधिरनी साथे वेहेवा लागेला पित्तने पित्तांतरनो संसर्ग थयो होय अने वळी कफनो तथा वायुनो पण संसर्ग थयो होय तो ते त्रणे दोषोना संबंधवाळुं गणाय छे. वळी एम पण कह्युं छे के 'जे रक्तपित्त एक मार्गे वेहेनारूं, बळवानने थएलुं, अत्यंत वेगवगरनुं, तुरतनुं थएलुं, हेमंतऋतुना के शिशिरऋतुना संबंधवाळुं अने उपद्रवो वगरनुं होय तेने साध्य समजवुं.)

६ सदनं शीतकामित्वं कण्ठधूमायनं वमिः॥
लोहगन्धिश्च निश्वासो भवत्यस्मिन्भविष्यति।

रक्तपित्तनुं पूर्वरूप.

६ रक्तपित्त थवानुं होय त्यारे ग्लानि थाय छे, शीतनी इच्छा थाय छे, गळामांथी धूमाडो नीकळतो होय एवुं लागे छे, वमन थाय छे अने निश्वास लोढाना जेवा गंधवाळो थई जाय छे.

७ बाह्यासृग्लक्षणैस्तस्य सङ्ख्यादोषोच्छ्रितीर्विदुः॥

रक्तपित्तोनी संख्या अने ते ते दोषोना संबंधनां जूदां जूदां लक्षणो.

७ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सान्निपातिक, वातपित्तजन्य, वातकफजन्य अने पित्तकफजन्य ए रीते रक्तपित्त सात प्रकारनुं छे.

वातजन्य रक्तपित्त फीणवाळुं, कांइक रातुं, पाकवा आवे त्यारे काळुं, लूखुं, आछुं, झडपथी चालनारूं अने थीजे नहीं एवुं थाय छे.

पित्तजन्य रक्तपित्त नीलवर्णवाळुं, पीळुं, हरितवर्णवाळुं, काळुं, काचा मांसना जेवा गंधवाळुं, कीडीओने तथा मांखीओने गमे नहीं एवुं अने थीजे नहीं एवुं थाय छे.

कफजन्य रक्तपित्त गेरूना पाणी जेवुं, स्निग्ध, टाढुं, घाटुं, चीकाशवाळुं, घणी वारे स्रवे एवुं अने मांसनी पेशी जेवुं थाय छे.

सान्निपातिक रक्तपित्त उपर कहेलां सघळां लक्षणोवाळुं अने अत्यंत दुर्गंधवाळुं थाय छे.

वातपित्तजन्य रक्तपित्त वायुनां तथा पित्तनां लक्षणोवाळुं थाय छे.

वातकफजन्य रक्तपित्त वायुनां तथा कफनां लक्षणोवाळुं थाय छे.

पित्तकफजन्य रक्तपित्त पित्तनां तथा कफनां लक्षणोवाळुं थाय छे.

८ दौर्बल्यश्वासकासज्वरवमथुमदाः पाण्डुतादाहमूर्छा
भुक्ते चान्ने विदाहस्त्वधृतिरपि सदा हृद्यतुल्या च पीडा।
तृष्णा कण्ठस्य भेदः शिरसि च तपनं पूतिनिष्ठीवनं च
द्वेषो भक्तेऽविपाको विरतिरपि रते रक्तपित्तोपसर्गाः॥

रक्तपित्तना उपद्रवो.

८ रक्तपित्तमां दुर्बळपणुं, श्वास, खांसी, ज्वर, उलटी, झाडुं सोपारी खाधानां जेवो मीणो, पांडुपणुं, दाह, मूर्छा, अन्न जम्या पछी विदाह,

अधैर्य, सर्वदा हृदयमां असाधारण पीडा, तरश, कंठनुं, कोठानुं के ए बन्नेनुं भेदावुं, माथामां संताप, दुर्गंधी-थूंक, मैथुननो विनाश, अन्न उपर द्वेष अने शरीरनुं आकुंचन ए उपद्रवो थाय छे.

९ मांसप्रक्षालनाभं कथितमिव च य-
त्कर्दमाम्भोनिभं वा
मेदःपूयास्रकल्पं यकृदिव यदि वा
पक्वजम्बूफलाभम् ।
यत्कृष्णं यच्च नीलं भृशमतिकुणपं
यत्र चोक्ता विकारा-
स्तद्वर्ज्यं रक्तपित्तं सुरपतिधनुषा
यच्च तुल्यं विभाति ।

रक्तपित्तना असाध्यपणानुं विशेष विवेचन.

९ जे रक्तपित्त मांसना धोण जेवुं, अथवा उकळेला जेवुं, अथवा कादवथी मिश्रित थएला पाणी जेवुं, अथवा मेदना परूना तथा रुधिरना मिश्रण जेवुं, अथवा जमणा पडखानी यकृत् नामनी गांठना जेवा वर्णवाळुं, अथवा पाकेला जांबू जेवी प्रभावाळुं, अथवा काळुं, अथवा मोरना गळाना जेवा वर्णवाळुं, अथवा इंद्रधनुषनी पेठे अनेक वर्णोवाळुं, अत्यंत सडेला शबना जेवा गंधवाळुं अने उपर कहेला उपद्रवोवाळुं होय तो तेनी चिकित्सा करवी नहीं. (ग्रंथांतरमां कह्युं के 'रक्तपित्तथी उपहत थएलो जे माणस घडा तथा वस्त्र आदि दृश्य पदार्थोने अने आकाश के जे अदृश्य छे तेने पण अत्यंत रक्त देखे ते माणसना रक्तपित्तने अवश्य असाध्य समजवुं'.)

१० नादौ संग्राह्यमुद्रिक्तं यदसृग्बलिनो यतः।
तत्पाण्डुग्रहणीकुष्ठप्लीहगुल्मज्वरावहम् ॥
अधः प्रवृत्तं वमनैरूर्ध्वमार्गं विरेचनैः ।
जयेदन्यतरच्चापि क्षीणस्य शमनैरसृक् ॥
अतिप्रवृत्तदोषस्य पूर्वं लोहितपित्तिनः ।
अक्षीणबलमांसाग्नेः कर्त्तव्यमपतर्पणम् ॥
लङ्घितस्य ततः पेयां विदध्यात्स्वल्पतण्डुलाम् ।
तर्प्पणं पाचनं लेहान् सर्प्पींषि विविधानि च॥
द्राक्षामधुककाश्मर्यं सितायुक्तं विरेचनम् ।
यष्टीमधुकयुक्तं च सक्षौद्रं वमनं हितम् ॥

पयांसि शीतानि रसाश्च जाङ्गलाः
सतीनयूषाश्च सशालिषष्टिकाः ।
पटोलशेलूसुनिषण्णपूथिका-
वटातिमुक्ताङ्कुरसिन्दुवारजम् ॥
हितं च शाकं घृतसंस्कृतं सदा
तथैव धात्रीफलदाडिमान्वितम् ।
रसाश्च पारावतशङ्खकूर्मजा-
स्तथा यवाग्वोऽभिहिता घृतोत्तराः ॥
सन्तानिकाश्चोत्पलवर्गसाधिते
क्षीरे प्रशस्ता मधुशर्क्करोत्तमाः ।
हिमाः प्रदेहा मधुरा गणाश्च ये
घृतानि पथ्यानि च रक्तपित्तिनाम् ॥
मधूकशोभाञ्जनकोविदारजैः
प्रियङ्गुकायाः कुसुमैश्च चूर्णितैः ।
भिषग्विदध्याच्चतुरः समाक्षिकान्
हिताय लेहानसृजः प्रशान्तये ॥
लिह्याच्च दूर्वावटजांश्च पल्लवा-
न्मधुद्वितीयान् सितकर्णिकस्य च ।
हितं च खर्जूरफलं समाक्षिकं
फलानि चान्यान्यपि तद्गुणान्यथ ॥

रक्तातिसारप्रोक्तांश्च योगानत्रापि योजयेत् ।
इक्षुकाण्डमापोथ्य नवे कुम्भे हिमाम्भसा ॥
योजयित्वा क्षिपेद्रात्रावाकाशे सोत्पलं तु तत् ।
प्रातः स्रुतं क्षौद्रयुतं पिबेच्छोणितपित्तवान् ॥
पिबेच्छीतकषायं वा जम्ब्वाम्रार्जुनसम्भवम् ।
उदुम्बरफलं पिष्ट्वा पिबेत्तद्रसमेव वा ॥
त्रपुसीमूलकल्कं वा सक्षौद्रं तण्डुलाम्बुना ।
पिबेदक्षसमं कल्कं यष्टीमधुकमेव वा ॥
चन्दनं मधुकं रोध्रमेवमेव समं पिबेत् ।
करञ्जबीजमेवं वा सिताक्षौद्रयुतं पिबेत् ॥
मज्जानमिङ्गुदस्यैवं पिबेन्मधुकसंयुतम् ।
सुखोष्णं लवणं बीजं कारञ्जं दधिमस्तुना ॥
पिबेद्वापि त्र्यहं मर्त्यो रक्तपित्ताभिपीडितः ।
रक्तपित्तहराः शस्ताः षडेते योगसत्तमाः ॥

पथ्याश्चैवावपीडेषु घ्राणतः प्रस्रुतेऽसृजि ।
अतिनिस्रुतरक्तो वा क्षौद्रयुक्तं पिबेदसृक् ॥
यकृद्वा भक्षयेदाजमामं पित्तसमायुतम् ।
पलाशवृक्षस्वरसे विपक्वं
सर्पिः पिबेत्क्षौद्रयुतं सुशीतम् ॥
वनस्पतीनां स्वरसैः कृतं वा
सशर्करं क्षीरघृतं पिबेद्वा ।
द्राक्षामुशीराण्यथ पद्मकं सितां
पृथक्पलांशान्युदके समावपेत् ।
स्थितं निशां तद्रुधिरामयं जये-
त्पीतं पयो वाम्बुसमं हिताशिनः ॥
तुरङ्गवर्चःस्वरसं समाक्षिकं
पिबेत्सिताक्षौद्रयुतं वृषस्य वा ।
लिहेत्तथा वास्तुकबीजचूर्णं
न्वितं तण्डुलसाह्वयं वा ॥
लिह्याच्च लाजाञ्जनचूर्णमेक-
मेवं सिताक्षौद्रयुतां तुगाख्याम् ।
द्राक्षां सितां तिक्तकरोहिणीं च
हिमाम्बुना वा मधुकेन युक्ताम् ।
पथ्यामहिंस्रां रजनीं घृतं च
लिह्यात्तथा शोणितपित्तरोगी ॥
वासाकषायोत्पलमृत्प्रियङ्गु-
नेत्राञ्जनाम्भोरुहकेशराणि ।
पीत्वा सिताक्षौद्रयुतानि जह्या-
त्पित्तासृजो वेगमुदीर्णमाशु ॥
गायत्रिजम्ब्वर्जुनकोविदार-
शिरीषरोध्रासनशाल्मलीनाम् ।
पुष्पाणि शिग्रोश्च विचूर्ण्य लेह्यो
मध्वन्वितः शोणितपित्तरोगे ॥
सक्षौद्रमिन्दीवरभस्मवारि
करञ्जबीजं मधुसर्पिषी च ।
जम्ब्वर्जुनाम्रक्वथितं च तोयं
घ्नन्ति त्रयः पित्तमसृक्च योगाः ।
मूलानि पुष्पाणि च मातुलुङ्ग्याः
पिष्ट्वा पिबेत्तण्डुलधावनेन ॥

घ्राणप्रवृत्ते जलमाशु देयं
सशर्करं नासिकयोः पयो वा ।
द्राक्षारसं क्षीरघृतं पिबेद्वा
सशर्करं चेक्षुरसं हिमं वा ॥
शीतोपचारं मधुरं च कुर्या-
द्विशेषतः शोणितपित्तरोगे ।
द्राक्षाघृतक्षौद्रसितायुतेन
विदारिगन्धादिविपाचितेन ॥
क्षीरेण चास्थापनमग्र्यमुक्त
हितं घृतं चाप्यनुवासनार्थम् ॥
प्रियङ्गुरोध्राञ्जनगैरिकोत्पलैः
सुवर्णकालीयकशङ्खचन्दनैः ।
सिताश्वगन्धाम्बुदयष्टिकाह्वयै-
र्मृणालसौगन्धिकतुल्यपेषितैः ॥
निरूह्य चैनं पयसा समाक्षिकै-
र्घृतप्लुतैः शीतजलाम्बुसेचितम् ।
क्षीरौदनं भुक्तमथानुवासये-
द्धृतेन यष्टीमधुसाधितेन च ॥
अधोवहं शोणितमाशु नाशये-
त्तथातिसारं रुधिरस्य दुस्तरम् ।
विरेकयोगे त्वति चैव शस्यते
वाम्यश्च रक्ते विजिते बलान्वितः
एवंविधा उत्तरबस्तयश्च
मूत्राशयस्थे रुधिरे विधेयाः ।

रक्तपित्तनी चिकित्सा.

१० बळवान् माणसना वृद्धि पामेला रक्तपित्तने शरुआतमां रोकवुं नहीं पण जो नीचेना मार्गोथी प्रवर्त्ततुं होय तो वमनक्रियाओथी जीतवुं अने ऊंचा मार्गोथी प्रवर्त्ततुं होय तो विरेचन क्रियाओथी जीतवुं. बळवान् माणसना वृद्धि पामेला रक्तपित्तने शरुआतमांज रोकवामां आवे तो तेथी पांडुरोग, ग्रहणी, कुष्ठ, बरलनुं दरद, गुल्म अने ज्वर उत्पन्न थाय छे. परंतु क्षीण थएला माणसनुं रक्तपित्त ऊंचा मार्गोथी के नीचा मार्गोथी चालतुं होय तो तेने शमन क्रि-

कित्साथी जीतवुं. जे रक्तपित्तवाळा माणसनो दोष अत्यंत प्रवर्त्ततो होय अने बळनो, मांसनो तथा जठराग्निनो क्षय न थयो होय तेने प्रथम लंघनरूप अपतर्पण कराववुं ए पण सारूं छे. जेणे लंघन करेलुं होय एवा रोगीने थोडा चोखावाळी पेया देवी, तर्पण देवुं, (चोखानी घाणीनो साथवो, द्राक्ष, दाडिम अने खजूर एओने पाणीमां घोळी तेमां साकर, मध अने घी नाखीने रोगीने देवुं,) वाळा वगेरेथी पकावेला जळरूप पाचन देवुं, महुडा वगेरेना पुष्पोना घीसहित तथा मधसहित अवलेहो देवा अने योग्य रीते अनेक प्रकारनां घृतो देवां. (रक्तपित्त जो नीचा मार्गोथी वेहेतुं होय अने वायु बळवान् न होय तो पेया देवी पण वायु बळवान् होय तो मांसनो रसज देवो. जो ऊंचा मार्गोथी वेहेतुं होय तो तर्पण देवुं ए हितकारी छे.) रक्तपित्तवाळाने विरेचन देवुं होय तो द्राक्ष, जेठीमध, सीवणनां फळ तथा साकर एओथी युक्त करीने देवुं अने वमन देवुं होय तो जेठीमधथी तथा मधथी संयुक्त करीने देवुं ए हितकारी छे.

रक्तपित्तवाळाने भोजनमां कमळ वगेरे द्रव्योना क्वाथथी पकावेलां शीतल दूधो, जांगलप्राणिओनां मांसोना रसो, वटाणाना यूषो अने राता चोखा तथा साठीचोखा देवा. (जो पित्त घणुं होय तो दूधो, वायुना अनुबंधवाळा रक्तपित्तमां काळीयार वगेरेनां मांसोना रसो अने कफना अनुबंधवाळा रक्तपित्तमां वटाणाना यूषो देवा.) पटोल, गुंदां, ओटींगण, पोथीनां कोमळ पल्लवो, वडनां कोमळ पल्लवो, टींबरूनां कोमळ पल्लवो अने नगडनां कोमळ पल्लवो एओनां शाको घीथी संस्कृत करीने तथा आमळांओथी अने दाडिमथी संयुक्त करीने देवां. कबूतरना, शंखोना जीवडाओना तथा काचबाना मांसोना रसो देवा. (जो के जांगलप्राणिओमां कबूतर पण आवी जाय छे तो पण कबूतरनुं जूदुं ग्रहण रक्तपित्त उपर कबूतरनां मांसनुं अतिहितपणुं जणाववा माटे कर्युं छे. डल्हन.) जेमां घी घणुं नाखेलु होय एवी यवागूओ देवी. उत्पलादिगणथी पकावेलां दूधोनी मधथी तथा साकरथी संयुक्त करेली तरो देवी ए पण प्रशस्त छे.

रक्तपित्तवाळाओने न्यग्रोधादि वगेरे शीतल गणोथी बनावेला शीतल प्रलेपो करवा, पान वगेरेमां मधुर गणोनां द्रव्योनो उपयोग कराववो अने मधुर गणोनां द्रव्योथी पकावेलां घृतो देवां ए पथ्य छे.

वैद्ये रक्तपित्तनी शांतिने माटे अने रोगीना बीजा पण हितने माटे महुडानां पुष्पोना चूर्णनो मधमां अवलेह बनाववो, सरगवानां पुष्पोना चूर्णनो मधमां अवलेह बनाववो, कंचनारनां पुष्पोना चूर्णनो मधमां अवलेह बनाववो अने घऊलांनां पुष्पोना चूर्णनो मधमां अवलेह बनाववो.

दूर्वानां तथा वडनां पल्लवोनो कल्क, श्वेत कमळनी पांखडीओनो कल्क, खजूरनो कल्क अने खजूरना जेवा गुणोवाळां बीजां फळोना कल्को पण मधनी साथे चटाडवा.

गया अध्यायमां रक्तातिसार उपर जे योगो केहेवामां आव्या छे तेओनी पण रक्तपित्त उपर योजना करवी.

धोळी शेलडीने छोली पथरा वगेरेथी सारी पेठे कचरी नवा घडामां बरफना पाणीनी साथे नाखी ते घडाने राते अगाशीमां मूकी राखवो. प्रभातमां ते घडामां जे रस तैयार थाय तेने वस्त्रथी गाळी लई नीलकमळना चूर्णथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्तनी शांति थाय छे.

जांबू, आंबो अने कडायो एओनुं हिम करी मधनी साथे पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

ऊंबरांना फळने वाटी तेनो रस लई ते रस मधथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

काकडीनां मूळोनो एक तोलांभार कल्क मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

जेठीमधनो एक तोलांभार कल्क मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

चंदन, जेठीमध अने लोदर एओने समभागे लई कल्क करी ते कल्क मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

करंजनां बीजोनो कल्क साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

इंगोळीयानां फळनो गर्भ अने जेठीमध एओनो कल्क साकरथी तथा मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

करंजनां बीज अने सैंधव एओनो कल्क जरा गरम करी दहींना पाणीनी साथे मिश्रित करी त्रण दिवससूधी पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

नाकमांथी लोही स्रवतुं होय तो उपर कहेला छ योगोमांथी गमे ते योगनुं अवपीडनस्य देवाथी ते स्राव नष्ट थई जाय छे.

जो रुधिरनो स्राव अत्यंत थई गयो होय तो मधथी संयुक्त करेलुं बकरांनुं लोही पावुं अथवा बकरांनुं काचूं यकृत् बकरांनाज पित्ताथी संयुक्त करीने खवरावबुं.

खाखराना स्वरसमां पकावेलुं शीतल घी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

वड वगेरे क्षीरिवृक्षोना स्वरसोमां पकावेलुं घी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छ.

दूध अने घी साकरथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

द्राक्ष, वाळो, पद्मकाष्ठ अने साकर ए प्रत्येक द्रव्योने चार चार तोलांभार लई, पाणीमां नाखी, रातवाशी राखी मूकी, प्रभातमां ते पाणी गाळी लईने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

दूध अने पाणी एओने समभागे मिश्रित करी पावामां आवे अने हित भोजननोज अभ्यास रखाववामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

घोडानी लादनो स्वरस मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

अरडूसीनो स्वरस मधथी तथा साकरथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

टांका नामनां शाकनां बीजोनुं चूर्ण अथवा तांदळजो मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

चोखानी धाणीनुं अने काळा सुरमानुं चूर्ण मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

वंशलोचननुं चूर्ण साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

द्राक्ष, साकर अने कडु एओने जेठीमधथी संयुक्त करी बरफना जळमां कालवी चटाडवामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

हरडे, कंथारी अने हळदर एओनुं चूर्ण घीथी संयुक्त करी चटाडवामां आवे तो तेथी रक्तपित्त नष्ट थई जाय छे..

अरडूसीना क्राथने नीलकमळनी माटी, घऊलां, सुरमो तथा कमळनां केसरा एओना चूर्णथी अने साकरथी तथा मधथी युक्त करीने

पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्तनो प्रबल वेग तुरत नष्ट थई जाय छे. (आ योग अतिसिद्ध छे.)

खेर, जांबू, कडायो, कंचनार, सरसडीयो, लोदर, बीबलो, शेमळो अने सरगवो एओनां पुष्पोनुं चूर्ण मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी रक्तपित्त तुरत नष्ट थई जाय छे.

इंदीवर नामना कमळनी भस्मनुं जळ मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

करंजनां बीजोनुं चूर्ण मधमां तथा घीमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी रक्तपित्त टळी जाय छे.

जांबू, कडायो अने आंबो एओनो क्वाथ मधथी युक्त करी पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्तनो नाश थाय छे.

बीजोरांनां मूळो तथा पुष्पो वाटी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी रक्तपित्तनो नाश थाय छ.

रक्तपित्त नाकमांथी प्रवर्त्ततुं होय त्यारे तुरतज साकरसहित दूध अथवा साकरसहित जळ अथवा साकरसहित द्राक्षनो रस अथवा दूधने वलोवीने काहाडेलुं साकरथी युक्त करेलुं घी अथवा साकरथी युक्त करेलो शेलडीनो थंडो रस नाकथी देवामां आवे तो तेथी शांति थाय छे.

रक्तपित्तना रोगमां विशेषे करी शीत तथा मधुर उपचारो करवा.

विदारिगंधादिगणथी पकावेला अने द्राक्ष, घी, मध तथा साकर एओथी युक्त करेला दूधनी आस्थापनबस्ति देवी ए उत्तम छे अने विदारिगंधादिगणथी पकावेला दूधमां पकावेला अथवा जेठीमधथी पकावेला घीनी अनुवासनबस्ति देवी ए पण हितकारी छे.

घऊलां, लोदर, सुरमो, गेरू, नीलकमळ, सोनागेरू, दारूहळदर, शंख, चंदन, साकर, आसोंद, मोथ, जेठीमध, कमळना तंतुओ अने सौगंधिक नामनुं कमळ एओने समभागे लई कल्क करी, मधथी तथा घीथी युक्त करी ते कल्कथी संयुक्त करेला दूधनी निरूहबस्ति देवामां आवे अने ते पछी रोगीने शीतल जळथी सिक्त करी, दूधभात जमाडी, जेठीमधथी पकावेला घीनी अनुवासनबस्ति देवामां आवे तो तेथी, नीचा मार्गोथी चालतुं रक्तपित्त तुरत नष्ट थई जाय छे अने लोहीनो दुस्तर अतिसार पण नष्ट थई जाय छे. विरेचननो अतियोग थयो होय तो ते उपर पण आ प्रयोग करवो. निरूहबस्तिथी तथा अनुवासनबस्तिथी रक्तपित्त जीताई जाय त्यार पछी बळवान् रोगीने वमन पण करावबुं.

रक्तपित्त मूत्राशयमां रह्युं होय तो उपर कहेला प्रकारनी उत्तरबस्तिओनी पण योजना करवी.

११ प्रवृत्तरक्तेषु च पायुजेषु
कुर्याद्विधानं खलु रक्तपैत्तम् ॥
विधिश्चासृग्दरेऽप्येष स्त्रीणां कार्यो विजानता।
शस्त्रकर्मणि रक्तं वा यस्यातीव प्रवर्त्तते ॥
त्रयाणामपि दोषाणां शोणितस्य च सर्वशः।
लिङ्गान्यालोक्य कर्त्तव्यं चिकित्सितमनन्तरम्॥

अरश उपर, रक्तप्रदर उपर अने शस्त्रक्रियाथी थएली लोहीनी अतिप्रवृत्ति उपर रक्तपित्तनी चिकित्सानो अतिदेश.

११ जेओमांथी रुधिर स्रवतुं होय एवा अरशो उपर पण रक्तपित्तनी चिकित्सा करवी. प्रवीण वैद्ये स्त्रीओना रक्तप्रदर उपर पण नीचा मार्गथी चालता रक्तपित्तनी चिकित्सा करवी. शस्त्रक्रिया करवाथी रुधिर अत्यंत प्रवर्त्तवा लाग्युं होय तो ते उपर पण रक्तपित्तनी चिकित्सा करवी. त्रणे दोषोनां तथा सूत्रस्थानना १४ मा अध्यायमां कह्या प्रमाणे रुधिरनां सघळां चिह्नो जोईने पछी रक्तप्रदर उपर आ चिकित्सानी योजना करवी.

अध्याय ४६ मो.

१ अथातो मूर्छाप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मूर्छाप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ क्षीणस्य बहुदोषस्य विरुद्धाहारसेविनः ।
विघातादभिघाताद्वा हीनसत्वस्य वा पुनः ।
करणायतनेषूग्रा बाह्येष्वाभ्यन्तरेषु च ॥
निविशन्ते यदा दोषास्तदा मूर्छति मानवः ।

मूर्छानां निदानो तथा संप्राप्ति.

२ क्षीण थएलाने, अधिक दोषवाळाने, विरुद्ध आहारनुं सेवन करनाराने अने अधिक तमोगुणवाळाने विष्टा वगेरे हाजतोना अटकावथी अथवा लाकडी वगेरेना अभिघातथी दोषो ज्यारे हृदयमां, ज्ञानेंद्रियोनां स्थानोमां तथा कर्मेंद्रियोनां स्थानोमां प्रवेश करे छे त्यारे ते माणसने मूर्छा आवे छे.

३ हृत्पीडा जृम्भणं ग्लानिः संज्ञानाशो बलस्य च॥
सर्वासां पूर्वरूपाणि यथास्वमुपलक्षयेत् ।

मूर्छानां पूर्वरूपो.

३ ज्यारे मूर्छा उत्पन्न थवानी होय त्यारे हृदयमां पीडा थाय छे, बगासां आवे छे, ग्लानि थाय छे, संज्ञानो नाश थाय छे अने बळनो नाश थाय छे. सघळा प्रकारनी मूर्छाओनां आ पूर्वरूपो कह्यां. मूर्छा क्या प्रकारनी छे? ए निश्चय तेनां लक्षणो उपरथी करवो.

४ संज्ञावहासु नाडीषु पिहितास्वनिलादिभिः।
तमोऽभ्युपैति सहसा सुखदुःखव्यपोहकृत् ॥
सुखदुःखव्यपोहाच्च नरः पतति काष्ठवत् ।
मोहो मूर्छेति तां प्राहुः षड्विधा सा प्रकीर्तिता॥

मूर्छानुं सामान्य लक्षण.

४ संज्ञानुं वहन करनारी नाडीओ वायु वगेरेथी ढंकाई जतां (दबाई जतां) सहसा सुखना तथा दुःखना ज्ञानने नष्ट करनारो तमोगुण प्राप्त थाय छे. अने ए तमोगुणथी सुखदुःखनुं ज्ञान नष्ट थतां माणस काष्ठनी पेठे पडे छे ए रोग मूर्छा अथवा मोह केहेवाय छे. ए छ प्रकारनी थाय छे.

५ वातादिभिः शोणितेन मद्येन च विषेण च ।
षट्स्वपि तासु पित्तं हि प्रभुत्वेनावतिष्ठते ॥

मूर्छाना छ प्रकारोनुं विवेचन.

५ वायुथी थएली, पित्तथी थएली, कफथी थएली, रुधिरथी थएली, मद्यथी थएली अने विषथी थएली ए रीते मूर्छा छ प्रकारनी छे. ए छए प्रकारोनी मूर्छाओमां पित्त अध्यक्षपणाथी रेहे छे.

(एओमां पेहेला त्रण प्रकारनी मूर्छाओनां लक्षणो मूलग्रंथमां आपेलां नथी माटे ग्रंथांतर उपरथी आपीए छीए.)

आकाशने नीलुं, आंजण जेवुं काळुं अथवा अळता जेवुं रातुं देखतां देखतां मूर्छा आवे, पाछी तुरत चेतना प्राप्त थाय, शरीरमां कंप थाय, अंगो भांगे, हृदयमां पीडा थाय, शरीर कृश थई जाय अने शरीरनो वर्ण काळाशथी मिश्रित रताशवाळो थई जाय तो जाणवुं के ए मूर्छा वायुथी थएली छे.

आकाशने रातुं, हरित रंगवाळुं अथवा पीळुं देखतां देखतां मूर्छा आवे, पसीनाथी संयुक्त थई चेतनाथी युक्त थाय, तरश लागे, संताप थाय, नेत्रो रातां तथा पित्तथी व्याकुल थई जाय, दस्त आवे अने शरीर पीळुं थई जाय तो जाणवुं के ए मूर्छा पित्तथी थएली छे.

आकाशने धोळां वादळां जेवुं अथवा घाटा

---

१ मूर्छानां, निदानो, संप्राप्ति, लक्षणो तथा चिकित्सा एओनां निरूपण विषेनो.

अंधकारोथी घेराएलुं देखतां देखतां मूर्छा आवे, पाछी घणी वारे चेतना आवे, अंगो जाणे आळां चामडांथी वींटाएलां होय तेम भारे थई जाय, मोहोडामां पाणी आवे अने मोळ आव्या करे तो जाणवुं के ए मूर्छा कफथी थएली छे.)

६ पृथिव्यम्भस्तमोरूपं रक्तं गन्धश्च तन्मयः ।
तस्माद्रक्तस्य गन्धेन मूर्छन्ति भुवि मानवाः ॥
द्रव्यस्वभाव इत्येके दृष्ट्वा यदभिमुह्यति ।

रुधिरथी मूर्छा आववानुं कारण.

६ पृथ्वी अने जळ एओ तमोगुणना घणा अंशोवाळां छे अने रुधिर ए उभयमय छे तथा गंध पृथ्वीमय छे एटला माटे जेओ सत्वगुणी के रजोगुणी नहीं पण तमोगुणी होय ते माणसो रुधिरना गंधथी मूर्छित थाय छे. केटलाएक आचार्यो केहे छे के "केवळ रुधिरना गंधथी नहीं परंतु दर्शनथी पण मूर्छा आवे छे माटे उपर कहेली क्लिष्ट कल्पना नहीं करतां रुधिरनो मूर्छा उत्पन्न करवानो स्वभावज छे एम मानवुं योग्य छे."

७ गुणास्तीव्रतरत्वेन स्थितास्तु विषमद्ययोः ॥
त एव तस्माज्जायन्ते ताभ्यां मोहौ यथेरितौ ।

मद्यथी अने विषथी मूर्छा आववानुं कारण.

७ लघु, रूक्ष, आशुकारी, व्यवायी, तीक्ष्ण, विकाशि, सूक्ष्म, उष्ण अने विशद ए गुणो के जेओ तैल आदि पदार्थोमां नोखनोखा रह्या छे अने तीव्र छे तेज गुणो विषमां अने मद्यमां अतितीव्रपणाथी रहेला छे. तेमां पण एटलो भेद छे के मद्य करतां पण विषमां ए गुणो वधारे बलवत्तर छे. मद्यमां अने विषमां ए गुणो होवाने लीधे मद्यथी तथा विषथी पोतपोतानां लक्षणोवाळी मूर्छा प्राप्त थाय छे. (लघु आदि गुणोनां लक्षणो सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २४० मा विषयमां कह्यां छे ते जोई लेवां.)

८स्तब्धाङ्गदृष्टिस्त्वसृजा गूढोच्छ्वासश्च मूर्छितः ।

रुधिरथी थएली मूर्छानुं लक्षण.

८ रुधिरथी मूर्छा प्राप्त थई होय तो शरीर तथा दृष्टि स्तब्ध थई जाय छे अने उच्छ्वास गूढ थई जाय छे.

९ मद्येन विलपञ् शेते नष्टविभ्रान्तमानसः ।
गात्राणि विक्षिपन् भूमौ जरां यावन्न याति तत् ॥

मद्यथी थएली मूर्छानुं लक्षण.

९ जेने मद्यथी मूर्छा आवी होय तेनुं मन स्मृतिवगरनुं तथा विपरीत ज्ञानवाळुं थई जाय छे अने ते माणस प्रलाप करतो करतो सूवे छे. पीधेलुं मद्य ज्यांसूधी जीर्ण न थाय त्यांसूधी मूर्छित माणस पोतानां गात्रोने धरतीपर अफाळ्या करे छे.

१० वेपथुस्वप्नतृष्णाः स्युः स्तम्भश्च विषमूर्छिते ।
वेदितव्यं तीव्रतरं यथास्वं विषलक्षणैः ॥

विषथी थएली मूर्छानुं लक्षण.

१० विषथी मूर्छा प्राप्त थई होय तो कंप, निद्रा, तरश अने स्तब्धपणुं उत्पन्न थाय छे. कल्पस्थानमां विषना अनेक भेदो अने ते भेदोनी न्यूनाधिक तीव्रताओ कहेली छे ते प्रमाणे ते ते विषथी कंप आदि गुणो तीव्रतर अने तीव्रतम थाय छे ए समजी लेवुं.

११ सेकावगाहौ मणयः सहाराः
शीताः प्रदेहा व्यजनानिलाश्च ।
शीतानि पानानि च गन्धवन्ति
सर्वासु मूर्छास्वनिवारितानि ॥
सिताप्रियालेक्षुरसप्लुतानि
द्राक्षामधूकस्वरसान्वितानि ।
खर्जूरकाश्मर्यरसैः कृतानि
पानानि सर्पींषि सजीवनानि ॥
सिद्धानि वर्गे मधुरे पयांसि
सदाडिमा जाङ्गलजा रसाश्च ।
तथा यवा लोहितशालयश्च
मूर्छासु पथ्याश्च सदा सतीनाः ।

भुजङ्गपुष्पं मरिचान्युशीरं
कोलस्य मध्यं च पिबेत्समानि ।
सतीनतोयेन बिसं मृणालं
क्षौद्रेण कृष्णां सितया च पथ्याम् ॥
कुर्याच्च नासावदनावरोधं
क्षीरं पिबेद्वाप्यथ मानुषीणाम् ।
मूर्छां प्रसक्तां तु शिरोविरेकै-
र्जयेदभीक्ष्णं वमनैश्च तीक्ष्णैः ॥
हरीतकीक्वाथघृतं पिबेद्वा
धात्रीफलानां स्वरसैः कृतं वा ।
द्राक्षासितादाडिमलाजवन्ति
शीतानि नीलोत्पलपद्मवन्ति ॥
पिबेत्कषायाणि च गन्धवन्ति
पित्तज्वरं यानि शमं नयन्ति ।

मूर्छानी चिकित्सा.

११ शीतल जळनां सेचनो, शीतल जळमां अवगाहनो, चंद्रकांत आदि मणिओ, मोती वगेरेना हारो, चंदनादिकना शीतल लेपो, पंखाना पवनो अने साकरथी तथा भीमसेनी बरास वगेरेथी युक्त करेलां आमळांना रस वगेरेनां सुगंधमय शीतल पानको ए उपचारो पित्तादिकथी थएली मूर्छाओमांज हितकारी छे एम नथी पण वायुथी के कफथी थएली मूर्छाओमां पण हितकारी छे माटे कोई प्रकारनी पण मूर्छामां एओनो निषेध नथी. कारण के सर्व मूर्छाओमां पित्तनुं प्राधान्य छे.

साकर, चारोळी, शेलडी, द्राक्ष, महुडांनां फळो, खजूर अने सीवणनां फळो एओना रसोथी सिद्ध करेलां पानको मूर्छाओ उपर हितकारी थाय छे. जीवनीय वर्गथी सिद्ध करेलां घृतो, मधुरद्रव्योथी सिद्ध करेलां दूधो, दाडिमना रसथी युक्त करेला जांगलप्राणिओना मांसना रसाओ, जव, राता चोखा अने वटाणा एओ सघळी मूर्छाओ उपर सर्वदा पथ्य छे.

मूर्छाना दरदीने नागकेसर, मरी, वाळो, बोरनी मज्जा, कमळनां बीसां अने कमळनाळना तंतुओ एओने समभागे लई कल्क करी वंटाणाना क्वाथनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूर्छा टळी जाय छे.

पीपळनुं चूर्ण मधनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूर्छा टळी जाय छे.

हरडेनुं चूर्ण साकरनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूर्छा टळी जाय छे.

मूर्छा आवी होय त्यारे रोगीनां नाकने अने मोहोडाने रोकवां के जेथी वायु शरीरनी अंदर गति करी स्रोतोने खुल्लां करीने मूर्छाने टाळी नाखे.

स्त्रीओनुं धावण पण अत्यंत शीतल छे माटे ते धावण मूर्छाना दरदीने पावुं.

मूर्छा वारंवार आव्या करती होय तो तेने वारंवार तीक्ष्ण शिरोविरेचनोथी तथा तीक्ष्ण वमनोथी जीतवी. (जो के सघळी मूर्छाओमां पित्तज प्रधान छे तो पण तीक्ष्ण शिरोविरेचन नस्यो अने तीक्ष्ण वमनो संज्ञानुं वहन करनारां स्रोतोना निरोधने शांत करनारां छे अने व्याधिना प्रत्यनीकरूप छे तेथी तेओने हितकारी गण्यां छे.)

हरडेना क्वाथमां अथवा आमळांओना स्वरसमां पकावेलुं घी पावामां आवे तो तेथी मूर्छा टळी जाय छे.

द्राक्ष, साकर, दाडिम, जवनी शेकेली धाणी, नीलकमळ तथा श्वेतकमळ, एओवाळा सुगंधी शीतल कषायोनो अने जे सुगंधी क्वाथो आ तंत्रना ३९ मा अध्यायना ८६ मा विषयमां पित्तज्वर उपर केहेवामां आव्या छे तेओनो पण मूर्छाओ उपर उपयोग कराववो.

१२ प्रभूतदोषस्तमसोऽतिरेका-
त्संमूर्छितो नैव विबुध्यते यः ॥
संन्यस्तसंज्ञो भृशदुश्चिकित्स्यो-
ज्ञेयस्तदा बुद्धिमता मनुष्यः ।

मूर्छानी संन्यास नामनी अवस्थानुं लक्षण अने अत्यंत कष्टसाध्यपणुं.

१२ घणा दोषवाळो माणस तमोगुणना आधिक्यने लीधे मूर्छित थईने पाछो जाग्रत् थतो नथी ए मूर्छानी स्थिति संन्यास केहेवाय छे. आ स्थितिने प्राप्त थएला माणसनी चिकित्सा करवी अत्यंत मुशकेली भरेली छे एम बुद्धिमान् वैद्ये समजवुं. (ग्रंथांतरमां कह्युं छे के 'ज्यारे हृदयमां रहेला अत्यंत बळवान् मळो वाणीनी, देहनी तथा मननी चेष्टाओनो विनाश करीने निर्बळ माणसने मूर्छित करी दे छे त्यारे ते माणसने संन्यास थयो केहेवाय छे.')

१३ यथामलोष्टं सलिले निषिक्तं
समुद्धरेदाश्वविलीनमेव ॥
तद्वच्चिकित्सेत्त्वरया भिषक्त-
मवेदनं मृत्युवशप्रयातम् ।

संन्यासनी चिकित्सा तुरत करवानी जरूर.

१३ जेम पाणीमां नाखेला माटीना काचा ढेफांने पीगळी गया पेहेलांज पाणीमांथी तुरत काहाडी लेवामां आवे तो तेनो बचाव थाय छे तेम मृत्युना कबजामां आवी गया जेवा थएला अने जेने वेदना होती नथी एवा संन्यासवाळानी तुरतज चिकित्सा करवामां आवे तो तेनो बचाव थाय छे. आ प्रमाणे छे माटे वैद्ये संन्यासवाळानी तुरतज चिकित्सा करवी. (मूर्छा दोषोनो वेग जतो रहे त्यारे पोतानी मेळे पण शांत थई जाय छे अने संन्यास तो औषधो विना शांत थतोज नथी.)

१४ तीक्ष्णाञ्जनाभ्यञ्जनधूमयोगै-
स्तथा नखाभ्यन्तरतोत्रपातैः ॥
वादित्रगीतानुनयैरपूर्वै-
र्विघट्टनैर्गुप्तफलावघर्षणैः ॥
आभिः क्रियाभिश्च न लब्धसंज्ञः
सानाहलालाश्वसनश्च वर्ज्यः ।
प्रभूतसंज्ञं वमनानुलोम्यै-
स्तीक्ष्णैर्विशुद्धं लघुपथ्यभुक्तम् ॥
फलत्रिकैश्चित्रकनागराढ्य-
स्तमश्मजाताज्जतुनः प्रयोगैः ।
सशर्करैर्मासमुपक्रमेत
विशेषतो जीर्णघृतं स पाय्यः ॥

संन्यासनी चिकित्सा.

१४ संन्यासवाळा माणसने तीक्ष्ण अंजनो आंजवां, तीक्ष्ण अभ्यंगो करवा, तीक्ष्ण धूमाडा पावा, नखोनां अभ्यंतरोमां टांचणी वगेरे भोंकवां, वाजांओनो अपूर्व अवाज संभळाववो, अपूर्व गायनो संभळाववां, आश्वासना भरेलां अपूर्व वचनो संभळाववां, अंगोनां विविध प्रकारनां चालनोथी मर्दित करवो, अंगोपर कौचां घसवां, वृषणोनी उपर दबाण करवुं अने एवीज रीतनी अवपीडनस्य वगेरे क्रियाओ पण करवी.

ए क्रियाओथी जेने संज्ञा प्राप्त न थाय ते संन्यासवाळाने छोडी देवो. जेने पेट तथा पेडु चडी आवेल होय, लाळ झर्या करती होय अने हांफ चाली होय एवा संन्यासना दरदीने पण छोडी देवो.

संज्ञा प्राप्त थाय तो ते पछी तीक्ष्ण वमनोथी तथा तीक्ष्ण विरेचनोथी शुद्ध करी, हलकुं तथा पथ्य अन्न जमाडी, त्रिफळा, चित्रक तथा सूंठ एओनी जेओने भावना आपी होय एवा शिलाजितना साकरथी संयुक्त करेला प्रयोगोथी एक महिनासूधी चिकित्सा करवी अने अवशेष रहेला दोषोनी शांतिने माटे विशेषे करी जूनुं घी पावुं.

१५ यथास्वं च ज्वरघ्नानि कषायाण्युपयोजयेत् ।
सर्वमूर्छोपरीतानां विषजानां विषापहम् ॥

मूर्छानी चिकित्सानो उपसंहार.

१५ जेओने कोई पण मूर्छा थई होय ते माणसोने तेओना दोषोना अनुसारथी ते ते ज्वरना विषयमां कहेला क्वाथो पावा. विषथी

मूर्छा थई होय तो कल्पस्थानमां कहेला विषमोहहर प्रयोगोनी योग्य योजनाओ करवी.

अध्याय ४७ मो.

१ अथातः पानात्ययप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'पानात्ययप्रतिषेध.'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी. पासे कहेलुं छे.

२ मद्यमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्मं विशदमेव च ।
रूक्षमाशुकरं चैव व्यवायि च विकाशि च ॥

मद्यना गुणो.

२ मद्य उष्ण छे, तीक्ष्ण छे, सूक्ष्म छे, विशद छे, रूक्ष छे, आशुकारी छे, व्यवायी छे अने विकाशी छे (आवा गुणोवाळा मद्यनो जो मिथ्योपयोग थाय तो तेथी पानात्यय आदि रोगो थाय छे.)

३ औष्ण्याच्छीतोपचारं तत्तैक्ष्ण्याद्धन्ति मनोगतिम् ।
विशत्यवयवान् सौक्ष्म्याद्वैशद्यात्कफशुक्रनुत् ॥
मारुतं कोपयेद्रौक्ष्यादाशुत्वादाशुकर्मकृत् ।
हर्षदं च व्यवायित्वाद्विकाशित्वाद्विसर्पति ॥

ते ते गुणोने लीधे मद्यनां जूदां जूदां कर्मो.

३ मद्य उष्ण होवाने लीधे पित्तने प्रकुपित करे छे, तीक्ष्ण होवाने लीधे मननी गतिने हणे छे, सूक्ष्म होवाने लीधे अवयवोमां पेसी जाय छे, विशद होवाने लीधे कफनुं तथा वीर्यनुं हरण करे छे, रूक्ष होवाने लीधे वायुने प्रकुपित करे छे, आशुकारी होवाने लीधे झडपथी पोतानुं काम करे छे, व्यवायी होवाने लीधे मनने हर्ष आपे छे अने विकाशी होवाने लीधे सघळा शरीरमां गति करे छे.

४ तदम्लं रसतः प्रोक्तं लघु रोचनदीपनम् ।
केचिल्लवणवर्ज्यांस्तु रसानत्रादिशन्ति हि ॥

मद्यमां रहेला रसो.

४ मद्य सघळा रसोवाळुं छे पण तेओमां खाटा रसनी उत्कटतावाळुं छे, हलकूं छे, रुचि उपजावनार छे अने जठराग्निने प्रदीप्त करनार. छे. केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'मद्यमां लवण (खारा) रस विना बाकीना सघळा रसो छे.'

५ स्निग्धैस्तदन्नैर्मांसैश्च भक्ष्यैश्च सह सेवितम् ।
भवेदायुःप्रकर्षाय बलायोपचयाय च ।
काम्यता मनसस्तुष्टिर्धैर्यं तेजोऽतिविक्रमः ॥
विधिवत्सेव्यमाने तु मद्ये सन्निहिता गुणाः ।

मद्यनुं केवी रीते सेवन कर्युं होय तो लाभ थाय.

५ मद्य स्निग्ध अन्नोनी साथे, स्निग्ध मांसोनी साथे अने स्निग्ध भक्ष्योनी साथे सेववामां आवे तो आयुष्यने वधारे छे, बळ आपे छे अने शरीरमां पुष्टि करे छे. मद्यनुं विधिपूर्वक सेवन करवाथी तुरत सुंदरपणुं, मननो संतोष, धीरज, तेज अने मोटुं पराक्रम प्राप्त थाय छे. केम के सुंदरता तथा संतोष आदि गुणो विधिपूर्वक सेवाता मद्यमां हाजरज छे.

६ तदेवानन्नमक्षेन सेव्यमानममात्रया ॥
कायाग्निना ह्यग्निसमं समेत्य कुरुते मदम् ।

विधिवगर मद्यनुं सेवन करवाथी हानि.

६ मद्यपानना विधानने नहीं जाणनारो माणस अयोग्य मात्राथी अने अन्न वगर मद्यनुं सेवन करे तो तेज मद्य शरीरना अग्निनी साथे मळीने अग्नि जेवा महासंतापदायक रोगने उत्पन्न करे छे.

१ पानात्यय, परमद, पानाजीर्ण अने पानविभ्रम ए मद्यजन्य रोगोनां तथा दाहनां निदानो, संप्राप्तिओ, लक्षणो तथा चिकित्सा एओनां निरूपण विषेनो.

२ उष्ण आदि गुणोनां लक्षणो सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २४० मा विषयमां कहेलां छे ते जोवां.

७ मदेन करणानां तु भावान्यत्वे कृते सति ॥
निगूढमपि भावं स्वं प्रकाशीकुरुतेऽवशः ।

मद्यना मदथी गुह्यवात पण गुप्त रखाती नथी.

७ मद्यनो मद मनना तथा ज्ञानेंद्रियोना स्वभावमां फेरफार करी नाखे छे तेथी मद्य पीनारो माणस परवश बनीने पोतानी गुह्य बाबतने पण जाहेर करी दे छे.

८ ऽयवस्थश्च मदो ज्ञेयः पूर्वो मध्योऽथ पश्चिमः॥
पूर्वे वीर्यरतिप्रीतिहर्षभाष्यादिवर्द्धनम् ।
प्रलापो मध्यमे हर्षो युक्तायुक्तक्रियास्तथा ॥
विसंज्ञः पश्चिमे शेते नष्टकर्मक्रियागुणः ।

मद्यना मदनी त्रण अवस्थाओ अने तेओनां जूदां जूदां लक्षणो.

८ मद्यना मदनी पेहेली, वचली अने छेली एम त्रण अवस्थाओ छे. मदनी पेहेली अवस्था होय तो उत्साह, रति, हर्ष, संतोष, भाषण अने हास्य इत्यादिकनी वृद्धि थाय छे. मदनी वचली अवस्था होय तो प्रलाप थाय छे, हर्ष थाय छे अने कोई वखते योग्य तथा कोई वखते अयोग्य क्रियाओ थाय छे. मदनी छेली अवस्था होय तो बेभान थईने सुई रेहेवुं पडे छे अने क्रियाओ तथा क्रियाओनां फळो नष्ट थई जाय छे.

९ श्लैष्मिकानल्पपित्तांश्च स्निग्धान्मात्रोपसेविनः
पानं न बाधतेऽत्यर्थं विपरीतांस्तु बाधते ।

मद्य कोने कोने अतिबाधक थतुं नथी.

९ कफप्रकृतिवाळाओने, अल्पपित्तवाळाओने, स्निग्ध शरीरवाळाओने अने योग्य मात्राथी सेवन करनाराओने मद्य अतिबाधक थतुं नथी पण वात के पित्तप्रकृतिवाळाओने, पित्तना आधिक्यवाळाओने, रूक्ष शरीरवाळाओने अने अतिमात्राथी सेवन करनाराओने तो बाधक थई पडे छे.

१० निर्भक्तमेकान्तत एव मद्यं
निषेव्यमाणं मनुजेन नित्यम् ।
उत्पादयेत् कष्टतमान्विकारा-
नापादयेच्चापि शरीरभेदम् ॥

मद्यनुं विधिवगर निरंतर सेवन करवाथी मरण पण थाय छे.

१० तमाम अन्नवगरनुं अने निरंतरपणाथी नित्य सेववामां आवतुं मद्य महादुःखदायी पानात्यय (मदात्यय) वगेरे विकारोने उत्पन्न करे छे अने शरीरनो विनाश पण करे छे.

११ क्रुद्धेन भीतेन पिपासितेन
शोकाभितप्तेन बुभुक्षितेन ।
व्यायामभाराध्वपरिक्षतेन
वेगावरोधाभिहतेन चापि ॥
अत्यम्लभक्ष्यावततोदरेण
साजीर्णभुक्तेन तथाऽबलेन ।
उष्णाभितप्तेन च सेव्यमानं
करोति मद्यं विविधान्विकारान्

अमुक स्थितिओमां मद्यनुं सेवन करवाथी पण पानात्यय आदि रोगो.

११ क्रोध पामेलाए, भय पामेलाए, तरश्या थएलाए, शोकथी परिताप पामेलाए, भूख्या थएलाए, कसरतथी भारथी के पंथथी गभराएलाए, मळोना वेगने रोकवाथी पीडित थएलाए, अत्यंत खाटां भक्ष्योथी व्याप्त उदरवाळाए, अजीर्णमां भोजन करनाराए, बळ वगरनाए अने उष्णथी (गरमीथी) तप्त थएलाए सेवातुं मद्य विविध विकारोने उत्पन्न करे छे.

१२ पानात्ययं परमदं पानाजीर्णमथापि वा ।
पानविभ्रममुग्रं च तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥

मद्यथी उत्पन्न थता विकारो.

१२ मद्यथी पानात्यय, परमद, पानाजीर्ण अने उग्र पानविभ्रम ए विकारो उत्पन्न थाय छे. हवे ए विकारोनां (रोगोनां) लक्षणो कहुं छुं.

१३ स्तम्भाङ्गमर्दहृदयग्रहतोदकम्पाः
पानात्ययेऽनिलकृते शिरसो रुजश्च ।

स्वेदप्रलापमुखशोषणदाहमूर्छाः
पित्तात्मके वदनलोचनपीतता च ॥
श्लेष्मात्मके वमथुशीतकफप्रसेकाः
सर्वात्मके भवति सर्वविकारसम्पत् ।

पानात्ययना सात भेदो अने तेओनां लक्षणो.

१३ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सान्निपातिक अने त्रण द्वंद्वज ए रीते सात प्रकारना पानात्ययो थाय छे. **वातजन्य पानात्यय** थयो होय तो शरीरमां स्तब्धपणुं थाय छे, अंगो भांगे छे, हृदय झलाई जाय छे, भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे, कंप थाय छे अने माथामां वेदनाओ थाय छे. **पित्तजन्य पानात्यय** थयो होय तो पसीनो आवे छे, प्रलाप थाय छे, मोहोडुं सूकाय छे, बळतरा थाय छे, मूर्छा आवे छे अने मोहोडामां तथा आंखोमां पीळाश थाय छे. **कफजन्य पानात्यय** थयो होय तो वमन थाय छे, शीत थाय छे अने मोहोडामांथी कफनो प्रसेक थाय छे. **सान्निपातिक पानात्यय** थयो होय तो उपर कहेला त्रणे दोषोसंबंधी सघळा विकारो थाय छे. (त्रण द्वंद्वज पानात्ययोमांथी कोई थएल होय तो ते जे बे दोषोथी थयो होय ते बे दोषोसंबंधी विकारो थाय छे.)

१४ ऊष्मा शरीरगुरुता विरसाननत्वं
श्लेष्माधिकत्वमरुचिर्मलमूत्रसङ्गः ॥
लिङ्गं परस्य तु मदस्य वदन्ति तज्ज्ञा-
स्तृष्णा रुजा शिरसि सन्धिषु चापि भेदः॥

परमदनुं लक्षण.

१४ परमद थएल होय तो गरमी थाय छे, शरीरमां भारेपणुं थाय छे, मोहोडुं विरस थई जाय छे, कफनी वृद्धि थाय छे, अरुचि थाय छे, विष्टानी तथा मूत्रनी अटकायत थाय छे, तरश लाग्या करे छे, माथामां वेदना थाय छे अने सांधाओ तूटे छे एम विद्वानोए कह्युं छे. (परमद सान्निपातिक छे तेथी तेना जूदा जूदा भेदो कह्या नथी.)

१५ आध्मानमुद्गिरणमम्लरसो विदाहो-
ऽजीर्णस्य पानजनितस्य वदन्ति लिङ्गम्॥
ज्ञेयानि तत्र भिषजा सुविनिश्चितानि
पित्तप्रकोपजनितानि च कारणानि ।

पानाजीर्णनुं लक्षण.

१५ पानाजीर्ण थएल होय तो पेटनो आफरो थाय छे, वमन थाय छे, अन्ननो खाटा रसवाळो विदाह थाय छे अने पित्तना प्रकोपथी जे जे विकारो थवानुं कह्युं छे ते विकारो पण थाय छे एम वैद्ये निश्चयपूर्वक समजवुं. (पानाजीर्ण पण सान्निपातिक छे तेथी तेना जूदा जूदा भेदो कह्या नथी.)

१६ हृद्गात्रतोदवमथुज्वरकण्ठधूम-
मूर्छाकफस्रवणमूर्द्धरुजो विदाहः ॥
द्वेषः सुरान्नविकृतेषु च तेषु तेषु
तं पानविभ्रममुशन्त्यखिलेषु धीराः ।

पानविभ्रमनुं लक्षण.

१६ गात्रोमां भोंकाया जेवी व्यथा थाय, हृदयमां विशेषे करी भोंकाया जेवी व्यथा थाय, वमन थाय, ज्वर आवे, कंठमांथी धूमाडो नीकळतो होय एवुं लागे, मूर्छा आवे, कफनो स्राव थाय, माथामां पीडा थाय, विदाह थाय अने मद्यना तथा अन्नना ते ते प्रकारो उपर द्वेष उत्पन्न थाय तो जाणवुं के 'सघळा मद्यसंबंधी विकारोमां आ पानविभ्रम नामनो विकार थयो छे' एम धीर वैद्योए कह्युं छे. (पानविभ्रम पण सान्निपातिक छे तेथी तेना जूदा जूदा भेदो कह्या नथी.)

१७ हीनोत्तरोष्ठमतिशीतममन्ददाहं
तैलप्रभास्यमतिपानहतं विजह्यात् ॥
जिह्वोष्ठदन्तमसितं त्वथ वापि नीलं
पीते च यस्य नयने रुधिरप्रभे च ।

हिक्काज्वरौ वमथुवेपथुपार्श्वशूलाः
कासभ्रमावपि च पानहतं त्यजेत्तम् ॥
तेषां निवारणमिदं इह मयोच्यमान
व्यक्ताभिधानमखिलेन विधिं निबोध ।

पानात्यय वगेरेना असाध्यपणानुं लक्षण.

१७ मद्यपानथी अत्यंत खराब थएला जे माणसने उपलो होठ टूंको थई गयो होय, कोई वखते शीत अत्यंत थतुं होय, कोई वखते दाह अत्यंत थतो होय अने मोहोडुं तेलना जेवा वर्णवाळुं थई गयुं होय तेनी वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं. मद्यपानथी खराब थएला जे माणसनां जीभ, होठ तथा दांतो काळां अथवा नील वर्णवाळां थई गयां होय, आंखो पीळी अथवा लोहीना जेवा वर्णवाळी थई गई होय अने हेडकी, ज्वर, वमन, कंप, पडखांओमां शूळ, खांसी तथा भ्रम ए उपद्रवो उत्पन्न थया होय ते माणसनी पण वैद्ये चिकित्सा करवी नहीं. हवे मद्यजन्य रोगोनी स्पष्ट शब्दोथी संपूर्ण चिकित्सा कहुं छुं ते सांभळो.

१८ मद्यं तु चुक्रमरिचार्द्रकदीप्यकुष्ठ-
सौवर्चलायुतमलं पवनस्य शान्त्यै ॥
पृथ्वीकदीप्यकमहौषधहिङ्गुभिर्वा
सौवर्चलेन च युतं वितरेत्सुखाय ।
आम्रातकाम्रफलदाडिममातुलुङ्गैः
कुर्याच्छुभान्यपि च खाडवपानकानि ॥
सेवेत वा फलरसोपहितान् रसादी-
नानूपवर्गपिशितान्यपि गन्धवन्ति ।
पित्तात्मके मधुरवर्गकषायमिश्रं
मद्यं हितं समधुशर्करमिष्टगन्धम् ॥
पीत्वा च मद्यमपि चेक्षुरसप्रगाढं
निःशेषतः क्षणमवस्थितमुल्लिखेच्च ।
लावैणतित्तिरिरसांश्च पिबेदनम्ला-
न्मौद्गान्सुखाय सघृतान्ससितांश्च यूषान्
पानात्यये कफकृते कफमुल्लिखेच्च
मद्येन बिम्बिविदुलोदकसंयुतेन ।
सेवेत तिक्तकटुकांश्च रसानुदारान्
यूषांश्च तिक्तकटुकोपहितान्हिताय ॥
पथ्यं यवान्नविकृतान्यपि जाङ्गलानि
श्लेष्मघ्नमन्यदपि यच्च निरत्ययं स्यात् ।
कुर्याच्च सर्वमथ सर्वभवे विधानं
द्वन्द्वोद्भवे द्वयमवेक्ष्य यथाप्रधानम् ॥
सामान्यमन्यदपि तत्सुसमग्रमग्र्यं
वक्ष्यामि यच्च मनसो मदकृत्सुखं च ।
त्वङ्नागपुष्पमगधैलमधूकधान्यैः
श्लक्ष्णैरजाजिमरिचैश्च कृतं समांशैः ॥
पानं कपित्थरसवारिपरूषकाढ्यं
पानात्ययेषु विधिवत्स्रुतमम्बरान्ते ।
ह्रीबेरपद्मपरिपेलवसंप्रयुक्तैः
पुष्पैः प्रलिप्य करवीरजलोद्भवैश्च ॥
पिष्टैः सपद्मकयुतैरपि सारिवाद्यैः
सेकं जलैश्च वितरेदमलैः सुशीतैः ।
त्वक्पत्रचाचमरिचैलभुजङ्गपुष्प
श्लेष्मातकप्रसवकल्कगुडैरुपेतम् ॥
द्राक्षायुतं हृतमलं मदिरामयार्त्तै-
स्तत्पानकं शुचि सुगन्धि नरैर्निषेव्यम् ।
पिष्ट्वा पिबेच्च मधुकं कटुरोहिणीं च
द्राक्षां च मूलमसकृत्त्रपुसीभवं यत् ॥
कार्प्पासमूलमथ नागबलां च तुल्यां
पीत्वा सुखी भवति साधु सुवर्च्चलां च ।

सात प्रकारना पानात्ययोनी चिकित्सा.

१८ वातजन्य पानात्यय थयो होय तो चुक्रो, मरी, आर्द्रक, बोडीअजमोद अथवा अजमा, कठ अने जराक संचळ एओथी युक्त करेलुं मद्य पावुं अथवा काळीजीरी, अजमोद अथवा अजमा, सूंठ, हींग अने संचळ एओथी युक्त करेलुं मद्य पावुं. आवा मद्यथी वातजन्य पानात्यय शांत थई जाय छे अने सुखनी प्राप्ति थाय छे. वातजन्य पानात्ययने शांत करवा माटे अंबाडां, आंबां, दाडिम अने बीजोरां ए फळोथी सुंदर खाडवो (सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायनो २२७ मो

विषय जुवो.) अने पानको पण बनाववां. दाडिम वगेरे फळोना रसोथी युक्त करेला मांसना रसाओ वगेरेनुं सेवन करावयुं अने जेओमां हींग तथा जीरां वगेरे पदार्थो घणा नाखेला होय एवां आनूपप्राणिओनां मांसोनुं पण सेवन करावयुं.

पित्तजन्य पानात्यय थयो होय तो मधुरवर्गमांनां योग्य द्रव्योना क्वाथथी, मधथी, साकरथी अने एळची वगेरे सुगंध द्रव्योथी मिश्रित करेलुं मद्य पावुं. शेलडीना रसथी सारी पेठे मिश्रित करेलुं मद्य पाई जरावार रेहेवा दईने पछी ते मद्यनुं निःशेष वमन करावी नाखवुं ए पण हितकारी छे. लावां, काळीयार अने तेतर एओनां मांसोना खटाश वगरना रसाओ पावा अने घीथी तथा साकरथी युक्त करेला खटाश वगरना मगना यूषो पण पावा.

कफजन्य पानात्यय थयो होय तो कडवी घोली तथा नेतर एओना क्वाथथी मिश्रित करेलुं मद्य पाईने वमन करावयुं. कडवां तथा तीखां द्रव्योथी जेओने संस्कारो आप्या होय एवा जांगलप्राणिओनां मांसना समेदस्क (मेदवाळा) रसाओनुं अने कडवां तथा तीखां द्रव्योथी जेओने संस्कारो आपेला होय एवा मग वगेरेना यूषोनुं पण सेवन करावयुं. जवनां अन्नो, जांगलप्राणिओनां मांसो अने बीजूं पण जे कांई कफने हणनारूं तथा निर्दोष होय ते पण कफजन्य पानात्यय उपर हितकारी छे.

सान्निपातिक पानात्यय थयो होय तो उपर एक एक दोषना पानात्ययने माटे त्रण पारिग्राफोमां जे जूदी जूदी चिकित्साओ केहेवामां आवी ते सर्वनुं योग्य रीते मिश्रण करीने विधान करवुं.

द्वंद्वज (वातपित्तजन्य, वातकफजन्य के पित्तकफजन्य) पानात्यय थयो होय तो दोषोना अनुसारथी मुख्य मुख्य बे योगोनुं मिश्रण करीने विधान करवुं.

सुखकारी तथा मनने हर्ष आपनारूं जे बीजूं पण सामान्य विधान आ अध्यायना २२ मा विषयमां केहेवामां आवशे ते सघळुं सघळा प्रकारना पानात्ययो उपर उत्तम हितकारी छे. तज, नागकेसर, पीपळ, एळची, जेठीमध, धाणा, जीरूं तथा मरी एओने समभागे लई कल्क करी ते कल्कथी युक्त करेला कोठना फळना स्वरसने फालसांना स्वरसथी मिश्रित करी, वस्त्रथी विधिपूर्वक गाळी लईने पावामां आवे तो तेथी सघळा प्रकारना पानात्ययोनी शांति थाय छे. वाळो, पद्मक, मोथ, कडायानां फूल, नीलकमळ वगेरे जलमां थतां पुष्पो, प्रियंग्वादिगण अने सारिवादिगण एओने वाटी ते कल्कनो शरीरपर लेप करी अत्यंत थंडां निर्मळ जळोथी सेचन करवुं ए सघळा प्रकारना पानात्ययो उपर हितकारी छे. तालीसपत्र, तज, मरी, एळची, नागकेसर, गुंदानां फल अने द्राक्ष एओना कल्कथी तथा गोळथी पानक बनावी, वस्त्रथी गाळी लई ते स्वच्छ अने सुगंधी पानकनुं सेवन करावयामां आवे तो तेथी सघळा प्रकारना पानात्ययो टळी जाय छे. जेठीमध, कडु, द्राक्ष अने काकडीनुं मूळ एओने वारंवार सारी रीते वाटीने पावामां आवे तो तेथी सघळा प्रकारना पानात्ययो टळी जाय छे. हीरवणीनुं मूळ, गंगेटी अने सूरजमुखी एओने समभागे लई वारंवार सारी रीते वाटीने पावामां आवे तो तेथी सघळा पानात्ययोनी शांति थाय छे.

१९ काश्मर्यदारुबिडदाडिमपिप्पलीषु
द्राक्षान्वितासु कृतमम्बुनि पानकं यत् ॥

१ जो के पित्त उपर वमन उचित नथी तो पण अहीं वमननुं विधान कर्युं छे ते विरुद्ध नथी. केम के आ रोगमां पित्त कफना स्थानमां रहेलुं होय छे अने वमन व्याधिनुं प्रत्यनीक छे. (डल्लन.)

तद्बीजपूरकरसायुतमाशु पीतं
शान्तिं परां मदगदेष्वचिरात्करोति ।
द्राक्षासितामधुकजीरकधान्यकृष्णा-
स्वेवं कृतं त्रिवृतया च पिबेत्तथापि ॥
सौवर्चलायुतमुदाररसं फलाम्लं
भार्गीशृतेन च जलेन हितोऽवसेकः ।

परमदनी चिकित्सा.

१९ सीवणनां फळ, देवदार, बिडलूण, दाडिम, पीपळ अने द्राक्ष एओना कल्कथी जळमां पानक बनावी तेने जराक बीजोरांना रसथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी तुरत परमदनी परम शांति थाय छे. आ योग सघळा मद्यजन्य विकारो उपर हितकारी छे.

द्राक्ष, साकर, जेठीमध, जीरूं, धाणा, पीपळ अने नसोतर एओना कल्कथी जळमां बनावेलुं पानक पावामां आवे तो तेथी परमदनी शांति थाय छे.

जांगलप्राणिओना मांसना रसाने दाडिम वगेरेना रसाथी खाटो करी, जराक संचळथी युक्त करीने ते पावामां आवे तो तेथी परमद नष्ट थई जाय छे.

शरीरपर भारंगीना क्वाथथी अवसेचन करवुं ए पण परमद उपर हितकारी छे.

२० इक्ष्वाकुधामार्गववृक्षकाणि
काकाह्वयोदुम्बरिकाश्च दुग्धे ।
विपाच्य तस्याञ्जलिना वमेद्धि
मद्यं पिबेदह्नि गते त्वजीर्णे ॥
त्वक्पिप्पलीभुजगपुष्पबिडैरुपेतं
सेवेत हिङ्गुमरिचैलयुतं फलाम्लम् ।
उष्णाम्बुसैन्धवयुतास्त्वथ वा बिडत्वक्-
चव्यैलहिङ्गुमगधाफलमूलशुण्ठीः ॥
हृद्यैः खडैरपि च भोजनमत्र शस्तं

पानाजीर्णनी चिकित्सा.

२० कडवी तूंबडी, कडवुं तूरीयुं, इंद्रजव अने काळो ऊंबरो एओने दूधमां पकावी तेमांथी सोळ तोलांभार दूध पाई वमन कराववामां आवे अने सायंकाळे मद्य पावामां आवे तो तेथी पानाजीर्ण टळी जाय छे.

दाडिम वगेरेना रसथी खाटा करेला मद्यने तज, पीपळ, नागकेसर, बिडलूण, हींग, मरी अने एळची एओथी युक्त करीने ते पावामां आवे तो तेथी पानाजीर्ण टळी जाय छे.

बिडलूण, तज, चवक, एळची, हींग, पीपळ, पीपळीमूळ अने सूंठ एओनो कल्क ऊना जळथी तथा सैंधवथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पानाजीर्ण टळी जाय छे.

मनने प्रिय लागे एवा खडयूषोनी साथे भोजन देवुं ए पानाजीर्ण उपर हितकारी छे.

२१ द्राक्षाकपित्थफलदाडिमपानकं यत् ।
तत्पानविभ्रमहरं मधुशर्कराढ्य-
माम्रातकोलरसपानकमेव वापि ॥
खर्जूरवेत्रककरीरपरूषकेषु
द्राक्षात्रिवृत्सु च कृतं ससितं हिमं वा
श्रीपर्णियुक्तमथवा तु पिबेदिमानि
यष्ट्याह्वयोत्पलहिमाम्बुविमिश्रितानि
क्षीरिप्रवालबिसजीरकनागपुष्प-
पत्रैलवालुसितसारिवपद्मकानि ।
आम्रातभव्यकरमर्दकपित्थकोल-
वृक्षाम्लवेत्रफलजीरकदाडिमानि ॥

पानविभ्रमनी चिकित्सा.

२१ द्राक्ष, कोठ, बीजोरां वगेरे फळो अने दाडिम एओनुं पानक मधथी तथा साकरथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पानविभ्रम टळी जाय छे.

अंबाडां अने बोर एओना रसनुं पानक मधथी तथा साकरथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पानविभ्रम टळी जाय छे.

खजूर, नेतरना अंकुरो, फालसां, द्राक्ष अने

नसोतर एओनुं थंडुं पानक साकरथी तथा केळना रसथी संयुक्त करी पावामां आवे तो तेथी पानविभ्रम टळी जाय छे.

वड वगेरे क्षीरिवृक्षोनां कोमळ पल्लवो, कमळनां बीसां, जीरूं, नागकेसर, तमालपत्र, एलवालुक नामनुं सुगंधी द्रव्य, सफेद उपलसरी, पद्मकाष्ठ, अंबाडुं, लींबु अथवा ओटनुं फळ, करमदां, कोठ, बोर, कोकम, नेतरनां फळ, जीरूं अने दाडिम एओने जेठीमधना तथा नीळकमळना थंडा पाणीथी मिश्रित करीने पावामां आवे तो तेथी पानविभ्रम नष्ट थई जाय छे.

२२ सेवेत वा मरिचजीरकनागपुष्प-
त्वक्पत्रविश्वचविकैलयुतान्रसांश्च ।
सूक्ष्माम्बरस्रुतहिमांश्च सुगन्धिगन्धान्
पानोद्भवान्नुदति सप्त गदानशेषान् ॥
पंचेन्द्रियार्थविषया मृदुपानयोगा
हृद्याः सुखाश्च मनसः सततं नियोज्याः।
पानात्ययेषु विकटोरुनितम्बवत्यः
पीनोन्नतस्तनभरा नतमध्यदेशाः ॥
प्रौढाः स्त्रियोऽभिनवयौवनपीनगात्र्यः
सेव्याश्च पञ्चविषयातिशयस्वभावाः ।
पिबेद्रसं पुष्पफलोद्भवं वा
सितामधूकात्रिसुगन्धियुक्तम् ।
संचूर्ण्य संयोज्य च नागपुष्पै-
रजाजिकृष्णामरिचैश्च तुल्यैः ॥
वषाभुयष्ट्याह्वमधूकलाक्षा-
त्वक्कर्बुदाराङ्कुरजीरकाणि ।
द्राक्षां च कृष्णामथ केशरं च
क्षीरे समालोड्य पिबेत्सुखोष्णम् ॥
भवेच्च मद्येन तु येन पातितः
प्रकामपीतेन सुरासवादिना ।
तदेव तस्मै विधिवत्प्रदापये-
द्विपर्यये भ्रंशमसौ च गच्छति ॥
यथा नरेन्द्रोपहतस्य कस्यचि-
द्भवेत्प्रसादस्तत एव नान्यतः ।

पानात्यय आदि चारे रोगोनी उपर सामान्य विधान.

२२ मरी, जीरूं, नागकेसर, तज, तमालपत्र, सूंठ, चवक अने एळची एओथी युक्त करेला, सूक्ष्म वस्त्रोथी गाळेला अने जेओने अगरू वगेरेनी धूमाडी आपी होय एवा शीत मांसना रसाओ पावामां आवे तो तेथी पानात्यय, परमद, पानाजीर्ण अने पानविभ्रम ए सघळा मद्यजन्य रोगो नष्ट थई जाय छे. (चार पानात्यय, एक परमद, एक पानाजीर्ण अने एक पानविभ्रम, ए अभिप्रायथी मूळमां सात रोगो कह्या छे.)

पानात्यय आदि चारे रोगोमां उत्तम रीते गोठवेला, सुखदायी तथा मनने हर्ष आपे एवा पांचे शब्दस्पर्शादिक विषयोनी अने एवी रीतनाज मृदु मद्यना योगोनी हमेश योजनाओ करवी. तेमज पुष्ट साथळोवाळी, मोटा नितंबोवाळी, पुष्ट तथा उन्नत स्तनमंडलोवाळी, नमेलां मध्योवाळी, नवीन यौवनथी भरपूर गात्रोवाळी अने शब्दस्पर्शादिक पांचे विषयोने पूरी सुघडताथी भोगववाना स्वभाववाळी प्रौढ स्त्रीओनुं सेवन करावतुं.

भूरा कोहोळाना रसने साकर, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एळची, नागकेसर, जीरूं, पीपळ अने मरी एटला पदार्थोना समभागे करेला चूर्णथी संयुक्त करी ते रस पावामां आवे तो तेथी पानात्यय आदि मद्यजन्य रोगो नष्ट थाय छे.

धोळी साटोडी, जेठीमध, महुडां, लाख, तज, गुंदाना अंकुरो, जीरूं, द्राक्ष, पीपळ अने केसर एओना चूर्णने दूधमां डोई नाखी ते दूधने गरम करी सेहेवाय तेवुं गरम राखीने पावामां आवे तो तेथी पानात्यय आदि मद्यजन्य रोगो नष्ट थई जाय छे.

अत्यंत पीवामां आवेला सुरा तथा आसव आदि जे मद्ये रोगने उत्पन्न कर्यो होय तेज मद्य विधिपूर्वक संचळ वगेरे पदार्थोथी युक्त

करीने रोगीने पावामां आवे तो तेथी पानात्यय आदि मद्यजन्य रोगो नष्ट थई जाय छे पण जो बीजूं मद्य पावामां आवे तो तेथी रोगी मोटा संकटने प्राप्त थाय छे. जेम राजाए पीडित करेला कोई माणसने पाछो तेज राजानो प्रसाद मळे तो सघळी पीडा टळी जाय छे पण बीजाना प्रसादथी टळती नथी तेम मद्ये पीडित करेला माणसने पाछो तेज मद्यनो प्रसाद मळे तो सघळी पीडा शांत थई जाय छे पण बीजा मद्यना प्रसादथी टळती नथी.

२३ विच्छिन्नमद्यः सहसा योऽतिमद्यं निषेवते
तस्य पानात्ययोद्दिष्टा विकाराः सम्भवन्ति हि ॥

वचमां अमुक काळसूधी मद्यने छोडी दीधा पछी पाछुं मद्यनुं अतिसेवन करवाथी रोगोनी उत्पत्ति.

२३ जेणे वचमां अमुक काळसूधी मद्य छोडी दीधुं होय ते पुरुष सहसा मद्यनुं अतिसेवन करवा लागे तो तेने पानात्ययना विषयमां कहेला विकारो उत्पन्न थाय छे.

२४ मद्यस्याग्नेयवायव्यौ गुणावम्बुवहानि च ।
स्रोतांसि शोषयेयातां तेन तृष्णा प्रजायते ॥
पाटलोत्पलकन्देषु मुद्गपर्ण्या च साधितम् ॥
पिबेन्मागधिकामिश्रं तत्राम्भो हिमशीतलम् ।
सर्पिस्तैलवसामज्ज दधिभृङ्गरसैर्युतम् ॥
क्काथेन बिल्वयवयोः सर्वगन्धैश्च पेषितैः ।
पक्कमभ्यञ्जने श्रेष्ठं सेके क्काथः सुशीतलः ॥
रसवन्ति च भोज्यानि यथास्वमवचारयेत् ।
पानकानि सुशीतानि हृद्यानि सुरभीणि च ॥

मद्य पीवाथी तरशनी उत्पत्ति अने ते तरशनी चिकित्सा.

२४ मद्यमां अग्निसंबंधी तथा वायुसंबंधी गुणो रहेला छे. ए गुणो जळनुं वहन करनारां स्रोतोने सूकावी नाखे छे तेथी तरश उत्पन्न थाय छे. पाडल, नीलकमळना कंद अने जंगली मगना छोड एओनो क्काथ करी पीपळना चूर्णथी मिश्रित करी बरफ नाखवाथी थंडो पाडीने पावामां आवे तो तेथी तरश शांत थई जाय छे. बीलीनो तथा जवनो क्काथ करी तेने एलादिगणना कल्कथी, दहींथी तथा भांगराना रसथी संयुक्त करी, ते क्काथमां घी, तैल, चरबी तथा मज्जा ए चारे स्नेहोने एकंदर पकावी ते स्नेहथी अभ्यंग करवामां आवे, मधुर तथा शीतल द्रव्योथी बनावेला अतिशीतल क्काथनुं शरीरपर सेचन करवामां आवे, दोषोना अनुसारथी घणा मधुर रसवाळां भोजनो जमाडवामां आवे अने अतिशीत, प्रिय लागे एवां तथा सुगंधवाळां पानको पीवराववामां आवे तो तेथी मद्यजन्य तृषा अने तृषावाळो पानात्यय पण टळी जाय छे.

२५ त्वचं प्राप्तस्तु पानोष्मा पित्तरक्ताभिमूर्छितः ।
दाहं प्रकुरुते घोरं पित्तवत्तत्र भेषजम् ॥
शीतं विधानमत ऊर्ध्वमहं प्रवक्ष्ये
दाहप्रशान्तिकरमृद्धिमतां नराणाम् ॥
तत्रादितो मलयजेन हितः प्रदेह-
श्चन्द्रांशुहारतुहिनोदकशीतलेन ।
शीताम्बुशीतलतरैश्च शयानमेवं
हारैर्मृणालवलयैरबलाः स्पृशेयुः ॥
भिन्नोत्पलोज्वलहिमे शयने शयीत
पत्रेषु वा सजलबिन्दुषु पद्मिनीनाम् ।
आसादयन्पवनमाहृतमिष्टगन्धं
कह्लारपद्मदलशैवलसंचयेभ्यः ॥
शीतैर्वनान्तपवनैः परिमृज्यमानः
प्रीतश्चरेद्भवनकाननदीर्घिकासु ।
दाहाभिभूतमथवा परिषेचयेत्तु
शीतैरुशीरजलचन्दनवारिभिस्तम्
विस्त्रावितां हृतमलां नववारिपूर्णां
पद्मोत्पलोज्वलजलामधिवासितां च
वापीं भजेत हरिचन्दनभूषिताङ्गः
कान्ताकरस्पर्शकर्कशरोमकूपः ॥

तत्रैनमम्बुरुहपत्रसमैः स्पृशन्त्यः
शीतैः करोरुवदनैः कठिनैः स्तनैश्च ।
तोयावगाहकुशला मधुरस्वभावाः
संहर्षयेयुरबला मधुरैः प्रलापैः ॥
धारागृहे प्रगलितोदकदुर्दिनाभे
क्लान्तः शयीत सलिलानिलशीतकुक्षौ ।
गन्धोदकैः सकुसुमैरुपसिक्तभूमौ
पत्राम्बुचन्दनरसैरुपलिप्तकुड्ये ॥
मांसीतमालघनकुङ्कुमपद्मपत्र-
जात्युत्पलप्रियककेशरपुण्डरीके ।
पुन्नागनागकरवीरकृतोपकारे
तस्मिन्गृहे कमलरेण्वरुणे शयीत ॥
तत्राहृतानिलविकम्पितपुष्पदाम्नि
हेमन्तविन्ध्यहिमवन्मलयाचलानाम् ।
शीताम्भसां सकदलीहरितद्रुमाणा-
मुद्भिन्ननीलनलिनाम्बुरुहाकराणाम् ॥
चन्द्रोदयस्य च कथाः शृणुयान्मनोज्ञा
(याभिर्भवेत्तनुमनःसुखशीतभावः ॥)
ग्लानं सुदीनमनसं मनसोऽनुकूलाः ।
पीनस्तनोरुजघना घनसारदिग्धाः ॥
ता एनमार्द्रवसनाः सह संविशेयुः ।
श्लिष्टाऽबलाः शिथिलमेखलहारयष्ट्यः ॥
हर्षयेयुः पुनर्नार्यः स्वगुणै रहसि स्थिताः ।
ताः शैत्याच्छमयेयुश्च पित्तपानात्ययं स्त्रियः ॥

मद्य पीवाथी दाहनी उत्पत्ति अने ते दाहनी चिकित्सा.

२९ मद्यपाननी गरमी पित्तथी तथा रुधिरथी व्याप्त थई त्वचामां प्राप्त थईने भयंकर दाहने उत्पन्न करे छे. ए दाहनी चिकित्सा पित्तनी चिकित्साप्रमाणे करवी.

हवे समृद्धिवाळा माणसोने माटे दाहनी शांति करनारूं शीतल विधान कहुं छुं. जेने मद्यपानथी दाह उत्पन्न थयो होय तेना शरीरपर प्रथम चंद्रनी किरणोना जेवी, मोतीना हार जेवी तथा बरफना जळ जेवी शीतलतावाळा चंदननो प्रलेप करावचो. ए माणसने शय्यामां विश्राम लेवडावी कामिनीओए शीत जळथी अत्यंत शीतलता धरावनारा मोतीना हारोवते, शीतल हस्तोवते अने कमळनालना कंकणाकारे गोळवेला तंतुओवते तेनो वारंवार स्पर्श करवो. ए माणसने प्रफुल्लित कमळोथी शोभी रहेला थंडा शयनमां अथवा कमलिनीओनां जलबिंदुओवाळां पत्रो उपर सूवडाववो. ए माणसे सौगंधिक कमळोनां तथा श्वेत कमळोनां पत्रोना तथा शैवाळना समूहोमांथी आवता सुगंधी पवननुं सेवन करतां करतां अने शीतल उपवनना पवनोनुं सेवन करतां करतां प्रसन्नताथी घरआगळना बगीचानी वापिकामां विहार करवो. अथवा वैद्ये दाहथी पीडाएला माणसना शरीरपर वाळानां तथा चंदननां शीतल जळोथी सेचन करावचुं. प्रथमनुं जळ ऊलेची नाखीने जेमांथी गाळ काहाडी नाखवामां आव्यो होय एवी, नवा जळथी भरपूर थएली, चंदन तथा वाळा वगेरेथी वासेली अने श्वेत कमळोथी तथा नीलकमळोथी शोभी रहेला जळवाळी वावनुं ए माणसे पोतानां अंगोने हरिचंदनथी शणगारी तथा अंगोमां कामिनीओना हस्तस्पर्शोथी रोमांचित थईने सेवन करवुं. जळनी अंदर अवगाहन करवामां प्रवीणता धरावनारी अने मधुर स्वभाववाळी कामिनीओए ए वावमां कमळपत्रोसरखा शीतल हस्तोथी, साथळोथी, मुखोथी तथा कठण स्तनोथी ए पुरुषनो स्पर्श करतां करतां मधुर भाषणोथी तेने हर्षयुक्त करवो. ए माणसे ज्यारे ग्लानि प्राप्त थाय त्यारे चोतरफ पडतां जळोथी वरसादना आडंबर जेवा लागता, शीतल जलबिंदुओवाळा पवनथी शीतल अभ्यंतरवाळा, सुगंध पुष्पोसहित गुलाबजळ वगेरे सुगंधी जळोनो जेमां छंटकाव कर्यो होय एवा, तमालपत्र वाळो तथा चंदन एओना रसोथी लींपेली भीतोवाळा, जटामांसी तमाल

मोथ कपूर केसर कमळपत्र जाई नीलकमळ घऊलांनां वृक्ष बोलसरी श्वेतकमळ पुन्नाग नाग तथा कणेर एओना कुंजवाळा अने कमळोना परागोथी अरुण थएला धारागृहमां (फुवाराओना घरमां) शयन करवुं. भींत वगेरेमां प्रत्याघात पामीने आवता पवनथी कंपती पुष्पमाळाओवाळा ए धारागृहमां ते माणसे शीतल जळोवाळा, केळ आदि सुंदर हरितवृक्षोवाळा तथा जेओमां तळावोनी अंदर नीळकमळो अने बीजां पण कमलो प्रफुल्लित थई रह्यां होय एवा हेमंताचल? विंध्याचल, हिमाचल अने मलयाचल एओनी मनोहर कथाओ सांभळवी अने चंद्रोदयनी कथाओ पण सांभळवी के जेओथी शरीरमां तथा मनमां सुखशीतलता प्राप्त थाय. ए माणस ग्लानि पामे के दीन मनवाळो थाय ते समयमां मनने प्यारी लागे एवी, पुष्ट स्तनमंडलोवाळी, पुष्ट साथळोवाळी, पुष्ट जघनोवाळी, कर्पूरनां लेपनोवाळी अने जेओए भीनां वस्त्रो धर्यां होय तथा जेओनां कटिमेखलाओ तथा हारो शिथिल थई गएल होय एवी कामिनीओए ते माणसनुं आलिंगन करीने तेनी साथे शयन करवुं. ए स्त्रीओए एकांतस्थलमां पोताना मृदुभाषण आदिगुणोथी ते माणसने पाछो हर्षयुक्त करवो. आ स्त्रीओ पोतानां अंगो वगेरेनी शीतलताथी पित्तजन्य पानात्ययने पण शांत करे छे.

२६ रक्तपित्ततृषादाहेष्वयमेव विधिः स्मृतः ॥
सामान्यतो विशेषं तु शृणु दाहेष्वशेषतः ।

मद्यपानथी थएला दाहनी चिकित्सानो अन्य प्रकारना दाहो उपर अतिदेश.

२६ रुधिरजन्य, पित्तजन्य तथा तृषाजन्य दाहो उपर पण मद्यपानथी थएला दाहनी चिकित्सा करवी ए सामान्य विधान छे. हवे अन्य प्रकारना दाहोनां निदानादिक तथा विशिष्ट चिकित्साओ संपूर्ण रीते कहुं छुं ते सांभळो.

२७ कृत्स्नदेहानुगं रक्तमुद्रिक्तं दहति ह्यति ॥
संचूष्यते दह्यते च ताम्राभस्ताम्रलोचनः ।
लोहगन्धाङ्गवदनो वह्निनेवावकीर्यते ॥
तं विलङ्घ्य विधानेन संसृष्टाहारमाचरेत् ।
अप्रशाम्यति दाहे च रसैस्तृप्तस्य जाङ्गलैः ॥
शाखाश्रया यथान्यायं रोहिणीर्व्यधयेच्छिराः ।

रुधिरजन्य दाहनां निदानादिक तथा विशिष्ट चिकित्सा.

२७ रुधिर के जे आखा शरीरमां रहेलुं छे ते जो वृद्धि पाम्युं होय तो दाहने अवश्य उत्पन्न करे छे के जे दाहने लीधे ते माणस जाणे अग्निथी अत्यंत बळतो होय, समीपमां रहेला अग्निथी तपतो होय अने चूसातो होय एवी पीडाने प्राप्त थाय छे, राता वर्णवाळो थई जाय छे, राती आंखोवाळो थई जाय छे, अंगोमां तथा मोहोडामां लोढाना जेवा गंधवाळो थई जाय छे अने जाणे अग्निना वरसादथी घेरायो होय एवो दुःखित थाय छे. ए दाह रुधिरजन्य केहेवाय छे.

आ रुधिरजन्य दाह थयो होय तो वैद्ये लंघन करावी क्रमप्रमाणे तर्पणादिक चिकित्सानी योजना करवी. एम कर्या छतां पण दाह शांत न थाय तो जांगलप्राणिओनां मांसोना रसाओथी तृप्त करी शारीरस्थानना 'शिराव्यधविधिशारीर' ए नामना आठमा अध्यायमां कहेला विधिप्रमाणे बाहुओमां तथा जांघोमां रहेली राती शिराओनो वेध करीने लोहीनुं स्त्रावण करवुं.

२८ पित्तज्वरसमः पित्तात्स चाप्यस्य विधिर्हितः ॥

पित्तजन्य दाहनां अतिदेशथी निदानादिक तथा विशिष्ट चिकित्सा.

२८ पित्तजन्य दाह पित्तज्वरना जेवां निदानादिकवाळो होय छे अने तेनी चिकित्सा पण चिकित्सास्थानना ३९ मा अध्यायमां कहेली

पित्तज्वरनी चिकित्साप्रमाणे करवी ए हितकारी छे. (विशेष एटलो छे के पित्तज्वरमां आमाशयनुं दुष्टपणुं होवाथी ज्वर उपरांत दाह होय छे अने आ व्याधिमां एकलो दाह होय छे.)

२९ तृष्णानिरोधादब्धातौ क्षीणे तेजः समुत्थितम् ।
सबाह्याभ्यन्तरं देहं दहेद्वै मन्दचेतसः ॥
संशुष्कगलताल्वोष्ठो जिह्वां निष्कृष्य चेष्टते ।
तत्रोपशमयेत्तेजस्त्वब्धातुं च विवर्द्धयेत् ॥
पाययेत्काममम्भश्च शर्कराढ्यं पयोऽपि वा ।
शीतमिक्षुरसं मन्थं वितरेच्चेरितं विधिम् ॥

तृषाजन्य दाहनां निदानादिक तथा विशिष्ट चिकित्सा.

२९ माणस पोतानी मूर्खाईथी तरशनो निरोध करे छे अर्थात् तरश लाग्या छतां पाणी पीतो नथी त्यारे ते तरशना निरोधथी शरीरमां जलरूप धातु क्षीण थतां अत्यंत वृद्धि पामेली पित्तनी गरमी शरीरनी अंदर तथा बाहार दाहने उत्पन्न करे छे के जेथी गळुं, ताळवुं तथा होठ सूकाई जाय छे अने तेथी ते माणस जीभ काहाडीने हाथ पग वगेरेने पछाडवा लागे छे.

आ तृषाजन्य दाह थएल होय तो गरमीनी शांति करवी अने जळधातुनी वृद्धि करवी. साकरथी मिश्रित करेलुं पाणी अथवा दूध रोगीनी मरजीप्रमाणे पावुं, शेलडीनो थंडो रस पावो, सातुनो मंथ (सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायनो ३३२ मो विषय जुवो.) पावो, पित्तज्वरनुं हरण करनारी जे चिकित्सा कही छे ते करवी अने बीजो पण पित्तशमक विधि करवो.

३० असृजा पूर्णकोष्ठस्य दाहोऽन्यः स्यात्सुदुस्तरः
विधिः सद्योव्रणीयोक्तस्तस्य लक्षणमेव च

रक्तपूर्णकोष्ठजन्य दाहनां निदानादिक तथा विशिष्ट चिकित्सा.

३० शस्त्र वगेरेना जखममांथी नीकळेला लोहीथी जे माणसनो कोठो भराई जाय तेने जे महादुस्तर दाह उत्पन्न थाय छे ते चोथा प्रकारनो दाह गणाय छे.

आ रक्तपूर्णकोष्ठजन्य दाहनां लक्षण? तथा चिकित्सा चिकित्सितस्थानना 'सद्योव्रणचिकित्सित' नामना बीजा अध्यायमां केहेवाई गयां छे. (ए अध्यायनो ७ मो तथा १४ मो विषय वांचो.)

३१ धातुक्षयोक्तो यो दाहस्तेन मूर्छातृषान्वितः ।
क्षामस्वरः क्रियाहीनः स सीदेद्भृशपीडितः ॥
रक्तपित्तविधिस्तस्य हितः स्निग्धोऽनिलापहः ।

धातुक्षयजन्य दाहनां निदानादिक तथा विशिष्ट चिकित्सा.

३१ सूत्रस्थानना १९ मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे अमुक धातुना क्षयथी पण दाह उत्पन्न थाय छे के जे दाहथी अत्यंत पीडाएलो माणस मूर्छाथी तथा तरशथी युक्त थाय छे, नबळा अवाजवाळो थई जाय छे, कायिक तथा मानसिक क्रियाओथी रहित थई जाय छे अने तेथी सीदाया करे छे.

आ धातुक्षयजन्य दाह थयो होय तो ते उपर रक्तपित्तनी चिकित्साप्रमाणे चिकित्सा करवी के जे चिकित्सा स्निग्ध होय तथा वायुने हणनारी होय.

३२ क्षतजेनाश्नतश्चान्यः शोचतो वाप्यनेकधा ॥
तेनान्तर्दह्यतेऽत्यर्थं तृष्णामूर्छाप्रलापवान् ।
तमिष्टविषयोपेतं सुहृद्भिरपि संवृतम् ॥
क्षीरमांसरसाहारं विधिनोक्तेन साधयेत् ।

भोजनागतरुधिरजन्य तथा शोकप्रकुपितरुधिरजन्य दाहनां निदानादिक तथा विशिष्ट चिकित्सा.

३२ प्राणीओना रुधिरनी साथे भोजन करवाथी अथवा अनेक प्रकारे शोक करवाथी माणसने रुधिरनो बीगाड थाय छे तेथी पण दाह

उत्पन्न थाय छे के जे दाहथी माणस अंदर अत्यंत बळ्या करे छे अने तरशथी, मूर्छाथी तथा प्रलापथी युक्त थाय छे.

आ दाहथी पीडाता माणसने तेनी इच्छाप्रमाणे शब्दादिक प्रिय विषयोनी सगवड करी आपवी, मित्रलोकोना समाजमां राखवो, दूधथी तथा मांसना रसाथी आहार कराववो अने आ अध्यायमां दाहनी शांति करे एवा जे प्रकारो कहेला छे तेओनी उचित योजना पण करी आपवी.

३३ मर्माभिघातजोऽप्यस्ति सोऽसाध्यः सप्तमो मतः ॥

मर्माभिघातजन्य दाहनुं संक्षिप्त निरूपण.

३३ मर्मस्थलमां अभिघात थवाथी पण दाह उत्पन्न थाय छे के जेने आचार्योए सातमा प्रकारनो तथा अत्यंत असाध्य मानेलो छे.

३४ सर्व एव च वर्ज्याः स्युःशीतगात्रस्य देहिनः

दाहोनुं अमुक स्थितिमां असाध्यपणुं.

३४ जेनां गात्रो शीत होय एवा माणसने उपर कहेला दाहोमांथी गमे ते प्रकारनो दाह होय तो पण ते दाहने असाध्यज समजीने तेनी चिकित्सा करवी नहीं.

३५ एवंविधो भवेद्यस्तु मदिरामयपीडितः ॥
प्रशान्तोपद्रवश्चापि शोधनं प्राप्तमाचरेत् ।

मद्यजन्य रोगवाळा माणसने निवृत्त थएला दाहादिकनी पुनरावृत्ति न थवा देवाने माटे विधान.

३५ मद्यजन्य रोगथी पीडातो माणस उपद्रवोथी रहित थयो होय तो पण ते उपद्रवोनी पाछी आवृत्ति न थवाने माटे तेने योग्य विरेचनरूप शोधन देवुं.

३६ स्रजीरकाण्यार्द्रकशृङ्गवेर-
सौवर्चलान्यर्द्धजलप्लुतानि ।
मद्यानि हृद्यान्यथ गन्धवन्ति
पीतानि सद्यः शमयन्ति तृष्णाम् ॥

केवा प्रकारनुं मद्य पीवामां आवे तो तरश उत्पन्न न थाय.

३६ जीरूं, आर्द्रक, सूंठ, तथा संचळ एओथी युक्त करेलां, जेओमां अरधो अरध जळ मिश्रित कर्युं होय एवां, हृदयने प्रिय लागे एवां अने सुगंधवाळां मद्यो पीवामां आवे तो तेओ विद्यमान तरशने पण तुरत शांत करे छे एटले पछी नवी तरशने तो केमज उत्पन्न थवा आपे.

३७ जलप्लुतश्चन्दन
स्रग्वी सभक्ष्यां पिशितोपदंशाम् ।
पिबेत्सुरां नैव लभेच्च रोगान्
मनोमतिघ्नं च मदं न याति ॥

केवी स्थिति राखी केवी रीते मद्य पीवामां आवे तो रोग तथा मद उत्पन्न न थाय.

३७ जळथी नाही, भीनां गात्रो उपरज चंदननुं लेपन करी, पुष्पोनी माळाओ पेहेरी, अन्नना तथा मांसना भक्षणनी साथे मदिरा पीवामां आवे तो मद्यजन्य कोई पण रोगो उत्पन्न थाय नहीं अने जेथी मन तथा बुद्धि हणाई जाय एवो मद पण उत्पन्न थाय नहीं.

अध्याय ४८ मो.

१ अथातस्तृष्णाप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'तृष्णाप्रतिषेध'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ सततं यः पिबेद्वारि न तृप्तिमधिगच्छति ।
पुनःकाङ्क्षति तोयं च तं तृष्णार्दितमादिशेत् ॥

---

१ तरशनां निदान, संप्राप्ति, भेदो, पूर्वरूपो, लक्षणो तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषयनो.

तृष्णानुं (तरशनुं) सामान्य स्वरूप.

२ जे माणस वारंवार पाणी पीये, पाणी पीधा छतां तृप्ति पामे नहीं अने तेथी फरीवार पण पाणीनी इच्छा करे ते माणसने तृष्णाथी पीडाएलो समजवो.

३ संक्षोभशोकश्रममद्यपाना-
द्रूक्षाम्लशुष्कोष्णकटूपयोगात् ।
धातुक्षयाल्लङ्घनसूर्यतापात्
पित्तं च वातश्च भृशं प्रवृद्धौ ॥
स्रोतांसि संदूषयतः समेतौ
यांन्यम्बुवाहीनि शरीरिणां हि ।
स्रोतःस्वपां वाहिषु दूषितेषु
जायेत तृष्णा प्रबला ततस्तु ॥

तृष्णानां निदानो तथा संप्राप्ति.

३ शरीरनुं वाहनादिकपर बेसवा वगेरेने लीधे बहुज चालन थवाथी, शोकथी, श्रमथी, मद्य पीवाथी, रूक्ष खाटा सूका उष्ण तथा तीखा पदार्थोनो उपयोग करवाथी, रसना क्षयथी, लंघनथी अने सूर्यना तापथी पित्त तथा वायु अत्यंत वृद्धि पामी, परस्परनी साथे मळी, माणसोनी जीभ तथा गळा वगेरेमां रहेली रसनुं वहन करनारी धमनीओने दूषित करे छे अने ए धमनीयो दूषित थतां प्रबळ तृष्णा उत्पन्न थाय छे.

४ तिस्रः स्मृतास्ताः क्षतजा चतुर्थी
क्षयात्तथान्यामसमुद्भवा च ।
स्यात्सप्तमी भक्तनिमित्तजा तु
लिङ्गानि तासां शृणु चौषधानि ॥

तृष्णानी संख्या.

४ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य[१], क्षतजन्य, रसक्षयजन्य, आमजन्य अने भक्तजन्य ए रीते तृष्णाना मुख्य सात भेदो छे. हवे ए तृष्णाओनां लक्षणो तथा औषधो कहुं छुं ते सांभळो.

५ ताल्वोष्ठकण्ठास्यविशोषदाहाः
संतापमोहभ्रमविप्रलापाः ।
पूर्वाणि रूपाणि भवन्ति तासा-
मुत्पत्तिकालेषु विशेषतो हि ॥

तृष्णाना पूर्वरूपो.

५ तृष्णा उत्पन्न थवानी होय त्यारे ताळवामां शोष तथा दाह थाय छे, होठोमां शोष तथा दाह थाय छे, कंठमां शोष तथा दाह थाय छे, मोहोडामां शोष तथा दाह थाय छे, संताप थाय छे, बेभानपणुं थाय छे, भ्रमण थाय छे अने प्रलाप थाय छे. ज्यारे तृष्णा उत्पन्न थाय त्यारे ए लक्षणो विशेषे करी थाय छे.

६ शुष्कास्यता मारुतसम्भवायां
तोदस्तथा शङ्खशिरोगले स्यात् ।
स्रोतोनिरोधो विरसं च वक्रं
शीताभिरद्भिश्च विवृद्धिमेति ॥

वातजन्य तृष्णानुं लक्षण.

६ वातजन्य तृष्णा उत्पन्न थई होय तो मोहोडुं सूकाय छे, लमणाओ माथुं तथा गळुं एओमां भोंकाया जेवी व्यथा थाय छे, कानना स्रोतनो निरोध थाय छे, मोहोडुं विरस थई जाय छे अने जेम जेम टाढुं पाणी पीवामां आवे तेम तेम तरश वधती जाय छे.

७ मूर्छाप्रलापारुचिवक्रशोषा
पीतेक्षणत्वं प्रततश्च दाहः ॥
शीताभिकाङ्क्षा मुखतिक्तता च
पित्तात्मिकायां परिधूमनं च ॥

पित्तजन्य तृष्णानुं लक्षण.

७ पित्तजन्य तृष्णा उत्पन्न थई होय तो मूर्छा आवे छे, प्रलाप थाय छे, अरुचि थाय छे, मोहोडुं सूकाय छे, आंखो पीळी थई जाय छे, निरंतर दाह थाय छे, शीतनी इच्छा थाय छे, मोहोडुं कडवुं थई जाय छे अने जाणे कंठमांथी धूमाडो नीकळतो होय एवुं लागे छे.

१ कफथी तरश उत्पन्न थवानो संभव नहीं छतां पण तरश उत्पन्न थाय छे तेनुं कारण कफजन्य तृष्णाना लक्षणमां केहेवामां आवशे.

८ बाष्पावरोधात्कफसंवृतेऽग्नौ
तृष्णा बलासेन भवेत्तु तत्र ॥
निद्रा गुरुत्वं मधुरास्यता च
तृष्णार्दितः शुष्यति चातिमात्रम्
शीतज्वरश्छर्दिररोचकश्च
कफात्मिकायां त्वचि पाक एव ॥
एतानि रूपाणि भवन्ति यस्यां
तयार्दितः काङ्क्षति नाति चाम्भः ।

कफजन्य तृष्णानुं लक्षण.

८ जठराग्नि, उपरना भागमां पोतानां (कफनां) निदानोथी कोप पामेला कफथी ढंकाई जवाने लीधे जठराग्निनी उष्णता रोकातां ते उष्णताथी जळनुं वहन करनारां स्रोतोनुं शोषण थवाने लीधे जे तरश उत्पन्न थाय छे ते कफजन्य तृष्णा केहेवाय छे. (एम पण मानवामां आवे छे के बंधाएलो कफ ज्यारे वायुने अने पित्तने ढांकी दे छे त्यारे वायुथी तथा पित्तथी सूकावा लागतां तृष्णाने उत्पन्न करे छे.) कफजन्य तृष्णा उत्पन्न थई होय तो निद्रा आवे छे, पेटमां भारेपणुं थाय छे, मोहोडुं मधुर थइजाय छे, अत्यंत कृशपणुं थाय छे, शीतज्वर आवे छे, उलटी थाय छे, अरुचि थाय छे अने त्वचामां पाक थाय छे. कफजन्य तृष्णाथी पीडाएला माणसने जळनी अत्यंत इच्छा थती नथी.

९ क्षतस्य रुक्शोणितनिर्गमाभ्यां
तृष्णा चतुर्थी क्षतजा मता तु ॥
तयाभिभूतस्य निशादिनानि
गच्छन्ति दुःखं पिबतोऽपि तोयम् ।

क्षतजन्य तृष्णानु लक्षण.

९ शस्त्रादिकथी जखमी थएला माणसने पीडाने लीधे तथा लोही नीकळवाने लीधे जे तरश लागे छे ते क्षतजन्य तृष्णा केहेवाय छे. क्षतजन्य तृष्णाथी पीडाएलो माणस पाणी पीधाकरतो होय तौ पण तेनां अहोरात्रो कष्टथी व्यतीत थाय छे.

१० रसक्षयाद्या क्षयसम्भवा सा
तयाभिभूतस्तु निशादिनेषु ॥
पेपीयतेऽम्भः स सुखं न याति
तां सन्निपातादिति केचिदाहुः ।
रसक्षयोक्तानि च लक्षणानि
तस्यामशेषेण भिषग्व्यवस्येत्

रसक्षयजन्य तृष्णानुं लक्षण.

१० रसनी क्षीणता के जेनां लक्षणो सूत्रस्थानना १९ मा अध्यायमां केहेवामां आव्यां छे ते थतां जे तरश उत्पन्न थाय छे ते रसक्षयजन्य तृष्णा केहेवाय छे. आ तृष्णाथी पीडाएलो माणस रातदिवस पाणी पीधा करे छे पण सुख पामतो नथी. केटलाएक केहे छे के 'आ तृष्णा त्रणे दोषोना प्रकोपथी थाय छे.' हृदयमां पीडा, कंप, तरशनुं लाग्याज करवुं अने रसनां स्वाभाविक कर्मोनी हानि ए रसक्षयनां लक्षणो आ तृष्णामां पण संपूर्ण रीते थाय छे एम वैद्ये समजवुं.

११ त्रिदोषलिङ्गामसमुद्भवा च
हृच्छूलनिष्ठीवनसादयुक्ता ।

आमजन्य (अजीर्णथी उत्पन्न थएली) तृष्णानु लक्षण.

११ तरश जो आमथी एटले अजीर्णथी उत्पन्न थएली होय तो तेमां उपर कहेलां त्रणे दोषोनां लक्षणो थाय छे अने हृदयमां शूळ थाय छे, वारंवार थुंकवुं पडे छे तथा अंगोमां ग्लानि पण थाय छे.

१२ स्निग्धं तथाम्लं लवणं च भुक्तं
गुर्वन्नमेवाशु तृषां करोति ॥

भक्तजन्य (अन्नजन्य) तृष्णानुं लक्षण.

१२ स्निग्ध, खाटुं तथा खारूं अन्न जमवामां आव्युं होय तो तेथी तुरत जे तरश उत्पन्न थाय छे ते भक्तजन्य तृष्णा केहेवाय छे.

१३ क्षीणं विचित्तं बधिरं तृषार्त्तं
विवर्जयेन्निर्गतजिह्वमाशु ।

तृष्णाओनुं अमुक स्थितिमां असाध्यपणुं.

१३ तरशथी पीडाएलो माणस जो क्षीण थई गयो होय, बेभान थई गयो होय, बेहेरो थई गयो होय तथा तुरत बाहार नीकळी गएली जीभवाळो थई गयो होय तो तेनी चिकित्सा करवी नहीं.

१४ तृष्णाभिवृद्धावुदरेच पूर्णे
तं वामयेन्मागधिकोदकेन ॥
विलेपनं चात्र हितं वदन्ति
स्याद्दाडिमाम्रातकमातुलुङ्गैः ।
तृष्णा प्रयोगैरिह सा निवार्या
शीतैश्च सम्यग्रसवीर्यजातैः ॥
गण्डूषमम्लैर्विरसे च वक्त्रे
कुर्याच्छुभैरामलकस्य चूर्णैः ।
सुवर्णरूप्यादिभिरग्नितप्तै-
र्लोष्टैः कृतं वा सिकतोपलैर्वा ॥
जलं सुखोष्णं शमयेत्तु तृष्णाम्
सशर्करं क्षौद्रयुतं हिमं वा ।

तृष्णानी सामान्य चिकित्सा.

१४ तरश वृद्धि पामी होय अने पेट भरपूर थई गयुं होय तो पीपळनुं जळ पाईने वमन करावvुं. (रसक्षयजन्य तृष्णामां वमन करावvुं नहीं.) दाडिम, अंबाडां तथा बीजोरां एओना कल्कनुं लेपन करवुं. संपूर्ण रसवाळा तथा संपूर्ण वीर्यवाळा पित्तहर प्रयोगो के जेओनां नामो आ अध्यायना २९ मा विषयमां केहेवामां आवशे तेओनी योजनाओ करवी. तृष्णामां मोहोडुं विरस थई गयुं होय तो बीजोरां वगेरेनां खाटा रसोथी अने आमळांओनां सुंदर चूर्णोथी पण कोगळा करावVा. सुवर्ण तथा रूपां वगेरे धातुओने अथवा ठीकरांओने अथवा भूकरा पथराओने अग्निमां तपावी जळमां ठारीने ते जळ सेहेवाय तेवुं गरम होय ते समयमां पावामां आवे तो तेथी तृष्णा शांत थई जाय छे. साकरथी तथा मधथी संयुक्त करेलुं बरफनुं जळ पावामां आवे तो तेथी तृष्णा शांत थई जाय छे.

१५ पञ्चाङ्गकाः पञ्च गणा य उक्ता
स्तेष्वम्बु सिद्धं प्रथमे गणे वा ॥
पिबेत्सुखोष्णं मनुजोऽल्पशस्त-
तृषो विमुच्येत हि वातजायाः ।

वातजन्य तृष्णानी चिकित्सा.

१५ वातजन्य तृष्णा थई होय तो सूत्रस्थानना ३८ मा अध्यायमां कहेला लघुपंचमूल, बृहत्पंचमूल, वल्लीपंचमूल, कंटकपंचमूल तथा तृणपंचमूल ए पांचे गणोनो अथवा विदारिगंधादिगणनो क्काथ करी ते क्काथ सेहेवाय तेवो ऊनो राखी थोडो थोडो पावामां आवे तो तेथी वातजन्य तृष्णा नष्ट थई जाय छे.

१६ पित्तघ्नवर्गेण कृतः कषायः
सशर्करः क्षौद्रयुतः सुशीतः ॥
पीतस्तृषां पित्तकृतां निहन्ति
क्षीरं शृतं वाप्यथ जीवनीयैः ।

पित्तजन्य तृष्णानी चिकित्सा.

१६ उत्पलादिगणनो अथवा सारिवादिगणनो अथवा काकोल्यादिगणनो क्काथ करी, सारी पेठे थंडो पाडी, साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य तृष्णा नष्ट थई जाय छे.

काकोल्यादि जीवनीयवर्गथी पकावेलुं दूध पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य तृष्णा नष्ट थई जाय छे.

१७ बिल्वाढकीकण्टकपञ्चमूली-
दर्भेषु सिद्धं कफजां निहन्ति ॥
हितं भवेच्छर्दनमेव चात्र
तप्तेन निम्बप्रसवोदकेन ।

कफजन्य तृष्णानी चिकित्सा.

१७ बीलीनां मूळ, तुवरनां मूळ, कंटकपंचमूल अने दर्भ एओनो क्काथ पावामां आवे तो तेथी कफजन्य तृष्णा नष्ट थई जाय छे.

लींबडानां पानडांओना स्वरसने गरम करी ते पाईने वमन करावबुं, ए कफजन्य तृष्णा उपर अत्यंत प्रशस्त छे.

१८ सर्वासु तृष्णास्वथवापि पैत्तम्
कुर्याद्विधिं तेन विना न शान्तिः ॥
पर्यागलोदुम्बरजो रसस्तु
सशर्करस्तत्क्वथितोदकं वा ।
वर्गस्य सिद्धस्य च सारिवादेः
पातव्यमम्भः शिशिरं तृषार्त्तैः ।

उपर लखेली त्रणे जातनी तृष्णाओ उपर योगांतरो.

१८ अथवा सघळी तृष्णाओ उपर मधुर तथा शीत आदि द्रव्योथी पान, लेपन तथा परिषेचन आदि पित्तहर विधि के जे केहेवामां आवशे ते करवो. केम के घणुं करीने तेविना शांति थती नथी.

पाकेला ऊंबराना फळनो रस करी तेने साकरथी संयुक्त करीने पावामां आवे अथवा ऊंबरानां फळोना क्काथने साकरथी संयुक्त करी पावामां आवे तो तेथी सघळी तृष्णाओ शांत थई जाय छे.

सारिवादिगणनो क्काथ करी ते थंडो पाडेलो क्काथ पावामां आवे तो तेथी सघळी तृष्णाओ शांत थई जाय छे.

१९ कशेरुशृङ्गाटकपद्ममोच-
बिसेषु सिद्धं क्षतजां निहन्ति ॥
नीलोत्पलोशीरकुचन्दनानि
दत्वा प्रवाते निशि वासयेत्तु ।
तदुत्तमं तोयमुदारगन्धि
सितायुतं क्षौद्रयुतं तथैव ।
द्राक्षाप्रगाढं च हिताय वैद्य-
स्तृष्णार्दितेभ्यो वितरेन्नरेभ्यः ॥
ससारिवादौ तृणपञ्चमूले
तथोत्पलादौ मधुरे गणे च ।
कुर्यात्कषायं च यथैव युक्तं
मधूकपुष्पादिषु वा परेषु
राजादनक्षीरिकपीतनेषु
षट् पानकान्यत्र हितानि च स्युः ।
सतुण्डिकेरीण्यथवा पिबेत्तु
पिष्टानि कार्पाससमुद्भवानि ॥
क्षतोद्भवां रुग्विनिवारणेन
जयेद्रसानामसृजश्च पानैः ।

क्षतजन्य तृष्णानी चिकित्सा.

१९ कसेरुकंद, शींगोडां, श्वेतकमळ, केळनां फूल अने कमळनां मूळ एओनो क्काथ पावामां आवे तो ते क्काथ क्षतजन्य तृष्णाने नष्ट करे छे.

नीळकमळ, वाळो तथा रतांजलि एओने पाणीमां नाखी ते पाणीने राते खुल्ली जग्यामां (अगाशीमां) राखी मूकवुं. पछी प्रभाते ए उत्तम सुगंधवाळुं जळ साकरथी तथा मधथी युक्त करी अने द्राक्षना कल्कथी सारी पेठे युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

सारिवादिगणने पाणीमां नाखी ते पाणीने राते खुल्ली जग्यामां राखी मूकी प्रभातमां साकरथी तथा मधथी संयुक्त करी द्राक्षना कल्कथी सारी पेठे युक्त करवुं. आ पानक पावाथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

तृणपंचमूळने पाणीमां नाखी ते पाणीने राते जग्यामां राखी मूकी प्रभातमां साकरथी तथा मधथी संयुक्त करी द्राक्षना कल्कथी सारी पेठे युक्त करवुं. आ पानक पावामां आवे तो तेथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

उत्पलादिगणने पाणीमां नाखी ते पाणीने राते खुल्ली जग्यामां राखी मूकी प्रभातमां सा-

करथी तथा मधथी संयुक्त करी द्राक्षना कल्कथी सारी पेठे युक्त करवुं. आ पानक पावामां आवे तो तेथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

काकोल्यादिगणने पाणीमां नाखी ते पाणीने राते खुल्ली जग्यामां राखी मूकी प्रभातमां साकरथी तथा मधथी संयुक्त करी द्राक्षना कल्कथी सारी पेठे युक्त करवुं. आ पानक पावामां आवे तो तेथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

महुडानां, सरगवानां, कांचनारनां तथा घऊंलानां पुष्पोने पाणीमां नाखी ते पाणीने राते खुल्ली जग्यामां राखी मूकी प्रभातमां साकरथी तथा मधथी संयुक्त करी द्राक्षना कल्कथी सारी पेठे युक्त करवुं. आ पानक पावामां आवे तो तेथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

राण, क्षीरिवृक्षो अने पारसपीपळो एओनां फळोने पाणीमां नाखी ते पाणीने राते खुल्ली जग्यामां राखी मूकी प्रभातमां साकरथी तथा मधथी संयुक्त करी द्राक्षना कल्कथी सारी पेठे युक्त करवुं. आ पानक पावामां आवे तो तेथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

(केटलाएक केहे छे के उपर कहेलां छ पानको सघळी तृष्णाओनी सामान्य चिकित्सारूप छे.)

हीरवणीनां फळो अने कपासनां फळो एओने वाटी साकरथी, मधथी तथा द्राक्षथी सारी पेठे युक्त करीने ते पावामां आवे तो तेथी क्षतजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे. (कार्त्तिककुंड नामनो आचार्य केहे छे के आ योग पण सघळी तृष्णाओनी सामान्य चिकित्सारूप छे.)

क्षतजन्य तृष्णाने क्षतनी वेदनाना निवारणथी अने मांसना रसाओ तथा मृग वगेरेनुं लोही पावाथी शांत करवी.

२० क्षयोत्थितां क्षीरघृतं निहन्या-
न्मांसोदकं वा मधुकोदकं वा ॥

रसक्षयजन्य तृष्णानी चिकित्सा.

२० रसक्षयजन्य तृष्णा उत्पन्न थई होय तो दूधने मथीने काहाडेलुं घी अथवा दूध अने घी अथवा मांसनुं जळ अथवा जेठीमधनुं जळ पावुं.

२१ आमोद्भवां बिल्ववचायुतानां
जयेत्कषायैरथ दीपनानाम् ।
आम्रातभल्लातबलायुतानि
पिबेत्कषायाण्यथ दीपनानि ॥

आमजन्य तृष्णानी चिकित्सा.

२१ आमजन्य तृष्णा उत्पन्न थई होय तो बीली, वज तथा पिप्पल्यादि दीपनगण एओना काथोथी शांत करवी.

अंबाडां, भीलामां, बलदाणा अने दीपनीय द्रव्यो एओना काथो पावामां आवे तो तेथी आमजन्य तृष्णा शांत थई जाय छे.

२२ गुर्वन्नजातां वमनैर्जयेच्च
क्षयादृते सर्वकृताश्च तृष्णाः ।

भक्तजन्य तृष्णानी चिकित्सा.

२२ भक्तजन्य तृष्णाने एटले भारे अन्न खावाथी उत्पन्न थएली तरशने वमनोथी जीतवी. रसक्षयजन्य तृष्णा शिवाय बाकीनी सघळी तृष्णाओ उपर पण वमनो देवां उचित छे.

२३ श्रमोद्भवां मांसरसो निहन्ति
गुडोदकं वाप्यथ वापि मन्थः ॥
भक्तोपरोधात्तृषितो यवागू-
मुष्णां पिबेन्मन्थमथो हिमं च ।
या स्नेहपीतस्य भवेच्च तृष्णा
तत्रोष्णमम्भः प्रपिबेन्मनुष्यः ॥
मद्योद्भवामर्द्धजलं निहन्ति
मद्यं तृषां यापि हि मद्यपस्य ।
उष्णोद्भवां हन्ति जलं सुशीतं
सशर्करं सेक्षुरसं तथाम्भः ।

परचुरण तृष्णाओनी चिकित्साओ.

२३ तरश जो श्रमथी उत्पन्न थएली होय

तो मांसनो रसो पावो अथवा गोळनुं पाणी पावुं अथवा सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २३२ मा विषयमां कहेलो मंथ पावो.

तरश जो उपवासथी उत्पन्न थएली होय तो ऊनी यवागू पावी अथवा सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २३२ मा विषयमां कहेलो मंथ पावो. अथवा बरफ पावो. (वायुनी उत्कटता होय तो यवागू पावी, कफनी उत्कटता होय तो मंथ पावो अने पित्तनी उत्कटता होय तो बरफ पावो.

तरश जो स्नेहपान करवाथी उत्पन्न थएली होय तो ऊनुं पाणी पावुं.

मद्यपान करनारने मद्य पीवाथी तरश उत्पन्न थएली होय तो जेमां अरधोअरध जळ मिश्रित करेलुं होय एवुं मद्य पावुं.

तरश जो उष्णकाळथी उत्पन्न थएली होय तो साकरवाळुं अथवा शेलडीना रसवाळुं शीतल जळ पावुं.

२४ स्वैः स्वैः कषायैर्वमनानि तासां
तथा ज्वरोक्तानि च पाचनानि ।

तृष्णाओ उपर केवां वमनो तथा पाचनो देवां.

२४ जे तृष्णा जे दोषथी उत्पन्न थएली होय ते तृष्णाने ते दोषनुं हरण करनारा क्वाथोथी वमनो आपीने नष्ट करवी.

वायुनी उत्कटतावाळी तृष्णा उपर वातज्वरना विषयमां कहेलां, पित्तनी उत्कटतावाळी तृष्णा उपर पित्तज्वरना विषयमां कहेलां अने कफनी उत्कटतावाळी तृष्णा उपर कफज्वरना विषयमां कहेलां पाचनो देवां.

२५ लेपावगाहौ परिषेचनानि
कुर्यात्तथा शीतगृहाणि चापि ॥
संशोधनं क्षीररसौ घृतानि
सर्वासु लेहान्मधुरान्हिमांश्च ॥

पित्तहर प्रयोगो.

२५ सघळा प्रकारनी तृष्णाओ उपर पित्तहर लेपनोनी, पित्तहर अवगाहनोनी, पित्तहर परिषेचनोनी, शीतल घरोनी, विरेचनोनी, दूधोनी, मांसोना रसाओनी, घृतोनी अने मधुर तथा शीतल अवलेहोनी योजनाओ करवी.

अध्याय ४९ मो.

१ अथातश्छर्दिप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'छर्दिप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि ।
अकाले चातिमात्रैश्च तथाऽसात्म्यैश्च भोजनैः ॥
श्रमाद्भयात्तथोद्वेगादजीर्णात्क्रिमिदोषतः ।
नार्याश्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः ॥
बीभत्सैर्हेतुभिश्चान्यैर्भुक्तमुत्क्लिश्यते बलात् ।

छर्दिनां (उलटीनां) निदानो.

२ अत्यंत द्रवरूप भोजनोथी, अत्यंत स्निग्ध भोजनोथी, अप्रिय भोजनोथी, खाटां भोजनोथी, समयवगरनां भोजनोथी, अत्यंत भोजनोथी, असात्म्य भोजनोथी, श्रमथी, भयथी, उद्वेगथी, अजीर्णथी, कृमिओना दोषथी, गर्भ रेहेवाने लीधे थता अभावाओथी, बहुज उतावळुं जमवाथी अने मनने ग्लानि आपनारा सुगामणा पदार्थोनां दर्शनादिक बीजां कारणोथी पण खाधेलुं अन्नादिक बलात्कारे पेटमांथी उछळे छे.

३ छादयन्नाननं वेगैरर्दयन्नङ्गभञ्जनैः ॥
निरुच्यते छर्दिरिति दोषो वक्त्रं प्रधावितः ।

१ उलटीनां निदान, संप्राप्ति, पूर्वरूप, लक्षणो तथा चिकित्साओ एओनां निरूपण विषयनो.

छर्दिनुं सामान्य लक्षण.

३ वेगोथी मोहोडाने बूरी देतो, अंगोने मरडवा वगेरेथी पीडतो अने नीकळवा माटे मोहोडामां दोडी पोहोचतो जे दोष ते छर्दि (उलटी) केहेवाय छे.

४ दोषानुदीरयन्वृद्धानुदानो व्यानसङ्गतः
ऊर्ध्वमागच्छति भृशं विरुद्धाहारसेविनाम् ।

छर्दिनी संप्राप्ति.

४ विरुद्ध आहारोनुं सेवन करनाराओनो उदानवायु व्यानवायुनी साथे मळी, वृद्धि पामेला दोषोने प्रेरतो प्रेरतो अत्यंत ऊंचे आवे छे एटले उलटी थाय छे.

५ हृल्लासोद्गाररोधौ च प्रसेको लवणस्तनुः ॥
द्वेषोऽन्नपाने च भृशं वमीनां पूर्वलक्षणम् ।

छर्दिनुं पूर्वरूप.

५ उलटी थवानी होय त्यारे मोळ आवे छे, ओडकार रोकाई जाय छे, मोहोडामां खाराशवाळुं थोडुं थोडुं पाणी आव्या करे छे अने अन्नपान उपर अत्यंत द्वेष थाय छे.

६ प्रच्छर्दयेत्फेनिलमल्पमल्पं
शूलार्दितोऽभ्यर्दितपार्श्वपृष्ठः ॥
श्रान्तः सघोषं बहुशः कषायं
जीर्णेऽधिकं सानिलजा वमिस्तु ।

वातजन्य छर्दिनुं लक्षण.

६ फीणवाळुं थोडुं थोडुं वमन थया करे, शूळ उत्पन्न थाय, पासांओमां तथा पीठमां वेदना थाय, श्रम लागे, अवाज थई तूरा रसवाळुं अन्नादिक वारंवार पडे अने अन्न जीर्ण थया पछी अधिक वमन थाय तो जाणवुं के ए छर्दि वातजन्य छे.

७ योऽम्लं भृशं वा कटु तिक्तवक्त्रः
पीतं सरक्तं हरितं वमेद्वा ॥
सदाहचोषज्वरवक्त्रशोषमूर्छा-
न्विता पित्तनिमित्तजा सा ।

पित्तजन्य छर्दिनुं लक्षण.

७ अत्यंत खाटुं अथवा तीखुं वमन थाय, मोहोडुं कडवुं थई जाय, जे वमन पडे ते पीळाशवाळुं, रताशवाळुं के हरितवर्णवाळुं होय, बळतरा थती होय, चोस थतो होय, ज्वर आवतो होय, मोहोडामां शोप पडतो होय अने मूर्छा पण आवती होय तो जाणवुं के ए छर्दि पित्तजन्य छे.

८ यो हृष्टरोमा मधुरं प्रभूतं
शुक्लं हिमं सान्द्रकफानुविद्धम्
अभक्तरुग्गौरवसादयुक्तो
वमेद्वमी सा कफकोपजा स्यात् ।

कफजन्य छर्दिनुं लक्षण.

८ वमन थती वखते रुवाडां ऊभां थई जतां होय, जे वमन पडे ते मीठुं, झाझुं, सफेद, थंडुं तथा घाटा कफथी संयुक्त पडतुं होय, अन्न उपर अरुचि होय, शरीरमां भारेपणुं होय अने अंगोमां ग्लानि होय तो जाणवुं के ए छर्दि कफजन्य छे.

९ सर्वाणि रूपाणि भवन्ति यस्यां
सा सर्वदोषप्रभवा मता तु ॥

सान्निपातिक छर्दिनुं लक्षण.

९ जे छर्दिमां उपर कहेलां त्रणे दोषोनां लक्षणो देखाय ते छर्दिने त्रणे दोषोथी उत्पन्न थएली समजवी.

१० बीभत्सजा दौहृदजामजा च
याऽसात्म्यतो वा कृमिजा च या हि ।
सा पञ्चमी ताश्च विभावयेत्तु
दोषोच्छ्रयेणैव यथोक्तमादौ ॥

आगंतुज छर्दिओमां दोषोनी परीक्षा.

१० सुगामणा पदार्थना दर्शनादिकथी अथवा गर्भ रेहेतां थता अभावाथी अथवा अजीर्णथी अथवा असात्म्य अन्नादिकथी अथवा कृमिओने लीधे जे छर्दि थाय ते सर्व छर्दिओने आगंतुज समजवी (आ रीते वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य,

सान्निपातिक अने आगंतुज ए नामना छर्दिना पांच भेदो थाय छे.) आगंतुज छर्दिओमां दोपोनी परीक्षा उपर कहेलां ते ते दोपोनां चिह्नो उपरथी करी लेवी.

११ शूलहृल्लासबहुला कृमिजा च विशेषतः ॥
कृमिहृद्रोगतुल्येन लक्षणेन च लक्षिता ।

कृमिओथी थएली आगंतुज छर्दिनुं विशिष्ट लक्षण.

११ कृमिजन्य छर्दिमां शूळ तथा मोळ अत्यंत होय छे अने विशेषे करी तेमां कृमिजन्य हृद्रोगनां लक्षणो जेवां लक्षणो होय छे. (आ तंत्रना ४३ मा अध्यायनो ८ मो विषय वांचो.)

१२ क्षीणस्योपद्रवैर्युक्तां सासृक्पूयां सचन्द्रिकाम् ॥
छर्दिं प्रसक्तां कुशलो नारभेत चिकित्सितुम् ।

छर्दिओनुं स्थितिओ उपरथी असाध्यपणुं.

१२ जो रोगी क्षीण होय तो तेनी छर्दिनी चिकित्सा करवी नहीं. कास, श्वास, ज्वर, तरश, हेडकी, बेभानपणुं, हृद्रोग तथा तमकश्वास ए उपद्रवोवाळी अथवा रुधिर के परुवाळी छर्दिनी चिकित्सा करवी नहीं. जे छर्दिमां मोरपीछना चांडला जेवा आकारवाळा चांडला पडता होय तेनी चिकित्सा करवी नहीं अने जे छर्दि निरंतर प्रवर्त्त्या करती होय तेनी चिकित्सा करवी नहीं.

१३ आमाशयोत्क्लेशभवाश्च सर्वास्तस्माद्धितं लङ्घनमेव तासु ॥
वमीषु बहुदोषासु च्छर्दनं हितमुच्यते ॥
विरेचनं वा कुर्वीत यथादोषोच्छ्रयं भिषक् ।
संसर्गीश्चानुपूर्व्येण यथास्वं भेषजायुतान् ॥
लघूनि परिशुष्काणि सात्म्यान्यन्नानि वाचरेत्
यथास्वं च कषायाणि ज्वरघ्नानि प्रयोजयेत् ॥

छर्दिओनी सामान्य चिकित्सा.

१३ सघळा प्रकारनी छर्दिओ आमाशयना उत्क्लेशथी थाय छे एटला माटे तेओमां लंघन करावतुं ए मुख्य हितकारी छे. जो छर्दि घणा कफवाळी होय तो वमन करावतुं ए हितकारी छे. वैद्ये दोपना उच्छ्रयने अनुसरीने योग्य जणाय तो विरेचन पण करवुं. वैद्ये शोधन कर्या पछी दोषोना अनुसारप्रमाणे ते ते दोषोने टाळनारां औषधोथी संयुक्त करेलां अन्नोना संसर्गो करवा अथवा मात्राथी तथा स्वभावथी हलकां अने शुष्कतावाळां सात्म्य अन्नो देवां. ज्वरोने हणनारा क्वाथो के जेओ आ तंत्रना ३९ मा अध्यायमां केहेवामां आव्या छे तेओनी पण दोपोना अनुसारथी योजनाओ करवी.

१४ हन्यात्क्षीरघृतं पीतं छर्दिं पवनसम्भवाम् ।
मुद्गामलकयूषो वा ससर्पिष्कः ससैन्धवः ॥
यवागूं मधुमिश्रां वा पञ्चमूलीकृतां पिबेत् ।
पिबेद्वा व्यक्तसिंधूत्थं फलाम्लं वैष्किरं रसम् ॥
सुखोष्णं लवणं चात्र हितं स्नेहविरेचनम् ।

वातजन्य छर्दिनी चिकित्सा.

१४ दूधने मथीने काहाडेलुं घी, अथवा दूध तथा घी पावामां आवे तो तेथी वातजन्य छर्दि नष्ट थई जाय छे.

जेने घीथी संस्कार आप्यो होय एवा मगना तथा आमळाना यूषने सैंधवयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य छर्दि नष्ट थई जाय छे.

मोटी अथवा नाहानी पंचमूली (बृहत्पंचमूली अथवा लघुपंचमूली)थी बनावेली यवागूने मधथी संयुक्त करी पावामां आवे तो तेथी वातजन्य छर्दि नष्ट थई जाय छे.

विष्किर पक्षीओना मांसना रसाने दाडिम वगेरे फळोना रसथी खाटो करी कांईक वधारे सैंधव नाखीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य छर्दि नष्ट थई जाय छे.

स्नेहात्मक विरेचन सैंधवथी युक्त करी कांईक ऊनुं करीने देवामां आवे तो ते वातजन्य छर्दि उपर हितकारी थाय छे.

१५ पित्तोपशमनीयानि पानानि शिशिराणि च।
कषायाण्युपयुक्तानि घ्नन्ति पित्तकृतां वमीम्।
शोधनं मधुरैश्चात्र द्राक्षारससमायुतैः॥
बलवत्यां प्रशंसन्ति सर्पिस्तैल्वकमेव च।

पित्तजन्य छर्दिनी चिकित्सा.

१५ पित्तनी शांति करनारां जे शीतल पानको केहेवामां आव्यां छे तेओने कषाय द्रव्योथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य छर्दि नष्ट थई जाय छे.

द्राक्षना रसथी संयुक्त करेलां मधुर शोधनो देवां ए पण पित्तजन्य छर्दि उपर हितकारी छे.

जो पित्तजन्य छर्दि प्रबल होय तो पाटीयालोदरना क्वाथथी तथा कल्कथी पकावेलुं घी अथवा चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २१ मा विषयमां कहेलुं तैल्वकघृत देवुं ए हितकारी गणाय छे.

१६ आरग्वधादिभिर्यूषं सुरसाद्यैस्तथैव च॥
पाययेताथ सक्षौद्रं कफजायां चिकित्सकः।

कफजन्य छर्दिनी चिकित्सा.

१६ कफजन्य छर्दि थई होय तो वैद्ये आरग्वधादिगणथी तथा सुरसादिगणथी बनावेलो यूष मधथी संयुक्त करीने पावो.

१७ कृतं गूडूच्या विधिवत्कषायं हिमसंज्ञितम्॥
तिसृष्वपि भवेत्पथ्यं माक्षिकेण समन्वितम्।

सान्निपातिक छर्दिनी चिकित्सा.

१७ गळोनुं विधिपूर्वक हिम बनावी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी सान्निपातिक नष्ट थई जाय छे. (गळोने कूटी सोळ तोलांभार ऊना जळमां नाखी रातवाशी राखवामां आवे एटले ते जळ हिम केहेवाय छे.)

१८ बीभत्सजां हृद्यतमैर्दौर्हृदां काङ्क्षितैःफलैः॥
लङ्घनैर्वमनैश्चामां सात्म्यैश्चासात्म्यकोपजाम्।
कृमिहृद्रोगवच्चापि कृमिजां साधयेद्वमीम्॥
वितरेच्च यथादोषं शस्तं विधिमनन्तरम्।

आगंतुज छर्दिओनी चिकित्सा.

१८ सुगामणा पदार्थना दर्शनादिकथी छर्दि उत्पन्न थई होय तो तेने अत्यंत प्रिय लागे एवा पदार्थोथी शांत करवी.

गर्भ रेहेतां थता अभावाथी छर्दि उत्पन्न थई होय तो गर्भिणीने जे फळो खावानी इच्छा थाय ते फळो खवराववां एटले ते छर्दि शांत थाय छे.

अजीर्णथी छर्दि उत्पन्न थई होय तो तेने लंघनोथी तथा वमनोथी शांत करवी.

असात्म्य अन्नादिकथी छर्दि उत्पन्न थई होय तो तेने सात्म्य पदार्थोथी शांत करवी.

कृमिओने लीधे छर्दि उत्पन्न थई होय तो तेने, कृमिजन्य हृद्रोगने माटे जे चिकित्सा आ तंत्रना ४३ मा अध्यायना १३ मा विषयमां केहेवामां आवी छे ते चिकित्साथी शांत करवी.

सघळी आगंतुज छर्दिओमां लक्षणो उपरथी दोषनी परीक्षा करी ते ते दोषना अनुसारथी, उपर कहेली दोषजन्य छर्दिओनी चिकित्साओनी पण योजना करवी.

१९दधित्थरससंयुक्तां पिप्पलीं माक्षिकान्विताम्।
मुहुर्मुहुर्नरो लीढ्वा छर्दिभ्यः प्रतिमुच्यते ।
समाक्षिका मधुरसा पीता वा तण्डुलाम्बुना॥
तर्प्पणं वा मधुयुतं तिसृणामपि भेषजम्।
स्वयङ्गुप्तां सयष्ट्याह्वां तण्डुलाम्बुमधुद्रवाम्॥
पिबेद्यवागूमथ वा सिद्धां पत्रैः करञ्जजैः।
युक्ताम्ललवणाः पिष्टाः कुस्तुबुर्योऽथ वा हिताः
तण्डुलाम्बुयुतं खादेत्कपित्थं त्र्यूषणेन वा।
सिताचन्दनमध्वक्तं लिह्याद्वा मक्षिकाशकृत्॥
पिबेत्पयोऽग्नितप्तां च निर्वाप्य गृहगोधिकाम्।
सर्पिःक्षौद्रयुतान्वापि लाजशक्तून्पिबेत्तथा॥
सर्पिःक्षौद्रसितोपेतां मागधीं वा लिहेत्तथा।
धात्रीरसे चन्दनं वा शृतं मुद्गदलाम्बुना॥
कोलामलकमज्जानं लिह्याद्वा त्रिसुगन्धिकम्।
सक्षौद्रां शालिलाजानां यवागूं वा पिबेन्नरः॥

घ्रेयाण्युपहरेच्चापि मनोघ्राणसुखानि च ॥
जाङ्गलानि च मांसानि स्वादुवत्पानकानि च।
भोजनानि विचित्राणि कुर्यात्सर्वास्वतन्द्रितः॥

छर्द्दिओनी सामान्य चिकित्सानुं अधिक निरूपण.

१९ कोठना रसने पीपळथी तथा मधथी संयुक्त करी वारंवार चटाडवामां आवे तो माणस छर्द्दिओथी मुक्त थाय छे.

मोरवेलनो रस मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो रोगी छर्द्दिओथी मुक्त थाय छे.

सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना ३३२ मा विषयमां कहेलो मंथ मधथी संयुक्त करीने देवामां आवे तो तेथी वातजन्य, पित्तजन्य अने कफजन्य ए त्रणे प्रकारनी छर्द्दिओ नष्ट थई जाय छे.

कौचां अने जेठीमध एओनो कल्क मधथी मिश्रित करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

करंजनां पानडांनो कल्क नाखीने पकावेली यवागू पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

कोथमरीने दाडिम वगेरेना खाटा रसथी तथा सैंधवथी युक्त करी वाटीने तेनो उपयोग कराववामां आवे तो ते सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ उपर हितकारी थाय छे.

कोठने चोखाना धोणमां वाटीने अथवा सूंठ मरी तथा पीपळ एओथी संयुक्त करीने ते खवराववामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

मांखीओनी विष्टाने साकरथी, चंदनथी तथा मधथी युक्त करी ते चटाडवामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

गृहगोधिकाने (ढेढगरोलीने?) अग्निमां तपावी दूधमां ठारीने ते दूध पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

जवनी धाणीनो सातू घीथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ नष्ट थई जाय छे.

पीपळनुं चूर्ण घीथी, मधथी तथा साकरथी संयुक्त करी चटाडवामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ नष्ट थई जाय छे.

आमळीना रसमां पकावेली रतांजलि मगनी दाळना अथवा मगना पानडाना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

बोर तथा आमळां एओनी मज्जा मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

तज, तमालपत्र तथा एळची एओनुं चूर्ण मधनी साथे चटाडवामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

चोखानी धाणीनी यवागू मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी सर्व प्रकारनी छर्द्दिओ टळी जाय छे.

वैद्ये आलस्य छोडी दई छर्द्दिवाळा माणसने सुगंधी पदार्थो सूंघाडवा के जेओथी मनने तथा नासिकाने सुख प्राप्त थाय तेमज जांगलप्राणिओनां मांसोना रसाओ तथा मधुरतावाळां पानको पावां अने विचित्र भोजनो पण आपवां. आ प्रमाणे करवाथी सघळा प्रकारनी छर्द्दिओ शांत थाय छे.

अध्याय ५० मो.

१ अथातो हिक्काप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'हिक्काप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

---

१ हेडकीनां निदानो, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्साओ एओना निरूपण विषेनो.

२ विदाहिगुरुविष्टम्भिरूक्षाभिष्यन्दिभोजनैः ॥
शीतपानाशनस्नानरजाधूमानलानलैः ।
व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः ॥
विषमाध्यशनामाभिघातस्त्रीक्षयपीडनैः
हिक्का श्वासश्च कासश्च नृणां समुपजायते ।

हेडकीनां निदानो.

२ बळतरा करनारां, भारे, मलबंध करनारां, रूक्ष तथा शरदी करनारां भोजनोथी, टाढां पानथी, टाढुं जमवाथी, शीतल जळमां स्नानथी, रज पेसवाथी, धूमाडाथी, पवनथी, बहु मेहेनतवाळां कामोथी, बोजो उपाडवाथी, पंथथी, मळमूत्रना वेगोने रोकवाथी, लंघन वगेरे अपतर्पणोथी, विषमाशनथी, अध्यशनथी, आमथी, अभिघातथी, अतिमैथुनथी, क्षयथी अने दबाणथी माणसोने हेडकी, श्वास अने खांसी उत्पन्न थाय छे.

३ मुहुर्मुहुर्वायुरुदेति सस्वनो
यकृत्प्लिहान्त्राणि मुखादिवाक्षिपन् ।
सघोषवानाशु हिनस्त्यसून्यत-
स्ततस्तु हिक्केति भिषग्भिरुच्यते ॥

हेडकीनुं स्वरूप तथा तेना 'हिक्का' ए नामनुं अन्वर्थपणुं.

३ मोहोडामांथी यकृत्ने, बरलने तथा आंतरडांओने बाहार काहाडतो होय एवो अवाजवाळो वायु वारंवार ऊंचो आवे छे अने ते अवाजवाळो वायु तुरत प्राणोने नष्ट करे छे एटला माटे ए रोगने वैद्यो 'हिक्का' केहे छे.

४ अन्नजां यमलां क्षुद्रां गम्भीरां महतीं तथा ।
कफेनानुगतो वायुः पञ्च हिक्काः करोति हि ॥

हेडकीना भेदो तथा संप्राप्ति.

४ अन्नजा, यमला, क्षुद्रा, गंभीरा अने महती ए रीते हेडकी पांच प्रकारनी थाय छे. कफे अनुसराएलो वायु ए हेडकीओने उत्पन्न करे छे.

५ मुखं कषायमरतिर्गौरवं कण्ठवक्षसोः ।
पूर्वरूपाणि हिक्कानामाटोपो जठरस्य च ॥

हेडकीनां पूर्वरूपो.

५ हेडकी उत्पन्न थवानी होय त्यारे मोहोडुं तूरूं थई जाय छे, अरति थाय छे, गळामां तथा छातीमां भारेपणुं थाय छे अने पेट चडी आवे छे.

६ पानान्नैरतिसंयुक्तैः सहसा पीडितोऽनिलः ।
हिक्कयत्यूर्ध्वगो भूत्वा तां विद्यादन्नजां भिषक् ॥

अन्नजा हेडकीनुं लक्षण.

६ अत्यंत संयुक्त थएलां अन्नपानोथी सहसा दबाएलो प्राणवायु ऊंचे गति करीने हिक्हिक् करावे छे तेने वैद्ये अन्नजा हेडकी जाणवी.

७ चिरेण यमलैर्वेगैर्या हिक्का संप्रवर्त्तते ।
कम्पयन्ती शिरोग्रीवं यमलां तां विनिर्दिशेत् ॥

यमला हेडकीनुं लक्षण.

७ घणी वारे बब्बे वेगोथी प्रवर्त्तती अने माथाने तथा डोकने कंपावी नाखती जे हेडकी आवे छे तेने यमला हेडकी जाणवी.

८ विकृष्टकालैर्या वेगैर्मन्दैः समभिवर्त्तते ।
क्षुद्रिका नाम सा हिक्का जत्रुमूलात्प्रधाविता ॥

क्षुद्रा हेडकीनुं लक्षण.

८ जे हेडकी घणी वारे मंदमंद वेगोथी प्रवर्त्ते छे अने डोकना कांठलाना मूळथी आवे छे ते क्षुद्रा हेडकी केहेवाय छे.

९नाभिप्रवृत्ता या हिक्का घोरा गम्भीरनादिनी ।
शुष्कौष्ठकण्ठजिह्वास्या श्वासपार्श्वरुजाकरी ॥
अनेकोपद्रवयुता गम्भीरा नाम सा स्मृता ।

गंभीरा हेडकीनुं लक्षण.

९ जे हेडकी नाभिथी प्रवर्त्ते छे, भयंकर लागे छे, गंभीर गर्जना करे छे, होठ गळुं जीभ तथा मोहोडुं एओमां शोष पाडे छे, श्वासवाळी होय छे, पडखामां वेदना करे छे अने अनेक उपद्रवोथी

युक्त होय छे ते गंभीरा हेडकी केहेवाय. छे.

१० मर्माण्यापीडयन्तीव सततं या प्रवर्त्तते ॥
देहमायाम्य वेगेन घोषयत्यतितृष्यतः ।
महाहिक्केति सा ज्ञेया सर्वगात्रप्रकम्पिनी ॥

महती हेडकीनुं लक्षण.

१० मर्मोने दबावी नाखती होय एवी, वेगथी देहने लांबो करी अवाज करती, बहु तरश लगाती अने सघळां गात्रोने कंपावनारी जे हेडकी निरंतर चाल्या करे छे ते महती केहेवाय छे.

११ आयम्यन्ते हिक्कतोऽङ्गानि यस्य
दृष्टिश्चोर्ध्वं ताम्यते यश्च गाढम् ।
क्षीणोऽन्नद्विट् कासते यश्च हिक्की
तौ द्वावन्त्यौ वर्जयेद्धिक्कमानौ ॥

हेडकीनुं अमुक स्थितिमां असाध्यपणुं.

११ जेनां अंगो हेडकी आवती वखते लांबां थई जतां होय तथा दृष्टि ऊंची थई जती होय अने शरीर अत्यंत ग्लानि पाम्या करतुं होय ते माणसने वैद्ये छोडी देवो. तेमज हेडकीवाळो जे माणस क्षीण थई गयो होय, अन्न उपर अरुचिवाळो होय अने ऊधरस के छीक खाधा करतो होय तेने पण वैद्ये छोडी देवो. तेमज गंभीरा हेडकीवाळाने तथा महती हेडकीवाळाने पण वैद्ये छोडी देवो.

१२ प्राणायामोद्वेजनत्रासनानि
सूचीतोदैः संभ्रमश्चात्र शस्तः ।
यष्ट्याह्वं वा माक्षिकेणावपीडः
पिप्पल्यो वा शर्कराचूर्णयुक्ताः ॥
सर्पिः कोष्णं क्षीरमिक्षो रसो वा
नातिक्षीणे स्रंसनं छर्दनं च ।
नारीपयःपिष्टमशुक्लचन्दनं
घृतं सुखोष्णं च ससैन्धवं तथा ॥
चूर्णीकृतं सैन्धवमम्भसा तथा
निघ्नन्ति हिक्कां च हितं च नस्यतः ।
गुञ्जयाद्धूपं शालनिर्यासजातं
नैपालं वा गोविषाणोद्भवं वा ॥
सर्पिःस्निग्धैश्चर्मवालैः कृतं वा
हिक्कास्थाने स्वेदनं वापि कार्यम् ।
क्षौद्रोपेतं गैरिकं काञ्चनाह्वं
लिह्याद्भस्म ग्राम्यसत्वास्थिजं वा ॥
तद्वच्छ्वाविन्मेषगोशल्यकानाम्
रोमाण्यन्तर्द्धूमदग्धानि चात्र ।
मध्वाज्याक्तं बर्हिपत्रप्रसूत-
मेवं भस्मौदुम्बरं तैल्वकं वा ॥
स्वर्जिक्षारं बीजपूराद्रसेन
क्षौद्रोपेतं हन्ति लीढ्वाशु हिक्काम् ।
सर्पिःस्निग्धा घ्नन्ति हिक्कां यवाग्वः
कोष्णग्रासाः पायसो वा सुखोष्णः ॥
शुण्ठीतोये साधितं क्षीरमाजं
तद्वत्पीतं शर्करासंयुतं वा ।
आतृप्तेर्वा सेव्यमानं निहन्याद्
घ्रात्वा हिक्कामाशु मूत्रं त्वजाव्योः ॥
सपूतिकीटं लशुनोग्रगन्धं
हिङ्ग्वम्बुनाचूर्ण्य सुभावितं तत् ॥
क्षौद्रं सितां वारणकेशरं च
पिबेद्रसेनेक्षुमधूकजेन ।
पिबेत्पलं वा लवणोत्तमस्य
द्वाभ्यां पलाभ्यां हविषः समग्रम् ॥
हरीतकीं कोष्णजलानुपानां
पिबेद्धृतं क्षारमधुप्रपन्नम् ।
रसं कपित्थान्मधुपिप्पलीभ्यां
पिचुप्रमाणं प्रपिबेत्सुखाय ॥
कृष्णा सिता चामलकं च लीढं
सशृङ्गवेरं मधुनाथ वापि ।
कोलास्थिमज्जाञ्जनलाजचूर्णं
हिक्कां निहन्यान्मधुना च लीढम् ॥
पाटलायाः फलं पुष्पं गैरिकं कटुरोहिणी ।
खर्जूरमध्यं मागध्यः काशीशं दधिनाम च ॥
चत्वारो यूषयोगाः स्युः प्रतिपादप्रदर्शिताः ।
मधुद्वितीयाः कर्त्तव्यास्ते हिक्कासु विजानता ॥
कपोतपारावतलावशल्यक-
श्वदंष्ट्रगोधावृषदंशजान्रसान् ।

पिबेत्फलाम्लानहिमान्ससैन्धवान्
स्निग्धांस्तथैवर्ष्यमृगद्विजोद्भवान् ॥
विरेचनं पथ्यतमं ससैन्धवं
घृतं सुखोष्णं च सितोपलायुतम् ।
सदागतावूर्ध्वगतेऽनुवासनं
वदन्ति केचिच्च हिताय हिक्किनाम् ॥

हेडकीओनी चिकित्सा.

१.२ हेडकी आवती होय तो प्राणायाम कराववो, उद्वेग आपवो, त्रास आपवो अने सोई वगेरेथी भोंकीने संभ्रम करी नाखवो ए हितकारी थाय छे.

मधथी संयुक्त करेला जेठीमधना कल्कना रसनुं अथवा साकरना चूर्णथी संयुक्त करेला पीपळना कल्कना रसनुं अवपीड नस्य देवुं ए पण हेडकी उपर हितकारी छे.

जरा ऊनुं करेलुं घी अथवा जरा ऊनुं करेलुं दूध अथवा जरा ऊनो करेलो शेलडीनो रस पावामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

जो रोगी अत्यंत क्षीण थएलो न होय तो विरेचन तथा वमन देवुं ए हितकारी थाय छे.

स्त्रीना धावणमां वाटेली रतांजलिनुं अथवा जरा गरम करेला तथा सैंधवथी युक्त करेला घीनुं अथवा सैंधवना चूर्णथी युक्त करेला पाणीनुं नस्य देवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे. ए रतांजलि, घी के पाणी पावामां आवे तो तेथी पण हेडकी टळी जाय छे.

राळनो अथवा मणशीलनो अथवा बलदना शींगडांनो अथवा चामडांने तथा वाळोने घीथी स्निग्ध करीने तेओनो धूमाडो पावामां आवे तो तेथी हेडकी शांत थई जाय छे.

जे स्थानथी हेडकी आवती होय ते स्थानमां स्वेदन (शेक वगेरे) करवुं ए पण उत्तम छे.

सोनागेरूनुं चूर्ण मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी हेडकी नष्ट थई जाय छे.

बलद वगेरे ग्राम्यपशुना अस्थिनी भस्म मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी हेडकी शांत थई जाय छे.

शेढाई, घेंटो, बलद तथा शेळो एओनां रुवाडांओने हांडलीमां नाखी, धूमाडो अंदरज रहे एवी रीते बाळी ते भस्म मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

मोरपींछनी अथवा ऊंबरानी अथवा पाटीयालोदरनी भस्म मधथी तथा घीथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

साजीखार बीजोराना रसथी तथा मधथी संयुक्त करीने चटाडवामां आवे तो हेडकी तुरत नष्ट थई जाय छे.

घीथी स्निग्ध करेली यवागूओ सेहेवाय तेवी ऊनी उपयोगमां लेवराववामां आवे अथवा दूधपाक सेहेवाय तेवो ऊनो जमाडवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

सूंठना जळमां पकावेलुं बकरीनुं दूध पावामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

बकरीनुं दूध साकरथी संयुक्त करीने तृप्ति: पर्यंत सेवाववामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

बकरीनुं तथा गाडरनुं मूत्र सूंघाडवामां आवे तो तेथी हेडकी हणाई जाय छे.

वर्षाऋतुमां उत्पन्न थतो पूतिकीट नामनो कीडो, लसण अने वज एओना चूर्णने हींगना जळनी खूब भावना आपीने ते चूर्ण खवराववामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

मध, साकर अने नागकेसर एओनो कल्क शेलडीना तथा महुडाना रसनी साथे पावामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

चार तोलांभार सैंधवथी मिश्रित करेलुं आठ तोलांभार घी पावामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

हरडेनुं चूर्ण खवरावी ते उपर सेहेवाय तेवुं ऊनुं जळ पावामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

जवखारथी तथा मधथी संयुक्त करेलुं घी पावामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

कोठनो एक तोलांभार रस मधथी तथा पीपळथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी हेडकीवाळो माणस सुखी थाय छे.

पीपळ, साकर, आमळुं अने सूंठ एओ मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

बोरना ठळीयानी अंदरनां बीज, सुरमो अने साळनी धाणी एओनुं चूर्ण मधनी साथे चटाडवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

पाडलनां फळ अने फूल एओनो यूष मधथी संयुक्त करीने देवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

सोनागेरू अने कडु एओनो यूष मधथी संयुक्त करीने देवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

खजूरनो गर्भ अने पीपळ एओनो यूष मधथी संयुक्त करीने देवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

हीराकसी अने कोठ एओनो यूष मधथी संयुक्त करीने देवामां आवे तो तेथी हेडकी टळी जाय छे.

होलो, कबूतर, लावां, शेळो, कुडचल, घो अने मींदडो एओना मांसोना रसाओ सैंधवथी तथा दाडिम वगेरे खाटां फळोना रसथी युक्त करी सेहेवाय तेवा गरम राखीने पावामां आवे तो तेओथी हेडकी टळी जाय छे.

ऋष्य नामना मृगोना दांतोना मांसना रसाओ सैंधवथी तथा दाडिम वगेरे खाटां फळोना रसथी युक्त करी, घीथी स्निग्ध करी सेहेवाय तेवा गरम राखीने पावामां आवे तो तेओथी हेडकी टळी जाय छे.

हेडकीवाळाओने वायु ऊंची गतिवाळो होय छे माटे तेओने सैंधवना योगवाळुं विरेचन देवुं अने साकरथी संयुक्त करेलुं घी सेहेवाय तेवुं ऊनुं पावुं ए हितकारी थाय छे.

केटलाएक आचार्यो केहे छे के 'अनुवासनबस्ति हेडकीवाळाओनुं हित करे छे.'

अध्याय ५१ मो.

१ अथातः श्वासप्रतिषेधं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'श्वासप्रतिषेध'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ यैरेव कारणैर्हिक्का बहुभिः सम्प्रवर्त्तते ।
तैरेव कारणैः श्वासो घोरो भवति देहिनाम् ॥

श्वासनां निदानो.

२ माणसोने जे अनेक कारणोथी हेडकी चाले छे तेज कारणोथी श्वास नामनो भयंकर व्याधि उत्पन्न थाय छे. (गया अध्यायनो बीजो विषय जुवो.)

३ विहाय प्रकृतिं वायुः प्राणोऽथ कफसंयुतः।
श्वासयत्यूर्ध्वगो भूत्वा तं श्वासं परिचक्षते ॥

श्वासनी संप्राप्ति.

३ प्राणवायु विगुण थई, ऊंचे चाली, कफथी संयुक्त थईने श्वास लेवरावे छे ए रोग श्वास केहेवाय छे.

४ क्षुद्रकस्तमकश्छिन्नो महानूर्ध्वश्च पञ्चधा ।
भिद्यते स महाव्याधिः श्वास एको विशेषतः ॥

---

१ श्वासनां निदान, संप्राप्ति, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषेनो.

श्वासना भेदो.

४ विशेषे करी ए श्वास नामनो एकज मोटो व्याधि क्षुद्रश्वास, तमकश्वास, छिन्नश्वास, महाश्वास अने ऊर्ध्वश्वास ए पांच भेदोथी पांच प्रकारनो गणवामां आवे छे. (प्रतमकश्वास तमकश्वासनोज भेद छे माटे तेथी संख्यामां वधारो थतो नथी.)

५ प्राग्रूपं तस्य हृत्पीडा भक्तद्वेषोऽरतिः परा ।
आनाहः पार्श्वयोः शूलं वैरस्यं वदनस्य च ॥

श्वासनुं पूर्वरूप.

५ श्वास थवानो होय त्यारे हृदयमां पीडा थाय छे, अन्न उपर द्वेष थाय छे, मनने कांई गमतुं नथी, पेडु चडी आवे छे, पासांओमां शूळ थाय छे अने मोहोडुं विरस थई जाय छे.

६ किंचिदारभमाणस्य यस्य श्वासः प्रवर्त्तते ।
निषण्णस्यैति शान्तिं च स क्षुद्र इति संज्ञितः ॥

क्षुद्रश्वासनुं लक्षण.

६ कोई पण कामनी शरुआत करतां श्वास प्रवर्त्तवा लागे अने ज्यारे बेसी जवामां आवे त्यारे ते श्वासनी शांति थाय ए क्षुद्रश्वास केहेवाय छे.

७ तृट्स्वेदवमथुप्रायः कण्ठघुर्घुरिकान्वितः ।
विशेषाद्दुर्दिने ताम्येच्छ्वासः स्यात्तमको मतः
घोषेण महताविष्टः सकासः सकफो नरः ।
यः श्वसित्यबलोऽन्नद्विट् सुप्तस्तमकपीडितः ॥
स शाम्यति कफे हीने स्वपतश्च विवर्द्धते ।
मूर्छाज्वराभिभूतस्य ज्ञेयः प्रतमकस्तु सः ॥

तमकश्वासनुं लक्षण.

७ जे श्वासमां तरश, पसीनो तथा थूंकवुं घणां थाय, गळामां घुघवाटी बोले अने जे दिवसे वादळांओनो घेराव होय ते दिवसे वधारे कष्ट थाय ते श्वास तमकश्वास केहेवाय छे. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के ज्यारे प्रतिलोम थएलो वायु स्त्रोतोने प्राप्त थाय छे त्यारे डोकने तथा माथाने पकडी कफने वधारीने ते कफथी नाकमां सळीखमने, कंठमां घुघवाटीने अने हृदयमां पीडा करनारा तीव्र वेगवाळा श्वासने उत्पन्न करे छे. आ श्वास जेने उत्पन्न थयो होय ते माणस जाणे अंधारामां पेसतो होय एवो थई जाय छे, त्रास पामे छे, श्वासना वेगने लीधे चेष्टावगरनो थई जाय छे, खांसी आवतां वारंवार बेभान थई जाय छे, बडखो नीकळवाना समयमां अत्यंत दुःख पामे छे, बडखो नीकळी जाय त्यारे जरावार सुखित जेवो थाय छे, कंठमां व्यथा पामे छे, मांडमांड बोली शके छे, शयनमां सूतां छतां पण श्वासनी पीडाथी निद्राने प्राप्त थतो नथी, शयनमां पड्यो होय त्यारे पडखामां वायुथी पीडाय छे, बेसी रेहेतां सुख पामे छे, उष्ण वस्तुओने इच्छे छे, सूणेली आंख्योवाळो थई जाय छे अने अत्यंत पीडाय छे. ए माणसना ललाटमां पसीनो आव्या करे छे, मोहोडुं सूकाय छे, वारंवार श्वास चाल्या करे छे, जेम हाथी उपर बेठेलानुं शरीर वारंवार हाल्या करे तेम श्वासने लीधे तेनुं शरीर हाल्या करे छे अने मेघथी, जळथी, शीतथी, ऊगमणा पवनथी तथां कफ करनारा पदार्थोथी दरदनी वृद्धि थाय छे. आ तमकश्वास केहेवाय छे अने ते याप्यज छे पण नवो थयो होय तो वखतपर साध्य पण थाय छे.) ए तमकश्वासथी पीडाएलो माणस के जे श्वासनी मोटी घुघवाटीवाळो होय छे, खांसीवाळो तथा कफवाळो होय छे, निर्बल होय छे, अन्ननो द्वेषी होय छे, सूतां सूतां पण श्वासथी पीडाया करे छे, बडखो नीकळे त्यारे थोडीवार शांत थाय छे अने सूतो होय त्यारे श्वासनी वृद्धिवाळो थाय छे ते माणस जो मूर्छाथी तथा ज्वरथी पण अभिभूत होय तो तेनो ए श्वास प्रतमक केहेवाय छे.

८ आध्मातो दह्यमानेन बस्तिना सरुजो नरः ।
सर्वप्राणेन विच्छिन्नं श्वस्याच्छिन्नं तमादिशेत् ।

छिन्नश्वासनुं लक्षण.

८ जो श्वासवाळो माणस रही रहीने सघळा जोरथी श्वास लेतो होय, पेडुना आफरावाळो होय, मूत्राशयमां बळतरावाळो होय अने बीजी पण वेदनाओवाळो होय तो तेनो ए श्वास छिन्नश्वास केहेवाय छे. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के 'जेने छिन्नश्वास थयो होय ते दुखी माणस रही रहीने सघळा जोरथी श्वास ले छे, मर्मस्थलोनुं छेदन थवा जेवी वेदनाओथी पीडाय छे, जाणे हृदयनुं तथा माथानुं छेदन थतुं होय एवी रीते पीडाय छे, वखते श्वास पण लेतो नथी, पेडु आफरवाथी पसीनाथी मूर्छाथी तथा मूत्राशयनी बळतराथी दुखी थाय छे, आंसुओथी घेराएलां नेत्रोवाळो थई जाय छे, अत्यंत क्षीण थई जाय छे, हांफ्या करे छे, चित्तमां उद्वेग पाम्या करे छे, बक्या करे छे अने तेनुं मोहोडुं शुष्क थई जाय छे, वर्ण बगडी जाय छे तथा एक आंख राती रेहे छे. आ लक्षणोवाळा छिन्न श्वासथी पीडाएलो माणस तुरत प्राण छोडी दे छे. केम के ए श्वास मारी नाखनारोज छे.')

९ निःसंज्ञः पार्श्वशूलार्त्तः शुष्ककण्ठोऽतिघोषवान् ।
संरब्धनेत्रस्त्वायम्य यः श्वस्यात्स महान्स्मृतः।

महाश्वासनुं लक्षण.

९ जो श्वासवाळो माणस भानवगरनो थई गयो होय, पडखाना शूळथी पीडातो होय, कंठमां शोषवाळो होय, श्वासना मोटा अवाजवाळो होय, नेत्रोमां सोजावाळो होय अने लांबो थईने अथवा जाणे शरीरना बे भागवाळो होय एवो थई जईने श्वास लेतो होय तो तेनो ए श्वास महाश्वास केहेवाय छे. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के 'जेने महाश्वास थयो होय ते माणस ऊंचे चालता मोटा शब्दवाळा श्वास लीधा करे छे, आफरेला मस्त बळदनी पेठे निरंतर ऊंचा अवाजथी हांफ्या करे छे अने ज्ञानविज्ञान वगरनो होय छे. ए माणसनी आंखो भ्रमण कर्या करे छे, आंखो तथा मोहोडुं खुल्लां रेहे छे, मूत्र तथा विष्टा रोकाई जाय छे अने एना श्वासनो भारे शब्द दूरथी सांभळवामां आवे छे. आ श्वास प्राण लेनारोज छे अने तेथी माणस तुरतज मरी जाय छे.')

१० मर्मस्वायम्यमानेषु श्वसन्मूढो मुहुश्च यः ।
ऊर्ध्वप्रेक्षी हतरवस्तमूर्ध्वश्वासमादिशेत् ॥

ऊर्ध्वश्वासनुं लक्षण.

१० जे श्वासमां मर्मस्थलो खेंचाया करे, अने दृष्टि ऊंची ऊंची रहे ते श्वास ऊर्ध्वश्वास केहेवाय छे. (तंत्रांतरमां कह्युं छे के 'जेने ऊर्ध्वश्वास थयो होय ते माणसने बहुज ऊंचा श्वास चाले छे, तेनो श्वास नीचे बेसतोज नथी, मोहोडुं अने स्रोतो कफथी घेराई जवाने लीधे प्रकुपित थएला पवनथी भारे पीडा थाय छे, दृष्टि ऊंची रेहे छे, ए माणस चकरवकर थती आंखोथी चोतरफ विकृत रीते जोया करे छे, मोह पामे छे, वेदनाथी पीडाय छे तथा मोहोडुं सूकाय छे अने तेने कोई उपर पण रुचि थती नथी. ऊर्ध्वश्वास प्रकुपित थाय त्यारे श्वास नीचे प्रवर्त्ततो नथी अने ते ऊर्ध्वश्वास मुंझाता तथा ग्लानि पामता ते माणसने जीवितथी भ्रष्ट करे छे. सघळा श्वासो करतां आ ऊर्ध्वश्वासमां श्वास अत्यंत ऊंचो चाले छे एटलो विशेष छे.')

११ क्षुद्रः साध्यतमस्तेषां तमकः कृच्छ्र उच्यते ।
त्रयः श्वासा न सिध्यन्ति तमको दुर्बलस्य च ॥

श्वासोना साध्यासाध्यपणानुं विवेचन.

११ एओमां क्षुद्रश्वास अत्यंत साध्य छे, तमकश्वास कष्टसाध्य छे. छिन्नश्वास, महाश्वास अने ऊर्ध्वश्वास एओ असाध्य छे. नबळा मा-

ळसनो के मूर्छा आदिवाळा माणसनो तमकश्वास पण असाध्य छे.

१२ स्नेहवस्तिं विना केचिदूर्ध्वं चाधश्च शोधनम् ।
मृदु प्राणवतां श्रेष्ठं श्वासिनामादिशन्ति हि ॥
कासे श्वासे च हिक्कायां हृद्रोगे चापि पूजितम्
घृतं पुराणं संसिद्धमभयाबिडरामठैः ॥
सौवर्चलाभयाबिल्वैः संस्कृतं वाऽनवं घृतम् ।
पिप्पल्यादिप्रतीवापं सिद्धं वा प्रथमे गणे ॥
सपञ्चलवणं सर्पिः श्वासकासौ व्यपोहति ।
हिंस्राविडङ्गपूतीकत्रिफलाव्योषचित्रकैः ॥
द्विक्षीरं साधितं सर्पिश्चतुर्गुणजलान्वितम् ।
कोलमात्रैः पिबेत्तद्धि श्वासकासौ व्यपोहति ॥
अर्शांस्यरोचकं गुल्मं शकृद्भेदं क्षयं तथा ।
कृत्स्ने वृषकषाये वा पचेत्सर्पिश्चतुर्गुणे ॥
तन्मूलकुसुमावापं शीतं क्षौद्रेण योजयेत् ।
शृङ्गीमधुरिकाभार्गीशुण्ठीतार्क्ष्यसिताम्बुदैः ॥
सहरिद्रैः सयष्ट्याह्वैः समैरावाप्य योगतः ।
घृतप्रस्थं पचेद्धीमान्युक्त्या तोये चतुर्गुणे ॥
श्वासं कासं तथा हिक्कां सर्पिरेतन्नियच्छति ।
सुवहाकालिकाभार्गीशुकाख्या नैचुलं फलम् ॥
काकादनीं शृङ्गवेरं वर्षाभूबृहतीद्वयम् ।
कोलमात्रैर्घृतप्रस्थं पचेदेभिर्जलार्द्धकम् ॥
कदुष्णं पीतमेतद्धि श्वासामयविनाशनम् ।
सौवर्चलयवक्षारकटुकाव्योषचित्रकैः ॥
वचाभयाविडङ्गैश्च साधितं श्वासशान्तये ।
गोपवल्ल्युदके सिद्धं स्यादन्यद् द्विगुणे घृतम् ॥
तालीशतामलक्युग्राजीवन्तीकुष्ठसैन्धवैः ।
बिल्वपुष्करपूतीकसौवर्चलकणाग्निभिः ॥
पथ्यातेजोवतीयुक्तैः सर्पिर्जलचतुर्गुणम् ।
...पादयुतं सिद्धं सर्वश्वासहरं परम् ॥
पञ्चैतानि हवींष्याहुर्भिषजः श्वासकासयोः ।
वासाघृतं षट्पलं च मृतं चात्र हितं भवेत् ॥
तैलं दशगुणे सिद्धं भृङ्गराजरसे शुभे ।
सेव्यमानं यथान्यायं श्वासकासौ व्यपोहति ॥

फलाम्ला विष्किररसाः स्निग्धाः प्रव्यक्तसैन्धवाः ।
एणादीनां शिरोभिर्वा कौलत्था वा सुसंस्कृताः ॥
हन्युः श्वासं च कासं च संस्कृतानि पयांसि च
तिनिशस्य च बीजानि कर्कटाख्या सुवर्चिका ॥
दुरालभाथ पिप्पल्यः कटुकाख्या हरीतकी ।
श्वाविन्मयूररोमाणि कोलामागधिकाकणाः ॥
भार्गी त्वक्शृङ्गवेरं च शर्करा शल्लकाङ्गजम् ।
त्रिकण्टकस्य बीजानि चूर्णितानि तु केवलम् ॥
पञ्च श्लोकार्द्धिकास्त्वेते लेह्या ये सम्यगीरिताः
सर्पिर्मधुभ्यां ते लेह्याः कासश्वासार्दितैर्नरैः ॥
सप्तच्छदस्य पुष्पाणि पिप्पलीश्चापि मस्तुना ॥
पिबेत्संचूर्ण्य मधुना धानाश्चाप्यथ भक्षयेत् ॥
अर्काङ्कुरैर्भावितानां यवानां साध्वनेकशः ।
तर्पणं वा पिबेदेषां सक्षौद्रं श्वासपीडितः ॥
शिरीषकदलीकुन्दपुष्पमागधिकायुतम् ।
तण्डुलाम्बुयुतं पीत्वा जयेच्छ्वासानशेषतः ॥
कोलमज्जास्तालमूलमृष्यचर्ममसीमपि ।
लिह्यात्क्षौद्रेण भार्गी वा सर्पिर्मधुसमायुताम् ॥
निम्बैः कदम्बबीजं वा सक्षौद्रं तण्डुलाम्बुना ।
द्राक्षां हरीतकीं कृष्णां कर्कटाख्यां दुरालभाम् ॥
सर्पिर्मधुभ्यां विलिहन्हन्ति श्वासान्सुदारुणान् ।
हरिद्रां मरिचं द्राक्षां गुडं रास्नां कणां शटीम् ॥
लिह्यात्तैलेन तुल्यानि श्वासार्त्तो हितभोजनः ।
गवां पुरीषस्वरसं मधुमागधिकायुतम् ॥
लेहः श्वासेषु कासेषु वाजिनां वा शकृद्रसः ।
पाण्डुरोगेषु शोथेषु ये योगाः सम्प्रकीर्त्तिताः ॥
श्वासकासापहास्तेऽपि कासघ्ना ये च कीर्त्तिताः
भार्गीत्वक्त्र्यूषणं तैलं हरिद्रां कटुरोहिणीम् ॥
पिप्पलीं मरिचं चण्डां गोशकृद्रसमेव च ।
तलकोटस्य बीजेषु पचेदुत्कारिकां शुभाम् ॥
सेव्यमाना निहन्त्येषा श्वासानाशु सुदुस्तरान् ।
पुराणसर्पिः पिप्पल्यः कौलत्था जाङ्गला रसाः ॥
सुरा सौवीरकं हिङ्गु मातुलुङ्गरसो मधु ।
द्राक्षामलकबिल्वानि शस्तानि श्वासहिक्किनाम्

श्वासहिक्कापरिगतं स्निग्धैः स्वेदैरुपाचरेत् ।
युक्तैर्लवणतैलाभ्यां तैरस्य ग्रथितः कफः ॥
खस्थो विलयनं याति मारुतश्चास्य शाम्यति ।
स्निग्धं ज्ञात्वा ततश्चैव भोजयित्वा रसौदनम् ॥
वातश्लेष्मविबन्धे वा भिषग्धूमं प्रयोजयेत् ।
मनःशिलादेवदारुहरिद्राच्छदनामिषैः ॥
लाक्षोरुबूकमूलैश्च कृत्वा वर्त्तीर्विधानतः ।
सर्पिर्नवमधूच्छिष्टशालनिर्यासजं तथा ॥
शृङ्गवालखुरस्नायुत्वक्समस्तं गवामपि ।
तुरुष्कशल्लकीनां च गुग्गुलोः पद्मकस्य च ॥
एते सर्वे ससर्पिष्का धूमाः कार्या विजानता ।
बलीयसि कफग्रस्ते वमनं सविरेचनम् ॥
दुर्बले चैव रूक्षे च तर्पणं हितमुच्यते ।
जाङ्गलोरभ्रजैर्मांसैरानूपैर्वा सुसंस्कृतैः ॥
निदिग्धिकां चामलकप्रमाणां
हिङ्ग्वर्द्धयुक्तां मधुना सुयुक्ताम् ।
लिहन्नरः श्वासनिपीडितो हि
श्वासं जयत्येव बलात्त्र्यहेण ॥

श्वासोनी चिकित्सा.

१२ श्वासना दरदीओ बलवान् होय तो तेओने स्नेहबस्तिशिवाय कोमळ (पीडा न करे एवुं) शोधन देवुं एटले वमन पण देवुं अने विरेचन पण देवुं एम केटलाएक आचार्यो केहे छे.

खांसी, श्वास, हेडकी अने हृद्रोग एओ उपर हरडे, बिडलूण अने हींग एओथी पकावेलुं जूनुं (दश वर्ष रेहेलुं) घी देवुं ए हितकारी छे.

संचळ, हरडे अने बीली एओथी पकावेलुं जूनुं घी देवामां आवे तो तेथी श्वास, खांसी तथा हेडकी एओनी शांति थाय छे.

विदारिगंधादिगणना क्वाथथी तथा पिप्पल्यादि गणना कल्कथी पकावेलुं अने जेमां पंचलवणोनुं चूर्ण नाखेलुं होय एवुं घी देवामां आवे तो तेथी श्वास अने खांसी टळी जाय छे.

जटामांसी, वावडींग, गुच्छकरंज, त्रिफळा, सूंठ, मरी, पीपळ अने चित्रक एओने अरधां अरधां तोलांभार लई, कल्क करी, ते कल्क नाखी बमणा दूधमां अने चोगणा पाणीमां पकावेलुं घी देवामां आवे तो तेथी श्वास, खांसी, अरश, अरोचक, गुल्म, झाडो अने क्षय एओ नष्ट थई जाय छे.

अरडूसीनां पंचांगोनो क्वाथ करी ते चोगणा क्वाथमां अने अरडूसीनां मूळोना तथा पुष्पोना कल्कमां घी पकावी ते शीतल घी मधनी साथे देवामां आवे तो तेथी श्वास नष्ट थाय छे.

काकडाशींगी, सुवा अथवा वरीयाळी, भारंगी, सूंठ, रसवंती, साकर, मोथ, हळदर अने जेठीमध एओनो समभागे यथोचित कल्क नाखी चोगणा पाणीमां चोसठ तोलांभार घी पकाववुं. आ घी श्वास, खांसी तथा हेडकी एओने टाळे छे.

रास्ना, मेंढाशींगी, भारंगी, बकान, नेतरनां फळ, चणोठी, सूंठ, साटोडी, ऊभीभोरींगणी अने बेठीभोरींगणी एओना अरधां अरधां तोलांभार कल्को नाखी बमणा पाणीमां चोसठ तोलांभार घी पकाववुं. आ घी जरा गरम राखी पावामां आवे तो तेथी श्वास तथा खांसी नष्ट थाय छे.

संचळ, जवखार, कडु, सूंठ, मरी, पीपळ, चित्रक, वज, हरडे अने वावडींग एओनो कल्क नाखी चोगणा पाणीमां घी पकाववुं. आ घी श्वासनी तथा खांसीनी शांति करे छे.

बमणा उपलसरीना क्वाथमां पकावेलुं घी देवामां आवे तो तेथी श्वासनी तथा खांसीनी शांति थाय छे.

तालीसपत्र, भोंआमली, वज, कडवी खरखोडी, कठ, सैंधव, बीली, पुष्करमूल, गुच्छकरंज, संचळ, पीपळ, चित्रक, हरडे अने तेजबल एओनो कल्क तथा चोथा भाग जेटली हींग नाखी चोगणा

पाणीमां घी पकाववुं. आ घी सघळा प्रकारना श्वासोने तथा खांसीने अत्यंत हरी ले छे.

आ उत्तरतंत्रना ४१ मा अध्यायना २२ मा विषयमां कहेलुं अरडूसीनुं घी श्वास उपर हितकारी छे. (आ घी पित्तप्रधानश्वास उपर हितकारी छे.)

चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना १० मा विषयमां कहेलुं षट्पलक नामनुं घी श्वास उपर हितकारी थाय छे. (आ घी वातप्रधानश्वास उपर हितकारी छे.)

भांगराना दशगणा स्वच्छ क्काथमां तैल पकावी ते तैलनुं योग्य रीते सेवन कराववामां आवे तो तेथी श्वास तथा खांसी टळी जाय छे. (आ तैल कफप्रधानश्वास उपर हितकारी छे.)

दाडिम तथा बीजोरां वगेरे फळोना रसोथी खाटा करेला अने जेओमां कांइक वधारे सैंधव नाख्युं होय एवा खिष्किर पक्षीओना मांसना स्निग्ध रसाओ श्वासने तथा खांसीने नष्ट करे छे.

काळीयार आदिनां माथांओनां मांसो नाखी सारी पेठे संस्कृत करेला कळथीना यूषादिक रसो श्वासने तथा खांसीने नष्ट करे छे.

वायुनुं हरण करनारां पंचमूली आदि द्रव्यो नाखी पकावेलां दूधो पण श्वासने तथा खांसीने नष्ट करे छे.

मीणाहरमानां बीज, काकडाशींगी अने सूरजमुखी एओनुं चूर्ण घीमां तथा मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास अने खांसी टळी जाय छे.

धमासो, पीपळ, कट्ठ अने हरडे एओनुं चूर्ण मधमां तथा घीमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास अने खांसी टळी जाय छे.

शेढाईनां रुवाडां, मोरनां रुवाडां, चवक, पीपळ अने शाहाजीरूं एओनुं चूर्ण घीमां तथा मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास अने खांसी टळी जाय छे.

भारंगी, तज, सूंठ, साकर अने शेलांनो कांटो एओनुं चूर्ण घीमां तथा मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास अने खांसी टळी जाय छे.

गोखरूनां बीजोनुं चूर्ण मधनी तथा घीनी साथे चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास तथा खांसी नष्ट थई जाय छे.

सप्तपर्णनां फूल अने पीपळ एओनुं चूर्ण दहींनी नीचेना पाणीनी साथे पावामां आवे अने ते उपर मधनी साथे धाणा खवराववामां आवे तो तेथी श्वास टळी जाय छे.

जवने अनेकवार आकडाना अंकुरोनी सारी रीते भावनाओ आपी तेओनो सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २३२ मा विषयमां कह्याप्रमाणे मंथ करी ते मंथने मधथी संयुक्त करी तेनो उपयोग कराववामां आवे तो तेथी श्वास नष्ट थई जाय छे.

सरसडीयानां फूल, केळनां फूल, कुंदकागडानां फूल अने पीपळ एओ संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी सघळा प्रकारना श्वासो नष्ट थई जाय छे.

बोरनी मज्जा, ताडनुं मूळ अने हृष्य नामना मृगना चामडानी मसी एओ मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास टळी जाय छे.

भारंगीना कल्कने अथवा चूर्णने घी तथा मध एओमां कालवीने ते चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास टळी जाय छे.

लींबडानां फूल तथा कदंबनां बीज एओ मधथी संयुक्त करी चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी श्वास टळी जाय छे.

द्राक्ष, हरडे, पीपळ, काकडाशींगी अने धमासो एओना चूर्णने मध तथा घी एओमां कालवीने ते चटाडवामां आवे तो तेथी अतिदारुण श्वासो पण टळी जाय छे.

हळदर, मरी, द्राक्ष, गोळ, रास्ना, पीपळ अने कचूरो एओने सम भागे लई तैलमां कालवीने ते चटाडवामां आवे अने पथ्यभोजन करावववामां आवे तो तेथी श्वास टळी जाय छे.

मधथी तथा पीपळथी संयुक्त करेलो गायनां छाणनो स्वरस अथवा घोडानी लादनो स्वरस चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास तथा खांसी टळी जाय छे.

पांडुरोगो उपर जे योगो आ उत्तरतंत्रना ४४ मा अध्यायमां केहेवामां आव्या छे तेओनी योजनाओ करवाथी श्वास तथा खांसी टळी जाय छे.

सोजाओ उपर जे योगो चिकित्सास्थानना २३ मा अध्यायमां केहेवामां आव्या छे तेओनी योजनाओ करवाथी श्वास तथा खांसी टळी जाय छे.

खांसीओ उपर जे योगो आ तंत्रना ५२ मा अध्यायमां केहेवामां आवशे तेओनी योजनाओ करवाथी पण श्वास टळी जाय छे.

भारंगी, तज, सूंठ, मरी, पीपळ, हळदर अने कडु एओनुं चूर्ण तैलमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास टळी जाय छे.

पीपळ, मरी अने करमाणी एओनुं चूर्ण गायना छाणना रसमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी श्वास टळी जाय छे.

तलकोट (आनो पर्याय गुजरातीमां मळयो नथी) नां बीजो नाखी सुंदर लाफसी पकावीने तेनुं सेवन करावववामां आवे तो तेथी अतिदुस्तर श्वासो पण तुरत टळी जाय छे.

जूनुं घी, पीपळ, जांगलप्राणिओनां मांसोना कळथीथी संस्कृत करेला रसो, सुरा, सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायना १९० मा विषयमां कहेलुं सौवीरक, हींग, बीजोरानो रस, मध, द्राक्ष, आमळां अने बीलां. एओ श्वासवाळाओने तथा हेडकीवाळाओने हितकारी छे.

श्वासथी अथवा हेडकीथी घेराएला माणसने सैंधवथी तथा तैलथी संयुक्त करेलां शाल्वण आदि स्निग्ध स्वेदनो देवां. स्रोतोमां घाटो थईने रहेलो कफ ए स्वेदनोथी पीगळी जाय छे अने वायु पण शांत थाय छे.

स्वेदनोथी पण जो वायुनो तथा कफनो अनुबंध शांत न थाय तो पछी ए माणसना स्निग्धपणानो निश्चय करी मांसना रसावाळो भात जमाडी वैद्ये मणशील, देवदार, हळदर, तमालपत्र, गुगळ, लाख अने राता एरंडानां मूळीयां एओनी बत्तीओ बनावी, घीथी संयुक्त करीने तेओनो चिकित्सास्थानना ४० मा अध्यायमां कहेला विधिप्रमाणे धूमाडो पावो. नवुं मीण अने राळ एओने घीथी संयुक्त करीने तेओनो विधिपूर्वक धूमाडो पावो. बळदोनां शींगडां, पूंछडां, खरीयो, स्नायुओ अने चामडी ए सर्वेनुं चूर्ण करी घीथी संयुक्त करी तेनो पण विधिपूर्वक धूमाडो पावो. तेमज शेलारस, किंदरू, गुगळ अने पद्मकाष्ठ एओने पण घीथी संयुक्त करी तेओनो विधिपूर्वक धूमाडो पावो.

जो रोगी बळवान् होय अने कफथी ग्रस्त होय तो तेने मृदु वमन अने मृदु विरेचन देवां ए हितकारी छे पण जो रोगी दुर्बळ अने रूक्ष होय तो तेने जांगलप्राणिओनां, घेंटाओनां अथवा आनूपप्राणीओनां सारी रीते संस्कृत करेलां मांसोथी तर्पण आपवुं ए हितकारी थाय छे.

अरधो अरध हींगथी संयुक्त करेलो अने मधथी पण सारी पेठे युक्त करेलो आमळां जेवडो भोरींगणीनो कल्क चटाडवामां आवे तो श्वासथी पीडित थएला रोगीनो श्वास बलात्कारथी त्रण दिवसमां नष्ट थई जाय छे. (आ सिद्ध योग छे.)

१३ यथाग्निरिद्धः खलु काष्ठसङ्घै-
वेज्रं यथा वा सुरराजमुक्तम् ।

रोगास्तथैते खलु दुर्निवाराः
श्वासश्च कासश्च विलम्बिका च ॥

श्वासादिक रोगोनी चिकित्सा बहुज काळजीथी करवी.

१३ जेम काष्ठोना समूहोथी प्रदीप्त थएलो अग्नि दुर्निवार (वारण करवाने अशक्य) छे अने जेम इंद्रे मूकेलुं वज्र दुर्निवार छे तेम श्वास, खांसी अने विलंबिका ए रोगो दुर्निवार छे. आ प्रमाणे छे माटे तेओनी चिकित्सा बहुज काळजीथी करवी.

अध्याय ५२ मो.

१ अथातः कासप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कासप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ उक्ता ये हेतवो नृणां रोगयोः श्वासहिक्कयोः।
कासस्यापि च ते ज्ञेयास्त एवोत्पत्तिहेतवः
धूमोपघाताद्रजसस्त
व्यायामरूक्षान्ननिषेवणाच्च।
विमार्गगत्वादपि भोजनस्य
वेगावरोधात् क्षवथोस्तथैव ॥
प्राणो ह्युदानानुगतः प्रदुष्टः
संभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघोषः।
निरेति वक्त्रात्सहसा सदोषः
कासः स विद्वद्भिरुदाहृतस्तु ॥

कासनां (खांसीनां) निदानो, संप्राप्ति अने सामान्य लक्षण.

२ गया बे अध्यायोमां माणसोने श्वास थवानां तथा हेडकी थवानां जे कारणो कहेलां छे तेज कारणोथी कास उत्पन्न थाय छे. धूमाडावते के रजवते उपघात थवाथी, कसरत वगेरे परिश्रमना अतिसेवनथी, रूक्ष अन्नोना अतिसेवनथी, भोजन अवळे मार्गे जवाथी अने छींकना वेगने रोकवाथी दुष्ट थएलो प्राणवायु उदानवायुनी साथे मळी फूटेला कांसाना शब्द जेवा शब्दने करतो करतो सहसा मोहोडामांथी नीकळे छे ए रोगने विद्वानो कास (खांसी–उधरस) केहे छे.

३ स वातपित्तप्रभवः कफाच्च
क्षतात्तथान्यः क्षयजोऽपरश्च।
पञ्चप्रकारः कथितो भिषग्भि-
र्विवर्द्धितो यक्ष्मविकारकृत्स्यात् ॥

कासोनी संख्या.

३ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, क्षतजन्य अने क्षयजन्य ए रीते कासना पांच भेदो वैद्योए कहेला छे. एओमांनो गमे ते प्रकारनो कास होय पण जो ते उपेक्षा करवाथी वृद्धि पामे तो क्षयने (शोषने) उत्पन्न करे छे. (क्षयथी थएलो कास क्षयने उत्पन्न करे छे एम कह्युं तेमां एम समजवुं के क्षयथी थएलो कास वधारे क्षयने उत्पन्न करे छे.)

४ भविष्यतस्तस्य तु कण्ठकण्डू-
र्भोज्योपरोधो गलताल्लुलेपः।
स्वशब्दवैषम्यमरोचकोऽग्नि-
सादश्च लिङ्गानि भवन्त्यमूनि ॥

कासनां पूर्वरूपो.

४ कास उत्पन्न थवानो होय त्यारे गळामां खरज आवे छे, भोजननो उपरोध (कोळीयाने गळवा जतां कंठमां व्यथा) थाय छे, गळामां तथा ताळवामां कफनो लेप थाय छे, स्वर विषम थई जाय छे, अरुचि थाय छे अने जठराग्नि मंद थई जाय छे.

५ हृच्छङ्खमूर्द्धोदरपार्श्वशूली
क्षामाननः क्षीणबलस्वरौजाः ॥

१ खांसीनां निदानो, संप्राप्ति, पूर्वरूप, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषयनो.

प्रसक्तवेगश्च समीरणेन
कासत्तु शुष्क स्वरभदयुक्तः

वातजन्य कासनु लक्षण.

५ जो हृदय, लमणा, माथुं, पेट तथा पासां एओमां शूल थतां होय, मोहोडुं कृश थई गयुं होय, बळ स्वर तथा ओज क्षीण थई गयां होय अने निरंतर स्वर खराब थतां कफ नीकळ्या विनाज सूकी उधरस आव्या करती होय तो जाणवुं के ए कास वातजन्य छे.

६ उरोविदाहज्वरवक्त्रशोषै-
रभ्यर्दितस्तिक्तमुखस्तृपार्त्तः ।
पित्तेन पीतानि वमेत्कटूनि
कासेत्स पाण्डुः परिदह्यमानः

पित्तजन्य कासनुं लक्षण.

६ जो छातीमां वळतरा थती होय, ज्वर आवतो होय, मोहोडामां शोप पडतो होय, जाणे लींबडो खाधो होय तेम मोहोडामां कडवाश होय, तरश लाग्या करती होय, दाह थई थईने खांसी आवती होय, पीळी तथा तीखी उलटीओ थती होय अने वर्ण पीळो थई गयो होय तो जाणवुं के ए कास पित्तजन्य छे.

७ विलिप्यमानेन मुखेन सीद-
ञ्छिरोरुगार्त्तः कफपूर्णदेहः ।
अभक्तरुग्गौरवसादयुक्तः
कासेद्भृशं सान्द्रकफः कफेन ॥

कफजन्य कासनुं लक्षण.

७ जो मोहोडुं कफथी चोपडाएलुं रह्या करतुं होय, माथामां वेदना थती होय, देह कफथी पूर्ण रेहेतो होय, भोजनमां रुचि न थती होय, शरीरमां भारेपणुं तथा ग्लानि रेहेतां होय अने कफनी घाटाईने लीधे सीदातां सीदातां अत्यंत खांसी आवती होय तो जाणवुं के ए कास कफजन्य छे.

८ अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्वगजनिग्रहैः ।
रूक्षस्योरः क्षतं वायुर्गृहीत्वा कासमावहेत् ॥
स पूर्वं कासते शुष्कं ततः ष्ठीवेत् सशोणितम् ।
कण्ठेन रुजतात्यर्थं विभिन्नेनेव चोरसा ॥
सूचीभिरिव तीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेन शूलिना ।
दुःखस्पर्शेन शूलेन भेदपीडाभितापिना
पर्वभेदज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्यपीडितः
पारावत इवाकूजन् कासवेगात् क्षतोद्भवात् ॥

क्षतजन्य कासनी निदानपूर्वक संप्राप्ति अने लक्षण.

८ अत्यंत मैथुनथी, अत्यंत भार उठाववाथी, अत्यंत पंथ करवाथी, अत्यंत मल्लयुद्धादिक करवाथी अथवा हाथी के घोडा वगेरेनो निग्रह करवाथी जे रूक्ष माणसनी छाती क्षतवाळी थएली होय ते माणसनी छातीने घेरी लईने वायु खांसीने उत्पन्न करे छे. आ खांसीवाळा माणसने प्रथम सूकी खांसी आवे छे अने पछी लोहीवाळो बडखो पडे छे. ए माणसनुं गळुं अत्यंत वेदना पामे छे, छाती जाणे भेदाई गई होय तथा तीक्ष्ण सोईओथी भोंकाती होय एवी थाय छे, छातीमां शूळ नीकळे छे, शूळनी जग्या उपर स्पर्श करतां बहु दूखे छे, भेदाया जेवी पीडा तथा अभिताप थाय छे, सांधाओ त्रूटे छे अने ज्वरथी, श्वासथी, तरशथी तथा स्वरभंगथी पीडा थाय छे. ए माणस क्षतथी उत्पन्न थएला खांसीना वेगने लीधे कबूतरनी पेठे घुघवे छे. आ रोग क्षतजन्य कास केहेवाय छे.

९ विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात्।
घृणिनां शोचतां नृणां व्यापन्नेऽग्नौ त्रयो मलाः॥
कुपिताः क्षयजं कासं कुर्युर्देहक्षयप्रदम् ॥
स गात्रशूलज्वरदाहमोहान्
प्राणक्षयं चोपलभेत कासी ।
शुष्कं विनिष्ठीवति दुर्बलस्तु
प्रक्षीणमांसो रुधिरं सपूयम् ॥

तं सर्वलिङ्गं भृशदुश्चिकित्स्यं
चिकित्सितज्ञाः क्षयजं वदन्ति ।

क्षयजन्य कासनी निदानपूर्वक संप्राप्ति, लक्षण अने अत्यंत कष्टसाध्यपणुं.

९ विषम भोजनो करवाथी, असात्म्य भोजनो करवाथी, अत्यंत मैथुन करवाथी, मलमूत्र वगेरेना वेगोने रोकवाथी, अत्यंत दया उपजवाथी अने अत्यंत शोक करवाथी माणसोनो जठराग्नि बगडी जतां कोप पामेला त्रणे दोषो शरीरनो क्षय करी नाखे एवा क्षयजन्य कासने उत्पन्न करे छे. ए माणसने गात्रोमां शूळ थाय छे, ज्वर आवे छे, दाह थाय छे, निस्संज्ञपणुं थाय छे, इंद्रियोनी क्षीणता थाय छे, सूकुं थूंकवुं पडे छे अने बळनी तथा मांसनी क्षीणता थतां परूवाळुं लोही थूंकवुं पडे छे. आ रोग क्षयजन्य कास केहेवाय छे. आ क्षयजन्य कास जो सघळां लक्षणोथी युक्त होय तो चिकित्सा करवामां अत्यंत विषमता भरेलो छे एम आयुर्वेद जाणनाराओ केहे छे.

१० वृद्धत्वमासाद्य भवत्यथो वै
याप्यं त माहुर्भिषजस्तु कासम् ॥

वृद्ध अवस्थामां सघळा प्रकारना कासनु याप्यपणुं.

१० वृद्ध अवस्थामां जे कोई कास थएल होय ते याप्यज थाय छे एम वैद्यो केहे छे.

११ शृङ्गीवचाकट्फलकत्तृणाब्द-
धान्याभयाभार्ग्यमराह्वविश्वम् ।
उष्णाम्बुना हिङ्गुयुतं तु पीत्वा
बद्धास्यमप्याशु जहाति कासम् ॥
फलत्रिकव्योषविडङ्गशृङ्गी-
रास्नावचापद्मकदेवकाष्ठैः ।
लेहः समैः क्षौद्रसिताघृताक्तः
कासं निहन्यादचिरादुदीर्णम् ॥
पथ्यां सितामामलकानि लाजान्
समागधीं चापि विचूर्ण्य शुण्ठीम् ।
सर्पिर्मधुभ्यां विलिहीत कासी
ससैन्धवां वोष्णजलेन कृष्णाम् ॥
खादेद्गुडं नागरपिप्पलीभ्यां
द्राक्षां च सर्पिर्मधुनावलिह्यात् ।
द्राक्षां सितां मागधिकां च तुल्यां
सशृङ्गवेरं मधुकं तुगां च ॥
लिह्याद्घृतक्षौद्रयुतां समांशं
सितोपलां वा मरिचांशयुक्ताम् ।
धात्रीकणाविश्वसितोपलाश्च
संचूर्ण्य मण्डेन पिबेच्च दध्नः ।
हरेणुकां मागधिकां च तुल्यां
दध्ना पिबेत्कासगदाभिभूतः
उभे हरिद्रे सुरदारु शुण्ठीम्
गायत्रिसारं च पिबेत्समांशम् ।
बस्तस्य मूत्रेण सुखाम्बुना वा
दन्तीं द्रवन्तीं च सतिल्वकांशाम् ॥
भृष्टानि सर्पिष्यथ बादराणि
खादेत्पलाशानि ससैन्धवानि ।
कोलप्रमाणं प्रपिबेद्धि हिङ्गु
सौवीरकेणाम्लरसेन वापि ॥
क्षौद्रेण लिह्यान्मरिचानि वापि
भार्गीवचाहिङ्गुकृता च वर्त्तिः ।
धूमे प्रशस्ता घृतसंप्रयुक्ता
वेणुत्वगेलालवणैः कृता च ॥
मुस्तेङ्गुदीत्वङ्मधुकाह्वमांसी-
मनःशिलालैश्छगलाम्बुपिष्टैः ।
विधाय वर्त्तीः सपयोनुपानं
धूमं पिबेद्वातबलासकासी ॥
पिबेच्च सीधुं मरिचान्वितं वा
तेनाशु कासः शममभ्युपैति ।
द्राक्षाम्बुमञ्जिष्ठपुराह्वयाभिः
क्षीरं शृतं माक्षिकसंप्रयुक्तम् ॥
निदिग्धिकानागरपिप्पलीभिः
खादेच्च मुद्गान्मधुना सुसिद्धान्
उत्कारिकां सर्पिषि नागराढ्यां
पक्का समूलैस्त्रुटिकोलप

एभिर्त्रिभिषेवेत कृतां च पेयां
तन्वीं सुशीतां मधुना विमिश्राम् ।
यत्क्षीहि सर्पिर्विहितं षडङ्गं
तद्वातकासं जयति प्रसह्य ॥
विदारिगन्धादिकृतं घृतं वा
रसेन वा वासकजेन पक्कम् ।
विरेचनं स्नैहिकमत्र चोक्त-
मास्थापनं चाप्यनुवासनं च ।
धूमं पिबेत्स्नैहिकमप्रमत्तः
पिबेत्सुखोष्णं घृतमेव चात्र ।
हिता यवाग्वश्च रसेषु सिद्धाः
पयांसि लेहाः सघृतास्तथैव ॥
प्रच्छर्दनं कायशिरोविरेका-
स्तथैव धूमाः कवलग्रहाश्च ।
उष्णाश्च लेहाः कटुका निहन्युः
कफं विशेषेण विशोषणं वा ॥
कटुत्रिकं चापि वदन्ति पथ्यं
घृतं कृमिघ्नस्वरसे विपक्कम् ॥
निर्गुण्डिपत्रस्वरसे च पक्कं
सर्पिः कफोत्थं विनिहन्ति कासम् ।
पाठाबिडव्योपविडङ्गसिन्धु-
त्रिकण्टरास्नाहुतभुग्बलाभिः ॥
शृङ्गीवचाम्भोधरदेवदारु-
दुरालभाभार्ग्यभयाशठीभिः ।
सम्यग्विपक्कं द्विगुणेन सर्पि-
र्निदिग्धिकायाः स्वरसेन चैतत् ॥
श्वासाग्निसादस्वरभेदभिन्ना-
न्निहन्त्युदीर्णानपि पञ्च कासान् ।
विदारिगन्धोत्पलसारिवादी-
न्निष्काथ्य वर्गान्मधुरं च कृत्स्नम् ॥
घृतं पचेदिक्षुरसाम्बुदुग्धैः
काकोलिवर्गं च सशर्करं तत् ।
प्रातः पिबेत्पित्तकृते च कासे
रतिप्रसूते क्षयजे च कासे ॥
खर्जूरभार्गीमगधापियाल-
मधूलिकैलामलकैस्समांशैः ।

चूर्णं सिताक्षौद्रघृतप्रगाढं
त्रीन्हन्ति कासानुपयुज्यमानम् ॥
रक्ताहरिद्रांजनवह्निपाठा-
मूर्वोपकुल्या विलिहेत्समांशाः ।
क्षौद्रेण कासे क्षतजे क्षयोत्थे
पिबेद्धृतं चेक्षुरसे विपक्कम् ॥
चूर्णं पिबेच्चामलकस्य वापि
क्षीरेण पक्कं सघृतं हिताशी ।
चूर्णानि गोधूमयवोद्भवानि
काकोलिवर्गश्च कृतः सुसूक्ष्मः ।
कासेषु पेयस्त्रिषु कासवाद्भिः
क्षीरेण सक्षौद्रघृतेन वापि ॥
गुडोदकं वा कथितं पिबेद्धि
क्षौद्रेण शीतं मरिचोपदंशम् ।
प्रस्थत्रयेणामलकीरसस्य
शुद्धस्य दत्वार्द्धतुलां गुडस्य
चूर्णीकृतैर्ग्रन्थिकचव्यजीर-
व्योषेभकृष्णाहपुषाजमोदैः ।
विडङ्गसिन्धुत्रिफलायवानी-
पाठाग्निधान्यैश्च पिचुप्रमाणैः ॥
दत्वा त्रिवृच्चूर्णपलानि चाष्टा-
वष्टौ च तैलस्य पचेद्यथावत् ।
तं भक्षयेदक्षफलप्रमाणं
यथेष्टचेष्टस्त्रिसुगन्धियुक्तम् ॥
अनेन सर्वे ग्रहणीविकाराः
सश्वासकासस्वरभेदशोषाः ।
शाम्यन्ति चायं चिरमन्तरग्ने-
र्हतस्य पुंस्त्वस्य च वृद्धिहेतुः ॥
स्त्रीणां च वन्ध्यामयनाशनः स्या-
त्कल्याणको नाम गुडः प्रतीतः ।
द्विपञ्चमूलेभकणात्मगुप्ता
भार्गीशठीपुष्करमूलविश्वान् ॥
पाठामृताग्रन्थिकशङ्खपुष्पी-
रास्नाग्न्यपामार्गबलायवासान् ।
द्विपालिकाञ्श्यस्य यवाढकं च
हरीतकीनां च शतं गुरूणाम् ॥

द्रोणे जलस्याढकसंयुते च
क्वाथे कृते पूतचतुर्थभागे ।
पचेत्तुलां शुद्धगुडस्य दत्वा
पृथक्च तैलात्कुडवं घृताच ॥
चूर्णं च तावन्मगधोद्भवाया
देयं च तस्मिन्मधु सिद्धशीते ।
रसायनात्कल्कमतो विलिह्याद्
द्वे चाभये नित्यमथाशु हन्यात् ॥
तद्राजयक्ष्मग्रहणीप्रदोष-
शोफाग्निमान्द्यस्वरभेदकासान् ।
पाण्ड्वामयश्वासशिरोविकारान्
हृद्रोगहिक्का विषमज्वरांश्च ॥
मेधाबलोत्साहमतिप्रदं च
चकार चैतद्भगवानगस्त्यः ।
कुलीरशुक्तीचटकैणलावा-
न्निष्काथ्य वर्गैर्मधुरैस्तथान्यैः ॥
पचेद्धृतं तत्तु निषेव्यमाणं
हन्यात्क्षतोत्थं क्षयजं च कासम् ।
शतावरीनागबलाबलाभि-
र्घृतं विधेयं च हिताय कासिनाम् ॥

कासोनी चिकित्सा.

११ काकडाशींगी, वज, कायफळ, रोहिस नामनुं खड, मोथ, धाणा, हरडे, भारंगी, देवदार अने सूंठ एओने हींगथी संयुक्त करी ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी लांबा काळनी खांसी पण टळी जाय छे. (जे वखते खांसी उत्पन्न थाय ते वखते तुरतज चिकित्सा करवी जोइए एम जणाववाने माटे 'लांबा काळनी खांसी पण टळी जाय छे' एम कह्युं छे.)

त्रिफळा, सूंठ, मरी, पीपळ, वावडींग, काकडाशींगी, रास्ना, वज, पद्मकाष्ठ, अने देवदार एओने समभागे लई तेओनुं चूर्ण करी मध, साकर अने घी एओमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी प्रबल खांसी पण तुरत नष्ट थई जाय छे.

हरडे, साकर, आमळां, साळनी धाणी, पीपळ अने सूंठ एओना चूर्णने मध तथा घी एओमां कालवीने ते चटाडवामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे. (केटलाएक एवुं व्याख्यान आपे छे के हरडे, साकर, आमळां अने साळनी धाणी एओना चूर्णने अथवा पीपल अने सूंठ एओना चूर्णने मध तथा घी एओमां कालवीने ते चटाडवामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.)

सैंधव अने पीपळ एओनुं चूर्ण ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

सूंठ अने पीपळ एओनुं चूर्ण गोळथी मिश्रित करीने खवराववामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

द्राक्षने मध तथा घी एओमां कालवीने ते चटाडवामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

द्राक्ष, साकर अने पीपळ एओने समभागे लई मधथी तथा घीथी युक्त करीने ते चटाडवामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

सूंठ, जेठीमध तथा वंशलोचन एओनुं चूर्ण मधथी तथा घीथी युक्त करीने चटाडवामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

मरीना भागथी युक्त करेली साकरने मध तथा घी एओमां कालवीने ते चटाडवामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

आमळां, पीपळ, सूंठ अने साकर एओनुं चूर्ण दहींना मंडनी साथे पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

हरेणु (आनो पर्याय गुजरातीमां मळ्यो नथी) अने पीपळ एओने समभागे लई तेओनुं चूर्ण दहींनी साथे पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

हळदर, दारूहळदर, देवदार, सूंठ अने खेरसार एओने समभागे लई तेओनुं चूर्ण बकराना मूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

नाहानो नेपाळो, मोटो नेपाळो (मूल लेवां) अने पाटीयोलोदर एओनुं चूर्ण जरा ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

बोरडीनां पानडांओने घीमां शेकी सैंधवथी युक्त करीने खवराववामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

अरधा तोलांभार हींग सौवीरकनी साथे अथवा बीजोराना रसनी साथे पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

मरीनुं चूर्ण मधनी साथे चटाडवामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

भारंगी, वज अने हींग एओनी बत्ती बनावी घीथी खरडीने तेनो धूमाडो पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

वांसनी छाल, एळची अने सैंधव एओनी बत्ती बनावी घीथी खरडीने तेनो धूमाडो पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

मोथ, इंगोळीयानी छाल, जेठीमध, जटामांसी, मणशील अने हरताल एओने बकराना मूत्रमां वाटी, बत्ती बनावी, घीथी खरडी तेनो धूमाडो पावामां आवे अने ते उपर दूध पावामां आवे तो तेथी वातजन्य तथा कफजन्य खांसी टळी जाय छे.

मद्यने मरीना चूर्णथी युक्त करी पावामां आवे तो तेथी खांसी तुरत शांत थई जाय छे.

द्राक्ष, वाळो, मजीठ अने गुगळ एओथी पकावेलुं दूध मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

सारी रीते रांधेला मग उपर भोरींगणी, सूंठ अने पीपळ एओनुं चूर्ण भभरावी ते मग खवराववामां आवे तो तेथी खांसी शांत थई जाय छे.

घीमां सूंठ, पीपळीमूळ, झीणी एळची, गजपीपळ अने तुमालपत्र एओना संयोगवाळी लाफसी पकावीने खवराववामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

उपर कहेलां सूंठ वगेरे द्रव्योथी बनावेली अने मधथी मिश्रित करेली शीतल तथा पातळी पेया पावामां आवे तो तेथी खांसी टळी जाय छे.

चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना १० मा विषयमां प्लीहोदर उपर जे षडंग (षट्पल) घृत केहेवामां आव्युं छे तेनी योजना करवामां आवे तो ते घी बलात्कारथी वातजन्य खांसीने जीते छे.

अरडूसीना स्वरसमां विदारिगंधादिगणनो कल्क नाखीने पकावेलुं घी खवराववामां आवे तो तेथी वातजन्य खांसी टळी जाय छे.

स्नेहात्मक विरेचन, स्नेहयुक्त निरूहबस्ति अने अनुवासनबस्ति एओ पण वातजन्य खांसी उपर हितकारी थाय छे. (जो के कासमां बस्ति निषिद्ध छे तो पण वातजन्य कास उपर तेनो प्रयोग करवानी छूट छे.)

स्नेहिक धूमपान, सेहेवाई शके एवुं ऊनुं घी, मांसोना रसाओमां पकावेली यवागूओ, दूधो अने घीवाळा अवलेहो एओ पण वातजन्य खांसी उपर हितकारी छे.

वमनो, विरेचनो, शिरोविरेचनो, विरेचन धूमपानो, कफहर द्रव्योथी गोटवेला कवलो, कफहर द्रव्योथी करेला उष्ण तथा तीखा अवलेहो अने विशेषे करी रूक्ष तथा अल्पभोजन एओ कफजन्य खांसीने नष्ट करे छे.

सूंठ, मरी तथा पीपळ एओ कफजन्य खांसी उपर पथ्य छे.

वावडींगना स्वरसमां अथवा हिममां पकावेलुं घी कफजन्य कासने नष्ट करे छे.

नगडनां पानडांओना स्वरसमां पकावेलुं घी कफजन्य खांसीने नष्ट करे छे.

काळीपाड, बिडलूण, सूंठ, मरी, पीपळ, वावडींग, सैंधव, गोखरू, रास्ना, चित्रक, बळदाणा, काकडाशींगी, वज, मोथ, देवदार, धमासो, भारंगी, हरडे अने कचूरो एओनो कल्क नाखी भोरीं-

गणीना बूमणा स्वरसमां पकावेलुं घी श्वासवाळा, अग्निनी मंदतावाळा अने स्वरभंगवाळा पांचे जातना प्रबल कासोने पण नष्ट करी नाखे छे.

विदारिगंधादि, उत्पलादि, सारिवादि अने काकोल्यादि एटला गणोना क्वाथमां काकोल्यादिगणनो कल्क, शेलडीनो रस, जळ अने दूध नाखी पकावेलुं अने जेमां पाकती वखते साकर नाखवामां आवी होय एवुं घी प्रभातमां पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य खांसी अने मैथुनथी थती क्षयजन्य खांसी पण नष्ट थई जाय छे.

खजूर, भारंगी, पीपळ, चारोळी, जेठीमध, एळची अने आमळां एओने समभागे लई चूर्ण करी साकर, मध तथा घी एओमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य, क्षतजन्य तथा क्षयजन्य खांसी नष्ट थई जाय छे.

मजीठ, हळदर, सुरमो, चित्रक, काळीपाड, मोरवेल अने पीपळ एओनुं समभागे चूर्ण करी मधमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य, क्षतजन्य अने क्षयजन्य खांसी नष्ट थई जाय छे.

शेलडीना रसमां पकावेलुं घी पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य, क्षतजन्य अने क्षयजन्य खांसी नष्ट थई जाय छे.

आमळांना चूर्णने दूधमां पकावी ते दूध घीसहित पावामां आवे अने पथ्यभोजन करावत्रामां आवे तो तेथी पित्तजन्य, क्षतजन्य तथा क्षयजन्य खांसी नष्ट थई जाय छे.

घऊं, जव अने काकोल्यादिगण एओनुं सूक्ष्म चूर्ण करी मधथी तथा घीथी संयुक्त करेला दूधनी साथे पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य, क्षतजन्य तथा क्षयजन्य खांसी टळी जाय छे. (केटलाएक एवुं व्याख्यान करे छे के पित्तजन्य खांसी उपर घऊंनुं चूर्ण, क्षतजन्य खांसी उपर जवनुं चूर्ण अने क्षयजन्य खांसी उपर काकोल्यादिगणनुं चूर्ण मधथी तथा घीथी संयुक्त करेला दूधनी साथे पावुं.)

शीतकषायना विधिप्रमाणे तैयार करेलुं गोळनुं पाणी भरीनुं चूर्ण भभरावी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य, क्षतजन्य तथा क्षयजन्य खांसी टळी जाय छे.

कल्याणक गुड.

एकसो बाणुं तोलांभार आमळांना रसने अने बसो तोलांभार गोळने मिश्रित करवा. पछी पीपळीमूळ, चवक, जीरूं, सूंठ, मरी, पीपळ, गजपीपळ, हपुषा, (आनो पर्याय गुजरातीमां मळ्यो नथी.) बोडीअजमोद, वावडींग, सैंधव, त्रिफळा, अजमा, काळीपाड, चित्रक अने धाणा एओनुं चार चार तोलांभार चूर्ण तथा बत्रीश तोलांभार नसोतरनुं चूर्ण अने बत्रीश तोलांभार तेल एओने ते गोळमां नाखी संपूर्ण रीते ते गोळने पकाववो. पछी तेमांथी बेहेडानां फळ जेटलो गोळ लई तेमां तज, तमालपत्र तथा एळची नाखी ते गोळनुं भक्षण कराववुं. आ गोळथी सघळा ग्रहणीना विकारो, श्वास, कास, स्वरभेद अने शोष एओ शांत थई जाय छे. घणा दिवसथी जठराग्नि हणाई गयो होय तथा पुरुषपणुं हणाई गयुं होय तो पण आ गोळथी जठराग्निनी तथा पुरुषपणानी वृद्धि थाय छे. आ 'कल्याणक' ए नामथी प्रसिद्ध पामेलो गोळ स्त्रीओना वांझणीपणाना दरदने पण नष्ट करे छे. आ गोळना प्रयोगमां विहारादिकनो परेजी पळाववानी जरूर नथी. (आ कल्याणक गुड पाकी रहे त्यारे तेलमां जराक शेकेलुं नसोतरनुं चूर्ण तथा त्रिफळा नाखवां जोइए एम बीजा ग्रंथोमां कह्युं छे अने डह्लन केहे छे के प्रथम जे बत्रीश तोलांभार नसोतरनुं चूर्ण नाखवुं ते तैलमां जराक शेकीनेज नाखवुं.)

अगस्त्यावलेह.

बारसो एंशी तोलांभार जळमां दशमूली,

गजपीपळ, कौचां, भारंगी, कचूरो, पुष्करमूल, सूंठ, काळीपाड, गळो, पीपळीमूळ, शंखावली, रास्ना, चित्रक, अघेडो, बळदाणा तथा जवासो ए प्रत्येक द्रव्योनुं आठ आठ तोलांभार चूर्ण, बसो छपन तोलांभार जवनुं चूर्ण अने सो आखी मोटी हरडे नाखी क्काथ ऊकाळवो. ऊकाळतां जळनो चोथो भाग अवशेष रहे त्यारे बफाई गएली सघळी हरडेने काहाडी लई क्काथने वस्त्रथी गाळी लई ते क्काथमां पेली बफाएली सो हरडे, चारसो तोलांभार शुद्ध गोळ, सोळ तोलांभार तैल अने सोळ तोलांभार घी नाखी पाक करवो. पाकी रहे अने शीतल थई जाय त्यारे तेमां सोळ तोलांभार पीपळनुं चूर्ण अने बत्रीश तोलांभार मध नाखवो एटले अगस्त्यावलेह सिद्ध थाय छे. आ रसायनरूप अगस्त्यावलेहनो नित्य बे तोलांभार कल्क चटाडवामां आवे अने तेनी साथेनी बे आखी हरडे खवराववामां आवे तो तेथी राजयक्ष्मा, (शोष) ग्रहणीदोष, सोजा, अग्निनुं मंदपणुं, स्वरभेद, खांसी, पांडुरोग, श्वास, माथानां दरदो, हृद्रोग, हेडकी, अने विषमज्वरो नष्ट थई जाय छे. धारणाशक्ति, बळ, उत्साह अने विचारशक्ति एओने आपनारूं आ रसायन भगवान् अगस्त्यमुनिए शोधेलुं छे तेथी अगस्त्यावलेह केहेवाय छे.

कुलीरादिघृत.

कुडचल, द्वीपना जीवडा, चकलांनुं मांस, काळीयारनुं मांस अने लावांपक्षीनुं मांस एओना क्काथथी अने काकोल्यादिगणना तथा बीजा पण मधुर वर्गना कल्कथी घी पकाववुं. आ घीनुं सेवन करावबाथी क्षतजन्य खांसी अने क्षयजन्य खांसी नष्ट थई जाय छे.

शतावर्यादिघृत

शतावरी, गंगेटी, अने बळदाणा एओना क्काथमां घी पकावी तेनो उपयोग करावबामां आवे तो तेथी पण खांसीवाळाओनुं हित थाय छे.

अध्याय ५३ मो.

१ अथातः स्वरभेदप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्वरभेदप्रतिषेध[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे केहेलुं छे.

२ अत्युच्चभाषणविषाध्ययनाभिघात-
शीतादिभिः प्रकुपिताः पवनादयस्तु ।
ते शब्दवाहिधमनीषु गताः प्रतिष्ठां
हन्युः स्वरं भवति चापि हि षड्विधः सः॥

स्वरभेदनुं निदान तथा संप्राप्तिपूर्वक सामान्य लक्षण अने संख्या.

२ अत्यंत ऊंचे स्वरे बोलवाथी, झेर खावाथी, ऊंचे स्वरे वेद आदि भणवाथी, कंठ आदि प्रदेशमां लाकडी वगेरेनो प्रहार वागवाथी अने बीजा पण शीत आदि पोतपोताना दुष्ट हेतुओथी प्रकोप पामेला वायु आदि दोषो स्वरने चलावनारां स्रोतोमां स्थिति पामीने स्वरने हणी नाखे छे ए रोग स्वरभेद केहेवाय छे. वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सान्निपातिक, क्षयजन्य अने मेदोजन्य ए रीते स्वरभेद छ प्रकारनो थाय छे.

३ वातेन कृष्णनयनाननमूत्रवर्चा
भिन्नं शनैर्वदति गर्दभवत्खरं च ।

वातजन्य स्वरभेदनुं लक्षण.

३ जेने वातजन्य स्वरभेद थयो होय ते माणस गधेडाना जेवा स्वरथी अथवा गद्गदाक्षरोथी धीरे धीरे त्रूटतां त्रूटतां वाक्यो बोले छे अने तेनां

[1] स्वर बगडी जवानां–बेसी जवानां निदानो, संप्राप्ति, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्सा एओनां निरूपण विषयनो.

नेत्र, मोढ़ोडुं, मूत्र तथा विष्टा एओ काळां थई जाय छे.

४ पित्तेन पीतवदनाक्षिपुरीषमूत्रो
ब्रूयाद्गलेन च विदाहसमन्वितेन ॥

पित्तजन्य स्वरभेदनुं लक्षण.

४ जेने पित्तजन्य स्वरभेद थयो होय ते माणस बळतरावाळा गळाथी बोले छे अने तेनां नेत्र, मोढ़ुं, मूत्र तथा विष्टा एओ पीळां थई जाय छे.

५ कृच्छ्रात्कफेन सततं कफरुद्धकण्ठो
मन्दं शनैर्वदति वापि दिवा विशेषात् ।

कफजन्य स्वरभेदनुं लक्षण.

५ जेने कफजन्य स्वरभेद थयो होय ते माणस निरंतर कफथी घेराएला कंठवाळो थई जाय छे, धीरे धीरे थोडुंक बोली शके छे अने सूर्यनी किरणोथी कफ कांइक ओछो थवाने लीधे दिवसे कांइक वधारे बोली शके छे.

६ सर्वात्मके भवति सर्वविकारसंप-
दव्यक्तता च वचसस्तमसाध्यमाहुः ॥

सान्निपातिक स्वरभेदनुं लक्षण अने असाध्यपणुं.

६ जेने सान्निपातिक स्वरभेद थयो होय ते माणस उपर कहेला त्रणे दोषोना विकारोथी भरपूर थाय छे अने तेनुं बोलवुं अस्पष्ट थाय छे. आ स्वरभेद असाध्य केहेवाय छे.

७ धूप्येत वाक्क्षयकृते क्षयमाप्नुयाच्च
वागेष वापि हतवाक्परिवर्जनीयः ।

क्षयजन्य स्वरभेदनुं लक्षण अने असाध्यपणुं.

७ जेने क्षयजन्य स्वरभेद थयो होय ते माणस जाणे मुखमांथी धूमाडो काहाडतो होय एवी रीते बोले छे अथवा तेनी वाणी क्षयज पामी जाय छे. आवी रीते हणाएली वाणीवाळा माणसनी वैद्ये चिकित्साज करवी नहीं.

८ अन्तर्गतस्वरमलक्ष्यपदं चिरेण
मेदोऽन्वयाद्वदति दिग्धगलोष्ठतालुः

मेदोजन्य स्वरभेदनुं लक्षण.

८ जेने मेदथी स्वरभेद थयो होय ते माणस घणीवारे गळाना मध्यमांज बीजाओथी नहीं समजी शकाय एवां पदोवाळुं बोले छे अने तेनां कंठ, होठ तथा ताळवुं एओ मेदथी तथा कफथी खरडाएलां रेहे छे.

९ क्षीणस्य वृद्धस्य कृशस्य चापि
चिरोत्थितो यश्च सहोपजातः ।
मेदस्विनः सर्वसमुद्भवश्च
स्वरामयो यो न स सिद्धिमेति ॥

स्वरभेदनुं असाध्यपणुं.

९ क्षयरोगवाळाने थएलो, वृद्धने थएलो, कृशने थएलो, लांबा काळथी थएलो, जन्मथी प्राप्त थएलो, मेदवाळाने थएलो अने त्रणे दोषोथी थएलो एटला प्रकारना स्वरभेदो असाध्य छे.

१० स्निग्धान्स्वरातुरनरानपकृष्टदोषान्
संयोजयेद्वमनरेचनबस्तिभिश्च ।
नस्यावपीडमुखधावनधूमलेहैः
सम्पादयेच्च विविधैः कवलग्रहैश्च ॥
यः श्वासकासविधिरादित एव चोक्त-
स्तं चाप्यशेषमवतारयितुं यतेत ।
वैशेषिकं च विधिमूर्ध्वमतो वदामि
तं वै स्वरातुरहितं निखिलं निबोध ॥

स्वरभेदनी सामान्य चिकित्सा.

१० स्वरभेदवाळा माणसोने वैद्ये स्नेहनसंस्कार आपी वमनोथी, विरेचनोथी तथा बस्तिओथी तेओना दोषोनुं अपकर्षण करीने पछी ते ते दोषनां प्रत्यनीकभूत नस्योथी, अवपीडनस्योथी, गंडूषादिकथी, धूमपानोथी, लेहोथी अने विविध कवलग्रहोथी संपादित करवा.

गया बे अध्यायोमां श्वासो उपर तथा कासो उपर जे चिकित्साओ कही छे ते सघळी चिकि-

त्साओनी ते ते दोषना अनुसारप्रमाणे स्वरभेद-उपर पण योजनाओ करवानो प्रयत्न करवो. हवे स्वरभेदवाळा माणसोना हितने माटे विशेष चिकित्सा कहुं छुं तेनुं पण संपूर्ण रीते श्रवण करो.

११ स्वरोपघातेऽनिलजे भुक्तोपरि घृतं पिबेत्।
कासमर्दकवार्त्ताकमार्कवस्वरसैर्युतम् ॥
पीतं घृतं हन्त्यनिलं सिद्धमार्त्तगले रसे ।
यवक्षाराजमोदाभ्यां चित्रकामलकेषु वा ॥
देवदार्वग्निकाभ्यां वा सिद्धमाजं समाक्षिकम् ।
सुखोदकानुपानो वा ससर्पिष्को गुडौदनः ॥

वातजन्य स्वरभेदनी विशिष्ट चिकित्सा.

११ जो स्वरभेद वातजन्य होय तो रोगी जमी रहे ते पछी कांसोदरी, रीगणां अने भांगरो एओना स्वरसोथी युक्त करेलुं घी पावुं.

कांटाअशेळीयाना स्वरसमां पकावेलुं घी पावामां आवे तो तेथी वातजन्य स्वरभेद टळी जायछे.

जवखार अने अजमोद एओना क्वाथमां पकावेलुं बकरीनुं घी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

चित्रक अने आमळां एओना क्वाथमां पकावेलुं बकरीनुं घी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

देवदार अने चित्रक एओना क्वाथमां पकावेलुं बकरीनुं घी मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वातजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

गोळ नाखीने पकावेलो भात घीथी संयुक्त करीने खवराववो अने ते उपर सेहेवाय तेवुं ऊनुं पाणी पावुं ए वातजन्य स्वरभेद उपर पथ्य छे.

१२ क्षीरानुपानं पित्ते तु पिबेत्सर्पिरतन्द्रितः।
अश्नीयाच्च ससर्पिष्कं यष्टीमधुकपायसम् ॥
लिह्यान्मधुरकाणां वा चूर्णं मधुघृताप्लुतम् ।
शतावरीचूर्णयोगं बलाचूर्णमथापि वा ॥

पित्तजन्य स्वरभेदनी विशिष्ट चिकित्सा.

१२ आलस्य छोडी दईने घी पावामां आवे, ते उपर दूध पावामां आवे अने जेठीमधना क्वाथमां पकावेला दूधथी सिद्ध करेलो अथवा जेठीमधथी युक्त करेलो दूधपाक घीसहित जमाडवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

काकोली आदि मधुर द्रव्योनुं चूर्ण मधमां तथा घीमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

शतावरीनुं चूर्ण मधमां तथा घीमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

बळदाणानुं चूर्ण मधमां तथा घीमां कालवीने चटाडवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

१३ पिबेत्कटूनि मूत्रेण कफजे स्वरसङ्क्षये ।
लिह्याद्वा मधुतैलाभ्यां भुक्त्वा खादेत्कटूनि च ॥

कफजन्य स्वरभेदनी विशिष्ट चिकित्सा.

१३ सूंठ, मरी अने पीपळ एओनुं चूर्ण गोमूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी कफजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

सूंठ, मरी अने पीपळ एओनुं चूर्ण मधमां तथा तैलमां कालवीने चटाडवामां आवे अने जम्या पछी तेज चूर्ण खवराववामां आवे तो तेथी कफजन्य स्वरभेद टळी जाय छे.

१४ स्वरोपघाते मेदोजे कफवद्विधिरिष्यते ।

मेदोजन्य स्वरभेदनी विशिष्ट चिकित्सा.

१४ जो मेदोजन्य स्वरभेद थयो होय तो कफजन्य स्वरभेद उपर जे चिकित्सा केहेवामां आवी छे तेज करवी.

१५ सर्वजे चापि क्षयजे प्रत्याख्यायाचरेत् क्रियाम् ॥

सान्निपातिक तथा क्षयजन्य स्वरभेदोनी विशिष्ट चिकित्सा.

१५ सान्निपातिक स्वरभेद थयो होय तो प्रथम नापाडीने पछी उपर कहेली त्रणे दोषोनी

विशिष्ट चिकित्साओ करवी अने क्षयजन्य स्वरभेद थयो होय तो आ उत्तरतंत्रना एकतालीशमा अध्यायमां कह्याप्रमाणे चिकित्सा करवी. (केटलाएक व्याख्यान आपे छे के ए बन्ने उपर आ अध्यायना १० मा विषयमां कहेली सामान्य चिकित्साओ करवी.)

१६ शर्करामधुमिश्राणि शृतानि मधुरैः सह ।
पिबेत्पयांसि यस्योच्चैर्वदतोऽभिहतः स्वरः ॥

अत्यंत ऊंचा भाषणथी उत्पन्न थएला स्वरभेदनी विशिष्ट चिकित्सा.

१६ अत्यंत ऊंचा स्वरथी भाषण करवाने लीधे जेनो स्वर अभिहत थयो होय ते माणसने काकोलीआदि मधुर द्रव्योथी पकावेलां अने साकरथी तथा मधथी मिश्रित करेलां दूधो पावां.

अध्याय ५४ मो.

१ अथातः कृमिरोगप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'कृमिरोगप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अजीर्णाध्यशनासात्म्यैर्विरुद्धमलिनाशनैः ॥
अव्यायामदिवास्वप्नगुर्वतिस्निग्धशीतलैः ।
माषपिष्टान्नविदलबिसशालूकसेरुकैः ॥
पर्णशाकसुराशुक्तदधिक्षीरगुडेक्षुभिः ।
पललानूपपिशितपिण्याकपृथुकादिभिः ॥
स्वाद्वम्लद्रवपानैश्च श्लेष्मा पित्तं च कुप्यति ।
कृमीन्बहुविधाकारान्करोति विविधाश्रयान् ॥

कृमिरोगनां दूरनां तथा पासेनां निदानो.[1]

२ अजीर्णथी, अजीर्णमां भोजन करवाथी, असात्म्य भोजन करवाथी, विरुद्ध भोजन करवाथी, मलिन भोजन करवाथी, कसरत नहीं करवाथी, दिवसनी निद्रा करवाथी, भारे पदार्थोनां सेवनथी, अत्यंत स्निग्ध पदार्थोना सेवनथी, शीतल पदार्थोना सेवनथी, अडदना अतिसेवनथी, पीठांनां अन्नोना सेवनथी, मग वगेरे विदळोना सेवनथी, कमळोनां मूळोना सेवनथी, कमळकंदोना सेवनथी, कसेरुकंदोना सेवनथी, पत्रमय शाकोना सेवनथी, सुराओना सेवनथी, शुक्तोना सेवनथी, दहींना सेवनथी, दूधना अतिसेवनथी, गोळना सेवनथी, शेलडीना सेवनथी, तलना कल्कना सेवनथी, आनूप प्राणीओनां मांसोना सेवनथी, खोळना सेवनथी, पवा वगेरेना सेवनथी अने मधुर तथा खाटा द्रवो पीवाथी कफनो अने पित्तनो प्रकोप थायछे. ए कफ अने पित्त अनेक प्रकारना आकारोवाळा अने जूदा जूदा आश्रयोवाळा कृमिओने (कीडाओने) उत्पन्न करे छे.

३ आमपक्वाशयस्तेषां प्रसवः प्रायशः स्मृतः ।
विंशतेः कृमिजातीनां त्रिविधः सम्भवः स्मृतः।
पुरीषकफरक्तानि तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥

कृमिओनां उत्पत्तिस्थलो अने जेओमां उत्पत्ति थाय छे ते.

३ घणुं करीने आमाशय अने पक्वाशय एओ कृमिओनां उत्पत्तिस्थलो छे. (बीजां स्थलोमां पण उत्पन्न थाय छे.) कृमिओ के जेओ मुख्यत्वे करी वीश जातना छे तेओनी उत्पत्ति विष्टामां, कफमां के रुधिरमां थाय छे. हवे ए जातोनां जूदां जूदां आकारो तथा कृत्यो कहुं छुं.

४ अयवा वियवाः किप्याश्चिप्या गण्डूपदास्तथा।
चूरवो द्विमुखाश्चैव सप्तैवैते पुरीषजाः ॥
श्वेताः सूक्ष्मास्तुदन्त्येते गुदं प्रतिसरन्ति च ।
तेषामेवापरे पुच्छैः पृथवश्च भवन्ति हि ॥
शूलाग्निमान्द्यपाण्डुत्वविष्टम्भबलसङ्क्षयाः ।
प्रसेकारुचिहृद्रोगविड्भेदास्तु पुरीषजैः ॥

---

[1] कृमिरोगोनां निदानो, स्थलो, संख्यादिक तथा चिकित्सादिक एओना निरूपण विषयनो.

रक्ता गण्डूपदा दीर्घा गुदकण्डूनिपातिनः ।
शूलाटोपशकृद्भेदपक्तिनाशकराश्च ते ॥

विष्टामां उत्पन्न थता कृमिओनी सात जातो अने ते जातोनां आकारो तथा कृत्यो.

४ अयव, वियव, किप्य, चिप्य, गंडूपद, चूरु अने द्विमुख ए सात जातोना कृमिओ विष्टामां उत्पन्न थाय छे. एओ सफेद होय छे, सूक्ष्म होय छे, व्यथा करे छे अने घणुं करीने गुदा तरफ गति करे छे. एओमां केटलाएक कृमिओ जाडां पुच्छोवाळा पण होय छे. विष्टामां थता ए कृमिओथी शूळ, अग्निनुं मंदपणुं, पांडुपणुं, मलबंध, बलक्षय, मोल, लालनुं झरवुं, अरुचि, हृद्रोग अने झाडानुं पातळापणुं थाय छे. ए कृमिओमां गंडूपद नामना कृमिओ राता होय छे, अणशीया जेवा लांबा होय छे, गुदामां खरज उत्पन्न करे छे अने एओथी शूळ, गडगडाट, झाडानुं पातळापणुं अने अन्न पचवानो अभाव पण थाय छे.

५ दर्भपुष्पा महापुष्पाः प्रलूनाश्चिपिटास्तथा ।
पिपीलिका दारुणाश्च कफकोथसमुद्भवाः ॥
रोमशा रोममूर्द्धानः सपुच्छाः श्यावमण्डलाः ।
रूढधान्याङ्कुराकाराः शुक्लास्ते तनवस्तथा ॥
मज्जादा नेत्रलेढारस्तालुश्रोत्रभुजस्तथा ।
शिरोहृद्रोगवमथुप्रतिश्यायकराश्च ते ॥

कफमां उत्पन्न थता कृमिओनी छ जातो अने ते जातोनां आकारो तथा कृत्यो.

५ दर्भपुष्प, महापुष्प, प्रलून, चिपिट, पिपीलिक अने दारुण ए छ जातोना कृमिओ कफना सडामां थाय छे. एओ रुछांडवाळा होय छे, माथांओमां बहु रुवाडांवाळा होय छे, पूंछडांवाळा होय छे, श्याम मंडलोवाळा होय छे, ऊगेलां धान्योना अंकुरो जेवा आकारवाळा होय छे, सफेद होय छे अने पातळा होय छे. एओ मज्जानुं भक्षण करे छे, नेत्रोने ताळवाने तथा कानोने खाधा करे छे अने एओथी माथाना रोगो, हृद्रोगो, उलटी तथा प्रतिश्याय थाय छे.

६ केशरोमनखादाश्च दन्तादाः किक्किशास्तथा ।
कुष्ठजाश्च परीसर्पा ज्ञेयाः शोणितसम्भवाः ॥
ते सरक्ताश्च कृष्णाश्च स्निग्धाश्च पृथवस्तथा ।
रक्ताधिष्ठानजान्प्रायो विकाराञ्जनयन्ति ते ॥

लोहीमां उत्पन्न थता कृमिओनी सात जातो अने ते जातोनां आकारो तथा कृत्यो.

६ केशाद, रोमाद, नखाद, दंताद, किक्किश, कुष्ठज अने परीसर्प ए छ जातोना कृमिओ रुधिरमां थाय छे. एओ वाळोने, रुवाडांओने, नखोने तथा दांतोने खाधा करे छे, रताशवाळा होय छे, काळा होय छे, स्निग्ध होय छे, पोहोळा होय छे अने घणुं करीने सूत्रस्थानना २४ मा अध्यायमां कहेला विसर्प तथा फोडलीओ वगेरे रक्तजन्य विकारोने उत्पन्न करे छे.

७ माषपिष्टान्नलवणगुडशाकैः पुरीषजाः ।
मांसमाषगुडक्षीरदधिशुक्तैः कफोद्भवाः ॥
विरुद्धाजीर्णशाकाद्यैः शोणितोत्था भवन्ति हि ।

कृमिओनां निदानोनो विभाग.

७ अडद, पीठांनां अन्नो, लवणो, गोल अने शाको एओथी विष्टाना कृमिओ उत्पन्न थाय छे. मांस, अडद, गोळ, दूध, दहीं अने शुक्त एओथी कफना कृमिओ उत्पन्न थाय छे. विरुद्ध भोजनो, अजीर्ण अने शाकादिक एओथी रुधिरना कृमिओ उत्पन्न थाय छे.

८ ज्वरो विवर्णता शूलं हृद्रोगः सदनं भ्रमः ॥
भक्तद्वेषोऽतिसारश्च सञ्जातकृमिलक्षणम् ।

जेना शरीरमां कृमिओ उत्पन्न थया होय तेनुं लक्षण.

८ ज्वर, वर्णनुं बगडी जवुं, शूळ, हृद्रोग,

ग्लानि, भ्रम, अन्न उपर द्वेष अने अतिसार ए लक्षणो उपरथी माणसना शरीरमां कृमिओ उत्पन्न थएला समजवा.

९ दृश्यास्त्रयोदशाद्यास्तु कृमीणां परिकीर्तिताः।
केशादाद्यास्त्वदृश्यास्ते द्वावाद्यौ परिवर्जयेत् ।

कृमिओनी वीश जातोमां दृश्य, अदृश्य अने असाध्य.

९ कृमिओनी वीश जातोमां पेहेलांनी तेर जातो देखवामां आवे छे अने ते पछीनी केशाद आदि सात जातो देखवामां आवती नथी. ए वीश जातोमां केशाद अने रोमाद ए बे जातोनी चिकित्सा करवी ते प्रथम नापाडीने करवी. केम के ए बे जातो असाध्य छे.

१० एषामन्यतमं ज्ञात्वा जिघांसुः स्निग्धमातुरम्
सुरसादिविपक्केन सर्पिषा वान्तमादितः ।
विरेचयेत्तीक्ष्णतरैर्योगैरास्थापयेच्च तम् ॥
यवकोलकुलत्थानां सुरसादेर्गणस्य च ।
विडङ्गस्नेहयुक्तेन क्वाथेन लवणेन च ॥
प्रत्यागते निरूहे तु नरं स्नातं सुखाम्बुना ।
युञ्ज्यात् कृमिघ्नैरशनैस्ततः शीघ्रं भिषग्वरः ॥
स्नेहेनोक्तेन चैनं तु योजयेत्स्नेहबस्तिना ।
ततः शिरीषकिणिहीरसं क्षौद्रयुतं पिबेत् ।
केबूकस्वरसं वापि पूर्ववत्तीक्ष्णभोजनः ॥
पलाशबीजस्वरसं कल्कं वा तण्डुलाम्बुना ।
पारिभद्रकपत्राणां क्षौद्रेण स्वरसं पिबेत् ॥
पत्तूरस्वरसं वापि पिबेद्वा सुरसादिजम् ।
लिह्यादश्वशकृच्चूर्णं विडङ्गं वा समाक्षिकम् ॥
पत्रैर्मूषिकपर्ण्या वा सुपिष्टैः पिष्टमिश्रितैः ।
खादेत्पूपालिकान् पक्वान्धान्याम्लं च पिबेदनु॥
सुरसादिगणे तैलं पक्कं वा पानमिष्यते ।
विडङ्गचूर्णपिष्टाभ्यां तस्मिन् भक्ष्यं तु कारयेत्॥
तत्कषायप्रपीतानां तिलानां स्नेहमेव वा ॥
श्वाविधः शकृतश्चूर्णं सक्तत्वः सुभावितम् ।
विडङ्गानां कषायेण त्रैफलेन तथैव च ॥
क्षौद्रेण लीढ्वानुपिबेद्रसमामलकोद्भवम् ।
अक्षाभयारसं चापि विधिरेषोऽयसामपि ॥
पूतीकस्वरसं वापि पिबेद्वा मधुना सह ।
पिबेद्वा पिप्पलीमूलमजामूत्रेण संयुतम् ॥
सप्तरात्रं पिबेद्धृष्टं त्रपु वा दधिमस्तुना ।
पुरीषजांत्कफोत्थांश्च हन्यादेवं कृमीन्भिषक् ॥

विष्टाना तथा कफना कृमिओनी चिकित्सा.

१० कोई जातना पण कृमिओ उत्पन्न थया होय तो तेओने नष्ट करवा माटे रोगीने प्रथम स्निग्ध करी सुरसादिगणना क्वाथादिकथी पकावेला घीवते वमन करावीने (जो के कृमिवाळा माणसने वमननो निषेध छे तो पण अहीं वमन करावववानुं कह्युं छे तेथी जणाय छे के ए रोगनी पेहेली अवस्थामां वमननो निषेध नथी.) पछी सूत्रस्थानना ४४ मा अध्यायमां कहेला अतितीक्ष्ण विरेचनयोगोथी विरेचित करवो. विरेचित कर्या पछी जव, गजपीपळ, कळथी अने सुरसादिगण एओना क्वाथने वावडींगथी पकावेला स्नेहथी अने सैंधवथी युक्त करी ते क्वाथथी निरूहबस्ति देवी. निरूहबस्ति पाछी नीकळ्या पछी रोगीने सेहेवाय तेवा गरम पाणीथी नवरावी कृमिओने हणनारां द्रव्योथी पकावेलां अन्नोनुं भोजन करावvुं. भोजन कराव्या पछी तुरतज वावडींगना क्वाथादिकथी पकावेला स्नेहथी अनुवासनबस्ति देवी. आ क्रियाओ कर्या पछी नीचे लखेला योगोनी योजनाओ करवी.

सरसडीयो अने वापुंगां एओनो स्वरस मधथी संयुक्त करी पावामां आवे अने पछी उपर कह्याप्रमाणे तीक्ष्ण द्रव्योथी संस्कृत करेलुं अने मधथी युक्त करेलुं भोजन देवामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

केबूकनो (कोबीनो ?) स्वरस मधथी संयुक्त करी पावामां आवे अने पछी उपर कह्याप्रमाणे तीक्ष्ण

द्रव्योथी संस्कृत करेलुं अने मधथी युक्त करेलुं भोजन देवामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

खाखरानां बीजोनो स्वरस अथवा कल्क चोखाना धोणनी साथे पावामां आवे अने उपर प्रमाणे तीक्ष्ण भोजन करावबामां आवे तो कृमिओ नष्ट थाय छे.

लींबडानां अथवा बकाननां पानडांओनो स्वरस मधथी युक्त करीने पावामां आवे अने उपर प्रमाणे तीक्ष्ण भोजन करावबामां आवे तो कृमिओ नष्ट थाय छे.

नगडनो स्वरस मधथी युक्त करी पावामां आवे अने उपर प्रमाणे तीक्ष्ण भोजन करावबामां आवे तो कृमिओ नष्ट थाय छे.

सुरसादिगणनो क्काथ मधथी संयुक्त करी पावामां आवे अने उपर प्रमाणे तीक्ष्ण भोजन करावबामां आवे तो कृमिओ नष्ट थाय छे.

घोडानी लादनुं चूर्ण मधथी युक्त करी चटाडवामां आवे अने उपर प्रमाणे तीक्ष्ण भोजन करावबामां आवे तो कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

वावडींगनुं चूर्ण मधथी संयुक्त करी चटाडवामां आवे अने उपर प्रमाणे तीक्ष्ण भोजन करावबामां आवे तो कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

ऊंदरकन्नीनां अथवा नेपाळानां पानडांओने सारी पेठे वाटी जवना लोटमां मिश्रित करी ते लोटना पूडा पकावीने खवरावबामां आवे अने ते उपर कांजी पावामां आवे तो कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

सुरसादिगणना कल्कथी पकावेलुं तैल पावामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

वावडींगनुं चूर्ण अने जवनो लोट एओने मिश्रित करी तेनुं सुरसादिगणना तैलमां भक्ष्य पकावीने खवरावबामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

जेओने वावडींगना क्काथनी भावना आपी होय एवा तलोनुं तैल पावामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

शेढाईनी विष्टाना चूर्णने सातवार वावडींगना क्काथनी अने सातवार त्रिफळाना क्काथनी सारी पेठे भावनाओ आपी ते चूर्ण मधमां कालवीने चटाडवामां आवे अने ते उपर आमळांनो, बेहेडांनो तथा हरडेनो क्काथ मधनी साथे पावामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

कलई, सीसुं, त्रांबुं, रूपुं तथा गजवेल इत्यादिक धातुओनां चूर्णने उपर प्रमाणेज भावनाओ आपी ते चूर्ण मधमां कालवीने चटाडवामां आवे अने ते उपर आमळांनो, बेहेडांनो तथा हरडेनो क्काथ मधनी साथे पावामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

गुच्छकरंजनो स्वरस मधनी साथे पावामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

पीपळीमूळनुं चूर्ण बकरीना मूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

कलईने दहींना पाणीमां घसी दहींना पाणीभी साथे सात दिवससूधी पावामां आवे तो तेथी कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

वैद्ये उपर कह्याप्रमाणे योगोनी योजनाओ करीने विष्टाना तथा कफना कृमिओने नष्ट करवा.

११ शिरोहृद्घ्राणकर्णाक्षिसंसृतांश्च पृथग्विधान् ।
विशेषेणाञ्जनैर्नस्यैरवपीडैश्च साधयेत् ॥
शकृद्रसं तुरङ्गस्य सुशुष्कं भावयेदति ।
निष्क्काथेन विडङ्गानां चूर्णं प्रधमनं तु तत् ॥
अयश्चूर्णान्यनेनैव विधिना योजयेद्भिषक् ।
सकांस्यनीलं तैलं च नस्यं स्यात्सुरसादिके ॥

मस्तकादिकमां रहेला कफसंबंधी कृमिओनी खास चिकित्सा.

११ मस्तक, हृदय, नाक, कान तथा नेत्रो एओमां रहेला जूदा जूदा प्रकारना कृमिओने विशेषे करी अंजनोथी तथा अवपीडनस्योथी नष्ट करवा. (अहीं एम केहेवामां आवे छे के नेत्रोमां रहेला कृमिओने अंजनोथी, नाकमां रहेला कृ-

गिओने अवपीडनस्योथी, हृदयमां रहेला कृमिओने आ उत्तरतंत्रना ४३ मा अध्यायमां कहेली कृमिजन्य हृद्रोगनी चिकित्साथी, माथामां रहेला कृमिओने आ उत्तरतंत्रना २६ मा अध्यायमां कहेली कृमिजन्य शिरोरोगनी चिकित्साथी अने कानमां रहेला कृमिओने आ उत्तरतंत्रना २१ मा अध्यायमां कहेली कृमिकर्णनी चिकित्साथी नष्ट करवा.)

घोडानी लादना स्वरसने सारी पेठे सूकावी वावडींगना क्वाथनी अत्यंत भावना आपी ते चूर्णनुं प्रधमननस्य देवामां आवे तो तेथी मस्तक आदिमां रहेला कृमिओ नष्ट थई जाय छे.

कलई वगेरे धातुओना चूर्णने वावडींगना क्वाथनी अत्यंत भावना आपी ते चूर्णनुं प्रधमननस्य देवामां आवे तो तेथी मस्तकआदिमां रहेला कृमिओ नष्ट थाय छे.

सुरसादिगणना क्वाथमां पकावेला तैलने कांसाना काटथी मिश्रित करी ते तैलनुं नस्य देवामां आवे तो तेथी मस्तक आदिमां रहेला कृमिओ नष्ट थाय छे.

१२ इन्द्रलुप्तविधिश्चापि विधेयो रोमभोजिषु ।
दन्तादानां समुद्दिष्टं विधानं मुखरोगिकम् ॥
रक्तजानां समुद्दिष्टं कुर्य्यात्कुष्ठचिकित्सिते ।

रुधिरना कृमिओनी चिकित्सा.

१२ जो रोमाद के केशाद (रुवाडांओने खानारा के केशोने खानारा) कृमिओ थया होय तो चिकित्सास्थानना २० मा अध्यायमां कहेली इंद्रलुप्तनी चिकित्साथी तेओने नष्ट करवा.

जो दंताद (दांतोने खानारा) कृमिओ थया होय तो चिकित्सास्थानना २२ मा अध्यायमां कहेली कृमिदंतनी चिकित्साथी तेओने नष्ट करवा.

जो नखाद (नखोने खानारा) आदि कृमिओ थया होय तो चिकित्सास्थानना ९ मा अध्यायना २० मा विषयमां कहेली चिकित्साथी तेओने नष्ट करवा.

१३ सुरसादिं तु सर्वेषु सर्वथैवोपयोजयेत् ॥
प्रव्यक्ततिक्तकटुकं भोजनं च हितं भवेत् ।
कुलत्थक्वाथसंसृष्टं क्षीरपानं च पूजितम् ॥

सर्व प्रकारना कृमिओ उपर सामान्य विधान.

१३ सघळा प्रकारना कृमिओ उपर स्नान तथा अनुपानादिक सर्व क्रियाओमां सुरसादिगणनो उपयोग अवश्य करवो. जेमां कडवो अने तीखो रस सारी पेठे दाखल कर्यो होय एवुं भोजन कराववुं अने कळथीना क्वाथनी साथे दूध पावुं ए सघळा प्रकारना कृमिओ उपर हितकारी छे.

१४ क्षीराणि मांसानि घृतानि चैव
दधीनि शाकानि च पर्णवन्ति ।
समासतोऽम्लान्मधुरान्हिमांश्च
कृमीञ्जिघांसुः परिवर्जयेत्तु

कृमिरोगवाळाए पाळवानी परेजी.

१४ कृमिओने नष्ट करवानी इच्छावाळा रोगीए दूधोनो, मांसोनो, घीनो, दहींनो, पानडांवाळां शाकोनो, खाटा पदार्थोनो, मधुर पदार्थोनो अने टाढा पदार्थोनो त्याग करवो ए कृमिरोग उपर संक्षिप्त परेजी छे.

अध्याय ५९ मो.

१ अथात उदावर्त्तप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'उदावर्त्तप्रतिषेध[१]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

---

१ उदावर्त्तोनां निदानो, संख्या, लक्षणो अने चिकित्साओ एओनां निरूपण विषयनो.

२ अधश्चोर्ध्वं च भावानां प्रवृत्तानां स्वभावतः।
न वेगान्धारयेत्प्राज्ञो वातादीनां जिजीविषुः ॥

सघळा उदावर्तोना मूळनो निषेध.

२ नीचेना मार्गोथी प्रवर्त्तनारा अधोवायुआदि स्वाभाविक भावोना अने ऊंचेना मार्गोथी प्रवर्त्तनारा ओडकारआदि स्वाभाविक भावोना वेगोने जीववानी इच्छावाळा समजू माणसे अटकावी राखवा नहीं.

३ वातविण्मूत्रजृम्भाश्रुक्षवोद्गारवमीन्द्रियैः ।
व्याहन्यमानैरुदितैरुदावर्तो निरुच्यते ॥
क्षुत्तृष्णाश्वासनिद्राणामुदावर्त्तो विधारणात् ।
तस्याभिधास्ये व्यासेन लक्षणं च चिकित्सितम्
त्रयोदशविधश्चासौ भिन्न एतैस्तु कारणैः ।
अपथ्यभोजनाच्चापि वक्ष्यते च तथापरः ॥

उदावर्त्तनां निदानो तथा संख्या.

३ अधोवायुना वेगने रोकवाथी, विष्टाना वेगने रोकवाथी, मूत्रना वेगने रोकवाथी, बगासांना वेगने रोकवाथी, आंसुना वेगने रोकवाथी, छींकना वेगने रोकवाथी, ओडकारना वेगने रोकवाथी, वमनना वेगने रोकवाथी, वीर्यना वेगने रोकवाथी, क्षुधाना वेगने रोकवाथी, तरशना वेगने रोकवाथी, श्वासना वेगने रोकवाथी अने निद्राना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त उत्पन्न थाय छे. उदावर्त्तनां लक्षणो अने चिकित्साओ विस्तारथी केहेवामां आवशे. उपर कहेलां तेर कारणोने लीधे उदावर्त्त तेर प्रकारनो गणवामां आवे छे. चौदमा प्रकारनो उदावर्त्त के जे अपथ्य भोजनथी थाय छे तेनुं लक्षण तथा चिकित्सा पाछळथी (आ अध्यायना ३२ मा विषय पछी) केहेवामां आवशे. (वेगनी अटकायत करवाने लीधे वायुनुं ऊर्ध्वभ्रमण थाय छे तेथी ते रोग उदावर्त्त केहेवाय छे. आंसु वगेरेना वेगोने रोकवाथी वायुनुं ऊर्ध्वभ्रमण केम थाय एवी शंका आवे त्यां एम समजवुं के ए वेगोने रोकवाथी अपानवायु प्रकुपित थाय छे अने ते ऊर्ध्वभ्रमण करवा लागे छे. डल्हन.)

४ आध्मानशूलौ हृदयोपरोधं
शिरोरुजं श्वासमतीव हिक्काम् ।
कासप्रतिश्यायगलग्रहांश्च
बलासपित्तप्रसरं च घोरम् ॥
कुर्यादपानोऽभिहतः स्वमार्गं
हन्यात्पुरीषं मुखतः क्षिपेद्वा ॥

अधोवायुना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

४ अधोवायुने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो पेट आफरे छे, शूळ उत्पन्न थाय छे, हृदयनो उपरोध थाय छे, माथामां व्यथा थाय छे, श्वास थाय छे, अत्यंत हेडकी थाय छे, खांसी थाय छे, प्रतिश्याय थाय छे, गळुं झलाई जाय छे, कफनो तथा पित्तनो भयंकर प्रसर थाय छे अने विष्टा पोताना मार्गमांथी नीकळती नथी अथवा मोहोडामांथी नीकळे छे.

५ आटोपशूलौ परिकर्त्तनं च
सङ्गः पुरीषस्य तथोर्द्ध्ववातः ॥
पुरीषमास्यादपि वा निरेति
पुरीषवेगेऽभिहते नरस्य ।

विष्टाना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

५ विष्टाना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो पेटमां वेदनावाळो गडगडाट थाय छे, पक्वाशयमां शूळ थाय छे, गुदामां वाढ चाले छे, विष्टानी अटकायत थाय छे, ओडकार आवे छे अने वखते मोहोडामांथी पण विष्टा नीकळे छे.

६ मूत्रस्य वेगेऽभिहते नरस्तु
कृच्छ्रेण मूत्रं कुरुतेऽल्पमल्पम् ॥
मेढ्रे गुदे वङ्क्षणमुष्कयोश्च
नाभिप्रदेशेष्वथ चापि मूर्ध्नि ।
आनद्धबस्तेश्च भवन्ति तीव्राः
शूलाश्च शूलैरिव भिन्नमूर्त्तेः ॥

मूत्रना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

६ मूत्रना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो घणा कष्टथी थोडुं थोडुं मूतरी शकाय छे, पेडु चडी आवे छे अने जाणे त्रिशूळोथी शरीर भेदातुं होय तेम लिंगमां, गुदामां, साथळोनां मूळोमां, वृषणोमां, नाभिने लगता प्रदेशोमां अने माथामां पण तीव्र शूळो उत्पन्न थाय छे.

७ मन्यागलस्तम्भशिरोविकारा
जृम्भोपघातात्पवनात्मकाः स्युः ।
श्रोत्राननघ्राणविलोचनोत्था
भवन्ति तीव्राश्च तथा विकाराः ॥

बगासाना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनु लक्षण.

७ बगासांना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो ओड तथा गळुं झलाई जाय छे, माथामां सूर्यावर्त्त आदि पवनात्मक रोगो थाय छे अने कानमां, मोहोडामां, नाकमां तथा नेत्रोमां पण तीव्र विकारो उत्पन्न थाय छे.

८ आनन्दजं शोकसमुद्भवं वा
नेत्रोदकं प्राप्तममुञ्चतो हि ।
शिरोगुरुत्वं नयनामयाश्च
भवन्ति तीव्राः सह पीनसेन ॥

आंसुना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

८ आनंदथी अथवा शोकथी प्राप्त थएला आंसुना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो माथामां भारेपणुं थाय छे, आंखोना तीव्र रोगो थाय छे अने सळेखम पण थाय छे.

९ भवन्ति गाढं क्षवथोर्विघाता-
च्छिरोऽक्षिनासाश्रवणेषु रोगाः

छींकना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

९ छींकना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो माथुं, नेत्रो, नाक तथा कानो एओमां रोगो अत्यंत उत्पन्न थाय छे.

१० कण्ठास्यपूर्णत्वमतीव तोदः
कूजश्च वायोरथ वाऽप्रवृत्तिः ।
उद्गारवेगेऽभिहते भवन्ति
जन्तोर्विकाराः पवनप्रसूताः ।

ओडकारना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

१० ओडकारना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो गळुं तथा मोहोडुं जाणे कोळीयाथी भरपूर थई रह्यां होय एवां थई जाय छे, हृदयमां तथा आमाशयमां अत्यंत व्यथा थाय छे, पेटमां पवननो अस्फुट शब्द थाय छे अथवा श्वास आदिना रोधने लीधे वायुनी प्रवृत्ति थती नथी अने बीजा हेडकी आदि पवनसंबंधी विकारो पण थाय छे.

११ छर्देर्विघातेन भवेच्च कुष्ठं
येनैव दोषेण विदग्धमन्नम् ॥

वमनना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

११ वमनना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो जे दोषथी अन्न दुष्ट थयुं होय ते दोषथी कोढ थाय छे अने अरोचक आदि बीजा विकारो पण थाय छे.

१२ मूत्राशये वा गुदमुष्कयोश्च
शोफो रुजा मूत्रविनिग्रहश्च ।
शुक्राश्मरी तत्स्रवणं भवेद्वा
ते ते विकारा विहते तु शुक्रे

वीर्यना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

१२ वीर्यना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो मूत्राशयमां, गुदामां तथा वृषणोमां सोजो तथा पीडा थाय छे, मूत्रनी अटकायत थाय छे, वीर्यनी पथरी थाय छे अथवा पोतानी मेळे

वीर्यनो स्राव थाय छे अने बीजा पण वातकुंडलिका वगेरे विकारो थाय छे.

१३ तन्द्राङ्गमर्दावरुचिः श्रमश्च
क्षुधोऽभिघातात्कृशता च दृष्टेः ।

क्षुधाना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

१३ भूखना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो तंद्रा, अंगोनुं भांगवुं, अरुचि, श्रम अने दृष्टिनुं निर्बळपणुं थाय छे.

१४ कण्ठास्यशोषः श्रवणावरोध-
स्तृष्णाभिघाताद्धृदये व्यथा च ॥

तरशना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

१४ तरशना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो गळामां तथा मोहोडामां शोष थाय छे, सांभळवानी शक्ति रोकाई जाय छे अने हृदयमां व्यथा थाय छे.

१५ श्रान्तस्य निश्वासविनिग्रहेण
हृद्रोगमोहावथ वापि गुल्मः ।

श्वासना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

१५ थाकी रेहेवाथी चालवा लागेला श्वासना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो हृद्रोग थायछे, मोह थायछे अने वखतपर गुल्म पण थाय छे.

१६ जृम्भाङ्गमर्दोऽङ्गशिरोऽक्षिजाड्यं
निद्राभिघातादथ वापि तन्द्रा ॥

निद्राना वेगने रोकवाथी उत्पन्न थएला उदावर्त्तनुं लक्षण.

१६ निद्राना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो बगासां आवे छे, अंगो भांगे छे, गात्रोमां माथामां तथा नेत्रोमां भारेपणुं थायछे अने तंद्रा पण थायछे.

१७ तृष्णार्दितं परिक्लिष्टं क्षीणं शूलैरभिद्रुतम् ।
शकृद्वमन्तं मतिमानुदावर्त्तिनमुत्सृजेत् ॥

उदावर्त्तना असाध्यपणानुं लक्षण.

१७ उदावर्त्तवाळो माणस जो तरशथी पीडातो होय, क्रियाओथी रहित थई गयो होय, क्षीण थयो होय, शूळोथी दुःखी थया करतो होय अने विष्टानुं वमन करतो होय तो बुद्धिमान् वैद्ये तेनी चिकित्सा करवी नहीं.

१८ सर्वेष्वेतेषु विधिवदुदावर्त्तेषु कृत्स्नशः ।
वायोः क्रिया विधातव्याः स्वमार्गप्रतिपत्तये ॥
सामान्यतः पृथक्त्वेन क्रियां भूयो निबोध मे ।

उदावर्त्तोनी सामान्य चिकित्सा.

१८ सघळा प्रकारना उदावर्त्तोमां वायुनुं प्रतिलोमपणुं होय छे एटला माटे जे जे क्रियाओथी वायु पाछो पोताना मार्गे उपर आवे ते ते सघळी क्रियाओ (वायुने अनुलोम करनारी क्रियाओ) संपूर्ण रीते करवी ए सामान्य विधि छे. हवे प्रत्येक उदावर्त्तोनी विशिष्ट क्रियाओ कहुं छुं ते सांभळो.

१९ आस्थापनं मारुतजे स्निग्धे स्विन्ने विशिष्यते ॥

अधोवायुना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

१९ जो उदावर्त्त अधोवायुना वेगने रोकवाथी थयो होय तो रोगीने स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी वायुने अनुलोम करनारां वातहर द्रव्योथी गोठवेली निरूहबस्ति देवी.

२० पुरीषजे तु कर्त्तव्यो विधिरानाहिको भवेत् ।

विष्टाना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२० जो उदावर्त्त विष्टाना वेगने रोकवाथी थयो होय तो चिकित्सास्थानना १४ मा अध्यायना ९ मा विषयमां कहेली फलवर्त्ति अथवा आ अध्यायना ३९ मा विषयमां कहेली फलवर्त्ति गुदामां खोसवा वगेरे मलबंधने टाळनारी चि-

कित्साओ करवी अने विष्टाने अनुलोम करनारी बीजी पण चिकित्साओ करवी.

२१ सौवर्चलाढ्यां मदिरां मूत्रे त्वभिहते पिबेत् ।
एलामप्यथ मद्येन क्षीरं वापि पिबेन्नरः ।
धात्रीफलानां स्वरसं सजलं वा पिबेत्त्र्यहम् ॥
रसमश्वपुरीषस्य गर्दभस्याथ वा पिबेत् ।
मांसोपदंशं मधु वा पिबेद्वा सीधु गौडिकम् ॥
भद्रदारु घनं मूर्वां हरिद्रां मधुकं तथा ।
कोलप्रमाणानि पिबेदान्तरीक्षेण वारिणा ॥
दुःस्पर्शास्वरसं वापि कषायं कुङ्कुमस्य च ।
एर्वारुबीजं तोयेन पिबेद्वा लवणीकृतम् ॥
पञ्चमूलीश्टतं क्षीरं द्राक्षारसमथापि वा ।
योगांश्च वितरेत्तत्र पूर्वोक्तानश्मरीभिदः ॥
मूत्रकृच्छ्रक्रमं वापि कुर्यान्निरवशेषतः ।
भूयो वक्ष्यामि योगांश्च मूत्राघातोपशान्तये ॥

मूत्रना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२१ जो उदावर्त्त मूत्रना वेगने रोकवाथी थयो होय तो संचळथी संयुक्त करेली मदिरा पावी अथवा मद्यनी साथे एळचीनुं चूर्ण पावुं अथवा दूध पावुं.

आमळांओनो स्वरस जळथी संयुक्त करीने त्रण दिवससूधी पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

घोडानी लादनो के गधेडानां लींडांनो स्वरस पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

मांसनुं भक्षण करावतां तेनी साथे मधनुं अथवा गोळनुं मद्य पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

देवदार, मोथ, मोरवेल, हळदर अने जेठीमध ए प्रत्येक द्रव्यने अरधां अरधां तोलांभार लई कल्क करीने ते कल्क अंतरिक्षमांथी झीलेला वरसादना जळनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

भोरींगणीनो अथवा राता धमासानो स्वरस अने केसरनुं हिम पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

उनाळानी काकडीनां बीज अने थोडुंक सैंधव एओनो कल्क जळनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

लघुपंचमूलीनो कल्क नाखी पकावेलुं दूध पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

द्राक्षनो रस पावामां आवे तो तेथी मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त टळी जाय छे.

चिकित्सास्थानना ७ मा अध्यायमां पथरीने भेदनारा जे योगो कह्या छे तेओनी पण मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त उपर योजनाओ करवी.

आ उत्तरतंत्रना ५८ मा तथा ५९ मा अध्यायमां मूत्राघातनी तथा मूत्रदोषनी शांतिने माटे जे योगो केहेवामां आवशे तेओनी पण मूत्ररोधजन्य उदावर्त्त उपर योग्यता जोई संपूर्ण रीते योजनाओ करवी.

२२ स्नेहस्वेदैरुदावर्तं जृम्भाजं समुपाचरेत् ।

बगासांना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२२ जो उदावर्त्त बगासांना वेगने रोकवाथी थयो होय तो स्नेहोनी तथा स्वेदोनी योजनाओ करवी.

२३ अश्रुमोक्षोऽश्रुजे कार्यः स्निग्धस्विन्नस्य देहिनः ॥

आंसुना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२३ जो उदावर्त्त आंसुना वेगने रोकवाथी थयो होय तो स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी करुण कथाओ वगेरेथी रोगीने रोवरावीने नेत्रोमांथी आंसु पडाववां. (आंसु पडाववाने माटे तीक्ष्ण अंजनोनी तथा तीक्ष्ण नस्योनी पण योजनाओ करवी.)

२४ तीक्ष्णाञ्जनावपीडाभ्यां तीक्ष्णगन्धोपशिघनैः ।
वर्त्तिप्रयोगैरथ वा क्षवशक्तिं प्रवर्त्तयेत् ॥
तीक्ष्णौषधप्रधमनैरथ वादित्यरश्मिभिः ।

छींकना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२४ जो उदावर्त्त छींकना वेगने रोकवाथी थयो होय तो तीक्ष्ण अभ्यंगोथी, तीक्ष्ण अवपीड नस्योथी, तीक्ष्ण गंधवाळां द्रव्यो सुंघाडवाथी, तीक्ष्ण औषधोनां प्रधमन नस्योथी, सूर्यनी सामे जोवराववाथी अथवा नाकमां वाट नाखवाना प्रयोगोथी छींकनी प्रवृत्ति करावవी.

२५ उद्गारजे क्रमोपेतं स्नैहिकं धूममाचरेत् ॥
सुरां सौवर्चलवतीं बीजपूररसान्विताम् ।

ओडकारना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२५ जो ओडकारना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो चिकित्सास्थानना ४० मा अध्यायमां कहेला क्रमप्रमाणे स्नैहिक धूमाडो पावो अथवा संचळ अने बीजोरांनो रस एओथी युक्त करेली मदिरा पावी.

२६ छर्द्याघातं यथादोषं सम्यक् स्नेहादिभिर्जयेत्
सक्षारलवणोपेतमभ्यङ्गं चात्र दापयेत् ।

वमनना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२६ जो उदावर्त्त वमनना वेगने रोकवाथी थयो होय तो दोषना अनुसार प्रमाणे स्नेहन, वमन, लंघन तथा विरेचन वगेरेनी सारी रीते योजनाओ करवी अने जवखार तथा सैंधव एओथी संयुक्त अभ्यंग कराववो.

२७ बस्तिशुद्धिकरावापं चतुर्गुणजलं पयः ॥
आवारिनाशक्कथितं पीतवन्तं प्रकामतः ।
रमयेयुः प्रिया नार्यः शुक्रोदावर्त्तिनं नरम् ॥

वीर्यना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२७ जो उदावर्त्त वीर्यना वेगने रोकवाथी थयो होय तो मूत्राशयने शुद्ध करनारां तृणपंचमूळी वगेरे द्रव्योनो कल्क नाखी चोगणा जळमां ते जळना नाशपर्यंत पकावेलुं दूध रोगीने तेनी मरजीप्रमाणे पाई ते रोगीने प्यारी स्त्रीओ सारी रीते रमण करावे एवी गोठवण करवी.

२८ क्षुद्विघाते हितं स्निग्धमुष्णमल्पं च भोजनम् ।

क्षुधाना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२८ जो क्षुधाना वेगने रोकवाथी उदावर्त्त थयो होय तो स्निग्ध तथा उष्ण भोजन अल्प मात्राथी आपवुं ए हितकारी थाय छे.

२९ तृष्णाघाते पिबेन्मन्थं यवागूं वापि शीतलाम् ।

तरशना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

२९ जो उदावर्त्त तरशना वेगने रोकवाथी थयो होय तो सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २३२ मा विषयमां कहेलो मंथ पावो अथवा शीतल यवागू पावी.

३० भोज्यो रसेन विश्रान्तः श्रमश्वासातुरो नरः ।

श्वासना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

३० जो उदावर्त्त श्रमजन्य श्वासना वेगने रोकवाथी थयो होय तो विश्राम लेवडावीने मांसना रसानी साथे भोजन कराववुं.

३१ निद्राघाते पिबेत् क्षीरं स्वप्याच्चेष्टकथारतः ॥

निद्राना वेगने रोकवाथी थएला उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

३१ जो उदावर्त्त निद्राना वेगने रोकवाथी थयो होय तो दूध पावुं, प्यारी लागे एवी वातो संभळाववी तथा करावవी अने निद्रा लेवडाववी.

३२ आध्मानोत्थेषु रोगेषु यथास्वं प्रयतेत हि
यच्च यस्मिन्भवेत्प्राप्तं तच्च तस्मिन्प्रयोजयेत् ॥

उदावर्तना उपद्रवोनी चिकित्सा.

३२ वेगोने रोकवाने लीधे आफरो, शूळ, वाढ तथा दस्तनी अटकायत इत्यादि जे उपद्रवो थया होय तेओने शांत करवा माटे चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायमां कहेली चिकित्साओमांथी योग्यता प्रमाणे चिकित्साओ करवी अने जे उपद्रव उपर बीजी पण जे कोई चिकित्सा प्राप्त जणाय ते उपद्रव उपर ते चिकित्सानी पण योजना करवी.

३३ वायुः कोष्ठानुगो रूक्षैः कषायकटुतिक्तकैः।
भोजनैः कुपितः सद्य उदावर्तं करोति हि ॥
वातमूत्रपुरीषासृक्कफमेदोवहानि वै ।
स्रोतांस्युदावर्त्तयति पुरीषं चातिवर्त्तयेत् ॥
ततो हृद्बस्तिशूलार्त्तो गौरवारुचिपीडितः ।
वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेण कुरुते नरः ॥
श्वासकासप्रतिश्यायदाहमोहवमिज्वरान् ।
तृष्णाहिक्काशिरोरोगमनःश्रवणविभ्रमान् ॥
लभते च बहूनन्यान्विकारान् वातकोपजान् ।

चौदमा प्रकारनो उदावर्त्त के जे आ अध्यायना त्रीजा विषयमां जणाव्यो छे तेनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३३ रूक्ष, तूरां, तीखां अने कडवां भोजनोथी प्रकुपित थएलो कोठामां रहेलो वायु तुरत उदावर्त्तने उत्पन्न करे छे. वायु ऊंचे ऊंचे भ्रमण करीने पोताने चलावनारां, मूत्रने चलावनारां, विष्टाने चलावनारां, रुधिरने चलावनारां, कफने चलावनारां तथा मेदने चलावनारां स्रोतोने रोकी दे छे, विष्टाने कठण करी दे छे अने विष्टा वगेरेनी अवळी गति करे छे पण तेओने नीचे उतरवा देतो नथी तेथी ते माणसने अधोवायु, मूत्र अने विष्टा घणा परिश्रमथी मांडमांड उतरे छे. आ उदावर्त्त के जे **अपथ्यभोजनजन्य उदावर्त्त** केहेवाय छे तेथी घेराएला माणसने हृदयमां शूळ, मूत्राशयमां शूळ, भारेपणुं, अरुचि, श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, दाह, मोह, उलटी, ज्वर, तरश, हेडकी, माथाना रोगो, भ्रांति आदि मनना विभ्रमो; सांभळवानो फेरफार अने बीजा पण वायुना कोपथी थनारा घणा घणा विकारो थायछे.

३४ तं तैललवणाभ्यक्तं स्निग्धं स्विन्नं निरूहयेत्॥
दोषतो भिन्नवर्चस्कं भुक्तं चाप्यनुवासयेत् ।

अपथ्यभोजनजन्य उदावर्त्तनी सामान्य चिकित्सा.

३४ अपथ्यभोजनजन्य उदावर्त्तवाळा माणसने तैलनो तथा सैंधवनो अभ्यंग करी स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी दोषना अनुसार प्रमाणे निरूहबस्ति देवी अने तेथी झाडो आवी जाय ते पछी जमाडीने अनुवासनबस्ति देवी.

३५ न चेच्छान्तिं प्रयात्येवमुदावर्त्तः सुदारुणः॥
अथैनं बहुशः स्विन्नं युञ्ज्यात् स्नेहविरेचनैः ।
पाययेत त्रिवृत्पीलुयवानीरम्लपानकैः ॥
हिङ्गुकुष्ठवचास्वर्जिविडङ्गं वा द्विरुत्तरम् ।
योगावेतावुदावर्त्तं शूलं चापि नियच्छतः ॥
देवदार्वग्निकं कुष्ठं वचां पथ्यां पलङ्कषाम् ।
पौष्कराणि च मूलानि तोयस्यार्द्धाढके पचेत् ॥
पादावशिष्टं तत्पीतमुदावर्त्तं व्यपोहति ।
मूलकं शुष्कमार्द्रं च वर्षाभूः पञ्चमूलकम् ॥
आरेवतफलं चाप्सु पक्त्वा तेन घृतं पचेत् ।
तत्पीयमानं शमयेदुदावर्त्तमशेषतः ॥
वचामतिविषां कुष्ठं यवक्षारं हरीतकीम् ।
कृष्णां निर्दहनीं चापि पिबेदुष्णेन वारिणा ॥
इक्ष्वाकुमूलं मदनं विशल्यातिविषे वचाम् ।
कुष्ठं किण्वाग्निकौ चापि पिबेत्तुल्यानि पूर्ववत् ॥
मूत्रेण देवदार्वग्नित्रिफलाबृहतीः पिबेत् ।
यवप्रस्थं फलैः सार्द्धं कण्टकार्या जलाढके
पक्त्वार्द्धप्रस्थशेषं तु पिबेद्धिङ्गुसमन्वितम् ।
मदनालाबुबीजानि पिप्पलीं सनिदिग्धिकाम् ॥

संचूर्ण्य प्रधमेन्नाड्या विशत्येतद्यथा गुदम् ।
चूर्णं निकुम्भकम्पिल्लश्यामेक्ष्वाकाग्निकोद्भवम् ॥
कृतवेधनमागध्यो लवणानां च साधयेत् ।
गवां मूत्रेण ता वर्त्तीः कारयेच्च गुदानुगाः ॥
सद्यः शर्मकरावेतौ योगावमृतसम्भवौ ।

अपथ्यभोजनजन्य उदावर्त्तनी विशिष्ट चिकित्सा.

३९ ए अतिदारुण उदावर्त्त जो उपर कहेली सामान्य चिकित्साथी शांत न थाय तो रोगीने घणा घणा स्वेदन संस्कारो आपी एरडीया तेल वगेरे स्नेहात्मक विरेचनो देवां.

नसोतर पीलु (खारी जार—मोटी जार) अने अजमा एओना कल्क खाटा द्रवोनी के साजीखारनी साथे पावामां आवे तो तेथी अपथ्य भोजनजन्य उदावर्त्त अने शूळ पण नष्ट थई जाय छे.

हींग, हींगथी बमणो कठ, कठथी बमणी वज, वजथी बमणो साजीखार अने साजीखारथी बमणां वावडींग एओनो कल्क खाटा द्रवोनी साथे पावामां आवे तो तेथी अपथ्यभोजनजन्य उदावर्त्त अने शूळ पण नष्ट थई जाय छे.

देवदार, चित्रक, कठ, वज, हरडे, गुगळ अने पुष्करमूळ एटलां द्रव्यो नाखी एकसो अठ्यावीश तोलांभार पाणीनो काथ उकाळवो. चोथा भाग जेटलुं पाणी अवशेष रहे त्यारे उतारीने ते काथ पावामां आवे तो तेथी अपथ्य भोजनजन्य उदावर्त्त नष्ट थई जाय छे. (केटलाएक केहे छे के आ काथनी मात्रा बहु मोटी थायछे एटला माटे अनुक्रमे तेमांथी चार चार तोलांभार काथ पावो.)

सूको मूळो, आर्द्र मूळो, साटोडी, बृहत्पंचमूल अने गरमाळानुं फळ एओनो काथ करी ते काथमां घी पकावी ए घी पावामां आवे तो तेथी उदावर्त्त संपूर्ण रीते शांत थई जाय छे.

वज, अतवस, कठ, जवखार, हरडे, पीपळ अने चित्रक एओनुं चूर्ण ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी अपथ्यभोजनजन्य उदावर्त्त नष्ट थाय छे.

कडवी तुंबडीनुं मूळ, मींढोळ, इंद्रवारणी, अतवस, वज, कठ, सुरानुं बीज अने चित्रक अथवा बोडीअजमोद एओने समभागे लई ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी अपथ्य भोजनजन्य उदावर्त्त नष्ट थायछे.

देवदार, चित्रक, त्रिफळा अने भोरींगणी एओनुं चूर्ण गोमूत्रनी साथे पावामां आवे तो तेथी उदावर्त्त नष्ट थई जाय छे.

जव अने भोरींगणीनां फळ एओने चोसठ तोलांभार लई बसो छपन (२५६) तोलांभार पाणीमां उकाळी बत्रीश तोलांभार पाणी अवशेष रहे त्यारे उतारी ते काथ हींगथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी उदावर्त्त नष्ट थई जाय छे. (आ काथनी मात्रा बहुज मोटी थई जाय छे माटे एकदम नहीं पातां अनुक्रमे चार चार तोलांभार पावो एवी कल्पना योग्य जणाय तो करवी.)

मींढोळनां बीज, कडवी तूंबडीनां बीज, पीपळ अने भोरींगणी एओनुं चूर्ण करी ते चूर्णने नळीमां नाखी फूंक मारीने गुदामां पेसाडी देवामां आवे तो तेथी उदावर्त्तवाळाने तुरतज सुख थाय छे. आ योग अमृततुल्य गणवामां आवे छे.

नेपाळो, कपीलो, नसोतर, कडवी तूंबडी, चित्रक, कडवी घीसोडी, पीपळ अने सैंधव एओना चूर्णने गोमूत्रमां पकावी तेनी गुदामां पेसे एवडी वाटो करवी. आ वाट गुदामां खोसवाथी उदावर्त्तवाळाने तुरतज सुख थायछे. आ फळवर्त्तिरूप योग पण अमृततुल्य गणवामां आवे छे.

अध्याय ५६ मो.

१ अथातो विसूचिकाप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'विसूचिकाप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अजीर्णमामं विष्टब्धं विदग्धं च यदीरितम् ।
विसूच्यलसकौ तस्माद्भवेच्चापि विलम्बिका ॥

विसूचिका, अलसक तथा विलंबिका एओनुं निदान.

२ [1]सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २३९ मा विषयमां जे आमाजीर्ण, विष्टब्धाजीर्ण अने विदग्धाजीर्ण कहेल छे तेथी विसूचिका, अलसक अने विलंबिका उत्पन्न थायछे.

३ सूचीभिरिव गात्राणि तुदन् सन्तिष्ठतेऽनिलः ।
यत्राजीर्णेन सा वैद्यैरुच्यते तु विसूचिका ॥

विसूचिका शब्दनी निरुक्ति.

३ ए रोगमां अजीर्णने लीधे वायु जाणे गात्रोने सोईओथी भोंकतो होय एवो क्रूर थायछे. एटला माटे वैद्योए तेने 'विसूचिका' ए नाम आपेलुं छे.

४ न तां परिमिताहारा लभन्ते विदितागमाः ।
मूढास्तामजितात्मानो लभन्तेऽशनलोलुपाः ॥

अजीर्णथी रहित रेहेनाराओने विसूचिका थतीज नथी.

४ भोजनसंबंधी शास्त्रोपदेशने जाणनारा अने तेथी परिमित तथा अनिषिद्ध आहारज करनारा लोकोने विसूचिका थती नथी. जे लोको त्याज्य आहारने नहीं जाणनारा, अजितेंद्रिय अने भोजनमां अतिलंपट होय छे तेओने विसूचिका प्राप्त थायछे.

५ मूर्छातिसारौ वमथुः पिपासा
शूलं भ्रमोद्वेष्टनजृम्भदाहाः ।
वैवर्ण्यकम्पौ हृदये रुजश्च
भवन्ति तस्यां शिरसश्च भेदः ॥

विसूचिकानुं लक्षण.

५ विसूचिकामां मूर्छा, अतिसार, वमन, तरश, शूळ, भ्रम, हाथ पग वगेरेमां गोठलीओ, अंगोनुं मरडावुं, दाह, विवर्णपणुं, कंप, हृदयमां वेदनाओ अने माथानुं जाणे विदारण थतुं होय एवी पीडा थायछे.

६ कुक्षिरानह्यतेऽत्यर्थं ताम्यत्यथ च कूजति ।
निरुद्धो मारुतश्चापि कुक्षावुपरि धावति ॥
वातवर्चोनिरोधश्च कुक्षौ यस्य भृशं भवेत् ।
तस्यालसकमाचष्टे हिक्कोद्गारौ तु यस्य तु ॥

अलसकनुं लक्षण.

६ पेट अत्यंत आफरी गयुं होय, अंगोने पछाडवा पडतां होय, ग्लानि थई होय, कणकणवुं पडतुं होय, अजीर्णथी रोकाएलो पवन छाती तथा कंठ वगेरे उपरना भागोमां दोड्या करतो होय, अधोवायु तथा झाडो अत्यंत रोकाई गयां होय अने हेडकी तथा ओडकार आव्या करता होय तो ते माणसने 'अलसक थयो छे' एम जाणवुं.

७ दुष्टं तु भुक्तं कफमारुताभ्यां
प्रवर्त्तते नोर्ध्वमधश्च यस्याम् ।
विलम्बिकां तां भृशदुश्चिकित्स्या-
माचक्षते शास्त्रविदः पुराणाः ॥

विलंबिकानुं लक्षण तथा अत्यंत कष्टसाध्यपणुं.

७ कफथी अने वायुथी दुष्ट थएलुं ख

[1] कालेरा, अलसक अने विलंबिका एओनां निदान, लक्षणो तथा चिकित्सा अने आनाहनां लक्षणो तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषयैनो.

अन्न मोहोडामांथी पण नीकळे नहीं अने गुदामांथी पण नीकळे नहीं ए रोगने प्राचीन आयुर्वेदशास्त्रीओ विलंबिका केहे छे. आ विलंबिका चिकित्सा करवामां अत्यंत कष्टसाध्य छे.

८ यत्रस्थमामं विरुजेत्तमेव
देशं विशेषेण विकारजातैः ।
दोषेण येनावततं स्वलिङ्गै-
स्तं लक्षयेदामसमुद्भवैश्च ॥

चिकित्सा सुखथी करी शकाय एटला माटे आमवाळा प्रदेशनी परीक्षा.

८ आम जे प्रदेशमां रह्युं होय अने जे दोषथी व्याप्त थयुं होय ते प्रदेशनेज विशेषे करी ते दोषसंबंधी विकारोथी तथा आफरा वगेरे पोतानां चिह्नोथी पण पीडे छे माटे दोषसंबंधी भोंकावा आदि विकारो उपरथी अने आफरा तथा स्तंभ वगेरे आमनां चिह्नो उपरथी वैद्ये आमवाळा प्रदेशने जाणी लेवो.

९ यः श्यावदन्तोष्ठनखोऽल्पसंज्ञ-
श्छर्द्यर्दितोऽभ्यन्तरयातनेत्रः ।
क्षामस्वरः सर्वविमुक्तसन्धि-
र्यायान्नरोऽसौ पुनरागमाय ॥

विसूचिकादिकनां असाध्यपणानां लक्षणो.

९ विसूचिका, अलसक के विलंबिका थतां जेना दांत, होठ तथा नखो काळा थई गया होय, संज्ञा अत्यंत अल्प थई गई होय, उलटीनी पीडा थया करती होय, आंखो ऊंडी उतरी गई होय, स्वर बेसी गयो होय अने सघळा सांधाओ नरम पडी गया होय ते माणस बीजो जन्म धरी अहीं आववाने माटे जाय छे अर्थात् मरी जशे एम समजवुं.

१० साध्यासु पार्ष्ण्योर्दहनं प्रशस्त-
मग्निप्रतापो वमनं च तीक्ष्णम् ।
पक्के ततोऽन्ने तु विलङ्घनं स्या-
त्संपाचनं चापि विरेचनं वा ॥

विशुद्धदेहस्य हि सद्य एव
मूर्छातिसारादिरुपैति शांतिम् ।
आस्थापनं चापि वदन्ति पथ्यं
सर्वासु योगानपरान्निबोध ॥
पथ्यावचाहिङ्गुकलिङ्गगृञ्ज-
सौवर्चलैः सातिविषैश्च चूर्णम् ।
सुखाम्बुपीतं विनिहन्त्यजीर्णं
शूलं विसूचीमरुचिं च सद्यः ॥
क्षारागदं वा लवणं विडं वा
गुडप्रगाढानथ सर्षपान्वा ।
अम्लेन वा सैन्धवहिङ्गुयुक्तौ
सबीजपूर्णौ सघृतौ त्रिवर्गौ ॥
कटुत्रिकं वा लवणैरुपेतं
पिबेत्स्नुहीक्षीरविमिश्रितं तु ।
कल्याणकं वा लवणं पिबेत्तु
यदुक्तमादावनिलामयेषु ॥
कृष्णाजमोदक्षवकाणि वापि
तुल्यौ पिबेद्वा मगधानिकुम्भौ ।
दन्तीयुतं वा मगधोद्भवानां
कल्कं पिबेत्कोषवतीरसेन ॥
उष्णाभिरद्भिर्मगधोद्भवानां
कल्कं पिबेन्नागरकल्कयुक्तम् ।
व्योषं करञ्जस्य फलं हरिद्रे
मूलं समं वाप्यथ मातुलुङ्ग्याः ॥
छायाविशुष्का गुटिकाः कृतास्ता
हन्युर्विसूचीं नयनाञ्जनेन ।
सुवामितं साधु विरेचितं वा
सुलङ्घितं वा मनुजं विदित्वा ॥
पेयादिभिर्दीपनपाचनीयैः
सम्यक्क्षुधार्त्तं समुपक्रमेत ।

विसूचिका, अलसक अने विलंबिका एओनी चिकित्सा.

१० विसूचिका, अलसक के विलंबिका जो साध्य जणाय तो रोगीना पगनी पेनीओमां डांभ देवा, अंगोने अग्निथी तपाववां (शेक करवो) अने तीक्ष्ण वमन कराववुं ए उत्तम छे. जो

खाधेलुं अन्न पाकवामां अभिमुख थएलुं जणाय तो पछी लंघन कराववुं, पाचन औषधो देवां अने फलवर्त्ति वगेरेथी विरेचन पण करवुं. वमन अने विरेचन देवां ते एटला माटे के देह शुद्ध थई जाय तो मूर्छा तथा अतिसार वगेरे विकारो तुरतज शांत थई जाय. विसूचिका, अलसक अने विलंबिका एओमां निरूहबस्ति देवी ए पण पथ्य छे एम केहेवामां आवे छे. हवे बीजा योगो कहुं छुं ते सांभळो.

हरडे, वज, हींग, इंद्रजव, रातुं लसण, संचळ अने अतवर्स एओनुं चूर्ण सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी अजीर्ण, शूळ, विसूचिका अने अरुचि एओ तुरत नष्ट थई जाय छे.

कल्पस्थानना सातमा अध्यायना २ जा विषयमां कहेलो क्षारागद अथवा बिडलूण सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

गोळथी सारी पेठे मिश्रित करेलुं सर्षपोनुं चूर्ण सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

हरडे, बेहेडां, आमळां, सूंठ, मरी अने पीपळ एओनुं चूर्ण घीथी, सैंधवथी, हींगथी तथा बीजोराना चूर्णथी युक्त करी खाटा द्रवनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

सूंठ, मरी तथा पीपळ एओनुं चूर्ण पंचलवणोथी तथा थोरना छीरथी युक्त करी खाटा द्रवनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

चिकित्सास्थानना चोथा अध्यायना २६ मा कल्याणक लवण खाटा द्रवनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

पीपळ, बोडीअजमोद अने राई एओनुं चूर्ण खाटा द्रवनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

पीपळ अने नेपाळो एओनुं समभाग चूर्ण खाटा द्रवनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

नेपाळो अने पीपळ एओनो कल्क कडवी घीसोडीना रसनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

पीपळनो तथा सूंठनो कल्क ऊना पाणीनी साथे पावामां आवे तो तेथी विसूचिकादिक नष्ट थायछे.

सूंठ, मरी, पीपळ, करंजनुं फळ, हळदर, दर अने बीजोरानुं मूळ एओने समभागे लई, कल्क करी, गोळीओ वाळी ते गोळीओने छायामां सूकाववी. आ गोळी नेत्रोमां आंजवामां आवे तो तेथी तंद्रा आदि विसूचिकाना विकारो अथवा विसूचिका नष्ट थायछे.

रोगी सारी रीते वामित थएलो, विरेचित थएलो के लंघित थएलो जाणवामां आवे ते पछी ज्यारे तेने सारी पेठे भूख लागे त्यारे वैद्ये पेया आदि दीपनीय तथा पाचनीय प्रयोगोथी उपचारो करवा.

११ आमं शकृद्वा निचितं क्रमेण
भूयो विबद्धं विगुणानिलेन ॥
प्रवर्त्तमानं न यथास्वमेनं
विकारमानाहमुदाहरन्ति ।

आनाहनुं निदान तथा सामान्य लक्षण.

११ आहारनो नहीं पाकेलो रस के जे आम केहेवाय छे ते अथवा विष्टा अनुक्रमे संचय पामीने अने वळी दुष्ट वायुथी बंधाईने अथवा सूकाईने पोताना मार्गमां प्रवर्त्ते नहीं ए विकारने वैद्यो आनाह केहेछे.

१२ तस्मिन्भवन्त्यामसमुद्भवे तु
तृष्णाप्रतिश्यायशिरोविदाहाः ॥

आमाशये शूलमथो गुरुत्वं
हृल्लास उद्गारविघातनं च ।

आमथी उत्पन्न थएला आनाहनुं लक्षण.

१२ जो आनाह आमथी थयो होय तो तरश, प्रतिश्याय, माथामां बळतरा, आमाशयमां शूळ, भारेपणुं, मोळ अने ओडकारनुं अटकवुं एटलां चिह्नो थाय छे.

१३ स्तम्भः कटीपृष्ठपुरीषमूत्रे
शूलोऽथ मूर्छा च शकृद्वमिश्च ॥
श्वासश्च पक्वाशयजे भवन्ति
लिङ्गानि चात्रालसकोद्भवानि ॥

विष्टाथी उत्पन्न थएला आनाहनुं लक्षण.

१३ जो आनाह विष्टाथी थयो होय तो कमर तथा पीठ झलाई जाय छे, विष्टा तथा मूत्र उतरतां नथी, शूळ थायछे मूर्छा आवे छे, विष्टानुं वमन थायछे, श्वास थायछे अने आ अध्यायना ६ ट्ठा विषयमां अलसकनां जे लक्षणो कह्यां छे तेओ पण थायछे.

१४ आमोद्भवे वान्तमुपक्रमेत
संसर्गभक्तक्रमदीपनीयैः
अथेतरं यो न शकृद्वमेत्त-
मासञ्जयेत्स्वेदनपाचनैश्च ।
विसूचिकायां परिकीर्त्तितानि
द्रव्याणि वैरेचनिकानि यानि ॥
तान्येव वर्त्तीर्वितरेद्धिचूर्ण्य
महिष्यजावीभगवां तु मूत्रैः ।
स्विन्नस्य पायौ विनिवेश्य ताश्च
चूर्णानि चैषां प्रधमेत्तु नाड्या ॥
मूत्रेण संसाध्य यथाविधानं
द्रव्याणि यान्यूर्ध्वमधश्च यान्ति ।
क्काथेन तेनाशु निरूहयेच्च
मूत्रार्द्धयुक्तेन समाक्षिकेण ॥
त्रिभण्डियुक्तं लवणप्रकुञ्चं
कृत्वा विरिक्तक्रममाचरेच्च ।
एष्वेव तैलेन च साधितेन
प्राप्तं यदि स्यादनुवासयेच्च ॥

आनाहनी चिकित्सा.

१४ जो आनाह आमथी उत्पन्न थएलो होय तो रोगीने वमन करावीने पछी अन्नसंसर्गना क्रमप्रमाणे पिप्पल्यादिगणथी संस्कृत करेला पेया वगेरे आहारोनी योजनाओ करवी.

जो आनाह विष्टाथी उत्पन्न थएलो होय तो स्वेदनो तथा पाचनोरूप उपचारो करवा. परंतु विष्टाथी थएला आनाहमां जो विष्टानुं वमन थतुं होय तो असाध्य समजीने तेनी चिकित्साज करवी नहीं.

आ अध्यायना १० मा विषयमां विसूचिका उपर जे नेपाळा वगेरे वैरेचनिक द्रव्यो केहेवामां आव्यां छे तेओना चूर्णने भेंश, बकरी, गाडर, हाथी तथा गाय एओनां मूत्रमां पकावी, वाटो बनावी, रोगीने स्वेदन संस्कार आपी तेनी गुदामां ते वाटो खोसवी. ए नेपाळा वगेरेनां कोरां चूर्णो नळीमां नाखी फूंक मारीने गुदामां चडावी देवां. सूत्रस्थानना ३९ मा अध्यायना छट्ठा विषयमां जे कडवी घीसोडी वगेरे उभयतोभागहर द्रव्यो कहेलां छे तेओनो अरधो अरध पाणीवाळा भेंश वगेरेना मूत्रमां विधिप्रमाणे क्काथ करी ते क्काथने मधथी तथा नसोतर अने सैंधव एओना चार तोलांभार कल्कथी युक्त करी ते क्काथथी निरूहबस्ति देवी. निरूहबस्ति दीधा पछी चिकित्सास्थानना ३९ मा अध्यायमां सम्यग्विरेचित थएलाने माटे जे क्रम केहेवामां आव्यो छे ते करवो. (आ निरूहबस्ति आमावस्थामां नहीं देवी पण आमनुं पाचन थया पछी देवी.) निरूहबस्ति दीधा पछी वायुनो प्रकोप रहेलो जणाय तो एज द्रव्योमां पकावेला तैलथी अनुवासनबस्ति पण देवी.

अध्याय ५७ मो.

१ अथातोऽरोचकप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अरोचकप्रतिषेध'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ दोषैः पृथक् सह च चित्तविपर्य्ययाच्च
भक्तायनेषु हृदि चावतते प्रगाढम् ।
नान्ने रुचिर्भवति तं भिषजो विकारं
भक्तोपघातमिह पञ्चविधं वदन्ति ॥

अरोचकनां निदान, संप्राप्ति, संख्या तथा सामान्य लक्षण.

२ एक एक दोषथी, त्रणे दोषोथी अने चिंतादिकने लीधे थएला चित्तना विह्वलपणाथी अन्ननुं वहन करनारां स्रोतो अने हृदय व्याप्त थतां अन्न उपर रुचि थती नथी ए रोगने वैद्यो अरोचक केहे छे. वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सान्निपातिक अने चित्तविपर्ययजन्य ए रीते अरोचकना पांच भेदो छे.

३ हृच्छूलपीडनयुतं विरसाननत्वं
वातात्मके भवति लिङ्गमरोचके तु ।

वातजन्य अरोचकनुं लक्षण.

३ जो वातजन्य अरोचक थयो होय तो हृदयमां शूळ तथा पीडा थायछे अने मोहोडुं विरस थई जाय छे.

४ हृद्दाहचोषबहुता मुखतिक्तता च
मूर्छा सतृड् भवति पित्तकृते तथैव ॥

पित्तजन्य अरोचकनुं लक्षण.

४ जो पित्तजन्य अरोचक थयो होय तो हृदयमां बहु दाह तथा बहु चोस थायछे, मोहोडुं कडवुं थई जाय छे, मूर्छा आवे छे अने तरश लाग्या करे छे.

५ कण्डूगुरुत्वकफसंस्रवसादतन्द्राः
श्लेष्मात्मके मधुरमास्यमरोचके तु ।

कफजन्य अरोचकनुं लक्षण.

५ जो कफजन्य अरोचक थयो होय तो खरज आवे छे, शरीरमां भारेपणुं थायछे, मोहोडामांथी कफनो स्राव थायछे, ग्लानि थाय छे, तंद्रा थायछे अने मोहोडुं मधुर थई जाय छे.

६ सर्वात्मके पवनपित्तकफा बहूनि
रूपाण्यथास्य हृदये समुदीरयन्ति ॥

सान्निपातिक अरोचकनुं लक्षण.

६ जो त्रणे दोषोथी अरोचक थयो होय तो माणसना हृदयमां वात, पित्त अने कफ ए त्रण दोषो घणां रूपोने प्रकट करे छे. (आ अरोचक असाध्य छे. डल्हन.)

७ संरागशोकभयविप्लुतचेतसस्तु
चिन्ताकृतो भवति सोऽशुचिदर्शनाच्च ।

चित्तविपर्ययजन्य (आगंतुज) अरोचकनुं लक्षण.

७ कामनाथी, शोकथी के भयथी चित्त विह्वल थतां चिंताने लीधे जे अरोचक थायछे ते चित्तविपर्ययजन्य अरोचक केहेवाय छे. बीभत्स आदि पदार्थना दर्शनथी जे अरोचक थायछे ते पण चित्तविपर्ययजन्य गणाय छे. (आ पांचमा प्रकारना अरोचकमां मोहोडुं अविकृत रसवाळुं रहे छे. भावप्रकाश.)

८ वाते वचाम्बुवमनं कृतवान्पिबेच्च
स्नेहैः सुराभिरथ वोष्णजलेन चूर्णम् ॥
कृष्णाविडङ्गयवभस्महरेणुभार्गी
रास्नैलहिङ्गुलवणोत्तमनागराणाम् ।
पित्ते गुडाम्बुमधुरैर्वमनं प्रशस्तं
स्नेहः ससैन्धवसितामधुसर्पिरिष्टः ॥

[1] अरोचक (अन्न उपर अरुचि) अने अविपाक (अन्ननुं पेटमां नहीं पाकवुं) एओनां निदानो, लक्षणो तथा चिकित्साओ विषयनो.

निम्बाम्बुवामितवतः कफजेऽनुपानं
राजद्रुमाम्बु मधुना तु सदीप्यकं स्यात् ।
चूर्णं यदुक्तमथ वानिलजे तदेव
सर्वैश्च सर्वकृतमेवमुपक्रमेत ॥
द्राक्षापटोलबिडवेत्रकरीरनिम्ब-
मूर्वाभयाक्षबदरामलकेन्द्रवृक्षैः
बीजैः करञ्जनृपवृक्षभवैश्च पिष्टै-
र्लेहं पचेत्सुरभिमूत्रयुतं यथावत् ॥
मुस्तां वचां त्रिकटुकं रजनीद्वयं च
भार्गीं च कुष्ठमथ निर्दहनीं च पिष्ट्वा ।
मूत्रेऽविजे द्विरदमूत्रयुते पचेद्वा
पाठां तुगामतिविषां रजनीं च मुख्याम्॥
मण्डूकिमर्कममृतां च सलाङ्गलाख्यां
मूत्रे पचेत्तु महिषस्य विधानविद्वा ।
एतान्न सन्ति चतुरो लिहतस्तु लेहान्
गुल्मारुचिश्वसनकण्ठहृदामयाश्च ॥
सात्म्यान् स्वदेशरचितान् विविधांश्च भक्ष्यान्
पानानि मूलफलखाडवरागयोगान् ।
अद्यादसांश्च विविधान् विविधैः प्रकारै-
र्भुञ्जीत चापि लघुरूक्षमनःसुखानि ॥
आस्थापनं विधिवदत्र विरेचनं च
कुर्यान्मृदूनि शिरसश्च विरेचनानि ।
त्रीण्यूषणानि रजनीत्रिफलायुतानि
चूर्णीकृतानि यवशूकविमिश्रितानि ॥
क्षुद्रायुतानि वितरेन्मुखधावनार्थ-
मन्यानि तिक्तकटुकानि च भेषजानि ।
मुस्तादिराजतरुवर्गदशाङ्गसिद्धैः
क्राथैर्जयेन्मधुयुतैर्विविधैश्च लेहैः ॥
मूत्रासवैर्गुडकृतैश्च तथा त्वरिष्टैः
क्षारासवैश्च मधुमाधवतुल्यगन्धैः ।

पेहेला चार अरोचकोनी चिकित्सा.

८ वातजन्य अरोचक थयो होय तो वजना क्राथथी वमन करावी पीपळ, वावडींग, जवखार, हरेणु, भारंगी, रास्ना, एळची अथवा एलवालुक, हींग, सैंधव अने सूंठ एओनुं चूर्ण स्नेहोनी साथे, मद्योनी साथे अथवा ऊना पाणीनी साथे पावुं.

पित्तजन्य अरोचक थयो होय तो गोळना पाणीथी तथा मधुरवर्गथी वमन करावी सैंधव, साकर, मध अने घी एओथी संयुक्त करेलुं स्नेहपान कराववुं.

कफजन्य अरोचक थयो होय तो लींबडाना क्राथथी वमन करावी ते उपर मधथी तथा अजमाथी युक्त करेलो गरमाळानो क्राथ पावो अथवा वातजन्य अरोचक उपर जे चूर्ण केहेवामां आव्युं छे ते पावुं.

सान्निपातिक अरोचक थयो होय तो प्रथम चिकित्सा करवानी ना पाडी पछी रोगी वगेरेनो आग्रह जणाय तो वमन करावीने उपर लखेली त्रणे दोषोनी चिकित्साओ करवी.

द्राक्ष, पटोल, त्रिडलूण, नेतर, केरडो, लींबडो, मोरवेल, हरडे, बेहेडां, बोर, आमळां, कडो, करंजनां बीज अने गरमाळानां बीज एओने वाटी तेनो गोमूत्रमां विधिप्रमाणे लेह पकावीने ते लेह चटाडवामां आवे तो तेथी वातजन्य अरोचक, गुल्म, श्वास, गळाना रोगो अने हृद्रोगो नष्ट थई जाय छे.

मोथ, वज, सूंठ, मरी, पीपळ, हळदर, दारुहळदर, भारंगी, कठ अने चित्रक एओने वाटी तेनो गाडरना मूत्रमां विधिप्रमाणे लेह पकावीने ते लेह चटाडवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य अरोचक, गुल्म, श्वास, गळाना रोगो अने हृद्रोगो नष्ट थई जाय छे.

काळीपाड, वंशलोचन, अतवस अने उत्तम हळदर एओने वाटी तेनो हाथीना मूत्रमां विधिप्रमाणे लेह पकावीने ते लेह चटाडवामां आवे तो तेथी कफजन्य अरोचक, गुल्म, श्वास, गळाना रोगो अने हृद्रोगो नष्ट थई जाय छे.

सूरजमुखी, आकडो, गळो अने कौचां ए-

ओने वांटी तेनो पाडाना मूत्रमां विधिप्रमाणे लेह पकावीने ते लेह चटाडवामां आवे तो तेथी सान्निपातिक अरोचक, गुल्म, श्वास, गळाना रोगो अने हृद्रोगो नष्ट थई जाय छे.

पोतपोताना देशनी रीतिथी बनावेलां तथा सात्म्य होय एवां विविध भक्ष्यो, पानको, मूळो, फळो, सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायना २२७ मा विषयमां कहेला रागखाडवो, विविध रसो अने हलकां रूक्ष तथा मनने आनंद आपे एवां भोजनो विविध प्रकारोथी गोठवीने देवामां आवे तो तेथी अरोचको टळी जाय छे.

अरोचको उपर निरूहबस्तिओनी, विरेचनोनी अने कोमळ शिरोविरेचनोनी पण विधिपूर्वक योजनाओ करवी. (जो के अरोचकमां निरूहबस्तिनो निषेध छे तो पण अहीं विधान कर्युं तेथी एम जणाय छे के अरोचकमां आरंभमां नहीं पण वमनादिक कराव्या पछी वायुनो अनुबंध जणाय तो निरूहबस्ति देवानी अनुज्ञा छे.)

अरोचको उपर मोहोडाने शुद्ध करवाने माटे सूंठ, मरी, पीपळ, हळदर, त्रिफळा, जवखार अने भोरींगणी एओनां चूर्णोथी गोठवेला योगो देवा अने बीजां पण कडवां तथा तीखां औषधो देवां.

मुस्तादिगण, आरग्वधादिगण अने दशमूळी एओना काथोथी, मधुरवर्गना विविध अवलेहोथी, तेमज चिकित्सास्थानना १० मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे गोळनो योग आपीने बनावेला अने मधना तथा मधथी बनावेला मद्यना जेवा गंधवाळा मूत्रासवोथी, अरिष्टोथी तथा क्षारासवोथी अरोचकोने नष्ट करवा.

९ स्यादेष एव कफवातहते विधिश्च
शान्ति गते हुतभुजि प्रशमाय तस्य ॥

अविपाकनुं लक्षण तथा चिकित्सा.

९ जठराग्नि कफथी तथा वायुथी हणाईने ठरी गयो होय तो खाधेलुं अन्न पचतुं नथी ए अविपाक केहेवाय छे. आ प्रमाणे अविपाक थयो होय तो पण वैद्ये उपर कहेली चिकित्साओज गोठववी.

१० इच्छाभिघातभयशोकहतेऽन्तरग्नौ
भावान्भवाय वितरेत्खलु शक्यरूपान् ।
अर्थेषु चाप्यपचितेषु पुनर्भवाय
पौराणिकैः श्रुतिपथैरनुमानयेत्तम् ॥
दैन्यं गते मनसि बोधनमत्र शस्तं
यद्यत्प्रियं तदुपसेव्यमरोचके तु ॥

चित्तविपर्ययजन्य अरोचकनी चिकित्सा.

१० इच्छेला पदार्थोनी प्राप्तिमां विघ्नो पडवाथी, भयथी के शोकादिकथी चिंता उत्पन्न थतां चित्त विह्वल थई जवाने लीधे जठराग्नि मंद थई जवाथी अरोचक उत्पन्न थयो होय तो जे पदार्थो मळी शके एवा होय ते पदार्थो देवा के जे देवाथी रुचि उत्पन्न थाय. घणा धनना के पुत्र वगेरेना विनाशथी अरोचक थयो होय तो पुराणोक्त तथा वेदोक्त आख्यानोना मार्गोथी रोगीने निश्चय कराववो के 'थएलो त्रोटो पण काळयोगने लीधे अमुक कारणोनी संपत्ति थतां नष्ट थई जाय छे.' रोगीनुं मन दीन थई गयुं होय तो वैराग्यने उत्पन्न करनारां वाक्योथी तथा ब्रह्मविद्याथी बोध करवो ए हितकारी छे. चित्तविपर्ययजन्य अरोचकने नष्ट करवानी सामान्य

१ केटलाएक एवुं व्याख्यान आपे छे के 'रागखाडव' ए शब्दथी यवानीखाडवचूर्ण समजवुं. अजमा, दाडिम, सूंठ, कोकम, अम्लवेतस अने सूकावेलो बोरनो गर्भ ए प्रत्येक पदार्थो छन्नु छन्नु चणोटीभार लेवा. मरी साठ चणोटीभार, पीपळ बसो चाळीस चणोटीभार अने तज, संचळ, धाणा तथा जीरूं एओ अडतालीश अडतालीश चणोटीभार लेवां. साकर चोवीश शाणभार लेवी. (चोवीश चणोटीभारनुं एक शाण थायछे.) ए सर्व पदार्थोने एकटा करी चूर्ण बनाववामां आवे ए यवानीखाडवचूर्ण केहेवाय छे.

रीति ए छे के रोगीने जे जे वस्तुओ प्रिय होय ते ते वस्तुओनुं सेवन करावबुं. (आ उपायोथी मन शांत थतां अग्नि प्रदीप्त थवाथी पोतानी मेळेज अन्न उपर रुचि उत्पन्न थायछे.)

अध्याय ५८ मो.

१ अथातो मूत्राघातप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मूत्राघातप्रतिषेध'[१] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वातकुण्डलिकाष्ठीला वातबस्तिस्तथैव च ।
मूत्रातीतः सजठरो मूत्रोत्सङ्गः क्षयस्तथा ॥
मूत्रग्रन्थिर्मूत्रशुक्रमुष्णवातस्तथैव च ।
मूत्रौकसादौ द्वौ चापि रोगा द्वादश कीर्त्तिताः ॥

'मूत्राघात' ए नामथी केहेवाता बार रोगो.

२ वातकुंडलिका, वाताष्ठीला, वातबस्ति, मूत्रातीत, मूत्रजठर, मूत्रोत्संग, मूत्रक्षय, मूत्रग्रंथि, मूत्रशुक्र, उष्णवात, पित्तकृत मूत्रौकसाद अने कफकृत मूत्रौकसाद ए बार रोगो 'मूत्राघात' ए नामथी ओळखाय छे.

३ रौक्ष्याद्वेगविघाताद्वा वायुर्बस्तौ सवेदनम् ॥
मूत्रं संगृह्य चरति विगुणः कुण्डलीकृतः ।
सृजेदल्पाल्पमथ वा सरुजस्कं शनैः शनैः ॥
वातकुण्डलिकां तां तु व्याधिं विद्यात्सुदारुणम् ।

वातकुंडलिकानां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

३ शरीरना रूक्षपणाथी अथवा मूत्र आदिना वेगोने रोकवाथी दुष्ट थएलो वायु कुंडलीवाळेला जेवो गोळ थई मूत्रने वींटी लई वेदना उत्पन्न करीने मूत्राशयमां फरे छे अने बंधाई गएलो होवाने लीधे तेमांज भम्या करे छे के जेथी थोडुं थोडुं अथवा पीडावाळुं मूत्र धीरे धीरे प्रवर्त्ते छे. आ महादारुण रोग वातकुंडलिका केहेवाय छे.

४ शकृन्मार्गस्य बस्तेश्च वायुरन्तरमाश्रितः ॥
अष्ठीलावद्घनं ग्रन्थिं करोत्यचलमुत्तमम् ।
विण्मूत्रानिलसङ्गश्च तत्राध्मानं च जायते ॥
वेदना जायते बस्तौ वाताष्ठीलेति तां विदुः ।

वाताष्ठीलानां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

४ विष्टानो मार्ग अने मूत्राशय एओना मध्यमां रहेलो वायु लाठ जेवी अचल अने प्रबल गांठने उत्पन्न करे छे. आ गांठ थतां विष्टा मूत्र तथा अधोवायु एओनी अटकायत थायछे, गुदा तथा मूत्राशय फूली जाय छे अने मूत्राशयमां वेदना थायछे. आ रोग वाताष्ठीला केहेवाय छे.

५ वेगं विधारयेद्यस्तु मूत्रस्याकुशलो नरः ॥
निरुणद्धि मुखं तस्य बस्तेर्बस्तिगतोऽनिलः ।
मूत्रसङ्गो भवेत्तेन बस्तिकुक्षिनिपीडितः ॥
वातबस्तिः स विज्ञेयो व्याधिः कृच्छ्रप्रसाधनः ।

वातबस्तिनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

५ जे मूर्ख माणस मूत्रना वेगने अटकावे छे तेना मूत्राशयमां रहेलो वायु मूत्राशयना मोहोडाने रोकी दे छे के जेथी मूत्रनो रोध थायछे अने मूत्राशयना मध्य भागमां वेदना थायछे. आ रोग वातबस्ति केहेवाय छे अने ते कष्टसाध्य छे.

६ सन्धार्य्य वेगं मूत्रस्य यो भूयः स्रष्टुमिच्छति ॥
तस्य नाभ्येति यदि वा कथञ्चित्संप्रवर्त्तते ।
प्रवाहतो मन्दरुजमल्पमल्पं पुनः पुनः ॥
मूत्रातीतं तु तं विद्यान्मूत्रवेगविघातजम् ।

मूत्रातीतनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

६ जे माणस प्रथम मूत्रना वेगने रोकी राखीने पछी मूत्रोत्सर्ग करवा इच्छे छे ते माणसने

१ बार प्रकारना मूत्राघातोनां निदानो, लक्षणो तथा चिकित्साओ एओनां निरूपण विषेनो.

मूत्र आवतुं नथी, आवे छे तो जोर करवाथी मांडमांड आवे छे अने ते पण मंद मंद वेदनावाळुं तथा वारंवार थोडुं थोडुं आवे छे. मूत्रना विघातने लीधे प्रकुपित थएला वायुथी थतो आ रोग मूत्रातीत केहेवाय छे.

७ मूत्रस्य विहते वेगे तदुदावर्त्तहेतुना ॥
अपानः कुपितो वायुरुदरं पूरयेद्भृशम् ।
नाभेरधस्तादाध्मानं जनयेत्तीव्रवेदनम् ॥
तं मूत्रजठरं विद्यादधोबस्तिनिरोधजम् ।

मूत्रजठरनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

७ मूत्रना वेगनो अटकाव करवामां आवतां मूत्रना ऊंचा भ्रमणने लीधे प्रकुपित थएलो अपानवायु उदरने अत्यंत पूरी दे छे अने तेने लीधे नाभिथी नीचेना भागमां तीव्र वेदनावाळुं आध्मान (फूलेलापणुं) करी दे छे के जेथी मूत्रनो तथा विष्टानो मार्ग रोकाई जाय छे. आ रोग मूत्रजठर केहेवाय छे.

८ बस्तौ वाप्यथ वा नाले मणौ वा यस्य देहिनः॥
मूत्रं प्रवृत्तं सज्येत सरक्तं वा प्रवाहतः ।
स्रवेच्छनैरल्पमल्पं सरुजं वाथ नीरुजम् ॥
विगुणानिलजो व्याधिर्मूत्रसङ्गः स संज्ञितः ।

मूत्रोत्संगनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

८ प्रवर्त्तेलुं मूत्र मूत्राशयमां, लिंगमां अथवा लिंगना टोचकामां रोकाई रहे अने जोरथी प्रवृत्ति करवा जतां लोहीवाळुं, वेदनावाळुं अथवा थोडी वेदनावाळुं अने थोडुं थोडुं धीरे धीरे स्रवे ए दुष्ट वायुथी थतो रोग मूत्रोत्संग केहेवाय छे.

९ रूक्षस्य क्लान्तदेहस्य बस्तिस्थौ पित्तमारुतौ ॥
सदाहवेदनं कृच्छ्रं कुर्यातां मूत्रसंक्षयम् ॥

मूत्रक्षयनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

९ जेनो देह रूक्ष थयो होय तथा ग्लानि पाम्यो होय एवा माणसनुं मूत्राशयमां रहेलुं पित्त अने मूत्राशयमां रहेलो वायु मूत्रनो क्षय करे छे के जे थतां दाह अने वेदना थाय छे. आ दुःखदायी रोग मूत्रक्षय केहेवाय छे.

१० अभ्यन्तरे बस्तिमुखे वृत्तोऽल्पः स्थिर एव च
वेदनावाननिस्यन्दी मूत्रमार्गनिरोधनः ॥
जायते सहसा यस्य ग्रन्थिरश्मरिलक्षणः ।
स मूत्रग्रन्थिरित्येवमुच्यते वेदनादिभिः ॥

मूत्रग्रंथिनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण

१० मूत्राशयना द्वारनी अंदर सहसा वर्त्तुल, नाहानो, अचल, वेदनावाळो, स्राव वगरनो, मूत्रनुं वहन करनारां स्रोतने रोकनारो अने वेदनादिकथी पथरीना जेवां लक्षणवाळो ग्रंथि उत्पन्न थायछे. ए रोग मूत्रग्रंथि केहेवाय छे. (पथरीमां अने मूत्रग्रंथिमां भेद ए छे के पथरी मूत्र आदिनो संचय थवाथी अनुक्रमे थायछे तथा पित्तना आधिक्यवाळी होय छे अने मूत्रग्रंथि सहसा थाय छे तथा लोहीना आधिक्यवाळो होय छे. भावप्रकाश.)

११ प्रत्युपस्थितमूत्रस्तु मैथुनं योऽभिनन्दति ।
तस्य मूत्रयुतं रेतः सहसा संप्रवर्त्तते ॥
पुरस्ताद्वापि मूत्रस्य पश्चाद्वापि कदाचन ।
भस्मोदकप्रतीकाशं मूत्रशुक्रं तदुच्यते ॥

मूत्रशुक्रनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

११ जे पुरुष मूत्रनी हाजत लाग्या छतां मूतर्‍या वगर मैथुन करे तेनुं स्थानथी भ्रष्ट थएलुं अने पछी वायुए ऊंचुं चडावेलुं वीर्य सहसा मूत्रनी साथे अथवा मूत्रथी पेहेलां अथवा कोई वखते मूत्र पछी प्रवर्त्ते छे अने ते भस्मवाळा जळ जेवुं होय छे. आ रोग मूत्रशुक्र केहेवाय छे.

१२ व्यायामाध्वातपैः पित्तं बस्तिं प्राप्यानिलावृतम् ।
बस्तिमेढ्रगुदं चैव प्रदहत् स्रावयेदधः ॥
मूत्रं हारिद्रमथवा सरक्तं रक्तमेव वा ।
कृच्छ्रात्प्रवर्त्तते जन्तोरुष्णवातं वदन्ति तम् ॥

उष्णवात (उनवा)नां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

१२ कसरत करवाथी, पंथ करवाथी अथवा त-

डवो लागवाथी प्रकुपित थई वायुथी आवृत थएलुं पित्त मूत्राशयमां, लिंगमां, योनिमां अने गुदामां दाह करतुं करतुं माणसने घणा कष्टथी वारंवार हळदर जेवा वर्णवाळा तथा कांइक रताश के रुधिरवाळा मूत्रनो स्राव करावे छे अथवा अत्यंत राता वर्णवाळा मूत्रनो के एकला लोहीनो स्राव करावे छे ए रोग उष्णवात केहेवाय छे.

१३ विशदं पीतकं मूत्रं सदाहं बहलं तथा ।
शुष्कं भवति यच्चापि रोचनाचूर्णसन्निभम् ॥
मूत्रौकसादं तं विद्याद्रोगं पित्तकृतं बुधः ।

पित्तकृत मूत्रौकसादनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

१३ माणस पित्तना प्रकोपने लीधे चीकाश-वगरनुं, पीळा वर्णवाळुं, बळतरावाळुं, घाटुं, अने तडका वगेरेथी सूकातां गोरोचनना चूर्ण जेवुं लागे एवुं मूतरे छे ए रोग पित्तकृत मूत्रौकसाद केहे-वाय छे.

१४ शुष्कं भवति यच्चापि शङ्खचूर्णप्रपाण्डुरम् ॥
पिच्छिलं संहतं श्वेतं तथा कृच्छ्रं प्रवर्त्तते ।
मूत्रौकसादं तं विद्यादामयं चापरं कफात् ॥

कफकृत मूत्रौकसादनां निदान, संप्राप्ति तथा लक्षण.

१४ माणस कफना प्रकोपने लीधे, सूकातां शंखना चूर्ण जेवुं सफेद लागे एवुं अथवा पडतां सफेदपणावाळुं, चीकाशवाळुं तथा घाटुं मूतरे अने वळी कष्टथी मूतरी शके ए रोग कफकृत मूत्रौकसाद केहेवाय छे.

१५कषायकल्कसर्पींषि भक्ष्यान् लेहान्पयांसि च
क्षारमध्वासवस्वेदान् बस्तींश्चोत्तरसंज्ञितान् ॥
विदध्यान्मतिमांस्तत्र विधिं चाश्मरिनाशनम् ।
मूत्रोदावर्तयोगांश्च कार्त्स्न्येनात्र प्रयोजयेत् ॥
कल्कमेर्वारुबीजानामक्षमात्रं ससैन्धवम् ।
धान्याम्लयुक्तं पीत्वैव मूत्रकृच्छ्रात्प्रमुच्यते ॥
सुरां सौवर्चलवतीं मूत्रकृच्छ्री पिबेन्नरः ।
मधु मांसोपदंशं वा पिबेद्वाप्यथ गौडिकम् ॥
पिबेत्कुङ्कुमकर्षं वा मधूदकसमायुतम् ।
रात्रिपर्युषितं प्रातस्तथा सुखमवाप्नुयात् ॥
दाडिमाम्लां युतां मुख्यामेलाजीरकनागरैः ।
पीत्वा सुरां सलवणां मूत्रकृच्छ्रात्प्रमुच्यते ॥
पृथक्पर्ण्यादिवर्गस्य मूलं गोक्षुरकस्य च ।
अर्द्धप्रस्थेन तोयस्य पचेत्क्षीरचतुर्गुणम् ॥
क्षीरावशिष्टं तच्छीतं सिताक्षौद्रयुतं पिबेत् ।
नरो मारुतपित्तोत्थमूत्राघातनिवारणम् ॥
निष्पीड्य वाससा सम्यग्वर्चो रासभवाजिनाम् ।
रसस्य कुडवं तस्य पिबेन्मूत्ररुजापहम् ॥
मुस्ताभयादेवदारुमूर्वाणां मधुकस्य च ।
पिबेदक्षसमं कल्कं द्राक्षाया जलसंयुतम् ॥
पिबेत्पर्युषितं वारि शीतं मूत्ररुजापहम् ।
निदिग्धिकायाः स्वरसं पिबेत्कुडवसंमितम्
मूत्रदोषहरं कल्कमथवा क्षौद्रसंयुतम् ।
प्रपीड्यामलकानां तु रसं कुडवसंमितम् ॥
पीत्वाऽगदी भवेज्जन्तुर्मूत्रदोषरुजातुरः ।
धात्रीफलरसेनैवं सूक्ष्मैलां वा पिबेन्नरः ॥
पिष्ट्वाथ वा सुशीतेन शालितण्डुलवारिणा ।
तालस्य तरुणं मूलं त्रपुसस्वरसं तथा ॥
श्वेतं कर्कटकं चैव प्रातस्तं पयसा पिबेत् ।
शृतं वा मधुरैः क्षीरं सर्पिर्मिश्रं पिबेन्नरः ॥
मूत्रदोषविशुद्ध्यर्थं शुक्रदोषहरं परम् ।
बलाश्वदंष्ट्राक्रौञ्चास्थिकोकिलाक्षकतण्डुलान् ॥
शतपर्वकमूलं च देवदारु सचित्रकम् ।
अक्षबीजं च सुरया कल्कीकृत्य पिबेन्नरः ॥
मूत्रदोषविशुद्ध्यर्थं तथैवाश्मरिशोधनम् ।
पाटलाक्षारमाहृत्य सप्तकृत्वः परिस्रुतम् ॥
पिबेन्मूत्रविकारघ्नं संसृष्टं तैलमात्रया ।
नलेक्षुदर्भाश्मभेदत्रपुसैर्वारुबीजकम् ॥
क्षीरं परिस्रुतं तत्र पिबेत्सर्पिःसमायुतम् ।
पाटल्या यावशूकाच्च पारिभद्रात्तिलादपि ॥
क्षारोदकेन मतिमांस्त्वगेलोषणचूर्णकम् ।
पिबेद्गुडेन मिश्रान्वा लिह्याल्लेहान् पृथक् पृथक् ॥
अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि मूत्रदोषे क्रमं हितम् ।

स्नेहस्वेदोपपन्नानां हितं तेषु विरेचनम् ।
ततः संशुद्धदेहानां हिताश्चोत्तरबस्तयः ॥
स्त्रीणामतिप्रसङ्गेन शोणितं यस्य सिच्यते ।
मैथुनोपरमस्तस्य बृंहणश्च विधिः स्मृतः ॥
ताम्रचूडवसा तैलं हितं चोत्तरबस्तिषु ।
विधानं तत्र पूर्वं हि व्यासतः परिकीर्तितम् ॥
क्षौद्रार्द्धभागं दत्वा तु भागौ तु क्षीरसर्पिषोः ।
स्वयंगुप्ताफलं चैव तथैवेक्षुरकस्य च ।
शर्करायाश्च चूर्णं तु द्राक्षाचूर्णं च तत्समम् ।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तमर्द्धभागं प्रदापयेत् ॥
एतदैकध्यमानीय खजेनाभिप्रमन्थयेत् ।
तस्य पाणितलं भागं लीढ्वा क्षीरं ततः पिबेत् ॥
एतं योगं प्रयुञ्जानः शुद्धदेहो नरः सदा ।
मूत्रदोषाञ्जयेत्सर्वानन्ययोगैः सुदुर्जयान् ॥
जयेच्छोणितदोषांश्च वन्ध्या गर्भं लभेत च ।
नारी चैतत्प्रयुञ्जाना योनिदोषात्प्रमुच्यते ॥
वला कोलास्थि मधुकं श्वदंष्ट्राथ शतावरी ।
मृणालं च कशेरुश्च बीजानि क्षुरकस्य च ॥
सहस्रवीर्यांशुमती पयस्या सह कालया ।
शृगालविन्नातिबला बृंहणीयो गणस्तथा ॥
एतानि समभागानि मतिमान् सह साधयेत् ।
चतुर्गुणेन पयसा गुडस्य तुलया सह ॥
द्रोणावशिष्टं तत्पूतं पचेत्तेन घृताढकम् ।
तत्सिद्धं कलशे स्थाप्यं क्षौद्रप्रस्थेन संयुतम् ।
सर्पिरेतत्प्रयुञ्जानो मूत्रदोषात्प्रमुच्यते ॥

मूत्राघातोनी चिकित्सा.

१९ बुद्धिमान् वैद्ये मूत्राघातो उपर क्वाथ आदि कषायोनी, कल्कोनी, घृतोनी, भक्ष्योनी, लेह्योनी, दूधोनी, क्षारोनी, मधथी बनावेला आसवोनी, उपनाह आदि स्वेदोनी अने उत्तरबस्तिओनी योग्य योजनाओ करवी. चिकित्सास्थानना ७ मा अध्यायमां पथरीने नष्ट करवानो जे विधि कह्यो छे तेनी पण उचित गोठवण करवी. आ उत्तरतंत्रना पंचावनमा अध्यायमां मूत्रना वेगना निरोधथी थएला उदावर्त्त उपर जे योगो कहेला छे तेओनी पण ते ते अवस्थाना अनुसारथी संपूर्ण योजनाओ करवी.

ऊनाळु काकडीनां बीजोनो सैंधवना संयोगवाळो एक तोलांभार कल्क कांजीनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

लोटनी मदिरा संचळथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

मांसना भक्षणनी साथे मधनुं अथवा गोळनुं मद्य पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

मधना संयोगवाळा पाणीमां एक तोलांभार केसर मेळवी दई रातवाशी राखीने प्रभातमां पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

लोटनी मदिराने दाडिमना रसथी खाटी करी, सैंधवनो सारी रीते योग आपी, एळची, जीरू अने सूंठ एओना सूक्ष्म चूर्णथी युक्त करीने पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

विदारिगंधादिवर्ग अने गोखरूनां मूळ एओनो कल्क चोगणा दूधवाळा बत्रीश तोलांभार पाणीमां पकावी सघळुं पाणी बळी जईने दूधज अवशेष रहे त्यारे ते दूध उतारी लई, थंडुं पाडी, साकरथी तथा मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी वायुना तथा पित्तना संबंधवाळा मूत्राघातो टळी जाय छे.

गधेडानां लींडांने तथा घोडानी लादने वस्त्रथी सारी पेठे नीचोवी तेनो सोळ तोलांभार रस पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

मोथ, हरडे, देवदार, मोरवेल अने जेठीमध एओनो एक तोलांभार कल्क द्राक्षना रसनी साथे पावामां आवे अथवा जळने अगाशीमां रातवाशी राखी ते थंडुं जळ प्रभातमां पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

भोरींगणीनो सोळ तोलांभार स्वरस अथवा कल्क मधथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

आमळांओने कचरी, वस्त्रथी नीचोवी तेनो मोऌ तोलांभार रस पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातनो रोगी आरोग्य पामे छे.

आमळांओना रसनी साथे झीणी एळचीनो कल्क अथवा चूर्ण पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

ताडना नवा मूळने वाटी चोखाना शीतल धोणनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

काकडीनो स्वरस अथवा सफेद काकडीनो कल्क प्रभातमां दूधनी साथे पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

मधुरगणनो कल्क नाखी पकावेलुं दूध घीथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे. आ प्रयोग मूत्रशुक्र नामना मूत्राघातने अत्यंत नष्ट करे छे.

बळदाणा, गोखरू, कुंझपक्षीनां हाडकांनुं चूर्ण, एखरो, चोखा, वांसनुं मूळ, देवदार, चित्रक अने बेहेडांनां मज्जा एओनो कल्क मदिरानी साथे पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे अने पथरी पण नष्ट थाय छे.

पाडळनी भस्मने वस्त्रमांथी सातवार स्रवावी ते क्षार थोडाक तैलथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

नाळी, शेलडी, दर्भ, पाषाणभेद, काकडी, ऊनाळु काकडी अने बीबलो एओना कल्कने दूधमां मेळवी ते दूध वस्त्रथी गाळी लई घीथी संयुक्त करीने पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

पाडल, जव, बकान अने तल एओनां काष्ठोना क्षारना पाणीनी साथे तज, एळची, सूंठ, मरी अने पीपळ एओनुं चूर्ण पावामां आवे तो तेथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

पाडळना काष्ठना, जवना काष्ठना, बकानना काष्ठना तथा तलना काष्ठना जूदा जूदा क्षारो लई गोळमां तेओने जूदा जूदा मिश्रित करी ए लेहो जूदा जूदा चटाडवामां आवे तो ए प्रत्येक प्रयोगथी मूत्राघातो नष्ट थाय छे. हवे मूत्राघातो उपर हित करनारो बीजो क्रम कहुं छुं.

मूत्रघातोना रोगीओने स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपीने विरेचन देवुं अने विरेचनथी शरीरशुद्धि थया पछी उत्तरबस्तिओ देवी ए हितकारी छे.

जेओने स्त्रीओना अत्यंत प्रसंगने लीधे मूत्रद्वारमांथी लोही पडतुं होय तेओने मैथुनथी अटकाववा अने मांसो, दूध तथा घी इत्यादिकनुं सेवन कराववुं तथा कूकडानी चरबीथी संयुक्त करेला तैलनी उत्तरबस्तिओ देवी ए हितकारी छे. उत्तरबस्तिनुं विधान चिकित्सास्थानना ३७ मा अध्यायमां विस्तारथी केहेवामां आव्युं छे. (आ चिकित्सा मूत्राघातनी नथी तोपण ग्रंथकारे प्रसंगने लीधे अहीं दाखल करी छे.)

अर्द्ध भाग मध, एक भाग दूध, एक भाग घी, एक भाग कौचानां फळ, एक भाग एखरो, एक भाग साकर, एक भाग सूकी द्राक्ष अने अर्द्ध भाग पीपळ एओने एकठां करी रवाईवते सारी पेठे मथीने तेमांथी नित्य एक तोलांभार चटाडवुं अने तेनी उपर दूध पावुं. संशोधनथी देहनी शुद्धि कर्या पछी आ प्रयोगनुं सेवन करावबामां आवे तो बीजा योगोथी कदी टळता न होय एवा पण सघळा मूत्राघातो टळी जाय छे. आ प्रयोगथी रुधिरना दोषो टळी जाय छे, वांझणी स्त्रीने गर्भप्राप्ति थायछे अने योनिना दोषवाळी स्त्री योनिदोषथी पण मुक्त थायछे.

बळदाणा, बोरनी मज्जा, जेठीमध, गोखरू, शतावरी, कमळनाळना तंतुओ, कसेरुकंद, एखरानां बीज, मोटी शतावरी, शालिपर्णी, खरणेर, पाडल, पृश्निपर्णी, खपाट अने काकोल्यादिगण ए प्रत्येकने समभागे लई चार द्रोणभार (एक हजार चोवीश तोलांभारनो एक द्रोण थायछे.) पाणीमां चारसो तोलांभार गोळनी साथे तेओनो

क्वाथ करवो. एक द्रोणभार पाणी अवशेष रहे त्यारे ते क्वाथने वस्त्रथी गाळी लई ते क्वाथमां बसो छप्पन्न तोलांभार घी पकाववुं. ए घी सिद्ध थई रहे त्यारे तेने चोसठ तोलांभार मधथी संयुक्त करीने कलशमां राखी मूकवुं. आ घीनो प्रयोग करवाथी मूत्राघातो टळी जाय छे.

अध्याय ५९ मो.

१ अथातो मूत्रदोषप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'मूत्रदोषप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ वातेन पित्तेन कफेन सर्वै-
स्तथाभिघातैः शकृदश्मरीभ्याम् ।
तथापरः शर्करया सुकष्टो
मूत्रोपघातः कथितोऽष्टमस्तु ॥

मूत्रकृच्छ्रनां निदानो, संख्या तथा सामान्य लक्षण.

२ वायुथी, पित्तथी, कफथी, त्रणे दोषोथी, अभिघातोथी, विष्टाथी, पथरीथी अने कांकरीथी मूत्रकृच्छ्र थायछे. वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सान्निपातिक, अभिघातजन्य, विष्टाजन्य, अश्मरीजन्य अने शर्कराजन्य ए रीते मूत्रकृच्छ्र रोग आठ प्रकारनो छे. अत्यंत कष्टथी मूतरी शकाय ए रोग मूत्रकृच्छ्र केहेवाय छे.

३ अल्पमल्पं समुत्पीड्य मुष्कमेहनबस्तिभिः ।
फलद्भिरिव कृच्छ्रेण वाताघातेन मेहति ॥

वातजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

३ जाणे वृषणो, लिंग तथा मूत्राशय फाटतां होय एवी पीडा थाय अने ए वृषणो वगेरेने दबावीने मांडमांड थोडुं थोडुं मूतरी शकाय, ए वातजन्य मूत्रकृच्छ्र गणाय छे.

४ हारिद्रमुष्णं रक्तं वा मुष्कमेहनबस्तिभिः ।
अग्निना दह्यमानाभैः पित्ताघातेन मेहति ॥

पित्तजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

४ जाणे वृषणो, लिंग तथा मूत्राशय अग्निथी बळी जतां होय एवी पीडा थाय अने कष्ट पामी हळदर जेवुं पीळुं, ऊनुं अथवा रातुं मूत्र उतरे ए पित्तजन्य मूत्रकृच्छ्र गणाय छे.

५ स्निग्धं शुक्लमनुष्णं च मुष्कमेहनबस्तिभिः ।
संहृष्टरोमा गुरुभिः श्लेष्माघातेन मेहति ॥

कफजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

५ वृषणो, लिंग अने मूत्राशय एओ भारे थई गयां होय, रुवाडां उभां थई जतां होय अने ऊनाश वगरनुं, स्निग्ध तथा सफेद मूत्र उतरतुं होय ए कफजन्य मूत्रकृच्छ्र केहेवाय छे.

६ दाहशीतरुजाविष्टो नानावर्णं मुहुर्मुहुः ।
ताम्यमानः सुकृच्छ्रेण सन्निपातेन मेहति ॥

सान्निपातिक मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

६ दाह थाय, टाढ वाय, वेदना अत्यंत थाय, ग्लानि थाय अने अत्यंत कष्टथी वारंवार अनेक वर्णोवाळुं मूत्र उतऱ्या करे ए सान्निपातिक (त्रणे दोषोथी थएलुं) मूत्रकृच्छ्र केहेवाय छे.

७ मूत्रवाहिषु शल्येन क्षतेष्वभिहतेषु वा ॥
स्रोतस्सु मूत्राघातस्तु जायते भृशवेदनः ।
वातबस्तेस्तु तुल्यानि तस्य लिङ्गानि लक्षयेत् ॥

अभिघातजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

७ मूत्रनुं वहन करनारां स्रोतो शल्यथी जखमी थतां अथवा अभिघात पामतां अत्यंत वेदनाथी मूतरी शकाय छे ए अभिघातजन्य मूत्रकृच्छ्र केहेवाय छे. आ मूत्रकृच्छ्रनां चिह्नो गया अध्यायना ५ मा विषयमां कहेलां वातबस्तिनां चिह्नो जेवां थायछे.

---

१ मूत्रकृच्छ्रनां निदानो, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्साओ एओना निरूपण विषेनो.

८ शकृतस्तु प्रतीघाताद्वायुर्विगुणतां गतः ।
आध्मानं च सशूलं च मूत्रसङ्गं करोति हि

विष्टाजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

८ विष्टानो प्रतिघात थतां दूषित थएलो वायु पेटमां आफराने अने मूत्रनी शूळवाळी अटकायतने उत्पन्न करे छे ए रोग विष्टाजन्य मूत्रकृच्छ्र केहेवाय छे.

९ अश्मरीहेतुकः पूर्वं मूत्रघात उदाहृतः ।

अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

९ अश्मरीथी (पथरीथी) जे मूत्रकृच्छ्र थाय छे तेनां लक्षणो निदानस्थानना त्रीजा अध्यायमां केहेवाई गयां छे.

१० अश्मरी शर्करा चैव तुल्ये सम्भवलक्षणैः॥
शर्करायां विशेषं तु शृणु कीर्त्तयतो मम ।
पच्यमानस्य पित्तेन भिद्यमानस्य वायुना ॥
श्लेष्मणोऽवयवा भिन्नाः शर्करा इति संज्ञिताः ।
हृत्पीडा वेपथुः शूलं कुक्षौ वह्निः सुदुर्बलः ॥
ताभिर्भवति मूर्छा च मूत्राघातश्च दारुणः ।
मूत्रवेगनिरस्तासु तासु शाम्यति वेदना ॥
यावदन्या पुनर्नैति गुटिका स्रोतसो मुखम् ।
शर्करासम्भवस्यैतन्मूत्राघातस्य लक्षणम् ॥
चिकित्सितमतस्तूर्ध्वमष्टानामपि वक्ष्यते ।

शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण.

१० अश्मरी (पथरी) अने शर्करा (कांकरी) एओ उत्पत्तिथी तथा लक्षणोथी तुल्य छे तेथी शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण अने अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण तुल्यज होय ए स्वाभाविक छे तो पण शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्रना लक्षणमां जे विशेष छे ते कहुं छुं. सांभळो. पित्ते पकावेला अने वायुए भेदेला कफना जे अवयवो जूदा जूदा थई गया होय तेओ शर्करा केहेवाय छे. ए शर्कराओथी हृदयमां पीडा थायछे, कंप थायछे, पेटमां शूळ थायछे, जठराग्नि अत्यंत नबळो थई जाय छे, मूर्छा आवे छे अने मूतरवामां अत्यंत दारुण कष्ट थायछे. मूत्रना वेगथी कांकरी नीकळी जाय अने बीजी कांकरी स्रोतना मुखमां न आवे त्यांसूधी वेदना शांत रेहे छे. ए शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्रनुं लक्षण समजवुं. हवे ए आठे मूत्रकृच्छ्रोनी चिकित्सा केहेवामां आवशे.

११ अश्मरीं च समाश्रित्य यदुक्तं प्रसमीक्ष्य तत्॥
यथादोषं प्रयुञ्जीत स्नेहादिकमपि क्रमम् ।
श्वदंष्ट्राश्मभिदौ कुम्भीं हपुषां कण्टकारिकाम् ।
बलां शतावरीं रास्नां वरुणं गिरिकर्णिकाम् ।
तथा विदारिगन्धादिं संहृत्य त्रैवृतं पचेत् ॥
तैलं घृतं वा तत् पेयं तेन वाप्यनुवासनम् ।
दद्यादुत्तरबस्तिं च वातकृच्छ्रोपशान्तये ॥
श्वदंष्ट्रास्वरसे तैलं सगुडक्षीरनागरम् ।
पक्त्वा तत्पूर्ववद्योज्यं तत्रानिलरुजापहम् ॥
तृणोत्पलादिकाकोलीन्यग्रोधादिगणे कृतम् ।
पीतं घृतं पित्तकृच्छ्रं नाशयेत् क्षिप्रमेव च ॥
दद्यादुत्तरबस्तिं च पित्तकृच्छ्रोपशान्तये ।
एभिरेव कृतः स्नेहस्त्रिविधेष्वेव बस्तिषु ॥
हितं विरेचनं चेक्षुक्षीरद्राक्षारसैर्युतम् ।
सुरसोषकमुस्तादिवरुणादौ च संस्कृतम् ॥
तैलं तथा यवाग्वश्च कफकृच्छ्रे प्रशस्यते ।
यथादोषोच्छ्रयं कुर्यादेतानेव च सर्वजे ॥
फल्गुवृश्चीकदर्भाश्मसारचूर्णं च वारिणा ।
सुरेक्षुरसदर्भाम्बुपीतं कृच्छ्ररुजापहम् ॥
तथाभिघातजे कुर्यात् सद्योव्रणचिकित्सितम् ।
मूत्रकृच्छ्रे शकृज्जाते कार्या वातहरी क्रिया ॥
स्वेदावगाहावभ्यङ्गा बस्तिचूर्णक्रियास्तथा ।
सकृच्छ्रौ द्वौ तथान्यौ यौ तयोः प्रोक्तः क्रियाविधिः

मूत्रकृच्छ्रोनी चिकित्सा.

११ मूत्रकृच्छ्र थएल होय तो चिकित्सास्थानना ७ मा अध्यायमां अश्मरीनी चिकित्साओ कहेली छे तेओने जोई दोषना अनुसारथी तेओमांनी योग्य चिकित्सा करवी अने स्नेहन आदि क्रम पण करवो.

गोखरू, पाषाणभेद, पाडल, हपुषा, भोरींगणी, बलदाणा, शतावरी, रास्ना, वायवरणो, गरणी अने विदारिगंधादिगण एओने एकठां करी तेना क्राथथी तथा कल्कथी चरबीनी तथा मज्जानी साथे तैल अथवा घी पकाववुं. आ तैल अथवा घी पावामां आवे अने तेनीज अनुवासनबस्ति तथा उत्तरबस्ति आपवामां आवे तो तेथी वातजन्य मूत्रकृच्छ्र शांत थई जाय छे.

गोखरूनो स्वरस अने दूध एओने एकठां करी तेमां गोळ अने सूंठ एओनो कल्क नाखी तैल पकाववुं. आ तैलनी पावामां, अनुवासनबस्तिमां तथा उत्तरबस्तिमां योजना करवामां आवे तो तेथी वातजन्य मूत्रकृच्छ्र शांत थई जाय छे.

तृणपंचमूली, उत्पलादिगण, काकोल्यादिगण अने न्यग्रोधादिगण एओना क्राथमां तथा कल्कमां घी पकावी ते घी पावामां आवे तो तेथी पित्तजन्य मूत्रकृच्छ्र तुरतज शांत थई जाय छे.

उपर कहेला स्नेहथी उत्तरबस्ति देवामां आवे तो तेथी पित्तजन्य मूत्रकृच्छ्र शांत थई जाय छे.

उपर कहेलां तृणपंचमूली वगेरे द्रव्योथी स्नेह पकावी ते स्नेहथी आस्थापनबस्ति, अनुवासनबस्ति तथा उत्तरबस्ति देवी अने शेलडीनो रस, दूध तथा द्राक्षनो रस एओथी युक्त करेलुं विरेचन देवुं ए पित्तजन्य मूत्रकृच्छ्र उपर हितकारी थायछे.

सुरसादिगण, ऊषकादिगण, मुस्तादिगण अने वरुणादिगण एओथी पकावेलुं तैल अने एओथीज पकावेली यवागूओ कफजन्य मूत्रकृच्छ्रने शांत करे छे.

सान्निपातिक मूत्रकृच्छ्र थएल होय तो तेमां जे दोषनुं आधिक्य जणाय ते दोषने माटे खास चिकित्सा करवी अथवा उपर कहेली सघळी चिकित्साओने मिश्रित करीने तेनी योजना करवी.

काळो ऊंबरो, धोळी साटोडी, दर्भ अने कोदुं एओनुं चूर्ण जळनी साथे पावामां आवे अथवा दोषना आधिक्यप्रमाणे मदिरानी साथे, शेलडीना रसनी साथे के दर्भना जळनी साथे पावामां आवे तो तेथी सान्निपातिक मूत्रकृच्छ्र शांत थई जाय छे.

अभिघातजन्य मूत्रकृच्छ्र थयुं होय तो वातजन्य मूत्रकृच्छ्रनी जे चिकित्सा उपर केहेवामां आवी छे ते करवी अने चिकित्सास्थानना बीजा अध्यायमां सद्योव्रणनी जे चिकित्साओ केहेवामां आवी छे तेओमांथी पण योग्य चिकित्सा करवी.

विष्टाजन्य मूत्रकृच्छ्र थयुं होय तो वायुनुं हरण करनारी चिकित्सा करवी एटले चिकित्सास्थानना वातव्याधिना विषयमां कहेलां स्वेदनो, अवगाहनो, अभ्यंगो, बस्तिओ तथा चूर्णो एओनी योजनाओ करवी.

अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र के शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्र थएल होय तो चिकित्सास्थानना ७ मा अध्यायमां कहेली क्रियाओ करवी.

कायचिकित्सातंत्र समाप्त

भूतविद्यातंत्र[1].

अध्याय ६० मो.

१ अथातोऽमानुषप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अमानुषप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ निशाचरेभ्यो रक्ष्यस्तु नित्यमेव क्षतातुरः । इति यत्प्रागभिहितं विस्तरस्तस्य वक्ष्यते ॥

२ वळगनारा गणो, ते ते वळगाडोनां चिह्नो अने वळगाडोनी चिकित्साओ एओना निरूपण विषयनो.

[1] अहींथी त्रण अध्यायसुधीनो ग्रंथ भूतविद्यातंत्र केहेवाय छे. सूत्रस्थानना पेहेला अध्यायनो ७ मो तथा त्रीजा अध्यायनो ८ मो विषय वांचो.

आ अध्यायनो उद्देश.

२ सूत्रस्थानना व्रणितोपासनीय नामना १९ मा अध्यायना छठ्ठा विषयमां 'क्षतथी (व्रणथी) आतुर थएला माणसनो वैद्ये राक्षसोथी (हिंसक देवगणोथी) सर्वदा बचाव करवो' एम जे केहेवामां आव्युं छे तेनो विस्तार एटले ए हिंसक गणो केवा होय छे, तेओना वळगाडनां चिह्नो केवां थायछे अने ते ते वळगाडोनी चिकित्साओ केवी रीते करवी इत्यादि सघळुं आ अध्यायमां केहेवामां आवशे.

३ गुह्यानागतविज्ञानमनवस्थाऽसहिष्णुता ।
क्रिया वाऽमानुषी यस्मिन्स ग्रहः परिकीर्त्यते॥

ग्रहनुं (आतुरने वळगनारानुं) सामान्य लक्षण.

३ गुप्त वातनुं तथा भविष्यनुं ज्ञान, अनवस्थितपणुं, क्रोधयुक्तपणुं अने वरदानादिक अथवा अद्भुत रीते ठेंकवा, कूदवा आदि अमानुषक्रिया (माणसोनी न बनी शके एवी क्रिया) जेमां होय ते ग्रह केहेवाय छे. (जेने कोई ग्रह वळगेल होय ते आतुरमां पण ए लक्षणो थायछे के जे उपरथी वळगाड थयो केहेवाय छे.)

४ अशुचिं भिन्नमर्यादं क्षतं वा यदि वाऽक्षतम्।
हिंस्युर्हिंसाविहारार्थं सत्कारार्थमथापि च ॥

ग्रहो शा माटे वळगे छे अने कोने वळगे छे?

४ जेने क्षत (जखम के व्रण) थएल होय ते माणस अथवा क्षत थयावगरनो माणस पण जो अशुचि होय तथा शास्त्रोक्त विधिनुं उल्लंघन करनारो होय तेने ग्रहो हिंसारूपी पोताना विहारने माटे अथवा ते माणसनी पासेथी पूजा लेवाने माटे वळगीने पीडे छे.

५ असङ्ख्येया ग्रहगणा ग्रहाधिपतिभिस्तु ये ।
व्यज्यन्ते विविधाकारा भिद्यन्ते ते तथाष्टधा ॥

ग्रहो कोण छे अने तेओनी जातिओ केटली छे?

५ ग्रहो असंख्यात छे अने तेओना आकारो पण विविध प्रकारना छे. ए ग्रहो पोतपोताना स्वामीओनां नामोथी तथा स्वामीओनां लक्षणोथी ओळखाय छे. एओ जेओना अनुचरो होय छे तेओनी आठ जातिओ छे माटे आठ जातना गणाय छे.

६ देवास्तथा शत्रुगणाश्च तेषां
गन्धर्वयक्षाः पितरो भुजङ्गाः ।
रक्षांसि या चापि पिशाचजाति-
रेषोऽष्टधा देवगणो ग्रहाख्यः ॥

ग्रहोनी आठ जातिओनां नामो.

६ ग्रह केहेवाता देवगणोनी, देव, दैत्य, गंधर्व, यक्ष, पितृ, नाग, राक्षस अने पिशाच ए नामनी आठ जातो छे. (देवताओना अनुचरो 'देव' ए नामथी, दैत्योना अनुचरो 'दैत्य' ए नामथी; गंधर्वोना अनुचरो 'गंधर्व' ए नामथी, यक्षोना अनुचरो 'यक्ष' ए नामथी, पितृओना अनुचरो 'पितृ' ए नामथी, नागोना अनुचरो 'नाग' ए नामथी, राक्षसोना अनुचरो 'राक्षस' ए नामथी अने पिशाचोना अनुचरो 'पिशाच' ए नामथी ओळखाय छे.)

७ संतुष्टः शुचिरपि चेष्टगन्धमाल्यो
निस्तन्द्रो ह्यवितथसंस्कृतप्रभाषी ।
तेजस्वी स्थिरनयनो वरप्रदाता
ब्रह्मण्यो भवति च यः स देवजुष्टः ॥

देवग्रहना वळगाडवाळानुं लक्षण.

७ जेना शरीरमां देवग्रहनो आवेश थयो होय ते माणस संतोषी थायछे, पवित्र रेहे छे, सुगंधो उपर तथा पुष्पो उपर प्रेम राखे छे, आलस्यवगरनो थायछे, साचुं बोले छे, संस्कृत भाषाथी बोले छे, तेजस्वी थायछे, निमेषवगरनां नेत्रोवाळो थायछे, वरदान आपे छे अने ब्राह्मणो उपर तथा वेद उपर श्रद्धा राखे छे.

८ संस्वेदी द्विजगुरुदेवदोषवक्ता
जिह्माक्षो विगतभयो विमार्गदृष्टिः ।
संतुष्टो भवति न चान्नपानजातै-
र्दुष्टात्मा भवति च देवशत्रुजुष्टः ॥

दैत्यग्रहना वळगाडवाळानुं लक्षण.

८ जेना शरीरमां दैत्यग्रहनो आवेश थयो होय ते माणस पसीनावाळो थायछे, ब्राह्मणोनी गुरुओनी तथा देवताओनी निंदा करे छे, वांकी आंखोवाळो थायछे, कोईथी बीतो नथी, आडा मार्ग पर दृष्टि राखे छे, अन्नपान आदिथी संतुष्ट थतो नथी अने दुष्ट चित्तवाळो थाय छे.

९ हृष्टात्मा पुलिनवनान्तरोपसेवी
स्वाचारः प्रियपरिगीतगन्धमाल्यः ।
नृत्यन् वा प्रहसति चारु चाल्पशब्दं
गन्धर्वग्रहपरिपीडितो मनुष्यः ॥

गंधर्वग्रहना वळगाडवाळानु लक्षण.

९ जेना शरीरमां गंधर्वग्रहनो आवेश थयो होय ते माणस प्रसन्न अंतःकरणवाळो रेहे छे, जलाशयोना तटोनुं तथा बगीचाओनुं सेवन करे छे, सारा आचारवाळो होय छे, गायनो सुगंधो तथा पुष्पो एओनी उपर प्रेम राखे छे, वखतपर नाचे छे अने थोडो शब्द थाय एवी रीते सुंदर हास्य करे छे.

१० ताम्राक्षः प्रियतनुरक्तवस्त्रधारी
गम्भीरो द्रुतमतिरल्पवाक्सहिष्णुः ।
तेजस्वी वदति च किं ददामि कस्मै
यो यक्षग्रहपरिपीडितो मनुष्यः ॥

यक्षग्रहना वळगाडवाळानुं लक्षण.

१० जेना शरीरमां यक्षग्रहनो आवेश थयो होय ते माणस राती आंखोवाळो थायछे, प्यारां झीणां तथा रंगेलां वस्त्रोनुं धारण करे छे, गंभीर होय छे, उद्भ्रांत चित्तवाळो होय छे, थोडुं बोले छे, सहन करनार थायछे, तेजस्वी थायछे अने 'कोने शुं आपुं?' एम बोले छे.

११ प्रेतेभ्यो विसृजति संस्तरेषु पिण्डा-
ञ्शान्तात्मा जलमपि चापसव्यवस्त्रः ।
मांसेप्सुस्तिलगुडपायसाभिकाम-
स्तद्भक्तो भवति पितृग्रहाभिभूतः ॥

पितृग्रहना वळगाडवाळानुं लक्षण.

११ जेना शरीरमां पितृग्रहनो आवेश थयो होय ते माणस जनोई वगेरेने अपसव्य राखी दर्भ पाथरीने तेओ उपर पूर्वजोने पिंडदान तथा जलदान आपे छे, मांस तल गोळ तथा दूधपाक खावानी इच्छा राखे छे अने पूर्वजोनी भक्ति करे छे.

१२ भूमौ यः प्रसरति सर्पवत्कदाचित्
सृक्किण्यौ विलिहति जिह्वया प्रसक्तम् ।
क्रोधालुर्गुडमधुदुग्धपायसेप्सु-
र्विज्ञेयो भवति भुजङ्गमेन जुष्टः ॥

नागना वळगाडवाळानुं लक्षण.

१२ जेना शरीरमां नागनो आवेश थयो होय ते माणस कोई समये सर्पनी पेठे छाती घसेडीने चाले छे, सर्पनी पेठेज जीभवते वारंवार होठना छेडा चाटे छे, वधारे क्रोधवाळो होय छे अने गोळ, मध, दूध तथा दूधपाक एओनी इच्छा करे छे.

१३ मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सु-
र्निर्लज्जो भृशमतिनिष्ठुरोऽतिशूरः ।
क्रोधालुर्विपुलबलो निशाविहारी
शौचद्विड् भवति च रक्षसा गृहीतः ॥

राक्षसग्रहना वळगाडवाळानुं लक्षण.

१३ जेना शरीरमां राक्षसग्रहनो आवेश थयो होय ते माणस मांसने लोहीने तथा अनेक प्रकारना मद्यना विकारोने इच्छे छे, अत्यंत निर्लज्ज थायछे, अत्यंत निर्दय तथा कठोर थायछे, अत्यंत शूर थायछे, क्रोधी थायछे, घणा बळवाळो थाय छे, राते फर्या करे छे अने पवित्रतानो द्वेष करे छे.

१४ उद्ध्वस्तः कृशपरुषश्चिरप्रलापी
दुर्गन्धो भृशमशुचिस्तथातिलोलः ।

बह्वाशी विजनहिमाम्बुरात्रिसेवी
व्याचेष्टन्भ्रमति रुदन्पिशाचजुष्टः ॥

पिशाचग्रहना वळगाडवाळानुं लक्षण.

१४ जेना शरीरमां पिशाचग्रहनो आवेश थयो होय ते माणस विकृत देखाववाळो थायछे, कृश थायछे, कर्कश थायछे, लांबी वार सूधी प्रलाप कर्या करे छे, दुर्गंधवाळो थाय छे, अत्यंत अपवित्र थायछे, अत्यंत चपल थायछे, झाझुं खाय छे, निर्जनस्थलोनुं तथा शीतल जळनुं सेवन करे छे, रातनो फर्या करे छे अने विकृत चेष्टाओ करतो करतो भमे छे तथा रुवे छे.

१५ स्थूलाक्षस्त्वरितगतिः स्वफेनलेही
निद्रालुः पतति च कम्पते च योऽति ।
यश्चाद्रिद्विरदनगादिविच्युतः सन्
संसृष्टो न भवति वार्द्धकेन जुष्टः ॥

वळगाडना असाध्यपणानुं लक्षण.

१५ जो आंखो स्थूल थई होय, चाल उतावळी थई गई होय, पोताना फीणने पोते चाटतो होय, निद्रा बहु आवती होय, पडी जतो होय, अत्यंत ध्रूजतो होय, पर्वतथी, हाथीथी के झाड वगेरेथी पडतां वळगाड थयो होय अथवा वृद्ध अवस्थामां वळगाड थयो होय तो वळगाडवाळो माणस नष्ट थई जाय छे.

१६ देवग्रहाः पौर्णमास्यामसुराः सन्ध्ययोरपि ।
गन्धर्वाः प्रायशोऽष्टम्यां यक्षाश्च प्रतिपद्यथ ॥
कृष्णपक्षे च पितरः पञ्चम्यामपि चोरगाः ।
रक्षांसि निशि पैशाचाश्चतुर्दश्यां विशन्ति च ॥

जूदा जूदा ग्रहोनो वळगाड थवाना जूदा जूदा समयो.

१६ घणुं करी देवग्रहो पुनेमने दिवसे, दैत्यग्रहो बन्ने संध्याकाळमां, गंधर्वो आठमने दिवसे, यक्षो प्रतिपदाने दिवसे, पितृओ अमावास्याने दिवसे, नागो पांचमने दिवसे, राक्षसो राते अने पिशाचो चौदशने दिवसे वळगे छे. (वखतपर नागो अमावास्याने दिवसे अने गंधर्वो संध्याकाळमां पण वळगे छे.)

१७ दर्पणादीन्यथा छाया शीतोष्णं प्राणिनो यथा ।
स्वमणिं भास्करार्चिश्च यथा देहं च देहभृत् ॥
विशन्ति च न दृश्यन्ते ग्रहास्तद्वच्छरीरिणम् ।

ग्रहो माणसोनां शरीरोमां पेसता देखाता नथी तेमां दृष्टांत.

१७ जेम दर्पणमां अथवा जळ के तेल आदि द्रव पदार्थोमां प्रतिबिंब प्रवेश करे छे पण प्रवेश करतुं देखातुं नथी, जेम टाढ तथा गरमी माणसोनां शरीरोमां पेसे छे पण प्रवेश करती देखाती नथी, जेम सूर्यनी प्रभा आगीया नामना काचमां प्रवेश करे छे पण प्रवेश करती देखाती नथी अने जेम जीव शरीरमां प्रवेश करे छे पण प्रवेश करतो देखातो नथी तेम ग्रहो माणसोनां शरीरोमां प्रवेश करे छे पण प्रवेश करता देखाता नथी.

१८ तपांसि तीव्राणि तथैव दानं
व्रतानि धर्मो नियमश्च सत्यम् ।
गुणास्तथाष्टावपि तेषु नित्या-
व्यस्ताः समस्ताश्च यथाप्रभावम् ॥
न ते मनुष्यैः सह संवसंति
न वा मनुष्यान्क्वचिदाविशन्ति ।
ये वा विशन्तीति वदन्ति मोहा-
त्ते भूतविद्याविषयादपोह्याः ॥
तेषां ग्रहाणां परिचारका ये
कोटीसहस्रायुतपद्मसंख्याः ।
असृग्वसामांसभुजः सुभीमा
निशाविहाराश्च तमाविशन्ति ॥

देव आदि लोको माणसोने वळगता नथी पण तेओना अनुचरो वळगे छे.

१८ देवो, दैत्यो, गंधर्वो, यक्षो, पितृओ, नागो, राक्षसो अने पिशाचो एओमां तीव्र तप,

दान, व्रतो, धर्म, नियम, सत्य अने आठ सि-द्धिओ एओ ते ते देव वगेरेना प्रभावप्रमाणे कोईमां थोडां घणां अने कोईमां सघळां होयज छे तेथी ते देव वगेरे लोको कदी माणसोनी साथे रेहेता नथी अने माणसोनां शरीरोमां प्रवेश पण करता नथी. जेओ अज्ञानथी केहे छे के 'देव वगेरे लोको माणसोनां शरीरोमां प्रवेश करे छे' तेओने भूतविद्याना विषयथी बहिष्कृतज समजवा. ए देव वगेरे लोकोना हजारो, दश हजारो, करोडो अने पद्मोरूपी संख्यावाळा परि-चारकोमां जेओ लोहीनुं, चरबीनुं तथा मांसनुं भक्षण करनारा, अत्यंत भयंकर अने रात्रिमां विहार करनारा छे तेओज माणसोनां शरीरोमां प्रवेश करे छे.

१९ निशाचराणां तेषां हि ये देवगणसंश्रिताः ।
ते तु तत्सत्वसंसर्गाद्विज्ञेयास्तु तदञ्जनाः ॥
देवग्रहा इति पुनः प्रोच्यन्ते शुचयश्च ये ।
देववच्च नमस्यन्ते प्रत्यर्थ्यन्ते च देववत् ॥
स्वामिशीलक्रियाचाराः क्रम एष सुरादिषु ।
नैर्ऋतेया दुहितरस्तासां स प्रसवः स्मृतः ॥
सत्यत्वादपवृत्तेषु वृत्तिस्तेषां ग्रहैः कृता ।
हिंसाविहारा ये केचिद्दिव्यं भावमुपाश्रिताः ॥
भूतानीति कृता संज्ञा तेषां संज्ञा प्रवक्तृभिः ।

ग्रहो देव वगेरेना अनुचरो छतां समय पर माणसोने वळगवारूपी नीच कृत्य करे छे तेनुं कारण.

१९ जे जे ग्रहो जे जे देव आदि स्वामीओना अनुचरो होय छे ते ते ग्रहो ते ते स्वामीओना प्रभावना संसर्गने लीधे स्वामीओना जेवांज चि-ह्नोवाळा होय छे, देवग्रह आदि नामोथी ओळ-खाय छे, पवित्र होय छे, स्वामीओनी पेठेज नमाय छे, स्वामीओना जेवाज स्वभावोवाळा होय छे, स्वामीओना जेवांज क्रियाओवाळा होय छे, स्वामीओनां जेवांज आचरणोवाळा होय छे, स्वामीओनी पेठेज पूजाय छे अने स्वामीओनी पेठेज तेओनी मानताओ करवामां आवे छे. जो के ए ग्रहोनी पद्धति आ प्रमाणे छे तो पण तेओ नैर्ऋतनी पुत्रीओना पुत्रो छे तेथी तेओमां केट-लाएक हिंसामां तथा बलात्कारथी पूजा लेवामां रुचि धरावनारा छे. स्वामीओए पोताना अनु चरोमां जेओ पूजाना लालचु अने हिंसाने वि-हाररूप समजनारा जणाया तेओनी आजीविका शास्त्रोक्त पद्धतिथी विपरीत रीते चालनारां मा-णसोनी उपर ठरावी आपी छे के जेथी तेओ तेवां माणसोने वळगे छे. आप्रमाणे दिव्य भाव-वाळा छतां जेओ हिंसाने एक जातना विहाररूप समजनारा के पूजा लेवाना लालचु छे तेओने आयुर्वेदना आचार्योए 'भूत' ए नाम आपेलुं छे.

२० ग्रहसंज्ञानि भूतानि यस्माद्वेत्त्यनया भिषक् ॥
विद्यया भूतविद्यात्वमत एव निरुच्यते ।

आ तंत्रनुं 'भूतविद्यातंत्र' ए नाम होवानुं कारण.

२० ए भूतो के जेओ ग्रहो पण केहेवाय छे तेओना वळगाडनुं ज्ञान तथा चिकित्सा आ तंत्रथी वैद्यना जाणवामां आवे छे एटला माटे आ तंत्र 'भूतविद्या' ए नामथी केहेवाय छे.

२१ तेषां शान्त्यर्थमन्विच्छन्वैद्यस्तु सुसमाहितः
जप्यैः सनियमैर्होमैरारभेत चिकित्सितुम् ।
रक्तानि गन्धमाल्यानि बीजानि मधुसर्पिषाम् ॥
भक्ष्याश्च सर्वे सर्वेषां सामान्यो विधिरुच्यते ।
वस्त्राणि मद्यमांसानि क्षीराणि रुधिराणि च ॥
यानि येषां यथेष्टानि तानि तेभ्यः प्रदापयेत् ।
हिनस्ति मनुजान् येषु प्रायशो दिवसेषु तु ॥
दिनेषु तेषु देयानि तद्भूतविनिवृत्तये ।
देवग्रहे देवगृहे हुत्वाग्निं प्रापयेद्बलिम् ॥
कुशस्वस्तिकपूपाज्यच्छत्रपायससंभृतम् ।
असुराय यथाकालं विदध्याच्चत्वरादिषु ॥

गंधर्वाय विदध्याच्च मद्यं मांसासृगु जांगलम् ।
तथा यक्षस्य तु गृहे कुल्माषासृक्सुरादिभिः ।
अतिमुक्तककुंदाद्यैः पुष्पैश्च वितरेद्बलिम् ।
नद्यां पितृग्रहायेष्टं कुशास्तरणभूषितम् ॥
दद्याद् बलिं मांसतिलगुडपायसकादिभिः ।
नद्यामेव च नागाय सगुडासवपायसम् ॥
चतुष्पथे राक्षसस्य भीमेषु गहनेषु वा ।
शून्यागारे पिशाचस्य तीव्रं बलिमुपाहरेत् ॥
पूर्वमाचरितैर्मन्त्रैर्भूतविद्यादिदर्शितैः ।
न शक्या बलिभिर्जेतुं योगैस्तान् समुपाचरेत् ।
अजर्क्षचर्मरोमाणि शल्यकोलूकयोस्तथा ॥
हिङ्गु मूत्रं च बस्तस्य धूममस्य प्रयोजयेत् ।
एतेन शाम्यति क्षिप्रं बलवानपि यो ग्रहः ॥
गजाह्वपिप्पलीमूलव्योषामलकसर्षपान् ।
गोधानकुलमार्जारऋक्षपित्तप्रभावितान् ॥
नस्याभ्यञ्जनसेकेषु विदध्याद्योगतत्ववित् ॥
खराश्वाश्वतरोलूककरभश्वशृगालजम् ।
पुरीषं गृध्रकाकानां वराहस्य च पेषयेत् ।
बस्तमूत्रेण तत्सिद्धं तैलं स्यात्पूर्ववद्धितम् ॥
शिरीषबीजं लशुनं शुण्ठीं सिद्धार्थकं वचाम् ।
मञ्जिष्ठां रजनीं कृष्णां बस्तमूत्रेण पेषयेत् ॥
वर्तीश्छायाविशुष्कास्ताः सपित्ता नयनाञ्जनम् ।
नक्तमालफलं व्योषं मूलं श्योनाकबिल्वयोः ॥
हरिद्रे च कृता वर्त्तिः पूर्ववन्नयनाञ्जनम् ।
ये ये ग्रहा न सिध्यन्ति सर्वेषां नयनाञ्जनम् ॥
सैन्धवं कटुकं हिङ्गु वयस्थां च वचामपि ।
बस्तमूत्रेण तत्पिष्टं मत्स्यपित्तेन पूर्ववत् ॥
पुराणसर्पिर्लशुनं हिङ्गु सिद्धार्थका वचा ।
गोलोमी चाजलोमी च भूतकेशी जटा तथा ॥
कुक्कुटी सर्पगन्धा च तथा काणाविषाणिके ।
ऋष्यप्रोक्ता वयस्था च शृङ्गी मोहनवल्लिका ॥
अर्कमूलं त्रिकटुकं लता स्रोतोञ्जनाञ्जनं ।
नैपाली हरितालं च रक्षोघ्ना ये च कीर्त्तिताः ॥
सिंहव्याघ्रर्क्षमार्जारद्वीपिवाजिगवां तथा ।
श्वाविच्छल्यकगोधानामुष्ट्रस्य नकुलस्य च ॥
विट्त्वग्रोमवसामूत्ररक्तपित्तनखादयः ।
अस्मिन्वर्गे भिषक्कुर्यात्तैलानि च घृतानि च ॥
पानाभ्याञ्जननस्येषु तानि योज्यानि जानता ।
अवपीडेऽञ्जने चैव विदध्याद्गुटिकीकृतम् ॥
विदधीत परीषेके क्वथितं चूर्णितं तथा ।
उद्धूलने श्लक्ष्णपिष्टं प्रदेहे चावचारयेत् ॥
एष सर्वविकारांस्तु मानसानपराजितः ।
हन्यादल्पेन कालेन स्नेहादिरपि च क्रमात् ॥
नचायुक्तं प्रयुञ्जीत प्रयोगं देवताग्रहे ।
ऋते पिशाचादन्येषु प्रतिकूलं न चाचरेत् ॥
वैद्यातुरौ निहन्युस्ते ध्रुवं क्रुद्धा महौजसः ।
हिताहितविधानं च नित्यमेव समाचरेत् ॥
ततः प्राप्स्यति सिद्धिं च यशश्च विपुलं भिषक्

ग्रहोना अथवा भूतोना वळगाडोनी चिकित्सा.

२१ ग्रहोना वळगाडोनी शांति करवानी इच्छा धरावनारा वैद्ये सारी पेठे सावधान रही जपोथी, नियमोथी तथा होमोथी ते वळगाडोनी चिकित्सा करवानो आरंभ करवो. सर्व ग्रहोने सघळां रातां सुगंध द्रव्योनुं, रातां पुष्पोनुं, रातां धान्योनुं अने मद्यथी तथा घीथी संयुक्त करेलां भक्ष्योनुं अर्पण करवुं. जे ग्रहोने जे वस्त्रो, मद्यो, मांसो, दूधो अने रुधिरो, जेवी गोठवणथी प्रिय होय ते ग्रहोने ते वस्त्रादिक पदार्थो तेवी गोठवणथी अर्पण कराववा. ग्रहो घणुं करीने जे दिवसोमां माणसोने वळगीने पीडे छे ते दिवसोमां ए वस्त्रादिक पदार्थोनुं अर्पण कराववुं के जेथी ते ग्रहोनी निवृत्ति थाय. आ सामान्य विधि छे.

देवग्रहनो वळगाड थयो होय तो देवमंदिरनी अंदर अग्निमां होम करी दर्भ, साथीया जेवा आकारवाळां पक्वान्न, पुडला, घी, छत्र तथा दूधपाक एओथी संयुक्त बलि देवो.

दैत्यग्रहनो वळगाड थयो होय तो संध्याकाळे चौटा वगेरेमां उपर कहेलो सामान्य बलि देवो.

गंधर्वग्रहनो वळगाड थयो होय तो चौटा वगेरेमां मद्य अने जांगलप्राणीओना मांसनो रस एओथी संयुक्त बलि देवो.

यक्षग्रहनो वळगाड थयो होय तो तेने तुष्ट करवा माटे धान्योनी घूघरी, रुधिर, मद्य अने मधुमाधवीनां तथा कुंदकागडावगेरेनां पुष्पो इत्यादिकथी संयुक्त बलि देवो.

पितृग्रहनो वळगाड थयो होय तो नदीना किनारापर दर्भो बीछावी ते उपर मांस, तिल, गोळ अने दूधपाक इत्यादिकथी संयुक्त बलि देवो.

नागग्रहनो वळगाड थयो होय तो नदीना किनारापर गोळ, आसव अने दूधपाक एओथी संयुक्त बलि देवो.

राक्षसग्रहनो वळगाड थयो होय तो चौटामां अथवा भयंकर अरण्योमां मांसादिकथी संयुक्त बलि देवो.

पिशाचग्रहनो वळगाड थयो होय तो उजड-घरमां काचां तथा पाकां मांसवाळो तीव्र बलि देवो.

प्राचीन आचार्योए शोधेला अने भूतनाशक विद्याना ग्रंथोमां देखाडेला मंत्रोथी ए बलिदानो देवां. जो आप्रमाणे बलिदानो देवाथी तथा जप आदि उपायोथी ग्रहो शांत न थाय तो पछी नीचे कहेला योगोनी योजनाओ करवी.

बकरो, रींछ, शेळो अने घूवड एओनां चामडां तथा रुवाडां, हींग अने बकरानुं मूत्र एओनो धूप देवो. बलवान् ग्रह पण आ धूमाडाथी तुरत शांत थाय छे.

गजपीपळ, पीपळीमूळ, सूंठ, मरी, पीपळ, आमळां अने सर्षप एओना चूर्णने घो, नोळीयुं, मींदडो अने रींछ एओनां पित्तांनी भावना आपीने ते चूर्णनी नस्योमां, अंजनोमां, अभ्यंगोमां तथा परिषेचनोमां युक्तिथी योजनाओ करवी.

गधेडो, घोडो, खच्चर, घूवड, ऊंट, कूतरो, शीयाळ, गरंज, कागडो अने सूवर एओनी विष्टाओने वटावी तेनो कल्क नाखी बकराना मूत्रमां तैल पकाववुं अने ते तैलनी नस्य वगेरेमां योजनाओ करवी ए हितकारी थाय छे.

सरसडीयांनां बीज, लसण, सूंठ, सर्षप, मजीठ, हळदर अने पीपळ एओने बकराना मूत्रमां वाटी बलदना पित्तांनो योग आपी गोळीओ करी, छायामां सूकावी ते गोळीओ आंखोमां आंजवी.

करंजनुं फळ, सूंठ, मरी, पीपळ, अरडूसानुं मूळ, बीलीनुं मूळ, हळदर अने दारूहळदर एओने बकराना मूत्रमां वाटी बलदना पित्तांनो योग आपी, गोळीओ करी, छायामां सूकावी ते गोळीओ आंखोमां आंजवी.

वळगाड केमे करी शांत न थतो होय तो सैंधव, सूंठ, मरी, पीपळ, हींग अने गळो एओने बकराना मूत्रमां वाटी माछलांना पित्तांनो योग आपी, गोळीओ करी, छायामां सूकावी ते गोळीओ आंखमां आंजवी.

जूनुं घी, लसण, हींग, सर्षप, वज, दूर्वा, धोळी दूर्वा, जटामांसी, गंधमांसी, कुकडवेल, नोरवेल, क्षीरकाकोली, मेंढाशींगी, खपाट, हरडे, काकडाशींगी, मोणवेल, आकडानुं मूळ, सूंठ, मरी, पीपळ, घऊंला सुरमो, रसवंती, मणशील, हरताल, राक्षसोने हणनारां रुद्राक्ष तथा गुगळ वगेरे द्रव्यो, अने सिंह, दीपडो, मींदडो, रींछ, चितरो, घोडो, बळद, शेढाई, शेळो, घो, ऊंट तथा नोळीयो एओनां विष्टा, चामडां, रुवाडां, चरबी, मूत्र, रुधिर, पित्तां अने नखो वगेरे पदार्थो ए सर्व द्रव्यो मळीने अपराजित वर्ग केहेवाय छे. प्रवीण वैद्ये आ अपराजित नामना वर्गना क्वाथथी तथा कल्कथी तैलो तथा घृतो पकावी तेओनी पानमां, अभ्यंगोमां तथा नस्योमां योजनाओ करवी. एज वर्गनी गोळीओ बनावी तेओनी अवपीडनस्यमां तथा अंजनमां योजना करवी. एज वर्गनो क्वाथ बनावी तेनी परिषेकमां

योजना करवी, एज वर्गना चूर्णनी शरीरपर चोळवामां योजना करवी अने एज वर्गने बारीक वटावी प्रलेपमां योजना करवी. आ अपराजित वर्ग वळगाडसंबंधी तथा उन्मादसंबंधी सघळा विकारोने अल्प काळमां नष्ट करे छे.

अनुक्रमथी करवामां आवती स्नेहन, 'स्वेदन, वमन तथा विरेचन आदि क्रियाओ पण उपर कहेला विकारोने नष्ट करे छे.

देवग्रहनो वळगाड होय तो विष्टा वगेरेना अपवित्र प्रयोगो करवा नहीं अने पिशाचग्रहना वळगाड शिवाय बीजा वळगाडोमां प्रहारादिक प्रतिकूल क्रियाओ करवी नही. केम के ए मोटी शक्तिवाळा ग्रहो अपवित्र प्रयोगोथी तथा प्रतिकूल क्रियाओथी कोप पामीने वैद्यने तथा आतुरने पण अवश्य मारी नाखे छे.

सूत्रस्थानना व्रणितोपासनीय नामना अध्यायमां तथा हिताहितीय नामना अध्यायमां जे कांई हित जणाव्युं छे ते सघळुं वैद्ये नित्य करवुं तथा कराववुं अने जे कांई अहित जणाव्युं छे तेनो परित्याग करवो तथा कराववो. आम करवाथी वैद्यने सिद्धि मळशे अने मोटी कीर्ति पण मळशे.

अध्याय ६१ मो.

१अथातोऽपस्मारप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'अपस्मारप्रतिषेध' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ स्मृतिर्भूतार्थविज्ञानमपश्च परिवर्जने ।
अपस्मार इति प्रोक्तस्ततोऽयं व्याधिरन्तकृत् ॥

अपस्मार शब्दनी निरुक्ति.

२ अप एटले जतुं रेहेवुं अने स्मार एटले जाणेली बाबतोनुं स्मरण. आ रोगमां भूतकालनी जाणेली बाबतोनुं स्मरण जतुं रेहे छे तेथी तेने 'अपस्मार' ए नाम आपेलुं छे. आ रोगथी एवुं विस्मरण थाय छे के जेथी रोगी जळमां के अग्नि वगेरेमां पण पडीने मरी जाय छे.

३ मिथ्यादियोगेन्द्रियार्थकर्मणामभिसेवनात् ।
विरुद्धमलिनाहारविहारात्कुपितैर्मलैः ॥
वेगनिग्रहशीलानामहिताशुचिभोजिनाम् ।
रजस्तमोऽभिभूतानां गच्छतां च रजस्वलाम् ॥
तथा कामभयोद्वेगक्रोधशोकादिभिर्भृशम् ।
चेतस्यभिहते पुंसामपस्मारोऽभिजायते ॥

अपस्मारनां निदानो.

३ शब्द आदि विषयोना तथा कायिक आदि कर्मोना सेवनना मिथ्यायोगथी, अतियोगथी तथा अयोगथी, विरुद्ध के मलिन आहार करवाथी, मलिन के विरुद्ध विहार करवाथी, मलमूत्रादिकना वेगोने अटकावी राखवानी टेवथी, अहित तथा अपवित्र भोजननी टेव राखवाथी, (आवा भोजनने अत्यंत अपथ्यरूप जणाववाने माटे पुनरुक्ति करी छे) रजोगुणना तथा तमोगुणना भारे दबाणथी, रजस्वला स्त्रीनो संग करवाथी अने काम, भय, उद्वेग, क्रोध तथा शोकादिक एओथी चित्त अत्यंत दूषित थतां, प्रकोप पामेला दोषोथी माणसोने अपस्मार थाय छे.

४ संज्ञावहेषु स्रोतःसु दोषव्याप्तेषु मानवः ।
रजस्तमःपरीतेषु मूढो भ्रान्तेन चेतसा ॥
विक्षिपन् हस्तपादं च विजिह्मभ्रूविलोचनः ।
दन्तान्खादन्वमन्फेनं विवृत्ताक्षः पतेत्क्षितौ ।
अल्पकालान्तरे चापि पुनः संज्ञां लभेत सः ।
सोऽपस्मार इति प्रोक्तः

१ अपस्मारनां (वाई नामना रोगनां) निदानो, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्साओ एओनां निरूपण विषयनो. आ रोगमां वळगाडना जेवीज मननी खराबी थायछे तथा वळगाडनी चिकित्सा आमां पण प्रशस्त छे तेथी आ रोगने भूतविद्यातंत्रमां दाखल कर्यो छे. डल्हन.

अपस्मारनुं सामान्य लक्षण.

४ संज्ञानुं वहन करनारां स्रोतो दोषोथी व्याप्त थतां अने तेने लीधे रजोगुणथी तथा तमोगुणथी घेराई जतां विभ्रम पामेला चित्ते मूढ बनावेलो माणस हाथपगने पछाडतो पछाडतो, वांकी भमरोवाळो तथा वांकां नेत्रोवाळो थतो थतो, दांतोने करडतो करडतो अने फीणनुं वमन करतो करतो आंखो फाडीने धरतीपर पडे छे अने थोडीवार पछी पाछो संज्ञाने प्राप्त थाय छे ए रोग अपस्मार केहेवाय छे.

५ स च दृष्टश्चतुर्विधः ।
वातपित्तकफैर्नृणां चतुर्थः सन्निपाततः ॥

अपस्मारनी संख्या.

५ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य अने सान्निपातिक ए रीते अपस्मारना चार भेद छे.

६ हृत्कम्पः शून्यता स्वेदो ध्यानं मूर्छा प्रमूढता॥
निद्रानाशश्च तस्मिंस्तु भविष्यति भवन्त्यथ ।

अपस्मारनुं पूर्वरूप.

६ अपस्मार थवानो होय त्यारे हृदयमां कंप थायछे, शून्यता थायछे, पसीनो आवे छे, ध्यान थई जाय छे, मूर्छा थायछे, अतिमूढपणुं थायछे अने निद्रानो नाश थायछे.

७ वेपमानो दशेद्दन्तान् श्वसन् फेनं वमत्यपि "
यो ब्रूयाद्विकृतं सत्त्वं कृष्णं मामनुधावति ।
ततो मे चित्तनाशः स्यात्सोऽपस्मारोऽनिलात्मकः

वातजन्य अपस्मारनुं लक्षण.

७ ध्रूजतो ध्रूजतो दांत करडे, हांफतो हांफतो फीण काहाडे अने संज्ञा आव्या पछी बोले के 'काळा वर्णवाळुं तथा विकृत आकारवाळुं कोइ प्राणी मारी पछवाडे दोडे छे अने तेथी मारा चित्तनो नाश थई जाय छे' तो जाणवुं के ए अपस्मार वातजन्य छे.

८ तृट्तापस्वेदमूर्छार्तो धुन्वन्नङ्गानि विह्वलः ।
यो ब्रूयाद्विकृतं सत्त्वं पीतं मामनुधावति ॥
ततो मे चित्तनाशः स्यात्स पित्तभव उच्यते ।

पित्तजन्य अपस्मारनुं लक्षण.

८ तृषा, ताप, पसीनो अने मूर्छा एओथी पीडाय, अंगोने कंपावे, विव्हल थई जाय अने संज्ञा आव्या पछी बोले के 'पीळा वर्णवाळुं तथा विकृत आहारवाळुं कोई प्राणी मारी पछवाडे दोडे छे अने तेथी मारा चित्तनो नाश थायछे' तो जाणवुं के ए अपस्मार पित्तजन्य छे.

९ शीतहृल्लासनिद्रार्तः पतन् भूमौ वमन् कफम् ।
यो ब्रूयाद्विकृतं सत्त्वं शुक्लं मामनुधावति ।
ततो मे चित्तनाशः स्यात्सोऽपस्मारः कफात्मकः

कफजन्य अपस्मारनुं लक्षण.

९ टाढ, मोळ तथा निद्रा एओथी पीडाय, धरतीपर पडे, कफनुं वमन करे अने संज्ञा आव्या पछी बोले के 'सफेद वर्णवाळुं तथा विकृत आकारवाळुं कोई प्राणी मारी पछवाडे दोडे छे अने तेथी मारा चित्तनो नाश थाय छे'. तो जाणवुं के ए अपस्मार कफजन्य छे.

१० हृदि तोदस्तृडुत्क्लेदस्त्रिष्वप्येतेषु संख्यया।
प्रलापः कूजनं क्लेशः प्रत्येकं तु भवेदिह

उपर कहेला त्रण अपस्मारोमां एकएकनुं एकएक विशिष्ट चिह्न अने सघळाओनां त्रण विशिष्ट चिह्नो.

१० वातजन्य अपस्मारमां हृदयनी अंदर भोंकाया जेवी व्यथा थायछे, पित्तजन्य अपस्मारमां तरश लागे छे, कफजन्य अपस्मारमां बडखो पडे छे अने ए त्रणे अपस्मारोमां प्रलाप, अव्यक्त शब्द तथा क्लेश थाय छे.

११ सर्वलिङ्गसमावायः सर्वदोषप्रकोपजे ।

सान्निपातिक अपस्मारनुं लक्षण.

११ त्रणे दोषोथी थएला अपस्मारमां सघळा दोषोनां चिह्नो होय छे के जे चिह्नो, उपरना चार विषयोमां केहेवामां आव्यां छे.

१२ अनिर्मित्तागमाद्याधेर्गमनादकृतेऽपि च ॥
आगमाच्चाप्यपस्मारं वदन्त्यन्ये न दोषजम् ।

अपस्मारना विषयमां परमत.

१२ केटलाएक केहे छे के 'अपस्मार अकस्मात् उत्पन्न थायछे, चिकित्सा कर्याविना पण जतो रेहे छे अने शास्त्रमां पण तेने आगंतुक कह्यो छे तेथी अपस्मार दोषजन्य नथी पण आगंतुकज छे.'

१३ क्रमोपयोगाद्दोषाणां क्षणिकत्वात्तथैव च ॥
आगमाच्चैश्चरूप्याच्च स तु निर्वर्ण्यते बुधैः ।
वर्षत्यपि यथा देवे भूमौ बीजानि कानिचित् ॥
शरदि प्रतिरोहन्ति तथा व्याधिसमुद्भवः ।
स्थायिनः केचिदल्पेन कालेनाभिप्रवर्द्धिताः ॥
दर्शयन्ति विकारांस्तु विश्वरूपान्निसर्गतः ।
अपस्मारो महाव्याधिस्तस्माद्दोषज एव तु ॥

परमतनुं खंडन.

१३ दोषो एकदम नहीं पण संचय आदि क्रमथी विकारोने उत्पन्न करे छे माटे 'अपस्मार अकस्मात् उत्पन्न थायछे' ए केहेवुं व्यर्थ छे. दोषनो जेटलो वेग लाग्यो होय तेटलो वेग जतो रेहेतां अपस्मार जतो रेहे छे तेथी अपस्मारनो स्वभाव क्षणिकज छे माटे 'चिकित्सा कर्याविना पण जतो रेहे छे' ए केहेवुं व्यर्थ छे. आ धन्वंतरितंत्रमां तथा बीजा प्रामाणिक आचार्योनां तंत्रोमां पण अपस्मारना वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य अने सान्निपातिक ए चार भेदो स्पष्ट रीते लख्या छे माटे 'शास्त्रमां पण तेने आगंतुक कह्यो छे' ए केहेवुं व्यर्थ छे. रोगीना शरीरमां प्रकुपित थएला वायु आदि दोषो सर्वदा रेहेज छे पण जता रेहेता नथी माटे अपस्मारने आगंतुक केहेवो उचित नथी. आ कारणोने लीधे विद्वान् लोको अपस्मारने दोषजन्यज केहे छे. 'प्रकुपित थएला दोषो सर्वदा विद्यमान छतां पण अपस्मार सर्वदा केम रेहेतो नथी?' एवी शंका थायछे तेनुं समाधान ए छे के जेम वरसाद वरसतां छतां पण पृथ्वीमां केटलाएक बीजो सर्वदा उगतां नथी पण कारणांतरोना योगने लीधे शरदृऋतुमांज उगे छे तेम प्रकुपित थएला दोषो सर्वदा विद्यमान छतां पण अपस्मार सर्वदा रेहेतो नथी पण दृष्टांतरोना योगने लीधे अमुक समयमांज उत्पन्न थायछे. केटलाएक अमुक प्रकारथी गोठवाएला दोषोनो स्वभावज एवो होय छे के तेओ सर्वदा स्थायी छतां पण अमुक संयोगोने लीधे अल्प कालमांज वेग पामी पोताना विविध प्रकारना विकारोने देखाडे छे पण सर्वदा देखाडता नथी. आ कारणोने लीधे अपस्मार नामनो मोटो व्याधि आगंतुक नथी पण दोषजन्यज छे ए सिद्धांत छे.

१४ तस्य कार्यो विधिः सर्वो य उन्मादेषु वक्ष्यते
पुराणसर्पिषः पानमभ्यङ्गश्चैव पूजितः ॥
उपयोगो ग्रहोक्तानां योगानां तु विशेषतः ।
शिग्रुकट्वङ्गकिणिहीनिम्बत्वग्रससाधितम् ॥
चतुर्गुणे गवां मूत्रे तैलमभ्यञ्जने हितम् ।
गोधानकुलनागानां पृषतर्क्षगवामपि ॥
पित्तेषु सिद्धं तैलं च पानाभ्यङ्गेषु पूजितम् ।
तीक्ष्णैरुभयतोभागैः शिरश्चापि विशोधयेत् ॥
पूजां रुद्रस्य कुर्वीत तद्गणानां च नित्यशः
कुलत्थयवकोलानि शणबीजं पलङ्कषाम् ॥
जटिलां पञ्चमूल्यौ द्वे पथ्यां चोत्क्वाथ्य यत्नतः।
बस्तमूत्रयुतं सर्पिः पिबेत्तद्वातिके हितम् ।
काकोल्यादिप्रतीवापं सिद्धं वा प्रथमे गणे ॥
पयोमधुसितायुक्तं घृतं यत्पैत्तिके हितम् ।
कृष्णावचामुस्तकाद्यैर्युक्तमारग्वधादिके ॥
पक्वं तन्मूत्रवर्गेषु श्लेष्मापस्मारिणे हितम् ।
सुरद्रुमवचाकुष्टसिद्धार्थव्योषहिङ्गुभिः ॥
मञ्जिष्ठारजनीयुग्मसमङ्गात्रिफलाम्बुदैः ।
करञ्जबीजशैरीषगिरिकर्णीहुताशनैः ॥
सिद्धं सिद्धार्थकं नाम सर्पिर्मूत्रचतुर्गुणम् ।
कृमिकुष्ठगरश्वासबलासविषमज्वरान् ॥

सर्वभूतग्रहोन्मादानपस्मारांश्च नाशयेत् ।
दशमूलेन्द्रवृक्षत्वङ्मूर्वाभार्गीफलत्रयैः ॥
शम्पाकश्रेयसीसप्तपर्ण्यपामार्गपीलुभिः ।
एतैः कल्कैश्च भूनिम्बपूतीकव्योषचित्रकैः ॥
त्रिवृत्पाठानिशायुग्मसारिवाद्वयपौष्करैः ।
कटुकामदयन्त्युग्रानीलिनीक्रिमिशत्रुभिः ॥
सर्पिरेभिश्च गोक्षीरदधिमूत्रशकृद्रसैः ।
साधितं पञ्चगव्याख्यं सर्वापस्मारभूतनुत् ॥
चातुर्थकक्षयश्वासानुन्मादांश्च नियच्छति ।
वातिकं बस्तिभिश्चापि पैत्तिकं तु विरेचनैः ।
कफजं वमनैर्धीमानपस्मारमुपाचरेत् ।
भार्गीशृते पचेत्क्षीरे शालितण्डुलपायसम् ।
ऽयहं शुद्धाय तद्भोज्यं वराहायोपकल्पयेत् ।
ज्ञात्वा च मधुरीभूतं तं विशस्य तदुद्धरेत् ।
त्रीन्भागांस्तस्य चूर्णस्य किण्वभागेन संसृजेत् ॥
मण्डोदकार्थे देयश्च भार्गीक्वाथः सुशीतलः ।
शुद्धे कुम्भे निदध्याच्च सम्भारं तं सुरां ततः
जातगन्धां जातरसां पाययेदातुरं भिषक् ।
शिरां विध्येदथ प्राप्तां मङ्गल्यानि च धारयेत् ॥

अपस्मारनी चिकित्सा.

१४ आ उत्तरतंत्रना ६२ मा अध्यायमां उन्मादो उपर जे चिकित्सा केहेवामां आवशे ते सघळी चिकित्सा अपस्मार उपर करवी. जूनुं घी पावुं अने जूना घीनो अभ्यंग करवो ए पण अपस्मार उपर प्रशस्त छे. गया अध्यायमां ग्रहोना वळगाडो उपर जे योगो केहेवामां आव्या छे तेओनो पण योग्यताप्रमाणे उपयोग करवो.

चोगणा गायोना मूत्रमां सरगवो, अरडूसो, धोळी गरणी अने लींबडो एओनो स्वरस तथा कल्क नाखी तेमां पकावेला तैलनो अभ्यंग करवो ए अपस्मार उपर हितकारी छे.

घो, नोळीयो, हाथी, पृषत नामनो छांटणांवाळो नाहानो मृग, रींछ अने बळद एओनां पित्तांओमां पकावेला तैलनी पीवामां तथा अभ्यंगमां योजना करवी ए अपस्मार उपर प्रशस्त छे.

तीक्ष्ण वमनविरेचनोथी तथा तीक्ष्ण शिरोविरेचनोथी संशोधन करवुं अने महारुद्रनी तथा तेमना गणोनी नित्य पूजा पण कराववी ए अपस्मार उपर हितकारी छे.

कळथी, जव, बोर, शणनां बीज, गुगळ, जटामांसी, दशमूळी अने हरडे एओना चोगणा क्काथमां एक गणुं बकरानुं मूत्र नाखी तेमां घी पकाववुं अथवा ए कलथी वगेरेना एक गणा क्काथमां चोगणुं बकरानुं मूत्र नाखीने तेमां घी पकाववुं. आ घी वातजन्य अपस्मार उपर हितकारी थाय छे.

विदारिगंधादिगणना क्काथमां काकोल्यादिगणनो कल्क नाखी तेमां पकावेलुं घी दूधथी, मधथी तथा साकरथी युक्त करीने देवुं ए पित्तजन्य अपस्मार उपर हितकारी थायछे.

पिप्पल्यादिगण, वचादिगण अने मुस्तादिगण एओना क्काथमां आरग्वधादिगणनो कल्क तथा नाखीने घी पकाववुं. आ घी कफजन्य अपस्मार उपर हितकारी थायछे.

देवदार, वज, कठ, सर्षप, सूंठ, मरी, पीपळ, हींग, मजीठ, हळदर, दारुहळदर, रीसामणी, त्रिफळा, मोथ, करंजनां बीज, सरसडीयानां बीज, गरणी अने चित्रक एओनो कल्क नाखी चोगणा गोमूत्रमां घी पकाववुं. आ घी **सिद्धार्थक** केहेवाय छे. आ घीथी कृमिओ, कुष्ठो, कृत्रिम विष, श्वास, कफ, विषमज्वरो, सर्व ग्रहोना वळगाडो, उन्मादो अने अपस्मारो नष्ट थायछे.

दशमूळी, कडाछाल, मोरवेल, भारंगी, त्रिफळा, गरमाळो, हरडे, रीसामणी, अघेडो अने पीलु (खारी जार) एओना क्काथमां करीयातुं, गुच्छकरंज, सूंठ, मरी, पीपळ, चित्रक, नसोतर, काळीपाड, हळदर, दारुहळदर, काळी उपलसरी, धोळी उपलसरी, पुष्करमूल, कडु, डोलर, वज,

गळी अने वावडींग एओनो कल्क नाखी तथा गायनुं दूध, गायनुं दहीं, गायनुं मूत्र अने गायना छाणनो रस नाखी तेमां गायनुं घी पकाववुं. आ घी **पंचगव्यघृत** केहेवाय छे. आ घीथी सघळा प्रकारना अपस्मारो, भूतो, चातुर्थक ज्वर, क्षय, श्वास अने उन्माद एओनो नाश थायछे.

बुद्धिमान् वैद्ये वातजन्य अपस्मारने बस्तिओथी, पित्तजन्य अपस्मारने विरेचनोथी अने कफजन्य अपस्मारने वमनोथी शांत करवो.

चोगणा पाणीमां एकगणो भारंगीनो कल्क नाखी तेमां दूध पकावी ते दूधमां राता चोखा नाखीने दूधपाक करवो अने ए दूधपाक त्रण दिवस सूधी भूख्या राखेला सूवरने खवराववो. ए दूधपाक खावाथी लाळनुं झरवुं तथा मूर्छा आदि चिह्नो थाय त्यारे ते सूवरने शस्त्रवते कापी तेना पेटमांथी ए दूधपाक काहाडी लेवो. पछी ए दूधपाकने सूकावी चूर्ण करी ए चूर्णना त्रण भाग अने सुराबीजनो एक भाग ए रीते चार भागने मिश्रित करी तेमां मंडोदक तरीके भारंगीनो अत्यंत थंडो पाडेलो क्वाथ नाखी ए सर्वने तज, तमालपत्र, एळची, नागकेसर, मध अने पीपळनुं चूर्ण एओना कल्कथी अंदरना भागमां लींपेला घडामां राखी मूकवुं. ज्यारे तेमां गंधवाळी अने रसवाळी मदिरा बनी जाय त्यारे वैद्ये ते मदिरा अपस्मारवाळाने पावी. आ प्रयोगथी अपस्मार टळी जाय छे.

वैद्ये शारीरस्थानना ८ मा अध्यायना २१ मा विषयमां जणाव्या प्रमाणे अपस्मारवाळानी शिराने वींधीने लोहीनुं स्रावण पण करवुं अने सूत्रस्थानना व्रणितोपासनीय नामना अध्यायमां कह्याप्रमाणे ओषधिधारणादिक मंगळो पण कराववां.

अध्याय ६२ मो.

१ अथात उन्मादप्रतिषेधमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'उन्मादप्रतिषेध[1]' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ मदयन्त्युद्गता दोषा यस्मादुन्मार्गमाश्रिताः। मानसोऽयमतो व्याधिरुन्माद इति कीर्त्तितः

उन्मादशब्दनी निरुक्ति तथा उन्मादनां निदान अने संप्राप्ति.

२ अत्यंत वृद्धि पामेला दोषो मननी साथे संबंध पामेला स्रोतोमां रहीने चित्तने भमावी नाखे छे ते रोग उन्माद केहेवाय छे अने ते मानसिक व्याधि छे. (अपस्मारमां दोषोने प्रकुपित करनारां जे कारणो कह्यां छे तेज कारणो उन्मादमां पण दोषोने प्रकुपित करनारां छे एम समजवुं.)

३ एकैकशः समस्तैश्च दोषैरत्यर्थमूर्छितैः।
मानसेन च दुःखेन स पञ्चविध उच्यते ॥
विषाद्भवति षष्ठश्च यथास्वं तत्र भेषजम्।
स चाप्रवृद्धस्तरुणो मदसंज्ञां बिभर्ति च।

उन्मादनी संख्या अने अवस्थाभेदथी नामांतर.

३ वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, सान्निपातिक अने मानसदुःखजन्य (मनना दुःखथी थएलो) ए रीते उन्माद पांच प्रकारनो छे. विषथी जे उन्माद थाय छे ते छठो गणाय छे. उन्मादोमां यथोचित औषधोनो प्रयोग करवो. ए उन्माद वध्यो न होय तथा नवो होय त्यांसूधी मद केहेवाय छे.

---

१ उन्मादनां (घेलापणानां) निदानो, भेदो, लक्षणो तथा चिकित्सा एओना निरूपण विषेनो. आ रोग मानसिक छे अने तेनी चिकित्साओ पण ग्रहोना वळगाडनी चिकित्साओथी तुल्य छे एटला माटे तेने भूतविद्यातंत्रमां दाखल कर्यो छे.

४ मोहोद्वेगौ स्वनः श्रोत्रे गात्राणामपकर्षणम् ।
अत्युत्साहोऽरुचिश्चान्ने स्वप्ने कलुषभोजनम् ॥
वायुनोन्मथनं चापि भ्रमश्चक्रमतस्तथा ।
यस्य स्यादचिरेणैवमुन्मादं सोऽधिगच्छति ॥

उन्मादनुं पूर्वरूप.

४ उन्माद थवानो होय त्यारे मोह थायछे, उद्वेग थायछे, कानमां अवाज थायछे, गात्रो दुर्बल थई जाय छे, अधीरपणुं थायछे, अन्न उपर अरुचि थायछे, स्वप्नमां मलिन भोजन थायछे, चित्त वायुथी व्याकुल थई जाय छे अने चाकडे चड्या जेवुं भ्रमण थायछे. जे माणसने आ लक्षणो थाय ते माणस तुरतज उन्मादने प्राप्त थायछे.

५ रूक्षच्छविः परुषवाग् धमनीततो वा
श्वासातुरः कृशतनुः स्फुरिताङ्गसन्धिः ।
आस्फोटयन्पठति गायति नृत्यशीलो
विक्रोशति भ्रमति चाप्यनिलप्रकोपात् ॥

वातजन्य उन्मादनुं लक्षण.

५ जो वातजन्य उन्माद थयो होय तो कांति रूक्ष थई जाय छे, वाणी कठोर थई जाय छे, कृशपणाने लीधे शरीर धमनीओथी व्याप्त देखाय छे, श्वासनी पीडा थायछे, शरीर दूबळुं थायछे, अंगोना सांधाओ फरके छे अने ते माणस अंगोना टचाका फोडतो फोडतो तथा अंगोने आम तेम नाखतो नाखतो भणे छे, गाय छे, नाचे छे, बूमो पाडे छे अने भमे छे.

६ तृट्स्वेददाहबहुलो बहुभुग्विनिद्र-
श्छायाहिमानिलजलान्तविहारसेवी ।
तीक्ष्णो हिमाम्बुनिचयेऽपि स वह्निशङ्की
पित्ताद्दिवा नभसि पश्यति तारकाश्च ॥

पित्तजन्य उन्मादनुं लक्षण.

६ जो पित्तजन्य उन्माद थयो होय तो तृषा पसीनो तथा दाह अत्यंत थाय छे, घणुं जमाय छे, निद्रा आवती नथी, तीक्ष्णपणुं थायछे, थंडा पाणीना समूहमां पण अग्निनी शंका थायछे, नेत्रो पीळां थई जाय छे, दिवसे पण आकाशमां तारा जोवामां आवे छे अने ते माणस छायामां, थंडा पवनमां तथा जलाशयोना समीपोमां विहारनुं सेवन करे छे.

७ छर्द्यग्निसादसदनारुचिकासयुक्तो
योषिद्विविक्तरतिरल्पमतिप्रकारः ।
निद्रापरोऽल्पकथनोऽल्पभुगुष्णसेवी
रात्रौ भृशं भवति चापि कफप्रकोपात् ॥

कफजन्य उन्मादनुं लक्षण.

७ जो कफजन्य उन्माद थयो होय तो उलटीओ थायछे, जठराग्नि मंद थई जाय छे, अंगोमां ग्लानि थायछे, अरुचि थायछे, खांसी आवे छे, एकांतमां स्त्री उपर रुचि थायछे, बुद्धिनो प्रचार थोडो थई जाय छे, निद्रा करवामां तत्परता रेहे छे, भाषण अल्प थई जाय छे, थोडुं जमी शकाय छे, उष्णनुं सेवन करवानी टेव थाय छे अने आ सघळा विकारो राते वृद्धि पामे छे.

८ सर्वात्मके त्रिभिरपि व्यतिमिश्रितानि
रूपाणि वातकफपित्तकृतानि विद्यात् ।
सम्पूर्णलक्षणमसाध्यमुदाहरन्ति ।
सर्वात्मकं क्वचिदपि प्रवदन्ति साध्यम् ॥

सान्निपातिक उन्मादनुं लक्षण.

८ जो सान्निपातिक उन्माद थयो होय तो वायुनां, पित्तनां तथा कफनां उपर कहेलां लक्षणो मिश्रित थायछे. जो आ उन्माद त्रणे दोषोनां सघळां लक्षणोथी युक्त होय तो असाध्य छे एम केहेवामां आवे छे. कोई तंत्रमां सघळां लक्षणोवाळा सान्निपातिक उन्मादने साध्य पण कह्यो छे.

९ चौरैर्नरेन्द्रपुरुषैररिभिस्तथान्यै-
र्वित्रासितस्य धनबान्धवसंक्षयाद्वा ।
गाढं क्षते मनसि च प्रियया रिरंसो-
र्जायेत चोत्कटतरो मनसो विकारः ॥

चित्रं स जल्पति मनोऽनुगतं विसंज्ञो
गायत्यथो हसति रोदिति चापि मूढः ।

मानसदुःखजन्य उन्मादनुं निदान अने लक्षण.

९ चोरोए, राजकीय लोकोए, शत्रुओए के बीजाओए त्रास आपवाथी अथवा धननो के बांधवनो नाश थवाथी अथवा कोई स्त्रीनी साथे रमण करवानी इच्छा थतां तेवो प्रसंग नहीं मळवाथी मन अत्यंत विव्हल थतां मनमां जे अत्यंत उत्कट विकार थायछे ते मानसदुःखजन्य उन्माद केहेवाय छे. आ उन्मादवाळो माणस मनमां आवे तेम विचित्र रीते बोले छे, भान-वगरनो होय छे, गाय छे, हसे छे अने मूढ बनीने रोय पण छे.

१० रक्तेक्षणो हतबलेन्द्रियभाः सुदीनः
श्यावाननो विषकृतेन भवेद्विसंज्ञः ॥

विषजन्य उन्मादनुं लक्षण.

१० जो विषजन्य उन्माद थयो होय तो नेत्रो रातां थई जाय छे, बळ, इंद्रियो तथा कांति हणाई जाय छे, अत्यंत दीनता थायछे, मोहोडुं श्याम थई जाय छे अने संज्ञा रेहेती नथी.

११ स्निग्धं स्विन्नं तु मनुजमुन्मादार्तं विशोधयेत्
तीक्ष्णैरुभयतोभागैः शिरसश्च विरेचनैः ।
विविधैरवपीडैश्च सर्षपस्नेहसंयुतैः ॥
योजयित्वा च तच्चूर्णं घ्राणे नस्यं तु योजयेत् ।
सततं धूपयेच्चैनं श्वगोमांसैः सुपूतिभिः ॥
सर्षपानां च तैलेन नस्याभ्यङ्गौ हितौ सदा ।
दर्शयेदद्भुतान्यस्य वदेन्नाशं प्रियस्य च ॥
भीमाकारैर्नरैर्नागैर्दान्तैर्व्यालैश्च निर्विषैः ।
भीषयेत्सततं पाशैः कशाभिर्वाथ ताडयेत् ॥
यन्त्रयित्वा सुसुप्तं वा त्रासयेत्तं तृणाग्निना ।
प्रतुदेदारयैश्चैनं मर्माघातं विवर्जयेत् ॥
सपिधाने जरत्कूपे सततं वा निवासयेत् ।
त्र्यहाच्त्र्यहाद्यवागूं च दद्यात्सक्तून् जलेन वा ॥
केवलानम्बुयुक्तान् वा कुल्माषान्वा बहुश्रुतः ।
हृद्यं यद्दीपनीयं च तत्पथ्यं तस्य योजयेत् ॥
विडङ्गत्रिफलामुस्तामञ्जिष्ठादाडिमोत्पलैः ।
प्रियङ्ग्वेलैलवालूकचन्दनामरदारुभिः ॥
बर्हिष्ठरजनीकुष्ठपर्णिनीसारिवाद्वयैः ।
हरेणुकात्रिवृद्दन्तीवचातालीसकेशरैः ।
द्विक्षीरं साधितं सर्पिर्मालतीकुसुमैः सह ।
गुल्मकासज्वरश्वासक्षयोन्मादनिवारणम् ॥
एतदेव हि सम्पक्वं जीवनीयोपसम्भृतम् ।
चतुर्गुणेन दुग्धेन महाकल्याणमुच्यते ॥
अपस्मारं ग्रहं शोषं क्लैब्यं कार्श्यमबीजताम् ।
घृतमेतन्निहन्त्याशु ये चादौ गदिता गदाः ॥
बर्हिष्ठकुष्ठमञ्जिष्ठाकटुकैलानिशाह्वयैः ।
तथैव त्रिफलाहिङ्गुवाजिगन्धामरद्रुमैः ॥
वचाजमोदाकाकोलीमेदामधुकपद्मकैः ।
सशर्करं हितं सर्पिः पक्वं क्षीरचतुर्गुणम् ॥
बालानां ग्रहजुष्टानां पुंसां दुष्टाल्पमेधसाम् ।
ख्यातं फलघृतं स्त्रीणां वन्ध्यानां चाशु गर्भदम् ॥
ब्राह्मीमैन्द्रीं विडङ्गानि व्योषं हिङ्गु सुरं जटाम् ॥
विषघ्नीं लशुनं रास्नां विशल्यां सुरसां वचाम् ।
ज्योतिष्मतीं नागविन्नामनन्तामभयां तथा ॥
सौराष्ट्रीं च समांशानि गजमूत्रेण पेषयेत् ।
छायाविशुष्कास्तद्वर्त्तीर्योजयेद्विधिकोविदः ॥
अवपीडेऽञ्जनेऽभ्यङ्गे नस्ये धूमे प्रलेपने ॥
उरोऽपाङ्गललाटेषु शिराश्चास्य विमोक्षयेत् ॥
अपस्मारक्रियां चापि ग्रहोद्दिष्टां च कारयेत् ।
शान्तदोषं विशुद्धं च स्नेहबस्तिभिराचरेत् ॥
शोकशल्यं व्यपनयेदुन्मादे पञ्चमे भिषक् ।
उन्मादेषु च सर्वेषु कुर्याच्चित्तप्रसादनम् ॥
मृदुपूर्वं मदेप्येवं क्रियां मूर्ध्नी प्रयोजयेत् ।
विषजे मृदुपूर्वा च विषघ्नीं कारयेत्क्रियाम् ॥

उन्मादनी चिकित्सा.

११ उन्मादवाळा माणसने बहुश्रुत वैद्ये स्नेहन तथा स्वेदन संस्कार आपी कूकडवेल वगेरे

तीक्ष्ण उभयतोहर पदार्थोथी वमन विरेचन कराववां, तीक्ष्णतावाळां शिरोविरेचन नस्योथी अने सरसीया तैलना संयोगवाळां विविध अवपीडनस्योथी शुद्ध करवो. सर्षपोना चूर्णनी योजना करीने तेनुं नस्य देवुं. अत्यंत दुर्गंधवाळां कूतराओनां तथा बळदोनां मांसोना निरंतर धूमाडा देवा. सर्वदा सरसीया तैलनुं नस्य देवुं अने तेज तैलनो अभ्यंग कराववो. ए माणसने अद्भुत पदार्थो देखाडवा. तेनी पासे पुत्र तथा धन वगेरे प्रिय पदार्थनो नाश थयानुं केहेवुं. भयंकर आकारवाळा माणसोथी, केळवाएला हाथीओथी, विषवगरना सर्पोथी अने फांसाओथी ए माणसने नित्य बीवडाववो. चाबुकोथी प्रहार पण देवा. अथवा ए माणस खूब ऊंघी गयो होय त्यारे बांधी लई चोमेर खड सळगावीने ते अग्निथी त्रास आपवो, मर्मस्थलनो आघात न थाय एवी रीते प्रतुदपक्षीओनी चांचोथी तेने ठोलाववो, नित्य ढांकणावाळा जूना कूवामां उतारवो, त्रण त्रण दिवसे यवागू पावी अथवा जळनी साथे सातू खावा देवो अथवा जळवाळी के जळ वगरनी धान्योनी घूघरी खावा देवी. जे पथ्य हृदयने प्रिय लागे एवुं अने जठराग्निने प्रदीप्त करे एवुं होय तेनी पण योजना करवी.

वावडींग, त्रिफळा, मोथ, मजीठ, दाडिम, नीलकमळ, घऊलां, एलची, एलवालुक नामनुं सुगंधी द्रव्य, रतांजलि, देवदार, वाळो, कठ, हळदर अथवा दारुहळदर, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, धोळी उपलसरी, काळी उपलसरी, हरेणु नामनुं सुगंधी द्रव्य, नसोतर, नेपाळो, वज, तालीसपत्र, नागकेसर अने मालतीनां फूल एओनो बत्रीश तोलांभार कल्क अने घीथी बमणुं दूध नाखी चार प्रस्थ (चोसठ तोलांभारनुं एक प्रस्थ थाय छे.) जळमां एक प्रस्थ गायनुं घी पकाववुं एटले ते **कल्याणघृत** केहेवाय छे. आ घी गुल्मोने, कासोने, ज्वरोने, श्वासोने, क्षयोने तथा उन्मादोने नष्ट करे छे. (आ घीनो पाठ आ उत्तरतंत्रना ३९ मा अध्यायना ९६ मा विषयमां अपाई गयो छे माटे अहीं पुनरुक्त छे.)

उपर केहेलुं घी जीवनीयवर्गनो कल्क नाखी चोगणा दूधमां पकाववामां आव्युं होय तो ते **महाकल्याणघृत** केहेवाय छे. आ घीथी अपस्मार, वळगाड, शोष, नपुंसकपणुं, कृशपणुं, निर्बीजपणुं तथा जे रोगो प्रथम (उपरना विषयमां) केहेवामां आव्या छे तेओ नष्ट थायछे.

वाळो, कठ, मजीठ, सूंठ, मरी, पीपळ, एळची, हळदर, त्रिफळा, हींग, आसोंद, देवदार, वज, बोडीअजमोद, काकोली, मेदा, जेठीमध अने पद्मकाष्ठ एओनो कल्क नाखी चोगणा दूधमां घी पकाववुं एटले ते **फळघृत** केहेवाय छे. आ घी साकरथी संयुक्त करीने देवामां आवे तो तेथी उन्माद नष्ट थायछे. बालग्रहोना वळगाडवाळा बालकोने माटे अने दुष्ट तथा अल्प बुद्धिवाळा पुरुषोने माटे पण आ घी उत्तम छे. आ घी वांझणी स्त्रीओने पण तुरत गर्भ आपे छे.

ब्राह्मी, इंद्रवारणी, वावडींग, सूंठ, मरी, पीपळ, हींग, देवदार, जटामांसी, हळदर, लसण, रास्ना, गळो, तुलसी, वज, मालकांकणी, गायवसुकडां, उपलसरी, हरडे अने फटकडी एओने समभागे लई हाथीना मूत्रमां वाटी गोळीओ बनाववी. ते गोळीओने छायामां सूकाववी. विधि जाणनारा वैद्ये ए गोळीओनी अवपीडनस्यमां, अंजनमां, अभ्यंगमां, नस्यमां, धूममां अने प्रलेपनमां योजनाओ करवी. आ योजनाओथी उन्माद शांत थायछे.

. उन्मादवाळा माणसनी छातीनी, लमणानी तथा ललाटनी शिराओ वींधीने लोहीनुं स्रावण पण करवुं.

गया बे अध्यायोमां ग्रहोना वळगाड उपर

तथा अपस्मार उपर जे क्रियाओ केहेवामां आवी छे तेओनी पण योजनाओ करवी.

उन्माद शांत थया पछी पण वमनादिकथी संशोधन करीने अनुवासनबस्तिओनी योजना करवी.

मानसदुःखजन्य उन्माद के जे पांचमा प्रकारनो छे ते थएल होय तो इष्ट वस्तुओथी तथा सांत्वनाओ वगेरेथी रोगीना शोकरूपी शल्यने दूर करवुं.

सघळा उन्मादोमां जे प्रकारोथी रोगीनुं चित्त स्वस्थ थाय ते प्रकारो गोठववा.

उन्मादनी एक जूदी अवस्था के जे आ अध्यायना त्रीजा विषयमां कह्याप्रमाणे मद केहेवाय छे ते होय तो कोमळ संशोधनपूर्वक कोमळतावाळी अंजनादिक क्रियाओ करवी.

विषजन्य उन्माद थयो होय तो कोमळ संशोधनोथी शुद्धि करीने पछी कल्पस्थानमां कहेली क्रियाओनी उचित योजनाओ करवी.

भूतविद्यातंत्र समास.

तंत्रभूषण[१].

अध्याय ६३ मो.

१अथातो रसभेदविकल्पमध्यायं व्याख्यास्यामः

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'रसभेदविकल्प' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ दोषाणां पञ्चदशधा प्रसरोऽभिहितस्तु यः ।
त्रिषष्ठ्या रसभेदानां तत्प्रयोजनमुच्यते ॥
अविदग्धा विदग्धाश्च भिद्यन्ते ते त्रिषष्टिधा ।
रसभेदत्रिषष्टिं तु वीक्ष्य वीक्ष्यावचारयेत् ॥
एकैकेनानुगमनं भागशो यदुदीरितम् ।
दोषाणां तत्र मतिमांस्त्रिषष्टिं तु प्रयोजयेत् ॥

रसोना भेदो केहेवानुं प्रयोजन.

२ सूत्रस्थानना व्रणप्रश्न नामना २१ मा अध्यायना १४ मा विषयमां दोषोनो पंदर प्रकारनो प्रसर कहेलो छे. ए दोषोना भेदो त्रेसठ थायछे तेथी तेओनी उपर योजवाना रसो पण त्रेसठ प्रकारना केहेवा जोइए. रसो मिश्रित पण होय छे अने अमिश्रित पण होय छे तेथी तेओना त्रेसठ भेद थायछे. ए त्रेसठ भेदोनुं अवेक्षण करी करीने तेओनी योग्यताप्रमाणे दोषोना त्रेसठ भेदो उपर योजना करवी. दोषोमां विभागप्रमाणे एक एकनो बीजाओनी साथे संबंध के जे त्रेसठ भेदो थवाना कारणरूप केहेवामां आवशे तेनो विचार करीने बुद्धिमान् वैद्ये ते दोषोना त्रेसठ भेदो उपर रसोना त्रेसठ भेदोनी योग्यता कल्पी लेवी. (दोषोना त्रेसठ भेदो आ उत्तरतंत्रना छेल्ला एटले छासठमा अध्यायमां केहेवामां आवशे.)

३ यथाक्रमं प्रवृत्तानां द्विकेषु मधुरो रसः ।
पञ्चानुक्रमते योगानम्लश्चतुर एव च ॥
त्रींश्चानुगच्छति रसो लवणः कटुको द्वयम् ।
तिक्तः कषायमन्वेति ते द्विका दश पञ्च च ॥

तद्यथा । मधुराम्लः । मधुरलवणः । मधु- [...] पञ्चानुक्रान्ता मधुरेण ॥ अम्ललवणः । अम्लकटुकः । अम्लतिक्तः । अम्लकषायः । एते चत्वारोऽनुक्रान्ता अम्लेन । लवणकटुकः । लवणतिक्तः । लवणकषायः । एते त्रयोऽनुक्रान्ता लवणेन । कटुतिक्तः । कटुकषायः । द्वावेतावनुक्रान्तौ कटुकेन ॥ [२]तिक्तकषाय एक एवानुक्रान्तस्तिक्तेन । एते पञ्चदश द्विकसंयोगा व्याख्याताः ॥

१ त्रेसठमो, चोसठमो, पांसठमो अने छासठमो ए चार अध्यायो आ शास्त्रना भूषणरूप होवाथी तंत्रभूषण केहेवाय छे. सूत्रस्थानना त्रीजा अध्यायनो ८ मो विषय वांचो. २ रसोना त्रेसठभेदोना निरूपण विषेनो.

रसोना बबेना संयोगरूप पंदर भेदो.

३ मधुर आदि क्रमथी प्रवर्त्तेला रसोना बबेना संयोगरूप पंदर भेदो छे तेओमां मधुर रस पांच संयोगोमां प्रथम आवे छे, अम्ल (खाटो) रस चार संयोगोमां प्रथम आवे छे, लवण (खारो) रस त्रण संयोगोमां प्रथम आवे छे, कटुक (तीखो) रस बे संयोगोमां प्रथम आवे छे अने तिक्त (कडवो) रस एक संयोगमां प्रथम आवे छे. जेम के मधुराम्ल, मधुरलवण, मधुरतिक्त, मधुरकटुक अने मधुरकषाय ए पांच संयोगोमां मधुर रस प्रथम आवे छे. अम्ललवण, अम्लकटुक, अम्लतिक्त अने अम्लकषाय ए चार संयोगोमां अम्ल रस प्रथम आवे छे. लवणकटुक, लवणतिक्त अने लवणकषाय ए त्रण संयोगोमां लवणरस प्रथम आवे छे. कटुतिक्त अने कटुकषाय ए बे संयोगोमां कटुरस प्रथम आवे छे अने तिक्तकषाय ए एक संयोगमां तिक्तरस प्रथम आवे छे. कुल १५

४ त्रिकान्वक्ष्यामः ॥

आदौ प्रयुज्यमानस्तु मधुरो दश गच्छति ।
षडम्लो लवणस्तस्मादूर्ध्वं त्वेकं रसः कटुः ॥

मधुराम्ललवणः । मधुराम्लकटुकः । मधुराम्लतिक्तः । मधुराम्लकषायः । मधुरलवणकटुकः । मधुरलवणतिक्तः । मधुरलवणकषायः । मधुरकटुकतिक्तः । मधुरकटुकषायः । मधुरतिक्तकषायः । एवमेषां त्रिकसंयोगानां दशानामादौ मधुरः प्रयुज्यते ॥ अम्ललवणकटुकः । अम्ललवणतिक्तः । अम्ललवणकषायः । अम्लकटुकषायः । अम्लकटुतिक्तः । अम्लतिक्तकषायः । एवमेषां षण्णामादावम्लः प्रयुज्यते॥ लवणकटुतिक्तः । लवणकटुकषायः । लवणतिक्तकषायः । एवमेषां त्रयाणामादौ लवणः प्रयुज्यते । कटुतिक्तकषायः । एवमेकस्यादौ कटुकः प्रयुज्यते ॥ एवमेते त्रिकसंयोगा विंशतिर्व्याख्याताः ।

रसोना त्रण त्रणना संयोगरूप वीश

४ रसोना त्रण त्रणना संयोगरूप वीश भेदो छे तेओमां मधुर रस दश संयोगोमां प्रथम आवे छे, अम्लरस छ संयोगोमां प्रथम आवे छे, लवणरस त्रण संयोगोमां प्रथम आवे छे अने कटुरस एक संयोगमां प्रथम आवे छे. जेम के मधुराम्ललवण, मधुराम्लकटुक, मधुराम्लतिक्त, मधुराम्लकषाय, मधुरलवणकटुक, मधुरलवणतिक्त, मधुरलवणकषाय, मधुरकटुकतिक्त, मधुरकटुकषाय अने मधुरतिक्तकषाय ए दश संयोगोमां मधुररस प्रथम आवे छे. अम्ललवणकटुक, अम्ललवणतिक्त, अम्ललवणकषाय, अम्लकटुकषाय, अम्लकटुतिक्त अने अम्लतिक्तकषाय ए छ संयोगोमां अम्लरस प्रथम आवे छे. लवणकटुतिक्त, लवणकटुकषाय अने लवणतिक्तकषाय ए त्रण संयोगोमां लवणरस प्रथम आवे छे अने कटुतिक्तकषाय ए एक संयोगमां कटुरस प्रथम आवे छे. कुल २०

५ चतुष्कान्वक्ष्यामः ॥

चतुष्करससंयोगान्मधुरो दश गच्छति ।
चतुरोऽम्लस्तु गच्छेच्च लवणस्त्वेकमेव तु ॥

मधुराम्ललवणकटुकः । मधुराम्ललवणतिक्तः मधुराम्ललवणकषायः । मधुराम्लकटुकतिक्तः मधुराम्लकटुकषायः । मधुरलवणतिक्तकटुकः मधुराम्लतिक्तकषायः । मधुरतिक्तकटुकषायः मधुरलवणकटुकषायः। मधुरलवणतिक्तकषायः एवमेषां दशानामादौ मधुरः प्रयुज्यते ॥ अम्ललवणकटुकतिक्तः । अम्ललवणकटुकषायः । अम्ललवणतिक्तकषायः । अम्लकटुतिक्तकषायः । एवमेषां चतुर्णामम्लः ॥ लवणकटुतिक्तकषायः । एवमेकस्यादौ लवणः ॥ एवमेते चतुष्करससंयोगाः पञ्चदश कीर्तिताः ।

रसोना चार चारना संयोगरूप पंदर भेदो.

५ रसोना चार चारना संयोगरूप पंदर भेदो

छे तेओमां मधुररस दश संयोगोमां प्रथम आवे छे, अम्लरस चार संयोगोमां प्रथम आवे छे अने लवणरस एक संयोगमां प्रथम आवे छे. जेम के मधुराम्ललवणकटुक, मधुराम्ललवणतिक्त, मधुराम्ललवणकषाय, मधुराम्लकटुकतिक्त, मधुराम्लकटुककषाय, मधुरलवणतिक्तकटुक, मधुराम्लतिक्तकषाय, मधुरतिक्तकटुकषाय, मधुरलवणकटुकषाय अने मधुरलवणतिक्तकषाय ए दश संयोगोमां मधुररस प्रथम आवे छे. अम्ललवणकटुकतिक्त, अम्ललवणकटुकषाय, अम्ललवणतिक्तकषाय अने अम्लकटुतिक्तकषाय ए चार संयोगोमां अम्लरस प्रथम आवे छे अने लवणकटुतिक्तकषाय ए एक संयोगमां लवणरस प्रथम आवे छे. कुल १५

६ पञ्चकान्वक्ष्यामः ॥

पञ्चकान्पञ्च मधुर एकमम्लस्तु गच्छति । मधुराम्ललवणकटुतिक्तः । मधुराम्ललवणकटुकषायः । मधुराम्ललवणतिक्तकषायः । मधुराम्लकटुतिक्तकषायः । मधुरलवणकटुतिक्तकषायः । एवमेषां पञ्चानां पञ्चकरससंयोगानामादौ मधुरः प्रयुज्यते ॥ अम्ललवणकटुतिक्तकषायः । एवमेकस्यादावम्लः प्रयुज्यते । एवमेते षट् पञ्चकसंयोगा व्याख्याताः ।

रसोना पांच पांचना संयोगरूप छ भेदो.

६ रसोना पांच पांचना संयोगरूप छ भेदो छे तेओमां मधुररस पांच संयोगोमां प्रथम आवे छे अने अम्लरस एक संयोगमां प्रथम आवे छे. जेम के मधुराम्ललवणकटुतिक्त, मधुराम्ललवणकटुकषाय, मधुराम्ललवणतिक्तकषाय, मधुराम्लकटुतिक्तकषाय अने मधुरलवणकटुतिक्तकषाय ए पांच संयोगोमां मधुररस प्रथम आवे छे अने अम्ललवणकटुतिक्तकषाय ए एक संयोगमां अम्लरस प्रथम आवे छे. कुल ६

७ षट्कमेकं वक्ष्यामः ॥ एकस्तु षट्कसंयोगः। मधुराम्ललवणकटुकतिक्तकषायः । एवमयमेकः षट्संयोगः ॥

रसोनो छना संयोगरूप एक भेद.

७ रसोनो छना संयोगरूप एक भेद छे. जेम के मधुराम्ललवणकटुकतिक्तकषाय. कुल १

८ एकैकश्च षड्रसा भवन्ति । मधुरोऽम्लो लवणः कटुकस्तिक्तः कषाय इति

एक एक रसथी छ भेदो.

८ एक एक रसथी छ भेदो थाय छे. जेम के मधुर, अम्ल, लवण, कटुक, तिक्त अने कषाय. कुल ६

९ भवति चात्र ॥
एषा त्रिषष्टिर्व्याख्याता रसानां रसचिन्तकैः ।
दोषभेदत्रिषष्टौ तु प्रयोक्तव्या विचक्षणैः ॥

रसोना भेदोनो उपसंहार.

९ आ विषयना श्लोकमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के रसोना भेदोनो विचार करनाराओए आप्रमाणे [illegible] रसोना त्रेसठ भेदो कहेला[1] छे. दोषोना त्रेसठ भेदो के जेओ आ उत्तरतंत्रना छासठमा अध्यायमां केहेवामां आवशे तेओ उपर योग्यताने अनुसरीने विचक्षण वैद्योए रसोना आ त्रेसठ भेदोनी योजनाओ करवी.

अध्याय ६४ मो.

१ अथातः स्वस्थवृत्तमध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'स्वस्थ वृत्त'[2] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान

१ रसोना त्रेसठ भेदोनुं अमुक उदाहरणोसहित पत्रक आ ग्रंथ पूरो थया पछी निघंटसंग्रह उपरथी आपवामां आवशे.

२ स्वस्थ माणसनी स्वस्थता जेथी जाळवी रखाय एवी चिकित्साना निरूपण विषयनो. आहारविभागो तथा औषधकाळो पण चिकित्सामां उपयोगी होवाने लीधे आ अध्यायमां केहेवामां आवशे.

करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥
सूत्रस्थाने समुद्दिष्टः स्वस्थो भवति यादृशः ।
तस्य यद्रक्षणं तद्धि चिकित्सायाः प्रयोजनम् ॥

स्वस्थनुं लक्षण अने स्वस्थनी चिकित्सानु प्रयोजन.

२ 'सम दोषोवाळो, सम अग्निवाळो, सम धातुओवाळो, सम मळोवाळो अने सम क्रियाओवाळो माणस के जे प्रसन्न देहवाळो, प्रसन्न इंद्रियोवाळो अने प्रसन्न मनवाळोज होय छे ते स्वस्थ केहेवाय छे' एवी रीतनुं स्वस्थनुं लक्षण सूत्रस्थानना १५ मा अध्यायना ३१ मा विषयमां आपेलुं छे. आवा स्वस्थ माणसनुं जे रक्षण करवुं एटले स्वस्थ माणसनी स्वस्थताने जाळवी राखवी ए स्वस्थनी चिकित्सानुं प्रयोजन छे.

३ तस्य यद्वृत्तमुक्तं हि रक्षणं हि समासतः ।
तस्मिन्नर्थाः समासोक्ता विस्तरस्तस्य वक्ष्यते ॥

स्वस्थवृत्त केहेवाई गएलुं छतां आ अध्यायनी आवश्यकता.

३ जो के चिकित्सास्थानना 'अनागताबाधप्रतिषेधनीय' नामना २४ मा अध्यायमां जेथी स्वस्थनी स्वस्थता जाळवी रखाय एवुं स्वस्थवृत्त केहेवाई गयुं छे तो पण ते संक्षेपथी केहेवामां आव्युं छे माटे आ अध्यायमां तेनो विस्तार केहेवामां आवशे.

४ यस्मिन्यस्मिन्नृतौ ये ये दोषाः कुप्यन्ति देहिनाम् ।
तेषु तेषु प्रदातव्या रसास्ते ते विजानता ॥

आ अध्यायमां केहेवाना ऋतुओसंबंधि विधिनो संक्षेप.

४ जे जे ऋतुमां जे जे दोषो प्रकुपित थाय छे ते ते ऋतुमां ते ते दोषोनी सामे प्रत्यनीकपणुं (शत्रुपणुं) धरावनारा रसो (रसोवाळां द्रव्यो) प्रवीण वैद्ये माणसोने देवा.

५ प्रक्लिन्नत्वाच्छरीराणां वर्षासु खलु देहिनाम् ।
मन्देऽग्नौ कोपमायान्ति संघर्षान्मारुतादयः ॥
तस्मात्क्लेदविशुद्ध्यर्थं दोषसंहरणाय च ।
कषायतिक्तकटुकै रसैर्युक्तमथाद्रवम् ।
नातिस्निग्धं नातिरूक्षमुष्णं दीपनमेव च ।
देयमन्नं नृपतये यज्जलं चोक्तमादितः ॥
तप्तावरतमम्भो वा पिबेन्मधुसमायुतम् ।
अह्नि मेघानिलाविष्टेऽत्यर्थशीताम्बुसङ्कुले ॥
तरुणत्वाद्विदाहं च गच्छन्त्योषधयस्तदा ।
मतिमांस्तन्निमित्तं च नैव व्यायाममाचरेत् ॥
अत्यम्बुपानावश्यायग्राम्यधर्मातपांस्तथा ।
भूबाष्पपरिहारार्थं शयीत च विहायसि ॥
शीते साग्नौ निवाते च गुरुप्रावरणो गृहे ।
यायान्नागवधूभिश्च प्रशस्तागुरुभूषितः ॥
दिवास्वप्नमजीर्णं च वर्जयेत्तत्र यत्नतः ।

वर्षाऋतुनो सविस्तर विधि.

५ वर्षाऋतुमां माणसोनां शरीरो अत्यंत आर्द्र थई जवाने लीधे जठराग्नि मंद थई जवाथी वायु आदि दोषो जाणे परस्परनी स्पर्द्धा करता होय एवी रीते प्रकुपित थायछे (वर्षाऋतुमां प्रावृष्ना संबंधथी वायु प्रकुपित होय छे अने पित्त संचयरूप होवाने लीधे तथा कफ असंचित छतां पण वरसादना पडवाने लीधे प्रकुपित तुल्यज होय छे एटला माटे अने अग्निनी मंदताथी सर्व दोषोनो प्रकोप थवो संभवित छे तेथी वर्षाऋतुमां त्रणे दोषोनो प्रकोप कह्यो छे.) एटला माटे वैद्ये आर्द्रपणाने नष्ट करवा सारू तथा दोषोने शांत राखवा सारू समर्थ माणसोने अने बनी शकतांसूधी असमर्थ माणसोने पण कषाय, तिक्त तथा कटुक ए रसोना योगवाळुं, द्रव वगरनुं अथवा थोडा द्रववाळुं, अत्यंत स्निग्ध न होय एवुं, अत्यंत रूक्ष पण न होय एवुं, उष्ण अने जठराग्निने

प्रदीप्त करे एवुं अन्न देवुं. सूत्रस्थानना ४५ मा अध्यायना ७ मा विषयमां कह्याप्रमाणे आंतरीक्ष के औद्भिदजळ पावुं अथवा जे दिवसे वादळांओनो घेराव, पवन, थंडी तथा वरसाद अत्यंत होय ते दिवसे जळ ऊनुं करी थंडुं पाडी मधथी संयुक्त करीने पावुं.

वर्षाऋतुमां औषधिओ नवी उत्पन्न थएली होवाने लीधे विकृत पाक पामे छे एटला माटे बुद्धिमान् वैद्ये लोकोने बहु कसरत करवानी छूट नहीं आपवी. तेमज अत्यंत जळपान, रात्रिमां पडता तुषारनुं सेवन, मैथुननुं सेवन अने तडकानुं सेवन एओनो पण निषेध करवो. पाणी पडवाथी नीकळती पृथ्वीनी वराळनी हवाथी बचाववाने माटे घर उपरनी बांधेली भूमिमां पलंग वगेरेनी उपर शयन करवानी आज्ञा करवी. जे दिवसे थंडी अधिक होय ते दिवसे पवन वगरना तथा सळगती सघडीवाळा घरमां जाडां वस्त्रो धरी शयन करवानी आज्ञा करवी. वाहार जवुं होय त्यारे उत्तम अगरुनां लेपनो करी हाथणीओपर बेसीने जाय एवी गोठवण करवी. दिवसनी निद्रा करवानो तथा अजीर्णनो प्रयत्नपूर्वक त्याग करावो.

६ सेव्याः शरदि यत्नेन कषायस्वादुतिक्तकाः
क्षीरेक्षुविकृतिक्षौद्रशालिमुद्गादिजाङ्गलाः ।
सलिलं च प्रसन्नत्वात् सर्वमेव तदा हितम् ॥
सरःस्वाप्लवनं चैव कमलोत्पलशालिषु ।
प्रदोषे शशिनः पादाश्चन्दनं चानुवासनम् ॥
तिक्तस्य सर्पिषः पानैरसृक्स्रावैश्च युक्तितः ।
वर्षासूपचितं पित्तं हरेच्चापि विरेचनैः ॥
मोपेयात्तीक्ष्णमम्लोष्णं क्षारं स्वप्नं दिवातपम् ।
रात्रिजागरणं चैव मैथुनं चापि वर्जयेत् ॥
स्वादु शीतमलं हृद्यं शुचि स्फटिकनिर्मलम् ।
शरच्चन्द्रांशुनिर्धौतमगस्त्योदयनिर्विषम् ।
प्रसन्नत्वाच्च सलिलं सर्वमेव तदा हितम् ।
सचन्दनं वा कर्पूरं वासश्चामलिनं लघु ॥
भजेच्च शारदं माल्यं सीधोः पानं च युक्तितः ।
पित्तप्रशमनं यच्च तच्च सर्वं समाचरेत् ॥

शरदृऋतुनो सविस्तर विधि.

६ वैद्ये शरदृऋतुमां कषाय, मधुर तथा तिक्त रसोनुं यत्नपूर्वक सेवन करावvुं. दूधना पदार्थो, शेलडीना रसना पदार्थो, मध, चोखा, मग वगेरे तथा जांगलप्राणीओनां मांसोना रसो एओनुं भोजन करावvुं. शरदृऋतुमां सघळां जळ निर्मळज होय छे एटला माटे सर्व जळनो उपयोग करवानी छूट देवी. कमळोथी तथा उत्पलोथी शोभी रहेलां तळावोमां स्नान करावvुं. प्रदोष समयमां चंद्रनी किरणोनुं तथा चंदननुं सेवन करावvुं. अनुवासनबस्तिओ देवी. वर्षाऋतुमां संचय पामेला पित्तनुं (तथा दुष्ट रुधिरनुं) युक्तिपूर्वक विरेचनोथी, जेने तिक्त द्रव्योनो संस्कार आप्यो होय एवुं घी पावाथी तथा बलादिकने अनुसरी शिरावेधो वगेरे करवाथी निर्हरण करवुं. तीक्ष्ण, खाटा, उष्ण तथा क्षार पदार्थोनो त्याग करावvो. दिवसनी निद्रानो, तडकाना सेवननो, रात्रिना उजागरानो तथा अतिमैथुननो पण निषेध करवो. शरदृऋतुमां जळ वधारे स्वादवाळुं, थंडुं, हृदयने अतिआनंद आपे एवुं, शुद्ध स्फाटिक जेवुं निर्मळ, चंद्रनी किरणोथी स्वच्छ थएलुं, अगस्त्यना उदयने लीधे विषथी रहित थएलुं अने सुप्रसन्न होय छे एटला माटे ए ऋतुमां सघळुं जळ हितकारीज छे. ए ऋतुमां चंदनसहित कर्पूरनुं, निर्मळ तथा हलकां वस्त्रोनुं, ते समयनां पुष्पोनुं अने मद्यपाननुं युक्तिपुरस्सर सेवन करावvुं. जे कांई द्रव्य के आचरण पित्तने शांत करनारूं जणाय ते सघळुं करावvुं.

७ हेमन्तः शीतलो रूक्षो मन्दसूर्योऽनिलाकुलः।
ततस्तु शीतमासाद्य वायुस्तत्र प्रकुप्यति ॥
कोष्ठस्थः शीतसंस्पर्शादन्तः पिण्डीकृतोऽनलः
रसमुच्छोषयत्याशु तस्मात्स्निग्धं तदा हितम् ।

हेमन्ते लवणक्षारतिक्ताम्लकटुकोत्कटम् ।
ससर्पिस्तैलमहिममशनं हितमुच्यते ॥
तीक्ष्णान्यपि च पानानि पिबेदगुरुभूषितः ।
तैलाभ्यक्तः सुखोष्णं च वारि कोष्ठेऽवगाहयेत्॥
साङ्गारधाने महति कौशेयास्तरणास्तृते ।
शयीत शयने चापि वृतो गर्भगृहोदरे ।
स्त्रीः श्लिष्टागुरुधूपाढ्याः पीनोरुजघनस्तनीः ॥
प्रकामं च निषेवेत मैथुनं तर्पितो नृपः ।
मधुरं तिक्तकटुकमम्लं लवणमेव च ॥
अन्नपानं तिलान्माषाञ्शाकानि च दधीनि च ।
तथेक्षुविकृतीः शालीन्सुगन्धांश्च नवानपि ॥
प्रसहानूपमांसानि क्रव्यादबिलशायिनाम् ।
औदकानां प्लवानां च पादिनां च हितानि वै ॥
मद्यानि च प्रसन्नानि यच्च किञ्चिद्बलप्रदम् ।
कामतस्तन्निषेवेत पुष्टिमिच्छन् हिमागमे ॥

हेमंतऋतुनो सविस्तर विधि.

७ हेमंतऋतु शीतल, रूक्ष, सूर्यना मंद तेजवाळी अने पवनथी व्याकुल होय छे एटला माटे ए ऋतुमां शीतने प्राप्त थईने वायु प्रकुपित थायछे. ए ऋतुमां कोठामां रहेलो अग्नि शीतना स्पर्शने लीधे अंदर पिंडीभूत थईने रेहे छे अने तेथी रसने तुरंत सूकावी नाखे छे एटला माटे ते ऋतुमां स्निग्ध हितकारी छे. तेमज लवण, क्षार, तिक्त, अम्ल अने कटुक एओनी उत्कटतावाळुं अने घीथी तथा तैलथी संयुक्त करेलुं ऊनुं भोजन हितकारी केहेवाय छे. वैद्ये ए ऋतुमां अगरूनां लेपनो करावी तीक्ष्ण पानो पण पावां. स्नान करवुं होय त्यारे तैलनो अभ्यंग करावी कोठी वगेरेमां सेहेवाय तेवुं ऊनुं पाणी भरावीने तेमां अवगाहन कराववुं. सळगती सघडीओवाळां, मोटां अने रेशमी तथा दुशाला वगेरे वस्त्रोथी बीछावेलां अंदरनां घरोमां अंगोनुं आच्छादन करावीने शयन कराववुं. ए ऋतुमां समर्थ माणसो तृप्त थई अगरूना धूपथी धूपेलां अंगादिकवाळी अने जेओनां साथळो जघनो तथा स्तनो पुष्ट होय एवी स्त्रीओनुं लिंगन करी इच्छाप्रमाणे मैथुननुं सेवन करे एवी गोठवणो करी आपवी. हेमंतमां विविध प्रकारनां मधुर, तिक्त, कटुक, अम्ल तथा लवण अन्नपानो, तिल, अडद, शाको, दहीं, शेलडीना विकारो, ऊना तथा सुगंधवाळा भातो अने प्रसह, आनूप, क्रव्याद, बिलेशय, मत्स्यो, प्लव तथा पादि ए प्राणीओनां मांसो हितकारी छे. हेमंतऋतुमां पुष्टिनी इच्छावाळां माणसोने प्रसन्न मद्योनुं अने बीजूं पण जे कांई बलदायी होय तेनुं तेओनी इच्छाप्रमाणे सेवन कराववुं.

८ एष एव विधिः कार्यः शिशिरे समुदाहृतः।

शिशिरऋतुनो सविस्तर विधि.

८ हेमंतऋतुमां करवानो जे विधि उपर केहेवामां आव्यो तेज सघळो विधि शिशिरऋतुमां पण करवो.

९ हेमन्ते निचितः श्लेष्मा शैत्याच्छीतः शरीरिणाम् ॥
औष्ण्याद्वसन्ते कुपितः कुरुते च गदान्बहून् ।
ततोऽम्लमधुरस्निग्धलवणानि गुरूणि च ॥
वर्जयेद्वमनादीनि कर्माण्यपि च कारयेत् ।
षष्टिकान्नं यवान्मुद्गांस्तथा नीवारकोद्रवान् ॥
लावादिविष्किररसैर्द्याद्यूपैश्च युक्तितः ।
पटोलनिम्बवार्त्ताकुतिक्तकैश्च हिमात्यये ॥
सेवेन्मध्वासवारिष्टान्सीधु माध्वीकमासवान् ।
व्यायाममञ्जनं धूमं तीक्ष्णं च कवलग्रहम् ॥
सुखाम्बुना च सर्वार्थान्सेवेत कुसुमागमे ।
तीक्ष्णरूक्षकटुक्षारकषायं कोष्णमद्रवम् ॥
यवमुद्गमधुप्रायं वसन्ते भोजनं हितम् ।
व्यायामोऽत्र नियुद्धाध्वशिलानिर्घातजो हितः।
उत्सादनं तथा स्नानं वनिताः काननानि च ॥
सेवेत निर्हरेच्चापि हेमन्तोपचितं कफम् ।
शिरोविरेकवमननिरूहकवलादिभिः ॥
वर्जयेन्मधुरस्निग्धदिवास्वप्नगुरुद्रवान् ।

वसंतऋतुनो सविस्तर विधि.

९ शीतल स्वभाववाळो अने हेमंतमां शीतने लीधे संचित थएलो कफ वसंतऋतुमां उष्णताने लीधे प्रकुपित थईने माणसोनां शरीरोमां अनेक जातना रोगोने उत्पन्न करे छे एटला माटे वैद्ये वसंतऋतुमां अम्ल, मधुर, स्निग्ध, लवण तथा भारेपणावाळां अन्नोनो त्याग कराववो अने वमन आदि कर्मो कराववां. लावां आदि विष्किरपक्षीओनां मांसोना रसोनी साथे साठीचोखा, जव, मग, बंटी अने कोदरा एओनां भक्ष्यो युक्तिपुरस्सर देवां. पटोल, लींबडो, रींगणां अने बीजां पण तिक्त द्रव्यो एओथी संस्कृत करेला यूषोनी साथे पण ते अन्नो जमाडवां. मधना आसवो, अरिष्टो, शेलडीना काचा अथवा पाका रसथी बनावेलां मद्यो, द्राक्षनां मद्यो, बीजा पण आसवो, कसरत, अंजन, धूमपान अने तीक्ष्ण कवलो एओनुं सेवन कराववुं. औषधादिक सघळा योग्य पदार्थोनुं सेहेवाय तेवा गरम पाणीनी साथे सेवन कराववुं. तीक्ष्ण, रूक्ष, तीखुं, क्षार, तूरूं, जरा ऊनाशवाळुं, द्रव वगरनुं अने जेमां जव, मग तथा मध सारी पेठे आवे एवुं भोजन कराववुं ए वसंतऋतुमां हितकारी छे. मल्लयुद्धरूप, पंथ करवारूप अने पथराओ पछाडवारूप कसरत करावची ए वधारे हितकारी छे. मेलने दूर करवा माटे लोट वगेरे पदार्थो शरीरपर चोळाववा, स्नान कराववुं अने स्त्रीओनुं तथा बगीचाओनुं सेवन कराववुं. हेमंतमां संचित थएला कफनुं शिरोविरेचनोथी, वमनोथी, निरूहबस्तिओथी तथा कवलादिकथी निर्हरण कराववुं. मधुर द्रव्यो, स्निग्ध द्रव्यो, दिवसनी निद्रा, भारे पदार्थो अने द्रवो एओनो त्याग कराववो.

१० व्यायाममुष्णमायासं मैथुनं चातिशोषि च॥
रसांश्चाग्निगुणोद्रिक्तान् निदाघे परिवर्जयेत् ।
सरांसि सरितो वापीर्वनानि रुचिराणि च ॥
चन्दनानि परार्ध्यानि स्रजः सकमलोत्पलाः ॥
तालवृन्तानिलान्हारांस्तथा शीतगृहाणि च ।
घर्मकाले निषेवेत वासांसि सुलघूनि च ॥
शर्कराखण्डदिग्धानि सुगन्धीनि हिमानि च ।
पानकानि च सेवेत मन्थांश्चापि सशर्करान् ॥
भोजनं च हितं शीतं सघृतं मधुरद्रवम् ।
शृतेन पयसा रात्रौ शर्करामधुरेण च ॥
प्रत्यग्रकुसुमाकीर्णशयने हर्म्यसंस्थिते ।
शयीत चन्दनार्द्राङ्गः स्पृश्यमानोऽनिलैः सुखैः

ग्रीष्मऋतुनो सविस्तर विधि.

१० ग्रीष्मऋतुमां कसरत, उष्ण, परिश्रम, मैथुन, अत्यंत शोषण करनारा पदार्थो अने कटु, अम्ल तथा लवण रसो एओनो त्याग कराववो. तलावो, नदीओ, वावो, सुंदर उपवनो, उत्तम चंदनो, कमळो तथा उत्पलोवाळी माळाओ, ताडना पंखाना पवनो, पुष्पोना तथा मोतीना हारो, शीतल घरो अने अत्यंत झीणां तथा हलकां वस्त्रो एओनुं सेवन कराववुं. साकरथी तथा खांडथी संयुक्त करेलां, सुगंधी तथा शीतलतावाळां पानकोनुं अने साकरथी संयुक्त करेला मंथोनुं सेवन कराववुं. शीतल, घीवाळुं अने शिखंड तथा आंबाना रस आदि मधुर द्रवोवाळुं भोजन कराववुं. राते गरम करेला अने साकरथी मधुर करेला दूधनी साथे भोजन कराववुं. चंदननां लेपनोथी अंगोने आर्द्र करी मेहेलमां नवीन पुष्पोथी व्याप्त करेली शय्याओमां सुखकारी पवनोनो स्पर्श मळे एवी रीते शयनो कराववां.

११ तपात्यये हिता नित्यं रसा ये गुरवस्त्रयः।
पयो मांसरसाः कोष्णास्तैलानि च घृतानि च॥
बृंहणं चापि यत्किंचिदभिष्यन्दि तथैव च ।
निदाघोपचितं चैव प्रकुप्यन्तं समीरणम् ॥
निहन्यादनिलघ्नेन विधिना विधिकोविदः
नदीजलं रूक्षमुष्णमुदमन्थं तथातपम् ॥
व्यायामं च दिवास्वप्नं व्यवायं चात्र वर्जयेत् ।
यवषष्टिकगोधूमान् शालींश्चाप्यनवांस्तथा ॥

हर्म्यमध्ये निवाते च भजेच्छय्यां मृदूत्तराम् ।
क्ष्वेविषप्राणिविण्मूत्रलालानिष्ठीवनादिभिः ॥
समाप्लुतं तदा तोयमान्तरीक्षं विषोपमम् ।
वायुना विषदुष्टेन प्रावृषेण्येन दूषितम् ।
तद्धि सर्वोपयोगेषु तस्मिन्काले विवर्जयेत् ॥
निरूहैर्बस्तिभिश्चान्यैस्तथान्यैर्मारुतापहैः ।
कुपितं शमयेद्वायुं वार्षिकं वा चरेद्विधिम् ॥

प्रावृष्ऋतुनो सविस्तर विधि.

११ प्रावृष्ऋतुमां नित्य मधुर, अम्ल तथा लवण रसोनुं सेवन कराववुं ए हितकारी छे. दूध, मांसना सेहेवाय तेवा ऊना रसो, तैलो, घी अने बीजूं पण जे कांई बृंहण तथा अभिष्यंदी द्रव्यादिक होय तेओनुं सेवन करावबुं. ग्रीष्ममां संचय पामेला अने पछी प्रकुपित थता वायुने विधि जाणनारा वैद्ये वायुनुं हरण करनारा विधिथी नष्ट करवो. नदीनुं जळ, रूक्ष, उष्ण जळथी संयुक्त करेलो मंथ, तडको, कसरत, दिवसनी निद्रा अने मैथुन एओनो त्याग कराववो. जव, साठीचोखा, घऊं अने जूना चोखा एओनां भोजनो कराववां. मेहेलमां पवन वगरना प्रदेशमां कोमळ बीछानांओवाळी शय्याओमां शयन कराववुं. प्रावृष्ऋतुमां वरसादना जळनो सघळा उपयोगोमां त्यागज कराववो. केम के ए समयमां वरसादनुं जळ झेरी प्राणिओनां विष्टा, मूत्र, लाळ तथा थूंक इत्यादिकथी तथा विषवते दूषित थएला पवनथी दूषित थएलुं होवाथी विषजेवुं होय छे. ए ऋतुमां प्रकुपित थएला वायुने निरूहादिक बस्तिओथी तथा बीजा पण वातहर योगोथी शांत करवो. प्रावृष्ऋतुमां उपर कहेला विधिनुं सेवन कराववुं अथवा वर्षाऋतुना विधिनुं सेवन कराववुं.

१२ ऋतावृतौ य एतेन विधिना वर्तते नरः ।
घोरानृतुकृतान् रोगान्नाप्नोति स कदाचन ॥

ऋतुसंबंधी विधिओ पाळवाथी लाभ.

१२ जे माणस प्रत्येक ऋतुमां उपर कहेला ते ते ऋतुना विधिप्रमाणे वर्त्ते ते माणसने कदी पण ऋतुप्रभावजन्य भयंकर रोगो थता नथी.

१३. अत उर्ध्वं द्वादशाशनप्रविभागान्वक्ष्यामः । तत्र शीतोष्णस्निग्धरूक्षद्रवशुष्कैककालिकद्विकालिकौषधयुक्तमात्राहीनदोषप्रशमनवृत्त्यर्थाः ।
तृष्णोष्णमददाहार्तान् रक्तपित्तविषातुरान् ॥
मूर्छार्तान्स्त्रीषु च क्षीणाञ्शीतैरन्नैरुपाचरेत् ।
कफवातामयाविष्टान् विरिक्तान्स्नेहपायिनः ॥
प्रक्लिन्नदेहांश्च नरानुष्णैरन्नैरुपाचरेत् ।
वातिकान्रूक्षदेहांश्च व्यायामोपहतांस्तथा ॥
व्यायामिनश्चापि नरान् स्निग्धैरन्नैरुपाचरेत् ।
मेदसाभिपरीतांस्तु स्थूलान्मेहातुरानपि ॥
कफाभिपन्नदेहांश्च रूक्षैरन्नैरुपाचरेत् ।
शुष्कदेहान् पिपासार्तान्दुर्बलानपि च द्रवैः ॥
प्रक्लिन्नकायान् व्रणिनः शुष्कैर्मेहिनमेव च ।
एककालं भवेद्देयो दुर्बलाग्निविवृद्धये ॥
समाग्नये तथाहारो देयः कालमथोभयम् ।
औषधद्वेषिणे देयस्तथौषधसमायुतः ॥
मन्दाग्नये रोगिणे च मात्राहीनः प्रशस्यते ।
यथार्थदत्तश्चाहारो दोषप्रशमनः स्मृतः ॥
अतः परं तु स्वस्थानां वृत्त्यर्थं सर्व एव च ।
द्वादशान्नप्रविचारानेतानेव प्रचक्षते ॥

आहारना बार विभागो अने तेओना अधिकारीओ.

१३ हवे बार आहारविभागो कहीए छीए. शीत आहार, उष्ण आहार, स्निग्ध आहार, रूक्ष आहार, द्रवरूप आहार, शुष्क आहार, एककालिक आहार, (एक टंक आहार) द्विकालिक आहार, (बे टंक आहार) औषधयुक्त आहार, मात्राहीन आहार, (ओछी मात्रावाळो आहार) दोषप्रशमन आहार, (दोषोने शांत

करनारो आहार) अने वृत्त्यर्थ आहार, (वृत्तिने माटे—शरीरना धारणने माटे नित्यनी रीतिप्रमाणे आहार) ए रीते आहारना बार विभागो छे.

जे माणसो तरशथी, गरमीथी, मदथी, दाहथी, रक्तथी, पित्तथी, विषथी के मूर्छाथी आतुर होय अथवा स्त्रीओना प्रसंगथी क्षीण थएला होय तेओने शीत आहार देवो. (शीत स्पर्शवाळां तथा शीतवीर्यवाळां अन्नपानो देवां.)

जे माणसो कफना के वायुना रोगथी पीडाएला होय, जेओने विरेचित कर्या होय, जेओने स्नेहपान कराव्युं होय अने जेओनां शरीरो क्लेदवाळां थई गयां होय तेओने उष्ण आहार देवो. (उष्ण स्पर्शवाळां तथा उष्ण वीर्यवाळां अन्नपानो देवां.)

जे माणसो वायुप्रकृतिवाळा होय, रूक्ष देहवाळा होय, कसरतथी दुःखी थया होय के कसरतना अभ्यासवाळा होय तेओने स्निग्ध आहार देवो.

जे माणसो मेदथी व्याप्त होय, जाडा होय, प्रमेहथी आतुर होय के कफथी व्याप्त शरीरवाळा होय तेओने रूक्ष आहार देवो.

जे माणसो शुष्क शरीरोवाळा होय, तरशथी पीडाएला होय के दुर्बल होय तेओने द्रवरूप आहार देवो.

जे माणसो अत्यंत क्लेदवाळा होय, व्रणवाळा होय के प्रमेहवाळा होय तेओने शुष्क आहार देवो.

जे माणसोना जठराग्नि नबळो थई गयो होय तेओने ते अग्निनी वृद्धिने माटे एककालिक आहार देवो (अने ते पण ओछी मात्रावाळो देवो.)

जे माणसो सम अग्निवाळा होय तेओने योग्य मात्राथी द्विकालिक आहार देवो.

जे माणसो औषधना द्वेषी होय तेओने औषधयुक्त (औषधोथी युक्त करेलो) आहार देवो.

जे माणसो मंद अग्निवाळा के रोगी होय तेओने मात्राहीन आहार देवो (अने ते पण एक टंकज देवो.)

जे माणसो दुष्ट दोषोवाळा होय तेओने शास्त्रोक्त विधानप्रमाणे दोषप्रशमन आहार देवो.

जे माणसो स्वस्थ होय तेओने दोषप्रशमन आहार दीधा पछी सर्व प्रकारनो वृत्त्यर्थ आहार देवो.

बीजा आचार्योए बार प्रकारना जे अन्नप्रविचारो कह्या छे तेओ आ बार प्रकारना आहारविभागोथी जूदा नथी.

१४ अत ऊर्ध्वं दशौषधकालान्वक्ष्यामः । तत्र निर्भक्तं प्राग्भक्तमधोभक्तं मध्येभक्तमन्तराभक्तं सभक्तं सामुद्गं मुहुर्मुहुर्ग्रासं ग्रासान्तरं चेति दशौषधकालाः ॥

औषधना दश कालो (समयो उपर देवाथी थता औषधना दश भेदो.)

१४ हवे दश औषधकालो कहीए छीए. निर्भक्त, प्राग्भक्त, अधोभक्त, मध्येभक्त, अंतराभक्त, सभक्त, सामुद्ग, मुहुर्मुहुः, ग्रास अने ग्रासांतर ए रीते औषधकालो दश छे.

१५ तत्र निर्भक्तं केवलमेवौषधमुपयुज्यते ।

वीर्याधिकं भवति भेषजमन्नहीनं
हन्यात्तथामयमसंशयमाशु चैव ।
तद् बालवृद्धयुवतीमृदवोऽथ पीत्वा
ग्लानिं परां समुपयान्ति बलक्षयं च ॥

निर्भक्त अने तेनुं फळ.

१५ जे औषध प्रभातमां नरणे कोठेज देवामां आवे ते निर्भक्त केहेवाय छे.

निर्भक्त औषध अधिकशक्तिवाळुं थायछे अने अवश्य तुरतज रोगने नष्ट करे छे. परंतु बालक, वृद्ध, जुवान स्त्री के कोमळ प्रकृतिनो माणस एओने निर्भक्त औषध देवुं नहीं. केम के निर्भक्त औषधथी तेओ अत्यंत ग्लानि पामे छे तथा तेओना बळनो क्षय थाय छे.

१६ प्राग्भक्तं नाम यत्तु प्राग्भक्तस्योपयुज्यते ।
शीघ्रं विपाकमुपयाति बलं न हिंस्या-

दुन्नावृतं न च मुहुर्वदनान्निरेति ।
प्राग्भक्तसेवितमथो बलमादधाति
दद्याच्च वृद्धशिशुभीरुवराङ्गनाभ्यः ॥

प्राग्भक्त अने तेनुं फळ.

१६ भोजनना आरंभमां जे औषध आपीने पछी भोजन कराववामां आवे ते औषध प्राग्भक्त केहेवाय छे.

प्राग्भक्त औषध तुरत उदरमां पाक पामे छे, बळने नष्ट करतुं नथी अने अन्नथी दबाई जवाने लीधे मोहोडामांथी वारंवार बाहार नीकळतुं नथी. सेवन कराववामां आवेलुं प्राग्भक्त औषध वृद्ध लोकोने, बालकोने, बीकण माणसोने तथा उत्तम स्त्रीओने बळ आपे छे माटे तेओने प्राग्भक्त देवुं.

१७ अधोभक्तं नाम यद्भुक्तान्ते पीयते ।
पीतं यदन्नमुपयुज्य तदूर्ध्वकाये
हन्याद्गदान्बहुविधांश्च बलं दधाति ।

अधोभक्त अने तेनुं फळ.

१७ जे औषध भोजनना अंतमां देवामां आवे ते औषध अधोभक्त केहेवाय छे.

अधोभक्त औषध शरीरना नाभिथी उपरना भागोमां थएला घणा प्रकारना रोगोने नष्ट करे छे तथा बळ आपे छे.

१८ मध्येभक्तं नाम यन्मध्ये भक्तस्य पीयते ।
मध्ये तु पीतमुपहन्त्यविसारिभावा-
द्ये मध्यदेहमभिभूय भवन्ति रोगाः ।

मध्येभक्त अने तेनुं फळ.

१८ जे औषध भोजनना मध्यमां देवामां आवे ते औषध मध्येभक्त केहेवाय छे.

मध्येभक्त औषध शरीरना उपरना भागोमां प्रसरतुं नथी तेथी मध्यभागोमां थएला रोगोने नष्ट करे छे.

१९ अन्तराभक्तं नाम यदन्तरा पीयते पूर्वापरयोर्भक्तयोः ।
हृद्यं मनोबलकरं त्वतिदीपनीयं
पथ्यं च सम्भवति चान्तरभक्तमेतत् ॥

अंतराभक्त अने तेनुं फळ.

१९ प्रभातना भोजन पछी अने सायंकाळना भोजनथी पेहेलां वचला समयमां जे औषध देवामां आवे ते अंतराभक्त केहेवाय छे.

अंतराभक्त औषध हृदयने प्रिय लागे छे, मनने बळ आपे छे, जठराग्निने सारी पेठे दीप्त करे छे अने पथ्य थायछे.

२० सभक्तं नामौषधेषु यत्साध्यते भक्तम् ।
पथ्यं सभक्तमबलाबलयोर्हि नित्यं
तद्द्वेषिणामपि तथा शिशुवृद्धयोश्च ।

सभक्त अने तेनुं फळ.

२० जे औषध अन्ननी साथेज पकावीने खवराववामां के पीवराववामां आवे ते औषध सभक्त केहेवाय छे.

सभक्त औषध बळवान् माणसोने, नबळां माणसोने, औषधना द्वेषीओने, बालकोने तथा वृद्धोने पण सर्वदा पथ्य छे.

२१ सामुद्गं नाम यद्भक्तस्यादावन्ते च पीयते ।
दोषे द्विधा प्रतिसृते तु समुद्गसंज्ञ-
माद्यन्तयोर्यदशनस्य निषेव्यते तु ॥

सामुद्ग अने तेनुं फळ.

२१ जे औषध संपुटरूपे एटले भोजनना आरंभमां तथा अंतमां पण देवामां आवे ते औषध सामुद्ग केहेवाय छे.

दोष उपरना भागोमां तथा नीचेना भागोमां पण प्रसार पामेलो होय तो सामुद्ग औषधनुं सेवन कराववुं.

२२ मुहुर्मुहुर्नाम सभक्तमभक्तं वा यदौषधं मुहुर्मुहुरुपयुज्यते ।
श्वासे मुहुर्मुहुरतिप्रसृते च कासे
हिक्कावमीषु च वदन्त्युपयोज्यमेतत् ।

मुहुर्मुहुः अने तेनुं फळ.

२२ भोजननी साथे अथवा भोजनथी जूदुं पण जे औषध वारंवार देवामां आवे ते औषध '**मुहुर्मुहुः**' केहेवाय छे.

श्वास, खांसी, हेडकी तथा उलटी के जेओ वारंवार अत्यंत प्रसऱ्या करे छे तेओनी उपर आ : औषध देवुं एम केहेवामां आवे छे.

२३ ग्रासं तु नाम यत्पिण्डव्यामिश्रम् ।
ग्रासं तु देयमबलाग्निषु मानुषेषु
प्राणाभिधे च पवने परिदोषमाप्ते ।

ग्रास तथा तेनुं फळ.

२३ जे औषध अन्नना कोळीआनी साथे मिश्रित करीने देवामां आवे ते औषध **ग्रास** केहेवाय छे.

जेओनो जठराग्नि नबळो थई गयो होय के प्राणवायु दुष्ट थयो होय ते माणसोने ग्रास औषध देवुं ए हितकारी थायछे.

२४ ग्रासान्तरं तु नाम यद् ग्रासान्तरेषु ।
ग्रासान्तरेषु वितरेद्वमनीयधूमान्
श्वासादिषु प्रथितदृष्टगुणांश्च लेहान् ॥
एतमेते दशौषधकालाः ॥

ग्रासांतर अने तेनुं फळ.

२४ जे औषध बन्ने कोळीयाओना मध्यमां देवामां आवे ते औषध **ग्रासांतर** केहेवाय छे.

वैद्ये श्वास आदि रोगो उपर वमन करावनारा धूमो अने जेओना गुणो प्रख्यात तथा अनुभवेला होय एवा अवलेहो बन्ने कोळीआओना मध्यमां देवा ए हितकारी थायछे.

आ दश औषधकाळोनुं निरूपण करवामां आव्युं.

२५ विसृष्टे विण्मूत्रे विशदकरणे देहे च सुलघौ विशुद्धे चोद्गारे हृदि सुविमले वाते च सरति । तथान्नश्रद्धायां क्षुदुपगमने कुक्षौ च शिथिले प्रदेयस्त्वाहारो भवति भिषजा कालः स तु मतः

भोजननो श्रेयस्कर समय.

२५ विष्टानो तथा मूत्रनो योग्य उत्सर्ग थई गया पछी शरीर निर्मळ इंद्रियोवाळुं तथा सारी पेठे हलकुं थई जाय, ओडकार शुद्ध आवे, हृदय अत्यंत स्वस्थ थई जाय, अधोवायु शुद्ध चाले, अन्न उपर रुचि थाय, भूख लागी होय अने पेट ऊंचाई वगरनुं थई गयुं होय ते समयमां वैद्ये आहार देवो. भोजननो आ समय श्रेयस्कर छे.

अध्याय ६५ मो.

१ अथातस्तन्त्रयुक्ति नामाध्यायं व्याख्यास्यामः।

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'तंत्रयुक्ति'[1] ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जेप्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ द्वात्रिंशत्तन्त्रयुक्तयो भवन्ति । तद्यथा ॥ अधिकरणं योगः पदार्थो हेत्वर्थ उद्देशो निर्देश उपदेशोऽपदेशः प्रदेशोऽतिदेशोऽपवर्गो वाक्यशेषोऽर्थापत्तिर्विपर्ययः प्रसङ्ग एकान्तोऽनेकान्तः पूर्वपक्षो निर्णयोऽनुमतं विधानमनागतावेक्षणमतिक्रान्तावेक्षणं संशयो व्याख्यानं स्वसंज्ञा निर्वचनं निदर्शनं नियोगः समुच्चयो विकल्प ऊह्यमिति ॥

तंत्रयुक्तिओनी संख्या तथा तेओनां नामो.

२ अधिकरण, योग, पदार्थ, हेत्वर्थ, उद्देश, निर्देश, उपदेश, अपदेश, प्रदेश, अतिदेश, अपवर्ग, वाक्यशेष, अर्थापत्ति, विपर्यय, प्रसंग, एकांत, अनेकांत, पूर्वपक्ष, निर्णय, अनुमत, वि-

---

१ शास्त्रनो अर्थ तथा अभिप्राय यथार्थ समजवामां आवे एटला माटे शास्त्रनां वाक्योनी तथा ते वाक्योना अर्थनी योजना करवानी युक्तिओना निरूपण विषयनो.

धान, अनागतावेक्षण, अतिक्रांतावेक्षण, संशय, व्याख्यान, स्वसंज्ञा, निर्वचन, निदर्शन, नियोग, समुच्चय, विकल्प अने ऊह्य ए बत्रीश तंत्रयुक्तिओ (आ शास्त्रने जोडवानी युक्तिओ) छे.

३ अथासां तन्त्रयुक्तीनां किं प्रयोजनमित्युच्यते वाक्ययोजनमर्थयोजनं च ॥

भवन्ति चात्र श्लोकाः ॥

असद्वादिप्रयुक्तानां वाक्यानां प्रतिषेधनम् ।
स्ववाक्यसिद्धिरपि च क्रियते तन्त्रयुक्तितः ॥
व्यक्ता नोक्ताश्च ये ह्यर्था लीना ये चाप्यनिर्मलाः
लेशोक्ता ये क्वचित्तन्त्रे तेषां चापि प्रसाधनम् ॥
यथाम्बुजवनस्यार्कः प्रदीपो वेश्मनो यथा ॥
प्रबोध्यस्य प्रकाशार्थास्तथा तन्त्रस्य युक्तयः ।

ए तंत्रयुक्तिओ केहेवानुं प्रयोजन.

३ हवे ए बत्रीश तंत्रयुक्तिओनुं जे प्रयोजन छे ते कहीए छीए. असंबद्ध लागता वाक्यनुं संबंधन करवुं अने गुप्त अथवा उपर उपरथी जोतां असंगत लागता अर्थनुं संगतीकरण करवुं ए तंत्रयुक्तिओनुं प्रयोजन छे. (योग उद्देश तथा निर्देश आदि केटलीक तंत्रयुक्तिओथी वाक्योनुं संबंधन थायछे अने अधिकरण तथा हेत्वर्थ आदि केटलीक तंत्रयुक्तिओथी अर्थनुं संगतीकरण थाय छे.) आ विषयना श्लोकोमां भगवान् धन्वंतरिए स्वमुखथी कह्युं छे के "खोटी तकरार लेनारा प्रतिपक्षीओनां वाक्योनुं खंडन अने पोतानां वाक्योनुं मंडन तंत्रयुक्तिओथी करवामां आवे छे. शास्त्रमां कोई स्थले जे अर्थो स्पष्ट कहेला न होय अथवा अंदर रहेला छतां निर्मल रीते जणाता न होय अथवा संक्षेपथी कहेला होय तेओनुं प्रसाधन तंत्रयुक्तिओथी करवुं. जेम सूर्यनी किरणो कमळवननो प्रकाश करे छे अने जेम दीवानी किरणो घरनो प्रकाश करे छे तेम तंत्रयुक्तिओ समजवालायक विषयनो प्रकाश करे छे."

४ यदर्थमधिकृत्योच्यते तदधिकरणम् । यथा । रसं दोषं वा ॥

अधिकरण नामनी पेहेली तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

४ जे संदर्भमां एक विषयना निरूपणने मुख्यत्वे स्थापी ते विषयने लगती बीजी सघळी बाबतोनुं निरूपण करवामां आवे ते संदर्भ ते विषयनुं **अधिकरण** केहेवाय छे.

जेम के जे संदर्भमां रसना निरूपणने मुख्यत्वें स्थापी रसने लगती बीजी सघळी बाबतोनुं निरूपण करवामां आव्युं होय ते रसाधिकरण (रसनो अधिकार अथवा रसनुं प्रकरण) केहेवाय. तेमज जे संदर्भमां दोषना निरूपणने मुख्यत्वे स्थापी दोषने लगती सघळी बाबतोनुं निरूपण करवामां आव्युं होय ते दोषाधिकरण (दोषनो अधिकार अथवा दोषनुं प्रकरण) केहेवाय छे. इत्यादि.

५ येन वाक्यं युज्यते स योगः । यथा ।

तैलं पिबेच्चामृतवल्लिनिम्ब-
हिंस्राभयावृक्षकपिप्पलीभिः ।
सिद्धं बलाभ्यां च सदेवदारु
हिताय नित्यं गलगण्डरोगी ॥

सिद्धं तैलं पिबेदिति प्रथमं वक्तव्ये तृतीयपादे सिद्धं प्रयुक्तमेवं दूरस्थानामपि पदानामेकीकरणं योगः ॥

योग नामनी बीजी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

५ समीपनां तथा दूरनां पदोनो उचित अन्वय करीने वाक्य गोठववुं ए **योग** केहेवाय छे.

जेम के चिकित्सास्थानना १८ मा अध्यायना १९ मा विषयमां '**तैलं पिबेच्चामृतवल्लिनिंबहिंस्राभयावृक्षकपिप्पलीभिः । सिद्धं बलाभ्यां च सदेवदारु हिताय नित्यं गलगंडरोगी**' ए श्लोक छे तेमां '**सिद्धं**' ए पद त्रीजा चरणमां छे तेनो पेहेला चरणमां रहेला '**तैलं**' ए पदनी साथे अन्वय करीए त्यारे योग्य

वाक्य गोठवाय छे. आप्रमाणे परस्परथी दूर रहेलां पदोनुं पण योग्यता उपरथी एकीकरण करी लेवुं.

६ योऽर्थोऽभिहितः सूत्रे पदे वा स पदार्थः। अपरिमिताश्च पदार्थाः।

यथा। स्नेहस्वेदाञ्जनेषु निर्दिष्टेषु द्वयोस्त्रयाणामर्थानामुपपत्तिर्दृश्यते तत्र योऽर्थः पूर्वापरयोगसिद्धो भवति स ग्रहीतव्यः। यथा वा। वेदोत्पत्तिं व्याख्यास्याम इत्युक्ते सन्दिह्यते बुद्धिः। कतमस्य वेदस्यायमुत्पत्तिं विवक्षुरिति। ऋग्वेदादयस्तु वेदाः। तत्र पूर्वापरयोगमुपलभ्य विद विचारणे विद विद्लृलाभे इत्येतयोश्च धात्वोरनेकार्थयोः प्रयोग इति पश्चात्प्रतिपत्तिर्भवति। आयुर्वेदोत्पत्तिमयं विवक्षुरित्येवं पदार्थः॥

पदार्थ नामनी त्रीजी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

६ सूत्रमां के इतर पदमां ज्यां अनेक अर्थोवाळो शब्द होय त्यां ते शब्दनो 'कयो अर्थ लेवो' एवो संदेह उत्पन्न थतां पूर्वापरना संबंध उपरथी जे अर्थ अन्वित थतो होय तेनुं ग्रहण करवुं ए **पदार्थ** केहेवाय छे. एवा पदार्थो अपरिमित छे.

जेम के आ शास्त्रमां घणी जगोपर स्नेह, स्वेद अने अंजन ए त्रण अनेक अर्थोवाळा शब्द आवे छे (स्नेहशब्दना स्नेह नामनो नैयायिकाभिमत गुण, घी आदि अने प्रेम ए त्रण अर्थो छे. स्वेद शब्दना पसीनो अने शेक ए बे अर्थो छे. अंजन शब्दना सुरमो, रसवंती तथा अभ्यंग ए त्रण अर्थो छे) त्यां पूर्वापरना संबंध उपरथी जे अर्थ लेवो उचित जणाय ते लेवो.

तथा आ शास्त्रना पेहेला अध्यायना आरंभमांज 'हवे शिष्योना पूछवा उपरथी वेदोत्पत्ति ए नामना अध्यायनुं व्याख्यान करीशुं' एवा अर्थवाळुं **अथातो वेदोत्पत्तिं नामाध्यायं व्याख्यास्यामः** ए सूत्र छे त्यां ऋग्वेद आदि वेदो अनेक होवाने लीधे संदेह उत्पन्न थायछे के 'कया वेदनी उत्पत्ति केहेवानी ग्रंथकर्त्तानी इच्छा छे? वळी **विद सत्तायां, विद विचारणे, विद ज्ञाने** तथा **विद्लृ लाभे** ए नोखनोखा अर्थोवाळा चारे धातुओमांथी व्याकरणनी रीतिप्रमाणे वेदशब्द सिद्ध थायछे तो „अहीं वेदशब्दनो कयो अर्थ लेवो ए संदेह पण उत्पन्न थायछे. आ संदेहो उत्पन्न थतां पूर्वापरनो संबंध जोईने पाछळथी निश्चय करी शकाय छे के 'आयुर्वेदनी उत्पत्ति केहेवानी ग्रंथकर्त्तानी इच्छा छे अने आ ग्रंथमां आयुष्यनो विचार करवामां आव्यो छे तथा जेओथी आयुष्यनो लाभ थाय एवा उपायोनो उपदेश करवामां आव्यो छे माटे अहीं वेदशब्दनो विचाररूप तथा लाभरूप अर्थ लेवो.'

७ यदन्यदुक्तमन्यार्थसाधकं भवति स हेत्वर्थः। यथा। यथा मृत्पिण्डोऽद्भिः प्रक्लिद्यते तथा माषदुग्धप्रभृतिभिर्व्रणः प्रक्लिद्यत इति॥

हेत्वर्थ नामनी चोथी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

७ केहेवामां आवेलुं जे बीजुं वाक्य अन्य विषयने सिद्ध करनारूं होय ते **हेत्वर्थ** केहेवाय छे.

जेम के आयुर्वेदमां कह्युं छे के 'जेम माटीनो पिंड जळथी आर्द्र थई जाय छे तेम व्रण अडद तथा दूध आदि पदार्थोथी आर्द्र थई जाय छे.' अहीं 'जेम माटीनो पिंड जळथी आर्द्र थई जाय छे' ए दृष्टांतरूप वाक्य 'व्रण अडद तथा दूध आदि पदार्थोथी आर्द्र थई जाय छे' ए विषयने सिद्ध करनारूं छे.

८ समासकथनमुद्देशः। यथा। शल्यमिति॥

उद्देश नामनी पांचमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

८ संक्षेपथी केहेवुं ए **उद्देश** केहेवाय छे.

जेम के 'शल्य' एटलुं केहेवाथी, जे कांई मनमां तथा शरीरमां पीडा करनार होय ते सघळुं समजाय छे.

९ विस्तरवचनं निर्देशः ।
यथा । शारीरमागन्तु चेति ॥

निर्देश नामनी छठी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

९ विस्तारथी केहेवुं ए निर्देश केहेवाय छे.

जेम के 'शारीर अने आगंतु ए रीते शल्य बे प्रकारनुं छे' ए शल्यना अर्थनुं विस्तारथी कथन कर्युं छे.

१० एवमित्युपदेशः ।
यथा । न जागृयाद्रात्रौ दिवास्वप्नं च वर्जयेत् ॥

उपदेश नामनी सातमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१० 'आ प्रमाणे करवुं' एम जे केहेवामां आव्युं होय ते उपदेश केहेवाय छे.

जेम के 'राते जागवुं नहीं अने दिवसनी निद्रा करवी नहीं.'

११ अनेन कारणेनेत्यपदेशः ।
यथोपदिश्यते मधुरेण श्लेष्माभिवर्द्धत इति ॥

अपदेश नामनी आठमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

११ कारण बतावीने केहेवुं ए अपदेश केहेवाय छे.

जेम के 'मधुरथी कफनी वृद्धि थायछे एटला माटे कफना रोगीवाळाए मधुररसनो त्याग करवो.' ए अपदेश छे.

१२ प्रकृतस्यातिक्रान्तेन साधनं प्रदेशः ।
यथा । देवदत्तस्यानेन शल्यमुद्धृतं तस्माद्यज्ञदत्तस्याप्ययमेवोद्धरिष्यतीति ॥

प्रदेश नामनी नवमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१२ भूत बाबतथी, प्रस्तुत बाबतने सिद्ध करवी ए प्रदेश केहेवाय छे.

जेम के 'आ वैद्ये देवदत्तनुं शल्य काहाड्युं हतुं माटे यज्ञदत्तनुं शल्य पण आ वैद्यज काहाडशे.' आ वाक्यमां देवदत्तनुं शल्य काहाडवारूप भूत बाबतथी यज्ञदत्तनुं शल्य काहाडवारूप प्रस्तुत बाबतने सिद्ध करवामां आवे छे.

१३ प्रकृतस्यानागतेन भूतेन वा साधनमतिदेशः
यथा । अनेनास्य वायुरूर्द्ध्वमुत्तिष्ठते तेनोदावर्त्तवत् स्यादिति ॥

अतिदेश नामनी दशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१३ कहेली के केहेवानी बाबतना प्रकारने प्रस्तुत बाबतमां दाखल करवी ए अतिदेश केहेवाय छे.

जेम के 'माणसने आ रोगथी वायु प्रतिलोम चाले छे माटे आ रोगनी उदावर्त्तना जेवी चिकित्सा करवी' आ वाक्यमां वायुने प्रतिलोम करनारा रोगरूप प्रस्तुतमां उदावर्त्तनी चिकित्साना प्रकारने दाखल कर्यो छे.

१४ अभिव्याप्यापकर्षणमपवर्गः ।
यथा । अस्वेद्या विषोपसृष्टा अन्यत्र कीटविषादिति ॥

अपवर्ग नामनी अगीयारमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१४ कोई विषयने प्रथम सर्वत्र व्याप्त करीने पछी अमुक बाबतमां तेनो संकोच करवो ए अपवर्ग केहेवाय छे.

जेम के 'आ ग्रंथमां विषथी पीडाएलाओने स्वेदन संस्कार नहीं आपवो' ए वाक्यथी अस्वेदनने सर्व प्रकारना विषसंसर्गमां व्याप्त करीने पछी 'कीडाओना विषथी पीडाएलाओने स्वेदन संस्कार देवो' ए वाक्यथी कीडाओना विषनी बाबतमां अस्वेदननो संकोच कर्यो छे. (जुवो चिकित्सास्थानना ३२ मा अध्यायनो १९ मो विषय तथा कल्पस्थानना ८ मा अध्यायनो २९ मो विषय.)

१५ येन पदेनानुक्तेन वाक्यं समाप्यते स वाक्यशेषः ।

यथा । शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोदरोरसइत्युक्ते पुरुषग्रहणमपि गम्यते पुरुष एवोक्तइति ॥

वाक्यशेष नामनी बारमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१९ केहेवामां नहीं आवेला जे पदने अध्याहारथी लईने वाक्यनी संपूर्णता करवामां आवे ते पद **वाक्यशेष** केहेवाय छे.

जेम के 'माथुं, हाथ, पग, पासां, पीठ, पेट अने उदर एओनुं आप्रमाणे समजवुं' ए वाक्यमां 'माणसनां' ए पद केहेवामां आव्युं नथी तो पण तेनो अध्याहार लईने वाक्यनी संपूर्णता करवामां आवे छे.

१६ यदकीर्त्तितमर्थादापद्यते सार्थापत्तिः ।

यथा । ओदनं भक्षयिष्यामीत्युक्तेऽर्थापन्नं भवति नायं पिपासुर्यवागूमिति ॥

अर्थापत्ति नामनी तेरमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१६ कोई बाबत मुखथी नहीं कहेली छतां अर्थात् प्राप्त थाय ए **अर्थापत्ति** केहेवाय छे.

जेम के कोई माणस 'हुं भात जमीश' एम बोले त्यां 'आने यवागू पीवानी इच्छा नथी' एवा प्रकारनी अर्थापत्ति थायछे.

१७ यद्यत्राभिहितं तस्य प्रातिलोम्यं विपर्ययः ।

यथा । कृशाल्पप्राणभीरवो दुश्चिकित्स्या इत्युक्ते विपरीतं गृह्यते दृढादयः सुचिकित्स्या इति ॥

विपर्यय नामनी चौदमी तंत्रयुक्तिनु लक्षण तथा उदाहरण.

१७ जे वात ज्यां केहेवामां आवे त्यां तेथी उलटी वात पण समजी लेवाय ए **विपर्यय** केहेवाय छे.

जेम के 'कृश, अल्प बलवाळो अने बीकण एओनी चिकित्सा करवी बहु कठण छे' एम केहेवामां आव्युं छे त्यां समजी लेवाय छे के 'दृढ, बलवान् अने निर्भय एओनी चिकित्सा करवी बहु सुगम छे.'

१८ प्रकरणान्तरेण समापनं प्रसङ्गः । एवं च प्रकरणान्तरितो योऽर्थोऽसकृदुक्तः समाप्यते स प्रसङ्गः ।

यथा । पञ्चमहाभूतशरीरिसमवायः पुरुष इत्युच्यते तस्मिन् क्रिया सोऽधिष्ठानमिति वेदोत्पत्तावभिधाय सर्वभूतचिन्ताशारीरे पुनरुक्तं यतोऽभिहितं पञ्चमहाभूतशरीरिसमवायः पुरुष इति स एव कर्मपुरुषश्चिकित्सायामधिकृतः ॥

प्रसंग नामनी पंदरमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१८ एक प्रकरणमां कही छोडी दीधेली वातने पाछी बीजा प्रकरणमां पुनरुक्तिथी कहीने समाप्त करवी ए **प्रसंग** केहेवाय छे.

जेम के आ ग्रंथना सूत्रस्थानना वेदोत्पत्ति नामना पेहेला अध्यायना १६ मा विषयमां 'पंचमहाभूतो अने जीव एओ मळीने मनुष्य शरीर थयुं छे ते पुरुष केहेवाय छे अने ते पुरुषमां सघळी क्रियाओ लागू पाडवामां आवे छे माटे ते पुरुष क्रियाओनो आश्रय छे' एम कही छोडी दीधेली ते वातने शारीरस्थानना पेहेला अध्यायना ११ मा विषयमां पाछी 'कह्युं छे के जीवात्मानो अने पंचमहाभूतात्मक शुक्रशोणितनो जे संयोग थायछे तेज पुरुष छे अने ते पुरुषने माटेज चिकित्सा छे. ए पुरुष जेम पापपुण्योनां फळोने भोगवे छे तेम चिकित्सानां फळोने पण भोगवे छे तेथी कर्मपुरुष केहेवाय छे' ए रीतनी पुनरुक्ति कहीने समाप्त करी छे.

१९ सर्वत्र यदवधारणेनोच्यते स एकान्तः ।

यथा त्रिवृद्विरेचयति मदनफलं च वामयतीति ॥

एकांत नामनी सोळमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

१९ कदी पण व्यभिचरित न थाय एवी जे वात केहेवामां आवी होय ते **एकांत** केहेवाय छे.

जेम के आ ग्रंथमां 'नसोतर रेच लगाडे छे अने मींढोळ वमन करावे छे' एम जे कह्युं छे ते कदी पण व्यभिचरित थाय एम नथी माटे एकांत छे.

२० क्वचित्तथा क्वचिदन्यथेति यः सोऽनेकांतः।

यथा। केचिदाचार्या ब्रुवते द्रव्यं प्रधानं केचिद्रसं केचिद्वीर्यं केचिद्विपाकमिति ॥

अनेकांत नामनी सत्तरमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२० जे वात सर्वत्र एकज प्रकारथी न रेहेतां व्यभिचरित थई जती होय ते वात **अनेकांत** केहेवाय छे.

जेम के सूत्रस्थानना ४० मा अध्यायमां कह्याप्रमाणे केटलाएक आचार्यो द्रव्यने प्रधान केहे छे, केटलाएक आचार्यो रसने प्रधान केहे छे, केटलाएक आचार्यो वीर्यने प्रधान केहे छे अने केटलाएक आचार्यो विपाकने प्रधान केहे छे तो ए परस्पर विरुद्ध मतोने लीधे सर्व आचार्योनुं केहेवुं अनेकांत छे.

२१ आक्षेपपूर्वकः प्रश्नः पूर्वपक्षः।

यथा। कथं वातनिमित्ताश्चत्वारः प्रमेहा असाध्या भवन्तीति ॥

पूर्वपक्ष नामनी अढारमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२१ खंडन करवानी ढबथी प्रश्न करवो ए **पूर्वपक्ष** केहेवाय छे.

जेम के 'सर्पिःप्रमेह, वसाप्रमेह, क्षौद्रप्रमेह अने हस्तिप्रमेह ए चार वातजन्य प्रमेहोने निदानस्थानना छठ्ठा अध्यायना छठ्ठा विषयमां शा माटे असाध्य गण्या छे?' एम जो कोई वादी खंडन करवानी ढबथी पूछे तो ते पूर्वपक्ष कर्यो केहेवाय.

२२ तस्योत्तरं निर्णयः।

यथा। शरीरं प्रपीड्य पश्चादधोगत्वा वसामेदोमज्जानुविद्धं मूत्रं प्रसृजति वात एवमसाध्या वातजा इति। यथाचोक्तम् ॥ कृत्स्नं शरीरं निष्पीड्य मेदोमज्जावसायुतः। अधः प्रक्रमते वायुस्तेनासाध्यास्तु वातजाः ॥

निर्णय नामनी ओगणीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२२ पूर्वपक्षनो उत्तर देवो ए **निर्णय** केहेवाय छे.

जेम के उपरना पूर्वपक्षनी संभावना करीने निदानस्थानना छठ्ठा अध्यायना १७ मा विषयमांज **कृत्स्नं शरीरं निष्पीड्य मेदोमज्जावसानुगः। अधः प्रक्रमते वायुस्तेनासाध्यास्तु वातजाः** ए श्लोकथी उत्तर आप्यो छे के वायु सघळा शरीरने नीचोवी मेदथी, मज्जाथी तथा चरबीथी युक्त थई नीचे गति करीने मेदना, मज्जाना तथा चरबीना संयोगवाळा मूत्रने प्रवर्त्तावे छे एटला माटे वातजन्य चारे प्रमेहो असाध्य छे.

२३ परमतमप्रतिषिद्धमनुमतम्।

यथा। केचित्सयकृतः प्लीहः प्रवदन्त्यसृजो गतिम् ॥

अनुमत नामनी वीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२३ जो परायो मत लखीने तेनुं खंडन न करवामां आव्युं होय तो ते मत **अनुमत** (ग्रंथकर्त्ताए पण कोई रीते स्वीकारेलो) केहेवाय छे.

जेम के आ उत्तरतंत्रनां ४९ मा अध्यायना चोथा विषयमां 'केटलाएक आचार्यो केहे छे के रुधिरनी गति आमाशयमांथी के पक्वाशयमांथी नहीं पण यकृत्मांथी तथा प्लीहमांथी थायछे' एम परायो मत लखीने तेनुं खंडन कर्युं नथी

तेथी ते मतने ग्रंथकर्त्ताए पण कोई रीते स्वीकारेलो समजवो.

२४ प्रकरणानुपूर्व्याभिहितं विधानम् ।

यथा । सक्थिमर्माण्येकादश प्रकरणानुपूर्व्याभिहितानि ॥

विधान नामनी एकवीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२४ प्रकरणना क्रमथी प्रतिपादनीय अर्थनुं जे निरूपण करवामां आव्युं होय ते **विधान** केहेवाय छे.

जेम के शारीरस्थानना छट्ठा अध्यायना ९ मा विषयमां पगनां अगीयार मर्मो प्रकरणना क्रमथी केहेवामां आव्यां छे.

२५ एवं वक्ष्यतीत्यनागतावेक्षणम् ।

यथा । सूत्रस्थाने ब्रूयाच्चिकित्सितेषु वक्ष्यामीति ॥

अनागतावेक्षण नामनी बावीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२५ एक प्रकरणमां कह्युं होय के 'अमुक विषय अमुक प्रकरणांतरमां केहेवामां आवशे' तो ते **अनागतावेक्षण** (भविष्यमां जे विषय केहेवानो छे तेनुं अवेक्षण) थयुं केहेवाय छे.

जेम के 'सूत्रस्थानमां केहेवामां आवे के अमुक विषय चिकित्साप्रकरणमां केहेवामां आवशे.' (जुवो सूत्रस्थानना २९ मा अध्यायनो १३ मो विषय.)

२६ यत्पूर्वमुक्तं तदतिक्रान्तावेक्षणम् ।

यथा । चिकित्सितेषु ब्रूयात् सूत्रस्थाने यदीरितमिति ॥

अतिक्रांतावेक्षण नामनी त्रेवीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२६ पूर्व प्रकरणमां जे विषय केहेवाई गयो होय तेनुं पाछळना प्रकरणमां अवेक्षण करवुं (स्मरण आपवुं) ए **अतिक्रांतावेक्षण** (भूतनुं अवेक्षण) केहेवाय छे.

जेम के 'चिकित्सितस्थानमां स्मरण आपवामां आवे के अमुक विषय सूत्रस्थानमां केहेलो छे.' (चिकित्सितस्थानना पेहेला अध्यायनो २९ मो विषय जुवो.)

२७ उभयहेतुदर्शनं संशयः ।

यथा । तलहृदयाभिघातः प्राणहरः पाणिपादच्छेदनमप्राणहरमिति ॥

संशय नामनी चोवीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२७ बे विषयोना परस्परनी साथेना विरोधनुं कारण जोवामां आवे ए **संशय** केहेवाय छे.

जेम के शारीरस्थानना छट्ठा अध्यायना २८ मा तथा २९मा विषयमां कह्युं छे के 'हाथना तथा पगना तळाना मध्यमां तलहृदय नामनुं मर्म छे अने ते मर्ममां जो अभिघात थाय तो पीडाओथी मरण थायछे.' आम केहेलुं छतां पाछुं ३० मा विषयमां जणाव्युं छे के 'हाथनुं के पगनुं छेदन थतां मरण थतुं नथी' माटे ए बे विषयोना परस्परनी साथेना विरोधनुं कारण जोवामां आवे छे के हाथना तथा पगना तळाना मध्यमां रहेला तलहृदय नामना मर्मनुं छेदन थतां मरण थाय तो पछी हाथनुं के पगनुं छेदन थतां मरण केम न थाय ? (समाधान पण ३० मा विषयमांज छे.)

२८ तन्त्रातिशयोपवर्णनं व्याख्यानम् ।

यथा । इह पञ्चविंशतिकः पुरुषो व्याख्यायते । अन्येष्वायुर्वेदतन्त्रेषु भूतादिप्रकृत्यारब्धचिन्ता ।

व्याख्यान नामनी पचीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२८ बीजां तंत्रो करतां कोई अधिक विषयनुं वर्णन कर्युं होय ए **व्याख्यान** केहेवाय छे.

जेम के आयुर्वेदनां बीजां तंत्रोमां केवळ अव्यक्तथी (प्रधानथी) मांडीने चोवीश तत्वोनी

रचनारूप सृष्टिविचार कर्यो छे अने आ तंत्रमां ए चोवीश तत्वोनी रचना उपरांत पचीशमा जीवात्मानुं पण वर्णन कर्युं छे. (जुवो शारीरस्थाननो पेहेलो अध्याय.)

२९ अन्यशास्त्रासामान्या संज्ञा स्वसंज्ञा । यथा । मिथुनमिति मधुसर्पिषोर्ग्रहणम् । लोके प्रथितमुदाहरणम् । यथा चतुर्षु स्नेहेषु महास्नेहसंज्ञा ॥

स्वसंज्ञा नामनी छवीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

२९ बीजां शास्त्रोमां न आपेली होय एवी जे संज्ञा दाखल करवामां आवी होय ते **स्वसंज्ञा** केहेवाय छे.

जेम के मिथुनशब्दथी मध तथा घी एओनुं समुदितग्रहण बीजां शास्त्रोमां थतुं नथी ते छतां कोई तंत्रमां मिथुनशब्दथी ते बन्नेनुं ग्रहण करवामां आवतुं होय तो ए मिथुनशब्द स्वसंज्ञा केहेवाय. स्वसंज्ञानुं लोकमां प्रख्यात उदाहरण लईए तो ए छे के महास्नेहशब्दथी चारे स्नेहोनुं ग्रहण बीजां शास्त्रोमां थतुं नथी अने आयुर्वेदतंत्रोमां थायछे.

३० निश्चितं वचनं निर्वचनम् । यथा । आयुर्विद्यतेऽस्मिन्ननेन वायुर्विन्दतीत्यायुर्वेदः ॥

निर्वचन नामनी सत्यावीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

३० नामनी अर्थने मळती अने व्याकरणथी सिद्ध थती व्युत्पत्ति आपवी ए **निर्वचन** केहेवाय छे.

जेम के 'आयुर्वेद' ए नामनी 'आयुष्य जेमां विचारवामां आवे छे अथवा आयुष्यनी जेथी प्राप्ति थायछे ते आयुर्वेद' ए व्युत्पत्ति अर्थने मळती छे तथा व्याकरणथी सिद्ध थायछे.

३१ दृष्टान्तेनार्थः प्रसाध्यते यत्र तन्निदर्शनम् । यथा । यथाग्निर्वायुना सहितः कोष्ठे वृद्धिं गच्छति तथा वातपित्तकफदुष्टो व्रण इति ॥

निदर्शन नामनी अठ्यावीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

३१ दृष्टांत आपीने पोतानो अभिमत अर्थ सिद्ध करवामां आवे तेमां ते दृष्टांत पण पोताना अभिमत सिद्धांतवाळुं होय ते **निदर्शन** केहेवाय छे.

जेम के 'जेम वायुथी संयुक्त थएलो अग्नि कोठामां वृद्धि पामे छे तेम वायुथी, पित्तथी तथा कफथी दुष्ट थएलो व्रण शरीरमां वृद्धि पामे छे.' आ वाक्यमां अग्निनी वृद्धिना दृष्टांतथी पोतानी अभिमत व्रणनी वृद्धिने सिद्ध करी छे तेम ए पोते दृष्टांत पण केवळ लौकिक नथी पण आयुर्वेदना अभिमत सिद्धांतवाळुं छे. (हेत्वर्थ नामनी तंत्रयुक्तिना उदाहरणमां जे दृष्टांतवाक्य आपेलुं छे ते तो केवळ लौकिकज छे पण आयुर्वेदना अभिमत सिद्धांतवाळुं नथी. आटलोज हेत्वर्थ अने निदर्शन एओमां भेद जणाय छे.)

३२ इदमेव कर्तव्यमिति नियोगः । यथा । पथ्यमेव भोक्तव्यमिति

नियोग नामनी ओगणत्रीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

३२ 'एज करवुं' एम जे केहेवामां आव्युं होय ते **नियोग** केहेवाय छे.

जेम के पथ्यज जमवुं. (जेमां अनेकांतपणुं होय एवी आज्ञा उपदेश केहेवाय अने जेमां एकांतपणुं होय एवी आज्ञा नियोग केहेवाय एटलो उपदेश अने निदर्शन एओमां भेद छे. राते जागवुं नहीं अने दिवसे सूवुं नहीं ए वात ऐकांतिक नथी पण प्रायिक छे. केम के कफादिकथी अभिभूत थएला माणसने रातनुं जागवुं ए पण प्रशस्त छे अने ग्रीष्मऋतुमां तथा तरश वगेरे रोगमां दिवसनी निद्रा करवी ए पण प्रशस्त छे. पथ्यभोजन करवुं ए तो ऐकांतिकज छे ए वात सुप्रसिद्ध छे. जो के आ उत्तरतंत्रना ३९ मा अध्यायना ७४ मा विषयमां 'जीर्णज्वरवा-

ळाते हितकारी अन्न उपर अरुचि होय तो तेणे जीवनना बचावने माटे अहित अन्न पण जमवुं परंतु भारे के अभिष्यंदी अन्न जमवुं नहीं' एम पण केहेवामां आव्युं छे तेथी अपथ्य भोजनने पण अवकाश मळया जेवुं जणाय छे तो पण ए समये अपथ्यज पथ्यरूप थई जाय छे माटे पथ्यभोजन निर्व्यभिचारज छे एम समजवुं.)

३३ इदं चेदं चेति समुच्चयः ।

यथा । मांसवर्गे एणहरिणलावतित्तिरिसारङ्गाः प्रधानमिति ॥

समुच्चय नामनी त्रीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

३३ सघळी बाबतोनी प्रधानता राखवामां आवी होय ए **समुच्चय** केहेवाय छे.

जेम के सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायमां कहेला मांसवर्गमां काळीयार तथा रातो हरिण एओना मांसनी प्रधानता राखी छे अने लावां, तेतर तथा बपैया एओनां मांसनी पण प्रधानता राखी छे.

३४ इदं वेदं वेति विकल्पः ।

यथा । रसौदनः सघृता यवागूर्वा ॥

विकल्प नामनी एकत्रीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

३४ 'आ करवुं अथवा आ करवुं' एम जे केहेवामां आव्युं होय ते **विकल्प** केहेवाय छे.

जेम के 'मांसना रसावाळो भात जमाडवो अथवा घीवाळी रावागू पावी.'

३५ यदनिर्दिष्टं बुद्धिमता तदूह्यम् ।

यथा।अभिहितमन्नपानविधौ चतुर्विधं चान्नमुपदिश्यते। भक्ष्यं भोज्यं लेह्यं पेयमेवं चतुर्विधे वक्तव्ये द्विविधमभिहितमत्रोह्यमिति। अन्नपाने विशिष्टे द्वयोर्ग्रहणे कृते चतुर्णामपि ग्रहणं भवति। किंश्चान्यत्। अन्नेन भक्ष्यमवरुद्धं त्वन्नसाधर्म्यात् पेयेन लेह्यं द्रवसाधर्म्यात् । चतुर्विधश्चाहारः प्रायेण द्विविधः प्रसिद्ध इति ॥

ऊह्य नामनी बत्रीशमी तंत्रयुक्तिनुं लक्षण तथा उदाहरण.

३५ जे वात तंत्रमां केहेवामां आवेली न होय ते वात बुद्धिमान् वैद्ये तर्कथी समजी लेवी ए **ऊह्य** केहेवाय छे.

जेम के 'सूत्रस्थानना ४६ मा अध्यायमां भक्ष्य, भोज्य, लेह्य अने पेय एओना प्रकार तथा गुणदोषादिकनुं निरूपण कर्युं छे तेथी ते अध्यायनुं 'भक्ष्यभोज्यलेह्यपेयविधि' ए नाम राखवुं जोइए पण ते नहीं राखतां 'अन्नपानविधि' ए नाम राख्युं छे तो त्यां बुद्धिमान् वैद्ये ऊह करी लेवो जोइए के 'अन्नपान' ए बे शब्दवाळा पदमां भक्ष्य, भोज्य, लेह्य अने पेय ए चारेनो समावेश थायछे.' भोज्यवाचक अन्न शब्दथी खाद्यत्वरूप सधर्मपणाने लीधे भोज्यनुं पण ग्रहण करी शकाय छे अने पेयवाचक पान शब्दथी द्रवत्वरूप सधर्मपणाने लीधे लेह्यनुं पण ग्रहण करी शकाय छे तेथी पण ए ऊह करवो सुगम पडे एम छे. चार प्रकारनो आहार घणुं करीने 'अन्न अने पान' ए बे प्रकारोमां समाविष्ट थई जाय छे.

३६ द्वात्रिंशद्युक्तयो ह्येतास्तन्त्रसारगवेषणे
मया सम्यग्विनिहिताः शब्दन्यायार्थसंयुताः ॥
योह्येता विधिवद्वेत्ति द्वीपीभूतास्तु बुद्धिमान् ।
स पूजार्हो भिषक्श्रेष्ठ इति धन्वन्तरेर्मतम् ॥

बत्रीश तंत्रयुक्तिओनो उपसंहार अने फलस्तुति.

३६ वैद्यो तंत्रना सारने सारी रीते शोधी शके एटला माटे में शब्दोनी, न्यायोनी तथा अर्थोनी उपपत्तिओवाळी आ बत्रीश युक्तिओ सारी रीते जणावी छे. जे बुद्धिमान् पुरुष आयुर्वेदरूपी समुद्रमां द्वीपोरूप थनारी आ युक्तिओने योग्य प्रकारथी जाणे छे ते उत्तम वैद्य जगत्पूज्य थायछे एम भगवान् धन्वंतरिनो मत छे.

अध्याय ६६ मो.

१ अथातो दोषभेदविकल्पं नामाध्यायं व्याख्यास्यामः ॥

उपक्रम.

१ हवे शिष्योना पूछवा उपरथी 'दोषभेदविकल्प' ए नामना अध्यायनुं ते प्रमाणे व्याख्यान करीशुं के जे प्रमाणे भगवान् धन्वंतरिए सुश्रुतनी पासे कहेलुं छे.

२ अष्टाङ्गायुर्वेदविदं दिवोदासं महामतिम् ।
छिन्नशास्त्रार्थसंदेहं सूक्ष्मागाधागमोदधिम् ॥
विश्वामित्रसुतः श्रीमान् सुश्रुतः परिपृच्छति ।
त्रिषष्टिर्दोषभेदा ये पुरस्तात्परिकीर्त्तिताः ॥
कति तत्रैकशो ज्ञेया द्विशो वाप्यथ वा त्रिशः

दोषोना भेदो जाणवा माटे सुश्रुतनो प्रश्न.

२ आठे अंगोथी संपूर्ण आयुर्वेदने जाणनारा, मोटी बुद्धिवाळा, जेमने शास्त्रार्थोमां क्यांय पण संदेह न हतो एवा अथवा सर्व लोकोना शास्त्रार्थविषयना संदेहोने कापनारा अने सूक्ष्म तथा अगाध आगमोरूपी जळोना समुद्ररूप भगवान् दिवोदासने (धन्वंतरिने) विश्वामित्रना पुत्र श्रीमान् सुश्रुते पूछ्युं के 'आपे आ उत्तरतंत्रना ६३ मा अध्यायना बीजा विषयमां दोषोना त्रेसठ भेदो होवानुं कह्युं छे तो ते भेदोमां एक एक केटला छे,' बबेना संयोगवाळा केटला छे अने त्रण त्रणना संयोगवाळा केटला छे ए मारे जाणवुं जोइए माटे कृपा करीने कहो.

३ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा संशयच्छिन्महातपाः ॥
प्रीतात्मा नृपशार्दूलः सुश्रुतायाह तत्वतः ।
त्रयो दोषा धातवश्च पुरीषं मूत्रमेव च ॥
देहं संधारयन्त्येते ह्यव्यापन्ना रसैर्हितैः ॥
पुरुषः षोडशकलः प्राणाश्चैकादशैव ये ।
रोगाणां तु सहस्रं यच्छतं विंशतिरेव च ॥
शतं च पञ्च द्रव्याणां त्रिसप्तत्यधिकं मया ।
व्यासतः कीर्तितं तद्धि भिन्ना दोषास्त्रयो गुणाः।
द्विषष्टिधा भवन्त्येते भूयिष्ठमिति निश्चयः ।
त्रय एव पृथग् दोषा द्विशो नव समाधिकैः ।
त्रयोदशाधिकैकद्विसमममध्योल्बणैस्त्रिशः ।
पञ्चाशदेवं तु सह भवन्ति क्षयमागतैः ॥
क्षीणमध्याधिकक्षीणक्षीणवृद्धैस्तथापरैः
द्वादशैवं समाख्यातास्त्रयो दोषा द्विषष्टिधा ।
मिश्रधातुमलैर्दोषा यान्त्यसंख्येयतां पुनः ॥

दोषोना त्रेसठ भेदो विषे भगवान् धन्वतारना उत्तर.

३ एप्रमाणे सुश्रुतनुं वचन सांभळी संशयोनुं छेदन करनारा महातपस्वी महाराज दिवोदासे प्रसन्नताथी सुश्रुतनी पासे नीचेप्रमाणे तात्विक व्याख्यान आप्युं.

त्रण दोषो, सात धातुओ, विष्टा अने मूत्र एओ जो हितकारी रसोना सेवनने लीधे प्रकृतिस्थ होय तो देहनुं धारण करे छे ए विषयनुं, सोळ कळाओवाळा पुरुषनुं[2], अगीयार प्राणोनुं[3], अगीयारसो वीश रोगोनुं[4], अने पांचसो त्रोंतेर द्रव्योनुं वर्णन तो तमने विस्तारथी कही संभळाव्युं छे. हवे

१ दोषोना त्रेसठ भेदोना निरूपण विषेनो अने ग्रंथना उपसंहार विषेनो.

२ पांच भूतो अने अगीयार इंद्रियो. अथवा शारीरस्थानना पेहेला अध्यायना १२ मा विषयमां कहेला सोळ गुणो. ३ अग्नि, सोम, वायु, सत्व, रज, तम अने पांच इंद्रियो. ४ सूत्रस्थानमां हीनदग्धथी मांडी त्रण प्रकारनां अजीर्णोसूधी ६६ रोगो कह्या छे. निदानस्थानमां एकएक अंगमां रहेला वायुओथी मांडी सर्वसरोसूधी ३४२ रोगो कह्या छे. शारीरस्थानमां शुक्रगतरोगोथी मांडी गर्भना रोगोसूधी २७ रोगो कह्या छे. चिकित्सास्थानमां सोजाओथी मांडी स्नेहादिकनी व्यापत्तिओसूधी ९८ रोगो कह्या छे. कल्पस्थानमां अन्नगतविषजन्य रोगोथी मांडी कीटविषोसूधी २४७ रोगो कह्या छे अने उत्तरस्थानमां नेत्ररोगोथी मांडी उन्मादसूधी ३४० रोगो कह्या छे. कुल ११२०.

दोषोना त्रेसठ भेदो कहुं छुं. गुणात्मक वात, पित्त अने कफ ए त्रण दोषो के जेओ भिन्नभिन्न छे तेओ पोतपोताना प्रमाणमर होय (जेओथी स्वस्थता रेहे एवा होय) ए तेओनो पेहेलो भेद छे. १। आ भेदशिवाय स्थूल मार्गे रोगोनां कारणोरूप बासठ भेदो थायछे. जेम के वृद्धवात, वृद्धपित्त अने वृद्धकफ ए रीते एकएकना प्रमाणना आधिक्यने लीधे त्रण भेदो थायछे. ३। वातवृद्ध अने पित्तवृद्धतर, पित्तवृद्ध अने वातवृद्धतर, कफवृद्ध अने पित्तवृद्धतर, पित्तवृद्ध अने कफवृद्धतर, कफवृद्ध अने वातवृद्धतर, वातवृद्ध अने कफवृद्धतर ए रीते संसर्गमां एक दोषनी अधिकवृद्धिने लीधे छ भेदो थायछे. ६ । वात तथा पित्त ए बन्ने वृद्ध, पित्त तथा कफ ए बन्ने वृद्ध अने वात तथा कफ ए बन्ने वृद्ध ए रीते संसर्गमां बन्ने दोषनी तुल्य वृद्धिने लीधे त्रण भेदो थायछे. ३ । कफवृद्ध वातपित्तअधिकवृद्ध, पित्तवृद्ध वातकफअधिकवृद्ध अने वातवृद्ध पित्तकफअधिकवृद्ध ए रीते सन्निपातमां बबेनी अधिकवृद्धिने लीधे त्रण भेदो थायछे. ३ । पित्तकफवृद्ध, वातअतिवृद्ध, वातकफवृद्ध पित्तअतिवृद्ध, वातपित्तवृद्ध कफअतिवृद्ध ए रीते सन्निपातमां एक एकनी अतिवृद्धिथी त्रण भेदो थायछे. ३ । सन्निपातमां त्रणे दोषोनी समवृद्धिथी एक भेद थायछे. १ । वातवृद्ध पित्तवृद्धतर कफवृद्धतम, वातवृद्ध कफवृद्धतर पित्तवृद्धतम, पित्तवृद्ध कफवृद्धतर वातवृद्धतम, पित्तवृद्ध वातवृद्धतर कफवृद्धतम, कफवृद्ध वातवृद्धतर पित्तवृद्धतम अने कफवृद्ध पित्तवृद्धतर वातवृद्धतम ए रीते सन्निपातमां तारतम्यथी छ भेदो थायछे. ६ । एमज वातक्षीण, पित्तक्षीण अने कफक्षीण ए रीते एक एकनी क्षीणताने लीधे त्रण भेदो थायछे. ३ । वातक्षीण अने पित्तक्षीणतर, पित्तक्षीण अने वातक्षीणतर, कफक्षीण अने पित्तक्षीणतर, पित्तक्षीण अने कफक्षीणतर, कफक्षीण अने वातक्षीणतर, वातक्षीण अने कफक्षीणतर ए रीते संसर्गमां एक दोषनी अधिक क्षीणताने लीधे छ भेदो थायछे. ६ । वात तथा पित्त ए बन्ने क्षीण, पित्त तथा कफ ए बन्ने क्षीण अने वात तथा कफ ए बन्ने क्षीण ए रीते संसर्गमां बन्ने दोषनी तुल्य क्षीणताने लीधे त्रण भेदो थायछे. ३ । कफक्षीण वातपित्त अधिकक्षीण, पित्तक्षीण वातकफअधिकक्षीण अने वातक्षीण पित्तकफअधिकक्षीण ए रीते सन्निपातमां बबेनी अधिकक्षीणताने लीधे त्रण भेदो थायछे. ३ । पित्तकफक्षीण वातअतिक्षीण, वातकफक्षीण पित्तअतिक्षीण, वातपित्तक्षीण कफअतिक्षीण ए रीते सन्निपातमां एक एकनी अतिक्षीणताथी त्रण भेदो थायछे. ३ । सन्निपातमां त्रण दोषोनी समक्षीणताथी एक भेद थायछे. १। वातक्षीण पित्तक्षीणतर कफक्षीणतम, वातक्षीण कफक्षीणतर पित्तक्षीणतम, पित्तक्षीण कफक्षीणतर वातक्षीणतम, पित्तक्षीण वातक्षीणतर कफक्षीणतम, कफक्षीण वातक्षीणतर पित्तक्षीणतम अने कफक्षीण पित्तक्षीणतर वातक्षीणतम ए रीते सन्निपातमां तारतम्यथी छ भेदो थायछे. ६ । एमज वातवृद्ध पित्तसम कफक्षीण, पित्तवृद्ध वातसम कफक्षीण, कफवृद्ध पित्तसम वातक्षीण, कफवृद्ध वातसम पित्तक्षीण, वातवृद्ध कफसम पित्तक्षीण अने पित्तवृद्ध कफसम वातक्षीण ए रीते सन्निपातमां एकएकनी वृद्धिथी, एकएकनी समताथी अने एकएकनी क्षीणताथी छ भेदो थायछे. ६ । एमज वातक्षीण, पित्तकफवृद्ध, पित्तक्षीण वातकफवृद्ध अने कफक्षीण वातपित्तवृद्ध ए रीते सन्निपातमां एकएकनी क्षीणताथी अने बबेनी वृद्धिथी त्रण भेदो थायछे. ३ । एमज वातपित्तक्षीण कफवृद्ध, वातकफक्षीण पित्तवृद्ध अने पित्तकफक्षीण वातवृद्ध ए रीते सन्निपातमां बबेनी क्षीणताथी अने एकएकनी वृद्धिथी त्रण भेदो थायछे. ३ । कुल ६३.

एप्रमाणेज वळी जो दोषोनुं धातुओनी साथे तथा मळोनी साथे मिश्रण करी गणीए तो तो दोषोना भेदो असंख्यात थई जाय एम छे.

४ तस्मात्प्रसङ्गं संयम्य दोषभेदविकल्पनैः।
रोगं विदित्वोपचरेद्रसभेदैर्यथेरितैः ॥

वैद्ये केटलो निश्चय करीने केवी रीते चिकित्सा करवी ?

४ उपर प्रमाणे छे एटला माटे वैद्ये लक्षणादिकनुं अवेक्षण करी, लक्षणादिकना निश्चय उपरथी रोगने ओळखी लई, पछी ते रोगमां दोषोना भेदोनो निश्चय करी ते भेदोना प्रत्यनीकभूत (सामावलीया) रसोना भेदोथी चिकित्सा करवी के जे रसोना भेदो गया ६३ मा अध्यायमां केहेवामां आव्या छे.

५ भिषक् कर्त्ताथ करणं रसा दोषास्तु कारणम्।
कार्यमारोग्यमेवैकमनारोग्यमतोऽन्यथा ॥

चिकित्सानां कर्त्ता, करण, कारण अने कार्य.

५ वैद्य चिकित्सानो कर्त्ता छे, रसो चिकित्सानां करणो (साधनो) छे, दोषो चिकित्सानां कारणो छे अने एक आरोग्य ज चिकित्सानुं कार्य छे. कर्त्ता तथा करणो योग्य होय अने कारणोनी स्थिति बराबर जाणवामां आवी होय तो कार्य (आरोग्य) उत्पन्न थायछे. नहींतर अनारोग्य रेहे छे तथा वधारे पण थायछे.

६ अध्यायानां तु षट्षष्ट्या ग्रथितार्थपदक्रमम्।
एवमेतदशेषेण तन्त्रमुत्तरमृद्धिमत् ।
स्पष्टगूढार्थविज्ञानमगाधं मन्दचेतसाम् ।
यथाविधि यथाप्रश्नं भवतां परिकीर्त्तितम् ॥

उत्तरतंत्रनो उपसंहार.

६ सुश्रुत आदि शिष्यो! आप्रमाणे छासठ अध्यायोथी, जेमां अर्थोनी, पदोनी तथा क्रमोनी योग्य गूंथणी करवामां आवी छे एवुं, अने प्रौढतावाळुं आ उत्तरतंत्र के जे गूढ अर्थोना पण स्पष्ट विवेचनवाळुं छे अने तेम छतां पण मंदबुद्धिवाळाओने अगाध थई पडे एवुं छे ते, तमारां प्रश्नोना अनुसारथी विधिपूर्वक संपूर्ण रीते तमोने कहां सभळाववामां आव्युं

७ सहोत्तरं त्वेतदधीत्य सर्वं ब्राह्मं विधानेन यथोदितेन । न हीयतेऽर्थान्मनसोभ्युपेतादेतद्वचो ब्राह्ममतीव सत्यम् ॥

ग्रंथनो उपसंहार तथा फलश्रुति.

७ जे पुरुष ब्रह्मानी परंपराथी प्राप्त थएला आ शास्त्रने उत्तरतंत्रसहित आ शास्त्रमां कहेला विधि[१]थी संपूर्ण भणे तथा अभ्यस्त करे ते पुरुष मनोवांछित पुरुषार्थथी भ्रष्ट थतो नथी. आ ब्रह्मानुं वचन अत्यंत सत्य छे.

१ सूत्रस्थानना बीजा, त्रीजा तथा चोथा अध्यायमां कहेला विधिप्रमाणे.

इति श्रीसौश्रुत आयुर्वेदे उत्तरतंत्रं समाप्तम् ॥

समाप्तोऽयं सौश्रुत आयुर्वेद ।

सुश्रुतनुं गुजराती भाषांतर समाप्त.

कालिदासाभिधः शास्त्री वास्तव्यो जामपत्तने ॥
गौविन्दिः सौश्रुतं ग्रन्थं व्याख्यं गुर्जरभाषया ॥ १ ॥

न हीश्वरादृते कश्चित् सर्वज्ञ इति सज्जनैः ॥
क्षंस्यन्ते स्खलितान्यत्रेत्याशासे प्राञ्जलिर्भवन् ॥ २ ॥

वेदधर्मसभा जीयादार्यतत्त्वोदयैषिणी ॥
विवृतावस्य वेदस्य प्रावृतं यदनुज्ञया ॥ ३ ॥

रसोना त्रेसठ भेदोनुं पत्रक-कोष्टक (१२९४ मा पृष्ठनी नोटमां जणावेलुं.)

मधुराम्ल १ केरी, दाडिम, द्राक्ष.	मधुरलवण २ शेरडीनो आगलो भाग, सैंधव.	मधुरतिक्त ३ जेठीमध, शतावरी.	मधुरकटुक ४ मीण, डुंगळी.	मधुरकषाय ५ वंशलोचन.	अम्ललवण ६ चणानो खार.
अम्लकटुक ७ काळो मरखो.	अम्लतिक्त ८ नाहानां कोठींबडां.	अम्लकषाय ९ खाखटी.	लवणकटुक १० संचल.	लवणतिक्त ११ खारो.	लवणकषाय १२ बकरीनुं मूत्र.
कटुतिक्त १३ चणकबाव, इंद्रयव.	कटुकषाय १४ हरताल, खेरसार, गजपीपळ.	तिक्तकषाय १५ काकडाशींगी, नागकेसर.	मधुराम्ललवण १६ घोडीनुं दूध.	मधुराम्लकटुक १७ कपासना छोड, चारोलीनुं पाकेलुं फल.	मधुराम्लतिक्त १८ करमदां, आंबाहळदर.
मधुराम्लकषाय १९ आमलां, जांबू.	मधुरलवणकटुक २० मूळा, मीठोसरगवो.	मधुरलवणतिक्त २१ मेथीनी भाजी.	मधुरलवणकषाय २२ कदंबी—कलंब कणेछरा.	मधुरकटुकतिक्त २३ हीरावोल, कपूर, जीरुं.	मधुरकटुकषाय २४ भीलामुं.
मधुरतिक्त कषाय २५ वाल, लोदर, गळो, अरडूसी.	अम्ललवणकटुक २६ लूणी.	अम्ललवण तिक्त २७	अम्ललवणकषाय २८	अम्लकटुकषाय २९ पाकुं कोकम.	अम्लकटुतिक्त ३० शंखवेल.
अम्लतिक्तकषाय ३१ हिराकसी, मींढीआवळ.	लवणकटुतिक्त ३२ कस्तूरी, सुरोखार.	लवणकटुकषाय ३३ मोरथुथु.	लवणतिक्तकषाय ३४ खेर.	कटुतिक्तकषाय ३५ जायफळ, आसोंद, बकान.	मधुराम्ललवण-कटुक. ३६
मधुराम्ललवणतिक्त ३७	मधुराम्ललवणकषाय ३८ सर्षपनां पांनडानुं शाक.	मधुराम्लकटुकतिक्त ३९ पतंगनुं लाकडुं, बळदाणा.	मधुराम्लकटुकषाय ४० गंगेटी, खपाट.	मधुरलवणतिक्त कटुक ४१ रींगणां, कुवाडीयो.	मधुराम्लतिक्तकषाय ४२ कोठ.
मधुरतिक्तकटुकषाय ४३ धाणा, जटामांसी, तल.	मधुरलवणकटुकषाय ४४ मोटा अरडूसानुं कोमल फळ.	मधुरलवणतिक्त-कषाय ४५ पोथी, परपोटी.	अम्ललवणकटुक-तिक्त ४६ मेढाशीगीनुं फल.	अम्ललवणकटुकषाय ४७	अम्ललवणतिक्त-कषाय ४८
अम्लकटुतिक्त-कषाय ४९ फटकडी, शण.	लवणकटुतिक्तकषाय ५० कलई.	मधुराम्ललवणकटु-तिक्त ५१ धमासो.	मधुराम्ललवणकटु-कषाय ५२	मधुराम्ललवणति-क्तकषाय ५३	मधुराम्लकटुतिक्त-कषाय ५४ मोटीहरडे, सोनामखी.
मधुरलवणकटुति-क्तकषाय ५५ पान, लसण, कदंब.	अम्ललवणकटुति-क्तकषाय ५६	मधुराम्ललवणकटु-कतिक्तकषाय ५७	मधुर ५८ साकर.	अम्ल ५९ लींबु.	लवण ६० मीठुं.
कटुक ६१ मरचां.	तिक्त ६२ करीयातुं.	कषाय ६३ हीमज.			

(संस्कृत)

लघुसिद्धान्तकौमुदी.

श्रीमद्वरदराजाचार्यकृत **लघुसिद्धांतकौमुदी** नामना मूळग्रंथ उपर प्रयोगमणिमाला नामनी संस्कृत टीका शीघ्रकवि **शंकरलाल शास्त्री**जीए बहु परिश्रमथी बनावी छे. आ टीका एवी संस्कृत सरल भाषामां लखाइ छे के, जे जोयाथी सारस्वत चंद्रिका, मुग्धबोध प्रभृति भणेल पण **लघु-कौमुदी** सारी रीते भणावी शके; वळी **लघुकौमुदीना** संपूर्ण प्रयोगनी साधनिका संस्कृतमां करेली छे तेमज प्रत्येक प्रयोगमां संपूर्ण सूत्रोनी योजना एवी रीते करेली छे के बीजी जग्याए सूत्रनुं अन्वेषण करवुं न पडे. वळी जगे जगे नीचे टीपणी आपेली छे. तेमां पूर्वपंक्तिनुं स्पष्ट विवरण अने न्यास अच्छी रीते लखेल छे. आ लखनार **व्याकरणकेसरी** श्रीयुत् **दामोदर शास्त्री**जीना साक्षात् शिष्य **जीवनराम शास्त्री** छे. आवी रीते मूल ग्रंथ उपर बे साक्षरोए श्रम लीधो छे तेथी पुस्तक बहु उपयोगी थयुं छे. सरकारी केळवणीखाताए इनाम तथा पुस्तकालयमां राखवा आ पुस्तक मान्य कर्युं छे.

कीमत बे रुपीआ बार आना, टपाल खर्च त्रण आना.

श्रीमद्भगवद्गीता.

मूल संस्कृत साथे.

आवृत्ति पांचमी.

(शुद्ध, सरळ, गुजराती भाषांतर.)

आ पुस्तक यथार्थ अने लोकप्रिय होवाथी तेनी पांचमी आवृत्ति छपाणी छे, नानी आकृति रेशमी पुठांवाळी होवाथी पूजा पाठमां राखवा उपयोगी छे. वळी श्लोक नीचेज भाषांतर होवाथी पूजा पाठमां अर्थनी सुगमता आपे छे.

भाषान्तर करनार जूनागढनी संस्कृत शाळाना शिक्षक **शास्त्री हरिदत्त करूणाशंकर.**

कीमत बार आना, टपाल खर्च एक आनो.

श्रीमद्भागवत भाषांतर.

(गद्यात्मक शुद्ध, सरळ, गुजराती भाषामां)

चौद चित्रो साथे पुस्तकना आकारमां

आ पुस्तकनी बे आवृत्ति खपी जवाथी त्रीजी आवृत्ति छपाववामां आवी हती, जेनी हवे मात्र थोडीज नकलो बाकी छे. आ उपरथी ते केटलुं उपयोगी अने वांचवा लायक छे ते समजाशे.

कीमत पांच रूपीआ चार आना, टपाल खर्च बार आना.

मळवानुं ठेकाणुं. }
वैद्य प्रभुराम जीवनराम औषधालय. }

वेदधर्म सभा तंत्री.
भुलेश्वर अनंतवाडी.